संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ

अर्थात्
संस्कृत शब्दों का हिन्दी भाषा में
अर्थ बतलाने वाला
एक बड़ा कोष

संग्रहकर्त्ता
चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा, एम० आर० ए० एस०

[प्रथम संस्करण]

प्रकाशक
लाला रामनारायण लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

१९२८

मूल्य दस रुपया

PREFACE

OF late years great efforts have been made to raise the standard of education in our schools and universities, and the study of no subject has attracted so much attention as that of the Indian Vernaculars The educated public, as well as those responsible for our educational institutions, have been taking progressive interest in their teaching and development Not long ago an academy has been instituted for the purpose of improving the Vernaculars with the moral and material blessings of the Government

The classics, however, have not been so fortunate. Their studies are in comparative neglect. They have to yield their high place to more utilitarian and modern subjects The present day tendency in education to subordinate what is purely or mostly cultural, to what is primarily utilitarian has thrown classics in shade.

Of all the classical languages *Sanskrit* has suffered most Persian and Arabic are still popular with their admirers, for they (the admirers) have not yet decided to break off more or less completely from their past culture or ancient literature. They would not be satisfied with a second-hand and scrappy knowledge of their old literature through the translations by foreigners in foreign languages

With the former champion of *Sanskrit* it is otherwise. A great many of those, who wield influence in the spheres of politics, education or social matters, even hesitate to do lip-service to that language in which the glories of their past are recorded. To them all old things of their country are only fit to be forgotten. Their neglect of *Sanskrit* has almost verged on hatred. They object even to that style of *Hindi*, which uses *Sanskrit* or words derived from it. And these very persons would gladly support the infusion of foreign words and derivatives into Hindi which might sound *Hebrew* and *Greek* to an average *Hindi*-speaking person !

Yet *Sanskrit* occupies an unique position—not only in the history and culture of *Aryavarta*—but also among the languages of the world. Dr. Ogilvie and Wilson did not overestimate the importance of *Sanskrit* when they said :—

संकेत-सूची

१ अ० का०—अपादान कारक ।
२ अव्यया०—अव्ययात्मक Indeclinable
३ अन्व०—अन्वर्थ Literal.
४ अ० व०—अतिशयार्थवाचक Superlative
५ आ० या आलं०—आलंकारिक या लाक्षणिक.।
६ आत्मा०—आत्मनेपदी ।
७ अं० शा०—अङ्कशास्त्र ।
८ क० क०—कर्मवाचक Accusative.
९ क० का०—करणकारक सम्बन्धी ।
१० कर्तृ० का०—कर्तृकारक सम्बन्धी ।
११ क० वा०—कर्मवाच्य Passive.
१२ क्रि० उ० या उ०—क्रिया उभयपदी ।
१३ (न०) नपुंसकलिङ्ग ।
१४ परस्मै०—परस्मैपदी ।
१५ व० कृ०—वर्तमानकालबोधक कृदन्त ।
१६ (पु०) पुल्लिङ्ग ।
१७ भू० क० कृ०—भूतकालबोधककर्मवाच्य कृदन्त ।
१८ स० का०—सद्भावनावाचक कर्मवाच्य कृदन्त ।
१९ सं० वा०—सम्बोधनवाचक ।
२० (स्त्री०) स्त्रीलिङ्ग ।

श्रीः

संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ

अ

अ—संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का यह प्रथम अक्षर है। बंगला आदि अन्य भाषाओं की वर्णमाला का भी यही आदिम वर्ण है। इसका उच्चारण कण्ठ से होता है; अतः यह वर्ण कण्ठ्य कहलाता है। संस्कृत व्याकरण में उच्चारणभेद से इसके १८ भेद दिखलाए गए हैं। प्रथम—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत। तदुपरान्त—ह्रस्व-उदात्त, ह्रस्व-अनुदात्त, ह्रस्व-स्वरित; दीर्घ-उदात्त, दीर्घ-अनुदात्त, दीर्घ-स्वरित; प्लुत-उदात्त, प्लुत-अनुदात्त, प्लुत-स्वरित। ये ९ प्रकार हुए। फिर अनुनासिक और अननुनासिक भेद से—इन ९ के दुगुने ९ × २=१८ भेद हुए। व्यञ्जनों के उच्चारण में इस वर्ण की सहायता अपेक्षित रहती है। इसीसे संस्कृत या हिन्दी में क आदिक वर्ण अकार-स्वर-संयुक्त लिखे तथा बोले जाते हैं। नञ् तत्पुरुष में भी 'न लोपो नञः' (पाणिनि-अष्टाध्यायी—६।३।७३) सूत्र से नकार का लोप हो जाने पर 'अ' बचता है। नञ्—के अर्थ ६ हैं:—

तत्सादृश्यमभावश्च, तदन्यत्वं तदल्पता।
अप्राशस्त्यं विरोधश्च, नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः॥

(उदाहरण क्रम से)

सादृश्य में—न ब्राह्मणः (अब्राह्मणः)
अभाव में— अपापम् (पापाभावः)
भिन्नता के ज्ञान में—अवटः (वटभिन्नः)
अप्राशस्त्यभाव में—अकालः (अप्रशस्तकालः)
विरोध में—अनादरः (आदरविरोधी-तिरस्कार)

न-लोप में इतनी विशेषता है कि, स्वरवर्ण परे रहते नुम् का आगम हो जाता है। जैसे, "अनादरः"। (अर्थ) विष्णु। कहीं कहीं ब्रह्म का अर्थ भी समझा जाता है।

पुल्लिङ्ग में	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	अः	औ	आः
द्वितीया	अं	औ	आन्
तृतीया	एन	आभ्याम्	ऐः
चतुर्थी	आय	,,	एभ्यः
पञ्चमी	आत्-आद्	,,	,,
षष्ठी	अस्य	अयोः,	आनां
सप्तमी	ए	,,	एषु

अंश् (धा० उ०) [अंशयति-अंशयते] १ विभाजित करना। बाँटना। भाग कर के बाँटना। २ पृथक् करना। इसी अर्थ में अंशापयति भी व्यवहृत होता है।

अंशः (पु०) १ भाग। हिस्सा। बाँट। २ भाज्य अङ्क। ३ भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। ४ चौथा भाग। ५ कला। ६ सोलहवाँ हिस्सा। ७ वृत्त की परिधि का ३६०वाँ हिस्सा, जिसे इकाई मान कर कोण या चाप का परिमाण बतलाया जाता है। ८ कंधा। ९ बारह आदित्यों में से एक।—अंशः

अंशावतार। एक हिस्से का हिस्सा।—अंशि (क्रि० वि०) भागशः। हिस्सेवार।—अवतारः जो पूर्णावतार न हो। अवतार विशेष। जिसमें परमात्मा का कुछ ही भाग हो।—अवतरणं (महाभारत के आदिपर्व के ६४ वें तथा ६७ वें अध्यायों का नाम।—भाज्—हर—हारिन् (पु० स्त्री०) उत्तराधिकारी, यथा—"पिण्डदोंशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः"। (याज्ञ०) —सवर्णनं (न०) अङ्कशास्त्र की एक क्रिया विशेष।—स्वरः (संगीत में) प्रधान स्वर।

अंशकः (पु०) १ हिस्सेदार। पाँतीदार। साझीदार। २ भाग। टुकड़ा। ३ दिवस। दिन।

अंशनं (न०) भाग देने की क्रिया।

अंशयितृ (पु०) १ विभाजक। बाँटने वाला। २ हिस्सेदार। पाँतीवाला।

अंशल (वि०) १ हिस्सा पाने का अधिकारी। २ मज़बूत। ३ सवल। स्वस्थ। दृढ़काय। बलवान। मांसल।

अंशिन् (वि०) १ साझीदार। समान भाग पाने वाला यथा—"सर्वे वा स्युः समांशिनः। (याज्ञ०) २ हिस्सोंवाला।

अंशु (पु०) १ किरण। रश्मि। २ चमक। दमक। ३ नोंक। (डोरे का) छोर। ४ पोशाक। सजावट। ५ रफ्तार। गति। ६ परमाणु।—जालं—(न०) रश्मिसमुदाय।—धर, —भृत्, —पतिः,—बाणः,—भर्तृ,—स्वामी,—हस्तः (पु०) सूर्य। आदित्य।—पट्टं (न०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। —माला (स्त्री०)१ प्रकाश की माला। २ सूर्य या चन्द्र का मण्डल।—मालिन्-माली (पु०) सूर्य।

अंशुकं १ वस्त्र विशेष। मिहीन कपड़ा। अर्थात् मिहीन रेशमी मलमल। टसर। मिहीन सफेद वस्त्र। २ वह सिला कपड़ा जो सव के ऊपर या सव के नीचे पहिना जाता है। ३ पत्ता। ४ आँच की या रोशनी की मंदी लौ या ज्योति।

अंशुमत् (वि०) १—चमकदार। चमकीला। दमकीला। २ नुकीला। नोकदार।—मान् (पु०) १ सूर्य। २ सूर्यवंशी एक राजा, जो असमञ्जस के पुत्र और महाराज सगर के पौत्र तथा महाराज दिलीप के पिता थे।

अंशुमती (स्त्री०) १ पौधा विशेष। सालवण। २ पूर्णमासी। पूर्णिमा।

अंशुमत्फला (स्त्री०) केले का वृक्ष।

अंशुल (वि०) चमकीला। दमकीला।

अंशुलः (पु०) चाणक्य का दूसरा नाम।

अंस् (असयति, अंसापयति) देखो "अंश्"।

अंसः १ टुकड़ा। हिस्सा। २ कंधा। कंधे की हड्डी। अंसफलक।—कूटः (पु०) साँड के कधों के वीच का ऊपर को उठा हुआ भाग। कूवड़। कुब्ब।—त्रं (न०) कंधों का कवच विशेष।—फलक (पु०) मेरुदण्ड का ऊपरी भाग। भारः (पु०) कंधे पर का वोझ या जुआँ।—भारिक, —भारिन् (वि०) कंधे पर रख कर बोझ उठाये हुए अथवा कंधे पर जुआँ रखे हुए।—निवर्तिन (वि०) कंधों की ओर मुड़ा हुआ।

अंसल (वि०) देखो "अंशल"। मज़बूत कंधों वाला। यथा—"युवा युगव्यायत वाहुरसलः।"

अंह् (धा० आत्मने०) [अंहते, अंहितुं, अंहित] जाना। समीप आना। आरम्भ करना भेजना। चमकना। बोलना।

अंहतिः—ती (स्त्री०) १ भेंट। उपहार। दान। दैन। ख़ैरात। २ बीमारी।

अंहस् (न०) १ पाप। २ कष्ट। चिन्ता।

अंह्रिः (पु०) १ पैर। २ पेट की जड़। ३ चार की संख्या।—पः (पु०) पादप। जड़ से जल पीने वाले अर्थात् वृक्ष।—स्कन्धः (पु०) पैर के तलवे का ऊपरी भाग।

अक् (धा० परस्मै०) [अकति, अकित] घूमघुमौआ चाल चलना। सर्पाकार चलना।

अकं (न०) १ हर्ष का अभाव। पीड़ा। कष्ट। २ पाप।

अकच (वि०) १ गंजा। जिसके सिर पर वाल न हों।

अकचः (पु०) केतु का नाम।

अकनिष्ठ (वि०) १ जो छोटा न हो। २ श्रेष्ठतर।

अकनिष्ठः (पु०) गौतमबुद्ध का नाम।

अकन्या (स्त्री०) जिसका क्वाँरपन उतर चुका हो।

अकर (वि०) १ लुंजा। जिसके हाथ न हो। २ अकर्मण्य। जो कुछ न करे। ३ वह माल जिस पर चुंगी न लगे या वह व्यक्ति जिस पर कर न हो।

अकरणं (न०) कुछ न करना । क्रिया का अभाव ।
अकरणिः (स्त्री०) १ असफलता । नैराश्य । अपूर्णता ।
२ इसका प्रयोग प्रायः किसी को शाप देने या किसी की अमङ्गल-कामना करने में होता है ।
अकर्ण (वि०) १ कर्णरहित । जिसके कान न हो । २ बहरा ।
अकर्णः (पु०) सर्प ।
अकर्तन (वि०) बौना । खर्वाकार ।
अकर्मन् (वि०) १ सुस्त । २ जिसके पास करने को कुछ काम न हो अथवा जो कुछ भी काम न करता हो । ३ अयोग्य । ४ पतित । दुष्ट । ५ व्याकरण में अकर्मक क्रिया के अर्थ में । (न०) (—र्मं) १ कार्याभाव । २ अनुचित कार्य । बुरा कर्म । पाप ।—अन्वित (वि०) १ बेकाम । खाली । निठल्लू । २ अपराधी ।—कृत (वि०) १ क्रिया से रहित । २ अनुचित काम करने वाला ।—भोगः (पु०) कर्मफल से मुक्त होने की स्वतंत्रता का सुखानुभव ।
अकर्मक (वि०) क्रियाविशेष । (स्त्री०) अकर्मिका ।
अकर्मण्य (वि०) १ अनुचित । न करने योग्य । २ सुस्त, निकम्मा ।
अकल (वि०) १ जो भागों में विभक्त न हो । २ परब्रह्म की उपाधि विशेष ।
अकल्क (वि०) १ विशुद्ध । पवित्र । २ पापशून्य ।
अकल्का (स्त्री०) चन्द्रमा की चाँदनी ।
अकल्प (वि०) १ अनियंत्रित । असंयत । २ निर्बल । अयोग्य । ३ तुलनाशून्य । जिसकी तुलना न हो सके ।
अकल्य (वि०) अस्वस्थ्य । भला चंगा नहीं ।
अकस्मात् (अव्यय०) संयोगवश । सहसा । आकस्मिक । अकस्मात् आया हुआ । तत्क्षण । बैठे बिठाए । औचक । दैवयोग से । हठात् । आप से आप । अकारण ।
अकांड, अकाण्ड (वि०) । १ सहसा । इत्तिफाकिया । औचक । २ जिसमें डंठल या डाली न हो ।—जात (वि०) सहसा उत्पन्न हुआ अथवा उत्पन्न किया हुआ ।—पातजात (वि०) जन्मते ही मर जाने वाला ।—शूलं (न०) वायुगोले का सहसा उठने वाला दर्द ।
अकांडे, अकाण्डे (क्रि० वि०) अचिन्तित । सहसा ।
अकाम (वि०) १ विना कामना का । कामनारहित । २ इच्छाशून्य । ३ निस्पृह । ४ विना चाह अर्थात् प्रीति का । ५ अबोध । ६ अतर्कित ।
अकामतः (क्रि० वि०) १ विना प्रयोजन के । व्यर्थ । २ खेद के सहित । विवश होकर । अज्ञानता के कारण से ।
अकाय (वि०) विना शरीर का । पाञ्चभौतिक शरीर से रहित । (पु०) १ राहु का नाम । २ परमात्मा की एक उपाधि ।
अकारण (वि०) १ विना कारण । हेतुरहित । २ स्वेच्छाप्रसूत । अयत्नसम्भूत । स्वतःप्रवृत्त । अपने आप उत्पन्न ।
अकारणम् (क्रि० वि०) विना कारण के । व्यर्थ ।
अकार्य (वि०) अनुचित ।—कारिन् (वि०) १ पापी । बुरा काम करने वाला । २ कर्त्तव्य-पराङ्मुख ।
अकार्यम् (न०) १ अनुचित या बुरा कर्म । २ कुकर्म । अपराध ।
अकाल (वि०) १—अनुपयुक्त समय । अनवसर । कुसमय । ठीक समय से पीछे या पहिले । २ कच्चा ।—कुसुमं,—पुष्पं (न०) कुसमय का फूला हुआ फूल ।—कूष्माण्डः (पु०) कुसमय में फला हुआ कुम्हड़ा ।—ज,—उत्पन्न,—जात (वि०) कुसमय में उत्पन्न । कच्चा ।—जलदोदयः,—मेघोदयः १ कुसमय आकाश में बादलों का उमड़ना । २ पाला या कुहरा ।—मृत्यु (पु०) बेसमय की मौत । असामयिक मृत्यु । अनायास मृत्यु । थोड़ी अवस्था में मरना ।—वेला (स्त्री०) कुसमय ।—सह (वि०) जो विलम्ब को अथवा समय का नाश न सह सके बेसब्र ।
अकिंचन, अकिञ्चन (वि०) जिसके पास कुछ न हो । निपट निर्धन । कंगाल । दरिद्र । दीन । ग़रीब । मुहताज ।
अकिंचिज्ज्ञ, अकिञ्चिज्ज्ञ (वि०) कुछ भी न जानते हुए । निपट अज्ञान । निपट अबोध ।
अकिञ्चित्कर (वि०) १ असमर्थ । जिसका किया कुछ भी न हो सके । अशक्त । २ तुच्छ ।
अकुंठ, अकुण्ठ (वि०) १ जो कुण्ठित या गोंठल

न हो। तीक्ष्ण। चोखा। २ तीव्र। खरा। तेज़। ३ विना रोकाटोका हुआ। ४ निर्दिष्ट। ५ अत्यधिक।

अकुतः (क्रि० वि०) यह अकेला कहीं नहीं प्रयुक्त होता। इसका अर्थ है जो कहीं से न हो।

अकुतोभय (वि०) सुरक्षित। जिसे किसी का भय न हो।

अकुप्यं (न०) १ सुवर्ण। २ चाँदी। ३ कम क़ीमती धातु नहीं।

अकुशल (वि०) १ जो निपुण न हो। अनाड़ी। २ अशुभ। अभागा।

अकुशलं (न०) विपत्ति। बुराई। अहित।

अकूपारः (पु०) १ समुद्र। २ सूर्य। ३ बड़ा कछुआ। वह विशाल कछुआ जिसकी पीठ पर पृथिवी टिकी हुई मानी जाती है। ४ पत्थर। चट्टान।

अकूर्च (वि०) कपटशून्य। शठता रहित। चातुर्य-विहीन। छलविवर्जित।

अकृच्छ्र (वि०) सरल। सहज।—म् (न०) सरलता। आसानी।

अकृत (वि०) १ जो न किया गया हो। जो ठीक ठीक न किया गया हो। जिसके करने में भूल की गयी हो। २ अपूर्ण। अधूरा। जो तैयार न हो। ३ जो रचा न गया हो। ४ जिसने कोई काम न किया हो। ५ अपक। कच्चा। जो पका न हो।—ता (स्त्री०) बेटी होने पर भी जो बेटी न मानी जाय और जो पुत्रों के समकक्ष मानी जाय।—तं (न०) १ किसी कार्य को न करना। २ अश्रुतपूर्व कर्म।—अर्थ (वि०) असफल। अनुत्तीर्ण।—अस्त्र (वि०) जिसको हथियार चलाने का अभ्यास न हो।—आत्मन् (वि०) अज्ञानी। अबोध। मूर्ख। परब्रह्म या परमात्मा से भिन्न।—उद्वाह (वि०) अविवाहित।—ज्ञ (वि०) १ जो कृतज्ञ न हो। जो किये हुए उपकार को न माने। कृतघ्न। नाशुकरा। २ अधम। नीच।—धी,—बुद्धि (वि०) अज्ञ। अबोध। मूर्ख।

अकृतिन् (वि०) कुत्सित। अकुशल। असुविधाजनक।

अकृष्ट (वि०) अनजुती हुई। जो न जोती गयी हो।—पच्य,—रोहिन् (न०) जो अनजुती ज़मीन में उत्पन्न हुआ हो।

अकृष्णकर्मन् (वि०) निर्दोष। निर्मल।

अकोट (पु०) सुपाड़ी का वृक्ष।

अकोविद (वि०) मूढ़। अपण्डित। मूर्ख।

अक्का (स्त्री०) माता।

अक्त (वि०) १ जोड़ा हुआ। २ गया हुआ ३ बाहर तक फैला हुआ। ४ तैलादि की मालिश किया हुआ।

अक्ता, अक्तु (स्त्री०) रात्रि।

अक्त्रं (न०) वर्म। कवच। जिरहबख्तर।

अक्रम (वि०) गड़बड़। अंडबंड।

अक्रमः (पु०) गड़बड़ी। अनियमितता।

अक्रिय (वि०) सुस्त। क्रियाशून्य।

अक्रिया (स्त्री०) क्रियाशून्यता। सुस्ती। कर्त्तव्यपालन में असावधानी।

अक्रूर (वि०) जो क्रूर या कठोर न हो। जो संगदिल न हो।

अक्रूरः (पु०) एक यादव का नाम, जो कृष्ण के चचा और हितैषी थे।

अक्रोध (वि०) क्रोधशून्य। शान्त।

अक्रोधः (पु०) शान्त। क्रोधराहित्य।

अक्लिका (स्त्री०) नील का पौधा।

अक्लिष्ट (वि०) १ कष्टरहित। विना क्लेश का। २ सुगम। सहज। आसान।

अक्ष् (धा० परस्मै०) [अक्षति, अक्ष्णोति, अक्षित] १ पहुँचना। २ व्याप्त होना। ३ घुसना। ४ एकत्र करना। जमा करना।

अक्षः (पु०) धुरी। किसी गोल वस्तु के बीचों बीच पिरोयी हुई वह लोहे की छड़ या लकड़ी जिस पर वह गोल वस्तु घूमती है। २ गाड़ी। छकड़ा। ३ पहिया। ४ तराजू की डांडी। ५ एक कल्पित स्थिर रेखा जो पृथिवी के भीतरी केन्द्र से होती हुई उसके आर पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथिवी घूमती हुई मानी जाती है। ६ चौंसर का पाँसा। चौंसर। ७ रुद्राक्ष। ८ तौल विशेष जो १६ माशे की होती है और जिसे कर्ष भी कहते हैं। ९ बहेड़ा। १० सर्प।

११ गरुड़। १२ आत्मा। १३ ज्ञान १४ मुकदमा। व्यवहार। मामला। १५ जन्मान्ध।

अक्षं (स्त्री०) १ इन्द्रिय। २ तूतिया। ३ सोहागा।

अक्ष + अग्रकीलः—अक्षलकः (पु०) गाड़ी के पहिये में जो कील लगायी जाती है, वह।

अक्ष + आवपनम् (न०) चौसर की बिछौत या बोर्ड।

अक्ष + आवापः (पु०) ज्वारी।

अक्ष + कर्णः (पु०) समकोण त्रिभुज के सामने की बाहु।

अक्षकुशल / अक्षशौंड (वि०) जुआ खेलने में प्रवीण।

अक्षकूटः (पु०) आँख की पुतली।

अक्षकोविद / अक्षज्ञ (वि०) पाँसे या चौसर के खेल में निपुण या उसका ज्ञाता।

अक्षग्लहः (पु०) जुआ। पाँसे का खेल।

अक्षजं (न०) १ ज्ञान। अवगति। २ वज्र। ३ हीरा।

अक्षजः (पु०) विष्णु का नाम विशेष।

अक्षतत्त्वं (न०) / अक्षविद्या (स्त्री०) जुआ खेलने की कला या विद्या।

अक्षदर्शकः / अक्षदृश् (पु०) १ जुए का निर्णायक। २ जुए का व्यवस्थापक।

अक्षदेविन् (पु०) ज्वारी।

अक्षद्यूतं (न०) जुआ। चौसर। पाँसे का खेल।

अक्षधूर्तः (पु०) ज्वारी।

अक्षधूर्तिलः (पु०) गाड़ी के जुआँ में जुता हुआ सांड या बैल।

अक्षपटलं (न०) १ न्यायालय। २ वह स्थान या कमरा, जहाँ अदालती काग़ज़ात रखे जाते हों।

अक्षपाटः (पु०) अखाड़ा।

अक्षपाटकः (पु०) आईन के ज्ञान में निपुण। जज। न्यायाधीश।

अक्षपातः (पु०) पाँसे का फिकाव।

अक्षपादः (पु०) सोलह पदार्थ वादी न्यायशास्त्र के रचयिता गौतम ऋषि अथवा न्यायवादी।

अक्षभागः / अक्षांशः (पु०) वे रेखाएं जो किसी मानचित्र में उत्तर से दक्षिण की ओर खिंची हों, उन रेखाओं का कुछ अँग।

अक्षभारः (पु०) गाड़ी भर बोझा।

अक्षमाला (स्त्री०) / अक्षसूत्रं (न०) रुद्राक्ष की माला।

अक्षराजः (पु०) वह जिसे जुआ खेलने का व्यसन हो अथवा पाँसों में प्रधान।

अक्षवाटः (पु०) वह घर जिसमें जुआ होता हो। जुआड़खाना।

अक्षहृदयं (न०) जुआ के खेल में पूर्ण निपुणता।

अक्षवती (स्त्री०) चौसर का खेल।

अक्षणिक (वि०) दृढ़। मज़बूत। जो क्षणिक या स्थायी न हो।

अक्षत (वि०) १ जो चोटिल न हो। २ जो टूटा न हो। ३ सम्पूर्ण। ४ अविभक्त। जो विभाजित न हो।

अक्षतः (पु०) १ शिव। २ कूटे हुए या पछोरे हुए चावल, जो धूप में सुखाये गये हों। (बहुवचन में) १ सम्पूर्ण अनाज। २ चावल जो जल से धोये हुए हों और पूजन में किसी देवता पर चढ़ाने को रखे जाँय। ३ यव।

अक्षतं (न०) अनाज किसी भी प्रकार का। २ हिजड़ा। नपुंसक। (यह पुल्लिङ्ग भी है)।

अक्षतयोनिः (स्त्री०) कन्या जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो। वह कन्या जिसका विवाह तो हो गया हो, परन्तु पुरुष के साथ संसर्ग न हुआ हो।

अक्षता (पु०) १ क्वारी। २ धर्मशास्त्रानुसार वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष से संसर्ग न किया हो। ३ काँकड़ासिंगी।

अक्षम (वि०) १ असमर्थ। अयोग्य। लाचार। अशक्त। असहिष्णु। ३ क्षमारहित। ४ अधीर।

अक्षमा (स्त्री०) १ ईर्ष्या। २ अधैर्य। ३ क्रोध। रोष।

अक्षय (त्रि०) जिसका नाश न हो। अविनाशी। अनश्वर। सदा बना रहने वाला। कभी जो न चुके। २ कल्पान्तस्थायी। कल्प से अन्त तक रहने वाला।—तृतीया (स्त्री०) १ वैशाख शुक्ला ३। आखातीज। २ सतयुग का आरम्भ दिवस।

अक्षय्य (वि०) कभी न चुकने वाला। अविनाशी। सदा बना रहने वाला।

अक्षर (वि०) १ अच्युत। स्थिर। नित्य। अविनाशी। —रः १ शिव। २ विष्णु।—रं अकारादिवर्ण। मनुष्य के मुख से निकली हुई ध्वनि को सूचित करने वाले सङ्केत। २ लिखत। टीप। दस्तावेज़। ३ अविनाशी आत्मा। ब्रह्म। ४ जल। ५ आकाश। ६ परमानन्द। मोक्ष।—अर्थ शब्दार्थ। —चं (चुं) चुः—चणः (नः) (पु०) लेखक। नकलनवीस। प्रतिलिपि करने वाला। यही अर्थ अक्षरजीवो अथवा अक्षरजीवकः अथवा अक्षरजीविकः का भी है। —चञ्चु (पु०) लेखक। क्लार्क।—च्युतकं (न०) किसी अक्षर के जोड़ देने से किसी शब्द का भिन्न अर्थ करना।—छंदस् (न०)—वृत्तं (न०) किसी पद्य का एक पाद।—जननी—तूलिका (स्त्री०) नरकुल या सैंटे की कलम।—न्यासः (वि०) १ लेख। २ अकारादि वर्ण। ३ धर्मग्रन्थ। ४ तंत्र की एक क्रिया जिसमें मंत्र के एक एक अक्षर पढ कर हृदय, अँगुलिया, कण्ठ आदि अंगस्पर्श किये जाते हैं।—भूमिका (स्त्री०) पट्टी या काठ का तख़्ता जिस पर लिखा जाय। —मुखः (पु०) १ छात्र। विद्यार्थी। २ विद्वान्। शास्त्री। —वर्जित अपढ मूर्ख।—शिक्षा (स्त्री०) तांत्रिक-अक्षर-शिक्षाविशेष। —संस्थानं (न०) १ लेख। २ वर्णमाला।

अक्षरक (न०) एक स्वर। एक अक्षर।

अक्षरशः (क्रि० वि०) १ अक्षर। अक्षर। शब्द व शब्द। २—बिल्कुल, सम्पूर्णतया।

अक्षांतिः
अक्षान्तिः } (स्त्री०) असहिष्णुता। ईर्ष्या। डाह।

अक्षार (वि०) जिसमें बनावटी निमकीनपन न हो।

अक्षारः (पु०) असली निमक।

अक्षि (न०) [अक्षिणी, अक्षीणि, अक्ष्णा, अक्ष्णः] १ नेत्र। २ दो की संख्या।

अक्षिकम्पः (पु०) आँख झपकना।

अक्षिकूटः (पु०)
अक्षिटकः (पु०)
अक्षिगोलः (पु०)
अक्षितारा (स्त्री०) } आँख की पुतली।

अक्षिगत (वि०) १ दृष्टिगोचर। २ उपस्थित। वर्तमान। आँख में पड़ी हुई (किरकिरी)। आँख का उठना। ३ घृणित। यथा—"अक्षिगतोऽहमस्य हास्यो जातः।" दशकुमारच०

अक्षिपक्ष्मन्
अक्षिलोमन् } (न०) बन्नी। पलकों के किनारों के ऊपर के बाल।

अक्षिपटलम् (न०) (१) आँख के कोए पर की झिल्ली। इसी झिल्ली का रोग विशेष।

अक्षिविकूणितं
अक्षिविकूशितं } (न०) तिरछी नज़र। कनखियों की देखन।

अक्षिवः
अक्षीवः } (पु०) पौधा विशेष। (न०) समुद्री लवण।

अक्षुण्ण (वि०) १ अभग्न। अनटूटा। समूचा। २ अनाड़ी। अकुशल। ३ जो परास्त न हुआ हो। जो जीता न गया हो। सफलमनोरथ। यथा "अक्षुण्णोऽनुनय." (वेणीसंहार) ४ जो कुचला या कूटा या पीटा गया हो। ५ असाधारण। ग़ैरमामूली।

अक्षेत्र (वि०) बिना खेत वाला। बिना जोता बोया हुआ।—वाद् (वि०) जिसको आध्यात्मिक ज्ञान न हो।

अक्षेत्रं (न०) बुरा या ख़राब खेत। (आ०) कुशिष्य। अयोग्य पात्र।

अक्षोटः (पु०) अखरोट।

अक्षोभ्य (वि०) जिस में क्षोभ न हो। अनुद्वेगी। शान्त। दृढ़। धीर। स्थिर।

अक्षौहिणी (स्त्री०) पूरी चतुरंगिनी सेना। सेना का एक परिमाण। सेना की संख्या विशेष। एक अक्षौहिणी में १०९३५० पैदल सिपाही, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ और २१८७० हाथी होते हैं।

अखंड
अखण्ड } (वि०) अभग्न। जो टूटा न हो। सम्पूर्ण। समूचा। अटूट। अविच्छिन्न। लगातार।

अखंडनम्
अखण्डनम् } (न०) जिसको कोई काट न सके। जिसका खण्डन न हो सके।

अखंडनः
अखण्डनः } (पु०) काल। समय। वक्त।

अखंडित
अखण्डित } (वि०) जिसके टुकड़े न हुए हों। विभागरहित अविच्छिन्न।—ऋतु

(पु०) वह फसल जिस में मामूली फल पुष्प उत्पन्न हों। सफल। फलवान्।

अखर्व (वि०) जो बोना न हो,। जो छोटा न हो। वड़ा। "अखर्वेण गर्वेण विराजमानः"। —दश-कुमार।

अखात (वि०) विना खोदा हुआ। विना गाड़ा हुआ। विना दफनाया हुआ।

अखातः (पु०) } १ विना खोदा हुआ या स्वाभाविक
अखातं (न०) } जलाशय या झील या खाडी। २ किसी मन्दिर के सामने की पुष्करिणी।

अखिल (वि०) सम्पूर्ण। समग्र। समूचा। सब।

अखिलेन (क्रि० वि०) १ सम्पूर्णतः। पूर्ण रूप से। २ ग़ैरआबाद। ग़ैर जोता हुआ।

अखेटिकः (पु०) १ साधारणतः वृक्ष। २ कुत्ता जिसको शिकार खेलना सिखलाया गया हो।

अख्यातिः (स्त्री०) बदनामी। अपकीर्ति। निन्दा। (वि०) निन्द्य। बदनाम।

अग् (धा० परस्मै०) [अगति, आगीत्, अगिष्यति, अगित] १ टेढ़ामेंढ़ा, सर्प की तरह चलना। लहरियादार गति। २ चलना। जाना।

अग (वि०) १ चलने में असमर्थ। २ जिसके पास कोई न पहुँच सके।—आत्मजा (स्त्री०) पर्वत की कन्या। पार्वती देवी।—ओकस् (पु०) १ पर्वत पर बसने वाला। २ (वृक्षवासी) पक्षी। ३ शरभ जन्तु जिसके आठ टाँगे बतलायी जाती हैं। ४ शेर। सिंह। (वि०) पहाड़ों में होकर घूमने फिरने वाला। जंगली।—जं (न०) शिलाजीत। शैलज तेल।

अगः (पु०) १ वृक्ष। २ पहाड़। ३ सर्प। ४ सूर्य। ५ ७ की संख्या।

अगच्छ (वि०) अचल। जो चल न सके।

अगच्छः (पु०) वृक्ष। पेड़।

अगतिः (स्त्री०) १ उपाय रहित। विना उपाय का। २ अनवबोध।

अगतिक } (वि०) 'जिसकी कहीं गति न हो'।
अगतीक } जिसका कहीं ठिकाना न हो। अशरण। अनाथ। निराश्रित। निरावलम्ब।

अगद (वि०) नीरोग। रोगरहित। स्वस्थ।

अगदः (पु०) १ औषध दवा। २ स्वास्थ्य। ३ विष नाश करने का विज्ञान।

अगद, } (पु०) चिकित्सक। वैद्य।
अगदंकारः अगदङ्कारः } रोग दूर करने वाला।

अगदतन्त्रम् (न०) आयुर्वेद का एक अंग विशेष। इसमें सांप विच्छू आदि के विष उतारने की दवाइयाँ लिखी हैं।

अगम देखो, अग।

अगम्य (वि०) १ गमन के अयोग्य। जहाँ कोई न पहुँच सके। २ अज्ञेय। जानने के अयोग्य। ३ विकट। कठिन। ४ अपार। बहुत। अत्यन्त। ५ अथाह, बहुत गहरा।

अगम्या (स्त्री०) न गमन करने योग्य। मैथुन करने के अयोग्य स्त्री। एक अस्पृश्य नीच जाति। —गमनं (न०) न गमन करने योग्य स्त्री के साथ गमन करना।—गामिन्। (वि०) मैथुन न करने योग्य स्त्री के साथ गमन किये हुए।

अगरु (न०) ऊद। अगर लकड़ी।

अगस्तिः } (पु०) १ कुम्भज। एक ऋषि का नाम।
अगस्त्यः } २ एक नक्षत्र का नाम। ३ एक वृक्ष का नाम।—कूट (पु०) दक्षिण भारत के मदरास प्रान्त के एक पर्वत का नाम, जिससे ताम्रपर्णी नदी निकलती है।

अगाध (वि०) १ अथाह। बहुत गहरा। अतल-स्पर्शी। २ असीम। अपार। बहुत। अधिक। ३ बोधागम्य। दुर्बोध।

अगाधः (पु०) } छेद। गड्ढा। दरार।
अगाधं (न०) }

अगाधजलः (पु०) ह्रद। तालाब। (वि०) अथाह जल वाला।

अगारं (न०) घर। मकान।

अगिरः (पु०) स्वर्ग। आकाश।—ओकस् (वि०) स्वर्ग में आवास करने वाला (देवताओं की तरह)।

अगुण (वि०) १ निर्गुण। २ जिसमें कोई सद्गुण न हो। निकम्मा।

अगुणः (पु०) अपराध। ख़राबी। बुराई।

अगुरु ((वि०) १ हल्का। जो भारी न हो। २ (छन्दः शास्त्र में) छोटा। ३ निगुरा। जिसका कोई गुरु न हो। (न० और पु० में भी) अगर। सुगन्धित काष्ठ विशेष।

अगृहः (पु०) विना घर वाला । (नट, बनजारा) यती ।

अगोचर (वि०) इन्द्रियों के प्रत्यक्ष का अविषय । जिसका अनुभव इन्द्रियों को न हो । अप्रत्यक्ष । अप्रकट ।

अगोचरम् (न०) ब्रह्म ।

अग्नायी (स्त्री०) १ अग्निदेव की स्त्री । स्वाहा । २ त्रेतायुग ।

अग्नि (पु०) आग । हवन की आग । यह तीन प्रकार की मानी गई है । यथाः—गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण । उदर के भीतर जो शक्ति खाद्य पदार्थों को पचाती है, उसको भी अग्नि कहते हैं और उसका नामविशेष है "जठराग्नि" या "वैश्वानर" । ३ पाँच तत्त्वों में से एक, जिसे " तेज " कहते हैं । ४ कफ, बात, पित्त में " पित्त " को अग्नि माना है । ५ सुवर्ण । ६ तीन की संख्या । ७ वैदिक तीन प्रधान देवताओं में (अग्नि,वायु और सूर्य) एक अग्नि भी है । ८ चित्रक । चीता । (औषध विशेष) । ९ भिलावा । १० नीबू ।—अ (आ) गारं—अ (आ) गारः—आलयः, (पु०)—गृहं (न०) अग्नि देव का मन्दिर ।—अस्त्रं(=अग्न्यास्त्रं) (न०) वह अस्त्र विशेष जो मंत्र द्वारा चलाये जाने पर आग की वर्षा करता है ।—बाणः (पु०) यह भी "अग्न्यास्त्र" ही का अर्थ वाची शब्द है ।—आधानं (=अग्न्याधान) (न०) १ अग्नि की यथाविधि स्थापना । २ अग्निहोत्र ।—आहितः, —(=अग्न्याहितः) (पु०) जो अपने घर में सदा विधान पूर्वक अग्नि को रखता है ।—उत्पातः (पु०) अग्नि सम्बन्धी उपद्रव विशेष अथवा अग्नि द्वारा सूचित अशुभ चिन्ह विशेष । उल्कापात आदि ।—उपस्थानं (न०) १ अग्नि का पूजन या आराधन । २ वे मंत्र विशेष जिनसे अग्नि का पूजन किया जाता है ।—कणः—स्तोकः (पु०) अँगारी । शोला । अँगारा ।—कार्य,—कर्मन् (न०) अग्नि का पूजन ।—काष्ठं (न०) अगर का वृक्ष ।—कुक्कुटः (पु०) जलता हुआ पयाल का पूला । लूक । लुकारी ।—कुण्डं (न०) एक विशेष प्रकार का गढ़ा जिसमें अग्नि प्रज्वलित करके हवन किया जाता है । यह कुण्ड धातु के भी बनाये जाते हैं ।—कुमारः—तनयः—सुतः (पु०) १ कार्तिकेय । षडानन । २ आयुर्वेद के मतानुसार एक रस विशेष ।—कुलं (न०) क्षत्रियों का एक वंश विशेष ।—केतुः (पु०) १ धूम । धुआ । २ शिव का नाम । ३ रावण की सेना का एक राक्षस ।—कोणः (पु०) —दिक् पूर्व और दक्षिण का कोना जिसके देवता अग्नि हैं ।—क्रिया (स्त्री०) १ शव का अग्निदाह । मुर्दा जलाना । २ दागना ।—क्रीड़ा (स्त्री०) १ आतिशबाज़ी । २ रोशनी । दीपमालिका ।—गर्भ (वि०) जिसके भीतर आग हो ।—गर्भः (पु०) सूर्यकान्तमणि । सूर्यमुखी शीशा ।—गर्भ (स्त्री०) १ शमीवृक्ष । २ पृथिवी का नाम । चित् (पु०) अग्निहोत्री ।—चयः (पु०)—चयनं (न०)—चित्या (स्त्री०) देखो अग्न्याधान ।—ज (वि०) अग्नि से उत्पन्न ।—जः —जातः (पु०) १ कार्तिकेय । षडानन । २ विष्णु । —जं—जातं (न०) सुवर्ण ।—जिह्वा (स्त्री०) आग की लौ । (न०) अग्नि की सात जिह्वा मानी गयी हैं । उन सातों के भिन्न भिन्न नाम हैं । (यथा कराली, धूमिनी, श्वेता, लोहिता, नीललोहिता, सुवर्णा । पद्मरागा ।)—तपस् (वि०) उत्पन्न होता हुआ । चमकता हुआ या जलता हुआ ।—त्रयं(न०)—त्रेता (स्त्री०) तीन प्रकार की आग जिनका वर्णन अग्नि के अर्थ के अन्तर्गत किया जा चुका है ।—द (वि०) ताकत बढ़ाने वाला । जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला ।—दातृ (पु०) अन्तिम संस्कार अर्थात् दाहकर्म करने वाला ।—दीपन (वि०) जठराग्नि प्रदीप्तकारी । —दीप्तिः—वृद्धि : (स्त्री) बढ़ी हुई पाचन शक्ति । अच्छी भूख ।—देवा (स्त्री०) कृत्तिका नक्षत्र ।—धानं (न०) वह स्थान या पात्र जिसमें पवित्र आग रखी जाय । अग्निहोत्री का गृह । —धारणं (न०) अग्नि को घर में सदा रखना । —परिक्रिया,—परिष्क्रिया (स्त्री०) अग्नि का पूजन ।—परिच्छेदः (पु०) हवन के श्रुवा आज्यस्थली आदि पात्र ।—परीक्षा (स्त्री०) जलती हुई आग द्वारा

परीक्षा या जाँच जैसी कि जानकी जी की लंका में हुई थी।—पर्वतः (पु०) ज्वालामुखी पहाड़। —पुराणं (न०) १८ पुराणों में से एक। इसको सर्वप्रथम अग्निदेव ने वशिष्ठ जी को श्रवण कराया था; अतः वक्ता के नाम पर इसका नाम अग्निपुराण पड़ा।—प्रतिष्ठा (स्त्री०) अग्नि की विधानपूर्वक वेदी पर या कुण्ड में स्थापना; विशेषकर विवाह के समय।—प्रवेशः (पु०) —प्रवेशनं (न०) किसी पतिव्रता का अपने पति के साथ चिता में बैठ कर सती होना।—प्रस्तरः (पु०) चकमक पत्थर, जिसको टकराने से आग उत्पन्न होती है।—बाहुः (पु०) धूम। (धुआँ)।—भं (न०) १ कृत्तिका नक्षत्र का नाम। २ सुवर्ण।—भु (न०) १ जल। २ सुवर्ण।—भूः (पु०) अग्नि से उत्पन्न। कार्त्तिकेय का नाम। —मणिः (पु०) सूर्यकान्तमणि। चकमक पत्थर।—मंथः (मन्थः) (पु०) मंथनं (मन्थनम्) (न०) रगड़ से आग उत्पन्न करना।—मान्द्यं (न०) कब्ज़ियत। कुपच। अनपच।—मुखः (पु०) १ देवता। २ साधारणतया ब्राह्मण। ३ खटमल।—मुखी (स्त्री०) रसोईघर।—युग ज्योतिषशास्त्र के पाँच पाँच वर्ष के १२ युगों में से एक युग का नाम। —रक्षणं अग्नि को घर में बनाये रखना। बुझने न देना।—रजः (पु०)—रजस् (पु०) १ इन्द्रगोप नामक कीड़ा। बीरबहूटी। २ अग्नि की शक्ति। ३ सुवर्ण।—रोहिणी (स्त्री०) रोगविशेष। इसमें अग्नि के समान झलकते हुए फफोले पड़ जाते हैं।—लिङ्ग (पु०) आग की लौ की रंगत और उसके झुकाव को देख शुभाशुभ बतलाने की विद्याविशेष।—लोकः (पु०) वह लोक जिसमें अग्नि वास करते हैं। यह लोक मेरुपर्वत के शिखर के नीचे है।—लिङ्गः—वंशः (पु०) देखो "अग्निकुल"।—वधूः स्वाहा, जो दक्ष की पुत्री और अग्नि की स्त्री है।—वर्धक (वि०) जठराग्नि को बढ़ाने वाली (दवा)।—वर्णः (पु०) इक्ष्वाकुवंशी एक राजा का नाम। यह सुदर्शन का पुत्र और रघु का पौत्र था।—वल्लभः (पु०) १ साखू का पेड़। २ साल का गोंद। ३ राल। धूप। —वाहः (पु०) १ धूम। धुआँ। २ बकरा।—विद् (पु०) अग्निहोत्री।—विद्या (स्त्री०) अग्निहोत्र। अग्नि की उपासना की विधि।—विश्वरूप केतुतारों का एक भेद।—वेशः आयुर्वेद के एक आचार्य।—व्रतः (पु०) वेद की एक ऋचा का नाम।—वीर्यं (न०) १ अग्नि की शक्ति या पराक्रम। (२) सुवर्ण।—शरणं (न०)—शाला (स्त्री०)—शालं (न०) वह स्थान या गृह जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाय।—शिखः (पु०) १ दीपक। २ अग्निबाण। ३ कुसुम या बर्रे का फूल। ४ केसर।—शिखं (न०) १ केसर। २ सोना। —ष्टुत—ष्टुभ—ष्टोम (पु०) यज्ञविशेष। —संस्कारः (पु०) १ तपाना। २ जलाना। ३ शुद्धि के लिये अग्निस्पर्शसंस्कार का विधान। ३ मृतक के शव को भस्म करने के लिये चिता पर अग्नि रखने की क्रिया। दाहकर्म। ४ श्राद्ध में पिण्डवेदी पर आग की चिनगारी फिराने की रीति।—सखः, सहायः (पु०) १ पवन। हवा २ जंगली कबूतर। ३ धूम। धुआ।—साक्षिक (वि०) या (क्रि० वि०) अग्निदेवता के सामने संपादित। अग्नि को साक्षी करना।—सात् (क्रि० वि०) आग में जलाया हुआ। भस्म किया हुआ।—सेवन आग तापना।—स्तुत् यज्ञीय कर्म का वह भाग जो एक दिन अधिक होता है।—स्तोमः (पु०) देखो "अग्निष्टोमः"।—ष्वात्तः (पु०) दिव्य पितर। नित्य पितर। पितरों का एक भेद। अग्नि, विद्युत् आदि विद्याओं का जानने वाला।—होत्रं (न०) एक यज्ञ। सायं प्रातः नियम से किये जाने वाला वैदिक कर्म विशेष।—होत्रिन् (वि०) अग्निहोत्र करनेवाला।

अग्नीध्रः (पु०) ऋत्विक् विशेष। इसका कार्य यज्ञ में अग्नि की रक्षा करना है।

अग्नीषोमीयम् (न०) अग्निसोम नामक यज्ञ की हवि। यज्ञ विशेष। इस यज्ञ के देवता अग्नि और सोम माने गये हैं।

अग्र (वि०) १ आगे का भाग। अगला हिस्सा। सिरा। नोंक। २ स्मृत्यानुसार भिक्षा का परिमाण, जो मोर के ४८ अंडों या सोलह माशे के बराबर होता है। ३ प्रथम। ४ श्रेष्ठ। ५ प्रधान।—अग्नी

कः,—अणीकः (पु०)—अनीकं,—अणीकम् (न०) सेना के आगे आगे चलने वाली घुड़सवार सैनिकों की टोली ।—आसनं (=अग्रासनं) (न०) प्रधान बैठकी । सब से ऊँची बैठकी ।—करः (पु०) हाथ का अगला भाग या हाथी की सूंड की नोंक । दहिना हाथ । हाथ की उँगुलियाँ ।—गः (पु०) १ नेता । २ रहनुमा । मार्गदर्शक ।—गएय (वि०) प्रधान । मुखिया । जिसकी गिनती प्रथम की जाय । बड़ा । श्रेष्ठ ।—ज (वि०) प्रथमउत्पन्न ।—जः (पु०) बड़ा भाई । २ ब्राह्मण ।—जा (स्त्री०) बड़ी बहिन ।—जात,—जातक,—जाति,—जन्मन् (पु०) १ प्रथम जन्मा हुआ । बड़ा भाई । २ ब्राह्मण । —जिह्वा (स्त्री०) जीभ की नोंक —दानिन् (पु०) पतित ब्राह्मण जो सूतक-कर्म में दान लेता है । —दूतः (पु०) आगे जानेवाला दूत । हल्कारा ।—तस् (अव्यया०) सामने । पहिले ।—नीः या णीः (पु०) अगुआ । श्रेष्ठ । प्रधान ।—पादः (पु०) पैर की उँगुलि ।—पाणिः (पु०) दहिना हाथ ।—पूजा (स्त्री०) सर्वोत्कृष्ट सम्मान । —पेयं (न०) पान करने में पूर्ववर्तिता । किसी पेय वस्तु के पीने में सर्वप्रथमता या प्रधानत्व । —भागः (पु०) १ प्रथम या श्रेष्ठ भाग । २ अवशिष्ट । शेष । बचा हुआ । ३ नोंक । छोर । —भागिन् (वि०) प्रथम पाने वाला ।—भूमिः (स्त्री०) उद्देश्य । लक्ष्य ।—मांसं (न०) हृदय का माँस । हृत्पिण्ड ।—यायिन् (वि०) आगे चलने वाला ।—योधिन् (पु०) मुख्य योद्धा । प्रधान लड़ने वाला ।—सन्धानी स्त्री०) यमराज के दफ़्तर का वह खाता जिसमें प्राणियों के पाप पुण्य लिखे जाते हैं ।—सन्ध्या (स्त्री०) प्रातः सन्ध्या ।—सर (वि०) आगे चलने वाला ।—हः (पु०) अविवाहित । जिसके स्त्री न हो ।—हायनः (पु०)—हायणः (पु०) वर्ष के आरम्भ का मास । मार्गशीर्ष मास । अगहन का महीना ।—हारः (पु०) राजा की ब्राह्मणों को दी हुई भूमि ।

अग्रतः (क्रि० वि०) सामने । पूर्व । आगे । २ उपस्थिति में । ३ प्रथम ।—सरः (पु०) नेता । पेशवा ।

अग्रिम (वि०) १ अगाऊ । पेशगी । २ आगे आनेवाला । सब से आगे का । मुख्य । ३ ज्येष्ठ ।

अग्रिमः (पु०) ज्येष्ठभ्राता ।

अग्रिय (वि०) सब से आगे वाला ।

अग्रियः (पु०) ज्येष्ठभ्राता ।

अग्रीय (वि०) आगे होने वाला । मुख्य ।

अग्रु (स्त्री०) उँगली ।

अग्रे (क्रि० वि०) १ सामने । आगे (समय और स्थान सम्बन्धी ।) २ उपस्थिति में । ३ पीछे से । यथा "एवमग्रे कथयति ।" "एवमग्रेऽपि श्रोतव्यं ।" (४) सर्वप्रथम (अन्य की अपेक्षा) । प्रथम ।

अग्रेगः, अग्रेगूः (पु०) नेता । पेशवा ।

अग्रेदधिषुः, अग्रेदधिषूः (पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य जाति का वह मनुष्य जो किसी विवाहिता स्त्री के साथ विवाह करता है ।

अग्रेदिधिषुः (स्त्री०)

"ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा ।
सा चाग्रेदिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा च दिधिषूः स्मृता ॥"

अर्थात् वह स्त्री जिसका स्वयं तो विवाह हो गया हो, किन्तु उसकी बड़ी बहिन अविवाहिता हो ।

अग्रेपतिः (पु०) ऐसी स्त्री का पति ।

अग्रेवनं, अग्रेवणं (न०) वन की सीमा । वन का प्रान्त ।

अग्रेसर (वि०) अग्रगामी । पुरोगामी । आगे चलने वाला ।

अग्र्य (वि०) सब से आगे । सर्वोत्कृष्ट । सर्वोत्तम । सर्वोच्च । सर्वप्रथम ।

अग्र्यः (पु०) जेष्ठ भ्राता । जेठा भाई ।

अघ्, अंघ् (धा० उ०) भूल करना । पाप करना । अनुचित करना ।

अघं (न०) १ पाप । २ दुष्कर्म । अपराध । जुर्म । ३ व्यसन । ४ अशौच । सूतक । अपवित्रता । ५ मुख्य । दुःख ।

अघः (पु०) बकासुर और पूतना के भाई एक असुर का नाम । यह कंस की सेना का प्रधान सेनाध्यक्ष था ।

अघ+अहः (अहन्) (पु०) अशौचदिन । अपवित्र दिन ।

अघ+आयुस् (वि०) पापमय जीवन वाला ।

अघ+नाश, अघ+नाशन (वि०) प्रायश्चित्तात्मक। पाप दूर करने वाला।

अघर्म (वि०) ठंडा। जो गर्म न हो।

अघमर्षणम् (न०) पापनाशक मंत्र विशेष। यह मंत्र वैदिक सन्ध्या में पढ़ा जाता है।

अघविषः (पु०) सर्प।

अघशंसः (पु०) दुष्ट मनुष्य यथा चोर आदि।

अघशंसिन् (वि०) मुख़बर। दूसरे के पाप कर्म या जुर्म की (अधिकारीवर्ग को) सूचना देने वाला।

अघायुः (पु०) पापपूर्ण। जिसका जीवन पापमय हो।

अघोर (वि०) जो भयानक न हो।—रः (पु०) शिव। महादेव।—पथः,—मार्गः (पु०) शैव। शिवपंथी।—प्रमाणं (न०) भयङ्कर शपथ या परीक्षा।

अघोरा (स्त्री०) भाद्रमास के कृष्ण पक्ष की १४शी। इस तिथि को शिव जी की पूजा की जाती है। इसीसे इसका नाम "अघोरा" पड़ा है।

अघोः सम्बोधनवाची अव्यय।

अघोष (वि०) प्लुतस्वर।—षः (पु०) व्यञ्जन अक्षरों में से किसी का प्लुत स्वर।

अघ्न्यः (पु०) प्रजापति। पर्वत। (वि०) मारने के अयोग्य।—घ्न्या (स्त्री०) सौरमेयी। गौ। जो न मारी जाय या जो न मारे।

अघ्रेयम् (न०) १ सूघने के अयोग्य। २ मदिरा। शराब।

अंक्, अङ्क् (धा० आत्मने०) टेढ़ामेढ़ा चलना। [अङ्कयति—अङ्कयते, अङ्कयितुं अङ्कित] १ चिन्हित करना। निशान लगाना। २ गणना करना। ३ कलङ्कित करना। दाग़ी करना। ४ चलना। जाना। सगर्व चलना।

अंकः, अङ्कः (पु०-न०) १ गोदी। क्रोड। २ चिन्ह। निशान। ३ संख्या। ४ पार्श्व। ओर। तरफ़। ५ सामीप्य। पहुँच। ६ नाटक का एक भाग। ७ काँटा। काँटेदार औज़ार। ८ दस प्रकार के रूपकों में से एक। ९ टेढ़ी रेखा। रेखा।—अवतारः (=अङ्कावतारः) (पु०) किसी नाटक के किसी एक अंक के अन्त मे अगले दूसरे अंक के अभिनय की सूचना या आभास जो पात्रों द्वारा दी जाय।—तंत्रं (न०) अङ्कगणित या बीजगणित विद्या।—धारणं (न०) धारणा (स्त्री०) १ चिन्हित। २ किसी पुरुष को पकड़ कर रखने की रीति।—परिवर्तः (पु०) दूसरी ओर उलटना। करवट। २ किसी को आलिङ्गन करने के लिये करवट बदलना।—पालिः—पाली (स्त्री०) १ आलिङ्गन। २ दायी। धाय।—पाशः (पु०) अङ्कगणित की विधिविशेष।—भाज् (वि०) १ गोद में बैठा हुआ अथवा किसी को (बच्चे की तरह) कमर पर रखकर ले जाते हुए। २ सहज में प्राप्त। समीपवर्ती। शीघ्र प्रासन्य।—मुखं या —आस्यं (न०) किसी नाटक का वह स्थल जिसमें उस नाटक के सब दृश्यों का ख़ुलासा किया गया हो।—विद्या (स्त्री०)गणितशास्त्र।

अंकनम्, अङ्कनम् (न०) १ चिन्ह। चिन्हानी। २ चिन्हित करने की क्रिया।

अंकतिः, अङ्कतिः (पु०) १ पवन। २ अग्नि। ३ ब्रह्म। ४ अग्निहोत्री ब्राह्मण।

अंकुटः, अङ्कुटः (पु०) चाबी। ताली।

अंकुरः, अङ्कुरः (पु०) १ अँखुआ। नवोद्भिद। गाभ। अँगुसा। २ डाभ। कल्ला। कनखा। ३ नुकीले चौघड़े दाँत। (आलं०) ४ प्रशाखा। पल्लव। सन्तति। ५ जल। ६ रक्त। ७ केश। ८ सूजन। गुमड़ा।

अंकुरित, अङ्कुरित (वि०) अँखुआ निकला हुआ। उगा हुआ। जमा हुआ।

अंकुशः, अङ्कुशः १ काँटा विशेष, जिससे हाथी हाँका जाता है। २ रोक। थाम।—ग्रहः (पु०) महावत। हाथी चलाने वाला।—दुर्धरः (पु०) मतवाला हाथी।—धारिन् (पु०) हाथी रखने वाला अथवा जिसके पास हाथी हो।

अंकूषः, अङ्कूषः देखो "अङ्कुश"।

अंकोटः, अंकोठः, अंकोलः; अङ्कोटः, अङ्कोठः अङ्कोलः (पु०) पिश्ते का पेड़।

अंकोलिका, अङ्कोलिका (स्त्री०) आलिङ्गन।

अंक्य, अङ्क्य (वि०) दागने योग्य।
अङ्क्यः (पु०) एक प्रकार का ढोल या मृदङ्ग।
अंख्, अङ्ख् (धा० परस्मै०) [अंखयति, अखित] १ रेंगना। घुटनों के बल चलना। २ चिपटना। ३ रोकना। ढका देना।
अंग्, अङ्ग् (धा० परस्मै०) [अगति। अङ्गति। आनंग—आनङ्ग। अगितुं,—अङ्गितुं। अंगित अङ्गित ।] १ जाना। टहलना २ चारों ओर घूमना फिरना। ३ चिन्हित करना। दागना। ४ गिनना।
अंग, अङ्ग (अव्यया०) सम्बोधनवाची अव्यय विशेष जिसका अर्थ है—"बहुत अच्छा", "श्रीमन् बहुत ठीक", "अवश्य", "सत्य है", "अङ्गीकार है" किन्तु जब इसके पूर्व "कि" जुड़ता है, तब इसका अर्थ होता है—"कितना कम"? या "कितना अधिक" यथा—

"तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां
किमङ्ग वाग्दस्तवता नरेण।"
—पञ्चतंत्र।

संस्कृत—कोशकारों ने "अङ्गः" शब्द के निम्नाङ्कित अर्थ बतलाये हैं—

"क्षिप्रे च पुनरर्थे च सङ्गमासूययोस्तथा।
हर्षे सम्बोधने चैव ह्यङ्गशब्दः प्रयुज्यते।"

अर्थात् शीघ्रता। पुनः। सङ्गम। असूया। हर्ष। सम्बोधन के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है। —गं, (अङ्गं) (न०) १ काय। गात्र। अवयव। २ प्रतीक। ३ उपाय। ४ मन। ५ छः की संख्या का वाचक। —गः (अङ्गः) (पु०) एक देश विशेष तथा वहाँ के निवासियों का नाम। यह देश विहार के भागलपुर नगर के आसपास कहीं पर है। इसकी सीमा का परिचय संस्कृतसाहित्य में इस प्रकार दिया हुआ है—

वैद्यनाथं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे।
तावदङ्गाभिधो देशो यात्रायां नहि दुष्यति॥"

अर्थात् वैद्यनाथ-देवघर से लेकर उड़ीसास्थित भुवनेश्वर तक का देश अङ्गदेश कहलाता है। इस देश में इतने बीच में जाने का निषेध नहीं है। —अंगि,—अङ्गीभाव (पु०) किसी भी शरीरावयव का जो सम्बन्ध शरीर के साथ होता है, वह अङ्गअङ्गी भाव कहलाता है। गौणमुख्य भाव। उपकार्योपकारक भाव। —अधीपः,—अधीशः (पु०) अङ्गदेश का राजा या अधीश्वर। —ग्रह (पु०) अकड़बाई। शरीर की पीड़ा। अंगों का अकड़ जाना। —ज—जात (वि०) १ शरीर से उत्पन्न या शरीर पर उत्पन्न। २ सुन्दर। विभूषित। —जः,—जनुस् (पु०) १ पुत्र। बेटा। २ शरीर के लोम। (न०) ३ प्रेम। कामदेव। ४ नशे का व्यसन। नशा। मद्यपान। ५ रोगविशेष। व्याधि। —जा (स्त्री०) पुत्री। बेटी। —जं (न०) रक्त। खून। लोहू। —द्वीपः (पु०) छः द्वीपों में से एक। —न्यासः (पु०) उपयुक्त मंत्रोच्चारण पूर्वक हाथ से शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों का स्पर्श। —पालिः (स्त्री०) आलिङ्गन। —पालिका (देखो अङ्कपालि)। —प्रत्यङ्गम् (न०) शरीर के छोटे बड़े सब अङ्ग। —भूः (पु०) १ पुत्र। २ कामदेव। —भङ्गः (पु०) १ किसी शरीरावयव का नाश। २ लकवा का रोग। ३ ऐंड़ाई। —मंत्रः (पु०) मंत्र विशेष। —मर्दः (पु०) शरीर दबानेवाला। २ शरीर दबाने की क्रिया। अङ्गमर्दकः अङ्गमर्दिन् भी इसी अर्थ में व्यवहृत होते हैं। —मर्षः (पु०) गठिया रोग। —यज्ञः—यागः (पु०) किसी मुख्य यज्ञ के अन्तर्गत कोई गौण यज्ञीय कर्म विशेष। —रक्षकः (पु०) शरीर की रक्षा करने वाला। अँगरेज़ी भाषा में "बाडीगार्ड" अङ्गरक्षक ही का पर्यायवाची शब्द है। —रक्षणी १ अंगरखी। अंगा। २ उरच्छद। ३ कवच। वर्म। —रक्षणं (न०) किसी व्यक्ति का रक्षण। —रागः (पु०) चन्दन आदि लेप। २ उबटन। ३ उबटन लगाने की क्रिया। —विकल (वि०) १ अङ्गभङ्ग। २ लकवा मारा हुआ। —विकृतिः (स्त्री०) सूरत बदल जाना। सहसा सर्वाङ्गीन पतन। जीवन शक्ति का निमज्जन। अवसाद। —विकारः (पु०) शारीरिक दोष या त्रुटि। —विक्षेपः (पु०) शारीरिक अवयव का सकोड़ना फैलाना या उनको हिलाना डुलाना। अंगों का मटकाना। कलाबाज़ी। —विद्या (स्त्री०) शरीर के चिन्हों को देखकर जीवन की

शुभाशुभ घटनाओं को बतलाने की विद्या। सामुद्रिक विद्या। २ व्याकरण शास्त्र, जिससे ज्ञान की वृद्धि हो। वृहद्संहिता का ५१ वाँ अध्याय जिसमें इस विद्या का विस्तार पूर्वक वर्णन है।—वीरः (पु०) मुख्य या प्रधान शूर।—वैकृतं (न०) १ अङ्गों की चेष्टा से हृदय का भाव बतलाने की क्रिया। २ सिर हिला कर स्वीकृति बतलाने की क्रिया। ३ आँख मारना। शरीर की बदली हुई सूरत।—संस्कारः (पु०)—संस्क्रिया (स्त्री०) अङ्गों की शोभा बढ़ाने वाले कर्म।—संहतिः (स्त्री०) सुन्दर अङ्गसंस्थान या अङ्ग विन्यास। अङ्गसौष्ठव। अङ्गप्रत्यङ्ग की श्रेष्ठता या परस्पर ऐक्य। शरीर। शरीर की दृढ़ता।—सङ्गः (पु०) ऐक्य। शारीरिक स्पर्श। सङ्गम।—सेवकः (पु०) निज नौकर।—हारः (पु०) नृत्य विशेष। अंगों की मटकौल।—हारिः। १ मटकौअल। २ रंगभूमि। ३ नाचने का कमरा। नाचघर।—हीन (वि०) अपूर्णाङ्ग। लुंजा। लंगड़ा। विकलाङ्ग।

अंगकम्, अङ्गकम् (न०) १ शरीर का अवयव। २ शरीर।

अंगणम्, अङ्गणम् (न०) देखो "अङ्गनम्"।

अंगतिः, अङ्गतिः (पु०) १ सवारी। गाड़ी। बग्घी। अग्नि। ३ ब्रह्म। ४ अग्निहोत्री ब्राह्मण।

अंगदम्, अङ्गदम् (न०) बाहुभूषण। जोशन। बाजूबंद।

अंगदः, अङ्गदः (पु०) १ बालि के पुत्र का नाम। २ उर्मिला की कोख से उत्पन्न लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम। इनकी राजधानी का नाम अंगदिया था। ३ दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम।

अंगनं-अंगणं; अङ्गनम्-अङ्गणम् (न०) १ आँगन। सहन। चौक। २ सवारी। ३ चलना। टहलना। घूमना।

अंगना, अङ्गना (स्त्री०) १ अच्छे अंगोवाली स्त्री। २ सार्वभौम नामक दिग्गज की हथिनी। ३ (ज्योतिष में) कन्याराशि।—जन (पु०) स्त्रीजाति।—प्रिय (वि०) स्त्रियों का प्रेमी।—प्रियः (पु०) अशोक वृक्ष।

अंगस्, अङ्गस् (पु०) पक्षी।

अंगारः (पु०) अंगारं (न०) अङ्गारः (पु०) अङ्गारं (न०) १ जलता हुआ या ठंडा, कोयला।

"उष्णोदहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।"
—हितोपदेश।

२ मङ्गल ग्रह। (न०) लाल रंग।—धानिका (स्त्री०) अंगीठी। बरोसी।—पात्री (स्त्री०) शकटी (स्त्री०) अंगीठी। बरोसी। वल्लरी-वल्ली (स्त्री०) कितने ही पौधों का नाम है। विशेष कर गुञ्जा या घुघची का।

अंगारकः (पु०)-अंगारकं (न०) अङ्गारकः (पु०) अङ्गारकं (न०) १ कोयला। २ मङ्गलग्रह। ३ भौमवार। ४ चिनगारी।—मणिः (पु०) मूँगा।

अंगारी—अङ्गारी (स्त्री०) अंगीठी। बरोसी।

अंगारकित, अङ्गारकित (वि०) जलाया हुआ। भूना हुआ। तला हुआ।

अंगारिका, अङ्गारिका (स्त्री०) १ अँगीठी। बरोसी। २ गन्ने का डंठुल। ३ किंशुक की कली।

अंगारिणी, अङ्गारिणी (स्त्री०) १ छोटी अंगीठी। २ बेल। लता।

अंगारित, अङ्गारित (वि०) १ जलाया हुआ। २ भूना हुआ। ३ अधजला।

अंगिका, अङ्गिका (स्त्री०) चोली। अँगिया।

अंगिन्, अङ्गिन् (वि०) १ दैहिक। देहभृत। मूर्तिमान्। शरीरधारी। २ मुख्य। प्रधान। जिसमें उपभाग हो।

"एक एव भवेदगो शृङ्गारो वीर एव वा।"
—साहित्यदर्पण।

अंगिरः, अंगिरस्, अङ्गिरः, अङ्गिरस् (पु०) १ एक प्रजापति का नाम जिनकी गणना दस प्रजापतियों में है। एक वैदिक ऋषि। २ बहुवचन में अंगिरा के सन्तान। ३ बृहस्पति का नाम। ४ साठ संवत्सरों में से छठवें का नाम। ५ कतीला (गोंद विशेष)

अंगीकारः, अङ्गीकारः (पु०)—कृतिः (स्त्री०)—करणं (न०) १ स्वीकृति। मंजूरी। २ रज़ामंदी। प्रतिज्ञा।

अंगीकृत, अङ्गीकृत (वि०) स्वीकृत। मंजूर। अङ्गीकार किया हुआ।

अंगीय, अङ्गीय (वि०) शरीर सम्बन्धी ।

अंगुः, अङ्गुः (पु०) हाथ ।

अंगुरिः-अंगुरी, अङ्गुरि-अङ्गुरी (स्त्री०) उँगुली ।

अंगुलः, अङ्गुलः (पु०) १ उंगली २ अंगूठा (न०) अंगुल भर का नाप, जो आठ यव के बराबर माना जाता है ।

अंगुलिः-अंगुली-अंगुरिः-अंगुरी, अङ्गुलिः-अङ्गुली-अङ्गुरिः-अङ्गुरी } १ उंगली जिनके नाम यथाक्रम अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका हैं । २ हाथी की सूंड की नोंक । ३ नाप विशेष ।—तोरणं (न०) माथे पर चंदन का अर्धचन्द्राकार पुण्ड्र (तिलक)। —त्रं-त्राणं (न०) दस्ताना जो धनुष चलाने वाले उँगुलियों में पहना करते थे ।—मुद्रा,—मुद्रिका (स्त्री०) सील मोहर सहित अंगूठी । मोटनं— स्फोटनं (न०) अंगुली चटकाना —संज्ञा (स्त्री०) उंगली का इशारा या सङ्केत ।—संदेशः उंगलियों के इशारे से मनोगत भावों को प्रदर्शित करना ।—सम्भूतः (पु०) नख ।

अंगुलिका, अङ्गुलिका देखो अंगुलिः ।

अंगुली, अंगुरी, अंगुलीयं, अंगुरीकं, अंगुरीयकं, अङ्गुली, अङ्गुरी, अङ्गुलीयं, अङ्गुरीकं, अङ्गुरीयकं (न०) अंगूठी । इसका प्रयोग पुल्लिङ्ग में भी होता है । यथा ।

" काकुत्स्थस्यांगुलीयक ।"

भट्टी काव्य ।

अंगुष्ठः,अङ्गुष्ठः (पु०) १ अंगूठा ।—मात्र (वि०) अंगूठे के बराबर (नाप में) ।

अंगुष्ठ्यः, अङ्गुष्ठ्यः (पु०) अंगूठे का नाखून या नख ।

अंगूषः, अङ्गूषः (पु०) १ न्योला । २ तीर ।

अंघ, अङ्घ (धा० आत्मने०) [अंघते-अङ्घते, अंघति-अङ्घति] चलना । २ आरम्भ करना । शीघ्रताकरना । ४ डाँटना । डपटना । फटकारना । भलाबुरा कहना ।

अंघस्, अङ्घस् (न०) पाप ।

अंघ्रि, अङ्घ्रि (अंह्रि) १ पैर । २ पेड़ की जड़ । किसी श्लोक का चौथा चरण । चतुर्थपाद ।—पः (पु०) वृक्ष।—पान (वि०) पैर या पैर की उँगुली (लड़कों की तरह) चूसने वाला ।—स्कन्धः (पु०) गुल्फ । एड़ी या एड़ी ।

अच् (धा० उभय०) [अचित-ते, अंचति, आनंच, अंचित—अक्त] १ जाना । २ हिलना डुलना । ३ सम्मान करना । ४ प्रार्थना करना । ५ माँगना । पूँछना ।

अच् (पु०) व्याकरण शास्त्र में "अच्" स्वर की संज्ञा है ।

अचक्र (वि०) विना पहिये का । व्यापाररहित । मंत्री सेनापति रहित (राजा) ।

अचक्षुस् (वि०) अंधा । नेत्रहीन । (न०) बुरी आँख । रोगिल नेत्र ।

अचंड, अचण्ड (वि०) शान्त । जो क्रोधी स्वभाव का न हो ।

अचंडी, अचण्डी (वि०) सीधी गौ । शान्त स्त्री ।

अचतुर (वि०) १ चार संख्या से शून्य । २ अनिपुण । अनाड़ी ।

अचल (वि०) गमन या शक्ति हीन । स्थावर । स्थायी ।

अचलः (पु०) १ पहाड़ । चट्टान । २ कील । काँटा । ३ सात सूचक संख्या ।

अचला (स्त्री०) पृथिवी ।

अचलं (न०) ब्रह्म ।

अचल-कन्यका,-सुता-दुहिता-तनया । (स्त्री०) । हिमालय की पुत्री । पार्वती ।

अचलकीला (स्त्री०) पृथिवी ।

अचलज,-जात (वि०) पर्वत से उत्पन्न ।

अचलजा,—जाता (स्त्री०) पार्वती का नाम ।

अचलत्विष् (पु०) कोयल ।

अचलद्विष् (पु०) पर्वतशत्रु । इन्द्र का नाम जिन्होंने पर्वतों के पंख काट डाले थे ।

अचलपतिः-राट् (पु०) हिमालय पर्वत का नाम । पर्वतों का स्वामी ।

अचापल,-ल्य (वि०) चञ्चलतारहित । स्थिर । अचापल्य—(न०) स्थिरता ।

अचित् (वि०) (वैदिक) १ जिसमें समझदारी न हो । २ धर्मविचार शून्य । जड़ ।

अचित (वि०) (वैदिक) १ गया हुआ । २ अविचारित । ३ एकत्र न किया हुआ । बिखरा हुआ ।

अचित्त (वि०) विचार से परे। जो समझ ही में न आवे।

अचिंत्य, अचिन्त्य अचिंतनीय, अचिन्तनीय (वि०) १ मन और बुद्धि के परे। अबोधगम्य। अज्ञेय। कल्पनातीत। २ अकूत। अतुल। ३ आशा से अधिक।

अचिंत्यः, अचिन्त्यः (पु०) ब्रह्मा। शिव।

अचिंतित, अचिन्तित (वि०) जिसका चिंतन न किया गया हो। बिना सोचा विचारा। आकस्मिक।

अचिर (न०) अल्प। थोड़ा। थोड़ी देर ठहरने या रहने वाला। शीघ्र। जल्दी।—अंशु,-आभा,-द्युतिः,-प्रभा,-भास्-रोचिस्- (स्त्री०) चपला, बिजली।

अचिरात् (अव्ययात्मक) तुरन्त, शीघ्रता से [अचिरेण, अचिरस्य भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।]

अचेतन (वि०) १ चेतनारहित। जड़। २। संज्ञा-शून्य। मूर्च्छित। ३ ज्ञानहीन।

अचैतन्यम् (वि०) चेतनारहित। ज्ञानशून्य। जड़।

अच्छ (वि०) साफ। पवित्र। विशुद्ध।—च्छः (पु०) १ स्फटिक। २ रीछ। भालू।—उदन (=अच्छोद) साफजल वाला।—दं (न०) कादम्बरी में वर्णित हिमालय पर्वत-स्थित एक झील का नाम।-भल्लः (पु०) रीछ। भालू।

अच्छ, अच्छा (वैदिक) (अव्यया०) ओर। तरफ।

अच्छावाकः (पु०) आह्वानकर्त्ता। सोमयज्ञ कराने वालों में से एक ऋत्विज जो होता का सहवर्ती रहता है।

अच्छान्दस् १ वह जिसने वेदाध्ययन न किया हो। (यज्ञोपवीत संस्कार होने के पूर्व का बालक) अथवा वेदाध्ययन का अनधिकारी। शूद्र। २ जो पद्यमय न हो।

अच्छिद्र (वि०) अभङ्ग। जो टूटा न हो। जो चोटिल न हो। निर्दोष। त्रुटिरहित।

अच्छिद्रं (न०) निर्दोष कार्य। निर्दोषता।

अच्छिन्न (वि) १ अविरत। सतत। २ जो खण्डित न हो। ३ अविभक्त। जो पृथक् न किया जा सके।

अच्छोटनम् (न०) शिकार। आखेट।

अच्छोदम् (न०) निर्मल जल वाला सरोवर। देखो अच्छ के अन्तर्गत।

अच्युत (वि०) जो कभी न गिरे। दृढ़। स्थिर। अविचल। (पु०) भगवान् विष्णु का नाम।—अग्रजः (पु०) बलराम या इन्द्र का नाम।—अंगजः,—पुत्रः,-आत्मजः (पु०) कामदेव। अनंग। कृष्ण और रुक्मिणी के पुत्र का नाम।—आवासः,—वासः (पु०) अश्वत्थ वृक्ष। वट वृक्ष।

अज् (धा० परस्मै०) (अजति, अजितवीत) १ चलना। जाना। २ हाँकना। नेतृत्व करना। ३ फेंकना। लुढकाना। छिटकाना।

अज (वि०) १ जन्मरहित। अनन्तकाल से वर्तमान।—(पु०) यह ब्रह्मा की उपाधि है। २ विष्णु का शिव का या ब्रह्मा का नाम। ३ जीव। ४ मेढ़ा। बकरा ५ मेषराशि। ६ अन्न विशेष। ७ चन्द्रमा अथवा कामदेव का नाम।-अदनी (स्त्री०) एक कटीली वनस्पति। धमासा।—अविकं (न०) छोटा पशु।—अश्वं (न०) बकरे। घोड़े।-एड्कं (न०) बकरे। मेढ़े।-गरः (पु०) एक बड़ा भारी सर्प।—गरी (स्त्री०) एक पौधे का नाम।—गल 'देखो अजागल'।—जीवः-जीविकः (पु०) बकरों की हेड।—मारः (पु०) १ कसाई। बूचड। २ एक प्रदेश का नाम जो इन दिनों अजमेर के नाम से प्रसिद्ध है। —मीढः (पु०) १ अजमेर का दूसरा नाम। २, युधिष्ठिर की उपाधि।—मोदा—मोदिका (स्त्री०) यह एक अत्यन्त गुणकारी दवाई के पौधे का नाम है। इसे ओंवा भी कहते हैं।—शृङ्गी (स्त्री०) पौधा विशेष। मेढ़ासिंगी।

अजन (वि०) चलते हुए। हाँकते हुए।—जः (पु०) ब्रह्मा।

अजका, अजिका (स्त्री०) छोटी बकरी।

अजकवः (पु०), **अजकवम्** (न०) शिव जी के धनुष का नाम।

अजकावः-(पु०), **अजकावम्** (न०) शिवधनुष।

अजगावं-(न०) **अजगावः** (पु०) पिनाक। शिव जी का धनुष।

अजड (वि०) जो जड़ अर्थात् मूर्ख न हो।

अजन (वि०) निर्जन (वियावान)। जहाँ एक भी जन न हो।

अजनाभ (पु०) भारतवर्ष का प्राचीन नाम अजनाभ था।

अजनिः (स्त्री०) रास्ता। सड़क।

अजन्मन् (वि०) अनुत्पन्न। अजन्मा। जीव की उपाधि। (पु०) अन्तिम परमानन्द। मोक्ष।

अजन्य (वि०) उत्पन्न किये जाने के या होने के अयोग्य। मनुष्य जाति के प्रतिकूल।—म् (न०) दैवी उत्पात्। दैवी उपद्रव। भूचाल आदि।

अजपः (पु०) १ वह ब्राह्मण जो सन्ध्योपासन यथाविधि नहीं करता। जप न करने वाला। २ बकरे पालने वाला। बकरे चराने वाला। ३ अस्पष्ट पढ़ने वाला।

अजपा (स्त्री०) देवता विशेष। गायत्री। जिसका जप श्वास प्रश्वास के साथ स्वयं होता रहता है।

अजपात् (पु०) १ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र। २ ग्यारह रुद्रों में से एक का नाम।

अजभक्ष (पु०) बबूर।

अजंभ, अजम्भ (वि०) दन्तरहित।—म्भः (पु०) १ मेंढक। २ सूर्य। बालक की वह अवस्था जब उसके दाँत नहीं रहते।

अजय (वि०) जो जीता या सर न किया जा सके।—यः (पु०) हार। शिकस्त।—या (स्त्री०) भाग।

अजय्य (वि०) अजेय। जो जीता न जा सके।

अजर (वि०) १ जो बूढ़ा न हो। सदैव युवा। २ अविनाशी। जिसका कभी नाश न हो। रः (पु०) देवता।—म् (न०) परब्रह्म।

अजर्यम् (न०) मैत्री। दोस्ती।

अजस्र (वि०) निरन्तर। सन्तत। सदा। त्रिकाल में स्थितशील।

अजहत्स्वार्था (स्त्री०) लक्षणाविशेष। इसमें लक्षक शब्द, अपने वाच्यार्थ को न छोड़कर, कुछ भिन्न अथवा अतिरिक्त अर्थ प्रकट करता है। इसका उपादानलक्षण भी नाम है।

अजहल्लिङ्गम् (न०) संज्ञाविशेष जो विशेषण की तरह व्यवहृत होने पर भी अपना लिङ्ग न बदले।

अजहा (स्त्री०) कँवाँछ। कपिकच्छुक। शूकशिम्बी नामक औषध।

अजा १ सांख्यदर्शनानुसार प्रकृति या माया। २ बकरी।—गलस्तनः (पु०) बकरी के गले के थन। इनकी उपमा किसी वस्तु की निरर्थकता सूचित करने में दी जाती है।—जीवः,—पालकः (पु०) जिसकी जीविका बकरे बकरियों से हो। बकरों की हेड़।

अजाजिः-अजाजी (स्त्री०) काला जीरा। सफेद जीरा।

अजात (वि०) अनुत्पन्न। जो अभी तक उत्पन्न न हुआ हो।—अरि,—शत्रु (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो। (पु०) १ युधिष्ठिर की उपाधि। २ शिवजी तथा अनेकों की उपाधि।—ककुत्,—द् (पु०) छोटी ऊमर का बैल, जिसके कुब्ब न निकला हो। बछड़ा। बच्छा।—व्यञ्जन (वि०) जिसके स्पष्ट चिन्ह (डाढ़ी मंछ आदि) पहिचान के लिये न हों।—व्यवहारः (पु०) नाबालिग़। अवयस्क।

अजानिः (पु०) रडुआ। जिसकी स्त्री न हो। स्त्री रहित। विधुर।

अजानिकः (पु०) बकरों की हेड़।

अजानेय (वि०) कुलीन। उत्तम या उच्च कुल का। निर्भय (जैसे घोड़ा)।

अजित (वि०) अजेय। जो जीता न जा सके।—तः (पु०) विष्णु, शिव तथा बुध की उपाधि विशेष।

अजिनम् (न०) १ चीता। शेर। हाथी आदि का और विशेष कर काले हिरन का रोएदार चमड़ा, जो आसन अथवा तपस्वियों के पहिनने के काम आता था। २ एक प्रकार का चमड़े का थैला या धौंकनी।—पत्रा-त्री-त्रिका (स्त्री०) चिमगादड़। चिमगीदड़।—योनिः (पु०) हिरन या बारहसिंहा।—वासिन् (वि०) मृगचर्मधारी।—सन्धः (पु०) लोमनिर्मितवस्त्र-व्यवसायी। पशमीना या शाल बेचने वाला।

अजिर (वि०) १ तेज़। फुर्तीला। शीघ्र।—म् (न०) १ आँगन। चौक। अखाड़ा। २ शरीर।

३ इन्द्रियगम्य कोई पदार्थ। ४ पवन। हवा। ५ मेंढक।

अजिरा (स्त्री०) १ एक नदी का नाम। २ दुर्गा का नाम।

अजिह्म (वि०) १ सीधा। २ ईमानदार।

अजिह्मः (पु०) मेंढक।

अजिह्मग (वि०) अपनी सीध में जाने वाला। (पु०) तीर। बाण।

अजिह्वः (पु०) मेंढक।

अजीकवं (न०) शिव जी का धनुष।

अजीगर्तः (पु०) १ सर्प। २ उपनिषद् तथा पुराणों में वर्णित शुनःशेफ के पिता का नाम।

अजीर्ण (वि०) न पचा हुआ।

अजीर्णम् (न०) अजीर्णिः (स्त्री०) १ अपच। मन्दाग्नि। बदहज़मी। अध्यग्न। २ वीर्य। शक्ति। पराक्रम। ओजस्विता। जीर्णता का अभाव।

अजीव (वि०) मृत। मरा हुआ। मृतक।

अजीवः (पु०) मृत्यु। मौत।

अजीवनिः (स्त्री०) मृत्यु। (इसका व्यवहार प्रायः अकोसने में होता है। यथा:—

"अजीवनिस्ते शठ भूयात्।"

—सिद्धान्त कौमुदी।

अजेय (वि०) जो जीता न जा सके। जीतने के अयोग्य।

अजैकपाद् (पु०) १ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र। २ रुद्र विशेष की उपाधि।

अज्झुका } (स्त्री०) १ (नाटकोक्ति में) वेश्या।
अज्जूका } २ बड़ी बहिन।

अज्झलं (न०) १ ढाल। २ दहकता हुआ अंगारा।

अज्ञ (वि०) जड़। अनपढ़। अविवेकी। मूर्ख। ज्ञानशून्य। अनुभवशून्य।

अज्ञात (वि०) अविदित। अनजाना हुआ। अपरिचित। अप्रकट। नमालूम।

अज्ञान (वि०) १ ज्ञानशून्य। गँवार। मूर्ख। —प्रभवः (पु०) अज्ञान से उत्पन्न।—प्रभवी (वि०) मूर्ख। अविद्वान्।

अज्ञानम् (न०) ज्ञान का अभाव। जड़ता। मूर्खता। मोह। अजानपन। २ अविद्या।

अज्ञेय (वि०) जो जाना न जा सके। बोधागम्य। ज्ञानातीत।

अंचू, अञ्चू (धा० उभय०) [अंचति-ते,आनञ्च, अञ्चितुं अच्यात् या अंच्यात्, अक्त या अञ्चित] १ मोड़ना, उमेंठना। झुकाना। यथा "शिरोंचित्वा।" (महीभाष्य) २ जाना। हिलना डुलना। मिलना। ३ पूजन करना। सम्मान करना। भूषित करना। ४ याचना करना। प्रार्थना करना। अभिलाषा करना। ५ भुनभुनाना। अस्पष्ट शब्द कहना। गुनगुनाना (निज०) प्रकाशित करना। खोलना।

अंचलः (पु०)
अञ्चलः (पु०)
अंचलं (न०)
अञ्चलम् (न०) } (किनारा। छोर।

अंचित } (वि०) १ मुड़ा हुआ, झुका हुआ। २ सम्मा-
अञ्चित } नित। प्रतिष्ठित। ३ सिला हुआ। बुना हुआ।

अंजनम् } (न०) १ कज्जल। २ सौवीर।
अञ्जनम् } ३ साञ्जन। ४ स्याही। ५ अग्नि। ६ रात्रि। (पु०) दिग्गज विशेष।

अंजनकेशी } (स्त्री०) एक सुगन्धद्रव्य विशेष,
अञ्जनकेशी } जिसे स्त्रियाँ बालों में लगाती हैं। इसे हट्टविलासिनी कहते हैं।

अंजना } (स्त्री०) एक वानरी का नाम। हनुमान
अञ्जना } जी की माता का नाम।

अंजनाधिका } (स्त्री०) काजल से भी बढ़ कर
अञ्जनाधिका } काला एक कीट विशेष।

अंजनावती } (स्त्री०) सुप्रतीक नामक दिग्गज
अञ्जनावती } की हथिनी। इसका रंग बहुत काला है।

अंजनी } (स्त्री०) गन्ध पदार्थों को लेपन
अञ्जनी } करने योग्य स्त्री। कटुक वृक्ष। कालाञ्जन।

अंजलिः } (पु०) जुड़े हुए दोनों हाथ। दोनों
अञ्जलिः } हथेलियों को जोड़ कर या मिलाकर

जो बीच में गड्ढा सा बनता है उसे अंजलि कहते हैं। इस अंजलि में जितना आवे उतना एक नाप। परिमाण विशेष।—कर्मन् (न०) प्रणाम। सम्मानसूचक मुद्रा।—कारिका (स्त्री०) मिट्टी की गुड़िया। —पुटः (पु०)—पुटं (न०) दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ संपुट।

अंजलिका, अञ्जलिका (स्त्री०) १ मूषिका। चुहिया। छोटा चूहा। २ अर्जुन के एक बाण का नाम।

अंजस—अंजसी, अंजीस—अंजोसी (वि०) १ जो टेढ़ा न हो। सीधा। २ ईमानदार। सच्चा।

अंजसा, अञ्जसा (क्रि० वि०) १ सिधाई से। २ सचाई से। ३ उचित रीति से। ठीक तौर पर। ४ शीघ्रता से। तुरन्त ताव से।—कृत (वि०) विनय से किया हुआ। शीघ्रता से किया हुआ।

अंजिष्ठः—अंजिष्णु, अञ्जिष्ठः—अञ्जिष्णु (पु०) सूर्य। भास्कर। मार्त्तण्ड।

अंजीरः(पु०)अंजीरं(न०), अञ्जीरः(पु०)अञ्जीरं(न०) स्वनामख्यात वृक्ष एवं फल विशेष। अँजीर।

अट् (धा० प०) (कभी कभी आत्मनेपदी भी होती है) [अटति, अटित] घूमना फिरना।

अट (वि०) घूमते हुए।

अटनं (न०) घूमना। भ्रमण। गमन।

अटनिः, अटनी (स्त्री०) धनुष का अग्रभाग।

अटा (स्त्री०) भ्रमण करने का अभ्यास (जैसा परिव्राजक किया करते हैं) भ्रमण। पर्यटन।

अटरुषः, अटरूषः (पु०) अडूसा।

अटविः, अटवी (स्त्री०) वन। जंगल।

अटविकः, आटविकः (पु०) वनरखा। वन मे काम करने वाला।

अट्ट (धा० आ०) १ मारना। २ लांघना। (निज०) १ कम करना। घटाना। २ अनादर करना।

अट्ट (वि०) १ ऊँचा। रवकारी। २ सतत। ३ शुष्क। सूखा रूखा।

अट्टम् (न०) अट्टः (पु०) १ अटा। अटारी। २ क्षुद्र बुर्ज। ३ आश्रय। आधार। आधार के लिये बनाया हुआ प्राकार। गुंबज़। ४ हाट। बाज़ार। मंडी। ५ प्रासाद। महल। विशाल भवन।

अट्टम् (न०) भोज्य पदार्थ। भात। ["अट्टशूला जनपदा" महाभारतः।—"अट्टं अन्नं शूलं विक्रेयं येषां ते" नीलकण्ठः।]

अट्टकः (पु०) अटा। महल।

अट्टहासः (पु०) ज़ोर की हँसी। कहक़हा। खिलखिलाना।

अट्टहासकः (पु०) कुन्द पुष्प।

अट्टहासिन् (पु०) शिव जी का नाम।

अट्टालः, अट्टालकः (पु०) १ अटा। कोठा। २ दूसरी मंज़िल। ३ महल। प्रासाद।

अट्टालिका (स्त्री०) प्रासाद। ऊँचा भवन।—कारः (पु०) राज। थवई। मैमार।

अड् (धा० पर०) उद्यम करना।

अड्डनं (न०) ढाल।

अण् (धा० पर०) रव करना। श्वास लेना।

अणक, अनक (वि०) बहुत छोटा। तुच्छ। तिरस्करणीय। अभागा।

अणिः (पु०), अणी (स्त्री०) १ सुई की नोंक। २ पहिये की चाबी। ३ सीमा। हद। ४ घर का कोना।

अणिमन् (पु०) अणुता, (स्त्री०) अणुत्वं (न०) १ सूक्ष्मता। २ शिवजी की आठ सिद्धियों में से एक।

अणिमा (स्त्री०) १ छोटापन। लघुता। २ अष्ट सिद्धियों में से एक।

अणीयस् (वि०) १ बहुत थोड़ा। २ बहुत छोटा। लघुतर।

अणु (वि०) [स्त्री०—अण्वी] १ लेश। सूक्ष्म। परमाणु सम्बन्धी।

अणुः (पु०) १ नैयायिकों द्वारा स्वीकृत पदार्थ विशेष। पदार्थों का मूल कारण। २ चीना नाम से प्रसिद्ध व्रीहि विशेष। ३ विष्णु का नाम। ४ शिव का नाम।

अणुक (वि०) १ अल्पतर। २ बहुत छोटा। बड़ा सूक्ष्म। बहुत मिहीन। ३ तीक्ष्ण।

अणुभा (स्त्री०) विद्युत् । विजली ।

अणुमा (स्त्री०) जिसकी प्रभा स्वल्प और क्षण-स्थायी हो । विद्युत् । विजली ।

अणुमात्रिक (वि०) १ अतिक्षुद्र । अत्यन्त छोटा । २ जीव की संज्ञा ।

अणुरेणुः (पु०) त्रसरेणु । धूलकण ।

अणुवादः (पु०) १ सिद्धान्त विशेष जिससे जीव या आत्मा अणु माना गया है। यह वल्लभाचार्य का सिद्धान्त है । २ शास्त्रविशेष जिसमें पदार्थों के अणु नित्य माने गये हैं । वैशेषिकदर्शन ।

अणिष्ठ (वि०) सूक्ष्मतर । सूक्ष्मतम । अति सूक्ष्म ।

अंडः (पु०) अडं (न०) | अण्डः—अण्डं (न०) | १ अण्डकोश । २ अंडा । ३ कस्तूरी । ४ पेशी । ५ शिव का नाम ।—जः (पु०) १ पक्षी या अँडे से उत्पन्न होने वाले जीव यथा मछली, सर्प, छिपकली आदि । २ ब्रह्मा ।

अंडजा | अण्डजा } (स्त्री०) मुश्क । कस्तूरी ।

अंडधरः | अण्डधर } (पु०) शिव ।

अंडाकार—कृति | अण्डाकार—कृति } (वि०) अंडे की शक्ल का ।

अंडालुः | अण्डालुः } (पु०) मछली ।

अंडीरः | अण्डीरः } (पु०) पुरुष । बलवान पुरुष ।

अत् (धा० पर०) [अतति, अत्त-अतित] १ जाना । चलना । भ्रमण करना सदैव चलना । २ (वैदिक) प्राप्त करना ३ बाँधना ।

अतनं (न०) जाना । घूमना ।

अतनः (पु०) भ्रमण करने वाला । पर्यटक । राहचलतू ।

अतट (वि०) सीधा ढालवाँ । खड़ा ढालवाँ ।

अतटः (पु०) प्रपात । पर्वत का ऊपरी भाग । ऊँचा पहाड़ ।

अतथा (अव्यया०) ऐसा नहीं ।

अतदर्ह (अव्यया०) अनुचित रीति से । अवाञ्छित रूप से ।

अतद्गुणः (पु०) १ अलङ्कार विशेष । किसी वर्णनीय पदार्थ के गुण ग्रहण करने की सम्भावना रहने पर भी जिसमें गुण ग्रहण नहीं किया जा सकता उसे अतद्गुण अलङ्कार कहते हैं । २ बहुव्रीहि समास का एक भेद ।

अतंत्र (वि०) [स्त्री०-अतंत्री] १ विना डोरी का । विना तारों का (बाजा) । २ असंयत ।

अतन्द्र | अतन्द्रित | अतन्द्रिन् | अतन्द्रिल } (वि०) सतर्क । सावधान । जागरूक । चौकस । होशियार ।

अतपस्-अतपस्क (वि०) वह व्यक्ति जो अपना धार्मिक कृत्य नहीं करता या जो अपने धार्मिक कर्त्तव्यों से विमुख रहता है ।

अतर्क (वि०) युक्तिशून्य । तर्क के नियमों के विरुद्ध ।

अतर्कः (पु०) जो तर्क के नियमों से अनभिज्ञ हो ।

अतर्कित (वि०) १ आकस्मिक । २ बे सोचा समझा । जो विचार में न आया हो ।

अतर्कितम् (क्रि० वि०) आकस्मिक रूप से ।

अतर्क्य (वि०) १ जिसके विषय में किसी प्रकार की विवेचना न हो सके । २ अचिन्त्य । ३ अनिर्वचनीय ।

अतल (वि०) जिसमें तरी या पेंदी न हो ।

अतलम् (न०) सात अधोलोकों अर्थात् पातालों में से दूसरा पाताल ।

अतलः (पु०) शिव जी का नाम ।—स्पृश्,—स्पर्श (वि०) तलरहित । बहुत गहरा । जिसकी थाह न मिले ।

अतस् (अव्यया०) १ इसकी अपेक्षा । इससे । २ इससे या इस कारण से । अतः । ऐसा या इस लिये । इस शब्द के समानार्थ वाची " यत् " " यस्मात् " और " हि " हैं । ३ अतः । इस स्थान से । इसके आगे । (समय और स्थान सम्बन्धी ।) इसके समानार्थवाची है "अतःपरं" या "अतऊर्ध्वं" । पीछे से ।—अर्थं,—निमित्तं इस

कारण। अतएव। इस कारण से।—एव इसी कारण से।—उर्ध्वं इसके आगे। पीछे से।—परं आगे। और आगे। इसके पीछे। इसके परे। इससे भी आगे।

अतसः (पु०) १ पवन। हवा। २ आत्मा। जीव। ३ पटसन का बना हुआ वस्त्र।

अतसी (स्त्री०) अलसी। सन। पटसन।—तैलम् (न०) अलसी का तेल।

अतस्क (वि०) असंयतेन्द्रिय जो अपनी इन्द्रियों को अपने वश मे न रख सके।

अति (अव्यया०) यह एक उपसर्ग है जो विशेषणों और क्रियाविशेषणों के पहले लगायी जाती है। इसका अर्थ है—बहुत। बहुत अधिक। परिमाण से बहुत अधिक। उत्कर्ष। प्रकर्ष। प्रशंसा। क्रिया में जुड़ने पर यह उपसर्ग—ऊपर, परे का अर्थ बतलाती है। जब यह संज्ञा या सर्वनाम में जुड़ती है, तब इसका अर्थ होता है—परे। बढ़ कर। श्रेष्ठतर। प्रसिद्ध। प्रतिपन्न। उच्चतर। ऊपर।

अतिकथा (स्त्री०) बहुत बढ़ा कर कहा हुआ वृत्तान्त। २ व्यर्थ की या बेमतलब की बातचीत।

अतिकर्षणं (न०) अत्यन्त पीड़ित। अत्यधिक परिश्रम।

अतिकश (वि०) कोड़े को न मानने वाला। घोड़े की तरह हाथ में न आने वाला।

अतिकाय (वि०) दीर्घकाय। असाधारण डीलडौल का।

अतिकृच्छ्र (वि०) बहुत कठिन। बड़ा मुश्किल।

अतिकृच्छ्रम् (न०) अतिकृच्छ्रः (पु०) १ असाधारण कठिनता। २ एक प्रायश्चित्त विशेष, जो १२ रात में पूर्ण होता है।

अतिक्रमः (पु०) १ नियम या मर्यादा उल्लङ्घन। विरुद्ध व्यवहार। २ अप्रतिष्ठा। असम्मान। बेइज़्ज़ती। ३ चोट। ४ विरोध। ५ (काल का) व्यतीत हो जाना। बीत जाना। दमन करना। पराजित करना। हराना। ६ छोड़ जाना। उपेक्षा करना। भूल जाना। ७ ज़ोर शोर का आक्रमण। ८ आधिक्य। ९ दुष्प्रयोग। १० निर्धारण। स्थापन। आदेश। करसंस्थापन।

अतिक्रमणम् (न०) उल्लङ्घन। पार करना। बढ़ जाना। सीमा के बाहिर जाना। समय को व्यतीत करना। आधिक्य। दोष। अपराध।

अतिक्रमणीय (स० क० कृ०) अतिक्रमण करने योग्य। उल्लङ्घन करने योग्य। बचा देने के योग्य। छोड़ देने के योग्य।

अतिक्रान्त (भू० क० कृ०) सीमा या मर्यादा का उल्लङ्घन किये हुए। बढ़ा हुआ। बीता हुआ। व्यतीत।

अतिखट्व (वि०) शय्यारहित। शय्या की आवश्यकता को दूर कर देने योग्य।

अतिग (वि०) अत्यधिक। अपेक्षा कृत। उत्कृष्ट।

अतिगन्ध (वि०) ऐसी गन्ध जो सब के ऊपर हो।

अतिगन्धः (पु०) १ गन्धक। २ भूतृण। ३ चंपा का पेड़।

अतिगव (वि०) १ बड़ा भारी मूर्ख। गयड मूर्ख। २ अवर्णनीय। अकथनीय।

अतिगण्डः (पु०) ज्योतिष शास्त्र वर्णित योग विशेष। (वि०) बड़ा गले वाला।

अतिगुण (वि०) १ वह जिसमें सर्वोत्कृष्ट अथवा श्रेष्ठतर गुण हों। २ गुणशून्य। निकम्मा।

अतिगुणः (पु०) श्रेष्ठ गुण।

अतिगो (स्त्री०) श्रेष्ठ गौ। उत्तम गाय।

अतिग्रह (वि०) जो बोधगम्य न हो।

अतिग्रहः } (पु०) १ इन्द्रियगम्य। इन्द्रियगोचर।
अतिग्राहः }
२ सत्यज्ञान। ३ श्रेष्ठ होने के लिये कर्म या क्रिया।

अतिचमू (वि०) सेनाओं पर विजय प्राप्त।

अतिचर (वि०) बड़ा परिवर्तनशील। अनित्य। अचिरस्थायी। क्षणविध्वंसी। क्षणिक।

अतिचरा (स्त्री०) स्थलपद्मिनी। पद्मिनी। पद्मचारिणीलता।

अतिचरणं (न०) अत्यधिक अभ्यास। अधिक काम करना।

अतिचारः (पु०) १ उल्लङ्घन। २ सद्गुण में अतिक्रमण करना। ३ ग्रहों की शीघ्र गति। ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना।

अतिच्छत्र (पु०), अतिच्छत्रा (स्त्री०), अतिच्छत्रका (स्त्री०) — १ छाती नाम से प्रसिद्ध एक तृण विशेष। २ तालमखाना। ३ सुल्फा।

अतिजगती (स्त्री०) छन्द विशेष जो १३ अक्षरों का होता है (वि०) जगत को डाँकने वाला। ज्ञानी। जीवन्मुक्त।

अतिजव (वि०) बड़े वेग से चलने वाला।

अतिजागरः (पु०) नीलक पक्षी—जो सदा जागता रहता है। (वि०) जिसको नींद न आवे।

अतिजात (वि०) जो आबाद न हो।

अतिडीनं (न०) पक्षियों का एक असाधारण उड़ान।

अतितराम्, अतितमां (अव्यया०) १ अधिक। उच्चतर। २ बहुत अधिक।

अतितीक्ष्ण (वि०) अत्यन्त कडवा। मरिचा।

अतितीव्रा (स्त्री०) गाँठदूब।

अतिथिः (पु०) मनु अध्या० ३ श्लो० १०२ के अनुसार अतिथि की परिभाषा यह है:—

"एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः।
अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते॥"

१ आगन्तुक। घर में आया हुआ। अज्ञात पूर्वव्यक्ति।—क्रिया, (वि०)—सत्कारः (पु०) सत्क्रिया, (स्त्री०)—सेवा,—सपर्या (स्त्री०) अतिथि का आदर सत्कार। मेहमानदारी।—धर्मः (पु०) अतिथि का सत्कार—यज्ञः (पु०) पञ्चमहायज्ञों में से एक। नृयज्ञ। अतिथिपूजा। मेहमानदारी।

अतिदानं (न०) अत्यधिक दान।

अतिदिष्ट (वि०) दूसरे के धर्म का दूसरे में आरोप। मीमांसा शास्त्र की परिभाषा विशेष।

अतिदीप्यः (पु०) रक्तचित्रक वृक्ष। लाल चीता का पेड़।

अतिदेशः (पु०) अतिदिष्ट। वह नियम जो अपने निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त और विषयों में भी काम दे।

अतिद्वय (वि०) १ अद्वितीय। जिसके समान दूसरा न हो। जो दो से बढ़ कर हो। जिसकी तुलना न हो सके। जिसका जोड़ न हो।

अतिधन्वन् (पु०) बेजोड़ तीरंदाज़ या योद्धा। जिसके जोड़ का दूसरा धनुर्धारी या योद्धा न हो।

अतिधृतिः (स्त्री०) एक छन्द जिसमें प्रत्येक पद में १९ अक्षर होते हैं।

अतिनिद्र (वि०) १ अत्यधिक निद्रालु। अत्यधिक सोने वाला। २ बिना निद्रा का। निद्रा रहित। अनिद्रम्। निद्रा के समय का अतिक्रम। अतिनिद्रा (स्त्री०) अत्यधिक नींद।

अतिनु, अतिनौ (वि०) नाव से उतारा हुआ। नदी या समुद्र के तट पर उतरा हुआ।

अतिपंचा, अतिपञ्चा (स्त्री०) पाँच वर्ष के ऊपर की लड़की।

अतिपतनं (न०) निर्दिष्ट सीमा के आगे उड़ जाना या निकल जाना। चूक जाना। छोड़ जाना। उल्लङ्घन करना। मर्यादा के बाहिर जाना।

अतिपत्तिः (स्त्री०) असिद्धि। असफलता। सीमा के बाहिर जाना।

अतिपत्रः (पु०) सागौन का वृक्ष।

अतिपर (वि०) वह व्यक्ति जिसने अपने शत्रुओं का नाश कर डाला हो।

अतिपरः (पु०) बड़ा या श्रेष्ठ शत्रु।

अतिपरिचयः (पु०) अत्यधिक मेलमिलाप।

अतिपातः (पु०)। १ गुज़रजाना (समय का)। नष्ट हो जाना। चूक। भूल। उल्लङ्घन। २ घटना का घटना। ३ दुर्व्यवहार। असद्व्यवहार। विरोध। प्रातिकूल्य।

अतिपातकं (न०) एक बड़ाभारी पाप।

अतिपातिन् (वि०) चाल में बढ़ा हुआ। अपेक्षाकृत वेगवान्।

अतिपात्य (भू० म० कृ०) विलम्ब करने योग्य। स्थगित करने योग्य।

अतिप्रबन्धः (पु०) अत्यन्त निरवच्छिन्नता।

अतिप्रगे (अव्यया०) बड़े तड़के। बड़े भोर।

अतिप्रश्नः (पु०) ऐसा प्रश्न जिसको सुन उद्रेक उत्पन्न हो। खिजाने वाला प्रश्न।

अतिप्रसङ्गः (पु०) प्रगाढ़ प्रेम।

अतिप्रसक्तिः (स्त्री०) १ अत्यन्त उद्दण्डता। (न्याक०) २ अतिव्याप्तिः। ३ घनिष्ठसंसर्ग।

अतिप्रौढा (स्त्री०) स्यानी लड़की, जो विवाह योग्य हो गयी हो।

अतिबल (वि०) बड़ा बलवान या दृढ़।

अतिबलः (पु०) एक प्रसिद्ध या विख्यात योद्धा।

अतिबला (स्त्री०) १ एक विद्याविशेष जिसे विश्वामित्र जी ने श्रीरामचन्द्र जी को बतलाया था। २ एक औषध विशेष।

अतिबाला (स्त्री०) दो वर्ष की उम्र की गौ।

अतिभरः अतिभारः (पु०) बहुत अधिक बोझ।

अतिभारगः (पु०) खच्चर।

अतिभवः (पु०) पराजय। विजय।

अतिभावः (पु०) श्रेष्ठता। उत्कृष्टता।

अतिभीः (स्त्री०) विद्युत्। बिजुली। इन्द्र के वज्र की कड़क या चमक।

अतिभूमिः (स्त्री०) १ आधिक्य। चरम सीमा पर पहुँच। अत्युच्च स्थान पर आरोहण। २ साहस। अमर्यादा। ३ ख्याति। श्रेष्ठता।

अतिमतिः (स्त्री०) **अतिमानः** (पु०) क्रोध। चिड़चिड़ापन। अत्यन्त गर्व या अभिमान।

अतिमर्त्यः (पु०)—**अतिमानुष** (वि०) अमानुषिक। अलौकिक।

अतिमात्र (वि०) मात्रा से अधिक। अत्यधिक। नितान्त असमर्थनीय।

अतिमाय (वि०) अन्त में मुक्त हुआ। सांसारिक माया से मुक्त।

अतिमुक्त १ अन्त में दासता से मुक्त। बंधन से मुक्त। २ वन्ध्या। ऊसर। ३ बढ़ाव। चढ़ाव।

अतिमुक्तः, अतिमुक्तकः (पु०) माधवी लता। कुसरी। कुसरमोगरा।

अतिमुक्तिः (स्त्री०) मुक्ति। मोक्ष। आवागमन से सदा के लिये छुटकारा।

अतिरंहस् (वि०) अत्यन्त फुर्तीला। बहुत तेज़।

अतिरथः (पु०) ऐसा योद्धा जिसका कोई प्रतिद्वन्द्वी न हो और जो रथ में बैठ कर लड़े।

अतिरभसः (पु०) बड़ी रफ्तार। उद्दामवेग। हठ। ज़िद्द।

अतिराजन् (पु०) १ असाधारण या उत्तम राजा। २ वह व्यक्ति जो राजा से आगे बढ़ जाय।

अतिरात्रः (पु०) ज्योतिष्टोम यज्ञ का एक ऐच्छिक भाग। २ रात्रि की निस्तब्धता।

अतिरिक्त (वि०) १ सिवाय। अलावा। २ अधिक। बढ़ती। शेष। ३ न्यारा। अलग। जुदा। भिन्न।

अतिरेकः अतीरेकः (पु०) १ अतिशय। २ सर्वोत्कृष्टता। सर्वश्रेष्ठत्व। ३ प्रसिद्धि। ४ अन्तर। भेद।

अतिरुच (पु०) घुटना। टहना।

अतिरुक् (स्त्री०) अत्यन्त सुन्दरी स्त्री।

अतिरोमश, अतिलोमश (वि०) बहुत रोंगटों वाला। बहुत बालों वाला।

अतिरोमशः, अतिलोमशः (पु०) १ जंगली बकरा। २ बृहद्काय बंदर।

अतिलङ्घनं (न०) १ बहुत अधिक उपवास या लंघन। (२) उल्लङ्घन। अतिक्रमण।

अतिलङ्घिन् (वि०) भूल करने वाला। ग़लती करने वाला।

अतिवयस् (वि०) बहुत बूढ़ा। बड़ी उमर का।

अतिवर्णाश्रमिन् (वि०) १ जो वर्णाश्रम के परे हो।

अतिवर्तनं (न०) १ क्षम्य अपराध। क्षम्य दुष्टाचरण। क्षम्य सामान्य अपराध। क्षमा करने योग्य क्षुद्र अपराध। २ दण्डवर्जित।

अतिवर्तिन् (वि०) अतिक्रम करने वाला। नियम तोड़ कर चलने वाला।

अतिवादः (वि०) अत्यन्त कड़ा। बड़ा सख़्त। कुवाच्य युक्त भाषा। गाली। कुवाच्य। तिरस्कार। निन्दावाद। भर्त्सना।

अतिवाहनं (न०) १ व्यतीत । ख़र्च किया हुआ । २ अत्यन्त सहनशील या परिश्रमी । अत्यधिक भार । किसी काम से पिंड या पीछा छुड़ाये हुए ।

अतिविकट (वि०) बड़ा भयङ्कर ।

अतिविकटः (पु०) दुष्टहाथी ।

अतिविषा (स्त्री०) एक विषविशेष जो दवाई के काम में आता है ।

अतिविस्तरः (पु०) १ दीर्घसूत्रता । २ प्रपंच । बहुत बकभक ।

अतिवृत्तिः (स्त्री०) १ अतिक्रमण । उल्लङ्घन । २ अतिशयोक्ति ।

अतिवृष्टिः (स्त्री०) मूसलधार वर्षा । ६ प्रकार की ईतियों में से एक ।

अतिवेल (वि०) १ अत्यधिक । असीम । अतिशय । २ अमिताचारी ।

अतिवेलम् (क्रि० वि०) १ अत्यधिकतया । २ बे समय से । अनृतु से ।

अतिव्याप्तिः (स्त्री०) किसी नियम या सिद्धान्त का अनुचित विस्तार । किसी कथन के अन्तर्गत उद्देश्य या लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य विषय के आ जाने का दोष । नैयायिकों का एक दोष विशेष । यदि किसी का लक्षण अथवा किसी शब्द की या वस्तु की परिभाषा की जाय और वह लक्षण या परिभाषा अपने मुख्य वाच्य को छोड़ कर दूसरे की बोधक हो तो वहाँ अतिव्याप्ति दोष माना जाता है ।

अतिशयः (पु०) १ बहुत । अत्यन्त । सर्वोत्तमता । २ उत्कृष्टता ।—उक्तिः (अतिशयोक्तिः) (स्त्री०) अलङ्कारविशेष, जिसमें लोकसीमा का उल्लङ्घन विशेष रूप से दिखलाया जाय ।

अतिशयन (वि०) बड़ा । मुख्य । प्रचुर । बहुतसा ।

अतिशयनम् (न०) आधिक्य । बहुतायत ।

अतिशायनम् (न०) श्रेष्ठत्व । समीचीनत्व । उमदापन । प्रकर्ष ।

अतिशायिन् (वि०) श्रेष्ठ । समीचीन ।

अतिशायिन (पु०) १ अतिक्रमण । २ अधिक ।

अतिशेषः (पु०) बचत । स्वल्प बचा हुआ ।

अतिश्रेयसिः (पु०) वह पुरुष जो सर्वोत्तम स्त्री से श्रेष्ठ हो ।

अतिश्व (वि०) १ बल में बढ़ा चढ़ा । कुत्ता । २ कुत्ते से निकृष्ट ।—श्वा (स्त्री) दासत्व । सेवा ।

अतिश्वन् (पु०) सर्वोत्तम कुत्ता ।

अतिसक्तिः (स्त्री०) घनिष्ठता । अत्यधिक अनुराग ।

अतिसन्धानं (न०) धोखा । दगा । जाल । कपट ।

अतिसरः (पु०) १ आगे बढ़ा हुआ । २ नेता ।

अतिसर्गः (पु०) १ देना । (पुरस्कार रूप से) । २ अनुमति देना । आज्ञा देना । ३ पृथक करना । छुड़ाना (नौकरी से) ।

अतिसर्जनम् (न०) १ देना । २ मुक्ति । छुटकारा । ३ वदान्यता । दानशीलता । ४ वध । विछोह । वियोग ।

अतिसर्व (वि०) सर्वोपरि । सब के ऊपर ।

अतिसर्वः (पु०) परमात्मा । परब्रह्म ।

अतिसारः / **अतीसारः** } (पु०) दस्तों की बीमारी ।

अतिसारिन् / **अतीसारिन्** } (पु०) अतीसार रोग जिसमें मल बढ़ कर रोगी के उदराग्नि को मन्द कर देता है और शरीर के रसों के साथ बराबर निकलता है ।

अतिस्नेहः (पु०) अत्यधिक अनुराग ।

अतिस्पर्शः (पु०) अर्द्धस्वर और स्वर की एक संज्ञा ।

अतीत (वि०) १ गत । बीता हुआ । २ मरा हुआ । ३ निर्लेप । विरक्त । पृथक । ४ असंख्य यथा "संख्यातीत" ।

अतीन्द्रिय (वि०) जो इन्द्रियों के ज्ञान के बाहिर हो । अव्यक्त । अप्रत्यक्ष । अगोचर ।

अतीन्द्रियः (पु०) (सांख्यशास्त्र में) जीव या पुरुष । परमात्मा ।

अतीन्द्रियम् (न०) १ (सांख्य मतानुसार) प्रधान या प्रकृति । २ (वेदान्त में) मन ।

अतीव (अव्यया०) अधिक । अतिशय । बहुत ।

अतुल (वि०) असमान । अनुपम । उपमान रहित ।

अतुलः (पु०) तिलक वृक्ष ।

अतुल्य (वि०) जिसकी तुलना या समता न हो । बेजोड़ । अद्वितीय ।

अतुषार (वि०) जो ठंडा न हो । —करः (पु०) सूर्य ।

अतृणया (स्त्री०) थोड़ी सी घास ।

अतेजस् (वि०) १ धुंधला । जो चमकदार न हो । २ निर्बल । कमज़ोर । ३ तुच्छ ।

अत्ता (स्त्री०) १ माता । २ बड़ी बहिन । ३ सास ।

अत्तिः (स्त्री०) अत्तिका (स्त्री०) बड़ी बहिन आदि ।

अत्लः, अत्नुः (पु०) १ हवा । २ सूर्य ।

अत्यग्निः (पु०) विकार उत्पन्न करने वाली तीक्ष्ण पाचन शक्ति ।

अत्यग्निष्टोमः (पु०) ज्योतिष्टोम यज्ञ का कर्म विशेष ।

अत्यङ्कुश (वि०) जो वश में न रह सके । बेकाबू (हाथी) ।

अत्यन्त (वि०) १ बेहद । बहुत अधिक । अतिशय २ सम्पूर्ण । नितान्त । ३ अनन्त । सदा सर्वदा रहने वाला ।—अभावः (=अत्यन्ताभाव.) किसी वस्तु का बिल्कुल न होना । सत्ता की नितान्त शून्यता ।—गत (वि०) सदैव के लिये गया हुआ । जो लौटकर न आवे ।—गामिन् (वि०) बहुत चलने फिरने वाला । बहुत तेज़ चलने वाला ।—वासिन् (पु०) वह जो सदा अपने शिक्षक के साथ छात्रावस्था में रहे ।—संयोगः (पु०) अति सामीप्य । अविच्छिन्नता । अविच्छेद ।

अत्यन्तिक (वि०) १ बहुत या बहुत तेज़ चलने वाला । २ बहुत समीप । ३ दूर । दूर का ।

अत्यन्तिकम् (न०) अति सामीप्य । बिल्कुल मिला हुआ । पड़ोस ।

अत्यल्तीन (वि०) बहुत अधिक चलने फिरने वाला बड़ी तेज़ी से चलने वाला ।

अत्ययः (पु०) १ बीत जाना । निकल जाना । २ अन्त । उपसंहार । समाप्ति । अनुपस्थिति । अदर्शन । लोप । तिरोधान् । ३ मृत्यु । नाश । ४ ख़तरा । जोखों । बुराई । ५ दुःख । ६ अपराध । दोष । अतिक्रमण । ७ आक्रमण ।

अत्ययित (वि०) १ बढ़ा हुआ । आगे निकला हुआ । २, उल्लङ्घन किया हुआ । अत्याचार किया हुआ ।

अत्ययिन् (वि०) बढ़ा हुआ । आगे निकला हुआ ।

अत्यर्थ (वि०) अत्यधिक । बहुत ज्यादा ।

अत्यर्थम् (क्रि० वि०) बहुत अधिकता से । अतिशयता से ।

अत्यन्ह (वि०) स्थितिकाल में एक दिन से अधिक ।

अत्याकारः (पु०) तिरस्कार । अभिशाप । भर्त्सना । धिक्कार । २ बड़े डील डौल वाला शरीर ।

अत्याचारः (पु०) १ अन्याय । विरुद्धाचार । दुराचार । आचार का अतिक्रमण । कोई ऐसा कार्य जो प्रथा से समर्थित न हो । २ उपद्रव । दुःखद काम । अधार्मिक कृत्य ।

अत्यादित्य (वि०) सूर्य की चमक को अपनी चमक से दबा देने वाला ।

अत्यानन्दा (स्त्री०) स्त्रीसहवास सम्बन्धी आनन्दों के प्रति अस्वस्थ अनास्था ।

अत्यायः (पु०) १ अतिक्रमण । उल्लङ्घन । २ आधिक्य । ज़्यादती ।

अत्यारूढ (वि०) बहुत अधिक बढ़ा हुआ ।

अत्यारूढम् (न०)—अत्यारूढिः (स्त्री०) अत्युच्चपद । अत्यधिक उन्नति या उत्कर्ष ।

अत्याश्रमः (पु०) १ संन्यासाश्रम । (२) संन्यासी । २ परमहंस । ब्रह्मचर्यादि आश्रमधर्मों को पालन करने वाला ।

अत्याहितं (न०) १ बड़ी भारी विपत्ति । ख़तरा । महाविपद । दुर्घटना । २ दुस्साहस या जोखों का काम ।

अत्युक्तिः (स्त्री०) बहुत बढा कर कहा हुआ कथन । बढा चढा कर कहने की शैली । बढावा । मुबालिग़ा ।

अत्युपध (वि०) विश्वस्त । परीक्षित ।

अत्यूहः (पु०) १ गम्भीर विचार या ध्यान । ठीक अथवा सच्चा तर्कवितर्क । २ जलकुक्कुट । एक प्रकार का जलपक्षी । कालकण्ठ ।

अत्र अधिकरणार्थक अव्यय । यहाँ । इसमें ।—अन्तरे (क्रि० वि०) इस बीच में । इस अर्से में । —भवत् (पु०)—भवान् । श्लाघ्य । पूज्य । प्रशंसा करने योग्य । अंगरेज़ी के Your honour या His Honour के समान । इसी प्रकार Your Ladyship or Her Ladyship के लिये "अत्रभवती" का व्यवहार होता है । यथा ।

(१) 'अत्रभवान् प्रकृतिमापन्नः'

—शकुन्तला

(२) "इदमेवनादेव परिश्रान्तामत्रभवतीं लक्षये ।

—शकुन्तला ।

अत्रत्य (वि०) १ यहाँ सम्बन्धी । इस स्थल से । २ यहाँ उत्पन्न हुआ । यहाँ प्राप्त । इस स्थान का । स्थानीय ।

अत्रप (वि०) निर्लज्ज । दुःशील । प्रगल्भ । उद्धत ।

अत्रिः (पु०) एक ऋषि का नाम ।—जः,—जातः दृग्जः,—नेत्रप्रसूतः,—प्रभवः,—भवः (पु०) चन्द्रमा ।

अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिवद्यौः ।"

रघुवंश सर्ग २ श्लोः ७५

अथ (अव्यया०) मङ्गल । आरम्भ । अधिकार । २ तदनन्तर । पीछे से । ३ यदि । कल्पना करिये । यदि अब । ऐसी दशा में । किन्तु यदि । ४ और । ऐसा भी । इसी प्रकार । जिस प्रकार । ५ इसका प्रयोग किसी विषय की जिज्ञासा करने में तथा कोई प्रश्न आरम्भ करने में होता है । ६ सम्पूर्णता । नितान्तता । ७ सन्देह । संशय । यथा "शब्दो नित्योऽथानित्यः । "—अपि, अपरञ्च । किञ्च । अपिच । पुनः ।—किं, और क्या ? हाँ । ठीक यही । ठीक ऐसा हो । निस्सन्देह ।—च अपिच । किञ्च । इसी प्रकार । ऐसे ही ।—वा १ या । २ वरं । अधिकतर । या क्यों । या कदाचित् । प्रथम कथन का संशोधन करते हुए ।

अथर्वन् (पु०) १ यज्ञकर्त्ता विशेष, जो अग्नि और सोम का पूजन करता है । २ ब्राह्मण । (बहुवचन में ।) अथर्वन ऋषि के सन्तान । अथर्ववेद की ऋचाएं ।

अथर्वा, अथर्व (पु० न०) अथर्ववेद ।—निधिः,—विद् (पु०) अथर्ववेद पढने का पात्र या अधिकारी । अथर्ववेद का ज्ञाता ।

अथर्वणिः (पु०) अथर्ववेद में निष्णात ब्राह्मण । अथवा अथर्ववेद में वर्णित कार्यों के कराने में निपुण ।

अथर्वाणं (न०) अथर्ववेद की अनुष्ठानपद्धति ।

अथवा (अव्यया०) पक्षान्तर बोधक अव्यय । या । वा । किंवा ।

अथो (अव्यया०) अथ ।

अद् (धा० प०) [अत्ति, अन्न-जग्ध] १ खाना । भक्षण करना । २ नष्ट करना ।

अद्-अद (वि०) भोजन करते हुए । भक्षण करते हुए ।

अदंष्ट्र (वि०) दन्तरहित ।

अदंष्ट्रः (पु०) सर्प जिसका विषदन्त उखाड़ लिया गया हो ।

अदक्षिण (वि०) १ बायाँ । २ वह कर्म जिसमें कर्म कराने वाले को दक्षिणा न मिले । विना दक्षिणा का । ३ सादा । निर्बल मन का । निर्बोध । मूढ़ । ४ सौष्ठवशून्य । नैपुण्यरहित । चातुर्यविवर्जित । भद्दा । ५ प्रतिकूल ।

अदण्ड्य (वि०) १ दण्ड देने के अयोग्य २ दण्ड से मुक्त । सज़ा से बरी ।

अदत् (वि०) दन्तरहित । विना दाँतों का ।

अदत्त (वि०) १ विना दिया हुआ । २ अन्याय पूर्वक या अनुचित रीति से दिया हुआ । ३ विवाह में न दिया हुआ ।

अदत्ता (स्त्री) अविवाहित लड़की।

अदत्तम् (न०) निष्फलदान ।—आदायिन् (पु०) निष्फल दान का ग्रहण करने वाला। वह पुरुष जो विना दी हुई वस्तु को उठा ले जाय। उठाईगीरा। चोर।—पूर्वा (स्त्री०) विना सम्बन्ध युक्त। जिसकी सगाई पहले न हुई हो।

" अदत्तपूर्वेत्याशंक्यते "

मालतीमाधव। अ० ४

अदंत / अदन्त } १ विना दाँतों वाला। २ जिनके अन्त मे अत् या अ हो। ३ जोंक।

अदंत्य / अदन्त्य } (वि०) १ दाँत सम्बन्धी नहीं। २ दाँतों के योग्य नहीं। दाँतों के लिये हानिकारक।

अदभ्र (वि०) कम नहीं। बहुत। अधिक। विपुल।

अदर्शनम् (न०) १ अदृष्ट। अनुपस्थित। २ (व्याकरण में) वर्णलोप।

अदस् (वि०) दूर की वस्तु। तत्। दूसरा। अन्य। ये अभी।

अदातृ (वि०) १ (लड़की जो) विवाह मे न दी गयी हो। २ अवदान्य। कजूस।

अदादि (वि०) जिसके आरम्भ मे अद् हो। व्याकरण की रूढि विशेष।

अदाय (वि०) जो भाग पाने का अधिकारी न हो।

अदायाद (वि०) १ जो उत्तराधिकारी होने का अधिकारी न हो। २ उत्तराधिकारी रहित। लावारिस।

अदायिक (वि०) / अदायिकी (स्त्री०) } १ वह वस्तु या सम्पति जिसके पाने के उत्तराधिकारी ने अपना स्वत्व प्रदर्शित न किया हो। लावारिसी। जिसका कोई वारिस न हो। २ जो पुश्तैनी न हो।

अदितिः (स्त्री०) १ पृथिवी। २ अदिति देवी, जो आदित्यों की माता है। पुराणों में देवताओं की उत्पत्ति अदिति ही से बतलायी गयी है। ३ वाणी। ४ गौ।

अदितिजः / अदितिनन्दनः } (पु०) देवता।

अदुर्ग (वि) १ जिसमें प्रवेश किया जा सके। २ दुर्गरहित।—विषय· (पु०) ऐसा देश जिसमें रक्षा के लिये दुर्ग न हो। अरक्षित देश या राज्य।

अदूर (वि०) जो बहुत दूर न हो। समीप (समय और स्थान सम्बन्धी)।

अदूरम् (पु०) सामीप्य। पड़ोस।

अदूरे, अदूरं, अदूरेण, अदूरतः अदूरात् (अव्यया०) (किसी स्थान या समय से) बहुत दूर नहीं।

अदृश् (वि०) दृष्टिहीन। नेत्रहीन। अंधा।

अदृष्ट (वि०) १ जो देखा न जाय। अनदेखा हुआ। जो पहिले न देखा गया हो। २ जो जाना न गया हो। ३ पूर्व से अनदेखा। न देखा या न सोचा हुआ। अज्ञात। अविचारित। ४ अस्वीकृत। आईन के विरुद्ध।

अदृष्टम् (न०) वह जो देख न पड़े। २ प्रारब्ध। भाग्य। नसीब। किस्मत। पाप या पुण्य जो दुःख या सुख का कारण है। ४ ऐसी विपत्ति या खतरा जिसका पहले कभी ध्यान भी न रहा हो। (जैसे अग्निकाण्ड, जलप्लावन)। —अर्थ (वि०) अध्यात्मविद्या सम्बन्धी। तत्वविद्या सम्बन्धी —कर्मन् (वि०) अक्रियात्मक। अनुभवशून्य।—फल (वि०) वह जिसका परिणाम दृष्टिगत न हो।—फलं (न०) अच्छे बुरे कर्मों का भावी फल या परिणाम।

अदृष्टिः (स्त्री०) बुरी दृष्टि। (वि०) अंधा।

अदेय (वि०) जो देने योग्य न हो या जो दिया न जा सके।

अदेयम् (न०) वह जिसका दिया जाना या देना ठीक नहीं या आवश्यक नहीं। इस श्रेणी की वस्तु में स्त्री, पुत्र आदि है।

अदेव (वि०) १ देव के समान नहीं। २ अपवित्र।

अदेवः (न०) वह जो देवता न हो। राक्षस। दैत्य। असुर।

अदेशः (पु०) १ अनुपयुक्त स्थान। २ कुदेश। वर्जित देश।—कालः (पु०) कुदेश और कुसमय।—स्थ (वि०) कुठौर का।

अदोष (वि०) १ निर्दोष। दोषरहित। त्रुटिरहित। निरपराध। २ रचना सम्बन्धी दोषों से वर्जित। (रचना के दोष जैसे अश्लीलता; ग्राम्यता आदि।)

अदोहः (पु०) १ वह समय जिसमें गौ का दुहना सम्भव नहीं। २ न दुहना।

अद्धा (अव्यया०) सचमुच। बेशक। निस्सन्देह। दरहकीकत। २ प्रत्यक्ष रूप से। स्पष्टतया।

अद्भुत (वि०) १ विलक्षण। विचित्र। आश्चर्यजनक। विस्मयकारक। अनोखा। अजीब। अनूठा। अपूर्व। अलौकिक। २ काव्य के नौ रसों में से एक।—सारः (पु०) अद्भुत राल। सर्जरस। यक्षधूप।—स्वनः (पु०) १ आश्चर्यशब्द। २ महादेव का नाम।

अद्मनिः (पु०) आग। अग्नि। आँच।

अद्मर (वि०) बहुत खाने वाला। भक्षणशील।

अद्य (वि०) खाने योग्य।

अद्यम् (न०) भोज्यपदार्थ। खाने योग्य कोई वस्तु। (अव्यया०) आज। आज का दिन। वर्तमान दिवस।—अपि (=अद्यापि) आज भी। आज तक। अब भी। अब तक नहीं।—अवधि (=अद्यावधि) १ आज से। आज तक।—पूर्व (न०) आज के पहिले। इससे पूर्व। आज से आगे।—श्वीना (वि०) वह गर्भिणी स्त्री जो एक ही दो दिन में बच्चा जनने वाली हो। आसन्नप्रसवा।

अद्यतन (वि०) १ आज सम्बन्धी। आज तक की। २ आधुनिक।

अद्यतनी (स्त्री०) भूतकाल का परियायवाचक शब्द।

अद्यतनीय, अद्यतन १ आज का। २ आधुनिक।

अद्रव्यं (न०) १ वह वस्तु जो किसी भी काम की न हो। निकम्मी वस्तु। २ कुशिष्य। कुपात्र।

अद्रिः (पु०) १ पर्वत। पहाड़। २ पत्थर। ३ वज्र। कुलिश। ४ वृक्ष। ५ सूर्य। ६ बादलों की घटा। बादल। ७ मापविशेष। ८ सात की संख्या।—ईशः,—पतिः,—नाथः (पु०) १ पहाड़ों का राजा। हिमालय। २ कैलासपति महादेव।—कीला (स्त्री०) पृथिवी।—कन्या,—तनया,—सुता (स्त्री०) पार्वती।—जं (न०) गेरू मिट्टी।—द्विप,—भिद् (पु०) पर्वत-शत्रु या पर्वत को विदीर्ण करने वाला। यह इन्द्र की उपाधि है।—द्रोणि,—द्रोणी (स्त्री०) १ पहाड़ की घाटी। २ नदी जो पहाड़ से निकलती है।—पति,—राजः (पु०) पहाड़ों का स्वामी। हिमालय।—शय्यः (पु०) शिव।—शृङ्गम् (न०)—सानु पर्वत का शिखर। पहाड़ की चोटी।—सारः (पु०) पर्वत का सारांश। लोहा।

अद्रोहः (पु०) विद्वेषशून्यता। विनम्रता।

अद्वय (वि०) १ दो नहीं। २ बेजोड़। अद्वितीय एकमात्र।

अद्वयः (पु०) बुद्धदेव का नाम।

अद्वयं (न०) अद्वितीयता। विजातीय और स्वगतभेद-शून्यता। सर्वोत्कृष्ट सत्य। ब्रह्म और विश्व की एकता। जीव और बाह्य पदार्थों की एकता।—वादिन् (न०, वेदान्ती। बौद्ध। अद्वैतवादी। बौद्धविशेष।

अद्वारं (न०) द्वार नहीं। कोई भी निकलने का रास्ता या द्वार, जो नियमित रूप से दरवाज़ा न हो।

अद्वितीय (वि०) बेजोड़। केवल। एकमात्र। जिसके समान दूसरा न हो।

अद्वितीयम् (न०) परमात्मा। ब्रह्म।

अद्वैत (वि०) द्वितीयशून्य। अपरिवर्तनशील। २ अनुपम। बेजोड़। एकाकी।

अद्वैतम् (न०) १ ऐक्य। (विशेष कर ब्रह्म या जीव का अथवा ब्रह्म और संसार का अथवा जीव और बाह्य पदार्थों का।) २ सर्वोत्कृष्ट या सर्वोपरि सत्य। ब्रह्म।—वादिन्। (वि०) वेदान्ती। ब्रह्म और जीव को एक मानने वाला।

अधम (वि०) क्षुद्र। नीच। दुष्टातिदुष्ट। बहुत बुरा। —अङ्गम् (न०) पैर। पाद।—अर्धं (न०) शरीर के नीचे का आधा अङ्ग। नाभि के नीचे का अंग।—ऋणः,—ऋणिकः (पु०) कर्ज़दार कढ़ुआ। (उत्तमर्णः का उलटा)—भृतः,—भृतकः (पु०) कुली। मजदूर। साईस।

अधमः (पु०) जार।

अधमा (स्त्री०) दुष्टा मलकिन। दुष्टा स्वामिनी।

अधर (वि०) १ नीचे का। निचला। तले का। २ नीच। अधम। दुष्ट। गुण में कम। अश्रेष्ठ। ३ परास्त किया हुआ। पराभूत। चुप किया हुआ। —उत्तर (वि०) १ नीचला और ऊपर का। अच्छा बुरा। २ शीघ्र या देर से। ३ उलटा पलटा। अंडबंड। अस्तव्यस्त। ४ समीप दूर। —ओष्ठः (पु०) नीचे का होंठ।—कण्ठः (पु०) गरदन के नीचे का भाग।—पानं (न०) चूमना। चुम्बन करना।—मधु-अमृतं (न०) ओठों का अमृत।—स्वास्तिकं। (न०) अधोविन्दु।

अधरम् (न०) १ (शरीर के) नीचे का भाग। निचला हिस्सा। २ भाषण। व्याख्यान।

अधरस्मात्, अधरतः, अधरस्तात्, अधरात्, अधरतात्, अधरेण } (अव्यया०) नीचे की ओर। निचले भाग में। नीचे के लोक में।

अधरीकृ (धा० उ०) आगे निकल जाना। हरा देना। पराजित कर देना।

अधरीण (वि०) १ निचला। २ निन्दित। बदनाम। अपकीर्तित। भर्त्सित।

अधरेद्युः (अव्यया०) किसी पूर्व दिवस। २ परसों (बीता हुआ)

अधर्मः (पु०) १ पापकर्म। अन्याय। दुष्टता। अन्याय से। अन्यायपूर्वक। २ अन्याय्य कर्म। निषिद्ध कर्म। पाप। धर्म और अधर्म। न्याय में वर्णित २४ गुणों में से दो और इनका सम्बन्ध आत्मा से है। सुख और दुःख के ये ही कारण हैं। ३ एक प्रजापति का नाम। सूर्य के एक अनुचर का नाम।

अधर्मम् (न०) उपाधिशून्यता। ब्रह्म की उपाधि विशेष।—आत्मन्,—चारिन् (वि०) दुष्ट। पापी।

अधर्मा (स्त्री०) मूर्तिमान दुष्टता।

अधवा (स्त्री०) राँड़। बेवा। जिसका पति मर गया हो।

अधस्, अधः (अव्यया०) नीचे। नीचे के लोक में। नरक में।—अंशुकम् (न०) निचला कपड़ा यथा बनियाइन। नीमास्तीन आदि। २ धोती। कटिवस्त्र।—अक्षजः (पु०) विष्णु का नाम।—करः(पु०) हाथ का निचला हिस्सा।—करणम् (न०) पराभव। अध:पात।—खननम् (न०) गाड़ना। तोपना।—गतिः (स्त्री०)—गमनम्, (न०)—पातः (पु०) नीचे जाना। नीचे गिरना। नीचे उतरना। अवनति। ह्रास।—गन्तृ (पु०) चूहा। मूसा।—चरः (पु०) चोर।—जिह्विका (स्त्री०) अलि-प्रति-जिह्वा। सुधाश्रवा। तालु-जिह्वा। घण्टिका। छोटी जीभ जो तालु के नीचे रहती है।—दिश (स्त्री०) अधोविन्दु। दक्षिण दिशा।—दृष्टिः (स्त्री०) नीचे को निगाह।—प्रस्तरः (पु०) वह चटाई जिस पर वे लोग जो मातमपुर्सी करने आते हैं, बिठाये जाते हैं।—भागः (पु०) नीचे का भाग।—भुवनं (न०) —लोकः (पु०) पृथिवी के नीचे के लोक पातालादि।—मुख—वदन (वि०) नीचे की ओर मुख किये हुए।—लम्बः (पु०) सीसे का गोला। लम्बितरेखा। सीधी खड़ी रेखा।—वायुः (पु०) अपानवायु। उदराध्मान। पेट का फूलना।—स्वस्तिकं (न०) अधोविन्दु।

अधस्तन (वि०) [स्त्री०—अधस्तनी] जो नीचे हो। निचला।

अधस्तात् (क्रि० वि०) (अधि०) नीचे की ओर। अंदर। भीतर।

अधामार्गवः (पु०) अपामार्ग।

अधारणक (वि०) जो लाभदायक न हो।

अधि (अव्यया०) १ यह क्रियाओं के साथ उपसर्ग की तरह आता है। ऊपर। ऊर्ध्व। अतीत। अधिक। २ प्रधान। मुख्य। विशेष।

अधिक (वि०) १ बहुत। ज़्यादा। विशेष। २ अतिरिक्त। सिवा। फालतू। बचा हुआ। शेष।

अधिकम् (न०) अलङ्कार विशेष, जिसमें आधेय को आधार से अधिक वर्णन करते हैं।—अङ्ग,—अङ्गी (वि०) नियत संख्या से अधिक अंगों वाला।—अर्थ (=अधिकार्थ) (वि०) अत्युक्त।—ऋद्धि (वि०) बहुल। प्रचुर। शुभ। सम्पन्न। सौभाग्यशाली। ऋद्धमान्।—तिथि (स्त्री०)—दिनं (न०)—दिवसः (पु०) बढ़ी हुई तिथि।

अधिकरणम् (न०) १ आधार। आसरा। सहारा। २ सम्बन्ध। ३ (व्याकरण में) कर्त्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार। व्याकरण विषयक सम्बन्ध। ४ (दर्शन में) आधार विषय। अधिष्ठान। मीमांसा और वेदान्त के अनुसार वह प्रकरण जिसमें किसी सिद्धान्त विशेष की विवेचना की जाय और उसमें निम्न पाँच अवयव हों—१ विषय, २ संशय, ३ पूर्वपक्ष, ४ उत्तरपक्ष, ५ निर्णय। यथाः—

"विषयो विषयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरं।
निर्णयश्चेति सिद्धान्तः शास्त्रेऽधिकरणं स्मृतम्॥"

—भोजकः (पु०) जज। निर्णायक। न्यायकर्त्ता।—मण्डपः (पु०) अदालत। न्यायालय।—सिद्धान्तः (पु०) सिद्धान्त विशेष जिसके सिद्ध होने से अन्यसिद्धान्त भी स्वयं सिद्ध हो जायँ।

अधिकरणिकः (पु०) न्यायाधीश। न्यायकर्त्ता। राज्यन्यवर्ग। पर्यवेक्षक। वह जिसको देखरेख और प्रबन्ध का काम सौंपा गया हो।

अधिकर्मिकः (पु०) किसी बाज़ार का दरोगा, जिसका काम व्यापारियों से कर उगाहने का हो।

अधिकाम (वि०) उग्र आकांक्षाओं वाला। अतिप्रचण्ड। क्रोधाविष्ट। उत्तेजित। कामासक्त। कामोद्दीपिजनक।

अधिकारः (पु०) १ कार्यभार। आधिपत्य। प्रभुत्व। अधिकार। २ अधिकारयुक्तपद। ३ शासन। ४ प्रकरण। शीर्षक। ५ क्षमता। ६ योग्यता। परिचय। ज्ञान।—विधि (स्त्री०) मीमांसा की वह विधि या आज्ञा जिससे यह बोध हो कि, किस फल के लिये कौन सा यज्ञानुष्ठान करना चाहिये।

अधिकारिन्, **अधिकारवत्** (वि०) अधिकारयुक्त। अधिकार प्राप्त। २ पाने का हक़दार। प्राप्त करने का अधिकारी। ३ प्राप्त। ४ योग्य। योग्यता या क्षमता रखने वाला। क़ाबिल। उपयुक्त पात्र।

अधिकारी, अधिकारवान् (पु०) १ अफ़सर। पदाधिकारी। दरोगा। २ स्वामी। मालिक। स्वत्वाधिकारी।

अधिकृत (वि०) अधिकार में आया हुआ। हाथ में आया हुआ। उपलब्ध।

अधिकृतः (पु०) अधिकारी। अध्यक्ष।

अधिकृतिः (स्त्री०) स्वत्व। हक़। मालकाना।

अधिकृत्य (अव्यया०) सम्बन्ध से। विषयक।

अधिक्रमः (पु०), **अधिक्रमणं** (न०) चढ़ाई। आरोहण। चढ़ाव।

अधिक्षेपः (पु०) १ कुवाच्य। गाली। आक्षेप। अपमान। व्यंग्य। २ बरखास्तगी। विसर्जन।

अधिगत (भू० का० कृ०) १ प्राप्त। पाया हुआ। २ जाना हुआ। अवगत। ज्ञात। पढ़ा हुआ।

अधिगमः (पु०) **अधिगमनम्** (न०) प्राप्ति। पाना। ज्ञान। अध्ययन। ३ लाभ। सम्पत्ति की प्राप्ति। व्यापारिक सारिणी। ४ स्वीकृति। ५ सङ्गम। संसर्ग। आलाप।

अधिगुण (वि०) योग्य। उत्कृष्टगुण विशिष्ट। गुणवान्। (कमान पर) भली भाँति रोदा चढ़ाया हुआ। भलीभाँति ग्रन्थित।

अधिचरणं (न०)किसी वस्तु के ऊपर टहलना या चलना।

अधिजननं (न०) उत्पत्ति।

अधिजिह्वः (पु०) १ सर्प।

अधिजिह्वा, **अधिजिह्विका** १ उपजिह्वा। २ जिह्वा पर एक प्रकार की सूजन।

अधिज्य (वि०) धनुष का रोदा ताने हुए।

अधित्यका (स्त्री०) पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ऊँचा पथरीला मैदान। उसका उल्टा " उपत्यका " है।

अधिदन्तः (पु०) एक दाँत के ऊपर दूसरे दाँत की उत्पत्ति।

अधिदेवः (पु०) } इष्टदेव। कुलदेव। पदार्थों के
अधिदेवता (स्त्री) } अधिष्ठाता देवता। रक्षक देवता।

अधिदैवं } (न०) किसी वस्तु का अधिष्ठाता
अधिदैवतम् } देवता।

अधिनाथः (पु०) परब्रह्म। परमात्मा। सर्वेश्वर।

अधिनायः (पु०) गन्ध। महक।

अधिपः } (पु०) मालिक। स्वामी। राजा।
अधिपतिः } प्रभु। शासक। प्रधान।

अधिपत्नी (स्त्री०) [वैदिक] स्वामिनी। शासन करने वाली।

अधिपुरुषः } (पु०) परमात्मा। परब्रह्म।
अधिपूरुषः }

अधिप्रज (वि०) बहुसन्तति वाला।

अधिभूतं (न०) परमात्मा। परब्रह्म। परब्रह्म की सर्वव्यापकता।

अधिमात्र (वि०) नाप से अधिक। अत्यधिक। अपरमित।

अधियज्ञः (पु०) प्रधान यज्ञ। परमेश्वर।

"अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।"

गीता।

अधिरथ (वि०) रथ पर सवार।

अधिरथः (पु०) १ सारथी। रथवान्। रथ हाँकने वाला। २ कर्ण के पिता का नाम।

अधिराज } (पु०) चक्रवर्ती। बादशाह। सम्राट्।
अधिराजः }

अधिराज्यं } (न०) १ साम्राज्य। चक्रवर्ती राज्य।
अधिराष्ट्रं } २ राष्ट्र। सम्राट् का ऐश्वर्य।
३ एक देश का नाम।

अधिरूढ (भू० का० कृ०) १ सवार। चढ़ा हुआ। २ बढ़ा हुआ। उन्नत।

अधिरोहः (पु०) १ हाथी का सवार। २ चढ़ाव।

अधिरोहणं (न०) चढ़ना। सवार होना। ऊपर उठना।

अधिरोहिणी (स्त्री०) नसैनी। सीढ़ी। ज़ीना।

अधिरोहिन् (वि०) चढ़ा हुआ। सवार। ऊपर उठा हुआ।

अधिलोकं (अव्यया०) १ सांसारिक। २ संसार में।

अधिवचनम् (न०) १ किसी के पक्ष में बोलना। वकालत। २ नाम। उपाधि।

अधिवासः (पु०) १ निवासस्थल। रहने की जगह। (२) हठ पूर्वक तकाज़ा। ३ किसी यज्ञानुष्ठान के आरम्भ में किसी प्रतिमा की प्रतिष्ठाक्रिया विशेष। ४ परिच्छदविशेष। चुगा। अंगा। ५ अतर फुलेल या उबटन लगाना। महासुगन्ध। खुशबू। ६ मनु के अनुसार स्त्रियों के ६ दोषों में से एक। ७ दूसरे के घर जाकर रहना। परगृहवास। ८ अधिक ठहरना। अधिक देर तक रहना।

अधिवासनम् (न०) १ सुगन्धित पदार्थ से सुवासित करना। सुगंधपदार्थ। २ मूर्ति की आरम्भिक प्रतिष्ठा। देवता की किसी मूर्ति में उसकी प्रतिष्ठा करना।

अधिविन्ना (स्त्री०) पतिपरित्यक्ता स्त्री। वह स्त्री जिसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया हो।

अधिवेत्तृ (पु०) पति जिसने अपनी पहिली पत्नी छोड़ दी हो।

अधिवेदः (पु०) एक अतिरिक्त पत्नी करना।

अधिवेदनं (न०) एक विवाहित स्त्री के रहते दूसरी स्त्री के साथ विवाह करना।

अधिश्रयः (पु०) १ आधार। पात्र। २ उबालना। गर्माना (आग पर रख कर)।

अधिश्रयणं } (न०) उबालना। गर्माना।
अधिश्रपणं }

अधिश्रयणी } तंदूर। अग्निकुण्ड। चूल्हा। अंगीठी।
अधिश्रपणी }

अधिश्री (वि०) अत्यधिक धनवान्। सर्वोत्कृष्ट। सर्वोपरि प्रभु या स्वामी।

अधिष्ठानम् (न०) १ समीप खड़े होना। समीप जाना। २ स्थिति। आधार। बैठक। स्थान। नगर। कसबा। ३ आवासस्थान। रहाइस। ४ अधिकार। राजसत्ता। सत्ता। ५ हुकूमत। राज्याधिकार। ६

पहिया। चक्र। ७ पूर्वदृष्टान्त। नज़ीर। निर्दिष्ट नियम। ८ आशीर्वाद। मङ्गलकामना।

अधिष्ठित (भू० का० कृ०) १ ठहरा हुआ। स्थापित। बसा हुआ। २ नियुक्त। निर्वाचित। ३ रक्षित। देखरेख में। अधिकार में। प्रभावान्वित। आतङ्कित।

अधीकारः देखो "अधिकार।"
' स्वागत स्वानधीकारानवलम्ब्य।"
—कुमारसम्भव।

अधीतिन् (वि०) सुपठित। भलीभाँति पढ़ा हुआ।

अधीतिः (स्त्री०) १ अध्ययन। पाठ। २ स्मृति। स्मरणशक्ति। याददाश्त।

अधीन (वि०) आश्रित। मातहत। वशीभूत।

अधीयानः (वि०) छात्र। विद्यार्थी। छात्र जो वेद पढ़ता हो।

अधीर (वि०) १ भीरु। डरपोंक। कायर। २ घबड़ाया हुआ। उत्तेजित। उद्विग्न। व्याकुल। विह्वल। ३ चंचल। अस्थिर। बेसब्र। उतावला।

अधीरा (स्त्री०) १ बिजली। विद्युत। २ कलहप्रिया स्त्री।

अधीवासः (पु०) चुगा। चोग़ा।

अधीशः (पु०) १ स्वामी। मालिक। सरदार। राजा।

अधीश्वरः (पु०) १ मालिक। स्वामी। (२) भूपति। राजा। अधिपति।

अधीष्ट (वि०) अवैतनिक। सत्कारपूर्वक किसी व्यापार में नियुक्त। सविनय प्रार्थित।

अधीष्टः (पु०) अवैतनिक पद या कार्य।

अधुना (अव्यया०) सम्प्रति। इस समय। अब। आजकल।

अधुनातन (वि०) [स्त्री०—अधुनातनी] आधुनिक। अर्वाचीन।

अधूमकः (पु०) जलती हुई आग जिसमें धुआँ न हो।

अधृतिः (स्त्री०) १ धृति का अभाव। अधीरता। २ असुख ३ चंचलता। दृढ़ता का अभाव। घबड़ाहट। आतुरता।

अधृष्य (वि०) १ दुर्जेय। जिसके समीप कोई न पहुँच सके। २ शर्मीला। ३ अभिमानी। गर्वीला।

अधोऽक्ष, अधोऽशुक } देखो "अधस्"

अधोऽक्षजः (पु०) १ परब्रह्म। २ विष्णु। ज्ञानी। जीवन्मुक्त।

अध्यक्ष (वि०) १ इन्द्रियगोचर। २ व्यापक। विस्तृत।

अध्यक्षः (पु०) १ देखरेख करने वाला। किसी विषय का अधिकारी। पर्यवेक्षक। व्यवस्थापक। २ क्षीरिका वृक्ष।

अध्यक्षरं (न०) ओङ्कार।

अध्यग्नि (अव्यया०) विवाह के समय हवन करने के अग्नि के समीप या ऊपर। (न०) स्त्रीधन। वह धन जो वर को अग्नि की साक्षी में वधू के माता पिता देते हैं।

अध्यधि (अव्यया०) ऊपर। ऊंचे पर।

अध्यधिक्षेपः (पु०) बुरी बुरी गालियाँ। अत्यन्त कुत्सित कुवाच्य। उग्र भर्त्सना।

अध्यधीन (वि०) नितान्त अधीन। निपट वशवर्ती। बिका हुआ दास। जन्म का दास।

अध्ययः (पु०) विद्या। अध्ययन। स्मरणशक्ति।

अध्ययनम् (न०) १ पढ़ना (विशेष कर वेदों का) अर्थ सहित अक्षरों को ग्रहण करना। २ ब्राह्मणों के शास्त्र विहित षट् कर्म्मों में से एक।

अध्यर्ध (वि०) वह जिसके पास अतिरिक्त आधा हो।

अध्यवसानम् (न०) उद्योग। निश्चय। (प्रकृत और अप्रकृत की) इस प्रकार की पहचान जिससे यह बोध हो जाय कि एक दूसरे में सम्पूर्णतः लीन हो गया।

अध्यवसायः (पु०) १ उद्योग। २ दृढ़ विचार। सङ्कल्प। २ बुद्धि सम्बन्धी व्यापार। ३ किसी पदार्थ का ज्ञान होने के समय रजोगुण और तमोगुण की न्यूनता होने पर जो सत्वगुण का प्रादुर्भाव होता है उसे अध्यवसाय कहते हैं। ४

लगातार उद्योग । अविश्रान्त परिश्रम । ४ उत्साह । निश्चय । प्रतीति ।

अध्यवसायिन् (न०) १ लगातार उद्योग करनेवाला । परिश्रमी । उद्योगी । उद्यमी । २ उत्साही ।

अध्यशनं (न०) अधिक भोजन । एक बार भर पेट खा लेने पर, उसके न पचते पचते पुनः खा लेना । अजीर्ण । अनपच ।

अध्यात्म (वि०) आत्मा सम्बन्धी ।—ज्ञानम् (न०) आत्मा अनात्मा का विवेक ।—विद्या (स्त्री०) अध्यात्मतत्व । जीव और ब्रह्म का स्वरूप बतलाने वाली विद्या ।

अध्यात्मं (न०) आत्मा । देह । मन । "स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते" गीता के इस वाक्यानुसार स्वभाव को अध्यात्म कहते हैं । श्रीधर के मतानुसार प्रत्येक शरीर में परब्रह्म की जो सत्ता या अंश वर्तमान रहता है, वही अध्यात्म कहलाता है ।

अध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—अध्यात्मकी] अध्यात्म सम्बन्धी ।

अध्यापकः (पु०) शिक्षक । गुरु । उपाध्याय । पढ़ाने वाला । (विशेषकर वेदों का) विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यापक के दो भेद हैं । एक आचार्य जो द्विज बालक का उपनयन संस्कार कर उसे वेद पढ़ने का अधिकारी बनाता है और दूसरा उपाध्याय जो अपने छात्र को वृत्त्यर्थ कोई विद्या पढ़ा देता है ।

अध्यापनम् (न०) पढ़ाना । शिक्षा देना । ब्राह्मणों के षट् कर्त्तव्यों में से एक । स्मृतिकारों के मतानुसार अध्यापन तीन प्रकार का है । १ धर्मार्थ पढ़ाना । २ शुल्क लेकर पढ़ाना । ३ सेवा के बदले पढ़ाना ।

अध्यापयितृ (पु०) शिक्षक । पढ़ाने वाला ।

अध्यायः (पु०) १ पाठ । अध्ययन (विशेषतः वेदों का) । २ अध्ययन का उपयुक्त काल । पाठ । उपदेश । ३ प्रकरण । किसी ग्रन्थ का एक बड़ा भाग । संस्कृतकोशकारों ने अध्याय के पर्यायवाची ये शब्द बतलाये हैंः—

सर्गो वर्गः परिच्छेदोद्घाताध्यायाङ्कसंग्रहाः ।
उच्छ्वासः परिवर्तश्च पटलः काण्डमाननम् ॥
स्थानं प्रकरणं चैव पर्वोल्लासाह्निकानि च ।
स्कन्धांशौ तु पुराणादौ प्रायशः परिकीर्तितौ ॥

अध्यायिन् (वि०) पढ़ने वाला । अध्ययनशील ।

अध्यारूढ (वि०) १ चढ़ा हुआ । सवार । २ ऊपर उठा हुआ । उन्नत पर पहुँचा हुआ । ३ ऊँचा । श्रेष्ठ । ४ नीचा । अनुत्तम ।

अध्यारोपः (पु०) १ उठाना । ऊँचा करना । २ (वेदान्त मतानुसार) भ्रमवश दूसरी वस्तु को दूसरी वस्तु समझना यथा रस्सी को साँप समझना । ३ मिथ्याज्ञान ।

अध्यारोपणं (न०) १ उठाना । २ बोना (बीजों का) ।

अध्यावापः (पु०) (बीजों को) बोने या बोने के लिये छितराने की क्रिया । २ खेत जिसमें बीज बोये जाँय ।

अध्यावाहनिकम् (न०) छः प्रकार के उन स्त्रीधनों में से एक जिसे स्त्री ससुराल जाते समय अपने माता पिता से पाती है ।

'यत् पुनर्लभते नारी नीयमाना तु पैतृकात् । (गृहात्)
अध्यावाहनिकम् नाम स्त्रीधन परिकीर्तितम्"

अध्यासः (पु०) } १ किसी पर बैठना । (किसी स्थान
अध्यासनम् न०) } को) रोकना या छेकना । अध्यक्ष का काम करना । २ बैठकी । स्थान ।

अध्यासः (पु०) देखो अध्यारोप । मिथ्याज्ञान । उपाङ्ग । अनुषङ्ग ।

अध्याहारः (पु०) } १ किसी वाक्य को पूरा करने
अध्याहरणम् (न०) } के लिये उसमें छूटी हुई बात को मिला कर उस वाक्य को पूरा करना । वाक्य को पूरा करने के लिये उसमें ऊपर से कोई शब्द मिलाना या जोड़ना । २ तर्क वितर्क । ऊहापोह । विचार । बहस । विचिकित्सा ।

अध्युष्ट्रः (पु०) गाड़ी जिसमें ऊँट जुते हों । चौपहिया ।

अध्यूढ (वि०) ऊपर को उठा हुआ । उमड़ा हुआ ।

अध्यूढः (पु०) शिव ।

अध्यूढा (स्त्री०) " अधिविन्ना " देखो।

अध्येषणम् (न०) प्रार्थना। कोई कार्य्य कराने की प्रार्थना।

अध्येषणा (स्त्री०) प्रार्थना। याचना।

अध्रुव (वि०) १ सन्दिग्ध। संशयपूर्ण। २ अस्थायी। विनश्वर। अदृढ अलग किये जाने वाला

अध्रुवं (न०) अनिश्चयता।

अध्वन् (पु०) १ मार्ग। रास्ता। सड़क। नक्षत्रों के घूमने का मार्ग। २ अन्तर। बीच। फासला। ३ समय। काल। मूर्तिमान काल। ४ आकाश। वातावरण। ५ विधि। उपाय। प्रक्रिया। ६ आक्रमण।

अध्वग: (पु०) १ पथिक। राहगीर। मुसाफिर। २ ऊँट। ३ खच्चर। ४ सूर्य।

अध्वगा (स्त्री०) गङ्गा।—पति (पु०) सूर्य।—रथः (पु०) १ पालकी गाड़ी। २ हल्कारा।

अध्वनीन } (वि०) यात्रा करने योग्य।
अध्वन्य }

अध्वनीनः } (पु०) तेज़ चलने वाला यात्री।
अध्वन्यः }

अध्वरः (पु०) यज्ञ। एक धार्मिक कृत्य विशेष। सोमयाग।

अध्वरम् (न०) आकाश या अन्तरिक्ष।

अध्वरमीमांसा (स्त्री०) जैमिनि प्रणीत पूर्वमीमांसा का नाम।

अध्वर्युः (पु०) १ यज्ञ कराने वाला। ऋत्विक। यजुर्वेद का जानने वाला। पुरोहित। २ यजुर्वेद। —वेदः (पु०) यजुर्वेद।

अध्वाति देखो "अध्वगः"।

अध्वान्तम् (न०) प्रदोषकाल। गोधूलिबेला। उषा। काकज्योत्स्ना। तिमिर। अन्धकार।

अन् (धातु० पर०) [अनिति, अनित] स्वांस लेना। प्राण धारण करना। हिलना डोलना। जीना।

अनः (पु०) स्वांस।

अनंश (वि०) पैतृक सम्पति में भाग न पाने वाला।

अनंशुमत्फला (स्त्री०) कदलीवृक्ष। केले का पेड़।

अनकदुन्दुभिः (पु०) श्री कृष्ण के पिता वसुदेव की उपाधि।

अनकदुन्दुभी (स्त्री०) ढोल। नगाड़ा।

अनक्ष (वि०) नेत्रहीन। दृष्टिरहित। अंधा।

अनक्षर (वि०) १ गूंगा। २ अनपढ़। ३ उच्चारण करने के अयोग्य।

अनक्षरम् (न०) गाली। कुवाच्य। भर्त्सना। डाँट डपट।

अनग्निः (पु०) १ श्रौतस्मार्तकर्महीन। अग्निहोत्र रहित। २ अधार्मिक। अपवित्र। ३ वह जो अनपच रोग से पीड़ित हो। कब्ज़ियत रोग वाला। ४ अविवाहित। जिसका व्याह न हुआ हो।

अनघ (वि०) १ पापरहित। निर्दोष। २ त्रुटि रहित। सुन्दर। खूबसूरत। ३ सुरक्षित। अनचोटिल। जिसके चोट न लगी हो। ४ विशुद्ध। कलङ्क रहित।

अनघः (पु०) १ सफेद सरसों या राई। २ विष्णु का नाम। शिव का नाम।

अनंकुश } (वि०) १ जो दबाव में न रहे। उद्दण्ड। २ कविस्वातंत्र्य (Poetic License) का उपभोग करने वाला।
अनङ्कुश }

अनंग } (वि०) १ शरीररहित। अशरीरी। —क्रीडा(स्त्री०) प्रेमालापमयी क्रीडा। विहार। प्रेमी और प्रेयसी का पारस्परिक प्रेमालाप पूर्वक क्रीडन। —लेखः (पु०) प्रेमपत्र। —शत्रुः,—असुहृत् (पु०) शिवजी का नाम।
अनङ्ग }

अनंगः } (पु०) कामदेव।
अनङ्गः }

अनंगम् } (न०) १ आकाश। पवन। एक प्रकार का अति सूक्ष्म वायवीय पदार्थ। ईथर। २ मन।
अनङ्गम् }

अनंजन } (वि०) विना सुर्मा का।
अनञ्जन }

अनंजनम् } (न०) १ आकाश। व्योम। २ परब्रह्म। विष्णु या नारायण।
अनञ्जनम् }

अनडुह् (पु०) (अनड्वान्) १ बैल। सांड। २ वृषराशि।

अनडुही } (स्त्री०) गौ। गाय।
अनड्वाही }

अनति (अव्यया०) बहुत अधिक नहीं।

अनतिरेकः (पु०) अभेद।

अनतिविलम्बिता (स्त्री०) १ विलम्ब का अभाव। २ वक्ता का एक गुण। ३५ वाग्गुण हैं, उनमें से एक।

अनघः (पु०) सफेद सरसों।

अनद्यतन (वि०) व्याकरण में क्रिया का काल-विशेष-बोधक शब्द।

अनद्यतनः (पु०) आज का दिन नहीं।

अनधिक (वि०) १ अधिक या अत्यधिक नहीं। २ असीम। पूर्ण।

अनधीनः (पु०) बढ़ई जो रोज़नदारी पर काम न कर स्वतंत्र अपने लिये ही काम करे।

अनध्यक्ष (वि०) १ जो देख न पड़े। अगोचर। अदृष्ट। २ अध्यक्ष या नियन्ता वर्जित।

अनध्यायः (पु०) अध्ययन के लिये अनुपयुक्त समय या दिन। पढ़ने के लिये निषिद्ध काल या दिन। छुट्टी का दिन।

अननम् (न०) स्वांस लेना। प्राण धारण करना।

अननुभावुक (वि०) धारण करने के अयोग्य। न समझने लायक।

अनंत } (वि०) अन्तरहित। निस्सीम। सीमा रहित। कभी समाप्त न होने वाला।—तृतीया (स्त्री०) भाद्रपद शुक्ला तृतीया। मार्गशीर्ष शुक्ला तृतीया और वैशाख शुक्ला तृतीया।—दृष्टिः (पु०) इन्द्र या शिव का नाम।—देवः (पु०) १ शेषनाग। २ शेषशायी नारायण का नाम।—पार (वि०)। अन्तरहित चौड़ाई या औड़ाई। निस्सीम।—रूप १ (वि०) संख्यातीत आकार प्रकार का। २ विष्णु भगवान की उपाधि।— विजयः (पु०) युधिष्ठिर के शङ्ख का नाम।
अनन्त }

अनन्तः—(पु०) १ विष्णु का नाम। शेष जी का नाम। श्रीकृष्ण और उनके भाई का नाम। शिव का नाम। वासुकी नाग का नाम। २ बादल। ३ एक प्रकार का मसृण खनिज पदार्थ। अभ्रक। ४ अनन्ता—जो एक रेशम का डोरा होता है और जिसमें १४ गांठे लगा कर अनन्त चतुर्दशी के दिन दहिनी बाँह पर बाँधा जाता है।

अनन्तम् (न०) १ आकाश। व्योम। २ अनन्तकाल। ३ निस्तार। उद्धार। अव्याहति। पापमोचन। पापक्षमापन। ४ परब्रह्म।

अनंतर } (वि०) १ जिसके भीतर स्थान न हो। निस्सीम। २ दृढ़। घन। ३ जो बहुत दूर न हो। अति निकट का। मिला हुआ। सटा हुआ (जड़ा हुआ)—जः (पु०) या—जा (स्त्री०) क्षत्रिय या वैश्य माता के गर्भ तथा ब्राह्मण वा क्षत्रिय पिता के वीर्य से उत्पन्न। २ छोटा या बड़ा भाई या बहिन।
अनन्तर }

अनंतरम्, अनन्तरम् (न०) १ निरन्तरता। २ ब्रह्म।

अनंतरम्, अनन्तरम् (अव्यया०) पीछे। पश्चात्। बाद को।

अनंतरीय } (वि०) क्रम से एक के बाद दूसरा।
अनन्तरीय }

अनंतता } (स्त्री०) १ पृथिवी। २ एक की संख्या। ३ पार्वती का नाम। ४ परब्रह्म। ५ कई पौधों के नाम जैसे, दूर्वा, अनन्तमूल आदि।
अनन्तता }

अनन्य (वि०) १ अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला। एकनिष्ठ। एक ही में लीन। २ एकरूप। अमिल। ३ एकमात्र। अद्वितीय। ३ अविभक्त।—गतिः (स्त्री०) गत्यन्तर रहित।—चित्त,—चिन्त—चेतस,—मानस्,—मानस,—हृदय (वि०) एक ही ओर मन या ध्यान लगाने वाला।—जः, —जन्मन् (पु०) कामदेव। अनङ्ग।—पूर्वः (पु०) जिसकी दूसरी स्त्री न हो।—पूर्वा।—(स्त्री०) क्वारी। अविवाहिता। जिसका पति न हो।—भाज् (वि०) स्त्री जो अन्य किसी पुरुष में अनुराग न रखती हो।—विषय (पु०) वह विषय जिसका किसी से सम्बन्ध न हो या जिस पर किसी अन्य की सत्ता न हो।—वृत्ति (वि०) १ एक ही स्वभाव का। २ जिसके आजीविका का अन्य कोई द्वार न हो। ३ एकाग्रचित्त।—सामान्य,—साधारण (वि०) असाधारण। एक ही में जो अनुरागवान् हो।

एक ही से सम्बन्ध रखने वाला ।—सदृश (वि०)—सदृशी । (स्त्री०) वेजोड़ । अद्वितीय ।

अनन्वयः (पु०) १ अन्वयशून्य । सम्बन्ध रहित । २ अर्थालङ्कार विशेष जिसमें एक ही उपमान और एक ही उपमेय हो ।

अनप (वि०) जिसमें अधिक जल न हो ।

अनपकारणं (न०) | अनपकर्मन् (न०) | अनपक्रिया (स्त्री०) | १ अनुपकारी । अपकार न करने वाला । २ अमोचन । ३ अदा न करना ।

अनपकारः (पु०) बुराई नहीं । भलाई । हित ।—कारिन् (वि०) निर्दोष । अहित शून्य ।

अनपत्य (वि०) सन्तानहीन । सन्ततिवर्जित । जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो ।

अनपत्रप (वि०) निर्लज्ज । वेहया । वेशर्म ।

अनपभ्रंश (पु०) ठीक ठीक बना हुआ शब्द । शब्द जो विकृत रूप में न हो, अपने शुद्ध रूप में हो ।

अनपसर (वि०) जिसमें से निकलने का कोई मार्ग न हो । २ असमर्थित । अक्षम्य ।

अनपसरः (पु०) बल पूर्वक अधिकार करने वाला ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा करने वाला । वरजोरी दख़ल करने वाला ।

अनपाय (वि०) अनश्वर । अविनाशी ।

अनपायः (पु०) स्थायित्व । स्थितिशीलता । २ शिवजी का नाम ।

अनपायिन् (वि०) अविनाशी । दृढ़ । मज़बूत । स्थायी । क्षणभङ्गुर नहीं ।

अनपेक्ष | अनपेक्षिन् | (वि०) १ अपेक्षावर्जित । निःस्पृह । २ असावधान ३ स्वतंत्र । जिसे किसी अन्य व्यक्त की परवाह न हो । जिसे किसी वस्तु की ज़रूरत न हो । ४ निर्पेक्ष । पक्षपात रहित । ५ असङ्गत ।

अनपेक्षम् (क्रि० वि०) स्वतंत्रता से । मनमुखत्यारी । यथेच्छ । अनवधानता से ।

अनपेक्षा (स्त्री०) निःस्पृहता । उपेक्षा ।

अनपेत (वि०) १ दूर न निकला हुआ । जो व्यतीत न हुआ हो । २ जो विपयगामी न हो । जो पृथक न हो । ३ जो विहीन न हो । जो वर्जित न हो । [अनभ्यस्त ।

अनभिज्ञ (वि०) अज्ञ । अनजान । अपरिचित ।

अनभ्यावृत्तिः (स्त्री०) न दुहराना । वारवार आवृत्ति न करना ।

अनभ्याश | अनभ्यास | (वि०) समीप नहीं । दूर ।

अनभ्र (वि०) मेघविवर्जित ।

अनमः (पु०) वह ब्राह्मण, जो न तो किसी को स्वयं प्रणाम करे और न किसी को उसके किये हुए प्रणाम के बदले आशीर्वाद दे ।

अनमितंपच (वि०) कृपणतया । लोभ से ।

अनंवर | अनम्बर | (वि०) नंगा । जो कपड़े पहिने न हो ।

अनंवरः | अनम्बरः | (पु०) बौद्ध भिक्षुक ।

अनयः (पु०) १ दुर्व्यवस्था । असदाचरण । अन्याय । अनौचित्य । २ दुर्नीति । कुपथ । ३ विपत्ति । दुःख । ४ दुर्भाग्य । ५ जुआ ।

अनर्गल (वि०) १ अनियंत्रित । यथेच्छाचारी । २ विना तालेकुंजी का । खुला हुआ ।

अनर्घ (वि०) अमूल्य । वेशक़ीमती ।

अनर्घः (पु०) अनुचित मूल्य । अयथार्थ मूल्य ।

अनर्घ्य (वि०) अमूल्य । बड़ा प्रतिष्ठित ।

अनर्थ (वि०) १ निकम्मा । किसी काम का नहीं । २ अभागा । दुःखी । ३ हानिकारक । ४ वाहियात । वेमतलव का ।—कर (वि०) ।—करी (स्त्री०) उपद्रवी । हानिकारी ।

अनर्थः (पु०) १ निष्प्रयोजन या विना मूल्य का । २ कोई वस्तु जो कौड़ी काम की न हो । निकम्मी वस्तु । ३ आपत्ति । विपत्ति । वद क़िस्मती । दुर्भाग्य । ४ निरर्थक । अर्थशून्यता ।

अनर्थ्य | अनर्थक | (वि०) १ अनुपयोगी । अर्थ रहित । २ तुच्छ । ३ वाहियात ४ जो लाभ-दायक नहीं है । हानिकारी ५ अभागा ।

अनर्थ्यम्, अनर्थकम् (न०) वाहियात बातचीत । बेमतलब की बातचीत ।

अनर्ह (वि०) १ अयोग्य । अवाञ्छित । २ कौड़ी काम का नहीं ।

अनलः (पु०) १ अग्नि । २ अग्निदेव । ३ भोजन पचाने की शक्ति । ४ पित्त । —द (वि०) गर्मी या अग्नि नाशक या दूर करने वाला । २ दीपन । पाचन शक्ति बढ़ाने वाला । —प्रिया (स्त्री०) अग्नि की पत्नी स्वाहा । —सादः (पु०) भूख का न लगना । कुपच रोग ।

अनलस (वि०) १ आलस्य विवर्जित । फुर्तीला । परिश्रमी । २ अयोग्य । अनुपयुक्त ।

अनल्प (वि०) १ थोड़ा नहीं । बहुत । २ उदार । सज्जन ।

अनवकाश (वि०) १ अवकाश का अभाव । फुरसत का न होना । २ जो लागू न हो । ३ अप्रार्थित ।

अनवग्रह (वि०) अप्रतिरोधनीय । अनिवार्य । अति प्रबल । स्वच्छन्द ।

अनवच्छिन्न (वि०) निस्सीम । अमर्यादित । अचिन्हित । जो काटा गया न हो । जो अलहदा न किया गया हो । २ अत्यधिक । ३ असंशोधित । जिसकी परिभाषा न दी हो । ४ अखण्डित । अटूट ।

अनवद्य (वि०) निर्दोष । निष्कलङ्क । अभर्त्सनीय । —अङ्ग,—रूप (वि०) सुन्दर । खूबसूरत ।—अङ्गी (स्त्री०) वह स्त्री, जिसके शरीर की सुन्दरता में कोई त्रुटि या दोष न हो ।

अनवधान (त्रि०) असावधान । अमनस्क ।

अनवधानता (स्त्री०) असावधानी । अमनस्कता ।

अनवधि (वि०) निस्सीम । अवधि रहित । अनन्त ।

अनवम् (वि०) जो नीच या अश्रेष्ठ न हो । श्रेष्ठ । उन्नत ।

अनवरत (वि०) निरन्तर । सतत । सदैव । रातदिन । लगातार । हमेशा । [समीचीन ।

अनवरार्ध्य (वि०) मुख्य । श्रेष्ठ । सर्वोत्तम ।

अनवलंब, अनवलम्ब, अनलम्बन, अनवलम्बन (वि०) निराश्रित । जिसका सहारा न हो ।

अनवलंबः (पु०) अनवलंबम् (न०), अनवलम्बः (पु०) अनवलम्बम् (न०) स्वातंत्र्य ।

अनवलोभनम् (न०) संस्कार विशेष । सीमन्तोनयन के पीछे तीसरे मास में गर्भ का किया जाने वाले संस्कार ।

अनवसर (वि०) १ बेमौक़ा । कुसमय । १ जिसको काम काज से फुरसत न मिले ।

अनवसरः (पु०) १ फुरसत का अभाव । २ कुसमयत्व ।

अनवस्कर (वि०) मैल से रहित । साफ़सुथरा ।

अनवस्थ (वि०) १ अदृढ ।

अनवस्था (स्त्री०) अस्थिरता । अस्थिर दशा । २ बुरा चाल चलन । ३ तर्क शैली का दोष विशेष ।

अनवस्थान (वि०) चंचल । अस्थायी । अदृढ ।

अनवस्थानः (पु०) पवन ।

अनवस्थानम् (न०) १ नश्वरता । २ चरित्र सम्बन्धी निर्बलता ।

अनवस्थित (वि०) १ परिवर्तनीय । अस्थिर । २ परिवर्तित । ३ असंयत । अनियंत्रित ।

अनवेक्षक (वि०) असावधान । लापरवाह । निरपेक्ष । [निरपेक्षता ।

अनवेक्षणम् (न०) असावधानी । लापरवाही ।

अनशनम् (न०) उपवास । भूखों मरना ।

अनश्वर (वि०) [स्त्री०—अनश्वरी] अविनाशी । जो नष्ट न हो । जो नाश को प्राप्त न हो ।

अनस् (न०) १ गाड़ी । २ भोजन । भात । ३ जन्म । उत्पत्ति । ४ प्राणधारी । ५ रसोईघर ।

अनसूय, अनसूयक (वि०) डाह से रहित । ईर्ष्या से वर्जित ।

अनसूया (स्त्री०) १ ईर्ष्या का अभाव । २ अत्रिमुनि की पत्नी का नाम । ३ उच्च कोटि का पातिव्रत धर्म ।

अनहन् (न०) बुरा दिन । अभागा दिन ।

अनाकालः (पु०) १ कुसमय । बेवक्त । २ अकाल । क़हत ।—भृतः (पु०) अन्न विना प्राण जाने पर, अन्न के लिये अपने को दूसरे का दास बनाने वाला । [अचञ्चल ।

अनाकुल (त्रि०) १ शान्त । आत्मसंयत । २ स्थिर ।

अनागत (वि०) १ नहीं आया हुआ २ अप्राप्त । ३

भविष्यद् ४ अनजान । अज्ञात ।—अवेक्षणं (न०) आगम देखना । आगे का ज्ञान ।—आबाधः (पु०) आने वाली विपत्ति ।—आर्तवा (स्त्री०) क्वारी, जो जवान नहीं हुई ।—विधातृ (पु०) वह जो भविष्य के लिये तैयारी करे । परिणामदर्शी । पंचतंत्र की कहानी के एक मत्स्य का नाम ।

अनागमः (पु०) न पहुँचना । न आना । २ अप्राप्ति ।

अनागस् (वि०) निर्दोष । निरपराध । निष्कलङ्क ।

अनाचारः (पु०) निन्दित आचार । शास्त्र विहित आचारों के विरुद्ध आचरण ।

अनातप (वि०) जो उष्ण न हो । ठंडा ।

अनातुर (वि०) १ जो आतुर न हो । जो उद्विग्न न हो । २ अपरिश्रान्त । जो थका न हो ।

अनात्मन् (वि०) १ आत्मा रहित । २ जो आत्मा से सम्बन्ध न रखे । ३ वह जो संयमी न हो जिसने अपने को वश में न किया हो । (पु०) आत्मा से भिन्न । अन्य । आत्मा से कोई वस्तु भिन्न ।—ज्ञ,—वेदिन् (पु०) अपने आपको न पहचानने वाला । मूर्ख ।—सम्पन्न (वि०) मूर्ख ।

अनात्मनीन (वि०) निःस्वार्थी । स्वार्थ रहित ।

अनात्मवत् (वि०) असंयत । अजितेन्द्रिय ।

अनाथ (वि०) नाथरहित । रक्षकवर्जित । गरीब । मातृपितृ रहित । यतीम । विधवा ।

अनाथसभा (स्त्री०) मोहताजख़ाना । अनाथालय ।

अनादर (वि०) निरपेक्ष । विचार शून्य ।

अनादरः (पु०) अप्रतिष्ठा । घृणा । असम्मान ।

अनादि (वि०) जिसका शुरू न हो । जिसका आरम्भ काल अज्ञात हो । आदिरहित । सनातन ।—अनन्त,—अन्त (वि०) अथ और इति रहित । आरम्भ और समाप्ति विवर्जित । सनातन ।—अनन्तः (पु०) भगवान् विष्णु का नाम ।—निधन (वि०) जिसकी न आदि (आरम्भ) हो और न अन्त (समाप्ति) । सतत । सनातन ।—मध्यान्त (वि०) जिसका न तो आरम्भ हो न मध्य हो और न अन्त हो । सनातन ।

अनादीनव (वि०) निर्दोष । निरपराध ।

अनाद्य (वि०) १ अनादि । २ अभक्ष्य । वह वस्तु जो खाने योग्य न हो ।

अनानुपूर्व्य (वि०) जो नियत क्रम में न रहे ।

अनाप्त (वि०) १ अप्राप्त । अयोग्य । अनिपुण ।

अनाप्तः (पु०) अनजान । अजनबी ।

अनामक (वि०) नाम रहित । गुमनाम । बदनाम ।

अनामन् (वि०) नामरहित । गुमनाम । अपकीर्तित । बदनाम । (पु०) १ लौंद मास । अधिक मास । २ हाथ की वह उँगली जिसमें अँगूठी पहनी जाती है । कुगुनिया के पास की अँगुली । (न०) अर्शरोग । बवासीर ।

अनामा } (स्त्री०) अंगूठी पहनने की उँगली ।
अनामिका } कुगुनिया के पास वाली उँगली ।

अनामय (वि०) तंदुरुस्त । स्वस्थ । हट्टाकट्टा ।

अनामयः (पु०) तंदुरुस्ती । स्वास्थ्य ।

अनामयम् (न०) विष्णु का नाम ।

अनायत्त (वि०) जो परतंत्र न हो । स्वतंत्र । स्वतंत्र आजीविका ।

अनायास (वि०) विना प्रयास । विना परिश्रम । विना उद्योग । सरल । सहज ।

अनारत (वि०) १ सतत । बराबर । अखण्डित । अबाधित । २ सनातन ।

अनारम्भः (पु०) अननुष्ठान । आरम्भ का अभाव ।

अनार्जव (वि०) कुटिल । बेईमान । अधार्मिक ।

अनार्जवम् (न०) १ कुटिलता । जाल । फरेब । २ रोग ।

अनार्तव (वि०) [स्त्री०—अनार्तवी] बे ऋतु का ।

अनार्तवा (स्त्री०) वह लड़की जिसको मासिक धर्म न होता हो ।

अनार्य (वि०) दुर्जन । दुश्शील । अधम । दस्यु ।

अनार्यः (पु०) १ जो आर्य न हो । २ वह देश जिसमें आर्य न बसते हों । ३ शूद्र । ४ म्लेच्छ । ५ अधम पुरुष ।

अनार्यकं (न०) १ आर्यावर्त से भिन्न देश । अगुरु काठ । अगर की लकड़ी ।

अनार्ष (वि०) जो ऋषियों का प्रोक्त न हो। अवैदिक।

अनालंब, अनालम्ब (वि०) निराश्रित। विना सहारे का।

अनालंबः, अनालम्बः (पु०) सहारे का अभाव। आधार शून्यता।

अनालंवी, अनालम्बी (स्त्री०) शिवजी की वीणा या सारंगी।

अनालंबुका, अनालम्बुका, अनालंभुका, अनालम्भुका (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

अनावर्तिन् (वि०) फिर न होने वाला। फिर न लौटने वाला।

अनाविद्ध (वि०) जो छेदा न गया हो। जो छिदा न हो।

अनावृत्तिः (स्त्री०) १ फिर न जन्मना। मोक्ष। अपरावर्तन।

अनावृष्टिः (स्त्री०) सूखा। वर्षा का अभाव। उपद्रव विशेष। ईति विशेष।

अनाश्रमिन् (पु०) वह जो चार आश्रमों में से किसी भी आश्रम में न हो। जो आश्रमी न हो।

"अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु क्षणमेकमपि द्विजः।"

अनाश्रव (वि०) जो किसी का कहना न सुने। या कहने पर कान न दे।

अनाश्वस् (वि०) अनखाया हुआ। जो भोग न किया गया हो।

अनास्था (स्त्री०) १ निरपेक्षता। अश्रद्धा। २ अनादर।

अनाहत (वि०) १ नया (कपड़ा)। कोरा कपड़ा। २ तंत्रशास्त्रानुसार हृदयस्थित द्वादशदल कमल। ३ मध्यम। वाक्। ४ आघात रहित वस्तु।

अनाहार (वि०) उपवास किये हुए।

अनाहारः (पु०) उपवास। फ़ाका। लंघन।

अनाहुतिः (स्त्री०) अनहवनीय। कोई हवन, जो हवन के नाम से कहलाने के अयोग्य हो। २ अनुचित बलि या अर्घ्य।

अनाहूत (वि०) अनिमंत्रित। विना बुलाया हुआ। विना न्योता हुआ।—उपजल्पिन् विना कहे बोलने वाला या शेख़ी बघारने वाला।—उपविष्ट (वि०) अनिमंत्रित आ कर बैठा हुआ।

अनिकेत (वि०) गृहहीन। आवारा। जिसके घर न हो और बेमतलब इधर उधर घूमा करे।

अनिगीर्ण (वि०) १ जो निगला हुआ न हो। अभुक्त। २ अकथित। ३ जो छिपा न हो। प्रकट। प्रत्यक्ष।

अनिच्छ, अनिच्छक, अनिच्छत्, अनिच्छु, अनिच्छुक (वि०) इच्छा न रखने वाला। अनभिलाषी। निराकांक्षी। जिसे चाह न हो।

अनित्य (वि०) १ जो सनातन न हो। २ विनश्वर। विनाशी। नाशवान। ३ अस्थायी। अध्रुव। ४ असाधारण। अनिमित। ५ अस्थिर। चञ्चल। ६ सन्दिग्ध। संशयात्मक। दत्तः,—दत्तकः,—दत्त्रिमः (पु०) पुत्र जो किसी दूसरे को कुछ दिनों के लिये दे दिया जाय।

अनित्यम् (अव्यया०) १ कभी कभी। हठात्। दैवात्।

अनिद्र (वि०) निद्रारहित। जागता हुआ (आलं०) जागरूक। सावधान। सतर्क।

अनिन्द्रियं (न०) १ कारण। २ इन्द्रियों में से कोई इन्द्री नहीं, मन।

अनिभृत (वि०) १ सार्वजनिक। खुलंखुल्ला। अनछिपा हुआ। २ लज्जाहीन। बेहया। साहसी। ३ अस्थिर। जो दृढ़ न हो। चपल। अविनीत।

अनिमकः (पु०) १ मेंढक। २ कोयल। ३ मधुमक्खिका।

अनिमित्त (वि०) अकारण। आधाररहित।—निराक्रिया (स्त्री०) बुरे शकुनों को पलट देने की क्रिया।

अनिमित्तम् (न०) १ किसी उपयुक्त कारण या अवसर का अभाव। २ अपशकुन। बुरा शकुन।

अनिमिष, अनिमेष (वि०) दृढतापूर्वक नियुक्त या नियत। स्पन्दनहीन (नेत्र)—दृष्टि,—लोचन (वि०) विना पलक झपकाये देखना।

अनिमिषाचार्यः (पु०) गुरु बृहस्पति। देवताओं के आचार्य।

अनिमेषः (पु०) १ देवता। २ मछली। ३ विष्णु।

अनियत (वि०) १ असयत। २ सन्दिग्ध। अनियमित। ३ कारणशून्य। ४ नश्वर।—आत्मन् (वि०) असंयत।—पुंस्का (वि०) दुश्चारिणी

स्त्री ।—वृत्ति (वि०) वह जिसकी आमदनी या जीविका बंधी हुई न हो । अनियमित आय ।

अनियंत्रण (वि०) असंयत । जो नियंत्रण में न रहे । उच्छृङ्खल ।

अनियंत्रितः (पु०) उच्छृङ्खल । नियमविरुद्ध ।

अनियमः (पु०) १ नियम का अभाव । नियत आज्ञा । २ सन्देह । ३ अनुचित आचरण ।

अनिरुक्त (वि०) १ स्पष्ट न कहा गया हो । २ भली भाँति व्याख्या न किया हुआ । भली भाँति न समझाया हुआ ।

अनिरुद्ध (वि०) अबाधित । मुक्त । अनियंत्रित । स्वेच्छाचारी । जो वश में न आसके ।—पथं (न०) १ विना रुका मार्ग । आकाश । व्योम ।

अनिरुद्धः (पु०) १ भेदिया । जासूस । २ प्रद्युम्न के पुत्र का नाम जो श्री कृष्ण जी का पौत्र और ऊषा का पति था । ३ पशु आदि के बांधने की रस्सी । ४ मन का अधिष्ठाता ।—भाविनी (स्त्री०) अनिरुद्ध की स्त्री । ऊषा ।

अनिर्णयः (पु०) अनिश्चितता । निर्णय का अभाव ।

अनिर्दश } (वि०) मृत्यु अथवा जन्म के १० दिन
अनिर्दशाह } के अशौच के भीतर ।

अनिर्देशः (पु०) किसी निश्चित नियम या आज्ञा का अभाव ।

अनिर्देश्य (वि०) वह जिसकी परिभाषा का वर्णन न हो सके । अवर्णनीय ।

अनिर्देश्यम् (न०) परब्रह्म ।

अनिर्धारित (वि०) अनिश्चित ।

अनिर्वचनीय (वि०) १ अनुच्चार्य्य । अवर्णनीय । २ वर्णन करने के अनुपयुक्त ।

अनिर्वचनीयम् (न०) १ माया । अज्ञान । २ संसार ।

अनिर्वाण (वि०) अनधुला । स्नान न किये हुए ।

अनिर्वेदः (पु०) अक्षोभ । उदासीनता या उदासी का अभाव । आत्मनिर्भरता । साहस ।

अनिर्वृत (वि०) बेचैन । दुखी ।

अनिर्वृतिः } (स्त्री) १ बेचैनी । विकलता । चिन्ता ।
अनिर्वृत्तिः } २ गरीबी । निर्धनता ।

अनिलः (पु०) १ पवन । २ पवन देव । ३ एक उपदेवता । ४ शरीरस्थ पवन । मानसिक भावों में से एक । ५ गठिया रोग या वातजन्य कोई रोग ।—अयनं (न०) पवनमार्ग ।—अशन,—अशिन् । १ पवनखाना । उपवास ।

आत्मजः (पु०) पवनपुत्र । भीम और हनुमान ।—आमयः (अनिलामयः) (पु०) वातरोग । अफरा ।—सखः (पु०) अग्नि ।

अनिलन् (पु०) सर्प ।

अनिर्लोडित (वि०) भली भाँति अविचारित । बुरी तरह निर्णीत ।

अनिशं (अव्यया०) सदा । अविरत । सर्वदा ।

अनिष्ट (वि०) १ अनभीष्ट । अवाँच्छित । प्रतिकूल । २ अशुभ । ३ बुरा । अभागा ४ यज्ञद्वारा असम्मानित ।—आपत्तिः (स्त्री०)—आपादनं (न०) अवाँच्छित वस्तु की प्राप्ति । अवाँच्छित घटना ।—ग्रहः (पु०) पापग्रह । बुरेग्रह ।—प्रसङ्गः (पु०) दुर्घटना । अशुभ घटना । किसी बुरी वस्तु, युक्ति अथवा नियम से सम्बन्ध युक्त ।—फलं (न०) बुरा परिणाम ।—शङ्का (स्त्री०) अशुभ का भय ।—हेतुः (पु०) अपशकुन । बुरा शकुन ।

अनिष्टम् (न०) १ अशुभ । अभाग्य । दुर्भाग्य । विपत्ति । २ असुविधा । हानि ।

अनिष्पत्रम् (अव्यया०) तीर का वह भाग जिसमें पर लगे रहते हैं, जिससे वह दूसरी ओर न निकले ।

अनिस्तीर्ण (वि०) १ जिससे पिंड या पीछा न छुटा हो । २ अनुत्तरित । अखण्डित । जिसका खण्डन न हुआ हो ।

अनीकः (पु०) १ सेना । फौज । पल्टन । दल ।—स्थः (पु०) २ सैनिक । योद्धा । ३ पहरेदार । सन्तरी । ४ महावत या हाथी का शिक्षक । ५ मारूबाजा । ढोल या बिगुल । ६ सङ्केत । चिह्न । निशानी ।

अनीकम् (न०) १ जमाव । झुंड । २ लड़ाई । आमना-सामना । युद्ध । ३ पंक्ति । अवली । ४ सामना । मुख्य । प्रधान ।

अनीकिनी (पु०) १ सेना । दल । फौज । २ तीन चमू या अक्षौहिणी सेना का दसवाँ भाग ।

अनील (वि०) जो नीला न हो । सफेद ।—वाजिन् (पु०) सफेद घोड़ों वाला । अर्जुन की उपाधि ।

अनीश (वि०) १ सर्वोपरि । सर्वोच्च । २ जो किसी पर अपनी सत्ता या आतङ्क न रखता हो । जो स्वामी या मालिक न हो ।

अनीशः (पु०) विष्णु का नाम ।

अनीश्वर (वि०) १ असंयत । २ अयोग्य । ३ ईश्वर सम्बन्धी नहीं । नास्तिकता वाला ।—वादः (पु०) नास्तिकवाद । नास्तिक ।

अनीह (वि०) निःस्पृह । निरपेक्ष । फलाशारहित । अनिच्छुक ।

अनीहा (स्त्री०) अनिच्छा । निःस्पृहता ।

अनु (अव्यया०) यह एक उपसर्ग है (इसका प्रयोग संज्ञाओं के साथ क्रियाविशेषणात्मक समासों के बनाने में या क्रियाओं अथवा क्रियाओं की धातुओं में होता है । १ पीछे । पश्चात् । २ साथ । पास पास । ३ साथ । सम्बन्ध से । ४ अश्रेष्ठ या आश्रित् । ५ विशेष सम्बन्ध में या अवस्था में । ६ साझा । ७ दुहराना । ८ दिन प्रति दिन । ९ ओर । तरफ । १० क्रम से एक के बाद एक । ११ समान । मानों । १२ समर्थनीय । समर्थन करने योग्य ।

अनुक (वि०) १ लालची । अभिलाषी । २ कामी । लम्पट । इन्द्रियदास ।

अनुकम् (न०) वितर्क । युक्ति ।

अनुकथनम् (न०) १ पीछे का वर्णन । २ सम्बन्ध । ३ सवाद । वार्तालाप ।

अनुकनीयस् (वि०) दूसरा सब से छोटा (उम्र में) ।

अनुकम्पक (वि०) दयालु । दयावान । करुणापूर्ण ।

अनुकंपनम्, अनुकम्पनम् (न०) दया । करुणा । कोमलता । सहानुभूति ।

अनुकंपा, अनुकम्पा (स्त्री०) दया । करुणा ।

अनुकंप्य, अनुकम्प्य (स० का० कृ०) दयापात्र । कृपापात्र । सहानुभूति दिखलाने योग्य । दयनीय ।

अनुकंप्यः, अनुकम्प्यः (पु०) हलकारा । दूत शीघ्र सन्देशा ले जाने वाला ।

अनुकरणम् (न०), अनुकृतिः (स्त्री०) १ नकल उतारना । २ प्रतिलिपि । समानता । एकरूपता ।

अनुकर्षः (पु०), अनुकर्षणम् (स्त्री०) १ पीछे घसीटना । २ रथ के नीचे रहने वाली लकड़ी जिसके सहारे पहिये रहते हैं ।

अनुकल्पः (पु०) गौण कल्प । मुख्य के अभाव में उसके प्रतिनिधि की कल्पना । प्रतिनिधि ।

अनुकामीन (वि०) स्वेच्छापूर्वक गमन या सहर्ष गमन । स्वेच्छाचारिता ।

अनुकार देखो " अनुकरणं " ।

अनुकाल (वि०) सामायिक । मौके का ।

अनुकीर्तनम् (न०) प्रकाशन या प्रकटन या घोषणा करने की क्रिया ।

अनुकूल (वि०) १ पक्ष में । अभिमत । मनोज्ञ । मुआफिक । २ सदय । दोस्ताना । ३ समर्थनीय ।

अनुकूलः (पु०) विश्वस्त और दयालु पति । नायक विशेष ।

अनुकूलम् (न०) १ कृपा । अनुग्रह । २ सहायता । प्रसन्नता ।

अनकूलयति (धा० परस्मै०) मिलाना । अपने पक्ष में कर लेना । राज़ी कर लेना ।

अनुक्रकच (वि०) आरे की तरह दाँतों वाला ।

अनुक्रमः (पु०) १ सिलसिला । क्रम । तरतीब । परिपाटी । यथाक्रम । २ विषयसूची ।

अनुक्रमणं (न०) १ सिलसिलेवार बढ़ना । २ अनुगमन ।

अनुक्रमणी / अनुक्रमणिका (स्त्री०) १ विषय सूची। परिपाटी बतलाने वाली। जिसमें किसी ग्रन्थ में वर्णित विषयों का संक्षेप में क्रमवार वर्णन हो। सूची। तालिका। २ कात्यायन के एक ग्रन्थ का नाम। इसमें मंत्रों के ऋषि, छन्द, देवता, और मंत्रों के विनियोगों का वर्णन है।

अनुक्रिया देखो "अनुकरणम्"

अनुक्रोशः (पु०) दया। रहम। कृपा।

अनुक्षणम् (अव्यया०) प्रत्येक लमहा। प्रत्येक पल। सतत। बराबर। अक्सर। बहुधा।

अनुक्षत्तृ (पु०) / अनुक्षत्ता (स्त्री०) दरबान या सारथी का टहलुआ।

अनुक्षेत्रं (पु०) पुजारियों को दी जाने वाली वृत्ति या बंधान। (उड़ीसा के मन्दिरों में यह बंधान बंधा हुआ है)।

अनुख्यातिः (स्त्री०) किसी गुप्त बात की सूचना देना या उसको प्रकट करना।

अनुग (वि०) अनुगत। पीछे जाने वाला। (मिलान करने पर) मिलता।

अनुगः (पु०) अनुयायी। पिछलगुआ। आज्ञाकारी नौकर। साथी। सहचार।

अनुगतिः (स्त्री०) अनुगमन। पीछे चलना। नकल करना। अनुकरण करना।

अनुगमः (पु०) / अनुगमनम् (न०) १ पीछे चलना। अर्थात होना। सहायक होना। २ सहमरण। किसी स्त्री का अपने पति के पीछे मरना। ३ अनुकरण करना। अनुसरण करना। समीप जाना। ४ अनुहार। अनुसार।

अनुगर्जित (वि० कृ०) गर्जन करता हुआ।

अनुगर्जितम् (न०) गर्जन युक्त, प्रतिध्वनि।

अनुगवीनः (पु०) गोपाल। ग्वाला। अहीर। गौ चराने वाला।

अनुगामिन् (पु०) / अनुगामी (वि०) अनुयायी। साथी। अनुवर्ती। पीछे चलने वाला।

अनुगुण (वि०) समान गुण वाला। समान स्वभाव वाला। अनुकूल। मनोज्ञ। उपयोगी।

अनुग्रहः (पु०) / अनुग्रहणम् (न०) कृपा। दया। अनुकंपा। २ स्वीकारोक्ति। स्वीकृति। ३ प्रधान सैन्यदल का पश्चातभाग रक्षक सैन्यदल।

अनुग्रासकः (पु०) मुख भर कर अर्थात जितना मुख में अट सके।

अनुचरः (पु०) दास। सेवक। टहलुआ। सहचार।

अनुचरी / अनुचरा (स्त्री०) टहलुनी। दासी।

अनुचारकः (पु०) अनुचर। सेवक।

अनुचारिका (स्त्री०) अनुचरी। दासी।

अनुचित (वि०) १ अयुक्त। नामुनासिब। २ असाधारण। अयोग्य।

अनुचिंता, (स्त्री०) अनुचिंतनम् (न०) / अनुचिन्ता (स्त्री०) अनुचिन्तनम् (न०) विचार। ध्यान। अनुध्यान। उत्कण्ठा पूर्वक स्मरण।

अनुच्छादः (पु०) अंगे के नीचे पहिना जाने वाला कपड़ा। सीमा।

अनुच्छित्तिः (स्त्री०) / अनुच्छेदः (पु०) अनाशकत्व। अनष्टत्व।

अनुज / अनुजात (वि०) पीछे जन्मा हुआ। पिछला। छोटा।

अनुजः / अनुजातः (पु०) छोटा भाई।

अनुजन्मन् (पु०) छोटा भाई।

अनुजीविन् (वि०) परावलम्बी। दूसरे पर (आजीविका के लिये) निर्भर। नौकर। चाकर।

अनुज्ञा (स्त्री०) / अनुज्ञानं (न०) अनुमति। आज्ञा। हुक्म।

अनुज्ञापकः (पु०) आज्ञा देने वाला। हुक्म देने वाला।

अनुज्ञापनम् (न०) / अनुज्ञप्ति (स्त्री०) आज्ञा। हुक्म। अनुमति।

अनुज्येष्ठम् (अव्यया०) (वयक्रम से) ज्येष्ठता या बड़ाई।

अनुतर्पः (पु०) १ प्यास। २ इच्छा। कामना। ३ पानपात्र। ४ मद्य।

अनुतर्पणं (न०) देखो "अनुतर्पः"

अनुतापः (पु०) पश्चात्ताप । कर्म करने के अनन्तर [दुःख ।

अनुतिलं (अव्यया०) अति सूक्ष्मता से । तिल तिल करके । तिल के बराबर ।

अनुत्क (वि०) जो अत्यधिक उत्कण्ठित न हो । जो पश्चात्ताप न करे । [कर ।

अनुत्तम (वि०) सर्वोत्कृष्ट । सर्वश्रेष्ठ । सब से बढ़

अनुत्तर (वि०) १ मुख्य । प्रधान । २ उत्तम । श्रेष्ठ । ३ उत्तर विना । चुप । उत्तर देने में असमर्थ । ४ दृढ़ । मज़बूत । ५ नीच । अश्रेष्ठ । कमीना । क्षुद्र । ६ दक्षिणी । दक्षिण दिशा का ।

अनुत्तरम् (न०) कोई उत्तर नहीं । [वाला ।

अनुत्तरङ्ग (वि०) मज़बूत । दृढ़ । विना लहरों

अनुत्तरा (स्त्री०) दक्षिण दिशा ।

अनुत्थानं (न०) उद्योग का अभाव ।

अनुत्सूत्र (वि०) सूत्र के विरुद्ध नहीं ।

अनुत्सेकः (पु०) क्रोध या अभिमान का अभाव । शील ।

अनुत्सेकिन् (वि०) जो अभिमान से फूल कर कुप्पा न हो गया हो ।

अनुदर (वि०) कृशोदर । पतला दुबला ।

अनुदर्शनं (न०) पर्यवेक्षण । मुआयना ।

अनुदात्त (वि०) १ जो उदात्त स्वर से उच्चारणीय न हो । उदात्त स्वर से भिन्न स्वर ।

अनुदार (वि०) १ जो उदार न हो । जो कुलीन न हो । २ जिसके उपयुक्त पत्नी हो ।

अनुदिनम् } (अव्यया०) नित्य । हररोज़ । दिनों
अनुदिवसम् } दिन ।

अनुदेशः (पु०) १ पीछे का निर्देश । २ निर्देश । आज्ञा ।

अनुद्धत (वि०) जो उद्दण्ड या अभिमानी न हो ।

अनुद्भट (वि०) १ जो वीर न हो । जो साहसी न हो । कोमल स्वभाव वाला । २ जो उन्नत या बहुत ऊँचा न हो ।

अनुद्रुत (वि० कृ०) पिछयाया हुआ । २ लौटाया हुआ । वापिस लाया हुआ । अनुगामी ।

अनुद्रुतम् (न०) (संगीत में) तालविशेष । मात्रा का चौथा भाग ।

अनुद्वाहः (पु०) अविवाहावस्था । अनूढावस्था । चिरकौमार्य ।

अनुधावनम् (न०) १ पीछे दौड़ना । पीछा करना । पछियाना । २ किसी पदार्थ के बिल्कुल समीप समीप दौड़ना । अनुसन्धान करना । पता लगाना । तहकीकात करना । ३ अप्राप्त होने पर भी किसी मलकिन या स्वामिनी का पता लगाना । ४ साफ करना । पवित्र करना ।

अनुध्यानम् (न०) १ अनुचिन्तन । बार बार सोचना । २ किसी विषय में तत्पर रहना । ३ आसक्ति । ४ कृपा करना । ५ मङ्गलकामना ।

अनुनयः (पु०) १ विनय । प्रणिपात । २ सान्त्वना । ३ प्रार्थना ।

अनुनादः (पु०) शब्द । होहल्ला । शोर । गुलगपाड़ा । प्रतिध्वनि । झाईं ।

अनुनायक (वि०) १ विनम्र । विनयशील । २ आज्ञाकारी ।

अनुनायिक (वि०) तुष्ट । शान्त । सुप्रसन्न ।

अनुनायिका (स्त्री०) एक अभिनय पात्री जो किसी अभिनय के मुख्य-पात्र (नायिक) की सहायक हो, जैसे धात्री, दासी आदि । अनुनायिका ये होती हैं:—

> सखी प्रव्रजिता दासी प्रेष्या धात्रेयिका तथा ।
> अन्याश्च शिल्पकारिण्यो विज्ञेया ह्यनुनायिकाः ॥

अनुनासिक (वि०) नासिका की सहायता से उच्चारण होने वाले वर्ण ।

अनुनिर्देशः (पु०) किसी पूर्ववर्ती वचन या आज्ञा का सम्बन्धसूचक दूसरा वचन या आज्ञा ।

अनुनीतिः देखो " अनुनय " ।

अनुपघातः (पु०) किसी जोखों या बाधा का अभाव ।

अनुपतनं (न०) } १ गणित की त्रैराशिक क्रिया।
अनुपातः (पु०) } त्रैराशिक गणित। २ पीछे गिरना। पीछा करना। ३ आनुगुण्य। एक अङ्ग के साथ दूसरे अङ्ग का सम्बन्ध।

अनुपथ (वि०) मार्ग का अनुसरण।

अनुपथम् (क्रि० वि०) सड़क के साथ साथ।

अनुपद (वि०) १ पीछे पीछे। क़दम कदम। २ अनन्तर। बाद ही।

अनुपदवी (स्त्री०) मार्ग। सडक।

अनुपदिन् (वि०) अनुसरित। पीछे लगा हुआ। खोजने वाला। तलाश करने वाला। जिज्ञासु।

अनुपदीना (स्त्री०) जूता, मोज़ा, खड़ाऊ।

अनुपधः (पु०) उपधा या उपान्त्य शब्दांश का अभाव।

अनुपधि (वि०) प्रवञ्चना रहित। छलवर्जित। विना [जाल साज़ी के।

अनुपन्यासः (पु०) १ वर्णन न करना। बयान न देना। २ सन्देह। शक। प्रमाण या निश्चय का अभाव। असमाधान।

अनुपपत्तिः (स्त्री०) १ उपपति का अभाव। असङ्गति। असिद्धि। २ असम्पन्नता। असमर्थता।

अनुपम (वि०) उपमारहित। बेजोड़ बेनज़ीर। सर्वोत्तम। सर्वोत्कृष्ट।

अनुपमा (स्त्री०) नैऋत्य कोण के कुमुद दिग्गज की [हथिनी।

अनुपमेय } (वि०) बेजोड़। जिसकी तुलना न
अनुपमित } हो सके।

अनुपलब्धिः (स्त्री०)। अप्राप्ति। न मिलना। अस्वीकृति। प्रत्याभिज्ञान। (सांख्य) प्रत्याभिज्ञान।

अनुपलंभः } (पु०) बोध या प्रत्यय का
अनुपलम्भः } अभाव।

अनुपवीतिन् (पु०) जो द्विज यज्ञोपवीत धारण न करे।

अनुपशयः (पु०) १ कोई वस्तु या अवस्था जो रोग की वृद्धि करे। २ रोगज्ञान के पांच विधानों में से एक। इससे आहार विहार के बुरे परिणाम से रोगी के रोग का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

अनुपसंहारिन् (पु०) (न्याय) हेत्वाभास।

अनुपसर्गः (पु०) १ शब्दांश जिसमें उपसर्ग न हो। २ उपसर्ग रहित।

अनुपस्थानम् (न०) गैरहाज़िरी। अनुपस्थिति। समीप न होना। अविद्यमानता।

अनुपस्थित (वि०) ग़ैरहाज़िर। मौजूद नहीं। अविद्यमान।

अनुपस्थितिः (स्त्री०) गैरहाज़िरी। अविद्यमानता।

अनुपहृत (वि०) १ चोटिल नहीं। २ अव्यवहृत। काम में न लाया हुआ। अनभ्यस्त। ३ कोरा (जैसा कपड़ा)।

अनुपाख्य (वि०) जो साफ साफ न देख पड़े। जो साफ़ साफ़ समझ में न आवे।

अनुपातकम् (न०) महापातक जैसे चोरी, हत्या, व्यभिचार आदि। विष्णुस्मृति में, इस श्रेणी में, ३५ और मनुस्मृति में ३० प्रकार के पातकों को शामिल किया है।

अनुपानम् (न०) पदार्थ विशेष जो किसी औषध के साथ या ऊपर से खाया जाय।

अनुपालनम् (न०) रखवाली। सुरक्षा। [आज्ञाकारी।

अनुपुरुषः (पु०) अनुयायी।

अनुपूर्व (वि०) यथाक्रम। सुविभक्त। समपरिमित। —जः (वि०) पीढ़ी दर पीढ़ी। साख व साख। —वत्सा (वि०) गौ जो नियमित रूप से बच्चे दे। —पूर्वशः,—पूर्वेण (क्रि० वि०) क्रमागत रीति से।

अनुपेत (वि०) जिसका उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार न हुआ हो।

अनुप्रयोगः (पु०) बार बार दुहराना। अतिरिक्त [प्रयोग।

अनुप्रवेशः (पु०) १ दरवाज़े के भीतर जाना। किसी के मन के भीतर घुसना। मन में स्थान करना।

अनुप्रसक्तिः (स्त्री०) १ घनिष्ट प्रेम। प्रगाढ़ अनुराग। २ (शब्दों का) अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध।

अनुप्रसादनम् (न०) प्रसादन । तोषन । दूसरे को सन्तुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया ।

अनुप्राप्तिः (स्त्री०) प्राप्ति । पहुँच ।

अनुप्लवः (पु०) अनुयायी । नौकर । सहायक । अनुगामी ।

अनुप्रासः (पु०) अलङ्कार विशेष । इसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार बार प्रयुक्त हो कर उस पद को अलङ्कृत करता है । वर्णवृत्ति । वर्णमैत्री । वर्णसाम्य ।

अनुबद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । गसा हुआ । जकड़ा हुआ । २ यथाक्रम अनुगमन करने वाला । ३ सम्बन्ध युक्त । ४ सतत । लगातार ।

अनुबंधः / अनुबन्धः (पु०) १ बन्धान । सम्बन्ध । युक्त । २ एक के बाद एक क्रमागत । ३ परिणाम । फल । ४ इरादा । उद्देश्य । कारण ५ व्याकरण में प्रकृति, प्रत्यय, आगम, आदेश आदि में कार्य के लिये जो वर्ण लगा दिये जाते हैं, वे भी अनुबन्ध कहे जाते हैं । ६ माता पिता का अनुवर्तन करने वाला पुत्र । प्रारम्भ किये हुए किसी काम का अनुवर्तन करना । ७ भावी अशुभ परिणाम । फलसाधन । ८ वेदान्त में एक एक विषय का अधिकरण । ९ वात, कफ, पित्त में जो अप्रधान हो । १० लगाव । आगा पीछा । ११ होने वाला शुभ या अशुभ ।

अनुबंधनं / अनुबन्धनम् (न०) लगाव । सम्बन्ध ।

अनुबंधिन् / अनुबन्धिन् (वि०) १ सम्बन्धित । लगाव रखने वाला । सम्बन्धी । परिणाम स्वरूप । २ समृद्धशाली । ३ अबाधित ।

अनुबन्ध्य (वि०) १ मुख्य । प्रधान । २ मारे जाने को । मार डालने को ।

अनुबलं (न०) मुख्य सेना की रक्षा के लिये उसके पीछे आने वाला सैन्यदल । सहायक सैन्यदल ।

अनुबोधः (पु०) स्मरण या बोध जो पीछे हो । गन्धोद्दीपन ।

अनुबोधनम् (न०) प्रबोधन । स्मरण । स्मरण शक्ति ।

अनुभवः (पु०) १ साक्षात् करने से प्राप्त हुआ ज्ञान । परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान । उपलब्ध ज्ञान । तजरबा । २ परिणाम । फल । —सिद्ध (वि०) अनुभव या तजरबे से प्रतिपादित ।

अनुभावः (पु०) राजसी चमकदमक । चमक दमक । महिमा । बड़ाई । शक्ति । अधिकार । प्रभाव । सामर्थ्य । निश्चय । २ हृदयस्थित भाव को प्रकाशित करने वाली कटाक्ष रोमाञ्चादि चेष्टा । भावप्रकाश का भावबोधक । ३ काव्य में रस के चार अंगों में से एक । वे गुण और क्रियाएं जिनसे रस का बोध हो सके । ४ अनुभाव के १ सात्त्विक २ कायिक ३ मानसिक और आहार्य्य चार भेद माने जाते हैं । हाव भी इसीके अन्तर्गत है ।

अनुभावक (वि०) द्योतक । निर्देशक । बतलाने वाला । समझाने वाला ।

अनुभावनम् (न०) चेष्टाओं द्वारा मानसिक भावों का निर्देश करना अर्थात् बतलाना ।

अनुभाषणं (न०) किसी दावे या कथन को दुहरा कर खण्डन करना । खण्डन करने के लिये किसी दावे या कथन को दुहराना ।

अनुभूतिः (स्त्री०) अनुभव । परिज्ञान । आधुनिक न्याय के अनुसार ये चार प्रकार की मानी गयी है । अर्थात् १ प्रत्यक्ष । २ अनुमिति । ३ उपमिति ४ शब्दबोध ।

अनुभोगः (पु०) १ वह भूमि जो किसी को किसी काम के बदले माफी में दी जाय । ख़िदमती । २ सुखभोग । विलास ।

अनुभ्रातृ (पु०) छोटा भाई ।

अनुमत (व० कृ) १ अनुज्ञात । स्वीकृत । अङ्गीकृत । २ पसंद । प्रिय । प्यारा । कृपापात्र ।

अनुमतः (पु०)अनुरागी । आशिक ।

अनुमतम् (न०) स्वीकृति । रज़ामंदी । अनुमति । अनुज्ञा ।

अनुमतिः (स्त्री०) १ आज्ञा । अनुज्ञा । हुक्म । २ पूर्णिमा जिसमें एक कला कम हो । चतुर्दशीयुक्त पूर्णिमा । —पत्रं (न०) प्रमाणपत्र जिसमें किसी काम की मंजूरी दी गयी हो ।

अनुमननम् (न०) स्वीकृति । अनुमति । आज्ञा । इजाजत । २ स्वतन्त्रता ।

अनुमंत्रणम् (न०) मंत्रों द्वारा आह्वाहन या प्रतिष्ठा ।

अनुमरणम् (न०) पीछे मरना । किसी पहले मरे हुए के पीछे मरना । किसी विधवा का पीछे सती होना ।

अनुमा (स्त्री०) अनुमिति । अनुमान ।

अनुमानम् (न०) १ अटकल । अंदाज़ा । भावना । विचार २ । परिणाम । नतीजा । फल । ३ न्याय-शास्त्रानुसार प्रमाण के चार भेदों में से एक । इससे प्रत्यक्ष साधनों द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना होती है ।

अनुमासः (पु०) आगे का महीना ।

अनुमासम् (अव्यया०) प्रत्येक मास ।

अनुमितिः (स्त्री०) १ अनुमान । २ नव्य न्याय के अनुसार अनुभूति के चार भेदों में से एक । ३ अनुभव विशेष । परामर्श से उत्पन्न ज्ञान । हेतु या तर्क से किसी वस्तु को जान लेना ।

अनुमेय (स० का० कृ०) अनुमान के योग्य ।

अनुमोदनम् (न०) १ समर्थन । ताईद । स्वीकृति । [अनुयाग ।

अनुयाजः (पु०) यज्ञ का अङ्ग विशेष । अनूयाज ।

अनुयातृ (पु०) अनुयायी ।

अनुयात्रम् (न०) } अनुचरवर्ग । परिषद्वर्ग ।
अनुयात्रा (स्त्री०) } पारिपार्श्व ।

अनुयात्रिकः (पु०) अनुचर । नौकर ।

अनुयानं (न०) अनुगमन । पीछे जाना ।

अनुयायिन् (वि०) १ पीछे गमन करने वाला । अनुवर्ती । आश्रित । नौकर । २ परिवर्ती घटना ।

अनुयोक्तृ (पु०) परीक्षक । जिज्ञासु । शिक्षक ।

अनुयोगः (पु०) १ प्रश्न । खोज । परीक्षा । २ भर्त्सना । डांटडपट । धिक्कार । ३ याचना । ४ उद्योग । ५ ध्यान । ६ टीकाटिप्पणी ।—कृत (पु०) १ प्रश्नकर्त्ता । २ उपदेशक । शिक्षक । गुरु ।

अनुयोजनम् (न०) प्रश्न । खोज ।

अनुयोज्यः (पु०) नौका ।

अनुरक्त (व० कृ०) १ लाल । रंगीन । २ प्रसन्न । सन्तुष्ट । अनुरागवान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) प्रेम । अनुराग । भक्ति । स्नेह ।

अनुरंजक } (वि०) प्रसन्नताप्रद । सुखप्रद ।
अनुरञ्जक } आह्लादकर ।

अनुरंजनं } (न०) सन्तोषकारक । प्रसन्नता-
अनुरञ्जनम् } प्रद ।

अनुरतिः (स्त्री०) प्रेम । स्नेह ।

अनुरथ्या (स्त्री०) पगडंडी । उपमार्ग ।

अनुरसः (पु०) } प्रतिध्वनि । झाईं ।
अनुरसितं (न०) }

अनुरहस (वि०) गुप्त । एकान्त । निजू ।

अनुरागः (पु०) १ ललाई । २ भक्ति । प्रेम । स्वामि-भक्ति ।

अनुरागिन् } (वि०) प्रेमपूर्ण ।
अनुरागवत् }

अनुरात्रम् (अव्यया०) रात्रि में । प्रत्येक रात्रि । प्रति रात्रि । एक रात के बाद दूसरी रात ।

अनुराधा (स्त्री०) २७ नक्षत्रों में से १७ वाँ । यह सात तारों के मिलने से सर्पाकार है ।

अनुरूप (वि०) अनुहार । तुल्य । सदृश । समान । सरीखा । २ योग्य । अनुकूल । उपयुक्त ।

अनुरूपं
अनुरूपतः
अनुरूपेण
अनुरूपशः } (क्रि० वि०) सादृश्य से । अनुहार से । अनुसार ।

अनुरोधः (पु०) } १ प्रेरणा । उत्तेजना । २
अनुरोधनम् (न०) } आग्रह । दबाव । विनय पूर्वक किसी बात के लिये आग्रह । प्रार्थना । याचना । अनुवर्तन ।

अनुरोधिन् } (वि०) विनयी । विनम्र । वचन-
अनुरोधक } ग्राही ।

अनुलापः (पु०) बारबार कथन । पुनरुक्ति । द्विरुक्ति । (न्याय०) पुनर्वाद । आम्रेडन ।

अनुलासः
अनुलास्यः } (पु०) मोर। मयूर।

अनुलेपः (पु०)
अनुलेपनम् (न०) } किसी तरल वस्तु की तह चढ़ाना। सुगंधित वस्तुओं को शरीर में लगाना। उबटन करना। २ उबटन। लेप।

अनुलोम (वि०) १ केश सहित। श्रेणीक्रम। नियमित। अनुकूल। २ सङ्कर (जाति) —अर्थ (वि०) अनुकूल कथन। —ज, —जन्मन् (वि०) यथाक्रम उत्पत्ति। पिता की अपेक्षा हीनवर्ण माता की सन्तान। वर्णसङ्कर।

अनुलोमम् (अव्यया०) यथाक्रम। स्वाभाविक क्रम से।

अनुलोमाः (बहुवचन) सङ्करजातियां। दोगली जातियां।

अनुलवण (वि०) १ अत्यधिक नहीं। न अधिक न कम। २ अस्पष्ट। अव्यक्त।

अनुवंशः (पु०) गोत्रपट। वंशावलीपत्र।

अनुवक्र (वि०) बहुत टेढ़ा।

अनुवचनं (न) पुनरावृत्ति। पठन। शिक्षण।

अनुवत्सरः (पु०) वर्ष। सवत्सर।

अनुवर्तनम् (न०) १ अनुगमन। आज्ञापालन। समर्थन। २ प्रसन्नता। कृतज्ञता। ३ पसदगी। ४ परिणाम। फल। ५ किसी पूर्ववर्ती सूत्र की पूर्ति।

अनुवश (वि०) दूसरे का वशवर्ती। दूसरे की इच्छा पर निर्भर। परवश। आज्ञाकारी।

अनुवाकः (पु०) ग्रन्थविभाग। ग्रन्थखण्ड। अध्याय या प्रकरण का एक हिस्सा। वेद के अध्याय का एक भाग।

अनुवाचनम् (न०) १ पढ़वाना। पाठ कराना। शिक्षा दिलाना। २ स्वयं बांचना या पढ़ना।

अनुवातः (पु०) हवा का रुख। जिस ओर की हवा हो उस ओर।

अनुवादः (पु०) १ दुरुक्तिः। व्याख्या करने के लिये या उदाहरण देने के लिये अथवा पुष्ट करने के लिये किसी अंश का बार बार पढ़ना। किसी ऐसे विषय का जिसका निरूपण हो चुका हो, व्याख्या रूप में या प्रमाण रूप में पुनः पुनः कथन। २ समर्थन। ३ सूचना। अफवाह। ४ भाषान्तर। उल्था। तर्जुमा।

अनुवादक
अनुवादिन् } (वि०) १ उल्था करने वाला। भाषान्तर करने वाला। २ अर्थबोधक। व्याख्या-सूचक। सङ्गतिविशिष्ट।

अनुवाद्य (स० का० कृ० । व्याख्या करने योग्य। उदाहरणीय।

अनुवारं (अव्यया०) बार बार। समय समय पर। अक्सर।

अनुवासः (पु०)
अनुवासनम् (न०) } १ सुगन्ध। सौरभ। २ धूप आदि से सुवासित। ३ वस्त्र के छोर को अतर से तर कर सुवासित करना।

अनुवासनः (पु०) पिचकारी।

अनुवासित (वि०) सुवासित। सुगन्धित।

अनुवित्ति (स्त्री०) प्राप्ति। उपलब्धि।

अनुविद्ध (व० कृ०) छिदा हुआ। सुराख किया हुआ। बर्मा चलाया हुआ। २ फैला हुआ। छापा हुआ। ओतप्रोत। परिपूर्ण। व्याप्त। संमिश्रित। ३ सम्बन्धयुक्त। ४ जड़ा हुआ।

अनुविधानं (न०) १ आज्ञापालन। २ आज्ञानुसार कार्य करना।

अनुविधायिन् (वि०) आज्ञाकारी।

अनुविनाशः (पु०) पीछे से विनाश।

अनुविष्टम्भः (पु०) परिणाम स्वरूप बाधा में पड़ा हुआ। अन्त में रुद्ध।

अनुवृत्त (व० कृ०) आज्ञापालन। अनुवर्तन। २ अबाधित। विना रोका टोका हुआ। सतत।

अनुवृत्तः (पु०)। प्रविष्ट। व्याप्त। पालित।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) १ स्वीकृति। आज्ञापालन। समर्थन। अनुसरण। सातत्य। निरवच्छिन्नता। २ पुनरावृत्ति।

अनुवेलं (अव्यया०) कभी कभी। यदाकदा। प्रायः। समय समय। सदैव।

अनुवेशः (पु०) } १ अनुसरण। पीछे प्रवेश करना। २ ज्येष्ठ के अविवाहित रहते कनिष्ठ भाई का विवाह।
अनुवेशनम् (न०)

अनुव्यंजनं } (न०) गौण लक्षण।
अनुव्यञ्जनम्

अनुव्याधः } (पु०) १ चोट। छेदन। वेधन। २ संभोग। मिलन। ३ झुकन। ४ रोक।
अनुवेधः

अनुव्याहरणं } १ पुनरावृत्ति। पुनः पुनः उच्चारण। २ शाप। अकोसा।
अनुव्याहारः

अनुव्रजनं (न०) } घर आये हुए शिष्ट पुरुषों के जाने के समय, कुछ दूर तक उनको पहुँचाने के लिये जाना। शिष्टाचारविशेष। अनुगमन। पीछे जाना।
अनुव्रज्या (स्त्री०)

अनुव्रत (वि०) भक्त। भक्तिमान्। अनुरक्त। अनुरागवान्।

अनुशतिक (वि०) सौ के साथ या सौ में खरीदा हुआ।

अनुशयः (पु०) १ पश्चात्ताप। परिताप। दुःख। क्षोभ। २ भारी वैर। घोर शत्रुता। महाक्रोध। ३ घृणा। घनिष्ट सम्बन्ध। घनिष्ट अनुराग। ४ किसी वस्तु के खरीदने के बाद का क्षोभ। ५ दुष्कर्मों का परिणाम।

अनुशयान (वि०) क्षुब्ध। दुःखी।

अनुशयाना (स्त्री०) परकीया नायिका का एक भेद। वह जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट होने पर दुःखी हो।

अनुशयिन् (वि०) १ भक्ति के कारण अनुरागी। अनुरक्त। निष्ठ। २ पश्चात्ताप करने वाला। ३ अत्यधिक घृणोत्पादक।

अनुशरः (पु०) राक्षस।

अनुशासक } (वि०) निर्देशक। शासन करने वाला। आज्ञा देने वाला। देश या राज्य का प्रबन्ध करने वाला। उपदेष्टा। शिक्षक।
अनुशासिन्
अनुशास्तृ
अनुशासितृ

अनुशासनम् (न०) १ उपदेश। शिक्षा। आज्ञा। विधि। आदेश। व्याख्यान। विवरण। २ महाभारत का एक पर्व।

अनुशिष्टिः (स्त्री०) आदेश। शिक्षण। निर्देश। आज्ञा। विचार पूर्वक कर्तव्याकर्तव्य का निरूपण।

अनुशीलनम् (न०) बार बार देखना। आलोचन। अध्ययन विशेष।

अनुशोकः (पु०) } शोक। पछतावा। दुःख। खेद।
अनुशोचनम् (न०)

अनुश्रवः (पु०) गुरु परम्परा से उच्चारित। जो केवल सुना जाय। वेद।

अनुषक्त (व० कृ०) १ सम्बन्धित। चिपका हुआ। सटा हुआ।

अनुषङ्गः (पु०) १ अतिनिकट सम्बन्ध या विद्यमानता। सम्बन्ध। मेल। संघ। २ एकीभाव। संहति। ३ एक शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध। ४ निश्चित परिणाम। ५ दया। करुणा। ६ प्रसङ्ग से एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना। ७ (न्याय में) उपनयन के अर्थ को निगमन में ले जाकर घटाना।

अनुषङ्गिक (वि०) सहभावी। सहवर्ती। सम्बन्धी।

अनुषंगिन् } (वि०) १ सम्बन्ध युक्त। सम्बन्धी। सटा हुआ। चिपका हुआ। २ व्याप्त।
अनुषङ्गिन्

अनुषेकः } (पु०) पानी से बार बार तर करना। (न०) सींचना।
अनुसेचनम्

अनुष्टुतिः (स्त्री०) स्तुति प्रशंसा। (यथाक्रम)।

अनुष्टुभ् (स्त्री०) १ प्रशंसा से पूर्ण। वाणी। २ सरस्वती। ३ चार पाद का एक छन्द विशेष। इसके प्रत्येक पाठ में आठ अक्षर होते हैं।

अनुष्ठातृ } (वि०) करते हुए। बनाते हुए।
अनुष्ठायिन्

अनुष्ठानम् (न०) किसी क्रिया का प्रारम्भ। शास्त्र विहित किसी कर्म को नियम पूर्वक करना। प्रयोग। पुरश्चरण।

अनुष्ठापनम् (न०) कोई काम करवाना।

अनुष्ण (वि०) १ जो गर्म न हो। ठंडा। २ सुस्त। काहिल। निरपेक्ष।

अनुष्णः (पु०) ठंडा। शीतल।

अनुष्णम् (न०) नीलकमल। उत्पल।

अनुष्यन्दः (पु०) पिछला पहिया।

अनुसन्धानम् (न०) खोज। तहकीकात। सूक्ष्म निरीक्षण या पर्यवेक्षण। परीक्षा। जांच। २ चेष्टा। प्रयत्न। कोशिश। ३ उपयुक्त सम्बन्ध।

अनुसंहित (वि क्र०) तहकीकात किया हुआ। जाँचा हुआ। खोज किया हुआ।

अनुसंहितम् (अव्यया०) संहिता (वेद में) संहिता के अनुसार।

अनुसमयः (पु०) नियमित या उपयुक्त सम्बन्ध जैसा कि शब्दों का।

अनुसमापनम् (न०) नियमित समाप्ति।

अनुसम्बन्ध (वि०) सम्बन्धयुक्त।

अनुसरः (पु०) अनुचर। अनुयायी। सहचर। साथी।

अनुसरणम् (न०) पीछे पीछे चलना। पीछा करना। पीछे जाना। समर्थन। अनुकूल आचरण।

अनुसर्पः (पु०) पेट के बल रेंगने वाले जन्तु। छिपकली, सर्प आदि।

अनुसवनम् (अव्यया०) १ यज्ञानन्तर। २ प्रत्येक यज्ञ में। ३ प्रतिक्षण।

अनुसाम (वि०) अनुकूल। मित्रता से। राज़ी। सुप्रसन्न।

अनुसाय (न०) प्रतिसन्ध्या। हर शाम।

अनुसारः (पु०) १ अनुकूल। सदृश। समान। २ अनुसरण। अनुक्रम। ३ पद्धति। रीति रस्म। निश्चित परिपाटी ४ प्राप्त या प्रतिष्ठित अधिकार।

अनुसारक } अनुसारिन् } (वि०) १ अनुसरण। अनुक्रम। २ खोज। ढूंढ़। तलाश। परीक्षा। जांच। ३ अनुसार। समर्थन में।

अनुसारणा (स्त्री०) पीछे पीछे जाना। पीछा करना।

अनुसूचक (वि०) बतलाने वाला। निर्देश करने वाला।

अनुसूचनम् (न०) निर्देश। बतलाना। प्रकट करना।

अनुसृतिः (स्त्री) पीछे पीछे जाना। पीछे चलना। समर्थन। अनुसार।

अनुसैन्यं (न०) किसी सेना का पिछला भाग। मुख्य सेना का सहायक सैन्य दल।

अनुस्कन्दम् (अव्यया०) यथाक्रम से उत्तराधिकारी होना। क्रम से किसी वस्तु का मालिक होना।

"गेहं गेहमनुस्कन्दम्।"

सिद्धान्तकौमुदी।

अनुस्तरणम् (न०) चारों ओर से सीना या गांठना। चारों ओर फैलाना या बिछाना।

अनुस्तरणी (स्त्री०) गौ। वह गौ जो किसी के मृतक कर्म में उत्सर्ग की जाय।

अनुस्मरणम् (न०) १ स्मरण। याददाश्त। २ बार बार का स्मरण।

अनुस्मृतिः (स्त्री०) १ मन से किया हुआ ध्यान। अन्य वस्तुओं को त्याग एक ही वस्तु का ध्यान करना। ध्यान। अनुस्मरण।

अनुस्यूत (वि०) ग्रथित। बुना हुआ। निरन्तर संसक्त। खूब मिला हुआ। सिला हुआ या बँधा हुआ।

अनुस्वानः (पु०) झाईं। प्रतिध्वनि। एक स्वर के समान दूसरा स्वर।

अनुस्वारः (पु०) स्वर के बाद उच्चारण किया जाने वाला एक अनुनासिक वर्ण। इसका चिन्ह [ं] है। आश्रयस्थान भागी। स्वर के ऊपर की बिंदी।

अनुहरणम् (न०) } अनुहारः (पु०) } नकल। समानता। समानरूपता। अनुकरण।

अनूकः (पु०) } अनूकम् (न०) } १ कुटुम्ब। जाति। २ प्रवृत्ति। मिजाज। स्वभाव। चरित्र। शील। जातीय विशेषता।

अनूचान (वि०) } अनूचानः (पु०) } १ अध्ययनशील। साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ा हुआ विद्वान्। वेदों का अर्थ करने वाला। २ विनय युक्त। सविनय। सुशील। —मानी (वि०) अपने को वेदार्थ का ज्ञाता समझने वाला।

अनूढ (वि०) १ न ढोया हुआ। न ले जाया हुआ। २ क्वारा। अविवाहित। —मान (वि०) लज्जाशील। लज्जालु। लजवन्त। लजीला। —भ्रातृ (अनूढभ्रातृ) अविवाहित पुरुष का भाई।

अनूढा (स्त्री०) क्वारी । अविवाहिता ।—भ्रातृ (पु०) १ अविवाहिता स्त्री का भाई । २ राजा की रखैल का भाई ।

अनूदकम् (न०) जलाभाव । सूखा । अनावृष्टि ।

अनूद्देशः (पु०) अलङ्कार विशेष ।

अनून (वि०) । १ अस्वल्प । श्रेष्ठ । अभावशून्य । २ पूर्ण । समस्त । समूचा । बड़ा । बहुत ।

अनूप (वि०) जलमय । अधिक जल वाला । दलदल वाला ।—जं (अनूपजम्) (न०) १ नम । तर । २ अदरक । आर्द्र ।—प्राय (वि०) दलदल वाला ।

अनूपः (पु०) १ अधिक जल वाला देश । २ देश विशेष का नाम ।

अनूपाः बहुवचन दलदल । ३ जलाशय । तालाब । ४ (नदी) तट । (पर्वत) पार्श्व । ५ भैंसा ६ मैंढक । ७ तीतर विशेष । ८ हाथी ।

अनूरु (वि०) जंघा रहित ।

अनूरुः (पु०) सूर्य के सारथि अरुण देव । उषःकाल । भोर । तड़का ।

अनूर्जित (वि०) १ अदृढ़ । नामज़बूत । निर्बल । सामर्थ्यहीन । २ गर्वरहित ।

अनूषर (वि०) लोना । ऊसर ।

अनृच } (वि०) बिना ऋचा का । जो ऋग्वेद न
अनृच्‌ } पढ़ा हो या न जानता हो । यज्ञोपवीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अधिकार न हो ।

अनृचो माणवकः ।

मुग्धबोध ।

अनृजु (वि०) जो सीधा न हो । टेढ़ा । (आलं०) दुष्ट । बेईमान । बुरा ।

अनृण (वि०) जो कर्ज़दार न हो । जिसके ऊपर ऋषियों, देवों एवं पितरों का ऋण न हो ।

अनृत (वि०) झूठा ।—वदनं, —भाषणं, —आख्यानं (न०) झूठ बोलना । असत्य बोलना ।—वादिन्—वाच् (वि०) झूठा । —व्रत (वि०) जो अपना व्रत झूठा सिद्ध करे ।

अनृतम् (न०) १ झूठ । दगा । धोखा । २ कृषि ।

अनृतुः (पु०) अनुचित समय । बेठीक वक्त ।—कन्या (स्त्री०) लड़की जिसको रजस्वलाधर्म न हुआ हो ।

अनेक (वि०) १ एक नहीं । एक से अधिक । कई एक । भिन्न भिन्न । २ वियुक्त । विभाजित ।

अनेकधा (अव्यया०) अनेक प्रकार से ।

अनेकशः (अव्यया०) १ कई बार । बहुत बार । अक्सर । बहुधा । २ अनेक प्रकार से । बहुत तरह से । ३ बहुत बड़ी संख्या में । बड़ी तादाद में । बड़े परिमाण में । बड़ी मिकदार में ।

अनेकान्त (वि०) अनियत । अनिश्चित । जो एक रूप न हो । जिसके विषय में कुछ निश्चय न हो । चञ्चल । [जैनदर्शन ।

अनेकान्तवादः (पु०) स्याद्वाद । आर्हतदर्शन ।

अनेकान्तवादी (वि०) बौद्ध । जैनविशेष । सात पदार्थों को मानने वाले नास्तिक विशेष ।

अनेडः (वि०) मूर्ख आदमी । अनाड़ी आदमी ।—मूक (वि०) १ गूंगा बहरा । २ अँधा । ३ बेईमान । ४ दुष्ट ।

अनेनस् (वि०) पापरहित । कलङ्कशून्य ।

अनेहस (पु०) }
अनेहा (स्त्री०) } समय । काल । वक्त ।
अनेहसौ }

अनैकान्त (वि०) अनिश्चित । चञ्चल । अस्थिर । परिवर्तनीय । कभी कभी । नैमित्तिक । बीच बीच में ।

अनैकान्तिक (वि०) [स्त्री०—अनैकान्तिकी] चञ्चल । अस्थिर । २ न्याय में हेत्वाभास के पांच प्रकारों में से एक । [इसके तीन भेद हैं । यथा साधारण । असाधारण । अनुपसंहारी । सव्यभिचार ।]

अनैक्यम् (न०) एकता का अभाव । बहुतायत । २ ऐक्य का अभाव । गड़बड़ी । दुर्व्यवस्था ।

अनैतिह्यम् (न०) परम्परागत पद्धति के विरुद्ध ।

अनो (अव्यया०) नहीं । न ।

अनोकशायिन् (पु०) [स्त्री०—अनोकशायी] घर में न सोने वाला । भिक्षुक ।

अनोकहः (पु०) वृक्ष।
अनौचित्यं (न०) अयोग्यता। अयुक्तता।
अनौजस्यं (न०) उत्साह। साहस या बल का अभाव।
अनौद्धत्यम् (न०) १ शील। विनम्रता। २ शान्ति।
अनौरस (वि०) शास्त्रविरुद्ध। निजू नहीं। गोद लिया हुआ (पुत्र)।
अंत, अन्त (वि०) १ समीप। २ अख़ीर। ३ सुन्दर। प्यारा। ४ सब से नीचा। सब से गयाबीता। ५ सब से छोटा (उम्र में)।—तः [कभी कभी नपुंसक भी] (पु०) १ छोर। सीमा। मर्यादा। २ किनारा। धार। ३ वस्त्र का आँचल। ४ पड़ोस। सामीप्य। उपस्थिति। ५ समाप्ति। ६ मृत्यु। नाश। जीवन की समाप्ति। ७ (व्याकरण में) किसी शब्द का अन्तिम अक्षर या शब्दांश। ८ समासान्त शब्द का अन्तिम शब्द। ९ पिछला भाग या अवशेष भाग जैसे—निशान्त। वेदान्त। ११ प्रकृति। अवस्था। प्रकार। जाति। १२ स्वभाव। मिजाज़। सारांश।—अवशायिन् (पु०) चाण्डाल।—अवसायिन् (पु०) १ नाई। २ अछूत जाति। चाण्डाल।—कर,—करण,—कारिन् (वि०) नाशक। मारक। मरणशील।—कर्मन (न०) मृत्यु।—कालः (पु०)—वेला (स्त्री०) मृत्यु का समय या मृत्यु की घड़ी।—ग (वि०) १ अन्त तक पहुँचा हुआ। २ भली भाँति परिचित।—गति,—गामिन् (वि०) नष्ट। नाशवान्।—गमनं (न०) १ समाप्ति। पूर्णता। २ मृत्यु।—दीपकं (न०) अलङ्कार विशेष।—पालः (पु०) १ आगे का सैन्यदल। २ द्वारपाल।—लीन (वि०) छिपा हुआ।—लोपः (पु०)शब्द के अन्तिम अक्षर का अभाव।—वासिन्। (वि०) सीमा पर रहने वाला। समीप रहने वाला। (पु०) १ शिष्य जो सदा अपने शिक्षक के समीप रह कर विद्याध्ययन करता है। २ चाण्डाल जो गाँव के निकास पर रहता है।—शय्या (वि०) १ भूमि पर का बिछौना। मृत्युशय्या। २ कब्रगाह। क़बरस्तान। श्मशान।—सत्क्रिया (स्त्री०) दाहकर्म।—सद् (पु०) शिष्य। छात्र।

अंतक, अन्तक (वि०) जिससे मौत हो। नाश करने वाला। मोहलक। मृत्युशील।
अंतकः, अन्तकः (पु०) १ मौत। मृत्यु। २ यमराज।
अंततः, अन्ततः (अव्यया०) १ अन्त से। २ अन्त में। आखिर में। सब से पीछे से। ३ कुछ कुछ। थोड़ा थोड़ा। ४ भीतर। अन्दर।
अंते, अन्ते (अव्यया०) अन्त में। आखिर में। २ भीतर। अंदर। ३ सामने। समीप में। पास में।—वासः (पु०) १ पड़ोसी। साथी। २ शिष्य। छात्र। शागिर्द।
अंतर, अन्तर (अव्यया०) (धातु का एक उपसर्ग) बीचोबीच। मध्य में। अन्दर। में।—अग्निः (पु०) जठराग्नि। पेट के अंदर की आग जो भोजन पचाती है—अङ्ग (वि०) भीतरी। भीतर का।—अङ्गम् (न०) १ भीतरी अंग अर्थात् हृदय। मन। २ अगाढ़ मित्र। विश्वस्त पुरुष।—आकाश (पु०) ब्रह्म जो हृदय में वास करता है।—हृदयाकाश। आकूतं (न०) गुप्त विचार। मन में छिपा हुआ इरादा।—आत्मन् (पु०) १ आत्मा। जीव। आन्तरिकभाव। हृदय। २ (बहुवचन में) आत्मा के भीतर रहने वाला परमात्मा।—आराम (वि०) मन में आनन्दानुभव।—इन्द्रियं (न० भीतर की इन्द्रिय। मन।—करणं (न०) हृदय। जीव। रूह। विचार और अनुभव का स्थान। विचार शक्ति। मन। सत्यासत्य विवेकशक्ति।—कुटिल (वि) मन का कपटी। कुटिल।—कुटिलः (पु०) शङ्ख।—कोणः (पु०) भीतरी कौना।—कोपः (पु०) अंदरूनी गुस्सा। भीतरी क्रोध।—गडु (वि०) निकम्मा। व्यर्थ। अनुपयोगी।—गम्,—गत (वि०) देखो "अन्तर्गम्"।—गर्भ (वि०) गर्भिणी।—गिर,—गिरि (अव्यया०) पहाड़ों में।—गुडवलय (पु०) अन्तर्गुदावलय। मलद्वार आदि स्वाभाविक छिद्रों को खोलने मूंदनेवाली गोलाकार पेशी।—गूढ़ (वि०) भीतर छिपा हुआ।—गूढ़विषः (पु०) हृदय में छिपा हुआ विष।—गृहं,—गेहं,—भवनं (न०) घर के भीतर का कोठा या कमरा।—घणः

(पु०)—घणं। घर के द्वार के सामने का खुला हुआ स्थान।—चर (वि०) शरीर में व्याप्त।—जठरं (न०) पेट।—ज्वलनं (न०) जलने वाला। सूजन।—ताप (वि०) भीतर की जलन।—ताप. (पु०) भीतरी ज्वर।—दहनं (न०)—दाहः (पु०) १ भीतरी गर्मी। २ सूजन।—द्वारं (न०) घर का चोरदरवाज़ा।—परः (पु०)—पटं (न०) पर्दा। चिक आड़। परिधानम् (वि०) पोशाक के सब से नीचे का वस्त्र।—पुरं (न०) १ महल के भीतर का कमरा। २ महल के भीतर रहने वाली स्त्रियाँ। राजमहिषी। रानी।—वर्ती, ज़नानी ड्योढ़ी का दरोग़ा।—पुरिकः (पु०) जनानख़ाने का दरोग़ा।—भेदः (पु०) भीतरी झगड़े। आपसी का झगड़ा, टंटा।—मनस् (वि०) उदास। उद्विग्न।—यामः (पु०) दम साधना और कण्ठस्वर को रोकना।—लीन (वि०) भीतर छिपा हुआ।—वत्नी (वि०) गर्भिणी स्त्री।—वस्त्रं, (न०)—वासस् (न०) अंगे आदि के नीचे पहिनने का वस्त्र। कुर्ता बनियाइन आदि।—वाणि (वि०) प्रकाण्डविद्वान।—वेगः (पु०) अंदरूनी बुखार। भीतर की घबड़ाहट। आन्तरिक-चिन्ता।—वेदिः,—वेदी (स्त्री०) अन्तर्वेद। प्रदेश विशेष। वह प्रदेश जो गंगा और यमुना नदी के बीच में है।—वेश्मन् (न०) घर के भीतर का कोठा। भीतर का कोठा।—वेश्मिकः (पु०) रनवास का प्रबन्धक।—शिला (स्त्री०) एक नदी का नाम जो विन्ध्याचल पर्वत से निकलती है।—सत्त्वा (वि०) गर्भिणी स्त्री।—सन्तापः (पु०) अंदरूनी दुःख, क्षोभ, खेद।—सलिल (वि०) वह जल जो ज़मीन के नीचे बहता है।—सार (वि०) भारी। दृढ़।—सेनं (अव्यया०) सेनाओं के बीच में।—स्थः (अन्तस्थः) (पु०) स्पर्श और ऊष्म के मध्य के वर्ण य, व, र, ल आदि।—स्वेदः (पु०) (मदमाता) हाथी।—हासः (पु०) गूढ़ हास्य।—हृदयं (न०) हृदय के भीतर का स्थान।

अंतर, अन्तर (वि०) १ भीतरी। भीतर की ओर। २ समीप। पास में। ३ सम्बन्धवाची। समीपी। प्रिय। ४ समान। ५ भिन्न। दूसरा। ६ बाहिरी। बाहिरस्थित। बाहिर पहिना जाने वाला।—अपत्या (वि०) गर्भवती स्त्री।—ज्ञ (वि०) भीतर का हाल जानने वाला। दूरदर्शी। परिणाम दर्शी।—पुरुषः—पूरुषः, (पु०) जीव। आत्मा। वह देवता जो पुरुष के भीतर वास करता और उसके शुभाशुभ कर्मों का साक्षी बना रहता है।—प्रभवः (पु०) वर्णसङ्कर जाति वालों में से एक।—स्थ,—स्थायिन्,—स्थित (वि०) १ भीतर। अंदर। स्वाभाविक। सहज। २ बीच में स्थित।

अंतरम्, अन्तरम् (न०) १ (क) भीतर। भीतरी। (ख) सूराख़, सन्धि। २ आत्मा। रूह। हृदय। मन। ३ परमात्मा। ४ कालसन्धि। बीच का समय या स्थान। अवकाश का समय। ५ कमरा। स्थान। ६ द्वार। जाने का रास्ता। प्रवेश द्वार। ७ (समय की) अवधि। ८ मौक़ा। अवसर। समय। ९ (दो वस्तुओं के बीच) अन्तर। फ़र्क़। १० (गणित में) भिन्नता। शेष। ११ फ़र्क़। दूसरा। परिवर्तित। १२ विशेषता। प्रकार। क़िस्म। १३ निर्बलता। असफलता। त्रुटि। दोष। १४ ज़मानत। दायित्व-स्वीकृति। १५ सर्वश्रेष्ठता १६ परिधान। वस्त्र। १७ अभिप्राय। मतलब। १८ प्रतिनिधि। एक के स्थान पर दूसरे के स्थापन की क्रिया। १९ रहित। बिना।

अंतरतः, अन्तरतः (अव्यया०) १ भीतर। भीतरी। बिल्कुल २ बीच से। बीच में। ३ अंदर।

अंतरम, अन्तरम (वि०) अत्यन्त निकट। भीतरी। पास। अत्यन्त विश्वस्त।

अंतरयः अन्तरयः, **अंतराय, अन्तरायः** } (पु०) बाधा। रोक। अड़चन। रुकावट।

अंतरयति, अन्तरयति (क्रि०) १ बीच में डालना। दूसरी ओर मुड़वाना। स्थगित करवाना। २ विरोध करना। ३ हटाना। ढकेलना।

अंतरा, अन्तरा (अव्यया०) १ निकट। २ मध्य। ३ रहित। बिना।—अंसः (पु०) वक्षस्थल। छाती।—भवदेहः, (पु०)—भवसत्वं (न०)

जीव या जीव की वह अवस्था जो मृत्यु और जन्म के बीच के काल में रहती है।—वेदिः (पु०)—वेदी (स्त्री०) १ वरंडा। दालान। द्वारमण्डप। २ दीवाल विशेष।—शृङ्गं (अव्यया०) सींगों के बीच।

अंतरालं, अन्तरालं } (न०) १ अभ्यन्तर। मध्य। बीच।
अंतरालकं, अन्तरालकं }

अंतरिक्षं, अन्तरिक्षं } (न०) आकाश। आसमान। व्योम। नभ।—गः,—चरः (पु०) पक्षी। चिड़िया।—जलं (न०) ओस। हिम।
अंतरीक्षं, अन्तरीक्षं }

अंतरित, अन्तरित (व० कृ०) १ बीच में गया हुआ। बीच में पड़ा हुआ। २ अन्दर घुसा हुआ। छिपा हुआ। ढका हुआ। पर्दा के भीतर का। दृष्टि के ओझल। ३ रुकावट डाला हुआ। रुद्ध। रुका हुआ। भिन्न किया हुआ। पृथक् किया हुआ। निगाह से छिपा हुआ अदृष्ट। ४ गायब। लुप्त। नष्ट (दृष्टि से) प्रस्थानित। रोका हुआ। ५ छूटा हुआ। चूका हुआ।

अंतरीपः, अन्तरीपः (पु०) भूमि का एक टुकड़ा जो किसी समुद्र या खाड़ी के भीतर तक चला गया हो। द्वीप।

अंतरीयम्, अन्तरीयम् (न०) बनियाइन। कुर्त्ता। नीमास्तीन। नीमा।

अंतरेण, अन्तरेण (अव्यया०) १ बिना। छोड़ कर। सिवाय। २ मध्य में। बीच में। हृदय से। मन से।

अंतर्गतम्, अन्तर्गतम् (वि०) १ अन्तर्भूत। भीतर गया हुआ। २ विस्मृत। ३ छिपा हुआ। ४ अदृष्ट। ग़ायब।—उपमा (स्त्री०) गुप्त उपमा।

अंतर्धा, अन्तर्धा (पु०) छिपाव। दुराव। ढकाव।

अंतर्धानम्, अन्तर्धानम् (न०) छिप जाना। गुप्त हो जाना। अदृश्य होना।

अंतर्धिः, अन्तर्धिः (स्त्री०) अदृश्यता। छिपाव। दुराव।

अंतर्भव, अन्तर्भव (वि०) भीतर की ओर। भीतरी। अंदरूनी।

अंतर्भावः, अन्तर्भावः (पु०) अन्तर्निवेश। सहज प्रवृत्ति। अन्तर्निगूढ़ प्रवृत्ति।

अंतर्भावना, अन्तर्भावना (स्त्री०) अन्तर्निवेश। २ मानसिक ध्यान या चिन्ता।

अंतर्य, अन्तर्य (वि०) भीतरी। अंदरूनी। बीच में। मध्य में।

अंतर्हित, अन्तर्हित १ मध्यस्थित। पृथक् किया हुआ। अलगाया हुआ। छिपा हुआ। गूढ़। २ अदृश्य। ग़ायब।—आत्मन् (पु०) शिवजी का नाम।

अंति, अन्ति (अव्यया०) को। समीप में।

अंतिः, अन्तिः (नाटकों में)। बड़ी बहिन।

अंतिक, अन्तिक (वि०) १ समीप। नज़दीक। २ पहुँच। ३ तक।

अंतिकम्, अन्तिकम् (न०) सामीप्य। पड़ोस। उपस्थिति। मौजूदगी।

अंतिका, अन्तिका (स्त्री०) १ जेठी बहिन। २ चूल्हा। अंगीठी। ३ सातलाख्य या शातलाख्य नाम की औषधि विशेष।

अंतिम, अन्तिम (वि०) चरम। सब से पीछे का। आख़िरी—अङ्कः (पु०) नव की संख्या।—अङ्गुलिः कनिष्ठिका। छगुनिया।

अंती, अन्ती (पु०) चूल्हा। अंगीठी। अलाव।

अंत्य, अन्त्य (वि०) १ अन्तिम। चरम्। २ सब से नीचा। सब से बुरा। सब से हल्का। दुष्ट।—अवसायिन् (पु०) (स्त्री०) नीच जाति का पुरुष या स्त्री। निम्न सात जातियाँ नीच मानी गयी हैं।

> "चाण्डालः श्वपचः क्षत्ता सूतो वैदेहकस्तथा।
> मागधायोगवौ चैव सप्तैतेऽन्त्यावसायिनः॥

—आहुतिः, —इष्टिः (स्त्री०) —कर्मन्, —क्रिया (स्त्री०) पूर्णाहुति। बलिदान।—ऋण (न०) तीन ऋणों में से अन्तिमऋण अर्थात सन्तानोत्पत्ति। —जः, —जन्मन् (पु०) १ शूद्र। सात नीच जातियों में से एक। चाण्डाल। —जन्मन्, —जाति, —जातीय (वि०) १ किसी

नीच जाति का। २ शूद्र। ३ चाण्डाल।—भं (न०) रेवती नक्षत्र।—युगं (न०) अन्तिम युग अर्थात् कलियुग।—योनि (वि०) अत्यन्त नीच जाति का।—लोपः किसी शब्द के अन्तिम अक्षर का लुप्त होना।—वर्णः (पु०)—वर्णा (स्त्री०) नीच जाति का पुरुष या स्त्री। शूद्र स्त्री या शूद्र पुरुष।

अंत्यः, अन्त्यः निम्नवर्ण का मनुष्य। शब्द का अन्तिम अक्षर। ३ (पु०) अन्तिम चान्द्रमास। फाल्गुण मास। ४ म्लेच्छ।

अंत्यम्, अन्त्यम् (न०) संख्याविशेष अर्थात् १०००००००००००००। मीन राशि। रेवती नक्षत्र।

अंत्यक, अन्त्यकः (पु०) पञ्चमवर्ण का मनुष्य।

अंत्या, अन्त्या (स्त्री०) नीच जाति की स्त्री।

अंत्रं, अन्त्रं (न०) आंत।—कूजः (पु०),—कूजनं,—विकूजनं (न०) आंत का बोलना। पेट की गुड़-गुड़।—वृद्धिः (स्त्री०) आँत का उतरना।—शिला (स्त्री०) विन्ध्याचल से निकलने वाली एक नदी का नाम।—स्रज् (स्त्री०) आँतों की माला जिसे नृसिंह भगवान् ने पहिना था।—अन्त्रंधमिः (स्त्री०) अजीर्ण। अपच।

अंदुः, अन्दुः / अंदूः, अन्दूः (स्त्री०) हथकड़ी बेड़ी। हाथी के पैर में बाँधने की जंजीर। नूपुर।

अंदोलनम्, अन्दोलनं (न०) लहराना। हिलना। हिलना डुलना।

अंध्, अन्ध् (धातु० उभय०) अंधा बनाना। अंधा हो जाना।

अंध, अन्ध (वि०) अंधा। दृष्टिहीन।—कारः (पु०) अंधियारा।—कूपः (पु०) १ कुआ जिसका मुख ढपा हो। २ एक नरक का नाम।—तमसं,—तामसं,—अन्धातमसम् (न०) निविड़ अन्धकार।—तामिस्रः या तामिश्रः (पु०) १ निविड अन्धकार।—धी (वि०) मानसिक अंधा।—पूतना (स्त्री०) एक राक्षसी जो बालकों में रोग उत्पन्न करने वाली मानी जाती है।

अंधम्, अन्धम् (न०) १ अंधियारा। अन्धकार। २ जल। गंदला जल।

अंधकरण, अन्धकरण (वि०) अंधा बनाने वाला।

अंधंभविष्णु, अन्धंभविष्णु (वि०) अंधा हो जाना।

अंधमभावुक, अन्धभावुक (वि०) देखो अंधभविष्णु।

अंधक, अन्धक (वि०) अंधा।—अरिः,—रिपुः, शत्रुः,—घाती,—असुहृद् (पु०) अन्धक दैत्य के मारने वाले। शिवजी का नाम।—वर्तः (पु०) एक पहाड़ का नाम।—वृष्णिः (पु०) (बहुवचन) अन्धक और वृष्णि के वंशवाले।

अंधकः, अन्धकः (पु०) एक असुर का नाम जो कश्यप और दिति का पुत्र था और जिसे शिव जी ने मारा था।

अंधस्, अन्धस् (न०) भोजन।

अंधिका, अन्धिका १ रात्रि। २ खेल विशेष। आँखमिचौनी। जुआ। ३ नेत्ररोग विशेष।

अंधु, अन्धुः (पु०) कुआ। कूप इनारा।

अंध्रः, अन्ध्रः (पु० बहुवचन) १ एक जाति का तथा उस जाति के उस देश का नाम जिसमें वह बस्ती है। २ एक राजवंश का नाम। ३ निम्न या वर्णसङ्कर जाति का मनुष्य।

अन्नम् (न०) १ (साधारणतया) भोजन। भात। २ कच्चा धान्य, चना, जौ आदि।—अद्यं (न०) उपयुक्त भोजन।—आच्छादनं,—वस्त्रं (न०) भोजन और वस्त्र।—कालः (पु०) भोजन करने का समय।—कूटः (पु०) भात का एक बड़ा (पर्वतोपम) ढेर।—कोष्ठकः (पु०) १ भड़ेरी। भण्डारी। अलमारी। २ विष्णु। ३ सूर्य।—गन्धिः (पु०) दस्तों की बीमारी। अतीसार। संग्रहणी।—जलं (न०) रोटी पानी।—दासः (पु०) नौकर। चाकर। वह नौकर जो केवल भोजन पर काम करे।—देवता (स्त्री०) अन्न के अधिष्ठातृ देवता।—दोषः (पु०) निषिद्ध अन्न खाने से उत्पन्न पाप।—द्वेषः (पु०) अन्न से अरुचि। अफरा रोग।—पूर्णा (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप विशेष।—प्राशः, (पु०)—प्राशनं (न०) १६ संस्कारों में से एक विशेष संस्कार। इसमें नवजात बालक को

प्रथमवार अन्न खिलाने की विधिवत् क्रिया सम्पादन की जाती है । जूठा ।—भुज् (वि०) १ अन्न का खाना । २ शिव की उपाधि ।—मलं (न०) १ विष्ठा । मल । पाखाना (२) मदिरा विशेष ।

अन्नः (पु०) सूर्य ।

अन्नमय (वि०) [स्त्री०—अन्नमयी] अन्न की बनी हुई ।—कोशः,—कोपः (पु०) स्थूल शरीर ।

अन्नमयम् (न०) अन्न का बाहुल्य । भोज्य पदार्थों की बहुतायत ।

अन्य (वि०) (अन्यत् न०) १ भिन्न । दूसरा । २ विलक्षण । असाधारण । यथा ।

' अन्या जगद्धितमयी मनसः प्रवृत्तिः

—भामिनीविलास ।

३ साधारण । कोई । ४ अतिरिक्त । नया । अधिक । —असाधारण (वि०) जो दूसरों के लिये साधारण न हो । विचित्र । विलक्षण ।—उदर्य (वि०) दूसरे से उत्पन्न ।—र्यः (अन्यर्यः पु०) १ सौतेली मा का पुत्र । सौतेला भाई ।—र्या (अन्यर्या) (स्त्री०) सौतेली बहिन ।—ऊढा (वि०) दूसरे को विवाही हुई । दूसरे की पत्नी ।—क्षेत्रं (न०) १ दूसरा खेत । २ दूसरा राज्य । विदेशी राज्य । ३ दूसरे की स्त्री ।—ग,—गामिन् (वि०) १ दूसरे के पास जाना । २ व्यभिचारी । छिनरा । जार । लंपट । पापी ।—गोत्र (वि०) दूसरे वंश का ।—चित्त (वि०) मनविक्षेप ।—ज,—जात । (वि०) दूसरी उत्पत्ति का । दूसरी जाति का ।—जन्मन् (न०) जन्मान्तर ।—दुर्वह (वि०) दूसरों द्वारा न ढोने या उठाने योग्य ।—नाभि (वि०) दूसरे वंश या कुल का ।—पर (वि०) १ दूसरों के प्रति भक्तिमान् । दूसरों से अनुरक्त । दूसरी वस्तु को प्रकट करना या हवाला देना ।—पुष्टः (पु०) —पुष्टा (स्त्री०) —भृतः, (पु०) —भृता (स्त्री०) दूसरो से पालो हुई । कोयल । —पूर्वा (स्त्री०) कन्या का जिसकी सगाई दूसरी जगह हो चुकी है ।—बीजः,—बीजसमुद्भवः—समुत्पन्नः (पु०) गोद लिया हुआ पुत्र । दत्तक पुत्र ।—भृत (पु०) कौआ । काक । —मनस्,—मनस्क,—मानस (वि०) चञ्चल । जो ध्यान न दे । असावधान ।—मातृजः (पु०) सौतेला भाई ।—रूप (वि०) परिवर्तित । बदला हुआ ।—लिङ्ग,—लिङ्गक (वि०) दूसरे शब्द के लिङ्गानुसार ।—वापः (पु०) कोयल ।—विवर्धित (वि०) कोयल ।

अन्यतम् (वि०) बहुत में से एक ।

अन्यतर (वि०) दो में से एक ।

अन्यतरतः (अव्य०) दो तरह में से एक ।

अन्यतरेद्युः (अव्यया०) दो में से किसी एक दिन । एक दिन या दूसरे दिन ।

अन्यतः (अव्य०) १ दूसरे से । २ एक ओर । दूसरे आधार पर या दूसरे उद्देश्य से ।

अन्यत्र (अव्य०) दूसरी जगह । अन्यस्थान । २ व्यतिरेक । दूसरा । ३ बिना ।

अन्यथा (अव्य०) १ प्रकारान्तर । पक्षान्तर । २ मिथ्यापन से । झूठपन से । ३ अशुद्धता से । भूल से ।—भावः (पु०) परिवर्तन । अदलबदल । अन्तर ।—वादिन् (वि०) प्रकारान्तर से बोलने वाला । मिथ्यावादी ।—वृत्ति (वि०) १ परिवर्तित । उत्तेजित । उद्विग्न ।—सिद्धिः (स्त्री०) (न्याय में) एक दोष विशेष, जिसमें यथार्थ नहीं, प्रत्युत अन्य कोई कारण दिखला कर किसी विषय की सिद्धि की जाय ।—स्तोत्रं (न०) व्यंग्य ।

अन्यदा (अव्यया०) १ दूसरे समय । दूसरे अवसर पर । अन्य किसी दशा में । २ एक बार । कभी एक बार । ३ कभी कभी ।

अन्यर्हि (अव्यया०) दूसरे समय ।

अन्यादृक्ष, अन्यादृश, अन्यादृशे (वि०) परिवर्तित । असाधारण । विलक्षण ।

अन्याय (वि०) अनुपयुक्त । बेठीक ।

अन्यायः (पु०) कोई अनुचित या आईन विरुद्ध कार्य ।

अन्यायिन् (वि०) अनुचित । अयथार्थ ।

अन्याय्य (वि०) १ अयथार्थ । आईन विरुद्ध । २ अनुचित । बेडौल । भद्दा । ३ अप्रामाणिक ।

अन्यून (वि०) समूचा । समस्त ।—अङ्ग (वि०) जिसका कोई अङ्ग कम बढ़ न हो ।

अन्येद्युः (अव्यया०) १ दूसरे दिन या अगले दिन । २ एक दिन । एक बार ।

अन्योन्य (अव्यया०) १ परस्पर । आपस में ।—आश्रय (वि०) परस्पर अविलम्बित । -युक्तिः (स्त्री०) वार्तालाप । बातचीत ।

अन्योन्याभावः (पु०) पारस्परिक अभाव ।

अन्योन्याश्रय (वि०) आपस का सहारा । एक दूसरे की अपेक्षा । सापेक्षज्ञान ।

अन्वक्ष (वि०) प्रत्यक्ष । साक्षात् ।

अन्वक्षम् (न०) पीछे से पीछे । तुरन्त ही । पीछे से । तुरन्त । सीधा, किसी के बीच में होकर नहीं ।

अन्वक् (अव्यया०) तदनन्तर । पीछे से । अनुकूलता से । पीछे ।

अन्वंच् (वि०) १ पीछे जाना । पछियाना । अनुसरण ।

अन्वयः (पु०) अनुयायी । चाकर । २ सम्बन्ध । सङ्गति । रिश्तेदारी । ३ व्याकरणानुसार वाक्य की शब्द योजना । ४ जाति । वंश । कुल । ६ वंशवाले । कुलवाले । ५ न्याय में कार्य करण सम्बन्ध ।—आगत (वि०) वंशपरम्परागत ।—ज्ञः (पु०) वंशावली जानने वाला ।—व्यतिरेकः (पु०) निश्चय पूर्वक हाँ या ना सूचक कथित वाक्य । १ नियम और अपवाद ।—व्याप्तिः (स्त्री०) स्वीकारोक्ति । जहाँ धूम वहाँ अग्नि—इस प्रकार की व्याप्ति ।

अन्वर्थ (वि०) १ अर्थ के अनुसार । २ सार्थक । अर्थयुक्त ।

अन्ववसर्गः (पु०) कामचारानुज्ञा । यथेच्छ आचरण की अनुमति । यथेच्छाचार ।

अन्ववसित (वि०) सम्बन्धयुक्त । बंधा हुआ । जकड़ा हुआ ।

अन्ववायः (पु०) जाति । वंश । कुल ।

अन्ववेक्षा (स्त्री०) सम्मान । आदर ।

अन्वष्टका (स्त्री०) साग्निकों के लिये एकमातृक श्राद्ध, जो अष्टका के अनन्तर पूस, माघ, फागुन और आश्विन की कृष्णा नवमी को किया जाता है ।

अन्वष्टमदिशं (अव्यया०) उत्तर पश्चिम के कोण की ओर ।

अन्वहं (अव्यया०) प्रति दिन । दिन दिन ।

अन्वाख्यानं (न०) पूर्वकथित विषय की पीछे से व्याख्या ।

अन्वाचयः (पु०) मुख्य कार्य की सिद्धि के साथ साथ अप्रधान (गौण) की भी सिद्धि । जैसे एक काम के लिये जाते हुए को, एक दूसरा वैसा ही साधारण काम बतला देना ।

अन्वादिष्ट (व० कृ) पीछे वर्णित । पुनर्नियुक्त । २ गौण ।उपयोगी ।

अन्वादेशः (पु०) एक आज्ञा के बाद दूसरी आज्ञा । किसी कथन की द्विरुक्ति ।

अन्वाधानं (न०) हवन की अग्नि पर समिधाओं को रखना ।

अन्वाधिः १ अमानत, जो किसी अन्य पुरुष को इस लिये सौंपी जाय कि, अन्त में वह उसे उसके न्यायानुमोदित अधिकारी को दे दे । २ दूसरी अमानत । ३ सतत परिताप, पश्चाताप या पछतावा ।

अन्वाधेयं } (न०) एक प्रकार का स्त्रीधन, जो
अन्वाधेयकं } स्त्री को विवाह के बाद पतिकुल या पितृकुल अथवा उसके अन्य कुटुम्बियों से प्राप्त होता है ।

अन्वारम्भः (पु०) } स्पर्श । किसी विशेष धर्म्मा-
अन्वारम्भणम् (न०) } नुष्ठान के बाद यजमान का स्पर्श या पीठ ठोकना यह जताने को कि, उसका कृत्य सुफल हुआ ।

अन्वारोहणं (न०) किसी सती स्त्री का पति के शव के साथ या पीछे भस्म होने के लिये चिता पर चढ़ना ।

अन्वासनम् (न०) सेवा । पूजा । २ एक के बैठने के बाद दूसरे का बैठना । ३ दुःख । शोक ।

अन्वाहार्यः (पु०) } मृत पुरुष के उद्देश्य से प्रति
अन्वाहार्यम् (न०) } अमावास्या के दिन किया
अन्वाहार्यकम् (न०) } जाने वाला मासिक श्राद्ध।

अन्वाहिक (वि०) [स्त्री०—अन्वाहिकी] दैनिक।

अन्वित (व० कृ०) १ युक्त। सम्बन्धप्राप्त। २ किसी पद्य के शब्द जो वाक्यरचना के नियमानुसार यथास्थान रखे गये हों। ३ साधर्म्य के अनुसार भिन्न भिन्न वस्तु जो एक श्रेणी में रखी हुई हों।

अन्वीक्षणं (न०) १ ध्यान से देखना। २ खोज।

अन्वीक्षणा (स्त्री०) अनुसन्धान। विचार।

अन्वीत देखो अन्वित।

अन्वृचं (अव्यया०) पद्य के वाद पद्य।

अन्वेषणः (पु०) } अनुसन्धान। खोज।
अन्वेषणम् (न०) } तालाश। ढूंढ़।
अन्वेषणा (स्त्री०) }

अन्वेषक }
अन्वेषिन् } (वि०) खोजने वाला। तलाश करने वाला।
अन्वेष्टृ }

अप् (स्त्री०) [इसके बहुवचन ही में रूप होते हैं। आपः, अपः, अद्भिः, अद्भ्यः, अपां और अप्सु; किन्तु वैदिक साहित्य में इसके रूप दोनों वचनों, में एकवचन और बहुवचन में मिलते हैं।] जल। पानी।—पतिः (पु०) वरुण का नाम। २ समुद्र।

अप (अव्यया०) जब यह किसी क्रिया में उपसर्ग के रूप में जोड़ा जाता है; तब इसका अर्थ होता है दूर। हट कर। विरोध। अस्वीकृति। खण्डन। वर्जन। कई स्थलों पर अप का अर्थ होता है बुरा। अश्रेष्ठ। बिगड़ा हुआ। अशुद्ध। अयोग्य।

अपकरणं (न०) १ अनुचित रीति से वर्तना। २ बुराई करना। अपमान करना। चिढ़ाना। दुर्व्यवहार करना। घायल करना।

अपकर्तृ (वि०) साघातिक। अनिष्टकर। अप्रीतिकर। (पु०) शत्रु।

अपकर्मन् (न०) १ दुष्कर्म। दुराचार। दुष्टाचरण। २ दुष्टता। अत्याचार। ज्यादती। ३ कर्ज़ अदा करना। ऋण चुकाना। "दत्तस्यानपकर्म च।" (मनु०)

अपकर्षः (पु०) नीचे को खींचना। २ घटाव। कमी। उतार। ३ निरादर। अपमान। वेकद्री।

अपकर्षक (वि०) घटाने वाला। छोटा करने वाला। नीचे खींचने वाला।

अपकर्षणम् (न०) १ हटाना। खींच कर नीचे ले जाना। खींचकर निकालना। २ कम करना। ३ किसी को किसी स्थान से हटाकर स्वयं उस पर बैठना।

अपकारः (पु०) १ अनिष्टसाधन। द्वेष। द्रोह। बुराई। नुकसान। हानि। अनभल। अहित। २ दुष्टता। अत्याचार। उग्रता। ३ ओछा या नीच कर्म।—अर्थिन् (वि०) विद्वेषकारी। अनिष्टप्रिय। दुराशय।—शब्दः (पु०) गालियाँ। कुवाच्य। अपमानकारक उक्ति।

अपकारक } (वि०) १ अनिष्टकर्ता। क्षति
अपकारिन् } पहुँचाने वाला। हानिकारी। २ विरोधी। द्वेषी।

अपकारकः } (पु०) अपकार करने वाला। बुराई
अपकारी } करने वाला।

अपकुशः (पु०) दन्तरोग विशेष।

अपकृत (वि०) } अपकार किया हुआ। अपकारी।
अपकृति (स्त्री०) } अपक्रिया। अपकार। क्षति।

अपकृष्ट (व० कृ०) १ हटाया हुआ। खींच कर ले जाया हुआ। २ नीच। दुष्ट। क्षुद्र।

अपकृष्टः (पु०) काक। कौआ।

अपकौशली (स्त्री०) खबर। समाचार। सूचना।

अपक्तिः (स्त्री०) १ कच्चापन। २ अजीर्ण।

अपक्रमः (पु०) १ पलायन। भगड़। दौड़। भागना। २ (समय का) निकल जाना। (वि०) अस्तव्यस्त। गड़बड़।

अपक्रमणम् (न०) } पलायन। (सेना का) पीछे
अपक्रामः (पु०) } हट जाना। निकलभागना। बचकर निकल जाना।

अपक्रोशः (पु०) गाली । अपशब्द । निन्दन । जुगुप्सन । तिरस्कार ।

अपक्वम् (वि०) अपरिणत । नहीं बढ़ा हुआ । कच्चा ।

अपक्ष (वि०) १ विना पंख का । उड़ने की शक्ति से हीन । २ जो किसी दल विशेष का न हो । ३ जिसका कोई मित्र या अनुयायी न हो । ४ विरुद्ध । उल्टा ।—पातः (पु०) पक्षपातराहित्य । न्याय । खरापन ।—पातिन् (न०) जो किसी की तरफदारी न करे । खरा । न्यायी ।

अपक्षयः (पु०) नाश । अधःपात । ह्रास । क्षय ।

अपक्षेपः (पु०) } अपक्षेपणम् (न०) } १ फेंकना । पल्टाना । २ गिराना । च्युतकरना । ३ प्रकाशादि का किसी पदार्थ से टकरा कर पलटना । ४ (वैशेषिक दर्शनानुसार) आकुञ्चन, प्रसारण आदि पांच प्रकार के कर्मों में से एक ।

अपगण्डः (पु०) वालिग । वयस्क ।

अपगमः (पु०) } अपगमनम् (न०) } १ प्रस्थान । वियोग । २ पात । गायव ।

अपगतिः (स्त्री०) वदक़िस्मती । दुर्भाग्य । अभाग्य ।

अपगरः १ (पु०) धिक्कार । डाँटडपट । गालीगलौज । २ गालियाँ देनेवाला या अप्रियवचन कहने वाला ।

अपगर्जित (वि०) गर्जनाशून्य ।

अपगुणः (पु०) दोष । अवगुण ।

अपगोपुर (वि०) नगरद्वार से शून्य । जिसमें फाटक न हो ।

अपघनः (पु०) देह । शरीर । अवयव । शरीरावयव ।

अपघातः (पु०) १ हत्या । हिंसा । २ वञ्चना । धोखा । विश्वासघात ।

अपघातिन् (वि०) विश्वासघाती । हिंसक । हत्या करने वाला ।

अपचः (पु०) १ रसोई वनाने के अयोग्य अथवा जो अपने लिये रसोई न वनावे । २ गँवार रसोइया । ३ एक प्रकार की गाली ।

अपचयः (पु०) अवनति । ह्रास । सडन । अधः-पात । नाश । २ ऐव । त्रुटि । दोष । असफलता ।

अपचरितं (न०) अपराध । भूल । दुष्कर्म ।

अपचारः (पु०) १ प्रस्थान । मृत्यु । २ अभाव । राहित्य । ३ अपराध । दुष्कर्म । असदाचरण । जुर्म । ४ अपथ्य ।

अपचारिन् (वि०) दुष्ट । बुरा । असदाचारी ।

अपचितिः (स्त्री०) हानि । अधःपात । नाश । २ व्यय । ३ पाप का प्रायश्चित्त । समन्वय । क्षति-पूरण । ४ सम्मान । पूजन । प्रतिष्ठाप्रदर्शन ।

अपच्छत्र (वि०) विना छाते का । छाता रहित ।

अपच्छाय (वि०) १ जिसकी परछायी न हो । २ चमक रहित । धुंधला ।

अपच्छायः (पु०) जिसकी परछाई न हो । देवता ।

अपच्छेदः (पु०) } अपच्छेदनम्(न०) } १ काट डालना । २ हानि । ३ बाधा ।

अपजयः (पु०) हार । शिकस्त ।

अपजातः (पु०) बुरी सन्तान । सन्तान जो अपने माता पिता के गुणों के समान न हो ।

अपज्ञानं (न०) अस्वीकृति । छिपाव । दुराव ।

अपञ्चीकृतं (न०) पदार्थ विशेष जो पाँचतत्वों से न बना हो ।

अपटी (स्त्री०) १ क़नात । कपड़े की एक प्रकार की विशेष पर्दा । २ पर्दा ।

अपटु (वि०) अनिपुण । गाउदी । भौंदू । २ वक्तृत्व शक्ति में जो निपुण न हो । ३ बीमार । रोगी ।

अपठ (वि०) जो पढ न सके । जो पढ़ा न हो । अधम पाठक ।

अपण्डित (वि०) १ जो विद्वान न हो । जो बुद्धिमान न हो । मूर्ख । अपढ़ । अज्ञानी । २ जिसमें चातुर्य, रुचि और दूसरों की सराहना करने का अभाव हो ।

अपण्य (वि०) जो विक न सके ।

अपतर्पणं (न०) (बीमारी में) कड़ाका । लंघन । असन्तोष ।

अपति } अपतिक } (वि०) विना स्वामी के । विना पति के । अविवाहित ।

अपत्नीक (वि०) विना स्त्री वाला। पत्नीरहित।

अपत्य (न०) सन्तति। शिशु। सन्तान। औलाद। —काम (वि०) पुत्र या पुत्री की इच्छा रखने वाला।—पथः (पु०) योनि। भग।—विक्रयिन् (पु०) सन्तान बेचने वाला।—शत्रुः (पु०) १ केकड़ा। २ साँप।

अपत्रप (वि०) निर्लज्ज। बेहया।

अपत्रपणम् (न०) } शर्म। लज्जा। लाज।
अपत्रपा (स्त्री०) }

अपत्रपिष्णु (वि०) शर्मीला। लजीला।

अपत्रस्त (व० कृ०) भयभीत। डरा हुआ। भय से थमा हुआ। भय से रुका हुआ।

अपथ (वि०) मार्गहीन।—गामिन् (वि०) बुरी राह चलने वाला। कुमार्गी।

अपथम् (न०) } बुरी सड़क। सड़क का अभाव।
अपन्था(स्त्री०) } (अलं०) बुरी राह। पाप की राह।

अपथ्य (वि०) १ अयोग्य। अनुचित। हानिकारी। ज़हरीला। २ अहितकर। जो गुणकारी न हो। ३ ख़राब। अभागा।—कारिन् (वि०) अपराधी। जुर्म करने वाला।

अपदः (पु०) उरग। सरीसृप, सर्प आदि।—अन्तर (वि०) समीपस्थ। अति निकट।—अन्तरम् (न०) समीप्य। निकटता।

अपदम् (न०) १ बुरा स्थान या घर। २ शब्द जो पदवाच्य न हो। ३ व्योम।

अपदक्षिणं (अव्यया०) बाईं ओर।

अपदम (वि०) असंयमी। विना इन्द्रिय-निग्रह-वान्।

अपदश (वि०) दस की संख्या से दूर।

अपदानं } (न०) १ सदाचरण। विशुद्ध आच-
अपदानकम् } रण। २ महान् या उत्तम काम। सर्वोत्तम कर्म। ३ सम्यक् पूर्ण किया हुआ कार्य।

अपदार्थः (पु०) १ कुछ नहीं। २ वाक्य में जो शब्द प्रयुक्त हुए हों उनका अर्थ न होना।

"अपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसति"

—काव्यप्रकाश।

अपदेशः (पु०) १ बयान। कथन। उपदेश। वर्णन। २ बहाना। व्याज। मिस। २ लक्ष्य। उद्देश्य। ३ अपने स्वरूप को छिपाना, भेष बदलना। ४ स्थान। ६ अस्वीकृति। ७ कीर्ति। नामवरी। ८ छल। धोखा। दग़ाबाजी।

अपदेवता (स्त्री०) भूत। प्रेत। दुष्ट आत्मा।

अपद्रव्यं (न०) बुरी वस्तु।

अपद्वार (न०) बग़ल का दरवाज़ा। बग़ली द्वार।

अपधूम (वि०) धूमरहित।

अपध्यान (न०) बुरे विचार। अनिष्टचिन्तन। मन ही मन अकोसना।

अपध्वसः (पु०) अधःपात। अपमान। बेइज्जती। —जः (पु०)—जा (स्त्री०) किसी वर्णसङ्कर, अधम और अछूत जाति का व्यक्ति।

अपध्वस्त (व० कृ०) शापित। अकोसा हुआ। घृणित। २ जो अच्छी तरह से न कूटा पीसा गया हो। अधकुटा। अधकचरा। ३ त्यक्त। त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ।

अपध्वस्तः (पु०) दुष्ट अभागा। जिसमें सदसद्विवेक शक्ति रह ही न गयी हो।

अपनयः (पु०) १ हटाना। अलहदा करना। खण्डन करना। २ बुरी नीति। बुरा चालचलन। ३ उपकार।

अपनयनं (न०) हटाना। अलहदा करना। २ (घाव) पुराना। चंगा करना। ३ उऋण करना।

अपनस (वि०) नकटा। नाक रहित।

अपनत्तिः (स्त्री०) } हटाना। अलगाना। अल-
अपनोदः (पु०) } हदा करना। नष्ट करना।
अपनोदनम् (न०) } प्रायश्चित्त करना। दूर करना।

अपपाठः (पु०) बुरी तरह पाठ करना। गलत पाठ करना। पाठ में भूल।

अपपात्र (वि०) नीच जाति के पात्रों (बरतनो) को काम में लाने से वञ्चित।

अपपात्रितः (पु०) किसी बड़े दुष्कर्म करने के कारण जाति से च्युत मनुष्य जो अपने सम्बन्धियो के साथ एक बरतन में खा पी न सके।

अपपानं (न०) अपेय। न पीने योग्य पीने की वस्तु।

अपप्रजाता (स्त्री०) स्त्री, जिसका गर्भपात हो गया हो।

अपप्रदानम् (न०) घूँस। रिश्वत।

अपभय । (वि०) डर से रहित। निर्भय।
अपभी } निःशङ्क। निडर।

अपभरणी (स्त्री०) अन्तिम नाराषुञ्ज या नक्षत्र।

अपभाषणम् (न०) गालियाँ। मानहानि।

अपभ्रंशः (पु०) १ पतन। गिराव। २ बिगाड़। विकृति। ३ बिगड़ा हुआ।

अपमः (पु०) ग्रहगति। ग्रहण या अयनमण्डल सम्बन्धी। क्रान्ति। अपक्रान्ति।

अपमर्दः (पु०) धूल गर्द। जो बुहारा जाय।

अपमर्शः (पु०) छूना। चरना।

अपमानः (पु०) निरादर। बेइज्जती। बदनामी।

अपमार्गः (पु०) पगडंडी। बगली रास्ता। बुरी रास्ता।

अपमुख (वि०) बदशक्ल। बदसूरत। कुरूप।

अपमूर्धन (वि०) लापरवाह।

अपमार्जनम् (न०) १ धो कर साफ करना। पवित्र करना। २ हजामत बनवाना।

अपमृत्युः (पु०) कुमृत्यु। कुसमय की मौत। बिजली गिरने से, विष खाने से, साँप आदि के काटने से मरना।

अपमृषित (वि०) १ जो बोधगम्य न हो। जो समझ न पड़े। अस्पष्ट। २ असह्य। नापसंद।

अपयशस् (न०) } बदनामी। अपकीर्ति।
अपयशः (पु०) }

अपयानम् (न०) भाग जाना। पीछे लौट जाना।

अपर (वि०) १ जो पर या दूसरा न हो। पहिला। पूर्व का। २ पिछला। जिससे कोई पर न हो ३। दूसरा। अन्य। और। भिन्न। ४ अपकृष्ट। नीचा। —अग्नि, (पु०) दक्षिण और गार्हपत्याग्नि। —अपरः,—अपरे—अपराणि, दूसरे दूसरे। कई एक। भिन्न भिन्न —अह्नः, (पु०) तीसरे पहर।—अन्ता, (स्त्री०) पूर्व दिशा।—कालः, (पु०) पीछे का काल। पिछला समय। —जनः, (पु०) पाश्चात्य जन। पश्चिमी देशों के रहने वाले। —दक्षिणं, (अव्यया०) दक्षिण पश्चिम में।—पक्षः, (पु०) १ कृष्णपक्ष। २ दूसरी ओर। उल्टी ओर। ३ प्रतिवादी।—पर, (वि०) कई एक। भिन्न भिन्न। तरह तरह के।—पाणिनीयाः, (पु०) पाणिनी के शिष्य जो पश्चिम में रहते हैं।—प्रणेय, (वि०) सहज में दूसरे द्वारा प्रभावान्वित होने वाला।—रात्रः, (पु०) रात का पिछला पहर —परलोकः, (पु०) स्वर्ग। —स्वस्तिकं (न०) आकाश का पश्चिमी अन्तिम विन्दु।—हैमन (वि०) शीतकाल का पिछला भाग।

अपरः (पु०) १ हाथी का पिछला पैर। २ शत्रु।

अपरम् (न०) १ भविष्य। २ हाथी का पिछला पैर। (अव्यया०) पुनः। आगे।

अपरता (स्त्री०) } दूसरापन। अनगैरीपन। २४ गुणों में
अपरत्वं (न०) } से एक गुण। अन्तर। सम्बन्ध।

अपरत्र (अव्य०) अन्यत्र। दूसरी जगह।

अपरक्त (वि०) १ बिना रंग का। खूनरहित। पीला। २ असन्तुष्ट।

अपरतिः (स्त्री०) १ विच्छेद २ असन्तोष।

अपरवः (पु०) झगड़ा। विवाद (किसी सम्पत्ति के उपभोग के सम्बन्ध में) २ अपकीर्ति। बदनामी।

अपरस्पर (वि०) एक के बाद दूसरा। अबाधित। लगातार।

अपरा (स्त्री०) पश्चिम की ओर। हाथी के पीछे का धड़। ३ गर्भाशय। झिल्ली। ४ गर्भावस्था में रुका हुआ रजोधर्म।

अपराग (वि०) बिना रंग का।

अपरागः (पु०) १ असन्तोष। २ शत्रुता। दुश्मनी।

अपराञ्च् (वि०) सम्मुख। सामने।—राक् (अपराक्) (अव्यया०) सम्मुख। सामने।—मुख, (वि०) —मुखी (स्त्री०) २ मुँह न मोड़ना। ३ साहस के साथ सामना करना। मोर्चा लेना।

अपराजित (वि०) जो हारा न हो। अजेय।

अपराजितः (पु०) १ एक प्रकार का ज़हरीला कीड़ा। २ विष्णु। ३ शिव।

अपराजिता (स्त्री०) १ दुर्गा देवी जिनका पूजन दशहरा के दिन किया जाता है । २ ओषधि विशेष । यह ओषधि कलाई मे यंत्र की तरह बांधी जाती है । ३ ईशान कोण ।

अपराद्धिः (स्त्री०) १ अपराध । कसूर । २ पाप । दुष्कर्म ।

अपराधः (पु०) १ कसूर । जुर्म । २ पाप ।

अपराधिन् (वि०) अपराध करने वाला । अपराधी ।

अपरिग्रह (वि०) जिसके पास न तो कोई वस्तु हो और न कोई नौकर चाकर । निपट मोहताज । निपट रक ।

अपरिग्रहः (पु०) १ अस्वीकृति । नामंजूरी । २ अभाव । गरीबी ।

अपरिच्छद (वि०) दरिद्र । गरीब । मोहताज ।

अपरिच्छिन्न (वि०) १ सतत २ अभेद्य । मिला हुआ ३ असीम । इयत्तारहित ।

अपरिणयः (पु०) अनूढ़ावस्था । अविवाहित अवस्था । चिर-कौमार्य ।

अपरिणीता (स्त्री०) अविवाहित लड़की ।

अपरिसंख्यानम् (न०) १ आनन्त्य । २ असीम । ३ असंख्यत्व ।

अपरीक्षित (वि०) १ अनजांचा हुआ । असिद्ध । २ कुविचारित । मूर्खतापूर्ण । अविचारित । ३ जो सब प्रकार से सिद्ध या स्थापित न हुआ हो ।

अपरुष् (वि०) क्रोधशून्य ।

अपरूप (वि०) [स्त्री०—अपरूपा या अपरूपी] बदशक्ल । कुरूप । वेढंग । अंगभंग ।

अपरेद्युः (अव्यया०) दूसरे दिन । अगले दिन ।

अपरोक्ष (वि०) १ अदृश्य । जो देख न पड़े । इन्द्रियों द्वारा जाना जाने वाला । २ समीप ।

अपरोधः (पु०) वर्जन । मनाई । रोक ।

अपर्ण (वि०) पत्तारहित ।

अपर्णा (स्त्री०) पार्वती या दुर्गा देवी का एक नाम ।

अपर्याप्त (वि०) १ अयथेष्ट । जो काफ़ी न हो । २ असीम । सीमारहित । ३ अशक्त । असमर्थ अयोग्य ।

अपर्याप्तिः (स्त्री०) १ अपूर्णता । कमी । त्रुटि । २ अयोग्यता । अक्षमता ।

अपर्याय (वि०) क्रमरहित । बेसिलसिले ।

अपर्यायः (पु०) क्रम या विधि का अभाव । जिसका कोई क्रम या सिलसिला न हो ।

अपर्युषित (वि०) रात का रखा हुआ नहीं । बासी नहीं । ताज़ा । टटका ।

अपर्वन (वि०) जिसमें गाँठ न हो । (न०) १ बेजोड़ अथवा जिसमें जोड़ने की जगह न हो । २ बे समय । अनऋतु ।

अपल (वि०) बेमांस का ।

अपलम् (न०) पिन या बोल्टू ।

अपलपनम् (न०) } १ छिपाव । दुराव । २
अपलापः (पु०) } छिपाना । किसी वस्तु की जानकारी को छिपाना । निकास । सत्य बात का, विचार का और भाव का छिपाना । —दण्डः, (पु०) मिथ्याभाषण के लिये सज़ा ।

अपलापिन् (वि०) इंकार करने वाला । मुकरने वाला । छिपाने वाला ।

अपलाषिका (स्त्री०) अपलासिका (स्त्री०) बड़ी [प्यास ।

अपलाषिन् } (वि०) १ प्यासा । २ प्यास या
अपलाषुक } अभिलाषा से मुक्त ।

अपवन (वि०) विना आँधी बतास के । पवन से रक्षित ।

अपवनम् (न०) नगर के समीप का बाग । उपवन । लताकुञ्ज ।

अपवरकः (पु०) } १ भीतरी कमरा । २
अपवारका (स्त्री०) } रोशनदान । झरोखा ।

अपवरणं (न०) १ पर्दा । चिक । २ कपड़ा ।

अपवर्गः (पु०) १ पूर्णता । समाप्ति । किसी कार्य का पूर्ण होना या सुसम्पन्न होना । २ अपवाद । विशेष नियम । ३ स्वर्गीय आनन्द । ४ भेंट । पुरस्कार । दैन । ५ त्याग । ६ फैंकना । छोड़ना (तीरों का) ।

अपवर्जनम् (न०) १ त्याग । (प्रतिज्ञा की) पूर्ति । उऋण होना । २ भेंट । दान । ३ स्वर्गीय आनन्द ।

अपवर्तनम् (न०) पलटाव । उलटफेर । २ वञ्चित करना ।

अपवादः (पु०) १ निन्दा । अपकीर्ति । कलङ्क । २ नियम विशेष जो व्यापक नियम के विरुद्ध हो । ३ आज्ञा । निर्देश । ४ खण्डन । प्रतिवाद । ५ विश्वास । इतमीनान । ६ प्रेम । सौहार्द । सद्भाव । आत्मीयता । ७ वेदान्तशास्त्रानुसार अध्यारोप का निराकरण ।

अपवादक, अपवादिन् (वि०) १ निन्दक । बदनाम करने वाला । २ विरोधी । किसी आज्ञा को हटाने वाला । बाहिर करने वाला ।

अपवारणम् (न०) १ छिपाव । ढकाव । २ अन्तर्धान । ३ रोक । व्यवधान । बीच में पड़ कर आघात से बचाने वाली वस्तु ।

अपवारित (वि० कृ०) १ ढका हुआ । छिपा हुआ । २ दूर किया हुआ । हटाया हुआ । ३ तिरोहित । अन्तर्हित ।

अपवारितम्, अपवारितकम् (न०) छिपे हुए या गुप्त तौर तरीके ।

अपवाहः (पु०), अपवाहनम् (न०) १ दूर करना । हटाना । २ कम करना । घटाना ।

अपविघ्न (वि०) अबाधित । विना रोक टोक का ।

अपविद्ध (व० कृ०) १ ढलकाया हुआ या दूर फैका हुआ । २ त्यक्त । त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । अस्वीकृत किया हुआ । भूला हुआ । स्थानान्तर किया हुआ । छुड़ाया हुआ । रहित । हीन । २ नीच । क्षुद्र । ओछा ।

अपविद्धः (पु०) हिन्दूधर्मशास्त्रानुसार बारह प्रकार के पुत्रों में से वह पुत्र जिसे उसके जनक जननी ने त्याग दिया हो और अन्य किसी ने उसे गोद ले लिया हो ।

अपविद्या (स्त्री०) अज्ञता । आध्यात्मिक अज्ञान । अविद्या । माया ।

अपवीण (वि०) बुरी वीणा रखने वाला या बिना वीणा का ।

अपवीणा (स्त्री०) बुरी वीणा ।

अपवृक्तिः (स्त्री०) पूर्ति । समाप्ति । सम्पूर्णता ।

अपवृतिः (स्त्री०) । खुलाव । जो ढका न हो ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) समाप्ति । छोर । अन्त ।

अपवेधः (पु०) ग़लत छेदना (मोती आदि का) । ठीक स्थान पर न वेधना ।

अपव्ययः (पु०) फिजूलख़र्च । निरर्थक व्यय ।

अपशकुनम् (न०) बुरा सगुन । असगुन ।

अपशङ्क (वि०) निडर । निर्भय ।

अपशब्दः (पु०) १ अशुद्ध शब्द । दूषित शब्द । २ असंबद्ध प्रलाप । ३ गाली । कुवाच्य । ४ पाद । गोज़ । अपानवायु ।

अपशिरस्, अपशीर्ष, अपशीर्षन् (वि०) सिररहित । बेसिर का ।

अपशुच् (वि०) बिना शोक । (पु०) रूह । जीवात्मा ।

अपशोकः (पु०) अशोकवृक्ष ।

अपश्चिम (वि०) जिसके पीछे कोई न हो । २ प्रथम । पूर्व । सब के आगे वाला । ३ अति । अत्यन्त ।

" अपश्चिमा कष्टामापदं प्राप्नवत्यह । "

—रामायण

अपश्रयः (पु०) तकिया । बालिश ।

अपश्री (वि०) सौन्दर्यरहित । बदसूरत ।

अपष्ठं (न०) अङ्कुश की नोंक ।

अपष्ठु (वि०) १ विरुद्ध । २ प्रतिकूल । ३ बाँया । (अव्य०) १ विरुद्ध । २ झुठाई से । ३ निर्दोषता से । ४ भली भाँति । ठीक ठीक ।

अपष्ठुर, अपष्ठुल (वि०) उल्टा । विरुद्ध ।

अपसदः (पु०) १ जातिवहिष्कृत । २ अधम । नीच । अपकृष्ट । ३ नीच जाति विशेष ।

अपसरः (पु०) १ अपसरण । हटना । पीछे लौटना । २ युक्तियुक्त कारण । ३ उचित क्षमाप्रार्थना ।

अपसरणम् (न०) चला जाना । लौट जाना (सेना का) । बच कर निकल जाना ।

अपसर्जनम् (न०) १ त्याग । २ भेंट या दान । ३ स्वर्गीय सुख ।

अपसर्पः, अपसर्पकः (पु०) जासूस । भेदिया ।

अपसर्पणं (न०) पीछे हटना या जाना। भेदिया की तरह भेद लेना।

अपसव्य (वि०) १ दहिना। २ उल्टा।
अपसव्यक विरुद्ध।

अपसव्यम् (अव्यया०) यज्ञोपवीत को बाँएं कंधे से दहिने कंधे पर करना।

अपसारः (पु०) १ बाहिर जाना। बहिर्गमन। पीछे लौटना। २ निकास। निकलने का रास्ता।

अपसारणम् (न०) दूर हटाना। हँका देना।
अपसारणा (स्त्री०) निकाल देना। रास्ता देना। बाजू हो जाना।

अपसिद्धान्तः (पु०) असत् सिद्धान्त।

अपसृतिः (स्त्री०) गमन।

अपस्करः (पु०) पहियों को छोड़ गाड़ी का अन्य कोई भाग।

अपस्करम् (न०) १ विष्ठा। २ योनि। भग। ३ गुदा। मलद्वार।

अपस्नानं (न०) १ अशौचस्नान। २ अपवित्र स्नान। ऐसे जल में स्नान करना जिसमें कोई मनुष्य पहिले अपना शरीर धो चुका हो।

अपस्पश (वि०) जिसके पास जासूस न हो।

अपस्पर्श (वि०) विचेतन। संज्ञाहीन। अनुभवशक्तिहीन।

अपस्मारः (पु०) १ विस्मृति। भ्रान्ति।
अपस्मृति (वि०) २ मिरगी। बीमारी।

अपस्मारिन् (वि०) भुलक्कड़। भूल जाने वाला।
अपस्मृतिः (स्त्री०) मिर्गी के रोग वाला।

अपह (वि०) दूर रखते हुए। स्थानान्तरित करते हुए। नाश करते हुए।

अपहतपाप्मा (त्रि०) जिसके समस्त पाप दूर हो गये हों। वेदान्त द्वारा जानने योग्य (आत्मा)।

अपहतिः (स्त्री०) हटाना। नष्ट करना। विनाश। उच्छेद।

अपहननम् (न०) निवारण करना। हटाना। प्रतिषेध करना। पीछे हटाना।

अपहरणम् (न०) १ हर ले जाना। स्थानान्तरित करना। २ चुराना।

अपहसितं (न०) अकारण हास। मूर्खतापूर्ण
अपहास (पु०) हास। निरर्थक हास्य।

अपहस्तित (व० कृ०) निरस्त। हराया हुआ। गले में हाथ देकर निकाला हुआ। रद्दी किया हुआ। छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ।

अपहानिः (स्त्री०) १ त्याग। विच्छेद। २ अन्तर्धान। नाश। वर्जन।

अपहारः (पु०) लूट। चोरी। छिपाव। लुटाना। अपचय। अपहरण। सङ्गोपन।

अपहारक (वि०) १ अपहरण करने वाला। छीनने वाला। बलात् हरने वाला। २ डाँकू। चोर लुटेरा।

अपहारी (वि०) १ अपहरणशील। २ नाश करने वाला। ३ चोर। लुटेरा।

अपहृत (वि०) छीना हुआ। लूटा हुआ। चुराया हुआ।

अपह्नवः (पु०) छिपाव। दुराव। २ वाग्जाल से सत्य को छिपाना। ३ बहाना। टालमटूल। ४ स्नेह। प्रेम।

अपह्नुतिः (स्त्री०) १ मुकरना। सत्य को छिपाना। २ काव्यालङ्कार विशेष। इसमें उपमेय का निषेध कर के उपमान स्थापित किया जाता है।

अपह्रास (पु०) घटाव। कमी।

अपाकः (पु०) १ अजीर्ण। अनपच। २ कच्चापन। ३ अवयस्कता।

अपाकरणम् (न०) १ निराकरण। हटाना। दूर करना। २ अस्वीकृति। नामंजूरी। खण्डन। ३ अदायगी। कर्ज की अदायगी का प्रबन्ध। ४ व्यवसाय उत्तोलन। किसी कारवार को समेटना। उठा देना।

अपाकर्मन् (न०) अदायगी। परिशोध। ऋणपरिशोध की व्यवस्था। कारवार उठाना।

अपाकृतिः (स्त्री०) अस्वीकृति। स्थानान्तरित कारण। भय या क्रोध से उत्पन्न उद्भास।

अपाक्ष (वि०) १ विद्यमान। प्रत्यक्ष। इन्द्रियग्राह्य। २ नेत्रहीन। बुरे नेत्रों वाला।

अपांक्त (वि०) एक पंक्ति में नहीं। जाति
अपांक्तेय बहिष्कृत। जो अपनी बिरादरी के साथ
अपांक्त्य बैठ कर न खा पी सके।

अपाङ्गः } (पु०) १ आँख का कोया । २ सम्प्र-
अपाङ्गकः } दाय सूचक माथे पर का चिन्ह । ३ कामदेव ।—दर्शनं, (न०) —दृष्टिः, (स्त्री०) —विलोकितं, (न०)—वीक्षणं, (न०) कनखियों से देखना । आँख मारना ।

अपाच् } (वि०) १ पश्चात्भाग में स्थित । पीछे ।
अपांच् } अनखुला । अस्पष्ट । ३ पाश्चात्य । ४ दक्षिणी । दक्षिण का ।

अपाची (स्त्री०) दक्षिण या पश्चिम दिशा ।

अपाचीन (वि०) १ पीछे को घूमा हुआ । पीछे को मुड़ा हुआ । २ अदृश्य । जो न देख पड़े । ३ दक्षिण का । पश्चिम का । सामने का । उल्टा ।

अपाच्य (वि०) दक्षिणी या पश्चिमी ।

अपाणिनीय (वि०) १ पाणिनी के नियमों के विरुद्ध । २ वह जिसने पाणिनी का व्याकरण भली भाँति न पढ़ा हो । संस्कृत भाषा का मामूली ज्ञान ।

अपात्रं (न०) १ कुपात्र । बुरा बरतन । अयोग्यपुरुष । दान देने के लिये अयोग्य व्यक्ति । निन्दित । दुराचारी ।

अपात्रीकरणम् (न०) निन्दित कर्म करने वाला । अयोग्यता । नौ प्रकार के पापों में से एक ।

अपादानं १ (न०) हटाना । अलगाव । विभाग । २ व्याकरण में पांचवाँ कारक ।

अपाध्वन् (पु०) बुरा मार्ग ।

अपानः (पु०) १ शरीर में नीचे रहने वाला पवन । पाँच प्राण वायुओं में से एक । यह गुदा मार्ग से निकलता है । २ गुदा ।

अपानृत (वि०) सत्य । असत्य से मुक्त ।

अपाप } (वि०) पापरहित । विशुद्ध । पवित्र ।
अपापिन् } धर्मात्मा ।

अपां (अप् का बहुवचन)—ज्योतिम् , (न०) विजली विद्युत ।—नपात्, सावित्री और अग्नि की उपाधि । —नाथः, (पु०) पतिः, (पु०) १ समुद्र । २ वरुण का नाम ।—निधिः, (पु०) १ समुद्र । २ विष्णु का नाम ।—पाथस्, (न०) भोजन ।—पित्तं, (न०) अग्नि ।—योनिः, (पु०) समुद्र ।

अपामार्गः (पु०) चिचड़ा । अजाझारा ।

अपामार्जनं (न०) धोना । साफ करना । (रोग आदि को) दूर करना ।

अपायः (पु०) १ प्रस्थान । २ वियोग । अलगाव । ३ अदृश्यता । तिरोहितता । अविद्यमानता । सर्वनाश । ४ हानि । चोट ।

अपार (वि०) १ पार रहित । २ असीम । सीमारहित । ३ जो कभी चुके ही नहीं । बहुत । ४ पहुँच के बाहिर । ५ जिसके पार कठिनता से हुआ जाय । जिससे पार पाना कठिन हो ।

अपारम् (न०) नदी का दूसरा तट ।

अपार्ण (वि०) १ दूर । फासला । २ समीप ।

अपार्थ } (वि०) निकम्मा । हानिकारी ।
अपार्थक } निरर्थक । अर्थहीन ।

अपावरणं (न०) } १ घेरा । २ छिपाव । दुराव ।
अपावृत्तिः (स्त्री०) }

अपावर्तनम् (न०) } १ लौट जाना । पीछे चला
अपावृत्तिः (स्त्री०) } जाना । भाग जाना । २ क्रान्ति ।

अपाश्रय (वि०) निरावलम्ब । असहाय ।

अपाश्रयः (पु०) १ आश्रय । आश्रयस्थल । २ चन्दोवा । शामियाना । शीर्ष ।

अपासंगः } (पु०) तरकस ।
अपासङ्गः }

अपासनं (न०) १ फैंकदेना । रद्दी कर देना । २ त्याग । परित्याग । ३ नाश ।

अपासरणं (न०) प्रस्थान । हटाना ।

अपासु (वि०) निर्जीव । मृत ।

अपि (अव्यया०) सम्भावना । प्रश्न । शङ्का । गर्हा । समुच्चय । अनुज्ञा । अवधारण । भी । ही । निश्चय । ठीक ।

अपिगीर्ण (वि०) १ प्रशंसित । प्रसिद्ध । २ । कथित । वर्णित ।

अपिच्छिल (वि०) गँदला नहीं । स्वच्छ । साफ ।

अपितृक (वि०) १ पितारहित । २ पैतृक या पुश्तैनी नहीं । अपैतृक ।

अपित्र्य (वि०) पैतृक नहीं ।

अपिधानं—पिधानं (न०) ढकना । आच्छादन ।

अपिधिः (स्त्री०) छिपाव । दुराव ।

अपिव्रत (वि०) किसी धर्मानुष्ठान में भाग लेनेवाला । रक्तसम्बन्ध युक्त ।

अप्रमत्ता (स्त्री०) क्वारी लड़की, जिसका विवाह न हुआ हो। या जिसका दान न किया गया हो।

अप्रत्यक्ष (वि०) १ अदृष्ट। अगोचर। २ अज्ञात। ३ अविद्यमान। अनुपस्थित।

अप्रत्यय (वि०) १ आत्मसन्दिग्ध। वेएतबार। जिसको किसी पर विश्वास न हो। २ ज्ञानशून्य। ३ व्याकरण में प्रत्यय रहित।

अप्रत्ययः (पु०) अविश्वास। आत्मसंशय। २ जिसका मतलब न समझा गया हो। दुर्बोध। ३ प्रत्यय नहीं।

अप्रदक्षिणं (अव्यया०) बाएं से दहिनी ओर।

अप्रधान (वि०) अमुख्य। गौण। अन्तर्वर्ती।

अप्रधानम् (न०) १ मातहती की हालत। ताबेदारी। अधीनतायी। २ गौणकर्म।

अप्रधृष्य (वि०) अजेय। जो जीता न जा सके।

अप्रभु (वि०) १ जो बलवान न हो। बलरहित। २ जिसमें शासन करने की शक्ति न हो। अशक्त। असमर्थ। अयोग्य।

अप्रमत्त (वि०) जो प्रमादी न हो। असावधान न हो। सावधान। बुद्धिमान। सतर्क।

अप्रमद (वि०) उत्सवरहित। उदास। हर्षरहित।

अप्रमा (स्त्री०) अयथार्थ ज्ञान। मिथ्या ज्ञान।

अप्रमाण (वि०) १ असीम। अपरिमाण। २ अप्रामाणिक। ३ जो प्रमाण न माना जाय। अविश्वस्त।

अप्रमाणम् (न०) १ ऐसी आज्ञा या नियम) जो किसी कार्य में प्रमाण मान कर ग्रहण न किया जाय। २ असङ्गति। अप्रासङ्गिकता।

अप्रमाद (वि०) सतर्क। सावधान।

अप्रमादः (पु०) सावधानी। सतर्कता

अप्रमेय (वि०) जो नापा न जा सके। असीम। सीमारहित। २ जो यथार्थ रूप से न जाना या समझा जा सके। जाँच के अयोग्य।

अप्रमेयम् (न०) ब्रह्म।

अप्रयाणिः (स्त्री०) गमन न करने वाला। जो उन्नति न करे। (इसका प्रयोग प्राय: किसी को शाप देने या अकोसने में होता है।

अप्रयुक्त (वि०) अव्यवहृत। जिसका प्रयोग न किया गया हो या किया जा सके। दुर्व्यवहृत। अनुचित-रीत्या प्रयुक्त। (अ०) दुर्लभ। असाधारण।

अप्रवृत्तिः (स्त्री०) १ क्रियाशून्यता। निश्चेष्टता। जड़ता। उत्तेजना का अभाव।

अप्रसङ्गः (पु०) १ अनुराग का अभाव। २ सम्बन्ध का अभाव। ३ अनुपयुक्त समय या अवसर।

अप्रसिद्ध (वि०) १ अज्ञात। तुच्छ। २ असाधारण।

अप्रस्ताविक (वि०) [स्त्री०—अप्रस्ताविकी] अप्रासङ्गिक। असङ्गत।

अप्रस्तुत (वि०) १ असङ्गत। प्रसङ्ग विरुद्ध। २ वाहियात। अर्थ रहित। ३ नैमित्तिक। विजातीय। वहिरङ्ग। अप्रधान ४ जो प्रस्तुत या विद्यमान न हो।—प्रशंसा, (स्त्री०) वह अर्थालङ्कार जिसमें अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय।

अप्रहत (वि०) १ अनाहत। २ अनजुती भूमि। ३ कोरा कपड़ा।

अप्राकरणिक (वि०) [स्त्री०—अप्राकरणिकी] जो प्रकरण के या प्रसङ्ग के अनुसार न हो।

अप्राकृत (वि०) १ जो प्राकृत न हो। गँवारू। २ जो असली न हो। अस्वाभाविक। ३ असाधारण ४ विशेष।

अप्राग्र्य (वि०) गौण। अधीन। निकृष्ट।

अप्राप्त (वि०) जो मिल न सके। २ जो न पहुँचा हो, न आया हो। ३ नियम जो लागू न हो।—अवसर,—काल (वि०) अनवसर का। वेमौके। अनऋतु का। कुसमय का।—यौवन (वि०) जो युवा न हुआ हो।—व्यवहार,—वयस्, (वि०) नाबालिग। अवयस्क।

अप्राप्तिः (स्त्री०) १ अलब्धि। २ जो पूर्व में किसी नियम से सिद्ध या प्रतिष्ठित न हुआ हो। ३ जो घटित न हो।

अप्रामाणिक (वि०) [स्त्री०—अप्रामाणिकी] १ जो प्रामाणिक न हो। ऊटपटाँग। २ अविश्वस्त। जो मातवर न हो।

अप्रिय (वि०) १ अरुचिकर । नापसंद । २ जो प्यारा न हो जो मित्र न हो ।

अप्रियः (पु०) शत्रु । वैरी ।

अप्रियम् (न०) अरुचिकर काम । नापसंद काम ।

अप्रीतिः (स्त्री०) अरुचि । नापसंदगी । घृणा । अभक्ति। पराङ्मुखता ।

अप्रौढ (वि०) जो प्रौढ अर्थात् दृढ न हो । २ भीरु । असाहसी । ३ जो पूरा बढा हुआ न हो ।

अप्रौढा (स्त्री) १ अविवाहित लड़की । २ लड़की जिसका हाल ही में विवाह हुआ हो, किन्तु जिसे रजस्वला धर्म न होता हो ।

अप्लुत (वि०) जो प्लुत न हो । अदीर्घीकृत (स्वर) । अविलम्बित ।

अप्सरस् / अप्सरा / अप्सराः (स्त्री०) इन्द्र की सभा में नाचने वाली देवाङ्गना, जो गन्धर्वों की स्त्रियाँ कही जाती हैं । स्वर्गवेश्या ।—पतिः, (पु०) इन्द्र ।

अफल (वि०) फलरहित । बेफलवाला । वन्ध्या । २ जो उर्वर न हो । व्यर्थ । निरर्थक । ३ नपुंसक किया हुआ । खोजा या हिजड़ा बनाया हुआ ।—आकांक्षिन्,—प्रेप्सु, (वि०) ऐसा पुरुष जो अपने परिश्रम का पुरस्कार या पारिश्रमिक न चाहे । निस्स्वार्थी ।

"अफलाकांक्षिभिर्यज्ञः क्रियते ब्रह्मवादिभिः ।"

महाभारत

अफेन (वि०) बिना फैन का । फेनरहित ।

अफेनम् (न०) अफीम ।

अबद्ध / अबद्धक (वि०) १ बिना बंधा हुआ । अनरुद्ध । स्वतंत्र । २ बिना अर्थ का । निरर्थक वाहियात । गुमसुम । विरुद्ध ।—मुख (वि०) जो मुंह का अपवित्र हो । जो गाली गलौज बका करे ।

अबंधु / अबन्धु / अबांधव / अबान्धव (वि०) एकाकी । मित्र रहित ।

अबल (वि०) १ निर्बल । कमज़ोर । २ अरक्षित ।

अबला (स्त्री०) स्त्री । औरत ।

अबाध (वि०) १ बाधा शून्य । अबाधित । २ पीडा रहित ।

अबाधः (पु०) १ रोकटोक न होना । २ अखण्डन ।

अबाल (वि०) लड़कपन नहीं । लड़का नहीं । जवान । २ छोटा नहीं । पूरा (जैसा पूर्णिमा का चन्द्र) ।

अबाह्य (वि०) १ बाहिरी नहीं । भीतरी । २ (आल०) परिचित ।

अबिंधनः / अबिन्धनः (पु०) समुद्र के भीतर रहने वाला अग्नि । बड़वानल ।

अबुद्ध (वि०) बुद्धू । मूर्ख । बेवकूफ ।

अबुद्धि (स्त्री०) । १ बुद्धि का अभाव । निर्बुद्धिता । २ अज्ञान । मूर्खता ।—पूर्व,—पूर्वक, (वि०) बेसमझा बूझा । अनजाना हुआ ।—पूर्वं (अबुद्धिपूर्वं)—र्वकं, (अबुद्धिपूर्वकम्) (अव्यया०) अज्ञातभाव से । अनजानपने से ।

अबुध् / अबुध (वि०) निर्बोध । मूढ । (पु०) मूर्ख व्यक्ति। मूढ व्यक्ति (स्त्री०) अज्ञानता । बुद्धि का अभाव ।

अबोध (वि०) अज्ञानी । मूर्ख। मूढ । —गम्य (वि०) जो समझ में न आवे ।

अबोधः (पु०) अज्ञता । मूर्खता । मूढता । ज्ञान का अभाव ।

अब्ज (वि०) जल में या जल से उत्पन्न ।—कर्णिका कमल का बीज पुटक ।—जः, —भवः ,—भूः ,—योनिः, (पु० । ब्रह्मा के नाम । —बान्धवः, (पु०) सूर्य ।—वाहनः, (पु०) शिवजी का नाम ।

अब्जम् (न०) १ कमल । २ संख्याविशेष । सौ करोड । अरब । ३ भसीडा । ४ शख । ५ चन्द्रमा । ६ धन्वन्तरि ।

अब्जा (स्त्री०) सीप ।

अब्जिनी (स्त्री०) १ कमलों का समुदाय । २ स्थान जहाँ कमल ही कमल हो । ३ कमल का पौधा । —पतिः, (पु०) सूर्य ।

अब्दः (पु०) १ बादल । वर्ष (पु० और न०) । २ एक पर्वत का नाम ।—अर्ध, (न०) आधा

अप्रमत्ता (स्त्री०) क्वारी लड़की, जिसका विवाह न हुआ हो। या जिसका दान न किया गया हो।

अप्रत्यक्ष (वि०) १ अदृष्ट। अगोचर। २ अज्ञात। ३ अविद्यमान। अनुपस्थित।

अप्रत्यय (वि०) १ आत्मसन्दिग्ध। बेएतबार। जिसको किसी पर विश्वास न हो। २ ज्ञानशून्य। ३ व्याकरण में प्रत्यय रहित।

अप्रत्ययः (पु०) अविश्वास। आत्मसंशय। २ जिसका मतलब न समझा गया हो। दुर्बोध। ३ प्रत्यय नहीं।

अप्रदक्षिणं (अव्यया०) बाएं से दहिनी ओर।

अप्रधान (वि०) अमुख्य। गौण। अन्तर्वर्ती।

अप्रधानम् (न०) १ मातहती की हालत। तावेदारी। अधीनतायी। २ गौणकर्म।

अप्रधृष्य (वि०) अजेय। जो जीता न जा सके।

अप्रभु (वि०) १ जो बलवान न हो। बलरहित। २ जिसमें शासन करने की शक्ति न हो। अशक्त। असमर्थ। अयोग्य।

अप्रमत्त (वि०) जो प्रमादी न हो। असावधान न हो। सावधान। बुद्धिमान। सतर्क।

अप्रमद (वि०) उत्सवरहित। उदास। हर्षरहित।

अप्रमा (स्त्री०) अयथार्थ ज्ञान। मिथ्या ज्ञान।

अप्रमाण (वि०) १ असीम। अपरिमाण। २ अप्रामाणिक। ३ जो प्रमाण न माना जाय। अविश्वस्त।

अप्रमाणम् (न०) १ (ऐसी आज्ञा या नियम) जो किसी कार्य में प्रमाण मान कर ग्रहण न किया जाय। २ असङ्गति। अप्रासङ्गिकता।

अप्रमाद (वि०) सतर्क। सावधान।

अप्रमादः (पु०) सावधानी। सतर्कता।

अप्रमेय (वि०) जो नापा न जा सके। असीम। सीमारहित। २ जो यथार्थ रूप से न जाना या समझा जा सके। जाँच के अयोग्य।

अप्रमेयम् (न०) ब्रह्म।

अप्रयाणिः (स्त्री०) गमन न करने वाला। जो उन्नति न करे। (इसका प्रयोग प्रायः किसी को शाप देने या अकोसने में होता है।

अप्रयुक्त (वि०) अव्यवहृत। जिसका प्रयोग न किया गया हो या किया जा सके। दुर्व्यवहृत। अनुचितरीत्या प्रयुक्त। (अ०) दुर्लभ। असाधारण।

अप्रवृत्तिः (स्त्री०) १ क्रियाशून्यता। निश्चेष्टता। जड़ता। उत्तेजना का अभाव।

अप्रसङ्गः (पु०) १ अनुराग का अभाव। २ सम्बन्ध का अभाव। ३ अनुपयुक्त समय या अवसर।

अप्रसिद्ध (वि०) १ अज्ञात। तुच्छ। २ असाधारण।

अप्रस्ताविक (वि०) [स्त्री०—अप्रस्ताविकी] अप्रासङ्गिक। असङ्गत।

अप्रस्तुत (वि०) १ असङ्गत। प्रसङ्ग विरुद्ध। २ वाहियात। अर्थ रहित। ३ नैमित्तिक। विजातीय। बहिरङ्ग। अप्रधान ४ जो प्रस्तुत या विद्यमान न हो।—प्रशंसा, (स्त्री०) वह अर्थालङ्कार जिसमें अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय।

अप्रहत (वि०) १ अनाहत। २ अनजुती भूमि। ३ कोरा कपड़ा।

अप्राकरणिक (वि०) [स्त्री०—अप्राकरणिकी] जो प्रकरण के या प्रसङ्ग के अनुसार न हो।

अप्राकृत (वि०) १ जो प्राकृत न हो। गँवारू। २ जो असली न हो। अस्वाभाविक। ३ असाधारण ४ विशेष।

अप्राग्र्य (वि०) गौण। अधीन। निकृष्ट।

अप्राप्त (वि०) जो मिल न सके। २ जो न पहुँचा हो, न आया हो। ३ नियम जो लागू न हो।—अवसर,—काल (वि०) अनवसर का। बेमौके। अनऋतु का। कुसमय का।—यौवन (वि०) जो युवा न हुआ हो।—व्यवहार,—वयस्, (वि०) नाबालिग। अवयस्क।

अप्राप्तिः (स्त्री०) १ अलब्धि। २ जो पूर्व में किसी नियम से सिद्ध या प्रतिष्ठित न हुआ हो। ३ जो घटित न हो।

अप्रामाणिक (वि०) [स्त्री०—अप्रामाणिकी] १ जो प्रामाणिक न हो। ऊटपटाँग। २ अविश्वस्त। जो मातबर न हो।

अप्रिय (वि०) १ अरुचिकर । नापसंद । २ जो प्यारा न हो जो मित्र न हो ।

अप्रियः (पु०) शत्रु । वैरी ।

अप्रियम् (न०) अरुचिकर काम । नापसंद काम ।

अप्रीतिः (स्त्री०) अरुचि । नापसंदगी । घृणा । अभक्ति । पराङ्मुखता ।

अप्रौढ (वि०) जो प्रौढ अर्थात् दृढ न हो । २ भीरु । असाहसी । ३ जो पूरा बढ़ा हुआ न हो ।

अप्रौढा (स्त्री) १ अविवाहित लड़की । २ लड़की जिसका हाल ही में विवाह हुआ हो. किन्तु जिसे रजस्वला धर्म न होता हो ।

अप्लुत (वि०) जो प्लुत न हो । अदीर्घीकृत (स्वर) । अविलम्बित ।

अप्सरस् / अप्सरा / अप्सराः (स्त्री०) इन्द्र की सभा में नाचने वाली देवाङ्गना, जो गन्धर्वों की स्त्रियाँ कही जाती हैं । स्वर्गवेश्या ।—पतिः, (पु०) इन्द्र ।

अफल (वि०) फलरहित । वेफलवाला । वन्ध्या । २ जो उर्वर न हो । व्यर्थ । निरर्थक । ३ नपुंसक किया हुआ । खोजा या हिजड़ा बनाया हुआ ।—आकांक्षिन्,—प्रेप्सु, (वि०) ऐसा पुरुष जो अपने परिश्रम का पुरस्कार या पारिश्रमिक न चाहे । निस्स्वार्थी ।

अफलाकांक्षिभिर्यज्ञः क्रियते ब्रह्मवादिभिः ।

महाभारत

अफेन (वि०) बिना फेन का । फेनरहित ।

अफेनम् (न०) अफीम ।

अबद्ध / अबद्धक (वि०) १ बिना बंधा हुआ । अनरुद्ध । स्वतंत्र । २ बिना अर्थ का । निरर्थक वाहियात । गुमसुम । विरुद्ध ।—मुख (वि०) जो मुंह का अपवित्र हो । जो गाली गलौज बका करे ।

अबंधु / अबन्धु / अबांधव / अबान्धव (वि०) एकाकी । मित्र रहित ।

अबल (वि०) १ निर्बल । कमज़ोर । २ अरक्षित ।

अबला (स्त्री०) स्त्री । औरत ।

अबाध (वि०) १ बाधा शून्य । अबाधित । २ पीड़ा रहित ।

अबाधः (पु०) १ रोकटोक न होना । २ अखण्डन ।

अबाल (वि०) लड़कपन नहीं । लड़का नहीं । जवान । २ छोटा नहीं । पूरा (जैसा पूर्णिमा का चन्द्र) ।

अबाह्य (वि०) १ बाहिरी नहीं । भीतरी । २ (आल०) परिचित ।

अबिंधनः / अबिन्धनः (पु०) समुद्र के भीतर रहने वाला अग्नि । बड़वानल ।

अबुद्ध (वि०) बुद्धू । मूर्ख । वेवकूफ ।

अबुद्धि (स्त्री०) । १ बुद्धि का अभाव । निर्बुद्धिता । २ अज्ञान । मूर्खता ।—पूर्व,—पूर्वक, (वि०) वेसमझा बूझा । अनजाना हुआ ।—पूर्वं (अबुद्धिपूर्वं)—र्वकं, (अबुद्धिपूर्वकम्) (अव्यया०) अज्ञातभाव से । अनजानपने से ।

अबुध् / अबुध (वि०) निर्बोध । मूढ़ । (पु०) मूर्ख व्यक्ति । मूढ व्यक्ति (स्त्री०) अज्ञानता । बुद्धि का अभाव ।

अबोध (वि०) अज्ञानी । मूर्ख । मूढ़ । —गम्य (वि०) जो समझ में न आवे ।

अबोधः (पु०) अज्ञता । मूर्खता । मूढ़ता । ज्ञान का अभाव ।

अब्ज (वि०) जल में या जल से उत्पन्न ।—कर्णिका कमल का बीज पुटक ।—जः, —भवः,—भूः,—योनिः, (पु०) ब्रह्मा के नाम । —बान्धवः, (पु०) सूर्य ।—वाहनः, (पु०) शिवजी का नाम ।

अब्जम् (न०) १ कमल । २ संख्याविशेष । सौ करोड़ । अरब । ३ भसीड़ा । ४ शंख । ५ चन्द्रमा । ६ धन्वन्तरि ।

अब्जा (स्त्री०) सीप ।

अब्जिनी (स्त्री०) १ कमलों का समुदाय । २ स्थान जहाँ कमल ही कमल हो । ३ कमल का पौधा । —पतिः, (पु०) सूर्य ।

अब्दः (पु०) १ बादल । वर्ष (पु० और न०) । २ एक पर्वत का नाम ।—अर्ध, (न०) आधा

वर्ष। ६ महीना।—वाहनः, (पु०) शिव जी का नाम।—शतं, (न०) शताब्दी। सदी। १०० वर्ष।—सारः, (पु०) एक प्रकार का कपूर।

अब्धिः (पु०) १ समुद्र। २ ताल। सरोवर। जलाशय। झील। ३ सात और कभी २ चार की संख्या का सङ्केत।—अग्निः, (पु०) बड़वानल।—कफः, —फेनः (पु०) फैन।—जः, (पु०) चन्द्रमा। २ शङ्ख। जा, (स्त्री०) १ वारुणी। मद्य। २ लक्ष्मी देवी।—द्वीपा, (स्त्री०) पृथिवी। —नगरी, (स्त्री०) द्वारकापुरी।—नवनीतकः (पु०) चन्द्रमा।—मण्डूकी, (स्त्री०) सीप। —शयनः, (पु०) विष्णु भगवान्। सारः (पु०) एक रत्न।

अब्रह्मचर्य (वि०) १ अपवित्र। २ जो ब्रह्मचारी न हो।

अब्रह्मचर्यम्, अब्रह्मचर्यकम् (न०) १ ब्रह्मचर्य का अभाव। २ स्त्रीप्रसङ्ग।

अब्रह्मण्य (वि०) ब्राह्मण के योग्य नहीं। २ ब्राह्मणों के प्रतिकूल।

अब्रह्मण्यम् (न०) ब्राह्मण के अयोग्य कर्म।

अब्राह्मन् (वि०) ब्राह्मणों से भिन्न या ब्राह्मणों का अभाव।

अभक्तिः (स्त्री०) १ श्रद्धा का या अनुराग का अभाव। २ अश्रद्धा।

अभक्ष्य (वि०) ना खाने योग्य। जिसका खाना निषिद्ध हो।

अभक्ष्यम् (न०) वर्जित खाद्य पदार्थ।

अभग (वि०) अभागा। बदकिस्मत।

अभद्र (वि०) अशुभ। बुरा। दुष्ट।

अभद्रम् (न०) १ बुराई। पाप। दुष्टता। २ दुःख।

अभय (वि०) भय से रहित। निर्भय। निडर। सुरक्षित। बेखौफ।—डिण्डिमः, (पु०) १ सुरक्षा का ढिंढोरा। २ सैनिक ढोल।—दक्षिणा, —दानं,—प्रदानं, (न०) किसी को भय से मुक्त कर देने की प्रतिज्ञा या वचन का देना।

अभयंकर, अभयङ्कर, अभयंकृत, अभयकृत् (वि०) १ भयङ्कर या भयावह नहीं। निर्भयप्रद। २ सुरक्षा करना।

अभवः (पु०) १ अनस्तित्व २ मोक्ष। नैसर्गिक सुख। ३ समाप्ति या नाश।

अभव्य (वि०) न होने को। अनुचित। अशुभ। अभागा। प्रारब्धहीन।

अभाग (वि०) १ जिसका हिस्सा या पांती न हो। (हिस्सा पैतृक)। २ अविभक्त। बिना बँटा हुआ।

अभावः (पु०) १ असत्ता। न होना। अनस्तित्व। नेस्ती। २ अविद्यमानता। ३ नाश। मृत्यु। ४ अदर्शन। यह पांच प्रकार का होता है। (क) प्रागभव। (ख) प्रध्वंसाभाव। (ग) अत्यन्ताभाव। (घ) अन्योन्याभाव। (ङ) संसर्गाभाव। ५ त्रुटि। टोटा। घाटा।

अभावना १ (स्त्री०) निर्णय करने की शक्ति अथवा यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति। २ ध्यान का अभाव।

अभाषित (वि०) अकथित। न कहा हुआ।—पुंस्कः, (पु०) शब्द विशेष जो न तो कभी पुल्लिङ्ग और न नपुंसक लिङ्ग बन सके। जो सदा स्त्रीलिङ्ग ही बना रहे।

अभि (अव्यया०) १ उपसर्ग विशेष जो संज्ञावाची और क्रियावाची शब्दों में लगाया जाता है। इसका अर्थ है— ओर प्रति। तरफ। २ पक्ष में। विपक्ष में ३ पर। ऊपर ४ छिड़कना। बुरकना। ५ अधिक। अतिरिक्त। आरपार। जब यह उपसर्ग विशेषणों और ऐसे संज्ञावाची शब्दों में जो क्रिया से नहीं बने, लगाया जाता है, तब इसका अर्थ होता है—१ घनिष्ठता। अत्यन्तता। उत्कृष्टता। २ सामीप्य। सामने। प्रत्यक्ष। ३ पृथक् पृथक्। एक के बाद एक।

अभिक, अभीक (वि०) कामुक। अभिलाषी। मरभुका।

अभिकांक्षा (स्त्री०) ख्वाहिश। अभिलाषा। आकांक्षा।

अभिकांक्षिन् (वि०) अभिलाषी। ख्वाहिशमंद।

अभिकाम (वि०) स्नेहभाजन। प्यारा। अभिलाषी। कामुक।

अभिकामः (पु०) १ स्नेह। प्रेम। २ ख्वाहिश। अभिलाषा।

अभिक्रमः (पु०) १ आरम्भ । उद्योग । २ चढ़ाई । आक्रमण । सांघातिक आक्रमण । ३ चढ़ना । सवार होना ।

अभिक्रमणं (न०) } समीप गमन । चढ़ाई ।
अभिक्रान्ति (स्त्री०) }

अभिक्रोशः (पु०) १ चिल्लाहट । पुकार । २ गाली । भर्त्सना । फटकार । डाँटडपट ।

अभिक्रोशकः (पु०) पुकारने वाला । गाली देने वाला ।

अभिख्या (स्त्री०) १ चमक दमक । सौन्दर्य । कान्ति । २ कथन । घोषणा ३ पुकार । सम्बोधन । ४ नाम (उपाधि) ५ शब्द । समानार्थवाची शब्द । ६ कीर्ति । नामवरी । गौरव । प्रसिद्धि (बुरे भाव में) । माहात्म्य ।

अभिख्यानं (न०) कीर्ति । गौरव ।

अभिगमः (पु०) } १ आगमन । गमन । मुलाकात । पहुँचना । २ मैथुन ।
अभिगमनम् (स्त्री०) }

अभिगम्य (स० का० कृ०) १ समीप आगमन या गमन किया हुआ । भेंटा हुआ । खोजा हुआ । २ उपगम्य । नासन्य ।

अभिगर्जनं } (न०) भयानक दहाड़ । भयङ्कर गर्ज ।
अभिगर्जितं }

अभिगामिन् (वि०) पास जाने वाला । (मैथुन सम्बन्धी) स्तसम्बन्ध रखने वाला ।

अभिगुप्तिः (स्त्री०) रक्षण । संरक्षण ।

अभिगोप्तृ (पु०) रक्षक । अभिभावक । वली ।

अभिग्रहः (पु०) १ लूट खसोट । ज़बरदस्ती छीनना । २ आक्रमण । चढ़ाई । ३ किसी काम के लिये किसी को ललकारना । ४ शिकायत । फरियाद । ५ अधिकार । शक्ति ।

अभिग्रहणम् (न०) लूट लेना । छीन लेना ।

अभिघर्षणम् (न०) १ घिसन । रगड़ । २ प्रेतावेश । सिर पर भूत का चढ़ना ।

अभिघातः (पु०) १ चोट देना । मार । प्रहार । ताड़न । आक्रमण । हमला । २ सम्पूर्णतः नाश । सर्वनाश । पूर्ण रूप से स्थानान्तरित करने की क्रिया ।

अभिघातक (वि०) [स्त्री०—अभिघातिका] रोक । बचाव ।

अभिघातिन (पु०) शत्रु । वैरी ।

अभिघारः (पु०) १ घी । २ हवन में घी डालना ।

अभिघारणम् (न०) घी छिड़कने की क्रिया ।

अभिचरः (पु०) अनुचर । नौकर ।

अभिचरणम् (न०) किसी बुरे काम के लिये अनुष्ठान; जैसे शत्रु नाश के लिये श्येन याग ।

अभिचारः (पु०) अनुष्ठान । मारण उच्चाटन, विद्वेषण आदि के लिये अनुष्ठान ।—ज्वरः (पु०) ऐसे अनुष्ठान से उत्पन्न ज्वर ।

अभिचारक [स्त्री०—अभिचारिकी] } (वि०) अनुष्ठान । टुटका टोना ।
अभिचारिन् [स्त्री०—अभिचारिणी] }

अभिचारकः } (पु०) अनुष्ठानकर्त्ता । जादूगर । तांत्रिक ।
अभिचारि }

अभिजनः (पु०) १ कुटुंब । कुनबा । जाति । वंश । उत्पत्ति । निकास, वंशपरम्परा । २ कुलीनता । खानदानीपना । ३ जन्मस्थान । जन्मभूमि । पैतृकस्थान । ४ कीर्ति । प्रसिद्धि । ५ खानदान का सरदार या मुखिया । कुलभूषण । ६ अनुचर । चाकरवर्ग ।

अभिजनवत् (वि०) कुलीन वंश का । कुलीन ।

अभिजयः (पु०) विजय । पूरी पूरी जीत ।

अभिजात (व० कृ०) १ उत्पन्न । अच्छे कुल में उत्पन्न । कुलीन । २ शिष्ट । विनम्र । ३ मधुर । अनुकूल । ४ योग्य । उचित । उपयुक्त । उत्तम गुणवान । सत्पात्र । ५ सुन्दर । रूपवान । ६ विद्वान् । पण्डित । प्रसिद्ध ।

अभिजाति (स्त्री०) कुलीन वंश में उत्पत्ति ।

अभिजिघ्रणं (न०) स्नेह प्रदर्शन करने को सिर सूंघना ।

अभिजित् (पु०) १ विष्णु का नाम । २ नक्षत्र विशेष । उत्तराषाढ़ा के अन्तिम १५ दण्ड तथा श्रवण के प्रथम चार दण्ड अभिजित कहलाता है । ३ दिन का आठवाँ मुहूर्त्त । दोपहर के पौने बारह बजे से लेकर साढ़े बारह बजे तक का समय । विजय मुहूर्त्त ।

अभिज्ञ (वि०) १ जानकार । विज्ञ । २ निपुण । कुशल ।

अभिज्ञा (स्त्री०) १ प्रत्याभिज्ञा । पुनर्ज्ञान । प्राथमिक ज्ञान । २ स्मृति । पहिचान ।

अभिज्ञानम् (न०) १ प्रत्याभिज्ञा । पुनर्ज्ञान । २ स्मृति । पहिचान । ३ चिन्हानी । ४ चन्द्रमण्डल का काला भाग ।—आभरणम् (न०) गहना जो किसी बात का स्मरण कराने के लिये उपस्थित किया जाय । परिचायक । सहदानी ।

अभितस् (अव्यया०) १ समीप । निकट । पास । ओर । तरफ । २ अत्यन्त समीप । निकट में । पास में । समक्ष । सामने । प्रत्यक्ष में । ३ आगे पीछे । ४ सब ओर से । चारो ओर । चौतरफा । ५ नितान्त । निपट । पूर्णत । धुराधुर । ६ फुर्ती से । तेज़ी से ।

अभितापः (पु०) प्रचण्ड गर्मी (चाहें यह शरीरिक हो चाहे मानसिक) । क्षोभ । उद्वेग । पीडा । दुःख ।

अभिताम्र (वि०) बहुत लाल ।

अभिदक्षिणम् (अव्यया०) दहिनी ओर या तरफ़ ।

अभिद्रवः (पु०)
अभिद्रवणम् (न०) } आक्रमण । हमला ।

अभिद्रोहः (पु०) १ षडयन्त्र । हानि । निर्दयता । २ गाली । भर्त्सना ।

अभिधर्षणं (न०) १ भूतावेश । भूत का शरीर में आवेश होना । भूताधिवेश । २ अत्याचार ।

अभिधा (स्त्री०) १ नाम । उपाधि । २ वाचक शब्द । ३ शब्दों के वाच्यार्थ का बोधन करने वाली शक्ति । ४ (मीमांसा) शाब्दी भावना ।

अभिधानम् (न०) १ कथन । निरूपण । नाम करण । २ भविष्यद्—कथन । नि सन्देह भाव से कथित वाक्य । ३ नाम । उपाधि । लकब । पद । ४ भाषण । सवाद । ५ शब्दकोश ।—कोशः, (पु०)—माला (स्त्री०) शब्दकोश ।

अभिधायक (वि०) [स्त्री०—अभिधायिका] १ सूचक । परिचायक । २ नाम रखने वाला ।

अभिधायिन् (वि०) निरूपक । प्रकाशक ।

अभिधावनम् (न०) आक्रमण । हम्ला । पीछा करना ।

अभिधेय (स० का० कृ) १ वर्णित । कथित । निरूपित । २ नाम धरने योग्य ।

अभिधेयम् (न०) १ अर्थ । भाव । तात्पर्य । अभिप्राय । २ निचोट । निष्कर्ष । ३ विवेच्य या आलोच्य विषय । प्रकरण । प्रसङ्ग । ४ किसी शब्द का अविकल अर्थ ।

अभिध्या (स्त्री०) १ दूसरे की वस्तु पर मन डिगाना । पराई वस्तु की चाह । २ अभिलाषा । इच्छा । लालच ।

अभिनन्दः (पु०) १ हर्ष प्रसन्नता । २ प्रशंसा । श्लाघा । सराहना । बधाई । ३ अभिलाषा । इच्छा । ४ प्रोत्साहन । उत्तेजन ।

अभिनन्दनम् (न०) १ आनन्द । अभिवादन । वंदना । स्वागत । २ प्रशंसा । अनुमोदन । ३ अभिलाषा । इच्छा ।

अभिनन्दनीय
अभिनन्द्य } (स० का० कृ०) १ हर्षप्रद । २ प्रशंसित । वंदनीय ।

अभिनम्र (वि०) झुका हुआ । नवा हुआ ।

अभिनयः (पु०) हृदय के भाव को प्रकट करने वाली क्रिया । स्वांग । नक़ल । नाटक का खेल ।

अभिनव (वि०) १ कोरा । बिल्कुल नया । ताजा । टटका । २ अनुभवशून्य ।—यौवन,—वयस्क, (वि०) (अवस्था में) बहुत छोटा । जवान ।

अभिनहनम् (न०) (आँखो के ऊपर बाधने की) पट्टी । अधा ।

अभिनियुक्त (वि०) काम में लगा हुआ । मशगूल ।

अभिनिर्मुक्त (वि०) १ छोड़ा हुआ । त्यागा हुआ । २ सूर्यास्त के समय सोने वाला ।

अभिनिर्याणम् (न०) १ कूच । प्रस्थान । २ चढ़ाई । हम्ला । किसी शत्रुसैन्य पर धावा ।

अभिनिविष्ट (व० कृ०) १ पैठा हुआ । धसा हुआ । गडा हुआ । २ लिप्त । मग्न । ३ कृतसङ्कल्प । दृढ़प्रतिज्ञ । ४ हठी । ज़िद्दी । आग्रही । ५ एक ही ओर लगा हुआ । अनन्य मन से अनुरक्त ।

अभिनिविष्टता (स्त्री०) १ दृढ़प्रतिज्ञा । सङ्कल्प । अपने स्वार्थ में (किसी बात की भी परवाह न कर) लिप्त हो जाना ।

अभिनिर्वृत्तिः (स्त्री०) सम्पादन । सिद्धि । समाप्ति । पूर्णता ।

अभिनिवेशः (पु०) अनुरक्ति । लीनता । एकाग्र-चिन्तन । २ उत्सुकतापूर्ण अभिलाषा । ३ दृढ-प्रतिज्ञा । ४ (योगदर्शन मे) पाँच क्लेशों में से अन्तिम क्लेश । मृत्यु । शङ्का ।

अभिनिवेशिन् (वि०) १ अनुरक्त । लिप्त । लीन । २ (मन को किसी ओर) लगाना । फेरना । ३ दृढप्रतिज्ञ । कृतसङ्कल्प ।

अभिनिष्क्रमणम् (न०) बाहिर का निकास ।

अभिनिष्ठानः (पु०) वर्णमाला का एक अक्षर ।

अभिनिष्पतनम् (न०) बहिर्धावन । बाहिर निकलना । युद्धार्थ द्रुतवेग से प्रयाण । [सिद्धि ।

अभिनिष्पत्तिः (स्त्री०) समाप्ति । अन्त । पूर्णता ।

अभिनिह्नवः (पु०) अस्वीकृति । प्रत्याख्यान । दुराव । छिपाव ।

अभिनीत (व० कृ०) १ निकट लाया हुआ । २ अभिनय किया हुआ । (नाटक) खेला हुआ । ३ पूर्णता को पहुँचाया हुआ । सर्वोत्कृष्ट । ४ सु-सज्जित । ५ योग्य । उचित । उपयुक्त । ६ क्रुद्ध । ७ दयालु । अनुकूल । ८ प्रशान्त चित्त । स्थिर चित्त ।

अभिनीतिः (स्त्री०) १ भावभङ्गी । हावभाव । २ कृपा । दयालुता । मैत्री । सन्तोष ।

अभिनेतृ (पु०) [स्त्री०—अभिनेत्री] एक्टर । नाटक का पात्र ।

अभिनेय } (स० का० कृ०) अभिनय करने
अभिनेतव्य } योग्य । खेलने योग्य ।

अभिन्न (वि०) १ जो भिन्न या कटा न हो । अपृथक् एकमय । २ अपरिवर्तित ।

अभिपतनं (न०) १ समीप गमन । २ आक्रमण । हमला । चढ़ाई । प्रस्थान । कूच । रवानगी ।

अभिपत्तिः (स्त्री०) १ समीपगमन । समीप खींचना । २ समाप्ति ।

अभिपन्न (व० कृ०) १ समीप गया हुआ या आया हुआ । ओर या तरफ दौड़ा हुआ । गया हुआ । २ भागा हुआ । भगोड़ा । ३ वश में किया हुआ । पकड़ा हुआ । गिरफ्तार किया हुआ । ४ अभागा । बदकिस्मत । आपत्ति में फँसा हुआ । ५ स्वीकृत । ६ अपराधी ।

अभिपरिप्लुत (वि०) १ निमज्जित । डूबा हुआ । बूड़ा हुआ । २ हिला हुआ ।

अभिपूरण (वि०) अतिप्रबल । विह्वलकारी ।

अभिपूर्व (अव्यया०) क्रमशः । अनुक्रम से ।

अभिप्रणयनम् (न०) पवित्र मंत्रों से संस्कार या प्रतिष्ठा करने की क्रिया ।

अभिप्रणयः (पु०) स्नेह । कृपा । प्रसादन । तुष्टि-साधन । तोषन । [२ लाया हुआ ।

अभिप्रणीत (व० कृ०) १ संस्कारित । प्रतिष्ठित ।

अभिप्रथनम् (न०) बिछाना, बखेरना या (आगे) बढ़ाना । ऊपर से डालना या ढकना ।

अभिप्रदक्षिणम् (अव्यया०) दहिनी ओर ।

अभिप्रायः (पु०) १ आशय । मतलब । तात्पर्य प्रयोजन । उद्देश्य । विचार । अभिलाषा । इच्छा । २ सम्मति । राय । विश्वास । ३ सम्बन्ध । हवाला ।

अभिप्रेत (व० कृ०) १ इष्ट । अभिलषित । ईप्सित । चाहा हुआ । २ पसंद । सम्मत । स्वीकृत । ३ प्रिय । अनुकूल ।

अभिप्रोक्षणं (न०) छिड़काव । छिड़कना ।

अभिप्लवः (पु०) १ दुःख । उपद्रव । २ नि-मज्जन । बूड़ना । [भूति । मग्न । आकुलित ।

अभिप्लुत (व० कृ०) दमन किया हुआ । अभि-

अभिबुद्धिः (स्त्री०) बुद्धीन्द्रिय । ज्ञानेन्द्रिय । (यथा आँख, जिह्वा, कान, नाक, त्वचा ।)

अभिभवः (पु०) १ हार । शिकस्त । वश । काबू । २ तिरस्कार । अनादर । ३ हीनता । दमन । ४ आधिक्य । प्राबल्य । उभाड़ । फैलाव । व्याप्ति । प्रसार ।

अभिभवनम् (न०) दमन । संयम । (स्वयं) वशवर्ती होना

अभिभावनम् (न०) दमन करना। वशवर्ती बनाना। विजयी बनाना।

अभिभाविन्, अभिभावक, अभिभावुक (वि०) १ दमन करने वाला। हराने वाला। पराजित करने वाला। जीतने वाला। २ लोकोत्तर। श्रेष्ठ।

अभिभाषणम् (न०) व्याख्यान। भाषण।

अभिभूतिः (स्त्री०) १ सर्वोत्तमता। प्राबल्य। आधिक्य। २ विजय। पराजय। वशवर्तीकरण। अधीनताई। ३ अपमान।

अभिमत (व० कृ०) १ अभीष्ट। प्रिय। प्यारा। अनुकूल। वाञ्छनीय। २ सम्मत। स्वीकृत। माना हुआ।

अभिमतः (पु०) माशूक। प्यार करने वाला। आशिक।

अभिमतम् (न०) ख्वाहिश। अभिलाषा।

अभिमनस (वि०) अभिलाषी। इच्छुक। उत्सुक। आशावान्।

अभिमंत्रणम् (न०) मंत्र विशेषों को पढ़कर (किसी वस्तु को) पवित्र या संस्कारित करना। २ जादू टोना करना। ३ सम्बोधन करना। न्योता देना। उपदेश करना।

अभिमरः (पु०) १ नाश। हत्या। २ युद्ध। लड़ाई। ३ विश्वासघात (आपस ही के लोगों के साथ)। अपने ही लोगों से भय या शङ्का। ४ बन्धन। क़ैद। बेड़ी।

अभिमर्दः (पु०) १ रगड़। २ कुचलन। ऊजाड़ किया जाना (शत्रुद्वारा किसी देश का)। ३ युद्ध। लड़ाई। ४ मदिरा। शराब।

अभिमर्दन (वि०) १ पीसना। चूर चूर करना। २ घस्सा। रगड़। युद्ध।

अभिमर्शः (पु०), अभिमर्शनम् (न०), अभिमर्ष (पु०), अभिमर्षणम् (न०) १ स्पर्श। संसर्ग। २ आक्रमण। अत्याचार। ३ मैथुन। सम्भोग।

अभिमर्शक, अभिमर्षक, अभिमर्शिन्, अभिमर्षिन् (वि०) छूने वाला। बलात्कार करने वाला।

अभिमादः (पु०) नशा। मद।

अभिमानः (पु०) १ गर्व। घमण्ड। अहङ्कार। अपने को बड़ा भारी प्रतिष्ठित समझना। आत्मश्लाघा। २ व्यक्तित्व। ३ स्नेह। प्रेम। ४ ख़्वाहिश। इच्छा। ७ घाव। चोट। —शालिन्, (वि०) अभिमानी। अहङ्कारी। —शून्य, (वि०) आत्माभिमान से रहित। विनम्र।

अभिमानिन् (वि०) अभिमानी। घमंडी। अपने को बहुत लगाने वाला।

अभिमुख (वि०) [स्त्री०—अभिमुखी] १ सामने। सम्मुख। २ समीप। ३ अनुकूल। ४ ऊपर को मुख किये हुए।

अभिमुखं, अभिमुखे (अव्यया०) ओर। तरफ। सामने मुंह किये हुए।

अभियाचनम् (न०), अभियाञ्चा (स्त्री०) प्रार्थना। माँग।

अभियातृ, अभियातिन् (वि०) समीप आया या गया हुआ। आक्रमण करता हुआ।

अभियातिः, अभियायिन्, अभियातृ (पु०) मारपीट के इरादे से समीप जाना या आने की क्रिया। शत्रु। वैरी।

अभियानम् (न०) १ समीप आना या जाना। २ (शत्रु पर) धावा बोलने की क्रिया। आक्रमण करने को क्रिया।

अभियुक्त (व० कृ०) १ व्यस्त। किसी काम में नधा हुआ। २ भली भाँति अभिज्ञ। पारदर्शी। विशारद। ३ विद्वान्। ज्ञानी। ४ प्रतिवादी। जो किसी मुकदमे में फँसा हो। ५ नियुक्त।

अभियोक्तृ (वि०) अभियोग उपस्थित करने वाला। (पु०) १ वादी। फरियादी। २ शत्रु। वैरी। आक्रमणकारी। ३ झूठा दावा करने वाला।

अभियोगः (पु०) १ मनोनिवेश। लगन। २ उद्योग। अध्यवसाय। ३ किसी बात की जानकारी प्राप्त करने या उसे सीखने के लिये उसमें मनोनिवेश। ४ अपराध की योजना। नालिश। अर्ज़ीदावा। ५ चढ़ाई। आक्रमण।

अभियोगिन् (वि०) १ मनोनिवेशित। संलग्न। २ आक्रमण करने वाला। ३ दोषी ठहराने वाला। (पु०) मुद्दई। वादी।

अभिरक्षा (स्त्री०)
अभिरक्षणं (न०) } सर्वविध रक्षण । सर्वत्र रक्षण ।

अभिरतिः (स्त्री०) १ आनन्द । हर्ष । सन्तोष । अनुराग । भक्ति ।

अभिराम (वि०) १ हर्षपूर्ण । मधुर । अनुकूल । २ सुन्दर । मनोहर । रम्य । प्रिय ।

अभिरुचिः (स्त्री०) अभिलाषा । चाह । पसंदगी । प्रवृत्ति । २ यश की चाहना । उच्चाभिलाषा ।

अभिरुचितः (पु०) प्यार करने वाला । चाहने वाला । आशिक ।

अभिरुतम् (न०) आवाज़ । पुकार । शोरगुल ।

अभिरूप (वि०) १ सदृश । अनुसार । २ मनोहर । हर्षपूर्ण । ३ प्रिय । प्रेमपात्र । माशूक । ४पण्डित । बुद्धिमान । बुध ।—पतिः (पु०) १ वह स्त्री जिसका मनोनुकूल पति हो । २ एक व्रत का नाम, जो परलोक में अच्छा पति पाने के लिये, स्त्रियों द्वारा किया जाता है ।

अभिरूपः (पु०) १ चन्द्रमा । २ विष्णु । ३ शिव । ४ कामदेव ।

अभिलंघनम् (न०) कूदकर आरपार चले जाने की क्रिया । नांघ जाना । कूद जाना ।

अभिलषणं (न०) इच्छा । अभिलाषा ।

अभिलषित (व० कृ०) इच्छित । वाञ्छित । इष्ट ।

अभिलषितम् (न०) इच्छा । चाह । प्रवृत्ति ।

अभिलापः (पु०) १ भाषण । कथन । २ प्रकटन । वर्णन । विस्तृत वर्णन । ३ किसी व्रत या धर्मानुष्ठान का सङ्कल्प वा प्रतिज्ञा ।

अभिलावः (पु०) निराई । (खेत की) कटाई ।

अभिलाषः
अभिलासः (कभी २) } (पु०) कामना । आकांक्षा । इच्छा । मनोरथ ।

अभिलाषक
अभिलाषिन्
अभिलासिन्
अभिलाषुक } (वि०) इच्छुक । इच्छा करने वाला । लालची । लोभी । लुब्ध ।

अभिलिखित (वि०) लिखा हुआ । खुदा हुआ ।

अभिलिखितम्
अभिलेखनम् } (न०) लेख । लिखावट । खुदा हुआ लेख ।

अभिलीन (वि०) १ संलग्न । चिपटा हुआ । सटा हुआ । २ आलिङ्गन किये हुए ।

अभिलुलित (वि०) १ आन्दोलित । गड़बड़ किया हुआ । २ खिलाड़ी । चञ्चल ।

अभिलूता (स्त्री०) मकड़ी विशेष ।

अभिवदनम् (न०) सम्बोधन । प्रणाम । सलाम ।

अभिवन्दनम् (न०) सम्मान पुरस्सर प्रणाम ।

अभिवर्षणम् (न०) वर्षा । वृष्टि । जल की वर्षा ।

अभिवादः (पु०)
अभिवादनम् (न०) } सम्मान पुरस्सर प्रणाम । प्रणाम तीन प्रकार से होता है । प्रथम, प्रत्युत्थान । द्वितीय, पादोपसंग्रह । तृतीय, स्वगोत्र एवं स्वनाम का उच्चारण कर वंदना करना ।

अभिवादक (वि०) (स्त्री०—अभिवादिका) प्रणाम करने वाला । प्रणाम । विनम्र । सुशील । सम्मान सूचक । नम्र ।

अभिविधिः (पु०) व्याप्ति । मर्यादा ।

अभिविश्रुत (वि०) जगतप्रसिद्ध । सर्वश्रेष्ठ ।

अभिवृद्धिः (स्त्री०) उन्नति । बढ़ती । सफलता । समृद्धि ।

अभिव्यक्तः (क्रि० वि०) १ प्रत्यक्ष । प्रगट । घोषित । २ स्वच्छ । साफ ।

अभिव्यक्तिः (स्त्री०) प्रकटकरण । प्रदर्शन ।

अभिव्यञ्जनम् (न०) प्रकटन । प्रकाशन ।

अभिव्यापक
अभिव्यापिन् } (वि०) १ अच्छी तरह प्रचलित होने वाला । २ सम्मिलित । शामिल । व्याप्त । अन्तर्भुक्त ।

अभिव्याप्तिः (स्त्री०) सर्वव्यापकता । अन्तर्भुक्तता । शामिलपन ।

अभिव्याहरणं (न०)
अभिव्याहारः (पु०) } १ कथन । उच्चारण । २ नाम । उपाधि । संज्ञा ।

अभिशंसक
अभिशंसिन् } (वि०) दोषी ठहराने वाला । अपमान करने वाला । बदनाम करने वाला ।

अभिशंसनम् (न०) १ आरोप । इलज़ाम । २ गाली । अपमान । उद्दण्डता ।

अभिशंका
अभिशङ्का } १ (स्त्री०) सन्देह । शक । भय । चिन्ता ।

अभिशपनम् (न०) } १ अकोसा । शाप । २ संगीन
अभिशापः (पु०) } इलज़ाम । इलज़ाम । बड़ा भारी दोष ।—रोप । ३ अपवाद । निन्दा । बदनाम । —ज्वरः, (पु०) ऐसा ज्वर जो कि अकोसने या शापवश चढ़ आया हो ।

अभिशङ्कित (वि०) घोषित । वर्णित । कथित ।

अभिशस्त (व० कृ०) १ बदनाम । तिरस्कृत । गरियाया हुआ । २ चोटिल । घायल । आक्रान्त । नामधरा हुआ । ३ शापित । ४ दुष्ट । पापी ।

अभिशस्तक (वि०) झूठमूठ दोषी ठहराया हुआ । बदनाम किया हुआ । बदनाम ।

अभिशस्तिः (स्त्री०) १ अकोसा । शाप । २ दुर्भाग्य बदकिस्मती । बुराई । विपत्ति ३ भर्त्सना । बद-नामी । अप्रतिष्ठा । ४ याचना । माँग ।

अभिशापनम् (न०) अकोसना । शाप देना ।

अभिशीत (वि०) ठंडा । शीतल ।

अभिशोचनम् (न०) बड़ा भारी दुःख, पीड़ा या क्लेश ।

अभिश्रवणं (न०) ब्राह्मण श्राद्ध करने बैठे उस समय ऋचाओं की पुनरावृत्ति ।

अभिषंगः } १ (पु०) मिलन । एकीभाव । ऐक्य
अभिषङ्गः } २ पराजय । दमन किया । ३ लगा हुआ
अभिसंगः } आघात । धक्का । दु.ख । इकबइक आई
अभिसङ्गः } हुई विपत्ति । ४ भूतपीडा । प्रेतावेश । ५ शपथ । ६ आलिङ्गन । सम्भोग । ७ अकोसा । शाप । गाली । ८ झूठा दोष । रोप । झूठी बदनामी । ९ तिरस्कार । असम्मान ।

अभिषव. (पु०) १ सोमलता को दबा कर, उससे सोमरस निकालने की क्रिया । २ शराब खींचना । धर्मानुष्ठान करने में प्रवृत्त होने के पूर्व स्नानमार्जन आदि की क्रिया । ४ स्नान । प्रक्षालन । अवभृथ स्नान । ५ वलिकर्म ।

अभिषवणम् (न०) स्नान ।

अभिषिक्त (व० कृ०) १ अभिषेक किया हुआ । भींगा हुआ । तर । २ राजतिलक किया हुआ । राजसिंहासन पर बैठा हुआ ।

अभिषेकः (पु०) १ जल से सिञ्चन । छिड़काव । २ ऊपर से जल छोड़कर स्नान । ३ राजतिलक । राज-गद्दी । ४ राज्याभिषेक के लिये जल ।

अभिषेचनम् (न०) १ छिड़काव । २ राज्याभिषेक ।

अभिषेणनम् (न०) किसी शत्रु पर हमला करने को प्रस्थान या कूच । शत्रु का सामना करने की क्रिया ।

अभिषेणयति (क्रि०) सेना के साथ चढाई करने को प्रस्थान करना । आक्रमण करना । शत्रु सैन्य से मुठभेड़ करना ।

अभिष्टवः (पु०) प्रशंसा । विरुदावली । तारीफ़ ।

अभिष्यन्दः } (पु०) १ बहाव । स्राव । २ नेत्र रोग
अभिस्यन्दः } विशेष । आँख आना । ३ अत्यधिक बढ़ती ।

अभिष्वङ्गः (पु०) १ संसर्ग । २ अत्यन्त अनुराग । प्रेम । स्नेह ।

अभिसंश्रयः (पु०) शरण । पनाह । साया ।

अभिसंस्तवः (पु०) बड़ी भारी प्रशंसा या स्तुति ।

अभिसन्तापः (पु०) युद्ध । लड़ाई । विग्रह ।

अभिसन्देहः (पु०) १ जननेन्द्रिय । २ विनिमय । परिवर्तन । बदलौअल ।

अभिसन्धः } (पु०) १ धोखा देने वाला । छलिया ।
अभिसन्धकः } २ निन्दक । दोषदर्शी ।

अभिसन्धा (स्त्री०) १ भाषण । घोषणा । शब्द । बयान । कथन । प्रतिज्ञा । २ धोखा । प्रवञ्चना ।

अभिसन्धानम् (न०) १ भाषण । शब्द । विचारित घोषणा । प्रतिज्ञा । २ धोखा । दग़ाबाज़ी ।

अभिसन्धिः—१ भाषण । विचारित घोषणा । प्रतिज्ञा । २ इरादा । उद्देश्य । अभिप्राय । लक्ष्य । ३ राय । मत । सम्मति । विश्वास । ४ ख़ास इक़रारनामा । विशेष प्रतिज्ञापत्र । शर्तें । ठहराव ।

अभिसमवायः (पु०) ऐक्य ।

अभिसम्परायः (पु०) भविष्यद् ।

अभिसम्पातः (पु०) १ एकत्रित होना । सङ्गम । २ युद्ध । लड़ाई । ३ शाप । अकोसा ।

अभिसम्बन्धः (पु०) १ सम्बन्ध । रिश्ता । जोड़ । सन्धि । २ संसर्ग । मैथुन ।

अभिसम्मुख (वि०) आदरपूर्वक देखना । मुख सामने किये हुए ।

अभिसरः (पु०) १ अनुचर । अनुयायी २ साथी । संगी । सहायक ।

अभिसरणम् (न०) १ समीपागमन । २ मिलाप । सङ्केतस्थान । प्रेमियों के मिलने का सङ्केतस्थान या ठहराव ।

अभिसर्गः (पु०)सृष्टि । संसार की रचना ।

अभिसर्जनम् (न०) १ भेंट । दान । २ वध । हत्या ।

अभिसर्पणं (न०) समीपागमन ।

अभिसान्त्वः (पु०)
अभिशान्त्वः (पु०)
अभिसान्त्वनम् (न०)
अभिशान्त्वनम् (न०) } तुष्टिसाधन । सान्त्वना । प्रवोध । ढाँढ़स । धीरज ।

अभिसायं (अव्यया०) सूर्यास्त के समय । सन्ध्या के लगभग ।

अभिसारः (पु०) १ प्रेमी प्रेमिका का मिलने के लिये (सङ्केतस्थान पर) गमन । सङ्केतस्थल । ठहराव । २ प्रेमी प्रेमिका का सङ्केतस्थान या सङ्केत समय । ३ हम्ला । आक्रमण ।

अभिसारिका (स्त्री०) नायिका जो सङ्केतस्थल पर अपने प्यारे नायिक से मिलने स्वयं जाय या उसे बुलावे ।

अभिसारिन् (वि०) भेंट करने को जाने वाला । आगे बढने वाला । आक्रमणकारी । बड़े वेग से बाहिर निकलने वाला । [लावा ।

अभिस्नेहः (पु०) अनुराग । स्नेह । प्रेम । अभि-

अभिस्फुरित (वि०) पूर्णरूप से फैला हुआ या बढ़ा हुआ । पूर्ण वृद्धि को प्राप्त (यथा पुष्प) ।

अभिहत (व० कृ०) १ ठोंका हुआ । २ पीटा हुआ । मारा हुआ । घायल किया हुआ । २ रोका हुआ । रुद्ध । ३ (अङ्कगणित) गुणा किया हुआ ।

अभिहतिः (स्त्री०) १ मार । चोट । २ गुणा । ज़रब ।

अभिहरणं (न०) १ समीप लाना । जाकर लाना । २ लूटना । [दान । यज्ञ ।

अभिह्वः (पु० । १ आह्वान । आमंत्रण । २ बलि-

अभिहारः (पु०) लेजाना । लूट लेना । चुरा लेना । २ आक्रमण । हमला । ३ हथियार लगाना । हथियार लेना ।

अभिहासः (पु०) हँसी दिल्लगी । मज़ाक । हर्ष ।

अभिहित (व० कृ०) १ कथित । कहा हुआ । घोपित । वर्णित । २ सम्बोधित । बुलाया हुआ । पुकारा हुआ । [क्रिया ।

अभिहोमः (पु०) अग्नि में घी की आहुतियाँ देने की

अभी (वि०) निडर । निर्भय ।

अभीक (वि०) १ अभिलापी । उत्सुक । २ कामुक । विलासी । भोगासक्त । ३ निर्भय । निडर ।

अभीक्ष्ण (वि०) १ दुहराया हुआ । २ सतत । निरन्तर । २ अत्यधिक ।

अभीक्ष्णम् (न०) १ अक्सर । बहुधा । बारंबार २ अविच्छिन्नता से । ३ बहुत अधिक । अत्यन्त अधिकाई से ।

अभीप्सित (वि०) अभीष्ट । वाञ्छित । चाहा हुआ । २ मनोनीत । ३ अभिप्रेत । आशय के अनुकूल ।

अभीप्सितम् (न०) अभिलाषा । मनोरथ ।

अभीरः (पु०) १ अहीर । ग्वाला । गौचराने वाला । —पल्ली (स्त्री०) अहीरों का एक छोटा सा गाँव ।

अभीशापः (पु०) देखो "अभिशाप" ।

अभीशु. } (पु०) १ लगाम । २ प्रकाश की किरण ।
अभीषुः } ३ अभिलाष । ४ अनुराग ।

अभीष्ट (व० कृ०) १ अभिलषित । अभीप्सित । २ प्रिय । कृपापात्र । प्राणप्यारा ।

अभीष्टः (पु०) परम प्यारा ।

अभीष्टम् (न०) मनोरथ । चाही हुई वस्तु । अभिमत वस्तु ।

अभीष्टा (स्त्री०) स्वामिनी । प्रेयसी ।

अभुग्न (वि०) १ जो टेढ़ा या मुड़ा या झुका हुआ न हो । सीधा । सतर । ३ अच्छा । भला । रोगरहित ।

अभुज (वि०) भुजारहित । लुंजा ।

अभिशपनम् (न०) } १ अकोसा। शाप। २ संगीन
अभिशापः (पु०) } इलज़ाम। इलज़ाम। बड़ा भारी दोष।—रोप। ३ अपवाद। निन्दा। बदनाम। —ज्वरः, (पु०) ऐसा ज्वर जो कि अकोसने या शापवश चढ़ आया हो।

अभिशब्दित (वि०) घोषित। वर्णित। कथित।

अभिशस्त (व० कृ०) १ बदनाम। तिरस्कृत। गरियाया हुआ। २ चोटिल। घायल। आक्रान्त। नामधरा हुआ। ३ शापित। ४ दुष्ट। पापी।

अभिशस्तक (वि०) झूठमूठ दोषी ठहराया हुआ। बदनाम किया हुआ। बदनाम।

अभिशस्तिः (स्त्री०) १ अकोसा। शाप। २ दुर्भाग्य बदकिस्मती। बुराई। विपत्ति ३ भर्त्सना। बदनामी। अप्रतिष्ठा। ४ याचना। माँग।

अभिशापनम् (न०) अकोसना। शाप देना।

अभिशीत (वि०) ठंडा। शीतल।

अभिशोचनम् (न०) बड़ा भारी दुःख, पीड़ा या क्लेश।

अभिश्रवणं (न०) ब्राह्मण श्राद्ध करने बैठे उस समय ऋचाओं की पुनरावृत्ति।

अभिषंगः } १ (पु०) मिलन। एकीभाव। ऐक्य
अभिषङ्गः } २ पराजय। दमन किया। ३ लगा हुआ
अभिसंगः } आघात। धक्का। दुःख। इकबड़क आई
अभिसङ्गः } हुई विपत्ति। ४ भूतपीड़ा। प्रेतावेश। ५ शपथ। ६ आलिङ्गन। सम्भोग। ७ अकोसा। शाप। गाली। ८ झूठा दोष। रोप। झूठी बदनामी। ९ तिरस्कार। असम्मान।

अभिषव. (पु०) १ सोमलता को दबा कर, उससे सोमरस निकालने की क्रिया। २ शराब सींचना। धर्मानुष्ठान करने से प्रवृत्त होने के पूर्व स्नानमार्जन आदि की क्रिया। ४ स्नान। प्रक्षालन। अवभृथ स्नान। ५ बलिकर्म।

अभिषवणम् (न०) स्नान।

अभिषिक्त (व० कृ०) १ अभिषेक किया हुआ। भींगा हुआ। तर। २ राजतिलक किया हुआ। राजसिंहासन पर बैठा हुआ।

अभिषेकः (पु०) १ जल से सिञ्चन। छिड़काव। २ ऊपर से जल छोड़कर स्नान। ३ राजतिलक। राजगद्दी। ४ राज्याभिषेक के लिये जल।

अभिषेचनम् (न०) १ छिड़काव। २ राज्याभिषेक।

अभिषेणनम् (न०) किसी शत्रु पर हम्ला करने को प्रस्थान या कूच। शत्रु का सामना करने की क्रिया।

अभिषेणयति (क्रि०) सेना के साथ चढ़ाई करने को प्रस्थान करना। आक्रमण करना। शत्रु सैन्य से मुठभेड़ करना।

अभिष्टवः (पु०) प्रशंसा। विरुदावली। तारीफ़।

अभिष्यन्दः } (पु०) १ बहाव। स्राव। २ नेत्र रोग
अभिस्यन्दः } विशेष। आँख आना। ३ अत्यधिक बढ़ती।

अभिष्वङ्गः (पु०) १ संसर्ग। २ अत्यन्त अनुराग। प्रेम। स्नेह।

अभिसंश्रयः (पु०) शरण। पनाह। साया।

अभिसंस्तवः (पु०) बड़ी भारी प्रशंसा या स्तुति।

अभिसन्तापः (पु०) युद्ध। लड़ाई। विग्रह।

अभिसन्देहः (पु०) १ जननेन्द्रिय। २ विनिमय। परिवर्तन। बदलौअल।

अभिसन्धः } (पु०) १ धोखा देने वाला। छलिया।
अभिसन्धकः } २ निन्दक। दोषदर्शी।

अभिसन्धा (स्त्री०) १ भाषण। घोषणा। शब्द। बयान। कथन। प्रतिज्ञा। २ धोखा। प्रवञ्चना।

अभिसन्धानम् (न०) १ भाषण। शब्द। विचारित घोषणा। प्रतिज्ञा। २ धोखा। दग़ाबाज़ी।

अभिसन्धिः १ भाषण। विचारित घोषणा। प्रतिज्ञा। २ इरादा। उद्देश्य। अभिप्राय। लक्ष्य। ३ राय। मत। सम्मति। विश्वास। ४ ख़ास इकरारनामा। विशेष प्रतिज्ञापत्र। शर्तें। ठहराव।

अभिसमवायः (पु०) ऐक्य।

अभिसम्परायः (पु०) भविष्यद्।

अभिसम्पातः (पु०) १ एकत्रित होना। सङ्गम। २ युद्ध। लड़ाई। ३ शाप। अकोसा।

अभिसम्बन्धः (पु०) १ सम्बन्ध। रिश्ता। जोड़। सन्धि। २ संसर्ग। मैथुन।

अभिसम्मुख (वि०) आदरपूर्वक देखना । मुख सामने किये हुए ।

अभिसरः (पु०) १ अनुचर । अनुयायी २ साथी । संगी । सहायक ।

अभिसरणम् (न०) १ समीपागमन । २ मिलाप । सङ्केतस्थान । प्रेमियों के मिलने का सङ्केतस्थान या ठहराव ।

अभिसर्गः (पु०)सृष्टि । संसार की रचना ।

अभिसर्जनम् (न०) १ भेंट । दान । २ वध । हत्या ।

अभिसर्पणं (न०) समीपागमन ।

अभिसान्त्वः (पु०) अभिशान्त्वः (पु०) अभिसान्त्वनम् (न०) अभिशान्त्वनम् (न०) } तुष्टिसाधन । सान्त्वना । प्रबोध । ढाँढस । धीरज ।

अभिसायं (अव्यया०) सूर्यास्त के समय । सन्ध्या के लगभग ।

अभिसारः (पु०) १ प्रेमी प्रेमिका का मिलने के लिये (सङ्केतस्थान पर) गमन । सङ्केतस्थल । ठहराव । २ प्रेमी प्रेमिका का सङ्केतस्थान या सङ्केत समय । ३ हम्ला । आक्रमण ।

अभिसारिका (स्त्री०) नायिका जो सङ्केतस्थल पर अपने प्यारे नायिक से मिलने स्वयं जाय या उसे बुलावे ।

अभिसारिन् (वि०) भेंट करने को जाने वाला । आगे बढने वाला । आक्रमणकारी । बड़े वेग से बाहिर निकलने वाला । [लाना ।

अभिस्नेहः (पु०) अनुराग । स्नेह । प्रेम । अभि-

अभिस्फुरित (वि०) पूर्णरूप से फैला हुआ या बढ़ा हुआ । पूर्ण वृद्धि को प्राप्त (यथा पुष्प) ।

अभिहत (व० कृ०) १ ठोंका हुआ । २ पीटा हुआ । मारा हुआ । घायल किया हुआ । २ रोका हुआ । रुद्ध । ३ (अङ्कगणित) गुणा किया हुआ ।

अभिहतिः (स्त्री०) १ मार । चोट । २ गुणा । ज़रब ।

अभिहरणं (न०) १ समीप लाना । जाकर लाना । २ लूटना । [दान । यज्ञ ।

अभिहवः (पु० । १ आह्वान । आमंत्रण । २ बलि-

अभिहारः (पु०) लेजाना । लूट लेना । चुरा लेना । २ आक्रमण । हमला । ३ हथियार लगाना । हथियार लेना ।

अभिहासः (पु०) हँसी दिल्लगी । मज़ाक । हर्ष ।

अभिहित (व० कृ०) १ कथित । कहा हुआ । घोषित । वर्णित । २ सम्बोधित । बुलाया हुआ । पुकारा हुआ । [क्रिया ।

अभिहोमः (पु०) अग्नि में घी की आहुतियाँ देने की

अभी (वि०) निडर । निर्भय ।

अभीक (वि०) १ अभिलाषी । उत्सुक । २ कामुक । विलासी । भोगासक्त । ३ निर्भय । निडर ।

अभीक्ष्ण (वि०) १ दुहराया हुआ । २ सतत । निरन्तर । २ अत्यधिक ।

अभीक्ष्णम् (न०) १ अक्सर । बहुधा । बारंबार २ अविच्छिन्नता से । ३ बहुत अधिक । अत्यन्त अधिकाई से ।

अभीप्सित (वि०) अभीष्ट । वाञ्छित । चाहा हुआ । २ मनोनीत । ३ अभिप्रेत । आशय के अनुकूल ।

अभीप्सितम् (न०) अभिलाषा । मनोरथ ।

अभीरः (पु०) १ अहीर । ग्वाला । गौचराने वाला । —पल्ली (स्त्री०) अहीरों का एक छोटा सा गाँव ।

अभीशापः (पु०) देखो "अभिशाप" ।

अभीशु. अभीषुः } (पु०) १ लगाम । २ प्रकाश की किरण । ३ अभिलाप । ४ अनुराग ।

अभीष्ट (व० कृ०) १ अभिलषित । अभीप्सित । २ प्रिय । कृपापात्र । प्राणप्यारा ।

अभीष्टः (पु०) परम प्यारा ।

अभीष्टम् (न०) मनोरथ । चाही हुई वस्तु । अभिमत वस्तु ।

अभीष्टा (स्त्री०) स्वामिनी । प्रेयसी ।

अभुग्न (वि०) १ जो टेढ़ा या मुड़ा या झुका हुआ न हो । सीधा । मतर । ३ अच्छा । भला । रोगरहित ।

अभुज (वि०) भुजारहित । लुंजा ।

अभुजिष्या (स्त्री०) स्त्री, जो दासी या टहलनी न हो। स्वतंत्र स्त्री।

अभूः (पु०) जो पैदा न हुआ हो। भगवान विष्णु [का नाम।

अभूत (वि०) अनस्तित्व। जो नहीं है या नहीं रहा है। जो यथार्थ या सत्य नहीं है। मिथ्या। अविद्यमान।—पूर्व, (वि०) जो पहले कभी नहीं था। बेजोड़। जो किसी पहिली नज़ीर (उदाहरण) से समर्थित न हो।—शत्रु, (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो।

अभूतिः (स्त्री०) १ अनस्तित्व। अत्यन्ताभाव। २ निर्धनता।

अभूमिः (स्त्री०) १ अनुपयुक्त स्थान या पदार्थ। २ पृथिवी को छोड़ कर अन्य कोई भी पदार्थ।

अभृत } अभृत्रिम } (वि०) १ जो भाड़े पर न हो, या जिस का भाड़ा न दिया गया हो। ६ असमर्थित।

अभेद (वि०) अविभक्त। २ समान। एकसा।

अभेदः (पु०) अन्तर या फर्क़ का अभाव। २ अति समानता।

अभेद्य } अभेदिक } (वि०) १ जो टुकड़े टुकड़े न किया जा सके। जो बेधा न जा सके।

अभेद्यम् (न०) हीरा।

अभोज्य (वि०) न खाने योग्य। वर्जित भोज्यपदार्थ।

अभ्यग्र (वि०) समीप। निकट। पास। २ ताज़ा। टटका।

अभ्यग्रम् (न०) सामीप्य। निकटता।

अभ्यक्त (वि०) हाल ही में चिन्ह किया हुआ। नवीन चिन्हित।

अभ्यङ्गः (पु०) शरीर में तेल लगाना। तैलमर्दन।

अभ्यंजनम् } अभ्यञ्जनम् } (न०) शरीर में मालिश करने का तैल या उबटन। २ आँख में लगाने का सुर्मा।

अभ्यधिक (वि०) अपेक्षाकृत अधिक। अत्यधिक। २ गुण या परिमाण में अपेक्षाकृत अधिक। उच्चतर। बड़ा। ऊँचा। ३ अधिक। असाधारण। मुख्य।

अभ्यनुज्ञा (स्त्री०) } अभ्यनुज्ञानम् (न०) } १ अनुमति। दी हुई आज्ञा। २ किसी दलील की स्वीकृत।

अभ्यंतर } अभ्यन्तर } (वि०) १ मध्य। बीच। भीतरी। अति समीपी। अति निकट सम्बन्धी ३ हाव-भाव प्रकाशन की कला। गोपनीय कथा।

अभ्यंतरकः } अभ्यन्तरकः } (पु०) अन्तरङ्गमित्र।

अभ्यमनम् (न०) आक्रमण। चोट। २ रोग।

अभ्यमित } अभ्यान्त } (व० कृ०) १ रोगी। बीमार। २ घायल चोटिल।

अभ्यमित्रं (न०) शत्रु पर आक्रमण। (अव्य०) शत्रु के विरुद्ध या शत्रु की ओर।

अभ्यमित्रीणः } अभ्यमित्रीय } अभ्यमित्र्यः } (पु०) योद्धा जो वीरता पूर्वक अपने शत्रु का सामना करता है।

अभ्ययः (पु०) १ आगमन। पहुँच। २ (सूर्य के) अस्त होने की क्रिया।

अभ्यर्चनम् (न०) } अभ्यर्चा (स्त्री०) } पूजन। सजावट। शृङ्गार। सम्मान।

अभ्यर्ण (वि०) समीप। निकट।

अभ्यर्थनं (न०) } अभ्यर्थना (स्त्री०) } १ विनय। विनती। दरख्वास्त। २ सम्मानार्थ आगे बढ़कर लेना। अगवानी।

अभ्यर्थिन् (वि०) माँगने वाला। याचना करने वाला।

अभ्यर्हणा (स्त्री०) १ पूजा। २ सम्मान। प्रतिष्ठा।

अभ्यर्हित (वि०) १ सम्मानित। पूजित। २ योग्य। उपयुक्त। भव्य।

अभ्यवकर्षणम् (न०) खींच कर बाहिर निकालना।

अभ्यवकाशः (पु०) खुली हुई जगह।

अभ्यवस्कन्दः (पु०) } अभ्यवस्कन्दनम् (न०) } १ वीरता पूर्वक शत्रु के सम्मुख होना २ ऐसी चोट करना जिससे शत्रुबेकाम या निकमा हो जाय। ३ आघात।

अभ्यवहरणम् (न०) १ फैंक देना या गिरा देना। २ भोजन करना। खाना। गले के नीचे उतारना। निगलना।

अभ्यवहारः (पु०) १ भोजन करना । खाना खाना । २ भोजन ।

अभ्यवहार्यः (स० का० कृ०) खाने योग्य ।

अभ्यवहार्यम् (न०) भोज्य पदार्थ ।

अभ्यसनम् (न०) दुहराना । पुनरावृत्ति । २ सतत-अध्ययन । किसी काम में तन्मयता ।

अभ्यसूयक (वि०) [स्त्री —अभ्यसूयिका] डाही । ईर्ष्यालु । निन्दक ।

अभ्यसूया (स्त्री०) डाह । ईर्ष्या । क्रोध ।

अभ्यस्त (व० कृ०) १ जिसका अभ्यास किया गया हो । वार वार किया हुआ । मश्क किया हुआ । २ सीखा हुआ । पढ़ा हुआ । ३ गुणा किया हुआ । ४ अस्वीकृत ।

अभ्याकर्षः (पु०) (पहलवानों की तरह) हथेली से छाती ठोंक कर मानों कुश्ती लड़ने के लिये ललकारना ।

अभ्याकांक्षितं (न०) १ झूठा इलज़ाम । असत्य आरोप । २ मनोरथ । अभिलाषा ।

अभ्याख्यानम् (न०) १ झूठा इलज़ाम । असत्य दोषारोपण । अपवाद । निन्दा । २ गर्व को खर्व करने की क्रिया ।

अभ्यागत (व० कृ०) १ सामने आया हुआ । घर आया हुआ । अतिथि बना हुआ ।

अभ्यागतः (पु०) पाहुना । महमान । अतिथि ।

अभ्यागमः (पु०) समीप आना या जाना । आगमन । मुलाकात । भेंट । २ सामीप्य । पड़ोस । ३ भिड़ना । हमला करना । ४ युद्ध । लड़ाई ५ शत्रुता । वैर ।

अभ्यागमनम् (न०) समीपागमन । आगमन । भेंट । मुलाकात ।

अभ्यागारिकः (पु०) वह जो अपने कुटुम्ब के भरण पोषण में यत्नशील हो ।

अभ्याघातः (पु०) हमला । आक्रमण ।

अभ्यादानं (न०) आरम्भ । प्रारम्भ । प्रथम आरम्भ ।

अभ्याधानं (न०) रखना । डालना (जैसे आग में ईंधन)

अभ्यान्त (वि०) रोगी । बीमार ।

अभ्यापातः (पु०) विपत्ति । सङ्कट । बदकिस्मती ।

अभ्यामर्दः (पु०) }
अभ्यामर्दनम् (न०) } युद्ध । लड़ाई । भिड़न्त । हमला ।

अभ्यारोहः (पु०) }
अभ्यारोहणम् (न०) } चढ़ना । सवार होना । ऊपर की ओर जाना ।

अभ्यावृत्तिः (स्त्री०) पुनरावृत्ति । वार वार आवृत्ति ।

अभ्याश (वि०) समीप । नज़दीक ।

अभ्याशः (पु०) १ आगमन । व्याप्ति । २ पड़ोस । सामीप्य । ३ लाभ । परिणाम । ४ लाभ की आगे की आशा । प्रत्याशा ।

अभ्यासः (पु०) १ वार वार किसी काम को करने की क्रिया । २ पूर्णता प्राप्त करने को वारंवार एक ही क्रिया का अवलम्बन । २ आदत । बान । टेव । स्वभाव । ३ रीति । रवाज़ । पद्धति । ४ कसरत । कवायद । ५ पाठ । अध्ययन । ६ समीप । पड़ोस । ७ अभ्यस्त अंश (निरुक्त में) । (गणित में) गुणा । (संगीत में) एकतान सङ्गीत । अस्थाई या टेक । —योगः, (पु०) एक अवलम्ब में चित्त को स्थापित कर देना अभ्यास कहा जाता है । अभ्यास सहित समाधि ।

अभ्यासादनम् (न०) शत्रु का सामना करना । शत्रु पर आक्रमण करना ।

अभ्याहननम् (न०) १ मारना । चोटिल करना । घात करना । २ रोकना । (रास्ते में) बाधा डालना ।

अभ्याहारः (पु०) १ समीप लाना या किसी ओर लाना । ढोना । २ लूटना ।

अभ्युक्षणं (न०) १ (जल) छिड़कना । तर करना । २ प्रोक्षण । मार्जन ।

अभ्युचित (वि०) मामूली । साधारण । प्रथानुरूप । प्रचलित ।

अभ्युच्चयः (पु०) उन्नति । बढ़ती । २ समृद्धि-[शालीनता ।

अभ्युत्क्रोशनम् (न०) उच्चस्वर से चिल्लाना ।

अभ्युत्थानं (न०) १ किसी के सम्मान के लिये आसन छोड़ कर खड़े होने की क्रिया । २ प्रस्थान । रवानगी । ३ उदय । पदोन्नति । समृद्धि । शान ।

अभ्युत्पतनं (न०) उछाल । झपट । आक्रमण ।

अभ्युदयः (पु०) १ उन्नति । वृद्धि । २ उदय । (किसी नक्षत्र का) निकलना । ३ उत्सव । उत्सवावसर । ४ आरम्भ । प्रारम्भ । [उदाहरण ।

अभ्युदाहरणम् (न०) किसी वस्तु का (उलटा)

अभ्युदित (व० कृ) १ उदय हुआ । २ पदोन्नत । ३ सूर्यास्त के समय सोया हुआ ।

अभ्युद्गमः (पु०)
अभ्युद्गमनम् (न०)
अभ्युद्गतिः (स्त्री०) } किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति अथवा महमान का सम्मान करने को आगे जा कर उसे लेने की क्रिया । अगवानी । उदय । निकास । उत्पत्ति ।

अभ्युद्यत (व० कृ०) १ उठा हुआ । ऊपर उठाया हुआ । २ तैयार किया हुआ । तैयार । ३ आगे गया हुआ । उदय हुआ । ४ अयाचित दिया हुआ या लाया हुआ ।

अभ्युन्नत (वि०) १ उठा हुआ । ऊँचा किया हुआ । २ ऊपर को निकला हुआ । अत्युच्च ।

अभ्युन्नतिः (स्त्री०) अत्यन्त पदोन्नति और समृद्धि । शालीनता ।

अभ्युपगमः (पु०) १ समीप आगमन । आगमन । २ मंजूर करना । मान लेना । किसी बात को सत्य समझ कर मान लेना । (दोष को) अङ्गीकार करना । ३ वचन । प्रतिज्ञा ।

अभ्युपगमन-सिद्धान्तः (पु०) १ न्याय का एक सिद्धान्त विशेष । बिना परीक्षा किये, किसी ऐसी बात को मान कर, जिसका खण्डन करना है, फिर उसकी परीक्षा करने को अभ्युपगमसिद्धान्त कहते हैं । २ स्वीकृत प्रस्ताव या सर्वजनगृहीत मूलनीति ।

अभ्युपपत्तिः (स्त्री०) १ सहायतार्थ समीप जाने की क्रिया । दयालु होने की क्रिया । १ अनुग्रह । कृपा । २ सान्त्वना । ढाँढ़स । धीरज । ३ संरक्षण । बचाव । रक्षा । ४ इकरारनामा । प्रतिज्ञापत्र । स्वीकृति । प्रतिज्ञा । ५ स्त्री को गर्भवती करने की क्रिया ।

अभ्युपायः (पु०) १ प्रतिज्ञा । इकरार । फसाव । २ उपाय । इलाज ।

अभ्युपायनम् (न०) १ घूंस । रिशवत । लालच । २ सम्मानप्रदर्शक भेंट ।

अभ्युपेत (अव्यया०) आग्रह किये जाने पर । रज़ामंद होने पर । प्रतिज्ञा करने पर ।

अभ्युपेत्य (व० कृ) १ समीप आया हुआ । २ प्रतिज्ञाता । स्वीकृत । अङ्गीकृत ।

अभ्युषः
अभ्यूषः
अभ्योषः } (पु०) एक प्रकार की रोटी या चपाती ।

अभ्यूहः (पु०) १ तर्क । दलील । वादविवाद । २ अनुमान । कल्पना । ३ त्रुटि की पूर्ति । ४ बुद्धि । समझ ।

अभ्र् (धा० पर०) [अभ्रति, आनभ्र, अभ्रित] जाना, इधर उधर घूमना फिरना ।

अभ्रम् (न०) १ बादल । २ आकाश । व्योम । ३ अभ्रक । ४ (गणित में) शून्य । ज़ीरो ।

अभ्रंलिह (वि०) बादलों का स्पर्श करनेवाला । (अर्थात् बहुत ऊँचा) ।

अभ्रलिहः (पु०) पवन ।

अभ्रकम् (न०) अभ्रक ।

अभ्रंकष (वि०) बादलों को छूनेवाला । बहुत ऊँचा ।

अभ्रंकषः (पु०) १ हवा । पवन । २ पर्वत ।

अभ्रमु (स्त्री०) पूर्व दिशा के दिग्गज की हथिनी । इन्द्र के ऐरावत हाथी की हथिनी ।—प्रियः, —वल्लभः, (पु०) ऐरावत हाथी ।

अभ्रिः
अभ्रीः } (स्त्री०) १ लकड़ी की बनी फरही, जिससे नाव की सफाई की जाती है । काष्ठ कुदाल । २ कुदाली । [आच्छादित ।

अभ्रित (वि०) बादल छाये हुए । बादलों से

अभ्रिय (वि०) बादल सम्बन्धी या बादलों से उत्पन्न ।

अभ्रेषः (पु०) औचित्य । न्याय्य । न्यायानुमोदित होने का भाव ।

अम् (अव्यया०) १ जल्दी से । फुर्ती से । २ अल्प । स्वल्प ।

अम् (धा० पर०) (अमति, अमितुं, अमित] १ जाना । ओर या तरफ जाना । २ सेवा करना । सम्मान करना । ३ शब्द करना ४ । खाना ।

(आमयति) आक्रमण करना । पीड़ा अथवा रोग से दुःखी होना । पीड़ित होना ।

अम्र (वि०) कच्चा ।

अमः (पु०) १ गमन । २ बीमारी । नौकर । ३ अनुचर । ४ यह । स्वयं ।

अमंगल / अमङ्गल / अमंगल्य / अमङ्गल्य } (त्रि०) अशुभ । बुरा । खराब । बद-क़िस्मत ।

अमंगलः / अमङ्गलः } (पु०) एरण्ड वृक्ष । अँडी का पेड़ ।

अमण्ड / अमण्ड } (वि०) १ विना सजावट के । विना आभूषण के । २ विना फेन या मांड के ।

अमत (वि०) १ असम्मत । अविज्ञात । अतर्कित । नहीं जाना हुआ । २ नापसंद ।

अमतः (पु०) १ समय । २ बीमारी । ३ मृत्यु ।

अमति (वि०) बुरे दिल का । दुष्ट । चरित्रभ्रष्ट । —पूर्व, (वि०) सत्यासत्यविवेकशक्तिहीन । अनिच्छाकृत । अनभिप्रेत ।

अमतिः (पु०) १ बदमाश । दुष्ट । दग़ाबाज़ । २ चन्द्रमा । ३ समय । काल । (स्त्री०) अज्ञानता । अविवेकता । ज्ञान का, सङ्कल्प का या दीर्घदर्शिता का अभाव ।

अमत्त (वि०) जो मत्त या उन्मत्त न हो । गम्भीर ।

अमत्रं (न०) १ बरतन । घड़ा । बासन । २ ताक़त । शक्ति ।

अमत्सर (वि०) जो ईर्ष्यालु या डाही न हो । उदार ।

अमनस / अमनस्क } (वि०) १ जिसका मन ठीक ठिकाने न हो । २ विवेकशक्ति से हीन । ३ अनाविष्ट । अमनोयोगी । ४ जिसका मन काबू में न हो । ५ स्नेहशून्य ।—गत, (वि०) अज्ञात । अचिन्त्य ।—योगः, (पु०) अमनोयोगिता ।—हर, (वि०) अप्रसन्न-कारक । प्रतिकूल । नापसंद ।

अमनः (न०) अबोध । निर्बोध । बाह्य वस्तु के ज्ञान से शून्य । २ अमनोयोगी । (पु०) परमात्मा ।

अमनाक् (अव्यया०) स्वल्प नहीं । अधिकता से । बहुत अधिक ।

अमनुष्य (वि०) १ मनुष्य नहीं । अमानुषिक । २ जहाँ मनुष्यों की बस्ती न हो ।

अमनुष्यः (पु०) १ मनुष्य नहीं । २ शैतान । राक्षस ।

अमंत्र / अमंत्रक } (वि०) १ वैदिक मंत्रों से रहित । वह कर्मानुष्ठान जिसमें वैदिक मंत्रों के पढ़ने की आवश्यकता न पड़े । २ वेद पढ़ने के अनधिकारी (शूद्र, स्त्री आदि) । ३ वेद को न जानने वाला । ४ वह रोगचिकित्सा जिसमें जादू टोना की क्रिया न हो ।

अमंद / अमन्द } (वि०) १ जो मंद या सुस्त न हो । क्रियाशील । प्रतिभावान् । २ उग्र । दृढ़ । तेज़ । ३ थोड़ा नहीं । बहुत । अत्यधिक । बड़ा । तीव्र ।

अमम (वि०) ममतारहित । जिसमें स्वार्थ या सांसारिक वस्तुओं का अनुराग न हो ।

अममता (स्त्री०) / अममत्वं (न०) } स्वार्थराहित्य । अनासक्ति । उदासीनता ।

अमर (वि०) १ जो कभी मरे नहीं । अविनाशी । अविनश्वर ।—अङ्गना, -स्त्री, (स्त्री०) अप्सरा ।—अद्रिः, (पु०) देवताओं का पर्वत । सुमेरु पर्वत ।—अधिप,—इन्द्र,—ईशः, ईश्वरः,—पतिः,—भर्ता,—राज, (पु०) १ देवताओं के राजा । इन्द्र । २ विष्णु । ३ शिव ।—आचार्यः,—गुरु,—इज्यः, (पु०) देवताओं के गुरु—अर्थात् बृहस्पति । —आपगा,—तटिनी,—सरित्, (स्त्री०) स्वर्ग की नदी । गङ्गा ।—आलयः, (पु०) स्वर्ग । —कण्टकं, (न०) अमरकण्टक पहाड़ जिस से नर्मदा नदी निकलती है ।—कोशः,—कोष, (पु०) संस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध शब्दकोश का नाम, जो अमरसिंह विरचित है ।—तरुः,-दारुः, (पु०) इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष ।—द्विजः, (पु०) ब्राह्मण जो किसी देवालय में पूजा करे अथवा देवालय का प्रबन्ध करे ।—पुरं, (न०) स्वर्ग । —पुष्पः,-पुष्पकः, (पु०) कल्पवृक्ष ।—प्रख्य, —प्रभ, (वि०) अमर के समान । अविनाशी के समान ।—रत्नं, (न०) स्फटिक पत्थर ।—लोकः, (पु०) स्वर्ग ।—सिंह ; (पु०) संस्कृत कोषकार अमरसिंह । यह जैन थे और कहा जाता है कि, विक्रमाजीत के नौरत्नों में से एक थे ।

अमरः (पु०) १ देवता। २ पारा। ३ सुवर्ण। ४ तेंतीस की संख्या। ५ अमरसिंह का नाम। ६ हड्डियों का ढेर।

अमरता(स्त्री०) } अविनश्वरता।
अमरत्वं (न०) }

अमरा (स्त्री०) १ अमरावती पुरी। २ नाभिसूत्र। नाभिनाल। ३ गर्भाशय।

अमरावती (स्त्री०) इन्द्र की पुरी का नाम।

अमरी (स्त्री०) देवता की स्त्री। देवी। इन्द्र की राजधानी।

अमर्त्य (वि०) अविनाशी। दैवी। जो कभी नाश न हो।—आपगा, (स्त्री०) गङ्गा का नाम।

अमर्त्यः (पु०) देवता।

अमर्मन् (न०) शरीर का मर्मस्थल नहीं।—वेधिन् (वि०) मर्मस्थल को न वेधने वाला। कोमल। मुलायम।

अमर्याद (वि०) १ सीमारहित। सीमा के बाहिर। अनुचित। असम्मानकारी। २ असीम। असदाचरण। असम्मान।

अमर्यादा (स्त्री०) उचित सम्मान की अवहेला।

अमर्ष (वि०) दूसरे का उत्कर्ष न सहने वाला।

अमर्षः (पु०) १ असहनशीलता। अधैर्य। ईर्ष्या। ईर्ष्या से उत्पन्न क्रोध। २ क्रोध। कोप।

अमर्षण }
अमर्षित } (वि०) १ अधैर्यवान्। असहनशील। जो क्षमा न करे। २ क्रोध। रूठा हुआ। रोषपरवश। ३ प्रचण्ड। उग्र। दृढ प्रतिज्ञ।
अमर्षिन् }
अमर्षवत् }

अमल (वि०) जिसमें मैल न हो। साफ सुथरा। निष्कलङ्क। बेधव्वा। बेदाग़। विशुद्ध। सच्चा। २ सफेद। चमकदार।—(ला) (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी का नाम। २ नाला। नाभिसूत्र। ३ एक वृक्ष का नाम। आमला वृक्ष।—पतत्रिन् (पु०) जंगली हंस।—रत्नं, (न०) -मणिः (पु०) स्फटिक पत्थर।

अमलम् (न०) १ स्वच्छता २ अभ्रक। ३ परमात्मा।

अमलिन (वि०) स्वच्छ। बेदाग़। निष्कलङ्क। पवित्र।

अमसः (पु०) १ रोग। २ मूढ़ता। ३ मूर्ख। ४ समय।

अमा (वि० मापरहित। जो नापा न जा सके। (अव्यया०) साथ। समीप। पास। (स्त्री०) अमावास्या तिथि। चन्द्र की १६ वीं कला। (पु०) आत्मा। जीव।

अमांस (वि०) १ बिना मांस का। जो मांसल न हो। २ दुबला। पतला। निर्बल।

अमांसम् (न०) मांस को छोड़ अन्य कोई भी वस्तु।

अमात्यः (पु०) दीवान। महामात्र। मंत्री। सचिव।

अमात्र (वि०) १ असीम। जो नापा न जा सके। २ सम्पूर्ण या समूचा नहीं। ३ अमौलिक।

अमात्रः (पु०) परमात्मा।

अमाननम् (न०) } तिरस्कार। अपमान। अवज्ञा।
अमानना (स्त्री०) }

अमानस्यं (न०) पीड़ा। दर्द।

अमानिन् (वि०) निरभिमान। विनयी। विनम्र।

अमानुष (वि०) [स्त्री०—अमानुषी] मनुष्य सम्बन्धी नहीं। अमानवी। अलौकिक। अपौरुषेय।

अमानुष्य (वि०) अमानुषी। अलौकिक।

अमामसी } (स्त्री०) अमावास्या।
अमामासी }

अमाय (वि०) १ सच्चा। निष्कपट। निश्छल। २ जो नापा न जा सके।

अमायम् (न०) ब्रह्म।

अमाया (स्त्री०) १ छल या कपट का अभाव। सचाई। ईमानदारी। २ वेदान्त दर्शन में "अमाया" से माया या भ्रम से रहित का बोध होता है। परमात्मा का ज्ञान।

अमायिक } (वि०) निश्छल। निष्कपट। ईमानदार।
अमायिन् }

अमावस्या }
अमावास्या } (स्त्री०) अमावस। कृष्णपक्ष की अन्तिम तिथि। अंधेरे पाख का अन्तिम दिन।
अमावसी }
अमावासी }

अमित (वि०) १ अपरिमित। जिसका परिमाण न हो। बेहद। असीम। २ अवज्ञा किया हुआ। तिरस्कृत। ३ अज्ञात। ४ अशिष्ट।—अक्षर, (वि०) गद्यवत्। कवित्व शून्य।—आभ, (वि०) असीम कान्तिवान्।

—ओजस्, (वि०) सर्वशक्तिमान।—तेजस्,—द्युति, (वि०) असीम महिमा या कान्ति वाला।—विक्रमः, (पु०) १ असीम पराक्रमशाली। २ विष्णु का नाम।

अमित्रः (पु०) जो मित्र न हो। शत्रु। रिपु। वैरी। प्रतिद्वन्द्वी। सामना करने वाला।

अमिथ्या (अव्यया०) झुठाई से नहीं। सचाई से।

अमिन् (वि०) बीमार। रोगी।

अमिषं (न०) १ सांसारिक भोग पदार्थ। विलास। २ ईमानदारी। सचाई। ३ मांस। गोश्त।

अमीवाम् (न०) कष्ट। क्लेश। पीड़ा। चोट।

अमीवा (स्त्री०) १ रोग। बीमारी। २ तक्लीफ। कष्ट। भय।

अमुक (सर्वनामीय विशेषण) फलां। ऐसा ऐसा। जब किसी वस्तु विशेष या व्यक्ति विशेष का नाम लेना अभीष्ट नहीं होता और उसको निर्दिष्ट किये बिना काम भी नहीं चलता, तब उस वस्तु या व्यक्ति का नाम न लेकर उसके बजाय इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अमुक्त (वि०) जो मुक्त न हो। बँधा हुआ। बंधन में पड़ा हुआ। जिसे छुटकारा न मिला हो। बद्ध।—हस्त (वि०, लोभी। कंजूस। किफ़ायतशार।

अमुक्तम् (न०) हथियार (यथा तलवार, छुरी जो फेंककर न चलाया जाय। हाथ में पकड़े ही पकड़े चलाया जाय।) [मोक्ष का न मिलना।

अमुक्तिः (स्त्री०) स्वतंत्रता या मोक्ष का अभाव।

अमुतः (अव्यया०) १ वहाँ से। वहाँ। २ उस स्थान से। ऊपर से। ३ परलोक में। अगले जन्म में। ४ वहाँ।

अमुथा (अव्यया०) इस प्रकार। यों। उस प्रकार।

अमुष्य (सम्बन्ध कारक अदस्) एक ऐसे का।—कुल, (वि०) एक ऐसे कुल का।—कुलम्, (न०) एक प्रसिद्ध कुल या वंश का।—पुत्रः, (पु०)—पुत्री, (स्त्री०) अच्छे या प्रसिद्ध वंश में उत्पन्न पुत्र या पुत्री।

अमूदृश, अमूदृश्, अमूदृक्ष (वि०) [स्त्री०—अमूदृशी, अमूदृक्षी] इस प्रकार का। इस जाति या प्रकार का।

अमूर्त (वि०) आकारशून्य। अशरीरी। शरीर रहित।—गुणः (पु०) वैशेषिकदर्शन में गुण को अशरीरी माना है। यथा धर्म अधर्म।

अमूर्तः (पु०) १ अवयव रहित। २ वायु। अन्तरिक्ष। आकाश। ३ काल। ४ दिशा। ५ आत्मा। ६ शिव।

अमूर्ति (वि०) आकाररहित। जिसकी कोई शक्ल न हो।

अमूर्तिः (पु०) विष्णु। (स्त्री०) अमूर्तिता। शक्ल का या आकार का न होना।

अमूल, अमूलक (वि०) बेजड़। निर्मूल। असत्य। मिथ्या। प्रमाणशून्य। जिसका कोई प्रमाण या आधार न हो।

अमूल्य (वि०) अनमोल। बेशक़ीमती। बहुमूल्य।

अमृणालम् (न०) एक सुगन्धित घास विशेष। नलद। उशीर। खस।

अमृत (वि०) १ जो मृत न हो। २ अमर। ३ अविनाशी। अविनश्वर।—अंशुः,—करः,—दीधितिः,—द्युतिः,—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा की उपधियाँ।—अन्धस्,—अशनः,—आशिन्, (पु०) जिसका भोजन अमृत हो। देवता। अविनाशी।—आहरणः, (पु०) गरुड़ का नाम।—उत्पन्ना, (स्त्री०) मक्खी।—उत्पन्नम्, उद्भवम् (न०) एक प्रकार का सुर्मा।—कुण्डम्, (न०) पात्र जिसमें अमृत हो।—गर्भः (पु०) १ व्यक्तिगत आत्मा। २ परमात्मा।—तरङ्गिणी, (स्त्री०) चाँदनी। जुन्हाई।—द्रव, (वि०) अमृत बहाने या चुआने वाला।—द्रवः, (पु०) अमृत की धार।—धारा, (स्त्री०) १ छन्दविशेष। वृत्त विशेष। इस वृत्त में चार चरण होते हैं और प्रथम पद में २०, दूसरे में १२, तीसरे में १६ और चौथे में ८ अक्षर होते हैं। २ अमृत की धारा।—पः (पु०) १ देवता। २ विष्णु का नाम। ३ शराब पीने वाला।—फला, (स्त्री०) द्राक्षा का गुच्छा।—बन्धुः, (पु०) १ देवता। २ घोड़ा या चन्द्रमा।—भुज्, (पु०) अमर। देवता।—भू, (वि०) जन्म मरण से मुक्त।—मन्थनम्, (न०) अमृत निकालने के लिये समुद्र का मंथन।—रसः,

(पु०) १ अमृत। २ ब्रह्म।—लता,—लतिका, (स्त्री०) वह लता जिससे अमृत निकले।—सारः, (पु०) घी।—सूः,—सूतिः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ देवताओं की जननी।—सोदरः (पु०) उच्चैश्रवा घोड़ा। [नाम।

अमृतः (पु०) १ देवता। अमर। २ धनवन्तरि का

अमृतम् (न०) १ अमरता। मो । स्वर्ग। ४ अमृत रस। ५ सोमरस। ६ विष का मारक। ७ यज्ञशेष। ८ अयाचित भिक्षा। ६ जल। १० आसव विशेष। ११ घी। १२ दूध। १३ भोज्य पदार्थ (कोई भी)। १४ भात। १५ कोई मधुर प्यारा या मनोहर पदार्थ। १६ सुवर्ण। १७ पारा। १८ विष। १६ ब्रह्म।

अमृतकम् (न०) अमरत्व प्रदायक रस विशेष।

अमृतता, अमृतत्वं } अमरता।

अमृता १ एक प्रकार की मदिरा। गिलोय, गुर्च आदि कई ओषधियाँ। [सोने वाले।

अमृतेशय (पु०) विष्णु का नाम। (जल में

अमृषा (अव्यया०) झुठाई से नहीं। सचाई से।

अमृष्ट (वि०) १ विना मला हुआ। २ विना साफ किया हुआ। [पतला।

अमेदस्क (वि०) जिसके चर्बी न हो। दुर्बल। लटा।

अमेधस् (वि०) मूर्ख। मूढ़। बुद्धिहीन।

अमेध्य (वि०) १ जो यज्ञ या हवन करने योग्य न हो। २ यज्ञ के अयोग्य। ३ अपवित्र। अशुद्ध। मैला। गदा। अस्वच्छ।

अमेध्यम् (न०) १ विष्ठा। मल। २ अशकुन।

अमेय (वि०) असीम। सीमारहित। अपार। २ अचिन्त्य। जो जाना न जा सके। अज्ञेय। —आत्मन्, (पु०) विष्णु का नाम।

अमोघ (वि०) १ अचूक। निशाने पर ठीक पहुँचने वाला। २ अव्यर्थ।—दण्ड, (पु०)। १ जो दण्ड देने में कभी न चूके। २ शिव का नाम।

अमोघः (पु०) १ जो कभी व्यर्थ न जाय या न चूके। २ विष्णु का नाम।

अंम्, अम्म् } (धा० पर०) १ जाना। २ (आत्म०) शब्द करना।

अंब, अम्ब } (अव्यया०) अच्छा। हाँ।

अंबः, अम्बः } (पु०) पिता।

अंबम्, अम्बम् } (न०) १ जल। पानी। २ नेत्र। आँख।

अंबकं, अम्बकम् } (न०) १ नेत्र। २ पिता।

अंबरं, अम्बरम् } (न०) १ अन्तरिक्ष। आकाश। व्योम। २ कपड़ा। वस्त्र। पोशाक। परिच्छद। ३ केसर। ४ अभ्रक। ५ सुगन्धित पदार्थ विशेष। अम्बरी।—ओकस्, (पु०) स्वर्गवासी। देवता। —दम्, (न०) कपास। रुई।—मणिः, (पु०) सूर्य।—लेखिन्, (वि०) आकाशस्पर्शी।

अंबरीषं, अम्बरीषम् } (न०) १ कढ़ाई। २ खेद। सन्ताप। ३ युद्ध। लड़ाई। ४ नरक विशेष। ५ किसी जानवर का बच्चा। बछड़ा। किशोर। ६ सूर्य। ७ विष्णु का नाम। ८ शिव का नाम।

अंबरीषः, अम्बरीषः } (पु०) राजा विशेष यह महाराज मान्धाता के पुत्र थे और परम भागवत थे।

अंबष्ठः, अम्बष्ठः } (पु०) १ ब्राह्मण पिता और वैश्या माता की औलाद। २ महावत। ३ (बहुवचन में) देश का तथा उस देश के बसने वालों का नाम।

अंबष्ठा, अम्बष्ठा } (स्त्री०) गणिका, यूथिका आदि कितने ही पौधों का नाम। (जुही, पाठा, पहाड़मूल, चुका अबाड़ा आदि पौधे)

अंबा, अम्बा } (स्त्री०) (सम्बोधनकारक में "अम्बे" वैदिक साहित्य में) १ माता। २ शिवपत्नी दुर्गा का नाम। ३ राजा पाण्डु की माता का नाम।

अंबाडा, अम्बाडा, अंबाला, अम्बाला } (स्त्री०) माता। जननी। मा।

अंबालिका, अम्बालिका } (स्त्री०) १ माता। भद्रमहिला। २ एकपौधे का नाम। ३ राजाविचित्रवीर्य की रानी का नाम, जो काशिराज की सब से छोटी कन्या थी।

अंबिका } (स्त्री०) १ माता भद्रमहिला। २ पार्वती
अम्बिका } का नाम। ३ राजा विचित्रवीर्य की पटरानी का नाम। यह काशिराज की मझली बेटी थी।—पति. —भर्त्ता, (पु०) शिव का नाम। —पुत्र.,—सुतः, (पु०) धृतराष्ट्र का नाम।

अंबिकेयः
अम्बिकेयः
अंबिकेयकः
अम्बिकेयकः } (पु०) १ गणेश जी का, २ कार्तिकेय का, ३ धृतराष्ट्र का नाम।

अंबु } (न०) १ पानी २ जल का भाग जो रक्त में
अम्बु } रहता है।—कणः, (पु०) जल की बूंद।—कण्टकः, (पु०) ग्राह। घड़ियाल। मगर।—किरातः, (पु०) घड़ियाल। मगर।—कोश,—कूर्मः, (पु०) सूंस। शिशुमार।—केशरः, (पु०) नीबू का पेड़।—क्रिया, (स्त्री०) पितरों को जलदान। तर्पण।—ग.—चर.—चारिन्, (वि०) जल में रहने वाले जीवजन्तु।—घनः, (पु०) ओला —चत्वरं, (न०) झील।—ज, (वि०) जल में उत्पन्न।—जः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ सारस पक्षी। ४ शङ्ख।—जम्, (न०) १ कमल। २ इन्द्र का वज्र।—जन्मन्, (न०) कमल। (पु०) १ चन्द्रमा। २ शङ्ख। ३ सारस। —तस्करः, (पु०) जल का चोर। सूर्य। —द. (वि०) जल देने वाला या जिससे जल निकले।—दः (पु०) बादल।—धरः (पु०) १ बादल। मेघ। २ अभ्रक।—धि., (पु०) १ जल का कोई पात्र। जैसे घड़ा, कलसा आदि। २ समुद्र। ३ चार की संख्या।—निधि, (पु०) समुद्र।—प, (वि०) जल पीने वाला। —पः (पु०) १ समुद्र। २ वरुण।—पातः (पु०) धारा। जलप्रपात। जलप्रवाह। जलस्रोत। —प्रसादः, (पु०)—प्रसादनम्, (न० कतक निर्मली का पेड़। (जिससे जल साफ होता है) —भवम् (न०) कमल।—भृत्, (पु०) १ जलवाहक। बादल। २ समुद्र। ३ अभ्रक। —मात्रज, (वि०) जो केवल जल ही में उत्पन्न हो।—मात्रजः, (पु०) शङ्ख।—मुच्, (पु०) बादल।—राजः, (पु०) समुद्र। वरुण।—राशि, (पु०) समुद्र।—रुह्, (न०) १ कमल २ सारस।—रुहः, (पु०)—रुहं, (न०) कमल। —रोहिणी, (स्त्री०) कमल।—वाहः, (पु०) १ बादल २ झील। ३ पानी ढोने वाला।—वाहिन्, (न०) पानी ढोने वाला। (पु०) बादल। वाहिनी, (स्त्री०) कठेली या काठ का ढोल।—विहारः, (पु०) जलक्रीडा।—वेतसः, (पु०) नरकुल जो जल में उत्पन्न होता है।—सरणं (न०) जल की धारा या जल का बहाव।—सर्पिणी, (स्त्री०) जोंक।

अंबुमत् } (वि०) पनीला। जिसमें जल हो।
अम्बुमत् }

अंबुमती } (स्त्री०) एक नदी का नाम।
अम्बुमती }

अंबूकृत } (वि०) ओंठ बंद कर के गुन गुनाया
अम्बूकृत } हुआ। ऐसे बोला हुआ जिससे थूक उड़े।

अंभ् (धा० आत्म०) [अंभते, अंभित] शब्द करना।

अंभस् (न०) १ जल। २ आकाश। ३ लग्न से चौथी राशि।—ज, (वि०) पानी का।—जः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ सारसपक्षी।—जं, (न०) कमल।—जन्मन्, (पु०) ब्रह्म की उपाधि। (न०) कमल।—दः धरः, (पु०) बादल। —धिः,—निधिः,—राशिः, (पु०) समुद्र।—रुह् (न०)—रुहं (न०) कमल। (पु०) सारस।—सारं (न०) मोती।—सूः (पु०) धुआं। बदरी वाला। बादल का।

अंभोजिनी } (स्त्री०) १ कमल का पौधा या उसके
अम्भोजिनी } फूल। २ कमल के फूलों का समूह। ३ स्थान जहाँ कमल के फूलों का बाहुल्य हो।

अम्मय (वि०) [स्त्री०—अम्मयी] पनीली या पानी की बनी हुई।

अम्र देखो आम्र।

अम्ल (वि०) खट्टा।—अक, (वि०) खट्टा। —उद्गारः, (पु०) खट्टी ढकार।—केशरः, (पु०) चकोतरा या बीजपूरक का पेड़।—निम्बक, (पु०) नीबू का पेड़।—फलः, (पु०) इम्ली का वृक्ष।—फलं, (न०) इम्ली फल।—वृक्षः, (पु०) इम्ली का पेड़।—सारः, (पु०) नीबू का वृक्ष।

अम्लः (पु०) १ खट्टापन । २ सिरका । ३ विभिन्न प्रकार के अम्लरस तरु । ४ चकोतरा का वृक्ष । ५ डकार ।

अम्लकः (पु०) एक वृक्ष का नाम । लकूचा ।

अम्लान (वि०) १ जो कुम्हलाया न हो । जो मुरझाया हुआ न हो । २ साफ । स्वच्छ । चमकीला । पवित्र । विना बादलों का ।

अम्लानि (वि०) सतेज । सबल । [हरियाली ।

अम्लानिः (स्त्री०) १ सतेजता । सबलता । २ ताज़गी ।

अम्लानिन् (वि०) साफ । स्वच्छ ।

अम्लिका } (स्त्री०) १ मुँह का खट्टापन । खट्टी
अम्लीका } डाकर । २ इम्ली का वृक्ष ।

अम्लिमन् (पु०) खट्टापन ।

अय् (धा० आत्म०) [कभी कभी यह परस्मैपदी भी होती है, विशेष कर "उद्" के संयोग से) [अयते, अयांचक्रे, अयितुं, आयित] जाना । गमन करना ।

अयः (पु०) १ गमन । २ पूर्वजन्म के शुभ कर्म । ३ सौभाग्य । खुशकिस्मती । ४ (खेलने का) पांसा —अन्वित,—अयवत्, (वि०) भाग्यवान् । खुशकिस्मत ।

अयक्ष्म (न०) निरोगता । तंदुरुस्ती ।

अयज्ञः (पु०) बुरा यज्ञ । यज्ञ नहीं ।

अयज्ञिय (वि०) १ यज्ञ के अयोग्य (जैसे उर्द) । २ यज्ञ करने के अयोग्य (जैसे अनुपवीत बालक) ३ गँवार । दूषित ।

अयत्न (वि०) जिसमें यत्न न करना पड़े ।

अयत्नः (पु०) यत्न का अभाव । सहज । सरल ।

अयथा (अव्यया०) जो ज्यों का त्यों न हो । ठीक-ठीक न हो । भूल से । ग़लती से । अनुचित । अयोग्य ।—वत्, (अव्यया०) ग़लती से । अनुचित रीति से ।

अयथार्थानुभव (पु०) अनुचित या मिथ्या अनुभव । अन्य वस्तु में अन्य वस्तु का ज्ञान ।

अयनं (न०) १ गमन । २ मार्ग । रास्ता । (सूर्य की) गति । (यह गति उत्तर या दक्षिण होती है ।) ३ स्थान । आवमस्थल । ४ व्यूह का मार्ग या द्वार । ५ दक्षिणायन । उत्तरायण ।

अयंत्रित (वि०) बेकाबू । जो वश मे न हो । मनमुखी । स्वेच्छाचारी ।

अयमित (वि०) १ अनियंत्रित । बेकाबू । २ विना सम्हाला हुआ । विना सजाया हुआ ।

अयशः (पु०) कलङ्क । अपवाद ।—कर,—करी, (वि०) अपकीर्तिकारी । बदनामी कराने वाला ।

अयशस् (वि०) अपकीर्तित । बदनाम । कलङ्कित ।

अयशस्य (वि०) बदनाम । कलङ्कित ।

अयस् (न०) १ लोहा । २ ईसपात । ३ सुवर्ण । ४ कोई भी धातु । ५ अगर की लकड़ी । (पु०) अग्नि । आग ।—अग्रं,—अग्रकम्, (न०) हथौड़ा । मूसल ।—काण्डः, (पु०) १ लोहे का तीर । २ उत्तम लोहा । ३ लोहे का ढेर ।—कान्तः, (अयस्कान्तः) (पु०) १ चुंबक पत्थर । २ मूल्यवान् पत्थर । मणि ।—कारः, (पु०) लुहार ।—कीटं, (न०) लोहे का मोर्चा —मलं, (न०) लोहे का मल ।—मुखः (पु०) लोहे की नोंक का तीर । - शङ्कु (पु०) १ भाला । २ कील । ३ परेग ।—शूलं, (न०) १ लोहे का भाला । २ तीक्ष्ण उपाय ।—हृदय, (वि०) कड़ा हृदय । निर्दयी ।

अयस्मय (न०) } [स्त्री०—अयोमयी] लोहे
अयोमय (न०) } की या अन्य किसी धातु की बनी हुई ।

अयाचित (वि०) विना माँगी हुई ।—व्रतिः, (पु०) —व्रतम् (न०) विना माँगी भीख पर जीवन व्यतीत करना ।

अयाचितम् (न०) विना माँगी भीख ।

अयाज्य (वि०) व्रात्य । पतित । वह व्यक्ति जिसको यज्ञ नहीं कराया जा सकता ।

अयात (वि०) नहीं गया हुआ ।—याम, (वि०) रात की रखी या बासी नहीं । ताज़ी । टटकी ।

अयथार्थिक (वि०) [स्त्री०—अयथार्थिकी] १ असत्य । झूठी । अनुचित । ठीक नहीं । २ असली नहीं । असङ्गत । असलग्न । युक्ति-विरुद्ध ।

अयथार्थ्य (न०) १ अयोग्य । अशुद्धि । २ असङ्गति । असंलग्नता ।

अयानं (न०) न चलना । न हिलना डुलना । ठहरना । गतिरोध । अवस्थिति ।

अयि (अव्यया०) (किसी से प्यार से बोलते समय सम्बोधन करने का शब्द ।) ओह । हो । ए ।

अयुक्त (वि०) १ जो गाड़ी के जुएँ में जुता न हो या जिस पर ज़ीन न कसा हो । २ जो मिला न हो । जुड़ा न हो । मिला हुआ । सम्बन्धयुक्त । ३ अभक्तिमान् । अधार्मिक । अमनस्क । असावधान ४ अनभ्यस्त । जो किसी काम में न लगा हो । ५ अयोग्य । अनुपयुक्त । अनुचित । ६ झूठा । असत्य ।

अयुग, अयुगल (वि०) १ पृथक । इकेला । इकेहरा । २ अविभाज्य ।—अर्चिस्, (पु०) अग्नि । आग । नेत्रः,—नयनः, (पु०) शिवजी का नाम ।—शरः, (पु०) कामदेव का नाम ।—सप्तिः (पु०) सात घोड़ों वाला । सूर्य ।

अयुज् (वि०) अविभाज्य ।—इषुः,—बाणः,—शरः, (पु०) कामदेव का नाम । (कामदेव के पास ५ बाण बतलाये जाते हैं)—नेत्र, लोचन,—अक्ष,—शक्ति । शिव जी का नाम ।

अयुत् (वि०) जो मिला न हो । असंयुक्त । असंबद्ध ।—अयुतम् (न०) दस हज़ार की संख्या ।—अध्यापकः, (पु०) एक अच्छा शिक्षक । —सिद्धिः, (स्त्री०) कोई कोई वस्तुएँ या विचार अभिन्न हैं—इस बात को प्रमाणित करने की क्रिया ।

अयुतम् (न०) दस हज़ार की संख्या ।

अये (अव्यया०) देखो "अयि ।" यह क्रोध, आश्चर्य, विषाद द्योतक सम्बोधन वाची अव्यय है ।

अयोगः (पु०) १ वियोग । अलगाव । अन्तराल । अवकाश । २ अयोग्यता । असंलग्नता । ३ अनुचित मेल । ४ विधुर । रडुआ । ५ हथौड़ा । ६ अरुचि । नापसंदगी ।

अयोगवः (पु०) [स्त्री० —अयोगवा, अयोगवी] देखो आयोगव । शूद्र पिता और वैश्या माता का पुत्र ।

अयोग्य (वि०) १ जो योग्य न हो । अनुपयुक्त । बेकार । निकम्मा । अपात्र ।

अयोध्य (वि०) जो आक्रमण करने योग्य न हो । अप्रतिरोधनीय । अतिप्रबल ।

अयोध्या (स्त्री०) सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी जो सरयू के तट पर बसी हुई है ।

अयोनि (वि०) अजन्मा । नित्य ।—ज,—जन्मन् (वि०) जो गर्भ से उत्पन्न न हुआ हो ।—जा, —सम्भवा, । (स्त्री०) जनकदुहिता सीता ।

अयोनि (स्त्री०) गर्भाशय नहीं । ब्रह्म की उपाधि ।

अयौगपद्यं (न०) समकालीनता का अभाव ।

अयौगिक (वि०) [स्त्री० -अयौगिकी] शब्दसाधनविधि से जिसकी उत्पत्ति न हो ।

अरः (पु०) पहिये की नाभि और नेमि के बीच की लकड़ी ।—अन्तर, (बहु०) आरों के बीच की खाली जगह ।—घट्टः,—घट्टक, (पु०) रहट । कुए से पानी निकालने का यंत्र विशेष । २ गहरा कूप ।

अरजस्, अरज, अरजस्क (वि०) १ धूलगर्दा से रहित । साफ । २ अत्यासक्ति से वर्जित ।

अरजस्का (स्त्री०) जिसको मासिक धर्म न हो ।

अरजाः (स्त्री०) रजोधर्म होने के पूर्व की अवस्था की लड़की ।

अरज्जु (वि०) बिना रस्सियों का । (न०) कारागृह । जेल ।

अरणिः (स्त्री० पु०), **अरणी** (स्त्री०) छेकुर की लकड़ी जिसको रगड़ने से अग्नि निकलता है। यज्ञ के लिये आग इसकी लकड़ियों को रगड़ कर ही निकाली जाती थी ।

अरणिः (पु०) १ सूर्य । २ अग्नि । ३ चकमक पत्थर ।

अरण्यं (न० कभी कभी पु० भी) जंगल । वन । —अध्यक्षः (पु०) वन का निगरांकार । वन की देखरेख करने वाला । फारेस्टरेंजर ।—अयनं,—यान, (न०) वनगमन । तपस्वी बनना ।—ओकस्,—सद्, (वि०) १ वनवास । २ वनवासी । वानप्रस्थ या संन्यासी —चन्द्रिका, (अन्व०) वन में चांदनी । (आलं०) वृथा का शृङ्गार ।—नृपतिः, —राज्, —राट्, —राज, (पु०) सिंह । चीता ।—पण्डितः (पु०) वन का

पण्डित। (अलं०) मूर्ख मनुष्य।—श्वन् (पु०) भेड़िया।

अरण्यकम् (न०) वन। जंगल।

अरण्यानि / अरण्यानी } (स्त्री०) एक बड़ा लंबा चौड़ा वन।

अरत (वि०) १ सुस्त। काहिल। २ असन्तुष्ट। विरुद्ध —त्रप, (वि०) जो रमण करने में लजावे नहीं।—त्रप· (पु०) कुत्ता (जो गली में कुतिया के साथ रमण करने में लज्जित नहीं होता।

अरतं (न०) अरमणकार्य।

अरति (वि०) १ असन्तुष्ट। २ सुस्त। काहिल। चेष्टाहीन।

अरतिः (स्त्री०) १ भोग विलास का अभाव। २ कष्ट। पीड़ा। दुःख। दर्द। ३ चिन्ता। शोक। विकलता। घबड़ाहट। ४ असन्तुष्टता। असन्तोष। ५ चेष्टाहीनता सुस्ती। काहिली। ६ उदरव्याधि।

अरत्निः (पु० या० स्त्री०) १ मुट्ठी। मूका। घूंसा। २ एक हाथ (का नाम)। कोहिनी से अंगुलियों की नोक तक।

अरत्निक (पु०) कोहनी। हाथ और बाँह के बीच का जोड़।

अरं (अव्यया०) १ तेज़ी से। समीप। पास। विद्यमान। २ तत्परता से।

अरमण / अरममाण } (वि०) १ अप्रसन्नताकारक। प्रतिकूल। नापसंद। २ सतत।

अररं (न०) / अररी (स्त्री०) } १ कपाट। किवाड़। २ गिलाफ। म्यान। ढक्कन।

अररः (पु०) राँपी (चमार का एक औज़ार)।

अररे (अव्यया०) अतिशीघ्रता अथवा घृणा व्यञ्जक सम्बोधनवाची अव्यय।

अरविंदः / अरविन्दः } (पु०) १ सारस। २ तांबा।—अक्ष (अरविन्दाक्ष) (वि०) कमलनयन। विष्णु का विशेषण या उपाधि।—दलप्रभम् (न०) तांबा —नाभिः नाभः, (पु०) विष्णु का नाम।—सद् (पु०) ब्रह्मा का नाम।

अरविंदं / अरविन्दम् } (न०) १ कमल। रक्त या नीले कमल का फूल।

अरविन्दिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा। २ कमल पुष्पों का समूह। ३ वह स्थान जहाँ कमलों का बाहुल्य हो।

अरस (वि०) १ रसहीन। नीरस। फीका। २ निस्तेज। मंद। ३ निर्बल बलहीन। अगुणकारी।

अरसिक (वि०) १ रूखा। जो रसिक न हो। २ कविता के मर्म को न जानने वाला।

अराग / अरागिन् } (वि०) १ अनासक्त। उदासीन। २ स्थिर। पक्षपातशून्य।

अराजक (वि०) राजारहित। जहाँ राजा न हो।

अराजन् (पु०) राजा नहीं।—भोगीन (वि०) राजा के काम लायक नहीं।—स्थापित (वि०) जो राजा द्वारा प्रतिष्ठित न हो; आईन विरुद्ध।

अरातिः (पु०) १ शत्रु। वैरी। २ छः की संख्या। —भङ्गः (पु०) शत्रुओं का नाश।

अराल (वि०) टेढ़ा मेढ़ा। मुड़ा हुआ।—केशी (स्त्री०) वह स्त्री जिसके घुघुराले बाल हों।—पक्ष्मन् (वि०) टेढ़ी मेढ़ी बरुनियों वाला।

अरालः (पु०) १ टेढ़ी या झुकी हुई बाँह। २ मदमाता हाथी।

अराला (स्त्री०) वेश्या। पुंश्चली। रंडी।

अरिः (पु०) १ शत्रु। वैरी। २ मनुष्य जाति के छः शत्रु, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि जो मनुष्य के मन को व्याकुल किया करते हैं।

> कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः।
> कृतारिषड्वर्गजयेन—॥
>
> किरातार्जुनीय।

३ छः की संख्या। ४ गाडी का कोई भाग। ५ पहिया।—कर्षण, (वि०) शत्रुजयी या शत्रु को अपने वश में करने वाला।—कुलं, (न०) १ बहुत से शत्रु। शत्रु समुदाय। २ शत्रु। —घ्नः, (पु०) शत्रु का नाश करने वाला। —चिन्तनं, (न०) चिन्ता (स्त्री०) वैदेशिक शासन विभाग। शत्रु सम्बन्धी व्यवस्था।—नन्दन, (वि०) शत्रु की प्रसन्नता। शत्रु को विजय दिलाने वाला।—भद्रः (पु०) सब से बड़ा या मुख्य शत्रु।—सूदनः, हन्,—हिंसकः, (पु०) शत्रुहन्ता। शत्रु को मारने वाला।

अरिन्दम (वि०) शत्रु को वश में करने वाला। विजयी। विजय प्राप्त।

अरिक्थभाज् } (वि०) ऐसा व्यक्ति जो पैतृक
अरिक्थीय } सम्पत्ति पाने का अधिकारी न हो (हिजड़ा आदि होने के कारण)।

अरित्रम् (न०) १ लोहे की चूर। कच्चा लोहा। २ नाव का डाँड़।

अरिपं (न०) मूसलधार जल की वर्षा।

अरिपः (पु०) बवासीर। गुदा का रोग विशेष।

अरिष्ट (वि०) अनटुटीला। पूर्ण। अविनाशी। सुरक्षित। —गृहम्, (न०) सौरी। सूतिकागृह। - ताति (वि०) शुभ।—तातिः, (स्त्री०) सतत हर्ष। —मथनः, (पु०) विष्णु या शिव का नाम। —शय्या. (स्त्री०) बीमार। रोगी।—सूदनः,—हन् (पु०) अरिष्ट नामक दैत्य के मारने वाले विष्णु।

अरिष्टः (पु०) १ गीध। २ कंक। कौवा। ३ शत्रु। ४ अनेक पौधों का नाम। रीठा का वृक्ष। नीव का वृक्ष। ५ लहसुन।

अरिष्टम् (न०) १ बुरी प्रारब्ध। बदकिस्मती। २ अनिष्टसूचक उत्पात। ३ बुरे लक्षण या बुरे शकुन जो मौत आने के सूचक माने गये हैं। मरणकारक योग। ४ सौभाग्य। खुशकिस्मती। हर्ष। ५ सौरी। सूतिकागृह। ६ माठा। ७ शराब।

अरुचि. (स्त्री०) १ अनिच्छा। २ अग्निमान्द्य रोग। ३ घृणा। नफरत। ४ सन्तोषजनक समाधान का अभाव।

अरुचिर } (वि०) जो मनोहर न हो। अशुभ।
अरुच्य } अमङ्गलक।

अरुज् (वि०) भला चंगा। तंदुरुस्त। नीरोग।

अरुज (वि०) भला चंगा। तंदुरुस्त।

अरुण (वि०) [स्त्री०—अरुणा. अरुणी] १ लाल। रक्त। २ व्याकुल। घबड़ाया हुआ। ३ गूंगा। मूक। —अनुजः,—अवरज (पु०) अरुण देव के छोटे भाई गरुड़ जी का नाम।—अर्चिस् (पु०) सूर्य।—आत्मज· (पु०) १ अरुण पुत्र जटायु का नाम। २ शनि, सावर्णिमनु, कर्ण, सुग्रीव, यम और दोनों अश्विनीकुमारों के नाम। —आत्मजा, (स्त्री०) यमुना और तापती नदियों का नाम।—ईक्षण, (वि०) लालनेत्र वाला।—उदयः, (पु०) भोर। प्रातःकाल। —उपलः, (पु०) चुन्नी रत्न।—कमलं (न०) लाल रंग का कमल।—ज्योतिस् (पु०) शिव का नाम।—प्रियः (पु०) सूर्य का नाम।—प्रिया (स्त्री०) १ सूर्यपत्नी। २ छाया।—लोचनः, (पु०) कबूतर। परेवा।—सारथिः, (पु०) सूर्य।

अरुणः (पु०) १ लाल रंग। २ प्रातःकालीन पूर्वाकाश की रक्तमयी आभा। ३ सूर्यदेव के सारथी। ४ सूर्य।

अरुणम् (न०) १ लाल रंग। २ सुवर्ण। सोना। ३ केसर।

अरुणित } (वि०) लाल रंग का। लाल
अरुणीकृत } रंगा हुआ।

अरुंतुद } (वि०) १ मर्मस्थलों को काटना या
अरुन्तुद } घायल करना। घायल करना। पीड़ा कारक तीव्र या तीक्ष्ण। दाहकारक।

"अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणस्य दन्तिनः।"

रघुवंश।

२ उग्र प्रकृति वाला। तीक्ष्ण स्वभाव युक्त।

अरुंधती } (स्त्री) १ वशिष्ठ जी की पत्नी का नाम।
अरुन्धती } २ इस नाम का एक तारा, सप्तर्षि मण्डल में सब से छोटा आठवाँ एक तारा, जो वशिष्ठ जी के समीप रहता है। अरुन्धती तारा के नाम से प्रसिद्ध है। यह तारा उन लोगों को नहीं दिखलाई पड़ता जिनका मृत्यु अतिनिकट होता है।—जानिः, नाथः,—पतिः, (पु०) वसिष्ठ जी का नाम।

अरुप } (वि०) रूठा हुआ नहीं। शान्त।
अरुष्ट }

अरुष (वि०) १ क्रुद्ध नहीं। रूठा हुआ नहीं। २ चमकदार। चमकीला।

अरुस् (वि०) घायल। दारुण। कष्टजनक।—कर, (वि०) घायल या चोटिल करना।

अरुः (पु०) १ अकौआ। मदार। २ रक्त खदिर। लाल कत्था। (न०) १ मर्मस्थल। २ घाव। कण्ठ।

अरूप (वि०) १ रूपरहित । आकारशून्य । २ बदशक्ल । कुरूप । भौंडा । ३ असमान । असदृश ।—हार्य, (वि०) जो सौन्दर्य से आकर्षित या वश में न किया जा सके ।

अरूपम् (न०) १ बदशक्ल का । २ सांख्यदर्शन का प्रधान और वेदान्त दर्शन का ब्रह्म ।

अरूपकः (पु०) १ बौद्ध दर्शनानुसार योगियों की एक भूमि अथवा अवस्था । निर्बीजसमाधि । (वि०) बिना रूपक का । अन्वर्थ । अविकल ।

अरे (अव्यया०) एक सम्बोधनार्थक अव्यय । ए । ओ । जब कोई बड़ा किसी छोटे को सम्बोधन करता है, तब इसका प्रयोग किया जाता है । क्रोधावेश में "अरे" कहा जाता है ।

"अरे महाराज मति कुतः क्षत्रियाः ।"

उत्तररामचरित्र ।

यह अव्यय ईर्ष्याबोधक भी है ।

अरेपस् (वि०) १ निष्पाप । निष्कलङ्क । २ स्वच्छ । निर्मल । पवित्र ।

अरेरे (अव्यया०) एक सम्बोधनार्थक अव्यय । इसका प्रयोग क्रोध की दशा में या किसी का तिरस्कार करने के लिये किया जाता है ।

अरोक (वि०) धुँधला । बेचमक का ।

अरोग (वि०) नीरोग । रोग से शून्य । तंदुरुस्त । मज़बूत भला । चंगा ।—अरोगः (वि०) अच्छा । स्वस्थ ।

अरोगिन्
अरोग्य } (वि०) तंदुरुस्त । भला । चगा ।

अरोचक (वि०) [स्त्री०—अरोचिका] १ जो चमकदार या चमकीला न हो । २ एक रोग विशेष जिसमें अन्न आदि का स्वाद मुँह में नहीं मिलता । ३ अरुचिकर । जो रुचे नहीं ।

अरोचकः (पु०) भूख का नाश या भूख न लगना । घृणा । अतिघृणा ।

अर्क (धा० पु०) १ उष्ण करना । गर्माना । २ स्तुति करना ।

अर्कः (पु०) १ प्रकाश की किरन । बिजली की चमक या कौंध । २ सूर्य । ३ अग्नि । ४ स्फटिक । ५ ताँबा । ६ रविवार । ७ अर्कवृक्ष । मदार । अकौआ । ८ आकन्द वृक्ष । ९ इन्द्र का नाम । १० बारह की संख्या । —अश्मन्, (पु०)—उपलः, (पु०) सूर्यकान्त मणि । - इन्दुसङ्गमः (पु०) दर्श । अमावास्या । वह समय जब चन्द्र और सूर्य मिलते हैं ।—कान्ता, (स्त्री०) सूर्यपत्नी ।—चन्दनः (पु०) लाल चंदन ।—जः (पु०) कर्ण । सुग्रीव और यम की उपाधि ।—जौ (पु०) देवताओं के चिकित्सक अश्विनीकुमार ।—तनयः (पु०) सूर्यपुत्र । कर्ण, यम और शनि की उपाधि ।—तनया, (स्त्री०) यमुना और तापती नदियों के नाम ।—त्विष् (स्त्री०) सूर्य का प्रकाश । —दिनं, (न०) वासरः, (पु०) रविवार इतवार । नन्दनः—पुत्रः,—सुत,—सूनुः, (पु०) शनि, कर्ण या यम के नाम ।—बन्धुः,—बान्धवः (पु०) कमल ।—मण्डलम् (न०) सूर्य का घेरा । —विवाहः (पु०) मदार के पेड़ के साथ विवाह । [तीसरा विवाह करने के पूर्व लोग अर्क के पेड़ से विवाह करते हैं । यथाः—

चतुर्थादिविवाहार्थं तृतीयेऽर्कं समुद्वहेत् ।

काश्यप ।]

अर्गलः (पु०)
अर्गला (स्त्री०)
अर्गली (स्त्री०)
अर्गलम् (न०) } १ बेंड़ा, बिल्ली, किल्ली, सिटकनी ये किवाड़ बंद करने के काठ के यन्त्र हैं । २ लहर । तरंग । ३ (पु०) दुर्गा पाठ के अन्तर्गत एक स्तोत्र विशेष ।

अर्गलिका (स्त्री०) छोटा बेंड़ा जो किवाड़ों को बंद करने के लिये उनमें अटकाया जाता है । चटखनी ।

अर्घ् (धा० प०) [अर्घति, अर्घित] दाम लगाना । मोल लेना ।

परीक्षका यत्र न सन्ति देशे
नार्घन्ति रत्नानि समुद्रजानि ।

सुभाषित ।

अर्घः (पु०) १ मूल्य । दाम । क़ीमत । भाव । २ पूजा की सामग्री । षोडशोपचार पूजन में से एक उपचार । इस उपचार में जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, चावल और यव मिला कर देवता को अर्पण करते हैं । जलदान । सामने जल गिराना । —अर्ह (वि०) सम्मानसूचक भेंट करने योग्य ।—बलाबलं (न०) भाव । उचित

मूल्य । मूल्य में तारतम्य या उतार चढ़ाव या मूल्य का कमवेशी होना ।—संख्यानम्—संस्थापनम्, (न०) दाम कूतने की क्रिया । क़ीमत लगाना ।

अर्घीशः (पु०) शिव जी का नाम ।

अर्घ्य (वि०) १ क़ीमती । मूल्यवान । २ पूज्य ।

अर्घ्यम् (न०) किसी देवता या प्रतिष्ठित व्यक्ति को सम्मान प्रदर्शक भेंट ।

अर्च् (धा० उभय०) [अर्चति—अर्चते, अर्चित] १ पूजा करना । शृङ्गार करना । प्रणाम करना । सम्मान पूर्वक स्वागत करना । २ वैदिक साहित्य में) स्तुति करना ।

अर्चक (वि०) पूजा करने वाला । शृङ्गार करने वाला । सजाने वाला ।

अर्चकः (पु०) पुजारी । शृङ्गारिया ।

अर्चत् (वि०) पूजन करते हुए । स्तुति करते हुए ।

अर्चनम् (न०) } पूजा । पूजन । आदर । सत्कार ।
अर्चना (स्त्री०) }

अर्चनीय } (स० का० कृ०) पूजनीय । शृङ्गार करने योग्य । पूज्य । मान्य । प्रतिष्ठित । सम्मानित ।
अर्च्य }

[मूर्ति या प्रतिमा ।

अर्चा (स्त्री०) १ पूजा । शृङ्गार । २ पूजन करने की

अर्चिः (स्त्री०) किरन । अंगारा । चमक ।

अर्चिष्मत् } (पु०) सूर्य । अग्नि ।
अर्चिष्मान् }

अर्चिस् (न०) } १ आग का गोला या अंगारा ।
अर्चिः (पु०) } चमक । किरन । २ दीप्ति । आभा ।
(पु०) किरन । ३ अग्नि । [२ सूर्य ।

अर्चिसत् (वि०) चमकीला । (पु०) १ अग्नि ।

अर्ज् (धा० प०) [अर्जति, अर्जित] १ उपार्जन करना । कमाना ।

अर्जक (वि०) [स्त्री०—अर्जिका] प्राप्त करने वाला । उपार्जन करने वाला ।

अर्जकः (वि०) वृक्ष विशेष । बाबुई वृक्ष, जिसके सूतों से रस्सी बटी जाती है ।

अर्जनम् (न०) प्राप्त करना । उपलब्धि । प्राप्ति ।

अर्जुन (वि०) [स्त्री०—अर्जुना, अर्जुनी] १ सफेद । स्वच्छ । चमकीला । दिन के प्रकाश की तरह । यथा—

" पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविं ।"

—शिशुपालवध ।

२ रुपहला ।

अर्जुनः (पु०) १ सफेद रंग । २ मोर । मयूर । ३ वृक्ष विशेष जिसकी छाल बड़ी गुणदायक है । ४ महाराज युधिष्ठिर के छोटे भाई । इनका वृत्तान्त महाभारत में विस्तार से लिखा हुआ है । ५ कार्तवीर्य राजा का नाम, जिसको परशुराम जी ने मारा था । ६ इकलौता पुत्र ।—ध्वजः (पु०) सफेद ध्वजा वाला । हनुमान जी का नाम ।

अर्जुनी (स्त्री०) १ कुटनी । २ गौ । ३ करतोया नदी का दूसरा नाम ।

अर्जुनम् (न०) घास ।

अर्जुनोपमः (पु०) साखू का वृक्ष । सागौन का पेड़ या सगौन ।

अर्णः (पु०) १ साखू, या सागौन का वृक्ष । २ [वर्णमाला का] एक वर्ण ।

अर्णवः (पु०) १ (फैनों से युक्त) समुद्र ।—उद्भवः, (पु०) चन्द्रमा ।—उद्भवा, (स्त्री०) लक्ष्मी ।—उद्भवं, (न०) अमृत ।—पोत, (पु०),—यानम्, (न०)—मन्दिरः (पु०) १ वरुण । २ समुद्रवासी । ३ विष्णु ।

अर्णस् (न०) जल ।—दः, (अर्णोदः) (पु०) बादल ।—भवः (पु०) शङ्ख ।

अर्णस्वत् (वि०) जिसमें बहुत जल हो ।

अर्णस्वत् (पु०) समुद्र । सागर ।

अर्तनम् (न०) धिक्कार । फिटकार । गाली ।

अर्तिः (स्त्री०) १ पीड़ा । दुःख । खेद । २ धनुष की नोंक ।

अर्तिका (स्त्री०) (नाट्य साहित्य में) बड़ी बहिन ।

अर्थ् (धा० आत्म०) [अर्थयते, अर्थित] १ माँगना । याचना करना । प्रार्थना करना । विनती करना । २ वाञ्छा करना । अभिलाषा करना ।

अर्थः (पु०) १ उद्देश्य । प्रयोजन । अभिलाषा । २ कारण । हेतु । भाव । आधार । ज़रिया । ३ विष्णु का नाम ।—अधिकारः, (पु०) खजानची का ओहदा ।—अधिकारिन्, (पु०)

खजानची। कोषाध्यक्ष।—अन्तरम् (न०) (अर्थान्तरम्) १ भिन्न अर्थ यानी मानी। २ भिन्न उद्देश्य या हेतु। ३ नया मामला। नयीपरिस्थिति।—न्यासः (पु०) (=अर्थान्तर-न्यासः) काव्यालङ्कार विशेष जिसमें प्रकृति अर्थ की सिद्धि के लिये अन्य अर्थ लाना पड़ता है। अर्थालङ्कार का एक भेद। २ (न्याय दर्शन में) निग्रहस्थान।—अन्वित, (= अर्थान्वित) (वि०) १ धनी। सम्पत्ति वाला। २ गूढार्थ प्रकाशक। गुरुतर।—अर्थिन्, (=अर्थार्थिन्) (वि०) वह जो धन प्राप्त करना चाहे या जो कोई अपना उद्देश्य सिद्ध करना चाहे।—अलङ्कारः, (= अर्थालङ्कारः) (पु०) वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय। आगमः, (= अर्थागमः) (पु०) १ आय। आमदनी। धन की प्राप्ति। २ किसी शब्द के अभिप्राय को सूचना करना।—आपत्तिः, (= अर्थापत्तिः) (स्त्री०) १ अर्थालङ्कार जिसमें एक बात के कहने से दूसरी बात की सिद्धि हो। २ मीमांसाशास्त्रानुसार प्रमाण विशेष। जिसमें एक बात कहने से दूसरी बात की सिद्धि अपने आप हो जाय।—उत्पत्तिः, (= अर्थोत्पत्तिः) (स्त्री०) धनोपार्जन। धनप्राप्ति।—उपक्षेपकः, (=अर्थोपक्षेपकः) (पु०) नाटक का आरम्भिक दृश्य विशेष। यथा—

" अर्थोपक्षेपकाः पञ्च। "

साहित्यदर्पण।

उपमा, (= अर्थोपमा) (स्त्री०) उपमा विशेष जिसका सम्बन्ध शब्दार्थ या शब्द के भाव से रहता है।—उष्मन्, (=अर्थोष्मन्) (पु०) धन की गर्मी।—

" अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स सद्यः।

भागवत।

—ओघः, (=अर्थौघः) (पु०) या—राशिः, (=अर्थराशिः) (पु०) खजाना या धन का ढेर।—कृत (वि०) १ धनी बनानेवाला। २ उपयोगी। लाभकारी।—काम, (वि०) धनाकांक्षी।—कृच्छ्र, (न०) १ कठिन विषय। २ धन सम्बन्धी सङ्कट।—कृत्यं (न०) धन का लाभ कराने वाले किसी कारोबार।—गौरवं, (न०) अर्थ की गम्भीरता।—घ्न, (वि०) फ़िजूल खर्च। अपव्ययी।—जात, (वि०) अर्थ से परिपूर्ण।—जातम्, (न०) १ वस्तुओं का संग्रह। धन की बड़ी भारी रकम। बड़ी सम्पत्ति।—तत्त्वं, (न०) १ यथार्थ सत्य। असली बात। २ किसी वस्तु का यथार्थ कारण या स्वभाव।—द, (वि०) १ धनप्रद। २ उपयोगी लाभदायी।—दूषणम् (न०) १ फ़िजूलखर्ची। अपव्ययिता। २ अन्याय पूर्वक किसी की सम्पत्ति छीन लेना या किसी का पावना (रुपया या धन) न देना। ३ (किसी पद या शब्द के) अर्थ में दोष निकालना।—निबंधन, (वि०) धन पर निर्भरता।—पतिः, (पु०) १ धन का अधिष्ठाता। राजा। २ कुबेर की उपाधि।—पर,—लुब्ध, (वि०) १ धन प्राप्ति के लिये तुला हुआ। लालची। लोभी। २ कृपण। व्ययकुण्ठ।—प्रयोगः, (पु०) व्याज। सूद। कुसीद।—बुद्धि (वि०) स्वार्थी।—मात्रं, (न०) —मात्रा, (स्त्री०) सम्पत्ति। धन दौलत।—लोभः (पु०) लालच।—वादः, (पु०) १ किसी उद्देश्य या अभिप्राय की घोषणा। २ प्रशंसा। स्तुति। तारीफ।—विकल्पः, (पु०) सत्य से डिगने की क्रिया। सत्य बात को बदलने की क्रिया। अपलाप।—वृद्धिः, (स्त्री०) धन को जोड़ना।—व्ययः, (पु०) खर्च।—शास्त्रं, (न०) सम्पत्ति शास्त्र। धन सम्बन्धी नीति को बताने वाला शास्त्र।—शौचं, (न०) रुपये के देन लेन के मामले में सफाई या ईमानदारी।—संबन्धः, (पु०) किसी शब्द से उसके अर्थ का सम्बन्ध।—सारः, (पु०) बहुत सा धन।—सिद्धिः, (स्त्री०) सफलता। मनोरथ का पूरा होना।

अर्थतः (अव्यया०) १ अर्थगौरव। २ दरहकीकत। सचमुच। यथार्थतः। ३ धन प्राप्ति लाभ या फायदे के लिये। ४ इस कारण से।

अर्थना (स्त्री०) प्रार्थना। विनय। विनती। २ प्रार्थना-पत्र। अर्ज़ी।

अर्थवत् (वि०) १ धनी । २ गूढार्थ प्रकाशक । ३ जिसका अर्थ हो । किसी प्रयोजन का । सफल । उपयोगी ।

अर्थवत्ता (स्त्री०) धन सम्पत्ति । धन दौलत ।

अर्थात् (अव्यया०) या । अथवा ।

अर्थिकः (पु०) १ चौकीदार । २ वैतालिक भाट। ३ भिक्षुक । भिखारी । मँगता ।

अर्थित (व० कृ०) प्रार्थना किया हुआ । अभिलषित ।

अर्थितम् (न०) १ अभिलाषा । इच्छा । २ प्रार्थना-पत्र । अर्ज़ी ।

अर्थिता } **अर्थित्वं** } १ याचना । प्रार्थना । २ इच्छा । अभिलाषा ।

अर्थिन् (वि०) १ याचक । भिक्षुक । मँगता । भिखारी । २ सेवक । सहायक । धनी । ४ वादी । ५ धनरहित । ६ अभिलाषी । मनोरथ रखने वाला ।

अर्थ्य (वि०) १ माँगने योग्य । प्रार्थनीय । २ योग्य । उचित । ३ गूढार्थ प्रकाशक । समुचित । ४ धनी । धनवान् । ५ पण्डित । बुद्धिमान ।

अर्थ्यम् (न०) लाल खड़िया । गेरू ।

अर्द् (धा० प०) १ पीड़ा देना । अत्याचार करना । चोट मारना । चोटिल करना । वध करना । २ माँगना । प्रार्थना करना । याचना करना ।

अर्दन (वि०) पीड़ाकारक । क्लेशदायी ।

अर्दनम् (न०) पीड़ा । कष्ट । चिन्ता । घबड़ाहट । व्याकुलता ।

अर्दना (स्त्री०) १ माँग । भिक्षा । २ वध । चोट । पीड़ाकारक ।

अर्ध } **अर्द्ध** } (वि०) आधा । खण्ड । टुकड़ा ।—अर्द्धि, (न०) क़नखिया । सैन मारना ।—अंशिन्, (वि०) आधे का भागीदार ।—अर्धः, (पु०)—अर्ध (न०) आधे का आधा । चौथाई ।—अवभेदकः, (पु०) आधे सिर की पीड़ा । अधासीसी ।—गङ्गा, (स्त्री०) कावेरी नदी का नाम । (कावेरी के स्नान करने से गङ्गास्नानका आधा फल प्राप्त हो जाता है)—चन्द्रः, (पु०) १ चन्द्रार्ध । अष्टमी का चन्द्रमा । आधे चन्द्रमा के आकार का नख का घाव । गरदनिया । गलहस्त । ३ सानुनासिक चिन्ह विशेष (ँ) । ४ मोर के परों पर की चन्द्रिका । ५ चन्द्राकार बाण ।—चोलकः (पु०) अँगिया । बाँहकटी ।—नारीशः,—नारीश्वरः, (पु०) महादेव का नाम । शिव पार्वती की मूर्ति विशेष । हरगौरी रूप शिव ।—पञ्चाशत्, (स्त्री०) २५ पचीस ।—भागः (पु०) १ आधा हिस्सा पाने का अधिकारी । २ साथी । साझीदार ।

अर्धक (वि०) आधा ।

अर्धिक (वि०) [स्त्री०—अर्धिकी] १ आधा नापने वाला । २ जो आधा हिस्सा पाने का हकदार हो ।

अर्धिकः (पु०) वर्णसङ्कर, जिसकी परिभाषा पाराशर स्मृति में इस प्रकार है:—

वैश्यकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ।
अर्धिकः स तु विज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥

अर्धिन् (वि०) आधे हिस्से का हक़दार ।

अर्धोदयः } **अर्द्धोदयः** } (पु०) योगविशेष । यह योग तब समझा जाता है, जब श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात हो । अमावस तिथि ।

अर्पणम् (न०) १ भेंट । नज़र । त्याग । यथा—
"स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण ।"
रघुवंश ।

२ वापिसी । ३ छेदना ।
श्रोत्रतुलार्पणैर्यां

अर्पिसः (पु०) हृदय का मांस ।

अर्व् (धा० परस्मै) [अर्वति, आनर्व, अर्वितुं] १ एक ओर जाना । २ हनन करना । वध करना ।

अर्वुदः अर्बुदः (पु०) } **अर्वुदम् अर्बुदम्** (न०) } १ सूजन । गुमड़ा । २ दस करोड़ की संख्या । ३ आबू पहाड़ का नाम । ४ सर्प । ५ बादल । ६ दैत्य विशेष जिसे इन्द्र ने मारा था । ७ मांस का ढेर ।

अर्भक (वि०) १ छोटा । सूक्ष्म । ह्रस्व । २ निर्बल । दुबला । ३ मूढ़ । मूर्ख । ४ युवा । ५ बालकपन ।

अर्भकः (पु०) १ बालक । बच्चा । २ किसी पशु का बच्चा । ३ मूर्ख । मूढ़ ।

अर्य (वि०) १ सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ । प्रतिष्ठित । कुलीन ।

अर्यः (पु०) १ मालिक। प्रभु। २ वैश्य।—वर्यः (पु०) प्रतिष्ठित वैश्य।

अर्या (स्त्री०) १ मलकिन। २ वैश्या। वैश्य जाति [की स्त्री।

अर्यमन् (पु०) १ सूर्य। २ पितरों के मुखिया। ३ मदार। आंक। अकौआ। ४ द्वादश आदित्यों में से एक। ५ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी देवत। ६ परम प्रियमित्र। साथ खेलने वाला।

अर्यम्यः (पु०) सूर्य। प्राणोपम मित्र।

अर्याणी (स्त्री०) वैश्य जाति की स्त्री। वैश्या। बनीनी।

अर्वन् (पु०) १ घोड़ा। २ चन्द्रमा के १० घोड़ों में से एक। ३ इन्द्र। ४ माप विशेष जो गाय के कान के बराबर का होता है।—ती (स्त्री०) १ घोड़ी। २ कुटनी।

अर्वाच् (वि०) १ इस ओर आते हुए। २ (किसी) ओर घूमा हुआ। किसी से मिलने को आता हुआ। ३ इस ओर को। ४ (समय या स्थान में) नीचे या पीछे। ५ बाद का। पीछे का। पिछला।—क्, (अव्यया०) १ इस ओर। इस तरफ। २ किसी विन्दु विशेष से। किसी स्थान विशेष से। ३ पूर्व का। पहला (समय सम्बन्धी या स्थान सम्बन्धी) ४ नीचे की ओर। पिछाड़ी। निचला। ५ पश्चात्। पीछे से। ६ अन्तर्गत। समीप। [विरुद्ध।

अर्वाचीन (वि०) १ आधुनिक। हालका। २ उल्टा।

अर्वाचीनम् (अव्यया०) १ इस ओर का। २ अपेक्षा कृत पीछे का। [सीर रोग नाशक।

अर्शस् (न०) ववासीर रोग।—घ्न, (वि०) ववा-

अर्शस (वि०) ववासीर रोग से पीड़ित।

अर्ह (धा० पर०) [अर्हति, अर्हतुं, आनर्ह, अर्हित] आर्ष प्रयोग। यथा।

रावणो नार्हते पूजां"—

रामायण।

१ योग्य होना। २ अधिकारी होना। २ कोई काम करने के योग्य होना। ३ सदृश या समान होना।

अर्ह (वि०) १ प्रतिष्ठित। मान्य। २ योग्य। ३ भव्य। उपयुक्त। ४ मूल्यवान्।

अर्हः (पु०) १ इन्द्र का नाम। विष्णु का नाम। ३ मूल्य।

अर्हा (स्त्री०) पूजन। आराधन। उपासना।

अर्हणं (न०) } (वि०) पूजन। उपासना।
अर्हणा (स्त्री०) } सम्मान। प्रतिष्ठापूर्ण व्यवहार।

अर्हत् (वि०) १ उपयुक्त। योग्य। आराधनीय। उपास्य। (पु०) १ बौद्धों में सर्वोच्चपद। २ जैनियों के एक पूज्य देवता।

अर्हन्त (वि०) उपयुक्त। योग्य।

अर्हन्तः (पु०) १ बौद्ध। २ बौद्धभिक्षुक।

अर्हन्ती (स्त्री०) पूजने, उपासना या सम्मान किये जाने के लिये अपेक्षित गुण।

अर्ह्य (स० का० कृ०) १ उपयुक्त। माननीय। प्रतिष्ठित। २ स्तुति योग्य।

अल् (धा० उभ०) [अलति—अलते, अलितुं, अलित] १ सजाना। २ योग्य होना। ३ रोकना। बचाना।

अलं (न०) १ बिच्छू की पूंछ का डंक। २ पीला-हरताल। (अव्यया०) काफी।

अलकः (पु०) १ घुघराले बाल। २ जुल्फें। ३ केसर का शरीर पर उपटन। ४ उन्मत कुत्ता।

अलकम् (न०) व्यर्थ। निरर्थक।

अलका (स्त्री०) (१) ८ और १० बरस के भीतर उम्र की लड़की। २ कुबेर की राजधानी का नाम।

अलक्तः } (पु०) कतिपय वृक्षों की लाल छाल
अलक्तकः } या बकला। लाक्षारस। लाख का रंग। महावर (जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं)।

अलक्षण (वि०) १ जिसमें कोई चिन्ह या निशान न हो। २ अप्रसिद्ध। जिसके लक्षण निर्दिष्ट न हों। ३ अशुभ।

अलक्षणम् (न०) १ अशुभ शकुन या चिन्ह। २ जिसकी परिभाषा न हो, या बुरी परिभाषा हो।

अलक्षित (वि०) अदृष्ट। अप्रकट। गायब।

अलक्ष्मीः (स्त्री०) दरिद्रता। अभागापन। दुर्दिष्ट।

अलक्ष्य (वि०) १ अदृष्ट। अप्रकट। अज्ञात। २ अचिन्हित। ३ विशेष चिन्हरहित। ४ देखने में तुच्छ। ५ जिसका कोई बहाना न हो। धोखे से वर्जित।—गति (वि०) ऐसे चलना कि

कोई देख न सके ।—जन्मना (वि०) अज्ञात उत्पत्ति । अस्पष्ट उत्पत्ति ।

अलगर्दः (पु०) पानी का साँप ।

अलघु (वि०) [स्त्री०—अलघ्वी] १ जो हल्का न हो । भारी । बड़ा । २ जो छोटा न हो । लंबा । ३ संगीन । गम्भीर । ४ बहुत बड़ा । अत्यन्त । प्रचण्ड । प्रबल ।—उपलः. (पु०) चट्टान ।

अलंकरणम्, अलङ्करणम् (न०) १ सजावट । शृङ्गार । २ आभूषण । गहना ।

"पुरुषरत्नमलङ्करणम् भुवः"

भर्तृहरिः

अलंकरिष्णु, अलङ्करिष्णु (वि०) १ गहनों का शौकीन । २ सजावटी । सजाने में निपुण ।

अलंकारः, अलङ्कारः (पु०) सजावट । शृङ्गार । २ आभूषण । गहना । ३ साहित्य शास्त्र का एक अंग । ४ अलङ्कार शास्त्र ।

अलंकारकः, अलङ्कारकः (पु०) गहना । सजावट ।

अलंकृतिः, अलङ्कृतिः (स्त्री०) १ सजावट । २ आभूषण (कर्णालंकृति अमरु) ३ साहित्य शास्त्र का एक आभूषण ।

अलंक्रिया, अलङ्क्रिया (स्त्री०) सजावट । शृङ्गार ।

अलंघनीय, अलङ्घनीय (वि०) पहुँच के बाहिर । अनतिक्रमणीय । दुरतिक्रम । अनुलङ्घ्य ।

अलजः (पु०) पक्षी विशेष ।

अलंजरः, अलञ्जरः, अलंजुरः, अलञ्जुरः (पु०) घड़ा । मिट्टी का घड़ा ।

अलम् (अव्यया०) (वि०) काफी । पर्याप्त । यथोचित । उपयुक्त ।—कर्मीण .(वि०) निपुण । कुशल ।—धूमः (पु०) सघन धुआँ । अत्यधिक धुआ ।—पुरुषीण (वि०) मनुष्योचित । मनुष्य के लिये पर्याप्त ।—भूष्णु (वि०) योग्य । कुशल ।

अलंपट, अलम्पट (वि०) जो लंपट या विषयी न हो । शुद्ध चरित्र वाला ।

अलंपटः, अलम्पटः (पु०) ज़नाना कमरा । ज़नानखाना ।

अलंबुषः, अलम्बुषः (पु०) १ वमन । छर्दि । कै । ओकी । २ खुले हुए हाथ की हथेली । ३ रावण के एक राक्षस सैनिक का नाम । ४ एक राक्षस जिसे महाभारत के युद्ध में घटोत्कच ने मारा था ।

अलंबुषा, अलम्बुषा (स्त्री०) १ मुंडी । गोरखमुण्डी । २ स्वर्ग की एक अप्सरा । ३ दूसरे का आना रोकने के लिये खींची गयी लकीर । ४ छुईमुई । लजालू पौधा ।

अलंबुसा, अलम्बुसा (स्त्री०) एक देश का नाम ।

अलय (वि०) १ गृहहीन । आवारा । २ जो कभी नाश को प्राप्त न हो । अविनश्वर ।

अलयः (पु०) १ स्थायित्व । २ उत्पत्ति । पैदायश ।

अलर्कः (पु०) १ पागल कुत्ता । २ सफेद मदार या अकौआ । ३ एक राजा का नाम ।

अलले (अव्यया०) पैशाची भाषा का शब्द जो नाटकों में बहुधा व्यवहृत होता है ।

अलवालं (न०) पेड़ की जड का खोदुआ या थाला, जिसमें जल भर दिया जाता है ।

अलस् (वि०) जो चमकीला न हो या जो चमके नहीं ।

अलस (वि०) १ अक्रियाशील । जिसके शरीर में फुर्ती न हो । सुस्त । काहिल । २ श्रान्त । थका हुआ । ३ मृदु । कोमल । ४ मन्द । चेष्टाहीन ।

अलसक (वि०) अकर्मण्य । काहिल । सुस्त ।

अलातः (पु०), अलातम् (न०) अधजला काठ या लकड़ी । जलता हुआ काठ या लकड़ी ।

अलाबुः (स्त्री०), अलाबूः (न०) तुम्बी । लावू । तुमड़िया ।—बु तुमड़ी का बना बरतन । तुमड़ी का फल ।—कटं, (न०) तुमडी की रज ।

अलारं (न०) दरवाज़ा ।

अलिः (पु०) १ भौंरा । २ विच्छू । ३ काक । कौआ । ४ कोयल । ५ मदिरा ।—कुलम्, (न०) भौंरों का झुंड ।—प्रियः, (पु०) कमल ।—विरावः, (पु०)—रुतं, (न०) भौंरों का गुञ्जार ।

अलिकं (न०) माथा ।

अलिन् (पु०) १ विच्छू । २ शहद की मक्खी ।

अलिनी (स्त्री०) शहद की मक्खियों का समुदाय ।

अलिगर्दः (पु०) सर्प विशेष ।

अलिंग } (वि०) १ जिसके कोई विशिष्ट चिन्ह न
अलिङ्ग } हो। जिसके कोई चिन्ह न हो। २ बुरे चिन्हों वाला। ३ (व्याकरण में) जिसका कोई लिङ्ग न हो।

अलिंजरः } (पु०) पानी का घड़ा।
अलिञ्जरः }

अलिंदः } (पु०) घर के द्वार के सामने का चबूतरा
अलिन्द } या चौतरा।

अलिपकः (पु०) १ कोयल। २ शहद की मक्खी। ३ कुत्ता।

अलीक (वि०) १ अप्रसन्नकर। अरुचिकर। [२ मिथ्या।

अलीकं (न०) १ माथा। २ झूठ। असत्य। [दगा।

अलीकिन् (वि०) अरुचिकर। अप्रसन्नकर। २ झूठ।

अलुः (पु०) एक छोटा जलपात्र।

अलूक्ष (वि०) कोमल। नम्र।

अले } (अव्यया०) अर्थशून्य शब्द जो नाटकों
अलेले } के उस दृश्य में जहाँ पिशाचों का संवाद होता है, प्रयुक्त किया जाता है।

अलेपक (वि०) निष्कलङ्क।

अलेपकः (पु०) ब्रह्म की उपाधि।

अलोक (वि०) १ अदृश्य। जो देख न पड़े। २ जिसमें कोई आदमी भी न हो। ३ ऐसा जीव जो मरने के बाद अन्य किसी लोक में न जाय।

अलोकः (पु०) } १ लोक नहीं। २ लोक का नाश
अलोकम् (न०) } मनुष्यों का अभाव।—सामान्य (वि०) असाधारण।

अलोकनम् (न०) अदृश्यता।

अलोल (वि०) १ स्थिर। टिका हुआ। २ दृढ़। मज़बूत। ३ अचञ्चल। ४ जो प्यासा न हो। इच्छा से रहित। कामनाशून्य।

अलोलुप (वि०) १ कामनाशून्य। जो लालची न हो। लोलुप न हो।

अलौकिक (वि०) [स्त्री०—अलौकिकी] १ इस लोक का नहीं। चमत्कारी।

अल्प (वि०) १ तुच्छ। २ थोड़ा। ज़रासा। ३ विनाशी। थोड़े दिनों का ४ दुर्लभ।

अल्पक (वि०) [स्त्री०—अल्पिका] १ कम। थोड़ा २ क्षुद्र। घृणायोग्य।

अल्पंपचः (पु०) कंजूस। लोभी। लालची।

अल्पशः (अव्यया०) थोड़े अंश में। थोड़ा।

अल्पीकृ (धा० उभय०) छोटा करना। घटाना। संख्या में कम करना। [छोटा या कम।

अल्पीयस् (वि०) अपेक्षाकृत कम या छोटा। बहुत

अल्ला (स्त्री०) माता। (सम्बोधनकारक में "अल्ल")।

अव् (धा० परस्मै०) [अवति, अवित, या ऊत] १ बचाना। रक्षा करना। सहारा देना २ प्रसन्न करना। सन्तुष्ट करना। आनन्द देना। ३ पसंद करना। इच्छा करना। अभिलाषा करना। ४ कृपा करना। अनुग्रह करना। उन्नति करना। [यद्यपि धातुरूपावली में इस धातु के और भी बहुत से अर्थ दिये हैं; किन्तु उन अर्थों में इस धातु का प्रयोग वर्तमान संस्कृतसाहित्य में बहुत कम होता है।]

अव (अव्यया०) १ दूर; फासले पर। नीचे। २ (जब यह किसी क्रिया में "उपसर्ग" होता है तब ये निम्न भाव प्रकट करता है :—) १ संकल्प। विचार। २ फैलाव। बहाव। विस्तार। ३ अवज्ञा। अवहेला। ४ स्वल्पता। ५ अवलम्ब। ६ शोधन। शुद्धता। निर्मलता।

अवकट (वि०) १ नीचे की ओर। पीछे की ओर। २ प्रतिकूल। विरुद्ध।

अवकटम् (न०) विरुद्धता। प्रतिकूलता।

अवकरः (पु०) धूल। बुहारन।

अवकर्तः (पु०) टुकड़ा। धज्जी। कतरन।

अवकर्तनम् (न०) काटन। कतरन।

अवकर्षणम् (न०) १ बाहिर निकालने या खींचकर बाहिर निकालने की क्रिया। २ बहिष्करण।

अवकलित (वि०) १ देखा हुआ। अवलोकन किया हुआ। २ जाना हुआ। ३ लिया हुआ। ग्रहण किया हुआ। प्राप्त।

अवकाशः (पु०) १ अवसर। मौक़ा। २ खाली वक्त। फुर्सत। छुट्टी। ३ स्थान। जगह। ४ शून्य जगह। ५ दूरी। अन्तर। फासला।

अवकीर्णिन् (वि०) व्रत से च्युत। धर्म से नष्ट।

अवकीर्णी (पु०) वह ब्रह्मचारी जिसने अपना ब्रह्मचर्य व्रत भङ्ग कर दिया हो।

अवकुंचनं / अवकुञ्चनम् } (न०) झुकाव । टेढ़ापन । खिचाव ।

अवकुंठनं / अवकुण्ठनम् } (न०) १ घिराव । छिकाव । २ खिचाव ।

अवकुंठित / अवकुण्ठित } (वि०) छेका हुआ । छिका हुआ या घेरा हुआ । खिचा हुआ ।

अवकृष्ट (व० कृ०) १ नीचे गिराया हुआ । २ स्थानान्तरित किया हुआ । ३ निकाला हुआ । ४ अपकृष्ट । नीचा । अधःपतित । जातिवहिष्कृत ।

अवकृष्टः (पु०) नौकर जो नीच काम करता हो ।

अवकॢप्तिः (स्त्री०) १ सम्भावना । २ उपयुक्तता ।

अवकेशिन् (वि०) वंजर । (वृक्ष) जिसमें कोई फल न लगे ।

अवकोकिल (वि०) कोकिल द्वारा गिराया हुआ । कोकिल द्वारा तिरस्कृत । [सच्चा । मातवर ।

अवक्र (वि०) जो टेढ़ा न हो । (आलं) ईमानदार ।

अवक्रन्द (वि०) धीरे धीरे रोता हुआ । गर्जता हुआ । हिनहिनाता हुआ ।

अवक्रन्दनम् (न०) रोने की क्रिया । ज़ोर से रोने की क्रिया ।

अवक्रमः (पु०) उतार । ढाल । निचान ।

अवक्रयः (पु०) १ मूल्य । क़ीमत । २ मज़दूरी । भाड़ा । किराया । ठेका । इजारा । पट्टा । चकनामा । ३ भाड़े पर उठाने की क्रिया । पट्टे पर देने की क्रिया । ४ कर या राजस्व । राजग्राह्य द्रव्य ।

अवक्रान्तिः (स्त्री०) १ उतार । २ समीप आगमन ।

अवक्रिया (स्त्री०) छूट । चूक । भूल ।

अवक्रोशः (पु०) १ वेसुरा कोलाहल । २ अकोसा । शाप । ३ गाली । झिड़की । फटकार ।

अवक्लेशः (पु०) १ बूँद बूँद टपकने की क्रिया । २ कचलोहू । घाव का पानी । पंछा ।

अवक्षयः (पु०) नाश । सढ़ाव । गलन । हानि ।

अवक्षेपः (पु०) दोषारोपण । २ आपत्ति ।

अवक्षेपणं (न०) १ गिराव । अधःपात । नीचे फेंकने की क्रिया । २ तिरस्कार । घृणा । ३ फटकार । भर्त्सना । दोषारोपण । ४ वशवर्त्ती करण ।

अवक्षेपणी (स्त्री०) लगाम । रास ।

अवखण्डनं (न०) विभक्त करने की क्रिया । नष्ट करने की क्रिया ।

अवखातम् (न०) गहरा गढ़ा ।

अवगणनं (न०) १ अवज्ञा । तिरस्कार । अवहेला । २ फटकार । दोषारोपण । ३ अपमान ।

अवगण्डः (पु०) मुहासा या फुंसी जो चेहरे पर या गाल पर होती है । [धारण ।

अवगतिः (स्त्री०) निश्चयात्मक ज्ञान । समझ ।

अवगमः (पु०) / अवगमनम् (न०) } १ समीप गमन । ऊपर से नीचे उतरने की क्रिया । २ समझ । धारणा । ज्ञान ।

अवगाढ़ (व० कृ०) १ बूड़ा हुआ । घुसा हुआ । डूबा हुआ । २ ढीला । नीचा । गहरा । ३ जमा हुआ । पक्का वना हुआ ।

अवगाहः (पु०) / अवगाहनम् (न०) } १ स्नान । २ निमज्जन (आलं०) निष्णात होने की क्रिया । पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया ।

अवगीत (व० कृ०) १ वेसुरा गाया हुआ । बुरा गाया हुआ । २ अकोसा हुआ । धिक्कारा हुआ । ३ दुष्ट । पापी । (न०) जनापवाद । निन्दा । अभिशाप ।

अवगुणः (पु०) दोष । त्रुटि । कमी ।

अवगुंठनं / अवगुण्ठनम् } (न०) ढकने की क्रिया । छिपाने की क्रिया । २ पर्दा । घूंघट । बुर्क़ा ।

अवगुंठनवत् / अवगुण्ठनवत् } (वि०) [स्त्री०—अवगुण्ठनवती] । घूंघट से ढका हुआ ।

अवगुंठिका / अवगुण्ठिका } (स्त्री०) घूंघट । पर्दा ।

अवगुंठित / अवगुण्ठित } (व० कृ०) ढका हुआ । घूंघट काढ़े हुए । छिपा हुआ ।

अवगुरणं / अवगोरणम् } (न०) मार डालने के उद्देश्य से हमला करने की क्रिया । हथियार से आक्रमण करने की क्रिया ।

अवगूहनम् (न०) १ छिपाव । दुराव । २ आलिङ्गन करने की क्रिया ।

अवग्रहः (पु०) १ (व्याकरण में) सन्धिविच्छेद । २ लुप्त अकार जिसका चिन्ह (ऽ) है । ३ अनावृष्टि । सूखा । ४ रुकावट । अड़चन । रोक । वाधा । ५ गज समूह । हाथी का माथा ।

७ स्वभाव । प्रकृति । ८ दण्ड । सज़ा । शाप । अकोसा । [अवहेला ।

अवग्रहणम् (न०) १ रुकावट । अड़चन । २ अपमान ।

अवग्राहः (पु०) १ टूटन । बिलगाव । अलगाव । २ अड़चन । रुकावट । रोक । ३ शाप । अकोसा ।

अवघट्टः (पु०) १ भूमि का बिल । गुफा । गुहा । २ अनाज पीसने की चक्की । ३ गड्डबड्ड करने की क्रिया । हिलाकर गड्डबड्ड करने की क्रिया ।

अवघर्षणम् (न०) १ रगड़न । मालिश । पीसने की क्रिया । (सूखा रङ्ग आदि) मल कर झाड़ने की क्रिया । (लगे रंग को) मल कर छुटाना । ३ पीसना ।

अवघातः (पु०) १ धान आदि का ताड़न । २ चोट । प्रहार । बध । हत्या । ३ अपमृत्यु ।

अवघूर्णनम् (न०) घुमरी । चक्कर ।

अवघोषणम् (न०) } अवघोषणा (स्त्री०) } १ ढिंढोरा । २ राजसूचना ।

अवघ्राणम् (न०) सूंघने की क्रिया ।

अवचन (वि०) न बोलने वाला । चुप । खामोश । वाणी रहित ।

अवचनम् (न०) १ वचन या कथन का अभाव । चुप्पी । मौनत्वा । २ फटकार । डाँटडपट । दोषारोपण । झिड़की ।

अवचनीय (वि०) जो कहा न जा सके । जो बोला न जा सके । अश्लील या भद्दी (बात या भाषा) २ झिड़की के अयोग्य । भर्त्संना से रहित ।

अवचयः } अवचायः } (पु०) सञ्चय । (जैसे फल फूल आदि का)

अवचारणम् (न०) किसी काम में लगाने की क्रिया । आगे बढ़ने का तरीका । बरताव या जुगत का लगाना ।

अवचूड़ः } अवचूलः } (पु०) रथ का उवार । किसी झंडे की सजावट के लिये लटकाये हुए चौरीनुमा गुच्छे ।

अवचूर्णनं (न०) पीसना । कूटना । पीस कर चूर्ण कर डालना । २ चूर्ण बुरकाना । विशेष कर कोई सूखी दवा किसी घाव पर बुरकाना ।

अवचूलकः (पु०) } अवचूलकम् (न०) } चौरी (जिससे मक्खियां उड़ायी जाती हैं) ।

अवच्छदः } अवच्छादः } (पु०) ढक्कन । कोई वस्तु जिससे दूसरी वस्तु ढकी जा सके ।

अवच्छिन्न (व० कृ०) १ काट कर अलग किया हुआ । २ विभाजित । पृथक् किया हुआ । छुड़ाया हुआ । ३ जिसका किसी अवच्छेदक पदार्थ से अवच्छेद किया गया हो । ४ छेका हुआ । घेरा हुआ । सम्हाला या संशोधित किया हुआ । निश्चित किया हुआ ।

अवच्छुरित (वि०) मिश्रित । मिला हुआ ।

अवच्छुरितम् (न०) खिलखिलाहट । अट्टहास । ठहाका ।

अवच्छेदः (पु०) १ टुकड़ा । भाग । २ सीमा । हद । ३ वियोग । ४ विशेषता । ५ निश्चय । निर्णय । ६ लक्षण (जिससे कोई वस्तु निर्भ्रान्त रूप से पहचानी जा सके । सीमाबद्धकरण । परिभाषाकरण ।

अवच्छेदक (वि०) १ भेदकारी । अलग करने वाला । २ विशेषण । ३ गुण रूप शब्द । ४ औरों से अलग करने वाला ।

अवजयः (पु०) हार ।

अवजितिः (स्त्री०) जय । विजय ।

अवज्ञानम् (न०) अवहेला । अपमान ।

अवटः (पु०) १ छेद । रन्ध्र । गुफा । २ गढ़ा । गड्ढा । ३ कूप । ४ खाल । खाड़ी । शरीर का कोई भी नीचा या दबा हुआ अवयव या भाग । —कच्छपः (अव्यय०) गढ़े का कछुआ । (आलं०) अनुभव शून्य । वह जिसने संसार का कुछ भी ज्ञान सम्पादन नहीं किया ।

अवटिः } अवटी } (स्त्री०) १ छेद । रन्ध्र । २ कूप । कुआ ।

अवटीट (वि०) चपटी नाक वाला ।

अवटुः (पु०) १ भूमि का बिल । २ कूप । ३ गरदन के पीछे का भाग । शरीर का दबा हुआ भाग । (स्त्री०) गरदन का उठा हुआ भाग ।

अवट्ठ (न०) सूराख । छेद । खोंप । दरार ।

अवडीनं (न०) पक्षी का उड़ान । नीचे की ओर उडान ।

अवतंसः (पु०) } १ हार । गजरा । माला । २ कान
अवतंसम् (न०) } की वाली । वालीनुमा एक आभूषण । ३ मस्तक पर पहिनने का गहना । मुकुट । ताज । [आभूषण ।

अवतंसकः (पु०) कान का आभूपण । कोई भी

अवतंसयति (क्रि०) वाली की तरह इस्तेमाल करना । वाली वनाना ।

अवततिः (स्त्री०) फैलाव । पसार । वढाव ।

अवतप्त (व० कृ०) १ गर्माया हुआ । गरम किया हुआ । २ प्रकाशित । उजागर ।

अवतमसं (न०) १ झुटपुटा थोडा अन्धकार । २ अंधकार । अंधियाला ।

अवतरः (पु०) उतार । गिराव ।

अवतरणम् (न०) १ स्नानार्थ पानी में उतरने की क्रिया । २ अवतार । प्रादुर्भाव । जन्म-ग्रहण-करण । वारण करण । ३ पार होना । उतरना । ४ पवित्र स्थान जहाँ स्नान किया जा सके । ५ अनुवाद । भूमिका । दीवाचा । ६ उद्धरण । नकल । प्रतिकृति ।

अवतरणिका (स्त्री०) ग्रन्थ की भूमिका । उपोद्घात ।

अवतरणी (स्त्री०) देखो अवतरणिका ।

अवतर्पणम् (न०) शान्त करनेवाला उपाय ।

अवताड़नम् (न०) कुचलन । रूंधना । कुचरना । २ मारण । आघातकरण ।

अवतानः (पु०) १ फैलाव । २ झुके हुए धनुष को सीधा करने की क्रिया । ३ ढक्कन या पर्दा ।

अवतारः (पु०) १ उतार । अवाई । आगमन । २ आकार । ३ प्रादुर्भाव । किसी देवता का पृथिवी पर जन्मग्रहण करण । ४ घाट । ५ स्नान करने का पवित्र स्थान । ६ अनुवाद । ७ तालाव । ८ भूमिका । दीवाचा ।

अवतारक (वि०) [स्त्री०—अवतारिका] प्रादुर्भूत । अवतरित ।

अवतारणं (न०) उतरवाने की क्रिया । २ अनुवाद । ३ किसी भूत प्रेत का आवेश । ४ पूजन । शृङ्गार । ५ भूमिका । उपोद्घात ।

अवतीर्ण (व० कृ०) १ उतरा हुआ । नीचे आया हुआ । २ स्नान किया हुआ । ३ पार किया हुआ । गुज़रा हुआ ।

अवतोका (स्त्री०) स्त्री या गौ जिसका कारण विशेष वश गर्भश्राव हो गया हो ।

अवत्किन् (वि०) विभाजित करने वाला ।

अवदंशः (पु०) ऐसा भोज्य पदार्थ जिसके खाने से प्यास वढ़े । वलवर्द्धक पदार्थ ।

अवदाघः (पु०) १ उष्णता । २ गर्मी की ऋतु ।

अवदात (वि०) १ खूबसूरत । सुन्दर २ साफ । स्वच्छ । बेदाग़ । चिकनाया हुआ । ३ पुण्यात्मा ४ पीला ।

अवदातः (पु०) चितरंगा । सफेद या पीला रंग ।

अवदानं (न०) १ पवित्र या शास्त्र विहित वृत्ति । २ सम्पादितकार्य । ३ शूरता या गौरवपूर्ण कोई कार्य । शूरता । बीरता । ४ टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया । ५ किसी अनौखी कहानी का कोई दृश्य ।

अवदारणम् (न०) १ चीरन । फाडन । विभाजित करण । खुदाई । टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया । २ कुदाल । लकडी का फावडा ।

अवदाहः (पु०) गर्मी । उष्णता । जलन ।

अवदीर्ण (व० कृ०) विमुक्त । टूटा हुआ । भग्न । २ पिघला हुआ । ३ हडवडाया हुआ । भटका हुआ । [पय ।

अवदोहः (पु०) १ दोहन । दुहना । २ दूध ।

अवद्य (वि०) १ अधम । पापी । निन्द्य । २ गर्हित । त्याज्य । निकृष्ट । कुत्सित ।

अवद्यं (न०) १ अपराध । दोष । त्रुटि । २ पाप । दुष्कर्म । ३ कलंक । भर्त्सना ।

अवद्योतनम् (न०) प्रकाश ।

अवधानम् (न०) १ मनोयोग । २ मनोयोगता । संलग्नता । सावधानी ।

अवधारः (पु०) ठीक ठीक निश्चय । वंधेज । वंदिश ।

अवधारण (वि०) १ सीमा वद्ध करने वाला । वंधेज बाँधने वाला ।

अवधारणम् (न०) १ निश्चय । २ दृढकरण । प्रमाण ।

अवधिः (स्त्री०) १ सीमा । हद्द । पराकाष्ठा । २ निर्धारित समय । मियाद । काल । अटकाव । ४ नियुक्ति । ५ किस्मत । डिवीज़न । ज़िला । विभाग । ६ रन्ध्र । गढ़ा ।

अवधीर (धा० पर०) अवहेला करना । बेइज्जत [करना ।

अवधीरणम् (न०) अवज्ञापूर्वक बर्ताव करने की क्रिया ।

अवधीरणा (स्त्री०) बेइज्जती । असम्मान । हार ।

अवधूत (व० क्रि०) १ हिलाता हुआ । लहराता हुआ । २ खारिज किया हुआ । अस्वीकृत । घृणा किया हुआ । ३ अपमानित किया हुआ । नीचा दिखलाया हुआ ।

अवधूतः (पु०) त्यागी । संन्यासी ।

अवधूननं (न०) १ हिलाने की क्रिया । लहराने की क्रिया । २ घबड़ाहट । कपकपी ।

अवध्य (वि०) पवित्र । मौत से बरी ।

अवध्वंसः (पु०) १ त्याग । उत्सर्ग । २ चूर्ण । धूल । ३ असम्मान । भर्त्सना । कलङ्क । ४ बुरकाने की क्रिया ।

अवनं (न०) १ रक्षण । बचाव । २ प्रसन्नकारक । हर्षप्रद । ३ इच्छा । कामना । ४ हर्ष । सन्तोष ।

अवनत (व० कृ०) १ झुका हुआ । झुकाये हुए ।

अवनति (स्त्री०) झुकाव । २ अस्त होने की क्रिया । ३ प्रणाम । डंडोत । ४ (धनुष की तरह) झुकने की क्रिया । ५ नम्रता । शील ।

अवनद्ध (व० कृ०) १ बना हुआ । २ खुर्सा हुआ । गढ़ा हुआ । बना हुआ । बंधा हुआ । जुड़ा हुआ ।

अवनद्धम् (न०) ढोल ।

अवनम्र (वि०) झुका हुआ । नवा हुआ ।

अवनयः } (पु०) नीचे को गिराने की क्रिया ।
अवनायः } २ नीचे उतरने की क्रिया । अधःपात करने की क्रिया ।

अवनाट (वि०) चपटी नाक वाला ।

अवनामः (पु०) झुकाव । पैरों पड़ने की क्रिया । २ झुकाने की क्रिया ।

अवनिः } (स्त्री०) १ भूमि । पृथवी । ज़मीन ।
अवनी } २ नदी ।—ईशः,—ईश्वरः,—नाथः,—पतिः,—पालः, (पु०) राजा । नरेश । भूपाल ।—चर, (वि०) पृथिवी पर भ्रमण करने वाला । आवारा । तलं, (न०) ज़मीन की सतह । धरातल ।—मण्डलं, (न०) भूगोल ।—रुहः,—रुट्, (पु०) वृक्ष । पेड़ ।

अवनेजनं (न०) १ प्रक्षालन । मार्जन । २ श्राद्ध की वेदी पर बिछे हुए कुशों पर जल सींचने का संस्कार । ३ पाद्य । पैर धोने के लिये जल । धोने के लिये जल ।

अवतिः, अवन्तिः } (स्त्री०) २ उज्जयिनी या
अवंती, अवन्ती } उज्जैन का नाम । २ एक नदी का नाम । (पु०) और बहुवचन में) मालवा प्रदेश का तथा उस देश के निवासियों का नाम ।

अवंध्य } (वि०) उर्वर । उपजाऊ । जो ऊसर
अवन्ध्य } न हो ।

अवपतनम् (न०) नीचे गिरने की क्रिया । उतरने की क्रिया ।

अवपाक (वि०) बुरी तरह पकाया हुआ ।

अवपातः (पु०) नीचे गिरने की क्रिया । अधःपात । २ उतार । ३ छिद्र । गढ़ा । ४ विशेष कर वह गढ़ा जो हाथियों को पकड़ने के लिये खोदा जाता है ।

अवपातनम् (न०) ठोकर लग कर गिरने की क्रिया । ठुकराना । नीचे गिराने की क्रिया । अधपात ।

अवपत्रित (वि०) जातिभ्रष्ट । जाति बिरादरी से खारिज ।

अवपीडः (पु०) १ दबाव । २ एक प्रकार की दवाई जिसे सूंघने से छींकें आती हैं । [वाली वस्तु ।

अवपीडनं (न०) खाने की क्रिया । २ छींक लाने

अवपीडना (स्त्री०) उत्पात । खण्डन । भञ्जन ।

अवबोधः (पु०) १ जागना । जाग उठना । २ ज्ञान । ३ सूक्ष्म विवेचना । विवेक । मतामत । ४ उपदेश । सूचना ।

अववोधक (न०) वाह्यवस्तु का ज्ञान । ज्ञान ।

अववोधकः १ सूर्य । २ भाट । वदीजन । ३ शिक्षक ।

अवबोधनम् (न०) ज्ञान । प्रतीति ।

अवभंगः } (पु०) नीचा दिखलाने की क्रिया ।
अवभङ्गः } जीतने की क्रिया । परास्तकरण ।

अवभासः (पु०) १ चमक दमक । प्रकाश । २ ज्ञान । अवबोध । ३ दर्शन । प्राकट्य । ३ दैवज्ञान । ४ स्थान । पहुँच । ५ मिथ्या ज्ञान । भ्रम ।

अवभासक (वि०) तेजोमय।
अवभासकम् (न०) परमात्मा। परब्रह्म। [टिढा।
अवभुग्न (वि० कृ०) झुका हुआ। मुड़ा हुआ।
अवभृथः (पु०) १ यज्ञान्त स्नान। २ मार्जन के लिये जल। ३ यज्ञानुष्ठान विशेष, जो प्रधान यज्ञ की त्रुटियों की शान्ति के अर्थ किया जाता है।—स्नानम् (न०) यज्ञान्त स्नान।
अवभ्रः (पु०) बलपूर्वक या चुरा छिपा कर (किसी मनुष्य का) हरण। भगा ले जाने की क्रिया।
अवभ्रट (वि०) चपटी नाक वाला।
अवम् (वि०) १ पापी। २ निरस्करणीय। क्षुद्र। ३ कमीना। अधःपतित। अपकृष्ट। ४ अगला। परमघनिष्ट। सम्पूर्ण। ५ अन्तिम। (उम्र में) सब से छोटा।
अवमत (व० कृ०) असम्मानित किया हुआ। अवज्ञात। अवमानित। निन्दित।—अङ्कुशः (पु०) मदमत्त हाथी जो अङ्कुश को कुछ भी न माने।
अवमतिः (स्त्री०) १ अवमानना। अवज्ञा। अवहेला। २ घृणा। अवाङ्मुखता।
अवमर्दः (पु०) १ कुचलन। २ बर्बादी। नाश। जुल्म। अत्याचार।
अवमर्शः (पु०) स्पर्श। संसर्ग।
अवमर्षः (पु०) १ विचार। अन्वेषण। खोज। २ किसी नाटक के ५ प्रधान भागों या सन्धियों में से एक। विमर्श।

"यत्र मुख्यफलोपाय उद्भिन्नो गर्भतोऽधिकः।
शापाद्यैः सान्तरायश्च सोऽवमर्ष इति स्मृतः॥
—साहित्यदर्पण ३६६

३ आक्रमण करने की क्रिया।
अवमर्षणम् (न०) १ असहिष्णुता। असहन शीलता। २ मिटाने की क्रिया। स्मृति से नष्ट कर देने की क्रिया।
अवमानः (पु०) असम्मान। तिरस्कार। अवहेला।
अवमाननम् (न०) } अवमानना (स्त्री०) } असम्मान। बेइज्जती।
अवमानिन् (वि०) अवहेलना किया हुआ। असम्मानित। बेइज्जत।

अवमूर्धन् (वि०) सिर झुकाये हुए।—शय, (वि०) औंधा मुँह कर लेटा हुआ।
अवमोचनम् (न०) मुक्तकरण। रिहा करने की क्रिया। स्वतंत्र करने की क्रिया। छोड़ देने की क्रिया। ढीला कर देने की क्रिया।
अवयवः (पु०) १ शरीर का एक अंग। २ अंश। भाग। हिस्सा। ३ न्यायशास्त्रानुसार वाक्य का एक अंश। ऐसे अंश पांच माने गये हैं [यथा १ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ उदाहरण, ४ उपनय और ५ निगमन।] ४ शरीर। ५ उपादानीभूत।
अवयवशः (वि०) (अव्यया०) हिस्सा हिस्सा कर के अलग अलग। टुकड़ा टुकड़ा। [वाला।
अवयविन् (वि०) अवयव वाला। अंगों या भागों
अवयवी (वि०) १ सम्पूर्ण। समष्टि। समूचा। अंगी। जिसके और बहुत से अवयव हों।
अवर (वि०) १ (अवस्था या उम्र में) छोटा। (समय में) पिछला, बाद का। पिछाड़ी का। २ एक के बाद दूसरा। ३ नीचे। अपेक्षाकृत निचला। अपकृष्ट। हीन। ४ तुच्छ। गयाबीता। अधमाधम। ५ (प्रथम का उल्टा) अन्तिम। ६ सब से कम (परिमाण में)। ७ पाश्चात्य। —अर्धः, (पु०) १ कम से कम भाग। कम से कम। २ दो समान भागों में से पिछला आधा भाग। ३ शरीर का पिछला भाग।—अवर, (वि०) सब से नीच। सब से अपकृष्ट।—उक्त, (वि०) अन्तिमवर्णित।—ज, (वि०) (उम्र में) अपेक्षाकृत छोटा।—जः, (पु०) छोटा भाई।—जा, (स्त्री०) छोटी बहिन।—वर्ण, (वि०) हीन जाति वाला।—वर्णः, (पु०) १ शूद्र। २ चतुर्थ या अन्तिम वर्ण।—वर्णकः,—वर्णजः, (पु०) शूद्र।—व्रतः, (पु०) सूर्य। —शैलः, (पु०) पश्चिम का पहाड़ जिसके पीछे सूर्य अस्त होता है। अस्ताचल।
अवरम् (न०) हाथी की जांघ का पिछला भाग।
अवरतः (अव्यया०) पीछे। पीछे की ओर। पीछे का। पिछला। [विश्राम।
अवरतिः (स्त्री०) १ विराम। समाप्ति। २ आराम।

अवरीण (वि०) गिरा हुआ। अधः पतित। घृणित। निन्द्य। [बीमार।

अवरुग्ण (वि०) १ टूटा हुआ। फटा हुआ। २ रोगी।

अवरुद्धिः (स्त्री०) १ रोक। थाम। रुकावट। २ घिराउ। ३ उपलब्धि। प्राप्ति

अवरूप (वि०) बदशक्ल। बदसूरत। कुरूप।

अवरोचकः (पु०) भूख का नाश।

अवरोधः (पु०) १ रुकावट। २ समय। ३ अन्तःपुर। हरम। ज़नानखाना। ४ समष्टिरूप से किसी राजा की रानियाँ। यथा—

" अवरोधे महत्यपि "

रामायण।

५ घेरा। हाता। बंदीगृह। ६ छेक। मुहासिरा। ७ ढकोना। ८ कटहरा। ९ लेखनी। कलम। १० चौकीदार। ११ खुखला। गह्वर।

अवरोधक (वि०) रोकने वाला। घेरा डालने वाला।

अवरोधकः (पु०) पहरेवाला। रक्षक।

अवरोधकम् (न०) प्रतिबन्धक। घेरा। हाता।

अवरोधनम् (न०) १ छेक। मुहासिरा। २ रुकावट। ३ अड़चन। रोक। ४ अन्तःपुर। ज़नानखाना।

अवरोधिक (वि०) रुकावट डालने वाला।

अवरोधिकः (पु०) ज़नानी ड्योढ़ी का दरवान।

अवरोधिका (स्त्री०) अन्तःपुरवासिनी महिला।

अवरोधिन् (वि०) १ अड़चन डालने वाला। रुकावट डालने वाला। २ घेरा डालने वाला।

अवरोपणं (न०) उखाड़ डालने की क्रिया। २ नीचे उतारने की क्रिया। ३ ले जाने की क्रिया। वञ्चित करने की क्रिया। घटाना।

अवरोहः (पु०) उतार। ढाल। २ बेल जो वृक्ष की जड़ से फुनगी तक लिपटी होती है। ३ स्वर्ग। आकाश। ४ वट की डाली।

अवरोहणम् (न०) १ उतार। गिराव। पतन। २ चढ़ाव।

अवर्ण (वि०) १ रंग रहित। २ बुरा। कमीना।

अवर्णः (पु०) १ बदनामी। कलङ्क। धब्बा। आरोप। इलज़ाम। धिक्कार।

अवलक्ष (वि०) सफेद। उज्ज्वल। इसी अर्थ में "धलक्ष" भी आता है।

अवलक्षः (पु०) सफेद रंग।

अवलग्न (त्रि०) चिपटा हुआ। सटा हुआ। छूता हुआ।

अवलग्नः (पु०) कमर। कटि। देह का मध्यभाग।

अवलम्ब (वि०) १ नीचे को लटकता हुआ। २ आश्रित। ३ आश्रय। शरण। ४ थुनकिया सहारा देने वाली लकड़ी।

अवलम्बनम् (न०) १ थुनकिया। सहारा। २ सहायता। मदद। [हुआ। सना हुआ।

अवलिप्त (व० कृ) १ अभिमानी। क्रोधी। २ पोता

अवलीढ (व० कृ०) १ खाया हुआ। चबाया हुआ। २ चाटा हुआ। छुआ हुआ ३ भक्षित। नष्ट किया हुआ।

अवलीला (स्त्री०) १ खेलकूद। हर्ष। २ अवमानना। अवहेला। तिरस्कार। (वि०) अनायास। आसानी।

अवलुंचनम् } अवलुञ्चनम् } (न०) १ काट डालने की क्रिया। उखाड़ डालने की क्रिया। नोंच डालने की क्रिया। २ जड़ से उखाड़ डालने की क्रिया।

अवलुंठनम् } अवलुण्ठनम् } (न०) १ ज़मीन पर लुढ़कना या लोटने की क्रिया। २ लूट।

अवलेखः (पु०) १ तोड़न। २ खरोंचन। छीलन।

अवलेखा (स्त्री०) १ रगड़न। २ किसी व्यक्ति को सुसज्जित करने की क्रिया।

अवलेपः (पु०) १ अभिमान। क्रोध। २ जबरदस्ती। बरजोरी आक्रमण। अपमान। ३ पोतने की क्रिया। ४ आभूषण। ५ ऐक्य। सङ्ग।

अवलेपनम् (न०) १ पोतने की क्रिया। सानना। २ तैल। तेल। उबटन। ३ ऐक्य। मेल। ४ अभिमान।

अवलेहः (पु०) चाटने की क्रिया। २ (सोम जैसा) अर्क। चटनी। माजून।

अवलोकः (पु०) १ देखन। २ नज़र। दृष्टि।

अवलोकनम् (न०) १ देखने की क्रिया। देखभाल। २ जाँच पड़ताल। निरीक्षण। ३ दृष्टि। नेत्र। ४ चितवन। छटा।

अवलोकित (व० कृ०) देखा हुआ।

अवलोकितम् (न०) दृष्टि। चितवन। छटा।

अववरकः (पु०) १ छिद्र। रन्ध्र। २ खिड़की।

अववादः (पु०) १ भर्त्सना । २ विश्वास । भरोसा । ३ अवहेलना । अपमान । ४ समर्थन । बचाव । ५ बदनामी । ६ आज्ञा ।

अवव्रश्चः (पु०) खपाची । चिपटी । किरच ।

अवश (वि०) १ स्वतंत्र । मुक्त । २ जो पालतू न हो । अवज्ञाकारी । नाफ़रमाबरदार । मनमुखी । स्वेच्छाचारी । ३ जो किसी का वशवर्ती न हो । ४ असंयमी । इन्द्रियदास । ५ परतंत्र । शक्तिहीन । बापुरा । [स्वेच्छाचारी ।

अवशंगमः (पु०) जो दूसरे के कहने में न हो ।

अवशातनम् (न०) नाशकरण । काट गिराने की क्रिया । २ मुरझाने की क्रिया । सूख जाने की क्रिया ।

अवशेषः (पु०) १ बचा हुआ । शेष । बाक़ी । २ समाप्त ।

अवश्य (वि०) १ जो वश में होने योग्य न हो । अशासनीय । २ अवश्यम्भावी । ३ अनिवार्य । आवश्यक । —पुत्रः (पु०) ऐसा पुत्र जिसको पढ़ाना या अपने वश में रखना सम्भव न हो ।

अवश्यं (अव्यया०) सर्वथा । ज़रूर । निस्सन्देह । निश्चय कर के । —भाविन् (वि०) ज़रूर होने वाला । जो टल न सके ।

अवश्यक (वि०) आवश्यक । अनिवार्य । [तुषार ।

अवश्या (स्त्री०) कोहर । पाला । ओस । हिम ।

अवश्यायः (पु०) १ कोहारा । ओस । पाला । हिम तुषार । २ अभिमान । घमंड ।

अवश्रयणम् (न०) किसी भी वस्तु को आग से निकालने की क्रिया ।

अवष्टब्ध (व० कृ०) अवलम्बित । पकड़ा हुआ । घिरा हुआ । २ ऊपर लटकता हुआ । ३ समीप । निकट । पास । ४ रुका हुआ । झुका हुआ । ५ बंधा हुआ । गसा हुआ ।

अवष्टम्भः (पु०) झुकने की क्रिया । सहारा लेने की क्रिया । २ सहारा । ३ क्रोध । घमंड । ४ खंभा । ५ सुवर्ण । ६ आरम्भ । प्रारम्भ । ७ ठहरने की क्रिया । रुकजाने की क्रिया । ८ साहस । दृढ़ सङ्कल्प । ९ लकवा । मूर्च्छा । अचेतना ।

अवष्टम्भनम् (न०) १ सहारा लेने की क्रिया । २ सहारा देने की क्रिया । ३ खंभा ।

अवष्टम्भमय (वि०) [स्त्री०—अवष्टम्भमयी] सुनहली । सुनहला । सोने का बना अथवा खंभे के बराबर लंबा । [२ संग । संस्पर्शित ।

अवसक्त (व० कृ०) १ लटकता हुआ । स्थापित ।

अवसक्थिका (स्त्री०) १ अरदावन । अदवाइन । २ पिंडुरियों और घुटनों में बांधने की पट्टी । ३ पट्टी ।

अवसंडीनं } (न०) पक्षियों का गिरोह बाँध कर
अवसण्डीनम् } ऊपर से एक साथ नीचे की ओर उड़ते हुए आना ।

अवसथः (पु०) १ बासा । डेरा । आबादी । २ गाँव । ३ पाठशाला । विद्यालय ।

अवसथ्यः (पु०) विद्यालय । पाठशाला ।

अवसन्न (व० कृ०) १ निमज्जित । अवनत । २ समाप्त । ३ रहित । खोया हुआ ।

अवसरः (पु०) १ मौक़ा । समय । २ अवकाश । फ़ुरसत । ३ वर्ष । ४ वृष्टि । ५ उतार । ६ निजीरूप से परामर्श लेने की क्रिया ।

अवसर्गः (पु०) १ ढीलापन । छुड़ाव । २ स्वेच्छानुसार कार्य करने की अनुमति देने की क्रिया । ३ स्वतंत्रता ।

अवसर्पः (पु०) जासूस । भेदिया । एलची । राजप्रतिनिधि ।

अवसर्पणं (न०) नीचे उतारने की क्रिया । अधोगमन ।

अवसादः (पु०) १ निमज्जन । मूर्च्छा । बैठना । २ नाश । हानि । ३ समाप्ति । ४ थकावट । ५ हार ।

अवसादक (वि०) मूर्च्छित करने वाला । असफल करने वाला । उदास करने वाला । थकाने वाला ।

अवसादनम् (न०) १ अवनति । हानि । २ अत्याचार । ३ समाप्ति ।

अवसानम् (न०) १ रुकावट । २ समाप्ति । उपसहार । ३ मृत्यु । रोग । ४ सीमा । हद । ५ विराम । ठहराव । ६ स्थान । विश्रामस्थान । आवासस्थान ।

अवसायः (पु०) १ अन्त । समाप्ति । २ अवशिष्ट । ३ सम्पूर्णता । ४ सङ्कल्प । निर्णय ।

अवसित (व० कृ०) १ समाप्त । पूर्ण । २ ज्ञात । जाना हुआ । समझा हुआ । ३ निश्चित किया

हुआ। दर्पोक्त किया हुआ। ४ एकत्र किया हुआ। जमा किया हुआ। ५ नत्थी किया हुआ। बधा हुआ।

अवसेकः (पु०) छिड़काव। सिंचन।

अवसेचनम् (न०) १ सींचने की क्रिया। पानी देने की क्रिया। २ रोगी के शरीर से पसीना निकालने की क्रिया। ३ रक्त निकालने की क्रिया।

अवस्कन्दः (पु०) } १ आक्रमण। हमला। २
अवस्कन्दनम् (न०) } ऊपर से नीचे उतरने की क्रिया। ३ शिविर। छावनी।

अवस्कन्दिन् (वि०) आक्रमण करते हुए। बलात्कार करते हुए।

अवस्करः (पु०) १ विष्ठा। २ गुह्याङ्ग (यथा लिङ्ग गुदा, योनि) ३ बुहारन। बटोरन।

अवस्तरणम् (न०) बिछौना।

अवस्तात् (अव्यया०) १ नीचे। नीचे से। नीचे की ओर। २ तले।

अवस्तारः (पु०) १ पर्दा। २ कनात। ३ चटाई।

अवस्तु (न०) १ तुच्छ वस्तु। २ असलियत नहीं। अवास्तवता।

अवस्था (स्त्री०) १ दशा। हालत। अवस्थिति। समय। काल। २ स्थिति। ३ आयु। उम्र। —चतुष्टयम्, (न०) मनुष्य जीवन की दशायें—[यथा—१ बाल्य, २ कौमार, ३ यौवन, ४ वार्धक्य।]—त्रयं, (न०) वेदान्तदर्शन के अनुसार मनुष्य की तीन दशाएं [यथा—१ जागृत, २ स्वप्न, ३ सुषुप्ति।]—द्वयं, (न०) जीवन की दो दशाएँ (यथा—सुख और दुःख)

अवस्थानं (न०) १ स्थिति। रहाइस। २ स्थान। ३ आवसस्थल। बसने का स्थान ४ ठहरने की अवधि।

अवस्थायिन् (वि०) ठहरने वाला। बसने वाला। रहने वाला।

अवस्थित (व० कृ०) १ रहा हुआ। ठहरा हुआ। २ दृढ। ३ अवलम्बित। टिका हुआ।

अवस्थिति (स्त्री०) १ वर्तमानता। रहाइस। २ डेरा। वासा।

अवस्यन्दनम् (न०) शरण। चूने की क्रिया। गिरने की क्रिया।

अवस्रंसनम् (न०) नीचे गिरने की क्रिया। पात। पतन।

अवहतिः (स्त्री०) कूटना। कुचरना।

अवहननम् (न०) १ छिलका निकालने को धानों का कूटने की क्रिया। २ फैफड़े।

"वधा वधाव हननम्"।—याज्ञवल्क्य।

"अवहननम् = फुप्फुसः—मिताक्षरा।

अवहरणम् (न०) १ हरण करण। स्थानान्तरित करण। २ फैंक देने की क्रिया। ३ चोरी। लूट। ४ सपुर्दगी। ५ कुछ काल के लिये युद्ध कार्य बंद कर देने की क्रिया। अस्थायी सन्धि।

अवहस्तः (पु०) हाथ की पीठ।

अवहानिः (स्त्री०) हानि। घाटा। नुकसान।

अवहारः (पु०) १ चोर। २ शार्क मछली। ३ अस्थायी सन्धि। ४ आमंत्रण। समन। बुलावा। ५ स्वधर्मत्याग। ६ फिर मोल ले लेने की क्रिया।

अवहारकः (पु०) शार्क मच्छली।

अवहार्य (स० का० कृ०) १ ले जाने को। स्थानान्तरित किये जाने को। २ अर्थदण्डनीय। दण्डनीय। ३ फिर मोल लेने योग्य।

अवहालिका (स्त्री०) दीवाल।

अवहासः (पु०) १ मुसक्यान। २ हँसी दिल्लगी। उपहास।

अवहित्था, अवहित्था (स्त्री०) } मानसिक भाव का
अवहित्थं, अवहित्थम् (न०) } दुराव। इसकी गणना "संचारी" या व्यभिचारी भाव में है। आकारगुप्ति।

अवहेलः (पु०) } अवज्ञा। अपमान। तिर-
अवहेला (स्त्री०) } स्कार।

अवहेलनं (न०) } अवज्ञा। अपमान। तिर-
अवहेलना (स्त्री०) } स्कार।

अवाक् (अव्यया०) १ नीचे की ओर। २ दक्षिणी। दक्षिण की ओर।—ज्ञानं, (न०) अपमान।—भव, (वि०) दक्षिणी।—मुख, (वि०) [स्त्री०—मुखी] नीचे की ओर देखते हुए। २ सिर के बल।—शिरस्, (वि०) नीचे की ओर सिर लटकाये हुए।

अवाक्त (वि०) अभिभावक। रखवाला।

अवाग्र (वि०) झुका हुआ। प्रणाम करता हुआ।

अवाच् (वि०) गूंगा । मूक । (न०) ब्रह्म ।

अवांच / अवाञ्च् } (वि०) १ नीचे की ओर झुका हुआ । २ अपेक्षाकृत नीचा । ३ सिर के बल । ४ दक्षिणी । (पु० और न०) ब्रह्म ।

अवाची १ दक्षिण । २ नीचे का लोक ।

अवाचीन (वि०) १ नीचे की ओर । सिर के बल । २ दक्षिणी । ३ उतरा हुआ ।

अवाच्य (वि०) १ जो कहने योग्य न हो । २ बुरा । ३ ठीक ठीक या स्पष्ट न कहा हुआ । जो शब्दों द्वारा प्रकट न किया जा सके ।—देशः, (पु०) भग । योनि ।

अवांचित / अवाञ्चित } (वि०) झुका हुआ । नीचा ।

अवानः (पु०) स्वास प्रश्वास ।

अवांतर / अवान्तर } (वि०) १ मध्यवर्त्ती । २ अन्तर्गत । शामिल । ३ गौण । ४ फालतू ।

अवाप्तिः (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि ।

अवाप्य (स० का० कृ०) प्राप्त करने योग्य ।

अवारः (पु०) / अवारं (न०) } १ समीप का नदीतट । निकटवर्ती नदीतट । २ उस ओर ।—पारः, (पु०) समुद्र ।—पारीण, (वि०) १ समुद्र का या समुद्र से सम्बन्ध रखने वाला । २ नदी पार करने वाला ।

अवारीण (वि०) नदी पार करने वाला ।

अवावटः (पु०) उस स्त्री का पुत्र जो उस स्त्री की जाति के किसी पुरुष के (पति को छोड़) वीर्य से उत्पन्न हुआ हो ।

द्वितीयेन तु यः पित्रा सवर्णायां प्रजायते ।
"अवावट" इति ख्यातः शूद्रधर्मा स जातितः ॥

अवावन् (पु०) चोर । चुराकर ले जाने वाला ।

अवासस् (वि०) नंगा । जो कपड़े पहिने हुए न हो । (पु०) बुद्धदेव का नाम ।

अवास्तव (वि०) [स्त्री०—अवास्तवी] १ जो असली न हो । २ निराधार । अयौक्तिक ।

अविः(स्त्री०) १ भेड़ । (पु०) २ सूर्य । ३ पर्वत ४ पवन । वायु । ५ ऊनी कंबल । शाल । ६ दीवाल ' छार दीवाली । ७ चूहा । (स्त्री०) १ भेड़ । २ रजस्वलास्त्री ।—कटः, (पु०) भेड़ों का गिरोह ।—कटोरणः, (पु०) एक प्रकार का राजकर जिसमें भेड़ें दी जाती हैं ।—दुग्धं,—दूसं,—मरीसं,—सोढुं, (न०) भेड़ी का दूध ।—पटः, (पु०) भेड़ी का चाम । ऊनी वस्तु ।—पाद्ः, (पु०) गड़रिया ।—स्थलं, (न०) भेड़ों की जगह । एक नगर का नाम ।

"अविस्थलं" वृकस्थलं माकन्दी वारणावतम्"

—महाभारत ।

अविकः (पु०) भेड़ ।

अविका (स्त्री०) भेड़ी ।

अविकम् (न०) हीरा ।

अविला (स्त्री) भेड़ । भेड़ी ।

अविकत्थ (वि०) जो शेखी न मारता हो, जो अभिमान न करता हो । जो अकड़ता न हो । [न हो ।

अविकत्थनम् (वि०) जो घमंडी न हो, जो अकड़बाज़

अविकल (वि०) १ समूचा । सम्पूर्ण । पूरा । तमाम । सब । ज्यों का त्यों । २ नियमित । क्रम से । गड़बड़ नहीं ।

अविकल्प (वि०) अपरिवर्तनशील ।

अविकल्पः (पु०) १ सन्देह का अभाव । २ निश्चयात्मक निर्देश या आज्ञा ।

अविकल्पम् (अव्यया०) निस्सन्देह । निस्सङ्कोच ।

अविकार (वि०) जिसमें विकार न हो । जो अपरिवर्तनशील हो ।

अविकारः (पु०) अपरिवर्तनशीलता ।

अविकृतिः (स्त्री०) परिवर्तन का अभाव । विकार का अभाव । २ (सांख्य दर्शन में) प्रकृति जो इस संसार का कारण मानी जाती है ।

अविक्रम (वि०) शक्तिहीन । निर्बल ।

अविक्रमः (पु०) भीरुता । डरपोंकपना । कातरता ।

अविक्रिय (वि०) अपरिवर्तनशील ।

अविक्रियम् (न०) ब्रह्म । [सम्पूर्ण ।

अविक्षत (वि०) जो कम नहीं हुआ । समूचा ।

अविग्रह (वि०) शरीर रहित । अदैहिक । अशरीरी । ब्रह्म की उपाधि ।

अविग्रहः (पु०) (व्याकरण का) नित्य समास ।

अविघात (वि०) बेरोक टोक । बिना अड़चन का ।

अविघ्न (वि०) बिना विघ्नबाधा का ।

अविघ्नम् (न०) विघ्नबाधा से रहित या वञ्चित। (यह शब्द नपुंसक है, हालाँ कि 'विघ्न' पुल्लिङ्ग है)

"साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते"

—रघुवंश।

अविघ्नमस्तु ते स्थेयाः पितेव धुरि पुत्रिणां।

—रघुवंश।

अविचार (वि०) विचार शून्यता। कुविचार।

अविचारः (पु०) निर्णय का अभाव। अविवेक।

अविचारित (वि०) विना विचारा हुआ। जिसके विषय में विचारा न गया हो।—निर्णय. (पु०) पक्षपात। पक्षपातपूर्ण सम्मति।

अविचारिन् (वि०) १ लापरवाह। असावधान। अविवेकी। २ फुर्त्तीला।

अविज्ञातृ (वि०) अनजानते हुए।

अविज्ञातृता (पु०) परमेश्वर।

अविडीन (वि०) पक्षियों का सीधा उड़ान।

अवितथ (वि०) १ झूठा नहीं। सच्चा। २ कार्य में परिणत किया हुआ। फलरहित नहीं।

अवितथं (न०) सत्य। [अनुसार।

अवितथ (अव्यया०) झुठाई से नहीं। सचाई के

अवित्यजः (पु०)
अवित्यजम् (न०) } पारा। पारद।

अविदूर (वि०) दूर नहीं। समीप। निकट। पास।

अविदूरं (न०) निकटता। सामीप्य। (अव्यया०) (किसी स्थान से) दूर नहीं। (किसी स्थान के) निकट।

अविद्य (वि०) अशिक्षित। अपढ़। मूर्ख।

अविद्या (स्त्री०) १ अज्ञानता। मूर्खता। शिक्षा का अभाव। २ आध्यात्मिक अज्ञान। ३ माया।—मय, (वि०) अज्ञान से उत्पन्न। माया से उत्पन्न।

अविधवा (स्त्री०) जो विधवा न हो। विवाहिता। स्त्री जिसका पति जीवित हो।

अविधा (अव्यया०) सम्बोधनात्मक होने पर "सहायता करो, सहायता करो" कहने के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

अविधेय (वि०) जो अपने मान का या काबू का न हो। न करने योग्य। प्रतिकूल।

अविनय (वि०) धृष्ट। ढीठ। उद्दण्ड।

अविनयः (पु०) १ विनय का अभाव। धृष्टता। ढिठाई। उद्दण्डता। २ अपराध। जुर्म। दोष। ३ अभिमान। अकड़।

अविनाभावः (पु०) १ अवियोग। अविछोह। २ ऐसा सम्बन्ध जो कभी छूट न सके। ३ सम्बन्ध।

अविनीत (वि०) १ दुर्दान्त। सरकश। २ उद्दण्ड। गँवार। [अभङ्ग। समूचा।

अविभक्त (वि०) १ अविभाजित। सम्मिलित। २

अविभाग (वि०) जो बँटा हुआ न हो। अविभक्त।

अविभागः (पु०) जो बट न सके। २ ऐसी पुश्तैनी सम्पत्ति जो बँट न सके।

अविभाज्य (वि०) जो बँट न सके।

अविभाज्यं (न०) वे चीज़ें जो बटवारे के समय बाँटी नहीं जाती। यथा

वस्त्रं पात्रमलङ्कारं कृतान्नमुदकं स्त्रियः।
योगक्षेमं प्रचारं च न विभाज्यं प्रचक्षते॥

मनु अ० ६ श्लो० २१६

अविरत (वि०) १ निरन्तर। विरामशून्य। २ अनिवृत्त। लगा हुआ। [अजितेन्द्रियत्व।

अविरति (वि०) निरन्तर। सतत। (स्त्री०) १ सातत्य। निरन्तरता। २ असंयतता।

अविरल (वि०) १ घना। सघन। अव्यवच्छिन्न। २ संसक्त। अव्यवहित। ३ स्थूल। मोटा। ऊबड़-खाबड़। सारवान। ४ निरन्तर।

अविरलं (अव्यया०) १ ध्यान से। निरन्तरता से।

अविरोधः (पु०) १ विरोध का अभाव। अनुकूलता। २ सुसङ्गति।

अविलम्ब (वि०) तुरन्त। फौरन। [फुर्त्ती।

अविलम्बः (पु०) विलम्ब का अभाव। शीघ्रता।

अविलम्बम् (न०) विना विलम्ब के। तुरतफुरत। (अव्यया०) शीघ्रता से।

अविलम्बित (वि०) विना विलम्ब के। शीघ्र। तुरन्त।

अविलम्बितम् (अव्यया०) शीघ्रता से।

अविला (स्त्री०) भेड़ी।

अविवक्षित (वि०) १ जिसके विषय में इच्छा न किया गया हो या जो अपना उद्दिष्ट न हो। २ जो बोलने या कहे जाने को न हो।

अविविक्त (वि०) जिसकी खोज न की गयी हो। जो भली भाँति विचारा न गया हो। अविचारित। विवेचनाशून्य। गड़बड़।

अविवेक (वि०) अविचारी। नादान। विचारहीन।

अविवेकः (पु०) १ विचार का अभाव। नादानी। अज्ञान। २ जल्दबाज़ी। उतावलापन।

अविशङ्क (वि०) निर्भय। निडर।

अविशङ्का (स्त्री०) भय का अभाव। सन्देह का अभाव। विश्वास। भरोसा।

अविशङ्कम् (न०) } बिना सन्देह या सङ्कोच
अविशङ्केन (अव्यया०) } के।

अविशङ्कित (वि०) १ निःशङ्क। निडर। बेखौफ। २ निस्सन्देह। निश्चय।

अविशेष (वि०) बिना किसी अन्तर या फ़र्क के। समान। बराबर। सदृश।

अविशेषः (पु०) } अन्तर या भेद का अभाव।
अविशेषं (न०) } समानता। सादृश्य।

अविशेषज्ञ (वि०) जो भेद या अन्तर न जानता हो।

अविष (वि०) जो ज़हरीला न हो। जो विष न हो।

अविषः (पु०) १ समुद्र। २ राजा।

अविषी (स्त्री०) १ नदी। २ पृथिवी। ३ स्वर्ग।

अविषय (वि०) १ अगोचर। २ अप्रतिपाद्य। अनिर्वचनीय। ३ विषयशून्य।

अविषयः (पु०) १ अनुपस्थिति। अविद्यमानता। २ परे। पहुँच के बाहिर।

अवी (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

अवीचि (वि०) लहरों से रहित।

अवीचिः (पु०) नरक विशेष।

अवीर (वि०) १ जो वीर न हो। कायर। डरपोंक। २ जिसके कोई पुत्र न हो।

अवीरा (स्त्री०) वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र ही हो और न पति ही हो।

अवृत्ति (वि०) १ जिसका अस्तित्व न हो। जो हो ही न। जिसकी कोई जीविका न हो।

अवृत्तिः (स्त्री०) १ वृत्ति का अभाव। जीविका का कोई वसीला न होना। २ मज़दूरी का अभाव।

अवृथा (अव्यया०) जो वृथा न हो। सफलतापूर्वक। —अर्थ (वि०) सफल।

अवृष्टि (वि०) सूखा।

अवृष्टिः (स्त्री०) मेह का अभाव। अनावृष्टि। सूखा। अकाल।

अवेक्षक (वि०) निरीक्षक। दरोगा। इंस्पेक्टर।

अवेक्षणं (न०) १ किसी ओर देखना। २ पहरा देना। रखवाली करना। निरीक्षण। ३ ध्यान। ख़बरदारी।

अवेक्षणीय (स० का० कृ०) १ देखने योग्य। निरीक्षण के योग्य। २ जाँच के योग्य। परीक्षा के योग्य। [विचार।

अवेक्षा (स्त्री०) १ देखना २ ध्यान। ख़बरदारी।

अवेद्य (वि०) १ जो जानने योग्य नहीं। गोप्य। २ जो प्राप्त न हो सके।

अवेद्यः (पु०) बछड़ा। [२ कुसमय का।

अवेल (वि०) १ असीम। जिसकी सीमा न हो।

अवेलः (पु०) ज्ञान का दुराव।

अवेला (स्त्री०) प्रतिकूल समय।

अवैध (वि०) [स्त्री० —अवैधी] १ अनियमित। नियम या आईन के विरुद्ध। २ शास्त्रविरुद्ध।

अवैमत्यम् (न०) ऐक्य। एकता।

अवोक्षणम् (न०) हाथ टेढ़ा कर पानी छिड़कना।
उत्तानेनैव हस्तेन प्रोक्षणं परिकीर्तितम्।
न्यञ्चताभ्युक्षणं प्रोक्तं तिरश्चावोक्षणं स्मृतम्॥"

अवोदः (पु०) छिड़काव। नम करने की क्रिया।

अव्यक्त (वि०) १ अस्पष्ट। जो प्रत्यक्ष न हो। अगोचर। अज्ञेय। ३ अचिन्त्य। ४ अज्ञात। अनुत्पन्न। ५ (बीजगणित में) अनवगत राशि। —क्रिया (स्त्री०) बीजगणित की एक क्रिया। —पद (वि०) वह पद जो ताल्वादि प्रयत्नों से न बोला जा सके। जैसे जीव जन्तुओं की बोली।—राग, (वि०) लाल रंग। -रागः, (पु०) अरुण रंग।—राशिः, (बीजगणित में) अनवगत राशि।—व्यक्तः, (पु०) शिव जी की उपाधि।

अव्यक्तः (पु०) १ विष्णु का नाम। २ शिव का नाम। ३ कामदेव। ४ प्रधान। प्रकृति। ५ मूर्ख।

अव्यक्तम् (न०) (वेदान्त दर्शन में) १ ब्रह्म । २ आध्यात्मिक अज्ञानता । ३ (सांख्य) सर्व-कारण । ४ जीव । (अव्यया०) अस्पष्टता से ।

अव्यग्र (वि०) १ दृढ़ । शान्त । २ जो किसी व्यापार में संलग्न न हो ।

अव्यंग, अव्यङ्ग (वि०) जिसमें कुछ त्रुटि या कमी न हो । भली भाँति निर्मित । दृढ़ । सम्पूर्ण ।

अव्यंजन, अव्यञ्जन (वि०) १ चिन्हरहित । अस्पष्ट ।

अव्यञ्जनः, अव्यंजन (पु०) ऐसा पशु जिसकी उम्र के विचार से सींग होने चाहिये, किन्तु सींग हों न ।

अव्यथ (वि०) पीड़ा से मुक्त ।

अव्यथः (पु०) सर्प । साँप ।

अव्यथिषः (पु०) १ सूर्य । २ समुद्र ।

अव्यथिषी (स्त्री०) १ पृथिवी । २ अर्धरात्रि । रात्रि ।

अव्यभिचारः, अव्यभीचारः (पु०) १ अविच्छेद । अविद्रोह । अपार्थक्य । २ वफादारी । निमक-हलाली ।

अव्यभिचारिन् (वि०) १ अनुकूल । २ सब प्रकार से सत्य । ३ धर्मात्मा । पवित्र । ४ स्थायी । ५ वफादार ।

अव्यय (वि०) १ अपरिवर्तनशील । जो कभी नष्ट न हो । सदा एक रस रहने वाला । २ जो व्यय न किया गया हो । ३ मितव्ययी । ४ ऐसे फल देने वाला जो कभी नष्ट न हो ।

अव्ययः (पु०) १ विष्णु का नाम । २ शिव का नाम ।

अव्ययम् (न०) १ ब्रह्म । २ व्याकरण का वह शब्द जिसका सब लिङ्गों, सब विभक्तियों और सब वचनों में समान रूप से प्रयोग हो ।

अव्ययात्मा (स्त्री०) जीव । आत्मा ।

अव्ययीभावः (पु०) १ समास विशेष । यह समास प्रायः पूर्वपदप्रधान होता है । यह या तो विशेषण या क्रियाविशेषण होता है । २ अनष्टता । अनाशता । ३ व्यय या खर्च का अभाव । (धनहीनता वश) [झूठ । प्रिय ।

अव्यलीक (वि०) १ झूठा नहीं । सच्चा । २ अनु

अव्यवधान (वि०) १ समीप का । पास का । सीधा । २ खुला हुआ । ३ वेढका हुआ । नंगा । ४ असावधान । अमनोयोगी ।

अव्यवधानम् (न०) असावधानता । अमनोयोगिता ।

अव्यवस्थ (वि०) १ जो (एक स्थान पर) नियत न हो । हिलने डुलने वाला । अनवस्थित । चञ्चल । अचिरस्थायी । २ अनियमित ।

अव्यवस्था (स्त्री०) १ अनियमितता । निर्धारित नियम के विरुद्ध आचरण । २ किसी धार्मिक विषय पर या दीवानी मामले में दी हुई अनुचित सम्मति ।

अव्यवस्थित (वि०) १ शास्त्र या पद्धति के विरुद्ध । २ चञ्चल । अस्थिर । ३ क्रम में नहीं । विधिपूर्वक नहीं ।

अव्यवहार्य (वि०) १ जो अपनी जाति वालों के साथ खाने पीने और उठने बैठने का अधिकारी न हो । जाति बहिष्कृत । २ जिस पर मुकद्दमा न चलाया जा सके ।

अव्यवहित (वि०) साथ । लगा हुआ ।

अव्याकृत (वि०) १ अप्रकट २ कारणरूप ।

अव्याकृतं (न०) १ वेदान्त में अप्रकट बीज रूप जगत्कारण अज्ञान । २ सांख्यदर्शन में प्रधान ।

अव्याजः (पु०), अव्याजम् (न०) १ ईमानदारी । २ सादगी ।

अव्यापक (वि०) जो व्यापी न हो । जो सब जगह न पाया जाय । १ अव्यधारणक्षम ।

अव्यापार (वि०) जिसका कोई व्यापार न हो । विना व्यवसाय धंधे का । वेकाम । निठाला ।

अव्यापारः (पु०) १ कार्य से निवृत्ति । २ ऐसा व्यापार जो न तो किया जाय और न समझ में आवे । ३ निज का धंधा नहीं ।

अव्याप्ति (स्त्री०) व्याप्ति का अभाव । २ नव्य न्याया-नुसार लक्ष्य पर लक्षण के न घटने का दोष ।
"लक्ष्यैकदेशे लक्षणस्यावर्तनमव्याप्तिः ।"

अव्याहत (वि०) १ वेरोकटोक का । अप्रतिरुद्ध । २ जो खण्डित न हो । सत्य ।

अव्युत्पन्न (वि०) १ अनभिज्ञ । अनाड़ी । अकुशल । २ व्याकरण के मतानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति अथवा सिद्धि न हो सके ।

अव्युत्पन्नः (पु०) व्याकरणज्ञानशून्य ।

अव्रत (वि०) जो निर्दिष्ट धर्म्मानुष्ठान व्रतोपवास न करता हो ।

अश् (धा० आत्म०) [अश्नुते, अशित-अष्ट] १ व्याप्त होना । घुसना । परिपूर्ण होना । २ पहुँचना । जाना या आना । ३ प्राप्त करना । पाना । हासिल करना । उपभोग करना । ४ अनुभव प्राप्त करना । ५ खाना ।

अशकुनः (पु०) } अपसगुन । बुरा शकुन।
अशकुनम् (न०) }

अशक्तिः (स्त्री०) १ कमज़ोरी । निर्बलता । असमर्थता । २ अयोग्यता । अपात्रता ।

अशक्य (वि०) असम्भव । असाध्य ।

अशंक, अशङ्क } (वि०) १ निडर । निर्भय । २ जिसको किसी प्रकार का सन्देह न हो ।
अशंकित, अशङ्कित }

अशनम् (न०) १ व्याप्ति । फैलाव । २ भोजन करने की क्रिया । खिलाना । ३ चखना । उपभोग करना । ४ भोजन ।

अशना (स्त्री०) भोजनेच्छा । भूख ।

अशनाया (स्त्री०) भूख ।

अशनायित } (वि०) भूखा ।
अशनायुक }

अशनिः (पु० स्त्री०) १ इन्द्र का वज्र । २ बिजली का कौंधा । ३ फैंक कर मारने का अस्त्र । भाला, बरछी आदि । ४ ऐसे अस्त्र की नोक । (पु०) १ इन्द्र । २ अग्नि । ३ बिजली से उत्पन्न अग्नि ।

अशब्दं (न०) १ ब्रह्म । २ (सांख्य में) प्रधान ।

अशरण (वि०) अनाथ । निराश्रय । बेपनाह ।

अशरीरः (पु०) १ परमात्मा । ब्रह्म । २ कामदेव । ३ संन्यासी ।

अशरीरिन् (वि०) अशरीरी । अलौकिक ।

अशास्त्र (वि०) १ धर्मशास्त्र के विरुद्ध । २ नास्तिक दर्शन वाला ।

अशास्त्रीय (वि०) शास्त्रविरुद्ध ।

अशित (व० कृ०) खाया हुआ । सन्तुष्ट । उपभुक्त ।

अशितंगवीन } १ पूर्व में मवेशियों या पशुओं द्वारा चरा हुआ । २ पशुओं के चरने का स्थान । चरागाह ।
अशितङ्गवीन }

अशित्रः (पु०) १ चोर । २ चाँवल की बलि ।

अशिरः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य । ३ हवा । ४ राक्षस ।

अशिरं (न०) हीरा । [धड़ । कबन्ध ।

अशिरस् (वि०) शिरहीन । (पु०) बेसिर का

अशिव (वि०) १ अमङ्गलक । अमङ्गलकारी । अशुभ । २ अभागा । बदकिस्मत ।

अशिवं (न०) १ अभाग्य । बदकिस्मती । २ उपद्रव ।

अशिष्ट (वि०) १ असाधु । दुःशील । अविनीत । उजड्ड । बेहूदा । २ शास्त्रअसम्मत । ३ किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में न पाया जाने वाला ।

अशीत (वि०) जो ठंडा न हो । गर्म । उष्ण ।—करः,—रश्मिः, (पु०) सूर्य ।

अशीतिः (स्त्री०) अस्सी । ८० ।

अशीर्षक (वि०) देखो अशिरस ।

अशुचि (वि०) १ जो साफ न हो । मैला । गंदा । अशुद्ध । मृतकसूतक । २ काला ।

अशुचिः (स्त्री०) १ अपवित्रता । सूतक । २ अधःपात ।

अशुद्ध (वि०) १ अपवित्र । ग़लत ।

अशुद्धि (वि०) १ अपवित्र । गंदा । २ दुष्ट ।

अशुद्धिः (स्त्री०) अपवित्रता । गंदगी ।

अशुभ (वि०) १ अमङ्गलकारी । अकल्याणकर । २ अपवित्र । गंदा । ३ अभागा । [विपत्ति ।

अशुभम् (न०) १ अमङ्गल । २ पाप । ३ अभाग्य ।

अशून्य (वि०) १ जो ख़ाली या रीता न हो । २ परिपूर्ण । पूर्ण किया हुआ ।

अशृत (वि०) बिना पकाया हुआ । कच्चा । अनपका ।

अशेष (वि०) जिसमें कुछ भी न बचे । पूर्ण । समूचा । समस्त । परिपूर्ण ।

अशेषं, }
अशेषेण, } (अव्यया०) सम्पूर्णतः ।
अशेषतः }

अशोक (वि०) शोक रहित ।—अरिः, (पु०) कदंब वृक्ष ।—अष्टमी, (स्त्री०) चैत्र की कृष्णा

अष्टमी ।—तरुः,—नग:, वृक्षः, (पु०) अशोक वृक्ष ।—त्रिरात्रः,—(पु०) त्रिरात्रम्, (न०) तीन रात व्यापी व्रत या उत्सव विशेष ।

अशोकः (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ विष्णु । ३ मौर्य राजवंश का एक प्रसिद्ध राजा ।

अशोकम् (न०) १ अशोक वृक्ष का फूल जो कामदेव के पांच सरों में से एक माना जाता है। २ पारा। पारद ।

अशोच्य (वि०) शोच करने या शोकान्वित होने के अयोग्य । जिसके लिये शोक करना उचित नहीं ।

अशौचं (न०) १ अपवित्रता । गंदगी । मैलापन । २ जनन या मरण का सूतक ।

अश्नया (स्त्री०) भूख । बुभुक्षा ।

अश्नीतपिबता (स्त्री०) न्योता जिसमें आमंत्रित जन खिलाये पिलाये जाते हैं ।

" अश्नीतपिबतीयन्ती प्रसुता शमरकर्मणि ।"

—भट्टीकाव्य ।

अश्मकः (बहुवचन) (पु०) १ दक्षिण के एक देश विशेष का नाम । २ उक्तदेशवासी ।

अश्मन् (पु०) १ पत्थर । २ चकमकपत्थर । ३ बादल । ४ कुलिश । वज्र ।—उत्थं, (न०) राल ।—कुट्ट —कुट्टक, (वि०) पत्थर पर फोड़ी हुई (कोई भी चीज़) ।—गर्भः, (पु०),—गर्भं, (न०)—गर्भजः, (पु०)—गर्भजं,—(न०) योनिः, (पु०) पन्ना ।—जः, (पु०)—जम्, (न०) १ गेरू । २ लोहा ।—जतु,—जतुकं, (न०) राल ।—जातिः, (पु०) पन्ना ।—दारणः, (पु०) हथौड़ा जिससे पत्थर तोड़े जाते हैं । —पुष्पं (न०) राल । —भाल (न०) पत्थर या लोहे का इमामदस्ता या खरल ।—सार, (वि०) पत्थर या लोहे की तरह ।—सारं, (न०)—सारः, (पु०) १ लोहा । २ पुखराज । नीलमणि ।

अश्मंतं } अश्मन्तम् } (न०) १ अलाउ । वह स्थान जहाँ आग जलाकर रखी जाय । २ खेत्र । मैदान । ३ मृत्यु ।

अश्मंतकः, अश्मन्तकः (पु०) } अश्मंतकम्, अश्मन्तकम् (न०) } अलाउ । अग्नि-कुण्ड । (पु०) एक पौधे का नाम जिसके रेशों से ब्राह्मणों का कटिसूत्र बनाया जाता है ।

अश्मरी (स्त्री०) पथरी का रोग ।

अश्रः (पु०) कौना ।

अश्रं (न०) आंसू । २ रक्त । –पः, (पु०) रक्तपायी । खून पीने वाला ।

अश्रवण (वि०) बहरा । जिसके कान न हों ।

अश्रवणः (पु०) सर्प । साँप ।

अश्राद्धभोजिन् (वि०) ऐसा ब्राह्मण जिसने श्राद्धान्न न खाने का व्रत धारण किया हो ।

अश्रान्त (वि०) १ जो थका हुआ न हो । अथक । २ लगातार । निरन्तर । (अव्यया०) लगातार रीत्या । निरन्तर रीत्या ।

अश्रिः } अश्री } (स्त्री०) १ कोना । कोण । २ किसी हथियार का वह किनारा जो पैना होता है । किसी भी वस्तु का पैना किनारा ।

अश्रीक } अश्रील } (वि०) १ जिसमें चमक या सौन्दर्य न हो । पीला । २ अभागा । जो समृद्धिशाली न हो ।

अश्रु (न०) आँसू ।—उपहत, (वि०) आँसूओं से भरा हुआ ।—कला, (स्त्री०) आँसू की बूंद ।—परिप्लुत, (वि०) आँसुओं से तर । आँसुओं से नहाया हुआ ।—पातः, (पु०) आँसूओं का बहना ।— लोचन, नेत्र, (वि०) आँखों में आँसू भरे हुए ।

अश्रुत (वि०) १ जो सुना न गया हो । जो सुनाई न पड़े । २ मूर्ख । अशिक्षित ।

अश्रौत (वि०) वेदविरुद्ध ।

अश्रेयस् (वि०) अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न हो । अपकृष्टतर । (न०) उपद्रव । दुःख ।

अश्लील (वि०) १ अप्रिय । कुरूप । २ गँवारू । फूहर । भद्दा । असभ्य । ३ कुवाच्य । [गलौज ।

अश्लीलम् (न०) फूहर बोलचाल । बुरी गाली

अश्लेषा (स्त्री०) १ नवाँ नक्षत्र । २ अनमिल । अनैक्य ।—जः,—भूः,—भवः, (पु०) केतुग्रह का नाम ।

अश्वः (पु०) १ घोड़ा । २ सात की संख्या । ३ मानवी जाति विशेष (जिसमें घोड़े जितना बल

होता है)।—अजनी, (स्त्री०) चाबुक। कोड़ा। —अधिक, (वि०) जो घुड़सवारों की सेना में हो। जिसके पास घोड़े अधिक हों —अध्यक्षः, (पु०) घुड़सवारों की सेना का कमाण्डर। —अनीकम्, (न०) घुड़सवारों की सेना। —अरिः, (पु०) भैंसा।—आयुर्वेदः, (पु०) सालहोत्र।—आरोहः (पु०) घुड़सवार। उरस, (वि०) घोड़े की तरह चौड़ी छाती वाला।—कर्णः,—कर्णकः (पु०) १ वृक्षविशेष। २ घोड़े का कान।—कुटी, (स्त्री०) अस्तबल। कुशल,—कोविद, (वि०) घोड़ों को वश में करने की कला में कुशल।—खरजः, (पु०) खच्चर।—खुरः, (पु०) घोड़े का खुर। गोष्ठं, (न०) अस्तबल।—घासः, (पु०) घोड़े का चारा। —चलनशाला, (स्त्री०) घोड़े घुमाने का स्थान। —चिकित्सकः,—वैद्यः, (पु०) सालहोत्री।—चिकित्सा, (स्त्री०) सालहोत्र।—जघनः, (पु०) पौराणिक अर्द्धघोटकाकृति अद्भुत मनुष्य।—नायः, (पु०) घोड़ों का समूह। घोड़ों को चराने वाला।—निबंधिकः, (पु०) साईस।—पालः, —पालकः,—रक्षः, (पु०) घोड़े का साईस।—बन्धः, (पु०) साईस।—भा, (स्त्री०) बिजुली —माहिषिका, (स्त्री०) घोड़े और भैंसे की स्वाभाविक शत्रुता।—मुख, (वि०) घोड़े जैसा मुख या सिर वाला।—मुखः, (पु०) किन्नर।—मुखी, (स्त्री०) किन्नरी।—मेधः, (पु०) यज्ञ विशेष जिसमें घोड़े का बलिदान किया जाता है।—मेधिक, —मेधीय, (वि०) अश्वमेध यज्ञ के योग्य या उससे सम्बन्ध रखने वाला।—युज, (वि०) (गाड़ी) जिसमें घोड़े जुते हों।—रणः (पु०) घोड़े का सवार या साईस।—रथा (स्त्री०) गन्धमादन पर्वत के निकट बहने वाली एक नदी का नाम।—रत्नं, (न०)—राजः, (पु०) सर्वोत्तम घोड़ा। घोड़ों का राजा।—लाला (स्त्री०) सर्प विशेष।—वक्त्रः, (पु०) किन्नर या गन्धर्व।—वडवं, (न०) तबेला। अस्तबल, जहाँ घोड़े घोड़ी रखी जाँय।—वहः, (पु०) घुड़सवार। —वारः,—वारकः, (पु०) चाबुकसवार। साईस।—वाहः,—वाहकः, (पु०) घुड़सवार। —विद्, (वि०) घोड़ों को पालने और उनको चाल आदि सिखाने की कला में कुशल। (पु०) १ घोड़ों का सौदागर। २ राजा नल की उपाधि। —वृषः, (पु०) बीज का घोड़ा। वह घोड़ा जो घोड़ियों को ग्याभन करता हो।—वैद्यः, (पु०) सालहोत्री।—शाला (स्त्री०) अस्तबल। तबेला। —शावः, (पु०) घोड़ी का बछेड़ा।—शास्त्रं (न०) सालहोत्र विद्या।—शृगालिका, (स्त्री०) स्यार और घोड़े की स्वाभाविक दुश्मनी।—सादः, —सादिन् (पु०) घुड़सवार। सैनिक घुड़सवार। —सारथ्यं (न०) रथवानी। सारथीपन।—स्थान, (वि०) अस्तबल में उत्पन्न —स्थानं, (न०) अस्तबल। तबेला।—हृदयं, (न०) १ घोड़े की इच्छा या इरादा। २ शहसवारी।

अश्वक (वि०) घोड़े की तरह।

अश्वकः (पु०) १ टट्टू। भाड़े का टट्टू। २ बुरा घोड़ा। ३ साधारणतः घोड़ा।

अश्वकिनी (स्त्री०) अश्विनी नक्षत्र।

अश्वतरः (पु०) [स्त्री०—अश्वतरी] खच्चर।

अश्वत्थः (पु०) पीपल का पेड़।

अश्वत्थामन् (पु०) यह द्रोण का पुत्र था। इसकी माता का नाम कृपी था। महाभारत के युद्ध में यह कौरवों की ओर से पाण्डवों से लड़ा था। यह सप्तचिरजिवियों में से एक है।

अश्वस्तन, अश्वस्तनिक (वि०) १ आने वाले कल का नहीं। आज का। २ एक दिन के व्यवहार के लिये अन्नादि संग्रह करने वाला।

अश्विक (वि०) घोड़ों से खींचा जाने वाला।

अश्विन् (पु०) चाबुक सवार —नौ, (द्विवचन) देवताओं के वैद्यों का नाम।

अश्विनी (स्त्री०) २७ नक्षत्रों में प्रथम। एक अप्सरा जो सूर्य की पत्नी मानी गयी है और जिसने घोड़ी बनकर सूर्य के साथ मैथुन करवाया था।—कुमारौ, —पुत्रौ,—सुतौ, (द्विवचन) सूर्यपत्नी अश्विनी के दो जुलहे पुत्र।

अश्वीय (वि०) घोड़ों का। घोड़ों से सम्बन्ध रखने वाला। घोड़ों के अनुकूल।

अश्वीयं (न०) घुड़सवारों का एक दस्ता।
अषडक्षीण (वि०) छः नेत्रों से न देखा हुआ। अर्थात् जिसे केवल दो पुरुषों ने जाना हो या जिस पर केवल दो पुरुषों ने विचार कर कुछ निश्चय किया हो।
अषडक्षीणम् (न०) गोप्य। गुप्त
अषाढः (पु०) अषाढ मास।
अष्टक (वि०) आठ भागों वाला। अठगुना।
अष्टकः (पु०) जिसने पाणिनी व्याकरण के आठ ग्रन्थ पढ़े हों।
अष्टकम् (न०) १ आठ भागों से बनी हुई समूची कोई वस्तु। २ पाणिनी के सूत्रों के आठ अध्याय। ३ ऋग्वेद का भाग विशेष। ४ किन्हीं आठ वस्तुओं का एक समुदाय। ५ आठ की संख्या।
अष्टका (स्त्री०) १ तीन दिवसों का समुदाय, ७मी, ८मी, ९मी। २ पौष, माघ और फागुन की कृष्णाष्टमी। ३ श्राद्ध जो उक्त तिथियों को किया जाता है।
अष्टाङ्गः (पु०) } चौपड़ की बिछात।
अष्टाङ्गम् (न०) }
अष्टन् (वि०) आठ संख्या।—अह,—अहन. (वि०) आठ दिन तक होने वाला।—कर्णः, (वि०) आठ कानों वाला। ब्रह्मा की उपाधि।—कर्मन्, (पु०)—गतिकः, (पु०) राजा जिसे ८ प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन करना पड़ता है वे आठ कर्म यह हैं :—

आदाने च विसर्गे च तथा प्रैषनिषेधयोः।
पञ्चमे चार्थवचने व्यवहारस्य चेक्षणे।
दण्डशुद्ध्योः सदा रक्तस्तेनाष्टगतिको नृपः॥

—कृत्वस् (अव्यया०) आठगुना।—कोणः, (पु०) आठ पहलू या आठकोना।—गुण, (वि०) आठगुना।—गुणम्, (न०) आठ प्रकार के गुण जो ब्राह्मण में होने चाहिये। वे आठगुण ये हैं :—

दया सर्वभूतेषु क्षान्तिः, अनसूया, शौच,
अनायास, मङ्गलम्, अकार्पण्यम्, अस्पृहा, चेति॥

—गौतम।

—चत्वारिंशत्, (स्त्री०) (=अष्टचत्वारिंशत्) ४८। अड़तालीस।—तय, (वि०) अठगुना।
—त्रिंशत्, (वि०) ३८। अड़तीस।—त्रिकं, (न०) २४ की संख्या।—दलं, (न०) आठदल का कमल।—दिश्, (स्त्री०) आठ दिशाएं।—दिक्पालाः, (पु०) आठों दिशाओं के अधिष्ठाता। आठ दिक्पाल ये हैं :—

इन्द्रो वह्निः पितृपतिः नैरृतो वरुणोमरुत्।
कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्॥

धातुः (पु०) सोना, चाँदी, तांबा, रांगा, सीसा, लोहा, यशद रस (पारा)।—पदः, (अष्टापदः) (पु०) १ मकड़ी। २ शरभ। ३ कील। कांटा। ४ कैलास पर्वत।—पदं, (—अष्टापदम्) (न०) १ सुवर्ण। २ वस्त्र विशेष।—मङ्गलः, (पु०) घोड़ा जिसका मुख, पूंछ, अयाल, छाती और खुर सफेद हों।—मङ्गलम् (न०) आठ माङ्गलिक द्रव्यों का समुदाय। वे आठ ये हैं :—

मृगराजो वृषो नागः कलशो व्यजनं तथा।
वैजयन्ती तथा भेरी दीप इत्यष्टमङ्गलम्।

स्थानान्तरे—

लोकेऽस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः।
हिरण्यं सर्पिरादित्य आपो राजा तथाष्टमः॥

—मूर्तिः, (पु०) शिवजी की उपाधि।—रत्नः, आठरत्न।—रसाः, (बहुव०) नाट्य शास्त्र के आठरस। यथा।

शृङ्गारहास्य करुणरौद्र वीर भयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥

—विध, (वि०) आठप्रकार।—विंशतिः, (स्त्री०, २८। अट्ठाइस।—श्रवणः,—श्रवस् (पु०) चारमुख और आठकानों वाले ब्रह्मा जी।
अष्टतय (वि०) आठ भाग या आठ अवयव वाला।
अष्टतयम् (न०) आठ का औसत।
अष्टधा (अव्यया०) आठ गुना। आठ बार। आठ प्रकार से। आठ भाग में।
अष्टम (वि०) आठवाँ।
अष्टम. (पु०) आठवाँ भाग
अष्टमी (स्त्री०) चान्द्रमास का आठवाँ दिवस। पक्ष की आठवीं तिथि।
अष्टमक (वि०) आठवाँ।

यौतमष्टमकं हरेत्। याज्ञवल्क्य॥

अष्टमिका (स्त्री०) चार तोले की तौल विशेष।

अष्टादशन् (वि०) अठारह।—**उपपुराणम्** (न०) अठारह उपपुराण जिनके नाम ये हैं —

आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परं।
तृतीयं नारदं प्रोक्तं कुमारेण तु भाषितम्।
चतुर्थं शिवधर्माख्यं साक्षान्नन्दीशभाषितम्।
दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं नारदोक्तमतः परम्।
कापिलं मानवं चैव तथैवोशनसेरितं।
ब्रह्माण्डं वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च।
माहेश्वरं तथा शाम्बं सौरं सर्वार्थसञ्चयम्।
पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवतद्वयं।
इदमष्टादशं प्रोक्तं पुराणं कौर्मसंज्ञितं।
चतुर्धा संस्थितं पुण्यं संहितानां प्रभेदतः।

—हेमाद्री

—**पुराणं**, (न०) १८ पुराण जिनके नाम ये हैं:— १ ब्राह्म, २ पाद्म, ३ विष्णु, ४ शिव, ५ भागवत, ६ नारदीय, ७ मार्कण्डेय, ८ अग्नि, ९ भविष्य, १० ब्रह्मवैवर्त ११ लिङ्ग १२ वराह, १३ स्कन्द, १४ वामन, १५ कौर्म, १६ मत्स्य, १७ गरुड। १८ ब्रह्माण्ड।—**विद्या**, (स्त्री०) १८ प्रकार की विद्याएं या कलाएं। यथा—

अंगानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति ते त्रयः
अर्थशास्त्रं चतुर्थं तु विद्या ह्यष्टादशैव तु।

अष्टिः (स्त्री०) १ खेल का पांसा। २ सोलह की संख्या। ३ बीज। ४ छिलका। छाल।

अष्टीला (स्त्री०) १ कोई गोल वस्तु। २ गोल पत्थर या स्फटिक। ३ छिलका। छाल। ४ बीज का अनाज।

अस् (धा० पर०) [अस्ति, आसीत, अस्तु, स्यात] होना, जिंदा रहना। (कोई बात का) पैदा होना। लेना। जाना।

असंयत (वि०) संयम रहित। क्रमशून्य। जो नियम [बद्ध न हो।

असंयमः (पु०) संयम का अभाव। रोक का न होना। यह इन्द्रियों के विषय में प्रयुक्त होता है।

असंशय (वि०) संशयरहित। निश्चित।

असंश्रव (वि०) जो सुनने के परे हो। जो सुनाई [न पड़े।

असंसृष्ट (वि०) जो मिश्रित न हो। जो संलग्न न हो। बटवारा होने के बाद फिर जो शामिलात में न रहे।

असंस्कृत (वि०) १ बिना सुधारा हुआ। अपरिमार्जित। २ जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

असंस्कृतः (पु०) व्याकरण के संस्कार से शून्य। अपशब्द। बिगड़ा हुआ शब्द।

असंस्तुत (वि०) १ अज्ञात। अपरिचित। २ असाधारण। विलक्षण।

असंस्थानं (न०) १ संयोग का अभाव। २ गड़बड़ी ३ अभाव। कमी।

असंस्थित (वि०) १ जो व्यवस्थित न हो। अनियमित। २ एकत्रित नहीं।

असंस्थितिः (स्त्री०) गड़बड़ी। बालमेल।

असंहत (वि०) जो जुड़ा न हो। जो मिला न हो। बिखरा हुआ।

असंहतः (पु०) सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष [या जीव।

असकृत् (अव्यया०) एक बार नहीं। बारंबार। अक्सर।—**समाधिः** बारंबार की समाधि या ध्यान।—**गर्भवासः** (पु०) बारंबार जन्म।

असक्त (वि०) १ जो किसी में सक्त न हो। २ फलाभिलाप से रहित। सांसारिक पदार्थों से विरक्त।

असक्तं (अव्यया०) १ किसी में विशेष अनुराग न रखते हुए। २ निरन्तर। सतत।

असक्थ (वि०) जिसके जंघा न हो।

असखिः (स्त्री०) शत्रु। विरोधी।

असगोत्र (वि०) जो एक गोत्र या कुल का न हो।

असंकुल } १ (वि०) जहाँ बहुत भीड़ भाड़ न हो।
असङ्कुल } २ खुला हुआ। साफ। चौड़ा (मार्ग)

असंकुलः }
असङ्कुलः } (पु०) चौड़ा मार्ग।

असंख्य (वि०) गणना के परे जिसकी गणना न हो सके। [संख्यावाला।

असंख्यात (वि०) अगणित। संख्यातीत। अनन्त

असंख्येय (वि०) अगणित। संख्यातीत।

असंख्येयः (पु०) शिव जी की उपाधि विशेष।

असंग } (वि०) १ अननुरक्त। सांसारिक या लौकिक
असङ्ग } बंधनों से मुक्त। २ अनवरुद्ध। जो मौथरा न

हो। ३ अनमिल। ४ एकान्त आक्रमण न किया हुआ।

असंग, असङ्गः } (पु०) १ वैराग्य। २ पुरुष या जीव।

असंगत, असङ्गत } (वि०) १ अयुक्त। सङ्गविवर्जित। २ अभावनीय। विषम। ३ गँवार। अशिष्ट।

असंगति, असङ्गति } (स्त्री०) १ सङ्गति विहीन। २ मेल का न होना। असबन्ध। बेसिलसिलापन। ३ अनुपयुक्तता। ४ एक काव्यालङ्कार। इसमें कार्य कारण के बीच देश काल सम्बन्धी अयथार्थता दिखलाई जाती है।

असंगम, असङ्गम } (वि०) जो मिला हुआ न हो।

असंगमः, असङ्गमः } (पु०) पार्थक्य। विछोह। अनैक्य। २ असलग्नता। अमेल।

असंगिन्, असङ्गिन् } (वि०) १ जो मिला हुआ न हो २ ससार से विरक्त।

असंज्ञ (वि०) संज्ञाहीन। मूर्च्छित।

असंज्ञा (स्त्री०) अनैक्य। विरोध। झगड़ा टंटा।

असत् (वि०) १ न होना या अस्तित्व का न होना। २ अनस्तित्व। अवास्तविकता। ३ बुरा। खराब। ४ दुष्ट। पापी। दूषित। ५ तिरोहित। ६ गलत। अनुचित। मिथ्या। झूठा। (न०) १ अनस्तित्व। असत्ता। २ मिथ्या। झूठ।

असती (स्त्री०) जो सती या पतिव्रता न हो।—अध्येतु (वि०) शाखारण्ड ब्राह्मण। जो अपने वेद की शाखा को छोड़ अन्य वेद की शाखा पढ़े।

> स्वशाखा यः परित्यज्य अन्यत्र कुरुते श्रमम्।
> शाखारण्डः स विज्ञेयो वर्जयेत्त क्रियासु च॥

—आगमः, (पु०) १ विरुद्ध मतावलम्बी। २ बेईमानी से (धन को) हथियाना। ३ बेईमानी।—आचार, (वि०) बुरे आचरण वाला। दुष्ट।—आचारः, (पु०) दुष्ट। पतित। कर्मन्, —क्रिया, (स्त्री०) १ बुरा काम। २ दुर्व्यवहार। —ग्रहः,—ग्राहः, (पु०) १ बुरी चालबाजी। २ बुरी राय। पक्षपात। ३ बच्चों जैसी अभिलाषा। —चेष्टितम्, (न०) हानि। चोट।—दृश, (वि०) बुरे नेत्रों वाला। बुरी दृष्टि वाला।—परिग्रहः, (पु०) बुरे मार्ग का ग्रहण।—प्रतिग्रहः, (पु०) कुदान। बुरा दान। जैसे तेल तिल आदि।—भावः (पु०) १ अविद्यमानता। असत्ता। २ दुष्ट सम्मति। दुष्ट स्वभाव। —वृत्तिः (स्त्री०) १ नीच कर्म या पेशा। २ दुष्टता।—संसर्गः (पु०) बुरी संगत।

असतायी (स्त्री०) दुष्टता।

असत्ता (स्त्री०) १ अनस्तित्व। २ असत्य। ३ दुष्टता। बुराई।

असत्त्व (वि०) शक्तिहीन। सत्ता रहित।

असत्त्वं (न०) १ अनवस्थान। २ अवास्तविकता। असत्य।

असत्य (वि०) १ झूठा। २ कल्पित। अवास्तविक। —सन्ध, (वि०) अपने वचन को पूरा न करने वाला। झूठा। दगाबाज़। धोखेबाज़।

असत्यः (पु०) मिथ्यावादी। झूठ बोलने वाला।

असत्यं (न०) झूठ। मिथ्या।

असदृश (वि० [स्त्री०—असदृशी] १ असमान। बेमेल। २ अयोग्य। अनुचित।

असद्यस् (अव्यया०) तुरन्त नहीं। देर करके। देरी से।

असन् (पु०) इन्द्र। (न०) रक्त। खून।

असन (वि०) फैंकते हुए। छुड़ाते हुए।

असन्दिग्ध (वि०) १ सन्देह रहित। निस्सन्देह। स्पष्ट। साफ। २ विश्वस्त।

असन्दिग्धम् (अव्यया०) निश्चय। निस्सन्देह।

असन्धि (वि०) १ जो मिले या जुड़े (शब्द) न हो। २ जो बन्धन में न हो। स्वतंत्र।

असंनद्ध (वि०) १ जो हथियारों से सुसज्जित न हो। २ पण्डितंमन्य।

असंनिकर्षः (पु०) १ दूरी। २ समझ के बाहिर।

असंनिवृत्ति (स्त्री०) न लौटाअल। न लौटने की क्रिया।

असपिण्ड (वि०) जो सपिण्ड न हो। जो अपने वंश या कुल का न हो। जो अपने हाथ का दिया पिंड पाने का अधिकारी न हो।

असभ्य (वि०) गँवार। उजड्ड। नाशाइस्ता।

असम (वि०) १ विषम। २ असमान। बेजोड़।

—सायकः (पु०) कामदेव की उपाधि । काम देव के पास पांच बाणों का होना माना गया है।
—लोचन, नयन,—नेत्र (वि०) १ विषम-संख्यक नेत्रों वाले । २ शिव जी की उपाधि ।

असमंजस } (वि०) १ अस्पष्ट । अबोधगम्य ।
असमञ्जस } २ अनुचित । असङ्गत । ३ वाहियात । मूर्खतापूर्ण ।

असमवायिन् (वि०) जो सम्बन्ध युक्त या परम्परागत न हो । आकस्मिक । पृथक् होने योग्य ।—कारणम्, (न०) न्याय दर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो गुण वा कर्म हो ।

असमस्त (वि०) १ असम्पूर्ण । थोड़ा सा । पूरा नहीं । २ (व्याकरण में) जो समासान्त न हो । ३ पृथक् । अलहदा । असम्बद्ध । [अधूरा ।

असमाप्त (वि०) जो समाप्त न हो । अपूर्ण ।

असमीक्ष्य (वि०) बिना विचारा हुआ ।—कारिन्, (वि०) बिना विचारे काम करने वाला ।

असम्पत्ति (वि०) ग़रीब । धनहीन ।

असम्पत्तिः (स्त्री०) १ धनहीनता । ग़रीबी । २ दुर्भाग्य । बदक़िस्मती । ३ असफलता । असम्पूर्णता ।

असम्पूर्ण (वि०) १ जो पूरा न हो । अधूरा । २ समूचा नहीं । ३ थोड़ा थोड़ा । कुछ कुछ ।

असम्बद्ध (वि०) १ जो परस्पर सम्बन्ध युक्त न हो । बेमेल । २ बेहूदा । वाहियात । जिसका कुछ अर्थ न हो । ३ अनुचित । ग़लत ।

असम्बन्ध (वि०) बेमेल । सम्बन्ध रहित ।

असम्बाध (वि०) १ जो सङ्कीर्ण न हो । प्रशस्त । चौड़ा । २ जो मनुष्यों की भीड़भाड़ से भरा न हो । एकान्त । ३ खुला हुआ । जहाँ हरेक की गम्य हो ।

असम्भव (वि०) जो सम्भव न हो । जो हो न सके । नामुमकिन ।

असम्भव्य } (वि०) १ नामुमकिन । अस-
असम्भाविन् } म्भव । २ अबोधगम्य ।

असम्भावना (स्त्री०) सम्भावना का अभाव । अभवितव्यता । अनहोनापन ।

असम्भृत (वि०) १ जो बनावटी उपायों से न लाया गया हो । जो बनावटी न हो । नैसर्गिक । अकृत्रिम । सहज । २ जो भली भाँति पाला पोसा न गया हो । [२ अनभिमत । विरुद्ध ।

असम्मत (वि) १ जो पसंद न हो । नापसंद ।

असम्मतः (पु०) वैरी । विरोधी । (चतुर्दापैरसम्मतान्)
—आदायिन्, (वि०) चोर ।

असम्मतिः (स्त्री०) १ सम्मति का अभाव । विरुद्ध मत या राय । २ नापसंदगी । अरुचि ।

असम्मोहः (पु०) १ मोह का या भ्रम का अभाव । २ दृढ़ता । शान्ति । चित्त की स्थिरता । ३ वास्तविक ज्ञान ।

असम्यञ्च् (वि०) [स्त्री०—असमीची] १ ख़राब । कुत्सित । अनुचित । अशुद्ध । २ असम्पूर्ण । अधूरा ।

असलम् (न०) १ लोहा । २ किसी अस्त्र को छोड़ते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र विशेष । ३ हथियार ।

असवर्ण (वि०) भिन्न जाति या वर्ण का ।

असह (वि०) असह्य । जो सहा न जाय । जो बरदाश्त न हो । [ईर्ष्यी ।

असहन (वि०) असहिष्णु । ईर्ष्यालु । डाही ।

असहनः (पु) शत्रु । बैरी ।

असहनम् (न०) असहनशीलता । असन्तोष ।

असहनीय }
असहितव्य } जो सहन न किया जा सके ।
असह्य }

असहाय (वि०) १ मित्रशून्य । एकान्ती । अकेला । २ बिना साथी संगी या सहायक का । [अगोचर ।

असाक्षात् (अव्यया०) जो नेत्रों के सामने न हो ।

असाक्षिक (वि०) [स्त्री०—असाक्षिकी] जिसका कोई गवाह न हो ।

असाक्षिन् (वि०) १ जो चश्मदीद गवाह न हो । २ जिसकी गवाही प्रमाण स्वरूप ग्रहण न की जाय । ३ जो किसी प्रामाणिक पत्र को प्रामाणित करने का अधिकारी न हो ।

असाधनीय } (वि०) १ जो साध्य न हो । जिस-
असाध्य } पर वश न चले । सिद्ध न होने योग्य । २ जो ठीक न हो ।

असाधारण (वि०) असामान्य । अपूर्व । विलक्षण ।
असाधारणः (पु०) न्याय में सपक्ष और विपक्ष ।
असाधु (वि०) १ जो साधु न हो । अप्रिय । २ दुष्ट । ३ असच्चरित्र । ४ अपभ्रंश । अशुद्ध ।
असामयिक (वि०) [स्त्री०—असामयिकी,] बे अवसर का । बिना समय का । बेवक्त का ।
असामान्य (वि०) असाधारण । विलक्षण । अपूर्व ।
असामान्यं (न०) विलक्षण या विशेष सम्पत्ति ।
असाम्प्रत (वि०) अयोग्य । अनुचित । अयुक्त । कालान्तर । [अयोग्यता से ।
असाम्प्रतम् (अव्यया०) अनुचित रूप से ।
असार (वि०) १ सारहीन । २ व्यर्थ । निकम्मा । ३ जो लाभदायक न हो । ४ निर्बल । कमज़ोर ।
असारः (पु०), **असारं** (न०) १ बेज़रूरी हिस्सा । अनावश्यक अंश । २ रेंडी का पेड़ । ३ ऊद या अगर की लकड़ी ।
असारता (स्त्री०) १ सारहीनता । निस्सारता । तत्त्वशून्यता । २ निरर्थकता । तुच्छता । ३ मिथ्यात्व ।
असाहसं (न०) वेग या प्रचण्डता का अभाव । सुशीलता ।
असिः (पु०) १ तलवार । २ छुरी जो जानवरों को हलाल करने के लिये इस्तेमाल की जाती है । —गण्डः, (पु०) छोटा तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है । —जीविन्, (वि०) तलवार के कर्म से आजीविका करने वाला । —दंष्ट्रः, —दंष्ट्रकः, (पु०) मगर । घड़ियाल । —दन्तः, (पु०) मगर । घड़ियाल । नक्र । —धारा, (स्त्री०) तलवार की धार । —धाराव्रतं, (न०) १ किसी किसी के मतानुसार एक व्रत विशेष, जिसमें तलवार की धार पर खड़ा होना पड़ता है । २ अन्य मतानुसार युवती स्त्री के साथ सदैव रह कर भी उसके साथ मैथुन करने की इच्छा को रोकना ।(आलं०) कोई भी असाध्य या असम्भव कार्य ।—धावः,—धावकः, (पु०) सिगलीगर । हथियार साफ करने वाला ।—धेनुः, —धेनुका, (स्त्री०) छुरी । छुरा । —पत्रः,(पु०) १ ऊख । ईख । गन्ना । २ वृक्ष विशेष जो अधोलोकों में उत्पन्न होता है ।—पत्रं, (न०) तलवार की धार ।—पुच्छः,—पुच्छकः, (पु०) सूँस संगमाही ।—पुत्रिका,—पुत्री, (स्त्री०) छुरी । —मेदः, (पु०) सड़ा हुआ खदिर ।—हत्यं, (न०) छूरी या तलवार की लड़ाई ।—हेतिः, (पु०) तलवार चलाने वाला । तलवार बहादुर ।
असिक्नं (न०) निचले ओठ और ठुड्डी के बीच का भाग ।
असिक्नी (स्त्री०) १ अन्तःपुर की युवती परिचारिका या दासी । २ पंजाब की एक नदी का नाम ।
असिक्निका (स्त्री०) युवती दासी ।
असित (वि०) जो सफेद न हो । काला ।—अम्बुजं, —उत्पलं, (न०) नील कमल ।—अर्चिस्, (पु०) अग्नि ।—अश्मन्, (पु०)—उपलः, (पु०) कालाँहानीला पत्थर ।—केशा, (स्त्री०) काले बालों वाली ।—गिरिः, (स्त्री०)—नगः, (पु०) नीलपर्वत । पर्वत विशेष ।—ग्रीव, (वि०) काली गर्दन वाला ।—ग्रीवः, (पु०) अग्नि ।—नयन, (वि०) काले नेत्रों वाली ।— पक्षः, (पु०) अँधियारा पाख ।—फलं, (न०) मीठा नारियल ।—मृगः, (पु०) काला हिरन । कृष्णमृग ।
असितः (पु०) १ काला या नीला रंग । २ कृष्ण पक्ष । ३ शनिग्रह । ४ काला साँप ।
असिता (स्त्री०) १ नील का पौधा । २ कन्या जो अन्तःपुर में रहती है (और जिसके बाल अधिक होने पर भी सफेद नहीं होते) । ३ यमुना नदी ।
असिद्ध (वि०) १ जो सिद्ध अर्थात् पूरा न हुआ हो । २ अधूरा । अपूर्ण । ३ अप्रमाणित । ४ कच्चा । अनपका । ५ जिसका परिणाम कुछ न हो ।
असिद्धः (पु०) न्यायानुसार हेतु के तीन दोष । वे तीन दोष ये हैं—आश्रयासिद्ध । स्वरूपासिद्ध । व्याप्यतासिद्ध ।
असिद्धिः (स्त्री०) १ अप्राप्ति । अनिष्पत्ति । २ कच्चापन । कचाई । ३ अपूर्णता ।
असिरः (पु०) १ किरण । २ तीर । ३ चटखनी ।
असु (न०) दुःख । शोक ।—भङ्गः, (पु०) १ जीवन का नाश । २ जीवन की आशङ्का या

भव ।—भृत्, (पु०) जीवधारी । प्राणी ।—सम, (वि०) प्राणोपम ।—समः, (पु०) पति । प्रेमी ।

असुः (पु०) १ स्वांस । जीवन । आध्यात्मिक जीवन । २ मृतात्माओं का जीवन । ३ (बहुवचनान्त) प्राणादि पांच वायु ।

असुमत (वि०) जीवित । स्वांसयुक्त । (पु०) १ प्राणधारी । जीवधारी । २ जीवन ।

असुख (वि०) १ दुःखी । शोकाकुल । २ (जिसका पाना) सहज नहीं । कठिन ।

असुखम् (न०) दुःख । शोक । पीड़ा ।—जीविका, (स्त्री०) दुःखमय जीवन ।

असुखिन् (वि०) दुःखी । शोकाकुल ।

असुत (वि०) बेऔलाद । जिसके कोई बाल बच्चा [न हो ।

असुरः (पु०) १ दैत्य । राक्षस । दानव । २ भूत । प्रेत । ३ सूर्य । ४ हाथी । ५ राहु की उपाधि । ६ बादल ।—अधिपः,—राज्,—राजः, (पु०) १ असुरों के राजा । २ प्रह्लाद के पौत्र राजा बलि की उपाधि ।—आचार्यः,—गुरुः, (पु०) १ शुक्राचार्य । २ शुक्रग्रह ।—आह्वं, (न०) टीन और ताँबे को मिला कर बनायी हुई धातु विशेष ।—द्विष्, (पु०) असुरों के वैरी । अर्थात् देवता ।—रिपुः,—सूदनः, (पु०) असुरों का नाश करने वाले । विष्णु भगवान की उपाधि । – हन् (पु०) १ असुरों को मारने वाला । २ अग्नि, इन्द्र की उपाधि । ३ विष्णु का नाम ।

असुरा (स्त्री०) १ रात्रि । २ राशिचक्र सम्बन्धी एक राशि । ३ वेश्या ।

असुरी (वि०) दानवी । राक्षसी । असुर की स्त्री ।

असुर्य (वि०) असुरों का । आसुरी ।

असुरसा (स्त्री०) पौधे का नाम । तुलसीवृक्ष की अनेक जातियाँ ।

असुलभ (वि०) जो सहज में न मिल सके ।

असुसुः (पु०) तीर । बाण ।

असुहृद् (पु०) शत्रु । वैरी ।

असूत्तणम् (न०) वेइज्ज़ती । अप्रतिष्ठा ।

असूत }
असूतिक } (वि०) जिसमें कुछ भी न हो । बांझ । [बंजर ।

असूतिः (स्त्री०) १ बाँझपन । बंजरपन । २ अड़चन । स्थानान्तरितकरण ।

असूयति (क्रि० परस्मै०) १ डाह करना । ईर्ष्या करना । २ अप्रसन्न होना । नाराज़ होना । तिरस्कार करना ।

असूयक (वि०) १ ईर्ष्यालु । डाही । अपवादरत । कुत्साशील । २ असन्तुष्ट । अप्रसन्न ।

असूयनम् (न०) निन्दा । अपवाद । २ ईर्ष्या । डाह ।

असूया (स्त्री०) १ डाह । ईर्ष्या । असहिष्णुता । २ निन्दा । अपवाद । ३ क्रोध । रोष ।

असूयुः (पु०) १ डाही । ईर्ष्यालु । २ अप्रसन्न ।

असूर्य (वि०) सूर्यरहित ।

असूर्यपश्य (वि०) जो सूर्य को भी न देखे ।

असूर्यपश्या (स्त्री०) १ सती पतिव्रता स्त्री । २ राजप्रसाद की स्त्रियाँ । रनवास की रानियाँ, जिन्हें सूर्य तक के दर्शन मिलना दुर्लभ है ।

असृज् (न०) १ खून । रक्त । लोहू । २ मङ्गलग्रह । ३ केसर ।—करः, (पु०) रस ।—धरा, (स्त्री०) चर्म । चमड़ा ।—धारा, (स्त्री०) लोहू की धार ।—पः,—पाः, (पु०) राक्षस । रक्त पीने वाला ।—वहा, (स्त्री०) रक्तधमनी । नाड़ी ।—विमोक्षणं (न०) रक्त का बहना ।—स्रावः,—स्राव, (पु०) रक्त का बहना ।

असेचन }
असेचनक } (वि०) अत्यन्त प्रिय । जिसे देखते देखते कभी जी न भरे ।

असौष्ठव (वि०) १ सौन्दर्य या मनोहरता का अभाव । २ बदसूरत । विकलाङ्ग ।

असौष्ठवम् (न०) १ निकम्मापन । गुणाभाव । २ विकलाङ्गता । बदसूरती ।

अस्खलित (वि०) १ जो हिले नहीं । स्थिर । स्थायी । २ बेचुटीला । ३ सावधान ।

अस्त (व० कृ०) १ फेंका हुआ । डाला हुआ । त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २ समाप्त । ३ भेजा हुआ ।—करुण, (वि०) दयाहीन । निठुर ।—धी, (वि०) मूर्ख ।—व्यस्त, (वि०) इधर उधर गड़बड़ ।—संख्य, (वि०) असंख्य ।

अस्तः (पु०) १ अस्ताचल पर्वत । पश्चिमाचल । २ सूर्य का छिपना । ३ छिपना । तिरोहित होना ।

पात। ह्रास।—गमनं, (न०) १ अस्त होना। अदृष्ट होना। २ मृत्यु। जीवन रूपी सूर्य का अस्त होना।

अस्तमनं (न०) (सूर्य का) डूबना।

अस्तमयः (पु०) १ (सूर्य का) डूबना। २ नाश। अन्त। ह्रास। हानि। ३ पात। वशत्व। ४ ग्रसित होना।

अस्ति (अव्यया०) है। स्थिति। विद्यमानता। रहना।—नास्ति (अव्यया०) सन्दिग्ध। कुछ सही कुछ ग़लत।

अस्तित्वं (न०) विद्यमानता। सत्ता।

अस्तेयं (न०) चोरी न करना। अचौर्य।

अस्त्यानम् (न०) कलङ्क। अपवाद।

अस्त्रं (न०) फेंक के मारे जाने वाला हथियार, तलवार, बरछी भाला। बाण आदि।—अगार,—आगारं, (न०) सिलहखाना। हथियारों का भाण्डार।—कण्टकः, (पु०) तीर। बाण।—चिकित्सकः, (पु०) जर्राह।—चिकित्सा, (स्त्री०) जर्राही।—जीवः,—जीवन्, (पु०)—धारिन्, (पु०) सिपाही।—निवारणं, (न०) अस्त्र के वार को रोकना।—मंत्रः, (पु०) किसी अस्त्र के छोड़ने या लौटाने के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र विशेष।—मार्जः,—मार्जकः, (पु०) सिकलीगर।—युद्धं, (न०) हथियारों की लड़ाई।—लाघवं, (न०) अस्त्र चलाने का कौशल।—विद्, (वि०) अस्त्रविद्या का जानने वाला।—विद्या, (स्त्री०) —शास्त्रं, (न०)—वेदः (पु०) अस्त्रविद्या।—वृष्टिः, (स्त्री०) अस्त्रों की वर्षा।—शिक्षा, (स्त्री०) सैनिक अभ्यास।

अस्त्रिन् (वि०) अस्त्रों से लड़ने वाला। धनुर्धर।

अस्त्री (स्त्री०) १ स्त्री नहीं। २ व्याकरण में पुलिङ्ग और नपुसक लिङ्ग।

अस्थान (वि०) अति गहरा।

अस्थानं (न०) १ बुरी या ग़लत जगह। २ अनुचित स्थान। अनुचित वस्तु। अनुचित अवसर। बेमौक़ा।

अस्थाने (अव्यया०) बेमौक़े। कुठौर। ठीक स्थान पर नहीं। अयोग्य पदार्थ।

अस्थावर (वि०) चर। हिलने डुलने वाला। जो अचर न हो। जङ्गम।

अस्थि (न०) १ हड्डी। २ फल का छिलका या गुठली।—कृत,—तेजस्, (पु०);—सम्भवः,—सारः,—स्नेहः, (पु०) गूदा।—जः, (पु०) १ गूदा। २ वज्र।—तुण्डः, (पु०) पक्षी। चिड़िया।—धन्वन्, (पु०) शिव जी का नाम।—पञ्जर, (पु०) १ हड्डियों का पिंजरा। ठठरी। कंकाल।—प्रक्षेपः, (पु०) हड्डियों को गङ्गा या अन्य किसी तीर्थ के जल में डालने की क्रिया।—भक्षः, (पु०) भुक्, हड्डी खाने वाला। कुत्ता। भङ्गः (पु०) हड्डी का टूट जाना।—माला, (स्त्री०) १ हड्डियों की माला। २ हड्डियों की पंक्ति।—मालिन्, (पु०) शिव जी का नाम।—शेष, (वि०) लटकर हड्डी मात्र रह जाना।—सञ्चयः, (पु०) १ शवदाह के बाद जली हुई हड्डियों को बटोरना। २ हड्डियों का ढेर।—सन्धिः, (स्त्री०) जोड़। ग्रन्थि-संयोग। पर्व।—समर्पण (न०) हड्डियों का गङ्गाप्रवाह। स्थूणः, (पु०) शरीर।

अस्थितिः (स्त्री०) दृढ़ता का अभाव। (आलं०) शिष्टता का अभाव। अच्छे चालचलन का अभाव।

अस्थिर (वि०) जो स्थायी या दृढ़ न हो। चञ्चल।

अस्पर्शनं (न०) असंसर्ग। किसी वस्तु का स्पर्श बचाना।

अस्पष्ट (वि०) १ जो साफ़ (समझने या देखने योग्य) न हो। २ सन्दिग्ध। [पतित।

अस्पृश्य (वि०) जो छूने योग्य न हो। २ अपवित्र।

अस्फुट (वि०) अस्पष्ट। सन्दिग्ध।

अस्फुटं (न०) सन्दिग्ध भाषण।—फलं, (न०) सन्दिग्ध या अस्पष्ट परिणाम।

अस्मद् (वि०) आत्मवाची सर्वनाम। देहाभिमानी जीव। मैं। हम।

अस्मदीय (वि०) हमारा। हम लोगों का।

अस्माक (सर्व०) हमारा।

अस्मार्त (वि०) १ जो स्मरण के भीतर न हो। स्मरणातीत कालवाची। २ आईन विरुद्ध। धर्म

शास्त्र अर्थात् स्मृतियों के विरुद्ध । जो स्मार्त्त-सम्प्रदाय का न हो । [भुलक्कड़पन

अस्मृतिः (स्त्री०) स्मरण शक्ति का अभाव । विस्मृति ।

अस्मि (अव्यया०) मैं ।

अस्मिता (स्त्री०) १ अहङ्कार । २ योगशास्त्रानुसार पाँच प्रकार के क्लेशों में से एक । द्रष्टा और दर्शनशक्ति को एक मानना अथवा पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानना । ३ सांख्य में इसे मोह और वेदान्त में इसे हृदयग्रन्थि कहते हैं ।

अस्रः (पु०) १ कोना । कोण । २ सिर के बाल । —कण्ठः (पु०) तीर । —जं (न०) मांस । गोश्त । —पः (पु०) खून पीने वाला राक्षस । —पा (स्त्री०) जोंक । —मातृका, (स्त्री०) अन्नरस । अर्द्धजीर्ण भुक्तद्रव्य ।

अस्रं (न०) १ आँसू । २ रक्त । खून ।

अस्व (वि०) १ जीवनोपाय विहीन । अकिञ्चन । निर्धन । ग़रीब । २ निज का नहीं । [वश्य ।

अस्वतंत्र (वि०) १ आश्रित । पराधीन । २ नम्र ।

अस्वप्न (वि०) जागता हुआ । अनिद्रित ।

अस्वप्नः (पु०) देवता । [२ व्यञ्जन ।

अस्वरः (पु०) १ मन्दस्वर । धीमी आवाज़ ।

अस्वरं (अव्यया०) ज़ोर से नहीं । धीमी आवाज़ में ।

अस्वर्ग्य (वि०) जिससे स्वर्ग की प्राप्ति न हो ।

अस्वाध्यायः (पु०) १ जिसने वेदाध्ययन आरम्भ न किया हो । जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो । २ अध्ययन में रुकावट ।

अस्वस्थ (वि०) बीमार । रोगी । भला चंगा नहीं ।

अस्वामिन् (वि०) जो किसी वस्तु का स्वामी या मालिक न हो ।—विक्रयः, (पु०) बिना मालिक की बिक्री ।

अस्वैरिन् (वि०) परतंत्र । पराधीन ।

अह (धा० आत्म०) १ मिल कर गाना । २ बनाना । सङ्कलन करना । ३ जाना । ४ चमकना ।

अह (अव्यया०) प्रशंसा ; वियोग, दृढ़ सङ्कल्प, अस्वीकृति ; भेजना, पद्धति का त्याग, बोधक अव्यय ।

अहंयु (वि०) अभिमानी । क्रोधी । स्वार्थी ।

अहत (वि०) १ जो हत या चोटिल न हो । कोरा । अनधुला हुआ । नवीन ।

अहतं (न०) कोरा या अनधुला वस्त्र ।

अहन् (न०) [कर्त्ता—अहः, अह्नी—अहनी, अहानि अह्ना, अहोभ्यां आदि] १ दिवस (जिसमें रात भी शामिल है) २ दिवस-काल । (समास के अन्त में अहन् का अहः; अहं, या अह्न, हो जाता है । इसी प्रकार समास के आदि में इसके रूप अहस् या अहर् होते हैं जैसे अहःपति या अहर्पति,) —करः, (पु०) सूर्य ।—गणः (पु०) १ दिनों का समूह । २ तीस दिन का मास ।—दिवं, (अव्यया०) नित्य प्रति । प्रति दिन । दिनों दिन ।—निशं, (अव्यया०) दिन रात ।—पतिः, (पु०) सूर्य ।—बान्धवः (स्त्री०) —मणिः, (स्त्री०) सूर्य ।—मुखं, (न०) दिन का आरम्भ । सवेरा ।—शेषः, (पु०)—शेषं, (न०) सायंकाल । सांझ । शाम ।

अहम् (सर्वनाम) १ मैं । आत्मसम्बन्धी । २ अभिमान । घमण्ड । अहङ्कार ।—अग्रिका (स्त्री०) श्रेष्ठता के लिये होड़ । प्रतिद्वन्द्वता ।—अहमहमिका, (स्त्री०) १ प्रतिद्वन्द्वता । स्पर्द्धा । ईर्ष्या । २ अहङ्कार । ३ सैनिक स्पर्द्धाकारी ।—कारः, (पु०) १ अहङ्कार । आत्मश्लाघा । २ अभिमान । क्रोध ।—कारिन् (वि०) अभिमानी । आत्माभिमानी । आत्मश्लाघी ।—कृतिः, (स्त्री०) अहङ्कार । अभिमान ।—पूर्व (वि०) प्रथम होने की अभिलाषा वाला ।—पूर्विका,— —प्रथमिका, (वि०) १ स्पर्द्धा । प्रतिद्वन्द्वता । २ आत्मश्लाघा । भद्रं, (न०) आत्मश्लाघा ।— भावः, (पु०) अभिमान । अहङ्कार ।— मतिः (स्त्री०) १ अविद्या । अज्ञान । अन्य में अन्य के धर्म को दिखाने वाला ज्ञान । २ श्लाघा । अभिमान । अहङ्कार ।

अहरणीय } (वि०) १ जो चुराया न जा सके ।
अहार्य } जो स्थानान्तरित न किया जा सके । जो ले जाया न जा सके । २ भक्त । ३ दृढ़ । असंकोची । स्थिर प्रतिज्ञ ।

अहल्य (वि०) अनजुता हुआ।

अहल्या (स्त्री०) गौतम की पत्नी। इसको इसके पति के शाप से भगवान् श्रीरामचन्द्र जी ने मुक्त किया था।—जारः, (पु०) इन्द्र।—नन्दनः, (पु०) सतानन्द ऋषि।

अहह (अव्यया०) विस्मय, एवं खेद व्यञ्जक सम्बोधन।

अहार्यः (पु०) पर्वत। पहाड़।

अहिः (पु०) १ सर्प। सांप। २ सूर्य। ३ राहुग्रह। ४ वृत्रासुर। ५ धोखेवाज़। दगावाज। ६ मेघ। बादल। ७ सीसक। ८ भोगी। ९ नीच। १० अश्लेषा नक्षत्र। ११ दुष्ट मनुष्य। १२ जल। १३ पृथिवी। १४ दुधार गौ। १५ नाभि।—कान्तः, (पु०) पवन। हवा।—कोषः, (पु०) साँप की कैचुली।—छत्रक, (न०) कुकुरमुता।—जित्, (पु०) १ श्री कृष्ण का नाम। २ इन्द्र का नाम।—तुण्डिकः, (पु०) सांप पकड़ने वाला कालवेलिया।। महुअर बजाने वाला। जादूगर। बाजीगर।—द्विष्, —द्रुह्, —मार, —रिपु, विद्विष्, (पु०) १गरुड जी का नाम। २ न्योला। ३ मोर।—नकुलिका, (स्त्री०) सर्प और न्योले की स्वाभाविक शत्रुता।—निर्मोकः, (पु०) साँप की कैचुली।—पतिः, (पु०) १ सर्पराज। वासुकी। २ कोई भी बड़ा सर्प।–पुत्रकः, (पु०) नाव विशेष। जो सर्प के आकार की होती है।—फेनः (पु०)—फेनम्, (न०) अफीम।—भयं, (न०) १ किसी छिपे सर्प का भय। २ दगा या विश्वासघात का भय। मित्र से भय।—भुज्, (पु०) १ गरुड का नाम। २ मोर। ३ न्योला। नकुल।—भृत् (पु०) शिव।

अहिंसा (स्त्री०) मन, वच, कर्म से किसी प्राणी को पीड़ा न देना।

अहिंस्र (वि०) अहिंसक। जो हिंसा न करे। निर्दोष।

अहिकः (पु०) अंधा सर्प।

अहित (वि०) १ जो रखा न गया हो। जो नियत न हो। २ अयोग्य। अनुचित। ३ हानिकारी। अहितकर। ४ प्रतिकूल। ५ बैरी। विरोधी।

अहितः (पु०) शत्रु। बैरी।

अहितम् (न०) हानि। नुक़सान। क्षति।

अहिम (वि०) जो ठंडा न हो। गर्म।—अंशु, —करः,—तेजस्, द्युतिः,—रुचिः (पु०) सूर्य।

अहीन (वि०) १ समूचा। सम्पूर्ण। अन्यून। २ बड़ा। जो छोटा न हो। ३ अधिकार में रखने वाला। जो किसी वस्तु से वञ्चित न हो। ४ जो जातिच्युत या पतित न हो।

अहीनः (पु०) }
अहीनं (न०) } एक यज्ञ जो कई दिनों तक होता है।

अहीरः (पु०) ग्वाला। गौ चराने वाला। अहीर।

अहीरणि (पु०) कुचलेड़। दुमुंहा साँप।

अहीश्रवः (पु०) शत्रु। बैरी।

अहु (वि०) सङ्कीर्ण। व्याप्त।

अहुत (वि०) जो हवन न किया गया हो।

अहुतः (पु०) ध्यान। स्तव। स्वाध्याय।

अहे (अव्यया०) धिक्कार, खेद और वियोग सूचक अव्यय।

अहेतुः (वि०) अकारण। स्वेच्छापूर्वक। मनमाना।

अहेतुक }
अहैतुक } (वि) १ विना कारण के। २ फल की इच्छा से रहित। ३ विना किसी तात्पर्य के।

अहो (अव्यया०) एक अव्यय जो निम्न भावों का द्योतक है:— आश्चर्य, शोक, खेद प्रशंसा, स्पर्द्धा, ईर्ष्या, सन्तोष, थकावट, सम्बोधन, तिरस्कार।

अन्हाय (अव्यया०) तुरन्त। तेज़ी से। फुर्ती से।

अह्रय, }
अह्रयाण } (वि०) निर्लज्ज। अभिमानी।

अह्रि (वि०) १ मोटा। २ विषयी। ३ बुद्धिमान। ४ कवि।

अह्रीक (वि०) निर्लज्ज।

अह्रीकः (वि०) बौद्ध भिक्षुक।

आ

आ वर्ण माला का दूसरा अक्षर तथा स्वर। यह 'अ' का दीर्घ रूप है। आहाँ। अनुमति। सचमुच। इसका प्रयोग अनुकंपा, दया, वाक्य, समुच्चय, थोड़ा, सीमा, व्याप्ति, अवधि से और तक के अर्थ में होता है। जब यह क्रिया अथवा संख्यावाचक शब्दों के पूर्व लगाया जाता है, तब यह समीप, सम्मुख, चारों ओर से आदि अर्थ को बतलाता है। वैदिक भाषा में "आ" सप्तम्यन्त शब्द के पहले—में और आदि का अर्थ बतलाता है।

आः (पु०) महादेव। (स्त्री०) लक्ष्मी।

आकत्थनम् (न०) डींग। शेखी। बड़ाई।

आकम्पः (पु०) १ थोड़ा हिलाना डुलाना। २ हिलाना कांपना।

आकम्पित } (वि०) कम्पयुक्त, काँपता हुआ।
आकम्प्र } आंदोलित।

आकर्यं (न०) किसी वस्तु को अपवित्र कर डालने की क्रिया।

आकरः (पु०) १ खान। २ समूह। ३ सर्वोत्कृष्ट। सर्वोत्तम।

आकरिकः (पु०) खान की निगरानी के लिये राजा द्वारा नियुक्त राजपुरुष।

आकरिन (वि०) १ खान से निकला हुआ। खनिज पदार्थ। २ कुलीन।

आकर्णनम् (न०) सुनना। कान करना।

आकर्षः (पु०) १ खिंचाव। २ दूर खींच ले जाना। ३ (धनुष को) तानना। ४ वशीकरण। ५ पाँसे का खेल। ६ पाँसा। ७ चौपड़ की बिछौत। ८ ज्ञानेन्द्रिय। ९ कसौटी।

आकर्षक (वि०) खींचने वाला। आकर्षण करने वाला।

आकर्षकः (वि०) चुम्बक पत्थर।

आकर्षणम् (न०) १ खिंचाव। २ तंत्र शास्त्र का एक प्रयोग विशेष।

आकर्षणी (स्त्री०) लग्गी। ऊँचाई से फलफूल पत्ती तोड़ने की लंबी और नोंक पर मुड़ी हुई लकड़ी विशेष।

आकर्षिक (वि०) [स्त्री०—आकर्षिकी] १ चुम्बक या अयस्कान्त पत्थर का। २ खींचने वाला।

आकर्षिन् (वि०) खींचने वाला।

आकलनम् (न०) १ पकड़। २ गणना। गिनती। ३ इच्छा। अभिलाषा। ४ पूंछताछ। ५ समझ बूझ।

आकल्पः (पु०) १ आभूषण। श्रृङ्गार। सजावट। २ पोशाक। परिच्छद ३ रोग। बीमारी।

आकल्पकः (पु०) १ खेद पूर्वक स्मरण। २ मूर्च्छा। ३ हर्ष या प्रसन्नता। ४ अन्धकार। ५ गाँठ या जोड़।

आकषः (पु०) कसौटी।

आकषिक (वि०) (कसौटी पर) जाँचना। परीक्षा करना।

आकस्मिक (वि०) [स्त्री०—आकस्मिकी] १ अचानचक। अकस्मात्। सहसा। आशातीत। २ अकारण।

आकांक्षा (स्त्री०) १ अभिलाषा। इच्छा। वांछा। चाह। २ अभिप्राय। तात्पर्य। इरादा ३ अनुसन्धान। ४ अपेक्षा।

आकायः (पु०) १ चिता की अग्नि। २ चिता।

आकारः (पु०) १ शक्ल। स्वरूप। आकृति। सूरत। २ डीलडौल। क़द। ३ बनावट। संगठन। ४ चेष्टा। ५ सङ्केत।

आकरण }
आकारण } १ आमंत्रण। २ ललकार।
आकरणा }
आकारणा }

आकालः (पु०) ठीक समय।

आकालिक (वि०) [स्त्री०—आकालिकी] १ क्षणिक। शीघ्र नष्ट होने वाली। २ बेफसल की (वस्तु)।

आकालिकी (स्त्री०) बिजली।

आकाशः (पु०) } १ आसमान। गगन। व्योम।
आकाशं (न०) } २ आकाश तत्व। ३ शून्य स्थान। शून्यता। ४ स्थान। ५ ब्रह्म। ६ प्रकाश। स्वच्छता।—ईशः, (पु०) १ इन्द्र। २ कोई भी अनाथ व्यक्ति जैसे स्त्री, बालक। जिसके पास आकाश को छोड़ अन्य कोई सम्पत्ति ही न हो।—कक्षा, (स्त्री०) क्षितिज।—कल्पः, (पु०)

ग्रह।—गः, (पु०) पक्षी।—गा, (स्त्री०) आकाशगंगा।—चमसः, (पु०) चन्द्रमा —जनिन् (पु०) खिड़की। झरोखा। दीपः,—प्रदीप, (पु०) ऊँची बल्ली पर लटका कर जो दीपक कार्तिक मास में भगवान लक्ष्मीनारायण की प्रसन्नता सम्पादनार्थ जलाया जाता है उसे आकाशदीप कहते हैं।—भाषितं, (न०) किसी नाटक के अभिनय में कोई पात्र जब विना किसी प्रश्नकर्त्ता के आकाश की ओर देख कर आप ही आप प्रश्नकर्त्ता और आप ही उसका उत्तर देता है; तब ऐसे प्रश्नोत्तर को आकाशभाषित कहते हैं। —यानं, (न०) व्योमयान। विमान। ऐरोप्लेन। —रक्षिन् राजप्रसाद की छत पर दीवाली पर का चौकीदार।—वाणी, (स्त्री०) देववाणी। वह वाणी जिसका बोलने वाला न देख पड़े। मण्डलं (न०) नभमण्डल।—स्फटिकः, (पु०) ओले।

आकिञ्चनं, आकिञ्चनं, आकिञ्चन्य, आकिञ्चन्यं दरिद्रता। धनहीनता। ग़रीबी।

आकीर्ण (व० कृ०) बिखरा हुआ। फैला हुआ। व्याप्त।

आकुञ्चनम् (न०) सिकोड़न। मोड़न समेटन। फैले हुए को एकत्र करने की क्रिया।

आकुल (वि०) १ व्याप्त। सङ्कुल। भरा हुआ। परिपूर्ण। २ व्यग्र। व्यस्त। ३ उद्विग्न। क्षुब्ध। ४ विह्वल। कातर। अस्वस्थ।

आकुलं (न०) आबादी। आबाद जगह।

आकुलित (वि०) दुःखी। व्यग्र। उद्विग्न। विह्वल।

आकुञ्चित (वि०) कुछ कुछ सकुड़ा हुआ। कुछ कुछ सिमटा हुआ।

आकूतं (न०) १ आशय। अभिप्राय। २ भाव। ३ आश्चर्य। ४ इच्छा। वाञ्छा।

आकृतिः (स्त्री०) १ बनावट। गठन। ढांचा। अवयव। विभाग। २ मूर्त्ति। रूप। ३ चेहरा। मुख। ४ चेष्टा। ५ २२ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

आकृतिच्छत्रा (स्त्री०) घौंना नाम की एक लता।

आकृष्टिः (स्त्री०) १ खिंचाव। आकर्षण। २ माध्याकर्षण। ३ (धनुष का) तानना।

आकेकर (वि०) अधमुँदा।

आकोकेरः (पु०) मकर राशि।

आक्रन्दः (पु०) १ रुदन। रोना। चीखना। २ बुलाना आह्वान करना। ३ शब्द। चीख़। ४ मित्र। त्राणकर्त्ता। ५ भाई। ६ घोर संग्राम। युद्ध ७ रोने का स्थान। ८ कोई राजा जो अपने मित्र राजा को अन्य राजा की सहायता करने से रोके।

आक्रन्दनम् (न०) १ विलाप। रुदन। २ बुलाहट।

आक्रन्दिक (वि०) रोने का शब्द सुन रोने के स्थान पर जाने वाला।

आक्रन्दित (व० कृ०) १ गर्जता हुआ। फूट फूट कर रोता हुआ। २ आह्वाहन किया हुआ।

आक्रन्दितम् (न०) चिल्लाहट गर्जन। दहाड़। नाद।

आक्रमः (पु०), आक्रमणम् (न०) १ समीप आगमन हमला। आक्रमण। ३ घेरना। कब्ज़ा करना। ४ प्राप्त करना। पकड़ लेना। ५ छाप लेना। छा लेना ६ भारी बोझ से लाद देने की क्रिया।

आक्रान्त (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ। अधिकार में लिया हुआ। २ पराजित। हराया हुआ। छिपा हुआ ग्रसित। ३ प्राप्त। अधिकारभुक्त।

आक्रान्तिः (स्त्री०) १ पदार्पण। रूँधना। ऊपर रखना। छेंकना। २ दबाव। लदाव। पकड़न। ३ चढ़न। आगे निकल जाने की क्रिया। ४ शक्ति। सामर्थ्य। बल। [करने वाला।

आक्रमकः (पु०) आक्रमण करने वाला। हमला

आक्रीडः (पु०), आक्रीडम् (न०) १ खेल। दिलबहलाव। आनन्द। २ प्रमोद-कानन। क्रीड़ावन। लीलोद्यान। रमना।

आक्रुष्ट (व० कृ०) १ तिरस्कृत। डाँटा डपटा हुआ। निन्दा किया हुआ। धिक्कारा हुआ। २ अकोसा हुआ। शापित। ३ चिल्लाया हुआ। गर्जना किया हुआ।

आक्रुष्टम् (न०) १ बुलावा। बुलाहट। २ प्रखर शब्द। गाली गलौज भरी हुई वक्तृता या कथन।

आक्रोशः (पु०) } १ पुकार । चिल्लाहट । २
आक्रोशनम् (न०) } धिक्कार । कलङ्क । भर्त्सना । गाली । ३ शाप । अकोसा । ४ शपथ । सौगंद ।

आक्लेदः (पु०) नमी । तरी । छिड़काव ।

आक्षद्यूतिक (वि०) [स्त्री०—आक्षद्यूतिकी] जुए से समाप्त किया हुआ । जुए से उत्पन्न । (विरोध या वैर)

आक्षपणम् (न०) व्रत । उपवास । छोड़ावारी ।

आक्षपाटिकः (पु०) १ जुए खाने का प्रबन्ध कर्त्ता । जुए की हार जीत का निर्णायक । २ न्यायकर्त्ता । निर्णायक ।

आक्षपाद (वि०) [स्त्री०—आक्षपादी] अक्षपाद या गौतम का सिखलाया हुआ ।

आक्षपादः (पु०) न्यायशास्त्रवादी । नैयायिक ।

आक्षारः (पु०) आरोप । अपवाद दोषारोप । (विशेष कर व्यभिचार का)

आक्षारणम् (न०) } कलङ्क । अपवाद । (व्यभि-
आक्षारणा (स्त्री०) } चार के लिये) दोषारोपण ।

आक्षारित (व० कृ०) १ कलङ्कित । बदनाम किया हुआ । २ दोषी । अपराधी ।

आक्षिक (वि०) [स्त्री०—आक्षिकी] १ पांसों से जुआ खेलने वाला । २ जुए से सम्बन्ध युक्त ।

आक्षिकम् (न०) १ जुए में प्राप्त धन । २ जुए में किया हुआ ऋण ।

आक्षिप्तिका (स्त्री०) तान या राग विशेष जो किसी अभिनयपात्र द्वारा उस समय गाया जाय, जिस समय वह रंगमञ्च के समीप पहुँचे ।

आक्षीव (वि०) १ थोड़ा नशा पिये हुए । २ मदमाता । नशे में चूर ।

आक्षेपः (पु०) १ दूर का फिकाव । उछाल । खिंचाव अपहरण । २ कटूक्ति । धिक्कार । कलङ्क । गाली । ताना । प्रगल्भ भर्त्सना । ३ चित्त विक्षेप । प्रलोभन । प्ररोचन । ४ लगाव । चढ़ाना (रंग जैसे) । ५ किसी ओर सङ्केत करण ।(किसी शब्द का अर्थ) मान लेना । ६ परिणाम निकाल लेना । ७ अमानत । जमा । धरोहर । ८ आपत्ति । सन्देह । ९ ध्वनि । व्यंग्य ।

आक्षेपकः (पु०) १ फैकने वाला । २ चित्त विक्षेपकारक । ३ आक्षेप करने वाला । दोषी ठहराने वाला । ३ शिकारी ।

आक्षेपणम् (न०) फैकाव । उछाल ।

आक्षोटः } (पु०) अखरोट का वृक्ष ।
आक्षोड : }

आक्षोडनम् (न०) शिकार ।

आखः, आखन० (पु०) कुदाली । लकड़ी की फावड़ी ।

आखण्डलः (पु०) इन्द्र ।

आखनिकः (पु०) १ बेलदार । खानि खोदने वाला । २ चूहा । ३ सूअर । शूकर । ४ चोर । ५ कुदाल ।

आखरः (पु०) १ कुदाल । २ बेलदार । खानि खोदने वाला ।

आखातः (पु०) } १ झील । ऐसा जलाशय जो
आखातम् (न०) } किसी मनुष्य का बनाया हुआ न हो ।

आखानः (पु०) १ वह जो चारो ओर खोदे । २ कुदाल । ३ बेलदार ।

आखुः (पु०) १ चूहा । घूंस । छछूँदर । २ चोर । ३ शूकर । ४ कुदाल । ५ कंजूस ।—उत्करः, (पु०) वल्मीकि । मृत्तिकाकूट ।—उत्थं, (न०) चूहों का समुदाय ।—गः,—पत्रः,—रथः,—वाहनः, (पु०) श्रीगणेश जी की उपाधि; जिनका वाहन चूहा है ।—घातः, (पु०) शूद्र । डोम ।—पाषाणः, (पु०) चुम्बक पत्थर ।—भुज,—भुजः, (पु०) बिल्ला । बिलार ।

आखेटकः (पु०) शिकार । अहेर ।—शीर्षकं, (न०) १ चिकना फर्श या ज़मीन । २ खान । विवर । गुफ़ा ।

आखेटक (वि०) } शिकार । मृगया ।
आखेटकम् (न०) }

आखेटकः (पु०) शिकारी ।

आखोटः (पु०) अखरोट का वृक्ष ।

आख्या (स्त्री०) १ नाम । उपाधि ।

आख्यात (व० कृ०) १ कथित । कहा हुआ । उक्त । २ गिना हुआ । पढ़ा हुआ । ३ जाना

हुआ। ज्ञात। ४ (व्याकरण में) साधन किया हुआ। धातुओं के रूप बनाये हुए।

आख्यातं (न०) क्रिया।

"भावप्रधानमाख्यातं।"

निरुक्त।

आख्यातिः (स्त्री०) १ कथन। सूचना। विज्ञप्ति। २ नामवरी। कीर्ति। ३ नाम।

आख्यानम् (न०) १ कथन। घोषणा। विज्ञप्ति। सूचना। २ पूर्ववृत्तोक्ति। ३ कहानी। क़िस्सा। ४ उत्तर ("प्रश्नाख्यानयोः" पाणिनी अष्टाध्यायी।)

आख्यानकम् (न०) किस्सा। छोटी कहानी। कथानक। उपाख्यान।

आख्यायक (वि०) कहने वाला।

आख्यायकः (पु०) १ हलकारा। २ राजकीय घोषणा करने वाला या उत्सवादि की व्यवस्था करने वाला।

आख्यायिका (स्त्री०) एक प्रकार की गद्यमयी रचना। कहानी। [साहित्यज्ञों ने गद्य रचना के दो भेद बतलाये हैं। अर्थात् कथा और आख्यायिका। बाण के "हर्षचरित" को ऐसे लोग "आख्यायिका" मानते हैं और कादम्बरी को कथा। यद्यपि दण्डिन् के मतानुसार इन दोनों में भेद कुछ भी नहीं है।

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः सञ्ज्ञाद्वयाङ्किता।

काव्यादर्श।]

आख्यायिन् (वि०) कहने वाला। जताने वाला।

आख्येय (स० का० कृ०) कहने योग्य। बतलाने योग्य। जताने योग्य।

आगतिः (स्त्री०) १ आगमन। २ प्राप्ति। उपलब्धि। ३ प्रत्यावर्तन। ४ उत्पत्ति।

आगन्तु (वि०) १ आया हुआ। पहुँचा हुआ। बाहिर से आया हुआ। बाहिरी। ३ आकस्मिक ४ भूला भटका। पथभ्रान्त।

आगन्तुः (पु०) १ नवागत। अपरिचित। महमान।

आगन्तुक (वि०) [स्त्री०—आगन्तुका,—आगन्तुकी] १ अपनी इच्छा से आया हुआ। बिना बुलाये आया हुआ। भूला भटका या घूमता फिरता आया हुआ। २ आकस्मिक। ४ प्रक्षिप्त।

आगन्तुकः (पु०) १ अनाहूत प्रवेशक। बिना बुलाये आया हुआ। अनधिकार प्रवेश करने वाला व्यक्ति। २ अपरिचित। महमान। अतिथि। नवागन्तुक।

आगमः (पु०) १ अवाई। आगमन। आमद। २ उपलब्धि। प्राप्ति। ३ जन्म। उत्पत्ति। उत्पत्ति-स्थान। ४ योजना। (धन की) प्राप्ति। ५ बहाव। धार (पानी की)। ६ लिखित प्रमाण। ७ ज्ञान। ८ आमदनी। आय। राजस्व। ९ वैध उपाय से प्राप्त कोई वस्तु। १० सम्पत्ति की वृद्धि। ११ परम्परागत सिद्धान्त या विधि। शास्त्र। १२ शास्त्राध्ययन। पवित्रज्ञान। १३ विज्ञान। १४ वेद। १५ (न्याय के) चार प्रकार के प्रमाणों में से अन्तिम प्रमाण। १६ उपसर्ग, विभक्ति या प्रत्यय। १७ किसी अक्षर का संयोग या मिलावट। १८ संस्कृत भाषा में, क्रियापदों के आदि में युक्त स्वरवर्ण। १९ उपपत्ति। सिद्धान्त।—वृद्ध, (वि०) प्रकाण्ड विद्वान। यथा।

"प्रतीव इत्यागमवृद्धसेवी।"

—रघुवंश।

आगमनम् (न०) १ आगमन। अवाई। आमद। २ प्रत्यावर्तन। ३ उपलब्धि। प्राप्ति। ४ सम्भोग के लिये किसी स्त्री के समीप गमन।

आगमिन् }
आगामिन् } (वि०) १ आने वाला। भविष्य का। २ आसन्न। आने वाला।

आगस् (न०) १ कसूर। अपराध। २ पाप।—कृत्, (वि०) अपराध करने वाला। अपराधी। दोषी।

आगस्ती (स्त्री०) दक्षिण दिशा।

आगस्त्य (वि०) दक्षिणी।

आगाध (वि०) अत्यन्त गहरा। अथाह।

आगामिक (वि०) [स्त्री०—आगामिकी] भविष्य काल सम्बन्धी। २ आने वाला। आसन्न।

आगामुक (वि०) १ आने वाला। २ भविष्य का।

आगारं (न०) घर। आवस-स्थान। [प्रतिज्ञा।

आगुर् (स्त्री०) स्वीकारोक्ति। हाँमी। स्वीकृति।

आगुरणं }
आगूरणम् } (न०) गुप्त प्रस्ताव या सूचना।

आगूः (स्त्री०) इक़रार। प्रतिज्ञा।

आग्निक (वि०) [स्त्री०—आग्निकी] आग सम्बन्धी। यज्ञीय अग्नि सम्बन्धी।

आग्नीध्रं (न०) वह स्थान जहाँ अग्निहोत्र का अग्नि जलाया जाता है।

आग्नीध्रः (पु०) १ हवन करने वाला। २ मनुवंशोद्भव महाराज प्रियव्रत का पुत्र।

आग्नेय (वि०) [स्त्री०—आग्नेयी] १ अग्नि सम्बन्धी। अगिया। २ अग्नि को चढ़ाया हुआ।

आग्नेयः (पु०) कार्तिकेय या स्कन्द की उपाधि।

आग्नेयी (स्त्री०) १ अग्नि की पत्नी। २ पूर्व और दक्षिण के बीच वाली दिशा।

आग्नेयम् (न०) १ कृत्ति का नक्षत्र। २ सुवर्ण। ३ खून। रक्त। ४ घी। ५ आग्नेयास्त्र।

आग्न्याधानिकी (स्त्री०) दक्षिणा विशेष जो ब्राह्मण को दी जाती है।

आग्रभोजनिकः (पु०) ब्राह्मण जो प्रत्येक भोज में सब के आगे या प्रथम बैठने का अधिकारी है।

आग्रयणम् (न०) आहिताग्नियों का नवशस्येष्टि। नवान्न विधान। [आहुति।

आग्रयणः (पु०) अग्निष्टोम में सोम की प्रथम

आग्रहः (पु०) १ पकड। ग्रहण। २ आक्रमण। ३ सङ्कल्प। प्रगाढ अनुराग। कृपा। अनुग्रह। संरक्षकता।

आग्रहायणः (पु०) मार्गशीर्ष मास।

आग्रहायिणी (स्त्री०) १ मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा। अगहनी पूनो। २ मगशिरा नक्षत्र का नाम।

आग्रहायणकः } (पु०) मार्गशीर्ष या अगहन
आग्रहायणिकः } मास।

आग्रहारिक (वि०) [स्त्री०—आग्रहारिकी] नियमानुसार प्रथम भाग पाने वाला। प्रथम भाग पाने योग्य। ब्राह्मण। श्रेष्ठ ब्राह्मण।

आघट्टना (स्त्री०) १ हिलाना। कम्पन। ताडन। २ रगड़। संसर्ग।

आघर्षः (पु०) } रगड। मालिश। ताडन।
आघर्षणम् (न०) }

आघाटः (पु०) सीमा। हद्द।

आघातः (पु०) १ ताड़न। मारण। २ चोट। प्रहार। घाव। ३ दुर्भाग्य। बदकिस्मती। विपत्ति। ४ कसाईखाना। वधस्थान।

—"आघातं नीयमानस्य।"

—हितोपदेश।

आघारः (पु०) १ छिड़काव। २ विशेष कर हवन के समय अग्नि पर घी का छिड़काव। ३ घी।

आघूर्णनं (न०) लोटना। उछाल। चक्कर। तैरना।

आघोषः (पु०) बुलावट। आमंत्रण। आह्वानकरण।

आघोषणम् (न०) } ढिंढोरा। राजाज्ञा की
आघोषणा (स्त्री०) } घोषणा। [होना।

आघ्राणम् (न०) १ सूँघना। २ अघाना। सन्तुष्ट

आंगारं } (न०) अंगारों का ढेर।
आङ्गारम् }

आंगिक } (वि०) [स्त्री०—आंगिकी, आङ्गिकी]
आङ्गिक } १ शारीरिक। दैहिक। २ हाव भाव युक्त।

आंगिक } (पु०) तबलची या मृदंगची।
आङ्गिकः }

आंगिरसः } (पु०) बृहस्पति का नाम। अंगिरस का
आङ्गिरसः } पुत्र।

आचक्षुस् (पु०)। विद्वान्। पण्डित।

आचमः (पु०) कुल्ला। आचमन।

आचमनम् (न०) जल से मुख साफ करने की क्रिया। किसी धर्मानुष्ठान के आरम्भ में दहिने हाथ की हथेली में जल रख कर पीने की क्रिया।

आचमनकम् (न०) १ पीकदानी।

आचयः (पु०) १ जमाव। भीड़। २ ढेर। समूह।

आचरणम् (न०) १ अनुष्ठान। व्यवहार। वर्ताव। २ चालचलन। ३ चलन। प्रचलन। पद्धति। ४ स्मृति।

आचांत } (वि०) १ आचमन या कुल्ला किये हुए।
आचान्त } २ आचमन करने योग्य।

आचामः (पु०) १ आचमन। कुल्ली। २ जल या गर्म जल का उफान।

आचारः (पु०) १ चालचलन। चरित्र। चालढाल। २ रीतिरिवाज़। चलन। पद्धति। ३ सदाचार। ४ शील। ५ रस्म।—भ्रष्ट, —पतित, (वि०) दुराचारी। अशिष्ट।—पूत, (वि०) सदाचार के अनुष्ठान से पवित्र।—लाज, (पु० बहुव०) खीलें जो राजा या किसी

प्रतिष्ठित व्यक्ति के ऊपर बरसायी जाती हैं—(उसके प्रति सम्मान प्रदर्शनार्थ ।) —वेदी, (स्त्री०) आर्यावर्त देश का नाम । [से समर्थित ।

आचारिक (वि०) प्रामाणिक । पद्धति या नियम

आचार्यः (पु०) १ (साधारणतः) शिक्षक या गुरु । २ उपनयनसंस्कार के समय गायत्री मंत्र का उपदेश देने वाला । ३ गुरु । वेद पढ़ाने वाला । ४ जब यह किसी के नाम के पूर्व लगता है (यथा आचार्य वासुदेव) तब इसका अर्थ होता है, विद्वान्, पण्डित । अगरेज़ी के "डाक्टर" शब्द का यह प्रायः समानार्थवाची शब्द भी है ।—मिश्र, (वि०) माननीय । पूज्य ।

आचार्यकं (न०) १ शिक्षा । पाठन । पढ़ाना । २ आध्यात्मिक गुरु का गुरुत्व ।

आचार्यानी (स्त्री०) अचार्य की पत्नी ।

आचित (व० कृ०) १ परिपूरित । भरा हुआ । लदा हुआ । ढका हुआ । २ बेधा हुआ । ओतप्रोत । ३ सञ्चित । एकत्रित किया हुआ ।

आचितः (पु०) गाड़ी भर बोझ (न० भी है) । दस गाड़ी भर की तौल, अर्थात् ८० हज़ार तोला । [सिंघी लगाना ।

आचूषणं (न०) १ चूसना । २ चूस कर उगल देना ।

आच्छादः (पु०) कपड़े । सिले कपड़े ।

आच्छादनं (न०) १ ढकने वाली वस्तु । चादर । चद्दर । २ कपड़े । सिले कपड़े । छत में लगी हुई लकड़ी की छत्त । [जलन पैदा करता हुआ ।

आच्छुरित (वि०) १ मिश्रित । २ खुरचा हुआ ।

आच्छुरितं (न०) नखवाद्य । नखों को एक दूसरे पर रगड़ कर बाजे की तरह बजाने की क्रिया । २ अट्टहास्य ।

आच्छुरितकम् (न०) १ नाख़ून का खरोंचा । नोंह की खरोच । २ अट्टहास्य ।

आच्छेदः (पु०), **आच्छेदनम्** (न०) } १ काटना । नश्तर लगाना । २ ज़रा सा काटना ।

आच्छोटनम् (न०) उँगलियाँ चटकाना ।

आच्छोदनम् (न०) शिकार । आखेट । मृगया ।

आजकं (न०) बकरों का झुंड ।

आजगवम् (न०) शिव जी का धनुष ।

आजननम् (न०) कुलीनता । उच्चवंशोद्भवता । प्रसिद्ध कुल या वंश ।

आजानः (पु०) उत्पत्ति । जन्म ।

आजानम् (न०) उत्पत्ति-स्थान । जन्मस्थान ।

आजानेय (वि०) [स्त्री०—आजानेयी] अच्छी जाति का (जैसे घोड़ा) । २ निर्भीक । निर्भय ।

आजानेयः (पु०) अच्छी जाति का घोड़ा ।

आजिः (पु०) १ युद्ध । लड़ाई । २ रणक्षेत्र ।

आजीवः (पु०), **आजीवनम्** (न०) } १ आजीविका । २ पेशा ।

आजीवः (पु०) जैनी भिक्षुक ।

आजीविका (न०) पेशा । आजीविका का उपाय ।

आजुर्, आजू (स्त्री०) १ विना पारिश्रमिक काम करना । २ नौकर जो वेतन लिये विना काम करे । नरक ही में रहना जिसके भाग्य में बदा है ।

आज्ञप्तिः (स्त्री०) आज्ञा । आदेश । हुक्म ।

आज्ञा (स्त्री०) १ आदेश । हुक्म । २ अनुमति इजाजत ।—अनुग,—अनुगामिन्, —अनुयायिन्,—अनुवर्तिन्, —अनुसारिन्, —सम्पादक,—वह (वि०) आज्ञाकारी । फ़र्मांबर्दार ।

आज्ञापनम् (न०) १ आज्ञा । हुक्म । २ प्रकटपत्र ।

आज्यं (न०) घी ।—पात्रं, (न०) स्थाली, (स्त्री०) बर्तन जिसमें घी रखा जाय ।—भुज् (पु०) १ अग्नि का नाम । २ देवता ।

आंचनम् (न०) शरीर से कांटे या तीर को थोड़ा सा खींच कर निकालने की क्रिया ।

आंछ् (धा० प०) [आंछति, आंछित) १ लंबा करना । बढ़ाना । २ ठीक करना । बैठाना । (जैसे हड्डी का)

आंछनम् (न०) (हड्डी या टांग को) बराबर या ठीक करना या बैठाना ।

आंजनम् (न०) अंजन ।

आंजनः, **आंजनेयः** } (पु०) हनुमान जी का नाम ।

आटविकः (पु०) १ बनरखा । २ अग्रगन्ता ।

आटिः (पु० स्त्री०) पक्षी विशेष । शरारि । [इसका "आटि" भी रूप होता है ।]

आटीकनं (न०) बछड़े की उछलकूद।
आटीकरः (पु०) बैल। साँड।
आटोपः (पु०) १ अभिमान। आत्मश्लाघा। २ सूजन। फैलाव। बढ़ाव। फुलाव।
आडम्बरः (पु०) १ अभिमान। मद। औद्धत्य। २ दिखावट। वाह्य उपाङ्ग। ३ बिगुल या तुरही की आवाज़, जो आक्रमण की सूचक हो। ४ आरम्भ। शुरुआत। ५ रोष। क्रोध। ६ हर्ष। आनन्द। ७ बादलों की गर्जन। हाथियों की चिंघार। ८ लड़ाई में बजाया जाने वाला ढोल। ९ युद्ध का कोलाहल या गर्जन तर्जन।
आडम्बरिन् (न०) मदमत्त। अभिमान में चूर।
आढकः (पु०) } आढकम् (न०) } द्रोण नामक तौल का चतुर्थांश।
आढ्य (वि०) १ धनी। धनवान। २ सम्पन्न ३ बहुतायत से। विपुल।—चर, (पु०)—चरी, (स्त्री०) जो एक बार धनी हो।
आढ्यंकरण (वि०) धनवान करने वाला।
आढ्यंकरणम् (न०) धन। सम्पत्ति।
आणक (वि०) नीच। ओछा। दुष्ट।
आणकम् (न०) मैथुन करने का आसन विशेष।
आणव (वि०) [स्त्री०—आणवी] बहुत ही छोटा।
आणवं (न०) बहुत ही छोटापन या अत्यन्त सूक्ष्मता।
आणिः (पु० स्त्री०) १ गाड़ी की धुरी की चाबी या पिन। २ घुटने के ऊपर का जांघ का भाग। ३ सीमा। हद। ४ तलवार की धार।
आंड } आण्ड } (वि०) अण्डज। वे जीव जो अंडे से उत्पन्न होते हैं।
आंडः } आण्डः } १ (पु०) हिरण्यगर्भ या ब्रह्मा की उपाधि।
आंडम् } आण्डम् } (न०) १ अँडों का ढेर। फोता। व्याँत। २ अण्डकोश की थैली।
आंडीर } आण्डीर } (वि०) १ बहुत से अँडों वाला। २ बढ़ा हुआ पूर्णवयप्राप्त। (जैसे सांड)
आतंकः } आतङ्कः } (पु०) १ रोग। शारीरिक रोग। २ पीड़ा। मानसिक कष्ट। दारुण व्यथा। ३ भय। डर। शङ्का। ४ ढोल या तबले का शब्द।
आतंचनम् } आतञ्चनम् } (न०) १ दही। २ जमा हुआ दूध। ३ एक प्रकार का तोड़ या पद्धा। ४ प्रसन्न करना। सन्तुष्ट करना। ५ भय। ख़तरा। आपत्ति। सङ्कट। ६ रफ्तार। गति।
आतत (वि०) १ फैला हुआ। बिछा हुआ। छाया हुआ। बढ़ा हुआ। २ ताना हुआ (जैसे धनुष की प्रत्यंचा)
आततायिन् (पु०) १ महापापी। २ शस्त्र उठा कर किसी का वध करने को उद्यत। शुक्र नीति में छः प्रकार के आततायी बतलाये गये हैं। यथा— आग लगाने वाला। विष खिलाने वाला। शस्त्र हाथ में लिये किसी का वध करने को उद्यत। धन का चोर। खेत का हरने वाला और स्त्रीचोर।

"अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रोन्मत्तो धनापहः।
क्षेत्रदारहरश्चैतान् षड् विद्यादाततायिनः॥"

आतपः (पु०) १ सूर्य अथवा आग की गर्मी। घाम। २ प्रकाश।—उदकं, (न०) मृगतृष्णा।—त्रं,—(न०)—अर्कं, (न०) छाता। छत्र।—लंघनं, (न०) लपट का लगना।—वारणं, (न०) छाता।—शुष्क, (वि०) धूप में सुखाया हुआ।
आतपनः (पु०) शिव जी का नाम।
आतरः } आतारः } (पु०) नाव की उतराई या पुल का महसूल। मार्गव्यय। भाड़ा।
आतर्पणं (न०) १ सन्तोष। २ प्रसन्नता। सन्तुष्टकरण। ३ दीवाल पर सफेदी पोतना। फर्श लीपना।
आतापिन् } आतायिन् } (न०) पक्षी विशेष। चील।
आतिथेय (वि०) [स्त्री०—आतिथेयी] १ अतिथियों का सत्कार। २ अतिथि के योग्य। अतिथि के लिये उपयुक्त। [पहुनई।
आतिथेयं (न०) महमानदारी। अतिथि का सत्कार।
आतिथ्य (वि०) पहुनई के योग्य।
आतिथ्यः (पु०) पाहुना। महमान। अतिथि।
आतिथ्यं (न०) पहुनई। महमानदारी।
आतिदेशिक (वि०) [स्त्री०—आतिदेशिकी] (व्याकरण में) अतिदेश से सम्बन्ध रखने वाला।

आतिरेक्यं / आतिरैक्यम् (न०) विपुलता । फालतूपन । अति आधिक्यता । अधिकाई ।

आतिशय्यम् (न०) आधिक्य । बहुतायत । ज्यादती ।

आतुः (पु०) लकड़ी या लट्ठों का बेड़ा । घरनई या चौघड़ा ।

आतुर (वि०) १ चोटिल । घायल । २ रोगी । दुःखी । पीडित । ३ शरीर या मन का रोगी । ४ उत्सुक । अधीर बेचैन । ५ निर्बल । कमज़ोर ।—शाला, (स्त्री०) अस्पताल ।

आतुरः (पु०) बीमार । मरीज़ ।

आतोद्यं / आतोद्यकम् (न०) वाद्य विशेष । एक प्रकार का बाजा ।

आत्त (व० कृ०) १ लिया हुआ । प्राप्त । स्वीकार किया हुआ । माना हुआ । २ इकरार किया हुआ । ३ आकर्षण किया हुआ । ४ निकाला हुआ । खींच कर बाहर निकाला हुआ ।—गन्ध, (वि०) १ शत्रु ने जिसके अहङ्कार को दूर कर डाला हो । शत्रु से पराजित । २ सूंघा हुआ ।—गर्व, (वि०) नीचा दिखलाया हुआ । तिरस्कृत । अधःपतित । [का ।

आत्मक (वि०) बना हुआ । ढंग का या स्वभाव

आत्मकीय / आत्मीय (वि०) अपना । अपने से सम्बन्ध युक्त ।

आत्मन् (पु०) १ आत्मा । जीव । २ परमात्मा । ३ मन । ४ बुद्धि । ५ मननशक्ति । ६ स्फूर्त्ति । ७ मूर्त्ति । शक्ल । ८ पुत्र ।

"आत्मा वै पुत्रनामासि" ।

९ उद्योग । सावधानी । १० सूर्य । ११ अग्नि । १२ पवन । १३ सार । १४ विशेषता । लक्षण । १५ स्वभाव । प्रकृति । १६ पुरुष या समस्त शरीर ।—अधीन, (वि०) स्वावलम्बी । स्वतंत्र ।—आधीनः, (पु०) १ पुत्र । २ भोजाई । ३ विदूषक । मसख़रा ।—अनुगमनम्, व्यक्तिगत उपस्थिति या विद्यमानता ।—अपहारकः, (पु०) पाखंडी । बहुरूपिया ।—आराम, (वि०) १ ज्ञान-प्राप्ति का प्रयासी । अध्यात्मविद्या का खोजी । २ अपने आत्मा में प्रसन्न रहने वाला ।—आशिन्, (पु०) मछली जो अपने बच्चों को खा जाया करती है ।—आश्रयः, (पु०) अपने ऊपर निर्भर रहने वाला ।—उद्भवः, (पु०) १ पुत्र । कामदेव ।—उद्भवा, (स्त्री०) पुत्री ।—उपजीविन्, (पु०) १ अपने परिश्रम से उपार्जित आय पर रहने वाला । २ दिन में काम करने वाला मज़दूर । ३ अपनी पत्नी की कमाई खाने वाला । ४ नाटक का पात्र । सार्वजनिक अभिनेतृ ।—काम, (वि) १ आत्माभिमानी । अहङ्कारी । २ केवल । ब्रह्म या परमात्मा की भक्ति करने वाला ।—गुप्तिः, (स्त्री०) गुफा । मांद ।—ग्राहिन् (वि०) स्वार्थी । लालची ।—घातः, (पु०) १ आत्महत्या । २ धर्मविरोध ।—घातिन्, (पु०)—घातक, (पु०) आत्महत्या । २ धर्मविरोधी ।—घोषः, (पु०) १ मुर्गा । कुक्कुट । २ काक । कौवा ।—जः, (पु०)—जन्मन्, (पु०)—जातः, (पु०)—प्रभवः (पु०)—सम्भवः, (पु०) १ पुत्र । २ कामदेव ।—जा (स्त्री०) १ पुत्री । २ तर्कशक्ति । समझने की शक्ति या समझ । बुद्धि ।—जयः, (पु०) अपने आपको जीतना । जितेन्द्रियत्व ।—ज्ञ ,—विद्, (पु०) आत्मज्ञानी । ऋषि ।—ज्ञानं, (न०) आत्मा और परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान । २ सत्यज्ञान ।—तत्त्वं, (न०) जीव या आत्मा का अथवा परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान ।—त्यागः, (पु०) १ आत्मोत्सर्ग । २ आत्मनाश । आत्मघात ।—त्यागिन्, (पु०) १ आत्मघात । आत्महत्या । २ स्वधर्मत्याग ।—त्राणं, (न०) १ आत्मरक्षा । २ शरीररक्षक । बाडी-गार्ड ।—दर्शः, (पु०) दर्पण । आईना ।—दर्शनम्, (न०) १ अपना दर्शन करना । आत्मज्ञान । सत्य ज्ञान ।—द्रोहिन् (वि०) अपने ऊपर अत्याचार करने वाला । २ आत्मघाती ।—नित्य, (वि०) अत्यन्त प्रिय ।—निवेदनम्, (न०) अपने आप को समर्पण करना । आत्मसमर्पण ।—निष्ठ, (वि०) सदैव आत्मविद्या की खोज में रहने वाला ।—प्रशंसा, (स्त्री०) आत्मश्लाघा । अपनी बड़ाई ।—बन्धुः,—बान्धवः, (पु०) अपने नातेदार । [धर्मशास्त्र में नातेदारों के अन्तर्गत इतने लोगों की गणना है ।

> आत्ममातुः स्वसुः पुत्रा आत्मपितुः स्वसुः सुताः ।
> आत्ममातुलपुत्राश्च विज्ञेया आत्मबान्धवाः ॥

अर्थात् मौसी का पुत्र । बुआ का पुत्र और मामा का पुत्र ।]—बोधः, (पु०) आत्मज्ञान । २ आध्यात्मिकज्ञान ।—भूः,—योनिः, (पु०) १ ब्रह्मा का नाम । २ विष्णु का नाम । ३ शिव का नाम । ४ कामदेव । ५ पुत्र ।—भूः, (स्त्री०) १ पुत्री । २ प्रतिमा । ३ बुद्धि ।—मात्रा, (स्त्री०) परमात्मा का एक अंश ।—मानिन्, (वि०) १ आत्मसम्मान रखने वाला । २ अभिमानी ।—याजिन्, (वि०) जो अपने लिये या अपने को बलि दे । (पु०) सब में अपने को देखने वाला । आत्मदर्शी विद्वान् ।—लाभः, (पु०) जन्म । उत्पत्ति पैदायश ।—वञ्चक, (वि०) अपने आपको धोखा देने वाला ।—वधः,—वध्या,—हत्या, (स्त्री०) आत्मघात ।—वशः, (पु०) आत्मसंयम । आत्मशासन ।—विद्, (पु०) बुद्धिमान पुरुष । ज्ञानी ।—विद्या (स्त्री०) आध्यात्मिक विद्या ।—वीरः (पु०) १ पुत्र । २ पत्नी का भाई । साला । ३ (नाट्यशास्त्र में) विदूषक ।—वृत्तिः, (स्त्री०) १ हृदय की परिस्थिति ।—शक्तिः, (स्त्री०) अपनी सामर्थ्य ।—श्लाघा,—स्तुतिः, (स्त्री०) अपनी बड़ाई । शेखी । डींग ।—संयमः, (पु०) आत्मवशत्व ।—सम्भवः,—समुद्भवः (पु०) १ पुत्र । २ कामदेव । ३ ब्रह्मा । विष्णु । शिव की उपाधि ।—सम्भवा,—समुद्भवा (स्त्री०) १ पुत्री । २ बुद्धि ।—सम्पन्न, (वि०) स्वस्थ । धीरचेता । संयत । धृतात्मा । २ बुद्धिमान । प्रतिभाशाली ।—हननं, (न०)—हत्या (स्त्री०) आत्मघात । खुदकुशी ।—हित, (वि०) अपना लाभ । अपना फायदा ।

आत्मना (अव्यया०) स्वयमर्थक रूप से उसका प्रयोग होता है । यथा—

> अद्य धारवमिता त्वमात्मना ।
>
> रामायण ।

आत्मनीन (वि०) १ निज से सम्बन्ध रखने वाला । निज का । अपना । २ आत्महितकर ।

आत्मनीनः (पु०) १ पुत्र । २ साला । ३ विदूषक ।

आत्मनेपद (न०) १ संस्कृत व्याकरण में धातु में लगने वाले दो तरह के प्रत्ययों में से एक । २ आत्मनेपद प्रत्यय के लगने से बनी हुई क्रिया ।

आत्मंभरि } आत्मम्भरि } १ जो अकेला अपने को पाले । २ जो बिना देवता पितर और अतिथि को निवेदन किये भोजन करे । ३ उदरंभरि । पेटू । स्वार्थी । लालची ।

आत्मवत् (वि०) १ धृतात्मा । संयत । धीरचेता । २ बुद्धिमान । [संयम । बुद्धिमत्ता ।

आत्मवत्ता (स्त्री०) धीरता । धृतात्मता । आत्म-

आत्मसात् (अव्यया०) अपने अधिकार में । अपने वश में ।

आत्यंतिक } आत्यन्तिक } (वि०) [स्त्री०—आत्यंतिकी, आत्यन्तिकी] १ लगातार । अविरत । अनन्त । स्थायी । अविनाशी । २ बहुत । अतिशय । सर्वाधिक । ३ परम । प्रधान । महान् । सम्पूर्ण । बिल्कुल ।

आत्ययिक (वि०) [स्त्री०—आत्ययिकी] १ नाशकारी । विपत्तिकारी । पीड़ाकारी । दुःखद । २ अमाङ्गलिक । अशुभ । ३ जरूरी । अत्यन्त आवश्यक ।

आत्रेय (वि०) अत्रि के वंश का । अत्रिका । अत्रि से उत्पन्न । [की पत्नी । ३ रजस्वला स्त्री ।

आत्रेयी (स्त्री०) १ अत्रि के वंश में उत्पन्न स्त्री । २ अत्रि

आत्रेयिका (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

आथर्वण (वि०) [स्त्री०—आथर्वणी] अथर्ववेद से निकला हुआ या अथर्ववेद का ।

आथर्वणः (पु०) १ अथर्वण वेद को जानने वाला । ब्राह्मण । २ अथर्वण वेद । ३ गृहचिकित्सक । पुरोहित । [ब्राह्मण ।

आथर्वणिकः (पु०) अथर्वण वेद पढ़ा हुआ

आदंशः (पु०) १ दाँत । २ काटने की क्रिया । काटने से पैदा हुआ घाव ।

आदरः (पु०) १ सम्मान । प्रतिष्ठा । मान । इज़्ज़त । २ ध्यान । मनोयोग । मनोनिवेश । ३ उत्सुकता । अभिलाषा । ४ उद्योग । प्रयत्न । ५ आरम्भ । शुरूआत । ६ प्रेम । अनुराग ।

आदरणं (न०) आदर सत्कार ।
आदर्शः (पु०) १ दर्पण । आईना । २ मूल ग्रन्थ जिससे नक़ल की जाय । नमूना । बानगी । ३ प्रतिलिपि । ४ टिप्पणी टीका । भाष्य । विवरण । अर्थ ।
आदर्शकः (पु०) दर्पण । आईना । शीशा ।
आदर्शनम् (न०) १ दिखावट दिखाने के लिये सजावट । २ दर्पण ।
आदहनम् (न०) १ जलन । २ चोट । ३ हनन । ३ तिरस्कार । गरियाना । ४ क़बरस्तान । ५ श्मशान ।
आदानं (न०) १ ग्रहण । स्वीकृति । पकड़ । २ आर्जन । प्राप्ति । ३ (रोग का) लक्षण ।
आदायिन् (वि०) लेना । प्राप्त करना ।
आदि (वि०) १ प्रथम । प्रारम्भिक । आदि कालीन । २ मुख्य । प्रधान । प्रसिद्ध । ३ आदिकाल का । —अन्त (वि०) जिसका आरम्भ और समाप्ति हो । शुरू और अख़ीर वाला ।—अन्तं, (न०) आरम्भ और समाप्ति । करः,—कर्तृ, —कृत्, (पु०) सृष्टिकर्त्ता । ब्रह्म की उपाधि विशेष ।—कविः, (पु०) ब्रह्म और वाल्मीकि की उपाधि विशेष ।—काण्डं, (न०) वाल्मीकि रामायण का प्रथम अर्थात् बालकाण्ड ।—कारणं, (न०) सृष्टि का मूलकारण सांख्यवाले प्रकृति को और नैयायिक पुरुष को आदिकारण मानते हैं ।—काव्यं (न०) वाल्मीकि रामायण ।—देवः (पु०) १ नारायण या विष्णु । २ सूर्य । ३ शिव ।—दैत्यः (पु०) हिरण्यकशिपु की उपाधि ।—पर्वन् (न०) महाभारत के प्रथमपर्व का नाम । —पुरुषः, या —पूरुषः, (पु०) विष्णु । नारायण ।—बलं, (न०) जनन शक्ति ।—भवः (पु०) १ ब्रह्मा की उपाधि । २ विष्णु का नाम । ३ ज्येष्ठ भ्राता ।—मूलं, (न०) आदिकारण ।—वराहः (पु०) विष्णु भगवान की उपाधि ।—शक्तिः (स्त्री०) माया की सामर्थ । दुर्गा की उपाधि । —सर्गः (पु०) प्रथम सृष्टि ।
आदितः } आदौ } (अव्यया०) प्रथमतः । अव्वलन ।
आदितेयः (पु०) १ अदिति के सन्तान । २ देवता ।
आदित्यः (पु०) १ अदिति-पुत्र । देवता । २ द्वादश आदित्य । ३ सूर्य । भास्कर । ४ विष्णु का पाचवा अवतार ।—मण्डलं, (न०) सूर्य का घेरा ।—सुनुः, (पु०) १ सूर्यपुत्र । २ सुग्रीव का नाम । ३ यम । ४ शनिग्रह । ५ कर्ण का नाम । ६ सावर्ण नाम के मनु । ७ वैवस्वत मनु ।
आदिनव (पु०) } आदीनवः (पु०) } आदिनवम् (न०) } आदीनवम् (न०) } १ दुर्भाग्य । बदक़िस्मती । विपत्ति । २ अपराध । दोष ।
आदिम (वि०) प्रथम । आदिकालीन । असली ।
आदीपनम् (न०) १ आग में जलाना । २ भड़काना । ३ किसी उत्सव के अवसर पर दीवाल की पुताई और फ़र्श की लिपाई ।
आदृत (व० कृ०) सम्मानित । आदर किया गया ।
आदेवनम् (न०) १ जुआ । २ जुआ का पांसा । ३ चौसर की बिछात । ४ जुआघर ।
आदेशः (पु०) १ आज्ञा । हुक्म । २ निर्देश । नियम । ३ वर्णन । सूचना । विज्ञप्ति । ४ भविष्यद्वाणी । ५ व्याकरण में अक्षरपरिवर्तन ।
आदेशिन् (वि०) १ आज्ञा देने वाला । हुक्म देने वाला । २ उभाड़ने वाला । उकसाने वाला । (पु०) १ आज्ञा देने वाला । सेनापति । २ ज्योतिषी ।
आद्य (वि०) १ प्रथम । प्राथमिक । २ सर्वप्रधान । मुख्य । अगुआ ।—कविः (पु०) वाल्मीकि ।
आद्या (स्त्री०) १ दुर्गा की उपाधि । २ मास की प्रथम तिथि ।
आद्यं (न०) १ आरम्भ । २ अनाज । भोज्य पदार्थ ।
आद्यून (वि०) १ निर्लज्जता पूर्वक । बेशर्मी से । २ पेट्ट । मरभुका । भूखा । बुभुक्षित ।
आद्योतः (पु०) प्रकाश । चमक ।
आधमनम् (न०) १ अमानत । बंधक । २ बिक्री के माल की बनावटी चढ़ी हुई दर ।
आधमर्ण्यं (न०) क़र्ज़दारी ।
आधर्मिक (वि०) बेईमान । अन्यायी ।
आधर्षः (पु०) १ तिरस्कार । २ बरजोरी की हुई चोट ।
आधर्षणम् (न०) १ सज़ा । दण्ड । २ खण्डन । ३ चोटिल करना ।

आधर्षित (व० कृ०) १ चोटिल किया हुआ । २ बहस में हराया हुआ । ३ सज़ायाफ़्ता । दण्डित ।

आधानम् (न०) १ रखना । ऊपर रखना । २ लेना । प्राप्त करना । फिर से लेना । वापिस लेना । ३ हवन के अग्नि को स्थापित करना । ४ करना । बनाना । ५ भीतर डालना । देना । ६ पैदा करना । तैयार करना । ७ बंधक । धरोहर । अमानत ।

आधानिकः (पु०) गर्भाधान संस्कार ।

आधारः (पु०) १ आश्रय । आसरा । सहारा अवलंब । २ व्याकरण में अधिकरण कारक । ३ थाला । आलवाल । ४ पात्र । ५ नीव । बुनियाद । मूल । ६ (योगशास्त्र में वर्णित) मूलाधार । ७ बाँध । बंध । ८ नहर ।

आधिः (पु०) १ मन की पीडा । २ शाप । अकोसा । विपत्ति । ३ वंधक । धरोहर । ४ स्थान । आवास-स्थान । ५ ठिकाना । स्थान । ६ कुटुम्ब के भरण पोषण के लिये चिन्तित मनुष्य ।—ज्ञ, (वि०) पीडित ।—भोगः (पु०) भोगवंधक ।—स्तेनः (पु०) वंधक धरी हुई वस्तु का, विना वस्तु के मालिक की अनुमति के भोग करने वाला ।

आधिकरणिकः (पु०) न्यायाधीश । जज ।

आधिकारिक (वि०) [स्त्री०—आधिकारिकी] १ सर्वप्रधान । सर्वोत्कृष्ट । २ सरकारी दफ़्तर सम्बन्धी ।

आधिक्यं (न०) १ बहुतायत । अधिकता । ज्यादती । २ सर्वोत्कृष्टता । सर्वोपरिता ।

आधिदैविक (पु०) [स्त्री०—आधिदैविकी] १ देवताकृत । देवताओं द्वारा प्रेरित । यक्ष, देवता, भूत, प्रेत आदि द्वारा होने वाला । २ प्रारब्ध से उत्पन्न ।

आधिपत्यं (न०) १ प्रभुत्व । स्वामित्व । अधिकार । २ राजा के कर्त्तव्य । यथा ।

"पाण्डोः पुत्रं प्रकुरुष्वाधिपत्ये ।"

महाभारत ।

आधिभौतिक (वि०) [स्त्री०—आधिभौतिकी] व्याघ्र सर्पादि जीवों द्वारा कृत (पीड़ा) । जीव अथवा शरीर धारियों द्वारा प्राप्त । तत्वों से उत्पन्न । प्राणि सम्बन्धी । [शासन ।

आधिराज्यं (न०) राजकीय । आधिपत्य । सर्वश्रेष्ठ

आधिवेदनिकं (न०) सम्पत्ति । प्रथम स्त्री का धन जो पुरुष द्वारा दूसरी स्त्री से विवाह करने पर उसे दिया जाय । विष्णु स्मृति में लिखा है

यच्च द्वितीयविवाहार्थिना पूर्वस्त्रियै
पारितोषिकं धनं दत्तं तदाधिवेदनिकं ॥

आधुनिक (वि०) [स्त्री०—आधुनिकी] अब का । हाल का । आजकल का । साम्प्रतिक । नवीन । वर्त्तमान काल का । इदानीन्तन ।

आधोरणः (पु०) हाथीसवार अथवा महावत ।

आध्मानम् (न०) १ धौंकनी से धौंकना । फूकना । (आलं०) बाढ । २ शेखी । डींग । ३ धौंकनी । ४ पेट का फूलना । जलंधर रोग ।

आध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—आध्यात्मिकी] १ आत्मासम्बन्धी । पवित्र । २ परमात्मा । ३ आत्मसम्बन्धी । ४ मन से उत्पन्न (दुःख, शोक)

आध्यानम् (न०) १ चिन्ता । फिक्र । २ शोकमय स्मृति । ३ ध्यान ।

आध्यापकः (पु०) शिक्षक । दीक्षागुरु ।

आध्यासिक (वि०) [स्त्री०—आध्यासिकी] अध्यास से उत्पन्न ।

आध्वनिक (वि०) [स्त्री०—आध्वनिकी] यात्री । यात्रा करने में चतुर । यात्रा करने वाला ।

आध्वर्यव (वि०) [स्त्री०—आध्वर्यवी] अध्वर्यु सम्बन्धी अथवा यजुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला ।

आध्वर्यवम् (न०) १ यज्ञ में कार्यविशेष । २ विशेषतः अध्वर्यु का कार्य करने वाला ब्राह्मण । ३ यजुर्वेद जानने वाला ।

आनः (पु०) १ स्वांस लेना । वायु को भीतर खींचना । २ फूंकना ।

आनकः (पु०) १ नगाडा । वडा ढोल । २ गरजने वाला बादल ।—दुन्दुभि (पु०) श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव जी की उपाधि ।—दुन्दुभि या —दुन्दुभी, (स्त्री०) वड़ा ढोल । नगाडा ।

आनतिः (स्त्री०) झुकना । नीचा होना । प्रणाम । २ सम्मान । आतिथ्य । अतिथि सत्कार ।

आनद्ध (वि०) १ बंधा हुआ। गसा हुआ। २ मल-बद्धकारक। [धारण करना।

आनद्धः (पु०) १ ढोल। २ पोशाक। परिच्छद

आननम् (न०) १ मुँह। चेहरा। २ अध्याय। परिच्छेद।

आनन्तर्यम् (न०) अनन्तर। अन्तर। समीप। निकट।

आनन्त्यम् (न०) १ असीमत्व। २ अनन्तत्व। ३ अमरत्व। ४ ऊर्ध्वलोक। स्वर्ग। भावीसुख।

आनन्दः (पु०) १ हर्ष। सुख। प्रसन्नता। २ ईश्वर। ब्रह्म। शिव का नाम।—काननम्,—वनं (न०) काशीपुरी। वाराणसीपुरी।—पटः (पु०) वर के वस्त्र।—पूर्ण (वि०) परमानन्द से भरा हुआ।—पूर्णः (पु०) परब्रह्म।—प्रभवः, (पु०) वीर्य। धातु।

आनन्दथु (वि०) प्रसन्नता। हर्षपूर्ण।

आनन्दथुः (पु०) प्रसन्नता। हर्ष।

आनन्दन (वि०) प्रसन्न करते हुए। आनन्दित करते हुए।

आनन्दनम् (न०) १ प्रसन्न करना। आनन्दित करना। २ प्रणाम करना। नमस्कार करना। ३ आते जाते समय मित्रों का शिष्टोचित कुशल प्रश्नादि पूंछ कर उपचार करना।

आनन्दमय (वि०) हर्षपूरित। सुख से पूर्ण।—कोषः (पु०) शरीर के पाँच कोषों में से एक।

आनन्दमयः (पु०) परब्रह्म।

आनन्दिः (पु०) १ प्रसन्नता। हर्ष। २ कौतूहल।

आनन्दिन् (वि०) १ प्रसन्न। हर्षित। २ प्रसन्नकर।

आनर्तः (पु०) १ नाचघर। नृत्यशाला। रंगभूमि। २ युद्ध। लड़ाई। ३ सौराष्ट्र देश का दूसरा नाम अर्थात् काठियावाड़। ४ सूर्यवंशी एक राजा का नाम, जो राजा शर्य्याति का पुत्र था।

आनर्थक्यं (न०) १ निरर्थकता। बेकारपन। २ अयोग्यता।

आनायः (पु०) जाल।

आनायिन् (पु०) मछुआ। धीवर। मल्लाह।

आनाय्यः (पु०) दक्षिणाग्नि।

आनाहः (पु०) १ बंधन। २ कोष्टबद्धता। कब्ज़ियत। ३ (वस्त्र की) चौड़ाई या अर्ज़।

आनिल (वि०) [स्त्री०—आनिली] वायु से उत्पन्न। वातल।

आनिलः } (पु०) हनुमान या भीम का नाम।
आनिलिः }

आनील (वि०) कालौंहा। हल्का नीला।

आनीलः (पु०) काला घोड़ा।

आनुकूलिक (वि०) [स्त्री०—आनुकूलिकी] उपयुक्त। सुविधाजनक। एकसा।

आनुकूल्यं (न०) १ अनुकूलता। उपयुक्तता। २ अनुग्रह। कृपा।

आनुगत्यम् (न०) परिचय। जानपहचान। हेलमेल।

आनुगुण्यम् (न०) अनुकूलता। उपयुक्तता। समानता। बराबरी। [देहाती। ग्रामीण।

आनुग्रामिक (वि०) [स्त्री०—आनुग्रामिकी]

आनुनासिक्यम् (न०) अनुनासिकता।

आनुपदिक (वि०) [स्त्री०—आनुपदिकी] १ पीछा करते हुए। अनुगमन करते हुए। २ अध्ययन करते हुए।

आनुपूर्वं (न०) }
आनुपूर्व्यम् (न०) } १ शैली। परिपाटी। क्रम। रीति। २ वर्णक्रम।
आनुपूर्वी (स्त्री०) }

आनुपूर्वं }
आनुपूर्वेण }
आनुपूर्व्यं } (अव्यया०) एक के बाद दूसरा। यथाक्रम।
आनुपूर्व्येण }

आनुमानिक (वि०) [स्त्री०—आनुमानकी] १ अनुमान प्रमाण से सम्बन्ध रखने वाला। २ अनुमानलभ्य। ३ संख्या। अटकल पच्चू।

आनुमानिकम् (न०) सांख्य शास्त्र में कहा गया प्रधान।

आनुयात्रिकः (पु०) अनुयायी। चाकर।

आनुरक्तिः (स्त्री०) प्रीति। अनुराग।

आनुलोमिक (वि०) [स्त्री०—आनुलोमिकी] १ क्रमानुयायी। क्रम से काम करने वाला। २ अनुकूल।

आनुलोम्यम् (न०) १ स्वाभाविक क्रम। ठीक क्रम। २ क्रमानुगत क्रम। ३ अनुकूलता। [पड़ोसी।

आनुवेश्यः (पु०) अपने घर के समीप ही रहने वाला

आनुश्रविक (वि०) जिसको परंपरा से सुनते चले आये हो। [वैदिक कर्मानुष्ठान।

आनुश्रविक. (पु०) वेद में विधान किया हुआ।

आनुषंगिक } (वि०) [स्त्री०—आनुषंगिकी,
आनुषङ्गिक } आनुषङ्गिकी] १ साथ साथ होने वाला। २ अनिवार्य। आवश्यक। ३ गौण। ४ अनुरक्त। शौकीन। ५ विषयक। सम्बन्धी। यथोचित। सुव्यवस्थित। ६ अंडाकार। ७ अन्तर्भुक्त। उपलब्ध।

आनूप (वि०) [स्त्री०—आनूपी] १ पानी वाला। दलदली। नम। २ दल दल में उत्पन्न हुआ।

आनूपः (पु०) वह जीव जिसे दल दल या जल में रहना पसंद हो (जैसे भैंसा, भैस।)

आनृण्यम् (न०) अऋणता। कर्ज़ से बेबाक होना।

आनृशंस } (वि०) कृपालु। दयावान।
आनृशंस्य } रहमदिल।

आनृशंसम् } १ रहमदिली। २ कृपालुता। ३
आनृशंस्यम् } दया। रहम। तरस।

आनैपुणं } (न०) अकुशलता। मूढ़ता।
आनैपुण्यं }

आंत } (वि०) [स्त्री०—आंति, आन्ति]
आन्त } अन्तिम। अन्त का।

आंतम् } (अव्यया०) पूर्णतः। अन्ततः।
आन्तम् }

आंतर } (वि०) १ भीतरी। गुप्त। छिपा हुआ।
आन्तर } २ अत्यन्त भीतरी। भीतर का।

आंतरम् } (न०) अभ्यन्तरीण स्वभाव।
आन्तरम् }

आंतरिक्ष } (वि०) १ व्योम सम्बन्धी।
आन्तरिक्ष } आकाशी। स्वर्गीय। नैसर्गिक। २
आंतरीक्ष } अन्तरिक्ष में उत्पन्न।
आन्तरीक्ष }

आंतरिक्षं } (न०) आकाश। आसमान।
आन्तरिक्षम् } पृथिवी और आकाश के बीच का स्थान।

आंतर्गणिक } (वि०) शामिल। सम्मिलित।
आन्तर्गणिक }

आंतर्गेहिक } (वि०) घर के भीतर होने वाला
आन्तर्गेहिक } या उत्पन्न।

आंतिका, आन्तिका (स्त्री०) बड़ी बहिन।

आंदोल्, आन्दोल् (धा० प०) [दोलयती, दोलित] १ झूलना। इधर उधर डोलना। २ हिलना। काँपना।

आंदोलः } (पु०) १ झूलना। झूला। २ कंपकपी।
आन्दोलः }

आंचसः } (पु०) भात का माँड़ या माँड़ी।
आन्चस. }

आंधसिकः } (पु०) रसोइया। पाचक।
आन्धसिकः }

आंध्यं } (न०) अंधापन।
आन्ध्यं }

आंध्र } (वि०) आन्ध्र देशीय। तिलंगाना
आन्ध्र } देश का।

आंध्रः } (पु०) तिलंगाना देश।
आन्ध्रः }

आन्वयिक (वि०) [स्त्री०—आन्वयिकी] १ कुलीन। अच्छे कुल में उत्पन्न। अच्छी जाति का। २ सुव्यवस्थित। नियमित।

आन्वाहिक (वि०) [स्त्री०—आन्वाहिकी] नित्य होने वाला (कृत्य)। नित्य (कर्म)।

आन्वीक्षिकी (स्त्री०) १ तर्कशास्त्र। न्याय दर्शन। २ आत्मविद्या।

आप् (धा० प०) [आप्नोति। आप्त] १ प्राप्त करना। पाना। २ पहुँचना। मिलना। (आगे गये हुए को पीछे जा कर) पकड़ लेना। ३ व्याप्त होना। छेक लेना। ४ अनुमति देना।

आपकर (वि०) [स्त्री०—आपकरी] अप्रीतिकर। उपद्रवकारी।

आपक्व (वि०) कच्चा। अधसिका।

आपक्वम् (न०) रोटी। चपाती।

आपगा (स्त्री०) नदी। सरिता।

आपगेयः (पु०) नदीपुत्र। भीष्म या कृष्ण की उपाधि।

आपण. (पु०) दूकान। हाट। बाज़ार।

आपणिक (वि०) [स्त्री०—आपणिकी] व्यापार सम्बन्धी। वाणिज्य सम्बन्धी। [विक्रेता।

आपणिकः (पु०) दूकानदार। व्यापारी। व्यवसायी।

आपतनं (न०) १ आगमन। समीप आगमन। २ घटना। हादसा। ३ प्राप्ति। उपलब्धि। ४ ज्ञान। ५ स्वाभाविक परिणाम।

आपतिक (वि०) [स्त्री०—आपतिकी] इत्तिफ़ाकिया। अचानक। दैवी।
आपतिक (पु०) बाज पक्षी।
आपतिः (स्त्री०) १ परिवर्तन। २ प्राप्ति। ३ सङ्कट। आफ़त। विपत्ति। ४ (दर्शन में) अनिष्ट प्रसङ्ग।
आपद् (स्त्री०) विपत्ति। सङ्कट।—कालः, (पु०) सङ्कट का समय। कष्ट का समय।—गत,—ग्रस्त,—प्राप्त, (वि०) १ विपत्ति में फँसा हुआ। २ अभागा। कमबख्त।—धर्मः, (पु०) वे कृत्य जो साधारण समय में शास्त्रविरुद्ध होने पर भी विपत्ति काल में किये जा सकते हैं।
आपदा (स्त्री०) विपत्ति। सङ्कट। [किरात।
आपनिकः (पु०) १ पन्ना। नीलम। पुखराज। २
आपन्न (व० कृ०) १ प्राप्त। उपलब्ध २ गिरा हुआ। मुबतिला।—सत्त्वा, (स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
आपमित्यक (वि०) बदले में पाया हुआ।
आपराह्णिक (वि०) [स्त्री०—आपराह्णिकी] दोपहर बाद का।
आपस् (न०) १ जल। पानी। २ पाप।
आपातः (पु०) १ आकर गिरना। आक्रमण। उतार। (सवारी से) उतरना। २ गिरना। पटकना। अधःपात। ३ किसी घटना का अचानक होना।
आपाततः (अव्यया०) अकस्मात्। अचानक। २ अन्त को। आख़िरकार।
आपादः (पु०) १ प्राप्ति। उपलब्धि। २ पुरस्कार। इनाम। पारिश्रमिक।
आपादनम् (न०) पहुँचना। लाना।
आपानम् } (न०) १ मद्यपों की मण्डली। आपानकम् } २ भैरवी चक्र। भोज। ३ कलारी की शराब की दूकान।
आपालिः (पु०) जूं। चीलर। जुआँ। चिलुए।
आपीडः (पु०) १ तंग करना। घायल करना। २ दबाना। निचोड़ना। ३ सीसफूल। ४ हार। माला।
आपीन (व० कृ०) मोटा ताज़ा। मज़बूत।
आपीनः (पु०) कूप। कुआँ। इंनारा।
आपीनम् (न०) स्तन के ऊपर की घुंडी। थन। ऐन।

आपूपिक (वि०) [स्त्री०—आपूपिकी] १ अच्छे पुए बनाने वाला। २ पुआ खाने का आदी।
आपूपिकः (पु०) रसोइया। नानवाई। हलवाई।
आपूपिकं (न०) पुओं का ढेर।
आपूप्यः (पु०) १ आटा। चून। मांडा हुआ मीठा आटा जिससे पुआ बनाये जाय। २ सत्तू।
आपूरः (पु०) १ बहाव। धार। प्रवाह। २ पूर्ण करना। भरना।
आपूरणम् (न०) पूर्ण करना। भरना।
आपूषं (न०) धातु विशेष। रांगा या टीन।
आपृच्छा १ वार्तालाप। २ विदाई। अन्तिम रवानगी। ३ कौतुहल।
आपोशनः, (पु०) मंत्र विशेष जो भोजन करने के पूर्व और पीछे पढ़े जाते हैं। वे ये हैं। भोजन के आरम्भ में पढ़ा जाने वाला मंत्र —

"अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा"।

भोजनोपरान्त का मंत्र—अमृतापिधानमसि स्वाहा।
आप्त (व० कृ०) १ प्राप्त। पाया हुआ। हासिल। हासिल किया हुआ। २ पहुँचा हुआ। ३ विश्वास। ४ अन्तरंग। गोप्य। सच्चा (मनुष्य)। ५ घनिष्ट। परिचित। ६ युक्तियुक्त। समझदार।—काम, (वि०) पूर्णकाम। जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो चुकी हों।—कामः, (पु०) परब्रह्म।—गर्भा, (स्त्री०) गर्भवती स्त्री।—वचनम्, (न०) विश्वस्त पुरुष के वचन।—वाच्, (वि०) विश्वास करने योग्य। ऐसा पुरुष जिसके वचन प्रामाणिक माने जा सके। (स्त्री०) १ विश्वस्त या मातबर पुरुष की सलाह। २ वेद या श्रुति। स्मृति। इतिहास। पुराण।—श्रुतिः (स्त्री०) १ वेद। २ स्मृति।
आप्तः (पु०) १ विश्वस्त पुरुष। इतमीनान का आदमी। उपयुक्त पुरुष। २ सम्बन्धी। रिश्तेदार। मित्र। [२ संसार त्यागी।
आप्तम् (न०) १ भाज्य फल। बांट फल। लब्ध।
आप्तिः (स्त्री०) १ प्राप्ति। उपलब्धि। २ पहुँच। मिलनभेंट। ३ योग्यता। सम्मान। ४ समाप्ति। परिपूर्णता।
आप्य (वि०) १ जल सम्बन्धी। २ प्राप्य।

आप्यान (व० कृ०) १ मोटा। तगड़ा। रोबीला। मज़बूत। २ प्रसन्न। सन्तुष्ट।

आप्यानम् (न०) १ प्रीति। २ बाढ़। बढ़ती।

आप्यायनम् (न०) } १ पूर्ण करने या मोटा करने
आप्यायना (स्त्री०) } की क्रिया। २ सन्तुष्ट करना। अघाना। ३ आगे बढ़ना। उन्नति करना। ४ मुटाव। मोटापन। ५ पौष्टिक दवाई।

आप्रच्छनम् (न०) १ विदा माँगना। गमन के समय जाने की अनुमति लेना। २ स्वागत करना। ३ बधाई देना।

आप्रपदीन (वि०) पैर तक लटकता हुआ (अँगा)।

आप्लवः (पु०) } १ स्नान। डुबकी। गोता।
आप्लवनम् (न०) } २ चारो ओर पानी का छिड़काव।—व्रतिन्, या—आप्लुतव्रतिन् (पु०) गृहस्थ जिसने ब्रह्मचर्याश्रम से निकल गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो। स्नातक। [बाढ़। बूड़ा।

आप्लावः (पु०) १ स्नान। मार्जन। २ जल की

आफूकं (न०) अफीम।

आबद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ। जकड़ा हुआ। २ गढ़ा हुआ। ३ बना हुआ। ४ पाया हुआ। ५ रुका हुआ।

आबद्धम् (न०) } १ बाँधना। जोड़ना। २ जुआं।
आबद्धः (पु०) } ३ आभूषण। ४ स्नेह।

आबंधः, आबन्धः (पु०) } १ बंधन। बाँधने
आबंधनम्, आबन्धनम् (न०) } की रस्सी। २ जुए का जोत। ३ गहना। शृङ्गार। ४ स्नेह।

आबर्हः (पु०) १ चीर डालना या खींच लेना। २ मार डालना।

आबाधः (पु०) क्लेश। कष्ट। सन्ताप। हानि।

आबाधा (स्त्री०) १ चोट। पीड़ा। कष्ट। २ मानसिक क्लेश या सन्ताप। [सूचना।

आबोधनम् (न०) १ ज्ञान। समझ। २ शिक्षण।

आब्द (वि०) बादल सम्बन्धी या बादल का।

आब्दिक (वि०) वार्षिक। सालाना।

आभरणं (न०) १ गहना। ज़ेवर। शृङ्गार। २ पालन पोषण की क्रिया।

आभा (स्त्री०) १ चमक। दमक। कान्ति। २ रूप। रंग। सौन्दर्य। ३ सादृश्य। समानता। ४ छाया-चित्र। छाया। परछाईं। प्रतिबिम्ब।

आभाणकः (पु०) कहावत।

आभाषः (पु०) १ सम्बोधन। २ उपोद्घात। भूमिका।

आभाषणम् (न०) परस्पर कथोपकथन। बातचीत।

आभासः (पु०) १ चमक। दमक। आब। २ निदिध्यासन। भावना। ३ समानता। सादृश्य। ४ झलक। मिथ्याज्ञान। ५ तात्पर्य। अभिप्राय।

आभासुर }
आभास्वर } (वि०) चमकीला। सुन्दर।

आभासुरः }
आभास्वरः } (पु०) चौसठ देवगण का समूह।

आभिचारिक (वि०) [स्त्री०—आभिचारिकी] १ ऐन्द्रजालिक। बाजीगर। अमानुषिक २ शापित। अभिशापित। अकोसा हुआ।

आभिजन (वि०) [स्त्री०—आभिजनी] जन्म सम्बन्धी।

आभिजनम् (न०) कुलीनता। सत्कुलोद्भवता।

आभिजात्यम् (न०) १ कुलीनता। २ पद। ३ विद्वत्ता। ४ सौन्दर्य।

आभिधा (स्त्री०) १ शब्द। स्वर। २ नाम।

आभिधानिक (वि०) जो किसी कोष में हो।

आभिधानिकः (पु०) कोषकार।

आभिमुख्यं (न०) १ ओर। तरफ। २ सामने होना। आमने सामने। ३ आनुकूल्य।

आभिरूपकः (पु०) }
आभिरूप्यम् (न०) } सौन्दर्य। सुन्दरता।

आभिषेचनक (वि०) [स्त्री०—आभिषेचनकी] अभिषेक सम्बन्धी।

आभिहारिक (वि०) [स्त्री०—आभिहारिकी] भेंट करने योग्य। चढ़ाने योग्य।

आभिहारिकम् (न०) भेंट। चढ़ावा।

आभीक्ष्ण्यम् (न०) निरन्तर आवृत्ति।

आभीरः (पु०) १ अहीर। (बहुवचन में) एक देश का नाम तथा उस देश के निवासी।—पल्लिः,—पल्ली (स्त्री०) अहीरों का गाँव।

आभीरी (स्त्री०) अहीरिन।

आभील (वि०) भयानक। भयप्रद। डरानेवाला।

आभीलं (न०) चोट। शारीरिक पीड़ा।

आभुग्न (वि०) ज़रासा मुड़ा हुआ। थोड़ा टेढ़ा।

आभोगः (पु०) १ गोलाई । चक्कर । वृद्धि । सीमा । चौहद्दी । २ डीलडौल । आकार । विस्तार । लंबाई चौड़ाई । ३ उद्योग । ४ सांप का फैला हुआ फन । ५ भोगविलास । तृप्ति ।

आभ्यंतर } (वि०) [स्त्री०—आभ्यन्तरी] भीतरी ।
आभ्यन्तर } अंदर का । भीतर की ओर ।

आभ्यवहारिक (वि०) [स्त्री०—आभ्यवहारिकी] खानेयोग्य ।

आभ्यासिक (वि०) १ अभ्यास से उत्पन्न या अभ्यास का फल । २ अभ्यास । आवृत्ति । ३ समीपी । पड़ोस का । अभ्यासिक ।

आभ्युदयिक (वि०) [स्त्री०—अभ्युदयिकी] १ शुभकर्मों की वृद्धि के लिये । २ उच्च । शुभ । आवश्यक ।

आभ्युदयिकम् (न०) किसी मङ्गल कार्य में पितरों के उद्देश्य से किया गया श्राद्ध कर्म ।

आम् (अव्यया०) स्वीकारोक्तवाची अव्यय ।

आम (वि०) १ कच्चा । अधसिका । अनसम्हला । २ अनपका । ३ अनसिका । ४ अनपचा ।—आशयः, (पु०) पेट की वह थैली जिसमें खाया हुआ अन्न रहता है । पेट का ऊपरी भाग ।—कुम्भः, (पु०) कच्चा घड़ा ।—गन्धि, (न०) कच्चे मॉस की या मुर्दे के जलने की गन्धि ।—ज्वरः, (पु०) एक प्रकार का ज्वर ।— त्वच्, (वि०) कोमल चाम का ।—रक्त, (न०) दस्तों की बीमारी जिसमें ऑव गिरे ।—रसः, (पु०) अर्धजीर्ण भुक्तद्रव्य ।—वातः (पु०) अजीर्ण । अनपच ।—शूलः, (पु०) वायगोले का दर्द । ऑव मुरेड़ का रोग ।

आमः (पु०) १ रोग । बीमारी । २ अजीर्ण । कोष्ठ-बद्धता । ३ भुसी अलगाया हुआ अनाज ।

आमञ्जु } (वि०) मनोहर । प्यारा । पेट की
आमञ्जु } मरोड़ ।

आमंडः } (पु०) रण्डवृक्ष । रेंडी का रूख ।
आमण्डः }

आमनस्यं } (न०) पीड़ा । शोक ।
आमानस्यं }

आमंत्रणम् (न०) } १ बुलावा । न्योता
आमंत्रणा (स्त्री०) } २ विदाई । ३ बधाई । ४ अनुमति । ६ वार्तालाप । ७ सम्बोधन कारक ।

आमंद्र } (वि०) गम्भीर स्वरवाला । गुड़गुड़ा-
आमन्द्र } हट का ।

आमंद्र } (पु०) हल्का गम्भीर स्वर । गुड़गुड़ा-
आमन्द्रः } हट ।

आमयः (पु०) १ रोग । बीमारी । अस्वस्था । २ क्षति । चोट ।

आमयाविन् (वि०) बीमार । कब्ज़ियत वाला । जिसको अनपच का रोग हो ।

आमरणांत } (वि०) [स्त्री०—आमरणा-
आमरणान्त } न्तिकी] मृत्यु तक रहने वाला ।
आमरणांतिक } यावज्जीवन रहने वाला ।
आमरणान्तिक }

आमर्दः (पु०) कुचलना । पीस डालना । रगड़ डालना ।

आमर्शः (पु०) १ स्पर्श करना । रगड़ना । २ परा-मर्श । सलाह । मशवरा ।

आमर्षः (पु०) } क्रोध । कोप । रोष । गुस्सा ।
आमर्षणम् (न०) } अधीरता ।

आमलकः (पु०) } ऑवले का पेड़ ।
आमलकी (स्त्री०) }

आमलकम् (न०) ऑवले का फल ।

आमात्यः (पु०) दीवान । वज़ीर । मुसाहिब ।

आमानस्यं (न०) पीड़ा । शोक ।

आमिक्षा (स्त्री०) मठा । छांछ । तक्र ।

आमिषं (न०) १ गोश्त । मॉस । २ (आलं०) शिकार । आखेट । भोग्य वस्तु । ३ भोजन । चारा । दाना । ४ रिश्वत । उत्कोच । घूस । ५ अभिलाषा । कामेच्छा । ६ भोगविलास । प्रिय या मनोहर वस्तु ।

आमीलनम् (न०) नेत्रों का बंद करना या मूँदना ।

आमुक्तिः (स्त्री०) पहनना । धारण करना । (पोशाक या कवच ।)

आमुखं (न०) १ आरम्भ । २ (नाट्य साहित्य में) प्रस्तावना । (अव्यया०) सामने । आगे ।

आमुष्मिक (वि०) [स्त्री०—आमुष्मिकी] पर-लोक से सम्बन्ध रखने वाला । परलोक का ।

आमुष्यायण (वि०) } [स्त्री०—आमुष्यायणी]
आमुष्यायणः (पु०) } सत्कुलोद्भव। किसी प्रसिद्ध पुरुष का पुत्र।

आमोचनम् (न०) १ खोल देना। ढील देना। छोड़ देना। २ गिराना। निकालना। उड़ेलना। २ बाँध रखना।

आमोटनम् (न०) कुचलना। पीस डालना।

आमोदः (पु०) १ हर्ष। आनन्द। प्रसन्नता। २ सुगन्धि। सुवास।

आमोदन (वि०) प्रसन्नकारक। हर्षप्रद।

आमोदनं (न०) १ प्रसन्नता। हर्ष। २ सुवासित करना। सौरभान्वित करना।

आमोदिन् (वि०) प्रसन्न। हर्षित। सुवासित।

आमोषः (पु०) चोरी। डाँका।

आमोषिन् (पु०) चोर।

आम्नात (व० कृ०) १ विचारित। २ अधीत। पुनरावृत्त। ३ स्मरण किया हुआ। ४ परंपरागत प्राप्त।

आम्नानं (न०) अध्ययन।

आम्नायः (पु०) १ (ब्राह्मण, उपनिषद् और आरण्यकों सहित) वेद। २ वंशपरम्परागत परिपाटी। कुल की रीतिभाँति। ३ विश्वासमूलक उपदेश। गुरोपदिष्ट शिक्षा। ४ परामर्श मंत्रणा या उपदेश।

आंबिकेयः } (पु०) धृतराष्ट्र और कार्तिकेय की
आम्बिकेयः } उपाधि।

आंभासिक } (वि०) [स्त्री०—आम्भासिकी]
आम्भासिक } पनीला। रसीला।

आंभासिकः }
आम्भासिकः } (पु०) मत्स्य। माही।

आम्रः (पु०) आम का पेड़।—कूट. (पु०) एक पर्वत का नाम।—पेशी (स्त्री०) अमावट। आम का रस जो जमा कर सुखा लिया जाता है। —वणं (न०) आम का कुञ्जवन। आम की उद्यानवीथिका।

आम्रं (न०) आम के वृक्ष का फल।

आम्रातः (पु०) आमड़ा का पेड़।

आम्रातम् (न०) आमड़ा के पेड़ का फल।

आम्रातकः (पु०) १ आमड़ा का वृक्ष। २ अमावट।

आम्रेडनम् (न०) पुनरावृत्तिः। दुहराना। फेरना। आमुक़्ता करना।

आम्रेडितम् (न०) किसी शब्द या स्वर का बार बार दुहराया जाना। व्याकरण की एक संज्ञा।

आम्ल. (पु०) } इमली का पेड़।
आम्ला (स्त्री०) }

आम्लं (न०) १ खटाई। तुर्शी।

आम्लिका }
आम्लीका } (स्त्री०) इमली का वृक्ष।

आयः (पु०) १ आगमन। आना। २ धनप्राप्ति। धनागम। ३ आय। आमदनी। प्राप्ति। ४ लाभ। फ़ायदा। नफ़ा। ५ ज़नानखाने का रक्षक।—व्ययौ, (द्विवचन) आमदनी ख़र्च।

आयःशूलिक (वि०) [स्त्री०—आयःशूलिकी,] कार्यतत्पर। परिश्रमी। अक्लिष्ट। अध्यवसायी।

आयःशूलिकः (पु०) अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिये ज़ोरदार उपायों से काम लेने वाला पुरुष।

आयत (व० कृ०) १ लंबा। २ विस्तृत। परिव्याप्त। ३ बड़ा। ४ आकर्षित। ईंचा हुआ। ५ मुड़ा हुआ। रुद्ध।—अक्ष,—(वि०) अक्षी, (स्त्री०)—ईक्षण,—नेत्र,—लोचन, (वि०) बड़े नेत्रों वाला या बड़े नेत्रों वाली।—अपाङ्ग बड़े कोण वाली आँखे।—आयतिः, (स्त्री०) बहुत दिनों बाद आने वाला भविष्यकाल।—छदा, (स्त्री०) केले का पेड़। कदली वृक्ष।—लेख, (वि०) बहुत मुड़ा हुआ।—स्तूः, (पु०) भाट। स्तुतिवादक।

आयतः (पु०) चौड़ाई की अपेक्षा लंबा अधिक।

आयतनम् १ (न०) १ स्थान। निवासस्थान। घर। डेरा। २ अग्निवेदी। अग्निकुण्ड। ३ देवालय। मन्दिर। ४ घर का स्थान।

आयतिः (स्त्री०) १ लंबाई। विस्तार। २ भविष्यद् काल। भविष्य। ३ भावी फल। ४ राजश्री। प्रताप। महिमा। ५ हाथ बढ़ाना। स्वीकृति प्राप्ति। ६ कर्म।

आयत्त (व० कृ०) १ अवलम्बित। पराधीन। परतंत्र। २ शिक्षणीय। वश्य। नम्र।

आयत्तिः (स्त्री०) १ परवशता । वश्यता । २ स्नेह । ३ सामर्थ्य । ४ सीमा । मर्याद । ५ सुविधा-जनक । ६ प्रताप महिमा । ७ चरित्र की दृढ़ता ।

आयथातथ्यं (न०) अयोग्यता । अनुपयुक्तता । अनौचित्य ।

आयमनम् (न०) १ लंबाई । विस्तार । २ संयम । बंधन । ३ (धनुष को) तानना । [लालसा ।

आयल्लकः (पु०) अधैर्य । अधीरज । उतावलापन ।

आयस (वि०) लोहे का बना । लोहा । धातु का ।

आयसं (न०) १ लोहा । २ लोहे की बनी कोई भी वस्तु । ३ हथियार ।

आयसी (स्त्री०) कवच ।

आयस्त (व० कृ०) १ पीडित । कष्टित । दुःखी । २ चोटिल । ३ क्रुद्ध । ४ तीक्ष्ण ।

आयानम् (न०) आगमन । स्वभाव । मिजाज ।

आयामः (पु०) १ लंबाई । २ विस्तार । फैलाव । ३ पसारना । आगे बढ़ना । ४ संयम । दमन । बंद करना ।

आयामवत् (न०) बढ़ा हुआ । लंबा ।

आयासः (पु०) १ उद्योग । २ थकावट ।

आयासिन् (वि०) १ थका हुआ । श्रान्त । २ परिश्रम करने वाला । उद्योग करने वाला ।

आयुक्त (व० कृ०) १ नियुक्त । नियत । २ संयुक्त । प्राप्त । [सहायक ।

आयुक्तः (पु०) मंत्री । मिनिस्टर । गुमाश्ता ।

आयुधः (पु०) } अस्त्र । हथियार । ढाल । हथियार
आयुधं (न०) } तीन प्रकार के होते हैं । एक "प्रहरण" जैसे तलवार । दूसरा "हस्तमुक्त" जैसे चक्र, भाला, बरछी आदि । तीसरा "यंत्रमुक्त" यथा तीर, बन्दूक, तोप । अगारं,—आगारं, (न०) हथियारों का भाण्डारगृह ।—जीविन् (वि०) हथियार से जीवन निर्वाह करने वाला । (पु०) योद्धा । सिपाही ।

आयुधिक (वि०) आयुध सम्बन्धी ।

आयुधिकः (पु०) योद्धा । सिपाही ।

आयुधिन् } (वि०) हथियार धारण करने वाला
आयुधीय } अथवा हथियार से काम लेने वाला ।

आयुष्मत् (वि०) १ जीवित । ज़िन्दा । २ दीर्घजीवी ।

आयुष्य—(वि०) आयु बढ़ाने वाला । जीवन की रक्षा करने वाला । जीवनरक्षक ।

आयुष्यं (न०) जीवनी शक्ति ।

आयुस् (न०) १ जीवन । जीवन की अवधि । २ जीवनी शक्ति । ३ भोजन । [समास में स् का ष् हो जाता है । जब स् किसी दीर्घ व्यञ्जन के पूर्व आवे तब ह्रस्व व्यञ्जन के पूर्व स् का र् हो जाता है ।]—कर, (वि०) उम्र बढ़ाने वाला ।—द्रव्यं, (न०) घी ।— वेदः, (पु०) चिकित्सा शास्त्र ।—वेददृश,—वेदिक,—वेदिन्, (वि०) ओषधि सम्बन्धी । (पु०) वैद्य । चिकित्सक ।—शेषः, (पु०) १ बचा हुआ जीवन । २ जीवन का अन्त । ३ आयु का ह्रास ।—स्तोमः, (= आयुष्टोमः) (पु०) यज्ञ जो दीर्घजीवन की प्राप्ति के लिये किया जाता है ।

आये (अव्ययः) स्नेहव्यञ्जक सम्बोधनात्मक अव्यय ।

आयोगः (पु०) १ नियुक्ति । २ क्रिया । ३ पुष्प-हार । सुवासित द्रव्य । ४ समुद्रतट या किनारा ।

आयोगवः (पु०) [स्त्री०—आयोगवी] वैश्या के गर्भ और शूद्र के वीर्य से उत्पन्न सन्तान । बढ़ई ।

आयोजनम् (न०) १ जोड़ना । २ ग्रहण करना । लेना । ३ उद्योग । प्रयत्न ।

आयोधनम् (न०) १ युद्ध । लड़ाई । संग्राम । २ रणभूमि ।

आरः (पु०) } १ पीतल । २ लोह विशेष । ३ कोण ।
आरं (न०) } कोना ।—कूटः (पु०) कूटम् (न०) पीतल ।

आरः (पु०) १ मङ्गलग्रह । २ शनिग्रह ।

आरा (स्त्री०) १ मोची की रॉपी । २ चाकू ।

आरक्त (वि०) रक्षित ।

आरक्षः (पु०) } १ बचाव । पालन । रक्षण ।
आरक्षा (स्त्री०) } २ कुम्भसन्धि । ३ सेना ।

आरक्षकः } (पु०) १ चौकीदार । संतरी । २ देहाती
आरक्षिकः } न्यायाधीश । पुलिस । मैजिस्ट्रेट ।

आरटः (पु०) नट । अभिनेता । नाटक का पात्र । एक्टर ।

आरणिः (पु०) बंवडर । उलटा बहाव ।

आरण्य (वि०) [स्त्री०—आरण्या, आरण्यी] जंगली । जंगल में उत्पन्न ।

आरण्यक (वि०) जंगली । जंगल में उत्पन्न ।

आरण्यकः (पु०) वनरखा । जंगली मनुष्य । जंगल का रहने वाला ।

आरण्यकम् (न०) वेद के ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक भाग जो या तो वन में बैठ कर रचे गये थे या जिनको वन में जाकर पढ़ना चाहिये ।

[अरण्येऽनूच्यमानत्व तु आरण्यकम् ।
अरण्येऽध्ययनादेव आरण्यकमुदाहृतम् ।]

आरतिः (स्त्री०) १ नीरांजन । आरती

आरनालं (न०) माँड । चाँवल का पसाव ।

आरब्धिः (स्त्री०) आरम्भ । प्रारम्भ ।

आरभटः (पु०) उद्योगी पुरुष । उत्साही पुरुष ।

आरभटः (पु०) साहस । विश्वास । (स्त्री०) वृत्ति ।

आरभटी (स्त्री०) विशेष प्रकार का नृत्य ।

आरंभः } आरम्भः } (पु०) १ आरम्भ । शुरूआत । २ भूमिका ३ कर्म । कार्य । ४ शीघ्रता । तेज़ी । ५ उद्योग । चेष्टा । प्रयत्न । ६ दर्प । ७ वध । हनन ।

आरभणं (न०) १ पकड़ना । काबू में करना । २ पकड़ । दस्ता । बेंट । हैंडिल ।

आरवः } आरावः } १ आवाज़ । २ चिल्लाहट । गुर्राहट । भौंक (कुत्ते भेड़िये आदि की बोली) ।

आरस्यं (न०) अस्वादिष्टता । जिसमें ज़ायका न हो ।

आरात् (अव्यया०) १ समीप । पड़ोस में । २ दूर । फासले पर । ३ दूर से । दूरी से ।

आरातिः (पु०) शत्रु । वैरी ।

आरातीय (वि०) १ समीप । नज़दीक । २ दूर ।

आरात्रिकम् (न०) भगवान के विग्रह की आरती करना ।

आराधनम् (न०) १ प्रसन्नता । सन्तोष । २ पूजन । सेवा । श्रृङ्गार । ३ प्रसन्न करने का उपाय । ४ सम्मान । प्रतिष्ठा । ५ पाचनक्रिया । ६ सम्पन्नता । सफलता ।

आराधना (पु०) पूजन । सेवा ।

आराधनी (स्त्री०) पूजन । श्रृङ्गार । तुष्टिसाधन । प्रसादन (देवता का) ।

आराधयितृ (वि०) पुजारी । पूजन करने वाला । विनम्र सेवक । [२ बाग़ बग़ीचा ।

आरामः (पु०) १ हर्ष । प्रसन्नता । आल्हाद ।

आरामिकः (पु०) माली ।

आरालिकः (पु०) रसोइया ।

आरुः (पु०) १ सूअर । २ कर्कट । केकड़ा ।

आरू (वि०) भूरे या सांवले रंग का ।

आरूढ (व० कृ०) सवार । चढ़ा हुआ । बैठा हुआ ।

आरूढिः (स्त्री०) चढ़ाई । उठान । उचान ।

आरेकः (पु०) १ खाली करना । २ कुञ्चन । सिकुड़न ।

आरेचित (वि०) कुञ्चित । सिकुड़ा हुआ ।

आरोग्यं (न०) सुस्वास्थ्य । अच्छी तंदुरुस्ती ।

आरोपः (पु०) १ संस्थापन । २ कल्पना । ३ एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ की कल्पना करना ।

आरोपणम् (न०) स्थापन । लगाना । मढ़ना । २ किसी पौधे को एक स्थान से हटाकर दूसरी जगह लगाना । रोपना । बैठाना । ३ किसी वस्तु के गुण को दूसरी वस्तु में मान लेना । ४ मिथ्या ज्ञान । भ्रम । ५ धनुष पर रोदा चढ़ाना ।

आरोहः (पु०) १ सवार । २ चढ़ाई । (घोड़े की) सवारी । उठी हुई जगह । उचान । ऊँचाई । ५ अहंकार । अभिमान । ५ पहाड़ । ढेर । ६ (स्त्री की कमर) नितंब । चूतर । ७ माप विशेष । ८ खान ।

आरोहकः (पु०) सवार । चढ़ने वाला ।

आरोहणम् (न०) १ सवार होने की या ऊपर चढ़ने की क्रिया । २ घोड़े पर चढ़ना । ३ ज़ीना । सीढ़ी ।

आर्किः (पु०) अर्क का पुत्र अर्थात्—१ यम । शनिग्रह । ३ राजा कर्ण । ४ सुग्रीव । ५ वैवस्वत मनु ।

आर्क्ष (वि०) [स्त्री०—आर्क्षी] नाक्षत्रिक । तारका सम्बन्धी । [शहद की मक्खी ।

आर्घा (स्त्री०) जाति विशेष अथवा पीले रंग की

आर्घ्य (न०) जंगली शहद ।

आर्च (वि०) [स्त्री०—आर्ची] अर्चा करने वाला । पूजा करने वाला पुजारी ।

आर्चिक (वि०) ऋग्वेद सम्बन्धी ।

आर्चिकं (न०) सामवेद की उपाधि ।

आर्जवम् (न०) १ सिधाई । २ सीधापन । स्पष्टवादिता । ईमानदारी । सचाई । कुटिलता का अभाव ।

आर्जुनिः (पु०) अर्जुनपुत्र । अभिमन्यु ।

आर्त (वि०) अस्वस्थ । पीड़ित । कष्ट प्राप्त ।

आर्तव (वि०) [स्त्री०—आर्तवा, आर्तवी] १ ऋतु सम्बन्धी । २ मौसमी । ऋतु में उत्पन्न । सामयिक । ३ स्त्री धर्म का ।

आर्तवः (पु०) वर्ष ।

आर्तवम् (न०) १ रज जो स्त्रियों की योनि से प्रति मास निकलता है । २ रजस्वला होने के पीछे कतिपय दिवस, जो गर्भाधान के लिये श्रेष्ठ होते हैं । ३ पुष्प ।

आर्तवी (स्त्री०) घोड़ी ।

आर्तवेयी (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

आर्तिः (स्त्री०) १ दुःख । क्लेश । पीड़ा । (शारीरिक या मानसिक) । २ मानसिक चिन्ता । ३ बीमारी । रोग । ४ धनुष की नोंक । ५ नाश । विनाश ।

आर्त्विजीन (वि०) ऋत्विज ।

आर्त्विज्यं (न०) ऋत्विज का पद ।

आर्थ (वि०) [स्त्री०—आर्थी] किसी वस्तु या पदार्थ से सम्बन्ध युक्त ।

आर्थिक (वि०) [स्त्री०—आर्थिकी] १ अर्थयुक्त । २ बुद्धिमान् । ३ सारवान । वास्तविक ।

आर्द्र (वि०) १ नम । तर । भींगा हुआ । २ हरा । रसीला । ३ ताज़ा । टटका । नया । ४ कोमल । मुलायम ।—काष्ठं, (न०) हरी लकड़ी ।—पृष्ठ, (वि०) सींचा हुआ । तरोताज़ा ।—शाकः, (पु०) अदरक । आदी ।

आर्द्रा (स्त्री०) नक्षत्र विशेष । छठवाँ नक्षत्र ।

आर्द्रकं (न०) अदरक । आदी ।

आर्द्रयति (क्रि०) भिगाना । नमकरना ।

आर्ध (वि०) आधा ।

आर्धिक (वि०) [स्त्री०—आर्धिकी] आधे से संबन्ध रखने वाला । आधा बँटवाने वाला ।

आर्धिकः (पु०) १ वह जोता, जो खेत की आधी पैदावार ले लेने की शर्त पर खेत जोतता बोता है । २ वैश्या का पुत्र, जिसे ब्राह्मण ने पाला पोसा हो ।

आर्य (वि०) १ श्रेष्ठ आर्य के योग्य । २ श्रेष्ठ । प्रतिष्ठित । कुलीन । उच्च । ३ उत्तम । समीचीन । सर्वोत्कृष्ट ।—गृह्य (वि०) १ श्रेष्ठों द्वारा सम्मानित । २ श्रेष्ठ का मित्र । श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा उपगम्य । ३ सम्मानित । ४ ऋजु । सरल ।—देशः (पु०) आर्यों के रहने का देश ।—पुत्रः (पु०) १ प्रतिष्ठित जन का पुत्र । २ दीक्षा गुरु का पुत्र । ३ बड़े भाई का पुत्र । ४ सम्मान जनक संज्ञा । इसी प्रकार पति के लिये पत्नी का अथवा अपने राजा के लिये उसके सेनापति की सम्मानजनक संज्ञा । ५ ससुर का पुत्र (साला) ।—प्राय, (वि०) आर्यों द्वारा आबाद । श्रेष्ठ जनों से परिपूर्ण ।—मिश्र, (वि०) प्रतिष्ठित । सम्मानित । विख्यात ।—मिश्रः, (पु०) १ भद्रपुरुष । २ सम्मान सम्बोधन ।—लिङ्गिन्, (पु०) धर्म ।—भ्रष्ट, (पु०) । शठ । धूर्त । भण्ड ।—वृत्त, (वि०) नेक । भला ।—वेश, (वि०) भली प्रकार परिच्छद पहिने हुए ।—सत्यं, (न०) महान् सत्य । श्रेष्ठ सत्य ।—हृद्य, (वि०) श्रेष्ठों द्वारा पसंद किया हुआ ।

आर्यः (पु०) १ हिन्दुओं और ईरानियों का नाम । २ अपने धर्म और शास्त्र को मानने वाला । ३ प्रथम तीन वर्ण । [ब्राह्मण । क्षत्रिय । वैश्य ।] ४ एक प्रतिष्ठित व्यक्ति । ५ कुलीन । ६ कुलीनोचित आचरण का व्यक्ति । ७ स्वामी । मालिक । ८ गुरु । शिक्षक । ९ मित्र । १० वैश्य । ११ ससुर । १२ बुद्धदेव ।

आर्या (स्त्री०) १ सास । २ श्रेष्ठ स्त्री । ३ छन्द विशेष ।—आवर्तः, (पु०) श्रेष्ठ पुरुषों का आवास स्थान । देश विशेष जो पूर्व और पश्चिम में समुद्रों द्वारा और उत्तर दक्षिण में हिमालय और विन्ध्यगिरि द्वारा सीमाबद्ध है ।

> आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात् ।
> तयोरेवान्तरं गिर्योः आर्यावर्तं विदुर्बुधाः ॥
>
> —मनुस्मृति ।

आर्यकः (पु०) १ भद्रपुरुष । २ पितामह ।

आर्यका } (स्त्री०) श्रेष्ठा स्त्री । कुलीन ।
आर्यिका }

आर्ष (वि०) [स्त्री०—आर्षी] केवल ऋषियों द्वारा प्रयुक्त होने वाला या वाली । ऋषियों की । वैदिक । पवित्र । पुनीत । अलौकिक ।

आर्षः (पु०) ऋषिप्रोक्त आठ प्रकार के विवाहों में से एक । जिसमें कन्या के पिता को, वरपक्ष से एक या दो गौएँ दी जाती है।

आदायार्षस्तु गोद्वयम् ।
याज्ञवल्क्य ।

आर्ष (न०) ऋषिप्रणीत शास्त्र । वेद ।

आर्षभ्यः (पु०) वछड़ा जो इतना बड़ा हो कि काम में लाया जासके या साड बना कर छोड़ा जासके ।

आर्षेय (वि०) [स्त्री—आर्षेयी] १ ऋषि का । ऋषि सम्बन्धी । २ योग्य । मान्य । प्रतिष्ठित ।

आर्हत (वि०) [स्त्री०—आर्हती] जैन-सिद्धान्त-वादी ।

आर्हतः (पु०) जैनी ।

आर्हतम् (न०) जैनियों का सिद्धान्त ।

आर्हन्ती (पु०) } योग्यता ।
आर्हन्त्यम् (न०) }

आलः (पु०) } १ मछली आदि के अंडे । २
आलं (न०) } पीतसंखिया । हरताल ।

आलगर्दः (पु०) पनिया साँप ।

आलभनम् (न०) १ पकड़ना । २ स्पर्श करना । ३ मार डालना ।

आलंवः } (पु०) १ अवलम्ब । आश्रय । थुनकिया ।
आलम्बः } २ सहारा । रक्षण ।

आलंवनम् } (न०) १ अवलम्ब । आश्रय । २
आलम्बनम् } सहारा । ३ आधार । अवस्थान । ४ कारण । हेतु । ५ रस में विभाग विशेष । उसके अवलम्ब से रस की उत्पत्ति होती है।

आलंविन् } (वि०) १ लटकता हुआ । झुका हुआ ।
आलम्बिन् } सहारा लिये हुए । २ समर्थित । ३ पहिने हुए । धारण किए हुए ।

आलंभः (पु०) } १ पकड़ना । स्पर्श करना ।
आलम्भः (पु०) } २ चीरना । फाड़ना । ३
आलंभनम् (न०) } यज्ञ में बलिदान के लिये पशु
आलम्भनम् (न०) } का वध करना । यथा "अश्वालम्भं गवालम्भम् ।"

आलयः (पु०) } १ घर । गृह । २ आधार ।
आलयं (न०) } ३ स्थान । जगह ।

आलर्क (वि०) पागल कुत्ता सम्बन्धी या पागल कुत्ते के कारण हुआ ।

आलवण्यं (न०) १ जिसमें निमक न हो । जिसमें स्वाद न हो । २ जिसमें कुछ लुनाई न हो । बदसूरत । कुरूप ।

आलवालं (न०) खोड़ुआ । थाला ।

आलस (वि०) [स्त्री०—आलसी] सुस्त । काहिल ।

आलस्य (वि०) आलसी । सामर्थ्य होने पर भी आवश्यक कर्त्तव्य का पालन न करने वाला । अकर्मण्य । उदासीन । [उदासीनता ।

आलस्यम् (न०) सुस्ती । काहिली । अकर्मण्यता ।

आलातम् (न०) लकड़ी जिसका एक छोर जलता हो । लुआठी । लुक ।

आलानम् (न०) १ हाथी बाँधने का खंभा या खूँटा । हाथी के बांधने का रस्सा । २ बेड़ी । ३ जंजीर । सकड़ी । रस्सा । ४ बंधन । [वाला ।

आलानिक (वि०) हाथी बांधने के खंभे का काम देने

आलापः (पु०) १ वार्तालाप । बातचीत । कथोपकथन । सम्भाषण । २ वर्णन । कथन । ३ तान । सङ्गीत के सप्त स्वरों का साधन ।

आलापनम् (न०) वार्तालाप । कथोपकथन ।

आलाबुः } (स्त्री०) कुम्हड़ा । कुहँड़ा । कूष्माण्ड ।
आलाबू }

आलावर्तम् (न०) कपड़े का बना पंखा । [सच्चा ।

आलि (वि०) १ निकम्मा । सुस्त । २ ईमानदार ।

आलिः (पु०) १ बिच्छू । २ मधुमक्खिका ।

आली (स्त्री०) १ सखी । सहेली । २ क़तार । अवलि । ३ पंक्ति । लकीर । रेखा । ४ पुल । सेतु । ५ बांध ।

आलिंगनं } (न०) चिपटाना । गले लगाना ।
आलिङ्गनम् } परिरम्भण ।

आलिंगिन् } (वि०) चिपटाये हुए ।
आलिङ्गिन् }

आलिंगी (स्त्री०) }
आलिङ्गी (स्त्री०) } यवाकार । छोटा ।
आलिङ्ग्यः (पु०) }
आलिङ्ग्यः (पु०) }

आलिंजरः / आलिञ्जरः } (पु०) मट्टी का मटका या बड़ा घड़ा।

आलिंदः / आलिन्दः / आलिंदकः / आलिन्दकः } (पु०) १ चबूतरा। चौतरा।

आलिंपनं / आलिम्पनम् } (पु०) पुताई। लिपाई।

आलीढम् (न०) दहिना घुटना मोड़ कर बैठना। बैठने का आसन विशेष।

आलु (न०) घन्नौटी। बेड़ा।

आलुः (पु०) १ उल्लू। घुग्घू। २ आबनूस। काले आबनूस की लकड़ी।

आलुः (स्त्री०) घड़ा।

आलुंचनम् / आलुञ्चनम् } (न०) नोंच कर उखाड़ना। चीर फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डालना।

आलुल (वि०) १ हिलने डुलने वाला। २ निर्बल।

आलेखनम् (न०) १ लेख। २ चित्रण। ३ खरोंचन। खसोटन।

आलेखनी (स्त्री०) कूंची। क़लम।

आलेख्यम् (न०) १ हाथ से बनायी हुई तसवीर। तसवीर। चित्र। २ लेख।—शेष, (वि०) सिवाय चित्र के जिसका कुछ भी न बचा हो अर्थात् मृत। मरा हुआ।

आलेपः (पु०) / आलेपनम् (न०) } १ मालिश। उपटन। लेप। २ पलस्तर।

आलोकः (पु०) / आलोकनम् (न०) } १ चितवन। अवलोकन। २ दृश्य। दर्शन। ३ प्रकाश। ४ आव। कान्ति। ५ बधाई।

आलोचक (वि०) देखने वाला। जाँचने वाला।

आलोकम् (न०) देखने की शक्ति। देखने का हेतु या कारण।

आलोचनम् (न०) / आलोचना (स्त्री०) } देखना। पहचानना। गुण-दोष-निरूपण। विवेचना।

आलोडनम् (न०) / आलोडना (स्त्री०) } १ हिलाना। गड़बड़ करना। हिलाना डुलाना। २ मिश्रण करना। मिलाना।

आलोल (वि०) १ ज़रा ज़रा हिलता हुआ। काँपता हुआ। घूमता हुआ। २ हिलता हुआ। आन्दोलित।

आवनेय (पु०) भूसुत। मङ्गलग्रह।

आवंत्य / आवन्त्य } (वि०) अवन्ती। (उज्जैन) से आया हुआ या अवन्ती से सम्बन्ध युक्त।

आवंत्यः / आवन्त्यः } (पु०) १ अवन्ती का राजा या निवासी। पतित ब्राह्मण की सन्तान।

आवपनम् (न०) १ बीज बोने बखेरने या फैंकने की क्रिया। २ बीज बोना। ३ मुंडन। हजामत। ४ पात्र। घड़ा। झारी। करवा। लोटा।

आवरकं (न०) ढक्कन। पर्दा। घूंघट।

आवरणम् (न०) १ ढाँकना। छिपाना। मूंदना। २ बंद करना। घेरना। ३ ढक्कन। पर्दा। ४ रोक। अड़चन। ५ घेरा। हाता। ह्यारदीवाली। ६ वस्त्र। कपड़ा। ७ ढाल।—शक्तिः, (स्त्री०) आत्मा व चैतन्य की दृष्टि पर परदा डालने वाली शक्ति।

आवर्तः (पु०) १ घुमाव। चक्कर। २ बवंडर। भँवर। ३ विचार। विवेचन। ४ घुँघराले बाल। ५ घनी बस्ती। ६ रत्न विशेष। लाजावर्त। ७ सोनामक्खी। ८ चिन्ता। ९ बादल जो पानी न बरसावें।

आवर्तकः (पु०) १ बादल विशेष। २ बवंडर। ३ चक्कर। फेरा। ४ घुँघराले बाल।

आवर्तनः (पु०) विष्णु।

आवर्तनम् (न०) १ घुमाव। चक्कर। २ आवर्तन। घूर्णन। ३ (धातुओं का) गलाना। ४ आवृत्ति। ५ दही या दूध का रखना।

आवर्तनी (स्त्री०) घरिया, जिसमें रख कर सुनार लोग सोना चाँदी गलाते हैं।

आवलिः / आवली } (स्त्री०) १ रेखा। पंक्ति २ श्रेणी। कतार।

आवलित (वि०) थोड़ा सा मुड़ा हुआ।

आवश्यक (वि०) [स्त्री०—आवश्यकी] १ ज़रूरी। सापेक्ष्य। २ प्रयोजनीय जिसके बिना काम न चले।

आवश्यकम् (न०) आवश्यकता। ऐसा कर्म या कर्तव्य जिसके बिना काम न चले। अनिवार्य परिणाम।

आवसतिः (स्त्री०) रात। आधी रात।

आवसथः (पु०) १ आवसस्थान । मकान । घर । २ विश्रामगृह । ३ छात्रालय । मठ । कुटी । ४ वृत्त विशेष ।

आवसथ्य (वि०) घर वाला । घर के भीतर ।

आवसथ्यः (पु०) अग्निहोत्र का अग्नि जो घर में रखा जाता है ।

आवसथ्यम् (न०) १ छात्रावास । छात्रनिलय । २ मठ । कुटी । ३ घर । मकान ।

आवसित (वि०) १ समाप्त । सम्पूर्ण । २ निर्णीत । निश्चित । निर्धारित ।

आवसितम् (न०) पका हुआ अनाज ।

आवह (वि०) उत्पन्न करते हुए । पथ दिखलाते हुए ।

आवापः (पु०) १ बीज बोना । २ बखेरना । ३ आलवाला । ४ बरतन । अनाज । अनाज रखने का बर्तन । ५ पेय पदार्थ विशेष । ६ कंकण । ७ ऊबड़ खाबड़ ज़मीन ।

आवापकः (पु०) कंकण । पहुँची ।

आवापनम् (न०) करघा ।

आवालं (न०) थाला । खोडुआ ।

आवासः (पु०) १ घर । मकान । बस्ती । २ आवासस्थल ।

आवाहनम् (न०) १ बुलावा । न्योता । आमंत्रण । २ देवता का आह्वान । ३ अग्नि में आहुति देना ।

आविक (वि०) [स्त्री०—आविकी] १ भेड़ सम्बन्धी । २ ऊनी ।

आविकम् (न०) ऊनी कपड़ा ।

आविग्न (वि०) दुःखी । विपद्ग्रस्त । मुसीबतज़दा ।

आविद्ध (व० कृ०) १ छिदा हुआ । विधा हुआ । २ टेढ़ा । झुका हुआ । ३ ज़ोर से फेंका हुआ । चलाया हुआ । [२ अवतार ।

आविर्भावः (पु०) १ प्रकाश । प्राकट्य । उत्पत्ति ।

आविल (वि०) १ मटीला । गंदला । मैला । गंदा । २ अपवित्र । भ्रष्ट । ३ काले रंग का । कलौंहा । ४ धुंधला । मंद ।

आविलयति (क्रि० पर०) धब्बा लगाना । कलङ्कित करना ।

आविष्करणम् (न०) } १ प्राकट्य । प्रकाश ।
आविष्कारः (पु०) } साक्षात्करण ।

आविष्ट (व० कृ०) १ प्रविष्ट । घुसा हुआ । २ आवेशित (भूत प्रेत द्वारा) । ३ मरा हुआ । वश में किया हुआ । ४ सर्वग्रास किया हुआ । घेरा हुआ । रत । सचेष्ट ।

आविस् (अव्यया०) सामने । नेत्रों के आगे । खुलंखुल्ला । साफ तौर पर । स्पष्टतः ।

आवीतं (न०) अपसव्य । दहिने कँधे पर जनेऊ रखने की क्रिया ।

आवुकः (पु०) (नाटक की भाषा में) पिता ।

आवुत्तः (पु०) भगिनीपति । बहनोई ।

आवृत् (स्त्री०) १ किसी ओर झुका या मुड़ा । प्रवेश । २ क्रम । विधि । तरीका । ३ रास्ते का मोड़ । रास्ता । दिशा । ४ प्रायश्चित्त विशेष ।

आवृत्त (व० कृ०) १ घूमा हुआ । चक्कर खाया हुआ । लौटा हुआ । २ दुहराया हुआ । ३ अभ्यस्त । पढ़ा हुआ । सीखा हुआ । अधीत ।

आवृत्तिः (स्त्री०) १ प्रत्यावर्तन । लौटना । २ पलटाव । (सेना का पीछे) हटाव । ३ परिक्रमा । चक्कर । ४ घूमकर या चक्कर काट कर पुनः उसी स्थान पर आना जहाँ से रवाना हुआ हो । ५ बारंबार जन्म और मरण । लौकिक जीवन । ७ बारबार किसी बात का अभ्यास । ७ पुनरावृत्ति । दुहराना ।

आवृष्टिः (स्त्री०) वर्षा । फुआर ।

आवेगः (पु०) बेचैनी । चिन्ता । उद्विग्नता । घबराहट । व्यस्तता । चित्तचाञ्चल्य । २ घबराहट । उतावली ।

आवेदनम् (न०) १ सूचना । इत्तिला । २ प्रतिस्मरण । वर्णन । ३ अपनी दशा को सूचित करना । अर्ज़ी । ४ अर्ज़ीदावा ।

आवेशः (पु०) १ व्याप्ति । सञ्चार । प्रवेश । २ अनुरक्ति । ३ अभिमान । अहङ्कार । ४ चित्तचाञ्चल्य । क्रोध । रोष । ५ भूतावेश । किसी प्रेत का किसी के शरीर पर अधिकार होना । भूतप्रेतबाधा । मृगी की मूर्छा ।

आवेशनम् (न०) १ प्रवेश । द्वार । २ भूत प्रेत की बाधा । ३ क्रोध । रोष । ४ कारखाना । ५ घर ।

आवेशिक (वि०) [स्त्री०—आवेशिकी] १ विलक्षण । निज का । २ पुश्तैनी ।

आवेशिकः (पु०) महमान । अतिथि । अभ्यागत ।

आवेष्टकः (पु०) दीवाल । घेरा । हाता ।

आवेष्टनम् (न०) १ वेठन । बन्धन । २ लिफाफा । रैपर । ३ दीवाल । हाता । घेरा ।

आश (वि०) खानेवाला । भक्षक ।

आशः (पु०) भोजन ।

आशंसनम् (न०) १ प्रतीक्षा । अभिलाषा । २ कथन । घोषणा । [घोषणा ।

आशंसा (स्त्री०) १ अभिलाषा । आशा । २ भाषण ।

आशंसु (वि०) अभिलाषी । आशावान ।

आशंका } (स्त्री०) १ भय । डर । २ सन्देह ।
आशङ्का } अनिश्चितता । ३ अविश्वास । शक । शुबह ।

आशंकित } (व० कृ०) भयभीत । डरा हुआ ।
आशङ्कित }

आशंकितं } (न०) १ डर । भय । २ सन्देह । शक ।
आशङ्कितम् } अनिश्चितता ।

आशयः (पु०) १ शयनगृह । विश्रामस्थल । २ आवसगृह । आश्रयस्थल । ३ स्थान । आधार । खात । गढ़ा । ४ आमाशय । पेट । मेदा । ५ अभिप्राय । तात्पर्य । ६ मन । हृदय । ७ समृद्धि । ८ खत्ती । बखारी । ९ इच्छा । मर्ज़ी ।१० प्रारब्ध । भाग्य । ११ पशु पकड़ने का खात या गढ़ा ।

आशाः (पु०) अग्नि । आग ।

आशरः (पु०) १ अग्नि । २ राक्षस । दैत्य । ३ हवा ।

आशवम् (न०) १ तेजी । फुर्ती । २ आसव । अर्क ।

आशा (स्त्री०) १ किसी अप्राप्त वस्तु के प्राप्त करने की अभिलाषा और उसकी प्राप्ति का कुछ कुछ निश्चय । २ अभिलाषा । इच्छा । ३ मिथ्या अभिलाषा । ४ दिशा । अञ्चल । अवकाश ।—अन्वित, —जनन, (वि०) आशावान । आशाकारक ।—गजः, (पु०) दिग्गज ।—तन्तुः, (पु०) बहुत कम आशा ।—पालः, (पु०) दिग्गज ।—पिशाचिका, (स्त्री०) आशाराक्षसी ।—बन्धः, (पु०) १ विश्वास । २ सान्त्वना । भरोसा । आशा । ३ मकड़ी का जाला ।—भङ्गः, (पु०) आशा का टूटना ।—हीन, (वि०) हतोत्साह । उदास ।

आषाढ (पु०) आषाढ़ का महीना ।

आशास्य (स० का० कृ०) वर द्वारा प्राप्तव्य । २ अभिलषित ।

आशास्यं (न०) १ आशा । इच्छा । अभिलाषा । २ आशीर्वाद । बरदान । दुआ ।

आशिंजित } (वि०) झनकारता हुआ ।
आशिञ्जित }

आशित (वि०) १ खाया हुआ । खाने को दिया हुआ । २ अघाया हुआ । तृप्त ।

आशितम् (न०) भोजन ।

आशितंगवीन } (वि०) पशुओं द्वारा पहिले चरा
आशितङ्गवीन } हुआ ।

आशितंभव } (वि०) अघाया । तृप्त हुआ ।
आशितम्भव }

आशितंभवम् } (न०) १ भोजन । भोज्य पदार्थ ।
आशितम्भवः } २ तृप्ति । (पु० भी होता है ।)

आशिर (वि०) पेटू । भोजनभट्ट ।

आशिरः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य । ३ दैत्य । राक्षस ।

आशिस् (स्त्री०) १ आशीर्वाद । दुआ । मङ्गलकामना । २ प्रार्थना । अभिलाषा । कामना । ३ सर्प का विषदन्त ।—वादः, (पु०)—वचनं, (न०) मङ्गल कामना सूचक वचन । दुआ । असीस ।—विषः, (आशीर्विषः) (पु०) सर्प । साँप ।

आशी (स्त्री०) १ सर्प का विषदन्त । २ विष । गरल । ३ आशीर्वाद । दुआ ।—विषः, (पु०) १ सर्प । २ एक विशेष प्रकार का सर्प ।

आशु (वि०) तेज । फुर्तीला ।—कारिन्, (अव्यया०) —कृत, (वि०) कोई भी काम हो, शीघ्र करनेवाला । —कोपिन्, (वि०) चिड़चिड़ा । तुनुक मिजाज । —ग, (वि०) तेज़ । फुर्तीला ।—गः, (पु०) १ हवा । २ सूर्य । ३ तीर ।—तोष, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—व्रीहिः, (पु०) चावल जो बरसात ही में पक जाते हैं ।

आशुः (पु०) आशु (न०) चाँवल, जो वर्षाऋतु ही में पक जाते हैं ।

आशुशुक्षणिः (पु०) १ हवा । २ आग ।

आशेकुटिन् (पु०) पहाड़।
आशोषणं (न०) सुखाना।
आशौचं (न०) अपवित्रता। (जनन मरण के समय होने वाला सूतक।)
आश्चर्य (वि०) अद्भुत। विस्मयकारी। असामान्य। अजीब।
आश्चर्यम् (न०) १ चमत्कार। जादू। २ विलक्षणता। विचित्रता।
आश्चोतनम्, आश्च्योतनम् (न०) १ निन्दावाद। प्रोक्षण। २ पलकों पर घी आदि लगाना।
आश्म (वि०) [स्त्री०—आश्मी] पत्थर का बना हुआ। पथरीला।
आश्मन (वि०) [स्त्री०—आश्मनी] पथरीला। पत्थर [का बना हुआ।
आश्मनः (पु०) १ पत्थर की बनी कोई वस्तु। २ सूर्य के सारथी अरुण का नाम।
आश्मिक (वि०) [स्त्री०—आश्मिकी] १ पत्थर का बना। २ पत्थर ढोनेवाला या ले जाने वाला।
आश्यान (व० कृ०) १ कड़ा। जमा हुआ। २ कुछ कुछ सूखा हुआ।
आश्रं (न०) आँसू।
आश्रपणम् (न०) पाचन की या उबालने की [क्रिया।
आश्रमः (पु०), आश्रमम् (न०) १ साधुओं के रहने का स्थान। कुटी। गुफा। २ ब्राह्मण के जीवन की चार अवस्थाओं में से कोई एक। [चार अवस्थाएँ—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास। क्षत्रिय और वैश्य को साधारणतः उक्त प्रथम तीन आश्रमों में प्रवेश करने का अधिकार है, किन्तु किसी किसी धर्मशास्त्रकार के मतानुसार ये दोनों वर्ण चतुर्थ आश्रम में भी प्रवेश कर सकते हैं] ३ विद्यालय। पाठशाला। ४ वन। उपवन। —गुरुः, (पु०) प्रधानाध्यापक। प्रिंसपल। —धर्मः, १ प्रत्येक आश्रम के कर्त्तव्य कर्म। २ संन्यासाश्रम के कर्त्तव्य। —पदं, —मण्डलं, (न०) तपोवन। —भ्रष्ट, (वि०) आश्रम धर्म से पतित। —वासिन्, —आलयः—सद्, (पु०) तपस्वी। संन्यासी।
आश्रमिक, आश्रमिन् (वि०) चार आश्रमों में से किसी एक आश्रम का।
आश्रयः (पु०) १ आसरा। सहारा। आधार। विश्रामस्थल। आश्रयस्थल। २ शरण। पनाह। ३ भरोसा। ४ घर। ५ राजा के ६ गुणों में से एक। ६ तरकस। ७ अधिकार। स्वीकृति। ८ सम्बन्ध। सङ्गति।
आश्रयक, आश्रयशः (पु०) अग्नि।
आश्रयणम् (न०) १ सहारा लेने की क्रिया। २ स्वीकृत करना। पसन्द करना। ३ पनाह। आश्रय।
आश्रयिन् (वि०) १ आश्रित। आश्रय लेनेवाला। २ सम्बन्ध युक्त।
आश्रव (वि०) आज्ञाकारी। आज्ञानुवर्ती।
आस्रवः (पु०) १ सरिता। नदी। चश्मा। सोता। २ प्रतिज्ञा। वादा। प्रतिश्रुति। ३ दोष। अपराध।
आश्रिः (स्त्री०) तलवार की धार।
आश्रित (व० कृ०) १ शरणागत। २ आसरे पर रहने [वाला।
आश्रितः (पु०) चाकर। नौकर। अनुयायी।
आश्रुत (व० कृ०) १ सुना हुआ। २ प्रतिज्ञात। स्वीकृत। मंजूर किया हुआ।
आश्रुतम् (न०) इस प्रकार पुकारना जो सुन पड़े।
आश्रुतिः (स्त्री०) १ श्रवण। २ स्वीकृति।
आश्लेषः (पु०) १ आलिङ्गन। चिपटाना। लिपटाना। गले लगाना। २ घनिष्ट सम्बन्ध। सम्बन्ध।
आश्लेषा (स्त्री०) नवाँ नक्षत्र।
आश्व (वि०) [स्त्री०—आश्वी] घोड़े का। घोड़ा [सम्बन्धी।
आश्वं (न०) बहुत से घोड़े। घोड़ों का समुदाय।
आश्वत्थ (वि०) [स्त्री०—आश्वत्थी] पीपल का बना हुआ या पीपल का या पीपल सम्बन्धी।
आश्वत्थम् (न०) पीपल वृक्ष के फल।
आश्वयुज (वि०) [स्त्री०—आश्वयुजी] आश्विन मास से सम्बन्ध रखने वाला।
आश्वयुजः (पु०) आश्विन मास। क्वार का महीना।
आश्वयुजी (स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णमासी या [पूर्णिमा।
आश्वलक्षणिकः (पु०) १ घोड़ों के नाल जड़ने वाला। २ अश्ववैद्य। सालहोत्री। ३ साईस।
आश्वासः (पु०) १ स्वतंत्र रीत्या सांस लेना। २ सान्त्वना। प्रसन्नता। अभयदान। ३ निवृत्ति।

अवसान । ४ किसी पुस्तक का परिच्छेद या काण्ड ।

आश्वासनम् (न०) दिलासा । तसल्ली । ढाँढस । धीरज । आशाप्रदान ।

आश्विकः (पु०) घुड़सवार ।

आश्विनः (पु०) क्वार का महीना ।

आश्विनेयौ (द्विवचन) दो आश्विनी कुमार । ये दोनों देवताओं के चिकित्सक कहे जाते हैं ।

आश्विन (वि०) [स्त्री०—आश्विनी] घोड़े पर सवार हो यात्रा करने वाला ।

आषाढ (पु०) १ वर्षाऋतु के प्रथम मास का नाम । २ पलास का दण्ड ।

आषाढा (स्त्री०) २० वाँ और २१ वाँ नक्षत्र । पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा । [मासी ।

आषाढ़ी (स्त्री०) आषाढ़ मास की पूर्णिमा या पूरन-

आष्टमः (पु०) आठवाँ भाग या अंश ।

आस्, आः (अव्यया०) स्मृति, क्रोध, पीडा, अपाकरण, खेद, शोक-द्योतक अव्यय ।

आस् (धा० आ०) [आस्ते, आसित] १ बैठना । लेटना । विश्राम करना । २ रहना । बसना । ३ चुपचाप बैठना । बेकार बैठना । ४ होना । जीवित रहना । ५ अन्तर्गत होना । ६ जाने देना । छोड़ देना । ७ एक ओर रख देना ।

आसः (पु०) } १ बैठक । २ कमान ।
आसम् (न०) } "स सासिः सासुसूः सासः ।"—
—किरातार्जुनीय ।

आसक्त (व० कृ०) १ अनुरक्त । लीन । लिप्त । २ लुब्ध । मुग्ध । मोहित । आशिक ।

आसक्तिः (स्त्री०) १ अनुरक्ति । लिप्तता । २ लगन । चाह । प्रेम । ३ इश्क ।

आसंगः } (पु०) १ अनुराग । अभिनिवेश । २ संगति,
आसङ्गः } (सोहबत । मिलन । ३ बधन ।

आसंगिनी } (स्त्री०) ववंडर ।
आसङ्गिनी }

आसजनम् } (न०) १ बांधना । लपेटना । (शरीर-
आसञ्जनम् } पर) धारण करना । २ फंसजाना । चिपट जाना । ३ अनुराग । भक्ति ।

आसत्तिः (स्त्री०) १ ससर्ग । मेलमिलाप । २ घनिष्ट मैत्र्य । ३ लाभ । फायदा । ४ सामीप्य । निकटता । ५ अर्थबोधार्थं विना व्यवधान के परस्पर सम्बन्ध युक्त दो पदों या शब्दों का समीप रहना ।

आसन् (न०) मुख ।

आसनम् (न०) १ बैठ जाना । २ बैठक । बैठकी । तिपाई । ३ बैठने का ढंग विशेष । आसन विशेष । ४ बैठ जाना या रुक जाना । ५ मैथुन करने की कोई भी विशेष विधि । ६ छः प्रकार की राजनीति में से एक । वे ये हैं—

"सन्धिर्ना विग्रहो यानमासन द्वैधमाश्रयः ।"
अमरकोष ।

शत्रु के सामना करने पर भी किसी स्थान पर डटे रहना । ७ हाथी का कंधा ।

आसना (स्त्री०) बैठक । तिपाई । टिकाव ।

आसनी (स्त्री०) छोटी बैठकी ।

आसंदी } कोच । तकिया दार लबी बैंच जिस पर
आसन्दी } गद्दा मद्दा हो ।

आसन्न (व० कृ०) समीपस्थ । निकट का । उपस्थित ।—कालः, (पु०) १ मृत्यु की घड़ी । २ जिसकी मृत्यु समीप हो ।—परिचारकः, (पु०) —चारिका, (स्त्री०) व्यक्तिगत चाकर । शरीररक्षक । बाडीगार्ड ।

आसंबाध (वि०) बंद किया हुआ । रोका हुआ । चारो ओर से रुका हुआ ।

आसबाधा भविष्यन्ति पन्थानः शरवृष्टिभिः ।
—रामायण ।

आसवः (पु०) १ अर्क । २ काढ़ा । ३ हर प्रकार का मद्य । [मण ।

आसादनम् (न०) १ उपलब्धि । प्राप्ति । २ आक्र-

आसारः (पु०) १ मूसलधार वृष्टि । २ शत्रु को घेरना । ३ आक्रमण । हम्ला । चढ़ाई । ४ मित्र राजा की सैन्य । ५ रसद । भोज्यपदार्थ ।

आसिकः (पु०) तलवारबहादुर । तलवारबंद सिपाही ।

आसिधारम् (न०) व्रत विशेष ।

आस्रुतिः (स्त्री०) १ परिस्रवण । निःसरण । क्षरण । खिंचाव । टपकाव । चुआव । २ फाँट । क्वाथ । काढ़ा ।

आसुर (वि०) [स्त्री०—आसुरी] १ असुरों का। असुर सम्बन्धी। २ राक्षसी। नारकी। अधम।

आसुरः (पु०) १ असुर। २ आठ प्रकार के विवाहों में से एक। इसमें वर अपने लिये वधू को मूल्य देकर वधू के पिता या अन्य किसी सम्बन्धी से ख़रीदता है।

आसुरी (स्त्री०) १ जर्राही। चीरा फाड़ी का इलाज। २राक्षसी या असुर की स्त्री।

आसूत्रित (वि०) १ पुष्प माला बनाना या पहिनना। २ ओतप्रोत। गुथा हुआ।

आसेकः (पु०) सिंचन। जल से सींचना। तर करना या भिंगोना। उड़ेलना। [छिड़कना।

आसेचनम् (न०) उड़ेलना। डालना। तर करना।

आसेधः (पु०) गिरफ़्तारी। हवालात। पकड़ रखना। गिरफ्तारी चार प्रकार की होती है यथा—
"स्थानसेधः कालकृतः प्रवासात् कर्मणस्तथा।"
—नारद।

आसेवा (स्त्री०) } १ उत्साह युक्त अभ्यास।
आसेवनम् (न०) } उत्साह पूर्वक किसी कर्म को बार बार करने की प्रवृत्ति। २ पुनरावृत्ति।

आस्कन्दः (पु०) } १ आक्रमण। चढ़ाई।
आस्कन्दनम् (न०) } हम्ला। २ चढ़ना। सवार होना। सीढ़ी पर चढ़ना। ३ धिक्कार। भर्त्सना। ४ घोड़े की एक चाल। ५ युद्ध। लड़ाई।

आस्कन्दितम् } (न०) घोड़े की चाल विशेष।
आस्कन्दितकम् } तेज़ दुलकी।

आस्कन्दिन् (वि०) कूदते हुए। फलाँगते हुए। हम्ला करते हुए। आक्रमण करते हुए।

आस्तरः (पु०) १ चादर। चद्दर। २ कालीन। ग़लीचा। विस्तरा। चटाई। ३ बिछावन।

आस्तरणम् (न०) १ बिछौना। चादर। २ शय्या। ३ गद्दा। तोषक। चादर। ४ ग़लीचा। ५ हाथी की झूल।

आस्तारः (पु०) बिछाना। ढाँकना। बखेरना।

आस्तिक (वि०) [स्त्री०—आस्तिकी] १ परलोक और ईश्वर में विश्वास रखने वाला। २ वेदों पर आस्था रखने वाला। ३ पवित्र। सच्चा। विश्वासी।

आस्तिकता (स्त्री०) } १ ईश्वर और परलोक
आस्तिक्यम् (न०) } में विश्वास। २ वेद में
आस्तिकत्वम् (न०) } विश्वास। ३ सचाई। विश्वास। श्रद्धा। ईश्वरभक्ति। धर्मानुराग।

आस्तीकः (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम। यह जरत्कारु के पुत्र थे। इन्हींके बीच में पड़ने से महाराज जनमेजय ने सर्पयज्ञ बंद किया था।

आस्था (स्त्री०) १ श्रद्धा। पूज्यबुद्धि। २ स्वीकारोक्ति। प्रतिज्ञा। ३ सहारा। आश्रय। आधार। ४ आशा। भरोसा। ५ उद्योग। प्रयत्न। ६ दशा। हालत। परिस्थिति। ७ समारोह।

आस्थानम् (न०) १ स्थान। जगह। २ आधार। आधारस्थल। ३ समारोह। ४ श्रद्धा। पूज्य बुद्धि। ५ सभा-भवन। दरबार। दर्शकों के बैठने के लिये विशाल भवन। ६ विश्रामस्थान।

आस्थित (व० कृ०) निवास किया। ठहरा। रहा। पहुँचा। मान गया। बड़े प्रयत्न से किसी काम में संलग्न। घिरा हुआ। फैला हुआ।

आस्पदम् (पु०) १ स्थान। जगह। बैठक। कमरा। २ (अलं०) आवसस्थान। ३ पद। मर्यादा। ४ प्रताप। अधिकार। ५ मामला। ६ सहारा। ७ लग्न से दसवाँ स्थान।

आस्पंदनं } (न०) सिसकन। काँपन। थर-
आस्पन्दनम् } थराहट। धड़कन। [होड़ी।

आस्पर्धा (स्त्री०) स्पर्धा। बराबरी। हिर्स। होड़ा-

आस्फालः (पु०) १ धीरे धीरे चलाना या डुलाना। २ फटफटाना। ३ विशेष कर हाथी के कानों का फटफटाना।

आस्फालनम् (न०) १ रगड़ना। मलना। चलाना। दबाना। पछाड़ना। २ गर्व। अहङ्कार।

आस्फोटः (पु०) १ मदार का पौधा। २ ताल ठोंकना।

आस्फोटनम् (न०) १ फटफटाना। २ थर थर काँपना। ३ फूँकना। फुलाना। ४ सकोड़ना। मूँदना। ५ ताल ठोंकना।

आस्फोटा (स्त्री०) नवमल्लिका का पौधा। चमेली की भिन्न भिन्न जातियाँ।

आस्माक } (स्त्री०—आस्माकी] हमारा।
आस्माकीन } हमारे।

आस्यं (न०) १ मुख । डाढ़ें । २ चेहरा । ३ मुख का वह भाग जिससे वर्ण का उच्चारण किया जाता है। ४ छेद ।—आसवः, (पु०) थूक । खकार ।—पत्रं, (न०) कमल ।—लाङ्गलः, (पु०) १ कुत्ता । २ शूकर ।—लोमन्, (न०) डाढ़ी ।

अस्यन्दनम् (न०) बहना । टपकना ।

आस्यंधय (वि०) चूमा । चुम्बन ।

आस्रं (न०) खून । लोहू । रक्त ।

आस्रपः (पु०) रक्त पीने वाला । राक्षस ।

आस्रवः (पु०) १ पीड़ा । कष्ट । दुःख । २ बहाव । दौड़ । ३ निकास । ४ अपराध । रोष । ५ चुरते हुए चावल का फेन । [कष्ट ।

आश्रावः (पु०) १ घाव । २ बहाव । थूक । ४ पीड़ा ।

आस्वादः (पु०) १ चखना । खाना । २ सुस्वाद । रस ।

आस्वादनम् (न०) चखना । खाना ।

आह (अव्यया०) भर्त्सना । उग्रता । प्रभुत्वसूचक अव्ययात्मक सम्बोधन ।

आहत (व० कृ०) १ पिटा हुआ । चोट खाया हुआ । २ कुचला हुआ । ३ चोटिल । मरा हुआ । ४ (अङ्कगणित में) गुणा किया हुआ । ५ (पाँसा) फैंका हुआ । ६ मिथ्या उच्चारित ।

आहतः (पु०) ढोल । [असम्भव कथन ।

आहतम् (न०) १ कोरा कपड़ा । २ बेहूदा कथन ।

आहतिः (स्त्री०) १ आघात । २ प्रहार । ३ लट्ठ । डंडा । [वाला ।

आहर (वि०) लाने वाला । जाकर लाने वाला । लेने

आहरः (पु०) १ ग्रहण । पकड़ । २ परिपूर्णता । किसी कार्य को करने की क्रिया । ३ बलिदान ।

आहरणं (न०) १ छीनना । हरलेना । स्थानान्तरित करना । अपनयन । ३ ग्रहण । लेना । ४ विवाह में दिया जानेवाला दहेज़ ।

" सत्वानुरूपाहरणी कृतश्रीः ।
रघुवंश ।

आहवः (पु०) १ युद्ध । लड़ाई । २ ललकार । चुनौती । । ३ यज्ञ । होम ।

आहवनम् (न०) यज्ञ । होम ।

आहवनीय (स० का० कृ०) हवन करने योग्य ।

आहवनीयः (पु०) गार्हपत्याग्नि से लिया हुआ अभिमंत्रित अग्नि, जो यज्ञ करने के लिये यज्ञ-मण्डप में पूर्व दिशा में स्थापित किया जाता है ।

आहारः (पु०) १ लाना । हरलाना । २ भोजन करना । ३ भोजन ।—पाकः, (पु०) भोजन की पाचन क्रिया ।—विरहः, (पु०) फाँका । कड़ाका । लँघन ।—सम्भवः, (पु०) खाये हुए पदार्थों का रस ।

आहार्य (स० का० कृ०) १ आहरणीय । २ पकड़ कर पास लाने योग्य । ३ कृत्रिम । बाहिरी । ४ चार प्रकार के अभिनयों में से एक ।

आहावः (पु०) १ ढोरों को जल पिलाने के लिये कुए के पास का हौद । २ युद्ध । लड़ाई । ३ आह्वान । आमंत्रण । ४ आग ।

आहिंडिकः } (पु०) वर्णसङ्कर विशेष । निषाद
आहिण्डिकः } पिता और वैदेहि माता से उत्पन्न ।

आहित (व० कृ०) १ स्थापित । रखा हुआ । जमा किया हुआ । अमानतन रखा हुआ । टिकाया हुआ । डाला हुआ । किया हुआ । २ संस्कारित ।—अग्नि, (पु०) अग्निहोत्री ।—अङ्क, (वि०) चिन्हित । धब्बादार ।

आहितुण्डिकः (पु०) सपेरा । मदारी ।

आहुतिः (स्त्री०) १ होम । हवन । किसी देवता के उद्देश्य से उसका मन्त्र पढ़ कर अग्नि में साकल्य का डालना । २ साकल्य की वह मात्रा जो एक वार हवनकुण्ड में छोड़ी जाय ।

अहुतिः (स्त्री०) आह्वान । आमंत्रण ।

आहेय (वि०) सर्प सम्बन्धी ।

आहेयः (पु०) सर्प । सर्प का विष ।

आहो (अव्यया०) सन्देह, विकल्प, प्रश्नव्यञ्जक अव्ययात्मक सम्बोधन ।

आहोपुरुषिका (स्त्री०) १ बड़ी भारी अहंमन्यता । २ शेखी । अपनी शक्ति का बखान ।—स्वित् (अव्यया०) १ विकल्प । सन्देह । प्रश्न । २ जानने की अभिलाषा । ३ दैनिक ।

आन्हं (न०) बहुत दिवस ।

आन्हिक (वि०) [स्त्री०—आन्हिकी] प्रति दिन का । दैनिक । नित्य प्रति होनेवाला काम ।

आन्हिकं (न०) स्नान, सन्ध्या, तर्पण, भोजनादि नित्य के कृत्य।
आल्हादः (पु०) हर्ष। आनन्द। प्रसन्नता।
आह्व (वि०) बुलानेवाला। चिल्लानेवाला।
आह्वा (स्त्री०) १ पुकार। चिल्लाहट। २ नाम। संज्ञा। यथा "अमृताह्वः, शताह्वः।"
आह्वयः (पु०) १ नाम संज्ञा। २ जुआ। जानवरों की लड़ाई से उत्पन्न हुआ मामला, मुकदमा।
"पणपूर्वक पक्षिमेषादियोधनमाह्वयः।"
—राघवानन्द।
आह्वयनम् (न०) नाम। संज्ञा।
आह्वानं (न०) १ निमन्त्रण। बुलावा। न्योता। २ अदालत की बुलाहट। ३ किसी देवता का आह्वान। ४ ललकार। चिनौती। ५ नाम। संज्ञा। [संज्ञा।
आह्वायः (पु०) १ अदालत का बुलावा। २ नाम
आह्वायकः (पु०) हल्कारा। डाँकिया।

इ

इ संस्कृत अथवा देवनागरी वर्णमाला में स्वर के अन्तर्गत तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालुदेश और प्रयत्न विवृत है।
इः (पु०) कामदेव का नाम। (अव्यया०) क्रोध, दया, भर्त्सना, आश्चर्य और सम्बोधनवाची अव्यय।
इ (धा० पर०) (एति, इति) १ जाना। आना। पहुँचना। पाना उपस्थित होना। हाजिर होना। दौड़ना। घूमना। तेजी से या वारंवार जाना।
इक् (प्रत्यय) याद करना। स्मरण करना।
इकटा (स्त्री०) घास विशेष जिससे चटाई बुनी जाती है।
इकवालः (पु०) ज्योतिष में वर्षफल के सोलह योगों में से एक योग। सम्पत्ति।
इक्षवः (पु०) गन्ना। ऊख।
इक्षुः (पु०) गन्ना। ऊख। पौंडा। —काण्डः, (पु०) —काण्डम्, (न०) दो जाति के गन्नों के नाम। —कुहकः, (पु०) गन्ना एकत्रित करने वाला। —दा, (स्त्री०) एक नदी का नाम। —पाकः, (पु०) शीरा। गुड़। जूसी। चोटा। राव। भक्षिका, (स्त्री०) राब और चीनी का बना हुआ भोज्य पदार्थ विशेष। मती,—मालिनी, —मालवी, (स्त्री०) नदी विशेष। —मेहः, (पु०) प्रमेह विशेष। इसमें पेशाब के साथ मधु या शक्कर निकलती है। मधुमेह। इक्षु प्रमेह। —रसः, (पु०) गन्ने का रस या शीरा। —वणं, (न०) गन्नों का वन या जंगल। —विकार, (पु०) चीनी। गुड़। शीरा। राव। —सारः, (पु०) शीरा। चीनी। गुड़।
इक्षुरः (पु०) गन्ना।
इक्ष्वाकुः (पु०) १ सूर्यवंशी एक राजा विशेष। इनके पिता का नाम वैवस्वत मनु था। २ महाराज इक्ष्वाकु का वंशज। ३ कड़वी तूँबी। तितलौकी।
इक्ष्वालिका (स्त्री०) काँस। काही।
इख्, इंख् (धा० प०) [एखति, इंखति] जाना। हिलना डुलना।
इंग्, इङ्ग् (धा० उभय०) [इंगति, इंगते, इंगित] हिलना डोलना।
इंग, इङ्ग (वि०) १ हिलने वाला। २ अद्भुत।
इंगः, इङ्गः (पु०) १ इशारा। सङ्केत। २ हावभाव द्वारा मानसिक भाव का द्योतन।
इंगनम्, इङ्गनम् (न०) १ हिलाना। डोलाना। २ ज्ञान।
इंगितम्, इङ्गितम् (न०) १ धड़कन। डोलन। २ मानसिक विचार। ३ इशारा। सङ्केत। सैन। —कोविद,—ज्ञ, (वि०) इशारे बाज़ी में कुशल। मनोभाव को प्रकाश करने वाला। हाव भावों को जानने वाला।
इंगुदः, इङ्गुदः (पु०), **इंगुदी, इङ्गुदी** (स्त्री०) १ हिंगोट का वृक्ष। २ ज्योतिमति वृक्ष। ३ मालकँगनी।
इंगुदम्, इङ्गुदम् (वि०) हिंगोट वृक्ष का फल।
इक्षिकिलः (पु०) १ कच्चा तालाब। २ कीचड़।

इक्ष्वाकः (पु०) जलवृश्चिक । पनवीछी ।
इच्छलः (पु०) एक छोटा पौधा विशेष, जो जल के समीप उत्पन्न होता है । हिज्जल ।
इच्छा (स्त्री०) १ अभिलाषा । वान्छा । चाह । २ (अंकगणित में) प्रश्न । कठिन प्रश्न ।—दानं, (न०) मुहमाँगा दान ।—निवृत्तिः (स्त्री०) सांसारिक कामनाओं की ओर से उदासीनता । वासनाओं का त्याग ।—फलं, (न०) किसी प्रश्न का उत्तर ।—रतं, (न०) मनचाहा खेल कूद ।—वसुः, (पु०) कुबेर का नाम ।—संपद्, (स्त्री०) मनोकामना का पूरी होना ।
इज्य (वि०) पूज्य । [यज्ञ । परमात्मा ।
इज्यः (पु०) १ गुरु । २ देवगुरु बृहस्पति । ३ नारा-
इज्या (स्त्री०) १ यज्ञ । २ दान । पुरस्कार । ३ मूर्ति प्रतिमा । ४ कुटिनी । ५ गौ ।—शीलः, (पु०) सदा यज्ञ करने वाला ।
इटः (पु०) १ एक प्रकार की घास । २ चटाई ।
इट्चरः (पु०) साँड या बारहसिंहा जो चरने के लिये स्वतंत्र छोड़ दिया जाय ।
इड् (स्त्री०) [वैदिक प्रयोग] १ इल् । २ वलि । ३ प्रार्थना । ४ धारा प्रवाह वक्तृता । ५ पृथिवी । ६ भोजन । ७ सामग्री । ८ वर्षाऋतु ६ पञ्चप्रयोगों में से तीसरा प्रयोग । [इडोयजति] १० ब्रह्म ।
इडस्पतिः (पु०) विष्णु का नाम ।
इडः (पु०) अग्नि का नाम ।
इडा, इडाला } (स्त्री०) १ पृथिवी । २ वाणी । ३ अन्न । हवि । ४ गौ । ५ (इला०) देवी का नाम । मनु की बेटी । यह बुध की स्त्री और राजा पुरूरवा की माता थी । ६ स्वर्ग । ७ शरीर की एक नाडी जो दहिने अंग में रहती है । ८ दुर्गा । ६ अम्बिका । ११ पार्वती । १२ स्तुति । १३ एक यज्ञपात्र । १४ आहुति जो प्रयाजा और अनुयाजा के बीच दी जाती है । १५ आसोमपा नामक एक अप्रिय देवता । १६ नय देवता ।
इडाविका (स्त्री०) वर्रं । बर्रैया ।
इडिका (स्त्री०) धरती । पृथिवी ।
इडिकः (पु०) जंगली बकरा ।
इण (क्रि०) जाना ।

इत (वि०) १ गत । गया हुआ । २ स्मरण किया हुआ । ३ प्राप्त ।
इतर (सर्वनाम) (वि०) [स्त्री०—इतरा, इतरत्] १ दूसरा । अन्य । भिन्न । २ पामर । निम्न श्रेणी का ।
इतरतः, इतरत्र } (अव्यया०) १ अन्यथा । नहीं तो । २ अन्यत्र । ३ भिन्नत्व ।
इतरथा (अव्यया०) १ अन्य प्रकार से । और तरह से । २ प्रतिकूलरीत्या । अन्यथा । ३ कुटिल भाव से । ४ दूसरी ओर ।
इतरेतर (वि०) अन्योन्य । परस्पर । आपस में ।
इतरेद्युः (अव्यया०) अन्यदिवस । दूसरे दिन ।
इतस् (अव्यय०) १ यहाँ से । यहाँ । २ इस पुरुष से । मुझसे । ३ इस ओर । मेरी ओर । ४ इस संसार से । ५ इस समय से ।
इतस्ततः (इतः इतः) (अव्या०) इधर उधर । इसमें । उसमें ।
इति (अव्यया०) १ समाप्ति । २ हेतु । ३ निदर्शन । ४ निकटता । ६ प्रत्यक्ष । ७ अवधारण । ८ व्यवस्था । ६ मान । १० परामर्श । ११ शब्द के यथार्थ रूप को प्रकट करने वाला । १२ वाक्य का अर्थप्रकाशक ।—अर्थः, (पु०) सारांश ।—कथा, (स्त्री०) वाहियात बातचीत ।—करणीय, (वि०) किन्हीं नियमों के अनुसार करने योग्य ।—मात्र, (वि०) अमुक परिमाण का । —वृत्तं, (न०) पुरावृत्त । पुरानी कथा । कहानी ।
इतिकर्त्तव्यता (स्त्री०) अवश्य करने योग्य । काम करने का क्रम, जिसके अनुसार एक काम के अनन्तर दूसरा काम किया जाय ।
इतिमध्ये (अव्य०) इतने में ।
इतिह (अव्य०) १ उपदेश परंपरा । २ देर से सुना जाने वाला उपदेश । ३ सुना सुनाया अच्छा वचन ।
इतिहासः (पु०) १ पुस्तक जिसमें बीते हुए काल की प्रसिद्ध घटनाओं और तत्कालीन प्रसिद्ध पुरुषों का वर्णन हो । २ वह ग्रन्थ जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उपदेश प्राचीन कथानकों से युक्त हो । तवारीख । [संस्कृत साहित्य में इतिहास

सभा का नाम "सुधर्मा" है। इसकी राजधानी का नाम अमरावती है। वहीं "नन्दन" नाम का उद्यान है, जिसमें पारिजात वृक्षों का प्राधान्य है और वहीं कल्पवृक्ष है। इसके घोड़े का नाम उच्चैः-श्रवा है और सारथी का नाम मातलि है। यह ज्येष्ठा नक्षत्र और पूर्व दिशा का स्वामी है।—अनुजः, (=इन्द्रानुजः,) (पु०)—अवरजः, (=इन्द्रावरजः,) (पु०) विष्णु या नारायण की उपाधि।—अरिः, (पु०) दैत्य या दानव।—आयुधं, (=इन्द्रायुधम्,) (न०) इन्द्र का हथियार। इन्द्रधनुष।—कीलः, (पु०) १ मन्दराचल पर्वत का नाम। २ चट्टान।—कीलम्, (न०) इन्द्र की ध्वजा।—कुञ्जरः, (पु०) ऐरावत हाथी।—कूटः, (पु०) पर्वत विशेष।—कोशः,—कोषः,—कोषकः, (पु०) १ कोच। सोफा। (Sofa) २ चबूतरा। ३ खूंटी जो दीवाल में गाड़ी जाती है। नागदन्त।—गिरिः, (पु०) महेन्द्राचल।—गुरुः,—आचार्यः, (पु०) बृहस्पति।—गोपः,—गोपकः, (पु०) वीर बहूटी नाम का एक कीड़ा।—चापं, (न०)—धनुस्, (न०) सात रंगों का बना हुआ एक अर्धवृत्त जो वर्षाकाल में सूर्य के सामने की दिशा में कभी कभी आकाश में देख पड़ता है।—जालं, (न०) १ एक अस्त्र जिसका प्रयोग अर्जुन ने किया था। २ माया कर्म। जादूगरी। तिलस्म।—जालिक, (वि०) धोखेबाज़। बनावटी। मायावी।—जालिकः (पु०) जादूगर। इन्द्रजाल करने वाला।—जित्, (पु०) इन्द्र को जीतने वाला। मेघनाद (जो रावण का पुत्र था और) जिसे लक्ष्मण जी ने मारा था।—जित्विजयिन्, (पु०) लक्ष्मण।—तूलं—तूलकं, (न०) रुई का ढेर।—दारुः, (पु०) देवदारु वृक्ष।—नीलः, (पु०) नीलमणि।—नीलः,—नीलकः, (पु०) मरकत मणि। पन्ना।—पत्नी, (स्त्री०) शची देवी।—पुरोहितः, (पु०) बृहस्पति देव।—प्रस्थं, (न०) आधुनिक दिल्ली नगरी।—प्रहरणं, (न०) वज्र।—भेषजम्, (न०) सोंठ।—महः, (पु०) १ इन्द्रोत्सव। २ वर्षाऋतु।—लोकः, (पु०) स्वर्ग।—वंशा,—वज्रा, (स्त्री०) दो छन्दों के नाम।—शत्रुः, (पु०) १ इन्द्र का बैरी। २ वह जिसका शत्रु इन्द्र हो।—शलभः, (पु०) वीरबहूटी नाम का कीड़ा।—सुतः,—सूनुः, (पु०) इन्द्र का पुत्र (क) जयन्त। (ख) अर्जुन। (ग) वालि।—सेनानीः, (पु०) कार्तिकेय की उपाधि।

इंद्रकं } इन्द्रकं } (न०) सभाभवन। कमेटी घर।

इंद्राणी } इन्द्राणी } (स्त्री०) १ शची देवी। २ इन्द्रायन वृक्ष। ३ बड़ी इलायची। ४ बाँई आँख की पुतली। ५ सभालू। सिन्धुवार वृक्ष। निरगुण्डी।

इंद्रियं } इन्द्रियं } (न०) १ बल। जोर। २ शरीर के वे अवयव, जिनसे बाहिरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। ये दो प्रकार के होते हैं। यथा कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय। अथवा बुद्धीन्द्रिय। ६ शारीरिक शक्ति। ४ वीर्य। ५ पाँच की संख्या का सङ्केत।—अगोचर, (वि०) जो दिखलायी न दे।—अर्थः, (पु०) इन्द्रियों का विषय। विषय जिनका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो। [ये विषय हैं—रूप, शब्द, गन्ध, रस स्पर्श।]—ग्रामः,—वर्गः (पु०) इन्द्रियों का समूह।—ज्ञानं, (न०) सत्यासत्यविवेकशक्ति।—निग्रहः, (पु०) इन्द्रियों का दमन।—वधः (पु०) अज्ञानता। अचेतना। मूर्च्छा।—विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) इन्द्रियों का उत्पथगमन।—स्वापः, (पु०) मूर्च्छा। अचेतना। बेहोशी।

इंध् } इन्ध् } (धा० आ०) [इद्धे या इंधे, इद्ध] जलाना। प्रकाशित करना। आग लगाना।

इंधः } इन्धः } (पु०) इंधन। जलाने की लकड़ी।

इंधनम् } इन्धनम् } (न०) १ जलाना। उजाला २ इंधन। लकड़ी।

इभः (पु०) हाथी।—अरिः (पु०) शेर।—आननः, (पु०) गणेश जी का नाम। गजानन।—निमीलिका, (स्त्री०) चातुर्य। बुद्धिमत्ता। चालाकी। होशियारी।—पालकः, (पु०) महावत।—पोटा, (स्त्री०) हाथी की मादा

छोटी सन्तान ।—पोतः, (पु०) हाथी का बच्चा ।—युवतिः, (स्त्री०) हथिनी ।

इभी (स्त्री०) हथिनी ।

इभ्य (वि०) धनी । धनवान ।

इभ्यः (पु०) १ राजा । २ महावत ।

इभ्यक (वि०) धनी । धनवान ।

इभ्या (स्त्री०) हथिनी ।

इयत् (वि०) इतना । इतना बड़ा । इतने विस्तार का ।

इयत्ता(स्त्री०) } सीमा । परिमाण । माप ।
इयत्वं (न०) }

इरणं (न०) १ ऊसर भूमि । लुनई ज़मीन । २ बियाबान । उजाड़ ।

इरंमदः (पु०) १ बिजली की कड़क या कौंधा । वह आग जो बिजली गिरने पर प्रकट होती है । वज्राग्नि । २ बड़वानल ।

इरा (स्त्री०) १ पृथिवी । २ वाणी । ३ वाणी की अधिष्ठात्री देवी । सरस्वती । ४ जल । ५ भोज्य पदार्थ । ६ मदिरा ।—ईशः, (पु०) वरुण । विष्णु । गणेश ।—चरं, (न०) ओला । पत्थर जो बादल से बरसते हैं ।

इरावत् (पु०) समुद्र । सागर ।

इरिणं (न०) लुनही ज़मीन ।

इर्वारु } (वि०) नाशक । हिंसक ।
इर्वालु }

इर्वारुः } (पु० स्त्री०) ककड़ी । ककड़ी ।
इर्वालुः }

इल् (धा० पर०) [इलति, इलित] १ चलना । डोलना । हिलना । २ सोना । ३ फैंकना । भेजना । डाल देना ।

इला (स्त्री०) १ पृथिवी । २ गौ । ३ वाणी ।—गोलः, (पु०)—गोलं, (न०) पृथिवी । भूगोल ।—धरः, (पु०) पहाड़ ।

इलिका (स्त्री०) पृथिवी ।

इल्वकाः } (बहुवचन) मृगशिरस् नक्षत्र ।
इल्वलाः }

इव (अव्यया०) १ जैसा । २ गोया । ३ कुछ थोड़ा । कुछ कुछ । शायद । कदाचित् ।

इष् (धा० पर०) [इच्छति, इष्ट] १ चाहना । कामना करना । २ चुनना । पसंद करना । ३ प्राप्त करने के लिये प्रयत्नवान होना । ४ अनुकूल होना । रज़ामन्द होना । सहमत होना ।

इषः (पु०) १ शक्तिशाली । बलवान् । २ आश्विनमास ।

इषिका } (स्त्री०) १ नरकुल । सींक । २ बाण ।
इषीका }

इषिरः (पु०) अग्नि ।

इषुः (पु०) १ तीर । २ पांच की संख्या का सङ्केत ।—अग्रं,—अनीकं (न०) तीर की नोक ।—असनं, अस्त्रं, (न०) कमान । धनुष ।—आसः, (पु०) १ धनुष । २ धनुषधर । ३ योद्धा ।—कारः,—कृत्, (पु०) धनुष बनाने वाला ।—धरः, भृत्, (पु०) धनुर्धर ।—पथः,—विक्षेपः, (पु०) तीर छोड़ना । तीर की शिस्त ।—प्रयोगः, (पु०) तीर चलाना ।

इषुधिः (पु०) तरकस । तूणीर ।

इष्ट (व० कृ०) १ अभिलषित । चाहा गया । २ प्रिय । प्यारा । प्रेमपात्र । कृपापात्र । ३ पूज्य । मान्य । ४ यज्ञ किया हुआ । यज्ञ में पूजन किया हुआ ।

इष्टः (पु०) प्रेमी । आशिक । पति ।

इष्टम् (न०) १ कामना । अभिलाषा । चाह । २ संस्कार । ३ यज्ञादि कर्मानुष्ठान । (अव्यया०) अपने इच्छा से । अपने आप । स्वेच्छतया ।

इष्टका (स्त्री०) ईंट । खपरैल ।—न्यासः, (पु०) नींव रखना ।—पथः, (पु०) ईंटों की बनी सड़क ।

इष्टदेव (पु०) } अपना देवता विशेष ।
इष्टदेवता (स्त्री०) }

इष्टा (स्त्री०) शमी वृक्ष । छेंकुर का पेड़ ।

इष्टार्थः (पु०) अभिलषित पदार्थ ।

इष्टापत्तिः (स्त्री०) अभिलषित कार्य का होना । प्रतिवादी के अनुकूल वादी का कथन या बयान । यथा—

"इष्टापत्तौ दोषान्तर माह ।"

इष्टापूर्तम् (न०) यज्ञादि अनुष्ठान । कूप, बावली खुदवाना, वृक्षादि रोपण करना, (धर्मशालादि, परोपकारी कार्य करना ।)

"इष्टापूर्तविधेः सपत्नशमनात्।"

इष्टिः (स्त्री०) १ अभिलाषा। कामना। २ प्रवृत्ति। ३ यज्ञ। दर्शपौर्णमास। ४ व्याकरण में भाष्यकार की वह सम्मति, जिसके विषय में सूत्रकार ने कुछ न लिखा हो। सूत्र और वार्तिक से भिन्न व्याकरण का नियम विशेष। —पचः (पु०) कंजूस।—पशुः, (पु०) बलिदान के लिये पशु।

इष्टिका (स्त्री०) ईंट। खपरैल।

इष्मः (पु०) १ कामदेव। २ वसन्त ऋतु।

इष्यः (पु०) } वसन्त ऋतु।
इष्यम् (न०) }

इस् (अव्यया०) क्रोध, पीड़ा एवं शोक व्यञ्जक अव्ययात्मक सम्बोधन।

इह (अव्यया०) यहाँ। इस समय। इस स्थान में। अब।—अमुत्र, (= इहामुत्र) (अव्यया०) इस लोक और परलोक में। यहाँ और वहाँ।—लोकः, (पु०) इस दुनिया में या इस जन्म में।—स्थ, (वि०) यहाँ खड़ा हुआ।।

इहत्य (वि०) यहाँ का। इस स्थान का। इस लोक का।

इहलः (पु०) चेदि देश का नाम।

ई

ई (पु०) संस्कृत या नागरी वर्णमाला का चौथा अक्षर। यह 'इ' का दीर्घ रूप है। तालु इसका उच्चारण स्थान है।

ई (धा० आत्म०) [ईयते] १ जाना। (परस्मै०) चमकना। २ व्याप्त होना। ३ अभिलाषा करना। ४ फैंकना। ५ जाना। ६ रवाना होना। ७ माँगना (आत्म०)। ८ गर्भवती होना।

ईः (पु०) कामदेव का नाम। (अव्यया०) उदासी, पीड़ा, क्रोध, शोक, अनुकम्पा, सम्बोधन और विवेक व्यञ्जक अव्ययात्मक सम्बोधन।

ईक्ष् (धा० आत्म०) [ईक्षते, ईक्षित] १ देखना। ताकना। जानना। आलोचना करना। घूरना। २ सम्मान करना। ३ परवाह करना। ४ सोचना। विचारना। ५ खोजना। ढूढ़ना। अनुसन्धान करना।

ईक्षकः (पु०) दर्शक। देखने वाला। [आँख।

ईक्षणं (न०) १ देखना। २ दृष्टि। चितवन। ३ नेत्र।

ईक्षणिकः (पु०) ज्योतिषी। भविष्यद्वक्ता।

ईक्षतिः (पु०) चितवन। दृष्टि।

ईक्षा (स्त्री०) १ चितवन। दृष्टि। २ विवेचना।

ईक्षिका (स्त्री०) १ नेत्र। २ झलक।

ईक्षित (व० कृ०) देखा हुआ। विचारा हुआ।

ईक्षितम् (न०) १ चितवन। निगाह। २ नेत्र। आँख।

ईख् } (धा० पर०) [ईखति, ईखित] १ जाना।
ईङ्ख् } हिलना। सरकना। झूमना। आगे पीछे होना। २ डुलाना। हिलाना। झुलाना। लटकाना।

ईज् } (धा० आत्म०) १ जाना। २ दोष लगाना।
ईञ्ज् } कलङ्क लगाना।

ईड (धा० आत्म०) [ईट्टे, ईडित] स्तुति करना। प्रशंसा करना।

ईडा (स्त्री०) प्रशंसा। स्तुति। बड़ाई।

ईड्य (स० का० कृ०) प्रशंसनीय। श्लाघनीय। प्रशंस्य। श्लाघ्य।

ईतिः (स्त्री०) १ प्लेग। आपत्ति। २ फसल सम्बन्धी उपद्रव। ऐसे उपद्रव ६ प्रकार के होते है। यथा, —अतिवृष्टि। अनावृष्टि। टीडियों का आगमन। चूहों का उपद्रव। तोतो का उपद्रव। राजाओं की चढ़ाई या उनका दौरा।

अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः।
प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः॥

३ संक्रामक रोग। ४ विदेशों में भ्रमण या यात्रा। ५ दंगा। मारपीट।

ईदृक्ता (स्त्री०) [इयत्ता का उलटा।] मात्रा।

ईदृक्ष } (वि०) [स्त्री०—ईदृक्षी, ईदृशी] इसका
ईदृश } ईदृश्, भी रूप होता है। ऐसा। इस प्रकार का। इसके सदृश। इसके बराबर। इस प्रकार के गुणों वाला।

ईप्सा (स्त्री०) १ अपेक्षा। २ चाह। अभिलाषा।

ईप्सित (वि०) अभिलषित । चाहा हुआ । प्रिय । प्यारा ।

ईप्सितं (न०) अभिलाषा । चाह ।

ईप्सु (वि०) प्राप्ति की कामना । किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये परिश्रम करने वाला ।

ईर् (धा० आत्म०) [ईर्ते , ईरांचक्रे, ऐरिष्ट, ईरितुं ईर्ण] [परस्मै० में - ईरति] १ जाना । हिलाना । डुलाना । २ फेंकना । डालना । छुड़ाना । सहसा निक्षेप करना । ३ कहना । उच्चारण करना । दुहराना । गतिशील करना । ४ काम में लगाना । प्रयुक्त करना । काम में लाना ।

ईरणः (पु०) हवा ।

ईरणं (न०) १ आन्दोलन । २ गमन ।

ईरिण (वि०) ऊसर । ऊजाड़ ।

ईरिणम् (न०) ऊजाड़ स्थान । ऊसर ज़मीन ।

ईर्क्ष्य (क्रि०) डाह करना । होड़ करना ।

ईर्मम् (न०) घाव ।

ईर्या (स्त्री०) इधर उधर घूमना फिरना (साधु की तरह) ।

ईर्वारुः (पु० स्त्री०) ककड़ी ।

ईर्षा, ईर्ष्या (पु०) डाह । परोत्कर्ष-असहिष्णुता ।

ईर्ष्य्, ईर्क्ष्य् (धा० परस्मै०) डाह करना । दूसरे की बढ़ती न देख सकना ।

ईर्ष्य, ईर्ष्यु, ईर्ष्यक (वि०) डाही । ईर्ष्यालु ।

ईर्ष्या, ईर्षा (स्त्री०) डाह । हसद । दूसरे की बढ़ती देख जो जलन पैदा होती है उसे ईर्ष्या कहते हैं ।

ईर्ष्यालु, ईर्षालु, ईर्षु, ईर्ष्यु (वि०) डाही । हसद रखने वाला । असन्तोषी ।

ईलिः (पु०, [स्त्री०—ईली] हथियार विशेष । सोटा । छोटी तलवार ।

ईश् (धा० आत्म०) [ईष्टे, ईशित] १ शासन करना । मालिक होना । हुक्मत करना । २ योग्य होना । अधिकार करना । कब्ज़ा करना ।

ईश (वि०) १ अधिकार में किये हुए ।

ईशः (पु०) १ प्रभु । मालिक । २ पति । ३ ग्यारह की संख्या । ४ शिव का नाम ।

ईशा (स्त्री०) १ दुर्गा का नाम । २ धनवती स्त्री ।—कोणः, (पु०) ईशान दिशा । उत्तर और पूर्व की दिशाओं के बीच का कोना —पुरी,—नगरी (स्त्री०) काशीपुरी । बनारस नगर ।—सखः, (पु०) कुबेर की उपाधि ।

ईशानः (पु०) १ शासक । अधिष्ठाता । मालिक । प्रभु । २ शिव जी का नाम । ३ विष्णु का नाम । ४ सूर्य ।

ईशानी (स्त्री०) दुर्गा देवी का नाम ।

ईशिता (स्त्री०), ईशित्वं (न०) उत्कृष्टता । महत्व । आठ सिद्धियों में से एक । [जिसको ईशिता की सिद्धि प्राप्त हो जाय, वह सब पर शासन कर सकता है ।]

ईश्वर (वि०) [स्त्री०—ईश्वरा ईश्वरी] शक्तिशाली । १ ताक़तवर । बलवान । योग्य । उपयुक्त । २ धनी । धनवान् ।—निषेधः, (पु०) ईश्वर के अस्तित्व को न मानना । नास्तिकता । —पूजक, (वि०) ईश्वर की पूजा करने वाला । ईश्वर में आस्थावान् । ईश्वरभक्त ।—सद्मन्, (न०) देवालय । मन्दिर । —सभम्, (न०) राजदरबार । राजसभा ।

ईश्वरः (पु०) १ प्रभु । मालिक । २ राजा । शासक । ३ धनी या बड़ा आदमी । यथा—"मा प्रयच्छेश्वरे धनम्" । ४ पति । ५ परमात्मा । परब्रह्म । परमेश्वर । ६ शिव का नाम । ७ विष्णु का नाम । ८ कामदेव ।

ईश्वरा, ईश्वरी (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

ईष् (धा० उभय) [ईषति-ईषते, ईषित] १ उड़जाना । भाग जाना । २ देखना । ३ देना । ४ मार डालना ।

ईषः (पु०) आश्विन मास ।

ईषत् (अव्यया०) हल्कासा । थोड़ासा । —उष्ण, (वि०) गुनगुना ।—कर, (वि०) १ थोड़ा करने वाला । २ सहज में होने वाला । —जलं, (न०) उथला पानी ।—पाण्डु, (वि०) हल्का सफेद या पीला । —पुरुषः (पु०) अधम या तिरस्कार

करने योग्य मनुष्य।—रक्त, (वि०) पिलौंहा लाल। नारंगी।—लभ,—प्रलभ, (वि०) थोड़े में मिलने वाला।—ह्रासः, (पु०) मुसक्यान। मुसकुराहट।

ईषा (स्त्री०) गाड़ी का बम या हल का बाँस।

ईषिका (स्त्री०) १ हाथी की आँख की पुतली। २ रंगसाज़ की कूँची। ३ हथियार। तीर। नेज़ा।

ईषिरः (पु०) अग्नि। आग।

ईषीका (स्त्री०) रंगसाज़ की कूची। (सोने या चांदी की) छड़, ईंट, सलाका या डला।

ईष्मः } ईष्वः } (पु०) १ कामदेव। २ वसन्तऋतु।

ईह् (धा० आत्म०) [ईहते, ईहित] १ इच्छा करना। अभिलाषा रखना। २ किसी वस्तु के पाने के लिये प्रयत्न करना। ३ उद्योग करना। प्रयत्न करना।

ईहा (स्त्री०) १ ख्वाहिश। चाह। २ उद्योग। क्रियाशीलता।

ईहामृगः (पु०) १ भेड़िया। २ नाटक का एक परिच्छेद जिसमें चार दृश्य हों।

ईहावृकः (पु०) भेड़िया।

ईहित (व० कृ०) वाञ्छित। अभिलषित। चाहा [हुआ।

ईहितं (न०) १ वाञ्छा। अभिलाषा। चाह। २ उद्योग प्रयत्न। ३ कर्म। कार्य।

उ

उ—नागरी वर्णमाला का पाँचवा अक्षर। इसका उच्चारण ओष्ठ की सहायता से होता है। इसकी गणना मुख्य तीन स्वरों में है। ह्रस्व दीर्घ, प्लुत, सानुनासिक एवं निरनुनासिक— इस प्रकार इसके १८ भेद हैं। उ, के गुण करने से "ओ" और वृद्धि करने से "औ" होता है।

उः (पु०) १ शिव जी का नाम। २ ब्रह्म का नाम। ३ चन्द्रमा का विम्ब। ४ ओम् का दूसरा अक्षर। (अव्यया०)पुकारने का, क्रोध अनुग्रह, आदेश, स्वीकृति, एवं प्रश्न व्यञ्जक अव्ययात्मक सम्बोधन।

उं (धा०) १ शब्द करना। कोलाहल मचाना। गरजना। २ धोंकना। ३ माँगना। तगादा करना।

उकानहः (पु०) लाल और पीले रंग का घोड़ा।

उकुणः (पु०) खटमल। खटकीरा।

उक्त (व० कृ०) १ कहा हुआ। कथित। २ बोला हुआ। बतलाया हुआ। ३ सम्बोधित। ४ वर्णित।

उक्तं (न०) वाणी। शब्दराशि। कथित।—अनुक्त, (वि०) कहा और अनकहा हुआ।—उपसंहारः, (पु०) संक्षिप्त वर्णन। सिंहावलोकन। साराश।—निर्वाहः, (पु०) कथन का समर्थन।—प्रत्युक्तं, (न०) कथन और उत्तर। संवाद।

उक्तिः (स्त्री०) १ कथन। वचन। २ वाक्य। ३ (मानसिक भाव) व्यक्त करने की शक्ति। यथा "एक योक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकर निशाकरौ।" —अमरकोश

उक्थं (न०) १ कथन। वाक्य। स्तोत्र। २ स्तुति। प्रशंसा। ३ सामवेद का नाम।

उक्ष् (धा० उभय०) [उक्षति, उक्षित] १ छिड़कना। तर करना। नम करना। उडेलना। २ निकालना। छोड़ना।

उक्षणं (न०) छिड़काव। प्रोक्षण या मार्जन।

उक्षन् (पु०) बैल। साँड़।—तरः, (पु०) छोटा साँड़। [सर्वोत्तम।

उक्षाल (वि०) १ तेज। भयानक। २ ऊँचा, बड़ा।

उक्षालः (पु०) बंदर। वानर।

उख् } उंख् } (धा० पर०) [ओखति, उंखित, ओखित, उखित] चलना। हिलना। डोलना।

उखा (स्त्री०) बटलोई। डेगची।

उख्य (वि०) बटलोई में उबाला हुआ।

उग्र (वि०) १ निष्ठुर। हिंसक। जंगली। २ भयानक। भयङ्कर। भयप्रद। ३ बलवान। शक्तिशाली। प्रबल। प्रचण्ड। ४ तीक्ष्ण। तेज़। पैना। ५ उच्च। कुलीन।—काण्डः, (पु०) करेला।—गन्धः, (पु०) १ चम्पा का वृक्ष। चमेली। २ लशुन। लहसन। हींग।—गन्ध, (वि०) तेज़ महकवाला।—चारिणी,—चण्डा, (स्त्री०) दुर्गा का नाम। जाति, (वि०) नीच जाति में उत्पन्न।—दर्शन,—रूप, (वि०) भयानक शक्ल वाला।—धन्वन्, (वि०) मज़बूत धनुषधारी। (पु०) शिव जी का नाम। इन्द्र का

नाम। —शेखरा, (स्त्री०) गङ्गाजी का नाम। —श्रवस्, (पु०) रोमहर्षण का पुत्र। (वि०) सुनी बात को तुरन्त याद कर लेने वाला। —सेनः, (पु०) कंस के पिता का नाम।

उग्रः (पु०) १ शिव या रुद्र का नाम। २ वर्णसङ्कर जाति विशेष। क्षत्रिय पिता से शूद्रा माता में उत्पन्न सन्तान। ३ केरल देश। मालावार देश। ४ रौद्ररस। [वीभत्स्य।

उग्रंपश्य (वि०) भयानक शक्ल वाला। भयानक।

उच् (धा० पर०) [उच्यति, उचित या उग्र।] १ जमा करना। इकट्ठा करना। २ अनुरागी होना। प्रसन्न होना। ३ उपयुक्त होना। ४ आदी होना। अभ्यस्त होना।

उचित (व० कृ०) १ योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब। २ सामान्य। साधारण। प्रथानुरूप। प्रचलित। ३ अभ्यस्त। आदी। ४ श्लाघ्य। प्रशंसनीय

उच्च (वि०) १ ऊंचा। २ श्रेष्ठ। महान। उत्तम। —तरुः, (पु०) नारियल का वृक्ष। —तालः, (पु०) मद्यशाला का सङ्गीत नृत्य आदि। —नीच, (वि०) १ ऊँचा नीचा। उतार चढ़ाव। २ विविध। बहुप्रकार। —ललाटा, —ललाटिका, (स्त्री०) चौड़े माथे वाली स्त्री। —संश्रय. (वि०) उच्च स्थानीय। (उच्चग्रह के लिये)

उच्चकैः (अव्यया०) १ ऊँचा। ऊपर। लंबा। २ तार। रवकारी।

उच्चक्षुस् (वि०) १ ऊपर देखने वाला। ऊपर की ओर निगाह किये हुए। २ अंधा दृष्टिहीन।

उच्चंड } उच्चण्ड } (वि०) १ भयानक। भयङ्कर। २ तेज़। फुर्तीला। ३ उच्चस्वर वाला। ४ क्रुद्ध। कुपित।

उच्चंद्रः } उच्चन्द्रः } (पु०) रात का अन्तिम पहर।

उच्चयः (पु०) १ संग्रह। ढेर। समूह। २ समुदाय। ३ स्त्री के दुपट्टे की ग्रन्थि। ४ समृद्धि। अभ्युदय।

उच्चरणम् (न०) १ ऊपर या वाहिर जाना। २ उच्चारण। कथन।

उच्चल (वि०) हिलने वाला। सरकने वाला।

उच्चलम् (न०) मन।

उच्चलनम् (न०) निकलना। चला जाना।

उच्चलित (व० कृ०) चलने को तैयार। जाने को उद्यत।

उच्चाटनम् (न०) १ विश्लेषण। निकास। २ वियोग। विछोह। ३ उखाड़ना (वृक्ष का)। ४ तांत्रिक षट् कर्मों में से एक। ५ चित्त का न लगना।

उच्चारः (पु०) १ कथन। वर्णन उच्चारण। २ मल। ३ विष्टा। " मातुरुच्चार एव सः।" ३ विसर्जन। छोड़ना।

उच्चारणं (न०) १ उच्चारण। कथन। २ निरूपण।

उच्चावच (वि०) १ ऊँचा नीचा। अनियमित। ऊवड़ खावड। २ भिन्न भिन्न।

उच्चूडः } उच्चूलः } (पु०) ध्वजा का फहरेरा। पताका। ध्वजा।

उच्चैः (अव्य०) १ ऊँचा। ऊपर। ऊपर की ओर। २ ज़ोर की आवाज़ के साथ। बड़े शोर के साथ। ३ बहुत अधिक। बहुतायत। —घुष्टं, (न०) १ शोरगुल। कोलाहल। २ उच्च स्वर से पढ़ी गयी घोषणा। —वादः, (पु०) प्रशंसा। —शिरस्, (वि०) उच्चाशय। उदाराशय। उदारचेता। —श्रवस्, —श्रवस, (वि०) १ बड़े बड़े कानों वाला। २ बहरा। (पु०) इन्द्र के घोड़े का नाम।

उच्चैस्तमां (अव्यया०) १ अत्युच्च। बहुत ही अधिक ऊँचा। २ बड़े ज़ोर से। अत्युच्च स्वर से।

उच्चैस्तरं } उच्चैस्तरां } (न०) अत्युच्चस्वर का। २ बहुत अधिक लंबा या ऊँचा।

उच्छृन्न (वि०) १ विनष्ट। नष्ट किया हुआ काट कर गिराया हुआ। २ लुप्त।

उच्छलत् (वि०) १ प्रकाशित। दीप्त। इधर उधर डोलने वाला। २ गतिशील। ३ उड़ जाने वाला या ऊपर उड़ने वाला। ४ बहुत ऊँचा जाने वाला।

उच्छलनम् (न०) ऊपर को जाने वाला या सरकने वाला। [फुलेल की मालिश करना।

उच्छादनम् (न०) १ ढकना। २ शरीर में तेल

उच्छासन (वि०) नियम या आदेश के अनुसार न चलने वाला। अदम्य। दुरन्त। दुष्ट।

उच्छास्त्र (वि०) १ शास्त्रविरुद्ध। २ धर्मशास्त्र का अतिक्रम करना।

उच्छिख (वि०) १ चुटियादार । २ अग्निशिखायुक्त । भभकता हुआ । [करना ।

उच्छित्तिः (स्त्री०) नाश । मूलोच्छेदन । जड़ से नाश

उच्छिन्न (व० कृ०) १ मूलोच्छेद किया हुआ । २ नष्ट किया हुआ । नीच । हीन । [महान् ।

उच्छिरस् (वि०) १ गर्दन उठाये हुए । २ कुलीन ।

उच्छिलींध्र, उच्छिलीन्ध्र (वि०) कुकुरमुत्तों से परिपूर्ण ।

उच्छिलींध्रं, उच्छिलीन्ध्रम् (न०) कुकुरमुत्ता ।

उच्छिष्ट (व० कृ०) १ बचा हुआ । जूठा । छूटा हुआ । २ अस्वीकृत किया हुआ । त्यागा हुआ । ३ बासा । तिवासा ।—मोदनम्, (न०) मोम ।

उच्छिष्टं (न०) जूठन ।

उच्छीर्षक (पु०) १ तकिया । २ सिर ।

उच्छुष्क (वि०) सूखा हुआ । मुरझाया हुआ ।

उच्छून (वि०) १ फूला हुआ । सूजा हुआ । २ मोटा । ३ ऊँचा । महान् ।

उच्छृङ्खल (वि०) १ बेलगाम का । जो बश या काबू में न हो । असंयत । असंयमी । २ स्वेच्छाचारी । ३ डॉवाडोल ।

उच्छेदः (पु०), उच्छेदनम् (न०) १ उखाड़पुखाड़ । २ खण्डन । नाश । ३ नश्तर । लगाने की क्रिया ।

उच्छेषः (पु०), उच्छेषणम् (न०) अवशिष्ट । बचा हुआ । शेष ।

उच्छोषण (वि०) १ सुखाने वाला । कुम्हलाने वाला । २ जलन करने वाला ।

उच्छोषणम् (न०) सुखाव । कुम्हलाव । मुरझाव ।

उच्छ्रयः, उच्छ्रायः (पु०) १ किसी ग्रह का उदय । २ उठान । (इमारत का) खड़ा करना । ३ ऊँचाई । उठान । ४ बाढ़ । उन्नति । सघनता । ५ अभिमान । घमंड ।

उच्छ्रयणम् (न०) उठान । ऊंचाई ।

उच्छ्रित (व० कृ०) १ उठा हुआ । ऊंचा किया हुआ । २ ऊपर गया हुआ । उदित । ३ ऊंचाई । लंबा । बड़ा । उन्नतिभूत । ४ उत्पन्न किया हुआ । उत्पन्न हुआ । ५ समृद्धशाली । उन्नत । बढ़ा हुआ । ६ अभिमानी ।

उच्छ्वसनम् (न०) १ सांस लेना । आह भरना ।

उच्छ्वसित (व० कृ०) १ आह भरता हुआ । सांस लेता हुआ । २ तरोताज़ा । ३ पूरा फूला हुआ । खुला हुआ । ४ विश्राम लिये हुए । सान्त्वित ।

उच्छ्वसितम् (न०) १ स्वांस । प्राणवायु । २ प्रफुल्लता । सांस से फुलाना । ३ स्वांस भीतर खींचना । उभार । उठाना (छाती का) फुलाव । सिसकना । ५ शरीर व्यापी पांच प्राणवायु ।

उच्छ्वासः १ ऊपर को खींची हुई स्वांस । २ उसांस आह । ३ सान्त्वना । ढाँढ़स । उत्साह । ४ वायुरन्ध्र । ५ ग्रन्थ का प्रकरण विभाग ।

उच्छ्वासिन् (वि०) १ सांस लेते हुए । २ उसांस लेते हुए । आह भरते हुए । ३ अदृश्य होते हुए । कुम्हलाते हुए ।

उज्झ् (धा० प०) १ बांधना । २ समाप्त करना । त्याग देना । छोड़ देना ।

उज्जयिनी, उज्ज्यनी (स्त्री०) उज्जैन नगरी ।

उज्जासनम् (न०) मार डालना । मारण । घात ।

उज्जिहान (वि०) १ उठना । उदय होना । २ प्रस्थान । बिदाई ।

उज्जृंभ, उज्जृम्भ, (वि०) १ फुलाया हुआ । बढ़ाया हुआ । २ खुला हुआ ।

उज्जृंभः, उज्जृम्भः (पु०) १ खिलना । फूलना । विकास । २ विछोह । जुदाई ।

उज्जृंभा (स्त्री०), उज्जृम्भा (स्त्री०), उज्जृंभणम् (न०), उज्जृम्भणम् (न०) १ जमुहाई । २ उछारन । ३ फैलाव । बढ़ती ।

उज्ज्य (वि०) खुली हुई डोरी का धनुष रखने वाला ।

उज्ज्वल (वि०) १ चमकीला । चमकदार । आभा वाला । सफ़ेद । २ मनोहर । सुन्दर । फूला हुआ । बढ़ा हुआ । ४ असंयमी ।

उज्ज्वलः (पु०) प्रेम । अनुराग ।

उज्ज्वलम् (न०) सुवर्ण । सोना । [कान्ति ।

उज्ज्वलनम् (न०) प्रदीप्त । चमकीला । चमक ।

उज्झ् (धा० प०) [उज्झति, उज्झित] १ त्यागना । छोड़ना । २ बचा जाना । निकल भागना । ३ बाहिर निकालना । निकाल डालना ।

उज्झकः (पु०) १ बादल । २ भक्त ।

उज्झनम् (न०) त्याग । स्थानान्तरकरण । छोड़ देना ।

उंछ्, उञ्छ् } (धा० पर०) [उंछति, उंछित] खेत में सिल उठ जाने बाद के पड़े हुए अनाज के दाने बीनना । एकत्र करना ।

उंछः, उञ्छः } (पु०) अनाज के दानों का संग्रह करने की क्रिया ।—वृत्ति,—शील, (वि०) खेत में छूटे हुए अनाज के कणों को बीन कर पेट भरने वाला ।

उंछनम्, उञ्छनम् } (न०) अनाज की मंडी या गंज में पड़े अनाज के दानों को एकत्र करने की क्रिया ।

उटं (न०) १ पत्र । पत्ता । २ घास तृण ।—जः, (पु०) जम्, (न०) झोपड़ी । कुटी ।

उडुः (स्त्री०), उडु (न०) } १ नक्षत्र । तारा । २ जल । —चक्रं, (न०) राशिचक्र । —पः, (पु०)—पम्, (न०) बडी धरनई । —पः, (पु०) चन्द्रमा ।—पतिः (पु०)—राज्, (पु०) चन्द्रमा ।—पथः—(पु०) आकाश । व्योम । अन्तरिक्ष ।

उडुंवरः, उडुम्वरः } (पु०) १ गूलर का पेड़ । २ घर की ड्योढ़ी । ३ हिजड़ा । नपुंसक । ४ कोढ़ विशेष । (यह नपुंसक लिंग भी होता है)

उडुंवरम्, उडुम्वरम् } (न०) १ गूलर का फल । २ तांबा ।

उड्डयनम् (न०) उड़ान (पक्षियों का) । [मीम ।

उड्डामर (वि०) १ मनोहर । समीचीन । सर्वोत्तम । २ भयानक ।

उड्डीन (व० कृ०) उड़ता हुआ । ऊपर उड़ता हुआ ।

उड्डीनम् (न०) उड़ान । चिड़ियों का विशेष प्रकार का उड़ान ।

उड्डीयनम् (न०) उड़ान ।

उड्डीशः (पु०) शिवजी का नाम ।

उड्रः (पु०) उड़ीसा प्रान्त का प्राचीन नाम ।

उंडेरकः, उण्डेरक. } (पु०) आटे का लड्डू । रोट । [सूचक अव्यय ।

उत् (अव्यय०) सन्देह, प्रश्न, विचार और प्रचण्डता,

उत (अव्यया०) सन्देह, अनिश्चितता, अनुमान, अथवा, या, और, सङ्गति सूचक अव्यय ।

उतथ्यः (पु०) अंगिरस के एक युग का नाम जो बृहस्पति के ज्येष्ठ भ्राता थे ।—अनुजः,—अनुजन्मन् (पु०) देवाचार्य बृहस्पति ।

उत्क (वि०) १ अभिलाषी । चाह रखने वाला । २ दुःखी । उदास । शोकान्वित । ३ अमनस्क ।

उत्कंचुक, उत्कञ्चुक } (वि०) विना अंगिया या कञ्चुकी धारण किये हुए ।

उत्कट (वि०) १ बड़ा । लंबा चौड़ा । २ बलवान् । शक्तिशाली । भयङ्कर । ३ अत्यधिक । अधिक । ४ बहुतायत से । अत्यधिक । सम्पन्न । ५ नशे में चूर । मदमाता । पागल । मदोत्कट । ६ श्रेष्ठ । उच्च । ७ विषम ।

उत्कटः (पु०) १ हाथी का मद । २ मदमाता हाथी ।

उत्कंठ, उत्कण्ठ } (वि०) १ ऊपर को गर्दन उठाये हुए । उद्ग्रीव (पु०) २ तत्पर । उत्सुक ।

उत्कंठः, उत्कण्ठः } [स्त्री०—उत्कंठा] मैथुन करने का ढंग विशेष ।

उत्कंठा, उत्कण्ठा } (स्त्री०) १ प्रबल इच्छा । लालसा । व्याकुलता । २ किसी प्यारे पुरुष की प्रिय वस्तु के मिलने की प्रबल इच्छा । ३ खेद । शोक ।

उत्कंठित, उत्कण्ठित } (व० कृ०) उत्सुक । चिन्तित । शोकान्वित । किसी प्यारे पुरुष या प्रिय-वस्तु के मिलने की प्रबल इच्छा ।

उत्कंठिता, उत्कण्ठिता } (स्त्री०) सङ्केत स्थान पर प्यारे के न आने पर तर्क वितर्क करने वाली नायिका । आठ प्रकार की नायिकाओं में से एक ।

उत्कंधर (वि०), उत्कन्धर (वि०) } गर्दन उठाए हुए ।

उत्कंप (वि०), उत्कम्प (वि०) } काँपते हुए ।

उत्कंपः (पु०), उत्कम्पः (पु०), उत्कंपनं (न०), उत्कम्पनम् (न०) } कँपकपी । सिहुरन

उत्करः (पु०) १ ढेर । समूह । २ ढाल । गोला । ३ कूड़ा कर्कट ।

उत्कर्करः (पु०), उत्कर्तनम् (न०) } १ वाद्य यन्त्र विशेष । एक प्रकार का बाजा । २ तराश । चीरना फाड़ना । ३ जड़ से उखाड़ना ।

उत्कर्षः (पु०) १ उखाड़ना। उचेलना। ऊपर खींच लेना। २ उन्नति। बढ़ती। प्रसिद्धि। उदय। समृद्धि। ३ आधिक्य। अधिकाई। ४ सर्वोत्कृष्टता उत्तमोत्तम गुण। महिमा। ५ अहङ्कार। अभिमान। ६ हर्ष। प्रसन्नता। [उचेल लेना।

उत्कर्षणम् (न०) १ ऊपर खींचना। २ उखाड़ लेना।

उत्कलः (पु०) १ उडीसा प्रान्त का नाम। २ बहेलिया। चिड़ीमार। ३ कुली।

उत्कलाप (वि०) पूँछ उठाये और फैलाये हुए।

उत्कलिका (स्त्री०) १ उत्कण्ठा। चिन्ता। विकलता। २ हेला। क्रीडा विशेष। ३ कली। ४ लहर। ५ —प्राय (न०) ऐसी गद्य रचना जिनमें कर्णकटुअक्षरो और लंबे लंबे समासों की भरमार हो।

"भवेदुत्कलिकाप्राय समासाढ्य दृढाक्षर।"

उत्कषणं (न०) १ फाड़ना। खींचना। २ जोतना। हल चलाना। ३ मलना। रगड़ना।

उत्कारः (पु०) १ अनाज फटकना। २ अनाज की ढेरी लगाना। ३ अनाज बोने वाला।

उत्कासः (पु०), उत्कासनं (न०), उत्कासिका (स्त्री०) १ खखारना। खांसना। २ गले का कफ साफ करना।

उत्किर (वि०) गुफना की तरह घुमाया हुआ। हवा में उड़ाया हुआ।

उत्कीर्तनम् (न०) प्रशंसा। स्तुति। कीर्तन।

उत्कुटम् (न०) उत्तान लेटना। चित्त लेटना।

उत्कुणः (पु०) खटमल। खटकीरा। चिलुआ। चील्हर। [नाम करने वाला।

उत्कुल (वि०) पतित। भ्रष्ट। अपने कुल को बद-

उत्कूजः (पु०) कोकिल की कूक।

उत्कूटः (पु०) छाता। छतरी।

उत्कूर्दनम् (न०) उछाल। कुलांच। फलांग।

उत्कूल (वि०) तट को नाँघ कर बहने वाली।

उत्कूलित (वि०) तटवर्तिनी।

उत्कृष्ट (व० कृ०) १ ऊपर उठाया हुआ। उठा हुआ। उन्नत। २ सर्वोत्तम। उत्तम। श्रेष्ठतम। उच्चतम। ३ जुता हुआ। हल चलाया हुआ।

उत्कोचः (पु०) घूस। रिश्वत।

उत्कोचकः (पु०) १ घूंस। २ घूसख़ोर। रिश्वती।

उत्क्रमः (पु०) १ प्रस्थान। २ उन्नतिशील। उन्नत। ३ नियमविरुद्धता। विरुद्धाचरण। ४ उछाल। फलांग।

उत्क्रमणं (न०) १ उछाल। निकास। प्रस्थान। २ मृत्यु। जीव का शरीर से वियोग। [२ मृत्यु।

उत्क्रान्तिः (स्त्री०) १ उछाल। वहिर्निष्क्रमण।

उत्क्रामः (पु०) ऊपर या बाहिर जाना। प्रस्थान। २ अतिक्रमण। ३ विरुद्धता। नियम का भंग करण।

उत्क्रोशः (पु०) १ चिल्लपों। शोरगुल। कोलाहल। २ घोषणा। ढिंढोरा। ३ कुररी।

उत्क्लेदः (पु०) तर होना। भींगना।

उत्क्लेशः (पु०) १ घबड़ाहट। अशान्ति। विकलता। २ विचारों की गड़बड़ी। ३ रोग। बीमारी। विशेष कर समुद्री बीमारी।

उत्क्षिप्त (व० कृ०) १ उछाला हुआ। लुकाया हुआ। ऊपर उठाया हुआ। २ रोका हुआ या रुका हुआ। अवलम्बित। ३ पकड़ा हुआ। ४ ढाया हुआ। गिराया हुआ। उजाड़ा हुआ।

उत्क्षिप्तः (पु०) धतूरे का पौधा।

उत्क्षिप्तिका (स्त्री०) आभूषण विशेष जो कान के ऊपरी भाग में पहिना जाता है। बाला।

उत्क्षेपः (पु०) १ उछाल। लुकान। २ ऊपर उछाली हुई वस्तु। ३ प्रेषण। रवानगी। ४ वमन। उछांट।

उत्क्षेपक (वि०) उछालने वाला या वह वस्तु जो उछाली जाय। उछाली हुई वस्तु।

उत्क्षेपकः (पु०) १ कपड़ों का चोर। २ भेजने वाला। आज्ञा देने वाला।

उत्क्षेपणं (न०) १ उछाल। लुकान। २ वमन। उछांट। ३ रवानगी। प्रेषण। ४ सूप। पंखा।

उत्खचित (वि०) घोलमेल। ओतप्रोत। जड़ा हुआ। बैठाया हुआ। [विशेष।

उत्खला (स्त्री०) सुगन्धि विशेष। खुशबूदार वस्तु

उत्खात (व० कृ०) १ खोदा हुआ। उखाड़ा हुआ। २ खींच कर बाहिर निकाला हुआ। ३ जड़ से उखाड़ा हुआ। जड़ तोड़ कर निकाला हुआ।

—केलिः, (स्त्री०) क्रीडा के लिये सींग या हाथी के दाँत से ज़मीन को खोदना। [ज़मीन।

उत्खातं (न०) १ रन्ध्र। गुफा। २ ऊबड़ खावड़

उत्खातिन् (वि०) विषम। ऊँची नीची। असम।

उत्त (वि०) भीगा हुआ। नम। तर।

उत्तंसः (पु०) १ शिखा। चोटी। सीसफूल। २ कान की बाली या झुमका।

उत्तंसित (वि०) कानों में बाली पहिने हुए। चोटी पर रखे या पहिने हुए। [(नद या नदी)

उत्तट (वि०) तटों के ऊपर निकल कर बहने वाला।

उत्तप्त (व० कृ०) जला हुआ। गर्म। सूखा। शुष्क।

उत्तप्तम् (न०) सूखा मांस।

उत्तम (वि०) १ सर्वोत्कृष्ट। सबसे अच्छा। २ सब के आगे। सब के ऊपर। सब से ऊँचा। ३ अत्युच्च। मुख्य। प्रधान। ४ सब से बड़ा। प्रथम।—अङ्गम्, (न०) शिर। सिर।—अधम्, (वि०) ऊँचा नीचा।—अर्धः, (पु०) सब से अच्छा आधा भाग। २ अन्तिम अर्धभाग।—अहः, (पु०) अन्तिम या पिछला दिवस। सुदिन। शुभ दिन।—ऋणः,—ऋणिकः, (उत्तमर्णः) (पु०) महाजन। कर्ज़ देने वाला।। (अधमर्ण—कर्जदार का उल्टा)—पुरुषः,—पूरुषः, (पु०) १ (व्याकरण में) १ कर्ता। २ परमेश्वर। ३ सब से अच्छा आदमी।—श्लोक, (वि०) सर्वोत्कृष्ट कीर्तिसम्पन्न। आदर्श। महिमान्वित। प्रसिद्ध।—साहसः, (पु०)—साहसम्, (न०) सब से अधिक जुर्माना या अर्थदण्ड। एक हज़ार (और किसी किसी के मतानुसार) अस्सी हज़ार पण का जुर्माना। [पुरुष।

उत्तमः (पु०) १ विष्णु भगवान का नाम। २ अन्त्य-

उत्तमा (स्त्री०) सब से अच्छी स्त्री।

उत्तमीय (वि०) सब से ऊपर। सब से ऊँचा। सर्वोत्तम। मुख्य। प्रधान।

उत्तंभः (पु०), उत्तम्भः (पु०), उत्तंभनम् (न०), उत्तम्भनम् (न०) } १ सहारा। रोक। थाम। २ थुनुकिया। ३ रोक। पकड़।

उत्तर (वि०) १ उत्तर दिशा का। उत्तर दिशा में उत्पन्न। २ उच्चतर। अपेक्षा कृत ऊँचा। ३ पिछला। बाद का। पीछे का। अगला। अन्त का। ४ बाँया। ५ उत्कृष्ट। मुख्य। सर्वोत्तम। ६ अधिकतर। ७ सम्पन्न। युक्त। अन्वित। ८ पार होने को। पार उतारने को।—अधर, (वि०) उच्चतर। नीचतर।—अधिकारः, (पु०)—अधिकारिता, (स्त्री०)—अधिकारित्वं, (न०) सम्पत्ति पाने का हक। वारिसपन।—अधिकारिन्, (पु०) उत्तराधिकारी। वारिस।—अयनं, (न०) उत्तरी मार्ग। वे छः मास जिनमें सूर्य की गति उत्तर की ओर झुकी हुई होती है। मकर से मिथुन के सूर्य तक का छः मास का समय।—अर्ध, (न०) १ शरीर का नाभि के ऊपर का आधा भाग। २ उत्तरी भाग। ३ पूर्वार्ध का उल्टा। पहिला भाग।—अहः, (पु०) अगला दिन। आने वाला कल।—आभासः, (पु०) भ्रम पूर्ण उत्तर या जवाब।—आशा (स्त्री०) उत्तर दिशा।—आशाधिपतिः,—आशापतिः, (पु०) कुवेर।—आषाढा, (स्त्री०) २१ वाँ नक्षत्र।—आसङ्गः, (पु०) ऊपर पहिनने का वस्त्र।—इतर (वि०) दक्षिण। दक्षिण का।—इतरा, (स्त्री०) दक्षिण दिशा।—उत्तर, (वि०) अधिक अधिक। सदा बढ़ने वाला।—उत्तरं, (न०) जवाब।—ओष्ठः, (=उत्तरौष्ठः या उत्तरोष्ठः,) (पु०) ऊपर का ओठ।—काण्डम् (न०) श्री महाल्मीकि रामायण का सातवाँ काण्ड।—कायः, (पु०) शरीर का ऊपरी भाग।—कालः, (पु०) आगे आने वाला समय।—कुरु, (पु०) (बहुवचन) पृथिवी के नौ खण्डों में से एक। उत्तरकुरु का प्रदेश।—कोसलाः, (पु० बहुवचन) अयोध्या के आस पास का देश।—क्रिया, (स्त्री०) शवदाह के अनन्तर मृतक के निमित्त होने वाला कर्म।—छदः, (पु०) चादर। चद्दर। पलंगपोश।—ज्योतिषाः, (पु० बहु०) पश्चिम दिशा का एक देश।—दायक, (वि०) अवज्ञाकारी। नाफर्मावरदार।

गुस्ताख़। ढीठ। दिश्, (स्त्री०) उत्तर दिशा। —ईशः,—पालः, (= उत्तरदिक्पालः) (पु०) कुबेर। पक्षः, (पु०) १ कृष्णपक्ष। अंधेरा पाख। २ पूर्वपक्ष का उल्टा। शास्त्रार्थ में वह सिद्धान्त जो विवादग्रस्त विषय का खण्डन करे।—पदं (न०) किसी यौगिक शब्द का अन्तिम शब्द। —पादः, (पु०) अर्ज़ीदावे का दूसरा हिस्सा। —प्रच्छदः, (पु०) रज़ाई। लिहाफ। तोशक। —प्रत्युत्तरं (न०) १ बाद विवाद। बहस। २ किसी मुकदमे में वकालत।—फल्गुनी,—फाल्गुनी, (स्त्री०) १२ वां नक्षत्र। -भाद्रपद्,—भाद्रपदा २६ वा नक्षत्र।—मीमांसा, (स्त्री०) वेदान्त दर्शन।—वयसं,—वयस्, (न०) बुढ़ापा।—वस्त्रं,—वासस्, (न०) ऊपर का वस्त्र। चुगा। लवादा। ओवर कोट।—वादिन् (पु०) प्रतिवादी। मुद्दालह। प्रतिपक्षी।—साधकः, (पु०) सहायक।

उत्तरः (पु०) १ आगे आने वाला समय। भविष्यत काल। २ विष्णु का नाम। ३ शिव का नाम। ४ विराट के पुत्र का नाम।

उत्तरा (स्त्री०) १ उत्तर दिशा। २ नक्षत्र विशेष। ३ विराट की कन्या का नाम, जो अभिमन्यु को व्याही गई थी।

उत्तरग } उत्तरङ्ग } (वि०) १ लहरों से डूबा हुआ। धोया हुआ। कपायमान। लहराती हुई लहरों से युक्त।

उत्तरतः } उत्तरात् } (अव्यया०) उत्तर से उत्तर दिशा तक। बाईं ओर। पीछे। बाद को।

उत्तरत्र (अव्यया०) पीछे से। बाद को। आगे को। नीचे। अन्त में।

उत्तराहि (अव्यया०) उत्तर दिशा की ओर।

उत्तरीयं } उत्तरीयक } (न०) ऊपर पहिनने का कपड़ा।

उत्तरेण (अव्या०) उत्तर की ओर। उत्तर दिशा की तरफ़। [आने वाले कल के बाद।

उत्तरेद्युः (अव्यया०) अगले दिन के बाद। परसों

उत्तर्जनम् (न०) भयङ्कर। डरावना।

उत्तान (वि०) १ फैला हुआ। बिछा हुआ। बढ़ा हुआ। प्रसारित। २ चित्त पड़ा हुआ। सीधा। सतर। ३ साफ दिल का। स्पष्ट वक्ता। ४ उथला। —पादः, (पु०) एक पौराणिक राजा का नाम जिनका पुत्र भक्तशिरोमणि ध्रुव था।—पादजः, (पु०) ध्रुव का नाम।—शय (वि०) चित्त पड़ा हुआ।—शयः, (पु०)—शया, (स्त्री०) स्तनंधय। दूध पीता हुआ छोटा शिशु या बच्चा।

उत्तापः (पु०) १ बड़ी गर्मी। तपन। २ पीड़ा। कष्ट सन्ताप। ३ घबड़ाहट।

उत्तारः (पु०) १ उतारा। २ ढुलाई। नाव पर लदे माल का उतारना। ३ पिंड छुटना। ४ वमन। उछांट।

उत्तारकः (पु०) रक्षक। विपत्ति से छुड़ाने वाला।

उत्तारणम् (न०) नाव पर से तट पर उतारने की क्रिया। छुड़ाने की क्रिया।

उत्तारणः (पु०) विष्णु का नाम।

उत्ताल (वि०) १ बड़ा। मज़बूत। २ उग्र। तेज़। ३ भयानक। भयङ्कर। ४ दुरूह। कठिन। ५ ऊंचा। लंबा।

उत्तालः (पु०) लंगूर।

उत्तंग } उत्तुङ्ग } (वि०) ऊँचा। लंबा। बड़ा।

उत्तुषः (पु०) भुसी निकाला हुआ अन्न। भुना हुआ। अनाज।

उत्तेजक (वि०) १ उभाड़ने वाला। बढ़ाने वाला। उकसाने वाला। प्रेरक। २ वेगों को तीव्र करने वाला।

उत्तेजनं (न०) } उत्तेजना (स्त्री०) } १ घबड़ाहट। विकलता। २ बढ़ावा। प्रोत्साह। ३ तेज़ करने वाला। ४ भड़काने वाला भाषण। ५ प्रलोभन।

उत्तोरण (वि०) ऊँची या सीधी महरावों से सुसज्जित।

उत्तोलनम् (न०) उठाना। ऊपर उठाना।

उत्त्यागः (पु०) १ त्याग। वैराग्य। उत्सर्ग। २ उछाल। लुकान। ३ संसार से वैराग्य।

उत्त्रासः (पु०) बड़ा भारी भय या डर।

उत्थ (वि०) १ उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ। निकला। २ खड़ा हुआ। आगे आया हुआ।

उत्थानम् (न०) १ उठने या खड़े होने की क्रिया। २ उदय। ३ उत्पत्ति। ४ समाधि से

पुनरुत्थान । ५ उद्योग प्रयत्न । क्रियाशीलता । ६ शक्ति । स्फूर्ति । ७ हर्ष । आनन्द । ८ युद्ध । ९ सेना । १० आँगन । वह मण्डप जहाँ बलिदान दिया जाय । ११ सीमा । मर्यादा । हद १२ सजग होना । जाग उठना ।—एकादशी (स्त्री०) कार्तिक शुक्ला ११ । इस दिन भगवान चार मास सो चुकने के बाद जागते हैं । इसको प्रबोधिनी-एकादशी भी कहते हैं ।

उत्थापनम् (न०) १ उठाना । खड़ा करना । २ ऊंचा उठाना । ३ भड़काना । उत्तेजित करना । ४ जगाना । ५ वमन । छाँट ।

उत्थित (व० कृ०) १ उठा हुआ । २ खड़ा हुआ । ३ उत्पन्न । पैदा हुआ । निकला हुआ । उदय हुआ । ४ बढ़ा हुआ । ५ मर्यादित । सीमाबद्ध । ६ फैला हुआ । पसरा हुआ ।—अंगुलिः (पु०) पसारा हुआ हाथ । खुला हुआ हाथ । फैलाया हुआ हाथ ।

उत्थितिः (स्त्री०) उन्नमन । उच्चता । उठान ।

उत्पक्ष्मन् (वि०) उलटे पलकों वाला ।

उत्पत (पु०) पक्षी । चिड़िया ।

उत्पतनम् (न०) १ उड़ान । फलांग । उछाल । कुदान । २ ऊपर चढ़ना । चढ़ना ।

उत्पताक (वि०) झंडा उठाये हुए ।

उत्पतिष्णु (वि०) उड़ता हुआ । ऊपर जाता हुआ ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) १ जन्म । २ उत्पादन । ३ उत्पत्ति स्थान । उद्गमस्थान । ४ उदय होना । ऊपर चढ़ना । दृष्टिगोचर होना । ५ लाभ । मुनाफा ।—व्यञ्जकः, (पु०) १ दूसरा जन्म । [उपनयन-संस्कार दूसरा जन्म कहलाता है । क्योंकि द्विजन्मा संज्ञा उपनयन संस्कार के बाद ही होती है ।] २ द्विजन्मा का चिन्ह ।

उत्पथः (पु०) असन्मार्ग । खराब रास्ता ।

उत्पथं (न०) विपथ गमन ।

उत्पन्न (व० कृ०) १ पैदा हुआ । निकला हुआ । २ उदय हुआ । उगा हुआ । ऊपर गया हुआ । ३ प्राप्त किया हुआ ।

उत्पल (वि०) माँसरहित । दुबला पतला । लटा ।

—अक्ष,—चक्षुस् (वि०) कमलनयन ।—पत्रं (न०) १ कमल का पत्ता । २ स्त्री के नख की खरोंच से उत्पन्न घाव । नखक्षत । नखचिन्ह ।

उत्पलम् (न०) १ नील कमल । कमोदिनी । २ कोई भी पौधा ।

उत्पलिन् (वि०) बहु-कमल-पुष्प-सम्पन्न ।

उत्पलिनी (स्त्री०) १ कमल पुष्पों का ढेर । २ कमल का पौधा जिसमें कमल के फूल लगे हों ।

उत्पावनम् (न०) साफ करना । पवित्र करना ।

उत्पाटः (पु०) १ उखाड़ना । उचेलना । २ जड़ डाली सहित नष्ट करना । कान के भीतर का रोग विशेष । [डाली सहित नष्ट कर डालना ।

उत्पाटनम् (न०) जड़ से उखाड़ डालना । जड़

उत्पाटिका (स्त्री०) वृक्ष की छाल ।

उत्पाटिन् (वि०) उचेलना । उन्मूलन । उखाड़न ।

उत्पातः (पु०) १ उछाल । कुलाँच । उठान । २ प्रतिक्षेप । उठान । उभाड़ । अशुभसूचक शकुन । ४ ग्रहण भूकम्प आदि अशुभ सूचक घटनाएँ ।—पवनः,—वातः,—वातालिः (पु०) बवंडर । तूफान ।

उत्पाद (वि०) ऊपर को पैर किये हुये । शयः—शयनः (पु०) १ शिशु । २ तीतर विशेष ।

उत्पादः (पु०) उत्पत्ति । प्राकट्य । प्रादुर्भाव ।

उत्पादक (वि०) [स्त्री०—उत्पादिका] पैदा करनेवाला । प्रभावोत्पादक । पूरा करने वाला ।

उत्पादकः (पु०) पैदा करनेवाला । उत्पन्न करनेवाला । जनक । पिता ।

उत्पादकम् (न०) उद्गम स्थान । कारण । हेतु ।

उत्पादनम् (न०) उत्पत्ति । पैदाइश । [हुआ ।

उत्पादिन् (वि०) उत्पन्न किया हुआ । पैदा किया

उत्पादिका (स्त्री०) १ कीट विशेष । दीमक । २ जननी । माता । पैदा करने वाली ।

उत्पाली (स्त्री०) तंदुरुस्ती । स्वास्थ्य ।

उत्पिंजर, उत्पिञ्जर, उत्पिंजल, उत्पिञ्जल (वि) १ जो पिंजड़े में बन्द न हो । २ गड़-बड़ । अत्यन्त घबड़ाया हुआ ।

उत्पीडः (पु०) १ दबाव । २ प्रबल या प्रचण्ड बहाव । ३ फेन । झाग ।

उत्पीडनम् (न०) दबाव । ताडन ।
उत्पुच्छ (वि०) पूछ उठाये हुए ।
उत्पुलक (वि०) १ रोमाञ्चित । जिसके रोंगटे खड़े हों । २ प्रसन्न । हर्षित ।
उत्प्रभ (वि०) चमकीला । प्रकाशमान ।
उत्प्रभः (पु०) दहकती हुई आग ।
उत्प्रसवः (पु०) गर्भपात या गर्भस्राव ।
उत्प्रासः (पु०) } उत्प्रासनम् (न०) } १ ज़ोर से फैंकना। २ हँसी मज़ाक । ३ अट्टहास । ४ उपहास । मज़ाक । जीट । ताना । व्यङ्गय ।
उत्प्रेक्षणं (न०) १ चितवन । अवलोकन । पहचान । २ ऊपर की ओर ताकना । ३ अनुमान । कल्पना । ४ तुलना ।
उत्प्रेक्षा (स्त्री०) १ अनुमान । कल्पना । क़यास । २ असावधानी । उदासीनता । ३ अर्थालङ्कार विशेष । इसमें भेदज्ञानपूर्वक उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है ।
उत्प्लवः (पु०) उछाल । कुदान । फलाँग । छलांग ।
उत्प्लवा (स्त्री०) बोट । नाव । किश्ती ।
उत्प्लवनम् (न०) कूद । छलाँग । फलांग । उछाल ।
उत्फलं (न०) उत्तम फल ।
उत्फालः (पु०) १ उछाल । छलांग । फलाँग । वेगवान गति । २ कूदने को उद्यत होने का एक ढंग विशेष ।
उत्फुल्ल (व० कृ०) १ खिला हुआ । २ बिलकुल खुला हुआ । फैला हुआ । ३ फूला हुआ । आकार में बढ़ा हुआ । ४ उतान लेटा हुआ ।
उत्फुल्लम् (न०) स्त्री की योनि ।
उत्सः (पु०) चश्मा । सोता । श्रोत । जल का [स्थान ।
उत्संगः } उत्सङ्गः } (पु०) १ गोद । अङ्क । २ आलिङ्गन । लिपटाना । चिपटाना । ३ आभ्यान्तरिक । सामीप्य । पड़ोस । ४ सतह । तल । ओर । ढाल । नितंब । ६ ऊपरी भाग । चोटी । पहाड़ की चढ़ाई । ८ घर की छत्त ।
उत्संगित } उत्सङ्गित } (वि०) १ सम्मिलित । समूह । २ गोद में लिया हुआ । गोद का ।
उत्संजनम् } उत्सञ्जनम् } (न०) उछाल या लुकान । ऊपर को उठाने की क्रिया ।

उत्सन्न (व० कृ०) १ सड़ा हुआ । २ नष्ट किया हुआ । उजाड़ा हुआ । जड़ से उखाड़ा हुआ । त्यागा हुआ । ३ अकोसा हुआ । शापित । ४ अप्रचलित । लुप्त ।
उत्सर्गः (पु०) १ त्याग । न्यास । २ उड़ेलना । गिराना । ३ भेंट । दान । अर्पण (करना) । दे डालना । ४ व्यय करना । ५ छोड़ देना । [जैसे वृषोत्सर्ग में] बलिदान । ७ विष्ठा या पुरीष का त्याग । (अध्ययन या किसी व्रत की) समाप्ति । ८ साधारण नियम (अपवाद का उलटा) १० योनि । भग ।
उत्सर्जनम् (न०) १ त्याग । न्यास । परित्याग । २ भेंट । पुरस्कार । दान । ३ (वैदिक) अध्ययन को स्थगित करना । ४ वैदिक अध्ययन बंद करने के उपलक्ष्य में गृहकर्म विशेष । यह वर्ष में दो बार अर्थात् पूस और श्रावण में किया जाता है ।
उत्सर्पः (पु०) } उत्सर्पणम्(न०) } १ ऊपर जाना या ऊपर सरकना । २ फुलाना ३ साँस लेना ।
उत्सवः (पु०) १ मङ्गलकार्य । उछाह । २ आनन्द । हर्ष । ३ उचाई । उच्चस्थान । ४ क्रोध । रोष । ५ इच्छा । इच्छा का उत्पन्न होना ।—सङ्केतः (बहुवचन, पु०) हिमालय पर्वत में रहने वाली एक मनुष्य जाति ।
उत्सादः (पु०) १ नाश । विनाश । २ उजड़न । हानि ।
उत्सादनम् (न०) १ नाश । २ सुगन्धि । ३ घाव को पूरना या उसका अच्छा होना । ४ चढ़ना । उठना । ५ ऊपर उठाना । ऊँचा करना । ६ दो बार किसी खेत को अच्छी तरह जोतना ।
उत्सारकः (पु०) १ पुलिस का सिपाही । २ चौकीदार । ३ दरबान । द्वारपाल ।
उत्सारणम् (न०) १ दूर हटाना । हटाना । रास्ते से दूर करना । २ अतिथि का सत्कार । महमानदारी ।
उत्साहः (पु०) १ साहस । हिम्मत । २ उमङ्ग । उछाह । जोश । हौसला । ३ दृढ़ अध्यवसाय । ४ दृढ़ सङ्कल्प । ५ शक्ति । सामर्थ्य । ६ दृढ़ता । पराक्रम । बल ।—वर्धनः, (पु०) वीर रस ।

—वर्धनम् (न०) वीरता ।—शक्तिः, (स्त्री०) दृढ़ता । उत्साह ।

उत्साहनम् (न०) १ उद्योग । प्रयत्न । २ अध्यवसाय । दृढ़ प्रयत्नशीलता । ३ उत्साहवृद्धि । हौंसला बँधाना । उभाड़ना ।

उत्सिक्त (व० कृ०) १ छिड़का हुआ । २ अभिमानी । क्रोधी । अकड़बाज़ । ३ जल की बाढ़ से बढ़ा हुआ । अत्यधिक । ४ चंचल । विकल ।

उत्सुक (वि०) १ अत्यन्त इच्छावान् । उत्कण्ठित । चाह से आकुल । २ बेचैन । उद्विग्न । व्याकुल । ३ अनुरक्त । ४ शोकान्वित ।

उत्सूत्र (वि०) १ डोरी से न बंधा हुआ । ढीला । बंधनमुक्त । २ अनियमित । गड़बड़ । ३ व्याकरण के नियम के विरुद्ध ।

उत्सूरः (पु०) सन्ध्याकाल । झुटपुटा ।

उत्सेकः (पु०) १ छिड़काव । उड़ेलना । २ उमड़न । बढ़ती । अत्यधिकता । ३ अभिमान । शेख़ी ।

उत्सेकिन् (वि०) १ उमड़ा हुआ । बढ़ा हुआ । २ अभिमानी । क्रोधी । अकड़बाज़ ।

उत्सेचनम् (न०) जल का छिड़काव या जल को उछालने की क्रिया । [मोटापन । ३ शरीर ।

उत्सेधः (पु०) १ उच्चस्थान । ऊंचा स्थान । २ मुटाई ।

उत्सेधम् (न०) हनन । मारण । घात ।

उत्स्मयः (पु०) मुसक्यान ।

उत्स्वन (वि०) उच्चस्वरकारी । दीर्घ स्वर वाला ।

उत्स्वनः (पु०) उच्चरव । दीर्घस्वर ।

उत्स्वप्नायते (क्रिया) सोते में बर्राना ।

उद् (अव्यया०) यह एक उपसर्ग है जो क्रियाओं और संज्ञाओं में लगाया जाता है, अर्थ होता है; १ ऊपर । बाहिर । २ अलग । पृथक । ३ उपार्जन । लाभ । ४ लोकप्रसिद्धि । ५ कौतूहल । चिन्ता । ६ मुक्ति । ७ अनुपस्थिति । ८ फुलाना । बढ़ाना । खोलना । ९ मुख्यता । शक्ति ।

उदक् (अव्यया०) उत्तर दिशा की ओर ।

उदकम् (न०) पानी ।—अन्तः, (पु०) तट । किनारा । समुद्रतट ।—अर्थिन्, (वि०) प्यासा । —आधारः, (पु०) कुण्ड । हौद ।—उदञ्जनः, (पु०) लोटा । कलसा ।—उदरं, (न०) जलंधर रोग । —कर्मन्, (न०) —कार्यं, (न०) —क्रिया. (स्त्री०) —दानं, (न०) पितरों की तृप्ति के लिये जल से तर्पण ।—कुम्भः, (पु०) जल का घड़ा या कलसा ।—गाहः, (पु०) स्नान ।—ग्रहणं, (न०) पीने का जल ।—द.—दातृ —दायिन् —दानिक, (वि०) जलदाता । जल देने वाला ।—दः, (पु०) १ तर्पण करने वाला । २ वंश वाला । उत्तराधिकारी ।—धरः, (पु०) बादल ।—वज्रः, (पु०) ओलों की वृष्टि ।—शान्तिः, (स्त्री०) मार्जनक्रिया ।—हारः, (पु०) पानी ढोने वाला ।

उदकल } (वि०) पनीला । पानी का भाग
उदकिल } जिसमें विशेष हो ।

उदकेचरः (पु०) जलजन्तु । पानी में रहने वाला जीव जन्तु ।

उदक्त (वि०) ऊपर उठा हुआ ।

उदक्य (वि०) जल की अपेक्षा रखने वाला ।

उदक्या (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

उदग्र (वि०) १ ऊंचा । उन्नत । उठा हुआ । बाहिर निकला हुआ या बाहिर की ओर बढ़ा हुआ । २ बड़ा । चौड़ा । प्रशस्त । बहुत बड़ा । ३ बूढ़ा । ४ मुख्य । प्रसिद्ध । गौरवान्वित । ५ प्रचण्ड । असह्य । ६ भयानक । डरावना । ७ कराल । उद्विग्न । ८ परमानन्दित ।

उदङ्कः } (पु०) चमड़े की बनी (तेल या घी
उदङ्गः } रखने की) कुप्पी या कुप्पा ।

उदच् } (वि०) [(पु०)—उदङ्; (न०)—
उदञ्च } उदक्, (स्त्री०)—उदीची] १ ऊपर की
उदञ्चे } ओर घूमा हुआ या जाता हुआ । २ ऊपर का । उत्तर । ३ उत्तरी या उत्तर की ओर घूमा हुआ । ४ पिछला ।—अद्रिः, (पु०) हिमालय पर्वत । —अयनम्, (न०) उत्तरायण ।—आवृत्तिः, (स्त्री०) उत्तर से लौटने की क्रिया ।—पथः (पु०) उत्तर का एक देश ।—प्रवण, (वि०) उत्तर की ओर झुका हुआ या ढालुआ ।—मुख, (वि०) उत्तर की ओर मुख किये हुए ।

उदञ्चनम् } (न०) १ डोल । बाल्टी जिससे कुए
उदञ्चनम् } से जल निकाला जाय । २ चढ़ाव । उठाव । उठान । ३ ढक्कन । ढकना ।

उदंजलि } (वि०) दोनों हाथों से सम्पुट सा
उदञ्जलि } बनाये और उंगुलियों को उपर किये हुए हाथों की मुद्रा विशेष ।

उदंडपालः } (पु०) १ मत्स्य । २ सर्प विशेष ।
उदण्डपालः }

उदधिः (पु०) १ घट । घडा । जलपात्र । २ समुद्र । ३ झील । सरोवर । ४ घडा । कलसा ।

उदन् (न०) जल । पानी । [अन्य शब्दों के साथ जब इसका योग किया जाता है, तब इसके "न्" का लोप हो जाता है । [जैसे—उदधिः,]—कुम्भः, (पु०) घडा । कलसा ।—ज, (वि०) पानी का ।—धानः, (पु०) १ पानी का घडा । २ बादल ।—धिकन्या, (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ द्वारकापुरी ।—पात्रं, (न०)—पात्री, (स्त्री०) जल भरने का बर्तन ।—पानः, (पु०)—पानम् (न०) १ कुए के समीप की हौदी । २ कूप ।—पेषं, (न०) लेही । चिपकाने की वस्तु ।—बिन्दुः, (पु०) जल की बूंद ।—भारः, (पु०) जल ढोने वाला अर्थात् बादल ।—मन्थः (पु०) यवागू या जव का विशेष रीत्या बनाया हुआ जल, जो रोगी को पथ्य में दिया जाता है ।।—मानः, (पु०)—मानम्, (न०) आढक का पचासवाँ भाग । तौल विशेष ।—मेघः, (पु०) वृष्टि करने वाला बादल ।—वज्रः, (पु०)१ ओलों की वर्षा । २ फुआरा ।—वासः, (पु०) जल में रहना या जल में खड़ा रहना ।—वाह, (वि०) जल लाने वाला ।—वाहः, (पु०) मेघ ।—वाहनं, (न०) जलपात्र ।—शरावः, (पु०) जल से भरा घडा ।—श्वित्, (न०) छाछ या मठा जिस में १ हिस्सा जल और २ हिस्सा माठा हो ।—हरणः, (पु०) पानी निकालने का पात्र ।

उदंत } (पु०) १ समाचार । ख़बर । वर्णन ।
उदन्तः } इतिहास । २ साधु पुरुष ।

उदंतकः } (पु०) समाचार । ख़बर ।
उदन्तकः }

उदंतिका } (स्त्री०) सन्तोष । तृप्ति ।
उदन्तिका }

उदन्य (वि०) प्यासा । तृषित ।

उदन्या (स्त्री०) प्यास । तृषा ।

उदन्वत् (पु०) समुद्र । सागर ।

उदय (पु०) १ उगना । उठना । ऊँचा होना । २ आगमन (जैसे धनोदयः) उपज (जैसे फलोदय) । ३ सृष्टि । ४ उदयगिरि । ५ उन्नति । अभ्युदय । ६ पदोन्नति । ७ परिणाम । ८ पूर्णता । परिपूर्णता । ९ लाभ । नफा । १० आमदनी । आय । मालगुज़ारी । ११ ब्याज । सूद । १२ कान्ति । चमक ।—अचलः, —अद्रिः,—गिरिः, —पर्वतः,—शैलः, (पु०) उदयाचल नामक पर्वत जो पूर्व दिशा में है ।—प्रस्थः, (पु०) उदयाचल की अधित्यका । [२ परिणाम ।

उदयनम् (न) १ उगना । निकलना । ऊपर चढ़ना ।

उदयनः (पु०) १ अगस्त्य जी का नाम । २ चन्द्रवंशी एक राजा का नाम । यह वत्सराज के नाम से प्रसिद्ध था और कौशाम्बी इसकी राजधानी थी ।

उदरं (न०) १ पेट । २ किसी वस्तु का भीतरी भाग । खोखलापन । पोलापन । ३ जलोदर रोग के कारण पेट का फुलाव । ४ हनन । घात । हत्या ।—आध्मानः, (पु०) पेट का फूलना ।—आमयः, (पु०) अतीसार । संग्रहणी । दस्तों की बीमारी ।—आवर्तः, (पु०) नाभि का ।—आवेष्टः, (पु०) फीता जैसा कीड़ा ।—त्राणं, (न०) १ कवच । बख़्तर । २ पेटी । पेट पर बांधने की पट्टी ।—पिशाच, (वि०) बहुत खाने वाला । भोजनभट्ट ।—सर्वस्वः, (पु०) भोजन भट्ट या जिसे केवल पेट भरने ही की चिन्ता हो ।

उदरथिः (पु०) १ समुद्र । २ सूर्य ।

उदरंभरि } (वि०) १ अपने पेट का भरण पोषण
उदरम्भरि } करने वाला । स्वार्थी । २ भोजनभट्ट ।

उदरवत् } (वि०) बडपिट्टू । बडे पेट वाला ।
उदरिक } तोंदिल । मौटा ।
उदरिल }

उदरिन् (न०) बड़े पेट या तोंद वाला । मौटा ।

उदरिणी (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।

उदर्कः (पु०) १ समाप्ति । अन्त । उपसंहार । २ परिणाम । फल । किसी कर्म का भावी परिणाम। ३ आने वाला काल । भविष्यत् काल ।

उदर्चिस् (वि०) चमकीला । कान्तिमान । दहकता हुआ ।—(पु०) १ अग्नि । २ कामदेव । ३ शिव।

उदवसितं (न०) घर । वासा । डेरा ।

उदश्रु (वि०) जो फूट फूट कर रोता हो । जिसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हो ।

उदसनम् (न०) १ फैंकना । उठाना । बनाकर खड़ा करना । २ निकालना ।

उदात्त (वि०) १ ऊंचा । उठा हुआ । २ कुलीन । महिमान्वित । ३ उदार । दानशील । ४ प्रख्यात । आदर्श । महान् । ५ प्रिय । प्यारा । माशूक । ६ ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ ।

उदात्तः (पु०) १ दान । भेंट । २ वाद्य यंत्र विशेष । एक प्रकार का बाजा । ढोल ।

उदात्तम्, (न०) अलङ्कार विशेष । इसमें सम्भाव्य विभूति का वर्णन खूब चढ़ा बढ़ा कर किया जाता है ।

उदानः (पु०) १ शरीरस्थ पाँच वायु में से एक । यह कण्ठ में रहती है । इसकी चाल हृदय से कण्ठ और तालू तक तथा सिर से भ्रूमध्य तक मानी गयी है । डकार और छींक इसीसे आती है । २ नाफ । नाभि । टुड्डी ।

उदायुध (वि०) हथियार उठाये हुए ।

उदार (वि०) १ दाता । दानशील । २ महान् । श्रेष्ठ । कुलीन । ३ ऊँचे दिल का । असङ्कीर्ण । ४ ईमानदार । सच्चा । धर्मात्मा । ५ अच्छा । भला । उत्तम । ६ वाग्मी । ७ विशाल । कान्तियुक्त । चमकीला । ८ बढ़िया पोशाक पहिनने वाला । ९ सुन्दर । मनोहर । मनोमुग्धकारी । प्रिय ।—आत्मन्,—चेतस्,—चरित,—मनस्,—सत्व, (वि०) उन्नतचेता । महानुभाव । महामना । महात्मा । महामति ।—धी, (वि) अत्युच्च प्रतिभावान् ।—दर्शन, (वि०) सुन्दर । खूबसूरत ।

उदारता (स्त्री०) १ दानशीलता । फैयाज़ी । २ धनीपना । अमीरी । [३ खिन्नचित्त । दुःखी ।

उदास (वि०) १ विरक्त । २ निरपेक्ष । तटस्थ ।

उदासः } (पु०) १ विषय-विरागी-व्यक्ति । दार्शनिक
उदासिन् } पण्डित । २ विरक्त । निरपेक्ष ।

उदासीन (व० कृ०) १ विरक्त । २ प्रपञ्चशून्य ।

उदासीनः (पु०) १ तटस्थ । निरपेक्ष । जो विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो । २ अपरिचित । ३ सामान्य रूप से सब से परिचित ।

उदास्थितः (पु०) १ पर्यवेक्षक । दरोगा । सुपरेंटेंडेंट। २ द्वारपाल । दरबान । ३ जासूस । भेदिया । व्रतभङ्ग यती ।

उदाहरणम् (न०) १ वर्णन । कथन । २ निरूपण । पाठ करना । वार्तालाप आरम्भ करना । ३ दृष्टान्त। मिसाल । प्रत्यन्तर । पटतर । ४ (न्यायदर्शन) वाक्य के पाँच अवयवों में से तीसरा । इसमें साध्य के साथ साधर्म्य वा वैधर्म्य होता है । ५ अर्थान्तर न्यास अलङ्कार । [आरम्भिक भाग ।

उदाहारः (पु०)१ दृष्टान्त । मिसाल । २ भाषण का

उदित (व० कृ०) १ उगाहुआ । ऊपर चढ़ा हुआ । २ ऊंचा । लंबा । ३ बढ़ा हुआ । ४ उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ । ५ कथित । कहा हुआ । उच्चारित ।

उदीक्षणम् (न०) १ खोज । तलाश । चितवन । अवलोकन ।

उदीची (स्त्री०) उत्तर दिशा । [२ उत्तर का ।

उदीचीन (वि०)१ उत्तर की ओर झुका या मुड़ा हुआ ।

उदीच्य (वि०) दक्षिण दिशा वासी ।

उदीच्यः (पु०) सरस्वती नदी के उत्तर-पश्चिम वाला देश । (बहुवचन में) उक्त देश निवासी ।

उदीच्यं (न०) एक प्रकार की सुगन्धित वस्तु ।

उदीपः (पु०) जल की बाढ़ । बूड़ा ।

उदीरणम् (न०) १ कथन । उच्चारण । प्रकटन । २ बोलना । कहना । ३ फैंकना । पठाना । विदा करना ।

उदीर्ण (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ । उगा हुआ । उत्पन्न हुआ । २ फूला हुआ । उठा हुआ । ३ तना हुआ । खिंचा हुआ ।

उदुम्बरः (पु०) गूलर का पेड़ ।

उदूखलं (न०) उलूखल । उखरी ।

उदूढा (स्त्री०) विवाहित स्त्री । [२ भयङ्कर ।

उद्वेजय (वि०) १ काँपता हुआ या हिलने वाला ।

उद्गतिः (स्त्री०) १ उठान । उगना । चढ़ाव । चढ़ाई । २ निकास । उद्गमस्थान । ३ वमन । छाँट ।

उद्गन्धि (वि०) १ खुशबूदार । २ उग्रगन्ध वाला ।

उद्गमः (पु०) १ उदय । आविर्भाव । २ उत्पत्ति का स्थान । निकास । २ सीधे खड़े होना जैसे रोमोद्गमः । ३ वाहिर जाना । प्रस्थान । ४ उत्पत्ति-सृष्टि । ५ उचाई । उच्च स्थान । ६ पौधे का अँखुआ । ७ वमन । छांट । उगलन ।

उद्गमनम् (न०) उदय । आविर्भाव ।

उद्गमनीय (वि०) चढ़ा हुआ । ऊपर गया हुआ ।

उद्गमनीयम् (न०) धुले हुए कपड़े का जोड़ा ।

उद्गाढ (वि०) गहरा । सघन । अत्यन्त । बहुत ।

उद्गाम् (न०) अत्यन्तअधिकता । (अव्य०) अधिकाई से । अत्यन्तता से । [करने वाला ।

उद्गातृ (पु०) उद्गाता । यज्ञ में सामवेद का गान

उद्गारः (पु०) १ उबाल । उफान । २ वमन । छाँट ३ थूक । खखार । ४ डकार ।

उद्गारिन् (वि०) १ ऊपर गया हुआ । उठा हुआ । २ निकला हुआ । वाहिर आया हुआ ।

उद्गरणम् (न०) १ छांट । वमन । २ लार । राल । ३ डकार । ४ उखाड़ पछाड़ ।

उद्गीति (स्त्री०) १ उच्चस्वर का गान । २ सामगान । ३ छन्द विशेष । [३ ओंकार । परब्रह्म ।

उद्गीथः (पु०) १ सामगान । २ सामवेद का दूसरा भाग ।

उद्गीर्ण (वि०) १ वमन किया हुआ । उगला हुआ २ उड़ेला हुआ । वाहिर निकाला हुआ ।

उद्गूर्ण (वि०) उठा हुआ । ऊपर उठाया हुआ ।

उद्ग्रंथः } उद्ग्रन्थः } (पु०) अध्याय । परिच्छेद ।

उद्ग्रंथि } उद्ग्रन्थि } (वि०) सम्मिलित । मिला हुआ । जुड़ा हुआ ।

उद्ग्रहः (पु०) } उद्ग्रहणम् (न०) } १ उठाना । ऊपर करना । २ ऐसा कार्य जो धर्मानुष्ठान अथवा अन्य किसी अनुष्ठान से पूरा हो सके । ३ डकार । [प्रतिवाद ।

उद्ग्राहः (पु०) १ उन्नयन । उठालेना । २ प्रत्युत्तर ।

उद्ग्राहणिका (स्त्री०) वादी का जवाब । प्रतिवाद ।

उद्ग्राहित (व० कृ०) १ उठाया हुआ । ऊपर किया हुआ । २ ले जाया हुआ । ३ सर्वोत्तम । ४ रखा हुआ । सौंपा हुआ । ५ बंधा हुआ । कसा हुआ । ७ स्मरण किया हुआ ।

उद्ग्रीव } उद्ग्रीविन् } (वि०) गर्दन उठाए हुए ।

उद्घः (पु०) १ उत्तमता । प्रधानता । २ प्रसन्नता । हर्ष । ३ अञ्जुलि । ४ अग्नि । ५ आदर्श । नमूना ६ शरीरस्थित वायु विशेष ।

उद्घनः (पु०) बढ़ई का पीढ़ा ।

उद्घट्टनम् (न०) } उद्घट्टना (स्त्री०) } रगड़ । ताड़न ।

उद्घर्षणम् (न०) १ रगड़न । २ सोंठा । डंडा । लट्ठ ।

उद्घाटः (पु०) चौकी । वह स्थान जहाँ चौकी रहे ।

उद्घाटकः (पु०) } उद्घाटकम् (न०) } १ चाबी । कुंजी । २ कुएं पर की रस्सी और डोल ।

उद्घाटन (वि०) खोलना । ताला खोलना ।

उद्घाटनम् (न०) १ खोलना । उघारना । २ प्रकट करना । प्रकाशित करना । ३ उठाना । ४ चाबी । कुंजी । कुएँ की रस्सी और डोल । गिर्री । चरखी ।

उद्घातः (पु०) १ आरम्भ । प्रारम्भ । २ हवाला । सङ्केत । ३ ताड़न । चोटिल करना । ४ प्रहार । घाव । ५ हिलन डुलन । झटका; जो गाड़ी में बैठने पर लगता है । ६ उठान । उचान । ७ लाठी । मुंगरी । ८ हथियार । ९ अध्याय । सर्ग ।

उद्घोषः (पु०) १ घोषण । घोषणा । ढिंढोरा । २ सार्वजनिक रिपोर्ट ।

उद्दंशः (पु०) १ खटमल । २ चिलुआ । ३ मच्छर ।

उद्दण्ड (वि०) १ डंडुल सहित । २ डंडा उठाए हुए । भयानक ।—पालः, (पु०) दण्डविधानकर्त्ता या दण्ड देने वाला । २ मत्स्य विशेष । ३ सर्प विशेष ।

उद्दंतुर } उद्दन्तुर } (वि०) १ बड़े दाँतों वाला या वह जिसके दाँत आगे निकले हों । २ ऊंचा । लंबा । ३ भयङ्कर ।

उद्दांत } उद्दान्त } (वि०) १ वीर्यवान । प्रबल । विनीत ।

उद्दानम् (न०) १ बंधन । बन्दीग्रह । २ पालतू बनाना । वश में करना । ३ मध्यभाग । कटि । कमर । ४ अग्निकुण्ड । ५ वाड़वानल ।

उद्दाम (वि०) १ बन्धनरहित । मुक्त । स्वतंत्र । २ बलवान । शक्तिशाली । मद में चूर । मदमाता । नशे में चूर । ३ भयानक । ४ स्वेच्छाचारी । ५ बहुत बढ़ने वाला । बड़ा । महान । अत्यधिक ।

उद्दामः (पु०) वरुणदेव का नाम ।

उद्दामं (अव्यय०) स्वच्छन्दता से । मदमत्तता से ।

उद्दालकम् (न०) एक प्रकार का मधु या शहद ।

उद्दित (वि०) बंधनयुक्त । बंधा हुआ ।

उद्दिष्टम् (व० कृ०) १ वर्णित । कथित । २ विशेष रूप से कहा हुआ । ३ व्याख्या किया हुआ । सिखलाया हुआ ।

उद्दीपः (पु०) १ दहन । जलन । प्रकाशन । २ दहनकारी । जलानेवाला । [प्रकाशक ।

उद्दीपक (वि०) १ भड़काने वाला । २ दहनकारी ।

उद्दीपनम् (न०) १ उत्तेजित करने की क्रिया । २ उत्तेजित करने वाला पदार्थ । ३ अलङ्कार शास्त्र के वे विभाव जो रस को उत्तेजित करते हैं । ४ रोशनी करना । प्रकाश करना । ५ देह को भस्म करना या जलाना ।

उद्दीप्त (वि०) दहकता हुआ । जलता हुआ ।

उद्दृप्त (वि०) अभिमानी । घमंडी ।

उद्देशः (न०) १ वर्णन । सविशेष विवरण । २ उदाहरण । दृष्टान्त द्वारा प्रदर्शन । व्याख्या । ४ खोज । अनुसन्धान । तहकीकात । ५ संक्षिप्त विवरण । ६ निर्देशपत्र । ७ शर्त । इकरार । ८ हेतु । कारण । ९ स्थान । जगह । १० मतलब । अभिप्राय ।

उद्देशकः (पु०) १ उदाहरण । २ (अङ्कगणित में) प्रश्न । कठिन प्रश्न । कूट प्रश्न ।

उद्देश्य (स० का० कृ०) व्याख्यान करने को ।

उद्देश्यं (न०) १ अभिप्रेत अर्थ । वह वस्तु जिसको लक्ष्य में रख कर कोई बात कही जाय । वह वस्तु जो किसी कार्य में प्रवृत्त करे । २ विधेय का उल्टा । विशेष्य । [भाग । अध्याय । पर्व । काण्ड ।

उद्द्योतः (पु०) १ चमक । आब । २ ग्रन्थ का

उद्द्रावः (पु०) पीछे हटना । भागना ।

उद्धत (व० कृ०) १ उठा हुआ । उठाया हुआ । २ अत्यधिक । बहुत अधिक । ३ अहङ्कारी । घमंडी अक्खड़ । ४ मग्न । ५ व्याकुल । उद्विग्न । ६ विशाल । महान । गौरव युक्त । गंवारू । बदतमीज़ ।—मनस् —मनस्क (वि०) उच्चाशय । अक्खड़ ।

उद्धतः (पु०) राजा का पहलवान । राजमल्ल ।

उद्धतिः (स्त्री०) १ ऊंचाई । २ अभिमान । घमंड । ३ गौरव । ४ आघात । प्रहार । [दम फूलना ।

उद्धमः (पु०) १ बजाना । फूंकना । २ सांस लेना ।

उद्धरणम् (न०) १ खींचना । उतारना । २ खींच कर निकालना । ३ छुड़ाना । ४ नामोनिशान मिटाना । ५ ऊपर उठाना । ६ वमन करना । ७ मुक्ति । मोक्ष । ८ ऋण से उऋण होना ।

उद्धर्तृ, उद्धारक (वि०) १ ऊपर उठानेवाला । ऊंचा करने वाला । २ भागीदार । साझीदार ।

उद्धर्ष (वि०) हर्षित । प्रसन्न ।

उद्धर्षः (पु०) १ बड़ी भारी प्रसन्नता । २ किसी कार्य को आरम्भ करने का साहस । ३ त्योहार । पर्व ।

उद्धर्षणम् (न०) उत्साहवर्द्धन । जान डालना । २ रोमाञ्च । शरीर के रोंगटों का खड़ा होना ।

उद्धवः (पु०) १ यज्ञाग्नि । २ उत्सव । पर्व । ३ एक यादव का नाम जो श्रीकृष्ण का मित्र था ।

उद्धस्त (वि०) हाथ बढ़ाये या उठाये हुए । [छाँट ।

उद्धानम् (न०) १ यज्ञकुण्ड । २ उगाल । वमन ।

उद्धांत, उद्धान्त (वि०) उगला हुआ । छाँट किया हुआ । [गया हो ।

उद्धांतः, उद्धान्तः (पु०) हाथी जिसका मद चूना बन्द हो

उद्धारः (पु०) १ मुक्ति । छुटकारा । त्राण । निस्तार । २ ऊपर उठाना । ३ सम्पत्ति का वह भाग, जो बराबर बाँटने के लिये अलग कर लिया जाय । ४ युद्ध की लूट का छठवाँ भाग जो राजा का होता है । ५ ऋण । ६ सम्पत्ति की पुनः प्राप्ति । ७ मोक्ष । नैसर्गिक आनन्द ।

उद्धारणम् (न०) १ निकालना । ऊपर उठाना । २ बचाना (किसी सङ्कट से) उबारना ।

उद्धुर (वि०) १ असंयत । अनरुद्ध । स्वतंत्र । २ दृढ़ । निडर । ३ भारी । परिपूर्ण । ४ गाढ़ा । सघन । ५ योग्य ।

उद्धूत (व० कृ०) १ हिला हुआ । गिरा हुआ । उठाया हुआ । ऊपर फैला हुआ । २ उन्नत । उन्नत किया हुआ । [हिलाना ।

उद्धूतनम् (न०) १ ऊपर फेंकना । ऊपर उठाना । २

उद्धूपनम् (न०) धूप देना । [चूर्ण बुरकाना ।

उद्धूलनम् (न०) चूर्ण करना । पीसना । धूल या

उद्धूषणम् (न०) शरीर के रोंगटों का खड़ा होना ।

उद्धृत (व० कृ०) १ निकाला हुआ । ऊपर खींचा हुआ । जादू से उखाड़ा हुआ । नष्ट किया हुआ । ३ अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ ।

उद्धृतिः (स्त्री०) १खींचना । खींचकर बाहर निकालना । २ किसी ग्रन्थ का कोई अंश उतार लेना । ३ बचाना । छुड़ाना । ४ पाप से छुड़ाना ।

उद्ध्मानम् (न०) अङ्गीठी । अलाव ।

उद्ध्यः (पु०) एक नदी का नाम ।

उद्बंध } उद्बन्ध } (वि०) ढीला ।

उद्बंधः (पु०) } उद्बन्धः (पु०) } उद्बंधनम् (न०) } उद्बन्धनम् (न०) } बांधना । लटकाना । स्वयं लटकाना ।

उद्बंधकः } उद्बन्धकः } (पु०) जाति विशेष जो धोबी का काम करती है ।

उद्बल (वि०) मज़बूत । ताकतवर ।

उद्बाष्प (वि०) आसुओं से परिपूर्ण ।

उद्बाहु (वि०) बाहें उठाये हुए ।

उद्बुद्ध (व० कृ०) १ जागा हुआ । उत्तेजित । २ खुला हुआ । ३ स्मरण कराया हुआ । ४ स्मरण किया हुआ ।

उद्बोधः (पु०) } उद्बोधनम् (न०) } जागृति । स्मृति । याद करना । उठ बैठना ।

उद्बोधक (वि०) १ बोध कराने वाला । याद कराने वाला । चेताने वाला । ख्याल कराने वाला । २ उद्दीप्त कराने वाला ।

उद्बोधकः (पु०) सूर्य का नाम ।

उद्भट (वि०) १ सर्वोत्तम । मुख्य । २ प्रबल । प्रचण्ड ।

उद्भटः (पु०) १ सूप । २ कछुआ । कच्छप ।

उद्भवः (पु०) १ उत्पत्ति । सृष्टि । जन्म । निकास । २ उद्गमस्थान । ३ विष्णु का नाम ।

उद्भावः (पु०) १ उत्पत्ति । प्रादुर्भाव । २ विशालता ।

उद्भावनम् (न०) १ सोचना । मन में लाना । २ उत्पत्ति । रचना । पैदायश । ३ अमनस्कता । असावधानी । ४ तिरस्कार ।

उद्भासः (पु०) चमक । आभा । कान्ति । आब ।

उद्भासिन् } उद्भासुर } (वि०) चमकदार । चमकीला । उत्तम ।

उद्भिद् (वि०) अंकुरित । अँखुओं वाला ।

उद्भिद (वि०) अंकुरित ।

उद्भिदः (पु०) १ अंकुर । अँखुआ । २ पौधा । ३ श्रोत । चश्मा । फव्वारा ।

उद्भिद-विद्या (स्त्री०) वनस्पति विज्ञान ।

उद्भूत (व० कृ०) १ उत्पन्न हुआ । पैदा किया हुआ । २ विशाल । ३ इन्द्रियगोचर । [उन्नति ।

उद्भूतिः (स्त्री०) १ उत्पत्ति । पैदायश । २ समृद्धि ।

उद्भेदः (पु०) } उद्भेदनम्(न०) } १ वेधना । २ फोड़ कर निकलना । दिखलाई पड़ना । प्रादुर्भाव । प्रकटन । बाढ़ । ३ फव्वारा । श्रोत । चश्मा । ४ रोंगटों का खड़ा होना ।

उद्भ्रमः (पु०) १ घूमरी । घन्नौटा । २ (तलवार को) घुमाना । ३ घूमना फिरना । ४ खेद । [लना ।

उद्भ्रमणं (न०) १ घूमना फिरना । २ उठना । निक-

उद्यत (व० कृ०) १ उठा हुआ । ऊपर उठा हुआ । २ निरन्तर उद्योगकारी । परिश्रमी । क्रियावान् । ३ झुका हुआ । ताना हुआ । ४ तत्पर । उत्सुक । तुला हुआ ।

उद्यमः (पु०) १ उत्थान । उन्नयन । २ सत्य उद्योग । अध्यवसाय । ३ तत्परता । तैयारी ।—भृत्, (वि०) कठिन परिश्रम करने वाला ।

उद्यमनम् (न०) उत्थान । उन्नमन ।

उद्यमिन् (वि०) परिश्रमी । अध्यवसायी

उद्यानम् (न०) १ गमन । बहिर्गमन । २ उपवन । पार्क । बाग । आनन्दवाटिका । ३ अभिप्राय । हेतु । कारण ।—पालः, रक्षकः, (पु०) माली ।

उद्यानकम् (न०) बाग । पार्क ।

उद्यापनम् (न०) समाप्ति । अवसान ।

उद्योगः (पु०) १ प्रयत्न । प्रयास । मिहनत । २ उद्यम । कामधंधा । [श्रमी ।

उद्योगिन् (वि०) क्रियाशील । अध्यवसायी । परि-

उद्रः (पु०) जलजन्तुओं का राजा । [मुर्गा ।
उद्रथः (पु०) १ रथ की धुरी की कील या पिन । २
उद्रावः (पु०) शोरगुल । होहल्ला । कोलाहल ।
उद्रिक्त (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ । अत्यधिक । विपुल । २ स्पष्ट । साफ़ ।
उद्रुज (वि०) नाश करना । गुपचुप नष्ट करना ।
उद्रेकः (पु०) १ वृद्धि । बढ़ती । अधिकता । विपुलता । २ काव्यालङ्कार विशेष ।
उद्वत्सरः (पु०) वर्ष । साल । [छलकाना ।
उद्वपनम् (न०) १ भेंट । दान । २ उडेलना ।
उद्वमनम् (न०), उद्वांतिः (स्त्री०), उद्वान्तिः (स्त्री०) } वमन । उबकाई ।
उद्वर्तः (पु०) १ बचत । फालतूपन । २ अधिकता । भाराधिक्य । ३ शरीर में तेल फुलेल की मालिश या उबटन ।
उद्वर्तनम् (न०) १ ऊपर जाना । उठना । २ निकलना । बाढ़ (पौधों की) । ३ समृद्धि । उन्नयन । करवटें लेना ।।उठ खड़े होना । ५ पीसना । कूटना । ६ उबटन लगाना । तेल फुलेल की मालिश ।
उद्वर्धनम् (न०) १ उन्नति । २ छिपाकर या धीरे धीरे हँसना । [चौथा पत्र । ३ विवाह ।
उद्वहः (पु०) १ पुत्र । २ पवन के सप्त पथों में से
उद्वहा (स्त्री०) बेटी । पुत्री ।
उद्वहनम् (न०) १ विवाह । २ सहारा । ऊपर उठाना । ले जाना । ३ सवारी करना ।
उद्वान (वि०) उगला हुआ । ओका हुआ ।
उद्वानम् (न०) १ वमन । उगाल । २ अंगीठी ।
उद्वांत, उद्वान्त } (वि०) १ ओका हुआ । २ मदरहित ।
उद्वापः (पु०) १ निकास । बहिर्निक्षेप । २ हजामत । क्षौरकर्म ।
उद्वासः (पु०) १ देश निकाला । २ त्याग । ३ वध । ४ यज्ञीय संस्कार विशेष ।
उद्वासनं (न०) १ निकालना । देश निकाला देना । २ त्यागना । ३ निकाल लेना या निकाल कर ले जाना (आगसे) । ४ वध करना ।
उद्वाहः (पु०) १ सहारा । २ विवाह । परिणय
उद्वाहनम् (न०) १ ऊपर ले जाना । ऊपर चढ़ाना । उठाना । २ विवाह ।
उद्वाहनी (स्त्री०) १ रस्सी । डोरी । २ कौड़ी ।
उद्वाहिक (वि०) १ विवाह सम्बन्धी । [विवाहित ।
उद्वाहिन् (वि०) १ उठा हुआ । ऊपर खींचा हुआ । २
उद्वाहिनी (स्त्री०) रस्सी । डोर ।
उद्विग्न (व० कृ०) दुःखी । सन्तप्त । शोकप्लुत । उदास । [नेत्र ।
उद्वीक्षणं (न०) १ ऊपर की ओर देखना । २ दृष्टि ।
उद्वीजनम् (न०) पंखा करना ।
उद्वृंहणम् (न०) बढ़ती । बाढ़ ।
उद्वृत्त (व० कृ०) १ उठा हुआ । ऊँचा किया हुआ । २ उमड कर वहा हुआ ।
उद्वेगः (पु०) १ कंपना । थरथराना । थर्राना । २ घबड़ाहट । विकलता । ३ भय । आशङ्का । ४ चिन्ता । खेद । शोक । ५ आश्चर्य । ताज्जुब ।
उद्वेगम् (न०) सुपारी ।
उद्वेजनम् (न०) १ विकलता । व्याकुलता । २ पीड़ा । कष्ट । सन्ताप । ३ खेद । [से युक्त ।
उद्वेदि (वि०) सिंहासन से युक्त । अथवा उच्चस्थान
उद्वेपः (पु०) काँपना । थरथराना । अत्यधिक प्रकम्प । [मर्यादा का अतिक्रम किये हुए ।
उद्वेल (वि०) (जलका) उमड़ कर वहा हुआ ।
उद्वेल्लित (व० कृ०) कांपा हुआ । उछाला हुआ ।
उद्वेल्लितम् (न०) हिलना डुलना ।
उद्वेष्टन (वि०) १ ढीला किया हुआ । खुला हुआ । २ मुक्त । बंधन से छूटा हुआ । बंधन रहित ।
उद्वेष्टनम् (न०) १ चारों ओर से घेरने या ढकने की क्रिया । २ घेरा । हाता । ३ पीठ या नितंब की पीड़ा ।
उद्वोढृ (पु०) पति । खसम । खाविंद ।
उधस् (न०) दूध देने वाले पशुओं का ऐन । लेवा ।
उंद्, उन्द् } (धा० पा०) [उनत्ति, उत्त—उन्न] भिगोना । तर करना । नम करना । स्नान करना ।
उंदनम्, उन्दनम् } (न०) नमी । तरी ।

उंदरुः, उन्दरुः
उंदुरुः, उन्दुरः
उंदुरुः, उन्दुरुः
उंदूरुः, उन्दूरुः } (पु०) चूहा । घूँस ।

उन्नत (व० कृ०) १ उठा हुआ । ऊपर उठा हुआ । २ ऊचा । लंबा । बडा । विख्यात । ३ मौटा । भरा हुआ । -आनत, (वि०) विषम । ऊचा नीचा । फूला पिचका ।—चरण, (वि०) बेरोक बढ़ने और फैलने वाला । प्रबल । पिछले पैरों पर खडा ।—शिरस्, (वि०) बडा अभिमानी ।

उन्नत (पु०) अजगर ।

उन्नतम् (न०) ऊंचाई । चढाव । चढाई ।

उन्नतिः (स्त्री०) १ ऊंचाई । चढ़ाव । २ वृद्धि समृद्धि । तरक्की । बढती ।—ईशः, (पु०) गरुड़ जी का नाम । [हुआ । मौटा । भरा हुआ ।

उन्नतिमत् (वि०) उठा हुआ । बाहिर निकला

उन्नमनं (न०) १ ऊपर उठाना । ऊंचा चढाना । २ ऊंचाई ।

उन्नम्र (वि०) १ सीधा । सतर । २ विशाल । ऊंचा ।

उन्नयः
उन्नायः } (पु०) १ ऊपर चढना । ऊपर उठना । २ ऊचाई । चढ़ाई । ३ सादृश्य । समता । ४ अटकल ।

उन्नयनम् (न०) १ ऊपर उठाना । २ ऊपर खींचकर पानी निकालना । ३ विचार । विवाद । ४ अटकल

उन्नस (वि०) मौटी या ऊँची नाक वाला ।

उन्नादः (पु०) चिल्लाहट । गर्ज । गुञ्जार । पक्षियों की चहक या कूजन । (मक्खियों की) भिनभिन्नाहट ।

उन्नाभ (वि०) तुंदीला । बड़े पेट का । जिसकी नाभि ऊंची उठी हो ।

उन्नाहः (पु०)१ नोक । गुमडा । २ बंधन ।

उन्नाहम् (न०) चाँवल से बना हुआ पदार्थ विशेष ।

उन्निद्र (वि०) १ निद्रारहित । जागता हुआ । २ फैला हुआ । पूरा फूला हुआ । कलियों से युक्त ।

उन्नेतृ (वि०) उठा हुआ । (पु०) सोलह प्रकार के यज्ञ कराने वालों में से एक ।

उन्मज्जनम् (न०) पानी से बाहर निकलना ।

उन्मत्त (वि० कृ०) १ मदमाता । नशे में चूर । २ पागल । सिडी । ३ अकडा हुआ । फूला हुआ । वहमी । उचक्की । प्रेतावेशित ।—कीर्तिः,—वेशः, (पु०) शिव जी का नाम ।—गङ्गम् (न०) वह प्रदेश विशेष जहाँ गङ्गाजी का हरहराना प्रबल रूप से होता है ।—दर्शन,—रूप, (वि०) देखने में या शक्ल से पागल ।—प्रलपित (वि०) नशे के झोंक में बातचीत । प्रलपितम् (न०) पागल का कथन ।

उन्मत्तः (पु०) धतूरा ।

उन्मथनं (न०) १ हिलाना डुलाना । पटक देना । गिरा देना । २ मारण । बध । हत्या ।

उन्मद (वि०) १ नशे में चूर । मदमत्त । २ पागल । मतवाला । आपे से बाहिर । डाँवाडोल ।

उन्मदः (पु०) १ पागलपन । २ नशा ।

उन्मदन (वि०) प्रेमासक्त । प्रेम में विह्वल ।

उन्मदिष्णु (वि०) १ पागल । २ मदमाता । नशे में चूर ।

उन्मनस्
उन्मनस्क } (वि०) १ उद्विग्न । विकल । व्याकुल । बेचैन । २ मित्रविछोह से संतप्त । ३ उत्सुक । लालायित । अधीरजी । [होना ।

उन्मनायते (क्रि०) बेचैन होना । मन का व्याकुल

उन्मंथः
उन्मन्थः } (पु०) १ विकलता । २ हत्या । बध ।

उन्मंथनम्
उन्मन्थनम् } (न०) १ हत्या । बध । चोटिल करना । २ लकडी से पीटना । ३ क्षोभ । उद्वेग ।

उन्मयूख (वि०) चमकीला । चमकदार । [उबटना ।

उन्मर्दनं (न०) १ मलना । रगडना । दबाना । २

उन्माथः (पु०) १ पीड़ा । कष्ट । २ क्षोभ । उद्वेग । ३ हत्या । बध । ४ जाल । फंदा ।

उन्माद (वि०) १ पागल । सिडी । २ डाँवाडोल ।

उन्मादः (पु०) १ पागलपन । सिडीपन । २ बडी झाँझ या क्रोध । ३ मानसिक रोग विशेष जिससे मन और बुद्धि का कार्यक्रम अस्तव्यस्त हो जाता है । (न०) इसके ३३ सञ्चारी भावों में से एक जिसमें वियोगादि के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता । ५ खिलना । प्रस्फुटन । यथा—

"उन्माद वीक्ष्य पद्मानाम्"

साहित्यदर्पण ।

उन्मादन (वि०) पागल । नशे में चूर ।

उन्मादनः (पु०) कामदेव के पांच शरों में से एक।
उन्मानं (न०) १ तौल। नाप। २ मूल्य। कीमत।
उन्मार्ग (वि०) अन्यमार्ग से जानेवाला। कुपथगामी।
उन्मार्गः (पु०) १ कुपंथ। २ निकृष्ट आचरण। बुरा ढङ्ग। बुरी चाल। [झाड़ना।
उन्मार्जनम् (न०) रगड़। मलिश। पोंछना।
उन्मितिः (स्त्री०) नाप। मूल्य।
उन्मिश्र (वि०) मिश्रित। मिलावटी।
उन्मिषित (व० कृ०)१ खुली हुई (आँखें)। जागता हुआ। २ खुला हुआ। ३ ताना हुआ।
उन्मिषितम् (न०) दृष्टि। नज़र। निगाह।
उन्मील: (पु०) } (नेत्रों का) खोलना। जागना।
उन्मीलनम् (न०) } बढ़ाना। तानना।
उन्मुख (वि०) १ ऊपर मुँह किये। ऊपर को ताकता हुआ। २ उत्कण्ठा से देखता हुआ। ३ उत्कण्ठित। उत्सुक। ४ उद्यत। तैयार।
उन्मुखर (वि०) [स्त्री०—उन्मुखी] कोलाहल मचाने वाला। शोर गुल करने वाला।
उन्मुद्र (वि०)१ बिना मोहर या सील का। २ खुला हुआ। फूंक कर बढ़ाया हुआ या फुलाया हुआ। ताना हुआ। खींच कर बढ़ाया हुआ। [करना।
उन्मूलनम् (न०) जड़ से उखाड़ना। समूल नष्ट
उन्मेदा (स्त्री०) मुटाई। मोटापन।
उन्मेषः (पु०) } (नेत्रों को) १ खुलन। आंख मट-
उन्मेषणम् (न०) } कौअल। सैनामानी। २ बढ़ाव। फुलाव। ३ रोशनी। प्रकाश। चमक। ४ जागृति। दृश्य होने की क्रिया। नज़र आना। प्रादुर्भाव। प्राकट्य। [क्रिया।
उन्मोचनम् (न०) खोलने की क्रिया। ढीला करने की
उप (अव्यया०) यह उपसर्ग जब किसी क्रिया या संज्ञावाची शब्द के पूर्व लगाया जाता है, तब यह निम्न अर्थों का बोधक होता है:—१ सामीप्य। सान्निध्य २ शक्ति। योग्यता। ३ व्याप्ति। ४ उपदेश। ५ मृत्यु। नाश। ६ त्रुटि। दोष। ७ प्रदान। ८ क्रिया। उद्योग। ६ आरम्भ। १० अध्ययन। ११ सम्मान। पूजन। १२ सादृश्य। १३ बराबर। १४ अश्रेष्ठत्व।

उपकंठः (पु०) } १ सामीप्य। सान्निध्य। पड़ोस।
उपकण्ठः (पु०) } २ किसी ग्राम या ग्रामसीमा
उपकंठं (न०) } के समीप का स्थान। (अव्यया०)
उपकण्ठम् (न०) } गर्दन के ऊपर, गले के पास। ३ पास में। पड़ोस में।
उपकथा (स्त्री०) छोटी कहानी। गल्प।
उपकनिष्ठिका (स्त्री०) कनिष्ठिका के पास की उँगली। अनामिका।
उपकरणम् (न०) १ अनुग्रह। सहायता। २ सामान। सामग्री। औज़ार। हथियार। यन्त्र। उपस्कर। ३ आजीविका का द्वार। जीवनोपयोगी कोई वस्तु। ४ राजचिन्ह (छत्र, दण्ड, चंवर आदि)
उपकर्णनम् (न०) श्रवण। सुनना।
उपकर्णिका (स्त्री०) अफवाह।
उपकर्तृ (वि०) उपयोगी। अनुकूल।
उपकल्पनम् (न०) } १ सामान। २ रचना।
उपकल्पना (स्त्री०) } मिथ्या रचना। बनावटीपन।
उपकारः (पु०) १ परिचर्या। सहायता। मदद। २ अनुग्रह। कृपा। ३ आभूषण। शृङ्गार।
उपकारी (स्त्री०) १ शाही खीमा। राजप्रसाद। २ पान्यनिवास। सराय। धर्मशाला।
उपकार्या (स्त्री०) राजप्रसाद। महल।
उपकुंचिः (पु०) }
उपकुञ्चिः (पु०) } छोटी इलायची।
उपकुंचिका (स्त्री०) }
उपकुञ्चिका (स्त्री०) }
उपकुंभ (वि०) } १ समीप। निकट। २ एकान्त।
उपकुम्भ (वि०) } [इच्छा रखता हो।
उपकुर्वाणः (पु०) ब्रह्मचारी, जो गृहस्थ होने की
उपकुल्या (स्त्री०) नहर। खाईं।
उपकूपं }
उपकूपे } (अव्यया०) कुए के समीप।
उपकृतिः }
उपक्रिया } (स्त्री०) अनुग्रह। कृपा।
उपक्रमः (पु०) १ आरम्भ। २ अनुष्ठान। उठान। ३ रोगी की परिचर्या। ४ ईमानदारी की परीक्षा। ५ चिकित्सा। इलाज। ६ सामीप्य।
उपक्रमणं (न०) १ समीपागमन। २ अनुष्ठान। ३ आरम्भ। ४ चिकित्सा।

उपक्रमणिका (स्त्री०) भूमिका । दीवाचा ।

उपक्रीडा (स्त्री०) चौगान । खेलने के लिये मैदान ।

उपक्रोशः (पु०) } फटकार । डाँटडपट ।
उपक्रोशनम् (न०) } भर्त्सना ।

उपक्रोष्टृ (पु०) (रेंकता हुआ) गधा ।

उपकणं } (न०) वीणा की झनकार ।
उपक्वाणम् }

उपक्षयः (पु०) १ अवनति । कमी । ह्रास । घटती । २ व्यय ।

उपक्षेपः (पु०) १ घुमाना । फिराना । २ धमकी । आक्षेप । ३ अभिनय के आरम्भ में अभिनय का संक्षिप्त वृत्तान्त-कथन ।

उपक्षेपणम् (न०) १ नीचे फेंकना या गिराना । २ दोषारोपित करना । जुर्म आयद करना ।

उपग (वि०) १ समीप आया हुआ । पीछे लगा हुआ । सम्मिलित । २ प्राप्त हुआ ।

उपगणः (पु०) छोटी या अन्तर्गत श्रेणी ।

उपगत (व० कृ०) १ गया हुआ । समीप आया हुआ । २ घटित । ३ प्राप्त । अनुभूत । ४ प्रतिज्ञात ।

उपगतिः (स्त्री०) १ समीपागमन । ज्ञान । परिचय । ३ स्वीकृति । ४ प्राप्ति । उपलब्धि ।

उपगमः (पु०) } १ गमन । समीप गमन । २
उपगमनम् (न०) } ज्ञान । परिचय । ३ प्राप्ति । उपलब्धि । ३ समागम (स्त्री पुरुष का) ५ संगत । सोहबत । ६ सहिष्णुता । अनुभव । ७ स्वीकृति । ८ प्रतिज्ञा । इकरार ।

उपगिरि } (अव्यया०) पर्वत के समीप ।
उपगिरम् }

उपगिरिः (पु०) उत्तर दिशा में पर्वत के समीप अवस्थित एक प्रदेश का नाम ।

उपगु (अव्यया०) गौ के समीप ।

उपगुः (पु०) ग्वाला । गोप ।

उपगुरुः (पु०) सहायक शिक्षक । नायब मुदर्रिस ।

उपगूढ (व० कृ०) १ छिपा हुआ । २ आलिङ्गन किया हुआ ।

उपगूहनम् (न०) १ छिपाव । दुराव । २ आलिङ्गन । ३ आश्चर्य । अचंभा ।

उपग्रहः (पु०) १ क़ैद । पकड़ । गिरफ़्तारी । २ हार । पराजय । ३ क़ैदी । बंदी । ४ योग । सम्मेलन । ५ अनुग्रह । प्रोत्साहन । ६ छोटा ग्रह [राहु केतु आदि] ।

उपग्रहणम् (न०) १ नीचे से पकड़ना । गिरफ्तारी । बदी बनाना । ३ सहारा । उन्नयन । ४ वेदाध्ययन ।

उपग्राहः (पु०) १ भेंट देना । २ भेंट ।

उपग्राह्यः (न०) भेंट । नैवेद्य । नज़राना ।

उपघातः (पु०) १ प्रहार । आघात । २ तिरस्कार । ३ नाश । ४ स्पर्श । संसर्ग । ५ आक्रमण । ६ रोग । ७ पाप ।

उपघोषणम् (न०) प्रकटन । प्रकाशन । ढिंढोरा ।

उपघ्नः (पु०) १ सहारा । २ संरक्षण । पनाह ।

उपचक्रः (पु०) लाल रङ्ग का हंस विशेष ।

उपचक्षुस् (न०) चश्मा । ऐनक ।

उपचयः (पु०) १ सञ्चय । २ वृद्धि । उन्नति । बढ़ती । ३ परिमाण । ढेर । ४ समृद्धि । उन्नयन । ५ कुण्डली में लग्न से तीसरा, छठवाँ और ग्यारहवाँ स्थान ।

उपचरः (पु०) चिकित्सा । इलाज ।

उपचरणम् (न०) समीपगमन ।

उपचाय्यः (पु०) यज्ञीयाग्नि विशेष ।

उपचारः (पु०) १ सेवा । परिचर्या । पूजन । सत्कार । २ विनम्रता । सभ्योचित व्यवहार । ३ चापलूसी । चाटुता । ४ नमस्कार । प्रणाम करने का विधान विशेष । ५ दिखावट । दिखावटी रीतिरस्म । ६ चिकित्सा । इलाज । ७ व्यवस्था । प्रबन्ध । ८ धर्मानुष्ठान । ९ व्यवहार । १० घूस । रिशवत । ११ बहाना । प्रार्थना । १२ विसर्ग के स्थान में स् और ष् का प्रयोग ।

उपचितिः (स्त्री०) सग्रह । बढ़ती । उन्नति ।

उपचूलनं (न०) गर्माने की क्रिया । जलाना ।

उपच्छदः (पु०) ढक्कन । ढकना ।

उपच्छंदनम् } (न०) १ मीठी मीठी बातें कह कर
उपच्छन्दनम् } अपना काम निकालने की क्रिया । प्रलोभित करना । २ आमन्त्रण देना । न्योता । [निकास ।

उपजनः (पु०) १ बढ़ती । उन्नति । २ पुंछल्ला । ३

उपजल्पनम्
उपजल्पितम् } (न०) वार्तालाप ।

उपजाप. (पु०) १ चुपचाप कान में कहना या बतलाना । २ वैरी के मित्र के साथ सन्धि के गुपचुप पैगाम । राजक्रान्ति के लिये असन्तोष का बीज वपन । ३ अनैक्य । विच्छेद ।

उपजीवक
उपजीवन् } (पु०) दूसरे के आधार पर रहनेवाला । परतंत्र । अनुचर ।

उपजीवनम् (न०)
उपजीविका (स्त्री०) } १ जीविका । रोज़ी । २ निर्वाह । ३ जीविका का साधन, सम्पत्ति आदि ।

उपजीव्य (स० का० कृ०) १ जीविका देने वाला । २ संरक्षकता प्रदान करते हुए । ३ लिखने के लिये सामग्री प्रदान करने वाला ।

"सर्वेषां कविमुख्यानामुपजीव्यो भविष्यति ।"
—महाभारत ।

उपजीव्यः (पु०) १ संरक्षक । २ आधार या प्रमाण जिससे कोई लेखक अपने लेख की सामग्री पावे ।

उपजोपः (पु०)
उपजोपणम् (न०) } १ स्नेह । २ भोगविलास ।

उपज्ञा (स्त्री०) १ वह ज्ञान जो स्वयं प्राप्त किया हो, परम्परा से प्राप्त न हुआ हो । २ ऐसे कार्य का अनुष्ठान जो पूर्व में कभी न किया गया हो ।

उपढौकनम् (न०) नज़र । भेंट । उपहार ।

उपताप· (पु०) १ गर्मी । २ उष्णता । क्लेश । पीड़ा । शोक । ३ सङ्कट । विपत्ति । ४ रोग । बीमारी । ५ शीघ्रता । हड़बड़ी । [कष्ट देना ।

उपतापनम् (न०) १ गर्माना । २ सन्तप्त करना ।

उपतापिन् (वि०) १ गर्माया हुआ । गर्म । उष्ण । २ सन्तप्त । पीड़ित । बीमार । [नक्षत्र का नाम ।

उपतिष्यं (न०) अश्लेषा नक्षत्र का नाम । पुनर्वसु

उपत्यका (स्त्री०) पर्वत के नीचे की भूमि । पहाड़ की तलहटी । पहाड़ की तराई ।

उपदंशः (पु०) १ वह वस्तु जो प्यास या भूख को भड़कावे । २ डसना । डंक मारना । गर्मी की बीमारी । आतिशक ।

उपदशः (वि०) [बहुवचन] लगभग दस ।

उपदर्शकः (पु०) १ पथप्रदर्शक । २ द्वारपाल । ३ साक्षी । गवाह ।

उपदा (स्त्री०) १ नज़राना । भेंट । २ घूस । रिशवत ।

उपदानं
उपदानकम् } (न०) १ बलि । चढ़ावा । २ दान । रिशवत ।

उपदिश (स्त्री०)
उपदिशा (स्त्री०) } १ उपदिशा । दिशाओं के कोण । २ ऐशानी । आग्नेयी नैर्ऋती । वायवी ।

उपदेवः (पु०)
उपदेवता (स्त्री०) } छोटा देवता । निकृष्ट देवता ।

उपदेशः (पु०) १ शिक्षा । नसीहत । हित की बात । कथन । २ दीक्षागुरुमन्त्र । ३ सविशेष विवरण । विवरण । ३ व्याज । बहाना । मिस ।

उपदेशक (वि०) शिक्षा देने वाला । नसीहत करनेवाला ।

उपदेशकः (पु०) शिक्षक । पथप्रदर्शक । दीक्षागुरु ।

उपदेशनं (न०) शिक्षा । नसीहत । सीख ।

उपदेशिन् (वि०) उपदेष्टा । नसीहत देने वाला ।

उपदेष्टृ (पु०) शिक्षक । गुरु । दीक्षागुरु ।

उपदेहः (पु०) १ मलहम । २ ढकना ।

उपदोह· (पु०)१ गाय का स्तन । स्तन के ऊपर की घुँडी । २ दोहनी । पात्र जिसमें दूध दुहा जाय ।

उपद्रवः (पु०)१ उत्पात । आकस्मिक बाधा । सङ्कट । २ चोटफेंट । विपत्ति । आफत । ३ ऊधम । गड़बड़ । दंगा फसाद ।, गदर । रोग का लक्षण ।

उपधर्म· (पु०) गौण धर्म या नियम ।

उपधा (स्त्री०) १ छल । प्रवञ्चना । जाल । फरेब । २ सत्यता या ईमानदारी की परीक्षा ।—भृतः, (पु०) वह नौकर जिसके ऊपर बेईमानी का इलज़ाम लगाया गया हो ।—शुचि, (वि०) परीक्षित । जाँचा हुआ ।

उपधातुः (पु०) १ निकृष्ट धातु अथवा प्रधान धातुओं के समान । धातु वे ये हैं :—

सप्तोपधातवः स्वर्णं माक्षिकं तारमाक्षिकं ।
तुत्थं कांस्यं च रीतिश्च सिन्दूरं च शिलाजतु ।।

२ शरीर के रस रक्तादि सात धातुओं से बने हुए दूध, पसीना, चर्बी आदि । वे ये हैं.—

स्तन्यं रजो वसा स्वेदो दन्ताः केशास्तथैव च ।
औजस्यं सप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः ।।

उपधानं (न०) १ जिस पर रख कर सहारा लिया जाय । २ तकिया । २ विशेषता । व्यक्तित्व । ४

स्नेह। कृपा। ५ धार्मिक अनुष्ठान। ६ सर्वोत्तम गुण विशिष्टता। ७ विष। ज़हर।

उपधानीय (न०) तकिया।

उपधारणं (न०) १ विचार। आलोचना। २ किसी ऊपर रखी या लगी हुई चीज़ को लग्गी में अटका कर खींच लेने की क्रिया।

उपधिः (पु०) १ जालसाज़ी। बेईमानी। २ सत्य का अपलाप। जान बूझ कर सत्य को छिपाना। ३ ३ भय। धमकी। विवशता। कपट। छल। ४ पहिया या पहिया का स्थान विशेष।

उपधिकः (पु०) दगाबाज़। धोखेबाज़। प्रवञ्चक। छली। कपटी।

उपधूपित (वि०) १ सुवासित। बफारा दिया हुआ। २ मरणासन्न। ३ अत्यन्त पीडित।

उपधूपितः (पु०) मृत्यु।

उपधृतिः (स्त्री०) प्रकाश का एक किरण।

उपध्मानः (पु०) होठ। ओठ।

उपध्मानम् (न०) फूँक। सास।

उपनक्षत्रम् (न०) सहकारी नक्षत्र। गौण नक्षत्र। ऐसे नक्षत्रों की सख्या ७२९ कही जाती है।

उपनगरं (न०) नगर। प्रांत। उपपुर। नगर का बाहिरी भाग।

उपनत (व० कृ०) आगम। आया हुआ। प्राप्त। घटित हुआ। [प्रणाम करना।

उपनति (स्त्री०) १ समीप आगमन। २ झुकाव।

उपनयः (पु०) १ समीप लाना। जाकर लाना। २ प्राप्ति। उपलब्धि। लगन। ३ उपनयन संस्कार। ४ न्याय में वाक्य के चौथे अवयव का नाम।

उपनयनम् (न०) १ निकालना। पास ले जाना। २ भेंट करने की क्रिया। चढ़ावा। ३ यज्ञोपवीत धारण कराना। व्रतबंध। जनेऊ।

उपनागरिका (स्त्री०) अलङ्कार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद विशेष। इसमें कर्णमधुर वर्णों का प्रयोग किया जाता है।

उपनायकः (पु०) १ नाटकों में या किसी साहित्य ग्रन्थ में प्रधान नायक का साथी या सहकारी। [जैसे रामायण में लक्ष्मण।] २ आशिक। उपपति। प्रेमी।

उपनायिका (स्त्री०) नाटकों में प्रधान नायिका की सखी या सहेली। [जैसे मालतीमाधव में मदयन्तिका।—]

उपनाहः (पु०) १ बीटा। बंडल। २ घाव या फोड़े पर लगाने की मलहम या लेप। ३ सितार की खूंटी।

उपनाहनम् (न०) १ मलहम या लेप लगाने की क्रिया। २ प्लासटर लगाने की क्रिया।। उबटन करना।

उपनिक्षेपः (पु०) अमानत। धरोहर। [ऐसी धरोहर जिसकी संख्या, तौल आदि धरोहर रखने वाले को बतला कर दिखला दी जाय। मिताक्षराकार ने ऐसी धरोहर की यह परिभाषा दी हैः—

"उपनिक्षेपो नाम रूपसंख्याप्रदर्शनेन रक्षणार्थं परस्य हस्ते निहित द्रव्य"]

उपनिधानम् (न०) १ समीप रखना। २ धरोहर रखना। ३ धरोहर। अमानत।

उपनिधिः (पु०) सील मोहर लगा कर और बंद कर के रखी हुई अमानत। धरोहर। गिरवी रखी हुई वस्तु। बंधक रखी हुई द्रव्य।

उपनिपातः (पु०) १ समीप गमन। समीप आगमन। २ अचानक घटित घटना या आक्रमण।

उपनिपातिन् (वि०) आता हुआ। आगत।

उपनिबंधनम् (न०)१ किसी कार्य को सुसम्पन्न करने का साधन। २बधन। बस्ता। पुस्तक के ऊपर की ज़िल्द।

उपनिमंत्रणम् (न०) आमत्रण। प्रतिष्ठा। अभिषेक।

उपनिवेशित (वि०) स्थापित। दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

उपनिषद् (स्त्री०) १ वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अन्तिम भाग जिनमें आत्मा और परमात्मा आदि का वर्णन किया गया है। २ वेद के गुह्यार्थ प्रकाशक ग्रन्थ। ३ ब्रह्मविद्या। ब्रह्मसम्बन्धी सत्यज्ञान। ४ वेदान्त दर्शन। ५ रहस्य। एकान्त। ६ समीप या पड़ोस का भवन। ७ समीप उपवेशन। ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिये गुरु के निकट उपवेशन।

उपनिष्करः (पु०) गली। राजमार्ग। मुख्य मार्ग। प्रधान रास्ता।

उपनिष्क्रमणम् (न०) १ बाहिर निकलना। निकलना। २ संस्कार विशेष। सब से प्रथम नवजात बालक को बाहिर लाने के समय का संस्कार विशेष। यह संस्कार चौथे मास किया जाता है। ३ मुख्यमार्ग।

उपनृत्यं (न०) नृत्यशाला या नाचने की जगह।

उपनेतृ (वि०) पास लाने वाला। जाकर लाने वाला।

उपनेतृता (स्त्री०) उपनयन संस्कार कराने वाला आचार्य।

उपन्यासः (पु०) १ पास लाना। २ धरोहर। अमानत। बंधक। ३ प्रस्ताव। सूचना। विवरण। भूमिका। ग्रन्थपरिचय। हवाला। ४ नीतिवाक्य। आईन।

उपपतिः (पु०) जार। आशिक।

उपपत्तिः (स्त्री०) १ प्राप्ति। सिद्धि। प्रतिपादन। हेतु द्वारा किसी पदार्थ की स्थिति का निश्चय। २ घटना। चरितार्थ होना। ३ मेलमिलना। सङ्गति। ४ युक्ति। हेतु। ५ प्रमाण। उपपादन। ६ प्राप्ति। उपलब्धि।

उपपदम् (न०) १ पास या पीछे बोला गया या लगाया गया पद। २ उपाधि। शिक्षा सम्बन्धी योग्यता प्रदर्शक पदवी। प्रतिष्ठासूचक सम्बोधनवाची शब्द; जैसे 'आर्य" ! "शर्मन' !

उपपन्न (व० कृ०) १ लब्ध। प्राप्त। पाया हुआ। मिला हुआ। २ ठीक। योग्य। उपयुक्त। उचित। ३ युक्तियुक्त। यथार्थ। ४ पास आया हुआ। पहुँचा हुआ। ५ शरणागत।

उपपरीक्षा (स्त्री०) } जाँचपड़ताल। अनुसन्धान।
उपपरीक्षणम् (न०) }

उपपातः (पु०) १ दुर्त्तिफाकिया घटना। २ विपत्ति। सङ्कट। घटना।

उपपातकम् (न०) छोटा पाप। याज्ञवल्क्य स्मृति में लिखा है।

> महापातकतुल्यानि पापान्युक्तानि यानि तु।
> तानि पातकसंज्ञानि तन्न्यूनमुपपातकम्॥

उपपादनम् (न०) १ करना। पूरा करना। २ देना। सौंपना। हवाले करना। भेंट करना। ३ सिद्ध करना। साबित करना। ठहराना। युक्ति पूर्वक किसी विषय को समझाना। ४ परीक्षण। अवगति।

उपपार्श्वं (न०) } १ कंधा। बगल। तरफ। ३
उपपार्श्वः (पु०) } सामने की ओर या तरफ।

उपपीडनम् (न०) १ नष्ट करना। उजाड़ना। २ पीड़ित करना। घायल करना। ३ पीड़ा। कष्ट।

उपपुरम् (न०) नगर प्रान्त। नगर के समीप की बस्ती।

उपपुराणम् (न०) अठारह प्रधान पुराणों के अतिरिक्त अन्य छोटे पुराण। पुराणों के बाद बनाये गये पुराण। इनके नाम ये हैं—

१ सनत्कुमार। २ नारसिंह ३ नारदीय ४ शिव, ५ दुर्वासा, ६ कपिल, ७ मानव, ८ औशनस, ९ वरुण, १० कालिका ११ शाँब, १२ नन्दा, १३ सौर, १४ पराशर, १५ आदित्य, १६ माहेश्वर, १७ भार्गव, १८ वासिष्ठ।

उपपुष्पिका (स्त्री०) जमुहाई।

उपप्रदर्शनम् (न०) बतलाना। निर्देश करना।

उपप्रदानम् (न०) १ सौंपना। हवाले करना। २ रिशवत। घूँस। नज़र। ३ राजस्व। खिराज।

उपप्रलोभनम् (न०) १ फुसलाहट। लोभन। लालच। २ घूंस। रिशवत। प्रलोभन।

उपप्रेक्षणं (न०) उपेक्षा। तिरस्कार।

उपप्रैषः (पु०) निमंत्रण। बुलावा।

उपप्लवः (पु०) १ विपत्ति। सङ्कट। क्लेश। दुःख। २ अशुभ घटना। ३ अत्याचार। तंग करना। कष्ट देना। ४ भय। आतङ्क। ५ अशुभसूचक दैवी उपद्रव। ६ चन्द्र या सूर्य ग्रहण। उल्कापात। ७ राहु उपग्रह का नाम। ८ राज्यक्रान्ति। ९ विघ्न। बाधा। [से सताया हुआ।

उपप्लविन् (वि०) १ सन्तप्त। पीड़ित। २ अत्याचार

उपबन्धः (पु०) १ सम्बन्ध। २ उपसर्ग। ३ रति क्रिया का आसन विशेष।

उपबर्हः (पु०) } तकिया। बालिश।
उपबर्हणम् (न०) }

उपबहु (वि०) थोड़ा। कुछ।

उपबाहुः (पु०) नीचे की बाँह।

उपभङ्गः (पु०) भाग जाना। पीछे भागना।

उपभाषा (स्त्री०) गौण बोलचाल की भाषा।

उपभृत् (स्त्री०) यज्ञीय पात्र विशेष।

उपभोगः (पु०) १ आनन्द। भोजन। आस्वादन। २ भोग विलास। स्त्री के साथ सहवास। व्यवहार का सुख उठाने वाला। ४ सन्तोष। आल्हाद।

उपमंत्रणम् (न०) सम्बोधन करने, निमंत्रण देने और बुलाने की क्रिया।

उपमंथनी } (स्त्री०) आग उकसाने की एक लकड़ी
उपमन्थनी } विशेष।

उपमर्दः (पु०) १ रगड़। घिस्सन। निचोड़। कुचलन। २नाश। वध। हत्या। ३ धिक्कार। भर्त्सना। गाली। तिरस्कार युक्त वाक्य। ४ भुसी अलगाना। ५ किसी लगाये हुए दोष का प्रतिवाद या खण्डन।

उपमा (स्त्री०) १ समानता। सादृश्य। तुलना। २ पटतर। मिलान। ३ अर्थालङ्कार जिसमें दो वस्तुओं में भेद रहते भी उनकी समानता दिखलाई जाती है।

उपमातृ (स्त्री०) १ धाय। दूधपिलाने वाली दाई। २ बिलकुल निकट का सम्बन्ध रखने वाली स्त्री।

उपमानम् (न०) १ वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय। समानता सूचक। २ न्याय में चार प्रमाणों में से एक।

उपमितिः (स्त्री०) १ समानता। तुलना। सादृश्य। २ उपमा या सादृश्य से होने वाला ज्ञान।

उपमेय (स० का० कृ०) वर्ण्य। वर्णनीय। तुलना करने योग्य। [जाय।

उपमेयं (न०) उपमा के योग्य। जिसकी उपमा दी

उपयंत्र (पु०) पति।

उपयंत्रम् (न०) जर्राही कर्म का एक छोटा औज़ार।

उपयमः (पु०) विवाह। परिणय।

उपयमनम् (न०) १ विवाह करना। २ रोकना। संयम करना। ३ अग्निस्थापन। [एक।

उपयष्टृ (पु०) १६ यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों में से

उपयाचक (वि०) माँगने वाला। मँगता। प्रार्थी। आवेदक

उपयाचनम् (न०) याचना। प्रार्थना। आवेदन।

उपयाचित (व० कृ०) याचित। प्रार्थित।

उपयाचितम् (न०) १ प्रार्थना। निवेदन। २ मनौती। मानता। ३ किसी कार्य की सिद्धी के लिये देवी देवता से प्रार्थना करना।

उपयाजः (पु०) यज्ञ का अतिरिक्त विधान।

उपयानम् (न०) समीप आगमन। समीप आना।

उपयुक्त (व० कृ०) १ अटका हुआ। २ योग्य। ठीक। उपयुक्त। उचित। ३ उपयोगी। काम का।

उपयोगः (पु०) १ काम। व्यवहार। इस्तेमाल। प्रयोग। २ औषधोपचार या दवाइयों का बनाना। ३ योग्यता। उपयुक्तता। औचित्य। ४ सामीप्य।

उपयोगिन् (वि०) व्यवहार में लाया हुआ। २ व्यवहार में लाने योग्य। उपयोगी। ३ योग्य। उचित।

उपरक्त (व० कृ०) १ पीड़ित। सन्तप्त। २ ग्रस्त। ३ रंगीन। रंगा हुआ।

उपरक्तः (पु०) राहु-केतु-ग्रस्त चन्द्र सूर्य।

उपरक्षः (पु०) शरीररक्षक।

उपरक्षणम् (न०) रक्षक। चौकी।

उपरत (व० कृ०) १ बंद किया हुआ। २ मरा हुआ। —कर्मन्, (वि०) सांसारिक कर्मों पर भरोसा न करने वाला। —स्पृह (वि०) समस्त कामनाओं से शून्य। संसार से विरुद्ध।

उपरतिः (स्त्री०) १ विरति। त्याग। विषय से विराग। २ स्त्रीसम्भोग से अरुचि। ४ उदासीनता। ५ मृत्यु।

उपरत्नं (न०) साधारणरत्न। अश्रेष्ठरत्न। घटियारत्न।

उपरमः } (पु०) १ निवृत्ति। वैराग्य। त्याग। ३
उपरामः } मृत्यु। [विराम।

उपरमणम् (न०) १ स्त्रीसम्भोग से विरति। २

उपरसः (पु०) १ वैद्यक में पारे के समान गुण करने वाले रस। २ स्वाद-विशेष। गौण स्वाद।

उपरागः (पु०) १ सूर्य चन्द्र का ग्रहण। २ राहु। ३ ललाई। लाल रंग। रंग। ४ विपत्ति। सङ्कट। ५ धिक्कार। भर्त्सना। कुवाच्य।

उपराजः (पु०) राजप्रतिनिधि। वाइसराय।

उपरि (अव्य०) ऊपर। —चर, (वि०) ऊपर चलने वाला (जैसे पक्षी।)—तन,—स्थ, (वि०) ऊपर का, ऊँचा।—भाग', (पु०) ऊपरी हिस्सा ऊपर की ओर। —भूमिः, (स्त्री०) ऊपर की ज़मीन।

उपरिष्टात् (अव्यय०) ऊपर। ऊँचे पर। आगे। बाद को। पीछे से। पीछे।

उपरीतकः (पु०) रतिक्रिया का आसन या विधि विशेष। [प्रकार का नाटक।

उपरूपकम् (न०) अठारह प्रकार के नाटकों में घटिया

उपरोधः (पु०) १ रोकटोक । बाधा । अड़चन। २ उत्पात । हौहल्ला । आफत । ३ आड़। पर्दा। रोक । ४ रक्षा । अनुग्रह ।

उपरोधक (वि०) १ रोकने वाला । २ ढकने वाला। आड़ करने वाला । घेरने वाला ।

उपरोधकम् (न०) भीतर का कोठा। निज का कमरा।

उपरोधनम् (न०) रोकटोक। बाधा । अड़चन।

उपलः (पु०) १ पत्थर । चट्टान। २ रत्न ।

उपलकः (पु०) पत्थर ।

उपला (स्त्री०) १ बालू । रेत । २ साफ की हुई चीनी।

उपलक्षणम् (न०)१ अवलोकन । निहारण । चिन्ह करण । २ चिन्ह । पहचान। विशिष्टता । ३ पदवी । ४ एक प्रकार की अजहत्स्वार्थ लक्षणा।

उपलब्धि (स्त्री०) १ प्राप्ति। २ आलोचन। बोध। ज्ञान। बुद्धि । मति । ४ अनुमान । कल्पना ।

उपलंभः } (पु०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २
उपलम्भः } पहचान । अवगति । खोज । तलाश।

उपलालनम् (न०) प्रियपात्र । लाड़ला । दुलारा ।

उपलालिका (स्त्री०) प्यास । तृषा ।

उपलिङ्गम् (न०) दुर्निमित्त । अशकुन ।

उपलिप्सा (स्त्री०) कामना । अभिलाषा ।

उपलेपः (पु०) १ लेप । मालिश । उबटन । २ लीपना। पोतना । ३ रोक । सुन्न पड़ जाना ।

उपलेपनम् (न०) १ मालिश, लेप या उबटन करने की क्रिया । २ लेप । उबटन। मलहम ।

उपवनं (न०) बाग़ । उद्यान ।

उपवर्णः (पु०) विस्तृत विवरण ।

उपवर्णनं (न०) विस्तृत विवरण ।

उपवर्तनम् (न०) १ अखाड़ा। कसरत करने का स्थान । २ ज़िला या परगना । ३ राज्य। ४ दलदल ।

उपवसथः (पु०) ग्राम । गाँव।

उपवस्तम् (न०) उपवास । कड़ाका । व्रत ।

उपवासः (पु०) १ व्रत । उपोषण । निराहार रहना । २ यज्ञीय अग्नि का प्रज्वलित करना ।

उपवाहनम् (न०) ले जाना । समीप लाना ।

उपवाह्यः (पु०) } राजा की सवारी ।
उपवाह्या (स्त्री०) }

उपविद्या (स्त्री०) लौकिक विद्या। घटिया ज्ञान ।

उपविषः (पु०) } १ बनावटी ज़हर । २ घटिया ज़हर ।
उपविषम्(न०) } मादक विष; यथा अफ़ीम। धतूरा।

उपवीणयति (क्रि०) वीणा बजाना ।

उपवीतं (न०) उपनयन संस्कार ।

उपबृंहणम् (न०) बढ़ती । वृद्धि । सञ्चय ।

उपवेदः (पु०) वे विद्याएँ जिनका मूल वेद में है । ये चार हैं। यथा धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद, स्थापत्य । धनुर्वेद विद्या का मूल यजुर्वेद में, गन्धर्व विद्या का सामवेद में, आयुर्वेद विद्या का ऋग्वेद में और स्थापत्य विद्या का अथर्ववेद में है ।

उपवेशः } (न०) बैठना । जमना । स्थित
उपवेशनम् } होना ।

उपवैणवं (न०) दिन के तीन काल, प्रातः, मध्यान्ह और सायं । त्रिसन्ध्या ।

उपव्याख्यानम् (न०) पीछे से लगायी या जोड़ी हुई व्याख्या या टीका ।

उपव्याघ्रः (पु०) चीता ।

उपशमः (पु०) १ निस्तब्ध हो जाना। शान्त हो जाना । २ विराम । अवसान । ३ निवृत्ति। इन्द्रियनिग्रह । शान्ति । ४ निवारण का उपाय। इलाज । चारा ।

उपशमनम् (न०)१ निस्तब्धता । शान्ति । विरति। २ ह्रास । ३ विलोप । अवसान ।

उपशयः (वि०) १ दाव । घात । माँद । बनैले पशुओं के रहने का स्थान । २ बगल में लेटना ।

उपशल्यं (न०) प्रान्त । मैदान ।

उपशाखा (स्त्री०) छोटी डाली या छोटी शाख ।

उपशान्तिः (स्त्री०) १ विराम । अन्त । शान्ति । ह्रास । २ बुझाना । (जैसे भूख को या प्यास को) कम करना ।

उपशायः (पु०) बारी बारी से सोना ।

उपशालं (न०) भवन के पास का छोटा घर । मकान के सामने का घेरा या हाता । (अव्य०) घर के समीप या पास ।

उपशास्त्रं (न०) छोटी पुस्तक या कोई छोटी कला ।

उपशिक्षा (स्त्री०) } अध्ययन । अध्यापन । पढ़ना ।
उपशिक्षणम् (न०) } पढ़ाना ।
उपशिष्यः (पु०) शागिर्द का शागिर्द ।
उपशोभनम् (न०) } शृङ्गार । सजावट ।
उपशोभा(स्त्री०) }
उपशोषणम् (न०) सूख जाना । मुरझा जाना ।
उपश्रुतिः (स्त्री०) १ सुनना । श्रवण करना । वह दूरी जहाँ सुन पड़े । २ प्रतिज्ञा । स्वीकृति ।
उपश्लेष (पु०) } १ संसर्ग । २ आलिङ्गन ।
उपश्लेषणम्(न०) }
उपश्लोकयति (क्रि०) श्लोक बना कर प्रशंसा करना ।
उपसंयमः (पु०) १ दमन करना । रोकना । वशवर्त्ती करना । बांधना । २ प्रलय । संसार का नाश ।
उपसंयोगः (पु०) १ गौण सम्बन्ध । २ सुधार ।
उपसंरोहः (पु०) साथ साथ उगना या किसी के ऊपर उगना ।
उपसंवादः (पु०) इकरारनामा । प्रतिज्ञापत्र ।
उपसंव्यानम् (न०) भीतर अर्थात् कपड़े के भीतर पहिना जाने वाला कपड़ा ।-कुर्त्ता, बनियाइन आदि ।
उपसंहरणम् (न०) १ वापिस ले लेना । फेर लेना । छीन लेना । २ रोक रखना । ३ छेक देना । ४ आक्रमण करना । हम्ला करना ।
उपसंहारः (पु०) १ मिला देना । संयोग कर देना २ वापिस लेना या रोक रखना । ३ समारोह । संग्रह । समाप्त करना । खतम करना । समाप्ति । ४ भाषण का अन्तिम भाग जिसमें व्याख्यानदाता अपने व्याख्यान का प्रभाव सहित संक्षेप वर्णन करता है । ५ सारांश । सारसंग्रह । ६ संक्षिप्तता ७ पूर्णता । ८ नाश । मृत्यु । ९ हम्ला । आक्रमण ।
उपसंक्षेपः (पु०) सार । संक्षेप । सारांश ।
उपसंख्यानम् (न०) १जोड़ । जमा । २अतिरिक्त योग या वृद्धि । यह शब्द प्रायः कात्यायन के वार्तिक के लिये प्रयुक्त होता है, जिसमें पाणिनी की छूटों की पूर्ति की गई है ।

उपसंग्रहः (पु०) } १ आनन्दित रखना । निर्वाह
उपसंग्रहणम् (न०) } करना । किसी को खाने पीने आदि की आवश्यकताओं का प्रबन्ध कर देना । २ प्रणाम । बाअदब सलाम । प्रणाम के लिए चरणस्पर्श । ३ अंगीकार करण । ४ विनम्र आवेदन । विनय । ५ एकत्र करण । जमा करना । संयोग करना । मिलाना । ६ ग्रहण करना । उपकरण ।
उपसत्तिः (स्त्री०) १ संयोग । सम्बन्ध । २ सेवा । पूजा । परिचर्या । ३ दान । चढ़ावा । भेंट ।
उपसदः (पु०) १ समीप गमन । २ दान । भेंट ।
उपसदनम् (न०) १ समीप जाना । समीपवर्त्ती होना । २ गुरु के चरणों में बैठना । शिष्य बनना २ पड़ोस । सेवा ।
उपसंतानः (पु०) } १ निकट सम्बन्ध । २ सन्तान ।
उपसन्तानः(पु०) }
उपसंधानम् (न०) } मिलावट । जोड़ ।
उपसन्धानम् (न०) } [देना ।
उपसंन्यासः (पु०) रख देना । त्याग देना । छोड़
उपसमाधानम् (न०) जमा करना । ढेर करना ।
उपसंपत्तिः (स्त्री०) } १ समीप आगमन । २ शर्त्त
उपसम्पत्तिः (स्त्री०) } करना । ठहराव ठहराना ।
उपसंपन्न: (पु०) } १ प्राप्त । २ आया हुआ ।
उपसम्पन्नः (व० कृ०) } आगत । ३ स्वत्व प्राप्त । ४ बलि में मारा हुआ (पशु) ।
उपसंपन्नम् (न०) } मसाला । छौंक । बघार ।
उपसम्पन्नम् (न०) }
उपसंभाषः (पु०) }
उपसम्भाषः (पु०) } १ वार्त्तालाप । २ अरोचना ।
उपसंभाषा(स्त्री०) } प्रवर्त्तना ।
उपसम्भाषा (स्त्री०) }
उपसरः (पु०) १ समीप जाना । २ गौ का प्रथम गर्भ । 'गवामुपसरः ।" [होना ।
उपसरणम् (न०) १ तरफ जाना । २ शरणागत
उपसर्गः (पु०) १ बीमारी । रोग । बीमारी के कारण शारीरिक परिवर्तन । २ विपत्ति । संकट । चोट । क्षति । ३ अशकुन । उपद्रव । दैवी उत्पात । ग्रहण । ४ मृत्यु का पूर्व लक्षण । वह शब्द या अव्यय जो केवल किसी शब्द के पूर्व

लगता है और उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है। जैसे अनु, उप, अन आदि।

उपसर्जनम् (न०) १ उड़ेलना। २ विपत्ति। दैवी उत्पात। ३ विसर्जन। ४ ग्रहण। ५ कोई व्यक्ति या वस्तु जो दूसरे के अधीन हो।

उपसर्पः (पु०) समीप जाना।

उपसर्पणम् (न०) समीप जाना। आगे बढ़ना।

उपसर्या (स्त्री०) सांड़ के योग्य गाय। [एक असुर।

उपसुन्दः (पु०) निकुम्भ का पुत्र और सुन्द का भाई

उपसूर्यकम् (न०) सूर्यमण्डल।

उपसृष्ट (व० कृ०) १ मिला हुआ। जुड़ा हुआ। सहित। २ आवेशित। ३ सन्तप्त। पीड़ित। ४ ग्रस्त। ५ उपसर्ग से युक्त।

उपसृष्टः (पु०) राहु केतु ग्रसित सूर्य या चन्द्र।

उपसृष्टम् (न०) स्त्रीमैथुन। स्त्रीसम्भोग।

उपसेचनम् (न०) } १ उड़ेलना। छिड़कना। पानी
उपसेकः (पु०) } से तर करना। २ गीली चीज़। रस।

उपसेचनी (स्त्री०) कटोरा। चमची। कलछी।

उपसेवनम् (न०) } १ पूजन। अर्चा। शृङ्गार। २ सेवा
उपसेवा (स्त्री०) } (किसी वस्तु का) आदी होना। अभ्यस्त होना। ४ वर्तना। इस्तेमाल करना। उपभोग करना (स्त्री का)।

उपस्करः (पु०) १ अंग अर्थात् जिसके विना कोई वस्तु अधूरी रहे। २ मसाला। ३ सामान। असबाब। उपकरण। ४ गृहस्थी के लिए उपयोगी सामान जैसे बुहारी, सूप, चलनी आदि। ५ आभूषण। ६ कलङ्क। दोष। भर्त्सना।

उपस्करणम् (न०) १ वध। हत्या। चोटिल करना। २ संग्रह। ३ परिवर्तन। संशोधन। ४ छूट। त्रुटि। ५ कलंक। दोष।

उपस्कारः (पु०) १ परिशिष्ट। २ न्यूनता पूरक। ३ सौन्दर्यवान बनाना। सजावट। ४ आभूषण। ५ आघात। प्रहार। ६ संग्रह।

उपस्कृत (व० कृ०) १ तैयार किया हुआ। बनाया हुआ। २ संग्रहीत। ३ सौन्दर्यवान बनाया हुआ। सजाया हुआ। भूषित किया हुआ। ४ न्यूनता की पूर्ति किया हुआ। ५ संशोधित किया हुआ।

उपस्कृतिः (स्त्री०) परिशिष्ट।

उपस्तम्भः (पु०) } १ सहारा। २ उत्साह।
उपस्तम्भनम् (न०) } उत्तेजना। सहायता। ३ आधार।

उपस्तरणम् (न०) १ फैलाना। बिखेरना। २ चादर। ३ बिछौना। शय्या। ४ कोई वस्तु जो बिछायी जाय।

उपस्त्री (स्त्री०) रंडी।

उपस्थः (पु०) १ गोद। २ मध्यभाग।

उपस्थम् (न०) १ स्त्री की योनि। २ पुरुष का लिङ्ग। ३ कूल्हा।—निग्रहः, (पु०) इन्द्रियनिग्रह। संयम।—पत्रः,—दलः (पु०) पीपल का वृक्ष।

उपस्थानम् (न०) १ निकट आना। सामने आना। २ अभ्यर्थना या पूजा के लिये निकट आना। ३ रहने की जगह। डेरा। वासा। ४ तीर्थ या देवालय। ५ स्मृति। याददाश्त।

उपस्थापनम् (न०) १ पास रखना। तत्पर होना। तैयार होना। २ स्मृति को नया करना। याददाश्त का ताज़ा करना। ३ परिचर्या। सेवा।

उपस्थायकः (पु०) सेवक।

उपस्थितिः (स्त्री०) १ निकटता। २ विद्यमानता। ३ प्राप्त करना। पाना। ४ पूरा करना। कार्यान्वित करना। ५ स्मृति। याददाश्त। ६ परिचर्या। सेवा।

उपस्नेहः (पु०) नम करना। तर करना।

उपस्पर्शः (पु०) } १ स्पर्श करना। छूना। संसर्ग
उपस्पर्शनम् (न०) } होना। २ स्नान। प्रक्षालन। मार्जन। ३ कुल्ला करना। मुंह साफ करना। आचमन करना।

उपस्मृतिः (स्त्री०) धर्मशास्त्र के छोटे ग्रन्थ। इनकी संख्या १८ है।

उपस्रवणम् (न०) १ रजस्वला धर्म। २ बहाव।

उपस्वत्वं (न०) राजस्व। लाभ, जो भूमि की आय से अथवा पूँजी से होता है।

उपस्वेदः (पु०) तरी पसीना।

उपहत (व० कृ०) १ आहत। निर्बल। पीड़ित। २ प्रभावान्वित किया हुआ। पीटा हुआ। हराया

हुआ। ३ अवश्य नष्ट होने वाला। ४ धिक्कारित। ५ विगाड़ा हुआ। अपवित्र किया हुआ।—आत्मन्, (वि०) उद्विग्न चित्त।—दृश, (वि०) चौधियाया हुआ। अंधा।—धी, (वि०) मूढ़।

उपहतक (वि०) अभागा। बदकिस्मत।

उपहति (स्त्री०) १ प्रहार। चोट। २ वध। हत्या।

उपहत्या (स्त्री०) आँखों का चौधियाना।

उपहरणम् (न०) १ लाना। जाकर लाना। २ ग्रहण करना। पकड़ना। ३ नज़र करना। भेंट देना। ४ बलिपशु चढ़ाना। ५ भोजन परोसना या बांटना।

उपहसित (व० कृ०) चिढ़ाया हुआ। मज़ाक उड़ाया हुआ।

उपहसितं (न०) कटाक्ष युक्त हँसी। [रहता है।

उपहस्तिका (स्त्री०) बटुआ जिसमें पान का सामान

उपहारः (पु०) १ भेंट। चढ़ाव। २ दान। पुरस्कार। ३ बलिपशु। यज्ञ। किसी देवता का चढ़ावा। ४ नज़राना। दक्षिणा। ५ सम्मान। ६ लड़ाई का हर्जाना। ७ महमानों को बाँटा हुआ भोजन।

उपहालकः (पु०) कुन्तल देश का नाम।

उपहासः (पु०) १ हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। २ निन्दा। बुराई।

उपहास-पात्रम् (न०) } हँसी उड़ाने लायक।
उपहासास्पदम् (न०) } निन्दनीय।

उपहासक (वि०) दूसरों की दिल्लगी उड़ाने वाला।

उपहासक (पु०) मसख़रा।

उपहास्य (स० का० कृ०) हँसने योग्य।

उपहित (वि०) स्थापित। रखा हुआ।

उपहूति (स्त्री०) आह्वान। बुलौआ। बोला।

उपह्वरः (पु०) १ एकान्त स्थल। २ उतार। [करना।

उपह्वानम् (न०) बुलाना। न्योतना। मंत्रों से आह्वान

उपांशु (अव्यया०) १ कानाफूंसी। मन्दस्वर से धीमी आवाज से। २ चुपके चुपके।

उपांशुः (पु०) मंत्र जपने की विधि विशेष। ऐसे जपना जिससे अन्य कोई जाप्य मंत्र को सुन न सके।

उपाकरणम् (न०) १ योजना। उपक्रम। तैयारी। अनुष्ठान। २ यज्ञ में वेदपाठ। ३ यज्ञीय पशु का संस्कार विशेष।

उपाकर्मन् (न०) १ तैयारी। आरम्भ। प्रारम्भ। २ श्रावणी कर्म।

उपाकृत (व० कृ०) १ समीप लाया हुआ। २ बलिदान किया हुआ। ३ आरम्भ किया हुआ।

उपाक्षं (अव्यया०) नेत्रों के सामने। विद्यमानता में।

उपाख्यानम् (न०) } १ पुरानी कथा। पुराना
उपाख्यानकम् (न०) } वृत्तान्त। २ किसी कथा के अन्तर्गत कोई अन्य कथा।

उपागमः (पु०) १ समीप आगमन। पहुँचना। २ घटित होना। ३ प्रतिज्ञा। इकरार। ४ स्वीकृति।

उपाग्रम् (न०) १ छोर के पास का भाग। २ गौण अवयव। [पीछे वेदाध्ययन करना।

उपाग्रहणम् (न०) वेदाध्ययन का अधिकारी हुए

उपांगम् } (न०) १ अन्तर्गत भाग। अंग का
उपाङ्गम् } भाग। अवयव। २ त्रुटिपूरक का पूरक। मुख्य का साहाय्य।

उपाचारः (पु०) १ स्थान। २ पद्धति।

उपाजे (अव्यया०) यह केवल कृ धातु के साथ ही व्यवहृत होता है। सहारे। सहारे से।

उपांजनं } (न०) तेल मलना। लीपना।
उपाञ्जनम् }

उपात्ययः (पु०) आज्ञा उल्लङ्घन। मर्यादा भङ्ग करना।

उपादानं १ (न०) ग्रहण करना। लेना। प्राप्त करना। २ वर्णन करना। बखान करना। ३ सम्मिलित करना। शामिल करना। ४ सांसारिक पदार्थों से इन्द्रियों को हटाना। ५ कारण। हेतु। ६ वे पदार्थ जिनसे कोई वस्तु बनी हो। ७ सांख्य की चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक।

उपाधिः (पु०) १ धोखा। जाल। चालाकी। २ भ्रम। कपट। ३ वह जिसके संयोग से कोई पदार्थ और का और दिखलाई पड़े। ४ विशेषता ५ प्रतिष्ठासूचक पद। पदवी। बिगाड़ा हुआ नाम। ६ परिस्थिति। ६ वह पुरुष जो अपने कुटुम्ब के भरणपोषण में सावधान रहता है। ७ धर्मचिन्ता। कर्त्तव्य का विचार। ८ उत्पात। उपद्रव।

उपाधिक (वि०) अत्यधिक। नियमित संख्या से अधिक। वेशी। अतिरिक्त।

उपाध्यायः (पु०) १ अध्यापक । शिक्षक । गुरु । २ वेदवेदाङ्ग का पढ़ाने वाला ।

उपाध्याया } (स्त्री०) पढानेवाली अध्यापिका ।
उपाध्यायी } (स्त्री०) गुरुपत्नी । अध्यापिका ।

उपाध्यायानी (स्त्री०) गुरु की पत्नी ।

उपानह् (स्त्री०) जूता । खडाऊ ।

उपांतः } (पु०) १ किनारा । बाढ। धार । हाशिया ।
उपान्तः } प्रांत । सिरा । ३ आँख की कोर । ३ पड़ोस । सन्निकट । ४ नितम्ब ।

उपांतिक } (वि०) समीपवर्त्ती । पड़ोस का ।
उपान्तिक }

उपांतिकं } (न०) पडोस । पास । समीप ।
उपान्तिकम् }

उपांत्य } (वि०) अन्तिम के पूर्व का एक ।
उपान्त्य }

उपांत्यः } (पु०) आँख की कोर ।
उपान्त्यः }

उपांत्यं } (न०) पड़ोस । समीप । निकट ।
उपान्त्यम् }

उपायः (पु०) १ साधना । युक्ति । तदबीर । साधन । युद्ध में शत्रु को धोखा देना । २ आरम्भ । प्रारम्भ । उपक्रम । ३ उद्योग । प्रयत्न । ४ शत्रु को परास्त करने की युक्ति । यथा साम, दान, भेद, दण्ड । ५ उपागम । ६ शृङ्गार के दो साधन । —चतुष्टयम्, (न०) शत्रु को वस में करने के चार उपाय । साम, दान, भेद, दण्ड । चतुष्टयज्ञ, (वि०) इन चार साधनों का जानकार या इन साधनों का व्यवहार करने में चतुर —तुरीयः, (पु०) चौथा उपाय अर्थात् दण्ड ।

उपायनम् (न०) १ समीपगमन । २ शिष्य बनना । धर्मानुष्ठान में लगना । ३ भेंट । चढ़ावा ।

उपारंभः } (पु०) आरम्भ । प्रारम्भ ।
उपारम्भः }

उपार्जनम् (न०) } प्राप्ति । उपलब्धि । कमाई ।
उपार्जना (स्त्री०) }

उपार्घ (वि०) कम मूल्य का । घटिया ।

उपालंभः (पु०) } १ ओलहना । शिकायत ।
उपालम्भः (पु०) } निन्दा । २ विलम्ब करना ।
उपालंभम् (न०) } मुलतवी करना । स्थगित
उपालम्भम् (न०) } करना ।

उपावर्तनम् (न०) १ लौट आना । लौट जाना । वापिस आना या जाना । २ चक्कर खाना । घूमना । ३ समीप आना ।

उपाश्रयः (पु०) १ सहायता प्राप्त करने का वसीला । आधार । सहारा । पानेवाला पात्र । ३ निर्भरता । [भक्त । अनुयायी । ३ शूद्र ।

उपासकः (पु०) १ उपासना करने वाला । २ सेवक ।

उपासनम् (न०) } १ सेवा । परिचर्या । सेवा
उपासना (स्त्री०) } में उपस्थित रहना । २ पूजन । सम्मान । ३ तीरन्दाज़ी का अभ्यास । ४ ध्यान । ५ गार्हपत्याग्नि । [३ ध्यान ।

उपासा (स्त्री०) १ सेवा । परिचर्या । २ पूजन ।

उपास्तमनम् (न०) सूर्यास्त ।

उपास्तिः (स्त्री०) १ चाकरी । सेवा में उपस्थित रहना । २ पूजन । अर्चन ।

उपास्त्रं (न०) गौण अस्त्र । छोटा हथियार ।

उपाहारः (पु०) हल्का जलपान ।

उपाहित (व० कृ०) १ स्थापित । जमा कराया हुआ । २ सम्बन्धयुक्त । संयोजित । [हुआ सर्वनाश ।

उपाहितः (पु०) अग्निभय या अग्नि का किया

उपेक्षा (स्त्री०) १ लापरवाही । उदासीनता । २ विरक्ति । चित्त का हटना । २ घृणा । तिरस्कार ।

उपेत (व० कृ०) १ समीप आना । २ उपस्थित । ३ युक्त । सम्पन्न । [का छोटा भाई ।

उपेन्द्रः (पु०) वामन या विष्णु भगवान । इन्द्र

उपेय (स० का० कृ०) १ समीप जाने को । २ पाने को । किसी उपाय से होने को ।

उपोढ (व० कृ०) १ संग्रह किया हुआ । जमा किया हुआ । राशीकृत । २ समीप लाया हुआ । समीप । ३ युद्ध के लिये क्रमबद्ध किया हुआ । ४ विवाहित ।

उपोत्तम (वि०) अन्तिम से पूर्व का एक ।

उपोद्घातः (पु०) १ आरम्भ । २ भूमिका । दीबाचा । ३ उदाहरण । किसी के कथन के विपरीत युक्ति । ४ अवसर । माध्यम । द्वारा । ज़रिया । ५ पृथक्करण ।

उपोद्बलक (वि०) समर्थित । दृढ़ीकृत ।

—

उपोषणम्
उपोषितम् } (न०) उपवास । व्रत । फांका । कड़ाका ।

उप्तिः (स्त्री०) बीज बोना ।

उब्ज् (धा० पर०) [उब्जति, उब्जित] १ दबाना । वश में करना । २ सीधा करना ।

उभ्
उंभ् } (धा० पर०) [उभति, उंभति, उभ्नाति, उंभित] १ कैद करना । २दो को मिलाना । ३ परिपूर्ण करना । ४ ढांकना ।

उभ (सर्वनाम) (वि०) दोनों ।

उभय (सर्वनाम) (वि०) दोनों ।—चर (वि०) जल थल में रहने वाला ।—विद्या, (स्त्री०) आध्यात्मिक ज्ञान और लौकिक ज्ञान ।—वेतन, (वि०) दोनों ओर से वेतन पाने वाला । दगाबाज ।—व्यञ्जन, (वि०) स्त्री और पुरुष दोनों के चिन्ह रखने वाला ।—संभवः,—सम्भवः, (पु०) दुविधा । भ्रम ।

उभयतः (अव्यया०) १ दोनों ओर से । दोनों ओर । २ दोनों दशाओं में । ३ दोनों प्रकार से ।—दत,—दन्त, (वि०) दाँतों की दुहरी पंक्तियों वाला ।—मुख, (वि०) दोनों ओर देखने वाला । दुमुँहा ।—मुखी, (स्त्री०) गौ ।

उभयत्र (अव्यया०) १ दोनों जगह । २ दोनों तरफ । ३ दोनो दशाओं में ।

उभयथा (अव्यया०) १ दोनों प्रकार से । २ दोनों दशाओं में ।

उभयद्युस्
उभयेद्युस् } (अव्यया०) १ दोनों दिवस । २ दोनों पिछले दिनों ।

उभ् (अव्यया०) क्रोध, प्रश्न, प्रतिज्ञा, स्वीकारोक्ति, सचाई व्यञ्जक अव्यय विशेष ।

उमा (स्त्री०) १ शिव जी की पत्नी, जो हिमालय की पुत्री थीं । २ कान्ति । सौन्दर्य । ३ यश । कीर्ति । ४ निस्तब्धता । शान्ति । ५रात्रि । ६ हल्दी । ७ सन ।—गुरुः, (पु०) —जनकः, (पु०) हिमालय पर्वत । —पतिः, (पु०) शिव जी ।—सुतः, (पु०) कार्तिकेय या गणेश जी ।

उंवरः
उम्बरः
उंबुरः
उम्बुरः } (पु०) चौखट की ऊपर वाली लकड़ी ।

उरः (पु०) भेड़ ।

उरगः [स्त्री० —उरगी] १ साँप । सर्प । २ नाग । ३ सीसा ।—अशनः,—शत्रुः, (पु०) १ साँप का शत्रु । २ गरुड़ । ३ मोर । ४ न्योला । —इन्द्रः, (पु०) —राजः, (पु०) वासुकी या शेष जी का नाम । —प्रतिसर, (वि०) परिणयाङ्गुलीयक के लिये सर्प रखने वाला ।—भूषणः, (पु०) शिव जी का नाम । —सारचन्दनः, (पु०)—सारचन्दनम्, (न०) एक प्रकार के चन्दन का काष्ठ ।—स्थानं, (पु०) पाताल, जहाँ सर्प रहते हैं ।

उरंग
उरङ्गः
उरंगमः
उरङ्गमः } (पु०) सर्प । साँप ।

उरगा (स्त्री०) एक नगरी का नाम ।

उरणः (पु०) [स्त्री० —उरणी,] १ मेढ़ा । मेष । भेड़ । २ एक दैत्य, जिसे इन्द्र ने मारा था ।

उरणकः (पु०) १ मेष । २ बादल ।

उरणी (स्त्री०) भेड़ी । मेषी ।

उरभ्रः (पु०) भेड़ । मेष ।

उररी (अव्यया०) स्वीकारोक्ति, प्रवेश और सम्मति व्यञ्जक अव्यय ।

उरस् (पु०) (उरः) छाती । वक्षस्थल । —क्षतं, (न०) छाती का घाव । —ग्रहः,—घातः, (पु०) फेफड़े का रोग । —छदः,—त्राणं, (न०) छाती के रक्षा के लिये वर्म विशेष । —जः, —भूः,— उरसिजः,—उरसिरुहः, (पु०) स्त्रियों की छाती । —सूत्रिका, (स्त्री०) मोती का हार जो वक्षस्थल पर पड़ा हो । —स्थलं, (न०) छाती । वक्षस्थल

उरस्य (वि०) १ औरस सन्तान (पुत्र या कन्या) । २ वक्षस्थल का । ३ सर्वोत्कृष्ट ।

उरस्य (पु०) पुत्र ।

उरस्वत्
उरसिल } (वि०) चौड़ी छाती वाला ।

उरी (अव्यया०) देखो उररी ।

उरु (वि०) [स्त्री० उरु और उर्वी] १ ओंडा । लंबा चौड़ा । प्रशस्त । २ बड़ा । लंबा । अधिक । अत्यधिक । विपुल । ४ बहुमूल्यवान ।

बेशकीमती ।—कीर्ति, (वि०) प्रसिद्ध । सुपरिचित ।—क्रम, (पु०) विष्णु भगवान की उपाधि (वामनावतार की) —गाय, (वि०) महान लोगों से प्रशंसित ।—मार्गः, (पु०) लंबा मार्ग ।—विक्रम, (वि०) पराक्रमी । बलवान ।—स्वन, (वि०) अतिउच्च रव । गम्भीर रव । तार स्वर ।—हारः, (पु०) मूल्यवान हार ।

उर्णनाभः (पु०) मकड़ी ।

उर्णा (स्त्री०) १ ऊन । नमदा । २ दोनों भौंवों के बीच का केशमण्डल । देखो "ऊर्णा" ।

उर्वटः (पु०) १ बछड़ा । २ वर्ष । [भूमि ।

उर्वरा (स्त्री०) १ उपजाऊ भूमि । २ (सामन्यतः)

उर्वशी (स्त्री०) १ विपम वासना । उत्कट अभिलाषा । २ स्वर्गवासिनी इन्द्र की एक प्रसिद्ध अप्सरा । —रमणः,—सहायः,—वल्लभः, (पु०)पुरूरवा का नाम ।

उर्वारुः (पु०) १ एक प्रकार की ककड़ी । २ खरबूज़ा ।

उर्वी (स्त्री०) १ भूमि । २ पृथिवी । ३ मैदान । —ईशः,ईश्वरः,—पतिः,—धवः, (पु०) राजा । —धरः, (पु०) १ पर्वत । २ शेषनाग ।—भृत्, (पु०) १ राजा । २ पहाड़ ।—रुहः, (पु०) वृक्ष । पेड़ ।

उलपः (पु०) १ बेल । लता । २ कोमल तृण ।

उलूकः (पु०) १ उल्लू । घुघू । २ इन्द्र का नाम ।

उलूखलं (न०) उखरी ।

उलूखलकम् (न०) खल । इमामदस्ता ।

उलूखलिक (वि०) खल में कूटा हुआ ।

उलूतः (पु०) अजगर सर्प ।

उलूपी (स्त्री०) नागराज एक कुमारी का नाम, जो अर्जुन को व्याही थी और अर्जुन के औरस और उलूपी के गर्भ से बभ्रुवाहन नामक एक वीर उत्पन्न हुआ था, जिसने युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ की दिग्विजय यात्रा में अर्जुन को परास्त किया था ।

उल्का (स्त्री०) १ प्रकाश । तेज । २ लुक । लुआठा । आकाश से टूट कर गिरा हुआ तारा । ३ मशाल । ४ अग्नि । अंगारा । —धारिन्, (वि०) मशालची । —पातः, (पु०) —मुखः, (पु०) एक राक्षस । एक दैत्य [लकड़ी ।

उल्कुषी (स्त्री०) १ राक्षसी । दानवी । २ अधजली

उल्वं } (न०) १ गर्भपिण्ड । गर्भवासी कच्चा बच्चा ।
उल्वं } २ भग । योनि । ३ गर्भाशय ।

उल्वण } (वि०) १ गाढ़ा । गांठोंदार । २ अधिक ।
उल्वण } विपुल । ३ दृढ़ । मज़बूत । बड़ा । ४ प्रादुर्भूत । प्रत्यक्ष ।

उल्मुकः (पु०) १ अधजली लकड़ी । २ मशाल ।

उल्लंघनम् (न०) } १ लाँघना । डाँकना । २ अति-
उल्लङ्घनम् (न०) } क्रमण । ३ विरुद्धाचरण ।

उल्लल (वि०) १ हिलने डुलने वाला । २ घने बालों वाला ।

उल्लसनम् (न०) १ हर्ष । आल्हाद । २ रोमाञ्च ।

उल्लसित (व० कृ०) १ चमकीला । दमकदार । प्रभावान् । कान्तिवान । २ प्रसन्न । आनन्दित ।

उल्लाघ (वि०) १ रोग से छुटा हुआ । रोग छुटने पर किञ्चित् प्राप्त बल । २ निपुण । पटु । चालाक । ३ विशुद्ध । ४ हर्षित । प्रसन्न ।

उल्लापः (पु०) १ वाणी । शब्द । २ अपमानकारक शब्द । आक्षेपयुक्त भाषण । आक्षेप । ३ तार स्वर से पुकारना या बुलाना । ४ बीमारी या भावावेश के कारण परिवर्तित कण्ठस्वर । ५ सङ्केत । इशारा सूचना ।

उल्लाप्यम् (न०) एक प्रकार का नाटक ।

उल्लासः (पु०) १ हर्ष । आनन्द । २ चमक । आभा । दीप्ति । ३ एक अलङ्कार, जिसमें एक गुण या दोष से दूसरे के गुण या दोष दिखलाये जाते हैं । इसके चार भेद माने गये हैं । ४ ग्रन्थ का एक भाग । पर्व । काण्ड ।

उल्लासनम् (न०) दीप्ति । चमक । आभा ।

उल्लिङ्गित (वि०) प्रसिद्ध । प्रख्यात । मशहूर । परिचित । [हुआ ।

उल्लीढः (वि०) चिकनाया हुआ । मला हुआ । रगड़ा

उल्लुञ्चनम् (न०) १ तोड़ना । कटना । २ बाल को खींचना या उखाड़ना ।

उल्लुण्ठनम् (न०) } श्लेषवाक्य । व्यङ्ग्यवाक्य ।
उल्लुण्ठा (स्त्री०) } व्यङ्ग्योक्ति । विपरीतार्थक वाक्य ।

उल्लेखः (पु०) १वर्णन । चर्चा । जिक्र । २ लिखना लेख । ३ एक काव्यालङ्कार विशेष । इसमें एक ही वस्तु का अनेक रूपों में दिखलाई पड़ना वर्णन किया जाता है । ४ खुरचना । छीलना । रगड़ना ।

उल्लेखनं (न०) १ खुरचन । छीलन । रगड़ । २ खुदाई । ३ वमन । छर्दि । ४ वर्णन । चर्चा । ५ लेख । चित्रण ।

उल्लोचः (पु०) राजछत्र । मण्डप । चन्द्रातप चँदोवा । शामियाना ।

उल्लोलः (पु०) लहर । तरङ्ग । हिलोरा ।

उल्व, उल्वण } देखो "उल्ब, उल्बण"

उशनस् (पु०) शुक्र का नाम । शुक्र ग्रह का अधिष्ठातृ देवता । वैदिक साहित्य में इनको कवि की उपाधि है । इनके नाम से एक स्मृति भी है ।

उशी (स्त्री०) इच्छा । अभिलाषा ।

उशीरः (पु०), उषीरः (पु०), उशीरं, उषीरं (न०), उशीरकम्, उषीरकम् (न०) } खस । गँड़ड़े की जड़ । वीरनमूल ।

उष् (धा० पर० [ओषति, ओषित—उषित—उष्ट] १ जलना । भस्म होजाना । २ दण्ड देना । ३ मार डालना । घायल करना ।

उषः (पु०) १ प्रातःकाल । बड़ा सवेरा । २ कामी पुरुष । ३ लुनिया भूमि ।

उषणम् (न०) १ काली मिर्च । २ अदरक । आदी ।

उषपः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य ।

उषस् (स्त्री०) १ तड़का । भुराहा । गजरदम । २ प्रातःकाल का प्रकाश । ३ प्रातः सायं सन्ध्याओं की अधिष्ठात्री देवी ।—बुधः, (पु०) अग्नि ।

उषसी (स्त्री०) दिन का अवसान । सायंकाल ।

उषा (स्त्री०) तड़का । भोर । २ प्रातः कालीन प्रकाश । ३ झुट पुटा । ४ लुनियाही भूमि । बटलोई । ६ बाणासुर की पुत्री का नाम ।—कालः, (पु०) मुर्गा ।—पतिः,—रमणः,—ईशः, (पु०) अनिरुद्ध जी का नाम ।

उषित (वि०) १ वसा हुआ । २ जला हुआ ।

उष्ट्रः (पु०) १ ऊंट । २ भैंसा । ३ साँड़ । [स्त्री०— उष्ट्री]

उष्ट्रिका (स्त्री०) १ ऊटनी । २ मिट्टी का बना ऊँट की शक्ल का मदिरा पात्र ।

उष्ण (वि०) १ गरम । ताता । २ पैना । तीक्ष्ण । सख्त । क्रियाशील । ३ तासीर में गरम । ४ तेज़ । चालाक । ५ हैज़ा सम्बन्धी ।

उष्णः (पु०), उष्णम् (न०) } १ गर्मी । ताप । गर्माई । २ ग्रीष्म-ऋतु । ३ सूर्यातप । घाम । (पु०) पियाज ।—अंशुः,—करः,—गुः,—दीधितिः,—रश्मिः,—रुचिः, (पु०) सूर्य ।—अभिगमः,—आगमः,—उपगमः, (पु०) ग्रीष्मऋतु ।—उदकं, (न०) गर्मजल । ताता पानी ।—कालः,—गः, (वि०) ग्रीष्मऋतु ।—वाष्पः, (पु०) १ आँसू । २ गर्म भाफ ।—वारणः, (पु०)—वारणम्, (न०) छाता । छत्र ।

उष्णाक (वि०) १ तीक्ष्ण । चालाक । क्रियाशील । २ ज्वर पीड़ित । पीड़ित । ३ गर्माना । गर्म करना ।

उष्णाकः (पु०) १ ज्वर । २ ग्रीष्मऋतु । गर्मी का मौसम ।

उष्णालु (वि०) गर्म्मी को सह सकने वाला । गर्म्मी से व्याकुल । घमाया हुआ ।

उष्णिका (स्त्री०) भात की माँडी ।

उष्णिमन् (पु०) गर्मी ।

उष्णीषः (पु०), उष्णीषम् (न०) } १ फेंटा । साफा । २ पगड़ी । मुकुट । ३ पहचान का चिन्ह ।

उष्णीषिन् (वि०) मुकुटधारी । (पु०) शिव जी का नाम ।

उष्मः, उष्मकः } (पु०) १ गर्मी । २ ग्रीष्मऋतु । ३ क्रोध । स्वभाव की गर्माई । गरम मिजाज़ । ४ उत्सुकता । उत्कण्ठा ।—अन्वित, (वि०) क्रुद्ध । क्रोध में भरा ।—भास्, (पु०) सूर्य ।—स्वेदः, (पु०) वफारा । भाफ से स्नान ।

उष्मन् (पु०) १ गर्मी । गर्माहट । २ भाफ । वाष्प । ३ ग्रीष्मऋतु । ४ उत्सुकता । उत्कठा । ५ श्, ष्, स् और ह् ये अक्षर व्याकरण में उष्मन् माने गये हैं ।

उस्रः (पु०) १ किरन । २ साँड़ २ देवता ।

उस्रा, उस्रिः } (स्त्री०) १ प्रातःकाल । भोर । तड़का । २ प्रकाश । ३ गौ ।—कः, (उस्रिकः,) (पु०) नाटा बैल ।

उह् (धा० पर०) [ओहति, उहित] १ पीड़ित करना। घायल करना। २ नाश करना।

उह } (अव्यया०) बुलाने में प्रयोग किया जाने
उहह } वाला अव्यय।

उह्नः (पु०) साँड।

ऊ

ऊ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का ६वां अक्षर। उच्चारण स्थान ओठ है। दो मात्राओं से दीर्घ और तीन मात्राओं से यह प्रयत्न होता है। अनुनासिक-भेद से इसके भी दो दो भेद हैं।

ऊः (पु०) १ शिव जी का नाम। २ चन्द्रमा। (अव्यया०) १ आरम्भ-सूचक अव्यय। २ आह्वान, अनुकंपा और रक्षण या रक्षा व्यञ्जक अव्यय विशेष।

ऊढ (वि०) १ ढोया गया। ढोकर ले जाया गया। २ लिया गया। ३ विवाहित। विवाह किया हुआ।

ऊढः (पु०) विवाहित पुरुष। ब्याहा हुआ पुरुष।

ऊढा (स्त्री०) लड़की जिसका विवाह हो चुका हो।

ऊढिः (स्त्री०) विवाह। परिणय। शादी।

ऊतिः (स्त्री०) १ बुनना। सीना। २ रक्षा। संरक्षण। ३ भोगविलास। ४ क्रीड़ा। खेल।

ऊधस् (न०) गौ का या भैंस का ऐन। वह थैली जिसमें दूध भरा रहता है।

ऊधन्यं (न०) } दूध। क्षीर।
ऊधस्यं (न०) }

ऊन (वि०) १ कम। न्यून। २ अधूरा। अपर्याप्त। ३ (संख्या, आकार या अंश में) कम। ४ निर्बल। अपकृष्ट। घटिया। ५ हीन।

ऊम् (अव्यया०) प्रश्न, क्रोध, भर्त्सना, गर्व, ईर्ष्या व्यञ्जक अव्यय विशेष।

ऊय् (धा० आत्म०) [ऊयते, ऊत] बुनना। सीना।

ऊररी देखो "उररी"।

ऊरव्यः (पु०) [स्त्री०—ऊरव्या] वैश्य, जिसकी उत्पत्ति वेद में ब्रह्म की जँघा से बतलायी गयी है।

ऊरुः (पु०) १ जाँघ। जंघा।—अष्ठीवं (न०) जांघ और घुटना।—उद्भव, (वि०) जंघा से निकला या उत्पन्न हुआ।—ज,—जन्मन्,—सम्भव, (वि०) जंघा से निकला हुआ। (पु०) वैश्य।—दघ्न,—द्वयस,—मात्र, (वि०) घुटने तक या घुटने तक ऊँचा। घुटने के बराबर गहरा।—पर्वन्, (पु० न०) घुटना।—फलकम् (न०) जाँघ की हड्डी। पुट्ठा या कूल्हे की हड्डी।

ऊरूरी देखो "उररी।"

ऊर्ज (स्त्री०) १ शक्ति। बल। २ रस। ३ भोज्य [पदार्थ।

ऊर्जः (स्त्री०) १ कार्तिक मास का नाम। २ स्फूर्ति। शक्ति। ३ बल। ताकत। ४ उत्पन्न करने की शक्ति ५ जीवन। स्वांस।

ऊर्जस् (न०) १ बल। शक्ति। २ भोजन।

ऊर्जस्वत् (वि०) १ रसीला। जिसमें भोज्य पदार्थ का अंश अत्यधिक हो। २ शक्तिशाली। बलवान।

ऊर्जस्वल (वि०) बड़ा। बलवान्। [illegible]। शक्तिशाली।

ऊर्जस्विन् (वि०) शक्तिवान्। दृढ़। विशाल।

ऊर्जा (स्त्री०) १ भोजन। २ शक्ति। ३ ताकत। बल ४ बढ़ती या वृद्धि।

ऊर्जित (वि०) १ बलवान। मज़बूत। शक्तिसम्पन्न। २ प्रसिद्ध। उत्कृष्ट। श्रेष्ठ। सुन्दर। ३ उदात्त। कुलीन। सतेज। तेजस्वी। ज़िन्दादिल। [फुर्ती।

ऊर्जितम् (न०) १ शक्ति। बलवत्ता। २ पौरुष।

ऊर्णम् (न०) १ ऊन। २ ऊनी कपड़ा।—नाभः,—पट,—नाभिः, (पु०) मकड़ी।—म्रद,—म्रदस् (वि०) ऊन की तरह कोमल।

ऊर्णा (स्त्री०) १ ऊन। पश्म। २ भौंओं के मध्य का केशमण्डल।—पिण्डः, (पु०) ऊन का गोला या पिंडी।

ऊर्णायु (वि०) ऊनी। [कंबल।

ऊर्णायुः (पु०) १ मेष। मेढ़ा। २ मकड़ी। ३ ऊनी

ऊर्णु (धा० उभय०) [ऊर्णोति-ऊर्णौति, ऊर्णित] ढकना। घेरना। छुपाना।

ऊर्ध्व (वि०) १ सतर । सीधा । ऊपर का । २ उठा हुआ । उभड़ा हुआ । सीधा खड़ा हुआ । ३ ऊच । उत्कृष्ट । उच्चतर । ४ खड़ा हुआ (बैठे हुए का उल्टा) ५ टूटा हुआ । —कच,—केश, (वि०) २ खड़े बालों वाला । —कचः, (पु०) केतु का नाम । —कर्मन्, (न०) —क्रिया, (स्त्री०) ऊपर की ओर की गति । २ उच्चा स्थान प्राप्त करने के लिये किया गया कर्म । (पु०) विष्णु का नाम । कायः, (पु०) —कायम्, (न०) शरीर का ऊपर का भाग । —ग, —गामिन्, (वि०) ऊपर गमन । चढ़ना । ऊँचा उठना । —गति, (वि०) ऊपर गमन । —गतिः, (स्त्री०) —गमः, —गमनं, (न०) १ चढाई । ऊँचा । २ स्वर्ग गमन । —चरण,—पाद, (वि०) शरभ ।—जानु,—ज्ञ,—ज्ञु । (वि०) ऊकरू बैठा हुआ । घुटनों के बल बैठा हुआ ।—दृष्टि, —नेत्र, (वि०) ऊपर देखने वाला । (अलं०) उच्चाभिलाषी । —दृष्टिः, (स्त्री०) योगदर्शन के अनुसार दृष्टि को भौओं के मध्य भाग में टिकाने की क्रिया ।—देहः, (पु०) मृतक कर्म । —पातनम्, (न०) (जैसे पारे का) शोधना । परिष्कार । —पात्रम्, (न०) यज्ञीयपात्र । —मुख, (वि०) ऊपर को मुख किये हुए । —मौहूर्तिक, (वि०) कुछ देर बाद होने वाला । —रेतस्, (वि०) अपने वीर्य को कभी न गिराने वाला । स्त्री सम्भोग कभी न करने वाला । (पु०) १ शिव । २ भीष्म । —लोकः, (पु०) ऊपर का लोक । स्वर्ग । —वर्त्मन्, (पु०) अन्तरिक्ष । —वातः,—वायुः, (पु०) शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाला पवन । —शायिन्, (वि०) चित्त सोने वाला । (पु०) शिव का नाम । —शोधनम्, (न०) वमन करने की क्रिया ।—श्वासः, (पु०) मृत्यु को प्राप्त होना ।—स्थितिः, (स्त्री०) १ घोड़ा पालना । २ घोड़े की पीठ । ३ उन्नयन । सर्वोत्कृष्टता ।

ऊर्ध्वम् (न०) उचान । उचाई । (अव्यया०) १ ऊपर की ओर । २ अन्त में । ३ तार स्वर में । ४ पीछे से । बाद को ।

ऊर्मिः (पु० स्त्री०) १ लहर । तरङ्ग । २ धार । प्रवाह । ३ प्रकाश । ४ गति । गति की द्रुतता । ५ तह या किसी सिले कपड़े की प्लेट । पंक्ति । अवली रेखा । ७ दुःख । बेचैनी । चिन्ता । —मालिन्, तरंगमालाओं से विभूषित (पु०) समुद्र ।

ऊर्मिका (स्त्री०) १ तरङ्ग । २ अँगूठी । ३ खेद । शोक (जो किसी वस्तु के खोने से उत्पन्न हो । ४ शहद की मक्खी या भौंरे का गुंजार । ५ तह या प्लेट किसी सिले हुए वस्त्र की ।

ऊर्व (वि०) विस्तृत । विशाल ।

ऊर्वः (पु०) वड़वानल ।

ऊर्वरा (स्त्री०) उपजाऊ भूमि ।

ऊलुपिन् (न०) सूस । शिशुमार ।

ऊष् (धा० पर०) [ऊषति, ऊषित] रोगी होना । गड़बड़ होना । बीमार होना ।

ऊषः (पु०) १ लुनही ज़मीन । २ खार । ३ दरार । झिरी । सन्धि । ४ कान के भीतर का पोला भाग ५ मलयागिरि । ६ प्रातःकाल । प्रभात ।

ऊषकम् (न०) प्रभात । तड़का । भोर ।

ऊषणम् (न०), ऊषणा (स्त्री०) } १ काली मिर्च । २ अदरक । आदी ।

ऊषर (वि०) निमक या लोना मिला हुआ ।

ऊषरः (पु०), ऊषरम् (न०) } ऊसर भूखण्ड जो लुनहा हो ।

ऊषवत् देखो " ऊषर ।"

ऊष्मः (पु०) १ गर्मी । २ ग्रीष्मऋतु ।

ऊष्मण, ऊष्मणय } (वि०) गर्म ।

ऊष्मन् (पु०) १ गर्मी । क्रोध । २ ग्रीष्मऋतु । ३ भाफ । वाष्पोद्गम । (मुँह से) भाफ निकालना । ४ उत्ताप । क्रोध । अत्यासक्ति । उग्रता । ज़बरदस्ती । ५ श, ष, स् और ह् । —उपगमः, (पु०) ग्रीष्मऋतु का आगमन । —पः, (पु०) १ अग्नि । २ पितृगण विशेष ।

ऊह् (धा० उभय०) [ऊहति ऊहते, ऊहित] १ टीपना । चिन्हित करना । आलोचना करना । २ अनुमान करना । अटकल

लगाना। ३ समझना। जानना। पहचानना। आशा करना। ४ बहस करना। विचार करना।

ऊहः (पु०) १ अनुमान। अटकल। २ परीक्षण और निश्चय करण। ३ समझ। ४ युक्तिता। युक्ति-प्रदर्शन। ५ छूट को पूरा करने वाला। त्रुटिपूरक। —अपोहः, (=ऊहापोहः,) तर्क वितर्क। सोच विचार।

ऊहनम् (न०) अनुमान। अटकल।

ऊहनी (स्त्री०) झाड़ू। बुहारी।

ऊहवत् (वि०) बुद्धिमान। तीव्र।

ऊहा (स्त्री०) अध्याहार। वाक्य में त्रुटि को पूरा करना।

ऊहिन् (वि०) कौन और क्या की बहस कर अटकल लगाने वाला।

ऊहिनी (स्त्री०) १ समूह। समुदाय। २ सेना। फौज।

ऋ

ऋ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का सातवाँ वर्ण। यह भी एक स्वर है और इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत के अनुसार इसके तीन भेद हैं। इन भेदों में भी उदात्त, अनुदात्त और प्लुत के अनुसार प्रत्येक के तीन भेद हैं। फिर इन नौं भेदों में भी प्रत्येक के अनुनासिक और निरनुनासिक दो दो भेद हैं। इस प्रकार सब मिला कर ऋ के अठारह भेद हैं।

ऋ (अव्यया०) आह्वान, उपहास और निन्दाव्यञ्जक अव्यय विशेष।

ऋ (धा० पर०) [ऋच्छति, ऋत] १ जाना। २ हिलाना। ३ प्राप्त करना, पहुँचना। मिलना। ४ उत्तेजित करना। (परस्मै०) [ऋणोति, ऋण] १ घायल करना। २ आक्रमण करना। (णिजन्त) [अर्पयति, अर्पित] १ फेंकना। जड़ना। रोपना। २। रखना। लगाना। टकटकी बांधना। ३ देना। ४ हवाले करना। सौंपना।

ऋ (स्त्री०) १ देवमाता। अदिति। २ निन्दा। बुराई।

ऋक् (स्त्री०) १ ऋचा। वेदमंत्र। २ ऋग्वेद।

ऋक्ण (वि०) घायल। चोटिल। चुटीला।

ऋक्थं (न०) १ सम्पत्ति। २ विशेषकर मरने पर छोड़ी हुई सम्पत्ति। सामान। ३ सुवर्ण। सोना। —ग्रहणम्, (न०) सम्पत्ति का प्राप्त करना। —ग्राहः (पु०) वारिस। उत्तराधिकारी। - भागः, १ बटवारा। हिस्सा। बाँट। २ हिस्सा। भाग। पैतृक सम्पत्ति। —भागिन्, —हर, —हारिन् (पु०) १ उत्तराधिकारी। २ अन्यतम उत्तराधिकारी।

ऋक्ष (वि०) गंजा।

ऋक्षः (पु०) १ रीछ। भालू। २ एक पर्वत का नाम। (न० पु०) १ नक्षत्र। तारा। राशि। २ राशिचक्र की एक राशि। —चक्रं, (न०) राशिचक्र। नाथः, - ईश, (पु०) चन्द्रमा। —नेमिः, (पु०) विष्णु का नाम। —राज्,—राजः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ जम्बुवत। जाम्बवान। रीछों के राजा। —हरीश्वरः, (पु०) रीछों और लंगूरों के राजा।

ऋक्षा (पु० बहुवचन) सप्तर्षि के सात तारे।

ऋक्षाः (स्त्री०) उत्तर दिशा।

ऋक्षीः (स्त्री०) मादा भालू।

ऋक्षरः (पु०) १ ऋत्विज। २ काँटा।

ऋक्षवत् (पु०) नरमदा नदी का समीपवर्त्ती एक पर्वत।

ऋच् (धा० परस्मै०) [ऋचति] १ प्रशंसा करना। २ ढकना। पर्दा डालना। ३ प्रकाशित होना। चमकना।

ऋच् (स्त्री०) १ ऋचा। २ ऋग्वेद की ऋचा। ३ ऋग्वेद। ४ चमक। दमक। ५ प्रशंसा। ६ पूजन। —विधानं, (न०) कतिपय वैदिक कर्मों का विधान, जो ऋग्वेद के मंत्रों को पढ़ कर किये जाते हैं। —वेदः, (पु०) ऋग्वेद। —संहिता, (स्त्री०) ऋग्वेद।

ऋचिकः (पु०) भृगुवंशीय एक ऋषि। यह जमदग्नि के पिता थे।

ऋचीषः (पु०) नरक।

ऋचीषम् (न०) १ कड़ाही। तसला। २ सोमलता की सीठी। ३ सीठी।

ऋच्छ् (धा० पर०) [ऋच्छति] १ कड़ा होना। सख्त होना। २ जाना। ३ क्षमता का न रहना।

ऋच्छका (स्त्री०) इच्छा। कामना।

ऋज् (धा० आत्म०) [अर्जते, ऋजित] १ जाना। २ प्राप्त करना। पाना। ३ खड़े रहना या दृढ़ होना। ४ स्वस्थ होना या मज़बूत होना। ५ उपार्जन करना।

ऋजीष देखो ऋचीष।

ऋजु } ऋजुक } (वि०) [स्त्री०—ऋजु,या ऋज्वी] १ सीधा। २ ईमानदार। सच्चा। ३ अनुकूल। नेक। ४ सरल। सहज।—गः, (पु०) १ व्यवहार में ईमानदार या सच्चा। २ तीर। बाण।—रोहितं, (न०) इन्द्र का लाल और सीधा धनुष। [विशेष।

ऋज्वी (स्त्री०) १ ईमानदार स्त्री। २ नक्षत्रपथ

ऋणं (न०) १ कर्ज़। उधार। २ दुर्ग। किला। ३ जल। ४ भूमि। ५ देव, ऋषि और पितरों के उद्देश्य से किया हुआ यथाक्रम यज्ञ। ६ वेदाध्ययन और सन्तानोत्पत्ति नामक आवश्यक कर्त्तव्य कर्म।—अन्तकः, (पु०) मङ्गल ग्रह।—अपनयनम्,—अपनोदनं,—अपाकरणम्—दानं, (न०)—मुक्तिः,—मोक्षः.(पु०)-शोधनम् (वि०) कर्ज़ की अदायगी। ऋणशोध। कर्ज़ चुकाना।—आदानं,(न०)ऋण में दिये हुए रुपयों का वापिस मिलना।—ऋणं, (ऋणार्णं) कर्ज़ के ऊपर कर्ज़। एक कर्ज़ चुकाने को जो दूसरा कर्ज़ काढ़ा जाय —ग्रहः, (पु०) १ कर्ज़ा लेना। २ कर्ज़ लेने वाला।—दातृ,—दायिन्, (वि०) कर्ज़ देने वाला।—दासः, (पु०) कर्ज़ा चुका देने के बदले कर्ज़ा चुकाने वाले का बना हुआ दास।—मत्कुणः,—मार्गणः, (पु०) ज़मानत।—मुक्तः, (वि०) कर्ज से छुटकारा पाया हुआ।—मुक्तिः, (स्त्री०) कर्ज़ से छुटकारा पाना।—लेख्यं, (न०) दस्तावेज़। टीप।

ऋणिकः (पु०) कर्ज़दार।

ऋणिन् (वि०) कर्ज़दार। ऋणी।

ऋत (वि०) १ उचित। ठीक। २ ईमानदार। सच्चा। २ पूजित। सम्मानित।—धामन्, (वि०) सच्चा या पवित्र स्वभाव वाला। (पु०) विष्णु भगवान का नाम।

ऋतपर्णः (पु०) अयोध्या के एक राजा, जो राजा नल के मित्र थे और पाँसा खेलने में बड़े निपुण थे।

ऋतपेयः (पु०) एकाह यज्ञ जो छोटे छोटे पापों को नष्ट करने के लिये किया जाता है।

ऋतम् (अव्यया०) ठीक रीति से। ठीक तौर पर।

ऋतम् (न०) १ निश्चित नियम या आईन। २ धार्मिक प्रथा। यज्ञ। ३ अलौकिक नियम। अलौकिक सत्य। ४ जल। ५ सत्य। जो कायिक वाचिक एवं मानसिक हो। ६ उञ्छवृत्ति। ब्राह्मण की उपजीव्य वृत्ति। ७ कर्म का फल।

ऋतम्भरा (स्त्री०) योगशास्त्रानुसार सत्य को धारण और पुष्ट करने वाली चित्तवृत्ति विशेष।

ऋतिः (स्त्री०) १ गति। २ स्पर्धा। २ निन्दा। ४ मार्ग। ५ मङ्गल। कल्याण।

ऋतीया (स्त्री०) धिक्कार। भर्त्सना।

ऋतुः (पु०) १ मौसम। वसन्तादि छः ऋतुएं। २ अब्द-प्रवर्तक-काल। ३ रजोदर्शन। ४ रजोदर्शन के उपरान्त का समय जो गर्भाधान के लिये उपयुक्त काल है। ५ उपयुक्त या ठीक समय। ६ प्रकाश। चमक। ७ छः की संख्या का सङ्केत।—कालः,—समयः, (पु०) वेला, (स्त्री०) रजोदर्शन के पीछे १६ रात्रि पर्यन्त गर्भाधान का उपयुक्त काल। ऋतु-मौसम का अवधि काल।—गणः, (पु०) ऋतुओं का समुदाय।—गामिन्, (वि०) ऋतुकाल में स्त्री के पास जाने वाला।—पर्णः, (पु०) अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम—। पर्यायः,—वृत्तिः, (पु०) मौसम का आना जाना।—मुखं, (न०) किसी ऋतु का प्रथम दिवस।—राजः, (पु०) ऋतुओं का राजा अर्थात् वसन्त।—लिङ्गम्, (न०) १ ऋतुओं का मिलान।—सन्धिः, (स्त्री०) वह स्त्री जो रजोदर्शन होने के बाद स्नान कर चुकी हो और सम्भोग के योग्य हो गई हो।—स्नाता (स्त्री०) रजोदर्शन के बाद का स्नान। [पुष्पवती।

ऋतुमती (स्त्री०) रजस्वला। मासिक धर्मयुक्ता।

ऋते (अव्यया०) विना। सिवाय।

ऋतेजा (पु०) नियमानकूल रहना।

ऋतेरक्षस् (न०) भूत प्रेतों का भगाना।

ऋतोक्ति (स्त्री०) सत्य वचन।

ऋत्वन्तः (पु०) १ ऋतु का अन्त। २ स्त्री के रजो दर्शन से १६ वीं रात्रि।

ऋत्विज् (पु०) यज्ञ करने वाला। साधारणतया प्रत्येक यज्ञ में चार ऋत्विज् हुआ करते हैं। अर्थात् होतृ, उद्गातृ, अध्वर्यु, ब्रह्मन्। किन्तु बड़े यज्ञ में इनकी संख्या १६ होती है।

ऋत्विय (वि०) १ नियमानुसार। निरन्तर। ऋत्विक् कर्म का ज्ञाता। १ सम्पन्न।

ऋद्ध (व० कृ०) १ समृद्धशाली। सम्पत्तिशाली। २ वर्धमान। बढ़ने वाला। ३ जमा किया हुआ।

ऋद्धः (पु०) विष्णु भगवान का नाम।

ऋद्धम् (न०) १ बढ़ती। २ प्रत्यक्षी भूत प्रणाम। सिद्धान्त।

ऋद्धिः (स्त्री०) १ बढ़ती। वृद्धि। २ सफलता। समृद्धि। धनदौलत। ३ परिमाण। ४ अलौकिक शक्ति। ५ पूर्णता।

ऋध (धा० पर०) [ऋध्यति, ऋध्नोति. ऋद्ध] १ फलना फूलना। सफल मनोरथ होना। २ बढ़ना। बढ़ती होना। ३ सन्तुष्ट करना। प्रसन्न करना।

ऋधक् (क्रि०) १ देना। २ मारना। ३ निन्दा करना। ४ लड़ना।

ऋभुः (पु०) १ देव। देवता। स्वर्ग में उत्पन्न। अदिति से उत्पन्न।

ऋभुक्षः (पु०) १ इन्द्र का नाम। २ स्वर्ग। ३ वज्र।

ऋभुक्षिन् (पु०) इन्द्र का नाम।

ऋभ्वन् (वि०) पटु। दक्ष। निपुण।

ऋल्लक (पु०) वाद्ययंत्र या बाजा बजाने वाला।

ऋश्य (पु०) सफेद पैरों का बारहसिंघा।

ऋश्यम् (न०) वध। हत्या।

ऋश्यकेतुः } (पु०) १ प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का
ऋश्यकेतनः } नाम। २ कामदेव का नाम।

ऋष् (धा० पर०) [ऋषति, ऋष्ट] १ जाना समीप जाना। २ मार डालना। (अर्षति) १ बहना। २ फिसलना।

ऋषभः (पु०) १ साँड। २ सर्वोत्कृष्ट। सर्वोत्तम। (जैसे पुरुषर्षभः) ३ संगीत के सप्तस्वरों में से दूसरा। ४ सुअर की पूँछ। ५ मगर की पूँछ। ६ जैनियों के मान्य अवतार विशेष।—कूटः, (पु०) पर्वत विशेष।—ध्वजः, (पु०) शिव जी का नाम।

ऋषभी (स्त्री०) १ स्त्री जो पुरुष के रूप रंग की हो। २ गौ। ३ विधवा स्त्री।

ऋषि. (पु०) १ वैदिक-मंत्र-द्रष्टा। २ अनुष्ठानादि। कर्म बतलाने वाले सूत्रों के रचयिता। गोत्र, प्रवर, प्रवर्तक। ३ प्रकाश की किरन। ४ मत्स्य-विशेष।—कुल्या. (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत के तीर्थयात्रा पर्व में है।—तर्पणं, (न०) ऋषियों की तृप्ति के लिये जलदान विशेष।—पञ्चमी, (स्त्री०) भाद्रमास की शुक्ला ५ मी।—लोक, (पु०) ऋषियों का लोक।—स्तोमः, (पु०) १ ऋषियों की प्रशंसा। २ यज्ञ विशेष जो एक ही दिन में पूरा होता है।

ऋषुः (पु०) १ गर्मी। २ अँगारा। शोला।

ऋष्टिः (पु० स्त्री०) १ दुधारा खाँड़ा। २ तलवार। ३ भाला बर्छी आदि कोई सा हथियार।

ऋष्य (पु०) मृगभेद।—अङ्कः, —केतनः,—केतुः, (पु०) अनिरुद्ध का नाम।—मूकः, (पु०) पर्वत विशेष जो पंपासरोवर के निकट है।—शृङ्गः, (पु०) विभाण्डक ऋषि के पुत्र का नाम।

ऋष्यकः (पु०) चित्रित या सफेद पैरों वाला हिरन।

ऋष्व (वि०) बड़ा। ऊँचा। अच्छा। देखने योग्य। (पु०) इन्द्र और अग्नि का नाम।

ॠ

ॠ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का आठवाँ वर्ण। इसका उच्चारणस्थान मूर्द्धा है।

ॠ (अव्यया०) भय, बचाव या रोक, भर्त्सना, धिक्कार अनुकम्पा अथवा स्मृतिव्यञ्जक अव्यय विशेष।

ॠः (पु०) १ भैरव का नाम। २ एक दानव या दैत्य का नाम।

ॠ (धा० पर०) [ॠणाति ईर्ण] जाना। हिलना।

ऌ ॡ

नोटः—वर्णमाला में ऌ, और ॡ, भी हैं, किन्तु इनसे कोई शब्द आरम्भ नहीं होता।

ए

ए संस्कृत वर्णमाला का नवाँ वर्ण। शिक्षा में इसे सन्ध्यक्षर माना है। इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालु है। संस्कृत मे मात्रानुसार इसके दीर्घ और प्लुत दो ही भेद हैं।

एः (पु०) विष्णु का नाम। (अव्यया०) स्मरण, ईर्ष्या, दया, आह्वान, तिरस्कार अथवा धिक्कार वोधक अव्यय विशेष।

एक (सर्वनाम० वि०) १ एक। इकहरा। अकेला। केवल। २ जिसके साथ अन्य कोई न हो। ३ वही। उसी जैसा। समान। ४ दृढ़। अपरिवर्तित। ५ अद्वितीय। ६ मुख्य। प्रधान। एकमेव। ७ बेजोड़। ८ बहुतों में या दो में से एक।—अक्ष, (वि०) १ एक धुरी वाला। २ काना।—अक्षः, (पु०) १ काक। २ शिवजी का नाम।—अक्षर (वि०) एक अक्षर का।—अक्षरं, (न०) ओंकार।—अग्र, (वि०) १ एक ही ओर ध्यान लगाये हुए। २ ध्यानावस्थित। ३ अचञ्चल।—अग्र्य १ (न०) ध्यानावस्थित।—अङ्ग, (पु०) शरीररक्षक। १ बुद्ध या मङ्गल ग्रह।—अनुदिष्टं, (न०) एक पितृ के उद्देश्य से किया हुआ मृत कर्म (श्राद्ध)।—अन्त, (वि०) १ सुनसान। २ एक ओर। अलहदा। पृथक्। ३ एक ओर ध्यान लगाये हुए। ४ अत्यधिक। विशाल। ५ नितान्त। निपट। निसन्देह। निरन्तर।—अन्तः (पु०) सुनसान स्थान।—अन्तं,—अन्तेन,—अन्ततः,—अन्ते (अव्यया०) १ अकेला। विशाल। नित्य। सदैव। २ अधिकता से। नितान्त। समूचा।—अन्तिक, (वि०) अन्तिम।—अयन, (वि०) ऐसा रास्ता जिस पर केवल एक ही चलने की पगडण्डी हो।—अयनम्, (न०) १ एकाग्रचित्त। २ निरालास्थान। ३ अड्डा। मिलने की जगह। ४ एकेश्वरवाद।—अर्थः, (पु०) १ एक ही वस्तु। २ एक ही अर्थ। समान अर्थ।—अहन् —अहः, (पु०) १ एक दिन की म्याद। २ एक ही दिन में पूरा होने वाला यज्ञ।—आतपत्र (वि०) एकछत्रराज्य। (साम्राज्य सूचक चिन्ह) एकछत्र।—आदेशः दो या अधिक अक्षरों के स्थान पर एक अक्षर का प्रयोग।—आवलिः,—आवली, (स्त्री०) १ इकहरी मोती की माला। २ काव्यालङ्कार विशेष।—उदकः (पु०) सम्बन्धी। सगोत्री।—उदरः,(पु०)—उदरा (स्त्री०) सगा। भाई। सगी। बहिन—उद्दिष्टम्, एकोद्दिष्टम् (न०) एक के उद्देश्य से किया हुआ श्राद्ध। वार्षिक श्राद्ध।—ऊन,(वि०) एक कम।—एक, (वि०) एक एक करके।—एकं (न०)—एकैकशः (अव्यया०) एक एक करके। अलग अलग।—ओघः, (पु०) अविच्छिन्न प्रवाह।—कर, (वि०) एक ही काम करने वाला।—करा (वि०) १ एक हाथ वाला। २ एक किरन वाला।—कार्य, (वि०) मिल कर काम करने वाला। सहयोगी।—कार्यम्, (न०) एक ही काम। एक ही व्यवसाय।—कालः, (पु०) एक समय। एक ही समय।—कालिक,—कालीन, (वि०) १ एक ही बार होने वाला। २ सहयोगी। समवयस्क।—कुण्डलः, (पु०) १ कुवेर का नाम। २ बलभद्र जी का नाम। ३ शेष जी का नाम।—गुरु,—गुरुक, (वि०) एक ही

गुरु वाले ।—गुरुः,—गुरुकः (पु०) गुरुभाई । —चक्र, (वि०) एकपहिया वाला ।—चक्रः (पु०) सूर्य का रथ ।—चत्वारिंशत् (स्त्री०) ४१ । इकतालीस ।—चर (वि०) १ अकेला घूमने या रहने वाला । २ वह जिसके पास एक ही चाकर हो । ३ बिना सहायता लिये रहने वाला । —चारिन् (वि०) अकेला ।—चारिणी, (स्त्री०) पतिव्रता स्त्री ।—चित्त, (वि०) केवल एक ही बात को सोचने वाला ।—चित्तं, (न०) एकमत्य । एकराय —चेतस्,—मनस्, (वि०) सर्वसम्मत ।—जन्मन्, (पु०) १ राजा । २ शूद्र ।—जात, (वि०) एक ही माता पिता, से उत्पन्न ।—जातिः, (स्त्री०) शूद्र ।—जातीय, (वि०) एक ही वंश या कुल का ।—ज्योतिस्, (पु०) शिव जी का नाम ।—तान, (वि०) अत्यन्त दत्तचित्त ।—तालः, (पु०) ऐक्य । समस्वर । गान, नृत्य और वाद्य की सङ्गति । तौर्यत्रिक —तीर्थिन्, (वि०) एक ही तीर्थ में स्नान करने वाले । एक ही सम्प्रदाय के । (पु०) सहपाठी । गुरुभाई ।—त्रिंशत्, (स्त्री०) ३१ । इकतीस । —दंष्ट्रः,—दन्तः, (पु०) एक दाँत वाला अर्थात् गणेश जी ।—दण्डिन्, (पु०) संन्यासी या भिक्षुक विशेष । [हारीतस्मृति में इनके चार भेद बतलाये गये हैं : १ कुटीचक २ बहूदक । ३ हंस और ४ परमहंस । इनमें उत्तरोत्तर श्रेष्ठतर माने गये हैं ।]—दृश्,—दृष्टिः, (पु०) १ काना काक । २ शिव जी । ३ दार्शनिक ।—देव., (पु०) परब्रह्म ।—देश, (पु०) १ एक स्थान या जगह । २ एक भाग या अंश । एक तरफ ।—धर्मन्,—धर्मिन्, (वि०) एक ही प्रकार के । एक ही वस्तु के बने हुए । एक सम्प्रदाय वाले ।—धुर,—धुरावह,—धुरीण, (वि०) १ केवल एक ही काम करने योग्य । २ एक ही जुए में जोते जाने योग्य ।—नटः, (पु०) किसी अभिनय का मुख्य पात्र । सूत्रधार ।—नवति, (स्त्री०) ९१ । इक्यानवे ।—पक्षः, (पु०) एक दल । एक ओर । —पत्नी, (स्त्री०) १ सच्ची पत्नी । पतिव्रता पत्नी । २ सौत ।—पदी, (स्त्री०) पगडंडी ।—पदे, (अव्यया०) सहसा । अचानक ।—पादः, (पु०) एक पैर । विष्णु और शिव जी का नाम ।—पिङ्गः,—पिङ्गलः, (पु०) कुबेर का नाम ।—पिण्ड, (वि०) सपिण्ड ।—भार्या, (स्त्री०) पतिव्रता स्त्री ।—भार्यः, (पु०) केवल एक पत्नी रखने वाला ।—भाव, (वि०) सच्चा भक्त । ईमानदार ।—यष्टिः,(पु०) —यष्टिका, (स्त्री०) इकलरा मोतीहार ।—योनि, (वि०) गर्भाशय सम्बन्धी एक ही वंश या जाति का । —रस, (पु०) समान । एक ढङ्ग का । केवल एक रस ।—राज्,—राजः, (पु०) एक छत्र राजा ।—रात्र, (पु०) ऐसी रस्म जो केवल एक ही रात में समाप्त हो जाय ।—रिक्थिन्, (पु०) समान स्वत्वाधिकारी ।—रूप, (वि०) १ समान आकृति वाला । १ एक ही रङ्ग ढङ्ग का ।—लिङ्गः, १ वह शब्द जो समान लिङ्गवाची हो । २ कुबेर का नाम ।—वचनं, (न०) एक संख्यावाची । —वर्णः, (पु०) एक जाति का ।—वर्षिका, (स्त्री०) एक वर्ष की बछिया ।—वाक्यता, (स्त्री०) सामञ्जस्य ।—वारं,—वारे, (पु०) (अव्यया०) १ केवल एक बार । २ तुरन्त । अचानक । सहसा । ३ एक बार । एक मरतबा । —विंशतिः, (स्त्री०) इक्कीस । २१ ।—विलोचन, (वि०) एक आँख का । काना ।—विषयिन्, (पु०) प्रतिद्वन्द्वी ।—वीरः, (पु०) एक प्रसिद्ध योद्धा ।—वेणिः,—वेणी, (स्त्री०) एक चोटी । [जब पतिव्रता स्त्रियाँ पति से अलग हो जाती हैं, तब वे केशविन्यास न कर, सब केशों को जोड़ बटोर कर उन सब की एक चोटी बना लेती हैं ।] —शफः, (पु०) एक सुम वाले जानवर जैसे घोड़ा गधा आदि ।—शृङ्ग (वि०) एक सींग वाला ।—शृङ्गः (पु०) १ गैंड़ा । २ विष्णु का नाम ।—शेष, (पु०) द्वन्द्व समास का एक भेद, जिसमें दो या तीन अथवा अधिक शब्दों का लोप कर एक ही शब्द रहे और वह अर्थ उन सब शब्दों का दे । जैसे पितरौ । यहाँ पितरौ से अर्थ माता और पिता दोनों से है ।—श्रुत, (वि०) एक बार सुना हुआ ।—श्रुतिः, (स्त्री०)

एकस्वरी। वेद पाठ करने का क्रम विशेष, जिसमें उदात्तादि स्वरों का विचार न किया जाय।—सप्तति (स्त्री०)। ७१ इकहत्तर।—सर्ग (वि०) दत्तचित्त।—सादिक (वि०) एक का देखा हुआ।—हायन (वि०) एक वर्ष का पुराना या एक वर्ष की उम्र का।—हायनी (स्त्री०) एक वर्ष की वछिया।

एकक (वि०) १ अकेला। २ समान सदृश।

एकतम (वि०) बहुतों में से एक।

एकतर (वि०) १ दो में से एक। २ दूसरा। भिन्न। ३ बहुतों में से एक।

एकतस् (अव्यया०) १ एक ओर से। एक ओर। २ अकेला। एक एक कर के।

एकतः-अन्यतः (अव्या०) १ एक तरफ। २ दूसरी तरफ।

एकत्र (अव्यय०) १ एक स्थान पर। २ साथ साथ। सब एक साथ। [ही समय में।

एकदा (अव्यया०) १ एक बार। २ एक ही बार। एक

एकधा (अव्यया०) १ एक प्रकार। २ अकेले। ३ तुरन्त। एक ही समय में। ४ एक साथ।

एकल (वि०) अकेला। एकान्त।

एकशस् (अव्यया०) एक एक करके।

एकाकिन् (वि०) अकेला। एकान्त। [११। ग्यारह।

एकादशन् (वि०) संख्यावाची विशेषण।

एकादश (वि०) [स्त्री०—एकादशी] ग्यारहवाँ।—द्वार (न०) शरीर के ११ छेद या दरवाजे।—रुद्राः (बहुवचन) ग्यारह रुद्र।

एकादशी (स्त्री०) चन्द्रमा के प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवीं तिथि। विष्णु भक्तों के उपवास का दिवस। यह विष्णु सम्बन्धी उपवासदिवस है।

एकीभाव (पु०) संमिश्रण। एकत्व। ऐक्य।

एकीय (वि०) एक का या एक से।

एकीयः (पु०) एक का सहायक। एक पक्ष का।

एज् (धा० पर०) [एजते, एजित] १ कांपना। २ हिलना। हिलोरना। ३ चमकना।

एजत् (वि०) हिलता हुआ। काँपता हुआ। हिलनेवाला काँपनेवाला।

एजनं (न०) कम्प। कांपना।

एठ (धा० आत्म०) [एठते, एठित] चिढ़ाना। सामना करना। [दुष्ट।

एड (वि०) बहरा।—मूक (वि०) १ बहरा गूगा। २

एडः (पु०) एक प्रकार की भेड।

एडकः (पु०) १ मेढा। २ जङ्गली बकरा।

एडका (स्त्री०) भेड़ी।

एणः } (पु०) काला मृग।—अजिनम् (न०)
एणकः } मृगचर्म।—तिलकः,—भृत्, (पु०) चन्द्रमा।—दृश् (वि०) हिरन जैसे नेत्रोंवाला। (पु०) मकर राशि।

एणी (स्त्री०) काली हिरनी।

एत (वि०) [स्त्री०—एता, एती] रंगबिरंगा। चमकीला।

एतः (पु०) हिरन। बारहसिंहा।

एतद् (सर्वनाम० वि०) [पु० एषः। स्त्री०—एषा। न० एतद्।] यह। यहाँ। सामने।

एतदीय (वि०) इसका। इससे सम्बन्ध युक्त।

एतनः (पु०) स्वांस। स्वास त्याग।

एतर्हि (अव्यया०) अब। इस समय। वर्तमान समय में।

एतदृश } (वि०) [स्त्री०—एतादृशी, एतादृक्षी]
एतादृक्ष } १ ऐसा। इसकी तरह। २ इस तरह का।

एतावत् (वि०) १ इतना अधिक। इतना बड़ा। इतने अधिक। इतने परिमाण का। इतना लम्बा चौड़ा। इतना दूर। इस प्रकार का। इस किस्म का।

एध् (धा० आत्म०) [एधते, एधित] १ बढ़ना। बड़ा होना। २ आराम से रहना। समृद्धिशाली होना। (णिजन्त) बढ़ाना। बधाई देना। सम्मान करना।

एधः (पु०) ईंधन। जलाने के लिये लकड़ी।

एधतु (पु०) १ मानव। २ अग्नि।

एधस् (न०) ईंधन।

एधा (स्त्री०) समृद्धि। हर्ष। आनन्द।

एधित (व० कृ०) १ वृद्धि युक्त। बढ़ा हुआ। २ पाला पोसा हुआ।

एनस् (न०) १ पाप। अपराध। दोष। २ उत्पात। जुर्म। ३ क्लेश। ४ भर्त्सना। कलङ्क।

एनस्वत् } (वि०) दुष्ट। पापी।
एनस्विन् }

एना (अव्यया०) यहाँ वहाँ ।
एनी (स्त्री०) बारहसिंघी ।
एमन् (पु०) रास्ता । मार्ग ।
एरका (स्त्री०) तृण विशेष । एक प्रकार की घास ।
एरंडः } (पु०) अरंडी का पौधा ।
एरण्डः }
एर्वारुक (पु०) खरबूजा । ककड़ी ।
एलकः (पु०) मेढा ।
एलवालुः } (न०) कैथा की छाल । सुवासित
एलवालुकम् } द्रव्य विशेष ।
एलविलः (पु०) कुबेर का नाम । [दाने ।
एला (स्त्री०) १ इलायची का पौधा । २ इलायची के
एलापर्णी (स्त्री०) लज्जावन्ती जाति का एक गुल्म ।
एलीका (स्त्री०) छोटी इलायची ।
एव (अव्यय०) सादृश्य । समानता । परिभव । तिरस्कार । निश्चय । ही । भी ।
एवं (अव्यय०) इस प्रकार । और । स्वीकार । प्रश्न । निश्चय ।—अवस्थ (वि०) ऐसी परिस्थिति में ।
—आदि,—आद्य (वि०) ऐसा । और इस प्रकार का ।—कार (अव्यया०) इस प्रकार से । —गुण (वि०) इस प्रकार के गुणों वाला । —प्रकार,—प्राय (वि०) इस तरह का । इस किस्म का ।—भूत (वि०) इस प्रकार के गुण-वाला । इस रकम का । ऐसा ।—रूप, (वि०) इस किस्म का । इस शक्ल का ।—विध (वि०) इस प्रकार का । ऐसा ।
एष् (धा० उभय०) [एषति एषते, एषित] १ जाना । समीप जाना । २ किसी ओर शीघ्रता से जाना ।
एषणः (पु०) लोहे का बाण ।
एषणम् (न०) इच्छा । कामना । खोज ।
एषणा (स्त्री०) इच्छा । अभिलाषा ।
एषणिका (स्त्री०) सुनार का कांटा (तौलने का) ।
एषा (स्त्री०) कामना । इच्छा ।
एषिन् (वि०) इच्छा करनेवाला । कामना करने वाला ।

ऐ

ऐ—संस्कृत वर्णमाला या नागरी वर्णमाला का दसवां वर्ण । इसका उच्चारण कण्ठ और तालु से होता है ।
ऐः (पु०) शिव जी का नाम । (अव्यया०) स्मरण, बुलावा, सम्बोधन व्यञ्जक अव्यय विशेष ।
ऐकध्यम् (अव्य०) तुरन्त । फौरन ।
ऐकध्यं (न०) समय या घटना विशेष का एकत्व ।
ऐकपत्यं (न०) सर्वोपरि प्रधानत्व इकछत्रराज्य ।
ऐकपदिक (वि०) [स्त्री०—ऐकपदिकी] एक पद से सम्बन्ध रखनेवाला ।
ऐकपद्यं (न०) १ शब्दों का योग । २ एक शब्द में बना हुआ । [वाक्यता ।
ऐकमत्यं (न०) एक मत । एक आशय । एक-
ऐकागारिकः (पु०) १ चोर । २ एक घर का मालिक ।
ऐकाग्र्यं (न०) एक ही वस्तु पर ध्यान लगाना ।
ऐकांगः (पु०) } शरीररक्षक दल का एक सिपाही ।
ऐकाङ्गः (पु०) }
ऐकात्म्यं (न०) १ एकता । ऐक्य । आत्मा का ऐक्य । २ एकरूपता । समता । ३ ब्रह्म के साथ एकत्व होना ।
ऐकाधिकरण्यं (न०) १ सम्बन्ध का एकत्व । २ एक कालिकत्व । समकालीन विद्यमानता ।
ऐकांतिक } (वि०) १ सम्पूर्ण । बिल्कुल । नितान्त ।
ऐकान्तिक } २ निश्चित । ३ सिवाय । अतिरिक्त ।
ऐकान्यिकः (पु०) वह शिष्य जो वेद पढ़ने में एक भूल करे ।
ऐकार्थ्य (न०) समान उद्देश्य वाला । अर्थ की सङ्गति ।
ऐकाहिक (वि०) [स्त्री० ऐकाहिकी] एक दिन में होने वाला । एक दिन का । प्रति दिन का ।
ऐक्यं (न०) १ एकत्व । मेल । एकता । २ एकमत्य । ३ समानता । सादृश्य । ४ जोड़ । योग ।

ऐक्षव (वि०) गन्ने का। गन्ने से बना हुआ। गन्ने से निकला हुआ।

ऐक्षवं (न०) १ चीनी। खांड। २ मदिरा विशेष।

ऐक्षव्य (वि०) गन्ने से बना हुआ।

ऐक्षुक (वि०) गन्ने के लिये उपयुक्त।

ऐक्षुकः (पु०) गन्ना ढोने वाला।

ऐक्षुभारिक (वि०) गन्ने का गट्ठर ढोने वाला।

ऐक्ष्वाक (वि०) इक्ष्वाकु का।

ऐक्ष्वाकः, ऐक्ष्वाकुः (पु०) १ ईक्ष्वाकु का वंशधर। २ इक्ष्वाकु के वंशधर का राज्य।

ऐंगुद, ऐङ्गुद (वि०) [स्त्री०—ऐंगुदी, ऐङ्गुदी] हिंगोट वृक्ष से उत्पन्न।

ऐंगुदं, ऐङ्गुदम् (न०) हिंगोट वृक्ष का फल।

ऐच्छिक (वि०) [स्त्री०—ऐच्छिकी] १ इच्छानुवर्ती। इच्छानुसार। २ स्वेच्छित। अनियमित।

ऐडक (वि०) [स्त्री०—ऐडकी] भेड़ का।

ऐडकः (पु०) भेड़ की एक जाति।

ऐडविडः, ऐलविलः (पु०) कुबेर का नाम।

ऐण (वि०) [स्त्री०—ऐणी] हिरन का (चर्म या ऊन)।

ऐणेय (वि०) [स्त्री०—ऐणेयी] काले हिरन से उत्पन्न। अथवा काले हिरन की किसी वस्तु से उत्पन्न।

ऐणेयः (पु०) काला बारहसिंघा।

ऐणेयं (न०) रतिबन्ध।

ऐतदात्म्य (न) इस प्रकार का विशेष गुण या [विशिष्टता युक्त।

ऐतरेयिन् (पु०) ऐतरेय ब्राह्मण का पढ़ने वाला।

ऐतिहासिक (वि०) [स्त्री०—ऐतिहासिकी] इतिहास सम्बन्धी। परम्परागत।

ऐतिहासिकः (पु०) इतिहास लेखक। इतिहास का [जानने वाला।

ऐतिह्यं (न०) परम्परागत उपदेश। पौराणिक वृत्तान्त।

ऐदंपर्यं (न०) मूलाधार। अभिप्राय। उद्देश्य। आशय।

ऐनस (न०) पाप।

ऐंदव, ऐन्दव (वि०) चन्द्रमा सम्बन्धी।

ऐंदवः, ऐन्दवः (पु०) चान्द्र मास।

ऐंद्र, ऐन्द्र (वि०) [स्त्री०—ऐन्द्री] इन्द्र सम्बन्धी।

ऐंद्रः, ऐन्द्रः (पु०) अर्जुन और वालि का नाम।

ऐंद्रजालिक, ऐन्द्रजालिक (वि०) [स्त्री० ऐन्द्रजालिकी] १ मायावी। धोखे में डालने वाला। भ्रमोत्पादक। २ जादू जानने वाला।

ऐंद्रजालिकः, ऐन्द्रजालिक (पु०) मायावी। मदारी।

ऐंद्रलुप्तिक, ऐन्द्रलुप्तिक (वि०) गंज के रोग से पीडित। सिर का गंजापन।

ऐंद्रिशिरः, ऐन्द्रिशिरः (पु०) हाथियों की एक जाति।

ऐंद्रिः, ऐन्द्रिः (पु०) १ इन्द्रपुत्र जयन्त, अर्जुन, वालि। २ काक।

ऐंद्रिय, ऐन्द्रिय, ऐंद्रियक, ऐन्द्रियक (वि०) १ इन्द्रियों से सम्बन्ध रखने वाला। विषयभोगी। २ विद्यमान इन्द्रियगोचर।

ऐंद्री, ऐन्द्री (स्त्री०) १ एक वैदिक मंत्र विशेष जिसमें इन्द्र की प्रार्थना है। २ पूर्व दिशा। ३ विपत्ति। सङ्कट। ४ दुर्गादेवी की उपाधि। ५ छोटी इलायची।

ऐंधन, ऐन्धन (वि०) [स्त्री० – ऐंधनी] ईंधन का।

ऐंधनः, ऐन्धनः (पु०) सूर्य का नाम।

ऐयत्यंः (न०) परिमाण। संख्या।

ऐरावण (पु०) इन्द्र का हाथी।

ऐरावतः (पु०) १ इन्द्र के हाथी का नाम। २ श्रेष्ठ हाथी। ३ पातालवासी नागों के नेताओं में से एक नेता। ४ पूर्व दिशा का दिक्कुञ्जर। ५ एक प्रकार का इन्द्रधनुष।

ऐरावती (स्त्री०) १ ऐरावत हाथी की हथिनी। २ बिजली। ३ पञ्जाब की रावी नदी का नाम। इरावती नदी।

ऐरेयं (न०) १ मद्य। शराब। २ मङ्गल ग्रह।

ऐलः (पु०) इला और बुध से उत्पन्न पुरूरवा का [नाम।

ऐलवालुकः (पु०) एक सुगन्धि-द्रव्य का नाम।

ऐलविलः (पु०) १ कुबेर का नाम। २ मङ्गलग्रह।

ऐलेयः (पु०) १ एक सुगन्धि-द्रव्य। २ मङ्गलग्रह।

ऐश (वि०) [स्त्री०—ऐशी] १ शिव जी का। २ सर्वोपरि। राजकीय। राजोचित।

ऐशान (वि०) शिव जी का।

ऐशानी(स्त्री०) १ ईशान उपदिशा। २ दुर्गा का नाम।

ऐश्वर (वि०) [स्त्री०—ऐश्वरी] १ विशाल। २ बलवान्। शक्तिशाली। ३ शिव जी का। ४ सर्वोपरि। राजकीय ५ दैवी।

ऐश्वरी (स्त्री०) दुर्गादेवी का नाम।

ऐश्वर्यम् (न०) १ प्रभुत्व। आधिपत्य। २ शक्ति। बल। शासन। अधिकार। ३ राज्य। ४ धन। सम्पत्ति। विभव। ५ भगवान की सर्वव्यापकता की शक्ति। सर्वव्यापकता।

ऐशमस् (अव्यया०) इस वर्ष के भीतर। इस वर्ष में।

ऐषमस्तन } ऐषमस्त्य } (वि०) १ वर्तमान वर्ष का। चालू साल का।

ऐष्टिक (वि०) [स्त्री०—ऐष्टिकी] यज्ञीय। संस्कारात्मक। शिष्टाचार सम्बन्धी।—पूर्तिक, (वि०) इष्टापूर्त (यज्ञ और धर्मादे) से सम्बन्ध युक्त।

ऐहलौकिक (वि०) [स्त्री०—ऐहलौकिकी] इस लोक का। सांसारिक। दुनियवी।

ऐहिक (वि०) [स्त्री०—ऐहिकी] १ इस लोक या स्थान का। सांसारिक। दुनियवी। २ स्थानीय।

ऐहिकं (न०) (इस दुनिया का) धंधा। व्यवसाय।

ओ

ओ—संस्कृत वर्णमाला या नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ वर्ण। इसका उच्चारण ओष्ठ और कण्ठ से होता है। इसके उदात्त, अनुदात्त, स्वरित तथा सानुनासिक भेद होते हैं।

ओ (पु०) ब्रह्म का नाम। (अव्यया०) ओह का संक्षिप्त रूप। पुकारने याद करने और दया प्रदर्शित करने के काम में प्रयुक्त होने वाला अव्यय विशेष।

ओकः (पु०) १ घर। मकान। २ छाया। रक्षा। बचाव। आड़। शरण। आश्रय। ३ पक्षी। ४ शूद्र।

ओकरणः } ओकणिः } (पु०) खटमल। खटकीरा।

ओकस् (न०) १ गृह। मकान। २ आश्रय। शरण।

ओख् (धा० पर०) [ओखति, ओखित] १ सूख जाना। २ योग्य होना। पर्याप्त होना। ३ शोभा बढ़ाना। सजाना। ४ अस्वीकृत करना। ५ रोकना। आड़ करना।

ओघः (पु०) १ जल की बाढ़। जल की धार। जल का प्रवाह। २ बृन्द। ३ ढेर। समुदाय। ४ सम्पूर्ण। समूचा। ५ अविच्छिन्नता। सातत्य। ६ परम्परा। परम्परागत उपदेश। ७ नटराज।

ओंकारः } ओङ्कारः } (पु०) १ एक पवित्र पद जो वेदाध्ययन के पूर्व और अन्त में कहा जाता है। २ अव्ययात्मक रूप में इसका अर्थ होता है। सम्मानपूर्ण स्वीकृति, गम्भीर समर्थन। हाँ। बहुत अच्छा। मङ्गल। स्थानान्तकरण। बचाव। ३ ब्रह्म। प्रणव।

ओज् (धा० उभय०) [ओजति, ओजयति, ओजित] बलवान होना। योग्य होना।

ओज (वि०) विषम। ऊँचा।

ओजस् (न०) १ प्राणबल। सामर्थ्य। शक्ति। २ उत्पादनशक्ति। ३ चमक। दीप्ति। ४ काव्यालङ्कार विशेष। ५ जल। ६ धातु जैसी आभा।

ओजसीन } ओजस्य } (वि०) मज़बूत। शक्तिशाली।

ओजस्वत् } ओजस्विन् } (वि०) मज़बूत। शक्तिशाली।

ओड्रः (पु०) [बहुवचन] उड़ीसा प्रदेश और उड़ीसा प्रदेश वासी।

ओड्रम् (न०) जवाकुसुम। [छोर तक सिला हुआ।

ओत (वि०) बुना हुआ। सूत से एक छोर से दूसरे

ओतप्रोत (वि०) १ अन्तर्व्याप्त। एक में एक बुना हुआ। गुथा हुआ। परस्पर लगा और उलझा हुआ। २ सब ओर फैला हुआ।

ओतुः (पु०) बिल्ली।

ओदनः (पु०) } ओदनम् (न०) } भात। भोज्य पदार्थ। भिगोया और दूध से रांधा हुआ अन्न।

ओ, ओम् (अव्यया०) देखो ओङ्कार ।

ओरंफः } (पु०) गहरी खरोच ।
ओरम्फः }

ओल (वि०) भींगा । नम । तर ।

ओलंड् } (धा० पर०) [ओलण्डति, ओलण्डयति,
ओलण्ड् } ओलण्डित] ऊपर की ओर फेंकना । उछालना ।

ओल्ल (वि०) नम । तर ।

ओल्लः (पु०) शरीर बंधक । प्रतिभू । ज़ामिन ।

ओषः (पु०) जलन । दाह ।

ओषणः (पु०) चरपराहट । तीक्ष्णता ।

ओषधिः } (स्त्री०) १ रुखरी । गुल्म । २ काष्ठादि
ओषधी } दवाइयाँ । बसौंढ पौधा विशेष जो पकने पर सूख जाता है ।—ईशः, —गर्भः, —नाथः, (पु०) चन्द्रमा ।—ज, (वि०) पौधों से उत्पन्न ।—धरः,—पतिः (पु०) १ दवाइयाँ बेचने वाला । २ वैद्य । हकीम । ३ चन्द्रमा —प्रस्थः, (पु०) हिमालय की राजधानी ।

ओष्ठः (पु०) होंठ । अधर ।—अधरौ,—रं (न०) ऊपर और नीचे का ओठ । —पुटं, (न०) मुँह खोलने से जो मुँह में खाली स्थान बन जाता है वह ।

ओष्ठ्य (वि०) १ ओठों का । २ ओठों की सहायता से उच्चारित होने वाले वर्ण । अर्थात् उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म ।

ओष्ण (वि०) गुनगुना । थोड़ा गर्म ।

औ

औ—संस्कृत वर्णमाला का बारहवाँ वर्ण । इसका उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ है । यह स्वर अ + ओ के मिलाने से बनता है ।

औ (अव्य०) आह्वान, सम्बोधन, विरोध, और सङ्कल्प द्योतक अव्यय विशेष ।

औक्थ्यं (न०) पढ़ने की विलक्षण विधि ।

औक्थिक्यं (न०) उक्थ संहिता ।

औक्षकम् } (न०) बैलों की हेड़ या बैलों का भुंड ।
औक्षम् }

औग्र्यं (न०) उग्रता । भयानकता । निष्ठुरता ।

औघः (पु०) बूड़ा । जल की बाढ़ ।

औचित्यम् (न०) } योग्यता । लौलीनता ।
औचिती (स्त्री०) } उपयुक्तता । न्यायत्व । सत्यत्व ।

औच्चैःश्रवसः (पु०) इन्द्र के घोड़े का नाम ।

औजसिक (वि०) शक्तिशाली । बलवान ।

औजस्य (वि०) शक्ति और बल के लिये लाभदायक ।

औजस्यं (न०) शक्ति । जीवनी शक्ति ।

औज्ज्वल्यम् (न०) चमक । कान्ति ।

औडुपिक (वि०) नाव से नदी पार करना ।

औडुपिकः (पु०) नाव या बेड़ा का यात्री ।

औदुम्बर औडुम्बर । गूलर ।

औड्रः (पु०) उडीसा प्रान्त का रहने वाला या वहाँ का राजा ।

औत्कंठ्यं, औत्कण्ठ्यं (न०) १ अभिलाषा । [चिन्ता ।

औत्कर्ष्यम् (न०) सर्वश्रेष्ठता । उत्कृष्टता ।

औत्तमिः (पु०) १४ मनुओं में से एक मनु का नाम ।

औत्तर (वि०) उत्तरी । उत्तर दिशा का ।

औत्तरेयः (पु०) परीक्षित राजा का नाम, जिनका जन्म उत्तरा के गर्भ से हुआ था ।

औत्तानपादः } (पु०) १ ध्रुव जी का नाम । २ ध्रुव
औत्तानपादि } नाम का सितारा जो सदा उत्तर दिशा में देख पड़ता है ।

औत्पत्तिक (वि०) १ प्राकृतिक । प्रकृति सम्बन्धी । सहज । २ एक ही समय में उत्पन्न ।

औत्पात (वि०) अपशकुनों का प्रतिकार करते हुए ।

औत्पातिक (वि०) अमाङ्गलिक । विपत्तिकारक । अकल्याणकारक ।

औत्पातिकम् (न०) अपशकुन । अमङ्गल ।

औत्सङ्गिक (वि०) कुल्हे पर रख कर ढोया हुआ या कुल्हे पर रखा हुआ ।

औत्सर्गिक (वि०) १ सामान्य विधि के योग्य । २ त्याज्य । छोड़ने योग्य । ३ प्राकृतिक । स्वाभाविक । ४ औत्पत्तिक ।

औत्सुक्यं (न०) १ चिन्ता । वेचैनी व्याकुलता । २ उत्कण्ठा । उत्सुकता ।

औदक (वि०) जलोद्भव । जल से उत्पन्न होने वाला । रसीला । जल सम्बन्धी ।

औदचन (वि०) बाल्टी या घड़े में रखा हुआ ।

औदनिकः (पु०) रसोइया ।

औदरिक (वि०) पेटू । मरभूका । भोजनभट्ट ।

औदर्य (वि०) १ गर्भस्थित । २ गर्भ में प्रविष्ट ।

औदश्वितं (न०) माठा जिसमें बरावर का पानी मिला हो । [२ अर्थसम्पत्ति ।

औदार्यम् (न०) १ उदारता । कुलीनता । बड़प्पन ।

औदासीन्यम् (न०) } १ उपेक्षा । उदासीनता ।
औदास्यम् (न०) } निरपेक्षता । २ एकान्तता । ३ वैराग्य ।

औदुम्बर (वि०) गूलर की लकडी का बना हुआ ।

औदुम्बरः (पु०) वह प्रदेश जहाँ गूलर के वृक्षों का आधिक्य हो ।

औदुम्बरी (स्त्री०) गूलर के वृक्ष की डाली ।

औदुम्बरम् (न०) १ गूलर के वृक्ष की लकडी । २ गूलर के फल । ताँवा ।

औद्गात्रम् (न०) उद्गाता का पद ।

औद्दालकम् (न०) कडुआ एवं चरपरा पदार्थ विशेष ।

औद्देशिक (वि०) [स्त्री०—औद्देशिकी] प्रकट करने वाला । निर्देश करने वाला ।

औद्धत्यं (न०) १ उदण्डता । अक्खड़पन । उग्रता उजड्डपन । २ धृष्टता । ढिठाई । ३ साहस ।

औद्धारिक (वि०) [स्त्री०—औद्धारिकी] पैतृक सम्पत्ति से लिया हुआ । बँटवारे के योग्य ।

औद्भिदम् (न०) १ श्रोत का जल । २ सेंधा निमक ।

औद्वाहिक (वि०) [स्त्री०—औद्वाहिकी] १ विवाह के समय मिली हुई वस्तु । २ विवाह सम्बन्धी ।

औद्वाहिकम् (न०) स्त्री को विवाह के अवसर पर मिली हुई वस्तु ।

औधस्यं (न०) थन से निकला हुआ दूध ।

औन्नत्यं (न०) ऊँचाई । उचान ।

औपकर्णिक (वि०) [स्त्री०—औपकर्णिकी] कान के समीप वाला ।

औपकार्यम् (न०) } १ वासा । २ खीमा । तंबू ।
औपकार्या (स्त्री०) }

औपग्रस्तिकः } (पु०) १ ग्रहण । २ चन्द्र या सूर्य
औपग्रहिकः } ग्रहण ।

औपचारिक (वि०) [स्त्री०—औपचारिकी] उपचार सम्बन्धी । जो केवल कहने सुनने के लिये हो । बोलचाल का । जो यथार्थ न हो । गौण । अप्रधान । [घुटनों के समीप का ।

औपजानुक (वि०) [स्त्री०—औपजानुकी]

औपदेशिक (वि०) [स्त्री०—औपदेशिकी] १ जो उपदेश से जीविका करता हो । जो पढ़ा कर अपना निर्वाह करता हो । २ उपदेश से प्राप्त ।

औपधर्म्य (न०) १ मिथ्या सिद्धान्त । मतान्तर । २ अपकृष्ट धर्म । अधर्म-धर्म-सिद्धान्त ।

औपाधिक (वि०) [स्त्री०—औपाधिकी] प्रपञ्ची । धोखेवाज । छली । कपटी ।

औपथेयं (न०) रथ का पहिया । रथाङ्ग ।

औपनायनिक (वि०) [स्त्री०—औपनायनिकी] उपनयन सम्बन्धी । [धरोहर सम्बन्धी ।

औपनिधिक (वि०) [स्त्री०—औपनिधिकी]

औपनिधिकम् (न०) धरोहर । अमानत । बंधक ।

औपनिषद (वि०) [स्त्री०—औपनिषदी] १ उपनिषदों द्वारा जानने योग्य । वैदिक । ब्रह्मविद्या सम्बन्धी । २ उपनिषदों पर अवलम्बित । उपनिषदों से निकला हुआ ।

औपनिषदः (पु०) १ ब्रह्म । २ उपनिषदों के सिद्धान्त का अनुयायी या मानने वाला ।

औपनीविक (वि०) [स्त्री०—औपनीविकी] नीवि के पास का । धोती की गाँठ के पास लगा हुआ ।

औपपत्तिक (वि०) [स्त्री०—औपपत्तिकी] १ तैयार । पहुँच के भीतर । २ योग्य । उपयुक्त । ३ कल्पनात्मक । वाचनिक ।

औपमिक (वि०) [स्त्री०—औपमिकी] १ उपमा के योग्य । तुलना के योग्य । २ उपमा से प्रदर्शित ।

औपम्यम् (वि०) तुलना । समानता । सादृश्य ।

औपयिक (वि०) [स्त्री०—औपयिकी] १ उपयुक्त । योग्य । उचित । २ प्रयोग द्वारा प्राप्त ।

औपयिकः (पु०) } उपाय । सदुपाय । प्रतीकार ।
औपयिकम् (न०) }

औपरिष्ट (वि०) [स्त्री०—औपरिष्टी] ऊपर का ।

औपरोधिक (वि०) } १ कृपा या अनुग्रह सम्बन्धी।
औपरौधिक (वि०) } २ रोक डालने वाला। सामना करने वाला।
औपरोधिकः } (पु०) पीलू वृक्ष की लकडी का
औपरौधिकः } डंडा। [पत्थर का।
औपल (वि०) [स्त्री०—औपली] पथरीला।
औपवस्तं (न०) कडाका। उपवास।
औपवस्त्रम् (न०) १ उपवासोपयुक्त भोजन। फलाहार। २ उपवास।
औपवास्यम् (न०) उपवास।
औपवाह्य (वि०) सवारी करने योग्य।
औपवाह्यः (पु०) १ गजराज। २ राज-यान। शाही सवारी।
औपवेशिक (वि०) [स्त्री०—औपवेशिकी] सारा समय लगा कर सेवा वृत्ति द्वार आजीविका उपार्जन करने वाला।
औपसंख्यानिक (वि०) [स्त्री०—औपसंख्यानिकी] न्यूनतापूरक। यौगिक।
औपसर्गिक (वि०) [स्त्री०—औपसर्गिकी] १ उपसर्ग सम्बन्धी। २ विपत्ति का सामना करने की योग्यता से सम्पन्न। ३ भावी अमङ्गलसूचक। ४ वातादि सन्निपात से उत्पन्न।
औपास्थिक (वि०) व्यभिचार से पेट पालने वाला।
औपस्थ्यं (न०) मैथुन। स्त्रीसहवास।
औपहारिक (वि०) [स्त्री०—औपहारिकी] भेंट या चढ़ावा सम्बन्धी।
औपाकरणम् (न०) वेदाध्ययन का आरम्भ।
औपधिक (वि०) १ सापेक्ष। २ उपाधि सम्बन्धी।
औपाध्यायक (वि०) [स्त्री०—औपाध्यायकी] अध्यापक से प्राप्त। [सम्बन्धी।
औपासन (वि०) [स्त्री०—औपासनी] गृह्याग्नि
औपासनः (पु०) गृह्याग्नि।
औम् (अव्यया०) शूद्रों के उच्चारणार्थ प्रणव का रूप विशेष। [क्योंकि शूद्रों के लिये ओं का उच्चारण वर्जित है।]
औरभ्र (वि०) [स्त्री०—औरभ्री] भेड से उत्पन्न या भेड सम्बन्धी। [मौटा ऊनी कंबल।
औरभ्रम् (न०) १ भेड का माँस। २ ऊनीवस्त्र।
औरभ्रकम् (न०) भेडों का झुंड।
औरभ्रिकः (पु०) गडरिया। मेषपाल।
औरस (वि०) [स्त्री०—औरसी] १ छाती से उत्पन्न। अपने वास्तविक पिता के वीर्य से उत्पन्न। २ न्याय। वैध। विहित। आईनसङ्गत।
औरसः (पु०) विहित पुत्र।
औरसी (स्त्री०) विहित पुत्री।
औरस्य देखो, औरस।
और्ण [स्त्री०—और्णी] } (वि०) ऊनी। उनसे
और्णक [स्त्री०—और्णकी] } बनी।
और्णिक [स्त्री०—और्णिकी] }
और्ध्वकालिक (वि०) [स्त्री०—और्ध्वकालिकी] पीछे की। पिछले समय की। [कर्म।
और्ध्वदेहम् (न०) प्रेतक्रिया। दसगात्र। सपिण्डदान
और्ध्वदेहिक } (वि०) मृत पुरुष से सम्बन्ध युक्त।
और्ध्वदैहिक } प्रेतकर्म सम्बन्धी।
और्ध्वदेहिकम् } (न०) प्रेतकर्म। अन्त्येष्टिकर्म।
और्ध्वदैहिकम् } मरने के बाद किये जाने वाले कर्म विशेष। [जङ्घा से उत्पन्न।
और्व (वि०) [स्त्री०—और्वी] १ और्व सम्बन्धी। २
और्वः (पु०) १ भृगुवंशीय एक प्रसिद्ध ऋषि। २ वाडवानल। ३ नौना मिट्टी का निमक। ४ पौराणिक भूगोल का दक्षिण भाग, जहाँ दैत्यों का निवास है। ५ पञ्चप्रवर मुनियों में से एक।
औलूकं (न०) उल्लुओं का समूह।
औलूक्यः (पु०) कणाद का नाम जो वैशेषिक दर्शन के प्रचारक थे।
औल्वण्यं (न०) अधिकता। अत्याधिक्य। विषमता। तीव्रता। अति तीक्ष्णता।
औशन } (वि०) [स्त्री०—औशनी, औशनसी]
औशनस } उशना सम्बन्धी या उशना से उत्पन्न अथवा उशना से अधीत।
औशनसम् (न०) उशना कृत स्मृति या धर्मशास्त्र।
औशीनरः (पु०) उशीनर का पुत्र।
औशीनरी (स्त्री०) पुरूरवा की रानी का नाम।
औशीरं (न०) १ पंखा या चौरी की डंडी। २ शय्या। ३ बैठकी जैसे कुर्सी मूढ़ा आदि। ४ खस पड़ा हुआ उबटना विशेष। ५ खस की जड़। ६ पङ्खा।
औषणम् (न०) १ चरपराहट। २ काली मिर्च।

औषधम् (न०) १ जड़ी बूटीयां । २ दवाई । ३ खनिज पदार्थ ।

औषधिः } (स्त्री०) १ जड़ी बूटी । २ काष्ठादि
औषधी } चिकित्सा के पदार्थ । ३ बूटी जिससे अग्नि निकलता है । यथा

"विरमन्ति न ज्वलितुमौषधयः ।"

किरातार्जुनीय ।

औषधीय (वि०) दवा सम्बन्धी । वह दवा जिसमें जड़ी बूटी पड़ी हो ।

औषरं
औषरकम् } (न०) सेंधा निमक ।

औषस (वि०) [स्त्री०—औषसी] प्रातःकाल सम्बन्धी । सवेरे का

औषसी (स्त्री०) तड़के । बड़े सवेरे ।

औपसिक } (वि०) [स्त्री०—औपसिकी,
औषिक } औषिकी] सुराहे या तड़के का उत्पन्न ।

औष्ट्र (वि०) [स्त्री०—औष्ट्री] १ ऊँट सम्बन्धी या ऊँट से उत्पन्न । २ ऊंटों के बाहुल्य से युक्त ।

औष्ट्रं (न०) ऊँटनी का दूध ।

औष्ट्रकम् (न०) ऊँटों का समुदाय ।

औष्ठ्य (वि०) ओठ सम्बन्धी । ओठ से उच्चारित होने वाला ।—वर्णः, (पु०) ओठ से उच्चारित होने वाले वर्ण अर्थात् उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्, व, द्, ।—स्थान, (वि०) ओठों से उच्चारित —स्वरः (पु०) ओठ से उच्चारित स्वर ।

औष्णम् (न०) गर्मी । गरमाहट ।

औष्ण्यं
औष्म्यम् } (न०) गर्मी ।

क

क—संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला का प्रथम व्यञ्जन । इसका उच्चारणस्थान कण्ठ है । इसको स्पर्शवर्ण भी कहते हैं । ख, ग, घ, ङ, इसके सवर्ण हैं ।

कः (पु०) १ ब्रह्म । २ विष्णु । ३ कामदेव । ४ अग्नि । ५ हवा । पवन । ६ यम । ७ सूर्य । ८ जीव । ९ राजा । १० गाँठ या जोड़ । ११ मोर । मयूर । १२ पक्षियों का राजा । १३ पक्षी । १४ मन । १५ शरीर । १६ काल । समय । १७ बादल । मेघ । १८ शब्द । स्वर । १९ बाल । केश ।

कम् (न०) १ प्रसन्नता । हर्ष । २ जल । ३ सिर ।

कंसः (पु०) } १ जल पीने का पात्र । गिलास ।
कंसम् (स्त्री०) } बंटी । कटोरा । २ काँसा । ३ परिमाण विशेष, जिसे आढ़क कहते हैं ।

कंसः (पु०) उग्रसेन के पुत्र कंस का नाम । यह मथुरा का राजा था और बड़ा अत्याचारी था । इसे श्रीकृष्ण ने मथुरा ही में मारा था ।—अरिः,—अरातिः—जित्,—कृष्,—द्विष्,—हन्, (वि०) कंस का मारने वाला । अर्थात् श्रीकृष्ण भगवान । —अस्थि. (न०) काँसा ।—कारः, (पु०) एक वर्णसङ्कर जाति । कसेरा ।

कंसकारशङ्खकारौ ब्राह्मणात्संबभूवतुः ।

—शब्दकल्पद्रुम ।

कंसकम् (न०) काँसा ।

कक् (धा० आत्म०) [ककते, ककित] १ चाहना । अभिलाषा करना । २ घमंड करना । ४ चंचल होना ।

ककुंजलः
ककुञ्जलः } (पु०) चातक पक्षी ।

ककुद् (स्त्री०) १ चोटी । शिखर । २ मुख्य । प्रधान । ३ बैल का कुब्ब । ४ सींग । राजकीय चिन्ह (जैसे छत्र चमर आदि) ।—स्थः, (पु०) राजा पुरञ्जय की उपाधि । सूर्यवंशी राजा विशेष । यह इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न हुए थे ।

ककुदः (पु०) } १ पहाड़ की चोटी । पर्वत
ककुदम् (न०) } शिखर । २ कौहान । कुब्ब । ३ मुख्य । प्रधान । ४ राजचिन्ह ।

ककुद्मत (वि०) कुब्ब वाला । (पु०) (शिखर वाला) १ पहाड़ । २ (कैसा भी) पहाड़ ।

ककुद्मती (स्त्री०) कमर । कूल्हा ।

ककुद्मिन् (वि०) १ शिखावाला । कुब्ब वाला (पु०) बैल । २ पहाड़ । ३ रैवतक राजा का नाम ।

ककुद्मत् (पु०) कुब्ब वाला भैसा।

ककुन्दरम् (न०) जघन कूप। कूप का खूआ। रॉन।

ककुभ् (स्त्री०) १ दिशा। २ कान्ति सौन्दर्य। ३ चम्पा के फूलों की माला। ४ धर्मशास्त्र। ५ चोटी। शिखर। [अर्जुन वृक्ष

ककुभः (पु०) १ वीणा की झुकी हुई लकड़ी। २

ककुभं (न०) कूटज वृक्ष का फूल।

ककुलः (पु०) वकुल वृक्ष।

ककोलः (पु०), ककोली(स्त्री०) शीतलचीनी। गन्धद्रव्य। वनकपूर। [हँसी का।

कक्खट (वि०) १ सख्त। कड़ा। ठोस। २ हास्य।

कक्खटी (स्त्री०) चाक। खड़िया मिट्टी।

कक्षः (पु०) १ छिपने की जगह। २ छोर उस वस्त्र का जो सब वस्त्रों के नीचे पहिना जाता है। धोती का छोर। ३लता या बेल विशेष। ४ घास। सूखी घास। ५ सूखे वृक्षों का वन। ६ बगल। काँख। ७ राजा का अन्त.पुर। ८ जंगल का भीतरी भाग। ९ भीत। पाखा। १० भैसा। ११ फाटक। १२ दलदल वाली ज़मीन।

कक्षं (न०) १ तारा। २ पाप।

कक्षा (स्त्री०) १ कँखोरी। २ हाथी बाँधने की जंजीर या रस्सी। ३ कमरबंद। इज़ारबंद। ४ छारदीवारी। दीवाल। ५ कमर। मध्यभाग। ६ आँगन। सहन। ७ हाता। ८ घर के भीतर का कमरा या कोठा। निजू कमरा। कोठा। ९ अन्तःपुर। १० सादृश्य। ११ उत्तरीय वस्त्र। डुपट्टा। १२ आपत्ति। एतराज़। प्रतिवाद। १३ प्रतिद्वन्द्वता। हिर्स। होड़। १४ काँसोटा (कमर में बाँधने का वस्त्र विशेष) १५ पटका। कमरबंद। १६ पहुँचा।—अग्निः, (पु०) दावानल।—अन्तरम्, (न०) भीतर का या नीजू कमरा।—अवेक्षकः (पु०) १ ज़नानी ड्योढ़ी का दरोगा। २ राजकीय उद्यान का अफसर। ३ द्वारपाल। ४ कवि। शायर। ५ लम्पट। ६ खिलाड़ी। चितेरा। ७ अभिनयपात्र। ८ प्रेमी। रागिक।—धरं, (न०) कंधे का जोड़।—पः, (पु०) कछवा।—पटः, (पु०) लंगोट।—पुटः, (पु०) काँख। बग़ल।—शायः, शायुः, (पु०) कुत्ता। श्वान।

कक्ष्या (स्त्री०) १ हाथी या घोड़े का जेवरबन्द। २ स्त्री का कमरबंद या नारा। ३ उत्तरीय वस्त्र। डुपट्टा। उपन्ना। ४अँगे आदि की गोट। मग़ज़ी। ५ अन्तःपुर का कमरा। ६ दीवाल। हाता। ७ सादृश्य।

कख्या (स्त्री०) हाता। घेरा। बड़े भवन का खण्ड।

कंक, कङ्कः (पु०) १ बृहत बक विशेष। २ आमों की जातियाँ ३ यमराज का नाम। ४ क्षत्रिय। ५ बनावटी ब्राह्मण। ६ विराट के यहाँ अज्ञातवास की अवधि में युधिष्ठिर ने अपना नाम कङ्क ही रखा था।—पत्र (वि०) बक विशेष के परों से सम्पन्न —पत्रः, (पु०) तीर। बाण।—पत्रिन्, (पु०) (=कङ्कपत्रः)—मुखः (पु०) चीमटा।—शायः (पु०) कुत्ता।

कंकटः, कङ्कटः (पु०), कंकटकः, कङ्कटकः (पु०) १ कवच। सैनिक उपस्कर। २ अङ्कुश।

कंकणः, कङ्कणः (पु०), कंकणं, कङ्कणम् (न०) १ कलाई में पहिनने का आभूषण विशेष। २ कड़ा। पहुँची। ककना। ३ विवाहसूत्र। कौतुकसूत्र। ४ साधारणतः कोई भी आभूषण। ५ चोटी। कलगी।

कंकणः, कङ्कणः (पु) पानी की फुहार। यथा।—

नितम्बे हाराली नयनयुगले कङ्कणभरम्।

—उद्भट

कंकणी, कङ्कणी (स्त्री०), कंकणिका कङ्कणिका(स्त्री०) १ घुँघुरू। २ बजने वाला आभूषण।

कंकत, कङ्कतः (पु०), कंकतं, कङ्कतम् (न०), कंकती, कङ्कती (स्त्री०), कंकतिका.कङ्कतिका(स्त्री०) कंघी। बाल झारने की कंघी या कंघा।

कंकरं, कङ्करम् (न०) मठा जिसमें जल मिला हो।

कंकालः, कङ्कालः (पु०), कंकालं, कङ्कालम् (न०) ठठरी। हड्डियों का ढाँचा। अस्थिपञ्जर।—मालिन्, (पु०) शिव जी का नाम।—शेष, (वि०) जिसके शरीर में केवल हड्डियाँ हड्डियाँ ही रह गयी हों।

कंकालयः, कङ्कालयः (पु०) शरीर। देह। जिस्म।

कंकेल्लः, कङ्केल्लः }
कंकेल्लिः, कङ्केल्लिः } (पु०) अशोक वृक्ष ।

कंकोली, }
कङ्कोली } देखो कक्कोली ।

कंगुल }
कङ्गुलः } (पु०) हाथ ।

कच् (धा० परस्मै०) [कचति, कचित] शब्द करना । चिल्लाना । शोर मचाना । (उभय०) १ बाँधना । नत्थी करना । २ चमकाना ।

कचः (पु०) १ केश (विशेष कर सिर के) २ । सूखा और पुरा हुआ घाव । गूत । ३ बंधन । ४ वस्त्र की गोट या संजाफ । ५ बादल । ६ बृहस्पति के पुत्र का नाम ।—अग्रं, (न०) बालों का घुघरालापन ।—आचित, (वि०) खुले या बिखरे बालों वाला ।—ग्रहः, (पु०) बाल पकड़ने वाला ।—मालः, स्त्री०) धूम । धुआँ ।

कचंगनं }
कचङ्गनं } (न०) वह मण्डी जहाँ बिकने के लिये आये हुए माल पर कोई कर वसूल न किया जाय ।

कचंगलः }
कचङ्गलः } (पु०) समुद्र ।

कचा (स्त्री०) हथिनी ।

कचाकचि (अव्यया०) एक दूसरे के बाल पकड़ कर खींचना और लड़ना ।

कचाटुरः (पु०) जलकुक्कुट ।

कचर (वि०) १ बुरा । मैला । २ दुष्ट । नीच । अधःपतित । [अव्यय विशेष ।

कच्चित् (अव्यया०) प्रश्न, हर्ष, और मङ्गल व्यञ्जक

कच्छ (पु०) }
कच्छम् (न०) } १ तट । हाशिया । सीमा । सीमावर्ती देश । २ दलदल । ३ गोट । मगज़ी । ४ नाव का एक हिस्सा । ५ कछुए का शरीराङ्ग विशेष ।—अन्तः, (पु०) किसी नदी या झील का तट ।—प., (पु०) कछुआ ।—पी, (स्त्री०) १ कछवी । २ वीणा विशेष ।—भूः, (स्त्री०) दलदल ।

कच्छटिका }
कच्छाटिका }
कच्छाटी } (स्त्री०) भगा की चुन्नट ।

कच्छा (स्त्री०) झींगुर । झिल्ली ।

कच्छुः (स्त्री०) }
कच्छू (स्त्री०) } खाज । खुजली ।

कच्छुर (वि०) १ खजुहा । २ लम्पट । विषयी ।

कज्जलं (न०) १ काजल । २ सुर्मा । स्याही । मसी ।—ध्वजः, (पु०) दीपक । लँप ।—रोचकः, (पु०) —रोचकम्, (न०) डीवट । पतीलसोत ।

कच् (धा० आत्म०) २ बाँधना । २ चमकाना ।

कंचारः }
कञ्चारः } (पु०) १ सूर्य । मदार का पौधा ।

कंचुकः }
कञ्चुकः } (पु०) १ कवच । २ सर्पचर्म । केंचुली । ३ पोशाक । परिच्छद । ४ चुस्त पोशाक । ५ अंगिया । चोली । जाकट ।

कंचकालु }
कञ्चकालुः } (पु०) सर्प । साँप ।

कंचुकित }
कञ्चुकित } (वि०) १ कवच धारण किये हुए । २ पोशाक पहिने हुए ।

कंचुकिन् }
कञ्चुकिन् } (वि०) १ कवचधारी । (पु०) १ ज़नानी ड्योढी का रखवाला । शयनगृह की परिचारिक । २ लम्पट । व्यभिचारी । ३ सर्प । ४ द्वारपाल । ५ यव । जौ । अन्न विशेष ।

कंचुलिका, कञ्चुलिका }
कंचुली, कञ्चुली } (स्त्री०) चोली । अँगिया ।

कंजः }
कञ्जः } (पु०) १ बाल । २ ब्रह्म का नाम ।—नामः, (पु०) विष्णु का नाम ।

कंजम् }
कञ्जम् } (न०) १ कमल । २ अमृत ।

कंजकः, कञ्जकः (पु०) }
कंजकी, कञ्जकी (स्त्री०) } पक्षी विशेष ।

कंजनः, कञ्जनः (पु०) १ कामदेव । २ पक्षी विशेष ।

कंजरः, कञ्जरः }
कंजारः, कञ्जारः } (पु०) १ सूर्य । २ हाथी । ३ उदर । पेट । ४ ब्रह्मा की उपाधि ।

कंजल. }
कञ्जलः } (पु०) पक्षी विशेष ।

कट् (धा० पर०) [कटति, कटित] १ जाना । २ ढकना ।

कटः (पु०) १ चटाई । २ कूल्हा । ३ कूल्हा और कमर । ४ हाथी की कनपटी । ५ घास विशेष । ६ शव । लाश । ७ शव-वाहन-शिविका । समाधि

मण्डप। ८ पाँसों के फेंकने का विशेष प्रकार। ९ अतिरिक्त। आधिक्य। १० तीर। बाण। ११ रवाज़ रीति। १२ कबरस्तान।—अक्षः, (पु०) झलक। कनखियों देखना।—उदकं (न०) १ तर्पण का जल। २ हाथी का मद। ३ वर्णसङ्कर जाति विशेष। [शूद्रायां वैश्यतश्चौर्यात् कटकार इति स्मृतः—उशना।] २ चटाई बनाने वाला। धक्कार।—कोलः, (पु०) खखारदान। पीकदान।—खादकः, (पु०) १ स्यार। गीदड़। २ काक। ३ कांच का पात्र।—घोषः, (पु०) गडरियों का पुरवा।—पूतनः, (पु०) - पूतना, (स्त्री०) एक प्रकार के प्रेतात्मा।—प्रूः, (पु०) १ शिव। २ क्षुद्रभूत या पिशाच। ३ कीट। कीड़ा।—प्रोथ, (पु०)—प्रोथं, (न०) चूतड़। नितंब।—मालिनी, (स्त्री०) मदिरा। शराब।

कटकः (पु०) } १ पहुँची। कड़ा। २ मेखला।
कटकम् (न०) } कमरबन्द। ३ डोरी। ४ जंजीर की कड़ी। ५ चढ़ाई। ६ सेंधा निमक। ७ पर्वत पार्श्व। ८ उपत्यका। ९ सेना। १० राजधानी। ११ घर। मकान। १२ चक्र। पहिया। वृत्त।

कटकिन् (पु०) पर्वत। पहाड़।

कटंकटः } (पु०) १ आग। २ सोना। ३ गणेश
कटङ्कटः } जी का नाम।

कटनम् (न०) मकान की छत, खपरैल या छप्पर।

कटाहः (पु०) १ कड़ाह। बड़ी कड़ाही २ खप्पर। ३ कूप। हौला।

कटिः } (स्त्री०) १ कमर। २ नितम्ब। ३ हाथी
कटी } का गण्डस्थल।—तटं, (न०) करिहा। करिहाँव।—त्रं (न०) कमरबन्द। कमर में बाँधने का कपड़ा।—प्रोथः, (पु०) चूतड़।—मालिका, (स्त्री०) स्त्रियों का इज़ारबन्द। नारा।—रोहकः, (पु०) हाथी का सवार। हाथी पर सवारी करने वाला।—शीर्षकः, (पु०) कूल्हा। करिहाँव।—शृङ्खला, (स्त्री०) बजनी करधनी।—सूत्रं, (न०) कमरबन्द। इज़ारबन्द।

कटिका (स्त्री०) कूल्हा। करिहाँव।

कटीरः } १ गुफा। कूल्हा। कटि।
कटीरम् }

कटीरकं (न०) १ शरीर का पिछला भाग। २ पुट्ठा। चूतड़।

कटु (वि०) [स्त्री०—कटु, कट्वी] १ चरपरा। तीता। षटरसों में से एक [छः प्रकार के रस ये हैं—१ मधुर, २ कटु ३ अम्ल, ४ तिक्त, ५ कषाय और ६ लवण।] ३ सुवासित। सुगन्धित। ४ दुर्गन्धित ५ उग्र। तीक्ष्ण। प्रतिकूल। अप्रीतिकर। ६ ईर्ष्यालु। ७ तेज़। प्रचण्ड।—(न०) अनुचित कर्म। २ अपमान। धिक्कार। फटकार।—कीटः,—कीटकः, (पु०) डाँस। मच्छड़।—क्वाणः, (पु०) टिटिभ पक्षी।—ग्रन्थि, (न०) सोंठ।—निष्पावः, (पु०) वह अनाज जो जल की बाढ़ में जलमग्न न हुआ हो।—मोदं, (न०) सुगन्धित द्रव्य विशेष।—रवः, (पु०) मैढक। मण्डूक।

कटुः (पु०) चरपराहट। तीतापन।

कटुक (वि०) १ तीक्ष्ण। चरपरा। २ प्रचण्ड। तेज़ ३ अप्रीतिकर। अप्रिय।

कटुकः (पु०) चरपराहट। तीतापन। [गँवारपन।

कटुकता (स्त्री०) अशिष्ट व्यवहार। अशिष्टता।

कटुरं (न०) जलमिश्रित छाछ या माठा।

कटोर (न०) मृण्मयपात्र। मिट्टी का बर्तन।

कटोलः (पु०) १ चरपरा स्वाद। २ निम्नवर्ण का पुरुष जैसे चाण्डाल।

कठ् (धा० परस्मै०) कष्ट में रहना।

कठः (पु०) एक ऋषि का नाम। यह वैशम्पायन के शिष्य थे। यजुर्वेद के पढ़ाने वाले। यजुर्वेद की एक शाखा इन्हींके नाम से प्रसिद्ध है।—धूर्तः, (पु०) कठशाखा में निष्णात ब्राह्मण।—श्रोत्रियः, (पु०) यजुर्वेद की कठशाखा में पारङ्गत ब्राह्मण।

कठमर्दः (पु०) शिव जी का नाम।

कठर (वि०) कड़ा। सख़्त।

कठाः (पु०) कठऋषि के अनुयायी।

कठिका (स्त्री०) खड़िया। चाक।

कठिन (वि०) १ कड़ा। सख़्त। कठिन। कठोर। २ निष्ठुर हृदय। संगदिल। निर्दयी। ३ नम्र न होने

वाला । अनार्द्र । ४ उग्र । प्रचण्ड । ५ पीड़ा-कारक ।

कठिनः (पु०) वन । बेहड़ ।

कठिना (स्त्री०) १ मिश्री या बूरे की बनी मिठाई विशेष । २ मिट्टी की हड़िया ।

कठिनिका } (स्त्री०) १ चाक । खड़िया मिट्टी । २
कठिनी } छुगुनिया । कनिष्ठिका ।

कठोर (वि०) १ कड़ा । ठोस । २ निर्दयी । कठोर-हृदय । दयाहीन । ३ पैना । तेज़ । ४ पूरा । पूरा बढ़ा हुआ । सम्पूर्ण । ५ (आलं०) पक्का । संस्कारित । साफ़ किया हुआ ।

कड् देखो कण्ड् । [मूर्ख ।

कड (वि०) १ गूंगा । २ रूखा स्वर । ३ अज्ञान ।

कडंगरः कडङ्गरः } (पु०) तृण । तिनका ।
कडंकरः कडङ्करः }

कडंकरीय, कडङ्करीय } (वि०) तृण खाने वाला ।
कडंगरीय, कडङ्गरीय } (गौ, भैंस आदि) ।

कडत्रं (न०) पात्र विशेष । एक प्रकार का बर्तन ।

कडंदिका, कडन्दिका (स्त्री०) कलण्डिका । विज्ञान ।

कडंबः, कडम्बः (पु०) } डंठल । डंठा ।
कलंबः, कलम्बः (पु०) }

कडार (वि०) १ साँवला । धौला । २ ठगना । ३ क्रोधी । अहंकारी । घमंडी । अकड़बाज़ ।

कडारः (पु०) १ सांवला या धौला रंग । २ नौकर ।

कडितुलः (पु०) तलवार । खांडा ।

कण् (धा० परस्मै०) [कणति; कणित] १ कराहना । सिसकना २ छोटा होना । ३ जाना । ४ आँख झपना । पलकों से आँखें मूँदना ।

कणः (पु०) १ अनाज । २ अणु । ३ स्वल्प परिमाण । ४ रत्तीभर गर्द या धूल । ५ पानी की बूंद या फुहार । ६ अनाज की बाल । ७ आग का अङ्गारा । —अदः, —भक्षः, —भुज्, (पु०) अणुवाद अर्थात् वैशेषिक दर्शन के आविर्भावकर्त्ता का कुत्सित नाम ।—जीरकम्, (न०) जीरा ।—भक्षकः, (पु०) पक्षी विशेष ।—लाभः, (पु०) भँवर ।

कणपः (पु०) भाला या साँग । [कण ।

कणशः (अव्यया०) थोड़ा थोड़ा । बूंद बूंद । कण

कणिकः (पु०) १ अनाज का दाना । २ अणु । ३ अनाज की बाल । ४ भुने हुए गेहुँओं का भोज्य पदार्थ विशेष ।

कणिका (स्त्री०) १ अणु । छोटे से छोटा पदार्थ । २ जलबिन्दु । ३ अनाज विशेष ।

कणिशः (पु०) } अनाज की बाल ।
कणिशम् (न०) }

कणीक (वि०) छोटा । नन्हा ।

कणे (अव्यया०) कामना पूर्ति व्यञ्जक अव्यय ।

कणेरा } (स्त्री०) १ हथिनी । २ रंडी । वेश्या ।
कणेरुः } पतुरिया ।

कंटकः, कण्टकः (पु०) } १ काँटा । २ डंक । ३
कंटकम्, कण्टकम् (न०) } (आलं०) १शासन या राज्य का कण्टक रूप व्यक्ति । ४ व्याधि । बवाल । ५ रोमाञ्च । ६ नख । नोंह । ७ मन दुखाने वाला भाषण । (पु०) १ बाँस । २ कारखाना ।—अशनः, —भक्षकः, (पु०)—भुज्, (पु०) ऊंट । —उद्धरणम्, (न०) काँटा निकालना । (आलं०) अप्रिय या उत्पातकारी व्यक्ति या वस्तु को दूर करना ।—प्रभुः (पु०) १ कांटा । झाड़ी । २ शालमली वृक्ष ।—मर्दनं, (न०) उपद्रव दमन । - विशोधनम्, (न०) प्रत्येक दुःख-दाई श्रोत को नष्ट कर डालना ।

कंटकित् } (वि०) १ कटीला । २ रोमाञ्चित ।
कण्टकित् }

कंटकिन् } (वि०) १कटीला । २दुःखदायी ।—
कण्टकिन् } फलः, (पु०) कटहल का वृक्ष ।

कंटकिलः } (पु०) कँटीला बाँस ।
कण्टकिलः }

कंठ्,कण्ठ्) (धा० उभय०) [कण्ठति, कण्ठते, कण्ठयति, कण्ठयते, कण्ठित] शोक करना । स्यापा करना । चिन्तित होना । अभिलाषी होना । सखेद स्मरण करना ।

कंठः,कण्ठः (पु०) } १ गला । २ गर्दन । ३
कंठम्,कण्ठम् (न०) } स्वर । आवाज़ । ४ पात्र का किनारा या गर्दन । ५ सामीप्य । पड़ोस —आभरणम्, (न०) कंठा । पाटिया । तिलरी आदि गले का गहना ।—कूणिका, (स्त्री०) वीणा । सारंगी ।—गत, (वि०) गले में प्राप्त । गले में स्थित । गले में आया

या अटका हुआ ।—तटः, —तटं, —तटी, (स्त्री०) गर्दन की अगल बगल का स्थान ।—दघ्न, (वि०) गरदन तक ।—नीडकः, (पु०) चील ।—नीलकः, (पु०) मसाल । लुका । पलीता ।—पाशकः, (पु०) हाथी की गर्दन का रस्सा ।—भूषा, (स्त्री०) छोटी गुंज ।—मणिः, (स्त्री०) रत्न जो गले में पहिना जाय ।—लता, (स्त्री०) १ पट्टा । कालर । २ बाग-डोर । अगाड़ी ।—शोषः, (पु०) गला सूखना ।—स्थ, (वि०) गले वाला । गले से उच्चारण किये जाने वाले वर्ण ।

कंठतः / कण्ठतः } (अव्यया०) १ गले से । २ स्पष्टतः । साफ साफ ।

कंठालः / कण्ठाल } (पु०) १ नाव । २ बेलचा । कुदाली । ३ युद्ध । ४ ऊँट ।

कंठाला / कण्ठाला } (स्त्री०) बर्तन जिसमें दही या दूध बिलोया जाय ।

कंठिका / कण्ठिका } (स्त्री०) एकलरा हार या गुंज ।

कंठी / कण्ठी } (स्त्री०) १ गर्दन । गला । २ गुंज । गोप । कालर । पट्टा । ३ घोड़े की गर्दन में बाँधने की रस्सी ।—रवः, (पु०) १ शेर । सिंह । २ मदमाता हाथी । ३ कबूतर । ४ स्पष्ट घोषणा या उल्लेख ।

कंठीलः / कण्ठील } (पु०) ऊँट । उष्ट्र ।

कंठेकालः / कण्ठेकालः } (पु०) शिव जी का नाम ।

कंठ्य / कण्ठ्य } (वि०) १ गले से उत्पन्न । २ जिसका उच्चारण गले से हो ।—वर्णाः, (पु०) कण्ठ से उच्चारित होने वाले अक्षर । यथा अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ् और ह् ।—स्वरः, (पु०) अ और आ अक्षर ।

कंड् / कण्ड् } (धा० उभय०) १ प्रसन्न होना । सन्तुष्ट होना । २ गर्व करना । ३ फटकना । कूट कर भूसी अलगाना । ४ बचाव करना । रक्षा करना ।

कंडनम् / कण्डनम् } (न०) १ भूसी से अनाज को अलगाने की क्रिया । फटकना । पछोरना । २ भूसी ।

कंडनी / कण्डनी } (स्त्री०) ऊखली । खरल । खल ।

कंडरा / कण्डरा } (स्त्री०) नस ।

कंडिका / कण्डिका } (स्त्री०) १ छोटे से छोटा विभाग । २शुक्ल-यजुर्वेद का भाग विशेष ।

कंडुः / कण्डुः } (पु० स्त्री०) १ खुजलाहट । खुजली । खाज ।

कंडूः / कण्डूः } (स्त्री०) खुजली । खाज ।

कंडूतिः / कण्डूतिः } (स्त्री०) खाज । खुजली ।

कंडूयति, कण्डूयति / कंडूयते, कण्डूयते } (क्रि० उ०) खुजलाना । धीरे धीरे मलना ।

कंडूयनम् / कण्डूयनम् } (न०) मलना । खुजलाना ।

कंडूयनकः / कण्डूयनकः } (पु०) गुद गुदाने वाला । सुरसुरी पैदा करने वाला ।

कंडूया / कण्डूया } (स्त्री०) खाज । खुजली ।

कंडूल / कण्डूल } (वि०) सुरसुरी, जिसके होने से खुजलाने को जी चाहे ।

कंडोलः / कण्डोल } (पु०) डलिया । टोकरी । कौआ ।

कंडोषः / कण्डोषः } (पु०) झाँझा । कीड़ा । कीट ।

कण्वः, (पु०) एक ऋषि का नाम जिन्होंने शकुन्तला का पालन पोषण किया था—दुहितृ,—सुता, (स्त्री०) शकुन्तला ।

कतः / कतकः } निर्मली का वृक्ष जिसके फल से जल साफ किया जाता है ।

कतं / कतकम् } (न०) निर्मली वृक्ष का फल ।

कतम (सर्वनाम वि०) कौन । कौनसा ।

कतर (सर्वनाम वि०) कौन । दो में से कौन सा ।

कतमालः (पु०) अग्नि । आग ।

कति (सर्वनाम वि०) १ कितने । २ कुछ ।

कतिकृत्वम् (अव्यया०) कितने वार । कितने दफा ।

कतिधा (अव्यया०) १ कितनी वार । २ कितने स्थानों पर । कितने भागों में ।

कतिपय (वि०) १ कुछ । थोड़े से । कुछेक ।

कतिविध (वि०) कितने प्रकार के।

कतिशस् (अव्यया०) एक दफे में कितने।

कत्थ् (धा० आत्म०) [कत्थते, कत्थित] १ डींगे हाँकना। शेखी बघारना। २ प्रशंसा करना। प्रसिद्ध करना। ३ गाली देना।

कत्थनम् (न०) } **कत्थना** (स्त्री०) } बखान करना। डींगे हाँकना।

कत्सवरं (न०) कंधा।

कथ् (धा० उभय०) [कथयति, कथित] १ कहना। बतलाना। २ वर्णन करना। ३ वार्तालाप करना। ४ निर्देश करना। खोल देना। दिखला देना। ५ निरूपण करना। ६ सूचना देना। ख़बर देना। शिकायत करना।

कथक (वि०) कहने वाला। निरूपण करने वाला।

कथकः (पु०) १ किसी अभिनय का प्रधान पात्र। २ वादी। ३ क़िस्सा कहने वाला।

कथनम् (न०) वर्णन। निरूपण। विवरण।

कथम् (अव्यया०) १ कैसे। किस प्रकार। किस तरह से। कहाँ से। २ यह आश्चर्य व्यञ्जक भी है —कथिकः (पु०) जिज्ञासु। खोजी।—कारं, (अव्यया०) किस रीति से। कैसे।—प्रमाण, (वि०) किस नाप का।—भूत, (वि०) किस प्रकार का कैसा।—रूप, (वि०) किस सूरत शक्ल का।

कथंता } **कथन्ता** } (स्त्री०) किस प्रकार का। किस ढंग का।

कथा (स्त्री०) १ कहानी। क़िस्सा। २ कल्पित कहानी। ३ वृत्तान्त। वर्णन। ४ वार्तालाप। कथोपकथन। ५ आख्यायिका के ढंग का गद्यमय निबन्ध।—अनुरागः, (पु०) वार्तालाप करने में हर्षित होने वाला पुरुष।—अन्तरम्, (न०) १ बातचीत के सिलसिले में। २ दूसरी कहानी। —आरम्भः, (पु०) कहानी का आरम्भ।—उदयः, (पु०) कहानी का आरम्भ।—उद्घातः (पु०) पाँच प्रकार की प्रस्तावनाओं में से दूसरे प्रकार की प्रस्तावना। २ किसी कहानी के वर्णन का आरम्भ।—उपाख्यानम्, (न०) वर्णन। निरूपण।—छलं, (न०) कल्पित कहानी का रूप रंग। २ मिथ्यावर्णन।—नायकः,—पुरुषः, (पु०) किसी कहानी का मुख्यपात्र। —पीठं, (न०) किसी कहानी का आरम्भिक भाग।—प्रबन्धः (पु०) कहानी। क़िस्सा।—प्रसङ्गः, (पु०) १ वार्तालाप। बातचीत का सिलसिला। २ विषवैद्य।—प्राणः, (पु०) नाटक का पात्र।—मुखं, (न०) कथापीठ। किसी कहानी का आरम्भिक अंश।—योगः,(पु०) वार्तालाप का सिलसिला।—विपर्यासः, (पु०) किसी कहानी का बदला हुआ ढंग।—शेष,—अवशेष, (वि०) वह पुरुष जिसका केवल वृत्तान्त बच रहे अर्थात् मृत। मृतक। मरा हुआ।—शेषः,—अवशेषः, (पु०) कहानी का शेष अंश या बचा हुआ भाग।

कथानकम् (न०) छोटी कहानी जैसे वेताल-पच्चीसी।

कथित (व० कृ०) १ कहा हुआ। वर्णित। निरूपित। २ वाच्य।—पदं (न०) पुनरुक्ति। [यह निबन्ध रचना में रचना सम्बन्धी दोष माना गया है।] वाक्यों से सम्बन्ध रखने वाला। वाक्य सम्बन्धी।

कद् (धा० आत्म०) [कदते] घबड़ा जाना। मन का चञ्चल होना। (आत्म० [कदते] १ रोना। आँसू बहाना। २ दुःखी होना। ३ बुलाना। पुकारना। ४ मार डालना या चोटिल करना।

कद् (अव्यया०) यह 'कु' का परियायवाची है और बुराई, स्वल्पता, ह्रास, अनुपयोगिता, त्रुटिपूर्णता आदि के भावों को प्रकट करता है।—अक्षरं (न०) बुरे अक्षर। बुरालेख।—अग्निः (पु०) थोड़ी आग।—अध्वन् (पु०) बुरा मार्ग।—अन्नं (न०) बुरा भोजन।—अपत्यं (न०) बुरा बालक।—अभ्यासः (पु०) बुरी आदत या बान। कुटेव।—अर्थ (वि०) निरर्थक। अर्थरहित।—अर्थना (स्त्री०) पीडा। अत्याचार। —अर्थयति, (क्रि०) १ तिरस्कार करना। तुच्छ समझना। २ पीड़ित करना। अत्याचार करना। —अर्थित (वि०) १ तिरस्कृत। घृणित। तुच्छीकृत। २ अत्याचार पीड़ित। खिजाया हुआ।

चिढ़ाया हुआ। ३ तुच्छ। कमीना। ४ वद। दुष्ट। —अर्यः (पु०) लोभी। लालची।—अर्यभावः (=कदर्यभावः) लोभ। लालच। कंजूसी। प्रलोभन। सूमता। कंजूसपना।—अश्वः, (पु०) दुष्ट घोड़ा।—आकार (वि०) भौंड़ा। वदशक्ल। अपरूप।—आचार (वि०) दुष्ट। बुरे आचरणों वाला —आचारः (पु०) वदचालचलन।—उष्ट्रः (पु०) बुरा ऊंट।—उष्ण, (वि०) गुनगुन।—उष्णम् (न०) गुनगुनापन।—रथः (पु०) बुरा रथ या गाडी।—वद् (वि०) १ बुरी वात करने वाला। अस्पष्ट बोलने वाला अथवा ठीक ठीक वात न कहने वाला। २ दुष्ट। तिरस्करणीय।

कदकं (न०) चँदवा। मण्डप। शामियाना।

कदनम् (न०) १ नाश। वरवादी। हत्या। २ युद्ध। ३ पाप।

कदंवः, कदम्बः } (पु०) १ स्वनामख्यात
कदंवक, कदम्बकः } वृत्तविशेष। इसके वारे में कहा जाता है कि, जव वादल गर्जते हैं, तव इसमें कलियां लगती हैं। २ घास विशेष। ३ हल्दी।—अनिलः (पु०) १ कदम्ब के पुष्पों की सुवास से सुवासित पवन। २ वसन्त ऋतु।—वायुः (पु०) सुवासित पवन।

कदंवकं } (पु०) १ आरा। आरी। २ अंकुश।
कदम्बकम् } आंकुस।

कदरः (न०) जमा हुआ दूध। दही।

कदरं (न०) १ समारोह। २ कदम्ब वृक्ष के फूल।

कदलः }
कदलकः } (पु०) केले का पेड। कदली वृक्ष।

कदली (स्त्री०) १ केले का पेड। २ मृग विशेष। ३ ध्वजा जो हाथी की पीठ पर लेकर आगे वढाई जाती है। ४ ध्वजा या झंडा।

कदा (अव्यया०) कव किस समय।

कद्रु (वि०) } धौला। भूरा।
कद्रू (स्त्री०) } (स्त्री०) कश्यप ऋषि की पत्नी और नागों की माता।—पुत्रः,—सुतः (पु०) साँप। सर्प।

कनकं (न०) सोना।

कनक (पु०) १ पलास वृक्ष। २ धतूरे का वृक्ष। ३ तिंदुक।—अगदम् (पु०) सोने का वाजू।—अचलः—अद्रिः,—गिरिः,—शैलः, (पु०) सुमेरु पर्वत।—आलुका, (स्त्री०) सुवर्ण, कलश या सोने का फूलदान।—आह्वयः, (पु०) धतूरे का वृक्ष।—टङ्कः, (पु०) सुनहली कुल्हाड़ी।—पत्रं, (न०) सोने का वना कान का गहना।—परागः, (पु०) सोने की रज।—रसः, (पु०) १ हरताल। २ गला हुआ सोना।—सूत्रं (न०) सोने की गुंज। आभूषण विशेष।—स्थली, (स्त्री०) सोने की खान।

कनकमय (वि०) सोने का वना हुआ। सुनहला।

कनखलं (न०) हरिद्वार के समीप का एक तीर्थ विशेष।

कनन (वि०) काना एक आँख का।

कनयति (क्रि०) कम करना। आकार में घटाना। छोटा करना।

कनिष्ठ (वि०) १ सब से छोटा। सब से कम। २ उम्र में सब से छोटा।

कनिष्ठा (स्त्री०) छगुनिया। हाथ की सब से छोटी [उँगुली।

कनीनिका } १ छगुनिया। हाथ की सब से छोटी
कनीनी } उँगुली। २ आँख की पुतली।

कनीयस् (वि०) १ अपेक्षा कृत कम। अपेक्षाकृत छोटा। २ वय में अपेक्षा कृत छोटा।

कनेरा (स्त्री०) १ रण्डी। वेश्या। २ हथिनी।

कंतुः } (पु०) १ काम। २ हृदय (जो विचार
कन्तुः } और अनुभव का स्थान है।) ४ खत्ती या खौ जिसमें अनाज भरा जाता है।

कंथा } (स्त्री०) कथडी। कथरी।—धारिणम्
कन्था } (न०) कथडी पहिनना।—धारिन् (पु०) योगी। भिक्षुक।

कंदः (पु०) कन्दः पु०) } १ एक प्रकार की जड़
कदम् (न०) कन्दम् (न०) } जो खायी जाती है। २ लहसन। ३ गाँठ। गुमडी।—मूलम् (न०) मूली।—सारं (न०) इन्द्र का उद्यान। (पु०) वादल।

कदड्डं (न०) सफेद कमल। कमोदिनी।

कंदरः (पु०) कन्दरः (पु०) } गुफा। घाटी (पु०)
कंदरम् (न०) कन्दरम् (न०) } अंकुश। आँकुस।

कंदरा } (स्त्री०) कंदरी, कन्दरी (स्त्री०)
कन्दरा } गुफा। खुखाल। घाटी।

कंदराकारः } (पु०) पहाड़ । पर्वत ।
कन्दराकारः }

कंदर्पः, कन्दर्पः (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम ।—कूपः (पु०) १ कुल या कुशा (२) योनि । भग ।—ज्वरः, (पु०) कामज्वर ।—दहनः, (पु०) शिव जी का नाम ।—मुपलः,—मुसलः, (पु०) पुरुष की जनेन्द्रिय । लिङ्ग ।—शृङ्खल, (पु०) रतिवन्ध ।

कंदलः, कन्दलः (पु०) } १ अंखुआ । अंकुर । २
कंदलम्, कन्दलम् (न०) } लानत । मलामत । भर्त्सना । ३ गाल अथवा गाल और कनपुटी । ४ अशकुन । कुलक्षण । ५ मधुर स्वर । ६ केले का वृक्ष । (पु०) १ सुवर्ण । २ युद्ध । लड़ाई । ३ वादानुवाद । बहस । (न०) पुष्प विशेष ।

कंदली, कन्दली (स्त्री०) १ केले का वृक्ष । २ एक जाति का हिरन । ३ झंडा । ४ कमलगट्टा । या कमल का बीज ।—कुसुमम् (न०) कुकुरमुत्ता ।

कंदुः } (पु०) (स्त्री०) १ बटलोई । पतीली ।
कन्दुः } २ तंदूर चूल्हा ।

कंदुकः , कन्दुकः (पु०) } गेंद । बाल ।—लीला
कंदुकम् , कन्दुकम् (न०) } (पु०) गेंद बल्ले का खेल ।

कंदोटः, कन्दोटः (पु०) } १ कमोदिनी या सफेद
कंदोट्टः, कन्दोट्टः (पु०) } कमल का फूल । २ नील कमल ।

कंधरः } (पु०) १ गरदन । २ बादल ।
कन्धरः }

कंधरा } (स्त्री०) गरदन ।
कन्धरा }

कंधिः } (स्त्री०) १ समुद्र । २ गर्दन ।
कन्धिः }

कन्नम् (न०) १ पाप । २ मूर्च्छा । बेहोशी ।

कन्यका (स्त्री०) १ लड़की । २ अविवाहिता लड़की । ३ दस वर्ष की लड़की की संज्ञा विशेष । साहित्यालङ्कार में कई प्रकार की नायिकाओं में से एक । अविवाहिता लड़की, जो किसी पद्यमय काव्य की प्रधान नायिका हो । ४ कन्याराशि ।—छलः (पु०) बहकावा । दम । झाँसा । फुसलाहट । —जनः, (पु०) कुँवारी कन्या । अनविवाहिता लड़की ।—जातः, (पु०) अविवाहिता लड़की से उत्पन्न पुत्र । कानीन ।

कन्यसः (पु०) सब से लहुरा भाई ।

कन्यसा (स्त्री०) सब से छोटी उँगुली ।

कन्यसी (स्त्री०) सब से छोटी बहिन ।

कन्या (स्त्री०) १ अनविवाहिता लड़की या पुत्री । २ दस वर्ष की उम्र की लड़की । ३ क्वारी लड़की । ४ साधारणतः कोई भी स्त्री । ५ कन्या राशि । ६ दुर्गा का नाम । ७ बड़ी इलायची । —अन्तःपुरं, (न०) ज़नानखाना । अन्तःपुर ।—आट, (वि०) युवती लड़कियों की खोजमें रहने वाला ।—आटः, (पु०) १ लड़कियों के रहने का स्थान । २ वह पुरुष जो युवतियों का शिकार करे अथवा उनकी खोज में रहे ।—कुब्जः, (पु०) कन्नौज नामक नगर —गतम्, (न०) कन्या राशि पर गया हुआ ग्रह । —ग्रहणम्, (न०) विवाह में कन्या को ग्रहण करना या लेना ।—दानम्, (पु०) विवाह में कन्या को देना ।—दोषः, (पु०) कन्याओं के ऐब, जैसे रोग, अङ्गन्यूनता आदि ।—धनम् (न०) दहेज़ । यौतुक ।—पतिः, (पु०) दामाद । जामाता ।—पुत्रः, (पु०) अविवाहिता लड़की से उत्पन्न लड़का जिसे कानीन कहते हैं । —पुरं, (न०) ज़नानखाना ।—भर्तृ, (पु०) १ दामाद । जमाई । २ कार्तिकेय का नाम । —रत्नं, (स्त्री०) अत्यन्त सुन्दरी कन्या । —राशिः, (पु०) कन्याराशि ।—वेदिन्, (पु०) जमाई ।—शुल्कं, (न०) वह धन जो कन्या का मूल्य स्वरूप कन्या के पिता को दिया जाता है ।—स्वयंवर., (पु०) क्वारी कन्या द्वारा अपने लिये पति का वरण करने का विधान विशेष ।—हरण, (न०) कन्या के भगा ले जाना ।

कन्यका } (स्त्री०) १ युवती लड़की । २ क्वारी
कन्यिका } लड़की ।

कन्यामय (वि०) युवती कन्या के रूप में ।

कन्यामयम् (न०) ज़नानखाना । अन्तःपुर । (जिसमें अधिक संख्या लड़कियों ही की हो) ।

कपटः (पु०) } धोखा । छल । कपट ।—तापसः,
कपटम् (न०) } पाखण्डी साधु । बना हुआ तपस्वी । -पटु, (वि०) धोखा देने में निपुण । —प्रबन्धः,(पु०) कपटपूर्ण चाल । —लेख्यम्, (न०) जाली दस्तावेज़ या टीप । —वचनम्, (न०) धोखे की बात ।—वेश, (वि०) बहरूपिया । शक्ल बदले हुए ।

कपटिकः (पु०) छली । कपटी दग़ाबाज ।

कपर्दः } (पु०) १ कौडी । २ जटा । विशेष कर
कपर्दकः } शिव जी का जटाजूट ।

कपर्दिका (स्त्री०) कौडी ।

कपर्दिन् (पु०) शिव जी का नाम ।

कपाटः (पु०) } १ किवाड । २ द्वार । दरवाज़ा ।
कपाटम् (स्त्री०) } —उद्घाटनम् (न०) किवाड खोलना । —घ्नः (पु०) सेंध फोडने वाला । चोर ।

कपालः (पु०) } १ खोपडी २ खप्पर । ३ समारोह
कपालं (न०) } समूह । ४ भिक्षापात्र । ५ प्याला या कटोरा । ६ ढकन । ढकना । —पाणिः, —भृत्, —मालिन्, —शिरस्, (पु०) शिव जी की उपाधियाँ । —मालिनी, (स्त्री०) दुर्गादेवी का नाम ।

कपालिका (स्त्री०) खपरा । खप्पर । ठिकडा ।

कपालिन् (वि०) १ खोपडी रखने वाला । २ खोपडियों की (माला) पहिनने वाला । (पु०) १ शिव जी की उपाधि । २ नीच जाति का आदमी, जो ब्राह्मणी माता और मछुवाहा पिता से उत्पन्न हुआ हो ।

कपिः (पु०) १ बंदर । लङ्गूर । २ हाथी ।—आख्याः सुगन्धिद्रव्य । धूप । धूना । —इज्यः, (पु०) श्रीरामचन्द्र , और सुग्रीव की उपाधि ।—इन्द्रः, (पु०) १ हनुमानजी की उपाधि । २ सुग्रीव की उपाधि । जाम्ववान् की उपाधि।—कच्छुः, (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।—केतनः,—ध्वजः, (पु०) अर्जुन का नाम । —जः, —तैलं, —नामन्, (न०) १ शीलाजीत । २ लोबान ।—प्रभुः, (पु०) श्रीरामचन्द्रजी की उपाधि । —लोहं, (न०) पीतल ।

कपिञ्जलः } (पु०) १ चातक पक्षी । २ तीतर पक्षी ।
कपिञ्जलः }

कपित्थः (पु०) कैथा का पेड । —आस्यः (पु०) वानर विशेष ।

कपित्थम् (न०) कैथा के पेड का फल ।

कपिल (वि०) १ भूरा । धुमैला । २ भूरे बालों वाला ।

कपिलद्युति (पु०) सूर्य ।

कपिलधारा (स्त्री०) गङ्गा जी की उपाधि ।

कपिलस्मृति (स्त्री०) कपिल रचित सांख्य सूत्र ।

कपिलः (पु०) १ एक महर्षि का नाम, जिन्होंने सगर राजा के ६० हज़ार पुत्रों को कुपित हो, भस्म कर डाला था । इन्होंने सांख्यदर्शन का आविष्कार किया था । २ कुत्ता । ३ लोबान । ४ धूप । ५ एक प्रकार की आग । ६ भूरा या धुमैला रंग ।

कपिला (स्त्री०) १ भूरे रंग की गाय । २ एक प्रकार का सुगन्धिद्रव्य ३ लकडी का लट्ठा । ४ जोंक । जलौका ।

कपिलाश्वः (पु०) इन्द्र की उपाधि ।

कपिश (वि०) १ भूरा । सुनहला । २ ललौंहा ।

कपिशः (वि०) १ भूरा या सुनहला रंग । २ शिलाजीत या लोबान । [नाम ।

कपिशा (स्त्री०) १ माधवीलता । २ एक नदी का

कपिशित (वि०) सुनहला या भूरे रंग का ।

कपुच्छलं (न०) } १ चूडाकरण संस्कार । २ दोनों
कपुष्टिका (स्त्री०) } कनपटियों के ऊपर के केशगुच्छ ।

कपूय (वि०) निकम्मा । हेय । नीच ।

कपोतः (पु०) १ पिंडकी । फाक्ता । कबूतर । २ (साधरणतः) पक्षी ।—अङ्घ्रिः, (पु०) सुगन्धि द्रव्य विशेष ।—अञ्जनम्, (न०) सुर्मा । —अरिः, (पु०) बाज पक्षी ।—चरणा, (स्त्री०) सुगन्धिद्रव्य विशेष । —पालिका, —पाली, (स्त्री०) काबुक । अड्डी । —राजः, (पु०) कबूतरों का राजा । —सारं, (न०) सुर्मा ।— —हस्तः, (पु०) हाथ जोड़ने की विधि विशेष भय या प्रार्थना व्यञ्जक होती है ।

कपोतकः (पु०) छोटा कबूतर ।

कपोतकम् (न०) सुर्मा ।

कपोलः (पु०) गाल । —फलकः, (पु०) चौड़े गाल । —भित्ति, (स्त्री०) कनपटी और गाल । —रागः, (पु०) गालों का गुलाबी रंग ।

कफः (पु०) श्लेष्मा । बलगम । —अरिः, (पु०) सोंठ । —कूर्चिका, (स्त्री०) थूक । खखार ।—क्षयः, (पु०) क्षय रोग । —घ्न, —नाशन, —हर, (वि०) कफनाशक । —ज्वरः, (पु०) कफ की वृद्धि या कफ के विकार से उत्पन्न ज्वर ।

कफल (वि०) कफ प्रकृति का ।

कफिन् (वि०) [स्त्री०—कफिनी] कफ की वृद्धि से पीडित । कफीला ।

कफणिः }
कफोणिः } (स्त्री०) कुहनी ।
कफोणी }

कबंधः—कबन्धः (पु०) } सिर रहित धड़ ।
कबंधम्—कबन्धम् (न०) } (विशेष कर वह धड़ जिसमें प्राण बाकी हों ।) (पु०) १ पेट । २ बादल । ३ धूमकेतु । ४ राहु का नाम । ५ जल । ६ श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में वर्णित राक्षस विशेष, जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने मारा था ।

कपित्थः (पु०) कैथा का पेड ।

कम् (धा० आत्मा०) [कामयते, कामित, कान्त] १ प्यार करना । आसक्त होना । २ उत्कण्ठित होना । अभिलाषा करना । इच्छा करना ।

कमठः (पु०) १ कछुआ । २ बाँस । ३ घडा । —पतिः, (पु०) कछुवों का राजा ।

कमठी (स्त्री०) १ कछुई या छोटा कछुवा ।

कमण्डलु, कमण्डलुः (पु०) मिट्टी या लकडी का जलपात्र । —धरः (पु०) शिवजी का नाम ।

कमन (वि०) १ विषयी । लम्पट । २ सुन्दर । मनोहर ।

कमनः (पु०) १ कामदेव । २ अशोक वृक्ष । ३ ब्रह्मा का नाम । [प्रिय ।

कमनीय (वि०) १ वाञ्छनीय । २ मनोहर । सुन्दर ।

कमर (वि०) कामासक्त । उत्सुक ।

कमलं (न०) १ कमल । २ जल । ३ ताँवा । ४ अर्कविशेष । दवाविशेष । ५ सारस पक्षी । ६ मूत्रस्थली । —अक्षी, (स्त्री०) कमल जैसे नेत्रों वाली स्त्री । —आकरः, (पु०) १ कमल समूह । २ कमल परिपूर्ण सरोवर । —आलया, (स्त्री०) लक्ष्मी जी का नाम । आसनः (पु०) ब्रह्मा का नाम । —ईक्षणा, (वि०) कमल जैसे नेत्रों वाली (स्त्री) ।—उत्तरं, (न०) कुसुम पुष्प । —खण्डम् (न०) कमल समूह ।—जः, (पु०) १ ब्रह्मा की उपाधि । २ रोहिणी नक्षत्र ।—जन्मन्, (पु०) —भवः —योनिः, —सम्भवः, (पु०) ब्रह्मा की उपाधियाँ ।

कमलः (पु०) १ सारस पक्षी । २ हिरन विशेष ।

कमलकम् (न०) एक छोटा कमल ।

कमला (स्त्री०) १ लक्ष्मीजी की उपाधि । २ सर्वोत्तम स्त्री ।—पतिः,—सखः (पु०) विष्णु की उपाधि ।

कमलिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा । २ कमल समूह । ३ वह स्थान जहाँ कमलो का बाहुल्य हो ।

कमा (स्त्री०) सौन्दर्य । कमनीयता ।

कमितृ (वि०) कामासक्त । कामुक ।

कंप् } (धा० आत्म०) [कंपते, कंपित] हिलना ।
कम्प् } काँपना । थरथराना । घूमना फिरना ।

कंपः कम्पः (पु०) } थरथरी । कपकपी ।—अन्वित,
कंपा,कम्पा (स्त्री०) } (वि०) थरथराने वाला । आन्दोलित । उद्विग्न ।—लक्ष्मन् (पु०) वायु । पवन ।

कंपन } (वि०) थरथराने वाला । काँपने वाला ।
कम्पन } हिलने वाला ।

कंपनः } (पु०) शिशिरऋतु । नवंबर और दिसंबर का
कम्पनः } मास ।

कंपनम् } (न०) १ थरथरी । कंपकपी । २ उच्चारण
कम्पनम् } विशेष । गिटकिरी ।

कंपाकः }
कम्पाकः } (पु०) वायु । पवन ।

कंप्र }
कम्प्र } (वि०) कांपने वाला । हिलने वाला ।

कंव् } (धा० परस्मै०) [कंवति, कंवित] जाना ।
कम्व् } हिलना ।

कंवर }
कम्बर } (वि०) चित्रविचित्र । रंगविरंगा ।

कंवरः } (पु०) रंगविरंग रंग का । चितकबरे रंग
कम्बर } का ।

कंवलः } (पु०) १ ऊनी कंवल । २ गलथ्था । गौ की
कम्बलः } गरदन के नीचे का लटकता हुआ मांस । हैंगा । ३ हिरन विशेष । ४ ऊनी वस्त्र जो ऊपर से पहिना जाय । ५ दीवाल ।—वाह्यकं (न०) बहली जिस पर ऊनी पर्दा पडा हो ।

कंवलम्
कम्बलम् } (न०) जल ।

कंवलिका } (स्त्री०) छोटा कंबल । (पु०) बैल ।
कम्बलिका } साँड ।—वाह्यकं (न०) कंबल के उघार की वैलगाड़ी ।

कंवी, कंवो
कम्बी } (स्त्री०) कलछी या चमचा ।

कंबु, कम्बु } (वि०) [स्त्री०—कम्बु —कंवू]
कंवी, कम्बी } चित्तीदार । धब्बादार रंगविरंगा । (पु० न०) शङ्ख । (पु०) १ हाथी २ गरदन । ३ रंगविरंगा रंग । ४ शरीरस्थ एक रग । ५ ककण । पहुँची । ६ नलीनुमा हड्डी । —कराठी, (स्त्री०) शंख जैसी गरदन वाली स्त्री —ग्रीवा (स्त्री०) देखो कंबुकराठी ।

कंवोजः } (पु०) १ शङ्ख । २ हाथी विशेष ।
कम्बोजः } ३ (बहुवचन) एक देश विशेष तथा वहाँ के रहने वाले ।

कम्र (वि०) मनोहर । सुन्दर ।

करः (पु०) [स्त्री०—करा, या करी,] १ हाथ । २ रोशनी की किरन । ३ हाथी की सूँड । ४ कर । चुंगी । ख़िराज । ५ ओला । ६ २४ अँगुल का माप विशेष । ७ हस्त नक्षत्र ।—अग्रं, (न०) हाथ का अगला भाग २ हाथी की सूँड़ की नोंक ।—आघातः, (पु०) हाथ का आघात । —आरोटः, (पु०) अँगूठी ।—आलंबः, (पु०) हाथ का सहारा देना ।—आस्फोटः,, (पु०) १ छाती । २ हाथ का आघात ।—कराटकः, (पु०) —कराटकम, (न०) हाथ की उँगुली का नाख़ून। —कमलं,—पङ्कजम्,—पद्मं, (न०) कमल जैसा हाथ । सुन्दर हाथ ।—कलशः, (पु०)—कलशम्, (न०) हाथ की अँजली ।—किसलयः, (पु०)—किसलयम्, (न०) १ कोमल कर। २ अँगुली ।—कोप , (पु०) हाथ की उँगुली । — ग्रह , (पु०)—ग्रहणम्, (न०) १ कर लगाना । २ पाणिग्रहण करना । ३ विवाह ।—ग्राह., (पु०) १ पति । २ कर उगाहने वाला ।—जः, (पु०) हाथ की ऊँगुली का नख ।—जम् (न०) सुगन्धि द्रव्य विशेष । - जालं, (न०) प्रकाश की धारा ।—तलः (पु०) हथेली ।—तालः, (पु०)—तालकम्, (पु०) १ ताली बजाना । करताल नाम का बाजा विशेष ।—तालिका,—ताली, (स्त्री०) ताली ।—तोया, (स्त्री०) एक नदी का नाम ।—दः, (वि०) १ कर अदा करते हुए। २ करद या कर देने वाला । —पत्रं, (न०) आरा । आरी । पत्रिका, (स्त्री०) जल में क्रीडा करते समय पानी को उछालना ।—पल्लवः, (पु०) १ कोमल हस्त । २ उँगुली ।—पालिका (स्त्री०) १ तलवार । २ फॉवड़ा । कुदाली ।—पीडनम् (न०) विवाह । —पुटः, (वि०) उँगुली । - पृष्ठं, (न०) हाथ की पीठ । बालः,—वालः, (पु०) १ तलवार । २ उँगुली का नख —भारः, (पु०) अत्यन्त अधिक कर ।—भूः (पु०) उँगुली का नख ।—भूषणं, (न०) पहुँची । कड़ा ।—मालः, (पु०) धुआ ।—मुक्तं (न०) हथियारों में सरताज ।—रुहः, (पु०) नख । नाख़ून ।—वीरः,—वीरकः, (पु०) १ तलवार । खाँडा । २ कबरगाह । ३ एक देश विशेष का नाम। ४ वृक्ष विशेष ।—शाखा, (स्त्री०) उँगुली ।—शीकरः, (पु०) हाथी की सूँड से फेंका हुआ जल ।—शूकः, (पु०) उँगुली का नाख़ून ।—सारः, (पु०) किरनों के प्रकाश का मंदा पड जाना ।—सूत्रं, (न०) सूत्र जो विवाह के समय कलाई पर बाँधा जाता है ।—स्थालिन्, (पु०) शिव का नाम ।—स्वनः, (पु०) ताली बजाना ।

करकः (पु०) } कमण्डलु । साधु का जलपात्र ।
करकम् (न०) } —अंभस्, (पु०) नारियल का वृक्ष ।—आसारः, (पु०) ओलों की फुआर या वर्षा ।—जम्, (पु०) पानी ।—पात्रिका, (स्त्री०) साधु का कमण्डलु ।

करङ्कः (पु०) १ हड्डियों की ठठरी । २ खोपड़ी । ३ नरेरी । नारियल का बना पात्र । पिटारी । संदूकची ।

करंजः
करञ्जः } (पु०) भिलावे का पेड ।

करटः (पु०) १ हाथी का गाल । २ कुसुंभ । ३ काक । ४ नास्तिक । अविश्वासी । ५ पतित ब्राह्मण ।

करटकः (पु०) १ काक । २ चोरी की कला का विस्तार करने वाले कर्णीरथ का नाम । ३ हितोपदेश और पञ्चतंत्र में वर्णित एक शृगाल का नाम ।

करटिन् (पु०) हाथी ।

करटुः, करेटुः (पु०) सारस पक्षी का भेद ।

करणम् (न०) १ करना । सम्पन्न करना । २ क्रिया । ३ धार्मिक अनुष्ठान । ४ व्यवसाय । व्यापार । ५ इन्द्रिय । ६ शरीर । ७ क्रिया का साधन । ८ कारण । हेतु । ९ टीप । दस्तावेज़ । लिखित प्रमाण । १० संगीत विद्या में ताली से ताल देना । ११ ज्योतिष में दिन विभाग विशेष ।—अधिपः, (पु०) जीव ।—ग्रामः, (पु०) इन्द्रियों की समष्टि ।—त्राणं, (न०) सिर ।

करंडः, करण्डः (पु०) १ संदूकची या छोटी डलिया । २ शहद की मक्खी का छत्ता । ३ तलवार । ४ कारण्डव (जल) पक्षी ।

करंडिका, करण्डिका, करंडी, करण्डी (स्त्री०) बाँस की पिटारी ।

करंधय, करन्धय (वि०) हाथ चूमते हुए ।

करभः (पु०) १ कलाई से लेकर उँगुली के नख तक के हाथ का पृष्ठभाग । २ सूंड । ३ जवान हाथी । ४ जवान ऊँट । ५ ऊँट । ६ सुगन्धि द्रव्य विशेष ।—ऊरूः, (स्त्री०) हाथी की सूंड़ जैसी जँघाओं वाली स्त्री ।

करभकः (पु०) ऊँट ।

करभिन् (पु०) हाथी ।

करंब, करम्ब, करंवित, करम्बित (वि०) १ मिश्रित । मिला-जुला । रंगबिरंगा । २ जड़ा हुआ । बैठाया हुआ ।

करंभः, करम्भ, करंबः करम्ब (पु०) १ आटा या अन्य भोज्यपदार्थ जिसमें दही मिला हो । २ कीचड़ । यथा—

करम्भवालुकातापान् ।

मनु ।

करहाटः (पु०) एक देश । सम्भवतः सतारा जिले का आधुनिक करहाड़ । कमल का डंठल या कमल-नाल । कमल की जड़ से निकलने वाले रेशे ।

करालः (वि०) १ भयानक । खौफनाक । २ फटा-हुआ । चौड़ा खुला हुआ । ३ बड़ा । लंबा । ऊँचा । ४ असम । विषम । नुकीला ।—दंष्ट्रः (वि०) भयानक डाढ़ों वाला ।—वदना, (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

करालिकः (पु०) १ वृक्ष । २ तलवार ।

करिका (स्त्री०) खरोंच । नखाघात ।

करिणी (स्त्री०) हथिनी ।

करिन् (पु०) १ हाथी । २ आठ की संख्या ।—इन्द्रः,—ईश्वरः,—वरः, (पु०) विशाल हाथी । गजराज ।—कुम्भः, (पु०) हाथी के मस्तक का वह भाग जो ऊँचा उठा हुआ हो ।—गर्जितं, (न०) हाथी की चिंघाड़ ।—दन्तः, (पु०) हाथीदाँत ।—पः, (पु०) महावत ।—पोतः—शावः,—शावकः (पु०) हाथी का बच्चा ।—बंधः, (पु०) हाथी का खूँटा ।—माचलः, (पु०) सिंह ।—मुखः, (पु०) गणेश जी ।—वैजयन्ती, (वि०) हाथी की पीठ पर रखा हुआ झंडा ।—स्कन्धः, (वि०) हाथियों का समूह ।

करीरः (पु०) १ बाँस का अँखुआ । २ अँखुआ । ३ करील नाम का कटीला एक झाड़ । ४ जलकुम्भ ।

करीषः (पु०), करीषम् (न०) सूखा गोबर ।—अग्निः, (पु०) अन्ने कंडों की आग ।

करीषंकषा (स्त्री०) प्रचण्ड पवन या आँधी ।

करीषिणी (स्त्री०) सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी ।

करुण (वि०) कोमल । करुण हृदय । दयापात्र । दया प्रदर्शित करने योग्य । दयोत्पादक । शोकान्वित ।—मल्ली, (स्त्री०) मल्लिका का पौधा । २ साहित्यालङ्कार में वियोग-जन्य प्रेम का भाव ।

करुणः (पु०) १ रहम । दया । अनुकम्पा । कोमलता । २ दुःख । शोक ।

करुणा (स्त्री०) अनुकम्पा । रहम । दया ।—आर्द्र (वि०) कोमलहृदय ।—निधिः, दया का भाण्डार ।—पर,—मय, (वि०) अत्यन्त दयालु ।—विमुख, (वि०) निष्ठुर । सङ्गदिल ।

करेटः (पु०) उँगुली का नख ।

करेणुः (पु०) १ हाथी । २ कर्णिकार । कठचंपा या वनचंपा का पेड़ ।—भूः,—सुतः, (पु०)

हस्ती-विज्ञान के आविर्भावकर्त्ता पालकाप्य का नाम। [का नाम।

करेणुः (स्त्री०) १ हथिनी। २ पालकाप्य की माता

करोटं (न०) } १ खोपड़ी। २ कटोरा या
करोटिः (स्त्री०) } पात्र।

कर्कः } (पु०) १ मकरा। २ राशिचक्र की
कर्कटकः } चौथी राशि। ३ अग्नि। ४ जलपात्र। ५ आईना। दर्पण। ६ सफेद रंग का घोड़ा।

कर्कटः } (पु०) १ केंकड़ा। २ कर्कराशि। ३
कर्कटकः } घेरा। चक्कर।

कर्कटिः }
कर्कटी } (स्त्री०) ककड़ी विशेष।

कर्कन्धुः } (स्त्री०) उन्नाव या ईरानी बैर का पेड़
कर्कन्धूः } और उसके फल।

कर्कर (वि०) १ कड़ा। ठोस। पोढ़ा।—अक्षः, (पु०)—अङ्गः, (पु०) खञ्जनपक्षी।—अन्धुकः, (पु०) अन्धा कुआ। अन्धकूप।

कर्करः (पु०) १ हथौड़ा। घन। २ दर्पण। आईना। ३ हड्डी। खोपड़ी की हड्डी का टूटा हुआ टुकड़ा।

कर्कराटुः (पु०) दीर्घ तिरछी दृष्टि। दूर तक देखनेवाली तिरछी चितवन। झलक।

कर्कराला (स्त्री०) घुँघुराले बाल।

कर्करी (स्त्री०) ऐसा जलपात्र जिसकी पैंदी में चलनी की तरह छिद्र हों।

कर्कश (वि०) १ कड़ा। सख्त। रूखा। २ निष्ठुर। दयाशून्य। ३ प्रचण्ड। दृढ़। अत्यधिक। ४ उद्दण्ड। ५ असदाचरणी। असती। अपतिव्रता। (स्त्री०) ६ समझने में कठिन। समझ में न आने योग्य।

कर्कशः (पु०) १ तलवार। खड्ग। २ करञ्जा। ३ गन्ना।

कर्कशिका }
कर्कशी } (स्त्री०) वनज द्रव्य विशेष।

कर्किः (पु०) कर्क राशि।

कर्कोटः } (पु०) १ आठ मुख्य सर्पों में से एक।
कर्कोटकः } यह एक बड़ा विषैला सर्प होता है। यहाँ तक कि, इसके देख देने ही से देखे जाने वाले पर सर्पविष का असर पैदा हो जाता है। २ गन्ना। ३ वेल का पेड़।

कर्चूरः (पु०) १ कचूर। २ एक सुगन्ध-द्रव्य विशेष।

कर्चूरम् (न०) १ सुवर्ण। २ हरताल। मैनफल।

कर्ण् (धा० उभय०) [कर्णयति, कर्णित] १ छेदना। सूराख करना। वेधना। २ सुनना।

कर्णः (पु०) १ कान। २ कड़ादार गंगाल या जंगाल आदि वर्तन के कड़े या कान। दस्ता। वेंट। ४ डॉड़। पतवार। ५ समकोण त्रिभुज की वह रेखा जो समकोण के सामने होती है। ६ महाभारत में वर्णित कौरव पक्षीय एक प्रसिद्ध योद्धा राजा। [यह सूर्यपुत्र के नाम से प्रसिद्ध था, तथा बड़ा प्रसिद्ध दानी था। कुन्ती जब क्वारी थी, तब उसके गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी। इसीसे यह 'कानीन' भी कहलाता था। कुरुक्षेत्र के युद्ध में इसने कौरवों की ओर से पाण्डवों से युद्ध किया था। अन्त में अर्जुन द्वारा यह मारा गया था।]—अञ्जलिः, (स्त्री०) कान का भाग विशेष अथवा वह मुख्य भाग जिससे सुनाई पड़ता है।—अनुजः, (पु०) युधिष्ठिर।—अन्तिक, (वि०) कान के समीप।—अन्दुः,-अन्दूः, (स्त्री०) कान की बाली या बाला।—अर्पणम्, (न०) सुनना। कान देना।—आस्फालः, (पु०) हाथी का कान फटफटाना।—उत्तंसः, (पु०) कान में धारण किया जानेवाला आभूषण विशेष अथवा आभूषण।—उपकर्णिका, (स्त्री०) अफवाह। किम्वदन्ती।—क्ष्वेडः, (पु०) कान में सतत आवाज़ का होना।—गोचर, (वि०) जो सुन पड़े।—ग्राहः, (पु०) पतवारी।—जप, (वि०) (कर्णेजप भी रूप होता है) गुप्त बात कहने वाला। मुखबिर। जपः, जापः, (पु०) निन्दक। निन्दा करनेवाला।—जाहः, (पु०) कान की जड़।—जित् (पु०) कर्ण को हरानेवाला। अर्जुन की उपाधि।—तालः, (पु०) हाथी के कानों की फटफट का शब्द।—धारः, (पु०) पतवारी।—धारिणी, (स्त्री०) हथिनी।—परम्परः, (स्त्री०) सुनी सुनाई बात। अफवाह।—पालिः, (स्त्री०) कान का नीचे लटकता हुआ हिस्सा।—पाशः, (पु०) सुन्दर कान।—पूरः, (पु०) १ कर्णफूल। करनफूल। कान का आभूषण विशेष। २ अशोक का वृक्ष।—पूरकः, (पु०) १ करन-

फूल। बाली। २ कदम्ब का पेड़। ३ अशोक का पेड़। ४ नील कमल।—प्रान्तः, (पु०) "कर्णपालि" देखो।—भूषण, (न०)—भूषा, (स्त्री०) कान का गहना।—मूलं, (न०) कान के नीचे का भाग।—मोटी, (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप।—वंशः, (पु०) बाँस बल्ली से बना मचान।—वर्जित, (वि०) कानरहित।—वर्जितः, (पु०) सर्प।—विवरं, (न०) कान का छेद।—विष्, (स्त्री०) कान का मैल या ठेठ।—वेधः, (पु०) संस्कार विशेष जिसमें कान छेदे जाते हैं। छिदाउन।—वेष्टः, (पु०)—वेष्टनम्, (न०) कान की बालियाँ।—शष्कुली, (स्त्री०) कान का बहिर्भाग।—शूलः, (पु०)—शूलं, (न०) कान का दर्द।—श्रव (वि०) ऊँची आवाज से कहा गया। सुन पड़ने योग्य।—स्रावः,—संस्रवः, (पु०) कान का बहना। कान का रोग विशेष।—सूः, (स्त्री०) कर्ण की जननी कुन्ती।—हीन, (वि०) कर्णविवर्जित।—हीनः, (पु०) सर्प।

कर्णाकर्णि (वि०) कानों कान।

कर्णाटः (बहुवचन) भारत के दक्षिणी प्रायःद्वीप का एक भूखण्ड विशेष।

कर्णाटी (स्त्री०) कर्णाट देश की स्त्री।

कर्णिक (वि०) १ कानों वाला। २ पतवार वाला।

कर्णिकः (पु०) माँझी। पतवरिया। पतवारी।

कर्णिका (स्त्री०) १ कानों की बाली। गुमड़ी। गूमड़ा। ३ पद्मबीज कोष। ४ कूंची या चित्रकार की लेखनी। ५ मध्यमा उँगुली। ६ फल का डंठल। ७ हाथी की सूड़ की नोंक। ८ चाक मिट्टी। खड़िया। [२ पद्मकोषबीज।

कर्णिकारः (पु०) १ बनचम्पा या कठचम्पा का पेड़।

कर्णिकारम् (न०) कर्णिकार वृक्ष का फूल जिसमें सुगन्धि बिलकुल नहीं होती।

कर्णिन् (वि०) १ कानों वाला। २ बड़े बड़े कानों वाला। शरपच युक्त। (पु०) १ गधा। २ पतवारी। ३ गाठोंदार बाण।

कर्णी (स्त्री०) १ पुङ्खदार विशेष बनावट का बाण। २ मूलदेव की माता का नाम। यह मूलदेव चौर्यकला विज्ञान के प्रादुर्भाव कर्ता थे।—रथः (पु०) पर्दा पड़ा हुआ रथ।—सुतः (पु०) मूलदेव जो चुराने की कला के आविष्कारकर्ता बतलाये जाते हैं। [२ रुई या सूत कातना।

कर्तनम् (न०) १ काटना। नराशना। कुतरना।

कर्तनी (स्त्री०) १ कैंची। २ चक्र। ३ छोटी तलवार।

कर्तव्य (न० वा० कृ०) १ करने योग्य। २ काटने या नाश करने योग्य।

कर्तृ (वि०) १ कर्त्ता। करने वाला। २ परब्रह्म। ३ ब्रह्म की एक उपाधि। ४ विष्णु और शिव की उपाधि।

कर्त्री (स्त्री०) १ छुरी। २ कतरनी। कैंची।

कर्दः } (पु०) कीचड़ काँदा।
कर्दकः }

कर्दमः (पु०) १ कीचड़। कीच। काँदा। २ मैल। कूड़ा। २ (आलंका०) पाप।—आटकः, (पु०) कूड़ाखाना।

कर्दमम् (न०) मांस। गोश्त।

कर्पटः (पु०) } १ पुराना या पैबंद लगा हुआ
कर्पटम् (न०) } कपड़ा। २ कपड़े की धज्जी। ३ गेरुआ रंग का कपड़ा। लुगीला कपड़ा।

कर्पटिक } (वि०) चिथड़े लपेटे हुए।
कर्पटिन् }

कर्पणः (पु०) एक प्रकार का शस्त्र।

कर्परः (पु०) १ कड़ाही। कड़ाह। २ पात्र। वर्तन। ३ ठीकरा। ४ खोपड़ी। ५ एक प्रकार का हथियार।

कर्पासः (पु०) }
कर्पासम् (न०) } कपास का वृक्ष। रुई का पेड़।
कर्पासी (स्त्री०) }

कर्पूरः } (पु०) कपूर। काफूर।
कर्पूरम् } (न०)—खण्ड, (पु०) १ कपूर का खेत। २ कपूर की डली।—तैलं, (न०) कपूर का तेल।

कर्फरः (पु०) दर्पण। आईना।

कर्बु (वि०) रंग विरंगा। चितकबरा।

कर्बुर (वि०) १ रंग विरंगा। चितकबरा। २ भूरा। धुमैला। (पु०) १ कबूतर के रंग का। चितकबरा रंग। २ पाप। ३ प्रेत। शैतान। ४ धतूरे का पेड़।

कर्वुरम् (न०) १ सोना । २ जल ।

कर्बुरित (व० कृ०) रंगविरंगा ।

कर्मठ (वि०) १ कार्यकुशल । क्रियाकुशल । काम करने में निपुण । २ परिश्रम से काम करने वाला । ३ केवल धार्मिक अनुष्ठानों के करने ही में लवलीन ।

कर्मठः (पु०) यज्ञ कराने वाला ।

कर्मण्य (वि०) चतुर । निपुण ।

कर्मण्या (स्त्री०) मज़दूरी । उजरत । पारिश्रमिक ।

कर्मण्यम् (न०) क्रियाशीलता ।

कर्मन् (न०) १क्रिया । कर्म । चरित्र । २ सम्पादन । ३ व्यवसाय । कर्त्तव्य । ४ धार्मिक कृत्य । ५ धर्मानुष्ठान का सम्पादन । ६ धर्म विशेष । नैतिक कर्त्तव्य । ७ परिणाम । फल । ८ कर्मविपाक । पूर्व जन्म में किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फलाफल । प्रारब्ध ।—अक्षम्, (वि०) कोई भी काम करने के योग्य । अंगम्, (न०) यज्ञ कर्म का एक भाग विशेष ।—अधिकारः (पु०) धार्मिक कृत्य या क्रिया करने का अधिकार । अनुरूप, (वि०) १ कर्मानुसार । २ पूर्वजन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार ।—अन्तः, (पु०) १ किसी कार्य या क्रिया का अवसान । २ व्यापार । व्यवसाय । कर्म का सम्पादन । ३ खत्ती । खों । अनाज का भाण्डार । ४ जुती हुई जमीन ।—अन्तरं, (न०) १ क्रिया में भेद । २ प्रायश्चित्त । पापनिवृत्ति । ३ किसी धर्मानुष्ठान का स्थगित करना ।—अन्तिक. (वि०) अन्तिम ।—अन्तिकः, (पु०) नौकर । कारीगर ।—आजीवः (पु०) कारीगर ।—इन्द्रियम्, (न०) वे इन्द्रियाँ जो कर्म करें । जैसे हाथ पैर, आँख कान आदि ।—उदारं, (न०) महानुभावता । उच्चाशयता ।—उद्युक्त, (वि०) मशगूल । लवलीन । क्रियाशील । स्पर्द्धावान् ।—करः, (पु०) १ रोजन्दारी पर काम करने वाला मज़दूर । २ यमराज ।—कर्तृ, (पु०) व्याकरण में कर्त्ताकारक ।—काण्डः, (पु०) काण्डम्, (न०) वेद का वह अंश जिसमें यज्ञानुष्ठानादि कर्मों का तथा उनके माहात्म्य का वर्णन है ।—कारः, (पु०) वह मनुष्य जो कोई भी काम करे । कारीगर । उजरत लेकर काम करने वाला । ३ लुहार । ४ साँड़ ।—कारिन्, (पु०) मज़दूर । कारीगर ।—कार्मुकः, (पु०) —कार्मुकम्, (न) सुदृढ़ धनुष ।— कीलकः, (पु०) धोबी ।—क्षेत्रं, (न०) वह भूमि जहाँ धार्मिक कर्मानुष्ठान किया जाय । [भारतवर्ष कर्मभूमि कहलाता है ।]—गृहीत, (वि०) किसी कार्य करते समय पकड़ा हुआ । (जैसे चोरी करते समय चोर)—घातः, (पु०) काम वंद कर देना । काम छोड़ वैठना । चण्डालः,—चाण्डालः, (पु०) १ नीच काम करने वाला । वशिष्ठ जी ने पांच प्रकार के कर्मचाण्डाल वतलाये हैं:—

असूयकः पिशुनश्च कृतघ्नो दीर्घरोषकः
चत्वारः कर्मचाण्डाल जन्मतश्चापि पञ्चमः ॥

२ दुस्साहस पूर्ण या निष्ठुर काम करने वाला । ३ राहु का नाम ।—चोदना (स्त्री०) १ वह हेतु या कारण जिससे प्रेरित हो कोई यज्ञानुष्ठान कर्म करे । २ शास्त्र की वह स्पष्ट आज्ञा या निर्देश, जिसमें किसी धार्मिक अनुष्ठान करने का अवश्य करणीय विधान वर्णित हो ।—ज्ञः, (पु०) धर्मानुष्ठान का विधान जानने वाला ।—त्यागः, (पु०) लौकिक कर्मों का त्याग । –दुष्ट (वि०) असदाचारी । दुष्ट । लंपट । तिरस्करणीय ।—दोषः, (पु०) १ पाप २ भूल । चूक । त्रुटि । ग़लती । ३ मानवोचित कर्मों का शोच्य परिणाम । ४ अयशस्कर आचरण ।—धारयः, (पु०) एक प्रकार का समास । ध्वंसः, (पु०) किसी धर्मानुष्ठान कर्म के फल का नाश । २ हतोत्साह ।—नाशा, (स्त्री०) एक नदी का नाम ।—निष्ठ, (वि०) धार्मिक कृत्यों के करने में संलग्न ।—पथः, (पु०) कर्मयोग । कर्ममार्ग (ज्ञानमार्ग का उलटा)—पाकः, (पु०) पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के फल की प्राप्ति का समय ।—न्यासः, (पु०) धर्मानुष्ठानों के फल का त्याग ।—फलं (न०) पूर्वजन्म में किये हुए शुभाशुभ कर्मों का शुभाशुभ फल । -बंधः,—बंधनम्, (न०) आवागमन, अथवा जन्म मरण का बंधन ।—भूः, भूमि. (स्त्री०) भारतवर्ष ।—मीमाँसा,

(स्त्री०) कर्मकाण्ड सम्बन्धी वेदभाग पर विचार करने वाला जैमिनि द्वारा रचित ग्रन्थ विशेष।—मूलं, (न०) कुश। १—युगम् (न०) कलियुग। —योगः. (पु०) कर्ममार्ग।—विपाक, देखो कर्मपाक।—शाला, (स्त्री०) दूकान। कारखाना। —शील,—शूर, (वि०) परिश्रमी। क्रियाशील। सङ्ग:, (पु०) लौकिक कर्मों और उनके फलों में आसक्ति।——सचिवः, (पु०) दीवान। मिनिस्टर। वज़ीर।—संन्यासिकः,—संन्यासिन्, (पु०) संन्यासी जिसने समस्त लौकिक कर्मों का त्याग कर दिया हो। ऐसा तपस्वी जो धार्मिक अनुष्ठान तो करे, किन्तु उनके फलों की कामना न करे।—साक्षिन्, (पु०) १ प्रत्यक्षदर्शी साक्षी। २ वे साक्षी जो जीवधारियों के शुभाशुभ कर्मों को साक्षी बन कर देखते हों [ऐसे नौ साक्षी माने गये हैं। यथा.—

सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च।
एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः॥]

—सिद्धिः, (स्त्री) सफलता। मनोरथ का साफल्य।—स्थानं. (न०) दफ़्तर। आफिस। व्यापार करने का स्थान।

कर्मन्दिन् (पु०) संन्यासी। साधु।

कर्मारः (पु०) लुहार।

कर्मिन् (वि०) १ क्रियाशील। कार्यतत्पर। २ वह पुरुष जो फल प्राप्ति की अभिलाषा से धर्मानुष्ठान करता हो। (पु०) कारीगर। कलाकुशल।

कर्मिष्ठ (वि०) चतुर। परिश्रमी। व्यापारपटु।

कर्वटः (पु०) मण्डी अथवा किसी प्रान्त का ऐसा मुख्य नगर जिसके अन्तर्गत कम से कम २०० से ४०० तक ग्राम हों।

कर्षः (पु०) १ तनाव। खिंचाव। २ आकर्षण। ३ खेत की जुताई। ४ खाई। लंबी नाली। ५ खरोंच।

कर्षः (पु०), कर्षम् (न०) } १६ माशा की सोने चाँदी की तौल।

कर्षक (वि०) खींचने वाला।

कर्षणम् (न०) १ खींचना। तानना। २ जोतना। हल चलाना। ३ चोटिल करना। पीडन। क्षीणता।

कर्षिणी (स्त्री०) लगाम।

कर्षूः (स्त्री०) १ खाई। लंबी नाली। २ नदी। ३ नहर। (पु०) १ अन्ने कंडों की आग। २ खेती। ३ आजीविका।

कर्हिचित्, (अव्यया०) किसी समय।

कल् (धा० आत्म०) [कलते कलित] १ गिनना। २ बजाना। (उभय०) [कलयति, कलयते, कलित] १ पकड़ना। थामना। २ गिनना। ३ लेना। रखना। ४ जानना समझना।

कल (वि०) १ अस्पष्ट मधुर धीमी और कोमल। २ निर्बल। ३ कच्चा। अनपचा हुआ। अपक्व। ४ रुनझुन का शब्द करने वाला।—अंकुरः (पु०) सारसपक्षी।—अनुनादिन् (पु०) १ गौरैया पक्षी। २ मधुमक्षिका। ३ चटक पक्षी।—अविकलः, (पु०) गौरैया पक्षी।—आलापः, (पु० १ धीमी कोमल गुनगुनाहट। २ मधुर एवं प्रिय सम्भाषण। ३ मधुमक्षिका।—उत्ताल, (वि०) ऊंचा। तीक्ष्ण। पैना।—कण्ठ, (वि०) मधुर कण्ठस्वर वाला।—कण्ठः (पु०)—कण्ठी, (स्त्री०) १ कोयल। २ हंस। ३ कबूतर।—कलः, (पु०) १ जन समुदाय का कोलाहल। २ अस्पष्ट और अंडबंड शोरगुल। ३ शिव जी का नाम। —कूजिका—कूणिका, (स्त्री०) निर्लज्जा स्त्री। अमती स्त्री।—घोषः (पु०) कोयल।—तूलिका, (स्त्री०) निर्लज्जा या रसीली स्त्री। —धौतं, (न०) १ चाँदी। २ सोना। धौत-लिपिः, (स्त्री०) सुनहले अक्षरों की लिखावट।—ध्वनिः, (स्त्री०) १ मधुर धीमा स्वर। २ कबूतर। ३ मोर। मयूर। ४ कोयल।—नादः, (पु०) मधुर धीमा स्वर।—भाषणं, (न०) बालकों की तोतली बोली।—रवः, (पु०) मधुर धीमा स्वर। —हंसः, (पु०) १ हंस। राजहंस। २ बत्तक। ३ परमात्मा।

कलः (पु०) धीमा कोमल एवं अस्पष्ट स्वर।

कलं (न०) वीर्य। धातु।

कलंकः, कलङ्कः } (पु०) १ धब्बा। काला दाग़। चिन्ह। २ (अलङ्का०) अपयश। बदनामी। अपकीर्ति। ३ दोष। त्रुटि। ४ लोहे का मोर्चा।

कलंकपः } (पु०) [स्त्री०—कलंकपी, कलङ्कपी]
कलङ्कपः } सिंह ।

कलंकित } (वि०) बदनाम । दगीला ।
कलङ्कित }

कलंकुरः } (पु०) भँवर । बगूला । उल्टी धारा ।
कलङ्कुरः } उल्टा बहाव ।

कलंजः } (पु०) १ पक्षी । २ विष बुझे अस्त्र से
कलञ्जः } मारा हुआ हिरन आदि जीवधारी ।

कलंजम् } (न०) विष में बुझे अस्त्र से मारे हुए पशु
कलञ्जम् } का मांस ।

कलत्रम् (न०) १ पत्नी २ कमर । कूल्हा । ३ शाही गढ़ ।

कलनम् (न०) १ धब्बा । दाग़ । २ त्रुटि । अपराध । दोष । ३ ग्रहण । ग्रास । पकड़ । ४ अवगति । समझ । ५ रव । शब्द ।

कलना (स्त्री०) १पकड़ । ग्रास । ग्रहण । २ क्रिया । ३ वशवर्त्तित्व । मुती । ४ समझ । ५ धारण करना । पहिनना ।

कलंदिका } (स्त्री०) बुद्धि । प्रतिभा ।
कलन्दिका }

कलभः (पु०) } १ हाथी का बच्चा । २ तीस वर्ष
कलभी (स्त्री०) } की उम्र का हाथी । ३ ऊँट का या अन्य किसी जानवर का बच्चा ।

कलमः (पु०) १ वे धान जो मई और जून में बोये जाते और दिसंबर में पकते हैं । २ लेखनी । नरकुल जिसकी क़लम बनती है । ३ चोर । ४ गुंडा । बदमाश । दुष्ट ।

कलंबः } (पु०) १ तीर । २ कदम्ब वृक्ष ।
कलम्बः }

कलंबुटम् } (न०) (ताज़ा) मक्खन ।
कलम्बुटम् }

कललः (पु०) } योनि । गर्भ की झिल्ली ।
कललम् (न०) }

कलविङ्कः } (पु०) १ गौरैया पक्षी । २ इन्द्रजौ । ।
कलविङ्क } १ धब्बा । दाग ।

कलशः (पु०) } १ घड़ा । कलसा । २ चौतीस सेर
कलसः } का माप विशेष ।—जन्मन्,—
कलशम् (न०) } उद्भव, (पु०) अगस्त्य जी
कलसम् } का नाम ।

कलशी (स्त्री०) } घड़ा । कलसा ।—सुतः,
कलसी (पु०) } अगस्त्य ऋषि का नाम ।

कलहः (पु०) } १ झगड़ा । लड़ाई भिड़ाई ।
कलहम् (न०) } २ युद्ध । जंग । ३ दाँवपेंच । धोखाधड़ी । झूठ । छल । ४ प्रचण्डता । आघात । प्रहार । मार ।—अन्तरिता, (स्त्री०) प्रेमी से झगड़ा हो जाने के कारण अपने प्रेमी से वियुक्त स्त्री ।—अपहृत (वि०) बरजोरी हरा हुआ । छीना हुआ । प्रिय, (वि०) वह व्यक्ति जिसे लड़ाई झगड़ा अच्छा लगता हो ।

कलहः (पु०) नारद जी की उपाधि ।

कला (स्त्री०) १ किसी वस्तु का छोटा अंश । टुकड़ा । २ चन्द्रमण्डल का १६वाँ अंश । ३ ब्याज । सूद । ४ समयविभाग । ५ राशि के तीसवें भाग का ६० वां भाग । कोई धंधा । ऐसी कलाएं चौसठ होती हैं । यथा गाना बजाना आदि । ७ चातुर्य । प्रतिभा । ८ कपट । छल । ९ नौका । १० रजोदर्शन ।—अन्तरं, (न०) अन्य अंश । २ ब्याज । सूद । लाभ ।—अयनः, (पु०) तलवार की धार पर नृत्य करने वाला ।—आकुलम्, (न०) हलाहल विष ।—केलि, (वि०) हर्षित । आल्हादित । रसीला ।—केलिः, (पु०) कामदेव की उपाधि ।—क्षयः, (पु०) चन्द्र का ह्रास ।—धरः, निधिः,—पूर्णः (पु०) चन्द्रमा ।—भृत्, (पु०) चन्द्रमा ।

कलादः } (पु०) सुनार ।
कलादकः }

कलापः (पु०) १ गट्ठा । गठड़ी । २ समुदाय । वस्तुओं का संग्रह । ३ मयूरपुच्छ । ४ स्त्री का इज़ारबंद या करधनी । ५ आभूषण । ६ हाथी की गरदन की रस्सी । ७ तरकस । तूणीर । ८ तीर । बाण । ९ चन्द्रमा । १० बुद्धिमान एवं चतुर मनुष्य । ११ एक ही छन्द में लिखी हुई पद्य रचना । १२ संस्कृत का व्याकरण विशेष ।

कलापी (स्त्री०) घास का गट्ठा ।

कलापकम् (न०) १ चार श्लोकों का समूह जो किसी एक ही विषय के वर्णन में हो और जिनका एक ही अन्वय हो । २ ऋण जिसकी अदायी उस समय हो जिस समय मोर अपनी पूंछ फैलावे ।

कलापकः (पु०) १ गट्ठा। गट्ठर। २ मोतियों की माला। ३ हाथी के गले की रस्सी। ४ करधनी या कमरबंद। ५ माथे पर का तिलक विशेष।

कलापिन् (पु०) १ मोर। २ कोयल। ३ वटवृक्ष।

कलापिनी (स्त्री०) १ रात। २ चन्द्रमा।

कलायः (पु०) बीज विशेष।

कलाविकः (पु०) मुर्गा।

कलाहकः (पु०) काहिली। एक प्रकार का मुँह से बजाया जाने वाला बाजा।

कलिः (पु०) १ झगड़ा। लड़ाई। २ युद्ध। जंग। ३ चौथा युग यानी कलियुग। [कलियुग ४३२००० वर्ष का होता है। यह ३१०२ ख्री० पू० वर्ष की १८ वीं फरवरी को लगा था।] ५ मूर्त्ति धारी कलियुग जिसने राजा नल को सताया था। ६ किसी श्रेणी का सर्वनिकृष्ट। ७ विभीतिका वृक्ष। बहेड़ा का पेड़। ८ पाँसे का वह पहल जिस पर १ अंकित हो। ८ वीर। शूर। ६तीर। बाण (स्त्री०)कली। —कारः,—कारकः,—प्रियः, (पु०) नारद जी की उपाधि।—द्रुमः,—वृक्षः, (पु०) बहेड़े का पेड़।—युगं, (न०) कलियुग।

कलिका } **कलिः** } (स्त्री०) १ अनखिला फूल। बौंडी। २ कला। धारी। अंश। इकाई।

कलिंगाः } **कलिङ्गाः** } (पु०—बहुवचन) देश विशेष और उसमें बसने वाले लोग। वाममार्ग में इसकी सीमा का उल्लेख इस प्रकार पाया जाता है।

जगन्नाथात्समारभ्य कृष्णातीरान्तगः शिवे।
कलिङ्गदेशः सम्प्रोक्तोवाममार्गपरायणः॥

कलिंजः } **कलिञ्जः** } (पु०) चटाई। चिक। पर्दा।

कलित् (वि०) गृहीत। पकड़ा हुआ। लिया हुआ।

कलिंदः } **कलिन्दः** } (पु०) १ पर्वत जिसमें यमुना नदी निकली है। २ सूर्य।—कन्या,—जा,—तनया,—नन्दिनी, (स्त्री०) यमुना नदी की उपाधियाँ।—गिरिः, (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध पर्वत।

कलिल (वि०) १ ढका हुआ। भरा हुआ। २ मिला हुआ। ३ प्रभावान्वित। वशवर्ती। अभेद्य।

कलिलम् (न०) एक बड़ा ढेर।

कलुष (वि०) १ मटीला। गंदला। मैला। खराब। २ छिलकादार। दबा हुआ। भद्दा। ३ भरा हुआ। ४ क्रुद्ध। अप्रसन्न। उत्तेजित। ५ दुष्ट। पापी। बुरा। ६ निष्ठुर। तिरस्करणीय। ७ काला। धुंधला। मैला। ८ सुस्त। काहिल। अकर्मण्य।—योनिज, (वि०) वर्णसङ्कर।

कलुषः (पु०) भैंसा। महिष।

कलुषं (न०) १ मैल। कूड़ा करकट। कीचड़। २ पाप। ३ क्रोध। रोष।

कलेवरः (पु०) } **कलेवरम्** (न०) } शरीर। देह। तन। जिस्म।

कल्कः (पु०) } **कल्कम्** (न०) } १ घी या तेल की तलछट। कीट। २ लेही या लेही की तरह चिपकने वाला कोई पदार्थ। ३ मैल। कूड़ा। ४ विष्ठा। ५ नीचता। कपट। दम्भ। ६ पाप। ७ पीसा हुआ चूर्ण।

कल्कफलः (पु०) अनार का पेड़।

कल्कनं (न०) छलना। प्रवञ्चना। मिथ्या। झूठ।

कल्किः } **कल्किन्** } (पु०) भगवान् विष्णु का दसवाँ अथवा अन्तिम अवतार।

कल्प (वि०) १ साध्य। होने योग्य। सम्भव। २ उचित। ठीक। योग्य। ३ निपुण। दक्ष।

कल्पः (पु०) १ धर्मशास्त्र की आज्ञा। आईन। आदेश। २ निर्दिष्ट नियम। ऐच्छिक नियम। ३ प्रस्ताव। सूचना। निश्चय। सङ्कल्प। ४ पद्धति। ढंग। तरीका। विधान। ५ प्रलय। ६ ब्रह्मा जी का एक दिवस अथवा १००० युगव्यापी काल। ७ बीमार की चिकित्सा। ८ छः वेदाङ्गों में से वेद का एक अङ्ग।—अन्तः, (=कल्पान्तः) (पु०) प्रलय काल। नाश।—आदिः, (=कल्पादिः,) (पु०) सृष्टि के आरम्भ काल में सब वस्तुओं का पुनः निर्माण।—कारः, (पु०) कल्पसूत्र के निर्माता।—क्षयः, (पु०) प्रलय। सर्वनाश।—तरुः,—द्रुमः,—पादपः,—वृक्षः, (पु०) स्वर्ग का एक वृक्ष विशेष। (आलं०) उदार वस्तु।—पालः, (पु०) मद्य विक्रेता।—लता,—लतिका, (स्त्री०)स्वर्गीय लता विशेष।—सूत्रं, (न०) ग्रन्थ विशेष जिसमें पद्धितियों का निरूपण है।

कल्पकः, (पु०) १ रीति। शास्त्रोक्त कर्म। २ नाई। नापित।

कल्पनम् (न०) १ बनाना । सजाना । सुव्यवस्थित करना । २ पूरा करना । कार्य में परिणत करना । ३ कतरना । काटना । ४ गाड़ना । ५ सजाने के लिये तर ऊपर रखना ।

कल्पना (स्त्री०) १ बनाना । करना । २ तरतीब में लाना । ३ सजाना । ४ रचना करना । ५ आविष्कार करना । ६ विचार । मानसिक कल्पना । ७ जाल । जालसाज़ी । ८ रीतिभाँति । युक्ति ।

कल्पनी (स्त्री०) कैंची ।

कल्पित (वि०) सुव्यवस्थित । निर्मित । सज्जित ।

कल्मष (वि०) १ पापी । दुष्ट । २ मैला कुचैला । गंदा ।

कल्मषं (न०) }
कल्मष (पु०) } १ धब्बा । मैल । २ पाप ।

कल्माष (वि०) [स्त्री०—कल्माषी,] १ रंग-बिरंगा । चितकबरा । २ सफेद और काला मिला हुआ ।—कण्ठः, (पु०) शिवजी की उपाधि ।

कल्माषः (पु०) १ चितकबरा रंग । २ सफेद और काले रंगों का संमिश्रण । ३ दैत्य । दानव ।

कल्माषी (स्त्री०) यमुना नदी का नाम ।

कल्य (वि०) १ स्वस्थ । रोगरहित । तंदुरुस्त । २ तैयार । तत्पर । ३ चतुर । ४ शुभ । अनुकूल । ५ बहरा गूँगा । ६ शिक्षाप्रद ।—आशः,—जग्धिः, (स्त्री०) कलेवा । सवेरे का भोजन ।—पालः —पालकः (पु०) कलार । कलवार । शराब खींचने वाला ।—वर्तः, (पु०) कलेवा । जलपान । —वर्तम्, (न०) तुच्छ । हल्का । अनावश्यक ।

कल्यं, (न०) १ तड़का । सवेरा । २ आने वाला । अगला दिन । ३ मदिरा । ४ बधाई । शुभ कामना । आशीर्वाद । ५ शुभ संवाद ।

कल्या (स्त्री०) १ मदिरा । २ बधाई ।—पालः,—पालकः, (पु०) कलाल । कलवार ।

कल्याण (वि०) [स्त्री०—कल्याणा,—कल्याणी,] (न०) १ शुभ । सुखी । भाग्यवान । सौभाग्य-शाली । २ सुन्दर । प्रिय । मनोहर । ३ सर्वोत्तम । गौरवान्वित । ४ मङ्गलकारी । भला ।—कृत, (वि०) १ लाभदायक । शुभ । २ मङ्गल-कारी । शुभप्रद । ३ पुण्यात्मा ।—धर्मन्, (वि०) पुण्यात्मा ।—वचनं, (न०) सौहार्द्रव्यञ्जक भाषण । शुभ कामनाएँ ।

कल्याणं (न०) १ सौभाग्य । खुशकिस्मती । आनन्द । भलाई । समृद्धि । २ पुण्य । ३ उत्सव । ४ सुवर्ण । ५ स्वर्ग ।

कल्याणक (वि०) [स्त्री०—कल्याणिका,] १ शुभ । समृद्धिशाली । धन्य ।

कल्याणिन् (वि०) [स्त्री०—कल्याणिनी,] १ सुखी । । भरापूरा । २ भाग्यशाली । धन्य । ३ शुभ । मङ्गलकारी ।

कल्याणी (स्त्री०) गौ । गाय ।

कल्ल (वि०) बहरा । बधिर ।

कल्लोल (पु०) १ विशाल लहर । २ शत्रु । ३ प्रसन्नता । हर्ष ।

कल्लोलिनी (स्त्री०) नदी । सरिता ।

कव् (धा० आत्म०) [कवते, कवित) १ प्रशंसा करना । २ वर्णन करना । रचना (पद्य का) । ३ चित्रण करना । चित्र बनाना ।

कवकः (पु०) मुँह भर ।

कवकम् (न०) कुकुरमुत्ता । कठफूल ।

कवचः (पु०) }
कवचम्(न०) } १ वर्म । जिरहबख्तर । २ तावीज । यंत्र । ३ ढोल ।—पत्रः, (पु०) भोजपत्र ।—हर, (वि०) १ वर्म धारण किये हुए । २ कवच धारण करने के लिये अति वृद्ध ।

कवटी (स्त्री०) चौखट (द्वार की) या (तसवीर का) चौखटा ।

कवर, कबर (वि०) [स्त्री०—कवरा या कवरी, कबरा या कबरी] १ मिश्रित । मिलाजुला । २ जड़ा हुआ । रंगबिरंगा ।

कवरः,कबरः (पु०) }
कवरम्,कबरम् (न०) } १ निमक । २ खटाई या खट्टापन । चोटीबंद । चुटीला । बाल बांधने का फीता ।

कवरी-कबरी (स्त्री०) गुथी हुई चोटी । चोटीवन्द ।

कवलः (पु०) }
कवलम् (न०) } मुखभर । कौर । गस्सा ।

कवलित (वि०) १ खाया हुआ। निगला हुआ। २ चबाया हुआ। ३ ग्रहण किया हुआ। पकड़ा हुआ।

कवाट (देखो कपाट)

कवि (वि०) १ सर्वज्ञ। सर्ववित। २ बुद्धिमान। चतुर। प्रतिभावान। ३ विचारवान। ४ प्रशंसनीय। श्लाघ्य।

कविः (पु०) १ बुद्धिमान पुरुष। विचारवान। पण्डित। पद्यरचना करनेवाला। शायर। ३ असुराचार्य। शुक्रदेव की उपाधि। ४ आदिकवि वाल्मीकि। ५ ब्रह्मा। ६ सूर्य। (स्त्री०) लगाम।—ज्येष्ठः, (पु०) वाल्मीकि जी की उपाधि।—पुत्र', (पु०) शुक्र जी की उपाधि।—राजः, (पु०) १ बड़ा शायर। २ एक कवि का नाम। एक पद्य का रचयिता जो राघवपाण्डवीय के नाम से प्रसिद्ध है।

कविकः (पु०) } लगाम।
कविका (स्त्री०) }

कविता (स्त्री०) पद्यरचना।

कवियं } (न०) लगाम।
कवीयं }

कवोष्ण (वि०) गुनगुना। कुछ कुछ गर्म।

कव्यं (न०) पितरों के लिए तैयार किया हुआ अन्न कव्य और देवताओं के लिये तैयार किया हुआ अन्न हव्य कहलाता है।—वाह् (पु०)—वाहः —वाहन. (पु०) अग्नि।

कव्य (पु०) पितर विशेष।

कशः (पु०) कोड़ा। चाबुक।

कशा (स्त्री०) १ चाबुक। कोड़ा। २ कोड़े मारना। ३ डोरी। रस्सी।

कशिपु (पु० या न०) १ चटाई। २ तकिया। ३ विस्तर। शय्या। [भोजन वस्त्र।

कशिपुः (पु०) १ भोजन। २ परिच्छद। वस्त्र। ३

कशेरु } (पु०) (न०) १ मेरुदण्ड-अस्थि। पीठ के
कसेरु } बीच की हड्डी। २ तृण विशेष। जल में उत्पन्न होने वाला फल विशेष जिसे कसेरू कहते हैं।

कश्मल (वि०) गंदा। मैला। लज्जाकर। घृणित।

कश्मलं (न०) १ मन की उदासी। २ मोह। ३ पाप। ४ मूर्छा।

कश्मीर. (पु० बहुवचन) देश विशेष। तंत्र ग्रन्थानुसार इस देश की सीमा यह है।

शारदामठमारभ्य कुङ्कुमाद्रितटान्ततः।
तावत्कश्मीर देशः स्यात् पञ्चाशद्योजनात्मकः॥

ज.,-जं,-जन्मन् (पु० न०) केसर। ज़ाफ़रान।

कश्य (वि०) चाबुक लगाने योग्य।

कश्यं (न०) शराब। मदिरा। मद्य।

कश्यप. (पु०) १ कछुआ। २ अदिति और दिति के पति, एक ऋषि का नाम।

कष् (धा० उभय०) [कषति, कषते, कषित] १ मलना। खरोंचना। छीलना। २ जाँचना। परीक्षा लेना। (कसौटी पर रगड़ कर) परीक्षा लेना। ३ घायल करना। नष्ट करना। ४ खुजलाना।

कष (वि०) रगड़ा हुआ। खुरचा हुआ।

कषः (पु०) १ रगड़। २ कसौटी का पत्थर।

कषणम् (न०) १ रगड़न। चिन्हकरण। छीलना। २ कसौटी पर से सुवर्ण की परख।

कषा देखो 'कशा'।

कषाय (वि०) १ कड़ुआ। कसैला। २ सुगन्धित। ३ लाल। कलौंहा लाल। ४ मधुर स्वर वाला। ५ भूरा। ६ अनुचित। मैला।

कषायः (पु०) } १ कसैला या कड़ुवा स्वाद या रस।
कषायम् (न०) } २ लाल रङ्ग। ३ काढ़ा। ४ लेप। उबटन। ५ तेल। फुलेल लगाकर शरीर को सुवासित करना। ६ गोंद। राल। ७ मैल। मैलापन ८ सुस्ती। मूढ़ता। ९ साँसारिक पदार्थों में अनुराग या अनुरक्ति। (पु०) १ अत्यासक्ति। अनुराग २ कलियुग।

कषायित (वि०) १ रंगीन। रंजित। रक्तरञ्जित। २ भावान्तरित। विकृत।

कषि (वि०) हानिकर। अनिष्टकर। क्षतिजनक।

कषेरुका } (स्त्री०) पीठ के बीच की हड्डी। मेरु-
कसेरुका } दण्ड।

कष्ट (वि०) १ बुरा। खराब। दुष्ट। गलत। २ पीड़ाकारक। सन्तापकारी। ३ क्लिष्ट। कठिनाई से वश में होने वाला। ४ उपद्रवी। अनिष्टकारी। क्षतिजनक। ५आगे होने वाला। अशुभ बतलाने वाला।

—आगत, (वि०) कठिनाई से प्राप्त या कठिनाई से आया हुआ ।—क्रूर, (वि०) पीडाकारक । दुःखदायी ।—तपस्, (वि०) कठोर तप करने-वाला ।—साध्य, (वि०) कठिनाई से पूरा होने-वाला ।—स्थानं, (न०) दूषित जगह । कठिनाई का या अप्रिय या प्रतिकूल स्थान ।

कष्टं (न०) १ दुष्ट । कठिनाई । विपत्ति । पीडा । दर्द । २ पाप । दुष्टता । ३ अड़चन ।

कष्टं (अव्यया०) हा कष्ट । हा धिक् ।

कष्टि (स्त्री०) १ जाँच । परीक्षा । २ पीडा । दुःख ।

कस् (धा० प०) [कसति, कसित्] हिलना । जाना । (आत्मने०) [कस्ते या कंस्ते] १ जाना । २ नाश करना ।

कस्तुरिका, कस्तूरिका, कस्तूरी (स्त्री०) मुश्क । कस्तूरी ।—मृगः (पु०) वह हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है ।

कल्हारं (न०) सफेद कमल ।

कह्वः (पु०) एक प्रकार का बेत ।

कांसीयं (न०) कांसा । फूल । धातु ।

कांस्य (वि०) काँसे या फूल का बना हुआ ।—कारः, (पु०) कसेरा । काँसे का बरतन बनाने वाला ।—तालः (पु०) झाँझ । मजीरा । भाजनम् (न०) पीतल का पात्र ।—मलं, (न०) कसाव । ताँबे का मोर्चा । पितराई ।

कांस्यम् (न०), कांस्यः (पु०), कांस्यम् (न०) १ फूल । काँसा । २ काँसे का घड़ियाल । ३ पीतल का बना जल पीने का पात्र । गिलास ।

काक (पु०) १ कौवा । २ (आलं०) तुच्छ जन । नीच, निर्लज्ज या उद्धत पुरुष । ३ लंगड़ा आदमी । ४ जल में केवल सिर भिगो कर (काक की तरह) स्नान करना ।—अक्षिगोलक न्याय, (पु०) कौए की एक ही आँख की पुतली दोनों नेत्रों में चली जाती है । इसी प्रकार उभय सम्बन्धी दृष्टान्त ।—अरिः, (पु०) उल्लू । उलूक ।—उदरः, (पु०) साँप ।—उलूकिका,—उलूकीयं, (न०) काक और उलूक का स्वाभाविक वैर । पंचतंत्र के तीसरे तंत्र का नाम "काकोलूकीयम्" है ।—चिञ्चा, (स्त्री०) गुञ्जा या घुंघची का झाड़ ।—छद:,—छदिः, (पु०) १ खंजन पक्षी । २ जुल्फ । अलक ।—जातः (पु०) कोकिल ।—तालीय, (वि०) अचानक या इत्तिफाकिया होने वाली घटना ।—तालुकिन्, (वि०) तिरस्करणीय । दुष्ट ।—दन्तः, (पु०) कौए के दाँत । (आलं०) कोई वस्तु जिसका अस्तित्व असम्भव हो । अनहोनी बात ।—दन्तगवेषणम्, (न०) ऐसी बात की खोज जो सर्वथा असम्भव हो । व्यर्थ का काम । ऐसा काम जिसके करने में कुछ भी लाभ न हो ।—ध्वजः, (पु०) वाड़वानल ।—निद्रा, (स्त्री०) झपकी । जो तुरन्त दूर हो जाय ।—पक्षः,—पक्षकः, (पु०) एक प्रकार की ज़ुल्फें । पट्टे । बालकों की दोनों कनपुटियों के लंबे बालों को काकपक्ष कहते हैं ।—पदं, (न०) छूट का यह (‸) चिन्ह । [हस्तलिखित पुस्तक या किसी लेख में जहाँ यह चिन्ह लगा हो वहाँ समझ ले कि यहाँ कुछ छूट गया है ।]—दः, (पु०) स्त्री-समागम का विधान विशेष ।—पुच्छः,—पुष्टः, (पु०) कोकिल । कोइल ।—पेय, (वि०) छिछला । उथला ।—भीरुः, (पु०) उल्लू । उलूक ।—यवः, (पु०) अनाज की बाल जिसमें दाना न हो ।—रुतं, (न०) कौए की काँव काँव जिससे भविष्यद् के शुभाशुभ का ज्ञान होता है ।—वन्ध्या, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके केवल एक ही सन्तान होता है ।—स्वरः, (पु०) कौए की कर्णकर्कश बोली ।

काकं (न०) काकसमुदाय ।

काकी (स्त्री०) मादा कौआ । कौअटिया ।

काकलः, काकालः (पु०) पहाड़ी कौआ । काला काक ।

काकलम्, काकालम् (न०) रत्नविशेष जो गर्दन में पहिना जाता है ।

काकलिः, काकली (स्त्री०) १ धीमा मधुर स्वर । २ सीठी जिससे चोर यह जानने का यत्न किया करते हैं कि, लोग जगते हैं या सोते हैं । ३ कैंची । ४ गुञ्जा का झाड़ ।—रवः, (पु०) कोकिल ।

काकिणी, काकिणिका (स्त्री०) १ कौड़ी । २ सिक्का विशेष जो चौथाई पण या २०

कौड़ियों के बराबर होता है। ३ चौथाई माशा। ४ माप का एक अंश विशेष। ५ तराजू की डंडी। ६ अठारह इंच या आधगज़।

काकिनी (स्त्री०) १ चौथाई पण। २ माप विशेष का चतुर्थांश। ३ कौडी।

काकुः (स्त्री०) १ वक्रोक्ति। भय, क्रोध, शोक के आवेश में स्वर की विकृति या परिवर्तन। २ अस्वीकारोक्ति को इस ढब से कहना कि, सुनने वाले को वह स्वीकारोक्ति जान पड़े। ३ गुनगुनाहट। ४ जिह्वा।

काकुत्स्थः (पु०) ककुत्स्थ राजा के वंशधर। सूर्यवंशी राजाओं की उपाधि विशेष।

काकुदं (न०) तालू। तलुआ। जिह्वा का आश्रयस्थान।

काकोलः (पु०) १ काला कौआ। पहाडी काक। २ सर्प। ३ शूकर। ४ कुम्हार। ५ नरक भेद।

काक्षः (पु०) १ तिरछी चितवन। कनखिया देखना।

काक्षम् (न०) ऐसे देखना जिससे आन्तरिक अप्रसन्नता प्रकट हो। टेंडी चितवन।

कागः (पु०) काक।

कांक्ष् (धा० परस्मै०) [काँचति, काँचित] १ इच्छा करना। चाहना। २ आशा करना। प्रतीक्षा करना।

कांक्षा (स्त्री०) १ कामना। इच्छा। २ प्रवृत्ति। भूख जैसे "भक्तकाँक्षा"।

कांक्षिन् (वि०) [स्त्री०—कांक्षिणी] इच्छा करने वाला। अभिलाषी।

काचः (पु०) १ काच। शीशा। स्फटिक। २ फाँसा। फंदा। लटकने वाली अलमारी का खाना। कुएँ की रस्सी। ३ नेत्र रोग विशेष। ४ मोम। ५ खारीमिट्टी।—घटी, (स्त्री०) झारी। लोटा जो काच का बना हो।—भाजनं, (न०) शीशे का पात्र।—मणिः, (पु०) स्फटिक।—मलं,—लवणं, —सम्भवम् (न०) काला निमक या सोडा।

काचनम् } (न०) डोरी या फीता जो बंडल
काचनकम् } लपेटने या कागज़ों को नत्थी करने के काम में आवे।

कांचनकिन् (पु०) हस्तलिपि। लिपि। लिखंत।

काचूकः (पु०) १ मुर्गा। २ चक्रवाक। चकई चकवा।

काजलम् (न०) १ स्वल्प जल। २ दूषित जल।

कांचन } (वि०) [स्त्री०—काञ्चनी] सुनहला
काञ्चन } या सोने का बना हुआ।—अङ्गी, (स्त्री०) सुनहले रंग की स्त्री। अर्थात् पीले रंग की स्त्री —कन्दरः, (पु०) सोने की खान।—गिरिः, (पु०) सुमेरु पर्वत।—भूः, (स्त्री०) १ पीली मिट्टी वाली ज़मीन। २ सुवर्णरज।—सन्धिः, (स्त्री०) दो पक्षों के बीच हुई ऐसी सन्धि या सुलह जिसमें उभय पक्ष के लिये समान शर्तें हों।

कांचनम् } (न०) १ सोना। सुवर्ण। २ चमक।
काञ्चनम् } दमक। ३ सम्पत्ति। धनदौलत। ४ कमल का रेशा।

कांचनः } (पु०) १ धतूरा का पौधा। २ चम्पा का
काञ्चनः } पौधा।

कांचनारः }
काञ्चनारः } (पु०) कोविदार या कचनार का
कांचनालः } पेड़।
काञ्चनालः }

कांचिः } (स्त्री०) १ करधनी जिसमें रोनें या घूँघर
काञ्चिः } लगे हों। बजनी करधनी। २ दक्षिण
कांची } भारत की स्वनाम प्रसिद्ध एक नगरी जिसकी
काञ्ची } गणना सप्त मोक्षपुरियों में है। आधुनिक कॉंजीवरम् नगर।—पदं (न०) कूल्हा और कमर।

कांजिकम् } (न०) खट्टी महेरी। खाद्यपदार्थ
काञ्जिकम् } विशेष जो खट्टा हो।

काटुकं (न०) खटाई। खट्टापन।

काठः (पु०) चट्टान। पत्थर।

काठिनम् } (न०) १ कड़ाई। कडापन। २ निष्ठुरता
काठिन्यम् } कठोरता। निष्ठुरहृदयता।

काण (वि०) १ काना। २ छेद किया हुआ। फूटी (कौडी)। यथा—

' भ्रातः काणवराटकोपि न मया
तृष्णेऽधुना मुञ्च मां। "

काणेयः } (पु०) कानी स्त्री का पुत्र।
काणेरः }

काणेली (स्त्री०) १ असती या व्यभिचारिणी स्त्री। २ अविवाहिता स्त्री।—मातृ, (पु०) अविवाहिता स्त्री का पुत्र।

काँडः, काण्डः (पु०) } १ भाग। अंश। २ काँडम्, काण्डम् (न०) } एक पोरुए से दूसरे पोरुए तक का किसी पोरुएदार पौधे का भाग। ३ तना। डंठल। डाली। शाखा। ४ किसी ग्रंथ का एक भाग। ५ पृथक् विभाग। ६ गुच्छा। समूह। गट्ठा। ७ तीर। ८ लंबी हड्डी। ९ बेत। नरकुल। १० छड़ी। डंडा। ११ जल। पानी। १२ अवसर। मौका। १३ खास जगह। रहस्य स्थान। १४ दुष्ट। पापी। —कार, (पु०) तीर बनाने वाला। —गोचरः, (पु०) लोहे का तीर। —पटः, —पटकः, (पु०) कनात। पर्दा। —पातः, (पु०) तीर का उड़ान या वह स्थान जहाँ तक तीर जा सके। —पृष्ठः, (पु०) १ सैनिकवृत्ति विशेष। सिपाही। २ वैश्या स्त्री का पति। ३ दत्तकपुत्र या औरसपुत्र से भिन्न कोई पुत्र (यह गाली देने में प्रयुक्त होता है।) कमीना। निमकहराम। महावीर चरित्र में जामदग्न्य को शतानन्द ने काण्डपृष्ठ कहा है।

"स्वकुलं पृष्ठतः कृत्वा यो वै परकुलं व्रजेत्।
तेन दुश्चरितेनासौ काण्डपृष्ठ इति स्मृतः॥

—भङ्गः, (पु०) हड्डी का टूटना या किसी शरीरावयव का भङ्ग होना। —वाणी, (स्त्री०) चाण्डाल की वीणा। —सन्धि, (स्त्री०) गाँठ। —स्पृष्टः, (पु०) योद्धा। सिपाही।

काँडवत् } (पु०) धनुषधारी।
काण्डवत् }

काँडीरः } (पु०) धनुषधारी।
काण्डीरः }

काँडोलः } नरकुल की बनी डलिया या टोकरी।
काण्डोलः }

कात् (अव्यया०) गाली, तिरस्कार व्यञ्जक अव्यय।

कातर (वि०) १ भीरु। डरपोंक। उत्साहहीन। २ दुःखित। शोकान्वित। भीत। ३ घबड़ाया हुआ। विकल। व्याकुल। ४ भय से विह्वल या भय के कारण थरथराता हुआ।

कातर्य (न०) भीरुता। डरपोंकपना।

कात्यायनः (पु०) १ प्रसिद्ध व्याकरणी जिन्होंने पाणिनी के सूत्रों को पूर्ण करने के लिये वार्तिक की रचना की। वररुचि नामक व्याकरण का वार्तिक बनानेवाले। २ कात्यायनसूत्र नामक एक धर्मशास्त्र के निर्माता।

कात्यायनी (स्त्री०) १ एक बूढ़ी या अधेड़ स्त्री (जो लाल वस्त्र पहिनती हो)। २ पार्वती का नाम। —पुत्रः, —सुतः (पु०) कार्तिकेय का नाम।

काथंचित्क } (वि०) [स्त्री०—काथंचित्की] जो काथञ्चित्क } कठिनाई से पूर्ण हुआ हो।

काथिकः (न०) कहानी कहनेवाला।

कादंबः } (पु०) १ कलहंस। २ तीर। ३ गन्ना। कादम्बः } ४ कदम्ब का पेड़।

कादंबम् } (न०) कदम्ब के फूल।
कादम्बम् }

कादंबरम् } (न०) कदम्ब के फूलों की शराब।
कादम्बरम् }

कादंबरी } (स्त्री०) १ कदम्ब के फूलों से खींची हुई कादम्बरी } मदिरा। २ मदिरा। शराब। ३ हाथी की कनपुटी से चूनेवाला मद। ४ सरस्वती देवी की उपाधि। ५ मादा कोकिल।

कादंबिनी } (स्त्री०) मेघमाला।
कादम्बिनी }

कादाचित्क (वि०) इत्तिफाकिया।

काद्रवेयः (पु०) सर्प विशेष।

काननम् (न०) १ जङ्गल। वन। २ घर। मकान। —अग्निः, (पु०) दावानल। —ओकस्, (पु०) १ वनवासी। २ वानर।

कानिष्ठिकम् (न०) छगुनिया। सब से छोटी हाथ की उँगली।

कानिष्ठिनेयः (पु०) } सब से छोटे बच्चे की कानिष्ठिनेयी (स्त्री०) } सन्तान।

कानीनः (पु०) १ अविवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र। २ व्यास। ३ कर्ण।

कांत } (वि०) १ प्रियः। इष्ट। प्यारा। २ मनोहर। कान्त } अनुकूल। सुन्दर। —पक्षिन् (पु०) मोर। मयूर। —लोहं (न०) चुम्बक पत्थर।

कांतः } (पु०) १ प्रेमी। आशिक। २ पति। ३ प्रेम-कान्तः } पात्र। माशूक। ४ चन्द्रमा। ५ वसन्तऋतु। ६ एक प्रकार का लोहा। ७ रत्नविशेष। ८ कार्तिकेय की उपाधि।

कांतम्
कान्तम् } (न०) केसर । जाफ़ान् ।

कांता
कान्ता } (स्त्री०) १ माशूका या प्रेमपात्री सुन्दरी स्त्री । २ पत्नी । भार्या । ३ प्रियङ्गु बेल । ४ बड़ी इलायची । ५ पृथिवी ।—अंघ्रिदोहद. (पु०) अशोकवृक्ष ।

कांतारः, कान्तारः (पु०)
कांतारं, कान्तारं (न०) } १ विशाल बियाबान । निर्जन वन । २ खराब सड़क । ३ रन्ध्र । खुखाल । छेद । सन्धि । (पु०) लाल रङ्ग के गन्नों की अनेक जातियां । तिन्दुक । पहाड़ी आबनूस ।

कांतिः
कान्तिः } (स्त्री०) १ मनोहरता । सौन्दर्य । २ आभा । दीप्ति । आब । ३ व्यक्तिगत शृङ्गार । ४ कामना । इच्छा । चाह । ५ अलङ्कार शास्त्र में प्रेम से बढ़ी हुई सुन्दरता । साहित्यदर्पणकार ने, "कान्ति" 'शोभा' और 'दीप्ति' में इस प्रकार अन्तर बतलाया है :—

"रूपयौवन लालित्य भोगाद्यैरङ्गभूषणम् ।
शोभामोक्ता सैव कान्तिर्मन्मथाप्यायिता द्युति ।
कान्तिरेवातिविस्तीर्णा दीप्तिरित्यभिधीयते ॥"

६ मनोहर मनोनीत स्त्री । ७ दुर्गा की उपाधि । —कर, (वि०) सौन्दर्य लानेवाला । शोभा बढ़ानेवाला ।—द, (वि०) सौन्दर्यप्रद । शोभा-जनक ।—दं, (न०) १ पित्त । २ घी ।—दायक,—दायिन्, (वि०) शोभा देनेवाला ।—भृत्, (पु०) चन्द्रमा ।

कांतिमत्
कान्तिमत् } (वि०) मनोहर । सुन्दर । सर्वोत्तम । (पु०) चन्द्रमा ।

कांदवम्
कान्दवम् } (न०) लोहे की कढ़ाई या चूल्हे में भुनी हुई कोई वस्तु ।

कांदविकः
कान्दविकः } (पु०) नानबाई । हलवाई ।

कांदिशीक
कान्दिशीक } (वि०) १ भगोड़ा । भाग जानेवाला । २ भयभीत । डरा हुआ ।

कान्यकुब्जः (पु०) एक देश का नाम । कन्नौज । २ [ब्राह्मण ।

कापटिक (वि०) [स्त्री—कापटिकी] १ धोखेबाज़ । जालसाज़ । बेईमान । २ दुष्ट ।

कापटिकः (पु०) चापलूस । खुशामदी ।

कापट्यं (न०) दुष्टता । जालसाज़ी । धोखा । छल । कपट ।

कापथ (पु०) खराब सड़क ।

कापालः
कापालिकः } (पु०) १ शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक उपसम्प्रदाय । इस सम्प्रदाय के लोग अपने पास खोपड़ी रखते हैं और उसी में रींध कर या रख कर खाते हैं । वामाचारी । २ एक प्रकार की कोढ़ ।

कापालिन् (पु०) शिवजी का नाम ।

कापिक (वि०) [स्त्री०—कापिकी] वानर जैसी शक्ल का या वानर की तरह आचरण करने वाला ।

कापिल (वि०) [स्त्री०—कापिली] १ कपिल का या कपिल सम्बन्धी । २ कपिल द्वारा पढ़ाया हुआ या कपिल से निकला हुआ ।

कापिलः (पु०) १ कपिल के सांख्यदर्शन को मानने वाला या उसका अनुयायी । २ भूरा रंग ।

कापुरुषः (पु०) नीच या ओछा जन । डरपोंक या दुष्ट जन ।

कापेयं (न०) १ वानर की जाति का । २ वानर जैसी चेष्टा करने वाला । ३ वानरी हथकंडे ।

कापोत (वि०) स्त्री०—कापोती] भूरे धुमैले सफेद रंग का ।

कापोतं (न०) १ कबूतरों का गिरोह । २ सुर्मा । —अञ्जनम् (न०) आँख में लगाने का सुर्मा ।

कापोतः (पु०) भूरा रंग ।

काम् (अव्यया०) किसी को बुलाने में प्रयोग होने वाला अव्यय ।

कामः (पु०) १ कामना । अभिलाषा । २ अभिलषित वस्तु । ३ स्नेह । प्रेम । ४ पुरुषार्थ विशेष । स्त्री-सम्भोग की कामना या स्त्रीसम्भोग का अनुराग । ५ कामुकता । मैथुनेच्छा । ६ कामदेव । ७ प्रद्युम्न का नाम । ८ बलराम का नाम । ९ एक प्रकार का आम का पेड़ ।

कामं (न०) १इष्टवस्तु । अभीष्ट पदार्थ । २ वीर्य । धातु । —अग्नि., (पु०) प्रेम की आग या सरगर्मी । —अङ्कुश., (पु०) १ नख । नाखून । २ जननेन्द्रिय । लिङ्ग ।—अङ्गः (पु०) आम का पेड़ । — अन्धः, (पु०) कोकिल ।—अन्धा, (स्त्री०) कस्तूरी । —अन्निन् (वि०) मनोभिलषित भोजन जब चाहे तब पाने वाला ।—अभिकाम,

(वि०) कामुक । लंपट । —अरण्यं, (न०) मनोहर उपवन । या सुन्दर उद्यान ।—अरिः (=कामारि.) (पु०) शिवजी ।—अर्थिन्, (वि०) कामुक ।—अवतार:, (पु०) प्रद्युम्न का नाम । अवसायः (पु०)—दुःख सुख की ओर से उदासीनता । —अशनं, (न०) १ इच्छानुसार खाने वाला । २ असंयत भोग विलास ।—आतुर, (वि०) प्रेम के कारण बीमार । प्रेमरोगाकान्त । कामातुर ।—आत्मजः, (पु०) प्रद्युम्न पुत्र अनिरुद्ध की उपाधि —आत्मन्, (वि०) कामुक । कामासक्त । आशिक ।—आयुधं, (न०) १ कामदेव के बाण । २ जननेन्द्रिय ।—आयुधः, (पु०) आम का पेड । —आयुस्, (पु०) १ गीध । गिद्ध । २ गरुड ।—आर्त, (पु०) कामपीडित । प्रेमविह्वल ।—आसक्त, (वि०) कामी । कामुक । प्रेम में विह्वल ।—ईप्सु, (वि०) अभीष्ट वस्तु आदि के लिये प्रयत्नवान् । —ईश्वरः, (पु०) १ कुबेर की उपाधि । २ परब्रह्म ।—उदकं, (न०) १ स्वेच्छापूर्वक जलदान । २ सगोत्र या जो तर्पण के अधिकारी हैं, उनसे भिन्न किसी का जलतर्पण करना ।—उपहत, (वि०) कम पीडित ।—कला, (स्त्री०) काम की स्त्री रति का नाम । —कूटः, (पु०) १ वेश्या का प्रेमी । २ वेश्यापना । केलि, (वि०) कामरत । कामुक । कामी ।—केलिः, (पु०) १ आशिक । प्रेमी । २ मैथुन ।—चर, चार, (वि०) बेरोकटोक । असंयत । —चरः,—चारः, (पु०) १ बेरोक टोक गति । २ स्वेच्छाचारिता । ३ स्वेच्छाचार । ४ कामासक्तता । मैथुनेच्छा । ५ स्वार्थपरता ।—चारिन्, (वि०) १ असंयत गतिशील । २ कामी । कामुक । ३ स्वेच्छाचारी (पु०) १ गरुड़ । २ गौरैया ।—जित्, (वि०) काम को जीतने वाला । (पु०) १ शिव जी की उपाधि । २ स्कन्द की उपाधि ।—तालः, (पु०) कोकिल ।—द, (वि०) अभिलाषा पूर्ण करनेवाला ।—दा, (स्त्री०) कामधेनु ।—दर्शन, (वि०) मनोहर रूप वाला ।—दुघा, दुह्, (स्त्री०) कामधेनु ।—दूती, (स्त्री०) कोकिला ।—देवः, (पु०) प्रेम के अधिष्ठाता देवता ।—धेनुः, (स्त्री०) स्वर्ग की गौ विशेष ।—ध्वंसिन्, (पु०) शिव जी का नाम ।—पत्नी, (स्त्री०) रति । कामदेव की स्त्री ।—पालः, (पु०) बलराम का नाम ।—प्रवेदनं, (न०) अपनी इच्छा प्रकट करना ।—प्रश्नः, (पु०) मनमाना प्रश्न या सवाल ।—फलः, (पु०) आम के पेड़ों की जाति विशेष ।—भोगाः,(बहुवचन) मैथुनेच्छा की पूर्ति ।—महः, (पु०) कामदेव सम्बन्धी उत्सव विशेष जो चैत्रमास की पूर्णिमा को मनाया जाता है ।—मूढ़,—मोहित, (वि०) प्रेम से बुद्धि गँवाये हुए । कामान्ध ।—रसः, (पु०) वीर्यपात । —रसिक, (वि०) कामुक । कामी ।—रूप, (वि०) १ इच्छानुसार रूप धारण करनेवाला । २ सुन्दर । खूबसूरत ।—रूपाः,(बहुवचन) गोहाटी का प्रांत कामरूप देश के नाम से प्रसिद्ध है ।—रेखा,—लेखा, (स्त्री०) वेश्या । रंडी । पतुरिया ।—लोल, (वि०) कामपीडित ।—वरः (पु०) मुँहमाँगा वरदान ।—वल्लभः, (पु०) १ वसन्तऋतु । २ आम का पेड़ ।—वल्लभा (स्त्री०) जुन्हाई । चन्द्रमा की चाँदनी ।—वश, (वि०) प्रेमासक्त ।—वश , (पु०) प्रेमासक्ति । —वादः (पु०) मनमाना कहना । जो जी में आवे सो कहना ।—विहंतृ, (वि०) असफल मनोरथ ।—वृत्त, (वि०) कामुक । ऐयाश ।—वृत्ति, (वि०) स्वेच्छाचारी । स्वतंत्र ।—वृत्ति, (स्त्री०) स्वतन्त्रता । स्वेच्छाचारिता ।—वृद्धिः, (स्त्री०) कामेच्छा की वृद्धि ।—शरः, (पु०) १ प्रेम का बाण । २ आम का पेड ।—शास्त्रः, (पु०) प्रणयात्मक विज्ञान ।—संयोगः, (पु०) अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि या प्राप्ति ।—सखः, (पु०) वसन्तऋतु ।—सू, (वि०) किसी भी अभिलाषा का पूरा करनेवाला ।—सूत्रम्, (न०) वात्स्यायन सूत्र जिसमें कामशास्त्र का प्रतिपादन है ।—हैतुक, (वि०) विना किसी कारण के । केवल इच्छामात्र से उत्पन्न ।

कामतः (अव्यया०) १ स्वेच्छतः । मनमाना । रज़ामन्दी से । जानबूझ कर । इरादतन । ३ कामुकवत् । रसिकता से । ४ स्वेच्छानुसार । असंयत रूप से । बेरोकटोक ।

कामन् (वि०) रसिया । ऐयाश ।

कामनम् (न०) ख्वाहिश । चाह । अभिलाषा ।

कामना (स्त्री०) अभिलाषा । इच्छा । चाह ।

कामनीयम् (न०) कमनीय । सुन्दर । मनोहर ।

कामंधमिन्, कामन्धमिन् (पु०) कसेरा । ठठेरा ।

कामम् (अव्यया०) १ इच्छा या प्रवृत्ति के अनुसार । २ इच्छानुकूल । ३ प्रसन्नता से । रज़ामन्दी से । ४ ठीक । बहुत ठीक । स्वीकारोक्तिसूचक अव्यय । ६ माना हुआ । स्वीकार किया हुआ । ७निस्सन्देह । सचमुच । वस्तुत. । ८ बहतर । बल्कि ।

कामयसान, कामयान, कमयितृ (वि०) रसिया । ऐयाश । लम्पट ।

कामल (वि०) रसिया । ऐयाश । लम्पट ।

कामलः (पु०) १ वसन्तऋतु । २ मरुभूमि । रेगस्तान ।

कामलिका (स्त्री०) मदिरा । शराब ।

कामवत् (वि०) १ अभिलाषी । चाह रखने वाला । २ रसिक । ऐयाश ।

कामिन् (वि०) [स्त्री०—कामिनी] १ कामी । रसिक । ऐयाश । २ अभिलाषी । (पु०) १ प्रेमी । आशिक । कामी । ऐयाश । २ स्त्रैण । स्त्रीनिर्जित पुरुष । ३ चक्रवाक । ४ गौरैया । ५ शिव जी की उपाधि । ६ चन्द्रमा । ७ कबूतर ।

कामिनी (स्त्री०) १ प्यार करनेवाली स्त्री । २ मनोहर या सुन्दरी स्त्री । ३ स्त्री । औरत । ४ भीरु स्त्री । ५ शराब । मदिरा ।

कामुक (वि०) [स्त्री०—कामुका या कामुकी] १ अभिलाषी । चाह रखने वाला । २ रसिक । लम्पट । ऐयाश ।

कामुकः (पु०) १ प्रेमी । आशिक । ऐयाश आदमी । २ गौरैया पक्षी । ३ अशोक वृक्ष ।

कामुका (स्त्री०) धन की कामना रखनेवाली स्त्री । ज़रपरस्त औरत ।

कामुकी (स्त्री०) छिनाल या ऐयाश औरत ।

कांपिल्लः, काम्पिल्लः, कांपीलः, काम्पीलः गुण्डारोचना नामक लता । [ढकी हुई गाड़ी ।

कांबलः, काम्बल. (पु०) कंबल या ऊनी वस्त्र से

कांबविकः, काम्बविकः (पु०) शङ्ख या सीप के बने आभूषण बेचने वाला दूकानदार । शङ्ख का व्योपारी ।

कांबोजः, काम्बोजः (पु०) १ कम्बोज (कंबोडिया) देशवासी । २ कम्बोज देश का राजा । ३ पुन्नाग वृक्ष । ४ कम्बोज देश में उत्पन्न होने वाले घोड़ों की एक जाति विशेष ।

काम्य (वि०) १ वाञ्छनीय । २ किसी विशेष कामना के लिए किया हुआ कर्मानुष्ठान । ३ सुन्दर । मनोहर । कमनीय ।—अभिप्रायः, (पु०) स्वार्थवश किया हुआ कर्म । जिसका हेतु या कारण स्वार्थ हो ।—कर्मन्, (पु०) धर्मानुष्ठान जो किसी उद्देश्य विशेष के लिये किया गया हो और जिससे भविष्य में फल प्राप्ति की इच्छा हो ।—गिर् (स्त्री०) अनुकूल कथन या भाषण ।—दानम्, (न०) ऐसा दान या भेंट जो स्वीकार करने योग्य हो । स्वेच्छानुसार दी हुई भेंट या अपनी इच्छा के अनुसार दिया हुआ दान ।—मरणं, (न०) इच्छा मृत्यु । आत्महत्या ।—व्रतं, (न०) अपनी इच्छा से रखा हुआ व्रत ।

काम्या (स्त्री०) अभिलाषा । इच्छा । प्रार्थना ।

काम्ल (वि०) नाममात्र को खट्टा । कमखट्टा ।

कायः, कायम् १ शरीर । देह । तन । २ पेड़ का धड़ या तना । ३ तारों को छोड़ कर वीणा का समस्त काठ का ढांचा । ४ समुदाय । समारोह । संग्रह । ५ पूंजी । मूलधन । ६ घर । वासा । डेरा । ७ चिन्ह । ८ स्वभाव ।—अग्नि., (पु०) पाचनशक्ति ।—क्लेश, (पु०) शरीर सम्बन्धी कष्ट ।—चिकित्सा, (स्त्री०) आयुर्वेद के आठ विभागों में तीसरा विभाग अर्थात् उन रोगों की चिकित्सा या इलाज जो समस्त शरीर में व्याप्त हों ।—मान, (न०) शरीर का माप ।—बलनम्, (न०) कवच । बर्म ।—स्थः, (पु०) १ मुंशी जाति, जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्रा स्त्री से हुई हो । २ कायथ जाति का एक मनुष्य ।—स्था, (स्त्री०) १ कैथानी । कायथ की स्त्री । २ बहेड़ा, हर्रा, आँवला का

पेड़। —स्थी, (स्त्री०) कायथ की स्त्री। —स्थित, (वि०) शारीरिक। देह सम्बन्धी।

कायः, (पु०) प्राजापत्य विवाह। आठ प्रकार के। विवाहों में से एक प्रकार का विवाह।

कायम्, (न०) प्राजापतितीर्थ। उँगुलियों की जड के पास का हाथ का भाग। विशेष कर कनिष्ठिका का मूलभाग।

कायक, (वि०) / कायिक (वि०) / कायिका (वि०) / कायिकी (वि०) } शरीर सम्बन्धी। —वृद्धिः, (स्त्री०) वह ब्याज या सूद जो किसी धरोहर रखे हुए जानवर का उपयोग करने के बदले मुजरा दिया जाय।

कायका / कायिका } (स्त्री०) ब्याज सूद।

कार (वि०) [स्त्री०—कारी.] समासान्त शब्द का अन्तिम शब्द होकर जब यह आता है, तब इसका अर्थ होता है ; करने वाला, बनाने वाला, सम्पादन करने वाला। यथा—कुम्भकार, ग्रन्थकार, आदि। —अवरः, (पु०) एक वर्णसङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति निषाद पिता और वैदेही जाति की माता से हो। —कर, (वि०) गुमाश्ता या आम-मुख्तार की जगह काम करने वाला।—भूः, (पु०) चुंगी उघाने की जगह। कर वसूल करने का स्थान।

कारः (पु०) १ कार्य। कर्म (यथा पुरुषकार)। २ उद्योग। प्रयत्न। चेष्टा। ३ धार्मिक तप। ४ पति। स्वामी। मालिक। ५ सङ्कल्प। दृढ़निश्चय। ६ शक्ति। सामर्थ्य। ताकत। ७ कर या चुंगी। ८ बर्फ़ का ढेर। ९ हिमालय पर्वत।

कारक (वि०) [स्त्री०—कारिका] १ करने वाला बनाने वाला। २ प्रतिनिधि। कारिन्दा। मुनीम। —दीपकम्, (न०) अलङ्कार शास्त्र का अर्थालङ्कार भेद। —हेतुः, (पु०) ज्ञापक हेतु का उल्टा। क्रियात्मक हेतु।

कारकम् (न०) व्याकरण में कारक उसे कहते हैं जिसका क्रिया से सम्बन्ध होता है। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, सम्बध —ये सात कारक हैं। २ व्याकरण का वह भाग जिसमें कारकों का वर्णन है।

कारणम् (न०) १ हेतु। २ जिसके विना कार्य की उत्पत्ति न हो सके। ३ साधन। ज़रिया। ४ उत्पादक। कर्त्ता। जनक। ५ तत्व। ६ किसी नाटक की मूल घटना। ७ इन्द्रिय। ८ शरीर। ९ चिन्ह। टीप। दस्तावेज़ प्रमाण। अधिकार। १० वह आधार जिस पर कोई मत या निर्णय अवलम्बित हो। —उत्तरं, (न०) १ मन में कुछ अभिप्राय रख कर उत्तर देना। २ वादी की कही बात को कह कर पीछे उसका खण्डन करना। [जैसे—मैं यह स्वीकार करता हूँ कि यह घर गोविन्द का है; किन्तु गोविन्द ने मुझे यह दान में दे दिया है।] —भूत, (वि०) कारण बना हुआ। हेतु बना हुआ। —माला, (स्त्री०) काव्यालङ्कार विशेष। —वादिन्, (पु०) वादी। मुद्दई। —वारि, (न०) वह जल जो सृष्टि की आदि में उत्पन्न किया गया था। —विहीनं (वि०) हेतुरहित। कारणरहित। बेवजह। —शरीरम्, (न०) नैमित्तिक शरीर।

कारणा (स्त्री०) १ पीड़ा। क्लेश। २ नरक में डाला जाना।

कारणिक (वि०) १ परीक्षक। न्यायकर्त्ता। २ नैमित्तिक।

कारंडवः / कारण्डवः } (पु०) एक प्रकार की बतक़।

कारंधमिन् / कारन्धमिन् } (पु०) १ कसेरा। ठठेरा। २ खनिज-विद्यावित।

कारवः (पु०) काक। कौआ।

कारस्करः (पु०) किंपाक नामक वृक्ष।

कारा (स्त्री०) १ जेलख़ाना। बंदीगृह। २ वीणा का भाग विशेष या तूंबी। ३ पीड़ा। कष्ट। क्लेश। ४ दूती। ५ सुनारिन। ६ वीणा की गूँज को कम करने का औज़ार।—आगारं,—गृहं,—वेश्मन्, (न०) जेलख़ाना। क़ैदखाना।—गुप्तः,(पु०) कैदी। बंदी। बँधुआ।—पालः, (पु०) जेलख़ाने का दरोगा।

कारिः (स्त्री०) क्रिया। कर्म। (पु०) या (स्त्री०) कलाकुशल। दस्तकार।

कारिका (स्त्री०) १ नाचने वाली स्त्री। २ कारोबार। व्यापार। व्यवसाय। ३ काव्य, दर्शन, व्याकरण, विज्ञान सम्बन्धी प्रसिद्ध पद्यात्मक कोई रचना।

[जैसे सांख्यकारिका]। ४ अत्याचार । जुल्म । ५ ब्याज । सूद । ६ अल्पाक्षरयुक्त और बहुअर्थवाची श्लोक ।

कारीषं (न०) अरने कंडों का ढेर ।

कारु (वि०) [स्त्री०—कारु,] १ कर्ता । करने वाला । प्रतिनिधि । कारिंदा । नौकर । २ कला-कुशल । कारीगर । कारीगरों में गणना इतनों की है ।

" तक्षा च तंत्रवायश्च नापितो रजकस्तथा ।
पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः ॥ "

—चौरः, (पु०) सेंधा लगाने वाला । सेंध फोड़ने वाला । डाँकू ।—जः, (पु०) १ कला से बनी कोई वस्तु । कला का कोई भाग या कोई फल । २ युवा हाथी या हाथी का बच्चा । ३ टीला । पहाड़ी । ४ फेन । ५ गेरू । ६ तिल । मस्सा ।

कारुणिक (वि०) [स्त्री०—कारुणिकी] दयालु । कृपालु ।

कारुण्यम् (न०) दया । रहम । अनुकम्पा ।

कार्कश्यम् (न०) १ सख्ती । कठोरता । उद्दण्डता । २ दृढ़ता । ३ ठोसपना । ४ हृदय की कठोरता । संगदिली ।

कार्तवीर्यः (पु०) हैहयराज कृतवीर्य का पुत्र । उसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी । इसको सहस्रबाहु या सहस्रार्जुन भी कहते हैं ।

कार्तस्वरम् (न०) सोना । सुवर्ण ।

कार्तांतिकः } कार्तान्तिकः } (पु०) ज्योतिषी । भविष्यद्वक्ता ।

कार्तिक (वि०) [स्त्री०—कार्तिकी,] कार्तिक मास सम्बन्धी ।

कार्तिकः (पु०) १एक मास का नाम जिसकी पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में होता है । अथवा जिसकी पूर्णमासी के दिन कृत्तिका नक्षत्र होता है । २ स्कन्द की उपाधि ।

कार्तिकी (स्त्री०) कार्तिक मास की पूर्णमासी ।

कार्तिकेयः (पु०) शिवपुत्र । स्कन्द । स्वामिकार्तिक ।
—प्रसूः, (स्त्री०) पार्वती देवी । स्कन्द की जननी ।

कार्त्स्न्यं (न०) सम्पूर्णता । समूचापन ।

कार्दम (वि०) [स्त्री०—कार्दमी] १ कीचड़ युक्त । कीचड़ में भरा या उससे सना । २ कर्दम प्रजापति सम्बन्धी ।

कार्पटः (पु०) १ आवेदनकर्ता । अर्ज़ी देने वाला । प्रार्थी । उम्मेदवार । २ चिथड़ा । लत्ता ।

कार्पटिकः (पु०) १ तीर्थयात्री । २ तीर्थजलों को ढो कर आजीविका करने वाला । ३ तीर्थयात्रियों का एक दल । ४ अनुभवी मनुष्य । ५ पिछलग्गू । खुशामदी ।

कार्पण्यम् (न०) १ धनहीनता । गरीबी । २ अनुकम्पा । दया । रहम । ३ कंजूसी । सूमपना । शक्तिहीनता । निर्बलता । ४ हल्कापन । ओछापन । मन का हल्कापन ।

कार्पास (वि०) [स्त्री०—कार्पासी] रुई का बना हुआ ।—अस्थि, (न०) बिनौला । कपास का बीज ।—नासिका, (स्त्री०) तकुआ । तकला ।
—सौत्रिक, (वि०) कपास के सूत से बना हुआ ।

कार्पासः (पु०) } कार्पासं (न०) } १ कोई वस्तु जो रुई से बनी हो । २ कागज़ ।

कार्पासिक (वि०) [स्त्री०—कार्पासिकी] रुई का बना हुआ या कपास से उत्पन्न ।

कार्पासिका } कार्पासी } (स्त्री०) कपास का पौधा ।

कार्मण (वि०) [स्त्री०—कार्मणी,] किसी कार्य को पूरा करना । किसी कार्य को सुचारु रूप से करना ।

कार्मणं (न०) जादू । तंत्र विद्या ।

कार्मिक (वि०) [स्त्री०—कार्मिकी,] १ निर्मित । बना हुआ । २ जरी का काम किया हुआ । रंगबिरंगे सूतों से बिना हुआ । ३ रंग बिरंगा ।

कार्मुक (वि०) [स्त्री०—कार्मुकी,] काम के योग्य । काम करने लायक । किसी कार्य को सुचारु रूप से पूर्ण करने वाला ।

कार्मुकम् (न०) १ धनुष । कमान । २ बाँस ।

कार्य (स० का० कृ०) बना हुआ । किया हुआ जो किया जाना चाहिये ।—अक्षम, (वि०) जो अपने कर्त्तव्य कार्य करने में असमर्थ हो । अयोग्य ।

—अकार्यविचारः, (पु०) किसी विषय की सपक्ष विपक्ष युक्तियों पर वादानुवाद। किसी कार्य के औचित्य अनौचित्य पर वादानुवाद। —अधिपः, (पु०) कार्याध्यक्ष। २ ज्योतिष में वह ग्रह जिसकी परिस्थिति देखकर किसी प्रश्न का उत्तर दिया जाय।—अर्थः, (पु०) १ उद्देश्य। प्रयोजन। २ नौकरी पाने के लिये आवेदनपत्र। —अर्थिन्, (न०) १ प्रार्थी। २ किसी पदार्थ की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील। ३ पदप्रार्थी। नौकरी चाहने वाला। ४ अदालत में किसी दावे के लिये वकालत करने वाला। अदालत का आश्रय ग्रहण करने वाला।—आसनं, (न०) वह स्थान जहाँ लैन दैन या खरीद फरोख्त होती हो। दूकान। गद्दी।—ईक्षणं (न०) सार्वजनिक कार्यों की देख रेख।—उद्धारः, (पु०) कर्त्तव्यपालन।—कर, (न०) गुणकारी।—कारणे, (द्विवचन) कारणे। कार्य क्रिया। - कालः, (पु०) १ काम करने का समय। ऋतु। मौसम। उपयुक्त समय या अवसर।—गौरवं, (न०) विषय का महत्व। —चिन्तक, (वि०) परिणामदर्शी। विचारवान। विवेकी।—चिन्तकः, (पु०) किसी कार्य या कार्यालय का प्रबन्धकर्त्ता या व्यवस्थापक। —च्युत, (वि०) बेकार। जो कहीं नौकर चाकर न हो। ठलुआ। किसी पद से हटाया या निकाला हुआ।—दर्शनं, (न०) १ अवेक्षण। मुआयना। पर्यवेक्षण। २ अनुसन्धान। तहकीकात।— —निर्णयः, (पु०) किसी काम का निपटारा।— पुटः, (पु०) १ निरर्थक काम करने वाला। २ पागल। चलितचित्त। झक्की। ३ निठल्ला। ठलुआ।—प्रद्वेषः, (पु०) अकर्मण्यता। काहिली। सुस्ती।—प्रेष्यः, (पु०) प्रतिनिधि। कारिंदा। मुनीम। दूत। कासिद।—विपत्ति, (पु०) असफलता। दुर्भाग्य।—शेष, (पु०) १ किसी कार्य का अवशिष्ट अंश। २ किसी कार्य की सम्पन्नता। पूर्णता।—सिद्धिः, (स्त्री०) सफलता। कामयाबी।—स्थानं, (न०) दफ्तर। आफिस। कोठी। दूकान।—हंतृ, (वि०) दूसरे के काम में बाधा डालने वाला। विपक्षी।

कार्यम् (न०) १ काम। व्यवसाय। २ कर्त्तव्य कर्म। ३ पेशा। उद्योग। व्यापार। अति आवश्यक कारोबार। ४ धार्मिक अनुष्ठान। ५ हेतु। कारण। प्रयोजन। ६ आवश्यकता। अपेक्षा। ७ आचरण। ८ अभियोग। मुकदमा। ९ कर्त्तव्य कार्य। १० नाटक का शेष अङ्क। ११ उत्पत्ति-स्थान।

कार्यतः (अव्यया०) किसी प्रयोजन या उद्देश्य से। अन्ततोगत्वा। लिहाज़ा। अतएव।

कार्श्य (न०) १ लटापन। दुबलापन। पतलापन। २ कामी। स्वल्पता। थोड़ापन।

कार्षः (५) किसान। खेतिहर।

कार्षापणः (पु०), कार्षापणम् (न०), कार्षापणकः (पु०) — भिन्न वज़न और मूल्य के सिक्के।

कार्षापणम् (न०) रुपया।

कार्षापणिक (वि०) [स्त्री—कार्षापणिकी] एक कार्षापण के मूल्य का। जिसका मूल्य एक कार्षापण हो।

कार्षिक देखो "कार्षापण"

कार्ष्ण (वि०) [स्त्री०—कार्ष्णी] श्रीविष्णु या श्रीकृष्ण से सम्बन्ध रखने वाला या वाली। २ व्यास का या की। ३ कृष्ण मृग का या की।

कार्ष्णायस (वि०) [स्त्री—कार्ष्णायसी] काले लोहे। का बना हुआ या हुई।

कार्ष्णायसम् (न०) लोहा।

कार्ष्णिः (पु०) कामदेव की उपाधि।

काल (वि०) [स्त्री०—काली] काले रंग का।— अयसं, (न०)—लोहा।—अक्षरिकः, (पु०) पढ़ा लिखा। साक्षर।—अगरुः, (पु०) चंदन वृक्ष विशेष। (न०) चंदन की लकड़ी। -अग्निः,—अनलः, (पु०) प्रलय के समय की आग।—अजिनं, (न०) काले मृग का चर्म।—अञ्जनम्, (न०) एक प्रकार का अंजन।—अण्डजः (पु०) कोकिल।—अतिपातः,—अतिरेकः, (पु०) १ विलम्ब। देरी। समय गँमाना। २ अवधि या म्याद बीत जाने के कारण होने वाली हानि।—अध्यक्षः, (पु०) १ सूर्य देवता। २ परमात्मा।—अनु-

नादिन्, (पु०) १ मधुमक्षिका। २ गौरैया पक्षी। ३ चातक पक्षी।—अन्तकः, (पु०) समय, जो मृत्यु का अधिष्ठात्र देवता और समस्त पदार्थों का नाशक माना जाता है।—अन्तः, (न०) १ बीच का समय। २ समय की अवधि। ३ अन्य समय या अन्य अवसर।—अभ्रः, (पु०) काला, पनीला बादल।—अवधिः, (पु०) निर्दिष्ट समय।—अशुद्धिः, (स्त्री०) स्यापे या शोक मनाने की अवधि जन्म अथवा मरण अशौच या सूतक।—आयसं (न०) लोहा।—उप्त, (वि०) ठीक मौसम में बोया हुआ।—कञ्जम्, (न०) नील-कमल।—कण्टकटः, (पु०) ७ शिवजी का नाम।—कण्ठः, (पु०) १ मोर। मयूर। २ गौरैया पक्षी। ३ शिवजी की उपाधि। करणम्, (न०) समय नियत करना।—कर्णिका,—कर्णी, (स्त्री०) बदक़िस्मती। विपत्ति। दुर्भाग्य।—कर्मन्, (न०) मृत्यु। मौत।—कीलः, (पु०) कोलाहल।—कुण्ठः, (पु०) यमराज। धर्मराज।—कूटः, (पु०)—कूटम्, (न०) हलाहल विष। वह विष जो समुद्र मन्थन के समय निकला था जिसे शिवजी ने अपने कण्ठ में रख लिया था।—कृत्, (पु०) १ सूर्य। २ मयूर। मोर। ३ परमात्मा।—क्रमः, (पु०) समय का बीत जाना।—क्रिया, (स्त्री०) १ समय का नियत करना। २ मृत्यु।—क्षेपः, (पु०) विलम्ब। देरी। समय का नाश। २ समय बिताना।—खण्डम् (न०) यकृत। लीवर।—गङ्गा, (स्त्री०) यमुनानदी।—ग्रन्थिः, (पु०) वर्ष।—चक्रं, (न०) १ समय का पहिया। २ युग। ३ (आलं०) भाग्यचक्र। जीवन के उतार चढ़ाव।—चिन्हं, (न०) मृत्यु निकट आने के लक्षण।—चोदित, (वि०) वह जिसके सिर पर काल या मृत्युदेव खेल रहे हों।—ज्ञ, (वि०) उचित समय या उचित अवसर जानने वाला।—ज्ञः, (पु०) १ ज्योतिषी। २ मुर्गा।—त्रयम्, (न०) भूत, वर्तमान, भविष्यद्।—दण्डः, (पु०) मृत्यु। मौत।—धर्मः,—धर्मन्, (पु०) १ ऐसे आचरण जो किसी भी समय के लिये उपयुक्त हों। २ मृत्युकाल। मृत्यु।—धारणा, (स्त्री०) काल की वृद्धि।—निरूपणम्, (न०) समय जानने की विद्या। कालनिरूपण शास्त्र।—नेमिः, (स्त्री०) १ कालरूपी पहिये के आरे। २ रावण के चाचा का नाम, जिसे रावण ने हनुमान को मार डालने का काम सौंपा था, किन्तु पीछे वह स्वयं हनुमानजी द्वारा मार डाला गया था। ३ हिरण्यकशिपु का पुत्र। ४ एक अन्य राक्षस, जिसके १०० पुत्र थे और जिसे विष्णु ने मारा था।—पाशः, (पु०) यम का पाश या फाँसी।—पाशिकः, (पु०) जल्लाद। वह आदमी जो मृत्युदण्ड प्राप्त लोगों को फाँसी लगाता हो।—पृष्ठं, (न०) १ हिरनों की जाति विशेष। २ कङ्कपक्षी।—पृष्ठकम्, (न०) १ कर्ण के धनुष का नाम। २ धनुष।—प्रभातं, (न०) शरद ऋतु।—भक्षः, (पु०) शिवजी।—मुखः, (पु०) लंगूरों की एक जाति।—मेषी, (स्त्री०) मंजिष्ठा नाम के पौधा।—यवनः, (पु०) यवन जातीय राजा, जिसने श्री कृष्ण पर मथुरा में, जरासन्ध के कहने से चढ़ाई की थी और जो श्रीकृष्ण की युक्ति से राजा मुचुकुन्द द्वारा भस्म किया गया था।—योगः, (पु०) भाग्य। किस्मत।—योगिन्, (पु०) शिवजी की उपाधि।—रात्रिः,—रात्री (स्त्री०) १ अंधेरीरात। प्रलयकाल की रात। कल्पान्त-रात। कार्तिकी अमा की रात।—लोहं, (न०) ईसपातलोहा।—विप्रकर्षः, (पु०) समय की वृद्धि।—वृद्धिः, (स्त्री०) ब्याज या सूद जो नियत रूप से किसी निर्दिष्ट समय पर अदा किया जाय।—वेला, (स्त्री०) शनिग्रह का समय। दिन में आधे पहर यह समय नित्य आता है। इस समय में शुभ कार्य करना वर्जित है।—सदृश, (वि०) १ समय से . अवसर साधकर।—सर्पः, (पु०) काला और महाविषैला साँप।—सारः (पु०) काले रंग का मृग।—सूत्रं,—सूत्रकं, (न०) १ समय या मृत्यु का डोरा। २ नरक विशेष।—स्कन्धः, (पु०) तमालवृक्ष—स्वरूप, (वि०) मृत्यु की तरह

भयङ्कर। —हरः, (पु०) शिवजी का नाम। —हरणं, (न०) समय का नाश। विलम्ब। —हानिः, (स्त्री०) विलम्ब। कालातिक्रमण।

कालं (न०) १ लोहा। २ सुगन्ध द्रव्य विशेष।

कालः (पु०) १ काला रंग। २ समय। ३ उपयुक्त समय या अवसर। ४ समय के विभाग जैसे घंटा, मिनिट आदि। ५ मौसम। वैशेषिक दर्शन के अनुसार नौ द्रव्यों में से काल एक द्रव्य माना गया है। ७ परमात्मा का वह रूप जो संहारकारी है। ८ यमराज। ९ प्रारब्ध। भाग्य। क़िस्मत। १० नेत्र का काला भाग। गोलक। ११ कोकिल। १२ शनिग्रह। १३ शिव जी। १४ समय का माप। १५ कलवार। कलार। १६ विभाग। भाग।

कालकं, (न०) यकृत। कलेजा। जिगर।

कालकः (पु०) १ तिल। मस्सा। लहसन। २ पनिया साँप। ३ आँख का गोल और काला भाग।

कालंजरः } कालञ्जरः } (पु०) १ पर्वत तथा उस पर्वत के समीप का भूखण्ड। २ साधु समारोह। ३ शिव जी की उपाधि।

कालेशयं (न०) माठा। छाछ।

काला (स्त्री०) दुर्गादेवी की उपाधि।

कालापः (पु०) १ सिर के केश। २ साँप का फन। ३ कलाप व्याकरण पढ़ने वाला। ४ इस व्याकरण का जानने वाला। ५ राक्षस। दैत्य। दानव।

कालापकम् (न०) १ कलाप-व्याकरणज्ञ-विद्वानों का समुदाय। २ कलाप के सिद्धांत या उसकी शिक्षा।

कालिक (वि०) [स्त्री०—कालिकी] १ समय सम्बन्धी। २ समय पर निर्भर। ३ समयानुसार। समय से।

कालिकः (पु०) १ सारस। २ बगला।

कालिकम् (न०) कृष्णचन्दन।

कालिका (स्त्री०) १ कालारंग। कालौंच। २ स्याही। काली स्याही। ३ किसी वस्तु का मूल्य जो किश्तबन्दी कर के चुकाया जाय। ४ छः माही या तिमाही सूद जो निर्दिष्ट समय पर अदा किया जाय। ५ बादलों का समूह। ६ बट्टा। वह धातु जो सोने में मिलाई जाती है। ७ कलेजा। यकृत। ८ कौआ की मादा। ९ बिच्छू। १० मदिरा। शराब। ११ दुर्गा देवी का नाम।

कालिंग } कालिङ्ग } (वि०) [स्त्री०—कालिंगी] कलिंग देश में उत्पन्न या उस देश का।

कालिंगः } कालिङ्गः } (पु०) १ कलिङ्ग देश का राजा। २ कलिङ्ग देश का सर्प। ३ हाथी। ४ राज-कर्कटी। एक प्रकार की ककड़ी।

कालिंगाः } कालिङ्गाः } (पु०) (बहुवचन) एक देश का नाम।

कालिंगम् } कालिङ्गम् } (न०) तरबूज़। हिंगवाना। कलींदा।

कालिंद } कालिन्द } (वि०) [स्त्री०—कालिंदी] कलिन्द पर्वत से निकला या आया हुआ। यमुनानदी। —कर्षणः, —भेदनः, (पु०) बलराम जी की उपाधि। —सूः, (स्त्री०) सूर्यपत्नी संज्ञा। —सोदरः, (पु०) यमराज।

कालिमन् (पु०) कालौंच। कालापन।

कालियः (पु०) एक बड़ा भारी सर्प जो यमुना में रहता था और जिसे श्रीकृष्ण ने दमन कर वृन्दावन से भगाया था। —दमनः, —मर्दनः, (पु०) श्रीकृष्ण की उपाधि।

काली (स्त्री०) १ कालिमा। कालौंच। २ स्याही। मसी। ३ पार्वती की उपाधि। ४ कृष्ण मेघमाला। ५ काले रंग की स्त्री। ६ व्यास माता सत्यवती का नाम। ७ रात्रि। —तनयः, (पु०) भैंसा।

कालीकः (पु०) बगुला।

कालीन (वि०) १ किसी विशेष समय का। २ सामयिक।

कालियं } कालीयकं } (न०) एक प्रकार का चन्दन।

कालुष्यम् (न०) १ गन्दगी। मैलाकुचैलापन। गँदलापना। २ मलीनता। अस्वच्छता। ३ अनैक्य।

कालेय (वि०) कलियुग का। [३ केसर। जाफ़रान।

कालेयम् (न०) १ यकृत। कलेजा। २ कृष्णचन्दन।

कालेयरु (पु०) १ कुत्ता। २ हल्दी। ३ चन्दनविशेष।

काल्पनिक (वि०) [स्त्री०—काल्पनिकी] १ बनावटी। फ़र्ज़ी। २ जाली।

काल्य (वि०) १ समय से। सामयिक। अवसरानुसार। २ प्रिय। अनुकूल। शुभ। कल्याणकारी।

काल्यम् (न०) तड़का। सवेरा। भोर। प्रभात।

काल्याणकम् (न०) कल्याण करनेवाला। शुभ।

कावचिक (वि०) [स्त्री०—कावचिकी] कवच या वर्म सम्बन्धी।

कावचिकम् (न०) कवचधारी पुरुषों का समूह।

कावृकः (पु०) १ मुर्गा। २ चकवा चकवी।

कावेरम् (न०) केसर। ज़ाफ़ान।

कावेरी (स्त्री०) १ दक्षिण भारत की एक नदी का नाम। २ रंडी। वेश्या।

काव्य (वि०) १ वह पुरुष जिसमें कवि अथवा पण्डित के लक्षण विद्यमान हों। २ भविष्य। ईश्वरी प्रेरणा से लिखा हुआ। पद्यमय।—अर्थः, (पु०) पद्यमय विचार। पद्य सम्बन्धी भाव।—चौरः, (पु०) दूसरे की कविता चुरानेवाला।—रसिक, (वि०) वह पुरुष जो कविता को पसंद करता हो और उसकी विशेषताओं और सौन्दर्य की सराहना कर सकें।—लिङ्गम्, (न०) अलङ्कार विशेष।

काव्यं (न०) १ पद्यमयी रचना। २ शायरी। कविता। ३ प्रसन्नता। नीरोगता। ४ बुद्धि। ५ ईश्वरी प्रेरणा। स्फूर्ति।

काव्यः (पु०) १ शुक्राचार्य का नाम। यह असुरों के गुरु थे।

काव्या (स्त्रि०) १ मातमा। २ सखी सहेली।

काश् (धा० आत्म०) [काशते, काश्यते; काशित] १ चमकना। चमकदार देख पड़ना। सुन्दर दिखलाई पड़ना। प्रकट होना।

काशः (पु०) } एक प्रकार की घास जो छत छाने
काशम् (न०) } और चटाई बनाने के काम में आती है। (न०) १ उस घास का फूल। तृणपुष्प। २ फेफड़े का रोग।

काशि (पु०) [बहुवचन] एक प्रदेश का नाम।

काशिः } (स्त्री०) सप्त मोक्षपुरियों में से एक। आधु-
काशी } निक बनारस नगर। —पः, (पु०) शिव जी की उपाधि।—राज०, (पु०) काशी के एक राजा का नाम जो अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का पिता था।

काशिन् (वि०) [स्त्री०—काशिनी] १ चमकीला। २ सदृश। समान [यथा जितकाशिन् अर्थात् जो विजयी के समान आचरण करे।]

काशी (स्त्री०) देखो 'काशिः'।—नाथः, (पु०) शिव जी।—यात्रा, (स्त्री०) काशी की तीर्थयात्रा।

काश्मरी (स्त्री०) एक पौधा जिसे गाँभारी कहते हैं।

काश्मीर (वि०) [स्त्री०—काश्मीरी] काश्मीर देश में उत्पन्न। काश्मीर देश का। काश्मीर से आया हुआ।—जं, (न०)—जन्मन्, (न०) केसर। ज़ाफ़ान।

काश्मीरं (न०) केसर। ज़ाफ़ान।

काश्मीराः (बहुवचन) देश विशेष अथवा उस देश के रहनेवाले।

काश्यं (न०) मदिरा। शराब। मद्य।—पम् (न०) माँस। गोश्त।

काश्यपः (पु०) १ एक प्रसिद्ध ऋषि। २ कणाद का नाम।—नन्दनः (पु०) १ गरुड की उपाधि। २ अरुण का नाम।

काश्यपिः (पु०) गरुड और अरुण की उपाधि।

काश्यपी (स्त्री०) पृथ्वी।

काषः (पु०) रगड़न। खरोंच।

काषाय (वि०) [स्त्री०—काषायी] जोगिया या गेरुआ रङ्ग का।

काषायम् (न०) जोगिया या गेरुआ रङ्ग का वस्त्र।

काष्ठं (न०) १ लकडी का टुकड़ा। २ शहतीर। लट्ठा। ३ लकड़ी। छड़ी। ४ नापने का एक औज़ार।—आगारः, (पु०)—आगारम्, (न०) लकडी का बना मकान या घेरा।—अम्बुवाहिनी, (स्त्री०) बाल्टी। डोलची।—कदली, (स्त्री०) जंगली केला।—कीटः, (पु०) लकड़ी का घुन।—कुट्ट,—कूटः, (पु०) कठफुड़वा। हुदहुद। खुटबढ़ई। पक्षी विशेष।—कुद्दालः, (पु०) कठौता।—तक्ष्, (पु०)—तक्षकः, (पु०) बढ़ई।—तन्तुः, (पु०) शहतीरों में रहने वाला एक छोटा कीडा।—दारुः, (पु०) देवदारु का पेड़। पलाश का पेड़।—भारिकः, (पु०) लकडहारा। लकडी ढोने वाला।—मठी, (वि०) चिता।—मल्लः, (पु०) ठठरी जिस पर रख कर मुर्दा ले जाया जाता है।—लेखकः,

(पु०) लकडी में रहने वाला एक छोटा कीडा ।
—वाट, (पु०)—वाटं, (न०) लकडी की दीवाल।

काष्ठकम् (न०) ऊद । अगर ।

काष्ठा (स्त्री०) १ दिशा । २ सीमा । ३ चरम सीमा । ४ घुडदौड का मैदान । ५ चिन्ह । घुडदौड का पाला । ६ आकाशस्थित पवन वा वायु का मार्ग। समय का परिमाण । कला का तीसवाँ भाग ।

काष्ठिकः (पु०) लकडी ढोने वाला ।

काष्ठिका (स्त्री०) लकडी का एक छोटा टुकडा ।

काष्ठीला (स्त्री०) कदली वृक्ष । केले का पेड ।

कास् (धा० आत्म०) [कासते० कासित] १ चमकना । २ खखारना । खाँसना । कहरना ।

कासः / कासा } १ खाँसी । जुकाम । २ छींक ।—कुण्ठ, (वि०) खाँसी से पीडित ।—घ्न, —हृत, (वि०) खाँसी दूर करने वाला । कफ निकालने वाला ।

कासरः (पु०) भैंसा । [स्त्री०—कासरी,] भैंस ।

कासारः (पु०) / कासारम् (न०) } तालाब । पुष्करिणी । तलैया । झील । सरोवर ।

कासू / काशू } (स्त्री०) १ एक प्रकार का भाला । २ अस्पष्ट भाषण । ३ दीप्ति । दमक । आब । ४ रोग । ५ भक्ति ।

कासृति (स्त्री०) पगडंडी । गुप्तमार्ग ।

काहल (वि०) १ सूखा । मुर्झाया हुआ । २ उत्पाती । ३ अत्यधिक । प्रशस्त । बडा ।

काहलः (पु०) १ बिल्ली । २ मुर्गा । ३ काक । ४ रव । आवाज़ ।

काहलम् (न०) अस्पष्ट भाषण ।

काहला (स्त्री०) बडा ढोल ।

काहली (स्त्री०) युवती स्त्री ।

किंचन (वि०) ग़रीब । तुच्छ । बापुरा ।

किंशारुः (पु०) १ धान की बाल । २ बगुला । कङ्कपक्षी । ३ तीर ।

किंशुकं (पु०) पलाश वृक्ष । ढाक का पेड ।

किंशुकं (न०) पलाश पुष्प ।

किंशुलकः (पु०) पलाश वृक्ष ।

किंकिः (पु०) १ नारियल का पेड़ । २. नीलकण्ठ पक्षी । ३ चातक पक्षी ।

किंकणी / किङ्कणी / किंकिणिका / किङ्किणिका } (स्त्री०) घुंघरू । रोना । छोटी छोटी घंटियाँ ।

किंकिरः / किङ्किरः } (पु०) १ घोड़ा । २ कोकिल । ३ भौंरा । ४ कामदेव । ५ लाल रंग ।

किंकिरा / किङ्किरा } (स्त्री०) खून । रक्त । लोहू ।

किंकिरातः / किङ्किरातः } (पु०) १ तोता । २ कोकिल । ३ कामदेव । ४ अशोक वृक्ष ।

किंजलः / किञ्जलः / किंजल्कः / किञ्जल्कः } (पु०) कमल पुष्प का रेशा या कमल का फूल । किसी वृक्ष का फूल या उसका रेशा ।

किटिः (पु०) शूकर । सुअर ।

किटिभः (पु०) खटमल । जुआँ । चील्हर ।

किट्टं / किट्टकं } (न०) कीट । कॉइट । मैल । तलछट । छानन ।

किट्टालः (पु०) १ ताँबे का पात्र । २ लोहे का मोर्चा ।

किणः (पु०) १ ठेठ । घट्टा । चट्टा । गूत । फोड़े या घाव का निशान । २ तिल । मस्सा । ३ लकड़ी का घुन ।

किण्वं (न०) पाप ।

किण्वं (पु०) / किण्वः (न०) } मदिरा का खमीर उठाने या उसमें उफान लाने वाली द्रव्य विशेष ।

कित् (धा० परस्मै०) (केतति) १ इच्छा करना । २ जीवित रहना । ३ इलाज करना । चंगा करना । आराम करना ।

कितवः (पु०) [स्त्री०—कितवी,] १ बदमाश । गुंडा । लबार । कपटी । २ धतूरे का पौधा । ३ सुगन्ध द्रव्य विशेष ।

किंधिन् / किन्धिन् } (पु०) घोड़ा । अश्व ।

किन्नरः (पु०) देवताओं के गायक । इनका मुख घोड़े जैसा और शरीर मनुष्य जैसा होता है ।

किन्नरेश (पु०) कुबेर । धनाधिप ।

किम् (अव्यया०) समासान्त शब्दों में यह प्रथम कु की जगह प्रयुक्त होता है और इसके अर्थ यह होते हैं—ख़राबी, ह्रास, रोष, कलङ्क या धिक्कार। यथा—किंसखा, अर्थात् दुष्ट या बुरा मित्र।

किन्नर, अर्थात् बुरा मनुष्य या अङ्ग भङ्ग मनुष्य आदि। आगे के समासान्त शब्द देखो। —दासः, (पु०) बुरा नौकर।—नरः, (पु०) १ दुष्ट या विकृत पुरुष। २ देवगायक जाति विशेष।—नरी, (स्त्री०) १ किन्नर की स्त्री। २ वीणा विशेष।—पुरुषः, (पु०) १ नीच या तिरस्करणीय पुरुष। २ किन्नर।—पुरुषेश्वरः, (पु०) कुबेर।—प्रभुः, (पु०) बुरा स्वामी या बुरा राजा।—राजन् (वि०) बुरा राजा वाला। —सखि (पु०) (एकवचन कर्त्ता कारक में किंसखा रूप होता है) दुष्ट पुत्र। यथा।

"स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं।"

—किरातार्जुनीय।

किम् (सर्वनाम० अव्य०) [कर्त्ता एकवचन (पु०) —कः, (स्त्री०) का, (न०) किम्] १ कौन। क्या। कौनसा।— अपि, (अव्य०) १ कुछ कुछ। २ बहुत अधिक। अकथनीय। अवर्णनीय। ३ बहुत अधिक। कहीं ज्यादा।—अर्थ, (वि०) किस प्रयोजन से। किस उद्देश्य से।—अर्थं, (अव्यय०) क्यों। क्यों कर।—आख्य, (वि०) किस नाम का। किस नाम वाला।— इति, (अव्यया०) काहे को। क्यों कर। किस काम के लिये। —उ,—उत, (अव्यया०) १ या। अथवा। वा। (सन्देहात्मक) २ क्यों। ३ कितना और अधिक। कितना और कम। —करः, (पु०) नौकर। दास। गुलाम।

"अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः"

—रघुवंश

—करा, (स्त्री०) दासी। नौकरानी। चाकरानी। —करी, (स्त्री०) नौकर की पत्नी।—कर्तव्यता, —कार्यता, (स्त्री०) किंकर्तव्यमूढ़ता। अर्थात् ऐसी परिस्थिति मे पहुँचना जब अपने मन में स्वयं यह प्रश्न उठे कि अब मुझे क्या करना चाहिये। परेशानी। —कारण, (वि०) क्यों कर। किस कारण से। —किल, (अव्यय०) एक अव्यय जो अप्रसन्नता या असन्तोष प्रकट कर्ता है। — क्षण, (वि०) अकर्मण्य, जो समय का मूल्य नहीं समझता —गोत्र, (वि०) किस वंश का। किस खान्दान का। —च, (अव्यय०) अतिरिक्त उपरान्त। —चन, (अव्यय०) कुछ अशं में। थोड़ा सा। —चित् (अव्यय०) कुछ अशं में। कुछ कुछ। थोडा सा। —चितज्ञ, (वि०) थोड़ा जानने वाला। बकवादी —चित्कर, (वि०) कुछ करने वाला। उपयोगी। —चित्कालः, (पु०) कभी कभी। कुछ समय।- चित्प्राण, (वि०) थोडा जीवन वाला। —चिन्मात्र (वि०) बहुत थोड़ा।—छंदस् (वि०) किस वेद को जानने वाला —तर्हि, (अव्यय०) फिर क्यों कर। किन्तु। तथापि। कितना ही। फिर भी इसके उपरान्त।—तु, (अव्यया०) किन्तु। ताहम। सो भी। तथापि।—दैवत, (वि०) किस देवता का। —नामधेय,—नामन् (वि०) किस नाम का। —निमित्त, (वि०) किस प्रयोजन का। —निमित्तम्, (अव्यया०) क्यों। क्यों कर। जिस लिये। इस लिये। जिस कारण से। —नु, (अव्यया०) १ आया। या। अथवा। २ अत्यधिक। अत्यल्प। ३ क्या। —नु,—खलु, (अव्यया०) १ ऐसा क्यों कर। क्यों कर सम्भव। क्यों। निश्चय ही। २ अस्तु। ऐसा ही सही।— पच,—पचान, (वि०) कंजूस। सूम। लालची। मक्खीचूस। —पराक्रम, (वि०) किस शक्ति या विक्रम वाला। —पुनर्, (अव्यया०) कितना और अधिक या कितना और कम। —प्रकारं, किस ढंग से। किस तरह। —प्रभाव, (वि०) किस चलाव का। किस रुतवे का। —भूत, (वि०) किस तरह का या किस स्वभाव का। —रूप, (वि०) किस शक्ल का। —वदन्ति, —वदन्ती, (स्त्री०) अफवाह। —वराटकः (पु०) अपव्ययीपुरुष। फ़जूल खर्च करने वाला आदमी। —वा, (अव्यया०) प्रश्नवाची अव्यय। —विद्, (वि०) क्या जानने वाला। —व्यापार, (वि०) किस पेशे का। —शील, (वि०) कैसे स्वभाव का। —स्वित्, (अव्यया०) या। आया।

कियत् (वि०) [कर्त्ता एकवचन पु०—कियान्, स्त्री० —कियती; न० कियत्] १ कितना बड़ा। कितनी दूर। कितना। कितने। कितने प्रकार का। किस

गुणों वाला। २ निकम्मा ३ कुछ। थोड़ा सा। अल्पसंख्यक। थोड़ा। —एतिका, (स्त्री०) उद्योग। धीर गम्भीर उद्योग। —कालम्, (अव्यया०) १ कितने समय का। २ कुछ थोड़े समय का। —चिरं, (अव्यया०) कब तक। कितने समय तक।—दूर, (अव्यया०) १ कितनी दूर। कितने फासिले पर। कितना लंबा। २ कुछ समय के लिये। कुछ दूर पर।

किरः (पु०) शूकर। सुअर।

किरकः (पु०) १ लेखक। २ सुअर का बच्चा। घेंटा।

किरणः (पु०) प्रकाश की किरन। (सूर्य, चन्द्र अथवा किसी प्रकाशयुक्त पदार्थ की) किरन। २ रजकण।—मालिन्, (पु०) सूर्य।

किरातः (पु०) १ एक पतित पहाड़ी जंगली जाति, जो वनजन्तुओं को मार कर उनके माँस पर अपना निर्वाह करती है।

वैयाकरणकिरातादपशब्दमृगाः क्व यान्तु सन्त्रस्ताः।
यदि नटगणकचिकित्सकवैतालिकवदनकन्दरा न स्युः॥

२ जंगली। वर्बर। ३ बौना। वामन। ४ साईस। घुड़सवार। ५ किरात का रूप धारण करने वाले शिव जी का नाम।—ताः, (बहुवचन) एक प्रदेश का नाम।—आशिन्, (पु०) गरुड़ जी की उपाधि।

किराती (स्त्री०) १ किरात जाति की एक स्त्री। २ चौरी डुलाने वाली स्त्री। ३ कुटनी। ४ किराती का रूप धारण करने वाली पार्वती। ५ आकाश-गंगा।

किरिः (पु०) १ शूकर। सुअर। २ बादल।

किरीटः (पु०) } १ मुकुट। ताज। कलँगी। २
किरीटम् (न०) } व्यापारी।—धारिन्, (पु०) राजा। —मालिन्, (पु०) अर्जुन की उपाधि।

किरीटिन् (वि०) मुकुट धारण करने वाला। (पु०) अर्जुन का नाम।

किर्मीर (वि०) धब्बेदार। चित्तेदार। रंग विरंगा। —जित्,—निषूदनः,—सूदनः, (पु०) भीम की उपाधि।

किर्मीर (पु०) एक राक्षस का नाम, जिसे भीम ने मारा था।

किल (अव्यय०) १ निश्चय। अवश्य। २ सत्य सत्य। यथावत। ज्यों का त्यों। ३ अलीक कार्य। आशा। सम्भावना। ४ असन्तोष। अरुचि। ६ तिरस्कार। ७ हेतु। कारण।

किलः (पु०) खेल। तुच्छ।—किञ्चितम्, (न०) कामप्रणोदित उद्विग्नता। रुदन। हास्य। प्रेमी के सामने मचलना, रूठना, क्रोध करना आदि।

किलकिलः (पु०) } एक प्रकार का हर्षसूचक
किलकिला (स्त्री०) } शब्द विशेष। वानरों की किलकारी।

किलिंजं } (न०) १ चटाई। २ हरी लकड़ी का
किलिञ्जम् } पतला तख़्ता। तख़्ता।

किलित् (पु०) घोड़ा।

किल्विषं (न०) १ पाप। २ अपराध। दोष। जुर्म। ३ रोग। बीमारी।

किशलयः (पु०) } अङ्कुर। अँखुआ। पल्लव।
किशलयम् (न०) } पत्ता।

किशोरः (पु०) १ बछेड़ा। बच्चा। किसी जानवर का बच्चा। २ बालक। बच्चा। छोकड़ा। १५ वर्ष की उम्र से कम का बालक। नाबालिग। अवयस्क अप्राप्त व्यवहार अर्थात् मैनर। ३ सूर्य।

किशोरी (स्त्री०) युवती स्त्री।

किष्किन्ध } (पु०) १ एक प्रदेश का नाम। २
किष्किन्ध्यः } उस प्रदेशस्थित एक पर्वत का नाम।

किष्किन्धा } (स्त्री०) किष्किन्ध्या प्रदेश की राज-
किष्किन्ध्या } धानी का नाम।

किष्कु (वि०) दुष्ट। तिरस्करणीय। बुरा।

किष्कुः (पु०) (स्त्री०) १ बाँह। २ बारह अँगुल का माप।

किसलः (पु०) किसलम् (न०) } नवपल्लव।
किसलयः (पु०) किसलयम् (न०) } कोमल-पत्र। अङ्कुर। अँखुआ।

कीकट (वि०) [स्त्री०—कीकटी] १ गरीब। बपुरा। २ कंजूस।

कीकटः (पु०) एक देश का नाम। आधुनिक विहार प्रान्त। "कीकटेषु गया पुण्या।"

कीकस (वि०) कड़ा। दृढ़। मज़बूत।

कीकसम् (न०) हड्डी। अस्थि।

कीचकः (पु०) १ खोखला बाँस। पोला बाँस। २ बाँस जो हवा चलने पर खड़खड़ाता हो अथवा हवा के चलने से उत्पन्न बाँस की सनसनाहट। ३ एक जाति का नाम। ४ विराट राजा का साला और उसकी सेना का प्रधान सेनापति। इसे भीम ने मारा था। क्योंकि इसने द्रौपदी के साथ अनुचित कर्म करना चाहा था।—जित्, (पु०) भीम की उपाधि।

कीटः (पु०) कीड़ा। तिरस्कार या हिकारत में इस शब्द का प्रयोग समासान्त शब्दों में किया जाता है जैसे द्विपकीटः, अर्थात् दुष्टहाथी; पक्षिकीटः, अर्थात दुष्टपक्षी आदि।—घ्नः, (पु०) गन्धक।—जं, (न०) रेशम।—जा, (स्त्री०) लाख। चपड़ा।—मणिः, (पु०) जुगनू। खद्योत।

कीटकः (पु०) १ कीड़ा। २ मागध जाति का वंदीजन।

कीदृश
कीदृशे
कीदृशी (स्त्री०)
कीदृक्ष
कीदृक्षी(स्त्री०)
} किस प्रकार का। कैसा। किस स्वभाव का।

कीनाश (वि०) १ भूमि जोतने वाला। २ गरीब। धनहीन। ३ कंजूस। स्वल्प। थोड़ा। [विशेष।

कीनाशः (पु०) १ यमराज की उपाधि। २ वानर

कीरः (पु०) तोता। सुग्गा।—इष्टः, (पु०) आम का वृक्ष।—वर्णकम्, (न०) सुगन्ध द्रव्यों का सरताज।

कीरम् (न०) गोश्त। माँस। [रहने वाले।

कीराः (बहुवचन) कश्मीर देश और उस देश के

कीर्ण (वि०) १ गुथा हुआ। फैला हुआ। पड़ा हुआ। बिखरा हुआ। २ ढका हुआ। भरा हुआ। ३ रखा हुआ। ४ घायल। चोटिल।

कीर्णिः (स्त्री०) १ बखेरना। २ ढकना। छिपाना। ३ घायल करना। [देवालय।

कीर्तनम् (न०) १ कहना। वर्णन करना। २ मन्दिर।

कीर्तना (स्त्री०) १ वर्णन। कथन। पाठ। २ कीर्ति। महिमा।

कीर्तिः (स्त्री०) १ प्रसिद्धि। प्रख्याति। महिमा। यश। २ प्रशंसा। सराहना। अनुग्रह। ३ कीचड़। कूड़ा। ४ बढ़ाव। फैलाव। पसार। ५ प्रकाश। कान्ति। आभा। ६ आवाज़।—भाज्, (वि०) प्रसिद्ध। प्रख्यात। मशहूर। (पु०) द्रोणाचार्य की उपाधि।—शेषः, (पु०) जिसकी ख्याति के समय कुछ भी पीछे न रह जाय। मृत्यु। मौत।

कील् (धा० परस्मै०) १ बाँधना। २ खोंसना। कीलना। अर्थात् बंद कर देना। कील ठोंकना। सहारा देना। टेक लगाना। दाव लगाना।

कील (पु०) १ कील। पिन। २ बर्छी। ३ खंभा। खूटा। ४ हथियार। ५ कोहनी। ६ कोहनी का प्रहार। ७ लौ। ८ सूक्ष्म अणु। ९ शिवजी का नाम।

कीलकः (पु०) १ पच्चर। खूंटी। मेख। कील। २ खम्भा। स्तूप।

कीलाल (पु०) १ अमृत के समान स्वर्गीय पेय पदार्थ। २ शहद। ३ हैवान। जानवर।—धिः, (पु०) समुद्र।—पः, (पु०) राक्षस। दानव। दैत्य।

कीलालकम् (न०) रक्त। खून।

कीलिका (स्त्री०) धुरी की कील।

कीलित (वि०) १ बिधा हुआ। २ गड़ा हुआ। कील से जड़ा हुआ।

कीश (वि०) नंगा।

कीशः (पु०) १ वानर। लंगूर। २ सूर्य। ३ पक्षी।

कु (अव्यया०) ह्रास, खराबी, कमी, घिसावट, पाप, धिक्कार, स्वल्पता, आवश्यकता और त्रुटि व्यञ्जक अव्यय विशेष। इसके विविध परियायवाची शब्द हैं-१"कद्", २ "कव", ३ "का" और ४ "किं"। [उदाहरण-१ कदश्व। २ कवोष्ण। ३ कोष्ण। ४ किंप्रभुः।]—पुत्रः (पु०) मङ्गल ग्रह।—कर्मन्, (न०) ओछा काम। बुरा काम।—ग्रहः, (पु०) अशुभग्रह।—ग्रामः, (पु०) पुरवा। छोटा ग्राम।—चेल, (पु०) चिथड़े पहिने हुए।—चर्या, (स्त्री०) दुष्टता। दुष्टाचरण।—जन्मन्, (वि०) अकुलीन। नीच।—तनु, (वि०) कुरूप। विकलाङ्ग।—तनुः, (पु०) कुवेर की उपाधि।—तंत्री, (स्त्री०) बुरी वीणा।—तीर्थ, (न०) बुरा

शिक्षक।—दिनं, (न०) अशुभ दिवस।—दृष्टिः, (स्त्री०) १ बुरी निगाह। २ कमज़ोर निगाह। ३ वेद विरुद्ध सम्मति।—देशः, (पु०) बुरा देश या स्थान। ऐसा देश जहाँ जीवनोपयोगी पदार्थ अप्राप्त हों या जहाँ का राजा अच्छा न हो और अत्याचारी हो।—देह, (वि०) कुरूप। विकलाङ्ग।—देहः, (पु०) कुबेर की उपाधि।—धी, (वि०) १ मूर्ख। मूढ़। बेवकूफ। २ दुष्ट।—नटः, (पु०) बुरा अभिनय पात्र।—नदिका, (स्त्री०) छोटी नदी या नाला।—नाथः, (पु०) दुष्ट स्वामी या मालिक। नामन्, (पु०) कंजूस।—पथः, (पु०) कुमार्ग।—पुत्रः, (पु०) दुष्ट पुत्र या बेटा।—पुरुषः, (पु०) नीच आदमी।—पूय, (वि०) नीच। ओछा। तिरस्करणीय।—प्रिय, (वि०) अप्रिय। तिरस्करणीय। नीच। ओछा।—प्लवः, (पु०) बुरी नाव।—ब्रह्म, —ब्रह्मन्, (पु०) पतित ब्राह्मण।—मंत्रः, (पु०) बुरी सलाह।—योगः, (पु०) ग्रहों का बुरा या अशुभ संयोग।—रसः, (पु०) मदिरा विशेष।—रूप, (वि०) बदशक्ल। भद्दा।—रूप्यं, (न०) टीन। जस्ता।—वंगः, (पु०) सीसा।—वचस्, —वाक्यम्, (न०) गाली-गलोज।—वर्षः, (पु०) अचानक या प्रचंड वर्षा।—विवाहः, (पु०) विवाह की बुरी पद्धति।—वृत्तिः, (स्त्री०) बुरा आचरण बदचालचलन।—वैद्यः, (पु०) खरा वैद्य। नीम हकीम।—शील, (वि०) उजड। असभ्य। दुष्ट। बदतमीज़। अशिष्ट। दुष्टस्वभाव।—स्थलम्, (न०) बुरा स्थान।—सरित्, (स्त्री०) छोटी नदी या नाला।—सृतिः, (स्त्री०) १ दुष्टाचरण। दुष्टता। इंद्रजाल। २ बदमाशी।—स्त्री, (स्त्री०) दुष्टा स्त्री।

कुः (स्त्री०) १ पृथिवी। २ त्रिभुज का आधार।

कुकभम् (न०) एक प्रकार की शराब।

कु (धा० आत्म०) [कवते] शब्द करना। बजाना। [कुवते] १ कराहना। कहरना। २ चिल्लाना। (परस्मै०) [कौति] भिनभिनाना।

कुकीलः (पु०) पहाड़। पर्वत।

कुकुदः } कुकूदः } विवाह में उपयुक्त पात्र को उचित शृङ्गार सहित एवं शास्त्रीय विधानानुसार कन्या देने वाला।

कुकुंदरः कुकुन्दरः } कुकुंदुर कुकुन्दुरः } (पु०) जघन कूप।

कुकुराः (बहुवचन) दशार्ह देश का नामान्तर।

कुकूलः (पु०) } कुकूलम् (न०) } १ भूसी। चोकर। २ चोकर की आग। (न०) १ सूराख। छेद। गढ़ा। गर्त। २ कवच। वर्म।

कुक्कुटः (पु०) १ मुर्गा। २ लुआठ। अधजली लकड़ी। ३ चिनगारी। अंगारा। [स्त्री०—कुक्कुटी] मुर्गी।

कुक्कुटिः } कुक्कुटी } (स्त्री०) दम्भ। स्वार्थसिद्धी के लिये किया गया धर्मानुष्ठान।

कुक्कुभ (पु०) १ जंगली मुर्गा। २ मुर्गा ३ वारनिश। लुक। रोगन।

कुक्कुरः (पु०) [स्त्री०—कुक्कुरी] कुत्ता।—वाच्, (पु०) हिरनों की एक जाति।

कुक्षः (पु०) पेट।

कुक्षिः (पु०) १ पेट। २ गर्भाशय। पेट का वह भाग जिसमें गर्भ की झिल्ली रहती है। ३ किसी भी वस्तु का भीतरी भाग। ४ रन्ध्र। ५ गुफा। गुहा। ६ म्यान। ७ खाड़ी।—शूलः, (पु०) पेट का दर्द।

कुक्षिंभरि (वि०) पेटू। पल्ले दर्जे का स्वार्थी। मरभुका। भोजनभट्ट।

कुंकमम् } कुङ्कुमम् } (न०)। केसर। जाफ़रान।—आद्रिः, (पु०) एक पर्वत का नाम।

कुच् (धा० परस्मै०) (कुचति, कुचित) १ पक्षी की बोली विशेष बोलना। २ जाना। ३ चिकनाना। ४ सकोड़ना। ५ झुकाना। सिकुड़जाना। ६ रोकना। अटकाना। ७ लिखना या लिखे को मिटाना।

कुचः (पु०) छाती। चूची। चूची के ऊपर की घुंडी।—अग्रं,—मुखं, (न०) चूची के उपर की घुंडी।—फलः, (पु०) अनार का वृक्ष।

कुचर (वि०) [स्त्री०—कुचरा, कुचरी] १ रेंगने वाला। २ दुष्ट। नीच। पापी। ३ निन्दक। (पु०) स्थिर ग्रह।

कुच्छं (न०) कमल की जाति विशेष।

कुजः (पु०) १ वृक्ष। २ मङ्गलग्रह। राक्षस विशेष। —जा, (स्त्री०) सीताजी का नाम।

कुजंभनः, कुजम्भनः, कुजंभिलः, कुजम्भिलः (पु०) घर में सेंध लगाने वाला चोर।

कुज्झटिः, कुज्झटिका, कुज्झटी (स्त्री०) कुहासा। नीहार। पाला। कुहरा।

कुंच्, कुञ्च् देखो कुच्"।

कुंचनम्, कुञ्चनम् (न०)। झुकाना। सकोड़ना।

कुंचिः, कुञ्चिः, (पु०) आठ अंजुली या पसों का माप विशेष।

कुंचिका, कुञ्चिका (स्त्री०) १ ताली। चावी। २ बाँस का अङ्कुर।

कुंचित, कुञ्चित (वि०) सिकुड़ा हुआ। मुड़ा हुआ। झुका हुआ।

कुंजः (पु०) कुञ्जः (पु०), कुंजम् (न०) कुञ्जम् (न०) १ लता वृक्षों से परिवेष्ठित स्थान। लतागृह। लतावितान।

"चल सखि कुञ्ज सतिमिरपुञ्ज शीलय नीलनिचोल।"
—गीतगोविन्द

२ हाथी के दाँत।—कुटीरः, (पु०) लतागृह।

कुंजरः, कुञ्जरः (पु०) १ हाथी। २ श्रेष्ठार्थवाचक। [अमर कोषकार ने निम्न शब्द श्रेष्ठार्थवाचक बतलाये हैं—व्याघ्र, पुङ्गव, वर्षभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नाग।] ३ अश्वत्थ वृक्ष। ४ हस्त नक्षत्र। —अनीकं, (न०) सेना का अंग विशेष जिसमें हाथीसवारों की टोली हो।—अशनः, (पु०) पीपल का वृक्ष।—अरातिः, (पु०) १ शेर। २ शरभ।—ग्रहः, (पु०) हाथी पकड़ने वाला।

कुट् (धा० पर०) (कुटति, कुटित) १ मुड़वाना। झुकवाना। २ मोड़ना। झुकाना। ३ बेईमानी करना। धोखा देना। छलना। (कुट्यति) टुकड़े टुकड़े कर डालना। कूटना। विभाजित करना। चीरना।

कुटः (पु०), कुटम्(न०) जलपात्र। कलसा। घड़ा। (पु०) १ दुर्ग। गढ़। २ हथौड़ा। घन। ३ वृक्ष। ४ घर। ५ पर्वत।—जः, (पु०) १ एक वृक्ष का नाम। २ अगस्त जी का नाम। ३ द्रोणाचार्य का नाम।—हरिका, (स्त्री०) दासी। चाकरानी।

कुटकं (न०) हल जिसमें बाँस लगा न हो।

कुटंकः, कुटङ्कः (पु०) छत्त। छावनी।

कुटंगकः, कुटङ्गकः (पु०) मढ़ैया। झोपड़ी।

कुटपः (पु०) १ माप विशेष। तौल विशेष। २ गृहउद्यान। घर के निकट का बाग। ३ ऋषि।

कुटपम् (न०) कमल।

कुटरः (पु०) खंभा जिसमें मथानी की रस्सी लपेटी जाय।

कुटलं (न०) छत्त। छप्पर।

कुटिः (पु०) १ शरीर। २ वृक्ष। (स्त्री०) १ झोपड़ी। २ मोड़। झुकाव।—चरः, (पु०) सूस। शिशुमार।

कुटिरं (न०) कुटीर। कुटी। झोपड़ी।

कुटिल (वि०) १ टेढ़ा। झुका हुआ। मुड़ा हुआ। घूमघुमाव का। घूमा हुआ। २दुःखदायी। ३ झूठा। बनावटी। कपटी। बेईमान।—आशय, (वि०) दुष्ट नियत का। दुष्टात्मा।—पक्ष्मन्, (वि०) झुके हुए पलकों वाला।—स्वभाव, (वि०) कपटी। छली। धोखेबाज़।

कुटिलिका (स्त्री०) १ पैर दबा कर चलने वाला (जैसे शिकारी चलते हैं)। २लुहार की भट्टी। लोहसाही।

कुटी (स्त्री०) १ मोड़। २ झोपड़ी। ३ कुटनी। ४ —चकः, (पु०) चार प्रकार के संन्यासियों में से एक।

चतुर्विधा भिक्षवस्ते कुटीचकबहूदकौ।
हंसः परमहंसश्च यो यः पश्चात् स उत्तमः॥
—महाभारत।

—चरः (पु०) वह संन्यासी जो अपनी गृहस्थी का भार अपने पुत्र को सौंप स्वयं तप और धर्मानुष्ठान में लग जाता है।

कुटीरः (पु०), कुटीरम् (न०), कुटीरकः (पु०) झोपड़ी। कुटी। मढ़ैया।

कुटुनी (स्त्री०) कुटनी। जो लंपटों को छिनाल औरतें ला कर दे।

कुटुंबं. कुटुम्बं, कुटुंबकम्, कुटुम्बकम् } (न०) १ गृहस्थ। नातेदार। रिश्तेदार। २ गृहस्थी सम्बन्धी चिन्ता और कर्त्तव्य। (पु० न०) १ सन्तान। सन्तति। औलाद। २ नाम। ३ जाति। —कलहः, (पु०) कलहम्, (न०) घरेलू झगड़ा। घरू विवाद।—भरः, (पु०) गृहस्थी का भार।—व्यापृत, (वि०) वह पुरुष जो गृहस्थी का पालन पोषण करे और उनकी सम्हाल रखे।

कुटुंबिक. कुटुम्बिकः, कुटुंबिन् कुटुम्बिन् } (प्र०) १ गृहस्थ। बाल बच्चों वाला। किसी कुटुम्ब का एक व्यक्ति।

कुटुंबिनी, कुटुम्बिनी } (स्त्री०) १ गृहस्थ की स्त्री। २ गृहिणी। ३ स्त्री।

कुट्ट (धा० उभय०) [कुट्टयति, कुट्टित] १ काटना। विभाजित करना। २ पीसना। चूर्ण करना। कूटना। ३ कलङ्क लगाना। दोष लगाना। धिक्कारना। ४ वृद्धि करना।

कुट्टकः (पु०) पीसने वाला। कूटने वाला।

कुट्टनम् (न०) १ काटना। कतरना। २ पीसना। कूटना। ३ गाली देना। धिक्कारना।

कुट्टनी, कुट्टिनी } (स्त्री०) कुटनी। दल्लाला।

कुट्टमितं (न०) प्रियतम के साथ मिलने की आन्तरिक इच्छा रहते भी, न मानने के लिये हाथ या सिर हिलाकर, इशारे से इंकार करना।

कुट्टाक (वि०) [स्त्री०—कुट्टाकी,] जो काटता या विभाजित करता है या जो काटा या विभाजित किया जाता है।

कुट्टारः (पु०) पहाड़। [अकेलापन।

कुट्टारं (न०) १ स्त्रीमैथुन। २ ऊनी कंबल। ३

कुट्टिमः (पु०), कुट्टिमम् (न०) } १ पत्थर जड़ा हुआ फर्श। २ ठोंक पीट कर मकान बानने के लिये तैयार की गयी नीव। ३ रत्नों की खान। ४ अनार। ५ झौपड़ी।

कुट्टिहारिका (स्त्री०) दासी। खरीदी हुई दासी।

कुठः (पु०) वृक्ष।

कुठर देखो कुटर।

कुठार. (पु०) [स्त्री०—कुठारी,] कुल्हाड़ी। परसा।

कुठारिकः (पु०) लकड़हारा। लकडी काटने वाला।

कुठारिका (स्त्री०) छोटी कुल्हाडी।

कुठारुः (पु०) १ वृक्ष। पेड़। २ लंगूर। बंदर।

कुठिः (पु०) १ वृक्ष। २ पहाड़।

कुडंगः, कुडङ्ग } (पु०) लताकुञ्ज। लतागृह।

कुडवः, कुडपः } (पु०) अनाज की एक तौल जो १२ अंगुलि भर अथवा प्रस्थ के बराबर होती है।

कुड्मल (वि०) खुला हुआ। खिला हुआ। फैला हुआ।

कुड्मलः (पु०) खिलावट। कली।

कुड्मलम् (न०) नरक विशेष।

कुड्मलित (वि०) १ कलीदार। जिसमें कलियाँ आगयी हों। फूला हुआ। २ प्रसन्न। हँसमुख।

कुड्य (न०) १ दीवाल। २ अस्तरकारी। ३ उत्सुकता। कौतूहल।—छेदिन् (पु०) सेंध लगाने वाला। चोर।—छेद्यः, (पु०) खोदने वाला। वेलदार।—छेद्यम्, (न०) गर्त। गढा। दरार।

कुण् (धा० परस्मै०) [कुणति, कुणित] १ सहारा देना। समर्थन करना। सहायता देना। २ शब्द करना। बजाना। [बच्चा।

कुणकः (पु०) हाल का उत्पन्न हुआ जानवर का

कुणप (वि०) [स्त्री०—कुणपी] मुर्दा जैसी सडाइन वाला। सडाँइन।

कुणप (वि०), कुणपम् (न०) } मुर्दा। शव। (पु०) १ भाला। बर्छी। २ दुर्गन्धि। सडाँइन।

कुणि (पु०) १ बिसहरी। फोडा जो हाथ की अँगुलियों के नाखूनों के किनारे होता है। २ लुञ्जा, जिसकी एक बाँह सूख गयी हो।

कुंटक, कुण्टक } (वि०) [स्त्री०—कुण्टकी] मोटा। स्थूल।

कुंठ् (धा० परस्मै०) [कुण्ठति कुण्ठित] १ मौथरा पड़ जाना। २ लंगडा होजाना या अँगहीन हो जाना। ३ मूर्ख बनना। सुस्त पड जाना। ४ ढीला करना। (निजन्त) छिपाना।

कुंठ, कुण्ठ } (वि०) १ मौथरा। सुस्त। ढीला। २ अल्हड़। अनाडी। मूढ़। ३ सुस्त। काहिल अकर्मण्य। ४ निर्बल।

कुंठकः } (पु०) मूर्ख । बेवकूफ़ ।
कुण्ठकः }

कुंठित } (व० कृ०) १ भोथरा । गोंठिल । २ मूर्ख । ३ विकलाङ्ग ।
कुण्ठित }

कुंडः, कुण्डः (पु०) } १ कूंडा । कूंडी । २ हांडी । चरी । ३ समूचापन । ४
कुंडं, कुण्डम् (न०) }
कुण्ड । कूप । ५ खप्पर । भिक्षापात्र । (पु०) छिनाले का लड़का । छिनाला कराने से पैदा हुआ बालक । पतिजीवित रहते हुए अन्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान । [स्त्री० --कुंडी कुण्डी]

"पत्यौ जीवति कुण्डः स्यात् ।"

—मनु० ।

आशिन्, (पु०) भडुवा । कुटना ।—ऊधस्, [—कुण्डोघ्नी] १ दूध से पेन भरी हुई गौ । २ स्त्री जिसके कुच पूरे निकल चुके हों ।—कीटः, (पु०) १ चकला वाला । व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डे वाला । २ चारवाक मतावलम्बी । नास्तिक । ३ छिनाले में उत्पन्न ब्राह्मण ।—कीलः, (पु०) कमीना या अधम पुरुष ।—गोलं,—गोलकम्, (न०) १ महेरी । पसाव । पीच । माँड़ । ओगरा । २ कुण्ड और गोलक का समुदाय ।

कुंडलः,कुण्डलः (पु०) } १ कान का आभूषण २ पहुँची । ३ रस्सी की
कुंडलम्,कुण्डलम् (न०) }
गड्डरी । ऐंठन ।

कुंडलना } (स्त्री०) एक गोल चिन्ह जो उस शब्द पर लगाया जाता है, जिसको पढ़ते
कुण्डलना }
समय, विचारते समय अथवा नक़ल करते समय छोड़ देना चाहिये । वह चिन्ह गोलाकार होता है।

कुंडलिन् (वि०) [स्त्री०—कुण्डलिनी] १ कुण्डलों से भूषित । २ गोलाकार । ३ ऐंठनदार । उमेंठा हुआ । (पु०) १सर्प । २ मोर । ३ वरुण की उपाधि ।

कुंडिका,कुण्डिका } (स्त्री०) १ घड़ा । कमण्डलु
कुंडिन्,कुण्डिन् } (पु०) (ब्रह्मचारी का) । शिव जी की उपाधि ।

कुंडिनम् } (न०) एक नगर का नाम । विदर्भों की
कुण्डिनम् } राजधानी ।

कुंडिर,कुण्डिर } (वि०) मज़बूत । दृढ़ ।
कुंडीर,कुण्डीर }

कुंडिरः कुण्डिरः } (पु०) मनुष्य ।
कुंडीरः,कुण्डीरः }

कुतपः (पु०) १ ब्राह्मण । २ द्विजन्मा । ३ सूर्य । ४ अग्नि । ५ मेहमान । ६ बैल । साँड । ७ दौहित्र । धेवता । लड़की का लड़का । ८ भाँजा । बहिन का लड़का । ९ अनाज । १० दिन का आठवाँ मुहूर्त्त ।

कुतपम् (न०) १ कुश । दर्भ । २ एक प्रकार का कंबल ।

कुतस् (अव्यया०) १ कहाँ से । किधर से । २ कहाँ । अन्यत्र कहाँ । किस स्थान पर । ३ क्यों । किसलिये । इसलिए । किस कारण से । किस उद्देश्य से । ४ क्योंकर । किस प्रकार । ५ अत्यधिक । अत्यल्प । ६ क्योंकि । यतः । [हुआ ।

कुतस्त्य (वि०) १ कहाँ से आया हुआ । २ कैसे

कुतुकम् (न०) १ अभिलाषा । कामना । प्रवृत्ति । २ कौतुक । ३ उत्कण्ठा ।

कुतुपः } (स्त्री०) कुप्पी या कुप्पा ।
कुतूः }

कुतूहल (वि०) १ अद्भुत । विलक्षण । २ सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ । ३ श्लाघ्य । प्रसिद्ध ।

कुतूहलम्(न०) १ अभिलाषा । कौतुक । २ उत्सुकता । उत्कण्ठा । ३ कोई पदार्थ जो प्रिय या रुचिकर हो । कौतूहल ।

कुत्र (अव्यया०) कहाँ ।

कुत्रत्य (वि०) कहाँ रहनेवाला । कहाँ बसनेवाला ।

कुत्स् (धा० आत्म०) [कुत्सयते, कुत्सित] गाली देना । धिक्कारना । फटकारना । दोषी ठहराना ।

कुत्सनम् (न०) } गाली । तिरस्कार । निन्दा ।
कुत्सा (स्त्री०) } अपशब्द ।

कुत्सित (वि०) १ तिरस्कार करने योग्य । २ नीच । कमीना । दुष्ट ।

कुथः (पु०) कुश । दर्भ ।

कुथः (पु०) } १ हाथी की झूल । २ कालीन ।
कुथम् (न०) } गलीचा ।
कुथा(स्त्री०) }

कुद्दारः } (पु०) १ कुदाली । २ फाँवड़ा । ३
कुद्दालः } कचनार का वृक्ष । काञ्चन वृक्ष ।
कुद्दालकः }

कुड्मलं (न०) देखो कुड्मलं ।

कुद्रंकः,कुद्रङ्कः, कुद्रगः,कुद्रङ्गः } (पु०) १ चौकीदार का घर या चौकी या मचान पर बनी मढ़ैया।

कुनक. (पु०) काक। कौआ।

कुंतः, कुन्तः } (पु०) १ प्रास नामक शस्त्र। भाला। सपक्ष तीर। २ छोटा कीडा। कीट।

कुंतलः, कुन्तलः } (पु०) १ सिर के केश। जलपान करने का कटोरा या प्याला। ३ हल। ४ जौ। ५ सुगन्ध द्रव्य। (बहुवचन) देश विशेष और उसके निवासी।

कुंतयः, कुन्तयः } (पु०) (कुन्ति का बहुवचन) देश विशेष और उसके वाशिंदे।

कुंतिः, कुन्तिः } (पु०) राजा क्रथ के पुत्र का नाम।—भोज, (पु०) एक यादव वंशी राजा का नाम (इसके कोई सन्तान न थी अत. इसने कुन्ती को गोद लिया था।)

कुंती, कुन्ती } (स्त्री०) शूरसेन राजा की औरसी पुत्री जिसका नाम पृथा था और कुन्तिभोज ने इसे गोद लिया था। यह राजा पाण्डु की पटरानी थी और इसीके गर्भ से कर्ण, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का जन्म हुआ था।

कुंथ् (धा० परस्मै०) [कुंथति, कुथ्नाति, कुंथित] १ पीड़ित होना। २ चिपटना। ३ गले लगाना। ४ घायल करना।

कुंदः—कुन्दः (पु०), कुंदं—कुन्दम् (न०) } चमेली की जाति का एक पौधा।

कुंदं, कुन्दम् } (न०) कुन्द का फूल।

कुंदः, कुन्दः } (पु०) १ विष्णु की उपाधि। २ खराद। ३ कुवेर के नौ धनागारों में से एक। ४ करवीर वृक्ष।

कुंदमः, कुन्दमः } (पु०) बिल्ली।

कुंदिनी, कुन्दिनी } (स्त्री०) कमलों का समूह।

कुंदुः, कुन्दुः } (पु०) चूहा। मूसा।

कुप् (धा० परस्मै०) [कुप्यति, कुपित] १ क्रोध करना। २ भड़क उठना।

कुपिंद, कुपिन्द } देखो कुविंद या कुविन्द।

कुपिनिन् (पु०) धीवर। मछुआ। माहीगीर।

कुपिनी (स्त्री०) छोटी मछलियाँ फँसाने का एक प्रकार का जाल। [घृणित।

कुपूय (वि०) दुष्टाचरणवाला। नीच। अकुलीन।

कुप्यम् (न०) १ उपधातु। २ चाँदी और सोने को छोड़ कर अन्य कोई भी धातु।

कुवेरः, कुवेर } धनाध्यक्ष देवता का नाम जो उत्तर दिशा के मालिक हैं।—अद्रिः,—अचलः, (पु०) कैलास पर्वत का नाम।—दिश्, (स्त्री०) उत्तर दिशा।

कुब्ज (वि०) कुबड़ा। झुका हुआ।

कुब्जः (पु०) १ खड्ग विशेष। २ कूबड़। ३ थोड़ी कोमलता वाला ४ अपामार्ग।

कुब्जा (स्त्री०) राजा कंस की एक जवान कुबड़ी दासी का नाम। इसका कुबड़ापन श्रीकृष्ण ने मिटाया था।

कुब्जकः (पु०) एक वृक्ष का नाम।

कुब्जिका (स्त्री०) आठ वर्ष की अविवाहिता लड़की।

कुभृत् (पु०) पर्वत। पहाड़।

कुमारः १ (पु०) पुत्र। बालक। पाँच वर्ष के नीचे की उम्र का बालक। ३ युवराज। राजकुमार। ४ कार्तिकेय का नाम। ५ अग्नि का नाम। ६ तोता। ७ सिन्धुनद का नाम।—पालनः, (पु०) १ वह पुरुष जो बालकों की देखभाल करे। २ शालिवाहन राजा का नाम।—भृत्य, (स्त्री०) १ लड़कों की देखभाल। २ धातृपना। दाई का काम। जच्चा स्त्री की परिचर्या।—वाहिन्,—वाहनः, (पु०) मोर। मयूर।—सूः, (स्त्री०) पार्वती का नाम। २ गणेश जी का नाम।

कुमारकः (पु०) १ बच्चा। बालक। २ आँख की पुतली।

कुमारयति (क्रि०) बालकों की तरह क्रीड़ा करना।

कुमारिक (वि०) [स्त्री०—कुमारिकी], कुमारिन् [स्त्री०—कुमारिणी] } लड़कियों के बाहुल्य वाला।

कुमारिका, कुमारी } १ (स्त्री०) जवान लड़की। १० और १२ वर्ष के बीच की उम्र की लड़की। २ अविवाहिता। क्वारी। ३ लड़की। पुत्री। ४ दुर्गा

का नाम। ५ कई एक पौधों का नाम। ६ सीता। ७ बड़ी इलायची। ८ भारतवर्ष की दक्षिणी सीमा का एक अन्तरीप। ९ श्यामा पक्षी। १० नवमल्लिका। ११ घृतकुमारी। १२ नदी विशेष। —पुत्रः, (पु०) कानीन। अविवाहिता का पुत्र। —श्वसुरः, (पु०) विवाह होने से पहिले सतीत्व से भ्रष्ट हुई लड़की का ससुर।

कुमुद्र (वि०) १ अकृपालु। अमित्र। २ लालची। (न०) १ कुमुदनी का फूल। २ लाल कमल का फूल।

कुमुदः (पु०) } कुमुदम् (न०) } १ सफ़ेद कमल जो चन्द्रमा उदय होने पर खिलता है। २ लाल कमल। (न० चांदी। (पु०) १ विष्णु की उपाधि। २ दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम जिसने अपनी छोटी बहिन कुमुद्वती का विवाह श्रीरामपुत्र कुश के साथ किया था। —अभिख्यं, (न०) चाँदी। —आकर, —आवासः,(पु०) सरोवर जो कमलों से भरी हो। —ईश, (पु) चन्द्रमा। —खण्डम्, (न०) कमल समूह। —नाथः, पतिः, —बन्धुः, —बान्धव, - सुहृद्, (पु०) चन्द्रमा।

कुमुद्वती (स्त्री०) कमल का पौधा।

कुमुदिनी (स्त्री०) १ सफेद कमल जिसमें सफेद कमल के फूल लगते हैं। २ कमलों का संग्रह। ३ वह स्थान जहाँ कमलों का बाहुल्य हो। —नायकः, —पतिः, (पु०) चन्द्रमा।

कुमोदकः (पु०) विष्णु की उपाधि।

कुंबा } कुम्बा } (स्त्री०) यज्ञस्थान का हाता या घेरा।

कुंभः } कुम्भः } (पु०) १ घड़ा। जलपात्र। कलसा। २ हाथी के माथे के दो माँसपिण्ड। ३ कुम्भ राशि। ४ चौसठ सेर या २० द्रोण की तौल। ५ प्राणायाम का एक अंग जिसमें स्वाँस खींचने के बाद रोकी जाती है। ६ वेश्यापति। ७ कुम्भकर्ण का पुत्र। ८ गुग्गुल। —कर्णः, (पु०) रावण का छोटा भाई। —कारः, (पु०) १ कुम्हार। २ वर्णसङ्कर जाति। उशना के मतानुसार।

"वेश्यायां विप्रतश्चौर्यात् कुम्भकारः स उच्यते।"

पराशर जी के मतानुसार—

"मालाकारात्कर्मकर्या कुम्भकारो व्यजायत।"

—घोणः, (पु०) एक प्राचीन कस्बे का नाम। —जः, —जन्मन्, (पु०) —योनिः, —सम्भवः, (पु०) १ अगस्त्य जी की उपाधियाँ। २ द्रोणाचार्य की उपाधि। ३ वशिष्ठ जी की उपाधि। —दासी, (स्त्री०) कुटनी। —तण्डुकः, (पु०) घड़े का मिडका। (आलं०) अनुभवशून्य मनुष्य। —सन्धिः, (पु०) हाथी के माथे पर के दो माँसपिण्डों के बीच का गढ़ा।

कुंभकः } कुम्भकः } (पु०) १ स्तम्भ का आधार। प्राणायाम विशेष।

कुंभा } कुम्भा } (स्त्री०) छिनाल स्त्री। नौची। रंडी।

कुंभिका } कुम्भिका } (स्त्री०) १ कलसिया। २ रंडी। वेश्या।

कुंभिन् } कुम्भिन् } (पु०) १ हाथी। २ नक्र। मगर घड़ियाल। ३ मछली। ४ एक प्रकार का विषैला कीड़ा। ५ गुग्गुल। —मदः, (पु०) हाथी का मद।

कुंभिलः } कुम्भिलः } (पु०) १ घर में सेंध फोड़ने वाला चोर। २ ग्रन्थचोर। लेखचोर। श्लोकार्थ चुराने वाला। ३ साला। ४ गर्भ पूर्ण होने के पूर्व ही उत्पन्न हुआ बालक।

कुंभी } कुम्भी } (स्त्री०) १ कलसिया। छोटा जलपात्र। २ मिट्टी के बरतन। ३ अनाज की तौल का एक बाट। बटखरा। ४ अनेक पौधों का नाम। —नसः, (पु०) एक प्रकार का विषैला साँप। —पाकः, (एकवचन या बहुवचन) (पु०) नरक विशेष जहाँ पापी, कुम्हार के बरतनों की तरह अवा में पकाये जाते हैं।

कुंभीकः } कुम्भीकः } (पु०) १ पुन्नाग वृक्ष। २ गाण्डू। —नसिका, (स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी।

कुंभीरः } कुम्भीरः } (पु०) एक जलजन्तु विशेष।

कुंभीरकः, —कुम्भीरकः, } कुंभीलः, —कुम्भीलः } कुंभीलकः, —कुम्भीलकः, } (पु०) १ चोर। २ मगर। नक्र।

कुर्—(धा० परस्मै०) [कुरति, कुरित] शब्द करना। बजाना।

कुरंकरः, कुरङ्करः, } कुरंकुरः, कुरङ्कुरः, } (पु०) सारस पक्षी।

कुरंगः } (पु०) [स्त्री०—कुरङ्गी] १ लाल रंग का
कुरङ्गः } हिरन।

"लवणी कुरङ्गी दृगङ्गी करोतु।"

—जगन्नाथ।

२ हिरनों की जाति विशेष।—अक्षी,—नयना,—नयनी,—नेत्रा, (स्त्री०) हिरन जैसी आंखों वाली स्त्री।—नाभिः, (स्त्री०) कस्तूरी। मुश्क।

कुरंगम } (पु०) देखो कुरङ्गः।
कुरङ्गमः }

कुरचिल्लः (पु०) १ केकड़ा। २ बनैले सेव। ३ [कर्कराशि।

कुरटः (पु०) मोची। चमार।

कुरंटः कुरण्टः, (पु०) } पीले रंग का
कुरंटकः,कुरण्टकः, (पु०) } सदाबहार।
कुरंटिका,कुरण्टिका, (स्त्री०) } कलगा। गुलकेस। गुलशादाब।

कुरंडः } (पु०) अण्डकोशवृद्धि रोग। एक रोग
कुरण्डः } जिसमें पोते बढ़ जाते हैं।

कुररः } (पु०) उत्क्रोश पत्ती। चकवा।
कुरलः }

कुररी (स्त्री०) १ चकवी। चकई। २ भेड़। मेषी।—गणः, (पु०) चकवी पक्षियों का झुंड।

कुरवः (पु०) } गुलकेस। गुलशादाब।
कुरब (पु०) } गुलशादाब का
कुरवकं, कुरबकम्, (न०) } फुल। [विशेष।

कुरीरं (न०) स्त्रियों के सिर पर ओढ़ने का वस्त्र

कुरुः (बहुवचन) १ आधुनिक दिल्ली के आस पास का प्रदेश। २ उस देश के राजा।

कुरुः (पु०) [एकवचन] १ पुरोहित। २ भात।—क्षेत्रं (न०) दिल्ली के पश्चिम एक तीर्थस्थान, जहाँ कौरव और पाँण्डवों का लोकक्षयकारी इतिहासप्रसिद्ध युद्ध हुआ था।—जांगलम्, (न०) कुरुक्षेत्र।—राज्, (पु०) राजः, (पु०) राजा दुर्योधन।—विस्तः, (पु०) चार तोले की सोने की तौल।—वृद्धः, (पु०) भीष्म की उपाधि।

कुरटः } (पु०) लाल रंग का गुलशादाब।
कुरण्टः }

कुरंटीः } (स्त्री०) काठ की पुतली।
कुरण्टीः }

कुरालः (पु०) माथे के ऊपर के बाल।

कुरुविंदः, कुरुविन्दः (पु०) } लाल। रत्न (न०) १
कुरुविंदम्, कुरुविन्दम् (न०) } कालानिमक। २ दर्पण। आईना।

कुक्कुटः (पु०) १ मुर्गा। २ कूड़ा कर्कट।

कुर्कुरः (पु०) कुत्ता।

कुर्चिका (स्त्री०) कूर्चिका। कूँची।

कुर्द } देखो कूर्द—कूर्दन।
कुर्दन }

कुर्परः } १ घुटना। २ कोहनी।
कूर्परः }

कुर्पासः }
कूर्पासः } (पु०) स्त्रियों के पहिनने की
कुर्पासकः } एक प्रकार की चोली या अँगिया।
कूर्पासकः }

कुर्वत् (व० क०) करता हुआ। (पु०) १ नौकर। २ मोची। चमार।

कुलं (न०) १ वंश। घराना। स्थान। २ घर। मकान। ३ कुलीन या उच्च वंशीय। ४ झुंड। गिरोह। दल समूह। समुदाय। ५ (बुरे अर्थ में) गिरोह। ६ देश। ७ शरीर। ८ अगला भाग।—अकुल, (वि०) अच्छा बुरे कुल का।—अंगना, (स्त्री०) उच्च कुलोद्भवा स्त्री।—अङ्गारः, (पु०) कुलकलङ्क।—अचलः—अद्रिः, पर्वतः,—शैलः, (पु०) प्रसिद्ध सप्त पर्वतों में से एक।—अन्वित, (वि०) उत्तम कुलोत्पन्न। अभिमान, (पु०) अपने कुल का अहङ्कार।—आचारः, (पु०) अपने वंश का परम्परागत आचार।—आचार्यः, (पु०) १ कुलपुरोहित २ वंशावली रखने वाला।—अलम्बिन् (वि०) कुल रखने वाला।—ईश्वर, (पु०) १ कुटुम्ब का मुखिया। २ शिव जी का नाम।—उत्कट, (वि०) उच्च कुलोद्भव—उत्कट, (पु०) अच्छी नस्ल का घोड़ा।—उत्पन्न,—उद्भूत,— उद्भव, (वि०) अच्छे वंश में उत्पन्न। उद्वहः, (पु०) खान्दान का मुखिया।—उपदेशः, (पु०) खान्दानी नाम।—कज्जलः, (पु०) कुलकलंक। कुलाङ्गार।—कण्टकः, (पु०) अपने कुल के लिये दुःखदायी। कन्यका,—कन्या, (स्त्री०) कुलीन लड़की।—करः, (पु०) कुल का आदिपुरुष।—कर्मन्, (न०) अपने कुल या खानदान की खास रस्म

अथवा विशेष रीति।—कलङ्कः, (पु०) अपने खानदान में धब्बा लगाने वाला।—क्षतः, (पु०) १ वंश का नाश। २ कुल की बरबादी। —गिरिः, -भूभृत्, (पु०)।—पर्वतः,—शैलः, (पु०) प्रधान सप्त पर्वतों में से एक। कुलाचल।—घ्न, (वि०) वंश को बरबाद करने वाला।—ज,—जात, (वि०) १ कुलीन। अच्छे खानदान का। खानदानी। २ पैतृक। बाप दादों का। पुरखों का।—जनः, (पु०) खान्दानी। कुलीन।—तन्तुः, (पु०) अपने कुल को कायम रखने वाला।—तिथिः, (पु० स्त्री०) १चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी, चतुर्दशी। वह तिथि जिस दिन कुलदेवता का पूजन होता है।—तिलक, (पु०) अपने वंश को उजागर करने वाला। वंशउजागर। दीपः,—दीपकः, (पु०) कुलउजागर। —दुहितृ, (स्त्री०) कुलकन्या।—देवता (स्त्री०) खानदानी देवता। वह देवता जिनका पूजन अपने कुल में सदा से होता चला आता हो।—धर्मः, वंशपरम्परा से प्रचलित धर्म। अपने खान्दान की पद्धति या रीतिरस्म।—धारक, (पु०) पुत्र।—धुर्यः (पु०) वह पुत्र जो अपने घर वालों का भरणपोषण कर सकता हो। वयस्क पुत्र।—नन्दन, (वि०) अपने कुल को प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला।—नायिका, (स्त्री०) वह लड़की जिसकी पूजा वाममार्गी ताँत्रिक भैरवीचक्र में किया करते हैं।—नारी, (स्त्री०) कुलीन और सती स्त्री।—नाशः, (पु०) १ खान्दान का नाश या बरबादी। २ जातिच्युत। पंक्तिबहिष्कृत। ३ ऊँट।—परम्परा, (स्त्री०) वंशावली। पतिः, (पु०) १० हज़ार शिष्यों का भरण पोषण कर, उनको पढ़ाने वाला ब्रह्मर्षि।

> मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात्।
> अध्यापयति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः॥

—पांसुका, (स्त्री०) कुलटा स्त्री।—पलिः,—पालिका,—पाली, (स्त्री०) सती या कुलीन स्त्री। —पुत्रः, (पु०) उत्तम कुल में उत्पन्न लड़का।—पुरुषः, (पु०) १ कुलीन पुरुष। खान्दानी आदमी। २ पुरखा। बुज़ुर्ग।—पूर्वगः, (पु०) पुरखा। बुज़ुर्ग।—भार्या, (स्त्री०) पतिव्रता या सती स्त्री।—भृत्या, (स्त्री०) गर्भवती स्त्री की परिचर्या करने वाली।—मर्यादा, (स्त्री०) कुल की प्रतिष्ठा। खान्दानी इज़्ज़त।—मार्गः, (पु०) खान्दानी रस्म।—योषित्,—वधू, (स्त्री०) कुलीन और अच्छे आचरण वाली स्त्री।—वारः, (पु०) मुख्य दिवस अर्थात् मंगलवार और शुक्रवार।—विद्या, (स्त्री०) वह ज्ञान जो किसी घर में परम्परा से प्राप्त होता आया हो।—विप्रः, (पु०) पुरोहित।—वृद्धः, (पु०) कुल का वृद्ध और अनुभवी पुरुष।—व्रतः, —व्रतम्, (न०) खान्दानी व्रत।—श्रेष्ठिन्, (पु०) १ किसी वंश का प्रधान। २ कुलीन घराने का कारीगर।—संख्या, (स्त्री०) १ खान्दानी इज़्ज़त। २ सम्मानित घरानों में गणना।—सन्ततिः, (स्त्री०) आलऔलाद।—सम्भव, (वि०) कुलीन घराने का।—सेवकः, (पु०) उत्कृष्ट नौकर।—स्त्री, (स्त्री०) अच्छे घराने की औरत। नेक औरत।—स्थितिः, (स्त्री०) घराने की प्राचीनता या समृद्धि।

कुलक (वि०) कुलीन।

कुलकः (पु०) १ किसी जत्था का मुखिया। किसी थोक का प्रधान। २ किसी प्रसिद्ध घराने का कलाकोविद। ३ बाँबी।

कुलकम् (न०) १ समूह। समुदाय। २ ऐसे ५ से १५ तक के श्लोकों का समूह जो एकवाक्य बनाते हों या एकान्वयी हों।

कुलटा (स्त्री०) छिनाल औरत। व्यभिचारिणी स्त्री। —पतिः (पु०) कुटना। मछंदर।

कुलतः (अव्यया०) जन्म से।

कुलत्थः (पु०) कुलथी। एक प्रकार का अनाज।

कुलंधर, कुलन्धर (वि०) अपने कुल या वंश को कायम रखने वाला।

कुलंभर, कुलम्भरः, कुलंभलः, कुलम्भलः (पु०) चोर।

कुलवत् (वि०) कुलीन।

कुलायः (पु०), कुलायम् (न०) १ पक्षी का घोंसला। २ शरीर। ३ स्थान। जगह। ४ जाला। बुना हुआ वस्त्र। ५ किसी वस्तु के रखने

का घर या खाना। पात्र।—निलायः (पु०) घोंसले में बैठना। अंडे सेना।—स्थ (पु०) पक्षी। [अटारी। पक्षीशाला।

कुलायिका (स्त्री०) पिंजडा। पक्षियों के बैठने की

कुलालः (पु०) १ कुम्हार। २ जंगली मुर्गा।

कुलिः (पु०) हाथ।

कुलिक (वि०) कुलीन।—वेला, (स्त्री०) दिन का वह विशेष भाग जिसमें शुभ कार्य करने का निषेध है।

कुलिकः (पु०) १ सगोत्री। २ घराने या वंश का मुखिया। ३ कुलीन। कलाकोविद।

कुलिंगः / कुलिङ्गः (पु०) १ पक्षी। २ गौरैया।

कुलिन् (वि०) [स्त्री०—कुलिनी] कुलीन। (पु०) पर्वत। पहाड़।

कुलिंदः / कुलिन्दः (बहु०) एक देश विशेष और उसके शासक।

कुलिरः (पु०) / कुलिरम् (न०) १ कैंकडा २ कर्कराशि।

कुलिशः—कुलीशः (पु०) / कुलिशम्—कुलीशम् (न०) १ इन्द्र का वज्र। नोंक।—धरः,—पाणिः, (पु०) इन्द्र।—नायकः, (पु०) स्त्रीमैथुन का आसन विशेष। रतिबन्ध।

कुली (स्त्री) वडी साली। सरहज।

कुलीन (वि०) अच्छे खान्दान का।

कुलीनः (पु०) अच्छी नस्ल का घोडा।

कुलीनसम् (न०) पानी।

कुलीरः / कुलीरकः (पु०) १ कैंकडा। २ कर्क राशि।

कुलुकगुञ्जा (स्त्री०) अधजली लकडी। लुआठ।

कुलूतः (पु०) (बहुवचन) एक देश विशेष और उसके राजा।

कुल्माषं (न०) पीची। माँड।

कुल्माषः (पु०) अन्न विशेष।

कुल्य (वि०) १ कुल का। वंश सम्बन्धी। २ कुलीन।

कुल्यः (पु०) कुलीन पुरुष।

कुल्य (न०) १ मित्रभाव से घरेलू वातों के सम्बन्ध में प्रश्न। (समवेदना। सहानुभूति। वधाई आदि) २ हड्डी। ३ माँस। ४ सूप।

कुल्या (स्त्री०) १ सती स्त्री। २ नहर। नाला। छोटी नदी ३ गढ़ा। गर्त। खाई। ४ अनाज की तौल विशेष, जो ८ द्रोण के वरावर होती है।

कुवं (न०) १ फूल। २ कमल।

कुवलं (न०) १ कमल विशेष। २ मोती। ३ जल।

कुवलयम् (न०) १ नील कमल विशेष। २ पृथिवी (पु० भी)

कुवलयिनी (स्त्री०) १ नील कमल विशेष का पौधा। २ कमल समूह। ३ वह स्थान जहाँ कमलों की वहुतायत हो। कमल का पौधा।

कुवाद (वि०) १ बदनाम। तुच्छ। हल्का। निन्दक। दोष ढूढ़ने वाला। २ नीच। कमीना। दुष्ट।

कुविंकः (पु०) (वहुवचन) एक देश विशेष का नाम।

कुविंदः कुविन्दः / कुपिंदः, कुपिन्दः (पु०) १ जुलाहा। कोरी। २ कोरी की जाति का नाम।

कुवेणी (स्त्री०) १ पकडी हुई मछलियों को रखने की टोकरी। २ बुरी बंधी हुई सिर की चोटी।

कुवेलं (न०) कमल।

कुश (वि०) १ पापी। २ मतवाला।

कुशं (न०) जल।

कुशः (पु०) १ दर्भ। पवित्र तृण विशेष। २ श्री रामचन्द्र जी के ज्येष्ठपुत्र। ३ द्वीप विशेष।

कुशल (वि०) १ ठीक। उचित। अच्छा। शुभ। २ प्रसन्न। समृद्धशाली। २ योग्य। निपुण। पटु। दक्ष।—काम, (वि०) सुख प्राप्ति का अभिलाषी। प्रश्नः, (पु०) राजीखुशी पूँछना।—बुद्धि, (वि०) बुद्धिमान। कुशाग्र बुद्धि। प्रतिभाशाली।

कुशलं (न०) १ कल्याण। मङ्गल। २ गुण। धर्म। ३ निपुणता। चतुराई।

कुशलिन् (वि०) [स्त्री०—कुशलिनी] प्रसन्न। अच्छी दशा में। भरा पूरा।

कुशस्थलं (न०) कन्नौज।

कुशस्थली (स्त्री०) १ द्वारका पुरी।

कुशा (स्त्री०) १ रस्सी। २ लगाम।

कुशावती (स्त्री०) श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुश की राजधानी का नाम।

कुशाग्र (वि०) वहुत महीन। कुश की नौंक के समान।—बुद्धि, (वि०) तीक्ष्ण बुद्धिवाला।

कुशारणिः, (पु०) दुर्वासा ऋषि ।
कुशिक (वि०) ऐंचाताना । भैंडा ।
कुशिकः (पु०) १ विश्वामित्र के पिता का नाम । २ हल की फाल । नसी । कुसी । फाल । ३ तेल की तलछट ।
कुशी (स्त्री०) हल की फाल ।
कुशीलवः (पु०) १ भाट । चारण । गवैया । २ अभिनय या नाटक का पात्र बनने वाला । नट । नचैया । ३ ख़बर फैलाने वाला । ४ वाल्मीकि की उपाधि । [कमण्डलु ।
कुशुंभः, कुशुम्भः (पु०) संन्यासी का जलपात्र ।
कुशूलः (पु०) १ अन्न भरने का कोठार । भण्डारी । २ धान की भूसी की आग ।
कुशेशयं (न०) १ कमल ।
कुशेशयः (पु०) १ सारस । २ कनैर का पेड ।
कुष् (धा० परस्मै०) [कुष्णाति, कुषित] १ फाड़ना । खींच कर निकालना । खींचना । २ परीक्षा करना । जाँचना । पड़तालना । ३ चमकना ।
कुषाकुः (पु०) १ पुत्र । २ अग्नि । ३ लंगूर । बन्दर ।
कुष्ठः (पु०) } कोढ़ रोग ।—अरिः, (पु०) १
कुष्ठम् (न०) } गन्धक । २ कत्था । ३ पर्वत । ४ कितने ही पौधों के नाम ।—केतुः, (पु०) खेखसा का साग ।—गन्धिनी, (स्त्री०) असगन्ध ।
कुष्ठिन् } (वि०) [स्त्री० कुष्ठिनी] कोढ़ी ।
कुष्ठी }
कुष्माण्ड (पु०) १ कुम्हड़ा । २ झूठा गर्भ । ३ शिव का एक गण ।
कुष्माण्डकः (पु०) कुम्हड़ा ।
कुस् (धा० परस्मै०) [कुस्यति, कुसित] १ आलिङ्गन करना । २ घेरना ।
कुसितः (पु०) १ आवाद देश । २ व्याज या सूद पर निर्वाह करने वाला ।
कुसिदः } (पु०) इसको कुशीद या कुषीद भी
कुसीदः } लिखते हैं । महाजन । सूदख़ोर ।
कुसीदम् (न०) १ कर्ज़ा जो सूद सहित अदा किया जाय । २ रुपये उधार देना । व्याजख़ोरी । व्याज का धन्धा ।—पथः, (पु०) सूदख़ोरी । व्याज । सूद । २ सैकड़े से अधिक भाव का सूद ।—वृद्धिः, (स्त्री०) रुपयों पर व्याज ।
कुसीदा (स्त्री०) व्याजख़ोर स्त्री ।
कुसीदायी (स्त्री०) व्याजख़ोर की पत्नी ।
कुसीदिकः } (पु०) व्याजख़ोर । सूद खाने वाला ।
कुसीदिन् }
कुसुमं (न०) १ फूल । २ रजोदर्शन ३ फल ।—अञ्जनम्, (न०) पीतल की भस्म जो अञ्जन की जगह इस्तेमाल की जाती है ।—अञ्जलिः, (पु०) पुष्पाञ्जलि ।—अधिपः,—अधिराज्, (पु०) चम्पा का पेड ।—अवचायः (पु०) फूल एकत्र करना ।—अवतंसकं, (न०) सेहरा । सरपेच । हार ।—अस्त्रः,—आयुधः,—इषुः,—बाणः,—शरः, (पु०) १ कुसुम बाण । पुष्पशर । फूल का तीर । २ कामदेव का नाम ।—आकरः, (पु०) १ बाग, बगीचा । पुष्पोद्यान । २ गुलदस्ता । ३ वसन्त ऋतु ।—आत्मकं, (न०) केसर । जाफ़रान ।—आसव, (न०) १ शहद । मधु । २ मदिरा विशेष ।—उज्ज्वल, (वि०) पुष्पों से प्रकाशित ।—कार्मुकः, चापः,—धन्वन्, (पु०) कामदेव ।-चित, (वि०) पुष्पों के ढेर का ।—पुरं, (न०) पटना । पाटलिपुत्र ।—लता (स्त्री०) फूली हुई बेल ।—शयनम् (न०) फूलो की सेज —स्तवकः, (पु०) गुलदस्ता ।
कुसुमवती (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।
कुसुमित (वि०) फूला हुआ । पुष्पित ।
कुसुमालः (पु०) चोर ।
कुसुंभः कुसुम्भः (पु०) } १ कुसुंभ । २ केसर । ३
कुसुंभं, कुसुम्भम् (न०) } सन्यासी का जलपात्र । (पु०) दिखावटी स्नेह । (न०) सुवर्ण । सोना ।
कुसूलः (पु०) खत्ती । खों । अन्न का भाण्डार गृह ।
कुसृतिः (स्त्री०) छल । जाल । कपट । धोखा प्रवञ्चना ।
कुस्तुभः (पु०) १ विष्णु २ समुद्र ।
कुहः (पु०) धनाधिप कुबेर ।
कुहकः (पु०) छली । प्रवञ्चक । जालसाज़ । मदारी । ऐन्द्रजालिक ।

कुहकम् (न०) } जालसाज़ी । इन्द्रजाल ।—कार,
कुहका (स्त्री०) } (वि०) ऐन्द्रजालिक। जालसाज़। छलिया । –चकित, (वि०) संशयात्मा । शक्की । सतर्क । धोखे से डरा हुआ ।—स्वन', —स्वरः, (पु०) मुर्गा ।

कुहनः (पु०) १ मूसा । २ साँप ।

कुहनम् (न०) १छोटा मिट्टी का पात्र । २ शीशे का पात्र ।

कुहना } (स्त्री०) दंभ ।
कुहनिका }

कुहरं (न०) १ रन्ध्र । छिद्र । गुफा । बिल । २ कान। ३ गला । ४ सामीप्य। ५ मैथुन । समागम ।

कुहरितं (न०) १ आवाज़। २ कोकिल की कूक। ३ मैथुन के समय की सिसकारी ।

कुहुः } (स्त्री०) १ अमावस्या । अमावस । २ इस-
कुहूः } तिथि का देवत । ३ कोकिल की कूक।—कुराठः —मुखः,—रवः,—शब्दः, (पु०) कोयल।

कू (धा० आत्म०) [कवते, कुवते] १ शब्द करना। शोर करना। २ दुःख में चिल्लाना । कहरना ।

कूः (स्त्री०) चुड़ैल । दुष्टा स्त्री । [वाहिता स्त्री की ।

कूचः (पु०) चूची । विशेष कर युवती अथवा अवि-

कूचिका } (स्त्री०) १ कूची । ब्रुश । पैंसिल ।
कूची } २ ताली ।

कूज् (धा० परस्मै०) [कूजति —कूजित,] भिन-भिनाना । गुञ्जार करना । कूजना ।

कूजः (पु०) }
कूजनं (न०) } १ कूक। चहचहाहट । २ पहियों
कूजितं (न०) } की खड़खड़ाहट या चूँचाँ ।

कूट (वि०) १ मिथ्या। २ अचल । दृढ़ ।

कूटः (पु०) } १ कपट । छल । माया । धोखा । २
कूटम् (न०) } चालाकी । जालसाज़ी । ३ विषम प्रश्न । परेशान करने वाला सवाल । क्लिष्ट रचना । ४ झूठ । मिथ्या । ५ पर्वत की चोटी या शिखर । ६ निकास । ऊँचाई । उभाड़ । ७ माथे की हड्डी । शिखा । ८ सींग । ९ कोना । छोर । १० प्रधान । मुख्य । ११ ढेर । समूह । १२ हथौड़ा । घन । १३ हल की फाल । कुशी । १४ हिरन फसाने का जाल । १५ गुप्ती । १६ कलसा । घड़ा । (पु०) १ घर । आवास-स्थल । २ अगस्त्य जी का नाम ।—अक्षः,(पु०) झूठा पाँसा ।—आगारं, (न०) अटारी । अटा ।—अर्थः, (पु०) सन्दिग्ध अर्थ ।—उपायः, (पु०) जालसाज़ी । ठगविद्या ।—कारः,(पु०) जालसाज़ । ठग । झूठा गवाह ।—कृत्, (वि०) १ जाली दस्तावेज़ बनाने वाला । २ घूंस देने वाला । (पु०) १ कायस्थ । २ शिव जी का नाम । –खड्गः, (पु०) गुप्ती (तलवार) । –छद्मन्, (पु०) कपटी । छलिया । ठग ।—तुला, (स्त्री०) झूठी तराज़ू । ।—धर्म, (वि०) मिथ्या भाषण जहाँ कर्त्तव्य समझा जाय ।—पाकलः, (पु०) हाथी का वातज्वर ।—पालकः, (पु०) कुम्हार । कुम्हार का आँवा ।—पाशः, —बन्धः, (पु०) फंदा । जाल ।—मानं,(न०) झूठी तौल ।—मोहनः (पु०) स्कन्द की उपाधि । —यंत्रम्, (न०) फंदा । जाल, जिसमें पक्षी या हिरन फँसाये जाते हैं ।—युद्धं, (न०) धोखे धड़ी का युद्ध ।—शाल्मलिः, (पु० स्त्री०) १ शाल्मली । वृक्ष विशेष । २ नरक में दण्ड देने का यंत्र विशेष ।—शासनं, (न०) बनावटी डिग्री । झूटी डिग्री ।—साक्षिन्, (न०) झूठा गवाह ।—स्थ, (वि०) शिखर या चोटी पर अवस्थित या खड़ा हुआ । सर्वोच्च पद पर अधि-ष्ठित । सर्वोपरि ।—स्थः, (पु०) १ परमात्मा । २ आकाशादितत्त्व । ३ व्याघ्रनख नाम का सुगन्ध-द्रव्य विशेष ।—स्वर्णं (न०) बनावटी या झूठा सोना । मुलम्मा ।

कूटकं (न०) १ छल । धोखा । जाल। २ श्रेष्ठत्व । उन्नयन । ३ हल की नोंक । कुशी ।—आख्यानं, (न०) बनावटी कहानी ।

कूटशः (अव्यया०) ढेर में । समूह में ।

कूण् (धा० उभय०) [कूणयति—कूणयते, कूणित] १ बोलना । बातचीत करना । २ सकोड़ना । बंद करना ।

कूणिका (स्त्री०) १ सींग । २ वीणा की खूँटी ।

कूणित (वि०) बंद । मुँदा हुआ ।

कूद्दालः (पु०) पहाड़ी आबनूस ।

कूपः (पु०) १ कूप । इनारा । २ छेद । रन्ध्र । गुफा। बिल । पोलापन । सन्धि । ३ कुप्पी । कुप्पा । ४

मस्तूल।—अङ्कः,—अङ्गः, (पु०) रोमाञ्च। रोंगटे खड़े होना। —कच्छपः, —मण्डूकः, (पु०) —मण्डूकी, (स्त्री०) कुएँ का कच्छप या मेंढ़क। (आलं०) अनुभवशून्यमनुष्य।—यंत्रम्, (न०) पानी निकालने का रहट।

कूपकः (पु०) १ अस्थायी या कच्चा कुआँ। २ गुफा। बिल। ३ जांघों के बीच का स्थान। ४ जहाज़ का मस्तूल। ५ चिता। ६ चिता के नीचे के रन्ध्र। ७ कुप्पी कुप्पा। ८ नदी के बीच की चट्टान या वृक्ष।

कूपारः } (पु०) समुद्र।
कूवारः }

कूपी (स्त्री०) १ कुइयां। छोटा कूप। २ बोतल। करावा। ३ नाभि।

कूबर } (वि०) [स्त्री०—कूबरी कूवरी] १ सुन्दर। मनोहर। २कुबड़ा।
कूवर }

कूबरः } (पु०) १ वह बाँस जिसमें जुए को फँसाते हैं। २ कुबड़ा आदमी।
कूवरः }

कूबरी } (स्त्री०) १ कंबल या कपड़े से ढकी गाड़ी। २ वह बाँस या लंबी लकड़ी जिसमें जुआँ लगाया जाता है।
कूवरी }

कूरं (न०) } भोजन। भात।
कूरः (पु०) }

कूर्चः (पु०) } १ मूठा। मुटरी। गट्ठर। २ मुट्ठी भर कुश। ३ मोरपंख। ४ दाढ़ी। ५ चुटकी। ६ दोनों भौहों का मध्यभाग। ७ कूची। ८ जाल। छल। कपट। ९ डींगे मारना। अकड़ना। १० दम्भ। ढोंग। (पु०) १ सिर। २ भण्डारी। —शीर्षः,—शेखरः, (पु०) नारियल का वृक्ष।
कूर्चम् (न०) }

कूर्चिका (स्त्री०) १ चित्र लिखने की कूंची या पैंसिल। २ कुंजी। ताली। ३ कली। फूल। ४ दुग्धविकार। ५ सुई।

कूर्द् (धा० उभय०) [कूर्दति,-कूर्दते, कूर्दित] १ कूदना। उछलना।

कूर्दनम् (न०) १ छलांग। २ खेल। क्रीड़ा।

कूर्दनी (स्त्री०) १ चैत्री पूर्णिमा को कामदेव सम्बन्धी उत्सव विशेष। २ चैत्री पूर्णिमा।

कूर्पः (पु०) दोनों भौहों के बीच का स्थान।

कूर्परः (पु०) १ कोंहनी। २ घुटना।

कूर्मः (पु०) १ कछुवा। २ कच्छावतार। —अवतार., (पु०) विष्णुभगवान् का कच्छपावतार। —पृष्ठं, —पृष्ठकं, (न०) १ कछुवे की पीठ। २ ढकना। —राजः, (पु०) विष्णु भगवान् अपने दूसरे अवतार के रूप में।

कूलं (न०) १ समुद्रतट। नदीतट। २ ढाल। उतार। ३ अंचल। छोर। किनारा। सामीप्य। ४ तालाब। ५ सेना का पिछला भाग। ६ ढेर। टीला। —चर, (वि०) नदीतट पर चरने वाला या रहने वाला। —भूः (स्त्री०) तट की भूमि। —हण्डकः—हुण्डकः, (पु०) जल-भँवर।

कूलंकषः, कूलङ्कषः (पु०) नदी की धार।

कूलंकषा कूलङ्कषा (स्त्री०) नदी। सरिता।

कूलंधय, कूलन्धय (वि०) नदी तटवर्ती। नदीतट के पास का।

कूलमुद्रुज (वि०) तट ढहाने वाला।

कूलमुद्वह (वि०) नदीतट को ढहाने वाला। ले जाने वाला।

कूष्मांडः, कूष्माण्डः (पु०) कुम्हड़ा।

कूहा (स्त्री०) कुहासा। कुहरा।

कृ (धा० उभय०) [कृणोति—कृणुते] चोटिल करना घायल करना। मार डालना। [करोति, कुरुते, कृत] १ करना। २ बनाना। ३ किसी वस्तु को बनाकर तैयार करना। ४ मकान उठाना। सृष्टि करना। ५ उत्पन्न करना। ६ तैयार करना। क्रम में करना। ७ लिखना। रचना करना। ८ अनुष्ठान करना। ९ कहना। निरूपण करना। १० पालन करना। आज्ञा का पालन करना। तामील करना। ११ पूरा करना। समाप्त करना। १२ फेंकना। निकाल देना। उड़ेल देना। १३ धारण करना। लेना। १४ बोलना। उच्चारण करना। १५ ऊपर रखना। १६ सोंपना। १७ भोजन बनाना। १८ सोचना। विचारना। ध्यान देना। १९ लेना। ग्रहण करना। २० शब्द करना। २१ व्यतीत करना। बिताना। २२ फेरना। ध्यान किसी ओर आकर्षित करना। २३ दूसरे के लिये कोई काम

करना। २४ इस्तेमाल करना। व्यवहार में लाना। २५ विभाजित करना। बाँटना। २६ किसी दशा विशेष में लाकर डाल देना।

कृकः (पु०) गला।

कृकणः } (पु०) तीतर।
कृकरः }

कृकलासः } (पु०) छिपकली। गिरगट।
कृकलासः }

कृकवाकु (पु०) १ मुर्गा। २ मोर। ३ छिपकली। विस्तुइया।—ध्वजः, (पु०) कार्तिकेय की उपाधि।

कृकाटिका (स्त्री०) १ गरदन का उठा हुआ भाग। २ गरदन का पिछला भाग घट्टी।

कृच्छ्र (वि०) १ कष्टकर। पीडाकारी। २ बुरा। विपत्तिकारी। दुष्ट। ३ पापी। ४ सङ्कट में फसा हुआ।—प्राण, (वि०) जिसके प्राण सङ्कट में हों। २ कष्टपूर्वक स्वास लेने वाला। ३ कठिनाई से जीवन निर्वाह करने वाला।—साध्य, (वि०) (रोगी) जो कठिनाई से अच्छा हो सके। २ कठिनाई से पूर्ण किया हुआ।

कृच्छ्रः (पु०) } १ कठिनाई। कष्ट। पीड़ा। सङ्कट। विपत्ति। २ शारीरिक कष्ट। तप। प्रायश्चित्त।
कृच्छ्रम् (न०) }

कृच्छ्रेण } बड़ी कठिनाई से। कष्टपूर्वक।
कृच्छ्रात् }

कृत् (धा० परस्मै०) [कृतति, कृत्त] १ काटना। काट कर अलग कर डालना। विभाजित कर डालना। चीर डालना। फार डालना। टुकड़े टुकड़े कर डालना। नष्ट कर डालना। [कृणत्ति, कृत्त.] १ कातना। २ घेर लेना।

कृत (वि०) करने वाला, कर्ता। बनाने वाला। रचने वाला। (पु०) एक प्रकार के उपसर्ग।

कृतं (न०) १ कर्म। कार्य। क्रिया। २ सेवा। लाभ। ३ परिणाम। फल। ४ उद्देश्य। प्रयोजन। ५ पाँसे का वह पहल जिसपर ४ बिंदु बने हों। ६ चार युगों में से प्रथम युग जिसमें मनुष्यों के १,२८०००० वर्ष होते हैं। (मनु० अ० १ श्लो० ६६ और इस पर कुल्लूकभट्ट की व्याख्या।] किन्तु महा भारत के अनुसार कृतयुग में मनुष्यों के ४८०० वर्षों के ऊपर वर्ष होते हैं। ७ चार की सख्या।—अकृत, (वि०) किया और अनकिया अर्थात् अधूरा।—अङ्क, (वि०) चिन्हित। दागा हुआ। २ गिनती किया हुआ।—अङ्कः (पु०) पाँसे का वह पहल जिसपर चार बिंदकी बनी हों।—अञ्जलि, (वि०) हाथ जोड़े हुए। अनुकर, (वि०)। उत्तर साधक। सहायक। अधीन।—अनुसारः, (पु०) रीति। रस्म। रीति भाँति।—अन्तः, (पु०) १ यमराज। २ प्रारब्ध। क़िस्मत ३ सिद्धान्त। ४ पापकर्म। दुष्टकर्म। ५ शनिग्रह। ६ शनिवार।—अन्तजनकः, (पु०) सूर्य।—अन्नं (न०) १ पकाया हुआ खाना। २ पचा हुआ अन्न। ३ विष्ठा।—अपराध, (वि०) कसूरवार। अपराधी। दोषी।—अभय, (वि०) किसी सङ्कट या भय से बचाया हुआ—अभिषेक, (वि०) राजगद्दी पर बैठाया हुआ। राजतिलक किया हुआ।—अभ्यास, (वि०) अभ्यस्त।—अर्थ, (वि०) १सफल। २ सन्तुष्ट। प्रसन्न। ३ चतुर।—अवधान, (वि०) होशियार। सावधान।—अवधि, (वि०) निर्द्धारित। नियत। २ सीमाबद्ध। मर्यादित।—अवस्थ, (वि०) बुलाया हुआ। २ स्थिर। बसा हुआ।—अस्त्र, (वि०) १ हथियारबंद। २ अस्त्र विद्या में निपुण।—आगम, (पु०) परमात्मा।—आत्मन्, (वि०) १ इन्द्रीजित। संयमी। २ पवित्र मन वाला।—आभरण, (वि०) भूषित।—आयास, (वि०) पीडित।—आह्वान, (वि०) ललकारा हुआ। चुनौती दिया हुआ।—उद्वाह, (वि०) विवाहित। ऊपर को बाँहे उठा कर तप करने वाला।—उपकार, (वि०) अनुग्रहीत।—कर्मन्, (वि०) चतुर। निपुण। (पु०) १ परमात्मा। २ सन्यासी।—काम, (वि०) वह जिसकी कामनाएँ पूरी हो चुकी हों।—काल, (वि०) १ निश्चित समय का। २ वह जिसने कुछ काल तक प्रतीक्षा की हो।—कालः, (पु०) निश्चित समय।—कृत्य, (वि०) १ वह जिसकी उद्देश्य सिद्धि हो चुकी हो। २ सन्तुष्ट। अघाया हुआ। ३ कर्त्तव्य पालन किये

हुए।—क्रयः, (पु०) खरीददार। गाहक।—क्षण, (वि०) १ घड़ी भर बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करने वाला। २ अवसरप्राप्त।—घ्न, (वि०) अनुपकारी। एहसान फरामोश। करे को न मानने वाला। पूर्व के समस्त उपायों को विफल करने वाला।—चूडः, (पु०) वह बालक जिसका चूड़ाकरण संस्कार हो चुका हो।—ज्ञ, (वि०) उपकृत। मशकूर।

कृत (वि०) १ किया हुआ। बनाया हुआ। पूर्ण किया हुआ। उपकार को मानने वाला। २ सदाचरणी।—ज्ञः, (पु०) कुत्ता।—तीर्थ, (वि०) १ जो सब तीर्थ कर आया हो। २ जो किसी अध्यापक के पास अध्ययन करता हो। ३ उपायों को अच्छी तरह जानने वाला। ४ पथप्रदर्शक।—दास, (पु०) वेतनभोगी नौकर। पन्द्रह प्रकार के दासों में से एक।—धी, (वि०) १ विचारवान। बुद्धिमान। २ शिक्षित। विद्वान।—निर्णेजनः. (पु०) पश्चाताप करने वाला। पापी।—निश्चय, (वि०) निर्द्धारित। निश्चय किया हुआ।—पुङ्ख, (वि०) धनुर्विद्या में निपुण।—पूर्व, (वि०) पहले किया हुआ।—प्रतिकृतं, (न०) आक्रमण और बचाव।—प्रतिज्ञ, (वि०) १ वह जो किसी के साथ कोई प्रतिज्ञा या ठहराव कर चुका हो। २ अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किये हुए।—बुद्धि, (वि०) शिक्षित। पढ़ा लिखा। बुद्धिमान।—मुख, (वि०) शिक्षित। बुद्धिमान।—लक्षण, (वि०) १ चिन्हित। मोहर लगा हुआ। २ टागा हुआ। ३ सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। सर्वप्रिय। ४ छुट्टा। बीना हुआ। निरूपित।—वर्मन्. (पु०) कौरव पक्षीय एक योधा जो सात्यकी द्वारा मारा गया था।—विद्य. (वि०) शिक्षित। अधीत।—वेतन, (वि०) भाड़े का। वेतनभोगी।—वेदिन्, (वि०) कृतज्ञ।—वेश, (वि०) भूपित।—शोभ, (वि०) १ सुन्दर। २ उत्तम। ३ चतुर।। कुशल।—शौच, (वि०) पवित्र। शुद्ध।—श्रमः,—परिश्रमः, (पु०) अधीत। पढ़ा लिखा। शिक्षित।—सङ्कल्प, (वि०) निश्चित किया हुआ।—संज्ञ, (वि०) १ सचेत। मूर्च्छा से जागा हुआ। २ जागा हुआ। सन्नाह, (वि०) कवच पहिने हुए।—सपत्निका, (वि०) वह स्त्री जिसके सौत हो।—हस्त,—हस्तक, (वि०) १ निपुण। कुशल। पटु। २ धनुर्विद्या में पटु। अस्त्र शस्त्र चलाने की विद्या में निपुण।

कृतक (वि०) १ किया हुआ। बनाया हुआ। तैयार किया हुआ। २ कृत्रिम। बनावटी। अवास्तविक। ३ मिथ्या। झूठा। बनाया हुआ। ४ गोद लिया हुआ।

कृतं (अव्या०) पर्याप्त। काफी। अधिक नहीं।

कृतिः (स्त्री०) १ करतूत। २ पुरुषार्थ। ३ बीस अक्षर के चरण वाला श्लोक विशेष। ४ जादू। इन्द्रजाल। ५ चोट। वध। ६ बीस की संख्या।—करः (पु०) रावण की उपाधि।

कृतिन्, (वि०) १ सन्तुष्ट। अघाया हुआ। अपनी साध पूरी किये हुए। २ भाग्यवान्। धन्य। कृतकृत्य। ३ चतुर। योग्य। पटु। निपुण। ४ नेक। धर्मात्मा। पवित्र। ५ अनुगमन। अनुसरण। आज्ञापालन। आज्ञानुसार करने वाला।

कृते } (अव्यया०) लिये। निमित्त। बवजह।
कृतेन } इसलिये।

कृत्तिः (स्त्री०) १ चर्म। चमड़ा। २ मृगछाला। ३ भोजपत्र। ४ कृत्तिका नक्षत्र।—वास,—वासस्, (पु०) शिव जी।

कृत्तिका (बहुवचन) २७ नक्षत्रों में से तीसरा।—तनयः,—पुत्रः,—सुतः, (पु०) १ कार्तिकेय।—भवः, (पु०) चन्द्रमा।

कृत्नु (वि०) १ भली भाँति करने वाला। काम करने की योग्यता रखने वाला। शक्तिमान। २ चतुर। चालाक। निपुण।

कृत्नु (पु०) कारीगर। शिल्पी।

कृत्य (वि०) १ वह जो किया जाना चाहिये। उपयुक्त। ठीक। २ सम्भव। साध्य। ३ विश्वासघाती।

कृत्यं (न०) १ कर्त्तव्य। कर्म। २ कार्य। अवश्य करणीय कार्य। ३ उद्देश्य। प्रयोजन।

कृत्यः "तव्य", "अनीयं" "य" और 'एलिम', ये विभक्तियाँ हैं।

कृत्या (स्त्री०) १ कार्य । क्रिया । २ जादू । टोना । ३ देवी विशेष, जो मारण कर्म के लिये विशेष रूप से बलिदानादि से पूजी जाती है ।

कृत्रिम (वि०) १ बनावटी । नकली । कल्पित । २ गोद लिया हुआ ।—धूपः,—धूपकः,(पु०) राल, लोवान, गूगूल आदि के मिलाने से बनी हुई धूप । - पुत्रकः, (पु०) गुड्डा । गुड़िया । पुतली ।

कृत्रिमः (पु०) १२ प्रकार के पुत्रों में से एक । जो वयस्क हो और अपने जनक जननी की अनुमति बिना किसी का पुत्र बन बैठा हो ।

"कृत्रिमः स्यात्स्वयं दत्तः ।"

—याज्ञवल्क्य ।

कृत्रिमम् (न०) १ एक प्रकार का निमक । २ एक सुगन्ध पदार्थ ।

कृत्सं (न०) १ जल । २ समूह ।

कृत्सः (पु०) पाप ।

कृत्स्न (वि०) समस्त । समूचा । सम्पूर्ण ।

कृंतत्रं (न०) हल ।

कृंतनं (न०) } काटना । फाड़ना । नोचना ।
कृन्तनम् (न०) } कुतरना ।

कृपः (पु०) अश्वत्थामा के मामा का नाम । सप्त चिरजीवियों में से एक ।

कृपण (वि०) १ गरीब । दयापात्र । अभागा । साहाय्यहीन । २ सत्यासत्य-विवेक-शून्य । अकर्मण्य । ३ नीच । ओछा । दुष्ट । ४ कंजूस । लालची ।—धी,—बुद्धि, (वि०) नीचमना । —वत्सल, (वि०) दीनों पर दया करने वाला । दीनदयालु ।

कृपण. (पु०) कंजूस ।

कृपणम् (न०) कंजूसी । दरिद्रता ।

कृपा (स्त्री०) रहम । दया । अनुकम्पा ।

कृपाणः (पु०) १ तलवार । २ छुरी ।

कृपाणिका (स्त्री०) खंजर । छुरी ।

कृपाणी (स्त्री०) १ कैंची । २ खाँड़ा । खंजर ।

कृपालु (वि०) दयालु । कृपापूर्ण ।

कृपी (स्त्री०) कृपाचार्य की बहिन और द्रोणाचार्य की पत्नी ।—पति., (पु०) द्रोणाचार्य ।—सुत., (पु०) अश्वत्थामा ।

कृपीटम् (न०) १ जङ्गल । वन । २ ईंधन । ३ जल । ४ पेट । —पालः, (पु०) १ पतवार । २ समुद्र । ३ पवन । हवा ।—योनिः, (पु०) अग्नि ।

कृमि (वि०) कीड़ों से भरा हुआ ।—कोशः, —कोषः, (पु०) रेशम के कीड़े का खोल । रेशम का कोया ।—कोशउत्थं (न०) रेशमी वस्त्र ।—जं,—जग्धं, (न०) अगर की लकड़ी ।—जा, (स्त्री०) लहा । लाख ।—जलजः, —वारिरुहः, (पु०) घोंघा । शङ्ख का कीड़ा ।—पर्वतः,—शैलः, (पु०) ढेहुर । बाम्बी ।—फलः, (पु०) उदुम्बुर या गूलर का पेड़ ।—शङ्खः, (पु०) शङ्ख का कीड़ा ।—शुक्ति, (स्त्री०) १ घोंघा । सीप । २ कीड़ा जो इनमें रहे । ३ दोपट्टा शङ्ख ।

कृमिः (पु०) १ कीड़ा । रोग के कीटाणु । ३ गधा । ४ मकड़ी । ५ लाख ।

कृमिण } (वि०) कीड़ेदार । कीड़ों से पूर्ण ।
कृमिल }

कृमिला (स्त्री०) बहुत बच्चे जनने वाली औरत ।

कृश् (धा० पर०) [कृश्यति, कृश] १ दुबला होना । लटना । २ क्षीण पड़ना (चन्द्रमा की तरह) ।

कृश (वि०) १ पतला । दुबला । लटा । निर्बल । २ छोटा । थोड़ा । महीन । ३ तुच्छ । निर्धन । —अक्षः, (पु०) मकड़ी ।—अङ्ग, (वि०) दुबला । लटा ।—अङ्गी, (स्त्री०) १ छरछरे शरीर की स्त्री । २ प्रियंगु लता ।—उदर, (वि०) पतली कमरवाली ।

कृशला (स्त्री०) सिर के बाल । [उपाधि ।

कृशानु (पु०) आग ।—रेतस् (पु०) शिव जी की

कृशाश्विन् (पु०) नाटक का पात्र । एक्टर ।

कृष् (धा० उभय०) [कृषति, कृषते, कृष्ट] १ जोतना । हल चलाना । [कर्षति—कृष्ट] १ खींचना । घसीटना । कढ़ोरना । २ आकर्षण करना । ३ सेना की तरह परिचालन करना । ४ झुकाना (कमान की तरह) ५ मालिक बनना । वशवर्त्ती करना । दबा लेना । ६ जोतना । ७ प्राप्त करना । ८ छीन ले जाना । वियुक्त करना ।

कृपाणः } (पु०) हलवाहा। किसान।
कृषिकः }

कृषिः (स्त्री०) १ जुताई। २ कृषि । किसानी।—कर्मन् (न०) खेती।—जीविन्, (वि०) किसानी पेशा। खेती करके निर्वाह करनेवाला।—फलं, (न०) खेती की पैदावार।—सेवा, (स्त्री०) किसानी। खेतिहरपन।

कृषीवलः (पु०) किसान। काश्तकार। खेतिहर।

कृष्करः (पु०) शिव जी।

कृष्ट (वि०) १ खींचा हुआ। आकृष्ट। २ जोता हुआ।

कृष्टिः (स्त्री०) विद्वान आदमी। (स्त्री०) १ खिंचाव। आकर्षण। २ जुताई।

कृष्ण (वि०) १ काला। २ दुष्ट। बुरा।

कृष्णः (पु०) १ काला रङ्ग। २ काला मृग। ३ काक ४ कोकिल। ५ कृष्णपक्ष। अँधेरा पाख। ६ कलियुग। ७ भगवान विष्णु का आठवाँ अवतार जो कंसादि दुर्दान्त दैत्यों के नाश के लिये मथुरा में हुआ था और जिनके चरित्रों से भागवतादि पुराण और महाभारतादि इतिहास पूर्ण हैं। ८ महाभारत के रचयिता कृष्णद्वैपायन व्यास। ६ अर्जुन का नाम। १० अगर की लकड़ी।—अगुरु, (न०) एक प्रकार के चन्दन की लकड़ी।—अचलः,(पु०) रैवतक पहाड़ का नाम।—अजिनं, (न०) काले मृग का चर्म।—अयस्, (न०) अयसं,—आमिषम्, (न०) लोहा। कान्तिसार लोहा।—अध्वन्,—अर्चिस्, (पु०) आग।—अष्टमी, (स्त्री०) भाद्र कृष्ण अष्टमी, जो श्रीकृष्ण जी के जन्म की तिथि है।—आवासः, (पु०) अञ्जीर या बरगद का पेड़।—उदरः, (पु०) एक प्रकार का सर्प। कन्दं, (न०) लाल कमल।—कर्मन्, (वि०) असदाचरणी। पापी। दोषी। दुष्ट। अपराधी।—काकः, (पु०) जंगली काक या पहाड़ी कौआ।—कायः, (पु०) भैंसा।—कोहलः, (पु०) जुआरी।—गतिः, (पु०) आग।—ग्रीवः, (पु०) शिव।—तारः, (पु०) मृग विशेष।—देहः, (पु०) भौंरा। भ्रमर।—धनं, (न०) बुरे ढङ्ग से या बेईमानी करके कमाया हुआ धन।—द्वैपायनः, (पु०) व्यास जी का नाम।—पक्षः, (पु०) अँधियारा पाख। बदी।—मृगः, (पु०) काला हिरन।—मुखः,—वक्त्रः,—वदनः, (पु०) काले मुख का वानर।—यजुर्वेदः, (पु०) तैत्तरीय या कृष्ण यजुर्वेद।—लोहः, (पु०) चुम्बक पत्थर।—वर्णः, (पु०) १ काला रङ्ग। २ राहुग्रह। ३ शूद्र।—वर्त्मन्, (पु०) १ अग्नि। २ राहुग्रह। ३ ओछा आदमी।—वेणा, (स्त्री०) एक नदी का नाम।—शकुनिः, (पु०) काक। कौआ।—सारः, (पु०) चित्तीदार हिरन।—शृङ्गः, (पु०) भैंसा।—सखः,—सारथिः, (पु०) श्रीकृष्ण।

कृष्णम् (न०) १ कालापन। कालिख। अँधियारी। २ लोहा। ३ सुर्मा। ४ आँख की पुतली। ५ काली मिर्च या गोल मिर्च। ६ सीसा।

कृष्णकम् (न०) काले हिरन का चमड़ा।

कृष्णलं (न०) घुँघची।

कृष्णलः (पु०) घुँघची का पौधा।

कृष्णा (स्त्री०) १ द्रौपदी। २ दक्षिण भारत की एक नदी का नाम।

कृष्णिका (स्त्री०) राई।

कृष्णिमन् (पु०) कालापन।

कृष्णी (स्त्री०) अँधियारी रात।

कॄ (धा० परस्मै०) [किरति—कीर्ण] १ बखेरना। छितराना। उड़ेलना। फेंकना। २ भगा देना। ३ ढकना। भर देना। छिपा देना।

कॄत् (धा० उभ०) [कीर्तयति—कीर्तयते, कीर्तित] १ उल्लेख करना। पुनरावृत्ति करना। उच्चारण करना। २ कहना। पढ़ना। घोषित करना। सूचना देना। ३ नाम लेना। पुकारना। ४ स्तव करना। प्रशंसा करना। महत्व बढ़ाना। स्मरण रखना।

क्लृप् (धा० आत्म०) [कल्पते, क्लृप्त] १ योग्य होना। उपयुक्त होना। रज़ामन्द करना। पूर्ण करना। पैदा करना। २ भलीभाँति व्यवस्थित होना। सफल होना। ३ होना। घटित होना। ४ तैयार होना। ५ अनुकूल होना। ३ शरीक होना। [णिजन्त] १ तैयार करना। व्यवस्था करना।

जड़ना। २ स्थिर करना । नियत करना। ३ बाँटना। ४ सम्पन्न करना। ५ विचारना।

क्लृप्त (व० कृ०) १ रचित। बनाया हुआ । सजा हुआ। टुकड़े किया हुआ । काटा हुआ । ३ उत्पन्न किया हुआ। ४ स्थिर किया हुआ। तै किया हुआ। ५ आविष्कृत। विचारा हुआ।—कीला, (स्त्री०) किवाला । एक प्रकार की दस्तावेज़।

क्लृप्तिः (स्त्री०) १ पूर्णता। सम्पूर्णता । सफलता। कामियाबी। २ आविष्कार। सुव्यवस्था।

क्लृप्तिक (वि०) खरीदा हुआ । क्रीत। [निवासी।

केकयः (पु०) (बहुवचन) देश विशेष और उसके

केकर (वि०) [स्त्री०—केकरी] ऐंचाताना । भेंड़ी आँख वाला। भेंड़ा।

केकरं (न०) भेंड़ापन।

केका (स्त्री०) मोर की बोली।

केकावलः, केकिकः, केकिन् (पु०) मोर। मयूर।

केणिका (स्त्री०) ख़ीमा। तंबू। कनात।

केतः (पु०) १ मकान। २ आबादी। बस्ती । ३ झंडा। पताका। ४ सङ्कल्प। इरादा। अभिलाषा।

केतकं (न०) केतकी का फूल।

केतकः (पु०) १ एक पौधे का नाम। २ झंडा। पताका।

केतकी (स्त्री०) १ एक पौधा विशेष । २ केतकी का फूल।

केतनम् (न०) १ घर । मकान । २ आमंत्रण। बुलावा। ३ जगह। स्थान। ४ झंडा। पताका। ५ चिन्हानी। चिन्ह। ६ अनिवार्य कर्म।

केतित (वि०) १ आमंत्रित। बुलाया हुआ। २ बसने वाला। बसा हुआ।

केतुः (पु०) १ झंडा । पताका । २ प्रधान। मुखिया। नेता। ३ पुच्छलतारा। धूमकेतु। ४ चिन्हानी। निशान। ५ चमक। सफाई। ६ प्रकाश की किरन । ७ उपग्रह विशेष । केतुग्रह।—ग्रहः, (पु०) केतुग्रह।—भ, (पु०) बादल। —यष्टि, (स्त्री०) पताका का बाँस।—रत्नं, (न०) वैडूर्य।—वसनं, (न०) कपड़े की पताका।

केदारः (पु०) १ पानी भरे खेत। चरागाह। २ थाला। खोड़ुआ। ३ पर्वत। ४ केदार पर्वत। ५ शिवजी का रूप विशेष।—खण्डम्, (न०) मेंड़। बाँध।—नाथः, (पु०) शिवजी का रूप विशेष।

केनारः (पु०) १ सिर। शीश। २ खोपड़ी। ३ जाल। ४ गाँठ। जोड़।

केनिपातः (पु०) पतवार। डाँड़।

केन्द्रम् (न०) १ वृत्त का मध्य भाग। २ वृत्त का प्रमाण। ३ जन्मपत्र के लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम स्थान। ४ मुख्यस्थान। मध्यस्थल।

केयूरः (पु०), केयूरम् (न०) बाजूबंद। जोशन। तावीज़।

केरलः (पु० बहुवचन) मालावार देश और वहाँ के अधिवासी।

केरली (स्त्री०) १ मालावार की स्त्री । २ ज्योतिर्विज्ञान।

केल् (धा० परस्मै०) [केलति, केलित] १ हिलाना। २ क्रीड़ा करना। क्रीडोत्सुक होना।

केलकः (पु०) नचैया। नाचने वाला।

केलासः (पु०) स्फटिक पत्थर।

केलिः (पु० स्त्री०) १ खेल । क्रीड़ा। २ आमोद प्रमोद। ३ हँसी मज़ाक। दिल्लगी। हर्ष।—कला। (स्त्री०) १ रतिकला । २ सरस्वती देवी की वीणा।—किल, (पु०) विदूषक। मसखरा ।—किलावती, (स्त्री०) कामदेव की पत्नी। रति देवी।—कीर्णः, (पु०) ऊंट।—कुञ्चिका, (वि०) छोटी साली ।—कुपित, (वि०) खेल में क्रुद्ध ।—कोपः, (पु०) अभिनय-पात्र । नचैया ।—गृहं,—निकेतनम्,—मन्दिरं,—सदनम्, (न०) प्रमोद भवन।—नागरः, (पु०) कामासक्त। कामुक। ऐयाश।—पर, (वि०) खिलाड़ी। आमोदप्रमोदप्रिय। —मुखः, (पु०) हँसी। खेल। आमोद प्रमोद। —वृक्षः (पु०) कदम्ब वृक्ष विशेष।—शयनं,

(न०) सेज ।—शुषिः, (स्त्री०) पृथिवी । —सचिवः, (पु०) अभिन्न मित्र ।

केलिः (स्त्री०) पृथिवी ।

केलिकः (पु०) अशोक वृक्ष ।

केली (स्त्री०) १ खेल । क्रीडा । २ आमोद प्रमोद । —पिक (पु०) आमोद के लिये पाली हुई कोकिला ।—वनी, (स्त्री०) प्रमोद वन —शुकः (पु०) आमोद के लिये पाला गया तोता ।

केवल (वि०) १ विशिष्ट । असाधारण । २ अकेला । मात्र । एकमात्र । बेजोड । ३ समस्त । समूचा । नितान्त । सम्पूर्ण । ४ अनावृत । विना ढका हुआ । ५ शुद्ध । साफ । अमिश्रित ।

केवलं (अव्यय०) सिर्फ । एकमात्र ।

केवलतस् (अव्य०) नितान्तता से । विशुद्धता से ।

केवलिन् (वि०) [स्त्री०—केवलिनी] १ अकेला । सिर्फ । एकमात्र । २ ब्रह्म के साथ एकत्व के सिद्धान्त पर पूर्ण श्रद्धावान् ।

केशः (पु०) १ बाल । २ विशेष कर सिर के केश । ३ घोड़ा या सिंह के गरदन के बाल । अयाल । ४ प्रकाश की किरण । ५ वरुण की उपाधि । ६ सुगन्धद्रव्य विशेष ।—अन्तः, (पु०) १ बाल की नोंक । २ जटा । लट । चोटी । ३ चूडाकरण संस्कार ।—उच्चयः (पु०) बहुत या सुन्दर बाल ।— कर्मन्, (पु०) बालों को सम्हालना या काढ़ना । माँग पट्टी बनाना ।—कलापः,(पु०) बालों का ढेर ।—कीटः, (पु०) जूँ । बालों में रहने वाले कीट विशेष ।—गर्भः, (पु०) वेणी । चोटी ।—छिद्, (पु०) नाई । हज्जाम ।—जाहः, (पु०) बालों की जड़ ।—पक्षः,—पाशः, हस्तः, (पु०) बहुत अधिक बाल ।—बन्धः, (पु०) चुटीला । बाल बाँधने का फीता ।—भूः, भूमिः, (स्त्री०) सिर या शरीर का अन्य कोई भाग जिस पर केश उगे ।—प्रसाधनी, (स्त्री० —मार्जकं, मार्जनं, (न०) कंघा । कंघी ।—रचना, (स्त्री०) बाल सम्हालना ।—वेशः, (पु०) चुटीला । फीता ।

केशटः (पु०) १ बकरा । २ विष्णु का नाम । ३ खटमल । ४ भाई ।

केशव (वि०) बहुत अथवा सुन्दर केशों वाला ।—आयुधः, (पु०) आम का पेड ।—आयुधम्, (न०) विष्णु का शस्त्र ।—आलयः,—आवासः, (पु०) पीपल का पेड़ ।

केशवः (पु०) १ विष्णु का नाम जो ब्रह्म रुद्रादिकों पर दया करते हैं । केशी दैत्य को मारने वाले ।

केशाकेशि (अव्य०) परस्पर बाल खींच कर (लडने वाले ।)

केशिक (वि०) [स्त्री०—केशिकी] सुन्दर बालों वाला ।

केशिन् (पु०) १ सिंह । २ श्री कृष्ण के हाथ से मरे हुए एक राक्षस का नाम । ३ देवसेना का हरण करने वाला और इन्द्र द्वारा मारा गया एक दूसरे राक्षस का नाम । ४ श्री कृष्ण की उपाधि । ५ अच्छे बालों वाला । —निषूदनः, —मथनः, (पु०) श्रीकृष्ण की उपाधियां ।

केशिनी (स्त्री०) १ सुन्दर वेणी वाली स्त्री । २ विश्रवस की पत्नी और रावण की माता का नाम ।

केसरः, केशरः (पु०) }
केसरम्, केशरम् (न०) } १ सिंह की गरदन के बाल । अयाल । २ फूल का रेशा या सूत । ३ वकुल वृक्ष । ४ पुन्नाग वृक्ष । ५ (आमफल का) रेशा । (न०) वकुलपुष्प । —अचलः, (पु०) मेरु पर्वत । —वरं (न०) केसर । जाफ़रान् ।

केसरिन् }
केशरिन् } (पु०) १ सिंह । २ अपनी श्रेणी का सर्वोत्कृष्ट या सर्वोत्तम । ३ घोड़ा । ४ नीबू अथवा चकोतरा अथवा बिजौरे का पेड़ । ५ पुंन्नाग वृक्ष ६ हनुमानजी के पिता का नाम ।—सुतः (पु०) हनुमान जी ।

कै (भ्वा० परस्मै०) [कायति] आवाज़ करना । बजाना ।

कैंशुकम् (न०) किंशुक का फूल ।

कैकयः (पु०) केकय देश का राजा ।

कैकसः (पु०) एक राक्षस । एक दैत्य ।

कैकेय (पु०) केकय देश का राजा या राजकुमार ।

कैकेयी (स्त्री०) महाराज दशरथ की छोटी रानी और भरत की जननी ।

कैटभः (पु०) एक दैत्य जो विष्णु के हाथ से मारा गया था।—अरिः, —जित्, —रिपुः, —हन्, (पु०) विष्णु।

कैतकं (न०) केतकी का फूल।

कैतवं (न०) १ जुआ का दाँव। २ धूर्त। जुआ। झूठ। कपट। छल। जाल। ठगी। चालाकी।

कैतवः (पु०) १ ठग। छलिया। २ जुआरी ३ धतूरा।

कैतवप्रयोगः (पु०) चालाकी। ठगी।

कैतववादः (पु०) छल। प्रवञ्चना। जाल।

कैदारः (पु०) चावल। अन्न।

कैदारम् (न०) खेतों का समुदाय।

कैमुतिकः (पु०) न्याय विशेष।

कैरवः (पु०) १ ज्वारी। ठग। प्रवञ्चक। २ शत्रु। —बंधुः (पु०) चन्द्रमा।

कैरवम् (न०) कोकावेली। सफेद कमल जो चन्द्रमा की चाँदनी में खिलता है।

कैरविन् (पु०) चन्द्रमा।

कैरविणी (स्त्री०) १ कमल का पौधा जिसमें सफेद कमल के फूल लगे हों। २ सरोवर जिसमें सफेद कमल के फूलों का बाहुल्य हो। ३ सफेद कमलों का समूह।

कैरवी (स्त्री०) चन्द्रमा की चाँदनी। जुन्हाई।

कैलासः (पु०) हिमालय पर्वत का शिखर विशेष। —नाथः, (पु०) १ शिवजी। २ कुवेरजी।

कैवर्तः (पु०) मल्लाह। मछुआ। माहीगीर।

कैवल्यं (न०) १ एकत्व। एकान्तता। २ व्यक्तित्व। ३ मोक्ष विशेष।

कैशिक (वि०) [स्त्री०—कैशिकी] केशों जैसा। बालों की तरह महीन।

कैशिकं (न०) बालों का परिमाण।

कैशिकः (पु०) प्रेमभाव। कामुकता।

कैशिकी (स्त्रि०) कौशिकी। नाट्य शास्त्र की एक [वृत्ति।

कैशोरं (न०) किशोर अवस्था जो १ से १५ वर्ष तक रहती है।

कैश्यं (न०) सम्पूर्णकेश।

कोकः (पु०) १ भेड़िया। २ चक्रवाक। ३ कोकिल। ४ मेंढक। ५ विष्णु। —देवः, (पु०) कबूतर। —बुधः (पु०) सूर्य।

कोकनदं (न०) लाल कमल।

कोकाहः (पु०) सफेद कमल।

कोकिलः (पु०) १ कोयल। २ अधजली लकड़ी। —आवासः, —उत्सव, (पु०) आम का वृक्ष।

कोकः, कोङ्कः, कोकणाः, कोङ्कणाः (पु० (बहुवचन) सह्य पर्वत और समुद्र के बीच का भूखण्ड प्रदेश विशेष।

कोंकणा, कोङ्कणा (स्त्री०) जमदग्नि की पत्नी रेणुका का नाम। —सुतः, (पु०) परशुराम।

कोजागरः (पु०) आश्विनी पूर्णिमा के दिवस का उत्सव विशेष।

कोटः (पु०) १ गढ़। किला। २ शाला। झोंपड़ी। ३ बांकापन। ४ दाढ़ी।

कोटरः (पु०), कोटरम् (न०) वृक्ष का खोडर।

(स्त्री०) १ बाणासुर की माता। २ बालग्रह।

कोटरी, कोटवी (स्त्री०) नंगी स्त्री। २ दुर्गा देवी।

कोटिः, कोटी (स्त्री०) १ कमान की मुड़ी हुई नोंक। २ नोंक। छोर। ३ अस्त्र की नोंक या धार। ४ चरम बिन्दु। आधिक्य। सर्वोत्कृष्टता। ५ चन्द्रकला। ६ कड़ोर की संख्या। ७ समकोण त्रिभुज की एक भुजा। ८ श्रेणी। कक्षा। विभाग। ९ राज्य। सल्तनत। १० विवादग्रस्त प्रश्न का एक पक्ष। —ईश्वरः, (पु०) करोड़पति। —जित्, (वि०) कालिदास की उपाधि। —पात्रं, (न०) पतवार। —पालः, (पु०) दुर्गरक्षक। —वेधिन्, (वि०) क्लिष्टकर्मा। बड़ा कठिन काम करने वाला।

कोटिक (वि०) अत्यन्त उच्च काम करने वाला।

कोटिरः (पु०) १ साधुओं के सिर के बालों की चोटी जिसे वे माथे के ऊपर बाँध लेते हैं और जो सींग की तरह जान पड़ती है। २ न्योला। ३ इन्द्र।

कोटिशः, कोटीशः (पु०) हेंगा। पाटा।

कोटिशः (अव्यया०) करोड़ों। असंख्य।

कोटीरः (पु०) १ मुकुट। ताज। २ कलँगी। चोटी। ३ साधुओं के सिर की चोटी जिसे वे सींग की शक्ल में माथे के ऊपर बाँध लिया करते हैं।

कोट्टः (पु०) कोट। गढ। किला। महल। राजप्रासाद।

कोट्टवी (स्त्री०) १बाल खोले नंगी स्त्री। २ दुर्गादेवी। ३ बाणासुर की माता का नाम।

कोट्टारः (पु०) १ किला या किले के भीतर का ग्राम। २ तालाब की सीढ़ियाँ। ३ कूप। तडाग। ४ लम्पट या दुराचारी पुरुष।

कोणः (पु०) १ कोना। २ सारंगी या वेला बजाने का गज। ३ तलवार आदि हथियारों की पैनी धार। ४ छड़ी। डंडा। डंका या ढोल बजाने की लकड़ी। ६ मंगल ग्रह। ७ शनि ग्रह। ८ जन्म कुण्डली में लग्न से नवम और पञ्चम स्थान।—कुणः, (पु०) खटमल।

कोणपः (पु०) देखो कौणप।

कोदंडः कोदण्डः, (पु०) } कमान। धनुष।
कोदंडम्, कोदण्डम् (न०) } (पु०) भौं।

कोद्रवः (पु०) कोंदों अनाज।

कोपः (पु०) १ क्रोध। कोप। रोष। गुस्सा। २ (पित्त-) कोप (वात-) कोप आदि शारीरिक अस्वस्थता।—आकुल,—आविष्ट, (वि०) क्रुद्ध। कुपित।—पदं, (न०) १ क्रोध का कारण। २ बनावटी क्रोध।—वशः, (पु०) क्रोध के वशवर्ती होना।

कोपन (वि०) १ क्रोधी। २ क्रुद्ध करना।

कोपनम् (न०) क्रुद्ध हो जाना। [स्त्री।

कोपना (स्त्री०) १ बिगडैल औरत। क्रोधी स्वभाव की

कोपिन् (वि०) १ क्रुद्ध। २ क्रोध उत्पन्न करने वाला। ३ शरीरस्थ रसों का उपद्रव उत्पन्न करने वाला।

कोमल (वि०) १ मुलायम। नरम। २ धीमा। मंद। प्रिय। मधुर। ३ मनोहर। सुन्दर।

कोमलकम् (न०) कमल नाल के सूत या रेशे।

कोयष्टि } (पु०) शिखरी। एक पक्षी जो पानी
कोयष्टिकः } के ऊपर उड़ा करता है।

कोरकः (पु०) } १ कली। २ कमलनाल सूत्र।
कोरकम् (न०) } ४ सुगन्ध द्रव्य विशेष।

कोरदूषः (पु०) देखो कोद्रवः।

कोरित (वि०) १कलीदार। अङ्कुरित। २ चूर्ण किया हुआ। पिसा हुआ। कुटा हुआ। २ टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

कोलं (न०) १ एक तोला भर की तौल।। २ गोल या काली मिर्च। ३ एक प्रकार का बेर।—अञ्चः, (पु०) कलिङ्ग देश।—पुच्छः, (पु०) बगला। वृटीमार।

कोलः (पु०) १ शूकर। सुअर। २ नाव। बेड़ा। ३ वक्षस्थल। ४ कूबड़। कुब्ब। कूल्हा। गोद। ५ आलिङ्गन। ६ शनिग्रह। ७ जातिच्युत। पतित जाति का। ८ बर्बर। जंगली जाति का।

कोलंबकः } (पु०) वीणा का ढाँचा।
कोलम्बकः }

कोला }
कोलिः } (स्त्री०) देखो बदरी।
कोली }

कोलाहलं (न०) } चिल्लाहट। शोरगुल।
कोलाहलः (पु०) }

कोविद (वि०) पण्डित। अनुभवी। चतुर। बुद्धिमान। योग्य।

कोविदारं (न०) } एक वृक्ष विशेष का नाम।
कोविदारः (पु०) } लाल कचनार।

कोशः (पु०) कोशम् (न०) } १ कठौती
कोषः (पु०) कोषम् (न०) } दोहनी। २ बाल्टी। डोलची। ३ कोई भी पात्र। ४ संदूक। अलमारी। दराज़। ट्रंक। ५ म्यान। ६ ढक्कन। खोल। चादर। ७ ढेर। ८ भाण्डारगृह। ९ खजाना। धनागार। १० धन सम्पत्ति। दौलत। रुपया पैसा। ११ सोना चाँदी। १२ शब्दार्थ संग्रह। शब्दार्थ संग्रहावली। १३ कली। अनखिला फूल। १४ फल की गुठली। १५ छीमी। फली। बौंडी। ढौंडा। १६ जायफल। सुपाडी। १७ रेशम का कोका। १८ योनि। गर्भाशय। १९ अण्डकोश। २० अंडा। २१ लिंग। पुरुष जननेन्द्रिय। २२ गोला। गैंद। २३ वेदान्त में वर्णित पाँच प्रकार के कोश यथा अन्नमयकोश, प्राणमयकोशादि। २४ [धर्मशास्त्र में] एक प्रकार की अपराधी के अपराध की कठोर परीक्षा।—अधिपतिः,—अध्यक्षः, (पु०) १ खजानची।

[आधुनिक] अर्थसचिव। २ कुबेर।—अगारः, (पु०) धनागार। खजाना।—कारः, (पु०) १ म्यान या परतला बनाने वाला। २ डिक्शनरी बनाने वाला। ३ कोका के भीतर का रेशमी कीड़ा। ४ कोशावस्था। कोशवासी। तितली आदि जिनके पर न आये हो।—कारकः, (पु०) रेशम का कीड़ा।—कृत्, (पु०) गन्ना।—गृहं, (न०) खजाना।—चञ्चुः, (पु०) सारस।—नायकः,—पालः, (पु०) खजानची। भंडारी।—पटक,—पेटकम्, (न०) तिजोरी। काफर।—वासिन्, (पु०) कोशस्थ जीव।—वृद्धि, (स्त्री०) १ धन की वृद्धि। २ अण्डकोश की वृद्धि।—शायिका, (स्त्री०) म्यान में रक्खी छुरी।—स्थ (वि०) म्यान वाली।—स्थः, (पु०) कोशवासी जीव।—हीन, (वि०) गरीब। धनहीन।

कोशलिकं (न०) घूस। रिश्वत।

कोशातकिन् (पु०) १ व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। २ व्यापारी। सौदागर। ३ वाड़वानल।

कोशिन्, कोषिन् (पु०) आम का पेड़।

कोष्ठं (न०) १ घेरे की दीवाल। हाते की दीवाल। चारदिवारी। २ छिलका या खोखा।

कोष्ठः (पु०) १ शरीर का कोई भाग जैसे हृदय, फेँफड़ा, आदि। २ मेदा। पेडू। ३ भीतर का कमरा। ४ अन्नभाण्डार।—आगारं, (न०) भाण्डार। भण्डरी।—अग्नि, (पु०) अन्न पचाने वाली शक्ति।—पालः, (पु०) १ खजानची। भंडारी। २ चौकीदार।

कोष्टक (न०) ईंट चूने का बना हौद जिसमें पशु पानी पीवे।

कोष्ठकः (पु०) १ अनाज का भाण्डार। भंडारी। २ हाते की दीवाल। चारदीवाली।

कोष्ण (वि०) गुनगुना। कुनकुना। थोड़ागरम। तत्ता।

कोष्णं (न०) गर्मी। ऊष्मा।

कोसलः, कोशलः (पु०) (बहुवचन) देश विशेष और वहाँ के अधिवासी।

कोसला, कोशला (स्त्री०) अयोध्या नगरी।

कोहलः (स्त्री०) १ काहिली। वाद्य विशेष। २ शराब।

कौक्कुटिकः (पु०) १ चिड़ीमार। २ वह साधु जो चलते समय ज़मीन की ओर दृष्टि रखता है जिससे कोई जीव उसके पैर से न कुचले। ३ दम्भी। पाखण्डी।

कौक्ष (वि०) [स्त्री०—कौक्षी] पेडू की। कुक्ष की।

कौक्षेय (वि०) [स्त्री०—कौक्षेयी] कुक्षवाला। पेट वाला। २ म्यान वाला।

कौक्षेयकः (पु०) तलवार। खाँड़ा।

कौंकः—कौङ्कः, कौंकणाः—कौङ्कणाः (पु०) कोङ्कण देश और वहाँ के अधिवासी।

कौट (वि०) [स्त्री०—कौटी] १ स्वतन्त्र। मुक्त। २ घरेलू। ३ बेईमान। छली। ४ जल में फंसा हुआ।—जः, (पु०) कुटुज वृक्ष।—तक्षः, (पु०) स्वतन्त्र बढ़ई (ग्रामतक्षः का उल्टा)।—साक्षिन्, (पु०) झूठा गवाह।—साक्ष्यं (न०) झूठी या जाली गवाही। [देना।

कौटः (पु०) १ जाल। छल। झूठ। २ झूठी गवाही

कौटकिकः, कौटिकः (पु०) बहेलिया। चिड़ीमार। फन्दे में फंसानेवाला। जाल में पकड़ने वाला। चिड़ीमार। कसाई। वधिक।

कौटिलिकः (पु०) १ शिकारी। व्याध। २ लुहार।

कौटिल्यं (न०) १ कुटिलता। २ दुष्टता। ३ बेईमानी। जाल। छल। [नीतिकार।

कौटिल्यः (पु०) चाणक्य का नाम। एक प्रसिद्ध

कौटुंब, कौटुम्ब (वि०) [स्त्री०—कौटुम्बी] गृहस्थोपयोगी। गृहोपयोगी।

कौटुंबं, कौटुम्बम् (न०) पारिवारिक सम्बन्ध। रिश्तेदारी।

कौटुंबिक, कौटुम्बिक (वि०) [स्त्री०—कौटुम्बिकी] पारिवारिक। परिवार सम्बन्धी।

कौटुंबिकः, कौटुम्बिकः (पु०) पिता या घर का बड़ा बूढ़ा।

कौणपः (पु०) राक्षस। दानव। दैत्य।—दन्तः (पु०) भीष्म।

कौतुकं (न०) १ अभिलाषा। कुतूहल। इच्छा। २ कौतूहलोत्पादक कोई वस्तु। ४ विवाहसूत्र जो कलाई पर बाँधा जाता है। ५ विवाह में एक विधि विशेष। ६ उत्सव। महोत्सव। विवाहादि

शुभ उत्सव । ८ हर्ष । आल्हाद । ९ क्रीडा । आमोदप्रमोद । १० गान । नृत्य । दृश्य । तमाशा ११ हँसी । मज़ाक । १२ बधाई । प्रणाम । आगारः, —आगारं, —गृहं (न०) प्रमोद भवन ।—क्रिया.(स्त्री०)—मङ्गलं. (न०)विवाहोत्सव । तोरणः, (पु०)—तोरणम् (न०) मङ्गल-सूचक महरावदार द्वार, जो विवाहादि उत्सवों के अवसर पर बनाये जाते हैं ।

कौतूहलं } (न०) १ अभिलाषा । जिज्ञासा ।
कौतूहल्यं } २ औत्सुक्य । ३ आश्चर्य । विस्मय ।

कौनिकः (पु०) भालाबरदार ।

कौंतेय } (पु०) कुन्ती का पुत्र । युधिष्ठिर, भीम,
कौन्तेयः } और अर्जुन ।

कौप (वि०) [स्त्री०—कौपी] कूप सम्बन्धी या कूप से निकला हुआ ।

कौपीनम् (न०) १ लंगोटी । २ गुह्यांग । ३ चिथड़ा । ४ पाप या अनुचित कर्म ।

कौब्ज्यं (न०) टेढ़ापन । कुबड़ापन ।

कौमार (वि०) [स्त्री०—कौमारी] १ क्वारी । २ कोमल । मुलायम ।—भृत्यं, (न०) बालक का पालन पोषण और चिकित्सा ।

कौमारं (न०) १ जन्म से पाँच वर्ष तक की अवस्था । २ कुआँरापना—(१६ वर्ष की अवस्था तक की लड़की का कुआँरापना माना गया है) ।

कौमारकम् (न०) लड़कपन । कमउम्रपना ।

कौमारिकः (पु०) लड़कियों का पिता ।

कौमारिकेयः (पु०) अनब्याही स्त्री का पुत्र ।

कौमुदः (पु०) कार्तिक मास ।

कौमुदी (स्त्री०) १ चाँदनी । जुन्हाई । व्याकरण का एक ग्रन्थ । ३ कार्तिकी पूर्णिमा । ४ आश्विनी पूर्णिमा । ५ उत्सव । ६ विशेष कर वह उत्सव जिसके घरों और देवालयों में दीपमालिका की जाय । ७ व्याख्या ।—पतिः, (पु०) चन्द्रमा । —वृत्तः, (पु०) दीवट । पतीलसोत ।

कौमोदकी } (स्त्री०) भगवान विष्णु की गदा का
कौमोदी } नाम ।

कौरव (वि०) [स्त्री०—कौरवी] कुरुओं से सम्बन्ध रखने वाला ।

कौरवः (पु०) १ राजा कुरु की सन्तान । २ कुरुओं का राजा या शासक ।

कौरव्यः (पु०) १ कुरु की सन्तान । २ कुरुओं का राजा या शासक ।

कौर्प्यः (पु०) वृश्चिक राशि ।

कौल (वि०) [स्त्री०—कौली] १ पैतृक । मौरूसी । २ कुलीन । अच्छे खान्दान का ।

कौलः (पु०) १ वाममार्गी तांत्रिक । २ ब्रह्मज्ञानी ।

कौलं (पु०) वाममार्ग का सिद्धान्त और उसके अनुष्ठान ।

कौलकेयः (पु०) वर्णसङ्कर । छिनाल का लड़का ।

कौलटिनेयः (पु०) १ सती भिखारिन का लड़का । २ वर्णसङ्कर ।

कौलटेयः (पु०) १ सती या असती भिखारिन का पुत्र । वर्णसङ्कर । दोगला ।

कौलिक (वि०) [स्त्री०—कौलिकी] कुल सम्बन्धी । २ कुल में प्रचलित । पैतृक । पुरतैनी । मौरूसी ।

कौलिकः (पु०) १ कोरी । जुलाहा । २ पाखंडी । दम्भी । ३ वाममार्गी ।

कौलीन (वि०) कुलीन । खान्दानी । [मार्गी ।

कौलीनः (पु०) १ भिखारिन का लड़का । २ वाम-

कौलीनम् (न०) १ लोकापवाद । कुत्सा । निन्दा । असदाचरण । कुकर्म । ३ पशुओं की लड़ाई । ४ मुर्गों की लड़ाई । युद्ध । लड़ाई । ६ कुलीनता । ७ छिपाने योग्य । गुह्याङ्ग । [वाद ।

कौलीन्यः (न०) १ कुलीनता । २ पारिवारिक अप-

कौलूतः (पु०) कौलूतों का राजा ।

"कौलूतश्चित्रवर्मा ।" मुद्राराक्षस ।

कौलेयकः (पु०) कुत्ता । ताज़ी कुत्ता । शिकारी कुत्ता ।

कौल्य (वि०) कुलीन ।

कौवेर } (वि०) [स्त्री०—कौवेरी कौबेरी] कुबेर
कौबेर } सम्बन्धी ।

कौवेरी } (स्त्री०) उत्तर दिशा ।
कौबेरी }

कौश (वि०) [स्त्री०—कौशी] १ रेशमी । २ कुश का बना ।

कौशलं } (न०) १ प्रसन्नता । समृद्धि । २ निपु-
कौशल्यं } णाई । निपुणता । चतुराई ।

कौशलिकं (न०) घूँस । रिश्वत ।

कौशलिका, कौशिली (स्त्री०) १ भेंट । चढ़ावा । २ कुशलप्रश्न । बधाई ।

कौशलेयः (पु०) कौशल्यानन्दन श्रीरामचन्द्र जी ।

कौशल्या } कौसल्या } (स्त्री०) महाराज दशरथ की महारानी और श्रीरामचन्द्र जी की जननी ।

कौशल्यायनिः (पु०) कौसल्यानन्दन श्रीराम ।

कौशांबी (स्त्री०) दुआब में अवस्थित एक प्राचीन नगरी का नाम ।

कौशिक (वि०) [स्त्री०—कौशिकी] १ म्यानदार । म्यान में रखा हुआ । २ रेशमी ।—अरातिः,—अरिः, (पु०) काक । कौआ ।—फलः, (पु०) नारियल का पेड़ ।—प्रिय, (पु०) श्री रामचन्द्र जी की उपाधि ।

कौशिकः (पु०) १ विश्वामित्र । २ उल्लू । ३ कोशकार । ४ गूदा । मिगी । सत । सार । ५ गूगल । ६ न्योला । ७ सपेला । साँप पकड़नेवाला । ८ शृङ्गार । ९ गुप्त धन जाननेवाला । १० इन्द्र ।

कौशिका (स्त्री०) कटोरा । प्याला ।

कौशिकी (स्त्री०) १ विहार की एक नदी का नाम । दुर्गादेवी का नाम । ३ चार प्रकार की नाट्यशास्त्र की वृत्तियों में से एक वृत्ति ।

सुकुमारार्थसन्दर्भा कौशिकी तासु कथ्यते ।

—साहित्यदर्पण ।

कौशेयम् } कौषेयम् } (न०) १ रेशम । २ रेशमी वस्त्र । ३ लहँगा ।

कौसीद्यं (न०) सूदखोरी । २ सुस्ती । अकर्मण्यता । काहिली । परिश्रम से अरुचि ।

कौस्तिकः (पु०) १ छलिया । धोखेबाज़ । बदमाश । १ मदारी । ऐन्द्रजालिक ।

कौस्तुभः (पु०) समुद्रमन्थन के समय प्राप्त एक मणि, जिसे भगवान विष्णु अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं ।—लक्षणः,—वक्षस्, (पु०) —हृदयः, (पु०) विष्णु भगवान् की उपाधियाँ ।

क्नूय् (धा० आत्म०) [क्नूयते] १ कर कर शब्द करना । २ डूबना । ३ भीगना ।

क्रकचः (पु०) आरा ।—च्छदः, (पु०) केतकी वृक्ष ।—पत्र, (पु०) साल का वृक्ष ।—पाद्, (पु०)—पादः, (पु०) विस्तुइया । छिपकली ।

क्रकरः (पु०) १ तीतर । २ आरा । ३ निर्धन मनुष्य । ४ रोग । बीमारी ।

क्रतुः (पु०) १ यज्ञ । २ विष्णु की उपाधि । ३ दस प्रजापतियों में से एक । ४ प्रतिभा । ५ शक्ति । योग्यता ।—उत्तमः, (पु०) राजसूय यज्ञ ।—द्रुह्,—द्विष् (पु०) राक्षस । दैत्य ।—ध्वंसिन्, (पु०) शिवजी की उपाधि ।—पतिः, (पु०) यज्ञकर्त्ता ।—पुरुष, (पु०) विष्णु की उपाधि ।—भुज्, (पु०) ईश्वर ।—राज् (पु०) १ यज्ञों के प्रभु । २ राजसूय यज्ञ ।

क्रथ् (धा० परस्मै०) [क्रथति, क्रथित] घायल करना । चोटिल करना । मार डालना ।

क्रथकैशिकः (पु० बहुवचन) एक देश का नाम ।

"अथेश्वरेण क्रथकैशिकानाम्," ।

रघुवंश ।

क्रथनम् (न०) हत्या । कत्लआम ।

क्रथनकः (पु०) ऊँट ।

क्रंद् } क्रन्द् } (धा० परस्मै०) [क्रन्दति, क्रन्दित] १ रोना । आँसू बहाना । २ बुलाना । पुकारना ।

क्रंदनम् } क्रन्दनम् } क्रंदितं } क्रन्दितं } (न०) १ रोदन । रोना । विलाप । २ पारस्परिक ललकार ।

क्रम् (धा० उभय०) पर [क्रामति, क्रामते, क्राम्यति, क्रान्त] १ चलना फिरना । पदार्पण करना । पैर रखना । जाना । २ समीप जाना । ३ गुज़रना । निकल जाना । ४ कूदना । फलांगना । उछलना । ५ चढ़ना । ऊपर जाना । ६ ढकना । छेकना । कब्ज़ा करना । अधिकार जमाना । भरना । ७ आगे निकल जाना । बढ़ जाना । ८ योग्य होना । किसी काम को हाथ में लेना । ९ बढ़ना । १० पूरा करना । सम्पन्न करना । ११ स्त्रीमैथुन करना ।

क्रमः (पु०) १ पग, कदम । २ पैर । ३ गमन । अग्रगमन । मार्ग । ४ अनुष्ठान । आरम्भ । ५ सिलसिला । ६ तरीका । ढब । ७ पकड़ । ८ जानवर की एक प्रकार की उस समय की बैठक विशेष, जब वह उछल कर किसी पर आक्रमण करना चाहता है । दबकन । ९ तैयारी । तत्परता । १० भारी काम । जोखों का काम । ११ कर्म ।

मामले को अपनी गवाही से हराने वाला। (पाँच-प्रकार के गवाहों में से एक)—निर्देशः, (पु०) गवाही। साक्षी।—पटु, (वि०) क्रियाकुशल। कार्यनिपुण।—पथः, (पु०) चिकित्सा प्रणाली। —पर, (वि०) अपने कर्त्तव्य पालन में परिश्रम करने वाला।—पादः, (पु०) साक्षी। लिखित प्रमाण तथा अन्य प्रमाण जो वादी की ओर से अपने अर्ज़ी दावे में पेश किये गये हों। —योगः, (पु०) १ क्रिया से सम्बन्ध। २ उपायों का प्रयोग।—लोपः, (पु०) किसी आवश्यक अनुष्ठेय कर्म का त्याग।—वाचक,—वाचिन्, (वि०) अव्यय जो क्रिया के ढङ्ग का वर्णन करे।—वादिन्, (पु०) वादी। मुद्दई।—विधिः (पु०) किसी कर्म का विधान।—विशेषणं, (न०) निर्देशकारक विशेषण।—संक्रान्तिः, (स्त्री०) शिक्षण। ज्ञानोपदेश।—समभिहारः, (पु०) किसी कर्म की पुनरावृत्ति। [अभ्यासी।

क्रियावत् (वि०) अभ्यस्त। किसी कार्य को करने का

क्री (धा० उभय) [क्रीणाति, क्रीणीते, क्रीत] १ ख़रीदना। मोल लेना। २ अदल बदल करना। विनियम करना।

क्रीड् (धा० परस्मै०) [क्रीडति, क्रीडित] १ खेलना। अपना दिल बहलाना। २ जुआ खेलना। ३ हँसी करना। उपहास करना। मसखरी करना। [दिल्लगी।

क्रीडः (पु०) १ खेल। आमोद प्रमोद। २ हँसी

क्रीडनम् (न०) १ खेल। आमोद प्रमोद। २ खिलौना।

क्रीडनकः (पु०), क्रीडनकम् (न०), क्रीडनीयम् (न०), क्रीडनीयकम् (न०) } खिलौना।

क्रीडा (स्त्री०) १ खेल। आमोद प्रमोद। २ हँसी दिल्लगी।—गृहं, (न०) प्रमोदभवन। क्रीड़ाभवन।—शैलः, (पु०) कृत्रिम पहाड़। प्रमोद शैल।—नारी, (स्त्री०) रंडी।—कोपः, (पु०) झूठा क्रोध। बनावटी कोप।—मयूरः, (पु०) मनबहलाव के लिये रखा हुआ मोर।—रत्नं, (न०) रमणकार्य। मैथुन।

क्रीडोपस्करम् (न०) खेल का सामान।

क्रीत (वि०) खरीदा हुआ। मोल लिया हुआ।

क्रीतः (पु०) धर्मशास्त्र में वर्णित बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रकार का खरीदा हुआ पुत्र।—अनुशयः, (पु०) किसी चीज़ को खरीदने के लिये पाश्चात्ताप। मोल ली हुई वस्तु को वापिस करना।

क्रुंच्, क्रुञ्च् (पु०), क्रुंचः, क्रुञ्चः (पु०) } १ बगला। क्रौंचपक्षी

क्रुध (धा० परस्मै) [क्रुध्यति, क्रुद्ध] कुपित होना। नाराज़ होना।

क्रुध् (स्त्री०) क्रोध। गुस्सा।

क्रुश् (स्त्री० परस्मै०) [क्रोशति, क्रुष्ट] १ रोना। विलाप करना। २ चीखना। चिल्लाना।

क्रुष्ट (वि०) बुलाया हुआ।

क्रुष्टम् (न०) बुलाना। चिल्लाना। चीखना।

क्रूर (वि०) १ निष्ठुर। निर्दयी। दयाशून्य। नृशंस। २ सख़्त। रूखा। ३ भयङ्कर। भयानक। भयप्रद। ४ उपद्रवी। उत्पाती। बरबाद करने वाला। ५ घायल। चोटिल। ६ खूनी। ७ कच्चा। ८ मज़बूत। ९ गर्म। तीक्ष्ण। अप्रिय।—आकृति, (वि०) भयङ्कर रूप वाला।—आचार, (वि०) निष्ठुर व्यवहार करने वाला।—आशय, (वि०) १ जिसमें भयङ्कर जीव हों (जैसे नदी) २ नृशंस स्वभाव वाला।—कर्मन्, (न०) १ खूनी काम। २ कोई भी कठोर परिश्रम का काम।—कृत् (वि०) भयानक। खूखार। निर्दयी।—कोष्ठ, (वि०) दस्तावर दवा यानी जुलाब देने पर भी जिसको दस्त न आवें ऐसे कोठे वाला। कब्जियत रोग से पीड़ित।—गन्धः, (पु०) गंधक। —दृश्, (वि०) १ कुदृष्टि वाला। बुरी निगाह डालने वाला। २ उत्पाती। दुष्ट।—राविन्, (पु०) पहाड़ी काक।—लोचनः, (पु०) शनिग्रह।

क्रूरं (न०) १ घाव। २ हत्या। निर्दयता।

क्रूरः (पु०) बाज। शिकरा। बहरी। बगुला।

क्रेतृ (पु०) खरीदनेवाला। गाहक।

क्रौंचः, क्रौञ्चः } (पु०) एक पर्वत का नाम।

क्रोडः (पु०) १ शूकर । २ वृक्ष का खोडर। ३ वक्षस्थल। ४ किसी वस्तु का मध्यभाग। ५ शनि-ग्रह।—अङ्कः,—अंघ्रिः,—पादः (पु०) कछुवा। —पत्रं, (न०) १ हाशिये का लेख। २ पत्र की समाप्ति करने के बाद लिखा हुआ लेख। ३ न्यूनता पूरक। ४ दानपत्र का अनुवन्ध।

क्रोडम् (न०) } १ वक्षस्थल। छाती। २ किसी
क्रोडा (स्त्री०) } वस्तु का भीतरी भाग। रन्ध्र। खोखलापन। पोलापन।

क्रोडीकरणम् (न०) आलिङ्गन। छाती से लगाना।

क्रोडीमुखः (पु०) गेंडा।

क्रोधः (पु०) १ क्रोध। रोष। २ रौद्ररस का भाव। —उज्झित, (वि०) क्रोधरहित। ठंडा। शान्त। —मूर्च्छित, (वि०) गुस्से में भरा हुआ। कुपित।

क्रोधन (वि०) क्रोध में भरा हुआ। क्रुद्ध।

क्रोधनं (न०) क्रोधी। क्रोध।

क्रोधालु (वि०) क्रोधी। गुस्सैल।

क्रोशः (पु०) १ चीख। चीत्कार। चिल्लाहट। कोलाहल। २ कोस। ३ मील।—तालः,—ध्वनिः, (पु०) बड़ा ढोल।

क्रोशन (वि०) चीत्कार करने वाला।

क्रोशनं (न०) चीत्कार। चीख।

क्रोष्टु (पु०) [स्त्री०—क्रोष्ट्री] गीदड़। शृगाल।

क्रौंचः—क्रौञ्चः (पु०) १ कुरर पक्षी। पर्वत विशेष। यह हिमालय पर्वत का नाती है और कार्तिकेय तथा परशुराम ने इसे वेधा था।—अदनं, (न०) कमलनाल के रेशे। —अरातिः। —अरिः,—रिपुः, (पु०) १ कार्तिकेय का नाम। २ परशुराम का नाम। —दारणः,—सूदनः, (पु०) १ कार्तिकेय। परशुराम।

क्रौर्यं (न०) क्रूरता। निष्ठुरता। निर्दयीपन।

क्लंद् } (धा० परस्मै०) [क्लंदति, क्लंदित] १
क्लन्द् } पुकारना। बुलाना। २ चिल्लाना। विलाप करना। (आत्मने०) [क्लंदते, क्लन्दते] परेशान होना। घबड़ा जाना। —क्लम् (धा० परस्मै०) [क्लामति, क्लाम्यति, क्लान्त] थक जाना। उदास हो जाना।

क्लम् (धा० परस्मै०) [क्लामति, क्लाम्यति, क्लान्त] थक जाना। उदास हो जाना।

क्लमः क्लमथः (पु०) थकावट। थकाई।

क्लांत } (वि०) १ थका हुआ। परिश्रान्त। २ कुम्हलाया
क्लान्त } हुआ। मुर्झाया हुआ। ३ लटा निर्वल।

क्लांति } (स्त्री०) थकावट। श्रम।—छिद् (वि०)
क्लान्ति } थकावट दूर करने वाला।

क्लिद् (धा० परस्मै०) [क्लिद्यति, क्लिन्न] भींग जाना। नम होना। तर होना। (णिजन्त) भिगोना। तर करना।

क्लिन्न (वि०) भीगा। तर।—अक्ष, (वि०) चुंधा। किचड़ाहा।

क्लिश् (धा० आत्म०) [किसी किसी के मतानुसार यह परस्मै० भी है [क्लिश्यते, क्लिष्ट, अथवा क्लिशित] १ सताया जाना। पीडित किया जाना। २ सताना। तंग करना। (परस्मै०) [क्लिश्नाति, क्लिष्ट, क्लिशित] १ सताना। पीड़ित करना। तंग करना। दुःखदेना।

क्लिशित } (वि०) १ पीडित। दुःखी। सन्तप्त। २
क्लिष्ट } सताया हुआ। ३ मुर्झाया हुआ। ४ विरोधी। असङ्गत। [जैसे मेरी माता वन्ध्या है।] ५ कृत्रिम। ६ लज्जित।

क्लिष्टिः (स्त्री०) १ सन्ताप। पीडा। दुःख। २ नौकरी। चाकरी। सेवा

क्लीव } (वि०) १ नपुंसक। हिजड़ा। २ भीरू।
क्लीब } निर्वल। ३ ओछा। नीच। ४ सुस्त। काहिल। ५ नपुंसक लिङ्ग का।

क्लीवः, क्लीबः (पु०) } १ नपुंसक। हिजड़ा।
क्लीवम्, क्लीबम् (न०) } खोजा।

न मूत्रं फेनिलं यस्य विष्ठा चाप्सु निमज्जति।
मेढ्रं चोन्मादशुक्राभ्यां हीनं क्लीव स उच्यते।

—कात्यायन।

२ नपुंसक लिङ्ग।

क्लेदः (पु०) १ नमी। तरी। सील। २ फोड़े का बहाव। ३ कष्ट। दुःख। पीड़ा।

क्लेशः (पु०) १ पीड़ा। कष्ट। क्रोध। २ सांसारिक झंझट।—क्षम, (वि०) कष्ट सहन करने योग्य।

क्लैव्यं } (न०) १ नपुंसकता। २ अमानुषता।
क्लैब्यं } भीरुता। ३ निरर्थकता। अपुंसकत्व।

क्षौमं (न०) कैफड़ा । फुसफुस ।

क्व (अव्यया०) कहाँ । किधर ।

क्वचित् क्वचित् (वि०) कहीं । एक जगह । इसी जगह । यहाँ यहाँ । अभी अभी ।

क्वण् (धा० परस्मै०) [क्वणति क्वणित] झंकार करना । घुंघुरू जैसा शब्द करना । चहकना । अस्पष्टगाना ।

क्वणः (पु०)
क्वणनं (न०)
क्वणितं (न०)
क्वाणः (पु०) } १ शब्द । २ किसी भी बाजे का शब्द ।

क्वत्य (वि०) किस स्थान का । कहाँ का ।

क्वथ् (धा० परस्मै) [क्वथति क्वथित] १ उबालना । काढ़ा बनाना २ जीर्ण करना । पचाना ।

क्वथः
क्वाथः } (पु०) काढ़ा ।

क्वाचित्क (वि०) [स्त्री०—क्वाचित्की] दुर्लभ । असाधारण ।

क्षः (पु०) १ नाश । २ अन्तर्धान । अदर्शन । हानि । ३ बिजुली । ४ क्षेत्र । ५ किसान । ६ विष्णु का चौथा या नृसिंहावतार । ७ राक्षस ।

क्षण्
क्षन् } (धा० उभय०) [क्षणोति, क्षणुते, क्षत] १ घायल करना । २ भङ्ग करना ।

क्षणः (पु०)
क्षणम् (न०) } १ लहमा । पल । $\frac{4}{5}$ सैकण्ड । २ अवकाश । फुर्सत ।

अहमपि लब्धक्षणः स्वगेहं गच्छामि ।
' मालविकाग्निमित्र ।

३ उपयुक्त क्षण । अवसर । ४ शुभ क्षण । ५ उत्सव हर्ष । ६ परतंत्रता । दासता । ७ मध्य-बिन्दु । मध्य ।—अन्तरे, (अव्यया०) अगला पल । कुछ ही देर बाद ।—क्षेपः, (पु०) क्षण भर का विलम्ब '—दः, (पु०) ज्योतिषी ।—दम्, (न०) पानी । जल ।—दा, (स्त्री०) १ रात्रि । २ हल्दी ।—दाकर ,—पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।—द्युतिः, (स्त्री०)—प्रकाश, —प्रभा. (स्त्री०) बिद्युत । बिजली ।—निःश्वासः, (पु०) सूंस । शिशुमार ।—भङ्गुर, (वि०) नष्ट हो जाने वाला । नश्वर । निर्बल ।—मात्रं, (अव्यया०) एक क्षण के लिये ।—रामिन् (पु०)कबूतर । परेवा ।—विध्वंसिन्, (वि०) एक क्षण में नष्ट होने वाला । (पु०) एक श्रेणी के नास्तिक दार्शनिक विशेष ।

क्षणतुः (पु०) घाव । फोड़ा ।

क्षणनम् (न०) घाव करना । चोटिल करना । मार [डालना ।

क्षणिक (पु०) क्षणभर का । दमभर का ।

क्षणिका (स्त्री०) विद्युत । बिजली ।

क्षणिन् (वि०) [स्त्री०—क्षणिनी] १ अवकाश रखने वाला । २ दमभर का । क्षणिक ।

क्षणिनी (स्त्री०) रात । रजनी ।

क्षत् (वि०) घायल । काटा हुआ । भंग किया हुआ । तोड़ा हुआ । चीरा हुआ । फाड़ा हुआ ।—अरि, (वि०) विजयी । फतहयाब ।—उदरं, (न०) दस्तों की बीमारी ।—कासः, (पु०) खाँसी जो चोटफेंट से उत्पन्न हुई हो ।—जं,(न०) १ रक्त । लोहू । खून । २ पीप । पसेव । राल ।—योनिः, (स्त्री०) उपयुक्त स्त्री । वह स्त्री जो पुरुष के साथ सम्भोग करा चुकी हो ।—विक्षत, (वि०) जिसका शरीर घावों से भरा हो । वृत्तिः, (स्त्री०) आजीविका रहित ।—व्रतः, (पु०) ब्रह्मचारी । व्रतभङ्ग करने वाला ब्रह्मचारी ।

क्षतं (न०) १ खरोंच । २ घाव । चोट । ३ ख़तरा । जोखों । नाश । भय ।

क्षतिः (स्त्री०) १ चोट । घाव । २ विनाश । काट चीरा । चीरफाड़ । ३ बरबादी । हानि । नुक-सान । ४ ह्रास । कमी । क्षय ।

क्षत्तृ (पु०) १ वह जो काटता या मोड़ता है । २ चाकर । द्वारपाल । दरवान । ३ कोचवान । घोड़ागाड़ी हाँकने वाला । सारथी । ४ शूद्र पुरुष और क्षत्रिया स्त्री से उत्पन्न पुरुष । ५ दासीपुत्र । ६ ब्रह्मा । ७ मछली ।

क्षत्रः (न०)
क्षत्रम् (पु०) } १ अधिकार । प्रभुता । प्रधानता । शक्ति । २ क्षत्रिय जाति का पुरुष या क्षत्रिय जाति ।—अन्तकः, (पु०) परशुराम ।—धर्मः, (पु०) १ बहादुरी । वीरता । सैनिक शूरता । २ क्षत्रिय के अवश्य कर्त्तव्य कर्म ।—पः, (पु०) शासक । मण्डलेश्वर । सूबेदार ।—बन्धुः, (पु०) १ जाति का क्षत्रिय । २ केवल क्षत्रिय । दुष्ट या पापी क्षत्रिय । (यह गाली है) जैसे ब्रह्मबन्धु ।

क्षत्रियः (पु०) दूसरे वर्ण का पुरुष । राजपूत ।—हणः, (पु०) परशुराम ।

क्षत्रियका) (स्त्री०) १ क्षत्रिय वर्ण की स्त्री । २
क्षत्रिया } क्षत्रिय की पत्नी ।
क्षत्रियिका)

क्षत्रियाणी (स्त्री०) १ क्षत्रिय वर्ण की स्त्री । २ क्षत्रिय की पत्नी ।

क्षत्रियी (स्त्री०) क्षत्रिय की पत्नी ।

क्षंतृ } (वि०) [स्त्री०—क्षान्त्री,] धैर्यवान् । सहन
क्षन्तृ } शील । विनयी ।

क्षप् (धा० उभय०) [क्षपति—क्षपते, क्षपित] लंघन करना । (णिजन्त) [क्षपयति—क्षपयते, क्षपित] १ फेंक देना । भेजदेना । च्युत कर देना । २ चूक जाना ।

क्षपणः (पु०) बौद्ध सम्प्रदाय का भिक्षुक ।

क्षपणम् (न०) १ अशौच । सूतक । अशुद्धि । २ नाश । निर्वासन ।

क्षपणकः (पु०) बौद्ध या जैन भिक्षुक ।

क्षपणी (स्त्री०) १ जड । २ जाल ।

क्षपण्युः (पु०) अपराध । जुर्म ।

क्षपा (स्त्री०) १ रात । रजनी । २ हल्दी ।—अटः, (पु०) १ रात में घूमने वाला । २ राक्षस । पिशाच ।—करः,—नाथः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—घनः, (पु०) काला मेघ ।—चरः, (पु०) राक्षस । पिशाच ।

क्षम् (धा० आत्म०) [क्षमते, क्षम्यति, क्षान्त] या क्षमित] १ अनुज्ञा देना । परवानगी देना । २ क्षमा करना । माफ़ करना । धैर्य रखना । शान्त होना । प्रतीक्षा करना । ४ सहलेना । निर्वाह करना । ५ सामना करना । मुकाबिला करना । ६ (किसी काम करने) योग्य होना ।

क्षम (वि०) १ धैर्यवान् । २ सहनशील । विनयी । ३ उपयुक्त । योग्य । ४ उचित । ठीक । ५ सहने योग्य । सह लेने योग्य । ६ अनुकूल ।

क्षमा (स्त्री०) १ धैर्य । सहनशक्ति । माफी । २ पृथिवी । ३ दुर्गा देवी ।—जः, (पु०) मङ्गल ग्रह ।—भुज्,—भुज०, (पु०) राजा ।

क्षमितृ (वि०) [स्त्री०—क्षमित्री] } धैर्यवान्, ।
क्षमिन् (वि०) [स्त्री०—क्षमिनी] } सहनशील ।

क्षय. (पु०) १ घर । मकान । २ हानि । घटी । खराबी । ह्रास । कमी । ३ अन्त । नाश । समाप्ति ४ आर्थिक हानि । ५ (भाव का) गिराव । ६ स्थानान्तरित करण । ७ प्रलय । ८ क्षयी का रोग । ९ साधारणतः कोई भी रोग । १० बीजगणित में ऋण या बाकी ।—कर, (वि०) नाशक । नाश करने वाला ।—कालः, (पु०) १प्रलय का समय । २ घटती का समय ।—कासः (पु०) क्षयी मे उत्पन्न खाँसी ।—पक्षः, (पु०) अँधियारा पाख ।—युक्ति, (स्त्री०)—योगः, (पु०) नाश करने का अवसर ।—रोगः, (पु०) क्षयी का रोग ।—वायुः, (पु०) प्रलय कालीन पवन ।—संपट्, (स्त्री०) नितान्त हानि । सम्पूर्णतः हानि । सर्वनाश ।

क्षयथुः (पु०) क्षय रोग या उसकी खाँसी ।

क्षयिन् (वि०) [स्त्री०—क्षयिणी) १ विनाशक । नाशक । २ क्षयरोगग्रस्त । ३ विनश्वर । (पु०) चन्द्रमा ।

क्षयिष्णु (वि०) १ नाश करने वाला । [वाला । २ विनश्वर । टूटने फूटने वाला ।

क्षर् (धा० पर०) [क्षरति, क्षरित] यह सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार से प्रयुक्त होती है । १ बहना । फिसलना । २ भेजना । उड़ेलना । निकालना । ३ टपकना । चूना । रिसना । ४ नष्ट होना । ५ बेकार हो जाना । ६ अलग किया जाना । वञ्चित किया जाना । (णिजन्त)[क्षारयति] दोषी ठहराना । नश्वर । नाशवान् ।

क्षर (वि०) १ पिघला हुआ । २ जङ्गम । चर ।

क्षरं (न०) १ पानी । २ शरीर ।

क्षरः (पु०) बादल ।

क्षरणम् (न०) १ बहने की, चूने की, टपकने की, रिसने की क्रिया । २ पसीना लाने की क्रिया ।

क्षरिन् (पु०) वर्षा ऋतु ।

क्षल् (धा० उभय०) [क्षालयति—क्षालयते क्षालित] १ धोना । साफ कर देना । शुद्ध करना । धोना । माँजना । २ पोंछ डालना ।

क्षवः } (पु०) १ छींक । खाँसी ।
क्षवथुः }

क्षात्र (वि०) [स्त्री०—क्षात्री] क्षत्रिय सम्बन्धी या क्षत्रिय का ।

क्षात्रम् (न०) १ क्षत्रिय जाति । क्षत्रिय के कर्म ।

क्षांत, क्षान्त (व० कृ०) १ धैर्यवान । सहनशील । क्षमावान् । २ माफ किया हुआ ।

क्षांता, क्षान्ता (स्त्री०) पृथिवी ।

क्षांतु, क्षान्तु (वि०) धैर्यवान् । सहनशील ।

क्षांतुः, क्षान्तुः (पु०) पिता । जनक । बाप ।

क्षाम (वि०) १ झुलसा हुआ । जला हुआ । २ घटा हुआ । पतला । नष्ट किया हुआ । लटा हुआ । दुबला । ३ हल्का । थोडा । छोटा । ४ निर्बल । बलहीन ।

क्षार (वि०) काट करनेवाला । जलानेवाला । तेज़ । तीक्ष्ण । खारा । नमकीन ।—अच्छं, (न०) समुद्री निमक ।—अञ्जनम्, (न०) खारी अञ्जन या लेप ।—अम्बु, (न०) खारी रस ।—उदः,—उदकः,—उदधिः,—समुद्रः, (पु०) खारी समुद्र ।—त्रयं,—त्रितयम् (न०) सज्जी, शोरा और जवाखार (या सोहागा) ।—नदी, (स्त्री०) नरक की खारी पानी की नदी विशेष ।—भूमिः (स्त्री०)—मृत्तिका, (स्त्री०) लुनिया ज़मीन ।—मेलकः, (पु०) खारी पदार्थ ।—रसः, (पु०) खारी रस ।

क्षारं (न०) १ काला निमक । २ पानी । जल ।

क्षारः (पु०) १ रस । सार । २ शीरा । चोटा । राब । जूसी । ३ कोई भी तीक्ष्ण पदार्थ । ४ शीशा । ५ बदमाश । लुच्चा । ठग ।

क्षारकः (पु०) १ खार । २ रस । सार । ३ पिंजडा । टोकरी या जाल जिसमें पक्षी रखे जाते हैं । ४ धोबी । ५ फूल । कली ।

क्षारणम् (न०), क्षारणा (स्त्री०) अभिशाप । अभियोग । विशेष कर व्यभिचार या लम्पटता का ।

क्षारिका (स्त्री०) भूख ।

क्षारित (वि०) १ खारी पदार्थ मे छुड़ाया हुआ । २ लम्पटता का झूठा दोष लगाया हुआ ।

क्षालनं (न०) १ धोना । साफ करना । पखारना । २ छिड़कना ।

क्षालित (वि०) १ धुला हुआ । साफ किया हुआ । शुद्ध किया हुआ । २ पोंछा हुआ । झाड़ा हुआ ।

क्षि (धा० परस्मै०) [क्षयति, क्षित या क्षीण] १ गलना । नष्ट होना । २ शासन करना । हुकूमत करना । अधिकार जमाना ।—[क्षयति, क्षिणोति, क्षिणाति] १ नाश करना । बरबाद करना । बिगाड़ना । २ घटाना । ३ मार डालना, चोटिल करना । (णिजन्त) [क्षययति या क्षपयति) १ नाश करना । स्थानान्तरित करना । समाप्त करना । २ व्यतीत करना ।

क्षितिः (स्त्री०) १ पृथिवी । २ गृह । आवासस्थान । मकान । ३ हानि । नाश । ४ प्रलय ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) राजा ।—कणः, (पु०) धूल । रज ।—कम्पः, (पु०) भूचाल । भूडोल ।—क्षित्, (पु०) राजा । राजकुमार ।—जः, (पु०) १ वृक्ष । २ केचुआ । ३ मङ्गलग्रह । ४ नरकासुर ।—जम्, (न०) अन्तरिक्ष ।—जा, (स्त्री०) सीता जी ।—तलं, (न०) पृथिवी तल । ज़मीन की सतह ।—देवः, (पु०) ब्राह्मण ।—धरः, (पु०) पहाड़ ।—नाथः,—पः,—पतिः,—पालः,—भुज्, (पु०) रक्षिन्, (पु०) राजा । सम्राट् ।—पुत्रः, (पु०) मङ्गलग्रह ।—प्रतिष्ठ, (वि०) धरती पर बसनेवाला —भृत्, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।—मण्डलम्, (न०) भूमण्डल भूगोलक ।—रन्ध्रम्, (न०) गढ़ा । गर्त ।—रुह, (पु०) पेड़ । वृक्ष ।—वर्धनः, (पु०) शव । मुर्दा । मृतकशरीर । लाश ।—वृत्तिः, (स्त्री०) धैर्ययुक्त व्यवहार या आचरण । पृथिवी की गति ।—व्युदासः, (पु०) बिल ।

क्षिद्रः (पु०) १ रोग । २ सूर्य । ३ सींग ।

क्षिप (धा० उभय) [किन्तु जब इसके पूर्व अभि, प्रति, और अति जोड़े जाते हैं तब ही यह परस्मै० होती है ।] परस्मै० क्षिपति—क्षिपते, क्षिप्यति, क्षिप्त] १ फेंकना । पटकना । भेजना । रवाना करना । छोड़ना । मुक्त कर देना । रखना । स्थापित करना । ३ लगाना । अर्पित करना । ४ फेंक देना । ५ छीन लेना । नाश कर डालना । ६ खारिज कर देना । अस्वीकृत कर देना । घृणा करना । ७

अपमान करना। गाली देना। तिरस्कार करना। फटकारना।

क्षिपणं (न०) १ भेजना। पठाना। फेंकना। २ गाली गलोज।

क्षिपणि } (स्त्री०) १ डाँड। २ जाल। ३ हथियार।
क्षिपणी }

क्षिपणिः (स्त्री०) आघात। चोट। प्रहार।

क्षिपण्युः (पु०) १ शरीर। २ वसन्तऋतु।

क्षिपा (स्त्री०) १ रात। २ पठौनी। पटक। गिराव।

क्षिप्त (व० कृ०) १ फेंका हुआ। छितराया हुआ। घुमाया हुआ। पटका हुआ। २ त्यागा हुआ। ३ अनादृत ४ स्थापित। ५ पागल। सिड़ी।—कुक्कुरः, (पु०) पागल कुत्ता।—चित्त, (वि०) चञ्चलचित्त (वि०) विकल।—देह, (वि०) लेटा हुआ। पसरा हुआ।

क्षिप्तं (न०) गोली का घाव।

क्षिप्तिः (स्त्री०) कूटार्थ। पहेली का अर्थ।

क्षिप्र (वि०) [तुलनात्मक—क्षेपीयस्। क्षेपिष्ठ] फुर्तीला।—कारिन्, (वि०) फुर्तीला।

क्षिप्रं (अव्य०) तेजी से। फुर्ती से। जल्दी से।

क्षिया (स्त्री०) १ हानि। नाश। बरबादी। ह्रास। २ असभ्यता। आचारभेद।

क्षीजनम् (न०) पोले नरकुलों में से निकली हुई सरसराहट की आवाज़।

क्षीण (वि०) १ दुबला। पतला। लटा हुआ। घटा हुआ। खर्च कर डाला गया। २ नाज़ुक। पतला। ३ स्वल्प। थोड़ा। कम। ४ धनहीन। गरीब। ५ शक्तिहीन। निर्बल।—चन्द्रः, (पु०) कृष्णपक्ष का चन्द्रमा।—धन, (वि०) निर्धन। गरीब।—पाप, (वि०) पाप का फल भोगने के पीछे उस पाप से रहित।—पुण्य, (वि०) जिसका सञ्चित पुण्यफल पूरा हो चुका हो और जिसे अगले जन्म के लिये पुनः पुण्यफल सञ्चय करना चाहिये।—मध्य, (वि०) पतली कमर वाला।—वासिन्, (वि०) खड़हर में रहने वाला।—विक्रान्त, (वि०) साहस या शक्ति से रहित।—वृत्ति, (वि०) आजीविका से रहित।

क्षीबू, क्षीव देखो क्षीवू, क्षीव।

क्षीरं (न०) } १ दूध। २ किसी वृक्ष का दूध जैसा रस। ३ जल।—अदः, (पु०) बच्चा। शिशु।—अब्धिः, (पु०) दूध का समुद्र।—अब्धिजः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ मोती।—अब्धिजा,—अब्धितनया, (स्त्री०) लक्ष्मी।—आह्वः, (पु०) सनौवर का वृक्ष।—उदः, (पु०) दूध का समुद्र।—ऊर्मिः, (स्त्री०) दूध के समुद्र की लहर।—ओदनः, (पु०) दूध में उबले हुए चावल।—कण्टः, (पु०) बच्चा। शिशु।—जं, (न०) जमौआ दूध। जमा हुआ दूध।—द्रुमः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष। बरगद का पेड़।—धात्री, (स्त्री०) दूध पिलाने वाली दासी।—धिः,—निधिः, (पु०) दूध का समुद्र।—धेनुः, (स्त्री०) दुधार गाय।—नीरं, (न०) १ पानी और दूध। २ दूध सदृश जल। ३ मेल-मेल। मिलावट।—पः, (पु०) दूध पीने वाला बच्चा।—वारिः,—वारिधिः, (पु०) दूध का समुद्र।—विकृतिः, जमा हुआ दूध।—वृक्षः, (पु०) न्यग्रोध, उदुम्बर, अश्वत्थ और मधूक नाम के वृक्ष।—शरः, (पु०) १ मलाई। २ दूध का झाग या फेन।—समुद्रः, (पु०) दूध का समुद्र।—सारः, (पु०) मक्खन।—हिण्डीरः, (पु०) दूध का फेन।
क्षीरः (पु०) }

क्षीरिका (स्त्री०) खीर। दूध से बना खाद्य पदार्थ।

क्षीरिन् (वि०) दुधार। दूध देने वाला।

क्षीव् (धा० परस्मै०) [क्षीवति, क्षीव्यति] १ नशा में होना। मदिरा पान करना। २ थूकना। मुँह से निकालना।

क्षीव (वि०) उत्तेजित। नशे में चूर।

क्षु (धा० परस्मै०) [क्षौति, क्षुत] १ छींकना। २ खाँसना। खखारना।

क्षुण्ण (व० कृ०) १ कुचला हुआ। कूटा हुआ। २ अभ्यस्त। अनुगत। ३ चूर्ण किया हुआ।—मनस्, (वि०) पश्चात्ताप करने वाला।

क्षुत् (स्त्री०) }
क्षुतं (न०) } छींक।
क्षुता (स्त्री०) }

क्षुद् (धा० उभय०) [क्षुणत्ति, क्षुन्ते, क्षुण्ण] १ कुचलना। पैरों से रूंधना। पटकना।

कुचल डालना। पीस डालना। २ हिलना। उत्तेजित होना।

क्षुद्र (वि०) १ बिल्कुल छोटा। छोटा। ठिंगना। २ ओछा। कमीना। दुष्ट। नीच। ३ उद्दण्ड। ४ निष्ठुर। ५ ग़रीब। ६ कंजूस।

क्षुद्रल (वि०) मिहीन। छोटा। (पशुओं और रोगों के लिये इस शब्द का प्रयोग विशेष रूप से होता है।)

क्षुद्रा (स्त्री०) १ मधुमक्षिका। २ कर्कशा स्त्री। ३ लंजी औरत। ४ वेश्या। रंडी।—अञ्जनम्, (न०) रोग विशेष में व्यवहार किये जाने वाला सुर्मा।—अंत्रः, (पु०) हृदय के भीतर का छोटासा रन्ध्र।—उलूकः, (पु०) उल्लू।—कम्बुः, (पु०) छोटा शङ्ख।—कुष्ठं, (न०) एक प्रकार की हल्की कोढ़।—घण्टिका, (स्त्री०) १ घुंघरू। रौना। २ बजनी करधनी।—चन्दनम्, (न०) लाल-चन्दन की लकड़ी।—जन्तुः, (पु०) कोई भी क्षुद्र जीव।—दंशिका, (स्त्री०) डाँस। गोम-क्षिका।—बुद्धि, (वि०) ओछी बुद्धि का। कमीना।—रसः, (पु०) शहद।—रोगः, (पु०) मामूली बीमारी। आयुर्वेद में इस प्रकार की ४४ बीमारियाँ गिनायी गयी हैं।—शङ्खः, (पु०) छोटा घोंघा।—सुवर्णं, (न०) खोटा या हल्का सोना।

क्षुध् (धा० पर०) [क्षुध्यति, क्षुधित] भूखा होना। भूख लगना।

क्षुध्, क्षुधा (स्त्री०) भूख।—आर्त,—आविष्ट, (वि०) भूख से पीडित।—क्षाम, (वि०) भूखे रहते रहते दुबला हो जाना।—पिपासित, (वि०) भूखा प्यासा।—निवृत्तिः, (स्त्री०) भूख का दूर होना। पेट भरना।

क्षुधालु (वि०) भूखा।

क्षुधित (वि०) भूखा।

क्षुपः (पु०) झाड़ी। झाड़।

क्षुभ् (धा० आत्म०) [क्षोभते, क्षुभ्यति, क्षुभ्नाति, क्षुभित—क्षुब्ध] १ काँपना। थरथराना। उत्तेजित होना। विकल होना। २ अस्थिर होना। ठोकर खाना।

क्षुभित (वि०) १ काँपता हुआ। व्याकुल। २ भयभीत। ३ क्रुद्ध।

क्षुब्ध (वि०) १ उत्तेजित। विकल। २ घबड़ाया हुआ। ३ भयभीत।

क्षुब्धः (पु०) १ मथानी। स्त्रीमैथुन का विधान विशेष।

क्षुमा (स्त्री०) अलसी। एक प्रकार का सन।

क्षुर् (धा० परस्मै०) [क्षुरति, क्षुरित] १ काटना। खरोंचना। २ हल से खेत में रेखाएँ सी खींचना। रेखा खींचना।

क्षुरः (पु०) १ छुरा। अस्तुरा। २ छुरेनुमा शरपत्र। ३ गौ का खुर। घोड़े का सुम। ४ तीर।—कर्मन्, (न०)—क्रिया, (स्त्री०) हजामत।—चतुष्टयं, (न०) हजामत के लिये आवश्यक चार वस्तुएँ।—धानं,—भाण्डम्, (न०) उस्तरे का घर। नाऊ की पेटी।—धार, (वि०) छुरे की तरह पैना।—प्रः, (पु०) १ घोड़े के सुम के आकार की नोंक वाला तीर। २ कुदाली। फावड़ी।—मर्दिन्,—मुण्डिन्, (पु०) नाई। हज्जाम।

क्षुरिका, क्षुरी (स्त्री०) १ चक्कू। छुरी। कटार। २ छोटा अस्तुरा।

क्षुरिणी (स्त्री०) हज्जाम की पत्नी। नाईन। नाउन।

क्षुरिन् (पु०) हज्जाम। नाऊ। नाई।

क्षुल्ल (वि०) छोटा। कम। स्वल्प।

क्षुल्लक (वि०) १ थोड़ा। छोटा। विहीन। २ नीच। पापी। ३ तुच्छ। ४ निर्धन। ६ दुष्ट। कलुषित हृदय का। युवा।

क्षेत्रं (न०) १ खेत। २ स्थावर सम्पत्ति। भूमि। ३ स्थान। प्रान्त। गोदाम। ४ तीर्थस्थान। ५ चारों ओर से घेरा हुआ चौगान। ६ उर्वरा भूमि। जर-खेज़ ज़मीन। ७ उत्पत्तिस्थान। ८ भार्या। ९ शरीर। १० मन। ११ घर। क़सबा। १२ क्षेत्र। रेखागणित की एक शक्ल। [जैसे त्रिभुज।] १३ अङ्कित क्षेत्र। चित्र।—अधिदेवता, (स्त्री०) किसी पवित्र स्थल का अधिष्ठातृ या रक्षक देवता।—आजीवः, (पु०)—करः, (पु०) किसान। खेतिहर।—गणितं, (न०) क्षेत्ररेखा। गणित।—गत (वि०) रेखा-गणित सम्बन्धी या भूमि की नापजोख सम्बन्धी।

—ज, (वि०) १ क्षेत्रोत्पन्न। २ शरीरोत्पन्न। -जः, (पु०) १२ प्रकार के पुत्रों में से एक। नियोग द्वारा उत्पन्न पुत्र।—जात, (वि०) दूसरे की भार्या में उत्पन्न किया हुआ पुत्र।—ज्ञ, (वि०) १ स्थलों का जानकार। २ चतुर। दक्ष।—ज्ञः, (पु०) १ जीवात्मा। २ परमात्मा। ३ अधर्मी। दुराचारी मनमौजी। ४ किसान।—पतिः, (पु०) जमीन-दार।—पदं, (पु०) किसी देवता के उद्देश्य से उत्सर्ग किया हुआ पवित्र स्थल।—पालः, (पु०) १ खेत का रखैया या रखवाला। २ देवता विशेष जो खेत की रखवाली करता है। ३ शिव जी की उपाधि।—फलं, (न०) खेत की लंबाई चौड़ाई का माँप।—भक्तिः, (स्त्री०) खेत का विभाग।—भूमिः, (स्त्री०) भूमि जिसमें खेती की जाती है।—विद्, (वि०) क्षेत्रज्ञ। (पु०) १ किसान। २ आध्यात्मिक ज्ञान सम्पन्न विद्वान। ३ जीवात्मा।—स्थ, (वि०) पवित्र स्थल में रहने वाला।

क्षैत्रिक (वि०) [स्त्री०—क्षैत्रिकी] क्षेत्र सम्बन्धी।

क्षैत्रिकः (पु०) १ किसान। २ जोता।

क्षैत्रिन् (पु०) १ कृषक। २ (नाममात्र का) जोता। ३ जीवात्मा। ४ परमात्मा।

क्षेत्रिय (वि०) १ खेत सम्बन्धी। २ असाध्य।

क्षेत्रियम् (न०) १ आभ्यन्तरिक रोग। २ चरागाह। गोचरभूमि।

क्षेत्रियः (पु०) लम्पट। व्यभिचारी।

क्षेपः (पु०) १ उछालना। फेंकना। पटकना। घूमना। अवयवों का चालन। २ फेंक। पटक। ३ भेजना। रवाना करना। ४ दे पटकना। ५ भङ्ग करना। (नियम) तोड़ना। ६ व्यतीत कर डालना। ७ विलम्ब। दीर्घसूत्रता। ८ तिरस्कार अपशब्द। ९ अपमान। अप्रतिष्ठा। १० अभिमान। घमण्ड। ११ गुलदस्ता।

क्षेपक (वि०) १ फेंकने वाला। भेजने वाला। २ मिलावटी। बीच में घुसेड़ा हुआ। ३ अपमान-कारक। गालीगलौज वाला।

क्षेपकः (पु०) मिलावटी या बनावटी भाग। किसी ग्रन्थ का वह अँश जो मूलग्रन्थकार का न हो कर अन्य किसी ने मूलग्रन्थकार के नाम से स्वयं बना कर ग्रन्थ में जोड़ दिया हो। पुस्तक में ऊपर से मिलाया हुआ पाठ।

क्षेपणम् (न०) १ फेंकना। डालना। भेजना। बत-लाना। २ व्यतीत करना। ३ छोड़ जाना। ४ गाली देना। ५ गुफना या गोफन नामक एक यंत्र जिसमें रख कर कङ्कण दूर तक फेंका जाता है।

क्षेपणिः / क्षेपणी (स्त्री०) १ डाँड। २ मछली पकड़ने का जाल। ३ गोफ या गुफना जिससे कंकण दूर तक फेंके जाते हैं।

क्षेम (वि०) १ सुरक्षित। प्रसन्न। २ सुखी। नीरोग।

क्षेमः (पु०) / क्षेमम् (न०) १ शान्ति। प्रसन्नता। चैन। सुख। नीरोगता। २ अनामय। निर्विघ्नता। रक्षा। ३ रक्षित। सुरक्षित। ४ जो वस्तु पास है उसका रक्षण। ५ मोक्ष। अनन्तसुख। (पु०) एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।—कर, (=क्षेमंकर) (वि०) शुभ। मङ्गलकारी।

क्षेमिन् (वि०) [स्त्री०—क्षेमिणी] सुरक्षित। आनन्दित।

क्षै (धा० परस्मै०) [क्षायति, क्षाम] बरबाद करना। दुर्बल होना। नष्ट करना।

क्षैण्यं (न०) १ नाश। २ दुबलापन।

क्षैत्रं (न०) १ खेतों का समूह। २ खेत।

क्षैरेय (वि०) [स्त्री०—क्षैरेयी] १ दुधार। दूध वाला। २ दूध सम्बन्धी।

क्षोडः (पु०) हाथी बाँधने का खूँटा।

क्षोणिः / क्षोणी (स्त्री०) १ भूमि। २ एक की संख्या।

क्षोतृ (पु०) मूसल। बट्टा। घन।

क्षोदः (पु०) १ घुटाई। पिसाई। २ सिल या उखली। ३ रज। धूल। कण।—क्षम्, (वि०) जाँच, अनुसन्धान या परीक्षा में ठहरने योग्य।

क्षोदिमन् (पु०) सूक्ष्मता।

क्षोभः (पु०) १ हिलाना। चलना। उछालना। २ झटका देना। ३ उत्तेजना। घबड़ाहट। उत्पात। उचंग।

क्षोभणं (न०) उत्तेजना। भड़क।

क्षोभणः (पु०) कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

खट्वा (स्त्री० १ खाट । चारपाई । सेज । पलका । २ हिंडोला । झूला । झूलन खटोला ।—अङ्गिनः, (पु०) १ लकड़ी या डंडा जिसकी मूँठ में खोपड़ी जड़ी हो । यह शिव जी का हथियार समझा जाता है और उनके अनुयायी गुँसाईं साधु उसे अपने पास रखते हैं । २ दिलीप राजा का दूसरा नाम ।—अंगधर,—अंगभृत्, (पु०) शिव जी की उपाधियाँ ।—आप्लुत,—आरूढ, (वि०) १ नीच । पापी । २ परित्यक्त । दुष्ट । ३ मूढ़ । मूर्ख ।

खट्वाका } (स्त्री०) खटोला । छोटी खाट ।
खट्विका }

खडः (पु०) तोड़ना । विभाजित करना ।

खडिका } (स्त्री०) खड़िया चाक । मिट्टी ।
खडी }

खड्गं (न०) लोहा ।

खड्गः (पु०) १ तलवार । २ गैंड़े का सींग । ३ गैंड़ा ।—आघातः, (पु०) तलवार का घाव ।—आधरः, (पु०) म्यान । परतला ।—आमिषं, (न०) भैंसे का मांस ।—आह्वः, (पु०) गैंड़ा ।—कोशः, (पु०) म्यान । परतला ।—धरः, (पु०) तलवार चलाने वाला योद्धा ।—धेनुः,—धेनुका, (स्त्री०) १ छोटी तलवार । २ गैंड़े की माता ।—पत्रं, (न०) तलवार की धार ।—पिधानं,—पिधानकम्, (न०) म्यान । परतला ।—पुत्रिका, (स्त्री०) छुरी । चाकू । छोटी तलवार ।—प्रहारः, (पु०) तलवार का आघात ।—फलं, (न०) तलवार की धार ।

खड्गवत् (वि०) तलवार से सज्जित ।

खड्गिकः (पु०) १ तलवार से लड़ने वाला योद्धा । तलवारबंद सिपाही । २ क़साई । बूचड़ ।

खड्गिन् (वि०) [स्त्री०—खड्गिनी] तलवारबंद । (पु०) गैंड़ा ।

खड्गीकं (न०) हंसिया । दराँती ।

खंड् } (धा० परस्मै०) [खण्डयति, खण्डित] १ तोड़ना । काटना । चीरना । फाड़ना । टुकड़े टुकड़े कर डालना । चूर्ण कर डालना । २ भली भाँति हरा देना । नाश करना । ३ हताश करना । विफल करना । ४ गड़बड़ करना । उपद्रव मचाना । ५ ठगना । धोखा देना ।
खण्ड् }

खंडं, खण्डम् (न०) } १ ऐंडा । नक़्व । दरार । खंडः, खण्डः (पु०) } साँस । सन्धि । छूट । हड्डी का टूटना । २ टुकड़ा । भाग । हिस्सा । अँश । ३ अध्याय । सर्ग । ४ समूह । समुदाय । झुंड । (पु०) १ खाँड । चीनी । २ रत्न का दोष । (न०) १ एक प्रकार का निमक । २ एक प्रकार का गन्ना ।—अभ्रं, (न०) १ बिखरे हुए बादल । २ भोगविलास में लगा हुआ । दांतों से काटने का निशान ।—आलिः, (स्त्री०) १ तेल का एक नाँप । २ सरोवर या झील । ३ स्त्री जिसका पति नमकहरामी के लिये अपराधी ठहराया गया हो ।—कथा, (स्त्री०) छोटी कहानी ।—काव्यं, (न०) छोटा पद्यात्मक ग्रन्थ जैसे मेघदूत । खण्डकाव्य की परिभाषा साहित्यदर्पणकार ने यह दी है ।—

खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारि च ॥

—जः, (पु०) एक प्रकार की चीनी ।—धारा, (स्त्री०) कैंची । कतरनी । कतन्नी ।—परशुः, (पु०) १ शिव जी की उपाधि । २ परशुराम जी की उपाधि ।—पर्शुः, १ शिव । २ परशुराम । ३ राहु । ४ हाथी, जिसका एक दाँत टूटा हो ।—पाल, (पु०) हलवाई ।—प्रलयः, (पु०) छोटी प्रलय जिसमें स्वर्ग के नीचे के समस्त लोक नष्ट हो जाते हैं ।—मोदकः, (पु०) ओले । लड्डू ।—लवणं, (न०) निमक विशेष ।—विकारः, (पु०) खाँड । चीनी ।—शर्करा, (स्त्री०) बूरा । मिश्री ।—शीला, (स्त्री०) पुंश्चली स्त्री । छिनाल औरत । व्यभिचारिणी पत्नी ।

खंडकः (पु०) } टुकड़ा । अंश । भाग ।
खण्डकः (पु०) } (पु०) १ शक्कर ।
खंडकं, खण्डकम् (न०) } खांड़ । २ नखरहित ।

खंडन, खण्डन (वि०) १ तोड़ा हुआ । टूटा हुआ । कटा हुआ । विभाजित । २ नष्ट किया हुआ ।

खंडनं, खण्डनम् (न०) १ तोड़ना । टुकड़े टुकड़े करना । काट डालना । २ काटना । चोटिल करना । घायल करना । ३ हताश करना । व्यर्थ

कर देना। ४ बाधा डालना। ५ धोखा देना। ६ किसी की दलीलों को काट देना। ७ विप्लव। विरोध। ८ विसर्जन। बरख़ास्तगी।

खंडलः, खण्डलः (पु०) } टुकड़ा।
खंडलं, खण्डलम् (न०) }

खंडशस्, खण्डशस् (अव्यया०) टुकड़े टुकड़े। टुकड़ों में।

खंडित, खण्डित (व० कृ०) १ कटा हुआ। टुकड़े टुकड़े किया हुआ। २ नष्ट किया हुआ। ३ (बहस में) हराया हुआ। (बहस में) उत्तर दिया हुआ। ४ विप्लव किया हुआ। बिगड़ा हुआ।—विग्रह, (वि०) अंगहीन। अंगभग्न।—वृत्त, (वि०) असदाचारी। दुराचारी। भ्रष्ट।

खंडिता } (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति अन्यत्र
खण्डिता } रात बिताता हो। आठ मुख्य नायिकाओं में से एक।

खंडिनी, खण्डिनी (स्त्री०) पृथिवी।

खंदिकाः, खन्दिकाः (बहुवचन) भुना हुआ या तला हुआ अनाज।

खदिरः (पु०) १ कत्था का वृक्ष। २ इन्द्र। ३ चन्द्रमा।

खन् (धा० उ०) [खनति-खनते, खात, खन्यते, या खायते) खोदना।

खनकः (पु०) १ खोदने वाला। २ सेंध फोड़ने वाला। ३ मूसा। ४ खाना।

खननम् (न०) १ खुदाई। २ गाड़ना।

खनिः }
खनी } (स्त्री०) खान।

खनित्रं (न०) फाँवड़ा। कुदाली।

खपुरः (पु०) सुपारी का पेड़।

खर (वि०) मृदु, श्लक्ष्ण, द्रव का उल्टा। १ कड़ा। रूखा। ठोस। २ तेज़। तीक्ष्ण। कठोर। ३ खट्टा। तीता। ४ सघन। घना। ५ हानिकारक। अवगुणकारी। ६ तेज़ धार वाला। ७ गरम। उष्ण। ८ निष्ठुर। नृशंस।—अंशुः,—करः,—रश्मिः, (पु०) सूर्य।—कुटी, (स्त्री०) १ गधों का अस्तबल। २ नाई की दूकान।—कोणः,—काणः, (पु०) तीतर विशेष।—कोमलः, (पु०) ज्येष्ठमास।—गृहं,—गेहं, (न०) गधों के लिये अस्तबल।—दण्डम्, (न०) कमल।—ध्वंसिन्, (पु०) श्रीराम जी की उपाधि।—नादः, (पु०) गधा की रेंक।—नालः, (पु०) कमल।—पात्रं, (न०) लोहे का वर्तन।—पालः, (पु०) काठ का वर्तन।—प्रियः, (पु०) कबूतर।—यानं, (न०) गधे की गाड़ी यानी गाड़ी जिसमें गधे जुते हो।—शब्दः, (पु०) गधे का रेंकना। २ समुद्री गिद्ध। लग्घड़।—शाला, (स्त्री०) गधों का अस्तबल।—स्वरा, (स्त्री०) जंगली चमेली।

खरः (पु०) १ गधा। २ खच्चर। ३ काक। ४ एक राक्षस का नाम जो रावण का भाई था।

खरिका (स्त्री०) पिसी हुई मुश्क या कस्तूरी।

खरिंधम—खरिन्धम } (वि०) गधी का दूध
खरिंधय—खरिन्धय } पीने वाला।

खरी (स्त्री०) गधी।—जंघः, (पु०) शिवजी की उपाधि।—वृषः, (पु०) गधा। मूर्ख।

खरु (वि०) १ सफेद। २ मूर्ख। मूढ़। ३ निर्दयी। ४ वर्जित वस्तुओं का अभिलाषी।

खरुः (पु०) १ घोड़ा। २ दाँत। ३ घमंड। ४ कामदेव। ५ शिव। (स्त्री०) वह लड़की जो अपना पति स्वयं पसंद करे।

खर्ज् (धा० परस्मै०) [खर्जति, खर्जित] १ कष्ट देना। बेचैन करना। २ चर्राना। चर्राना। चूँचूँ करना।

खर्जनम् (न०) खरोचना। छीलना।

खर्जिका (स्त्री०) १ जननेंद्रिय सम्बन्धी रोग विशेष। २ चाट। चसका।

खर्जुः (स्त्री०) १ खरोचन। छीलन। २ खजूर का पेड़। ३ धतूरे का झाड़।

खर्जुरं (न०) १ चाँदी। २ हरताल।

खर्जूः (स्त्री०) खाज। खुजली।

खर्जूरं (न०) १ चाँदी। २ हरताल।

खर्जूरः (पु०) १ खजूर का वृक्ष। २ बिच्छू।

खर्जूरी (स्त्री०) खजूर का पेड़।

खर्परः (पु०) १ चोर। २ गुंडा। ठग। ३ खप्पर। खोपड़ी। ५ खपरा। ६ छाता।

खर्परिका, खर्परी (स्त्री०) एक प्रकार का सुर्मा।

खर्व—खर्व् (क्रि०) [खर्वति, खर्वित] १ जाना । हरकत करना । २ अकड़ना ।

खर्व—खर्वः (वि०) १ अंगभग । अपूर्ण । २ ठिगना । कदाकार । नीचा । छोटा । (कद में)

खर्वः—खर्वः (पु०) } दस अरब की संख्या ।
खर्व—खर्व (न०) } —शाख, (वि०) ठिंगना । कदाकार । बोना ।

खर्वटः (पु०) } १ हाट । पैंठ । २ पहाड़ की तराई
खर्वटम् (न०) } का ग्राम ।

खल् (धा० परस्मै०) [खलति, खलित] १ हिलना कॉंपना । २ एकत्र करना । इकट्ठा करना ।

खलः (पु०) } १ खलिहान । २ ज़मीन । स्थल । ३
खलम् (न०) } स्थान । जगह । ४ धूल का ढेर । ५ तलछट । नीचे बैठी हुई कीचड़ । (पु०) दुष्ट मनुष्य ।—उक्तिः, (स्त्री०) गाली ।—धान्यं, (न०) खलिहान ।—पूः, (पु० स्त्री०) मेहतर । बटोरने वाला ।—मूर्तिः, (पु०) पारा । संसर्गः, (पु०) दुष्ट की सङ्गति ।

खलकः (पु०) घड़ा ।

खलति (वि०) गंजा ।

खलतिकः (पु०) पहाड़ ।

खलिः } (स्त्री०) तेल की तलछट । कीट । काइट ।
खली } खरी ।

खलिनः—खलीनः (पु०) } लगाम । रास ।
खलिनम्—खलीनम् (न०) }

खलिनी (स्त्री०) खलिहानों का समूह ।

खलीकारः (पु०) } १ चोटिल करना । घायल
खलीकृतिः (स्त्री०) } करना । २ बुरा व्यवहार करना । ३ दुष्टता । उत्पात ।

खलु (अव्यया०) १ निश्चय, वास्तविकता, और यथार्थता बोधक अव्यय । २ मिन्नत । आर्जू । प्रार्थना । विनय । ३ अनुसंधान । ४ वर्जन । मनाई । निषेध । ५ हेतु । [कभी कभी यह वाक्यालङ्कार की तरह भी व्यवहार में लाया जाता है ।

खलुज् (पु०) अंधियारा । अंधेरा ।

खलूरिका (स्त्री०) परेड । मैदान जहाँ सैनिक लोग क़वाइद करें तथा अस्त्रप्रयोग का अभ्यास करें ।

खल्या (स्त्री०) खलिहानों का समूह ।

खल्लः (पु०) १ खरल जिसमें डाल कर कोई वस्तु कूटी जाय । चक्की । २ खड्डा । गढ़ा । ३ चमड़ा । ४ चातक पक्षी । ५ मसक ।

खल्लिका (स्त्री०) कढ़ाई ।

खल्लिट } (वि०) गंजा ।
खल्लीट }

खल्वाट (वि०) गंजा ।

खशः (बहुवचन० पु०) उत्तर भारत में पहाड़ी एक देश और उस देश के अधिवासी ।

खशीरः (बहुवचन० पु०) देश विशेष और उसके अधिवासी ।

खष्पः (पु०) १ क्रोध । २ निष्ठुरता । नृशंसता ।

खसः (पु) १ खाज । खुजली । २ देश विशेष ।

खसूचिः (पु० स्त्री०) निन्दाव्यञ्जक शब्द यथा " वैयाकरणखसूचिः " । वैयाकरण जो व्याकरण को भूल गया हो । व्याकरण को भली भाँति न जानने वाला ।

खसखसः (पु०) पोस्ते के दाने ।—रसः, (पु०) अफीम । अहिफेन ।

खाजिकः (पु०) भुना हुआ अनाज ।

खाद्—खात् (अव्यया०) गला साफ करते समय का शब्द । खखार ।

खाटः (पु०) } अर्थी । टिक्ठी जिस पर रख
खाटा (स्त्री०) } कर मुर्दे को श्मशान पर ले
खाटिका (स्त्री०) } जाते हैं ।
खाटी (स्त्री०) }

खांडवः—खाण्डवः (पु०) मिश्री । कंद ।

खांडवम्—खाण्डवम् (न०) इन्द्र के एक वन का नाम जो कुरुक्षेत्र के समीप था और जिसे अर्जुन और श्रीकृष्ण की सहायता से अग्निदेव ने भस्म किया था ।—प्रस्थः (पु०) एक नगर का नाम ।

खांडविकः—खाण्डविकः } (पु०) हलवाई ।
खांडिकः—खाण्डिकः }

खात (वि०) १ खुदा हुआ । २ फटा हुआ । टूटा फूटा ।

खातम् (न०) १ गढ़ा । गर्त । २ रन्ध्र । सूराख । छेद । ३ खनन । खुदाई । ४ तालाब जो लंबा अधिक और चौड़ा कम हो ।—भूः, (स्त्री०) नगर के या किले के चारों ओर जल से भरी खाई ।

खातकः (पु०) १ खोदने वाला। बेलदार। २ कदुआ। कर्ज़दार।

खातकं (न०) खाई। गढ़ा। गर्त।

खाता (स्त्री०) कृत्रिम तालाब।

खातिः (स्त्री०) खुदाई।

खात्रं (न०) १ फदुआ। कुदाली। २ लंबा अधिक और चौड़ा कम तालाब। ३ डोरा। ४ वन। जंगल। ५ भय।

खाद् (धा० परस्मै०) [खादति, खादित] खाना। भक्षण करना। शिकार करना। काटना।

खादक (वि०) [स्त्री०—खादिका] खाने वाला। निवटाने वाला।

खादकः (पु०) कर्जदार। ऋणी। कदुआ।

खादनं (न०) १ खाना। चबाना। २ भोज्य पदार्थ।

खादनः (पु०) दाँत। दन्त।

खादुक (वि०) [स्त्री०—खादुकी] उत्पाती। [उपद्रवी।

खाद्यम् (न०) भोज्यपदार्थ। खाना।

खादिर (वि०) [स्त्री—खादिरी,] खदिर यानी कत्था के वृक्ष से बना हुआ या तत् वृक्ष सम्बन्धी।

खानं (न०) १ खुदाई। २ चोट।—उदकः, (पु०) नारियल का वृक्ष।

खानक (वि०) [स्त्री०—खानिका] खोदने वाला। बेलदार। खान खोदने वाला।

खानिः (स्त्री०) खानि।

खानिकं (न०) } कूप का छेद। कूप की दरार
खानिकः (स्त्री० } या सन्धि।

खानिलः (पु०) घर में सेंध लगाने वाला चोर।

खार } (स्त्री०) १२ मन ३२ सेर की अनाज
खारिः खारी } की तौल विशेष।

खार्वा (स्त्री०) त्रेता युग।

खिखिरः—खिङ्खिरः (पु०) १ लोमड़ी। २ चारपाई मचवा या पाया।

खिद् (धा० परस्मै०) [खिदति, खिन्न] ठोंकना। दबाना। दुःख देना। सताना। (आत्मने०) [खिद्यते, खिन्ते, खिन्न,] सन्तप्त होना। पीड़ित होना। थक जाना। सुस्त या उदास हो जाना। डराना। भय दिखाना।

खिदिरः (पु०) १ संन्यासी। फकीर। २ मोहताज। भिखमंगा। ३ चन्द्रमा। [पीड़ित।

खिन्न (व० कृ०) सन्तप्त। उदास। ग़मगीन। दुःखी।

खिलं (न०) } १ बजर ज़मीन का टुकड़ा। मरु-
खिलः (पु०) } भूमि का एक खत्ता। २ अतिरिक्त भजन जो मूलभजनसंग्रह में न आया हो। ३ त्रुटिपूरक। परिशिष्ट भाग। ४ संग्रह। ५ शून्यता। खोखलापन।

खुंगाहः,—खुङ्गाहः (पु०) काला टटुआ या घोड़ा।

खुरः (पु०) १ (गाय आदि का) खुर। २ सुगन्ध द्रव्य विशेष। ३ छुरा। उस्तुरा। ४ खाट का पाया।—आघातः,—क्षेपः, (पु०) लात।—णस्,—णास, (वि०) चपटी नाक वाला।—पदवी, (स्त्री०) घोड़े के पैरों के चिन्ह।—प्रः, (पु०) तीर जिसकी नोंक या फल अर्द्ध चन्द्राकार हो।

खुरली (स्त्री०) सैनिक क्वायद या अस्त्र-चालन का अभ्यास।

खुरालकः (पु०) लोहे का तीर।

खुरालिकः (पु०) १ छुरा रखने का घर या केस। २ लोहे का तीर। ३ तकिया।

खुल्ल (वि०) छोटा। कम। नीच। ओछा।—तातः, (पु०) पिता का छोटा भाई। छोटा चाचा।

खेचर देखो खचर।

खेटः (पु०) १ गाँव। २ कफ। ३ बलराम का मूसल। ४ घोड़ा।

खेटितानः } (पु०) वैतालिक जो अपने मालिक को गा
खेटितालः } बजा कर जगावे।

खेटिन् (पु०) मनमौजी। भ्रष्ट।

खेदः (पु०) १ उदासी। शिथिलता। सुस्ती। २ थकावट। ३ पीड़ा। शोक।

खेयं (न०) गढ़ा। खाई।

खेयः (पु०) पुल।

खेल् (धा० परस्मै०) [खेलति, खेलित] १ हिलाना। इधर उधर घूमना। २ काँपना। खेलना।

खेल (वि०) खिलाड़ी। कामी। कामुक।

खेलनं (न०) १ हिलना डुलना। २ खेल। आमोद-प्रमोद। ३ अभिनय।

खेला (स्त्री०) क्रीडा । खेल ।
खेलिः (स्त्री०) १ क्रीड़ा । खेल । २ तीर ।
खोटिः (स्त्री०) चालाक या नटखट स्त्री ।
खोड (वि०) लंगड़ा । लूला ।
खोर } खोल } (वि०) लंगडा । लूला ।
खोलकः (पु०) १ पुरवा । गाँव । २ बाँबी । ३ सुपाड़ी का छिलका । ४ डेगची विशेष ।
खोलिः (पु०) तरकस ।
ख्या (धा० परस्मै०) [ख्याति, ख्यात] कहना । बतलाना । बखान करना । [ख्यायते] प्रसिद्ध होना [(निजन्त) ख्यापयति-ख्यापयते] १ प्रसिद्ध करना । ३ उद्घोषित करना । २ कहना । वर्णन करना । तारीफ करना । प्रशंसा करना ।
ख्यात (व० कृ०) १ जाना हुआ । २ उक्त । कहा हुआ । ३ प्रसिद्ध । मशहूर । बदनाम ।—गर्हण, (वि०) बदनाम ।
ख्यातिः (स्त्री०) १ प्रसिद्धि । शोहरत । गौरव । कीर्ति । २ सञ्ज्ञा । पदवी । उपाधि । ३ वर्णन । ४ प्रशंसा । ५ (दर्शन में) ज्ञान ।
ख्यापनम् (न०) १ वर्णन । प्रकाशन । व्यक्तकरण । प्रकट करना । २ प्रसिद्ध करना । कीर्ति फैलाना ।

ग

ग संस्कृत या नागरी वर्णमाला का तीसरा व्यञ्जन । कवर्ग का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारणस्थान कण्ठ्य है । इसको स्पर्शवर्ण कहते हैं ।
ग (वि०) केवल समास में पीछे आता है और वहाँ इसका अर्थ होता है कौन, कौन जाता है, हिलने वाला । जाने वाला । होने वाला । ठहरने वाला । रहने वाला । मैथुन करने वाला ।
गं (न०) गीत । भजन ।
गः (पु०) १ गन्धर्व । गणेश जी । छन्दः शास्त्र में गुरु अक्षर के लिये चिन्ह ।
गगनम् } गगणम् } (न०) [किसी किसी के मतानुसार गगणम् रूप अशुद्ध है ।

फाल्गुने गगने फेने णत्वमिच्छन्ति बर्बराः ।

अर्थात् फाल्गुन, गगन और फेन शब्दों में जङ्गली लोग न की जगह ण लगाते हैं] १ आकाश । अन्तरिक्ष । २ शून्य । सिफर । ३ स्वर्ग । —अग्रं, (न०) सब से ऊँचे ऊर्ध्वलोक ।—अंगना, (स्त्री०) अप्सरा । परी । किन्नरी ।—अध्वगः, (पु०) १ सूर्य । २ ग्रह । ३स्वर्गीय जीव ।—अम्बु, (न०) वृष्टिजल ।—उल्मुकः, (पु०) मङ्गलग्रह ।—कुसुमं,—पुष्पं, (न०) आकाश का फूल (असम्भाव्य वस्तु) ।—गतिः, (पु०) १ देवता । २ स्वर्गीय जीव । ३ ग्रह ।—चर, (गगनेचर भी) (वि०) आकाश में चलने वाला ।—चरः, (पु०) १ पक्षी । २ ग्रह । ३ स्वर्गीय आत्मा ।—ध्वजः, (पु०) १ सूर्य । २ बादल ।—सद्, (पु०) आकाशवासी या अन्तरिक्ष में बसने वाला । (पु०) स्वर्गीय जीव ।—सिन्धु, (स्त्री०) गङ्गाजी की उपाधि ।—स्थ, -स्थित, (वि०) आकाश में टिका हुआ ।—स्पर्शनः, (पु०) १ पवन । हवा । २ अष्ट मारुतों में से एक का नाम ।
गंगा } गङ्गा } (स्त्री०) भारतवर्ष की पुण्यतोया प्रसिद्ध नदी ।—अम्बु,—अम्भस्, (न०) १गङ्गाजल । २ आश्विन मास की वृष्टि का निर्मल जल । —अवतारः, (पु०) १ गङ्गाजी का भूलोक में आगमन । २ तीर्थस्थलविशेष ।—उद्भेदः, (पु०) गङ्गाजी के निकलने का स्थान । गङ्गोत्री ।—क्षेत्रं, (न०) गङ्गाजी और उसके दोनो तटों से दो दो कोस का स्थान ।—जः (पु०) २ कार्तिकेय ।—दत्तः, (पु०) भीष्मपितामह ।—द्वारं, (न०) वह स्थान जहाँ गङ्गाजी पहाड़ छोड़ मैदान में आती हैं । हरिद्वार —धरः, (पु०) १ शिवजी । २ समुद्र ।—पुत्रः, (पु०) १ भीष्म । २ कार्तिकेय ।

३ दोगला। वर्णसङ्कर विशेष। इस जाति के पुरुष मुर्दे ढोया करते हैं। ४ गङ्गा के घाटों पर बैठ कर यात्रियों से पुजवाने वाले। घाटिया।—भृत्, (पु०) १ शिव। २ समुद्र।—यात्रा, (स्त्री०) १ गङ्गाजी को जाना। २ मरणासन्न पुरुष को मरने के लिये गङ्गातट पर लेजाना।—सागरः, (पु०) वह स्थान, जहाँ गङ्गाजी समुद्र में गिरती हैं।—सुतः, (पु०) १ भीष्म। २ कार्तिकेय।—ह्रदः, (पु०) एक तीर्थ का नाम।

गंगाका, गङ्गाका
गंगका, गङ्गका
गंगिका, गङ्गिका } (स्त्री०) श्री गङ्गाजी।

गंगोलः, गङ्गोलः (पु०) रत्न विशेष जिसे गोमेद भी कहते हैं।

गच्छः (पु०) १ वृक्ष। २ अङ्कगणित का पारिभाषिक शब्द विशेष।

गज् (धा० परस्मै०) [गजति, गजित] १ शोर करना। गर्जना। २ नशे में होना। घबड़ा जाना।

गजः (पु०) १ हाथी। २ आठ की संख्या। ३ लंबाई नापने का माप विशेष जो दो हाथ का होता है।

"धाधारणनरांगुलया त्रिंशदंगुलको गजः।"

४ राक्षस जिसे शिव जी ने मारा था।—अग्रणी, (पु०) १ सर्वोत्तम हाथी। २ ऐरावत की उपाधि।—अधिपतिः, (पु०) गजराज।—अध्यक्षः, (पु०) हाथियों का दारोगा।—अपसदः, (पु०) दुष्ट हाथी।—अशनः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष।—अशनं, (न०) कमल की जड़।—अरिः, (पु०) १ सिंह। २ गज नामी राक्षस के मारने वाले शिवजी।—आजीवः, (पु०) महावत।—आननः, आस्यः, (पु०) गणेश जी।—आयुर्वेद, (पु०) हाथियों की चिकित्सा का शास्त्र।—आरोहः, (पु०) महावत।—आह्वं, —आह्वयम्, (न०) हस्तिनापुर नगर का नाम।—इन्द्रः, (पु०) १ गजराज। २ ऐरावत।—इन्द्रकर्णः, (पु०) शिव जी।—कूर्माशिन्, (पु०) गरुड जी।—गतिः, (स्त्री०) १ हाथी जैसी चाल। मदमाती चाल। २ गजगामनी स्त्री।—गामिनी, (स्त्री०) हाथी जैसी चाल से चलनेवाली स्त्री।—दघ्न,—द्वयस, (वि०) हाथी जितना लाँबा या ऊँचा। दन्तः, (पु०) १ हाथी का दाँत।—२ गणेश जी। ३ हाथीदाँत का। ४ खूँटी। कील या ब्रेकेट (जो दीवाल पर लटका दिया जाता है)।—दन्तमय, (वि०) हाथी दाँत का बना हुआ।—दानं, (न०) १ हाथी का मद। २ हाथी का दान।—नासा, (स्त्री०) हाथी की कनपटी। पतिः, (पु०) १ हाथी का स्वामी। २ बड़ा ऊँचा गजराज। ३ सर्वोत्तम हाथी।—पुङ्गवः, (पु०) गजराज।—पुरं, (न०) हस्तिनापुर नगर।—बंधनी,—बंधिनी, (स्त्री०) गजशाला।—भक्षकः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष।—मण्डनम्, (न०) हाथी के माथे पर बनाई हुई रङ्ग बिरङ्गी रेखाएँ। हाथी का शृङ्गार।—मण्डलिका,—मण्डली, (स्त्री०) हाथियों की मण्डली।—माचलः, (पु०) सिंह।—मुक्ता (स्त्री०)—मौक्तिकं, (न०) गज के मस्तक से निकलने वाला मोती।—मुखः,—वक्त्रः,—वदनः (पु०) गणेश जी।—मोटनः (पु०) सिंह। शेर।—यूथं, (न०) हाथियों का झुंड।—योधिन्, (वि०) हाथी की पीठ पर बैठ कर लड़ने वाला।—राजः, (पु०) हाथियों में सर्वोत्कृष्ट हाथी।—व्रजः, (पु०) हाथियों की एक टोली।—साह्वयम्, (न०) हस्तिनापुर।—स्नानम्, (न०) हाथी का स्नान। (आलं०) व्यर्थ का काम। जिस प्रकार हाथी स्नान कर पुनः सूँड में भर सूखी मिट्टी अपने ऊपर डाल कर स्नान व्यर्थ कर डालता है; उसी प्रकार कोई काम करके पुनः वह खराब कर डाला जाय, तो उस कार्य को गजस्नानवत् कार्य कहते हैं।

गजता (स्त्री०) हाथियों का समूह।

गजवत् (वि०) १ हाथी की तरह। २ हाथी रखनेवाला।

गंज्
गञ्ज् } (धा० परस्मै०) [गञ्जति] विशेष रूप से शब्द करना।

गंजः
गञ्जः } १ खान। २ खजाना। ३ गोशाला। ४ गञ्ज। अनाज की मण्डी। ५ अवज्ञा। तिर-

स्कार ।—जा, (स्त्री०) १ झोंपड़ी । मढ़ैया । छप्पर । २ मदिरा की दूकान । ३ मदिरापात्र ।

गंजन } (वि०) १ अत्यधिक घृणित । लज्जित किया
गञ्जन } हुआ । २ विजयी ।

गंजा } (स्त्री०) १ झोंपड़ी । २ कलारी । शराब की
गञ्जा } दूकान । ३ पानपात्र ।

गंजिका } (स्त्री०) कलारी । शराब की दूकान ।
गञ्जिका }

गड् (धा० परस्मै०) [गडति, गडित] १ चुआना । २ खींचना । रस निकालना ।

गडः (पु०) १ पर्दा । टट्टी । २ हाता । ३ खाई । ४ रोकथाम । अटकाव । ५ सुनहले रङ्ग की मछली । —उत्थं,—देशजं,—लवणं, (न०) सेंधा निमक ।

गडयंतः }
गडयन्त } (पु०) बादल । मेघ ।
गडयित्नुः }

गडिः (न०) १ बछड़ा । २ सुस्त बैल ।

गडु (वि०) कुबड़ा ।

गडुः (पु०) १ कूबड़ । २ बर्छी । भाला । साँग । ३ निरर्थक वस्तु ।

गडुक (पु०) १ झारी । लोटा । जलपात्र । २ अंगूठी ।

गडुर } (वि०) कुबड़ा । झुका हुआ ।
गडुल }

गडेरः (पु०) बादल । मेघ ।

गडोल (पु०) १ मुँह भर । २ कच्ची खाँड ।

गडुरः } (पु०) मेढ़ । मेष ।
गडुल }

गडुरिका (स्त्री०) १ मेढ़ों की कतार । २ अविच्छिन्न रेखा । धार ।

गडुक (पु०) सोने का गडुआ या पात्र विशेष ।

गण् (धा० उभय०) [गणयति-गणयते, गणित] १ गिनना । गणना करना । गिन्ती करना । २ जोड़ना । हिसाब लगाना । ३ तख़मीना करना । अन्दाज़ा लगाना । ४ श्रेणीवार रखना । ५ ख्याल करना । ६ लगाना । (टोप) ७ ध्यान देना ।

गणः (पु०) १ झुण्ड । गिरोह । समूह । हेड़ । टोली । दल । २ श्रेणी । कक्षा । ३ नौकरों की टोली । ४ शिव जी के गण । ५ एक उद्देश्य के लिये बनी हुई मनुष्यों की संस्था । ६ एक सम्प्रदाय । ७ सैनिकों की एक छोटी टोली । ८ संख्या । ९ पाद (कविता में) । १० व्याकरण में एक श्रेणी की धातुएँ यथा भ्वादिगण । ११ गणेश जी का नाम ।—अग्रणी, (पु०) गणेश जी ।—अचलः, (पु०) कैलास पर्वत का नाम ।—अधिपः,—अधिपतिः, (पु०) १ शिव जी । २ गणेश जी । ३ सेनापति । गुरु । यूथप या यूथपति ।—अन्नं, (न०) कई आदमियों के खाने योग्य बनाया हुआ भोज्य पदार्थ ।—अभ्यन्तर, (वि०) दल या समुदाय में से एक ।—अभ्यन्तरः, (पु०) किसी धार्मिक संस्था का नेता या मुखिया । —ईशः, (पु०) १ गणेश,—ईशानः,—ईश्वरः, (पु०) १ गणेश । २ शिव ।—उत्साहः, (पु०) गैंडा ।—कारः, (पु०) १ श्रेणीबद्ध करने वाला । २ भीम की उपाधि ।—चक्रकं, (न०) धर्मात्माओं की पंक्ति या ज्योनार ।—तिथ, (वि०) दल या टोली बनाने वाला ।—देवताः, (पु०) देव समूह । अमरकोशकार ने इनकी गणना यह बतलायी है —

> आदित्यविश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिलाः ।
> महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥

अर्थात १२ आदित्य, १० विश्वदेव, ८ वसु, ४९ वायु, १२ साध्य, ११ रुद्र, ३६ तुषित, ६४ आभास्वर, २२० महाराजिक ।—द्रव्यं, (न०) सार्वजनिक सम्पत्ति ।—धरः, (पु०) १ एक श्रेणी या संस्था का मुखिया । २ पाठशालीय अध्यापक ।—नाथः,—नायकः, (पु०) १ गणेश जी । २ शिव जी ।—नायिका, (स्त्री०) दुर्गादेवी ।—पः, —पतिः,—(पु०) शिव जी अथवा गणेशजी । —पीठकं, (न०) वक्षस्थल । छाती ।—पुङ्गवः, (पु०) १ जाति का या श्रेणी का मुखिया । (बहुवचन) एक देश और उसके अधिवासी ।—पूर्व , (पु०) किसी जाति या श्रेणी का मुखिया ।—भर्तृ, (पु०) १ शिव जी का नाम । २ गणेश जी का नाम । ३ श्रेणी का मुखिया ।—भोजन, (न०) पंगति । ज्योनार । भोज ।—राज्यं, (न०)

दक्षिण की एक रियासत का नाम ।—हासः, हासक, (पु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष ।

गणक (वि०) [स्त्री०—गणिका] बड़ा मूल्य देकर खरीदा हुआ ।

गणकः (पु०) १ अङ्कगणित का जाननेवाला । २ ज्योतिषी । दैवज्ञ ।

गणकी (स्त्री०) ज्योतिषी की स्त्री ।

गणनं (न०) १ गिनती । हिसाब किताब । २ जोड़ । ३ कल्पना । विचार । ४ विश्वास ।

गणना (स्त्री०) गिनती । किताब ।—महामात्रः (पु०) अर्थसचिव । [क्रम से ।

गणशस् (अव्यया०) समूह में । टोली में । श्रेणी के

गणिः (स्त्री०) गिनती । गणना । [पुष्प विशेष ।

गणिका (स्त्री०) १ रण्डी । वेश्या । २ हथिनी । ३

गणित (वि०) १ गिना हुआ । संख्या डाला हुआ । जोड़ा घटाया हुआ । २ ध्यान दिया हुआ ।

गणितं (न०) १ गणना । गिनती । २ अङ्कगणित, जिसके अन्तर्गत पाटीगणित या व्यक्तगणित, बीजगणित, और रेखागणित सम्मिलित हैं । ३ जोड़ ।

गणितिन् (पु०) १ जिसने गणना की हो । २ अङ्कगणित का जानने वाला ।

गणिन् (वि०) [स्त्री०—गणिनी,] किसी का झुंड या दल रखनेवाला । (पु०) अध्यापक । शिक्षक ।

गणेय (वि०) गिनती करने योग्य । गिनने योग्य ।

गणेरुः (पु०) कर्णिकार वृक्ष । (स्त्री०) १ रंडी । २ हथिनी ।

गणेरुका (स्त्री०) १ कुटनी । २ चाकरानी । दासी ।

गंडः, गण्डः (पु०) १ गाल । २ हाथी की कनपुटी । ३ बुद्बुद । बबूला । बुल्ला । ४ फोड़ा । गिल्टी । गुमड़ा । मुहासा । सूजन । ५ घेघा । गरदन की बीमारी विशेष । ६ गाँठ । जोड़ । ७ चिन्ह । दाग । धब्बा । ८ गैंडा । ९ मूत्रस्थली । १० वीर । योद्धा । ११ घोड़े के साज का अंश विशेष ।—अंगः, (पु०) गैंडा ।—उपधानं, (न०) तकिया । मसनद ।—कुसुमं, (न०) हाथी का मद ।—कूपः, (पु०) पर्वतशिखर पर का कूप या कुआँ ।—देशः,—प्रदेशः (पु०) गाल ।—फलकं, (न०) चौड़ा गाल ।—मालः. (पु०) —माला, (स्त्री०) रोग विशेष । वह रोग जिसमें गरदन में माला की तरह गिल्टियाँ निकलती हैं । —मूर्ख, वि०) वज्रमूर्ख । महामूर्ख ।—शिला, (स्त्री०) १ एक बड़ी भारी चट्टान जिसे भूडोल या तूफान ने नीचे गिरा दिया हो । २ माथा ।—साह्वया (स्त्री०) गण्डकी नदी का नाम । स्थलं, (न०)—स्थली, (स्त्री०) १ गाल । २ हाथी की कनपुटी ।

गंडकः, गण्डकः (पु०) १ गैंडा । २ रोक । अड़चन । बाधा । ३ गाँठ । ग्रन्थि । ४ चिन्ह । धब्बा । दाग । ५ फोड़ा । गुमड़ा । गुमड़ी । मुंहासा । ६ वियोग । विरह । ७ चार कौड़ी के मूल्य का सिक्का विशेष ।—वती, (स्त्री०) गण्डकी नदी ।

गंडका, गण्डका (स्त्री) डला । डली । मेला । मेली । लौंदा । चक्का । ढोंका । ढेला ।

गंडकी, गण्डकी (स्त्री०) एक नदी का नाम जो गङ्गा में गिरती है ।—पुत्रः, (पु०),—शिला, (स्त्री०) शालग्राम शिला ।

गंडलिन्, गण्डलिन् (पु०) शिव जी का नाम ।

गंडिः, गण्डिः (पु०) पेड़ का तना या धड़ । जड़ से ले कर उस स्थान तक का भाग जहाँ से डालियों का निकलना आरम्भ होता है ।

गंडिका, गण्डिका (स्त्री०) पत्थर विशेष ।

गंडीरः, गण्डीरः (पु०) शूरवीर ।

गंडुः, गण्डुः (पु० स्त्री०) १ तकिया । ३ जोड़ । गाँठ । ग्रन्थि ।—पदः, (पु०) कीट विशेष ।

गंडूषः, गण्डूषः, गंडूषा, गण्डूषा (स्त्री०) १ मुँह भर । २ अञ्जली भर । ३ हाथी की सूंड की नोक ।

गंडोलः, गण्डोलः (पु०) १ कच्ची शक्कर । २ मुँहभर ।

गत (व० कृ० (गम् का) १ गया हुआ । सदैव के लिये गया हुआ । २ बीता हुआ । गुजरा हुआ । ३ मृत । मरा हुआ । ४ आया हुआ । पहुँचा हुआ । ५ अवस्थित । स्थापित । अव-

लम्बित । ६ गिरा हुआ । कम किया हुआ । ७ सम्बन्धी । विषय का ।—अन्त, (वि०) अन्धा । नेत्रहीन । -अध्वस्, १ वह जिसने अपनी यात्रा पूरी कर डाली हो । २ अभिज्ञ । अवगत । (स्त्री०) चतुर्दशी युक्त अमावस्या । —अनुगतं, (न०) किसी रीति या रस्म का अनुयायी या माननेवाला ।—अनुगतिक, (वि०) अँधअनुयायी ।—अन्तः, (वि०) वह जिसकी समाप्ति आ पहुँची हो ।—अर्थ, (वि०) १ निर्धन । गरीब । २ अर्थहीन ।—असु, – जीवित,—प्राण, (वि०) मृत । मरा हुआ । —आधि, (वि०) निश्चिन्त । प्रसन्न ।—आयुस, (वि०) बूढ़ा । अपाहज । अशक्त ।—आर्तवा, (स्त्री०) जच्चा ।—उत्साह, (वि०) शिथिल । उदास । उत्साहहीन ।—कल्मष, (वि०) पाप या दोष से मुक्त । पवित्र ।—क्लम, (वि०) सरोताज़ा । चेतन, (वि०) मूर्छित । बेहोश ।—दिनं (अव्यया०) बीता हुआ कल्ल ।—प्रत्यागत, (वि०) जाकर लौटा हुआ ।—प्रभ, (वि०) मंदा । धुंधला । कुम्हलाया हुआ ।—प्राण, (वि०) मृत । मरा हुआ ।—प्राय, (वि०) लगभग गुजरा हुआ । मरा हुआ ।—भर्तृका, (स्त्री०) विधवा । रॉड । प्रोषित भर्तृका । वह स्त्री जिसका पति विदेश गया हो ।—लक्ष्मीक, (वि०) प्रभाहीन । चमक रहित । धुंधला । कुम्हलाया हुआ ।—वयस्कं, (वि०) बूढ़ा ।—वर्षः, (पु०)—वर्षं (न०) बीता हुआ वर्ष ।—वैर, (वि०) मेल मिलाप किये हुए । सन्धि किये हुए । —व्यथ, (वि०) पीड़ा रहित ।—सत्व, (वि०) १मृत । मरा हुआ । २ नीच । ओछा ।—सन्नकः, (वि०) हाथी जिसके मद न चूता हो ।—स्पृह, (वि०) साँसारिक अनुराग से रहित ।

गतिः (स्त्री०) १ चाल । हरकत । गमन । २ प्रवेश । ३समाई । जगह । विस्तार । ४ पथ । मार्ग । रास्ता । ५ गमन । पहुँचना । प्राप्ति । ७ फल । परिणाम । ८ हालत । दशा । परिस्थिति । ९ उपाय । ज़रिया । १० पहुँच । शरण स्थान । बचाव । ११ उत्पत्ति स्थान । निकास । १२ मार्ग । पथ । १३ जलूस । यात्रा । १४ कर्मफल । नतीजा । १५ भाग्य । प्रारब्ध । १६ नक्षत्र पथ । १७ नक्षत्र की चाल विशेष । १८ नासूर । घाव । भगंदर । १९ ज्ञान । बुद्धि । २० पुनर्जन्म । २१ आयु की भिन्न दशाएँ । यथा—शैशव, यौवन, बुढ़ापा आदि ।—अनुसरः, (पु०) दूसरे के पीछे चलना । दूसरे के मार्ग पर गमन करना ।—भङ्गः, (पु०) निवृत्ति । निवारण । प्रतिबन्ध ।—हीन, (वि०) बेबस । असहाय । अनाथ ।

गत्वर (वि०) [स्त्री० - गत्वरी] १चर । जङ्गम । चलने-वाला । २ नश्वर । नाशवान ।

गद् (धा० परस्मै०) [गदति, गदित] १ ऐसे बोलना जिससे समझ पड़े । २ गणना करना ।

गदं (न०) एक प्रकार का रोग ।

गदः (पु०) १भाषण । वक्तृता । २ वाक्य । ३ रोग । ४ गर्ज । गड़गड़ाहट । अगदौ, (द्विवचन) अश्विनीकुमार ।—अग्रणी, (स्त्री०) सब रोगों का सरदार अर्थात् क्षय रोग ।—अम्बरः, (पु०) बादल ।—अरातिः, (पु०) दवा ।

गदयित्नु (वि०) १ बातूनिया । बकवादी । २ कामी । लम्पट ।

गदयित्नुः (पु०) कामदेव का नाम ।

गदा (स्त्री०) काठ या लोहे का अस्त्र विशेष ।—अग्रजः, (पु०) श्रीकृष्ण का नाम ।—अग्र-पाणि, (वि०) दहिने हाथ में गदा लेनेवाला । —धरः, (पु०) विष्णु भगवान की उपाधि । —भृत, (पु०) गदा से युद्ध करने वाला । (पु०) विष्णु भगवान की उपाधि ।—युद्धं, (न०) गदा की लड़ाई ।—हस्त, (वि०) गदास्त्र से सज्जित ।

गदिन (वि०) [स्त्री०—गदिनी,] १ गदा लिये हुए । २ रोगी । बीमार । (पु०) विष्णु की उपाधि ।

गद्गद (वि०) हकला । रुक रुक कर बोलने वाला । —स्वरः, (पु०) १ हकलाने की बोली । २ भैंसा ।

गद्गदः (पु०) हकलाना । तुतलाना ।

गद्गदं (न०) हकला कर बोलना ।

गद्य (स० का कृ०) बोलने को । कहने को ।

गद्यं (न०) पद्य नहीं । वार्तिक । वह रचना जिसमें कविता या पद्य न हो ।

गद्याणकः, गद्यानकः, गद्यालकः (पु०) ४१ घुंघची या रत्ती भर की तौल।

गंतृ, गन्तृ (वि०) [स्त्री०—गन्त्री,] १ जाने वाला। २ स्त्री के साथ मैथुन करने वाला।

गंत्री, गन्त्री (स्त्री०) बैलगाड़ी।

गंध्र, गन्ध्र (धा० आत्म०) [गन्धयते] १ घायल करना। २ माँगना। ३ जाना।

गंधः, गन्धः (पु०)। १ बू। बास। २ सुगन्ध पदार्थ। ३ गन्धक। ४ घिसा हुआ चन्दन। ५ सम्बन्ध। रिश्ता। पड़ोसी। ६ घमण्ड। अकड़।—अश्मा, (स्त्री०) जंगली नीबू का वृत्त।—अश्मन्, (पु०) गन्धक।—आखु, (पु०) छछून्दर।—आढ्यः, (पु०) नारंगी का पेड़।—आढ्यम्, (न०) चन्दन काष्ठ।—इन्द्रियं, (न०) नाक। नासिका।—इभः,—गजः,—द्विपः,—हस्तिन्, (पु०) सर्वोत्तम हाथी।—उत्तमा, (स्त्री०) शराब। मदिरा।—ओतुः, (पु०) गन्धगोकुला। जीव-विशेष।—कालिका,—काली, (स्त्री०) वेद व्यासजी की माता का नाम।—केलिका,—चेलिका, (स्त्री०) कस्तूरी। मुश्क।—सी, (स्त्री०) नाक।—धूलिः, (स्त्री०) कस्तूरी।—नकुलः (पु०) छछून्दर।—नालिका,—नाली, (स्त्री०) नाक। नासिका।—निलया, (स्त्री०) एक प्रकार की चमेली।—पः, (पु०) पितृगण विशेष।—पलाशिका, (स्त्री०) हल्दी।—पाषाणः, (पु०) गन्धक।—पुष्पा, (स्त्री०) नील का पौधा।—पूतना, (स्त्री०) बालग्रह विशेष।—फली, (स्त्री०) १ प्रियङ्गुलता। २ चम्पा के वृत्त की फली।—बन्धुः, (पु०) आम का पेड़।—मादनः, (पु०) १ भौंरा। २ गन्धक।—मादनम्, (न०) मेरु पर्वत के पूर्व एक पर्वत जिसमें महकदार अनेक वन हैं।—मादनी, (स्त्री०) शराब।—मादिनी, १ (स्त्री०) लाख। चपड़ा।—मार्जारः (पु०) मुश्कबिलाई।—मुखा,—मूषिक, (पु०)—मूषी, (स्त्री०) छछूंदर।—मृगः, (पु०) १ मुश्कबिलाई। २ मुश्कहिरन। कस्तूरीमृग।—मैथुनः, (पु०) साँड। बैल।—मोदनः, (पु०) गन्धक।—मोहिनी, (स्त्री०) चंपा की कली।—राजः, (पु०) चमेली।—राजम्, (न०) चन्दन।—लता, (स्त्री०) प्रियङ्गु की बेल।—लोलुपा, (स्त्री०) भ्रमर। मधुमक्षिका।—वहः, (पु०) पवन। हवा।—वहा, (स्त्री०) नासिका। नाक। वाहकः, (पु०) १ पवन। हवा। २ कस्तूरीमृग।—वाही, (स्त्री०) नाक।—विह्वलः, (पु०) गेहूँ।—वृत्तः, (पु०) साल का पेड़।—व्याकुलं, (न०) कक्कोल।—शुण्डिनी, (स्त्री०) छछूंदरी।—शेखरः, (पु०) मुश्क। कस्तूरी।—सोमं, (न०) सफेद कमोदिनी।

गंधकः, गन्धकः (पु०) गन्धक।

गंधनम्, गन्धनम् (न०) १ अध्यवसाय। सततचेष्टा। २ चोट। घाव। ३ प्राकट्य। प्रकाशन। ४ सूचना। सङ्केत। इशारा।

गंधवती, गन्धवती (स्त्री०) १ भूमि। पृथिवी। २ शराब। ३ व्यास माता सत्यवती। ४ चमेली की जातियाँ।

गंधर्वः, गन्धर्वः (पु०) १ देवताओं के गवैया। २ गवैया। ३ घोड़ा। ४ मुश्कहिरन। कस्तूरीमृग। ५ मृत्यु के बाद और जन्म के पूर्व की जीव की दशा। ६ काली कोयल।—नगरं,—पुरं, (न०) गन्धर्वों की पुरी।—राज, (पु०) गन्धर्वों के राजा चित्ररथ।—विद्या, (स्त्री०) सङ्गीत विद्या।—विवाहः, (पु०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक। इस प्रकार का विवाह युवक और युवती के पारस्परिक प्रेमबंधन पर ही निर्भय है। युवक युवती को न तो अपने किसी सगे सम्बन्धी से अनुमति लेने की आवश्यकता पड़ती है और न कोई रीतिरस्म अदा करने की ज़रूरत ही होती है।—वेदः, (पु०) चार उपवेदों में से एक। यह सामवेद का उपवेद है।—हस्तः, (पु०)—हस्तकः, (पु०) अंडी या रेंडी का रूख।

गंधारः, गन्धारः (पु०) [बहुवचन] १ देश विशेष और उसके अधिवासी। २ राग विशेष। ३ सिन्दूर।

गन्धाली } (स्त्री०) १ बरैंया । २ सतत सुगन्ध
गंधाली } देने वाला पदार्थ विशेष ।—गर्भः (पु०) छोटी इलायची ।

गंधालु } (वि०) सुवासित । सुराधित ।
गन्धालु }

गंधिक } (वि०) १ सुगन्धियुक्त । २ अल्प परि-
गन्धिक } माण का ।

गंधिकः } (पु०) १ गन्धी । इत्रफरोश । २ गन्धक ।
गन्धिकः }

गभस्ति (पु० स्त्री०) १ प्रकाश की किरण । २ चन्द्रमा या सूर्य की किरण ।—करः,—पाणिः,—हस्तः, (पु०) सूर्य ।

गभस्ति (पु०) सूर्य । स्त्री । अग्निपत्नी स्वाहा की उपाधि ।

गभस्तिमत् (पु०) सूर्य । (न०) पाताल के सप्त विभागों में से एक ।

गभीर (वि०) १ गहन । गहरा । २ गुप्त । रहस्यमय । ४ दुर्बोध । ५ गाढा । सघन । घना ।—आत्मन्, (पु० न०) परब्रह्म ।—वेध, (वि०) वेधकारी ।

गभीरिका (स्त्री०) बडा ढोल जिसमें बडा गंभीर शब्द हो ।

गभोलिकः (पु०) गोल छोटा तकिया ।

गम् (धा० परस्मै०) [गच्छति, गत (निजन्त) गमयति । आत्म० जिगांसते] १ जाना । २ प्रस्थान करना । रवाना होना । ३ पहुँचना । समीपागमन । ४ गुज़रना । व्यतीत होना । ५ होना ।

गम (वि०) [समास के अन्त में जोडा जाता है जैसे "हृदयङ्गम" "पुरोगमा" आदि और तब इसका अर्थ होता है] जाते हुए । पहुँचते हुए । प्राप्त होते हुए ।—आगमः, (पु०) जाना आना ।

गमः (पु०) १ गमन २ प्रस्थान । ३ आक्रमणकारी का कूच । ४ मार्ग । रास्ता । ५ अविवेक । ६ कम समझ पाना । ७ स्त्रीमैथुन । ८ चौपड का खेल ।

गमक (वि०) [स्त्री—गमिका] १ सूचक । सङ्केत-कारी । स्मारक । २ विश्वासोत्पादक ।

गमनम् (न०) १ गमन । चाल । गति । २ समीपा-गमन । ३ आक्रमणकारी का कूच । ४ भोगना । ५ प्राप्ति । उपलब्धि । ६ स्त्रीमैथुन ।

गमिन् (वि०) जाने वाला । जाने की इच्छा रखने वाला । गमनेच्छु । (पु०) यात्री ।

गमनीय, गम्य (स० का० कृ०) १ समीप जाने योग्य । २ बोधगम्य । सहज में समझने योग्य । ३ उपलक्षित । अन्तर्भुक्त । ध्वनित । तात्पर्य द्वारा आगत । ४ उपयुक्त । वाञ्छनीय । योग्य । ५ मैथुन के योग्य । ६ आरोग्य होने योग्य ।

गंभारिका, गम्भारिका } (स्त्री०) एक वृक्ष का
गंभारी, गम्भारी } नाम ।

गंभीर, } (वि०) १ (हरेक अर्थ में) गहरा । २
गम्भीर, } गम्भीर शब्द वाला (जैसे ढोल) । ३ गाढा । सघन । घना (जैसे जंगल) । ४ प्रगाढ़ । अगाध । विचक्षण । ५ संगीन । गुरुतर । वास्तविक । दृढ़ । गुप्त । रहस्यमय । ७ दुरभिगम्य । कठिनता से समझने योग्य ।—वेदिन्, (वि०) विकल । बेचैन ।

गंभीरः } (पु०) १ कमल । २ नीबू । चकोतरा ।
गम्भीरः } बिजौरा ।

गंभीरा—गम्भीरा । } (स्त्री०) एक नदी का
गंभीरिका—गम्भीरिका } नाम ।

गय. (पु०) १ गया प्रदेश और उसके निवासी । २ एक असुर का नाम ।

गया (स्त्री०) बिहार प्रान्त के एक नगर का नाम, जहाँ सनातनधर्मी अत्यन्त प्राचीन काल से अपने पितरों का उद्धार करने को जाते हैं ।

गर (वि०) [स्त्री०—गरी] १ निगलने योग्य ।—अधिका, (स्त्री०) लाक्षा कीट । लाख या लाल रंग जो लाक्षा या लाख से निकलता है ।—घ्नी, (स्त्री) मछली विशेष ।—द (वि०) ज़हर देने वाला । विष खिलाने वाला ।—दं, (न०) ज़हर । विष ।—व्रत, (पु०) मयूर । मोर ।

गरः (पु०) १ पेय । शरबत । २ रोग । बीमारी । ३ निगलना । लीलना ।

गरं (पु०) } १ ज़हर । विष । २ प्रतिषेधक । विष-
गरः (न०) } नाशक वस्तु । ज़हरमोहरा । (न०) तर करना । भिगोना ।

गरणं (न०) १ निगलने की क्रिया । २ छिड़काव । ३ ज़हर । विष ।

गरभः (पु०) १ बच्चादानी । गर्भाशय ।

गरलं (न०) } १ विष। हलाहल। ज़हर। २ साँप का
गरल (पु०) } विष। घास का गट्ठा।—अरिः, (पु०) पन्ना। हरे रंग की मणि विशेष।

गरित (वि०) विष मिला हुआ। विष दिया हुआ।

गरिमन् (पु०) १ भार। गुरुता। २ महत्व। विशेषता। गौरव। ३ उत्तमता। ४ शिवजी की अष्टसिद्धियों में से एक जिसके अनुसार वे स्वेच्छापूर्वक अपने शरीर को जितना चाहे उतना बड़ा या भारी बना सक्ते हैं। [महत्त्व पूर्ण।

गरिष्ठ (वि०) १ सब से अधिक भारी। २ सर्वाधिक

गरीयस् (वि०) अपेक्षा कृत भारी। अपेक्षाकृत महत्व पूर्ण।

गरुडः (पु०) १ पक्षिराज। २ गरुडाकार भवन। ३ गरुड़ के आकार का व्यूह।—अग्रजः, (पु०) अरुण जो गरुड जी के बड़े भाई और सूर्य के सारथी हैं।—अङ्कः, (पु०) विष्णु का नाम। —अङ्कितम्,—अश्मन्,—ध्वजः, (पु०) विष्णु की उपाधि।—व्यूहः, (पु०) विशेष प्रकार से युद्ध के लिये सेना को खड़ा करना।

गरुत् (पु०) १ पक्षी का पर। २ भोजन करना। निगलना।—योधिन्, (पु०) लवा। बटेर।

गरुत्मः (पु०) पक्षिराज गरुड़।

गर्गः (पु०) १ ब्रह्मा के पुत्रों में से एक पुत्र। मुनि विशेष। २ साँड़। ३ केंचुआ। (बहुवचन०) गर्ग के वंशधर। गर्गगोत्री।—स्रोतस्, (न०) एक तीर्थ का नाम।

गर्गरः (पु०) १ भँवर। २ बाजा विशेष। ३ मछली विशेष। ४ मथानी।

गर्गरी (स्त्री०) मथानी। गगरी।

गर्गाटः (पु०) एक प्रकार की मछली।

गर्ज् (धा० परस्मै०) [गर्जति, गर्जयति—गर्जयते, गर्जित] १ गर्जना। गुर्राना। घुरघुराना। २ सिंहनाद करना। कड़कना।

गर्जनं (न०) १ गर्ज। चिंघार। गड़गड़ाहट। घुरघुराहट। २ रव। चीत्कार। शोरगुल। कोलाहल। ३ रोष। क्रोध। ४ युद्ध। लड़ाई। ५ भर्त्सना। धिक्कार। फिटकार।

गर्जः (पु०) १ हाथी की चिंघार। २ बादलों की गड़गड़ाहट।

गर्जा (स्त्री०) } बादलों की गरजन।
गर्जि (पु०) }

गर्जित् (वि०) गरजता हुआ। सिंहनाद करता हुआ।

गर्जितम् (न०) मदमाता और चिंघारता हुआ हाथी।

गर्त (न०) } पोल। छेद। गुफा। (पु०) १ कमर
गर्तः (पु०) } या कूल्हा का भाग विशेष। २ रोग विशेष। ३ त्रिगर्त देश का प्रान्त विशेष।—आश्रयः, (पु०) चूहे की तरह भूमि में बिल बना कर रहनेवाला जन्तु।

गर्तिका (स्त्री०) जुलाहे का कारखाना।

गर्द् (धा० परस्मै०) [गर्दति, गर्दयति — गर्दयते] गरजना। रव करना।

गर्दभं (न०) सफेद कुमोदिनी।

गर्दभः (पु०) [स्त्री०—गर्दभी] १ गधा। २ गंध। बास।—अण्डः,—अण्डकः, (पु०) १ वृक्ष विशेष। २ वृक्ष।—आह्वयं, (न०) सफेद कमल।—गदः, (पु०) चर्मरोग विशेष।

गर्धः (पु०) १ कामना। इच्छा। उत्सुकता। २ लालचीपन। लालच।

गर्धन् } (वि०) लालची। लोभी।
गर्धित }

गर्धिन् (वि०) [स्त्री—गर्धिनी] १ अभिलाषी। इच्छुक। लालची। २ उत्सुकता पूर्वक अनुसरण।

गर्भः (पु०) गर्भाशय। पेट। २ गर्भाशय की झिल्ली। गर्भाधान। ३ गर्भाधान का समय। ४ गर्भ का बच्चा। ५ बच्चा या पक्षिशावक। ६ भीतर का भाग। मध्यभाग। अभ्यन्तरीण भाग। ७ आकाशोत्पन्न पदार्थ जैसे कोहासा। ओस। हिम। ८ प्रसूतिकागृह। ९ कोठे के भीतर की कोठरी १० छेद। ११ अग्नि। १२ भोजन। १३ पनस-कंटक। कटहर का छिकला। १४ नदी की भण्डारी।—अङ्कः, (पु०) (गर्भेऽङ्कः भी होता है।) अभिनय के किसी दृश्य के अन्तर्गत कोई दृश्य।—अवक्रान्ति, (स्त्री०) गर्भस्थित बालक के शरीर में जीव का पड़ना।—अगारम्, (न०) १ गर्भस्थान। बच्चेदानी। २ ज़नानखाना।

अन्तःपुरः । प्रसूतिकागृह । ४ मन्दिर में वह स्थान जहाँ मूर्ति स्थापित हो । गर्भमन्दिर ।—आधानं, (न०) १ गर्भस्थापन । २ संस्कार विशेष ।—आशयः, (पु०) गर्भस्थान । गर्भ की झिल्ली ।—आस्रावः, (पु०) गर्भ का कच्ची अवस्था में गिर जाना ।—ईश्वरः, (पु०) जन्म से धनी होना ।—उत्पत्तिः, (स्त्री०) गर्भपिण्ड का बनना ।—उपघातः, (पु०) गर्भ का गिर पड़ना ।—कालः (पु०) गर्भस्थापन का समय । —कोशः,—कोषः, (पु०) गर्भाशय ।—क्लेशः, (पु०) गर्भस्थ बालक के बाहिर निकलने के समय की पीड़ा जो गर्भधारिणी स्त्री को होती है ।—क्षय , (पु०) गर्भ का नाश ।—गृहं,—भवनं,—वेश्मन्, (न०) १ भवन का मुख्य कमरा । २ प्रसूतिका गृह । ३ गर्भमन्दिर या वह कमरा जिसमें मूर्ति स्थापित हो ।—ग्रहणं, (न०) गर्भस्थापना । गर्भ रह जाना ।—घातिन्, (वि०) गर्भ गिराने वाला ।—चलनं (न०) गर्भ का हिलना डुलना या स्थानच्युत होना ।—च्युतिः, (स्त्री०) १जन्म । उत्पत्ति । २ कच्चा गर्भ गिर पड़ना ।—दास , (पु०)—दासी, (स्त्री०) जन्म से गुलाम या जन्म से दासी ।—द्रुह, (वि०) पेट गिराना ।—धरा, (स्त्री०) गर्भिणी ।—धारणम्, धारणा,—(स्त्री०) गर्भ में सन्तान को रखना ।—ध्वंसः, (पु०) गर्भश्राव ।—पाकिन, (पु०) ६० दिन में पकने वाले चावल ।—पातः, (पु०) गर्भश्राव । —पोषणम्,—भर्मन्, (न०) गर्भस्थ बालक का पालन पोषण ।—मण्डपः, (पु०) जच्चाघर । प्रसूतिका-गृह ।—मासः, (पु०) गर्भस्थापन का महीना ।—मोचनम्, (न०) उत्पत्ति । जन्म ।—योषा, (स्त्री०) १ गर्भिणी स्त्री । २ तटों को नाँघ कर बहनेवाली गङ्गा ।—रूपः,—रूपकः, (पु०) शिशु । बच्चा ।—लक्षणम्, (न०) गर्भ धारण के चिन्ह ।—लंभनम्, (न०) संस्कार विशेष । —वसति, (स्त्री०) वासः, (पु०) गर्भाशय । —विच्युतिः, (स्त्री०) गर्भाधान के आरम्भ ही में गर्भपात ।—वेदना, (स्त्री०) बालक उत्पन्न होने के समय का स्त्री को कष्ट ।—व्याकरणं, (न०)गर्भपिण्ड की रचना ।—शङ्कुः, (पु०) गर्भस्थित मृतबालक को निकालने का औज़ार । —सम्भवः,—सम्भूतिः, (स्त्री०) गर्भस्थापन । गर्भ रह जाना ।—स्थ, (वि०) १ गर्भ का । २ आभ्यान्तरिक । भीतरी ।—स्रावः, (पु०) गर्भपात ।

गर्भकं (न०) दो रात्रि, (जिसके बीच में एक दिन हो) की अवधि ।

गर्भकः (पु०) पुष्पों का गुच्छा जो बालों में खोंसा जाता है ।

गर्भण्डः (पु०) गर्भवृद्धि के कारण पेट का बढ़ जाना ।

गर्भवती (स्त्री०) जिसके पेट में गर्भ हो ।

गर्भिणी (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।—अवेक्षणं, (न०) धातृपना । दाई का काम ।—दौहृदं, (न०) गर्भिणी स्त्री की इच्छाएँ या रुचि ।—व्याकरणम्, —व्याकृतिः, (स्त्री०) गर्भवृद्धि का विज्ञान विशेष । आयुर्वेद का प्रसङ्ग विशेष ।

गर्भित (वि०) गर्भवाली । जिसके पेट में गर्भ हो ।

गर्भेतृप्त (वि०) १ गर्भ में बालक होने से तृप्त । २ भोजन एवं सन्तान की ओर से निश्चिन्त । ३ कामचोर । आलसी ।

गर्मुत (स्त्री०) १ एक प्रकार की घास । २ एक प्रकार का नरकुल । ३ सुवर्ण । सोना ।

गर्व (धा० परस्मै०) [गर्वति, गर्वित] गर्वीला, घमण्डी अथवा अभिमानी होना ।

गर्वः (पु०) अभिमान । घमण्ड । ऐंठ । अकड़ ।

गर्वाटः (पु०) द्वारपाल । दरबान । चौकीदार ।

गर्ह् (धा० आत्म०) कभी कभी पर० भी । [गर्हते, गर्हयते, गर्हित] १ दोष लगाना । दोषी ठहराना धिक्कारना । फटकारना । २ अभिशाप लगाना । खेद प्रकट करना ।

गर्हणं (न०) } भर्त्सना । कलङ्क । धिक्कार । फिट-
गर्हणा (स्त्री०) } कार ।

गर्हा (स्त्री०) गाली । भर्त्सना ।

गर्ह्य (वि०) भर्त्सनीय । धिक्कारने योग्य । निन्द्य । —वादिन्, (वि०) निन्दक । अपशब्द कहनेवाला ।

गल् (धा० परस्मै०) [गलति, गलित] १ टपकाना। चुआना। २ गिर पड़ना। गिर जाना। ३ अदृश्य हो जाना। गायब हो जाना। स्थानान्तरित हो जाना। खाना। निगलना। लीलना।

गलः (पु०) १ गला। २ गर्दन। ३ साल वृक्ष की राल। ३ वाद्ययंत्र या बाजा विशेष।—अङ्कुरः, (पु०) गले का रोग विशेष।—उद्भवः, (पु०) घोड़े के अयाल।—ओघः, (पु०) गुमड़ा जो गले में हो —कंबलः, (पु०) बैल या गाय के गरदन की खाल जो लटकती रहती है।—गण्डः (पु०) घेघा। गले का रोग विशेष।—ग्रहः, (पु०) —ग्रहणं (न०) १ गरदनियाना। गर्दन में हाथ लगा कर पकड़ना। २ रोग विशेष। ३ कृष्णपक्ष की ४र्थी, ७मी, ८मी ६मी, १३शी, अमावस्या। ४ ऐसा दिवस जिसमें अध्ययन आरम्भ हो, किन्तु अगले दिन ही अनध्याय हो। ५ अपने आप विसाई विपत्ति। ६ मछली की चटनी।—चर्मन्, (न०) गला। नरेटी। नली। नरखड़ा।—द्वारं, (न०) मुख। —मेखला, (स्त्री०) गुञ्ज। हार। कण्ठा।—वार्त, (वि०) १ स्वस्थ्य। तन्दुरुस्त। २ मुफ़्तखोर। खुशामदी टट्टू।—व्रतः, (पु०) मयूर। मोर।—शुण्डिका, (स्त्री०) कव्वा।—शुण्डी, (स्त्री०) गरदन की गिल्टियों की सूजन।—स्तनी, (गलेस्तनी) (स्त्री०) बकरी।—हस्तः, (पु०) १ अर्धचन्द्र। गलहत्था। गरदनिया। २ अर्धचन्द्र बाण।—हस्तित, (वि०) गले में हाथ डाल कर पकड़ना।

गलकः (पु०) १ गला। गरदन। २ एक प्रकार की मछली।

गलनं (न०) चूना। टपकना। रिसना।

गलंतिका—गलन्तिका } (स्त्री०) १ कलसिया।
गलंती—गलन्ती } छोटा कलसा। छोटा घड़ा। २ छोटा घड़ा जिसकी पेंदी में छेद करके शिव जी के ऊपर टाँग देते हैं, जिससे उस छेद से बराबर शिव जी पर जल टपका करे।

गलिः (पु०) पुष्ट किन्तु कामचोर बैल।

गलित (व०कृ०) १ गिरा हुआ। टपका हुआ। २ पिघला हुआ। ३ चुआ हुआ। बहा हुआ। ४ खोया हुआ। पृथक् किया हुआ। नज़र से छिपा हुआ। ५ संयुक्त। ढीला। ६ रीता। खाली। टपक टपक कर खाली हुआ। ७ साफ किया हुआ। क्षीण। निर्बल।—कुष्ठं, (न०) कोढ़ के रोग की वह दशा जब अँगुलियाँ गल गल कर गिर पड़ती हैं। —दन्त, (वि०) दन्तहीन।—नयन, (वि०) अँधा।

गलितिकः (पु०) नृत्य विशेष।

गलेगंडः } (पु०) एक पक्षी विशेष जिसकी गर-
गलेगण्डः } दन में खाल की थैली सी लटका करती है।

गल्भ् (धा० आत्म०) [गल्भते, गल्भित] साहसी होना। आत्म निर्भर होना।

गल्भ (वि०) साहसी। हिम्मती।

गल्या (स्त्री०) गलों का समूह।

गल्लः (पु०) गाल। विशेष कर मुख के दोनों ओर के पास का भाग।—चातुरी, (स्त्री०) छोटा गोल तकिया जो गाल के नीचे रखा जाता है।

गल्लकः (पु०) १ पानपात्र। जाँम। मदिरा पीने का बरतन। २ नीलमणि। पुखराज।

गल्लर्कः (पु०) शराब पीने का प्याला।

गल्वर्कः (पु०) १ स्फटिक मणि। २ लाजवर्द। ३ गिलास। मदिरा-पान-पात्र।

गल्ह् (धा० आत्म०) [गल्हते—गल्हित] कलङ्क लगाना। इलज़ाम लगाना। भर्त्सना करना।

गव [किसी किसी समासान्त पद के पहिले लगाया जानेवाला "गो" का परियाय] ।—अक्षः, (पु०) रोशनदान। झरोखा।—अक्षित, (वि०) खिड़कियोंदार।—अग्रं, (न०) गौओं का झुंड। रौहर (गोऽग्रं, गोअग्रं, गवाग्रं)—अदनं, (न०) चरागाह। गोचरभूमि।—अदनी, (स्त्री०) १ गोचरभूमि। २ नाँद जिसमें गौओं को सानी खिलायी जाती है।—अधिका, (स्त्री०) लाख। लाक्षा।—अर्ह, (वि०) गौ के मूल्य का।— अविकं, (न०) भेड़े और भेड़।—अशनः, (पु०) १ चमार। मोची। २ जातिच्युत।—अश्वं, (न०)

सॉंढ और घोड़े।—आकृति, (वि०) गोमुखी। गौ की आकृति की।—आन्हिकं (न०) नाप जिसके अनुसार रोज गौ को चारा दिया जाय। —इन्द्रः (पु०) १ गौ का मालिक। २ उत्तम सॉंड।—उद्धः, (पु०) उत्तम सॉंड़ या गाय।

गवयः (पु०) बैल की जाति विशेप।

गवलः (पु०) जङ्गली भैंसा।

गवालूकः (पु०) (देखो गवय।)

गविनी (स्त्री०) गौओं की हेड। रौहर।

गव्य (वि०) १ गौ या मवेशियों से युक्त। २ गौ से उत्पन्न यथा दूध, दही, मक्खन आदि। ३ मवेशियों के योग्य या उनके लिये उपयुक्त।

गव्यं (न०) १ मवेशी। गौओं की हेड या रौहर। २ गोचरभूमि। ३ गौ का दूध। ४ पीला रङ्ग या रोगन।

गव्यः (स्त्री०) १ गौओं की हेड या रौहर। २ माप विशेप, जो दो कोस या ४ मील के बराबर होता है। ३ रोदा। कमान की डोरी। ४ पीला पदार्थ विशेप या पीला रङ्ग अथवा रोगन।

गव्या (स्त्री०) १ गौओं की हेड। २ दो कोस की दूरी का माप। ३ रोदा। धनुष की डोरी। ४ हरसाल।

गव्यूतम् (न०), गव्यूतिः (स्त्री०) } १ माप विशेप जो एक कोस या दो मील के बराबर होता है। २ माप जो दो कोश या चार मील के बराबर होता है।

गवेडुः (पु०), गवेधुः (पु०), गवेधुका (स्त्री०) } मवेशियों के खाने योग्य घास या तृण विशेप।

गवेरुकं (न०) गेरू। लाल खड़िया।

गवेष् (धा० आत्म०) [गवेषते, गवेषयति, गवेषित] १ तलाश करना। खोजना। ढूँढ़ना। २ उद्योग करना। कड़ा परिश्रम करना।

गवेष (वि०) ढूढ़ने को।

गवेष (पु०) ढूँढ़ना। खोज। तलाश।

गवेषणम्, गवेषणा } किसी वस्तु की खोज या तलाश।

गवेषित (वि०) ढूंढ़ा हुआ। तलाश किया हुआ। अनुसन्धान किया हुआ।

गह् (धा० उभय०) [गहयति-गहयते] १ (वन की तरह) घना होना। सघन होना। अप्रवेश्य या अप्रवेशनीय होना। २ गम्भीरतापूर्वक प्रवेश करना या बैठना।

गहन (वि०) १ गहरा। सघन। गाढ़ा। घना। २ अप्रवेश्य जिसमें कोई घुस या पैठ न सके। अगम्य। ३ क्लिष्टता पूर्वक समझने योग्य। दुरधिगम्य। दुर्बोध। रहस्यमय। ४ क्लिष्ट। असरल। कठिन। पीड़ा या दुःख देने वाला। ५ गम्भीर। प्रखर। प्रचण्ड।

गहनम् (न०) १ अगाध गर्त। गहराई। २ वन। ऐसा सघन वन जिसमें कोई घुस न सके। ३ छिपने की जगह। ४ गुफा। ५ पीड़ा। कष्ट।

गह्वर (वि०) [स्त्री०—गह्वरा, गह्वरी,] अप्रवेश्य।

गह्वरं (न०) १ अतलस्पर्शगर्त। २ गहराई। ३ वन। जङ्गल। गुफा। ४ अगम्य स्थान। ५ छिपने का स्थान। ६ पहेली। ७ दम्भ। पाखंड। ८ रोदन। क्रंदन।

गह्वरः (पु०) लता मण्डप। निकुञ्ज।

गह्वरी (स्त्री०) गुफा। कन्दरा।

गा (स्त्री०) गीत। भजन।

गांग, गाङ्ग } (वि०) [स्त्री०—गाङ्गी] गङ्गा का या गङ्गा से। गङ्गा से उत्पन्न या गङ्गा का।

गांगं, गाङ्गं } (न०) १ आकाश गङ्गा का जल। [लोगों के विश्वास है कि जब सूर्य के देखते देखते जल की वृष्टि होती है तब वह आकाश गंगा का जल होता है] २ सुवर्ण। सोना।

गांगः, गाङ्गः } (पु०) १ भीष्म की उपाधि। २ कार्तिकेय की उपाधि।

गांगटः, गाङ्गटः, गांगटेयः, गाङ्गटेयः } (पु०) झींगा मछली।

गांगायनि, गाङ्गायनि } (वि०) १ भीष्म। २ कार्तिकेय।

गांगेय, गाङ्गेय } (वि०) [स्त्री०—गाङ्गेयी] गङ्गा का या गङ्गा में।

गांगेयं, गाङ्गेयं } (न०) सुवर्ण। सोना।

गांगेयः, गाङ्गेयः } (पु०) १ भीष्म। २ कार्तिकेय।

गाजरं (न०) गजर। गाजर।

गिंजाकायः (पु०) लवा। बटेर।

गाढ (व० कृ०) १ डूबा हुआ। गोता लगाये हुए। स्नान किये हुए। गहरा घुसा हुआ। २सघन बसा हुआ। ३ अत्यन्त भिचा या दबा हुआ। मूदा हुआ। बन्द। पक्का। कसा हुआ। ४ सघन। घना। ५ गहरा। अगम्य। ६ मज़बूत। दृढ़। उग्र। प्रचण्ड। प्रगाढ़। अत्यन्त। अतिशय। निपट। अपरिमित।—मुष्टि. (वि०) बद्धमुष्टि। कञ्जूस। मक्खीचूस।—मुष्टिः, (स्त्री०) तलवार।

गाढं (अव्यया०) अतिशयता से। गुरुता से, दृढ़ता से।

गाणपत (वि०) [स्त्री०—गाणपती] किसी दल के दलपति से सम्बन्ध रखने वाला। २ गणेश सम्बन्धी।

गाणपत्यं (न०) गणेश जी की पूजा या आराधना। यूथपतित्व। सरदारी। [मानने वाला।

गाणपत्यः (पु०) गणेश को अपना आराध्य देव

गाणिक्यं (न०) वेश्या या रंडियों का समूह।

गाणेशः (पु०) गणेश का पूजने वाला।

गांडिवः, गाण्डिवः (पु०), गांडीवः, गाण्डीवः (पु०), गांडिवम्, गाण्डिवम् (न०), गांडीवम्, गाण्डीवम् (न०) १ अर्जुन के धनुष का नाम। असल में यह धनुष सोम ने वरुण को और वरुण ने अग्नि को दिया था। खाण्डववन दाह के समय यह अर्जुन को अग्नि द्वारा प्राप्त हुआ था। २ धनुष।—धन्वन्, (पु०) अर्जुन की उपाधि।

गांडीविन्, गाण्डीविन् (पु०) अर्जुन।

गातागतिक (वि०) आने जाने के कारण उत्पन्न।

गातानुगतिक (वि०) [स्त्री०—गातानुगतिकी] अन्ध अनुयायी या पुरानी लकीर का फकीर बनने के कारण पैदा हुआ।

गातु (पु०) १ भजन। गीत। २ गवैया। ३ गन्धर्व। ४ कोयल। ५ भौंरा।

गातृः (पु०) [स्त्री—गात्री] १ गवैया। २ गन्धर्व।

गात्रम् (न०) १ शरीर। २ शरीर अवयव। ३ हाथी के आगे के पैर की जाँघ।—अनुलेपनी, (स्त्री०) उबटना।—आवरणम्, (न०) ढाल।—उत्सादनं, (न०) तेल उबटन लगा कर शरीर को साफ करना।—कर्षण, (वि०) निर्बल या दुर्बल शरीर वाला।—मार्जनी, (स्त्री०) तौलिया। अँगोछा।—यष्टि, (स्त्री०) लटा दुबला शरीर।—रुहं, (न०) रोंगटे। लोम।—लता, (स्त्री०) दुहरा बदन। छिरछिरी देह।—सङ्कोचिन्, (पु०) खेखर। ऊदबिलाव के समान पशु विशेष।—सम्प्लव, (पु०) एक छोटा पक्षी। गोताखोर।

गाथः (पु०) गीत। भजन।

गाथकः, गाथिकः (पु०) १ गवैया। २ पुराणों या धर्म कथाओं को गाकर पढ़ने वाला।

गाथा (स्त्री०) १ छन्द। २ वेद से भिन्न छन्द। ३ गीत। श्लोक। ४ प्राकृत भाषा का छन्द।—कारः (पु०) प्राकृत छन्द निर्माता।

गाथिका (स्त्री०) गीत। भजन।

गाध् (धा० आत्म०) [गाधते, गाधित] १ स्थगित होना। रुक जाना। ठहरजाना। बच रहना। २ रवाना होना। घुसना। डुबकी लगाना। गोता लगाना। ३ ढूंढना। खोजना। तलाश करना। ४ बटोर जोड़ कर एकत्र करना। डोरे से बाँधना या बुनना। गूथना।

गाध (वि०) पार होने योग्य। उथला। गम्य।

गाधम् (न०) १उथली जगह। वह जगह जहाँ जल कम हो और पैदल ही लोग पार हो जायँ। घाट। २ स्थल। ३ लाभेच्छा। लिप्सा। कामाभिलाष। ४ तली। तल।

गाधिः, गाधिन् (पु०) विश्वामित्र जी के पिता का नाम।—जः,—नन्दनः,—पुत्रः, (पु०) विश्वामित्र।—नगर,—पुरं, (न०) आधुनिक कन्नोज या कान्यकुब्ज देश का नाम।

गाधेयः (पु०) विश्वामित्र का नाम।

गानं (न०) गीत। भजन।

गांत्री (स्त्री०) बैलगाड़ी।

गांदिनी, गान्दिग्गी (स्त्री०) १ गङ्गा। २ स्वफल्क की माता और अक्रूर की पत्नी का नाम।—सुतः, (पु०) १ भीष्म। २ कार्तिकेय। ३ अक्रूर।

गांधर्व—गान्धर्व (वि०) [स्त्री०—गान्धर्वी] गन्धर्व सम्बन्धी।

गांधर्व } गान्धर्व } (न०) गन्धर्वों की कला विशेष। जैसे सङ्गीत आदि।—शाला, (स्त्री०) सङ्गीतालय।

गांधर्वः } गान्धर्वः } (पु०) १ गवैया। गन्धर्व। देवगायक। २ आठ प्रकार के विवाहों में से एक। ३ उपवेद जो सामवेद के अन्तर्गत माना गया है। ४ घोड़ा। अश्व।

गांधर्वकः—गान्धर्वकः } गांधार्विकः—गान्धर्विकः } (पु०) गवैया।

गांधारः } गान्धारः } (पु०) १ सङ्गीत के सप्तस्वरों में से तीसरा। सरगम (सा रे ग म प) का तीसरा वर्ण। २ गेरू। ३ भारतवर्ष और फारस के बीच का देश। आधुनिक कंधार। कंधार देश का शासक या अधिवासी।

गांधारिः } गान्धारिः } (पु०) दुर्योधन के मामा शकुनि की उपाधि।

गांधारी } गान्धारी } (स्त्री०) धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधनादि कौरवों की जननी।

गांधारेयः } गान्धारेयः } (पु०) दुर्योधन की उपाधि।

गांधिकः } गान्धिकः } (पु०) १ गंधी। अतर फुलेल बेचने वाला। २ लेखक। मुहरिर। क्लार्क।

गांधिकम् } गान्धिकम् } (न०) अतर फुलेल आदि सुगन्ध द्रव्य।

गामिन् (वि०) [समास के अन्त में आने वाला] १ जाने वाला। घूमने वाला। २ सवार होने वाला। ३ सम्बन्धी। सम्बन्ध रखने वाला।

गांभीर्यम् } गाम्भीर्यम् } (न०) गहराई। गंभीरता।

गायः (पु०) गान। गीत। भजन।

गायकः (पु०) गवैया। गाने वाला।

गायत्रः (न०) } गायत्रम् (न०) } १ वैदिक छन्द विशेष जिसमें २४ अक्षर होते हैं। २ एक परम पवित्र एवं ब्राह्मणों द्वारा उपास्य वैदिक मंत्र, जिसकी उपासना किये विना ब्राह्मण में ब्राह्मणत्व ही नहीं आता।

गायत्रिन् (वि०) [स्त्री०—गायत्रिणी] सामवेद के मंत्रों को गाने वाला।

गायत्री (स्त्री०) ऋचा या गान।

गायनः (पु०) [स्त्री०—गायनी] १ गवैया। २ आजीविका के लिये गानविद्या का अभ्यास करना।

गारुड (वि०) [स्त्री०—गारुडी] १ गरुड़ के आकार का। २ गरुड़ सम्बन्धी। गरुडोत्पन्न।

गारुडः (पु०) } गारुडम् (न०) } १ पन्ना। २ सर्पों को वशीभूत करने का मंत्र विशेष। ३ गरुड़ मंत्र से अभिमंत्रित अस्त्र। ४ सोना। सुवर्ण।

गारुडिकः (पु०) ऐन्द्रजालिक। जादूगर। ज़हरमोहरा बेचने वाला। विषवैद्य।

गारुत्मत् (वि०) [स्त्री०—गारुत्मती] १ गरुड़ के आकार का। २ गरुड के मंत्र से अभिमंत्रित (अस्त्र)।

गारुत्मतं (न०) पन्ना।

गार्दभ (वि०) [स्त्री०—गार्दभी] गधे का या गधे से उत्पन्न।

गार्द्धर्यम् (न०) लालच। लोभ।

गार्ध्र (वि०) [स्त्री०—गार्ध्री] गीध से उत्पन्न।

गार्ध्रः (पु०) १ लोभ। लालच। २ तीर। बाण।—पक्षः,—वासस् (पु०) गीध के परों से युक्त तीर।

गार्भ (वि०) [स्त्री० गार्भी] } गार्भिक (वि०) [स्त्री०—गार्भिकी] } गर्भाशय सम्बन्धी। भ्रूण सम्बन्धी। अन्तस्सत्वावस्था सम्बन्धी।

गार्भिणं } गार्भिण्यम् } (न०) कई एक गर्भवती स्त्रियाँ।

गार्हपतं (न०) गृहस्थ का पद और उसका गौरव।

गार्हपत्यः (पु०) १ अग्निहोत्र का अग्नि। तीन प्रकार के अग्नियों में से एक। २ वह स्थान जहाँ यह पवित्र अग्नि रखा जाय।

गार्हपत्यं (न०) गृहस्थ का पद और गौरव।

गार्हमेध (वि०) [स्त्री०—गार्हमेधी] गृहस्थ के योग्य या गृहस्थ के उपयुक्त।

गार्हमेधः (पु०) गृहस्थ के नित्य अनुष्ठेय पञ्चयज्ञ।

गालनम् (न०) १ (किसी पनीली वस्तु को) छानना। २ पिघलाना।

गालवः (पु०) १ लोध्र वृक्ष । २ आबनूस विशेष । ३ विश्वामित्र के एक शिष्य का नाम । ४ एक ऋषि का नाम ।

गालिः (स्त्री०) गाली । अपशब्द । कुवाच्य ।

गालित (वि०) १ छाना हुआ । २ चुआया हुआ । (अर्क की तरह) खींचा हुआ । ३ पिघलाया हुआ ।

गालोड्यं (न०) कमलगट्टा या कमल का बीज ।

गावल्गणिः (स्त्री०) सञ्जय की उपाधि । गवल्गण का पुत्र ।

गाह् (धा० आत्म०) [गाहते, गाढ या गाहित] १ गोता लगाना । डूबना । डुबकी लगाना । स्नान करना । २ घुसना । पैठना । घूमना फिरना । ३ गड़बड़ करना । चलाना । उथल पुथल करना । मथना । हिलाना डुलाना । ४ मग्न हो जाना । लीन होना । तन्मय होना ५ अपने को छिपाना । ६ नष्ट करना ।

गाहः (पु०) १ डुबकी । गोता । स्नान । २ गहराई । अभ्यन्तरीय । अन्तर्देश । [स्नान ।

गाहनं (न०) गोता या डुबकी लगाने की क्रिया ।

गाहित (वि०) १ स्नान किया हुआ । डुबकी लगाये हुए । २ घुसा हुआ । प्रवेशित ।

गिंदुकः } १ (पु०) १ खेलने की गेंद । २ गेंदुक
गिन्दुकः } नामक वृक्ष विशेष ।

गिर (स्त्री०) १ वाणी । शब्द । भाषा । स्तव । संसार । गीत । भजन । ३ विद्या की अधिष्ठात्री देवी श्रीसरस्वती जी ।—पतिः, (पु०) [गीःपतिः, गीष्पतिः, और गीर्पतिः,] १ बृहस्पति अर्थात् देवाचार्य । २ विद्वान् । पण्डित । —रथः, [=गीरथः,] बृहस्पति का नाम ।—बाणः,—वाणः, (पु०) [=गीर्वाणः,] देवता ।

गिरा (स्त्री०) वाणी । भाषण । भाषा । आवाज़ ।

गिरि (वि०) प्रतिष्ठित । सम्मानित । माननीय । —इन्द्रः, (पु०) १ ऊँचा पहाड़ । शिव जी । ३ हिमालय पर्वत ।—ईशः, (पु०) १ हिमालय पर्वत । २ शिव जी ।—कच्छपः, (पु०) पहाड़ी कछुआ ।—कण्टकः, (पु०) इन्द्र का वज्र । —कदम्बः, (पु०)—कदम्बकः, (पु०) कदम्ब वृक्ष की जाति विशेष ।—कन्दरः, (पु०) गुफा ।—कर्णिकः, (स्त्री०) पृथिवी ।—काणः (पु०) काना ।—काननं, (न०) पहाड़ की अमराई । पहाड़ी छोटा वन ।—कूटं, (न०) पर्वतशिखर ।—गङ्गा, (स्त्री०) नदी विशेष । —गुडः, (पु०) गेंद । गोला ।—गुहा, (स्त्री०) पहाड़ी गुफा या कंदरा ।—चरः, (पु०) चोर । —ज, (वि०) पहाड़ से उत्पन्न ।—जम्, (न०) १ अबरक । २ गेरू । ३ लोबान । ४ राल । नफ़्ता । ५ लोहा ।—जा, (स्त्री०) १ पार्वती देवी । २ पार्वती कदली । पहाड़ी केला । ३ मल्लिका लता । ४ गङ्गा जी ।—जातनयः, —जानन्दनः,—जासुतः, (पु०) १ कार्तिकेय । २ गणेश जी ।—जापतिः, (पु०) शिव जी । —जामलं, (न०) अबरक । भोडर ।—जालं, (न०) पहाड़ की पंक्ति या सिलसिला ।—ज्वरः, (पु०) इन्द्र का वज्र ।—दुर्गं, (न०) पहाड़ी क़िला ।—द्वारं, (न०) घाटी ।—धातुः, (पु०) गेरू ।—ध्वजः, (न०) इन्द्र का वज्र । —नगरं, (न०) दक्षिणपथ के एक नगर का नाम ।—णदी, (स्त्री०) (नदी) पहाड़ी चश्मा ।—णद्ध, (नद्ध) (वि०) पहाड़ों से गिरा हुआ ।—नन्दिनी, (स्त्री०) १ पार्वती । २ गङ्गा । ३ कोई भी (पहाड़ी) नदी ।

यथा—"कलिन्दगिरिमन्दिनीतटसुरद्रुमालम्बिनी ।"

भामिनीविलास ।

—णितम्बः, (नितम्बः) (पु०) पहाड़ का ढाल ।—पीलुः, (पु०) फलदार वृक्ष विशेष ।—पुष्पकं, (न०) राल ।—पृष्ठः, (पु०) पहाड़ की चोटी ।—प्रपातः, (पु०) पहाड़ का ढाल ।—प्रस्थः, (पु०) पहाड़ की अधित्यका ।—भिद्, (पु०) इन्द्र ।—भू, (वि०) पहाड़ से उत्पन्न ।—भूः, (स्त्री०) १ श्री गङ्गा । २ पार्वती ।—मल्लिका, (स्त्री०) कुटजवृक्ष । —मानः, (पु०) विशाल और अतिबलिष्ठ हाथी ।—मृद्,—मृद्भवम्, (न०) गेरू ।— राज्, (पु०) १ ऊँचा पर्वत । २ हिमालय । —राजः, (पु०) हिमालय ।—व्रजम्, (न०)

मगध के एक नगर का नाम।—शाल., (पु०) पक्षी विशेष।—शृङ्गः, (पु०) गणेश जी की उपाधि।—शृङ्गम्, (न०) पर्वत शिखर।—षद्, (सद्) (पु०) शिव।—सानु, (न०) अधित्यका।—सारः, (पु०) १ लोहा। २ जस्ता। ३ मलयपर्वत की उपाधि।—सुतः, (पु०) मैनाक पर्वत।—सुता, (स्त्री०) पार्वती।—स्रवा, (स्त्री०) पहाड़ी जलप्रवाह। पहाड़ी चश्मा जो बड़े वेग से बहे।

गिरिः (पु०) १ पहाड़। पर्वत। टीला। २ बड़ी भारी चट्टान। ३ नेत्र रोग विशेष। ४ दस प्रकार के गुंसाइयो में से एक श्रेणी के गुसाइयों की उपाधि। ५ आठ की संख्या। ६ बालकों के खेलने की गेंद। (स्त्री०) १ निगलना। लीलना। २ चूहा। मूसा।

गिरिकः }
गिरियकः } (पु०) खेलने की गेंद।
गिरियाकः }

गिरिका (स्त्री०) चुहिया। छोटा चूहा।

गिरिशः (पु०) शिवजी की उपाधि।

गिल् (धा० परस्मै०) [गिलति, गिलित] निगलना। लीलना।

गिलः (पु०) नीबू का वृत्त।

गिलगिलः } (पु०) मगर। नक्र। घड़ियाल। समुद्री
गिलग्राहः } जन्तु विशेष।

गिलनम् (न०) }
गिलिः (पु०) } निगलना। खा डालना।

गिलायुः (पु०) गले की कड़ी गिल्टी।

गिलित }
गिरित } (वि०) खाया हुआ। निगला हुआ।

गिष्णुः—गेष्णुः (पु०) १ गवैया। सामवेद गाने वाला ब्राह्मण।

गीत (व० कृ०) १ गाया हुआ। २ वर्णित। कथित।—अयनं, (न०) बाजा। वीन। बाँसुरी।—ज्ञः, (वि०) गानविद्या में निपुण।—प्रियः, (पु०) शिव जी।—मोदिन्, (पु०) किन्नर।—शास्त्रं, (न०) सङ्गीत विधि।

गीतकं (न०) गान।

गीता (स्त्री०) कतिपय संस्कृत के पद्यमय धार्मिक ग्रन्थों के नाम। जैसे रामगीता। भगवद्गीता। शिवगीता आदि। [नाम।

गीतिः (स्त्री०) १ भजन। गीत। २ एक छन्द का

गीतिका (स्त्री०) १ छोटा भजन। २ गान।

गीतिन् (वि०) [स्त्री०—गीतिनी] जो गाने की ध्वनि में पढ़ता हो। ऐसा पढ़ने वाला अधम माना गया है। यथा।

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
शिक्षा।

गीर्ण (वि०) १ निगला हुआ। खाया हुआ। २ प्रशंसित।

गीर्णिः (स्त्री०) १ प्रशंसा। २ कीर्ति। ३ भक्षण। निगलना।

गु (धा० परस्मै०) [गुवति, गूत] १ विष्ठाशून्य होना। २ कच्चा बच्चा निकालना।

गुग्गुलः } (पु०) एक प्रकार का सुगन्ध पदार्थ।
गुग्गुलुः } गूगुल।

गुच्छः (पु०) १ गुच्छा। २ फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ३ मयूरपंख। ४ मुक्ताहार। ५ ३२ या ७० लरों की मोतियों की माला।—अर्धः, (पु०) २४ लरों की मोतियों की माला।—अर्धः, (पु०)—अर्धम्, (न०) आधागुच्छा।—कणिशः, (पु०) अन्नविशेष।—पत्रः, (पु०) खजूर का पेड़। ताड़ का पेड़।—फलः, (पु०) १ अंगूर। २ केले का पेड़।

गुच्छकः (पु०) गुच्छा।

गुज् (धा० परस्मै०) [गोजति] प्रायः गुञ्ज भी होता है। [गुंजति, गुंजित, गुजित] गूँजना। गुञ्जार करना। गुनगुनाना।

गुजः (पु०) १ गुनगुनाहट। भिनभिनाहट। २ पुष्पगुच्छ। गुलदस्ता।—कृतः, (पु०) भौंरा।

गुंजनं }
गुञ्जनम् } (न०) धीरे धीरे बोलना। गुनगुनाना।

गुंजा }
गुञ्जा } (स्त्री०) १ घुंघची का झाड़। २ धीमी आवाज़। गुनगुनाहट। ४ ढोल। ५ मदिरा की दूकान। ६ ध्यान।

गुंजिका }
गुञ्जिका } (स्त्री०) घुंघची का दाना।

गुंजितं }
गुञ्जितं } (न०) गुंजार । गुनगुनाहट ।

गुटिका (स्त्री०) १ गोली । २ गोल स्फटिक । स्फटिक का गुरिया । गोला या गेंद । ३ रेशम का कोया । ४ मोती । —अञ्जनं, (न०) सुर्मा विशेष ।

गुटी (स्त्री०) देखो गुटिका ।

गुडः (पु०) १ गुड़ । शीरा । राव । चोटा । २ गोला । ३ गेंद । ४ खेलने की गेंद । ५ कौर । कवर । ६ हाथी का कवच या जिरहवख़्तर । —उदकं, (न०) शीरे का शरवत । —उद्भवा, (स्त्री०) चीनी । शक्कर ।—ओदनम्, (न०) मीठा भात ।—तृणम्, (न०)—दारुः, (पु०)—दारुं, (न०) गन्ना । ऊख । पिष्ठ । (न०) मिठाई विशेष ।— फलः (पु०) पीलू का पेड़ ।—शर्करा, (स्त्री०) चीनी ।—शृङ्गम् (न०) गुम्मट । कलश । —हरीतकी,(स्त्री०) शीरे में पड़ी हुई हर्रं अर्थात् हर्रं का मुरब्बा ।

गुडकः (पु०) १ गेंद । २ कौर । गस्सा । ३ शीरा से खींचा हुआ एक प्रकार का अर्क ।

गुड़लं (न०) मदिरा । शराब । वह शराब जो शीरे से खींची गयी हो ।

गुडा (स्त्री०) १ कपास का पौधा । २ गोली ।

गुडाका (स्त्री) १ सुस्ती । २ निद्रा ।

गुडाकेशः (पु०) १ नींद को वश में करने वाला । २ अर्जुन । ३ शिव ।

गुडगुडायनम् (न०) खखारना ।

गुडेरः (पु०) १ गेंद । गोला । २ कौर । गस्सा ।

गुण (धा० उभय०) [गुणयति, गुणयते, गुणित] १ गुणा करना । २ सलाह देना । ३ आमन्त्रण देना । न्योतना ।

गुणः (पु०) १ सिफत (अच्छी या बुरी) । २ भलाई । सुकृति । उत्तमता । श्रेष्ठता । नामवरी । ख्याति । ३ उपयोग । लाभ । अच्छाई । ४ प्रभाव । परिणाम । शुभ परिणाम । ५ डोरा । डोरी । रस्सा । ६ धनुष की प्रत्यञ्चा । ७ बाजे की डोरी । ८ नस । ९ लक्षण । १० रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण । स्वभाव । ११ सूत की बत्ती । तन्तु । १२ इन्द्रिय जन्य विषय (कर्म यथा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द ।) १३ पुनरावृत्ति । गुना । यथा-दसगुना वार यथा दस वार । १४ गौण । १५ आधिक्य । विपुलता । आतिशय्य । १६ विशेषण । इ, उ, ऋ के स्थान में ए, ओ, आ, और अल का आदेश । १७ काव्यालङ्कार शास्त्र में मम्मट ने गुण की परिभाषा यह दी है —

ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः ।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलास्थितयो गुणाः ॥

१८ नीति में राजा के लिए ६ गुण बतलाये हैं । यथा—सन्धि, विग्रह, यान, स्थान, आसन, संश्रय और द्वैध या द्वैधीभाव । १९ तीन की संख्या । २० वृतांश की प्रान्तद्वय संयोजक सरल रेखा । २१ ज्ञानेन्द्रिय । २२ पाचक । २३ भीम की उपाधि । २४ त्याग । विराग ।—कारः, (पु०) १ कुशल रसोइया जो हर प्रकार के व्यञ्जन बना सके । २ भीम की उपाधि ।—ग्रामः, (पु०) सद्गुणों का समूह ।—त्रयं,—त्रियतम्, (न०) सत्व, रजस्, तमस ।—लयनिका,—लयनी, (स्त्री०) तम्बू । खीमा ।—वृक्षः,—वृक्षकः, (पु०) मस्तूल या वह खंभा जिससे जहाज या नाव बाँध दी जाती है ।—शब्दः, (पु०) विशेषण । —सागरः, (पु०) १ अच्छे गुणों का समुद्र। अत्यन्त गुणवान् पुरुष । २ ब्रह्म । परमात्मा ।

गुणक (पु०) १ हिसाब जोड़ने वाला या लगाने वाला । २ वह राशि जिसके साथ गुणा जाता है ।

गुणनं (न०) १ गुणा । २ गिनती । ३ किसी के सद्गुणों का बखान ।

गुणनिका (स्त्री०) १ अध्ययन । पुनरावृत्ति । २ नृत्य या नृत्यकला । ३ (नाटक की) प्रस्तावना । ४ माला । हार । ५ शून्य । सिफर ।

गुणनीय (वि०) १ गुणा करने योग्य । २ गिनने योग्य । ३ परामर्श देने योग्य ।

गुणनीयः (पु०) अध्ययन । अभ्यास ।

गुणवत् (वि०) गुणवान् । श्रेष्ठ । उत्तम । नेक । सुकृत ।

गुणिका (स्त्री०) गुमड़ी । गिल्टी ।

गुणित (व० कृ०) १ गुणा किया हुआ । २ ढेर लगाया हुआ । एकत्र किया हुआ । जमा किया हुआ । ३ गिना हुआ ।

गुणिन् (वि०) १ गुणवान् । सराहनीय । उत्कृष्ट । २ नेक । शुभ । ३ किसी के गुणों से परिचित । ४ गुणों से युक्त । ५ मुख्य ।

गुणीभूत (वि०) महत्वपूर्ण अर्थ से वञ्चित । २ गौण गुणों से युक्त । [मध्यम काव्य ।

गुणीभूत व्यङ्ग्यम् (न०) अलङ्कार में कहा हुआ

गुंठ्, गुण्ठ् (धा०उभय०)[गुण्ठयति, गुण्ठयते, गुण्ठित] घेरना । चारों ओर से छेक लेना । लपेटना । ढकना ।

गुंठनम्, गुण्ठनम् (न०) १ ढकना । छिपाना । २ (शरीर में) मलना जैसे शरीर में भस्म मलना ।

गुंठित, गुण्ठित (वि०) १ घिरा हुआ । ढका हुआ । २ पिसा हुआ । कुटा हुआ । चूर्ण किया हुआ ।

गुंड्, गुण्ड् (धा० परस्मै०) [गुण्डयति गुण्डित,] १ ढकना । छिपाना । २ पीसना । चूर्ण करना ।

गुंडकः, गुण्डकः (पु०) १ रज । चूर्ण । २ तैलभाण्ड । ३ धीमा मधुर स्वर ।

गुंडिकः, गुण्डिकः (पु०) आटा । भोजन । चूर्ण ।

गुंडित, गुण्डित (वि०) १ पिसा हुआ । चूरा किया हुआ । २ धूलधूसरित ।

गुण्य (वि०) १ गुणी । गुणवान् । २ बखानने योग्य । ३ प्रशंसनीय । श्लाघ्य । ४ गुणा करने योग्य ।

गुत्सकः (पु०) १ गट्ठा । गट्ठर । बंडल । गुच्छा । २ गुलदस्ता । ३ चौरी । चंवर । ४ अध्याय । सर्ग ।

गुद् (धा० आ०) [गोदते, गुदित] खेलना । क्रीड़ा करना ।

गुदं (न०) गुदा । मलत्याग स्थान ।—अङ्कुरः, (पु०) बवासीर ।—आवर्तः, (पु०) कोष्ठ-बद्धता ।—उद्भवः, (पु०) बवासीर ।—ओष्ठः, (पु०) गुदा का छेद ।—कीलः,—कीलकः, (पु०) बवासीर ।—ग्रहः, (पु०) कब्ज़ियत । कोष्ठबद्धता ।—पाकः, (पु०) गुदा की सूजन । —वर्त्मन्, (न०) गुदा । मलद्वार ।—स्तम्भः, (पु०) कोष्ठबद्धता ।

गुध् (धा० परस्मै०) [गुध्यति, गुधित] लपेटना । ढकना । कपड़े पहनना । [गुध्नाति] क्रोध करना । [गोधते] खेलना ।

गुंद्लः, गुन्द्लः (पु०) ढोल विशेष का शब्द ।

गुंद्राल.—गुन्द्रालः, गुंद्रालः—गुन्द्रालः (पु०) चातक पक्षी ।

गुप् (धा० परस्मै०) [गोपायति, गोपायित या गुप्त] १ बचाना । रक्षा करना । शत्रु के आक्रमण से बचना । पहरा देना । २ छिपना । ३ घृणा करना । भर्त्सना करना । तिरस्कार करना ।

गुपिलः (पु०) १ राजा । त्राता । परित्राण करता ।

गुप्त (वि०) [व० कृ०] १ रक्षित । सुरक्षित । रखवाली किया हुआ । २ छिपा हुआ । गोप्य । छिपाने लायक । ३ अदृश्य । आंखों के ओझल । ४ जुड़ा हुआ या जोड़ा हुआ ।—कथा (स्त्री०) गुप्त सूचना । ऐसी सूचना जो प्रकट करने योग्य नहीं है ।—गतिः, (स्त्री०) जासूस । भेदिया ।—चरः, (पु०) १ बलराम । २ जासूस ।—दानं, (न०) अप्रकट दान ।—वेशः, (पु०) बनावटी वेश ।

गुप्तं (अव्यय०) चुपके चुपके ।

गुप्तः (पु०) वैश्य की उपाधि ।

गुप्तकः (पु०) रक्षक ।

गुप्ता (स्त्री०) काव्य की मुख्य नायिका । परकीया नायिका ।

गुप्तिः (स्त्री०) १ रक्षण । संरक्षण । २ छिपाव । दुराव । ३ ढकना । ४ गुफा । बिल । ५ जमीन में गढ़ा खोदना । ६ रक्षा का उपाय । किलाबन्दी । धुस । परकोटा । गढ़ की भीत । ७ बन्दीगृह । जेलखाना । ८ नाव का निचला तला । ९ रोकथाम ।

गुफ्, गुंफ्, गुम्फ् (धा० परस्मै०) [गुफति, गुंफति, गुफित, गुंफित] १गूथना । २(आलं०) लिखना । रचना ।

गुफित, गुंफित, गुम्फित (व० कृ०) गुथा हुआ । बाँधा हुआ । बुना हुआ ।

गुंफः, गुम्फः (पु०) १ बन्धन । गूथन । २ एकत्रकरण । रचना । क्रमबद्ध करण । ३ पहुँची । करभूषण विशेष । ४ गलमुच्छा । मूँछ ।

गुंफना, गुम्फना (स्त्री०) १ गूंथना । २ क्रमबद्ध करना । रचना । यथारीत्या शब्दयोजना करना । अच्छा निबन्ध ।

गुर् (धा॰ आ॰) [गुरते, गूर्त, गूर्ण] प्रयत्न करना। चेष्टा करना। [गूर्ण] । १ चोटिल करना। मार डालना। २ जाना।

गुरणम् (न॰) प्रयत्न। सतत चेष्टा।

गुरु (वि॰) } [तुलनात्मक—गरीयस, गरिष्ठ] १
गुर्वी (वि॰) } भारी। बोझिल। २ महान। ३ दीर्घ। ४ महत्वपूर्ण। ५ क्लिष्ट। (असह्य)। ६ प्रचण्ड। ७ सम्मानित। ८ गरिष्ठ जो शीघ्र न पचे। ९ उत्तम। सर्वोत्कृष्ट। १० प्यारा। प्रेमपात्र। ११ अहङ्कारी। घमण्डी।—अर्थः, (पु॰) अध्यापन का शुल्क। पढ़ाई की फीस।—उत्तमः, (पु॰) परमात्मा।—कारः, (पु॰) पूजन। सम्मान।—क्रमः, (पु॰) परम्परागत प्राप्त शिक्षा।—जनः, (पु॰) बड़ा बूढ़ा कोई भी व्यक्ति।—तल्पः (पु॰) गुरु की शय्या।—तल्पगः,—तल्पिन्, (पु॰) १ गुरुपत्नी के साथ व्यभिचार करनेवाला। पाँच महापातकियों में से एक। २ सौतेली माता के साथ मैथुन करने वाला।—दक्षिणा, (स्त्री॰) वह शुल्क जो गुरु को दिया जाय।—दैवतः, (पु॰) पुष्पनक्षत्र।—पाक, (वि॰) गरिष्ठ (पदार्थ) जो कठिनता से पचे।—भं, (न॰) १ पुष्प नक्षत्र। २ कमान। धनुष।—मर्दलः, (पु॰) ढोलक या मृदङ्ग।—रत्नं, (न॰) पुखराज।—वर्तिन्,—वासिन्, (पु॰) ब्रह्मचारी। विद्यार्थी, जो गुरु के पास या घर में रहे।—वृत्तिः, (स्त्री॰) ब्रह्मचारी का अपने गुरु के प्रति व्यवहार।

गुरुः (पु॰) १ पिता। २ वृद्ध। ३ शिक्षक। अध्यापक। ४ मन्त्रदाता। दीक्षा देने वाला। ५ प्रभु। अध्यक्ष। शासक। ६ देवाचार्य। बृहस्पति। ७ बृहस्पति ग्रह। ८ किसी नये सिद्धान्त का प्रचारक। ९ पुष्प नक्षत्र। १० द्रोणाचार्य। ११ मीमांसकों में सिद्धान्त विशेष के प्रवर्तक प्रभाकर।

गुरुक (वि॰) [स्त्री॰—गुरुकी] १ कुछ थोड़ा हल्का। २ छन्दोशास्त्र में गुरु वर्ण।

गुर्जरः } (पु॰) गुजरात प्रान्त।
गूर्जरः }

गुर्विणी } (स्त्री॰) गर्भवती स्त्री।
गुर्वी }

गुलः (पु॰) शीरा। राब। चोटा।

गुलुच्छः } (पु॰) दस्ता। गुच्छा।
गुलुञ्छः }

गुल्फः (पु॰) गट्टा। गिट्टा। पावों की गांठे।

गुल्मं (न॰) } १ झाड़ी। वृक्षों का झुरमुट। वन।
गुल्मः (पु॰) } जङ्गल। २ प्रधान पुरुषों से युक्त रक्षकदल, जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घुड़सवार और ४५ पैदल होते हैं। ३ दुर्ग। क़िला। ४ प्लीहा। ५ प्लीहावृद्धि। ६ देहाती पुलिस की चौकी। ७ घाट।

गुल्ममूलम् (न॰) अदरक। आदी।

गुल्मलता (स्त्री॰) सोमवल्ली।

गुल्मिन् (वि॰) [स्त्री॰—गुल्मिनी] १ झाड़ बाँध कर उगने वाला। २ प्लीहावृद्धि का रोगी।

गुल्मी (स्त्री॰) खीमा। तंबू।

गुवाकः } (पु॰) सुपाड़ी का पेड़।
गूवाकः }

गुह् (धा॰ उभय॰) [गूहति, गूहते, गूढ] संवरण करना। छिपाना। ढकना।

गुहः (पु॰) १ कार्तिकेय। २ घोड़ा। ३ शृङ्गवेरपुर के निषादों का राजा और श्रीरामचन्द्र जी का मित्र। ४ विष्णु।

गुहा (स्त्री॰) १ गुफा। २ छिपाव। दुराव। ३ गढ़ा। बिल। ४ हृदय।—आहित, (वि॰) हृदयस्थित।—चरं, (न॰) ब्राह्मण।—मुख, (वि॰) खुला हुआ मुख वाला।—शयः, (पु॰) १ चूहा। २ शेर। चीता। ३ परमात्मा। ४ अज्ञान।

गुहिनं (न॰) वन। जंगल।

गुहेरः (पु॰) १ अभिभावक। संरक्षक। २ लुहार।

गुह्य (स॰ का॰ कृ॰) १ छिपाने के योग्य। गुप्त। २ एकान्त। ३ रहस्य।—दीपकः, (पु॰) जुगनू।—निष्यन्दः, (पु॰) पेशाब। मूत्र।—भाषितं, (न॰) १ रहस्यमयी वार्ता या वार्तालाप। २ रहस्य।—मयः, (पु॰) कार्तिकेय।

गुह्यं, (न॰) रहस्य। गुप्तत्व।

गुह्यः (पु॰) १ पाखण्ड। दम्भ। २ कछुवा।

गुह्यकः (पु॰) देवयोनि विशेष। यह भी कुबेर के किन्नरों की तरह प्रजा हैं और धनागार की रक्षा का काम इनके सुपुर्द है।

गूः (स्त्री०) १ कूड़ा करकट। २ विष्ठा। मल।

गूढ (व० कृ०) १ गुप्त। छिपा हुआ। २ ढका हुआ। ३ गहन। ४ एकान्त। अङ्गः, (पु०) कछुवा। —अंघ्रिः, (पु०) साँप।—आत्मन्, (गूढात्मन्) परमात्मा।—उत्पन्नः,—जः, (पु०) धर्मशास्त्रों के मतानुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक। अज्ञातनामा पिता का पुत्र, जिसकी उत्पत्ति गुपचुप हुई हो।

'गृहे प्रच्छन्न उत्पन्नो गूढजस्तु सुतः स्मृतः।'

—याज्ञवल्क्य।

—नीड़ः, (पु०) खञ्जन पत्नी।—पथः, (पु०) १ गुप्तमार्ग। २ पगडंडी। ३ मन। समझ। प्रतिभा। —पाद्,—पादः, (पु०) सर्प। साँप।—पुरुष, (पु०) भेदिया। जासूस। —पुष्पकः, (पु०) वकुल वृत्त।—मार्गः, (पु०) सुरङ्गी रास्ता।—मैथुनः, (पु०) काक। कौआ।—वर्चस्, (पु०) मैंढक।—साक्षिन्, (न०) प्रपच्छी गवाह। ऐसा गवहा जो छिप कर अन्य गवाहों की गवाही सुन ले और तदनुसार स्वयं गवाही दे।

गूथं (न०)
गूथः (पु०) } विष्ठा। मल।

गूषणा (स्त्री०) आँखों की वह आकृति जो मोर के पंखों में होती है।

गृ (धा० परस्मै०) [गरति] छिड़कना। तर करना। नम करना।

गृंज्
गृञ्ज् } (धा० परस्मै०) [गर्जति, या गृंजति] नाद करना। गर्जना। घुरघुराना। गुर्राना।

गृंजनः
गृञ्जनः } (पु०) १ गाजर। २ शलगम। ३ गाँजा।

गृंजनम्
गृञ्जनम् } (व०) विषैले तीरों से वध किये हुए पशु का माँस।

गृडिवः
गृडीवः } (पु०) श्रृगाल विशेष। स्यारों की एक जाति।

गृध् (धा० परस्मै०) [गृध्यति,—गृद्ध] कामना करना। लोभ करना। लालच दिखाना।

गृधु (वि०) लंपट। कामी।

गृधुः (पु०) कामदेव।

गृध्नु (वि०) १ लालची। लोभी। २ उत्सुक। अभिलाषी।

गृध्यं (न०)
गृध्या (स्त्री०) } अभिलाषा। लालच। लोभ।

गृध्र (वि०) लालची। लोभी।—कूटः, (पु०) एक पर्वत का नाम जो राजगृह के समीप है।—पति,—राजः, (पु०) जटायु की उपाधि।—वाज,—वाजित, (वि०) गीध के परों से युक्त (वाण)।

गृध्रं (न०)
गृध्रः (पु०) } गीध। गिद्ध।

गृष्टिः (स्त्री०) १ एक प्रसूता गौ। एक व्यान की गौ। वह गौ जो केवल एक बार ही व्यायी हो। २ कोई भी जवान मादा जानवर।

गृहं (न०) १ घर। भवन। २ पत्नी।

"न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।"

—पंचतन्त्र।

३ गृहस्थ का जीवन। ४ नाम। [यह शब्द जब एक घर के लिये प्रयुक्त किया जाता है, तब नपुंसक लिङ्ग और जब एक से अधिक घरों के लिये तब पुल्लिङ्ग होता है। यथा मेघदूते—"तत्रागारं धनपति-गृहान्।"]।—गृहः, (बा० पु०) १ घर।—अक्षः (पु०) छेद। सूराख़। खिड़की (विशेष)।—अधिपः,—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) गृहस्थ।—अयनिकः, (पु०) गृहस्थ।—अर्थः, (पु०) गृहस्थी के मामले।—अम्लं, (न०) काँजी। खट्टामाँड।—अवग्रहणी, (स्त्री०) देहरी। दहलीज़ (पु०) २ पाट। सिल।—आरामः, (पु०) घर के आसपास का बाग। —आश्रमः, (पु०) गृहस्थ।—आश्रमिन्, (पु०) गृहस्थ।—उपकरणं, (न०) गृहस्थी के लिये उपयोगी पात्र अथवा अन्य कोई वस्तु।—कपोतः, —कपोतकः, (पु०) पालतू कबूतर।—करणं, (न०) घर गृहस्थी के मामले। भवन या घर की इमारत।—कर्मन्, (न०) गृहस्थी के धंधे।—कलहः, (पु०) घरेलू झगड़े।—कारकः, (पु०) थवई। राज। मैमार।—कार्य, घर गृहस्थी के काम।—चुल्ली, (स्त्री०) घर, जिसमें पास पास दो कमरे हों, किन्तु इनमें से एक का मुख पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर हो।

—छिद्रम्, (न०) गृहच्छिद्र । घर गृहस्थी की कमज़ोरियाँ या कलङ्क । २ पारिवारिक झगड़े । —जः,—जातः, (पु०) वह दास जो वहीं या उसी घर में जन्मा हो जिसमें वह नौकर हो ।—जालिका, (स्त्री०) धोखा । कपट । छल । कपट वेश ।—ज्ञानिन् —[गृहेज्ञानिन्, भी रूप होता है ।] (वि०) अनुभवशून्य । मूर्ख । मूढ़ । बेवकूफ ।—तटी, (स्त्री०) चबूतरा । चौतरा ।—देवता, (स्त्री०) घर का देवता । कुलदेवता ।—देहली, (स्त्री०) दहलीज़ । दारी ।—नमनम्, (न०) पवन । हवा ।—नाशनः, (पु०) जंगली कबूतर ।—नीडः, (पु०) गौरैया ।—पतिः, (पु०) १ गृहस्थ । २ यज्ञ करने वाला । घर का स्वामी । गृहस्थ के अनुष्ठेय कर्म, यथा आतिथ्य ।—पालः, (पु०) १ घर का मालिक । २ घर का कुत्ता ।—पोतकः, (पु०) वह स्थल जिसके ऊपर मकान खड़ा हो और उससे सम्बन्ध रखने वाली उसके आस पास की ज़मीन ।—प्रवेशः (पु०) नये बने मकान में जाने के पूर्व कतिपय शास्त्रीय कर्मानुष्ठान ।—बभ्रुः, (पु०) पालतू न्योला । —बलिः, (स्त्री०) अवशिष्ट अन्न से सब प्राणियों को आहारदान । जैसे पशु पक्षी, गृहदेवता आदि को ।—भङ्गः, (पु०) १ घर से निर्वासित । २ घर को नाश करना । ३ घर फोड़ना । ४ असफलता । किसी दूकान या घर की बरबादी ।—भेदिन्, (वि०) १ घर का भेद । घर का भेदुआ । २ घर में झगड़े उत्पन्न कराने वाला । —मणिः, (पु०) दीपक । लेंप ।—माचिका, (स्त्री०) चमगादड़ ।—मृगः (पु०) कुत्ता । —मेधः, (पु०) गृहस्थ ।—यंत्र, (न०) डंडा या बाँस जिस पर उत्सव के अवसरों पर ध्वजा फहरायी जाय ।—वित्तः, (पु०) घर का मालिक ।—शुकः, (पु०) आमोद प्रमोद के लिये पाला गया तोता ।—संवेशक, (पु०) थवई । राज । मैमार ।—स्थः, (पु०) गृहस्थ । बालबच्चों वाला ।

गृह्याय्यः (पु०) गृहस्थ । बालबच्चों वाला ।

गृह्यालु (वि०) पकड़ने वाला । ग्रहण करने वाला ।

गृहिणी (स्त्री०) घरवाली । पत्नी ।—पदं, (न०) घरस्वामिनी की मर्यादा ।

गृहिन् (पु०) गृहस्थ । बाल बच्चे वाला ।

गृहीत (व० कृ०) १ ग्रहण किया हुआ । २ स्वीकृत । ३ प्राप्त । उपलब्ध । ४ पहिना हुआ । धारण किया हुआ । ५ लूटा हुआ या लुटा हुआ । ६ सीखा हुआ । पढ़ा हुआ । समझा हुआ ।—गर्भा, (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।—दिश्, (वि०) १ भगोड़ा । २ ग़ायब । लापता ।

गृहीतिन् (वि०) [स्त्री—गृहीतिनी] वह व्यक्ति जिसने कोई बात समझ ली हो ।

गृहीतिनर्दिन् (पु०) घर में डींगे मारने वाला और घर के बाहिर युद्ध में पीठ दिखाने वाला । कायर । डरपोंक ।

गृह्य (वि०) १ आकर्षणीय । प्रसन्न करने योग्य । २ घरेलू । ३ परतंत्र । परमुखापेक्षी । ४ पालतू । ५ बाहिर अवस्थित । ६ मल-द्वार ।—अग्नि, (पु०) अग्निहोत्र की आग ।

गृह्यः (पु०) १ घर में बसने वाला । २ पालतू जानवर ।

गृह्या (स्त्री०) नगर के आसपास का गाँव ।

गॄ (धा० परस्मै०) [गृणाति, गूर्ण] १ बोलना । पुकारना । बुलाना । आमंत्रण करना । उद्घोषित करना । २ वर्णन करना । ३ प्रशंसा करना । स्तव करना ।

गेंडुकः } (पु०) गेंद । गद्दा ।
गेंदुकः }

गेय (वि०) १ गाने वाला । गवैया । २ गाने योग्य ।

गेप् (धा० आत्म०) [गेपते, गेप्ता,] तलाश करना । खोजना । ढूंढ़ना । अनुसंधान करना ।

गेहम् (न०) घर । मकान । बस्ती ।

गेहेक्ष्वेडिन् (वि०) भीरु । कायर । डरपोंक ।

गेहेदाहिन् (वि०) भीरु । कायर । डरपोंक ।

गेहेनर्दिन् (वि०) डरपोंक । पर्दे का मुर्गा । गोबर के ढेर पर बैठा हुआ मुर्गा ।

गेहेमेहिन् (वि०) घर में मूतने वाला । कामचोर ।

गेहेव्याडः (पु०) अकड़बाज़ । डींगें हाँकने वाला । अभिमानी ।

गेहेशूरः (पु०) भीरु । डरपोंक ।

गेहिन् (वि०) [स्त्री०—गेहिनी,] देखो गृहिन्, ।
गेहिनी (स्त्री०) पत्नी । गृहिणी । घर की मलकिन ।
गै (धा० पर) [गायति,—गीत,] १ गाना । गीत गाना । २ गाने के स्वर में पढ़ना या बोलना । ३ वर्णन करना । निरूपण करना । ४ पद्य द्वारा वर्णन करना या कविता बनाकर प्रसिद्ध करना ।
गैर (वि०) [स्त्री०—गैरी] पहाड़ पर उत्पन्न ।
गैरिक (वि०) [स्त्री०—गैरिकी] पहाड़ पर उत्पन्न ।
गैरिकं (न०) } गैरिकः (पु०) } गेरू । (न०) सुवर्ण । सोना ।
गैरेयं (न०) राल । नफ़्ता ।
गो (पु० स्त्री०) [कर्त्ता—गौः] १ पशु । मवेशी (बहुवचन में) । २ गौ से उत्पन्न कोई भी वस्तु जैसे दूध, चमड़ा आदि । ३ नक्षत्र । ४ आकाश । ५ इन्द्र का वज्र । ६ किरण । ७ हीरा । ८ स्वर्ग । ९ तीर ।
गो (स्त्री०) १ गौ । २ पृथिवी । ३ वाणी । ४ सरस्वती देवी । ५ माता । ६ दिशा । ७ जल । ८ नेत्र ।
गो (पु०) १ साँड । बैल । २ रोम । लोम । ३ इन्द्रिय । ४ वृषराशि । ५ सूर्य । ६ नौ की संख्या । ७ चन्द्रमा । ८ घोड़ा ।—कण्टकः, (पु०)—कण्टकम्, (न०) बैलों से खूंदा हुआ मार्ग या स्थान जो दूसरों के जाने योग्य न रह गया हो । २ गाय का खुर । ३ गौ के खुर की नोंक ।—कर्णः, (पु०) १ गाय का कान । २ खच्चर । ३ साँप । ४ बालिश्त । वित्ता । माप विशेष । ५ अवध प्रान्त का तीर्थ विशेष जो गोकरननाथ के नाम से प्रसिद्ध है । ६ बाणविशेष ।—किराटा,—किराटिका, (स्त्री०) मैना पक्षी ।—किलः,—कीलः, (पु०) १ हल । २ खल्ल ।—कुलं, (न०) १ गौ की रौहर । गौओं का समूह । २ गोशाला । ३ गोकुल गाँव जहाँ श्रीकृष्ण पाले पोसे गये थे ।—कुलिक, (वि०) १ दलदल में फंसी गौ को निकालने में सहायता न देने वाला । २ ऐंचाताना । भेंड़ा ।—कृतं, (न०) गोबर ।—क्षीरं, (न०) गाय का दूध ।—गृष्टिः, (स्त्री०) एक बार की ब्यायी गाय ।—गोयुगं, (न०) बैलों की एक जोड़ी ।—गोष्ठं, (न०) गोशाला ।—ग्रन्थिः, (स्त्री०) १ कंडे । उपरी । २ गोशाला ।—ग्रहः, (पु०) मवेशी पकड़ना ।—ग्रासः, (पु०) भोजन करने के पूर्व निकाला हुआ हिस्सा ।—घृतं, (न०) १ वृष्टि का जल । २ घी । गौ का घी ।—चन्दनम्, (न०) एक प्रकार का चन्दन ।—चर, (वि०) १ गौ का चरा हुआ । २ पृथिवी पर घूमने वाला । ३ लक्ष्य के भीतर ।—चरः, (पु०) १ गोचरभूमि । चरागाह । २ ज़िला । प्रान्त । विभाग । प्रदेश । ३ इन्द्रियों की पहुँच के भीतर । इन्द्रियों के विषय । ४ पहुँच । लक्ष्य के भीतर । ५ पकड़ । शक्ति । प्रभाव । काबू । ६ दिङ्मण्डल । दिगन्तवृत्त । आकाशमण्डल ।—चर्मन्, (न०) १ गाय का चमड़ा । २ सतह नापने का माप विशेष, जिसकी परिभाषा वशिष्ठ जी ने इस प्रकार दी है—

> दशहस्तेन वंशेन दशवंशान् समन्ततः
> पञ्च चाभ्यधिकान् दद्यादेतद्गोचर्म चोच्यते ॥

—चर्मवसनः, (पु०) शिवजी ।—चारकः, (पु०) ग्वाला । अहीर ।—जरः, (पु०) बूढ़ा साँड़ या बैल ।—जलं, (पु०) गोमूत्र ।—जागरिकं, (न०) आनन्द । उल्लास । उछाह । मङ्गल ।—तल्लजः, (पु०) उत्तम साँड़ या गाय ।—तीर्थं, (न०) गोशाला ।—त्रं, (न०) १ गोशाला । २ वंश । कुल । ३ नाम । संज्ञा । ४ समूह । ५ वृद्धि । ६ वन । ७ खेत । ८ मार्ग । ९ सम्पत्ति । १० छत्र । छाता । ११ भविष्यज्ञान । १२ श्रेणी । जाति । वर्ग ।—त्रः, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।—त्रकीला, (स्त्री०) पृथिवी ।—त्रज, (वि०) एक ही कुल या वंश में उत्पन्न ।—त्रपटः, (पु०) वंशावली ।—त्रभिद्ः, (पु०) पहाड़ों को फोड़ने वाला । इन्द्र ।—त्रस्खलनम्, (न०)—त्रस्खलितम्, (न०) गलत नाम से पुकारना ।—त्रा, (स्त्री०) १ गौओं की हेड़ । २ पृथिवी ।—दन्तम्, (न०) हरताल ।—दा, (स्त्री०) गोदावरी नदी ।—दानम्, (न०) बाल काटने का दान । यथा रघुवंशे—"गोदान विधेरनन्तरम् ।"—दारणं, (न०) १ हल । २

कुद्दाली । फावड़ा ।—दावरी, (स्त्री०) नदी विशेष ।—दुह्, (पु०)—दुहः, (पु०) १ ग्वाला । अहीर । गाय दुहने वाला । २ गाय दुहने का समय ।—दोहनम्, १ गाय दुहने का समय । २ गाय दुहना ।—दोहिनी, (स्त्री०) बासन जिसमें दूध दुहा जाय ।—द्रवः, (पु०) गोमूत्र ।—धरः, (पु०) पर्वत ।—धुमः,—धूमः, (पु०) १ गेहूँ । २ नारंगी । संतरा ।—धूलिः, (पु०) वह समय जब गोचरभूमि से गौएं चर कर लौटे ।—धेनु', (स्त्री०) गाय जो दूध देती हो और जिसके नीचे बछड़ा हो ।—ध्र०, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।—नन्दी, (स्त्री०) मादा सारस ।—नर्दः, (पु०) १ सारस । २ देश विशेष ।—नर्दीयः, (पु०) महाभाष्यकार पतञ्जलि ।—नसः,—नासः (पु०) १ सर्प विशेष । २ रत्नविशेष ।—नाथः, (पु०) १ बैल । साँड । २ ज़मीदार । ३ ग्वाला । ४ गौं का धनी ।—निष्यन्दः, (पु०) गोमूत्र ।—पः, (पु०) १ गोप । ग्वाला । २ गोशाला का प्रधान । ३ गाँव का दारोगा । ४ राजा । ५ संरक्षक । अभिभावक ।—पी, (स्त्री०) गोप की स्त्री ।—पीथ्यत्तः, (पु०)—पेन्द्रः,—पेशः, (पु०) श्रीकृष्ण ।—पीदलः, (पु०) सुपारी का वृक्ष ।—पतिः, (पु०) १ गौ का धनी । २ साँड । ३ मुखिया । प्रधान । ४ सूर्य । ५ इन्द्र । ६ कृष्ण । ७ शिव । ८ वरुण । ७ राजा ।—पशुः, (पु०) यज्ञीय पशु ।—पानसी, (स्त्री०) छप्पर की थुनकिया ।—पालः, (पु०) १ ग्वाला । अहीर । २ श्रीकृष्ण । ३ राजा ।—पालकः, (पु०) १ अहीर । ग्वाला । २ शिव ।—पालिका,—पाली, (स्त्री०) अहीरिन । ग्वाला की स्त्री ।—पीतः, (पु०) खंजन पक्षी विशेष ।—पुच्छः (पु०) १ वानर विशेष । २ हार विशेष जिसमें दो, चार या ३४ लरे हों ।—पुटिकम्, (न०) शिव जी के नादिया का सिर ।—पुत्रः (वि०) बछड़ा ।—पुरं (न०) १ नगर-द्वार । २ मुख्य द्वार । ३ मंदिर का सजा हुआ द्वार ।—पुरीषं, (न०) गोबर ।—प्रकाण्डम्, (न०) विशाल बैल ।—प्रचार, (पु०) गोचर भूमि ।—प्रवेशः, (पु०) गौओं के चरकर लौटने का समय, सूर्यास्त काल ।—भृत्, (पु०) पहाड़ ।—मक्षिका, बग्घी । डाँस ।—मण्डलम्, (न०) १ भूगोल । २ गौओं का झुंड ।—मतल्लिका (स्त्री०) वह गाय जो काबू में लायी जा सके । सीधी गाय । उत्तम गाय ।—मथ', (पु०) ग्वाला ।—मायुः, (पु०) १ शृगाल । २ मेंढ़क । एक गन्धर्व का नाम ।—मुखः,—मुखम्, (न०) वाद्य यंत्र विशेष ।—मुखः, (पु०) १ मगर । घड़ियाल । नक्र । २ चोरों का किया हुआ विशेष प्रकार का दीवार में सूराख ।—मुखं, (न०)—मुखी, (स्त्री०) जप करने की थैली ।—मूढ (वि०) बैल की तरह मूढ । मूत्रं, (न०) गाय का मूत्र ।—मृगः, (पु०) एक प्रकार का बैल ।—मेदः, (पु०) मणि विशेष ।—यानम्, (न०) बैल-गाड़ी । बहली । रथ ।—रक्षः, (पु०) १ गोपाल । ग्वाला । २ नारंगी ।—रङ्कुः, (पु०) १ जलपक्षी । कैदी । बंदी । ३ नग्ना स्त्री । परमहंस ।—रसः, (पु०) १ गाय का दूध । २ दही । ३ मक्खन ।—राजः, (पु०) सर्वोत्तम बैल ।—रुतं, (न०) दो कोस या चार मील का माप ।—राटिका,—राटी, (स्त्री०) मैना पक्षी ।—रोचना (स्त्री०) गौ के मस्तक से निकला हुआ पीला पदार्थ ।—लवणं (न०) माप विशेष जिसके अनुसार गाय को निमक दिया जाता है ।—लांगुलः,—लांगूलः, (पु०) वानर विशेष ।—लोमी (स्त्री०) वेश्या । रंडी ।—वत्सः, (पु०) बछड़ा ।—वत्सआदिन्, (पु०) भेड़िया ।—वर्धनः (पु०) मथुरा ज़िले का एक पर्वत और तीर्थस्थान ।—वर्धन-धरः,—वर्धनधारिन्, (पु०) श्रीकृष्ण ।—वशा, (स्त्री०) बाँझ गाय ।—वाटं,—वास, (पु०) गोशाला ।—विद्, (पु०) १ मुख्य ग्वाला । अहीरों का मुखिया । २ श्रीकृष्ण । ३ बृहस्पति —विष्, (स्त्री०)—विष्ठा, (स्त्री०) गोबर ।—विसर्गः, (पु०) प्रातःकाल का वह समय जब चरने के लिये गौएं ढीली जाती हैं ।—

वीर्य, (न०) दूध का मूल्य।—वृंदम्, (न०) मवेशियों की हेड़ या रौहर।—वृंदारकः, (पु०) सर्वोत्तम बैल या गौ।—वृषः, (पु०) उत्तम साँड़।—वृषध्वजः, (पु०) शिवजी।—व्रजः, (पु०) १ गोशाला। २ गौओं का झुंड। ३ चरागाह जहाँ गौएं चरें।—शकृत, (न०) गोबर।—शालं, (न०)—शाला, (स्त्री०) वह छाया हुआ घर, जिसमें गौए रक्खी जाय।—षड्गवम्, (न०) बैलों की तीन जोड़िया।—ष्ठः, (पु०) गोशाला।—सख्यः, (पु०) ग्वाला। अहीर।—सर्गः, (पु०) प्रातःकाल।—सूत्रिका, (स्त्री०) गाय बाँधने की रस्सी।—स्तनः, (पु०) १ गाय का ऐन या थन। २ गुलदस्ता। चौलड़ा मोती का हार।—स्तना,—स्तनी, (स्त्री०) अँगूरों का गुच्छा।—स्थानं, (न०) गोशाला।—स्वामिन्, (पु०) १ गाय का धनी। २ भिक्षुक विशेष। ३ उपाधि विशेष।—हत्या, (स्त्री०) गोवध।—हनम्, (न०) गोबर।—हित, (वि०) गौ की रक्षा करने वाला।

गोडुम्बः (पु०) कलींदा। हिंगवाना। तरबूज़।

गोणी (स्त्री०) १ गोन। बोरा। २ एक द्रोण के बराबर की तौल। ३ चिथड़ा। गूदड़।

गोंडः, गोण्डः (पु०) १ मासल नाभि। २ नीच जाति विशेष। विशेष कर नर्वदा और कृष्णानदी के बीच विन्ध्याचल के पूर्वी भाग में बसने वाली जाति के लोग।

गोतमः (पु०) सतानन्द के पिता और अहिल्या के पति एवं अँगिरस गोत्री एक ऋषि विशेष।

गोतमी (स्त्री०) गोतम की स्त्री अहल्या।—पुत्रः, (पु०) सतानन्द।

गोधा (स्त्री०) १ चमड़े का पट्टा जो बाईं भुजा पर धनुष की रगड़ बचाने को बांधा जाता है। २ नाका। मगर। घड़ियाल। ३ ताँत। डोरी।

गोधिः (पु०) १ माथा। २ गङ्गा का नक्र।

गोधिका (स्त्री०) गोह। एक प्रकार का जन्तु विशेष।

गोपः (पु०) [स्त्री०—गोपी] १ रक्षक। २ छिपाव। चुराव। ३ गाली। कुवाच्य। ४ उत्तेजना। आन्दोलन। ५ दीप्ति। चमक। कान्ति।

गोपायनं (न०) रक्षण। बचाव।

गोपायित (वि०) रक्षित।

गोप्तृ (वि०) [स्त्री०—गोप्त्री] रक्षा करने वाला। छिपाने वाला। दुराने वाला।

गोमत् (वि०) गोधन वाला।

गोमती (स्त्री०) नदी विशेष।

गोमयं (न०), गोमयः (पु०) गोबर।

गोमयछत्रं, गोमयप्रियं (न०) कठफूला। कुकुरमुत्ता।

गोमिन् (पु०) १ मवेशी का धनी। २ स्यार। शृगाल। ३ अर्चक। ४ बुद्धदेव का सेवक।

गोरणं (न०) स्फूर्ति। सतत प्रयत्न। अविच्छिन्न चेष्टा।

गोर्दम् (न०) मस्तिष्क। दिमाग।

गोलः (पु०) १ गेंद। गोला। गहा। २ भूगोल। ३ नभमण्डल। ४ विधवा का पुत्र। वेश्यापुत्र। हरामी। ५ एक राशि पर कई ग्रहों का समागम।

गोला (स्त्री०) १ लड़कों के खेलने की काठ की गेंद। २ जल रखने का मटका। कूंडा। ३ सिंगरफ। लाल सखिया। ४ स्याही। मसी। ५ सखी। सहेली। ६ दुर्गा का नाम। गोदावरी नदी का नाम।

गोलकः (पु०) १ गेंद। गोला। २ लकड़ी की गेंद। ३ मिट्टी का बड़ा घड़ा। ४ विधवापुत्र। ५ एक राशि पर ६ या अधिक ग्रहों का योग। ६ शीरा। राब। ७ मदन का पेड़।

गोष्ठ् (धा० आ०) [गोष्ठते] एकत्र होना। जमा होना। ढेर लगाना।

गोष्ठः (पु०), गोष्ठं (न०) १ गोशाला। २ अहीरों का अड्डा। (पु०) जमाव।

गोष्ठिः, गोष्ठी (स्त्री०) १ जमाव। सभा। मीटिंग। २ संस्था। ३ वार्तालाप। बातचीत। संवाद। ४ समूह। समुदाय। ५ सम्बन्ध। नाता। ६ नाटक की रचना विशेष।

गोष्पदं (न०) १ गौ का खुर। २ धूल में गाय के खुर का चिन्ह। ३ उस खुरचिन्ह में समा जाने

वाला जल । ४ गौ के खुर में समावे उतना जल । ५ स्थान जहाँ गाएं प्रायः आया जाया करें ।

गोह्य (वि०) छिपाने योग्य । गोप्य ।

गौञ्जिकः }
गौन्जिकः } (पु०) सुनार ।

गौडः (पु०) १ एक प्रान्त विशेष का नाम । स्कन्द-पुराण में इस देश का परिचय इस प्रकार दिया गया है :—

वंगदेशः समारभ्य भुवनेशान्तगः शिवे ।
गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्या विशारदः ।

२ ब्राह्मणों की जाति विशेष ।

गौडाः (पु० बहु०) गौड देश के अधिवासी ।

गौडी (स्त्री०) १ शीरा या गुड़ की शराब । २ रागिनी विशेष । ३ छन्दःशास्त्र की रीति या वृत्ति विशेष ।

गौडिकः (पु०) गन्ना । ऊख ।

गौण (वि०) [स्त्री०—गौणी] १ अमुख्य । अप्रधान । २ व्याकरण में प्रधान का उल्टा । ३ गुणवाचक । गुण बतलाने वाला ।

गौण्यं (न०) मातहती । अधीन होकर रहना । अप-कृष्ट पद ।

गौतमः (पु०) १ (क) भरद्वाज ऋषि का नाम । (ख) सतानन्द मुनि का नाम । (ग) कृपाचार्य का नाम, जो द्रोणाचार्य के साले थे । (घ) बुद्ध-देव का नाम । (ङ) न्यायशास्त्र प्रवर्तक का नाम ।—सम्भवा, (स्त्री०) गोदावरी नदी ।

गौतमी (स्त्री०) १ द्रोणाचार्य की स्त्री कृपी का नाम । २ गोदावरी नदी की उपाधि । ३ बुद्धदेव की शिक्षा या उपदेश । ४ गौतम द्वारा प्रवर्तित न्याय दर्शन । ५ हल्दी । ६ गोरोचन । ७ कण्व मुनि की बहिन ।

गौधूमीनं (न०) खेत जिसमें गेहूँ उत्पन्न होते हैं ।

गौनर्दः (पु०) महाभाष्य प्रणेता पतञ्जलि की उपाधि ।

गौपिकः (पु०) गोपी या गोप की स्त्री का बालक या पुत्र ।

गौप्तेयः (पु०) वैश्या का पुत्र ।

गौर (वि०) [स्त्री०—गौरा या गौरी] १ सफेद । २ पिलौंहाँ । पीला या लाल । ३ ललौंहा । ४ चमकीला । दीप्तियुक्त । ५ विशुद्ध । स्वच्छ । मनोहर ।

गौरः (पु०) १ सफेद रंग । २ पिलौंहाँ रंग । ३ ललौंहाँ रंग । ४ सफेद राई । ५ चन्द्रमा । ६ भैंसा विशेष । ७ एक प्रकार का हिरन ।

गौरं (न०) १ कमल-नाल-तन्तु । २ केसर । जाफ़ान । ३ सुवर्ण । सोना ।

गौरसर्षपः (पु०) सफेद राई ।

गौरास्यः (पु०) एक प्रकार का काले रंग का वानर जिसका मुख सफेद होता है ।

गौरक्ष्यं (न०) ग्वाला या गौओं की रखवाली करने वाले का पद ।

गौरवम् (न०) १ वजन । भारीपन । प्रयोजनीयता । ३ ज़रूरीपन । ४ सम्मान । प्रतिष्ठा । ५ कुलीनता पदमर्यादा । बड़प्पन । ६ भारीपन । गुरुत्व ।—आसनं (न०) सम्मान की बैठक ।—उरित, (वि०) प्रशंसित । कीर्तिवान । ख्याति सम्पन्न ।

गौरवितं (वि०) अत्यन्त सम्माननीय ।

गौरिका (स्त्री०) क्वारी । युवती लड़की । जवान लड़की ।

गौरिलः (पु०) १ सफेदराई । २ लोहे या ईस्पात लोहे की चूर या धूल ।

गौरी (स्त्री०) १ पारबती का नाम । २ आठवर्ष की कन्या । ३ क्वारी । रजोधर्म जिस लड़की को न हुआ हो वह लड़की । ४ गोरी या गेहुआ रंग की लड़की । ५ पृथिवी । ६ हल्दी । ७ गोरोचन । ८ वरुण की स्त्री । ९ मल्लिका की लता । १० तुलसी का पौधा । ११ मंजिष्ठ का पौधा ।—कान्तः,—नाथः, (पु०) शिवजी ।—गुरुः, (पु०) हिमालय पर्वत ।—जः, (पु०) कार्तिकेय ।—जम्, (न०) अबरक ।—पट्टः, (पु०) वह योनिरूपी अर्घा जिसमें शिवलिङ्ग, स्थापित किया जाता है ।—पुत्रः, (पु०) कार्तिकेय ।—ललितं, (न०) गोरोचन ।—सुतः (पु०) १ कार्तिकेय । २ ऐसी स्त्री का पुत्र जिसका विवाह आठ वर्ष की अवस्था में हुआ हो ।

गौरतल्पिकः, (पु०) गुरुपत्नी के साथ गमन करने वाला या गुरु की शय्या को भ्रष्ट करने वाला।

गौलक्षणिकः, (पु०) गौ के शुभाशुभ लक्षणों को जानने वाला।

गौल्मिकः, (पु०) किसी सैनिक दल का एक सिपाही।

गौशतिक (वि०) [स्त्री०—गौशतिकी] १०० गायें पालने वाला।

ग्मा (स्त्री०) पृथिवी।

ग्रथ् या ग्रन्थ् (धा० आत्मने०) [ग्रथते, ग्रन्थते] १ टेढ़ा करना। तिरछा करना। झुकाना २ गूथना। रचना।

ग्रथनम् (न०) १ गाढ़ा करना। जमाना। २ गूँथना। ३ पुस्तक की रचना करना। लिखना। [ग्रथना, भी अन्तिम दो अर्थों का वाची है।]

ग्रथनः (पु०) गुच्छा।

ग्रथित (व० कृ०) १ गूँथा हुआ। २ रचा हुआ। ३ श्रेणीबद्ध किया हुआ। यथाक्रम किया हुआ। ४ जमाया हुआ। गाढ़ा किया हुआ। ५ गाँठ गठीला।

ग्रन्थ् (धा० परस्मै०) [ग्रन्थित, ग्रथ्नाति, ग्रन्थयति-ग्रन्थयते, ग्रथित, और ग्रथते भी रूप होते हैं] १ बाँधना। गूथना। यथाक्रम करना। श्रेणी बद्ध करना। २ लिखना। रचना करना। ३ बनाना पैदा करना।

ग्रन्थः (पु०) १ बांधना। गाँठ लगाना। २ रचना। ग्रन्थ। पुस्तक। साहित्यिक रचना। ३ धन। सम्पत्ति। ४ अनुष्टुप छन्द वाला पद्य।—कार, —कृत, (पु०) ग्रन्थरचयिता। लेखक।—कुटी,—कूटी, (स्त्री०) १ पुस्तकालय। २ दफ्तर जहाँ काम किया जाय।—विस्तरः, (पु०) वृहदकारता। अकाण्डता। प्रगल्भ शैली।—सन्धिः, (स्त्री०) काण्ड। अध्याय। सर्ग।

ग्रन्थनम्, ग्रन्थना } देखो ग्रथन।

ग्रन्थिः (स्त्री०) १ गिल्टी। गुमड़ा। गुमड़ी। २ रस्सी की गाँठ। ३ कपड़े के आँचल की गाँठ, जिसमें पैसे रुपये गठियाये जाते हैं। ४ बैंत या नरकुल के पोरुओं की गाँठ या जोड़। ६ टेढ़ापन। भद्दापन। असत्य। ७ सूजना या फूलना।—छेदकः,—भेदः,—मोचकः, (पु०) गँठकटा। जेब कतरने वाला।—पर्णः, (पु०)—पर्णम्, (न०) १ एक सुगन्ध वृक्ष। २ एक सुगन्ध पदार्थ।—बन्धनम्, (न०) १ विवाह के समय दूल्हा दुलहिन का गठजोड़ा। २ पदी।—हरः, (पु०) सचिव। दीवान।

ग्रंथिकः, ग्रन्थिकः } (पु०) १ दैवज्ञ। ज्योतिषी। २ अज्ञातवास के समय राजा विराट के यहाँ रहते समय नकुल ने अपना नाम ग्रन्थिक ही रखा था।

ग्रंथित, ग्रन्थित } (वि०) देखो ग्रथित।

ग्रंथिन्, ग्रन्थिन् } (पु०) १ ग्रन्थ पढ़ने वाला। २ विद्वान। सुपठित।

ग्रथिल, ग्रन्थिल } (वि०) गाँठ गठीला

ग्रस् (धा० आत्म०) [ग्रसते, ग्रस्ते] १ निगलना। लील लेना। निघटाना। वर्त डालना। २ पकड़ना। ३ ग्रहण डालना। ४ शब्दों पर चिन्ह या दाग लगाना। ५ नष्ट करना। (उभय०) [ग्रसति, ग्रासयति,—ग्रासयते] खा डालना भक्षण कर जाना।

ग्रसनम् (न०)१ निगलना। खाना। २ पकड़ना। ३ चन्द्र और सूर्य का अपूर्ण ग्रास।

ग्रस्त (व० कृ०) १ खाया हुआ। भक्षण किया हुआ। २ पकड़ा हुआ। अधिकृत किया हुआ। प्रभाव पड़ा हुआ। ३ ग्रहण लगा हुआ।—ग्रस्तं (न०) ग्रहण सहित सूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना।—उदयः, (पु०) ग्रहण लगे हुए चन्द्रमा सूर्य का उदय होना।

ग्रस्तम् (न०) अर्द्धोच्चारित शब्द या वाक्य।

ग्रह् (धा० उभय०) वैदिक साहित्य में ग्रभ्, [गृह्णाति, गृहीत, (णिजन्त) ग्राहयति, जिघृक्षति] १ पकड़ना। लेना। ग्रहण करना। २ पाना। प्राप्त करना। अङ्गीकार करना। वसूल करना। उगाहना। ३ गिरफ़्तार करना। बंदी बनाना। ४ रोकना। थामना। पकड़ना। ५

आकर्षित करना। अपनी ओर खींचना। ६ जीतना। एक पक्ष में कर लेना। ७ प्रसन्न करना। खुश करना। ८ अधिकार में करना। प्रभावान्वित करना। ९ धारण करना। १० सीखना। जानना पहिचानना। समझना। ११ विश्वास करना। ख़याल करना। १२ इन्द्रियगोचर करना। १३ वशवर्ती करना १४ अनुमान करना। परिणाम निकालना। १५ बखान करना। वर्णन करना। १६ खरीदना। मोल लेना। १७ वञ्चित करना। छीन लेना। लूट लेना। १८ धारण करना। पहिन लेना। १९ पहचान लेना। २० (व्रत) रखना। २१ ग्रस लेना। २२ हाथ में (किसी) कार्य को लेना। [णिजन्त] १ लेना। ग्रहण करना। पकड़ना। स्वीकार करना। २ विवाह में दान कर डालना। ३ सिखलाना। बतलाना।

ग्रहः (पु०) १ पकड़ना। हाथ साफ करना। २ पकड़। लेना। प्राप्त करना। अङ्गीकार करना। उपलब्धि। ३ चोरी। डाँका। ४ लूट का माल। ५ ग्रहण (चन्द्रमा सूर्य का)। ७ ग्रह। ८ वर्णन। निरूपण। दुहराना। ९ ग्राह। नक्र। मगर। घड़ियाल। १० भूत। पिचाश। ११ बच्चों को कष्ट देने वाली दुष्ट योनि विशेष। १२ ज्ञान। बोध। १३ ज्ञानेन्द्रिय। १४ सततचेष्टा। निरन्तर प्रयत्न। १५ अभिप्राय। मंशा। मनोरथ। १६ संरक्षकता। अनुग्रह।—अधीन, (वि०) ग्रहों के शुभाशुभ फलों के ऊपर निर्भर।—अवमर्दनः, (पु०) राहु का नाम।—अवमर्दनम् (न०) ग्रहों की टक्कर।—अधीशः, (पु०) सूर्य।—आधारः, —आश्रयः, (पु०) ध्रुव वृत्त सम्बन्धी नक्षत्र। मेरु सम्बन्धी नक्षत्र।—आमयः, (पु०) १ मिर्गी। २ भूतावेश।—आलुञ्चनम्, (न०) शिकार पर झपटना और उसके टुकड़े टुकड़े कर डालना।—ईशः, (पु०) सूर्य।—कल्लोलः (पु०) राहु।—गतिः, (स्त्री०) ग्रहों की चाल।—चिन्तकः, (पु०) ज्योतिषी। दैवज्ञ।—दशा, (स्त्री०) ग्रह की दशा।—नायकः, (पु०) १ सूर्य। २ शनि।—निग्रहौ, (वचन) इनाम और दण्ड।—नेमि, चन्द्रमा।—पतिः, (पु०) १ सूर्य। २ चन्द्रमा।—पीडनम्, —पीडा, (स्त्री०) १ ग्रह के कारण दुःख या क्लेश। २ चन्द्र सूर्य का ग्रहण।—राजः, (पु०) १ सूर्य। २ चन्द्र। ३ बृहस्पति।—मण्डलं, (न०) —मण्डली, (स्त्री०) ग्रहों का वृत्त।—युतिः, (स्त्री०) ग्रहों का योग।—वर्षः, (पु०) वर्षफल।—विप्रः (पु०) ज्योतिषी।—शान्तिः, (स्त्री०) जपदानादि से अशुभ ग्रहों के अशुभ फल को दूर करना।—संगमम्, (न०) ग्रहों का योग।

ग्रहणम् (न०) १ पकड़ना। ग्रहण करना। २ पाना। प्राप्ति। अङ्गीकार करना। ३ वर्णन करना। कहना। ४ पहनना। धारण करना। ५ चन्द्र और सूर्य का ग्रहण। ६ बुद्धि। समझ। ७ ज्ञान। ८ प्रतिध्वनि झाँईं। ९ हाथ। १० इन्द्रिय।

ग्रहणिः } (स्त्री०) संग्रहणी का रोग। दस्तों की
ग्रहणी } बीमारी।

ग्रहिल (वि०) १ लिया हुआ। स्वीकृत। २ अविनयी। हठी। ज़िद्दी।

ग्रहीतृ [स्त्री०—ग्रहीत्री] १ पाने वाला। स्वीकार करने वाला। २ जान लेने वाला। पहिचान लेने वाला। देखने वाला। ३ कर्ज़दार। ऋणिया।

ग्रामः (पु०) १ गाँव। पुरवा। पुरा। २जाति। समाज। ३ समूह। समुदाय। ४ सरगम। स्वर। राग।—अधिकृत,—अध्यक्षः,—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) गाँव का मुखिया। चौधरी।—अन्तः, (पु०) ग्राम की सीमा। ग्राम के समीप की जगह।—अन्तरं, (न०) अन्य ग्राम।—अन्तिकम्, (न०) ग्राम का पड़ोस या सामीप्य।—आचारः, (पु०) गाँव की (रस्म)।—आधानं, (न०) शिकार।—उपाध्यायः, (पु०) ग्रामयाजक।—कण्टकः, (पु०) चुगलख़ोर। पिशुन।—कुमारः, (पु०) देहाती लड़का।—कूटः, (पु०) १ ग्राम का सर्वोत्तम पुरुष। २शूद्र।—घातः, (पु०) गाँव की लूट करने वाला।—घोषिन्, (पु०) इन्द्र।—चर्या, (स्त्री०) स्त्रीमैथुन।—जालं, (न०) कई एक ग्रामों का समूह।—णीः, (स्त्री०) १ गाँव या समाज का मुखिया या चौधरी। २ नेता। मुखिया। ३ नाई। ४ कामीपुरुष। (स्त्री०)

१ रंडी। वेश्या। २ नील का पौधा।—तक्षः, (पु०) बढ़ई जो गाँव में काम करे।—धर्मः, (पु०) स्त्रीमैथुन।—प्रेष्यः, (पु०) किसी ग्राम के समाज का संदेश ले जाने और ले आने वाला।—मद्गुरिका, (स्त्री०) ग्राम का झगड़ा या उत्पात। उपद्रव।—मुखः (पु०) हाट। बाज़ार।—मृगः, (पु०) कुत्ता।—याजकः, (पु०)—याजिन्, (पु०) १ ग्राम का उपाध्याय। २ पुजारी। अर्चक।—षंडः, (पु०) नपुंसक पुरुष। हिजड़ा।—संघः, (पु०) ग्रामीण संस्था।—सिंहः, (पु०) कुत्ता।—स्थ, (वि०) १ ग्राम में रहने वाला। २ एक ही ग्राम का बसने वाला साथी।—हासकः, (पु०) बहनोई।

ग्रामटिका (स्त्री०) अभागा गाँव। दरिद्र गाँव।

ग्रामिक (वि०) [स्त्री०—ग्रामिकी] १ ग्रामीण। गँवारू। २ गँवार।

ग्रामिकः (पु०) ग्राम का चौधरी या मुखिया।

ग्रामीणः (पु०) १ गाँव में रहने वाला। २ कुत्ता। ३ काक। ४ शूकर।

ग्रामेय (वि०) गाँव में उत्पन्न। गँवार।

ग्रामेयी (स्त्री०) रंडी। वेश्या।

ग्राम्य (वि०) गाँव सम्बन्धी। १ गाँव का। २ ग्रामवासी। ३ पालतू। हिला हुआ। ४ जुता हुआ। नीच। अशिष्ट। कमीना। ५ अश्लील।—अश्वः, (पु०) गधा।—कर्मन्, (न०) ग्रामवासी का पेशा या रोज़गार।—कुङ्कुमं, (न०) केसर।—धर्मः, (पु०) १ ग्रामवासी का कर्तव्य। २ मैथुन। स्त्रीप्रसङ्ग।—पशुः, (पु०) पालू जानवर।—बुद्धि, (वि०) अज्ञानी। हंसोड़। मसखरा।—वल्लभा, (स्त्री०) रंडी। वेश्या।—सुखं, (न०) मैथुन।

ग्राम्यः (पु०) पालतूकुत्ता।

ग्राम्यं (न०) १ गवारू बोलचाल। २ ग्राम में तैयार किया गया भोजन। ३ स्त्रीमैथुन।

ग्रावन् (पु०) १ पत्थर। चट्टान। २ पहाड़। ३ बादल।

ग्रासः (पु०) १ कवर। कौर। गस्सा। मुँह भर माप। २ भोजन। पालन पोषण का उपस्कर। ३ राहु या केतु ग्रस्त चन्द्र या सूर्य का एक भाग।—आच्छादनम्, (न०) भोजन कपड़ा।—शल्यं, (न०) गले में अटकी कोई भी वस्तु।

ग्राह (वि०) पकड़ा हुआ।

ग्राहः (पु०) १ पकड़। २ नक्र। ग्राह। मगर ३ बंदी। कैदी। ४ स्वीकृति। ५ समझ। ज्ञान। ६ अटलता। दृढ़ता। अत्यातुरोध। ७ दृढ़ प्रतिज्ञता। सङ्कल्प। निश्चय। ८ रोग। बीमारी।

ग्राहक (वि०) ख़रीदार। पाने वाला।

ग्राहकः (पु०) १ बाज। राजपक्षी। २ विषवैद्य। ३ ख़रीददार ४ पुलिस अफसर।

ग्रीवा (स्त्री) गरदन। घंटा, (स्त्री०) घोड़े के गले की घंटी या घुंघरू।

ग्रीवालिका देखो ग्रीवा।

ग्रीविन् (पु०) ऊंट।

ग्रीष्म (वि०) गर्म।

ग्रीष्मः (पु०) १ गर्मी की ऋतु। ज्येष्ठ और आषाढ के मास। २ गर्मी। ३ उष्णता।—उद्भवा, (स्त्री०)—जा, (स्त्री०) नवमल्लिका लता।

ग्रैव (वि०) [स्त्री०—ग्रैवी]
ग्रैवेय (वि०) [स्त्री०—ग्रैवेयी] } गरदन सम्बन्धी।

ग्रैवं
ग्रैवेयं } (न०) १ गले का पट्टा या कंठा। २ हाथी के गले की जंजीर।

ग्रैवेयकम् (न०) १ हार। कंठा। २ हाथी के गले की जंज़ीर।

ग्रैष्मक (वि०) [स्त्री०—ग्रैष्मिका] १ गर्मी में बोया हुआ। २ गर्मी की ऋतु में अदा करने योग्य।

ग्लपनम् (न०) १ मुर्झाना। सूखना। कुम्हलाना। २ पर्यवसान।

ग्लस् (धा० आत्म०) [ग्लसते, ग्लस्त] खा जाना। भक्षण कर जाना।

ग्लहः (धा० उभय०) [ग्लहति—ग्लहते, ग्लाहयति,—ग्लाहयते] १ जुआ खेलना। जुआ में जीतना। २ पाना। प्राप्त करना।

ग्लहः (पु०) १ जुआरी। २ दाँव। ३ पाँसा। ४ जुआ। द्यूत।

म्लान (व० कृ०) १ थका हुआ । परिश्रान्त । २ बीमार । रोगी ।

म्लानि (स्त्री०) १ थकान । २ ह्रास । ३ निर्बलता । बीमारी । ४ घृणा । अरुचि ।

म्लास्नु (वि०) थका हुआ । श्रान्त ।

ग्लेुच् (धा० प०) [ग्लोचति, ग्लुक्त] १ जाना । २ चुराना । लूटना । ३ छीन लेना ।

ग्लै (धा० प०) [ग्लायति,—ग्लान] १ घृणा करना । २ थक जाना । ३ हिरास होना । उदास होना । ४ मूर्च्छित होना ।

ग्लौ (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।

घ

घ संस्कृत वर्णमाला या नागरी वर्णमाला का बीसवाँ वर्ण और व्यञ्जनों में से कवर्ग का चौथा व्यञ्जन । इसका उच्चारण जिह्वामूल या कण्ठ से होता है । यह स्पर्श वर्ण है । इसमें घोष, नाद, संवार और महाप्राण प्रयत्न होते हैं ।

घ (वि०) यह समास में पीछे जुड़ता है और इसका अर्थ होता है मारने वाला; हत्या करने वाला जैसे पाणिघ, राजघ ।

घः (पु०) १ घंटा । २ घर्घरशब्द ।

घट् (धा० आत्म०) [घटते—घटित] यत्न करना । प्रयत्न करना । घटित होना । होना ।

घटः (पु०) १ घड़ा । २ कुम्भराशि । ३ हाथी का माथा । ४ कुम्भक प्राणायाम । ५ २० द्रोण के समान तौल । ६ स्तम्भ का एक भाग ।—आटोपः (पु०) बग्घी या गाड़ी का उवार ।—उद्भवः,—जः,—योनिः,—सम्भवः, (पु०) अगस्त्य जी ।—ऊधस्, (स्त्री०) (= घटोघ्नी) दूध से परिपूर्ण थैन वाली गौ ।—कर्परः, (पु०) १ संस्कृत साहित्य के कवि विशेष । २ खपरा ।—कारः,—कृत्, (पु०) कुम्हार ।—ग्रहः, (पु०) कहार । धीमर । पनभरा ।—दासी, (स्त्री०) कुटनी ।—पर्यसनम् (न०) जो अपने जीवन-काल में पुनः अपनी जाति में शामिल होने को रज़ामंद न हुआ हो ऐसे जातिच्युत का और्द्ध्व देहिक कृत्य ।—भेदनकम् (न०) कुम्हार का एक औज़ार जो बरतन बनाने के काम में आता है ।—राजः, (पु०) आँवा में पकाया हुआ मिट्टी का घड़ा ।—स्थापनम्, (न०) घड़ा रखकर उसमें देव विशेष का आह्वाहन पूर्वक पूजन ।

घटक (वि०) १ प्रयत्नवान् । चेष्टा करने वाला । २ सम्पन्न करने वाला । ३ मौलिक । आवश्यक सास्थानिक । प्रधान । वास्तविक ।

घटकः (पु०) १ एक वृक्ष जिसमें फूल न लग कर फल ही लगते हैं । २ दियासलाई बनाने वाला । ३ सगाई कराने वाला । बिचवानिया । ४ वंशावली जानने वाला ।

घटनं (न०) } घटना (न०) } १ प्रयत्न । उद्योग । २ घटना । वाके होना । ३ सम्पन्नता । पूर्णता । ४ मेल । ऐक्य । संसर्ग । सम्बन्ध । ५ बनाना । गढ़ना । तैयार करना ।

घटा (स्त्री०) १ उद्योग । प्रयत्न । चेष्टा । २ संख्या । दल । जमाव । ३ सैनिक कार्य के लिये जमा हुए हाथियों का समूह । ४ समूह । (बादलों का)

घटिकं (न०) कूल्हा ।

घटिकः (पु०) पानी पिलाने वाला ।

घटिका (स्त्री०) १ छोटा मिट्टी का घड़ा । २ बाल्टी । डोल । मिट्टी का छोटा बर्तन । ३ २४ मिनिट की एक घड़ी । ४ जलघड़ी । ५ गट्ठा । टखना । एड़ी ।

घटिन् (पु०) कुम्भ राशि ।

घटिंधम् } घटिन्धम् } (न०) जो घड़ा भर (जल) पी जाय ।

घटी (स्त्री०) १ छोटा घड़ा । २ २४ मिनिट का काल । ३ जलघड़ी ।—कारः, (पु०) कुम्हार ।—ग्रह,—ग्राह (वि०) पनभरा । पानी ढोनेवाला ।

—यंत्रं (न०) १ ढेकी। एक यंत्र विशेष जो पानी उलीचने के काम में आता है । २ जलघड़ी।

घटोत्कच (पु०) हिडिम्बा राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न भीम का पुत्र।

घट्ट् (धा० आत्म०) [घट्टते]—(उभय०) [घट्टयत्ति-घट्टयते, घट्टित] १ हिलाना डुलाना। गड्डबड्ड करना। २ स्पर्श करना। मलना। हाथों को मलना। ३ चिकनाना। चोट मारना। ४ निन्दा करना। ५ उखाड पछाड़ करना।

घट्टः (पु०) १ घाट। महसूल उगाहने का स्थान। —कुटी, । महसूल उगाहने की चौकी।—जीविन्, (पु०) १ मल्लाह। नाव खेने वाला। २ दोगला, जाति विशेष। (यथा " वैश्यायां रजकाज्जातः ")।

घट्टना (स्त्री०) १ हिलाना। गड्डबड्ड करना। २ मलना। व्यवसाय। पेशा।

घंट }
घण्टः } (पु०) एक प्रकार की चटनी विशेष।

घंटा }
घण्टा } (स्त्री०) १ घंटा। घड़ियाल।—अगारं, (न०) घंटाघर। - फलकः, (पु०) - फलकम्. (न०) ढाल जिसमें घूंघर जड़े हों।—ताडः, (पु०) घंटा बजाने वाला।—नादः (पु०) घंटा का नाद।—पथः, (पु०) किसी ग्राम की मुख्य सड़क। यथा -

दशधन्वन्तरो राजमार्गो घंटापथः स्मृतः।
कौटिल्य।

—शब्दः, (पु०) १ काँसा। फूल। २ घंटे की आवाज़।

घटिका (स्त्री०) घंटी। छोटा घंटा।

घंटुः }
घण्टुः } (पु०) १ हाथी की छाती के आर पार बाँधने की रस्सी जिसमें घंटे अटके हों। २ उष्णता। प्रकाश।

घंडः (पु०) }
घण्ड. (पु०) } मधुमक्षिका।

घन (वि०) १ कसा हुआ। दृढ़। कड़ा। ठोस। २ गाढ़ा। घना। सघन। ३ पूर्ण। पूर्णता को प्राप्त। ४ गहरा। ५ स्थायी। वेरोकटोक। ६ अभेद्य। ७ महान्। अतिशय। तीक्ष्ण। ८ सम्पूर्ण। ९ शुभ। सौभाग्य सम्पन्न।—अत्ययः, (पु०)—अन्तः, (पु०) शरद् ऋतु।—अम्बु (न०) वर्षा।—आकरः, (पु०) वर्षा ऋतु।—आगमः, (पु०) वर्षाऋतु।—आमयः, (पु०) छुहारे का वृक्ष।—आश्रयः, (पु०) आकाश, अन्तरिक्ष।—उपलः, (पु०) ओले।—ओघः, (पु०) बादलों का समूह।—कफः, (पु०) ओले। बिनौले।—कालः, (पु०) वर्षाकाल।—गर्जितं, (न०) बादलों की गड़गड़ाहट।—गोलकः, (पु०) चाँदी, सोने की मिलौनी। खोटी धातु।—जम्बालः, (पु०) गाढ़ी कीचड़ या काँदो।—तालः, (पु०) पक्षी विशेष। सारङ्ग पक्षी।—तोलः (पु०) चातक पक्षी।—नाभिः, (पु०) धूम। धुआँ। —नीहारः, (पु०) सघन कोहासा। कोहरा।—पदवी, (स्त्री०) आकाश। अन्तरिक्ष।—पाषण्डः, (पु०) मयूर। मोर।—मूलं, (न०) घनवर्ग। —रसः (पु०) १ गाढ़ा रस। २ सार। काढ़ा। ३ कपूर। ४ पानी। जल।—वर्त्मन्, (न०) आकाश।—वल्लिका, —वल्ली, (स्त्री०) बिजली। वासः, (पु०) कोंहड़ा। कोंला। काशीफल।—वाहनः, (पु०) १ शिव। २ इन्द्र।—श्याम, (वि०) अत्यन्त काला।—श्यामः, (पु०) १ श्रीरामचन्द्र। २ श्री कृष्णचन्द्र की उपाधि। समयः, (पु०) वर्षाऋतु। सारः, (पु०) १ कपूर। २ पारा। पारद। ३ जल। पानी।—स्वनः, (पु०) बादलों की गड़गड़ाहट।

घनः (पु०) १ बादल। २ गदा। बड़ा हथौड़ा या घन। ३ शरीर। ४ समूह। समुदाय। ५ अबरक।

घनम् (न०) १ झांझ। मजीरा। घंटा। घड़ियाल। २ लोहा। ३ टीन। ४ चर्म। छाल। छिलका।

घनाघनः (पु०) १ इन्द्र। २ दुष्ट हाथी। ३ मदमत्त हाथी। ३ नशे में चूर हाथी। ४ पानी से भरा काला बादल।

घरट्टः (पु०) चकिया।

घुरी (स्त्री०) नथना । (विशेष कर शूकर के)

घुर्घुरः (पु०) १ कीट विशेष । घुर्राना । २ गुर्राना ।

घुर्घुरी (स्त्री०) शूकर का शब्द विशेष ।

घुलघुलारवः (पु०) एक प्रकार का कबूतर ।

घुष् (धा० प०) [घोषति, घोषयति,—घोषयते, घुषित, घुष्ट, या घोषित] १ शब्द करना । आवाज़ करना । शोर करना । २ घोषणा करना ।

घुसृणं (न०) केसर । जाफ़रान ।

घूकः (पु०) उल्लू । घुग्घू ।—अरिः, (पु०) कौआ ।

घूर्ण (धा० आ०) [घूर्णते, घूर्णति, घूर्णित,] इधर उधर घूमना या मारे मारे फिरना । चक्कर लगाना । हिलना । घूम कर पीछे पलटना ।

घूर्ण (वि०) इधर उधर घूमने वाला ।—वायुः, (पु०) बवण्डर ।

घूर्णनम् (न०) } हिलाना । घूमना । चक्कर
घूर्णना (स्त्री०) } काटना ।

घृ (धा० प०) [घरति, घृत] छिड़काव करना । (उभय०) [घारयति,—घारयते, घारित] नम करना । तर करना । छिड़कना सींचना ।

घृण (धा० प०) [घृणोति,—घृणुते] जलना । चमकना ।

घृणा (स्त्री०) १ अरुचि । घिन । दया । रहम । २ तिरस्कार । ३ भर्त्सना । धिक्कार ।

घृणालु (वि०) दयालु । कोमल हृदय । कृपालु ।

घृणिः (स्त्री०) १ गर्मी । धूप । २ किरन । ३ सूर्य । ४ लहर । (न०) जल ।—निधिः, (पु०) सूर्य ।

घृतं (न०) १ घी । २ मक्खन । ३ पानी ।—अन्नः,—अर्चिस्, (पु०) दहकती हुई आग ।—आहुतिः, (स्त्री०) घी की आहुति । आह्वः, (पु०) वृक्ष विशेष ।—उदः, (पु०) घी का समुद्र । —ओदन, (पु०) घी मिश्रित भात ।—कुल्या, (स्त्री०) घी की नदी ।—दीधितिः, (पु०) आग ।—धारः, (स्त्री०) अविच्छिन्न घी की धार ।—पूरः,—वरः, (पु०) मिष्ठान्न विशेष ।—लेखनी, (स्त्री०) कलछी या चमचा जिससे घी डाला या निकाला जाय ।

घृताची (स्त्री) १ रात । २ सरस्वती देवी । ३ अप्सरा विशेष ।—गर्भसम्भवा, (स्त्री०) बड़ी इलायची ।

घृष् (धा० परस्मै०) [घर्षति, घृष्ट,] १ रगड़ना । मलना । प्रहार करना । २ झाड़ना । पालिश करना । चिकनाना । चमकाना । ३ पीसना । कूटना । कुचरना । ४ स्पर्धा करना । हिर्स करना । डाह करना ।

घृष्टिः (पु०) शूकर । (स्त्री०) १ पीसना । कूटना । मलना । २ प्रतिद्वन्द्वता । स्पर्धा ।

घोटः (पु०) } घोड़ा । अश्व ।—अरिः, (पु०)
घोटकः (पु०) } भैंसा ।

घोटी } (स्त्री०) घोड़ी ।
घोटिका }

घोणसः } (पु०) रेंगने वाला जन्तु विशेष ।
घोनस }

घोणा (स्त्री०) १ नासिका । नाक । २ घोड़े का नथुना । शूकर का थूथन ।

घोणिन् (पु०) शूकर ।

घोण्टा } (स्त्री०) वृक्ष विशेष । सुपाड़ी का पेड़ ।
घोणटा }

घोर (वि०) १ भयङ्कर । भयानक । २ प्रचण्ड । उग्र ।—आकृति,—दर्शन, (वि०) भयानक शक्ल का ।—घुष्यं, (न०) काँसा । फूल ।—रासनः, (पु०)—रासिन्,—वाशनः,—वाशिन्, (पु०) शृगाल । स्यार ।—रूपः, (पु०) शिव ।

घोर (न०) १ भय । डर । २ ज़हर ।

घोरः (पु०) शिव ।

घोरा (स्त्री०) रात ।

घोलः (पु०) } माठा । छाँछ ।
घोल (न०) }

घोषं (न०) काँसा धातु ।

घोषः (पु०) १ शोर गुल । २ बादल की गड़गड़ाहट । ३ घोषणा । ढिंढोरा । ४ अफवाह । किंवदन्ती । ५ ग्वाला । गोप । ६ गाँव । पुरवा । ७ कायस्थ ।

घोषणम् (न०) } ढिंढोरा । राजाज्ञा । फरमान ।
घोषणा (स्त्री०) }

घोषयित्नुः (पु०) १ चिल्लाने वाला। भाट। वंदीजन। २ ब्राह्मण। ३ कोकिल।

घ्न (वि०) [स्त्री०—घ्नी,] मारने वाला। हत्या करने वाला। नाशक। विनाशक।

घ्रा (धा० प०) [जिघ्रति, घ्रात,—घ्राण] १ सूंघना। सूँघ कर जान लेना। २ चुंबन करना।

घ्राण (व० कृ०) सूंघा हुआ।—इन्द्रियं, (वि०) आँखों का अंधा किन्तु नाक से सूंघ सूंघ कर जान लेने वाला।—तर्पण, (वि०) नासिकाप्रिय।—तर्पणम्, (न०) सुगन्धि।

घ्राणं (न०) १ सूंघना। २ गन्धि। सुगन्धि।

घ्रातिः (स्त्री०) १ सूंघने की क्रिया। २ नाक।

ङ

नोट—ङ से आरम्भ होने वाला संस्कृत में कोई शब्द नहीं है।

च

च संस्कृत वर्णमाला या नागरीवर्णमाला का २२ वाँ अक्षर और छठाँ व्यञ्जन और दूसरे वर्ग चवर्ग का प्रथम अक्षर। यह भी व्यञ्जन है। इसका उच्चारण स्थान तालु है। यह स्पर्शवर्ण है और इसके उच्चारण में श्वास, विवार, घोष और अल्पप्राण प्रयत्न लगते हैं।

चः (पु०) १ चन्द्रमा। २ कछुवा। ३ चोर। (अव्यया०) और। पादपूर्णक।

चक् (धा० उभ०) [चकति,—चकते, चकित] अघाना। अफरना। सन्तुष्ट होना। रोकना। अड़ना।

चकास् (धा० परस्मै० किन्तु कदाचित् आत्मने० भी) [चकास्ति,—चकास्ते, चकासित,] चमकना चमकीला होना। २ (आलं०) प्रसन्न होना और समृद्धशाली होना। (णिजन्त) चमकाना। प्रकाशित करना।

चकित (वि०) (भय के कारण) १ थरथर काँपता हुआ। २ भयभीत। चौंका हुआ। ३ भीरु। डरपोंक। शङ्कान्वित। शङ्कित। (न०) एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में १६ अक्षर होते हैं।

चकोरः (पु०) तीतर की जाति का एक पहाड़ी पक्षी जो कि चन्द्रमा को देख बहुत प्रसन्न होता है।

चक्रं (न०) १ पहिया। २ कुम्हार का चाक। ३ तेली का कोल्हू। ४ भगवान विष्णु का आयुध विशेष। ५ वृत्त। मण्डल। ६ दल। समूह। समुदाय। ७ राष्ट्र। राज्य। ८ प्रान्त। सूबा। ज़िला। ग्रामों का समुदाय। ९ सैनिक व्यूह। १० युग। ११ अन्तरिक्ष। आकाशमण्डल। १२ सेना। भीड़भाड़। १३ ग्रन्थ का अध्याय। १४ भँवर। १५ नदी का घूमघुमाव।—अङ्गः, (पु०) १ राजहंस। २ गाड़ी। ३ चक्रवाक।—अटः, (पु०) १ मदारी। सपेरा। २ गुंडा। बदमाश। ठग। ३ दीनार या सिक्का विशेष।—आकार,—आकृति, (वि०) गोलाकार। गोल।—आयुधः, (पु०) श्रीविष्णु।—आवर्तः, (पु०) भँवर जैसी या चक्करदार गति।—आह्वः, (पु०)—आह्वयः, (पु०) चकवाक।—ईश्वरः, (पु०) १ विष्णु। २ जिले का आला अफसर या सर्वोच्च अधिकारी।—उपजीविन्, (पु०) तेली।—कारकं, (न०) १ नाखून। नख। २ सुगन्ध-द्रव्य विशेष।—गण्डुः, (पु०) गोल तकिया।—गतिः, (स्त्री०) चक्कर। चक्करदार चाल या गति।—गुच्छः, (पु०) अशोक वृक्ष।—ग्रहणं, (न०) [स्त्री०—ग्रहणी] परकोटा। खाई।—चर, (वि०) मण्डल में

घूमने वाला।—चूडामणिः, (पु०) मुकुटमणि।—जीवकः,—जीविन्, (पु०) कुम्हार।—तीर्थं, (न०) नैमिषारण्य का तीर्थ विशेष।—धरः, (पु०) १ विष्णु का नाम। २ राजा। सूबेदार। प्रान्त का शासक। ३ देहाती कलाबाज नट। जादूगर। मदारी।—धारा, (स्त्री०) पहिये की परिधि या उसका घेरा।—नाभिः, (पु०) पहिये की नाह।—नामन्, (पु०) १ चक्रवाक। २ लोहभस्म।—नायकः, (पु०) १ सैनिक टोली का नायक। २ सुगन्ध द्रव्य विशेष।—नेमिः, पहिये की परिधि या उसका घेरा।—पाणिः, (पु०) विष्णु भगवान।—पादः,—पादकः, (पु०) १ गाड़ी। २ हाथी।—पालः, (पु०) १ सूबेदार या प्रान्त का शासक। २ एक सैनिक विभाग का अधिकारी। ३ आकाशमण्डल।—बन्धु,—बान्धवः, (पु०) सूर्य।—बालः,—वालः,—बाडः,—वाडः,—बालं,—वालं,—बाडं,—वाडं, (न०) १ मण्डल। वृत्त। समुदाय। समूह। २ आकाश मण्डल। (पु०) १ पौराणिक पर्वत माला जो पृथिवी की परिधि को दीवाल की तरह घेरे हुए है और जो प्रकाश और अन्धकार की सीमा समझी जाती है। २ चक्रवाक।—भृत्, (पु०) १ चक्रधारी। २ विष्णु।—मेदिनी, (स्त्री०) रात। निशा।—भ्रम,—भ्रमिः, (स्त्री०) चक्की (आटा पीसने की)।—मण्डलिन् (पु०) सर्प विशेष।—मुखः, (पु०) शूकर।—यानम्, (न०) गाड़ी।—रद, (पु०) शूकर।—वर्तिन्, (पु०) आसमुद्रक्षितीश। सम्राट्।—वाकः, (पु०) चकवा चकवी।—वाटः, (पु०) १ सीमा। सरहद्द। २ डीवट। पतील-सोत। ३ किसी कार्य में व्याप्ति।—वातः, (पु०) तूफान। बवंडर। आंधी।—वृद्धिः, (स्त्री०) सूद दर सूद।—व्यूहः, (पु०) मण्डलाकार सैनिक संस्थापना।—संज्ञं, (न०) टीन।—संज्ञः, (पु०) चक्रवाक।—साह्वयः, (पु०) चक्रवाक।—हस्त (पु०) विष्णु।

चक्रः (पु०) १ चक्रवाक। २ समुदाय। समूह। दल।

चक्रक (वि०) चक्राकार। गोल।

चक्रकः (पु०) तर्क विशेष।

चक्रवत् (वि०) १ पहियादार या जिसमें पहिये लगे हों। २ गोल। (पु०) १ तेली। २ सम्राट्। ३ विष्णु का नाम।

चक्रांकी } चक्राङ्की } (स्त्री०) राजहंस।

चक्रिका (स्त्री०) १ ढेर। दल। टोली। २ धोखा। दगाबाज़ी। ३ घुटना।

चक्रिन् (पु०) १ विष्णु। २ कुम्हार। ३ तेली। ४ सम्राट्। ५ सूबेदार। प्रान्त का शासक। ६ गधा। ७ चक्रवाक। ८ मुखबिर। सूचना देने वाला। ९ सर्प। १० काक। ११ मदारी। नट।

चक्रिय (वि०) यात्रा करने वाला। गाड़ी में बैठने वाला।

चक्रीवत् } चक्रीवन्तः } (पु०) गधा। रासभ। खर।

चक्ष् (धा० आत्म०) [चष्टे] १ देखना। ताकना। पहचानना। २ बोलना। कहना। बतलाना।

चक्षुस् (पु०) १ शिक्षक। दीक्षागुरु। अध्यात्म विद्या सम्बन्धी विद्या पढ़ाने वाला। २ देवगुरु बृहस्पति।

चक्षुष्य (वि०) १ सुन्दर। खूबसूरत। मनोहर। २ आँखों के लिये भला।

चक्षुष्या (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।

चक्षुस् (न०) १ नेत्र। आँखे। २ दृष्टि। दृक्शक्ति। देखने की शक्ति।—गोचर, (वि०) दिखलाई पड़ने वाला।—दानं, (न०) मूर्ति प्रतिष्ठा के अन्तर्गत नेत्रोन्मीलन कृत्य।—पथः, (पु०) दृष्टि की पहुँच। अन्तरिक्ष।—मलं, (न०) कीचड़। आँखो का मैल।—रागः, (=चक्षूरागः) (पु०) आँखो की सुर्खी। आँखभिड़ौअल।—रोगः, (= चक्षूरोगः) (पु०) नेत्ररोग विशेष।—विषयः, (पु०) १ दृष्टिगोचरत्व। २ चिन्हानी। देखने से प्राप्त हुआ ज्ञान अथवा देखने से प्राप्त होने वाला ज्ञान। ३ कोई भी पदार्थ जो दिखलाई पड़े। [अच्छे या स्वच्छ नेत्रों वाला।

चक्षुष्मत् (वि०) १ देखने की शक्ति से सम्पन्न। २

चंकुणः, चङ्कुणः (पु०) } चंकुरः, चङ्कुरः (पु०) } १ वृक्ष। पेड़। २ गाड़ी। ३ कोई भी पहियादार सवारी।

चंक्रमणम् } (न०) १ घूमना फिरना। टहलना। २
चङ्क्रमणम् } धीरे धीरे चलना।

चञ्च् (धा० प०) [चञ्चति, चञ्चित] १ हिलना। लहराना। काँपना। २ दोदूल्यमान होना। झूमना।

चंचः } (पु०) १ टोकनी। डलिया। २ पञ्चाङ्गुल-
चञ्चः } मान। पांच अंगुल का नाप।

चंचरिन् }
चञ्चरिन् } (पु०) भ्रमर। भौरा।

चंचरीकः }
चञ्चरीकः } (पु०) भ्रमर। भौरा।

चंचल } (वि०) १ कँपकपा। थरथराने वाला।
चञ्चल } काँपने वाला। २ अस्थिर। एकसा न रहने वाला।

चंचलः } (पु०) १ पवन। २ प्रेमी। आशिक।
चञ्चलः } ३ मनमौजी। लम्पट।

चंचला } (स्त्री०) १ विद्युत। बिजली। २ धन की
चञ्चला } अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी।

चंचा } (वि०) १ बेत का बना हुआ। २ गुड्डा।
चञ्चा } गुड़िया। पुतला।

चंचु } (वि०) १ प्रसिद्ध। प्रख्यात। परिचित।
चञ्चु } २ चतुर।—प्रहार, (पु०) चोंच की चोट।—भृत्, (पु०)—कृत्, (पु०) पक्षी।

चंचुः }
चञ्चुः } (पु०) हिरन।

चंचू }
चञ्चू } (स्त्री०) चोंच।

चंचुर }
चञ्चुर } (वि०) चतुर। पटु।

चट् (धा० प०) [चटति, चटित] फूटना। गिरना। अलग होना। [चाटयति—चाटयते] १ वध करना। २ घायल करना। ३ पैठना। घुसना। तोड़ना।

चटकः (पु०) गौरैया।

चटका }
चटिका } (स्त्री०) मादा गौरैया।

चटुं (न०) }
चटुः (पु०) } चापलूसी भरे शब्द। पेट।

चटुल (वि०) १ कँपकपा। काँपने वाला। अस्थिर। अदृढ़। २ चञ्चल। ३ मनोहर। सुन्दर। प्रिय।

चटुला (स्त्री०) बिजली। विद्युत।

चटुलोल } (वि०) १ कंपकपा। २ मनोहर।
चटूल्लोल } सुन्दर। ३ मधुरभाषी।

चण (वि०) प्रसिद्ध। प्रख्यात। निपुण।

चणः (पु०) मटर विशेष।

चणकः (पु०) चना। मटर।

चंड } (वि०) १ भयानक। उग्र। क्रुद्ध। क्रोध
चण्ड } युक्त। २ गर्म। उष्ण। ३ फुर्तीला। कर्मठ। ४ झालदार। ५ चूक।—अंशुः,—दीधितिः,—भानुः, (पु०) सूर्य।—ईश्वरः, (पु०) शिव का रूप विशेष।—मुण्डा, (=चामुण्डा) (स्त्री०) दुर्गा का रूप विशेष।—मृगः, (पु०) वन्य जन्तु विशेष।—विक्रम, (वि०) अत्यन्त पराक्रमी।

चंडं } (न०) १ गर्मी। उष्णता। २ क्रोध।
चण्डम् } रोष।

चंडा, चण्डा (स्त्री०) } १ दुर्गा देवी। २ क्रोधन
चंडी, चण्डी (स्त्री०) } स्वभाव की स्त्री।

चंडातः }
चण्डातः } (पु०) सुगन्ध युक्त कनेर।

चंडातकः, चण्डातकः (पु०) } कुर्ती।
चंडातकम्, चण्डातकम् (न०) } छोटाकोट।

चंडाल } (वि०) दुष्ट। निष्ठुर। नृशंसकर्मा।
चण्डाल } क्रूरकर्मन।—वल्लकी, (स्त्री०) चण्डाल की वीणा।

चंडालः } (पु०) १ अत्यन्त नीच एवं घृणित एक
चण्डालः } वर्णसङ्कर जाति का नाम जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और शूद्रा स्त्री से हुई है। २ इस जाति का मनुष्य। जातिच्युत पुरुष।

चंडालिका }
चण्डालिका } (स्त्री०) चाण्डाल की वीणा।

चंडिका }
चण्डिका } (स्त्री०) दुर्गा का नाम।

चंडिमन् } (पु०) १ क्रोध। रोष। उग्रता।
चण्डिमन् } २ गर्मी। उष्णता।

चंडिल }
चण्डिलः } (पु०) नाई। हज्जाम।

चतुर् (वि०) [संख्यावाची—सदा बहुवचनान्त यथा—(पु०) चत्वारः; (स्त्री०) चतस्रः; (न०) चत्वारि] चार।—अंशः, (पु०) चतुर्थ भाग। अङ्गम्, (न०) १ जिसके चार अंग हों। हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सिपाहियों से सज्जित सेना।

२ एक प्रकार की शतरञ्ज।—अन्तः, (पु०) चारों ओर से आवेष्ठित।—अन्ता, (स्त्री०) पृथिवी।—अशीत, (वि०) ८४वाँ।—अशीति, (वि०) ८४। चौरासी।—अश्र,—अस्र, (वि०) १ चार कोनों वाला। चतुष्कोण। २ सब प्रकार से सुन्दर। सुडौल।—अहं, (न०) चार दिवस की अवधि।—आननः, (पु०) ब्रह्मा जी।—आश्रमं, (न०) ब्राह्मण के जीवन के चार भाग।—कर्ण, (वि०) (=चतुष्कर्ण) केवल दो आदमियों का सुना हुआ।—गतिः, (पु०) १ परमात्मा। २ कछवा।—गुण, (वि०) चारगुना। चौपाया।—चत्वारिंशत्, (=चतुश्चत्वारिंशत्) (वि०) ४४। चौवालीस।—दन्तः (पु०) इन्द्र के हाथी ऐरावत की उपाधि।—दश, (वि०) १४वाँ।—दशन्, (वि०) १४। चौदह।—दसरत्नानि, (बहुवचन) चौदह रत्न जो समुद्रमन्थन के समय निकले थे। यथा—

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा,
गावो कामदुघाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः।
अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधे
रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्युः सदा मङ्गलम्।

—दशविद्या, (स्त्री०) [बहुवचन] चौदह विद्याएँ। वे ये हैं :—

षडङ्गमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्रं पुराणकं।
मीमांसा तर्कमपि च एता विद्याश्चतुर्दश॥

—दशी, (स्त्री०) चौदस।—दिशं, (न०) चारों दिशाओं का समूह। (अव्यया०) चारो दिशाओं की ओर। सब तरफ से।—दोलः, (पु०) दोलम्, (न०) तामझाम। राजकीय पाल्की।—नवति, (वि०) या (स्त्री०) ९४। चौरानवे।—पंच, (वि०) [चतुःपञ्च या चतुष्पञ्च] चार या पाँच।—पञ्चाशत् (स्त्री०) [=चतुःपञ्चाशत् या चतुष्पञ्चाशत्] ५४। चौवन।—पथः, (पु०) [=चतुःपथः या चतुष्पथः अथवा चतुष्पथम्] चौराहा। (पु०) ब्राह्मण।—पद, (वि०) [=चतुष्पदः] १ चार पैरों वाला। २ चार अवयवों वाला।—पदः, (पु०) चौपाया।—पदी (स्त्री०) चार पदों वाला श्लोक, जिसमें ३२ अक्षर होते हैं।—पाटी, (स्त्री०) [चतुष्पाठी] ब्राह्मणों की पाठशाला जिसमें चारों वेद पढ़ाये जाँय।—पाणिः, (पु०) [=चतुष्पाणिः] विष्णु भगवान।—पाद्,—पाद, [=चतुःपाद् या चतुष्पाद्] (वि०) चार पदों वाला, चार भागों या अवयवों वाला। (पु०) चौपाया।—बाहुः, (पु०) विष्णु।—बाहुं, (न०) चतुष्कोण।—भद्रं, (न०) पुरुषों के चार पुरुषार्थ अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।—भागः, (पु०) चतुर्थांश। चौथा हिस्सा। चौथाई।—भुज् (वि०) चार भुजा वाला। (पु०) विष्णु। (न०) चतुष्कोण।—मासं (न०) चार मास की अवधि। [आषाढ़ मास की शुक्ला ११ से कार्तिक शुक्ला ११ तक की अवधि]—मुख, (वि०) चार मुखों वाला।—मुखः, (पु०) ब्रह्मा जी।—मुखम्, (न०) १ चार मुख। २ चार द्वारों वाला घर।—युगं (न०) चारयुग।—वक्त्रः, (पु०) ब्रह्मा जी।—वर्गः (पु०) चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।—वर्णः, (पु०) चार जातियाँ यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।—वार्षिका (स्त्री०) चारवर्ष की उम्र की गौ।—विंश (वि०) २४ चौवीस।—विंशति (वि० या स्त्री०) २४। चौवीस।—विद्य, (वि०) चारो वेदों का जानने वाला।—विद्या (स्त्री०) चारो वेद।—विध, (वि०) चार प्रकार का। चौगुना।—वेद, (वि०) चारो वेदों से परिचित।—वेदः, (पु०) परब्रह्म।—व्यूहः, (पु०) विष्णु भगवान का नामान्तर।—व्यूहम् (न०) वैद्यक शास्त्र।—षष्टि (वि० या स्त्री०) चौसठ। ६४।—सप्तति (वि० या स्त्री०) ७४। चौहत्तर।—हायन,—हायण, (वि०) चार वर्ष की उम्र का।

चतुर (वि०) १ होशियार। स्याना। निपुण। पटु। २ तीक्ष्ण बुद्धि सम्पन्न। फुर्तीला। तेज़। ३ मनोहर। सुन्दर। प्रिय। अनुकूल।

चतुरं (न०) १ चातुर्य । पटुता । निपुणता । २ गजशाला । [(पु०) संन्यासाश्रम ।

चतुर्थ (वि०) [स्त्री०—चतुर्थी] चौथा ।—आश्रमः,

चतुर्थ (न०) चौथाई । चतुर्थांश ।

चतुर्थक (वि०) चौथा ।

चतुर्थकः (पु०) चौथिया ज्वर ।

चतुर्थी (स्त्री०) १ चौथतिथि । २ कारक विशेष ।—कर्मन्, (न०) विवाह में एक कर्म विशेष जो चतुर्थ दिवस किया जाता है ।

चतुर्धा (अव्यया०) चार प्रकार से । चार गुना ।

चतुष्कम् (न०) १ चार का समूह । २ चौराहा । ३ चौकोन आँगन । चार खंभों पर टिका हुआ बड़ा कमरा । चौद्वारी ।

चतुष्की (स्त्री०) १ चौकोन बड़ी पुष्करिणी । २ मसहरी । मच्छरदानी ।

चतुष्टय (वि०) [स्त्री०—चतुष्टयी] चारगुना ।

चतुष्टयम् (न०) १ चार का समूह । २ चौकोन ।

चत्वरं (न०) १ चबूतरा । आँगन । २ चौराहा । ३ समथर भूमि जो यज्ञ के लिये तैयार की गयी हो ।

चत्वारिंशत् (स्त्री०) चालीस । ४० ।

चत्वालः (पु०) १ हवनकुण्ड । २ कुश । ३ गर्भाशय ।

चद् (धा० उभय०) [चदति, चदते] माँगना । याचना करना ।

चदिरः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ हाथी । ४ सर्प ।

चन (अव्यया०) [च + न] और नहीं ।

चंद्, चन्द् (धा० परस्मै०) [चन्द्रति, चन्द्रित] १ चमकना । २ प्रसन्न होना ।

चंदः, चन्दः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।

चंदनः, चन्दनः, चंदनम्, चन्दनम् (पु०) चन्दन । सुगन्धद्रव्य विशेष ।—अचलः,—गिरिः,—अद्रिः, (पु०) मलयपर्वत ।—उदकं, (न०) चन्दन मिश्रित जल ।—पुष्पं (न०) लवँग । लौंग ।

चंदिरः, चन्दिरः (पु०) १ हाथी । २ चन्द्रमा ।

चंद्रः, चन्द्रः (पु०) १चन्द्रमा । चाँद । २ चन्द्रग्रह । ३ कपूर । मयूरपंख में की चन्द्रिकाएँ । ५ जल । ६ सुवर्ण । [चन्द्र जब समासान्त शब्दों के अन्त में आता है, तब इसका अर्थ प्रख्यात या आदर्श होता है । यथा पुरुषचन्द्रः अर्थात् सर्वोत्कृष्ट या आदर्श पुरुष]—अंशुः, (पु०) चन्द्र की किरण ।—अर्धः, (पु०) आधा चन्द्रमा । —आत्मजः —औरसः, —जः, —जातः,—तनयः,—नन्दनः,—पुत्रः, (पु०) बुध ग्रह । —आननः, (पु०) कार्तिकेय ।—आपीडः, (पु०) शिव ।—आह्वयः, (पु०) कपूर ।—इष्टा, (स्त्री०) कमल का पौधा । कमोदिनी के पुष्पों का समूह ।—उपलः, (पु०) चन्द्रकान्त मणि ।—कान्तः, (पु०) चन्द्रकान्त मणि ।—कला, (स्त्री०) चन्द्रमा का एक अंश ।—कान्ता, (स्त्री०) १ रात । २ चाँदनी ।—कान्तिः, (स्त्री०) चाँदनी । (न०) चाँदी ।—क्षयः, (पु०) अमावास्या ।—गोलः, (पु०) चन्द्रलोक ।—गोलिका (स्त्री०) चाँदनी ।—ग्रहणम्, (न०) चन्द्रमा का ग्रहण । —चञ्चला, (स्त्री०) एक प्रकार की छोटी मछली । —चूडः—मौलिः—शेखरः, (पु०) शिवजी की उपाधियाँ ।—दाराः, (पु० बहुवचन) २७ नक्षत्र जो दक्ष की कन्याएं हैं, चन्द्रमा की स्त्रियाँ हैं ।—द्युतिः, (पु०) चन्दन काष्ठ । (स्त्री०) चाँदनी ।—नामन्, (पु०) कपूर ।—पादः, (पु०) चन्द्र किरण ।—प्रभा, (स्त्री०) चाँदनी ।—बाला, (स्त्री०) १ बड़ी इलायची । २ चाँदनी ।—बिन्दुः, (पु०) चिन्ह विशेष (ँ) ।—भस्मन्, (न०) कपूर ।—भागा, (स्त्री०) दक्षिण भारत की एक नदी का नाम । —भासः, (पु०) तलवार ।—भूति, (न०) चाँदी ।—मणिः, (पु०) चन्द्रकान्त मणि ।—रेखा, —लेखा, (स्त्री०) चन्द्रमा की कला ।—रेणुः, (पु०) ग्रन्थचोर । लेखचोर ।—लोकः, (पु०) चन्द्रमा का लोक ।—लोहकं,—लोहं,—लौहकं, (न०) चाँदी ।—वंशः, (पु०) भारतीय प्राचीन प्रसिद्ध राजवंशों में से एक । चन्द्रवंश ।—वदन, (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला ।—व्रतं, (न०) एक प्रकार का व्रत ।

—शाला, (स्त्री०) १ अटारी । अटा । २ चाँदनी । —शालिका, (स्त्री०) अटा । अटारी ।—शिला, (स्त्री०) चन्द्रकान्त मणि ।—संज्ञः, (पु०) कपूर ।—सम्भवः, (पु०) बुध ग्रह ।—सम्भवा, (स्त्री०) छोटी इलायची ।—सालोक्यं, (न०) चन्द्रलोक की प्राप्ति ।—हन्, (न०) राहु की उपाधि ।—हासः, (पु०) १ चमचमाती तलवार । २ रावण की तलवार का नाम । ३ केरल के राजा सुधार्मिक का पुत्र चन्द्रहास था ।

चन्द्रकः (पु०) १ चन्द्रमा । २ मयूर के पंखों की चन्द्रिका । ३ नख । ४ चन्द्र के आकार का मण्डल (जो जल में तैल बिन्दु डालने से बन जाता है ।)

चन्द्रकिन् (पु०) मयूर । मोर ।

चन्द्रकस् (पु०) चन्द्रमा ।

चन्द्रिका (स्त्री०) १ चाँदनी । २ व्याख्या । टीका । ३ रोशनी । ४ बड़ी इलायची । ५ चन्द्रभागानदी ६ मल्लिका लता ।—अम्बुजं, (न०) सफेद कमल जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलता है । —द्रावः, (पु०) चन्द्रकान्त मणि ।—पायिन्, (पु०) चकोर पक्षी ।

चन्द्रिलः (पु०) १ नाई । २ शिव ।

चप् (धा० परस्मै०) [चपति,] सान्त्वना प्रदान करना । ढाँढस बँधाना । (उभय०) [चपयति, —चपयते,] पीसना । कूटना । गूंथना । सानना ।

चपटः (पु०) देखो चपेट ।

चपल (वि०) १ काँपने वाला । हिलाने वाला । थरथराने वाला । २ अस्थिर । चंचल । अनियमित । डाँवाडोल । ३ निर्बल । नश्वर । ४ फुर्तीला । उतावला । ५ अविचारी । अविवेकी ।

चपलः (पु०) १ मछली । २ पारा । पारद । ३ चातक पक्षी । ४ सुगन्ध द्रव्य विशेष ।

चपला (स्त्री०) १ बिजली । २ कुलटा स्त्री । ३ मदिरा । ४ लक्ष्मी । ५ जिह्वा ।—जनः, (पु०) चंचल या अस्थिर स्वभाव की स्त्री ।

चपेटः (पु०) १ थप्पड़ । २ फैले हुए हाथ की हथेली ।

चपेट, चपेटिका (स्त्री०) थप्पड़ । झापड़ ।

चम् (धा० परस्मै०) [चमति, चान्त,] १ पीना । चसकना । पी डालना । २ खाना ।

चमरः (पु०) एक प्रकार का हिरन ।

चमरः (पु०), चमरम् (न०) } जन्तु विशेष की पूँछ का बना चँवर ।

चमरी (स्त्री०) सुरागाय । चमर की मादा । पुच्छं, (न०) चमर की पूंछ जो चँवर की तरह इस्तेमाल की जाती है ।—पुच्छ, (पु०) गिलेहरी ।

चमरिकः (पु०) कोविदार वृक्ष ।

चमसः (पु०), चमसम् (न०), चमसी (स्त्री०) } यज्ञों में सोमवल्ली का रस पीने का पात्र विशेष ।

चमूः (स्त्री०) सेना (फौज) सैन्यदल जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ ही रथ, २१८७ घुड़सवार और ३६४५ पैदल होते हैं ।—चरः, (पु०) योद्धा । सिपाही । —नाथः,—पः,—पतिः, (पु०) सेनानायक । जनरल । कमाँडर ।

चमूर (पु०) एक प्रकार का हिरन ।

चम्प् (धा० उभय०) [चंपयति,—चपयते] जाना । हिलना ।

चम्पकः (पु०) १ चंपा का वृक्ष । २ सुगन्धिद्रव्य विशेष ।

चम्पकं (न०) चम्पा का फूल ।—माला, (स्त्री०) १ चंपाकली । आभूषण विशेष । २ चम्पा के फूलों का हार । ३ छन्द विशेष ।—रम्भा, (स्त्री०) कदली विशेष ।

चम्पकालुः (पु०) कटहर का पेड़ ।

चम्पकावती, चम्पा, चम्पावती } (स्त्री०) गंगातट पर अवस्थित एक प्राचीन नगर का नाम । इस पुरी का आधुनिक नाम भागलपुर है ।

चम्पालुः (पु०) देखो "चम्पकालु" ।

चम्पूः (स्त्री०) गद्यपद्य मिश्रित काव्य विशेष ।

गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते ।

—साहित्यदर्पण ।

चय् (धा० आत्म०) [चयते] ओर जाना ।

चयः (पु०) १ समूह । समुदाय । ढेर । २ टीला । ३ धुस्स । ४ परकोटा । ५ दुर्गद्वार । ६ बैठकी । ७ इमारत । भवन । ८ लकड़ी की टाल ।

चयनम् (न०) १ पुष्पादिक को बीन कर एकत्र करने की क्रिया। २ ढेर।

चर् (धा० पर०) [चरति, चरित] १ चलना। फिरना। इधर उधर घूमना। भ्रमण करना। २ अभ्यास करना। देखना। ३ चरना। ४ खाना। निघटाना। ५ किसी काम में लगना। ६ रहना। किसी दशा में रहना। [णिजन्त] [चारयति,] १ चलाना। भेजना। २ भगा देना। ४ अभ्यास करवाना।

चर (वि०) [स्त्री०—चरी,] १ काँपता हुआ। थर थराता हुआ। २ जंगम। चलने वाला। ३ जानदार। जीवधारी।—अचर, (पु०) स्थावर जङ्गम।—अचरम्, (न०) १ संसार। २ आकाश अन्तरिक्ष।—द्रव्यं, (न०) हिलाने डुलाने वाला पदार्थ।—मूर्तिः, (पु०) उत्सव मूर्ति।

चरः (पु०) १ जासूस। भेदिया। दूत। २ खंजन पक्षी। ३ जुआ। ४ कौड़ी। ५ मङ्गलग्रह। ६ मङ्गलवार।

चरकः (पु०) १ जासूस। २ रमता भिक्षुक। ३ आयुर्वेद विशेष। ४ पापड़।

चरटः (पु०) खञ्जन पक्षी।

चरणः (पु०) } **चरणम्** (न०) } १ पैर। २ सहारा। खंभा। थुनकिया। ३ वृक्ष मूल। ४ श्लोक का एक पाद। ५ चौथाई। ६ वेद की शाखा। ७ जाति। नस्ल। (न०) घूमना। फिरना। भ्रमण। २ सम्पादन। अभ्यास। ३ चालचलन। वर्ताव। ४ सम्पन्नता। ५ भक्षण।—अमृतं,—उदकं, (न०) जल। जिससे ब्राह्मण या किसी देव मूर्ति के पैर धोये गये हों। पैर का धोवन।—अरविन्दं,—कमलं,—पद्मं, (न०) कमल जैसे पैर।—आयुधः, (पु०) मुर्गा।—आस्कन्दनम्, (न०) कुचरना। पैरों से रूँधना।—ग्रन्थिः, (पु०)—पर्वन्, (न०) टखना।—न्यासः, (पु०) कदम।—पः, (पु०) वृक्ष।—पतनम्, (न०) पैरों पड़ना।—पतित, (पु०) पैरों पड़ना। पैर लगना।—शुश्रूषा,—सेवा, (स्त्री०) १ दण्डवत। नकघिसनी। २ सेवा। भक्ति।

चरम (वि०) १ अन्तिम। आख़री। २ पिछला। ३ बूढ़ा। पुराना। ४ बिल्कुल बाहिरी। ५ पश्चिमी। ६ सब से नीचा या कम।—अचलः,—अद्रिः,—क्ष्माभृत्, (पु०) अस्ताचल पर्वत।—अवस्था, (स्त्री०) वृद्धावस्था। बुढ़ापा।—कालः, (पु०) मृत्यु की घड़ी।

चरमम् (अव्यया०) अन्त में। आख़िर में।

चरिः (पु०) जन्तु।

चरित (भू० कृ०) १ भ्रमण किया हुआ। घूमा हुआ। २ पूरा किया हुआ। अभ्यास किया हुआ। ३ उपलब्ध किया हुआ। ४ जाना हुआ। ५ भेंट किया हुआ।—अर्थ, (वि०) १ सफल। २ सन्तुष्ट। ३ पूरा किया हुआ।

चरितम् (न०) १ गमन। मार्ग। अभ्यास। चाल-चलन। आचरण। ३ जीवनचरित्र। स्वयं लिखित अपनी जीवनी। इतिहास (कथा)।

चरित्रम् (न०) १ आचरण। आदत। बान। टेव। चाल-चलन। करतब। २ सम्पादन। निर्वाह। पालन। रक्षा। अनुष्ठान। ३ इतिहास। जीवनी स्वहस्त लिखित जीवनी। वृत्तान्त। साहसिककार्य। आश्चर्य घटना. स्वभाव। मिज़ाज। ५ कर्तव्य। निर्दिष्ट अनुष्ठान।

चरिष्णु (वि०) डोलने वाला। क्रियाशील। भ्रमणकारी।

चरु (पु०) कव्य विशेष। हव्य विशेष।

चर्च (धा० उभय०) [चर्चयति,—चर्चयते, चर्चित] पढ़ना। सीखना। अध्ययन करना। [परस्मै० चर्चति, चर्चित] १ गाली देना। धिक्कारना। निन्दा करना। २ बहस करना। विचार करना।

चर्चनं (न०) १ अध्ययन। पुनरावृत्ति। वारवार पढ़ना। २ शरीर में उबटन या लेप करना।

चर्चरिका } **चर्चरी** } (स्त्री०) १ गीत विशेष। २ ताल देना। पण्डितों का पाठ। ३ उत्सव के समय के खेल। उत्सव का उल्लास। ५ उत्सव। ६ चापलूसी। ७ घुँघराले बाल।

चर्चा } **चर्चिका** } (स्त्री०) १ पाठ। पुनरावृत्ति। अध्ययन। वार वार पढ़ना। २ बहस। खोज। अनुसंधान। तहकीकात। ३ निदिध्यासन। ४ शरीर में चन्दनादि का लेप।

चर्चिक्यम् (न०) शरीर में चन्दनादि लगाना। लेप। उबटन।

चर्चित (व० कृ०) १ लगा हुआ। लेप किया हुआ २ विचारित। अनुसन्धान किया हुआ।

चर्पटः (पु०) चपेट। थप्पड। चापड।

चर्पटी (स्त्री०) चपाती। रोटी।

चर्भटः (पु०) ककडी। [ककडी।

चर्भटी (स्त्री०) १ आनन्द कोलाहल। हर्षरव। २

चर्मम् (न०) ढाल।

चर्मण्वती (स्त्री०) चबल नदी। यह नदी इटावे के पास यमुना में गिरती है।

चर्मन् (न०) १ चाम। २ चमड़ा। ३ स्पर्शज्ञान। ४ ढाल।—अम्भस्, (न०) शरीर का स्वच्छ तरल पदार्थ। रस।—अवकर्तनं, (न०) चमड़े का कारोबार।—अवकर्तिन्,—अवकर्तृ (न०) मोची। जूता बनाने वाला। चमार।—कारः,—कारिन्, (पु०) मोची। चमार।—कीलः,—कीलं, (न०) मस्सा। टेंटर।—चित्रकं, (न०) सफेद कोढ।—जं, (न०) १ बाल। २ खून।—तरङ्ग, (पु०) झुर्री। शिकन।—दण्डः (पु०)—नालिका, (स्त्री०) कोडा।—द्रुमः,—वृक्षः, (पु०) भोजपत्र का वृक्ष।—पट्टिका, (स्त्री०) पाँसे फेंकने का चमड़े का चौरस टुकडा।—पत्रा, (स्त्री०) चिमगीदड।—पादुका, (स्त्री०) जूता।—प्रभेदिका, (स्त्री०) चमार की राँपी।—प्रसेवकः (पु०)—प्रसेविका, (स्त्री०) धौंकनी।—बंधः, (पु०) चमडे का तस्मा।—मुण्डा, (स्त्री०) दुर्गा का नाम। यष्टिः, (स्त्री०) चाबुक।—वसनः (पु०) शिवजी।—वाद्य, (न०) ढोल। ढोलक। तबला आदि।—सम्भवा, (स्त्री०) बडी इलायची।—सार, (पु०) शरीर का स्वच्छ तरल पदार्थ या रस।

चर्ममय (वि०) चमड़े का।

चर्मरुः } (पु०) मोची। चमार।
चर्मार }

चर्मिक (वि०) ढालधारी।

चर्मिन् (वि०) १ढालधारी। २ चमडे का। (पु०) ढालधारी सिपाही। २ केला। ३ भूर्जपत्र का पेड।

चर्या (स्त्री०) १ गति। चाल। २ चालचलन। व्यवहार। आचरण। ३ अभ्यास। अनुष्ठान। निर्वाह। रक्षा। ५ नियमित अनुष्ठान। ६ भक्षण। ७ रस्म। रीति।

चर्व् (धा० पर०) [चर्वति, चर्वयति, चर्वयते, चर्वित] १ चबाना। खाना। कुतरना। टुनगना। २ चूसना। चसकना। ३ चखना।

चर्वणम् (न०) } १ चबाना। खाना। २चसकना।
चर्वणा (स्त्री०) } २ चखना।

चर्वा (स्त्री०) थप्पड का प्रहार।

चर्वित (भू० कृ०) १ चबलाया हुआ। कुतरा हुआ। खाया हुआ। चक्खा हुआ।—चर्वणम्, (न०) चबाये हुए को चबाना। एक ही विषय की शब्दान्तर में पुनरुक्ति।—पात्रं (न०) पीकदानी।

चल् (धा० पर०) [चलति, चलते, चलित] हिलना। काँपना। थर्राना। धड़कना। उथल पुथल होना।

चल (वि०) १ डोलता हुआ। काँपता हुआ। २ अस्थिर। ढीला। ३ निर्बल। कमजोर। नाशवान। ४ घबडाया हुआ।—अचल, (वि०) १ स्थावर जगम। २ चंचल। नाशवान।—अचलः, (पु०) काक।—अन्तकः, (पु०) गठिया।—आत्मन्, (वि०) चञ्चल।—इन्द्रिय, (वि०) १ इन्द्रिय सम्बन्धी। इन्द्रियसेव्य। २ सहज में परिवर्तनीय।—इषुः, (पु०) वह तीरंदाज़ जिसका तीर लक्ष्यच्युत हो जाय।—कर्णः (पु०) किसी ग्रह का पृथिवी से ठीक ठीक अन्तर।—चञ्चुः, (पु०) चकोर पक्षी।—चित्त, (वि०) चञ्चल मना।—दलः,—पत्रः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष।

चलः (पु०) १ कंपकपी। घबड़ाहट। विकलता। २ पवन। ३ पारद।

चला (स्त्री०) १ लक्ष्मी। २ सुगन्धद्रव्य विशेष।

चलन (वि०) हिलने वाला। काँपने वाला।

चलनः (पु०) १ पैर। २ हिरन।

चलनी (स्त्री०) १ स्त्रियों की कुर्ती। २ हाथी बांधने का रस्सा।

चलनकं (न०) नीच जाति की स्त्रियों के पहिनने की कुर्ती।

चलिः (पु०) चादर। ओढ़नी।

चलित (व० कृ०) १ चला हुआ। हिला हुआ। आन्दोलित। २ गया हुआ। प्रस्थानित। ३ प्राप्त। ४ जाना हुआ। समझा हुआ।

चलितं (न०) नृत्य विशेष।

चलुः (पु०) मुलभर जल।

चलुकः (पु०) १ कुल्ला करने को हथेली में जल लेना। २ मुट्ठीभर या मुँह भर जल।

चष् (धा० उभय०) [चषति, चषते] खाना। [(प्र०) चषति]

चषकः (पु०) } मदिरा पीने का बरतन। (न०)
चषकम् (न०) } १ मदिरा। २ शहद।

चषतिः (स्त्री०) १ भोजन। २ हत्या। ३ निर्बलता। ह्रास। गलाव।

चषालः (पु०) १ यज्ञीयस्तम्भ के ऊपर लगाने को काठ का छल्ला। २ छत्ता।

चह (धा० परस्मै०) [चहति, चहयति—चहयते] दुष्टता करना। २ छलना। धोखा देना। अभिमान करना।

चाकचक्यं (न०) चमक दमक।

चाक्र (वि०) १ गोल। २ पहिया सम्बन्धी।

चाक्रिकः (पु०) १ कुम्हार। २ तेली। ३ गाड़ीवान।

चाक्रिणः (पु०) कुम्हार या तेली का पुत्र।

चाक्षुष (वि०) १ नेत्र सम्बन्धी। २ दृष्टिगोचर।

चाक्षुषः (पु०) छठवें मनु।

चांगः } (पु०) १ खट्टा शाक विशेष। २ दान्तों की
चाङ्गः } सफेदी या उनका सौन्दर्य।

चांचल्यं } (न०) १ अस्थिरता। २ चंचलता।
चाञ्चल्यम् } ३ विनश्वरता।

चाटः (पु०) ठग। बटमार। बदमाश। भेड़िया। [चाटः ऐसे ठग को कहते हैं जो आरम्भ में अपनी ओर से उस मनुष्य के मन में पूर्ण विश्वास उत्पन्न कर लेता है, जिसे वह धोखा देना चाहता है।

"प्रतारका विश्वास्य ये परधनमपहरन्ति।"

—मिताक्षरा]

चाटुं (न०) } १ चापलूसी। खुशामद। ठकुर-
चाटुः (पु०) } सुहाती। २ स्पष्टकथन।—उक्तिः (स्त्री०) चापलूसी की बात।—उल्लोल,—कार, (वि०) चापलूस। खुशामदी टट्टू।—पटु (वि०) चापलूसी करने में निपुण।—पटुः, (पु०) मसखरा। भाँड़। विदूषक।

चाणक्य, (पु०) विष्णु गुप्त या कौटिल्य भी चाणक्य का नाम था। इन्होंने नीति विषयक एक उत्कृष्ट ग्रन्थ की रचना की है।

चाणूरः (पु०) कंस का एक सेवक दैत्य, जिसे मल्ल-युद्ध में श्रीकृष्ण ने पछाड़ा था।

चाण्डालः (पु०) [स्त्री०—चाण्डाली] पतित जाति। देखो "चण्डाल।"

चातकः (पु०) एक पक्षी विशेष जो वर्षाजल से स्वांत की बूंद से बड़ा प्रसन्न होता है। पपीहा।—आनन्दनः, (पु०) १ वर्षाऋतु। २ बादल। [स्त्री०—चातकी]।

चातनं (न०) १ स्थानान्तरण। २ चोटिल करना।

चातुर (वि०) १ चार संख्या सम्बन्धी। २ चतुर। योग्य। स्याना। ३ सुचारु भाषी। चापलूस। ४ दृश्य। दृष्टिगोचर।

चातुरं (न०) चार पहिये की गाड़ी।

चातुरी (स्त्री०) निपुणता। चतुराई। चतुरता। पटुता।

चातुरक्षं (न०) चौपड़ के या पाँसे के खेल में चार संख्या चिन्हित पाँसे का पड़ना। चार का दाव आना।

चातुरक्षः (पु०) छोटा गोल तकिया।

चातुराश्रमिक } (वि०) [स्त्री०—चातुरा-
चातुराश्रमिन् } श्रमकी] [स्त्री०—चातुरा-श्रमणी] वह ब्राह्मण जो चार आश्रमों में से किसी एक आश्रम में हो।

चातुराश्रम्यम् (न०) ब्राह्मण के जीवन की चार अवस्थाएं।

चातुरिक }
चातुर्थक } (वि०) चौथिया । चौथे दिन होने
चतुर्थिक } वाला ।

चातुर्थिकः (पु०) चौथिया बुख़ार ।

चातुर्थान्हिक (वि०) चौथे दिन का ।

चातुर्दशं (न०) राक्षस ।

चातुर्दशिकः (पु०) चतुर्दशी के दिन अनाध्याय दिवस होता है । जो इस अनाध्याय के दिवस अध्ययन करता है उसे चातुर्दशिकः कहते हैं ।

चातुर्मासिक (वि०) [स्त्री०—चातुर्मासिका] चातुर्मास्य यज्ञ करने वाला ।

चातुर्मास्यं (न०) यज्ञ विशेष जो प्रत्येक चार मास बाद अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के आरम्भ में किया जाता है ।

चातुर्यं (न०) १ निपुणता । चतुराई । २ मनोहरता । सौन्दर्य ।

चातुर्वर्ण्यं (न०) १ हिन्दुओं की चार वर्णों की व्यवस्था । २ इन चारों वर्णों के अनुष्ठेय कर्म ।

चातुर्विध्यम् (न०) चार प्रकार । चार तरह । [कुशा ।

चात्वालः (पु०) १ चोकोर अग्निकुण्ड । २ दर्भ ।

चांदनिक } १ चन्दन सम्बन्धी या चन्दन से उत्पन्न ।
चान्दनिक } २ चन्दन के तेल या लेप से सुवासित ।

चांद्र } चन्द्रमा सम्बन्धी ।—भागा, (स्त्री०)
चान्द्र } चन्द्रभागा नदी ।—मासः, (पु०) महीना जिसकी गणना चन्द्र तिथियों के अनुसार की जाती है ।—व्रतिकः, (पु०) चान्द्रायण-व्रत-धारी ।

चांद्रः } (पु०) १ चन्द्रतिथियों से गणित मास ।
चान्द्रः } २ शुक्लपक्ष । ३ चन्द्रकान्त मणि ।

चांद्रम् }
चान्द्रम् } (न०) चान्द्रायण व्रत ।

चांद्रकम् }
चान्द्रकम् } (न०) सोंठ ।

चांद्रमस }
चान्द्रमस } (वि०) चन्द्रमा सम्बन्धी ।

चांद्रमसं }
चान्द्रमसं } (न०) मृगशिरस् नक्षत्र ।

चांद्रमसायनः }
चान्द्रमसायनः }
चांद्रमसायनिः } (पु०) बुधग्रह ।
चान्द्रमसायनिः }

चांद्रायणम् }
चान्द्रायणम् } (पु०) चान्द्रयण व्रत ।

चांद्रायणिक }
चान्द्रायणिक } (वि०) चान्द्रयण-व्रत-धारी ।

चापं (न०) १ धनुष । कमान । २ इन्द्रधनुष । ३ वृत्तांश । ४ धनुष राशि ।

चापलं } (न०) १ चपलता । चञ्चलता । फुर्ती ।
चापल्यं } २ फुर्तीलापन । अस्थिरता । नश्वरता । ३ अविचारित कर्म । जल्दबाज़ी । जल्दबाज़ी का काम । बेचैनी । विकलता ।

चामरः (पु०) } चँवर । चौरी ।—ग्राहः,—
चामरम् (न०) } ग्राहिन्, (पु०) चवर डुलाने वाला । चॅवरबरदार ।—ग्राहिणी, (स्त्री०) दासी जो राजा के ऊपर चॅवर डुलावे ।—पुष्पः, (न०)—पुष्पकः (पु०) १ सुपाडी का पेड़ । २ केतकी का पेड़ । ३ आम का पेड ।

चामरिन् (पु०) घोड़ा । अश्व ।

चामीकरं (न०) १ सुवर्ण । सोना । २ धतूरा । प्रख्य, (वि०) सुवर्ण की तरह ।

चामुंडा }
चामुण्डा } (स्त्री०) दुर्गा देवी का एक भयानक रूप ।

चाम्पिला (स्त्री०) चंपा अथवा आधुनिक नदी चंबल ।

चाम्पेयः (पु०) १ चंपा वृक्ष । २ नागकेसर वृक्ष ।

चम्पेयम् (न०) १ कमल नाल का सूत या रेशा । २ सुवर्ण । ३ धतूरे का पोधा ।

चाय (धा० उभय०) [चायति—चायते] १ देखना । सूझना । २ पूजन करना ।

चारः (पु०) १ गमन । चहलकदमी । गति । चाल । भ्रमण । २जासूस । भेदिया । ३अभ्यास । अनुष्ठान । ४ बँदीगृह । ५ बेडी । जंज़ीर ।—अन्तरितः, (पु०) जासूस ।—ईक्षणः, (पु०)—चक्षुस्, (पु०) राजा जो चरों के द्वारा देखता है ।—चण, (वि०)—चञ्चु, (वि०) सुन्दर चाल या गति वाला ।—पथः, (पु०) चौराहा ।—भटः, (पु०) वीर । योद्धा ।—वायुः, (पु०) ग्रीष्म ऋतु में बहने वाला पवन । पछैयाँ हवा । पछियाव ।

चारम् (न०) एक कृत्रिम विष ।

चारकः (पु०) १ भेदिया । जासूस । २ गड़रिया । गोपाल । ३ नेता । लीडर । ४ हाँकने वाला । गाड़ी चलाने वाला । सारथी । ५ साईस । घुड़सवार । ६ बन्दगृह ।

चारणः (पु०) १ भ्रमणकारी । पर्यटक । तीर्थयात्री । २ घूमने फिरने वाला नट या गायक, वंदीजन, भाट । ३ गन्धर्व । ४ पुराण पाठक । ५ जासूस । भेदिया ।

चारिका (स्त्री०) दासी । परिचारिका ।

चारितार्थ्य (न०) सफलता । कामियाबी ।

चारित्रम् (न०) या **चारित्र्यं,** (न०) १ आचरण । चालचलन । २ सुकीर्त्ति । नामवरी । ख्याति । खरापन । सत्यता । साधुता । ३ (स्त्री०) सतीत्व । ४ स्वभाव । निर्वाह ।—कवच, (वि०) सतीत्व रूपी कवच धारिणी ।

चारु (वि०) [स्त्री०—चार्वी] १ सुखागत । प्रिय । अनुकूल । प्रेमपात्र (माशूक) । २ मनोहर । सुन्दर । सुडौल । सुस्वरूप ।—अङ्गी, (स्त्री०) सुस्वरूपा स्त्री ।—घोणा, (वि०) सुन्दर नासिका वाला ।—दर्शन, (वि०) खूबसूरत । मनोहर ।—धारा, (पु०) इन्द्राणी । शची ।—नेत्र, (न०)—लोचन, (वि०) सुन्दर नेत्रों वाला ।—नेत्रः, (पु०)—लोचनः, (पु०) हिरन । मृग ।—फला, (स्त्री०) अंगूर । द्राक्षा ।—लोचना, (स्त्री०) सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री ।—वक्र, (वि०) खूबसूरत चेहरे वाला ।—वर्धना, (स्त्री०) स्त्री । औरत ।—व्रता, (स्त्री०) मास भर व्रत रखने वाली स्त्री ।—शिला, (स्त्री०) रत्न । जवाहरात ।—शील, (वि०) अच्छे स्वभाव का ।—हासिन्, (वि०) मधुर हास करने वाला ।

चारु (न०) केसर । जाफ़राँन् ।

चारुः (पु०) बृहस्पति । देवाचार्य ।

चार्चिक्यं (न०) १ शरीर को सुवासित करना । शरीर में उबटन लगाना । २ उबटन ।

चार्म (वि०) [स्त्री०—चार्मी] १ चमड़े का । २ चमड़े से ढका हुआ । ३ ढालधारी ।

चार्मण (वि०) [स्त्री०—चार्मणी] चर्म या चाम से ढका हुआ ।

चार्मणम् (न०) चमड़ा या ढालों का समूह ।

चार्मिक (वि०) [स्त्री०—चार्मिकी] चमड़े का बना हुआ ।

चार्मिणं (न०) ढाल धारी मनुष्यों की टोली ।

चार्वाकः (पु०) १ नास्तिकवादी । २ महाभारत में उल्लिखित एक राक्षस जो दुर्योधन का मित्र और पाण्डवों का शत्रु था ।

चार्वी (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ चाँदनी । ३ प्रतिभा । ४ चमक । आब । कान्ति । ५ कुबेर की पत्नी का नाम ।

चालः (पु०) १ घर की छत्त या छवनई । २ नीलकण्ठ पक्षी । ३ प्रकम्प । ४ चर । जंगम ।

चालकः (पु०) चञ्चल या बेचैन हाथी ।

चालनं (न०) (पूंछ का) हिलाना या डुलाना । चलनी में रखकर छानना ।

चालनी (स्त्री०) चलनी ।

चाषः } (पु०) नीलकण्ठ पक्षी ।
चासः }

चि (उभय०) [चिनोति, चिनुते, चित । (णिजन्त) चाययति, चापयति, या चययति, चपयति । (सनन्त) चिचीषति, चिकीषति] १ एकत्र करना । २ ढेर लगाना । पंक्तिबद्ध करना । ३ जड़ना । भरना ।

चिकित्सक (पु०) वैद्य । हकीम । डाक्टर ।

चिकित्सा (स्त्री०) औषधोपचार । इलाज । मालजा ।

चिकित्स्य (वि०) साध्य रोगी । इलाज करने योग्य बीमार ।

चिक्किलः (पु०) कीचड़ । काँदा ।

चिकीर्षा (स्त्री०) अभिलाषा । कामना ।

चिकीर्षित (वि०) अभिलषित ।

चिकीर्षितम् (वि०) अभिप्राय । प्रयोजन । मतलब ।

चिकीर्षु (वि०) अभिलाषी । इच्छुक ।

चिकुर (वि०) १ चञ्चल । अस्थिर । काँपने वाला । २ अविचारी । दुस्साहसी ।

चिकुरः (पु०) १ सिर के केश । २ पर्वत । ३ सर्प या रेंगने वाला कोई भी जीव ।—उच्चयः,

—कलापः,—निकरः—पत्त,—पाशः,—भारः,—हस्तः, (पु०) बालों की चोटी या चूड़ा।
चिकूरः (पु०) केश। बाल।
चिक्कः (पु०) छछूंदर।
चिक्कण (वि०) १ चिकना। चमकीला। २ फिसलाहट वाला। ३ कोमल। स्निग्ध। ४ तिलहा। तैलाक्त।
चिक्कणः (पु०) सुपारी का वृत्त।
चिक्कणम् (न०) सुपारी फल।
चिक्कसः (पु०) यवागू। यव का बना भोज्य पथ्य विशेष।
चिक्का (स्त्री०) देखो चिक्कण।
चिक्किरः (न०) चूहा।
चिक्लिदं (न०) नमी। तरी। ताज़गी। टटकापन।
चिचिंड (न०) कुम्हड़ा या कद्दू।
चिच्छिलाः (पु० बहुवचन) देश विशेष और उसके रहने वाले।
चिंचा } चिञ्चा } (स्त्री०) १ इमली का पेड़। इमली। २ घुंघची का पौधा।
चिट् (धा० पर०) [चेटति, चेटयति, चेटयते] पठाना। बाहिर भेजना।
चित् (धा० पर०) [चेतति, चेतयते, चेतित] १ पहचानना। चीन्हना। देखना। २ समझना। जान लेना। ३ सचेत होना। होश में आना। ४ प्रकट होना। प्रदीप्त होना।
चित् (स्त्री०) १ विवेक। ज्ञान। बोध। २ बुद्धि। प्रतिभा। समझ। ३ हृदय। मन। आत्मा। जीवात्मा। रूह। ४ ब्रह्म।—आत्मन्, (पु०) १ विवेक शक्ति। विचार शक्ति। विशुद्ध ज्ञान। परब्रह्म।—आत्मकं, (न०) संज्ञा। चैतन्य।—आभासः, (पु०) जीव।—उल्लासः, (पु०) जीवात्माओं के मन को प्रसन्न करने वाला।—घनः, (पु०) परमात्मा या ब्रह्म।—प्रवृत्ति, (स्त्री०) सोच विचार।—शक्तिः, (स्त्री०) बोध शक्ति।—स्वरूपं, (न०) परमात्मा।
चित् (भू० कृ०) १ एकत्रित किया हुआ। ढेर लगाया हुआ। २ प्राप्त। उपलब्ध। ३ जड़ा हुआ। बैठाया हुआ।
चितं (न०) भवन। इमारत।
चिता (स्त्री०) शव जलाने के लिये तर ऊपर रखा हुआ काष्ठ का ढेर।—चूड़कम्, (न०) चिता।
चितिः (स्त्री०) १ एकत्रीकरण। २ ढेर। समूह। परिमाण। ३ तह। पर्त। ४ चिता। ५ धी। बुद्धि।
चितिका (स्त्री०) १ चिता। २ टाल। गोला। गंज। ढेर। ३ करधनी।
चित्त (वि०) १ देखा हुआ। पहिचाना हुआ। २ विचारित। मनन किया हुआ। ३ निर्द्धारित। ४ इच्छित।—अनुवर्तिन्, (वि०) मन के अनुसार।—अपहारकः, (वि०)—अपहारिन्, (वि०) आकर्षक। मन चुराने वाला।—आभोगः, (पु०) किसी वस्तु के प्रति अनन्य अनुराग।—आसङ्गः, (पु०) अनुराग। प्रेम।—उद्रेकः, (पु०) अभिमान। अहङ्कार।—ऐक्य, (वि०) मतैक्य। एकदिली।—उन्नतिः, —समुन्नतिः, (स्त्री०) १ उदारता। उच्चाशयता। २ अहङ्कार। अभिमान।—चारिन्, (वि०) दूसरे की इच्छानुसार चलने वाला।—जः, (पु०) जन्मन्, (पु०)—भू:, (पु०) योनिः, (पु०) १ प्रेम। अनुराग। २ कामदेव।—ज्ञ, (वि०) दूसरे के मन की बात जानने वाला।—नाशः, (पु०) विवेकहीनता।—निर्वृतिः, (स्त्री०) सन्तोष। प्रसन्नता।—प्रथम, (वि०) शान्त। स्वस्थ।—प्रशमः, (पु०) मन की शान्ति।—प्रसन्नता, (स्त्री०) हर्ष।—भेदः, (पु०) १ मत-अनैक्य। २ असङ्गति।—मोहः, (पु०) चित्तविभ्रम।—विकारः, (पु०) विचार या भावना का परिवर्तन।—विक्षेपः, (पु०) चित्तमोह।—विप्लवः, (पु०)—विभ्रमः, (पु०) विक्षिप्तता। सिड़ीपन। पागलपन।—विश्लेषः, (पु०) मैत्रीभङ्ग।—वृत्तिः, (स्त्री०) १ प्रवृत्ति। झुकाव। २ आन्तरिक अभिप्राय। उमङ्ग।—वेदना, (स्त्री०) कष्ट। विपत्ति। चिन्ता।—

वैक्लव्यं, (न०) बावलापन। सिड़ीपन ।—हारिन्, (वि०) मनोहर । आकर्षक। मनोमुग्धकारी। प्रिय।

चित्तं (न०) १ विचार । २ मनोयोग । इच्छा। ३ उद्देश्य । ४ मन । ५ हृदय । ६ युक्ति । हेतु। ७ प्रतिभा । विचारशक्ति । तर्कनाशक्ति ।

चित्तवत् (वि०) १ युक्तियुक्त । सहेतुक । तर्कनाशक्ति सम्पन्न । २ दयालु हृदय । मनभावन । सर्वप्रिय ।

चित्यं (न०) वह स्थान जहाँ शव भस्म किया जाय। श्मशान।

चित्या (स्त्री०) चिता ।

चित्र (वि०) १ चमकीला । स्पष्ट । साफ । २ रंग-विरंगा । ३ रुचिकर । प्रिय । ४ भिन्न भिन्न। तरह तरह का । ५ आश्चर्यकारी । अद्भुत ।—अक्षी, (पु०) —नेत्रा, —लोचना, (स्त्री०) सारिका । मैना पक्षी ।—अङ्ग, (वि०) धारियोंदार । धब्बेदार ।—अङ्गम्, (न०) सेंदुर । इंगुर ।—अर्पित, (वि०) चित्रित ।—आकृतिः, (स्त्री०) हाथ की बनी तसवीर ।—आयसम्, (न०) इँसपात लोहा।—आरम्भः, (पु०) तसवीर का खाका ।—उक्तिः, (स्त्री०) १ आकाशवाणी । २ आश्चर्यप्रद कहानी ।—ओदन, (पु०) पीला भात ।—कण्ठः, (पु०) कबूतर । परेवा ।—कवलः, (पु०) रंगविरंगी हाथी की झूल । २ रंग विरंगा ग़लीचा ।—करः, (पु०) चित्रकार । नाटक का पात्र ।—कर्मन्, (न०) १ असाधारण कार्य । २ शृङ्गार । सजावट । ३ तसवीर । ४ जादू । १ चितेरा । २ जादूगर ।—कामः, (पु०) चीता । बाघ ।—कारः, (पु०) चितेरा । सङ्कर वर्ण विशेष ।

"स्थपतेरपि गान्धिक्यां चित्रकारो व्यजायत।"

—पराशर

—कूटः, (पु०) तीर्थक्षेत्र विशेष जो बाँदा (बुन्देलखण्ड) में है ।—कृत् (पु०) चितेरा । —क्रिया, (स्त्री०) चित्रणकला ।—ग, (वि०) —गत, (वि०) चित्रित ।—गंधम्, (न०) हरताल ।—गुप्तः, (पु०) यमराज के पेशकार जो जीवधारियों के पाप पुण्यों का लेखा रखते हैं। कायथों के कुलदेवता ।—जल्पः, (पु०) नाना विषयों पर अस्तव्यस्त विचार ।—त्वच्, (पु०) भोजपत्र ।—दण्डकः, (पु०) कपास का पौधा ।—न्यस्त, (वि०) चित्रित ।—पक्षः, (पु०) तीतर विशेष ।—पटः, (पु०) पट्टः, (पु०) १ चित्र । २ रंगीन और ख़ानेदार कपड़ा ।—पद, (वि०) अनेक भागों में विभक्त । अच्छे या सुन्दर भावों से भरा हुआ। पादा, (स्त्री०) मैना पक्षी ।—पिच्छकः, (पु०) मोर ।—पुङ्खः, (पु०) एक प्रकार का तीर ।—पृष्ठः, (पु०) गौरैया पक्षी ।—फलकं, (न०) तख्ता या पट्टी जिस पर रखकर चित्र खींचा जाय ।—बर्हः, (पु०) मयूर ।—भानुः, (पु०) १ आग । २ सूर्य । ३ भैरव । मदार का पौधा ।—मण्डलः, (पु०) सर्प विशेष ।—मृगः, (पु०) चीतल । हिरन ।—मेखलः, (पु०) मयूर ।—योधिन्, (पु०) अर्जुन का नाम ।—रथः, (पु०) १ सूर्य । २ गन्धर्वों के एक सरदार का नाम । मुनि नाम्नी स्त्री के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के सोलह पुत्रों में से एक का नाम ।—लेखा, (स्त्री०) उषा की एक सहेली का नाम ।—लेखकः, (पु०) चितेरा । लेखनिका, (स्त्री०) चितेरे की कूची ।—विचित्र, (वि०) रंग विरंगा । —विद्या, (स्त्री०) चित्रकला ।—शाला, (स्त्री०) चितेरे का कार्यालय । —शिखण्डिन् (पु०) सप्तर्षियों की उपाधि ।—संस्थ, (वि०) चित्रित ।—हस्तः, (पु०) युद्ध के समय हाथ की विशिष्ट स्थिति ।

चित्रं (न०) १ तसवीर । २ हाथ की खींची हुई तसवीर । ढाँचा । खाका । ३ चमकीला आभूषण । गहना । ४ विलक्षण दर्शन । आश्चर्य। ५ साम्प्रदायिक तिलक । ६ स्वर्ग । आकाश। ७ धब्बा । दाग । ८ कोढ़ रोग विशेष ।

चित्रः (पु०) १ कई प्रकार के रंग के समूह का एक रंग । रंग विरंगा रंग । २ अशोक वृक्ष ।

चित्रं (अव्यया०) आह । ओह । कैसा आश्चर्य। कैसा विस्मय ।

चित्रकं (न०) माथे का साम्प्रदायिक चिन्ह स्वरूप तिलक।

चित्रकः (पु०) १ चित्रकार। चितेरा। २ चीता। ३ वृक्ष विशेष।

चित्रल (वि०) रंग बिरंगा। धब्बेदार।

चित्रलः (पु०) रंग बिरंगा रंग।

चित्रा (स्त्री०) चौदहवाँ नक्षत्र।—अट्टीर, (पु०)—ईशः, (पु०) चन्द्रमा।

चित्रिकः (पु०) चैत्र मास।

चित्रिणी (स्त्री०) चार प्रकार की (अर्थात् पद्मिनी, चित्रिणी, शङ्खिनी और हस्तिनी अथवा करिणी) स्त्रियों में से एक। रतिमञ्जरीकार ने चित्रिणी के लक्षण यह लिखे हैं:—

> भवति रतिरसज्ञा नातिखर्वा न दीर्घा,
> तिलकुसुमसुनासा स्निग्धनीलोत्पलाक्षी।
> घन कठिन कुचाढ्या सुन्दरी बद्धशीला
> सकलगुण विचित्रा चित्रिणी चित्रवक्त्रा॥

चित्रित (वि०) १ रंग बिरंगा। धब्बेदार। २ रंगा हुआ।

चित्रिन् (वि०) [स्त्री० – चित्रिणी] १ अद्भुत। २ रंग बिरंगा।

चित्रीयते (क्रि०) आश्चर्य करना। आश्चर्य का कारण बनना।

चित् } (धा० उभय०) [चिन्तयति, चिन्तयते,
चिन्त् } चिन्तित] १ सोचना। विचारना। २ ध्यान देना। ख्याल करना। ३ स्मरण करना। याद करना। ४ ढूंढ़ निकालना। खोज निकालना। ५ सम्मान करना। ७ तोलना। अच्छे बुरे का विचार करना। ८ बहस करना।

चिंतनम्, चिन्तनम् (न०) } १ सोचना। विचा-
चिंतना, चिन्तना (स्त्री०) } रना। २ सोच विचार में पड़ जाना।

चिंता } (स्त्री०) १ विचार। सोच। २ चिन्ता।
चिन्ता } फिक्रिर। सोच। दुःखदायी विचार।—आकुल, (वि०) फिकिर से विकल। उत्सुक।—कर्मन्, (न०) सोच फिकिर।—पर, (वि०) विचारवान्। उत्सुक।—मणिः, (पु०) विचारते ही अभिलषित वस्तु को देने वाला रत्न विशेष।—वेश्मन्, (न०) विचार-भवन। सभाभवन।

चिंतिडी } (स्त्री०) इमली का पेड़।
चिन्तिडी }

चिंतित } (वि०) विचारा हुआ। सोचा हुआ।
चिन्तित }

चिंतिति }
चिन्तिति }
चिंतिया } (स्त्री०) सोच। विचार। ध्यान।
चिन्तिया }

चिंत्य } (स० का० कृ०) १ सोचने योग्य। विचारने
चिन्त्य } लायक। २ ढूँढ़ने लायक। पता लगाने योग्य। ३ सन्दिग्ध। विचारने योग्य।

चिन्मय (वि०) आध्यात्मिक। चैतन्यमय ईश्वर।

चिन्मयम् (न०) १ विशुद्ध ज्ञान। २ परब्रह्म।

चिपट (वि०) चपटी नाक का।

चिपटः (पु०) चाँवल या अनाज जो चपटा किया गया हो।

चिपिटः (पु०) देखो चिपट।—ग्रीव, (वि०) कोतलगर्दन।—नासं (न०)—नासिक, (वि०) चपटी नाक वाला।

चिपिटकः } (न०) चपटे या कुटे चाँवल। च्योरा।
चिपुटः } चिउरा।

चिबुकं } (न०) ठोड़ी।
चिबुकं }

चिमिः (पु०) तोता।

चिर (वि०) दीर्घ। दीर्घ काल व्यापी। बहुत दिनों का। पुराना।—आयुस्, (वि०) बहुत दिनों का या बड़ी उम्र का। (पु०) देवता।—आरोधः, (पु०) बहुत दिनों से डाला हुआ घेरा।—उत्थ, (वि०) दीर्घ-काल-व्यापी।—कार, (वि०)—कारिक,—(वि०)—कारिन्, (वि०)—क्रिय, (वि०) धीरे धीरे कार्य करने वाला। विलंब करने वाला। दीर्घसूत्री।—कालः, (पु०) दीर्घकाल।—कालिक,—कालीन (वि०) बहुत दिनों का। बहुत पुराना।—जात, (वि०) बहुत दिनों पूर्व उत्पन्न। बहुत पुराना।—जीविन्, (वि०) दीर्घजीवी। चिरजीवियों में सात की गणना है। यथा—

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥

—पाकिन्, (वि०) देर में पकने वाला ।—पुष्पः, (पु०) वकुल वृक्ष ।—मित्रं, (न०) पुराना दोस्त ।—मेहिन्, (पु०) गधा । रासभ । खर ।—रात्रं, (न०) कई रात्रियों की अवधि का काल । दीर्घकाल ।—विप्रोषित, (वि०) दीर्घकाल से निर्वासित । दीर्घ कालीन प्रवासी । —सूता, (न०)—सूतिका, (स्त्री०) वह गौ जिसके अनेक बछड़े उत्पन्न हुए हों ।—सेवकः, (पु०) पुराना नौकर ।—स्थः, (न०)—स्थायिन्, (पु०)—स्थित (वि०) टिकाऊ । बहुत दिनों चलने वाला ।

चिरं (न०) दीर्घ काल ।

चिरंजीव (वि०) दीर्घजीवी ।

चिरञ्जीवः (पु०) कामदेव की उपाधि ।

चिरटी, चिरिंटी, चिरिएटी (स्त्री०) यह विवाहित अथवा अविवाहित स्त्री जो जवान होने पर भी दीर्घकाल तक अपने पिता के घर ही में रहे ।

चिरत्न (वि०) [स्त्री०—चिरत्नी] प्राचीनकालीन । बहुत पुरानी ।

चिरंतन, चिरन्तन (वि०) प्राचीन । बहुत पुरानी ।

चिरयति, चिरायते (क्रि०) देर करना । विलंब करना । अटकाना ।

चिरिः (पु०) तोता ।

चिरुः (पु०) कंधे के जोड़ ।

चिर्भटी (स्त्री०) ककड़ी विशेष ।

चिल् (धा० प०) [चिलति] कपड़ा धारन करना ।

चिलमिलिका, चिलमीलिका (स्त्री०) १ एक प्रकार की गुंज या सोने की सकड़ी । २ जुगनू । ३ बिजली ।

चिल्ल् (धा० परस्मै०) [चिल्लति, चिल्लित] ढीला पड़ जाना । शिथिल होना ।

चिल्लः (पु०), चिल्ला (स्त्री०) चील ।—आभः, (पु०) जेबकट । चोर । गिरहकट ।

चिल्लिका, चिल्लीका (स्त्री०) गेंद बल्ले का खेल ।

चिविः (पु०) ठोड़ी ।

चिन्हं (न०) १ निशान । दाग़ । मोहर । निशानी । लक्षण । चपरास । बिल्ला । २ चिन्हानी । ३ राशि । ४ लक्ष्य । दिशा ।—कारिन्, (पु०) १ चिन्ह । दाग़ । २ हनन । घायल करना । चोटिल करना । ३ भयप्रद । घिनौना ।

चिन्हित (वि०) १ निशान किया हुआ । मोहर लगा हुआ । बिल्लाधारी । चपड़ासधारी । २ दाग़ा हुआ । ३ परिचित ।

चीत्कारः (पु०) हाथी की चिंघार या गधे की रेंक ।

चीनः (पु०) १ चीनदेश । २ हिरन विशेष । ३ वस्त्र विशेष ।—अंशुकम्,—वासस्, (न०) रेशमी वस्त्र ।—कर्पूर, (पु०) कपूर विशेष ।—जं, (न०) ईस्पात लोहा ।—पिष्टं, (न०) १ सिन्दूर । इंगुर । २ सीसा —वङ्गम्, (न०) सीसा ।

चीनम् (न०) १ झंडा । पताका । २ आँखों के कोयों के लिये पट्टी विशेष । ३ सीसा ।

चीनाः (पु०) (बहुवचन) चीन का राजा या चीन देशवासी ।

चीनाकः (पु०) कपूर विशेष ।

चीरं (न०) १ चिथड़ा । धज्जी । २ छाल । ३ वस्त्र । ४ चौलड़ा मोती का हार । ५ धारी । लकीर । लेखन का विधान विशेष । खुदाई । नक्काशी । ७ सीसा ।—परिग्रह,—वासिन्, (वि०) १ छाल को (वस्त्र के स्थान पर) पहिने हुए । २ चिथड़े पहिने हुए ।

चीरि (स्त्री०) १ आँख ढाँपने का घूंघट विशेष । २ गेंद बल्ला का खेल । ३ भीतर पहिनने वाले कपड़े की संजाप या गोट ।

चीरिका, चीरुका (स्त्री०) गेंद बल्ले का खेल ।

चीर्ण (वि०) १ किया हुआ । कृत । २ अधीत । पाठ किया हुआ । ३ विभाजित । चिरा हुआ । फटा हुआ ।—पर्णः (पु०) खजूर ।

चीलिका (स्त्री०) गेंद बल्ले का खेल ।

चीव (धा० उभय०) [चीवति, चीवते] १ पहनना । धारण । करना । ढकना । २ पाना । ३ घेरा डालना । चारों ओर से रुद्ध करना ।

चीवरं (न०) १ वस्त्र। फटा कपडा। चिथडा। २ कथडी।

चीवरिन् (पु०) १ बौद्ध या जैन भिक्षुक। २ भिक्षुक।

चुक्कारः (पु०) सिंह की दहाड या गर्जन।

चुक्रः (पु०) अमलवेत या खट्टा साग विशेष। २ खट्टापन। खटाई।—फलं (न०) इमली का फल। —वास्तुकं (न०) खट्टा साग विशेष।

चुक्रम् (न०) खटाई। खट्टापन।

चुक्रा (स्त्री०) इमली का पेड।

चुक्रिमन् (पु०) खट्टापन।

चुचुक (पु०), चुचुकम् (न०), चुचूकम् (न०) चूची के ऊपर की घुंडी।

चुचु, चुञ्चु (वि०) प्रख्यात। प्रसिद्ध। निपुण।

चुटा, चुण्टा, चुंडा, चुण्डा (स्त्री०) कुइया। छोटा तालाव।

चुत् (धा० पर०) चूना। रिसना। टपकना।

चुतः (पु०) भग। योनि। स्त्री का गुप्ताङ्ग।

चुद् (धा० उभय०) [चोदयति, चोदयते, चोदित] १ भेजना। निर्देश करना। आगे फैंकना। आगे वढ़ाना। २ सुझाना। मन में डालना। प्रेरणा करना। उसकाना। भडकाना। जाल डालना। सजीव करना। प्रवृत्त करना। पथ प्रदर्शन करना। ३ फुर्ती करना। शीघ्रता करना। ४ प्रश्न करना। पूछना। ५ दवाना। प्रार्थना द्वारा दवाव डालना। ६ उपस्थित करना। पेश करना।

चुंदी (स्त्री०) कुटनी।

चुप् (धा० पर०) [स्त्री०—चोपति,] धीरे धीरे चलना। रेंगना। पैर दवा कर चलना।

चुवुकः (पु०) ठोड़ी।

चुंव्, चुम्ब् (धा० उभय) [चुम्वति चुम्वते, चुम्वयति—चुम्वयते, चुम्वित] चूमा लेना। मिट्ठी लेना। धीरे से स्पर्श करना। चराना।

चुंवः, चुम्वः (पु०), चुंवा, चुम्वा (स्त्री०) चूमा। वोसा। मिट्ठी।

चुंवकः, चुम्वकः (पु०) १ चूमा लेने वाला। २ लम्पट। वेश्यागामी। रसिया। ३ गुंडा। ठग। ४ लेउद्दू पण्डित। पल्लवग्राही पण्डित। ५ चुम्बक पत्थर। मक्नातीसी पत्थर।

चुंवनं, चुम्बनम् (न०) चूमा। वोसा। मिट्ठी।

चुर् (धा० उभय) [चोरयति, चोरयते, चोरित] १लूटना। चुराना। २ रखना। अधिकार करना।

चुरा (स्त्री०) चोरी।

चुरि, चुरी (स्त्री०) छोटा कूप। कुइया।

चुलुकः (पु०) १ गहरी कीचड़। २ मुंहभर जल या अञ्जली। ३ छोटा वरतन।

चुलुकिन् (पु०) सूंस। शिशुमार। जलजन्तु विशेष।

चुलुंप् (धा० पर०) [स्त्री० —चुलुम्पति] झूलना। इधर उधर हिलना। आन्दोलन करना।

चुलुम्पः (पु०) दुलारे वालक।

चुलुम्पा (स्त्री०) वकरी।

चुल्ल (धा० प०) [चुल्लति] खेलना। क्रीडा करना। प्रेम सूचक भाव प्रदर्शित करना।

चुल्लिः (स्त्री०) चूल्हा।

चूचुकं, चूचूकम् (न०) चूची के ऊपर की घुंडी।

चूडकः (पु०) कूप। कुआ। इनारा।

चूडा (स्त्री०) १ चोटी। चुटिया। चूडा। २ चूडाकरण संस्कार। ३ मुर्गा या मोर के सिर की कलँगी। ४ सिर। ६ चोटी। शिखर। ७ अटारी। अटा। ८ कूप। ६ कलाई का आभूषण।—करणं, —कर्मन्, (न०) मुण्डन संस्कार।—पाशः, (पु०) केश समूह।—मणिः,(पु०)—रत्नं, (न०) १ सीसफूल या सीस में धारण करने के लिये मणि जटित आभूषण विशेष। २ सर्वोत्तम। सर्वोत्कृष्ट।

चूडार, चूडाल (वि०) चोटीदार। कलगीदार। चोटी। चूडा।

चूतः (पु०) आम्रवृक्ष। आम का पेड़।

चूतम् (न०) भग। योनि। स्त्री का गुप्ताङ्ग।

चूर्ण् (धा० उभय०) [चूर्णयति, चूर्णयते- चूर्णित] १ कूट कर या पीस कर आटा कर डालना। २ कूटना। कुचरना।

चूर्णः (पु०) } १ चूर्ण । २ आटा । ३ धूल । ४
चूर्णम् (न०) } घिसा हुआ चंदन । खुशबूदार चूर्ण । (पु०) १ खड़िया । २ चूना ।—कारः (पु०) चूना फूंकने वाला ।—कुन्तलः (पु०) घुँघराले वाल ।—खण्डम्, (न०) रोड़ा । कंकड़ । गिट्टी ।—पारदः, (पु०) सिंदूर । इंगूर । लालरंग ।—योगः, (पु०) सुगन्धित चूर्ण ।

चूर्णकः (पु०) भुना और पिसा हुआ अनाज

चूर्णकम् (न०) १ सुगन्धयुक्त चूर्ण । २ सरल गद्यमय निबन्ध । यथा ।

"अकठोराक्षर स्वल्पसमासं चूर्णकं विदुः ॥"
—छन्दोमञ्जरी ।

चूर्णनं (न०) चूर्ण करना । चूर्ण ।

चूर्णिः } (स्त्री०) १ चूर्ण । २ सौ कौड़ियों का
चूर्णी } योग या जोड़ ।

चूर्णिका (स्त्री०) १ भुना और पिसा अनाज । २ गद्य रचना की शैली विशेष ।

चूर्णित (वि०) कूटा हुआ । पीसा हुआ । टुकड़े टुकड़े किया हुआ ।

चूलः (पु०) वाल ।

चूला (स्त्री०) १ ऊपर के खन का कमरा । २ चोटी, कलंगी । ३ पुच्छल तारे की चोटी ।

चूलिका (स्त्री०) १ मुर्गे की कलगी । २ हाथी का कर्णमूल । नाटक में वह कथन जो पर्दे की आड़ से कहा जाता है । यथा —

अन्तर्जवनिकासंस्थैः सूचनार्थस्य चूलिका ।
साहित्यदर्पण ।

चूष् (धा० पर०) [चूषति, चूषित] चूसना । पीना ।

चूषा (स्त्री०) (हाथी के लिये) १ चमड़े का तंग । २ चूसना । ३ तंग । पेटी ।

चूष्यं (न०) कोई भोज्य पदार्थ जो चूस कर खाने योग्य हो; आम आदि ।

चृत् (धा० पर०) [स्त्री०—चृतति] १ चोटिल करना । मार डालना । २-बाँध लेना । आपस में जोड़ कर मिला देना । ३ जलाना । प्रकाश करना ।

चेकितानः (पु०) १ शिवजी । २ यादव वंशी राजा जो महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की ओर से लड़ा था ।

चेटः } (पु०) १ नौकर । २ अनुरागी । आशिक ।
चेड } चहीता ।

चेटिका, चेडिका } (स्त्री०) दासी । टहलनी ।
चेटि, चेडी }

चेतन (वि०) १ सजीव । जीवित । जीवधारी । प्राणधारी । २ दृश्यमान । दृष्टिगोचर ।

चेतनः (पु०) १ जीव । प्राणी । २ जीवात्मा । रूह । मन । ३ परमात्मा ।

चेतना (स्त्री०) १ संज्ञा । बोध । २ समझ । धी । ३ जीवन । सजीवता । ज्ञान । ४ बुद्धि । विवेक ।

चेतस् (न) १ विवेक । २ चित्त । मन । आत्मा । ३ तर्कना शक्ति । विचारशक्ति ।—जन्मन्,—भवः,—भूः, (पु०) १ प्रेम । अनुराग । २ कामदेव ।—विकारः, (पु०) मन की विकलता ।

चेतोमत् (वि०) जीवित । सजीव ।

चेद् (अव्यया०) अगर । वशर्ते कि । यद्यपि ।

चेदिः (पु०, बहुवचन) एक देश का नाम । उस देश के अधिकारी ।—पतिः,—भूभृतः, (पु०)—राज्, (पु०)—राजः (पु०) शिशुपाल का नाम । यह दमघोष राजा का पुत्र था और श्रीकृष्ण के हाथ से युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ में श्रीकृष्ण का अपमान करने के लिये मारा गया था ।

चेय (वि०) ढेर करने योग्य । जमा करने योग्य ।

चेल् (धा० परस्मै०) [स्त्री०—चेलति] १ चलना । जाना । २ हिलना । काँपना । थरथराना ।

चेलम् (न०) कपड़ा ।—प्रक्षालकः, (पु०) धोबी ।

चेलिका (स्त्री०) अँगिया । चोली ।

चेष्ट् (धा० आत्म०) [चेष्टते, चेष्टित] १ डोलना । घूमना । जीवन के चिन्ह दिखाना । सजीव होने के लक्षण प्रदर्शित करना । २ उद्योग करना । ३ पूर्ण करना । ४ आचरण करना ।

चेष्टकः (पु०) स्त्रीप्रसङ्ग का आसन या विधान विशेष । रतिबन्ध ।

चेष्टनम् (न०) उद्योग । चेष्टा । प्रयत्न ।

चेष्टा (स्त्री०) १ यत्न । उद्योग । २ हावभाव । ३ आचरण ।—नाशः, (पु०) प्रलय ।—निरू-

पणं, (न०) किसी व्यक्ति विशेष के आचरणों पर दृष्टि रखना। [हुआ।

चेष्टित (व० कृ०) चेष्टा किया हुआ। प्रयत्न किया

चैतन्यम् (न०) १ चेतना। जीवन। बोध। सजीवता। २ परमात्मा।

चैतिक (वि०) बुद्धि सम्बन्धी। मानसिक।

चैत्यः (पु०) } १ पत्थरों का ढेर। २ स्मारक। कबर
चैत्यं (न०) } का पत्थर जिस पर मुर्दे के जीवनकाल आदिका परिचय रहता है। ३ यज्ञमण्डप। ४मन्दिर। देवालय। धार्मिक अनुष्ठान करने का स्थान। ५ देवालय। ६ बुध या जैन मंदिर। ७ गूलर का वृक्ष। रथ्यावृक्ष।—तरुः,—द्रुमः, - वृक्षः, (पु०) किसी पवित्र स्थान पर जमा हुआ गूलर का पेड़।—पालः, (पु०) किसी देवालय का पुजारी।—मुखः, (पु०) साधु का कमण्डलु।

चैत्रः (पु०) १ चैत मास। २ बौद्ध भिक्षुक।

चैत्रम् (न०) १ मंदिर। मृतपुरुष का स्मारक। आवलिः (स्त्री०) चैत्र की पूर्णमासी।—सखः, (पु०) कामदेव।

चैत्ररथं }
चैत्ररथ्यं } (न०) कुवेर के बाग का नाम।

चैत्रिः }
चैत्रिकः } (पु०) चैत्र मास या चैत का महीना।
चैत्रिन् }

चैत्री (स्त्री०) चैत्री पूर्णमासी।

चैद्यः (पु०) शिशुपाल। [धोबी।

चैलं (न०) १ कपड़े का टुकड़ा।—धावः, (पु०)

चोक्ष (वि०) १ साफ सुथरा। शुद्ध। २ ईमानदार। सच्चा। ३ चतुर। निपुण। ३ पटु। ४ प्रिय। मनोहर। प्रसन्नकारक।

चोचं (न०) १ छाल। बकला। २ चर्म। खाल। ३ नारियल।

चोटी (स्त्री०) कुर्ती। छोटा कोट।

चोडः (पु०) चोली। अँगिया।

चोदना (स्त्री०) १ प्रेरणा। ३ उत्साह। ४ उपदेश।—गुडः, (पु०) गेंद। गद्दा।

चोदित (व० कृ०) १ भेजा हुआ। २ उत्तेजित। जीवन डाला हुआ। ५ युक्ति या कारण प्रदर्शित करने के लिये पेश किया हुआ।

चोद्यम् (न०) १ एतराज या प्रश्न करना। २ एतराज करना। ३ आश्चर्य।

चोरः }
चौरः } (पु०) चोर। ठग। डाकू।

चोरिका }
चौरिका } चोरी। लूट।

चोरित (वि०) चुराया हुआ। लूटा हुआ।

चोरितकम् (न०) १ छोटी चोरी। अपहरण। २ चुराई हुई कोई भी वस्तु।

चोलः (पु० बहुवचन) आधुनिक तंजौर प्रान्त प्राचीन काल में चोल देश के नाम से प्रसिद्ध था। इस देश के अधिवासी।

चोलः (पु०) }
चोली (स्त्री०) } चोली। अँगिया।

चोलकः (पु०) १ छाल की बनी पोशाक। वल्कल-वस्त्र। २ अँगिया। चोली। ३ चपरास। पेटी।

चोलकिन् (पु०) १ योद्धा जो पेटी लगाये हो। २ शंतरे का पेड़। ३ कलाई।

चोलंडुकः, चोलण्डुकः }
चोलोंडुकः, चोलोण्डुकः } (पु०) पगड़ी। साफा। मुकुट। कलगी।

चोषः (पु०) १ चूसन। २ सूजन।

चौड }
चौल } (वि०) १ कलँगीदार। २ केश सम्बन्धी। (न०) चूड़ाकरण संस्कार।

चौर्य (न०) १ चोरी। ठगी। २ रहस्य। - रतं, (न०) गुपचुप स्त्रीसम्भोग।—वृत्तिः, (स्त्री०) डाँका डालने की बान।

च्यवनम् (न०) १ गति। गतिशीलता। २ राहित्य। शून्यता। हीनता। ३ मरण। नाश। बहाव। चुआव। २ टपकाव।

च्यु (धा० आत्म०) [च्यवते, च्युत,] १ गिरना। टपकना। चूना। फिसलना। डूबना। २ बाहिर निकलना। बहनिकलना। रसना। ३ अलग होना। रहित होना। त्यागना।

च्युत् (धा० प०) [स्त्री०—च्योतति] १ बहना। टपकना। २ फिसलना। रपटना।

च्युत (व० कृ०) १ गिरा हुआ। फिसला हुआ। २ स्थानान्तरित। बहिष्कृत। ३ भटका हुआ। भूला हुआ।—अधिकार, (वि०) बर्खास्त। नौकरी

से छुड़ाया हुआ। —आत्मन्. (वि०) दुष्टात्मा।

च्युतिः (स्त्री०) १ पतन। २ अलगाव। ३ टपकना। बहनिकलना। ४ अदृश्य होना। नष्ट होना। ५ योनि। भग। ६ मलद्वार। गुदा।

च्यूतः (पु०) आम का पेड़।

छ

छ संस्कृत या नागरी वर्णमाला के स्पर्श नामक भेद के अन्तर्गत चवर्ग का दूसरा वर्ण। यह व्यञ्जन है। इसके उच्चारण का स्थान तालु है। इसके उच्चारण अघोष और महाप्राण नामक प्रयत्न लगते हैं।

छः (पु०) १ भाग। अँश। टुकड़ा। (वि०) १ स्वच्छ। २ छेदक। ३ चञ्चल।

छगः (पु०) [स्त्री०—छगी] बकरा।

छगनः (पु०) [स्त्री०—छगली] बकरा।

छगलं (न०) नीला कपड़ा।

छगलकः (पु०) बकरा।

छटा (स्त्री०) १ समूह। समुदाय। जमाव। २ प्रकाश की किरणों का समूह। चमक। कान्ति। दीप्ति। ३ अविच्छिन्न पंक्ति। —आभा, (स्त्री०) बिजली। विद्युत। —फलः, (पु०) सुपाड़ी का वृक्ष।

छत्रं (न०) छाता। छतरी। —धरः, धारः, (पु०) छाता तान कर (किसी के पीछे पीछे) चलने वाला भृत्य। —धारणम्. (न०) १ छाता लेकर चलना। २ राजचिन्ह छत्र (चवर आदि) से भूषित होना। —पतिः, (पु०) १ सम्राट्। चक्रवर्ती। २ जम्बुद्वीप के एक प्राचीन राजा का नाम। —भङ्ग, (पु०) १ राज्यनाश। राजसिंहासन से च्युति। २ पारतन्त्र्य। परवशता। ३ रण्डामंदी। ४ वैधव्य।

छत्रः (पु०) कुकुरमुता। कठफूल।

छत्रकं (न०) कठफूल। कुकुरमुता।

छत्रकः (पु०) शिवालय।

छत्रा (स्त्री०), छत्राक (पु०) } कठफूल। कुकुरमुता।

छत्रिकः (पु०) वह नौकर जो छाता तान कर चले।

छत्रिन् (वि०) [स्त्री०—छत्रिणी] छाता रखने वाला या छाता ले जाने वाला। —(पु०) नाई। हज्जाम।

छत्वरः (पु०) १ घर। २ कुञ्ज। लतामण्डप।

छद् (धा० उभय०) [छदति-छदते, छादयति-छादयते, छन्न, छादित] १ ढकना। छालेना। २ फैलाना। ३ छिपाना। ग्रसना।

छदः (पु०), छदनम् (न०) } १ उघार। चादर। २ डैना। बाज़ू। २ पत्ता। ३ म्यान। परतला।

छदिः (स्त्री०), छदिस् (न०) } १ गाड़ी की छत। २ घर की छत या छावनी।

छद्मन् (न०) १ कपटवेश। २ व्याज। बहाना। ३ ठगी। धोखेबाज़ी। बेईमानी। चाल। —तापसः, (पु०) पाखण्डी। धर्म की ओट में शिकार खेलने वाला। दम्भी। —रूपेण, (अव्यया०) भेष बदले हुए। कपटवेशी। —वेशिन्, (पु०) धोखेबाज़। ठग। कपट वेशधारी।

छद्मिन् (वि०) १ कपटी। दग़ाबाज। २ कपट वेशधारी।

छनच्छन् (अव्यया०) बनावटी आवाज़। छनाछन या छनछनाहट की आवाज़।

छन्द् (धा० उभय०) [छन्दयति, छन्दयते,-छन्दित] १ प्रसन्न करना। खुश करना। २ प्रवृत्त करना। ३ ढकना। ४ प्रसन्न होना।

छन्दः (पु०) १ इच्छा। कामना। अभिलाषा। स्वेच्छा। २ वश में करना। काबू में करना। ३ अभिप्राय। इरादा। मंशा। ५ विष। ज़हर।

छन्दस् (न०) १ कामना। अभिलाषा। २ स्वेच्छाचार। ३ उद्देश्य। अभिप्राय। मंशा। ४ चालाकी। धोखा। ५ वेद। ६ वृत्त। पद्य। ७ छन्दःशास्त्र। —कृतं (न०) वेद का कोई सा भाग। —गः, (=छन्दोग.) १ सामवेद गाने वाला ब्राह्मण। २

छन्द पढ़ने वाला ।—भङ्गः (पु०) छन्दशास्त्र के नियमों को उल्लङ्घन करने वाला ।

छन्न (वि०) १ ढका हुआ । २ छिपा हुआ । रहस्यमय

छमराडः (पु०) मातृपितृहीन ।

छर्द (धा० उभय०) [छर्दयति, छर्दित] वमन करना । कै करना ।

छर्दः (पु०), छर्दनम् (न०), छर्दि (स्त्री०), छर्दिका (स्त्री०), छर्दिन् (स्त्री०) — वमन । कै । रोग ।

छलः (पु०), छलम् (न०) — १ दगा । चालाकी । धोखा । २ धोखावाज़ी । बदमाशी । ३ बहाना । ४ मशा । अभिप्राय । ५ दुष्टता । ६ भुलावा । ७ वदिश । अभिप्राय ।

छलयति (क्रि०) छलता है । धोखा देता है ।

छलन (न०), छलना (स्त्री०) — धोखा देना । ठगना ।

छलिकं (न०) नाटक या नृत्य विशेष ।

छलिन् (पु०) धोखेवाज़ । वदमाश ।

छल्लि, छल्ली (स्त्री०) १ छाल । बकला । २ लता विशेष । ३ सन्तान । औलाद ।

छविः (स्त्री०) १ रंग । चमड़े की रंगत । २ सौन्दर्य । कान्ति । ४ दमक । आब । ५ चमड़ा चर्म ।

छाग (वि०) वकरा सम्बन्धी ।—भोजन, (पु०) भेड़िया ।—मुखः, (पु०) कार्तिकेय ।—रथः, वाहनः, (पु०) अग्निदेव ।

छाग. (पु०) [स्त्री०—छागी] १ वकरा । २ मेषराशि ।

छागम् (न०) बकरी का दूध ।

छागणः (पु०) अन्ने कंडों की आग ।

छागल (वि०) [स्त्री०—छागली] वकरा सम्बन्धी ।

छागलः (पु०) बकरा ।

छात (वि०) १ कटा हुआ । विभाजित । २ निर्बल । दुवला । लटा हुआ ।

छात्रः (पु०) शिष्य । चेला ।—दर्शनम्, (न०) एक दिन रखे हुए दूध का ताज़ा मक्खन ।—व्यंसकः, (पु०) कुन्दज़ह्न तालिवइल्म । मौथरी बुद्धि का विद्यार्थी ।

छात्रम् (न०) एक प्रकार का शहद ।

छादम् (न०) छप्पर । छत्त ।

छादनम् (न०) १ पर्दा । आड़ । चिक । २ छिपाव । लुकाव । ३ पत्ता । ४ वस्त्र ।

छाद्मिकः (पु०) बदमाश । गुंडा ।

छान्दस् (वि०) १ वैदिक । २ वेदाधीत । ३ पद्यमय ।

छान्दस. (पु०) वेदज्ञ ब्राह्मण ।

छाया (स्त्री०) १ साया । परछाहीं । २ प्रतिविम्ब । ३ समानता । सादृश्य । ४ भ्रम । धोखा । माया । झाँसा । ५ रंगों का गड़बड़ी । ६ चमक । आब । ७ रंग । ८ चेहरे की रंगत । ९ सौन्दर्य । १० रक्षा । हिफ़ाज़त । ११ पंक्ति । पांति । १२ अंधकार । १३ धूम । रिश्वत । १४ दुर्गादेवी । १५ सूर्यपत्नी का नाम ।—अङ्कः, (पु०) चन्द्रमा ।—ग्रहः, (पु०) शीशा । दर्पण ।—तनयः,—सुतः, (पु०) शनिग्रह ।—तरु., (पु०) छायादार पेड़ । द्वितीय, (वि०) अकेला ।—पथः, (पु०) अन्तरिक्ष । आकाशमण्डल ।— भृत्, (पु०) चन्द्रमा ।— मानम्, (न०) छाया का माप ।—मित्रम्, (न०) छाता ।—मृगधरः, (पु०) चन्द्रमा ।—यंत्रं, (न०) धूपघड़ी ।

छायामय (वि०) सायादार । प्रतिविम्बित ।

छिः (स्त्री०) गाली । धिक्कार ।

छिका (स्त्री०) छींक ।

छित्तिः (स्त्री०) कटन । विभाजन ।

छित्वर (वि०) १ काटने लायक । २ छली । कपटी । धोखेबाज़ । बदमाश ।

छिद् (धा० उभय०) [छिनत्ति, छिंत्ते, छिन्न] १ काटना । चीरना । लुनना । तोड़ना । २ बाधा डालना । ३ स्थानान्तरित करना । हटाना । नाश करना । शान्त करना । नष्ट करना या कर डालना ।

छिदक (न०) १ इन्द्र का वज्र । २ हीरा ।

छिदा (स्त्री०) काटना । विभाजित करना ।

छिदि. (स्त्री०) १ कुल्हाड़ी । २ इन्द्र का वज्र ।

छिदिरः (पु०) १ कुल्हाड़ी । २ शब्द । ३ अग्नि । ४ रस्सा ।

छिदुर (वि०) १ काटनेवाला। विभाजित करनेवाला। २ सहज में तोड़ा जाने वाला। ३ टूटा हुआ। अव्यवस्थित। ४ विपरीति। ५ गुंडा। बदमाश।

छिद्र (वि०) छिपा हुआ। छेददार।—अनुजीविन्, —अनुसन्धानिन्,—अनुसारिन्,—अन्वेषिन्, (वि०) दोषग्रही। निन्दक।—अन्तरः, (पु०) बेत। नरकुल।—आत्मन्, (वि०) जो अपनी निर्बलता बतला कर दूसरों को अपने ऊपर आक्रमण करने का अवसर दे।—कर्ण, (वि०) छिदे हुए कानों वाला।—दर्शन, (वि०) दोषप्रदर्शक। ४ दोषान्वेषी।

छिद्रं (न०) १ सूराख। छेद। सन्धि। दरार। २ त्रुटि। दोष। भूल। ३ निर्बल स्थान। निर्बल पक्ष। असम्पूर्णता।

छिद्रित (वि०) १ छेदोंवाला। २ सूराख किया हुआ। पास पास छोटे छोटे छिद्रों से युक्त।

छिन्न (व० कृ०) १ कटा हुआ। चिरा हुआ। अलगाया हुआ। २ नष्ट किया हुआ। स्थानान्तरित किया हुआ। - केश, (वि०) मुण्डित। मुड़ा हुआ।—द्रुमः, (पु०) कटा हुआ पेड़।—द्वैध, (वि०) सन्देह निराकृत।—नासिक, (वि०) नकटा।—भिन्न, (वि०) आरपार चिरा हुआ। —मस्त,—मस्तक, (वि०) सिर कटा हुआ। —मूल, (वि०) जड़ से कटा हुआ।—श्वासः, (पु०) एक प्रकार का दमे का रोग।—संशय, (वि०)) संशयहीन। सन्देह रहित।

छुछुन्दरः (पु०) छछूंदर जन्तु।

छुप् (धा० प०) [छुपति] छूना।

छुपः (पु०) १ स्पर्श। २ झाड़ी। ३ युद्ध। लड़ाई।

छुर् (धा० प०) [छोरति, छुरति] १ काटना। चीरना। २ खोदना। नक्स बनाना।

छुरणं (न०) मालिश। उबटन।

छुरा (स्त्री०) चूना। कलई। सफेदी।

छुरिका (स्त्री०) छुरी। चाकू।

छुरित (व० कृ०) १ जड़ा हुआ। २ फैलाया हुआ। ढका हुआ। २ गड्डबड्ड किया हुआ। घोलमाल किया हुआ।

छुरी, छूरिका, छूरी } (स्त्री०) चाकू।

छृद् (धा० प०) [छर्दति छर्दयति, छर्दयते] १जलाना। सुलगाना। (उभय) [छृणत्ति, छृन्ते] १ खेलना। २ चमकना। ३ कै करना।

छेक (वि०) १ पालतू। हिला हुआ। २ शहरुआ। नागरिक। ३ धूर्त।—अनुप्रासः, (पु०) अनुप्रास विशेष। शब्द सम्बन्धी अलङ्कार।—उक्तिः, (स्त्री०) श्लेषकारी। कौशलपूर्वक दूसरे का अनुग्रह प्राप्त करने वाला।

छेदः (पु०) १ काटना। काटकर गिराना। तोड़ कर गिराना। अलगाना। बाँटना। २ सिद्धि। सफाई। स्थानान्तरकरण। ३ नाश। बाधा। ४ अवसान। अन्त। समाप्ति। ५ टुकड़ा। टूक।

छेदनं (न०) १ काटना। फाड़ना। चीरना। अलगाना। २ विभाग। अंश। भाग। टुकड़ा। ३ नाश। स्थानान्तरकरण।

छेदि (स्त्री०) बढ़ई।

छेमण्ड: (पु०) मातृपितृहीन बालक।

छेलकः (पु०) बकरा।

छैदिकः (पु०) बेत।

छो (धा० पर०) [छ्यति, छाति, या छित] (णिजन्त) [छापयति] काटना। (खेत की) कटाई।

छोटिका (स्त्री०) चुटकी।

छोरणं (न०) त्याग।

ज

ज संस्कृत या नागरी वर्णमाला का एक व्यञ्जन और चवर्ग का तीसरा वर्ण है। यह स्पर्श वर्ण है। इसका बाह्य प्रयत्न संवार और नाद घोष है। यह अल्पप्राण माना जाता है। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

ज जब "ज" समास के अन्त में आता है। तब इसका अर्थ होता है—उससे या इससे उत्पन्न हुआ। जैसे पङ्क + ज=पङ्कज। अर्थात् कीचड़ से उत्पन्न।

जः (पु०) १ पिता। जनक। २ उत्पत्ति। जन्म। ३ ज़हर। ४ पिशाच। ५ विजयी। ६ कान्ति। आभा। आब। ६ विष्णु।

जकुटः (पु०) १ मलय पर्वत। २ कुत्ता।

जक्ष् (धा० परस्मै०) [जक्षिति, जक्षित, या जग्ध] खाना। नाश करना। निघटाना।

जक्षणम् (न०)
जक्षिः (स्त्री०) } खा डालना। निघटा डालना।

जगत् (वि०) चर। चलने वाले। (पु०) हवा। पवन। (न०) संसार।—अंबा,—अम्बिका, (स्त्री०) दुर्गा।—आत्मन्, (पु०) परमात्मा। आदिजः, (पु०) शिव।—आधारः, (पु०) १ काल। २ पवन।—आयुः, —आयुस्, (पु०) पवन। हवा।—ईशः,—पतिः, (पु०) परमात्मा।—उद्धारः, (पु०) संसार की मोक्ष।—कर्तृ,—धातृ, (पु०) सृष्टिकर्ता।—चक्षुस् (पु०) सूर्य।—नाथः, (पु०) सृष्टिस्वामी।—निवासः, (पु०) १ परमात्मा। २ विष्णु। ३ सांसारिक स्थिति।—प्राणः,—बलः (पु०) पवन।—योनिः (पु०) १ परमात्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ ब्रह्मा। (स्त्री०) पृथिवी।—वहा (स्त्री०) पृथिवी।—साक्षिन्, (पु०) १ परमात्मा। २ सूर्य।

जगती (स्त्री०) १ पृथिवी। २ मानवजाति। लोग। ३ गौ। ४ छन्द विशेष जिसके प्रत्येक पद में १२ अक्षर होते हैं।—अधीश्वर,—ईश्वरः, (पु०) राजा।—रुह्, (पु०) वृक्ष।

जगनुः
जगन्नुः } (पु०) १ अग्नि। २ कीट। ३ जानवर।

जगरः (पु०) कवच। वक्तर।

जगल (वि०) १ गुण्डा। वदमाश। कपटी।

जगलं (न०) १ गोवर। २ कवच। ३ मदिरा। अन्तिम दो अर्थों में इस शब्द का प्रयोग पुल्लिङ्ग में भी होता है।

जग्ध (वि०) खाया हुआ।

जग्धिः (स्त्री०) १ भोजन। भोज्य पदार्थ।

जग्मिः (पु०) पवन।

जघनं (न०) १ कूल्हा। कमर। नितंब। २ सेना जो बचत में रक्खी जाय।—चपला (स्त्री०) असती स्त्री।

जघन्य (वि०) १ सब से पीछे का। पिछला। अन्तिम। सब से गया बीता। निकृष्ट। नीच। तिरस्करणीय। २ अकुलीन।—जः, (पु०) १ छोटा भाई। २ शूद्र।

जघन्य (पु०) शूद्र।

जघ्निः (पु०) (आक्रमण करने का एक) अस्त्र।

जघ्न (वि०) मारने वाला। मार डालने वाला।

जंगम
जङ्गम } (वि०) चर। जीवधारी। चलने फिरने वाले।—इतर, (वि०) अचल। स्थावर। जो चलफिर न सके।—कुटी, (स्त्री०) छाता।

जंगमम्
जङ्गमम् } (न०) चलने फिरने वाला पदार्थ।

जंगलम्
जङ्गलम् } (न०) १ वन। अरण्य। निर्जन स्थान। परती भूमि। २ उपवन। बेहड़। ३ एकान्त जगह।

जंगालः
जङ्गालः } (पु०) खेत की मेंड़।

जंगुलम्
जङ्गुलम् } (न०) जहर। विष।

जंघा
जङ्घा } (स्त्री०) जाँघ। एड़ी से घुटनों तक का भाग।—आरः,—कारिकः, (पु०) हल्कारा। डाकिया। चर। दौड़ैया।—त्राणं, (न०) टाँगों के लिये कवच।

जंघाल } (वि०) तेज़ दौड़ने वाला ।
जङ्घाल }

जंघालः } (पु०) १ हल्कारा । २ हिरन । बारह-
जङ्घालः } सिंघा ।

जंघिल } (वि०) तेज़ दौड़ने वाला । तेज़ ।
जङ्घिल } फुर्तीला ।

जज् } (धा० पर०) [जंजति, या जञ्जति,]
जंज् } लड़ना । युद्ध करना ।

जट् (धा० पर०) [स्त्री०—जटति] जमना । थक्का होना । बंधना । एकत्र होना । उलझ जाना । (बालों की जटा बाँधना ।

जटा (स्त्री०) १ जूड़ा । २ जटामाँसी । ३ जड़ या मूल । ४ शाखा । ५शतावरी । ६ शेर के अयाल । ७ वेद का पाठ विशेष ।—चीरः,—टङ्क —टीरः,—धरः, (पु०) शिव जी की उपाधियाँ ।—जूटः, (पु०) १ जटाओं का समुदाय । २ शिवजी के सिर के उमठे हुए बाल ।—ज्वालः, (पु०) दीपक । लैंप ।—धर, (वि०) जटाजूट धारण करने वाला ।

जटायु (वि०) बड़ी आयु वाला ।

जटायुः (पु०) १ पक्षी विशेष । इसने सीता जी के लिये रावण से युद्ध कर अपने प्राण गँवाये थे । २ गूगल ।

जटाल (वि०) १ जटाजूटधारी । २ एकत्री भूत ।

जटालः (पु०) गूलर का वृक्ष ।

जटिः } (स्त्री०) १ गूलर का वृक्ष । २ जटाजूट ।
जटी } ३ जमाव ।

जटिन् (वि०) [स्त्री०—जटिनी] १ जटाजूटधारी । (पु०) शिवजी का नाम । २ प्लक्ष वृक्ष ।

जटिल (वि०) १ जटाजूटधारी । २ उलझन डालने वाला । पेचीला । ३ सघन । अगम्य ।

जटिलः (पु०) १ सिंह । शेर । २ बकरा ।

जठर (वि०) कठोर । दृढ़ । मज़बूत ।

जठरं (न०) } १ पेट । मेदा । कुक्षि । २ गर्भा-
जठरः (पु०) } शय । ३ किसी भी वस्तु का अँदरूनी भाग ।—अग्निः (पु०) पेट के भीतर खाये हुए पदार्थों को पचाने वाली आग । पाकस्थली का पाचक-रस ।—आमयः, (पु०) उदर सम्बन्धी रोग । जलोदर रोग ।—ज्वाला,—व्यथा, (स्त्री०) पेट की पीड़ा । पेट की व्यथा । वायगोले का दर्द ।—यंत्रणा,—यातना, (स्त्री०) गर्भ में रहते समय का कष्ट ।

जड (वि०) १ ठंडा । शीतल । २ निर्जीव । तेजस्विताहीन । गतिहीन । लकवा मारा हुआ । ३ ३ मूढ़ । बुद्धिहीन । विवेकहीन । अज्ञान । ४ अच्छे बुरे ज्ञान से शून्य । ५ सुन्न । अकड़ा हुआ । ठिठुरा हुआ । ६ गूंगा । ७ वेदाध्ययन करने में असमर्थ । क्रिय, (वि०) सुस्त । दीर्घसूत्री ।—भरतः, (पु०) विलल्ला । गाउदी । अनाड़ी ।

जडम् (न०) जल । सीसा ।

जडता (स्त्री०) } १ सुस्ती । २ अज्ञानता । ३
जडत्वम् (न०) } मूर्खता ।

जडिमन् (पु०) १ शीतलता । २ विवेकहीनता । ३ सुस्ती । काहिली । मुर्दादिली । ४ ठिठुरन । सुन्न ।

जतु (न०) लाख ।—अश्मकम्, (न०) खनिज विष विशेष ।—रसः (पु०) लाख ।

जतुकं (न०) लाख ।

जतुका (न०) १ लाख । २ चिमगादड़ ।

जतुकी } (स्त्री०) चिमगादड़ ।
जतूका }

जत्रु (पु०) हँसली की हड्डी ।

जन् (धा० आत्म०) [जायते, जात, जन्यते, या जायते] १ उत्पन्न होना । पैदा होना । २ उदय होना । निकलना । ३ होना । घटित होना । (निजन्त) [स्त्री०—जन्यति] उत्पन्न करना । पैदा करना ।

जनः (पु०) १ जीवधारी । प्राणधारी । २ व्यक्ति । (पुरुष या स्त्री) (समूहार्थ में) पुरुष गण । लोग । संसार । ३ जाति महर्लोक के आगे का लोक ।—अतिग, (वि०) असाधारण । असामान्य । अलौकिक ।—अधिपः,—अधिनाथः, (पु०) राजा ।—अन्तः (पु०) १ऐसा स्थान जहाँ बस्ती न हो । २ अञ्चल । प्रदेश । यम की उपाधि ।—अन्तिकं, (न०) कानाफूसी । खुसफुस ।—अर्दनः (पु०) विष्णु या कृष्ण ।—अशनः, (पु०) भेड़िया ।—आचारः, (पु०) रस्म । रिवाज़ ।—आश्रमः,(पु०) सराय । धर्मशाला । उतारा ।—आश्रयः, (पु०) थोड़े

समय के लिये निर्मित वासस्थान। मण्डप । तवू। चाँदनी। चन्द्रातप।—इन्द्रः,—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) राजा।—इष्ट, (वि०) लोगो द्वारा वाञ्छित या पसद।—इष्टः, (पु०) एक प्रकार की चमेली।–उदाहरणम्,(न०)महिमा। कीर्ति। —श्रोघः(पु) मनुष्यो का जमाव या समूह।—कारिन्, (पु०) लाख।—चक्षुस्, (न०) लोगों की आँख। सूर्य।—त्रा, (स्त्री०) छतरी। छाता।—देवः, (पु०) राजा।—पदः, (पु०) १ जाति। समाज। किसी राज्य का प्रजा समूह। वश। वर्ण। २ राज्य। राष्ट्र। प्रदेश जिसमें लोगों की वस्ती हो। ३ नगरी। ४ लोग। प्रजा। ५ मानव जाति।—पदिन् (पु०) किसी देश या समाज का शासक।—प्रवाद, (पु०) १ किंवदन्ती। अफवाह। इत्तिला। २ कलङ्क। अपवाद। —प्रिय (वि) १ परोपकारी। सर्वोपकारपरायण। २सर्वजनप्रिय।–मर्यादा,(स्त्री०)प्रचलित पद्धति। —रञ्जनम्, (न०) सार्वजनिक अनुग्रह प्राप्त करने वाला।—रवः, (पु०) १ किंवदन्ती। अफवाह। २ अपवाद। कलङ्क।—लोकः, (पु०) महर्लोक के ऊपर का लोक विशेष।—वाद (जानेवादः भी) १ समाचार। खवर। अफवाह। २ अपवाद। कलङ्क।—व्यवहार' (पु०) लोकाचार।—श्रुत, (वि०) सुप्रसिद्ध।–श्रुति', (स्त्री०) अफवाह। किंवदन्ती। इत्तिला।—संबाध, (वि०) सघन बसी हुई (वस्ती) - स्थानं, (न०) दण्डकवन। दण्डकारण्य जहाँ खर और दूषण की चौकी थी।

जनक (वि०) [स्त्री०—जनिका] पैदा करने वाला। उत्पन्न करने वाला। कारणीभूत।

जनकः (पु०) १ पिता। २ जन्म देने वाला। २ विदेह या मिथिला के एक प्रसिद्ध राजा का नाम जो सीता जी के पोष्यपिता थे।—आत्मजा, (स्त्री०) सीता जी।—तनया,—नन्दिनी,—सुता, (स्त्री०) सीता जी। जानकी जी।

जनङ्गमः }
जनङ्गमः } (पु०) चाण्डाल। [समूह।

जनता (स्त्री) १ उत्पत्ति। २ मानवजाति। जन-

जनन (वि०) कारणीभूत। उत्पादक।

जननम् (न०) १ उत्पत्ति। जन्म। २ सृष्टि। ३ प्रादुर्भाव। ४ जीवन। अस्तित्व। ५ वंश। कुल। वर्ण।

जननि (स्त्री०) १ माता। १ जन्म। उत्पत्ति।

जननी (स्त्री०) १ माता। २ दया। रहम। अनुकम्पा। रहमदिली। ३ चिमगादड। ४ लाख।

जनमेजय (पु०) चन्द्रवंशी एक प्रसिद्ध राजा। यह महाराज परीक्षित का पुत्र था और अपने पिता को डसने वाले तक्षक से बदला लेने के लिये इसने सर्पयज्ञ किया था। पीछे आस्तिक ऋषि के समझाने पर सर्पयज्ञ वद किया गया था।

जनयितृ (वि०) [स्त्री०—जनयित्री] उत्पादक। सृष्टिकर्त्ता। वनानेवाला। (पु०) पिता।

जनयित्री (स्त्री०) माता।

जनस् (न०) जन देखो।

जनिः }
जनिका } १ उत्पत्ति। सृष्टि। पैदावार २ स्त्री।
जनी } ३ माता। ४ भार्या। वहू। पुत्रवधू।

जनित (वि०) १ उत्पन्न करने वाला। २ उत्पन्न किया हुआ। पैदा किया हुआ। कारणीभूत।

जनितृ (पु०) पिता।

जनित्रि (स्त्री०) माता।

जनु }
जनू } (स्त्री०) उत्पत्ति। पैदावार। पैदायश।

जनुस् (न०) १ उत्पत्ति। जन्म। २ सृष्टि। ३ जीवन। अस्तित्व।—जनुषान्धः, (पु०) जन्मान्ध। पैदायशी अधा।

जंतुः }
जन्तुः } (पु०) १ जीव। प्राणधारी। मनुष्य। २ (व्यक्तिगत) आत्मा। ३ क्षुद्र जाति का प्राणधारी —कम्बुः, (पु०) घोंघा।—फलः, (पु०) गूलर का वृक्ष।

जंतुका }
जन्तुका } (स्त्री०) लाख।

जंतुमती }
जन्तुमती } (स्त्री०) पृथिवी।

जन्मं (न०) उत्पत्ति।

जन्मन् (न०) १जन्म। उत्पत्ति। पैदायश। २ निकास। उद्गम। प्रादुर्भाव। प्राकट्य। सृष्टि। ३ जीवन। अस्तित्व। जन्मस्थान। ५ पैदायश।—अधिपः, (पु०) १शिव। २जन्म नक्षत्र।—अन्तरम्, (न०)

दूसरा जन्म।—अन्तरीय, (वि०) दूसरे जन्म का। जन्मान्तरकृत।—अन्ध, (वि०) जन्म से अंधा। —अष्टमी, (स्त्री०) भाद्रकृष्णा अष्टमी। जिस दिन श्री कृष्ण भगवान का जन्म हुआ था।—कुण्डली, (स्त्री०) एक चक्र विशेष जिसमें जन्म-समय के ग्रहों की स्थिति का उल्लेख किया जाता है।—कृत्, (पु०) पिता।—क्षेत्रं, (न०) उत्पत्तिस्थान।—तिथिः, (पु० स्त्री०)—दिनम्, (न०)—दिवसः, (पु०) जन्म-दिवस।—दः, (पु०) पिता।—नक्षत्रं,—भं, (न०) वह नक्षत्र जो जन्म के समय हो।—नामन्, (न०) जन्म होने के १२ वें दिवस रखा गया नाम जो राशि के अनुसार आद्य अक्षर संयुक्त होता है।—पत्रं, (न०)—पत्रिका, (स्त्री०) जन्मकुण्डली। प्रतिष्ठा, (स्त्री०) १ जन्मस्थान। २ माता।—भाज्, (पु०) प्राणी। जीवधारी।—भाषा, (स्त्री०) मातृभाषा।—भूमि, (स्त्री०) जन्मस्थान।—योगः, (पु०) जन्म-कुण्डली।—रोगिन्, (वि०) पैदायशी बीमार। लग्नं, (न०) वह लग्न जो जन्म के समय हो। —वर्त्मन्, (न०) भग। योनि।—शोधनं, (न०) जन्म होने पर, तत्सम्बन्धी कर्त्तव्यों का यथाविधि पालन।—साफल्यं, (न०) जीवन के उद्देश्यों की सिद्धि।—स्थानं (न०) १ जन्मस्थान। २ गर्भाशय।

जन्मिन् (पु०) प्राणी। जीवधारी।

जन्य (वि०) १ उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ। (समासान्त में इनका अर्थ होता है), २ किसी कुल या वंश का अथवा किसी कुल या वंश सम्बन्धी। ३ (अमुक से) उत्पन्न। ५ गँवारू। ग्रामीण। साधारण। ६ राष्ट्रीय।

जन्यः (पु०) १ पिता। २ मित्र। २ वर (दूल्हा) का नातेदार। मित्र। टहलुआ। ३ साधारण जन। ४ किंवदन्ती। अफवाह। ५ उत्पत्ति। सृष्टि। पैदायश। उत्पन्न। सृष्टि की हुई वस्तु। कर्म (क्रिया का फल) ३ शरीर। ४ जन्म के समय होने वाला शकुन। ५ हाट। पैंठ। मैला। ७ युद्ध। लड़ाई ७ भर्त्सना। फटकार।

जन्या (स्त्री०) १ माता का मित्र। २ वधू के नतैत। वधू की सहेली। ३ हर्ष। आह्लाद। ४ स्नेह। प्रीति। [अग्नि। ४ सृष्टिकर्त्ता या ब्रह्मा।

जन्युः (पु०) १ उत्पत्ति। २ प्राणी। जीवधारी। ३

जप् (धा० परस्मै०) [जपति, जपित, जप्त] मन ही मन किसी (मंत्र को) बारं बार कहना। जप करना।

जपः (पु०) मंत्र जो अत्यन्त धीमे स्वर से बार बार पढ़े जाँय।—परायणः, (वि०) जपनिरत।—माला, (स्त्री०) माला जिस पर जप किया जाय।

जपा (स्त्री०) सदागुलाब का फूल या पौधा।

जप्यं (न०)
जप्यः (पु०) } मन्त्र जो जपा जाय।

जभ्
जंभ् } (धा० पर०) [जभति, जंभति] सहन्म करना। रमण करना। (आत्म०) [जभते, जम्भते] जमुहाई लेना। उबासी लेना।

जम् (धा० परस्मै०) [जमति] खाना।

जमदग्निः (पु०) भृगुवंशीय एक ऋषि जो परशुराम के पिता थे। इनके पिता का नाम ऋचीक और माता का नाम सत्यवती था। जमदग्नि बड़े अध्ययन शील थे और कहा जाता है इन्होंने वेदाध्ययन भली भाँति किया था। इनकी मामी का नाम रेणु था। जिसके गर्भ से इनके पाँच पुत्र हुए थे।

जपंती
जपन्ती } (पु०) [द्विवचन] पति पत्नी। दम्पती और जायापती।

जंबालः
जम्बालः } (पु०) १ कीचड। २ काइ। सिवार। ३ केतक पौधा।

जंबालिनी
जम्बालिनी } (स्त्री०) नदी।

जंबीरं
जम्बीरम् } (न०) जमीरी का फल।

जंबीरः
जम्बीरः } (पु०) जमीरी का वृक्ष।

जंबु, जम्बु
जंबू, जम्बू } (स्त्री०) जामुन का फल और जामुन का पेड़।—खण्डः,—द्वीपः, (पु०) सात द्वीपों में से एक, जो मेरु पर्वत को घेरे हुए है।

जंबुकः, जम्बुकः
जंबूकः, जम्बूकः } (पु०) १ श्रृगाल। गीदड़ २ नीच मनुष्य। ३ जामुन का फल।

जंबूलः } (पु०) वृक्ष विशेष।
जम्बूलः }

जंभः } (पु०) १ दाँत। २ जाँवड़ा । ३ भक्षण।
जम्भः } ४ कुतरना। काटकर टुकड़े टुकड़े कर डालना। ५ भाग। अंश। ६ तरकस। तूणीर। ७ ठोड़ी। ८ जमुहाई। ६ इन्द्र द्वारा हत एक दैत्य। १० नीबू या जंभीरी का पेड़।—अरातिः,—द्विष्,—भेदिन् रिपुः, (वि०) इन्द्र।—अरिः, (पु०) १ आग। २ इन्द्र का वज्र। ३ इन्द्र।

जंभका, जम्भका }
जंभा, जम्भा } (स्त्री०) जमुहाई। उबासी।
जंभिका, जम्भिका }

जंभरः, जम्भरः }
जंभीरः, जम्भीरः } (पु०) नीबू या जंभीरी का वृक्ष।

जयः (पु०) विजय। सफलता। जीत [युद्ध या जुआँ या मुकद्दमे में)। २ संयम। निग्रह। ३सूर्य। ४ इन्द्रपुत्र जयन्त। ५ युधिष्ठिर। ६ विष्णु के द्वार पालों में से एक। ७ अर्जुन की उपाधि। ८ पताका विशेष। ६ मार्ग। ५ ज्योतिष में ३ या। ८मी। १३शी तिथियां।—आवह, (वि०) विजयदायी। विजय देने वाला।—उद्धुर (वि०) विजय प्राप्ति के आनन्द में नृत्य करने वाला।—कोलाहलः, (पु०) १ जयजयकार। २ पाँसों का खेल विशेष।—घोषः,—घोषणं, (न०) घोषणा, (स्त्री०) विजय का ढिंढोरा।—ढक्का (स्त्री०) विजयसूचक ढोल का शब्द।—पत्रं, (न०) विजय का लेखा।—पालः, (पु०) १ राजा। २ ब्रह्म। ३—पुत्रकः, (पु०) एक प्रकार का पाँसा।—मङ्गलः, (पु०) शाही हाथी। २ ज्वर की दवा।—वाहिनी, (स्त्री०) शची देवी की उपाधि।—शब्दः, (पु०) १ जयजयकार। २ जय।—स्तम्भः (पु०) विजय का स्मारक स्वरूप स्तम्भ।

जयनम् (न०) १ जीत। विजय। २ घुड़सवारों तथा हाथी सवारों आदि का कवच।—युज्, (वि०) १ विजयी। २ बहुमूल्य साज सामान से सजा हुआ घोड़ा आदि।

जयन्त (पु०) १ इन्द्रपुत्र। २ शिव। ३ चन्द्रमा।—पत्रम् (न०) जज का लिखा हुआ फैसला। अश्वमेधीय घोड़े के माथे पर बँधा हुआ विजय पत्र। [दुर्गा का नाम।

जयन्ती (स्त्री०) १ पताका। ध्वजा। २ इन्द्रपुत्री। ३

जयद्रथः (पु०) दुर्योधन का बहनोई जो सिन्धु देश का राजा था। यह दुःशला का पति था। अर्जुन के हाथ से यह महाभारत के युद्ध में मारा गया था।

जया (स्त्री०) १ दुर्गा की परिचारिका का नाम।

जयिन् (वि०) १ विजयी। सफल। मुकद्दमा जीतने वाला। ३ मनोहर। मन को वश में कर लेने वाला। (पु०) विजयी। जयी।

जय्य (वि०) जीतने योग्य। जो जीता जा सके।

जरठ (वि०) १ सख्त, कड़ा। ठोस। बूढ़ा। ३ जर्जरित। निर्बल। ४ पूरा बढ़ा हुआ। पक्का। पका हुआ। ५ निष्ठुर। नृशंस।

जरठः (पु०) पाण्डु राजा का नाम।

जरण (वि०) बूढ़ा। जर्जरित। निर्बल।

जरत् (वि०) १ बूढ़ा। पुरनिया। २ कमज़ोर। जर्जरित।—कारुः, (पु०) एक महर्षि का नाम जिसने वासुकी की बहिन के साथ शादी की थी।—गवः, (पु०) बूढ़ा बैल।

जरती (स्त्री०) बूढ़ी स्त्री। बुढ़िया।

जरन्तः (पु०) १ बूढ़ा आदमी। २ भैंसा।

जरा (स्त्री०) १ बुढ़ापा। २ निर्बलता। बुढ़ाई। ३ पाचनशक्ति। ४ एक राक्षसी का नाम जिसने जरासंध के शरीर के दो टुकड़ों को जोड़ा था।—अवस्था, (स्त्री०) वार्द्धक्य। जीर्णता।—जीर्ण, (वि०) बुढ़ापे के कारण निर्बल। कमज़ोर।—सन्धः, (पु०) यह बृहद्रथ का पुत्र था और मगध देश का राजा था। इसकी बेटी कंस को ब्याही थी। जब उसने सुना कि, श्री कृष्ण ने इसके दामाद को मार डाला है; तब इसने १८ बार मथुरा पर चढ़ाई की। इसकी चढ़ाइयों से तंग आकर यादवों को मथुरा त्यागनी पड़ी और वे मथुरा से सुदूर और समुद्रस्थित द्वारकापुरी में जा बसे थे। अन्त में महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्णचन्द्र जी की दुरभिसन्धि से भीम ने इसका वध किया था।

जरायणिः (पु०) जरासन्ध का नाम।
जरायु (न०) १ केंचली। २ गर्भाशय की ऊपर की झिल्ली। ३ गर्भाशय। भग।—ज, (वि०) वे प्राणी जो जरा से युक्त उत्पन्न होते हैं। यथा मनुष्य। मृग आदि।
जरित (वि०) १ वृद्ध। अधिक उम्र का। २ निर्बल। जीर्ण। [उम्र का।
जरिन् (वि०) [स्त्री०—जरिणी] वृद्ध। अधिक
जरूथम् (न०) माँस।
जर्जर (वि०) १ वृद्ध। जीर्ण। कमज़ोर। २ घिसा हुआ। फटा हुआ। टुकड़े टुकड़े किया हुआ। विभक्त। चीरा हुआ। ३ घायल। चोटिल। ४ पोला।
जर्जरम् (न०) इन्द्रध्वजा।
जर्जरित (वि०) १ वृद्ध। पुराना। जीर्ण। निर्बल। २ घिसा हुआ। टुकड़े टुकड़े किया हुआ। टुकड़े टुकड़े हो कर बिगरा हुआ। ३ निकम्मा किया हुआ। श्वस्त।
जर्जरीक (वि०) १ पुराना।—जीर्ण, (पु०) २ छिद्रों से परिपूर्ण। छिद्रान्वित।
जर्तु (पु०) १ भग। योनि। २ हाथी।
जल (वि०) सुस्त। शीतल। ठंडा।—अञ्चलं, (न०) १ चश्मा। सोता। २ प्राकृतिक जलप्रवाह। ३ काई। सिवार।—अञ्जलिः, (पु०) अञ्जलीभर जल। २ जलतर्पण।—अटनः, (पु०) बगुला।—अटनी, (स्त्री०) जोंक। जलौका।—अण्टक .(न०) शार्क नाम का मत्स्य। —अन्यय, (पु०) शरदृऋतु।—अधिदैवतः, (पु०)—अधिदैवतम्, (न०) वरुण। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।—अधिपः, (पु०) वरुण। अम्बिका, (स्त्री०) कूप। कुआ।—अर्कः (पु०) जल में सूर्यमण्डल का प्रतिबिम्ब।—अर्णव, (पु०) १ वर्षाऋतु। २ मीठे जल का समुद्र।—अर्थिन्, (वि०) प्यासा।—अवतारः, (पु०) नदी का घाट।—अष्ठीला, (पु०) एक वृहद् चौकोर तालाब।—असुका, (स्त्री०) जोंक।—आकारः, (न०) चश्मा। फुआरा। फव्वारा। कूप।—आकांक्षः, (पु०) हाथी।—आकांक्षिन्, (पु०) हाथी।—आखुः, (वि०) ऊदबिलाव जो मछली खाता है।—आत्मिका, (स्त्री०) जोंक।—आधारः, (पु०) तालाब। सरोवर। जलाशय।—आयुका, (स्त्री०) जोंक।—आर्द्र, (वि०) भींगा। तर।—आर्द्रम्, (न०) भींगे कपड़े। आर्द्रा, (स्त्री०) पानी से तर पंखा।— —आलोका, (स्त्री०) जोंक।—आवर्तः, (पु०) भँवर।—आशयः, (पु०) १ तालाब। सरोवर २ मछली। ३ समुद्र।—आश्रयः, (पु०) १ तालाब। २ जलभवन।—आह्वयं, (न०) कमल।—इन्द्रः, (पु०) १ वरुण। २ समुद्र। —इन्धनः, (न०) बाड़वानल।—इभः, (पु०) सूंस। शिशुमार।—ईशः, —ईश्वरः, (पु०) १ वरुण। २ समुद्र।—उच्छ्वासः, (पु०) १ परीवाह। नहर। नाली। २ नदी की बाढ़।—उदरं, (न०) जलोदर।—उरगा, (स्त्री०) —ओकस्, (पु०) ओकसः, जोंक।—कण्टकः, (पु०) नक्र। नाका। घड़ियाल।—कपिः, (पु०) गंगा जी की सूँस। —कपोतः, (पु०) जलकबूतर।—करङ्कः, (पु०) १ शङ्ख। २ नारियल। ३ बादल। ४ लहर। ५ कमल।—कल्कः (पु०) कीचड़। काकः, (पु०) पानी का कौआ। पानकौड़ी। —कान्तारः, (पु०) वरुण।—किराटः, (पु०) शार्क मछली।—कुक्कुटः, (पु०) जलमुर्ग। मुरगाबी। कुलंज।—कुन्तलः, (न०) —कोशः, (वि०) सिवार।—कूपी, (स्त्री०) १ चश्मा। सोता। कूप। २ तालाब। पोखरा। ३ भँवर।—कूर्मः, (पु०) सूंस।—केलिः, (पु०) या —क्रीडा, (स्त्री०) जल में का खेल जैसे एक दूसरे पर पानी उलीचना।—क्रिया, (स्त्री०) जलतर्पण।—गुल्मः, (पु०) १ कछुआ। २ चौखूँटा तालाब। ३ भँवर।—चर, (वि०) (जलेचर, भी रूप होता है) जल का।—चरजीव, —चर, + आजीवः, (पु०) मछुवा। धीमर। माहीगीर।—चारिन्, (पु०) १ जल में रहने वाला

जन्तु। २ मछली।—ज (वि०) जल में पैदा होने वाला। जल में रहने वाला।—जः, (पु०) १ जलजन्तु। २ मछली। ३ सिवार। काई। ४ चन्द्रमा।—जः, (पु०)—जम्, (न०) १ शंख। २ घोंघा। कमल। जन्तुः, (पु०) १ मछली। २ कोई भी जल में रहने वाला जीव। —जन्तुका, (स्त्री०) जौंक।—जन्मन्, (न०) कमल।—जिह्वः, (पु०) मगर। नाका।—जीविन्, (पु०) धीवर। माहीगीर। मछवाहा। —तरङ्गः, (पु०) १ लहर। २ जलतरंग। वाद्ययंत्र विशेष।—त्रा, (स्त्री०) छाता।—त्रासः, (पु०) जलातङ्क। पागल कुत्ते के काटने से उत्पन्न पागलपन।—दः, (पु०) १ बादल। २ कपूर।—अशनः, (पु०) साल वृक्ष।—आगमः, (पु०) वर्षाऋतु।—दर्दुरः, (पु०) वाद्ययंत्र विशेष।—देवता, (स्त्री०) जलपरी। —द्रोणी, (स्त्री०) बाल्टी। डोलची।—धरः, (पु०) १ बादल। २ समुद्र।—धि, (पु०) १ समुद्र। २ संख्या विशेष। ३ चार की संख्या। —नकुलः, (पु०) ऊदविलाव।—नरः, (पु०) जलमानुस।—निधिः, (पु०) १ समुद्र। २ चार की संख्या।—निर्गमः, (पु०) १ नाली। पानी निकलने का मार्ग। २ जलप्रपात।—नीलिः, (स्त्री०) सिवार। काई।—पटलं, (न०) बादल।—पतिः, (पु०) १ समुद्र। २ वरुण। —पथः, (पु०) समुद्री यात्रा।—पारावतः, (पु०) जलपक्षी विशेष।—पुष्पम्, (न०) जल में उत्पन्न होने वाला फूल।—पूरः, (पु०) १ जल की बाढ़। २ जल से परिपूर्ण चश्मा।—पृष्ठजा, (स्त्री०) काई। सिवार।—प्रदानं, (न०) तर्पण।—प्रलयः (पु०) जल द्वारा नाश। —प्रान्तः, (पु०) नदीतट।—प्रायं, (न०) वह देश जिसमें जल का बाहुल्य हो।—प्रियः, (पु०) १ चातक पक्षी। २ मछली।—प्लव, (पु०) ऊदविलाव।—प्लावनम्, (न०) जलप्रलय। बूड़ा।—बन्धुः, (पु०) मछली।—बालकः, (पु०)—बालकः, (पु०) विन्ध्यागिरि। —बालिका, (स्त्री०) बिजली।—बिडालः, (पु०) ऊदविलाव।—बिम्बः, (पु०)—बिम्बम्, (न०) बबूला।—बिल्वः, (पु०) १ झील। सरोवर। २ कछुवा। ३ केंकड़ा।— —भूः, (पु०) १ बादल। २ जलसञ्चय का स्थान। ३ कपूर विशेष।—भृत, (पु०) १ बादल। २ घड़ा। ३ कपूर।—मक्षिका, (स्त्री०) जल का कीड़ा।—मण्डूकं, (न०) जलदर्दुर। एक प्रकार का बाजा।—मार्गः, (पु०) नाली। पनाला। पानी निकलने का रास्ता। नहर।—मुच्, (पु०) १ बादल। २ कपूर विशेष।—मूर्तिः, (पु०) शिव जी की उपाधि विशेष। —मूर्तिका, (स्त्री०) ओला।—यंत्रम्, (न०) १ फव्वारा। २ जल खींचने की कल।—यात्रा, (स्त्री०) जलमार्ग से गमन।—यानं, (न०) जहाज़। नौका।—रण्डः, (वि०)—रुण्डः, (पु०) १ भवर। २ कुआर ३ बूंद। ४ सर्प। —रसः, (पु०) निमक। लवण।—राशिः, (पु०) समुद्र।—रुहः, (पु०) रुहं, (न०) कमल।—रूपः, (पु०) मगर। घड़ियाल। नक्र।—लता, (स्त्री०) लहर।—वायसः, (पु०) जलपक्षी विशेष। मुर्गाबी।—वाहः, (पु०) बादल।—वाहनी, (स्त्री०) नाली। परनाला। नहर। बंबा।—वृश्चिकः, (पु०) झींगा मछली।—व्यालः, (पु०) पनिहाँ साँप। —शय, (न०) शयनः,—(पु०)—शायिन्, (पु०) विष्णु।—शूकं (न०) सिवार। काई।—शूकरः, (पु०) नक्र। मगर। घड़ियाल।—शोषः, (पु०) सूखा। अनावृष्टि।—सर्पिणी, (स्त्री०) जौंक।—सूचिः, (स्त्री०) १ सूंड़स। शिशुमार। २ मछली विशेष। ३ काक। ४ जौंक।—स्थानं, (न०)—स्थायः, (पु०) सरोवर। झील। तालाब।—ह्रम्, (न०) घर जिसमें जगह जगह फव्वारे लगे हों। ग्रीष्मभवन।—हस्तिन्, (पु०) जलहाथी।—हारिणी, (स्त्री०) नाली। पनाला। —हासः, (पु०) फेन। झाग। समुद्रफेन।

जलम् (न०) १ पानी। २ एक सुगन्ध द्रव्य विशेष। ३ शीतलत्व। ४ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

जलंगमः }
जलङ्गमः } (पु०) चाण्डाल।

जलमसिः (पु०) १ बादल। २ कपूर।

जलाका
जलालुका
जलिका
जलुका
जलूका } (स्त्री०) जोंक।

जलेजं
जलेजातम् } (न०) कमल।

जलेशयः (पु०) १ मछली। २ विष्णु।

जल्प् (धा० परस्मै०) [जल्पति, जल्पित] १ बोलना। बातचीत करना। २ बर्राना। अस्पष्ट बोलना। ३ तोतलाना।

जल्पः (पु०) १ बातचीत। वार्तालाप। २ संवाद। ३ गपशप। ४ वादविवाद। दूसरे की बात काट कर अपनी बात रखने वाला।

जल्पक
जल्पाक } (वि०) [स्त्री०—जल्पिका] बातूनी। बकी।

जव (वि०) तेज़। फुर्तीला।—अधिकः, (पु०) वेगवन्त घोड़ा। युद्ध की शिक्षा प्राप्त घोड़ा।—अनिलः, (पु०) आंधी। तूफान।

जवः (पु०) १ तेज़ी। फुर्ती। जल्दी। २ वेग।

जवन (वि०) [स्त्री —जवनी] तेज़। फुर्तीला।

जवनः (पु०) १ युद्ध की शिक्षा प्राप्त घोड़ा। २ वेगवन्त घोड़ा।

जवनम् (न०) तेज़ी। फुर्ती। वेग।

जवनिका
जवनी } (स्त्री०) १ कनात। २ पर्दा। चिक।

जवसः (पु०) चरागाह।

जवा (स्त्री०) जवा कुसुम।

जष् (उभय० धा०) [जषति, जषते] घायल करना। चोटिल करना।

जस् (धा० पर०) [जस्यति] मुक्त करना। छोड़ देना [जसति, जासयति] मारना। घायल करना। चोटिल करना। २ तिरस्कार करना। अपमान करना।

जहकः (पु०) १ समय। काल। २ बच्चा। ३ साँप की केंचुली।

जहत् (वि०) [स्त्री० - जहती] त्यक्त। परित्यक्त।

जहानकः (पु०) कल्पान्त प्रलय।

जहुः (पु०) किसी भी पशु का बच्चा।

जह्नुः (पु०) सुहोत्र राजा का पुत्र जिसने गङ्गा को अपना दत्तक बनाया था।

जागरः (पु०) १ जागृति। २ जागृत अवस्था का दृश्य। ३ कवच। जरहबक्तर।

जागरणम् (न०) १ जागृति। जागना। २ सावधानी। सतर्कता।

जागरा (स्त्री०) देखो जागरणम्।

जागरित (वि०) १ जागा हुआ। २ सतर्क। [सावधान।

जागरितम् (न०) जागृति। जागरण।

जागरितृ
जागरूक } (वि०) [स्त्री० - जागरित्री] १ जागृत। निद्रा का अभाव। २ सावधान। सतर्क।

जागर्तिः
जागर्या
जाग्रिया } (स्त्री०) जागते रहना।

जागुडम् (न०) केसर। जाफ़रान।

जागृ [धा० पर० जागर्ति, जागरित] १ जागते रहना। सावधान रहना। २ रात भर बैठ रहना। ३ नींद में जगाया जाना। ४ पहिले से देखना।

जाघनी (स्त्री०) १ पूंछ। दुम। ३ जघा।

जांगल
जाङ्गल } (वि०) [स्त्री०—जाङ्गली] १ देहाती। चित्रवत् सुदर्शन। नयनरञ्जन। रम्य। सुन्दर। २ जंगली। ३ वहशी। बर्बर। ४ उजाड़। सूना।

जांगलः
जाङ्गलः } (पु०) तीतर विशेष। कपिञ्जल पक्षी।

जांगल
जाङ्गलम् } (न०) १ मांस। २ हिरन का मांस। ३ कुरुदेश का समीपवर्ती देश विशेष।

जांगुलं
जाङ्गुलम् } (न०) ज़हर। सर्प आदि विषैले जानवरों का ज़हर।

जांगुलिः
जाङ्गुलिः
जांगुलिकः
जाङ्गुलिकः } (पु०) विषवैद्य।

जांघिकः
जाङ्घिकः } (पु०) १ धावक। हलकारा। २ उंट।

जाजिन् (पु०) योद्धा। लड़ने वाला।

जाठर (वि०) [स्त्री०—जाठरी] पेट सम्बन्धी या पेट का।

जाठरः (पु०) पाचन शक्ति।

जाड्यं (न०) १ ठिठुरन। इठन। २ सुस्ती। अकर्मण्यता। ३ मूर्खता। जडता। ४ जिह्वा का स्वाद राहित्य।

जात (व० कृ०) १ उत्पन्न। पैदा हुआ। २ निकला हुआ। बढ़ा हुआ। ३ कारणीभूत ४ द्रवित। दुःखी।—अपत्या, (स्त्री०) माता।—अमर्ष, (वि०) क्रुद्ध। रोपित।—अश्रु, (वि०) आँसू बहाता हुआ। रोता हुआ।—इष्टि, (स्त्री०) पुत्रोत्पन्न के समय किया जाने वाला धर्मकृत्य विशेष।—उक्षः, (पु०) जवान बैल।—कर्मन्, (न०) बालक उत्पन्न होने के समय किया जाने वाला कर्म विशेष।—कलाप, (वि०) पुंछ वाला (जैसे मोर)।—काम, (वि०) मोहित। लट्टू। लवलीन।—पक्ष, (वि०) पंखोंवाला।—पाश, (वि०) बेडी पड़ा हुआ।—प्रत्यय, (वि०) विश्वास दिलाया हुआ।—मन्मथ, (वि०) प्रेमासक्त।—मात्र, (वि०) हाल का जन्मा हुआ।—रूप, (वि०) सुन्दर। कान्तिमान।—रूपम्, (न०) सुवर्ण। सोना।—वेदस्, (पु०) अग्नि।

जातक (वि०) उत्पन्न।

जातकं (पु०) १ सद्योजात बालक। २ भिक्षुक।

जातकः (न०) १ जातकर्म। बालक के उत्पन्न होने पर किया जाने वाला कर्म। २ जन्मकुण्डली। ३ समान वस्तुओं का जोड़ या ढेर।

जातिः (स्त्री०) १ उत्पत्ति। जन्म। २ जन्म से निश्चित होने वाली जाति। ३ वर्ण। जाति। वंश। कुल। ४ जाति। ५ श्रेणी। कक्षा। किसी वस्तु या जीव की पहिचान का चिन्ह या विशेषता विशेष। ७ अग्निकुण्ड। ८ जायफल। (चमेली के फूल या पौधा। १० अव्यवहार्य उत्तर (न्याय में)। ११ सरगम। सा रे ग म पा धा नी सा। १२ छन्द विशेष।—अंधः,(पु०) जन्म से अँधा।—कोशः,—कोषः, (पु०) कोपम्, (न०) जायफल।—कोशी,—कोषी, (स्त्री०) जायफल का छिलका।—धर्मः, (पु०) १ वर्ण धर्म। २ जातीय गुण।—ध्वंसः, (पु०) वर्णच्युति या वर्णाधिकार से बहिष्कृति।—पत्री, (स्त्री०) जायफल का ऊपरी छिलका।—ब्राह्मणः, (पु०) केवल जन्म से ब्राह्मण किन्तु कर्म से नहीं। अपढ़ ब्राह्मण।—भ्रंशः, (पु०) जातिभ्रष्टता।—लक्षणं, (न०) जातीय पहिचान।—वैरं, (न०) स्वाभाविक शत्रुता। वैरिन्, (पु०) स्वाभाविक वैरी।—शब्दः, (पु०) संज्ञा।—सङ्करः, (पु०) दोगला। वर्णसङ्कर।—सम्पन्न, (वि०) कुलीन। उत्तम कुल का। सारं, (न०) जायफल।—स्मर, (वि०) पिछले जन्म का वृत्तान्त स्मरण रखने वाला।—हीन, (वि०) नीच जाति का। जातिच्युत।

जातिमत् (वि०) कुलीन। उत्तम कुल का।

जातु (अव्यय०) १ समस्त। नितान्त। किसी समय। सम्भवतः। २ कदाचित्। कभी कभी। ३ एक बार। किसी समय। किसी दिन।

जातुधानः (पु०) राक्षस। दैत्य। पिशाच।

जातुष (वि०) [स्त्री०—जातुषी] १ लाख का बना या लाख से ढका हुआ। २ चिपचिपा। चिपकने वाला।

जात्य (वि०) १ एक ही कुल वाला। २ कुलीन। ३ मनोहर। प्रिय। प्रसन्नकर।

जानकी (स्त्री०) श्रीरामचन्द्र जी की पत्नी सीता।

जानपदः (पु०) १ ग्रामवासी। ग्रामीण। गँवार। किसान। २ देहात। ३ प्रजा।

जानु (न०) घुटना।—दघ्न, (वि०) घुटनों तक। घुटनों जितना गहरा।—फलकम्, (न०)—मण्डलम्, (न०) खुरिया। चपनी।

जापः (पु०) १ जप। फुसफुसाहट। गुनगुनाहट। बरबराना। २ मंत्र का जप।

जाबालः (पु०) बकरों का समूह।

जामदग्न्यः (पु०) परशुराम का नाम।

जामा (स्त्री०) १ लड़की। २ बहू। वधू।

जामातृ (पु०) १ दामाद। २ प्रभु। स्वामी। ३ सूरजमुखी।

जामिः (स्त्री०) १ बहिन। २ लड़की। ३ वधू।

पुत्रवधू । ४ निकट की स्त्री नातेदारीन । ५ सती साध्वी स्त्री ।

जामित्रं (न०) लग्न से सातवाँ घर या जन्मलग्न से ७ वीं लग्न ।

जामेयः (पु०) भाँजा । बहिन का पुत्र ।

जाम्बवम् (न०) १ सुवर्ण । सोना २ जामुन-फल ।

जांववं } (पु०) रीछों के राजा, जिन्होंने लंका पर
जाम्बवत् } आक्रमण करने में श्रीरामचन्द्र जी की सहायता की थी ।

जाम्बीरम् } १ जमीरी । नीवू विशेष ।
जाम्बीलम् }

जाम्बूनदं (न०) १ सुवर्ण । सोना । २ सोने का आभूषण । ३ धतूरा का पौधा ।

जाया (स्त्री०) स्त्री । स्त्री को जाया कहने का कारण मनुस्मृतिकार ने इस प्रकार बतलाया है —

पतिर्भार्यां सम्प्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते ।
जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः ॥

—अनुजीविन्, (पु०)—आजीवः,—मनुः (पु०) १ नट । नचैया । २ रण्डी का पति । ३ भिक्षुक । मोहताज ।

जायिन् (वि०) [स्त्री०—जायिनी] जीतने वाला । वशवर्ती करने वाला ।

जायुः (पु०) १ दवाई । २ वैद्य ।

जारः (पु०) आशिक । वीर । प्रेमी ।—जः,—जन्मन्,—जातः, (पु०) दोग़ला ।—भरा, (स्त्री०) छिनाल औरत ।

जारिणी (स्त्री०) छिनाल औरत ।

जालं (न०) १ जाल । फंदा । २ मकड़ी का जाल । ३ कवच । ४ रोशनदान । खिड़की । ५ संग्रह । संख्या । समुदाय । ६ जादू । ७ माया । भ्रम । ८ अनखिला फूल ।—अक्षः, (पु०) सूराख । छेद ।—कर्मन् [न०] मछली पकड़ने का धंधा या पेशा ।—कारकः,(पु०) १ जाल बनाने वाला । २ मकड़ी ।—गोणिका, (स्त्री०)—मथानी,—पाद्,—पादः, (पु०) हँस ।—प्राया, (स्त्री०) कवच । जरहवख्तर ।

जालकं (न०) १ जाल । २ समूह । संग्रह । ३ झरोखा । खिड़की । ४ कली । अनखिला फूल । ५ चूड़ामणि । आभरण विशेषः । ६ घोंसला । ७ माया । भ्रम । धोखा ।—मालिन् (वि०) अवगुण्ठित । घूंघर ।

जालकिन् (पु०) बादल ।

जालकिनी (स्त्री०) भेड़ ।

जालिकः (पु०) १ माहीगीर । मछुआ । २ बहेलिया । चिड़ीमार । ३ मकड़ी । ४ सूबेदार । ५ बदमाश । गुंडा ।

जालिका (स्त्री०) १ जाल । २ कवच । ३ मकड़ी । ४ जौंक । ५ विधवा । ६ लोहा । ७ घूंघट । ऊनी वस्त्र ।

जालिनी (स्त्री०) तसवीरों से सुसज्जित कमरा ।

जाल्म (वि०) [स्त्री०—जाल्मी] १ निष्ठुर । नृशंस । कड़ा । सख़्त । २ दुस्साहसी । अविवेकी ।

जाल्मः (पु०) १ बदमाश । गुंडा । २ धनहीन । नीच ।

जाल्मक (वि०) [स्त्री०—जाल्मिका] घृणित । नीच । कमीना ।

जावन्यं (न०) १ गति । रफ्तार । तेज़ी । २ शीघ्रता । हड़बड़ी ।

जाह्नवी (स्त्री) श्री गङ्गा जी ।

जि (धा० परस्मै०) [जयति,—जित] १ जीतना । हराना । वशवर्ती करना । २ आगे बढ़ जाना । ३ जीतना (बाज़ी या दाव) । ४ निग्रह करना । ५ विजयी होना ।

जिः (पु०) पिशाच ।

जिगत्नुः (पु०) स्वाँस । जीवन ।

जिगीषा (स्त्री०) १ जीतने की अभिलाषा । २ स्पर्धा । ३ प्रतिष्ठा । मान । ४ पेशा ।

जिगीषु (वि०) विजयी होने का अभिलाषी ।

जिघत्सा (वि०) १ भूखा । २ प्रयत्नशील । ३ सन्तुष्ट ।

जिघत्सु (वि०) भूखा ।

जिघांसा (स्त्री०) वध करने का अभिलाषी ।

जिघांसु (पु०) शत्रु । वैरी ।

जिघृक्षा (स्त्री०) ग्रहण करने या पकड़ने का अभिलाषी । [अंदाज़न ।

जिघ्र (वि०) महकदार । आनुमानिक । अंदाज़िया ।

जिज्ञासा (स्त्री०) (किसी बात के) जानने की इच्छा ।

जिज्ञासु (वि०) १ किसी बात को जानने का अभिलाषी। २ मुमुक्षु।

जित् (वि०) [यह समासान्त शब्द के अन्त में आता है। यथा कामजित्] जीतने वाला। वशवर्ती करने वाला। काबू में करने वाला।

जित (व० कृ०) १ जीता हुआ। वशवर्ती किया हुआ। संयत। २ जीत कर हस्तगत किया हुआ। प्राप्त। ३ अतिशयित। ४ वशवर्ती किया हुआ।—अक्षर, (वि०) भलीभाँति पढ़ा हुआ। सुपठित।—अमित्र, (वि०) वह मनुष्य जिसने अपने वैरियों को परास्त कर दिया हो। विजयी।—अरि,(वि०) शत्रु को जीत लेने वाला।—अरि, (पु०) बुद्धदेव की उपाधि।—आत्मन्, (वि०) आत्मसंयमी।—आहव, (वि०) विजयी।—इन्द्रिय, (वि०) जितेन्द्रिय। अपनी इन्द्रियों को काबू में रखने वाला। जितेन्द्रिय की परिभाषा यह है:—

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः।
न हृष्यति, ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः॥

—काशिन्, (वि०) विजयी होने का अभिमानी। विजयी होने की शान दिखानेवाला।—कोप,—क्रोध, (वि०) क्रोध को जीतने वाला। उद्विग्न न होने वाला।—नेमिः, (पु०) पीपल की लकड़ी का बना डंडा।—श्रम, (वि०) परिश्रमी। न थकने वाला।—स्वर्गः, (पु०) मरने के बाद शुभकर्मों द्वारा स्वर्ग में जाने वाला।

जितिः (स्त्री०) जीत। विजय।

जितुमः } जित्तमः } (पु०) मिथुन राशि। द्वादश राशियों में तीसरी राशि।

जित्वर (वि०) [स्त्री०—जित्वरी] विजयी। फतहयाब।

जिन (वि०) १ विजयी। फतहयाब। २ बहुत पुराना या बुड्ढा।—इन्द्र,—ईश्वर, (पु०) प्रधान बौद्ध भिक्षुक। जैनियों का अर्हत।—सद्मन्, (न०) जैनियों का मन्दिर।

जिनः (पु०) १ बौद्ध या जैन साधु। २ जैनी अर्हतों की उपाधि। ३ विष्णु।

जिवाजिवः (पु०) चकोर पक्षी।

जिष्णु (वि०) १ विजयी। फतहयाब। २ जीतने वाला। प्राप्त करने वाला।

जिष्णुः (पु०) १ सूर्य। २ इन्द्र ३ विष्णु। ४ अर्जुन।

जिह्म (वि०) १ तिरछा। टेढ़ा। बाँका। २ भेंडा। ऐंचाताना। ३ अनियमित चलने वाला। ४ नैतिक। कौटिल्य। बेईमान। दुष्ट। ५ धुंधला। अँधियारा। पीले रंग का। ६ सुस्त। काहिल।—अक्ष, (वि०) भेंड़ी आँख वाला। भेंडा।—गः, (पु०) सर्प।—गति, (वि०) टेढ़ा मेढ़ा चलने वाला।—मेहनः (पु०) मेंढक।—योधिन, (वि०) बेईमानी से युद्ध करने वाला।—शल्यः, (वि०) खदिर वृक्ष।—जिह्मः, (पु०) जिह्वा। जीभ।

जिह्मं (न०) बेईमानी। झूठ।

जिह्वल (वि०) मरभुका। पेटू। लालची। तृष्णालु।

जिह्वा (स्त्री०) १ जबान। जीभ। २ अग्नि की जिह्वा अर्थात आग की लौ।—आस्वादः, (पु०) चाटना। लपलपाना।—उल्लेखनी,—उल्लेखनिका,(स्त्री०)—निर्लेखनम्, (न०)जिह्वा का मैल साफ करने वाली वस्तु। जिभी।—प, (पु०) १ कुत्ता। २ बिल्ली। ३ चीता। बाघ। ४ लकड़बग्घा। ५ रीछ।—मूलं, (न०) जिह्वा की जड़।—मूलीय (वि०) वर्ण विशेष। वर्ण जिनके उच्चारण के लिये जिह्वामूल से सहायता ली जाती है।—रदः, (पु०) पक्षी विशेष।—लिह्, (पु०) कुत्ता।—लौल्यं, (न०) लालच। चटोरापन।—शल्य, (पु०) खदिर का पेड़।

जीन (वि०) बूढ़ा। पुराना। घिसा हुआ। क्षीण।

जीनः (पु०) चमड़े का थैला।

जीमूत, (पु०) १ बादल। २ इन्द्र।—कूटः (पु०) पहाड़। पर्वत।—वाहनः (पु०) १ इन्द्र। २ विद्याधरों के एक राजा का नाम। नागानन्द नाटक का प्रधान पात्र।—वाहिन्, (पु०) धूम। धुआँ।

जीरः (पु०) १ तलवार। २ जीरा।

जीरकः, } जीरणः } (पु०) जीरा।

जीर्ण (वि०) १ पुराना। प्राचीन। २ घिसा हुआ। इस्तेमाली। नष्ट किया हुआ। फटा हुआ। ३ पचा

हुआ।—उद्धारः, (पु०) मरम्मत । रफू।—उद्यानं, (न०) उजड़ा हुआ बगीचा।—ज्वरः, पुराना बुखार। बहुत दिनों का ज्वर।—पर्णः, (पु०) कदम्ब वृक्ष।—वाटिका (स्त्री०) उजड़ी हुई बगिया या मकान।—वज्रं (न०) रत्न विशेष।

जीर्णं (न०) १लोबान। २ बुढ़ापा।

जीर्णः (पु०) १ बूढ़ा आदमी। २ वृक्ष।

जीर्णक (वि०) सूखा हुआ। मुर्झाया हुआ।

जीर्णिः (स्त्री०) १ बुढ़ापा। निर्बलता। २ पाचन शक्ति।

जीव् (धा० आत्म०) [जीवति, जीवित] १ जीवित रहना। २ पुनरुज्जीवित करना। ३ किसी वस्तु के सहारे निर्वाह करना।

जीव (वि०) १ जीना। अस्तित्व कायम रखना।—जीवः, (पु०) १ प्राण। अन्तरात्मा। २ जीवात्मा। ३ जीवन। अस्तित्व। ४ प्राणी। प्राणधारी। ५ आजीविका। पेशा। ६ कर्ण का नाम। ७ मरुतों का नाम। ८ पुष्य नक्षत्र।—अन्तकः, (पु०) चिड़ीमार। २ जल्लाद। हत्यारा।—आत्मन्, (पु०) जीवात्मा जो शरीर के भीतर रहता है।—आदानं, (न०) रक्तस्राव।—आधानम्, (न०) प्राण की या जीवन की रक्षा।—आधारः, (पु०) हृदय।—इन्धनं, (न०) दहकती हुई लकड़ी। लुआट।—उत्सर्गः, (पु०) इच्छा पूर्वक जान देना। आत्महत्या।—ऊर्णा (स्त्री०) जीवित पशु की ऊन।—गृहं,—मन्दिरं, (न०) शरीर। देह।—ग्राहः, (पु०) जीवित पकड़ा हुआ क़ैदी।—जीवः, (जीवजीवः भी) (पु०) चकोर पक्षी।—दः, (पु०) १ वैद्य। २ शत्रु।—दशा, (स्त्री०) मृत्युशीलत्व। नाशवान्। अस्तित्व।—धनं, (न०) पशु धन। गाय, बैल आदि।—धानी, (स्त्री०) पृथिवी।—पतिः, (स्त्री०)—पत्नी (स्त्री०) स्त्री जिसका पति जीवित हो।—पुत्रा,—वत्सा, (स्त्री०) बच्चे वाली स्त्री।—मातृका, (स्त्री०) सप्तमातृका जिनके नाम ये हैं—

कुमारी धनदा नंदा विमला मङ्गला बला।
पद्मा चेति च विख्याताः सप्तैता जीवमातृकाः।

रक्तम्, (न०) रजोधर्म का रक्त या लोहू।—लोकः, (पु०) १ मर्त्यलोक। भूलोक। २ प्राणी। प्राणधारी। जीव। मानव जाति।—वृत्तिः, (स्त्री०) पशु का। पालने का पेशा।—शेष, (वि०) वह जिसके पास अपने प्राण को छोड़ और कुछ भी न रह गया हो।—संक्रमणम्, (न०) जीव का जन्मग्रहण और शरीरत्याग। आवागमन।—साधनम्, (न०) अनाज। अन्न।—साफल्यं, (न०) जन्मधारण करने की सफलता।—सूः, (स्त्री०) स्त्री जिसके सन्तान जीवित हो।—स्थानं, (न०) जोड़। गिरह। गाँठ। मेल।

जीविकः (पु०) १ जीवधारी। २ नौका। बौधभिक्षुक। भीख पर निर्भर रहने वाला कोई भी भिक्षुक। ४ सूदख़ोर। ५ सँपेला। साँप पकड़ने वाला। कालबेलिया। ६ वृक्ष। पेड़।

जीवत् (वि०) [स्त्री०—जीवन्ती] ज़िन्दा। सजीव।—तोका, (स्त्री०) वह औरत जिसके बच्चे जीवित हों।—पतिः, (स्त्री०)—पत्नी, (स्त्री०) स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा।—मुक्त, (वि०) परमात्मा का साक्षात्कार करने वाला। सांसारिक कर्मबन्धन से छुटा हुआ।—मृत, (वि०) ज़िन्दा मरा हुआ; अर्थात् ज़िन्दा होने पर भी मुर्दे की तरह बेकार।

जीवथः (पु०) १ जीवन। अस्तित्व। २ कछुवा। ३ मोर। ४ बादल।

जीवन (वि०) [स्त्री०—जीवनी] जीवनप्रद। जीवनी शक्ति देने वाला।—अन्तः, (पु०) मृत्यु। मौत।—आघातं, (न०) विष।—आवासः, (पु०) १ वरुण देव। २ शरीर। देह। तनु।—उपायः, (पु०) आजीविका।—औषधम्, (न०) १ अमृत। २ सञ्जीवनी दवा।

जीवनं (न०) १ जीवन। अस्तित्व। २ सञ्जीवनी शक्ति। ३ जल। पानी। ४ पेशा। ५ एक दिन का बासा मक्खन जो दूध से निकाला गया हो।

जीवनः (पु०) १ प्राणधारी। २ पवन। ३ पुत्र।

जीवनकम् (न०) भोजन।

जीवनीयम् (न०) १ पानी। २ ताज़ा या टटका दूध।
जीवन्तः (पु०) १ ज़िंदगी। अस्तित्व। २ दवाई।
जीवन्तिकः (पु०) चिड़िमार। बहेलिया।
जीवा (स्त्री०) १ जल। २ पृथिवी। ३ कमान की डोरी। ४ वृत्तांश के दोनों प्रान्तों को मिलाने वाली सरल रेखा। ५ आजीविका के साधन। ६ गहनों की झंकार का शब्द। ७ वचा। पौधा विशेष।
जीवातु (पु० न०) १ भोजन। २ जीवन। अस्तित्व। ३ पुनरुज्जीवन। ४ मुर्दे को जिलाने वाली दवा।
जीविका (स्त्री०) जीविका का साधन। वृत्ति। रोज़ी। आजीविका।
जीवित (वि०) १ ज़िंदा। २ पुनरुज्जीवित किया हुआ। ३ सजीव।—अन्तकः, (पु०) शिव।—ईशः, (पु०) १ प्रेमी। पति। २ यम। ३ सूर्य ४ चन्द्रमा।—कालः, (पु०) जीवन काल। या जीवन की अवधि।—ज्ञा, (स्त्री०) नाड़ी। धमनी। रग।—व्ययः, (पु०) जीवनोत्सर्ग।—संशयः, (पु०) प्राणसङ्कट।
जीवतम् (न०) १ जीवन। अस्तित्व। २ जीवन की अवधि। ३ आजीविका। ४ प्राणधारी। जीव।
जीविन् (वि०) [स्त्री० -जीविनी] १ जीवित। ज़िंदा। (पु०) प्राणधारी।
जीव्या (स्त्री०) आजीविका का साधन।
जुगुप्सनम् (न०), जुगुप्सा (स्त्री०) १ भर्त्सना फटकार। धिक्कार। २ अरुचि। घृणा। नफरत। ३ निंदा।
जुष् (धा० आत्म०) [जुषते जुष्ट] १ प्रसन्न या सन्तुष्ट होना। अनुकूल होना। २ पसंद करना। मुस्ताक होना। उपयोग करना। ३ अनुरक्त होना। अभ्यास करना। ४ अनुसंधान करना। ५ चुनना। ६ तर्क करना।
जुष्ट (व० कृ०) १ प्रसन्न। आल्हादित। २ अभ्यस्त। सेवित। ३ सम्पन्न।
जुहूः (स्त्री०) १ श्रुवा। आहुति देने का चमचा।
जुहोतिः (पु०) यज्ञीयकर्म सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द विशेष।
जूः (स्त्री०) १ गति। तेज़ चाल। २ वायुमण्डल। ३ राक्षसी। ४ सरस्वती।
जूकः (पु०) तुला राशि।
जूटः (पु०) जटा। सिर के लंबे और आपस में चिपटे हुए बाल।
जूटकं (न०) जटा।
जूतिः (स्त्री०) वेग। तेज़ रफ़्तार।
जूर् (धा० आत्म०) [जूर्यते, जूर्ण] १ चोटिल करना। वध करना। २ नाराज़ होना। ३ बढ़ना।
जूर्तिः (स्त्री०) ज्वर।
जॄ (धा० परस्मै०) [जरति] नीचा दिखाना। तिरस्कार करना।
जृभ्, जृम्भ् (धा० आत्म०) [जृभते, जृंभते, जृम्भित, जृंब्ध] १ जमुहाई लेना। २ खोलना। फैलाना। ३ बढ़ाना। छा देना। सर्वत्र व्याप्त कर देना। ४ प्रकट करना। ५ आराम करना। ६ पल्टाखाना। लौटना।
जृंभः, जृम्भः (पु०), जृंभं जृम्भं (न०), जृंभणं, जृम्भणं (न०), जृंभा, जृम्भा (स्त्री०), जृंभिका, जृम्भिका (स्त्री०) जमुहाई। खिलना। प्रस्फुटन। फैलाव। अंगों का फैलाव।
जॄ (धा० प०) [जरति, जीर्यति, जृणाति, जारयति-जारयते, जीर्ण या जारित] पुराना पड़ जाना। घिस जाना। कुम्हला जाना। सड़ जाना। नष्ट हो जाना। घुल जाना। पच जाना।
जेतृ (पु०) १जेता। विजयी। २ विष्णु।
जेंताकः, जेन्ताकः (पु०) गर्म कोठरी जिसमें बैठकर शरीर से पसीना निकाला जाय।
जेमनम् (न०) १ भोजन करना। खाना। २ भोज्य पदार्थ।
जैत्र (वि०) [स्त्री०—जैत्री] १ विजयी। सफल। विजयप्रद। २ उत्कृष्ट।
जैत्रं (न०) १ विजय। जीत। २ उत्कृष्टता।
जैत्रः (पु०) १ विजयी। फतहयाब। २ पारा। पारद।
जैनः (पु०) जैनी। जैन मतावलम्बी।
जैमिनिः (पु०) मीमांसादर्शनकार महर्षि विशेष।
जैवातृक (वि०) [स्त्री० —जैवातृकी] दीर्घजीवी।
जैवातृकः (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ पुत्र। ४ दवा। ५ किसान।
जैवेयः (पु०) बृहस्पतिपुत्र कच की उपाधि।

बीच का। पुराना। २ सर्वोत्कृष्ट। सर्वोत्तम। ३ अधिकतर बड़ा। ४ अधिकतर वयस्क। बालिग़।

ज्येष्ठ (वि०) १ जेठा। सब से बड़ा। २ सर्वोत्तम। ३ मुख्य। प्रधान। प्रथम।—अंशः, (पु०) १ बड़े भाई का हिस्सा। २ पैतृक सम्पत्ति का वह विशेष हक़ जो सब से बड़े भाई को (सब से बड़ा होने के कारण) प्राप्त होता है। ३ सर्वोत्तम भाग। —अंबु, (न०) १ पानी जिसमें अनाज धोया गया हो। २ माँड। भात का पसावन।—आश्रमः, (पु०) १ सर्वोत्तम अर्थात् गृहस्थ आश्रम। २ गृहस्थ।—तातः, (पु०) ताऊ। पिता का बड़ा भाई।—वर्णः, (पु०) सब से ऊँची जाति अर्थात ब्राह्मण जाति।—वृत्ति, (पु०) बड़ों का कर्त्तव्य। —श्वश्रूः, (स्त्री०) १ भार्या की बड़ी बहिन। बड़ी सरैज या साली।

ज्येष्ठ (पु०) १ जेठाभाई। सब से बड़ा भाई। २ ज्येष्ठ मास।

ज्येष्ठा (स्त्री०) १ सब से बड़ी बहिन। २ १८ वाँ नक्षत्र। ३ मध्यमा अँगुली। ४ छपकली। बिस्तुइया। ५ गङ्गा का नाम।

ज्यैष्ठः (पु०) चान्द्र मास विशेष। जेठ मास।

ज्यैष्ठी (स्त्री०) १ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा। २ छपकली। बिस्तुइया।

ज्यैष्ठ्य (न०) १ जेठापन। २ मुख्यता। प्रधानता।

ज्यो (धा० आत्म०) [स्त्री०—ज्यवते] १ परामर्श देना। निर्देश देना। २ व्रत रखना।

ज्योतिर्मय (वि०) ताराओं से सम्बन्ध युक्त। नक्षत्रों का।

ज्योतिष (वि०) (गणित या फलित) ज्योतिष सम्बन्धी।—विद्या, (स्त्री०) नक्षत्रविद्या।

ज्योतिषः (पु०) १ छः वेदाङ्गों में से एक। ग्रहादि की गति, स्थिति, आदि जानने वाला।

ज्योतिषी } (पु०) नक्षत्र। तारा।
ज्योतिष्क }

ज्योतिष्मत् (वि०) १ चमकदार। चमकीला। २ स्वर्गीय। (पु०) सूर्य।

ज्योष्मिती (स्त्री०) १ रात। २ मन की शान्ति।

ज्योतिस् (न०) १ प्रकाश। प्रभा। चमकीला। (पु०) सूर्य।—इङ्गः,—इङ्गणः, (पु०) जुगनू।—कणः, (पु०) आग की चिनगारी। —गणः, (पु०) नक्षत्र या ग्रह समूह।—चक्रं, (न०) राशिचक्र।—ज्ञ, (पु०) ज्योतिषी। —मण्डलम्, (न०) ग्रहमण्डल।—रथः, (ज्योतीरथः) ध्रुवतारा।—विद्, (पु०) ज्योतिषी।—विद्या, (स्त्री०)—शास्त्रं, (न०) ग्रह नक्षत्रादि की गति और स्वरूप का निश्चय कराने वाला शास्त्र।—स्तोमः, (पु०) यज्ञ विशेष जिसे सम्पन्न करने के लिये १६ कर्मकाण्डी विद्वानों की आवश्यकता होती है।

ज्योत्स्ना (स्त्री०) १ जुन्हाई। २ प्रकाश। चाँदनी। —ईशः, (पु०) चन्द्रमा।—प्रियः, (पु०) चकोर पक्षी।—वृक्षः, (पु०) १ शमादान। डीवट। २ मोमबत्ती।

ज्योत्स्नी (स्त्री०) चाँदनी रात।

ज्यौः (पु०) वृहस्पति ग्रह।

ज्यौतिषिकः (पु०) दैवज्ञ। गणक। ज्योतिषी।

ज्यौत्स्नः (पु०) शुक्ल पक्ष।

ज्वर् (धा० प०) [ज्वरति, जूर्ण,] १ ज्वर आना। २ रोगी होना। बीमार होना।

ज्वरः (पु०) १ बुखार। ताप। २ मानसिक व्यथा। पीड़ा। क्लेश।—अग्निः, (पु०) ज्वर का चढ़ाव।—अङ्कुशः, (पु०) ज्वरान्तक दवा।— प्रतीकारः, (पु०) ज्वर की दवा या ज्वर दूर करने का उपाय।

ज्वरित } (वि०) ज्वर चढ़ा हुआ। ज्वर से
ज्वरिन् } आक्रान्त।

ज्वल् (धा० प०) [ज्वलति, ज्वलित,] १ दहकना। २ जलजाना। ३ उत्सुक होना।

ज्वलन (वि०) १ दाहकारी। दहकता हुआ। २ जल उठने वाला।

ज्वलनं (न०) जलन। दहकन। भभक।

ज्वलनः (पु०) १ आग। २ तीन की संख्या।

ज्वलित (वि०) जला हुआ। प्रकाशमान।

ज्वालः (पु०) १ प्रकाश। शोला। २ मशाल।

ज्वाला (स्त्री०) शोला । प्रकाश ।—जिह्वः, (पु०) —ध्वजः, (पु०) आग ।—मुखी, आतिशी पहाड़ । पहाड़ जिससे आग निकले ।

—वक्त्रः, (पु०) शिवजी की उपाधि विशेष ।

ज्वालिन् (पु०) शिवजी की उपाधि ।

झ

संस्कृत अथवा देवनागरी वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण। यह स्पर्श है और इसके उच्चारण में संवार, नाद और घोष प्रयत्न होते हैं। च, छ, ज और ञ इसके सवर्ण कहे जाते हैं। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

झः (पु०) १ ध्वनि। झुनझुन की आवाज़। २ झंझा-वात। ३ बृहस्पति।

झगझगायति (क्रि०) चमकना। जल उठना।

झगति
झगिति } (अव्य०) शीघ्रता से। फुर्त्ती से।

झंकारः (पु०)
झङ्कारः (पु०)
झंकृतम् (न०)
झङ्कृतम् (न०) } १ भौरे की गूँज।

झंकारिणी
झङ्कारिणी } गङ्गा नदी।

झंकृतिः
झङ्कृतिः } (स्त्री०) धातु के बने आभूषणों के बजने का शब्द विशेष। झंकार।

झंझनम्
झञ्झनम् } (न०) धातु के बने आभूषणों का शब्द या झंकार।

झंझा
झञ्झा } (स्त्री०) १ पवन के चलने या जलवृष्टि का शब्द। २ आँधी पानी। तूफान। ३ झन झन शब्द।—अनिलः, (पु०)—मरुत्,—वातः, (पु०) आंधी पानी। तूफान।

झटिति (अव्यया०) तुरन्त। फुर्त्ती से। फौरन।

झणझणं (न०)
झणझणा (स्त्री०) } झंकार। झनझन का शब्द।

झणझणायित (वि०) झंकार शब्द करने वाला।

झणत्कारः
झनत्कारः } (पु०) नूपुर, कङ्कण आदि के बजने का शब्द।

झंपः, झम्पः (पु०)
झंपा, झम्पा (स्त्री०) } कूदना। कुलाँच। उछाल। झपट।

झंपाकः झम्पाकः
झंपारुः झम्पारुः
झंपिन् झम्पिन् } बंदर। लंगूर।

झरः (पु०)
झरा (स्त्री०)
झरी (स्त्री०) } झरना। जलप्रपात। चश्मा। सोता।

झर्झरः (पु०) १ ढोल। २ कलियुग। ३ बेत की छड़ी। ४ झाँझ। मजीरा।

झर्झरा (स्त्री०) वेश्या। रंडी।

झर्झरिन् (पु०) शिव जी की उपाधि।

झला (स्त्री०) १ लड़की। पुत्री। २ धूप। घाम। आतप।

झलझला (वि०) टपकने का या हाथी के कानों के फड़फड़ाने का शब्द।

झल्लः (पु०) १ पुरस्कार प्राप्ति के लिये लड़ने वाले। २ नीच जातियों में से एक।

झल्ली (स्त्री०) ढोल विशेष।

झल्लकं (न०)
झल्लकी (स्त्री०) } झाँझ। मजीरा।

झल्लकण्ठः (पु०) कबूतर। परेवा।

झल्लरी (स्त्री०) झाँझ।

झल्लिका (स्त्री०) १ उबटन लगाने से छुटा हुआ [illegible]

झाटः (पु०) १ लताच्छादित स्थान। कुञ्ज। २ वन। उपवन।

झिंटिः }
झिण्टिः } (स्त्री०) एक प्रकार की झाड़ी।

झिरिका (स्त्री०) झींगुर।

झिल्लिः (स्त्री०) १ झींगुर। २ लैंप की बत्ती। ३ रोशनी। प्रकाश। चमक।—कण्ठः, (पु०) पालतू कबूतर।

झिल्लीः (स्त्री०) झींगुर। वाद्ययंत्र विशेष। बाजा विशेष।

झिल्लिका (स्त्री०) झींगुर। धूप या घाम का प्रकाश। चमक।

झीरुका (स्त्री०) झींगुर।

झुंट }
झुण्टः } (पु०) १ वृक्ष। २ झाड़ी।

झोडः (पु०) सुपारी का पेड़।

ञ

संस्कृत नागरी वर्णमाला का दसवाँ व्यञ्जन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है। इसका प्रयत्न स्पर्श, घोष अल्पप्राण है।

ञः (पु०) १ बैल। २ शुक्र। ३ ऐंड़ी बैंडी चाल। ४ सङ्गीत। गान। ५ घर्घर शब्द।

ट

ट संस्कृत वा नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यञ्जन और टवर्ग का प्रथम अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इसके उच्चारण में तालू से जीभ लगानी पड़ती है।

टः (पु०) १ धनुष की टंकार। २ चतुर्थांश। ३ शपथ। ४ पृथिवी। ५ नारियल की नरेरी। ६ बौना।

टंक् (धा० उभय) [टङ्कयति, टङ्कयते, टङ्कित] १ बाँधना। लपेटना। कसना। २ ढकना। आच्छादित करना।

टंकः, टङ्कः (पु०) }
टंकं, टङ्कम् (न०) } १ कुदाली। कुल्हाड़ी। छैनी। २ तलवार। ३ तलवार की म्यान। ४ पहाड़ी का ढाल। ५ क्रोध। ६ अहङ्कार। ७ टांग।

टंका }
टङ्का } (स्त्री०) टांग।

टंकक (पु०) चाँदी का सिक्का जिस पर ठप्पा लगा हो।—पतिः, (पु०) टकसाल का प्रधानाध्यक्ष।—शाला, (स्त्री०) टकसालघर।

टंकणं, टङ्कणम् }
टंकनं, टङ्कनम् } (न०) सुहागा।

टंकणः, टङ्कणः }
टंकन, टङ्कनः } (पु०) १ घोड़े की जाति विशेष। २ जाति विशेष के मनुष्य।—क्षारः, (पु०) सुहागा।—टङ्कारः, (पु०) १ रोदे के टंकोर की आवाज़। २ हाऊ हाऊ शब्द। चिल्लाहट। चीत्कार।

टंकारिन् }
टङ्कारिन् } (वि०) [स्त्री०—टङ्कारिणी] टंकोरने का शब्द।

टंकिका }
टङ्किका } (स्त्री०) कुल्हाड़ी।

टंगः, टङ्गः (पु०) }
टंगं, टङ्गम् (न०) } फावड़ा। कुदाली। कुल्हाड़ी।

टंगणः, टङ्गणः (पु०) }
टंगणं टङ्गणम् (न०) } सुहागा।

डामर (वि०) १ भयानक। भयङ्कर। २ विप्लवकारी। उपद्रवी। ३ मनोहर। सुस्वरूप।

डामरः (पु०) १ कोलाहल। चीत्कार। उपद्रव। २ किसी उत्सव या लड़ाई झगड़े के समय होने वाला चीत्कार या कोलाहल।

डालिमः (पु०) दाडिम। अनार।

डाहलः (बहु० पु०) एक देश विशेष और उस देश के अधिवासी।

डिंगरः, डिङ्गरः (पु०) १ नौकर। चाकर। टहलुआ। २ गुण्डा। बदमाश। धोखेबाज़। ३ नीच जाति का आदमी।

डिंडिमः, डिण्डिमः (पु०) ढोलक। ढोलकी।

डिंगिः, डिङ्गिः, डिंडिर, डिंडीर, डिण्डिरः डिण्डीरः (पु०) समुद्रफेन।

डिमः (पु०) दस प्रकार के नाटकों में से एक।

मायेन्द्रजालसंग्राम क्रोधाद्भ्रान्तादिचेष्टितैः।
उपरागैश्च भूयिष्ठो डिमः ख्यातोऽतिवृत्तकः॥

डिंबः, डिम्बः (पु०) १ झगड़ा। टंटा। २ भयभीत होने पर किया हुआ शब्द। ३ बच्चा। ४ अण्डा। ५ गोला या गेंद।—आहवः, (पु०)—युद्धम्, (न०) झूठा युद्ध। बिना हथियारों की लड़ाई।

डिंबिका, डिम्बिका (स्त्री०) १ छिनाल औरत। २ बबूला।

डिंभ, डिम्भः (पु०) १ बच्चा। २ जानवर का बच्चा। ३ मूर्ख। मूढ़।

डिंभकः, डिम्भकः (पु०) [स्त्री०—डिम्भिका] १ बछवा। २ जानवर का बच्चा।

डी (धा० आत्म०) [डयते, डियते, डीन] १ उड़ना। २ जाना।

डीन (व० कृ०) उड़ा हुआ।

डीनम् (न०) पक्षी का उड़ान। पक्षियों के उड़ान १०१ प्रकार के होते हैं। इन उड़ानों के भेदों के द्योतक उपसर्ग डीन में लगाने से उस उस उड़ान का बोध होता है। यथाः—"अवडीनं", "उड्डीनं", "प्रडीनम्", 'अभिडीनम्", "विडीनम्", "परिडीनं" "पराडीनं" आदि।

डुंडुभः, डुण्डुभः (पु०) निर्विष सर्प विशेष।

डुलिः (स्त्री०) छोटा कछवा।

डोमः (पु०) डोम। अत्यन्त नीच जाति का आदमी।

ढ

संस्कृत या नागरी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यञ्जन। टवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ढक्का (स्त्री०) बड़ा ढोल।

ढामरा (स्त्री०) हंस।

ढालं (न०) ढाल।

ढालिन् (पु०) ढालधारी योद्धा।

ढुंढिः, ढुण्ढिः (पु०) गणेश जी।

ढौलः (पु०) बड़ा ढोल।

ढौक् (धा० आत्म०) [ढौकते, ढौकित] जाना। समीप जाना।

ढौकनं (न०) १ भेंट। चढ़ौती। २ घूंस।

ण

संस्कृत वा नागरी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यञ्जन टवर्ग का पञ्चम वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है । इसके उच्चारण में आभ्यन्तर प्रयत्न स्पष्ट और सानुनासिक है । वाह्य प्रयत्न, सवार नाद, घोष और अल्पप्राण है । इसका संयोग मूर्द्धन्य वर्ण, अन्तस्थ तथा 'म" और "ह" के साथ होता है ।

संस्कृतभाषा में ण से आरम्भ होने वाले शब्दों का अभाव है ; किन्तु धातुपाठ में कुछ धातु ऐसी हैं जिनका प्रथम अक्षर ण है । वास्तव में यह "ण", 'न" स्थानीय हैं । इनके 'ण" से लिखे जाने का कारण यह है कि, इससे यह सूचित होता है कि, 'न" कतिपय उपसर्गों के पूर्व आने से "ण" के साथ भी परिवर्तित होता है । ऐसी धातुओं की सूची कोश के अन्त में दी गयी हैं ।

त

सं ६ृ त या नागरी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यञ्जन । तवर्ग का प्रथम वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान दन्त है । इसके उच्चारण में विवार श्वास और अघोष प्रयत्न लगाये जाते हैं । इसके उच्चारण में आधी मात्रा का समय लगता है ।

तः (पु०) १ पूँछ । २ गीदड़ की पूँछ । ३ छाती । ४ गर्भाशय । ५ टेहुनी । ६ योद्धा । ७ चोर । ८ दुष्टजन । ८ जातिच्युत । १० वर्वर । ११ बौद्ध । १२ रत्न । १३ अमृत । १४ छन्द मे गण विशेष ।

तक् (क्रि०) १ दुःखी होना । उड़ना । झपटना । ३ हँसना । ४ चिढ़ाना । ५ सहन करना ।

तकिल (वि०) छली । कपटी । मुतफन्नी ।

तक्रं (न०) मठा । छाछ—अटः, (पु०) रई ।—सारं, (न०) ताज़ा मक्खन ।

तक्ष् (धा० प०) [तक्षति, तक्ष्णोति, तष्ट] १काट डालना । छेनी से काटना । चीरना । टुकड़े टुकड़े करना । २ सँमारना । ३ बनाना । सिरजना । ४ घायल करना । ५ अविष्कार करना । ६ मन में कल्पना करना ।

तक्षकः (पु०) १ बढ़ई । लकड़हारा । २ सूत्रधार । ३ देवताओं का कारीगर । ४ पातालवासी मुख्य नागों में से एक का नाम ।

तक्षणं (न०) काटना ।

तक्षन् (पु०) बढ़ई । लकड़हारा । (जाति से हो या पेशे से हो)

तगरः (पु०) पौधा विशेष ।

तंक् (धा० प०) [तङ्कति, तङ्कित] १ सहन करना । २ हँसना । ३ कष्ट में रहना ।

तंक, तङ्कः (पु०) १ कष्टमय जीवन । २ प्रियजन के वियोग से उत्पन्न कष्ट । ३ भय । डर । ४ संगतराश की छैनी ।

तंकनं, तङ्कनम् (न०) कष्टमय जीवन । दुःखी जीवन ।

तंग्, तङ्ग् (धा० प०) [तगति तंगित] १ जाना । चलना । २ कांपना । थरथराना । ३ ठोकर खाना ।

तंच्, तञ्च् (धा० प०) [तनक्ति, तंचित] सकोड़ना । पीछे हटना ।

तटः (पु०) ढालू स्थान । रपट । आकाश ।

तटः (पु०), तटा स्त्री०), तटी (स्त्री०), तटं (न०) — १ नदी का किनारा । २ शरीर के कतिपय अवयवों की संज्ञा यथा जघनतट कटितट, कुचतट आदि । (न०) खेत ।

तटस्थ (वि०) तट का या किनारे पर का । (आल०) उदासीन ।

तटाकः (पु०), तटाकम् (न०) — तालाब ।

तटिनी (स्त्री०) नदी ।

तड् (धा० उभय०) [ताड़यति-ताडयते, ताडित] मारना । सितार आदि के तारों को बजाना ।
तडगः (वि०) देखो तड़ाग ।
तडागः (पु०) तालाव । गहरी पुष्करिणी ।
तडाघातः (पु०) तटाघात । तटों में टक्करों का लगना ।
तडित् (स्त्री०) बिजली । विद्युत ।—गर्भः, (पु०) बादल ।—लता, (स्त्री०) दो शाखों में विभक्त विद्युत रेखा ।—लेखा, (स्त्री०) बिजली की रेखा ।
तडित्वत् (वि०) बिजली वाला । (पु०) बादल ।
तडिन्मय (वि०) बिजली से सम्पन्न ।
तंड्, तण्ड् (धा० आ०) [तण्डते, तण्डित] मारना ।
तंडकः, तण्डकः (पु०) खञ्जन पक्षी ।
तंडुलः, तण्डुलः (पु०) छिलका निकले हुए चावल । अनाज के चार रूप हैं— यथा शस्य, धान्य, तण्डुल और अन्न । चारों की अलग अलग परिभाषा इस प्रकार हैं:—

शस्य क्षेत्रगत प्रोक्तं सतुषं धान्यमुच्यते ।
निस्तुषं तण्डुलः प्रोक्तः स्विन्नमन्नमुदाहृतं ।

तत (व० कृ०) फैला हुआ । बढ़ा हुआ । ढका हुआ ।
ततम् (न०) तारों वाला बाजा ।
ततस् (ततः) (अव्यया०) १ उससे । तब से । २ वहाँ । वहाँ से । ३ तब । जिसके पीछे । पश्चात् । पीछे से । ४ अतएव । अन्ततोगत्वा । इसलिये । ५ ऐसी हालत में । ६ उसके परे । आगे । और आगे । ७ तदपेक्षा । उसके अलावा या अतिरिक्त ।
ततस्त्य (वि०) वहाँ से आया हुआ ।
तति (अव्यया०) १ इतने अधिक । २ संख्या । दल । समूह । ३ यज्ञकर्म ।
तत्त्वं (न०) ("तत्वं" भी लिखा जाता है) १ वास्तविक दशा या परिस्थिति । २ वास्तविक या सत्यरूप । ३ सचाई । ४ निष्कर्ष । ५ यथार्थ रूप । ६ परमात्मा । ब्रह्मत्व । ७ यथार्थ सिद्धान्त । ८ मन । ९ नृत्य विशेष । १० वस्तु । ११ सांख्य के मतानुसार पचीस पदार्थ ।
तत्त्वतः (अव्यया०) यथार्थतः । वस्तुतः ।
तत्र (अव्यया०) १ वहाँ । उस स्थान पर । २ उस अवसर पर । तब ।
तत्रत्य, (अव्यया०) वहाँ होने वाला । वहाँ की वस्तु ।—भवत्, (वि०) पूज्य । पूजनीय ।
तत्पर (वि०) तैयार । सन्नद्ध ।
तत्परायण (वि०) तदासक्त । उसीमें लगा हुआ ।
तत्पुरुषः (पु०) १ परमात्मा । २ समास विशेष ।
तथा (अव्यया०) साम्य । वैसे ही । निश्चय ।—च, (अव्यया०) जैसा कि ।—हि, (अव्यय०) दृष्टान्त । उदाहरण ।
तथापि (अव्यया०) तोभी । ताहम ।
तथैव (अव्यया०) तिस पर भी । ठीक वैसा ही ।—च, (अव्यया०) इसी तरह । उसी तरह ।
तथात्वं (न०) १ ऐसा होने पर । ऐसी दशा में । २ सत्य ।
तथ्य (वि०) सत्य । वास्तविक । असली ।
तथ्यम् (न०) सचाई । वास्तविकता । असलियत ।
तद् (सर्व०) पूर्वकथित । पहिले कहा हुआ ।—अनन्तरं, (अव्य०) ठीक उसके पीछे । उसके बाद ।—अनु, (अव्यया०) उसके बाद । पीछे से ।—अन्त, (वि०) इस प्रकार समाप्ति ।—अर्थ,—अर्थीय, (वि०) यह अर्थ रखते हुए ।—अवधि, (अव्यया०) १ यहाँ तक । इस समय तक । तब तक । २ तब से । उस समय से ।—एकचित्त, (वि०) अपने मन को नितान्ततया उस पर लगाये हुए ।—कालः, (पु०) वर्तमान क्षण । वर्तमान समय ।—कालं, (अव्यया०) तुरन्त । फौरन ।—क्षणं,—क्षणात्, (अव्यया०) तुरन्त फौरन ।—क्रिय, (वि०) बिना मज़दूरी लिये काम करने वाला ।—ज्ञः, (पु०) बुद्धिमान जन । विद्वान ।—तृतीय, (वि०) तीसरी बार वह कार्य करने वाला ।—धन, (वि०) कंजूस । लालची ।—पर, (वि०) उसके पीछे का । उसके बाद का । अवकृष्ट ।
तदा (अव्य०) १ तब । उस समय । २ उस दशा में ।—मुख, (वि०) आरम्भ किया हुआ । प्रारम्भ किया हुआ ।—मुखं, (न०) आरम्भ । प्रारम्भ ।
तदात्वं (न०) उस समय में । वर्तमान समय ।
तदानीम् (अव्य०) तब । उस समय ।
तदानींतन (वि०) उस समय का । समकालीन ।

तदीय (वि०) उसका । उनका ।

तद्वत् (वि०) उसके समान । समानता से ।

तन्, (धा० उभय०) [तनोति,—तनुते, तत, । तन्यते. तायते । तितंसति, तितांसति, तितनिषति] १ फैलाना । पसारना । लंबा करना । २ ढकना । परिपूर्ण करना । ३ पूरा करना । ४ रचना करना । लिखना । ५ झुकाना (धनुष को)

तनयः (पु०) १ पुत्र । २ नर औलाद ।

तनया (स्त्री०) लड़की । पुत्री ।

तनिमन् (पु०) छुटाई । सूक्ष्मता । पतलापन ।

तनु (वि०) [स्त्री०—तनु, तन्वी] १ पतला । दुबला । लदा हुआ । २ कोमल । मुलायम । ३ मिहीन । ४ छोटा । वोना । कम । थोड़ा । परिमित । ५ तुच्छ । ६ छिछला । पायाव (नदी) । (स्त्री०) १ शरीर । देह । २ (वाहिरी) रूप । आकार । ३ स्वभाव । ४ चर्म । चाम ।—अङ्ग, (वि०) दुबला पतला । कोमल ।—अङ्गी, (स्त्री०) दुबली पतली स्त्री । नज़ाकत वाली औरत ।—कूपः, (पु०) रोमों के छेद ।—छदः, (पु०) कवच । जरहवक्खतर ।—जः, (पु०) पुत्र ।—जा, (स्त्री०) पुत्री ।—त्यज्, (वि०) १ अपने प्राणों को खतरे में डालने वाला । मरने वाला ।—त्याग, (वि०) थोड़ा थोड़ा खर्च करने वाला । कजूस ।—त्रं,—त्राणं, (न०) कवच ।—भवः, (पु०) पुत्र ।—भवा, (स्त्री०) पुत्री ।—भस्त्रा, (स्त्री०) नाक ।—भृत्, (पु०) जीवधारी । प्राणधारी ।—मध्य, (वि०) पतली कमर वाला ।—रसः, (पु०) पसीना । पसेव ।—रुह, रुहं, (न०) शरीर के रोम ।—वारं, (न०) कवच ।—व्रणः, (पु०) मुहासे ।—सञ्चारिणी, (स्त्री०) दस वर्ष की उम्र की लड़की । युवती स्त्री ।—सरः, (पु०) पसीना ।—ह्रदः, (पु०) गुदा । मलद्वार ।

तनुल (वि०) फैला हुआ । बढ़ा हुआ ।

तनुस् (न०) शरीर ।

तनू (स्त्री०) शरीर ।—ऊद्भवः,—जः, (पु०) पुत्र ।—ऊद्भवा,—जा, (स्त्री०) पुत्री ।—नपं, (न०) घी ।—नपात्, (पु०) आग ।—रुहं, (न०) १रोम । लोम (पु० भी होता है) । २ पर ।—रुहः, (पु०) पुत्र ।

तंतिः } (स्त्री०) १ रेखा । वृत्तांश की सरल रेखा ।
तन्तिः } डोरी । २ पंक्ति । अवली ।—पालः, (पु०) गौओं की हेड़ों का रखवाला । २ विराट् राज के यहाँ रहते समय सहदेव ने अपना बनावटी नाम तन्तिपाल ही रखा था ।

तंतुः } (पु०) १ डोरा । सूत । तार । डोरी । धारी ।
तन्तुः } २ मकड़ी का जाला । ३ तांत । ४ सन्तान । औलाद । जाति । ५ जलजन्तु विशेष । ६ परब्रह्म ।—कीटः, (पु०) रेशम का कीड़ा ।—नागः, (पु०) वृहद् जलजन्तु विशेष । निर्यासः, (पु०) वृक्ष विशेष ।—नाभः, (पु०) मकड़ी ।—भः, (पु०) १ राई के दाने । २ बछड़ा ।—वाद्यं, (न०) बाजा जिसमें तार या डोरी लगी हों ।—वानं, (न०) बुनावट ।—वापः, (पु०) १ जुलाहा । कोरी । २ करघा । ३ बुनाई ।—विग्रहा, (स्त्री०) केला ।—शाला, (स्त्री०) कपड़ा विनने का घर ।—सन्तत, (वि०) विना हुआ । सिला हुआ ।—सारः, (पु०) सुपारी का वृक्ष ।

तंतुकः } (पु०) राई के दाने ।
तन्तुकः }

तंतुनः, तन्तुनः } (पु०) जलजन्तु विशेष । शार्क
तंतुणः, तन्तुणः } मत्स्य ।

तंतुरं, तन्तुरं } (न०) कमलनाल का रेशा ।
तंतुलं, तन्तुलं }

तंत्र् } (धा० उभय०) [तंत्रयति;—तंत्रयते,—
तन्त्र् } तंत्रित] १ संयम में करना । शासन करना । हुकूमत करना । २ परवरिश करना । पालन पोषण करना ।

तंत्रं } (न०) १करघा । २ सूत । ३ ताना । ४ वंश ।
तन्त्रम् } ५ अविच्छिन्न (वंश) परंपरा । ६ कर्मकाण्ड पद्धति । ७ मुख्य विषय । ८ सिद्धान्त । नियम । कल्पना । विज्ञान । ७ परतंत्रता । पराधीनता । १० विज्ञान शास्त्र । ११ अध्याय । पर्व । १२ तंत्र शास्त्र । १३ मंत्र तंत्र । १४ मुख्य या प्रधान तंत्र । १५ दवाई । १६ शपथ । १७ पोशाक । १८ किसी कार्य के करने की ठीक ठीक पद्धति । १६ राजकीय परिवार । दरबारी । २० प्रान्त । प्रदेश ।

अधिकार। २१ राज्य। शासन। हुकूमत। २२ सेना। २३ ढेर। समूह। २४ घर। २५ सजावट। शृङ्गार। २६ धन सम्पत्ति। २७ आल्हाद।—वापः,—वाप, (न०) १ (कपड़े) बिनना। २ करघा।—वायः, (पु०) १ मकड़ी। २ जुलाहा। कोरी।

तंत्रकः, तन्त्रकः (पु०) कोरा कपड़ा।

तंत्रणं, तन्त्रणम् (न०) हुकूमत कायम रखना। शान्ति बनाये रखना।

तंत्रिः, तन्त्रिः, तंत्री, तन्त्री (स्त्री०) १ डोरी। डोर। २ रोदा। ३ वीणा के तार। ४ नसें। ५ पूँछ।

तंद्रा, तन्द्रा (स्त्री०) १ शिथिलता। थकावट। २ औंघाई। सुस्ती।

तंद्रालु, तन्द्रालु (वि०) १ थका हुआ। २ निद्रालु। सोने की इच्छा रखने वाला।

तन्द्रीः, तन्द्रीः, तंद्री, तन्द्री (स्त्री०) औंघाई। सुस्ती।

तन्मय (वि०) उसीमें निवेशित चित्त वाला। उसी में लगा हुआ। उसीमें लीन हो जाने वाला।

तन्वी (स्त्री०) कृशाङ्गी। कोमलाङ्गी।

तप् (धा० आत्म०) [तपति—तप्त] १ चमकना। जलना। गर्माना। तपना। गर्मी पैदा करना। सन्तप्त होना। तपस्या करना। २ गर्म करना। जलाना। चोटिल करना। नुकसान पहुँचाना। ख़राब करना।

तप (वि०) १ गर्म। उष्ण। जलता हुआ। २ सन्तापदायी। दुःखदायी।—अत्ययः,—अन्तः (पु०) ग्रीष्म ऋतु का अवसान और वर्षा ऋतु का आरम्भ। [४ तपस्या।

तपः (पु०) १ गर्मी। आग। २ सूर्य। ३ ग्रीष्म ऋतु।

तपती (स्त्री०) तापती नदी।

तपनः (पु०) १ सूर्य। २ ग्रीष्म ऋतु। २ सूर्यकान्त मणि। ४ नरक विशेष। ५ शिव। ६ मदार या आक का पौधा।—आत्मजः,—तनयः (पु०) यम। कर्ण। सुग्रीव।—आत्मज,—तनया (स्त्री०) यमुना। गोदावरी।—इष्टं, (न०) ताँबा।—उपलः,—मणिः, (पु०) सूर्यकान्ति मणि।—छदः, (पु०) सूर्यमुखी।

तपनी (स्त्री०) गोदावरी या तापती नदी।

तपनीयं (न०) सुवर्ण। सोना।

तपस् (न०) १ उष्णता। गर्मी। आग २ पीड़ा। कष्ट। ३ तप। धार्मिक अनुष्ठान। ४ ध्यान। आलोचन। ५ पुण्यकर्म। ६ अपने वर्ण या आश्रम का शास्त्र विहित कर्मानुष्ठान। ७ जनलोक के ऊपर का लोक। (पु०) १ माघ मास। (पु० न०) शिशिरऋतु। २ हेमन्त ऋतु। ३ ग्रीष्म ऋतु।—अनुभाव.. (पु०) धार्मिक कर्मानुष्ठान का प्रभाव।—अवटः, (पु०) ब्रह्मावर्त प्रदेश।—क्लेशः, (पु०) तपस्या के कष्ट।—चरणं,—चर्या, (स्त्री०) तपस्या।—तक्षः, (पु०) इन्द्र।—धनः, (पु०) तपस्वी। संन्यासी।—निधिः, (पु०) तपस्वी। संन्यासी।—प्रभावः, (पु०)—बलं, (न०) तपस्या द्वारा उपार्जित शक्ति।—राशिः, (पु०) संन्यासी।—लोकः, (पु०) जनलोक के ऊपर का लोक।—वनं, (न०) वन, जहाँ तपस्वी तप करें।—वृद्ध, (वि०) बहुत तप कर चुकने वाला।—विशेषः, (पु०) सर्वोत्कृष्ट भक्ति। प्रधान धर्मानुष्ठान।—स्थली, (स्त्री०) काशी।

तपसः (पु०) १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ पक्षी।

तपस्यः (पु०) फाल्गुण मास।

तपस्या (वि०) तप। व्रतचर्या।

तपस्विन् (वि०) १ तपस्वी। २ बापुरा। साहाय्यहीन। दयापात्र। (पु०) तपस्वी।—पत्रं, (न०) सूर्यमुखी का फूल।

तप्त (व० कृ०) १ गर्माया हुआ। जला हुआ। २ अंगारे की तरह लाल। अति गर्म। ३ पिघला हुआ। ४ सन्तप्त। पीडित। ५ तपस्या करने वाला। काञ्चनम्, (न०) सोना।—कृच्छ्रं, (न०) तप विशेष। व्रतचर्या विशेष।—रूपकं, (न०) विशुद्ध चाँदी।

तम् (धा० परस्मै०) [ताम्यति, तांत] १ (गला) घोंटना। २ थक जाना। शान्त होना। ३ मन में सन्तप्त होना। विकल होना।

तमं (न०) १ अन्धकार। २ पैर की नोंक।

तमः (पु०) १ राहु। २ तमाल वृक्ष।

तमस् (न०) अन्धकार । २ नरक का अंधकार । ३ भ्रम । ४ तमोगुण । ५ क्लेश । दुःख । ६ पाप (पु० न०) राहु ।—अपह, (पु० वि०) भ्रम दूर करने वाला । अज्ञान हटाने वाला ।—अपहः; (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि ।—काण्डः, (पु०)—काण्डं, (न०) घोर या गाढ़ अन्धकार ।—गुणः, (पु०) तमोगुण ।—घ्नः, (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्र । ३ अग्नि । ४ विष्णु । ५ शिव । ६ ज्ञान । ७ बुद्धदेव ।—ज्योतिस्, (पु०) जुगनू । खद्योत ।—ततिः (पु०) अन्धकार छाने वाला । —नुदः, (पु०) १ नक्षत्र । २ सूर्य । ३ चन्द्रमा । ४ अग्नि । ५ दीपक । —नुदः, (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा ।—भिद्, —मणिः, (पु०) जुगनू ।—विकारः, (पु०) बीमारी । —हन्,—हर, (वि०) अन्धकार दूर करने वाला । (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा ।

तमसः (पु०) १ अन्धकार । २ कूप ।

तमस्विनी, तमा } (स्त्री०) रात । रजनी ।

तमालः (पु०) १ वृत्त विशेष जिसकी छाल बड़ी काली होती है । २ माथे पर लगाने का साम्प्रदायिक चिन्ह या तिलक विशेष । ३ तलवार । खाँड़ा ।—पत्र, (न०) १ तिलक विशेष । २ तमाखू ।

तमिः, तमी } (स्त्री०) १ रात, विशेष कर कृष्णपक्ष की । २ मूर्छा । बेहोशी । ३ हल्दी ।

तमिस्र (वि०) अंधियारा । कृष्ण । काला ।

तमिस्रं (न०) १ अंधियारी । अन्धकार । २ भ्रम । ३ क्रोध ।—पक्षः, (पु०) कृष्णपक्ष ।

तमिस्रा (स्त्री०) १ कृष्ण पक्ष की रात । २ प्रगाढ़ अन्धकार ।

तमोमयः (पु०) राहु ।

तंबा, तम्बा, तंबिका, तम्बिका } (स्त्री०) गौ । गाय ।

तय् (धा० आ०) [तयते] १ चलना । जाना । २ रक्षा करना ।

तरः (पु०) १ अनुप्रस्थ-गमन । चौराहा । मार्ग । २ भाड़ा । ३ सड़क । ४ उतारा ।—पण्यम्, (न०) भाड़ा ।—स्थानं, (न०) घाट ।

तरक्षः, तरक्षुः } (पु०) सेई । जन्तु जिसके बदन में काँटे होते हैं ।

तरंगः, तरङ्गः } (पु०) १ लहर । २ (ग्रन्थ का) अध्याय । ३ फलांग । ४ वस्त्र ।

तरंगिणी, तरङ्गिणी } (स्त्री०) नदी ।

तरंगित (न०) १ तरंगों वाली । २ बाढ़ । ३ शङ्कित । त्रस्त ।

तरणं (न०) १ पार करना । २ विजय । जीत । ३ डाँड ।

तरणः (पु०) १ नाव । बेड़ा । २ स्वर्ग ।

तरणिः (पु०) १ सूर्य । २ प्रकाश की किरण ।

तरणिः, तरणी } (स्त्री०) नाव । बेड़ा । घन्नौती ।—रत्नं, (न०) लाल ।

तरंड, तरण्डः (पु०), तरंडं, तरण्डम् (न०) } १ नाव । २ बेड़ा । घन्नौती । ३ डाँड ।—पादा, (स्त्री०) एक प्रकार की नाव ।

तरंडी तरण्डी, तरन्ड, तरंती, तरन्ती } (स्त्री०) नाव । बेड़ा । घन्नौती ।

तरंत, तरन्त } (पु०) १ समुद्र । २ प्रचण्ड जलवृष्टि । ३ मेंढक । ४ दैत्य या राक्षस ।

तरल (वि०) १ थरथराने वाला । काँपने वाला । २ चचल । अदृढ़ । विनश्वर । ३ उत्तम । चमकीला । चमकदार । ४ पनीला । ५ लंपट ।

तरलः (पु०) १ हार के बीचों बीच की मुख्यमणि । २ हार । ३ समतल सतह । ४ तली । गहराई । ५ हीरा । ६ लोहा ।

तरला (स्त्री०) माँड । उबले हुए चाँवलों का जल विशेष । लस्सो ।

तरलयति (क्रि०) हिलाना । इधर उधर घुमाना ।

तरलायते (क्रि०) काँपना । हिलना । इधर उधर घूमना ।

तरलयित (न०) बड़ी लहर ।

तरवारिः (पु०) तलवार । खड्ग ।

तरस् (न०) १ रफ्तार । वेग । २ विक्रम । शक्ति । स्फूर्ति । २ तीर । किनारा । चौराहा । ३ बेड़ा । घन्नौटी ।

तरसम् (न०) गोश्त । मांस ।

तरसानः (पु०) नाव ।

तरस्विन (वि०) [स्त्री०—तरस्विनी] १ तेज़। फुर्तीला। २ मज़बूत। शक्तिमान। साहसी। बलवान। १ हल्कारा। २ वीर। ३ पवन। वायु। ४ गरुड।

तरांधुः, तरान्धुः, तरालुः (पु०) बड़ी और चपटी तली की नाव।

तरिः, तरी (स्त्री०) १ नाव। २ कपड़े रखने का संदूक। ३ कपड़े का छोर या किनारा।—रथः, (पु०) खेपणी। डाँड।

तरिक, तरिकिन् (पु०) मल्लाह। नाव खेवने वाला।

तरिका (स्त्री०), तरित्रं (न०), तरित्री (स्त्री०), तरिणी (स्त्री०) नाव। पोत। जहाज़।

तरीषः (पु०) १ नाव। बेड़ा। २ समुद्र। ३ योग्य पुरुष। ४ स्वर्ग। ५ कार्य। व्यापार। पेशा।

तरुः (पु०) वृक्ष।—खण्डः, (पु०),—खण्डं, (न०),—षण्डः, (पु०), षण्डम्, (न०) वृक्ष समूह।—जीवनम्, (न०) पेड़ की जड़।—तलं, (न०) वृक्ष की जड़ के समीप की भूमि।—नखः, (पु०) काँटा।—मृगः, (पु०) वानर।—रागः, (पु०) १ कली या फूल। २ अँखुआ। कल्ला। अङ्कुर।—राजः, (पु०) तालवृक्ष।—रूहा, (स्त्री०) वह वृक्ष जो दूसरे वृक्ष पर जमे या फैले।—विलासिनी, (स्त्री०) नवमल्लिका लता।—शायिन्, (पु०) पक्षी।

तरुण (वि०) १ जवान। युवा। २ छोटा। हाल का पैदा हुआ। कोमल। मुलायम। हाल ही का उगा हुआ। ३ नवीन। ताज़ा। टटका। ४ ज़िन्दादिल।—ज्वर, (पु०) वह ज्वर जो एक सप्ताह तक न उतरे।—दधि, (न०) पाँच दिन का रखा हुआ दही।—पीतिका, (स्त्री०) इंगुर। विष विशेष।

तरुणः (पु०) युवा पुरुष। जवान आदमी।

तरुणी (स्त्री०) युवती स्त्री। जवान औरत।

तरुण्ड (वि०) वृक्षों का बाहुल्य अथवा वृक्षों से परिपूर्ण।

तर्क् (धा० उभय०) [तर्कयति—तर्कयते, तर्कित] १कल्पना करना। अनुमान करना। सन्देह करना। विश्वास करना। २ परिणाम पर पहुँचना। ३ बहस करना। विचारना। ४ सोचना। इरादा करना। ५ खोजना। ढूँढना। ६ चमकना। ७ बोलना।

तर्कः (पु०) १ कल्पना। अनुमान। कयास। अटकल। २ युक्ति। वादविवाद। ३ सन्देह। ४ न्याय शास्त्र। तर्क शास्त्र। ५ आँकाक्षा। ६ कारण। हेतु।—विद्या, (स्त्री०) न्याय शास्त्र।

तर्ककः (पु०) १ उम्मेदवार। जिज्ञासु। प्रार्थी। २ न्याय शास्त्र का जानने वाला।

तर्कुः (पु० स्त्री०) तकुआ जिस पर चर्खें में सूत लपिटता जाता है।—पिण्डः,-पीठी, (न०) तकुआ के निचले छोर पर का गोला।

तर्क्षुः (पु०) सेई। जन्तु विशेष।

तर्क्ष्यः (पु०) शोरा।

तर्ज् (धा० परस्मै०) [तर्जति, तर्जयति—तर्जयते, तर्जित] १ डरवाना। भयभीत करना। २ फटकारना। गरियाना। डाँटना। भर्त्सना करना। कलङ्क लगाना। ३ चिढ़ाना। चिंगाना।

तर्जनं (न०), तर्जना (स्त्री०) १ भयभीत करना। डरवाना। २ भर्त्सना।

तर्जनी (स्त्री०) अँगूठे के पास की अँगुली।

तर्णः, तर्णक (पु०) बछड़ा। बछवा।

तर्णिः (पु०) १ बेड़ा। २ सूर्य।

तर्द् (धा० परस्मै०) [तर्दति] १ घायल करना। चोटिल करना। २ वध करना। काट गिराना।

तर्पणम् (न०) १ प्रसन्न करना। सन्तुष्ट करना। २ सन्तोष। प्रसन्नता। ३ आन्हिक पाँच कर्त्तव्यानुष्ठानों में से एक। पितृयज्ञ विशेष। ४ समिधा। हवन के लिये इंधन।—इच्छुः, (पु०) भीष्म पितामह की उपाधि।

तर्मन् (न०) यज्ञीयस्तम्भ का शिरोभाग।

तर्षः (पु०) १ प्यास। २ कामना। इच्छा। ३ समुद्र। सागर। ४ नाव। ५ सूर्य।

तर्षणम् (न०) प्यास। तृषा।

तातनः (पु०) खञ्जन पक्षी।

तातलः (पु०) १ रोग। २ लोहे का डंडा। लोहे की तेज़ नोक की कील। ३ रसोई बनाना। पकाना। ४ गर्मी।

तातिः (पु०) औलाद। (स्त्री०) सातत्य। पारम्पर्य। वंशानुक्रम।

तात्कालिक (वि०) [स्त्री०—तात्कालिकी] १ समकालीन। २ समीप का। उसी समय का।

तात्पर्यम् (न०) आशय। निष्कर्ष। अभिप्राय।

तात्विक (वि०) सत्य। असली। वास्तविक। परमावश्यक।

तादात्म्यम् (न०) एक ही स्वभाव का। समान।

तादृत्त (वि०) [स्त्री०—तादृत्ती] } वैसा।
तादृश् (वि०) [स्त्री०—तादृशी] } उसकी तरह।

तान (न०) १ तनाव। फैलाव। २ ज्ञानेन्द्रिय।

तानः (पु०) १ सूत। रेशा। २ (गान में) तान।

तानव (न०) दुबलापन। स्वल्पता।

तानूरः (पु०) भँवर।

तांत } (वि०) १ थका हुआ। शिथिल। परिश्रान्त।
तान्त } पीडित। सन्तप्त। २ मुर्झाया हुआ। कुम्हलाया हुआ।

तांतवं } (न०) १ कातना। बिनना। २ मकड़ी
तान्तवम् } का जाला। ३ बुना हुआ कपड़ा।

तांत्रिक } (वि०) [स्त्री०—तान्त्रिकी] १ किसी
तान्त्रिक } कला या सिद्धान्त में भली भाँति सुपरिचित। २ तंत्र सम्बन्धी। ३ तन्त्रों में सुपठित।

तांत्रिकः }
तान्त्रिकः } (पु०) तन्त्रों को मानने वाला।

तापः (पु०) १ गर्मी। भभक। धधक। २ पीड़ा। कष्ट। ३ शोक। दुःख।—त्रयं, (न०) तीन प्रकार के कष्ट (यथा आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक)—हर, (वि०) शान्तिदायी।

तापनः (पु०) १ सूर्य। २ ग्रीष्मऋतु। ३ सूर्यकान्तिमणि। ४ कामदेव के बाणों में से एक बाण का नाम।

तापनम् (न०) १ जलन। २ कष्ट। ३ दण्ड।

तापस (वि०) [स्त्री०—तापसी] १ तपस्या या तपस्वी सम्बन्धी। २ साधु। धर्मनिष्ठ। भक्ति पूर्ण।

तापसः (पु०) [स्त्री०—तापसी] साधु। संन्यासी। तपस्वी।—इष्टा, (स्त्री०) द्राक्षा। दाख। अंगूर।—तरुः,—द्रुमः, (पु०) इङ्गुदी वृक्ष।

तापस्यं (न०) तपस्या। व्रतचर्य्या।

तापिच्छः (पु०) तमालवृक्ष। अथवा इस वृक्ष के [पुष्प।

तापी (स्त्री०) १ तापती नदी। २ यमुना नदी।

तामः (पु०) १ भयप्रद वस्तु। २ कसूर। अपराध। दोष। भूल। त्रुटि। ३ चिन्ता। कष्ट। ४ अभिलाषा।

तामरम् (न०) १ जल। २ मक्खन।

तामरसं (न०) १ लालकमल। २ सोना। ताबा।

तामरसी (स्त्री०) तालाब जिसमें कमल हो।

तामस (वि०) [स्त्री०—तामसी] १ कृष्ण। काला। २ तमोगुणी। ३ अज्ञानी। ४ दुष्ट।

तामसं (न०) अन्धकार।

तामसः (पु०) १ दुष्टजन। अधमजन। अनिद। २ साँप। ३ घुग्घू। उल्लू।

तामसी (स्त्री०) १ कृष्णपक्ष की रात। २ निद्रा। ३ दुर्गा की उपाधि।

तामसिक (वि०) [स्त्री०—तामसिकी] अँधियारा। तमस् सम्बन्धी। तमस् से उत्पन्न या निकला हुआ।

तामिस्रः (पु०) नरक विशेष।

तांबूल } (न०) पान।—करंकः,—पेटिका,
ताम्बूलम् } (स्त्री०) पानदान। बिल्हरा।—दः,—धरः,—वाहकः, (पु०) नौकर जो अपने मालिक के साथ पानदान लिये हुए डोले और जहाँ ज़रूरत पड़े वहाँ पान खिलावे।—वल्ली, (स्त्री०) पान की बेल।

तांबूलिकः }
ताम्बूलिकः } (पु०) तबोली।

तांबूली }
ताम्बूली } (स्त्री०) पान का पौधा।

ताम्र (वि०) तांबे जैसे लाल रंग का।—अक्षः, (पु०) १ काक। २ कोयल।—अर्धः, (पु०) काँसा।

फूल ।—अश्मन्, (पु०) पद्मरागमणि ।—उपजीविन् (पु०) ताँबे की चीज़े बनाने वाला ।—ओष्ठः, (पु०) लाल ओंठों वाला । —कारः,—कुट्टः, (पु०) कसेरा । ठठेरा । —कृमिः, (पु०) इन्द्रगोप कीट । वीरबहूटी ।—गर्भम्, (न०) तूतिया ।—चूडः, (पु०) मुर्गा ।—त्रपुजं, (न०) पीतल । द्रुः, (पु०) लालचन्दन ।—पट्टः, (पु०)–पत्रं, (न०) ताम्रपत्र जिन पर दान दी हुई वस्तुओं के नाम दानदाता का नाम और दानग्रहीता का नाम खोदा जाता था । -पर्णी, (स्त्री) मलयाचल से निकलने वाली एक नदी का नाम ।—पल्लवः, (पु०) अशोकवृक्ष ।—लिप्तः, (पु०) एक प्रदेश का नाम ।—लिप्ताः, (पु०) (बहु०) ताम्रलिप्त देश का राजा या इस देश के अधिवासी ।—वृक्षः, (पु०) चन्दन विशेष ।

ताम्रिक (वि०) [स्त्री० -ताम्रिकी] ताँबे का बना हुआ ।

ताम्रिकः (पु०) ठठेरा । कसेरा ।

ताय् (धा० आत्म०) [तायते, तायित] १ फैलाना । बढ़ाना । अविच्छिन्न पंक्ति में आगे बढ़ना । २ २ रक्षा करना । बचाना ।

तार (वि०) १ ऊँचा । २ उच्चस्वर । ३ चमकदार चमकीला । ४ उत्तम । श्रेष्ठ । ५स्वादिष्ट ।—अभ्रः, —अरिः, (पु०) लोहभस्म जो दवा के काम में आवे ।—पतनं, (न०) नक्षत्रपात । उल्कापात । —पुष्पः, (पु०) कुन्द या चमेली की बेल । —वायुः, (पु०) सन् सन् करती हुई हवा । —शुद्धिकरं, (न०) सीसा । सीसक ।—स्वर, (वि०) खर आवाज़ वाला ।—हार, (पु०) १ मोती का हार । २ दमकता हुआ हार ।

तारः (पु०) १ नदीतट । २ मोती की आब । ३ सुन्दर या बड़ा मोती । ४ उच्चस्वर ।

तारं (न०) } १ ग्रह या नक्षत्र । २ कपूर । (न०)
तारः (पु०) } १ चाँदी । २ आँख की पुतली (यह पुल्लिङ्ग भी है) । ३ मोती । (यह स्त्री-लिङ्ग भी है) ।

तारक (वि०) [स्त्री०—तारिका] १ ले जाने वाला । पारकरैया । २ रक्षक । बचाने वाला । उद्धारक ।

तारकः (पु०) १ खिवैया । राहवतैया । २ बचाने वाला । छुड़ाने वाला । ३ एक दानव जिसे कार्तिकेय ने मारा था । (पु० न०) बेड़ा । बञौटी । (न०) १ आँख की पुतली । २ आँख ।—अरिः, —जित्, (पु०) कार्तिकेय का नाम ।

तारका (स्त्री०) १ सितारा । नक्षत्र । २ धूमकेतु । ३ आँख की पुतली ।

तारकिणी (स्त्री०) रात जिसमें आकाश के तारे देख पड़े ।

तारकित (वि०) नक्षत्रों वाला । नक्षत्र विजड़ित ।

तारणः (पु०) नौका । बेड़ा ।

तारणं (न०) १ पार होना । २ बचाना । छुड़ाना ।

तारणिः } (पु०) बेड़ा । नाव ।
तारणी }

तारतम्यं (न०) न्यूनाधिक्य । कमज्यादा । थोड़ा बहुत । भेद । अन्तर ।

तारलः (पु०) लंपट मनुष्य । कामुक ।

तारा (स्त्री०) १ तारा या नक्षत्र । २ स्थिर नक्षत्र । ३ आँख की पुतली । ४ मोती । ५ वालि की स्त्री का नाम । ६ बृहस्पति की स्त्री का नाम । ७ हरिश्चन्द्र राजा की रानी का नाम ।—अधिपः, —आपीडः,—पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।—पथः, (पु०) आकाशमण्डल । आकाश ।—भूषा, (स्त्री०) रात ।—मण्डलं, (न०) १ खगोल । २ आँख की पुतली ।—मृगः, (पु०) मृगशिरस् नक्षत्र ।

तारिकं (न०) भाड़ा । किराया । उतराई ।

तारुण्यम् (न०) १ जवानी । युवावस्था । २ ताज़गी । टटकापन ।

तारेयः (पु०) १ बुधग्रह । २ वालिपुत्र अङ्गद की उपाधि ।

तार्किकः (पु०) १ न्यायदर्शनवेत्ता । २ विद्वान् ।

तार्क्ष्यः (पु०) १ गरुड । २ अरुण । ३ गाड़ी । ४ घोड़ा । ५ सर्प । ६ पक्षी ।—ध्वजः, (पु०) विष्णु ।—नायकः, (पु०) गरुड ।

तार्तीय (वि०) तीसरा।

तार्तीयीक (वि०) तीसरा।

तालः (पु०) १ तालवृक्ष। २ ताली बजाना। ३ फड़फड़ाना। ४ हाथी के कानों की फड़फड़ाहट। ५ सङ्गीत की प्रक्रिया विशेष। ६ मँजीरा। ७ हथेली। ८ ताला। चटख़नी। ९ तलवार की मूँठ।—अङ्कः, (पु०) १ बलराम। २ तालपत्र जो लिखने के काम आते हैं। ३ पुस्तक। ४ आरा।—अवचरः, (पु०) नचैया। नाचने वाला। नाटक का पात्र।—केतुः, (पु०) भीष्मपितामह।—क्षीरकं, (न०) —गर्भः, (पु०) ताड़ वृक्ष का रस।—ध्वजः,—भृत्, (पु०) १ बलराम का नाम। २ कर्णभूषण विशेष।—मर्दलः, (पु०) बाजा विशेष। यंत्रं, (न०) जर्राही का औज़ार।—रेचनकः, (पु०) नृत्यकरने वाला। नाटक खेलने वाला।—लक्षणः, (पु०) बलराम।—वनं, (न०) वृक्षों का समूह। उपवन।—वृन्तं, (न०) पंखा।

तालं (न०) १ ताड़ वृक्ष का फल। २ हड़ताल।

तालकं (न०) १ हड़ताल। २ चटखनी। ताला।

तालकः (पु०) कर्णभूषण विशेष।

तालव्य (वि०) तालू से सम्बन्ध रखने वाला।—वर्णाः, (पु०) वे अक्षर जो तालु की सहायता से बोले जाँय। ऐसे अक्षर ये है— इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ और य्

तालिकः (पु०) १ हथेली। २ ताली।

तालितं (न०) १ रंगीन कपड़ा। २ डोरा। डोरी।

ताली (स्त्री०) १ पहाड़ी ताड़ के पेड़। २ ताड़ी वृक्ष। ३ महकदार मिट्टी। ४ एक प्रकार की कुंजी।—वनं, (न०) ताड़ के वृक्षों का झुरमुट।

तालु (न०) तालू।—जिह्व, (पु०) मगर। नक्र।

तालूरः (पु०) भँवर। ज्वार। बाढ़।

तालूषकं (न०) तालू।

तावक (वि०)
तावकीन (वि०) } तेरा। तुम्हारा।

तावत्
तावतिक } (वि०) इतना। उतना।

तावत्क (वि०) इतने मूल्य का। इतने दामों का।

तावुरि (पु०) वृष राशि

तिक्त (वि०) तीता। कडुआ।—गन्धा, (स्त्री०) राई।—धातुः, (पु०) पित्त।—फलः (पु०) —मरिच, (पु०) निर्मली।—सारः, (पु०) खदिर वृक्ष।

तिक्तः (पु०) १ कडुआपन। कडुआ स्वाद। २ कुटज वृक्ष। ३ तीतापन। चरपराहट। ४ गन्धि।

तिग्म (वि०) १ तीव्र। पैना। नौंकदार (हथियार)। २ उग्र। प्रचण्ड।। भभकता हुआ। जलता हुआ ३ तीता। कडुआ। ४ घोर। क्रोधी। अंशुः, (पु०) १ सूर्य। २ अग्नि। ३ शिव।—करः, —दीधितिः,—रश्मिः,(पु०) सूर्य।

तिग्मम् (न०) १ गर्मी। २ तीतापन।

तिज् (धा० आत्म०) [तितिक्षते तितिक्षिते] सहन करना। सहना। गवारा करना।

तितउः (पु०) चलनी। (न०) छाता।

तितिक्षा (स्त्री०) १ सहनशीलता। सब्र। त्याग।

तितिक्षु (वि०) धैर्यवान। सहनशील।

तितिभः (पु०) १ जुगनू। खद्योत। २ इन्द्रगोप। बीरबहूटी।

तितिरः
तित्तिरः } (पु०) तीतर विशेष।

तित्तिरिः (पु०) १ तीतर। २ एक ऋषि का नाम जिन्होंने कृष्णयजुर्वेद को सब से प्रथम पढ़ाया।

तिथ (पु०) १ आग। २ प्रेम। ३ समय। ४वर्षा या शरद ऋतु।

तिथि (पु० स्त्री०) १ चान्द्र दिवस। २ पन्द्रह की संख्या।—क्षयः, (पु०) अमावास्या तिथि का ह्रास।—पत्री, (स्त्री०) पञ्चाङ्ग। पत्रा।

तिनिशः (पु०) वृक्ष विशेष।

तिंतिडः तिन्तिडः (पु०)
तिंतिडी, तिन्तिडी (स्त्री०)
तिंतिडिका, तिन्तिडिका (स्त्री०)
तिंतिडीकः, तिन्तिडीकः (पु०) } इमली का वृक्ष। इमली।

तिंदुः, तिन्दुः
तिंदुकः, तिन्दुकः
तिंदुलः, तिन्दुलः } (पु०) तेंदू का पेड़।

तिम् (धा० पर०) [तेमति, तिमित] नम करना। गीला करना।

तिमि (पु०) १ समुद्र। २ मत्स्यविशेष।—कोपः, (पु०) समुद्र।—ध्वजः (पु०) एक दैत्य जिसे इन्द्र ने महाराज दशरथ की सहायता से मारा था।

तिमिंगिलः } (पु०) एक विशाल मत्स्य जो तिमि-
तिमिङ्गिलः } मत्स्य को भी खा डालता है।

तिमित (वि०) १ गतिहीन। स्थिर। अचल। २ गीला। नम। तर।

तिमिर (वि०) काला। अन्धकारमय।

तिमिरः (पु०) } १ अंधकार। २ अन्धापन। ३
तिमिरम् (न०) } लोहे का मोर्चा।—अरिः,—नुद्, (पु०) -रिपुः, (पु०) सूर्य।

तिरश्ची (स्त्री०) किसी जानवर, पक्षी या जन्तु की मादा।

तिरश्चीन (वि०) टेढ़ा। तिरछा।

तिरस् (अव्यया०) १ तिरछेपन से। टेढ़ेपन से। २ विना। रहित। ३ गुप्तरीत्या। अदृश्य रूप से।

तिरयति (क्रि०) १ छिपाना। गुप्त रखना। २ रोकना। अड़चन डालना। बाधा देना। ३ जीत लेना।

तिर्यक (अव्य०) टेढ़ेपन से।

तिर्यच् (वि०) [तिरश्ची—तिर्यची] १ टेढ़ा। तिरछा। बाँका। २ मुड़ा हुआ। झुका हुआ। (पु० न०) पशु। पक्षी।—अन्तरं (न०) अर्ज़। चौड़ाई।—अयनं, (न०) सूर्य की वार्षिकगति।—ईक्ष, (वि०) भेंडा। ऐंचाताना।—जातिः, (पु०) पशु जाति।—प्रमाणं, (न०) चौड़ाई।—प्रेक्षणं, (न०) कनखियों देखना। तिरछी आँख कर देखना।—योनिः, (स्त्री) पशु पक्षी जाति।—स्रोतस्, (पु०) पशु सृष्टि।

तिलः (पु०) १ तिल का पौधा। २ तिल बीज। ३ शरीर पर का तिल या मस्सा। ४ तिल के समान छोटा टुकड़ा।—अम्बु,—उदकं, (न०) तिल मिश्रित जल, जो तर्पण के काम में आता है।—उत्तमा, (स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।—ओदनः, (पु०)—ओदनं (न०) तिल चावल की खीर।—कालकः, (पु०) मस्सा। तिल।—किट्टं,—खलिः,—खली, (स्त्री०) या चूर्णं, (न०) खल जो पशुओं को खिलायी जाती है। तैलं, (न०) तिली का तेल।—पर्णः, (पु०) तारपीन।—पर्णम् (न०) चन्दन।—पर्णी, (स्त्री०) १ चन्दन का वृक्ष। २ तारपीन।—रसः, (पु०) तिली का तेल।—स्नेहः, (पु०) तिली का तेल।—होमः, (पु०) तिल की आहुति।

तिलंतुदः }
तिलुन्तुदः } (पु०) तेली।

तिलशः (अव्य०) अत्यन्त अल्प परिमाण में।

तिल्व (पु०) लोध्र का वृक्ष।

तिलकं (न०) १ मूत्रस्थली। २ फुप्फुस। फेंफड़ा। ३ लवण विशेष।—आश्रयः, (पु०) माथा।

तिलकः (पु०) १ वृक्ष विशेष। २ शरीर पर का छोटा सा काला चिन्ह विशेष। (पु०) मस्तक पर का तिलक या टीका।

तिलका (स्त्री०) गुंज।

तिलित्सः (पु०) बड़ा सर्प।

तिष्ठद्गु (अव्यया०) वह समय जब दूध देने को गौ खड़ी होती है। सन्ध्या के घंटा या डेढ़ घंटे बाद का समय।

तिष्यः (पु०) १ पुष्य नक्षत्र। २७ नक्षत्रों में से आठवाँ नक्षत्र। २ पौष मास।

तिष्यम् (न०) कलियुग।

तीक् (धा० आत्म०) [तीकते] जाना। चलना।

तीक्ष्ण (वि०) १ पैना। तीव्र। २ गर्म। ताता। ३ उग्र। प्रचण्ड। ४ कड़ा। ज़ोरदार। दृढ़ ५ कर्कश। टेढ़ा। ६ कठोर। ७हानिकर। अशुभ। विषैला। ८ कुशाग्र। ९ बुद्धिमान। चतुर। १० डाही। ११ त्यागी। भक्त।—अंशुः, (पु०) १ सूर्य। २ अग्नि।—आयसं (न०) ईस्पात लोहा।—उपायः, (पु०) उग्रसाधन।—कन्दः, (पु०) लहसन।—कर्मन्, (वि०) क्रियाशील। स्पर्धामान्।—दंष्ट्र, (पु०) चीता।—धारः, (पु०) तलवार।—पुष्पं, (न०) लौंग।—पुष्पा, (स्त्री०) १ लौंग का पौधा। २ केतकी का पौधा।—बुद्धि, (वि०) तेज़ अक्ल का। चतुर।—रश्मिः,

(पु०) सूर्य।—रसः, (पु०) १ शोरा। २ विषैला तरल पदार्थ।—लौहं, (न०) ईस्पात।—शूकः, (पु०) जौ।

तीक्ष्णः (पु०) १ शोरा। २ लालमिर्च। ३ कालीमिर्च। ४ राई।

तीक्ष्णं (न०) १ लोहा। २ ईस्पात। ३ गर्मी। तीतापन। ४ युद्ध। ५ विष। ६ मृत्यु। ७ हथियार। ८ समुद्री निमक। ९ शीघ्रता।

तीम् (धा० परस्मै०) [तीम्यति] भींगना। नम होना।

तीरं (न०) १ तट। किनारा। २ हाँशिया। छोर। किनारा।

तीरः (पु०) १ वाण। २ सीसा। ३ टीन। जस्ता।

तीरित (वि०) तै किया हुआ। निर्णीत। साक्षी के अनुसार फैसला किया हुआ।

तीरितम् (न०) किसी कार्य की समाप्ति या अवसान।

तीर्ण (वि०) १ पार किया हुआ। गुज़रा हुआ। २ फैला हुआ। बढ़ा हुआ। ३ सब से आगे निकला हुआ। सर्वोत्तम।

तीर्थम् (न०) १रास्ता। मार्ग। बाट। उतारा। २ घाट। ३ जलस्थान। ४ पवित्रस्थान। ५ द्वारा। ज़रिया। माध्यम। ६ उपाय। ७ पवित्र या पुण्यप्रद व्यक्ति। योग्य पुरुष। प्रतिष्ठा योग्य पदार्थ। उपयुक्त पात्र। ८ गुरु। आचार्य। ९ उद्गम स्थान। १० यज्ञ। ११ सचिव। १२ उपदेश। निर्देश। १३ उपयुक्त स्थान या काल। १४ उपयुक्त या साधारण पद्धति। १५ हाथ के कई भाग जो देव और पितृ कार्य के लिये पवित्र माने जाते हैं। १६ दार्शनिक सिद्धान्त विशेष। १७ स्त्रियों का रज। १८ ब्राह्मण। १९ अग्नि।—उदकम्, (न०) पवित्र जल।—करः, (पु०) १ जैनअर्हत। २ संन्यासी। ३ नवीन दर्शनकार। ४ विष्णु का नाम।—काकः,—ध्वांसः, वायसः, (पु०) लोलुप।—भूत, (वि०) पवित्र। विशुद्ध।—यात्रा, (स्त्री०) पुण्यप्रद स्थानों में गमन।—राजः, (पु०) प्रयाग का नाम।—राजिः,—राजी, (स्त्री०) बनारस। काशी।—वाकः, (पु०) सिर के बाल।—विधि, (स्त्री०) तीर्थ में जाकर वहाँ कर्म विशेष करने की पद्धति।—सेविन्, (वि०) तीर्थयात्री। (पु०) सारस।

तीर्थं (न०) संन्यासियों की एक उपाधि।

तीर्थिकः (पु०) तीर्थयात्री। ब्राह्मण साधु।

तीवरः (पु०) १ समुद्र। २ शिकारी। ३ राजपूतिन की वर्णसङ्कर औलाद।

तीव्र (वि०) १ उग्र। प्रचण्ड। २ गर्म। उष्ण। ३ चमकीला। ४ व्यापक। ५ अनन्त। असीम। ६ भयानक।—आनन्दः, (पु०) शिव जी।—गति, (वि०) तेज़। फुर्तीला।—पौरुषं, (न०) १ दुस्साहस पूर्ण वीरता। २ वीरता।—संवेग, (वि०) १ दृढ़ विचार सम्पन्न। २ अति प्रचण्ड।

तीव्रं (न०) १ उष्णता। गर्मी। २ तट। ३ लोहा।

तु (अव्यया०) १ किन्तु। प्रत्युत। २ और। अब। इस सम्बन्ध में। ४ भेदसूचक भी है।

तुक्खारः, तखारः, तुषारः (पु०) विन्ध्याचल वासी जातियों में से एक जाति के लोगों का नाम।

तुंग, तुङ्ग (वि०) १ ऊँचा। उन्नत। लंबा। प्रधान। २ प्रलंब। ३ मेहराबदार। ४ मुख्य। ५ दृढ़।—बीजः, (पु०) पारा।—भद्रः, (पु०) मदमाता हाथी।—भद्रा, (स्त्री०) एक नदी का नाम जो कृष्णा नदी में गिरती है।—वेणा, (स्त्री०) एक नदी का नाम।—शेखरः, (पु०) पर्वत।

तुंगः, तुङ्गः (पु०) १ ऊँचाई। उठान। २ पर्वत। ३चोटी। ४ बुधग्रह। ५ गैंडा। ६ नारियल का वृक्ष।

तुंगी, तुङ्गी (स्त्री०) १ रात्रि। २ हल्दी।—ईशः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ सूर्य। ३ शिव। ४ कृष्ण।—पतिः, (पु०) चन्द्रमा।

तुच्छ (वि०) १ ख़ाली। रहित। व्यर्थ। हलका। २ छोटा। थोड़ा। न कुछ। ३ त्यक्त। त्यागा हुआ। ४ नीच। कमीना। अकिञ्चित्कर। तिरस्करणीय। निकम्मा। ६ ग़रीब। अभागा। दुखिया।—द्रुः, (पु०) एरण्ड वृक्ष।—धान्यः,—धान्यकः, (पु०) फूस। पुआल।

तुच्छं (न०) भूसी।

तुञ्जः (पु०) इन्द्र का वज्र।

तुट्मः (पु०) मूसा। चूहा।

तुण् (धा० पर०) [तुणति] १झुकाना। टेढ़ा करना। २ धोखा देना। ठगना

तुंडं / तुण्डम् (न०) १ मुख। चेहरा। चोंच। थूथन (शूकर का)। २ हाथी की सूंड। ३ औज़ार की नोंक।

तुंडिः / तुण्डिः (पु०) १ चेहरा। मुख। २ चोंच। (स्त्री०) ढुंडी। नाभि।

तुंडिन् / तुण्डिन् (पु०) शिव के वृषभ का नाम।

तुंडिल / तुण्डिल (वि०) १ वातूली। गप्पी। २ थोंदिल। ३ कटुभाषी।

तुत्थः (पु०) १ अग्नि। २ पत्थर।—अञ्जनं, (न०) आँख में लगाने की दवाई विशेष।

तुत्थं (न०) तूतिया।

तुत्था (स्त्री०) १ छोटी इलायची। २ नील का पौधा।

तुद् (धा० परस्मै०) [तुदति, तुन्न] १ मारना। घायल करना। २ चुभोना। गड़ाना। ३ पीड़ित करना। सताना। दुःख देना।

तुंदं / तुन्दम् (न०) पेट। थोंद।—कूपिका,—कूपी, (स्त्री०) नाभि।—परिमार्ज,—परिमृज्,—मृज, (वि०) काहिल। सुस्त। दीर्घसूत्री।

तुंदवत् / तुन्दवत् (वि०) मौटा। थुंदीला।

तुंदिक, तुन्दिक / तुंदिन्, तुन्दिन् / तुंदिभ, तुन्दिभ / तुंदिल, तुन्दिल (वि०) १ थोंदीला। बड़े पेट का। मटका जैसे पेट वाला। २ अत्यन्त मौटा। ३ भरा हुआ या लदा हुआ।

तुन्न (वि०) १ चोटिल। टकराया हुआ। घायल। २ सताया हुआ। वायः, (पु०) दर्ज़ी।

तुभ् (धा० परस्मै०) [तुभ्यति, तुभ्नाति] चोटिल करना।

तुमुल (वि०) १ शोर गुल मचाने वाला। २ भयानक। क्रोधी। ३ उद्विग्न। व्याकुल। ४ परेशान। घबड़ाया हुआ। (पु० न०) १ कोलाहल। शोरगुल। २ अस्तव्यस्त द्वन्द्वयुद्ध।

तुंवः / तुम्बः (पु०) तूंवी।

तुंवरः / तुम्बरः (पु०) एक गन्धर्व का नाम।

तुंवरं / तुम्बरम् (न०) वाद्ययंत्र विशेष। बाजा।

तुंवा / तुम्बा (स्त्री०) १ तूंवा। २ दुधार गौ।

तुंविः, तुम्बिः / तुंवी, तुम्बी (स्त्री०) तूंवी। तोमड़ी।

तुंवुरुः, तुम्बुरुः / तुंवरुः, तुम्बरुः (पु०) एक गन्धर्व का नाम।

तुरगः (पु०) १ घोड़ा। २ मन। विचार।—आरोहः, (पु०) घुड़सवार।—उपचारकः, (पु०) साईस।—प्रियः, (पु०)—प्रियं, (न०) यव। जौ। ब्रह्मचर्य, (न०) स्त्री के अभाव में विवश हो ब्रह्मचर्य धारण करना।

तुरगिन् (पु०) घुड़सवार।

तुरगी (स्त्री०) घोड़ी।

तुरंगः / तुरङ्गः (पु०) १ घोड़ा।—अरिः, (पु०) भैंसा।—द्विषणी, (स्त्री०) भैंस।—प्रियः,—प्रियं, (न०) यव। जौ।—मेधः, (पु०) अश्वमेध यज्ञ।—यायिन्,—सादिन्, (पु०) घुड़सवार।—वक्त्रः,—वदन, (पु०) किन्नर।—शाला, (स्त्री०) - स्थानम्, (न०) अस्तबल। घुड़साल।—स्कन्धः, (पु०) रिसाला। घुड़सवारों की टोली।

तुरंगं / तुरङ्गम् (न०) मन। विचार।

तुरंगमः / तुरङ्गमः (पु०) घोड़ा।

तुरंगी / तुरङ्गी (स्त्री०) घोड़ी।

तुरायणम् (न०) १ असंग। अनासक्ति। २ यज्ञ विशेष।

तुरासाह (पु०) (कर्त्ता एकवचन तुराषाट् या तुराषाड्] इन्द्र का नाम।

तुरी (स्त्री०) १ जुलाहों का एक प्रकार का औज़ार। ढरकी। नारी। माखो। ३ चित्रकार की कूची।

तुरीय (वि०) चौथा।—वर्णः, (पु०) शूद्र।

तुरीयं (न०) चौथाई। चौथा हिस्सा। चौथा।

तुरुष्कः (पु०) तुर्क लोग।
तुर्य (वि०) चौथा।
तुर्यम् (न०) चौथाई। चौथा हिस्सा।
तुल् (धा० पर०) [तोलति, तोलयति—तोलयते, तुलयति—तुलयते भी] १ तोलना। २ सोचना विचारना। ३ उठाना। ऊँचा करना। ४ पकड़ना। पकड़े रहना। ५ तुलना करना। ६ बराबरी करना। ७ तिरस्कार करना। ८ सन्देह करना। ९ परीक्षा लेना।
तुलनं (न०) १ तौल। २ उठान। तुलना।
तुलना (स्त्री०) १ समानता। २ मौत। ३ तख़मीना। ४ उठाना। ऊपर करना। परीक्षा करना।
तुलसी (स्त्री०) वृक्ष विशेष जो विष्णु को परम प्रिय है।
तुला (स्त्री०) १ तराज़ू। तख़री। २ नाप। बाँट। —कूटः, (पु०) पासंगी। तराज़ू।—कोटिः, —कोटी, (स्त्री०) नूपुर।—कोशः,—कोषः, (पु०) परीक्षा विशेष।—दानं, (न०) अपने शरीर के वज़न के बराबर सुवर्ण आदि वस्तुएँ तौल कर उन्हें दान कर देना तुलादान कहलाता है। —धटः, (पु०) बटखरा।—धरः, (पु०) १ व्यापारी। सौदागर। २ तुलाराशि।—धारः, (पु०) व्यवसायी। सौदागर।—परीक्षा, (स्त्री०) तुला द्वारा परीक्षा का विधान विशेष। —पुरुषः, (पु०) सोलह प्रकार के महादानों में से एक दान।—प्रग्रहः, प्रग्राहः, (पु०) तराज़ू की डोरी या डंडी।—यानं, (न०)— यष्टिः, (पु०) तराज़ू की डंडी।—बीजं, (न०) घुँघची के दाने।—सूत्रं, (न०) तराज़ू की डोरी।
तुलित (व० कृ०) १ तोला हुआ। २ मिलान किया हुआ।
तुल्य (वि०) १ एक ही प्रकार का या एक ही श्रेणी का। बराबर का। समान। सदृश। २ उपयुक्त। एक सा। अभिन्न।—दर्शन, (वि०) समान दृष्टि से देखना।—पानं, (न०) एक साथ पीना। —रूप, (वि०) समान। सदृश।
तुवर (वि०) १ कसैले स्वाद का। २ दाढ़ी रहित।
तुष (धा० परस्मै०) [तुष्यति, तुष्ट] प्रसन्न होना। सन्तुष्ट होना। सन्तोष करना।
तुषः (पु०) भुसी।—अग्निः,—अनलः, (पु०) भूसी या चोकर की आग।—अम्बु, (न०) —उदकं, (न०) खट्टा जवागू। खट्टा चाँवल का माँड।—ग्रहः,—सारः, (पु०) अग्नि।
तुषार (वि०) ठंडा। कुहरे का। ओस का।— अद्रिः,—गिरिः,—पर्वतः, (पु०) हिमालय पर्वत।—कणः, (पु०) कोहरा या पाले की बूंद। ओसकण।—कालः, (पु०) जाड़े का मौसम।—किरणः,—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा। -गौर, (वि०) वर्फ़ की तरह सफेद। वर्फ़ के कारण सफेद। (पु०) १ कपूर।
तुषार (पु०) १ कोहरा। सर्दी। २ वर्फ़। ३ ओस। ४ पाला। बौछार।
तुषिताः (बहु० पु०) उपदेवता जिनकी संख्या १२ या ३६ बतलायी जाती है।
तुष्टः (व० कृ०) १ प्रसन्न। सन्तुष्ट। २ जो प्राप्त हो उससे सन्तुष्ट और अप्राप्त प्रत्येक वस्तु से विरक्त।
तुष्टिः (स्त्री०) सन्तोष। प्रसन्नता। आनन्द।
तुष्टुः (पु०) कान में पहिनने का रत्न।
तुहिन (वि०) शीत। अकडन। ऐंठन। (शीत के कारण)—अंशुः, (पु०)—करः,—किरणः, —द्युतिः,—रश्मिः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। —अचलः, (पु०)—अद्रिः, (पु०)— शैलः, (पु०) हिमालय पर्वत।—कणः, (पु०) ओस की बूंद।—शर्करा, (स्त्री०) वर्फ़।
तूण् (धा० उभय०) [तूणयति, तूणयते] सकोड़ना। [तूणयते] भरना। परिपूर्ण करना।
तूणः (पु०) तूणीर। तरकस।—धारः, (पु०) धनुषधारी।
तूणी
तूणीर } (स्त्री०) तरकस।
तूबरः (पु०) १ दाढ़ी रहित पुरुष। २ बिना सींग का बैल। ३ कसैला जायका। ४ हिजड़ा।
तूर् (धा० आत्म०) [तूर्यते, तूर्ण] १ तेज़ी से जाना। जल्दी करना। २ चोटिल करना। वध करना।
तूरं (न०) तुरही। एक प्रकार का बाजा।

तूर्ण (वि०) १ तेज़ । वेगवान । २ त्वरावाला । शीघ्रगामी । फुर्तीला ।

तूर्णं (अव्यया०) तेज़ी से । फुर्ती से । शीघ्रता से ।

तूर्णिः (पु०) शीघ्रता । फुर्ती ।

तूर्यं (न०) } वाद्ययंत्र विशेष ।—ओघः, (पु०)
तूर्यः (पु०) } औज़ारों का समूह ।

तूलं (न०) } १ रुई । २ अन्तरिक्ष । आकाश । वायु-
तूलः (पु०) } मण्डल ।— कार्मुकं, (न०) धनुस्, (न०) रुई धुनने की कमान । धनुही ।—पिचुः, (पु०) रुई ।—शर्करा, (स्त्री०) १ बिनौला । २ घास का गट्ठा । ३ शहतूत ।

तूलकं (न०) रुई ।

तूला (स्त्री०) १ कपास का पेड़ । २ दिया की बत्ती ।

तूली (स्त्री०) १ रुई । २ बत्ती । ३ जुलाहे की कूंची ४ चितेरे की कूंची । ५ नील का पौधा ।

तूलिः (स्त्री०) चितेरे की कूंची ।

तूलिका (स्त्री०) १ चितेरे की कूंची । पैंसिल । २ सूती बत्ती । ३ रुई भरा गद्दा । ४ बर्मा । छेद करने का औज़ार ।

तूष्णीक (वि०) ख़ामोश । चुपचाप ।

तूष्णीं (अव्यया०) गुप्त रूप से । चुपचाप । बिना बोले या शोरगुल किये ।—भावः, (पु०) ख़ामोशी । मूकत्व ।—शील, (वि०) ख़ामोश ।

तूस्तं (न०) १ जटा । २ धूल । ३ पाप । ४ परिमाणु । ज़र्रा ।

तृंह् (धा० परस्मै०) [तृंहति] वध करना । घायल करना ।

तृणं (न०) १ घास । २ नरकुल । सरपत । ३ घास फूसकी बनी कोई चीज़ ।—अग्निः, (पु०) १ फूस या भूसी की आग । २ आग जो जल्द बुझ जाय ।—अञ्जनः, (पु०) गिरगट ।—अटवी (स्त्री०) वन जिसमें घास बहुत हो ।—आवर्तः, (पु०) १ हवा का बवंडर । २ एक दैत्य का नाम जिसे श्री कृष्ण ने मारा था ।—असृजं, (न०)—कुङ्कुमम्, (न०)—गौरं, (न०) भिन्न भिन्न प्रकार के सुगन्ध-द्रव्य ।—इन्द्रः, (पु०) खजूर का पेड़ ।—उल्का, (स्त्री०) घास की बनी मसाल । फूस का लुआठ । अधजला फूस का मूठा ।—ओकस, (न०) फूस की झोंपड़ी ।—काण्डः, (पु०)-काण्डम्, (न०) घास का ढेर ।—कुटी. (स्त्री०)—कुटीरकं (न०) घास फूस की कुटिया ।—केतुः, (पु०) खजूर का पेड़ ।—गोधा, (स्त्री०) एक प्रकार का गिरगट । गोह ।—ग्राहिन्, (पु०) नीलम । पुखराज ।—चरः, (पु०) गोमेद मणि ।—जलायुका — जलूका. (स्त्री०) झांझा । कमला । कीड़ा ।—द्रुमः, (पु०) १ नारियल । २ ताल । ३ खजूर । ४ केतक वृक्ष । ५ छुहारे का वृक्ष ।—धान्यं, (न०) बिना जोती बोई भूमि में उत्पन्न धान्य । नीवार । धान्य विशेष ।—ध्वजः, (पु०) १ताल वृक्ष । २ बाँस ।—पीडं, (न०) हाथापाई ।—पूली, (स्त्री०) चटाई । नरकुल की बनी बैठकी ।—प्राय (वि०) निकम्मा । तुच्छ ।—बिन्दुः, (पु०) एक ऋषि का नाम ।—मणिः, (पु०) रत्न विशेष ।—राज , (पु०) १ नारियल का पेड़ । २ बाँस । ३ ईख । ४ तालवृक्ष ।—वृक्षः, (पु०) खजूर का पेड़ । छुहारे का पेड़ । नारियल का पेड़ ।—शीतं, (न०) एक प्रकार की महकदार घास । सारा, (स्त्री०) केले का पेड़ ।—सिंहः, (पु०) कुल्हाड़ी ।—हर्म्यः, (पु०) फूस का झोंपड़ा ।

तृण्या (स्त्री०) घास या फूस का ढेर ।

तृतीय (वि०) तीसरा ।—प्रकृति , (पु० या स्त्री०) हिजड़ा । नपुंसक ।

तृतीयं (न०) तिहाई । तीसरा हिस्सा ।

तृतीयक (वि०) १ तिजारी । तीसरे दिन आने वाला ज्वर ।

तृतीया (स्त्री०) १ तिथि तीज । २ कारक विशेष ।—कृत, (वि०) तीन बार जोता हुआ खेत ।—प्रकृतिः, (पु० स्त्री०) हिजड़ा । नपुंसक ।

तृतीयिन् (वि०) तीसरा भाग पाने का अधिकारी ।

तृद् (धा० परस्मै०) [तर्दति, तृणत्ति, तृन्ते, तृणत्त] १चीरना । फाड़ना । छेद करना २ मार डालना नष्ट कर डालना । उजाड़ देना । ३ छोड़ देना । मुक्त कर देना । ४ तिरस्कार करना ।

तृप् (धा० परस्मै०) [तृप्यति, तृप्नोति, तृपति,- तृप्त] १ सन्तुष्ट होना । २ प्रसन्न करना ।

तृप्त (वि०) सन्तुष्ट । अफरा हुआ । अघाया हुआ ।

तृप्ति (स्त्री०) १सन्तोष । २ छकाई । अघाई । अनिच्छा ३ प्रसन्नता । आल्हाद ।

तृष् (धा० पर०) [तृष्यति, तृषित] १ प्यासा होना । २चाटना । ३उत्सुक होना । लालच करना ।

तृष् (स्त्री०) [कर्त्ता एकवचन ।—तृट्, तृड्] १ प्यास । २ उत्कट अभिलाषा । उत्सुकता ।

तृषा (स्त्री०) प्यास ।—आर्त, (वि०) १ प्यासा । —हं, (न०) पानी ।

तृषित (व०कृ०) १प्यासा । २ लोलुप । लाभ का लोभी ।

तृष्णज् (वि०) १लालची । लोभी । २ प्यास लगाने वाला ।

तृष्णा (स्त्री०) १ प्यास । २ अभिलाषा । लालच । —क्षयः, (पु०) मन की शान्ति । सन्तोष ।

तृष्णालु (वि०) १बहुत प्यासा । २ बड़ा लालची ।

तृह् (धा० परस्मै०) [तृणेढि, तर्हयति, तर्हयते,- तृढ] घायल करना । मार डालना । टकराना ।

तॄ (धा० परस्मै०) [तरति, तीर्ण] १ पार होना । २ (मार्ग) तै करना । ३ तैरना । उतराना । ४ (कठिनाई को) पार करना । वश में करना । ५ सम्पूर्णतः अपने अधिकार में कर लेना । ६ पूरा करना । समाप्त करना । ७ छुटकारा पाना । छूट जाना ।

तेजनम् (न०) १ बाँस । २ पैनाना । तेज़ करना । ३ जलाना । ४ चमकाना । ४ पालिश करना । ६ नरकुल । ७ बाण की नोक । ८ हथियार की धार ।

तेजलः (पु०) एक प्रकार का तीतर ।

तेजस् (न०) १ तेज़ी । २ (चाकू की) तेज़धार । ३ आग की शिखा । ४ गर्मी । भभक । धधक । चकाचौंध । ५ चमक । आव । ६ पाचतत्वो । में से एक । ७ सौन्दर्य । ८ पराक्रम । ६ विक्रम । १० स्फूर्ति । ११ चरित्रबल । १२ सर्वोत्कृष्ट आभा । १३ वीर्य । मुख्य लक्षण । १४ सार । १५ आध्यात्मिक शक्ति । १६ अग्नि । ११ गूदा । मिंगी । १८ पित्त । १६ घोड़े का वेग । २० ताज़ा मक्खन । २१ सुवर्ण । २२ ब्रह्म । २३ सत्त्वगुण । (सांख्यमतानुसार) ।- कर, (वि०) १ चमक पैदा करने वाला । २ बलप्रद ।—भङ्गः, (पु०) अपमान । माननाशक । अनुत्साह ।—मण्डलं, (न०) प्रकाश का घेरा ।—मूर्तिः, (पु०) सूर्य । —रूपः, (पु०) ब्रह्म । परमात्मा ।

तेजस्वत्, तेजोवत् (वि०) १ चमकीला । २ तेज । तीक्ष्ण । ३ वीर । ४ क्रियाशील ।

तेजस्विन् (वि०) [स्त्री०—तेजस्विनी] १ चमकीला । चमकदार । २ शक्तिमान । वीर । दृढ़ । ३ कुलीन । ४ प्रसिद्ध । ५ प्रचण्ड । ६ क्रोधी । ७ आईन के अनुसार ।

तेजित् (वि०) १ पैनाया हुआ । २ उत्तेजित । भड़काया हुआ ।

तेजीयस् (वि०) तेज वाला ।

तेजोमय (वि०) १ महत्वपूर्ण । २ चमकीला । ज्योतिर्मय । प्रकाशमय । प्रधान तेज वाला ।

तेजोमात्रा (स्त्री०) सत्त्वगुण का अंश । इन्द्रिय समूह ।

तेप् (क्रि०) काँपना । गिरना ।

तेमः (पु०) आर्द्र भाव । गीला होना ।

तेमनम् (न०) १ गीला होना । भीगना । २ गीला । ३ चटनी । मसाला ।

तेवनं (न०) १ खेल । आमोद प्रमोद । २ क्रीड़ास्थल । विहार भूमि ।

तैजस (वि०) [स्त्री०—तैजसी] १ चमकीला । २ ज्योतिर्मय । तेजोमय । ३ धातु का । ४ विषयी । ५ विक्रमी । क्रियात्मक । ६ शक्तिमान । बलिष्ठ । —आवर्तनी, (स्त्री०) घड़िया । कुल्हिया ।

तैजसं (न०) घी ।

तैतिक्ष (वि०) [स्त्री०—तैतिक्षी] सहनशील ।

तैतिरः (पु०) तीतर । बटेर ।

तैतिलः (पु०) १ गैंडा । २ देवता ।

तैत्तिरः (पु०) १ तीतर । २ गैंडा ।

तैत्तिर (न०) तीतरों का समूह ।

तैत्तिरीय (पु० बहु०) यजुर्वेद की तैतिरीय शाखा वाले ।

तैत्तिरीयः (पु०) कृष्ण यजुर्वेद ।

तैमिरः (पु०) आँख के धुंधलापने का रोग ।

तैर्थिक (वि०) पवित्र । शुद्ध ।

तैर्थिकं (न०) पवित्रजल । किसी पुण्य नदी या सरोवर का जल ।

तैर्थिकः (पु०) १ संन्यासी । साधु २ नवीन दार्शनिक सिद्धान्त का आविष्कार करने वाला । नवीन मत या सम्प्रदाय का प्रवर्तक ।

तैलं (न०) १ तेल । २ धूप । लोबान ।—अटी, (स्त्री०) बरैया ।—अभ्यङ्गः, (पु०) शरीर में तेल की मालिश ।—कल्कजः, (पु०) खली । —पर्णिका,—पर्णी, (स्त्री०) १ चन्दन २ धूप । ३ तारपीन ।—पिञ्जः (पु०) सफेद तिल ।—पिपीलिका, (स्त्री०) छोटी लाल चींटी ।—फलः, (पु०) इंगुदी वृक्ष ।—भाविनी, (स्त्री०) चमेली ।—माली, (स्त्री० दीपक की बत्ती ।—यंत्रं, (न०) कोल्हू ।—स्फटिकः, (पु०) रत्न विशेष ।

तैलङ्गः (पु०) आधुनिक कर्नाटक प्रदेश ।

तैलङ्गाः (पु० बहु०) कर्नाटक प्रदेश के अधिवासी ।

तैलिकः } (पु०) तेली ।
तैलिन् }

तैलिनी (स्त्री०) बत्ती ।

तैलीनं (न०) तिल का खेत ।

तैपः (पु०) पौष मास ।

तोकं (न०) औलाद । बच्चा ।

तोककः (पु०) चातक पक्षी ।

तोडनम् (न०) १ चीरना । विभाजित करना । २ फाड़ना । ३ चोटिल करना ।

तोत्रं (न०) अङ्कुश या कीलदार चाबुक ।

तोदः (पु०) पीड़ा । सन्ताप ।

तोदनं (न०) १ पीड़ा । कष्ट । २ अङ्कुश । ३ मुख । तुण्ड ।

तोमरं (न०) } १ लोहे का डंडा । २ बर्छी । साँग ।
तोमरः (पु०) } —धरः, (पु०) अग्निदेव ।

तोयं (न०) पानी ।—अधिवासिनी, (स्त्री०) पुष्प विशेष ।—आधारः,—आशयः, (पु०) सरोवर । कूप । जलाशय ।—आलयः, (पु०) समुद्र ।—ईशः, (पु०) वरुण की उपाधि । —ईशं, (न०) पूर्वाषाढ़ानक्षत्र ।—उत्सर्गः, (पु०) जल-वृष्टि ।—कर्मन्, (न०) १ शरीर के भिन्न भिन्न अवयवों के जल से मार्जित करना । २ जलतर्पण । कृच्छ्रः, (पु०)—कृच्छ्रम्, (न०) व्रतचर्या विशेष जिसमें केवल जल पीकर ही निर्दिष्ट काल तक रहना पड़ता है ।—क्रीडा (स्त्री०) जलविहार । —गर्भः, (पु०) नारियल ।—चरः, (पु०) जलजीव —डिम्बः,—डिम्भः, (पु०) ओला । —दः, (पु०) बादल ।—धरः, (पु०) बादल । —धिः,—निधिः, (पु०) समुद्र ।—नीवी, (स्त्री०) पृथिवी ।—प्रसादनम्, (न०) नारियल को साफ करना ।—मलं, (न०) समुद्रफेन ।—मुच्, (पु०) बादल ।—यंत्रं, (न०) १ जलघड़ी । २ फव्वारा । राज्,—राशिः, (पु०) समुद्र । —वेला, (स्त्री०) समुद्रतट ।—व्यतिकरः, (पु०) (नदियों का) सङ्गम ।—शुक्तिका, (स्त्री०) सीपी । सर्पिका, (स्त्री०)—सूत्रकः, (पु०) मेंढक ।

तोरणं (न०) } १ मेहरावदार द्वार । २ बरसाती ।
तोरणः (पु०) } फाटक । ३ अस्थायी रूप से बनाया हुआ फाटक । ४ महरावदार स्नानागार के समीप का चबूतरा । (न०) गर्दन । गला ।

तोलं (न०) } १ तौल जो तराजू में तौल कर
तोलः (पु०) } जानी गयी हो । २ १२ माशे की तौल । एक तोला ।

तोपः (पु०) सन्तोप । प्रसन्नता ।

तोपणं (न०) सन्तोप । प्रसन्नता ।

तोपलं (न०) मूसल ।

तौलिकः (पु०) तुलाराशि ।

तौतिकं (न०) मोती ।

तौतिकः (पु०) सीपी जिसमें से मोती निकलता है ।

तौर्य (न०) तुरही का शब्द ।—त्रिकं, (न०) नृत्य और सङ्गीत । गान, वाद्य और नृत्य तीनों की संगति ।

तौलं (न०) तराजू ।

तौलिकः } (पु०) चित्रकार । चितेरा ।
तौलिककः }

त्यक्त (व० कृ०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २ त्यागी ।—अग्निः, (पु०) ब्राह्मण जिसने अग्नि-

होत्र करना त्याग किया हो ।—जीवित,—प्राण, (वि०) किसी भी प्रकार की जोखों में अपने को डालने के लिये उद्यत प्राण त्यागने को तैयार।—लज्ज, (वि०) बेहया। बेशर्म।

त्यज् (धा० परस्मै०) (त्यजति, त्यक्त) १ त्यागना। छोड़ना। अलहदा हो जाना। २ विदा करना। छोड़ देना। निकाल देना। ३ विरक्त होना। ४ बच निकलना। कनियाना। कतरा जाना। ५ छुट्टी पाना। पीछा छुड़ाना। ६ एक ओर कर देना। ७ ध्यान न देना। छोड़ना। जाने देना। ८ बाँटना।

त्यागः (पु०) १ छोड़ना। अलहदा हो जाना। वियोग। २ विराग। ३ भेंट। दान। धर्मादा। ४ उदारता। ५ पसेव। शरीर का मल।—युत, —शील, (वि०) उदार।

त्यागिन् (वि०) १ त्यागने वाला। छोड़ देने वाला। २ दे डालने वाला। दानी। ३ वीर। बहादुर। ४ कर्मानुष्ठान के फल की आशा न रखने वाला।

त्रप् (धा० आत्म०) [त्रपते, त्रपित] शर्माना। लज्जित होना।

त्रपा (स्त्री०) १ लाज। शर्म। सङ्कोच। २ छिनाल स्त्री। ३ ख्याति। प्रसिद्धि।—निरस्त,—हीन, (वि०) निर्लज्ज। बेहया। बेशर्म।—रण्डा, (स्त्री०) वेश्या। रंडी।

त्रपिष्ठ (वि०) अत्यन्त सन्तुष्ट। [सन्तुष्ट।

त्रपीयस् (वि०) [स्त्री०—त्रपीयसी] अधिकतर

त्रपु (न०) टीन। जस्ता।

त्रपुलम्
त्रपुषम्
त्रपुस्
त्रपुसम् } (न०) टीन। जस्ता।

त्रप्स्यं (न०) माठा या घोला हुआ दही।

त्रय (वि० [स्त्री० – त्रयी] तिहरा। तीन गुना। तीन प्रकार के तीन भागों में विभाजित।

त्रयं (न०) तिगड्डा। तीन का समूह।

त्रयस् (कर्त्ता० बहु० पु०) तीन।—चत्वारिंश, (वि०) तेतालीसवां।—चत्वारिंशत, (वि०) तेतालीस।—त्रिंश, (व०) ३३वाँ।—त्रिंशति, (वि० या स्त्री०) तेतीस।—दश, (वि०) १ तेरहवाँ।—दशन्, (वि० बहु०) १३ वाँ। – दशी, (स्त्री०) तेरस।—नवतिः, (स्त्री०) ९३।—पंचाशत्, (स्त्री०) ५३। त्रेपन।—विंश, (वि०) २३वाँ।—विंशतिः, (स्त्री०) २३। तेइस।—षष्टिः, (स्त्री०) ६३ त्रेसठ।—सप्ततिः, (स्त्री०) ७३। तिहत्तर।

त्रयी (स्त्री०) १ तीन वेदों का समूह। २ त्रिगड्डा। त्रिमूर्ति। त्रिपट्टा। ३ सधवा स्त्री जिसका पति और बाल बच्चे जीवित हों। ४ बुद्धि। प्रतिभा।—तनुः, (पु०) १ सूर्य। २ शिव।—धर्मः, (पु०) तीनों वेदों में कथित धर्म।—मुखः, (पु०) ब्राह्मण।

त्रस् (धा० परस्मै०) [त्रसति, त्रस्यति, त्रस्त] १ काँपना। थरथराना।

त्रस (वि०) चल। जंगम। गतिशील।—रेणुः, (पु०) १ सूर्य की किरण में व्याप्त परमाणु का छठवाँ अंश। २ सूर्य की स्त्री का नाम।

त्रसं (न०) १ वन। जंगल। २ जानवर।

त्रसः (पु०) हृदय।

त्रसरः (पु०) जुलाहे की ढरकी। नारी। माखा।

त्रसुर
त्रस्नु } (वि०) भयविह्वल। डरपोंक। कापने वाला।

त्रस्त (व० कृ०) १ डरा हुआ। भयभीत। डरपोंक। भयविह्वल। २ जल्दी। त्वरा।

त्राण (व० कृ०) संरक्षित। रक्षा किया हुआ। बचाया हुआ।

त्राणं (न०) १ रक्षा। बचाव। २ पनाह। सहायता।

त्रात (व० कृ०) सुरक्षित। रक्षित।

त्रापुष (वि०) [स्त्री०—त्रापुषी] टीन का बना हुआ।

त्रास (वि०) १ गतिशील। २ भय।

त्रासः (पु०) १ डर। भय। शङ्का। २ रत्न का ऐब।

त्रासन (वि०) भयप्रद। भयावह।

त्रासनम् (न०) भयभीत करने की क्रिया।

त्रासित (वि०) डरा हुआ। भयभीत।

त्रि संख्यावाची विशेषण [इसके रूप केवल बहुवचन में होते हैं। कर्त्ता पु०—त्रयः, (स्त्री०) तिस्रः, (न०) त्रीणि,] तीन।—अंश., (पु०) १ तिहरा हिस्सा। तिगुना हिस्सा। २ तिहाई हिस्सा।—अक्षः, अक्षकः, (पु०) शिव जी।

—अक्षरः, (पु०) १ ओंकार । प्रणव । २ २ घटक । स्त्री पुरुष की जोड़ी मिलाने वाला ।—अङ्कटम्,—अङ्गटम्, (न०) १ वहंगी । कामर । २ एक प्रकार का सुरमा या अञ्जन ।—अञ्जलं, (न०) —अञ्जलि, (स्त्री०) तीन अंजुली ।—अधिष्ठानः, (पु०) जीवात्मा ।—अध्वगा,—मार्गगा,—वर्त्मगा, (स्त्री०) गङ्गा जी की उपाधियाँ ।—अम्बकः, (पु०) तीन नेत्रों वाला अर्थात् शिव जी ।—अम्बका, (स्त्री०) पार्वती जी ।—अब्द, (वि०) तीन साल का ।—अब्दं, (न०) तीन वर्षों का समूह ।—अशीत, (वि०) ८३ वाँ ।—अष्टन्, (वि०) चौबीस ।—अश्र —अस्र, (वि०) तिकोना ।—अश्र —अस्त्र, अस्त्रं, (न०) त्रिकोण ।—अहः, (पु०) तीन दिवस का काल ।—आहितः, (पु०) तीन दिन में पूरा हुआ या तीन दिन में उत्पन्न हुआ । तिजारी । —ऋचं, (पु०) (तृचं भी) (न०) तीन ऋचाओं की समष्टि ।—ककुद्, (पु०) १ त्रिकूटाचल का नाम । २ विष्णु या कृष्ण ।—कर्मन्, (पु०) ब्राह्मण के तीन मुख्य कर्त्तव्य । अर्थात् यज्ञ करना, वेदों का पढ़ना और दान देना । (पु०) इन तीन कर्मों को करने वाला ब्राह्मण । —कायः, (पु०) बुद्ध का नाम ।—कालं, (न०) तीनों काल अर्थात् भूत, भविष्यद् और वर्तमान । या प्रातः, मध्यान्ह और सायं।—कूटः, (पु०) एक पर्वत का नाम जो लंका में है और जिसकी चोटी पर लंका नगरी बसी हुई थी ।—कूर्चकं, (न०) त्रिफला चाकू ।—कोण, (वि०) तिकोना ।—कोणः, (पु०) १ त्रिकोण । २ योनि । भग ।—गणः, (पु०) धर्म अर्थ और काम । गत, (वि०) १ तिहरा । २ तीन दिन में किया हुआ ।—गर्ताः, (बहु०) १ देश विशेष, पंजाब का आधुनिक जालंधर नगर । इस देश के शासक अथवा अधिवासी। —गर्ता, (स्त्री०) छिनाल औरत ।—गुण, (वि०) १ डोरों वाला । २ तिवारा कहा हुआ । तिवारा । तिगुना । ३ तीन गुणों वाला अर्थात् सत्व, रजस् और तमस् गुणों वाला ।—गुणा, (स्त्री०) १ माया । २ दुर्गा ।—चक्षुस्, (पु०) शिव । —चतुर, (वि०) (बहु०) तीन या चार ।—चत्वारिंश, (वि०) ४३वाँ ।—चत्वारिंशत्, (स्त्री०) ४३ ।—जगत्, (न०)—जगती, (न०) १ त्रिलोक । ज़मीन, आस्मान और पाताल । २ आकाश स्वर्ग और भूलोक ।—जटः, (पु०) शिव जी का नाम ।—जटा, (स्त्री०) अशोक वाटिका में सीता जी के साथ रहने वाली राक्षसियों में से एक राक्षसी का नाम ।—णता, (स्त्री०) धनुष ।—णव —णवन्, (वि० बहु०) तीन बार । ६ अर्थात् २७ ।—तक्षं,—तक्षी, (पु०) तीन बढ़इयों का समुदाय ।—दण्डम्, (न०) संन्यासियों का दण्ड विशेष । —दण्डिन्, (पु०) १ तीन दण्डों को बाँध कर उसे दहिने हाथ में धारण करने वाले श्रीवैष्णव संन्यासी । २ वह जिसने अपने मन, वाणी और शरीर को अपने वश में कर लिया हो ।

वाग्दण्डोऽथ मनोदण्डः कायदण्डस्तथैव च ।
यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते ॥

—मनुस्मृति ।

—दशाः, (बहु०) १ तीस । २ तेतीस देवता । दशः, (पु०) शिव ।—दोषं, (न०) वात, पित्त और कफ-इन तीनों का व्यतिक्रम ।—धारा, (स्त्री०) गंगा ।—णयन, (नयन,)—नेत्रः, —लोचनः, (पु०) शिव जी ।—नवत, (वि०) ९३वाँ । तिरानवेवाँ ।—पञ्च, (वि०) पन्द्रह ।—पंचाश, (वि०) ५३ वाँ ।—पंचाशत्, (स्त्री०) ५३ ।—पटु, (पु०) काँच । शीशा ।—पताकः, (पु०) तीन उंगली उठाये हुए फैला हुआ हाथ । २ माथे का ऊर्ध्वपुण्ड्र । तिलक ।—पत्रकं, (न०) पलाश वृक्ष ।—पथं, (न०) १ तीन मार्गों का समूह । २ भूमि, स्वर्ग, आकाश या आकाश, भूमि पाताल । ३ तिराहा ।—पथगा, (स्त्री०) गङ्गा ।—पदं —पदिका, (स्त्री०) तिपाई ।—पदी, (स्त्री०) १ हाथी का ज़ेरबंद । २ गायत्री छन्द । ३ तिपाई । गोधापदी नाम का पौधा ।—पर्णः, (पु०) किंशुक वृक्ष ।—पाद, (वि०) १ तीन पैरों वाला ।

२ तीन हिस्सों वाला। ३ तीन चौथाई वाला। ४ विष्णु।—पुट, (वि०) तिकौना।—पुटः, (वि०) तिकौना।—पुटः, (पु०) १ बाण। २ हथेली। ३ एक हाथ या आधा गज। ४ नदी-तट या समुद्रतट।—पुटकः, (पु०) त्रिकोण।—पुटा, (स्त्री०) दुर्गा का नाम।—पुण्ड्रम्,—पुण्ड्रकम्, (न०) माथे पर का तीन आड़ी रेखाओं वाला टीका।—पुरं, (न०) तीन नगरों का समूह। पृथिवी, अन्तरिक्ष और आकाश में चाँदी, सोने और लोहे की तीन पुरियां, मयदानव ने राक्षसों के लिये बनायी थी, जिनको देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर, शिव जी ने नष्ट कर डाला था।—पुरः, (पु०) एक दानव का नाम जो इन नगरों का अधिपति था।—पुरान्तकः,—अरिः,—घ्नः,—दहन्,—द्विष्, (पु०)—हर, (पु०) महादेव जी के नामान्तर।—पुरी, (स्त्री०) १ जबलपुर के पास का एक नगर। २ एक प्रदेश का नाम।—पौरुष, (वि०) तीन पीढ़ी तक का।—प्रस्रुतः, (पु०) मदमाता हाथी।—फला, (स्त्री०) हर्र। बहेरा, आँवला।—बलिः,—बली,—वलिः,—वली, (स्त्री०) नाभि के ऊपर तीन सिमिटनें। ये स्त्री के सौन्दर्य का चिन्ह मानी गयी हैं।—भद्र, (न०) स्त्रीप्रसङ्ग। स्त्री-मैथुन।—भुजं, (न०) त्रिकोण।—भुवनं, (न०) तीनलोक।—भूमः, (पु०) तीन खना महल।—मार्गा, (स्त्री०) श्रीगंगा जी।—मुकुटः, (पु०) त्रिकूटाचल।—मुखः, (पु०) बुध देव की उपाधि। मूर्ति, (पु०) ब्रह्मा, विष्णु और महादेव जी की मूर्ति। यष्टिः, (पु०) तिलड़ाहार।—यामा, (स्त्री०) तीन पहर की।—योनिः, (पु०) मुकदमा। अभि-योग। मुकदमा दायर करने के साधरणतः तीन कारण होते हैं। यथा—क्रोध, लोभ और बुद्धि विपर्यय।—रात्रं, (न०) तीन रात की अवधि। रेखः, (पु०) शङ्ख।—लिङ्ग, (वि०) तीन लिङ्गों वाला अर्थात् विशेषण।—लिङ्गः, (पु०) तैलङ्ग देश।—लोकं, (न०) तीन लोक।—लोकेशः, (पु०) सूर्य।—लोकनाथः, (पु०) १ इन्द्र। २ विष्णु। ३ शिव।—वर्गः, (पु०) १ धर्म और काम। २ क्षय, स्थान और वृद्धि।—वर्णकं, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य।—वारं, (अव्यया०) तिबारा। तीन मर्तबा।—विक्रमः, (पु०) वामनावतार।—विद्यः, (पु०) तीनों वेदों का जानने वाला।—विध, (वि०) तीन प्रकार का। तिगुना।—विष्टपं,—पिष्टपं, (पु०) स्वर्ग।—वेणिः,—वेणी, (स्त्री०) प्रयाग का वह स्थान जहाँ गङ्गा सरस्वती और यमुना का सङ्गम है।—वेदः, (पु०) तीनों वेदों के जानने वाला ब्राह्मण।—शङ्कुः, (पु०) १ सूर्यवंशी एक राजा का नाम। यह हरिश्चन्द्र राजा का पिता और अयोध्या का राजा था। २ चातक पक्षी। ३ पतंगा। ४ बिल्ली। ५ जुगनू। खद्योत।—शङ्कुजः, (पु०) हरि-श्चन्द्र राजा।—शङ्कुयाजिन्, (पु०) विश्वा-मित्र।—शत, (वि०) तीन सौ।—शतम्, (न०) १. १०३। २ तीन सौ।—शिखं, (न०) तीन कलंगी का मुकुट।—शिरस्, (पु०) राक्षस जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने मारा था।—शूलं, अस्त्र विशेष।—शूलअङ्कः,—शूलधारिन्, (पु०) शिव की उपाधि।—शूलिन्, (पु०) शिव जी।—शृङ्गः, (पु०) त्रिकूटाचल।—षष्टि, (स्त्री०) ६३।—सन्ध्यं, (न०) सन्ध्यी, (स्त्री०) प्रातः, मध्यान्ह और सायं काल।—सन्ध्यं, (अव्यया०) तीन सन्ध्याओं का समय।—सप्तत, (वि०) ७३वाँ।—सप्ततिः, (स्त्री०) ७३।—सप्तन्—सप्त (वि० बहु०) २१। इक्कीस।—साम्यं, (न०) तीनों गुणों की समानता।—स्थली, (स्त्री०) तीन तीन तीर्थ स्थान अर्थात् काशी, प्रयाग और गया।—स्रोतस्, (स्त्री०) गंगा।—सीत्य,—हल्य, (वि०) तीन बार जुता हुआ (खेत)—हायण, (वि०) तीन वर्ष का।

त्रिंश (वि०) १ [स्त्री०—त्रिंशी] १ तीसवाँ। २ तीसवाला। ३ तीस से जुड़ा हुआ जैसे त्रिंशशतं अर्थात् १३०।

त्रिंशक (वि०) १ तीस वाला। २ तीस में खरीदा हुआ या तीस के मूल्य का।

त्रिंशत् (स्त्री०) तीस ।—पत्रं, (न०) चन्द्रमा के उदय पर खिलने वाला कमल ।
त्रिंशत्कम् (न०) तीस का जोड़ ।
त्रिंशति (स्त्री०) तीस ।
त्रिक (वि०) १ तिहरा । तिगुना । २ तीन गत ।
त्रिकम् (न०) १ त्रिमूर्ति । २ तिराहा । ३ कूल्हा । ४ मुड्ढों के बीच का स्थान । ५ त्रिकुट या तीन मसाले ।
त्रिका (स्त्री०) अरहट । कुएं से पानी निकालने का यंत्र विशेष ।
त्रितय (वि०) [स्त्री०—त्रितयी] तीन भागों वाला । तिगुना । तिहरा ।
त्रितयम् (न० तीन का समूह ।
त्रिधा (अव्यया०) तीन प्रकार से या तीन भागों में ।
त्रिस् (अव्यया०) तिबारा । तीन बार ।
त्रुट् (धा० परस्मै०) [त्रुट्यति, त्रुटति, त्रुटित] चीरना । तोड़ना ।
त्रुटिः } (स्त्री०) १काटना । तोड़ना । फाड़ना । २ छोटा
त्रुटी } हिस्सा । अणु । ३ क्षण या लव । ४ सन्देह । संशय । ५ हानि । नाश । ६ छोटी इलायची (का पौधा) ।
त्रेता (स्त्री०) १ तीन का समूह । २ तीन प्रकार के हवनाग्नि का समूह । ३ पांसे में तीन का दाँव फेंकना । चार युगों में से दूसरा युग ।
त्रेधा (अव्य०) तीन प्रकार से । तीन भागों से ।
त्रै (धा० आत्म०) [त्रायते, त्रात, त्राण] रक्षा करना । बचाना ।
त्रैकालिक (वि०) [स्त्री०—त्रैकालिकी] तीन काल से सम्बन्ध रखने वाला । अर्थात बीते हुए, आगे आने वाले और वर्तमान कालों से सम्बन्धयुक्त ।
त्रैकाल्यं (न०) तीन काल । भूत, भविष्यद् और वर्तमान ।
त्रैगुणिक (वि०) तिहरा । तीन गुना ।
त्रैगुण्यम् (न०) १ तीन गुणों का । २ तिहरापन । ३ सत्व, रजस् और तमस् ।
त्रैपुरः (पु०) १ त्रिपुर प्रदेश । २ उस देश का शासक या रहने वाला ।
त्रैमातुरः (पु०) लक्ष्मण का नाम ।
त्रैमासिक (वि०) [स्त्री०—त्रैमासिकी] तीन मास का । प्रत्येक तीसरे मास होने या निकलने वाला ।
त्रैराशिकं (न०) गणित की क्रिया विशेष ।
त्रैलोक्यं (न०) तीन लोकों का समूह ।
त्रैवर्णिक (वि०) [स्त्री०—त्रैवर्णिकी] प्रथम तीन वर्णों से सम्बन्ध रखने वाला ।
त्रैविक्रम (वि०) विष्णु या वामनावतार का ।
त्रैविद्यं (न०) १ तीन वेद । २ तीन वेदों का अध्ययन । ३ तीन विज्ञान ।
त्रैविद्यः (न०) तीनो वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण ।
त्रैविष्टप } (पु०) देवता ।
त्रैविष्टपेयः }
त्रैशङ्कवः (पु०) त्रिशङ्कु के पुत्र राजा हरिश्चन्द्र की उपाधि ।
त्रोटकं (न०) नाटक विशेष । जैसे कालिदास की विक्रमोर्वशी ।
त्रोटिः (स्त्री०) चोंच ।—हस्तः, (पु०) पक्षी ।
त्रोत्रं (न०) अङ्कुश । चाबुक ।
त्वक्ष् (धा० पर०) [त्वक्षति, त्वष्ट] तराशना । छाँटना । कतरना । छीलना ।
त्वंकारः } (पु०) तूकार । अप्रतिष्ठाकारक सम्बोधन ।
त्वङ्कार }
त्वंग } (धा० पर०) [त्वंगति] १ जाना । हिलना ।
त्वङ्ग } २ कूदना । झपट दौड़ना । ३ काँपना ।
त्वच् (स्त्री०) १ चमड़ा (मनुष्य, सर्प आदि का) । २चर्म (गाय, हिरन आदि का) । ३ छाल । गूदा । ४ कोई चीज़ जो ढकने वाली हो । ५ स्पर्श ज्ञान । —अङ्कुरः (पु०) रोमाञ्च । रोंगटे खड़े होना ।—इन्द्रियम् (न०) स्पर्शेन्द्रिय ।—कण्डुरः (पु०) फोड़ा । घाव । नासूर ।—गन्धः, (पु०) नारंगी । सन्तरा ।—छेदः, (पु०) चर्म का घाव । खरौच ।—जं, (न०) १ खून । लोहू । २ रोम । लोम ।—तरङ्गकः, (पु०) झुर्री । सकुड़न ।—त्रं, (न०) कवच ।—दोषः, (पु०) चर्मरोग । कोढ़ ।—पारुष्यं, (न०) चर्म का रूखापन ।—पुष्पः, (पु०) रोमाञ्च ।—सारः, (पु०) [त्वचिसारः,] बाँस ।—सुगन्धः, (पु०) नारंगी ।
त्वचा (स्त्री०) देखो त्वच् ।

त्वदीय (वि०) तुम्हारा। तेरा।
त्वद् (सर्व०) तेरा। तुम्हारा।
त्वद्विध (वि०) तेरी तरह। तुम्हारी तरह।
त्वर् (धा० आत्म०) [त्वरते, त्वरित] शीघ्रता करना।
त्वरा, त्वरि (स्त्री०) शीघ्रता। जल्दी। वेग।
त्वरित (वि०) तेज़। फुर्तीला। वेगवान।
त्वरितं (न०) जल्दी। तेज़ी। (अव्यया०) जल्दी से।
त्वष्टृ (पु०) १ बढ़ई। मैमार। कारीगर। २ विश्वकर्मा।
त्वादृश, त्वादृश् (वि०) [स्त्री०—त्वादृशी] तेरी तरह। तुम्हारी तरह। तेरी जाति का।
त्विष् (धा० उभय०) [त्वेषति—त्वेषते] चमकना। प्रदीप्त होना।
त्विष् (स्त्री०) १ रोशनी। प्रकाश। आभा। चमक। २ सौन्दर्य। ३ अधिकार। वजन। ४ अभिलाषा। कामना। ५ रीतिरस्म। ६ प्रचण्डता। ७ वाणी। —ईशः, (त्विषांपतिः भी) (पु०) सूर्य।
त्विषिः (पु०) प्रकाश की किरन।
त्सरुः (पु०) १ रेंग कर चलने वाला कोई भी जानवर। २ तलवार की मूँठ या अन्य किसी हथियार की मूँठ।

थ

थ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
थः (पु०) पहाड़।
थम् (न०) १ रक्षा। रक्षण। २ भय। डर। ३ शुभत्व। मङ्गल।
थुड् (धा० परस्मै०) [थुडति] १ ढकना। पर्दा डालना। २ छिपाना।
थुडनम् (न०) ढक्कन। लपेटन।
थुत्कारः (पु०) थूकते समय जो शब्द किया जाता है।
थुर्व् (धा० पर०) [थूर्वति] चोटिल करना।
थूत्कारः (पु०), थूत्कृतं (न०) थूत शब्द जो थूकने के समय किया जाता है।
थै (अव्य०) नृत्य के समय मृदङ्ग के बोल।

द

द संस्कृत या नागरी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान दन्तमूल है दन्तमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है। यह अल्पप्राण है और इसमें संवार, नाद और घोष बाह्यप्रयत्न होते हैं।
द (वि०) [यह समास के पीछे आता है] देना। उत्पन्न करना। काटना। नष्ट करना। अलग करना। जैसे धनद, अन्नद, गरद, तोयद, अनलद आदि।
दं (न०) भार्या। पत्नी।
दः (पु०) १ दान। पुरस्कार। २ पहाड़।
दा (स्त्री०) १ गर्मी। २ पश्चात्ताप। परिताप।
दंश् (धा० परस्मै०) [दशति, दष्ट] काटना। डंकमारना। डसना।
दंशः (पु०) १ डसना। काटना। डंक मारना। २ सर्प का विषदन्त। वह स्थान जहाँ डसा

हो। ४ काटना। चीरना। ५ वनैली मक्खी। ६ दोष। त्रुटि। कमी। ७ दांत। ८ चरपराहट। तीतापन। ९ कवच। १० जोड़। अवयव।—भीरुः, (पु०) भैंसा।

दंशकः (पु०) १ कुत्ता। २ गोमक्खी। डांस। मक्खी।

दंशनम् (न०) १ डसने या काटने की क्रिया। कवच।

दंशित (वि०) १ काटा हुआ। २ कवच धारण किये हुए।

दंशिन् (पु०) देखो दंशकः।

दंशी (स्त्री०) छोटी गोमक्खी।

दंष्ट्रा (स्त्री०) बड़ा दाँत। हाथी का दाँत। डंक। विषदन्त। —अस्त्रः, —आयुधः, (पु०) जंगली शूकर।—कराल, (वि०) भयानक दाँतों वाला।—विषः, (पु०) एक प्रकार का विषैला सर्प।

दंष्ट्राल (वि०) बड़े बड़े दाँतों वाला।

दंष्ट्रिका (वि०) देखो "दंष्ट्रा"

दंष्ट्रिन् (पु०) १ वनैला शूकर। २ सर्प। ३ सेई।

दक्ष (वि०) १ योग्य। निष्णात। विशेषज्ञ। चतुर। निपुण। २ उपयुक्त। उपयोगी। ३ तत्पर। सावधान। मनोयोगी। फुर्तीला। ४ सच्चा। ईमानदार।— अध्वरध्वंसकः, —क्रतुध्वंसिन्, (पु०) शिव जी।— कन्या,—जा,—तनया, (स्त्री०) १ दुर्गा की उपाधि। २ अश्विनी आदि नक्षत्र।—सुतः, (पु०) देवता।

दक्षः (पु०) एक प्रसिद्ध प्रजापति का नाम।

दक्षाय्यः (पु०) १ गीध। २ गरुड की उपाधि।

दक्षिण (वि०) १ योग्य। निपुण। कारीगर। निष्णात। चतुर। २ दहिना। (वाम का उल्टा)। दक्षिण ओर अवस्थित। ६ सच्चा। सीधा। ईमानदार। निर्पेक्ष। ७ प्रिय। मधुर। ८ शिष्ट। सभ्य। भद्र। ९ आज्ञाकारी। अनुगत। विनीत। १० अवलम्बित। पराधीन।—अग्निः, (पु०) अन्वाहार्यपचन। यज्ञाग्नि जो दक्षिण दिशा में स्थापित की जाती है।—अग्र, (वि०) दक्षिण की ओर निकला हुआ।—अचलः, (पु०) दक्षिणी पर्वतमाला अर्थात् मलयाचल।—अभिमुख, (वि०) दक्षिण दिशा की ओर मुख किये हुए। दक्षिण की ओर।—अयनं, (न०) दक्षिणायन। सूर्य की गति विशेष। कर्क की संक्रान्ति से मकर की संक्रान्ति पर्यन्त जिस मार्ग पर सूर्य चलते हैं वह दक्षिणायन कहलाता है। इस पथ पर सूर्य ६ मास रहते हैं।—अर्धः, (पु०) १ दहिना हाथ। २ दहिनी या दक्षिण दिशा की ओर।—आचार (वि०) १ ईमानदार। अच्छे आचरण का। २ शक्तिपूजक।—आशा, (स्त्री०) दक्षिण दिशा।—आशापतिः, (पु०) यमराज। धर्मराज।—इतर, (वि०) १ वाम। बायां। २ उत्तरी। उत्तराधी।—इतरा, (स्त्री०) उत्तर दिशा।—उत्तर, (वि०) दक्षिण से उत्तर की ओर झुकी हुई।—उत्तरवृत्त, (न०) मध्यान्हरेखा।—पश्चात्, (अव्यया०) दक्षिण पश्चिम की ओर।—पश्चिम, (वि०) दक्षिण पश्चिमी।—पश्चिमा, (स्त्री०) दक्षिण-पश्चिम।—पूर्व—प्राच्, (वि०) दक्षिण-पूर्व।—पूर्वा,—प्राची, (स्त्री०) दक्षिण-पूर्व का कोण।—समुद्रः, (पु०) दक्षिणी समुद्र।—स्थः, (पु०) रथवान। सारथी।

दक्षिणः (पु०) १ दहिना हाथ या बाँह। २ भद्र या सभ्य जन। नायक विशेष। ३ विष्णु या शिव की उपाधि।

दक्षिणतः (अव्यया०) १ दहिनी ओर से या दक्षिण दिशा की ओर से। २ दक्षिण हाथ की ओर। ३ दक्षिण दिशा की ओर या दहिनी ओर।

दक्षिणा (अव्यया० १दहिनी ओर का या दक्षिण दिशा में।—अर्ह, (वि०) दक्षिणा या दान देने योग्य।—आवर्त, १ दहिनी ओर मुड़ा हुआ। २ दक्षिण दिशा की ओर मुड़ा हुआ।—काल, (पु०) दक्षिणा लेने का समय।—पथः, (पु०) दक्षिणीभारत।—प्रवण, (वि०) दक्षिण की ओर झुका हुआ।

दक्षिणा (स्त्री०) १ ब्राह्मण को देने योग्य धन। २ दक्षिण प्रजापति की पुत्री और यज्ञ रूपी पुरुष की पत्नी समझी जाती है। ३ दान। भेंट।

पुरस्कार । पारिश्रमिक । ४ दुधार गौ । ५ दक्षिण दिशा ६ दक्खिनी भारत ।

दक्षिणाहि (अव्यया०) १ दहिनी ओर दूर । २ दक्षिण दिशा में दूर । दहिनी ओर ।

दक्षिणीय / दक्षिण्य } (वि०) दक्षिणा पाने योग्य ।

दक्षिणेन (अव्य०) दहिनी ओर का ।

दग्ध (व० कृ०) १ जला हुआ । अग्नि में भस्म हुआ । २ (आलं०) सन्तप्त । पीड़ित । सताया हुआ । ३ भूखों मरा हुआ । अकाल का मारा । ४ अशुभ । अमङ्गलकारी । ५ शुष्क । स्वादरहित । फीका । अलौना । ६ अभागा । शापित । दुष्ट ।

दग्धिका (स्त्री०) भुने हुए चाँवल ।

दघ्न (वि०) [स्त्री०—दघ्नी] तक । उतना गहरा या ऊँचा ।

दंड् / दण्ड् } (धा० उभय०) [दण्डयति - दण्डयते, दण्डित] दण्ड देना । सज़ा देना । जुर्माना करना ।

दंडः, दण्डः (पु०) / दंडं, दण्डम् (न०) } १ लकड़ी । डंडा । गदा । सोंठा । २ राजदण्ड । आत्त-दण्ड । ३ दण्ड जो द्विजों को उपनयन संस्कार के समय ग्रहण कराया जाता है । ४ सन्यासी द्वारा ग्रहण किया जाने वाला दण्ड । ५ हाथी का दाँत । ६ डंठुल । कमलदण्ड । ७ नाव के डाँड । ८ मथानी । रई । ६ अर्थदण्ड । जुर्माना । १०शरीरिक दण्ड । ११ कैद । कारागृह-वास । १२ आक्रमण । ज़्यादती । सज़ा । १३ सेना । १४ व्यूह । १५ वश-वर्तीकरण । सयम । १६ चार हाथ का नाँप विशेष । १७ लिङ्ग । १८ अहङ्कार । अभिमान । १६ शरीर । २० यम की उपाधि । २१ विष्णु का नाम २२ शिव जी । २३ सूर्य का सहचर । २४ फोड़ा । (पु०)—अजिन, (न०) दण्ड और मृगचर्म । २ (आल०) दम्भ और छल या प्रवञ्चना ।—अधिप', (पु०) मुख्य न्यायाधीश ।—अनीकं, (न०) सेना की एक टोली ।—अर्ह, (वि०) सजा पाने योग्य ।—अलसिका, (स्त्री०) हैज़ा । —आज्ञा, (स्त्री०) फौजदारी से सज़ा ।—आहातं, (न०) मीठा । छाछ ।—कर्मन्, (न०) दण्डविधान ।—काकः, (पु०) द्रोण-काक ।—काष्ठं, (न०) डठा । सोठा ।—ग्रहणं, (न०) संन्यासी होना ।—कुदनं, (न०) भाण्डार जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार के वर्तन रखे जाते हैं ।—ढक्का, (स्त्री०) एक प्रकार का ढोल ।—दासः, (पु०) ऋण न चुकाने के कारण बना हुआ दास ।—देवकुलं, (न०) न्यायालय । कचहरी ।—धर, (वि०)—धार, (वि०) १आसा ले चलने वाला । २ दण्ड देने वाला ।—धरः,—धार', (पु०) १ राजा । २ यम । ३ न्याया-धीश ।—नायकः, (पु०) १ न्यायाधीश । पुलिस का अफसर । मैजिस्ट्रेट । २ सेनानायक । —नीति', (स्त्री०) १ न्यायविधान । २ नागरिक और सैनिक शासन पद्धति । ३ राजनीति । शासन व्यवस्था ।—नेतृ, (पु०) राजा ।—पातः, (पु०) १ छड़ी का गिरना । २ दण्डविधान । —पः, (पु०) राजा । - पांशुलः, (पु०) द्वारपाल । दरवान ।—पाणिः, (पु०) यमराज । —पातनं, (न०) दण्डविधान करना ।—पारुष्यं (न०) १ आक्रमण । ज़ोर जबरदस्ती । प्रचण्डता । २ कठोर दण्डविधान ।—पालः,—पालकः, (पु०) १ मुख्य या प्रधान न्यायकर्त्ता । २ द्वारपाल । दरवान ।—पोणः, (पु०) मूठ-दार चलनी ।—प्रणामः, (पु०) १ शरीर को झुकाये विना नमस्कार करना । प्रणाम करते समय डंडे की तरह सतर खड़े रहना । २ प्रणाम करते समय लकड़ी की तरह पृथिवी पर गिर पड़ना । —वालधिः, (पु०) हाथी ।—भङ्ग', (पु०) दण्डविधान को भङ्ग कर देना —भृत्, (पु०) १कुम्हार । २ यम ।—माणवः,—मानवः, (पु०) १ आसाधारी । २ दण्डधारी संन्यासी ।—माथ', (पु०) राजमार्ग ।—यात्रा, (स्त्री०) १ बरात का जलूस । २ चढाई । राज्य को जीतलेना ।—यामः, (पु०)१ यमराज । २ अगस्त्य । ३ दिवस । —वादिन्,—वासिन्, (पु०) द्वारपाल । रक्षक ।—वाहिन्, (पु०) पुलिस का उच्च पदा-धिकारी ।—विधिः, (पु०) १ दण्डविधान के नियम । २ फौजदारी कानून ।—विष्कम्भ, (पु०) वह खंभा जिसके सहारे रई फेरी जाती है ।—

व्यूहः, (पु०) विशेष ढंग से सेना को खड़े करने की व्यवस्था ।—शास्त्रं, (न०) दण्डविधान की पद्धति । फौज़दारी कानून ।—हस्तः, (स्त्री०) १ द्वारपाल । दरवान । २ यमराज ।

दंडकः } (पु०) १ छुड़ी । डंडा । २ पंक्ति ।
दण्डकः } अवली । ३ छन्द का नाम ।

दंडकः, दण्डकः (पु०) } १ नर्मदा और गोदावरी
दंडका, दण्डका (स्त्री०) } के बीच दक्षिण भारत
दंडकम्, दण्डकम् (न०) } का एक प्रसिद्ध प्रान्त । श्री रामचन्द्र जी के समय में यह प्रान्त उजाड़ पड़ा था ।

दंडनं } (न०) सज़ा । जुर्माना । अर्थदण्ड ।
दण्डनम् }

दंडादंडि } (अव्यया०) लट्ठों की लड़ाई ।
दण्डादण्डि }

दंडारः } (पु०) १ गाड़ी । २ कुम्हार का चाक ।
दण्डारः } ३ नाव । बेड़ा । ४ मस्त हाथी ।

दंडिक } (पु०) आसाधारी ।
दण्डिकः }

दंडिका } (स्त्री०) १ जड़ी । २ पंक्ति । अवली ।
दण्डिका } ३ मोती का हार । हार । ४ रस्सा ।

दंडिन् } (पु०) १ संन्यासी । २ द्वारपाल ।
दण्डिन् } ३ डाँड चलाने वाला । खेवट । ४ जैनी साधु । ५ यम । ६ राजा । ७ काव्यादर्श तथा दश कुमारचरित्र का रचयिता ।

दंत् } (पु०) दाँत ।—छदः,—(दच्छदः) (पु०)
दन्त् } ओठ ।

दत्त (व० कृ०) १ दिया हुआ । दे डाला हुआ । भेंट किया हुआ । २ सौंपा हुआ । हवाले किया हुआ । ३ रक्खा हुआ । पसारा हुआ ।—अनपकर्मन्—अप्रदानिकं, (न०) दी हुई वस्तु को न देना । हिन्दूधर्म शास्त्र में वर्णित बारह प्रकार के स्वत्वाधिकारों में से एक ।—अवधान, (वि०) मनोयोगी ।—आत्रेयः, (पु०) एक ऋषि का नाम जो अत्रि और अनुसूया से उत्पन्न हुए थे और जो ब्रह्मा विष्णु और महेश का मिश्रित अवतार माने जाते हैं ।—आदर, (वि०) सम्मान प्रदर्शित करने वाला । आदर करने वाला ।—शुल्का, (स्त्री०) दुलहिन जिसके लिये दहेज़ दिया गया हो ।—हस्त, (वि०) हाथ का सहारा देने वाला । हाथ का सहारा पाये हुए ।

दत्तः (पु०) १ हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक । २ वैश्य की उपाधि विशेष । ३ दत्तात्रेयी ।

दत्तक (पु०) गोद लिया हुआ पुत्र ।

दद् (धा० आत्म०) [ददते] देना । नज़र करना ।

दद् (वि०) देते हुए । नज़र करते हुए ।

ददनं (न०) दान । भेंट ।

दध् (धा० आ०) [दधते) १ ग्रहण करना । २ रखना । अधिकार में कर लेना । ३ देना । नज़र करना । भेंट करना ।

दधि (न०) १ जमीआ दूध । जमीआ माठा । २ तारपीन । ३ वस्त्र ।—अन्नं,—ओदनं, (न०) दही मिला हुआ माठा ।—उत्तर,—उत्तरकं, —उत्तरगं, (न०) दही का तोड़ ।—उदः,—उदकः, (पु०) दधिसागर ।—कूर्चिका, (स्त्री०) दही मिश्रित भात ।—चारः, (पु०) रई ।—जं, (न०) ताज़ा मक्खन ।—फलः, (पु०) कैथा ।—मण्डः,—वारि, (न०) दही का तोड़ ।—मंथन, (न०) दही का विलोना ।—शोणः, (पु०) बंदर ।—सक्त, (पु० बहु०) जव का भोज्य पदार्थ जिसमें दही मिला हुआ हो ।—सारः,—स्नेहः, (पु०) ताज़ा मक्खन ।—स्वेदः, (पु०) माठा ।

दधित्थः (पु०) कैथा । कपित्थ ।

दधीचः (पु०) एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिन्होंने वज्र बनाने के लिये अपने शरीर के हाड़ दे दिये थे ।—अस्थि, (न०) १ इन्द्र का वज्र । २ हीरा ।

दनुः (स्त्री०) दानवों की माता जो दक्ष की लड़की और कश्यप की पत्नी थी ।—जः,—पुत्रः,—सम्भवः,—सूनुः, (पु०) दैत्य । दानव ।—द्विष्, (पु०) देवता ।

दन्तः (पु०) १ दाँत । काँप । विषदन्त । २ हाथी का दाँत । ३ बाण की नोंक । ४ पर्वत की चोटी । ५ कुञ्ज ।—अग्रं, (न०) दाँत का अग्रभाग ।—अन्तरं, (न०) दाँत के बीच का हिस्सा ।—उद्भेदः, (पु०) दाँत निकालना ।—उलूखलिक, (पु०)—खालिन्, (पु०) जो दाँतों से उखरी मूसल का काम ले । तपस्वी विशेष ।

—कर्पणः, (पु०) नीबू का वृक्ष ।—कारः, (पु०) हाथी के दाँत की चीज़ें बनाने वाला कारीगर । —काष्ठं, (न०) दतवन । मुखारी । —क्रूरः, (पु०) लड़ाई ।—ग्राहिन्, (वि०) दाँतों को खराब करने वाला ।—घर्षः, (पु०) दाँतों को कटकटाना ।—चालः, (पु०) ढीला दाँत । दाँत जो हिल उठा हो ।—छदः, (पु०) ओठ ।—जात, (वि०) [बच्चा जिसके] दाँत निकलते हों ।—जाहं, (न०) दाँत की जड़ । —धावनं, (न०) १ मुखारी करना । २ मुखारी। दतवन । - धावनः, (पु०) बकुल का पेड़ । —पत्रं, (न०) कर्णभूषण विशेष ।—पत्रकं, (न०) १ कर्णभूषण विशेष । २ कुन्द का फूल । —पत्रिका, (स्त्री०) १ कर्णभूषण विशेष । २ कुन्द । - पवन, (वि०) १ दाँत साफ करने की कूची । २ दाँत साफ करना ।—पातः, (पु०) दाँतों का पतन ।—पाली, (स्त्री०) १ दाँत की नोक । २ मसूढ़ा ।—पुष्पं, (न०) १ कुन्द का फूल । २ कतकफूल ।—प्रक्षालनं, (न०) दाँतों का धोना ।—भागः, (पु०) हाथी के माथे का अगला भाग ।—मलं, (न०) दाँतों का मैल ।—मांसं,—मूलं,—वल्कं, (न०) मसूड़ा ।—मूलीया, (बहु०) दाँत की सहायता से उच्चारण किये जाने वाले अक्षर ।—यथा ल, त्, थ्, द्, ध्, न्, और स् ।—रोगः, (पु०) दाँत की पीड़ा ।—वस्त्र,—वाससू, (न०) ओठ । —वीज, - वीजः,—वीजकः,—बीजकः, (पु०) अनार का वृक्ष ।—वीणा, (स्त्री०) १ वाद्य यंत्र विशेष । २ दाँतों की कट् कट् ।—वैदर्भः, (वि०) बाहिरी चोट से दाँतों का हिल उठना ।—व्यसनं, (न०) दाँत का टूट जाना ।—शठ, (वि०) खट्टा ।—शठः, (पु०) नीबू का पेड़ ।—शर्करा, (स्त्री०) दाँत की पपड़ी ।—शाणः, (पु०) दन्तमञ्जन ।—शूलं, (न०)—शूलः, (पु०) दाँत का दर्द । - शोधनिः, (स्त्री०) खरका । —शोथः, (पु०) मसूढ़ों की सूजन ।—हर्षकः, (पु०) नीबू का पेड़ ।

दंतकः, दन्तकः (पु०) १ चोटी । शिखर । २ ब्रेकेट । दीवाल में लगी खूँटी ।

दंतादंति, दन्तादन्ति (अव्य०) परस्पर काटाकूटी ।

दंतावलः, दन्तावलः (पु०) दंतिन्, दन्तिन् (पु०) हाथी ।

दंतुर, दन्तुर (वि०) १ बड़े बड़े या आगे निकले हुए दाँतों वाला । २ दाँतेदार । खुरदरे किनारे वाला । ३ लहरियादार । ४ खड़ा होना (जैसे रोंगटों का) —छदः, (पु०) नीबू का पेड़ ।

दंतुरित, दन्तुरित (वि०) बड़े या निकले हुए दाँतों वाला ।

दंत्य, दन्त्य (वि०) दाँतों का ।

दंत्यः, दन्त्यः (पु०) दाँतों की सहायता से उच्चारण होने वाले अक्षर । दन्तमूलीय ।

दंदशः, दन्दशः (पु०) दाँत ।

दंदशूक, दन्दशूक (वि०) १ ज़हरीला । काटने वाला । उत्पाती ।

दंदशूकः, दन्दशूकः (पु०) १ साँप । २ सरीसृप जन्तु । ३ राक्षस ।

दभ्, दम्भ् (धा० पर०) [दभति, दम्नोति दब्ध] १ चोटिल करना । २ छलना । धोखा देना । ३ जाना । ४ आगे बढ़ाना । आगे हाँकना ।

दभ्र (वि०) थोड़ा । छोटा ।

दभ्र (अव्यया०) थोड़ा सा । हल्का सा । कुछ कुछ ।

दभ्रः (पु०) समुद्र ।

दम् (धा० पर०) [दाम्यति, दमित, दान्तः] १ पालने योग्य । २ शान्त होने योग्य । ३ पालना । वशवर्ती करना । जीतना । रोकना । ४ शान्त करना ।

दमः (पु०) १ पालना । वशवर्ती करना । २ बाहिर की वृत्तियों को रोकना । ३ बुरे कामों से मन को हटाना । ४ मन की दृढ़ता । ५ सज़ा । दण्ड । ६ कीचड़ ।

दमथः, दमथुः (पु०) १ आत्मसंयम । २ सज़ा ।

दमन (वि०) [स्त्री०—दमनी] वशवर्ती । पालतू । विजयी ।

दमनं (न०) १ पालना । वशवर्ती करना । संयम

में रखना। २ सज़ा देना। दण्ड देना। ३ आत्म संयम।

दमयंती } (स्त्री०) विदर्भ के राजा भीम की राज-
दमयन्ती } कुमारी। इसका दमयन्ती नाम इस लिये पड़ा था कि, इसने अपने अनुपम सौन्दर्य से संसार की समस्त रूपवती स्त्रियों का अभिमान दूर कर दिया था।

दमयितृ (वि०) १ पालने वाला। वशवर्ती करने वाला। २ दण्ड देने वाला। ३ विष्णु का नाम।

दमित (वि०) १ पालतू। शान्त। २ विजित। संयत। वश में किया हुआ। हराया हुआ।

दमुनस् } (पु०) अग्नि।
दमूनस् }

दंपती } (पु०) (द्विवचन) [समा: जाया + पति]
दम्पती } पतिपत्नी।

दंभः } (पु०) १ पाखण्ड। छल। प्रवञ्चना। २
दम्भः } धार्मिक पाखण्ड। ३ अभिमान। अहङ्कार। ४ पाप। दुष्टता। ५ इन्द्र का वज्र।

दंभनं } (न०) छल। प्रवञ्चना। दग़ा। धोखा।
दम्भनम् }

दंभिन् } (पु०) पाखण्डी। छलिया।
दम्भिन् }

दंभोलिः } (पु०) इन्द्र का वज्र।
दम्भोलिः }

दम्य (वि०) १ पालने योग्य। काबू में लाने योग्य। २ दण्डनीय।

दम्य (पु०) १ नया बैल। बिना निकाला हुआ बछड़ा।

दय् (धा० आत्म०) [दयते, दयित] १ दया आना। रहम खाना। सहानुभूति प्रदर्शित करना। २ प्यार करना। पसंद करना। आसक्त होना। ३ रक्षा करना। ४ जाना। ५ देना। बाँटना। हिस्से में डालना। ६ घायल करना।

दया (स्त्री०) रहम। किसी को दुःख में देख उसके दुःख को दूर करने की इच्छा।—कूटः,—कूर्चः, (पु०) बुद्धदेव की उपाधि।

दयालु (वि०) दयावाला। कृपालु।

दयित (व० कृ०) प्यारा। अभिलषित। चाहा हुआ।

दयितः (पु०) पति। प्रेमी। प्रेमपात्र।

दयिता (स्त्री०) पत्नी। प्रेयसी।

दर (वि०) फटा हुआ। चिरा हुआ।

दरं (न०) } १ गुफा। रन्ध्र। बिल। भीटा।
दरः (पु०) } २ शङ्ख। (पु०) १ भय। डर।

दरम (अव्यया०) तनकसा। हल्का सा।

दरणं (न०) तोड़ना। चीरना। फाड़ना।

दरणिः (पु०) } १ भँवर। चक्कर। २ धार। ३
दरणी (स्त्री०) } समुद्र का हिलोरा या लहर।

दरद् (स्त्री०) १ हृदय। २ भय। डर। ३ पर्वत। पहाड़। ४ बाँध। टीला।

दरदाः (पु० बहु०) काश्मीर का सीमावर्ती एक देश।

दरदं (न०) सिंदूर। ईंगुर।

दरदः (पु०) भय। डर।

दरिः } (स्त्री०) गुफा। गह्वर। घाटी।
दरी }

दरिद्र (वि०) ग़रीब। मोहताज।

दरिद्रता (स्त्री०) निर्धनता।

दरिद्रा (स्त्री०) (धा० परस्मै०) [दरिद्राति, दरिद्रित (णिज०) दरिद्रयति] निर्धन होना। २ कष्ट में होना। ३ लटा दुबला होना।

दरोदरः (पु०) १ जुआरी। २ जुए का दाव।

दरोदरः (न०) १ जुआ। २ पाँसा।

दर्दरः (पु०) १ पहाड़। २ कुछ टूटा हुआ घड़ा।

दर्दरीकं (न०) बाजा।

दर्दरीकः (पु०) १ मैंढ़क। २ बादल। ३ बाजा।

दर्दुरः (पु०) १ मैंढ़क। २ बादल। ३ शहनाई। ४ पर्वत। ५ दक्षिण भारत का एक पर्वत।

दर्द्रुः } (पु०) दाद। एक प्रकार का चर्मरोग।
दद्रु }

दर्पः (पु०) १ अहङ्कार। अभिमान। तुनकमिजाज़ी। २ दुस्साहस। ३ गर्व। घमण्ड। ४ चिड़चिड़ापन। ५ गर्मी। ६ मुश्क। मृगमद।—आध्मात, (वि०) अभिमान से फूला हुआ।—छिद्,—हर, (वि०) दर्पखर्वकारी। नीचा दिखाने वाला।

दर्पकः (पु०) कामदेव का नाम।

दर्पणं (न०) १ आँख। २ जलाने वाला। फुलाने वाला।

दर्पणः (पु०) आईना। बट्टा। शीशा।

दर्पित } (वि०) [स्त्री०—दर्पिणी] अभिमानी। दर्पिन् } अहंकारी। चिड़चिड़ा।

दर्भः (पु०) कुश। एक प्रकार की पवित्र घास। —अनूपः, (पु०) जलप्रचुर देश जहाँ कुश बहुतायत से लगे हों।—आह्वयः, (पु०) मूंज।

दर्भटं (न०) निज का कमरा।

दर्वः (पु०) १ हिंस्र जन। उपद्रवी आदमी। २ राक्षस। दैत्य। ३ कलछी।

दर्वटः (पु०) १ चौकीदार (गाम का)। २ दरवान। द्वारपाल।

दर्वरिकः (पु०) १ इन्द्र। २ बाजा विशेष। ३ पवन। वायु।

दर्विका (स्त्री०) कलछी। चमचा।

दर्वी } (स्त्री०) १ कलछी। चमचा। २ सर्प का दर्विः } फन।—करः, (पु०) साँप। सर्प।

दर्शः (पु०) १ दृश्य। तमाशा। दर्शन। २ अमावास्या। ३ यज्ञ विशेष।—पः, (पु०) देवता। —यामिनी, (स्त्री०) अमावास्या की रात।—विपद्, (पु०) चन्द्रमा।

दर्शक (वि०) १ देखने वाला। २ दिखलाने वाला। बतलाने वाला।

दर्शकः (पु०) १ दिखाने वाला या दिखाने के लिये सामने रखने वाला। २ द्वारपाल। दरवान। पहरेदार। ३ निपुणजन। कारीगर।

दर्शनम् (न०) १ देखना। २ जानना। समझना। पहचानना। ३ दृश्य। ४ आँख। ५ पर्यवेक्षण। मुआयना। ६ भेंट करना। ७ उपस्थित होना। ८ रूप। वर्ण। आकार। ९ स्वप्न। १० समझ। परख। बुद्धि। ११ फैसला। निर्णय। धारणा। १२ धर्म सम्बन्धी ज्ञान। १३ दार्शनिक सिद्धान्त। १४ दर्शन। १५ आईना। दर्पण। १५ गुण। नैतिक विशेषता। १६ यज्ञ।—इप्सु, (वि०) देखने का अभिलाषी।—प्रतिभूः, (पु०) उपस्थित होने के लिये ज़मानत।

दर्शनीय (वि०) १ देखने योग्य। पहचानने योग्य। २ देखने योग्य। मनोहर। सुन्दर। अदालत में उपस्थित करने के लिये।

दर्शयितृ (पु०) १ रखवाला। द्वारपाल। २ पथ-प्रदर्शक।

दर्शित (वि०) १ दिखलाया हुआ। प्रकट हुआ। प्रादुर्भूत। २ देखा हुआ। समझा हुआ। ३ समझाया हुआ। सिद्ध किया हुआ। ४ स्पष्ट।

दर्शिन् (वि०) [स्त्री०—दर्शिनी] देखने वाला। पहचानने वाला। जानने वाला। समझने वाला।

दल् (धा० परस्मै०) [दलति, दलित] १ फटपड़ना। चीरना। दरार करना। तड़काना। फोड़ना। २ फैलाना। खिलाना।

दलं (न०) } १ टुकड़ा। हिस्सा। २ अंश। ३ दलः (पु०) } आधा। ४ म्यान। परतला। ५ छोटा अङ्कुर। कोंपल। पत्ता। ६ किसी हथियार का फल। ७ ढेर। समूह। परिमाण। ८ सेना की टुकड़ी।—आढकः, (पु०) १ फेन। फेना। २ समुद्री मत्स्य विशेष की हड्डी। ३ खाई। गढ़ा। ४ आँधी। तूफान। ५ गेरू।—कोपः, (पु०) कुन्द की बेल।—निर्मोकः, (पु०) भूर्ज वृक्ष।—पुष्पा, (स्त्री०). केतक वृक्ष।—सूचिः,—सूची, (स्त्री०) काँटा।—स्नसा, (स्त्री०) पत्ते का रेशा या नस।

दलनम् (न०) फटना। तोड़ना। काटना। हिस्से करना। कुचलना। पीसना। चीरना।

दलनी } (पु० स्त्री०) मट्टी का ढेला। दलिः }

दलपः (पु०) १ हथियार। २ सुवर्ण। ३ शास्त्र।

दलशः (अव्य०) टुकड़े टुकड़े करके।

दलित (व० कृ०) टूटा हुआ। फटा हुआ। चिरा हुआ। फटा हुआ। खुला हुआ। फैला हुआ।

दल्भः (पु०) १ पहिया। २ जाल। बेईमानी। ३ पाप।

दवः (पु०) १ जंगल। वन। २ दावाग्नि। वनदहन। ३ अग्नि। गर्मी। ४ ज्वर। पीड़ा।—अग्निः,—दहनः, (पु०) वन की आग। दावानल।

दवथुः (पु०) १ अग्नि। गर्मी। २ पीड़ा। चिन्ता। दुःख। ३ आँख का फूलना।

दविष्ठ (वि०) दूरतम। सब से अधिक दूर।

दवीयस् (वि०) १ दूरतर। २ बहुत परे।

दशक (वि०) दस युक्त। दसगुना।

दशकम् (न०) दस का समूह।

दशत्, दशतिः (स्त्री०) दस का समूह। दहाई।

दशन् (वि०) दस।—अङ्गुलं, (न०) दस अंगुल लंबा।—अर्ध, (वि०) पाँच।—अर्धः, (पु०) बुद्धदेव।—अवतारः, (पु० बहु०) विष्णु के दस अवतार।—अश्वः, (पु०) चन्द्रमा।—आननः,—आस्यः, (पु०) रावण।—आमयः, (पु०) रुद्र।—ईशः, (पु०) १० गाँव का दरोगा।—एकादशिक, (वि०) वह आदमी जो १० देय और ११ वसूल करे। अर्थात् १० सैकड़ा सूद लेने वाला।—कण्ठः,—कन्धरः, (पु०) रावण।—गुण, (वि०) दसगुना। दस गुना अधिक बड़ा।—ग्रामिन्, (पु०)—पः, (पु०) १० गाँव का दरोगा।—ग्रीवः, (पु०) रावण।—पारमिता,—धरः, (पु०) दस सिद्धियों का रखने वाला। बुद्धदेव की उपाधि।—पुरः, (पु०) राजा रन्तिदेव की राजधानी।—बलः,—भूमिगः, (पु०) बुद्धदेव।—मालिकाः, (पु० बहु०) एक देश का नाम।—मास्य (वि०) १दस मास का। २ दस मास का गर्भ में रहा हुआ।—मुखः, (पु०) रावण।—मुखरिपुः, (पु०) श्री रामचन्द्र।—रथः, (पु०) महाराज अज के पुत्र श्रीरामचन्द्र के पिता महाराज दशरथ।—रश्मिशतः, (पु०) सूर्य।—रात्रं, (न०) दस रात का काल।—रात्रः, (पु०) दस दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ।—रूपभृत्, (पु०) विष्णु।—वक्त्रः,—वदनः, (पु०) रावण।—वाजिन्, (पु०) चन्द्रमा।—वार्षिक, (वि०) दस वर्ष बाद होने वाला या दस वर्ष तक रहने वाला।—विध (वि०) दस प्रकार का।—शतं, (न०) १ एक हज़ार। २ ११०।—शतरश्मिः, (पु०) सूर्य।—शती, (स्त्री०) एक हज़ार।—साहस्रं, (न०) दस हज़ार।—हरा, (स्त्री०) १ गंगा जी की उपाधि। २ ज्येष्ठ शुक्ला १० को होने वाला गङ्गोत्सव। ३ दुर्गा जी का उत्सव जो आश्विन शुक्ला १० को होता है। [का। दस गुना।

दशतय (वि०) [स्त्री०—दशतयी] दस हिस्सों

दशधा (अव्य०) १ दस प्रकार से। २ दस भागों में।

दशनं (न०), दशनः (पु०) १ दाँत। २ काटना।

दशनं (न०) कवच।—अंशुः, (पु०) दाँतों की दमक।—अङ्कः, (पु०) दन्तक्षत। काटने का चिन्ह।—उच्छिष्टः, (पु०) १ ओठ। २ चुम्बन। ३ आह।—छदः, वासस्, (न०) १ ओठ। २ चूमा।—पदं, (न०) दन्तक्षत। काटने का निशान।—बीजः (पु०) अनार का वृक्ष।

दशनः (पु०) पर्वत शिखर।

दशम (वि०) [स्त्री०—दशमी] दसवाँ।

दशमिन् (वि०) [स्त्री० दशमिनी] १ दसमी तिथि। २ जीवन का दसवाँ वर्ष। ३ शताब्दी के अन्तिम दस वर्ष।—स्थ, —दशमीगत, (वि०) ९० वर्ष से ऊपर की उम्र का।

दष्ट (वि०) काटा हुआ। डसा हुआ।

दशा (स्त्री०) १ कपड़े की झालर। २ बत्ती ३ उम्र या जीवन की दशा। ४ अवस्था। ५ काल। अवधि ६ परिस्थिति। हालत। ७ मन की दशा। ८ प्रारब्ध। कर्मों का फल। ९ ग्रहों की स्थिति। (जन्म काल में)।—अन्तः, (पु०) १ बत्ती का छोर। २ जीवन का अन्त।—इन्धनः, (पु०) दीपक। लैंप।—कर्ष (पु०) कपड़े का किनारा। २ दीपक।—पाकः,—विपाकः, (पु०) प्रारब्धानुसार फल। जीवन की दशा में परिवर्तन।

दशार्णाः (पु० बहु०) १ एक प्रदेश का नाम। २ उक्त देश के अधिवासी।

दशिन् (वि०) [स्त्री०—दशिनी] दस वाला। (पु०) दस गांवों का व्यवस्थापक।

दशेर (वि०) कट्टर। उत्पाती। हानिकर।

दशेरः (पु०) उपद्रवी या विषैला जानवर।

दशेरकः, दसेरकः (पु०) ऊँट का बच्चा।

दस्युः (पु०) १ एक दुष्ट जाति के जीवों की संज्ञा जिनको, देवताओं के शत्रु होने के कारण इन्द्र ने मारा था। २ जातिच्युत। पतित। व्रात्य। संस्कारभ्रष्ट। ३ चोर। डाँकू। लुटेरा। ४ दुष्ट। उद्दण्ड। पापात्मा। ५ अत्याचारी।

दस्र (वि०) वहशी । भयङ्कर । नाशक ।
दस्रौ (पु० द्वि०) दोनों अश्विनीकुमार ।
दस्रः (पु०) १ गर्दभ । गधा । २ अश्विनी नक्षत्र ।
दस्रू (स्त्री०) सूर्यपत्नी और अश्विनीकुमारों की माता ।
दह् (धा० परस्मै०) [दहति, दग्ध, दिधक्षति] १ जलाना । दग्ध करना । २ नाश करना । भस्म करना । ३ सन्तप्त करना । पीड़ित करना । ४ दागना । जुल देना ।
दहन् (वि०) १ जलन वाला । अग्नि द्वारा भस्म होने वाला । २ नाशक । हानिकारक ।—अरातिः (पु०) जल । पानी ।—उपलः, (पु०) सूर्यकान्तिमणि ।—उल्का, (स्त्री०) लुआट । अधजली लकड़ी ।—केतनः, (पु०) धूम ।—धुआँ ।—प्रिया, (स्त्री०) स्वाहा । अग्नि की स्त्री ।—सारथि, (पु०) पवन ।
दहनं (न०) १ जलना । आग मे भस्म होना ।
दहनः (पु०) १ अग्नि, २ कबूतर । ३ तीन की संख्या । ४ कुत्सितजन । ५ भिलावे का पौधा ।
दहर (वि०) १ छोटा । पतला । पतील । २ कमउम्र ।
दहरः (पु०) १ बच्चा । शिशु । २ जानवर का बच्चा । ३ छोटा भाई । ४ हृदयगह्वर या हृदय । ५ चूहा या घूँस ।
दहः (पु०) १ अग्नि । २ दावाग्नि । दावानल ।
दा (धा० परस्मै०) [यच्छति, दत्त] देना ।
दाक्षायणी (स्त्री०) १ २७ नक्षत्र में से कोई भी । २ कश्यपपत्नी दिति का नाम । ३ पार्वती । ४ रेवती नक्षत्र । ५ कद्रू या विनता । ६ दन्ती का पौधा ।—पतिः, (पु०) १ शिव । २ चन्द्रमा ।—पुत्रः, (पु०) देवता ।
दाक्षाय्यः (पु०) गीध । गृद्ध ।
दाक्षिण (वि०) [स्त्री०—दाक्षिणी] १ यज्ञ की दक्षिणा सम्बन्धी । २ दक्षिण दिशा सम्बन्धी ।
दाक्षिणं (न०) यज्ञीय दक्षिणा की वस्तुओं का समुच्चय।
दाक्षिणात्य (वि०) दक्षिण प्रदेश वासी ।
दाक्षिणात्य, (पु०) १ दक्षिन का रहने वाला आदमी । २ नारियल ।
दाक्षिणिक (वि०) [स्त्री०—दाक्षिणिकी] यज्ञीय दक्षिणा सम्बन्धी ।
दाक्षिण्यम् (न०) १ नम्रता । शिष्टता । २ कृपालुता । प्रेमी का बनावटी या अत्यन्त शिष्टाचार । ३ ऐक्य । ऐकमत्य । ४ प्रतिभा । चातुरी ।
दाक्षी (स्त्री०) १ दक्ष की कन्या । २ पाणिनी की माता का नाम ।—पुत्रः, (पु०) पाणिनी का नाम ।
दाक्ष्यं (न०) १ चातुरी । निपुणता । योग्यता । २ सत्यता । ईमानदारी ।
दाघः (पु०) जलन ।
दाडकः (पु०) दाँत । हाथी का दाँत ।
दाडिमः (पु०), दालिमः (पु०), दाडिमी (स्त्री०), दालिमी (स्त्री०) — १ अनार का पेड़ । २ छोटी इलायची ।—प्रियः,—भक्षणः (पु०) तोता । शुक ।
दाडिमं (न०) अनार फल ।
दाडिम्बः (पु०) अनार का पेड़ ।
दाढा (स्त्री०) १ बड़ा दाँत । २ समूह । ३ इच्छा । कामना ।
दाढिका (स्त्री०) दाढ़ी । श्मश्रु ।
दांडाजिनिक, दाण्डाजिनिक (वि०) [स्त्री०—दाण्डाजिनिकी] दण्ड और मृगचर्म धारण करने वाला ।
दांडाजिनिकः, दाण्डाजिनिकः (पु०) धोखे बाज़ । छलिया । कपटी पाखण्डी । दम्भी ।
दांडिकः, दाण्डिकः (पु०) दण्डदाता । सजा देने वाला ।
दात (वि०) १ विभाजित । कटा हुआ । २ धोया हुआ । साफ़ किया हुआ । ३ पका हुआ ।
दातिः (स्त्री०) १ देना । २ काटना । नाश करना । ३ वितरण । बाँट ।
दातृ (वि०) [स्त्री०—दात्री] १ दाता । २ उदार । (पु०) ।
दाता (स्त्री०) १ देने वाला । २ दाता । ३ महाजन । कर्ज देने वाला । ४ शिक्षक ।
दात्यूहः (पु०) १ पक्षी विशेष । २ चातक पक्षी । ३ बादल । ४ जलकाक ।
दात्रं (न०) हंसिया । काटने का औज़ार ।

दादः (पु०) दान । भेंट ।—दः (पु०) दाता ।

दान् (धा० उभय) [दानति—दानते] १ काटना । विभाजित करना ।

दानं (न०) १ देना । सौंपना । हवाले करना । ३ दान । भेंट । पुरस्कार । ४ उदारता । धर्मादा । ५ हाथी का मदजल । ६ घूंस । चार उपायों में से एक, जिनसे शत्रु को अपने में मिलाया जाता है । ७ काटना । बांटना । ७ स्वच्छता । सफाई । ६ रक्षा । बचाव । १० बैठक । आसन ।—कुल्या, (स्त्री०) हाथी की कनपुटी से मदजल का बहना ।—धर्मः, (पु०) धर्मादा । धर्मार्थ दान ।—पतिः, (पु०) १ अत्यन्त उदार पुरुष । २ अक्रूर जो कृष्ण के मित्र थे ।—पत्रं, (न०) दस्तावेज़ जिसमें किसी वस्तु का दान किसी के नाम लिखा गया हो ।—पात्रं, (न०) दान लेने के योग्य व्यक्ति । ब्राह्मण जिसे दान दिया जा सके ।—प्रातिभाव्यं, (न०) ऋण अदा करने की ज़मानत ।—भिन्न, (वि०) जो घूँस देकर विरुद्ध बना दिया गया हो ।—वीरः, (पु०) अत्यन्त उदार पुरुष ।—शील,—शूर, शौंड, (वि०) अत्यन्त दानी या उदार पुरुष ।

दानकं (न०) क्षुद्रदान ।

दानवः (पु०) राक्षस ।—अरिः, (पु०) देवता । २ विष्णु ।—गुरुः, (पु०) शुक्र का नाम ।

दानवेयः देखो दानवः ।

दांत, दान्त (व० कृ०) १ पला हुआ । वश में किया हुआ । लगाम को मानने वाला । २ पालतू । सीधा । ३ त्यक्त । ४ उदार ।

दांतः, दान्तः (पु०) १ पालतू बैल । सीधा बैल । २ दाता । ३ दमनक वृक्ष ।

दांतिः, दान्तिः (स्त्री०) आत्मसंयम । वश में करना ।

दांतिक, दान्तिक (वि०) हाथी दाँत का बना हुआ ।

दापित (वि०) १ दिलाया हुआ । २ जुर्माना किया हुआ । ३ दिया हुआ । ४ निबटाया हुआ । फैसल किया हुआ ।

दामन् (वि०) १ डोरा । सूत । रस्सा । २ कमर-पेटी । पट्टका । कमरबंद । २ (विद्युत्) रेखा । धारी । लकीर । ४ बड़ी पट्टी या बंधन ।—अञ्चलं, —अञ्जनं, (न०) घोड़े की पिछाड़ी बाँधने की रस्सी ।—उदरः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

दामनी (स्त्री०) पैर बांधने की रस्सी ।

दामिनी (स्त्री०) बिजली ।

दांपत्यम्, दाम्पत्यम् (न०) विवाह । वैवाहिक सम्बन्ध ।

दांभिक, दाम्भिक (वि०) [स्त्री०—दाम्भिकी] १ धोखेबाज़ । छलिया । कपटी । २ अभिमानी । तड़कीला भड़कीला । बनावटी ।

दायः (पु०) १ दान । भेंट । नज़र । २ यौतुक । दहेज़ । ३ हिस्सा । भाग । शेयर । ५ सौंपना । हवाले करना । ६ बाँटना । तकसीम करना । ८ हानि । नाश । ८ दुर्भाग्य । ६ जगह ।—अपवर्तनं, (न०) पैतृक सम्पत्ति का अपहरण या ज़ब्ती ।—अर्ह, (वि०) पैतृक सम्पत्ति पाने का दावा पेश करना ।—आदः, (पु०) १ उत्तराधिकारी । २ पुत्र । ३ रिश्तेदार । भाईबन्धु । कुटुम्बी । ४ दूर का नातेदार । ५ पावनादार ।—आदा,—आदी, (स्त्री०) १ उत्तराधिकारिणी । २ कन्या । पुत्री ।—आद्यं, (न०) १ पैतृक । २ उत्तराधिकारी होने की अवस्था ।—कालः, (पु०) पैतृक सम्पत्ति के बटवारे का समय ।—बन्धुः, (पु०) १ पैतृक सम्पत्ति का भागीदार । २ भाई ।—भागः (पु०) उत्तराधिकारियों में सम्पत्ति का बटवारा । बटवारा । [बरकाने वाला ।

दायक (वि०) [स्त्री०—दायिका] देने वाला ।

दारः (पु०) १ दरार । सन्धि । छेद । सूराख । २ जुता हुआ खेत ।—अधीन, (वि०) स्त्री पर अवलम्बित ।—उपसंग्रहः, —ग्रहः, —परिग्रहः,—ग्रहणं, (न०) विवाह । शादी ।—कर्मन्, (न०) क्रिया । विवाह । परिणय ।

दारक (वि०) [स्त्री०—दारिका] तोड़ने वाला । फाड़ने वाला । चीरने वाला ।

दारकः (पु०) १ लड़का । पुत्र । २ बच्चा । शिशु । ३ कोई भी जानवर का वच्चा । ४ ग्राम ।

दारणं (न०) चीरना । फाड़ना । खोलना । दरार करना ।

दारदः (पु०) १ पारद । पारा । २ समुद्र । (पु०) (न०) सिन्दूर । इंगूर ।
दाराः (बहु०) भार्या । पत्नी ।
दारका (स्त्री०) १ लडकी । २ रंडी । वेश्या ।
दारित (वि०) फटा हुआ । विभाजित । कटा हुआ । चिरा हुआ ।
दारिद्र्यं (न०) निर्धनता । गरीबी ।
दारी (स्त्री०) १ दरार । बिवाँई । २ रोग विशेष ।
दारु (वि०) फाडने वाला । चीरने वाला ।
दारुं (न०) १ काठ । काठका टुकडा । शहतीर । २ कुन्दा । ढेकली । उठंगन । टेकन । डंडी । ४ चट पनी । ५ देवदारु वृक्ष । ६ कच्चा लोहा । ७ पीतल ।—अराडः, (पु०) मोर । मयूर ।—आघाटः, (पु०) कठफुडवा ।—गर्भा, (स्त्री०) कठपुतली ।—जः, (पु०) ढोल विशेष ।—पात्रं, (न०) काठ का पात्र । कठोता ।—पुत्रिका, पुत्री, (स्त्री०) काठ की गुडिया । मुख्याह्वया—मुख्याह्वा, (स्त्री०) छपकली ।—यंत्रं, (न०) १कठपुतलियाँ जो तार के बल नचायी जाती हैं । २ काठ की कोई भी कल ।—वधूः, (पु०) कठपुतली या काठ की गुडिया ।—सारः, (पु०) चन्दन ।—हस्तकः, (पु०) काठ का चमचा ।
दारुः (पु०) १ उदार पुरुष । २ चित्रकार ।
दारुकः (पु०) १ देवदारु वृक्ष । २ कृष्ण के सारथी का नाम ।
दारुका (स्त्री०) १ पुतली । २ काठ की बनी किसी की शक्ल ।
दारुण (वि०) १ कड़ा । रूखा । २ कठोर । निष्ठुर । करुणाशून्य । ३ भयानक । भयङ्कर । ४ भारी । प्रचण्ड । ५ तीक्ष्ण । तीव्र । ६ निठारुण । ७ दिल दहलाने वाला ।
दारुणं (न०) सख्ती । निष्ठुरता ।
दारुणः (पु०) भयानक रस का भाव ।
दार्ढ्यं (न०) १ सख्ती । दृढ़ता । २ विश्वास-जनक प्रमाण । समर्थन ।
दार्दुरं (न०) } १ शंख (दाहिनावर्ती)। २ जल ।
दार्दुरः (पु०) }
दार्भ (वि०) [स्त्री०—दार्भी] कुश का बना हुआ ।

दार्व (वि०) [स्त्री०—दार्वी] लकडी का । काठ का ।
दार्वटं (न०) कौंसिलघर । न्यायालय । अदालत ।
दार्शनिकः (पु०) दर्शन शास्त्रों से सुपरिचित ।
दार्षद (वि०) [स्त्री०—दार्षदी] १ पत्थर का । खनिज । चपटे पत्थर पर का फर्श ।
दार्ष्टांत } (वि०) [स्त्री०—दार्ष्टान्ती] दृष्टान्त देकर
दार्ष्टान्त } समझाया हुआ ।
दालिमः (पु०) इन्द्र का नाम ।
दावः (पु०) देखो दाव ।—अग्निः,—अनलः, (पु०)—दहनः, (पु०) दावानल । वन की आग ।
दाश (पु०) मछवाहा । धीमर । मल्लाह ।—ग्रामः, (पु०) ग्राम, जिसमें अधिकांश मछुए रहते हों ।—नन्दिनी, (स्त्री०) सत्यवती, जो व्यास की माता थीं ।
दाशरथः } (पु०) दशरथ का पुत्र । साधारणतः
दाशरथि } श्री राम तथा उनके तीनों भाइयों का नाम, किन्तु विशेषतः श्रीरामचन्द्र का नाम ।
दाशार्हाः (बहु०) दाशार्ह के वंशज अर्थात् यादव गण ।
दाशेरः (पु०) १ मछुए का पुत्र । २ मच्छुआ । ३ ऊंट ।
दाशेरकः (पु०) मालवा प्रदेश ।
दाशेरकाः (पु० बहु०) मालवा प्रदेश के शासक और अधिवासी ।
दासः (पु०) १ दास । गुलाम । सेवक । २ मछुवा । ३ शूद्र । चतुर्थ वर्ण का आदमी । ४ शूद्र के नाम के पीछे लगाया जाने वाला शब्द विशेष ।—अनुदासः (पु०) गुलाम का गुलाम ।—जनः (पु०) सेवक या दास ।
दासी (स्त्री०) १ स्त्रीगुलाम । चाकरनी । २ मछुए की पत्नी । ३ शूद्र की पत्नी । ४ रंडी । वेश्या ।—पुत्रः,—सुतः, (पु०) दासी का पुत्र या बेटा ।—सभं, (न०) दासियों का समूह ।
दासेरः } (पु०) दासी का पुत्र । २ शूद्र । ३
दासेरकः } मछुआ । ४ ऊंट ।
दास्यं (न०) गुलामी । चाकरी । नौकरी । बन्धन ।
दाहः (पु०) १ जलन । आग । २ लालिमा (जैसे-आकाश की) । ३ जलन । ४ ज्वरांश ।—अगुरु (न०)—काष्ठं (न०) काष्ठ विशेष ।—आत्मक, (वि०) जल उठने

वाला। भभकने वाला।—ज्वरः, (पु०) ज्वर जिसके चढने पर शरीर में जलन सी उत्पन्न हो जाय।—सरः, (पु०)—सरस्, (न०) —स्थल, (न०) श्मशान। मरघट। कब्रगाह। —हर, (वि०) गर्मी नष्ट करने वाला। -हरं, (न०) उशीर। खस।

दाहक (वि०) [स्त्री०—दाहिका,] १ जलने वाला। सुलगने वाला। २ आग लगाने वाला। ३ दागने वाला। जुल देने वाला।

दाह्य (वि०) जलाने योग्य। भभक उठने योग्य।

दिक्कः (पु०) करभ। जवान हाथी, जिसकी उम्र २० वर्ष की हो।

दिग्ध, (वि०) १ लिसा हुआ लिपा हुआ। २ तिलहा। नष्ट किया हुआ। ३ ज़हर में बुका हुआ।

दिग्धः (पु०) १ तेल। मलहम। २ उबटन। ३ अग्नि। ४ आग में बुझातीर। ५ कहानी। [सच्ची या कल्पित]

दिंडिः, दिण्डिः } (पु०) एक प्रकार का बाजा।
डिंडिरः, दिण्डिरः }

दित (वि०) फटा हुआ। फटा हुआ। चिरा हुआ। विभाजित।

दितिः (स्त्री०) १ उदारता। २ काटफाँस। ३ दक्ष की एक कन्या का नाम जो कश्यप को व्याही थी और जो दैत्यों की माता थी।—जः,—तनयः, (पु०) राक्षस। दैत्य।

दित्यः (पु०) दैत्य।

दित्सा (स्त्री०) देने की इच्छा।

दिदृक्षा (स्त्री०) देखने की इच्छा।

दिदृक्षु (वि०) देखने के लिये इच्छुक।

दिधिषुः (पु०) १ एक स्त्री का दूसरा पति। २ अक्षत योनि विधवा जिसका पुनर्विवाह हुआ हो।

दिधिषूः } (स्त्री०) दो बार व्याही हुई स्त्री। वह
दिधीषूः } अविवाहिता स्त्री जिसकी छोटी बहिन का विवाह होगया हो।—पतिः, (पु०) वह मनुष्य जिसने अपने भाई की विधवास्त्री से मैथुन किया हो।

दिधीर्षा (स्त्री०) सहायता करने की अभिलाषा।

दिनं, (न०) १ दिन। २ दिवस जिसका मान रात सहित २४ घंटे का है।—अण्डं, (न०) अन्धकार।—अत्ययः,—अन्तः,—अवसानं, (न०) सन्ध्या। सूर्यास्त का समय।—अधीशः, (पु०) सूर्य।—ईश्वरआत्मजः, (पु०) १ शनिग्रह। २ सुग्रीव।—कर,—कर्तृ,—कृत्, (पु०) सूर्य। —केशरः,—वः, (पु०) अन्धकार।—क्षयः, (पु०) सन्ध्या काल। - चर्या, (स्त्री०) नित्य का धंधा। नित्य का कार्यक्रम।—ज्योतिस्, (न०) धूप।—दुःखित, (पु०) चक्रवाक। चकवा चकई। पः—पतिः,—बन्धुः,—मणिः,—मयूखः,—रत्नं, (न०) सूर्य।—मुखं, (न०) प्रात काल।—मूर्द्धन् (पु०) उदयाचल पर्वत।—यौवनं, (न०) दोपहर। मध्याह्न काल।

दिनिका (स्त्री०) एक दिन की मज़दूरी।

दिरिपकः (पु०) खेलने को गेंद।

दिलीपः (पु०) सूर्यवंशी एक राजा जो राज अंशुमत के पुत्र और भागीरथ के पिता थे। किन्तु कालिदास ने इनको रघु का पिता बतलाया है।

दिव् (धा० परस्मै०) [दीव्यति, द्यूत, या द्यूनः] १ चमकना। २ फेंकना। पटकना। ३ जुआ खेलना। पांसो से खेलना। क्रीडा करना। ५ हँसी मज़ाक करना। ६ दाव लगाना। ७ बेचना। ८ फजूल खर्ची करना। उड़ाना। ९ प्रशंसा करना। १० प्रसन्न होना। ११ पागल होना। नशे में चूर होना। १२ सोना। १३ अभिलाषा करना। [देवति, देवयति,—देवयते] १ विलाप करना। २ तंग कराना। सतवाना।

दिव् (स्त्री०) [कर्त्ता एकवचन—द्यौः] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ दिवस। ४ प्रकाश। चमक।—पतिः, (दिवस्पतिः) (पु०) इन्द्र। - स्पृथिव्यौ (दिवस्पृथिव्यौ) पृथिवी आकाश।—दिविजः, —दिविष्ठः,—दिविस्थ,—दिविसद्, (पु०) दिविषद् (पु०) दिवोकस्, (पु०) दिवौकस् —दिवौकसः, (पु०) स्वर्गवासी देवता।

दिवम् (न०) १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ दिवस। ४ जंगल।

दिवसं (न०) } दिन ।—ईश्वरः —करः, (पु०)
दिवसः (पु०) } सूर्य ।—मुखं, (न०) प्रातःकाल ।
—विगमः, (पु०) सन्ध्याकाल । सूर्यास्तकाल ।

दिवा (अव्यया०) दिन से । दिनके समय में ।—अटनः, (पु०) १ काक ।—अन्धः, (पु०) उल्लू ।—अन्धकी, —अन्धिका (स्त्री०) छछूंदर ।—करः, (पु०) सूर्य । २ काक । ३ सूरजमुखी फूल ।—कीर्तिः, (पु०) १ चाण्डाल । नीच जाति का आदमी । २ नाई । ३ उल्लू ।—निशं, (अव्य०) दिन रात ।—प्रदीपः, (पु०) दिन का दीपक । दुर्बोध मनुष्य ।—भीतः,—भीतिः, (पु०) १ उल्लू । २ चोर । सेंध लगाने वाला ।—मध्यं, (न०) दोपहर ।—रात्रं, (अव्य०) दिन रात ।—वसुः, (पु०) पुत्र ।—शयं, (वि०) दिन में सोने वाला ।—स्वप्नः,—स्वापः, (पु०) दिन में सोना ।

दिवातन (वि०) [स्त्री०—दिवातनी] दिन का [या दिन सम्बन्धी ।

दिविः (स्त्री०) चाष पक्षी ।

दिव्य (वि०) १ दैवी । स्वर्गीय । नैसर्गिक । २ अलौकिक । अद्भुत । ३ चमकीला । दमकदार । ४ मनोहर । सुन्दर । अंशुः, (पु०) सूर्य ।—अङ्गना, —नारी, —स्त्री, (स्त्री०) अप्सरा,—अदिव्य, (वि०) लौकिक तथा अलौकिक (वीर) जैसे अर्जुन ।—उदकं, (न०) वृष्टि का जल ।—कारिन्, (वि०) शपथ खाने वाला । सत्यासत्य की परीक्षा देने वाला ।—गायनः, (पु०) गन्धर्व ।—चक्षुस्, (वि०) १ दिव्य दृष्टि वाला । २ अधा । (पु०) १ वानर । २ अलौकिक दृष्टि ।—ज्ञान, (न०) अलौकिक ज्ञान । नैसर्गिक ज्ञान ।—दृश्, (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।—प्रश्नः, (पु०) शकुन विचार ।—रत्नं, (न) चिन्तामणि ।—रथः, (पु०) देवविमान जो आकाश में चलता है ।—रसः, (पु०) पारद । पारा ।—वस्त्र, (वि०) नैसर्गिक परिच्छद सम्पन्न ।—वस्त्रः, (पु०) १ धूप । घाम । २ सूरजमुखी फूल —सरित्, (स्त्री०) आकाशगङ्गा ।—सारः, (पु०) साल वृक्ष ।

दिव्यं (न०) १ नैसर्गिक स्वभाव । दैवी । २ आकाश । ३ (अग्न्यादि द्वारा) परीक्षा । ४ शपथ । किरिया । गम्भीर घोषणा । ५ लौंग । ६ चन्दन विशेष ।

दिव्यः (पु०) १ अलौकिक पुरुष । स्वर्गीय जीव । २ यव । जवा । ३ यम । ४ तत्ववेत्ता । दार्शनिक ।

दिश् (धा० उभय०) [दिशति—दिशते, दिष्ट] १ बतलाना । दिखलाना । सामने रखना । २ निर्दिष्ट करना । ३ देना । सौंपना । ४ अदा करना । ५ राज़ी होना । अङ्गीकार करना । ६ आज्ञा देना । हुक्म देना । ७ अनुमति देना । परवानगी देना ।

दिश् (स्त्री०) [कर्त्ता एकवचन ।—दिक्, दिग्] १ दिशा । २ निर्देश । सङ्केत । ३ अञ्चल । प्रदेश । ४ विदेशी अञ्चल । ५ दृष्टिकोण । ६ आज्ञा । आदेश । ७ सात की संख्या । ८ पक्ष या दल । ९ काटने की गूत या चिन्ह ।—अन्तः,(पु०) दूरवर्ती स्थान ।—अन्तरं, (न०) १ दूसरी ओर । २ मध्यवर्ती स्थान । अन्तरिक्ष । ३ सुदूरवर्ती स्थान विशेष ।—अम्बर, (वि०) नितंग नंगा । मादरजात नंगा ।—अम्बर, (पु०) १ नागा । जैन या बौद्ध धर्म का । २ भिक्षुक । संन्यासी । ३ शिव । ४ अन्धकार ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) दिक्पाल ।—करः, (पु०) १ युवक । युवा-पुरुष । २ शिव जी ।—कारिका,—करी, (स्त्री०) युवती लड़की या स्त्री ।—कारिन्—गज,—दन्तिन्,—वारणः, (पु०) अष्टदिग्गजो में से एक —चक्र (न०) १आकाश मण्डल । २ समूचा संसार ।—जयः,—विजयः, (पु०) ससार का विजय ।—दर्शनं, (न०) केवल दिशा निर्देश ।—नागः, (पु०) १ दिग्गज । २ कालिदास का समकालीन एक कवि । मुखं, (न०) आकाश का कोई स्थान या भाग ।—मोहः, (पु०) दिग्भ्रम ।—वस्त्र, (वि०) नितंग नंगा । नागा ।—वस्त्रः (पु०) १ दिगम्बरी साधु । २ शिव जी ।—विभावित (वि०) जगत्प्रसिद्ध ।

दिशा (स्त्री०) दिशा । सिम्त । अञ्चल । प्रान्त ।—गजः,—पाल, (पु०) दिग्गज । दिक्पाल ।

दिष्ट (वि०) १ दिखलाया हुआ। निर्दिष्ट। २ वर्णित। ३ निश्चित। ४ आनिष्ट।—अन्तः, (पु०) मृत्यु।

दिष्टम् (न०) १ अंश। भाग। २ प्रारब्ध। आज्ञा। आदेश। निर्देश। ४ उद्देश्य।

दिष्टिः (स्त्री०) १ अंश। भाग। २ निर्देश। आदेश। नियम। आज्ञा। ३ भाग्य। प्रारब्ध। ४ सौभाग्य। हर्ष। शुभ कार्य।

दिष्ट्या (अव्यया०) सौभाग्य से। भाग्यवश।

दिह् (धा० उभय०) [देग्धि, दिग्धे, दिग्धः] १ लेप करना। उपटन करना। प्लास्टर करना। फैलाना। २ ख़राब करना। भ्रष्ट करना। अपवित्र करना।

दी (धा० आत्म०) [दीयते, दीन,] नष्ट होना। मर जाना।

दीक्ष् (धा० आत्म०) [दीक्षते, दीक्षित] १ यज्ञ करने की योग्यता प्रदान करना। २ आत्मसमर्पण करना। ३ शिष्य बनाना। ४ उपनयन संस्कार करना। ५ यज्ञ करना। ६ आत्मसंयम का अभ्यास करना।

दीक्षकः (पु०) दीक्षा गुरु।

दीक्षणं (न०) शिक्षादान। दीक्षादान।

दीक्षा (स्त्री०) १ संस्कार। २ यज्ञारम्भ के पूर्व का कर्म विशेष। ३ उपनयन संस्कार। ४ किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये आत्मसमर्पण करना।

दीक्षित (व० कृ०) १ दीक्षाप्राप्त। मन्त्रोपदिष्ट। २ यज्ञ करने के लिये तैयार। ३ व्रत धारण किये हुए।

दीक्षितः (पु०) १ दीक्षा में संलग्न यज्ञ कराने वाला। २ शिष्य। ज्योतिष्टोम आदि बड़े बड़े यज्ञ करने वालों की सन्तान।

दीदिविः (पु०) १ भात। २ स्वर्ग।

दीधितिः (स्त्री०) १ प्रकाश की किरण। २ चमक। ३ कान्ति। शारीरिक स्फूर्ति।

दीधितिमत् (वि०) चमकीला। (पु०) सूर्य।

दीधी (धा० आत्म०) [दीधीते] १ चमकना। २ मालूम पड़ना। प्रकट होना।

दीन (वि०) १ गरीब। निर्धन। निष्किञ्चन। २ सन्तप्त। पीड़ित। अभागा। ३ दुःखी। उदास। ४ भीरु। डरपोंक। ५ कमीना। दयार्द्र। करुण।—दयालु (वि०) —वत्सल, (वि०) दीनों पर कृपा करने वाला।—बन्धुः (पु०) दीनों का मित्र।

दीनः (पु०) निर्धन मनुष्य। पीड़ित मनुष्य।

दीनारः (पु०) १ एक प्रकार का प्राचीन कालीन सोने का सिक्का। २ सिक्का। ३ सुवर्ण भूषण।

दीप् (धा० आत्म०) [दीप्यते, दीप्त, देदीप्यते] १ चमकना। भभकना। २ जलना। ३ धधकना। ४ क्रोधाविष्ट होना। ५ ज्योतिर्मय होना।

दीपः (पु०) दीपक। चिराग। लैंप।—अन्विता, (स्त्री०) अमावास्या।—आराधनं (न०) आर्ती करना। —आलिः,—आलि,—आवली,—उत्सवः (पु०) दीपकों की माला या पंक्ति। दिवाली का उत्सव जो कार्तिकी अमावास्या को किया जाता है।—कलिका, (स्त्री०) दीपक का फूल। चिराग का गुल।—किट्टम्, (न०) काजल।—कूपी,—खरी, (स्त्री०) दीपक की बत्ती। पलीता।—पादपः,—वृक्षः, (पु०) दीवट। झाड़। शमादान।—पुष्पः, (पु०) चम्पक वृक्ष। —भाजनं, (न०) लैंप।—माला, (स्त्री०) रोशनी।—शत्रुः, (पु०) पतिंगा। पंखी।—शिखा, (स्त्री०) दीपक की लौ।—शृङ्खला, (स्त्री०) दीपकों की पंक्ति। रोशनी।

दीपक (वि०) [स्त्री०—दीपिका] १ जलता हुआ। प्रकाशमान। २ चमकता हुआ। सुन्दर बनाने वाला। ३ भड़काने वाला। उभाड़ने वाला। ४ बलप्रद। पाचनशक्ति बढ़ाने वाला।

दीपकं (न०) १ केसर। ज़ाफ़रान। २ अर्थालङ्कार विशेष।

दीपकः (पु०) १ रोशनी। चिराग़। दीपक। २ बाज पक्षी। ३ कामदेव की उपाधि।

दीपनम् (न०) १ जलानेवाला। प्रकाश करने वाला। २ बलप्रद। पाचनशक्ति को बढ़ाने वाला। ३ स्फूर्ति उत्पन्न करने वाला। ४ केसर। ज़ाफ़रान।

दीपिका (स्त्री०) पलीता। मसाल।

दीपित १ (वि०) १ आग लगा हुआ। २ जलता हुआ। ३ प्रकाश करता हुआ। ४ प्रकट किया हुआ। प्रत्यक्ष किया हुआ।

दीप्त १ (व० कृ० १ जला हुआ । प्रकाशमान । २ धधकता हुआ । चमकीला । ३ बला हुआ । ४ भड़का हुआ । उत्तेजित किया हुआ । —अंशुः, (पु०) सूर्य ।—अक्षः, (पु०) बिलार ।—अग्नि, (वि०) जलता हुआ ।—अग्निः, (पु०) १ धधकती हुई आग । २ अगस्त्य जी का नाम ।—अङ्गः, (पु०) मयूर । मोर ।—आत्मन्, (वि०) क्रोधन स्वभाव का । —उपलः, (पु०) सूर्यकान्त मणि । - किरणः, (पु०) सूर्य ।—कीर्तिः, (पु०) कार्तिकेय का नाम ।—जिह्वा, (स्त्री०) लोमड़ी । [यह प्रायः किसी बदमिजाज या कलहप्रिया स्त्री के लिये आलङ्कारिक रूप से प्रयुक्त होता है ।] —तपस्, (वि०) तपस्या में निरत ।— पिङ्गल , (पु०) सिंह ।—रस , (पु०) केंचुवा । —लोचनः, (पु०) बिल्ली ।—लोहं, (न०) पीतल । काँसा ।

दीप्तं (न०) सुवर्ण । सोना ।

दीप्तः (पु०) १ सिंह । २ नीबू या बिनौरे का पेड़ ।

दीप्तिः (स्त्री०) १ चमक । आभा । कान्ति । २ अत्यन्त मनोहरता । ३ लाख । चपड़ी । ४ पीतल ।

दीप्र (वि०) चमकीला । भड़कीला ।

दीप्रः (पु०) अग्नि । आग ।

दीर्घ (वि०) [तुलना करने में द्राघीयस् Compar —द्राघिष्ठ, Superl.] १लंबा (समय और स्थान सम्बन्धी) बहुत दूर तक पहुँचने या व्याप्त होने वाला । २ दीर्घकालीन । बहुत समय का । अरुचि उत्पन्न करने वाला । ३गम्भीर । ४ दीर्घ (जैसे स्वर) ५ ऊँचा । लंबा ।— अध्वगः, (पु०) हल्कारा । कासिद ।—अहन्, (पु०) ग्रीष्मऋतु ।— आकार, (वि०) लंबा अधिक, चौड़ा कम ।— आयु, —आयुस्, (वि०) दीर्घजीवी ।— आयुधः, (पु०) १ भाला । २ बर्छी आदि कोई भी लंबा हथियार । ३ शूकर ।—आस्यः, (पु०) हाथी ।—कण्ठः,—कण्ठकः,— कन्धरः (पु०) सारस पक्षी ।—काय (वि०) कद में लंबा ।—केशः, (पु०) रीछ ।—गतिः, —ग्रीवः,—घाटिकः,—जंघः, (पु०) ऊँट । —जिह्वः, (पु०) सर्प ।—तपस्, (पु०) अहल्या के पति गौतम का नाम ;—तरुः,—दण्डः, (पु०) ताड़ वृक्ष ।—तुण्डी, (स्त्री०) छछूँ-दर ।—दर्शिन्, (वि०) १ दूर देखने वाला । आगा पीछा सोचने वाला । विवेकी । समझदार । २ बुद्धिमान । मतिमान । (पु०) १ रीछ । २ उल्लू । - नाद, (वि०) निरन्तर अति कोला-हल करने वाला ।—नादः, (पु०) १ कुत्ता । २ मुर्गा । ३ शङ्ख ।—निद्रा, (स्त्री०) दीर्घकालीन नींद । मृत्यु ।—पत्रः, (पु०) ताड़ का वृक्ष । पादः, (पु०) बगुला । बूटीमार ।—पादप , (पु०) १ नारियल का पेड़ । सुपाड़ी का पेड़ । ३ ताड़ का पेड़ ।—पृष्ठः, (पु०) सर्प ।— वाला, (स्त्री०) मृग विशेष । चमरी ।— मारुतः, (पु०) हाथी ।—रतः, (पु०) कुत्ता । रदः, (पु०) शूकर ।—रसनः, (पु०) सर्प । रोमन्, (पु०) शूकर ।—वक्त्रः, (पु०) हाथी । —सक्थ, (वि०) बड़ी बड़ी जांघों वाला ।— सत्रं, (न०) दीर्घ-काल-व्यापी सोमयाग ।— सत्रः, (पु०) ऐसा यज्ञ करने वाला ।—सूत्र, —सूत्रिन्, (वि०) धीरे काम करने वाला । धीमा । सुस्त । दीर्घसूत्री ।

दीर्घं (अव्यया०) १ अर्से का । अर्से तक । २ गह-राई से । गम्भीरता से । ३ दूर । सुदूर ।

दीर्घः (पु०) १ ऊंट । २ दीर्घ स्वर ।

दीर्घिका (स्त्री०) १ दिग्घी । लंबी झील । २ झील या कूप ।

दीर्ण (वि०) १ फटा हुआ । चिरा हुआ । २ भय-भीत । डरा हुआ ।

दु (धा० परस्मै०) [दुनोति, दूत या दून] १ जलाना । भस्म कर डालना । २ सताना । सन्तप्त करना । तंग करना । ३ पीड़ित करना । दुःखी करना ।

दुःख (वि०) १ पीड़ाकारक । अप्रिय । प्रतिकूल । २ कठिन । असरल ।—अतीत, (वि०) दुःखों से मुक्त ।—अन्तः, (पु०) मोक्ष ।—कर, (वि०) पीड़ादायी । कष्टदायी ।—ग्रामः, (पु०) सांसारिक अस्तित्व । दुःखदायी दृश्य ।

—छिन्न, (वि०) १ सन्तप्त। कष्ट। २ पीड़ित। दुःखी।—प्राय,—बहुल, (वि०) दुःखों से परिपूर्ण।—भाज्, (वि०) दुःखी।—लोक, (पु०) सांसारिक जीवन जो दुःखपूर्ण है। —शील, (वि०) कठिनता से काबू में किये जाने वाला। दुष्ट स्वभाव का। चिड़चिड़ा।

दुःखम् (न०) १ दुःख। रंज। पीड़ा। कष्ट। २ मुसीबत। कठिनाई।

दुःखित } (वि०) [स्त्री०—दुःखिनी] १ पीड़ित।
दुःखिन् } सन्तप्त। दुःखी। २ बापुरा। कष्टी। अभागा।

दुकूलं (न०) रेशमी महीन वस्त्र। दुपट्टा।

दुग्ध (वि०) दुहा हुआ। दूध निकाला हुआ। खींचा हुआ। निकाला हुआ।—अग्रं, (न०) —तालीयं, (न०) मलाई।—पावनम्, (न०) दुधैंडी जिसमें दूध गर्माया जाता हो। —पोष्य, (वि०) माता का दूध पीने वाला (बच्चा)।—समुद्रः, (पु०) क्षीरसागर।

दुग्धम् (न०) १ दूध। २ क्षीरवृक्षों का दूध जैसा रस।

दुघ (वि०) १ दुहने वाला। देने वाला।

दुघा (स्त्री०) दुधार गौ।

दुंडुक } (वि०) बेईमान। दुष्ट हृदय का। जालसाज़।
दुण्डुक }

दुड्डुमः (पु०) हरा प्याज़।

दुंदमः } (पु०) ढोल। नगाड़ा।
दुन्दमः }

दुंदुः } (पु०) १ एक प्रकार का ढोल। २ कृष्ण के
दुन्दुः } पिता वसुदेव का नाम।

दुंदुभः } (पु० स्त्री०) ढोल विशेष। (पु०) १
दुन्दुभः } विष्णु। २ कृष्ण। ३ विष विशेष। ४ एक दैत्य जिसे वालि ने मारा था।

दुंदुभिः } (पु० स्त्री०) बड़ा ढोल। नगाड़ा। (पु०)
दुन्दुभिः } १ विष्णु। २ कृष्ण। ३ विषविशेष। ४ दैत्य जिसे वालि ने मारा था।

दुर् (अव्यया०) एक उपसर्ग जो दुस् के बदले उन शब्दों में लगायी जाती है, जो स्वर या हस्व व्यञ्जनों से आरम्भ होते हैं। इसका प्रयोग "बुरे" "कठोर" या "दुरूह" के अर्थ में किया जाता है।—अक्ष, (वि०) १ कमज़ोर आँख वाला। २ बुरे नेत्रों वाला।—अक्षः, (पु०) कपट के पाँसे।—अतिक्रम, (वि०) १ दुस्तर। जिसका नाँघना या पार होना कठिन हो। २ अजेय। ३ अनिवार्य।—अत्यय, (वि०) देखो अतिक्रम।—अदृष्टं, (न०) अभाग्य। बुरी क़िस्मत।—अधिग,—अधिगम, (वि०) १ अप्राप्त। २ २ जो कठिनाई से मिल सके। ३ कठिनाई से समझ में आ सके।—अधिष्ठित, (वि०) बुरी तरह किया हुआ। दुर्व्यवस्थित।—अध्यय, (वि०) १ कठिनता से प्राप्त करने योग्य। २ अध्ययन करने के लिये अत्यन्त कठिन।—अध्यवसायः, (पु०) मूर्खता पूर्ण व्यवसाय या कार्य। —अध्वः, (पु०) बुरा मार्ग।—अन्त, (वि०) १ अनन्त। अन्तरहित। जिसकी समाप्ति पर पहुँचा ही न जा सके। २ परिणाम में दुःखदायी। —अन्वय, (वि०) कठिनाई से पीछे चलने योग्य। २ कठिनाई से प्राप्त करने या समझने योग्य।—अन्वयः, (पु०) भ्रमपूर्ण परिणाम या फल।—अभिमानिन्, (वि०) अनुचित अभिमान करने वाला।—अवगम, (वि०) समझ में न आने योग्य।—अवग्रह, (वि०) कठिनाई से वश में लाने योग्य।—अवस्थ, (वि०) दुर्दशाग्रस्त।—अवस्था, (स्त्री०) दुर्दशा।—आकृति, (वि०) बदसूरत। कुरूप। —आक्रम, (वि०) अजेय। न जीतने योग्य। आक्रमण, (पु०) १ अनुचित चढ़ाई। २ दुरूह स्थान।—आगमः, (पु०) अनुचित या शास्त्र विरुद्ध उपलब्धि।—आग्रहः, (पु०) मूर्खता पूर्ण हठ। जिद।—आचर, (वि०) कठिनाई से पूर्ण होने वाला।—आचार, (वि०) दुष्ट आचरण वाला। दुष्ट।—आचारः, (पु०) कुत्सित पद्धति। दुष्टता।—आत्मन्, (पु०) दुष्टात्मा। पाजी। बदमाश।—आधर्ष, (वि०) १ दुरतिक्रम। दुरूह। २ जिस पर आक्रमण न किया जा सके। ३ क्रोधी।—आनम, (वि०) कठिनता से झुकाने या खींचने योग्य।—आप, (वि०) कठिनाई से प्राप्तव्य।—आराध्य,

(वि०) कठिनाई से प्रसन्न होने वाला या मनाया जाने वाला।—आरोह, (वि०) कठिनाई से चढ़ने योग्य।—आरोहः, (पु०) १ नारियल का पेड़। २ ताड़का वृक्ष। ३ छुहारे का पेड़।—आलाप, (पु०) १ अकोसा। शाप। २ गाली गलौज।—आलोक, (वि०) १ कठिनाई से देखने या पहचानने योग्य। २ चकाचौंध वाला।—आवार, (वि०) कठिनाई से ढकने योग्य। कठिनाई से काबू में आने वाला।—आशय, (वि०) दुष्ट मन वाला। दुष्टात्मा। मलिनचित्त का।—आशा, (स्त्री०) बुरी या दुष्ट अभिलाषा। आशा जिसका पूरा होना कठिन हो।—आसद, (वि०) १ अजेय। जिस पर आक्रमण न किया जा सके। २ कठिनाई से मिलने वाला। ३ असमान। असदृश।—इत, (वि०) १ कठिन। २ पापपूर्ण।—इतम्, (न०) १ बुरा मार्ग। २ दुष्टता। कठिनाई। ख़तरा। भय। ३ मुसीबत। विपत्ति।—इष्टं, (न०) १ अकोसा। शाप। २ अनुष्ठान जो दूसरे को हानि पहुँचाने के लिये किया जाय।—ईशः, (पु०) बुरा स्वामी। दुष्ट मालिक।—ईषणा,—एषणा, (स्त्री०) अकोसा। शाप।—उक्त,—उक्तिः, (स्त्री०) ऐसा कथन जो बुरा लगे। गाली। भर्त्सना। धिक्कार। फटकार।—उत्तर, (वि०) जो उत्तर देने योग्य न हो।—उदाहर, (वि०) कठिनाई से उच्चारण करने योग्य।—उद्वह, (वि०) असह्य।—ऊह, (वि०) निगूढ़। दुर्बोध।—ग, (वि०) १ कठिनाई से प्रवेश करने योग्य। अगम्य। २ अप्राप्तव्य। ३ जो समझ में न आ सके। गः, (पु०)—गम् (न०) किसी वन, नदी या पर्वत के ऊपर का मार्ग जो कठिनाई से तै किया जा सके। १ सङ्कीर्ण मार्ग। २ गढ़ी। गढ़। क़िला। महल। ३ ऊबड़-खाबड़ भूमि। ४ कठिनाई। विपत्ति। मुसीबत। कष्ट। भय। ख़तरा।—र्गा, (=दुर्गा) (स्त्री०) पार्वती का नाम विशेष।—गत, (वि०) १ अभागा। दुरवस्था को प्राप्त। २ अकिञ्चन। निर्धन। ३ दुःखी। मुसीबतज़दा।—गतिः, (स्त्री०) १अभाग्य। बदकिस्मती। अभाव। कष्ट। २कठिन अवस्था या मार्ग। ३नरक।—गन्ध, (वि०) दुर्गन्धि युक्त।—गन्धः, (पु०) १ बदबू। बास। सड़ाइन। २ प्याज़। ३ आम का पेड़।—गन्धि,—गन्धिन्, (वि०) बदबू वाला।—गम, (वि०) १ अगम्य। न जाने योग्य। २ अप्राप्तव्य। ३ समझने में कठिन।—गाढ,—गाध,—गाह्य, (वि०) थाह लेने में कठिन। अथाह। जिसका अनुसन्धान न हो सके।—ग्रह, (वि०) १ कठिनाई से प्राप्तव्य या सम्पन्न करने योग्य। २ कठिनाई से जीतने या काबू में करने योग्य। ३ कठिनाई से समझ में आने योग्य।—ग्रहः (पु०) मरोड़। ऐंठन। जकड़। अकड़वाई।—घट, (वि०) १ कठिन। २ असम्भव।—घोषः, (पु०) १ चीख़। चिल्लाहट। २ रीछ।—जन, (वि०) १ दुष्ट। बुरा। ख़राब। २ मलिन चित्त का। उपद्रवी।—जनः, (पु०) दुष्ट आदमी। उत्पाती आदमी।—जय, (वि०) अजेय।—जर, (वि०) १ सदैव युवा रहने वाला। २कड़ा (खाद्य पदार्थ)। १ सहज में न पचने योग्य। २ कठिनाई से उपभोग करने योग्य।—जात, (वि०) १ दुःखी। अभागा। २ दुष्ट स्वभाव का। बुरा। दुष्ट। ३ मिथ्या। बनावटी।—जातम्, (न०) दुर्भाग्य। बदकिस्मती। विपत्ति।—जाति, (वि०) १ दुष्ट स्वभाव। दुष्ट। बुरा। २ जाति बहिष्कृत।—जातिः, (स्त्री०) विपत्ति। दुर्वस्था।—ज्ञान,—ज्ञेय, (वि०) जो बोधगम्य न हो। जो जाना न जा सके।—णय,—नयः, (पु०) दुष्टाचरण। २ अनौचित्य ३ अन्याय।—णामन्,—नामन्, (वि०) बुरा नाम वाला।—दम,—दमन,—दम्य, (वि०) कठिनाई से बस में आने योग्य।—दर्श, (वि०) १ कठिनाई से दिखलायी पड़ने वाला। २ चकाचौंध वाला।—दान्त, (वि०) ऊधमी। उपद्रवी।—दान्तः, (पु०) १ बछड़ा। २ झगड़ा। ऊधम।—दिन, (न०) १ बुरा दिन। २ दिन जिसमें आकाश मेघाच्छादित रहे। ३ वृष्टि (किसी भी चीज़ की)। ४ गाढ़ अंधकार।—दृष्ट, (वि०) अनुचित रीत्या निर्णीत।—दैवं,

(न०) दुर्भाग्य । बदक़िस्मती ।—द्यूतं, (न०) कपट द्यूत ।—द्रुमः, (पु०) प्याज । धर., (वि०) जिसे धारण करना या पकड़ रखना कठिन हो ।—धरः, (पु०) पारा । पारद ।—धर्ष, (वि०) १ जिसका तिरस्कार न हो सके । जो पकड़ा न जा सके । २ अगम्य । ३ भयावह । भयजनक । ४ क्रोधन स्वभाव का ।—धी, (वि०) मूढ़ । मूर्ख । नामकः, (पु०) अर्शरोग । बवासीर के मस्से ।—निग्रह, (वि०) जो दबाया न जा सके । जिस पर शासन न किया जा सके । बर्बर । जंगली ।—निमित (वि०) असावधानी से भूमि पर रखा हुआ । निमित्तं, (न०) १ अपशकुन । २ अनुचित बहाना ।—निवार,—निवार्य, (वि०) कठिनाई से रोकने या बचाने योग्य । अजेय ।—नीतं, (न०) दुश्चरण । दुर्नीत । बुरा चाल चलन ।—नीतिः, (स्त्री०) बुरा शासन ।—बल (वि०) १ निर्बल । कमज़ोर २ उत्साहहीन । ३ छोटा । थोड़ा । कम ।—बाल, (वि०) गंजा । खल्वाट ।—बुद्धि, (वि०) १ मूर्ख । मूढ़ । २ दुष्ट चित्त का । दुष्टात्मा । बोध, (वि०) जो समझ में न आ सके । अथाह । —भग, (वि०) अभागा ।—भगा, (स्त्री०) १ पत्नी जिसे उसका पति नापसंद करता हो । २ दुष्ट स्वभाव स्त्री ।—भर, (वि०) जिसका पालन पोषण न किया जा सके ।—भाग्य, (वि०) अभागा । बदक़िस्मत ।—भाग्यं, (न०) अभाग्य । बदक़िस्मती ।—भिक्षं, (न०) अकाल । क़हत ।—भृत्यः, (पु०) बुरा नौकर । भ्रातृ, (पु०) बुरा भाई ।—मति, (वि०) १ मूर्ख । मूढ़ । अजान । २ दुष्ट ।—मद, (वि०) गर्वी । पागल । भयानक ।—मनस्, (वि०) मन में दुःखी । अनुत्साहित । उदास । दुःखी ।—मनुष्यः, (पु०) बुरा आदमी ।—मंत्रः,—मन्त्रितम् (न०) बुरा परामर्श । बुरी सलाह ।—मरणम्, (न०) अकाल मृत्यु ।—मर्याद, (वि०) दुश्शील । दुष्ट ।—मल्लिका,—मल्लीः, (स्त्री०) छोटा नाटक । सुखान्त । नक़ल ।—मित्रः, (पु०) १ बुरा दोस्त । २ शत्रु ।—मुख, (वि०) १ कुरूप । बदशक्ल । २ बदज़बान ।—मूल्य, (वि०) महँगा । तेज़ ।—मेधस्, (वि०) मूर्ख । मूढ़ । कुन्द । (पु०) मूढ़ । बुद्धू ।—योध,—योधन, (वि०) अजेय । जो जीता न जा सके ।—योधनः, (पु०) धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र ।—योनि (वि०) नीच जाति में उत्पन्न ।—लक्ष्य (वि०) कठिनाई से देख पड़ने वाला ।—लभ, (वि० १ कठिनाई से प्राप्त होने योग्य या मिलने योग्य । २ सर्वोत्तम । प्रसिद्ध । ३ प्रिय प्रेमपात्र । ४ मूल्यवान ।—ललित, (वि०) १ लाड प्यार से बिगड़ा हुआ । दुलार से ख़राब किया हुआ । २ नटखट । उपद्रवी दुष्ट ।—लेख्यं, (न०) जाली दस्तावेज़ ।—वच, (वि०) अवर्णनीय ।—वचं (न०) गाली । दुर्वाच्य ।—वचस्, (न०) गाली । कुवाच्य ।—वर्ण, (वि०) बुरे रंग का ।—वर्णं, (न०) चाँदी ।—वसतिः (स्त्री०) ऐसा आवसस्थान जहाँ रहने में कष्ट हो ।—वह, (वि०) भारी । —वाच्य, (वि०) १ बोलने या कहने में कठिन । २ कुवाच्य युक्त । ३ कठोर । निष्ठुर ।—वाच्यं, (न०) १ गाली । फटकार । धिक्कार । २बदनामी । अपवाद ।—वादः, (पु०) मानहानि । बदनामी । —वार,—वारण, (वि०) असह्य ।—वासना, १ बुरी अभिलाषा । २अलीक कल्पना । असारवस्तु —वासस् (वि०) १ बुरी तरह पोशाक पहिने हुए । २ नंगा । (पु०) अत्रि और अनुसूया के पुत्र एक ऋषि का नाम ।—विगाह,—विगाह्य, (वि०) अथाह ।—विचिन्त्य, (वि०) जो समझ में न आ सके ।—विदग्ध, (वि०) १ अपटु । कच्चा । मूर्ख । मूढ़ । २ नितान्त या निपट अजान । ३ मूर्खतावश अभिमान से फूला हुआ । वृथाभिमानी ।—विध, (वि०) १ कमीना । २ दुष्ट । ३ अकिञ्चन । ४ मूर्ख ।—विनयः, (पु०) बुरा चालचलन ।—विनीत, (वि०) ढीठ । हठी । ज़िद्दी ।—विपाकः, बुरा परिणाम या फल । २ इस जन्म या पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का बुरा फल ।—विलसितं, (न०) उद्दण्डता । नटखटी ।—वृत्त, (वि०) १ दुष्ट । बदमाश । असदाचरणी । २ गुण्डा ।—वृत्तम्,

(न०) असदाचरण। बुरा चाल चलन।—वृष्टिः, (स्त्री०) सूखा। अकाल।—व्यवहारः, (पु०) अनुचित निर्णय या फैसला। -व्रत, (वि०) अवज्ञाकारी। नियम-विरुद्ध करने वाला।—हुत, (न०) विधि-विरुद्ध हवन किया हुआ।—हृद्, (वि०) दुष्ट हृदय। (पु०) कोई भी शत्रु।—हृदय, (वि०) दुष्ट हृदय। बुरा इरादा रखने वाला। दुष्ट।

दुरोदरं (न०) जुआ। पाँसे का खेल।

दुरोदरः (पु०) १ ज्वाडी। जुआ खेलने वाला। २ पाँसे रखने की पेटी ३ दाँव।

दुल् (धा० उभ०) [दोलयति—दोलयते, दोलित] झूलना।

दुलिः (स्त्री०) छोटी कछुई या कछवी।

दुष् (धा० परस्मै०) [दुष्यति, दुष्ट] १ हानि उठाना। खराब होना। धब्बा लगना। अपवित्र होना। छूत लगना। ३ पाप करना। भूल करना। गलती करना। ४ असती होना। निमकहरामी करना।

दुष्ट (व० कृ०) १ खराब किया हुआ। बरबाद किया हुआ। चोटिल किया हुआ। नष्ट किया हुआ। २ भ्रष्ट किया हुआ। कलङ्कित किया हुआ। ३ बिगाड़ा हुआ। ४ दुष्ट। ५ अपराधी। जुर्म करने वाला। ६ नीच। ओछा। ७ दोषपूर्ण। त्रुटि युक्त। ८ कष्टदायी। ९ निकम्मा।—आत्मन्,—आशय, (वि०) दुष्ट चित्त। दुराशय।—गज, (पु०) खूनी हाथी।—चेतस्—धी,- बुद्धि, (वि०) मलिन चित्त। खराब तबियत का।—वृष, (पु०) ख़राब या अड़ियल बैल।

दुष्टिः (स्त्री०) चरित्रभ्रंश। भ्रष्टावस्था।

दुष्ठु (अव्यया०) १ बुरा। ख़राब। २ अनुचित रूप से। भूल से। गलती से।

दुष्यंतः } (पु०) सूर्यवंशी एक राजा जो पुरुवंशी
दुष्यन्तः } थे। इनका गन्धर्व-विवाह शकुन्तला के साथ हुआ था।

दुस् (यह एक उपसर्ग है जो संज्ञावाची और कभी कभी क्रियावाची शब्दों में लगायी जाती है। इसका प्रयोग "बुरा, दुष्ट, अपकृष्ट, कठोर या कठिन" के अर्थों में किया जाता है।—करम्, (न०) १ कठिन और पीडादायी कार्य। कठिनाई। २ अन्तरिक्ष। आकाश।—कर्मन्, (पु०) पापकर्म। अपराध। जुर्म।—कालः, (पु०) १ बुरा समय। २ प्रलय काल। ३ शिवजी की उपाधि।—कुलं, (न०) अकुलीन कुल।—कुलीन, (वि०) नीच वंशोत्पन्न।—कृत्, (पु०) दुष्ट जन।—कृतं,—कृतिः, (स्त्री०) पापकर्म। असद्कर्म।—क्रम, (वि०) अस्तव्यस्त। गड़बड़।—चर, (वि०) १ कठिनाई से पूरा होने वाला। कठिन काम। २ अप्रवेश्य। अप्राप्तव्य। ३ असदाचरणी।—चरः, (पु०) १ रीछ। २ शङ्ख विशेष।—चरित, (वि०) दुष्ट। बुरे आचरण वाला।—चिकित्स्य, (वि०) असाध्य। आरोग्य न होने वाला।—च्यवनः, (पु०) इन्द्र।—च्यावः (पु०) शिवजी।—तर, (वि०) (= दुस्तर, या दुस्तर,) १ कठिनाई से पार किये जाने वाला। २ कठिनाई से वश में किये जाने वाला। अजेय—तर्कः, (पु०) मिथ्या वादविवाद।—पच, (= दुष्पच) (वि०) कठिनाई से पचने योग्य।—पतनं, (न०) बुरी तरह गिरने वाला। (अपशब्द)—परिग्रह, (वि०) कठिनाई से पकड़ा जानेवाला।—परिग्रह, (पु०) दुष्टास्त्री या भार्या।—पूर, (वि०) मुश्किल से भरा जाने वाला या अघाने वाला।—प्रकाश, (वि०) अँधियारा। धुंधला।—प्रकृति, (वि०) बुरे स्वभाव का। चिड़चिड़ा।—प्रजस्, (वि०) बुरी औलाद वाला।—प्रज्ञ, (= दुष्प्रज्ञ) (वि०) मूढ़। निर्बल चित्त का —प्रधर्ष,—प्रधृष्य, (वि०) दुर्धर्ष। जिसपर हम्ला न हो सके।—प्रवादः, (पु०) कलङ्क। अपकीर्ति। अपवाद।—प्रवृत्तिः, (स्त्री०) बुरी खबर। अमङ्गलजनक संवाद।—प्रसह, [= दुष्प्रसह] १ भयङ्कर। २ असह्य।—प्राप,—प्रापण, (वि०) अप्राप्तव्य। कठिनता से मिलने योग्य।—शकुनं (न०) अपशकुन। बुरा सगुन।—शला, (स्त्री०) धृतराष्ट्र की एकमात्र पुत्री का नाम। यह जयद्रथ को ब्याही गयी थी।—शासन, (वि०) कठिनाई से काबू में आने वाला।—शासनः, (पु०) धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों

में से उनके एक पुत्र का नाम। इसीने महारानी द्रौपदी का भरी सभा में चीर खींच कर, अपमान किया था। इस अपमान का बदला भीमसेन ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई में इसके कलेजे का गर्मागर्म लोहू पीकर लिया था।—शील, [=दुश्शील] (वि०) पापिष्ट। दुराचारी। धर्मभ्रष्ट।—सम, [=दुसम या दुस्सम] (वि०) १ असम। असदृश। जो बराबर या समान न हो। २ अभागा। ३ दुष्ट। कुत्सित। अनुचित।—समं, (अव्यया०) दुष्ट। दुष्टता से।—सत्वं, (न०) दुष्ट व्यक्ति।—सन्धान,—सन्धेय, (वि०) कठिनाई से मिलने वाले या आपस में मेल कर लेने वाले।—सह, [=दुस्सह] (वि०) असह्य। असमर्थनीय।—साक्षिन्, (पु०) झूठा साक्षी। झूठा गवाह।—साध,—साध्य, (वि०) १ कठिनाई से पूरा होने वाला या व्यवस्थित होने वाला। २ असाध्य (रोग)। ३ कठिनाई से वश में होने वाला।—स्थ, —स्थित, [=दुस्थ, और दुस्थित] १ बुरा। अकिञ्चन। निर्धन। अभागा। २ पीड़ित। दुःखी। ३ अस्वस्थ। बीमार। ४ चञ्चल। अशान्त। ५ मूर्ख। अज्ञान।—स्थम्, (अव्यय०) बुरी तरह।—स्थितिः, (स्त्री०) बुरी दशा। बुरी हालत।—स्पृष्टं [=दुस्पृष्टं] १ थोड़ा सा छुआव या लगाव।—स्मर, (वि०) कठिनाई से स्मरण किया जाने वाला या जिसे स्मरण करने से पीड़ा हो।—स्वप्नः, (पु०) खराब सपना।

दुह् (धा० उभय) [दोग्धि, दुग्धे, दुग्ध] १ दुहना या दबा कर निचोड़ लेना। निकाल लेना। खींच लेना। २ एक के भीतर से दूसरी चीज़ निकालना। ३ लाभ उठाना। ४ (किसी अपेक्षित वस्तु को) देना। ५ उपभोग करना।

दुहितृ (स्त्री०) बेटी। पुत्री।—पतिः, या दुहितुःपतिः, (पु०) दामाद। जमाई।

दू (धा० आत्म०) [दूयते दून] १ सन्तप्त होना। पीड़ित होना। दुःखी होना। २ दुःखी करना। पीड़ित करना।

दूतः, दूतकः (पु०) कासिद। संदेशा ले जाने वाला। पैगाम ले जाने वाला। इधर की बात उधर और उधर की बात इधर पहुँचाने वाला।

दूतिका, दूती (स्त्री०) कुटनी। [कभी कभी दूती, का "ती" ह्रस्व भी हो जाता है।]

दूत्यं (न०) १ दूतपना। २ सदेश। पैग़ाम।

दून (वि०) पीड़ित। दुःखी।

दूर (वि०) [दवीयस Comp दविष्ठ, Super] दूरवर्ती। फासले पर।—अन्तरित, (वि०) दूर होने के कारण बिलगाया हुआ।—आपातः, (पु०) दूर से निशानाबाज़ी करना।—आप्लाव, (वि०) दूर से फलाँगना या कूदना।—आरुढ़, (वि०) ऊँचा चढ़ा हुआ। बहुत आगे बढ़ा हुआ।—ईरितेक्षण (वि०) भेंडा। ऐंचाताना।—गत, (वि०) दूर स्थानान्तरित किया हुआ। दूर गया हुआ।—ग्रहणं, (न०) दूरस्थ वस्तुओं को देखने की अलौकिक शक्ति।—दर्शनः, (पु० १ गीध। २ विद्वान पुरुष। पण्डित।—दर्शिन (वि०) दूरदर्शी। विवेकी। विचारवान। (पु०) १ गीध। २ पण्डित। ३ देवदूत। पैगम्बर। ऋषि।—दृष्टिः, (स्त्री०) १ दूर तक देख सकने की शक्ति। २ विवेक।—पातः, (पु०) १ बहुत ऊँचाई से गिरना। २ दूर का उड़ान।—पार, (वि०) १ बहुत चौड़ा (या चौड़े पाट की नदी)। २ कठिनाई से पार होने योग्य।—बंधु, (वि०) भार्या तथा भाई बन्धुओं से दूर किया हुआ।—भाज्, (वि०) दूरी। फासला। वर्तिन, (वि०) दूर पर मौजूद होना। फॉसले पर होना।—वस्त्रक, (वि०) नंगा।—विलम्बिन, (वि०) बहुत नीचा लटकने वाला।—वेधिन, (वि०) दूर से छेद करने वाला या घुसने वाला —संस्थ, (वि०) बहुत दूरी पर मौजूद।

दूरतः (अव्यया०) बहुत दूर से। फाँसले से।

दूरेत्य (वि०) दूरी पर। दूर से आना।

दूर्यम् (न०) मल। गाढ़। विष्ठा।

दूर्वा (स्त्री०) एक प्रकार की घास जो बहुत फैलती है और देव तथा पितृ पूजन के काम आती है। यह घोड़ों को खिलायी जाती है और घोड़े इसे बड़े प्रेम से खाते हैं।

दूलिका, दूली (स्त्री०) नील का पौधा।

दूष (वि०) अपवित्र करने वाला । खराब करने वाला यथा "पंक्तिदूष" ।

दूषक (वि०) [स्त्री०—दूषिका] भ्रष्ट करने वाला । नष्ट करने वाला । २ पापी

दूषकः (पु०) १ कुपथ में प्रवृत्त करने वाला । स्त्रियों का सतीत्व नष्ट करने वाला । २ बदनाम मनुष्य ।

दूषणं (न०) १ दोष । २ हानिकारक । ३ गाली । कुवाच्य । ४ अपवाद । अपकीर्ति ।

दूषणः (पु०) रावण पक्षीय एक प्रधान राक्षस जिसे जनस्थान में श्रीरामचन्द्र जी ने मारा था ।

दूषि } दूषी } (स्त्री०) आँख का कीचड़ ।

दूषिका (स्त्री०) १ पेंसिल । चित्रकार की कूची । २ चाँवल विशेष । ३ आँख का कीचड़ ।

दूषित (वि०) १ भ्रष्ट । नष्ट । बिगड़ा हुआ । २ चोटिल । ३ टूटा फूटा । चरित्रभ्रष्ट । ४ अपकीर्तित । कलङ्कित । ५ मिथ्या दोषारोपित । बदनाम किया हुआ ।

दूष्य (वि०) भ्रष्ट होने योग्य । कलङ्क लगाने योग्य ।

दूष्यं (न०) १ पीप । राल । २ विष । ३ रुई । ४ वस्त्र । कपड़ा । ५ शामियाना । तंबू ।

दूष्या (स्त्री०) हाथी का चमड़े का जेरबंद ।

दृ (धा० आत्म०) [द्रियते,—दृत,—दिदरिषते] सम्मान करना । आदर करना । पूजा करना ।

दृंह् (धा० परस्मै०) [दृंहति दृंहित] १ मजबूत करना । दृढ़ करना । २ दृढ़ होना । ३ बढ़ना । अधिक होना ।

दृंहित (व० कृ०) १ मजबूत किया हुआ । दृढ़ किया हुआ । २ बढ़ा हुआ ।

दृकं (न०) छिद्र । रन्ध्र । छेद ।

दृढ (वि०) १ मजबूत । अचल । अथक । २ पोढ़ा । ठोस । ३ स्थापित । ४ अचञ्चल । ५ दृढ़ता से बँधा हुआ । ६ कसा हुआ । ७ घना । ८ बड़ा । अत्यधिक शक्तिशाली । कठोर । ताकत वाला । ९चिमड़ा । १० ऐसा कड़ा जो कठिनाई से लचाया जा सके । ११ ठहरने वाला । चलाऊ । १२ विश्वस्त । १३निश्चित । अवश्य । ।—अंग, (वि०) शरीर का पुष्ट ।—अङ्गम्, (न०) हीरा ।—इषुधि (वि०) मजबूत तरकस रखने वाला ।—काण्डः,—ग्रन्थिः, (पु०) बाँस ।—ग्राहिन्, (वि०) मज़बूती से पकड़ने वाला । - दंशकः, (पु०) शार्क नामक समुद्री जन्तु विशेष ।—द्वार, (वि०) मज़बूती से द्वार को बंद रखने वाला ।—धनः (पु०) बुध देव की उपाधि ।—धन्वन्,—धन्विन्, (पु०) अच्छा तीरन्दाज ।—निश्चय, (वि०) १ दृढ़ सङ्कल्प ।—नीरः,—फलः, (स्त्री०) नारियल का वृक्ष ।—प्रतिज्ञ, (न०) वचन या प्रतिज्ञा का पक्का ।—प्ररोहः, (पु०) गूलर का पेड़ । - प्रहारिन् (वि०) १ कस कर प्रहार करने वाला । २ ठीक लक्ष्य वेधने वाला ।—भक्ति, (वि०) निमकहलाल । सच्चा ।—मति, (वि०) अपने विचार का पक्का ।—मुष्टि, (वि०) १ सूम । कंजूस । २ मज़बूती से मुट्ठी बाँधने वाला ।—मुष्टिः, (स्त्री०) तलवार ।—मूलः, (पु०) नारियल का पेड़ ।—लोमन्, (पु०) जंगली सुअर ।—वैरिन्, (पु०) करुणाशून्य शत्रु । बेरहम दुश्मन ।—व्रत, (वि०) १ धर्मानुष्ठान में दृढ़ । २अचल । सच्चा । ३अध्यवसायी । —सन्धि, (वि०) १ मज़बूती से मिले हुए । २ अच्छी तरह जुड़े हुए ।—सौहृद, (वि०) मैत्री में अचल या दृढ़ ।

दृतिः (पु० स्त्री०) १ पानी भरने का चमड़े का डोल । २ मछली । ३ चर्म । खाल । ४ धौंकनी ।—हरिः, (पु०) कुत्ता ।

दृन्फूः (स्त्री०) १ साँपिन । २ वज्र ।

दृन्भूः (स्त्री०) १ इन्द्र का वज्र । २ सूर्य । ३ राजा । ४ यम ।

दृप् (धा० परस्मै०) [दर्पति, दर्पयति, दर्पयते] प्रकाश करना । जलाना । बालना । [दृप्यति,—दृप्त] १ अभिमान करना । अकड़ना । २ अत्यन्त प्रसन्न होना । ३ आपे में न रहना ।

दृप्त (वि०) १ अभिमानी । अकड़बाज़ । २ पागल । मदमाता । आततायी ।

दृप्र (वि०) अभिमानी । अकड़बाज़ । मजबूत । दृढ़ ।

दृश् (धा० परस्मै०) [पश्यति,—दृष्ट] देखना । निहारना । अवलोकन करना । पहचानना ।

दृश् (स्त्री०) १ दृष्टि। निगाह। २ आँख। ३ बोध। ज्ञान। ४ दो की संख्या। ५ ग्रह की गति।—अध्यक्ष, (पु०) सूर्य।—कर्णः, (पु०) सर्प।—क्षयः, (पु०) धुधला दिखलाई पड़ना। देखने की शक्ति का कम हो जाना।—जलं, (न०) आँसू।—पातः, (पु०) निगाह। नज़र। चितवन।—प्रिया, (स्त्री०) सौन्दर्य आभा—भक्तिः,(स्त्री०) प्रेम भरी चितवन। विषः, (पु०) सर्प।—श्रुतिः (पु०) सर्प। साँप।

दृशद्, दृषद् (स्त्री०) पत्थर।

दृशा (स्त्री०) आँख।—आकांक्ष्यं, (न०) कमल।—उपमं (न०) सफेद कमल।

दृशानः (पु०) १ दीक्षा गुरु। २ ब्राह्मण। ३ लोकपाल।

दृशानं (न०) प्रकाश। चमक।

दृशिः, दृशी (स्त्री०) १ आँख। २ शास्त्र।

दृश्य १ देखने को। दिखलाई पड़ने वाला। २ मनोहर। सुन्दर।

दृश्यं (न०) दिखलाई पड़ने वाली वस्तु।

दृश्वन् (वि०) जानने वाला। देखने वाला। (आलं०) जानकार।

दृषद् (स्त्री०) १ चट्टान। २ चक्की का पाट। ३ सिल, जिस पर मसाले आदि पीसे जाते हैं।—उपलः, (पु०) चक्की का पाट जिस पर मसाले पीसे जाते हैं।

दृषद्वत् (वि०) पथरीला। चट्टानदार।

दृषद्वती (स्त्री०) आर्यावर्त देश की पूर्वी सीमा की एक नदी जो सरस्वती नदी में गिरती है।

दृषद्मापकः (पु०) कर जो चक्की चलाने वालों पर लगाया जाय।

दृष्ट (व० कृ०) १ देखा हुआ। जाना हुआ। समझा हुआ। २ पाया हुआ। मिला हुआ। ३ प्रकट। प्रादुर्भूत। ४ निश्चित किया हुआ। निर्णीत।—अन्तः,—अन्तम्, (न०) १ मिसाल। उदाहरण। नजीर। २ शास्त्र। विज्ञान। ३ मृत्यु।—अर्थ, (वि०) स्पष्टअर्थ-बोधक।—कष्ट,—दुःख, (वि०) कष्टसहिष्णु। दुःख झेले हुए।—कूटम्, (न०) कठिन प्रश्न। पहेली। बुझौअल।—दोष, (वि०) १ दोषयुक्त देखा हुआ। २ दुष्ट। ३ पकड़ा हुआ।—प्रत्यय, (वि०) १ विश्वस्त। २ विश्वास दिलाया हुआ।—रजस्, (स्त्री०) युवावस्था को प्राप्त लड़की।—व्यतिकर, (वि०) १ मुसीबतें झेले हुए। २ अनिष्ट को पहिले ही से जान लेने वाला।

दृष्टं (न०) डकैतों का भय।

दृष्टिः (स्त्री०) १ निगाह। नज़र। २ हिये की आँखों से देखना। ३ ज्ञान। जानकारी। ४ आँख। देखने की शक्ति। निगाह। ५ चितवन। ६ बुद्धि।—कृत,—कृतं (न०) स्थलपद्म।—क्षेपः, (पु०) नज़र।—गुणः, (पु०) तीरन्दाज़ों का निशाना या लक्ष्य।—गोचर, (वि०) नजर के सामने।—पूत, (वि०) दृष्टि रख कर पवित्र रखना। रखवाली करना कि, अपवित्र न होने पावे।—बन्धु, (पु०) जुगनू।—विक्षेपः, (पु०) कनखियों से देखना।—विद्या, (स्त्री०) नेत्रविद्या। चाक्षुसी विद्या।—विषः, (पु०) सर्प। साँप।

दृह्, दृंह् (धा० परस्मै०) [दृंहति, दृंहति,] १ दृढ होना। २ बढ़ना। उगना। ३ समृद्धिवान होना ४ कस कर बाँधना।

दॄ (धा० परस्मै०) [दीर्यति, दृणाति, दीर्ण,] १ चिर कर खुल जाना। २ चिरवा डालना। फड़वा डालना। टुकड़े टुकड़े करवा डालना।

दे (धा० परस्मै०) [दयते, दात,] रक्षा करना। बचाना।

देदीप्यमान (वि०) चमकदार। दहकता हुआ।

देय (वि०) १ देने को। भेंट करने को। चढ़ाने को। देने योग्य। भेंट करने योग्य। ३ लौटा देने को। फेर देने को।

देव् (धा० आत्म०) [देवते] १ खेलना। क्रीडा करना। जुआ खेलना। २ विलाप करना। ३ चमकना।

देव (वि०) [स्त्री०—देवी,] दैवी। नैसर्गिक स्वर्गीय। अंशः, (पु०) भगवान का अँशावतार।—अगारः (पु०) अगारं, (न०) मन्दिर।—

अङ्गना, (स्त्री०) स्वर्गीय अप्सरा।—अतिदेवः,—अधिदेवः, (पु०) सर्वोच्च देवता। शिव।—अधिपः, (पु०) इन्द्र।—अन्धस्, (न०)—अन्नं, (न०) देवताओं का अन्न। कव्य। अभीष्ट, (वि०) देवताओं को प्रिय। देवता को चढ़ा हुआ।—अभीष्टा, (स्त्री०) १ नफीरी बजाने वाला। २ पान। ताम्बूल।—अरण्यं, (न०) बाग़।—अरिः, (पु०) दानव।—अर्चनं (न०)—अर्चना, (स्त्री०) देवताओं का पूजन।—अवसथ, (पु०) देवालय। मन्दिर।—अश्वः, (पु०) इन्द्र का घोड़ा उच्चैःश्रवा।—आक्रीडः, (पु०) देवताओं का नन्दन वन।—आजीवः, (पु०)—आजीविन् (पु०) पुजारी। देवलक।—आत्मन्, (पु०) गूलर का वृक्ष।—आयतनम्, (न०) मन्दिर।—आयुधं, (न०) १ देवताओं का हथियार। २ इन्द्रधनुष।—आलयः, (पु०) १ स्वर्ग। २ मन्दिर।—आवास, (पु०) १ स्वर्ग। २ अश्वत्थ वृक्ष। ३ मन्दिर। ४ सुमेरु पर्वत।—आहारः, (पु०) अमृत।—इज्, (वि०) [कर्त्ता एकवचन देवेट्, या देवेड्,] देवताओं की पूजा।—इज्यः, (पु०) बृहस्पति।—इन्द्रः,—ईशः, (पु०) १ इन्द्र। २ शिव।—उद्यानम्, (न०) १ नन्दनवन। २ मन्दिर के समीप का बाग।—ऋषिः, [=देवर्षिः,] (पु०) १ अत्रि, भृगु, पुलस्त्य, अंगिरस आदि देवर्षि हैं। २ नारद की उपाधि।—ओकस्, (न०) सुमेरु पर्वत।—कन्या, (स्त्री०) अप्सरा।—कर्मन्, (न०)—कार्यं, (न०) १ धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान। २ देवार्चन।—काष्ठं, (न०) देवदारु वृक्ष।—कुण्डं, (न०) कुदरती तालाब।—कुलं, (न०) १ मन्दिर। २ देव जाति। ३ देवताओं का समूह।—कुल्या, (स्त्री०) स्वर्ग गङ्गा।—कुसुमं, (न०) लवङ्ग। लौंग।—खातं,—खातकं, १ घाटी। २ किसी मनुष्य का न बनाया हुआ तालाब या जलाशय। ३ मन्दिर के समीप का जलाशय।—गणः, (पु०) देवताओं की एक श्रेणी।—गणिका, (स्त्री०) अप्सरा।—गर्जन, (न०) बादल की गड़गड़ाहट।—गायनः, (पु०) गन्धर्व।—गिरिः, (पु०) एक पर्वत का नाम।—गुरुः, (पु०) १ कश्यप। बृहस्पति।—गुही, (स्त्री०) सरस्वती की उपाधि या उसके समीप के स्थान की उपाधि।—गृहं, (न०) १ मन्दिर। २ राजप्रासाद। महल।—चर्या, (स्त्री०) देवार्चन। देवपूजन।—चिकित्सकौ, (वि०) अश्विनी कुमारद्वय।—छन्दः, (पु०) सौलड़ा मोती का हार।—तरु, (पु०) १ अश्वत्थ वृक्ष। २ मदारवृक्ष। ३ पारिजात वृक्ष। ४ सन्तान वृक्ष। ५ कल्पवृक्ष। ६ हरिचन्दन वृक्ष।—ताड़ः, (पु०) १ अग्नि २ राहु।—दत्तः, (पु०) अर्जुन के शङ्ख का नाम—दारु (पु०) एक प्रकार का सनोवर का वृक्ष। दासः, (पु०) मन्दिर का नौकर।—दासी, (स्त्री०) मन्दिरों में रहने वाली स्त्रियाँ, जिनको उनके घर वालों ने देवता को चढ़ा दिया हो। नृत्यकी। वेश्या।—दीपः, (पु०) आँख।—दूतः, (पु०) फरिश्ता। देवदूत।—दुन्दुभिः, (पु०) १ देवताओं का ढोल या नगाड़ा। २ श्यामा तुलसी जिसमें लाल मञ्जरी लगती है।—देवः, (पु०) १ ब्रह्मा। २ शिव। ३ विष्णु। द्रोणी, (स्त्री०) देवमूर्ति का जुलूस।—धर्मः, (पु०) धार्मिक अनुष्ठान।—नदी, (स्त्री०) १ गङ्गा। २ कोई भी पवित्र नदी।—नन्दिन्, (पु०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम।—नागरी, (स्त्री०) वह लिपि जिसमें संस्कृत भाषा लिखी जाती है।—निकायः, (पु०) स्वर्ग।—निन्दकः, (पु०) नास्तिक।—निर्मित, प्राकृतिक।—पतिः, (पु०) इन्द्र।—पथः, (पु०) १ आकाशमार्ग। २ आकाश-गङ्गा। छायापथ।—पशु, (पु०) देवता को चढ़ाया हुआ कोई भी जानवर।—पुर,—पुरी, (स्त्री०) अमरावती पुरी।—पूज्यः, (पु०) बृहस्पति।—प्रतिकृतिः, (स्त्री०) प्रतिमा, (स्त्री०) मूर्ति। विग्रह।—प्रश्नः, (पु०) ज्योतिष।—प्रियः, (पु०) शिव। (देवानांप्रियः। यह अनियमित समास है। इसका अर्थ होता है) १ बकरा। २ मूर्ख। पशु के समान मूढ़।—बलिः, (पु०) देवताओं को बलिदान

—ब्रह्मन्, (पु०) नारद ।—ब्राह्मणः, (पु०) ब्राह्मण जो मन्दिर की चढ़त पर निर्वाह करता हो। २ प्रतिष्ठित ब्राह्मण ।—भवनं, (न०) १ स्वर्ग। २ मन्दिर । ३ अश्वत्थ वृक्ष ।—भूमिः, (स्त्री०) स्वर्ग ।—भूतिः, (स्त्री०) गङ्गा ।—भूयं, (न०) देवत्व । देवसायुज्य ।—भृत्, (पु०) १ विष्णु । २ इन्द्र ।—मणिः, (पु०) १ कौस्तुभ मणि । २ सूर्य ।—मातृकः, (वि०) वह देश जो, नदी नहर के जल पर नहीं, किन्तु सर्वथा वृष्टि जल पर ही निर्भर है ।—मानकः, (पु०) विष्णु भगवान की कौस्तुभ मणि ।—मुनिः, (पु०) देवर्षि ।—यजनं, (न०) यज्ञभूमि । यज्ञस्थली ।—यात्रा, (स्त्री०) उत्सव विशेष ।—युगं, (न०) कृत युग ।—योनि, (स्त्री०) देवताओं के अंश से उत्पन्न विद्याधर आदि नौ योनियाँ प्रधान हैं। [यथा विद्याधर । अप्सरा । यक्ष । राक्षस । गन्धर्व किन्नर । पिशाच । गुह्यक और सिद्ध]—योषा, (स्त्री०) अप्सरा ।—रहस्यं, (न०) दैवी रहस्य ।—राज्,—राजः, (पु०) इन्द्र ।—लता, (स्त्री०) नवमल्लिका ।—लिङ्गं, (न०) किसी देवता की मूर्ति ।—लोकः, (पु०) स्वर्ग ।—वक्त्रं, (न०) अग्नि ।—वर्त्मन् (न०) आकाश ।—वर्धकिः,—शिल्पिन्, (पु०) विश्वकर्मा ।—वाणी, (स्त्री०) आकाशवाणी । —वाहनः, (न०, अग्नि ।—व्रतं (न०) धार्मिक व्रत ।—व्रतः, (पु०) १ भीष्म । २ कार्तिकेय । —शत्रुः, (पु०) दैत्य ।—शुनी, (स्त्री०) देवताओं की कुतिया सर्मा की उपाधि ।—शेषं, (न०) यज्ञ का अवशिष्ट भाग ।—श्रुतः, (पु०) १ विष्णु । २ नारद । ३ वेदसंहिता । ४ देवता । —सभा, (स्त्री०) १ देवताओं का सभाभवन जिसका नाम है सुधर्मन् । २ जुआखाना ।—सभ्य , (पु०) १ ज्वारी । २ जुआखाने में रहने वाला । ३ देवता का सेवक ।—सायुज्यं, (न०) देवत्व प्राप्ति । देवता के साथ एकात्मन होने की योग्यता ।—सेना, (स्त्री०) १ देवताओं की फौज । २ स्कन्द की स्त्री षष्ठी सोलह मातृकाओं में से एक ।—स्वं, (न०) देवताओं की सम्पत्ति । देवनिर्माल्यधन । वह सम्पत्ति जो केवल धर्मकृत्यों ही में लगायी जा सके ।—हविस्, (न०) यज्ञ में देवताओं के उद्देश्य से उत्सर्ग किया हुआ पशु ।—हूति, (स्त्री०) कर्दम मुनि की स्त्री । कपिल की माता ।

देवः (पु०) १ देवता । २ इन्द्र । ३ ब्राह्मण । ४ राजा । शासक (जैसे मनुष्यदेव) ५ ब्राह्मणों की उपाधि । (यथा पुरुषोत्तम देव) । ६ नाटकों में राजाओं को सम्बोधन करने का शब्द विशेष । —

देवकी (स्त्री०) देवक की कन्या का नाम जो वसुदेव को ब्याही थी और जिसके गर्भ से श्री कृष्ण का जन्म हुआ था ।—नन्दनः, (पु०)—पुत्रः,— मातृ,—सुनुः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

देवटः (पु०) कारीगर ।

देवता (स्त्री०) १ इन्द्रादि देवता । २ देवमूर्ति । प्रतिमा । ४ इन्द्रिय ।—अगारः, (पु०)— अगारं, (न०)—आगारः,—आगारं,—गृहं, (न०) देवालय । देवमन्दिर ।—अधिपः, (पु०) इन्द्र ।—अभ्यर्चनम्, (न०) देवार्चन ।— आयतनं,—आलयः,—वेश्मन्, (न०) मन्दिर । —प्रतिमा, (स्त्री०) किसी देवता की मूर्ति । —स्नानं, (न०) मूर्ति का स्नान ।

देवद्र्यच् (वि०) देवता का शृङ्गार ।

देवन् (पु०) पति का छोटा भाई । देवर ।

देवनं (न०) १ सौन्दर्य । चमक । आभा । २ पाँसे का खेल । जुआ । ३ आमोद प्रमोद । क्रीड़ा । खेल । ४ बाग़ । वाटिका । ५ कमल । ६ स्पर्द्धा । ७ व्यापार । कामकाज । ८ प्रशंसा ।

देवनः (पु०) पाँसा ।

देवना (स्त्री०) जुआ । चौसर ।

देवयानी (स्त्री०) शुक्र की कन्या का नाम ।

देवरः } (पु०) पति का बड़ा या छोटा भाई । देवर
देवृ } या जेठ ।

देवलः (पु०) निम्न कोटि का ब्राह्मण जो देवता की चढ़त पर अपना निर्वाह करता है ।

देवसात् (अव्यय०) देवता की प्रकृति या स्वभाव ।

देविक (वि०) } [स्त्री०—दैविकी,]१ देव सम्बन्धी।
देविल (वि०) } २ देवता से उत्पन्न ।

देवी (स्त्री०) १ देवपत्नी । २ दुर्गा का नाम । ३

सरस्वती का नाम। ४ अग्रमहिषी। पटरानी। ५ पूज्य या प्रतिष्ठित स्त्रियों की उपाधि।

देशः (पु०) १ स्थान। भाग। भूमण्डल का कोई स्थान। २ प्रान्त। ३ विभाग। हिस्सा। ४ क़ायदा नियम।—अतिथिः, (पु०) विदेशी।—अन्तरम्, (न०) अन्य देश।—अन्तरिन्, (पु०) विदेशी।—आचारः,—धर्मः, (पु०) स्थानीय रस्म या आईन। किसी देश का आचार।—कालज्ञ, (वि०) उचित समय और स्थान का ज्ञाता।—ज,—जात, (वि०) १ देशी। २ दिसावरी। ३ विशुद्ध सन्तति।—भाषा, (स्त्री०) किसी देश की बोलचाल की भाषा।—रूपं, (न०) योग्यता। उपयुक्तता।—व्यवहारः, (पु०) स्थानीय आचार।

देशकः (पु०) १ शासक। सूबेदार। २ उपदेशक। शिक्षक। गुरु। ३ पथप्रदर्शक। रहनुमा।

देशना (स्त्री०) आदेश। निर्देश।

देशिक (वि०) स्थानीय। किसी देश विशेष सम्बन्धी।

देशिकः (पु०) १ आध्यात्मिक गुरु। २ यात्री। पथ प्रदर्शक। ४ स्थानों से परिचय रखने वाला।

देशिनी (स्त्री०) तर्जनी। अगूठे के पास वाली अँगुली।

देशी (स्त्री०) प्राकृतिक भाषाओं में से कोई एक।

देशीय (वि०) १ किसी प्रान्त का। प्रान्तीय। २ देश सम्बन्धी। स्थानीय।

देश्य (वि०) १ जो बतलाने को हो या जो सिद्ध करने को हो। २ प्रान्तीय। स्थानीय। ३ तत् देश जात। विशुद्ध उत्पत्ति का। ४ प्रायः।

देश्यः (पु०) १ प्रत्यक्षदर्शी। २ किसी देश का अधिवासी।

देश्यं (न०) पूर्व पक्ष। प्रथम सम्मति।

देहं (न०) } शरीर।—अन्तरं, (न०) अन्य।
देहः (पु०) } शरीर।—अन्तरप्राप्तिः, (स्त्री०) जन्मग्रहण।—आत्मवादः, (पु०) चार्वाक का मत। नास्तिक्वाद।—आत्मवादिन्, (पु०) चार्वाकसिद्धान्तानुयायी।—आवरण, (न०) कवच। पोशाक।—ईश्वर, (पु०) जीव।—उद्भव,—उद्भूत, (वि०) शरीर में उत्पन्न।—कर्तृ, (पु०) १ सूर्य। २ परमात्मा। ३ पिता।—कोषः, (पु०) १ शरीर को आच्छादन करने वाली वस्तु। २ पर। डैना। ३ चमड़ा।—क्षय, (पु०) १ शरीर का नाश। २ बीमारी। रोग। गत. (वि०) अवतार। शरीर में प्राप्त।—जः, (पु०) पुत्र।—जा, (स्त्री०) पुत्री।—त्यागः, (पु०) मृत्यु। इच्छा मृत्यु।—दः, (पु०) पारा।—दीपः, (पु०) नेत्र।—धर्मः, शरीर के आवश्यक कृत्य।—धारकं, (न०) हड्डी।—धारणं, (न०) जीवन।—धि, (पु०) बाजू। डैना।—धृष्, (पु०) पवन। वायु।—बद्ध, (वि०) शरीरधारी।—भाज्, (पु०) शरीरधारी कोई भी जीव। विशेष कर मनुष्य।—भुज्, (पु०) १ जीव। २ सूर्य।—भृत्, (पु०) १ जीवधारी विशेष कर मनुष्य। २ शिव जी। ३ जीवन। जीवनी शक्ति।—यात्रा, (स्त्री०) १ मरण। मृत्यु। २ शरीर की रक्षा का साधन। ३ आजीविका।—लक्षणं, (न०) चर्म के ऊपर का तिल या मस्सा।—वायु, (पु०) शरीर स्थित पाँच पवन।—सारः, (पु०) मज्जा।

देहंभर (वि०) मरभुखा। पेटू।

देहवत् (वि०) शरीरधारी। (पु०) १ मनुष्य। २ जीव। रूह।

देहला (स्त्री०) शराब। मदिरा।

देहलिः } (स्त्री०) ड्योढ़ी। दहलीज़। दहरी।—
देहली } दीपः, (पु०) ड्योढी का दीपक।

देहिन् (वि०) [स्त्री०—देहिनी] शरीरधारी। (पु०) १जीवधारी विशेषतया मनुष्य। २ जीव। रूह।

देहिनी (स्त्री०) पृथिवी।

दै (दायति. दात) १ पवित्र करना। साफ करना। २ पवित्र होना। ३ बचाना। रक्षा करना।

दैतेयः (पु०) दिति के पुत्र। राक्षस। दैत्य।—इज्य,—गुरुः,—पुरोधस्, (पु०) पूज्यः, (पु०) शुक्राचार्य।—निषूदन, (पु०) विष्णु।—मातृ,(स्त्री०) दिति। दैत्यों की माता।—मेदजा, (स्त्री०) पृथिवी।

दैत्यः (पु०) दिति के पुत्र अर्थात् दैत्य।—अरि, (पु०) १ देवता। २ विष्णु।—देवः, (पु०)

१ विष्णु । २ पवन ।—पतिः, (पु०) हिरण्यकशिपु।

दैत्या (स्त्री०) १ औषधविशेष । २ मदिरा ।

दैन (वि०) [स्त्री०—दैनी]
दैनंदिन (वि०) [स्त्री०—दैनंदिनी]
दैनन्दिन (वि०) [स्त्री०—दैनन्दिनी]
दैनिक (वि०) [स्त्री०—दैनिकी]
} प्रतिदिन का। दैनिक।

दैनिकी (स्त्री०) दैनिक मज़दूरी। दिन भर की उजरत ।

दैर्घ्य }
दैर्घ } लंबाई ।

दैनं } (न०) १ निर्धनता। गरीबी। २ शोक।
दैन्यं } उदासी । रंज । ३ निर्बलता । ४ कमीनापन ।

दैव (वि०) [स्त्री०—दैवी] १ देवता सम्बन्धी। नैसर्गिक। स्वर्गीय। २ राजकीय ।—अत्ययः, (पु०) असाधारण अप्राकृतिक घटना से उत्पन्न उपद्रव ।—अधीन,—आयत्त. (वि०) भाग्याधीन ।—अहोरात्रः, (पु०) देवताओं का एक दिन रात । अर्थात मनुष्यों का एक वर्ष ।—उपहत, (वि०) अभागा ।—कर्मन्, (न०) देवताओं को भेंट चढ़ाने का कर्म ।—कोविदः,—चिन्तकः, —ज्ञः, (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।—गतिः, (स्त्री०) भाग्य का पल्टा। भाग्य का फेर। —तंत्र, (वि०) भाग्याधीन ।—दीपः (पु०) नेत्र ।—दुर्विपाकः, १ (पु०) भाग्य की निष्ठुरता।—दोष., (न०) भाग्य का बुरापन ।—पर, (वि०) भाग्य पर भरोसा करने वाला । भाग्यवादी ।—प्रश्नः, (पु०) ज्योतिष ।—युगं, (न०)देवताओं का युग जिसमें देवताओं के १२००० वर्ष हुआ करते हैं।—योगः, (पु०) भाग्य से किसी घटना का अतर्कित भाव से होना ।—योगात्, (अव्यया०) दैववशात्।—लेखकः (पु०) दैवज्ञ ।—वशः, (पु०) —वशं, (न०) भाग्य की शक्ति ।—वाणी, (स्त्री०) आकाशवाणी। २ संस्कृत भाषा ।—हीन, (वि०) भाग्यहीन। प्रारब्ध का फूटा । अभागा ।

दैवं (न०) भाग्य । प्रारब्ध । क़िस्मत ।

दैवः (पु०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक ।

दैवकः (पु०) देवता ।

दैवत (वि०) [स्त्री०—दैवती] दैवी ।

दैवत (न०) १ देवता । २ देव समूह । देवता मात्र । ३ मूर्ति ।

दैवतस् (अव्यया०) दैवात । इत्तिफाकिया । सौभाग्य से ।

दैवत्य (वि०) देवता सम्बन्धी ।

दैवलः } (पु०) दुष्ट (भूत) आत्मा का सेवक ।
दैवलकः } भूत प्रेत उपासक ।

दैवारिपः (पु०) शङ्ख ।

दैवासुरं (न०) देवता और दैत्यों का स्वाभाविक वैर ।

दैविक (स्त्री०) [स्त्री०—दैविकी] देवता सम्बन्धी । दैवी ।

दैविकम् (न०) अनिवार्य घटना ।

दैविन् (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।

दैव्य [स्त्री०—दैव्या दैव्यी] दैवी ।

दैव्यं (न०) १ भाग्य । प्रारब्ध । २ दैवी शक्ति ।

दैशिक (वि०) [स्त्री०—दैशिकी] १ स्थानीय । प्रान्तीय । २ जातीय । समूचे देश से सम्बन्ध रखने वाला । ३ स्थान सम्बन्धी । स्थान से सम्बन्धयुक्त । ४ किसी स्थान से परिचित । ५ शिक्षण । प्रदर्शन ।

दैशिकः (पु०) १ शिक्षक । गुरु । २ पथप्रदर्शक।

दैष्टिक (वि०) [स्त्री०—दैष्टिकी] भाग्य में लिखा हुआ । दैवनिर्दिष्ट ।

दैष्टिकः (पु०) भाग्यवादी ।

दैहिक (वि०) [स्त्री०—दैहिकी] शारीरिक । शरीर सम्बन्धी ।

दैह्य (वि०) शरीर सम्बन्धी ।

दैह्यः (पु०) जीवात्मा । रूह ।

दो (धा० प०) [द्यति, दित] १ काटना । विभक्त करना । २ अनाज काटना । पकाना ।

दोग्धृ (पु०) १ ग्वाला । अहीर । २ बछड़ा । ३ भाड़े का कवि । वह पुरुष जो अपने स्वार्थ के लिये ही कोई कार्य करता हो ।

दोग्ध्री (स्त्री०) १ दुधार गौ। २ दूध पिलाने वाली दाई ।

दोधः (पु०) बछड़ा ।

दोरः (पु०) रस्सा । रज्जु ।

दोलः (पु०) १ झूला। हिंडोला। २ उत्सव विशेष। होली का उत्सव।

दोला } (स्त्री०) १ डोली। पालकी। २ हिंडोला।
दोलिका } ३ उतार चढ़ाव। घटा बढ़ी। ४ सन्देह। अनिश्चय।—अधिरूढ,—आरूढ, (वि०) झूले पर चढ़ा हुआ।—युद्ध, (न०) सफलता में सन्देह। युद्ध जिसमें हार जीत का कुछ निश्चय न हो।

दोलायते (क्रि०) १ झुलाना। २ विकल होना।

दोषः (पु०) १त्रुटि। कलङ्क। भर्त्सना। ऐब। निर्बलता। भूल। ग़लती। २ जुर्म। अपराध। ३ खराबी। ४ हानि। बुराई। ५ दुष्परिणाम। ६ रोग। ७ त्रिदोष। ८ आलङ्कारिक त्रुटि। ९ बछड़ा। १० खण्डन।—आरोपः (पु०) इल्ज़ाम लगाना। जुर्म फर्द लगाना।—एकदृश्, (पु०) दोषदर्शी।—कर,—कृत, (वि०) हानिकारक।—ग्रस्त, (वि०) दोषी। दोष या त्रुटि से पूर्ण। ग्राहिन्, (वि०) १ मलिन चित्त। दुष्ट हृदय। २ भर्त्सनात्मक।—ज्ञ, (वि०) दोष जनाने वाला।- ज्ञः, (पु०) १ बुद्धिमान पुरुष। २ हकीम। वैद्य।—त्रय, (न०) वात पित्त और कफ का व्यतिक्रम।—दृष्टि, (वि०) निन्दक। दोष ढूंढ़ने वाला।—भाज्, (वि०) दोषी। अपराधी।

दोषणं (न०) आरोप।

दोषल (वि०) दोषी। त्रुटिपूर्ण। खोटा। लंपट।

दोषस् (स्त्री०) रात। (न०) अन्धकार।

दोषा (अव्यया०) रात्र को। (स्त्री०) १ बाँह। २ रात का अन्धकार। रात।—आस्यः—तिलकः, (पु०) दीपक।—करः, (पु०) चन्द्रमा।

दोषातन (वि०) [स्त्री०—दोषातनी,] रात सम्बन्धी।

दोषिक (वि०) [स्त्री०—दोषिकी,] दोषी। खराब। त्रुटिपूर्ण।

दोषिकः (पु०) बीमारी। रोग।

दोषिन् (वि०) [स्त्री०—दोषिणी] १ अपवित्र। भ्रष्ट। २ दोषपूर्ण। अपराधी। दुष्ट। खोटा।

दोस् (पु० न०) १ बाँह। भुजा। २ महाराव का भाग।—गड्डु, [दोर्गड्डु] (वि०) टेढ़ी भुजा।—ग्रह,[=दोर्ग्रह](वि०)शक्तिमान। ताकतवर।—ग्रहः, (पु०) भुजपीडा।—दण्डः, [=दोर्दण्डः] मज़बूत भुजा। डंडा जैसी भुजा।—मूलं [=दोर्मूलं](न०) बगल। काँख।—युद्धं, [=दोर्युद्धं,] द्वन्द्व युद्ध।—शालिन्, [दोःशालिन्] बहादुर। वीर।—शिखरं, [दोःशिखरं] (न०) कंधा।—सहस्रभृत् [=दोःसहस्रभृत्] (पु०) १ बाणासुर की उपाधि। २ सहस्रार्जुन की उपाधि।—स्थः, [=दोस्थः,]१भृत्य। नौकर। २ सेवा। चाकरी। ३ खिलाड़ी। ४ खेल। क्रीड़ा।

दोहः (पु०) १ दुहना। २ दूध। ३ दूध दुहने का पात्र।—अपनयः, (पु०)—जं, (न०) दूध।

दोहदं (न०) } १ गर्भवती स्त्री की रुचि। २ गर्भ।
दोहदः(पु०) } ३वृक्षों की अभिलाषा, जो उनके मन में फूल खिलने के समय होती है। [यथा अशोक वृक्ष चाहता है कि, युवतियाँ उसे ठुकरावें। वकुल चाहता है कि, लोग मुँह में भरकर शराब के उस पर कुल्ले करें।] ४ प्रबल अभिलाषा। ५अभिलाषा। कामना।—लक्षणं, (न०) गर्भाशय की झिल्ली।

दोहदवती (स्त्री०) गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु पर मन चलावे।

दोहनं (न०) १ दुहना। २ दुधैंडी।

दोहन (वि०) १ दुहना। २ देनेवाला। (अभीष्ट वस्तु)

दोहनी (स्त्री०) दुधैंडी। दूध दुहने का पात्र।

दोहलः (पु०) देखो दोहद।

दोहली (पु०) अशोक वृक्ष।

दोह्य (वि०) दुहने योग्य।

दोह्यं (न०) दूध।

दौःशील्यम् (न०) बुरा मिजाज। दुष्टता। दुष्ट स्वभाव।

दौःसाधिकः (पु०) १ द्वारपाल। २ ग्राम का व्यवस्थापक।

दौकूलः } (पु०) गाड़ी जिस पर रेशमी उघार या
दौगूलः } पर्दा पड़ी हो।

दौकूलं (न०) }
दौगूलं (न०) } महीन रेशमी वस्त्र।

दौत्यं (न०) संदेसा। पैगाम। [पना।

दौरात्म्यं (न०) १ दुष्टता। दुष्ट स्वभाव। २ उपद्रव-पना।

दौर्गत्यं (न०) १ धनहीनता अभाव। मुहताजपना। २ दुःख। अभागापन।

दौर्गंध्यं } (न०) बुरी या अप्रिय गन्ध ।
दौर्गन्ध्यं }
दौर्जन्यं (न०) दुर्जनता । दुष्टता ।
दौर्जीवित्यं (न०) दुःख पूर्ण जीवन ।
दौर्बल्यं (न०) निर्बलता । नपुंसकता । कमज़ोरी ।
दौर्भागनेयः (पु०) उस स्त्री का पुत्र जिसकी अपने पति के साथ खटपट रहती हो
दौर्भाग्यं (न०) अभाग्य । बदक़िस्मती ।
दौर्भ्रात्रं (न०) भाई भाई में झगड़ा ।
दौर्मनस्यं (न०) मानसिक पीड़ा ।
दौर्मंश्यं } (न०) असद् परामर्श ।
दौर्मन्त्र्यम् }
दौर्वचस्यम् (न०) असद् भाषण ।
दौर्हृदं } (न०) १ शत्रुता । मन का विकार । २ गर्भ । ३ गर्भवती स्त्री की रुचि । ४ अभिलाषा ।
दौहृदम् }
दौलिमः (पु०) इन्द्र ।
दौवारिकः (पु०) [स्त्री०—दौवारिकी] द्वारपाल । दरवान । पहरेदार ।
दौश्चर्य (न०) असद् आचरण । दुष्टता । असत्कार्य ।
दौष्कुल (वि०) [स्त्री०—दौष्कुली] } तुच्छ कुल में उत्पन्न । नीच घर में उत्पन्न ।
दौष्कुलेय (वि०) [स्त्री०—दौष्कुलेयी] }
दौष्ठवं (न०) बुरापन । खोटापन । दुष्टता ।
दौष्यंतिः दौष्यन्तिः } (पु०) दुष्यन्त या दुष्मन्त का पुत्र ।
दौष्मंतिः दौष्मन्तिः }
दौहित्रं (न०) तिल । [नवासा ।
दौहित्र (पु०) पुत्री का पुत्र । धोइता । नाती ।
दौहित्रायणः (पु०) धोइते का पुत्र । नवासे का पुत्र ।
दौहित्री (स्त्री०) पुत्री की पुत्री । धोइती ।
दौहृदिनी (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
द्यु (धा० पर०) [द्यौति] किसी ओर आगे बढ़ना । आक्रमण करना । चढ़ाई करना । हमला करना ।
द्यु (न०) १ दिवस । २ आकाश । ३ चमक । ४ स्वर्ग । (पु०) अग्नि ।—गः, (पु०) पक्षी ।—चरः, (पु०) १ ग्रह । २ पक्षी ।—जयः, (पु०) स्वर्गप्राप्ति ।—धुनिः, (स्त्री०)—नदी, (स्त्री०) स्वर्गीय गंगा ।—निवासः, (पु०) देवता ।—पतिः, (पु०) १ सूर्य । २ इन्द्र ।—मणिः, (पु०) सूर्य ।—लोकः, (पु०) स्वर्ग ।—षद्, —सद्, (पु०) १ देवता । २ ग्रह ।—सरित्, (स्त्री०) श्रीगङ्गा ।
द्युकः (पु०) उल्लू ।—अरिः (पु०) काक । कौवा ।
द्युत् (धा० आत्म०) [द्योतते, द्युतित या-द्योतित] चमकना । चमकीला होना ।
द्युतिः (स्त्री०) १ चमक । चमकीलापन । सौन्दर्य । आभा । २ प्रकाश । प्रकाश की किरण । ३ गौरव । महत्व ।
द्युतित (वि०) प्रकाशमान । चमकता हुआ । चमकीला ।
द्युम्नं (न०) १ चमक । आभा । २ स्फूर्ति । शक्ति । विक्रम । ३ धन । सम्पत्ति । ४ प्रत्यादेश । दैवज्ञान ।
द्युवन् (पु०) सूर्य ।
द्यूतं (न०) } १ क्रीड़ा । खेल । चौपड का खेल । २ जीता हुआ इनाम या पुरस्कार ।—अधिकारिन् (पु०) जुआखाने का मालिक ।—करः,—कृत्, (पु०) जुआरी । जुआ खाना रखने वाला ।—कारः,—कारकः, (पु०) जुआखाना रखने वाला । २ जुआरी ।—क्रीडा, (स्त्री०) पाँसे का खेल । जुआ ।—पूर्णिमा,—पौर्णिमा, (स्त्री०) कोजागरी पूरनमासी । आश्विन मास की पूरनमासी ।—बीजं, (न०) कौड़ी ।—वृत्तिः, (पु०) १ पेशेवर ज्वारी । २ जुआरखाने का रखने वाला या चलाने वाला ।—सभा, —समाजः, (पु०) १ जुआखाना । २ ज्वारियों का समुदाय ।
द्यूतः (पु०) }
द्यै (धा० पर०) [स्त्री०—द्यायति] १ तिरस्कार करना । तुच्छ समझ कर व्यवहार करना । २ बदशक्ल करना ।
द्यो (स्त्री०) [कर्त्ता एक०—द्यौः] स्वर्ग । इन्द्रलोक । आकाश ।—भूमिः, (स्त्री०) पक्षी । चिड़िया ।—सद्, [= द्योषद्] देवता ।
द्योतः (पु०) १ प्रकाश । आभा । चमक । २ सूर्य की धूप । ३ गर्मी ।
द्योतक (वि०) १ चमकदार । २ प्रकाश । ३ स्पष्टी करण करने वाला । समझाने वाला । बतलाने वाला ।

द्योतिस् (न०) १ प्रकाश । चमक । आभा । २ नक्षत्र । सितारा ।—ईगणः, [=द्योतिरिंगणः] (पु०) खद्योत । जुगुनू ।

द्रद्दणं(न०) तौल विशेष । नाप विशेष । एक तोला ।

द्रढयति (क्रि०) मज़बूत करना । दृढ करना ।

द्रढिमन् (पु०) १ मज़बूती । दृढ़ता । २ समर्थन । ३ बयान । ४ बोझ । भार ।

द्रप्सं (न०) माठा । तक्र । छाछ ।

द्रम् (धा० पर०) [स्त्री०—द्रमति] दौड़ना । इधर उधर जाना । इधर उधर भागते फिरना ।

द्रमं }
द्रम्मं } (न०) तौल या नाप विशेष ।

द्रव (वि०) १ दौड़ने वाला (घोड़े की तरह) । २ चूने वाला । टपकने वाला । तर । ३ बहने वाला । पनीला । ४ तरल । ५ पिघला हुआ ।—आधारः, (पु०) छोटा बरतन । चुल्लू ।—जः, (पु०) शीरा । चोटा । राव ।—द्राव्यं, (न०) तरल पदार्थ । —रसा, (स्त्री०) १ लाख । २ गोंद ।

द्रवः (पु०) १ गमन । भ्रमण । गति । २ टपकना । चूना । उफनना । चू जाना । ३ पीछे भाग आना । भाग जाना । ४ खेल । आमोद । बिहार । ५ पनीलापन । ६ पनीला पदार्थ । तरल पदार्थ । ७ रस । सार । ८ क्वाथ । काढा । ६ वेग ।

द्रवंती }
द्रवन्ती } (स्त्री०) नदी ।

द्रविडः (पु०) १ दक्षिण भारत का प्रान्त विशेष । २ उस प्रान्त का निवासी । ४ एक नीच जाति का नाम ।

द्रविणं (न०) १ धन । रुपया पैसा । सम्पत्ति । २ सुवर्ण । ४ पराक्रम । विक्रम । ५ वस्तु । पदार्थ । सामग्री ।—अधिपतिः,—ईश्वरः, (पु०) कुबेर की उपाधि ।

द्रव्यं (न०) १ वस्तु । पदार्थ । २ उपादान सामग्री । उपयुक्त या योग्य पदार्थ । २ वह पदार्थ जो क्रिया और गुण अथवा केवल गुण का आश्रय हो । ३ वैशेपिकदर्शन के द्रव्य जो ६ माने गये हैं । ४ कोई भी अधिकृत वस्तु जैसे धन, सम्पत्ति, सामान आदि । औषधि विशेष । ५ शील । ६ काँसा । फूल । ७ मदिरा ।—८ होड़ । दाँव ।—अर्जनं,—वृद्धिः,—सिद्धिः, (स्त्री०) धन की प्राप्ति ।—ओघः, (पु०) धन का बाहुल्य । —परिग्रहः, (पु०) धन या सम्पत्ति का अधिकार ।—प्रकृतिः, (स्त्री०) पदार्थ का स्वभाव । संस्कार, (पु०) यज्ञीय वस्तुओं की शुद्धि ।—वाचकं, (न०) सत्तावाचक । स्वाधीन । मूलतत्व सम्बन्धी । स्थायी ।

द्रव्यवत् (वि०) धनी । अमीर ।

द्रष्टव्य (वि०) १ देखने को । देखने योग्य । २ मनोहर । प्रिय । सुन्दर ।

द्रष्टृ (पु०) १ ऋषि । ध्यान द्वारा देखने वाला । २ न्यायाधीश ।

द्रहः (पु०) गहरी झील ।

द्रा (धा० पर०) [द्राति, द्रायति] १ सोना । २ भागना । शीघ्रता करना । भाग जाना । उड़जाना ।

द्राक् (अव्यया०) शीघ्रता से । तुरन्त । फौरन ।—भृतकं, (न०) टटका पानी । कुएँ से तुरन्त निकाला हुआ जल ।

द्राक्षा (स्त्री०) दाख । मुनक्का । अँगूर ।—रसः, (पु०) अंगूर का रस । शराब । अंगूरी शराब ।

द्राघयति (क्रि०) १ लंबा करना । बढ़ाना । पसारना । आगे करना । २ वृद्धि करना । घनीभूत करना । ३ विलम्ब करना ।

द्राघिमन् (पु०) १ लंबाई । २ अक्षांश सूचित रेखा का अंश ।

द्राघिष्ठ (वि०) सब से अधिक लंबा । बहुत लंबा । [यह दीर्घ का Super है ।]

द्राघियस् (वि०) [स्त्री०—द्राघियसी] लंबा । बहुत लंबा ।

द्राण (वि०) १ बहा हुआ । भागा हुआ । २ सोने वाला । निंदासा ।

द्राणं (न०) १ भागना । भगाड़ । २ नींद ।

द्रापः (पु०) १ कीचड़ । काँदा । २ स्वर्ग । आकाश । ३ मूर्ख । मूढ़ । ४ शिव । ५ छोटा शङ्ख ।

द्रामिलः (पु०) चाणक्य का नाम ।

द्रावः (पु०) १ पलायन । २ वेग । ३ बहाव । ४ गर्मी । ताप । ५ पिघलाव ।

द्रावकः (पु०) १ द्रव रूप में करने वाला पदार्थ। ठोस चीज़ को तरल करने वाला। २ वहाने वाला। ३ गलाने वाला। ४ पिघलाने वाला। ५ चन्द्रकान्त मणि। ६ चोर। ७ चतुर आदमी। ८ सुहागा। ९ चुम्बक पत्थर। १० लंपट।

द्रावकं (न०) मोम।

द्रावणम् (न०) १ भगा देना। २ पिघलाना। ३ (अर्क की तरह) खींचना। ४ रीठा।

द्राविडः (पु०) द्रविड देश वासी।

द्राविडी (स्त्री०) इलायची।

द्राविडकं (न०) काला निमक।

द्राविडकः (पु०) आँवा हल्दी।

द्रु (धा० पर०) [द्रवति, द्रुत] १ भागना। वहना। २ आक्रमण करना। ३ तरल होना। घुल जाना। पिघलना। उमडकर वहना।

द्रु (पु० न०) १ लकडी। २ लकडी का बना कोई भी औज़ार। (पु०) १ वृक्ष। २ शाखा। डाली। —किलिमं, (न०) देवदारु वृक्ष। घणः, (पु०) १ काठ की हथोड़ी। २ बढई की हथौड़ी जैसा लोहे का बना हथियार। ३ कुल्हाडी। ४ ब्रह्मा। —घ्नी, (स्त्री०) कुल्हाडी। —नखः, (पु०) काँटा। —नस, (वि०) —णस् (वि०) लँबी नाक वाला। —नहः, —णहः, (पु०) मियान। परतला। —सल्लकः, (पु०) वृक्ष विशेष। पियालवृक्ष।

द्रुणं (न०) धनुष की डोरी।

द्रुणः (पु०) १ विच्छू। २ भृंगी कीडा। ३ वदमाश।

द्रुणिः } द्रुणी } (स्त्री०) १ छोटा या मादा कछुवा २। वाल्टी। डोल। ३ कनखजूरा। काँतर। गोजर।

द्रुत (व० कृ०) १ तेज़। फुर्तीला। वेगवान। २ वहा हुआ। भागा हुआ। वच कर निकला हुआ। ३ ४ पिघला हुआ। तरल हुआ। घुला हुआ।

द्रुतं (अव्यया०) तेज़ी से। फुर्ती से।

द्रुतः (पु०) १ विच्छू। २ वृक्ष।

द्रुतविलम्बितम् (न०) एक छन्द का नाम।

द्रुतिः (स्त्री०) पिघलना। घुलना। जाना। भाग जाना।

द्रुपदः (पु०) पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम। इस ही की वेटी का नाम द्रौपदी था।

द्रुमः (पु०) १ वृक्ष। २ स्वर्ग का एक वृक्ष। —अरिः, (पु०) हाथी। —आमयः, (पु०) लाख। गोंद। —आश्रयः, (पु०) छिपकली। —ईश्वरः (पु०) ताड का पेड़। —उत्पलः, (पु०) कर्णिकार वृक्ष। —नखः, —नरः, (पु०) काँटा। —व्याधिः, (पु०) लाख। गोंद। —श्रेष्ठः, (पु०) ताड का पेड़। —षण्डम्, (न०) पेड़ों का समूह।

द्रुमिणी (स्त्री०) वृक्षों का समूह।

द्रुवय. (पु०) माप। मान।

द्रुह् (धा० पर०) [द्रुह्यति, द्रुग्ध] घृणा या नफरत करना। हानि पहुँचाने का अवसर ढूढ़ना। वदला लेने के लिये षड्यंत्र रचना। उपद्रव करने का मंसूवा वाँधना।

द्रुह (वि०) घायल करने वाला। चोटिल करने वाला। द्रोह करने वाला। (स्त्री०) हानि। चोट।

द्रुहः (पु०) १ पुत्र २ झील।

द्रुहणः } द्रुहिणः } (पु०) ब्रह्मा या शिव का नाम।

द्रूः (पु०) सुवर्ण।

द्रूघणः (पु०) हथौड़ा। घन। लोहे की गदा।

द्रूणः (पु०) विच्छू।

द्रोणः (पु०) १ चार सौ वाँस लँवी झील। २ जल से भरा वादल। ३ वनकाक। ४ विच्छू। ५ वृक्ष। ६ सफेद फूलों का पेड। ७ कौरव और पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्य। —काकः (पु०) जंगली काक। —क्षीरा, —घा, —दुग्धा, —दुघा, (स्त्री०) एक द्रोण दूध। दूध देने वाली गाय। —मुखं, (न०) ४०० ग्रामों की राजधानी।

द्रोणं (न०) } द्रोणः (पु०) } १ तौल विशेष जो १६ या ३२ सेर की होती है। (न०) १ कठौता। कठौती। २ टव।

द्रोणिः } द्रोणी } (स्त्री०) १ काठ की वाल्टी। २ जलाधार। ३ नाँद। ४ १२८ सेर की तौल। ५ घाटी। —दलः, (पु०) केतक वृक्ष।

द्रोहः (पु०) १उत्पात। उपद्रव। २ प्रतिहिंसा का भाव। वैर। द्वेष। ३ विश्वासघात। ४ विद्रोह। ५

अपराध।—अटः, (पु०) १ दम्भी। पापण्डी। २ शिकारी। ३ झूठा आदमी।—चिन्तनम्, (न०) बुरा विचार।—बुद्धि, (वि०) उपद्रव करने के तुला हुआ।—बुद्धिः, (स्त्री०) दुष्ट विचार।

द्रौणायनः
द्रौणायनि.
द्रौणि. } (पु०) द्रोणपुत्र अश्वत्थामा।

द्रौपदी (स्त्री०) द्रुपद की पुत्री जो पाण्डवों को ब्याही गयी थी और जिसका कौरवों द्वारा भरी सभा में अपमान, कुरुक्षेत्र के इतिहासप्रसिद्ध महायुद्ध के कारणों में से एक है।

द्रौपदेय (पु०) द्रौपदी का पुत्र।

द्वन्द्वं (न०) १ जोड़ा। २ जानवरों का जुट्ट। ३ किसी का भी जोड़ा। ४ झगड़ा। टंटा। ५ मल्ल युद्ध। ६ सन्देह। अनिश्चय। ७ गढ़ी। गढ़। ८ गुप्तभेद।—चर,—चारिन्, (वि०) जुट्ट रहने वाले चक्रवाक। चकवा चकई।—भावः, (पु०) विरोध। अनबन।—भिन्नं, (न०) नर और मादा का विछोह।—भूत, (वि०) १ जोड़ा बाँधना। २ सन्दिग्ध।—युद्धं, (न०) दो का पारस्परिक युद्ध।

द्वन्द्वः (पु०) घड़ियाल जिस पर घंटा बजाया जाता है। समास भेद विशेष।

द्वंद्वशः
द्वन्द्वशः } (अव्यय०) दो दो करके। जुट्ट में। जोड़े में।

द्वय (वि०) [स्त्री०—द्वयी] दुगुना। दुहरा। दो प्रकार का।—आत्मक, (वि०) रजस् और तमस् से रहित जिसका मन हो। अपि —आत्मक, (वि०) दो प्रकार के स्वभाव का।—वादिन्, (वि०) दुजिह्व। कपटी।

द्वयं (न०) १ जोड़ा। जुट्ट। २ दो प्रकार का स्वभाव। ३ मिथ्यापन।

द्वयी (स्त्री०) जोड़। जुट्ट।

द्वापरं (न०)
द्वापरः (पु०) } १ तीसरे युग का नाम। पाँसे का वह पहलू जिस पर दो बुंदे हों। ३ सन्देह। पसोपेश। अनिश्चय।

द्वार (स्त्री०) १ दरवाज़ा। फाटक। २ साधन।—स्थः,—स्थितः, (पु०) [=द्वाःस्थः, द्वास्थः, द्वाःस्थितः द्वास्थितः] द्वारपाल। दरवान।

द्वारं (न०) १ दरवाज़ा। फाटक। २ रास्ता। निकास मानव शरीर के नौ छिद्र। ३ मार्ग। माध्यम। साधन।—अधिपः (पु०) दरबान। कण्टकः, (पु०) चटखनी। बेंडा।—कपाटः, (पु०)—कपाटं, (न०) किवाड़। पल्ला। गोपः, (पु०) - नायकः (पु०)—पः, (पु०)—पालः, (पु०)—पालकः, (पु०) द्वारपाल। दरवान।—दारुः, (पु०) शीशम।—पट्टः, (पु०) १किवाड़। २दरवाज़े की पर्दा।—पिण्डी,(स्त्री०) दहली। दहलीज़। ड्योढी।—पिधानः, (पु०) दरवाज़े की चटखनी।—बलिभुज्, (पु०) १ काक। २ गौरैया।—बाहुः, (पु०) पाखा।—यंत्रं, (न०) ताला। चटखनी।—स्थः, (पु०) दरवान।

द्वारका
द्वारिका } (स्त्री०) गुजरात प्रान्त स्थित श्रीकृष्ण की राजधानी का नाम।—ईशः, (पु०) श्रीकृष्ण।

द्वारवती
द्वारावती } (स्त्री०) द्वारका। श्रीकृष्ण की राजधानी का नाम।

द्वारिकः
द्वारिन् } (पु०) द्वारपाल। दरवान।

द्वि (वि०) [कर्त्ता द्विवचन—द्वौ, (पु०)—द्वे (स्त्री०) द्वे (न०) दो। दोनों।—अक्ष, (वि०) दो आँखों वाला।—अक्षर, (वि०) दो अक्षरों वाला।—अंगुल, (वि०) दो अंगुल लंबा।—अंगुलं, (न०) दो अंगुल की लंबाई।—अणुकं, (पु०) दो अणुओं का योग।—अर्थ, (वि०) १ दो अर्थ का। द्विअर्थक। २ जटिल। ३ दो लक्ष्यों वाला।—अशीत, (वि०) ८२ वाँ।—अशीतिः, (स्त्री०) ८२। बयासी।—अष्टं, (न०) ताँबा।—अहः, (पु०) दो दिवस की अवधि।—आत्मक, (वि०) दो प्रकार का स्वभाव वाला। दो।—आमुष्यायणः, (पु०) दो बाप का बेटा। एक तो अपने जनक का दूसरे दत्तक पिता का।—ऋचं, (द्वृचं या द्व्यृचं) ऋचाओं का संग्रह।—कः,—ककारः (पु०) १ काक। कौवा।—ककुदः,

(पु०) ऊँट।—गु, (वि०) दो गाय के बदले में प्राप्त।—गुः, (पु०) तत्पुरुष समास का एक अवान्तर भेद जिसमें प्रथम शब्द संख्यावाची होता है।—गुण, (वि०) दूना। दुगना।—गुणित, १ दूना किया हुआ। दो से गुणा किया हुआ। २ दुहराया हुआ। दो पत्तों में किया हुआ। ३ लपेटा हुआ। ४ दूना बढ़ाया हुआ। दुगुना किया हुआ।—चरण, (वि०) दो पैरों वाला।—चत्वारिंश, (वि०) [= द्विचत्वारिंश, या द्वाचत्वारिंश.] ४२ वाँ।—चत्वारिंशत् (स्त्री०)(द्विचत्वारिंशत्, या द्वाचत्वारिंशत्,) (स्त्री०) ४२। बयालिस।—जः, (पु०) १ दो बार उत्पन्न हुआ। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य। ब्राह्मण जिसमें समस्त संस्कार हों। २ पक्षी। सर्प। मछली आदि कोई भी अण्डज जन्तु। ३ दाँत।—जराजः, (पु०) १ चन्द्रमा २ गरुड़। ३ कपूर।—राजब्रुवः,—राजबन्धुः, (पु०) १ केवल जन्म का ब्राह्मण किन्तु ब्राह्मणोचित्त कर्मों से रहित। २ ब्राह्मण बनने का दावा रखने वाला मनुष्य। बनावटी ब्राह्मण।—जन्मन् —जातिः, पु०) १ प्रथम तीन वर्णों में से कोई भी हिन्दू। २ ब्राह्मण। ३ चिड़िया। ४ दाँत।—जातीय, (वि०) प्रथम तीन वर्णों से सम्बन्ध युक्त।—जिह्वः, (पु०) १ सर्प। २ चुगलखोर। कहानी कहने वाला। ३ कपटी मनुष्य।—त्रिंश, (द्वात्रिंश,) (न०) १ ३२ वाँ। २ बत्तीस का।—त्रिंशत्, [द्वात्रिंशत्,] (स्त्री०) ३२।—दण्डि, (अव्यया०) डंडे से डंडा।—दत्, (वि०) दो दाँतों वाला।—दश, (वि०) २०। बीस।—दश, (वि०)[द्वादश]१ बारहवाँ। २ बारह से बना हुआ।—दशन्, [द्वादशन्] (वि० बहुव०] १२ बारह।—अंशुः, (पु०) १ बुध। २ बृहस्पति।—आयुस, (पु०) कुत्ता।—दशी, [द्वादशी] तिथि विशेष।—देवतं, (न०) विशाखा नक्षत्र।—देहः, (पु०) गणेश।—धातुः, (पु०) गणेश।—नवत, (वि०) ९२ वे।—नवतिः, (स्त्री०) ९२।—पः, (पु०) हाथी।—पक्षः, (पु०) १चिड़िया। २मास।—पंचाश, (वि०) ५२वाँ।—पञ्चाशत्, (स्त्री०)५२।—पथं (न०) दो मार्ग।

—पदः, (पु०) दो पैर का आदमी।—पादिका, —पदी, (स्त्री०) छन्द विशेष।—पाद्,—पादः, १ दो पैर का आदमी। २ पक्षी। ३ देवता।—पाद्यः,—पाद्यं, (न०) दुहरी सजा।—पायिन्, (पु०) हाथी।—बिन्दुः, (पु०) विसर्ग।—भुजः, (पु०) कोण।—भूम, (वि०) दोमंजला।—मातृ,—मातृजः, (पु०) १ गणेश। २ जरासन्ध राजा।—मार्गी, (स्त्री०) चौराहा।—मुखा, (स्त्री०) जौंक।—रः, (पु०) भौंरा।—रदः, (पु०) हाथी।—रसनः, (पु०) सर्प।—रात्रं, (न०) दो रात।—रूप, (वि०) १ दो रूप वाला। २ दो रंग का।—रेतस्, (पु०) खच्चर।—रेफः, (पु०) भौंरा।—वज्रकः (पु०) १६ कोने का या सोलह पहल का घर विशेष।—वाहिका, (स्त्री०) —हिंडोला,।—विंश, [द्वाविंश,] (वि०) बाइसवाँ।—विंशतिः, [द्वाविंशतिः,] (स्त्री०) बाइस।—विध, (वि०) दो प्रकार का।—वेशरा, (स्त्री०) एक प्रकार की हलकी गाडी जिसमें खच्चर जोते जाते हैं।—शतं, (न०) १ दो सौ। २ एक सौ दो।—शत्य, (वि०) दो सौ मूल्य का या दो सौ में ख़रीदा गया।—शफ, (वि०) चिरा हुआ सुम या खुर।—शफः, (पु०) खुर वाला कोई भी जानवर।—शीर्ष, (पु०) अग्नि।—षष, (वि०) दो बार ६, यानी १२।—षष्ट [= द्विषष्ट, द्वाषष्ट] बासठवाँ।—षष्टि (स्त्री०) [+ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः,] बासठ।—सप्तत, [+ द्वि द्वा,—सप्तत,](वि०) बहत्तरवाँ।—सप्ततिः, (स्त्री०) [+ द्वि, —द्वा —सप्ततिः, बहत्तर।—सप्ताहः, (पु०) एक पक्ष या पखवारा।—सहस्र —साहस्र, (वि०) २००० से युक्त। सहस्रं,—साहस्रं, (न०) दो हज़ार।—सीत्य, —हल्य, (वि०) दो प्रकार से जोता हुआ। अर्थात प्रथम लंबान में दूसरी बार चौड़ान में।—सुवर्ण, (वि०) दो मोहरों में खरीदा हुआ या दो मोहरों के मूल्य का।—हन्, (पु०) हाथी।—हायन्, —वर्ष, (वि०) दो वर्ष पुराना या दो वर्ष की उम्र का।—हीन, (वि०) नपुंसक लिङ्ग

का।—हृदया (स्त्री०) गर्भवती स्त्री।—होतृ, (पु०) अग्नि।

द्विक (वि०) १ दुहरा। जुट्टदार। दो से युक्त। २ दूसरा। ३ दूसरी वार होने वाला। ४ दो से बढ़ा हुआ। दो सैकड़ा।

द्वितय (वि०) [[स्त्री—द्वितयी] दो से युक्त अथवा दो में विभक्त। दूना। दूसरा।

द्वितयं, (न०) जोड़ा। जुट्ट।

द्वितीय (वि०) दूसरा।—आश्रमः, (पु०) गृहस्थाश्रम गार्हस्थ्य।

द्वितीयः (पु०) १ कुटुम्ब में दूसरा। पुत्र। २ साथी। साझीदार। पत्तीदार। मित्र।

द्वितीया (स्त्री०) १ चान्द्र मास की दूसरी तिथि। २ पत्नी। साथी। साझीदार। ३ विभक्ति विशेष।

द्वितीयक (वि०) दूसरा।

द्वितीयाकृत (वि०) दो बार जुता हुआ।

द्वितीयिन् (वि०)[स्त्री०—द्वितीयिनी] दूसरे स्थान को अधिकृत किये हुए।

द्विध (वि०) दो भागों में विभक्त।

द्विधा (अव्यया०) १दो भागों में। २ दोप्रकार से।—करणं, (न०) दो भागों में विभक्त करना।—गतिः, (पु०) १ केकड़ा। २ मगर। नक्र। ३ जल-थल-चर जन्तु।

द्विशस् (अव्यया०) दो दो करके।

द्विष् (धा० उभय०) [द्वेष्टि, द्विष्टे द्विष्ट,] नफरत करना। घृणा करना।

द्विष् (वि०) विरोधी। घृणा करने वाला। (पु०) शत्रु।

द्विषः (पु०) शत्रु।

द्विषत् (पु०) शत्रु। वैरी। दुश्मन।

द्विष्ट (वि०) १ वैरी। अशुभचिन्तक। २ अरुचिकर। घृण्य।

द्विष्टं (न०) ताँवा।

द्विस् (अव्या०) दुवारा।—आगमनम्, [=द्विरागमनम्] (न०) गोना।—आपः, [द्विरापः] (पु०) हाथी।—उक्त, (त्रि०) [द्विरुक्त] १ दो वार कहा हुआ। दुहराया हुआ। २ फालतू। अधिक।—उक्तिः, (स्त्री०) [द्विरुक्तिः,] १ पुनरावृत्ति। दुहराना। २ फालतूपना। व्यर्थत्व।— ऊढा, (द्विरूढा) (स्त्री०) स्त्री जिसका दो वार विवाह हुआ हो।— भावः, (पु०) –वचनं, (न०) दुहराव।

द्वीप (न०) } द्वीपः(पु०) } १ टापू। २ पनाह। पैदावार।—कर्पूरः, (पु०) चीन का कपूर।

द्वीपवत (वि०) द्वीपों से परिपूर्ण।—(पु०) समुद्र।

द्वीपवती (स्त्री०) पृथिवी।

द्वीपिन् (पु०) १ चीता। २ लकड़बग्घा।—नखः, —नखं, (न०) १ चीते के नाखून। २ सुगन्ध द्रव्य विशेष।

द्वेधा (अव्यया०) दो भागों में। दो प्रकार से। दुवारा। [वैर।

द्वेषः (पु०) १ घृणा। अरुचि। नफरत। २ शत्रुता।

द्वेषण (वि०) नफरत करने वाला। नापसन्द करने वाला।

द्वेषणं (न०) घृणा। अरुचि। नफरत।

द्वेषणः (पु०) शत्रु। वैरी।

द्वेषिन् } द्वेष्टृ } (वि०) घृणा करने वाला। वैर करने वाला। (पु०) शत्रु।

द्वेष्य (स० का० कृ०) १ घृणा करने योग्य। घृण्य। अप्रिय।

द्वेष्यः (पु०) शत्रु। वैरी।

द्वैगुणिकः (पु०) वह व्याजखोर जो सौ पर सौ ही सूद लेता है।

द्वैगुण्यं (न०) १ दूनी रकम। दूना मूल्य या दूना नाप। २ द्वेध। ३ तीन गुणों में से दो गुणों की विद्यमानता (तीनगुण-सत्व, रजस् और तमस्)।

द्वैतं (न०) १ दुई। २ द्वैतवाद। –वनं, (न०) वन विशेष।—वादिन्, (पु०) द्वैत सिद्धान्त मानने वाला।

द्वैतिन् (पु०) द्वैतीयीक, (वि०) [स्त्री०—द्वैतीयीकी] १-द्वैतवादी। २ दूसरा।

द्वैध (वि०) [स्त्री०—द्वैधी) दुहरा। दूना।

द्वैधं (न०) १ दुहरापन। दो प्रकार का स्वभाव या अवस्था। २ दो भागों में अलग किया हुआ। ३ अन्तर। फ़र्क। ४ सन्देह। शक। ५ दो प्रकार का व्यवहार। दुहरापन। भीतर कुछ और बाहर कुछ। राजनीति के षड गुणों में से एक। इसमें

पारस्परिक व्यवहार में दो प्रकार का स्वभाव रखना पड़ता है। अर्थात मुख्य उद्देश्य को छिपा कर गौण उद्देश्य प्रकट किया जाता है।
द्वैधीभावः (पु०) १ द्विधाभाव। अनिश्चय। २ भीतर कुछ बाहिर कुछ।
द्वैध्यं (न०) १ अन्तर। फर्क। २ छलबल। कपट।
द्वैप (वि०) [स्त्री०—द्वैपी] १ द्वीप सम्बन्धी। टापू में रहने वाला। २ चीते का। व्याघ्राम्बर से ढका हुआ या बना हुआ।
द्वैपः (पु०) व्याघ्र की चाम से मढ़ा हुआ रथ या गाड़ी।
द्वैपलं (न०) दो दल।
द्वैपायन. (पु०) टापू में उत्पन्न। व्यास जी का नाम।
द्वैप्य (वि०) [स्त्री०—द्वैप्या या द्वैप्यी] टापू में रहने वाला या टापू से सम्बन्ध रखने वाला।
द्वैमातुर (वि०) दो माताओं वाला। एक जननी दूसरी सौतेली माता।
द्वैमातुरः (पु०) १ गणेश। २ जरासन्ध।
द्वैमातृक (वि०) [स्त्री०—द्वैमातृकी] वह भूमि जो वृष्टि के जल और नदी के जल पर निर्भर हो।
द्वैरथं (न०) दो रथों पर सवार। दो योद्धाओं का पारस्परिक युद्ध।
द्वैरथः (पु०) शत्रु। वैरी।
द्वैराज्यं (न०) वह राज्य जो दो राजाओं में बँटा है।
द्वैवार्षिक (वि०) दुसाला।
द्वैविध्यं (न०) १ दुहरापन। दो प्रकार का स्वभाव। २ भिन्नता। अन्तर। फर्क।

ध

ध नागरी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है। इसके उच्चारण में आभ्यन्तर प्रयत्न की आवश्यकता होती है, और जिह्वा का अग्रभाग दाँतों के मूल में लगाना पड़ता है। बाह्य प्रयत्न संवार, नाद, घोष महाप्राण हैं।
ध (वि०) १ धारण करने वाला। २ ग्रहण करने वाला। पकड़ने वाला।
धं (न०) धनदौलत। सम्पत्ति।
धः (पु०) १ ब्रह्मा। २ कुबेर। ३ धर्म। सद्गुण। सदाचार।
धक् (पु०) क्रोध में निकलने वाला शब्द विशेष।
धक्क (धा० उभय०) [धक्कयति, धक्कयते] नाश करना।
धटः (पु०) १ तराजू। २ तराजू द्वारा कठोर परीक्षा। ३ तुला राशि।
धटकः (पु०) ४२ रत्ती के वज़न की तौल विशेष।
धटिका, धटी } १ पुराना वस्त्र। चिथड़ा। २ कोपीन।
धटिन् (पु०) १ शिव जी। २ तुला राशि।
धण् (धा० परस्मै०) [धणति] शब्द करना।
धत्तूरः, धत्तूरकः, धत्तूरका } धतूरा।
धन् (धा० परस्मै०) [धनति] शब्द करना।
धनम् (न०) १ सम्पत्ति। दौलत। खजाना। रुपैया। २ प्रियतम कोई भी वस्तु। बहुमूल्य कोई भी वस्तु। ३ पूँजी। लूट का माल। शिकार। ५ खिलाड़ी को, जो खेल में जीता हो, दिया जाने वाला पुरस्कार। ६ पुरस्कार प्राप्त करने के लिये भिड़न्त। ७ अङ्क गणित में जोड़ का चिन्ह (+) —अधिकारः, (पु०) पैतृक सम्पत्ति पर अधिकार पाने का हक़।—अधिकारिन्,—अधिकृतः, (पु०) १ खजानची कोषाध्यक्ष। २ उत्तराधिकारी।—अधिगोप्तृ,—अधिपः,—अधिपतिः —अध्यक्षः, (पु०) १ कुबेर। २ कोषाध्यक्ष।

—अपहारः, (पु०) १ जुर्माना । २ लूट ।—अर्चित, (वि०) १ धन के दान से सम्मानित । मूल्यवान भेंट देकर सन्तुष्ट रखा हुआ । २ धनी । अमीर । - अर्थिन्, (वि०) लालची । कजूस । —आढ्य, (वि०) धनी । धनवान् । अमीर । —आधारः, (पु०) खजाना । कोषागार ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) खजानची । कुबेर ।—उष्मन्, (पु०) (=अर्थोष्मन्,) धन की गर्माहट या गर्मी । ऐपिन्, (पु०) महाजन जो अपना रुपया माँगे ।—केलिः, (पु०) कुबेर । —क्षयः, (पु०) धन का नाश ।—गर्व,—गर्वित, (वि०) पास रुपयों के तोड़े होने के कारण अभिमानी ।—जातं, (न०) सम्पत्ति । सब प्रकार की मूल्यवान् अधिकृत सामग्री । - दः, (पु०) १ उदार पुरुष । दानी पुरुष । २ कुबेर की उपाधि । ३ अग्नि का नाम ।—दण्डः, (पु०) अर्थदण्ड । जुर्माना ।—दायिन्, (पु०) अग्नि ।—पतिः, (पु०) कुबेर ।—पालः, (पु०) १ खजानची । २ कुबेर ।—पिशाचिका,—पिशाची, (स्त्री०) धन का लालच । धनलिप्सा ।—प्रयोगः, (पु०) अधिक ब्याज ।—मूलं, (न०) पूंजी । मूल-धन ।—लोभः, (पु०) लालच ।—व्ययः, (पु०) १ ख़र्च । २ फजूलख़र्ची । अपव्यय । स्थानं, (न०) कोषागार ।—हरः, (पु०) १ उत्तराधिकारी । २ चोर । ३ गन्धविशेष ।

धनकः }
धनाया } (पु०) लालच । लोभ ।

धनंजयः }
धनञ्जय } (पु०) १ अर्जुन का नाम । २ अग्नि की उपाधि ।

धनवत् (वि०) धनी । धनवान् ।

धनिकः (पु०) १ धनी पुरुष । २ महाजन । उत्तमर्ण । ३ पति । ४ ईमानदार व्यापारी । ५ प्रियङ्गु वृक्ष ।

धनिन् (वि०) [स्त्री०—धनिनी] अमीर । धनवान् । (पु०) १ धनी आदमी । २ महाजन ।

धनिष्ठ (वि०) बड़ा धनवान् ।

धनिष्ठा (स्त्री०) २३ वां नक्षत्र ।

धनी }
धनीका } (स्त्री०) जवान स्त्री या लड़की ।

धनुः (पु०) कमान ।

धनुस् (वि०) कमानधारी । (न०) १ कमान । २ नाप विशेष जो ४ हाथ के बराबर का होता है । ३ वृत्त की गुलाई । ४ धनुष राशि । ५ वीरान । —कर, (=धनुष्कर) (वि०) धनुर्धारी । —करः, (पु०) कमान बनाने वाला ।—काण्डम्, (=धनुःकाण्डम्) तीर कमान । —खण्डम्, (=धनुः खण्डम्,) कमान का एक भाग ।—गुणः, (पु०) (=धनुर्गुणः,) रोदा । कमान की डोरी ।—ग्रहः, (पु०) (=धनुर्ग्रहः) तीरन्दाज़ ।—ज्या, (स्त्री०) (=धनुर्ज्या) कमान की डोरी ।—द्रुमः, (पु०) (=धनुर्द्रुमः) बाँस ।—धरः,—भृत्, (पु०) (=धनुर्धरः) तीरन्दाज़ ।—पाणि, (वि०) (=धनुष्पाणिः) धनुष लिये हुए ।—मार्गः, (पु०) (=धनुर्मार्गः) धनुषाकार रेखा ।—विद्या, (स्त्री०) (=धनुर्विद्या) धनुष चलाने की विद्या ।—वृक्षः (=धनुर्वृक्षः) (पु०) १ बाँस । २ अश्वत्थ वृक्ष ।—वेदः, (=धनुर्वेदः) (पु०) अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपवेद जिसमें बाण चलाने की विद्या का वर्णन है ।

धनू (स्त्री०) कमान ।

धन्य (वि०) १ धन देने वाला । जिससे धन प्राप्त हो । २ धनवान । ३ भाग्यवान । सुकृती । सुखी । ४ सर्वोत्कृष्ट । सर्वोत्तम । पुण्यात्मा ।—वादः, (पु०) १ शाबाशी । प्रशंसा । वाह वाह । शुक्रिया । २ कृतज्ञताद्योतक शब्द ।

धन्यं (न०) सम्पत्ति । धनदौलत ।

धन्यः (पु०) १ भाग्यवान या सुकृती जन । २ नास्तिक । निमकहराम । ३ एक जादू का नाम ।

धन्या (स्त्री०) १ उपमाता । २ वनदेवी । ३ मनु की एक कन्या जो ध्रुव को ब्याही थी । ४ आमलकी । छोटा आँवला । ५ धनिया ।

धन्यंमन्य (वि०) अपने को धन्य या भाग्यवान मानने वाला ।

धन्याकं (न०) धनिया । धनिया का पौधा ।

धन्व (न०) कमान ।—धिः, (पु०) कमान रखने का बक्स ।

धन्वन् (पु० न०) खुश्क ज़मीन । रेगिस्तान । पड़ती

ज़मीन । समुद्रतट । कड़ी ज़मीन ।—दुर्गम्, (न०) चारों ओर रेगिस्तान होने से अगम्य दुर्ग।

धन्वंतरं, धन्वन्तरं (न०) चार हाथ या दो गज़ का नाप।

धन्वंतरिः, धन्वन्तरिः (पु०) देववैद्य । देवताओं के चिकित्सक।

धन्विन् (वि०) [स्त्री०—धन्विनी] कमान से सज्जित । (पु०) १ तीरन्दाज । २ अर्जुन की उपाधि । ३ शिव की उपाधि । ४ धनुष राशि ।

धन्विन: (पु०) शूकर ।

धम (वि०) [स्त्री०—धमा, धमी] १ धौंकने वाला । २ पिघलाने वाला ।

धमः (पु०) १ चन्द्रमा । कृष्ण की उपाधि । ३ यम । ४ ब्रह्मा ।

धमकः (पु०) लुहार ।

धमधमा (स्त्री०) धम धम का शब्द ।

धमन (वि०) १ धौंकने वाला । २ निष्ठुर ।

धमनः (पु०) एक प्रकार का नरकुल ।

धमनिः, धमनी (स्त्री०) १ नरकुल । पाइप । २ नाड़ी । शिरा । ३ गला । ग्रीवा ।

धमिः (स्त्री०) धौंकने की क्रिया ।

धम्मलः, धम्मिल, धम्मिल्लः (पु०) स्त्री के सिर के बालों का जूड़ा जिसमें मोती और फूल आदि गुथे हों।

धय (वि०) पीने वाला । चूसने वाला। [यथा स्तनंधय।]

धर (वि०) [स्त्री०—धरा—धरी] पकड़ने वाला। धारण करने वाला । [यथा गङ्गाधर।]

धरः (पु०) १ पहाड़ । २ रुई का ढेर । ३ विट। कुटना । ४ कच्छावतार । ५ वसुओं में से एक का नाम ।

धरण (वि०) [स्त्री०—धरणी] धारण करने वाला । रक्षा करने वाला । वहन करने वाला ।

धरणं (न०) १ सहारा देने वाला । धारण करने वाला । २ कब्जे में रखने वाला । खाने वाला । ३ सहारा । खंभा । ४ दस पल के समान की एक तौल । ५ ज़मानत ।

धरणः (पु०) १ बांध । पुल । २ संसार । ३ सूर्य । ४ स्त्री के कुच । ५ चाँवल । धान्य । ६ हिमालय।

धरणिः, धरणी (स्त्री०) १ पृथिवी । २ भूमि । ज़मीन । ३ वृक्ष की धन्न । ४ शिरा । धमनी । —ईश्वरः, (पु०) १ राजा । विष्णु । ३ शिव । कीलकः, १ (पु०) पहाड़ ।—जः,—पुत्रः,—सुतः, (पु०) १ मङ्गल ग्रह । २ नरकासुर ।—जा,—पुत्री,—सुता, (स्त्री०) जनक दुलारी जानकी ।—धरः, (पु०) १ शेष । २ विष्णु । ३ पर्वत । ४ कच्छप । ५ राजा । ६ दिग्गज ।—धृत, (पु०) १ पर्वत । २ विष्णु । ३ शेष ।

धरा (स्त्री०) १ पृथिवी । २ शिरा । ३ गर्भाशय । योनि । ४ गूदा । मिंगी ।—अधिपः, (पु०) राजा ।—अमरः,—देवः,—सुरः, (पु०) ब्राह्मण ।—आत्मजः,—पुत्रः,—सूनुः, (पु०) १ मङ्गल ग्रह । नरकासुर ।—आत्मजा, (स्त्री०) सीता जी ।—धरः, (पु०) १ पर्वत । २ कृष्ण या विष्णु । ३ शेष जी ।—पतिः, (पु०) १ राजा । २ विष्णु ।—भुज्, (पु०) राजा ।—भृत्, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।

धरित्री (स्त्री०) १ पृथिवी । २ ज़मीन । भूमि ।

धरिमन् (पु०) तराज़ू । तखरी ।

धत्तूरः (पु०) धतूरे का पौधा ।

धर्त्रं (न०) १ मकान । घर । २ शुभक्रिया । खम्भा । ३ यज्ञ । ४ पुण्य । सदाचार ।

धर्मः (पु०) वह कर्म जिसके करने से करने वाले का इस लोक में अभ्युदय हो और परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो । २ आईन । कानून । प्रचलन । पद्धति । ३ कर्त्तव्य । ४ न्याय । समानता । पक्षपात । ५ किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे और उससे कभी पृथक् न हो । ६ नेम । ईश्वरभक्ति । छवि । फबन । ७ कर्त्तव्याकर्त्तव्य अवधारण विषयक शास्त्र । ८ समानता । सादृश्य । ९ यज्ञ । १० सत्सङ्ग । धर्मात्मा पुरुषों का सहवास । ११ भक्ति । १२ तौर तरीक़ा । १३ उपनिषद । १३ युधिष्ठिर का नाम । १४ यम का नाम ।—अङ्गः, (पु०) —अङ्गा, (स्त्री०) सारस ।—अधर्मौ (पु० द्विवचन) शुभ और अशुभ । उचित और अनुचित । धर्म और अधर्म । अधिकरणम्, (न०) आईन के अनुसार

शासन। आईन का प्रयोग करना।—अधिकरणिन्, (पु०) न्यायाधीश।—अधिकार (पु०) १ धार्मिक कृत्यों की व्यवस्था। २ न्याय का प्रयोग। ३ न्यायाधीश का पद।—अधिष्ठानं, (न०) न्यायालय।—अध्यक्षः, (पु०) १न्यायाधीश। २ विष्णु।—अनुष्ठानं, (न०) धर्मानुसार व्यवहार करना। सदाचरण।—अपेत, (वि०) सत्कर्म से अलग होना। अधार्मिक।—अपेतं, (न०) पाप। असत्कर्म। अन्याय।—अरण्यं, (न०) तपोभूमि। ऋष्याश्रम।—अलीक, (वि०) असदाचरणी।—आगमः, (पु०) धर्मशास्त्र।—आचार्यः, (पु०) १ धर्म की शिक्षा देने वाला। २ धर्म शास्त्र का अध्यापक।—आत्मजः, (पु०) युधिष्ठिर। आत्मन् (वि०) उचित। ठीक। सत्। पुण्यमय। पवित्र।—आसन (न०) न्याय का सिंहासन।—इन्द्रः, (पु०) युधिष्ठिर।—ईशः (पु०) यमराज।—उत्तर, (वि०) न्याय करने और पक्षपात शून्य होने में प्रसिद्ध।—उपदेशः, (पु०) १ धर्मशास्त्र की शिक्षा। २ धर्मशास्त्रों का समुच्चय।—कर्मन् (न०)—कार्य, (न०)—क्रिया, (स्त्री०) १ कोई भी धार्मिक कृत्य। कोई भी धर्मानुष्ठान। कोई भी धार्मिक विधि या विधान। २ सदाचरण।—कथादरिद्रः, (पु०) कलियुग।—कायः, (पु०) बुधदेव।—कील॰, (पु०) राजा की ओर से दानपत्र या दान देने की आज्ञा।—केतु, (पु०) बुद्धदेव।—कोशः,—कोषः (पु०) धर्मशास्त्रों का समूह या कर्त्तव्य कर्मों का समुच्चय।—क्षेत्रं, (न०) १ भारतवर्ष। २ दिल्ली के पास का एक स्थान विशेष। कुरुक्षेत्र।—घटः, (पु०) वैशाख मास में (ब्राह्मण को दिया जाने वाला) सुगन्धयुक्त जल से पूर्ण घड़ा।—चक्रभृत्, (पु०) बौध या जैन।—चरणं, (न०)—चर्या, (स्त्री०) धर्मशास्त्रानुसार आचरण। धार्मिक कर्त्तव्यों का नियमित अनुष्ठान।—चारिन्, (वि०) पुण्यात्मा। धर्मात्मा। (पु०) संन्यासी।—चारिणी (स्त्री०) १ पत्नी। २ सती स्त्री।—चिन्तनं,—चिन्ता, (स्त्री०) धार्मिक चर्या की चिन्ता।—जः, (पु०) १ औरस सन्तान। २ युधिष्ठिर का नाम। जन्मन्, (पु०) युधिष्ठिर का नाम।—जिज्ञासा, (स्त्री०) धर्म सम्बन्धी बातें जानने की इच्छा।—जीवन, (वि०) वह पुरुष जो अपने वर्ण के धर्मानुसार आचरण करता है।—ज्ञ, (वि०) १ उचित अनुचित जानने वाला। २ उचित। पुण्यात्मा। ऋषिकल्प।—त्यागः (पु०) धर्मत्यागी।—दाराः, (पु० बहुवचन) धर्मपत्नी।—द्रोहिन् (पु०) राक्षस।—धातुः, (पु०) बुध की उपाधि।—ध्वजः,—ध्वजिन् (पु०) पाखण्डी। दम्भी।—नन्दनः, (पु०) युधिष्ठिर।—नाथ॰, (पु०) धर्मानुसार स्वामी या मालिक।—नाभः, (पु०) विष्णु।—निवेशः, (पु०) धर्म के प्रति भक्ति।—निष्पत्तिः, (स्त्री०) कर्त्तव्यपालन।—पत्नी, (स्त्री०) शास्त्र विधि से परिणीत पत्नी।—पर, (वि०) धर्मात्मा। पुण्यात्मा। सुकृती।—पाठक॰, (पु०) धर्मशास्त्र पढ़ाने वाला।—पालः, (पु०) धर्मशास्त्र रक्षक।—पीडा, (स्त्री०) धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरण।—पुत्रः, (पु०) १ वह सन्तान जो कर्त्तव्य समझ कर उत्पन्न की जाय न कि सुखभोग के उद्देश्य से। २ युधिष्ठिर की उपाधि।—प्रवक्तृ, (पु०) १ धर्म शास्त्र का व्याख्याता। आईनी मशवराकार। धर्मव्यवस्थादाता। २ धर्मोपदेष्टा। धर्मोपदेशक।—प्रवचनम्, (न०) १ कर्त्तव्य सम्बन्धी विज्ञान। २ धर्मशास्त्र का व्याख्याता।—प्रवचनः, (पु०) बुधदेव की उपाधि।—वाणिजिकः,—वाणिजिकः, (पु०) वह मनुष्य जो धार्मिक कृत्यों को इसलिये करता है कि उसे उनसे कुछ लाभ उसी प्रकार हो जिस प्रकार बनिये को व्यापार करने से होता है।—भगिनी, (स्त्री०) १ धर्मबहिन। २ धर्मगुरु की पुत्री। ३ समान धर्मपालन करने वाली।—भागिनी, (स्त्री०) सती भार्या। पतिव्रता पत्नी।—भाणकः, (पु०) पुराण पाठक। कथावाचक।—भ्रातृ, (पु०) गुरुभाई। सहपाठी।—महामात्र, सचिव जिसके हाथ में धर्मादा विभाग हो।—मूलं, (न०) वेद।—युगं,

(न०) कृतयुग।—वृष., (पु०) विष्णु।—रति, (त्रि०) धर्मात्मा। पुण्यात्मा। सुकृती।—राज्, (पु०) १ यमराज। २ जिन। ३ युधिष्ठिर। ४ राजा।—रोधिन्, (वि०) धर्मशास्त्र विरुद्ध। अधार्मिक। धर्मविरुद्ध। २ असदाचरणी।—लक्षणं, (न०) १ धर्म की पहचान। २ वेद।—लक्षणा. (स्त्री०) मीमांसा दर्शन।—लोपः, (पु०) धर्माचरण का नाश। असदाचरण। कर्त्तव्यपराङ्मुखता—वत्सल, (वि०) धर्मात्मा।—वर्तिन्, (वि०) पुण्यात्मा। न्यायवान्।—वासरः, (पु०) पूर्णमासी।—वाहनः, (पु०) १ शिव। २ भैंसा (धर्मराज का वाहन)—विद्, (वि०) धर्मशास्त्र का जानने वाला।—विप्लवः, (पु०) असदाचरण।—वैतंसिकः, (पु०) अन्याय से उपार्जित धन का दान करने वाला। इस आशा से कि लोग उसे उदार या दानी मानें।—शाला, (स्त्री०) १ न्यायालय। २ कोई भी धार्मिक संस्था।—शासनम् (न०)—शास्त्रं, (न०) कर्त्तव्याकर्तव्य का यथार्थ उपदेशक शास्त्र। मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्र।—शील, (वि०) धार्मिक।—संहिता, (स्त्री०) मनु-याज्ञवल्क्यादि स्मृतियाँ।—सङ्गः, (पु०) १ न्याय या सुकर्म के प्रति अनुराग। २ दम्भ। पाखण्ड।—सभा, (स्त्री०) न्यायालय।—सहायः, (पु०) किसी धार्मिक कृत्य के अनुष्ठान में भाग लेने वाला या सहायता पहुँचाने वाला।

धर्मतः (अव्यया०) नियम या धर्म शास्त्रानुसार।

धर्मयु (वि०) धर्मात्मा। न्यायी। ईमानदार। सच्चा।

धर्मिन् (वि०) १ धर्मात्मा। न्यायी। सच्चा। २ अपना कर्त्तव्य जानने वाला। ३ धर्म शास्त्रानुसार चलने वाला। ४ विशेष लक्षणाक्रान्त। (पु०) विष्णु।

धर्मीपुत्र. (पु०) नाटक का पात्र। एक्टर। नट।

धर्म्य (वि०) १ धर्मानुसार। २ धार्मिक। ३ न्यायवान। ईमानदार। सच्चा। ४ मामूली। साधारण। विशेष गुण सम्पन्न।

धर्षः (पु०) अविनय। अविनीत व्यवहार। धृष्टता। २ अभिमान। अहङ्कार। ३ अधैर्य। ४ संयम। रोक। ५ सतीत्व हरण। ६ अपमान। गुस्ताखी। हतक। ७ हिजड़ा। नपुंसक।—कारिणी, (स्त्री०) स्त्री जिसका सतीत्व हरण हो चुका हो।

धर्षक (वि०) १ खाने वाला। दमन करने वाला। २ सतीत्व हरण करने वाला। ३ असहनशील।

धर्षकः (पु०) १ सतीत्व-हरणकारी। व्यभिचारी। २ अभिनय-कर्त्ता। नट। नर्तक।

धर्षणम् (न०) }
धर्षणा (स्त्री०) } १ अवज्ञा। अपमान। २ आक्रमण। सतीत्वहरण। ४ सम्भोग। रति। ५ कुवाच्य। गाली।

धर्षणिः }
धर्षणी } (स्त्री०) रंडी। वेश्या।

धर्षित (वि०) १ दबाया या दमन किया हुआ। २ सतीत्व हरण की हुई। ३ असद व्यवहार किया हुआ। गाली दिया हुआ। अपमानित किया हुआ।

धर्षितम् (न०) १ अभिमान। २ मैथुन। सम्भोग।

धर्षिता (स्त्री०) वेश्या। असती स्त्री।

धर्षिन् (वि०) १ अभिमानी। अकड़बाज़। आपे से बाहिर। २ सतीत्व-हरण करने वाला। ३ अपमान करने वाला। अवज्ञा करने वाला। ४ मैथुन करने वाला।

धर्षिणी (स्त्री०) रंडी। वेश्या। कुलटा स्त्री।

धवः (पु०) १ कंपन। थरथराना। २ मनुष्य। ३ पति (जैसे विधवा)। ४ स्वामी। मालिक। ५ गुंडा। बदमाश। धोखेबाज़।

धवल (वि०) १ सफेद। २ सुन्दर। ३ साफ। विशुद्ध।—उत्पलं, (न०) सफेद कमल या कमोदिनी जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलती है।—गिरिः, (पु०) हिमालय की सर्वोच्च चोटी।—गृहं, (न०) चूने से पुता घर। राजप्रासाद।—पक्षः, (पु०) हंस। चान्द्रमास का शुक्लपक्ष।—मृत्तिका, (स्त्री०) खड़िया मट्टी। चाक।

धवलं (न०) सफेद कागज़।

धवलः (पु०) १ सफेद रंग। २ श्रेष्ठ बैल। ३ चीन का कपूर। ४ एक वृक्ष का नाम। धव।

धवला (स्त्री०) गोरे रंग की स्त्री।

धवली (स्त्री०) सफेद रंग की गाय।

धवलित (वि०) सफेद किया हुआ।

धवलिमन् (न०) १ सफेदी । सफेद रंग । २ पीलापन ।

धवित्रं (न०) मृगचर्म का बना पखा ।

धा (धा० उभ०) [दधाति,—धत्ते,—हित,—धीयते, (णिजन्त) धापयति,—धापयते,—धित्सति,—धित्सते,] १ रखना । स्थापित करना । जड़ना । बैठाना । २ गाड़ना । निर्देश करना । ३ पान करना । ४ थामना । थामाना । ५ पकड़ना । ग्रहण करना । ६ पहनना । धारण करना । ६ दिखाना । प्रदर्शित करना । ७ वहन करना । सहन करना । ८ समर्थन करना । सहारा लगाना । ६ सृष्ट करना । उत्पन्न करना । १० झेलना । भोगना । ११ करना ।

धाकः (पु०) १ बैल २ पात्र । आधार । ३ भोज्य पदार्थ । माल । ४ खंभा । स्तम्भ ।

धाटी (स्त्री०) आक्रमण । हमला ।

धाणकः (पु०) सोने का सिक्का ।

धातुः (पु०) १ आवश्यक । प्रधान । साधक । २ मूलउपादान । तत्त्व जैसे पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश । ३ निःसृतरस (यथा मल मूत्र पसीना आदि)। ४ वात, पित और कफ । ५ खनिज पदार्थ । ६ क्रिया सम्बन्धी धातु । ७ जीवात्मा । ८ परमात्मा । ६ इन्द्रिय । १० इन्द्रियजन्य कर्म यथा रूप रस गन्ध आदि । ११ हड्डी ।—उपलः, (पु०) खड़िया मिट्टी ।—काशीशं,—कासीसं, (न०) कसीस ।—कुशल, (वि०) लोहा पीतल आदि से वस्तु बनाने में पटु ।—क्रिया, (स्त्री०) खनिजविद्या । धातुतत्त्व ।—क्षयः, (पु०) शारीरिक रोग विशेष । क्षयी का रोग । प्रमेह का रोग ।—द्रावकः, (पु०) सोहागा ।—भृत्, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।—मलं, (न०) वैद्यक के अनुसार वात, पित्त, कफ पसीना, नाखून, बाल, आँख या कान का मैल आदि, जिनकी सृष्टि शरीरस्थ किसी धातु के परिपक्व हो जाने पर उसके बचे हुए निरर्थक अंश या मल से होती है । २ सीसा ।—माक्षिक, (न०) १ सोनामक्खी नाम की उपधातु । २ खनिज पदार्थ विशेष ।—मारिन्, (पु०) गन्धक ।—राजकः, (पु०) वीर्य ।—वल्लभं, (न०) सोहागा ।—वादः, (पु०) खनिज विद्या । धातुत्त्व —वादिन् (पु०) रसायनी । कीमियागर ।—वैरिन्, (पु०) गन्धक ।—शेखरं (न०) १ कसीस । २ सीसा ।—शोधनं,—सम्भवम्, (न०) सीसा ।—साम्यम्, (न०) सुस्वास्थ्य । अच्छी तंदुरुस्ती ।

धातुमत् (वि०) धातु की विपुलता ।

धातृ (पु०) १ धाता । बनाने वाला । सृष्टिकर्त्ता । सम्पादक । २ वाहक । रक्षक । समर्थक । ३ ब्रह्मा की उपाधि । ४ विष्णु । ५ जीव ६ सप्तर्षियों का नाम । ७ विवाहिता स्त्री का प्रेमी या आशिक । व्यभिचारी ।

धात्रं (न०) पात्र जिसमें कोई चीज़ रखी जा सके ।

धात्री (स्त्री०) १ दाई । धाय । पालने वाली माता । उपमाता । २ माता । ३ पृथिवी । ४ आँवले का वृक्ष ।—पुत्र, (पु०) धाय का लड़का । २ नट । अभिनयकर्त्ता । फलं, (न०) आँवला ।

धात्रेयिका } (स्त्री०) १ धाय की लड़की । २
धात्रेयी } धाय । धात्री ।

धानं (न०) } १ वह जो धारण करे । वह जिसमें
धानी (स्त्री०) } कोई वस्तु रखी जाय । पात्र । २ स्थान । जगह । जैसे मसीधानी । राजधानी ।

धानाः (स्त्री० बहुवचन०) १ भुने हुए जौ या चाँवल । २ भुना हुआ कोई भी अनाज । ३ अनाज । ४ कली । अँकुर ।

धानुर्दण्डिकः } (पु०) धनुर्धर । तीरन्दाज ।
धानुष्कः }

धानुष्यः (पु०) बाँस ।

धांधा } (स्त्री०) इलायची । एला ।
धान्धा }

धान्यं (न०) १ अनाज । नाज । चाँवल । २ धनिया ।—अर्थः, (पु०) अनाज ही जिसका धन है ।—अम्लं, (न०) माँड का बना हुआ खट्टा पदार्थ ।—अस्थि, (न०) भूसी । चोकर ।—उत्तम (वि०) अनाजों में उत्तम अर्थात् चाँवल ।—कल्कं, (न०) १ भूसी । २ पुआल ।—कोशः, (पु०)—कोष्ठकं, (न०) खत्ती । अनाज

का भाण्डार ।—क्षेत्रं, (न०) अनाज का खेत ।—चमसः, (पु०) विशेष क्रिया से तैयार किया हुआ चाँवल । चूड़ा । चौरा ।—त्वच्, (स्त्री०) अनाज की भूसी ।—मायः, (पु०) अनाज का व्यापारी ।—राजः, (पु०) जौ ।—वर्धनं, (न०) व्याज पर अनाज उधार देना ।—वीजं, —बीजं, (न०) धनिया ।—वीरः, (पु०) उर्द । माष ।—शीर्षकं, (न०) अनाज की वाल ।—शूकं, (न०) अन्न की बाल या भुट्टा ।—सारः, (पु०) कुटा हुआ अनाज ।

धान्या (स्त्री०) }
धान्यार्क (न०) } धनिया ।

धान्वन् (वि०) [स्त्री०—धान्वनी] रेगस्तान में अवस्थित । धन्वन् ।

धामकः (पु०) माँसा । एक प्रकार की तौल ।

धामन् (न०) १ आवसस्थान । निवासस्थान । डेरा । २ स्थान । आश्रयस्थल । ३ किसी घर के निवासी । किसी कुटुम्ब के सदस्य । ४ प्रकाश की किरण । ५ प्रकाश । चमक । महिमा । ६ बल । पराक्रम । प्रताप । ८ उत्पत्ति । ९ शरीर । १० (सैन्य) दल । समूह । ११ दशा । परिस्थिति ।—केशिन्,—निधिः, (पु०) सूर्य ।

धामनिका }
धामनी } (स्त्री०) धमनी । नाड़ी । शिरा ।

धार (वि०) १ ग्रहण करने वाला । वहन करने वाला । सहारा देने वाला । २ बहने वाला ।

धारः (पु०) १ विष्णु । २ अचानक मूसलाधार जलवृष्टि । ३ ओले । ४ गहरी जगह । ५ ऋण । ६ सीमा ।

धारकः (पु०) धारण करने वाला । वर्तन । बक्स । ट्रंक आदि ।

धारण (वि०) [स्त्री०—धारणी] धारण करने वाला या वाली ।

धारणकः (पु०) कर्जदार । ऋणी ।

धारणा (स्त्री०) १ धारण करने की क्रिया या भाव । २ वह शक्ति जिसमें कोई बात मन में धारण की जाती है । बुद्धि । समझ । ३ दृढ़ निश्चय । पक्का विचार । ४ मर्यादा । ५ योग के आठ अँगो में से एक । ६ विश्वास । निश्चय ।—शक्तिः, (स्त्री०) याद रखने की ताकत ।

धारणी (स्त्री०) १ पंक्ति । रेखा । २ शिरा ।

धारयित्री (स्त्री०) पृथिवी । ज़मीन ।

धारा (स्त्री०) १ जल का प्रवाह । धार । २ घड़े का छेद जिससे पानी या अन्य कोई तरल पदार्थ बहे । ५ घोड़े की चाल । ६ सिरा । बाढ़ । धार । ७ पहाड़ का किनारा । ८ पहिया । बाग की दीवाल या घेरा । ९ सेना का अग्रभाग । सर्वोच्चस्थान । उत्तमता । १० समूह । ११ कीर्ति । १२ रात । १३ हल्दी । १४ समानता । १५ कान का अग्रभाग ।—अग्रं, (पु०) तीर का चौड़ा फल ।—अङ्कुरः, (पु०) १ वृष्टिजल की बूँद । २ ओला । ३ शत्रुसैन्य के सम्मुख आगे बढ़ना ।—अङ्गः, (पु०) तलवार ।—अटः, (पु०) चातक पक्षी । २ घोड़ा । ३ बादल । ४ मदमाता हाथी ।—अधिरूढ, (वि०) सर्वोच्च स्थान पर चढ़ा हुआ । (—अ) वनिः, (स्त्री०) वायु । हवा ।—अश्रु, (न०) आँसुओं का प्रवाह ।—आसारः, (पु०) मूसलधार जल-वृष्टि ।—उष्ण, (थन से निकला हुआ) गर्म । ताता ।—गृहं, (न०) स्नानागार जिसमें फुहारा लगा हो ।—धरः, (पु०) १ बादल । २ तलवार ।—निपातः,—पातः (पु०) १ जलवृष्टि । २ जलप्रवाह ।—यंत्रम्, (न०) फुहारा । फव्वारा—वर्षः, (पु०) वर्षम् (न० —सम्पातः, (पु०) मूसलधार या लगातार जलवृष्टि ।—वाहिन्, (वि०) सतत । लगातार ।—विष, टेढ़ी तलवार ।

धारिणी (स्त्री०) पृथिवी ।

धारिन् (वि०) [स्त्री०—धारिणी] १ ले जाने वाला । धारण करने वाला । २ याद रखना । स्मरण रखना ।

धार्तराष्ट्रः (पु०) १ धृतराष्ट्र का पुत्र । २ हंस विशेष जिसके पैर और चोंच काली होती है ।

धार्मिक (वि०) [स्त्री०—धार्मिकी] १ धर्मात्मा । पुण्यात्मा । ईमानदार । सच्चा । २ न्यायप्रिय । सत्यप्रिय । सत्य पर निर्भर । ३ धर्मिष्ठ ।

धार्मिणम् (न०) धार्मिक लोगों का समूह ।

धार्ष्ट्यं (न०) अभिमान । ढिठाई ।

धाव् (धा० परस्मै०) [धावति, धावित] १ भागना । आगे बढ़ना । २ भाग जाना ।

धावकः (पु०) १ धोबी । २ संस्कृत भाषा के एक कवि का नाम ।

धावनं (न०) १ पलायन । सरपट दौड़ । २ बहाव । ३ आक्रमण । ४ सफाई । ५ किसी वस्तु से रगड़ना ।

धावल्यं (न०) १ सफेदी । २ पीलापन ।

धि (धा० पर०) [धियति] ग्रहण करना । धरना । पकड़ना ।

धि (पु०) धारण करने वाला । भाण्डार ।

धिक् (अव्यया०) धिक्कार । फटकार ।—कारः,—क्रिया, (स्त्री०) भर्त्सना । तिरस्कार ।—दण्डः, (पु०) फटकार । भर्त्सना ।— पारुष्यं, (न०) कुवाच्य । गाली ।

धिप्सु (वि०) धोखा देने का अभिलाषी । धोखेबाज़ ।

धिन्व् देखो धि ।

धिषणं (न०) आवासस्थान । रहने की जगह ।

धिषणः (पु०) बृहस्पति का नाम ।

धिषणा (स्त्री०) १ वाणी । वक्तृता । २ प्रशंसा । गीत । ३ बुद्धि । प्रतिभा । समझ । ५ प्याला । कटोरा । कमण्डलु ।

धिष्ण्यं (न०) १ बैठक । स्थान । मकान । २ धूमकेतु । टूटता हुआ तारा । लूक । उल्का । ३ अग्नि । ४ नक्षत्र । सितारा ।

धिष्ण्य (पु०) १ वह स्थान जहाँ यज्ञीय अग्नि स्थापन किया जाय । २ दैत्यगुरु शुक्राचार्य । ३ शुक्रग्रह । ४ पराक्रम । बल ।

धीः (स्त्री०) १ बुद्धि । समझ । मन । २ ख्याल । विचार । कल्पना । ३ इरादा । मसूवा । ४ भक्ति । प्रार्थना । ५ यज्ञ ।—इन्द्रियं, (न०) ज्ञानेन्द्रिय ।—गुणाः, (बहु०) बुद्धि सम्बन्धी गुण । [वे गुण ये हैं—

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥

—कामन्दक ।

—पतिः [=धियांपतिः] बृहस्पति ।—मन्त्रिन्, (पु०) —सचिवः, (पु०) कर्मसचिव का उल्टा । अर्थात् वह मंत्री जो केवल परामर्श दे । २ बुद्धिमान परामर्शदाता ।—शक्तिः, (स्त्री०) बुद्धि सम्बन्धी विशिष्टता ।—सखः, (पु०) परामर्शदाता । सचिव । मंत्री ।

धीमत् (वि०) बुद्धिमान । प्रतिभाशाली । पण्डित । (पु०) बृहस्पति की उपाधि ।

धीत (वि०) पिया हुआ । चूसा हुआ ।

धीतिः (स्त्री०) १ पीना । चूसना । २ प्यास ।

धीर (वि०) १ वीर । साहसी । हिम्मतवर । २ दृढ़ । टिकाऊ । सातित्य । ३ दृढ़ मन का । दृढ़ प्रतिज्ञ । पक्के विचार का । ४ शान्त । ५ गम्भीर । संजीदा । ६ मज़बूत । उत्साहवान । ७ बुद्धिमान । समझदार । विवेकी । पण्डित । चतुर । ८ गहरा । गम्भीर । उच्च (स्वर) ९ कोमल । मुलायम । अनुकूल । प्रिय । १० सुस्त । काहिल । ११ दुस्साहसी । १२ उजड्ड । ज़िद्दी ।—उदात्तः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधानपात्र जो वीर और उदात्त विचारों का हो ।—उद्धतः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधान पात्र जो वीर तो हो किन्तु साथ ही तुनक मिज़ाज भी हो ।—चेतस्, (वि०) दृढ़ । दृढ़मनस्क । साहसी । हिम्मतवर ।—प्रशान्तः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधानपात्र जो वीर होने के साथ ही साथ शान्त प्रकृति का भी हो ।—ललितः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधानपात्र जो दृढ़ और वीर तो हो, किन्तु साथ ही आमोदप्रिय और लापरवाह भी हो ।—स्कन्ध, (पु०) भैंसा ।

धीरं (न०) केसर । कुङ्कुम ।

धीरं (अव्यया०) साहसपूर्वक । दृढ़ता से ।

धीरः (पु०) १ समुद्र । २ बालि का नामान्तर ।

धीरता (स्त्री०) १ सहनशीलता । सहिष्णुता । मन की दृढ़ता । २ स्पर्द्धा आदि मानसिक वेगों का शमन । ३ गाम्भीर्य । सजीदगी ।

धीरा (किसी काव्य का या कवि की कृति की मुख्यपात्री, जो अपने पति या प्रेमी के प्रति अपने मन में

ईर्ष्यापरायण हो, किन्तु अपने इस मानसिक भाव को वाह्य सङ्केतों से अपने पति या प्रेमी के सामने प्रकट न होने दे।

धीलटिः, धीलटी } (स्त्री०) पुत्री।

धीवरं (न०) लोहा।

धीवरः (पु०) मछुआ। माहीगीर। मल्लाह।

धीवरी (स्त्री०) १ मछुवा की स्त्री। २ मछली रखने की डलिया।

धु (धा० उभय०) [धुनोति, धुनते, धुत] देखो धूं।

धुक्ष् (धा० आत्म०) [धुक्षते, धुक्षित] १ जलना भभकना। २ रहना। ३ थकना।

धुत (वि०) १ हिला हुआ। २ त्यक्त। त्यागा हुआ।

धुनिः, धुनी } (स्त्री०) नदी।—नाथः (पु०) समुद्र।

धुर् [कर्त्ता एकवचन धूः] १ जुआ। २ जुए का वह भाग जो जानवर के कंधे पर रहता है। ३ धुरी के छोरों की कीलें जो पहियों को निकलने से रोकती हैं। ४ बंब। ५ बोझ। भार। दायित्व। कर्त्तव्य। बेगार। ६ सब से आगे का या सब से ऊँचा भाग। चोटी। सिर।—गत, (= धूर्गत] (वि०) १ रथ के बाँस पर खड़ा हुआ। २ मुख्य। प्रधान। अगुआ। जटिः, (धूर्जटिः,) (पु०) शिव जी की उपाधि।—(धर, = धूर्धर धुरन्धर) (वि०) १ जुआँ ढोने वाला। २ जोतने योग्य। ४ सद्गुणों से सम्पन्न। आवश्यक कर्त्तव्यों के भार से भारान्वित। ४ प्रधान। मुखिया। नेता।—धरः, (पु०) १ बोझ ढोने वाला जानवर। २ काम धंधे में संलग्न मनुष्य। ३ प्रधान। नेता। मुखिया।—वह, (= धुर्वह) (वि०) १ बोझ ढोने वाला। २ व्यवस्थापक।—वहः, (पु०) बोझ ढोने वाला जानवर।—धूर्वोढृ भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।

धुरा (स्त्री०) बोझ। भार।

धुरीण, धुरीय } (वि०) १ बोझ ढोने योग्य। भार उठाने योग्य। २ (गाडी या हल में) जोतने योग्य। ३ उत्तरदायी कर्त्तव्यों से सम्पन्न।

धुरीणः, धुरीयः } (पु०) १ बोझ ढोने वाला। २ जानवर। ३ कामधन्धे में लिप्त मनुष्य। ४ मुखिया। प्रधान। नेता।

धुर्य (वि०) १ बोझ ढोने योग्य। बोझ उठाने योग्य २ उत्तरदायी कर्त्तव्यों का भार सौंपने योग्य।

धुर्यः (पु०) १ बोझा ढोने वाला जानवर। २ घोड़ा या बैल जो गाडी या रथ में जुता हुआ हो। ३ बोझ ढोने वाला। ४ प्रधान। मुखिया। नेता। ५ सचिव। दीवान। मंत्री।

धुस्तुरः, धुस्तूरः } (पु०) धतूरे का पौधा।

धू (धा० पर०) [धुवति, धवति, धवते, धूनोति, धुनुते, धुनोति, धुनीते, धूनयति धूनयते, धून, धून,] १ हिलाना। आन्दोलन करना। २ दूर कर देना।

धूः (स्त्री०) हिलने वाली। काँपने वाली। आन्दोलन करने वाली।

धूत (व० कृ०) १ हिला हुआ। २ झड़ा हुआ। ३ स्थानान्तरित किया हुआ। ३ हवा किया हुआ। ४ त्यक्त। त्यागा हुआ। भागा हुआ। ५ धिक्कारा हुआ। ६ जाँचा हुआ। ७ तिरस्कृत किया हुआ। ८ अनुमान किया हुआ।—कल्मष, —पाप, (वि०) पापों से युक्त।

धून (व० कृ०) कँपा हुआ। आन्दोलित।

धूप् (धा० पर०) [धूपायति धूपायित] १ गर्माना या गर्म होना। २ धूप देना। ३ चमकना। ४ बोलना।

धूपः (पु०) एक प्रकार का द्रव्य विशेष जिसे आग पर डालने से सुगन्ध युक्त धुआँ निकलता है। इसके पञ्चाङ्ग दशाङ्ग, षोडशाङ्ग आदि अनेक भेद हैं। अङ्गः, (पु०) १ तारपीन। २ सरल नामक वृक्ष। ३—अर्हं, (न०) गुग्गुल।—पात्रं, (न०) धूपदानी।

धूपनं न०) धूप देना। अगियारी देना।

धूपित (वि०) धूप दिया हुआ। गर्माया हुआ। सुगन्ध युक्त किया हुआ।

धूमः (पु०) १ धुआँ। २ कुहरा। ३ हल्का। ४ बादल। ५ डकार। ६ विशेष प्रकार का धुआँ

जिसका रोग विशेष में सेवन कराया जाता है।—आभ, (वि०) धूम की रंगत। धुमैले रंग का। —उर्णा, (स्त्री०) यमपत्नी का नाम।—केतनः, —केतुः, (पु०) १ अग्नि। आग। २ उल्का। धूमकेतु। पुच्छलतारा। ३ केतु ग्रह।—जः, (पु०) बादल।—ध्वजः, (पु०) अग्नि।—पानं, (न०) हुक्का पीना।—योनिः, (पु०) बादल।

धूमल (वि०) धुमैला। धुएँ के रंग का। बैंगनी।

धूमायति } (क्रि०) धुएँ से भर जाना या ढक
धूमायते } जाना।

धूमिका (स्त्री०) बाष्प। कोहरा। कुहासा।

धूमित (वि०) धुएँ के कारण छिपा हुआ। अन्धकारमय।

धूम्या (स्त्री०) धुएँ की घटा। प्रगाढ़ धूम।

धूम्र (वि०) १ धुमैले रंग का। भूरा। २ ललौंहा काला। ३ अधकार। ४ बैंगनी।—अटः, (पु०) धूम्यार पक्षी। भृङ्गराज।—रुच् (वि०) बैंगनी रंग का।—लोचनः, (पु०) कबूतर।—लोहित, (वि०) गहरा बैंगनी।—लोहितः, (पु०) शिवजी।—शूकः, (पु०) ऊँट।

धूम्रं (न०) १ पाप। गुनाह। दुष्टता।

धूम्रः (पु०) १लाल और काले का मिश्रण। २धूप। ३ राम की सेना का एक भालू।

धूम्रकः (पु०) ऊँट। उष्ट्र। क्रमेलक।

धूर्त (वि०) १ मायावी। छली। कपटी। २ वंचक। प्रतारक। दगाबाज़। धोखा देने वाला। ३ उत्पाती। उपद्रवी।—कृत, (वि०) चालाक। वेईमान। मुफ्तखोर। (पु०) धतूरे का पौधा।—जन्तुः, (पु०) मनुष्य।—रचना, (स्त्री०) वदमाशी। गुंडापन।

धूर्तः (पु०) १ धोखा देने वाला। दगाबाज़। २ जुआरी। ३ दाँवपेच करने वाला आदमी। ४ धतूरा। ५ चोर नामक गन्धद्रव्य। ६ साहित्य में शठनायक का एक भेद।

धूर्तकः (पु०) १ शृगाल। २ धूर्त। ३ जुआरी। ४ कौरव्य कुल का नाग।

धूर्वी (स्त्री०) गाड़ी का अगला हिस्सा। गाड़ी का [बम।

धूलकं (न०) ज़हर।

धूलिः (पु०) } १ धूल। गर्दा। २ चूर्ण।—
धूली (स्त्री०) } कुट्टिमं, (न०)—केदारः, (पु०) १ टीला किले का धुस्स। २ जुता हुआ खेत।—ध्वजः, (पु०) पवन।—पटलः, (पु०) धूल का बादल।—पुष्पिका,—पुष्पी (स्त्री०) केतकी का पौधा।

धूलिका (स्त्री०) कोहरा। कोहासा।

धूसर (वि०) धुमैले रंग का।

धूसरः (पु०) १ भूरा रंग। २ गधा। ३ ऊँट। ४ कबूतर। ५ तेली।

धृ (धा० आत्म०) [ध्रियते, धृत] १ होना। जीना। जीवित बना रहना। २ पाला पोसा जाना। ३ दृढ़ निश्चय करना।

धृत (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ। आया हुआ। लेजाया हुआ। वहन किया हुआ। समर्थित। २ अधिकृत किया हुआ। ३ रखाहुआ। बचाया हुआ ४ पकड़ा हुआ। ५ घिसा हुआ। इस्तेमाली। ६ धरा हुआ। जमा किया हुआ। ७ अभ्यास किया हुआ। देखा हुआ। ८ तौला हुआ।—आत्मन्, दृढ़ मनवाला।—दण्ड, (वि०) १ सज़ा देने वाला। २ सज़ापाने वाला।—पट, (वि०) कपड़े से लपटा हुआ।—राजन्, (वि०) अच्छे राजा द्वारा शासन किया हुआ।—राष्ट्रः, (पु०) (=धृतराष्ट्रः) विचित्रवीर्य की विधवा रानी के गर्भ से व्यास के साथ नियोग कराकर उत्पन्न हुआ पुत्र। यह दुर्योधन का पिता था।—वर्मन्, (वि०) कवचधारी।—धृतिः, (स्त्री०) १ पकड़ने वाला। थामने वाला। २ अधिकृत करने वाला। ३ समर्थन करने वाला। ४ दृढ़ता। मज़बूती। ५ मन की दृढ़ता। स्फूर्ति। दृढ़ सङ्कल्प। ६ सन्तोष। आनन्द। प्रसन्नता।

धृतिमत् (वि०) १ दृढ़। मज़बूत। दृढ़ सङ्कल्प वाला। २ सन्तुष्ट। प्रसन्न। हर्षित।

धृत्वन् (पु०) १ विष्णु। २ ब्रह्मा। ३ पुण्य। सुकृत। ४ आकाश। ५ समुद्र ६ चालाक आदमी।

धृष् (धा० पर०) [धर्षति—धर्षित] १साथ साथ आना। २ घायल करना।

धृष्ट (वि०) १ ढीठ । साहसी । हिम्मत वाला । २ अशिष्ट । बेहया । निर्लज्ज । ३ अभिमानी । प्रगल्भ । ४ लंपट । कुकर्मी । परित्यक्त ।—द्युम्न:, (पु०) द्रुपद राजा का बेटा ।—धी,—मानिन् (वि०) अभिमानी ।

धृष्टः (पु०) बेवफा पति या प्रेमी ।

धृष्णज् (वि०) १ साहसी । २ निर्लज्ज । बेहया ।

धृष्णिः (स्त्री०) प्रकाश की किरण ।

धृष्णु (वि०) १ साहसी । हिम्मत वाला । बहादुर । शक्तिमान । २ निर्लज्ज । बेहया ।

धे (धा० पर०) [धयति धीत] १ चूसना । पीना ।

धेनः (पु०) १ समुद्र । २ नद ।

धेनु. (स्त्री०) १ गौ । २ दुधार गाय । ३ किसी भी पुरुषवाची शब्द के पीछे यह शब्द लगाने से यह शब्द स्त्रीवाची हो जाता है । यथा खड्गधेनुः, वडवधेनुः । ४ पृथिवी ।

धेनुकः (पु०) बलराम द्वारा मारे गये एक दैत्य का नाम ।—सूदनः, (पु०) बलराम ।

धेनुका (स्त्री०) १ हथिनी । २ दुधार गौ ।

धेनुष्या (स्त्री०) वह गाय जिसका दूध बंधक रखा हो ।

धैनुकं (न०) १ गौओं का समूह । २ रतिबंध ।

धैर्य्यम् (न०) १ धीरज । धीरता । चित्त की स्थिरता । २ शान्ति । ३ गाम्भीर्य । ४ साहस ।

धैवतः (पु०) सङ्गीत के सप्तस्वरों में से एक स्वर ।

धैवत्यं (न०) चालाकी । चातुर्य ।

धोर् (धा० पर०) [स्त्री०—धोरति] १ तेज़ी से जाना । २ निपुण होना ।

धोरणम् (न०) १ वाहन । सवारी । २ तेज़ी से या चार रूप से जाने वाला । ३ घोड़े की कदम चाल ।

धोरणिः } धोरणी } (स्त्री०) १ श्रेणी । २ परम्परा ।

धोरितं (न०) १ चोट पहुँचाना । चोटिल करना । २ गमन । गति । ३ घोड़े की कदम ।

धौत (व० कृ०) १ धोया हुआ । साफ किया हुआ । २ चिक्नाया हुआ । चमकाया हुआ । ३ चमकीला । सफेद ।—कटः, (पु०) मोटे कपड़े का थैला ।—कौषजं,—कौशेयं, (न०) कलफ किया हुआ रेशमी कपड़ा ।

धौतम् (न०) चाँदी ।

धौम्र (पु०) १ भूरापन । २ भवन के लिये स्थान जो विशेष रीत्या बनाया गया हो ।

धौरितकं (न०) घोड़े की कदम चाल ।

धौरेय (वि०) [स्त्री०—धौरेयी] बोझ ढोने योग्य ।

धौरेय. (पु०) १ बोझ ढोने वाला जानवर । २ घोड़ा ।

धौर्तकं } धौर्तिकं } धौर्त्यं } (न०) कपट । छल । बेईमानी । बदमाशी ।

ध्मा (धा० पर०) [धमति. ध्मात] १ फूंकना । फूंक मारना । स्वाँस लेना । २ आग फूकना । धौंक कर कोई वस्तु बनाना ।

ध्माकारः (पु०) लुहार ।

ध्मांक्षः या ध्वांक्षः (पु०) १ काक । २ बगला । ३ फकीर । ४ घर ।

ध्मात (व० कृ०) १ बजाया हुआ । २ फूंका हुआ । ३ फुलाया हुआ ।

ध्मापित (वि०) जलाकर भस्म किया हुआ ।

ध्यात (वि०) विचारित । विचार किया हुआ ।

ध्यानं (न०) १ प्रगाढ़ चिन्ता । २ वाह्य इन्द्रियों के प्रयोग के बिना केवल मन में लाने की क्रिया या भाव । ३ अन्तःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव । ४ मानसिक प्रत्यक्ष ।—गम्य. (वि०) केवल ध्यान द्वारा प्राप्तव्य ।—तत्पर,—निष्ठ,—पर (वि०) ध्यान में मग्न ।—मात्रं, (न०) केवल ध्यान या विचार ।—योगः, प्रशान्त ध्यान ।—स्थ, (वि०) ध्यान में निरत होने के कारण आत्मविस्मृत ।

ध्यानिक (वि०) ध्यान द्वारा पाया हुआ या खोजा हुआ ।

ध्याम (वि०) अपरिष्कृत । मैला कुचैला । काला कलूटा । दाग़ दगीला ।

ध्यामन् (पु०) १ मात्रा । परिणाम । माप । २ प्रकाश । (न०) ध्यान ।

ध्यै (धा० पर०) [ध्यायति, ध्यात] ध्यान करना । विचार करना ।

ध्राडिः (पु०) पुष्प एकत्र करने वाला ।

ध्रुव (वि०) १ स्थिर । अचल । सदा एक ही स्थान

पर रहने वाला। इधर उधर न हटने वाला। २ सदा एक ही अवस्था में रहने वाला। ३ नित्य। ४ निश्चित। दृढ़। ठीक। पक्का।—अक्षरः, (पु०) विष्णु।—आवर्त, (पु०) बालों का भौरा या भौरी।—तारा, (स्त्री०) —तारकं, (न०) ध्रुव तारा।

ध्रुवः (पु०) १ ध्रुव तारा। २ पृथिवी का अक्षदेश। ४ वट वृक्ष। बरगद। ५ खभा। थून। स्थाणु। ६ वृक्ष का तना। ७ टेक (गीतकी)। ८ समय। युग। ज़माना। ९ ब्रह्मा। १० विष्णु। ११ शिव। १२ उत्तानपाद राजा के एक पुत्र का नाम जिसने पिता द्वारा अपमानित हो, तप.प्रभाव से राज्य सम्पादन किया था।

ध्रुवकः (पु०) १ (किसी गीत की) टेक। २ (वृक्ष का) तना। ३ खंभा।

ध्रौव्यं (न०) १ दृढ़ता। अचलत्व। स्थिरता। २ अवस्थान। स्थिति। स्थितिकाल। ३ निश्चय।

ध्वंस् (धा० आत्म०) [ध्वंसते, ध्वस्त] १ नीचे गिरना। गिर कर टुकड़े टुकड़े हो जाना। २ गिर पड़ना। डूब जाना। उदास होना। ३ नष्ट होना। सड़जाना। ४ ग्रस्त होना। (णिजन्त) नाश करना।

ध्वंसः (पु०) } १ विनाश। नाश। गिरकर चूर
ध्वंसनं (न०) } चूर होना। (किसी मकान का सहसा बैठ जाना। २ हानि। नाश।

ध्वंसिः (पु०) एक मुहूर्त का शतांश।

ध्वजः (पु०) १ झंडा। राजचिन्ह। २ प्रसिद्ध पुरुष। झंडे का बाँस या दण्ड। ३ चिन्ह। राजचिन्ह। ४ देवचिन्ह। ५ सराय का चिन्ह। ६ ट्रेडमार्क। ७ पुरुष या स्त्रीचिन्ह। ८ कलवार (मदिरा बेचने वाला)। ९ किसी वस्तु के पूर्व अवस्थित मकान। १० अभिमान। ११ दम्भ।—अंशुकम्,—पटः, —पटं, (न०) झंडा। आहृत, (वि०) समरक्षेत्र में पकड़ा हुआ।—गृहं, (न०) घर जिसमें झडे रखे जाते हैं।—द्रुमः, (पु०) ताड़ का वृक्ष। —प्रहरणः, (पु०) पवन।—यंत्रं, (न०) झंडा खड़ा करने का यत्र।—यष्टिः, (स्त्री०) झंडे का बाँस।

ध्वजवत् (वि०) १ झंडों से सुसज्जित। २ चिन्ह युक्त। ३ किसी अपराध के लिये दागा हुआ। दाग कर चिन्हित किया हुआ। (पु०) झंडावरदार। २ शराब बेचने वाला।

ध्वजिन् (वि०) [स्त्री०—ध्वजिनी] झंडावरदार। २ चिन्ह रखने वाला। सुराभाजन चिन्ह। (झ०) झंडावरदार। कलवार। शराब बेचने और खींचने वाला। ३ गाड़ी। फिटन। रथ। ४ पर्वत। ५ सर्प। ६ मयूर। मोर। ७ घोड़ा। ८ ब्राह्मण।

ध्वजिनी (स्त्री०) सेना। पल्टन।

ध्वजीकरणं (न०) झंडा खड़ा करना। झंडा फहराना।

ध्वन् (धा० पर०) [ध्वनति, ध्वनित,] ध्वन करना। शब्द करना। भिनभिनाना। प्रतिध्वनि करना। गर्जना। दहाड़ना।

ध्वननं (न०) १ शब्द करना। २ सङ्केत करना। ३ अर्थ लगाना।

ध्वनः (पु०) १ शब्द। स्वर। २ भिनभिन आवाज़।

ध्वनिः (स्त्री०) १ आवाज़। नाद। २ बाजे की लय। ३ बादल की गड़गड़ाहट। ४ खाली शब्द। ५ शब्द। ६ साहित्य में ध्वनि उस विशेषता को कहते है, जो काव्य में शब्दों के नियत अर्थों के योग से सूचित होने वाले अर्थ की अपेक्षा प्रसङ्ग से निकलने वाले अर्थ में होती है।—ग्रहः, (पु०) १ कान। २ श्रवण करना। ३ श्रवण करने का भाव। —नाला, (स्त्री०) एक प्रकार की तुरही। २ बीणा। ३ बाँसुरी।—विकारः, (पु०) भय या शोक के कारण परिवर्तित हुआ कण्ठस्वर।

ध्वनित (व० कृ०) १ शब्दित। २ व्यञ्जित। ३ बजाया हुआ। वादित।

ध्वस्तिः (स्त्री०) नाश। बरबादी।

ध्वांक्ष (पु०) १ काक। २ भिक्षुक। ३ निर्लज्ज मनुष्य। ४ सारस।—अरातिः, (पु०) उल्लू। घुग्घू।—पुष्टः, (पु०) कोयल।

ध्वानः, (पु०) १ शब्द। २ भिनभिनाहट। गुञ्जार। बरबराना।

ध्वान्तम् (न०) अन्धकार ।—उन्मेषः,—वित्तः, (पु०) जुगनू ।—शात्रवः, (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि । ४ सफेद रंग ।

ध्वान्तारिः (पु०) १ सूर्य । २ आक का पौधा । ३ चन्द्रमा । आग ।

ध्वृ (धा० पर०)[ध्वरति] १ झुकाना । २ मार डालना ।

न

न संस्कृत या नागरी वर्णमाला का बीसवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण । इसका उच्चारणस्थान दन्त है । इसका उच्चारण करते समय आभ्यन्तर प्रयत्न और जीभ के अग्रभाग का दन्तमूल से स्पर्श होता है और वाह्य प्रयत्न, संवार, नाद, घोप और अल्प प्राण है ।

न (वि०) १ पतला । फालतू । २ खाली । रीता । ३ वही । समान । ४ अविभक्त ।

नः (पु०) १ मोती । २ गणेश का नाम । ३ दौलत । सम्पत्ति । ४ दल । ५ युद्ध । (अव्य०) नहीं । न । —असत्यौ, (पु- बहु०) अश्विनी कुमार ।—एक, (वि०) एक नहीं । एक से अधिक । कई एक । भिन्न भिन्न ।—किञ्चन, (वि०) अत्यन्त धनहीन । भिखारीपन से ।

नकुटं (न०) नाक । नासिका ।

नकुलः (पु०) १ न्योला । २ चौथे पाण्डव का नाम ।

नक्तम् (न०) १ रात । २ रात को भोजन करना । (एक प्रकार का व्रत)—अन्ध, (वि०) रात को अँधा । जो रात में न देख सके ।—चर्या, (स्त्री०) रात मे भ्रमण करने वाला ।—चारिन्, (पु०) १ उल्लू । २ विल्ली । ३ चोर । ४ राक्षस । दैत्य। —भोजनं, (न०) रात का भोजन । ब्यालू ।—मालः, (पु०) एक वृक्ष का नाम ।—मुखा, (स्त्री०) सन्ध्या ।—व्रतं, (न०) दिन में उपवास और रात में भोजन । कोई भी व्रत जो रात में किया जाय ।

नक्तं (अव्यय०) रात में । रात के समय ।—चरः, (पु०) १ कोई भी रात में घूमने वाला प्राणधारी । २ चोर ।—चारिन्, (पु०) रात में घूमने फिरने वाला ।—दिनं, (न०) दिन रात । —दिवं,—दिनं, (अव्यया०) रात और दिन में ।

नक्तकः (पु) मैले चिथड़े । मैले फटे कपड़े ।

नक्रं (न०) १ चौखट का ऊपर का काठ । २ नासिका । नाक ।

नक्रः (पु०) मगर । घड़ियाल ।

नक्रा (स्त्री०) १ नाक । २ शहद की मक्खियों या वरों का समूह ।

नक्षत्रं (न०) १ तारा । २ ग्रह । ३ मोती ।—ईशः, —ईश्वरः,—नाथः,—पः,— पतिः,— राजः, (पु०) चन्द्रमा ।—चक्रं, (न०) १ नक्षत्र मण्डल । २ राशिचक्र ।—दर्शः, (पु०) फलित ज्योतिषी । गणक ज्योतिषी ।—नेमिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ ध्रुवतारा । ३ विष्णु । (स्त्री०) रेवती नक्षत्र ।—पथः, (पु०) नक्षत्र मण्डित आकाश ।—पाठकः, (पु०) ज्योतिषी । २७ मोतियों की माला या हार । ३ हाथी के गले का कठला ।—योगः, (पु०) चन्द्रमा के साथ नक्षत्रों का योग ।—वर्त्मन्, (पु०) आकाश ।—विद्या, (स्त्री०) खगोल विद्या । ज्योतिष विद्या ।—वृष्टिः, (स्त्री०) उल्कापात । तारे का टूटना ।—सूचकः, (पु०) कुत्सित ज्योतिषी ।

नक्षत्रिन् (पु०) १ चन्द्रमा । २ विष्णु ।

नखं } नखः } १ हाथ या पैर का नाखून । पंजा । चंगुल । २ बीस की संख्या ।—खः, (पु०) हिस्सा । भाग ।—अङ्कः, (पु०) खरौंच । नखचिन्ह । आघातः, (पु०) खरौंच । नखक्षत ।—आयुधः, (पु०) १ चीता । २ सिंह । ३ मुर्गा । —आशिन्, (पु०) उल्लू ।—कुट्टः, (पु०) नाई ।— जाहं, (न०) नखमूल ।—दारणः, (पु०) बाज । गीध ।—दारणं, (न०) नाखून काटने की कैंची ।—निकृंतनं—रंजनी, (स्त्री०) नाखून काटने की कैंची । नहन्नी ।—पदं, (न०)—

व्रणः, (पु०) नखत्तत। खरौच।—मुच', (पु०) कमान।—लेखा, (स्त्री०) १ नखचिन्ह। २ नख को रंगना।—विष्किरः, (पु०) शिकारी चिड़िया।—शङ्खः, (पु०) छोटा शंख।

नखंपच (वि०) नख की खरौंच।

नखरं (न०) } हाथ का नाखून। पंजा। चंगुल।
नखरः (पु०) } —आयुधः, (पु०) १ चीता। २ सिंह। ३ मुर्गा।—आह्वः, (पु०) करवीर।

नखानखि (अव्य०) नख के लिये नख।

नखिन् (वि०) १ पंजा या नखायुध सम्पन्न। २ कटीला। (पु०) पंजे वाला जन्तु। यथा चीता सिंह।

नग. (पु०) १ पर्वत। पहाड़। २ वृत्त। ३ पौधा। ४ सूर्य। ५ साँप। ६ सात की संख्या।—अटनः, (पु०) वंदर।—अधिपः,—अधिराज,—इन्द्रः, (पु०) १ हिमालय। २ सुमेरु पर्वत।—अरिः, (पु०) इन्द्र।—उच्छ्राय. (पु०) पर्वत की उचाई।—ओकस् (पु०) १ पत्ती। २ काक। ३ सिंह। ४ शरभ।—ज, (वि०) पर्वतोत्पन्न।—जः, (पु०) हाथी।—जा,—नन्दिनी (स्त्री०) पार्वती।—पतिः, (पु०) १ हिमालय पर्वत। २ चन्द्रमा।—भिद्, (पु०) १ कुल्हाड़ी। २ इन्द्र।—मूर्धन्, (पु०) पर्वत-शिखर।—रन्ध्रकरः, (पु०) कार्तिकेय।

नगरं (न०) कसवा। शहर।—अधिकृतः,—अधिपः,—अध्यक्षः, (पु०) १ पुलिस का मुख्य अधिकारी। ज़िला मैजिस्ट्रेट। २ किसी कसवे का शासक।—उपान्त', (पु०) नगर के समीप की आबादी।—ओकस् (पु०) नागरिक। नगरनिवासी।—काकः, (पु०) शहरुआ कौआ। तिरस्कार का शब्द।—घातः, (पु०) हाथी।—जनः, (पु०) १ गाँव के लोग। २ नागरिक।—प्रदक्षिणा, (स्त्री०) जलूस में मूर्ति को नगर के चारों ओर ले जाना।—प्रान्तः, (पु०) उपपुर। बाहिरी भाग।—मार्गः, (पु०) मुख्यमार्ग।—रक्षा, (पु०) किसी ग्राम या नगर की व्यवस्था या शासन।—स्थ', (पु०) ग्रामवासी। नगरनिवासी।

नगरी (स्त्री०) पुरी।—काकः, (पु०) सारस।—बकः, (पु०) काक। कौआ।

नग्न (वि०) १ नंगा। विवस्त्र। उघारा। २ बिना जुता हुआ। जो आबाद न हो। सुनसान।—अटः,—अटकः, (पु०) १ जो नंगा घूमे फिरे। २ दिगंबर जैन या बौध देव।

नग्नः (पु०) १ नंगा भिक्षुक। नागा। २ क्षपणक। बौद्ध भिक्षुक। ३ दम्भी। पाखण्डी। ४ सेना के साथ रहने वाला कवि। भ्रमण करने वाला कवि।

नग्ना (स्त्री०) १ नंगी स्त्री। बेहया स्त्री। २ बारह वर्ष या दशवर्ष से कम उम्र की बालिका, जिसको रजोधर्म न हुआ हो।

नग्नक (वि०) [स्त्री०—नग्निका] नगा। दिगँवर।

नग्नका } १ नंगी या निर्लज्ज स्त्री। २ रजोधर्म
नग्निका } होने के पूर्व की अवस्था वाली लड़की।

नग्नंकरणम् (न०) नंगा करना।

नग्नंभविष्णु } (वि०) नग्न होने वाला।
नग्नंभावुक }

नंगः } (पु०) प्रेमी। आशिक।
नङ्गः }

नचिकेतस् (पु०) अग्नि।

नचिर (वि०) अचिर।

नञ् (अव्य०) न। नहीं।

नट् (धा० पर०) [नटति] १ नाचना। २ अभिनय करना। ३ घायल करना। (णिजन्त) [नाटयति—नाटयते] १ अभिनय करना। भाव प्रदर्शित करना। २ अनुकरण करना। नकल करना। १ गिरना। टपकना। २ चमकना। ३ घायल करना।

नटः (पु०) १ नचैया। अभिनयपात्र। ३ निम्न श्रेणी के क्षत्रिय का पुत्र। ४ अशोक वृक्ष। ५ एक प्रकार का नरकुल।—अन्तिका, (स्त्री०) शर्म। लज्जा।—ईश्वरः, (पु०) शिव।—चर्या, (पु०) नाटक के पात्र द्वारा किया हुआ अभिनय।—भूषणः,—मण्डनः, (पु०) हरताल।—रङ्गः, (पु०) अभिनयशाला।—वरः, (पु०) सूत्रधार।—संज्ञकम्, (न०) हरताल।—संज्ञकः, (पु०) नाटक का पात्र। नचैया।

नटनम् (न०) १ नृत्य । नाच । २ नाटकीय अभिनय । हावभाव प्रदर्शन ।

नटी (स्त्री०) १ नट की स्त्री । २ नाचने वाली स्त्री । ३ अभिनय करने वाली स्त्री । ४ अभिनय करने वाले नट की स्त्री । ५ वेश्या ।—सुतः, (पु०) नर्तकी का पुत्र ।

नट्या (स्त्री०) अभिनय करने वाले नटों का समुदाय ।

नडं } नडः } (पु०) १ एक जाति का सरपत ।—अगारं, —आगारं, (न०) नरकुल की झोपड़ी ।—प्रायः (वि०) सरपत के बाहुल्य से सम्पन्न ।—वनं, (स्त्री०) सरपत का वन ।—संहतिः, (स्त्री०) सरपत का समूह ।

नडश (वि०) [स्त्री०—नडशी] सरपतों से ढका हुआ ।

नडिनी (स्त्री०) वह नदी जिसमें सरपत अधिक हों ।

नडिल (वि०) } नड्वत (वि०) } [स्त्री०—नडिली, नड्वती] सरपतों की विपुलता । सरपतों से ढका हुआ । सरपतों का ।

नड्या (स्त्री०) सरपतों का मूढ़ा ।

नड्वल (वि०) सरपतों की अधिकता ।

नत (व० कृ०) १ झुका हुआ । प्रणाम करता हुआ । विनीत । २ डूबा हुआ । उदास । ३ टेढ़ा ।—अंशः, (पु०) वह वृत्त जिसका केन्द्र भूकेन्द्र पर हो और जो विषुवत् रेखा पर लव हो । इस वृत्त का उपयोग ग्रहों की स्थिति निश्चित करते समय होता है ।—अङ्गः, (वि०) १ बदन झुकाये हुए । २ प्रणाम करने वाला ।—अङ्गी, (स्त्री०) औरत (स्त्री०)—नासिक, (वि०) चपटी नाक का ।—भ्रूः, टेढ़ी भौं वाली स्त्री ।

नतं (न०) मध्यान्हरेखा से किसी भी ग्रह का फासला ।

नतिः (स्त्री०) १ झुकाव । प्रणाम । २ टेढ़ापन । घुमाव । प्रणाम करने के लिये शरीर झुकाना ।

नद् (धा० पर०) [नदति, नदित] १ शब्द करना । गर्जना । प्रतिध्वनि करना । २ बोलना । चिल्लाना । दहाड़ना । थरथराना ।

नदः (पु०) १ बड़ी नदी । २ जलप्रवाह । नाला । ३ समुद्र ।—राजः, (पु०) समुद्र ।

नदथुः (पु०) १ शोर । गर्जना । २ बैल का दहाड़ना ।

नदी (स्त्री०) नदी ।—ईनः, —ईशः, —कान्तः, (पु०) समुद्र ।—कुलप्रियः, (पु०) एक प्रकार का नरकुल ।—ज, (वि०) जलोत्पन्न ।—जः, (पु०) भीष्म ।—जं, (न०) कमल ।—तरस्थानं, (न०) उतरने का स्थान । घाट ।—दोहः, (पु०) भाड़ा । उतराई । किराया ।—धरः, (पु०) शिव ।—पतिः, (पु०) १ समुद्र । २ वरुण ।—पूरः, (पु०) उमड़ी हुई नदी ।—भवं, (न०) नदी-लवण ।—मातृक, (न०) नदी के जल या नहर के जल से सींचा जाने वाला देश ।—रयः, (पु०) नदी की धार ।—वंकः, (पु०) नदी का मोड़ ।—ष्णाः, —स्नः, (पु०) १ नदीजल में स्नान । २ नदी के खतरनाक स्थानों को जानने वाला । ३ अनुभवी । चतुर ।—सर्जः, (पु०) अर्जुन वृक्ष ।

नद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । अटका हुआ । चारो ओर से लपेटा हुआ । पहनाया हुआ । २ ढका हुआ । जड़ा हुआ । गुथा हुआ । जुड़ा हुआ । मिला हुआ ।

नद्धम् (न०) बंधन । पट्टी । गाँठ ।

नद्ध्री (स्त्री०) चमड़े का तस्मा ।

ननंदृ, ननन्दृ } ननांदृ, ननान्दृ } (स्त्री०) पति की बहिन । ननद ।

ननांदृपतिः, ननान्दृपतिः } ननांदुपतिः, ननान्दुपतिः } (पु०) पति की बहिन का पति । नन्दोई ।

ननु (अव्य०) एक अव्यय जिसका व्यवहार कोई बात पूछने, सन्देह प्रकट करने या वाक्य के आरम्भ में किया जाता है ।

नंद् } नन्द् } (धा० पर०) [नन्दति, नन्दित] प्रसन्न होना ।

नंदः } नन्दः } (पु०) १ प्रसन्नता । हर्ष । आह्लाद । २ (ग्यारहइंच लंबी) वीणा विशेष । ३ मेंढक । ४ विष्णु । ५ यशोदा के पति का नाम ।—आत्मजः,—नन्दनः, (पु०) श्रीकृष्ण ।—पालः, (पु०) वरुण ।

नंदक } नन्दक } (वि०) १ प्रसन्न करने वाला । २ कुटुम्ब को प्रसन्न करने वाला ।

नंदकः } नन्दकः } (पु०) १ मेंढक । २ कृष्ण की तलवार का नाम । ३ कोई भी तलवार । ४ प्रसन्नता ।

नंद्किन्, नन्द्किन् (पु०) विष्णु।

नंद्थु, नन्द्थुः (पु०) प्रसन्नता। आनन्द। खुशी।

नंदन, नन्दन (वि०) प्रसन्नताकारक।—जं, (न०) पीले चन्दन की लकड़ी। हरिचन्दन।

नंदनः, नन्दनः (पु०) १ पुत्र। २ मेंढक। ३ विष्णु। शिव।

नंदं, नन्दम् (न०) १ इन्द्र के उद्यान का नाम। २ प्रसन्न होना। ३ हर्ष।

नदंतः, नदन्तः, नंदयतः, नन्दयन्तः, (पु०) पुत्र।

नंदा, नन्दा (स्त्री०) १ प्रसन्नता। हर्ष। २ धनदौलत। सम्पत्ति। छोटा मिट्टी का घड़ा। ३ नन्द। ५ शुक्ल पक्ष की ये तिथियां शुभ मानी गयी हैं। प्रतिपदा, छठ और ११शी तिथियां।

नंदिः, नन्दिः (पु० स्त्री०) प्रसन्नता। हर्ष।—ईशः, —ईश्वरः, (पु०) १ शिव। २ शिव जी के प्रधान गण का नाम।—ग्रामः, (पु०) उस ग्राम का नाम जहाँ श्रीराम के वनोवासकाल में भरत जी रहे थे।—घोषः, (पु०) अर्जुन के रथ का नाम। वर्धनः, (पु०) शिव का नाम। मित्र। चान्द्र पक्ष का अवसान। अमावास्या।

नंदिकः, नन्दिकः (पु०) १हर्ष। २ घल्लिया। छोटा घड़ा। ३ शिव का एक गण।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) १ शिव जी के एक प्रधान गण का नाम। २ शिव का नाम।

नंदिन्, नन्दिन् (वि०) १ आनन्दित। आह्लादित। २ प्रसन्नताकारक। (पु०) १ पुत्र। २ नाटक में आशीर्वादात्मक वचन कहने वाला। ३ शिव के द्वारपाल का नाम। शिव के वाहन का नाम।

नंदिनी, नन्दिनी (स्त्री०) १ लड़की। २ नन्द। ननद। पति की बहिन। ३ सुरभी गौ की लड़की। कामधेनु। ४ श्री गङ्गा जी। ५ श्यामा तुलसी।

नपात् (पु०) नाती। पौत्र। यह वैदिक प्रयोग है यथा 'तनूनपात्।"

नपुंस्, नपुंसे (पु०) हिजड़ा। जनाना।

नपुंसक (न०), नपुंसकः (पु०) १ न स्त्री और न पुरुष। हिजड़ा। २ भीरु। डरपोंक।—(न०) नपुंसकवाची शब्द। नपुंसकलिङ्ग।

नप्तृ (पु०) नाती। पौत्र।

नभः (पु०) श्रावण मास।

नभस् (न०) १ आकाश। वायुमण्डल। २ मेघ। ३ कोहरा। वाष्प। ४ जल। ५ वय। उम्र। (पु०) १ जलवृष्टि। २ वर्षाऋतु। ३ नासिका। ४ गन्ध। ५ श्रावणमास।—अम्बुपः, (पु०) चातक पक्षी।—कान्तिन्, (पु०) सिंह।——गजः, (पु०) बादल।—चक्षुस्, (पु०) सूर्य।—चमस, (पु०) १ चन्द्रमा। २ जादू।—चर, (वि०) आकाशगामी।—चरः, (पु०) १ देवता। किन्नर आदि। २ पक्षी।—दुहः, (पु०) मेघ।—दृष्टि, (वि०) १ अंधा। आकाश की ओर देखने वाला।—द्वीपः,—धूमः, (पु०) मेघ। बादल।—नदी, (स्त्री०) श्रीगङ्गा।—प्राणः, (पु०) वायु। पवन।—मणिः, (पु०) सूर्य।—मण्डलं, (न०) आकाश। वायुमण्डल।—रजस् (पु०) अन्धकार।—रेणुः, (स्त्री०) कोहरा। तुषार।—लयः, (पु०) धूम।—लिह्, (वि०) आकाश चाटने वाला। महोच्च। बहुत ऊँचा।—सद्, (पु०) देवता।—सरित्, (स्त्री०) आकाशगङ्गा।—स्थली, (स्त्री०) आकाश।—स्पृश्, (वि०) आकाश को छूने वाला।

नभसः (पु०) १ आकाश। २ वर्षाऋतु। ३ समुद्र।

नभसंगमः, नभसङ्गमः (पु०) पक्षी।

नभस्य (पु०) भाद्रपद मास।

नभस्वत् (वि०) वाष्पीय। कुहरा का। (पु०) पवन। वायु।

नभाकः (पु०) १ अन्धकार। २ राहु उपग्रह।

नभ्राज् (पु०) काली घटा या काला बादल।

नम् (धा० पर०) [नमति-नमते, नत, (णिजन्त) नमयति--नमयते] नवना। प्रणाम करना। झुकना। निम्न गमन करना। झुक कर टेढ़ा होना।

नमत (वि०) झुका हुआ। टेढामेढ़ा।

नमतः (पु०) १ अभिनय-कर्त्ता-नट। २ धूम। ३ स्वामी। प्रभु। ४ मेघ। बादल।

नमनं (न०) १ झुकना । २ प्रणाम । नमस्कार ।

नमस् (अव्यया०) प्रणाम । सलाम ।—कारः, (पु०) प्रणाम ।—कृति. (स्त्री०)—करणम्, (न०) नमस्कार करना ।—कृत, (वि०) प्रणाम किया हुआ । पूज्य । मान्य ।—गुरुः, (पु०) दीक्षा गुरु ।—वाकं, (अव्यया०) नमस् शब्द कहने वाला ।

नमस (वि०) अनुकूल । महरबान ।

नमसित }
नमस्यित } (वि०) प्रणम्य । सम्माननीय । पूज्य ।

नमस्यति (क्रि०) पूजा करना । प्रणाम करना ।

नमस्य (वि०) १ प्रणाम करने योग्य । २ सम्माननीय ।

नमस्या (स्त्री०) पूजन । सम्मान । प्रणाम ।

नमुचि. (पु०) १ एक दैत्य का नाम जिसका इन्द्र ने वध किया था । २ कामदेव का नाम ।

नमेरुः (पु०) रुद्राक्ष या सुरपन्नग वृक्ष ।

नम्र (वि०) १ नत । झुका हुआ । २ विनयावनत । ३ टेढा । ४ पूजा करने वाला । ५ भक्त ।

नय् (धा० आत्म०) [नयते] १ जाना । रक्षा करना ।

नय' (पु०) १ पथप्रदर्शक । रहनुमा । व्यवहार । वर्ताव ।३ दूरदर्शिता विवेक । ४ नीति । राजनैतिक प्रतिभा । मुल्कीशासन । राज्य की नीति । ५ न्याय । नीतिविद्या । समानता । आर्जव । सत्यशीलता । ६ व्यवस्था । कल्पना । ७ सारकथा । मूलवाक्य । तत्वकथा । सिद्धान्त । ८ विधि । तौर तरीका । मार्ग । ९ मत । राय । १० दार्शनिक सिद्धान्त ।—कोविद्,—ज्ञ, (वि०) नीति कुशल । —चक्षुस्, (पु०) राजनैतिक दूरदर्शिता ।—नेतृ, (पु०) राजनैतिक नेता ।—विद्, (पु०)—विशारदः, (पु०) राजनैतिक नेता ।—शास्त्रम्, (न०) १ राजनैतिक शास्त्र । २ नीति सम्बन्धी कोई शास्त्र ।—शालिन्, (वि०) ईमानदार ।

नयनम् (न०) १ लेजाना । रहनुमा करना । व्यवस्था करना । २ लेलेना । पास लाना । खींचना । ३ शासन करना । हुकूमत करना । ४ प्राप्त करना । ५ नेत्र । आँख ।—अभिराम, (वि०) देखने मे मनोहर ।—अभिरामः, (पु०) चन्द्रमा ।—उत्सवः, (पु०) १ दीपक । २ कोई भी मनोहर वस्तु ।—उपान्तः, (पु०) नेत्रों के कोये ।—गोचर, (वि०) दिखलाई पडने वाला । समक्ष । —छदः, (पु०) पलक । – पथः, (पु०) दृष्टि के भीतर —पुटं, (न०) आँख के गढ़े या गोलक। —सलिल, (न०) आँसू ।

नरः (पु०) १ मनुष्य । २ पुमान् । ३ शतरंज का प्यादा । ४ धूपघडी की कील । ५ परब्रह्म । ६ एक प्राचीन ऋषि का नाम । ७ अर्जुन का नाम । —अधिपः, (पु०)—ईशः, (पु०)—ईश्वरः, (पु०)—देवः, (पु०)—पतिः, (पु०)—पालः, (पु०) राजा ।—अन्तकः, (पु०) मृत्यु । —अयण', (पु०) विष्णु ।—अंशः, (पु०) दैत्य । राक्षस ।—इन्द्रः, (पु०) १ राजा । २ वैद्य । हकीम । चिकित्सक । ३ विषवैद्य ।—उत्तम., (पु०) विष्णु ।—ऋषभः, (पु०) राजा । नरपति । —कपालः, (पु०) मनुष्य की खोपडी ।—कीलकः, (पु०) गुरुहन्ता । दीक्षा गुरु की हत्या करने वाला ।—केशरिन्, (पु०) नृसिंहावतार । —द्विष्, (पु०) दैत्य । दानव ।—नारायणः, (पु०) कृष्ण का नाम ।—पशु', (पु०) मनुष्याकृति का जानवर ।—पुङ्गव', (पु०) पुरुषश्रेष्ठ ।—मानिका, —मानिनी, —मालिनी, (स्त्री०) मर्दानी औरत जिसके दाढ़ी हो ।——मेधः, (पु०) यज्ञ विशेष जिसमें मनुष्य की वलि दी जाय ।—यंत्रम्, (न०) धूपघडी ।—यानं, (न०)—रथः, (पु०)—वाहनम्, (न०) पालकी । पीनस । तामझाम । ठेला । रिक्शा । कोई सवारी जिसे आदमी ढकेल कर या उठा कर ले चलें ।—लोकः, (पु०) १ वह लोक जिसमें मनुष्य रहै । २ मानव जाति ।—वाहनः, (पु०) कुवेर ।—वीरः, (पु०) वहादुर आदमी । व्याघ्रः,—शार्दूलः, (पु०) प्रसिद्ध पुरुष ।—शृङ्गम्, (न०) मनुष्य के सींग । एक असम्भव कल्पना ।—संसर्गः, (पु०) मनुष्य समुदाय । —सिंहः,—हरिः, (पु०) नृसिंहावतार ।—स्कन्धः, (पु०) मनुष्यों का समूह या दल ।

नरक (न०) } नरक। दोज़ख। वह स्थान जहाँ
नरकः (पु०) } मरने के बाद जीवों को जीवित अवस्था में किये हुए पापों का दण्ड दिया जाता है। नरक २१ हैं। इनकी यातनाओं में तारतम्य है।

नरकः (पु०) एक असुर का नाम। यह प्राग्ज्योतिषपुर का अधिपति था। यह अदिति के कानों के कुण्डल ले भागा था। अतः देवताओं के प्रार्थना करने पर श्रीकृष्ण ने अकेले ही उसे मार गिराया था।—अन्तकः,—अरिः,–जित् (पु०) श्रीकृष्ण।—आमयः, (पु०) १ मरने के बाद जीव का सूक्ष्म शरीर। २ भूत। प्रेतात्मा।—कुण्डम्, (न०) नरक का एक गर्त जिसमें पापियों को नरकयातना दी जाती है।—स्था, (स्त्री०) वैतरिणी नदी।

नरंगं, नरङ्गम् (न०) } पुरुष की जननेन्द्रिय।
नरांगः नराङ्गः (पु०) } लिङ्ग।

नरंधि: } (स्त्री०) सांसारिक जीवन। सांसारिक
नरन्धिः } अस्तित्व।

नरी (स्त्री०) औरत। स्त्री।

नर्कुटकम् (न०) नाक।

नर्त: (पु०) नृत्य। नाच।

नर्तकः (पु०) १ नाचने वाला। नृत्यक। २ नाटक का अभिनय करने वाला एक पात्र। ३ भाट। जगा। नकीब। ४ हाथी। ५ राजा। ६ मयूर। मोर।

नर्तकी (स्त्री०) १ नाचने वाली। २ हथिनी। ३ मयूरनी।

नर्तनं (न०) हावभाव। नाच। नृत्य।—गृहं, (न०)—शाला, (स्त्री०) नाचघर।—प्रियः, (पु०) शिव जी।

नर्तनः (पु०) नाचने वाला।

नर्तित (वि०) नाचा हुआ। नचाया हुआ।

नर्द् (धा० पर०) [नर्दति, नर्दित] १ गर्जना। आवाज़ करना। भीषण शब्द करना। २ जाना।

नर्द (वि०) १ डकारने वाला। रंभाने वाला। दहाड़ने वाला।

नर्दनं (न०) १ डकारना। रंभाना। २ उच्चस्वर। प्रशंसा करना।

नर्दितः (पु०) एक प्रकार के पाँसे या पाँसे का विशेष रूप से एक फिकाव।

नर्दितम् (न०) शब्द। दहाड़। डकार। रंभाना।

नर्मटः (पु०) १ ठिकरा। खप्पर। २ सूर्य।

नर्मठः (पु०) १ विदूषक। भाँड़। २ कामुक। लंपट। ऐय्याश। ३ खेल। आमोद प्रमोद। मनोरञ्जन। ४ मैथुन। सम्भोग। ५ ठोडी। ६ चूचीं के ऊपर की काली घुडी। चूचुक।

नर्मन् (न०) १ क्रीड़ा। मनोरञ्जन। मनबहलाव। आमोद प्रमोद। २ हँसी-मज़ाक। दिल्लगी। ३ ३ मसखरा। हसोड़ा।—कील, (पु०) पति।—गर्भ, (वि०) हसोड़ा। पुरमज़ाक। हाज़िर जवाब। -गर्भः, (पु०) गुप्त प्रेमी। छिपा हुआ आशिक। अप्रकट चाहने वाला।—द, (वि०) प्रसन्नकारक। आल्हादक।—दः (पु०) मसखरा।—दा, (स्त्री०) नदी विशेष जो विन्ध्यगिरि से निकल कर खंभात की खाड़ी में गिरती है।—द्युति, (वि०) प्रसन्न। हर्षयुक्त।—द्युतिः (स्त्री०) किसी हँसी की बात सुन प्रसन्न होना।—सचिवः,—सुहृद्, (पु०) विदूषक। वह मनुष्य जो किसी राजा के पास उसे हँसाने के लिये रहे।

नर्मरा (स्त्री०) १ पहाड़ी घाटी। २ धौंकनी। ३ वृद्धा स्त्री जिसको रजोधर्म न होता हो। ४ सरल वृक्ष।

नलं (न०) कमल।

नलः (पु०) १ एक प्रकार का नरकुल। २ दमयन्ती के पति राजा नल। ३ श्रीरामजी की सेना का एक प्रसिद्ध वानरयूथपति, जिसने समुद्र पर पुल बाँधने के काम में मुख्य साहाय्य प्रदान किया था।—कीलः, (पु०) घुटना। टेंहुना।—कूवरः, (पु०)—कूबरः, (पु०) कुबेर के एक पुत्र का नाम।–दम्, (न०) उशीर। खस।—पट्टिका, (स्त्री०) चटाई।—मीनः, (पु०) झींगा मछली।

नलकं (न०) शरीर की कोई भी लंबी हड्डी। गोलाकार वह हड्डी जिसके भीतर मज्जा हो। नली के

आकार की हड्डी । २ कालदेवल के भतीजे का नाम, जिसे बुद्ध ने उपदेश दिया था ।

नलकिनी (स्त्री०) १ जंघा । जांघ । २ टांग ।

नलिनं (न०) १ कमल का फूल । २ जल । ३ नील का पौधा । "नलिनेशयः" विष्णु की उपाधि है ।

नलिनः (पु०) सारस ।

नलिनी (स्त्री०) १ कमलिनी । कमल । २ कमल का ढेर । ३ वह स्थान या तालाव जहाँ कमल बहुतायत से उत्पन्न होते हैं ।—खण्डम्, - षण्डम्, (न०) कमलों का ढेर ।—रुहः, (न०) ब्रह्मा की उपाधि ।—रुहं, (न०) कमलनाल । कमल के नाल के भीतर के सूत । [हाथ का होता है ।

नल्वः (पु०) भूमि नापने का एक नाप जो ४००

नव (वि०) १ नया । ताज़ा । टटका । हाल का । २ आधुनिक ।—अन्नं, (न०) ताज़ा अनाज । —अम्बुः, (पु०) ताज़ा पानी ।—अहः, (पु०) पक्ष का प्रथम दिवस ।—इतर, (वि०) पुराना । —उद्धतं, (न०) टटका मक्खन ।—ऊढा,— पाणिग्रहणा, (स्त्री०) हाल की व्याही दुलहिन । —कारिका,—कालिका,—फलिका, (स्त्री०) १ हाल की व्याही औरत । २ स्त्री जो थोड़े ही दिनों पूर्व प्रथम वार रजस्वला हुई हो ।—छात्रः, (पु०) हाल में दाखिल हुआ विद्यार्थी ।—नी, (स्त्री०) —नीतं, (न०) ताज़ा मक्खन ।—नीतकं, (न०) १ घी । २ टटका मक्खन ।—पाठकः, (पु०) नया शिक्षक ।—मल्लिका,—मालिका, (स्त्री०) चमेली का एक भेद ।—यज्ञः, (पु०) नये अन्न या फल से अग्नि में आहुति देने की क्रिया विशेष ।—यौवनं, (न०) ताज़ी जवानी या युवावस्था ।—रजस्, (स्त्री०) लड़की जिसको हाल ही में रजोदर्शन हुआ हो ।—वधूः,— वरिका, (स्त्री०) हाल की व्याही लड़की । —वल्लभम्, (न०) एक प्रकार का चन्दन । —वस्त्रं, (न०) कोरा या नया कपड़ा ।— शशिभृत्, (पु०) शिव जी का नाम ।— —सूतिः,—सूतिका, (स्त्री०) १ दुधार गौ । २ जच्चा स्त्री ।

नवं (न० अव्यया०) टटका । हालका । बहुत देर का नहीं ।

नवः (पु०) काक । कौआ ।

नवकं (न०) नौ का जोड़ ।

नवत (वि०) [स्त्री०—नवती] नव्वेवाँ ।

नवतः (पु०) हाथी की भूल जिस पर चित्रकारी हो । २ ऊनी वस्त्र । कंबल । २ भूल । उचार । पर्दा ।

नवतिः (स्त्री०) नव्वे ।

नवतिका (स्त्री०) १ नव्वे । २ चित्रकार की कूची ।

नवन् (वि०) नौ । ९ ।—अशीतिः, (स्त्री०) ८९ नवासी ।—अर्चिस्, (पु०)—दीधितिः, (पु०) मङ्गल ग्रह ।—कृत्वस्, (अव्यया०) नौगुना ।— —ग्रहाः, (पु०) बहुवचन, नवग्रह ।— चत्वारिंशः, (वि०) ४९ वा उनचासवाँ ।— चत्वारिंशत् (स्त्री०) ४९ । उनचास ।— छिद्रं,—द्वारं, (न०) शरीर जिसमें ९ छेद हैं । —त्रिंश, (वि०) ३९ वाँ ।—दश, (वि०) १९ वाँ । उनीसवाँ ।—नवतिः, (स्त्री०) ९९ । निन्यानवे ।—निधिः, (पु० बहु०) कुबेर की नौ निधियाँ यथा—

महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकर कच्छपौ ।
मुकुन्दकुन्द नीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥

पञ्चाश, (वि०) ५९ उनसठवां ।—पञ्चाशत्, (स्त्री०) ५९ । उनसठ । —रत्नं, (न०) नौ बहुमूल्य रत्न । २ विक्रमादित्य की सभा के नौ कविरत्न—

" धन्वन्तरिक्षपणकामर सिंहशङ्कु—
वेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायाम्
रत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य ॥

—रसाः, (पु० बहु०) काव्य के नवरस यथा— १ शृङ्गार, २ करुणा, ३ हास्य, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ ७ वीभत्स । ८ अद्भुत और । ९ शान्त ।— रात्रं, (न०) नौ दिन । चैत्र शुक्ला प्रतिपद से नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से ९ मी तक के नौ दिन, जिनमें लोग धर्मानुष्ठान किया करते हैं ।—विंश, (वि०) २९वाँ । उनतीसवाँ ।—विंशतिः, (स्त्री०) २९ । उनतीस —विध, (पु०) नौ गुना या नौ प्रकार का । —शतं, (न०) १ १०९ । एक सौ नौ । २ नौ

सौ ।—षष्टिः, (स्त्री०) ६६ । उनहत्तर ।—सप्ततिः, (स्त्री०) ७६ । उनासी ।

नवधा (अव्यया०) नौ प्रकार से । नौगुना ।

नवम (वि०) [स्त्री०—नवमी] नवाँ । ६वाँ ।

नवशः (अव्यया०) नौसे ।

नवीन } (वि०) १ नया । ताज़ा । टटका । हाल
नव्य } का । २ आधुनिक ।

नश् (धा० परस्मै०) [नश्यति, नष्टः,] १ खोजना २ नष्ट हो जाना । नाश हो जाना । भाग जाना । उड जाना । ४ असफल हो जाना । नाकामयाव हो जाना ।

नश् (स्त्री०) }
नशः (पु०) } नाश । विनाश सत्यानाश ।
नशनं (न०) }

नश्वर (वि०) [स्त्री०—नश्वरी] १ नाशवान् । जो नाश हो जाय । जो ज्यों का त्यों न रहे । २ नाशक । उपद्रवकारी ।

नष्ट (व० कृ०) १ खोया हुआ । २ जो अदृश्य हो । जो दिखाई न दे । ३ जिसका नाश हो गया हो । जो वरवाद हो गया हो । ४ मृत । मरा हुआ । ५ खराव किया हुआ । ६ बञ्चित । मुक्त ।—अर्थ, (वि०) गरीव वनाया हुआ ।—आतंकम्, (अव्य०) विना भय या शङ्का ।—आप्तिसूत्र, (न०) लूट का माल । लूट ।—आशङ्क, (वि०) निडर । निर्भय ।—इन्दुकला, (स्त्री०) पूर्णिमा ।—इन्द्रिय, (वि०) इन्द्रिय-रहित ।—चेतन,—चेष्ट,—संज्ञ, (पु०) वेहोश मूर्छित ।—चेष्टता, (स्त्री०) सार्वदेशिक नाश । प्रलय ।—जन्मन्, (पु०) वर्णसङ्कर । दोगला ।

नस् (स्त्री०) नाक ।—क्षुद्र, (न०) छोटी नाक वाला । ।

नस्तस् (अव्यय०) नाक से ।

नसा (स्त्री०) नाक ।

नस्तः (पु०) नाक ।—ऊतः, (पु०) नाथ से थामा हुआ वैल ।

नस्तं (न०) सुंघनी । हुलास ।

नस्ता (स्त्री०) पशुओं के नाक का छेद जिसमें नाथ वांधी जाती हैं ।—ऊतः, (पु०) नथा हुआ वैल ।

नस्तित (वि०) नाथा हुआ । नाक में छेद कर रस्सी डाला हुआ ।

नस्य (वि०) नासिका सम्बन्धी ।

नस्यं (न०) १ नाक के भीतर के बाल । २ हुलास । सुंघनी ।

नस्या (स्त्री०) १ नाक । २ जानवर की नाक का छेद जिसमें रस्सी पिन्होई जाती है ।

नह् (धा० उभय०) [नह्यति—नह्यते, नद्ध] १ वाँधना । लपेटना । २ पहिनना । धारण करना ।

नहि (अव्यया०) नहीं । न । किसी प्रकार नहीं । विल्कुल नहीं ।

नहुषः (पु०) चन्द्रवंशी पुरूरवा राजा का पौत्र और राजा ययाति का पिता ।

ना (अव्यया) नहीं । न ।

नाकः (पु०) १ स्वर्ग । २ आकाशमण्डल ।—चरः, (पु०) देवता । २ किन्नर ।—नाथः,—नायकः, (पु०) इन्द्र ।—वनिता, (स्त्री०) अप्सरा ।—सद्, (पु०) देवता ।

नाकिन् (पु०) देवता ।

नाकुः (पु०) १ दीमक की मिट्टी का ढूह । वल्मीक । २ पर्वत ।

नाक्षत्र, (वि०) [स्त्री०—नाक्षत्री] नक्षत्र युक्त ।

नाक्षत्रं (न०) ६० घडी के दिन से ३० दिवस का मास । नाक्षत्र मास । जितने दिनों में चन्द्रमा २७ नक्षत्रों पर १ बार घूम जाता है उसे नाक्षत्र मास कहते हैं ।

नाक्षत्रिकः (पु०) नाक्षत्र मास । देखो नाक्षत्रं ।

नागः (पु०) १ सर्प । २ सर्प जाति विशेष जिनका ऊपरी शरीर मनुष्याकृति का और नीचे का धड सर्प शरीराकृति का होता है । ३ हाथी । ४ जल जीव विशेष । शार्क । ५ निष्ठुर या संगदिल आदमी । ६ कोई भी प्रसिद्ध पुरुष ("यथा पुरुषनाग") । ७ बादल । ८ खूंटी । ९ नागकेसर । नागरमौथा । १० शरीरस्थ पाँच वायुओं में से नाग वायु वह है, जिसके द्वारा डकारें आती है । ११ ग्यारह की संख्या ।—अंगना, (स्त्री०) १ हथिनी । २ हाथी की सूँड ।—अञ्जना, (स्त्री०) हथिनी ।—अधिपः,

(पु०) शेष जी ।—अन्तकः, (पु०)—अरातिः,—अरिः, (पु०) १ गरुड़ । २ मोर । ३ सिंह ।—अशनः, (पु०) १ मयूर । २ गरुड़ ।—आननः, (पु०) गणेश जी ।—आह्वः, (पु०) हस्तिनापुर ।—इन्द्रः, (पु०) १ उत्कृष्ट हाथी । २ ऐरावत । ३ शेष जी ।—ईशः, (पु०) १ शेष जी । २ परिभाषेन्दुशेखर के रचयिता का नाम (नागेश भट्ट) ३ पतञ्जलि का नाम ।—उदरं, (न०) लोहे का तवा या बकतर जिसे अस्त्रों के आघात से बचने के लिये छाती पर बाँधा करते थे २ गर्भोपद्रव भेद ।—केसरः, (पु०) सदाबहार का पेड़ ।—गर्भम्, (न०) सिन्दूर ।—चूड़ः, (पु०) शिव जी ।—जं, (न०) १ सिन्दूर । २ वंग ।—जिह्विका, (स्त्री०) मैनसिल ।—जीवनं (न०) वंग । फूका हुआ वंग ।—दन्तः,—दन्तकः, (पु०) १ हाथीदाँत । २ खूंटी जिस पर कपड़े आदि टाँगे जाते हैं ।—तन्ती, (स्त्री०) १ सूर्यमुखीफूल विशेष । २ रंडी । वेश्या ।—नक्षत्रं, (न०)—नायकं, (न०) अश्लेषा नक्षत्र ।—कः, (पु०) सर्पों का राजा ।—नासा, (स्त्री०) हाथी की सूँड़ ।—निर्यूहः, (पु०) खूंटी या वैक्रट ।—पञ्चमी, (स्त्री०) श्रावण शुक्ला ५ को नाग सम्बन्धी एक उत्सव विशेष ।—पदः, (पु०) रतिवध । मैथुन करने का आसन विशेष ।—पाशः, (पु०) १ ऐन्द्रजालिक फंदा, जो युद्धकाल में शत्रु को फसाने के लिये व्यवहृत किया जाता था । २ वरुण के फंदे का नाम ।—पुष्पः (पु०) १ चम्पा का पेड़ । २ पुन्नाग वृक्ष ।—बन्धकः, (पु०) हाथी पकड़ने वाला ।—बन्धुः, (पु०) वट या वरगद का पेड़ ।—बलः, (पु०) भीम की उपाधि ।—भूषणः, (पु०) शिव जी का नाम ।—मण्डलिक, (पु०) १ सपेरा । २ साँप पालने वाला ।—मल्लः, (पु०) ऐरावत हाथी ।—यष्टिः, (स्त्री०)—यष्टिका, (स्त्री०) १ नये खुदे ताल का पानी नापने का बाँस विशेष । २ धरती में छेद करने का वर्मा ।—रक्तं (न०)—रेणुः,(पु०) सिन्दूर ।—रंगः, (पु०) नारंगी ।—राजः, (पु०) शेष जी ।—लता,—वल्लरी—वल्ली, (स्त्री०) पान की लता । पान ।—लोकः, (पु०) नागों के रहने का लोक । पाताल लोक ।—वारिकः, (पु०) १ राजा की सवारी का हाथी । २ महावत । ३ मयूर । मोर । ४ गरुड़ । ५ हाथियों के यूथ का यूथपति । ६ किसी सभा का प्रधान पुरुष ।—सम्भवम्,—सम्भूतं, (न०) सिन्दूर ।—साह्वयं (न०) हस्तिनापुर ।

नागर (वि०) [स्त्री०—नागरी] १ नगर में उत्पन्न हुआ । शहरुआ । २ नगर सम्बन्धी । ३ नगर में बोली जाने वाली । ४ शिष्ट । ५ चतुर । चालाक । ६ बुरा । वह पुरुष जिसमें नगर की बुराइयाँ आगयी हों ।

नागरः (पु०) १ पौर । पुरवासी । २ देवर । ३ व्याख्यान । ४ नारंगी । ५ थकावट । परिश्रम । ६ किसी बात की जानकारी से इंकार ।

नागरक, नागरिक (वि०) १ नगर में उत्पन्न । शहरुआ । २ शिष्ट । सभ्य । ३ चालाक । चतुर । विदग्ध ।

नागरकः, नागरिकः (पु०) १ नगर में रहने वाला । २ शिष्ट मनुष्य । ५ वह जिसमें नगर के समस्त दोष आगये हों । ६ चोर । ७ कारीगर । ८ पुलिस का प्रधानाध्यक्ष ।

नागरी (स्त्री०) १ वह वर्णमाला जिसमें संस्कृत लिखी जाती है । २ कपट से भरी चालाक औरत । ३ स्नुही का पौधा । थूहर ।

नागवीटः, नागरीटः १ लम्पट । व्यभिचारी । २ प्रेमी । आशिक । ३ जार ।

नागरूकः (पु०) नारंगी ।

नागर्यं (न०) चालाकी ।

नाचिकेतः (पु०) आग ।

नाटः (पु०) १ नाच । अभिनय करने की क्रिया । २ करनाटक देश का नाम ।

नाटकं (न०) ड्रामा । दृश्यकाव्य । अभिनय ग्रन्थ ।

नाटकः (पु०) अभिनय करने वाला । नट ।

नाटकीय (वि०) नाटक सम्बन्धी ।

नाटारः (पु०) नटी का पुत्र ।

नाटिका (स्त्री०) छोटा नाटक जिसमें चार अङ्क होते हैं, किन्तु इसकी कथा कल्पित होती है। इसमें स्त्री पात्रों का आधिक्य होता है।

नाटितकं (न०) हाव भाव।

नाटेयः (पु०) } नटी या नर्तकी का पुत्र।
नाटेरः (पु०) }

नाट्यं (न०) नृत्य गीत और वाद्य। नटों का काम।

नाट्यः (पु०) नट। अभिनय करने वाला पुरुषपात्र। —आचार्यः, (पु०) नाचने की तालीम देने वाला। नृत्य शिक्षक।—उक्तिः, (स्त्री०) विशेष विशेष सम्बोधन सूचक शब्द जो विशेष विशेष व्यक्तियों के लिये नाटक ग्रन्थों में व्यवहृत किये जाते हैं।—धर्मिका, (स्त्री०) —धर्मी, (स्त्री०) नाटक सम्बन्धी नियम।—प्रियः, (पु०) शिवजी। —शाल, (स्त्री०) १ नाचघर। २ नाटकघर। —शास्त्रं, (न०) नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या।

नाडिः } (स्त्री०) १ किसी कमल का पोला नाल।
नाडी } २ तृण का पोला डंठल। ३ नली। शरीर के भीतर की वे नलियाँ जिनमें होकर लोहू बहा करता है। विशेष कर वे नलियाँ जिनमें हृदय से शुद्ध रक्त बन कर प्रत्येक तथा सारे शरीर में जाया करता है। धमनी। ४ वंशी। वीणा। ५ भगन्दर। ६ कलाई पर की नाड़ी। ७ २४ मिनिट के बराबर का काल। ८ अर्ध मुहूर्त काल। ९ ऐन्द्रजालिक कर्तव।—चरणः, (पु०) पक्षी।—चीरं, (न०) एक छोटी नरकुल।—जंघः, (पु०) काक।—परीक्षा, (स्त्री०) नाड़ी देखना।—मण्डलं, (न०) विषुवद्रेखा।—व्रणः, (पु०) फोड़ा। नासूर। भगन्दर।

नाडिका (स्त्री०) १ नाड़ी। धमनी। २ घड़ी (२४ मिनट का काल।

नाडिंधम, नाडिन्धम } (वि०) १ नली को फूँकने
नाडींधम, नाडीन्धम } वाला। २ नाड़ियों को हिलाने वाला। ३ श्वास को जल्दी चलाने वाला। हँफाने वाला।

नाडिंधमः, नाडिन्धमः } (पु०) सुनार। स्वर्णकार।
नाडींधमः, नडीन्धमः }

नाणकं (न०) सिक्का। कोई चीज़ जिस पर कोई ठप्पा लगा हो।

नातिचर (वि०) बहुत काल का नहीं। बहुत लंबा।

नातिदूर (वि०) बहुत दूर नहीं।

नातिवादः (पु०) कुवाच्यों को बचाने वाला।

नाथ् (धा० पर०) [नाथति] १ माँगना। याचना करना। २ मालिक बनना। प्रभावान्वित करना। ३ कष्ट देना। ४ आशीर्वाद देना।

नाथः (पु०) १ मालिक। स्वामी। प्रभु। रक्षक। मार्गप्रदर्शक। नेता। २ पति। ३ नटखट बैल की नाक में डाला हुआ रस्सा।—हरिः (पु०) पशु। हैवान।

नाथवत् (वि०) १ सनाथ। जिसका कोई रक्षक या रक्षा करने वाला हो। २ परतंत्र। दूसरे पर निर्भर। परवशवर्ती।

नादः (पु०) १ शब्द। ध्वनि। आवाज़। २ गर्जन। चिल्लाहट। चीत्कार। ३ वर्णों का अव्यक्त मूलरूप। ४ सानुनासिक स्वर जो '˘' अर्द्धचन्द्र से व्यक्त होता है।

नादिन् (वि०) शब्द करने वाला। नाद करने वाला राँभने वाला। दहाड़ने वाला।

नादेय (वि०) [स्त्री०—नादेयी] जलोत्पन्न। नदी में होने वाला। नदी सम्बन्धी।

नादेयं (न०) सेंधा निमक।

नाना (अव्यया०) १ भिन्न भिन्न स्थानों में। भिन्न भिन्न प्रकार से। विविध। (२) अनेक। बहुत।—अत्यय, (वि०) १ अनेक प्रकार का।—अर्थ, भिन्न भिन्न उद्देश्य और लक्ष्य वाला। २ अनेकार्थ वाची।—कार, (अव्यया०) अनेक प्रकार से किया हुआ।—रस, (वि०) भिन्न भिन्न प्रकार के स्वादों वाला।—रूप, (वि०) अनेक रूपों वाला।—वर्ण, (वि०) अनेक रंगों का।—विध, (वि०) विविध प्रकार का।—विधं, (अव्यया०) अनेक प्रकार से।

नानांद्रः } (पु०) ननद का पुत्र।
नानान्द्रः }

नांत } (वि०) अन्तरहित। असीम।
नान्त }

नांतरीयक } (वि०) जो पृथक न हो सके। घनिष्ठ
नान्तरीयक } सम्बन्ध रखने वाला।

नांत्रम्, नान्त्रम् (न०) प्रशंसा। विरुदावली।

नांदिकरः, नान्दिकरः (पु०), नांदिन्, नान्दिन् (पु०) अशीर्वाद देने वाला। नाटक में नांदी का कथन।

नांदी, नान्दी (स्त्री०) १ प्रसन्नता। हर्ष। सन्तोष। २ समृद्धि। ३ देवस्तुति। ४ नाटक के पूर्व आशीर्वादात्मक स्तुति।—करः, (पु०) शब्द करने वाला। नाद करने वाला।—निनादः, (पु०) हर्षनाद।—पटः, (पु०) कूप का ढकना।—मुख, (वि०) पितृ जिनके लिये नान्दीमुख श्राद्ध किया जाता है।—मुखश्राद्धं, (न०) आभ्युदयिक श्राद्ध। श्राद्ध जो किसी शुभ कार्य के आरम्भ करने के पूर्व किया जाता है।—मुखः, (पु०) कूप का ढकना।—वादिन्, (पु०) १ नाटक में मङ्गलाचरण करने वाला। २ ढोल बजाने वाला।

नापितः (पु०) नाई। हज्जाम।

नापित्यं (न०) नाई का धंधा।

नाभिः (पु० स्त्री०) १ नाह। नाफ। ढुंडी। २ चक्रमध्य। पहिये का मध्यभाग। ३ प्रधान। नेता। मुखिया। ४ समीप की नातेदारी। ५ सम्राट्। ६ समीपी नातेदार। ७ क्षत्रिय। घर। (स्त्री०) मुश्क। कस्तूरी।—आवर्तः, (पु०) ढुंडी का गढ़ा।—जः,—जन्मन्, (पु०)—भूः (पु०) ब्रह्मा।—वाडी, (स्त्री०)—नालं, (न०) नारा।

नाभिल (वि०) १ नाभि सम्बन्धी। २ उभरी हुई नाभि वाला।

नाभीलम् (न०) १ ढुंडी का गढ़ा। २ पीड़ा। कष्ट। ३ भङ्गनाभि। ४ स्त्रियों के कटि के नीचे का भाग। उरुसन्धि।

नाभ्य (वि०) नाभि सम्बन्धी।

नाभ्यः (पु०) शिव जी।

नामन् (न०) १ शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का ज्ञान प्राप्त हो। किसी वस्तु या व्यक्ति का निर्देश करने वाला शब्द। संज्ञा। आख्या। अभिख्या। आह्व। २—अङ्क, (वि०) नाम से चिन्हित।—अनुशासनम्, (न०)—अभिधानं, (न०) १ अपना नाम बतलाना। २ शब्दकोश।—अपराधः, (पु०) नाम लेकर गाली देना। नाम निकालना यानी बदनामी करना।—आवली, (स्त्री०) नामों की तालिका।—करणं,—कर्मन्, (न०) नामकरणसंस्कार।—ग्रहः, (पु०) नाम लेकर सम्बोधन करना।—धारक,—धारिन्, (वि०) नाम मात्र रखने वाला। नाम के लिये। सिर्फ नाम मात्र का।—धेयं, (न०) नाम। निर्देशः, (पु०) नाम लेकर बतलाना।—मात्र (वि०) केवल नाम के लिये।—माला, (स्त्री०)—संग्रहः, (पु०) नामों की तालिका।—मुद्रा, (स्त्री०) मोहर वाली अँगूठी।—वर्जित, (वि०) १ नाम रहित। २ मूर्ख। मूढ़।—वाचक, (वि०) नाम बतलाने वाला। वाचकम्, (न०) व्यक्ति या वस्तु का निज नाम।—शेष, (वि०) जिसका केवल नाम बच रहा हो। मृतक। मरा हुआ।

नामिः (स्त्री०) विष्णु।

नामित (वि०) झुकाया हुआ।

नाम्य (वि०) लचीला। झुकाने योग्य।

नायः (पु०) १ नेता। मुखिया। २ नेतृत्व। ३ नीति। ४ साधन।

नायकः (पु०) १ नेता। चलाने वाला। २ प्रधान। प्रभु। ३ मुख्य या प्रसिद्ध पुरुष। ४ सेनानायक। चमूपति। ५ किसी काव्य का चरितनायक। ६ हार के बीच का रत्न। ७ मुख्य दृष्टान्त।—अधिपः, (पु०) राजा।

नायिका (स्त्री०) १ स्वामिनी। २ भार्या। ३ किसी काव्य की प्रधानपात्री।

नारः (पु०) जल।—जीवनं, (न०) स्वर्ण।

नारं (न०) जनसमूह। नरों का समुदाय।

नारक (वि०) [स्त्री०—नारकी] १नरक सम्बन्धी।

नारकः (पु०) १ नरक। दोज़ख। २ नरकवासी।

नारकिक, नारकिन्, नारकीय (वि०) नरक का। (पु०) नरकवासी।

नारंगः, नारङ्गः (पु०) १ नारंगी का पेड़। २ लंपट। ऐयाश। ३ जीवधारी। ४ जुलही जुलहा। यमजप्राणी।

नारंगं, नारङ्गम् (न०) } १ नारंगी का फल।
नारंगकं, नारङ्गकम् (न०) } २ गाजर।

नारदः (पु०) एक प्रसिद्ध देवर्षि। ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से यह एक हैं।

नारसिंह (वि०) नरसिंह सम्बन्धी।

नारसिंहः (पु०) विष्णु की उपाधि।

नाराचः (पु०) १ लोहे का तीर। २ तीर। ३ जलहस्ती। शिशुमार। सुइस।

नाराचिका } (स्त्री०) सुनार का काँटा।
नाराची }

नारायणः (पु०) १ विष्णु भगवान। इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार मनु ने बतलायी है :—

"आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायन पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः॥"

२ एक ऋषि का नाम जो नर के साथी थे और जिनकी जंघा से उर्वशी की उत्पत्ति हुई थी। यथा
"ऊरूद्भवा नरसखस्य मुने सुरस्त्री।"

नारायणी (स्त्री०) १ लक्ष्मी देवी। २ दुर्गा देवी।

नारिकेरः } (पु०) नारियल।
नारिकेलः }

नारी (स्त्री०) १ स्त्री। औरत।—तरङ्गकः, (पु०) प्रेमी। आशिक। लपट। व्याभिचारी।—दूषणं, (न०) स्त्रियों के पाप जिनका उल्लेख मनु ने इस प्रकार किया है :—

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनं।
स्वप्नोऽन्यगृहवासश्च नारीणां दूषणानि षट्॥

—प्रसङ्गः, (पु०) लंपटता। व्यभिचार।—रत्नं (न०) उत्तम स्त्री।

नार्यंगः } (पु०) नारंगी का पेड़।
नार्यङ्गः }

नाल (वि०) नरकुल का बना हुआ।

नालम् (न०) १ पोला डठुल। कमल का डंठुल। (पु०) नाड़ी। धमनी। ३ हरताल। ४ मूठ। दस्ता। वेंट।

नालः (पु०) नहर। नाली।

नालंबी (स्त्री०) शिव की वीणा।

नाला (स्त्री०) पोलाडठुल। विशेष कर कमल का।

नालिः } (स्त्री०) १ धमनी। नाड़ी। २ कमल का नाल। ३ घड़ी। २४ मिनट का काल।
नाली } हाथी का कान छेदने का औज़ार। ५ नाली। नहर। ६ कमल का फूल।

नालिकः (पु०) भैंसा।

नालिका (स्त्री०) १ कमलनाल। २ नली। ३ हाथी का कान छेदने का औज़ार।

नालिकं (न०) १ कमल का फूल। २ वंसी। बाँसुरी।

नालिकेर }
नालिकेलि } नारियल।
नालिकेली }
नालकेरी }

नालीकः (पु०) १ तीर। २ एक प्रकार का छोटा वाण जो नली में रख कर छोड़ा जाता है। ३ कमल। ४ सूतदार कमलनाल। ५ कमल के फूल का सूतदार डंठुल।

नालिकिनी (स्त्री०) १ कमल के फूलों का समूह। २ कमल का तालाब।

नाविकः (पु०) १ मल्लाह। २ जल में यात्रा करने वाले। ३ जहाज का यात्री।

नाविन् (पु०) मल्लाह।

नाव्य, (वि०) १ नाव से जाने योग्य। २ प्रशंसार्ह।

नाव्यं (न०) नवीनपन। नयापन।

नाशः (पु०) १ अदृश्यता। असफलता। नाश। बरबादी। हानि। २ दुर्भाग्य। बदकिस्मती। विपत्ति। ३ त्याग। ४ भाग जाना।

नाशक (वि०) नाश करने वाला। बरबाद करने वाला।

नाशन (वि०) [स्त्री०—नाशनी] नाश करने वाला।

नाशनं (न०) १ नाश। बरबादी। २ स्थानान्तरकरण। ३ मृत्यु।

नाशिन् (वि०) [स्त्री०—नाशिनी] नाशक। नाश योग्य। नाश होने वाला।

नाष्टिकः (पु०) किसी खोई हुई वस्तु का मालिक या रखने वाला।

नासा (स्त्री०) १ नाक। २ सूँड। ३ चौखट का ऊपर का बाजू।—अग्रं, (न०) नाक की नोंक।—छिद्रं,—रन्ध्रं,—विवरं, (न०) नकुना। नथुना।—दारु, (न०) चौखट का ऊपर का बाजू। दुः (पु०)—पुटं, (न०) नथुना।

नकुना।—वंशः, (पु०) नाक के उपर बीचो बीच वाली पतली हड्डी । नाक का पाँसा। —स्रावः. (पु०) नाक का एक रोग जिसमें नाक से सफेद और पीला मवाद निकला करता है।

नासिकन्धय (वि०) नाक में होकर पीना।

नासिका (स्त्री०) नाक।—मलः, (पु०) रेंहट।

नासिक्य (वि०) नासिका से उत्पन्न।

नासिक्यं (न०) नाक।

नासिक्यः (पु०) नासिक शब्द।

नासीरं (न०) किसी शत्रु के सामने जाना या आमने सामने लड़ना।

नासीरः (पु०) १ (सेना का) अगला भाग। २ सेनानायक के आगे चलने वाला दल जो जयनाद करता जाता है।

नास्ति (अन्यया०) नहीं।—वादः, (पु०) वह सिद्धान्त, जिसमें ईश्वर का होना नहीं माना जाता है।

नास्तिक (वि०) } वेद और ईश्वर को न मानने
नास्तिकः (पु०) } वाला। ईश्वर को जगत् का उपादान कारण न मानने वाला।

नास्तिक्यं (न०) नास्तिकता। ईश्वर परलोक आदि में अविश्वास।

नान्दिः (पु०) आम का पेड़।

नास्यं (न०) बैल की नाथ।

नाहः (पु०) १ बाँधने वाला। बंद करने वाला। २ फंदा। लासा। जाल। ३ कब्ज़ियत। बद्धकोष्ठता।

नाहुषः } (पु०) ययाति राजा की उपाधि।
नाहुषिः }

नि (अन्यया०) यह एक उपसर्ग है जो संज्ञावाचक और क्रियावाचक शब्द में लगायी जाती है और निम्नअर्थो में प्रयुक्त होती है। १ नीचापन। नीचे की ओर की गति; जैसे 'निपत्'। २ समूह। समुदाय; जैसे "निकर"। "निकाय।" ३ आधिक्य; यथा "निकाम।" ४ आज्ञा, आदेश; यथा "निदेश"। ५ सातत्य. स्थिरत्व, यथा निविशन। ६ पटुता: यथा निपुण। ७ रोक, बंधन; यथा 'निबन्ध"। ८ सम्मिलन, संयोग। यथा "निपीतमुदकं"। ९ सामीप्य; यथा—"निकट"। १० तिरस्कार, हानि; यथा "निकृति"। "निकाय।" ११ दिखावट, यथा निदर्शन। १२ अवसान, यथा—"निवृत्"। १३ आश्रय, यथा "निलय"। १४ सन्देह। १५ निश्चय। १६ स्वीकृति। १७ फैंकदेना। दान।

निःक्षेप. (पु०) १ फैंकदेना। भेज देना। २ खर्च कर डालन।

निःश्रयणी } (स्त्री०) नसैनी। सीढ़ी। जीना।
निःश्रेणिः }

निःश्वास. } (पु०) १ बाहिर स्वाँस निकालना।
निःश्वास } साँस लेना। २ आह भरना। ऊँची साँस लेना।

निःसरणम् (न०) १ बाहिर निकलना। बाहिर निकलने का रास्ता। २ द्वार। दरवाज़ा। ३ महायात्रा। मृत्यु। ४ उपाय। साधन। ५ निर्वाण। मोक्ष।

निःसह (वि०) १ असह्य। २ शक्तिहीन। ३ जो बरदाश्त न हो सके।

निःसरणम् (न०) १ निकालना। २ बाहिर कर देना। ३ घर का द्वार।

निःस्रव (पु०) शेष। बचत। अधिक।

निःस्रावः (पु०) १ व्यय। खर्च। २ उबले हुए चाँवलों का जल या माँडी।

निकट (वि०) समीप। पास।

निकटं (न०) } सामीप्य।
निकट (पु०) }

निकरः (पु०) १ ढेर। २ गल्ला। झुंड। समूह। ३ गट्ठर। गट्ठा। बंडल। ४ सार। ५ उचित पुरस्कार या भेट। मानार्थ स्वेच्छाप्रदत्त वेतन। ६ द्रव्यकोष।

निकर्तनम् (न०) काटकर नीचे गिराने की क्रिया।

निकर्षणम् (न०) १ मैदान। खुली जगह। चौगान जो नगर के निकट हो। २ घर के द्वार के सामने की खुली जगह। ३ पड़ोस। ४ अनबुई अनजुती ज़मीन का टुकड़ा।

निकषः (पु०) १ कसौटी। २ हथियारों पर सान रखने का पत्थर। सिल्ली। ३ कसौटी पर की सोने की रेखा।—उपलः, (पु०)—ग्रावन्, (पु०)—पाषाणः, (पु०) कसौटी। सिल्ली।

निकषा (स्त्री०) १ रावण की माता का नाम । २ प्रेतनी । पिशाचिन । (अव्यया०) समीप ।—आत्मजः, (पु०) राक्षस ।

निकाम (वि०) १ विपुल । बहुत । अत्यधिक । २ अभिलाषी ।

निकामं (न०) } कामना । अभिलाषा ।
निकामः (पु०) } (अव्यय०) १ इच्छानुसार । २ अपने सन्तोषार्थं । मन भरने को । ३ अत्यधिक ।

निकायः (पु०) १ ढेर । समूह । श्रेणी । दल । झुंड । २ सभा । समाज । स्कूल । संस्था । ३ घर । आवादी । आवासस्थान । ४ शरीर । ५ निशाना । लक्ष्य । ६ परमात्मा ।

निकाय्यः (पु०) घर । आवादी । भवन ।

निकारः (पु०) १ अनाज फटकना । २ ऊपर उठाना । ३ वध । हत्या । ४ नीचा दिखाना । वशवर्ती करना । ५ तिरस्कार । हतक । मानहानि । ६ गाली । कुवाच्य । अपमान । ७ दुष्टता । ८ विरोध । खण्डन ।

निकारणम् (न०) वध । हत्या ।

निकाशः } (पु०) १ दृष्टि । प्रत्यक्ष । २ आकाश ।
निकासः } ३ सामीप्य । पड़ोस । ४ समानता । सादृश्य ।

निकाषः (पु०) रगड़ । खरोंच ।

निकुंचनः } (पु०) तौल विशेष जो ८ तोले के
निकुञ्चनः } बराबर होती है ।

निकुंज, निकुञ्जः (पु०) } लतागृह । लतामण्डप ।
निकुंजं, निकुञ्जम् (न०) } ऐसा स्थान जो घनी लताओं और घने वृक्षों से ढका हो ।

निकुंभः } (पु०) १ शिव के एक अनुचर का नाम ।
निकुम्भः } २ सुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम ।

निकुरंवं (न०)
निकुरम्बम् (न०) } गल्ला । झुंड । समूह ।
निकुरुव (न०) } गिरोह ।
निकुरुम्बम् (न०)

निकुलीनिका (स्त्री०) कोई भी दस्तकारी या कला जो किसी के घर में परम्परागत होती चली आती हो ।

निकृत (व० कृ०) १ नीचा देखे हुए । अपमानित । २ तिरस्कृत । ३ प्रवञ्चित । धोखा खाये हुए । ४ स्थानान्तरित किया हुआ । ५ दुःखी । घायल । ६ दुष्ट । बेईमान । ७ कमीना । नीच । पापी ।

निकृति (वि०) नीच । बेईमान । दुष्ट ।—प्रज्ञ, (वि०) दुष्ट । दुष्ट हृदय ।

निकृतिः (स्त्री०) १ नीचता । दुष्टता । २ बेईमानी । ठगी । कपट । ३ मानहानि । अपमान । ४ कुवाच्य गाली । अस्वीकृति । स्थानान्तर करण । ५ धनहीनता । ग़रीवी ।

निकृंतन } (वि०) [स्त्री०—निकृन्तनी] काटकर
निकृन्तन } नीचे गिराने वाला ।

निकृंतनं } (न०) १ काटना । नाश करना । २
निकृन्तनम् } काटने का औज़ार ।

निकृष्ट (वि०) १नीच । कमीना । पाजी । २जातिच्युत । घृणित । ३ गँवार ।

निकेतः (पु०) मकान । आवसस्थान । भवन । घर ।

निकेतनं (न०) मकान । घर ।

निकेतनः (पु०) पलाण्डु । प्याज़ ।

निकोचनम् (न०) संकुचन । सिकोड़ । सिमटाव ।

निक्कणः } (पु०) १ साङ्गीतिक स्वर । २ स्वर । ३
निक्काणः } वीणा की झनकार । ४ किन्नरों का शब्द ।

निक्षा (स्त्री०) जू का अण्डा ।

निक्षिप्त (व० कृ०) १ फैका हुआ । नीचे पटका हुआ । २ धरोहर रखा हुआ । जमा कराया हुआ । गिरवी रखा हुआ । ३ भेजा हुआ । ४ नापसंद किया हुआ । त्यागा हुआ ।

निक्षेपः (पु०) १ फेंकने वा डालने की क्रिया या भाव । २ चलाने की क्रिया या भाव । ३ गिरवी । धरोहर । ४ कोई चीज़ विना सील मोहर लगाये खुली जमा करा देना । ५ पोंछने या सुखाने की क्रिया ।

निक्षेपणम् (न०) १ फेंकना । डालना । २ छोड़ना । चलाना । ३ त्यागना । ४ कोई भी उपाय जिसके द्वारा कोई वस्तु रखी जाय ।

निखननम् (न०) खनना । खोदना । गाड़ना ।

निखर्व (वि०) बोना । खर्वाकार ।

निखर्वं (न०) दस हज़ार करोड़ । दस सहस्र करोड़ ।

निखात (व० कृ०) १ खोदा हुआ । खोदकर निकाला हुआ । २ खोद कर लगाया हुआ या जमाया हुआ । ३ खोदकर गाड़ा हुआ ।

निखिल (वि०) सम्पूर्ण । समूचा । तमाम । सब ।

निगडं (न०) } १ लोहे की जंज़ीर जो हाथी के
निगडः (पु०) } पैर में बाँधी जाती है। २ बेडी। जंज़ीर ।

निगडित (वि०) बेड़ी पड़ा हुआ । जंज़ीर से बंधा हुआ ।

निगणः (पु०) यज्ञीय धूम ।

निगदः } (पु०) १ स्तुति-पाठ । स्तोत्रपाठ । २
निगादः } व्याख्यान । संवाद । ३ अर्थ सीखना । ४ वर्णन ।

निगदितम् (न०) संवाद । कथोपकथन । व्याख्यान ।

निगमः (पु०) वेद । वेदसंहिता । २ वेद का कोई अंश या अवतरण । ३ वेदभाष्य । आप्तवचन । ४ धातु । ५ निश्चय । विश्वास । ६ न्याय । ७ व्यापार । व्यवसाय । ८ हाट । मंडी । बाज़ार । पैंठ । मेला । ९ बनजारा । फेरी वाला सौदागर । १० मार्ग । बाज़ार का रास्ता । ११ नगर ।

निगमनम् (न०) १ वेद का अवतरण । २ न्याय में अनुमान के पाँच अवयवों में से एक । परिणाम । नतीजा ।

निगरः } (पु०) निगलने की या भक्षण करने की
निगारः } क्रिया ।

निगरणम् (न०) निगलना । लीलना । खा डालना ।

निगरणः (पु०) १ गला । २ यज्ञीय अग्नि या यज्ञीय जले हुए पदार्थ का धुआं ।

निगलः } (पु०) १ निगलना । लीलना । खा
निगालः } डालना । २ घोड़े का गला या गर्दन ।
—वत्, (पु०) घोड़ा ।

निगीर्ण (व० कृ०) १ निगला हुआ । लीला हुआ । (आलं०) २ छिपा हुआ । सम्पूर्णतया सोखा हुआ या खाया हुआ ।

निगूढ (वि०) १ छिपा हुआ । २ अत्यन्त गुप्त ।

निगूढम् (अव्यया०) गोप्य । रहस्यमय ।

निगूहनम् (न०) छिपाना । दुराना

निग्रंथनं } (न०) हत्या । वध ।
निग्रन्थनम् }

निग्रहः (पु०) १ रोक । अवरोध । २ दमन । ३ पकड़ना । गिरफ़्तार करना । ४ पकड़ कर बंद कर देना । क़ैद कर लेना । ५ पराभव । पराजय । ६ नाश । विनाश । ७ चिकित्सा । रोग की रोकथाम । ८ दण्ड । सज़ा । ९ भर्त्सना । डाँट । फटकार । १० अरुचि । घृणा । ११ (न्याय में) तर्क सम्बन्धी दोष विशेष । १२ दस्ता । बेंट । १३ सीमा । हद ।

निग्रहण (वि०) रोकने वाला । दबाने वाला ।

निग्रहणम् (न०) १ रोकने का कार्य । दबाने का कार्य । २ गिरफ्तारी । पकड़ । ३ दण्ड । सज़ा । ४ पराजय । हार ।

निग्राहः (पु०) १ सज़ा । २ शाप । आक्रोश ।

निघ (वि०) जितना लंबा उतना ही चौड़ा ।

निघः (पु०) १ गेंद । २ पाप ।

निघंटुः } (पु०) १ वैदिक कोश । यास्क ने निघण्टु
निघण्टुः } की जो व्याख्या लिखी है वह निरुक्त के नाम से प्रसिद्ध है । २ शब्दसंग्रह मात्र, जैसे वैद्यक का निघण्टु ।

निघर्षः (पु०) } रगड़ । मथन ।
निघर्षणं (न०) }

निघसः (पु०) १ खाने की क्रिया । भोजन करने की क्रिया । २ भोजन । खाने की सामग्री ।

निघातः (पु०) १ प्रहार । घात । २ उच्चारण के लहज़े का अभाव ।

निघातिः (स्त्री०) १ लोहे की गदा । लौहदण्ड । २ निहाई ।

निघुष्टं (न०) शब्द । शोरगुल । कोलाहल ।

निघ्न (वि०) १ अधीन । आश्रित । वशीभूत । आज्ञाकारी । २ नम्र । वश्य । शिक्षणीय । ३ गुणित । गुणा किया हुआ ।

निघ्नः (पु०) १ सूर्य वंशीय राजा अनरण्य का पुत्र । २ एक राजा जो अनमित्र का पुत्र था ।

निचयः (पु०) १ ढेर । समूह । समुदाय । २ सञ्चय । ३ निश्चय ।

निचिकिः (देखो नैचिकी) ।

निचायः (पु०) ढेर ।

निचित (व० कृ०) १ ढका हुआ । फैला हुआ । २ पूरित । भरा हुआ । ३ उठा हुआ ।

निचुलः (पु०) १ बेत । २ कालिदास के एक कविमित्र । ३ ऊपर से शरीर ढाँकने का कपड़ा ।

निचुलकं (न०) उरस्त्राण । वर्म विशेष ।

निचोलः (पु०) १ चादर । ओढ़नी । घूंघट । बुरका । २ पलगपोश । ३ डोली का परदा ।

निचोलकः (पु) १ जाकेट । अंगिया । २ उरस्त्राण ।

निच्छविः (स्त्री०) तीर युक्ति देश । तिरहुत ।

निच्छिविः (पु०) एक प्रकार के व्रात्य क्षत्रिय । सवर्णा स्त्री से उत्पन्न व्रात्य क्षत्रिय की सन्तान ।

निज् (धा० उभय०) [नेनेक्ति, नेनिक्ते, प्रणेनेक्ति, निक्त,] १ धोना । साफ करना । पवित्र करना । २ अपने शरीर को धोना या पवित्र करना । २ पोषण करना ।

निज (वि०) १ जन्म से । स्वाभाविक । प्राकृतिक । २ अपना । ३ विलक्षण । ४ सदैव बना रहने वाला ।

निंज, निञ्ज् } (धा० आत्म०) [निंक्ते,] धोना ।

निटलं, निटिलं } (न०) मत्था । माथा ।—अक्षः, (पु०) शिव जी का नाम ।

निडीनम् (न०) पक्षियों का नीचे की ओर उडना या झपट्टा ।

नितंबः, नितम्बः } (पु०) १चूतड़ । कमर का पिछला उभरा हुआ भाग । (विशेषत स्त्रियों का) । २ ढालुवाँ किनारा (पर्वत का) ३ नदी का ढलुवाँ तट । ४ कंधा । ५ खड़ी चट्टान ।—बिम्ब, (वि०) गोल कमर का पिछला भाग ।

नितंबवत्, नितम्बवत् } (वि०) सुन्दर कमर वाला ।

नितंबवती, नितम्बवती } (वि०) सुन्दर कमर वाली ।

नितंबिन्, नितम्बिन् } (वि०) अच्छे नितम्बों वाली ।

नितंबिनी, नितम्बिनी } (स्त्री०) १ बड़े और सुन्दर नितम्बों वाली स्त्री । २ स्त्री ।

नितरां (अव्यया०) १ सदैव । हमेशा । २ समूचा । सम्पूर्ण । तमाम । ३ अत्यधिक । अत्यन्त । बहुत अधिक । ४ निश्चय रूप से । अवश्य ।

नितल (न०) सात पातालों में से एक ।

नितांत, नितान्त } (वि०) असाधारण । अत्यधिक । अतिशय ।

नितांतं, नितान्तम् } (न०) बहुत अधिक । अत्यन्त अधिकता से ।

नित्य (वि०) जो सब दिन रहे । जिसका कभी नाश न हो । शाश्वत । अविनाशी । त्रिकालव्यापी ।—कर्मन्,—(न०)—कृत्यं,—(न०)—क्रिया, (स्त्री०) प्रतिदिन का काम । नित्य की क्रिया जैसे सन्ध्या, तर्पण अग्निहोत्रादि ।—गतिः, (पु०)वायु । पवन ।—दानं, (न०) नित्यदान देने की क्रिया । —नियमः, (पु०) प्रतिदिन का बंधा हुआ काम । —नैमित्तकम्, (न०) पर्वश्राद्ध प्रायश्चित्तादि कर्म ।—प्रलयः (पु०) नींद । निद्रा ।—युक्तः (पु०) परमात्मा । श्रीरामानुज सिद्धान्तानुसार, विष्वक्सेनादि सूरिगण जिनके विषय में वेदों में लिखा है—

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।

—यौवना, (स्त्री०) सदैव युवती बनी रहने वाली अथवा जिसका यौवन बराबर या बहुत काल, तक स्थिर रहे ।—शङ्कित, (वि०) सदैव सशङ्कित रहने वाला ।—सामासः, (पु०) समास विशेष ।

नित्यता (स्त्री०), नित्यत्वं (न०) } १ अनश्वरता । नित्य होने का भाव । २ आवश्यकता ।

नित्यदा (अव्यया०) सर्वदा । हमेशा ।

नित्यशस् (अव्यय०) सदैव । हमेशा । सर्वदा ।

निदद्रुः (पु०) मनुष्य । मानव ।

निदर्शक (वि०) १ देखने वाला । २ जानने वाला । पहचानने वाला । ३ बतलाने वाला । निर्देश करने वाला ।

निदर्शनम् (न०) १ दिखाने का कार्य । प्रदर्शित करने का कार्य । प्रकट करने का कार्य । २ सबूत । साक्षी । ३ उदाहरण । नज़ीर । ४ शकुन । शुभ सूचना । ५ आप्तवचन । आदेश ।

निदाघः (पु०) १ गर्मी । ऊष्मा । २ ग्रीष्मऋतु । २ पसीना ।—करः, (पु०) सूर्य ।—कालः, (पु०) ग्रीष्मऋतु ।

निदानं (न०) १ बँधना । रस्सी । बागडोर । २ बछड़ा बाँधने की रस्सी । ३ आदिकारण । कारण । ४ रोगलक्षण । रोगनिर्णय । रोग की पहचान । ५ अन्त । छोर । ६ पवित्रता । शुद्धि ।

निदिग्ध (व० कृ०) १ छोपा हुआ । लेप किया हुआ । २ जमा किया हुआ । बढ़ाया हुआ ।

निदिग्धा (स्त्री०) छोटी इलायची।

निदिध्यासनं (न०) } बारंबार स्मरण। बारंबार
निदिध्यासः (पु०) } ध्यान में लाना।

निदेशः (पु०) १ शासन। आज्ञा। हुक्म। २ कथन। वर्णन। वार्तालाप। ३ पड़ोस। नैकट्य। ४ ४ पात्र। बर्तन। यज्ञीयपात्र।

निदेशिन् (वि०) निर्देश करने वाला। बतलाने वाला।

निदेशिनी (स्त्री०) १ दिशा। २ देश।

निन्द्रा (स्त्री०) १ नींद। २ सुस्ती। ३ मुकलित अवस्था।—भङ्गः, (पु०) जागरति। जागरण। —वृत्तः, (पु०) अन्धकार।—सञ्जननं, (न०) कफ। श्लेष्मा। (कफ की वृद्धि से नींद अधिक आती है)

निद्राणं (न०) सोनेवाला। उंघासा।

निद्रालु (वि०) सोनेवाला। निद्राशील।

निद्रित (वि०) सोया हुआ।

निधन (वि०) ग़रीब। धनहीन।

निधनं (न०) } १ नाश। २ मरण। ३ समाप्ति।
निधनः (पु०) } अवसान। ४ कुटुम्ब। जाति।

निधानम् (न०) १ नीचे रखना। तरतीबवार जमा करना। २ सुरक्षित रखना। बचा कर रखना। ३ वह स्थान जहाँ कोई वस्तु रखी जाय। ४ द्रव्य-कोश। ५ जमा। जख़ीरा। सम्पत्ति। धन।

निधिः (पु०) १ घर। आधार। २ भाण्डार। ख़ज़ाना। ३ सम्पत्ति। कुबेर के नौ प्रकार के ख़ज़ाने हैं। (यथा—पद्म। महापद्म, शङ्ख। मकर। कच्छप। मुकुन्द। कुन्द। नील और वर्च्च)। ४ समुद्र। ५ विष्णु। ६ अनेक सद्गुणों से भूषित पुरुष।—ईशः, —नाथः, (पु०) कुबेर।

निधुवनं (न०) १ आन्दोलन। कंप। २ मैथुन। ३ आनन्द। उपभोग। क्रीडा।

निध्यानं (न०) १ दर्शन। देखना। २ निदर्शन।

निध्वानः (पु०) नाद। आवाज़।

निनंक्षु (वि०) १मरने का अभिलाषी। २ निकल भागने की इच्छा रखने वाला।

निनदः } (पु०) नाद। ध्वनि। कोलाहल। २
निनादः } गुञ्जार। भिनभिन शब्द।

निनयनं (न०) १ किसी कार्य को पूर्ण करने की क्रिया। २ उड़ेलना।

निंद् } (धा० पर०) [निन्दति, —निन्दित,—
निन्द् } प्रणिन्दति,] कलङ्क लगाना। धिक्कारना। डाँटना। फटकारना।

निंदक } (वि०) निन्दा करने वाला। गाली देने
निन्दक } वाला। बदनाम करने वाला।

निंदनं, निन्दनम् (न०) } १ कलङ्क। कुवाच्य।
निंदा, निन्दा (स्त्री०) } बदनामी। २ दुष्टता। हानि।—स्तुतिः, (स्त्री०) व्याजस्तुति। स्तुति के रूप में निन्दा।

निंदित } (व० कृ०) कलङ्कित। बदनाम किया
निन्दित } हुआ। कुवाच्य कहा हुआ।

निंदुः } (स्त्री०) जिसके पास मरा हुआ बच्चा हो।
निन्दुः }

निंद्य } (वि०) १ निन्दनीय। २ वर्जित। निषिद्ध।
निन्द्य }

निपः } (पु०) } जल का घड़ा।
निपम् } (न०) }

निपः (पु०) कदम्ब का पेड़।

निपठः } (पु०) पढ़ना। पाठ करना। अध्ययन
निपाठः } करना।

निपतनम् (न०) नीचे गिरने की क्रिया। नीचे उतरने की क्रिया।

निपत्या (स्त्री०) १ ज़मीन जहाँ बिचलाहट या फिसलन हो। २ रणक्षेत्र।

निपाकः (पु०) पकाने की क्रिया। (जैसे कच्चे फल को)।

निपातः (पु०) १ पतन। गिराव। पात। २ अधः-पतन। ३ विनाश। ४ मृत्यु। क्षय। नाश। २ ५ व्याकरण के मतानुसार वह शब्द जिसके बनने के नियम का पता न हो या जो व्याकरण के नियमों से सिद्ध न हो।

निपातनम् (न०) १ गिराने का कार्य। २ नाश। क्षय। ध्वंस। ३ वध। हत्या। ४ नियमविरुद्ध शब्द का रूप।

निपानं (न०) १ पीने की क्रिया। २ तालाब। ३ कूप के समीप का हौद जिसमें पशुओं के पीने को जल भरा जाय। ४ कूप। ५ दूध दुहने का पात्र।

निपीडनम् (न०) १ दबा कर निकालने की क्रिया २ घायल करने की क्रिया।

निपीडना (स्त्री०) अत्याचार । चोट ।

निपुण (वि०) १ चतुर । तीव्र । पटु । २ योग्य । काबिल । ३ अनुभवी । ४ दयालु या मैत्री भाव रखने वाला । ५ तीक्ष्ण । सूक्ष्म । कोमल । ६ सम्पूर्ण । पूरा । ठीक ठीक ।

निपुणम् } निपुणेन } (अव्य०) १ निपुणता से । पटुता से । चतुराई से । २ सम्पूर्णतया । ३ ज्यों का त्यों । ठीक ठीक ।

निबद्ध (व०) १ बन्धन में पडा हुआ । बेडी में पडा हुआ । रोका हुआ । बँद किया हुआ । २ सम्बन्ध रखे हुए । ३ बना हुआ । ४ जडा हुआ । भू- साक्षी देने को बुलाया हुआ ।

निबंधः } निबन्धः } (पु०) १ बंधन । २ (मकान) बनाना । ३ रोक थाम । ४ बंधन । बेडी । ५ पट्टी । सहारा । अवलम्ब । ६ अधीनता । सम्बन्ध । ७ कारण । उपादान कारण । आधार । उद्देश्य । नीव । ८ स्थान । आधार । ६ रचना । प्रबन्ध । व्यवस्था । १० साहित्यिक रचना । निबन्ध । ११ सद्वृत्ति । १२ वीणा की खूँटी । १३ वाक्यरचना । १४ टीका ।

निबंधनी } निबन्धनी } (स्त्री०) बधन । रस्सी । बेडी ।

निबर्हण } निबहण } (वि०) नाशक । विनाशक । शत्रु ।

निबर्हणम् } निबर्हणम् } (न०) वध । हत्या । नाश । विनाश ।

निबिड (वि०) १ घना । घनघोर । २ गहरा । ३ दबी या चपटी नाक वाला ।

निभ (वि०) समान । तुल्य । बराबर । सदृश ।

निभ (न०) } निभः (पु०) } १ प्राकट्य । प्रादुर्भाव । २ मिस । बहाना । ३ चालाकी । धोखा ।

निभालनम् (न०) देखना । पहचानना ।

निभृत (वि०) १ अत्यन्त भीत । २ गया गुज़रा । बीता हुआ ।

निभृत, (वि०) रखा हुआ । जमा किया हुआ । नीचा किया हुआ । २ परिपूर्ण । ३ छिपा हुआ । ४ गुप्त । ५ शान्त । चुप । खामोश । दृढ । अचञ्चल । अचल गतिहीन । ६ नम्र । कोमल । ७ विनीत । विनम्र । ८ दृढसङ्कल्प का । दृढविचार का । ६ एकान्ती । अकेला । १० बंद । मुँदा हुआ ।

निभृतम् (अव्यया०) चुपचाप । गुपचुप । गुप्त रीति से । विना जनाये हुए ।

निमग्न (व० कृ०) १ डूबा हुआ । सना हुआ । लिप्त । २ नीचे बैठा हुआ । अस्त हुआ । ३ छिपा हुआ । ४ दबा हुआ । अप्रधान ।

निमज्जथुः (पु०) १ डूबने की क्रिया । २ सोना । सेज पर पड कर सोना ।

निमज्जनम् (न०) स्नान । अवगाहनस्नान । डूबना ।

निमंत्रणम् (न०) १ बुलावा । २ हाज़िर होने की आज्ञा ३ उपस्थित होने का आज्ञापत्र ।

निमयः (पु०) अदलाबदली । एक चीज़ के मूल्य में दे कर, दूसरी चीज़ खरीदना ।

निमानं (न०) १ भाव । २ मूल्य ।

निमिः (पु०) १ (आँख) झपकाना । मटकाना । २ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम जो मिथिला राजवंश का पूर्वपुरुष था ।

निमित्तं (न०) १ हेतु । कारण । २ चिन्ह । लक्षण । ३ शकुन । सगुन । ४ उद्देश्य । फल की तरफ लक्ष्य ।—आवृत्तिः, (स्त्री०) किसी विशेष कारण पर निर्भर ।—कारणं, (न०)—हेतुः, (पु०) वह कारण जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई वस्तु बने । -कृत् (पु०) काक । कौआ ।—धर्मः, (पु०) प्रायश्चित्त । धार्मिक विधि जो कभी कभी की जाय ।—विद्, (वि०) शकुनों का शुभाशुभ फल जानने वाला (पु०) ज्योतिषी ।

निमित्तं } निमित्तेन } निमित्तात् } बवजह । क्योंकि ।

निमिषः (पु०) १ आँख झपकाने की क्रिया । आँखें बंद करने की क्रिया । २ पलक मारने भर का समय । पल । क्षण । ३ फूलों के मुदने की क्रिया । ४ पलकों के खुलने और बंद होने की क्रिया । ५ विष्णु ।

निमीलनम् (न०) १ पलक झपकाना । २ निमेष । ३ मरण । ३ सर्वग्रास ग्रहण ।

निमीला } (स्त्री०) १ आँखों की झपकी । २
निमीलिका } व्याज । छल ।

निमूलं (अव्यया०) जड के नीचे तक ।

निमेषः (पु०) पलक का गिरना । क्षण । पल ।—कृत्, (स्त्री०) विजली । विद्युत ।—रुच, (पु०) जुगनू ।

निम्न (वि०) १ गहरा । २ नीचा । दवा हुआ ।—उन्नत, (वि०) ऊँचा नीचा । ऊवडखावड । असम ।—गर्तं, (न०) नीची जगह ।—गा, (स्त्री०) नदी । पहाडी सोता ।

निम्नं (न०) १ गहराई । नीची ज़मीन । २ ढाल । उतार । ३ दरार । ४ निम्नभाग ।

निंवः } (पु०) नीम का पेड ।
निम्वः }

निम्लोचः (पु०) सूर्यास्त ।

नियत (वा० कृ०) १ नियम द्वारा स्थिर । वंधा हुआ । परिमित । संयत । वद्ध । पावंद । २ ठहराया हुआ । स्थिर । ठीक किया हुआ । निश्चित । ३ नियोजित । स्थापित । प्रतिष्ठित ।

नियतं (अव्यया०) १ सदैव । हमेशा । २ निश्चित रूप से । अवश्य ।

नियतिः (स्त्री०) १ नियत होने का भाव । वंधेज । वद्ध होने का भाव । २ ठहराव । स्थिरता । ३ भाग्य । दैव । अदृष्ट । ४ नियत वात । अवश्य होने वाली वात । पूर्वकृत कर्म का परिणाम जो अनिवार्य है । (जैन) ६ जड़ प्रकृति ।

नियंतृ } (पु०) १ सारथी । रथवान । गाड़ीवान ।
नियन्तृ } २ शासक । सूवेदार । परिचालक । मालिक । ३ दण्ड देने वाला । सज़ा देने वाला ।

नियंत्रणं, नियन्त्रणं (न०) } १ रोकथाम । २
नियंत्रणा, नियन्त्रणा (स्त्री०) } देखाभाली । ३ व्यवस्था ।

नियंत्रित } (व० कृ०) नियम से वंधा हुआ ।
नियन्त्रित } प्रतिवद्ध । जिस पर किसी प्रकार की रोकथाम हो ।

नियमः (पु०) १ परिमित । रोक । पावंदी । नियंत्रण । २ दवाव । शासन । ३ वंधा हुआ क्रम । प्रचलित विधान । परम्परा । दस्तूर । ४ ठहराई हुई रीति या विधि । व्यवस्था । पद्धति । ५ शर्त । ठहराव ६ प्रतिज्ञा । ७ अर्थालङ्कार विशेष । ८ विष्णु । ६ महादेव ।—निष्ठा, (स्त्री०) नियमानुसार काम करने की श्रद्धा ।—पत्रं, (न०) इकरारनामा । प्रतिज्ञापत्र ।—स्थितिः, (स्त्री०) संन्यास ।

नियमनं (न०) १ रोकटोक । दण्डविधान । वशत्व । २ अवरोध । सीमावन्धन । वाधा । तमादी । ३ दीनता । ४ आदेश । ५ निश्चित नियम ।

नियमवती (स्त्री०) स्त्री जो मासिक धर्म से हुआ करती हो ।

नियमित (व० कृ०) १ रोका हुआ । थामा हुआ । २ शासन किया हुआ । रहनुमा किया हुआ । ३ निर्दिष्ट किया हुआ । वतलाया हुआ । ४ इकरार किया हुआ । प्रतिज्ञावद्ध ।

नियामः (पु०) १ रोक । अवरोध । २ धर्म सम्वन्धी व्रत ।

नियातनम् (न०) देखो "निपातनम्"

नियामक (न०) [स्त्री० नियामिका] १ रोकने वाला । अवरोध करने वाला । २ वश में करने वाला । कावू में लाने वाला । दवाने वाला । स्पष्टतया परिभाषा करने वाला । ४ पथप्रदर्शक । शासक ।

नियामकः (पु०) १ मालिक । स्वामी । शासक । २ सारथी । रथ हाँकने वाला । ३ नाव खेने वाला । मल्लाह । ४ माझी । कर्णधार । चालक ।

नियुक्त (वा० कृ०) आदिष्ट । निर्देश किया हुआ । आज्ञप्त । आज्ञा दिया हुआ । २ नियत किया हुआ नियोजित अधिकार दिया हुआ । ३ प्रश्न करने के लिये अनुमति दिया हुआ । ४ लगा हुआ । संलग्न । ५ वंधा हुआ । ६ दर्याफ्त किया हुआ ।

नियुक्तिः (स्त्री०) १ आज्ञा । आदेश । २ तैनाती । मुकर्ररी ।

नियुतम् (न०) १ एक लाख । लक्ष । २ दस लाख । १०० अयुत । दसहज़ार करोड ।

नियुद्ध (वि०) १ पैदल युद्ध करने वाला । २ व्यक्तिगत झगड़ा । ३ वाहुयुद्ध । हाथावाही । कुश्ती ।

नियोगः (पु०) १ किसी काम में लगाना । तैनाती । २ उपयोग । ३ आज्ञा । ४ वंधन । संलग्नता । ५

आवश्यकता। एहसान। ६ उद्योग। प्रयत्न। ७ निश्चय। ८ प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसके अनुसार निःसन्तान स्त्री को अधिकार था कि वह परपुरुष से संयोग कर सन्तान उत्पन्न कराले। किन्तु कलियुग में यह प्रथा वर्जित है।

नियोगिन्‌ (पु०) अफ़सर। सचिव। कर्मचारी।

नियोग्यः (पु०) स्वामी। प्रभु।

नियोजनम्‌ (न०) १ बंधन। अटकाव। २ आज्ञा। आदेश। ३ अनुरोध। आग्रह। ४ नियुक्ति।

नियोज्यः (पु०) अधिकारी। अफसर। कर्मचारी। कारकुन। नौकर।

नियोद्धः (पु०) पहलवान। कुश्ती लड़ने वाला। मल्ल योद्धा।

निर्‌ (अव्यया०) निस्‌ का पर्यायवाची। इसका अर्थ है बाहिर। दूर। विना। रहित।—अंश, (वि०) १समूचा। सम्पूर्ण। २वह जो पैतृक सम्पत्ति में से कुछ भी भाग पाने का अधिकारी न हो।—अत्तः, (पु०) ऐसी जगह जहाँ विस्तार करने का स्थान न हो।—अग्नि, (वि०) अग्निहोत्र की आग को असावधानी से बुझ जाने देने वाला।—अङ्कुश, (वि०) विना रोक टोक का। वश में न रहने वाला। काबू में न आने वाला। स्वाधीन। स्वतंत्र।—अङ्ग, (वि०) जिसमें भाग न हो। २ उपायशून्य। उपायवर्जित।—अजिन्‌, (वि०) १ विना सुर्मे का। २ बेदाग़। निष्कलङ्क। ३ मिथ्या से रहित। ४ सीधा सादा। चालाकी न जानने वाला।—अञ्जनः, (पु०) शिव जी की उपाधि।—अञ्जना, (स्त्री०) पूर्णिमा।—अतिशय, (=निरतिशय) (वि०) हद दर्जे का।—अत्ययः, (वि०) १ ख़तरे से महफ़ूज़। सुरक्षित। २ दोषशून्य। निस्वार्थी। हर प्रकार से सफल काम।—अध्व, (वि०) गुमराह। वह जो मार्ग भूल गया हो।—अनुक्रोश, (वि०) निर्दयी। संगदिल। निष्ठुर हृदय।—अनुक्रोशः, (पु०) निष्ठुरता।—अनुग, (वि०) जिसके कोई अनुयायी न हो।—अनुनासिक, (वि०) जिसका उच्चारण नाक से न हो।—अनुरोध, (वि०) १ प्रतिकूल। २ अकृपालु।—अन्तर, (वि०) १ अविच्छिन्न। २ जिसके बीच में अन्तर या फासला न हो। ३ निविड। घना। गझिन। ४ बड़े आकार का। ५ वफ़ादार। ईमानदार। सच्चा। ६ जो अन्तर्ध्यान न हो। जो दृष्टि से ओझल न हो। ७ समान। एक सा।—अन्तरम्‌, (अव्य०) अविच्छिन्न। बराबर होने वाला। अखण्डित।—अन्तराल, (वि०) १ सटा हुआ। २ सङ्कीर्ण।—अन्वय, (वि०) १ निस्सन्तान। बेऔलाद। २ जिसका कोई सम्बन्ध न हो। ३ मूल से भिन्न। ४ दृष्टि से ओझल। ५ नौकर चाकरों से रहित।—अपत्रप, (वि०) १ निर्लज्ज। बेहया। २ साहसी।—अपराध, (वि०) कलङ्करहित। बेकसूर।—अपाय, (वि०) १ दुष्टता से रहित। अपकार शून्य। २ अविनाशी। ३ अभ्रान्त। अमोघ। अन्यर्थ।—अपेक्ष, (वि०) १ जिसे किसी बात की चाह न हो। २ लापरवाह। असावधान। ३ कामनाशून्य। ४ जिसे किसी सांसारिक पदार्थ से अनुराग न हो। ५ निस्स्वार्थी। ६ तटस्थ।—अपेक्षा, (स्त्री०) १ अपेक्षा या चाह का अभाव। २ लगाव का न होना। ३ अवज्ञा। परवाह न होना।—अभिभव, (वि०) जो अपमान का पात्र न हो।—अभिमान, (वि०) अहङ्कार से रहित। अभिमानशून्य।—अभिलाप, (वि०) इच्छारहित।—अभ्र, (वि०) बादलशून्य।—अमर्ष, (वि०) क्रोधरहित। धैर्यधारी।—अम्बु, (वि०) १ जल से बचने या परहेज़ करने वाला। २ जलरहित। पानी का मोहताज।—अर्गल, (वि०) विना चटख़नी या सांकल कुंडे का। बेरोक टोक।—अर्गलम्‌, (अव्यया०) स्वतंत्रता से।—अर्थ, (वि०) धनहीन। ग़रीब। निर्धन। २ अर्थरहित। ३ वाहियात। ४ व्यर्थ। निष्प्रयोजन। जिसका कोई काम का मतलब न निकले।—अर्थक, (वि०) १ व्यर्थ। हानिकर। २ विना अर्थ का। वाहियात।—अर्थकम्‌, (न०) पादपूरक। पूरा करने वाला।—अवकाश, (वि०) १ विना स्वतंत्र स्थान का। २ जिसको फ़ुर्सत न हो।—अवग्रह, (वि०) १

वेरोकटोक। वेकावू। २स्वतंत्र। ख़ुदमुख़त्यार। ३ मनमौजी। ज़िद्दी।—अवद्य, (वि॰) कलङ्क रहित। दोषरहित। जो आपत्तिजनक न हो।—अवधि, (वि॰) असीम। सीमारहित।—अवयव (वि॰) जिसमें हिस्से न हों। अदृश्य। २ जिसमें अवयव (अंग-उपाङ्ग) न हों।—अवलम्ब, (वि॰) असमर्थित। विना सहारे का। २ जो सहारा न दे।—अवशेष, (वि॰) समूचा। पूर्ण।—अवशेषेण, (अव्यया॰) सम्पूर्णतया। विल्कुल।—अशन, (वि॰) भोजन से परहेज़ करने वाला।—अशनं, (न॰) कड़ाका। लंघन। फाका।—अस्त्र, (वि॰) हथियारशून्य। खाली हाथ।—अस्थि, (वि॰) जिसके हड्डी न हों।—अहङ्कार,—अहंकृति, (वि॰) अभिमान रहित। गर्वशून्य।—आकांक्ष, (वि॰) जिसे आकाँक्षा न हो। कामनाशून्य। इच्छारहित।—आकार, (वि॰) १ जिसका कोई आकार या शक्ल सूरत न हो। जिसके आकार की भावना न हो। २ २ बदशक्ल। वदसूरत। कुरूप। भद्दा। ३ कपट वेशी। ४ विनम्र। लज्जालु।—आकारः, (पु॰) १ सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान परमात्मा। २विष्णु। ३ शिव।—आकृति, (वि॰) १ आकार रहित। जिसकी कोई शक्ल न हो। २ वदशक्ल। वदसूरत।—आकृतिः, (वि॰) १ स्वाध्याय रहित विद्यार्थी। वेदपाठ रहित ब्रह्मचारी। २ वैदिक कर्मानुष्ठान पञ्च महायज्ञादि कर्म से रहित।—आकुल, (वि॰) १ जो विकल न हो। अनुद्विग्न। २शान्त। दृढ़। ३ स्पष्ट। साफ़।—आक्रोश, (वि॰) जो दोषी न ठहराया गया हो।—आगस, (वि॰) दोष रहित। पापशून्य।—आचार, (वि॰) आचार रहित।—आडम्बर, (वि॰) १ विना ढोल का। ढोलों से रहित।—आतङ्क, (वि॰) १ निर्भय। निडर। २ विना किसी पीड़ा के। स्वस्थ। तंदुरुस्त।—आतप, (वि॰) गर्मी से रक्षित। छायादार। जहाँ सूर्य की रश्मियाँ प्रवेश न कर सकें।—आतपा, (स्त्री॰) रजनी। रात।—आदर, (वि॰) अपमान। वेइज्जती।—आधार, (वि॰) अवलम्ब या आश्रय रहित।—आधि, (वि॰) सुरक्षित। चिन्ताशून्य।—आपद्, (वि॰) जिसे कोई आपदा न हो।—आबाध, (वि॰) १ उपद्रवों से रहित। २ विना बाधा का। ३ जो उपद्रव न करे।—आमय, १ रोगरहित। स्वस्थ। २ निष्कलङ्क। शुद्ध। २ दोषशून्य। ३ कलङ्क या ऐबों से रहित। ४ पूर्ण। सम्पूर्ण। ५ अचूक। अभ्रान्त।—आमयं,—(न॰)—आमयः, (पु॰) रोग से रहित। भला। चंगा।—आमयः, (पु॰) १ जंगली वकरा। २ शूकर।—आमिष, (वि॰) १ जिसमें माँस न हो। माँस रहित। २ जिसमें मैथुन करने की इच्छा न हो। जो लालची न हो। ३ जिसे पारिश्रमिक या मज़दूरी न मिले।—आय, (वि॰) जिससे कुछ भी लाभ न हो। जिससे कुछ भी आय या आमदनी न हो।—आयास, (वि॰) सरल। सहज।—आयुध, (वि॰) विना हथियार के। खाली हाथ।—आलम्ब, (वि॰) विना सहारे का। निराधार। निराश्रय। स्वावलम्बी। २ मित्रशून्य। एकाकी।—आलोक, (वि॰) जो देख न सके। दृष्टिहीन। प्रकाशशून्य। अन्धकार।—आश, (वि॰) आशारहित।—आशङ्क, (वि॰) निडर। निर्भय।—आशिस, (वि॰) आशीर्वाद या वर रहित। विना किसी इच्छा का। तटस्थ।—आश्रय, (वि॰) निरावलम्ब। निराधार। साहाय्यशून्य। एकाकी।—आस्वाद, (वि॰) जिसमें कुछ भी स्वाद या ज़ायका न हो। सीठा।—आहार, (वि॰) भोजन, (वि॰) विना भोजन का।—आहारः, (पु॰) कड़ाका। लंघन।—इच्छ, (वि॰) विना इच्छा का। जिसका किसी में अनुराग न हो।—इन्द्रिय, (वि॰) १ जिसके शरीर का कोई अँग रहा न हो या वेकाम हो गया हो। २ अङ्गहीन। ३ निर्बल।—इन्धन, (न॰) ईंधन का अभाव।—इति, (वि॰) ऋतु के कष्टों से मुक्त।—ईश्वर, (वि॰) नास्तिक।—ईषं, (न॰) हल।—ईह, (वि॰) १ कामनारहित। इच्छाशून्य। २ अक्रियाशील।—उच्छ्वास, (वि॰) स्वास रहित।—उत्तर, (वि॰) १लाजवाव। २

अपने से श्रेष्ठतर व्यक्ति से रहित ।—उत्सव, (वि०) विना उत्सवों का ।—उत्साह, (वि०) काहिल । सुस्त ।—उत्सुक, (वि०) १ उत्सुकताहीन । २ शान्त ।—उदक, (वि०) जलरहित । —उद्यम, - उद्योग, (वि०) जिसके पास कोई उद्यम न हो । बेकाम । बेकार ।—उद्वेग, (वि०) उद्वेग से रहित निश्चिन्त ।—उपक्रम, (वि०) उपक्रमरहित । आरम्भ शून्य ।—उपद्रव, (वि०) १ आफत विपत्ति से रहित । भाग्यवान् । प्रारब्धी । २ शान्तिप्रिय । सुरक्षित ।—उपाधि, (वि०) ईमानदार ।—उपपत्ति, (वि०) अयोग्य । अनुपयुक्त ।—उपपद, (वि०) विना किसी उपाधि या खिताब का ।—उपप्लव, (वि०) उपद्रव से रहित ।—उपम, (वि०) जिसकी उपमा न हो । उपमा रहित । बेजोड़ ।—उपसर्ग, अपशकुनों से रहित ।—उपाख्य, (वि०) १ जो असली न हो । बनावटी । जिसका अस्तित्व ही न हो (जैसे वन्ध्यापुत्र) २ तुच्छ । ३ अदृश्य ।—उपाय, (वि०) उपायरहित ।—उपेक्ष, (वि०) धोखा या छल से रहित । जो असावधान न हो ।—उष्मन्, (वि०) गर्मी रहित । ठंडा ।—गन्ध, (वि०) जिसमें बू न हो ।—गर्व, (वि०) अहङ्कार शून्य ।—गवाक्ष, (वि०) जिसमें खिड़की या झरोखा न हो ।—गुण, (वि०) १ जिसमें डोरी न हो । २ बुरा । खराब । निकम्मा । ३ गुणशून्य । निरुपाधि । ४ विना नाम का ।—गुणः, (पु०) परमात्मा ।—गृह, (वि०) जिसके घर द्वार न हो ।—गौरव, (वि०) जिस का गौरव न हो ।—ग्रन्थः, (वि०) १ समस्त बंधनों और बाधाओं से रहित । २ गरीब । अकिञ्चन । भिक्षुक । ३ एकाकी । असहाय ।—ग्रन्थिः, (पु०) १ मूर्ख । मूढ़ । २ ज्वारी । २ संसारत्यागी साधु जिसने संसार का मोह त्याग दिया हो और जो भगवान में अनुरागवान हो । परमहंस ।—ग्रन्थिक, (वि०) १ चतुर । चालाक । २ जिसके साथ कोई न हो । एकाकी । ३ त्यक्त । त्यागा हुआ । ४ फलरहित ।—ग्रन्थिकः, (पु०) १ नागा । दिगम्बरी जैन साधु ।—घटम्, (न०) बाज़ार जहाँ बड़ी भीड़ लगी हो । सब के लिये खुला हुआ बाज़ार ।—घृण, (वि०) १ निष्ठुर । संगदिल । बेरहम । २ निर्लज्ज । बेहया ।—जन, (वि०) जो आबाद न हो । सुनसान ।—जनम्, (न०) एकान्त स्थान । बियाबान् ।—जर, (वि०) १ जवान । ताज़ा । २ अविनश्वर । जो नष्ट न हो ।—जरं, (न०) अमृत ।—जरः, (पु०) देवता ।—जल, (वि०) जलरहित । रेगस्तान । २ जिसमें पानी न मिलता हो ।—जलः, (पु०) उजाड़ । रेगस्तान ।—जिह्वः, (पु०) मेंढक । मेघा ।—जीव, (वि०) मरा हुआ । मृत । मुर्दा । —ज्वर, (वि०) जिसको ज्वर न हो ।—दण्ड, (वि०) शूद्र ।—दय, (वि०) १ निष्ठुर । संगदिल । २ क्रोधी । २ अत्यन्तदृढ़ । घनिष्ठ । अत्यधिक । दयं, (अव्यया०) निष्ठुरता से । बेरहमी से ।—दश, (वि०) दस दिन से अधिक का ।—दशन, (वि०) जिसके दाँत न हों । पुपला ।—दुःख, (वि०) पीड़ा रहित । जिससे पीड़ा न हो ।—दोष, (वि०) निरपराधी । त्रुटि रहित ।—द्रव्य, (वि०) ग़रीब । निर्धन । —द्रोह, (वि०) द्रोह या विद्वेष रहित ।—द्वन्द्व, (वि०) १ जिसका कोई द्वन्द्वी न हो । जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वन्द्वों से (जुट्टों से) परे या रहित हो । २ स्वच्छन्द । विना बाधा का । —धन, (वि०) सम्पत्तिहीन । निर्धन । ग़रीब । —धनः, (पु०) बूढ़ा बैल ।—धर्म (वि०) बेईमान । भ्रष्ट ।—धूम, (वि०) धूमरहित । —नर, (वि०) १ जिसको मनुष्यों ने त्याग दिया हो ।—नाथ, (वि०) अनाथ । असहाय । जिसका कोई नाथ न हो ।—निद्र, (वि०) जागता हुआ । जो सोता न हो ।—निमित्त, (पु०) कारण रहित ।—निमेष, (वि०) जो झपके नहीं ।—बन्धु, (वि०) जिसका जाति बिरादरी वाला न हो । मित्रवर्जित ।—बल, (वि०) अशक्त । बलरहित । कमज़ोर ।—बाध, (वि०) बेरोकटोक । एकाकी ।—बुद्धि, (वि०) मूर्ख । बेवकूफ ।—बुष,—बुस्, (वि०) जिसकी भूसी न निकाली गयी हो ।—भय, (वि०) निडर ।

भयरहित। सुरक्षित।—भर, (वि०) १ अत्यधिक उग्र। प्रचण्ड। २ उत्सुक। घनिष्ठ। ३ गम्भीर। ४ परिपूर्ण।—भाग्य (वि०) अभागा। बदक़िस्मत।—भृति, (वि०) जिसको रोज़नदारी यानी मज़दूरी न मिली हो।—मक्षिक, (वि०) मक्खियों से रहित। एकाकी। एकान्त।—मत्सर, (वि०) ईर्ष्यारहित।—मत्स्य, (वि०) मछलियों से शून्य।—मद, (वि०) जो नशे में न हो। जो अभिमानी न हो।—मनुज,—मनुष्य, (वि०) ग़ैरआबाद। जहाँ कोई मनुष्य न रहता हो।—मन्यु, (वि०) सांसारिक सम्बन्धों से मुक्त। निस्स्वार्थी। निरपेक्ष।—मर्याद, (वि०) असीम।—मल, (वि०) १ जिसमें मैल न हो। साफ़। स्वच्छ। २ चमकीला। ३ पापरहित।—मलं, (न०) १ अभ्रक। २ निर्मली। देवता को समर्पित पदार्थ का अवशेष।—मशक, (वि०) मच्छरों से रहित।—मांस, (वि०) माँस से रहित।—मानुष, (वि०) गैरआबाद। उजाड़।—मार्ग, (वि०) पथशून्य।—मुटः, (पु०) १ सूर्य। २ बदमाश। गुंडा।—मुटं, (न०) बड़ा बाज़ार या बड़ी पैंठ।—मूल, (वि०) जड़हीन। २ आधारहीन। ३ मिटाया हुआ।—मेघ, (वि०) विना बादलों का।—मोह, (वि०) मूर्ख। मूढ।—मोह, (वि०) निर्भ्रान्त। अभ्रान्त।—यत्न, (वि०) अक्रियाशील। सुस्त।—यंत्रण (वि०) जिसकी कोई रोकटोक न हो। जो वश में न रह सके। हठी। ज़िद्दी।—यंत्रणम्, (न०) स्वाधीनता। मनमौजीपन।—यशस्क, (वि०) अकीर्तिकर।—यूथ, (वि०) झुंड से छूटा हुआ।—रक्त (=नीरक्त, बे रंग का। फीका।—रज,—रजस्क, (वि०) (=नीरज, नीरजस्क,) १ जिसमें गर्द गुबार न हो। (स्त्री०) स्त्री जो रजस्वला न हो।—रन्ध्र, (=नीरन्ध्र,) (वि०) १ विना छेदों या सूराखों का। २ सघन। घना। ३ मोटा। जाड़ा।—रव, (=नीरव) (वि०) जो शोर न करे। जो कोलाहल न करे।—रस, (=नीरस,) (वि०) १ जिसमें रस न हो। रसहीन। सूखा। शुष्क। २ फीका। जिसमें कोई स्वाद न हो। ३ जिसमें कोई आनन्द न मिले। जिससे मनोरंजन न हो। जैसे नीरस काव्य। ४ अप्रिय। ५ निष्ठुर। वेरहम।—रसः (=नीरसः,) (पु०) अनार।—रसन (वि०) (=नीरसन,) विना कमरबंद का।—रुच, (वि०) (=नीरुच्) मंद। धुंधला जिसमें चमक न हो।—रुज्,—रुज, (=नीरुज्,) (वि०) नीरोग। जो रोगी न हो।—रूप, (=नीरूप,) (वि०) आकारशून्य। जिसकी कोई शक्ल न हो।—रोग, (=नीरोग,) (वि०) स्वस्थ। चंगा। तंदुरुस्त।—लक्षण, (वि०) १ जिसके शरीर में कोई शुभ चिन्ह न हो। २ जिसको कोई पहचान न पावे। ३ तुच्छ। ४ जिसमें कोई धब्बा न हो।—लज्ज, (वि०) बेहया। बेशर्म।—लिङ्ग, (पु०) जिसकी पहचान के लिये कोई चिन्ह न हो।—लेप, (वि०) १ विषयों से अलग रहने वाला। निर्लिप्त। २ जो लीपा पोता न गया हो। ३ पापरहित। कलङ्कशून्य।—लोभ, (वि०) जो लोभी न हो। जो लालची न हो। इच्छा रहित।—लोमन्, (वि०) जिसके बाल न हों।—वंश, (वि०) सन्तानहीन।—वण,—वन, (वि०) जंगल के बाहिर। जहाँ जंगल न हो। खुला हुआ। ऊसर।—वसु, (वि०) निर्धन। ग़रीब।—वात, (वि०) जहाँ पवन न हो। शान्त।—वातः, (पु०) ऐसा स्थान जो पवन के उपद्रवों से रक्षित हो।—वानर, (वि०) जहाँ बंदर न हों।—वायस, (वि०) जहाँ कौए न हों।—विकल्प,—विकल्पक, (वि०) १ जो विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदों से रहित हो। २ जो दृढ़ विचार वाला न हो। ३ जो पारस्परिक सम्बन्ध न रख सके।—विकार, (वि०) १ अपरिवर्तित। जो बदले नहीं। २ जिसका कोई स्वार्थ न हो।—विकास, (वि०) अनखिला हुआ।—विघ्न, (वि०) विना विघ्न बाधा के। विघ्न बाधाओं से मुक्त।—विघ्नम्, (न०) विघ्नों का अभाव।—विचार, (वि०) अविचारी। जो किसी बात पर विचार न करे। अविवेकी।—विचिकित्स, (वि०) वह जो सन्देह या शङ्का न करे।

—विचेष्ट, (वि०) गतिहिन। संज्ञाहीन।—विनोद, (वि०) आमोद प्रमोद से रहित।—विन्ध्या, (वि०) विन्ध्याचल से निकलने वाली एक नदी का नाम।—विमर्श, (वि०) विचार हीन। अविवेकी।—विवर, (वि०) १ जिसमें कोई रन्ध्र या छिद्र न हो। २ जिसमें अन्तर न हो। घनिष्ठ।—विवाद, (वि०) मतभेद का अभाव। ३ सर्वसम्मत।—विवेक, (वि०) मूर्ख। जिसमें अच्छाई बुराई का विचार करने की शक्ति न हो।—विशङ्क, (वि०) निडर। निर्भय।—विशेष, (वि०) वह जो किसी में भेदभाव न करे।—विशेष', (पु०) परब्रह्म। परमात्मा।—विशेषण, (वि०) विना उपाधियों के।—विष, (वि०) विषहीन। जिसमें ज़हर न हो।—विषय, (वि०) १ घर से निकाला हुआ। २ जिसको काम करने के लिये कोई भी स्थान न हो। ३ जिसको विषय (स्त्री मैथुनादि) वासना न हो।—विषाण, (वि०) जिसके सींग न हो।—विहार, (वि०) जिसके लिये आनन्द का अभाव हो।—वीज,—वीज, (वि०) १ वीजरहित। २ नपुंसक। ३ कारणरहित।—वीर, (वि०) १ वीरहीन। २ भीरुता से।—वीरा, (वि०) वह स्त्री जिसका पति और लड़केवाले मर चुके हों।—वीर्य, (वि०) शक्तिहीन। निर्बल। अमानुषिक। नपुंसक।—वृक्ष, (वि०) वृक्षों से रहित।—वृष, (वि०) वैल रहित।—वेग, (वि०) स्थिर। जिसमें वेग या गति न हो।—वेतन, (वि०) अवैतनिक।—वेष्टनम्, (न०) जुलाहे की ढरकी।—वैर, (वि०) शान्तिप्रिय। जिसका कोई शत्रु न हो।—वैरं, (न०) शत्रुता का अभाव।—व्यञ्जन, (वि०) १ सरल। साफ। निष्कपट। २ विना मसालों का।—व्यञ्जने, (अव्यया०) साफ तौर से। सरलता से।—व्यथ, (वि०) १ पीड़ारहित। २ शान्त।—व्यपेक्ष, (वि०) तटस्थ। उदासीन।—व्यलीक, (वि०) १ जो किसी को कष्ट न दे। २ पीड़ा-रहित। ३ कोई भी कार्य हो मन लगा कर या रज़ामंदी से करने वाला। ४ सच्चा। निष्कपट।—व्याघ्र, (वि०) वह स्थान जहाँ चीतों का उत्पात न हो।—व्याज, (वि०) १ ईमानदार। सच्चा। साफ मन का। २ निष्कपट। छलशून्य।—व्यापार, (वि०) जो कहीं नौकर न हो। जिसके पास कोई काम धधा न हो।—व्रण, (वि०) जिसके कोई घाव न हो। चीरफाड़ रहित।—व्रत, (वि०) जो व्रत न रखता हो।—हिमं, (न०) जाड़े का अवसान। हेमन्त ऋतु की समाप्ति।—हति, (वि०) हथियार रहित।—हेतु, (वि०) कारण रहित।—ह्रीक, (वि०) १ निर्लज्ज। वेहया वेशर्म। २ साहसी।

निरत (वि०) १ किसी कार्य में लगा हुआ। तत्पर। लीन। मशगूल। २ प्रसन्न। आनन्दित। ४ बंद।

निरतिः (स्त्री०) १ अत्यन्त रति। अत्यधिक प्रीति। २ लिप्त या लीन होने का भाव।

निरयः (स्त्री०) नरक। दोज़ख़।

निरवहानिका (स्त्री०) } घेरा। बाड़ा। घेरे की
निरवहालिका (स्त्री०) } दीवाल।

निरस (वि०) स्वादहीन। फीका। शुष्क।

निरसः (पु०) १ स्वादहीनता। २ फीकापन। ३ जिसमें रस न हो। शुष्कता। ४ विरक्ति।

निरसन (वि०) [स्त्री०—निरसनी] १ निराकरण। परिहार। २ फैकना। दूर करना। हटाना। ३ वमन करना। कै करना। थूकना।

निरस्त (व० कृ०) १ फैंका हुआ। छोड़ा हुआ। भगाया हुआ। देश निकाला हुआ। २ नष्ट किया हुआ। ३ त्यागा हुआ। अलग किया हुआ। ४ हटाया हुआ। रहित किया हुआ। ५ छोड़ा हुआ। (जैसे तीर) ६ खण्डन किया हुआ। ७ उगला हुआ। थूका हुआ। ८ अस्पष्ट रूप से जल्दी जल्दी वोला हुआ। ९ फाड़ा या चीरा हुआ। १० दवाया हुआ। रोका हुआ। ११ तोड़ा हुआ। (जैसे कोई प्रतिज्ञा)।—भेद, (वि०) समस्त भेदों को दूर किये हुए। समान। एक सा।—राग, (वि०) संसारत्यागी। सांसारिक समस्त वासनाओं को त्यागे हुए।

निराकः (पु०) १ पंचम क्रिया। २ पसीना। ३ पाप का परिणाम।

निराकरणम् (न०) १ छाँटना । अलग करना । २ हटाना । दूर करना । ३ मिटाना । रद्द करना । ४ शमन । निवारण । परिहार । ५ खण्डन । ६ देश निर्वासन । ७ तिरस्कार । मुख्य यज्ञीय कर्मों की अवहेलना । विस्मृति ।

निराकरिष्णु (वि०) १ हटाना । दूर करना । निकाल देना । २ बाधक । रोक टोक करने वाला । ३ किसी को किसी वस्तु से वञ्चित करने वाला ।

निराकुल (वि०) १ परिपूर्ण । भरा हुआ । ढका हुआ । २ पीड़ित ।

निराकृतिः } (स्त्री०) १ निराकरण । परिहार । २ अस्वीकृति । इंकार । रोक टोक । बाधा । ४ विरोध ।
निराक्रिया }

निराग (वि०) राग रहित । अनुराग शून्य ।

निराद्दिष्ट (वि०) कर्ज चुकाया हुआ ।

निरामालुः (पु०) कैथा ।

निरासः (पु०) १ निकास । निराकरण । स्थानान्तर-करण । २ उगलना । ३ खण्डन । ४ प्रतिवाद । विरोध ।

निरिंगिणी, निरिङ्गिणी } (स्त्री०) घूँघट ।
निरिंगिनी, निरिङ्गिनी }

निरीक्षणम् (न०) } १ चितवन । २ दृष्टि । ३ खोज । तलाश । ४ सोच विचार । मान मर्यादा । ५ आशा । उम्मेद । ६ ग्रहों का योग या स्थिति । जन्म काल में ।
निरीक्षा (स्त्री०) }

निरीशं (न०) } हल का फाल ।
निरीषं (न०) }

निरुक्त (वि०) १ प्रकट किया हुआ । कहा हुआ । समझाया हुआ । व्याख्या किया हुआ । २ उच्च-स्वर से । स्पष्ट ।

निरुक्तं (न०) १ व्याख्या । व्युत्पत्ति । २ वेद के छः अंगों में से एक, जिसमें अप्रचलित शब्दों की व्याख्या की गयी है । ३ एक प्रसिद्ध व्याख्या का नाम, जो यास्क द्वारा निघण्टु पर की गयी है ।

निरुक्तिः (स्त्री०) १ निरुक्त की रीति से निर्वचन । किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि अच्छी तरह समझायी गयी हो । २ एक काव्यालङ्कार जिसमें अर्थ तो मनमाना किया जाय, किन्तु हो सयुक्तिक ।

निरुत्सुक (वि०) १ अत्यन्त उत्सुक । २ उदासीन । तटस्थ ।

निरुद्ध (व० कृ०) १ रोका टोका हुआ । बाधा दिया हुआ । काबू में लाया हुआ । वश में किया हुआ । रुका हुआ । बंधा हुआ । २ क़ैद किया हुआ ।—कण्ठ, (वि०) दम घुटा हुआ । - गुदः, (वि०) मलावरोध ।

निरूढ (वि०) १ प्रसिद्ध । विख्यात । प्रचलित । २ अविवाहित ।—लक्षणा, (स्त्री०) लक्षणा विशेष जिसमें गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो अर्थात् वह अर्थ केवल प्रसङ्ग या प्रयोजनवश ही ग्रहण न किया गया हो ।

निरूढः (पु०) व्यापकता ।

निरूढिः (स्त्री०) १ ख्याति । प्रसिद्धि । कीर्ति । २ हेलमेल । परिचय । ३ दृढीकरण । विश्वास-जनक । प्रामाणिक ।

निरूपणं (न०) } १ आकार । शक्ल । सूरत । २ दृष्टि । चितवन । ३ तलाश । खोज । ४ अनुसन्धान । निश्चय । ५ परिभाषा ।
निरूपणा (स्त्री०) }

निरूपित (व० कृ०) १ देखा हुआ । पता लगाया हुआ । चिन्हित । २ नियुक्त किया हुआ । चुना हुआ । पसंद किया हुआ । ३ तौला हुआ । विचारा हुआ । ४ खोजा हुआ । दर्यांफ़्त किया हुआ । निश्चय किया हुआ ।

निरूहः (पु०) १ वस्ति क्रिया । २ तर्क । विवाद । ३ निश्चय । खोज । ४ वाक्य जिसमें कुछ छूटा न हो । पूर्ण वाक्य ।

निर्ऋतिः (स्त्री०) १ नाश । विनाश । २ विपत्ति । ३ शाप । अकोसा । ४ नैर्ऋत कोण की स्वामिनी । ५ मृत्यु ।

निरोधं (न०) } १ रुकावट । बंधन । २ घेरा । घेर लेना । ३ संयम । रोक । दबाना । ४ बाधा । विरोध । ५ चोटिल करना । सज़ा देना । ६ नाश । विनाश । ७ अरुचि । नापसंदगी । ८ हताश । आशा का टूटना ।
निरोध (पु०) }

निर्गः (पु०) देश । प्रान्त । स्थान ।

निर्गंधनं
निर्गन्धनम् } (न०) वध । हत्या ।

निर्गमः पु०) १ फौरन रवानगी । तुरन्त गमन । २ प्रस्थान । अदृश्य होना । ३ द्वार । निकलने का मार्ग ।

निर्गमनम् (न०) निकलने की क्रिया । निकास ।

निर्गुढः (पु०) वृक्ष का कोटर ।

निर्ग्रंथनं
निर्ग्रन्थनम् } (न०) हत्या । वध ।

निर्घटः, निर्ग्रण्टः (पु०)
निर्घटं, निर्ग्रण्टम् (न०) } १ शब्दों और उनके अर्थों की तालिका । २ विषयसूची ।

निर्घर्षणम् (न०) रगड़ ।

निर्घातः (पु०) १ नाश । २ बवण्डर । आँधी का झोका । आँधी । तूफ़ान । ३ हवा की सनसनाहट । ४ भूचाल । ५ वज्रपात । बिजली की कड़क ।

निर्घातनम् (न०) ज़बरदस्ती बाहिर करना । बाहिर निकाल लाना ।

निर्घोषः (पु०) १ शब्द । आवाज़ । २ बड़े ज़ोरों का कोलाहल ।

निर्जयः (पु०)
निर्जितिः (स्त्री०) } पूर्णतया विजय । पूरी जीत ।

निर्झरं (न०)
निर्झरः (पु०) } १ सोता । चश्मा । झरना । जलप्रपात । पहाड़ी नाला । (पु०) १ चोकर जलाने वाला । २ सूर्य का एक घोड़ा । ३ हाथी ।

निर्झरिन् (पु०) पर्वत । पहाड़ ।

निर्झरिणी
निर्झरी } (स्त्री०) नदी । पर्वत से निकला हुआ पानी का झरना ।

निर्णयः (पु०) फैसला ।—न्यायः, (पु०) दण्ड विधान । डिग्री । तजवीज ।

निर्णायक (वि०) निर्णय करने वाला । तै करने वाला । फैसला देने वाला ।

निर्णायनम् (न०) १ निश्चय करना । २ हाथी के कान का बाहिरी भाग विशेष ।

निर्णिक्त (व० कृ०) धुला हुआ । साफ किया हुआ । स्वच्छ किया हुआ ।

निर्णिक्तिः (स्त्री०) १ धुलाई । सफाई । स्वच्छता । २ प्रायश्चित्त ।

निर्णेकः (पु०) १ धुलाई । सफाई । २ स्नान । मार्जन । ३ प्रायश्चित्त ।

निर्णेजकः (पु०) धोबी ।

निर्णेजनम् (न०) १ मार्जन । २ प्रायश्चित (किसी पाप का)

निर्णोदः (पु०) स्थानान्तर करण । देश निकाला ।

निर्दट
निर्दड } (वि०) १ निष्ठुर । नृशंस । २ दूसरों के दोषों पर प्रसन्न होने वाला । ३ डाही । ईर्ष्यालु । ४ बदज़बान । गाली गलौज करने वाला । ५ व्यर्थ । अनावश्यक । ६ उग्र । प्रचण्ड । ७ उन्मत्त । नशे में चूर ।

निर्दरः
निर्दरिः } (पु०) गुफ़ा । गह्वर ।

निर्दलनम् (न०) भग्नकरण । नष्टकरण ।

निर्दहनम् (न०) भस्मकरण । जलाना ।

निर्दातृ (पु०) १ बेकाम के घास फूस को खोदने वाला । २ दानी । ३ किसान । पका अनाज काटने वाला ।

निर्दारित (वि०) १ फटा हुआ । चीरफाड़ किया हुआ । २ खुला हुआ । फाड़ कर खोला हुआ ।

निर्दिग्ध (व० कृ०) १ लेप किया हुआ । (तेल) लगाया हुआ । २ खूब खिलाया पिलाया हुआ । मोटा ताज़ा ।

निर्दिष्ट (व० कृ०) १ जिसका निर्देश हो चुका हो । बतलाया या नियत किया हुआ । २ आज्ञप्त । आज्ञा दिया हुआ । ३ वर्णित । ४ तलाश या दर्याफ़्त किया हुआ । निश्चित किया हुआ । ५ प्रकट किया हुआ ।

निर्देशः (पु०) १ बतलाना । २ आदेश । ३ उपदेश । ४ कथन । प्रकटन । ५ उल्लेख । जिक्र । ६ सामीप्य । नैकट्य । पास ।

निर्धारः (पु०)
निर्धारणम् (न०) } १ निश्चय । निर्णय । २ कितनी ही वस्तुओं में से एक को अलगाना या बतलाना । ३ निश्चय । निर्णय ।

निर्धारित (व० कृ०) निश्चित किया हुआ । जिसका निर्धारण हो चुका हो । ठहराया हुआ ।

निर्धूत (व० कृ०) १ हिलाया हुआ। हटाया हुआ। २ त्यागा हुआ। अस्वीकृत। ३ वञ्चित किया हुआ। ४ बचाया हुआ। ५ खण्डन किया हुआ। ६ नष्ट किया हुआ।

निर्धौत (व० कृ०) १ धोया हुआ। २ चमकाया हुआ। चिकनाया हुआ।

निर्बंधः / निर्बन्धः (पु०) १ ज़िद। हठ। २ कड़ी माँग। आवश्यकता। ३ दुराग्रह। ४ दोषारोपण। ५ झगड़ा। विवाद।

निर्बर्हण (देखो निबर्हण)

निर्भट (वि०) दृढ़। मज़बूत। सख़्त।

निर्भत्सनम् (न०) / निर्भत्सना (स्त्री०) १ धमकी। डाँट डपट। २ कुवाच्य। गाली। कलङ्क। बदनामी। ३ विद्वेष बुद्धि। द्रोह भाव। ४ लाल रंग। लाख।

निर्भेदः (पु०) १ फट पड़ना। विभक्त होना। (बीच से) चिरना। २ चीरना। फाड़ना। ३ स्पष्ट कथन। ४ नदीगर्भ। ५ किसी बात का दृढ़ निश्चय।

निर्मथः (पु०) / निर्मथनं (न०) / निर्मथः—निर्मन्थः (पु०) / निर्मथनम्—निर्मन्थनम् (न०) १रगड़। मंथन। मथने की क्रिया। गड़बड़ करने की क्रिया। २ आग प्रकट करने को या मथने को दो काष्ठों को आपस में रगड़ना।

निर्मथ्य / निर्मन्थ्य (वि०) १ गड़बड़ करने या मथने का। २ रगड़ कर उत्पन्न करने का।

निर्मथ्यम् / निर्मन्थ्यम् (न०) आग पैदा करने के लिये अरणी (काठ की लकड़ियाँ)

निर्माणं (न०) १ नापने की क्रिया। २ नाप। पहुँच। विस्तार। ३ उत्पन्नकरण। बनाने की क्रिया। गढ़ने या ढालने की क्रिया। ४ सृष्टि। ५ शक्ल। आकार। बनावट। ६ इमारत।

निर्माणा (स्त्री०) योग्यता। उपयुक्तता। सुघड़ता।

निर्माल्यम् (न०) १ शुद्धता। स्वच्छता। वेदाग़पन। २ देवता को चढ़ायी हुई वस्तु। देवार्पित वस्तु। ३ चढ़े हुए फूल। देवता पर से उतारे हुए फूल। कुम्हलाये हुए फूल। ४ अवशेष। बचत।

निर्मितिः (स्त्री०) उत्पत्ति। पैदावार। बनावट। कोई भी कारीगरी की वस्तु।

निर्मुक्त (व० कृ०) १ छोड़ा हुआ। मुक्त किया हुआ। आज़ाद किया हुआ। २ सांसारिक मोह ममता से छूटा हुआ। ३ पृथक् किया हुआ।

निर्मुक्तः (पु०) वह साँप जिसने हाल ही में कैंचुली त्यागी हो।

निर्मूलनम् (न०) जड़ से उखाड़ डालना। जड़ से नाश करना।

निर्मृष्ट (व० कृ०) धोया या पोंछा हुआ। रगड़ कर साफ़ किया हुआ।

निर्मोकः (पु०) १ मुक्तकरण। आज़ाद कर देने की क्रिया। २ चमड़ा। चर्म। खाल। कैंचुली। ३ कवच। ४ आकाश। ५ वायुमण्डल।

निर्मोक्षः (पु०) पूर्ण मोक्ष जिसमें एक भी संस्कार न बच रहे।

निर्मोचनम् (न०) मुक्ति। मोक्ष।

निर्याणम् (न०) १ बाहर निकलना। २ यात्रा। रवानगी। प्रस्थान। ३ वह सड़क जो किसी नगर के बाहर की ओर जाती हो। ४ अदृश्य होना। गायब होना। ५ शरीर से आत्मा का निकलना। मृत्यु। ६ मोक्ष। मुक्ति। परमानंद। ७ हाथी के आँख का बाहिरी कोना। ८ पशुओं के पैरों में बाँधने की रस्सी।

निर्यातनम् (न०) बदला चुकाना। (धरोहर का धनी को) पुनः सौंपना। २ ऋण चुकाना। ३ दान। भेंट। ४ प्रतीकार। बदला। वैरनिर्यातन। ५ हत्या। वध। मौत।

निर्यातिः (स्त्री०) १ बहिर्गमन। प्रस्थान। २ मृत्यु।

निर्यामः (पु०) मल्लाह। कर्णधार। नाव खेने वाला।

निर्यासं (न०) / निर्यासः (पु०) १ वृक्षों का चिपचिपा रस। गोंद। राल। २ सार। काढ़ा। क्वाथ। ३ कोई गाढ़ी तरल वस्तु।

निर्यूहः (पु०) १ कलस। छज्जा। गौख। २ मुकुट। कलगी। शिरोभूषण। ३ खुटी। ४ द्वार। फाटक। ५ रस। क्वाथ।

निर्लुंचनम् / निर्लुञ्चनम् (न०) खींच कर उखाड़ लेना।

निर्लुंठनम्
निर्लुण्ठनम् } (न०) १ लूट खसोट । २ चीर-फाड़ ।

निर्लेखनम् (न०) १ खरोचना । (लिखे हुए को) छीलना । २ खरोचने का औज़ार । खरौचा ।

निर्ल्वयनी (स्त्री०) साँप की कैचुल ।

निर्वचनम् (न०) १ कथन । उच्चारण । २ कहनावत । कहावत । लोकोक्ति । ३ शब्दसाधन । ४ शब्द-सूची । विषयसूची ।

निर्वपणम् (न०) १ भेंट करना । २ पिण्डदान । ३ पुरस्कारप्रदान । ४ दान । भेंट ।

निर्वर्णनम् (न०) १ देखना । २ सावधानी से देखना ।

निर्वर्तक (वि०) [स्त्री०—निर्वर्तिका] पूरा करने वाला । पूरा करने वाला ।

निर्वर्तनम् (न०) १ कर्म को पूर्ण करने की क्रिया ।

निर्वहणम् (न०) १ समाप्ति । पूर्णता । २ अन्त को पहुँचाना यानी समाप्त या पूरा करना । ३ नाश । विनाश ।

निर्वाण (व० कृ०) १ फूँक कर बाहिर निकाला हुआ । (दीपक) बुझाया हुआ । २ खोया हुआ । अदृश्य हुआ । ३ मारा हुआ । मृत । ४ जीवन से मुक्त । ५ डूबा हुआ । अस्त हुआ । ६ चुप किया हुआ ।

निर्वाणम् (न०) १ बुझने की क्रिया । २ अन्तर्धान । अदृश्यता । ३ मृत्यु । ४ मोक्ष । ५ बौद्धों की मोक्ष का नाम निर्वाण प्राप्ति है ।

निर्वृत्त (व० कृ०) पूरा किया हुआ । जो पूरा हो गया हो । जिसकी निष्पत्ति हो चुकी हो ।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) निष्पत्ति । समाप्ति ।

निर्वेदः (पु०) १ वैराग्य । २ दुःख । खेद । ३ अनुताप । ४ अपमान ।

निर्वेशः (पु०) १ लाभ । प्राप्ति । २ मज़दूरी । भाड़ा । नौकरी । ३ भोजन । उपभोग । उपयोग । ४ रक़म की वापिसी । ५ प्रायश्चित्त । ६ विवाह । ७ मूर्च्छा । वेहोशी ।

निर्व्यथनम् (न०) १ बड़ा दर्द । २ तीव्र पीड़ा से मुक्ति । ३ रन्ध्र । छेद । सूराख ।

निर्व्यूढ (व० कृ०) १ समाप्त किया हुआ । पूरा किया हुआ । २ बढ़ा हुआ । वृद्धि को प्राप्त । ३ पूर्णतया देखा हुआ । सत्यसिद्ध किया हुआ । सत्यता से अन्ततक पहुँचाया हुआ अर्थात् समाप्त किया हुआ । ४ त्यक्त । छोड़ा हुआ ।

निर्व्यूढिः (स्त्री०) १ समाप्ति । अन्त । २ चोटी । सर्वोच्च स्थल ।

निर्व्यूहः (पु०) १ छोटा बुर्ज़ । २ शिरस्त्राण । कलगी । ३ द्वार । फाटक । ४ खूँटी । ब्रैकट । ५ क्काथ । काढ़ा ।

निर्हरणम् (न०) १ शव को जलाने के लिये ले जाना । २ शव को जलाने के लिये चिता पर रखना । ३ लेजाना । निकाल लाना । खींच कर निकाल लेना । हटाना । ४ जड़ से उखाड़ डालना ।

निर्हादः (पु०) मल । विष्ठा ।

निर्हार (पु०) १ (तीर के) निकालने की क्रिया । ३ मलमूत्रादि का त्यागना । छोड़ना । ६ इच्छानुसार लगाना । ७ निज की सम्पत्ति या धन दौलत का सञ्चय करना ।

निर्हारिन् (वि०) १ (शव को जलाने के लिये) ले जाने वाला । २ फैलाने वाला । प्रचार करने वाला । ३ सुगन्ध वस्तु ।

निर्हृतिः (स्त्री०) हटाना । रास्ता साफ़ करना ।

निर्ह्रादः (पु०) शब्द ।

निलयः (पु०) १ छिपने का स्थान । जानवरों का बिल या भीटा । चिड़ियों का घोंसला । २ आवसस्थान । घर । गृह ।

निलयनम् (न०) १ उतरना । किसी स्थान में बस जाना । २ आवासस्थान । घर ।

निलिंपः
निलिम्पः } (पु०) १ देवता । २ मरुतों का दल । —निर्झरी, (स्त्री०) आकाशगंगा ।

निलिंपा, निलिम्पा
निलिंपिका, निलिम्पिका } (स्त्री०) गौ ।

निलीन (व० कृ०) १ पिघला हुआ । २ बंद या लपेटा हुआ । छिपा हुआ । ३ घिरा हुआ । ४ नष्ट किया हुआ । नाश किया हुआ । ५ बदला हुआ ।

निवचने (अव्य०) ज़बानबंद करना । न बोलना ।

निवपनम् (न०) १बखेरना। उडेलना। डालना। २ बोना। ३ पितरों के नाम पर किसी वस्तु को देना।

निवरा (स्त्री०) कारी कन्या। अविवाहिता स्त्री।

निवर्तक (वि०) १ लौटाने वाला। वापिस लाने वाला। २ बंद करने वाला। पकड़ने वाला। ३ मिटा देने वाला। निकाल देने वाला। हटा देने वाला। ४ लौटा कर लाने वाला।

निवर्तन (वि०) १लौटाने वाला। २ पीछे हटाने वाला। बंद करने वाला।

निवर्तनम् (न०) १ वापिसी। २ बंदी। ३ विरक्ति। ४ अकर्मण्यता। ५ ला कर पीछे देने की या लौटाने की क्रिया। ६ पश्चात्ताप। ७ उन्नति करने की अभिलाषा। ८ सौ वर्ग गज भूमि। अथवा २० बाँस लंबी जगह।

निवसतिः (स्त्री०) घर। मकान। डेरा। रहाइस।

निवसथः (पु०) ग्राम। गाँव।

निवसनम् (न०) १ घर। मकान। डेरा। २ वस्त्र। भीतर पहिनने का कपडा।

निवहः (पु०) १ समूह। समुदाय। राशि। ढेर। २ सात पवनों में से एक पवन का नाम।

निवात (वि०) १ वह स्थान जहाँ पवन न हो। २ शान्त। अवाध। ३ सुरक्षित। ४ कवच धारण किये हुए।

निवातं (न०) १ वह स्थान जो पवन से रक्षित हो। २ जहाँ पवन न हो। ३ सुरक्षित स्थान। ४ सुदृढ़ कवच।

निवातः (पु०) १ आश्रयस्थल। आश्रम। २ अभेद्य कवच।

निवापः (पु०) १ बीज। दाना। अनाज जो बीज के काम में आवे। २ पितरों के उद्देश्य से या उनके नाम पर किसी वस्तु का दान। श्राद्ध में तर्पण-क्रिया। ३ भेंट। नज़र।

निवारः (पु०), निवारणम् (न०) १ रोक। बचाव। हटाने या रोकने की क्रिया। २ वर्जन। निषेधकरण। ३ बाधा। रुकावट।

निवासः (पु०) १ रहन। रहाइस। २ घर। डेरा। विश्राम-स्थल। ३ रात बिताना। ४ पोशाक का कोई वस्त्र।

निवासनम् (न०) १ आवसस्थल। २ टिकाव। ३ समययापन।

निवासिन् (वि०) १ रहने वाला। निवासी। वासी। २ वस्त्र पहनने वाला। वस्त्र धारण करने वाला। (पु०) ३ वाशिन्दा। रहने वाला।

निविड, निविड (वि०) १ घना। घनघोर। २ गहरा। ३ दृढ। अभेद्य। ४ मोटा। बडा। ६ चपटी या टेढ़ी नाक का।

निविरीस (वि०) १ घना। सघन। मोटा। जाडा। २ टेढ़ी नाक वाला।

निर्विशेष (वि०) अभिन्न। एकसा। समान। सदृश।

निर्विशेषः (पु०) भिन्नता का अभाव। असमानता रहित।

निविष्ट (व० कृ०) १ बैठा हुआ। स्थित। ठहरा हुआ। २ जो एकाग्रचित्त किये हो। एकाग्र। ३ लपेटा हुआ। ४ घुसा या घुसाया हुआ। ५ बाँधा हुआ। ६ दीक्षा दिया हुआ। ७ सुव्यवस्थित। क्रम में रखा हुआ।

निवीत (न०) १ जनेऊ को गले में माला की तरह डालना। २ इस प्रकार पहना हुआ जनेऊ।

निवीतं (न०), निवीतः (पु०) घूंघट। बुरका।

निवृत (व० कृ०) घेरा हुआ। लपेटा हुआ।

निवृतं (न०), निवृतः (पु०) घूँघट। बुरका। चादर। पिछौरा।

निवृतिः (स्त्री०) ओढ़नी। चादर।

निवृत्त (व० कृ०) १ लौटा हुआ। वापिस आया हुआ। २ गया हुआ। प्रस्थान किये हुए। ३ रुका हुआ। बंद किया हुआ। ४ विरक्त। ५ असदाचरण के लिये पश्चात्ताप किये हुए। ६ समाप्त किया हुआ।—आत्मन्, (पु०) १ ऋषि। २ विष्णु।—कारण, (वि०) बिना किसी अन्य हेतु या उद्देश्य के।—कारणः, (पु०) धर्मात्मा मनुष्य। वह मनुष्य जिसमें साँसारिक वासनाएं न रह गयी हों।—मांस, (वि०) जिसने मांस खाना त्याग दिया हो।—राग, (वि०) जितेन्द्रिय। जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।—वृत्ति, (वि०) किसी पेशे को त्यागना।—हृदय, (वि०) वह जो अपने

मन में पश्चात्ताप करता हो। मन में पछताने वाला।

निवृत्तं (न०) वापिसी।

निवृत्तिः (स्त्री०) १ वापिसी। २ अन्तर्द्धान। अवसान। समाप्ति। ३ कर्मत्याग। विरक्ति। ४वैराग्य। ५ त्याग। ६ शान्ति। सांसारिक झंझटों से उपराम। ७ आराम। विश्राम। ८ परमानन्द। ९ सन्यास। १० रोक।

निवेदनम् (न०) १ घोषणा। विज्ञप्ति। सूचना। वर्णन। २ सौंपना। हवाले करना। ३ उत्सर्ग करना। ४ प्रतिनिधि। ५ भेंट।

निवेद्यं (न०) किसी देवमूर्ति के लिये भोग। नैवेद्य।

निवेशः (पु०) १ प्रवेश। द्वार। २ शिविर। डेरा। ३ पडाव। ४ घर। मकान। घेरा। ५ धरोहर। सपुर्दगी। ७ विवाह। ८ प्रतिलिपि। अङ्कन। नक्श। ९ सैनिक छावनी। १० भूषण। सजावट।

निवेशनम् (न०) १ प्रवेश। द्वार। २ पडाव। डेरा। ३ विवाह। ४ लिखापढी। ५ घर। मकान। ६ तंबू। ७ कस्बा या नगर। ८ घोंसला।

निवेष्टः (पु०) चादर या वेठन।

निवेष्टनम् (न०) चादर या वेठन।

निश् (स्त्री०) १ रात। २ हल्दी।

निशमनं (न०) १ चितवन। दृष्टि। २ दृश्य। ३ श्रवण। ४ जानकारी।

निशरणं, निशारणम् (न०) वध। हत्या।

निशा (स्त्री०) १ रात। २ हल्दी।—अटः,—अटनः, (पु०) १ उल्लू। २ राक्षस। भूत। दानव।—अतिक्रमः,—अत्ययः,—अन्तः,—अवसानं, (पु०) १ रात का बीत जाना। २ प्रातःकाल।—अन्ध, (वि०) जो रात को अँधा हो जाय।—अधीशः,—ईशः,—नाथः—पतिः,—मणिः,—रत्नं, (न०) चन्द्रमा।—अर्धकालः, (पु०) रात्रि का प्रथम भाग।—आख्या,—आह्वा, (स्त्री०) हल्दी।—आदिः, (पु०) सन्ध्याकाल। सूर्यास्त के बाद का समय। उत्सर्गः, (पु०) रात्रि का अवसान। प्रातःकाल।—करः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ मुर्गा ३ कपूर।—गृहं, (न०) सोने का कमरा।—चर, (वि०) [स्त्री०—चरा,—चरी] रात को इधर उधर घूमने वाला।—चरः, (पु०) १ निशाचर। राक्षस। दुष्टात्मा। २ शिव जी की उपाधि। ३ गीदड़। शृगाल। ४ उल्लू। ५ सर्प। ६ चक्रवाक। ७ चोर।—चरपतिः, (पु०) १ शिव। २ रावण।—चरी, (स्त्री०) १ राक्षसी। २ वह स्त्री जो पूर्व निश्चय के अनुसार रात में अपने प्रेमी से मिलने जाय। ३ वेश्या। कुलटा स्त्री।—चर्मन्, (पु०) अँधकार।—जलं, (न०) ओस। कुहरा।—दर्शिन्, (पु०) उल्लू।—निशं, प्रतिरात। सदैव। पुष्पं, (न०) १ कमोदनी जो रात को खिलती या फूलती हो। २ ओस। कुहरा। कुहासा।—मुखं, (न०) रात का आरम्भ।—मृगः, (पु०) शृगाल। गीदड़।—वनः, (पु०) सन। शण।—विहारः, (पु०) राक्षस। दानव।—वेदिन्, (पु०) मुर्गा।—हसः, (पु०) कमोदिनी।

निशात (व० कृ०) १ पैनाया हुआ। तीक्ष्ण। २ चिकनाया हुआ। वारनिस किया हुआ। चमकीला।

निशानं (न०) तीक्ष्णीकरण। तेज़करना। शान रखना। बाढ़ रखना।

निशांत, निशान्त (व० कृ०) नीरव। शान्त। चुपचाप।

निशांतम्, निशान्तम् (न०) मकान। घर। डेरा। बासा।

निशामः (पु०) देखना। पहचानना। अवलोकन करना।

निशामनम् (न०) १ चितवन। अवलोकन। २ दृश्य। ३ श्रवण करना। ४ वार वार अवलोकन। ५ परछाँही। प्रतिविम्ब।

निशित (वि०) १ तेज़। शान पर चढ़ा हुआ। २ ठहराव किया हुआ।

निशीथः (पु०) १ अर्धरात्रि। आधीरात। २ सोने का समय। रात।

निशीथिनि, निशीथ्या (स्त्री०) रात।

निशुंभः } (पु०) १ हत्या। वध। २ मग्नकरण।
निशुम्भः } २ झुकाने (धनुष को) की क्रिया। ३ एक दैत्य का नाम जिसे दुर्गा देवी ने वध किया था।—मथनी, (स्त्री०)—मर्दनी, (स्त्री०) दुर्गा देवी की उपाधि।

निशुंभनम् }
निशुम्भनम् } (न०) वध। हत्या।

निश्चयः (पु०) १ अनुसन्धान। खोज। २ निश्चित। सम्मति। दृढ़ विश्वास। ३ दृढ़ सङ्कल्प। ४ यकीन। विश्वास। ५ पूरा इरादा। पक्का विचार।

निश्चल (वि०) १ अचल। स्थिर। अटल। २ जो तनक भी न हिले डुले। २ अपरिवर्तनीय जो कभी बदले नहीं।—अंग, (वि०) मज़बूत शरीर।—अंगः, (पु०) १ सारस विशेष। २ चट्टान या पर्वत।

निश्चला (स्त्री०) पृथिवी।

निश्चायक (वि०) वह जो किसी बात का निर्णय या निश्चय करता हो। निर्णायक।

निश्चारकम् (न०) १ प्रवाहिका नामक रोग। यह अतिसार का एक भेद है। २ वायु। हवा। ३ हठ। मनमौजीपना।

निश्चित (व० कृ०) निर्णीत। तैशुदा।

निश्चितं (अव्यया०) दृढ़। पक्का। जिसमें कोई फेर-फार न हो।

निश्चितिः (स्त्री०) १ खोज। अनुसन्धान। निर्णय। २ सङ्कल्प। पक्का विचार।

निश्रमः (पु०) १ अध्यवसाय। किसी कार्य को करते करते न घबड़ाना या ऊबना।

निश्रयणी }
निश्रेणि } (स्त्री०) सीढ़ी। नसैनी
निश्रेणी }

निश्वासः (पु०) स्वाँस लेना। आह भरना।

निषंगः } (पु०) १ आलिङ्गन। २ ऐक्य। मेल। ३
निषङ्गः } तरकस। तूणीर।

निषंगथिः } (पु०) १ आलिङ्गन। २ धनुर्धर। तीरं-
निषङ्गथिः } दाज़। ३ सारथी। ४ रथ।

निषंगिन् } (वि०) १ आलिङ्गन करने वाला। २ तर-
निषङ्गिन् } कस रखने वाला।—(पु०) १ तीरन्दाज़। धनुर्धर। २ तूणीर। तरकस। ३ तलवार धारी।

निषण्ण (व० कृ०) १ बैठा हुआ। आराम करता हुआ। सहारा लिये हुए। २ जिसको सहारा मिला हुआ हो। ३ प्रस्थानित। गमन किया हुआ। ४ उदास। पीड़ित। नीची गर्दन किये हुए।

निषण्णकम् (न०) बैठक। बैठकी। आसन।

निषद्या (स्त्री०) १ छोटी खाट। २ व्यापारी की दूकान या गद्दी। ३ मंडी। हाट। बाज़ार।

निषद्वरः (पु०) १ कीचड़। २ कामदेव।

निषद्वरी (स्त्री०) रात्रि।

निषधः (पु० बहु०) १ देश विशेष और वहाँ के अधिवासी जहाँ राजानल राज्य किया करते थे। २ निषध देश का राजा ३ एक पर्वत का नाम।

निषादः (पु०) १ भारतवर्ष की एक अति प्राचीन अनार्य जाति। इस जाति के लोगों ही में चिड़ी-मार माहीगीर आदि निन्दित कर्म करने वाले हुआ करते हैं। २ वर्णसङ्कर जाति विशेष। चाण्डाल। विशेष कर ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न सन्तति। ३ सङ्गीत के सप्तस्वरों में अन्तिम और ऊँचा स्वर। इसका सरगम में संक्षिप्त रूप "नि" है।

निषादित (वि०) १ बैठाया हुआ। २ पीड़ित। सन्तप्त।

निषादिन् (व० कृ०) नीचे बैठा हुआ या लेटा हुआ। (पु०) महावत।

निषिद्ध (वि०) वर्जित। मना किया हुआ।

निषिद्धिः (स्त्री०) निषेध। मनाई।

निषूदनं (न०) वध। हत्या।

निषूदनः (पु०) वध करने वाला।

निषेकः (पु०) १ छिड़काव। बुरकाव। २ चुआव। झराव। चूते हुए तेल की एक बूंद। ४ बहाव। ढरकाव। रिसाव। ५ वीर्यपात। ५ सिञ्चन। आबपाशी। ६ धोने के लिये जल। ७ वीर्यपात सम्बन्धी अपवित्रता। ८ मैला पानी।

निषेधः (पु०) १ वर्जन। मनाई। रोक। २ अस्वी-कृति। इंकार। ३ निषेधवाची नियम। ४ नियम का अपवाद।

निषेवक (वि०) १ अभ्यास करने वाला। अनुसरण करने वाला। भक्त। अनुरागी। २ रहने वाला।

वास करने वाला । ३ उपभोग करने वाला । मज़ा लूटने वाला ।

निषेवणम् (न०) } १ सेवा । चाकरी । २ पूजा ।
निषेवा (स्त्री०) } ३ अभ्यास । अभिनय । ४ अनुराग । आसक्ति । ५ निवास । ६ परिचय । उपयोग ।

निष्क् (धा० आत्म०) [निष्कयते] १ तौलना । नापना ।

निष्कं (न०) } १ सोने का सिक्का जो एक कर्ष या
निष्कः (पु०) } १६ माशे का होता है । २ सोने की तौल विशेष । ३ कंठा या हार जो सुवर्ण का बना हुआ हो । ४ सुवर्ण । (पु०) चाण्डाल ।

निष्कर्षः (पु०) १ निचोड़ । सार । सारांश । २ नाप । ४ निश्चय ।

निष्कर्षणम् (न०) १ खिंचाव । खींच कर निकालना । २ (नतीजा) निकालना ।

निष्कालनम् (न०) १ (पशुओं को) हँका देना । २ मरण ।

निष्कासः } (पु०) १ बाहिर निकालने का रास्ता ।
निष्काशः } २ बरसाती । गृहद्वार के आगे पटा हुआ या छायादार स्थान । ३ प्रभात । ४ अन्तर्धाना ।

निष्कासित (व० कृ०) १ निकाला हुआ । बाहिर किया हुआ । २ रखा हुआ । स्थापित । जमा कराया हुआ । ४ नियत किया हुआ । मुकर्रर किया हुआ । ५ खोला हुआ । फूला हुआ । बढ़ाया हुआ । ६ भर्त्सना किया हुआ । फटकारा हुआ । गरियाया हुआ ।

निष्कासिनी (स्त्री०) चाकरानी जो अपने मालिक के काबू मे न हो ।

निष्कुटः (पु०) १ नज़रबाग । पाईं बाग । घर के समीप का बाग । २ खेत । ३ जनानखाना । रनवास । ४ द्वार । ५ वृक्ष का कोटर ।

निष्कुटि } (स्त्री०) बड़ी इलायची ।
निष्कुटी }

निष्कुषित (व० कृ०) १ फटा हुआ । बलपूर्वक खींच कर निकाला हुआ । २ बाहिर किया हुआ ।

निष्कुहः (पु०) वृक्ष कोटर ।

निष्कृत (व० कृ०) १ मुक्त । छूटा हुआ । स्वतंत्र । २ निश्चित । ३ हटाया हुआ । ४ क्षमा किया हुआ ।

निष्कृतं (न०) १ प्रायश्चित्त ।

निष्कृतिः (स्त्री०) १ प्रायश्चित्त । २ छुटकारा । उपकार या ऋण से उद्धार । ३ स्थानान्तर-करण । ४ नीरोगता प्राप्ति । आराम होना । ५ बचाव । ६ असावधानी । ७ बुरा चाल चलन । बदमाशी । गुँडापन ।

निष्कृष्ट (व० कृ०) १ निकाला गया । खींचा गया । २ सारांश । निचोड़ ।

निष्कोषः (पु०) } १ चीरना । निकालना । भीतर
निष्कोषणम् (न०) } से निकालना । खींच कर निकालना । २ भूंसी या चोकर अलगाना ।

निष्कोषणकम् (न०) दाँत साफ करने का तिनका या खरका ।

निष्क्रमः (पु०) १ निष्क्रमण की रीति । बाहिर निकलना । २ वैदिक हिन्दुओं में बच्चे का एक संस्कार । इसमें बालक जब चार मास का होता है तब उसे बाहिर लाकर सूर्य का दर्शन कराते हैं । ३ जाति-भ्रशता । पतित होना । ४ मन की वृत्ति ।

निष्क्रमणम् (न०) बाहर निकलना । देखो निष्क्रमः ।

निष्क्रमणिका (स्त्री०) देखो 'निष्क्रमः' ।

निष्क्रयः (पु०) १ छुटकारा । उद्धार । वह द्रव्य जो छुड़ाने के हेतु दिया जाय । २ पुरस्कार । इनाम । ३ भाड़ा । उजरत । मज़दूरी । ४ वापिसी । मुक्ति । ५ बदला । विनिमय ।

निष्क्रयणम् (न०) छुटकारा । उद्धार । वह द्रव्य जो छुड़ाने के हेतु दिया जाय ।

निष्क्राथः (पु०) १ काढ़ा । २ रसा । झोर । शोरुवा । वह पानी जिसमे मांस राँधा गया हो ।

निष्टपनम् (न०) जलाना ।

निष्ठ (वि०) १ स्थित । ठहरा हुआ । २ तत्पर । लगा हुआ । ३ जिसमें किसी के प्रति भक्ति या श्रद्धा हो । ४ पटु । निपुण । ५ विश्वासी ।

निष्ठा (स्त्री०) १ स्थिति । प्रतिष्ठा । ठहराव । २ भक्ति । श्रद्धा । प्रगाढ़ अनुराग । ३ विश्वास । पूज्य बुद्धि । दृढ़ अनुरक्ति । ४ उत्कृष्टता । निपु-

णता। योग्यता। सर्वाङ्गपूर्णता। ५ समाप्ति। ६ किसी ड्रामा या नाटक का दुःखान्त। ७ नाश। मृत्यु। किसी निश्चित समय पर इस संसार से अन्तर्धान होना। ८ निश्चय। निश्चयात्मक ज्ञान। ९ याचना। १० कष्ट। पीड़ा। सन्ताप। चिन्ता।

निष्ठानम् (न०) चटनी। मसाला।

निष्ठीवं (न०)
निष्ठीवः (पु०)
निष्ठेवः (पु०)
निष्ठेवं (न०)
निष्ठीवनम् (न०)
निष्ठेवनम् (न०)
निष्ठीवितं (न०) } १ थूक। २ एक दवा जिसके सेवन से रोगी का कफ निकलने लगता है।

निष्ठुर (वि०) १ कठिन। कड़ा। सख्त। २ तीव्र। तीक्ष्ण। उग्र। ३ नृशंस। कड़े जी का। सगदिल। ४ वेलगाम। निर्लज्ज। बड़बोला।

निष्ठ्यूत (व० कृ०) थूका हुआ। उगला हुआ। फैंका हुआ।

निष्ठ्यूतिः (स्त्री०) थूक। खकार।

निष्ण
निष्णात } (वि०) १ कुशल। निपुण। पटु। होशियार। विशेषज्ञ। किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता या जानकार। विज्ञ। पारङ्गत। २ सुचारु रूप से सम्पन्न किया हुआ। ३ श्रेष्ठतर।

निष्पक्व (वि०) १ काढ़ा निकाला हुआ। औटाया हुआ। उबाला हुआ। भली भाँति राँधा हुआ।

निष्पतनं (न०) १ झपट कर निकलना। शीघ्र बाहिर आना।

निष्पत्तिः (स्त्री०) १ जन्म। पैदावार। २ पक्कावस्था। परिपाक। ३ समाप्ति। अन्त। ४निपटेरा।

निष्पन्न (व० कृ०) १ उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ। निकला हुआ। २ पूर्ण। समाप्त। सिद्ध। ३ तत्पर।

निष्पवनम् (न०) फटकना।

निष्पादनम् (न०) १ पूर्णता। समाप्ति। सिद्धि। २ निष्पत्ति करना। सम्पादन करना। पूर्ण करना।

निष्पावः (पु०) १ फटक कर अनाज को साफ करना। २ सूप से निकली हुई हवा। ३ पवन।

निष्पीडितः (व० कृ०) निचोड़ा हुआ। दो को एकत्र कर दवाया हुआ।

निष्पेषः (पु०)
निष्पेषणम् (न०) } मिलाकर रगड़ना। पीसना। कूटना। कुचलना। चूर्ण करना।

निष्प्रवाणम्
निष्प्रवाणि } (न०) कोरा वस्त्र।

निस् (अव्यया०) निषेध। सफलता। निश्चय। पूर्णता। उपभोग। तरण। भग्न करण। बाहिर। दूर। नहीं। विना। रहित। [समासों में निस् के 'स्' का 'र' हो जाता है।—कण्टक, (=निष्कण्टक (वि०) १ काँटों से रहित। २ शत्रुओं से शून्य। ३ भय से रहित।—कन्द, (=निष्कन्द) (वि०) कंद से रहित।—कपट, (= निष्कपट,) (वि०) कपट या छल से रहित।—कम्प, (= निष्कम्प) (वि०) गतिहीन। स्थिर। दृढ़। अटल। अचल।—करुण, (= निष्करुण) (वि०) करुणाशून्य। निष्ठुर। क्रूर।—कल, (= निष्कल,) (वि०) १ विना हिस्सों का। समूचा। २ ह्स्वाकार। छोटा किया हुआ। ३ नपुंसक। वाझ। ४अंगभङ्ग किया हुआ। विकलाङ्ग। —कलः (= निष्कलः) (पु०) १ आधार। २ ब्रह्म का नाम।—कला, (स्त्री०)—कली, (स्त्री०) वूढ़ी औरत जिसके बालबच्चे होने की सम्भावना न रही हो अथवा जिसका रजस्वला धर्म से होना बंद हो गया हो।—कलङ्क, (= निष्कलङ्क) (वि०) निर्दोष। कलङ्क से रहित।—कषाय, (= निष्कषाय) (वि०) १ मैल से रहित। साफ। २ दुष्ट वासनाओं से शून्य। —काम, (= निष्काम) (वि०) कामनाओं या इच्छाओं से रहित। २ समस्त सांसारिक वासनाओं से रहित।—कामं, (= निष्कामम्) (अव्यया०) वेमर्ज़ी। अनिच्छापूर्वक।—कारण, (=निष्कारण) (वि०) १ अनावश्यक। २ निस्स्वार्थभाव से। स्वार्थ से रहित। ३ निराधार।—कालकः, (= निष्कालकः) (पु०) वह प्रायश्चित्ती जिसका मुण्डन हुआ हो। और जो शरीर में घी लगाये हो।—कालिक, (= निष्कालिक) (वि०) जिसका जीवन काल समाप्त होने पर हो। जिसके जीवन के दिन इने गिने रह गये हों। अजेय। अजय्य।—किञ्चन,

(= निष्किञ्चन) (वि०) जिसके पास एक पाई भी न हो। धनहीन। निर्धन।—कुल, (= निष्कुल,) (वि०) जिसके कुल में कोई न रह गया हो।—कुलीन, (= निष्कुलीन,) (वि०) नीच।—कूट, (= निष्कूट,) (वि०) जो कपटी न हो। ईमानदार। सच्चा।—कूप, (= निष्कूप) (वि०) निष्ठुर। क्रूर। बेरहम।—कैवल्य, (= निष्कैवल्य) (वि०) १ नितान्त। निपट। बिल्कुल। २ मोक्ष हीन।—क्रिय, (= निष्क्रिय) (वि०) १ निश्चेष्ट। बेकार। कुछ न करने वाला।—क्षत्र (= निःक्षत्र)—क्षत्रिय (= निःक्षत्रिय) (वि०) क्षत्रिय जाति से रहित या शून्य।—क्षेपः, (= निःक्षेप,) (पु०) १ फेंकने या डालने की क्रिया का भाव-त्याग। २ धरोहर। अमानत। थाती।—चक्षुस्, (= निश्चक्षुस्) (वि०) अंधा। नेत्रहीन।—चत्वारिंश (= निश्चत्वारिंश) (वि०) चालीस के ऊपर।—चिन्त, (= निश्चिन्त) १ चिन्ता से रहित। बेफिक्र। २ अविवेकी। विचार-हीन।—चेतन, (= निश्चेतन) मूर्छित। बे-होश।—चेतस्, (= निश्चेतस्) (वि०) वह जिसके होश हवास दुरुस्त न हों।—चेष्ट, (= निःचेष्ट, (वि०) गतिहीन। शक्तिहीन।—छन्दस्, (= निश्छन्दस्) (वि०) वेदों का अध्ययन न करने वाला।—छिद्र, (= निश्छिद्र) १ बिना किसी दोष या त्रुटि का। २ बिना छेदों का। ३ अबाधित। बेरोक टोक। बिना चोटफेंट का।—तन्तु, (वि०) सन्तानहीन।—तन्द्र, (वि०) जो काहिल या सुस्त न हो। ताज़ा। तंदुरुस्त। भला चंगा।—तमस्क,—तिमिर, (वि०) १ अंधकारशून्य। प्रकाश। २ पाप या दुराचरण से रहित।—तर्क्य, (वि०) विचार से परे।—तल, (वि०) १ गोल। मण्डलाकार या गोलाकार। २ गतिशील। कम्पित। ३ जिसमें तली न हो।—तुष, (वि०) जिसमें भूसी न हो। २ साफ किया हुआ। सरल किया हुआ।—तेजस् (वि०) १ अग्निहीन। उष्णताशून्य। नपुंसक। २ सुस्त। काहिल। एहदी। ३ धुंधला। अस्पष्ट।—त्रप, (वि०) बेहया। निर्लज्ज।—त्रिंश (वि०) १ तीस से ऊपर। २ बेरहम। नृशंस। क्रूर।—त्रिंशः, (पु०) तलवार।—त्रैगुण्य, (वि०) सत्व, रजस् और तमस् से रहित।—पङ्क, (= निष्पङ्क,) (वि०) जिसमें कीचड़ आदि न लगा हो। स्वच्छ। निर्मल। साफ। सुथरा।—पताक, (= निष्पताक,) (वि०) जिसके पास झंडा झंडी न हो।—पति,-सुता, (= निष्पतिसुता) (वि०) वह स्त्री जिसका न पति हो न पुत्र हो।—पत्र, (=निष्पत्र) (वि०) १पत्रों से रहित। २ पररहित। जिसके पंख न हों।—पद, (=निष्पद) (वि०) बिना पैरों का।—पदं, (न०) यान जो बिना पहियों के चले।—परिकर, (= निष्परिकर) (वि०) बिना तैयारी के। बिना सरंजाम के।—परिग्रह (= निष्परिग्रह) (वि०) जिसके पास कुछ भी सम्पत्ति न हो।—परिग्रहः (पु०) संन्यासी जिसके वंश में कोई न रह गया हो।—परिच्छद, (= निष्परिच्छद) (वि०) जिसके पिछलगुए न हों। जिसके अनुचर न हों।—परीक्ष, (= निष्परीक्ष) (वि०) जो भलीभाँति परी-क्षित न किया गया हो। जिसकी अच्छी तरह से जाँच पड़ताल न की गयी हो।—परीहार, (= निष्परीहार) (वि०) जो चेतावनी की पर-वाह न करे।—पर्यन्त, (= निष्पर्यन्त) (वि०)—पार, (= निष्पार) (वि०) असीम। सीमारहित। जिसकी हद्द न हो। बेहद।—पाप, (= निष्पाप) (वि०) पापशून्य। निरपराध। साफ। शुद्ध।—पुत्र (= निष्पुत्र) (वि०) सन्तानहीन।—पुरुष (= निष्पुरुष) (वि०) उजाड़। १ बेआबाद। २ पुत्रसन्तान रहित। ३ पुल्लिङ्ग नहीं; स्त्रीलिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग।—पुरुषः (पु०) १ हिजड़ा। जनाना। ३ भीरु। डरपोंक।—पुलाक, (= निष्पुलाक) (वि०) भूसी निकाला हुआ। बिना भूसी का।—पौरुष, (= निष्पौरुष) (वि०) अमानुषिक।—प्रकम्प, (= निष्प्रकम्प) (वि०) दृढ़। अटल। गतिहीन।—प्रकारक, (= निष्प्रका-

रक) (वि०) विवरण रहित । बिना शर्त या कैद के ।—प्रकाश, (= निष्प्रकाश) (वि०) धुंधला । साफ़ नहीं । अंधकारमय ।—प्रचार, (= निष्प्रचार) (वि०) १ न हिलने डुलने वाला । एक स्थान पर रहने वाला । २ एकाग्र ।—प्रतिकार, —प्रतीकार, (= निष्प्रति (ती) कार)—प्रतिक्रिय. (वि०) १ असाध्य । २अबाधित । बेरोक टोक ।—प्रतिघ, (= निष्प्रतिघ) (वि०) बेरोकटोक । अबाधित ।—प्रतिद्वन्द्व, (= निष्प्रतिद्वन्द्व) (वि०) १ अजात शत्रु । जिसका कोई विरोधी न हो । २ बेजोड़ ।—प्रतिभ, (= निष्प्रतिभ) (वि०) १ प्रतिभाहीन । चमक जिसमें न हो । २ जिसके प्रतिभा का अभाव हो । जो हाज़िरजवाब या प्रत्युत्पन्नमति न हो । कुंद ज़हन । मूढ़ । ३ विरक्त । उदासीन । —प्रतिभान, (= निष्प्रतिभान) (वि०) १ भीरु । डरपोंक ।—प्रतीप, (= निष्प्रतीप) (वि०) सामने देखने वाला । पीछे न मुड़ने वाला ।—प्रत्यूह, (= निष्प्रत्यूह) (वि०) अबाधित । बेरोकटोक ।—प्रपञ्च, (=निष्प्रपञ्च) (वि०) जो प्रपञ्ची या छली न हो । ईमानदार । —प्रभ., (निष्प्रभ या नि.प्रभ) (वि०) १ जिसमें आब या चमक न हो । २ अशक्त । ३ उदास । अस्पष्ट । अन्धकारमय ।—प्रमाणक, (= निष्प्रमाणक) (वि०) विना अधिकार या प्रमाण के ।—प्रयोजन, (= निष्प्रयोजन) (वि०) १ विना प्रयोजन के । २ निराधार । निष्कारण । ३ निरर्थक । बेकाम । ४ अनावश्यक । बेज़रूरत ।—प्रयोजनम्, (= निष्प्रयोजनम्) (अव्यया०) विना कारण । अकारण । विना किसी उद्देश्य के ।—प्राण, (= निष्प्राण) (वि०) मृत । मरा हुआ ।—फल, (=निष्फल) (वि०) जिसका कोई फल न हो । फलहीन । (अलंका०) १ असफल । नाकामियाब । २ निरर्थक । व्यर्थ । ३ बाँझ । जिसमें फल न लगे । ४ अर्थशून्य । ५ बीज रहित । नपुंसक ।—फला, —फली, (=निष्फला, निष्फली) (स्त्री०) स्त्री जिसकी उम्र गर्भ धारण करने योग्य न रही हो ।—फेन, (= निष्फेन) (वि०) फेना रहित ।—शब्द, (= निःशब्द) (वि०) जो शब्दों द्वारा प्रकट न करे । जो सुनाई न पड़े । (निःशब्दं रोदितुमारेभे")—शलाक, (निःशलाक) (वि०) एकाकी । अकेला । एकान्ती । "अरण्ये निःशलाके वा मंत्रयेदविभावितः ।"—शेष, (=निःशेष) शलाकं, (=निःशलाकं) (न०) एकान्त स्थल । सुनसान जगह ।—शेष, (=निःशेष) (वि०) विना बचत के । सम्पूर्ण । पूरा । समूचा । नितान्त ।—शोध्य, (निःशोध्य) (वि०) धोया हुआ । साफ किया हुआ ।—संशय, (=निःसंशय) (वि०) १ निश्चित । विलाशक । २ निस्सन्देह । जो आशंका न करे ।—सङ्ग (निःसङ्ग,) (वि०) १ जो किसी में अनुरक्त न हो । उदासीन । २ संन्यासी । असम्बद्ध । पृथक किया हुआ । ४अबाधित । बाधा शून्य ।— सङ्गम्, (=निःसङ्गम्) निस्स्वार्थ भाव से ।—संज्ञ, (निःसंज्ञ) (वि०) बेहोश । मूर्छित ।—सत्व (=निःसत्त्व) (वि०) १ स्फूर्ति हीन । निर्बल । २ नपुंसक । ३नीच । ओछा । कमीना । ४ अस्तित्वहीन । ४ प्राणधारियों से रहित ।—सन्तति, (=निःसन्तति)—सन्तान, (=निःसन्तान) (वि०) बे औलाद । जिसके कोई सन्तान न हो ।—सन्दिग्ध, (=निःसन्दिग्ध,) —सन्देह (=निःसन्देह) (वि०) निस्संशय । जिसको सन्देह या शक न हो ।—सन्धि, (=निःसन्धि, निस्सन्धि) (वि०) जिसमें ऐसी कोई ग्रन्थि या गाँठ न हो जो दिखलायी पड़े । गझन । सघन ।—सपत्न, (=निःसपत्न) (वि०) १ जिसका कोई शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी न हो । २ जो सर्वथा एक ही का हो । ३ अजातशत्रु ।—समं, (=निस्समं) (अव्यय०) १ बे ऋतु का । ठीक समय पर नहीं । २ दुष्टता से ।—संपात, (=निःसंपात) (वि०) मार्ग न देने वाला । अवरुद्ध मार्ग ।—सम्पातः (=निःसम्पातः) (पु०) अर्द्धरात्रि का अन्धकार । आधीरात की अंधियारी । घनान्धकार ।—संबाध, (= निःसंबाध) (वि०) सङ्कीर्ण नहीं । प्रशस्त । बड़ा ।

संसार (=निःसंसार) (वि०) १ रसहीन । निस्सार । २ निकम्मा ।—सीम, (=निःसीम) —सीमन्, (=निःसीमन्) (वि०) जो नापा न जा सके । सीमारहित । असीम ।- स्नेह, (= निःस्नेह) (वि०) १ शुष्क । २ तटस्थ । उदासीन । ३ जिससे कोई प्यार न करता हो । जिसकी कोई देखरेख न रखता हो ।—स्पन्द, (=निःस्पन्द) (वि०) गतिहीन । दृढ ।—स्पृहः, (=निःस्पृहः) १ कामनाशून्य । २ लापरवाह । तटस्थ । ३ सन्तुष्ट । जो स्पृहावान या ईर्ष्यालु न हो । ४ साँसारिक बंधनों से मुक्त ।—स्व, (=निःस्व) (वि०) निर्धन । ग़रीब । —स्वादु, (=निःस्वादु) (वि०) फीका ।

निसर्गः (पु०) १ बक्शना । दान देना । भेट करना । दे डालना । २ दान । ३ मलमूत्र । ४ त्याग । अधिकार त्याग । ५ रचना । सृष्टि —ज,—सिद्ध, (वि०) जन्म से । स्वाभाविक ।—भिन्न, (वि०) स्वभाव से पृथक ।—विनीत, (वि०) १ स्वभाव से विवेकी । बुद्धिमान् या दूरदर्शी । २ स्वभाव से सदाचारी ।

निसर्गतः (पु०) } निसर्गेण (अव्यय०) } स्वभाव से । स्वाभाविक ।

निसारः (पु०) समूह ।

निसूदन (व० कृ०) } निसूदनम् (न०) } हिंसा करना । वध करना ।

निसृष्ट (व० कृ०) १ सौंपा हुआ । दिया हुआ । बक्शा हुआ । २ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । ३ निकाला हुआ । विदा किया हुआ । ४ आज्ञा दिया हुआ । ५ मध्य । बीचोबीच ।—अर्थ, (वि०) वह जिसे किसी विषय का प्रबन्ध सौंपा गया हो । —अर्थः, (पु०) १ एलची । एक राजा का प्रतिनिधि जो दूसरे राजा के दरबार में रहै । २ दूत । गुमाश्ता । आममुख्तार ।

निस्तरणम् (न०) १ निस्तार । छुटकारा । उद्धार । २ पार जाने की क्रिया । ३ उपाय ।

निस्तर्हणा (न०) वध । हत्या ।

निस्तारः (पु०) १ पार होने की क्रिया । २ पिंड छुटाने की क्रिया । छुटकारा । बचाव । ३ मोक्ष । ४ ऋण से छुटकारा । ५ उपाय । ज़रिया ।

निस्तीर्ण (व० कृ०) १ छूटा हुआ । मुक्त । २ जो तै या पार कर चुका हो ।

निस्तोदः (पु०) १ डंक । काँटा । २ पीडा । व्यथा । दर्द ।

निस्पन्दः (पु०) प्रकम्पन । गति । धडकन ।

निस्यन्दः } निष्यन्दः } (पु०) १ चूना । टपकना । बहना । उमड कर बहना । २ रस । ३ बहाव । टपकने वाला रस ।

निस्यंदिन् } निस्यन्दिन् } (वि०) टपकने वाला । उमड कर बहने वाला ।

निस्रवः } निस्रावः } (पु०) १ चश्मा । सोता । २ चाँवलों का माँड ।

निस्वनः } निस्वानः } (पु०) कोलाहल । शोर ।

निहत (व० कृ०) १ मारा हुआ । वध किया हुआ । २ जमा हुआ । गडा हुआ । ३ भक्तमान । अनुरागी ।

निहननं (न०) वध । हत्या ।

निहवः (पु०) बुलाहट । पुकार ।

निहार देखो नीहार ।

निहिंसनम् (न०) हत्या । वध ।

निहित (व० कृ०) १ स्थापित । रखा हुआ । जमा किया हुआ । लगाया हुआ । ४ बीच में घुसेडा हुआ । गडा हुआ । ५ भाण्डार में जमा किया हुआ । ६ गम्भीर स्वर से कहा हुआ । ७ पकडा हुआ । ८ रखा हुआ ।

निहीन (वि०) कमीना । नीच । पापी ।

निहीनः (पु०) नीच मनुष्य । कमीना आदमी । नीच कुलोत्पन्न मनुष्य ।

निह्नवः (पु०) १ छिपाव । दुराव । अस्वीकृति । इंकार । २ रहस्य । ३ अविश्वास । सन्देह । सन्दिग्धता । ४ दुष्टता । ५ प्रायश्चित्त । ७ बहाना । मिस ।

निह्नुतिः (स्त्री०) १ इंकार । किसी बात की जानकारी को छिपा डालना । २ कपटाचरण । ३ छिपाव । दुराव ।

नी (धा०उभय०) [नयति—नयते, नीत] १ ले जाना । मार्ग प्रदर्शन करना । लाना । पहुँचाना ।

लेना। करवाना। २ रहनुमा करना। निर्देश देना। शासन करना।

नी (पु०) नेता। पथप्रदर्शक। जैसे सेनानी। अग्रणी। ग्रामणी "आदि।

नीका (स्त्री०) खेतों की सिंचाई के लिये पानी का बंबा या नहर।

नीकाश (वि०) देखो।—"निकाशः"।

नीच (वि०) १ नीचा। छोटा। थोड़ा। कम। खर्वाकार। बौना। २ निम्नवर्ती। निम्नपदस्थ। ३ मंद। गम्भीर। (स्वर) ४ कमीना। क्षुद्र। नीच। दुष्ट। सब से गया बीता। ५ निकम्मा। तुच्छ।—गा, (स्त्री०) नदी।—भोज्यः, (पु०) पलाण्डु। प्याज।—योनिन्, (वि०) अकुलीन। निम्न जाति में उत्पन्न।—वज्रः, (पु०)—वज्रं, (न०) वैक्रान्त नामक रत्न।

नीचका
नीचिका
नीचिकी } (स्त्री०) सर्वोत्तम गौ।

नीचकिन् (पु०) १ किसी वस्तु का सर्वोच्चभाग। २ बैल का सिर। ३ अच्छी गौ का रखैया।

नीचा (स्त्री०) सर्वोत्तम गौ।

नीचकैस्
नीचैस् } (अव्यया०) १ नीचा। नीचे की ओर। तले। भीतर। २ झुककर प्रणाम। ३ कोमलता से। धीरे से। ४ मन्द स्वर से। दबी ज़बान से। ५ छोटा। ह्रस्व। बौना। (पु०) एक पर्वत का नाम।—गतिः, (स्त्री०) धीमा क़दम। मंद चाल।—मुख, (वि०) नीचे मुख किये हुए।

नीडः (पु०)
नीडम् (न०) } १ पक्षी का घोंसला। २ शय्या। पलंग। ३ भीटा। माँद। गुफा। ४ किसी गाड़ी का अंदरूनी हिस्सा। ५ स्थान। जगह। रहने का स्थान। विश्राम स्थल।—उद्भवः, (पु०)—जः, (पु०) पक्षी।

नीडकः (पु०) १ पक्षी। २ घोंसला।

नीत (व० कृ०) १ लाया गया। पहुँचाया गया। २ पाया गया। प्राप्त हुआ। उपलब्ध। ३ व्यय किया गया। गुज़रा हुआ। बीता हुआ। ४ भली भाँति आचरित किया हुआ।

नीतं (न०) १ धनदौलत। २ अनाज। नाज।

नीतिः (स्त्री०) १ पथप्रदर्शन। परिचालन। अनुशासन। २ चालचलन। अपना निज का चालचलन। ३ शील। भव्यता। औचित्य। उपयुक्तता। समीचीनता। ४ राजनीति। विज्ञता। विमृश्यकारिता। सन्मार्ग। ५ पद्धति। धारा। युक्ति। उपाय। हिकमत। ६ राजनीति। राज्य की रक्षा के लिये काम में लायी जाने वाली युक्ति। राजाओं की चाल जो वे राज्य की प्राप्ति अथवा रक्षा के लिये चलते हैं। ७ आचारपद्धति। लोक या समाज के कल्याण के लिये निर्दिष्ट किया हुआ। आचार व्यवहार। ८ प्राप्ति। उपलब्धि। ९ दान। भेंट। चढ़ावा। १० सम्बन्ध। सहारा।—कुशल, (वि०)—ज्ञ, (वि०)—निपुण, (वि०)—विद्, (वि०) राजनीति का जानने वाला।—घोषः, (पु०) वृहस्पति की गाड़ी का नाम।—दोषः, (पु०) नीति सम्बन्धी त्रुटि या भूल।—बीजं, (न०) षडयंत्र का उद्गमस्थल।—व्यतिक्रमः, (पु०) १ राजनीति या सामाजिक नीति के नियमों को तोड़ना। २ आचार पद्धति में भूल। नीति में भूल।—शास्त्रं, (न०) १ वह शास्त्र जिसमें देश काल और पात्र के अनुरूप व्यवहार करने के नियमों का निरूपण किया गया हो। २ वह शास्त्र जिसमें मनुष्यसमाज के हित के लिये देश काल और पात्र के अनुसार आचार व्यहार तथा प्रबन्ध एवं शासन का विधान हो।

नीध्रम्
नीव्रम् } (न०) १ छप्पर या छत्त की ओलती। २ वन। जंगल। ३ पहिये का व्यास या चक्कर। ४ चन्द्रमा। ५ रेवती नक्षत्र।

नीपः (पु०) १ पहाड़ की तलैही। २ कदम्ब वृक्ष। ३ अशोक वृक्ष। ४ राजवंश विशेष।

नीपं (न०) कदम्ब पुष्प।

नीरम् (न०) १ जल। पानी। २ रस। अर्क। कोई द्रव पदार्थ।—जम्, (न०) १ कमल। २ मोती। ३ जलजीव।—दः, (पु०) बादल।—धिः,—निधिः, (पु०) समुद्र।—रुहं, (न०) कमल।

नीराजन
नीराजना } (स्त्री०) अस्त्रों का मार्जन। यह एक सैनिक एवं धार्मिक कृत्य था, जिसे राजा लोग, शत्रु पर चढ़ाई करने के पूर्व आश्विन मास में

किया करते थे । २ किसी देवता की आरती उतारना । दीपदान । आरती ।

नील (वि०) [स्त्री०—नीला,नीली] १ नीला । २ नील से रंगा हुआ ।—अङ्गः, (पु०) सारस पक्षी ।—अञ्जनम्, (न०) सुर्मा ।—अञ्जना, —अञ्जसा, (स्त्री०) बिजली । विद्युत ।—अब्जं,—अम्बुजं,—अम्बुजन्मन्, (न०) —उत्पलं, (न०) नील कमल ।—अभ्रः, (पु०) कालीघटा ।—अम्बर, (वि०) नीलवस्त्र पहिने हुए ।—अम्बरः, (पु०) १ राक्षस । दानव । २ शनिग्रह । ३ बलराम ।—अरुणः, (पु०) तड़का । भोर ।—अश्मन्, (पु०) नीलम रत्न ।—कण्ठः, (पु०) १ मयूर । मोर । २ शिव । ३ नीलकण्ठ । ४ जलकुक्कुट विशेष । ५ खञ्जन पक्षी । ६ गौरैया । ७ मधुमक्षिका ।—केशी, (स्त्री०) नील का पौधा ।—ग्रीवः, (पु०) शिव जी ।—छदः, (पु०) १ छुहारे का पेड़ । २ गरुड़ ।—तरुः, (पु०) ताड़वृक्ष ।—तालः, (पु०) तमाल वृक्ष ।—पङ्कः, (पु०) —पङ्कम्, (न०) अन्धकार ।—पटलं (न०) काली परदा या काला उधार । अंधे की आँख पर का काला जाला । —पिङ्गः, (पु०) बाज पक्षी ।—पुष्पिका, (स्त्री०) १ नील का पौधा । २ अलसी ।—भः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ बादल । ३ मधुमक्षिका ।—मणिः,—रत्नं, (न०) नीलम । —मीलिकः, (पु०) जुगनू । खद्योत ।—मृत्तिका, (न०) पुष्पकसीस । । कालीमिट्टी । —राजिः, (स्त्री०) कालिमा की रेखा । घनान्धकार ।—लोहितः, (पु०) शिव जी

नीलकं (न०) १ काला नोन । २ नीला इस्पात लोहा । वर्त्तलौह । चीठरी लोहा । ३ नीलाथोथा । नतिया ।

नीलकः (पु०) काले रंग का घोड़ा ।

नीलंगु:, नीलङ्गुः (पु०) }
नीलांगु:, नीलाङ्गुः (पु०) } एक कीट विशेष ।

नीलिका (स्त्री०) १ नील का पौधा ।

नीलिमन् (पु०) नीला रंग । कालापन । नीलापन ।

नीली (स्त्री०) १ नील का पौधा । २ नीले रंग की मक्खी । ३ रोग विशेष ।—राग, (वि०) अनुराग में दृढ़ ।—रागः, (पु०) १ प्रेम जो नील के रंग की तरह पक्का हो या जो कभी न छूटे । अटल प्रेम । २ पक्केमित्र ।—सन्धानं, (न०) नील का खमीर ।

नीवरः (पु०) १ व्यवसाय । व्यापार । २ व्यवसायी । ३ साधू । संन्यासी । ४ कीचड़ ।

नीवरं (न०) कीचड़ ।

नीवाकः (पु०) १ मँहगी के समय अनाज की बढ़ी हुई माँग । २ अकाल । दुष्काल ।

नीवारः (पु०) वे चावल जो विना जोते बोये अपने आप उत्पन्न हों । पसाई के चाँवल । तिन्नी के चावल । मुन्यन्न । मुनियों के खाने का अनाज विशेष ।

नीविः }
नीवी } (स्त्री०) कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या योंहीं बाँधती हैं । फुफुंदी । नारा । इज़ारबंद । २ पूजी । बारदाना । ३ होड़ । दाँव ।

नीवृत् (पु०) कोई भी आबाद स्थान ।

नीव्र (वि०) देखो नीध्र ।

नीशारः (पु०) १ गर्मकपड़ा । कंबल । २ मसहरी । ३ कनात ।

नीहारः (पु०) १ कोहरा । कुहासा । ओस । पाला । २ झाड़ा । मलमूत्र ।

नु (अव्यया०) सन्देह । अनिश्चितता-सूचक अव्यय । यह सम्भावना और अवश्य के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है ।

नु (धा० पर०) [नौति, प्रणौति, नुत,] प्रशंसा करना । सराहना करना । तारीफ करना ।

नुतिः (स्त्री०) १ प्रशंसा । तारीफ । विरदावली । २ पूजन अर्चा ।

नुद् (धा० उभ०) (नुदति, नुदते—नुत्त या नुन्न, प्रणुदति) १ धक्का देना । हाँकना । रेलना । ठेलना । २ उत्तेजित करना । चतलाना । आग्रह करना । ३ हटाना । भगा देना । फेंक देना । ४ भेजना । डालना ।

नूतन } (वि०) १ नया । २ ताज़ा । जवान । ३
नूत्न } वर्तमान । प्रचलित । ४ तत्क्षण का । ५ हाल का । आधुनिक । अद्भुत । विलक्षण । अनोखा । अपूर्व ।

नूनं (अव्यया०) १ अवश्य । दरहक़ीक़त । सचमुच । २ बहुत कर के ।

नूपुरं (न०) } नेवर । बिछिया ।
नूपुरः (पु०) }

नृ (पु०) १ नर । मनुष्य । २ मनुष्य जाति । ३ शतरंज की गोट या गुट्टी । ४ सूर्य घड़ी की कील । ५ पुल्लिङ्ग शब्द ।—अस्थिमालिन्, (पु०) शिव जी ।—कपालं, (न०) मनुष्य की खोपड़ी ।—केसरिन्, (पु०) नृसिंहावतार ।—जलं, (वि०) मनुष्य का मूत्र ।—देवः, (पु०) राजा ।—धर्मन्, (पु०) कुबेर ।—मिथुनं, (न०) मिथुन राशि ।—मेधः, (पु०) नरमेध यज्ञ । वह यज्ञ जिसमें मनुष्य का बलिदान दिया जाता है ।—यज्ञः, (पु०) पञ्चयज्ञों में से एक ।—लोकः, (पु०) भूलोक । मर्त्यलोक ।—वराह, (पु०) विष्णु का वराह अवतार ।—वाहनः, (पु०) कुबेर ।—वेष्टनः, (पु०) शिव ।—शृङ्गं, (न०) असम्भावना के उदाहरण के लिये मनुष्य के सींग ।—सिंहः, (पु०) १ मनुष्यों में शेर या उत्तम पुरुष । २ विष्णु भगवान का चौथा नृसिंहावतार ।—सेनं, (न०)—सेना, (स्त्री०) मनुष्यों की फौज ।—सोमः, (पु०) आदर्श मनुष्य । बड़ा आदमी ।

नृगः (पु०) वैवस्वतमनु के पुत्र महाराज नृग जिन्हें एक ब्राह्मण के शाप से गिरगट होना पड़ा था ।

नृत् (धा० पर०) [नृत्यति, प्रणृत्यति, नृत्त] १ नाचना । इधर उधर घूमना । २ रंगमञ्च पर अभिनय करना । ३ हावभाव दर्साना । मटकना । खेलना ।

नृतिः (स्त्री०) नाच । नृत्य ।

नृत्तं } (न०) नाच । अभिनय । मूक अभिनय ।
नृत्यं } भँड़ई । अङ्ग विक्षेप । मटकना ।—प्रियः, (पु०) शिव ।—शाला, (स्त्री०) नृत्यशाला । नाचघर ।—स्थानं, (न०) रंगभूमि । अभिनयस्थान । स्टेज ।

नृप }
नृपति } (पु०) राजा ।—नृपअध्वरः, (पु०) राजसूय यज्ञ ।—आत्मजः, (=नृपात्मजः,) (पु०) राजकुमार ।—नृपआभीरं,
नृपाल }
(न०)—नृपमानं, (न०) वह सङ्गीत जो राजा के भोजन करते समय होता है ।—नृपगृहं, (न०) राजप्रासाद । महल ।—नृपनीतिः, (स्त्री०) राजनीति ।—नृपप्रियः, (पु०) आम का वृक्ष ।—नृपलक्ष्मन्, (न०)—नृपलिङ्गम्, (न०) राजचिन्ह । विशेष कर सफ़ेद छाता ।—नृपशासन, (न०) राजाज्ञा ।—नृपसभम्, (न०) —नृपसभा, (स्त्री०) राजाओं का समारोह ।

नृशंस (वि०) दुष्ट । मलिनचित्त । क्रूर । उपद्रवी । कमीना ।

नेजकः (पु०) धोबी ।

नेजनम् (न०) धुलाई । सफाई ।

नेतृ (पु०) १ नेता । अगुआ । सञ्चालक । व्यवस्थापक । अग्रगन्ता । २ आज्ञा देने वाला । गुरु । ३ प्रधान । मालिक । मुखिया । ४ दण्ड देने वाला । ५ मालिक । स्वामी । ६ किसी अभिनय का मुख्यपात्र ।

नेत्रं (न०) १ अगुआपन । सञ्चालन । २ नेत्र । ३ मथानी की रस्सी । ४ बना हुआ रेशमी वस्त्र । मिहीन रेशमी कपड़ा । ५ एक वृक्ष की जड़ । ६ वाद्ययंत्र । बाजा । ७गाड़ी । सवारी । ८दो की संख्या ९ नेता । १० नक्षत्र । तारा ।—अञ्जनम्, (न०) आँखों का सुर्मा ।—अन्तः, (पु०) आँख के कोने का बाहरी भाग ।—अम्बु,—अम्भस्, (न०) आँसू ।—आमयः, (पु०) नेत्ररोग विशेष ।—उत्सवः (पु०) कोई भी मनोहर वस्तु ।—उपमं, (न०) बादाम ।—कनीनिका, (स्त्री०) आँख की पुतली ।—कोपः, (पु०) १ आँख का ढेला । २ फूल की कली ।—गोचर, (वि०) दृष्टि के भीतर ।—छदः, (पु०) पलक ।—जं,—जलं,—वारि, (न०) आँसू ।—पर्यन्तः, (पु०) आँख का कोया या कोना ।—पिण्डः, (पु०) १ नेत्रगोलक । आँख का ढेल । २ बिल्ली ।—मलं, (न०) आँख का कीचड़ ।—योनिः, (पु०) १ इन्द्र । २ चन्द्रमा ।—रञ्जनम्,

(न०) सुर्मा।—रोमन्, (न०) आँख की विरनी या बन्ही।—वस्त्रं, (न०) घूँघट विशेष। —स्तम्भः, (पु०) आँखों का पथरा जाना। आँखों का हिलना डुलना बंद हो जाना।

नेत्रिकम् (न०) १ पाइप। नली। २ कलछी।

नेत्री (स्त्री०) १ नदी। २ धमनी। ३ स्त्रीनेता। ४ लक्ष्मी देवी।

नेदिष्ठ (वि०) अत्यन्त निकट। निकटतम्।

नेदीयस् (वि०) [स्त्री०—नेदीयसी] निकटतर।

नेपः (पु०) घर का पुरोहित।

नेपथ्यम् (न०) १ शृङ्गार। भूषण। २ पोशाक। परिच्छद। ३ अभिनयकर्त्ता की पोशाक। ४ वह स्थान जहाँ नाटक के पात्र अपना रूप भरते हैं। ५ पर्दे के पीछे का स्थान।—विधानं, (न०) उस स्थान की व्यवस्था जहाँ अभिनयकर्त्ता अपना रूप भरते हैं।

नेपालं (न०) ताँबा।

नेपालः (पु०) भारतवर्ष के उत्तर में स्थित स्वनामख्यात राज्य विशेष।

नेपालजा } नेपालजाता } सिंगरफ।

नेपालाः (पु०) नेपाल देश के अधिवासी।

नेपालिका (स्त्री०) सिंगरफ।

नेपाली (स्त्री०) जंगली छुहारे का वृक्ष या उसके [फल।

नेम (वि०) [कर्त्ता बहुवचन—नेमे,—नेमाः] आधा।

नेमः (पु०) १ हिस्सा। २ समय। समय की अवधि। ऋतु। ३ सीमा। हद। ४ हाता। बाड़ा। ५ दीवाल की नींव। ६ छल। कपट। दग़ा। ७ सन्ध्या। शाम। ८ गढ़ा। सूराख। ९ जड़।

नेमिः } नेमी } (स्त्री०) १ चक्रपरिधि। २ किनारा। बाढ़। ३ व्यास। चक्कर। ४ वज्र। पृथिवी।

नेमिः (पु०) तिनिश वृक्ष। तिनास। तिनसुना।

नेष्टृ (पु०) सोमयाग में यज्ञ कराने वाले, जिनकी सख्या १६ होती है।

नेष्टुः (पु०) मट्टी का ढेला।

नैःश्रेयस (वि०) [स्त्री०—नैःश्रेयसी] } नैःश्रेयसिक (वि०) [स्त्री०—नैःश्रेयसिकी] } मोक्ष देने वाला।

नैस्वं } नैःस्वयं } (न०) धनहीनता। ग़रीबी। मुहताजी।

नैक (वि०) [न + एक] एक नहीं।—आत्मन्, (पु०)—रूपः, (पु०)—शृङ्गः, (पु०) परब्रह्म।

नैकटिक (वि०) [स्त्री०—नैकटिकी] पड़ोस का। पास का। समीपी।

नैकटिकः (पु०) साधु। भिक्षुक।

नैकट्य (न०) सामीप्य। समीपता।

नैकषेयः (पु०) राक्षस। दानव।

नैकृतिक (वि०) [स्त्री०—नैकृतिकी] १ बेईमान। झूठा। २ कमीना। नीच। दुष्ट। ३ घुन्ना। रूखा।

नैगम (वि०) [स्त्री०—नैगमी,] वेद सम्बन्धी।

नैगमः (पु०) १ वेद का व्याख्याकार या टीकाकार। २ उपनिषद। ३ युक्ति। उपाय। ४ विवेकपूर्ण आचरण। ५ नागरिक। व्यापारी। सौदागर। महाजन।

नैघंटुकम् } नैघण्टुकम् } (न०) १ वेद का शब्दकोष। वैदिक शब्दों का कोष। २ शब्दकोष।

नैचिकं (न०) बैल का सिर।

नैचिकी (स्त्री०) एक उत्तम गौ।

नैतलं (न०) नरक। पाताल।—सद्मन्, (पुं०) यम।

नैत्यं (न०) अनन्तता। सातत्य।

नैत्यक (वि०) [स्त्री०—नैत्यकी] } नैत्यिक(वि०) [स्त्री०—नैत्यिकी] } १ सदैव अनुष्ठेय। नियमित रूप से अनुष्ठेय। २ अनिवार्य। जो टल न सके।

नैदाघः (पु०) ग्रीष्म ऋतु। गर्मी का मौसम।

नैदानः (पु०) शब्द। व्युत्पत्ति-तत्त्व।

नैदानिकः (पु०) निदान शास्त्र विशारद।

नैदेशिकः (पु०) आज्ञापालन करने वाला। नौकर।

नैपातिक (वि०) [स्त्री०—नैपातिकी] अकस्मात् या दैवसंयोग से वर्णन करने वाला।

नैपुण्यम् (न०) १ निपुणता। पटुता। चातुर्य। योग्यता। २ नाजुक मामला।। ४ सम्पूर्णता।

नैभृत्यं (न०) १लाज। सङ्कोच। विनम्रता। २ रहस्य।

नैमंत्रणकम् (न०) भोज । दावत ।
नैमयः (पु०) व्यापारी । व्यवसायी ।
नैमित्तिक (वि०) [स्त्री० —नैमित्तिकी] १ जो किसी कारण विशेष वश किया जाय । जो निमित्त या कारण उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो । २ असाधारण । कभी कभी होने वाला ।
नैमित्तिकम् (न०) १ कारण । २ कभी कभी होने वाला शास्त्रोक्त कर्म ।
नैमित्तिकः (पु०) ज्योतिषी । फरिश्ता । ईश्वरदूत ।
नैमिष (वि०) [स्त्री० —नैमिषी] एक निमिष या क्षण रहने वाला । क्षणिक । विनश्वर ।
नैमिषं (न०) नैमिषारण्य तीर्थ ।
नैमेयः (पु०) विनिमय । बदलौअल ।
नैयग्रोधं (न०) गूलर का फल । गूलर का वृक्ष ।
नैयत्यं (न०) संयम । जितेन्द्रियत्व ।
नैयमिक (वि०) [स्त्री० - नैयमिकी] नियमित । नियमानुसार ।
नैयमिकं (न०) नियमानुसारता ।
नैयायिकः (पु०) न्यायशास्त्र का जानने वाला । न्यायवेत्ता ।
नैरंतर्यं } नैरन्तर्यम् } (न०) निरन्तरत्व । अविच्छेदत्व ।
नैरपेक्ष्यम् (न०) निरपेक्षता । तटस्थता । उदासीनता ।
नैरयिकः (पु०) नरकवासी ।
नैरर्थ्यम् (न०) निरर्थकता । ऊटपटाँग । वाहियाद ।
नैराश्यम् (न०) १ नाउम्मेदी । निराशा का भाव । २ आशा या इच्छा का अभाव ।
नैरुक्तः (पु०) शब्द-व्युत्पत्ति-तत्वज्ञ ।
नैरुज्यम् (न०) स्वास्थ्य । तंदुरुस्ती ।
नैर्ऋतः (पु०) राक्षस । दैत्य ।
नैर्ऋती (स्त्री०) १ दुर्गादेवी । २ दक्षिण-पश्चिम का कोना । उपदिशा विशेष ।
नैर्गुण्यम् (न०) १ गुणों का अभाव । २ उत्तमता का अभाव । अच्छे गुणों का अभाव ।
नैर्घृण्यम् (न०) निष्ठुरता । नृशंसता । क्रूरता ।
नैर्मल्यम् (न०) सफाई । शुद्धता । निष्कलङ्कता ।
नैर्लज्ज्यम् (द०) निर्लज्जता । वेशर्मी ।
नैल्यम् (न०) नीलापन । नीलारंग ।
नैविड्यं } नैविड्यम् } (पु०) सामीप्य । सकुड़न । घनिष्ठता । घनापन ।
नैवेद्यम् (न०) भोज्य पदार्थ जो किसी देवता को अर्पण किया जाय ।
नैश (वि०) [स्त्री०—नैशी] } नैशिक (वि०) [स्त्री०—नैशिकी] } १ रात सम्बन्धी । २ रात में दिखलाई पड़ने वाला ।
नैश्चल्यं (न०) अटलता । अचलता ।
नैश्चित्यम् (न०) १ दृढ़ विचार । पक्का इरादा । निश्चय । २ निश्चित कृत्य या रस्म ।
नैषधः (पु०) १ निषध देश का राजा । २ यह उपाधि इस देश के राजाओं में से राजा नल की थी । ३ निषध-देश-वासी ।
नैष्कर्म्यं (न०) १ सुस्ती । अकर्मण्यता । २ कर्म या कर्मफलों से छेका हुआ या मुसूतसना । ३ समाधि द्वारा प्राप्त मोक्ष ।
नैष्किक (न०) [स्त्री०—नैष्किकी] वस्तु जिसका मूल्य एक निष्क हो ।
नैष्किकः (पु०) १ टकसालघर का व्यवस्थापक ।
नैष्ठिक (वि०) [स्त्री०—नैष्ठिकी] १ अन्तिम । अखीर । २ निर्णीत । स्पष्ट । पक्का । ३ निर्दिष्ट । दृढ़ । सतत । ४ सर्वोच्च । पूर्ण । ५ पूर्णतया परिचित या अवगत । ६ सदैव के लिये त्यागने और शुद्ध रहने का व्रत धारण करने वाला ।
नैष्ठिकः (पु०) वह ब्रह्मचारी जिसने आजन्म के लिये ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया हो और जो अपने गुरुदेव की सेवा में रहे ।
नैष्ठुर्यम् (न०) क्रूरता । नृशंसता । निष्ठुरता ।
नैष्ठ्यं (न०) दृढ़ता । मज़बूती । स्थिरता । स्थिरत्व ।
नैसर्गिक (वि०) [स्त्री०—नैसर्गिकी] स्वाभाविक । प्रकृतिजन्य । परंपरागत ।
नैस्त्रिंशकः (पु०) तलवारबहादुर । खड्गधारी ।
नो (अव्यया०) (न+उ] नहीं । न ।
नोचेत् (अव्यया०) नहीं तो । अन्यथा ।
नोदनम् (न०) प्रचोदना । प्रेरणा । गोदना । चलाने या हाँकने का काम ।
नोधा (अव्यया०) नौ हिस्सों में । नौगुना ।

नौः (स्त्री०) १ जहाज । पोत । नौका । नाव । बेड़ा । २ एक नक्षत्र का नाम ।—आरोह, [= नावारोहः] (पु०) १नाव का यात्री । २माझी ।—कर्णधारः, (पु०) डाँड खेने वाला ।—कर्मन्, (न०) माझी का पेशा ।—चरः,—जीविकः, (पु०) मल्लाह । माझी ।—तार्य, (वि०) जहाज़ या नाव में बैठ कर जाने योग्य ।—दण्डः, (पु०) डाँड ।—यायिन्, (वि०) यात्री ।—वाहः, (पु०) नाव चलाने वाला । जहाज़ का बड़ा अफसर या कपतान ।—व्यसनं, (न०) जहाज़ का नष्ट होना । जहाज़ का नाश ।—साधनं, (न०) जहाज़ी बेड़ा । नौसेना । जलसेना ।

नौका (स्त्री०) छोटी नाव । बोट ।—दण्डः, (पु०) डाँड ।

न्यक् (अव्यया०) एक अव्यय जो तिरस्कार, अधःपात, अपमान का अर्थवाची है ।—करणं, (न०)—कारः, (पु०) अधःपात । अपमान । हतक ।—भावः, (पु०) अधःपात । तिरस्कार । अपकृष्ट बनाने वाला । अधीनताई । मातहती ।—भावित, (वि०) १ तुच्छ । अधःपतित । अपमानित । २ अप्रधानीकृत ।

न्यक्त (वि०) नीच । अपकृष्ट । दुष्ट । कमीना ।

न्यक्तं (न०) सूराख ।

न्यक्त' (पु०) १ भैंसा । २ परशुराम ।

न्यग्रोधः (पु०) १ वटवृक्ष । बरगद का पेड़ । २ लंबाई का एक नाप । उतनी लंबाई जितनी कि दोनों हाथों के फैलाने से होती है । पुरसा ।—परिमण्डला, (स्त्री०) उत्तमाङ्गी । उत्तमाङ्गी का लक्षण इस प्रकार हैं :—

> स्तनौ सुकठिनौ यस्या नितम्बे च विशालता ।
> मध्ये क्षीणा भवेद्या सा न्यग्रोधपरिमण्डला ।

अन्यच्च

> "दूर्वाकाण्डमिव श्यामा न्यग्रोधपरिमण्डला ।"

न्यङ्कुः (पु०) बारहसिंहा विशेष ।

न्यच्, न्यञ्च् (वि०) [स्त्री०—नीची] १ नीचे फेंका या मुड़ा हुआ । २ मुंह के बल पड़ा हुआ । ३ नीच । तुच्छ । कमीना । दुष्ट । ४ सुस्त । काहिल । ५ समूचा । समस्त ।

न्यंचनम्, न्यञ्चनम् (न०) १ मोड़ । घुमाव । २ लुकने का स्थान । छिपने की जगह । ३ खुखाल । गुफा ।

न्ययः (पु०) १ हानि । नाश । २ बरबादी ।

न्यसनम् (न०) १ धरोहर । न्यास । २ सौंपना । दे देना ।

न्यस्त (व० कृ०) १ नीचे फैंका हुआ । फैंका हुआ । डाला हुआ । २ रखा हुआ । धरा हुआ । ३ स्थापित किया हुआ । बैठाया या जमाया हुआ । ४ चुन कर सजाया हुआ । ५ धरोहर रखा हुआ । अमानत रखा हुआ । हस्तान्तरित किया हुआ । ६ छोड़ा हुआ । हटाया हुआ । त्यागा हुआ ।—दण्ड, (वि०) सजा से बरी किया हुआ ।—दण्ड (पु०) संन्यासी ।—देह, (पु०) मृत । मरा हुआ ।—शस्त्र, (वि०) १ वह जिसने अपने हथियार रख दिये हों । २ निरस्त्र । जिसके पास अपने बचाव के लिये कुछ भी न हो । ३ जो हानिकारक न हो ।

न्याक्यं, (न०) भुना हुआ चावल ।

न्यादः (पु०) भोजन । आहार ।

न्यायः (पु०) १ पद्धति । तौरतरीक़ा । रीति । नियम । ढब । २ योग्यता । औचित्य । उपयुक्तता । ३ आईन । इंसाफ । पुण्य । खरापन । धार्मिकता । । ईमानदारी । ४ मुकदमा । कानूनी कार्रवाई । ५ फौजदारी । कानून के अनुसार सज़ा । ६ राजनीति । पालिसी । सुशासन । ७ सादृश्य । समानता । ८ प्रसिद्ध नीतिवाक्य । प्रसिद्ध कहावत । फबती हुई नज़ीर । उपयुक्त उदाहरण । उदाहरण । ९ वैदिकस्वर विशेष । १० सार्वजनिक नियम । ११ हिन्दूषडदर्शनों में से एक, जिसके आविष्कारकर्त्ता गौतम ऋषि थे । १२ न्यायशास्त्र । १३ सवयव तर्क जिसमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन ये पाँच अवयव होते हैं । १४ विष्णु ।—पथः, (पु०) मीमाँसा शास्त्र ।—वर्तिन्, (वि०) सदाचारी ।—वादिन्, (वि०) वह जो ठीक और न्यायोचित बात कहता है ।—वृत्तं, (न०) अच्छा चालचलन । पुण्य । सद्गुण ।—शास्त्रं, (न०)

१ न्याय दर्शन। २ न्याय दर्शन का विज्ञान।—सारिणी। उचित अथवा उपयुक्त आचरण या व्यवहार।—सूत्रं (न०) न्याय शास्त्र के सूत्र।

न्यायतः (अव्यया०) १ न्याय से। ईमान से। ठीक ठीक रीति से। धर्म और नीति के अनुसार। २ न्यायपूर्वक। सच्चाई से।

न्यायिन् (वि०) १ योग्य। उचित। ठीक। २ युक्तिसिद्ध। न्यायसङ्गत। युक्तियुक्त। सङ्गत।

न्याय्य (वि०) १ ठीक। उचित। उपयुक्त। न्यायसङ्गत। २ साधारण चलन के अनुसार।

न्यास, न्यासिन् } (वि०) न्यस के अन्तर्गत देखो।

न्युंख, न्युङ्ख, न्यूंख, न्यूङ्ख } (वि०) १ मनमोहक। मनोहर। प्रिय। सुन्दर। २ उचित। ठीक।

न्युच् (धा० पर०) १ स्वीकार करना। राज़ी होना। रज़ामंद होना। २ हर्षित होना। प्रसन्न होना।

न्योचनी (स्त्री०) चाकरानी। टहलुनी।

न्युब्ज् (धा० परस्मै०) मोड़ना। दबाना। फेंकना।

न्युब्ज (वि०) १ नीचे को मोड़ा या झुकाया हुआ। मुँह के बल पड़ा हुआ। औंधा पड़ा हुआ। २ झुका हुआ। टेढ़ा। ३ कूर्मपृष्ठवत्। ४ कुबड़ा।—खड्गः, (पु०) खाँड़ा। एक प्रकार की तलवार।

न्युब्जं (न०) १ पात्र विशेष जो श्राद्धकर्म के काम में आता है। २ कमरख फल।

न्युब्जः (पु०) १ न्यग्रोधवृक्ष। बरगद का पेड़। २ कुशनिर्मित स्रुवा।

न्यून (वि०) १ कम। थोड़ा। अल्प। २ दागी। घटिया। मुहताज़। ३ कमी। ४ ऐबी (अंग से) ५ नीच। ओछा। कमीना दुष्ट।—अङ्ग, (वि०) विकलाङ्ग। अङ्गहीन।—अधिक, (वि०) कमोवेश। असमान।—धी, (वि०) अज्ञानी मूर्ख।

न्यूनं (अव्यया०) कम। थोड़े अंश में।

न्यूनयति, न्यूनीकृ } (क्रि०) कम करना। घटाना।

न्योकस (वि०) [वैदिक] दिव्यधाम में रहने वाला।

न्योजस् (वि०) टेढ़ा। (आलं०) दुष्ट। बदमाश।

प

प, संस्कृत या नागरी वर्णमाला का इक्कीसवाँ व्यञ्जन है और अन्तिम वर्ग का प्रथम वर्ण है। इसका उच्चारण ओठ से होता है। अतएव शिक्षाकार ने इसे ओष्ठ्य माना है। इसके उच्चारण में दोनों ओठ मिल जाते हैं; अतएव यह स्पर्शवर्ण है। इसके उच्चारण के लिये विवार, श्वास, घोष और अल्पप्राण नामक प्रयत्न का व्यवहार किया जाता है।

प (वि०) १ पीने वाला। जैसे "पादप"। २ रक्षक। शासक। अभिभावक। यथा गोप, नृप, क्षितिप।

पः (पु०) १ वायु। पवन। २ पत्र। पत्ता। ३ अंडा।

पक्कणः (पु०) चाण्डाल या वर्बर का झोंपड़ा।

पक्ति, पक्तृ, पक्व } (वि०) पका हुआ। दृढ़।

पक्कशः (पु०) एक वर्बर जाति का नाम। चाण्डाल।

पक्ष् (धा० पर०) [पक्षति, पक्षयति—पक्षयते] १लेना। पकड़ना। २स्वीकार करना। ३ तरफ़दारी करना। पक्षपात करना।

पक्षः [पक्ष + अच्] १ बाजू। डाना। २ तीर के दोनों ओर लगे हुए पर। ३ कंधा। ४ कोख। ५ सेना का एक बाजू। ६ किसी वस्तु का आधा। ७पखवारा जो १५ दिन का होता है। ८ दल। तरफ़। ओर। वंश। कुल। ९ किसी दल का अनुयायी। १० श्रेणी। समूह। समुदाय। अनुयायियों की कोई भी संख्या। ११ वादविवाद का एक पक्ष। १२ कल्पना। १३ विवादग्रस्त विषय। १४दो की संख्या का वाची शब्द। १५ पक्षी। १६ परिस्थिति। हालत। १७ शरीर। १८ शरीरावयव।

१९ राजा के चढ़ने का हाथी। २० सेना। २१ दीवाल। २२ विरोध। २३ प्रत्युत्तर। उत्तर का उत्तर। जवाब का जवाब। २४ मिकदार। प्रमाण। मात्रा। २५ पद। स्थान। २६ धारणा। ख्याल। २७ अग्निकुण्ड का वह स्थान जहाँ राख जमा हो। २८ सामीप्य। पड़ोस। २९ कोष्ठक। ३० शुद्धता। सर्वाङ्ग पूर्णता। ३१ घर। मकान। —अन्त, (पु०) १ कृष्ण या शुक्ल पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन। पूर्णिमा। अमावास्या। २ सेना के पक्षों के छोर। —अन्तरं, (वि०) १ दूसरी तरफ। २ पक्ष। ३ भिन्न कल्पना। —अवसरः, (पु०) पक्षान्त। —आघातः, (पु०) १पक्षाघात। लकवा जो एक अँग को मारे। २ युक्ति का खण्डन। —आभासः, (पु०) १ सिद्धान्ताभास। २ झूठा अर्जीदावा। —आहार, (पु०) वह व्यक्ति जो पक्ष (अर्थात् १५ दिवस) में केवल एक दिवस भोजन करे। —उद्ग्राहिन्, (वि०) पक्षपात करने वाला। —गम्, (वि०) उड़ने वाला। —ग्रहणम्, (न०) किसी भी पक्ष का हो जाना। —घातः, (=पक्षाघातः) देखो आघातः, —चरः, (पु०) १ हाथी जो अपने गिरोह से बहक गया हो। २ चन्द्रमा। ३ टहलुआ। चाकर। —छिद्, (पु०) इन्द्र। —जः, (पु०) चन्द्रमा। —द्वयं, (न०) १बहस के दोनों पहलू। २ युग्मपक्ष अर्थात् एक मास। —द्वारं, (न०) अप्रधान द्वार। निजू दरवाज़ा। —धर, (वि०) पंखों वाला। पक्ष विशेष में रहने वाला। किसी भी दल विशेष का पक्षपाती या तरफदार। —धरः, (पु०) १ पक्षी। २ चन्द्रमा। ३ पक्षपाती। दलवाला। ४ अपने झुंड से बहका हुआ हाथी। —नाडी, (वि०) पर की क़लम। —पातः, (पु०) १ किसी भी पक्ष की तरफ़दारी। २ रुचि। अभिलाषा। अनुराग। स्नेह। ३ किसी पक्ष से अनुराग। तरफदारी। ४ परों का पतन। ५ पक्षपाती। तरफदार। —पातिता, (स्त्री०)—पातित्वं (न०) १पक्षपात। तरफदारी। २ मैत्री। तीर्थत्व। सहपाठित्व। ३ परों का चालन। —पालिः, (त्रि०) १ पक्षपाती। तरफदार। २ सहानुभूति रखने वाला। ३ अनुयायी। —पुटः, (पु०) १ प्राइवेट दरवाज़ा। २ बाजू। डाना। —पोषणः (पु०) कलहवृद्धि। —बिन्दुः, (पु०) कंक पक्षी। —वाहनः, (पु०) पक्षी। —व्यापिन्, (वि०) समूचे तर्क में व्याप्त होने वाला या समूचे तर्क को ग्रहण करने वाला। —हत, (वि०) शरीर का एक अंश लकवा से मारा हुआ। —हरः, (पु०) पक्षी। —होमः, (पु०) एक पखवारे तक होने वाला यज्ञ। धार्मिक विधि या कृत्य जो प्रति पक्ष किया जाय।

पक्षकः (पु०) १ खिड़की। २ पक्खा। ३ साथी। सहवर्ती।

पक्षता (स्त्री०) १ तरफदारी। मेल मिलाप। २ किसी एक पक्ष में हो जाना। ३ किसी पक्ष या किसी तर्फ को ग्रहण कर लेना। ४ किसी का एक अंग बन जाना। ५ किसी पक्ष का समर्थन करना।

पक्षतिः (स्त्री०) १ डाने की जड़। २ शुक्ला प्रतिपदा।

पक्षस् (न०) १ डाना। बाजू। २ किसी गाड़ी के एक बाजू का भाग। ३ किवाड़ का पट। ४ सेना की एक टुकड़ी। ५ अर्द्धमास। ६ नदीतट। ७ तरफ। ओर।

पक्षालुः (पु०) पक्षी।

पक्षिणी (स्त्री०) १ मादा पक्षी। चिड़िया। २ दो दिन और एक रात का समय। ३ पूर्णिमा।

पक्षिन् (वि०) [स्त्री०—पक्षिणी] १ पंखोंवाला। २ पक्षों से सम्पन्न। ३ पक्षपाती। तरफदार। (पु०) १ पक्षी। २ तीर। ३ शिव जी। —इन्द्रः,—प्रवरः, —राज्, (पु०) —राजः,—सिंहः,—स्वामिन्, (पु०) गरुड़ जी। —कीटः, (पु०) तुच्छ पक्षी। —पतिः, (पु०) सम्पाति गिद्ध। —पानीयशालिका, (स्त्री०) कठोता या कुण्ड जिसमें पक्षियों के लिए जल भरा रहे। —पुङ्गवः, (पु०) जटायु। —बालकः,—शावकः, (पु०) पक्षी का बच्चा। पक्षिशावक। —शाला, (स्त्री०) घोंसला। चिड़ियाघर।

पक्षिलः (पु०) वात्स्यायन मुनि का नाम।

पक्षीय (वि०) किसी पक्ष या दल से सम्बन्ध रखने वाला।

पक्ष्मन् (न०) [पक्ष + मानिन्] १ बरौनी । आँख की बन्ही । २ पुष्प की पखुरी । ३ मिहीन डोरा । डोरे का छोर । ४ बाजू । डाना । ५ फूल का एक पत्ता ।—कोपः,—प्रकोपः, (पु०) बरौनी के आँख में चले जाने से उत्पन्न हुई आँख की जलन ।

पक्ष्मल (वि०) १ सुन्दर बरौनी वाला । २ बालों वाला । बालदार ।

पक्ष्य (वि०) [पक्षेभवः, यत्,] १ एक पाख में उत्पन्न होने वाला । २ पक्षपाती । ३ एकतरफी । एक लंग का । ४ प्रत्येक पक्ष में बदलने वाला ।

पक्ष्यः (पु०) पक्षपाती । इकतरफा । अनुयायी । मित्र । सहयोगी।

पंक, पङ्कः (पु०), पंकं, पङ्कम् (न०) १ कीचड । काँदा । २ बड़ी मात्रा में । ३ दलदल । ४ पाप। ५ मलहम । उबटन ।—कर्वटः, (पु०) नदी की बाढ़ से आई हुई मिट्टी ।—कीरः, (पु०) टिटिहरी नाम की चिड़िया ।—क्रीडः,—क्रीडनकः, (पु०) शूकर । सुअर ।—ग्राहः, (पु०) मकर या मगर । नक्र । घड़ियाल ।—छिद्, (पु०) रीठा का वृक्ष । निर्मली का वृक्ष ।—जं, (न०) कमल ।—जः, (पु०) सारस पक्षी ।—जन्मन्, (न०) कमल । (पु०) सारस-पक्षी ।—दिग्ध, (वि०) कीचड में सना हुआ ।—भाज्, (वि०) कीचड़ में डूबा हुआ ।—भारक, (वि०) कीचड़हा ।—मण्डूकः, (पु०) दुपट्टा शङ्ख ।——रुह, (न०) —रुहं, (न०) कमल ।—वासः, (पु०) मकरा ।—शूरणः,—सूरणः, (पु०) कमल की जड़ । भसीडा ।

पंकजिनी, पङ्कजिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा । २ कमल के पौधों का समूह । ३ स्थान जहाँ पुष्पों की बहुतायत हो । ४ कमोदिनी का लचीला दण्ड या डंठुल ।

पंकारः, पङ्कारः (पु०) १ काई । सिवार । २ बाँध । मेंड़। पुश्ता । धुस । ३ जीना । सीढ़ी । नसैनी ।

पंकिन, पङ्किन (वि०) कीचड से भरा हुआ। कीचड़ से सना हुआ ।

पंकिल, पङ्किल गंदला । मैला । कीचड़हा ।

पंकिलः, पङ्किलः (पु०) नाव । किश्ती ।

पंकेजं, पङ्केजं (न०) कमल ।

पंकेरुह (न०) पङ्केरुह, पंकेरुहम् (न०) पङ्केरुहम् कमल ।

पंकेरुहः, पङ्केरुहः (पु०) सारस पक्षी ।

पंकेशय, पङ्केशय (वि०) १ कीचड में रहने वाला ।

पंकणः, पङ्कणः (पु०) चाण्डाल का झोपडा ।

पंक्ति (स्त्री०) [पञ्च् विस्तारे क्तिन्.] १ रेखा । पतनार । अवली । २ समूह । समुदाय । दल । गिरोह । ३ (एक ही जाति के) आदमियों की कतार । एक जाति के मनुष्यों की पंगति । ४ वर्तमान या जीवित पीढी । ५ पृथिवी । ६ कीर्ति । प्रसिद्ध । ७ पाँच का समूह या पाँच की संख्या । ८ दस की संख्या या " पंक्तिस्थ" पंक्तिग्रीव । ९ पाचन क्रिया । पकाने की क्रिया । १०एक ही जाति के लोगों का समूह ।—कण्टकः, (पु०) पंक्तिदूषक ।—ग्रीवः, (पु०) रावण का नाम ।—चरः, (पु०) समुद्री गिद्ध ।—दूषः,—दूषकः, (पु०) जातिबहिष्कृत पुरुष जिसके साथ पंक्ति में बैठ कर कोई भोजन न करे या जिसके साथ बैठ कर भोजन करने से भोजन करने वाले पतित हो जाँय ।—पावनः, (पु०) वह ब्राह्मण जिसको यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया है । ऐसा ब्राह्मण पंक्ति को पवित्र करता है ।—रथः, (पु०) दशरथ का नाम ।

पंक्तिका (स्त्री०) पंक्ति । पतनार । पगत ।

पंगु, पङ्गु (वि०) [स्त्री०—पंगू या पग्वी] लंगड़ा । लूला । एकटंगा । पंगुल । अपाहज ।

पंगुः, पङ्गुः (पु०) १ लंगडा आदमी । २ शनिग्रह ।—ग्राहः (पु०) १ मकर । नक्र । २ मकरराशि ।

पंगुक, पङ्गुक (वि०) लंगडा । लूला ।

पंगुल, पङ्गुल (वि०) लंगड़ा । लूला ।

पंगुलः } (पु०) चाँदी की तरह सफेद रंग का ।
पङ्गुलः }

पच् (धा० उभय०) [पचति—पचते, पपाच, पेचे,—अपाक्षीत—अपक्त-पक्ष्यति—पक्ष्यते, पक्तु,—पक्व] १ पकाना। भूनना। साफ करना। (भोजन बनाने के पदार्थों को) २ (ईंटों को) पकाना। जलाना। ३ पचाना (भोजन को) ४ पकाना (फलादि को। ५ पूर्णता को प्राप्त करना। ६ गलना (धातुओं का) ७ अपने लिये भोजन बनाना।

पक्ति (स्त्री०) (पच्, भावे—क्तिन्) १ रसोई बनाने की क्रिया। २ भोजन पचाने की क्रिया। ३ पक जाना। ४ कीर्ति। ख्याति। ५ भोजन पचने का स्थान। ६ भोज्य पदार्थ से भरी थाली।—शूलं, (न०) वायुशूल। अपच से उत्पन्न पेट का दर्द।

पक्तृ (वि०) १ रसोई बनाने की क्रिया। २ पेट में भोजन पचने की क्रिया। ३ (फलादि) पकने की क्रिया।—(पु०) १ जठराग्नि। वैश्वानर। २पाचक। रसोइया।

पक्त्रं (न०) १ अग्निहोत्री गृहस्थ। २ अग्निहोत्र की आग।

पक्त्रिम (वि०) १ पका। पका हुआ। २ पूर्णता को प्राप्त। ३ पकाया हुआ। ४ (समुद्र का जल औटा कर निकाला हुआ) निमक।

पक्व (वि०) १ पका हुआ। भुना हुआ। उबला हुआ। २ हज़म किया हुआ। ३ सेका हुआ। जलाया हुआ। ताव दिया हुआ। ४ (फलादि) पका हुआ। ५ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। सम्पूर्ण। ६ अनुभवी। ७ पका हुआ। (फोड़ा) ८ भूरा। ९ नष्ट हुआ। नाश होने वाला।—अतिसारः, (पु०) दस्तों की पुरानी बीमारी।—अन्न, (न०) पकाया हुआ अन्न या अन्न से बने भोज्य पदार्थ।—आधानं, (न०) —आशयः, (पु०) पेट। मेदा। तरेट।—इष्टका, (स्त्री०) पकी हुई ईंट।—इष्टकाचितम्, (न०) पकी ईंटों की बनी इमारत।—कृत्, (वि०) १ पका हुआ। २ पूर्णता को प्राप्त। (पु०) नीम का पेड़।—केश, (वि०) भूरे बालों वाला —रसः, (पु०) शराब या आसव।—वारि, (न०) काँजी। चावल का खट्टा माँड़।

पक्वता (स्त्री०) पकने की या पूर्ण वृद्धि की क्रिया।

पक्ष्णु (वि०) पका हुआ।

पच् (वि०) पका हुआ। सेका हुआ।

पच (वि०) १ पकाना। भूनना। २ (पेट में) पचाना।

पचः (पु०) } अन्नादि का पचाना।
पचा (स्त्री०) }

पचकः (पु०) रसोइया।

पचत (वि०) १ पकाया हुआ। २ पका हुआ।

पचतः (पु०) १ अग्नि। २ सूर्य। ३ इन्द्र।

पचत (न०) बना हुआ भोजन।—भृज्ज्जता, (न०) बराबर भूजना व सेकना।

पचन (वि०) [पच्—करणे ल्युट्] पकाना। साफ करना।

पचनम् (न०) १ रसोई। २ रसोई बनाने का साधन। बरतन। ईंधन। ३ पकजाना। पाल में पकजाना।

पचपचः (पु०) शिव जी की उपाधि।

पचा (स्त्री०) पकाने की क्रिया।

पचिः (पु०) १ अग्नि। २ रसोई बनाने की प्रक्रिया।

पचेलिम (वि०) १ शीघ्र पकाना। २ पकने लायक। पकने योग्य। फलादि का पकना, अपने आप या कृत्रिम ढंग से।

पचेलिमः (पु०) १ अग्नि। २ सूर्य।

पचेलुकः (पु०) रसोइया। पाचक।

पंझटिका } (स्त्री०) छोटी घंटी (बजने की)।
पञ्झटिका }

पज्र (वि०) [वैदिक] १ ताकतवर। मज़बूत। २ धनवान। धनी।

पज्रः (पु०) अँगिरस की उपाधि।

पंचथुः } (पु०) १ काल। समय। २ कोयल।
पञ्चथुः }

पंच } (वि०) फैला हुआ। बढ़ा हुआ।
पञ्च }

पंचन् } [संख्यावाची विशेषण] इसका प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है। पाँच।—अंशः, (पु०) पाँचवा भाग। पाचवाँ।—अग्निः, (पु०) १ पाँच अग्नि का समूह। २ पंचाग्नि का
पञ्चन् }

समुदाय। (दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य ये यज्ञीय पाँचों अग्नियों के नाम हैं।) अग्निहोत्री गृहस्थ। २ शरीरस्थ पञ्चअग्नि विशेष। ३ इन अग्नियों के सिद्धान्त को जानने वाला।—अंग, (वि०) पाँच अंगों वाला।—अंगः, (पु०) १ कछुवा। २ पचकल्याण घोडा।—अंगी, (स्त्री०) घोड़े की लगाम।—अंगम्, (न०) १ पांच भागों का समुदाय। २ पूजन के पाँच प्रकार। पञ्चोपचार। ३वृक्ष की पाँच वस्तुएँ। [१ छाल २ पत्ते ३ फूल ४ जड ५ फल] ४ तिथिपत्र। (जिसमें ये पाँच बातें हों) यथा—(१ तिथि २ वार ३ नक्षत्र ४ योग और ५ करण) —अङ्गिकम्, (वि०) पाँच अवयवों वाला।—अंगुल, (वि०) [स्त्री०—अंगुला, अंगुली] पाँच अँगुल बड़ा।—अंगुलः, (पु०) रेंडी का रूख।—अजं,—आजं, (न०) बकरे के शरीर की पाँच वस्तुएँ।—अप्सरस्, (न०) एक झील का नाम जिसे माण्डकर्णी ने बनाया था।—अमृत, (वि०) ५ पदार्थों से बना हुआ।—अमृतं, (न०) पाँच अर्थों का समूह। पाँच मीठी वस्तुओं का समुदाय जो देवपूजन में प्रयुक्त होती हैं। [दुग्धं च शर्करा चैव घृतं, दधि तथा मधु]—अर्चिस्, (पु०) बुधग्रह।—अवस्थः, (पु०) लाश।—अविकं, (न०) भेड़ के शरीर की पाँच चीज़े।—अशीतिः, (स्त्री०) ८५ पचासी।—अहः, (पु०) पाँच दिन का काल।—आतप, (वि०) पंचाग्नि तापना। (चार-अग्नि और १ सूर्य) एक प्रकार का तप।—अहः, (पु०) पाँच दिवस का काल।—आत्मक, (वि०) पांच तत्वों का बना हुआ। (शरीर जैसे)—आननः,—आस्य,—मुखः,—वक्त्रः, (पु०) १ शिव। २ शेर। ३ सिंहराशि।—आननी, (स्त्री०) दुर्गा देवी।—आम्नायः (पु० बहुवचन) पाँचशास्त्र जो शिवजी के पाँच मुखों से निकले बतलाये जाते हैं।—इन्द्रियं, (न०) पाँच इन्द्रियों का समुदाय।—इषुः,—बाणः,—शरः, (पु०) कामदेव। (कामदेव के पाँच बाण ये हैं।—

"अरविंदमशोकं च चूतं च नवमल्लिका।
नीलोत्पलं च पचैते पंचबाणस्य सायकाः।"

अन्यच्च

सम्मोहनोन्मादनौ च शोषणस्तापनस्तथा।
स्तम्भनश्चेति कामस्य पञ्चबाणाः प्रकीर्तिताः।

—उष्मन्, (पु० बहु०) शरीरस्थ पाँच अग्नि।—कपाल, (वि०) पाँच प्यालों में बनाया हुआ या भेंट किया हुआ।—कर्ण, (त्रि०) (जानवरों के) कान पर पाँच की संख्या दागना।—कर्मन्, (न०) पाँच प्रकार की चिकित्सा। [१ वमन, २ रेचन, ३ नस्य, ४ अनुवासन, ५ निरूह]—कृत्वस्, (अव्यया०) पाँचवार। पाँच मरतवा।—कोणः, (पु०) पचकौना।—कोलं, (न०) पाँच जाति का समूह।—कोषाः, (पु० बहु०) शरीरस्थ ५ कोष। [पाँच कोष ये हैं:— १ अन्नमयकोष। २ प्राणमयकोष। ३ मनोमयकोष। ४ विज्ञानमयकोष। ५ आनन्दमयकोष।] —क्रोशी, (स्त्री०) १ पाँच कोश का अन्तर। २ बनारस का नाम।—खट्वं,—खट्वी, (स्त्री०) पाँच खाटों का समुदाय।—गवं, (न०) पाँच गौओं का समुदाय।—गव्यं, (न०) गौ से उत्पन्न पाँच पदार्थ। [१ दूध, २ दही, ३ घी, ४ मूत्र, ५ गोबर]—गु (वि०) पाँच गौ देकर खरीदा हुआ।—गुण, (वि०) पाँच गुना।—गुणाः, (पु०) रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द।—गुणी, (स्त्री०) ज़मीन।—गुप्तः, (पु०) १ कछुवा। २ चार्वाकमत।—चत्वारिंश, (वि०) पैतालीसवाँ।—जनः, (पु०) १ मनुष्य। मानवजाति। २ एक दैत्य, जिसे कृष्ण भगवान ने मारा था। ३ जीवात्मा। ४ पाँच प्रकार के जीव [अर्थात् १ देवता, २ मानव, ३ गन्धर्व, ४ नाग और ५ पितृ।] ५ पाँच वर्ण यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अंत्यज।—जनः, (पु०) अभिनयकर्त्ता। विदूषक। मसखरा। ज्ञानः, (पु०) १ बुद्धदेव की उपाधि। २ पाशुपत सिद्धान्तों का जानकार पुरुष।—तक्षं, (न०)—तक्षी (वि०) पाँच बढ़इयों का समूह।—तत्त्वं, (न०) १ पाँच तत्वों का समूह। [पाँचतत्व—१ पृथ्वी, २ जल, ३ तेजस्, ४ वायु और ५ आकाश]

२ पंचमकार (तांत्रिकों के) [यथा मद्य, माँस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन ।)—तंत्रम्, (न०) एक नीति विषयक संस्कृत का ग्रन्थ जिसमें पाँच अध्याय है और जिसमें पॉच नैतिक विषयों का उल्लेख किया गया है ।—तन्मात्रम्, (न०) इन्द्रियों से ग्रहण किये जाने वाले पॉच विषय; यथा शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध ।—तपस्, (पु०) वह साधु जो ग्रीष्मऋतु में सूर्यातप में अपने चारों ओर चार जगहों में आग जला तथा पाँचवें सूर्य के आतप से पंचाग्नि तापता है ।—तय, (वि०) पाँचगुना । —तयः, (पु०) पञ्चक । पञ्चबन्धन ।—तिक्तं, (न०) पांच कड़वी दवाइयां—

[निंबामृतावृषपटोलनिदिग्धिकाख्य ।"

—त्रिंशः, (पु०) ३५वाँ ।—त्रिंशत्,—त्रिंशतिः, (स्त्री०) ३५ । पैंतीस ।—दश, (वि०) १५ वाँ । १५ से बढ़ा हुआ अर्थात् पन्द्रह अधिक। यथा पञ्चशतं दशं यानी ११५ ।—दशन्, (वि०) (बहु) १५ । पन्द्रह ।—दशिन्, (वि०) १५ से बना हुआ ।—दशी, (स्त्री०) पूर्णिमासी ।—दीर्घ, (न०) शरीर के पांच दीर्घ भाग; अर्थात्

बाहू नेत्रद्वय कुक्षिर्द्वे तु नासे तथैव च
स्तनयोरन्तरम् चैव पञ्चदीर्घं प्रचक्षते ॥"

—देवताः, (पु०) पाँच देवता यथा

आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम् ।
पञ्चदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत् ॥

—नखः, (पु०) १ पांच नखों वाले कोई जीव । २ हाथी । ३ कछुवा । ४ सिंह या चीता ।—नदः, (पु०) पंजाब जहाँ पाँच नदियाँ है । [शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, और वितस्था । इनके आधुनिक नाम है । सतलज, व्यास, रावी, चिनाव और झेलम]—नदाः, (पु० बहु०) पंजाब प्रान्त वासी ।—नवतिः, (स्त्री०) ९५ ।—नीराजनं, (न०) किसी देवविग्रह के सामने पाँच वस्तुओं का घुमाना यथा, दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान ।—पञ्चाश, (वि०) पचपनवा । ५५वाँ । —पञ्चाशत्, (स्त्री०) ५५ । पचपन ।—पदी, (स्त्री०) पॉच कदम ।—पर्वन, (न० बहु०) पॉच पर्व यथा—

चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा ।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रांतिरेव च ।"

—पाद्, (वि०) पाँच पैरों का ।—(पु०) संवत्सर । - पात्रं, (न०) पाँच बरतनों का समूह । २ श्राद्ध विशेष जिसमें पाँच पात्रों में रख कर भोग लगाया जाता है ।—पितृ, (पु० बहु०) पाँच पिता यथा ।

"जनकश्चोपनेता च यश्च कन्यां प्रयच्छति ।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः ॥"

—प्राणाः, (पु० बहुवचन) शरीरस्थ पांच प्राणवायु । [यथा—प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान ।]—प्रसादः, (पु०) विशेष ढग का मन्दिर जिसमें चार कौनों पर चार कलस और लाट या धौरहरा हो ।—बंधः, (पु०) अर्थदण्ड विशेष जो चोरी गयी या खोयी हुई वस्तु से या उसके मूल्य का पाँचवाँ भाग होता है । बाणः,—वाणः,—शरः, (पु०) कामदेव ।—बाहुः, (पु०) शिव ।—भद्र, (वि०) १ पाँच गुणों वाला । २ पाँच मसाले की चटनी । ३ पाँच शुभ लक्षणों वाला (घोड़ा) । ४ दुष्ट ।—भुज, (वि०) पाँच भुजा की शक्ल । पचकुनिया ।—भुजः, (पु०) पचकोना ।—भूतं, (न०) पाँच तत्व ।—मकारं, (न०) वाममार्गियों के मतानुसार मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन ।—महापातकम्, (न०) मनुस्मृति के अनुसार ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु-स्त्री-गमन और इन पातकों के करने वाले का सहवास; पाँच महापातक माने गये हैं ।—महायज्ञाः, (पु० बहु०) स्मृतियों और गृह्यसूत्रों के अनुसार पाँच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थ के लिये आवश्यक है । वे पाँच कृत्य ये हैं :—

१—अध्यापन—इसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं । सन्ध्यावंदन इसीके अन्तर्गत है ।
२—पितृतर्पण—इसे पितृयज्ञ भी कहते हैं ।
३ - हवन—इसको देवयज्ञ कहते हैं ।
४—बलिवैश्वदेव—इसे भूतयज्ञ कहते हैं ।
५—अतिथिपूजन—इसे नृयज्ञ कहते हैं ।

—माषक, या —माषिक, (वि०) अर्थदण्ड जिसमें पाँच माशा (सुवर्ण) अपराधी को देना पड़ता

है।—मात्स्य, (वि०) हर पाँचवे महीने होने वाला ।—मुखः, (पु०) पाँच नोंकों वाला वाण।—मुद्रा, (स्त्री०) तंत्रानुसार पूजन में पाँच प्रकार की मुद्राएं दिखाना आवश्यक है। वे पाँच मुद्रा ये हैं —१ आवाहनी। २ स्थापनी। ३ सन्निधापनी । ४ सवोधिनी । ५ सम्मुखी करणी।—ग्रामः, (पु०) दिन।—रत्नं, (न०) पांच जावाहिर। (१) १ नीलम। २ हीरा। ३ पद्मराग। ४ मोती और मूंगा। (२) १ सोना। २ चाँदी । ३ मोती। ४ लाजावर्त (रावटी) ५ मूंगा। (३) १सुवर्ण, २हीरा, ३ नीलम, ४ पद्मराग और ५ मोती। २ महाभारत के पांच प्रसिद्ध उपाख्यान ।—रसा, (स्त्री०) आँवला ।—रात्रं, (न०) पाँच रात का समय।—राशिकं, (न०) गणित का एक प्रकार का हिसाव जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।—लक्षणम्, (न०) पुराण, जिसमें पांच लक्षण होते हैं। [वे लक्षण ये हैं—१ सृष्टि की उत्पत्ति, २ प्रलय, ३ देवताओं की उत्पत्ति और वंशपरम्परा। ४ मन्वन्तर और ५ मनु के वंश का विस्तार। लवणं, (न०) पाँच प्रकार के निमक [१ काँच । सेंधा। ३ सामुद्र, ४ विट और सोंचर]—लाङ्गलकम्, (न०) महादान। अर्थात् उतनी भूमि का दान जिसको पाँच हल जोत सकें । -लोहं, (न०) पाँच धातु १ तांवा। २ पीतल। ३ रांगा ४ सीसा और लोहा । (मतान्तरे)। १ सोना। २ चाँदी। ३ तांवा । ४ सीसा और रांगा।—लोहकम्, (न०) पाँच प्रकार का लोहा। यथा—१ वज्रलौह। २ कान्तलौह। ३ पिण्डलौह । ४ क्रौंचलौह। ५ --वटः, (पु०) यज्ञोपवीत। जनेऊ ।—वटी, (पु०) पाँच वृक्षों का समूह। [पाँचवृक्ष। १ अश्वत्थ । २ विल्व। ३ वट। ४ आँवला। ५ अशोक]। २ दण्डकारण्य के अन्तर्गत स्थान विशेष । यह स्थान गोदावरी नदी के तट पर नासिक में है। सीताहरण यहीं हुआ था।—वर्गः, (पु०) पाँच वस्तुओं का समूह । यथा पाँच तत्व, पाँच इन्द्रियाँ, पाँच महायज्ञ।—वर्षदेशीय, (वि०) लगभग पाँच वर्ष का।—वर्षीय, (वि०) पाँच वर्ष का । - वल्कलं, (न०) पाँच वृक्षों की छाल का समुदाय। (वे पाँच वृक्ष ये हैं—वरगद, गूलर, पीपल, पाकर और वेत या सिरिसि ।]—वार्षिक, (वि०) प्रति पाँचवे वर्ष होने वाला।—वाहिन्, (वि०) (सवारी जिसमें पांच घोड़े जुते हों।—विंश, (वि०) २५वाँ।—विंशति , (स्त्री०) २५। पचीस।—विंशतिका, (स्त्री०) २५ (कहानियों का) संग्रह । यथा वैतालपचीसी।—विध, (वि०) पाँच प्रकार का । पचगुना—वृत्,—वृतं, (न०) (अव्य०) पचगुना।—शत, (वि०) जिसका जोड़ ५०० हो।—शतं, (न०) १ १०५ । २ पाँचसौ ।—शाखः, (पु०) १ हाथ। २ हाथी।— शिखः, (पु०) शेर। सिंह। - ष, (वि०) (वहु०) पाँच या छ ।—षष्ठ, (वि०) ६५ वाँ।—षष्टिः, (स्त्री०) ६५।—सप्तत, (वि०) ७५वाँ।—सप्ततिः, (स्त्री०) ७५।—सुगन्धकं (न०) पाँच प्रकार के सुगन्ध द्रव्य। यथा।

कर्पूरककोलवङ्गपुष्पगुवाकजातीफलपञ्चकेन।
समांशभागेन च योजितेन मनोहरं पंचसुगन्धकं स्यात्।

सूनाः, (स्त्री०) पाँच प्रकार की हिंसा जो गृहस्थों से, घर के कामधंधों में हुआ करती है। वे पाँच हिंसाएं जिन कर्मों से होती हैं वे ये हैं।—१ चूल्हा जलाना। २ आटा पीसना। ३ झाड़ू देना। ४ कूटना। ५ पानी का घड़ा रखना।—हायन, (वि०) पाँच वर्ष का।

पंचक, पञ्चक (वि०) १ पाँच से सम्पन्न। पाँचसम्बन्धी। २ पाँच से वना हुआ। ४ पाँच से खरीदा हुआ। ५ पाँच फी सदी लेने वाला।

पंचकं, पञ्चकम् (न०), पंचकः, पञ्चकः (पु०) पाँच का जोड़ या पाँच का समूह।

पंचता, पञ्चता, पंचत्वं, पञ्चत्वम् (न०) १ पचगुनी हालत। २ पाँच का समूह। ३ पाँच तत्वों का समुदाय। ४ मृत्यु। नाश।

पंचयति, पञ्चयति (वि०) पचगुना।

पंचधा / पञ्चधा (अव्यया०) १ पाँच भागों में। २ पाँच प्रकार से।

पंचनी / पञ्चनी (स्त्री०) शतरज जैसे खेल विशेष की बिछांत का कपड़ा।

पंचम / पञ्चम (वि०) [स्त्री०—पञ्चमी] १ पाँचवाँ। २ पाँचवाँ भाग। दक्ष। निपुण। रुचिर। सुन्दर।—आस्यः, (पु०) कोकिल।

पंचमः / पञ्चमः (पु०) १ सप्तस्वरों में से पाँचवाँ स्वर। यह स्वर पिक या कोकिल के कण्ठस्वर के समान माना गया है। २ राग विशेष। ३ मैथुन।

पंचमं / पञ्चमम् (अव्यया०) पाँचवी बार।

पंचमी / पञ्चमी (स्त्री०) १ पाँचे। पाख की पाँचवी तिथि। २ व्याकरण में पंचमी विभक्ति। ३ द्रौपदी। ४ खेल विशेष की बिछाँत।

पंचशः / पञ्चशः (अव्यया०) पाँच और पाँच। पाँच से।

पंचमिन् / पञ्चमिन् (वि०) पाँचवे वर्ष की उम्र में।

पंचाश / पञ्चाश [स्त्री०—पञ्चाशी] (वि०) पचासवाँ।

पंचाशत्, पञ्चाशत् (पु०) / पंचाशतिः, पञ्चाशतिः (स्त्री०) पचास।

पंचाशिका / पञ्चाशिका (स्त्री०) पचास का समूह। पचास पद्यों का संग्रह। यथा चौरपञ्चाशिका।

पंचिका / पञ्चिका (स्त्री०) १ ऐतरेय ब्राह्मण। २ पाँच अध्यायों व खण्डों का समूह। ३ पाँच पाँसों से खेला जाने वाला खेल विशेष।

पंचालः / पञ्चालः (पु०) पञ्चाल देश का राजा।

पंचालाः (पु०) / पञ्चालाः (पु०) (पु० बहु०) एक देश विशेष और उस देश के अधिवासी।

पंचालिका / पञ्चालिका (स्त्री०) गुड़िया। पुतली।

पंचाली / पञ्चाली (स्त्री०) १ गुड़िया। पुतली। २ राग विशेष। ३ शतरंज या अन्य उसी प्रकार के एक खेल की बिछाँत। (पंचारी का अर्थ भी यही है)

पंचावटः / पञ्चावटः (पु०) यज्ञीय सूत्र जो कंधे के आरपार पहिना जाता है। जनेऊ।

पंजरं / पञ्जरम् (न०) पिंजड़ा। चिड़ियाखाना।—आखेटः, (पु०) मछली पकड़ने का जाल या डलिया विशेष।—शुकः, (पु०) पिंजड़े में बंद तोता।

पंजरं, पञ्जरम् (न०) / पंजरः, पञ्जरः (पु०) १ पसली। २ ठाँठर। (पु०) १ शरीर। २ कलियुग। ३ गौ का एक संस्कार विशेष।

पंजरकं, पञ्जरकम् (न०) / पंजरकः, पञ्जरकः (पु०) पिंजड़ा।

पंजिः, पञ्जिः / पंजी, पञ्जी (स्त्री०) १ रुई का गोलाकार गाला जिससे सूत काता जाता है। २ लेखा। बही। रेजिस्टर। ३ पत्ता। तिथिपत्र।—कारः,—कारकः, (पु०) १ लेखक। क्लार्क। २ पत्रा बनाने वाला।

पंजिका / पञ्जिका (स्त्री०) १ टीका। व्याख्या। २ यमराज की वह लेखावही जिसमें मनुष्यों के शुभाशुभ कार्यों का लेखा लिखा जाता है। ३ रोकड़-वही, जिसमें आमदनी और ख़र्च लिखा जाता है।—कारकः, (पु०) लेखक। मुनीम। कायथ जाति का पुरुष।

पट् (धा० पर०) (पटति) जाना।

पटम् (न०) / पटः (पु०) १ कपड़ा। वस्त्र। वस्त्र का टुकड़ा। २ मिहीन कपड़ा। ३ पर्दा। घूँघट। ४ पटरी या कपड़े का टुकड़ा, जिस पर चित्र लिखे जाँय। (पु०) कोई वस्तु जो अच्छे प्रकार बनी हो। (न०) छत। छावन या छप्पर।—उटजं, (न०) तंबू। क़नात।—कर्मन्, (न०) १ जुलाहे का काम। बुनाई।—कारः, (पु०) १ जुलाहा। २ चित्रकार।—कुटी, (स्त्री०)—मण्डपः, (पु०)—वापः, (पु०)—वेश्मन्, (न०) ख़ीमा।—वासः, (पु०) १ ख़ीमा। २ बंडी। कुर्ती। ३ सुगन्धिपूर्ण चूर्ण।—वासकः, (पु०) सुगन्धिपूर्ण चूर्ण।

पटकः (पु०) १ शिविर। तंबू। खेमा। २ सूती कपड़ा। ३ आधा गाँव।

पटमय (वि०) कपड़े का बना।

पटमयः (पु०) खेमा। तंबू।

पटच्चरं (न०) चिथड़ा। फटा पुराना कपड़ा।

पटच्चरः (पु०) चोर।

पटत्कः (पु०) चोर ।

पटपटा (अव्यया०) पटपट की आवाज़ ।

पटलं (न०) १ छत्त । छान । छप्पर । २ उघार । पर्दा । आवरण । घूंघट । बुरक़ा । ३ आँख ढकने का घूंघट । ४ ढेर । समूह । अंवार । ५ टोकरी । ६ लावलश्कर । लवाज़मा । ७ माथे पर का या शरीर के अन्य किसी अंग का चिन्ह । ८ ग्रन्थ का अध्याय ।

पटलः (पु०) } १ वृत्त । पेड़ । २ डंठुल ।
पटली (स्त्री०) }

पटलप्रान्तः (पु०) छत्त का किनारा ।

पटहः (पु०) १ ढोल । मृदंग । तवला । दुन्दभी । नगाड़ा । डंका । २ आरम्भ करने वाला । ३ वध करने वाला ।—घोषकः (पु०) ड्योढ़ी पीटने वाला । ढिंढोरा पीटने वाला ।—भ्रमणं (न०) लोगों को जमा करने के लिये इधर उधर घूम कर ढोल वजाने वाला ।

पटाकः (पु०) पत्ती । चिड़िया ।

पटालुका (स्त्री०) जोंक । जलौका ।

पटिः } (स्त्री०) १ रंगशाला का पर्दा । २ वस्त्र ।
पटी } ३ मोटा कपड़ा । ४ कनात । ५ रंगीन वस्त्र ।—क्षेपः, (पु०) रंगमंच की पर्दा डालना ।

पटिका (स्त्री०) वुना हुआ वस्त्र ।

पटिमन् (पु०) १ निपुणता । चातुरी । २ तीव्रता । ३ खारपन । ४ कड़ाई । सख़्ती । रूखापन । ५ प्रचण्डता । उग्रता ।

पटीर (वि०) सुन्दर । रूपवान । लंवा । ऊँचा ।—जन्मन्, (पु०) चन्दन का वृत्त ।

पटीरः (पु०) १ गेंद । गोली (खेलने की) । २ चन्दन । ३ कामदेव ।

पटीरं (न०) १ कत्था । २ चलनी । ३ पेट । ४ खेत । ५ वादल । ६ उचाई ७ मूली । ८ गठिया । ९ मोतिया विन्दु ।

पटु (वि०) [स्त्री०—पटु, या पट्वी] १ चतुर । निपुण । योग्य । २ चरपरा । तीता । ३ कुशाग्र बुद्धि । ४ प्रचण्ड । उग्र । ५ चीख । स्पष्ट । चीखने वाला । ६ उद्देश्योपयोगी । स्वभावतः उन्मुख । प्रवण । ७ सख़्त । निष्ठुर । नृशंस हृदय । ८ चालाक । फ़ितरती । धूर्त । मक्कार । छलिया । ९ स्वस्थ । तंदुरुस्त । १० क्रियाशील । मशगूल । ११ वातूनी । १२ फूँका हुआ । वढ़ाया या फुलाया हुआ । १३ सख़्त । भयङ्कर । १४ वडबोला । वेलगाम ।

पटुं (न०) } छत्ता । कुकुरमुत्ता । धरती का फूल ।
पटुः (पु०) } साँप की टोपी । गगनधूल । खूखरी । टेकनस । खुंभी ।

पटु (न०) निमक ।—कल्प,—देशीय, (वि०) चालाक । साधारण चतुर ।—रूप, (वि०) अत्यन्त चतुर ।

पटुता (स्त्री०) } १ चतुराई । २ चातुर्य । निपुणता
पटुत्वं (न०) } योग्यता । ३ कार्यकारिणी शक्ति ।

पटोलः (पु०) परवर । परवल ।

पटोलकः (पु०) घोंघा । सीपी ।

पट्टं (न०) } १ पट्टी । तख़्ती । लिखने की
पट्टः (पु०) } पटिया । २ ताँवे आदि धातुओं की चिपटी पट्टी जिसके ऊपर राजाज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी । ३ मुकुट । किरीट । कलँगी । ४ धज्जी । ५ रेशम । ६ मिहीन या रंगीन वस्त्र । वस्त्र । ७ सव कपड़ों के ऊपर पहिनने का वस्त्र । ८ पगड़ी । साफा । मंडील । ९ राजसिंहासन । तख्त । १० कुर्सी । काठ का मूढ़ा । ११ ढाल । १२ चक्की का पाट । १३ चौराहा । १४ नगर । कस्वा । १५ घाव या चोट पर वाँधने की पट्टी ।—अभिषेकः, (पु०) मुकुटधारण की क्रिया ।—अर्हा, (स्त्री०) पटरानी ।—उपाध्यायः (पु०) राजा की आज्ञाओं को लिखने वाला मुख्य लेखक । ख़ास क़लम ।—जं, (न०) एक प्रकार का कपड़ा ।—देवी,—महिषी,—राज्ञी, (स्त्री०) पटरानी ।—वस्त्र,—वासस्, (वि०) बने हुए रेशमी वस्त्र अथवा रंगीन वस्त्र धारण करने वाला ।—सूत्रकारः (पु०) रेशमी वस्त्र बुनने वाला आदमी ।

पट्टकः (पु०) १ धातु की चपटी पट्टी जिसपर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाय । २ चोट या घाव की पट्टी । ३ कागज़ात । प्रमाण-पत्र ।

पट्टनम् (न०) } नगर । शहर ।
पट्टनी (स्त्री०) }

पट्टला (स्त्री०) मण्डल । ज़िला । समाज ।

पट्टिका (स्त्री०) १ पट्टी । तख़्ती । २ प्रमाणपत्र । सनद । ३ वस्त्रखण्ड । कपड़े का टुकड़ा । ४ रेशमी वस्त्र का टुकड़ा । ५ घाव या चोट की पट्टी ।—वायकः, (पु०) रेशमी वस्त्र बनाने वाला जुलाहा या कोरी ।

पट्टिशः—पट्टिस } (पु०) एक प्रकार का बड़ी
पट्टीशः—पट्टीस } पैनी नोंक का भाला ।

पट्टी (स्त्री०) १ माथे का आभूषण विशेष । खौर । २ घोड़े का ज़ेरबंद या तंग ।

पट्टोलिका (स्त्री०) १ पट्टा । जो भूमि जोतने का जोते को दिया जाता है । २ लिखित कानूनी व्यवस्था ।

पठ् (धा० परस्मै०) (पठति, पठित) १ पढ़ना । बार बार दुहराना । पाठ करना । २ अध्ययन करना । ३ उद्धृत करना । वर्णन करना । ४ प्रकट करना । घोषणा करना । ५ पढ़ाना । ६ सीखना । पढ़ना ।

पठकः (पु०) पढ़ने वाला ।

पठनं (न०) १पढ़ना । पाठ करना । २ उल्लेख करना । ३ अध्ययन करना ।

पठिः (स्त्री०) पढ़ना । अध्ययन करना ।

पठित (व० कृ०) १ पढ़ा हुआ । पाठ किया हुआ । दुहराया हुआ । २ अधीत ।

पण् (धा० आत्म) [पणते, पणित] ख़रीदना । अदलबदल करना । २ मोल भाव करना । ३ दाँव लगाना । होड़ बदना । ४ जोखो उठाना । ५ खेल में जीतना ।

पणः (पु०) १ पाँसे से खेलना या दाँव लगाकर खेलना । २ कोई खेल जो दाँव लगाकर या होड़ बदकर खेला जाय । ३ दाँव पर रखी हुई वस्तु । ४ शर्त । ठहराव । इकरार । ५ मज़दूरी । भाड़ा । ६ पुरस्कार । इनाम । ७ रकम जो किसी सिक्के में हो या कौड़ियों में । ८ सिक्का विशेष जो ८०कौड़ियों का होता था । ९ मूल्य । दाम । १० धनदौलत । सम्पत्ति । ११ बिक्री के लिये वस्तु । १२ व्यवसाय बनिज । लैन दैन । १३ दूकान । १४ फेरीवाला । १५ शराब खींचने वाला । १६ मकान । घर । १७ सेना की चढ़ाई का ख़र्च । १८ मुट्ठी भर कोई भी वस्तु । १९ विष्णु ।—अंगना,—स्त्री (स्त्री०) वेश्या । रंडी । कसबी ।—अर्पणम् (न०) ठेका ।—ग्रन्थिः (पु०) मंडी । पैंठ ।—बन्धः, (पु०) १ सन्धि । २ इकरारनामा । शर्तनामा ।

पणता (स्त्री०) } क़ीमत । मूल्य । दाम ।
पणत्वं (न०) }

पणनम् (न०) १ खरीदना । मोललेना । विनिमय । २ दाँव । ३ बिक्री । व्यवसाय ।

पणस (पु०) बिक्री की वस्तु ।

पणाया (स्त्री०) १ लैन दैन । व्यवसाय । २ बाज़ार । ३ व्यापार का लाभ । ४ जुआ । ५ प्रशंसा ।

पणायित (वि०) १ प्रशंसित । २ खरीदा हुआ । बेचा हुआ । मोलभाव किया हुआ ।

पणिः (स्त्री०) बाज़ार । मंडी । (पु०) १ लोभी । कृपण । कंजूस । २ पापी जन ।

पणिक (वि०) ५० पण का (जुर्माना) ।

पणित (व० कृ०) १मोल भाव किया हुआ । २ दाँव पर लगाया हुआ ।

पणितं (न०) दाँव । होड़ ।

पणितृ (पु०) व्यवसायी । सौदागर ।

पण्य (वि०) १ बिक्री के लिये । २ मोल भाव करने के लिए ।—अंगना, (स्त्री०)—योषित्, (स्त्री०) —विलासिनी—स्त्री, (स्त्री०) रंडी । वेश्या । कसबी ।—अजिरं, (न०) गाँव ।—आजीवः, (पु०) व्यापारी ।—आजीवकम्, (न०) मंडी । पैंठ ।—पतिः, (पु०) बड़ा व्यापारी ।—फलत्वं (न०) व्यापार का लाभ ।—भूमिः, (स्त्री०) मालगोदाम ।—वीथिका,—वीथी, —शाला, (स्त्री०) बाज़ार । मंडी । २ दूकान ।

पण्यः (पु०) १ बिक्री के लिये कोई भी चीज़ या सामान । २ व्यापार । सौदागरी । बनिज । ३ मूल्य ।

पणवः (पु०) ढोल । ढोलक । तबला ।

पणाविन् (पु०) शिव जी का नाम ।

पंड, पराड् (धा० आत्मने०) [पराडते, पराडित] जाना। हिलना। डोलना। (उभय०) संग्रह करना। देर लगाना। जमा करना।

पंडः, पराडः (पु०) हिजड़ा। नपंसक।

पंडा, पराडा (स्त्री०) १ बुद्धि। समझदारी। २ विद्या। विज्ञान्।—अपूर्व, (न०) अदृष्ट फल की अप्राप्ति। भाग्य में जो लिखा हो उसका न होना।

पंडावत्, पराडावत् (वि०) बुद्धिमान्। (पु०) विद्वान। पण्डित।

पंडित, पण्डित (वि०) १ विद्वान्। बुद्धिमान्। २ चतुर। निपुण। योग्य।

पंडितः, पण्डितः (पु०) १ विद्वान्। २ धूप। लोबान आदि। ३ विशेषज्ञ।—जातीय, (वि०) कुछ कुछ चतुर।—मराडलं, (न०)—सभा, (स्त्री०) विद्वानों का समुदाय।—मानिक,—मानिन्, (पु०) अपने को पण्डित मानने वाला। वादिन्, (वि०) अपने को बुद्धिमान् समझने का दावा रखने वाला।

पंडितक, पण्डितक (वि०) बुद्धिमान्। अक्लमंद।

पंडितकः, पण्डितकः (पु०) विद्वान आदमी।

पंडितिमन्, पण्डितिमन् (पु०) ज्ञान। बुद्धिमानी। विद्वत्ता।

पत् (धा० पर०) [पतति,—पतित] १ गिरना। नीचे आना। नीचे उतरना। गिर पड़ना। नीचे उतरना। २ उड़ना। आकाश में उड़ना।

पत (वि०) पुष्ट। भलीभाँति खिलाया पिलाया हुआ।

पत. (पु०) १ उड़ान। २ गमन। पतन। उतार।—गः, (पु०) पक्षी।

पतक (वि०) गिरने वाला। नीचे उतरने वाला।

पतकः (पु०) ज्योतिष सम्बन्धी सारिणी।

पतंगम्, पतङ्गम् (न०) १ पारा। पारद। २ चन्दन विशेष।

पतंगः, पतङ्गः (पु०) १ चिड़िया। २ सूर्य। टिड्डी। ४ मधुमक्षिका। ५ गेंद। ६ शोला। ७ शैतान। ८ पारा। पारद। ९ कृष्ण।

पतंगं, पतङ्गं (न०) १ चिड़िया। २ पतंगा।

पतंगिका, पतङ्गिका (स्त्री०) छोटी चिड़िया। छोटी मधुमक्खी।

पतंगिन्, पतङ्गिन् (पु०) पक्षी।

पतंजलिः, पतञ्जलिः (पु०) महाभाष्य के प्रसिद्ध रचयिता। योग दर्शन के निर्माता।

पतत् (वि०) [स्त्री—पतन्ती] उड़ने वाला। उतरने वाला। (पु०) पक्षी।—ग्रहः, (पु०) सेना जो बचत में रखी जाय। २ पीकदान।—भीरुः, (पु०) बाज पक्षी। शिकरा।

पतत्रम् (न०) १ डैना। २ पर। ३ सवारी।

पतत्रिः (पु०) पक्षी।

पतत्रिन् (पु०) १ पक्षी। तीर। ३ घोड़ा। (न०) (द्विव०) [वैदिक] दिन और रात।—केतनः, (पु०) विष्णु।—राजः, (पु०) गरुड़।

पतनम् (न०) [पत्-भावे ल्युट्] १उड़ने की क्रिया। नीचे आने की क्रिया। २ अस्त होना। डूबना। ३ नरक में गिरना। ४ स्वधर्म त्याग। गौरवान्वित पद से पतन। पात। नाश। ह्रास। ७ मृत्यु। ८ लटकपड़ना। ९ (गर्भ) पात। १० (अङ्कगणित में) बाक़ी। ११ ग्रह का विस्तार।—धर्मिन्, (वि०) नाशवान्। नश्वर।

पतनीय (वि०) जातिभ्रष्ट करने वाला। पतन करने वाला।

पतनीयं (न०) जातिभ्रष्टकर पाप।

पतयः, पतसः १ (पु०) १ चन्द्रमा। २ पक्षी। ३ टिड्डा।

पतयालु (वि०) गिरने योग्य। पतनशील। [गमन।

पतापत (वि०) १ गमनशील। पतनशील। २ प्रायः।

पतित (व० कृ०) १ गिरा हुआ। नीचे उतरा हुआ। २ टपका हुआ। ३ (नैतिक) अधःपात हुआ। ४ धर्म त्यागने वाले। अधःपतित। जातिभ्रष्ट। ६ युद्ध में गिरा हुआ। हारा हुआ। पराजित। ७ अन्तर्गत। ८ रखा हुआ। स्थापित।—उत्पन्न, (वि०) जातिभ्रष्ट से उत्पन्न।—सावित्रीकः, (पु०) वह द्विजाति जिसका उपनयन संस्कार या तो हुआ ही न हो अथवा हुआ भी हो तो विधिपूर्वक नहीं।

पतितं (न०) उड़ान।
पतेर (वि०) १ उड़ाकू। उड़ने वाला। २ गमन करने वाला।
पतेरः (पु०) १ पक्षी। २ रन्ध्र या गढ़ा। ३ माप विशेष। आढ़क।
पत्मन्, पत्वन् (न०) [वैदिक] उड़ान।
पतंचिका, पतञ्चिका (स्त्री०) धनुष का रोदा। प्रत्यञ्चा। कमान की डोरी।
पताका (स्त्री०) १ झंडी। झंडा। २ झंडे का डंडा। ३ चिन्ह। राजचिन्ह। ४ नाटक की कोई ऐतिहासिक घटना। ५ माङ्गलिक। सौभाग्य।—अंशुकं (न०) झंडा।—स्थानकं, इसकी परिभाषा इस प्रकार है।—

"यत्रार्थे चिन्तितेऽन्यस्मिंस्तल्लिङ्गोऽन्यः प्रयुज्यते।
आगन्तुकेन भावेन पताकास्थानकं तु तत्॥"
—साहित्यदर्पण।

पताकिक (वि०) झंडाबरदार।
पताकिन् (वि०) झंडा ले जाने वाला। झंडियों से भूषित या सजाया हुआ। (पु०) १ राजचिन्ह। राजचिन्ह सूचक झंडा ले जाने वाला। २ झंडा।
पताकिनी (स्त्री०) सेना। फौज।
पतिः (पु०) स्वामी। प्रभु। (यथा गृहपतिः) २ मालिक। अध्यक्ष। ३ शासक। सूबेदार। अधिष्ठाता। ४ भर्ता। ५ जड़। ६ गमन। गति। उड़ान। (स्त्री०) स्वामिनी। अधिष्ठात्री।—घातिनी, (स्त्री०)—घ्नी, (स्त्री०) १ स्त्री जो पतिघातिनी हो, जिसने अपने पति की हत्या की हो। २ हाथ की रेखा जिसका फल यह है कि जिस स्त्री के वह रेखा हो वह अपने पति के साथ विश्वासघात करे।—देवता,—देवा, (स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति को देवतातुल्य पूज्य एवं मान्य समझे। सती या साध्वी स्त्री।—धर्मः, (पु०) पत्नी का अपने पति के प्रति कर्त्तव्य।—प्राणा, (स्त्री०) सती स्त्री।—लङ्घनम्, (न०) पुनर्विवाह करके प्रथम पति की अवहेलना करने वाली स्त्री।—वेदनः, (पु०) शिवजी।—वेदनम्, (न०) मंत्र तंत्र से पति को प्राप्त करने वाली।—लोकः, (पु०) मरने के बाद उसलोक की प्राप्ति जिसमें पति हो।—व्रता, (स्त्री०) सती स्त्री।—सेवा, (स्त्री०) पतिभक्ति।
पतिंवरा (स्त्री०) वह स्त्री जो अपने लिये पति वरने वाली हो।
पतित्वं, पतित्वनं (न०) [वैदिक] १ प्रभुत्व। स्वामित्व। २ गठजोड़ा। विवाह।
पतिवती (स्त्री०) [वैदिक] सधवा। जीवित पति वाली।
पतिवत्नी (स्त्री०) भार्या जिसका पति जीवित हो।
पतीयति (क्रि०) पति की कामना करना।
पतीयंती, पतीयन्ती (स्त्री०) पति कामना वाली स्त्री अथवा पति के योग्य पत्नी।
पत्नी (स्त्री०) १ भार्या। २ गृहिणी।—आटः, (पु०) जनानखाना। अन्तःपुर।—शाला, (स्त्री०) झोपड़ा। तंबू। पत्नी के रहने और गृहस्थी के योग्य कमरा। (२) यज्ञशाला में वह घर जो यजमान पत्नी के लिये बनाया जाता है। यह घर यज्ञशाला से पश्चिम की ओर होता है।—संनहनम्, (न०) पत्नी की कमर में कमरबंद बाँधना। पत्नी का कमरबंद।
पतित (व० कृ०) १ गिरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। २ आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। आचारच्युत। नीतिभ्रष्ट। धर्मत्यागी। ३ महापापी। अतिपातकी। नारकीय। ४ जातिबहिष्कृत। समाज से निकाला हुआ। जाति या बिरादरी से खारिज।
पत्तनम् (न०) १ नगर। कस्बा। २ मृदङ्ग।
पत्तिः (पु०) १ पैदल। पैदल सैनिक। २ पैदल चलने वाला। ३ वीर। शूर।—(स्त्री०) १ फौज का एक छोटा दस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पैदल सिपाही होते हैं। २ गमन। पाद। चरण।—कायः, (पु०) पैदल सिपाहियों की पल्टन।—गणकः, (पु०) वह सैनिक अधिकारी जिसका काम पैदल सैनिकों को एकत्र करना हो।—संहतिः, (स्त्री०) सैनिक सिपाहियों की पल्टन।
पत्तिक (वि०) पैदल गमन करने वाला।
पत्तिन् (पु०) पैदल सैनिक।

पत्रं (न०) [पत्—ष्ट्रन्] १ वृक्ष का पत्ता । २ पुष्प की पखुरी । कमल की पाँखुरी । ३ कागज़ । ४ पत्र दस्तावेज़ । ५ सुवर्ण या अन्य किसी धातु का पत्र । जिसपर कुछ खोदा जाय । ६ डैना । पर । तीर के पर । ७ सवारी (जैसे गाडी, घोड़ा, ऊँट) । ८ मुख में चन्दन या अन्य कोई सुगन्ध पदार्थ का मलना । ९ तलवार या छुरी की धार । १० छुरी । कटार ।—अङ्गम् (न०) भोजपत्र का पेड़ । २ लालचन्दन । ३ कमलगट्टा । ४ पतंग । वक्कम ।—अङ्गुलिः, (पु०) माथे पर त्रिपुण्ड्र लगाना ।—अञ्जनम् (न०) १ स्याही । २ कालिख पोतना ।—आढ्यं, (न०) पीपलामूल । २ पर्वततृण । ३ तृणाल्य । ४ पतंग । वक्कम । ५ नरसल । ६ तालीस पत्र ।—आवलिः (स्त्री०) १ सिन्दूर । २ पत्र रचना । पत्तियों की पन्नार । ३ शरीर पर चन्दनादि से विशेष रूप से लकीरें कर शरीर का शृङ्गार करना ।—आवली, (स्त्री०) पत्रों की पंक्ति या श्रेणी । पीपल के कोमल पत्रों का, जव और शहद के साथ संमिश्रण ।—आहारः, (पु०) पत्तों को खाकर निर्वाह करना ।—ऊर्णम् (न०) रेशमी वस्त्र ।—उल्लासः, (पु०) कली या अँखुआ । — काहला, (स्त्री०) वह शोर जो पक्षी के परों की फड़फड़ाहट अथवा पत्तों से हो ।—कृच्छ्रम्, (न०) एक व्रत जिसमें केवल पत्तों का काढ़ा पीकर रहना पड़ता है ।—घना, (स्त्री०) पौधा जिसमें सघन पत्ते हों ।—झङ्कारः, (पु०) नदी की धार । -दारकः, (पु०) आरा ।—नाडिका, (स्त्री०) पत्ते की नसें ।—परशुः, (पु०) छैनी ।—पालः, (पु०) बड़ी कटार । लंबी छुरी ।—पाली, (स्त्री०) १ वाण का वह भाग जिसमें पर लगे हों । २ कैंची ।—पाश्या, (स्त्री०) माथे का आभूषण विशेष ।—पुटं, (न०) दौना या पत्ते का बना कोई पात्र ।—पुष्पा, (स्त्री०) छोटे पत्ते की तुलसी ।—बन्धः, (पु०) पुष्पों की सजावट ।—बालः,—वालः, (पु०) डाँड़ ।—भङ्गः,—भङ्गिः,—भंगी, (स्त्री०) वे चित्र या रेखा जो सौन्दर्यवृद्धि के उद्देश्य से स्त्रियाँ कस्तूरी केसर आदि के लेप अथवा सुनहले, रुपहले पत्तरों (कटोरियों) से भाल, कपोल आदि पर बनाती हैं । सारी । २ पत्रभङ्ग बनाने की क्रिया ।—यौवनं, (न०) कोपल ।—रञ्जनम्, (न०) पृष्ठ की सजावट । पन्ने का शृङ्गार ।—रथः, (पु०) पक्षी । रथइन्द्रः, (पु०) गरुड़ ।—रथइन्द्रकेतुः, (पु०) विष्णु ।—लता, (स्त्री०) लंबी छुरी, बिछुआ या कटार ।—रेखा,—लेखा,—वल्लरी,—वल्लिः—वल्ली, (स्त्री०) देखो पत्रभङ्ग ।—वाज, (वि०) (वाण) जो परों से सम्पन्न हो ।—वाहः, (पु०) १ पक्षी । २ तीर । ३ हल्कारा । डाँकियाँ । चिट्ठीरसा ।—विशेषकः, (पु०) देखो पत्रभङ्ग ।—वेष्टः, (पु०) एक प्रकार का कर्णभूषण ।—शाकः, (पु०) पत्तों की भाजी ।—शिरा, (स्त्री०) पत्ते की नसें ।—श्रेष्ठः, (पु०) बिल्ववृक्ष । बेल का पेड़ ।—सूचिः, (स्त्री०) काँटा ।—हिमं, (न०) हेमन्त ऋतु ।

पत्रकम् (न०) १ पत्ता । २ शरीर का सौन्दर्य बढ़ाने को शरीर पर बनायी गयी रेखाएँ विशेष ।

पत्रणा (स्त्री०) १ देखो पत्रभङ्ग । २ तीर को परों से सम्पन्न करने की क्रिया ।

पत्रिका (स्त्री०) १ पन्ना । कागज़ का पृष्ठ । २ चिट्ठी या दस्तावेज़ ।

पत्रिन् (वि०) [स्त्री०—पत्रिणी] परोंदार । जिसमें पत्र या पन्ने हों । (पु०) १ तीर । २ पक्षी । ३ बाज पक्षी । ४ पर्वत । ५ रथ । ६ वृक्ष । – वाहः, (पु०) पक्षी ।

पत्रिणी (स्त्री०) अँखुआ । अङ्कुर ।

पत्तो (स्त्री०) लेख ।

पत्नी (स्त्री०) भार्या । जोड़ू ।

पत्सलः (पु०) मार्ग । रास्ता ।

पथ् (धा० परस्मै०) [पथति] १ गमन करना । गतिशील होना । २ फेंकना । टपकाना ।

पथः (पु०) मार्ग । सड़क । रास्ता ।—अतिथिः, (पु०) यात्री । राहगीर ।—कल्पना, (स्त्री०) इन्द्रजाल । जादू का खेल ।—दर्शकः, (पु०) रास्ता बतलाने वाला । रहनुमा ।

पथकः (पु०) १ रास्ता जानने वाला । २ मार्ग बत-लाने वाला ।

पथत् (पु०) मार्ग । सड़क ।

पथिकः (पु०) १ यात्री । २ पथप्रदर्शक । —आश्रयः, (पु०) सराय । धर्मशाला । —सन्ततिः,—संहतिः, (स्त्री०)—सार्थः, (पु०) यात्रियों का दल ।

पथिका (स्त्री०) मुनक्का ।

पथिन् (पु०) १ राह । मार्ग । सड़क । २ यात्रा । ३ पहुँच । ४ बर्ताव का ढंग । ५ पंथ । सम्प्रदाय । सिद्धान्त । ६ नरक का विभाग ।—कृत, (पु०) [वैदिक] १ पथप्रदर्शक । २ अग्नि का नाम ।—देयं, (न०) सार्वजनिक सड़कों पर लगाया गया राजकर ।—द्रुमः, (पु०) कत्था का पेड़ । —प्रज्ञ, (वि०) रास्तों का जानकार ।—वाहक, (वि०) निष्ठुर ।—वाहकः, (पु०) १ शिकारी । चिड़ीमार । बहेलिया । २ बोझा ढोने वाला । कुली ।

पथिलः (पु०) यात्री । राहगीर । मुसाफिर ।

पथ्य (वि०) १ लाभदायक । गुणकारी । २ योग्य । उपयुक्त । उचित ।—अपथ्यम्, (न०) हित-कारी और अहितकारी वस्तुएं ।

पथ्यम् (न०) १ रोगी के लिये हितकर वस्तु या आहार । २ नीरोगता ।

पथ्या (स्त्री०) मार्ग । रास्ता ।

पद् (धा० आत्म०) [पद्यते] जाना । चलना फिरना । (णिजन्त) १ जाना । २ समीपगमन । ३ प्राप्त करना । ४ अभ्यास करना । अनुष्ठान में लाना । ५ [वैदिक] थक कर गिर पड़ना । ६ [वैदिक] नाश करना ।

पद (पु०) १ पैर । २ चतुर्थ भाग । चौथाई हिस्सा । —कापिन, (वि०) पैर मलने या खरोचने वाला । २ पैदल जाने वाला । (पु०) पैदल चलने वाला ।—गः, (= पद्गः) (पु०) पैदल सिपाही ।—ज, (= ज्जः) १पैदल चलने वाला । २ शूद्र ।—नद्धा,—नध्री, (स्त्री०) मुंडा जूता । शू । बूट ।—निष्कः, (पु०) निष्क सिक्के का चतुर्थांश ।—रथः, (= पद्रथः) (पु०) पैदल सिपाही ।—शब्दः, (पु०) पैर की आहट ।—हतिः,—हती, (स्त्री०) [= पद्धतिः, पद्धती] १ मार्ग । सड़क । रास्ता । २ पंक्ति । श्रेणी । अवली । ३ उपनाम । उपाधि । पदवी । जाति सूचक उपाधि । [यथा शर्म वर्म गुप्त और दास ।] ४ एक श्रेणी के लेखों का नाम ।—हिमं, (= पद्धिमं) पैरा की ठंडक ।—अङ्कः, (पु०) —चिन्हम्, (न०) पैर का निशान ।—अँगुष्ठः, (पु०) पैर का अँगूठा ।—अध्ययनम्, (न०) पदपाठ के अनुसार वेदाध्ययन ।—अनुग, पछियाना । पीछे लगना ।—अनुगः, (पु०) अनुयायी । पिछलग्गू ।—अनुरागः, (पु०) १ चाकर । नौकर । २ सेना ।—अनुशासनम्, व्याकरण ।—अनुषंगः, (पु०) कोई वस्तु जो पद में जोड़ दी जाय ।—अन्तः (पु०) १ किसी वाक्यखण्ड की पंक्ति की समाप्ति । २ शब्द का अन्त ।—अन्तरं, (न०) और एक पग । एक पग का अन्तर ।—अन्त्य, (वि०) अन्तिम —अब्जं, – अम्भोजम्, —अरविन्दम्, —कमलं, पङ्कजम्,—पद्मं, (न०) कमल जैसे पैर ।—अर्थः, (पु०) १ शब्दार्थ । २ पदार्थ । वस्तु । ३ अभि-धेय ।—आघातः, (पु०) लात ।—आजिः, (पु०) पैदल सिपाही ।—आदिः, (पु०) १ वाक्यखण्ड के आरम्भ की पंक्ति । २किसी शब्द का आदि या प्रथम अक्षर ।—विद्, (पु०) कुशिष्य । बुरा शागिर्द ।—उत्तमता, (स्त्री०) जूती ।—आवली, (स्त्री०) शब्दों की श्रेणी ।—आसनं, (न०) पैर रखने की काठ की चौकी विशेष ।—आहत, (वि०) लतियाया हुआ ।—कारः,—कृत, (पु०) पदपाठ का रचयिता । – क्रम ,(पु०)चलना । गमन ।—गः, (पु०) पैदल सिपाही ।—गतिः, (स्त्री०) चाल ।—छेदः,—विच्छेदः, (पु०) —विग्रहः. (पु०) शब्दों का पार्थक्य ।—च्युत, (वि०) स्थान या पद से पृथक् किया जाना । मुअत्तली ।—न्यासः, (पु०) १ कदम रखना । २ पदचिन्ह । ३ विशेष ढंग से पैर का रखना । ४ गोक्षुर । गोखरू । ५ श्लोकपाद लिखना ।—पंक्तिः, (स्त्री०) १ पदचिन्हों की श्रेणी । २ शब्दा-

वली। ३ ईंट। सूखी ईंट। इष्टका।—पाठः, (पु०) वेद पढ़ने का क्रम विशेष।—पातः,—विक्षेपः, (पु०) कदम। पग।—बन्धः, (पु०) पग। क़दम।—भञ्जनम्, (न०) शब्दों का पृथक्करण।—भञ्जिका, (स्त्री०) टीका जिसमें शब्दों की सन्धियो और शब्दों के समासों पर अधिक श्रम किया गया हो। २ बही। रजिस्टर। ३ पञ्चाङ्ग।—भ्रंशः, (पु०) पदच्युति। मुअत्तली।—माला, (स्त्री०) तांत्रिक मंत्र।—योपनं (न०) वेदी। [वैदिक]।—वायः, (पु०) [वैदिक] नेता। पेशवा।—विष्टम्भः, (पु०) पग। कदम।—वृत्ति, (स्त्री०) दो शब्दों की सन्धि।—व्याख्यानं, (न०) शब्दों की व्याख्या या टीका।—संघातः,—संघाटः, (पु०) १ संहिता के उन शब्दों का मिलान जो पृथक हैं। २ टीकाकार। व्याख्या करने वाला।—स्थ, (वि०) १पैदल चलने वाला। २ अधिकारी या उच्चपदस्थ।—स्थानं, (न०) पदचिन्ह।

पदं (न०) १ पैर। २ कदम। पग। ३ पदचिन्ह। पैर का निशान। ४ खोज। पता। चिन्ह। छाप। ५ स्थान। स्थिति। अवस्थान। ६ महिमा। मर्यादा। पद। ७ कारण। गुणादि का आधार। ८ आवासस्थान। घर। मकान। पदार्थ। आधार। ९ श्लोकपाद। १० विभक्ति युक्त या पूर्ण शब्द। ११ बहाना। १२ वर्गमूल। १३ (किसी वाक्य का) खण्ड या अँश।—१४ लंबाई नापने का माँप। १५ वृत्तपाद। वृत्त या उसकी परिधि का चतुर्थांश। १६ किसी श्रेणी का अन्तिम भाग। १७ भूखण्ड।

पदः (पु०) प्रकाश की किरण।

पदकं (न०) पग। कदम। परिस्थिति। पद।

पदकः (पु०) १ हार। गले का आभूषण। २ पदपाठ का ज्ञाता। ३ निष्क। सुवर्ण की तौल विशेष।

पदविः, पदवी } (स्त्री०) १ मार्ग। रास्ता। २ पद। संस्थान। स्थान। ३ जगह। ४ सदाचरण।

पदातः, पदातिः, } (पु०) १ पैदल सिपाही। २ पैदल। चलने वाला।—अध्यक्षः, (पु०) पैदल सेना का चमूपति।

पदातिन् (वि०) १ पैदल सेना रखने वाला। २ पैदल चलने वाला। (पु०) पैदल सिपाही।

पदातिकः, पदातीयः } (पु०) पैदल। सिपाही। दरवान।

पदारः (पु०) पैर की धूल।

पदिः [वैदिक] १ पैदल चलने वाला। २ एक पाद लंबा। ३ केवल एक दल या विभाग वाला।

पदिकः (पु०) पैदल सिपाही।

पदिकम् (न०) पैर की नोंक।

पदेकः (पु०) बाज पक्षी।

पद्गन् (पु०) मार्ग। रास्ता।

पद्, पद्रथ } देखो पद् के अन्तर्गत।

पन्न (व० कृ०) १ गिरा हुआ। डूबा हुआ। नीचे उतरा हुआ। २ गया हुआ।

पन्नम् (न०) १नीचे की ओर गति। उतार। पतन। २ रेंगना।

पन्नगः (पु०) सर्प। साँप।

पद्म (वि०) कमल के रंग का।—अक्ष, (वि०) कमल सदृश नेत्र वाला।—अक्षः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—अक्षम्, (न०) कमलगट्टा।—अन्तरम्, (न०)—अन्तरः, (पु०) कमलपत्र।—आकरः, (पु०) १ बड़ा तलाव जिसमें कमल की बहुतायत हो। २ जलपूर्ण सरोवर या तालाव। ३ कमल का तालाव। ४ कमल समूह।—आलयः, (पु०) सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा का नामान्तर।—आलया, (स्त्री०) १ लक्ष्मी देवी का नामान्तर। २ लवङ्ग। लौंग।—आसनं, (न०) कमल की बैठको। ध्यान करने के लिये बैठने वालों का आसन विशेष जिसमें पालथी मार कर सीधे बैठते हैं।—आसनः, (पु०) १ सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा का नामान्तर। २ शिव का नामान्तर। ३ सूर्य का नामान्तर।—आह्वम्, (न०) लवङ्ग। लौंग।—उद्भवः, (पु०) ब्रह्मा का नामान्तर।—कर,—हस्त, (वि०) वह जिसके हाथ में कमल हो।—करः,—हस्तः, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर। २ कमल सदृश हाथ। ३ सूर्य का नामान्तर।—करा,—हस्ता,

(स्त्री०) लक्ष्मी का नामान्तर।—कर्णिका, (स्त्री०) १ कमल का बीजकोष। २ कमलव्यूह बना कर खड़ी हुई सेना का मध्यवर्ती भाग।—कलिका, (स्त्री०) कमल की कली। अनखिला कमल का फूल।—काष्ठम्, (न०) पद्माख। दवा विशेष। केशरम्, (न०) केशरः, (पु०) कमल की तिरी। -कोश,—कोषः, (पु०) १ कमल का सम्पुट। कमल के बीच का छत्ता जिसमें बीज होते हैं। २ करमुद्रा विशेष। खण्डम्,—षण्डम्, (न०) कमल समूह।—गन्ध,—गन्धि, (वि०) कमल जैसी खुशबू वाला।—गन्धम्, (न०) —गन्धिः, (न०) पद्मकाष्ठ। पद्माख।—गर्भः, (पु०) १ ब्रह्मा का नामान्तर। २ विष्णु का नामान्तर। ३ शिव का नामान्तर। ४ सूर्य का नामान्तर। ५ कमलपुष्प का भीतरी या मध्यभाग।—गुणा, —गृहा, (स्त्री०) १ धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का नामान्तर। २ लवङ्ग। लौंग।—जः,—जातः,—भवः,—भूः,—योनिः,—सम्भवः, (पु०) १ कमल से उत्पन्न ब्रह्मा जी का नामान्तर।—तन्तुः, (पु०) कमलनाल।—नाभिः,—नाभः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—नालं, (न०) कमल नाल।—निधिः, (पु०) कुबेर की नवनिधियों में से एक।—पाणिः, (पु०) १ ब्रह्मा का नामान्तर। २ बुधदेव का नामान्तर। ३ सूर्य का नामान्तर। ४ विष्णु का नामान्तर।—पुष्पः, (पु०) कनेर का पेड।—बन्धः, (पु०) एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं, जिससे कमल का आकार बन जाता है।——बन्धुः, (पु०) १ सूर्य। २ मधुमक्षिका।—बीजं, (न०) कमल के बीज।—भासः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—मालिनी, (स्त्री०) धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी।—रागः, (पु०) —रागम्, (न०) मानिक या लाल नामक रत्न।—रूपा, (स्त्री०) लक्ष्मी देवी का नामान्तर। —रेखा, (स्त्री०) सामुद्रिक शास्त्रानुसार हथेली की कमलाकार रेखा। लाञ्छनः, (पु०) १ ब्रह्मा। २ कुबेर। ३ सूर्य। ४ राजा।—लाञ्छना, (स्त्री०) १ लक्ष्मी देवी का नामान्तर। २ सरस्वती देवी का नामान्तर। ३ तारा का नामान्तर।—वासा, (स्त्री०) लक्ष्मी का नामान्तर।—समासनः, (पु०) ब्रह्मा का नामान्तर।—स्नुषा, (स्त्री०) १ गङ्गा का नामान्तर २ लक्ष्मी का नामान्तर। ३ दुर्गा का नामान्तर।—हासः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।

पद्मं (न०) १ कमल। (पु०) यथा—

"पद्मपत्रस्थित तोयं धत्ते मुक्ताफल श्रियम्।"

२ कमल सदृश आभूषण विशेष। ३ कमल की आकृति या आकार। ४ कमल की जड। ५ हाथी के चेहरे और सूँड पर की रंगामेज़ी या चित्रकारी जो उसे सजाने को प्रायः लोग किया करते हैं। ६ कमलव्यूह। ७ संख्या विशेष। ८ सीसा। राँगा। ९ शरीर स्थित अर्द्धचन्द्र। १० मानव शरीर के चिन्ह विशेष। तिल। मस्सा। ११ दाग़। धब्बा।

पद्मः (पु०) १ मन्दिर विशेष। २ हाथी। ३ सर्प जाति विशेष। ४ श्रीरामचन्द्र की उपाधि। ५ कुबेर की नवनिधियों में से एक। स्त्रीमैथुन का एक आसन विशेष। रतिबन्ध।

पद्मकं (न०) १ पद्मव्यूह। कमल व्यूह। २ हाथी के चेहरे और सूंड़ पर के रंगीन दाग़। ३ बैठने का आसन विशेष।

पद्मकिन् (पु०) १ हाथी। २ भोजपत्र का पेड।

पद्मा (स्त्री०) १ श्रीविष्णुपत्नी लक्ष्मी जी का नामान्तर। २ लवंग। लौंग।

पद्मावती (स्त्री०) १ लक्ष्मी का नामान्तर। २ एक नदी विशेष का नाम।

पद्मिन् (वि०) १ कमल रखने वाला। २ धब्बेदार। (पु०) १ हाथी। २ विष्णु का नामान्तर।

पद्मिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा। २ कमलसमुदाय। ३ वह सरोवर या ताल जिसमें कमलों की बहुतायत हो। ४ कमलनाल। ५ हथिनी। ६ कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति। इस जाति की स्त्री अत्यन्त कोमलाङ्गी सुशीला रूपवती और पतिव्रता होती है।

भवति कमलनेत्रा नासिकाक्षुद्ररन्ध्रा।
अविरलकुचयुग्मा चारुकेशी कृशाङ्गी
मृदुवचन सुशीला गीतवाद्य नुरक्ता।
सकलतनुसुवेशा पद्मिनी पद्मगन्धा॥

—ईशः, (पु०) —कान्तः, (पु०)—वल्लभः, (पु०) सूर्य।—खण्डम्.—षण्डम्, (न०) कमल समूह। वह स्थान जहाँ कमलों की बहुतायत हो।

पद्मेशयः (पु०) विष्णु का नामान्तर।

पद्य (पु०) १ जिसमें कविता के पद या चरण हो। २ चरण सम्बन्धी। ३ पदचिन्ह से चिन्हित। ४ शब्द सम्बन्धी। ५ अन्तिम।

पद्यः (पु०) १ शूद्र। २ शब्द का अंश।

पद्या (स्त्री०) १ पगडंडी। राह। रास्ता। २ चीनी।

पद्यम् (न०) १श्लोक। छन्द। २ प्रशंसा। स्तुति।

पद्रः (पु०) ग्राम।

पद्वः (पु०) १ भूलोक। मर्त्यलोक। २ गाडी। ३ मार्ग।

पन् (धा० उभय०) [पनायति—पनायते, पनायित या पनित] १ स्तुतिकरना। प्रशंसा करना। २ (आत्मने०) प्रसन्न होना। हर्षित होना।

पनस्यति (क्रि०) प्रशंसार्ह होना। प्रशंसा के योग्य होना। [हुआ।

पनायित, पनित (वि०) प्रशंसित। प्रशंसा किया

पनुः, पनूः (पु०) [वैदिक] श्लाघा। सराहना। प्रशंसा।

पनसः (पु०) १ कटहल या कटहर का वृक्ष। २ काँटा। ३ रामदल का एक वानर। ४ विभीषण का एक मंत्री।

पनसं (न०) कटहल का फल।

पनसा, पनसी (स्त्री०) १ रोग विशेष। २ वानरी। बंदरिया। राक्षसी।

पनसिका (स्त्री०) कान और गर्दन पर होने वाली फुंसी जो कटहल के काँटे की तरह नुकीली होती है।

पंथक, पन्थक (वि०) मार्ग में उत्पन्न। रास्ते में पैदा हुआ।

पन्न (वि०) गिरा हुआ। पड़ा हुआ। जैसे "शरणापन्न"।

पपिः (पु०) चन्द्रमा।

पपी (पु०) १ सूर्य। २ चन्द्रमा।

पपु (वि०) पालन पोषण करने वाला। रक्षा करने वाला।

पपुः (स्त्री०) वह पोष्या माता जिसने माता की तरह पाला हो।

पंपा, पम्पा (स्त्री०) १ दण्डकवन की एक झील या सरोवर का नाम। २ दक्षिण भारत की एक नदी का नाम।

पय् (धा० आत्म०) [पयते] जाना। गमन करना।

पयस् (न०) १ पानी। २ दूध। ३ वीर्य। ४ भोजन। ५ [वैदिक] रात। ६ शक्ति। ताक़त। बल। ओज —गलः, (पु०)—गडः, (पु०) १ ओला। २ द्वीप।—घनं, (न०) ओला।—चयः,(=पय-श्रयः) (पु०) जलाशय। तालाब। झील। सरोवर।—जन्मन् (पु०) बादल।—दः, (पु०) बादल।—सुहृद्, (पु०) मयूर। केकी। मोर। —धरः, (पु०) १ बादल। मेघ। २ स्त्री की छाती या चूची। ३ थाँड़। ४ नारियल का वृक्ष। ५ कशेरुक। मेरुदण्ड। पीठ के बीच की हड्डी।—धस्, (पु०) १ समुद्र। २ झील। सरोवर। ३ जल बरसाने का बादल।—धारागृहं, (न०) स्नानागार जहाँ जल झरता हो।—धि,—निधिः, (पु०) समुद्र।—पूरः, (पु०) जलकुण्ड। सरोवर।—मुच्, (पु०) बादल।—राशिः (पु०) समुद्र।—वाहः, (पु०) बादल।—व्रतं, (न०) दूधाहार पर रहना। उपवास विशेष।

पयस्य (वि०) १ दूधवाला। दूध का बना हुआ। २ पनीला।

पयस्यः (पु०) बिल्ली।

पयस्यति, पयायते (क्रि०) बहना।

पयस्या (स्त्री०) दही।

पयस्वल (वि०) बहुत दूध वाला। बहुत दुधार। बहुत दूध देने वाला।

पयस्वलः (पु०) बकरा।

पयस्विन् (वि०) जिसमें दूध हो। रसीली। पनीली।

पयस्विनी (स्त्री०) १ दुधार गौ २ नदी । ३ बकरी । ४ रात ।

पयोधिकं (न०) १ समुद्रफेन ।

पयोरः (पु०) कत्थे का वृक्ष ।

पयोष्णी (स्त्री०) एक नदी का नाम जो विन्ध्याचल से निकलती है और चित्रकूट के नीचे बहती हुई जाती है ।

पर (वि०) १ दूसरा । भिन्न । और । स्वातिरिक्त । २ दूर । अलग । ३ परे । उस ओर । ४ पीछे का । बाद का । दूसरा । आगे का । बाद । पश्चात् । ५ उत्तर । उत्कृष्टतम् । ६ सर्व्वोच्च । सब से बड़ा । सब से अधिक प्रसिद्ध । विख्यात । मुख्य । श्रेष्ठ । प्रधान । ७ अपरिचित । गैर । अजनवी । ८ वैरी । शत्रु । दुश्मन । विरोधी । ६ बढ़ती । बचत । छूटा हुआ । बचा हुआ । १० अन्तिम । आखीर का । अन्त का । ११ प्रवृत्त । लीन । तत्पर ।—अङ्गम्, (न०) शरीर का पिछला भाग ।—अङ्गदम्, (न०) शिव जी का नामान्तर ।—अदनम् (न०) फारस या अरब का घोड़ा ।—अधिकारचर्चा (स्त्री०) अनधिकार हस्तक्षेप । छेड़छाड़ ।—अन्त , (पु०) मृत्यु ।—अन्ताः, (पु० बहु०) एक मानव-जाति विशेष ।—अन्तकः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—अन्न, (वि०) दूसरे के अन्न पर निर्वाह करने वाला ।—अन्नम्, (न०) दूसरे का अन्न ।—अपर, (वि०) दूर और निकट । दूर और समीप । २ पहिला और पिछला । ३ पूर्व और परे । ४ सवेरी और अवेरी । ५ ऊँच और नीच । ६ श्रेष्ठ और निकृष्ट ।—अपरः, (पु०) मध्यम श्रेणी का गुरु ।—अमृतं, (न०) वर्षा । मेह ।—अयण, (वि०)—अयन, (वि०) १ भक्त । अनुरक्त । २ निर्भर । अधीन । ३ लीन । डूबा हुआ । ४ सम्बन्धयुक्त । ५ सहायक ।—अयणम्, (न०) १ अन्तिम उपाय । मुख्य उद्देश्य । सर्व्वोच्च लक्ष्य । २ सार । (वैदिक) दृढ भक्ति ।—अर्थ, (वि०) १ अन्य उद्देश्य या अर्थ वाला । २ दूसरे के लिये किया हुआ ।—अर्थः (पु०) १ सर्वाधिक लाभ २ परमार्थ । ३ मुख्य सब से बढ़ कर अर्थ । ४ सब से बढ़ कर पदार्थ अर्थात् स्त्रीप्रसङ्ग ।—अर्थम्, (न०)—अर्थे (अव्यया०) दूसरे के लिये ।—अर्ध, (न०) १ दूसरा भाग । उत्तरार्द्ध । २ सर्व्वोच्च संख्या विशेष ।—अर्ध्य, (वि०) १ और आगे की ओर का । संख्या में बहुत आगे का । २ सर्वश्रेष्ठ । सर्व्वोत्तम । ३ अत्यन्त मूल्यवान । ४ सब से अधिक सुन्दर । अर्ध्यम्, (न०) १ अधिक से अधिक । २ अनन्त या असीम संख्या ।—अवर, (वि०) १ दूर और नज़दीक । २ सवेरी और अवेरी । ३ पहले और पीछे । ४ ऊँचा और नीचा । ५ परम्परागत । ६ सब शामिल किये हुए ।—अवरा, (स्त्री०) सन्तति । औलाद ।—अवरं, (न०) १ कार्य और कारण । २ विचार का समूचा विस्तार । ३ संसार । ४ पूर्णता ।—अहः, (पु०) दूसरे दिन ।—अह्णः, (पु०) दोपहर के बाद । दिन का उत्तरार्द्ध काल ।—आगमः, (पु०) शत्रु का हमला ।—आचित, (वि०) दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ ।—आचितः, (पु०) गुलाम । दास ।—आत्मन्, (पु०) परब्रह्म ।—आयत्त, (वि०) अधीन । परमुखापेक्षी । दूसरे पर निर्भर ।—आयुस्, (न०) ब्रह्म का नामान्तर ।—आविद्धः, (पु०) १ कुवेर का नामान्तर । २ विष्णु का नामान्तर ।—आश्रय, (वि०) दूसरे पर निर्भर ।—आश्रयः, (पु०) १ पराधीन । २ शत्रु का प्रतिनिवर्तन । लौटना ।—आश्रया, (स्त्री०) वह वृक्ष जो दूसरे वृक्ष पर उगे । बंदा ।—आसङ्गः, (पु०) पराधीन । दूसरे पर निर्भर ।—आस्कंदिन्, (पु०) चोर । डॉकू ।—इतर, (वि०) १ कृपालु । २ निज का ।—ईशं, (न०) १ ब्रह्म की उपाधि । २ विष्णु का नामान्तर ।—इष्टिः, (पु०) ब्रह्म ।—उत्कर्षः (पु०) दूसरे की समृद्धि ।—उपकारः, (पु०) दूसरों की भलाई ।—उपकारिन्, (वि०) उपकारी । दूसरों पर दया करने वाला ।—उपजापः, (पु०) शत्रुओं में भेदभाव उत्पन्न करने वाला ।—उपदेशः, (पु०) दूसरों को शिक्षा या नसीहत ।—उपरुद्ध, (वि०) शत्रु द्वारा घेरा हुआ ।—ऊढा, (स्त्री०) दूसरे की स्त्री ।—एधित,

(वि०) दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ ।—एधितः (पु०) १ नौकर । २ कोयल ।—कलत्रं, (न०) दूसरे की स्त्री ।—कार्य, (न०) दूसरे का काम या धधा ।—क्षेत्रं, (न०) १ दूसरे का शरीर । २ दूसरे का खेत । ३ दूसरे की स्त्री ।—गामिन्, (वि०) १ दूसरे के साथ रहने वाला । २ दूसरे को लाभ पहुँचाने वाला ।—गुण, (वि०) दूसरे को लाभदायी ।—ग्रन्थिः, (पु०) जोड । गाँठ ।—ग्लानिः, (स्त्री०) शत्रु को वशीभूत करने की क्रिया ।—चक्र, (न०) १ शत्रुसैन्य । २ ६ प्रकार की दूतियों में से एक । शत्रुद्वारा आक्रमण । ३ वैरी राजा ।—छन्द, (वि०) अधीन ।—छन्द., (पु०) १ दूसरे की इच्छा । २ पराधीनता ।—छिद्रं, (न०) दूसरे की कमज़ोरी या निर्बलता ।—ज, (वि०) अजनवी ।—जन., (पु०) अजनवी । ग़ैर ।—जात, (वि०) १ दूसरे से उत्पन्न । २ आजीविका के लिये दूसरे पर निर्भर रहने वाला ।—जातः, (पु०) नौकर । —जित, (वि०) १ दूसरे से जीता हुआ । हारा हुआ । २ दूसरे के सहारे रहने वाला ।—जितः, कोयल पक्षी ।—तंत्र, (वि०) पराश्रित । दूसरे के सहारे रहने वाला । पराधीन । परमुखापेक्षी । —दाराः (पु० बहु०) दूसरे की स्त्री ।—दारिन्, (पु०) व्यभिचारी । लंपट । -दुःखं, (न०) दूसरे का दुःख या शोक —देवता, (स्त्री०) परमात्मा । परब्रह्म ।—देशः, (पु०) विदेश । स्वदेशातिरिक्त देश ।—देशिन्, (पु०) विदेशी । —द्रोहिन्,—द्वेषिन् (वि०) दूसरों से घृणा करने वाला । वैरी । विद्वेषी ।—धनं, (न०) दूसरे की सम्पत्ति ।—धर्मः, (पु०) १ दूसरे का धर्म । २ दूसरे का कर्त्तव्य या धंधा । ३ दूसरी जाति के कर्त्तव्य ।—ध्यानम्, (न०) ध्यान । समाधि ।—पक्षः, (पु०) शत्रु पक्ष या शत्रु का दल ।—पदम्, (न०) १ सर्वोच्च पद । प्राधान्य । २ मोक्ष ।—पाकरत, (वि०) पेट के लिये दूसरे की रसोई बनाने वाला । किन्तु पाक बनाने के पूर्व निर्दिष्ट पञ्चयज्ञादि करने वाला ।—

पञ्चयज्ञान् स्वयं कृत्वा परान्नमुपजीवति ।
सततं प्रातरुत्थाय परपाकरतस्तु सः ॥

—पिण्डः, (पु०) दूसरे का दिया हुआ भोजन । दूसरे का भोजन ।—पुरञ्जयः, (पु०) शूर । विजयी ।—पुरुषः, (पु०) १ ग़ैर । अजनवी । अपरिचित । २ परब्रह्म । विष्णु । ३ दूसरी स्त्री का पति ।—पुष्ट, (वि०) दूसरे द्वारा पाला पोसा गया ।—पुष्टः, (पु०) कोयल ।—पुष्टा, (स्त्री०) १ कोयल पक्षी । २ पौधा विशेष । ३ वेश्या । रंडी ।—पूर्वा, (स्त्री०) वह स्त्री जो अपने प्रथम पति को छोड दूसरा पति करे ।—प्रेष्यः, (पु०) नौकर । चाकर ।—ब्रह्मन्, (न०) परब्रह्म । परमात्मा ।—भागः, (पु०) १ दूसरे का हिस्सा । २ उत्कृष्टतर गुण । ३ सौभाग्य । समृद्धि । ४ (अ०) सर्वोत्तमता । सर्वप्रधानता । सर्वोत्कृष्टता । (इ०) अत्यधिवृत्तान्त । विपुलता । उच्चता। उचाई । ५ अन्तिम भाग । शेष। भाषा, (स्त्री०) विदेशी भाषा ।—भुक्त, (वि०) अन्य द्वारा उपयुक्त या व्यवहृत किया हुआ ।—भृत् (पु०) काक । कौआ ।—भृतः, (वि०) दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ । —भृत., (पु०)—भृता, (स्त्री०) कोयल पक्षी ।—मतं, (न०) १ दूसरे की राय । २ भिन्न राय या सिद्धान्त ।—मर्मज्ञ, (वि०) दूसरे की गुप्त बातें जानने वाला। —मृत्युः (पु०) काक । कौआ । रमणः, (पु०) किसी विवाहित स्त्री का प्रेमी या आशिक । —लोकः, (पु०) दूसरा लोक ।—वश,—वश्य, (वि०) पराधीन । पराश्रित । वाच्यं, (न०) दोष । त्रुटि ।—वाणिः, (पु०) १ जज । न्यायकर्त्ता । २ वर्ष । साल । ३ कार्तिकेय के वाहन मयूर का नाम ।—वादः, (पु०) १ अफवाह । किम्वदन्ती । २ आपत्ति । एतराज़ । वादविवाद ।—वादिन्, (पु०) मुद्दै । वादी । वादविवाद करने वाला ।—वेश्मन्, (न०) परब्रह्म का आवासस्थान ।—व्रतः, (पु०) धृतराष्ट्र का नामान्तर ।—श्वस्, (अव्यया०) आनेवाले कल के बाद का दूसरा दिन । परसों ।—सङ्गत, (वि०) १ दूसरे के साथ रहने वाला ।

२ दूसरे से लड़ने वाला ।—संज्ञकः, (पु०) जीव । रूह ।—सात्. (अव्यया०) दूसरे के हाथ में गया हुआ ।—सेवा, (स्त्री०) दूसरे की चाकरी ।—स्त्री, (स्त्री०) दूसरे की भार्या ।—स्वं, (न०) दूसरे का मालमता ।—हन् (वि०) शत्रुहन्ता ।—हित, (वि०) १ शुभचिन्तक । परोपकारी । शीलवन्त । २ दूसरे के लिये लाभकारक ।—हितं, (न०) दूसरे का कुशल । दूसरे की भलाई ।

परं (न०) १ सर्वोच्च शिखर । सब से ऊँचा सिरा । २ परब्रह्म । ३ मोक्ष । ४ किसी शब्द का गौणार्थ ।

परः (पु०) १ अन्यपुरुष । गैर । अजनबी । विदेशी शत्रु । । वैरी । विरोधी ।

परकीय (वि०) १ दूसरे का । पराया । २ अपरिचित । द्वेषी ।

परकीया (स्त्री०) दूसरे की भार्या । स्त्री जो अपनी न हो । मुख्य तीन नायिकाओं में से एक ।

परंजन, परञ्जनः
परंजय, परञ्जयः } (पु०) वरुण का नामान्तर ।

परतस् (अव्यया०) १ दूसरे से । २ शत्रु से । ३ आगे । (अपेक्षाकृत) अधिक । परे । पीछे । ऊपर । ४ अन्यथा । नहीं तो । ५ भिन्न प्रकार से । ६ बाद को । और आगे ।

परत्वं (न०) १ पर होने का भाव । पूर्व या पहले होने का भाव २ भेद । पहिचान । ३ दूरी । ४ परिणाम । नतीजा । ५ शत्रुता वैर । ६ समय या स्थान की पूर्वता । वैशेषिक दर्शनानुसार द्रव्य के २४ गुण ।

परत्र (अव्यया०) १ दूसरे लोक में । अगले जन्म में । २ परिणाम में । आगे या पीछे से । ३ उसके बाद । भविष्य में ।—भीरुः (पु०) वह जो परलोक से भयभीत हो । धर्मात्मा आदमी ।

परत्रम् (न०) मरने के बाद मिलने वाला लोक ।

परंतप
परन्तप } (वि०) दूसरों को सताने वाला । शत्रु को अपने वश में करने वाला ।

परंतपः
परन्तपः } (पु०) शूरवीर । बहादुर । विजयी ।

परम (वि०) १ अति दूरवर्ती । अन्तिम । २ सर्वोच्च उत्तम । सर्वश्रेष्ठ । सब से बड़ा । ३ मुख्य । प्रधान । आरम्भिक । सब से बढ़ कर श्रेष्ठ । ४ अति । ५ पर्याप्त । काफी । ६ सब से गया बीता । ६ अपेक्षाकृत । श्रेष्ठ ।—अङ्गना, (स्त्री०) सर्वोत्कृष्ट स्त्री ।—अणुः, (पु०) अत्यन्त सूक्ष्म अणु ।—अद्वैतं, (न०) १ परब्रह्म या परमात्मा । २ नितान्त भेद विकल्प रहितवाद । जीव और ब्रह्म में अभेद की कल्पना करने वाला वेदान्त सिद्धान्त विशेष ।—अन्नम्, (न०) खीर । दूध में पके हुए चाँवल ।—अर्थः, (पु०) १ सर्वोच्च या सर्वोत्कृष्ट सत्य । सत्य आत्मज्ञान । जीव और ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान । २ सत्य । कोई भी उत्तम और आवश्यक वस्तु । ४ उत्तम भाव । ५ उत्तम प्रकार की सम्पत्ति ।—अर्थतः, (अव्यया०) सचमुच । वास्तव में । ज्यों का त्यों । ठीक ठीक ।—अहः, (पु०) उत्तम दिवस ।—आत्मन्, (पु०) ब्रह्म । परमात्मा ।—आनन्दः, (पु०) बहुत बड़ा सुख । ब्रह्म के अनुभव का सुख । ब्रह्मानन्द । परमात्मा ।—आपद, स्त्री०) सब से बड़ी विपत्ति या मुसीबत ।—ईशः, (पु०) विष्णु ।—ईश्वरः, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर । २ इन्द्र का नामान्तर । ३ शिव का नामान्तर । ४ सर्वशक्तिमान परब्रह्म । परमात्मा । ५ ब्रह्मा का नामान्तर । ६ संसार का अधीश्वर । दुनिया का अधिष्ठाता ।—ऋषिः, (पु०) महर्षि ।—ऐश्वर्यम् (न०) प्रभुत्व ।—गतिः, (स्त्री०) मोक्ष । मुक्ति ।—गवः, (पु०) उत्तम बैल । साँड़ या गाय ।—पदम्, (न०) १ सर्वोत्तम पद । सर्वोच्च पदवी । २ मोक्ष ।—पुरुषः,—पूरुषः, (पु०) परमात्मा । परब्रह्म ।—प्रख्य (वि०) प्रसिद्ध । प्रख्यात ।—ब्रह्मन्, (न०) परमात्मा ।—रसः, (पु०) पानी मिला माठा ।—हंसः, (पु०) वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को प्राप्त कर चुका हो । कुटीचक । बहूदक । हंस और परमहंस नाम से संन्यासियों के चार भेद स्मृतिकारों ने किये हैं । इनमें परमहंस सर्वश्रेष्ठ माना गया है ।

परमक (वि०) सर्वोच्च । सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ ।

परमतः (अव्यया०) अत्यधिकता से । बहुत अधिक ।

परमता (स्त्री०) १ सर्वोच्च । २ सर्वोच्च लक्ष्य ।

परंपदं } परम्पदम् } (न०) १ वैकुण्ठधाम। दिव्यधाम। २ सब से श्रेष्ठ पद व स्थान। ३ मोक्ष। मुक्ति।

परमश्रेष्ठ (वि०) सब से बढ़िया। श्रेष्ठतम।

परमश्रेष्ठः (पु०) १ ब्रह्मा का नामान्तर। २ विष्णु का नामान्तर। ३ शिव का नामान्तर। ४ देवता। देवत।

परमेष्ठिन् (पु०) १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ गरुड़। ५ अग्नि। ६ कोई भी आध्यात्मिक गुरु। ७ (जैनियों का) अर्हंत।

परंपर } परम्पर } (वि०) १ एक के बाद दूसरा। २ सिल-सिलेवार। क्रमशः।

परंपरः } परम्परः } (पु०) १ परपोता। पौत्र का पुत्र। २ हिरन विशेष।

परंपरं } परम्परम् } (न०) क्रमशः। सिलसिलेवार।

परंपरा } परम्परा } (स्त्री०) १ अविच्छिन्न क्रम। सिलसिला जो टूटे नहीं। २ पंक्ति। अवली। समूह। समुदाय। ३ क्रम। विधि। यथार्थ व्यवस्था। ४ वंश। कुल। ५ वध। नाश।

परंपराक } परम्पराक } (वि०) यज्ञ में पशु का वध करने वाला।

परंपरीण } परमपरीण } (वि०) १ पैतृक। वंशपरम्परा से प्राप्त। २ ख़ानदानी।

परवत् (वि०) १ पराधीन। आज्ञाकारी। २ बलरहित। शक्तिहीन किया हुआ। सम्पूर्णतः परवश। ४ अनुरक्त। भक्त।

परवत्ता (स्त्री०) परवशता। पराधीनता।

परंजं } परञ्जम् } (न०) इन्द्र की तलवार।

परंजः } परञ्जः } (पु०) १ कोल्हू। २ तलवार की धार। ३ फेन।

परशः (पु०) १ पारस पत्थर। स्पर्शमणि।

परशुः (पु०) १ एक अस्त्र जिसमें एक डंडे के सिरे पर एक अर्द्धचन्द्राकार लोहे का फल लगा रहता है। कुल्हाडी विशेष। तबर। २ वज्र।—धरः, (पु०) १ परशुराम। २ गणेश। ३ परशुधारी सिपाही।—रामः, (पु०) जमदग्नि के पुत्र।—वनं, (न०) नरक विशेष.

परश्वधः } परस्वधः } (पु०) परसा। तबर। तबल।

परस् (अव्यया०) १ परे। आगे। अपेक्षाकृत अधिक। २ दूसरी तरफ। ३ अत्यन्त दूसरा। ४ छोड़ कर। ५ (वैदिक) भविष्यत् में। पीछे से।—कृष्ण, (वि०) अतिकाल।—पुंसा, (स्त्री०) [वैदिक] वह स्त्री जो अपने पति से सन्तुष्ट न होकर (आशिक या प्रेमी) की तलाश में हो।—पुरुष, (वि०) मनुष्य से बढ़ कर।—शत, (वि०) सौ से अधिक।—श्वस्. (अव्यया०) आने वाले कल के बाद का दिन। परसों।—सहस्र, (वि०) एक हज़ार से अधिक।

परस्तात् (अव्यया०) १ परे। दूसरी तरफ या ओर। और आगे। २ इसके बाद। पीछे से। ३ अपेक्षाकृत ऊँचा। उच्चतर। ४ (वैदिक) ऊपर से। ५ अलग। दूर। पृथक।

परस्पर (वि०) आपस में।—ज्ञः, (पु०) मित्र। दोस्त।

परस्मैपदम् (न०) } परस्मैभाषा (स्त्री०) } संस्कृत में क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं। उनमें से एक। इससे दूसरे के लिये फल का ज्ञान होता है। व्याकरण में कथित तिप् आदि।

परा (अव्यया०) यह एक अव्यय है। दूर, पीछे, एक तरफ, ओर के अर्थ में यह प्रयुक्त होता है। यथा परागत। पराक्रान्त। पराधीन आदि।

पराक (वि०) छोटा।

पराकः (पु०) १ बलिदान देने की तलवार। २ प्रायश्चित्त विशेष। ३ रोग विशेष।

पराकाशः (पु०) बहुत दूर की आशा या उम्मेद।

पराकृ (क्रि०) ख़ारिज कर देना। अस्वीकृत कर देना। तिरस्कार करना। ध्यान देना।

पराकरणम् (न०) अस्वीकृत कर देने की क्रिया। तिरस्कार।

पराके (अव्यया०) फ़ासले पर। अन्तर पर (वैदिक)।

पराक्रम् (क्रि०) १ हिम्मत दिखाना। बहादुरी दिखाना। २ लौट जाना। पीठ फेरना। ३ आक्रमण। करना। ४ आगे बढ़ना।

पराक्रमः (पु०) १ बहादुरी। साहस। साकत। २ आक्रमण। ३ प्रयत्न। उद्योग। ४ विष्णु का नामान्तर।

पराक्रमिन् (वि०) पराक्रमी। साहसी। बहादुर। वीर। विक्रमशाली। हिम्मत वाला।

पराक्रान्त (व० कृ०) १ बलवान। बलिष्ट। वीर। बहादुर। २ आक्रमण किया हुआ। ३ पीछे भगाया हुआ।

परागः (पु०) १ पुष्परज। वह रज व धूल जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है। २ धूल। रज। ३ एक प्रकार का सुगन्ध-चूर्ण जो स्नानोपरान्त शरीर में मला जाता है। ४ चन्दन। ५ चन्द्रमा सूर्य का ग्रहण। ६ कीर्ति। ख्याति। ७ स्वाधीनता। मनमौजीपन।

परागम् (क्रि०) १ लौटना। २ घेरना। छेकना। घुमना। ३ प्रस्थान करना। ४ मर जाना।

परागत (व० कृ०) १ मृत। मरा हुआ। २ ढका हुआ। घिरा हुआ। ३ फैला हुआ। बढ़ा हुआ।

परांगवः }
पराङ्गवः } समुद्र।

पराच् }
परांच्-पराञ्च् } (वि०) [स्त्री०—पराची या पराञ्ची] १ दूसरी ओर स्थित। २ पराङ्मुख। मुँह फेरे हुए। ३ प्रतिकूल। विरोधी। ४ फॉसले पर। ५ बाहिर की ओर घूमा हुआ। बाह्योन्मुख। ६ भगाया हुआ। लौटाया हुआ। ७ उलटा चलने वाला।—मुख, (= पराङ्मुख) १ विमुख। मुँह फेरे हुए। २ उदासीन। ३ विरुद्ध।—मुखः, (पु०) तॉन्त्रिक मन्त्र जो शत्रु के चलाये अस्त्र को लौटाने के लिये पढ़ा जाता है।

पराचीन (वि०) १ सामने की ओर, भगाया हुआ। २ ध्यान न देने वाला। ३ उत्तरकालभव। पीछे हुआ। दूसरी ओर अवस्थित।

पराचीनं (न०) दूर। परे। अपेक्षाकृत अधिक। अधिकता।

पराजि (क्रि०) १ हराना। शिकस्त देना। जीतना। पराजयी करना। मुर्ती करना। २ खोना। हाथ से निकाल देना। ३ जीत लिया जाना। पराजित होना। ४ (किसी वस्तु को) असह्य जानना। ५ वशीभूत हो जाना।

पराजयः (पु०) विजय। हार।

पराजित (व० कृ०) जीता हुआ। हराया हुआ।

पराजिष्णु (वि०) १ विजयी। २ जीता हुआ। हराया हुआ।

परांजः }
पराञ्जः } (पु०) १ कोल्हू (तेल का)। २ फैन। फैना। ३ तलवार या छुरी की बाढ़।

पराणुत्तिः (स्त्री०) भगा देने की क्रिया। हटा देने की क्रिया।

परात्परः (पु०) परमात्मा। परब्रह्म।

परादा (क्रि०) [वैदिक] १ सौंप देना। हवाले कर देना। २ फैंक देना। बरबाद कर डालना। ३ दे डालना। बदल लेना। ४ बाहिर कर देना।

परादानं (न०) १ दे डालना। त्याग देना। २ बदलौअल।

पराधिः (पु०) १ शिकार। आखेट। २ अत्यन्त मानसिक पीड़ा।

परानसा }
पराणसा } (स्त्री०) वैद्यक चिकित्सा। चिकित्सा की क्रिया।

परापत् (क्रि०) १ पहुँचना। समीप जाना। २लौटना। ३ बच जाना। ४ प्रस्थान करना। ५ गिर पड़ना। ६ असफल होना। (निज०) भगा देना।

पराभू (क्रि०) १ हराना। शिकस्त देना। नाश करना। जीतना। २ घायल करना। चिढ़ाना। छेड़छाड़ करना। ३ अन्तर्धान होना। ४ नष्ट होना। खोजाना। ५ वशवर्ती होजाना। आत्मसमर्पण कर देना।

पराभवः (पु०) १ हार। पराजय। २ तिरस्कार। अपमान ३ नाश। ४ अन्तर्धान। वियोग।

पराभूत (व० कृ०) १ हराया हुआ जीता हुआ। २ तिरस्कृत। अपमानित।

पराभूतिः (स्त्री०) देखो पराभवः।

परामृत (वि०) वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। मुक्त।

परामृश् (क्रि०) १ छूना। रगड़ना। धीरे धीरे चोट मारना। २ हाथ लगाना। आक्रमण करना। घेरा डालना। ३ भ्रष्ट करना। ४ विचार करना।

सोचना । ५ मन ही मन सोचना विचारना । ६ सलाह लेना ।

परामर्शः (पु०) १ पकड़ना । खींचना । जैसे "केशपरामर्श." । २ (धनुष को) झुकाना या तानना । ३ प्रचण्डता । आक्रमण । ४ होहल्ला । रुकावट । ५ स्मरण करना । ६ विचार । मनन । ७ फैसला । निर्णय । ८ स्पर्श । थपथपाना । ९ रोग से पीड़ित होना ।

परामर्शनम् (न०) १ याददाश्त । स्मृति । २ विचार । सोच विचार ।

परामृष्ट (व० कृ०) १ स्पर्श किया हुआ । छुआ हुआ । पकड़ा हुआ । गसा हुआ । २ बुरी तरह व्यवहृत किया हुआ । भङ्ग किया हुआ । ३ विचारा हुआ । निर्णय किया हुआ । ४ सहा हुआ । ५ सम्बन्ध किया हुआ । ६ रोगाक्रान्त ।

परारि (अव्यया०) गतवर्ष के पूर्व का वर्ष ।

परायण (वि०) १ गत । गया हुआ । २ निरत । प्रवृत्त । लीन । तत्पर । लगा हुआ ।

परारुः (पु०) कारवेल्ल । करेला ।

परारुकः (पु०) पत्थर या चट्टान ।

परावाकः (पु०) [वैदिक] खण्डन । प्रतिवाद ।

पराविद्धः (पु०) कुबेर का नामान्तर ।

परावत् (अव्यया०) [वैदिक] फ़ासले पर । अन्तर पर ।

परावृत् (क्रि०) लौटना । लौटजाना ।

परावर्तः (पु०) १ प्रत्यावर्तन । पलटने का भाव । पलटाव । २ बदलौअल । लेनदेन । अदलबदल । विनिमय । ३ फिर से पाने की क्रिया । पुनःप्राप्ति । ४ सजा का बदल जाना ।

परावृत्त (व० कृ०) १ पलटाया या पलटाया हुआ । २ फेरा हुआ । ३ बदला हुआ । ४ लौटा कर दिया हुआ ।

परावृत्तिः (स्त्री०) १ पलटने या पलटाने का भाव । पलटाव । २ मुकदमे का फिर से विचार या फैसला ।

पराव्याधः (पु०) इतना फ़ासला जितने में फेंका हुआ पत्थर जा कर गिरे ।

पराशरः (पु०) एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि द्वैपायन वेदव्यास के पुत्र थे ।

पराशरिन् (पु०) भिक्षुक । भिखारी ।

परास् (क्रि०) १ त्यागना । छोड़ना । २ निकालना । ३ अस्वीकृत करना । खण्डन करना । नामंजूर करना । खारिज करना ।

परासं (न०) टीन । रांगा ।

परासनम् (न०) वध । हत्या ।

परासु (वि०) प्राणरहित । मृत ।

परास्त (व० कृ०) १ फेंका हुआ । बहाया हुआ । २ निकाल बाहर किया हुआ । निकाला हुआ । ३ त्यक्त । त्यागा हुआ । ४ खण्डन किया हुआ । अस्वीकृत किया हुआ । नामंजूर किया हुआ । ५ परास्त किया हुआ ।

पराहत (व० कृ०) १ आक्रान्त । ध्वस्त । २ दूर किया हुआ । भगाया हुआ ।

पराहतम् (न०) आघात । चोट ।

परि (अव्यया०) एक उपसर्ग जिसके अन्य शब्दों में जोड़ने से निम्न अर्थों की उपलब्धि होती है । १ सर्वतोभाव । अच्छी तरह । २ अतिशय । ३ पूर्णता । ४ दोषाख्यान जैसे परिहास । परिवाद । ५ नियम । क्रम । ६ चारों ओर ।

परिकथा (स्त्री०) एक कहानी के अन्तर्गत उसीके सम्बन्ध की दूसरी कहानी ।

परिकंपः } परिकम्पः } (पु०) १ महान । भयङ्कर कपकपी ।

परिकरः (पु०) १ लवाज़मा । अनुगत सहचर । २ समूह । संग्रह । भीड़ । ३ आरम्भ । शुरूआत । ४ कमरबंद । कमरपट्टी । पटुका । ५ पर्यङ्क । ६ एक अर्थालङ्कार जिसमें अभिप्रायपूर्ण विशेषणों के साथ विशेष्य आता है । ७ फैसला । निर्णय ।

परिकर्मन् (पु०) नौकर । (न०) १ देह में चन्दन केसर आदि लगाना । उबटन करना । २ पैर में महावर लगाना । ३ तैयारी । ४ पूजन । अर्चन । ५ पवित्रीकरण । ६ अङ्कशास्त्र की क्रिया विशेष ।

परिकर्तृ (पु०) पुरोहित जो अनविवाहित ज्येष्ठ भ्राता के रहते छोटे भाई का विवाह करावे ।

परिकर्षः (पु०) } खींचने की क्रिया। खींच
परिकर्षणम् (न०) } कर निकालने की क्रिया। उखाड़ने की क्रिया।

परिकल्कनम् (न०) धोखा। छल। कपट। बदमाशी।

परिकल्पनम् (न०) } १ तै करना। निश्चित
परिकल्पना (स्त्री०) } करना। २ बनावट। रचना। आविष्कार। ३ सम्पन्नकरण। ४ विभक्तकरण। बटवारा।

परिकांक्षितः (पु०) भक्त। साधु। संन्यासी।

परिकीर्ण (व० कृ०) १ फैला हुआ। बिखरा हुआ। २ घिरा हुआ। भीड़भाड़ से युक्त। परिपूर्ण।

परिकूट (न०) धुस्स। खाई।

परिकोपः (पु०) महान् क्रोध। रोष।

परिक्रमः (पु०) १ टहलना। २ फेरी देना। चारो ओर घूमना। ३ क्रम। सिलसिला। ४ एक के पीछे एक दूसरे का आना। ७ प्रविष्ट होने वाला। घुमने वाला।—सहः (पु०) बकरा।

परिक्रयः (पु०) } १ मज़दूरी। भाड़ा। २
परिक्रियणम् (न०) } मज़दूरी पर काम में लगाना। ३ क्रय। खरीद। ४ विनिमय। पलटौअल। अदलाबदली। ५ सन्धि जो रुपये देकर की गयी हो।

परिक्रिया (स्त्री०) १ खाई से घेरना। २ घेरना।

परिक्लान्त (व० कृ०) थका हुआ। परिश्रान्त।

परिक्लेदः (पु०) तरी। नमी। सील।

परिक्लेशः (पु०) थकाई। थकावट। कष्ट। कड़ाई।

परिक्षयः (पु०) १ नाश। गलाव। २ अदृश्य हो जाने की क्रिया। समाप्त होने की क्रिया। बरबादी। हानि। घाटा। असफलता।

परिक्षाम (वि०) दुबला। लटा हुआ।

परिक्षालनम् (न०) १ धुलाई। सफाई। २ धोने के लिये जल।

परिक्षिप्त (व० कृ०) १ खाई आदि से घेरा हुआ। २ बिखरा हुआ। ३ घेरा हुआ। ४ फिका हुआ। ५ त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ।

परिक्षीण (व० कृ०) १ नष्ट हुआ। अन्तर्धान हुआ। २ नष्ट किया हुआ। क्षीण किया हुआ। ३ दुबला या लटा हुआ। घिसा हुआ। निघटा हुआ। ४ नितान्त नाश को प्राप्त हुआ। ५ खोया हुआ। विनष्ट किया हुआ। ६ छोटा किया हुआ। घटाया हुआ। ७ दिवाला निकाले हुए।

परिक्षीव (वि०) नशे में बिल्कुल चूर।

परिक्षेपः (पु०) १ इधर उधर भ्रमण करना। टहलना। २ फैलाना। बखेरना। ३ घेरना। छेकना। ४ घेरने की सीमा या घेरा।

परिखा (स्त्री०) खाई। किसी नगर या गढ़ के बाहिर की नहर जो नगर या गढ़ की रक्षा के लिये खोदी जाती है। खंदक।

परिखातम् (न०) १ खाई। खंदक। २ हल। पहिये से बनी लीक या लकीर। ३ खुदाई।

परिखेदः (पु०) थकावट। श्रान्ति।

परिख्यातिः (स्त्री०) कीर्ति। नामवरी। प्रसिद्धि।

परिगणनम् (न०) } भलीभाँति गिनना। पूरा
परिगणना (स्त्री०) } पूरा गिनना। ठीक ठीक बयान या कथन।

परिगत (व० कृ०) १ घेरा हुआ। २ चारो ओर छाया हुआ। ३ जाना हुआ। समझा हुआ। ४ भरा हुआ। ढका हुआ। ५ प्राप्त किया हुआ। पाया हुआ। ६ स्मरण किया हुआ।

परिगलित (व० कृ०) १ डूबा हुआ। २ टकराया हुआ। गिरा हुआ। ३ अदृश्यता को प्राप्त। ४ पिघला या गला हुआ। ५ बहा हुआ।

परिगर्हणम् (न०) बड़ा भारी कलङ्क या दोषारोपण।

परिगूढ (व० कृ०) १ नितान्तगुप्त। २ जो समझ ही में न आवे। बड़ी कठिनाई से समझ में आने वाला।

परिगृहीत (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ। काँपे में आया हुआ। २ आलिङ्गन किया हुआ। छाती से लगाया हुआ। चिपटाया हुआ। घेरा हुआ। ३ स्वीकृत किया हुआ। लिया हुआ। पाया हुआ। ४ माना हुआ। ५ आश्रय दिया हुआ। अनुग्रह किया हुआ। ६ अनुसरण किया हुआ। आज्ञा का पालन किया हुआ। ७ विरोध किया हुआ।

परिगृह्या (स्त्री०) विवाहिता स्त्री।

परिग्रहः (पु०) १ पकड़। २ छिकाव। घिराव। ३ पहनाव उढ़ाव। ४ प्राप्ति। उपलब्धि। ५ स्वीकृति ६ सम्पत्ति। धनदौलत। ७ विवाह में पाना।

विवाह । ८ भार्या । पत्नी । ९ अपनी संरक्षकता में लेना । अनुग्रह करना । १० चाकर । टहलुआ । ११ गृहस्त । परिवार । परिवार के लोग । १२ अन्तःपुर । रनवास । १३ जड । उत्पतिस्थान । १४ चन्द्रग्रहण । सूर्यग्रहण । १५ शपथ । १६ सेना का पिछला भाग । १७ विष्णु का नामान्तर । १८ पूर्णता ।

परिग्रहीतृ (पु०) पति । [विरह ।

परिग्लान (व० कृ०) १ थका हुआ । परिश्रान्त । २

परिघः (पु०) १ अर्गल । २ बाधा । रुकावट । ३ मूठ पर लोहा जड़ा हुआ डंडा या छड़ी । ४ लोहे का डंटा ५ घडा । कलसा । ६ शीशे का घडा । ७ घर । ८ वध । नाश । ९ चोट ।

परिघट्टनम् (न०) १ आघात । २ खलबलाना । घोलमेल करना ।

परिघातः (पु०)
परिघातनम् (न०) } १ वध । हत्या । हनन । स्थानान्तरकरण । पिण्ड छुडाना । २ डंडा । लुहाँगी ।

परिघोष (पु०) १ शोर । होहल्ला कोलाहल । २ अनुचित कथन । ३ मेघगर्जन ।

परिचतुर्दशनम् (न०) पूरा चौदह ।

परिचय: (पु०) १ ढेर । संग्रह । २ जानकारी । अभिज्ञता । घनिष्ठता । अवगति । ३ परीक्षा । अध्ययन । अभ्यास । उद्धरणी । ४ ज्ञान । ५ पहचान ।

परिचरः (पु०) १ नौकर । अनुयायी । सेवक । २ शरीररक्षक । ३ रक्षक । चौकीदार । ४ सेवा । ख़िदमत ।

परिचरणः (पु०) नौकर । सेवक । सहायक ।

परिचरणम् (न०) १ चलना फिरना । २ सेवा ।

परिचर्या (स्त्री०) सेवा । उपस्थिति ।

परिचाय्यः (पु०) यज्ञीय अग्नि ।

परिचारकः
परिचारिकः } (पु०) सेवक । टहलुआ ।

परिचिति (स्त्री०) १ परिचय । जानकारी । घनिष्ठता ।

परिच्छद् (स्त्री०) १ राजा आदि के साथ सदैव रहने वाले नौकर । अनुचर । २ लवाज़मा । ३ असबाब । सामान ।

परिच्छदः (पु०) १ पट । कपडा जो किसी वस्तु को ढक या छिपा सके । आच्छादन । २ वस्त्र । पोशाक । ३ अनुचर । सेवक । आश्रितों का मण्डल । ४ छत्र चमर आदि सामान । ५ सामान असबाब । (बरतनादि) ६ यात्रोपयोगी सामान ।

परिच्छंदः
परिच्छन्दः } (पु०) अनुचर । सेवक । टहलुआ ।

परिच्छन्न (व० कृ०) १ ढका हुआ । लपटा हुआ । कपडा पहिने हुए । वस्त्र धारण किये हुए । २ छाया हुआ । ३ घिरा हुआ । ४ छिपा हुआ ।

परिच्छित्तिः (स्त्री०) १ सीमा । अवधि । इयत्ता । २ बटवारा । अलगाव ।

परिच्छिन्न (व० कृ०) १ अलगाया हुआ । विभाजित । २ भली भाँति परिभाषा दिया हुआ । निश्चित किया हुआ । दर्याफ्त किया हुआ । ३ सीमाबद्ध ।

परिच्छित्तिः (पु०) १ अलगाव । बंटवारा । विवेक (अच्छे बुरे का) २ लक्षण । निर्णय । ३ पहचान । फैसला । ४ सीमा । अवधि । इयत्ता । ५ अध्याय । प्रकरण ।

परिच्छेद्य (वि०) १ गिनने नापने या तौलने योग्य । विलगाने योग्य । ३ बाँटने योग्य । विभाज्य ।

परिजनः (पु०) १अनुचर । अनुयायी । पिछलगुआ । सदा साथ रहने वाले नौकर । २ आश्रित जन जैसे स्त्री पुत्रादि । ३ नौकर ।

परिजल्पितं (न०) ऐसा गूढ़ कथन जिससे अपनी श्रेष्ठता और निपुणता प्रकट हो और (अपने स्वामी) की निष्ठुरता, परिवञ्चना तथा अन्य ऐसे ही दुर्गुण प्रकट हों ।

परिज्ञप्तिः (पु०) १ वार्तालाप । संवाद । २ पहिचान ।

परिज्ञानम् (न०) पूर्णज्ञान । पूर्णपरिचय । सम्यक् ज्ञान ।

परिडीनम् (न०) पक्षियों का चक्कर खाते हुए उड़ान ।

परिणद्ध (व० कृ०) १ चारों ओर से ढका या बंधा हुआ । २ चौडा । लंबा ।

परिणत (व० कृ०) १ झुका हुआ । नवा हुआ । २ उतरता हुआ (जैसे उतरती उम्र) ३ पका हुआ । पूर्णवृद्धि को प्राप्त । ४ पूर्णरूप से बढ़ा हुआ ।

आगे बढ़ा हुआ। पूर्णता को प्राप्त। ५ पचा हुआ। ६ रूपान्तरित। बदला हुआ। ७ समाप्त।

परिणत (पु०) वह हाथी जो दाँतों का प्रहार करने को झुका हुआ हो।

परिणतिः (स्त्री०) १ नवन। झुकाव। २ पकावट। पक्वता। वृद्धि। ३ रूपान्तरित्व। अवस्थान्तरित्व। ४ पूर्णता। ५ परिणाम। नतीजा। ६ अन्त। समाप्ति। अवसान। ७ जीवन का अवसान। वृद्धावस्था। ८ परिपाक। पचन।

परिणयः (पु०) } विवाह। शादी।
परिणयनम् (न०) }

परिणद्ध (वि०) चारों ओर से लपेटा हुआ या बाँधा हुआ।

परिणामः } (पु०) १ परिवर्तन। अदलबदल। रूपान्तरकरण। २ पाचन शक्ति। ३ नतीजा। फल। ४ वृद्धि। पक्वता। ५ अन्त। समाप्ति। अवसान। ६ वृद्धावस्था। बुढ़ापा। ७ क्षेप (काल का)। समय बिताना। ८ अर्थालङ्कार विशेष, जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) को प्रकृत (उपमेय से एक रूप हो कर कोई कार्य करना) कहा जाय।—दर्शिन्, (वि०) दूरदर्शी। विवेकी।—दृष्टि, (वि०) विवेकी।—दृष्टिः, (स्त्री०) विमृश्यकारिता। विज्ञता। पूर्वविधान। भावी काल की व्यवस्था।—पथ्य, (वि०) अन्त में गुणकारी।—शूलं, (न०) वायगोले का दर्द।
परीणामः }

परिणायः } (पु०) शतरंज की चाल। शतरंज की गोट की चाल।
परीणायः }

परिणायकः (पु०) १ नेता। पेशवा। २ पति।

परिणाहः } (पु०) १ घेरा। विस्तार। २ चौड़ाई। अर्ज।
परीणाहः }

परिणाहवत् (वि०) बड़ा। लंबा। बढ़ा हुआ। फैला हुआ।

परिणाहिन् (वि०) लंबा। बड़ा।

परिणिमक (वि०) १ खाने वाला। चखने वाला। २ चुम्बन करने योग्य।

परिणिष्ठा (स्त्री०) पूर्ण निपुणता।

परिणीत (व० कृ०) विवाहित।

परिणीता (स्त्री०) विवाहिता स्त्री।

परिणेतृ (पु०) पति। ख़सम।

परितर्पणम् (न०) प्रसन्नता। सन्तोष।

परितस् (अव्य०) १ चारों ओर। सब तरफ। सर्वत्र। सब जगह। २ ओर। तरफ।

परितापः (पु०) १ बड़ी भारी गर्मी। उत्कट उष्णता। २ कष्ट। पीड़ा। ३ विलाप। ४ कम्प। भय।

परितुष्ट (व० कृ०) १ भली भाँति सन्तुष्ट। २ आह्लादित। हर्षित।

परितुष्टिः (स्त्री०) १ सन्तोष। पूर्ण सन्तोष। २ हर्ष। आह्लाद।

परितोषः (पु०) १ सन्तोष। वासना या किसी वस्तु की प्राप्ति की अभिलाषा का अभाव। २ पूर्ण सन्तोष। प्रसन्नता। ३ आह्लाद। हर्ष।

परितोषण (वि०) सन्तोषी। हर्षित।

परितोषणम् (न०) सन्तोष। सन्तुष्टि।

परित्यक्त (व० कृ०) १ त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। २ रहित किया हुआ। ३ छोड़ा हुआ (जैसे तीर)। ४ आवश्यकता।

परित्यागः (पु०) १ त्याग। त्यागने का भाव। २ विराग। वैराग्य। ३ असावधानी। छूट। ४ उदारता। वदान्यता। ५ घाटा। हानि।

परित्राणं (न०) रक्षा। बचाव। रक्षण। छुटकारा। मुक्ति।

परित्रासः (पु०) भय। आतङ्क। डर।

परिदंशित (वि०) कवच से भलीभाँति आपादमस्तक ढका हुआ। जिरहपोश।

परिदानं (न०) १ विनमय। अदल बदल। २ भक्ति। अनुरक्ति। ३ धरोहर को धरोहर रखने वाले को सौंपना।

परिदायिन् (पु०) परिवेतृ। वह पिता जो अपनी लड़की को ऐसे मनुष्य को विवाह में दे डाले जिसका बड़ा भाई क्वारा हो।

परिदाहः (पु०) } १ जलन। २ पीड़ा। परिताप।
परीदाह (पु०) } दाह। ३ शोक। विलाप।
परिदेवः (पु०) } रोदन।

परिदेवनं (न०)
परिदेविता (स्त्री०)
परिदेवतम् (न०) | १ विलाप। उलहना। २ पछतावा। शोक।

परिद्वेवन (वि०) शोकान्वित। उदास। दुःखी।

परिद्रष्ट्र (पु०) तमाशबीन। दर्शक।

परिधर्षणम् (न०) १ आक्रमण। चढ़ाई। बलात्कार। २ हतक। अपमान। कुवाच्य। ३ दुर्व्यवहार। बुरा बर्ताव।

परिधानम् | परीधानम् (न०) १ पोशाक पहनना। वस्त्र धारण करना। २ वस्त्र। नीमा।

परिधानीयम् (न०) नीमा। अँगे के नीचे पहिनने का वस्त्र।

परिधायः (पु०) १ नौकर। अनुचर। २ आधार। आश्रय। ३ पिछला भाग। चूतड़, पुट्ठा आदि।

परिधिः (पु०) १ दीवाल। हाता। मेंड। घेरा। २ सूर्यमण्डल का घेरा। ३ आकाशमय घेरा या प्रकाश का घेरा। ४ आकाशमण्डल का घेरा। ५ पहिये का घेरा। अग्निकुण्ड के चारों ओर गोलाकार रखी हुई पलाश आदि की लकड़ी।—पति, —खेचरः (पु०) शिव जी का नामान्तर। —स्थ:, (पु०) १ रखवाला। चौकीदार। २ रथ और रथी का रक्षक एक सैनिक या सैनिकदल।

परिधूपित (वि०) बहुत सुगन्धि वाला। बहुत खुशबूदार।

परिधूसर (वि०) बिल्कुल भूरा।

परिधेयम् (न०) कुर्त्ता। नीमा। बनियाइन।

परिध्वंसः (पु०) १ कष्ट। विपत्ति। आफत। बरबादी। २ सफलता। नाश। ४ जातिभ्रंशता।

परिध्वंसिन (वि०) १ गिराने वाला। २ नाश करने वाला।

परिनिर्वाण (वि०) बिल्कुल बुझा हुआ।

परिनिर्वाणम् (न०) पूर्ण निर्वाण। मोक्ष।

परिनिर्वृतिः (स्त्री०) पूर्ण मोक्ष।

परिनिष्ठा (स्त्री०) १ पूर्ण ज्ञान। पूर्ण परिचय। २ सर्वाङ्ग पूर्णता। ३ चरम सीमा या अवस्था। पराकाष्ठा।

परिनिष्ठित (व० कृ०) पूर्ण रूप से निपुणता प्राप्त। पूर्णकुशल। पूर्णअभ्यस्त।

परिपक्व (व० कृ०) १ भलीभाँति पकाया हुआ। २ भलीभाँति सेका हुआ। ३ बिल्कुल पका हुआ। ४ बड़ा चतुर या चालाक। ५ भलीभाँति पचा हुआ। ६ नष्ट होने वाला अथवा मरने वाला।

परिपणं | परिपनम् (न०) पूँजी। मूल धन। बारदाना।

परिपणनम् (न०) वचन हारना। प्रतिज्ञा। वादा।

परिपणित (व० कृ०) वचन हारा हुआ। प्रतिज्ञात।

परिपंथकः | परिपन्थकः (पु०) विरोधी। शत्रु। वैरी। विद्वेषी। दुश्मन।

परिपंथिन् | परिपन्थिन् (वि०) मार्ग रोकने वाला। मार्गावरोधक। (पु०) १ शत्रु। वैरी। प्रतियोगी। विरोधी। दुश्मन। २ डाकू। लुटेरा। ठग।

परिपाकः | परीपाकः (पु०) १ भलीभाँति पकाया हुआ। २ पाचनशक्ति। ३ पका पूर्णवृद्धि को प्राप्त होना। परिपूर्णता। ४ फल। परिणाम। नतीजा। ५ चातुर्य। चालाकी। निपुणता।

परिपाटल (वि०) पिलौंहालाल।

परिपाटिः | परिपाटी (स्त्री०) १ क्रम। शैली। सिलसिला। २ प्रणाली। तरीका। चाल। ढंग।

परिपाठः (पु०) पूर्ण वर्णन। विगत।

परिपार्श्व (वि०) समीप। ओर। तरफ। सटा हुआ। मिला हुआ।

परिपालनम् (न०) १ रक्षा। बचाव। २ पालन पोषण।

परिपिष्टकम् (न०) सीसा।

परिपीडनम् (न०) दबाना। दबा कर निचोड़ना। सताना। अनिष्ट करना। हानि पहुँचाना।

परिपुटनम् (न०) १ हटाना। पृथक्करण। २ छाल या चाम को अलग करना।

परिपूजनं (न०) सम्मान करना। अर्चन करना।

परिपूजा (स्त्री०) पूजा करना।

परिपूत (व० कृ०) साफ किया हुआ। नितान्त स्वच्छ। फटका हुआ। छाना हुआ। भूसी से अलगाया हुआ।

परिपूरणम् (न०) खूब भरा हुआ। पूरा करना।

परिपूर्ण (व० कृ०) १ बिल्कुल भरा हुआ। लवालब। २ अघाया हुआ। सन्तुष्ट।

परिपूर्तिः (स्त्री०) सम्पूर्णता। परिपूर्णता।

परिपृच्छा (स्त्री०) सवाल । प्रश्न ।
परिपेलव (वि०) अत्यन्त कोमल । अति सुकुमार ।
परिपोटः } कान का एक रोग । इसमें लौक का
परिपोटकः } चमड़ा सूज कर स्याही लिये हुए लाल रंग का हो जाता है और उसमें दर्द होता है।
परिपोषणम् (न०) खिलाना पिलाना । पालन पोषण । बढ़ाना । वृद्धि ।
परिप्रश्नः (पु०) तहकीकात । अनुसन्धान । प्रश्न । सवाल ।
परिप्राप्ति (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि ।
परिप्रेष्यः (पु०) नौकर ।
परिप्लव (वि०) १ हिलता हुआ । काँपता हुआ । २ उतराता हुआ । ३ चञ्चल । अस्थिर ।
परिप्लवः (पु०) १ बूड़ा । बाढ़ । प्लावन । २ नाव । ३ अत्याचार । ज़ुल्म । ४ गीला । भींगा ।
परिप्लुत (व० कृ०) १ जल की बाढ़ में डूबा हुआ । प्लावित । २ स्नान किये हुए । भींगा हुआ । गीला ।
परिप्लुतम् (न०) कुदान । उछाल । फलाँग । छलाँग ।
परिप्लुता (स्त्री०) शराब । मदिरा । मद्य ।
परिप्लुष्ट (व० कृ०) जला हुआ । झुलसा हुआ ।
परिबर्हः } (पु०) १ लवाज़मा । नौकर चाकर ।
परिवर्हः } २ राजा के छत्र चँवर आदि राजचिन्ह । ३ सजावट का सामान । ४ सम्पत्ति । धनदौलत ।
परिबर्हणम् } (न०) १ अनुचरवर्ग । २ शृङ्गार ।
परिवर्हणम् } सजावट । ३ बढ़ती । ४ पूजा । उपासना ।
परिबाधा (स्त्री०) १ कष्ट । पीड़ा । चिढ़ । २ थकावट । कठिनाई ।
परिबृंहणम् } (न०) १ समृद्धि । सकुशलता । २
परिवृंहणम् } किसी ग्रन्थ के अङ्ग स्वरूप अन्य ग्रन्थ । वह ग्रन्थ अथवा शास्त्र जो किसी अन्य ग्रन्थ या शास्त्र की पूर्ति या पुष्टि करता हो । जैसे ब्राह्मण ग्रन्थ वेद के परिबृंहण हैं ।
परिबृंहित } (व० कृ०) १ उन्नत । बढ़ा हुआ । २
परिवृंहित } समृद्ध । फलता फूलता हुआ । ३ किसी से जुड़ा या मिला हुआ । युक्त । अँगीभूत ।
परिभग्नः (पु०) टुकड़े टुकड़े होकर टूटना । टुकड़े टुकड़े हो जाना ।
परिभर्त्सनम् (न०) डाँट । डपट । धिक्कार । फटकार ।
परिभवः } (पु०) १ अनादर । तिरस्कार । अप-
परीभवः } मान ।—आस्पदं, (न०)—पदं, (न०) १ तिरस्करणीय वस्तु । तिरस्कार के योग्य पदार्थ । २ अपमान या अपमानार्ह परिस्थिति ।—विधिः, (पु०) अपमान ।
परिभविन (वि०) [स्त्री०—परिभविनी] १ अपमानकारक । तिरस्कार या अपमान करने वाला । २ अपमानित ।
परिभावः (पु०) देखो "परिभवः"
परिभाविन् (वि०) [स्त्री०—परिभाविनी] १ अपमानकारक । तिरस्कार करने वाला व्यवहार करने वाला । २ लज्जित करने वाला । ३ तुच्छ समझने वाला । सामना करने वाला । चिनौती देने वाला ।
परिभाषणम् (न०) १ वार्तालाप । संवाद । कथोपकथन । गप्पसप्प । बातचीत । २ निन्दा करते हुए उलहना । किसी को दोष देते हुए या लानत मलामत करते हुए उसके कार्य पर अप्रसन्नता प्रकट करना । लानत मलामत । फटकार । भर्त्सना । ३ नियम । आज्ञा । आदेश ।
परिभाषाः (पु०) १ परिष्कृत भाषण । स्पष्ट कथन । संशय रहित कथन । २ भर्त्सना । फटकार । निन्दा । गाली । कलङ्क । ३ पारिभाषिक शब्दावली । ४ किसी ग्रन्थ में व्यवहृत सङ्केतों की सूची ।
परिभुक्त (व० कृ०) १ खाया हुआ । व्यवहृत । काम में आया हुआ । २ उपयुक्त । ३ अधिकृत ।
परिभुग्न (वि०) झुका हुआ । टेढ़ा । मुड़ा हुआ ।
परिभूतिः (स्त्री०) तिरस्कार । हतक । अपमान । अनादर ।
परिभूषणः (पु०) वह सन्धि या शान्ति जो किसी विशेष प्रदेश या भूखण्ड का समस्त राजस्व देकर स्थापित की गयी हो ।
परिभोगः (पु०) १ भोग । उपभोग । २ मैथुन । स्त्रीप्रसङ्ग । ३ अनधिकार किसी वस्तु को काम में लाना ।
परिभ्रंशः (पु०) १ छुटकारा । निकास । २ गिराव । पतन । च्युति । स्खलन ।

परिभ्रमः (पु०) १ इधर उधर टहलना । घूमना । भ्रमण । पर्यटन । २ घुमा फिरा कर कहना । सीधे न कह कर फेरफार से कहना । ३ भूल । भ्रम ।

परिभ्रमणम् (न०) १ पर्यटन । भ्रमण । मटरगश्त । २ घूमना । चक्कर लगाना । ३ व्यास । घेरा । परिधि ।

परिभ्रष्ट (व० कृ०) १ पतित । गिरा हुआ । च्युत । स्खलित । २ निकला हुआ । निकल कर भागा हुआ । ३ अधःपतित । ४ रहित किये हुए । वञ्चित किया हुआ । ५ असावधानी किया हुआ ।

परिमंडल, परिमण्डल (वि०) गोलाकार । गोल । चक्करदार ।

परिमंडलम्, परिमण्डलम् (न०) १ गोला । २ गेंद ३ वृत्त । परिधि ।

परिमंथर, परिमन्थर (वि०) अत्यन्तसुस्त । पल्ले दर्जे का दीर्घसूत्री या घिसटा ।

परिमंद, परिमन्द (वि०) १ अत्यन्त धुंधला । अस्पष्ट । २ बहुत सुस्त । ३ बहुत थका हुआ या कमज़ोर । ४ बहुत थोड़ा ।

परिमरः (पु०) नाश ।

परिमर्दः (पु०), **परिमर्दनं** (न०) १ रगड़ना । पीसना । २ कुचलना । पीस डालना । ३ नाश । ४ अनिष्ट । ५ कौरियाना । दबाना ।

परिमर्षः (पु०) १ डाह । ईर्ष्या । घृणा । अरुचि । २ क्रोध । रोष । गुस्सा ।

परिमलः (पु०) १ सुवास । उत्तमगन्ध । खुशबू । २ खुशबूदार चीज़ों का चूर्ण करना या मलना । ३ खुशबूदार चीज़ । ४ सहवास । मैथुन । संभोग । ५ पण्डितों का समुदाय । ६ धब्बा । कलङ्क ।

परिमलित (वि०) १ सुवासित । खुशबूदार । २ भ्रष्ट । सौन्दर्यभ्रष्ट ।

परिमाणं, परीमाणं (न०) १ नाप । नपना । (शक्ति या ताक़त का ।) २ तौल । संख्या । मूल्य ।

परिमार्गः (पु०), **परिमार्गणं** (न०) १ तलाश । खोज । अनुसन्धान । २स्पर्श । संसर्ग ।

परिमार्जनं (न०) १ धोने या माँजने का काम । झाड़ने पोंछने का काम । २ एक प्रकार की मिठाई जो घी मिश्रित शहद के शीरे में डुबोई हुई होती है ।

परिमित (वि०) १ न अधिक और न कम । २ सीमा संख्या आदि से बद्ध । ३ नपा तुला हुआ । ४ हिसाब या अंदाज़ से उचित मात्रा या परिमाण में ।—आभरण, (वि०) अंदाज़े से आभूषण धारण किये हुए । थोड़े गहने पहिने हुए ।—आयुस्, (वि०) अल्पायु । थोड़े दिनों जीने वाला ।—आहार,—भोजन, (वि०) कम भोजन करने वाला ।—कथ, (वि०) कम बोलने वाला । नये तुले शब्द कहने वाला ।

परिमितिः (स्त्री०) १ नाप । परिमाण । सीमा ।

परिमिलनम् (न०) १ स्पर्श । संसर्ग । २ संयोग । मेल ।

परिमुखं (अव्यया०) चेहरे के निकट । किसी पुरुष के) इर्द गिर्द । चारों तरफ़ ।

परिमुग्ध (वि०) १ मनोहर तथापि सादा । २ मनमोहक किन्तु मूर्ख ।

परिमृदित (वि० कृ०) १ कुचला हुआ । पैरों से रूंदा हुआ । २ आलिङ्गन किया हुआ । कौरियाया हुआ । ३ रगड़ा हुआ । पीसा हुआ ।

परिमृष्ट (व० कृ०) १ साफ़ किया हुआ । धोया हुआ । पवित्र किया हुआ । २ रगड़ा हुआ । सम्हाला हुआ । थपथपाया हुआ । ३ आलिङ्गन किया हुआ । ४ फैला हुआ । व्याप्त । परिपूरित ।

परिमेय (वि०) १ थोड़ा । ससीम । २ जो नापा या तोला जा सके । जो गणना किया जा सके । जो गिना जा सके । ३ परिच्छिन्न । जिसकी सीमा हो ।

परिमोक्षः (पु०) १ स्थानान्तरकरण । मुक्तकरण । २ मुक्ति । छुटकारा । ३ मलपरित्याग । ४ निकास । ५ निर्वाण । मोक्ष ।

परिमोक्षणं (न०) १ छुटकारा । मुक्ति । २ बन्धनराहित्य ।

परिमोषः (पु०) चोरी । डाँकाजनी । लूट ।

परिमोषिन् (पु०) चोर । डाँकू ।

परिमोहनम् (पु०) किसी के मन या उसकी बुद्धि को पूर्ण रूप से अपने वश में कर लेना । सम्यक् वशीकरण ।

परिम्लान (व० कृ०) १ कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ । उदास । २ मलीन । हतप्रभ । निस्तेज ।

३ निर्बल । कमज़ोर । घटा हुआ । ४ धब्बा खाया हुआ । कलङ्कित ।

परिरक्षकः (पु०) रक्षक । अभिभावक ।

परिरक्षणम् (न०) } सब प्रकार या सब तरह से
परिरक्षा (स्त्री०) } रक्षा । छुटकारा । निस्तार ।

परिरथ्या (स्त्री०) गली । राह ।

परिरंभ, परीरंभ (पु०) } आलिङ्गन करने
परिरम्भ, परीरम्भः (पु०) } की क्रिया ।
परिरभणम्, परिरम्भणम् (न०) }

परिराटिन् (वि०) चिल्लाने वाला । चीख़ मारने वाला ।

परिलघु (वि०) १ बहुत हल्का । (जैसे वस्त्र) २ बहुत हल्का या पचने में सुलभ (जैसे भोजन का कोई पदार्थ)। ३ बहुत छोटा ।

परिलुप्त (व० कृ०) १ बाधा दिया हुआ । घबड़ाया हुआ । घटाया हुआ । २ खोया हुआ । लुप्त ।

परिलेखः (पु०) १ चित्र का ख़ाका । चित्र का स्थूल रूप । ढाँचा । ख़ाका । २ चित्र । [छूट ।

परिलोपः (पु०) १ क्षति । हानि । २ विलोप ।

परिवत्सरः (पु०) एक समूचा वर्ष । एक पूरा साल ।

परिवर्जनम् (न०) १ त्याग । परित्याग । २ तजना । छोड़ना । ३ वध । हत्या ।

परिवर्तः } (पु०) १ फिराव । फेरा । घुमाव ।
परीवर्तः } चक्कर । २ विवर्तन । आवृत्ति । ३ अवधि । अवधि की समाप्ति । ४ युग की समाप्ति । ५ परिवर्तन । तबदीली । ६ भगड़ । पलायन । स्थानत्याग । ७ वर्ष । ८ पुनर्जन्म । ९ विनिमय । अदल बदल । बदला । १० पुनरागमन । ११ आवासस्थल । घर । १२ परिच्छेद । अध्याय । १३ भगवान विष्णु का दूसरा अवतार । कच्छपावतार ॥

परिवर्तक (वि०) १ घुमाने वाला । फिराने वाला । चक्कर देने वाला । २ बदलने वाला । विनिमय करने वाला ।

परिवर्तनं (न०) १ घुमाव । फेरा । चक्कर । २ बदला बदली । हेरफेर । तबादला ३ दशान्तर । स्थित्यन्तर । ४ किसी काल या युग की समाप्ति । ५ जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय । विनिमय ।

परिवर्तिका (स्त्री०) एक रोग जिसमें अधिक खुजलाने, दबाने या रगड़ लगने से लिङ्ग का चर्म उलट कर सूज जाता है ।

परिवर्तिन् (वि०) १ घूमने वाला । चक्कर लगाने वाला । २ बार बार घूम कर आने या होने वाला । ३ परिवर्तनशील । ४ समीपवर्ती । पास रहने वाला । चारों ओर फिरने वाला । ५ भागने वाला । ६ बदलने वाला । ७ त्यागने वाला । ८ डाँड देने वाला । दण्ड भरने वाला ।

परिवर्धनम् (न०) संख्या, गुण आदि में किसी पदार्थ की वृद्धि । परिवृद्धि ।

परिवसथः (पु०) ग्राम । गाँव ।

परिवहः (पु०) सात पवनमार्गों में से छठवाँ पवन मार्ग । इसी मार्ग में आकाशगंगा बहती है और सप्तर्षि चला करते हैं ।

परिवाद } (पु०) १ निन्दा । अपवाद । बुराई ।
परीवादः } २ कलङ्क । अपकीर्ति । बदनामी । ३ दोष । दोषारोपण । ४ मिजराव जिससे पहन कर वीणा या सितार बजाया जाता है ।

परिवादकः (पु०) १ वादी । मुद्दई । दावागीर । २ सितार या वीणा बजाने वाला ।

परिवादिन् (वि०) १ निन्दक । निन्दा करने वाला । गाली देने वाला । अनीति फैलाने वाला २ दोषी ठहराने वाला । ३ चीख़ने वाला । चिल्लाने वाला । ४ भर्त्सित । फटकारा हुआ । डाँटा हुआ । बदनाम किया हुआ । (पु०) दोषारोपण करने वाला । दावागीर ।

परिवादिनी (स्त्री०) वीणा जिसमें सात तार होते हैं ।

परिवाप } (पु०) १ मुण्डन । २ बुआई । बवनी ।
परीवापः } ३ जलाशय । तालाव । कुण्ड । ४ सामान । ५ अनुचरवर्ग ।

परिवापित (वि०) मुड़ा हुआ । जिसका सिर मुड़ा हो ।

परिवारः } (पु०) १ अनुचरवर्ग । २ ढक्कन ।
परीवारः } आवरण । परिच्छद । ३ म्यान । परतला ।

परिवासः (पु०) वासा । डेरा । थोड़े दिन का निवास ।

परिवाहः } (पु०) ऐसा जलप्रवाह जिसके कारण
परीवाहः } पानी ताल, तालाव आदि की समाई से

ज्यादा हो जाय और बाँध के ऊपर से बहने लगे। २ जलमार्ग। जल बहने की नाली, बंबा या नहर।

परिवाहिन् (वि०) समाई से अधिक जल के आने से बाँध के ऊपर से जल का बहाव।

परिविण्णः, परिविन्नः, परिवित्तः, परिवित्तिः (पु०) अविवाहित ज्येष्ठ भ्राता, जिसका छोटा भाई विवाहित हो।

परिविद्धः, (पु०) कुबेर का नामान्तर।

परिविंदकः, परिविन्दकः, परिविंदत्, परिविन्दत् (पु०) वह छोटा भाई, जिसका विवाह ज्येष्ठ भ्राता का विवाह होने से पूर्व हो चुका हो।

परिविहारः (पु०) आनन्दार्थ इधर उधर भ्रमण।

परिविह्वल (वि०) बहुत घबड़ाया हुआ। नितान्त उद्विग्न।

परिवारणम् (न०) १ ढकन। आवरण। परिच्छद। २ अनुचरवर्ग। ३ रोकना। बचाना।

परिवारित् (व० कृ०) १ घेरा हुआ। छेका हुआ। २ व्याप्त। फैला हुआ। पसरा हुआ।

परिवारितं (न०) ब्रह्मा का धनुष।

परिवृढः (पु०) स्वामी। प्रभु। अधिपति। प्रधान।

परिवृत (व० कृ०) १ घेरा हुआ। २ छिपा हुआ। ३ व्याप्त। छाया हुआ। ४ परिचित। जाना हुआ।

परिवृत्त (व० कृ०) १ घुमाया हुआ। उलटा पलटा हुआ। २ भगाया हुआ। खदेड़ा हुआ। ३ समाप्त किया हुआ। ख़तम किया हुआ। ४ बदला हुआ। अदला बदला हुआ।

परिवृत्तम् (न०) आलिङ्गन।

परिवृत्तिः (स्त्री०) १ घुमाव। चक्कर। २ वापिसी। पलटाव। ३ विनिमय। बदलौअल। ४ समाप्ति। अवसान। ५ घिराव। ६ किसी स्थल पर टिकना या बसना। ७ एक अर्थालङ्कार जिसमें एक वस्तु को देकर दूसरी के लेने अर्थात् अदल बदल का कथन होता है। ८ एक शब्द के बदले दूसरे शब्द को बैठाना।

परिवृद्धिः (स्त्री०) बढ़ती। उपज।

परिवेतृ (पु०) परिवेदक। वह छोटा भाई, जिसका विवाह बड़े भाई का विवाह होने के पूर्व हुआ हो।

परिवेदनम् (न०) १ बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह। २ विवाह। ३ पूर्णज्ञान। ४ प्राप्ति। उपलब्धि। ५ अग्न्याधान। ६ विद्यमानता। मौजूदगी।

परिवेदना (स्त्री०) तीक्ष्ण बुद्धिमानी। विदग्धता। चतुराई।

परिवेदनीया, परिवेदिनी (स्त्री०) उस छोटे भाई की स्त्री, जिसका विवाह ज्येष्ठ भ्राताओं के पूर्व हो चुका हो।

परिवेशः, परीवेशः, परिवेषः, परीवेषः (पु०) १ परसना या परोसना। २ घेरा। परिधि ३ सूर्य या चन्द्र का पार्श्व या घेरा। ४ चन्द्रमण्डल। सूर्यमण्डल। ५ कोई ऐसी वस्तु जो चारों ओर से घेर कर किसी वस्तु की रक्षा करती हो।

परिवेषकः (पु०) परोसने वाला।

परिवेषणं (न०) १ परोसना। २ घेरना। घेरा। ३ चन्द्रमा या सूर्य का पार्श्व या घेरा। ३ परिधि।

परिवेष्टनम् (न०) १ चारों ओर से घेरना या वेष्टन करना। २ छिपाने, ढकने या लपेटने वाली चीज़। आच्छादन। ३ परिधि।

परिवेष्टृ (पु०) परसैया। भोजन परोसने वाला।

परिव्ययः (पु०) १ मूल्य। २ मसाला।

परिव्याधः (पु०) सरपत या नरकुल की एक जाति।

परिव्रज्या (स्त्री०) १ भ्रमण। जगह जगह घूमते फिरना। एकान्तवास (संन्यासी की तरह) संसार की मोह ममता का त्याग। तपस्या। संन्यास।

परिव्राज् (पु०), परिव्राजः (पु०), परिव्राजकः (पु०) वह संन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहे। सन्यासी। यती। परमहंस।

परिशाश्वत (वि०) [स्त्री०—परिशाश्वती] सदा एकसी।

परिशिष्ट (वि०) छूटा हुआ। बचा हुआ।

परिशिष्टम् (न०) किसी ग्रन्थ या पुस्तक का पीछे जोड़ा हुआ अंश।

परिशीलनम् (न०) १ स्पर्श। संसर्ग। २ सदैव का संसर्ग। ३ अध्ययन। [मनन पूर्वक]।

परिशुद्धिः (स्त्री०) १ पूर्ण रूप से पवित्रता। २ छुटकारा। रिहाई।

परिशुष्क (व० कृ०) १ भली भाँति सूखा हुआ । २ कुम्हलाया हुआ । अत्यन्त रसहीन । पोला । खोखला ।

परिशुष्कं (न०) एक प्रकार का तला हुआ माँस ।

परिशून्य (वि०) १ बिलकुल खाली । २ नितान्त खाकीन । पूर्णतः वञ्चित या रहित ।

परिश्रुतः (पु०) उत्सुक आत्माएं ।

परिशेषाः } (पु०) १ बचा हुआ । अवशिष्ट । २
परीशेषाः } अवसान । समाप्ति । सम्पूर्णता । ३ अतिरिक्तत्व ।

परिशोधः (पु०) } १ सफाई । स्वच्छता । २
परिशोधन (न०) } त्यागना । छुड़ाना । चुकता करना । [क्रिया ।

परिशोषः (पु०) सम्पूर्ण रूप से सुखाने या भूनने की

परिश्रमः (पु०) १थकावट । क्लेश । पीड़ा । २ उद्यम । आयास । श्रम । महनत ।

परिश्रमः (पु०) १सभा । २ आश्रम । आश्रयस्थल ।

परिश्रय. (पु०) १ सभा । परिषद् । २ आश्रम । रक्षा-स्थान ।

परिश्रांतिः } (स्त्री०) १ थकावट । आयास । परिश्रम ।
परिश्रान्तिः } क्लेश । मेहनत । उद्योग ।

परिश्लेपः (पु०) आलिङ्गन ।

परिषद् (स्त्री०) १ सभा । मजलिस । २ धर्मसभा ।

परिषदः } (पु०) सभासद ।
परिषद्य }

परिषेकः (पु०) } छिड़कना । नम करना ।
परिषेचनम् (न०) }

परिष्कण } (वि०) दूसरे का पाला पोसा हुआ ।
परिष्कन्न }

परिष्कणः } (पु०) पोष्यपुत्र । वह बालक जिसे
परिष्कन्नः } किसी अपरिचित मनुष्य ने पाला पोसा हो ।

परिष्कं } (न०) दूसरे का पाला हुआ ।
परिस्कं }

परिष्कन्दः (पु०) १ पोष्यपुत्र । २ नौकर ।

परिष्करः (पु०) १ शृङ्गार । सजावट । आभूषण । २ पाचन क्रिया । ३संस्कार । आरम्भिक संस्कारों द्वारा पवित्र करने की क्रिया । ४ सामान (सजवाट का)

परिष्कृत (व० कृ०) १ शृङ्गारित । सजा हुआ । २ पकाया हुआ । ३ आरम्भिक संस्कारों से शुद्ध किया हुआ ।

परिष्क्रिया (स्त्री०) सजावट । शृङ्गार । शोधन ।

परिष्टोमः } (पु०) १ हाथी की रंगीन झूल । २
परिस्तोमः } आच्छादन ।

परिष्यंदः परिष्यन्दः } (पु०) १ अनुचरवर्ग ।
परिस्पंदः परिस्पन्दः } २ पुष्पों से केशों का शृङ्गार । ३ आभूषण या सजावट का कोई भी उपस्कर । ४ धड़कन । सिसकन । गति । ५ रसद । ६ कूटना । कुचलना ।

परिष्वक्त (व० कृ०) चिपटाया हुआ । गले लगाया हुआ । आलिङ्गन किया हुआ ।

परिष्वंगः } (पु०) १ आलिङ्गन । २ स्पर्श । मेल ।
परिष्वङ्गः }

परिसंवत्सर (वि०) पूरे एक वर्ष का ।

परिसंवत्सर (पु०) एक पूरा वर्ष ।

परिसंख्या (स्त्री०) १ गणना । गिनती । २ जोड़ । मीज़ान । कुल । संख्या । ३ एक अर्थालङ्कार विशेष ।

परिसंख्यात (व० कृ०) गिना हुआ । गणना किया हुआ । विशेष रूप से बतलाया हुआ ।

परिसंख्यानम् (न०) १ गणना । गिनती । शुमार । जोड़ । संख्या । २ विशेष निर्देश । ३ यथार्थ निर्णय । उचित अनुमान या तख़मीना ।

परिसंचरः } (पु०) महाप्रलय ।
परिसञ्चरः }

परिसमापन } (स्त्री०) सामाप्ति । ख़ातमा ।
परिसमाप्तिः }

परिसमूहनं (न०) १ ढेर । विशेष ढंग से अग्नि के चारों ओर का जल का छिड़काव ।

परिसरः (पु०) १ किनारा । सीमा । सामीप्य । २ पड़ोस । नैकट्य । स्थान । ३ चौड़ाई । अर्ज़ । ४ मृत्यु । ५ नियम । आज्ञा ।

परिसरणम् (न०) इधर उधर घूमना फिरना ।

परिसर्पः (पु०) १ इधर उधर जाना या घूमना । २ तलाश में जाना । अनुसरण करना । पीछा करना । ३ घेरा । हाता ।

परिसर्पणम् (न०) १ हिलना । रेंगना । २ इधर उधर दौड़ना । इधर उधर भागना । चलते फिरते रहना ।

परिसर्या (स्त्री०
परीसर्या (स्त्री०
परिसारः (पु०
परीसारः (पु० } १ इधर उधर घूमना फिरना। २ फेरी।

परिस्तरणम् (न०) १ चारों ओर फैलाना या बिछाना। बखेरना। २ आवरण। आच्छादन।

परिस्फुट (वि०) १ बिल्कुल साफ। प्रत्यक्षगोचर। ३ स्पष्टगोचर। पूर्णवृद्धि। पूरा फूला हुआ। पूरा बढ़ा हुआ। [खिलाना।

परिस्फुरणम् (न०) १ कप। थरथराहट। २

परिस्यन्दः (पु०) चूना। टपकना। रिसना। १ बहाव। धारा। ३ अनुचरवर्ग।

परिस्रवः (पु०) १ बहाव। धार। २ फिसलाहट। ३ नदी।

परिस्रावः (पु०) बहाव। प्रवाह। फूटना। निकास।

परिस्रुत्
परिस्रुता } (स्त्री०) १ मदिरा विशेष। २ टपकना। चूना। बहना।

परिहत (वि०) ढीला।

परिहरणं (पु०) १ त्याग। परित्याग। २ बचाव। निवारण। ३ खण्डन। ४ पकड़ना। ले जाना।

परिहारः
परीहारः } (पु०) १ तजना। त्यागना। छोड़ना। २ हटाना। अलग करना। दूर करना। ३ निराकरण। खण्डन। ४ वर्णन न करना। छूट। छोड़ जाना। ६ दुराव। छिपाव। ७ ग्राम के समीप का भूमिखण्ड या परती ज़मीन जो सब ग्रामवालों की समझी जाय। ८ अपमान। तिरस्कार। आपत्ति। एतराज़।

परिहाणिः
परिहानिः } (स्त्री०) १ कमी। घटती। घाटा। हानि। २ घटाव। अधःपतन।

परिहार्य (वि०) त्याज्य। जिसका परिहार किया जा सके। जिससे बचा जा सके।

परिहार्यः (पु०) कङ्कण। ककना।

परिहासः
परीहासः } (पु०) १ हंसी। मज़ाक। दिल्लगी। ठट्ठा। २ क्रीड़ा। खेल। ३ चिढ़ाना। —वेदिन्, (पु०) विदूषक। भाँड। मसखरा।

परिहृत (व० कृ०) १ त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। २ खण्डन किया हुआ। ३ पकड़ा हुआ। थामा हुआ। ४ पवित्र। भ्रष्ट। त्याज्य।

परीक्षकः (पु०) परीक्षा लेने वाला। अनुसन्धान करने वाला। न्यायकर्त्ता।

परीक्षणम् (न०) जाँच। परीक्षा।

परीक्षा (स्त्री०) जाँच। पड़ताल। आजमाइश। इम्तहान।

परीक्षित् (पु०) अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के पुत्र का नाम।

परीक्षितं (न० व० कृ०) जाँचा हुआ। पड़ताला हुआ।

परीत (व० कृ०) १ घिरा हुआ। २ बीता हुआ। गुज़रा हुआ। ३ जमा हुआ। ४ पकड़ा हुआ। अधिकृत किया हुआ।

परीताप
परीपाक
परीवार
परीवाह
परीहास } देखो परिताप।

परीप्सा (स्त्री०) १ किसी वस्तु की प्राप्ति की कामना। २ शीघ्रता। त्वरा।

परीरं (न०) फल।

परीरणम् (न०) १ कछुवा। २ छड़ी। ३ पट्टशाटक। वस्त्र विशेष।

परीष्टिः (स्त्री०) १ अनुसन्धान। खोज। तहक़ीकात। २ सेवा। चाकरी। उपस्थिति। ३ मान। पूजा। सम्मानप्रदर्शन।

परुः (पु०) १ गाँठ। जोड़। २ लंग। हचक। ३ अवसर। ४ स्वर्ग। ५ पहाड़। पर्वत।

परुत् (अव्यया०) गतवर्ष।

परुद्वारः (पु०) घोड़ा।

परुष (वि०) १ कड़ा। कठोर। कर्कश। सख़्त। अत्यन्त रूखा या रसहीन। २ अप्रिय। बुरा लगने वाला। ३ निष्ठुर। निर्दय। ४ तीक्ष्ण। प्रचण्ड। उग्र। तीव्र। ५ घामड़। गाउदी। सुस्त। आलसी। ६ मैला कुचैला। —इतर, (वि०) मुलायम। कोमल। —उक्तिः, —वचनं, (न०) कुवाच्य या सख़्तकलामी।

परुषम् (न०) कठोर शब्द या कथन। कुवाच्य।

परुस् (न०) १ पोरुआ। गाँठ। जोड़। २ अवयव। शरीरावयव।

परेत (व० कृ०) मृत । मरा हुआ । सदा के लिये गया हुआ ।

परेतः (पु०) प्रेत भूत ।—भर्तृ,—राज्, (पु०) यम ।—भूमिः, (स्त्री०)—वासः, (पु०) श्मशान । कबरस्तान ।

परेद्यवि } परेद्युस् } (अव्यया०) अन्यदिवस । दूसरे दिन ।

परेष्टुः (स्त्री०) } परेष्टुका: (स्त्री०) } कई बार की ब्यायी हुई गाय ।

परोक्ष (वि०) १ दृष्टि से बाहिर । अगोचर । अनुपस्थित । २ गुप्त । अनजान । अपरिचित ।—भोगः, (पु०) वस्तु के मालिक की अनुपस्थिति में उसकी वस्तु का उपभोग ।—वृत्ति, (वि०) दृष्टि के ओझल रहने वाला ।

परोक्षं (न०) १ अनुपस्थिति । अगोचरत्व । २ व्याकरण में भूतकाल ।

परोक्षः (पु०) संन्यासी । साधु ।

परोष्टिः } परोष्णी } (स्त्री०) तिलचट्टा । झींगुर ।

पर्जन्यः (पु०) १ बादल जो पानी बरसावे । बादल जो गर्जना करें । बादल । २ वृष्टि । मेह । ३ इन्द्र ।

पर्ण (धा० उभय०)[पर्णयति, पर्णयते] सब्ज़ करना । हरा भरा करना ।

पर्ण (न०) १ डैना । बाज़ू । २ बाण में लगे पंख । ३ पत्ता । ४ पान । ताम्बूल ।—अशनं, (न०) पत्ते खा कर रहना ।—उटजं, (न०) पत्तों की झोंपड़ी । पर्णकुटी ।—कारः, (पु०) तमोली । पान बेचने वाला ।–टिका, (स्त्री०)—कुटी, (स्त्री०) झोंपड़ी जो पत्तों से छायी गयी हो ।—कृच्छ्रः, (पु०) एक प्रकार का प्रायश्चित्त जिसमें प्रायश्चित्ती को पाँच दिन पत्तों का काढ़ा और कुश खाकर रहना होता है ।—खण्डः, (पु०) विना फलों का वृक्ष ।—खण्डं (न०) पत्तों का समूह ।—चीरपटः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—चोरकः, (पु०) एक प्रकार का गन्धद्रव्य ।–नरः, (पु०) पत्तों का पुतला जो अप्राप्त शव के स्थान में रख कर फूंक दिया जाता है ।—मेदिनी, (स्त्री०) प्रियङ्गुलता ।—भोजनः, (पु०) बकरा ।—शुच्, (पु०) शिशिरऋतु ।—मृगः, (पु०) कोई पशु जो वृक्षों के झुरमुट में रहे ।—रुह्, (पु०) वसन्तऋतु ।—लता, (स्त्री०) पान की बेल ।—वीटिका, (स्त्री०) सुपारी के टुकड़े जो पान की बीड़ी में रखे जाते हैं ।—शय्या, (स्त्री०) पत्तों का बिछौना ।—शाला, (स्त्री०) पर्णकुटी । पत्तों की बनी झोंपडी ।

पर्णः (पु०) पलाश वृक्ष ।

पर्णल (वि०) जहाँ पत्तों का बाहुल्य हो । पत्तों की इफ़रात वाला ।

पर्णसिः (पु०) १ जलविहार-भवन । घर जो पानी के बीच में बना हो । २ कमल । ३ शाक । ४ शृङ्गार । उबटन ।

पर्णिन् (पु०) वृक्ष ।

पर्णिल (वि०) देखो पर्णल ।

पर्द् (धा० आत्म०) [पर्दते] पादना । अपान वायु छोड़ना ।

पर्दः (पु०) १ केशसमूह । घने बाल । २ अपानवायु । पाद । गोज़ ।

पर्पः (पु०) १ छोटी घास । २ पङ्गुपीठ । लंगड़ों के रहने का स्थान । एक पहिये की गाड़ी जिसके सहारे पङ्गु चले । ३ मकान ।

पर्परीकः (पु०) १ सूर्य । २ अग्नि । ३ तालाब । जलाशय ।

पर्यक् (अव्यया०) चारो ओर । हर ओर ।

पर्यंकः } पर्यङ्कः } (पु०) १ पलंग । पल्का । खाट । चारपाई । २ अवसक्थिका । कमर पीठ और घुटने में लपेटने की वस्तु विशेष । ३ योगासन विशेष ।—बन्धः, (पु०) वीरासन विशेष ।—भोगिन्, (पु०) सर्प विशेष ।

पर्यटनम् } पर्यटितं } (न०) भ्रमण । इधर उधर की मटरगश्त ।

पर्यनुयोगः (पु०) दूषणार्थ जिज्ञासा । किसी विषय का खण्डन करने के लिये पूँछताँछ या अनुसन्धान ।

पर्यंत, } पर्यन्त } (वि०) तक । तलक । लौं ।

पर्यंतः } पर्यन्तः } (पु०) १ परिधि । व्यास । ३ सीमा । किनारा । बाढ़ । छोर । ३ पार्श्व । बगल । तरफ़ । ४ समाप्ति । अवसान । ख़ातमा ।—देशः,

(पु०) —भूः, —भूमिः, (स्त्री०) पड़ोस का ज़िला, नगर, कसबा या स्थान।

पर्यंतिका, पर्यन्तिका (स्त्री०) सद्गुणों की हानि या अभाव।

पर्ययः (पु०) १ विपर्यय। गड़बड़ी। २ परिवर्तन। तबदीली। ४ कर्त्तव्य-पराङ्मुखता। ५ विरोध।

पर्ययणम् (न०) १ चक्कर लगाना। परिक्रमा करना। चारों ओर घूमना। २ घोड़े का ज़ीन।

पर्यवदात (वि०) नितान्त विशुद्ध या स्वच्छ।

पर्यवरोधः (पु०) रोक। अटकाव।

पर्यवसानं (न०) १ समाप्ति। अन्त। खातमा। २ इरादा। निश्चय।

पर्यवसित (व० कृ०) १ समाप्त। पूरा किया हुआ। ख़तम किया हुआ। २ नष्ट हुआ। खोया हुआ। ३ निश्चित किया हुआ।

पर्यवस्था (स्त्री०), पर्यवस्थानम् (न०) १ विरोध। ससुहाना। रुकावट। २ खण्डन।

पर्यश्रु (वि०) आँखों में आँसू भरे हुए।

पर्यसनम् (न०) १ निक्षेप। फैंकना। २ भेज देना। ४ मुलतवी करना। स्थगित करना।

पर्यस्त (व० कृ०) १ बिखरा हुआ। छितराया हुआ। २ घिरा हुआ। ३ उल्टा पल्टा हुआ। अस्त व्यस्त किया हुआ। उलटा सीधा किया हुआ। विसर्जन किया हुआ। निकाला हुआ। ५ चोटिल किया हुआ। घायल किया हुआ। मार डाला हुआ।

पर्यस्तिः (स्त्री०), पर्यस्तिका (स्त्री०) वीरासन। आसन विशेष।

पर्याकुल (वि०) १ गँदला (जैसे पानी)। २ बहुत अधिक विकल। बहुत घबड़ाया हुआ। ३ गड़बड़ किया हुआ। अस्तव्यस्त किया हुआ। ४ सम्पन्न। पूर्ण।

पर्याणम् (न०) ज़ीन कसा हुआ। काँठी कसा हुआ।

पर्याप्त (व० कृ०) १ प्राप्त। हासिल किया हुआ। २ समाप्त किया हुआ। पूर्ण किया हुआ। ३ पूरा। समूचा। तमाम। सब। ४ योग्य। काबिल। उपयुक्त। ५ काफी। आवश्यकतानुसार। यथेष्ट।

पर्याप्तं (न०) १ रज़ामन्दी से। तत्परता से। २ तृप्ति। सन्तोष। प्रचुरता। यथेष्ट होने का भाव।

पर्याप्तिः (स्त्री०) १ उपलब्धि। २ समाप्ति। अवसान। अन्त। ३ काफी। पूर्णता। यथेष्टता। ४ अघाना। सन्तोष। ५ प्रहार को रोकने की क्रिया। ६ योग्यता। काबलियत।

पर्यायः (पु०) १ समानार्थवाची शब्द। समानार्थक शब्द। २ क्रम। सिलसिला। परंपरा। ३ प्रकार। ढंग। तरह। ४ मौक़ा। अवसर। ५ बनाने का काम। निर्माण। ६ द्रव्य का धर्म। ७ अर्थालङ्कार विशेष। ८ एक ही कुल में उत्पन्न होने के कारण किन्हीं दो व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध।

पर्याली (अव्यया०) एक उपसर्ग जिसका अर्थ होता है हिंसन, अनिष्ट।

पर्यालोचनम् (न०), पर्यालोचना (स्त्री०) १ अच्छी तरह देखभाल। समीक्षा। पूरी जाँच पड़ताल। २ जानकारी। परिचय।

पर्यावर्तः (पु०), पर्यावर्तनम् (न०) लौटना। लौटकर आना।

पर्याविल (वि०) बड़ा मैला या गंदला। (पानी) जिसमें मिट्टी मिली हो।

पर्यासः (पु०) १ समाप्ति। खातमा। अवसान। २ चक्कर। ३ परिवर्तित क्रम। उल्टा या औंधा।

पर्याहारः (पु०) १ कंधों पर जुआँ रख कर किसी बोझी हुई गाड़ी को खींचना। २ ढुलाई। ३ बोझा। भार। ४ मट्टी का घड़ा। ५ नाज को जमा करने की क्रिया।

पर्युक्षणम् (न०) श्राद्ध। होम या पूजन आदि के समय बिना किसी मंत्रोचारण के चारों ओर जल छिड़कना।

पर्युत्थानम् (न०) खड़ा हो जाना।

पर्युत्सुक (वि०) १ दुःखी। शोकान्वित। उदास। २ अत्यन्त उत्सुक।

पर्युदञ्चनं (न०) १ ऋण। कर्ज़ा। २ उद्धार।

पार्युदस्त (व० कृ०) १ निवारित। रोका गया। हटाया गया। २ निकाला हुआ। छेका हुआ।

पर्युदासः (पु०) अपवाद। किसी नियम या आज्ञा का अपवाद।

पर्युपस्थानम् (न०) सेवा । टहल । उपस्थिति ।
पर्युपासनम् (न०) १ पूजा । अर्चन । मान । सम्मान । सेवा । २ मैत्री । सौ जन्म । चारों ओर आसीन ।
पर्युप्तिः (स्त्री०) बोने की क्रिया ।
पर्युषणम् (न०) पूजन । अर्चन । सेवा ।
पर्युषित (व०) १ बासी । एक दिन पहले का । जो ताज़ा न हो । २ फीका । ३ मूर्ख । ४ व्यर्थ ।
पर्येषणम् (न०) } १ तर्क द्वारा अनुसन्धान । २
पर्येषणा (स्त्री०) } खोज । तहकीकात । ३ सम्मानप्रदर्शन । पूजन ।
पर्येष्टि (स्त्री०) खोज । तलाश । अनुसन्धान ।
पर्लकं (न०) घुटना ।
पर्वणी (स्त्री०) १ पूर्णिमा । पूर्णमासी । २ उत्सव । ३ आँख की सन्धि में होने वाला एक रोग विशेष ।
पर्वतः (पु०) १ पहाड़ । २ चट्टान । ३ कृत्रिम पर्वत । ४ सात की संख्या । ५ वृक्ष ।—अरिः, (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।—आत्मजः, (पु०) मैनाक पर्वत का नामान्तर ।—आत्मजा, (स्त्री०) पार्वती देवी ।—आधारा, (स्त्री०) पृथिवी ।—आशयः, (पु०) बादल ।—आश्रयः, (पु०) शरभ नामक जन्तु विशेष ।—काक, (पु०) जंगली कौआ ।—जा, (स्त्री०) नदी ।—पतिः, हिमालय ।—मोचा, (स्त्री०) केला विशेष ।—राज्, (पु०) – राजः, (पु०) १ विशाल पर्वत । २ पर्वतों का स्वामी अर्थात् हिमालय पर्वत ।—स्थ, (वि०) पर्वतवासी या पहाड़ी ।
पर्वन् (न०) १ ग्रन्थि । जोड़ । गाँठ । २ शरीरावयव । अङ्ग । ३ अंश । भाग । टुकड़ा । विभाग । ४ पुस्तक का भाग । जैसे महाभारत में १८ भाग या पर्व हैं । ५ ज़ीने की सीढ़ी । ६ अवधि । निर्दिष्ट काल । विशेष कर प्रतिपक्ष की ८मी और चतुर्दशी तथा पूर्णिमा एवं अमावस्या । ७ यज्ञ विशेष । ८ पूर्णिमा अमावास्या और संक्रान्ति । ९ चन्द्र या सूर्य ग्रहण । १० उत्सव । पुण्यकाल । ११ अवसर ।—कालः, (पु०) चतुर्दशी, अष्टमी, पूर्णिमा, अमावास्या और संक्रान्ति ।—कारिन्, (पु०) वह ब्राह्मण जो अमावास्या आदिपर्व दिवसों में किया जाने वाला धर्मानुष्ठानविशेष, व्यक्तिगत लाभ के लोभ में फँस, किसी भी दिन कर डाले ।—गामिन्, (पु०) पर्व के दिन स्त्रीप्रसङ्ग करने वाला (पर्व के दिन स्त्रीप्रसङ्ग करना वर्जित है ।)—धिः, (पु०) चन्द्रमा ।—योनिः, (पु०) नरकुल सरपत या वेत ।—रुह्, (पु०) अनार का पेड़ ।—सन्धिः, (वि०) १ पूर्णिमा अथवा अमावास्या और प्रतिपदा के बीच का समय । वह समय जब कि पूर्णिमा या अमावास्या का अन्त हो चुका हो और प्रतिपदा आरम्भ होती हो । २ चन्द्र या सूर्यग्रहणकाल ।
पर्शुः (पु०) १ कुल्हाड़ी । तवल । २ हथियार ।—पाणिः, (पु०) १ गणेश जी । २ परशुराम ।
पर्शुका (स्त्री०) पसली ।
पर्श्वधः (पु०) देखो परश्वध ।
पर्षद् (स्त्री०) देखो परिषद् ।
पलः (पु०) पुआल । भूसी ।
पलम् (न०) १ माँस । गोश्त । २ एक तोल जो ४ कर्ष के बराबर होती है । ३ तरल पदार्थों का माँप विशेष । ४ समय का माँप विशेष ।—अग्निः, (पु०) पित्त ।—अङ्गः, (पु०) कछुवा ।—अदः,—अशन, (पु०) राक्षस ।—क्षारः, (पु०) ख़ून ।—गराडः (पु०) लेपक । मिट्टी का पलस्तर करने वाला । राज । थवई ।—प्रियः, (पु०) १ राक्षस । २ वनकाक ।—भा, (स्त्री०) धूप घड़ी के शङ्कु (कील) की तत्कालीन छाया जब मेषसंक्रान्ति के मध्यान्हकाल में सूर्य ठीक विषुवत् रेखा पर होता है ।
पलंकट } (वि०) भीरु । डरपोंक । बुज़दिल ।
पलङ्कट }
पलंकरः } (पु०) पित्त ।
पलङ्करः }
पलंकषः } (पु०) १ राक्षस । प्रेत । पिशाच ।
पलङ्कषः }
पलंकषम् } (न०) १ माँस । २ कीचड़ । ३ तिल-
पलङ्कषम् } कुट या तिल और चीनी की बनी मिठाई ।—ज्वरः, (पु०) पित्तज्वर । पित्त ।—प्रियः, (पु०) १ वनकाक । २ राक्षस ।

पलवः (पु०) एक प्रकार का जाल जिससे मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

पलाण्डु
पलाण्डु } (पु० न०) प्याज़।

पलापः (पु०) १ हाथी की कनपटी। २ बंधन। रस्सा। [भाव।

पलायनम् (न०) भागना। भागने की क्रिया या

पलायित (व० कृ०) भागा हुआ। जो छूट कर भाग गया हो।

पलालः (पु०) } पुआल। भूसी। चोक्र।—
पलालम् (न०) } दोहदः, (पु०) आम का वृक्ष।

पलालिः (पु०) माँस का ढेर।

पलाशः (पु०) एक वृक्ष का नाम जिसका दूसरा नाम किंशुक भी है। ढाक। टेसू।

पलाशम् (न०) १ पलाश वृक्ष के फूल। २ पत्ता। ३ हरारंग।

पलाशिन् (पु०) वृक्ष।

पलिक्नि (स्त्री०) १ बूढ़ी स्त्री जिसके बाल पक गये हों। २ गाय जो प्रथम बार व्यायी हो। बालगर्भिणी।

पलिघः (पु०) १ शीशे का घड़ा। काँच का बरतन। २ दीवाल। परकोटे की दीवाल। ३ लोहे का डंडा। ४ गोशाला।

पलित (वि०) पका हुआ। बुड्ढा। सफेद (बाल)।

पलितम् (न०) १ सफेद बाल। केश। बुढ़ापे के कारण बालों का सफेद होना। अत्यधिक या सम्हाले हुए केश।

पलितंकरण
पलितङ्करण } (वि०) सफेद कर देने वाला।

पलितंभविष्णु (वि०) सफेद हो जाने वाला।

पल्यंकः
पल्यङ्कः } (पु०) पलंग। खाट।

पल्ययनम् (न०) १ जीन। काँठी। २ लगाम। रास।

पल्लः (पु०) एक बड़ा अनाज का भाण्डार या खत्ती।

पल्लवः (पु०) } १ अङ्कुर। अँखुआ। कोंपल।
पल्लवम् (न०) } कल्ला। २ कली। फूल। ३ विस्तार। पसार। फैलाव। ४ अलक्त। (आल०) लाल रंग। ५ बल। ताकत। ६ तृण। घास की पत्ती। ७ कड़ा या कंकण या बाजूबंद। ८ प्रेम। क्रीड़ा। ९ चपलता। चाञ्चल्य। (पु०) अधर्मी। दुराचारी।—अङ्कुरः, (पु०)—आधारः, (पु०) शाखा। डाली।—अस्त्रः, (पु०) कामदेव।—द्रुः, (पु०) अशोक वृक्ष।

पल्लवकः (पु०) १ अधर्मी। दुराचारी। २ वह बालक जो अप्राकृतिक मैथुन करवावे। अस्वाभाविक अभिगमन के लिये रखा हुआ बालक। ३ रंडी का प्रेमी या आशिक। ४ अशोक वृक्ष। ५ एक प्रकार की मछली। ६ कल्ला। अँखुआ।

पल्लविकः (पु०) १ नास्तिक। दुराचारी। २ बहादुर। साहसी। ३ गाड़ू।

पल्लवित (वि०) [स्त्री०—पल्लविनी] कोंपल या कल्ले वाला (वृक्ष)। (पु०) वृक्ष। पेड़।

पल्लिः } (स्त्री०) १ गाँवड़ा। छोटा ग्राम। २ झोंपड़ी।
पल्ली } ३ मकान। स्थान। टिकासरा। ४ नगर या कस्बा। ५ छिपकली। बिस्तुइया।

पल्लिका (स्त्री०) १ गाँवड़ा। टिकासरा। ठहरने का स्थान। २ छिपकली। बिस्तुइया।

पल्वलं (न०) छोटा तालाब।—आवासः, (पु०) कछुवा।—पङ्कः, (पु०) कीचड़ (तालाब की)

पवः (पु०) १ पवन। हवा। २ शुद्धता। ३ अनाज को फटकना या पछोरना।

पवम् (न०) गोबर।

पवनः (पु०) हवा। बयार।

पवनम् (न०) १ सफाई। २ पछोरना। फटकना। ३ चलनी। ४ जल। ५ कुम्हार का आँवा। (पु० भी है)—अशनः,—भुज्, (पु०) साँप।—आत्मजः, (पु०) १ हनुमान। २ भीम। ३ अग्नि।—आशः, (पु०) सर्प।—नाशः, (पु०) १ गरुड। २ मयूर —तनयः, (पु०)—सुतः, (पु०) १ हनुमान। २ भीम।—व्याधिः, (पु०) १ कृष्णसखा उद्धव या ऊधो। २ गठिया का रोग। [विशेष।

पवमानः (पु०) १ पवन। हवा। २ यज्ञीय अग्नि

पवाका (स्त्री०) तूफान। बवण्डर।

पविः (पु०) इन्द्र का वज्र। [हुआ।

पवित (वि०) स्वच्छ किया हुआ। साफ़ किया

पवितं (न०) काली मिर्च। गोल मिर्च।

पवित्र (वि०) १ शुद्ध । पापरहित । २ निर्मल । साफ। ३ यज्ञादि द्वारा शुद्ध हुआ।

पवित्रं (न०) १ चलनी आदि साफ करने का साधन। २ कुश जो यज्ञ में घी को छिड़कने या शुद्ध करने में व्यवहृत होता है। ३ कुश की पवित्री। ४ यज्ञोपवीत। जनेऊ। ५ ताँबा। ६ जलवृष्टि। ७ जल। ८ मलना। साफ करना। ९ अर्घा। १० घी। ११ शहद।—आरोपणम्, (न०) आरोहणम् (न०) उपनयन संस्कार।—पाणि, (वि०) हाथ मे कुश ग्रहण किये हुए।—धान्यं, (न०) यव। जवा।

पवित्रकं (न०) सनिया या सूती रस्सा या जाल।

पशव्य (वि०) १ पशु के योग्य। २ पशु सम्बन्धी। ३ पशुतापूर्ण। पशु जैसा।

पशुः (पु०) १ मवेशी। जानवर। लाङ्गूल विशिष्ट चतुष्पद जन्तु। २ बलि के उपयुक्त पशु जैसे बकरा। ३ हैवान। जानवर। ४ शिव जी का गण।—अवदानं, (न०) पशुवलि।—क्रिया, (स्त्री०) १ पशुबलिदान की क्रिया। २ सम्भोग। मैथुन।—गायत्री, (स्त्री०) मंत्र विशेष जो आसन्न मृत्यु वाले पशु के कान में पढ़ा जाता है। [वह मन्त्र यह है :—पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय (विश्वकर्मणे) धीमही। तन्नो जीवः प्रचोदयात्।] —घातः, (पु०) यज्ञ में पशुवध।—चर्या, (स्त्री०) मैथुन।—धर्मः, (पु०) १ पशु-व्यवहार। २ स्वच्छन्द मैथुन। ४ विधवा विवाह। —नाथः, (पु०) शिव।—पः, (पु०) पशुपाल।—पतिः, (पु०) १ शिव। २ पशुपाल। पशु पालने या रखने वाला। ३ एक सिद्धान्त का नाम जो सिद्धान्त का प्रचारक है।—पालः,—पालकः, (पु०) ग्वाला। गडरिया।—पालनं,—रक्षणं, (न०) पशुओं का पालना या रखना।—पाशकः, (पु०) मैथुन विशेष।—प्रेरणम्, (न०) पशु हाँकना।—मारं, (अव्यया०) पशुवध की प्रणाली के अनुसार।—यज्ञः,—यागः, (पु०)—द्रव्यं, (न०) पशुवलि।—रज्जुः, (स्त्री०) पशु बाँधने की रस्सी।—राजः, (पु०) शेर। सिंह।

पश्चात् (अव्यया०) १ पीछे से। पिछवाड़े से। २ पीछे। बाद। तदुपरान्त। तब। ३ अन्त में। अन्ततोगत्वा। ४ पश्चिम दिशा से। ५ पश्चिम की ओर। पश्चिमी।—कृत, (वि०) पीछे छूटा हुआ। पीछे छोड़ा हुआ।—तापः, (पु०) पछतावा।

पश्चार्धः (पु०) १ (शरीर का) पिछला भाग। २ (समय या स्थान सम्बन्धी) अन्तिम। ३ पश्चिमी। पश्चिम की ओर से।—अर्धः, (पु०) १ पिछाड़ी का आधा। २ रात का अन्तिम आधा भाग।

पश्चिमा (स्त्री०) पश्चिम।—उत्तरा, (स्त्री०) उत्तर-पश्चिम।

पश्यत् (वि०) [स्त्री०—पश्यन्ती] देखने वाला। अवलोकन करने वाला।

पश्यतोहरः (पु०) चोर। डाकू। सुनार।

पश्यंती / पश्यन्ती (स्त्री०) १ रंडी। वेश्या। २ स्वर विशेष।

पस्त्यम् (न०) घर। आवादी। बस्ती। डेरा।

पस्पशः (पु०) १ पतञ्जलि महाभाष्य के प्रथम अध्याय के प्रथम आन्हिक का नाम। २ उपोद्घात। आरम्भिक वक्तव्य।

पह्लवाः—पह्नवाः (पु०)—पान्हकाः (पु० बहुवचन) एक जाति के लोगों का नाम। सम्भवतः फारस वाले।

पा (धा० परस्मै०) [पिवति, पीत] १ पीना। २ रक्षा करना।

पा (वि०) १ पीने वाला। यथा "सोमपाः"। २ रक्षा करने वाला। यथा "गोपा"

पांसन (वि०) / पांशन (वि०) [स्त्री०—पांसनी, पांशनी] १ अपमानकारक। अप्रतिष्ठाकारक। २ नष्टकारी। भ्रष्टकारी। ३ दुष्ट। तिरस्करणीय। ४ बदनाम। अपकीर्तित।

पांसव / पांशव (वि०) १ धूल का। गर्द का। २धूल। रेणु। ३ विष्ठा। पाँस। ४ कर्पूर विशेष।—कासीसं, (न०) कसीस।—कूलं,—कुली, (स्त्री०) मार्ग। रास्ता। (न०) १ धूल का ढेर। २ ऐसा प्रमाणपत्र या दस्तावेज़ जो किसी के नाम से न हो। निरा-

पद-शासन।—कृत, (वि०) धूल से ढका हुआ। —क्षारं, (न०)—जम्, (न०) निमक विशेष। —चत्वरं, (न०) श्रोला।—चन्दनः, (पु०) शिव जी का नाम।—चामरः, (पु०) १ धूल का ढेर। २ खीमा। तंबू। ३ बाँध या (नदी) तट जो दूब घास से ढका हो। ४ प्रशंसा।—जालिकः (पु०) विष्णु का नामान्तर।—पटलं, (न०) धूल की तह या पर्त।—मर्दनः, (पु०) पेड़ के चारों ओर खोद कर खोडुआ बनाना जिसमें जल भर दिया जाय। आलवाल।

पांसुरः } (पु०) १ डाँस। गोमक्खी। २ लुंजा जो
पांशुरः } गाड़ी में बैठ कर घूमें।

पांसुल } (वि०) १ धूलधूसरित। धूल से लस्त-
पांशुल } पस्त। गंदला किया हुआ। भ्रष्ट किया हुआ। दगीला। दाग़दार। ३ भ्रष्ट करने वाला। अपमान करने वाला।

पांसुलः } (पु०) १ लंपट मनुष्य। अधर्मी मनुष्य।
पांशुलः } नास्तिक मनुष्य। २शिव जी का नामान्तर।

पांसुला } (स्त्री०) १ रजस्वला स्त्री। २ छिनाल
पांशुला } औरत। ३ ज़मीन। भूमि।

पाकः (पु०) १ भोजन बनाने की क्रिया। २ पकाने की जैसे ईंट आदि की क्रिया। ३ पचन (भोजन) की क्रिया। हज़म करने की क्रिया। ४ प्रकृत। ५ पूर्णता। ६ परिणाम। फल। नतीजा। ७ किये हुए कर्मों का विपाक। कर्मविपाक। ८ अनाज। नाज। ९ (घाव या फोड़े का) पक जाना। १० (बालों का पक कर वृद्धावस्था के कारण) सफेद होना। ११ गार्हपत्याग्नि। १२ उल्लू। १३ बच्चा। १४ एक दैत्य का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था।—अगारः, (पु०)—अगारं, (न०) —आगारः, (पु०)—आगारं, (न०) —शाला, (स्त्री०)—स्थानं, (न०) रसोईघर। —अतीसारः, (पु०) पुरानी दस्तों की बीमारी।—अभिमुख, (वि०) १ गदर। पकने को तैयार। २ अनुकूल होने वाले।—जं, (न०) १ काला निमक। कचिया निमक। २ अफरा।—पात्रं (न०) रसोई के बरतन। —पुटी, (स्त्री०) कुम्हार का अँवा।—यज्ञः, (पु०) पञ्च महायज्ञ में ब्रह्मयज्ञ को छोड़ अन्य चार यज्ञ। वृषोत्सर्ग और गृहप्रतिष्ठा आदि कार्यों में किया जाने वाला खीर का हवन।—शुक्ला, (स्त्री०) खड़िया मिट्टी।—शासनः, (पु०) इन्द्र का नामान्तर।—शासनिः, (पु०) १ इन्द्रपुत्र जयन्त का नाम। २ बालि का नाम। अर्जुन का नाम। [ज्वर।

पाकलः (पु०) १ अग्नि। २ हवा। ३ हाथी का

पाकिम (वि०) १ राँधा हुआ। पकाया हुआ। साफ किया हुआ। २ पकाया हुआ। (डार का या पाल का)। ३ उबाल कर उपलब्ध (यथानियम)।

पाकुः } (पु०) रसोइया।
पाकुकः }

पाक्य (वि०) राँधने के योग्य। साफ करने योग्य। पकाने योग्य।

पाक्यः (पु०) सोरा।

पाक्ष (वि०) [स्त्री०—पाक्षी] १ शुक्ल पक्ष का। पाक्षिक। पखवारे का। २ किसी दल से सम्बन्ध रखने वाला।

पाक्षिक (वि०) [स्त्री०—पाक्षिकी] १ किसी पखवारे से सम्बन्ध युक्त। पखवारे का। २ पक्षी सम्बन्धी। ३ किसी दल का पक्षपात करने वाला। ४ युक्ति सम्बन्धी। ५ ऐच्छिक।

पाक्षिकः (पु०) बहेलिया। चिड़ीमार।

पाखंड } (पु०) नास्तिक।
पाखण्डः }

पागल (वि०) विक्षिप्त। जिसका दिमाग़ ठीक न हो।

पांक्तेय, } (वि०) भोजन की पंगति में एक साथ
पांक्त्य } बैठने योग्य। संसर्ग करने योग्य।

पाचक (वि०) १ राँधने वाला। भोज्य पदार्थ बनाने वाला। सेकने वाला। २ पका हुआ। ३ (भोजन को) पचाने वाला।

पाचकं (न०) पित्त।—स्त्री (स्त्री०) १ रसोई बनाने वाली।

पाचकः (पु०) १ रसोइया। २ अग्नि।

पाचन (वि०) [स्त्री०—पाचनी] १ पचाने वाला। हाज़िम। २ किसी वस्तु के अजीर्ण को नाश करने

वाली (ओषधि)। ३ (फल आदि का) पकाने वाला।

पाचनः (पु०) १ अग्नि। २ खट्टापन। खट्टारस।

पाचनं (न०) १ पचाने या पकाने की क्रिया। २ (फल को) पकाने की क्रिया। ३ वह दवा जो आम या अपक्वदोष को पचावे। ४ घाव को मूँद देने वाला। ५ प्रायश्चित्त।

पाचालं (न०) १ रसोई बनने की क्रिया। २ फलादि पकाने की क्रिया।

पाचालः (पु०) १ रसोइया। २ अग्नि। ३ हवा।

पावा (स्त्री०) पकाना।

पांचकपाल, पाञ्चकपाल (वि०) [स्त्री०—पाञ्चकपाली] पाँच कटोरों में रखे हुए नैवेद्य सम्बन्धी।

पांचजन्यः, पाञ्चजन्यः श्रीकृष्ण के शङ्ख का नाम।—धरः, (पु०) श्री कृष्ण का नामान्तर।

पांचदश, पाञ्चदश (वि०) [स्त्री०—पाञ्चदशी] पन्द्रह तिथि सम्बन्धी।

पांचदश्यम्, पाञ्चदश्यम् (न०) पन्द्रह का समूह।

पांचनद, पाञ्चनद (वि०) पञ्जाब में प्रचलित।

पांचभौतिक, पाञ्चभौतिक (वि०) [स्त्री०—पाञ्चभौतिकी] पाँचतत्वों से वनी हुई।

पांचवार्षिक, पाञ्चवार्षिक (वि०) [स्त्री०—पाञ्चवार्षिकी] पाँच वर्ष की।

पांचशब्दिकम्, पाञ्चशब्दिकम् (न०) पाँच प्रकार का सङ्गी। २ वाद्ययंत्र। बाजे।

पांचाल, पाञ्चाल (वि०) [स्त्री०—पाञ्चाली] पाञ्चाल देश सम्बन्धी। अथवा पाञ्चाल देशाधिपति सम्बन्धी।

पांचालः, पाञ्चालः (पु०) १ पाञ्चालदेश। २ पाँचाल देश का राजा।

पांचालाः, पाञ्चालाः (पु० बहुव०) पाञ्चालदेश के रहने वाले।

पांचालिका, पाञ्चालिका (स्त्री०) गुड़िया। पुतली।

पांचाली, पाञ्चाली (स्त्री०) १ पाँचाल देश की स्त्री या रानी। २ द्रौपदी का नाम। ३ गुड़िया। पुतली। ४ साहित्य में एक प्रकार की रचनाशैली विशेष, जिसमें बड़े बड़े पाँच, छः समासों से युक्त और कान्तिपूर्ण पदावली होती है। कोई कोई गौड़ी और वैदर्भी के संमिश्रण को पाञ्चाली मानते हैं।

पाट् (अव्यया) एक अव्यय जो सम्बोधन अथवा पुकारने के लिये प्रयुक्त होता है।

पाटकः (पु०) १ चीरने वाला। विभाजित करने वाला। २ ग्राम का एक भाग। ३ ग्राम का अर्द्ध भाग। ४ बाजा विशेष। ५ नदीतट। समुद्रतट। ६ घाट की पैड़ियाँ। ७ मूलधन या पूंजी का घाटा। ८ बालिश्त। बित्ता। ९ चौसर के पासों की फिकावट।

पाटच्चरः (पु०) चोर। लुटेरा। डॉकू।

पाटनं (न०) चीरने की, फाड़ने की, तोड़ने की और नष्ट करने की क्रिया।

पाटल (वि०) पिलौंहा लाल। गुलाबी रंग का।—उपलः, (पु०) माणिक रत्न।—द्रुमः (पु०) पाढ़र या पाटला का पेड़।

पाटलं (न०) १ पाढ़र वृक्ष का फूल। २ एक प्रकार का चाँवल जो वर्षा ऋतु में तैयार होता है। ३ केसर।

पाटलः (पु०) १ पिलौहाँ-लाल या गुलाबी रंग। २ पाढर या पाढ़र वृक्ष।

पाटला (स्त्री०) १ लाललोध्र। २ पाटला या पाटर का पेड़ या इस पेड के फूल। ३ दुर्गा का नामान्तर।

पाटलिः (स्त्री०) पाटला का वृक्ष।—पुत्रं, (न०) आधुनिक पटना नगर का प्राचीन नाम। इसके नामान्तर पुष्पपुर या कुसुमपुर भी है।

पाटलिकः (पु०) शिष्य। शागिर्द।

पाटलिमन् (पु०) पिलौंहाँ लाल रंग।

पाटल्या (स्त्री०) पाटल वृक्ष के फूलों का समुदाय।

पाटवं (न०) १ पटुता। चतुराई। चालाकी। कुशलता। २ स्फूर्ति। ३ फुर्त्ती।

पाटविक (वि०) [स्त्री०—पाटविकी] १ चतुर। होशियार। निपुण। २ मुतफन्नी। चौंताक। धोखेबाज़।

पाटित (व० कृ०) १ फटा हुआ। चिरा हुआ। दरारदार। टूटा हुआ। २ विधा हुआ। छेदा हुआ। काटा हुआ।

पाटी (स्त्री०) अङ्कगणित ।—गणितं, (न०) अङ्कगणित ।

पाटीरः (पु०) १ चन्दन । २ खेत । ३ जस्ता । ४ बादल । ५ चलनी ।

पाठः (पु०) १ पढ़ाई । २ ब्रह्मयज्ञ अर्थात् वेदपाठ । पञ्चमहायज्ञों में से एक । ३ जो कुछ पढ़ाया जाया । ४ पुस्तक का एक अंश ।—अन्तरं, (न०) दूसरा पाठ ।—छेदः, (पु०) ठहराव । विराम । अन्तर । विसर्ग ।—दोषः, (पु०) अशुद्ध पाठ ।—निश्चयः, (पु०) किसी पुस्तक के किसी अंश पर मनन कर उसके अर्थादि का निश्चय करना ।—मञ्जरी,—शालिनी, (स्त्री०) मैना या सारिका पक्षी ।—शाला, (स्त्री०) चटशाला । मदरसा । स्कूल ।

पाठकः (पु०) १ पढ़ाने वाला । शिक्षक गुरु । २ पुराणवाचक । कथावाचक । ३ दीक्षागुरु । ४ शिष्य । छात्र । विद्यार्थी ।

पाठनं (न०) पढ़ाना । अध्यापन कर्म ।

पाठित (व० कृ०) सिखलाया हुआ । पढ़ाया हुआ ।

पाठिन् (वि०) वह जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो । २ जानकार । परिचित ।

पाठीनः (पु०) १ पुराणों की कथा सुनाने वाला । २ मछली विशेष ।

पाणः (पु०) १ व्यापार । व्यवसाय । २ व्यापारी । ३ खेल । खेला । ४ खेल का दाँव । ५ इकरारनामा । ६ प्रशंसा । ७ हाथ ।

पाणिः (पु०) हाथ ।

पाणिः (स्त्री०) मंडी । । हाट । बाज़ार ।—गृहीती, (स्त्री०) भार्या । पत्नी ।—ग्रहः,—ग्रहणम्, (न०) विवाह । शादी ।—ग्रहीतृ (पु०)—ग्राहः, (पु०) वर । पति ।—घः, (पु०) १ ढोल बजाने वाला । २ मज़दूर । ३ कारीगर ।—घातः, (पु०) हाथ का आघात या प्रहार ।—जः, (पु०) हाथ की उंगलियों के नाखून ।—तलं, (न०) हथेली । गदोरी ।—धर्मः, (पु०) विवाह की विधि या क्रिया ।—पीडनं, (न०) विवाह ।—प्रणयिनी, (स्त्री०) भार्या ।—बन्धः, (पु०) विवाह । शादी ।—भुज्, (पु०) अश्वत्थ या वट वृक्ष ।—मुक्तं, (न०) हाथ से फैंका ढेला ।—रुह्, (पु०)—रुहः, (पु०) नख । नाखून ।—वादः, (पु०) १ ताली पीटना । २ ढोलक बजाना ।—सर्ग्या, (स्त्री०) रस्सा ।—

पाणिनिः (पु०) संस्कृत भाषा के एक स्वनामख्यात व्याकरणी विद्वान का नाम ।

पाणिनीय (वि०) पाणिनी सम्बन्धी या पाणिनी का बनाया हुआ ।

पाणिनीयं (न०) पाणिनि का बनाया व्याकरण ।

पाणिनीय (पु०) पाणिनी का अनुयायी ।

पाणिंधम, पाणिन्धम, पाणिंधय, पाणिन्धय (वि०) हाथ से धौंकने वाला ।

पांडर, पाण्डर (वि०) १ सफेद । पिलौंहाँ-सफेद ।

पांडरम्, पाण्डरम् (न०) १ गेरू । २ चमेली का फूल ।

पांडवः, पाण्डवः (पु०) राजा पाण्डु की औलाद ।—आभीलः, (पु०) श्रीकृष्ण का नाम ।—श्रेष्ठः, (पु०) युधिष्ठिर ।

पांडवीय, पाण्डवीय (वि०) पाण्डवों का ।

पाडित्यम्, पाण्डित्यम् (न०) १ विज्ञता । पण्डिताई । २ चतुराई । चालाकी । निपुणता ।

पाण्डु (वि०) सफेदी माइल पीला ।

पाण्डुः (पु०) १ सफेदी माइल पीला रंग । २ एक रोग विशेष जिसमें रक्त के दूषित होने से शरीर के चमड़े का रंग पीला हो जाता है । ३ सफेद हाथी । ४ पाण्डवों के पिता का नाम ।—आमयः, (पु०) पाण्डुरोग ।—कम्बलः, (पु०) १ सफेद कंबल । २ ऊपर पहिनने का गर्म कपड़ा । ३ राजा के हाथी की झूल ।—पुत्रः, (पु०) पाँच पाण्डवों में से कोई भी एक ।—मृत्तिका, पडोल मिट्टी । पंडू मट्टी ।—रागः, (पु०) सफेदी ।—रोगः, (पु०) रोग विशेष ।—लेखः, (पु०) मसविदा । खाका ।—शर्मिला, (स्त्री०) द्रौपदी का नामान्तर ।—सोपाकः, (पु०) एक वर्णसङ्कर जाति ।

पांडुर, पाण्डुर (वि०) १ पीला । ज़र्द । २ सफेद ।—इक्षुः, (पु०) गन्ना या पौंड़ा ।

पांडुरम्, पाण्डुरम् (न०) सफेद कोढ़ रोग।

पांड्यः, पाण्ड्यः (पु०) देश विशेष का अधिपति या राजा।

पांड्याः, पाण्ड्याः (पु० बहु०) देश विशेष और उसके अधिवासी।

पात (वि०) रक्षित। रखवाली किया हुआ। बचाया हुआ।

पातः (पु०) १ उड़ान। पलायन। २ नीचे उतरना। (सवारी से) उतरना। ३ पतन। गिराव। ४ नाश। बरबादी। ५ प्रहार। आघात। ६ बहना (जैसे आँसुओं का) ७ (तीर या गोली आदि का) छूटना। ८ आक्रमण। हमला। ९ होना। (किसी घटना का) घटना। १० चूकना। ११ राहु का नामान्तर।

पातकं (न०), पातकः (पु०) पाप। गुनाह।

पातंगिः, पातङ्गिः (पु०) १ शनिग्रह। २ यमराज। ३ कर्ण। ४ सुग्रीव।

पातंजल, पातञ्जल (वि०) [पातञ्जली] पतंजलि का बनाया हुआ।

पातंजलम्, पातञ्जलम् (न०) पतंजलि विरचित योग दर्शन।

पातनम् (न०) १ गिराने की क्रिया। २ नीचा दिखाने की क्रिया। ३ स्थानान्तरित या हटाने की क्रिया।

पातालं (न०) १ नीचे के सप्त लोकों में से अन्तिम लोक का नाम। [कहा जाता है, इस लोक में नाग रहते है। नीचे के सात लोकों के नाम ये हैं:— १ अतल, २ वितल, ३ सुतल, ४ रसातल, ५ तलातल, ६ महातल और ७ पाताल]। २ नीचे का कोई भी लोक। ३ गढ़ा या सूराख। वाड़वानल।—गङ्गा, (स्त्री०) नीचे के लोक में बहने वाली गङ्गा।—ओकस्, (पु०)—निलयः, (पु०)—निरासः, (पु०)—वासिन्, (पु०) १ राक्षस। २ नाग।

पातिकः (पु०) सुइस। शिशुमार।

पातित (व० कृ०) १ गिराया हुआ। फैंका हुआ। नीचे गिरा हुआ। २ नीचा दिखाया हुआ। ३ (पद में) नीचा किया हुआ।

पातित्यं (न०) पद या जाति की भ्रंशता।

पातिन् (वि०) [स्त्री०—पातिनी] १ गमनकारी। २ नीचे उतरने वाला। ३ गिरने वाला। डूबने वाला। ४ सम्मिलित होने वाला। गिराने या फैंकने वाला। ५ उड़ेलने वाला। निकालने वाला। छोड़ने वाला।

पातिली (स्त्री०) १ जाल। फंदा। २ हाँडी।

पातुक (वि०) [स्त्री०—पातुकी] जो प्रायः या अक्सर गिरा करे। पतनशील।

पातुकः (पु०) १ पहाड़ का उतार। २ सुइस। शिशुमार।

पात्रं (न०) १ पानी पीने का बर्तन। प्याला। घड़ा। २ कोई भी बर्तन। ३ किसी वस्तु का आधार। ४ जलाशय। ५ दान पाने के योग्य व्यक्ति। ६ अभिनय करनेवाला। अभिनेता। नट। ७ आमात्य। राजसचिव। ८ नदी के उभय तटों के बीच का स्थान। ९ योग्यता। औचित्य। १० आज्ञा। आदेश।—उपकरणम्, (न०) अपकृष्ट श्रेणी की सजावट।—पालः, (पु०) १ डाँड या खेवा। २ तराजू की डंडी। संस्कारः (पु०) बरतनों की सफाई। २ नदी का प्रवाह।

पात्रिक (व०) [स्त्री०—पात्रिकी] १ आढक से नापा हुआ। २ योग्य। पर्याप्त। उचित।

पात्रिकं (न०) बरतन। प्याला। तश्तरी।

पात्रिय, पात्र्य (वि०) भोजन में शरीक होने योग्य।

पात्रीयं (न०) स्रुवा आदि यज्ञीय पात्र।

पात्रीरः (न०), पात्रीरम् (पु०) नैवेद्य। चढ़ावा। भेंट।

पात्रेबहुलः, पात्रेसमितः (पु०) जुठनखोर। पतरीचाट। मुफ्तखोर। खुशामदी टट्टू। २ दग़ाबाज़ आदमी। कपटी या दम्भी मनुष्य।

पाथं (न०) १ जल। २ पवन। ३ भोजन।—जं, (न०) १ कमल। २ शङ्ख।—दः,—धरः, (पु०) बादल।—धिः,—निधिः,—पतिः, (पु०) समुद्र।

पाथः (पु०) १ अग्नि। २ सूर्य।

पाथेयं (न०) १ पैंडा । यात्रा में रास्ते के लिये भोजन । २ कन्या राशि ।

पादः (पु०) १ पैर । २ किरण । ३ चारपाई या कुर्सी आदि का पावा । ४ वृक्ष की जड । ५ पहाड़ की तलैटी । ६ चतुर्थांश । ७ श्लोक के चार पादों में से एक । ८ किसी पुस्तक के अध्याय का विशेष अँश । ९ अँश । भाग । हिस्सा । १० खंभा । स्तम्भ । –अग्रं, (न०) पैर का सब से आगे का भाग ।—अङ्कः, (पु०) पदचिन्ह । पैर का निशान ।—अङ्गदम्, (न०) अङ्गदी, (स्त्री०) नूपुर ।—अङ्गुष्ठः, (पु०) पैर का अँगूठा —अन्तः, (पु०) पैर का अन्तिम भाग ।—अंतरं, (न०) पग । पैंड । क़दम ।—अम्बु, (न०) माठा जिसमें एक चौथाई जल मिला हो ।—अंभस्, (न०) पैर का धोवन । जल जिसमें पैर धोये गये हों ।—अरविन्दं —कमलं, —पङ्कजं,—पद्मं, (न०) कमल जैसे चरण । —अलिन्दी, (स्त्री०) नाव । नौका ।—अवसेचनम्, (न०) १ पैर धोना । २ जल जिससे पैर धोये गये हों ।—आघातः, (पु०) ठोकर। लात ।—आनत, (वि०) पैरों में पड़ा हुआ या गिरा हुआ ।—आवर्तः, (पु०) कुए से जल निकालने वाला, यंत्र या पहिया, जो पैर से चलाया जाता है ।—आसनं, (न०) पैर रखने का पीढ़ा । आस्फालनम्, (न०) पैरों का चलाना ।—आहत, (वि०) लतियाया हुआ । –उदकं,-जलं, (न०) पैर धोने का जल या वह जल जिसमें किसी पूज्य व्यक्ति के पैर धोये गये हों ।—उदरः (पु०) साँप ।—कटकः, (पु०) कटकं, (न०) —कीलिका, (स्त्री०) नूपुर ।—क्षेपः, (पु०) क़दम । पग ।—ग्रन्थिः, (पु०) एड़ी ।—ग्रहणम्, (न०) पादस्पर्श । पैरछूना (प्रणामार्थ)—चतुरः,—चत्वरः (पु०) १निन्दक। चुगुलख़ोर । ख़ुशामदी । २ बकरा । बालू का भीटा । ३ ओला ।—चारः (पु०) पैदल चलने वाला ।—चारिन्, (वि०) पैदल चलने या लड़ने वाला । (पु०) १ पैदल । २ प्यादा सिपाही ।—जः, (पु०) शूद्र ।—जाहं, (न०) एड़ी या एडी की गाँठ । - तलं, (न०) पैर का तलवा ।—त्रः, (पु०) त्रा, (स्त्री०) त्राणं (न०) जूता ।—पः, (पु०) वृक्ष । —पखण्डः, (पु०) पखण्डम्, (न०) जंगल ।—पालिका, (स्त्री०) पैर का गहना ।— पाशः, (पु०) पशु के पैर में बाँधने की रस्सी । —पाशी, (स्त्री०) १ बेडी । २ चटाई । ३ लता । बेल ।—पीठः, (पु०) —पीठं, (न०) पैर रखने का पीढ़ा ।—पूरणं, (न०) पादपूर्ति । किसी श्लोक या कविता के किसी चरण को लेकर उस चरण के भाव को नष्ट न करते हुए पूरा श्लोक बना देना ।—प्रक्षालनम्, (न०) पैर धोना । —प्रतिष्ठानं, (न०) पैर का पीढ़ा ।—प्रहारः, (पु०) पैर की ठोकर या लात ।—बन्धनम्, (न०) बेडी ।—मुद्रा, (स्त्री०) पदचिन्ह । पैर का निशान ।—मूलं, (न०) १ एड़ी या एडी की गाँठ । २ पैर का तलवा । ३ पर्वत की तलैटी । ४ किसी मनुष्य के बारे में नम्रता सूचक कथन ।—रजस्, (न०) पैर की धूल ।—रज्जुः, (पु०) हाथी के पैर के लिये चमड़ा ।—रथी, (स्त्री०) खड़ाऊ । जूता ।—रोहः, (पु०) — रोहणः, (पु०) वटवृक्ष ।—वंदनं, (न०) चरणों में प्रणाम ।—विरजस्, (न०) जूता । (पु०) देवता ।—शाखा, (स्त्री०) पैर की अंगुली ।—शैलः, (पु०) किसी पर्वत की तलैटी की पहाड़ी ।—शोथः, (पु०) पैर की सूजन । —शौचं, (न०) पैर धोना —सेवनं, (न०) —सेवा, (स्त्री०) १ चरणस्पर्श कर प्रतिष्ठा करना । २ सेवा । –स्फोटः, (पु०) पैरचटकाना । —हत, (वि०) लतियाया हुआ ।

पादविक (पु०) यात्री ।

पादात् (पु०) प्यादा सिपाही । पैदल ।

पादातः (न०) पैदल सिपाहियों की सेना ।

पादातिः
पादाविकः } (पु०) पैदल सिपाही ।

पादिक (पु०) [स्त्री०—पादिकी] एक चौथाई ।

पादिनः (पु०) चतुर्थांश ।

पादुक (वि०) [स्त्री—पादुकी] पैदल जाने वाला।

पादुका (स्त्री०) खड़ाऊँ।—कारः, (पु०) मोची। जूता बनाने वाला।

पादू (स्त्री०) जूती।—कृत, (पु०) मोची।

पाद्य (वि०) पैर का।

पाद्यम् (न०) पैर धोने के लिये जल।

पानं (न०) १ पान करना। पीना। अधर को चूसना। २ शराब पीना। ३ शरबत पीना। ४ पानपात्र। ५ पैनाना। तेज़ करना। ६ रक्षा। बचाव।

पानः (पु०) कलवार। शराब खींचने वाला।—अगारः,—आगारः, (पु०) —आगर, (न०) मदिरागृह।—अत्ययः, (पु०) अत्यधिक मदिरा पान।—गोष्ठिका,—गोष्ठी, (स्त्री०) १ शराबियों की टोली। २ ढोलक या ढोल की दूकान। मदिरागृह। शराब की दूकान।—प, (वि०) शराब पीने वाला। पात्रं,—भाजनं, (न०) —भाण्डं, (न०) पानपात्र। शराब पीने का प्याला —भूः, —भूमिः, —भूमी, (स्त्री०) पानशाला।—मङ्गलं, (न०) मदिरापान करने वालों की गोष्ठी।—रत, (वि०) शराब पीने का लतियल।—वणिज्, (पु०) शराब बेचने वाला।—विभ्रमः, (पु०) नशा। —शौण्डः, (पु०) बड़ा शराबी।

पानकं (न०) पेय पदार्थ। शर्बत। रस।

पानिकः (पु०) शराब बेचने वाला। कलवार।

पानिलं (न०) पानपात्र। शराब पीने का बरतन।

पानीय (न०) १ जल। २ पेय पदार्थ। रस। शरबत। —नकुलः, (पु०) ऊदबिलाव जो मछली खाते हैं।—वर्णिका, (स्त्री०) बालू। रेती।—शाला,—शालिका, (स्त्री०) पौशाला। प्रपा। वह स्थान जहाँ बिना कुछ लिये प्यासे को जल पिलाया जाय।

पान्थः } (पु०) बटोही। यात्री।
पान्य }

पाप (वि०) १ दुष्ट। २ हानिकारी। अनिष्टकर। ३ नीच। ४ अशुभ।—अधम, (वि०) पापियों में भी नीच या गया बीता।—अपनुत्तिः, (स्त्री०) प्रायश्चित्त।—अहः, (पु०) दुर्दिन। बुरा दिन।

पापं (न०) १ दुर्भाग्य। २ पाप। गुनाह। अपराध।

पापः (पु०) दुष्टात्मा। पापात्मा। पापी आदमी। —आचार, (वि०) बुरी राह चलने वाला।—आत्मन्, (वि०) दुष्ट हृदय। पापपरायण। दुष्ट। (पु०) पापी। पापकर्म करने वाला।—आशय,—चेतस्, (वि०) बुरे इरादे रखने वाला। दुष्टहृदय।—कर,—कारिन्,—कृत, (वि०) पापपूरित। पापी। बदमाश।—क्षयः, (पु०) पाप का नाश।—ग्रहः, (पु०) दुष्ट ग्रह। (यथा, मंगल, शनि, राहु और (केतु) घ्न, (वि०) पापनाशक।—चर्यः, (पु०) १ पापी। २ राक्षस।—दृष्टि, (वि०) बुरी निगाह वाला।—धी, (वि०) दुष्ट हृदय। दुष्ट।—नापितः, (पु०) चालाक नाई।—नाशनः, (वि०) पापनाशक।—पतिः, (पु०) प्रेमी। आशिक।—पुरुषः, (पु०) दुष्ट मनुष्य। फल,— (वि०) दुष्ट। अशुभ।—बुद्धि,—भाव,—मति, (वि०) दुष्ट हृदय। दुष्ट। धूर्त।—भाज्, (वि०) पापपूर्ण। पापी।—मुक्त, (वि०) पाप से छूटा हुआ। पवित्र।—मोचनं,—विनाशनम्, (न०) पापनाशक। पाप छुड़ाने वाला।—योनि, (वि०) कमीना। अकुलीन।—योनिः, (स्त्री०) अपकृष्ट दशा में उत्पत्ति।—रोगः, (पु०) १ बुरा रोग। २ चेचक।—शील, (वि०) पापकर्मों को करने की प्रवृत्ति रखने वाला।—सङ्कल्प, (वि०) पापी हृदय का। दुष्ट।—सङ्कल्पः, (पु०) दुष्ट विचार।

पापर्द्धिः, (पु०) शिकार। आखेट।

पापल (वि०) पाप देने वाला। पापकर।

पापिन् (वि०) [स्त्री०—पापिनी] पापपूरित। दुष्ट। खराब। (पु०) पापी। पापिष्ठ।

पापिष्ठ (वि०) बड़ा भारी पापी या दुष्ट।

पापीयस् (वि०) [स्त्री०—पापीयसी] अपेक्षाकृत ख़राब।

पाप्मन् (पु०) पाप। गुनाह। जुर्म। दुष्टता। अपराध।

पामन्, (पु०) चर्म रोग विशेष। खाज। —घ्नः, (पु०) गन्धक।

पामर (वि०) [स्त्री०—पामरा, पामरी] १ खजुहा। २ दुष्ट। खल। ३ कमीना। पाजी। ४ मूर्ख। मूढ़। ५ निर्धन। ग़रीब। निस्सहाय।

पामरः (पु०) १ मूर्ख। बेवकूफ़। २ पाजी या कमीना आदमी। ३ वह मनुष्य जो अत्यन्त नीच कर्म या धंधा करता हो।

पामा (स्त्री०) खाज। देखो पामन्।

पायना (स्त्री०) १ पिलाना। २ सिञ्चन। नम करना। ३ पैनाना। तेज़ करना।

पायस (वि०) [स्त्री०—पायसी] दूध या जल का बना हुआ।

पायसं (न०) } १ खीर। दूध में चाँवल डाल कर
पायसः (पु०) } राँधा हुआ भोज्य पदार्थ विशेष। २ तारपीन। (न०) दूध।

पायिकः (पु०) पैदल सिपाही।

पायुः (पु०) गुदा। मलद्वार।

पाय्यं (न०) १ जल। २ पेय पदार्थ। ३ संरक्षण। ४ परिमाण।

पारः (पु०) १ नदी या समुद्र का सामने वाला या दूसरा तट।

पारं (न०) २ किसी वस्तु की आगे की या सामने की ओर। ३ अपरतट या सीमा। ४ किसी वस्तु का अधिक से अधिक परिमाण। —दः, (पु०) पारा। —अपारं, (न०) —अवारं, (न०) दोनों तट। दूरतर और समीपतर तट। —पारः, (पु०) समुद्र। —अयणं, (न०) १ पारगमन। २ अत्यन्त पढ़ना। भली भाँति किया हुआ अध्ययन। ३ सम्पूर्ण। सम्पूर्णता। समूचापन। —अयणी, (स्त्री०) १ सरस्वती का नामान्तर। २ ध्यान। विचार। ३ क्रिया। कर्म। ४ प्रकाश। —काम, (वि०) दूसरे छोर पर जाने का अभिलाषी। —ग, (वि०) १ पार जाने वाला। २ अन्त तक पहुँचने वाला। ३ किसी विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेने वाला। ४ प्रकाण्ड विद्वान। —गत, —गामिन्, (वि०) परले पार गया हुआ। —दर्शक, (वि०) परला पार देखाने वाला। जिसके भीतर से होकर प्रकाश की किरनों के आ सकने के कारण उस पार की वस्तुएँ दिखलाई दें। —दृश्वन्, (वि०) १ दूरदर्शी। विवेकी। बुद्धिमान। २ पूर्ण रूप से जान कर।

पारक (वि०) [स्त्री०—पारकी] १ पार करने वाला। २ बचाने वाला। मुक्त करने वाला। उद्धार करने वाला। प्रसन्न करने वाला। सन्तुष्ट करने वाला।

पारक्य (वि०) १ पराया। परकीय। दूसरे का। २ विरोधी।

पारक्यं (न०) पुण्यकार्य जो परलोक सुधारता है। परलोकसाधन।

पारग्रामिक (वि०) [स्त्री०—पारग्रामिकी] पराया। विदेशी। विरोधी।

पारज् (पु०) सोना। सुवर्ण।

पारजायिकः (पु०) लम्पट पुरुष। व्यभिचारी आदमी।

पारटीटः } (पु०) पत्थर या चट्टान।
पारटीनः }

पारण (वि०) १ पार करने वाला। २ उद्धार करने वाला। उबारने वाला।

पारणं (पु०) १ समाप्ति। ख़ातमा। २ किसी पुराणादि धर्मग्रन्थ का नियमित रूप से नित्य पाठ। ३ किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जाने वाला पहला भोजन और तत्सम्बन्धी कृत्य।

पारणः (पु०) १ बादल। २ सन्तोष। तृप्ति।

पारणा (स्त्री०) १ व्रत समाप्ति पर भोजन। २ भोजन करना।

पारतः (पु०) पारा।

पारतन्त्र्यं (न०) पराधीनता। परतंत्रता।

पारत्रिक (वि०) [स्त्री०—पारत्रिकी] १ परलोक का। २ कर्म जिससे परलोक बने। मरने के बाद उत्तम गतिप्रदाता।

पारदः (पु०) पारा।

पारदारिकः (पु०) परस्त्री से मैथुन करने वाला। व्यभिचारी।

पारदार्य (न०) व्यभिचार। लम्पटता।

पारदेशिक (वि०) [स्त्री०—पारदेशिकी] विदेश अन्य देश।

पारदेशिकः (पु०) १ विदेश का रहने वाला। २ यात्री।

पारदेश्य (वि०) [स्त्री०—पारदेश्यी] विदेश का। विदेशी।

पारदेश्यः (पु०) १ परदेशी। विदेश का रहने वाला। २ यात्री।

पारभृतं (न०) [इसका शुद्ध रूप प्राभृत जान पड़ता है] भेंट। पुरस्कार।

पारमहंस्यम् (न०) सर्वोत्कृष्ट संन्यास या ध्यान।

पारमार्थिक (वि०) [स्त्री०—पारमार्थिकी] १ परमार्थ सम्बन्धी। अध्यात्म ज्ञान सम्बन्धी। २ असली। वास्तविक। सत्यस्थित। यथार्थ में विद्यमान। ३ सत्यप्रिय। न्यायप्रिय। ४ सर्वोत्तम। सर्वोत्कृष्ट। सर्वश्रेष्ठ।

पारमिक (वि०) [स्त्री०—पारमिकी] सर्वोत्कृष्ट। श्रेष्ठ। मुख्य। प्रधान।

पारमित (वि०) १ पल्लेपार गया हुआ। २ आरपार गया हुआ। चढ़ बढ़ कर।

पारमेष्ठ्यम् (न०) १ सर्वोच्चता। सर्व्वोच्चपद। २ राजचिन्ह।

पारंपरीण } (वि०) [स्त्री०—पारम्परीणी]
पारम्परीण } परम्परागत। एक के बाद दूसरा, क्रम में बराबर चला आता हुआ।

पारपरीय }
पारम्परीय } (वि०) परम्परागत।

पारंपर्य } (न०) परम्परागत। लगातार जारी
पारम्पर्य } रहना।

पारयिष्णु (वि०) १ प्रसन्नकर। २ पार जाने के योग्य किसी काम को पूरा करने योग्य।

पारलौकिक (वि०) [स्त्री०—पारलौकिकी] १ परलोक सम्बन्धी। २ परलोक में शुभफल देने वाला।

पारवतः (पु०) कबूतर। परेवा।

पारवश्यम् (न०) पराधीनता। परतंत्रता।

पारशव (वि०) [स्त्री०—पारशवी] १ लोहे का बना हुआ। २ कुल्हाड़ी सम्बन्धी।

पारशवः (पु०) १ लोहा। २ वर्णसङ्कर जाति विशेष। ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न जाति। ३ हरामी। दोग़ला।

पारश्वधः }
पारश्वधिकः } (पु०) परसाधारी।

पारस (वि०) [स्त्री०—पारसी] १ पारस देश वासी। परशियन।

पारसिकः (पु०) } १ फारसदेश। २ फारसदेश
पारसीकः (पु०) } का घोड़ा।

पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा।

पारसीकाः (पु० बहु०) फारसदेशवासी।

पारस्त्रैणेयः (पु०) हरामी। दोग़ला।

पारहंस्य (वि०) जितेन्द्रिय संन्यासी सम्बन्धी।

पारा (स्त्री०) एक नदी का नाम।

पारापतः (पु०) कबूतर। परेवा।

पारायणिकः (पु०) १ व्याख्यानदाता। पुराण-पाठक। २ शिष्य। छात्र।

पारावतः (पु०) १ कबूतर। २ बंदर। ३ पर्वत। —अङ्घ्रिः,—पिच्छः, (पु०) कबूतर विशेष।

पारारुकः (पु०) पत्थर। चट्टान।

पारावारीण (वि०) दोनों तटों पर आने जाने वाला। २ पूर्ण रूप से परिचित

पाराशरः } (पु०) पराशरपुत्र व्यास जी का
पाराशर्यः } नामान्तर।

पाराशरिः (पु०) १ शुकदेव जी का नामान्तर। २ व्यास जी का नाम।

पाराशरिन् (पु०) संन्यासी विशेष कर वे जो व्यास रचित शारीर सूत्र पढ़ें।

पारिकांक्षिन् (पु०) ध्यानमग्न रहने वाला संन्यासी।

पारिक्षितः (पु०) जन्मेजय का नाम।

पारिखेय (वि०) [स्त्री०—पारिखेयी] परखा या खाई से घिरा हुआ।

पारिजातः } (पु०) स्वर्गस्थित पाँच वृक्षों में से
पारिजातकः } एक। यह समुद्रमन्थन के समय निकला था और इन्द्र को मिला था। श्रीकृष्ण ने इन्द्र से छीन कर इसे सत्यभामा के बाग में लगाया था। २ मूंगे का पेड़। ३ सुगन्धि।

पारिणाय्य (वि०) [स्त्री०—पारिणाय्यी] विवाह सम्बन्धी। विवाह में प्राप्त।

पारिणाय्यम् (न०) विवाह के समय मिली हुई स्त्री की सम्पत्ति। २ विवाह-निर्णय।

पारिणाह्यं (न०) घरेलू सामान और बरतन।

पारितथ्या (स्त्री०) सिर में गूंथने को मोतियों की लड़ी।

पारितोषिक (वि०) [स्त्री०—पारितोषिकी] सन्तुष्टकारी। प्रसन्नकारक।

पारितोषिकं (न०) पुरस्कार। इनाम। [वाला।

पारिध्वजिकः (पु०) झंडावरदार। झंडा ले चलने

पारिंद्रः } (पु०) सिंह।
पारिन्द्रः }

पारिपंथिकः } (पु०) डाकू। लुटेरा।
पारिपन्थिकः }

पारिपाट्यं (न०) १ ढंग। रीति। प्रकार। परिपाटी। २ नियमितता।

पारिपार्श्वम् (वि०) अनुचर वर्ग। अनुयायी।

पारिपार्श्वकः } (पु०) १ नोकर। अर्दली। २
पारिपार्श्विकः } (नाटक में) स्थापक का अनुचर।

पारिपार्श्विका (स्त्री०) सदा साथ रहने वाली दासी या चाकरानी।

पारिप्लव (वि०) १ इधर उधर घूमने वाला। चंचल। अस्थिर। २ तैरने वाला। उतराने वाला। ३ उद्विग्न। घबड़ाया हुआ।

पारिप्लवं (न०) चञ्चलता। अस्थिरता। विकलता।

पारिप्लवः (पु०) नौका। नाव।

पारिप्लाव्यं (न०) १ परेशानी। विकलता। २ उद्विग्नता। ३ कम्प। प्रकम्प।

पारिप्लाव्यः (पु०) हस।

पारिबर्हः (पु०) विवाह के समय की भेंट।

पारिभद्रः (पु०) १ मूंगे का पेड़। २ देवदारुवृक्ष। ३ सरल वृक्ष। ४ नीम का पेड़।

पारिभाव्यं (न०) ज़मानत। जामिनी।

पारिभाषिक (वि०) [स्त्री०—पारिभाषिकी] १ जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाय। जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के सङ्केत के रूप में किया जाय। २ प्रचलित। मामूली।

पारिमाण्डल्यम् (न०) अणु या परमाणु का परिमाण।

पारिमुखिक (वि०) [स्त्री०—पारिमुखिकी] मुँह के सामने का। समीपवर्ती। पास का।

पारिमुख्यं (न०) उपस्थिति। मौजूदगी।

पारियात्रः } (पु०) सप्त कुल पर्वतों में से एक जो
पारिपात्रः } विन्ध्य के अन्तर्गत है।

पारियात्रिकः } (पु०) १ पारियात्र पर्वत पर रहने
पारिपात्रिकः } वाला। २ पारियात्र पर्वत।

पारियानिकः (पु०) गाड़ी। बग्घी।

पारिरक्षिकः (पु०) तपस्वी। साधु।

पारिविन्द्यं } (न०) अविवाहित। वह अविवाहित
पारिवेत्त्यम् } ज्येष्ठ भ्राता, जिसका छोटा भाई विवाहित हो।

पारिव्राजकम् } (न०) १ परिव्राजक का कर्म।
पारिव्राज्यम् } भ्रमण। २ संन्यास।

पारिशीलः (पु०) एक प्रकार का पुआ या मालपुआ।

पारिशेष्यं (न०) बचत। बचा हुआ।

पारिषद् (वि०) [स्त्री०—पारिषदी] परिषद सम्बन्धी।

पारिषदः (पु०) १ परिषद में उपस्थित पुरुष। परिषद का सदस्य। पंच। २ राजा का पासवान।

पारिषदाः (पु० बहु०) देवता के अनुयायि वर्ग।

पारिषद्यः (पु०) दर्शक। परिषद में उपस्थित जन।

पारिहारिकी (स्त्री०) एक प्रकार की पहेली।

पारिहार्यः (पु०) कड़ा। कंगन। वलय।

पारिहार्यम् (न०) परिहारत्व। ग्रहण। पकड़।

पारिहास्यं (न०) मज़ाक। दिल्लगी। हंसी ठट्ठा।

पारी (स्त्री०) १ हाथी के पैर का रस्सा। २ जल परिमाण। ३ पानपात्र। पानी का घड़ा। प्याला। ४ दुधैड़ी।

पारीण (वि०) १ विरुद्ध पक्ष वाला। पूर्ण परिचित।

पारीणह्यं (न०) गृहस्थी का सामान या बरतन।

पारींद्रः } (पु०) १ सिंह। २ अजगर सर्प।
पारीन्द्रः }

पारीरणः (पु०) १ कछुवा। २ छड़ी। डंडा।

पारुः (पु०) १ सूर्य। २ अग्नि।

पारुष्यं (न०) १ कठोरता। रूखापन। २ कडुआपन। नृशंसता। अदयालुता। ३ गाली। कुवाच्य।

अपमान । ४ उग्रता (वचन या कर्म में) । ५ इन्द्र का उद्यान । ६ अगर ।

पारुष्यः (पु०) बृहस्पति का नामान्तर ।

परोवर्यम् (न०) परम्परा ।

पार्घटम् (न०) धूल या राख ।

पार्जन्य (वि०) जलवृष्टि सम्बन्धी ।

पार्ण (वि०) [स्त्री०—पार्णी] १ पत्ता सम्बन्धी । पत्तों का बना हुआ । पत्तोंदार । २पत्तों पर बैठाया हुआ । (जैसे कर)

पार्थः (पु०) १ कुन्ती का दूसरा नाम पृथा था । अतएव युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को पार्थ कहते थे, किन्तु विशेषतया अर्जुन की पार्थ संज्ञा थी । २ राजा । पृथ्वीपति ।—सारथिः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

पार्थक्यं (न०) पृथक् होने का भाव । भेद । अलहदगी ।

पार्थवं (न०) बड़ाई । बड़प्पन । बाहुल्य । चौड़ाई ।

पार्थिव (वि०) [स्त्री०—पार्थिवी] १ मिट्टी का । पृथिवी का । पृथिवी सम्बन्धी । २ पृथिवी पर शासन करने वाला । ३ राजसी । शाही ।—नन्दनः,—सुतः, (पु०) राजकुमार ।—कन्या,—नन्दिनी,—सुता, (स्त्री०) राजकुमारी ।

पार्थिवः (पु०) १ पृथिवी पर रहने वाला । २ शाहंशाह । राजा । ३ मिट्टी का बरतन ।

पार्थिवी (स्त्री०) १ सीता का नामान्तर । २ लक्ष्मी जी का नामान्तर ।

पार्परः (पु०) १ मुट्ठी भर चाँवल । २ क्षयरोग ।

पार्यंतिक / पार्यन्तिक (न०) [स्त्री०—पार्यन्तिकी] १ पर्व सम्बन्धी या पर्व का । २ बुद्धिमान् । बढ़ने वाला (जैसे चन्द्रमा) ।

पार्वणम् (न०) पितृश्राद्ध जो किसी पर्व में किया जाय । इस श्राद्ध में पिता पितामहादि समस्त मातृकुल और पितृकुल के पितरों को पिण्डदान दिया जाता है ।

पार्वत (वि०) [स्त्री०—पार्वती] पहाड़ पर रहने वाला । पर्वत पर उत्पन्न या पर्वत से आया हुआ । २ पहाड़ी ।

पार्वतिकं (न०) पहाड़ों का समूह या सिलसिला ।

पार्वती (स्त्री०) १ दुर्गादेवी । २ ग्वालिन । ३ द्रौपदी । ४ पहाड़ी नदी । ५ सुगन्धयुक्त मृत्तिका विशेष ।—नन्दनः, (पु०) १ गणेश । २ कार्तिकेय ।

पार्वतीय (वि०) [स्त्री—पार्वतीयी] पर्वत पर रहने वाला ।

पार्वतीयः (पु०) १ पर्वतवासी । पहाड़ी आदमी । २ एक विशेष पहाड़ी जाति का नाम ।

पार्वतेय (वि०) [स्त्री०—पार्वतेयी] पर्वत पर उत्पन्न ।

पार्वतेयं (पु०) सुर्मा । अञ्जन ।

पार्शवः (पु०) परशुधारी योद्धा ।

पार्श्वं (न०) / पार्श्वः (पु०) १ शरीर का बग़लों के नीचे का भाग, जहाँ पसलियाँ है । कक्ष । अधोभाग । २ बगल । ओर । तरफ । पास । । निकटता । सामीप्य । (पु०) पारसनाथ का नामान्तर । (न०) १ पसलियां का समूह । २ बेईमान का काम । कुटिल उपाय । टेढ़ी चाल । अनुचरः, (पु०) अर्दली । पासवान नौकर ।—अस्थि, (न०) पसली—आयात, (वि०) अतिनिकटवर्ती ।—आसन्न, (वि०) बगल में खड़ा हुआ ।—उदरप्रियः, (पु०) मकड़ा ।—गः, (पु०) अर्दली ।—गत, (वि०) पासवान । शरणागत ।—चरः, (पु०) नौका ।—दः, (पु०) अर्दली । नौकर ।—देशः, (पु०) बग़ल । कुक्षि ।—परिवर्तनम्. (न०) १(खाट पर पड़े पड़े) करवट बदलना । २ भाद्रशुक्ल ११ जिसका नाम पार्श्वैकादशी है । इस दिन भगवान विष्णु करवट बदलते हैं ।—भागः, (पु०) बगल ।—वर्तिन्, (वि०) १ बगल का रहने वाला । अर्दली । २ लगा हुआ । मिला हुआ । समीपी ।—शय, (वि०) १ करवट सोने वाला । २ बग़ल में सोने वाला ।—शूलः,—शूलं, (न०) पसली का दर्द ।—सूत्रकः, (पु०) आभूषण विशेष ।—स्थ, (पु०) समीपवर्ती । निकटस्थ ।—स्थः, (पु०) साथी । सहचर । पास खड़ा रहने वाला । अभिनय के नटों में से एक ।

पार्श्वकः (पु०) [स्त्री०—पार्श्विकी] कुटिल उपायों से धन कमाने वाला। चोर।

पार्श्वतस् (अव्यय) समीप। पास। बगल में।

पार्विक (वि०) [स्त्री०—पार्विकी] बगल सम्बन्धी।

पार्विकः (पु०) १ पक्षपाती जन। तरफदार आदमी। २ सहचर। साथी। ३ ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

पार्षत (वि०) [स्त्री०—पार्षती] चित्तल हिरन सम्बन्धी।

पार्षतः (पु०) १ राजा द्रुपद और उसके राजकुमार। २ धृष्टद्युम्न का नामान्तर।

पार्षती (स्त्री०) १ द्रौपदी। २ दुर्गादेवी।

पार्षद् (स्त्री०) सभा। समाज।

पार्षदः (पु०) १ साथी। संगी। अर्दली २ अनुचर वर्ग। ३ सभा में उपस्थित जन। दर्शक। पंच।

पार्षद्यः (पु०) सभा का सदस्य। पंच।

पार्ष्णिः (पु० स्त्री०) १ ऐड़ी। २ सेना का पिछला भाग। पीठ। पीछे। ४ लात। ठोकर। (स्त्री०) छिनाल स्त्री। २ कुन्ती का नामान्तर।—ग्रहः, (पु०) अनुयायी।—ग्रहणम्, (न०) आक्रमण। पिछाड़ी की ओर पड़े शत्रु को धमकाना।—ग्राहः, (पु०) १ पीछे पड़ा हुआ शत्रु। २ सेनापति जो पीछे रहने वाली सेना का नायक हो। ३ मित्रराजा जो अपने मित्रराजा को सहायता दे।—घातः, (पु०) लात। ठोकर।—त्रं, (न०) पीछे रहने वाली सेना।—वाहः, (पु०) बाहिरी घोड़ा। दूसरे का घोड़ा।

पालः, (पु०) १ रक्षक। रखवाला। २ ग्वाल। अहीर। गड़रिया। ३ राजा। ४ पीकदानी।—घ्नः, (पु०) कुकुरमुत्ता। कठफूल। छत्रक।

पालकः (पु०) १ रक्षक। २ राजा। शासक। ३ साईस। भटियारा। ४ घोड़ा। ५ चित्रक वृक्ष। ६ पोष्य पिता।

पालकाप्यः (पु०) ऋषि विशेष का नाम। करेणु ऋषि; इन्होंने सब से प्रथम हाथियों के सम्बन्ध का विज्ञान लोगों को सिखलाया था।

पालकाप्यं (न०) हाथियों के सम्बन्ध का विज्ञान।

पालंकः, **पालङ्कः** (पु०) १ पालक का शाक। २ बाज-पक्षी।

पालंकी, **पालङ्की** (स्त्री०) कुंदरू नामक गन्ध द्रव्य विशेष।

पालंक्यः (पु०) [स्त्री०—पालङ्क्या] गन्ध द्रव्य विशेष।

पालन (वि०) जीवनरक्षाकारी।

पालनम् (न०) १ भरण पोषण। रक्षण। परवरिश। २ भंग न करना। न टालना। ३ हाल की ब्यायी गौ का दूध।

पालयितृ (पु०) रक्षक। रक्षा करने वाला।

पालाश (वि०) [स्त्री०—पालाशी] १ पलाश वृक्ष का। उससे उत्पन्न। २ पलास की लकड़ी का बना हुआ। ३ सब्ज़। हरा।—खण्डः,—षण्डः, (पु०) मगध देश।

पालाशः (पु०) हरा रंग।

पालिः, **पाली** (स्त्री०) १ कान का अग्रभाग। २ नोंक। किनारा। कोर। सीमा। हाशिया। ३ किसी अस्त्र की वाढ़ या धार। ४ सीमा। हद। ५ पंक्ति। अवली। ६ धब्बा। दाग़। ७ पुल। ८ अङ्क। गोदी। क्रोड। ९ तालाब जो लंबा अधिक और चौड़ा कम हो। १० छात्रावस्था में गुरु द्वारा छात्र का भरण पोषण। ११ जूँ। चीलर। १२ प्रशंसा। बड़ाई। १३ डढ़ियल औरत।

पालिका (स्त्री०) १ कान का अग्रभाग। २ तलवार की तेज़ वाढ़। ३ छुरी विशेष।

पालित (व० कृ०) १ रक्षित। २ पाला हुआ। (जो कहा सो) किया हुआ।

पालित्यं (न०) वृद्धावस्था के कारण बालों की सफेदी।

पाल्वल (वि०) [स्त्री०—पाल्वली] तलैया सम्बन्धी। तलैया में।

पावकः (पु०) १ अग्नि। आग। २ अग्नि देव। ३ तेज। ताप। ४ चित्रक वृक्ष। ५ तीन की संख्या।—आत्मजः, (पु०) १ कार्तिकेय। २ सुदर्शन ऋषि।

पावकिः (पु०) कार्तिकेय।

पावन (वि०) [स्त्री० —पावनी] १ पाप से छुड़ाने

वाला। २ पवित्र। विशुद्ध।—ध्वनि, (पु०) शङ्खनाद।

पावनं (न०) १ पवित्र करने की क्रिया। पवित्रता। २ तप। जल। ४ गोवर। ५ माथे का तिलक।

पावनः (पु०) १ अग्नि। २ धूप। ३ सिद्ध। ३ व्यास देव।

पावनी (स्त्री०) १ तुलसी। २ गौ। ३ गङ्गा नदी।

पावमानी (स्त्री०) वेद की एक ऋचा का नाम।

पावरः (पु०) १ पाँसे का वह पहलू जिस पर दो की संख्या अंकित हो। पाँसे का विशेष रूप से फेंकना।

पाशः (पु०) १ रस्सा। जंजीर। बेड़ी। फंदा। २ जाल (पकड़ने का)। ३ पाश। वरुण का अस्त्र विशेष। ४ पाँसा। ५ किसी बुनी हुई वस्त्र की बाढ़ या उस का किनारा।—अन्तः, (पु०) कपड़े की उल्टी ओर।—क्रीड़ा, (स्त्री०) जुआ। द्यूत कर्म।—धरः,—पाणिः, (पु०) वरुण देव का नामान्तर।—बन्धः, (पु०) फंदा। जाल।—बन्धकः, (पु०) चिड़ीमार। बहेलिया।—भृत्, (पु०) वरुण का नामान्तर।—रज्जुः, (स्त्री०) बड़ी रस्सी।—हस्तः, (पु०) वरुण का नामान्तर।

पाशकः (पु०) पाँसा।—पीठं, (न०) पीढ़ा जिस पर जुआ खेला जाता है।

पाशनम् (न०) १ फंदा। जाल। २ रस्सा। ३ जाल में फँसाना। जाल से पकड़ना।

पाशव (वि०) [स्त्री०—पाशवी] पशु से सम्बन्ध युक्त या पशु से उत्पन्न।

पाशवं (न०) झुंड। गल्ला। गिरोह।—पालनं, (न०) चरागाह या वहाँ की घास।

पाशित (वि०) बंधा हुआ। फंदे में फँसा हुआ। बेड़ी पड़ा हुआ।

पाशिन् (पु०) १ वरुण। २ यम। ३ बहेलिया। चिड़ीमार।

पाशुपत (वि०) [स्त्री०—पाशुपती] पशुपति सम्बन्धी। शिवसम्बन्धी।—अस्त्रं, (न०) शिव जी का एक अस्त्र विशेष।

पाशुपतं (न०) पाशुपत सिद्धान्त।

पाशुपतः (पु०) १ शैव। २ पशुपति के सिद्धान्तों को मानने वाला।

पाशुपाल्यं (न०) ग्वाले या गड़रिये का धंधा।

पाश्चात्य (वि०) १ पीछे का। पिछला। २ पीछे होने वाला। ३ बाद का।

पाश्चात्यं (न०) पीछे का भाग।

पाश्या (स्त्री०) १ जाल। २ रस्सों का। संग्रह।

पाशकः (पु०) पैर का आभूषण विशेष।

पाषंडकः, पाषण्डकः (पु०) } वेदविरुद्ध आचरण
पाषंडिन्, पाषण्डिन् (पु०) } करने वाला। नास्तिक।

पाषाण, (पु०) पत्थर।—दारकः, (पु०)—दारणः, (पु०) संगतराश की छैनी।—सन्धि, (पु०) चट्टान में बनी गुफा।—हृदय, (वि०) नृशंस हृदय।

पाषाणी (स्त्री०) छोटा पत्थर जो बटखरे की तरह काम में लाया जाय।

पि (धा० परस्मै०) [पियति] जाना।

पिकः (पु०) कोयल पक्षी।—आनन्दः, (पु०)—बान्धवः, (पु०) वसन्तऋतु।—बन्धुः,—रागः,—वल्लभः, (पु०) आम का पेड़।

पिकाः (पु०) १ बीस वर्ष का हाथी। २ जवान हाथी।

पिंग } (वि०) पीला। पीलापन लिये हुए। भूरा।
पिङ्ग } —अक्ष, (वि०) भूरेरंग की आँखों वाला।—अक्षः (पु०) १ लंगूर। २ शिव जी का नामान्तर।—ईक्षणः, (पु०) शिव।—ईशः (पु०) अग्निदेव।—कपिशा, (स्त्री०) तेलचट्टा।—चक्षुस्, (पु०) कैकड़ा। मकरा।—जटः, (पु०) शिव।—सारः, (पु०) हरताल।—स्फटिकः, (पु०) गोमेद रत्न।

पिंगः } (पु०) १ पीला या पीलापन लिये हुए
पिङ्गः } भूरा रंग। २ भैंसा। ३ चूहा।

पिंगल } (वि०) भूरापन लिये लाल। तामड़ा।
पिङ्गल } —अक्षः, (पु०) शिव।

पिंगलं } (न०) १ पीतल। २ हरताल।
पिङ्गलम् }

पिंगलः } (पु०) १ भूरा रंग। २ आग। २ बंदर।
पिङ्गलः } ४ न्योला। ५ छोटा उल्लू। ६ सर्प विशेष। ७ सूर्य का एक गण। ८ कुबेर की नवनिधियों में से एक। ९ छन्दशास्त्रकार संस्कृत के एक विद्वान् का नाम।

पिंगला } (स्त्री०) १ उल्लू विशेष। २ शिंशपा
पिङ्गला } वृक्ष। ३ धातु विशेष। ४ शरीरस्थ नाड़ी विशेष। ५ एक पुराणप्रख्यात वेश्या का नाम।

पिंगलिका } (स्त्री०) १ सारस पक्षी। २ उल्लू
पिङ्गलिका } पक्षी।

पिंगा } (स्त्री०) १ हल्दी। २ केसर। ३ हरताल।
पिङ्गा } ४ चण्डिका देवी।

पिंगाशं } (न०) चोखा सोना।
पिङ्गाशम् }

पिंगाशः } (पु०) गाँव का मुखिया या ज़मींदार।
पिङ्गाशः } २ मछली विशेष।

पिंगाशी } (स्त्री०) नील का पौधा।
पिङ्गाशी }

पिचंडः, पिचण्डः (पु०) }
पिचंडं, पिचण्डम् (न०) } पेट। उदर।
पिचिंडः, पिचिण्डः (पु०) }
पिचिंडम्, पिचिण्डम् (न०) }

पिचंडकः } (पु०) औदरिक। पेटू। मरभुखा।
पिचण्डकः }

पिचिंडकः } (पु०) टाँग की पिंडुरी।
पिचिण्डकः }

पिचिंडिल } (वि०) बड़े पेट का। बड़ी तोंद
पिचिण्डिल } वाला।

पिचुः (पु०) १ रुई। २ दो तोले के बराबर की तौल जिसे कर्ष कहते हैं। ३ कोढ़ रोग विशेष। —तलं, (न०) रुई। —मन्दः, —मर्दः, (पु०) नीम का पेड़।

पिचुलः (पु०) १ रुई। २ विभिन्न प्रकार के पक्षियों का साधारण नाम।

पिच्चट (वि०) बंदमुट्ठी।

पिच्चटः (पु०) आँख की सूजन।

पिच्चटम् (न०) १ जस्ता। सीसा।

पिच्चा (स्त्री०) १६ मोती की लड़, जिसका ख़ास वज़न होता है।

पिच्छं (न०) १ मयूर का पूंछ का पर। २ मयूर की पूंछ। ३ बाण में लगे पर। ४ डैना। बाज़ू। ५ कलँगी। चोटी।

पिच्छः (पु०) पूंछ।

पिच्छाः (स्त्री०) १ म्यान। गिलाफ। खोल। २ चाँवल का माँड़। ३ पंक्ति। अवली। ४ ढेर। समूह। ५ मोचरस। ६ केला। ७ कवच। ८ टाँग की पिंडुरी। ९ साँप का विष। १० सुपाड़ी। —बाणः (पु०) बाज पक्षी।

पिच्छल (वि०) चिकना। रपटन वाला।

पिच्छिका (स्त्री०) मयूर पक्षों का मोरछल।

पिच्छिल (वि०) १ चिकना। रपटन वाला। २ पूंछ वाला।

पिच्छिलः (पु०) [स्त्री०—पिच्छिला]—
पिच्छिलं, (न०) १ भात का माँड। २ एक प्रकार की चटनी। ३ दही जिसके ऊपर छाली हो। —त्वच् (पु०) नाँरगी का पेड़।

पिंज } (धा०आत्म०) [पिंक्ते] १ रंगना। २ स्पर्श
पिञ्ज् } करना। ३ सजाना। (उभय०) [पिञ्जयति, पिञ्जयते] १ देना। २ लेना। ३ चमकना। ४ शक्तिवान् होना। ५ रहना। बसना। ६ वध करना। चोटिल करना।

पिंजं } (न०) ताकत। शक्ति।
पिञ्जम् }

पिंजः } (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ वध।
पिञ्जः } हत्या। ४ ढेर।

पिंजा } (स्त्री०) १ चोट। अनिष्ट। २ हल्दी। ३
पिञ्जा } रुई।

पिंजटः } (पु०) आँख का कीचड़।
पिञ्जटः }

पिंजनम् } (न०) धुना की धनुही जिससे रुई धुनकी
पिञ्जनम् } जाती है।

पिंजर } (वि०) सुनहला। भूरा।
पिञ्जर }

पिंजरं } (न०) १ सोना। २ हरताल। ३ अस्थि-
पिञ्जरम् } पंजर। ४ पिंजड़ा।

पिंजरः } (पु०) १ सुनहला या भूरा रंग। २ पीला
पिञ्जरः } रंग।

पिंजरकं } (न०) हरताल।
पिञ्जरकम् }

पिंजरित } (वि०) पीले रंग का। भूरे रंग का।
पिञ्जरित }

पिंजल (वि०) १ बहुत घबड़ाया हुआ या परेशान। २ भयभीत।

पिंजलं } (न०) १ हरताल। २ कुश की पत्ती।
पिञ्जलम् }

पिंजालं / पिञ्जाल } (न०) सुवर्ण।

पिंजिका / पिञ्जिका } (स्त्री०) धुनी रुई की पोली वत्ती, जिससे कातने पर बढ़ बढ कर सूत निकलते हैं।

पिंजूषः / पिञ्जूषः } (स्त्री०) कान का मैल या ठेठ।

पिंजेटः / पिञ्जेटः } (पु०) कीचड या आँख का मैल।

पिंजोला / पिञ्जोला } (स्त्री०) पत्तों की खरभर।

पिटं (न०) १ घर। भीटा। २ छत्त।

पिटः (पु०) वक्स। पेटी। टोकरी।

पिटकं (न०) / पिटकः (पु०) } १ पेटी। टोकरी। २ अन्न की भण्डारी। ३ मुहाँसा। फुंसी। ४ इन्द्र के झंडे पर का भूषण विशेष।

पिटक्या (स्त्री) पेटियों का ढेर।

पिटाकः (पु०) टोकरा। पेटी।

पिट्टकं (न०) दाँत का मैल।

पिठरं (न०) / पिठरः (पु०) } १ वरतन। कढ़ाई। वटलोई। (न०) मथानी। रई।

पिठरकं (न०) / पिठरक (पु०) } वरतन। कढ़ाई।—कपालः, (पु०)—कपालं, (न०) खप्पर कमण्डलु।

पिडकः (पु०) / पिडका (स्त्री०) } छोटा फोडा। फुडिया। मुहाँसा। फुंसी।

पिंड् / पिण्ड् } (धा० आत्म०) (उभय०) [पिण्डते, पिण्डयति—पिण्डयते, पिण्डित] समेट कर गोला वनाना। २ जोड़ना। मिलाना। ३ ढेर लगाना। इकट्ठा करना।

पिंड / पिण्ड } (वि) [स्त्री० —पिण्डी] १ वेस। २ घना। सघन।

पिंडं, पिण्डम् (न०) / पिंडः, पिण्डः (पु०) } १ गोला। २ ढेला। ३ कौर। कवर। ४ खीर का पिण्ड जो पितरों के लिये होता है। ५ भोजन। ६जीविका। ७खैरात। धर्मादा। ८ गोश्त। माँस। ९ शरीर। काया। १० ढेर। सग्रह। समूह। ११ टाँगों की पिंडुली। १२ हाथी का माथा। १३ दरवाज़े के सामने का छप्पर। १४ धूप या सुगन्धित द्रव्य विशेष। १५ (अंकगणित में) जोड़। मीज़ान। जमा। १७ (रेखागणित में) मुटाई।

पिंडं / पिण्डम् } (न०) १ ताकत। बल। शक्ति। २ लोहा। ३ ताज़ा मक्खन। ४ सेना।—अन्वाहार्य, (वि०) पितरों को पिण्डदान दे चुकने के बाद खाने योग्य।—अन्वाहार्यकम्, (न०) पित्तरों के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन।—अभ्रं, (न०) ओला।—अयसं, (न०) फौलाद। अलक्तकः, (पु०) लालरंग।—अशनः—आशः, —आशकः,—आशिन्, (पु०) भिक्षुक। भिखारी। —उदकक्रिया, (स्त्री०) पितरों को पिण्डदान तथा जलदान। श्राद्ध और तर्पण।—उद्धरणम्, (न०) श्राद्ध सम्बन्धी कृत्य में भाग लेना।—गोसः, (पु०) गोंद। लोवान।—तैलं, (न०)—तैलकः, (पु०) शिलारस।—द, (न०) १ भोजन देने वाला। पितरों को पिण्डदान देने का अधिकारी।—दः, (पु०) १ पुरुष नातेदारों में पिण्ड देने का अधिकारी। २ मालिक। संरक्षक। —दानं, (न०) पिण्डदान। पितरों को पिण्ड देना। —निर्वपणम्, (न०) पितरों को पिण्डदान देना। —पातः (पु०)खैरात बाटने वाला। धर्मादा बाँटने वाला।—पातिकः, (पु०) खैरात पर या धर्मादे पर गुज़र वसर या निर्वाह करने वाला।—पाद, —पाद्यः, (पु०) हाथी।—पुष्पं, (न०) १ अशोक वृक्ष। १ गुलाव विशेष। ३ अनार। —पुष्पः (पु०) १ अशोक या गुलाब का फूल। २ कमल।—भाज्, (वि०) पिण्डों में भाग पाने का अधिकारी। (पु० बहुवचन में) पितरगण।—भृतिः, (स्त्री०) निर्वाह। गुज़र वसर आजीविका का उपाय।—मूलं,—मूलकं (न०) गाजर। शलजम।—यज्ञः, (पु०) श्राद्ध कर्म।— लेपः, (पु०) हाथ में लगी हुई पिण्ड की खीर।— लोप (पु०) श्राद्ध कर्म का लोप।—संवन्धः, (पु०) मृत पुरुषों में और जीवितों में वह सम्बन्ध जिससे जीवित लोग मृतों को पिण्ड दे सकें।

पिंडकं, पिण्डकं (न०) / पिंडकः, पिण्डकः (पु०) } १ गोला। २ गूमड़ा। गूमड़ी। ३ भोज्य पदार्थ का गोलाकार कौर। ४ टाँग की पिंडुरी।

५ लोबान। गूगल। ६ गाजर। (पु०) पिशाच। राक्षस।

पिंडनं / पिण्डनं } (पु०) पिण्ड बनाना।

पिंडलः / पिण्डलः } (पु०) १ पुल। २ टीला।

पिंडसः / पिण्डसः } (पु०) भिक्षुक। फकीर।

पिंडातः / पिण्डातः } (पु०) लोबान। गूगल।

पिंडारः / पिण्डारः } (पु०) १ साधु। भिखारी। २ गाय चराने वाला। ग्वाला। ३ भैंसे चराने वाला। विकंकत वृक्ष। ५ एक प्रकार की धिक्कारात्मक सूचना।

पिंडिः, पिण्डिः / पिंडी, पिण्डी } (स्त्री०) १ गोला। गेंद। २ लुगदी। ३ पहिये के बीच का भाग। चक्रनाभि। ३ टांग की पिंडुरी। ४ अशोक वृक्ष। ५ ताड विशेष।—पुष्पः, (पु०) अशोक वृक्ष।—शूरः, (पु०) १ घर में बैठे ही बैठे बहादुरी दिखाने वाला। २ पेटू।

पिंडिका / पिण्डिका } (स्त्री०) १ माँस की गोलाकार सूजन। २ पिंडली।

पिंडित / पिण्डित } (वि०) १ पिंडी बनाया हुआ। २ सघन। घन। ३ ढेर किया हुआ। संग्रहीत। ४ मिश्रित। ५ जुडा हुआ। गुणा किया हुआ। ६ गिना हुआ। शुमार किया हुआ।

पिंडिन् / पिण्डिन् } (वि०) श्राद्ध के पिण्डों को पाने वाला। (पु०) १ भिक्षुक। २ पितरों को पिण्ड देने वाला।

पिंडिलः / पिण्डिलः } (पु०) १ पुल। टीला। २ ज्योतिषी। गणक।

पिंडीर / पिण्डीर } (वि०) रसहीन। फीका। सूखा।

पिंडीरः / पिण्डीरः } (पु०) १ अनार का वृक्ष। २ समुद्रफेन। ३ समुद्र का फैन।

पिंडोलिः / पिण्डोलि• } (स्त्री०) जूठन।

पिण्याकं / पिण्याकः } १ तिल या सरसों की खली। २ शिलाजीत। ३ सिंहलक। शिलारस। ४ केसर। जाफ़ान्। ५ हींग।

पितामहः (पु०) [स्त्री०—पितामहि] १ बाबा। बाप का बाप। २ ब्रह्मा जी का नामान्तर।

पितृ (पु०) पिता।

पितरौ (द्विवचन) पिता माता। वालदैन।

पितरः (पु० बहुवचन) १ पूर्वपुरुष। पुरखा। पित्तर। २ पितृकुल के पितर। ३ पितृगण।—अर्जित, (वि०) पिता द्वारा पैदा किया हुआ। पैतृक (सम्पत्ति)।—कर्मन्, (पु०)—कार्य, (न०)—कृत्य, (न०)—क्रिया, (स्त्री०) श्राद्ध कर्म।—काननम्, (न०) कब्रगाह। श्मशान घाट।—कुल्या, (स्त्री०) मलय से निकलने वाली एक नदी।—गणः, (पु०) पितृगण।—गृहं, (न०) १ पिता का घर। मायका। २ श्मशान। कब्रगाह। कब्रस्तान।—घातकः,—घातिन्, (पु०) पितृहत्यारा। पिता को मारने वाला।—तर्पणं, (न०) १ पितरों को जलदान। २ तिल।—तिथिः, (स्त्री०) अमावास्या।—तीर्थं, (न०) १ गया तीर्थ। २ अँगूठे और तर्जनी के बीच का हथेली का स्थान।—दानं, (न०) पितरों का श्राद्ध या श्राद्ध सम्बन्धी दान।—दायः, (पु०) बपौती। पिता से प्राप्त सम्पत्ति या धन।—दिनं, (न०) अमावास्या।—देव, (वि०) पितरों के अधिष्ठाता देवता। अग्नेष्वात्तादि पितृगण।—देवाः, (पु०) पितृदेव।—दैवत, (वि०) पितरो के अधिष्ठाता देवता।—दैवतं, (न०) मघा नक्षत्र।—द्रव्यं, (न०) बपौती। पिता से प्राप्त सम्पत्ति।—पक्षः, (पु०) १ पितर की ओर के लोग। पिता के सम्बन्धी। पितृकुल। २आश्विन का कृष्ण पक्ष।—पतिः, (पु०) यमराज का नामान्तर।—पदं, (न०) पितृलोक।—पितृ, (पु०) बाप का बाप। बाबा।—पुत्रौ, (द्वि०) पिता और पुत्र।—पूजनं, (न०) पितरों की अर्चा।—पैतामह, (वि०) [स्त्री०—पैतामही] पैतृक। परम्परागत।—पैतामहाः, (बहुवचन) पुरखे।—प्रसूः, (स्त्री०) १ दादी। बाप की मा। पितामही। २ सन्ध्या।—प्राप्त, (वि०) १ १ पिता से प्राप्त। पुरखों से प्राप्त।—बन्धुः,

(पु०) पिता के नातेदार। पितृकुल के लोग। —भक्त, (वि०) पिता का आज्ञाकारी।—भक्तिः, (पु०) पिता की भक्ति। पिता में पूज्य बुद्धि।—भोजनम्, (न०) १ पितरों को अर्पण किया हुआ भोजन। २ उरद।—भ्रातृः, (पु०) चाचा। ताऊ।—मन्दिरं, (न०) १ पिता का घर। २ श्मशान। कब्रस्तान।—मेधः, (पु०) वैदिक अन्त्येष्टि कर्म का भेद विशेष।—यज्ञः, (पु०) तर्पणादि। पितृतर्पण।—राज्, (पु०) —राजः, (पु०) राजन्, (पु०) यमराज। —रूपः, (पु०) शिव।—लोकः, (पु०) वह लोक जिसमे पितृगण रहते हैं।—वंशः, (पु०) पिता का कुल।—वनं, (न०) कब्रस्तान। श्मशान।—वसतिः, (स्त्री०)—सद्मन्, (न०) कब्रस्तान। श्मशान।—श्राद्धं, (न०) पितृश्राद्ध।—स्वसृ, (स्त्री०) बुआ।—ष्वस्रीयः, (पु०) चचेरा भाई। फुफेरा भाई। —सन्निभ, (वि०) १ पैतृक। सन्ध्या काल। —स्थानीयः, (पु०) अभिभावक। पितृ स्थानीय।—हन्,—हत्या, (स्त्री०) पिता की हत्या करने वाला।

पितृक (वि०) १ पिता सम्बन्धी। पुरखों का। पुश्तैनी। २ अन्त्येष्टि क्रिया सम्बन्धी।

पितृव्यः (पु०) १ पिता का भाई। चाचा। चचा। २ कोई भी पुरुष जातीय वयोवृद्ध नातेदार।

पित्तं (न०) एक तरल पदार्थ जो शरीर के भीतर यकृत में बनता है।—अतीसारः, (पु०) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न दस्तों का रोग।—उपहत, (वि०) पित्त प्रकोप से पीडित।—कोपः, (पु०) पित्त।—क्षोभः, (पु०) पित्त का प्रकोप।—ज्वरः, (पु०) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।—प्रकोपः, (पु०) पित्त का विकार।—रक्तं, (न०) रक्त पित्त। रक्ताधिक्य।—विदग्ध, (वि०) पित्त विकार से निर्बल किया गया।—शमन,—हर, (वि०) पित्त के विकारों को दूर करने वाला।

पित्तल (वि०) पित्त को उभाड़ने वाला। पित्तकारी।

पित्तलं (न०) १ पीतल। धातु विशेष। २ भोजपत्र।

पित्र्य (वि०) १ पैतृक। पिता सम्बन्धी। पुरखों का। पुश्तैनी। २ मृत पितरों से सम्बन्ध रखने वाला।

पित्र्यं (न०) १ मघा नक्षत्र। तर्जनी और अँगूठे के बीच का हथेली का भाग।

पित्र्यः (पु०) १ ज्येष्ठ भ्राता। २ माघ मास।

पित्र्या (स्त्री०) १ मघा नक्षत्र। २ पूर्णिमा। अमावास्या।

पित्सत् (पु०) पक्षी।

पित्सलः (पु०) मार्ग। रास्ता। सड़क। राह।

पिधानं (न०) १ आच्छादन। छिपाना। २ म्यान। ३ लबादा। चादर। ४ ढक्कन। ढकना।

पिधानकम् (न०) १ म्यान। परतला। २ ढकना।

पिधायक (वि०) छिपाने वाला। ढकने वाला।

पिनद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ। पहना हुआ। २ पोशाक की तरह धारण किया हुआ। ३ छिपा हुआ। ४ छिदा हुआ। घुसा हुआ। ५ लपेटा हुआ। ढका हुआ।

पिनाकं (न०), पिनाकः (पु०) १ शिव जी का धनुष। २ त्रिशूल। ३ धनुष। ४ डंडा या छड़ी। ५ धूल की वृष्टि।—गोप्तृ,—धृक्,—धृत,—पाणिः, (पु०) शिव जी के नामान्तर।

पिनाकिन् (पु०) शिव जी का नामान्तर।

पिपतिषत् (पु०) पक्षी। चिड़िया।

पिपतिषु (वि०) पतनशील। गिरने वाला।

पिपतिषुः (पु०) चिड़िया।

पिपासा (स्त्री०) प्यास। तृषा।

पिपासित, पिपासिन्, पिपासु (वि०) प्यासा।

पिपीलः (पु०), पिपीली (स्त्री०) चींटी।

पिपीलकः (पु०) चेंटा। चींटी।

पिपीलिकं (न०) सुवर्ण विशेष।

पिपीलिकः (पु०) चींटी।

पिपीलिका (स्त्री०) मादा चींटी।—परिसर्पणम्, (न०) चींटियों का इधर उधर भ्रमण।

पिप्पलः (पु०) १ वट वृक्ष। २ स्थन की ढेपनी। कुर्त्ती या जाकेट की आस्तीन।

पिप्पलं (न०) १ पीपल का फल । २ कोई भी बिना गुठली का फल । ३ मैथुन । ४ जल ।

पिप्पलिः } (स्त्री०) बड़ी पीपल ।
पिप्पली }

पिप्पिका (स्त्री०) दाँत का मल ।

पिप्लुः (पु०) निशान । तिल । मस्सा ।

पियालः (पु०) वृक्ष विशेष । चिरौंजी का पेड़ ।

पियालं (न०) चिरौंजी ।

पिल् (धा० पर०) [पेलयति—पेलयते] १ फेंकना । पटकना । २ भेजना । बतलाना । ३ उत्तेजना देना । बतलाना ।

पिलुः (पु०) देखो "पीलू" ।

पिल्ल (त्रि०) मैंचा ताना । भेंगा ।

पिल्लं (न०) मैंली आँख ।

पिल्लका (स्त्री०) हथिनी ।

पिश् (धा० उभय०) [पिंशति—पिशते] १ बनाना । सम्हालना । २ संघटन करना । ३ प्रकाश करना । उजाला करना । चमकाना ।

पिशंग } (वि०) ललौंहा । भूरे रंग का ।
पिशङ्ग }

पिशंगः } (पु०) भूरा रंग ।
पिशङ्गः }

पिशंगकः } (पु०) विष्णु और उनके अनुचर का
पिशङ्गकः } नामान्तर ।

पिशाचः (पु०) राक्षस । दैत्य । दानव । पिशाच । शैतान ।—द्रुः, (पु०) वृक्ष विशेष ।—बाधा, (स्त्री०)—सञ्चारः, (पु०) पिशाच का आवेश । —भाषा, (स्त्री०) भाषा विशेष ।—सभं, (न०) पिशाचों की सभा ।

पिशाचकिन् (पु०) कुबेर का नामान्तर ।

पिशाचिका (स्त्री०) १ पिशाची । २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये पिशाच की तरह उत्सुकता । ३ लड़ने की पैशाचिक अभिलाषा ।

पिशितं (न०) माँस ।—अशनः, (पु०)— आशः, (पु०)—आशिन्, (पु०)—भुज्, (पु०) १ माँसभक्षी । गोश्तखोर । राक्षस । पिशाच । २ मनुष्य भक्षी । आदमी खाने वाला ।

पिशुन (वि०) १ बतलाने वाला । निर्देश करने वाला । प्रकट करने वाला । दिखाने वाला । द्योतक । २ एक की बुराई दूसरे से कर भेद डालने वाला । चुगलखोर । इधर की उधर लगाने वाला । ३ दुर्जन । खल । ४ कमीना । नीच । क्षुद्र । तिरस्करणीय । ५ मूर्ख । मूढ़ । बेवकूफ ।—वचनं,—वाक्यं, (न०) चुगली । निन्दा । बुराई ।

पिशुनः (पु०) १ निन्दक । चुगलखोर । २ रुई । ३ नारद का नामान्तर । ४ काक । कौआ ।

पिष् (धा० पर०) [पिनष्टि, पिष्ट] १ कूटना । पीसना । चूर्ण करना । मसलना । कुचलना । २ चोटिल करना । नष्ट करना । वध करना ।

पिष्ट (व० कृ०) १ पिसा हुआ । चूर्ण किया हुआ । २ रगड़ा हुआ । निचोड़ा हुआ । दोनों हाथों से पकड़ कर दबाया हुआ ।

पिष्टं (न०) १ पिसी हुई कोई भी वस्तु । २ आटा । पीठी । ३ सीसा ।—उदकं, (न०) आटा में मिला हुआ जल ।—पचनं, (न०) आटा भूँजने की कढ़ाई ।—पशुः, (न०) आटा का बनाया हुआ पशु का खिलौना ।—पिण्डः, (पु०) आटा का लड्डू या पूड़ी ।—पूरः, (पु०) पूड़ी । —पेषः, (पु०)—पेषणम्, (न०) आटा पीसना । पिसे को पीसना । व्यर्थ का काम करना । —मेहः, (पु०) प्रमेह रोग के भिन्न भिन्न प्रकारों में से एक प्रकार का प्रमेह रोग ।—वर्तिः, (न०) छोटा लड्डू जो जवा, दाल की पीठी या चावल के आटा का बनाया जाता है ।—सौरभं, (न०) घिसा हुआ चन्दन ।

पिष्टकं (न०) } १ पूड़ी जो किसी अन्न के आटे
पिष्टकः (पु०) } की बनायी गयी हो । २ रोटी । पूड़ी (न०) पिसे हुए तिल ।

पिष्टपं (न०) } ब्रह्माण्ड का विभाग विशेष ।
पिष्टपः, (पु०) } लोक । भुवन ।

पिष्टातः, (पु०) खुशबूदार चूर्ण ।

पिष्टकः (पु०) चाँवलों की बनी हुई तवाखीर या वंसलोचन ।

पिष्टिकः (पु०) चाँवल के आटे की पूड़ी विशेष । अंदरसा ।

पिस् (धा० पर०) [पेसति] जाना (उभय०) [पेसयति—पेसयते] १ जाना । २ बलवान होना । ३ बसना । ४ ज़ख़मी करना । अनिष्ट करना । ५ देना या लेना ।

पिहित (व० कृ०) १ बंद किया हुआ । मूदा हुआ । सेका हुआ । बंधा हुआ । २ ढका हुआ । छिपा हुआ । छिपाया हुआ । ३ भरा हुआ या आच्छादित ।

पी (धा० आत्म०) [पीयते] पीना ।

पीचं (न०) ठोडी ।

पीठं (न०) १ पीढ़ा । २ कुशासन । ३ मूर्ति का वह आधारवत् स्थान जिस पर वह खडी रहती हैं । वेदी । ४ किसी वस्तु के रहने का स्थान । अधिष्ठान (यथा विद्यापीठ) । ५ राजसिंहासन । तख़्त । ६ वह स्थान जहाँ सती के शरीर का कोई अंग अथवा आभूषण भगवान् विष्णु के चक्र से कट कर गिरा हो । ७ बैठने का एक विशेष ढंग । एक आसव विशेष ।—केलिः, (पु०) अधर्मी । पीठमर्द नायक ।—गर्भः, (पु०) वह गड्ढा जो वेदी पर मूर्ति को जमाने के लिये खोद कर बनाया जाता है ।—नायिका, (स्त्री०) १४ वर्ष की कन्या जो दुर्गोत्सव में दुर्गा की प्रतिनिधि मानी जाती है । —भूः, (पु०) प्राचीर के आसपास का भूभाग । —मर्दः, (पु०) १नायिक के चार सखाओं में से एक जो अपनी वचनचातुरी से नायिका का मान-मोचन करने में समर्थ हो । २ नर्तकी वेश्या को नृत्य सिखाने वाला उस्ताद ।—सर्प, (वि०) लंगडा । लुंजा ।

पीठिका (स्त्री०) १ पीढ़ा । २ मूर्ति या खंभे का मूल या आधार । ३ पुस्तक का अंश या अध्याय ।

पीड् (धा० उभ०) [पीडयति—पीडयते, पीडित] १ कष्ट देना । सताना । अत्याचार करना । चोटिल करना । अनिष्ट करना । छेड़खानी करना । चिढ़ाना । २ सामना करना । ३ (किसी नगर पर) घेरा डालना । ४ दबाना । निचोडना । चुटकी काटना । ५ दबाना । नाश करना । ६ चूक जाना । लापरवाही करना । किसी अमाङ्गलिक वस्तु से टकना । ८ ग्रहण डालना ।

पीडकः (पु०) अत्याचारी । ज़ालिम ।

पीडनम् (न०) १ दाबने की क्रिया । चाँपना । अत्याचार करना । पीड़ा देना । २ निचोढना । दबाना । ३ दबाने का यंत्र विशेष । ४ पकडना । ग्रहण करना । ५ बरबाद करना । नष्ट करना । ६ पीट पीट कर अनाज (बालों से) निकालना । ७ सूर्य चन्द्र का ग्रहण । ८ तिरोभाव । लोप ।

पीडा (स्त्री०) १ दर्द । कष्ट । तकलीफ । व्याधि । २ अनिष्ट । हानि । घाटा । ३ उच्छेद । नाश । ४ अतिक्रमण । नियमभङ्ग करण । ५ रोक थाम । ६ दया । रहम । ७ सूर्यचन्द्रग्रहण । ८ शिरोमाला । सिर में लपेटी हुई माला । ९ सरल वृक्ष ।—कर, (वि०) कष्टदायी । दुःखदायी ।

पीडित (व० कृ०) १ पीडायुक्त । दुःखित । क्लेशयुक्त । २ निचोड़ा हुआ । दबाया हुआ । ३ थामा हुआ । पकड़ा हुआ । ४ भङ्ग किया हुआ । तोडा हुआ । ५ उच्छिन्न । नष्ट किया हुआ । ६ ग्रहण लगा हुआ । ७ बंधा हुआ । गसा हुआ ।

पीडितं (न०) १पीडा युक्त । क्लेशयुक्त । दुःखित । २ मैथुन का आसन विशेष । [से ।

पीडितम् (अव्यया०) १ पक्का । घनिष्ठता से । २ दृढता

पीत (वि०) १ पिया हुआ । २ तर । भीगा हुआ । ३ पीला ।—अब्धिः, (पु०) अगस्त्य ऋषि का नामान्तर ।—अम्बरः, (पु०) १ विष्णु भगवान का नामान्तर । २ नट । अभिनयकर्त्ता । ३ काषाय वस्त्रधारी संन्यासी ।—अरुण, (वि०) पिलौंहा लाल ।—अश्मन्, (पु०) पुखराज रत्न ।—कदली, (स्त्री०) केले का भेद विशेष । —कन्दं, (न०) गाजर । शलजम ।—कावेरं, (न०) १ केसर । २ पीतल ।—काष्ठं, (न०) पीला चन्दन । पद्माख ।—गन्धम्, (न०) पीला चन्दन ।—चन्दनं, (न०) १ हरिचन्दन । पीले रंग का चन्दन । २ केसर । ३ हल्दी ।—चम्पकः (पु०) १ दिया । चिराग । प्रदीप ।—तुण्डः, (पु०) कारण्डव या बया पक्षी ।—दारु, (न०) सरल वृक्ष ।—दुग्धा, (स्त्री०) दुधार गौ ।—द्रुः, (पु०) सरल वृक्ष ।—पादा, (स्त्री०) मैना पक्षी जिसके पैर पीले होते हैं ।

गुलगुलिया।—मणिः, (पु०) पुखराज।—माक्षिकं, (न०) सोनामाखी।—मूलकं, (न०) गाजर। शलजम।—रक्त, (वि०) नारंगी रंग का।—रक्तं, (न०) पुखराज।—रागः, (पु०) १ पीला रंग। २ मोम। ३ पद्मकेसर।—वालुका, (स्त्री०) हल्दी।—वासस्, (पु०) कृष्ण का नामान्तर।—सारः, (पु०) १ पुखराज। २ चन्दन वृक्ष।—सारं, (न०) पीलाचन्दन।—सारि, (न०) सुर्मा।—स्कन्धः, (पु०) शूकर।—स्फटिकः, (पु०) पुखराज।—हरित, (वि०) पिलौहा हरा।

पीतं (न०) १ सोना। २ हरताल।

पीतः (पु०) १ पीला रंग। २ पुखराज। ३ कुसुम।

पीतकं (न०) १ हरताल। २ पीतल। ३ केसर। ४ शहद। ५ अगर काष्ठ। ६ चन्दन काष्ठ।

पीतनं (न०) १ हरताल। २ केसर।

पीतनः (पु०) वट वृक्ष विशेष।

पीतल (वि०) पीला।

पीतलं (न०) पीतल धातु।

पीतलः (पु०) पीला रंग।

पीतिः (पु०) घोड़ा। (स्त्री०) घूँट। पेय पदार्थ। २ कलवरिया। शराब की दूकान। २ हाथी की सूँड़।

पीतिका (स्त्री०) १ केसर। २ हल्दी। ३ पीली चमेली।

पीतुः (पु०) १ सूर्य। २ अग्नि। ३ हाथियों के गिरोह का सरदार या यूथपति।

पीथः (पु०) १ सूर्य। २ समय। ३ अग्नि। ४ पेय पदार्थ (पानी घी आदि)। ५ जल।

पीथिः (पु०) घोड़ा।

पीन (वि०) १ मोटा। मॉसल। स्थूल। धमधूसर। २ गुदगुदा। बड़ा। गाढ़ा। ३ पूरा। गोला। ४ अत्यधिक।—ऊधस्, (स्त्री०) (पीतोध्नी) गौ जिसके थन दूध से भरे हों।—वक्षस्, (वि०) भरी हुई छातियों वाला।

पीनसः (पु०) १ नाक का एक रोग विशेष। २ जुकाम।

पीयुः (पु०) १ काक। २ सूर्य। ३ अग्नि। ४ उल्लू। ५ समय। ६ सुवर्ण।

पीयूषं (न०) } १ अमृत। सुधा। २ दूध। ३
पीयूषः (पु०) } व्याने के सात दिन के भीतर का गाय का दूध। पेवसी।—महस्, (पु०)—रुचिः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।—वर्षः, (पु०) १ अमृतवृष्टि। २ चन्द्रमा। ३ कपूर।

पीलकः (पु०) चेंटा। चींटा।

पीलुः (पु०) १ तीर। २ अणु। ३ कीट। ४ हाथी। ताड़ वृक्ष का तना। ६ पुष्प। ७ ताड़ वृक्षों का समूह। ८ वृक्ष विशेष।

पीलुकः (पु०) चींटी। चेंटी।

पीव् (धा० पर०) [पीवति] मुटाना। मोटा होना।

पीवन् (वि०) [स्त्री०—पीवरी] १ पूर्ण। मोटा। बड़ा। २ दृढ़। मज़बूत। (पु०) पवन।

पीवर (वि०) [स्त्री०—पीवरा या पीवरी] १ मोटा। बड़ा। दृढ़। माँसल। धमधूसर। २ गुद-गुदा। मोटा।

पीवरः (पु०) कछुवा।

पीवरी (स्त्री०) १ युवती स्त्री। २ गौ।

पीवा (स्त्री०) जल।

पुंस् (धा० उभय०) [पुंसयति—पुंसयते] १ कुचलना। पीसना। २ पीड़ा देना। कष्ट देना। दण्ड देना।

पुंस (पु०) [कर्त्ता—पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः सम्बोधन एकवचन पुमान्] १ पुरुष। नर। मादा का उल्टा। २ मनुष्य। इंसान। मानव। ३ मनुष्य। मनुष्य जाति। मानव जाति। ४ नौकर। अर्दली। ५ पुल्लिङ्ग शब्द। ६ पुल्लिङ्ग। ७ जीव। रूह।—अनुज, (वि०) (= पुंसानुज) बड़े भाई वाला।—अनुजा, (= पुमनुजा) लड़के के पीठ की लड़की अर्थात् वह लड़की जिसका बड़ा भाई हो।—अपत्यं (= पुमपत्यं) (न०) नर बच्चा।—अर्थः (= पुमर्थः) १ मनुष्य का उद्देश्य। पुरुषार्थ। [पुरुषार्थ चार हैं, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष]।—आख्या, (=पुमाख्या) नर की संज्ञा।—आचारः (=पुमाचारः) (पु०) पुरुष के आचार।—कामा, (स्त्री०) स्त्री जो पति की चाहना करती हो।—कोकिल (पु०) नरकोयल।—खेटः (पु०) (= पुंखेटः)

नर ग्रह या नक्षत्र।—गवः (=पुंगवः) (पु०) १ सांड। बैल। २ (समासान्त शब्द के अन्त में आने पर इसका अर्थ होता है। मुख्य। सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ। प्रसिद्ध। प्रख्यात।—केतुः (पु०) शिव जी का नामान्तर।—चली (=पुंश्चली) (स्त्री०) रंडी। वेश्या।—चलीय (पु०) (= पुंश्चलीयः) रंडी का बेटा।—चिन्हं (=पुंश्चिन्हं) (न०) पुरुष लक्षण। जनेन्द्रिय।—जन्मन्, (=पुंजन्मन्) (न०) बालक की उत्पत्ति।—योगः, (पु०) ग्रहों का योग जिसमें किसी बालक का जन्म होता है।—दासः, (=पुंदासः) (पु०) पुरुष नौकर।—ध्वजः, (=पुंध्वजः) १ जीवधारियों में किसी भी जाति का नर। २ चूहा।—नक्षत्रं, (= पुंनक्षत्रं) (न०) पुरुषवाची नक्षत्र।—नागः (=पुंनागः) (पु०) १ मनुष्यों में हाथी अर्थात् प्रसिद्ध पुरुष। २ सफेद हाथी। ३ सफेद कमल। ४ कायफर या जायफल। ५ नागकेसर वृक्ष।—नाटः, —नाडः, (=पुंनाटः, पुंनाडः) (पु०) एक वृक्ष का नाम।—नामधेय, (= पुंनामधेयः) नर। १ पुरुषवाची।—नामन् (=पुंनामन्) (वि०) पुरुषवाची नामधारी। २ पुनाग वृक्ष।—पुत्रः (पु०) लड़का।—प्रजननं, (न०) लिङ्ग। जननेन्द्रिय।—भूमन्, (=पुंभूमन्) (पु०) पुरुषवाची शब्द जो सदा बहुवचन में प्रयुक्त किया जाता है।—"दाराः पुंभूम्नि चाक्षताः"—अमरकोश।—योगः, (पु०) (=पुंयोगः) १ पुरुषमैथुन। लौंडेबाज़ी। २ किसी नर या पति सम्बन्धी।—रत्नं, (=पुंरत्न) (न०) उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष।—राशिः, (=पुंराशिः) पुरुषवाची राशि।—रूपं (=पुंरूपं) (न०) पुरुष का आकार।—लिङ्ग, (= पुल्लिङ्ग) (वि०) पुरुषवाची। नर।—लिङ्गम्, (न०) १ पुंलिङ्ग। २ मनुष्यत्व। पुरुषत्व। ३ लिङ्ग। जननेन्द्रिय।—वत्स (=पुंवत्स) (पु०) छछूंदर।—वेष, (=पुंवेष) (वि०) मर्दानी पोशाक में।—सवनं (=पुंसवन) (न०) द्विजातियों के १६ संस्कारों में से दूसरा संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे मास किया जाता है। २ दूध। ३ गर्भपिण्ड।

पुंस्त्वं (न०) १ पुरुषत्व। पुंसता। मर्दानगी। २ वीर्य। ३ पुरुषलिङ्ग।

पुंवत् (अव्यया०) १ पुरुष की तरह। २ पुल्लिङ्ग में।

पुक्कश (वि०) [स्त्री०—पुक्कशी] } नीच। ओछा।
पुक्कस (वि०) [स्त्री०—पुक्कसी] }

पुक्कशः, } (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष।
पुक्कसः }

पुंखं (न०) }
पुङ्खं (न०) } तीर की वह जगह जहाँ उसमें पर लगे होते हैं।
पुंखः (पु०) }
पुङ्खः (पु०) }

पुंखित } (व० कृ०) परों से सम्पन्न।
पुङ्खित }

पुंगं (न०) }
पुङ्गं (न०) } ढेर। राशि। संग्रह। समूह।
पुंगः (पु०) }
पुङ्गः (पु०) }

पुंगलः } (पु०) जीव। रूह। आत्मा।
पुङ्गलः }

पुच्छं (न०) } १ पूंछ। २ बालदार पूंछ। ३ मयूर की पूंछ ४ पीछे का भाग। ५ किसी वस्तु का छोर।—अग्रं,—मूलं, (न०) पूंछ की नोंक।—कराटकः, (पु०) बीछू।—जाहं, (न०) पूंछ की जड़।
पुच्छः (पु०) }

पुच्छटिः } (स्त्री०) उंगली चटकाना।
पुच्छटी }

पुच्छिन् (पु०) मुर्गा।

पुंजः } (पु०) ढेर। समूह। संग्रह।
पुञ्जः }

पुंजिः } (स्त्री०) ढेर। समूह।
पुञ्जिः }

पुंजिकः } (पु०) ओला। जमी हुई बर्फ।
पुञ्जिकः }

पुंजित } (वि०) १ जमा किया हुआ। संग्रह किया हुआ। ढेर लगाया हुआ। २ मिलाकर दबाया हुआ।
पुञ्जित }

पुट् (धा० पर०) (पुटति) १ कौरियाना। चिपटाना आलिङ्गन करना। २ बीच में पड़ना।

पुटं (न०) } १ तह । परत । पल्ला । २
पुटः (पु०) } अञ्जुली । ३ पत्तों का बना दौना ४ कोई भी औंड़ापात्र । ५ छीमी । फली । ६ म्यान । गिलाफ । खोल । आच्छादन । ७ पलक । ८ घोड़े का सुम । (पु०) चौखटा । (व०) जायफल ।—उटजं, (न०) सफेद छत्र ।—उदकः, (पु०) नारियल । —ग्रीवः, (पु०) १ बरतन । घड़ा । कलसा । २ ताँबे का बरतन ।—पाकः, (पु०) दवाइयाँ बनाने का विशेष विधान ।—भेदः, (पु०) १ नगर । कस्बा । २ वाद्ययंत्र विशेष । बाजा । (आतोद्य) । ३ भँवर । बाढ़ । —भेदनं, (न०) नगर । शहर ।—

पुटकं (न०) १ तह । परत । २ कोई भी छिछला बरतन । ३ दौना । ४कमल । ५जायफल ।

पुटकिनी (स्त्री०) १ कमल । २ कमल समूह ।

पुटिका (स्त्री०) इलायची ।

पुटित (वि०) १ रगड़ा हुआ । पीसा हुआ । २ सकुड़ा हुआ । ३ सिला हुआ । टकियाया हुआ । ४ चिरा हुआ ।

पुटी (देखो पुट)

पुड् (धा० पर०) १ त्यागना । छोड़ना । २ विदा करना । निकाल देना । ३ उमड़न । ४ खोज निकालना ।

पुंड } (धा० पर०) (पुण्डति) पीसना । पीस
पुण्ड् } कर चून कर डालना । कूटना ।

पुंड्रः } (पु०) चिन्ह । निशान ।
पुण्ड्रः }

पुंडरीकं } (न०) १ कमलपुष्प, विशेष कर सफेद
पुण्डरीकं } रंग का । २ सफेद छाता ।

पुंडरीकः } (पु०) १ सफेद रंग । २ आग्नेयी
पुण्डरीकः } दिशा का दिग्गज । ३ चीता । ४ सर्प विशेष । ५ चाँवल विशेष । ६ कोढ़ रोग विशेष । ७ गजज्वर । ८ आम्र वृक्ष विशेष । ९ जल का घड़ा । १० अग्नि । ११ माथे पर साम्प्रदायिक तिलक चिन्ह ।

पुंडरीकाक्षः } (पु०) विष्णु का नामान्तर ।
पुण्डरीकाक्षः }

पुंडन } (पु०) १ एक प्रकार की ईख । २ कमल
पुण्डन } । ३ सफेद कमल । ४ माथे पर का तिलक । ५ कीट विशेष ।

पुंड्रः } (पु०) १ लाल जाति की ऊख । २
पुण्ड्रः } कमल । ३ सफेद कमल । ४ माथे का तिलक । ५ कीड़ा ।

पुंड्रकः } (पु०) १ ईख की एक जाति । २
पुण्ड्रकः } साम्प्रदायिक तिलक ।

पुंड्राः } (पु० बहु०) भारत के एक प्रान्त का
पुण्ड्राः } प्राचीन नाम और उस प्रान्त के निवासी ।
—केलिः, (पु०) हाथी ।

पुण्य (वि०) १ पवित्र । शुद्ध । २ अच्छा । गुणी । नेक । ईमानदार । न्याय । ३ शुभ । मङ्गलात्मक । अनुकूल । ४ प्रसन्नकारक । आल्हादप्रद । मनोहर । सुन्दर । ५ मधुर सुगन्धि । ६ धूमधड़ाके का । उत्सव सम्बन्धी ।

पुण्यं (न०) १ नेकी । भलाई । धार्मिक श्रेष्ठता । पुण्यवर्द्धककार्य । पुण्यकार्य । ३ पवित्रता । विशुद्धता । ४ पशुओं के पानी पीने के लिये हौदी । हौज ।

पुण्या (स्त्री०) तुलसी का पेड़ ।—अहं, (अहन के बदले) आनन्द का या मङ्गल दिवस । सुदिन ।—उदयः, (पु०) सौभाग्योदय । —उद्यान, (वि०) सुन्दर उद्यान रखने वाला ।—कर्तृ (पु०) पुण्यात्मा या धर्मात्मा आदमी ।—कर्मन् (वि०) शुभकार्य करने वाला । पुण्यात्मा । ईमानदार । (न०) पुण्य का कार्य ।—कालः, (पु०) दान पुण्य का समय ।—कीर्ति, (वि०) शुभनाम या नामवरी वाला । ख्यात । प्रसिद्ध । —कृत्, (वि०) पुण्यात्मा । नेक । धर्मात्मा ।—कृत्या, (स्त्री०) धर्मकार्य ।—क्षेत्रं, (न०) १ तीर्थ स्थान । २ आर्यावर्त का नाम ।—गन्ध, (वि०) मधुर सुगन्धि युक्त ।—गृहं, (न०) १ वह घर जहाँ लोगों को खैरात बाँटी जाती है । २ देवालय । —जनः (पु०) १ धर्मात्मा आदमी । २ दानव । दैत्य । ३ यक्ष ।—ईश्वरः, (पु०) कुबेर ।—जित, (वि०) धर्मकर्म से जीता हुआ ।—तीर्थ, (न०) यात्रा का स्थान । तीर्थस्थान ।—दर्शन, (वि०) सुन्दर । मनोहर ।—दर्शनः, (पु०) नीलकण्ठ पक्षी ।—दर्शनं, (न०) देवालयों में दर्शन ।—पुरुषः, (पु०) पुण्यात्मा या धर्मात्मा जन ।—प्रतापः (पु०) पुण्य या

अच्छे कर्म का प्रभाव । —फलं, (न०) सत्कर्मों का पुरस्कार ।—फलः, (पु०) लता-कुञ्ज ।—भाज्, (वि०) धन्य । नेक । धर्मात्मा । —भूः, —भूमिः (स्त्री०) पवित्र स्थान । तीर्थ स्थान । आर्यावर्त देश । - लोकः (पु०) स्वर्ग ।—शकुनं, (न०) शुभ शकुन ।—शकुनः, (पु०) शकुन पक्षी ।—शील, (वि०) मनुष्य जिसका सम्मान सत्कर्मों की ओर हो । -श्लोक, (वि०) अच्छे या सुन्दर चरित्र अथवा यश वाला । पवित्र चरित्र या आचरण वाला । पवित्र एवं शिक्षाप्रद जीवन वृत्तान्त वाला । —श्लोकः, (पु०) नल । युधिष्ठिर आदि । यथाः—

> पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः
> पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥

—श्लोकाः, (स्त्री०) सीता और द्रौपदी । - स्थानं, (न०) तीर्थस्थान ।

पुण्यवत् (वि०) १ सत्कर्मी । धर्मात्मा । २ भाग्यवान । शुभ । ३ सुखी ।

पुत् (न०) नरक विशेष जिसमें वे जीव डाले जाते है जो अपुत्रक हैं ।

पुत्तलः (पु०), पुत्तली (स्त्री०) १ मूर्ति । प्रतिमा । पुतला । २ गुड़िया पुतली ।—दहनं, (न०) —विधिः, (पु०) अप्राप्त मृतक के बदले उसका पुतला बना कर जलाना ।

पुत्तलकः (पु०), पुत्तलिका (स्त्री०) गुड्डा । गुड़िया ।

पुत्तिका (स्त्री०) १ मधुमक्षिका । २ दीमक ।

पुत्रः (पु०) १ बेटा । पूत । बेटा का नाम पूत इस लिये पड़ा—

> पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् त्रायते पितरं सुतः ।
> तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयम्भुवः ॥

—अन्नादः, (पु०) १ पुत्र की कमाई पर निर्वाह करने वाला । २ कुटीचक सन्यासी ।—अर्थिन, (वि०) पुत्र की कामना रखने वाला ।—इष्टिः,—इष्टिका,(स्त्री०) पुत्र प्राप्ति के लिये यज्ञ विशेष ।—काम, (वि०) पुत्र की अभिलाषा वाला ।—कार्यं, (न०) कोई रीति या रस्म जो पुत्र सम्बन्धी हो ।—कृतकः, (पु०) गोद लिया हुआ बेटा ।—जात, (वि०) बेटा वाला । पुत्र वाला । —दारं, (न०) बेटा और जोरू ।—पौत्रं, —पौत्राः, (पु०) बेटा और नातियों वाला ।—पौत्रीण, (वि०) परम्परागत । पुश्तैनी ।—प्रतिनिधिः, (पु०) बेटा का एवज़ी । दत्तकपुत्र ।—लाभः, (पु०) पुत्र की प्राप्ति ।—सखः, (पु०) वह पुरुष जो लड़कों को बहुत चाहता हो ।—हीन, (वि०) वह पुरुष जिसके कोई पुत्र न हो ।

पुत्रकः, (पु०) १ छोटा पुत्र या बच्चा । २ पुतली । गुड़िया । ३ गुंड़ा । छलिया । ४ टीढ़ी । पतिंगा । ५ शरभ जन्तु । ६ बाल । केश ।

पुत्रका, पुत्रिका, पुत्री, (स्त्री०) १ बेटी । २ गुड़िया । पुतली । (समासान्त शब्दों में जब यह अन्त में होता है तब इसका अर्थ "छोटी जाति की कोई भी वस्तु" होता है । यथा "असिपुत्रिका" ।—पुत्रः, —सुतः, (पु०) १लड़की का पुत्र जो अपने नाना की गोद गया हो । २ वह लड़की जो अपने पिता के यहाँ पुत्र के स्थान पर गयी हो । ३ पौत्र ।—प्रसूः, (स्त्री०) ऐसी माता जिसकी सन्तान कन्याएँ ही हों—पुत्र न हो ।—भर्तृ, (पु०) जामाता । जमाई । दामाद ।

पुत्रिन् (वि०) [स्त्री०—पुत्रिणी] पुत्र या पुत्रों वाला । (पु०) एक पुत्र का पिता ।

पुत्रिय, पुत्रीय, पुत्र्य (वि०) पुत्र सम्बन्धी । सन्तानोचित ।

पुत्रीया (स्त्री०) पुत्र प्राप्ति की कामना या अभिलाषा ।

पुद्गल (वि०) सुन्दर । मनोहर ।

पुद्गलः (पु०) १ परमाणु । २ शरीर । ३ आत्मा । जीव । ४ शिव का नामान्तर ।

पुनर् (अव्यया०) १ पुनः । फिर । नये सिरे से । २ पीछे । सामने की ओर से । बरखिलाफ इसके । इसके विरुद्ध । किन्तु । बल्कि । यद्यपि । तोभी । —अर्थिता, (स्त्री०) बार बार की हुई प्रार्थना । —आगत, (वि०) लौटा हुआ । फिरा हुआ । —आधानं, आधेयं, (न०) यज्ञीय अग्नि का पुनर्संस्कार । —आवर्तः, (पु०) १ प्रत्यागमन । २ पुनर्जन्म ।—आवर्तिन्, (वि०) पार्थिवास्थिति में लौट कर आने वाला ।—आवृत,

(स्त्री०)—आवृत्तिः, (स्त्री०) १ दुहराना। २ पुनर्जन्म। ३ संशोधन। (किसी पुस्तक का)। —उक्त, (वि०) १ पुनः कहा हुआ। दुहराया हुआ। २ फालतू। अनावश्यक।—उक्तं, (न०) —पुनरुक्तता, (स्त्री०) १ दुहराने की क्रिया। २ फालतूपना। अनावश्यकता। निरर्थकता।—उक्तिः, (स्त्री०) देखो पुनरुक्तता।—उत्थानं, (न०) फिर से उठना।—उत्पत्तिः (स्त्री०) पुनर्जन्म।—उपगमः, (पु०) लौटना।—उपोढा.—ऊढा. (स्त्री०) दुबारा ब्याही हुई स्त्री। —गमनं, (न०) पुनःगमन।—जन्मन्, (न०) पुनर्जन्म।—जात, (वि०) पुनः उत्पन्न हुआ। —णवः,—नवः, (पु०) नाखून। जो बार बार उत्पन्न हो।—दारक्रिया, (स्त्री०) पुनर्विवाह (पुरुष का)।—प्रत्युपकारः, (पु०) १ किसी के उपकार का बदला चुकाना। बार बार जन्म ग्रहण। २ नाखून। नख।—भावः, (पु०) पुनर्जन्म। —भूः, (पु०) पुनर्विवाहिता विधवा।—यात्रा, (स्त्री०) १ पुनर्गमन। २ बार बार जलूस का निकलना।—वसुः, (पु०) १ पुनर्वसु-नक्षत्र। २ विष्णु। ३ शिव।—विवाहः, (पु०) दुबारा विवाह।

पुष्कुलः (पु०) उदरस्थवायु। जठरवात।

पुष्फुसः (पु०) १ फेंफड़ा। पद्मबीज कोष।

पुर् (स्त्री०) १ क़सबा। शहर जिसकी रक्षा के लिये चारों ओर परकोटे की दीवाल हो। २ गढ़ी। क़िला। महल। ३ दीवाल। परकोटा। ४ शरीर। ५ प्रतिभा। प्रज्ञा। धीर।—द्वार, (स्त्री०)—द्वारं, (न०) नगर का फाटक।

पुरं (न०) १ नगर। शहर। २ महल। गढ़। गढ़ी। ३ घर। मकान। ४ शरीर। ५ ज़नानख़ाना। ६ पाटलिपुत्र या पटने का नामान्तर। ७ दौना। पत्तों से बनाया गया प्यालेनुमा पात्र। ८ चकला। छिनाल स्त्रियों या रंडियों का बाज़ार। ६ चमड़ा। १० मौथा। ११ गुग्गुल।—अट्टः, (पु०) परकोटे की दीवाल पर बनी हुई बुर्जी या बुर्ज। —अधिपः,—अध्यक्षः, (पु०) किसी नगर का शासक या हाकिम।—अरातिः,—अरिः, —असुहृद्, (पु०)—रिपुः, (पु०) शिव जी के नामान्तर।—उत्सवः, (पु०) नगर में मनाया जाने वाला उत्सव।—उद्यानं, (न०) पार्क या नगर के बीच में लगाया हुआ बाग़। —ओकस्, (पु०) नागरिक। नगरनिवासी। —कोट्टं, (न०) गढ़। नगरकोट।—ग, (वि०) १ नगर में जाने वाला। २ अनुकूल।—जित्,—द्विष्,—भिद् (पु०) शिव जी का नाम।—ज्योतिस् (पु०) १ अग्नि। २ अग्नि-लोक।—तटी, (स्त्री०) छोटाग्राम। छोटा ग्राम जिसमें बाज़ार या पैंठ लगती हो।—तोरणं, (न०) नगर का बहिर्द्वार।—निवेशः, (पु०) नगर की नींव डालना।—पालः, (पु०) शहर का हाकिम। गढ़ का नायक।—मथनः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—मार्गः, (पु०) नगर की गली।—रक्षः,—रक्षकः,—रक्षिन् (पु०) कॉंस्टेबिल। नगररक्षकदल का सिपाही या अफसर।—रोधः, (पु०) गढ़ी का अवरोध या घेरा।—वासिन्, (पु०) नागरिक। नगर निवासी।—शासनः, (पु०) १ विष्णु। २ शिव।

पुरटं (न०) सुवर्ण।

पुरणः (पु०) समुद्र। सागर।

पुरतस् (अव्यया०) १ पूर्व। पहले। सामने। २ पीछे से।

पुरन्दरः } (पु०) १ इन्द्र का नाम। २ शिव। ३
पुरन्दरः } अग्नि। ४ चोर। घर में सेंध लगाने वाला।

पुरन्दरा } (स्त्री०) गंगा का नामान्तर।
पुरन्दरा }

पुरन्ध्रिः, पुरन्ध्रिः } (स्त्री०) पति, पुत्र, कन्या आदि
पुरंध्री, पुरन्ध्री } से भरीपूरी स्त्री।

पुरला (स्त्री०) दुर्गा देवी का नामान्तर।

पुरस् (अव्यया०) १ पूर्व। पहिले। २ पूर्व दिशा में। पूर्व दिशा से। ३ पूर्व की ओर।—करणं, (न०)—कारः, (पु०) १ सामने रखने वाला। अपेक्षाकृत अधिक रुचि। सम्मान प्रदर्शन। ४ पूजन। अर्चन। ५ सहवर्तित्व। ६ तैयारी करना। ७ क्रम में लाना। ८ पूर्ण करना। ९ आक्रमण करना। १० आरोप।—कृत, (वि०) सामने

रखा हुआ। ४ सजाया हुआ। पूजा किया हुआ। ५ सम्मिलित। अनुयायियों से युक्त। ६ तैयार किया हुआ। ७ संस्कारित। ८ दोषी ठहराया हुआ। ६ पूर्ण किया हुआ। १० होने के पूर्व ही होने की आशा से आशान्वित।—क्रिया, (स्त्री०) १ सम्मानप्रदर्शन। २ आरम्भिक संस्कार।—ग,—गम, (=पुरोगम—पुरोग) १ नेता। अगुआ। पेशवा। गति, (स्त्री०) पूर्ववर्तिता। अग्रगमन।—गतिः, (पु०) कुत्ता। —गन्तृ, (वि०)—गामिन्, (वि०) १ पहले या आगे जाने वाला। २ प्रधान नेता। (पु०) कुत्ता।—चरण, (न०) १ आरम्भिक संस्कार। २ तैयारी। ३ किसी देवता के नाम का जप और उसके उद्देश्य से हवन।—छदः, (पु०) स्तन के ऊपर की बौंड़ी।—जन्मन्, (=पुरोजन्मन्) (वि०) पूर्व उत्पन्न।—डाश्,—डाशः, (=पुरोडाश्, पुरोडाशः) (पु०) चावल के आटे की बनी हुई टिकिया जो कपाल में पकाई जाती थी। यज्ञ में इसके टुकड़े काट काट कर, और मंत्र पढ़ पढ़ कर देवताओं के उद्देश्य से इसकी आहुति दी जाती थी।—धस्, (=पुरोधस्) (पु०)पुरोहित। धानं, (= पुरोधानं) (न०) सामने रखना। आगे रखना। पुरोहित द्वारा कराया हुआ कर्म। —धिका, (= पुरोधिका) (स्त्री०) मन पर चढ़ी हुई औरत।——पाक, (वि०) प्रायः भरा हुआ।—प्रहर्तृ, (पु०) आगे या पीछे की ओर लड़ने वाला।

पुरस्तात् (अव्यया०) १ पूर्व। सामने। २ सब से आगे। ३ आरम्भ में। ४ पूर्व। पेश्तर। ५ पूर्व दिशा की ओर। ६ पीछे से। अन्त में।

पुरा (अव्यया०) १ पूर्व काल में। २ पूर्व। अब तक। ३ आरम्भ में। ४ कुछ काल में। शीघ्र। अविलम्ब।—कथा, (स्त्री०) पुरानी कहावत या कहानी।—कल्पः, (पु०) १ पूर्वकाल की सृष्टि। २ भूतकाल की कथा। ३ पुरातन युग।—कृत, (वि०) पहिले किया हुआ।—योनि, (वि०) प्राचीन कालीन उत्पत्ति।—वसुः, (पु०) भीष्म का नामान्तर।—विद्, (वि०) भविष्यकाल को जानने वाला।—वृत्त, (वि०) प्राचीन कालीन। प्राचीन काल से सम्बन्ध युक्त।—वृत्तं, इतिहास। तवारीख।

पुरा (स्त्री०) १ गङ्गा नदी का नामान्तर। २ सुगन्ध पदार्थ। ३ पूर्व। ४ महल।

पुराण (वि०) [स्त्री०—पुराणा, पुराणी] १ पुराना। मुद्दत का। प्राचीन-कालीन। २ असली। आदि का। ३ घिसा हुआ बर्ता हुआ।—अष्टादशन् —अष्टादशणः, (पु०) ८० कौडी के बराबर का एक सिक्का।—अन्तः, (पु०) यम का नामान्तर।—उक्त, (वि०) पुराण कथित। पुराण में दिया हुआ।—गः, (पु०) १ ब्रह्मा का नामान्तर। २ पुराणपाठक।—पुरुषः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।

पुराणं (न०) १ प्राचीन कालीन कोई घटना। २ अतीतकाल की कथा। ३ हिन्दुओं के ग्रन्थ विशेष का नाम। इनकी संख्या १८ है और इनकी रचना वेदव्यास ने की है।

पुरातन (वि०) [स्त्री०—पुरातनी] १ प्राचीन। पुराना। २ बूढ़ा। आदिकाल का। ३ जीर्ण। घिसा हुआ।

पुरातनः (पु०) विष्णु का नामान्तर।

पुरिः (स्त्री०) १ क़स्बा। शहर। २ नदी।

पुरिशय (वि०) शरीरस्थ।

पुरी (स्त्री०) १ नगर। शहर। २ गढ़। दुर्ग। ३ शरीर।—मोहः, (पु०) धतूरे का पौधा।

पुरीतत् (पु० न०) हृदय के पास की एक आँत।

पुरीषं (न०) १ विष्टा। मल। गू। २ कूड़ा करकट। —उत्सर्गः, (पु०) मलत्याग।—निग्रहणम्, (न०) कोष्ठबद्धता। कब्ज़ियत।

पुरीषणः (पु०) विष्ठा। मल।

पुरीषणं (न०) मलत्याग।

पुरीषमः (पु०) उरद। माष।

पुरु (वि०) [स्त्री०—पुरु—पुर्वी] बहुत। विपुल। अत्यधिक।

पुरुः (पु०) १ पुष्पपराग। २ देवलोक। अमरलोक। स्वर्ग। ३ चन्द्रवंशी एक राजा का नाम। यह राजा ययाति के पुत्र थे। —जित्, (पु०)

१ विष्णु। २ कुन्तिभोज राजा का या उसके भाई का नामान्तर।—दं, (न०) सुवर्ण।—दंशकः, (पु०) हंस।—लंपट, (वि०) बड़ा विषयी। बड़ा कामुक।—हु, (अव्यया०) बहुत से।—हूतः, (वि०) अनेकों से आमंत्रित।—हूत, (पु०) इन्द्र का नामान्तर।

पुरुषः (पु०) १ मनुष्य। आदमी। २ नर। किसी पुश्त या पीढ़ी का कोई प्रतिनिधि। ३ अधिकारी कार्यकर्त्ता। मुख़्तार। गुमाश्ता। नौकर। टहलुआ। ५ मनुष्य की उचाई या माप। ६ जीव। ७ परमात्मा। ८ व्याकरण में पुरुष के तीन भेद अर्थात् उत्तम, मध्यम और अन्य माने गये हैं। ९ आँख की पुतली। १० (सांख्यदर्शन में) प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्त्ता और असङ्गचेतन पदार्थ।—अङ्गम्, (न०) जननेन्द्रिय। लिङ्ग।—अदः, (पु०) मनुष्य-भक्षी। राक्षस।—अधमः, (पु०) सब से गया बीता। नीच।—अधिकारः, (पु०) मरदानगी का काम। मनुष्य की गणना या अँदाज़ा।—अन्तरम्, (न०) दूसरा आदमी।—अर्थः, (पु०) १ चार पुरुषार्थों में से कोई एक। २ पुरुषकार।—प्रस्थि,—मालिन्, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—आद्यः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—आयुषं,—आयुस्, (न०) मनुष्य की ज़िन्दगी या उम्र।—आशिन्, (पु०) नरभक्षी। राक्षस।—इन्द्रः, (पु०) राजा। बादशाह।—उत्तमः, (पु०) १ सर्वोत्तम मनुष्य। २ परमात्मा।—कारः, (पु०) मनुष्य का उद्योग या प्रयत्न। मरदानगी। पुरुषत्व।—कुणपः, (पु०)—कुणपम्, (न०) मनुष्य की लाश या मृतक शरीर।—केसरिन्, (पु०) विष्णु भगवान् का नृसिंहावतार।—ज्ञानं, (न०) मनुष्य जाति का ज्ञान।—दघ्न,—द्वयस, (वि०) मनुष्य की लंबाई जितना।—द्विष्, (पु०) विष्णु का शत्रु।—नायः, (पु०) १ चमूपति। २ राजा। बादशाह।—पशुः, (पु०) नरपशु।—पुङ्गवः,—पुण्डरिकः, (पु०) उत्कृष्ट या प्रख्यात पुरुष।—बहुमानः, (पु०) मनुष्य जाति का सम्मान।—मेधः, (पु०) नरमेध (यज्ञ)।—वरः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—वाहः, (पु०) १ गरुड का नाम। २ कुबेर।—व्याघ्रः,—शार्दूलः (पु०)—सिंहः, (पु०) १ पुरुषों में श्रेष्ठ। २ बहादुर। वीर।—समवायः, (पु०) पुरुषों की संख्या।—सूक्तं, (न०) ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम जो सहस्रशीर्षा से आरम्भ होता है।

पुरुषं (न०) मेरु पर्वत का नामान्तर।

पुरुषकः (पु०) } पुरुष की तरह दो पैरों पर खड़ा
पुरुषकम् (न०) } होना। घोड़े का जमना या अलफ होना।

पुरुषता (स्त्री०) } १ मरदानगी। वीरता। २
पुरुषत्वं (न०) } पुंसत्व।

पुरुषायित (वि०) मनुष्य की तरह आचरण करने वाला।

पुरुषायितम् (न०) १ मनुष्य का आचरण। चाल-चलन। २ स्त्री मैथुन करने का आसन विशेष।

पुरूरवस् (पु०) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम।

पुरोटिः (पु०) १ नदी का प्रवाह या धार। २ पत्तों की खरभर।

पुरोडाश } (देखो पुरस् के अन्तर्गत।
पुरोधस् }

पुर्व (धा० पर०) [पुर्वति] १ भरना। २ रहना। बसना। आबाद होना। ३ आमंत्रित करना। बुलावा भेजना।

पुल (वि०) बड़ा। लंबा। चौड़ा। विशाल।

पुलः (पु०) रोंगटों का खड़ा होना।

पुलकः (पु०) १ भय या हर्ष के अतिरेक में शरीर के रोंगटों का खड़ा होना। २ एक प्रकार का पत्थर या रत्न। ३ खनिज पदार्थ। ४ रत्नदोष। ५ गजान्न पिण्ड। ६ हरताल। ७ शराब पीने का काँच का गिलास। ८ राई का मसाला विशेष।—अङ्गः, (पु०) वरुण का फंदा।—आलयः, (पु०) कुबेर का नामान्तर।—उद्गमः, (पु०) रोमाञ्च।

पुलकित (वि०) रोमाञ्चित। गद्गद। आनन्दित।

पुलकिन् (वि०) [स्त्री०—पुलकिनी] जो रोमाञ्चित हो। (पु०) कदंब वृक्ष विशेष।

पुलस्तिः } (पु०) ब्रह्मा के मानसपुत्र ऋषियों में
पुलस्त्यः } से एक ऋषि का नाम।

पुला (स्त्री०) गले का कव्वा, काग।

पुलाकः (पु०) } १ कदन्न। अंकरा। २ उबला
पुलाकं (न०) } हुआ चाँवल। भात। ३ संक्षेप। संग्रह। गुटका। ४ अल्पता। संक्षिप्तता। ५ चाँवल का माँड। ६ क्षिप्रता। जल्दी।

पुलाकिन् (पु०) वृक्ष।

पुलायितं (न०) घोड़े की सरपट चाल।

पुलिनं (न०) } १ नदी का रेतीला तट। २ पानी
पुलिनः (पु०) } के भीतर से हाल की निकली हुई ज़मीन। चर। ३ नदीतट।

पुलिनवति (स्त्री०) नदी।

पुलिंदक } (पु०) १ भारतवर्ष की एक प्राचीन
पुँलिन्दकः } असभ्य जाति। २ इस जाति का एक आदमी। जंगली। पहाड़ी।

पुलिरिकः (पु०) सर्प।

पुलोमन् (पु०) इन्द्र के ससुर एक दैत्य का नाम। —अरिः,—जित्,—भिद्,—द्विष्, (पु०) इन्द्र के नामान्तर।—जा,—पुत्री, (स्त्री०) पुलोमन की पुत्री और इन्द्र की स्त्री शची।

पुष् (धा० पर०) [पोषति, पुष्यति, पुष्णाति, पुष्ट, या पुषित] १ पोषण करना। पालना पोसना। २ सहायता करना। ३ बढ़ने देना। सरसब्ज होने देना ४ उन्नति करना। बढ़ाना। ५ प्राप्त करना। कब्ज़े में करना। रखना। उपभोग करना। ६ दिखाना। प्रदर्शन करना। ७ बढ़ जाना या परवरिश पाना। ८ प्रशंसा करना।

पुष्करं (न०) १ नीलकमल। २ हाथी की जिह्वा की नोंक। ३ ढोल का चाम। ढोलक का पुरा। ४ तलवार की धार। ५ तलवार की म्यान। ६ तीर। ७ आकाश। अन्तरिक्ष। वायुमण्डल। ८ पिंजड़ा। ९ जल। १० नशा। मद। ११ नृत्यकला। १२ युद्ध। लड़ाई। १३ मेल। सम्मेलन। १४ अजमेर के निकटस्थ एक तीर्थ स्थान का नाम।

पुष्करः (पु०) १ तालाव। सरोवर। २ सर्प विशेष। ३ ढोल। नगाड़ा। ४ सूर्य। ५ एक जाति के उन बादलों का नाम जो अनावृष्टि का कारण होते हैं। ६ शिव जी का नामान्तर।

पुष्करं (न०) } ब्रह्माण्ड के सप्त विशाल भागों में
पुष्करः (पु०) } से एक।—अक्ष, (पु०) विष्णु का नाम।—आख्यः,—आह्वः, (पु०) सारस।—तीर्थः, (पु०) अजमेर के पास का एक तीर्थस्थान विशेष।—पत्रं, (न०) कमल का पत्ता।—प्रियः, (पु०) मोम।—बीजं, (न०) कमलगट्टा। व्याघ्रः, (पु०) मगर। नक्र। घड़ियाल।—शिखा, (स्त्री०) कमल की जड़। मसीड़ा।—स्थपतिः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—स्रज्, (स्त्री०) कमल की माला।

पुष्करिणी (स्त्री०) १ हथिनी। २ कमल का तालाव। ३ झील। तालाव। ४ कमल का तालाब।

पुष्करिन् (वि०) [स्त्री०—पुष्करिणी] (वह सरोवर जिसमें) कमलों का बाहुल्य हो। (पु०) हाथी।

पुष्कल (वि०) १ बहुत। विपुल। अधिक। २—पूर्ण। पूरा। ३ सम्पन्न। चटकीला। भड़कीला। ४ सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ। मुख्य। ५ समीप। ६ गूंजने वाला। प्रतिध्वनि करने वाला। चिल्लाने वाला।

पुष्कलः (पु०) १ एक प्रकार का ढोल। २ मेरु- [पर्वत।

पुष्कलम् (न०) अनाज नापने का एक मान जो ६४ मुट्ठियों के बराबर होता था। २ चार ग्रास की भिक्षा।

पुष्कलकः (पु०) १ हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है। २ पच्चर। खूंटी। मेख। कील।

पुष्ट (व० कृ०) १ पोषण किया हुआ। पाला हुआ। २ तैयार। मोटा ताज़ा। वलिष्ठ। ३ बलवर्द्धक। मोटा ताज़ा बनाने वाला। ४ सम्पन्न। अच्छी तरह सम्पन्न। ५ पूरी तरह शब्द करने वाला। चिल्लाने वाला। ६ मुख्य। प्रधान। ७ पूर्ण। पूरा।

पुष्टिः (स्त्री०) १ पोषण। २ मोटाई। ताज़ापन। ३ वलिष्ठता। ४ सम्पत्ति। मालमता। सुख की सामग्री या साधन। ५ सम्पन्नता। चटकीलापन

या भडकीलापन । ६ वृद्धि । पूर्णता ।—कर, (वि०) पुष्ट करने वाला । बल-वीर्य वर्द्धक ।—कर्मन्, (न०) एक धार्मिक अनुष्ठान जो सांसारिक समृद्धि की प्राप्ति के लिये किया जाता है ।—द, (वि०) पुष्टि देने वाला । ताज़गी देने वाला । समृद्धिकारी । वर्धन, (वि०) समृद्धिकारक । स्वास्थ्यवर्द्धक । —वर्धनः, (पु०) मुर्ग़ा । अरुणशिखा । कुक्कुट ।

पुष्प् (धा० पर०) [पुष्प्यति] १ खौलना । २ धौंकना । फूंक मारना । ३ पसारना । खिलना ।

पुष्पं (न०) १ फूल । २ स्त्री का रजोधर्म या मासिक धर्म । ३ पुखराज । ४ नेत्ररोग विशेष । ५ कुबेर का पुष्पक विमान । ६ वीरता । (प्रेमियों की भाषा में) सुशीलता । ७ विकाश । फूलना ।—अञ्जनम्, (न०) एक प्रकार का अंजन जो पीतल के हरे कसाव के साथ कुछ अन्य दवाइयों के संमिश्रण से पीस कर तैयार किया जाता है ।—अञ्जलिः (पु०) फूलों से भरी अँजली जो किसी देवता या पूज्य पुरुष को चढ़ायी जाय ।—अम्बुजम्, (न०) मकरन्द ।—अवचयः, (पु०) फूलों को एकत्र करना या चुनना ।—अस्त्रः, (पु०) कामदेव का नामान्तर । आकर, (वि०) फूलों से सम्पन्न ।—आगमः, (पु०) वसन्त ऋतु ।—आजीवः, (पु०) मालाकार ।—आपीडः, (पु०) गुलदस्ता ।—इषुः, (पु०) कामदेव । —आसवं, (न०) शहद । मधु ।—उद्यानं, (न०) वाटिका । बाग़ ।—उपजीविन्, (पु०) माली । मालाकार ।—कालः, (पु०) वसन्त ऋतु ।—कीटः, (पु०) भौंरा ।—कैतन,—केतुः, (पु०) कामदेव । (न०) मकरन्द । पराग ।—गृहं, (न०) शीशे का घर या कमरा जिसमें पौदे सर्दी से बचा के रखे जाते हैं ।—घातकः, (पु०) बाँस ।—चापः, (पु०) कामदेव ।—चामरः, (पु०) १ दौनामरुआ । २ केवड़ा ।—जं, (न०) पुष्परस ।—दः, (पु०) वृक्ष ।—दन्तः, (पु०) शिव के एक गण का नाम । २ महिम्नस्तोत्र के रचयिता का नाम । ३ वायव्य कोण के दिग्गज का नाम ।—दामन्, (न०) पुष्पहार ।—द्रवः, (पु०) फूल का रस ।—द्रुमः, (पु०) फूलने वाला वृक्ष ।—ध, (पु०) जाति बहिष्कृत ब्राह्मण की सन्तान ।—धनुस्—धन्वन्, (पु०) कामदेव ।—धारणः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—ध्वजः, (पु०) कामदेव का नामान्तर ।—निक्षः, (पु०) मधुमक्षिका । —निर्यासः, निर्यासकः, (पु०) पुष्परस ।—नेत्रं, (न०) फूल की डंडी ।—पत्रिन्, (पु०) कामदेव ।—पथः, (पु०) भग । स्त्री का गुप्ताङ्ग ।—पुरं, (न०) पटना का नामान्तर ।—प्रचय, (पु०) प्रचायः, (पु०) पुष्प तोड़ना ।—प्रचायिका, (स्त्री०) पुष्पसञ्चय ।—प्रस्तारः, (पु०) फूल शय्या ।—बाणः,—बाणः, (पु०) कामदेव ।—भवः, (पु०) फूल का रस ।—मंजरिका, (वि०) नील कमल ।—माला, (स्त्री०) फूलों की माला ।—मासः, (पु०) १ चैत्रमास । २ वसन्तऋतु ।—रजस्, (न०) मकरंद । पराग ।—रथः, (पु०) गाड़ी जो युद्धोपयोगी न हो, जिसमें साधारणतया बैठ घूमा फिरा जाय ।—रागः,—राजः, (पु०) पुखराज ।—रेणुः, (पु०) मकरंद ।—लोचनं, (न०) नागकेसर वृक्ष ।—लावः, (पु०) पुष्प इकट्ठा करने वाला ।—लावी, (स्त्री०) मालिन ।—लिक्षः,—लिह्, (पु०) मधुमक्षिका ।—वटुकः, (पु०) वीर । बहादुर ।—वर्षः, (पु०)—वर्षणं (न०) फूलों की वर्षा । पुष्पवृष्टि ।—वाटिका,—वाटी, (स्त्री०) फूलबगिया ।—वेणी, (स्त्री०) फूलों की माला ।—शकटी, (स्त्री०) आकाशवाणी ।—शय्या, (स्त्री०) फूल की शय्या ।—शरः,—शरासनः,—सायकः, (पु०) कामदेव ।—समयः, (पु०) वसन्त ऋतु ।—सारः,—स्वेद, (पु०) अमृत या फूलों से बना शहद ।—हासा, (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।—हीना, (स्त्री०) स्त्री जिसकी उम्र अधिक हो जाने से सन्तान न होती हो ।

पुष्पकं (न०) १ फूल । २ पीतल की भस्म या मोर्चा । ३ लोहे का प्याला । ४ विमान विशेष

जिसे रावण ने अपने बड़े भाई कुबेर से छीन लिया था। ५ वलय। कङ्कण। ६ अञ्जन विशेष। ७ नेत्र रोग विशेष।

पुष्पंधयः } पुष्पन्धयः } (पु०) मधुमक्षिका। शहद की मक्खी।

पुष्पवत् (वि०) १ फूल जैसा। फूला हुआ। २ फूलों से सजाया हुआ। (पु० द्वि०) चन्द्र और सूर्य।

पुष्पवती (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

पुष्पा (स्त्री०) चम्पा नगरी।

पुष्पिका (स्त्री०) १ दाँत का मैल। २ लिङ्ग का मैल। ३ अध्याय के अन्त का वह भाग जिसमें वर्णन किये हुए प्रसङ्ग की समाप्ति सूचित की जाती है। यथा "इति श्रीमन् महाभारते आदि।

पुष्पिणी (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

पुष्पित (व० कृ०) १ पुष्पसंयुक्त। फूला हुआ। २ पूर्ण विकसित।

पुष्पिता (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

पुष्पिन् (वि०) फूलदार। फूलों वाला।

पुष्यः (पु०) १ कलियुग। २ पौषमास। ३ पुष्य नक्षत्र।

पुष्यलकः (पु०) १ कस्तूरी मृग। २ क्षपणक। चँवर लिये हुए जैन साधु। ३ खूंटा। कील।

पुस्तं (न०) १ गीली मिट्टी का पलास्तर। चित्रकारी। लीपना पोतना। २मिट्टी लगाने या खोदने आदि का काम। ३ लकड़ी या धातु की बनी कोई वस्तु। ४ पुस्तक। हाथ की लिखी पोथी। किताब।—कर्मन्, (न०) गारा की अस्तरकारी। चित्रकारी।

पुस्तक (न०) } पुस्तकः (पु०) } पुस्ती (स्त्री०) } किताब। हाथ की लिखी पोथी।

पू (धा० आत्म०) [पवते, पूयते, पुनाति, पुनीते, पूत, (णिजन्त) पावयति] १ पवित्र करना। माँजना। २ साफ करना। ३ भूसी अलग करना। फटकना। ४ प्रायश्चित्त करना। ५ लक्षण से पहचानना। ६ ईजाद करना। सोच विचार कर कोई बात नई पैदा करना।

पूगः (पु०) १ ढेर। समूह। संग्रह। २ संख्या। सभा। संघ। ३ सुपारी का पेड़। ४ स्वभाव। मिज़ाज़।

पूगं (न०) सुपारी फल।—पात्रं, (न०) १ पीकदान। पानदान।—पीटं—पीठं (न०) पीकदान।—फलं, (न०) सुपाड़ी।—वैरं, (न०) अनेक लोगों से शत्रुता।

पूज् (धा० उभय०) [पूजयति,—पूजयते, पूजित] १ पूजना। पूजन करना। सम्मान करना। सम्मान पूर्वक स्वागत करना

पूजक (वि०) [स्त्री०—पूजिका] पुजारी। सम्मान करने वाला।

पूजनं (न०) पूजा। अर्चा। सम्मान। प्रतिष्ठा। मान।—अर्ह, (वि०) पूज्य। पूजा के योग्य।

पूजित (व० कृ०) १ सम्मानित। २ पूज्य। ३ स्वीकृत। ४ सम्पन्न। ५ शिफारिश किया हुआ। प्रशंसित।

पूजिल (वि०) पूज्य। माननीय।

पूजिलः (पु०) देवता।

पूज्य (वि०) मान करने योग्य। पूजा करने योग्य।

पूज्यः (पु०) ससुर। पत्नी का पिता या पति का पिता।

पूण् (धा० उभय०) [पूणयति—पूणयते] एकत्र करना। जमा करना।

पूत (व० कृ०) १ पवित्र। शुद्ध। २ सूप से फटका हुआ। ३ प्रायश्चित्त करके पवित्र किया हुआ। ४ ईजाद किया हुआ। आविष्कार किया हुआ। ५ सड़ा हुआ। बुसा हुआ। बदबूदार।—आत्मन्, (वि०) साफ दिल का। (पु०) विष्णु का नामान्तर।—क्रतायी, (स्त्री०) इन्द्राणी। शची।—क्रतुः, (पु०) इन्द्र का नामान्तर।—तृणं, (न०) सफेद कुश।—द्रुः, (पु०) पलाश वृक्ष।—धान्यं, (न०) तिल।—पाप्मन्, (वि०) पाप से मुक्त।—फलः, (पु०) कटहल का वृक्ष।

पूतं (न०) सचाई।

पूतः (पु०) १ शङ्ख। २ सफेद कुश।

पूतना (स्त्री०) १ एक राक्षसी जो कंस की प्रेरणा से गोकुल में श्रीकृष्ण को मारने गयी थी, किन्तु

श्रीकृष्ण द्वारा स्वयं मारी गयी। २ राक्षसी।—अरिः,—सूदनः,—हन्, (पु०) श्रीकृष्ण।

पूति (वि०) सड़ा हुआ। बुसा हुआ। बदबूदार।—अण्डः, (पु०) कस्तूरी मृग।—काष्ठं, (न०) देवदारुवृक्ष।—काष्ठकः, (पु०) कटहल का वृक्ष।—गन्ध, (वि०) सड़ा। बुसा। दुर्गन्धयुक्त।—गन्धः, (पु०) १ सड़ाइन। बुसाइन। २ गन्धक।—गन्धि, (वि०) बदबूदार। सड़ा हुआ।—नासिक, (वि०) सड़ी हुई नाक वाला।—वक्त्र, (वि०) वह जिसके मुख से दुर्गन्ध आती हो।—व्रणं, (न०) पका हुआ फोड़ा।

पूतिः (स्त्री०) १ स्वच्छता। पवित्रता। (न०) १ मैला जल। २ पीप। मवाद।

पूतिक (वि०) सड़ा हुआ। बुसा हुआ। गंदा।

पूतिकं (न०) विष्ठा। मल।

पूतिका (स्त्री०) एक प्रकार की रुखरी।—मुखः, (पु०) दुपर्त्ता शङ्ख।

पून (वि०) नष्ट किया हुआ।

पूपः (पु०) पुआ। मालपुआ।

पूपला, **पूपली**, **पूपालिका**, **पूपाली**, **पूपिका** (स्त्री०) मालपुआ। पुआ।

पूयं (न०), **पूयः** (पु०) पीप। मवाद।—रक्तः, (पु०) १ नासिका का रोग विशेष। रक्तं, (न०) १ कचलोहू। २ नाक से पीप मिला हुआ रक्त का निकलना।

पूर् (धा० आत्म०) [पूर्यते, पूर्ण] १ भरना। पूर्ण करना। २ प्रसन्न करना। सन्तुष्ट करना।

पूरं (न०) धूप विशेष।—उत्पीडः, (पु०) जल की बाढ़।

पूरः (पु०) १ भरना। पूर्ण कर देना। २ सन्तुष्ट करना। प्रसन्न करना। अघाना। ३ उडेलना। ४ नदी या समुद्र के जल की बाढ़। ५ धार या बाढ़। ६ सरोवर। तालाब। ७ घाव का भरना या साफ करना। ८ एक प्रकार की रोटी या पूड़ी।

पूरक (वि०) १ पूरा करने वाला। सन्तुष्ट करने वाला। अघाने वाला।

पूरकः (पु०) नीबू या जभीरी का वृक्ष। २ पितृश्राद्ध में सब से पीछे दिया जाने वाला पिण्ड। ३ गुणक अङ्क।

पूरण (वि०) [स्त्री०—पूरणी] १ भरा हुआ। पूर्ण करने वाला। २ क्रमसूचक संख्या जैसे प्रथम, द्वितीय आदि। ३ अघाने वाला।—प्रत्ययः, (पु०) एक प्रत्यय जो किसी अंक में पीछे लगा देने से क्रम बतलावे जैसे दूसरा, तीसरा आदि।

पूरणं (न०) १ पूर्ति। २ परिपूर्ति। समाप्ति। २ फुलाव। सूजन। ३ पालन। (यथा वचनपालन) किसी काम को पूरा करने की क्रिया। ५ रोटी या पूड़ी विशेष। ६ मृतक कर्म में व्यवहृत होने वाली रोटी या पूड़ी। ७ वृष्टि। मेह। ८ ताना। नाव खींचने का रस्सा। ९ अंक गुणन।

पूरणः (पु०) १ पुल। बाँध। २ समुद्र।

पूरिका (स्त्री०) पूड़ी।

पूरित (व० कृ०) १ भरा हुआ। पूर्ण। २ छाया हुआ। ढका हुआ। ३ गुणा किया हुआ।

पूर्ण (व० कृ०) १ पूरित। भरा हुआ। २ तमाम। समूचा। कुल। ३ भरा पूरा। ४ पूर्ण किया हुआ। समाप्त किया हुआ। ५ बीता हुआ। गुज़रा हुआ। ६ सन्तुष्ट। अघाया हुआ। ७ शब्दकारी। झनझनाने या खनखनाने वाला। ८ बलिष्ट। दृढ़। ९ स्वार्थी।—अङ्कः, (पु०) पूरी संख्या। अभिन्न अङ्क।—अभिलाष (वि०) सन्तुष्ट। अघाया हुआ। आप्तकाम।—आनक, (न०) १ ढोल। नगाड़ा। २ नगाड़े का शब्द। ३ पात्र। ४ चन्द्रकिरण।—इन्दुः, (पु०) पूर्णचन्द्र।—उपमा, (स्त्री०) सर्वाङ्गपूर्ण उपमा जिसमें उपमान, उपमेय, साधारण धर्म और उपमा प्रतिपादक बातें हों।—ककुद्, (वि०) पूरे कुब्ब वाला।—काम, (वि०) आप्तकाम। कुम्भः, (पु०) १ भरा हुआ घड़ा। २ युद्ध का विशेष प्रकार। ३ दीवाल में घड़े के बराबर का सूराख।—पात्रं, (न०) १ अनाज का माप जो २५६ मुठियों के बराबर होता है। २ वक्स जिसमें भर कर उत्सवों पर नातेदार के पास सौगात भेजी

जाय। —बीजः, —बीजः, (पु०) नीबू। बिजौरा। —मासी, (स्त्री०) पूर्णिमा। पूर्णमासी।

पूर्णाकः (पु०) १ वृक्ष विशेष। २ रसोइया। ३ कुक्कुट। ताम्रचूड़।

पूर्णिमा, पूर्णिमासी (स्त्री०) उजियाले पाख की अन्तिम तिथि जिस दिन चन्द्रमा का मण्डल पूर्ण दिखलाई पड़ता है।

पूर्त (वि०) १ पूर्ण। पूरा। २ छिपा हुआ। ढका हुआ। ३ पोषित। रक्षित।

पूर्तं (न०) १ पूर्ति। २ पालन पोषण। ३ पुरस्कार। इनाम। ४ धर्मार्थ अथवा परोपकार के कार्य विशेष। पूर्त की परिभाषा इस प्रकार है:—

"वापीकूपतडागादि देवतायतनानि च।
अन्नप्रदानमारामः पूर्तमित्यभिधीयते॥"

पूर्तिः (स्त्री०) १ पूर्ण करने की क्रिया। २ समाप्ति। (वचन) पालन। ३ तृप्ति।

पूर्व (वि०) १ प्रथम। सब के आगे। २ पूर्वीय। पूर्व दिशा का। ३ पहिले का। ४ प्राचीन। पुरातन। ५ अगला। पूर्व वाला। ६ पूर्वकथित। ऊपर कहा हुआ। —अचलः, (पु०)—अद्रिः, (पु०) उदयाचल। —अपर, (वि०) १ पूर्वी पश्चिमी। २ पहला। अन्त का। ३ पूर्वकालीन और पश्चाद्वर्ती। पहला और अगला। ४ दूसरे से सम्बन्ध युक्त। अपरं,—(न०) १ जो आगे और पीछे हो। २ सम्बन्ध। प्रमाण और कोई विषय जिसे सिद्ध करना है। —अभिमुख, (वि०) पूर्व को मुख किये हुए। —अंबुधिः, (पु०) पूर्वी समुद्र। —अर्जित, (वि०) पूर्व कर्मों से उपार्जित। —अर्जितं (न०) पुश्तैनी जायदाद या सम्पत्ति। —अर्ध (न०)—अर्धः (पु०) पहला आधाभाग (शरीर का) ऊपरी भाग। —आवेदकः, (न०) मुद्दई (वादी)। आषाढ़ा,— (स्त्री०) २० वें नक्षत्र का नाम। इतर, —(वि०) उत्तरी-पूर्वी। —कर्मन्, (न०) १ पूर्व समय में किया हुआ कर्म। २ प्रथम किये जाने वाला कर्म। ३ कर्म जो पूर्वजन्म में किये हैं। —कल्पः, (न०) पहले के समय। —कायः, (पु०) १ जानवरों के शरीर का भाग। २ मनुष्य के शरीर का ऊपरी भाग। —कालः, (पु०) प्राचीन काल। —कालिका,—कालीन,—(वि०) प्राचीन। काष्ठा,—(स्त्री०) पूर्व दिशा। —कोटिः, (स्त्री०) पूर्वपक्ष। —गङ्गा, (स्त्री०) नरमदा नदी का नाम। —चोदित, (वि०) पूर्वकथित। पूर्व-वर्णित—ज्ञ, (वि०) १ प्रथम उत्पन्न। २ प्राचीन। पुरातन। ३ पूर्वी। —ज, (पु०) १ ज्येष्ठ भ्राता। २ बड़ी स्त्री का पुत्र। ३ पूर्वपुरुष। —जन्मन्,—(न०) पूर्वजन्म। (पु०) ज्येष्ठ भ्राता। —जा, (स्त्री०) बड़ी बहिन। —जातिः, (स्त्री०) पूर्व जन्म। —ज्ञानं, (न०) पूर्वजन्म का ज्ञान। —दक्षिण, (वि०) दक्षिण पूर्व का कोने वाला। —दक्षिणा, (स्त्री०) दक्षिण पूर्व। —दिक्पतिः,—(पु०) इन्द्र। दिनं, (न०) दोपहर के पहिले। —दिश्, (स्त्री०) पूर्व दिशा—दिष्टं,—(न०) भाग्य का लिखा हुआ। देवः,—(पु०) १ प्राचीन देवता। २ दैत्य या दानव। ३ पितृ। देशः,—(पु०) पूर्वीय देश अथवा भारतवर्ष का पूर्वीय भाग। पक्षः,—(पु०)। १पूर्व कोटि। २मास का पहला पखवारा। ३किसी तर्क के सम्बन्ध में प्रथम आपत्ति। प्रथम आपत्ति। ४ मुकद्दमा। अभियोग। पदं,—(न०) किसी समासान्त शब्द का प्रथम शब्द या किसी वाक्य का पूर्ण अंश। पर्वतः,—(पु०) उदयाचल। —पाञ्चालक, (वि०) पूर्वी पाञ्चाल से सम्बन्ध रखने वाला। —पाणिनीयाः, (पु० बहु०) पूर्व देश में रहने वाले पाणिनि के अनुयायी। —पितामहः, (पु०) पूर्वपुरुष। पुरखा। —पुरुषः, (पु०) १ ब्रह्मा। १ तीन पीढ़ियों में से कोई एक। (पितृ, पितामह-प्रपितामह) ३ पूर्व-पुरुष। —फल्गुनी, (स्त्री०) । ११ वाँ नक्षत्र। भाद्रपदा, —(स्त्री०) २५वाँ नक्षत्र। —भुक्ति, (स्त्री०) पहले का कब्ज़ा। —भून, (वि०) पहला। बीता हुआ। —मीमाँसा, (स्त्री०) हिन्दूदर्शन शास्त्र विशेष, जिसमें कर्मकाण्ड सम्बन्धी विषयों का निर्णय किया गया है। —रङ्गः, (पु०) वह गान या स्तुति जो किसी

अभिनय के आरम्भ में विघ्न प्रशमनार्थ नटों द्वारा गायी जाती है। —रात्रः, (पु०) रात्रि का प्रथम भाग।—रूपं, (न०) १ शीघ्र होने वाले परिवर्तन की सूचना। २रोगोत्पत्ति का लक्षण। २ आगम सूचक लक्षण। ३ आसरा।—वयस्, (वि०) युवा। जवान।—वर्तिन् (वि०) पहले का।—वादः, (पु०) व्यवहार शास्त्रानुसार वह अभियोग जो न्यायालय में उपस्थित किया जाय। पहला दावा। नालिश।—वादिन्, (पु०) वादी। मुद्दई। वृत्तं,— (न०) १ पहले का हाल २ पूर्व आचरण।—सक्थं, (न०) किसी वस्तु का ऊपरी भाग।—सन्ध्या, (स्त्री०) प्रातःकाल। भोर। तड़का।—सर, (वि०) आगे जाने वाला।—सागरः, (पु०) पूर्वीय समुद्र।—साहसः, (पु०) प्रथम या तीन बड़े भारी अर्थदण्डों में से एक।—स्थितिः, (स्त्री०)। पूर्वावस्था।

पूर्वं (न०) १ अगला भाग। (अव्यया०) पहले २ पेश्तर। आरम्भ में।

पूर्वः (पु०) पुरखा। पूर्वपुरुष।

पूर्वक (वि०) १ सहित। साथ। पूर्ववर्ती।

पूर्वकः (पु०) पूर्वपुरुष। पुरखा।

पूर्वंगम् (वि०) पहले जाने वाला। [ओर।

पूर्वतस् (अव्यया०) पूर्व दिशा में। पूर्व दिशा की

पूर्वत्र (अव्यया०) पहले के भाग में। पूर्व में।

पूर्ववत् (अव्यया०) पहिले की तरह।

पूर्विन् (वि०) [स्त्री०—पूर्विणी] पहिले का।

पूर्वीण (वि०) १ प्राचीन। पुरातन। २ पुश्तैनी। पुरखों की।

पूर्वेद्युस् (अव्यय०) १ अगले दिन। २ बीते हुए कल। ३ भोर में। सवेरे। दिन के पूर्वार्द्ध में। ४ बड़ी सवेरी।

पूल् (धा० पर०) [पूलति, पूलयति-पूलयते] ढेर करना। एकत्र करना। संग्रह करना।

पूलः } पूलकः } (पु०) मुट्ठा। बंडल। गट्ठा।

पूलिका (स्त्री०) पूड़ी।

पूषः } पूषकः } (पु०) शहतूत का पेड़।

पूषन् (पु०) [कर्त्ता-पूषा,-षणौ-षणः] सूर्य। —असुहृद्, (पु०) शिव का नामान्तर।—आत्मजः, (पु०) १ बादल। २ इन्द्र।—भासा, (स्त्री०) इन्द्रपुरी। अमरावती।

पृ (धा० आत्म०) [प्रियते, पृत] क्रियाशील होना। कामकाज में लगा रहना। मशगूल होना।

पृक्त (व० कृ०) १ मिला हुआ। मिश्रित। २ छुआ हुआ। संसर्गान्वित। संयुक्त।

पृक्तं (न०) धनदौलत। सम्पत्ति।

पृक्तिः (स्त्री०) स्पर्श। संसर्ग। युक्तता।

पृक्थं (न०) सम्पत्ति। धनदौलत।

पृच् (धा० आत्म) [पृक्ते, पृक्ण] १ संसर्ग में आना। जोड़ना। मिलाना। २ संमिश्रण होना। ३ संयोगान्वित होना। सन्तुष्ट करना। भरना। अघाना। ४ बढ़ाना। वृद्धि करना।

पृच्छकः (पु०) पूँछने वाला। जिज्ञासु।

पृच्छनम् (न०) जिज्ञासा। प्रश्न।

पृच्छा (स्त्री०) १ प्रश्न। जिज्ञासा। २ भविष्य सम्बन्धी प्रश्न।

पृज् (धा० आत्म०) [पृंक्ते] संसर्ग में आना। स्पर्श करना।

पृत् (स्त्री०) सेना।

पृतना (स्त्री०) १ सेना। २ सैन्यदल, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल सिपाही होते हैं। ३ मुठभेड़। युद्ध। लड़ाई।—साहः (पु०) इन्द्र का नामान्तर।

पृथ् (धा० उभय०) [पर्थयति, पर्थयते] १ बढ़ना। २ फैलना। ३ भेजना।

पृथक् (अव्यया०) १ अलग अलग। एकाकी। अकेला। २ भिन्न। जुदा।—आत्मता, (स्त्री०) १ विरक्ति। वैराग्य। २ भेद। अन्तर। निर्णय या फैसला।—आत्मन्, (वि०) भिन्न। अलहदा। जुदा।—आत्मिका, (स्त्री०) व्यक्तित्व। व्यक्तिगत अस्तित्व।—करणं, (न०) —क्रिया, (स्त्री०) अलग करने का काम।—कुल, (वि०) जुदे खन-दान का।—क्षेत्रः, (पु०) (बहु०) वे लड़के जो एक पिता, किन्तु भिन्न माताओं अथवा भिन्न भिन्न

वर्णों की माताओं की कोख से उत्पन्न हुए हों।—चर, (वि०) एकाकी जाने वाला।—जनः, (पु०) १ मूर्ख। बेवकूफ। २ नीच व्यक्ति। कमीना आदमी। पापी जन।—भावः, (पु०) अलहदगी। जुदापन। रूप,—(वि०) भिन्न प्रकार या जाति के।—विध, (वि०) भिन्न भिन्न। जुदा जुदा।—शय्या, (स्त्री०) अलग सोने वाला।—स्थितिः, (स्त्री०) भिन्न अस्तित्व।

पृथवी (स्त्री०) देखो पृथिवी।

पृथा (स्त्री०) पाण्डु राजा की दो रानियाँ थीं। उन दो में से कुन्ती का दूसरा नाम पृथा था।—जः,—तनयः,—सुतः,—सूनुः, (पु०) प्रथम तीन पाण्डवों का नाम, किन्तु विशेषकर अर्जुन का।—पतिः, (पु०) राजा पाण्डु।

पृथिका (स्त्री०) वृश्चिकादि जाति का शतपदविशिष्ट कोई जीव।

पृथिवी (स्त्री०) धरा। भूमि।—इन्द्रः,—ईशः, (पु०)—क्षित्, (पु०)—पालः,—पालकः,—भुज्,—भुजः,—शक्रः, (पु०) राजा।—तलं, (न०) धरातल। ज़मीन की सतह।—पतिः, (पु०) १ राजा। २ यमराज।—मण्डलः, (पु०)—मण्डलम् (न०) भूमण्डल।—रुहः, (पु०) वृक्ष। पेड़।—लोकः (पु०) भूलोक। मर्त्य लोक।

पृथु (वि०) [स्त्री०—पृथु या पृथ्वी] १ चौड़ा। विस्तृत। २ अधिक। विपुल। ३ बड़ा। महान्। ४ विस्तारित। ५ असंख्य। अगणित। ६ चतुर। तेज़। चालाक। ७ आवश्यक।

पृथुः (पु०) १ अग्नि। २ एक राजा का नाम। राजा वेणु का पृथु पुत्र था।

पृथुः (स्त्री०) अफीम। अहिफेन।—उदर, (वि०) बड़े पेटवाला। धमधूसर।—उदरः,—(पु०) मेढ़ा। मेष।—जघन,।—नितम्ब, बड़े चूतड़ों वाला। पत्रः, (पु०)—पत्र, (न०) १ लाल लहसन। प्रथ—यशस् (वि०) दूर दूर तक प्रसिद्ध।—रोमन्, (पु०) मछली।—श्री, (वि०) बहुत बड़ा। समृद्धिशाली।—श्रोणि, (वि०) मौटी कमर वाली।—सम्पद्, (वि०) धनी। धनवान्।—स्कन्धः, (पु०) शूकर। सुअर।

पृथुकं (स्त्री०) } चिड़वा। च्योरा। चिउरा।
पृथुकः (पु०) } (पु०) बच्चा।

पृथुका (स्त्री०) लड़की।

पृथुल (वि०) चौड़ा। लंबा। विस्तृत।

पृथ्वी (स्त्री०) १ धरा। भूमि। २ पृथिवी तत्व। ३ बड़ी इलायची। ४ एक छन्द का नाम।—ईशः,—पतिः,—पालः,—भुज्,—(पु०) राजा।—खातं, (न०) गुफा। खोह। माँद।—गर्भः, (पु०) गणेश का नाम।—गृहं, (न०) गुफा। खोह।—जः, (पु०) १ वृक्ष। पेड़। २ मङ्गल ग्रह।

पृथ्वीका (स्त्री०) १ बड़ी इलायची। २ छोटी इलायची।

पृदाकुः, (पु०) १ बिच्छू। २ चीता। ३ सर्प। छोटी जाति का ज़हरीला साँप। ४ वृक्ष। ५ हाथी। ६ तेंदुआ।

पृश्नि } (वि०) १ छोटा। थोड़ा। खर्वाकार २
पृष्णि } सुकोमल। निर्बल। नाज़ुक। चित्तीदार। धब्बादार।

पृश्निः (पु०) १ किरण। २ ज़मीन। भूमि। ३ तारागणयुक्त आकाश। ४ कृष्णमाता देवकी का दूसरा नाम।—गर्भः,—धरः,—भद्रः, (पु०) कृष्ण के नामान्तर।—शृङ्गः, (पु०) १ कृष्ण का नामान्तर। २ गणेश का नामान्तर।

पृश्निका
पृष्णिका
पृश्नी
पृष्णी } (स्त्री०) जलकुम्भी। एक पौधा जो जल में उत्पन्न होता है।

पृषत् (न०) जल या अन्य किसी तरल पदार्थ की बूंद।—अंश,—अश्वः, (पु०) १ पवन। हवा। २ शिव का नामान्तर।—आज्यं, (न०) दही में मिला हुआ घी।—पतिः, [=पृषतांपतिः] पवन। हवा।—बलः, (पु०) पवनदेव के घोड़े का नाम।

पृषतः (पु०) १ चित्तीदार हिरन। २ जलबिन्दु। ३ धब्बा। चिन्ह।—अश्वः, (पु०) हवा। पवन।

पृषत्कः (पु०) तीर। बाण।

पृषंतिः } (पु०) जलविन्दु ।
पृषन्तिः }

पृषाकरा (स्त्री०) छोटा पत्थर ।

पृषातकम् (न०) घी और दही का संमिश्रण ।

पृषोदरः (पु०) पवन । हवा । [हुआ ।

पृष्ट (व० कृ०) १ जिज्ञासित । पूछा हुआ । २ छिड़का

पृष्टाहायनः (पु०) १ अन्न विशेष । २ हाथी ।

पृष्टिः (स्त्री०) जिज्ञासा । प्रश्न । सवाल ।

पृष्ठं (न०) १ पीठ । पिछला भाग । पीछे का हिस्सा । २ जानवर की पीठ । ३ सतह । तल । ऊपरी भाग । ४ पीठ या दूसरी ओर (किसी पत्र-या दस्तावेज़ का) । ५ समतल छत्त । ६ पुस्तक का पन्ना ।—अस्थि, (न०) मेरुदण्ड ।—गोपः, —रक्षः, (पु०) वह सिपाही जो किसी योद्धा की पीठ की रक्षा पर नियुक्त हो ।—ग्रन्थि, (वि०) कुबड़ा ।—चक्षुस्, (पु०) दिग्दर्शिनी पत्रिका । ताश ।—तल्पनं. (न०) हाथी की पीठ की रग विशेष ।—दृष्टिः, (स्त्री०) १ कैकड़ा । २ भालू । रीछ ।—फलं, (न०) किसी पिंड के ऊपरी भाग का क्षेत्रफल ।—भागः, (पु०) पीठ ।—मांसं, (न०) १ पीठ का माँस । २ पीठ की गुमड़ी ।—मांसाद,—मांसादन, (वि०) चुगलख़ोर ।—मांसादम्,—मांसादनम्, (न०) चुगली ।—यानं, (न०) सवारी (घोड़े के पीठ की)—वास्तु. (न०) मकान का ऊपर का तल्ला ।—वाह्, (पु०)—वाह्यः, (पु०) बैल जिसकी पीठ पर वोझा लादा जाता हो ।—शय, (वि०) पीठ पर सोने वाला ।—श्रृङ्ग, (पु०) जंगली बकरा ।—श्रृङ्गिन्, (पु०) १ मेष । मेढ़ा । २ भैंसा । ३ हिजड़ा । ४ भीम का नामान्तर ।

पृष्ठकं (न०) पीठ ।

पृष्ठतस् (अव्य०) १ पीछे । पीठ पीछे । पीछे से । २ पीठ की ओर । पीछे की ओर । ३ पीठ पर । ४ पीठ के पीछे । चुपचाप । गुपचुप ।

पृष्ठ्य (वि०) पीठ सम्बन्धी ।

पृष्ठ्यः (पु०) वह घोड़ा जिसकी पीठ पर वोझा लादा जाता हो ।

पृष्णिः (स्त्री०) ऐंड़ी ।

पॄ (धा० पर०) [पिपर्ति, पृणाति, पूर्णा] १ भरना । भर देना । पूरा कर देना । २ परिपूर्ण करना । (वचन) पालन करना । (आशा) पूरी करना । फूँक से फूल जाना या फूकना । ४ तृप्त करना । अघाना । ५ पालन पोषण करना ।

पेचकः (पु०) १ उल्लू । हाथी की पूँछ की जड़ । ३ सेज । शय्या । ४ बादल । ५ जूँ । चीलहर ।

पेचकिन् (पु०) } हाथी ।
पेचिलः (पु०) }

पेंजूषः - पेज्जूषः (पु०) कान का मैल या ठेठ ।

पेटं (न०) } १ पेटी । संदूक । टोकरा । थैला ।
पेटः (पु०) } २ समूह । (पु०) फैली हुई उँग-लियों सहित खुला हाथ ।

पेटकं (न०) } १ टोकरी । पिटारा । थैला ।
पेटकः (पु०) } बोरा । २ समूह । समुदाय ।

पेटाकः (पु०) बैग । थैला । पेटी । टोकरा ।

पेटिका } (स्त्री०) छोटा थैला । टोकरी ।
पेटी }

पेडा (स्त्री०) बड़ा थैला ।

पेय (वि०) १ पीने योग्य । २ सोंधा । स्वादिष्ट । रुचिकर ।

पेयं (न०) शर्बत ।

पेया (स्त्री०) माँड । लाजाफाँट ।

पेयुः (पु०) १समुद्र । २ अग्नि । ३ सूर्य ।

पेयूषम् (न०) } १अमृत । सुधा । २उस गौ का दूध
पेयूषः (पु०) } जिसको ब्याये ७ दिन से अधिक न हुए हों । ३ ताज़ा घी ।

पेरा (स्त्री०) वाद्ययंत्र विशेष । बाजा ।

पेल् (धा० पर०) [पेलति, पेलयति—पेलयते] १ जाना । २ काँपना ।

पेलं (न०) } अण्डकोष ।
पेलकः (पु०) }

पेलव (वि०) १ सुकुमार । सुकुमोल । मिहीन । २ पतला । ३ दुबला ।

पेलिः—पेलिन् (पु०) घोड़ा ।

पेशल } १ कोमल । मुलायम । सुकुमार ।
पेषल } (वि०) २ दुबला । पतला । ३ मनो-
पेसल } हर । सुन्दर । ४ विशेष । चतुर । निपुण । ५ मुल्फ़ची । छली । कपटी ।

पेशिः } (स्त्री०) १ गोश्त का टुकड़ा। माँसखण्ड
पेशी } २ माँस का गोला या पिण्ड। ३ अंडा। ४ रग। पट्ठा। ५ गर्भाधान होने के कुछ ही दिनों बाद का कच्चा गर्भपिण्ड। ६ खिलने वाली कली (पु०) इन्द्र का वज्र। ७ एक प्रकार का बाजा।—कोशः—कोषः, (पु०) पक्षी का अँडा।

पेषः (पु०) पसीना। कूटना। कुचरना।

पेषणं (न०) १ पसीना। चूर चूर करना। २ खलिहान में वह जगह जहाँ दाँय चलाई जाती है। ३ खल और लोढ़ा। कोई भी कूटने पीसने का यंत्र।

पेषणिः (स्त्री०) }
पेषणी (स्त्री०) } चक्की का पाट। सिल। लोढ़ा।
पेषाकः (पु०) }

पेस्वर (वि०) १ गमनकारी। २ नाशकारी।

पै (धा० पर०) (पायति) सुखाना। कुम्हलाना।

पैंगिः } (पु०) यास्क का नाम विशेष।
पैङ्गिः }

पैंजूषः } (पु०) कर्ण। कान।
पैञ्जूषः }

पैठर (वि०) [स्त्री०—पैठरी] किसी पात्र में उबाला हुआ।

पैठीनसिः (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

पैंडिक्य, पैण्डिक्यम् }
पैंडिन्यं, पैण्डिन्यम्, } (न०) भिखारीपना।

पैतामह (वि०) [स्त्री०—पैतामही] बाबा सम्बन्धी। पितामह या बाबा से प्राप्त।

पैतामहाः (पु० बहु०) पुरखा। पूर्वपुरुष।

पैतामहिक (वि०) [स्त्री०—पैतामहिकी] पितामह सम्बन्धी।

पैतृक (वि०) [स्त्री०—पैतृकी] १ पिता सम्बन्धी। २ पुश्तैनी। परंपरागत प्राप्त। ३ पितरों का।

पैतृकं (न०) पुरखों का श्राद्ध कर्म।

पैतृमत्यः (पु०) १ कानीन। अविवाहिता स्त्री का पुत्र। २ किसी प्रसिद्धपुरुष का पुत्र।

पैतृष्वसेयः }
पैतृष्वस्रीयः } (पु०) चाची या काकी का पुत्र।

पैत्त (वि०) [स्त्री०—पैत्ती] } १ पित्त का।
पैत्तिक (वि०) [स्त्री०—पैत्तिकी] } पित्त सम्बन्धी।

पैत्र (वि०) [स्त्री—पैत्री] १ पैतृक। पुश्तैनी। २ पितरों का।

पैत्रम् (न०) तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान।

पैलव (वि०) [स्त्री०—पैलवी] पिलुआ की लकड़ी का बना हुआ।

पैशल्यं (न०) नम्रता। नरमी। कोमलता।

पैशाच (वि०) [स्त्री०—पैशाची] पैशाचिक। नारकीय।

पैशाचः (पु०) १ आठ प्रकार के विवाहों में से आठवाँ या निकृष्ट श्रेणी का विवाह। २ एक प्रकार का पिशाच वा राक्षस।

पैशाचिक (वि०) १ नारकीय। २ शैतानी। राक्षसी।

पैशाची (स्त्री०) १ किसी धार्मिक विधान के समय बनाया हुआ नैवेद्य। २ रात। ३ एक प्रकार की निकृष्ट प्राकृत बोली।

पैशुनं } (न०) १ चुगली। पीठ पीछे निन्दा।
पैशुन्यम् } २ गुंडई। बदमाशी। ३ दुष्टता।

पैष्ट (वि०) [स्त्री०—पैष्टी] आटा या पिठी का बना हुआ।

पैष्टिक (वि०) [स्त्री०—पैष्टिकी] आटा या पिठी का बना हुआ।

पैष्टिकम् (न०) १ कचौंडियाँ। २ अनाज से खींची हुई मदिरा।

पैष्टी (स्त्री०) अनाज को सड़ाकर बनाया हुआ मद्य।

पोगंड } (वि०) १ पाँच से सोलह वर्ष तक की
पोगण्ड } अवस्था का। २ वह जिसका कोई अंग कम या विकृत हो। ३ भौंडा। भद्दा। बदशक्ल।

पोगंडः, } (पु०) पाचवीं से सोलहवीं वर्ष तक
पोगण्डः } के भीतर का बालक।

पोटः (पु०) घर की नीव।—गालः, (पु०) १ एक प्रकार का नरकुल। २ काँस। ३ मछली विशेष।

पोटकः (पु०) नौकर।

पोटा (स्त्री०) १ मरदानी औरत। मर्दों के चिन्ह दाढ़ी मूछ आदि रखने वाली स्त्री। ३ हिजड़ा।

आख्ता । ख़स्सी । वधिया । ३ नौकरानी । चाकरानी ।

पोटी (स्त्री०) वड़ा घड़ियाल ।

पोट्टलिका, पोट्टली } (स्त्री०) पुटरिया । पोटरी । पैकट । पारसल । गट्ठा । गट्ठर ।

पोतः (पु०) १ किसी भी जानवर का बच्चा । २ दस वर्ष की उम्र का हाथी । ३ नाव । वेड़ा । जहाज़ । ४ वस्त्र । कपड़ा । ५ वृक्ष का अँखुआ । ६ वह स्थल जहाँ घर हो ।—आच्छादनं (न०) तंबू । कनात ।—आधानं, (न०) छोटी मछली का बच्चा ।—धारिन्, (पु०) जहाज़ का मालिक ।—भङ्गः, (पु०) जहाज़ का डूबना । —रक्षः, (पु०) नाव का डाँड ।—वणिज्, (पु०) व्यापारी जो समुद्र मार्ग से गमनागमन कर व्यापार करे ।—वाहः, (पु०) माझी । मल्लाह । केवट ।

पोतकः (पु०) १ जानवर का बच्चा । २ छोटा वृक्ष । ३ वह भूखण्ड जिस पर घर बना हो ।

पोतासः (पु०) कपूर ।

पोतृ (पु०) यज्ञ कराने वाले सोलह ब्राह्मणों में से एक जिसको याज्ञिक भाषा में "ब्रह्मन" कहते हैं ।

पोत्या (स्त्री०) नावों का समूह ।

पोत्रं (न०) १ सुअर का थूथन या खाँग । २ वज्र । ३ नाव । जहाज़ । ४ हल की फाल । ५ वस्त्र । ६ यज्ञपात्र विशेष जो पोत नामक याजक के पास रहता है । पोता नामक याजक का पद ।—आयुधः, (पु०) शूकर । सुअर ।

पोत्रिन् (पु०) शूकर । सुअर ।

पोलः (पु०) १ ढेर । २ आयतन । आकार ।

पोलिका, पोली } (स्त्री०) गेहूँ के आटे की पूड़ी ।

पोलिंदः, पोलिन्दः } (पु०) जहाज़ का मस्तूल ।

पोषः (पु०) पालन पोषण । परवरिश ।

पोषयित्नुः (पु०) कोमल ।

पोषितृ (वि०) पालन पोषण करने वाला । (पु०) खिलाने वाला । परवरिश करने वाला । रक्षक ।

पोषिन्, पोष्टृ } (वि०) पालन पोषण कर्त्ता । खिलाने पिलाने वाला । (पु०) पालने पोसने वाला । रक्षक ।

पोष्य (वि०) १ पालनीय । पालने योग्य । २ भली प्रकार पाला पोसा हुआ ।—पुत्र, —सुतः, (पु०) दत्तक या गोद लिया हुआ ।—वर्गः, (पु०) माता, पिता गुरु, पुत्र, पत्नी, सन्तान, अभ्यागत और शरणागत "पोष्यवर्ग में हैं ।

पौंश्चलीय (वि०) [स्त्री०—पौंश्चलीया] वेश्या सम्बन्धी ।

पौंश्चल्यं (न०) वेश्यापन । कुलटापन ।

पौंसवनं (न०) देखो —"पुंसवन" ।

पौंस्न (वि०) [स्त्री०—पौंस्नी] १ मानव योग्य । २ मानवता । मर्दानगी ।

पौंस्नं (न०) मनुष्यता । मर्दानगी ।

पौगंड, पौगण्ड } [स्त्री०—पौगण्डी] लड़कपन ।

पौगंडम्, पौगण्डम् } (न०) लड़कपन । (पाँच से सोलह वर्ष तक की अवस्था ।)

पौंड्र, पौण्ड्रः } (पु०) १ एक देश का नाम । २ उस देश के राजा या वाशिंदे का नाम । ३ गन्ना या ईख विशेष । ४ माथे पर का तिलक । ५ भीम के शङ्ख का नाम ।

पौंड्रकः, पौड्रकः } (पु०) १पौंड़ा । गन्ना । २ वर्णसङ्कर जाति विशेष ।

पौतवं (न०) एक माप ।

पौत्तिकं (न०) एक प्रकार का शहद ।

पौत्र (वि०) [स्त्री०—पौत्री] पुत्र सम्बन्धी या पुत्र से निकला हुआ ।

पौत्रः (पु०) पुत्र का पुत्र । नाती । पोता ।

पौत्री (स्त्री०) नातिन । पोती ।

पौत्रिकेयः (पु०) लड़की का लड़का जो अपने नाना की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो ।

पौनःपुनिक (वि०) [स्त्री०—पौनःपुननिकी] वार वार होने वाला । अक्सर दुहराया हुआ ।

पौनःपुन्यं (न०) प्रायः या सदैव पुनरावृत्त ।

पौनरुक्तं, पौनरुक्त्यं } (न०) १ वारवार दुहराने की क्रिया । २ व्यर्थता । फालतूपना ।

पौनर्भव (वि०) १ उस विधवा सम्बन्धी, जिसने दूसरे पति के साथ विवाह किया हो। २ दुहराया हुआ।

पौनर्भवः (पु०) १ पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र। स्मृतियों में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक। २ किसी स्त्री का दूसरा पति।

पौर (वि०) [स्त्री०—पौरी] नगर या कस्बा सम्बन्धी।

पौरः (पु०) नागरिक। नगरनिवासी।—अंगना,—योषित्, (स्त्री०)—स्त्री, (स्त्री०) नगरवासिनी स्त्री।—जानपद, (वि०) नगर या देहात से सम्बन्धयुक्त।—जानपदाः, (पु० बहु०) देहाती और नगर का। —वृद्धः, (पु०) नगर या प्रतिष्ठित व्यक्ति विशेष।

पौरकं (न०) १ घर के समीप का उद्यान। २ नगर समीपस्थ बाग।

पौरंदर } (वि०) [स्त्री०—पौरन्दरी] इन्द्र
पौरन्दर } सम्बन्धी। इन्द्र से निकला हुआ।

पौरंदरं }
पौरन्दरं } (न०) ज्येष्ठा नक्षत्र।

पौरव (वि०) [स्त्री०—पौरवी] पुरु से आया हुआ। पुरु सम्बन्धी।

पौरवः (पु०) १ पुरु की सन्तान। २ उत्तरी भारत के एक प्रान्त विशेष का तथा उस प्रान्त के शासक अथवा अधिवासियों का नाम।

पौरवीय (वि०) [स्त्री०—पौरवीयी] पौरव में अनुरक्त।

पौरस्त्य (वि०) १ पूर्वी। २ सब से आगे का। ३ प्रथम। पूर्व का।

पौराण (वि०) [स्त्री०—पौराणी] १ भूतकाल का। पुरातन काल का। प्राचीन। आदि का। २ पुराण सम्बन्धी। पुराण से निकला हुआ।

पौराणिक (वि०) [स्त्री०—पौराणिकी] १ प्राचीन। पुरातन। २ पुराण सम्बन्धी। ३ इतिहास में निष्णात।

पौराणिकः (पु०) पुराण-पाठक।

पौरुष (वि०) [स्त्री०—पौरुषी] १ मानव सम्बन्धी। मानवी। २ मरदानगी से।

पौरुषः (पु०) उतना बोझ जितना कि एक आदमी ले जा सके।

पौरुषी (स्त्री०) स्त्री। औरत।

पौरुषं (न०) १ मानवी कर्म। मनुष्य का कर्म। उद्योग। प्रयत्न। २ वीरता। बहादुरी। विक्रम। पराक्रम। साहस। ३ पुंसत्व। ४ वीर्य। ५ लिङ्ग। ६ मनुष्य की पूरी ऊँचाई। पुरसा।

पौरुषेय (वि०) [स्त्री०—पौरुषेयी] पुरुष सम्बन्धी। पुरुष का। २ पुरुषकृत। आदमी का किया हुआ। ३ आध्यात्मिक।

पौरुषेयः (पु०) १ पुरुषवध। २ मनुष्य समूह। ३ रोजंदारी पर काम करने वाला मज़दूर। ४ पुरुष का कर्म। मानव कर्म।

पौरुष्यम् (न०) मनुष्यता। साहस। वीरता।

पौरोगवः (पु०) पाकशालाध्यक्ष। राजा की पाकशाला का अध्यक्ष।

पौरोभाग्यं (न०) १ दोषदर्शन। २ ईर्ष्या।

पौरोहित्यं (न०) पुरोहिताई। पुरोहित का कर्म।

पौर्णमास (वि०) [स्त्री०—पौर्णमासी] पूर्णिमा सम्बन्धी।

पौर्णमासः (पु०) एक याग या इष्टिका जो पूर्णिमा के दिन होती है।

पौर्णमासी }
पौर्णमी } (स्त्री०) पूर्णिमा। पूरनमासी।

पौर्णमास्यं (न०) पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ विशेष।

पौर्णिमा (स्त्री०) पूर्णमासी।

पौर्तिक (वि०) [स्त्री०—पौर्तिकी] पूर्तसाधक कर्म। परोपकार के कर्म।

पौर्व (वि०) [स्त्री०—पौर्वी] १ भूतकाल सम्बन्धी। २ पूर्व दिशा सम्बन्धी। पूर्वी।

पौर्वदेहिक } (वि०) [स्त्री०—पौर्वदेहिकी]
पौर्वदैहिक } पूर्वजन्म सम्बन्धी। पूर्वजन्म कृत।

पौर्वपदिक (वि०) [स्त्री०—पौर्वपदिक] समास का प्रथम पद।

पौर्वापर्यम् (न०) पहले और पीछे का सम्बन्ध। क्रम। सिलसिला।

पौर्वाह्णिक (वि०) [स्त्री०—पौर्वाह्णिकी] पूर्वाह्ण सम्बन्धी।

पौर्विक (वि०) [स्त्री०—पौर्विकी] १ पहिले का। अगला। पूर्व का। २ पैतृक। ३ पुरातन। प्राचीन।

पौलस्त्यः (पु०) १ रावण का नामान्तर। २ कुबेर का नामान्तर। ३ विभीषण का नामान्तर। ४ चन्द्रमा।

पौलिः (पु० स्त्री०) } पूड़ी।
पौली (स्त्री०) }

पौलोमी (स्त्री०) शची। इन्द्राणी। —सम्भवः, (पु०) जयन्त का नामान्तर।

पौषः (पु०) पूस मास।

पौषी (स्त्री०) पूसमास की पूर्णिमा।

पौष्कर } (वि०) [स्त्री० पौष्करी या
पौष्करक } पौष्करकी] नीलकमल सम्बन्धी।

पौष्करिणी (स्त्री०) सरोवर जिसमें कमल हों।

पौष्कलः (पु०) अनाज विशेष।

पौष्कल्यं (न०) १ आधिक्य। अधिकता। २ पूर्ण वृद्धि।

पौष्टिक (वि०) [स्त्री०—पौष्टिकी] पुष्टिकारक। पुष्ट करने वाला। बलवीर्यदायक।

पौष्णं (न०) रेवती नक्षत्र।

पौष्प (वि०) [स्त्री०—पौष्पी] पुष्प सम्बन्धी। फूलों का। फूलों से निकला हुआ। फूलदार।

पौष्पी (स्त्री०) पटना नगर का नामान्तर।

प्याट् (अव्य०) हो, अहो कहकर पुकारने के लिये व्यवहृत होने वाला अव्यय विशेष।

प्याय् (धा० आत्म०) [प्यायते, प्यान, या पीन] बढ़ना। बाढ़ आना।

प्यायनम् (न०) उन्नति। बाढ़।

प्यायित (वि०) १ वृद्धि को प्राप्त। उन्नत। २ मोटा पड़ा हुआ। ३ बलिष्ट। तरोताज़ा।

प्यै (धा० आ०) [प्यायते, पीन] १ बढ़ना। वृद्धि को प्राप्त होना। २ पूर्ण हो जाना।

प्र (अव्यया०) १ जब यह उपसर्ग किसी क्रिया में लगाया जाता है, तब इसका अर्थ होता है आगे, सामने, पेश्तर, पहले, आगे की ओर, यथा प्रगम, प्रस्था आदि। २ विशेषणवाची शब्दों में लगाने से इसका अर्थ होता है — बहुत, अत्यधिकता से, अत्यधिक। यथा प्रकृष्ट। प्रमत्त आदि। (इ) संज्ञावाची शब्दों के पूर्व लगाने पर इसका अर्थ होता है:—

(क) आरम्भ। प्रारम्भ। यथा—प्रस्थान।

(ख) लबाई। यथा—प्रवालमूषिक।

(ग) बल। यथा—प्रभु।

(घ) वनिष्टता। अत्याधिक्य। यथा—प्रकर्ष। प्रवाद।

(ङ) उद्भव स्थान। निकास। यथा—प्रभव। प्रपौत्र।

(च) सम्पूर्णता। पूर्णता। यथा—प्रभुक्तमन्नं।

(छ) राहित्य। वियोग। विना। यथा—प्रोषिता।

(ज) जुदा। यथा—प्रजु।

(झ) उत्तमता। यथा—प्राचार्यः।

(ञ) पवित्रता। यथा—प्रसन्नजल।

(न) अभिलाषा। यथा—प्रार्थना।

(थ) अवसान। यथा—प्रगम।

(ठ) सम्मान। प्रतिष्ठा। यथा—प्राञ्जलि।

(ध) विशिष्टता। यथा—प्रवाल। प्रपल।

प्रकट (वि०) १ जाहिर। प्रत्यक्ष। २ खुला। बे-परदा। सर्वसाधारण का। ३ जो दिखलाई पड़े।

प्रकटं (अव्यया०) साफ तौर से। प्रत्यक्ष रीत्या। —प्रीतिवर्द्धनः, (पु०) शिव जी।

प्रकटनम् (न०) प्रकट या प्रत्यक्ष होने की क्रिया।

प्रकटित (व० कृ०) १ प्रकट किया हुआ। प्रत्यक्ष किया हुआ। खोला हुआ। २ सर्वसाधारण के सामने रखा हुआ। ३ साफ।

प्रकंपः } (पु०) कँपकँपी। थरथराहट।
प्रकम्पः }

प्रकंपन } (वि०) कँपाने वाला। हिलाने वाला।
प्रकम्पन }

प्रकंपनं } (न०) अत्यधिक कँपकँपी या थरथराहट।
प्रकम्पनम् }

प्रकंपनः } (पु०) १ पवन। आँधी। २ नरक
प्रकम्पनः } विशेष।

प्रकरं (न०) अगर की लकड़ी।

प्रकरः (पु०) १ ढेर। समूह। भीड़। संग्रह। २ गुल-दस्ता। ३ साहाय्य। सहायता। मैत्री। ४ चलन।

प्रथा । ५ सम्मान । ६ बरजोरी हरण । बह-कावा फुसलाहट ।

प्रकरणम् (न०) १ किसी विषय को समझने या समझाने के लिये उस पर वादविवाद करना । जिक्र करना । २ विषय । प्रसङ्ग । ३ किसी ग्रन्थ के अन्तर्गत छोटे छोटे भागों में से कोई भाग । अध्याय । ४ अवसर । मौका । ५ आरम्भिक वक्तव्य । मुखबन्ध । ७ दृश्य काव्य के अन्तर्गत रूपक के दस भेदों में से एक ।

प्रकरणिका, प्रकरणी (स्त्री०) नाटिका ।

प्रकरिका (स्त्री०) दृश्यकाव्य का स्थल विशेष जो उसमें लगा दिया जाता है और जो यह बतलाता है कि, आगे क्या होने वाला है ।

प्रकरी (स्त्री०) १ नाटक के किसी दो अकों के बीच का वह अंश जिसमें आगे होने वाली घटना की सूचना दी जाती है । २ नटों की पोशाक । एक्टरों की ड्रेस । ३ मैदान । ४ चौराहा । ५ गान विशेष ।

प्रकर्षः (पु०) १ उत्तमता । प्रसिद्धि । उत्कृष्टता । २ अधिकता । बहुतायत । ३ बल । ताकत । ४ केवलत्व । ५ लबाई । दीर्घीकरण ।

प्रकर्षणम् (न०) १ खींच लेने की क्रिया । २ हल जोतने की क्रिया । ३ अवधि । प्रसार । ४ उत्कर्षता । उत्कृष्टता । ५ विकलता । चित्त विक्षेप । भ्रान्ति ।

प्रकला (स्त्री०) एक कला । (समय) का साठवाँ भाग ।

प्रकल्पना (स्त्री०) निश्चित करना । स्थिर करना ।

प्रकल्पित (व० कृ०) १ बनाया हुआ । किया हुआ । निर्माण किया हुआ । २ निश्चित किया हुआ । निर्दिष्ट किया हुआ ।

प्रकल्पिता (स्त्री०) एक प्रकार की पहेली या बुझौअल ।

प्रकांडं, प्रकाण्डम् (न०), प्रकांडः, प्रकाण्डः (पु०) १ वृक्ष का तना । स्कन्ध । २ डाली । शाखा । (समास के अन्त में) अपनी जाति में सर्वोत्कृष्ट । ३ बाँह का ऊपरी भाग ।

प्रकांडकः, प्रकाण्डकः (पु०) देखो प्रकाण्ड ।

प्रकांडरः, प्रकाण्डरः (पु०) वृक्ष । पेड़ ।

प्रकाम (पु०) १ प्रेमासक्त । अत्याधिक । बहुत । अघाया हुआ ।—भुज्, (वि०) अघाकर खाने वाला ।

प्रकामः (पु०) अभिलाषा । आनन्द । सन्तोष ।

प्रकामं (अव्यया०) १ अत्यधिक । अत्यधिकता से । २ पर्याप्तरूप से । कामनानुसार । ३ स्वेच्छानुसार । रज़ामंदी से ।

प्रकारः (पु०) १ ढंग । तौर तरीक़ा । प्रणाली । तरह । भाँति । २ भेद । क़िस्म । ३ साम्य । सादृश्य । तुलना । ४ विशेषता । विशिष्टता ।

प्रकाश (वि०) १ चमकीला । भड़कीला । चमकदार । २ सुस्पष्ट । प्रत्यक्ष । ३ सतेज । उज्ज्वल । विशद । स्पष्ट । प्रसिद्ध । प्रख्यात । प्रकट । खुला हुआ । ६ स्थान जिस पर के वृक्ष काट कर साफ़ कर दिये गये हों । मैदान । ७ फूला हुआ । बढ़ा हुआ । ८ मानों । जैसा । सदृश ।—आत्मक, (वि०) चमकीला । उज्ज्वल ।—आत्मन्, (वि०) चमकीला । उज्ज्वल । (पु०) १ शिवजी का नामान्तर । २ सूर्य ।—इतर, (वि०) अदृश्य । जो देख न पड़े ।—क्रयः, (पु०) खुलंखुल्ला खरीद ।—नारी (स्त्री०) रंडी । वेश्या । छिनाल ।

प्रकाशं (अव्यया०) १ खुलंखुल्ला । साफ़ तौर पर । २ चिल्ला कर ।

प्रकाशः (पु०) १ रोशनी । उजियाला । चमक । उज्ज्वलता । आब । आभा । २(आलं०) व्याख्या । (यथा काव्यप्रकाश) ३ धूप । घाम । ४ प्राकट्य । दर्शन । ५ कीर्ति । नामवरी । ख्याति । गौरव । ६ मैदान । ७ सुनहला दर्पण । ८ किसी ग्रन्थ का अध्याय । परिच्छेद ।

प्रकाशक (वि०) [स्त्री०—प्रकाशिका] १ प्रकट करने वाला । दिखलाने वाला । २ व्यक्त करने वाला । निर्देश । ३ व्याख्या करने वाला । ४ चमकीला । उज्ज्वल । ६ प्रसिद्ध । विख्यात ।

प्रकाशकः (पु०) १ सूर्य । २ आविष्कारकर्त्ता। खोजी । ३ प्रसिद्ध करने वाला जैसे ग्रन्थ-प्रकाशक। —ज्ञातृ, (पु०) मुर्गा ।

प्रकाशन (वि०) प्रकट करने वाला । प्रसिद्ध करने वाला ।

प्रकाशनं (न०) प्रकाशित करने का काम । प्रकाश में लाने का काम।

प्रकाशनः (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

प्रकाशित (व० कृ०) १ प्रकट किया हुआ । प्रसिद्ध किया हुआ । २ चमकता हुआ । जिसमें से प्रकाश निकल रहा हो । ३ प्रत्यक्ष । जो देख पड़े । स्पष्ट ।

प्रकाशिन् (वि०) साफ । उज्ज्वल । चमकीला ।

प्रकिरणं (न०) बखेरना । छिटकाना ।

प्रकीर्ण (व० कृ०) १ बिखरा हुआ । छिटका हुआ । २ फैला हुआ । प्रकाशित । प्रचारित । ३ लहराता हुआ । हिलता हुआ । ४ अस्तव्यस्त । ढीला ढाला । खुले हुए (जैसे केश) । ५ असलग्नता । असम्बद्धता । ६ उद्विग्न । घबड़ाया हुआ । ७ फुटकर । मिलाजुला ।

प्रकीर्णं (न०) १ फुटकल वस्तुओं का संग्रह । २ अध्याय जिसमें फुटकल नियमों का संग्रह हो ।

प्रकीर्णक (वि०) बिखरा हुआ ।

प्रकीर्णकं (न०) } १ चँवर । (पु०) घोड़ा ।
प्रकीर्णकः (पु०) } (न०) १ फुटकर अध्याय ।

प्रकीर्तनम् (न०) १ घोषणा । २ प्रशंसा करना । तारीफ करना ।

प्रकीर्तिः (स्त्री०) १ नामवरी । प्रशंसा । २ ख्याति । प्रसिद्धि । घोषणा ।

प्रकुंचः } (पु०) आठ तोले या एक पल का माप ।
प्रकुञ्चः }

प्रकुपित (व० कृ०) १ अत्यन्त क्रुद्ध । २ उत्तेजित ।

प्रकुलं (न०) सुन्दर शरीर । सुडौल बदन ।

प्रकूष्माण्डी (स्त्री०) दुर्गा का नामान्तर ।

प्रकृत (व० कृ०) १ सुसम्पन्न । २ आरम्भित । शुरू किया हुआ । ३ नियुक्त किया हुआ । व्यस्त किया हुआ । ४ असली । यथार्थ । ५ किसी विषय को वादविवाद का विषय बनाया हुआ । विचाराधीन विषय । प्रस्तुत विषय । ६ आवश्यक । मनोरञ्जक ।

प्रकृतं (न०) वास्तविक विषय । प्रस्तुत विषय ।— अर्थ, (वि०) यथार्थ भाव बतलाने वाला ।— अर्थः, (पु०) वास्तविक भाव ।

प्रकृतिः (स्त्री०) १ स्वभाव । तासीर । २ मिज़ाज़ । ३ बनावट । आकार । ४ निकास । परंपरा । ५ उद्गम स्थल । ६ सॉंख्यदर्शन में पुरुष और प्रकृति को छोड़ तीसरी वस्तु नहीं मानी गयी । ७ आदर्श। नमूना । ८ स्त्री । ९ परब्रह्म का मूर्तिमान सङ्कल्प, जिसके कारण सृष्टि की उत्पत्ति होती है । १० पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय । लिङ्ग । भग । ११ माता । (बहुवचन) १ राजा के अमात्य । मंत्रिमण्डल । २ राजा की प्रजा । ३ राजतंत्र के अङ्ग जो सात माने गये हैं ।

"स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।"

४ सांख्यदर्शन के अनुसार आठ प्रधान तत्त्व जिनसे हरेक वस्तु उत्पन्न होती है । ५ सृष्टि को बनाने वाले ५ तत्त्व । —ईशः, (पु०) राजा या ज़िले का हाकिम । —कृपण, (वि०) स्वभाव से सुस्त या जो पहचान न सके ।—तरल, (वि०) स्वभाव से चञ्चल ।—पुरुषः, (पु०) अमात्य । राजपुरोहित ।—मण्डलं, (न०) समूचा राज्य या राष्ट्र या बादशाहत ।—लयः, (पु०) प्रकृति में लीन होना ।—सिद्ध, (वि०) नैसर्गिक । स्वाभाविक ।—सुभग, (वि०) स्वभाव से मनोहर ।—स्थ, (वि०) १ जो अपनी स्वाभाविक अवस्था में हो । मामूली हालत में । २ स्वस्थ्य । तंदुरुस्त । ३ आरोग्यता प्राप्त किया हुआ । ४ नंगा ।

प्रकृष्ट (व० कृ०) १ आकृष्ट । खिंचा हुआ । २ लंबा । दीर्घ । ३ उत्कृष्टतर । उत्कृष्टतम । प्रधान । मुख्य । खास । ५ विक्षिप्त । अशान्त ।

प्रक्लृप्त (व० कृ०) तैयार किया हुआ । बनाया हुआ । सुव्यवस्थित ।

प्रकोथः (पु०) सड़ाइन । बुसाइन ।

प्रकोष्ठः (पु०) १ कोहनी के नीचे का भाग । २ दरवाजे के समीप का कोठा । ३ घर का आँगन ।

प्रकोष्ठकः (पु०) बड़े दरवाज़े के पास की कोठरी ।

प्रक्खरः (पु०) १ घोड़ा या हाथी का कवच। २ कुत्ता। ३ खच्चर।

प्रक्रम. (पु०) १ पग। क़दम। २ पैग जो दूरी नापने के लिये व्यवहृत होता है। ३ आरम्भ। शुरूआत। ४ कार्रवाई। पद्धति। ५ अवकाश। अवसर। ६ नियमितता। ढंग। तौर। ७ अंश। अनुपात। माप।—भङ्गः, (पु०) किसी कार्य में किसी आरम्भ किये हुए क्रम का उल्लंघन। २ साहित्य का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जिस समय किसी विषय के वर्णन में आरम्भ किये हुए क्रम आदि का यथावत् पालन नहीं किया जाता।

प्रक्रान्त (व० कृ०) १ आरम्भ किया हुआ। शुरू किया हुआ। २ गया हुआ। प्रस्थानित। ३ प्रस्तुत। विवादग्रस्त। ४ वीर।

प्रक्रिया (स्त्री०) १ ढंग। तौर। तरीका। २ संस्कार। कर्म। ३ राजचिन्ह (चँवर छत्रादि) का धारण करना। ४ उच्चपद। ५ ग्रन्थ का अध्याय, परिच्छेद। ६ व्याकरण में वाक्‌रचना प्रणाली। ७ अधिकार। हक।

प्रक्रीडः (पु०) खेल। क्रीडा। आमोद प्रमोद।

प्रक्लिन्न (व० कृ०) १ तर। नम। भींगा हुआ। २ तृप्त। अघाया हुआ। ३ करुणापूर्ण। दयामय।

प्रक्वणः } प्रक्वाणः } (पु०) वीणा की झनकार।

प्रक्षयः (पु०) नाश। बरबादी। [बहना।

प्रक्षरणम् (न०) टपकना। चूना। उफनना।

प्रक्षालनं (न०) १ धोना। २ माँजना। साफ करना। पवित्र करना। ३ स्नान करना। ४ कोई भी वस्तु जो सफा करने के काम में आवे। ५ धोने के लिये जल।

प्रक्षालित (व० कृ०) १ धोया हुआ। साफ किया हुआ। २ पवित्र किया हुआ। ३ प्रायश्चित्त करा के शुद्ध किया हुआ।

प्रक्षिप्त (व० कृ०) १ फेंका हुआ। २ घुसेड़ा हुआ। ३ बढ़ाया हुआ।। ४ ऊपर से मिलाया हुआ।

प्रक्षीण (वि०) १ जीर्ण। २ नष्ट किया हुआ। ३ प्रायश्चित्त करके पवित्र किया हुआ। ४ लुप्त। अन्तर्धान।

प्रक्षुण्ण (व० कृ०) १ कुचला हुआ। २ भेदा हुआ। छेदा हुआ। ३ उत्तेजित किया हुआ।

प्रक्षेपः (पु०) १ फेंकना। डालना। छितराना। बखेरना। ३ मिलाना। बढ़ाना। ४ ऊपर से मिलाना। प्रक्षिप्त करना। ५ गाड़ी का बक्स या भण्डारी। ६ किसी कंपनी के हिस्सेदारों का जमा किया हुआ अपने अपने हिस्सों का रुपया।

प्रक्षेपणम् (न०) फेंकना। पटकना।

प्रक्षोभणम् (न०) घबराहट। बेचैनी।

प्रक्ष्वेडनः (पु०) १ लोहे का बाण। २ शोरगुल। कोलाहल।

प्रक्ष्वेडित (वि०) शोरगुल वाला। कोलाहल वाला।

प्रखर (वि०) १ अत्यन्त उष्ण। २ बड़ा तेज़ या तीव्र। ३ बड़ा कठोर व रूखा।

प्रखरः (पु०) १ खच्चर। २ कुत्ता। घोड़े की पाखर या हाथी का कवच।

प्रख्य (वि०) १ साफ। प्रत्यक्ष। स्पष्ट। २ सदृश। समान।

प्रख्या (स्त्री०) १ प्रत्यक्ष गोचरत्व। २ प्रसिद्धि। प्रख्याति। ३ प्रकाशित वस्तु या विषय। ४ सादृश्य। समानता।

प्रख्यात (व० कृ०) १ प्रसिद्ध। मशहूर। २ आगे ही से मोल लिया हुआ। ३ प्रसन्न। आह्लादित। —वप्तृक, (वि०) प्रसिद्ध पिता वाला।

प्रख्याति (स्त्री०) १ शुहरत। प्रसिद्धि। २ प्रशंसा। तारीफ़।

प्रगंडः } प्रगण्डः } (पु०) कंधे से लेकर कोहनी तक का भाग।

प्रगंडी } प्रगण्डी } (स्त्री०) नगर के परकोटे की दीवाल।

प्रगत (व० कृ०) १ आगे गया हुआ। २ जुदा। अलहदा।—जानु,—जानुक, (वि०) टेढ़ी टाँगों वाला।

प्रगमः (पु०) प्रेम का प्रथम प्रदर्शन।

प्रगमनम् (न०) १ वृद्धि। उन्नत। २ प्रेमस्थापन में प्रथम प्रेमप्रदर्शन।

प्रगर्जनं (न०) दहाड़। गर्जन।

प्रगल्भ (वि०) १ साहसी। उत्साही। हिम्मती।

२ निर्भय । निडर । बहादुर । ३ वाग्मी । ४ हाज़िर जवाब । प्रत्युत्पन्नमति । ५ दृढ़प्रतिज्ञ । ६ प्रौढ़ । ७ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । पक्का हुआ । दृढ़ । निपुण । ६ अभिमानी । अहङ्कारी । घमंडी । १० निर्लज्ज । बेशर्म । बेहया । ११ प्रसिद्ध । [एक ।

प्रगल्भा (स्त्री०) साहसी स्त्री । नायिकाओं में से

प्रगाढ (व० कृ०) १ तर । भींगा हुआ । डूबा हुआ । २ अधिक । बहुत । ३ दृढ़ । मज़बूत । ४ कड़ा । सख़्त । कठिन ।

प्रगाढं (न०) १ तंगी । हीनता । अभाव । २ तपस्या । शारीरिक तप ।

प्रगाढं (अव्यया०) १ अत्यधिकता से । २ दृढ़ता से ।

प्रगातृ (पु०) उत्तम गवैया ।

प्रगुण (वि०) १ सीधा । ईमानदार । धर्मात्मा । २ अच्छे गुणों वाला । ३ योग्य । उपयुक्त । गुणवान् । निपुण । पटु । चतुर । [हुआ ।

प्रगुणित (वि०) १ सीधा किया हुआ । २ चिकनाया

प्रगृहीत (व० कृ०) १ जो भली भाँति ग्रहण किया गया हो । २ प्राप्त । स्वीकृत । ३ जिसका उच्चारण सन्धि के नियमों का ध्यान रखे विना किया गया हो ।

प्रगृह्यं (न०) वह स्वर जिस पर सन्धि के नियमों का प्रभाव न पड़े और जो स्वतंत्र रीति से लिखा जाय और बोला जाय ।

प्रगे (अव्यया०) बड़े तड़के । भोर ही ।—तन, (वि०) प्रातःकाल किया जाने वाला ।—निश, —शय, (वि०) जो सवेरा होने पर भी सोता रहे ।

प्रगोपनम् (न०) रक्षण । बचाव ।

प्रग्रथनम् (न०) बुनना । गूथना ।

प्रग्रहः (पु०) १ धारण । ग्रहण । २ चन्द्र या सूर्य के ग्रहण का आरम्भ । ३ लगाम । रास । ४ रोक थाम । ५ बन्धन । क़ैद । ६ बंधुआ । क़ैदी । ७ (घोड़े आदि पशुओं का) साधना । ८ किरण । ६ तराजू की डोरी । १० स्वर जिसमें सन्धि के नियम लागू न हों ।

प्रग्रहणम् (न०) १ पकड़ना । धरना । थामना । २ सूर्य या चन्द्र ग्रहण का आरम्भ । ३ लगाम । रास । ४ संयम । दमन ।

प्रग्राहः (पु०) १ पकड़ । थाम । २ ढोना । ले जाना । ३ तराजू की डोरी । ४ लगाम । रास ।

प्रग्रीवं (न०) } १ रंगा हुआ कलस या बुर्ज़ी ।
प्रग्रीवः (पु०) } २ किसी मकान के चारों ओर लकड़ी का बनाया हुआ घेरा । ३ तबेला । ४ वृक्ष की फुनगी ।

प्रघटकः (पु०) नियम । सिद्धान्त । आदेश ।

प्रघटा (स्त्री०) किसी विज्ञान के आरम्भिक सिद्धान्त । —विद्, (पु०) फालतू विषय पढ़ने वाला । बकवादी ।

प्रघणः (पु०) } १ बंगले के दरवाजे के सामने
प्रघनः (पु०) } छाया हुआ स्थान । बरसाती ।
प्रघाणः (पु०) } बरामदा । २ ताँबे का बरतन ।
प्रघानः (पु०) } ३ लोहे की गदा या घन । गदाला ।

प्रघस (वि०) पेटू । मरभुक्खा ।

प्रघसः (पु०) १ राक्षस । २ भुक्खड़पन । पेटूपन ।

प्रघातः (पु०) १ वध । २ युद्ध । लड़ाई ।

प्रघुणः (पु०) महमान । अतिथि ।

प्रघूर्णः (पु०) महमान । अतिथि ।

प्रघोषः (पु०) १ आवाज़ । शोर । २ गर्जन ।

प्रचक्रं (न०) सेना जो रवानगी में हो ।

प्रचक्षस् (पु०) १ बृहस्पति ग्रह । २ ब्रहस्पति का नामान्तर ।

प्रचंड } (वि०) १ अत्यन्त तीव्र । तेज़ । उग्र ।
प्रचण्ड } प्रखर । २ मज़बूत । बलवान । भयानक । ३ अतिडग्र । क्रोधमूर्च्छित । गुस्सैल । ५ साहसी । ६ भयङ्कर । ७ असह्य । दुस्सह ।— आतपः, (पु०) भयङ्कर गर्मी ।—घोण, (वि०) लंबी नाक वाला ।—सूर्य, (वि०) ऐसी कड़ी धूप जो सही न जाय ।

प्रचयः } (पु०) १ संग्रह । एकत्रकरण । २ ढेर ।
प्रचायः } राशि । ३ वृद्धि । बढ़ती । ४ साधारण मेल मिलाप ।

प्रचयनं (न०) संग्रह । एकत्रीकरण ।

प्रचरः (पु०) १ रास्ता । मार्ग । सड़क । २ रीति । रिवाज़ ।

प्रचल (वि०) १ थरथराता हुआ । काँपता हुआ । २ प्रचलित । रिवाज़ के मुताबिक ।

प्रचलाकः (पु०) १ तीरंदाज़ी । २ मयूर की पूंछ । ३ सर्प । साँप ।

प्रचलाकिन् (पु०) मयूर । मोर ।

प्रचलायित (वि०) लुढ़कने वाला । उछलने वाला ।

प्रचलायितम् (न०) सिर हिलाना ।

प्रचायिका (स्त्री०) १ बारी बारी से फूल चुनने वाला । २ मालिन ।

प्रचारः (पु०) १ चलने वाला । २ भ्रमणकारी । ३ प्रत्यक्ष होना । दृष्टिगोचर होना । ४ चलन रिवाज़ । किसी वस्तु का निरन्तर व्यवहार या उपयोग । ५ चालचलन । आचरण । ६ रीतिरस्म । नेग । ७ क्रीडास्थली । अखाडा । ८ चरागाह । ९ पथ । मार्ग । रास्ता ।

प्रचालः (पु०) वीणा का एक भाग विशेष ।

प्रचालनम् (न०) भली भाँति गड्डबड्ड करना । हिलाना डुलाना ।

प्रचित (व० कृ०) १ एकत्रित किया हुआ । संग्रह किया हुआ । तोडा हुआ । २ जमा किया हुआ । ३ ढका हुआ । भरा हुआ ।

प्रचुर (वि०) १ बहुत । अधिक । विपुल । २ बडा । दीर्घ । विस्तृत । ३ बाहुल्यता से सम्पन्न ।—पुरुष, (वि०) आबाद । बसा हुआ ।—पुरुषः, (पु०) चोर ।

प्रचुरः (पु०) चोर ।

प्रचेतस् (पु०) १ वरुण का नामान्तर । एक प्राचीन ऋषि जो स्मृतिकार भी थे ।

प्रचेतृ (पु०) सारथी । रथ हाँकने वाला । कोचवान ।

प्रचेलं (न०) पीला चन्दन काष्ठ ।

प्रचेलकः (पु०) घोडा । अश्व ।

प्रचोदनम् (न०) १ अनुरोध । प्रेरणा । उत्तेजन । २ प्रवृत्ति । साजिश । आज्ञा । आदेश । ४ नियम । क़ायदा क़ानून ।

प्रचोदित (व० कृ०) १ प्रेरित । उत्तेजित । प्रवर्तित । २ आज्ञप्त । निर्देश दिया हुआ । निर्दिष्ट । ४ प्रेषित । भेजा हुआ । निश्चय किया हुआ ।

प्रच्छ् (धा० पर०) [पृच्छति, पृष्ट, ; (निजन्त) प्रच्छयति] १ पूंछना । प्रश्न करना । सवाल करना । दर्याफ़्त करना । २ तलाश करना । खोजना । ढूंढना ।

प्रच्छदः (पु०) आच्छादन । परदा । चादर । पलंगपोश । पलग की चादर ।—पटः, (पु०) पलंग की चादर । चाँदनी ।

प्रच्छनं (न०), प्रच्छना (स्त्री०) अनुसन्धान । जिज्ञासा । प्रश्न । सवाल ।

प्रच्छन्न (व० कृ०) १ छिपा हुआ । परवेष्ठित । वस्त्राछादित । कपड़े से लपेटा हुआ । गोप्य । निजी । दुराव करने योग्य । छिपा हुआ ।

प्रच्छन्नं (अव्यया०) चुपके चुपके । चोरी से ।—तस्कर, (पु०) ऐसा चोर जो चोरी करते कभी देखा न गया हो, किन्तु चोरी अवश्य करता हो ।

प्रच्छर्दनम् (न०) १ वमन । रेचन ।

प्रच्छर्दिका (स्त्री०) वमन । कै ।

प्रच्छादनम् (न०) १ ढकना । छिपाना । २ कपडों के ऊपर पहनने का वस्त्र विशेष ।—पटः, (पु०) चादर । उढ़ौना ।

प्रच्छादित (व० कृ०) १ ढका हुआ । ओढ़े हुए । वस्त्राच्छादित । २ छिपा हुआ ।

प्रच्छायं (न०) सघन छाया । छायादार स्थान ।

प्रच्छिल (वि०) निर्जल । सूखा ।

प्रच्यवः (पु०) १ अधःपात । नाश । बरबादी । २ वापिसी ।

प्रच्यवनम् (न०) १ प्रस्थान । पलायन । पीछे की ओर हटाव । २ हानि । अभाव । ३ क्षरण । टपकना । चूना ।

प्रच्युत (व० कृ०) १ झड़ा हुआ । टूटकर गिरा हुआ । २ अपने स्थान से हटा हुआ । ३ स्थानच्युत । अधःपतित । ४ भगाया हुआ । हटाया हुआ ।

प्रच्युतिः (स्त्री०) १ अपने स्थान से गिरने या हटने का भावा । २ हानि । अभाव । अधःपात । ३ बरबादी । नाश ।

प्रजः (पु०) पति । शौहर ।

प्रजनः (पु०) १ गर्भाधान। गर्भस्थापन। उत्पत्ति। पैदायश। २ पशुओं का गर्भस्थापन। ४ पैदा करना। जनना।

प्रजननम् (न०) १ गर्भाशय में गर्भस्थापन। उत्पत्ति। २ पैदायश। जन्म। बालक का उत्पन्न होना। ३ वीर्य। ४ भग। लिङ्ग। ५ सन्तान।

प्रजनिका (स्त्री०) माता। जननी। माँ।

प्रजनुकः (पु०) शरीर। देह।

प्रजल्पः (पु०) गप्पशप्प। बकवाद। ऊटपटाँग। बातचीत।

प्रजल्पनम् (न०) १ वार्तालाप। बोलचाल। २ बकबक। गप्पशप्प।

प्रजविन् (वि०) [स्त्री०—प्रजविनी] तेज़। फुर्तीला। वेगवान। (पु०) हल्कारा।

प्रजा (स्त्री०) १ सन्तान। औलाद। २ उत्पत्ति। जन्म। पैदायश। ३ मानवजाति। लोग। रैयत। ४ वीर्य। धातु।—अन्तकः, (पु०) यम।—ईप्सु, (वि०) सन्तानेच्छुक।—ईशः, —ईश्वरः, (पु०) राजा। बादशाह।—उत्पत्तिः,—उत्पादनम्, (न०) सन्तान उत्पन्न करने की क्रिया।—काम, (वि०) सन्तानेच्छुक।—तन्तु, (पु०) कुल। वंश। वंशपरम्परा।—दानं, (न०) चाँदी।—नाथः, (पु०) राजा। बादशाह। नरपति।—पः, (पु०) राजा। पृथिवीपाल।—निषेकः, (पु०) गर्भस्थापन। गर्भाधान।—पतिः, (पु०) १ सृष्टिउत्पन्न करने वाला। २ ब्रह्मा जी का नामान्तर। ३ ब्रह्मा के दस पुत्र जो प्रजापति कहलाये। ४ विश्वकर्मा का नामान्तर। ५ सूर्य। ६ राजा। ७ दामाद। जमाई। ८ विष्णु भगवान्। ९ पिता। जनक। १० लिङ्ग। पुरुष की जननेन्द्रिय। पाल,—पालकः, (पु०) राजा। नरपति।—पाली, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—वृद्धिः, (स्त्री०) सन्तान की बढ़ती। सृज्, (पु०) ब्रह्मा जी।—हित, (वि०) सन्तान या रैयत के लिये लाभकारी।—हितं (न०) जल। पानी।

प्रजागरः (पु०) १ रात को जागने वाला। अनिद्रित्व। २ विवेक। सावधानी। ३ रक्षक। अभिभावक। ४ कृष्ण भगवान् का नामान्तर।

प्रजात (व० कृ०) पैदा हुआ। उत्पन्न हुआ।

प्रजाता (स्त्री०) जच्चा। वह स्त्री जिसके बच्चा पैदा हुआ हो।

प्रजातिः (स्त्री०) १ जन्म। उत्पत्ति। सन्तानवृद्धि। २ जनन। ३ उत्पादक शक्ति। ४ प्रसववेदना। प्रसव की पीड़ा।

प्रजावत् (वि०) १ प्रजावान। सन्तान वाला। २ गर्भवती।

प्रजावती (स्त्री०) १ भ्रातृजाया। भावज। भौजाई भावी। ३ माता। दाई।

प्रजिनः (पु०) पवन। हवा। वायु।

प्रजीवनम् (न०) आजीविका।

प्रजुष्ट (वि०) भक्त। अनुरक्त। आसक्त।

प्रज्ञ (वि०) बुद्धिमान्। प्रतिभावान्। विद्वान्।

प्रज्ञप्तिः (स्त्री०) १ प्रण। शर्त। २ शिक्षा। विज्ञप्ति। सूचना। ३ सिद्धान्त।

प्रज्ञा (स्त्री०) १ बुद्धि। ज्ञान। समझ। प्रतिभा। २ विवेक। जाँच। निर्णय। ३ विचार। मंशा। ४ बुद्धिमती स्त्री।—चक्षुस, (पु०) अंधा नेत्रहीन। (पु०) धृतराष्ट्र का नामान्तर। (न०) हिये की आँखें। मन।—पारमिता (स्त्री०) बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार दस मामिताओं (गुणों की परा काष्ठा) में से एक, जिसे गौतम बुद्ध ने अपने मर्त्य जन्म में प्राप्त किया था।—वृद्ध, (वि०) बुद्धिमत्ता में बड़ा।—हीन, (वि०) बुद्धिहीन। मूर्ख। मूढ।

प्रज्ञात (व० कृ०) १ जाना हुआ। समझा हुआ। २ पहचाना हुआ। ३ स्पष्ट। साफ। ४ प्रसिद्ध। प्रख्यात। मशहूर।

प्रज्ञानं (न०) १ प्रतिभा। ज्ञान। बुद्धि। २ चिन्ह। निशानी।

प्रज्ञावत् (वि०) बुद्धिमान। प्रतिभावान्।

प्रज्ञाल, प्रज्ञिन्, प्रज्ञिल (वि०) [स्त्री०—प्रज्ञिनी] बुद्धिमान्। प्रतिभाशाली। विवेकी।

प्रज्ञु (वि०) टेढ़ी टाँगों वाला।

प्रज्वलनम् (न०) जलना। जलने की क्रिया।

प्रज्वलित (व० कृ०) १ धधकता हुआ। जलता हुआ। २ चमकीला। चमचमाता हुआ।

प्रडीनम् (न०) १चारों ओर (पक्षियों का) उड़ना। २ आगे की ओर उड़ना। ३ उड़ान भरना।

प्रण (वि०) प्राचीन। पुराना।

प्रणखः (पु०) नख का अग्रभाग।

प्रणत (व० कृ०) १ बहुत झुका हुआ। २ प्रणाम करता हुआ। ३ दीन। ४ चतुर। निपुण।

प्रणतिः (स्त्री०) १ प्रणाम। नमस्कार। प्रणिपात। दण्डवत। २ नम्रता। सुशीलता। दीनता।

प्रणदनं (न०) आवाज़। नाद।

प्रणय (पु०) १ विवाह। (पाणि) ग्रहण। २ प्रेम। प्रीति। आसक्ति। ३ मैत्री। दोस्ती। ४ मेलजोल। रलज़ल। विश्वास। भरोसा। ५ अनुग्रह। दया। कृपा। ६ विनय। याचना। प्रार्थना। ७ प्रणाम। प्रणिपात। ८ मोक्ष।—अपराधः, (पु०) प्रेम या मैत्री के विरुद्ध कोई अपचार।—उन्मुख, (वि०) १ अन्तर्गत प्रेम को प्रकट करने को उद्यत। २ प्रेमावेश से धैर्यरहित।—कलहः (पु०) प्रेमी का झगड़ा। बनावटी या झूठमूठ का झगड़ा।—कुपित, (वि०) झूठमूठ का या दिखावटी क्रोध।—कोपः, (पु०) नायिका का अपने नायिक के प्रति झूठमूठ का क्रोध।—प्रकर्षः, (पु०) अत्यधिक प्रेम।—भङ्गः, (पु०) १ मित्रता का टूट जाना। २ निमकहरामी पना।—वचनं, (न०) प्रेमप्रदर्शक वाक्य।—विमुख, (वि०) १ प्रेम से पराङ्गमुख। २ मैत्री करने को अनिच्छुक।—विहतिः,—विघातः, (पु०) अस्वीकृति। अवज्ञा।

प्रणयनम् (न०) १ लाना। जाकर लाना। २ परिचालन करना। लेजाना। ३ रचना। बनाना। तैयार करना। ४ लेखलिखना। निबन्ध लिखना। ५ दण्डाज्ञा देना। डिग्री देना अर्थात् वादी को जिताना। यथा "दण्डस्य प्रणयनम्।"

प्रणयवत् (वि०) १ प्रिय। प्यारा। २ निःछल। अकपटी। साफ दिल का। ३ उत्सुकतापूर्वक अभिलाषी। कामना करने वाला।

प्रणयिन् (वि०) १ प्यारा। प्रिय। कृपालु। अनुरक्त। २ प्रेमपात्र। ३ अभिलाषी। इच्छुक। ४ परिचित। घनिष्ठ (पु०) १ मित्र। सखा। प्रेमी। २ पति। प्रेमी। आशिक। ३ विनम्रप्रार्थी। प्रणयी। ४ पुजारी। भक्त।

प्रणयिनी (स्त्री०) १ स्वामिनी। प्रेमपात्री। माशूका। भार्या। पत्नी। सखी। सहेली।

प्रणवः (पु०) १ ओङ्कार। २ तबला। मृदङ्ग। ढोल। ३ विष्णु या परब्रह्म का नामान्तर।

प्रणस (वि०) लंबी नाक वाला। नक्कू।

प्रणाडी (स्त्री०) माध्यम। बीच बिचाव। बीच में पड़ना।

प्रणादः (पु०) १ कोलाहल। होहल्ला। शोरगुल। २ गर्जन। ३ हिनहिनाहट। रेंक। ४ बरबराहट। जयजयकार। वाहवाही। ५ सहायता के लिये चीत्कार। ६ कान का रोग विशेष।

प्रणामः (पु०) नमस्कार। प्रणिपात। दण्डवत।

प्रणायकः (पु०) १ चमूपति। सेनापति। २ नेता। प्रधान। पथप्रदर्शक।

प्रणाय्य (वि०) १ प्यारा। प्रेमपात्र। माशूक। २ धर्मात्मा। ईमानदार। ३ नापसंद। अरुचिकर। अस्वीकृत। ४ विरक्त।

प्रणालः (पु०), प्रणाली (स्त्री०), प्रणालिका (स्त्री०) — १ नाली। नहर। बंबा। २ परंपरा।

प्रणाशः (पु०) १ नाश। बरबादी। २ अवसान। समाप्ति।

प्रणाशन (वि०) नाश करने वाला। स्थानान्तरित करने वाला।

प्रणाशनम् (न०) नाश। बरबादी।

प्रणिंसित (वि०) चुम्बित।

प्रणिधानं (न०) १ प्रयोग। व्यवहार। उपयोग। २ महान् प्रयत्न। ३ समाधि। ४ अत्यन्त भक्ति। ५ कर्मफलत्याग।

प्रणिधिः (पु०) १ भेदिया। गुप्तचर। गोइंदा। २

नौकर। चाकर। अर्दली। ५ विनयी। प्रार्थना। याचना।

प्रणिनादः (पु०) उच्चस्वर।

प्रणिपतनं (न०) } प्रणाम। दण्डवत। नमस्कार।
प्रणिपातः (पु०) } चरणों में सिर नवाना।—रसः, (पु०) आयुधों पर पढ़ा जाने वाला मंत्र विशेष।

प्रणिहित (व० कृ०) १ स्थापित। लगाया हुआ। २ सौंपा हुआ। ३ फैलाया हुआ। बढ़ाया हुआ। पसारा हुआ। ४ जमा किया हुआ। ५ लवलीन। ६ दृढ़प्रतिज्ञ। निर्णीत। ७ सावधान। ८ प्राप्त। उपलब्ध। ९ जासूसी किया हुआ।

प्रणीत (व० कृ०) उपस्थित किया हुआ। पेश किया हुआ। सामने रखा हुआ। २ सौंपा हुआ। दिया हुआ। भेंट किया हुआ। ३ लाया हुआ। ४ तैयार किया हुआ। बनाया हुआ। ५ सिखलाया हुआ। ६ फेंका हुआ। निकाला हुआ।

प्रणीतः (पु०) मंत्रों से संस्कृत किया हुआ यज्ञाग्नि।

प्रणीत (न०) अच्छी तरह पकाया या बनाया हुआ कोई पदार्थ।

प्रणुत्त (व० कृ०) १ निकाला हुआ। भगाया हुआ। २ भड़काया हुआ। चौंकाया हुआ। डराया हुआ।

प्रणुन्न (व० कृ०) १ भगाया हुआ। २ चलाया हुआ। ३ भड़का हुआ। ४ काँपता हुआ।

प्रणेतृ (पु०) १ नेता। सृष्टिकर्त्ता। बनाने वाला। ३ किसी सिद्धान्त का प्रचारक। आचार्य। ४ प्रणयनकर्त्ता। ग्रन्थरचयिता।

प्रणेय (वि०) १ आज्ञाकारी। अधीन। वशवर्ती। २ किये जाने को। पूरा किये जाने को। ३ निश्चय करने को। तै करने को।

प्रणोदः (पु०) १ हकाना। २ सुझाना।

प्रतत (व० कृ०) १ छाया हुआ। ढका हुआ। २ तना हुआ। [बेल।

प्रततिः (स्त्री०) १ विस्तार। फैलाव। २ लता।

प्रतन (वि०) [स्त्री०—प्रतनी] प्राचीन। पुराना।

प्रतनु (वि०) [स्त्री०—प्रतनु या प्रतन्वी] १ क्षीण। दुबला। २ बारीक। सूक्ष्म। ३ बहुत छोटा। ४ तुच्छ।

प्रतपनं (न०) तपाना। तप्त करना।

प्रतप्त (व० कृ०) १ गर्माया हुआ। २ उत्सुक। ३ सन्तप्त। सताया हुआ। पीड़ित।

प्रतरः (पु०) पार होना। उतरना। पार जाना।

प्रतर्कः (पु०) } १ अनुमान। क़यास। २ वाद-
प्रतर्कणं (न०) } विवाद।

प्रतलं (न०) सप्त अधोलोकों में से एक।

प्रतल· (पु०) हाथ की हथेली।

प्रतानः (पु०) १ अङ्कुर। अँकुआ। कोंपल। २ लता। बेल। ३ बहुशाखत्व। पल्लवित होना। ४ रोग विशेष जिसमें मूर्च्छा आती है।

प्रतानिन् (वि०) १ फैलने वाला। २ अँकुआँ या कोंपल वाला।

प्रतानिनी (स्त्री०) खूब फैलने वाली लता या बेल।

प्रतापः (पु०) १ उष्णता। गर्मी। २ ताप। ३ चमक। आभा। ४ गौरव। ५ साहस। वीरता। ६ जीवट। पराक्रम। ७ उत्सुकता।

प्रतापन (वि०) १ गर्माना। पीडन करना।

प्रतापनं (न०) १ जलन। उष्णता। गर्मी। ताप। २ पीड़ा। सन्ताप। दण्डविधान।

प्रतापनः (पु०) १ एक नरक का नाम। कुम्भीपाक नरक। २ विष्णु भगवान का नाम।

प्रतापवत् (वि०) १ महिमान्वित। गौरवान्वित। २ पराक्रमी। विक्रमी। बलवान्। बली। (पु०) शिव का नामान्तर।

प्रतारः (पु०) १ पार ले जाना। २ वञ्चना। ठगी। धोखेबाज़ी। ठगी।

प्रतारकः (पु०) १ वञ्चक। ठग। धूर्त।

प्रतारणम् (न०) १ पार करना। २ छलना। धोखा देना। ठगना।

प्रतारणा (स्त्री०) छल। धोखा। ठगी। बदमाशी। चालबाज़ी। दम्भ।

प्रतारित (वि०) छला हुआ। ठगा हुआ।

प्रति (अव्यया०) एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व लगाया जाता है और निम्न अर्थ देता है १ विरुद्ध। विपरीत। २ सामने। ३ बदले में। ४ हर एक। एक एक। ५ समान। सदृश। ६ जोड़ का। मुकाबले का। ७ सामने। मुकाबले में। ८

ओर। तरफ़।—अक्षरं, (न०) प्रत्येक अक्षर में।—अग्नि, (अव्यया०) अग्नि की तरफ।—अङ्ग, (न०) १ शरीर का छोटा अवयव जैसे नाक। २ भाग। अध्याय। प्रत्येक अवयव। ४ आयुध। हथियार।—अङ्गम्, (अव्यया०) शरीर के प्रत्येक अवयव में या पर। २ प्रत्येक उपविभाग के लिये।—अनन्तर, (वि०) समीपवर्ती। २ समीपी (कुटुम्बी) ३ अत्यन्त घनिष्ठता।—अनिलं, (अव्यया०) पवन की ओर या विरुद्ध।—अनीक, (वि०) १ शत्रु। विरोधी। २ सामना करने वाला। बचाव करने वाला—अनीकः, (पु०) शत्रु।—अनीकं, (न०) १ शत्रुता। वैर। विरोध। २ आक्रमणकारी सेना। ३ अलकार विशेष।—अनुमानं, (न०) उल्टा परिणाम।—अन्त, (वि०) समीपी। सीमा वर्ती।—अन्तः, (पु०) १ सीमा। हद। २ सीमान्त देश। विशेष कर वह देश जिसमें हूस और म्लेच्छ बसते हों।—अपकारः, (पु०) बदला। बदले में अनिष्ट करना।—अब्दं, (अव्यया०) प्रतिवर्ष।—अर्कः, (पु०) झूठ मूठ का सूर्य। बनावटी सूर्य।—अवयवं, (अव्यया०) १ प्रत्येक अवयव में। २ विस्तार से।—अवर, (वि०) १ निम्नतर। कम प्रतिष्ठित। २ अति नीच। अति तुच्छ।—अश्मन्, (पु०) ईंगुर। सिंदूर।—अहं, (अव्यया०) प्रतिदिवस। हर रोज़। दैनिक।—आकारः, (पु०) म्यान। परतला।—आघातः, (पु०) १ बदले का प्रहार। २ प्रतिक्रिया।—आचारः, (पु०) उपयुक्त आचरण।—आत्मं, (अव्यया०) एकाकी। अकेला। अलग अलग।—आदित्यः, (पु०) झूठमूठ का सूर्य।—आरम्भ, (पु०) १ पुनः प्रारम्भ। दुबारा शुरूआत। २ निषेध।—आशा, (स्त्री०) १ उम्मेद। प्रतीक्षा। २ भरोसा। विश्वास।—उत्तरं, (न०) जवाब। जवाब का जवाब।—उलूकः, (पु०) १ काक। २ कोई पक्षी जो उल्लू के समान हो।—ऋचं, (अव्यया०) प्रत्येक ऋचा में।—एक, (वि०) हरेक।—एकं, (अव्यया०) एक एक कर के। एक बार में एक। अलग अलग। एकाकी।—कञ्चुकः, (पु०) शत्रु। वैरी।—कण्ठम्, (अव्यया०) १ अलग अलग। एक के बाद एक। २ गले के समीप।—कश, (वि०) जो कोड़े का भी ख्याल न करे।—कायः, (पु०) १ पुतला। मूर्ति। तसवीर। सादृश्य। २ शत्रु। बैरी। ३ निशान। लक्ष्य।—कितवः, (पु०) जुआरी का जोड़ीदार।—कुञ्जरः, (पु०) आक्रमणकारी हाथी।—कूपः, (पु०) परिखा। खाई।—कूल, (वि०) १ खिलाफ़। विपरीत। विरुद्ध। २ सख्त। अप्रिय। ३ अशुभ। ४ विरोधी। ५ उल्टा। ६ हठीला। ज़िद्दी। दुराग्रही।—कूलं, (अव्यया०) १ विरुद्धताई से। उल्टे ढंग से।—क्षणं, (अव्यया०) हर लहमें में।—गजः, (पु०) आक्रमणकारी हाथी।—गात्रं, (अव्यया०) प्रति अवयव में।—गिरिः, (पु०) १ सामने का पहाड़। २ छोटा पहाड़ या पहाड़ी।—गृहं,—गेहं, (अव्यया०) हर एक घर में।—ग्रामं (अव्यया०) हरेक ग्राम में।—चन्द्रः, (पु०) झूठमूठ का चन्द्रमा।—चरणं, (अव्यया०) प्रत्येक (वैदिक) सिद्धान्त या शाखा में। २ प्रत्येक पग पर।—छाया, (स्त्री०) १ प्रतिबिम्ब। परछाँई। २ मूर्ति। प्रतिमा। छबी। तसवीर।—जंघा, (स्त्री०) टाँग का अगला भाग।—जिह्वा,—जिह्विका, (स्त्री०) गले के भीतर की घंटी। कव्वा। छोटी जीभ।—तंत्रं (अव्यया०) प्रत्येक तंत्र या मत के अनुसार।—तंत्रसिद्धान्तः, (पु०) सिद्धान्त जो किसी शास्त्र में तो हो और किसी में न हो।—त्र्यहं, (न०) एक बार में (लगातार) तीन दिन।—दिनं, (अव्यया०) सब ओर। सर्वत्र।—द्वन्द्वः, (पु०) दो समान विरोधी व्यक्ति। मुकाबले का लड़ने वाला। वैरी। शत्रु।—द्वन्द्वं, (न०) दो समान व्यक्तियों का विरोध।—द्वन्द्विन्, (वि०) १ शत्रु। वैरी। २ प्रतिकूल। ३ डाह करने वाले। प्रतिस्पर्द्धी। (पु०) विरोधी। वैरी।—द्वारं, (अव्यया०) प्रत्येक द्वार पर।—नप्तृ, (पु०) पन्ती। पौत्र का पुत्र। प्रपौत्र।—नव,

(वि०) १ नवीन । युवा । ताज़ा । २ हाल का खिला हुआ या जिसमें हाल ही में कलियाँ आयी हों ।—नाड़ी, (स्त्री०) उपनाडी । छोटी नाडी । —नायकः (पु०) नाटकों अथवा काव्यों में मुख्य नायक का प्रतिद्वन्द्वी नायक । जैसे रामायण काव्य में श्रीराम जी मुख्य नायक हैं और रावण प्रतिनायक है ।—निधिः, (पु०) १ प्रतिमा । प्रतिमूर्ति । २ वह व्यक्ति जो किसी अन्य की ओर से उसका कोई काम करने को नियुक्त किया गया हो ।—निर्यातनः, (पु०) वह अपकार जो किसी अपकार का बदला चुकाने को किया जाय ।—पः, (पु०) राजा शान्तनु के पिता का नाम ।—पक्षः, (पु०) १ प्रतिवादी । विरोधी पक्ष । विरुद्ध दल । २ शत्रु । वैरी । दुश्मन ।—पक्षिन्, (पु०) विरोधी । वैरी ।—पुरुषः,—परुषः, (पु०) १ समान पुरुष । २ एवज़ । बदली । २ सहचर । साथी । ३ मनुष्य का पुतला जिसे चोर सेंध के भीतर खड़ा करते हैं । इस लिये कि, उन्हें यह पता लग जाय कि, घर में कोई जाग तो नहीं रहा । ४ (किसीका) पुतला । —प्राकारः, (पु०) परकोटे की दीवाल ।—प्रियं, (न०) वह उपकार जो किसी उपकार का बदला चुकाने के लिये किया जाय ।—बंधुः, (पु०) समान पद या स्थिति वाला ।—बल, (वि०) समान बल वाला । जोड़ीदार ।—बलं, (न०) बाहुः, (पु०) बाँह का अगला भाग ।—बिम्बः —बिम्ब. (पु०) बिम्बम्—बिम्बम् (न०) १ परछाँही । छाया । २ प्रतिमा । प्रतिमूर्ति । छवी । तस्वीर ।—भट, (वि०) मुकाबला करने वाला ।—भटः, (पु०) बराबर का योद्धा । समान बल वाला योद्धा ।—भय, (वि०) भयङ्कर । खौफ़नाक ।—भयं, (न०) खतरा । जोखों ।—मण्डलं, (न०) सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का मण्डल या घेरा । परिवेश ।—मल्लः, (पु०) प्रतिमा । बराबर का पहलवान । —माया, (स्त्री०) जादू के जवाब का जादू ।—मित्रं, (न०) शत्रु । वैरी ।—मुख, (वि०). १ सामने खड़ा हुआ । २ समीप । निकट ।—मुखं, (न०) नाटक की पञ्चसन्धियों में से एक । इस सन्धि में विलास, परिसर्प, नर्म, (परिहास), प्रगमन, विरोध. पर्युपासन, पुष्प, वज्र, उपन्यास और वर्णसंहार आदि का वर्णन किया जाता है ।—मुद्रा, (स्त्री०) दूसरी मोहर ।—मूर्तिः (स्त्री०) प्रतिमा ।—यूथपः, (पु०) आक्रमणकारी हाथियों के दल का अगुआ या नायक ।—रथ. (पु०) बराबरी का लड़ने वाला ।—राजः, (पु०) आक्रमणकारी या शत्रु राजा ।—रूप, (वि०) १ समान । सदृश । २ उपयुक्त । उचित ।—रूपं, (न०) १ तसवीर । मूर्ति । प्रतिमा ।—रूपकं (न०) तसवीर । चित्र । प्रतिमा ।—लक्षणं, (न०) चिन्ह । निशान । चिन्हानी ।—लिपिः, (स्त्री०) लेख की नक़ल । हाथ का लिखा हुआ लेख ।—लोम, (वि०) १ उलटा । २ जातिविरुद्ध । (अर्थात् वह जिसके पिता और माता भिन्न भिन्न वर्ण के हों) । ३ कमीना । नीच । ४ वाम । बायाँ ।—लोमकं, (न०) उलटा क्रम ।—वस्तु, (न०) १ वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के बदले में दी जाय । २ समानान्तर ।—वातः, (पु०) प्रतिकूल पवन ।—वातं, (न०) पवन के विरुद्ध ।—विषं, (न०) विष का उतारा ।—विष्णुकः, (पु०) मुचुकुन्द वृक्ष ।—वीरः, (पु०) विरोधी । विपक्षी ।—वृषः, (पु०) आक्रमणकारी साँड ।—वेशः, (पु०) पड़ोस । पड़ोस का मकान । घर के सामने या निकट का घर ।—वेशिन् (पु०) पड़ोसी । पड़ोस में रहने वाला । —वेश्मन्, (न०) पड़ोसी का घर ।—वेश्यः, (पु०) पड़ोसी ।—वैरं, (न०) बदला । दाँव । —शब्दः, (पु०) १ प्रतिध्वनि । गूँज । काँई । २ गर्जन ।—शशिन्, (पु०) कृत्रिम का चन्द्रमा । चन्द्रमा का घेरा ।—सम, (वि०) बराबरी वाला । जोड़ीदार ।—सव्य, (वि०) उलटा क्रम वाला ।—सूर्यः,—सूर्यकः, (पु०) १ सूर्य का घेरा । २ एक उत्पात जिसमें सूर्य के सामने एक और सूर्य निकला हुआ दिखलाई देता है । गिर-

गिट ।—सेना, (स्त्री०) शत्रु की सेना ।—हस्तः, हस्तकः, (पु०) प्रतिनिधि । एवज़ी ।

प्रतिक (वि०) १ कार्षापण में मोल लिया हुआ ।

प्रतिकरः (पु०) सुश्रावज्ञा । क्षतिपूर्ति । प्रतिशोध ।

प्रतिकर्तृ (वि०) [स्त्री०—प्रतिकर्त्री] प्रतिशोध करने वाला । क्षतिपूर्ति करने वाला । (पु०) विरोधी । प्रतिपक्षी ।

प्रतिकर्मन् (न०) १ प्रतिकार । बदला । २ वह कार्य, जो किसी दूसरे कर्म के द्वारा प्रेरित हो किसी कार्य के होने पर होने वाला कार्य । किसी काम के जवाब में होने वाला काम । ३ वेश । भेस । ४ अङ्गकर्म । शरीर की सजावट । ५ विरोध । वैर ।

प्रतिकर्षः (पु०) समष्टि । संग्रह ।

प्रतिकषः (पु०) १ नायक । नेता । २ सहायक । ३ वार्ताहर । क़ासिद ।

प्रतिकारः } (पु०) १ प्रतिशोध । पुरस्कार ।
प्रतीकारः } बदला । २ वह कार्य जो किसी बुरे कार्य का बदला देने को किया जाय । ३ चिकित्सा । इलाज । ४ विपक्षता । सामना ।—विधानं, (न०) इलाज । चिकित्सा ।

प्रतिकाशः } (पु०) १ प्रतिबिम्ब । २ चितवन ।
प्रतीकाशः } दृष्टि ।

प्रतिकुंचित } (वि०) मुड़ा हुआ । झुका हुआ ।
प्रतिकुञ्चित } टेढ़ा ।

प्रतिकृत (व० कृ०) फेरा हुआ । लौटा हुआ । अदा किया हुआ । प्रतिशोधित । बदला लिया हुआ । २ इलाज किया हुआ ।

प्रतिकृतिः (स्त्री०) १ बदला । प्रतिकार । २ प्रतिशोध । ३ प्रतिबिम्ब । चित्र । छायाचित्र । ४ सादृश्य । तसवीर । मूर्ति । प्रतिमा । ५ प्रतिनिधि ।

प्रतिकृष्ट (व० कृ०) १ दुबारा जोता हुआ । २ अति निन्दित । निकृष्ट । त्यक्त । ३ छिपा हुआ । ४ नीच । कमीना ।

प्रतिकोपः }
प्रतिक्रोध. } (पु०) किसी के ऊपर गुस्सा ।

प्रतिक्रमः (पु०) उल्टा पुल्टा क्रम या सिलसिला ।

प्रतिक्रिया (स्त्री०) १ प्रतीकार । बदला । २ एक तरफ कोई क्रिया होने पर परिणाम स्वरूप दूसरी तरफ होने वाली क्रिया । ३ विरोध । सामना । ४ व्यक्तिगत सजावट या शृङ्गार । ५ रक्षण । ६ साहाय्य ।

प्रतिक्रुष्ट (वि०) निर्धन । बापुरा ।

प्रतिक्षयः (पु०) रखवाला । अर्दली ।

प्रतिक्षिप्त (व० कृ०) १ लौटाया हुआ । अस्वीकृत । निकाला हुआ । २ रोका हुआ । सामना किया हुआ । ३ गाली दिया हुआ । निन्दा किया हुआ । ४ भेजा हुआ । रवाना किया हुआ ।

प्रतिक्षुतं (न०) छींक । छिक्का ।

प्रतिक्षेपः (पु०) १ अस्वीकृति । ग्रहण न करना । २ विरोध करना । खण्डन करना । खण्डन । ३ झगड़ा ।

प्रतिख्यातिः (स्त्री०) प्रसिद्धि । ख्याति ।

प्रतिगत (व० कृ०) पक्षियों का एक प्रकार का उड़ान ।

प्रतिगमनम् (न०) लौट जाना । वापिस जाना । वापसी ।

प्रतिगर्हित (व० कृ०) कलङ्कित । निन्दित ।

प्रतिगर्जना (स्त्री०) गर्जन के जवाब में गर्जन ।

प्रतिगृहीत (व० कृ०) १ लिया हुआ । जो ग्रहण कर लिया गया हो । २ स्वीकृत । माना हुआ । ३ विवाहित ।

प्रतिग्रहः (पु०) १ स्वीकार । ग्रहण । २ उस दान का लेना जो विधिपूर्वक दिया जाय । ३ पकड़ना । अधिकृत करना । ४ पाणिग्रहण । विवाह । ५ ग्रहण । उपराग । ६ स्वागत । अभ्यर्थना । ७ दान लेने वाला । ८ अनुग्रह । कृपा । ९ सेना का पिछला भाग । १० उगालदान । पीकदान ।

प्रतिग्रहणम् (न०) १ प्रतिग्रह लेना । २ स्वागत । ३ विवाह ।

प्रतिगृहिन् }
प्रतिगृहीतृ } (पु०) लेने वाला । ग्रहण करने वाला ।

प्रतिग्राहः (पु०) १ प्रतिग्रह । २ उगालदान । पीकदान ।

प्रतिघः (पु०) १ विरोध । सामना । मुकाबला । २ लड़ाई । युद्ध । आपस की मारपीट । ३ क्रोध । रोष । ४ मूर्छा । ५ शत्रु । वैरी ।

प्रतिघातः } (पु०) १ रोकना । रोपना । २ सामना ।
प्रतीघातः } मुकाबला । ३ चोट के बदले चोट । ४ टक्कर । ५ रुकावट । बाधा ।

प्रतिघातनं (न०) १ हटाना । टालना । भगा देना । २ प्राणघात । वध । हत्या ।

प्रतिघ्नं (न०) शरीर । देह । काया ।

प्रतिचिकीर्षा (स्त्री०) बदला लेने की अभिलाषा ।

प्रतिचिंतनं } (न०) ध्यान । पुनर्विचार ।
प्रतिचिन्तनम् }

प्रतिच्छदनम् (न०) चादर । चद्दर ।

प्रतिच्छंदः, प्रतिच्छन्दः } (पु०) १ सादृश्य ।
प्रतिच्छंदकः, प्रतिच्छन्दकः } छवी । तसवीर । मूर्ति । प्रतिमा । २ परियाय ।

प्रतिच्छन्न (व० कृ०) १ ढका हुआ । लपटा हुआ । २ छिपा हुआ । ३ सम्पन्न । ४ घिरा हुआ । छिका हुआ ।

प्रतिच्छेदः (पु०) बाधा । रुकावट ।

प्रतिजल्पः (पु०) उत्तर । जवाब ।

प्रतिजल्पकः (पु०) प्रतिष्ठा पूर्वक सहमति या ऐक्मत्य ।

प्रतिजागरः (पु०) खूब सावधानी रखना । सम्यक् [ध्यान देना ।

प्रतिजीवनम् (न०) नया जन्म । फिर से जन्म ।

प्रतिज्ञा (स्त्री०) १ वादा । स्वीकृति । स्वीकारोक्ति । २ किसी काम को करने या न करने के विषय में वचनदान । ३ बयान । कथन । घोषणा । ४ न्याय में अनुमान के पाँच खण्डों या अवयवों में प्रथम अवयव । ५ अभियोग । दावा ।—पत्रं, (न०) वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो । इकरारनामा ।—भङ्गः, (पु०) वादे को तोड़ देना । —विरोधः, (पु०) प्रतिज्ञा के प्रतिकूल आचरण । वादाख़िलाफी ।—विवाहित, (वि०) सगाई । वाक्दान ।—संन्यासः, (पु०) १ वादाखिलाफी । प्रतिज्ञा भंग करने की क्रिया । २ न्याय में एक प्रकार का "निग्रहस्थान ।" प्रतिज्ञाहानि ।

प्रतिज्ञात (व० कृ०) १ वादा किया हुआ । २ कहा हुआ । ३ स्वीकृत । माना हुआ ।

प्रतिज्ञानं (न०) १ ईमानधर्म से कहना । २ इकरार । वादा । ३ स्वीकारोक्ति ।

प्रतितरः (पु०) जहाज़ी । माँझी । डाँड खेने वाला ।

प्रतिताली (स्त्री०) कुंजी । चाभी । ताली । (किसी दरवाज़े की ।

प्रतिदर्शनम् (न०) भेंट । मुलाकात ।

प्रतिदानं (न०) १ ली या रखी हुई वस्तु को लौटाना । २ विनिमय । एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु देना । बदला ।

प्रतिदारणं (न०) १ लड़ाई । युद्ध । २ चीरना । [फाड़ना ।

प्रतिदिवन् (पु०) १ दिवस । २ सूर्य ।

प्रतिदृष्ट (व० कृ०) देखा हुआ । दृष्टिगोचर । निगाह के सामने पड़ा हुआ ।

प्रतिधावनम् (न०) आक्रमण । हमला । चढ़ाई ।

प्रतिध्वनिः } (पु०) प्रतिनाद । प्रतिशब्द । गूँज ।
प्रतिध्वानः } झाँई ।

प्रतिध्वस्त (व० कृ०) गिराया हुआ । पटका हुआ ।

प्रतिनंदनं } (न०) १बधाई । स्वागत । २ धन्य-
प्रतिनन्दनम् } वाद देने की क्रिया ।

प्रतिनादः (पु०) प्रतिध्वनि । गूँज । झाँई ।

प्रतिनाहः } (पु०) झंडा । पताका ।
प्रतीनाहः }

प्रतिनिधिः (पु०) १ वह व्यक्ति जो दूसरे के बदले कोई काम करने को नियुक्त किया जाय । एवज़ । बदली । २ ज़ामिन । ३ प्रतिमा ।

प्रतिनियमः (पु०) साधारण नियम ।

प्रतिनिर्जित (व० कृ०) १ अन्तर्धान । संयत । १ खण्डन किया हुआ ।

प्रतिनिर्देश्य (वि०) वह जो, यद्यपि प्रथम व्यक्त किया जा चुका है, तथापि पुनः कहा जाय, इस अभिप्राय से कि कुछ अधिक कथन किया जाय ।

प्रतिनिर्यातनम् (न०) अपकार जो किसी अपकार का बदला चुकाने को किया जाय ।

प्रतिनिविष्ट (वि०) हठी । आग्रही । ज़िद्दी ।—मूर्खः, (पु०) दुराग्रही मूर्ख ।

प्रतिनिवर्तनं (न०) १ लौटना । वापिस आना । २ मुड़ना । पराङ्मुख होना ।

प्रतिनोदः (पु०) पीछे हटाने वाला । पीछे हटाने की क्रिया ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ ज्ञान । विवेक । ३ स्वीकृति । ४ स्वीकारोक्ति । ५ कथन । बयान । ६ आरम्भ । प्रारम्भ । ७ कार्रवाई ।

पद्धति । ८ करना । पूरा करना । ६ मन्तव्य । दृढ़ सङ्कल्प । १० संवाद । ख़बर । ११ सम्मान । मान । प्रतिष्ठा । १२ ढंग । उपाय । १३ प्रतिभा । बुद्धि । १४ उपयोग । व्यवहार । १५ उन्नति । बढ़ती । पदवृद्धि । १६ ख्याति । नामवरी । प्रसिद्धि । १७ साहस । विश्वास । १८ प्रमाण । इतमीनान । भरोसा ।—दक्ष, (वि०) कोई काम कैसे करना चाहिये यह जानने वाला ।—पटहः, (पु०) ढोल । ढोलक । मृदंग ।—भेदः, (पु०) मतभेद ।—विशारद, (वि०) निपुण । पटु । चतुर ।

प्रतिपद (स्त्री०) १ द्वार । दरवाज़ा । रास्ता । २ आरम्भ । प्रारम्भ । ३ पाख की प्रथम तिथि । ४ ढोल ।—चन्द्रः, (पु०) प्रतिपदा का चन्द्रमा । —तूर्य, (न०) नगाड़ा ।

प्रतिपदा } प्रतिपदी } (स्त्री०) पाख की प्रथम तिथि । परवा ।

प्रतिपन्न (व० कृ०) १ प्राप्त । जो मिला हो । २ किया हुआ । पूरा किया हुआ । ३ आरम्भ किया हुआ । ४ प्रतिज्ञात । ५ अङ्गीकृत । स्वीकृत । अपनाया हुआ । ६ जाना हुआ । अवगत । समझा हुआ । ७ उत्तर दिया हुआ । ८ सिद्ध किया हुआ । स्थापित किया हुआ । प्रमाणित किया हुआ ।

प्रतिपादक (वि०) [स्त्री०—प्रतिपादिका] १ भली भाँति समझाने वाला । प्रतिपादन करने वाला । २ साबित करने वाला । प्रतिपन्न करने वाला । समर्थन करने वाला । ३ निष्पादन करने वाला । निरूपण करने वाला । ४ उन्नति करने वाला । बढ़ाने वाला । ५ निर्वाह करने वाला । ६ उत्पन्न करने वाला ।

प्रतिपादनं (न०) १ दान । पुरस्कार । २ प्रतिपत्ति । स्थापन । सिद्धि । ३ व्याख्या । निष्पादन । ६ अभ्यास । टेव । बान । ७ आरम्भ ।

प्रतिपादित (व० कृ०) १ दिया हुआ । दान किया हुआ । भेंट किया हुआ । २ स्थापित किया हुआ । सिद्ध किया हुआ । ३ व्याख्या किया हुआ । अच्छी तरह समझाया हुआ । ४ घोषित किया हुआ । ५ उत्पन्न किया हुआ ।

प्रतिपालकः (पु०) रक्षक । रखवाला ।

प्रतिपालनं (न०) रक्षण । रक्षा । रखवाली । अभ्यास । आलोचन । बचाव ।

प्रतिपीडनम् (न०) अत्याचार । छेड़छाड़ ।

प्रतिपूजनं (न०) } प्रतिपूजा (स्त्री०) } १ अभिवादन । सम्मान प्रदर्शन । २ पारस्परिक अभिवादन । पारस्परिक शिष्टाचार प्रदर्शन ।

प्रतिपूरणं (न०) १ भरना । परिपूर्ण करना । २ (सुईदार पिचकारी से) किसी तरल पदार्थ को भीतर डालना ।

प्रतिप्रणामः (न०) प्रणाम के बदले का प्रणाम ।

प्रतिप्रदानं (न०) १ लौटाना । किसी ली हुई या धरोहर रखी हुई वस्तु को लौटाना । २ विवाह में दान करना ।

प्रतिप्रयाणं (न०) लौटना । फिरना ।

प्रतिप्रश्नः (पु०) १ प्रश्न के बदले प्रश्न । २ उत्तर ।

प्रतिप्रसवः (पु०) अपवाद का अपवाद । जिस बात का एक स्थान पर निषेध किया गया हो उसीका किसी विशेष अवस्था में विधान ।

प्रतिप्रहारः (पु०) प्रहार के बदले प्रहार । चोट के बदले चोट ।

प्रतिप्लवनम् (न०) कूद कर लौट आना ।

प्रतिफलः (पु०) } प्रतिफलनं (न०) } १ परिणाम । नतीजा । २ प्रतिबिम्ब छाया । परछाँई । ३ प्रतिशोध । ४ बदला ।

प्रतिफुल्लक (वि०) फूलने वाला । पूरा खिला हुआ ।

प्रतिबद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । २ सम्बन्ध युक्त । ३ जिसमें रुकावट या प्रतिबन्ध हो । ४ जड़ा हुआ । ५ फँसा हुआ । पड़ा हुआ । ६ हटाया हुआ । ७ जो हताश हो चुका हो । ८ अविच्छिन्न सम्बन्ध युक्त जैसे आग और धुँआ ।

प्रतिबंधः } प्रतिबन्धः } (पु०) १ बंधन । २ रोक । अटकाव । ३ विघ्न । बाधा । ४ सामना । मुकाबला । ५ घिराव । ६ सम्बन्ध । ७ अनिवार्य तथा अविच्छिन्न सम्बन्ध ।

प्रतिबंधक } प्रतिबन्धक } (वि०) [स्त्री०—प्रतिबन्धिका] १ बाँधने वाला । गसने वाला । २ रोकने वाला । अटकाने वाला । ३ मुकाबला करने वाला । सामना करने वाला ।

प्रतिवंधकः }
प्रतिवन्धकः } (पु०) शाखा । अङ्कुर ।

प्रतिवंधनं } (न०) १ वंधन । २ क़ैद । ३ विघ्न ।
प्रतिवन्धनम् } वाधा ।

प्रतिवंधिः, प्रतिवन्धिः (पु०) } १ आपत्ति । एत-
प्रतिवंधी, प्रतिवन्धी (स्त्री०) } राज़ । ऐसी तर्क जो विपक्ष पर भी समान रूप से असर डाले । (इसे "प्रतिवन्दी" भी कहते हैं ।)

प्रतिवाधक (वि०) १ हटाने वाला । दूर भगा देने वाला । २ रोकने वाला । वाधा डालने वाला ।

प्रतिवाधनम् (न०) १हटाना । दूर भगाना । २नामंजूर करना । खारिज करना । अस्वीकृत करना ।

प्रतिविंवनं } (न०) १ परछाँई । प्रतिच्छाया । २
प्रतिविम्बनम् } तुलना ।

प्रतिविंवित } (वि०) जिसका प्रतिविम्व पड़ता हो ।
प्रतिविम्वित } जिसकी परछाँही पड़ती हो । २ जो झलकता हो । जिसका आभास मिलता हो ।

प्रतिवुद्ध (व० कृ०) १ जाना हुआ । पहचाना हुआ । देखा हुआ । २ प्रसिद्ध । विख्यात ।

प्रतिवुद्धि (स्त्री०) १ जागृति । २ विरोधी अभिप्राय या इरादा ।

प्रतिवोधः (पु०) १ जागना । २ ज्ञान । अवगति । ३ शिक्षण । ४ युक्ति । तर्क ।

प्रतिवोधनम् (न०) १ जागरण । जागृति । २ शिक्षण । शिक्षा । ज्ञानोत्पादन ।

प्रतिवोधित (व० कृ०) १ जागा हुआ । २ शिक्षित । सिखलाया हुआ ।

प्रतिभा (स्त्री०) १ सूरत । रूप । चितवन । २ उज्ज्वलता । चमक । ३ बुद्धि । समझदारी । ४ असाधारण मानसिक शक्ति । असाधारण बुद्धि-वल । ५ प्रतिभा । प्रतिविम्व । ६ साहस । वीरता । धृष्टता । ढिठाई । अक्खड़पन । गुस्ताखी । —अन्वित, (वि०) १ बुद्धिमान । २ अक्खड़ । साहसी । —मुख, (वि०) साहसी । पूर्ण विश्वासी । —हानिः, (स्त्री०) १ अन्धकार । २ बुद्धि का अभाव ।

प्रतिभात (व० कृ०) १ चमकीला । प्रकाशवान् । २ जाना हुआ । समझा हुआ ।

प्रतिभानं (न०) १ प्रभा । चमक । २ बुद्धि । ३ हाज़िरजवावी । प्रत्युत्पन्नमतित्व ।

प्रतिभाषा (स्त्री०) उत्तर । जवाव ।

प्रतिभासः (पु०) १ (सहसा उत्पन्न हुआ) । १ चेत या वोध । २ आकृति । ३ भ्रम । धोखा ।

प्रतिभासनम् (न०) आकृति । शक्ल । सूरत ।

प्रतिभिन्न (व० कृ०) १ विधा हुआ । छिदा हुआ । २ घनिष्ठ सम्बन्ध युक्त । विभक्त ।

प्रतिभूः (पु०) ज़मानत । हाँमी ।

प्रतिभेदनम् (न०) १ वेधना । घुसना । काटना । चीरना । सन्धि करना । ३ खोलना । ४ विभाग करना ।

प्रतिभोगः (पु०) उपभोग ।

प्रतिमा (स्त्री०) १ मूर्ति । अनुकृति । प्रतिविम्व । छाया । ३ माप । प्रसार । ४ हाथी का शिरोभाग विशेष । —गत, (वि०) मूर्ति में विद्यमान । —चन्द्रः, (पु०) चन्द्रमा का प्रतिविम्व । —परिचारकः, (पु०) पुजारी । अर्चक ।

प्रतिमेन्दुः (पु०) }
प्रतिमाशशाङ्कः (पु०) } चन्द्रमा का प्रतिविम्व ।

प्रतिमानं (न०) १ दृष्टान्त । उदाहरण । आदर्श । २ मूर्ति । प्रतिमा । ३ अनुकृति । सादृश्य । ४ मान । तौल विशेष । ५ हाथी के दोनों दाँतों के वीच का भाग । ६ प्रतिविम्व ।

प्रतिमुक्त (व० कृ०) १ पहिना हुआ । काम में लाया हुआ । २ वाँधा हुआ । वँधा हुआ । ३ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित । हथियार वंद । ४ छोड़ा हुआ । मुक्त किया हुआ । ५ लौटाया हुआ । फेर कर दिया हुआ । ६ जोर से फेंक कर मारा हुआ ।

प्रतिमोक्षः (पु०) }
प्रतिमोक्षणम् (न०) } छुटकारा । मुक्ति ।

प्रतिमोचनम् (न०) १ खोलना । ढीला करना । २ परिशोध । वदला । ३ छुटकारा । मुक्ति ।

प्रतियत्नः (पु०) १ उद्योग । २ तैयारी । ३ पूर्ण करना । ४ नया गुण या खूवी उत्पन्न कर देना । ५ अभिलाषा । इच्छा । ६ मुक़ावला । सामना । ७ वदला । ८ कैदी वनाना । गिरफ़्तार करना । ९ अनुग्रह । कृपा ।

प्रतियातनं (न०) प्रतिशोध । बदला ।

प्रतियातना (स्त्री०) तसवीर । मूर्ति । प्रतिमा ।

प्रतियानं (न०) लौटना । वापस आना ।

प्रतियोगः (पु०) १ किसी वस्तु का दूसरा प्रतिरूप या उतारा । २ सामना । मुकाबला । ३ खण्डन । ४ सहयोग । ५ मारक ।

प्रतियोगिन् (पु०) १ शत्रु । विरोधी । बैरी । २ बाधा डालने वाला । ३ सहायक । मददगार । साथी । ४ बराबर वाला । जोड़ का । जोड़ीदार ।

प्रतियोद्धृ (पु०), प्रतियोधः (पु०) शत्रु । बैरी ।

प्रतिरक्षणं (न०), प्रतिरक्षा (स्त्री०) रक्षा । हिफ़ाज़त ।

प्रतिरंभः, प्रतिरम्भः (पु०) क्रोध । रोष ।

प्रतिरवः (पु०) १ झगड़ा । टंटा । २ प्रतिध्वनि ।

प्रतिरुद्ध (व० कृ०) १ अवरुद्ध । रुका हुआ । २ अटका हुआ । ३ निर्बल । ४ बेकाम किया हुआ ।

प्रतिरोधः (पु०) १ अटकाव । रोकटोक । २ घेरा । अवरोध । ३ विरोधी । ४ छिपाव । दुराव । ५ चोरी । डाकेज़नी । ६ भर्त्सना । धिक्कार ।

प्रतिरोधकः (पु०), प्रतिरोधिन् (पु०) १ बैरी । शत्रु । २ डाँकू । चोर । ३ अटकाव । रोकटोक ।

प्रतिरोधनं (न०) अवरोध । रोक । अटकाव ।

प्रतिलंभः, प्रतिलम्भः (पु०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ भर्त्सना । कुवाच्य । गाली गलौज ।

प्रतिलाभः (पु०) वापिस लेना । फेर लेना । प्राप्त करना ।

प्रतिवचनं (न०), प्रतिवचस् (न०), प्रतिवाच् (स्त्री०), प्रतिवाक्यं (न०) उत्तर । जवाब ।

प्रतिवर्तनम् (न०) लौटाव । फिराव । लौटने की क्रिया ।

प्रतिवसथः (पु०) ग्राम । गाँव ।

प्रतिवहनं (न०) उलटी ओर ले जाना । विरुद्ध दिशा में ले जाना ।

प्रतिवादः (पु०) १ उत्तर । उत्तर का उत्तर । जवाब । २ अस्वीकृति । इंकार ।

प्रतिवादिन् (पु०) १ प्रतिवादी । विपक्षी । मुद्दालह ।

प्रतिवारः (पु०), प्रतिवारणम् (न०) रोकना । मना करना ।

प्रतिवार्ता (स्त्री०) वृत्तान्त । सूचना । संवाद । ख़बर ।

प्रतिवासिन् (वि०) [स्त्री०—प्रतिवासिनी] समीप का वासी । (पु०) पड़ोसी ।

प्रतिविघातः (पु०) बचाव । चोट के बदले चोट ।

प्रतिविधानं (न०) १ प्रतीकार । २ व्यूहरचना । ३ रोक । ४ उपसंस्कार ।

प्रतिविधिः (पु०) १ बदला । दाँव । २ प्रतीकार । इलाज । उपाय ।

प्रतिविशिष्ट (वि०) अत्युत्तम ।

प्रतिवेशः (पु०) १ पड़ोसी । २ पड़ोसी का वासस्थान । पड़ोस ।—वासिन्, (वि०) पड़ोस में बसने वाला ।

प्रतिवेशिन् (वि०) [स्त्री०—प्रतिवेशिनी] पड़ोसी ।

प्रतिवेश्यः (पु०) पड़ोसी ।

प्रतिवेष्टित (व० कृ०) प्रत्यावृत्त । लौटा हुआ । विपर्यस्त ।

प्रतिव्यूहः (पु०) १ शत्रु पर आक्रमण करने के लिये सेना का व्यूह बनाना । २ समुदाय । दल ।

प्रतिशमः (पु०) अवसान । समाप्ति ।

प्रतिशयनम् (न०) किसी कामना की सिद्धि के लिये देवस्थान पर खाना पीना त्याग कर पड़ा रहना । धरना देना ।

प्रतिशयित (वि०) धरना देने वाला ।

प्रतिशापः (पु०) शाप के बदले शाप । अकोसा के बदले अकोसा ।

प्रतिशासनं (न०) १ आज्ञा प्रदान करना । २ किसी कार्य पर बाहिर भेजना । आज्ञा । आदेश ।

प्रतिशिष्ट (व० कृ०) १ भेजा हुआ । आज्ञप्त । २ विसर्जन किया हुआ । छुड़ाया हुआ । खारिज किया हुआ । ३ प्रख्यात । प्रसिद्ध ।

प्रतिश्या (स्त्री०), प्रतिश्यानं (न०), प्रतिश्यायः (पु०) ज़ुकाम । श्लेष्मा । ठंड ।

प्रतिश्रयः (पु०) १ आश्रम । २ घर । ३ सभा । ४

यज्ञमण्डप । ५ साहाय्य । सहायता । ६ वादा । प्रतिज्ञा ।

प्रतिश्रवः (पु०) १ रज़ामंदी । इकरार । वादा । २ गूंज । झाँई । प्रतिध्वनि ।

प्रतिश्रवणम् (न०) १ सुनना । २ प्रतिज्ञाबद्ध होना । ३ प्रतिज्ञा । वादा । इक़रार ।

प्रतिश्रुत्, प्रतिश्रुतिः (स्त्री०) १ वादा । प्रतिज्ञा । २ प्रतिध्वनि । गूँज । झाँई ।

प्रतिश्रुत (व० कृ०) प्रतिज्ञात । स्वीकार किया हुआ । मंज़ूर किया हुआ ।

प्रतिषिद्ध (व० कृ०) १ निषिद्ध । वर्जित । अस्वीकृत । २ खण्डित । खण्डन किया हुआ ।

प्रतिषेधः (पु०) १ निषेध । मनाई । २ अस्वीकृति । इंकार । ३ अपलाप । खण्डन । ४ अस्वीकार सूचक अव्ययात्मक शब्द ।—अक्षरं, (न०)—उक्तिः, (स्त्री०) इंकार । अस्वीकारोक्ति ।—उपमा, (स्त्री०) दण्डी कवि वर्णित कई प्रकार की उपमाओं में से एक ।

प्रतिषेधक, प्रतिषेद्धृ (वि०) १ प्रतिषेध करने वाला । मना करने वाला । २ रोकने वाला । (पु०) बाधा डालने वाला । मनाई करने वाला ।

प्रतिषेधनम् (न०) १ रोक थाम । २ निषेध । मनाई । ३ इंकार । अस्वीकृति ।

प्रतिष्कः, प्रतिष्कसः (पु०) जासूस । भेदिया । दूत ।

प्रतिष्कशः (पु०) १ भेदिया । दूत । २ चाबुक । ३ चमड़े का तस्मा ।

प्रतिष्कषः (पु०) चाबुक । कोड़ा । चमड़े का तस्मा ।

प्रतिष्टभः, प्रतिष्टम्भः (पु०) अवरोध । शोक । बाधा ।

प्रतिष्ठा (स्त्री०) १ स्थापना । पधरौनी । अवस्थान । स्थिति । २ घर । मकान । आबादी । ३ स्थिरता । स्थायित्व । दृढ़भित्ति । ४ नीव । थुनकिया । ओटा । खभा । ६ उच्चपद । उच्च अधिकार । ७ कीर्ति । यश । ख्याति । प्राण-प्रतिष्ठा (किसी देवमूर्ति की) ६ अभीष्ट सिद्धि । १० शान्ति । विश्राम । ११ आधार । पात्र । १२ पृथिवी । १३ अभिषेक । १४ सीमा । हद ।

प्रतिष्ठानं (न०) १ नीव । आधार । २ जगह । स्थान । अवस्थिति । ३ टाँग । पैर । ४ एक प्राचीन राजधानी का नाम जो प्रयाग के समीप गंगा पार झूसी के नाम से अब प्रसिद्ध है । ५ गोदावरी नदी के तटवर्ती एक नगर का नाम ।

प्रतिष्ठित (व० कृ०) १ खड़ा किया हुआ । लगाया हुआ । २ गाड़ा हुआ । स्थापित किया हुआ । ३ अवस्थित । ४ अभिषेक किया हुआ । ५ पूर्ण किया हुआ । ६ जिसका मूल्य लग चुका हो । ७ प्रसिद्ध । प्रख्यात ।

प्रतिसंविद् (स्त्री०) किसी वस्तु का सम्यक् परिज्ञान या जानकारी ।

प्रतिसंहारः (पु०) १ वापिस कर लेने की क्रिया । २ ह्रास । न्यूनता । सिमटाव । सङ्कोचन । ३ धीशक्ति । बोध । अन्तर्निवेश । ४ त्याग ।

प्रतिसंहृत (व० कृ०) १ वापिस लिया हुआ । फेरा हुआ । २ समझा हुआ । शामिल किया हुआ । सिकुड़ा हुआ । दबा हुआ ।

प्रतिसंक्रमः (पु०) १ प्रतिच्छाया । परछाँई । २ परिशोषन । तिरोधान ।

प्रतिसंख्या (स्त्री०) अव्यवहित ज्ञान । चैतन्य ।

प्रतिसञ्चरः (पु०) पुराणानुसार प्रलय का एक भेद ।

प्रतिसंदेश, प्रतिसन्देशः (पु०) सन्देसे का जवाब । सन्देशे के उत्तर में संदेसा ।

प्रतिसंधानं, प्रतिसन्धानं (न०) १ मिलान । जोड़ । दो युगों के बीच का सन्धिकाल । ३ इलाज । ४ आत्म संयम । जितेन्द्रियत्व । ५ प्रशंसा ।

प्रतिसंधिः, प्रतिसन्धिः (पु०) १ पुनर्मिलन । २ गर्भाशय में प्रवेश करण । ३ दो युगों के परिवर्तन का मध्यकाल । ४ उपरम । विश्राम ।

प्रतिसमाधानं (न०) इलाज । चिकित्सा ।

प्रतिसमानम् (न०) १ जोड़ीदार । बराबरी का । २ सामना करना । मुकाबला करना ।

प्रतिसरं (न०), **प्रतिसरः** (पु०) कलाई या गरदन में बाँधने का गाँडा या तावीज़ । (पु०) १ नौकर । अनुचर । कङ्कण । व्याह में पहिना जाने वाला कङ्कण विशेष । ३ पुष्पहार या फूलमाला । ४ प्रभात । ५ सेना का पश्चाद् भाग । ६

तांत्रिक मंत्र विशेष। ७ घाव का पुरना या अच्छा होना।

प्रतिसर्गः (पु०) पुराण के मतानुसार वे सब सृष्टियाँ जिनकी रचना, ब्रह्मा के मानसपुत्रों द्वारा की गयी। २ प्रलय।

प्रतिसांधानिकः }
प्रतिसान्धानिकः } (पु०) भाट। मागध। वंदी।

प्रतिसारणं (न०) १ घाव के किनारों की सफाई और मल्लहम पट्टी करना। २ घाव में मलहम लगाने का एक औज़ार। ३ भगंदर बवासीर रोगों को गरम घी या तेल से दागने की सुश्रुत के मतानुसार क्रिया विशेष।

प्रतिसीरा (स्त्री०) पर्दा। कनात। चिक। दुवनिका।

प्रतिसृष्ट (व० कृ०) १ भेजा हुआ। रवाना किया हुआ। २ प्रसिद्धि प्राप्त। ३ खदेड़ा हुआ। भगाया हुआ। खारिज किया हुआ। ४ प्रमत्त। नशे में चूर।

प्रतिस्नात (व० कृ०) स्नान किया हुआ।

प्रतिस्नेहः (पु०) प्यार के बदले प्यार।

प्रतिस्पंदनम् }
प्रतिस्पन्दनम् } (न०) हृदय की धकधक।

प्रतिस्वनः }
प्रतिस्वरः } (पु०) प्रतिध्वनि। काँईं।

प्रतिहत (व० कृ०) १ हटाया हुआ। २ भगाया हुआ। ३ अवरुद्ध। रुका हुआ। ६ भेजा हुआ ५ नापसन्द। घृणास्पद। ६ हताश।—मति, (वि०) घृणा। अरुचि।

प्रतिहतिः (स्त्री०) १ रोकने या हटाने की चेष्टा। २ प्रतिघात। ३ नैराश्य। विफलता। ४ क्रोध। ५ टक्कर।

प्रतिहननं (न०) वह आघात जो किसी के आघात करने पर किया जाय।

प्रतिहर्तृ (पु०) निवारण करने वाला। पीछे हटाने वाला।

प्रतिहारः }
प्रतीहारः } (पु०) १ द्वार। दरवाज़ा। २ द्वारपाल। दरवान। ३ ऐन्द्रजालिक। जादूगर। ४ इन्द्रजाल।—भूमिः, (स्त्री०) घर का चबूतरा। —रक्षी, (स्त्री०) स्त्रीद्वारपाल।

प्रतिहारकः (पु०) ऐन्द्रजालिक।

प्रतिहासः (पु०) हँसी के बदले हँसी।

प्रतिहिंसा (स्त्री०) बदला लेना। वैर चुकाना।

प्रतीक (वि०) १ प्रतिकूल। विरुद्ध। २ उलटा। औंधा। विलोम।

प्रतीकः (पु०) १ अवयव। अङ्ग। २ अंश। भाग।

प्रतीकं (न०) १ मूर्त्ति। २ मुख। चेहरा। ४ किसी पद या वाक्य का प्रथम शब्द।

प्रतीक्षणं (न०) }
प्रतीक्षा (स्त्री०) } १ आसरा। इन्तज़ार। २ प्रत्याशा। ३ ख़याल। विचार। ध्यान।

प्रतीक्षित (व० कृ०) १ वह जिसकी प्रतीक्षा की गयी हो या जिसकी बाट जोही गयी हो। २ विचार किया हुआ। सोचा विचारा हुआ।

प्रतीक्ष्य (वि०) १ प्रतीक्षा करने योग्य। सोचने योग्य। विचारने योग्य। ३ माननीय। प्रतिष्ठित। ४ परिपूर्ण करने योग्य।

प्रतीची (स्त्री०) पश्चिम दिशा।

प्रतीचीन (वि०) १ पश्चिमी। पाश्चात्य। २ भविष्य का। पीछे का। अगला।

प्रतीच्छकः (पु०) पाने वाला।

प्रतीच्य (वि०) पाश्चात्य देश वासी। पश्चिम दिशा का।

प्रतीत (व० कृ०) १ गुज़रा हुआ। गया हुआ। व्यतीत। अतीत। ३ विश्वस्त। विश्वास किया हुआ। ४ सिद्ध। साबित किया हुआ। स्थापित। ६ माना हुआ। जाना हुआ। ६ भली भाँति ज्ञात। प्रसिद्ध। विख्यात। ७ दृढ़ निश्चय। ८ प्रसन्न। आनन्दित। ९ प्रतिष्ठित। सम्मानित। १० चतुर। विद्वान्। बुद्धिमान।

प्रतीतिः (स्त्री०) १ विश्वास। निश्चित विश्वास या धारणा। २ यकीन। प्रत्यय। ३ ज्ञान। जानकारी। ४ कीर्ति। ख्याति। ५ सम्मान। प्रतिष्ठा। ६ हर्ष। आनन्द।

प्रतीत्त (वि०) फेर कर दिया हुआ। वापिस किया हुआ।

प्रतीधकः (पु०) विदेह देश का नामान्तर।

प्रतीप (वि०) १ विरुद्ध। प्रतिकूल। २ उलटा। विलोम। ३ पश्चाद्गामी। ४ अप्रिय। अप्रसन्नकर

५ हठी। अवज्ञाकारी। दुराग्रही। ६ बाधाकारक।

प्रतीपं (न०) अर्थालङ्कार विशेष। इसमें उपमेय को उपमान के समान न कह कर, उलटा उपमान को उपमेय के समान कहते हैं। अथवा उपमेय द्वारा उपमान के तिरस्कार का वर्णन करते हैं।

प्रतीपः (पु०) महाराज शान्तनु के पिता का नाम।

प्रतीपम् (अव्यया०) १ विरुद्ध इसके, दूसरी ओर। २ उलटे क्रम से। विलोम क्रम से। ३ प्रतिकूल। बरखिलाफ़।—ग (वि०) १ प्रतिकूल गमनकारी। २ वैरी। प्रतिकूल।—गमनं, (न०) –गतीः, (स्त्री०) पीछे की ओर की गति या गमन।—तरणं, (न०) धार के विरुद्ध जाना या नाव चलाना।—दर्शिनी, (स्त्री०) स्त्री। औरत। नववधू।—वचनं, (न०) खण्डन। किसी के वचन के विरुद्ध कथन।—विपाकिन् (वि०) उलटा फल देने वाला।

प्रतीरं (न०) समुद्रतट। नदीतट। तट।

प्रतीवापः (पु०) १ वह दवा जो पीने के लिये काढ़े आदि में मिलायी जाय। २ किसी धातु का रूप बदलने के लिये उसमें अन्य धातु या वस्तु मिलाना। ३ संक्रामक रोग। उड़नी बीमारी। छुआछूत के रोग। प्लेग।

प्रतीवेश, **प्रतीहार**, **प्रतीहास** } देखो प्रतिवेश

प्रतीवेशिन् (वि०) देखो प्रतिवेशिन्।

प्रतीहारी (स्त्री०) १ स्त्री दरवान या स्त्री द्वारपाल। २ द्वारपाल। दरवान।

प्रतुदः (पु०) १ पक्षियों की जाति विशेष। (इस जाति में तोता, बाज, कौआ आदि हैं)। २ छेदने या चुभोने का यंत्र विशेष।

प्रतुष्टिः (स्त्री०) सन्तोष। हर्ष।

प्रतोदः (पु०) १ अङ्कुश। २ चाबुक। ३ अरई। चुभोने का औज़ार।

प्रतूर्ण (वि०) वेगवान्। तेज़।

प्रतोली (स्त्री०) गली। आमसड़क। किसी नगर का मुख्य मार्ग।

प्रत्त (व० कृ०) दिया हुआ। दे डाला हुआ। चढ़ाया हुआ। भेंट किया हुआ। २ विवाह में दिया हुआ। विवाहित।

प्रत्न (वि०) १ प्राचीन। पुरातन। २ अगला। ३ परंपरागत।

प्रत्यक् (अव्यया०) १ विरुद्ध दिशा में। पीछे की ओर। २ प्रतिकूल। ३ पश्चिम की ओर। ४ भीतर की ओर। अंदर से। ५ पहिले। प्राचीन काल में।

प्रत्यक्ष (वि०) १ नयनगोचर। २ उपस्थित। विद्यमान। आँखों के सामने। इन्द्रियगोचर। ४ स्पष्ट। साफ। ५ सीधा। समीप। ६ शरीर सम्बन्धी।—दर्शनः,—दर्शिन्, (पु०) चश्मदीद गवाह। वह साक्षी जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो।—दृष्ट, (वि०) ख़ुद का देखा हुआ।—प्रमा, (स्त्री०) यथार्थ ज्ञान।—प्रमाणं, (न०) आँखों से देखा हुआ सबूत।—वादिन्, (पु०) वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण या इन्द्रिय जन्य प्रमाण माने।—विहित, (वि०) स्पष्ट रूप से आदेश किया हुआ।

प्रत्यक्षं (न०) १ स्पष्टता। २ चार प्रकार के प्रमाणों में से एक।

प्रत्यक्षिन् (पु०) आँखों देखा गवाह।

प्रत्यग्र (वि०) १ ताज़ा। जवान। नया। टटका। २ दुहराया हुआ। ३ विशुद्ध।—वयस्, (वि०) जवान।

प्रत्यंच्, **प्रत्यञ्च्** } (वि०) [स्त्री०—प्रतीची] बोपदेव के मतानुसार प्रत्यञ्ची] १ मुड़ा हुआ। घूमा हुआ। २ पीछे पड़ा हुआ। ३ अगला। निम्न। ४ लौटा हुआ। फिरा हुआ। बदला हुआ। ५ पश्चिमी। पाश्चात्य।—आत्मन्, (पु०) (=प्रत्यगात्मन्) व्यक्तिगत जीव।—आशापतिः, (=प्रत्यगाशापतिः) (पु०) पश्चिम दिशा के दिक्पाल वरुण देव।—उदच्, (स्त्री०) (=प्रत्यगुदच्) उत्तर-पश्चिम कोण। वायव्यकोण।—दक्षिणतः, (=प्रत्यग्दक्षिणतः) (अव्यया०) नैऋत्य कोण की ओर।
—दृश्, (स्त्री०) (=प्रत्यग्दृश्) अन्तर्दृष्टि
—मुख, (वि०) [=प्रत्यङ्मुख) पश्चिम की

ओर । उलटा मुँह किये हुए ।—स्रोतस्, (=प्रत्यक्स्रोतस्) (वि०) पश्चिम की ओर बहने वाली । (स्त्री०) नरमदा नदी का नामान्तर ।

प्रत्यंचित (वि०) सम्मानित । पूजित । अर्चित ।

प्रत्यदनं (न०) १ भोजन करना । २ भोजन ।

प्रत्यभिज्ञा (स्त्री०) वह ज्ञान जो किसी देखी हुई वस्तु को अथवा उसके समान अन्य किसी वस्तु को फिर से देखने पर हो । स्मृति की सहायता से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ।

प्रत्यभिज्ञानम् (न०) समान वस्तु को देख कर किसी पूर्व देखी हुई वस्तु का स्मरण हो आना ।

प्रत्यभिज्ञात (व० कृ०) पहचाना हुआ ।

प्रत्यभिभूत (व० कृ०) जीता हुआ ।

प्रत्यभियुक्त (व० कृ०) अभियोग के बदले अभियोग लगाया हुआ ।

प्रत्यभियोगः (पु०) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर लगावे ।

प्रत्यभिवादः (पु०) } नमस्कार के बदले का नमस्कार ।
प्रत्यभिवादनं (न०) }

प्रत्यभिस्कंदनं } (न०) अभियोग के बदले का अभियोग ।
प्रत्यभिस्कन्दनम् }

प्रत्ययः (पु०) १ प्रतीति । विश्वास । २ भरोसा । ३ ज्ञान । बुद्धि । समझ । धारणा । राय । ४ निश्चयत्व । ५ अनुभव । बोध । ६ कारण । हेतु । ७ प्रसिद्ध । ख्याति । ८ वह अक्षर या शब्द जो किसी धातु या मूल शब्द के अन्त में जोड़ा जाय । ९ शपथ । १० परमुखापेक्षी । ११ चाल । प्रचलन । रवाज़ । रीति । रस्म । १२ छिद्र । १३ बुद्धि ।—कारक, (वि०)—कारिन्, (वि०) विश्वास दिलाने वाला ।—कारिणी, १ (स्त्री०) मोहर । सील ।

प्रत्ययित (वि०) १ विश्वास किये हुए । निर्भर । २ विश्वस्त । विश्वासपात्र ।

प्रत्ययिन् (वि०) १ विश्वास करने वाला । २ विश्वास करने योग्य । विश्वस्त ।

प्रत्यर्थ (वि०) उपयोगी । काम का ।

प्रत्यर्थम् (न०) १ उत्तर । जवाब । २ विरोध ।

प्रत्यर्थकः (पु०) विपत्ती । विरोधी ।

प्रत्यर्थिन (वि०) [स्त्री०—प्रत्यर्थिनी] विरोधी । (पु०) १वैरी । शत्रु । २ प्रतिद्वन्द्वी । जोड़ीदार । ३ प्रतिवादी । मुद्दालह ।—भूत (वि०) बाधक होना ।

प्रत्यर्पणं (न०) वापिस देना । लिये हुए को लौटा देना ।

प्रत्यर्पित (व० कृ०) लौटाया हुआ । फेरा हुआ ।

प्रत्यवमर्शः } (पु०) १ समाधि । भली भाँत विचार । २ परामर्श । सलाह । ३ परिणाम ।
प्रत्यवमर्षः }

प्रत्यवरोधनं (न०) रोक टोक । बाधा अटकाव ।

प्रत्यवसानं (न०) खाना या पीना ।

प्रत्यवसित (वि०) खाया हुआ । पिया हुआ ।

प्रत्यवस्कंदः (पु०) } व्यवहार शास्त्रानुसार प्रतिवादी का वह उत्तर जो वादी के कथन का खण्डन करने को दिया जाय । जवाब दावा ।
प्रत्यवस्कन्दः (पु०) }
प्रत्यवस्कंदनं (न०) }
प्रत्यवस्कन्दनम् (न०) }

प्रत्यवस्थानं (न०) १ स्थानान्तरकरण । २ विरोध । मुकाबला ।

प्रत्यवहारः (पु०) १ वापिसी । २ प्रलय । संहार ।

प्रत्यवायः (पु०) १ ह्रास । न्यूनता २ अटकाव । बाधा । ३ विरुद्ध मार्ग । विरुद्धता । ४ पाप । अपराध । पापमयता ।

प्रत्यवेक्षणं (न०) } किसी बात को भलीभाँति देखना । देखना भालना । मुआयना करना ।
प्रत्यवेक्षा (स्त्री०) }

प्रत्यस्तमयः (पु०) १ सूर्यास्त । २ अवसान । समाप्ति ।

प्रत्याक्षेपक (वि०) [स्त्री०—प्रत्याक्षेपिका] चिढ़ाने वाला । जीट उड़ाने वाला । तिरस्कार करने वाला ।

प्रत्याख्यात (व० कृ०) १ अस्वीकृत । जो अङ्गीकार न किया हो । २ वर्जित । निषिद्ध । ३ बरतरफ किया हुआ । हटाया हुआ । खारिज किया हुआ ।

प्रत्याख्यानम् (न०) १ अस्वीकृति । २ तिरस्कार । ३ भर्त्सना । ४ खण्डन । प्रतिवाद ।

प्रत्यागतिः (स्त्री०) वापसी ।

प्रत्यागमः (पु०) } वापिसी । लौट आना । वापिस आना ।
प्रत्यागमनम् (न०) }

प्रत्यादानं (न०) वापिस ले लेना।

प्रत्यादिष्ट (व० कृ०) १ निर्दिष्ट। २ सूचित किया हुआ। ३ अस्वीकृत किया हुआ। ४ वरतरफ किया हुआ। हटाया हुआ। ५ छाया में फेंका हुआ। ६ चेतावनी दिया हुआ। सावधान किया हुआ।

प्रत्यादेशः (पु०) १ आज्ञा। आदेश। २ सूचना। घोषणा। ३ अस्वीकृति। प्रतिवाद। ४ ग्रसित करने की क्रिया। लज्जित करने वाला। ५ चेतावनी। ६ आकाशवाणी।

प्रत्यानयनं (न०) वापिसी। दूसरे के हाथ में गयी हुई वस्तु को फिर पाना।

प्रत्यापत्तिः (स्त्री०) १ वापिसी। २ वैराग्य।

प्रत्यायः (पु०) कर। टैक्स।

प्रत्यायक (वि०) १ सिद्ध करने वाला। समझाने वाला। २ विश्वास कराने वाला।

प्रत्यायनम् (न०) १ (वर) को घर लाना। २ (सूर्य का) अस्त होना।

प्रत्यालीढ (न०) धनुषधारियों के बैठने का आसन विशेष।

प्रत्यावर्तनम् (न०) लौटना। लौटकर आना। वापस आना।

प्रत्याश्वस्त (व० कृ०) ढाँढस बँधाया हुआ। धीरज बँधाया हुआ। तरोताज़ा किया हुआ।

प्रत्याश्वासः (पु०) स्वाँस चलने की क्रिया। फिर से स्वाँस का चलने लगना।

प्रत्याश्वासनम् (न०) धीरज बँधाना। मातमपुरसी।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री० (समय या स्थान की) समीपता। २ घनिष्टता। ३ उपमिति। भिन्न भिन्न वस्तुओं का सादृश्य।

प्रत्यासन्न (व० कृ०) पास आया हुआ। निकट पहुँचा हुआ।

प्रत्यासरः | **प्रत्यासारः** (पु०) १ सेना का पीछे का भाग। २ सेना का व्यूह। व्यूह के पीछे व्यूह।

प्रत्याहरणं (न०) १ वापस लेना या लाना। २ रोक रखना। ३ इन्द्रियसंयम।

प्रत्याहारः (पु०) १ पीछे खींच लेना। २ पीछे हटा लेना। पीछे हट आना। २ रोक रखना। ३ इन्द्रिय दमन। ४ प्रलय। ४ योग के आठ अंगों में से एक।

प्रत्युक्त (व० कृ०) उत्तर दिया हुआ। जिसका उत्तर दिया जा चुका हो।

प्रत्युक्तिः (स्त्री०) उत्तर। जवाब।

प्रत्युच्चारः (पु०) | **प्रत्युच्चारणं** (न०) पुनरुक्ति।

प्रत्युज्जीवनं (न०) मरे हुए व्यक्ति का फिर जी उठना। पुनर्जीवन। –प्रत्युत, (अव्यया०) विपरीतता। वल्कि। वरन्। इसके विरुद्ध।

प्रत्युत्क्रमः (पु०) | **प्रत्युत्क्रमणं** (न०) | **प्रत्युत्क्रान्तिः** (स्त्री०) १ उद्योग जो कोई कार्य आरम्भ करने के लिये किया जाय। २ लड़ाई की तैयारी। ३ वह आक्रमण जो युद्ध के समय सब से पहले हो।

प्रत्युत्थानं (न०) १ अभ्युत्थान। किसी बड़े के आने पर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शन करने के लिये उठ खड़े होना। २ किसी के विरुद्ध उठ खड़े होना। युद्ध के लिये तैयारी करना।

प्रत्युत्थित (व० कृ०) किसी मित्र या शत्रु से मिलने के लिये उठा हुआ।

प्रत्युत्पन्न (व० कृ०) १ जो फिर से उत्पन्न हुआ हो। २ जो ठीक समय पर उत्पन्न हुआ हो। उद्यत। तत्पर। क्षिप्रकारी।—मति, (वि०) १ हाज़िरजवाब। वह जो मौके पर ठीक उत्तर दे या समय पर जिसकी बुद्धि काम कर जाय। तत्पर बुद्धि वाला। २ साहसी। हिम्मतवाला। ३ तीक्ष्ण। तीव्र।

प्रत्युत्पन्नं (न०) गुणा।

प्रत्युदाहरणं (न०) उदाहरण के बदले उदाहरण। विरुद्ध उदाहरण।

प्रत्युद्गत (व० कृ०) १ अतिथि के आने पर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शनार्थ अपना आसन छोड़ उठ खड़ा होना। अभ्युत्थान।

प्रत्युद्गतिः (स्त्री०) | **प्रत्युद्गम** (पु०) | **प्रत्युद्गमनम्** (न०) आगे बढ़ कर या अपने आसन को छोड़ कर आये हुए अतिथि की आवभगत के लिये उठ खड़ा होना।

प्रत्युद्गमनीयम् (न०) एक प्रकार के वस्त्र का जोड़ा। (उत्तरीय और अधोवस्त्र), जो प्राचीन काल में

यज्ञों में या भोजन के समय पहना जाता था। धोती उपरना।

प्रत्युद्धरणं (न०) १ परहस्तगत वस्तु को वापिस लेना। २ पुनः उठ खड़ा होना।

प्रत्युद्यमः (पु०) १ समान भाव या बल। २ प्रतिरोध। प्रतिक्रिया।

प्रत्युद्यात (वि०) देखो "प्रत्युद्ग।"

प्रत्युन्नमनम् (न०) पुनः उठ खड़े होना। उछल कर लौट आना। पलटा खाना।

प्रत्युपकारः (पु०) वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय।

प्रत्युपक्रिया (स्त्री०) वह सेवा जो किसी सेवा के बदले में की जाय।

प्रत्युपदेशः (पु०) वह उपदेश जो उपदेश के बदले दिया जाया।

प्रत्युपमानं (न०) १ नमूना। बानगी। २यथार्थ नक़ल। । ३ यथार्थ तुलना।

प्रत्युपलब्ध (व० कृ०) वापिस मिला हुआ फिर से पाया हुआ।

प्रत्युपवेशः (पु०) } कोई कार्य कराने के लिये
प्रत्युपवेशनं (न०) } अभ्यास कराना।

प्रत्युपस्थान (वि०) सामीप्य। नैकट्य। पड़ोस।

प्रत्युप्त (व० कृ०) १ जड़ा हुआ। बिछाया हुआ। २ बोया हुआ। ३ गाड़ा हुआ। लगाया हुआ। मजबूत करके गाड़ा हुआ।

प्रत्युषः (पु०) } प्रभात। भोर। तड़का।
प्रत्युषस् (न०) }

प्रत्यूषं (न०) } प्रभात। भोर। सवेरा। तड़का।
प्रत्यूषः (पु०) } (पु०) १ सूर्य। २ आठ वसुओं में से एक वसू का नाम।

प्रत्यूषस् (न०) प्रभात। सवेरा। भोर। तड़का।

प्रत्यूहः (पु०) अड़चन। रोक। अटकाव।

प्रथ् (धा० आत्म०) [प्रथते, प्रथित] १ (धन की) वृद्धि करना। २ (कीर्ति का) फैलाना। ३ प्रसिद्ध होना। विख्यात होना। ४ प्रकट होना। देख पड़ना। प्रकाश में आना।

प्रथा (स्त्री०) कीर्ति। ख्याति।

प्रथित (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ। फैला हुआ। २ प्रसिद्ध किया हुआ। घोषितकिया हुआ। प्रचार किया हुआ। ३ दिखलाया हुआ। प्रकट किया हुआ। ४ प्रसिद्ध। विख्यात।

प्रथिमन् (न०) चौड़ाई। महानता। विस्तार। आयतन।

प्रथिवि (स्त्री०) पृथ्वी। धरा। भूमि।

प्रथिष्ठ (वि०) सब से लंबा। सब से चौड़ा। अर्ज़ में सब से बड़ा।

प्रथीयस् (वि०) [स्त्री०—प्रथीयसी] अपेक्षा कृत लबा, चौड़ा। विस्तृत।

प्रथु (वि०) विस्तृत। चारों ओर व्याप्त या फैला हुआ

प्रथुकः (पु०) च्योरा। चूड़ा। चौंरा।

प्रदक्षिण (वि०) देवपूजन के समय देवमूर्ति आदि को दहिनी ओर का सभक्ति उसके चारों ओर घूमने वाला। २ पूज्य। माननीय। ३ शुभ। मङ्गलकारी।

प्रदक्षिणं (न०) } भक्ति पूर्वक किसी पूज्य को
प्रदक्षिणः (पु०) } दहिनी ओर कर उसके चारों
प्रदक्षिणा (स्त्री०) } ओर घूमना।

प्रदक्षिण (अव्यया०) १ बायीं से दहिनी ओर। २ दहिनी ओर। ३ दक्षिण की ओर। दक्षिण दिशा की ओर।—अर्चिस, (वि०) अग्नि जिसकी लौं दहिनी ओर झुकी हो।—क्रिया, (स्त्री०) परिक्रमा करने की क्रिया।—पट्टिका, (स्त्री०) आँगन। खुला मैदान।

प्रदग्ध (व० कृ०) जला हुआ। जो भस्म हो चुका हो।

प्रदत्त (व० कृ०) दिया हुआ।

प्रदरः (पु०) १ फोड़ने या तोड़ने का भाव। २ अस्थि-भङ्ग। हड्डी का टूटना। दरार। तड़कन। गर्त। गह्वर। ३ सेना का पलायन। ४ स्त्रियो का रोग विशेष जिसमें स्त्रियों के गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहा करता है।

प्रदर्पः (पु०) अभिमान। अकड़। अहङ्कार।

प्रदर्शः (पु०) १ शक्ल। सूरत। चितवन। २ आदेश। आज्ञा।

प्रदर्शक (वि०) दिखलाने वाला। बतलाने वाला।

प्रदर्शनम् (न०) १ सूरत। शक्ल। चितवन। २ दिखावट। दिखलाने का काम। ३ प्रदर्शनी। नुमा-

हुआ। ४ शिक्षण। उपदेश। व्याख्या। ५ उदाहरण। दृष्टान्त।

प्रदर्शित (व० कृ०) १ दिखलाया हुआ। प्रकट किया हुआ। घोषित किया हुआ।

प्रदलः (पु०) तीर।

प्रदवः (पु०) जलन। दहन।

प्रदातृ (पु०) १ दाता। देने वाला। २ उदार पुरुष। ३ कन्यादान (विवाह में) करने वाला। ४ इन्द्र का नामान्तर।

प्रदानं (न०) १ दान। चढ़ावा। भेंट। २ विवाह में देना। ३ शिक्षण। ४ भेंट। दान। पुरस्कार। ५ अंकुश।—शूरः १ (पु०) दानी। दानवीर।

प्रदानकं (न०) भेंट। चढ़ावा। दान। पुरस्कार।

प्रदायं (न०) पुरस्कार। भेंट।

प्रदिः } (पु०) पुरस्कार। भेंट।
प्रदेयः }

प्रदिग्ध (व० कृ०) तेल या घी से चिकलाया हुआ।

प्रदिग्धं (न०) विशेष प्रकार से पका हुआ मांस।

प्रदिश (स्त्री०) १ बतलाना। २ आज्ञा। आदेश। निर्देश। ३ उपदिशा। विदिशा।

प्रदिष्ट (व० कृ०) १ दिखलाया हुआ। बतलाया हुआ। २ आज्ञा दिया हुआ। आदिष्ट। नियुक्त किया हुआ। निश्चित किया हुआ।

प्रदीपः (पु०) १ दीपक। लैंप। प्रकाश। २ वह जिससे प्रकाश हो।

प्रदीपन (वि०) [स्त्री—प्रदीपनी] प्रकाश करने वाला। २ उत्तेजक।

प्रदीपनं (न०) प्रकाश करने का काम।

प्रदीपनः (पु०) एक प्रकार का खनिज विष।

प्रदीप्त (व० कृ०) १ जला हुआ। प्रकाशित। २ प्रकटता हुआ। प्रकाशमान। जगमगाता हुआ। ३ उठा हुआ। फैला हुआ। ४ उत्तेजित। उत्साहित।

प्रदुष्ट (व० कृ०) १ बिगाड़ा हुआ। खराब किया हुआ। २ दुष्ट। निकृष्ट। पापी। ३ लम्पट। कामुक।

प्रदूषित (व० कृ०) खराब। भ्रष्ट। नष्ट। अपवित्र। सड़ा हुआ।

प्रदेय (वि०) देने योग्य। दान करने योग्य।

प्रदेशः (पु०) १ बतलाने वाला। दिखलाने वाला। २ स्थान। प्रदेश। जगह। देश। राज्य। छोटा भूखण्ड। ३ बालिश्त। बित्ता। ४ निर्णय। निश्चय। ५ दीवाला। ६ (व्याकरण का) उदाहरण।

प्रदेशनम् (न०) १ आदेश। २ परामर्श। ३ भेंट। नज़र। चढ़ावा।

प्रदेशनी } (स्त्री०) तर्जनी। अंगूठे के पास की उँगली।
प्रदेशिनी }

प्रदेहः (पु०) लेप। पलस्तर।

प्रदोष (वि०) बुरा। ख़राब।—कालः, (पु०) सायंकाल। रात्रि का आरम्भ।—तिमिरं, (न०) सायङ्काल की अँधियारी।

प्रदोषः (पु०) १ अपराध। त्रुटि। ऐब। पाप। जुर्म। २ गदर आदि जैसी गड़बड़ अवस्था। ३ सायङ्काल। रात्रि का प्रथम प्रहर।

प्रदोहः (पु०) दुहना। दूध निकालना।

प्रद्युम्नः (पु०) कामदेव का एक नाम। प्रद्युम्न जी श्री कृष्ण जी के पुत्र थे और रुक्मिणी जी के पेट से उत्पन्न हुए थे।

प्रद्योतः (पु०) १ जगमगाहट। प्रकाश। रोशनी। २ चमक। आभा। ३ किरण। ४ उज्जयन के एक राजा का नाम।

प्रद्योतनं (न०) १ दहकन। प्रकाशन। २ प्रकाश।

प्रद्योतनः (पु०) सूर्य।

प्रद्रवः (पु०) पलायन।

प्रद्रावः (पु०) १ पलायन। निकल भागना। तेज़ चलना या जाना।

प्रद्वारः (पु०) } दरवाजे के सामने का स्थान या जगह।
प्रद्वारम् (न०) }

प्रद्वेषः } (पु०) अरुचि। घृणा। नफ़रत। वैर।
प्रद्वेषणम् }

प्रधनं (न०) १ युद्ध में लूट का माल। ३ नाश। विनाश। चीरफाड़।

प्रधमनं (न०) १ वैद्यक में वह क्रिया जिसके द्वारा कोई दवा नाक के रास्ते ज़ोर से सुंघा कर ऊपर चढ़ायी जाय। २ एक प्रकार की सूँघनी।

प्रधर्षः (पु०) बलात्कार। आक्रमण। हमला।

प्रधर्षणं (न०) } १ आक्रमण । हमला । २
प्रधर्षणा (स्त्री०) } बलात्कार । ३ दुर्व्यवहार । अपमान । तिरस्कार ।

प्रधर्षित (व० कृ०) १ आक्रमण किया हुआ । २ चोट पहुँचाया हुआ । अनिष्ट किया हुआ । ३ अभिमानी । अहङ्कारी ।

प्रधान (वि०) १ खास । मुख्य । प्रसिद्ध । उत्तम । अत्युत्तम । २ मुख्यतया प्रचलित ।

प्रधान (न०) १ मुख्य वस्तु । अति आवश्यक वस्तु । प्रधान । मुखिया । २ प्रथम उत्पादक । इस भौतिक संसार का उपादान कारण । ३ परब्रह्म । ४ बुद्धि ।

प्रधानं (न०) } १महामात्र । प्रधान सचिव । २ सर-
प्रधानः(पु०) } दार । दरबारी । ३महावत । फीलवान । —अङ्ग, (न०) १ किसी वस्तु की प्रधान शाखा या भाग । २ शरीर का प्रधान अङ्ग । ३ किसी राज्य का प्रधान अधिकारी ।—अमात्यः, (पु०) प्रधान सचिव । महामात्र । —आत्मन् १ (पु०) विष्णु का नामान्तर । —धातुः १ (पु०) शरीर का प्रधान तत्व । वीर्य ।—पुरुषः, (पु०) १ राज्य का प्रधान पुरुष । २ शिव जी का नामान्तर । —मंत्रिन् (पु०) प्रधान सचिव ।—वासस्, (न०) मुख्य वस्त्र ।—वृष्टिः, (स्त्री०) अतिवृष्टि ।

प्रधावनः (पु०) हवा । पवन ।

प्रधावनं (न०) रगड़ । प्रक्षालन ।

प्रधिः (पु०) पहिये का धुरा ।

प्रधी (वि०) कुशाग्रबुद्धि वाला । (स्त्री०) महती प्रतिभा ।

प्रधूपित (व० कृ०) १ सुवासित । २ गर्माया हुआ । तपाया हुआ । ३ चमकता हुआ । दीप्त । ४ सन्तप्त ।

प्रधूपिता (स्त्री०) १ सन्तप्ता (स्त्री०) । २ वह दिशा जिधर सूर्य चढ़ रहा हो ।

प्रधृष्ट (व० कृ०) १ वह जिसके साथ ढिठाई के साथ वर्ताव किया गया हो । २ अभिमानी । अहङ्कारी ।

प्रध्यानं (न०) १ गम्भीर ध्यान या सोच विचार । २ विचार ।

प्रध्वंसः (पु०) नितान्त अभाव । पूर्णरीत्या विनाश । —अभावः, (पु०) न्याय के अनुसार पाँच प्रकार के अभावों में से एक प्रकार का अभाव । वह अभाव जो किसी वस्तु से उत्पन्न होकर, नष्ट हो जाने पर हो ।

प्रध्वस्त (व० कृ०) जो नष्ट हो गया हो । जिसका नाश हो चुका हो ।

प्रनप्तृ (पु०) पौत्र का पुत्र । प्रपौत्र ।

प्रनष्ट (व० कृ०) १ अन्तर्धान । जो देख न पड़े । अगोचर । २ नष्ट । मरा हुआ । ३ खोया हुआ । ४ बरबाद ।

प्रनायक (वि०) वह जिसका नायक चला गया हो । २ नायक के अभाव से युक्त ।

प्रनालः } (पु०) } देखो प्रणाली ।
प्रनाली } (स्त्री०) }

प्रनिघातनं (न०) बध । हत्या । क़त्ल ।

प्रनृत्त (वि०) नाचने वाला ।

प्रनृत्तं (न०) नाच । नृत्य ।

प्रपक्ष (पु०) बाज़ू की कोर ।

प्रपंचः } (पु०) १ विकाश । प्रदर्शन । २ वृत्ति ।
प्रपञ्चः } विस्तार । ३ बाहुल्य । वाग्विस्तार । व्याख्या । टीका । ४ अति विस्तार । अतिप्रसङ्ग । विस्तार । ५ बहुलता । अनेकत्व । ६ दुनिया का जंजाल । ७ भ्रम । धोखा । ८ ठगी ।—बुद्धि (वि०) १ चालाक । छलिया । धोखेबाज़ ।

प्रपचित } (व० कृ०) १ प्रकटित । २ विस्तारित ।
प्रपञ्चित } ३ भली भाँति व्याख्या किया हुआ । ४ भटका हुआ । भूला हुआ । ५ धोखा खाया हुआ । छला हुआ ।

प्रपतनम् (न०) १ पलायन । २ पात । ३ नीचे उतरना । ४ मृत्यु । नाश । ५ उतार ।

प्रपदं (न०) पैर का अग्रभाग ।

प्रपदीन (वि०) पैर का अग्रभाग सम्बन्धी ।

प्रपन्न (व० कृ०) १ आया हुआ । पहुँचा हुआ । २ शरण में आया हुआ । शरणागत । आश्रित । ३ प्रतिज्ञात । ४ उपलब्ध । प्राप्त । ५ निर्धन । दुखियारा ।

प्रपन्नाडः (पु०) चक्रमर्दक । चकवँड़ ।

प्रपर्ण (वि०) पत्तों से रहित ।

प्रपर्ण (न०) गिरा हुआ पत्ता।
प्रपलायनम् (न०) उड़ान। पलायन।
प्रपा (स्त्री०) १ पौंसाला। प्याऊ। २ कूप। कुण्ड। ३ वह जल का स्थान जहाँ पशु जलपान करें। ४ जल का देना।—पालिका, (स्त्री) वह स्त्री जो बटोहियों को जल पिलावे।
प्रपाठकः (पु०) १ सबक़। पाठ। २ ग्रन्थ का अध्याय। परिच्छेद।
प्रपाणिः (पु०) १ हाथ का अग्रभाग। २ हाथ की हथेली।
प्रपातः (पु०) १ प्रस्थान। २ पतन। ३ अचानक आक्रमण। ४ जलप्रपात। पानी का झरना। ५ तट। समुद्रतट। ६ ढलुआ चट्टान। पहाड़ का उतार या ढाल। ७ झड़ना (जैसे केशों का) ८ निकल पड़ना (जैसे वीर्य का)। ६ वहाव के ऊपर से अपने को नीचे गिरा देना। १० उड़ान विशेष।
प्रपातनं (न०) अपने को नीचे गिरा देना।
प्रपादिकः (पु०) मयूर। मोर।
प्रपानं (न०) पीना।
प्रपानकं (न०) एक प्रकार का पेय पदार्थ।
प्रपितामहः (पु०) १ पिता का पिता। बाबा। २ कृष्ण का नामान्तर।
प्रपितामही (स्त्री०) पिता की माता। दादी।
प्रपितृव्यः (पु०) चचेरे बाबा।
प्रपीडनम् (न०) १ दबाना। दबाकर निचोड़ना। २ कोष्ट करने वाली (दवा)
प्रपीत } प्रपीन } (वि०) निगला हुआ।
प्रपुनाटः—प्रपुन्नाटः } प्रपुंनाडः—पपुंन्नाडः } (पु०) चक्रमर्द नाम का वृक्ष। चकवँड़।
प्रपूरित (व० कृ०) भरा हुआ। परिपूर्ण।
प्रपृष्ठ (वि०) विशिष्ट पीठवाला।
प्रपौत्रः (पु०) पौत्र का पुत्र। पंती।
प्रपौत्री (स्त्री०) पौत्री की पुत्री। पंतिन।
प्रफुल्ल (व० कृ०) १ पूर्ण खिला या फूला हुआ। २ आनन्दित। ३ मुसक्याता हुआ।—नयन, —नेत्र—लोचन, (वि०) हर्ष से खुले हुए नेत्र। - वदन, (वि०) जिसके चेहरे पर हर्ष छाया हो। हर्षित।
प्रवद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ। २ रोका हुआ। अवरुद्ध। अड़चन में डाला हुआ।
प्रवंद्धृ } प्रवन्द्धृ } (पु०) ग्रन्थकार
प्रवन्धः (पु०) १ बंधन। गाँस। २ अप्रतिवन्धता। अविच्छिन्नता। ३ ऐसा निवन्ध जिसका सिलसिला जारी रहे। ४ कोई भी रचना, विशेष कर पद्यमयी। ५ योजना।—कल्पना, (स्त्री०) कल्पित कहानी।
प्रवन्धनम् (न०) वन्धन। गाँसी।
प्रवभ्रः (पु०) इन्द्र का नामान्तर।
प्रवर्ह } प्रवर्ह } (वि०) अत्युत्तम। सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ।
प्रवल (वि०) १ अत्यन्त मज़बूत या ताकतवर। २ प्रचण्ड। सुदृढ़। ३ आवश्यक। ४ विपुल। ५ ख़तरनाक। भयानक नाशकारी।
प्रवह्लिका } प्रवह्लिका } (स्त्री०) पहेली। बुझौअल।
प्रवाधनम् (न०) १ अत्याचार। प्रपीडन। २ अस्वीकृति। इंकार। ३ दूर रखना। हटाना।
प्रवालः—प्रवालः (पु०) } प्रवालं—प्रवालम् (न०) } १ अङ्कुर। अँखुआ। कोंपलें। २ मूंगा। ३ वीणा का भाग विशेष। (पु०) १ शिष्य। शागिर्द। २ पशु।—अश्मन्तकः (पु०), वृक्ष विशेष। मूंगे का वृक्ष।—पद्मं, (न०) लाल कमल।—फलं, (न०) लाल चन्दन काष्ठ।—भस्मन्, (न०) मूंगा की भस्म।
प्रवाहुः (पु०) वाँह।
प्रवाहुकम् (अव्यया) १ ऊंचाई पर। २ साथ ही साथ।
प्रवुद्ध (व० कृ०) १ जागृत। जागा हुआ। २ बुद्धिमान। विद्वान। चतुर। ३ जानकार। ४ पूर्ण खिला हुआ। फैला हुआ।
प्रवोधः (पु०) १ जागना। नींद का हटाना। (आलं०) यथार्थज्ञान। पूर्ण वोध। २ (फूलों का) खिलना या फैलाना। ३ जागृति। अनिद्रता। ४ सतर्कता। ५ समझदारी। ज्ञान। भ्रम का दूर होना। सत्य

ज्ञान। ६ ढाढस। धीरज। ७ किसी सुगन्ध द्रव्य में पुनः सुगन्ध उत्पन्न करने की क्रिया।

प्रबोधन (वि०) [स्त्री०—प्रबोधनी] जागने वाला।

प्रबोधनम् (न०) १ जागृति। जागरण। २ सचेत होना। ३ ज्ञान। बुद्धिमत्ता। ४ शिक्षण। परामर्श। ५ सुगन्ध द्रव्य की नष्ट हुई सुगन्ध को पुनः सुगन्ध से युक्त करना।

प्रबोधनी, प्रबोधिनी (स्त्री०) कार्तिक शुक्ला ११, जिस दिन भगवान चारमास शयन कर जागते हैं।

प्रबोधित (व० कृ०) १ जागृत। जागा हुआ। २ सूचित किया हुआ। शिक्षा दिया हुआ।

प्रभंजनम्, प्रभञ्जनम् (न०) टुकड़े टुकड़े कर डालना।

प्रभञ्जनः (पु०) पवन। वायु। विशेष कर आँधी।

प्रभद्रः (पु०) नीव वृक्ष।

प्रभवः (पु०) १ उद्गमस्थल। निकास। २ जन्म। उत्पत्ति। ३ नदी का उद्गमस्थान। ४ उपादान कारण। ५ रचयिता। सृष्टिकर्त्ता। ६ उत्पत्ति स्थान। ७ शक्ति। बल। पराक्रम। प्रभाव। ८ विष्णु का नामान्तर।

प्रभवितृ (पु०) शासक।

प्रभविष्णु (वि०) बलवान। शक्तिमान।

प्रभविष्णु (पु०) १ स्वामी। मालिक। २ विष्णु।

प्रभा (स्त्री०) १ चमक। जगमगाहट। आभा। २ किरण। ३ सूरजघडी पर सूर्य की छाया। ४ दुर्गा का नामान्तर। ५ कुबेर की नगरी का नाम। ६ एक अप्सरा का नाम।—करः (पु०) १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ अग्नि। ४ समुद्र। ५ शिव। ६ मीमाँसा दर्शनकार का नाम।—कीटः, (पु०) जुगनू। खद्योत।—तरल, (वि०) कम्पित भाव से दीप्तमान्।—मण्डलं, (न०) प्रकाश का घेरा।—लेपिन्, (वि०) प्रकाश से आच्छादित।

प्रभागः (पु०) विभाग। २ भिन्न का भिन्न, जैसे $\frac{2}{3}$ का $\frac{1}{3}$ आदि।

प्रभात (व० कृ०) रोशनी होना आरम्भ हुआ।

प्रभातं (न०) प्रातःकाल। सवेरा।

प्रभानं (न०) ज्योति। दीप्ति। प्रकाश।

प्रभावः (पु०) १ आभा। चमक। जगमगाहट। २ महत्व। गौरव। ३ शक्ति। बल। ४ राजोचित शक्ति या अधिकार। ५ अलौकिक शक्ति। ६ महिमा। माहात्म्य।—ज, (वि०) प्रभाव से उत्पन्न। प्रभावजात।

प्रभाषणं (न०) व्याख्या। कैफियत। अर्थ।

प्रभासः (पु०) चमक। सौन्दर्य। आभा।

प्रभासं (न०), प्रभासः (पु०) एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो काठियावाड़ में है।

प्रभासनम् (न०) चमक। दीप्ति। प्रकाश।

प्रभास्वर (वि०) चमकीली। दीप्तिमान्।

प्रभिन्न (व० कृ०) १ अलग किया हुआ। अलगाया हुआ। फटा हुआ। चिरा हुआ। विभक्त। २ तोड़ कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ। ३ कटा हुआ। काट कर अलग किया हुआ। ४ फूला हुआ। खिला हुआ। ५ परिवर्तित। अदल बदल किया हुआ। ६ बदशक्ल किया हुआ। अंग भङ्ग किया हुआ। ७ ढीला किया हुआ। ८ नशे में चूर। मतवाला।

प्रभिन्नः (पु०) मतवाला हाथी।—अञ्जनम्, (न०) काजल।

प्रभु (वि०) [स्त्री०—प्रभु, प्रभ्वी] १ ताक़तवर। बलवान। २ योग्य। अधिकार प्राप्त। ३ जोड़ का। बराबरी का।—भक्त, (वि०) अपने मालिक का हितैषी या खैरख्वाह।—भक्तः, (पु०) अच्छा घोड़ा।—भक्ति, (स्त्री०) अपने मालिक की हित-तत्परता या खैरख़्वाही।

प्रभुः (पु०) १ स्वामी। मालिक। २ शासक। सूबेदार। सर्वोच्च अधिकारी। ३ (किसी वस्तु का) मालिक। ४ पारा। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ इन्द्र।

प्रभुता (स्त्री०), प्रभुत्वं (न०) १ मलकियत। साहिबी। मालिकपन। २ बड़ाई। महत्त्व।

प्रभूत (व० कृ०) १ उद्भूत। निकला हुआ। उत्पन्न। २ बहुत। विपुल। ३ बहुत से। बहुत। ४ पूर्ण। परिपक्व। ५ उच्च। विशाल। ६ लंबा। ७ अधिष्ठाता।—यवसेंधन, (वि०) हरी घास और इंधन की बहुतायत या इफ़रात।—वयस्, (वि०) बुड्ढा। उमररसीदा।

प्रभूतिः (स्त्री०) १ उत्पत्ति । निकास । २ बल । शक्ति । ३ पर्याप्तता ।

प्रभृतिः (अव्यया०) से । तब से । आरम्भ कर । आज से । अब से । अद्यप्रभृति ।

प्रभेदः (पु०) १ भेद । विभिन्नता । २ स्फोटन । फोड़ कर निकालने की क्रिया । ३ हाथी की कनपुटी से मद का चूना । ४ जाति । तरह ।

प्रभ्रंशः (पु०) पात । गिरना ।

प्रभ्रंशथुः (पु०) पीनस रोग ।

प्रभ्रंशित (व० कृ०) १ नीचे गिराया या फेंका हुआ । २ वञ्चित किया हुआ ।

प्रभ्रंशिन् (व०) गिरा हुआ ।

प्रभ्रष्ट (व० कृ०) पतित । नीचे गिरा हुआ ।

प्रभ्रष्टं (न०) शिखावलम्बिनी फूलमाला ।

प्रभ्रष्टकम् (न०) देखो प्रभ्रष्टम् ।

प्रमग्न (व० कृ०) डूबा हुआ ।

प्रमत (व० कृ०) विचारा हुआ । मनन किया हुआ ।

प्रमत्त (व० कृ०) १ नशे में चूर । नशा पिये हुए । मस्त । २ पागल । उन्मत्त । ३ असावधान । लापरवाह । जो ध्यान न दे । ४ जो काम न करे । ५ भूल करने वाला । ६ कामुक । व्यसनी ।—गीत, (वि०) असावधानी से गाया हुआ । —चित्त, (वि०) असावधान । लापरवाह ।

प्रमथः (पु०) १ घोड़ा । २ शिव के गण जिनकी संख्या किसी किसी पुराणानुसार ३६ करोड़ बतलाई गयी है ।—अधिपः, नाथः,—पतिः, (पु०) शिव जी ।

प्रमथनम् (न०) १ मथना । २ पीड़ित करना । सताना । ३ कुचलना । ४ हत्या । वध ।

प्रमथित (व० कृ०) १ सताया हुआ । पीड़ित । २ कुचला हुआ । ३ मार डाला हुआ । ४ भली भाँति मथा हुआ ।

प्रमथितम् (न०) माठा जिसमें जल न हो ।

प्रमद (वि०) १ नशे में मस्त । २ क्रोधविष्ट । क्रुद्ध । ३ असावधान । ४ असंयत । निरङ्कुश । अशिष्ट । —काननम्, (न०)—वनम्, (न०) ऐशबाग़ । आनन्दबाग़

प्रमदः (पु०) १ हर्ष । आह्लाद । २ धतूरे का पौधा ।

प्रमदक (वि०) कामुक । लंपट । ऐयाश ।

प्रमदनम् (न०) प्रीतिद्योतक अभिलाषा ।

प्रमदा (स्त्री०) १ युवती सुन्दरी स्त्री । २ पत्नी । स्त्री । ३ कन्याराशि ।—काननम्,—वनं, (न०) राजमहल में रनवास का उद्यान, जहाँ रानियाँ चलें फिरें ।—जनः, (पु०) युवती । स्त्री । २ स्त्री जाति ।

प्रमद्वर (वि०) असावधान । लापरवाह ।

प्रमनस् (वि०) प्रसन्न । हर्षित ।

प्रमन्यु (वि०) १ क्रोधाविष्ट । क्रुद्ध । नाराज़ । २ पीड़ित । दुःखी ।

प्रमयः (पु०) १ मृत्यु । मौत । बरबादी । नाश । अधःपात । ३ वध । हत्या ।

प्रमर्दनं (न०) १ अच्छी तरह मर्दन । अच्छी तरह कुचलना या नष्ट करना । पैरों से रुंधना ।

प्रमर्दन (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

प्रमा (स्त्री०) १ शुद्धबोध । यथार्थ ज्ञान । २ जहाँ जैसा हो वहाँ वैसा अनुभव ।

प्रमाणं (न०) १ माप । नाप । २ आकार । आयतन । ३ पैमाना । नपुआ । श्रेणी । ४ सीमा । मात्रा । ५ साक्षी । गवाही । सबूत । ६ अधिकारी या वह पुरुष जिसका कथन अन्तिम निर्णय हो । न्यायाधीश । ७ यथार्थ ज्ञान शुद्ध बोध । ८ यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन । [नैयायिकों ने चार प्रमाण माने हैं:—यथा प्रत्यक्ष । अनुमान । उपमान । शब्द । वेदान्ती और मीमाँसक इन चार के अतिरिक्त अनुपलब्धि और अर्थापत्तिः दो प्रमाण और मानते हैं । साँख्य वाले केवल प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम—ये तीन ही प्रमाण मानते हैं ।] मुख्य । प्रधान । १० ऐक्य । ११ धर्मशास्त्र । आगम । १२ कारण । युक्ति । —अधिक, (वि०) अत्यधिक । बहुत ज्यादा । —अन्तरं, (न०) कोई बात प्रमाणित करने के लिये अन्य ढंग ।—अभावः (पु०) प्रमाण का अभाव ।—ज्ञः, (पु०) शिव जी ।—दृष्ट, (वि०) प्रमाण सिद्ध ।—पत्रं, (न०) वह लिखा हुआ कागज़ जिसका लेख किसी बात का प्रमाण हो । सर्टीफिकेट ।—पुरुषः, (पु०) पंच ।

न्यायाधीश ।—शास्त्रं, (न०) १ धर्मशास्त्र । १ न्याय शास्त्र ।—सूत्रं, (न०) नापने का फीता ।

प्रमाणिक (वि०) १ मनाने योग्य । माननीय । २ ठीक । सत्य । ४ शास्त्रसिद्ध । ५हैतुक । ६शास्त्रज्ञ। ७ जो प्रत्यक्षादि प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो ।

प्रमातामहः (पु०) बड़ा नाना । नाना का पिता ।

प्रमातामही (स्त्री०) बड़ी नानी । बड़े नाना की पत्नी ।

प्रमाथः (पु०) १ अत्यचार । पीडन । २ उत्तेजना । मथन । ३ हत्या । वध । नाश । ४ बलात्कार । किसी स्त्री से उसकी इच्छा के विरुद्ध भोग । बरजोरी किसी स्त्री को पकड़ कर लेजाना । स्त्री भगाना । ६ प्रतिद्वन्द्वी को भूमि पर पटक कर उसके घिस्से लगाना ।

प्रमाथिन् (वि०) १ अत्याचार । पीडन । २ हत्या । वध । ३ चलाना । ४ मार कर नीचे गिराना । ५ काट कर गिराना ।

प्रमादः (पु०) १ असावधानी । लापरवाही । २ नशा । मस्ती । ३ पागलपन । ४ गलती । ५ घटना । दुर्घटना । विपत्ति । ख़तरा ।

प्रमापणम् (न०) हत्या वध ।

प्रमार्जनम् (न०) माँजना । धोना । रगड़ना ।

प्रमित (व० कृ०) १ परिमित । २ अल्प । थोड़ा । ३ जिसका यथार्थ ज्ञान हो चुका हो । ज्ञात । विदित । अवगत । ४ अवधारित । प्रमाणित ।

प्रमितिः (स्त्री०) १ माप । नाप । २ यथार्थ या सत्य ज्ञान । यथार्थ बोध । ३ वह ज्ञान जो किसी प्रमाण की सहायता से प्राप्त हुआ हो ।

प्रमीढ (वि०) १ गाढ़ा । घना । मोटा । सकुड़ा हुआ । २ मूत्र बन कर निकला हुआ ।

प्रमीतिः (स्त्री०) मृत्यु । मौत । नाश । रोग ।

प्रमीला (स्त्री०) १ निद्रा । नींद । तंद्रा । थकावट । शैथिल्य । ग्लानि । २ अर्जुन की एक स्त्री का नाम जो प्रथम उनसे लड़ी और पीछे उनकी स्त्री बन गयी ।

प्रमीलित (व० कृ०) आँख मूँदे हुए ।

प्रमुक्त (व० कृ०) १ ढीला किया हुआ । २ छोड़ा हुआ । मुक्त किया हुआ । ३ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । ४ फेंका हुआ ।—कण्ठं, (अव्यया०) कस के । ज़ोर से ।

प्रमुख (वि०) १ सम्मुख । सामने । आगे । २ मुख्य । प्रधान । सब के आगे । प्रथम ।

प्रमुखः (पु०) १ प्रतिष्ठित पुरुष । २ ढेर । समुदाय ।

प्रमुखं (न०) १ मुख । २ किसी ग्रन्थ का या किसी ग्रन्थ के अध्याय का आरम्भ ।

प्रमुग्ध (वि०) १ मूर्छित । अचेत । बेहोश । (२) अत्यन्त मनोहर ।

प्रमुद (स्त्री०) अत्यन्त आनन्द ।

प्रमुदित (व० कृ०) आल्हादित । प्रसन्न । सुखी ।—हृदय, (वि०) प्रसन्न हृदय ।

प्रमुपित (व० कृ०) चुराया हुआ ।

प्रमुषिता (स्त्री०) एक प्रकार की पहेली ।

प्रमूढ (व० कृ०) १ परेशान । घबड़ाया हुआ । व्याकुल । २ मूर्ख । मूढ ।

प्रमृत (व० कृ०) मृत । मरा हुआ ।

प्रमृतं (न०) सूखी हुई या पाला मारी हुई खेती ।

प्रमृष्ट (व० कृ०) १ मला हुआ । माँजा हुआ । पोंछा हुआ । साफ किया हुआ । २ चिकनाया हुआ । चमकीला । साफ ।

प्रमेय (वि०) १ जिसका मरन बताया जा सके । परिमित । २ जो सिद्ध करने को हो । अवधार्य ।

प्रमेयं (न०) सूत्र । उपपाद्य ।

प्रमेहः (पु०) धातु सम्बन्धी रोग विशेष ।

प्रमोक्षः (पु०) १ त्याग । छोड़ना फेंकना । २ मुक्त करना । छुटकारा देना ।

प्रमोचनम् (न०) छोड़ना । छुटकारा देना ।

प्रमोदः (पु०) खुशी । हर्ष ।

प्रमोदन (न०) १ प्रसन्नकारक । हर्षप्रद । २ हर्ष ।

प्रमोदनः (पु०) विष्णु भगवान का नाम ।

प्रमोदित (व० कृ०) प्रसन्न । हर्षित ।

प्रमोदितः (पु०) कुबेर का नामान्तर ।

प्रमोहः (पु०) १ मोह । २ मूर्च्छा । ३ पल्ले दर्जे की मूर्खता । भूलभटक । घबड़ाहट ।

प्रयत (व० कृ०) १ संयत । इन्द्रियों को दमन किये हुए । धर्मात्मा । भक्त । जो तपस्या द्वारा पवित्र-

हो चुका हो। जितेन्द्रिय। २ स्पर्द्धावान्। ३ नम्र। दीन।

प्रयत्नः (पु०) १ विशेष यत्न। प्रयास। चेष्टा। कोशिश। २ अध्यवसाय। ३ बड़ी सावधानी। ४ व्याकरण के मतानुसार वर्णों के उच्चारण में होने वाली क्रिया।

प्रयस्त (व० कृ०) मसाला मिला हुआ।

प्रयागः (पु०) १ यज्ञ। २ इन्द्र। ३ घोड़ा। ४ तीर्थ स्थान विशेष जो गंगा यमुना के संगम पर अवस्थित है।—मयः (पु०) इन्द्र का नामान्तर।

प्रयाचनं (न०) माँगना। याचना करना। दीनता करना।

प्रयाजः (पु०) यज्ञीय प्रधान कर्म विशेष।

प्रयाणम् (न०) १ प्रस्थान। २ यात्रा। ३ उन्नति। आगे बढ़ना। ४ आक्रमण। हमला। ५ आरम्भ। प्रारम्भ। ६ मृत्यु महायात्रा। महाप्रस्थान। ७ घोड़े की पीठ। पशु का पीछे का भाग।—भङ्गम्, (न०) पड़ाव। यात्रा के बीच रुक जाना।

प्रयाणकं (न०) यात्रा। प्रस्थान।

प्रयात (व० कृ०) १ आगे बढ़ा हुआ। प्रस्थानित। २ मरा हुआ। मृत।

प्रयातः (पु०) १ आक्रमण। २ पहाड़ का ढाल। ढलुवाँ चट्टान।

प्रयापित (व० कृ०) १ आगे बढ़ाया हुआ। आगे जाने के लिये प्रेरित किया हुआ। २ भगाया हुआ।

प्रयामः (पु०) १ अभाव। महँगी। कहतसाली। २ संयम। दमन। ३ लंबाई।

प्रयासः (पु०) १ प्रयत्न। चेष्टा। उद्योग। २ कठिनाई। श्रम।

प्रयुक्त (व० कृ०) १ जुए में जुता हुआ कॉठी या चारजामा कसा हुआ। २ व्यवहार में लाया हुआ। इस्तेमाल किया हुआ। ३ संलग्न। ४ नियुक्त किया हुआ। नामजद किया हुआ। ५ किया हुआ। ६ ध्यानावस्थित। ७ (व्याज पाकर) लगाया हुआ। ८ प्रेरित किया हुआ। उसकाया हुआ।

प्रयुक्तिः (स्त्री०) १ उपयोग। इस्तेमाल। प्रयोग। २ उत्तेजना। उसकाने की क्रिया। ३ प्रयोजन। उद्देश्य। अवसर। ४ परिणाम। नतीजा।

प्रयुतं (न०) दस लाख की संख्या।

प्रयुत्सुः (पु०) १ योद्धा। २ मेढ़ा। ३ पवन। ४ संन्यासी। ५ इन्द्र।

प्रयुद्धं (न०) युद्ध। लड़ाई।

प्रयोक्तृ (वि०) १ प्रयोगकर्त्ता। व्यवहार करने वाला। अनुष्ठान करने वाला। २ उत्तेजित करने वाला। भड़काने वाला। ३ रचयिता। गुमाश्ता। ४ (नाटक में) अभिनयकर्त्ता। ५ व्याज पर रुपया उधार देने वाला। ६ बाण चलाने वाला। तीरंदाज़।

प्रयोगः (पु०) १ व्यवहार। अनुष्ठान। २ रीतिरस्म। पद्धति। ३ चलाना। फेंकना (तीर या अन्य किसी वस्तु को)। ४ अभिनय करना। नाटक खेलना। ५ अभ्यास। ६ प्रणाली। प्रथा। ७ क्रिया। ८ पाठ पढ़ कर सुनाना। पाठ करना। ९ आरम्भ। शुरुआत। १० योजना। ११ साधन। औज़ार। १२ परिणाम। प्रतिफल। १३ ताँत्रिक उपचार। १४ धनवृद्धि के लिये धन लगाना। १५ घोड़ा।—अतिशयः, (= प्रयोगातिशयः) (पु०) नाटक में प्रस्तावना का एक भेद।—निपुण, (वि०) अभ्यास में निपुण।

प्रयोजकः (पु०) १ प्रयोगकर्त्ता। अनुष्ठान करने वाला। २ काम में लगाने वाला। प्रेरक। ३ नियन्ता। व्यवस्थापक। महाजन। कर्ज़ देने वाला। ५ धर्मशास्त्र या आईन की व्यवस्था देने वाला। ६ स्थापनकर्त्ता। प्रतिष्ठापक।

प्रयोजनं (न०) १ कार्य। काम। अर्थ। २ अपेक्षा। आवश्यकता। ३ उद्देश्य। ४ उद्देश्य सिद्धि का साधन। ५ अभिप्राय। मतलब। गरज़। ६ लाभ। मुनाफा। सूद। व्याज।

प्रयोज्य (वि०) १ प्रयोग के योग्य। बरतने योग्य। काम में लाने योग्य। २ अभ्यास करने योग्य। ३ नियुक्त करने योग्य। ४ चलाने या फेंकने (अस्त्र) योग्य।

प्रयोज्यं (न०) पूँजी। सरमाया।

प्रयोज्यः (पु०) नौकर।

प्ररुदित (व० कृ०) फूट फूट कर रोने वाला।

प्ररूढ (व० कृ०) १ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। २ उत्पन्न। निकला हुआ। पैदा किया हुआ। ३ बढ़ा हुआ। ४ गहरा धसा हुआ। ५ लंबा।

प्ररूढिः (स्त्री०) बाढ़। बढ़ती।

प्ररोचन (न०) १ उत्तेजना। भड़की। २ उदाहरण। नज़ीर। व्याख्या। ३ प्रदर्शन (ऐसा जिससे लोगों को देखने की रुचि पैदा हो और वे पसंद करें)। ४ किसी नाटक में आगे होने वाले दृश्य का रोचक वर्णन।

प्ररोहः (पु०) १ अँकुर। अँखुआ। कल्ला। कोंपल। २ टहनी जो कलम लगाने के लिये उतारी जाय। पैबंद। वंश। ३ उल्का। ४ नया पत्ता या डाली।

प्ररोहणं (न०) १ आरोह। चढ़ाव। २ भूमि से निकलना। उगना। जमना।

प्रलपनम् (न०) १ वार्तालाप। सम्भाषण। २ गप्पशप्प। ऊटपटांग बातचीत। ३ विलाप।

प्रलपित (व० कृ०) कहा हुआ। ऊटपटाँग कहा हुआ।

प्रलपितं (न०) वार्तालाप।

प्रलब्ध (व० कृ०) छला हुआ। धोखा दिया हुआ।

प्रलंब, प्रलम्ब (वि०) १ नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ। २ बड़ा (यथा प्रलम्बनासिका) ३ सुस्त। काहिल। दीर्घसूत्री।—अण्डः, (पु०) मनुष्य जिसके अण्डकोष लटकते हों या बड़े हों। —घ्न,—मथनः,—हन् (पु०) बलराम।

प्रलंबः, प्रलम्बः (पु०) १ लटकाव। झुलाव। २ शाखा। डाली। ३ गले में पड़ी फूलमाला। ४ कण्ठहार या गुंज। ५ स्त्री के कुच। ६ जस्ता या सीसा। ७ एक दैत्य का नाम जिसे बलराम ने मारा था।

प्रलंबनं, प्रलम्बनम् (न०) अवलम्बन। सहारा।

प्रलंबित, प्रलम्बित (वि०) खूब नीचे तक लटकाया हुआ।

प्रलंभः, प्रलम्भः (पु०) १ उपलब्धि। प्राप्ति। २ छल। कपट। धोखा।

प्रलयः (पु०) नाश। लय को प्राप्त होना। विलीन होना। रह न जाना। २ कल्पान्त में संसार का नाश। ३ मृत्यु। मौत। विनाश। ४ मूर्च्छा। बेहोशी। अचेतनता। ५ प्रणव ओं।—कालः, (पु०) संसार के नाश का समय।—जलधरः, (पु०) प्रलयकालीन मेघ।—दहनः, (पु०) प्रलयकालीन आग। - पयोधिः, (पु०) प्रलयकालीन समुद्र।

प्रललाट (वि०) बड़ा या विशाल माथे वाला।

प्रलवः (पु०) टुकड़ा। धज्जी। छिपटिहया।

प्रलवित्रं (न०) काटने का औज़ार।

प्रलापः (पु०) १ वार्तालाप। संवाद। २ व्यर्थ की बकवाद। अनापशनाप बातचीत। ३ विलाप।—हन्, (पु०) कुलत्थाञ्जन। एक प्रकार का अंजन।

प्रलापिन् (वि०) बातूनी। व्यर्थ की बातचीत करने वाला।

प्रलीन (व० कृ०) १ पिघला हुआ। घुला हुआ। २ विनष्ट। ३ अचेत। बेहोश।

प्रलून (व० कृ०) कटा हुआ।

प्रलेपः (पु०) लेप। उपटन। मलहम।

प्रलेपकः (पु०) १ लेप करने वाला। उबटन लगाने वाला। २ एक प्रकार का मन्द ज्वर।

प्रलेहः (पु०) कोरमा। माँस का बनाया हुआ खाद्य पदार्थ विशेष।

प्रलोठनम् (न०) १ ज़मीन पर लोटना पोटना। उसाँस लेना।

प्रलोभः (पु०) १ लालच। अत्यन्त लोभ।

प्रलोभनम् (न०) १ किसी को किसी ओर प्रवृत्त करने के लिये उसे लाभ की आशा देने का काम। लालच। लोभ। ३ लालसा।

प्रलोभनी (स्त्री०) रेत। बालू।

प्रलोल (वि०) अत्यन्त उद्विग्न या व्याकुल।

प्रवक्तृ (पु०) १ कहने वाला। बोलने वाला। घोषणा करने वाला। २ शिक्षक। व्याख्याता। ३ लेक-चरार। वाग्मी।

प्रवगः
प्रवंगः
प्रवङ्गः } (पु०) वानर । बंदर ।
प्रवंगमः
प्रवङ्गमः

प्रवचनम् (न०) १ अच्छी तरह समझ कर कहना। अर्थ खोलकर बतलाना । २ व्याख्या । ३ वाग्मिता । ४ वेदाङ्ग ।

प्रवटः (पु०) गेहूं ।

प्रवण (वि०) १क्रमशः नीचा होता हुआ । नीचे की ओर बहने वाला । २ ढालू । ३ झुका हुआ । मुड़ा हुआ । ४ रत । प्रवृत्त । ५ अनुरक्त । आदी । ६ अनुकूल । मुवाफिक । ७ उत्सुक । तत्पर । ८ सम्पन्न । ९ नम्र । विनीत । १० क्षीण । जर्जरित ।

प्रवणं (न०) पहाड़ का ढाल या उतार ।

प्रवणः (पु०) चौराहा । चतुष्पथ ।

प्रवत्स्यत् (वि०) [स्त्री०—प्रवत्स्यती या प्रवत्स्यन्ती] विदेश की यात्रा करने को जाने वाला ।—पतिका, (स्त्री०) वह नायिका जिसका पति विदेश जाने वाला हो ।

प्रवयणं (न०) १ बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग। २ अङ्कुश ।

प्रवयस् (वि०) बुड्ढा । बूढ़ा । पुरनिया ।

प्रवर (वि०) १ मुख्य । प्रधान । सर्वोत्तम । श्रेष्ठ महिमान्वित । २ उम्र में सब से बड़ा ।

प्रवरः (पु०) १ बुलाहट । बुलावा । २ अग्निसंस्कार का मंत्र विशेष । ३ वंश । कुल । ४ पूर्वपुरुष । ५ गोत्रप्रवर्तक ऋषि । ६ सन्तति । वंशज । ७ चादर। आच्छादन ।

प्रवरं (न०) अगर काष्ठ ।—वाहनौ, (पु०) द्विवचन । अश्विनीकुमारों का नामान्तर ।

प्रवर्गः (पु०) १ यज्ञीय अग्नि । २ विष्णु ।

प्रवर्ग्यः (पु०) सोम याग की आरम्भिक विधि विशेष।

प्रवर्तः (पु०) आरम्भ । शुरुआत । कार्यारम्भ ।

प्रवर्तक (वि०) [स्त्री० प्रवर्तिका] १ सञ्चालक । किसी काम को चलाने वाला । २ आरम्भ करने वाला । जारी करने वाला । ३ काम में लगाने वाला । प्रवृत्त करने वाला । प्रेरणा करने वाला । गति देने वाला ।

प्रवर्तकः (पु०) १ निकालने वाला । ईजाद करने वाला । २ पंच । हार जीत का निर्णय करने वाला ।

प्रवर्तनम् (न०) कार्यारम्भ । २ कार्यसञ्चालन । ३ उत्तेजना । प्रेरणा । उसकाना । उभारना ४ प्रवृत्ति । ५ चालचलन । आचरण । पद्धति ।

प्रवर्तना (स्त्री०) १ प्रवृत्तिदान । उत्तेजना । प्रेरणा ।

प्रवर्तयितृ (वि०) किसी काम को चलाने वाला । किसी काम की नींव डालने वाला ।

प्रवर्तित (वि०) १ गतिशील । २ प्रतिष्ठित । स्थापित । ३ उत्तेजित । उभारा हुआ । ४ सुलगाया हुआ । जलाया हुआ । ५ बनाया हुआ । ६ पवित्र किया हुआ ।

प्रवर्तिन (वि०) १ प्रेरणा करने वाला । चलाने वाला । आगे बढ़ाने वाला । २ क्रियाशील । ३ प्रयोग करने वाला ।

प्रवर्धनम् (न०) विवर्द्धन । बढ़ती । वृद्धि ।

प्रवर्षः (पु०) मूसलधार वृष्टि ।

प्रवर्षणं (न०) प्रथम वृष्टि । वृष्टि ।

प्रवसनं (न०) विदेशगमन ।

प्रवहः पु०) १ प्रवाह । धार । २ हवा पवन । ३ पवन के सप्तमार्गों में से एक का नाम । इसीमें ज्योतिष्क पिण्ड आकाश में स्थित हैं ।

प्रवहणं (न०) १ (स्त्रियों के लिये) पर्देदार गाड़ी या पालकी या डोली । २ सवारी । ३ जहाज़ । पोत ।

प्रवह्लिः
प्रवह्ली } (स्त्री०) पहेली । बुझौअल ।

प्रवाच् (वि०) १ वाग्मि । वक्ता । २ बातूनी । गप्पी।

प्रवाचनं (न०) घोषणा ।

प्रवाणं (न०) बने हुए कपड़े में गोट लगाना या उसके छोरों को सम्हारना ।

प्रवाणिः
प्रवाणी } (स्त्री०) करघा ।

प्रवात (व० कृ०) आँधी में पड़ा हुआ ।

प्रवातं (न०) १ हवा का झोका । ताज़ी हवा । २ अँधड़ । आँधी । ३ हवादार स्थान ।

प्रवाद (पु०) १ शब्दोच्चारण। २ व्यक्तकरण। वर्णन करना। प्रकट करना। ३ वार्तालाप। संवाद। ४ बातचीत। किंवदन्ती। अफवाह। जनश्रुति। जनरव। ५ कल्पनाप्रसूत रचना। काल्पनिक रचना। ६ आईनी भाषा। ७ चिनौती।

प्रवारः, प्रवारकः (पु०) चादर। आच्छादन।

प्रवारण (न०) १ इच्छापूर्ण करना। २ निषेध। विरोध। ४ काम्यदान।

प्रवाल देखो प्रवाल।

प्रवासः (पु०) विदेश में रहना। परदेश का निवास। विदेश।

प्रवासन (न०) १ विदेश में वास। २ घर से निकासा। निर्वासन। देशनिकाला। ३ वध। हत्या।

प्रवासिन् (पु०) यात्री। पथिक। बटोही। मुसाफिर।

प्रवाहः (पु०) १ धार। २ चरमा। श्रोत। ३ जल का बहाव। ४ घटनाचक्र। ५ क्रियाशीलता। ६ जलाशय। झील। ७ उत्तम घोड़ा।

प्रवाहकः (पु०) प्रेत। पिशाच।

प्रवाहनम् (न०) १ निकलना। २ दस्त करा कर साफ करना।

प्रवाहिका (स्त्री०) दस्तों की बीमारी।

प्रवाही (स्त्री०) रेत। बालू।

प्रविकीर्ण (व० कृ०) १ बिखरा हुआ। ओत प्रोत। छिटकाया हुआ।

प्रविख्यात (व० कृ०) १ नामधारी। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रविख्यातिः (स्त्री०) नामवरी। प्रसिद्धि। शोहरत।

प्रविचयः (पु०) परीक्षा। अनुसन्धान।

प्रविचारः (पु०) विवेक। ज्ञान। चतुराई।

प्रविचेतनम् (न०) समझदारी।

प्रवितत (व० कृ०) १ फैला हुआ। पसरा हुआ। २ अस्तव्यस्त। उलझे हुए (केश)।

प्रविदारः (पु०) तड़कन। फटन।

प्रविदारणम् (न०) १ चीरन। फाड़न। २कलियों का लगना। ३ लड़ाई। युद्ध। ४ भीड़भाड़। गड़बड़ी।

प्रविद्ध (व० कृ०) फैंका हुआ। निकाला हुआ।

प्रविद्रुत (व० कृ०) भगाया हुआ। छितराया हुआ।

प्रविभक्त (व० कृ०) १ अलहदा किया हुआ। पृथक किया हुआ। २ विभाजित। जिसका बटवारा हो चुका हो।

प्रविभागः (पु०) १ विभाग। बाँट। क्रमवार रखना। २ अंश। भाग।

प्रविरल (वि०) १ बहुत दूर दूर अलगाया हुआ। पृथक। २ स्वल्प। बहुत थोड़ा।

प्रविलयः (पु०) १ पिघलाना। गलाना। २ भली भाँति घुलना या लीन होना।

प्रविलुप्त (व० कृ०) हटाया हुआ। काटा हुआ। गिरा हुआ। घिसा हुआ।

प्रविरः (पु०) पीला चन्दन।

प्रविवादः (पु०) झगड़ा। टंटा।

प्रविविक्त (व० कृ०) १ एकाकी। २ अलगाया हुआ। अलहदा किया हुआ।

प्रविश्लेषः (पु०) अलगाव। बिलगाव।

प्रविषण्ण (व० कृ०) उदास। उत्साह शून्य।

प्रविष्ट (व० कृ०) १ घुसा हुआ। २ संलग्न। ३ आरम्भ किया हुआ।

प्रविष्टकं (न०) रंगभूमि का द्वार।

प्रविस्तरः, प्रविस्तारः (पु०) विस्तार। फैलाव। वृत्त।

प्रवीण (वि०) चतुर। निपुण। जानकार।

प्रवीर (वि०) १ प्रधान। श्रेष्ठ। सर्वोत्कृष्ट। २ मज़बूत। दृढ़। वीर।

प्रवीरः (पु०) १ वीर पुरुष। बहादुर आदमी। योद्धा। २ प्रधान पुरुष।

प्रवृत (व० कृ०) चुना हुआ। छाँटा हुआ।

प्रवृत्त (व० कृ०) १ आरम्भ किया हुआ। २ संचालित। ३ सलग्न। ४ प्रस्थानित। ५ निश्चित। निर्णीत। ६ अविरुद्ध। अविवादग्रस्त। ७ गोल।

प्रवृत्तः (पु०) गोल आभूषण विशेष।

प्रवृत्तक (न०) रंग भूमि का प्रवेशद्वार।

प्रवृत्तिः (स्त्री०) १ अविच्छिन्न उन्नति। बढ़ती। २ उत्पत्ति। उद्गमस्थान। उदय। प्राकट्य। प्रकाशन। ३ आरम्भ। ५ लगन। रुझान।

झुकाव। ६ चालचलन। चरित्त। ७ व्यापार। कामधंधा। ८ व्यवहार। चलन। प्रचलन। ९ अविच्छिन्न उद्योग। १० भाव। अर्थ। मतलब। ११ सातत्य। अविच्छिन्नता। स्थायित्व। १२ सांसारिक विषयों में अनुरक्ति। १३ वार्ता। वृत्तान्त। हाल। बात। १४ किसी नियम का किसी विषय में लागू होना। १५ प्रारब्ध। भाग्य। तक़दीर। १६ बोध। १७ हाथी का मद। उज्जयिनी पुरी का नाम। ज्ञः, (पु०) भेदिया। जासूस।

प्रवृद्ध (व० कृ०) १ पूरा बढ़ा हुआ। २ वृद्धियुक्त। फैला हुआ। विस्तारित। ३ पूर्ण। गहरा। ४ अहंकारी। अभिमानी। ५ उग्र। प्रचण्ड। ६ लंबा। दीर्घ।

प्रवृद्धिः (स्त्री०) १ उन्नति। बढ़ती। २ उत्थान। समृद्धि। उन्नयन।

प्रवेक (वि०) श्रेष्ठ। मुख्य। सर्वोत्कृष्ट।

प्रवेगः (पु०) बड़ा वेग।

प्रवेटः (पु०) जौ।

प्रवेणिः } प्रवेणी } (स्त्री०) १ बालों का जूड़ा। २ हाथी की झूल। ४ रंगीन ऊनी कपड़े का थान। ५ जलप्रवाह या नदी की धार।

प्रवेतृ (पु०) रथवान। सारथी।

प्रवेदनं (न०) प्रकट करना। प्रकटन। घोषणा।

प्रवेपः, प्रवेपकः, प्रवेपथुः (पु०), प्रवेपनम् (न०) } थर्राना। कँपकपी।

प्रवेरित (वि०) इधर उधर पटका हुआ या फैंका हुआ।

प्रवेलः (पु०) सोना मूँग।

प्रवेशः (पु०) १ द्वार। अन्तर्निवेश। २ पैठारी। घुसना। ३ रंगमंच का प्रवेशद्वार। ४ घर का प्रवेशद्वार। ५ आमदनी। मालगुज़ारी। ६ किसी कार्य में संलग्नता।

प्रवेशकः (पु०) १ प्रवेश करने वाला। २ नाटक के अभिनय में वह स्थल जहाँ कोई अभिनय करने वाला दो अंकों के बीच की घटना का (जो दिख लायी न गयी हो) परिचय; पारस्परिक वार्तालाप द्वारा देता है।

प्रवेशनं (न०) प्रवेशद्वार। पैठारी। २ भीतर गमन। ३ सिंहद्वार। ४ मैथुन। स्त्रीसङ्गम।

प्रवेशित (व० कृ०) परिचय कराया हुआ। भीतर लाया हुआ।

प्रवेष्टः (पु०) १ बाँह। २ पहुँचा। ३ हाथी की पीठ का वह माँसल भाग जहाँ लोग बैठते हैं। ४ हाथी के मसूड़े। ५ हाथी की झूल।

प्रव्यक्त (व० कृ०) स्पष्ट। साफ़। व्यक्त। प्रकट।

प्रव्यक्तिः (स्त्री०) प्रकटन। प्राकट्य।

प्रव्याहारः (पु०) वार्तालाप की वृद्धि।

प्रव्रजनं (न०) १ विदेशगमन। २ निर्वासन। घर बार छोड़ संन्यास लेना।

प्रव्रजित (व० कृ०) घर छोड़ने वाला। विदेश गया हुआ।

प्रव्रजितं (न०) संन्यासी का जीवन।

प्रव्रजित (पु०) १ संन्यासी। गृहत्यागी। २ बौद्ध भिक्षुक का शिष्य।

प्रव्रज्या (स्त्री०) १ विदेशगमन। २ भ्रमण। ३ संन्यास। श्रम।

प्रव्रज्यावसितः (पु०) वह पुरुष जिसने संन्यासाश्रम ग्रहण कर उसे त्याग दिया हो।

प्रव्रश्चनः (पु०) लकड़ी काटने का चाकू विशेष।

प्रव्राज (पु०), प्रव्राजकः (पु०) } संन्यासी।

प्रव्राजनं (न०) निर्वासन। घर छुड़ा वन में भेजना।

प्रशंसनं (न०) प्रशंसा। श्लाघा। सराहना। तारीफ।

प्रशंसा (स्त्री०) गुणवर्णन। स्तुति। बड़ाई। श्लाघा। —मुखर, (वि०) ज़ोर ज़ोर से प्रशंसा करने वाला।

प्रशंसित (व० कृ०) सराहा हुआ। तारीफ किया हुआ।

प्रशंसोपमा (स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद। इसमें उपमेय की विशेष प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा व्यक्त की जाती है।

प्रशंस्य (वि०) प्रशंसनीय। प्रशंसा करने योग्य।

प्रशस्वन् (पु०) समुद्र।

प्रशस्वरी (स्त्री०) नदी ।

प्रशमः (पु०) १ शान्ति । २ शमन । उपशम । ३ नाश । ध्वंस । ४ अवसान । अन्त । विनाश । ५ निवृत्ति ।

प्रशमन (वि०) [स्त्री०—प्रशमनी] १ शान्त करने वाला ।

प्रशमन (न०) १ शमन । शान्ति । २ नाशन । ध्वंसन । ३ मारण । वध । ४ प्रतिपादन । ५ वशकरण । स्थिरकरण ।

प्रशमित (व० कृ०) १ शान्त । उपशमित । २ बुझा हुआ । अघाया हुआ । तृप्त । २ प्रायश्चित्त द्वारा शुद्ध किया हुआ ।

प्रशस्त (व० कृ०) १ प्रशंसा किया हुआ । प्रशंसनीय । ३ श्रेष्ठ । सर्वोत्तम । ४ कृतकृत्य । सुखी । शुभ । —अद्रिः, (पु०) एक पर्वत का नाम ।—पादः, (पु०) एक प्राचीन आचार्य । इन्होंने वैशेषिक दर्शन पर पदार्थ धर्मसंग्रह नामक एक ग्रन्थ लिखा था, जो अब तक मिलता है ।

प्रशस्तिः (स्त्री०) १ प्रशंसा । विरुदावली २ वर्णन । ३ प्रशंसा में रची हुई कविता । ४ श्रेष्ठता । उत्कृष्टता । ५ आशीर्वचन । ६ आदेश ।

प्रशस्य (वि०) प्रशंसा के योग्य । प्रशंसनीय । उत्तम । श्रेष्ठ ।

प्रशाख (वि०) १ अनेक सघन या विस्तारित शाखाओं वाला । २ गर्भपिण्ड की पाँचवी अवस्था जब उसमें हाथ पैर बन चुकते हैं ।

प्रशाखा (स्त्री०) छोटी डाली या टहनी ।

प्रशाखिका (स्त्री०) छोटी डाली या टहनी ।

प्रस्तरण (न०) } प्रस्तरणा (स्त्री०) } १ सेज । शय्या । २ आसन । बैठकी ।

प्रशांत } प्रशान्त } (व० कृ०) १ स्थिर । अचंचल । २ शान्त । निश्चल वृत्ति वाला । ३ वश में किया हुआ । दमन किया हुआ । ४ समाप्त । खत्म । ५ मृत । मरा हुआ ।—आत्मन्, (वि०) शान्त चित्त । —ऊर्ज, (वि०) निर्बल किया हुआ । वैरों पड़ा हुआ ।—चेष्ट, (वि०) काम धंधा छोड़े हुए ।—बाध, (वि०) वह जिसकी समस्त बाधाएँ दूर हो चुकी हों ।

प्रशान्तिः (स्त्री०) शान्ति । स्थिरता ।

प्रशामः (पु०) १ शान्ति । स्थिरता । २ तृप्ति । ३ अवसान ।

प्रशासनं (न०) १ हुकूमत करना । शासन करना । २ हुकूमत । शासन । ३ हुक्मदेना ।

प्रशास्तृ (पु०) राजा । शासक । सूबेदार ।

प्रशिथिल (वि०) बहुत ढीला ।

प्रशिष्यः (पु०) शिष्य का शिष्य ।

प्रशुद्धिः (स्त्री०) स्वच्छता । पवित्रता ।

प्रशोषः (पु०) सूखना । सूख जाना ।

प्रश्चोतनम् (न०) छिड़काव ।

प्रश्नः (पु०) १ सवाल । २ अनुसन्धान । तहकीकात । ३ विवाद ग्रस्त विषय । ४ अंकगणित का हल करने के लिये कोई सवाल । ५ भविष्य सम्बन्धी जिज्ञासा । ६ किसी ग्रन्थ का कोई छोटा अध्याय ।—उपनिषद्, (न०) एक उपनिषद् विशेष जिसमें ६ प्रश्न और उनके छः उत्तर हैं ।—दूतिः, (स्त्री०) पहेली ।—दूती (स्त्री०) बुझौअल ।

प्रश्रथः (पु०) ढीलापन ।

प्रश्रयः (पु०) } प्रश्रयणम् (न०) } १ विनय । नम्रता । शिष्टता । २ प्रेम । स्नेह । सम्मान ।

प्रश्रित (व० कृ०) विनम्र । विनीत । शिष्ट ।

प्रश्लथ (वि०) १ बहुत ढीला । २ उत्साहहीन ।

प्रश्लिष्ट (व० कृ०) १ उमेठा हुआ । २ युक्तियुक्त ।

प्रश्लेषः (पु०) १ घनिष्ट संसर्ग । २ सन्धि होने में स्वरों का परस्पर मिल जाना ।

प्रश्वासः (पु०) नथने से बाहिर आयी हुई साँस । वायु के नथने से निकलने की क्रिया ।

प्रष्ठ (वि०) १ सामने खड़ा होने वाला । २ प्रधान । मुख्य । अगुआ । नेता ।—वाह, (पु०) जवान बैल, जिसे हल जोतने का अभ्यास कराया जाता हो ।

प्रस् (धा० आत्म०) [प्रस, प्रस्य, प्रस्यते] १ बच्चा पैदा करना । २ फैलाना । पसारना । व्याप्त करना । बढ़ाना ।

प्रसक्त (व० कृ०) १ सम्बन्ध युक्त । अटका हुआ । २ अत्यन्त आसक्त । ३ समीप । ४ सतत । ५ प्राप्त । उपलब्ध ।

प्रसक्तं (अव्यया०) लगातार। बराबर। अविच्छिन्न।

प्रसक्तिः (स्त्री०) १ स्नेह। भक्ति। अनुराग। २ सम्बन्ध। मेल। संसर्ग। ३ प्रयोग। ४ व्याप्ति। ५ अध्यवसाय। ६ परिणाम। नतीजा। प्रतिफल। ७ विवादग्रस्त विषय। ८ सम्भावन।

प्रसंगः } (पु०) १ अनुराग। आसक्ति। भक्ति।
प्रसङ्गः } २ संसर्ग। सम्बन्ध। सम्पर्क। मेल। ३ अनुचित सम्बन्ध। ४ विषय जो विवादग्रस्त हो या जिस पर बातचीत होती हो। ५ अवसर। ६ उपयुक्त अवसर। उपयुक्त काल। ७ व्याप्त रूप सम्बन्ध।

प्रसंख्या (स्त्री०) १ जोड़। मीज़ान। २ ध्यान।

प्रसंख्यानम् (न०) १ गणना। २ ध्यान। विचार। आत्मानुसन्धान। ३ ख्याति। कीर्ति। प्रसिद्धि।

प्रसंख्यानः (पु०) भुगतान। दिवाला।

प्रसंजनम् } (न०) १ जोड़ने की क्रिया। मिलाना।
प्रसञ्जनम् } २ उपयोग में लाना। काम में लाना।

प्रसत्तिः (स्त्री०) १ अनुग्रह। २ स्वच्छता। पवित्रता निर्मलता।

प्रसंधानम् } (न०) मिलान। योग। जुटाव। एका।
प्रसन्धानम् }

प्रसन्न (व० कृ०) १ पवित्र। स्वच्छ। चमकीला। निर्मल। २ प्रसन्न। आह्लादित। आस्वस्त। ३ कृपालु। शुभ। ४ साफ। खुलंखुल्ला। स्पष्ट। सहज में बोधगम्य। ५ सत्य। सही। ठीक।—आत्मन्, (वि०) जो सदा प्रसन्न रहे। आनन्दी।—ईरा, (=प्रसन्नेरा) एक प्रकार की मदिरा।—कल्प, (वि०) १ प्रायःशान्त। २ प्रायःसत्य।—मुख,—वदन, (वि०) जिसका मुख प्रसन्न हो। जिसकी आकृति से प्रसन्नता टपकती हो। हँसता हुआ चेहरा।—सलिल (वि०) स्वच्छ जलवाला।

प्रसन्ना (स्त्री०) १ प्रसन्नकर। आनन्दप्रद। २ वह मद्य जो पहले खींची गयी हो।

प्रसभं (अव्यया०) १ बलपूर्वक। बरजोरी। ज़बरदस्ती। २ अत्यधिक। बहुतायत से। ३ अड़ पकड़कर। हठ करके।—दमनं, (न०) ज़बरदस्ती वशीभूत करना।—हरणं, (न०) ज़बरदस्ती पकड़ कर ले जाना।

प्रसभः (पु०) बल। उग्रता। प्रचण्डता। वेग।

प्रसमीक्षणम् (न०) } विचार। निर्णय। गम्भीरा
प्रसमीक्षा (स्त्री०) } लोचन।

प्रसयनम् (न०) १ बंधन। २ जाल।

प्रसरः (पु०) १ आगे बढ़ना। बढ़ना। विस्तार। २ बेरोकटोक गति। अबाधित गति। अबाधित मार्ग। ३ प्रसार। विस्तार। फैलाव। ४ आयतन। बड़ी मात्रा। ५ प्रभाव। चलन। ६ धार। बहाव। बाढ़। ७ समूह। भीड़भाड़। ८ युद्ध। लड़ाई। लोहे का तीर। १० वेग। वेगवान्गति। ११ विनम्र याचना या प्रार्थना। स्नेहयुक्त याचना।

प्रसरणं (न०) १ आगे बढ़ना। बहाव। २ निकल भागना। भाग जाना। ३ फैलना। फैलने की क्रिया या भाव। ४ शत्रु को घेर लेना। ५ सुशीलता। स्नेहशीलता।

प्रसरणिः } (स्त्री०) शत्रु को घेर लेना।
प्रसरणी }

प्रसर्पणम् (न०) १ आगे बढ़ना। आगे खिसकना। २ घुसना। पैठना। (सेना का) चारों ओर फैल जाना।

प्रसलः } (पु०) हेमन्त ऋतु।
प्रशलः }

प्रसवः (पु०) १ बच्चा जनने की क्रिया। जनना। प्रसूति। २ जन्म। उत्पत्ति। ३ अपत्य। बच्चा। सन्तान। ४ उत्पत्ति स्थान। उद्गमस्थल। ५ फूल। पुष्प। कुसुम। ६ फल। उपज।—उन्मुख, (वि०) उत्पन्न होने वाला।—गृहं, (न०) प्रसूतिकागृह। वह कमरा जिसमें बच्चा जना जाय। सोवर।—धर्मिन्, (वि०) उर्वर, जिसमें कोई वस्तु पैदा हो सके।—बन्धनम्, (न०) वह पतला सींका जिसके सिरे पर पत्ता या फूल लगता है। नाल।—वेदना,—व्यथा, (स्त्री०) वह दर्द जो बच्चा जनने के पूर्व गर्भवती स्त्री के पेट में हुआ करता है।—स्थली, (स्त्री०) माता। स्थानं, (न०) १ वह स्थान जहाँ बच्चा उत्पन्न हो। २ जाल।

प्रसवकः (पु०) पियालवृक्ष। चिरौंजी का पेड़।

प्रसवनम् (न०) १ बच्चा जनना। २ उर्वरापन। उपजाऊपन।

प्रसवंतिः } (स्त्री०) जच्चा औरत ।
प्रसवन्तिः }

प्रसवितृ (पु०) पिता । जनक ।

प्रसवित्री (स्त्री०) माता ।

प्रसव्य (वि०) उल्टा । औंधा ।

प्रसह (वि०) सहनशील । सहिष्णु ।

प्रसह (पु०) १ शिकारी पशु या पत्ती । २ सहनशीलता । सामना । मुकाबला ।

प्रसहनं (न०) १ सहनशीलता । सहिष्णुता । २ सामना । मुकाबला । ३ पराजय । शिकस्त । ४ आलिङ्गन ।

प्रसहनः (पु०) शिकारी पशु या पत्ती ।

प्रसह्य (अव्यया०) १ वरजोरी । प्रचण्डता से । ज़बरदस्ती से । २ बहुतायत से । अत्यन्त अधिकाई से । बहुत ।

प्रसातिका (स्त्री०) छोटे दाने का चॉवल ।

प्रसादः (पु०) १ अनुग्रह । कृपा । अच्छा स्वभाव । २ शान्ति । उद्वेगराहित्य । ४ स्पष्टता । स्वच्छता । ५ प्राञ्जलता । सुस्पष्टता । परिस्फुटता । ६ वह भोज्य पदार्थ जो देवता को निवेदित किया गया हो । ७ देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लायी जाय । ८ निस्स्वार्थदान । पुरस्कार । ९ कोई भी पदार्थ जो तुष्टिसाधन के लिये भेंट किया जाय ।—उन्मुख, (वि०) कृपालु । अनुग्रह करने को तत्पर ।—पराङ्मुख, (वि०) १ अप्रसन्न । नाराज़ । २ वह जो किसी की कृपा की परवाह न करे ।—पात्रं, (न०) कृपापात्र ।—स्थ, (वि०) १ कृपालु । २ शुभ । शान्त । प्रसन्न । सुखी ।

प्रसादक (वि०) [स्त्री०—प्रसादिका] १ स्वच्छ करने वाला । साफ करने वाला । २ ढाँढ़स बँधाने वाला । धीरज देने वाला । ३ प्रसन्न करने वाला । ४ अनुग्रह करने वाला ।

प्रसादन (वि०) [स्त्री० प्रसादनी] १ साफ करने वाला । पवित्र या स्वच्छ करने वाला । २ धीरज बधाने वाला । प्रसन्न करने वाला ।

प्रसादनं (न०) १ अस्वच्छता को हटाने वाला या साफ करने वाला । २ धीरज बंधाने वाला । ३ प्रसन्न करने वाला । ४ अनुग्रह करने वाला ।

प्रसादनः (पु०) शाही खीमा । बादशाह का तंबू ।

प्रसादना (स्त्री०) १ चाकरी । सेवा । परिचर्या । २ पवित्रता ।

प्रसादित (व० कृ०) १ स्वच्छ किया हुआ । पवित्र किया हुआ । २ सन्तुष्ट किया हुआ । अघाया हुआ । ३ परिचर्या किया हुआ । ४ शान्त किया हुआ । धीरज बँधाया हुआ ।

प्रसाधक (वि०) [स्त्री०—प्रसाधिका] १ सम्पादक । निर्वाह करने वाला । २ स्वच्छ करने वाला । सफाई करने वाला । ३ सजावट करने वाला । शृङ्गार करने वाला ।

प्रसाधकः (पु०) राजाओं के वस्त्र, आभूषणादि पहनाने वाला नौकर ।

प्रसाधनं (न०) १ सम्पादन । कार्य को पूरा करना । २ सुव्यवस्था करना । ३ सजावट । शृङ्गार । वेष । कँघी । ४ सजावट ।—विधिः (स्त्री०) शृङ्गार का तरीका ।—विशेषः (पु०) सब से चढ़ बढ़ कर शृङ्गार ।

प्रसाधनः (पु०) }
प्रसाधनम् (न०) } कंघी ।
प्रसाधनी (स्त्री०) }

प्रसाधिका (स्त्री०) वह दासी जो अपनी स्वामिनी के शृङ्गार के साधनों की देखरेख रखा करे ।

प्रसाधित (व० कृ०) १ सँवारा हुआ । सजाया हुआ । २ सुसम्पादित ।

प्रसारः (पु०) विस्तार । फैलाव । पसार ।

प्रसारणं (न०) फैलाना । पसारना । विस्तृत करना ।

प्रसारिणी (स्त्री०) शत्रु को घेरना ।

प्रसारित (व० कृ०) १ फैला हुआ । बढ़ा हुआ । छाया हुआ । २ (हाथ) आगे फैलाया हुआ । ३ (बिक्री के लिये) सामने रखा हुआ ।

प्रसाहः (पु०) शिकस्त । हार । पराजय ।

प्रसित (व० कृ०) १ बंधा हुआ । बसा हुआ । २ अनुरक्त । संलग्न । लगा हुआ । ३ अभिलषित ।

प्रसितं (न०) पीव । मवाद ।

प्रसितिः (स्त्री०) १ जाल । २ पट्टी । ३ बंधन । वेड़ी ।

प्रसिद्ध (व० कृ०) १ विख्यात । मशहूर । २ सजा हुआ । सँवारा हुआ ।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) १ ख्याति । कीर्ति । २ सफलता । परिपूर्णता । ३ आभूषण । सजावट ।

प्रसीदिका (स्त्री०) वाटिका । फुलवगिया ।

प्रसुप्त (व० कृ०) १ निद्रित । सोया हुआ । २ प्रगाढ़निद्रित । [बीमारी ।

प्रसुप्तिः (स्त्री०) १ निद्रा । नींद । २ लकवे की

प्रसू (वि०) जनने वाली । उत्पन्न करने वाली (स्त्री०) १ माता । जननी । २ घोड़ी । ३ फैलने वाली लता या बेल । ४ केला ।

प्रसूका (स्त्री०) घोड़ी ।

प्रसूत (व० कृ०) उत्पन्न । सञ्जात । पैदा ।

प्रसूतं (न०) १ फूल । २ उत्पादक ।

प्रसूता (स्त्री०) जच्चा स्त्री ।

प्रसूतिः (स्त्री०) १ प्रसव । जनन । २ उद्भव । ३ बच्चा जनना । ४ अंडे देना ।५ उत्पत्ति । पैदायश । ६ निकलना । बढ़ना । ७ पैदावार । ८ अपत्य । सन्तति । ९ उत्पन्नकरने वाला । पैदा करने वाला । १० माता ।

प्रसूतिजं (न०) वह दर्द जो बच्चा जनते समय होता है ।

प्रसूतिवायु. (पु०) वह वायु जो बच्चा जनते समय गर्भाशय में उत्पन्न होता है ।

प्रसूतिका (स्त्री०) जच्चा स्त्री । वह स्त्री जिसके हाल में बच्चा हुआ हो ।

प्रसून (व० कृ०) उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ ।

प्रसूनम् (न०) १ फूल । पुष्प । २ कली । ३ फल ।

प्रसूनकं (न०) १ फूल । २ कली ।

प्रसूनइषुः }
प्रसूनबाणः } (पु०) कामदेव के नामान्तर ।
प्रसूनवाणः }

प्रसूनवर्षः (पु०) फूलों की वर्षा ।

प्रसृत (व० कृ०) १ आगे बढ़ा हुआ । २ पसारा हुआ । बढ़ाया हुआ । ३ छाया हुआ । बिछा हुआ । ४ लंबा । दीर्घ । ५ लगा हुआ । ६ तेज़ । फुर्तीला । ७ सुशील । विनय ।—जं (न०) छिनाले का लड़का ।

प्रसृतं (न०) हथेली पर का मान (यह पु० भी है।)

प्रसृत. (पु०) हाथ की हथेली या अंगुलि ।

प्रसृता (स्त्री०) टाँग ।

प्रसृति. (स्त्री०) १ वृद्धि । बढ़ती । २ बहाव । ३ हथेली । पसा । अञ्जुलि । ४ हथेली भर का मान ।

प्रसृष्ट (व० कृ०) १ पृथक किया हुआ । पसारे हुए ।

प्रसृष्टा (स्त्री) एक अंगुली पसारे हुए ।

प्रसृत्वर (वि०) चारों ओर फैलने वाला ।

प्रसृमर (वि०) चूने वाला । टपकने वाला ।

प्रसेकः (पु०) १ सेचन । सिञ्चन । २ छिड़काव । ३ पसेव । ४ वमन । कै ।

प्रसेदिका (स्त्री०) छोटी बगिया ।

प्रसेवः }
प्रसेवकः } (पु०) १ बोरा । थैला । २ कुप्पी । कुप्पा । ३ बीन की तूंबी ।

प्रस्कंदनं }
प्रस्कन्दनं } (न०) १ झपट । फलाँग । २ विरेचन । जुलाब । अतिसार । दस्तों का रोग ।

प्रस्कंदनः }
प्रस्कन्दनः } (पु०) शिव ।

प्रस्कन्न (व० कृ०) १ फलाँग लगाये हुए । उछला हुआ । २ गिरा हुआ । टपका हुआ । ३ परास्त । पराजित ।

प्रस्कन्नः (पु०) १ जातिच्युत । २ पापी । नियम भङ्ग करने वाला ।

प्रस्कुंदः }
प्रस्कुन्दः } (पु०) गोलाकार वेदी ।

प्रस्खलनम् (न०) १ पतन । २ लड़खड़ाना ।

प्रस्तरः (पु०) १ फूलों और पत्तों की सेज । २ सेज । शय्या । ३ चौरस जगह । मैदान । ४ पत्थर । चट्टान । ५ रत्न ।

प्रस्तरणं (पु०) } १ शय्या । सेज । २ बैठकी ।
प्रस्तरणा (स्त्री०) }

प्रस्तारः (पु०) १ फैलाव । विस्तार । २ फूलों और पत्तों से सवारी सेज या शय्या । ३सेज । शय्या ।४ चौरस ज़मीन । मैदान । ५ जंगल । वन । ६ छन्दः शास्त्र के अनुसार नव प्रत्ययो में से प्रथम । इसमें छंदों के भेद की संख्या और उनके रूपों का वर्णन होता है । इसके दो भेद हैं । प्रथम वर्णप्रस्तार । द्वितीय मात्राप्रस्तार ।

प्रस्तावः (पु०) १ आरम्भ । शुरूआत । २ भूमिका । उपक्रम । ३ वर्णन । चर्चा । जिक्र । ४ अवसर । मौका । ५ प्रकरण । विषय । ६ अभिनय में अभिनय से पूर्व विषय का परिचय ।

प्रस्तावना (स्त्री०) १ प्रशंसा । सराहना । २ आरम्भ । शुरूआत । ३ भूमिका । उपोद्घात । ४ नाटक में सूत्रधार और किसी नट से आरम्भिक वातचीत जिसमें नाटकरचयिता और उसकी योग्यता का वर्णन दिया जाता है ।

प्रस्तावित (वि०) १ आरम्भ किया हुआ । २वर्णित ।

प्रस्तिरः (पु०) फूलों और पत्तियों की सेज ।

प्रस्तीत } (व० कृ०) १ शब्द करता हुआ । शब्दाय-
प्रस्तीम } मान । २ भीड़भाड़ लगाये हुए ।

प्रस्तुत (व० कृ०) १ जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गयी हो । २ आरम्भ किया हुआ । ३ पूर्ण किया हुआ । खत्म किया हुआ । ४ जो घटित हुआ हो । ५ जो समीप या सामने हो । ६ विवादग्रस्त । प्रस्तावित । वर्णित । हाथ में लिया हुआ ।—अङ्कुरः, (पु०) एक अलङ्कार विशेष । इसमें एक प्रस्तुत पदार्थ के सम्बन्ध में कुछ कह कर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत पदार्थ पर घटाया जाता है । प्रस्तुतालङ्कार ।

प्रस्तुतं (न०) १ उपस्थित विषय । २ विचाराधीन या विवादग्रस्त विषय ।

प्रस्थ (वि०) १ जाने वाला । भेंट करने वाला । अनुसार चलने वाला । २ यात्रा के लिये जाने वाला । ३ फैलाना । बढ़ाना । विस्तार करना । ४ स्थिर । स्थायी ।

प्रस्थं (न०) } १ चौरस मैदान । २ पहाड़ के
प्रस्थः (पु०) } ऊपर की चौरस भूमि । अधित्यका । टेबुललैंड । ३ पर्वतशिखर । ४ प्राचीन कालीन एक तौल । ५ कोई वस्तु जो एक प्रस्थ यानी एक बालिश्त के लगभग हो ।—पुष्पः, (पु०) १ टोनामरुआ का फूल । २ छोटे पत्ते की तुलसी ।

प्रस्थानं (न०) १ गमन । यात्रा । रवानगी । २ आगमन । ३ कूच । सेना या चढ़ाई करने वाली सेना का कूच । ४ पद्धति । ५ मृत्यु । मरण । ६ अपकृष्ट श्रेणी का नाटक ।

प्रस्थापनं (न०) रवानगी । विदाई । २ दौत्य—कार्य पर नियुक्ति । ३ स्थापन । सिद्ध करना । ४ उपयोग । ५ पशुओं की रवानगी । उनको दूर भेजन ।

प्रस्थापित (व० कृ०) १ भेजा हुआ । रवाना किया हुआ । २ सिद्ध किया हुआ । स्थापित किया हुआ ।

प्रस्थित (व० कृ०) गत । गया हुआ ।

प्रस्थितिः (स्त्री०) १ रवानगी । प्रस्थान । २ यात्रा । कूच ।

प्रस्नः (पु०) स्नान पात्र ।

प्रस्नवः (पु०) १ नहाव । उमड़ कर बहना । २ (दूध की) धार ।

प्रस्नुत (व० कृ०) टपकता हुआ । चूता हुआ । गिरता हुआ ।—स्तनी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी छाती से दूध टपकता हो । (मातृस्नेह के आधिक्य से) ।

प्रस्नुषा (स्त्री०) पौत्र की पत्नी । नतबहू ।

प्रस्पन्दन (न०) धड़कन ।

प्रस्फुट (वि०) १ फूला हुआ । खिला हुआ । २ प्रकाशित । जाहिर । साफ । स्पष्ट ।

प्रस्फुरित (व० कृ०) काँपता हुआ । थरथराता हुआ ।

प्रस्फोटनं (न०) फोड़ निकलना । विकसित होना या करना । खिलना । खिलाना । ३ प्रकट करना । प्रकाशित करना । खोद देना । ४ फटना (अन्न का) ५ सूप । ६ पीटना । ठोंकना ।

प्रस्रंसिन् (वि०) [स्त्री०—प्रस्रंसिनी] अकाल ही में गिरने वाला या कच्चा गिरने वाला (गर्भ) ।

प्रस्रवः (पु०) १ उमड कर वह निकलना। २ वहाव। धार। ३ स्तन में से दूध का झरना। ४ पेशाव। मूत्र।
प्रस्रवणं (न०) १ वहाव। २ छाती या ऐन से दूध का वहना या निकलना। ३ जलप्रपात। ४ चश्मा। सोता। ५ फव्वारा। ६ दह या कुण्ड। ७ पसीना। ८ मूत्रोत्सर्ग।
प्रस्रवणः (पु०) एक पर्वत का नाम।
प्रस्रावः (पु०) १ वहाव। उमड़न। २ पेशाव। मूत्र।
प्रस्रावाः (पु०) (बहुवचन) आँसूओं का उमडना या गिरना।
प्रस्रुत (व० कृ०) उमडा हुआ। टपका हुआ। निकला हुआ।
प्रस्वनः
प्रस्वानः } (पु०) ज़ोर का कोलाहल या शोरगुल।
प्रस्वाप (पु०) १ निद्रा। २ स्वप्न। २ अस्त्र विशेष जिसके कारण शत्रु सैन्य सो जाती हो।
प्रस्वापनं (न०) १ निद्रा लाने वाला। २ अस्त्र विशेष जो शत्रु सैन्य को निद्रित करता है।
प्रस्विन्न (व० कृ०) पसीने से तर।
प्रस्वेदः (पु०) वहुत अधिक पसीना।
प्रस्वेदित (व० कृ०) १ पसीने से तरावोर। २ गर्म।
प्रहणनम् (न०) हनन। वध। हत्या।
प्रहत (व० कृ० १ घायल। हत। वध किया हुआ। २ पीटा हुआ। ३ भगाया हुआ। हराया हुआ। ४ फैला हुआ। वढ़ा हुआ। ५ अविच्छिन्न। ६ (कोई मार्ग जो पैरों से) कचरा हुआ हो। ७ सीखा हुआ।
प्रहरः (पु०) दिन का आठवाँ भाग। समय का मान विशेष।
प्रहरकः (वि०) घडियाली अथवा वह आदमी भी जो पहरे पर हो और घंटा वजाता हो।
प्रहरणं (न०) १ प्रहार। वार। २ फेंकना। हटाना। ३ आक्रमण। हमला। ४ चोट। ५ स्थानान्तरित करना। निकाल देना। ६ आयुध। हथियार। ७ युद्ध। ८ पर्दादार डोली या गाड़ी।
प्रहरणीयम् (न०) अस्त्र। हथियार।
प्रहरिन् (पु०) १ पहरेवाला। चौकीदार। २ घंटा वजाने वाला।
प्रहर्तृ (वि०) १ मारने वाला। प्रहार करने वाला। आक्रमणकारी। २ लडने वाला। योद्धा। ३ तीरंदाज़। गोली चलाने वाला।
प्रहर्षः (पु०) १ अत्यधिक हर्ष। २ लिङ्ग का उत्थान।
प्रहर्षणम् (न०) अत्यन्त आनन्दित करना।
प्रहर्षणः (पु०) बुध नामक ग्रह।
प्रहर्षणी
प्रहर्षिणी } (स्त्री०) १ हल्दी। २ एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें १३ अक्षर होते हैं।
प्रहर्षुलः (पु०) बुध ग्रह।
प्रहसनम् (न०) १अट्टहास। प्रसन्नता। २ मज़ाक। उपहास। दिल्लगी। हँसी। ३ रूपक विशेष। ४ हंसाने वाला नाटक। फार्स। निम्नश्रेणी का सुखान्त नाटक।
प्रहसन्ती (स्त्री०) १ चमेली विशेष। यूथिका। वासन्ती। २ बडी कढाई। कडाह।
प्रहसित (व० कृ०) हँसता हुआ।
प्रहसितम् (न०) हास्य। हँसी। प्रसन्नता।
प्रहस्तः (पु०) १ चपेटा। थप्पड। २ रावण के अमात्य एवं सेनापति विशेष का नाम।
प्रहाणं (न०) त्यागना। छेंकना। छोड़ देना।
प्रहाणिः (स्त्री०) १ त्याग। २ कमी। अभाव।
प्रहारः (पु०) १ आघात। वार। चोट। २ वध। ३ तलवार का घाव। ३ लात की चोट। ठोकर। ४ गोली मारना।—आर्त (वि०) प्रहार से घायल। —आर्तम् (न०) प्रहार की दारुण पीडा।
प्रहारणम् (न०) काम्य दान। मनचाहा दान।
प्रहासः (पु०) १ अट्टहास। २ चिढाना। वनाना। जीट उडाना। ३ व्यङ्गयोक्ति। श्लेषवाक्य। ४ नचैया। नट। ५ शिव। ६ प्राकट्य। प्रदर्शन। ७ प्रभास नामक तीर्थस्थल विशेष।
प्रहासिन् (पु०) विदूषक। मसख़रा। हँसोड़ा।
प्रहिः (पु०) कूप। इनारा।
प्रहित (व० कृ०) १ स्थापित। २ वढाया हुआ। ३ भेजा हुआ। रवाना किया हुआ। ४ छोडा हुआ (जैसे तीर) ५ नियत किया हुआ। ६ उपयुक्त। उचित।

प्रहित (न०) चटनी । मसाला ।

प्रहीण (व० कृ०) त्यक्त । त्यागा हुआ ।

प्रहीणं (न०) नाश । स्थानान्तरकरण । हानि ।

प्रहुतं (न०) } भूत यज्ञ । बलिवैश्व देव ।
प्रहुतः (पु०) }

प्रहृत (व० कृ०) १ प्रताड़ित । मारा हुआ । घायल किया हुआ ।

प्रहृतं (न०) प्रहार । चोट । आघात ।

प्रहृष्ट (व० कृ०) १ अत्यन्त प्रसन्न । आह्लादित । २ रोमाञ्चित ।—आत्मन्, —चित्त, —मनस्, (वि०) प्रसन्न मन ।

प्रहृष्टकः (पु०) काक । कौआ ।

प्रहेलकः (पु०) १ लपसी । २ पहेली । बुझौवल ।

प्रहेला (स्त्री०) आवारा । बुरे चालचलन की । ३ रंगरस । विहार ।

प्रहेलि. (स्त्री०) } पहेली । बुझौवल ।
प्रहेलिका (स्त्री०) }

प्रह्लन्न (व० कृ०) हर्षित । प्रसन्न ।

प्रह्लादः } (पु०) १ अत्यन्त आनन्द । प्रसन्नता ।
प्रह्लाद } हर्ष । २ शोर । कोलाहल । रव । ३ हिरण्यकशिपु के पुत्र का नाम । इन्हीं प्रह्लाद को पुराणों में भक्तशिरोमणि की उपाधि दी है ।

प्रह्लादन } (वि०) प्रसन्नकारक । आनन्ददायी ।
प्रह्लादन } हर्षकर ।

प्रह्लादनं } (न०) प्रसन्न करना । आह्लादित
प्रह्लादनम् } करना ।

प्रह्व (वि०) १ ढालू । उतार का । २ झुका हुआ । नम्रता से झुका हुआ । ३ विनम्र । विनीत । ४ आसक्त । अनुरक्त ।—अञ्जलि (वि०) अञ्जलिबद्ध हो सिर नवाये हुए ।

प्रह्वयति (क्रि०) विनम्र करना ।

प्रह्वलिका (स्त्री०) पहेली । बुझौवल ।

प्रह्वायः (पु०) बुलावा । आमंत्रण ।

प्रांशु (वि०) ऊँचा । लंबा । बड़ा । लंबे तड़ंगे क़द का या डीलडौल का । २ लंबा । विस्तृत ।

प्रांशुः (पु०) लंबे डील डौल का आदमी ।

प्राक् (अव्यया०) १ पहिले । २ आरम्भ में । हाल ही में । ३ पूर्व । (किसी ग्रन्थ के पिछले भाग में) । ४ पूर्व दिशा में । (अमुक स्थान से) पूर्व । ५ सामने । ६ जहाँ तक हो वहाँ तक । यहाँ तक (यथा—प्राक् कडारात्)

प्राकट्यं (न०) प्रादुर्भाव । प्रसिद्धि । प्रचार ।

प्राकरणिक (वि०) [स्त्री०—प्राकरणिकी] विवाद ग्रस्त विषय सम्बन्धी ।

प्राकर्षिक (वि०) [स्त्री०—प्राकर्षिकी] श्रेष्ठतर समझे जाने का अधिकारी ।

प्राकर्षिकः (पु०) १ लौंडा । मैथुन कराने वाला लौंडा । २ वह पुरुष जिसकी जीविका दूसरों की स्त्रियों से चलती हो । औरतों का दलाल ।

प्राकाम्यं (न०) १ कार्य करने का स्वातंत्र्य । २ स्वेच्छाचरिता । ३ अप्रतिरोधनीय सङ्कल्प ।

प्राकृत (वि०) [स्त्री०—प्राकृता या प्राकृती । १ असली । स्वाभाविक । अपरिवर्तित । असंशोध्य । २ मामूली । साधारण । ३ अशिक्षित । गँवार । अपढ़ । ४ तुच्छ । अनावश्यक । ४ प्रकृति से उत्पन्न । ५ प्रान्तीय । ६ बोलचाल की भाषा, जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रान्त में हो अथवा पूर्वकाल में रहा हो । ६ एक प्राचीन भाषा जिसका प्रचार प्राचीन भारत में था और जिसका प्रयोग संस्कृत नाटकों में स्त्रियों, सेवकों और साधारण व्यक्तियों के मुख से करवाया गया है ।—अरिः (पु०) नैसर्गिक शत्रु अर्थात् पड़ोसी राज्य का राजा ।—उदासीनः (पु०) स्वभावतः तटस्थ । अर्थात् राजा जिसका राज्य बहुत दूर पर हो ।—ज्वरः (पु०) मामूलीबुख़ार ।—प्रलयः (पु०) पुराणानुसार एक प्रकार का प्रलय । जिसका प्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है । अर्थात् इस प्रलय में प्रकृति भी ब्रह्म में लीन हो जाती है ।—मित्रं (न०) स्वाभाविक मित्र ।

प्राकृतं (न०) प्रान्तीय बोलचाल की भाषा जो संस्कृत से निकली हो या जो संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश रूपों से बनी हो । हेमचन्द्र ने प्राकृत भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है । —"प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगत च प्राकृतं ।"

प्राकृतः (पु०) नीच जन । गँवार आदमी । साधारण मनुष्य ।

प्राकृतिक (वि०) [स्त्री०—प्राकृतिकी] १ स्वाभाविक। प्रकृति से उत्पन्न। २ अनात्मक। मायामय। कृत्रा।

प्राक्तन (वि०) [स्त्री० -प्राक्तनी] १ पहिले का। पूर्व का। २ पुराना। प्राचीन। पुरातन। ३ पिछले किसी जन्म का पूर्वजन्म कृत कर्म।

प्राखर्य (न०) १ उग्रता। २ तीतापन। कडुआपन। ३ दुष्टता।

प्रागल्भ्यम् (न०) १ प्रगल्भता। वीरता। २ घमंड। अभिमान। ३ चतुरता योग्यता। ४ प्रधानता। प्रबलता। बड़प्पन। ५ प्रादुर्भाव। प्राकट्य। ६ वाग्मिता। ७ धूमधाम। आडम्बर। ८ औद्धत्य।

प्रागारः (पु०) घर। इमारत। भवन।

प्राग्रं (न०) सर्वोच्च स्थान।—सर, (वि०) प्रथम। सब से आगे।—हर, (वि०) मुख्य। प्रधान।

प्रांग्राटः (पु०) पतला जमा हुआ दूध।

प्राग्र्य (वि०) प्रधान। सर्वप्रथम। श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

प्राघातः (पु०) युद्ध। लड़ाई।

प्राघारः (पु०) टपकना। चूना। रिसना।

प्राघुणः
प्राघुणकः
प्राघुणिकः
प्राघूर्णकः
प्राघूर्णिकः } (पु०) महमान। पाहुना। अतिथि।

प्रांगं
प्राङ्गम् } (न०) ढोलक।

प्रांगणम्,प्राङ्गणम्
प्रांगनम्,प्राङ्गनम् } (न०) १ आँगन। सहन। २ (कमरे का) फर्श। ३ एक प्रकार का ढोल।

प्राच्
प्रांच् } (वि०) [स्त्री० प्राची—प्रांची] पूर्व की ओर मुख किये हुए। सामने। सब से आगे। २ पूर्वी। पूर्व की ओर का। ३ पहिला। अगला। (पु० बहु०) १ पूर्वदेशवासी। २ पूर्व देश के व्याकरणी।—अग्र (वि०) [= प्रागग्र] पूर्व दिशा की ओर घूमा हुआ काटे वाला।—अभावः (=प्रागभावः] (पु०) १ वह अभाव जिसके पीछे उसका प्रतियोगी भाव उत्पन्न हो। २ अनादि सान्त पदार्थ।—अभिहित, (=प्रागभिहित) (वि०) पूर्वस्थित।—अवस्था, (=प्रागवस्था (स्त्री०) पहिले की हालत या अवस्था।—आयत, (= प्रागायत) (वि०) पूर्व की ओर बढ़ा हुआ।—उक्तिः (= प्रागुक्तिः) (स्त्री०) पहिले का कथन।—उत्तर (= प्रागुत्तर) (वि०) ईशान कोण का।—उदीची, (=प्रागुदीची) (स्त्री०) ईशान कोण।—कर्मन्, (= प्राक्कर्मन) (न०) पूर्व जन्म में किये हुए कर्म।—कालः, (= प्राक्कालः) (पु०) अगली अवस्था। अगला युग।—कालीन, (= प्राक्कालीन) प्राचीन काल सम्बन्धी।—कूल, (= प्राक्कूल) (वि०) (कुशों के सिरे) पूर्व दिशा की ओर निकले हुए।—कृत, (= प्राक्कृत) (पु०) पूर्व जन्म में किया हुआ।—चरणा, (= प्राक्चरणा) (स्त्री०) भग। योनि।—चिर, (= प्राक्चिर) (अव्यया०) उपयुक्त समय में। अपेक्षित काल में। अति विलम्ब होने के पूर्व।—जन्मन्, (=प्राग्जन्मन्) (न०)—जातिः, (= प्राग्जातिः) (स्त्री०) पूर्व जन्म।—ज्योतिषः, (= प्राग्ज्योतिषः) (पु०) कामरूप देश। (बहु०) इस देश के अधिवासी।—ज्योतिष, (= प्राग्ज्योतिषं) (न०) एक नगर का नाम।—दक्षिण, (= प्राग्दक्षिण) (वि०) आग्नेयी दिशा का।—देशः, (= प्राग्देशः) (पु०) पूर्वी देश।—द्वार, (= प्राग्द्वार)—द्वारिक, (= प्राग्द्वारिक) (वि०) वह घर जिसका द्वार या दरवाज़ा पूर्व की ओर हो।—न्यायः, (= प्राङ्न्यायः) (पु०) किसी विवाद का पहिले भी किसी न्यायालय में उपस्थित किये जाने पर निर्णीत हो चुकना।—प्रहारः, (= प्राक्प्रहारः) (पु०) पहिली चोट।—फलः, (= प्राक्फलः) (पु०) कटहल का पेड़।—फल्गुनी, (= प्राक्फल्गुनी)—फाल्गुनी, (= प्राक्फाल्गुनी) (स्त्री०) ग्यारहवाँ नक्षत्र।—फाल्गुनः (=प्राक्फाल्गुनः)—फाल्गुनेयः, (प्राक्फाल्गुनेयः) (पु०) बृहस्पति ग्रह।—भक्त, (= प्राग्भक्तं) (न०) वह दवा जो भोजन

करने के पूर्व ली जाय।—भागः, (=प्राग्भाग) (पु०) १ सामना। २ सामने का हिस्सा। —भारः, (=प्राग्भारः) (पु०) १ पर्वत-शिखर। २ अगला या सामने का हिस्सा। ३ अतिमात्रा। ढेर। समूह। बाढ़।—भावः, (=प्राग्भावः) (पु०) १ पूर्व का अस्तित्व। २ उत्कृष्टता। उत्तमता।—मुख, (=प्राङ्मुख) (वि०) १ पूर्व की ओर मुख किये हुए। २ अभिलाषी।—वंशः, (=प्राग्वंशः) (पु०) यज्ञमण्डप विशेष जिसके खभे पूर्व की ओर मुड़े हुए हों। अथवा वह कमरा जिसमें यज्ञकर्त्ता के मित्र और कुटुम्बी एकत्र हों। २ पूर्व कालीन कोई राजवश या पीढ़ी।-वृत्तान्तः, (=प्राग्वृत्तान्तः) (पु०) पुरातन घटना।—शिरस्,—शिरस, —शिरस्क, (=प्राक्शिरस् आदि) (वि०) पूर्व ओर सिर घुमाये हुए।—सन्ध्या, (=प्राक्सन्ध्या) तड़का। सबेरा। भुकभुका।—सवनं, (=प्राक्सवनं) (न०) प्रातःकालीन अग्नि-होत्र।—स्रोतस्, (=प्राक्स्रोतस्) (वि०) पूर्व की ओर बहने वाला।

प्राचंड्यं } प्राचण्ड्यं } (न०) १ प्रबलता। तीव्रता। क्रोध। २ भयङ्करता।

प्राचिका (स्त्री०) १ मच्छर। २ डांस की जाति की जंगली एक मक्खी।

प्राची (स्त्री०) पूर्व दिशा।—पति (पु०) इन्द्र का नामान्तर।-मूलं, (न०) पूर्व की ओर का आकाश।

प्राचीन (वि०) १ पूर्वी। पूर्व दिशा का। पूर्व दिशा की ओर मुड़ा हुआ। २ अगला। पहला। पूर्व कथित। ३ पुरातन। पुराना।—आवीतं, (न०) यज्ञोपवीत धारण करने का एक ढंग। इसमें वायां हाथ यज्ञोपवीत से बाहिर और यज्ञोपवीत दाहिने कंधे पर रहता है। (यह उपवीत का उल्टा। इस प्रकार का यज्ञोपवीत पितृकार्य में धारण किया जाता है)।—कल्पः, (पु०) पहला कल्प। पूर्वकल्प।—तिलकः, (पु०) चन्द्रमा।—पनसः, (पु०) विल्ववृक्ष।—बर्हिस्, (पु०) इन्द्र का नामान्तर।—मतं (न०) प्राचीन मत। प्राचीन सम्मति।

प्राचीनं (न०) } प्राचीनः (पु०) } बाड़ा। हाता। हाते की दीवाल।

प्राचीरं (न०) नगर या किले आदि के चारों ओर उसकी रक्षा करने के लिये बनायी हुई दीवाल। चहारदीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

प्राचुर्यं (न०) १ विपुलता। बहुतायत। २ समूह।

प्राचेतसः (पु०) १ मनु का नाम। २ दक्ष का नाम। ३ वाल्मीकि का नाम।

प्राच्य (वि०) १ पूर्वी देश या पूर्व दिशा में उत्पन्न या रहने वाला। पूर्वी। ३ प्राचीन। पुरातन। ४ पूर्व का। पहिला।

प्राच्याः (पु० बहु०) पूर्व दिशा के देश। सरस्वती नदी के दक्षिण या पूर्व के देश।—भाषा, (स्त्री०) वह बोलचाल की भाषा जो भारत में पूर्व देश में बोली जाती है। पूर्वी बोली।

प्राच्यक (वि०) पूर्वी।

प्राछ् (वि०) पूछने वाला।—विवाकः, (=प्राड्-विवाकः) १ न्यायाधीश। २ वकील।

प्राजक (पु०) सारथी। रथ हाँकने वाला।

प्राजनम् (न०) } प्राजनः (पु०) } कोड़ा। चाबुक। अङ्कुश।

प्राजापत्य (वि०) १ प्रजापति सम्बन्धी।

प्राजापत्यं (न०) १ यज्ञ विशेष। २ उत्पादक शक्ति।

प्राजापत्यः (पु०) १ हिन्दू धर्मशास्त्रानुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक। २ प्रयाग का नामान्तर।

प्राजापत्या (स्त्री०) १ एक इष्टि का नाम। यह संन्यास ग्रहण के समय की जाती है। इसमें सर्वस्व दक्षिणा में दे दिया जाता है। २ वैदिक छन्दों के आठ भेदों में से एक।

प्राजिकः (पु०) बाज नामक पक्षी।

प्राजितृ } प्राजिन् } (पु०) सारथी। गाड़ीवान।

प्राजेशं (न०) रोहिणी नक्षत्र।

प्राज्ञ (वि०) [स्त्री०—प्राज्ञा या प्राज्ञी] १ बुद्धि सम्बन्धी। मानसिक। २ बुद्धिमान। विद्वान्। चतुर।

प्राज्ञ· (पु०) १ बुद्धिमान और विद्वान् नर । २ एक जाति विशेष का तोता या सुग्गा ।

प्राज्ञा (स्त्री०) १ बुद्धि । समझ । २ चतुर या बुद्धिमती स्त्री ।

प्राज्ञी (स्त्री०) १ चतुर या बुद्धिमती स्त्री । २ विद्वान की स्त्री । ३ सूर्यपत्नी ।

प्राज्य (वि०) १ प्रचुर । अधिक । बहुत । २ बड़ा । लंबा । आवश्यक ।

प्रांजल } (वि०) सीधा । सरल । ईमानदार ।
प्राञ्जल } सच्चा ।

प्रांजलि }
प्राञ्जलि } (वि०) अञ्जलिबद्ध ।

प्रांजलिक, प्राञ्जलिक }
प्रांजलिन्, प्राञ्जलिन् } देखो प्रांजलि ।

प्राणः (पु०) १ स्वांस । स्वांस प्रश्वास । २ प्राणवायु । शरीर की वह हवा जिससे वह जीवित कहलाता है । ३ शरीरस्थित पञ्चप्राणवायु । ४ पवन । वायु । ५ बल । शक्ति । पौरुष । ६ जीव या आत्मा । ७ परब्रह्म । ८ इन्द्रिय । ९ प्राण समान प्रिय कोई पदार्थ या व्यक्ति । प्रेमपात्र । माशूक । १० कवित्व शक्ति या प्रतिभा । प्रत्यादेश । ११ उच्चाभिलाप । १२ पाचनशक्ति । १३ समय का मान विशेष । १४ गोंद । लोबान ।—अतिपातः, (पु०) जीव की हत्या या वध ।—अत्ययः, (पु०) जीवन की हानि ।—अधिक, (वि०) १ प्राण से भी अधिक प्रिय । २ शक्ति या बल में उत्कृष्टतर ।—अधिनाथः, (पु०) पति ।—अधिपः, (पु०) जीव । आत्मा ।—अन्तः, (पु०) मृत्यु । मौत ।—अन्तिकः, (पु०) १ मरणशील । २ यावज्जीवन । जीवन के साथ अन्त होने वाला । ३ सब से बढ़ कर (फाँसी या सज़ा, ।—अन्तिकं, (न०) हत्या ।—अपहारिन्, (वि०) साङ्घातिक । प्राणनाशक ।—आघातः, (पु०) प्राण का नाश या विनाश ।—आचार्यः (पु०) राजवैद्य । शाही हकीम ।—आद, (वि०) प्राणनाशक ।—आबाधः, (पु०) जीवन के लिये अनिष्टकर ।—आयामः, (पु०) योग शास्त्रानुसार योग के आठ अँगों में से चौथा अँग ।—ईश्वरः, (पु०) प्यार करने वाला । प्रेमी । आशिक । पति ।—ईशा,—ईश्वरी, (स्त्री०) पत्नी । प्रेयसी ।—उत्क्रमणं, (न०)—उत्सर्गः, (पु०) मृत्यु । मरण । मौत ।—उपहारः, (पु०) भोजन ।—कृच्छ्रम्, (न०) जीवन का सङ्कट या खतरा ।—घातक, (वि०) जीवन नाशक ।—घ्न, (वि०) जीवन नाशकारी ।—छेदः, (पु०) हत्या । क़त्ल ।—त्यागः, (पु०) १ आत्महत्या । ख़ुदकुशी । २ मृत्यु । मौत । क़ज़ा ।—दं, (न०) १ ख़ून । लोहू । २ जल । पानी ।—दक्षिणा, (स्त्री०) जीवन दान ।—दण्डः (पु०) फाँसी की सज़ा ।—दयितः, (पु०) पति । स्वामी ।—दानं, (न०) जीवनदान । किसी को मरने से बचाना ।—द्रोहः, (पु०) किसी को मार डालने की चेष्टा ।—धारः, (पु०) जीवधारी ।—धारणम्, (न०) १ जीवन धारण करने का भाव । जीवन निर्वाह । २ जीवनी शक्ति ।—नाथः, (पु०) १ प्रिय व्यक्ति । प्रेमी । पति । २ यम का नामान्तर ।—निग्रहः, (पु०) प्राणायाम । स्वाँस को रोकना या बंद कर लेना ।—पतिः, (पु०) १ प्रेमी । पति । २ जीव । आत्मा ।—परिक्रय, (पु०) जीवन को दाँव पर लगाना । अथवा जीवन की बाजी लगाना या जान को ख़तरे में डालना ।—परिग्रहः, (पु०) प्राण धारण । जीवन अस्तित्व ।—प्रद (वि०) जीवनदाता ।—प्रयाणं, (न०) मृत्यु ।—प्रियः, (पु०) जो प्राण के समान प्रिय हो । प्रियतम । पति ।—भक्ष (वि०) पवन पीकर जीवित रहने वाला ।—भास्वत् (पु०) समुद्र ।—भृत्, (पु०) जीवधारी ।—मोक्षणं, (न०) १ मृत्यु । मरण । २ आत्मघात ।—यात्रा, (स्त्री०) वे व्यापार जिनसे मनुष्य जीवित रहे । आजीविका ।—योनिः, (स्त्री०) जीवन का आदि कारण ।—रन्ध्र, (न०) १ मुख । मुँह । २ नाक के नथना ।—रोधः, (पु०) १ प्राणायाम । २ जीवन के लिये सङ्कट ।—विनाशः,—विप्लवः, (पु०) मृत्यु । मौत ।—वियोगः (पु०) जीव का शरीर से विच्छेद । मृत्यु । मौत ।—

व्ययः, (पु०) प्राणोत्सर्ग । प्राणनाश । मृत्यु । —संयमः, (पु०) प्राणायाम ।—संशयः, (पु०)—सङ्कटम्, (न०)—सन्देहः, (पु०) जान जोखिम । वह अवस्था जिसमें प्राण जाने का भय हो ।—सद्मन्, (न०) शरीर । देह । —सार (वि०) बल शक्ति अथवा ताकत वाला ।—हर, (वि०) मारक । नाशक। घातक । प्राणलेवा ।—हारक, (वि०) प्राण नाश करने वाला ।—हारकं, (न०) वत्सनाभ विष ।

प्राणकः (पु०) १ जीवधारी । प्राणधारी । २ लोबान । गन्धरस ।

प्राणथः (पु०) १ पवन । वायु । २ तीर्थस्थान । ३ प्राणधारियों का स्वामी । प्रजापति ।

प्राणनं (न०) १ श्वास प्रश्वास । २ जीवन । जान ।

प्राणनः (पु०) गला ।

प्राणतः } प्राणान्तः } (पु०) पवन । वायु । हवा ।

प्राणंती } प्राणन्ती } (स्त्री०) १ भूख । २ सिसकन । ३ हिचकी ।

प्राणाय्य (वि०) [स्त्री०—प्राणाय्यी] उपयुक्त । उचित । ठीक । योग्य ।

प्राणित (वि०) जीवित । ज़िन्दा ।

प्राणिन् (वि०) ज़िदा जीवित । (पु०) १ प्राणधारी । २ मनुष्य ।—अङ्गं, (न०) प्राणधारी के शरीर का अवयव ।—जातं, (न०) पशु की एक समस्त श्रेणी ।—द्यूतं, (न०) धर्मशास्त्रानुसार वह बाज़ी जो मेढ़े, तीतर, घोड़े आदि जीवों की लड़ाई पर लगायी जाय ।—पीडा (स्त्री०) पशुओं के साथ निर्दयीपन का व्यवहार ।—हिंसा (स्त्री०) पशुओं का अनिष्ट ।—हिता, (स्त्री०) जूता ।

प्राणीत्यं (न०) क़र्ज़ा । ऋण ।

प्रातर् (अव्यया०) १ तड़के । भोर ही । सवेरे । २ आने वाला कल का दिन ।—अन्हः, (पु०) दोपहर के पूर्व ।—आश , (पु०) कलेवा ।—आशिन्, (पु०) वह पुरुष जो कलेवा खा चुका हो ।—कर्मन्, (न०)—कार्यं,—कृत्यं, (न०) प्रातःकालीन कर्म ।—कालः, (पु०) सवेरा । सवेरे का समय ।—गेयः, (पु०) वे बंदीजन या भाट जो प्रातःकाल राजश्री का स्तुति पाठ कर राजा को जगाते थे ।—त्रिवर्गा, (= प्रातस्त्रिवर्गा (स्त्री०) गङ्गा ।—दिनं, (न०) दोपहर के पूर्व का समय ।—प्रहरः (पु०) दिन का प्रथम प्रहर । —भोक्तृ, (पु०) काक । कौआ ।—भोजनं, (न०) कलेवा ।—सन्ध्या, (= प्रातःसन्ध्या) प्रातःकालीन भगवदुपासना का कृत्य विशेष ।

प्रातस्तन (वि०) [स्त्री०—प्रातस्तनी] प्रातःकाल सम्बन्धी ।

प्रातस्तरां (अव्यया०) बड़े तड़के ।

प्रातस्त्य (वि०) प्रात काल सम्बन्धी ।

प्रातिः (स्त्री०) अँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान । पितृतीर्थ ।

प्रातिका (स्त्री०) जवा का पेड़ ।

प्रातिकूलिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिकूलकी] विरुद्ध । विरोधी । प्रतिकूल ।

प्रातिकूल्यं (न०) प्रतिकूलता । विरोध ।

प्रातिजनीन (वि०) [स्त्री०—प्रातिजनीनी] विरोधी के उपयुक्त । शत्रु के लायक ।

प्रातिज्ञं (न०) विवादग्रस्त विषय ।

प्रातिदैवसिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिदैवसिकी] नित्य होने वाला ।

प्रातिपक्ष (वि०) [स्त्री०—प्रातिपक्षी] विरुद्ध ।

प्रातिपक्ष्यं (न०) शत्रुता । वैरीपन ।

प्रातिपद (वि०) [स्त्री०—प्रातिपदी] १ आरम्भ करने वाला । २ प्रतिपदा तिथि सम्बन्धी या प्रतिपदा को उत्पन्न ।

प्रातिपदिकः (पु०) अग्नि ।

प्रातिपदिकं (न०) संस्कृत व्याकरणानुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और जिसकी सिद्धि विभक्ति लगने से न हुई हो ।

प्रातिपौरुषिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिपौरुषिकी] पुरुषार्थ या मरदानगी सम्बन्धी ।

प्रातिभ (वि०) [स्त्री०—प्रातिभी] प्रतिभा सम्बन्धी ।

प्रातिभं (न०) विस्तृत कल्पना।
प्रातिभाव्यं (न०) ज़मानत। जामिनी।
प्रातिभासिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिभासिकी] १ जो असली न हो। २ नकल।
प्रातिलोमिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिलोमिकी] विपक्ष। विरुद्ध। उत्पन्न।
प्रातिलोम्यं (न०) १ प्रतिलोम का भाव। २ विरुद्धता। प्रतिकूलता।
प्रातिवेशिकः
प्रातिवेश्मकः
प्रातिवेश्यकः } (पु०) पड़ोसी।
प्रातिवेश्यः (पु०) १ पड़ोसी। २ वह पड़ोसी जिसके घर का द्वार ठीक अपने घर के द्वार के सामने हो।
प्रातिशाख्यं (न०) ग्रन्थ विशेष। इसमें वेदों की किसी शाखा के स्वर, पद, संहिता, संयुक्त वर्णादि के उच्चारणादि का निर्णय किया जाता है। वेदों की प्रत्येक शाखा की संहिताओं पर एक एक प्रातिशाख्य ग्रन्थ थे। ऐसा लेखों के सङ्केतों से जान पड़ता है।
प्रातिस्विक (वि०) [स्त्री०—प्रातिस्विकी] विलक्षण। विशिष्ट।
प्रातिहंत्रं (न०) प्रतिहिंसा। बदला। पलटा।
प्रातिहारः
प्रातिहारकः
प्रातिहारिकः } (पु०) मायावी। जादूगर। ऐन्द्रजालिक। लाग का खेल करने वाला
प्रातीतिक (वि०) [स्त्री० -प्रातीतिकी] मानसिक। काल्पनिक। जिसकी प्रतीति केवल चिन्ता या कल्पना के द्वारा मन में होती है।
प्रातीपः (पु०) प्रतीप के पुत्र राजा शान्तनु।
प्रातीपिक (वि०) [स्त्री०—प्रातीपिकी] (स्त्री०) १ विरुद्धाचरण करने वाला। २ विपरीत। उलटा।
प्रात्यतिक (वि०) [स्त्री०—प्रात्यतिकी] विश्वासी। इतमीनामी। २ प्रतिभू। जामिनी। जमानत।
प्रात्यहिक (वि०) [स्त्री०—प्रात्यहिकी] दैनिक। प्रति दिन का।
प्राथमिक (वि०) [स्त्री०—प्राथमिकी] १ प्रारम्भिक। आदि का। आदिम। २ प्रथम बार होने वाला। ३ पहला। अगला।

प्राथम्यं (न०) प्रथमता। पहिलापन।
प्रादक्षिण्यम् (न०) प्रदक्षिणा। परिक्रमा।
प्रादुस् (अव्यया०) दृश्यतः,। स्पष्टतः। प्रकाशतः।
—करणं (=प्रादुष्करणं) (न०) प्रादुर्भाव। प्रत्यक्ष करना।—भावः (पु०) (=प्रादुर्भावः) १ प्रकट होना। प्रत्यक्ष होना। २ ऐसे बोलना जो सुन और समझ पड़े। ३ किसी देवता का धराधाम पर अवतार।
प्रादुष्यं (न०) प्रकटन। प्रादुर्भाव।
प्रादेशः (पु०) १ एक मान जो अँगूठे की नोंक से लेकर तर्जनी की नोंक तक का होता था और नापने के काम में आता था। २ प्रदेश। स्थान।
प्रादेशनं (न०) प्रसाद। पुरस्कार। दान।
प्रादेशिक (वि०) [स्त्री०—प्रादेशिकी] १ प्रदेश सम्बन्धी। २ प्रान्तिक। ३ प्रसङ्गगत। प्रसङ्गानुसार।
प्रादेशिकः (पु०) सामन्त। ज़मीदार।
प्रादेशिनी (स्त्री०) तर्जनी। अँगूठे के पास की उँगली।
प्रादोष (वि०) [स्त्री०—प्रादोषी]
प्रादोषिक (वि०) [स्त्री०—प्रादोषिकी] } सायङ्काल सम्बन्धी।
प्राधनिकं (न०) हथियार। आयुध।
प्राधानिक (वि०) [स्त्री०—प्राधानिकी] १ प्रधान सम्बन्धी। २ प्रधान। सर्वोत्कृष्ट।
प्राधान्यं (न०) १ प्रधानता। श्रेष्ठता। २ मुख्यता। उत्कर्ष। ३ प्रधान कारण।
प्राधीत (वि०) भली भाँति पढ़ा हुआ। बहुत पढ़ा हुआ।
प्राध्व (वि०) १ लंबा। दूर। फासला। २ झुका हुआ। ३ बद्ध। ४ अनुकूल।
प्राध्वः (पु०) गाड़ी। बग्घी।
प्राध्वम् (अव्यया०) १ अनुकूलता से। उपयुक्त रूप से। २ टेढ़ेपन के।
प्रांतः
प्रान्तः } (पु०) १ किनारा। हाशिया। छोर। २ कोना। ३ सीमा। ४ अन्त। ५ नोंक।—ग, (वि०) समीपस्थ। पास रहने वाला।—दुर्ग, (न०) १ किसी नगर के परकोटे के बाहिर की आबादी। २ नगर या आबादी जो किसी दुर्ग के समीप हो।—विरस (वि०) अन्त में फीका। बेज़ायका।

प्रांतरं } (न०) लंबा और सुनसान रास्ता । २ रास्ता
प्रान्तरं } जिस पर छाया न हो । ३ वन । जंगल । ४ पेड़ का खोडर ।

प्रापक (वि०) [स्त्री०—प्रापिका] १ पाने वाला । २ प्राप्त होने वाला । ३ स्थापनकर्त्ता । दृढ़कर्त्ता । समर्थनकर्त्ता । सिद्ध करने वाला ।

प्रापणं (न०) १ प्राप्ति । मिलना । २ ले आना ।

प्रापणिकः (पु०) व्यापारी । सौदागर ।

प्राप्त (व० कृ०) १ लब्ध । पाया हुआ । जीता हुआ । लिया हुआ । २ समुपस्थित । ३ मिला हुआ । ४ सहा हुआ । ५ आया हुआ । ६ पूर्ण किया हुआ । ७ उपयुक्त । ठीक ।—अनुज्ञ, (वि०) जाने की अनुमति पाये हुए । -अर्थ, (वि०) सफल ।—अर्थः, (पु०) उद्देश्य की पूर्ति । —अवसर, (वि०) मिला हुआ मौका । —उदय, (वि०) उन्नति प्राप्त ।—कारिन्, (वि०) उचित करने वाला ।—काल, (वि०) १ उपयुक्तकाल । उचित समय । २ विवाह करने योग्य । ३ समय प्राप्त । जिसके मरने का समय आ गया हो ।—कालः (पु०) उपयुक्त समय । —पञ्चत्व, (वि०) मृत । मरा हुआ । प्रसव, (वि०) जच्चा ।—बुद्धि, (वि०) आदेश दिया हुआ । शिक्षित ।—भारः, (पु०) बोझ ढोने वाला पशु ।—मनोरथ, (वि०) वह जिसका उद्देश्य पूरा हो चुका हो ।—यौवन, (वि०) जवान । युवा ।—रूप, (वि०) १ खूबसूरत । सुन्दर । २ बुद्धिमान । विद्वान् । ३ योग्य । उपयुक्त ।—व्यवहार, (वि०) वयस्क । बालिग़ ।—श्री, (वि०) वह जिसकी बढ़ती (दूसरे के द्वारा) हुई हो ।

प्राप्तिः (स्त्री०) १ उपलब्धि । प्रापण । मिलना । २ पहुँच । ३ आगमन । ४ अर्थागम । अर्जन । ५ अनुमान । अटकल । कल्पना । ६ हिस्सा । अंश । ७ प्रारब्ध । भाग्य । ८ उदय । ९ अणिमादि अष्ट प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, जिससे वाञ्छित पदार्थ मिलता है । १० संहति । ११ सुखागम । —आशा, (स्त्री०) कोई वस्तु मिलने की उम्मेद ।

प्राबल्यं (न०) १ प्रबलता । उत्कृष्टता । प्रधानता । २ ताकत । शक्ति । बल ।

प्रावालिकः } (पु०) मूंगा का व्यापार करने
प्रावालिकः } वाला ।

प्राबोधकः } (पु०) १ भोर । तड़का । सबेरा ।
प्राबोधिकः } २ बंदीजन जिनका काम स्तुति सुना कर राजा को जगाने का हो ।

प्राभंजनं }
प्राभञ्जनम् } (न०) स्वाति नक्षत्र ।

प्राभंजनिः }
प्राभञ्जनिः } १ हनुमान । २ भीष्म ।

प्राभवं (न०) उत्कृष्टता । प्राधान्य । विशिष्टता ।

प्राभवत्यम् (न०) प्रधानता । अधिकार । शक्ति ।

प्राभाकरः (पु०) मीमांसक ।

प्राभातिक (वि०) [स्त्री० - प्राभातिकी] प्रातःकाल सम्बन्धी ।

प्राभृत } (न०) १ पुरस्कार । दान । २ नज़राना
प्राभृतकम् } भेंट । चढ़ावा । ३ घूंस । रिशवत ।

प्रामाणिक (वि०) [स्त्री०—प्रामाणिकी] १ जो प्रत्यक्ष प्रमाणादि से सिद्ध हो । २ शास्त्रसिद्ध । ३ विश्वस्त । ४ प्रमाण सम्बन्धी ।

प्रामाणिकः (पु०) वह जो प्रमाण को स्वीकार करे । २ नैयायिक । ३ व्यापारियों का मुखिया ।

प्रामाण्यं (न०) १ प्रमाण का भाव । प्रमाणत्व । २ विश्वस्तता । आप्तता । ३ सबूत । साक्षी । प्रमाण ।

प्रामादिक (वि०) १ प्रमादजनित । २ दूषित ।

प्रामाद्यम् (न०) १ भूल । दोष । ग़लती । २ पागलपन । ३ नशा ।

प्रायः (पु०) १ प्रस्थान । जीवन से प्रस्थान । २ किसी इष्टसिद्धि के लिये खाना पीना छोड़ कर धरना देना या भूखों प्यासों मर जाने को तैयार होना । ३सब से बड़ा अंश । बहुमत । बहुतायत । ४ आधिक्य । विपुलता । प्राचुर्य । ५ जीवन की अवस्था ।—उपगमनं, (न०) —उपवेशः, (पु०) —उपवेशनम्, (न०) - उपवेशनिका, (स्त्री०) वह अनशन व्रत, जो प्राण त्यागने के लिये किया जाय । अन्न जल त्याग कर मरने को बैठना ।—उपेत, (वि०) अन्न जल त्याग कर

मरने के लिये बैठने वाला। —उपविष्ट, (वि०) वह जिसने प्रायोपवेशन व्रत किया हो। —दर्शनं, (न०) मामूली अद्भुत व्यापार या घटना।

प्रायणं (न०) १ प्रवेश। आरम्भ। आरम्भ। २ इच्छामृत्यु। ३ शरण होना।

प्रायणीय (वि०) आरम्भिक। प्रारम्भिक।

प्रायणीयं (न०) सोम याग में पहिली सुत्या के दिवस का कर्म।

प्रायशस् (अव्यया०) साधारणतः। अक्सर। सम्भवतः।

प्रायश्चित्तं (न०) } प्रायश्चित्तिः (स्त्री०) } १ शास्त्रीय कृत्य विशेष जिसके करने से करने वाले का पाप छूट जाता है। २ तृप्ति। क्षतिपूरण।

प्रायश्चित्तिन् (वि०) प्रायश्चित करने वाला।

प्रायस् (अव्यया०) अक्सर। प्राय.। सम्भवतः बहुत करके। कदाचित्।

प्रायाणिक } प्रायात्रिक } (वि०) [स्त्री०—प्रायाणिकी या प्रायात्रिकी] यात्रा के लिये उपयुक्त या अनावश्यक।

प्रायिक (वि०) [स्त्री०—प्रायिकी] मामूली। साधारण।

प्रायुद्धेपिन् (पु०) घोड़ा।

प्रायेण (अव्यया०) प्रायः। अक्सर।

प्रायोगिक (वि०) [स्त्री०—प्रायोगिकी] जो नित्य काम में आता हो।

प्रारब्ध (व० कृ०) आरम्भ किया हुआ।

प्रारब्धं (न०) १ कर्म। २ प्रारब्ध। भाग्य।

प्रारब्धिः (स्त्री०) आरम्भ। शुरुआत। २ हाथी के बाँधने का खूंटा या रस्सा।

प्रारंभः } प्रारम्भः } (पु०) १ आरम्भ। शुरुआत। २ कर्म।

प्रारंभणं } प्रारम्भणम् } (न०) आरम्भ। शुरुआत।

प्ररोहः (पु०) अंकुर। अँखुआ। कोपल।

प्रार्णं (न०) मुख्य ऋण।

प्रार्थक (वि०) [स्त्री०—प्रार्थिका] याचक। प्रार्थी।

प्रार्थकः (पु०) प्रार्थी। वर।

प्रार्थनं (न०) } प्रार्थना (स्त्री०) } १ प्रार्थना। विनय। २ इच्छा। ख्वाहिश। ३ मुक़द्दमा। —भङ्गः, (पु०) प्रार्थना अस्वीकार करना। —सिद्धिः, (स्त्री०) प्रार्थना स्वीकृति। अभिलषित वस्तु की प्राप्ति।

प्रार्थनीय (वि०) प्रार्थना करने योग्य। याचनीय।

प्रार्थनीयं (न०) द्वापर युग का नाम।

प्रार्थित (वि०) १ याचित। जो माँगा गया हो। २ अभिलषित। ३ आक्रमण किया हो। शत्रु द्वारा सामना किया हुआ। ४ वध किया हुआ। घायल किया हुआ।

प्रालब } प्रालम्ब } (वि०) लटकता हुआ। झूलता हुआ।

प्रालबः } प्रालम्बः } (पु०) १ मोती का आभूषण विशेष। २ स्त्री के स्तन।

प्रालंबं } प्रालम्बम् } (न०) वह हार जो कुचों तक लटा हो।

प्रालंबिका } प्रालम्बिका } (स्त्री०) सोने का हार। माला।

प्रालेयं (न०) बर्फ़। कोहरा। पाला। ओस। —अद्रिः,—शैलः, (पु०) हिमालय पर्वत। —अंशुः,—करः,—रश्मिः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। कर्पूर। —लेशः (पु०) ओला।

प्रावटः (पु०) यव। जवा।

प्रावणं (न०) कुदाल। फावड़ा। बेलचा।

प्रावरः (पु०) १ परकोटा। हाता। घेरा। २ उत्तरीय वस्त्र। ३ देश विशेष।

प्रावरणं (न०) चुगा। लबादा।

प्रावरणीयं (न०) १ उत्तरीय वस्त्र। २ एक प्रान्त का नाम। —कीटः, (पु०) दीमक।

प्रावारकः (पु०) उत्तरीय वस्त्र।

प्रावारिकः (पु०) उत्तरीय वस्त्र बनाने वाला।

प्रावास (वि०) [स्त्री०—प्रावासी] यात्रा सम्बन्धी। यात्रा में देने योग्य। यात्रा में करने योग्य।

प्रावासिक (वि०) [स्त्री०प्रावासिकी] यात्रा के योग्य।

प्रावीण्यं (न०) चातुरी। चतुराई। निपुणता। पटुता।

प्रावृत (व० कृ०) घिरा हुआ। आच्छादित। ढका हुआ। पर्दा पड़ा हुआ।

प्रावृतं (न०) } घूंघट। बुरका। चादर। पिछौरा।
प्रावृतः (पु०) } (यह स्त्रीलिङ्ग भी है।)

प्रावृतिः (स्त्री०) १ घेरा। हाता। बाड़ा। रोक। आड़। २ आत्मा सम्बन्धी अज्ञान। आध्यात्मिक अन्धकार।

प्रावृत्तिक (वि०) [स्त्री० प्रावृत्तिकः] अप्रधान। गौण।

प्रावृत्तिकः (पु०) दूत। एलची।

प्रावृष् (स्त्री०) वर्षा ऋतु।—अत्ययः (पु०) [=प्रावृडत्ययः] वर्षाऋतु का अन्त। —कालः, (=प्रावृट्कालः) (पु०) वर्षा ऋतु। बसकाला। बर्सात।

प्रावृषः (पु०) } वर्षा ऋतु। वर्षाकाल।
प्रावृषा (स्त्री०) }

प्रावृषिक (वि०) [स्त्री० प्रावृषिकी] वर्षाऋतु में उत्पन्न।

प्रावृषेण्य (वि०) १ वर्षाऋतु में उत्पन्न या वर्षाऋतु सम्बन्धी। २ वह (किरत) जो वर्षाऋतु में अदा की जाय।

प्रावृषेण्यं (न०) असंख्यता। प्राचुर्य। आधिक्य।

प्रावृषेण्यः (पु०) १ कदम्ब वृक्ष। २ कुटज। कुरैया।

प्रावृष्यः (पु०) कदम्ब वृक्ष विशेष। २ कुटज। कुरैया।

प्रावेण्यं (न०) बढ़िया ऊनी चादर।

प्रावेशन (वि०) [स्त्री०—प्रावेशना] (वस्तु) जो प्रवेश करने पर दी जाय या वह (कार्य) जो प्रवेश करने पर किया जाय।

प्रावेशनं (न०) अर्चा। पूजन।

प्रावेशिक (वि०) [स्त्री० प्रावेशिकी] प्रवेश सम्बन्धी या प्रवेश से युक्त। प्रवेश का साधन भूत। जिसके द्वारा (रंगशाला या भवन में) प्रवेश मिले।

प्राव्रज्यं } (न०) प्रव्रज्या सम्बन्धी। सन्यासी का
प्राव्राज्यं } जीवन।

प्राशः (पु०) १ भोजन करना। खाना। चखना। २ भोजन। भोज्य पदार्थ।

प्राशनं (न०) १ खाना। भोजन करना। २ खिलाना। ३ भोजन। भोज्य पदार्थ।

प्राशनीयं (न०) भोजन सामग्री। खाद्य पदार्थ।

प्राशस्त्यं (न०) उत्तमता। प्रशंसा का भाव। प्रधानता। श्रेष्ठता।

प्राशित (व० कृ०) खाया हुआ। भक्षित।

प्राशितं (न०) पितृतर्पण। पितृयज्ञ।

प्राश्निकः (पु०) १ परीक्षक। २ पंच। हारजीत का निर्णायक। न्यायाधीश।

प्रासः (पु०) प्राचीन कालीन एक प्रकार का भाला। इसमें ७ हाथ लंबी बाँस की छड़ लगायी जाती थी और उसकी एक नोंक पर लोहे का नुकीला फल रहता था। यह फल बड़ा तेज़ होता था और उस पर तबक चढ़ा रहता था। बरछी। भाला।

प्रासकः (पु०) १ प्रास। २ पाँसा।

प्रासंगः } (पु०) पशु का जुआँ।
प्रासङ्गः }

प्रासंगिक } (वि०) [स्त्री०—प्रासङ्गिकी] १ प्रसङ्ग
प्रासङ्गिक } सम्बन्धी। २ प्रसङ्गागत। ३ इत्तिफाकिया। ४ प्रस्तावानुरूप। ५ समयोचित। ६ उपाख्यान घटित या तदन्तर्भुक्त।

प्रासंग्य } (पु०) हल में चला हुआ बैल।
प्रासङ्ग्य }

प्रासादः (पु०) महल। राजभवन। विशाल भवन। २ राजप्रासाद। शाहीमहल। ३ देवालय। मन्दिर। —अङ्गनं, (न०) राजभवन का आँगन।—आरोहणं, (न०) राजभवन पर चढ़ना या उसमें प्रवेश करना।—कुक्कुटः (पु०) पालतू कबूतर। —तल, (न०) राजभवन की छत्त या फ़र्श। —पृष्ठ., (पु०) राजभवन के ऊपर का छज्जा या बरामदा।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०) मन्दिरकी प्रतिष्ठा। —शायिन्, (वि०) राजभवन में सोने वाला। —शृङ्गम्, (न०) राजभवन या मन्दिर का कलस या गुमटी।

प्रासिकः (पु०) प्रासधारी। भालाधारी।

प्रासूतिक (वि०) [स्त्री०—प्रासूतिकी] प्रासूति सम्बन्धी। जच्चा सम्बन्धी।

प्रास्त (व० कृ०) १ फैंका हुआ। छोड़ा हुआ। २ निकाला हुआ। बहिष्कृत किया हुआ।

प्रास्ताविक (वि०) [स्त्री०—प्रास्ताविकी] आरम्भिक। प्रारम्भिक। भूमिका सम्बन्धी। २ उचित समय का। सामयिक। ४ प्रासङ्गिक।

प्रास्तुत्यं (न०) विवादग्रस्त। विचाराधीन।

प्रास्थिक (वि०) [स्त्री० - प्रास्थिकी] वह वस्तु जो यात्रा के समय शुभ समझी जाती हो। यथा-शङ्ख-ध्वनि। दही। मछली आदि।

प्रास्रवण (वि०) [स्त्री०—प्रास्रवणी] १ तौल में एक प्रस्थ भर। २ एक प्रस्थ के मूल्य में खरीदा हुआ। प्रस्थ के हिसाब से मोल लिया हुआ। ३ प्रस्थ भर का।

प्रास्रवण (वि) [स्त्री०—प्रास्रवणी] सोते से निकला हुआ।

प्राहः (पु०) नृत्य कला का शिक्षक।

प्राह्णः (पु०) मध्यान्हपूर्व।

प्राह्णेतन (वि०) [स्त्री०—प्राह्णेतनी] मध्यान्ह के पूर्व होने वाला। मध्यान्हं पूर्व सम्बन्धी।

प्राह्णेतराम्, **प्राह्णेतमाम्** } (अव्यया०) सवेरे। बड़े तड़के। गजरदम।

प्रिय (वि०) १ प्यारा। २ मनोहर।

प्रियः (पु०) १ प्रेमी। स्वामी। २ एक जाति विशेष का हिरन।

प्रिया (स्त्री०) १ प्रेयसी। २ माया। ३ स्त्री। ४ छोटी इलायची। ५ खबर। संवाद। ६ शराब।

प्रियं (न०) १ प्यार। २ महरबानी। चाकरी। अनुग्रह। ३ प्रसन्नकारक सूचना या खबर। ४ आनन्द।

प्रियं (अव्यया०) प्रसन्नकारक ढंग से। हर्षप्रद रीति से।—अतिथि, (वि०) आतिथेय।—अपायः, (पु०) किसी प्रिय वस्तु का अभाव या अनुपस्थिति।—अप्रिय. (वि०) प्यारा कुप्यारा। रुचिकर अरुचिकर।—अम्बुः, (पु०) आम का पेड़।—अर्ह, (वि०) १ प्रेम या कृपा करने योग्य। २ सर्वप्रिय। मनभावन।—अर्हः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—असु, (वि०) जीवन का प्रेमी।—आख्य, (वि०) शुभसंवाद सुनाने वाला।—आख्यानं, (न०) शुभसंवाद।—आत्मन्, (वि०) मनभावन। मनोहर।—उक्तिः, (स्त्री०)—उदितम्, (न०) चापलूसी की बातें। मैत्री सूचक वक्तृता।—उपपत्तिः, (स्त्री०) आनन्द दायिनी घटना।—उपभोगः, (पु०) किसी प्रेमी या प्रेयसी के साथ रंगरलियां।—एषिन्, (वि०) प्रसन्न करने या सेवा करने का अभिलाषी। २ प्यारा। स्नेही।—कर, (वि०) आनन्द दायी। हर्षप्रद।—कर्मन, (वि०) मित्रभाव से वर्ताव करने वाला।—कलत्रः, (पु०) वह पति जो अपनी भार्या को बहुत चाहता हो।—काम, (वि०) सेवा करने के लिये इच्छुक।—कार,—कारिन्, (वि०) भलाई करने वाला। नेकी करने वाला।—कृत् (पु०) हितैषी। मित्र।—जनः, (पु०) प्यारा जन। प्रेमपात्र जन।—जानिः (पु०) अपनी पत्नी को प्यार करने वाला पुरुष।—तोषणः, (पु०) स्त्री मैथुन का आसन विशेष।—दर्श, (वि०) मनोहर। खूबसूरत।—दर्शन, (वि०) मनोहर सूरत का। खूबसूरत। मनोहर। प्यारा।—दर्शनः, (पु०) १ तोता। २ खिरनी का पेड़। ३ एक गन्धर्व का नाम।—दर्शिन, (वि०) अशोक राजा की उपाधि।—देवन, (वि०) जुआ खेलने का शौकीन।—धन्वः, (पु०) शिवजी।—पुत्रः, (पु०) पक्षी-विशेष।—प्रसादनम्, (न०) पति को सन्तोष प्रदान।—प्राय, (वि०) अत्यन्त कृपालु या शिष्ट। प्रायस, (न०) प्रिय सम्भाषण जो एक प्रेमी अपनी प्रेयसी से करता हो।—प्रप्सु, (वि०) अपनी इष्ट सिद्धि का अभिलाषी।—भावः, (पु०) प्रेम की भावना।—भाषणं, (न०) मीठा बोल।—भाषिन्, (वि०) मीठा बोलने वाला।—मण्डन, (वि०) आभूषणों का शौकीन —मधु, (वि०) शराब का मुश्ताक।—मधुः, (पु०) बलराम जी का नामान्तर।—रण, (वि०) बहादुर। वचन, (वि०) अच्छे वचन कहने वाला।—वयस्यः, (पु०) प्यारा-मित्र।—वर्णी, (स्त्री०) कँगनी नाम का अन्न।—वस्तु, (न०) प्यारी वस्तु।—वाच, (वि०) प्यारी बातें कहने वाला। (स्त्री०) कृपामय या प्यारे वचन बोलने वाला।—वादिका, (स्त्री०) बाजा विशेष।—वादिन्, (वि०) मधुरभाषी।

चापलूस।—श्रवस्, (पु०) कृष्ण का नाम। —सवासः, (पु०) प्रियपात्र का सत्सङ्ग।—सखः, (पु०) प्यारा मित्र। सखी, (स्त्री०) प्यारी सहेली।—सत्य (वि०) १ सच्च को पसन्द करने वाला। २ सत्य होने पर भी प्रिय।—संदेशः, (पु०) १ खुशख़बरी। अच्छा सन्देसा २ चम्पा का पेड़। समागमः, (पु०) प्रेमपात्र के साथ मिलन।—सहचरी, (स्त्री०) प्यारी पत्नी।—सुहृद्, (पु०) प्राणप्रिय मित्र।—स्वप्न, (वि०) सोने का शौकीन। जो निद्रा लेना बहुत पसन्द करता हो।

प्रियंवद (वि०) मधुरभाषी।

प्रियंवदः (पु०) १ पक्षीविशेष। २ एक गन्धर्व का नाम।

प्रियकं (न०) असन के पेड़ का फूल।

प्रियकः (पु० १ मृग विशेष। चित्तमृग। २ नीपवृक्ष। ३ प्रियङ्गु लता। ४ शहद की मक्खी। ५ पक्षी विशेष। ६ केसर।

प्रियकर, प्रियंकरण, प्रियकरण, प्रियङ्कार, प्रियङ्कार (वि०) १ कृपा करने वाला। दयालु। कृपालु। २ अनुकूल। प्यारा। ३ मनभावन।

प्रियंगुः, प्रियङ्गुः (पु०) १ एक लता विशेष का नाम, जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि जहाँ उसे किसी स्त्री ने स्पर्श किया कि, वह फूलने लगती है। २ बड़ी पीपल। (न०) केसर।

प्रियतम (वि०) सब से अधिक प्यारा।

प्रियतमः (पु०) आशिक। प्रेमी। पति।

प्रियतमा (स्त्री०) पत्नी। प्रेयसी। माशूका।

प्रियतर (वि०) अपेक्षाकृत प्यारा।

प्रियता (स्त्री०), प्रियत्वं (न०) १ प्रिय होने का भाव। २ प्यार स्नेह।

प्रियंभविष्णु, प्रियंभावुक (वि०) प्रेमपात्र।

प्रियालः (पु०) पियाल पेड़।

प्रियाला (स्त्री०) दाख।

प्री (धा० उभय) [प्रीणाति, प्रीणीते, प्रीत] प्रसन्न करना। आनन्दित करना। तृप्त करना।

प्रीण (वि०) १ प्रसन्न। सन्तुष्ट। आनन्दित। २ प्राचीन। पुरातन। ३ पहिले का। अगला।

प्रीणनम् (न०) प्रसन्नकारक। आनन्ददायी। सन्तोषकारक। तृप्तिकर।

प्रीत (वि० कृ०) १ आनन्दित। हर्षित। २ प्रसन्न। सुखी। अल्हादमय। ३ सन्तुष्ट। ४ प्यारा। ५ कृपालु। स्नेहमय।—आत्मन,—चित्,—मनस, (वि०) मन से प्रसन्न। चित्त से आनन्दित।

प्रीतिः (स्त्री०) १ हर्ष। आनन्द। सुखी। २ अनुकम्पा। अनुग्रह। ३ प्रेम। स्नेह। ४ अनुराग। ५ मैत्री। मेल। ६ कामदेव की स्त्री और रति की सौत का नाम।—कर, (वि०) कृपालु। अनुकूल।—कर्मन्, (न०) मित्रोचित कर्म।—दः, (पु०) हँसोड़। मसखरा। विदूषक।—दत्त, (वि०) प्रेम से दिया हुआ। स्नेह के कारण दिया हुआ। दत्तं, (न०) वह सम्पत्ति जो किसी स्त्री को उसके सगे सम्बन्धियों से मिली हो विशेष कर वह जो उसे उसके ससुर या सास से विवाह के अवसर पर प्राप्त हुई हो।—दानं, (न०) —दायः, (पु०) प्रेमोपहार।—धनं, (न०) प्रेम या मित्रता के नाते दिया हुआ धन या रुपया। —पात्रं, (न०) प्रेमपात्र। कोई भी पुरुष या पदार्थ जिसके प्रति प्रेम हो।—पूर्व,—पूर्वकं, (अव्यया०) दयामय। स्नेहमय।—मनस्, (वि०) मन में प्रसन्न। प्रसन्न।—युज, (प्यारा। स्नेही।—वचस्, (न०)—वचनम्, (न०) मित्रोपयुक्त वचन या भाषण।—वर्धन, (वि०) प्रेम या हर्ष बढ़ानेवाला।—वर्धनः, (पु०) विष्णु भगवान्।—वादः, (पु०) मित्रोपयुक्त वाद विवाद।—विवाहः, (पु०) वह विवाह जो केवल प्रीतिवश हुआ हो।—श्राद्धम्, (न०) श्रद्धापूर्वक किया गया श्राद्ध विशेष।

प्रु (धा० आत्म०) [प्रवते] १ जाना। २ कूदना। ३ उछलना।

प्रुष् (धा० परस्मै०) [प्रोषति, प्रुष्ट] १ जलाना। भस्म कर डालना। २ जला कर राख कर डालना। [प्रुष्णाति] १ तर होना। भीग जाना। २ उड़ेलना। छिड़कना। ३ भरना। परिपूर्ण करना।

प्रुष्ट (व० कृ०) जला हुआ। जला कर राख किया हुआ।

प्रुष्वः (पु०) १ वर्षा ऋतु। २ सूर्य। ३ जलविन्दु।

प्रेक्षकः (पु०) दर्शक। तमाशबीन।

प्रेक्षणं (न०) १ देखने की क्रिया। २ दृश्य। चितवन। शक्ल। सूरत। ३ आँख। नेत्र। ४ कोई भी सार्वजनिक दृश्य या तमाशा।—कूटं. (न०) आँख का ढेला।

प्रेक्षणकं (न०) दृश्य। तमाशा। स्वाँग। लीला। कौतुक।

प्रेक्षणिका (स्त्री०) वह स्त्री जिसे तमाशा देखने का बड़ा शौक हो।

प्रेक्षणीय (वि०) १ देखने के योग्य। दर्शनीय। २ ध्यान देने के योग्य।

प्रेक्षणीयकं (न०) तमाशा। दृश्य।

प्रेक्षा (स्त्री०) १ देखना। २ दृष्टि। निगाह। ३ स्वाँग तमाशा देखना। ४ सार्वजनिक कोई भी स्वाँग या तमाशा। ५ विशेष कर नाटकीय अभिनय। नाटक। ६ बुद्धि। समझदारी। ७ विचार। आलोचन। मनन। ८ वृक्ष की शाखा या डाली।—अगारः, (पु०)—आगरः, (पु०)—अगारं,—आगार, (न०)—गृहं, (न०)—स्थानं (न०) रंगशाला। वह घर या भवन जहाँ नाटक खेला जाय।—समाजः, (पु०) दर्शक वृन्द।

प्रेक्षावत् (वि०) समझदार। बुद्धिमान। विद्वान।

प्रेक्षित (व० कृ०) देखा हुआ। ताका हुआ। घूरा हुआ।

प्रेक्षितं (न०) चितवन। नज़र।

प्रेंखः, प्रेङ्खः (पु०) } १ झूलना। २ पेंग लेना। ३
प्रेंखं, प्रेङ्खम् (न०) } एक प्रकार का सामगान।

प्रेंखण } (वि०) १ भ्रमणकारी। इतस्ततः फिरने
प्रेङ्खण } वाला।

प्रेंखणं } (न०) १ अच्छी तरह झूलना। २ झुलना।
प्रेङ्खणम् } हिंडोला। ३ अठारह प्रकार के रूपकों में से एक। इसमें सूत्रधार, विष्कुम्भक, प्रवेशक आदि की आवश्यकता नहीं होती। इसका नायक कोई नीच जाति का हुआ करता है। इसमें नान्दी और प्ररोचना नैपथ्य में होते हैं और इसमें एक ही अङ्क होता है। इसमें प्रधानता वीररस की रखी जाती है।

प्रेंखा } (स्त्री०) १ झूलना। हिंडोला। २ नृत्य।
प्रेङ्खा } ३ भ्रमण। यात्रा। ४ विशेष प्रकार का घर या भवन। ५ घोड़े की चाल विशेष।

प्रेंखित } हिलता हुआ। झूलता हुआ।
प्रेङ्खित }

प्रेंखोल् } (धा० उभय०) [प्रेंखोलयति प्रेंखो-
प्रेङ्खोल् } लयते] हिलना। डुलना। हिलाना डुलाना।

प्रेंखोलनम् } (न०) झूलना। हिलना। काँपना।
प्रेङ्खोलनम् } २ हिंडोला। झूला।

प्रेत (व० कृ०) मृत। मरा हुआ।

प्रेतः (पु०) १ वह मृतआत्मा की अवस्था जो और्ध्वदेहिक कृत्य किये जाने के पूर्व रहती है। २ भूत।—अधिपः, (पु०) यमराज।—अन्नं, (न०) वह अन्न जो पितरों को अर्पित किया गया हो।—अस्थि, (न०) मुर्दे की हड्डियाँ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) यमराज। धर्मराज।—उद्देशः, (पु०) पितरों के लिये नैवेद्य।—कर्मन्, (न०)—कृत्यं, (न०)—कृत्या, (स्त्री०) दाह से लेकर सपिण्डी तक का वह कर्म जो मृतक जीव के उद्देश्य से किया जाता है।—गृहं, (न०) कब्रस्तान।—चारिन्, (पु०) शिव जी।—दाहः, (पु०) मृतक के जलाने आदि का कर्म।—धूमः, (पु०) चिता से निकला हुआ धुआँ।—पक्षः, (पु०) क्वार का अँधियारा या कृष्ण पाख पितृपक्ष कहलाता है।—पटहः, (पु०) वह ढोल जो किसी के जनाज़े या ठठरी को ले जाते समय बजाया जाता है।—पतिः, (पु०) यम का नामान्तर।—पुरं, (न०) यमराज पुरी।—भावः, (पु०) मृत्यु। मौत।—भूमिः, (स्त्री०) कब्रस्तान।—मेधः, (पु०) मृतक कर्म विशेष।—राक्षसी, (स्त्री०) तुलसी।—राजः, (पु०) यमराज।—लोकः, (पु०) वह लोक जहाँ प्रेत निवास करते हैं।—शरीरं, (न०) मृत शरीर।—शुद्धि, (स्त्री०)—शौचं, (न०) किसी मरे हुए नातेदार के

सूतक की शुद्धि ।—श्राद्धं, (न०) मरने की तिथि से एक वर्ष के अन्तर होने वाले १६ श्राद्ध । इनमें सपिण्डी, मासिक और षाण्मासिक श्राद्ध भी शामिल हैं ।—हारः, (पु०) १ मृत शरीर को उठाकर श्मशान तक ले जाने वाला । मुरदा उठाने वाला । २ मृतक का सगा या नातेदार ।

प्रेतिकः (पु०) भूत । प्रेत ।

प्रेत्य (अव्यया०) लोकान्तरित । परलोकगत ।—जातिः, (स्त्री०) परलोक में मरने के बाद किसी की परिस्थिति ।—भावः, (पु०) किसी जीव की शरीर छोड़ने के बाद की दशा ।

प्रेत्वन् (पु०) १ पवन । हवा । २ इन्द्र का नामान्तर ।

प्रेप्सा (स्त्री०) १ प्राप्त करने की अभिलाषा । २ इच्छा ।

प्रेप्सु (वि०) अभिलाषी । इच्छुक ।

प्रेमन् (पु० न०) १ प्रेम । स्नेह । २ अनुकम्पा । अनुग्रह । ३ आमोद प्रमोद । ४ हर्ष । प्रसन्नता ।—अश्रु, (स्त्री०) प्रेम या स्नेह के आँसू ।—ऋद्धिः, (स्त्री०) स्नेह का आधिक्य । प्रगाढ़ प्रेम ।—पर, (वि०) प्यारा । प्रिय ।—पातनं, (न०) (हर्ष के) आँसू । २ नेत्र (जिनसे प्रेमाश्रु गिरे ।—पात्रं, (न०) प्रेमपात्र ।—बंधः, (पु०)—बन्धनम्, (न०) प्रेम की फाँस या गाँस ।

प्रेमिन् (वि०) [स्त्री०—प्रेमिणी] प्यारा । स्नेही ।

प्रेयस् (वि०) [स्त्री०—प्रेयसी] अधिकतर प्यारा । (पु०) प्रेमी । पति । (पु० न० चापलूसी ।

प्रेयसी (स्त्री०) पत्नी । स्वामिनी ।

प्रेयोपत्यः (पु०) बगुला । बूटीमार ।

प्रेरक (वि०) [स्त्री०—प्रेरिका] १ प्रेरणा करने वाला । उत्तेजन देने वाला । २ फेंकने वाला ।

प्रेरणं (न०) } १ उत्तेजित करना । इच्छितयाल
प्रेरणा (स्त्री०) } दिलाना । २ आवेग । उत्तेजना । प्रवृत्ति । ३ फेंकना । डालना । ४ भेजना । रवाना करना ।

प्रेरित (व० कृ०) १ उत्तेजित किया हुआ । आग्रह किया हुआ । २ उद्विग्न । ३ भेजा हुआ । रवाना किया हुआ । ४ स्पर्श किया हुआ ।

प्रेरितः (पु०) एलची । दूत ।

प्रेष् (धा० उभय०) [प्रेषति—प्रेषते] जाना ।

प्रेषः (पु०) १ आग्रह । २ सन्ताप । कष्ट । शोक ।

प्रेषणं (न०) } १ प्रेरणा । भेजना । २ किसी
प्रेषणा (स्त्री०) } विशेष अभीष्ट सिद्धि के लिये भेजना ।

प्रेषित (व० कृ०) १ (संदेसा देकर) भेजा हुआ । २ आज्ञा दिया हुआ । निर्देश किया हुआ । ३ घूमा हुआ । गड़ा हुआ । किसी ओर फिरा हुआ । (आँखें) नीचे किये हुए । ४ बहिष्कृत ।

प्रेष्ठ (व० कृ०) अतिशय प्रिय । प्रियतम । बहुत प्यारा ।

प्रेष्ठः (पु०) प्रेमी । पति ।

प्रेष्ठा (स्त्री०) पत्नी । स्वामिनी ।

प्रेष्य (वि०) जो भेजने योग्य हो । जनः, (पु०) नौकर चाकर ।—भावः, (पु०) गुलामी । चाकरी । बंधन ।—वधू, (पु०) नौकर की पत्नी । २ नौकरानी । दासी ।—वर्गः, (पु०) अनुचरों का समूह ।

प्रेष्यं (न०) १ किसी कार्य पर भेजना । २ चाकरी ।

प्रेष्यः (पु०) नौकर । दास । गुलाम ।

प्रेष्या (स्त्री०) दासी । चाकरानी ।

प्रेह्किटा (स्त्री०) आचार विशेष जिसमें चटाइयों का निषेध है ।

प्रेहिकर्दमा (स्त्री०) अनुष्ठान विशेष जिसमें अपवित्रता वर्जित है ।

प्रेहिद्वितीया (स्त्री०) अनुष्ठान विशेष जिसमें स्वयं को छोड़ अन्य पुरुष की उपस्थिति वर्जित है ।

प्रेहिवाणिजा (स्त्री०) अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी भी व्यवसायी की उपस्थिति वाञ्छनीय नहीं है ।

प्रैयं (न०) कृपा । प्रेम ।

प्रैषः (पु०) १ प्रेषण । २ आज्ञा । आदेश । आमंत्रण । ३ सङ्कट । विपत्ति । ४ विक्षिप्तता । पागलपन । सनक । ५ दबाना । कुचलना । मर्दन ।

प्रैष्यम् (न०) चाकरी । गुलामी ।

प्रैष्यः (पु०) नौकर । दास । गुलाम । कमीन ।—भावः, (पु०) नौकरी । दासत्ववृत्ति ।

प्रैष्या (स्त्री०) दासी । चाकरानी ।

प्रोक्त (व० कृ०) १ कहा हुआ । नियत किया हुआ । ठहराया हुआ ।

प्रोक्षणं (न०) १ मार्जन । २ जल छिड़क कर पवित्र करना । ३ यज्ञ में वध के पूर्व यज्ञीय पशु पर जल छिड़कना ।

प्रोक्षणी (स्त्री०) १ वह पवित्र जल जो मार्जन के लिये या छिड़कने के लिये हो । २ वह पात्र जिसमें प्रोक्षण के लिये जल रखा जाता है । प्रोक्षणीपात्र ।

प्रोक्षणीयं (न०) प्रोक्षण के लिये जल ।

प्रोक्षित (व० कृ०) जल के मार्जन से पवित्र किया हुआ । २ वलिदान के पूर्व जल से छिड़का हुआ ।

प्रोच्चंड } प्रोच्चगड } (वि०) अतिशय भयानक ।

प्रोच्चैस् (अव्यया०) १ अतिशय उच्चस्वर से । २ अतिशय अधिकता में ।

प्रोच्छ्रित् (व० कृ०) ऊंचा । लंबा । उन्नत ।

प्रोज्जासनम् (न०) वध । हत्या ।

प्रोज्झनम् (न०) त्याग । विराग । वैराग्य ।

प्रोज्झित (व० कृ०) त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।

प्रोञ्छनम् } प्रोन्छनम् } (न०) पोंछ डालना । मिटा डालना । २ अवशिष्ट को बीन लेना ।

प्रोड्डीन (वि०) उड़ा हुआ । उड़ गया हुआ ।

प्रोढ } प्रोढि } देखो "प्रौढ, प्रौढि ।"

प्रोत (व० कृ०) १ सिला हुआ । टाँका लगा हुआ । २ ओत् का उलटा । लंबा या सीधा फैला हुआ । ३ बंधा हुआ । गसा हुआ । ४ बिधा हुआ । आर पार छिपा हुआ । ५ गुजरा हुआ । निकला हुआ । ६ जड़ा हुआ । बैठाया हुआ ।

प्रोतं (न०) बुना हुआ वस्त्र ।

प्रोत + उत्सादनं (न०) (= प्रोतोत्सादनं) १छाता । २ खीमा । तंबू । पटगृह ।

प्रोत्कण्ठ (वि०) गर्दन उठाये हुए । गर्दन आगे किये हुए ।

प्रोत्कुष्टं (न०) कोलाहल । शोरगुल । गुलगपाड़ा ।

प्रोत्खात (व० कृ०) खुदा हुआ ।

प्रोत्तुङ्ग (वि०) बहुत ऊँचा । अतिशय लँबा ।

प्रोत्फुल्ल (वि०) फैला हुआ । खिला हुआ ।

प्रोत्सारणं (न०) पिंड छुड़ाना । पीछा छुड़ाना । हटा देना । निकाल देना ।

प्रोत्सारित (व० कृ०) १ स्थानान्तरित किया हुआ । निकाला हुआ । हटाया हुआ । २ आगे बढ़ाया हुआ । ३ त्यागा हुआ ।

प्रोत्साहः (पु०) १ उमङ्ग । अतिशय उत्साह । २ उकसाने वाला । शह देने वाला ।

प्रोत्साहकः (पु०) उकसाने वाला । उत्तेजन देने वाला ।

प्रोथ् (धा० उभय०) [प्रोथति—प्रोथते] १ समान होना । बराबरी करना । २ योग्य होना । ३ परिपूर्ण होना ।

प्रोथ (वि०) १ विख्यात । प्रसिद्ध । २ स्थापित । ३ यात्रा करने वाला ।

प्रोथं (न०) } प्रोथः (पु०) } १ घोड़ा का नथुना । शूकर का थूथन । (पु०) १ कमर । चूतड़ । २ गढ़ा । गर्त । ३ वस्त्र । पुराने वस्त्र । ४ गर्भाशय ।

प्रोथिन् (पु०) घोड़ा ।

प्रोद्घुष्ट (व० कृ०) १ प्रतिध्वनित । प्रतिशब्दाय मान । २ कोलाहल करना ।

प्रोद्घोषणं (न०) } प्रोद्घोषणा (स्त्री०) } १ घोषणा । २ उच्चस्वर से बोलना ।

प्रोद्दीप्त (व० कृ०) आग लगाया हुआ । जलता हुआ । धधकता हुआ ।

प्रोद्भिन्न (व० कृ०) १ उगा हुआ । २ फोड़ कर निकला हुआ ।

प्रोद्भुत (व० कृ० निकला हुआ । उगा हुआ ।

प्रोद्यत (व० कृ०) १ उठा हुआ । २ क्रियावान् । परिश्रमी ।

प्रोद्वाहः (पु०) विवाह ।

प्रोन्नत (व० कृ०) १ अतिशय ऊँचा या लंबा । २ निकला हुआ ।

प्रोल्लाघित (वि०) १ बीमारी से उठा हुआ। रोग छूटने पर कुछ कुछ प्राप्तबल। २ रोबीला।

प्रोल्लेखनम् (न०) छीलना। चिन्ह करना।

प्रोषित (व० कृ०) यात्रा के लिये विदेश गया हुआ। विदेशवासी। अनुपस्थित।—भर्तृका (स्त्री०) पति के विदेश गमन से दुखी स्त्री। विरहिनी नायिका।

प्रोष्ठः } (पु०) १ बैल। साँड। २ तिपाई। काठ
प्रौष्ठः } का मूढ़ा। स्टूल। ३ एक प्रकार की मछली। —पदः (पु०) भाद्रपद। भादों का महीना। —पदा (स्त्री०) पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र।

प्रोह } (वि०) बहस करने वाला।
प्रौह }

प्रोहः } (पु०) १ तर्क। न्याय। २ हाथी का पैर
प्रौहः } ३ गाँठ। जोड़।

प्रोढ } (वि०) १ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। पका हुआ।
प्रौढ } पूर्ण। २ जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३ गाढ़ा। घना। सतेज। सारवान। ४ विशाल। सबल। बलवान। ५उग्र। प्रचण्ड। ६साहसी। ७ अभिमानी।

प्रौढा (स्त्री०) अधिक उम्रवाली स्त्री। ३० से ५० या ५५ वर्ष तक की वयस वाली स्त्री प्रौढा मानी गयी है।—अङ्गना, (स्त्री०) साहसिन स्त्री।—उक्ति, (स्त्री०) साहसपूर्ण कथन।—प्रताप, (वि०) बड़ा शक्तिवान्।—यौवन, (वि०) ढलती जवानी का।

प्रौढिः } (स्त्री०) १ बालग़ी। पूर्णवयस्कता। २
प्रोढिः } बाढ़। बढ़ती। ३ बड़ाई। बड़प्पन। उच्चता। शान। ४ साहस। ५ अभिमान। आत्मनिर्भरता। ६ उद्योग। उत्साह।—वादः (पु०) चटकीला भड़कीला भाषण। २ साहस से भरा बयान या कथन।

प्रौण (वि०) चतुर। विद्वान। निपुण।

प्लक्षः (पु०) १ वट वृक्ष। २ पाकर वृक्ष। ३ पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। ३ खिड़की।—जाता,—समुद्रवाचका, (स्त्री०) सरस्वती नदी का नामान्तर।—तीर्थं, (न०)—राज्, (पु०) वह स्थान जहाँ से सरस्वती नदी निकलती है।

प्लव (वि०) १ तैरता हुआ। उतराता हुआ। २ कूदता हुआ। उछलता हुआ।

प्लवः (पु०) १ तैरना। उतराना। २ जल की बाढ़। ३ छलाँग। कुलाँच। ४ बेड़ा। घरनई। नाव। छोटी नाव। ५ मेंढ़क। ६ बंदर। ७ उतार। ढाल। ८ शत्रु। ९ भेड़। १० चाण्डाल। ११ मछली पकड़ने का जाल। १२ वट वृक्ष। १३ कारण्डव पक्षी।—गः, (पु०) १ बंदर। २ मेंढक। ३ जल का पक्षी विशेष। ४ शिरीष वृक्ष। ५ सूर्य के सारथी का नाम। ६ कन्याराशि।—गतिः, (पु०) मेंढक।

प्लवकः (पु०) १ मेंढ़क। २ कूदने वाला। रस्से पर नाचने वाला नट। ३ पाकर वृक्ष। ४ पतित। चाण्डाल। ५ बंदर।

प्लवंगः } (पु०) १ लंगूर। वानर। २ मृग। ३
प्लवङ्गः } पाकर वृक्ष।

प्लवंगमः } (पु०) १ वानर। २ मेंढक।
प्लवङ्गमः }

प्लवनं (न०) १ तैरना। २ स्नान। अवगाह स्नान। ३ उछाल। छलाँग। फलाँग। ५ जलप्लावन। जलप्रलय। ६ नीची ज़मीन।

प्लवाका (स्त्री०) बेड़ा। घरनई।

प्लविक (वि०) मल्लाह। माझी।

प्लाक्षं (न०) प्लक्ष वृक्ष के फल।

प्लावः (पु०) १ बाढ़ (जल की)। २ तरल पदार्थ का छानना (जिससे उसमें मैल न रह जाय।)

प्लावनं (न०) १स्नान। मार्जन। २जल की बाढ़। ३ जलप्रलय।

प्लावित (व० कृ०) १ तैराया हुआ। उमड़ कर बहा हुआ। जल की बाढ़ में डूबा हुआ। ३ नम। गीला। जल से छिड़का हुआ। ४ ढका हुआ।

प्लिह् (धा० आत्म०) (प्लेहते) जाना।

प्ली (धा० परस्मै०) (प्लीनाति) जाना।

प्लीहन् (पु०) तिल्ली। बरवट। लरक।—उदरं, (न०) तिल्ली की वृद्धि।—उदरिन्, (वि०) वह पुरुष जो तिल्ली की वृद्धि से पीड़ित हो।

प्लीहा (स्त्री०) तिल्ली । वरवट ।

प्लु (धा० आत्म०) —[प्लवते,प्लुत] १ तैरना । पैरना । नाव द्वारा पार होना । ३ डोलना । इधर उधर झूलना । ४ कूदना । फलाँगना । ५ उड़ना । ६ कुदकना ७ (स्वर का) दीर्घ होना । (णिज्) [प्लावयति प्लावयते] १ तैराना । पैराना । २ हटाना । वहा ले जाना । ३ स्नान करना । ४ वाढ में डूबना । ५ तारतम्य करना ।

प्लुत (व० कृ०) १ पैरता हुआ । उतराता हुआ । २ डूबा हुआ । ३ कूदा हुआ । ४ वढा हुआ । ५ ढका हुआ ।

प्लुतं (न०) १ छलाँग । फलाँग । २ घोडे की चाल विशेष । पोई ।—गतिः, (पु०) १ खरगोश । खरहा । २ उछलते हुए चलना । फरपट चाल ।

प्लुतिः (स्त्री०) १ जल की वाढ़ । २ छलाँग । फलाँग ३ घोड़े की चाल विशेष, जिसे पोई कहते हैं । ४ स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी वडा और तीन मात्रा का होता है ।

प्लुप् (धा० परस्मै०) [प्लोषति, प्लुष्यति, प्लुष्णाति, प्लुष्ट] जलाना ।—[प्लुष्णाति,] १ छिड़कना । तर करना । २ मालिश करना । तेल लगाना । ३ भरना ।

प्लुष्ट (व० कृ०) जला हुआ । दग्ध ।

प्लेव् (धा० आत्मने०) [प्लेवते] खिदमत करना । चाकरी करना । सेवा करना ।

प्लोपः (पु०) जलन । दाह ।

प्लोषण (वि०) [स्त्री०—प्लोषणी,] जला हुआ । जल कर जो भस्म हो गया हो ।

प्लोषणं (न०) जलन । दाह ।

प्सा (धा० परस्मै०) [प्साति, प्सात,] खाना । भक्षण करना ।

प्सात (व० कृ०) भक्षण । भोजन । भूख । बुभुक्षा ।

प्सानम् (न०) १ खाया हुआ । २ भोजन ।

फ

फ (पु०) संस्कृत वर्ण माला का वाइसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का दूसरा वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है और इसके उच्चारण में आभ्यन्तर प्रयत्न होता है । इसका उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्रभाग होठों से छूता है, अतः इसे स्पर्शवर्ण कहते हैं । इसके वाह्यप्रयत्न, विवार, श्वास और अघोप हैं । इसकी गणना महाप्राण में है । प, व, भ, तथा म, इसके सवर्ण हैं ।

फ (न०) १ रूखा वोल । २ फूत्कार । फूँक । ३ झञ्झा वात । ४ जमुहाई । ५ साफल्य । ६ रहस्यमय अनुष्ठान । ७ व्यर्थ की वकवक् । ८ गर्मी । उष्णता । ७ उन्नति ।

फक्क् (धा० परस्मै०) [फक्कति, फक्कित] १ धीरे धीरे चलना । खसकना । रेंगना । २ गलती करना । दूषित व्यवहार करना । ३ वढ़ना । फूल उठना ।

फक्किका (स्त्री०) वह जो शास्त्रार्थ में दुरूहस्थल को स्पष्टीकरण करने के लिये पूर्वपक्ष के रूप में कहा जाय । निर्णय के लिये पूर्वपक्ष । २ पक्षपात । वह राय जो पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष को सुनने के पूर्व ही कायम कर ली जाय ।

फट् (अव्यय) एक तांत्रिक शब्द जिसको अस्त्र मंत्र भी कहते हैं ।

फटः (पु०) १ साँप का फैला हुआ फन । २ दाँत । ३ वदमाश । कितव ।

फडिंगा } फडिङ्गा } (स्त्री०) टीढ़ी । पतिंगा ।

फण् (धा० परस्मै०) [फणति, फणित] इधर उधर हिलना । २ विना प्रयास उत्पन्न करना ।

फणः (पु०) } फणा (स्त्री०) } साँप का फैला हुआ फन ।—करः, (पु०) साँप ।—धरः, (पु०) १ साँप । २ शिव जी ।—भृत्, (पु०)

सर्प।—मणिः, (पु०) वह मणि जो सर्प के फन में होती है —मण्डलं, (न०) सर्प की कुड़री।

फणिन् (पु०) १ फनधारी सर्प। २ राहु। महाभाष्यकार पतञ्जलि।—इन्द्रः,—ईश्वरः, (पु०) १ शेषनाग का नामान्तर। २ अनन्त नाग। ३ पतञ्जलि।—खेलः, (पु०) लवा। बटेर।—तल्पगः, (पु०) विष्णु का नामान्तर —पतिः, (पु०) शेषनाग। वासुकी नाग।—प्रियः, (पु०) पवन। हवा।—फेनः, (पु०) अफीम।—भाष्यं, (न०) पाणिनी के सूत्रों पर पतञ्जलि का महाभाष्य।—भुज् (पु०) १ मोर। २ गरुड

फत्कारिन् (पु०) पक्षी। चिड़िया।

फरं (न०) ढाल। फलक।

फरुवकं (न०) पान रखने का डब्बा।

फर्फरीकः (पु०) हाथ की खुली हुई हथेली।

फर्फरीकं (न०) १ कल्ला। वृक्ष की नयी डाली। २ कोमलता।

फर्फरीका (स्त्री०) जूता। जूती।

फल् (धा० परस्मै०) [फलति, फलित] १ फलना। २ सफल होना। ३ परिणाम निकालना। ४ पकना।

फलं (न०) १ फल। २ फसल। पैदावार ३ परिणाम। नतीजा। ४ पुरस्कार। ५ कर्म। ६ उद्देश्य। ७ उपयोग। लाभ। फायदा। ८ मूल धन का ब्याज। ९ सन्तति। औलाद। १० फल के भीतर का बीज या गूदा। ११ फल विशेष। १२ तलवार की धार। १३ तीर की नोंक। १४ ढाल। १५ अण्डकोष। १६ दान। १७ अङ्कगणित की किसी क्रिया का अन्तिम परिणाम। १८ योगफल। गुणनफल। १९ रजस्वलाधर्म। २० जायफल। २१ हल की नोंक।—अनुबन्धः, (पु०) परिणाम। नतीजा।—अनुमेय, (वि०) फल देख कर निकाला हुआ सार।—अन्तः, (पु०) बांस। बल्ली।—अन्वेषिन् (वि०) (कर्म का) फल या पुरस्कार चाहने वाला।—अशनः, (पु०) तोता। सुग्गा। सूआ।—अम्लम्, (न०) इमली।—अस्थि, (न०) नारियल।—आकांक्षा, (स्त्री०) (अच्छे) परिणाम की अभिलाषा।—आगमः, (पु०) १ फलोत्पत्ति। २ फल फलने का समय या मौसम। शरदृतु।—आढ्या, (स्त्री०) १ कठकेला। २ एक प्रकार के अँगूर जिनमें बीजा नहीं होते।—उत्पत्तिः, (स्त्री०) १ फल की पैदावार। २ लाभ। मुनाफा। (पु०) आम का पेड़।—उदयः, (पु०) १ फल का दृष्टिगोचर होना। २ परिणाम निकलना। ३ सफलता प्राप्ति या अभीष्टसिद्धि।—कालः, (पु०) फलों का मौसम।—केशरः, (पु०) नारियल का वृक्ष।—ग्रहः, (पु०) लाभ निकालने वाला।—ग्रहि,—ग्राहिन्, (वि०) फलवान्। ऋतु में फल देने वाला।—द, (वि०) १ फलदायी। उपजाऊ। फलदार। २ लाभदायी।—दः, (पु०) वृक्ष।—निवृत्तिः, (स्त्री०) परिणाम का अवसान।—निष्पत्तिः, (स्त्री०) फलोत्पत्ति —पादपः, (पु०) फलदार वृक्ष।—पूरः,—पूरकः, (पु०) नीबू या जमीरी का पेड़।—प्रदानं, (न०) १ सगाई। २ फल का दान।—भूमिः, (स्त्री०) वह स्थान जहाँ कर्मों के फल का भोग करना हो।—भृत्, (वि०) फलदार।—भोगः, (पु०) १ फल का भुगतना। २ फलभोग। उपसत्व भोगने का अधिकार।—योगः, (पु०) १ फलप्राप्ति या अभीष्टप्राप्ति। २ मजदूरी। महनताना।—राजन्, (पु०) तरबूज़। कलींदा।—वर्तुलम्, (न०) तरबूज़। कलींदा। वृक्षः, (पु०) फलवान् वृक्ष।—वृक्षकः, (पु०) कटहल का पेड़।—षाडवः, (पु०) अनार का वृक्ष।—श्रेष्ठः, (पु०) आम का पेड़।—सम्पद्, (स्त्री०) १ फलों का बाहुल्य। २ सफलता।—साधनं, (न०) किसी भी अभीष्ट सिद्धि का कोई उपाय।—स्नेहः, (पु०) अखरोट का पेड़।—हारी, (स्त्री०) काली या दुर्गा का नामान्तर।

फलकं (न०) १ पटल। तख़्ता। पट्टी। २ चौरस सतह। ३ ढाल। ४ कागज़ का तख़्ता। सफा। ५ चूतड़। करिहाँ। ६ हथेली।—पाणि, (वि०)

ढालधारी।—यंत्रं, (न०) ज्योतिष सम्बन्धी यंत्र विशेष जिसको भास्कराचार्य ने ईजाद किया था।

फलतस् (अव्यया०) फलतः। परिणामतः। अन्ततो गत्वा। लिहाज़ा। अतः।

फलनं (न०) १ फलोत्पत्ति। फलों का लगना। २ नतीजा निकालना।

फलवत् (वि०) १ फल वाला। फरने वाला। २ परिणामप्रद। सफल। लाभप्रद।

फलवती (स्त्री०) प्रियङ्गु नाम का पौधा।

फलिता (स्त्री०) रजस्वला स्त्री

फलिन् (वि०) फलवान्। फरने वाला। (पु०) वृक्ष।

फलिन (वि०) फलने वाला।

फलिनः (पु०) कटहल का पेड़।

फलिनी, फली } (स्त्री०) प्रियङ्गु नामक लता

फल्गु (वि०) १ रसहीन। फीका। असार। २ निकम्मा। अनुपयोगी। अनावश्यक। ३ थोड़ा। सूक्ष्म। ४ व्यर्थ। अर्थशून्य। ५ निर्बल। कमज़ोर। थोदा।—उत्सवः, (पु०) होली का त्योहार।

फल्गुः (स्त्री०) १ वसन्त ऋतु। २ गूलर। वृक्ष विशेष। ३ गया की एक नदी का नाम।

फल्गुनः (पु०) १ फागुन मास। २ इन्द्र का नाम।

फल्गुनी (स्त्री०) एक नक्षत्र का नाम।

फल्यं (न०) फूल।

फाणिः (पु०), फाणितं (न०) } गुड़। राव। कच्ची खाँड।

फाँट, फाण्ट } (वि०) आसानी से या सहज में बना हुआ।

फांटः, फाण्टः, फांटं, फाण्टम् } (पु०) काढ़ा। क्वाथ।

फालं (न०), फालः (पु०) } १ हल की नोंक। २सीमान्त भाग। माँग। (सिर पर की)। (पु०) १ बलराम का नामान्तर। २ शिव का। ३ नीबू का वृक्ष। (न०) सूती कपड़ा। २ जुता हुआ खेत।

फाल्गुनः (पु०) १ फागुनमास। २ अर्जुन का नामान्तर। ३ एक वृक्ष विशेष।—अनुजः, (पु०) १ चैत्रमास। २ वसन्तकाल। ३ नकुल और सहदेव का नाम।

फाल्गुनी (स्त्री०) फागुन मास की पूर्णमासी।—भवः, (पु०) बृहस्पति का नाम।

फिरङ्गः (पु०) फिरंगियों का देश। फिरंगिस्तान। योरुप।

फिरङ्गिन् (पु०) फिरंगी। योरोपियन।

फुक्कः (पु०) पक्षी।

फुत्, फूत् } (अव्यया०) शब्द विशेष।—कारः, (पु०)—कृतं, (न०)—कृतिः, (स्त्री०) १ फूंकना। २ सर्प की फुँसकार। ३ सिसकन। ४ चीख मारना।

फुप्फुसं (न०), फुप्फुसः (पु०) } फेफड़ा।

फुल्ल (धा० परस्मै०) [फुल्लति, फुल्लित] फूलना। फैलना। खिलना।

फुल्ल (व० कृ०) १ फैला हुआ। खिला हुआ। खुला हुआ।—लोचन, (वि०) (आनन्द से) नेत्रों का विकसित होना।

फेट्कारः (पु०) चीख।

फेणः, फेनः } (पु) १ फैना। फैन। झाग। २ मुँह का झाग। ३ थूक।
—पिण्डः, (पु०) १ बबूला। बुद्बुद्। २ खोखले विचार।—वाहिन, (पु०) छन्ना। साफ़ी।

फेणकं, फेनकं } (न०) झाग। फेन।

फेनिल (वि०) झागदार फेनदार।

फेरः, फेरण्डः, फेरुण्डः } (पु०) श्रृगाल। गीदड़। स्यार।

फेरवः (पु०) १श्रृगाल। स्यार। गीदड़। २ बदमाश। गुंडा। कपटी ३ राक्षस। प्रेत। पिशाच।

फेरुः (पु०) स्यार। गीदड़।

फेलं (न०), फेला (स्त्री०), फेलिका (स्त्री०), फेली (स्त्री०) } उच्छिष्ट। जूठा।

ब

ब—संस्कृत वर्णमाला का तेईसवां व्यञ्जन और पवर्ग का तीसरा वर्ण। यह दोनों ओठों को मिलाने पर उच्चारित होता है। इस लिये इसको ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं। यह अल्पप्राण है और इसके उच्चारण में संवार, नाद और घोष नाम के वाह्य प्रयत्न होते हैं।

ब (पु०) १ बुनावट। २ बुआई। ३ वरुण। ४ घड़ा। ५ योनि। ६ समुद्र ७ जल। ८ गमन। ९ तन्तु सन्तान। १० सूचना।

बंह् (धा० आत्म०) [बंहते, बंहित] १ बढ़ना। उगना। २ दृढ़ करना।

बंहिमन् (पु०) १ बाहुल्य। २ विपुलता।

बंहिष्ठ (वि०) बहुत अधिक। बहुत बड़ा।

बहीयस् (वि०) अतिशय। अनेक।

बकः (पु०) १ बगला। २ ढोंगी। छलिया। कपटी। ३ एक असुर का नाम जिसे भीम ने मारा था। ४ एक और असुर का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ५ कुबेर का नाम।—चरः,—वृत्तिः,—व्रतचरः,—व्रतिकः, -व्रतिन्, (पु०) वह पुरुष जो नीचे ताकता हो और स्वार्थ साधन में तत्पर तथा कपटयुक्त हो। ढोंगी। छली। कपटी।—जित्, (पु०)—निषूदनः, (पु०) १ भीम। २ श्रीकृष्ण।—व्रत, (न०) ढोंग। दम्भ।

बकुलः (पु०) १ मौलसिरी का पेड़।

बकुलं (न०) मौलसिरी के फूल।

बकेरुका (स्त्री०) छोटी जाति का सारस।

बकोटः (पु०) सारस। बगला।

बटुः (पु०) लड़का। छोकरा। [इस शब्द का प्रयोग तिरस्कार करने के लिये भी होता है यथा "ब्राह्मणबटुः"]

बडिशं) (न०) मछली पकड़ने की बंसी।
बलिशं)

बत (अव्यया०) एक अव्यय; जो शोक, खेद, दया, अनुकम्पा, सम्बोधन, हर्ष, सन्तोष, आश्चर्य और भर्त्सना के अर्थ में व्यवहृत किया जाता है।

बदरं (न०) बेर के फल।

बदरः (पु०) बेर का पेड़।

बदरपाचनम् (न०) तीर्थस्थान विशेष।

बदरिका (स्त्री०) १ बेर का पेड़ या फल। २ हिन्दुओं के चार धामों में से एक, जिसे बदरिकाश्रम या बदरीनारायण कहते हैं।

बदरिकाश्रम (न०) हिन्दुओं का हिमालयपर्वत-स्थित तीर्थस्थान विशेष।

बदरी (स्त्री०) बेर का पेड़।

बद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ। २ हथकड़ी बेड़ी से जकड़ा हुआ। ३ गिरफ्तार किया हुआ। पकड़ा हुआ। ४ कैदखाने में बद। ५ पहिना हुआ। कमर में कसा हुआ। ६ रुका हुआ। रोका हुआ। दमन किया हुआ। ७ बनाया हुआ। ८ जुड़ा हुआ। मिला हुआ। ९ दृढ़ता से जमाया हुआ।—अंगुलित्र, —अंगुलित्राण, (वि०) दस्ताना पहिने हुए।—अंजलि (वि०) हाथ जोड़े हुए।—अनुराग (वि०) प्रेम में बँधा हुआ।—अनुशय, (वि०) पश्चाताप करने वाला।—आशङ्क, (वि०) शक्की। सन्दिग्ध।—उत्सव, (वि०) छुट्टी मनाने वाला।—उद्यम, (वि०) मिल कर यत्न करने वाला।—कक्ष, —कक्ष्य, (वि०) तैयार। तत्पर।—कोप, —मन्यु,—रोष, (वि०) १ क्रोधी। रोषान्वित। (वि०) १ कोपान्वित। २ क्रोध को दबा लेने वाला।—चित्त,—मनस्, (वि०) किसी ओर मन को दृढ़ता से लगाने वाला।—जिह्व, (वि०) जीभ कीला हुआ।—दृष्टि, —नेत्र, —लोचन, (वि०) घूमने वाला। ताकने वाला।—नेपथ्य, (वि०) नाटकीय पोशाक पहिने हुए।—परिकर, (वि०) कमर कसे हुए। तैयार।—प्रतिज्ञ, (वि०) १ वचन दिये हुए। प्रतिज्ञा किये हुए। २ दृढ़ता पूर्वक (किसी बात का) निश्चय किये हुए।—मुष्टि (वि०) १ कंजूस। लोभी। मूठी बाँधे हुए।—मूल, (वि०)

जिसने जड़ पकड़ ली हो। जो दृढ़ या अटल हो गया हो।—मौन, (वि०) खामोश। चुपचाप।—राग, (वि०) अनुरागी।—वसति, (वि०) अपने वासस्थान को निर्दिष्ट करने वाला।—वाच्, (वि०) जिसका बोलना बंद कर दिया गया हो। जबानबंद।—वेपथु, (वि०) थर-थर काँपता हुआ।—वैर, (वि०) घृणा करने वाला। वैर रखने वाला।—शिख, (वि०) १ जिसकी चोटी गठियायी या बधी हुई हो। २ बालक।—स्नेह, (वि०) स्नेही। अनुरागी। प्रेमी।

बध् (धा० आत्म०) घृणा करना। नफरत करना।

बधिर (वि०) बहरा।

बधिरित (वि०) बहरा बनाया हुआ।

बधिरमन् (पु०) बहरापन। बधिरता।

बंदिन् (देखो वंदिन्)

बंदिः, बन्दिः } (स्त्री०) १ बधन। कैदखाना। २
बंदी, बन्दी } कैदी बंधुआ।

बंध } (धा० परस्मै०) [बध्नाति, बद्ध] १
बन्ध } बाँधना। गसना २ पकड़ना। फंदे में फंसना। क़ैद करना। ३ बेड़ी डालना। ४ रोकना। बंद करना। ५ पहिनना। धारण करना। ६ आकर्षण करना। पकड़ना। गिरफ्तार करना। ७ लगाना। फेरना। ८ मिला कर बाँधना या गसना। ९ (इमारत या भवन) बनाना। १० (पद्य) रचना। ११ पैदा करना। लगाना। (जैसे फलों का) १२ रखना।

बंधः } (पु०) १ बंधन। २ बाल बाँधने का फीता या
बन्धः } डोरी। ३ बेड़ी। जंज़ीर। ४ पकड़। गिरफ्तारी। ५ बनावट। ६ सम्बन्ध। मेल। ७ जोड़ना (हाथों का)। ८ पट्टी। १० मेलमिलाप। ११ प्रदर्शन। प्रकटन। १२ फँसाव। १३ परिणाम। १४ परिस्थिति। १५ मैथुन का आसन विशेष। १६ किनारी। चौखटा। १७ विशेष प्रकार की पद्य-रचना। (खड्गबंध) १८। १९ शरीर। २० धरोहर।—करणं, (न०) बेड़ी डालना। क़ैद करना।—तंत्रं, (न०) पूरी फौज या चतुरंगिनी सेना।—स्तम्भः, (पु०) खूँटा।

बंधकं } (न०) बंधन। क़ैदखाना।
बन्धकं }

बंधकः } (पु०) १ बाँधने वाला। २ पकड़ने वाला।
बन्धकः } ३ पट्टी। रस्सी। ४ बाँध। ५ धरोहर। ६ आसन। ७ विनमय। बदलौअल। ८ भङ्ग करने वाला। तोड़ने वाला। ९ प्रतिज्ञा। १० शहर।

बंधकी } (स्त्री०) १ छिनाल स्त्री। २ रंडी।
बन्धकी } वेश्या। ३ हथिनी।

बंधनं } (न०) १ बाँधने की क्रिया। २ वह जो
बन्धनं } किसी की स्वतंत्रता में बाधक हो। ३ फँसा रखने वाली वस्तु। ४ रस्सी। जंज़ीर। बेड़ी ५ जेलखाना। क़ैदखाना। ६ वध। हिंसा। ७ डंठल। नाल। ८ रग। नस। ९ पट्टी।—अगारः, (पु०)—आगारः, (पु०)—अगारं, (न०)—आगारं, (न०)—आलयः, (पु०) जेलखाना। क़ैदखाना।—ग्रन्थिः, (पु०) १ बंधन या पट्टी की गाँठ। फंदा। ३ पशु बाँधने की रस्सी।—पालकः,—रक्षिन्, (पु०) जेलखाने का दरोगा।—वेश्मन्, (न०) जेलखाना।—स्थः, (पु०) क़ैदी। बंधुआ।—स्तम्भः, (पु०) पशु बाँधने का खूंटा।—स्थानं, (न०) अस्तबल। गोशाला आदि।

बंधित } (वि०) १ बंधा हुआ। २ क़ैद में पड़ा
बन्धित } हुआ।

बंधित्रः } (पु०) १ कामदेव। २ चमड़े का पंखा।
बन्धित्रः } ३ तिल। दाग़।

बंधुः } (पु०) १ नातेदार। भाई बिरादरी।
बन्धुः } सम्बन्धी। २ पारिवारिक नातेदार [धर्मशास्त्र में तीन प्रकार के बन्धु बतलाये गये हैं। अर्थात् "आत्मबन्धु", पितृबन्धु' और "मातृबन्धु"]। ३ कोई भी किसी प्रकार का सम्बन्धी जैसे प्रवासबन्धु, धर्मबन्धु आदि। ४ मित्र। ५ पति।

[यथा "वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे"-रघुवंश।]

६ पिता। ७ माता। ८ भाई। ९ बन्धुजीव नामक वृक्ष। १० जो किसी जाति या पेशे से नाम मात्र का सम्बन्ध रखता हो। इसका प्रयोग प्रायः तिरस्कार सूचक होता है—यथा, 'ब्रह्मबन्धु।"—कृत्यं, (न०) भाई बिरादरी का कर्त्तव्य।—

जनः (पु०) रिश्तेदार। जाति वाला।—जीवः, —जीवकः, (पु०) एक वृक्ष का नाम।—दत्तं, (न०) स्त्रीधन विशेष।—प्रीतिः, (स्त्री०) १ भाई बिरादरी का प्रेम। २ मित्र के प्रति प्रेम। —भावः, (पु०) १ मैत्री। भाईचारा। नातेदारी।—वर्गः, (पु०) भाईबन्द।—हीन, (वि०) भाई बिरादरी या मित्र से रहित।

वंधुकः, बन्धुकः (पु०) १ दुपहरिया का वृक्ष जिसमें लाल रंग के फूल लगते है और जो बरसात में फूलता है। २ वर्णसङ्कर।

वंधुका, बन्धुका, वधुकी, बन्धुकी (स्त्री०) असती स्त्री। छिनाल औरत।

वंधुता, बन्धुता (स्त्री०) १ बन्धु होने का भाव। २ भाईचारा। ३ मैत्री। दोस्ती।

वंधुदा, बन्धुदा (स्त्री०) छिनाल औरत।

वंधुर, बन्धुर (वि०) १ तरङ्गित। लहराता हुआ। असमान। २ झुका हुआ। नवा हुआ। ३ टेढ़ा। टेढ़ा मेढ़ा। ४ मनोहर। सुन्दर। खूबसूरत। ५ बहरा। ६ अनिष्टकर। उपद्रवी।

वंधुरं, बन्धुरम् (न०) मुकुट। ताज।

वंधुरः, बन्धुरः (पु०) १ हंस। २ सारस। ३ अर्कविशेष। ४ खली। ५ योनि। भग।

वंधुरा, बन्धुरा (स्त्री०) छिनाल औरत।

वंधुराः, बन्धुराः (पु० बहुवचन) भुना हुआ अनाज या कोई खाद्य पदार्थ।

वंधुल, बन्धुल (वि०) १ मुड़ा हुआ। झुका हुआ। २ प्रसन्नकारक। हर्षप्रद। आकर्षक। सुन्दर।

वंधुलः, बन्धुलः (पु०) १ वर्णसङ्कर। दोगला। २ रंडी की दासी। वन्धूक वृक्ष।

वंधूकं, बन्धूकम् (न०) वन्धूक वृक्ष का फूल।

वंधूकः, बन्धूकः (पु०) वृक्ष विशेष।

वंधूर, बन्धूर (वि०) १ तरङ्गित। असम। २ झुका हुआ। मुड़ा हुआ। नवा हुआ। ३ प्रसन्नकारक। हर्षप्रद। प्यारा।

वंधूरं, बन्धूरम् (न०) छेद। छिद्र।

वंधूलिः, बन्धूलिः (पु०) बन्धुजीव नामक वृक्ष। गुलदुपहरिया का पौधा।

वंध्य, बन्ध्य (वि०) १ बाँधने योग्य। बेड़िया डालने लायक। क़ैद करने लायक। २ मिलाने योग्य। एक करने योग्य। ३ बाँधने या बनाने योग्य। ४ रोका हुआ। पकड़ा हुआ। गिरफ़्तार किया हुआ। ५ बाँझ। जिसमें कुछ भी पैदावार न हो। बंजर। बेकाम। ६ जो रजस्वला न हो। ७ वञ्चित। रहित।

वंध्या, बन्ध्या (स्त्री०) १ बाँझ औरत। २ बाँझ गौ। ३ बालछड़।—तनयः, (पु०) पुत्र, (पु०)—सुतः, (पु०)—दुहितृ, (पु०) —सुता, (स्त्री०) बाँझ स्त्री का पुत्र या पुत्री। [इसका प्रयोग केवल किसी असम्भावित् वस्तु के लिये किया जाता है।]

वभ्रं, बन्भ्रम् (न०) बन्धन। गाँस।

बभ्रवी (स्त्री०) दुर्गा देवी का नामान्तर।

बभ्रु (वि०) १ साँवला। भूरा। धवला। धौला। २ गंजा।—धातुः, (पु०) १ सुवर्ण। सोना। २ गेरू।—वाहनः, (पु०) चित्राङ्गदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन के पुत्र का नाम।

बभ्रुः (पु०) १ अग्नि। २ न्योला। ३ भूरा रंग। ४ भूरे रंग के केशों वाला मनुष्य। ५ एक यादव का नाम। ६ शिव। ७ विष्णु।

बम् (धा० पर०) [बंबति] जाना।

बंभरः, बम्भरः (पु०) शहद की मक्खी।

बभराली (स्त्री०) मक्खी।

बरटः (पु०) अनाज विशेष।

बर्ब (धा० पर०) [बर्बति] चलना। जाना।

बर्बटः (पु०) राजमाष नाम का अनाज।

बर्बटी (स्त्री०) १ राजमाष नाम का धान्य। २ रंडी। वेश्या।

बर्बणा (स्त्री०) नीले रंग की मक्खी।

बर्बरः (पु०) १ अनार्य। जंगली। २ मूर्ख।

बर्बुरः (पु०) बबूल का पेड़ ।

बर्ह् (धा० आत्म०) [बर्हते] १ बोलना । २ देना । ३ ढकना । ४ चोटिल करना । नाश करना । ५ बिछाना ।

बर्ह (न०) } १ मयूर की पूँछ । २ पक्षी की पूँछ ।
बर्हः (पु०) } ३ मोर की पूँछ के पर । ४ पत्ता । ५ अनुचर वर्ग ।—भारः, (पु०) १ मोर की पूँछ । २ मोरछल ।

बर्हणम् (न०) पत्ता ।

बर्हिः (पु०) अग्नि । (न०) कुश । दर्भ ।

बर्हिणः (पु०) मोर । मयूर ।—वाजः, (पु०) मयूर के पँखों से युक्त वाण । वह तीर जिसमें मोर के पंख लगे हों ।—वाहनः, (पु०) कार्तिकेय ।

बर्हिस् (पु० न०) १ कुश । दर्भ । २ कुश की शय्या । (पु०) १ अग्नि । २ प्रकाश । चमक । (न०) १ जल । २ यज्ञ ।—केशः,—ज्योतिस्, (पु०) १ अग्नि । २ देवता ।—शुष्मन् (पु०) अग्नि ।—सद्, (=बर्हिषद्) (वि०) कुशासन पर बैठा हुआ । (पु०) (बहुवचन) पितृगण ।

बल् (धा० परस्मै०) [बलति] साँस लेना । जीवित रहना । २ अनाज एकत्र करना । (उभय०) [बलति,—बलते] १ देना । चोटिल करना । मार डालना । ३ बोलना । ४ देखना । चिन्हित करना । (णिज०) [बालयति,—बालयते] पालन पोषण करना ।) परवरिश करना ।

बलं (न०) १ बल । ताकत । जोर । शक्ति । २ उग्रता । प्रचण्डता । ३ सेना । सैन्यदल । ४ (शरीर की) मुटाई । मोटापन । ५ शरीर । आकार । ६ वीर्य । धातु । ७ खून । ८ गोंद । राल । लोबान । ९ अँखुआ । अङ्कुर ।—अङ्कः, (पु०) वसन्त ऋतु ।—अचिन्ता, (स्त्री०) बलराम की बाँसुरी ।—अटः, (पु०) मूँग ।—अध्यक्षः, (पु०) १ चमूपति । सेना का बड़ा अफसर । २ समरसचिव ।—अनुजः, (पु०) श्रीकृष्ण ।—अभ्रः, (पु०) बादल के आकार में सेना ।—अरातिः, (पु०) इन्द्र ।—अवलेपः, (पु०) बलवान होने का अभिमान ।—उशः,—असः, (पु०) १ क्षय रोग । कफ । २ गले की सूजन ।—आग्मिका, (स्त्री०) हस्तिशुण्डी या सुरजमूखी ।—आह्वः, (पु०) जल । पानी ।—उपपन्न.—उपेत, (वि०) बलवान । ताक़तवर ।—ओघः, (पु०) सेनाओं का समूह । अनेक सेनाएं ।—क्षोभः, (पु०) ग़दर । विप्लव ।—चक्रं, (न०) १ साम्राज्य । राष्ट्र । २ सेना ।—जं, (न०) १ नगरद्वार । फाटक । २ खेत । ३ अनाज । अनाज का ढेर । ४ युद्ध । लड़ाई । ५ गरी । मिगी ।—जा, (स्त्री०) १ पृथिवी । २ सुन्दरी स्त्री । ३ चमेली विशेष ।—दः, (पु०) बैल ।—देवः, (पु०) १ पवन । हवा । २ श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम ।—द्विष्, (पु०)—निषूदनः, (पु०) इन्द्र ।—पति, (पु०) सेनापति ।—प्रसूः, (पु०) बलराम की माता रोहिणी जी ।—भद्रः, (पु०) १ ज़बरदस्त आदमी । २ बैल विशेष । ३ बलराम । ४ लोध्र वृक्ष ।—भिद्, (पु०) इन्द्र ।—भृत्, (वि०) मज़बूत । बलवान ।

बलः (पु०) १ काक । कौआ । २ कृष्ण के बड़े भाई बलराम । ३ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था ।—अग्रः, (पु०) सेनानायक । चमूपति ।—रामः, (पु०) बलदेव जी का नामान्तर ।—विन्यास, (पु०) सैन्यव्यूह ।—व्यसनं, (न०) सेना की हार ।—सूदनः, (पु०) इन्द्र ।—स्थः, (पु०) योद्धा । सिपाही ।—स्थितिः, (स्त्री०) पड़ाव । छावनी । शाही पड़ाव ।—हन्, (पु०) इन्द्र ।—हीन, (वि०) बलशून्य । निर्बल । कमज़ोर ।

बलक्ष (वि०) सफेद ।—गुः, (पु०) चन्द्रमा ।

बललः (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

बलवत् (वि०) १ ताक़तवर । बलवान । २ मज़बूत । रोबीला । ३ सघन । गाढ़ा । ४ मुख्य । प्रधान । व्याप्त । ५ अधिक आवश्यक । अधिक भारी । (अव्यया०) १ ज़बरदस्ती । बलपूर्वक । २ अत्यधिक । अतिशय ।

बला (स्त्री०) एक मंत्र या विद्या का नाम, जिसके

प्रभाव से योद्धा को युद्ध के समय भूख या प्यास नहीं सताती। [यह मंत्र या विद्या विश्वामित्र ने श्रीरामचन्द्र जी और श्रीलक्ष्मण जी को सिखलायी थी।

बलाकः (पु०) } १ बगली । २ (स्त्री०) स्वामिनी।
बलाका (स्त्री०) }

बलाकिका (स्त्री०) छोटी जाति का बगला या सारस।

बलाकिन् (वि०) जहाँ बगलों या सारसों की बहुतायत हो।

बलात्कारः (पु०) १ जबरदस्ती करना। २ किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ३ अन्याय । ४ ऋणी को पकड़ कर बैठाना।

बलात्कृत (वि०) जिसके साथ ज़ोरज़ुल्म या बलात्कार किया गया हो।

बलाहकः (पु०) १ बादल। २ बगला या सारस। ३ पहाड़। ४ प्रलयकालीन सात बादलों में से एक का नाम।

बलिः (पु०) १ किसी देवता को उत्सर्ग किया कोई खाद्य पदार्थ । २ भूतयज्ञ । ३ पूजन। अर्चा। ४ उच्छिष्ट। ५ नैवेद्य। ६ कर । टेक्स। खिराज। ७ चौरी की डंडी । ८ एक प्रसिद्ध दैत्य का नाम, जो विरोचन का पुत्र था। इसी के लिये भगवान विष्णु ने वामनावतार धारण किया था। (स्त्री०) झुर्री। बल। सिकुड़न।—कर्मन्, (न०) १ भूतयज्ञ । समस्त प्राणियों को भोजन देना। २ राजकर का भुगतान।—दानं, (न०) देवता को नैवेद्य का अर्पण। प्राणियों को भोज्यपदार्थ प्रदान।—ध्वंसिन्, (पु०) विष्णु।—नन्दनः,—पुत्रः,—सुतः, (पु०) बलिराज के पुत्र बाणासुर का नामान्तर।—पुष्टः,(पु०)—भोजनः, (पु०) काक। कौआ।—प्रियः, (पु०) लोध्रवृक्ष।—बन्धनः (पु०) विष्णु।—भुज्, (पु०) १ काक। २ गौरैया। सारस। बगला।—मन्दिरं,—वेश्मन्,—सद्मन्, (न०) पाताल लोक। राजा बलि के रहने का स्थान।—हन्, (पु०) विष्णु।—हरणं, (न०) प्राणिमात्र को आहार प्रदान।

बलिन् (वि०) बलवान्। ताकतवर। (पु०) १ भैंसा। २ शूकर। ३ ऊँट। ४ बैल। ५ योद्धा। ६ चमेली विशेष। ७ कफ। ८ बलराम जी का नामान्तर।

बलिदमः } (पु०) विष्णु।
बलिन्दमः }

बलिमत् (वि०) १ पूजन का या बलिदान का संरजाम ठीक करने वाला। २ कर वसूल करने वाला।

बलिमन् (पु०) शक्ति। ताकत।

बलिवर्द (न०) देखो बलीवर्द।

बलिष्ठ (वि०) अतिशय बलवान।

बलिष्ठः (पु०) ऊँट। उष्ट्र।

बलिष्णु (वि०) अपमानित। तिरस्कृत।

बलीकः (पु०) छप्पर की मुड़ेर।

बलीयस् (वि०) [स्त्री०—बलीयसी] १ मज़बूत। ताकतवर। २ अधिक प्रभाव वाला। ३ अधिकतर आवश्यक।

बलीवर्दः } (पु०) साँड़। बैल।
बरीवर्दः }

बल्य (वि०) १ मज़बूत। ताकतवर। २ बलप्रद।

बल्यं (न०) वीर्य। धातु।

बल्यः (पु०) बौद्ध भिक्षुक।

बल्लवः (पु०) १ ग्वाला। अहीर । गोपाल । २ पाचक। रसोइया। ३ भीम का फ़र्ज़ी नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय रखा था।—युवतिः,—युवती, (स्त्री०) गोपी।

बल्लवी (स्त्री०) गोपी। ग्वालिन। अहीरिन।

बल्वजः (पु०) } एक जाति की मोटे तृण की घास।
बल्वजा (स्त्री०) }

बल्हिकाः } (बहुवच०) एक देश विशेष और उसके अधिवासी।
बल्हीकाः }

बष्कय (वि०) पूर्णवयस्क। जैसे गाय का बच्छा।

बष्कयणी }
बष्कयिणी } १ (स्त्री०) गौ जिसका बच्छा बड़ा हो।
बष्कयनी } २ गौ जिसके कई एक बच्छे हों।
बष्कयिनी }

बस्तः (पु०) बकरा।—कर्णः, (पु०) साल वृक्ष।

बहल (वि०) १ अत्यधिक। विपुल। प्रचुर। बड़ा।

मज़बूत। २ गाढ़। घना। ३ लंबे लंबे बालों वाली (जैसे पूँछ) ४ सख्त। दृढ़।

बहलः (पु०) ऊख विशेष।

बहला (स्त्री०) बड़ी इलायची।

बहिस् (अव्यया०) १ बाहिर की ओर। बाहिरी। २ द्वार के बाहिर। ३ बाहिर की ओर से।

बहु (वि०) [स्त्री०—बहु या बह्वी] विपुल। प्रचुर। २ बहुत से। अनेक। ३ सम्पन्न। बहुतायत से।—अप्,-अप, (वि०) तरल। पनीला।—अपत्य,(वि०) अनेक सन्तानों वाला।—अपत्यः, (पु०) १ शूकर। २ चूहा। घूंस।—अपत्या (स्त्री०) कई बार की ब्यायी हुई गौ।—आशिन्, (वि०) पेटू। भोजनभट्ट।—उदकः, (पु०) एक प्रकार का संन्यासी।—ऋच्, (स्त्री०) ऋग्वेद।—एनस्, (वि०) बड़ा पापी।—कर, (वि०) मशगूल। कामधंधे में लगा हुआ।—करः, (पु०) १ मेहतर। सफाई करने वाला। २ ऊँट।—करी, (स्त्री०) झाड़ू। बढ़नी।—कालीन, (वि०) पुरातन। पुराना।—कूर्चः, (पु०) नारियल का वृक्ष विशेष।—गन्धदा, (स्त्री०) मुश्क। कस्तूरी।—गन्धा, (स्त्री०) १ यूथिका लता। २ चम्पा की कली।—जल्प, (वि०) बातूनी। बक्वादी।—दक्षिण, (वि०) १ जिसमें बहुत सा दान दिया जाय। २ उदार।—दायिन् (वि०) उदार।—दुग्ध, (वि०) बहुत दूध देने वाली।—दुग्धः, (पु०) गेहूँ।—दुग्धा, (स्त्री०) बहुत दूध देने वाली गौ।—दृश्वन्, (वि०) बड़ा अनुभवी।—धारं, (न०) इन्द्र का वज्र।—धेनुकं (न०) बहुत सी गौएं।—नादः, (पु०) शंख।—पत्रः, (पु०) लशुन। लहसन।—पत्रं, (न०) मुड़वर। अभ्रक। अबरक।—पत्री, (स्त्री०) तुलसी वृक्ष।—पद्,-पाद,-पादः, (पु०) वट वृक्ष।—पुष्पः, (पु०) १ मूँगा का वृक्ष। २ नींब का पेड़।—प्रज, (वि०) अनेक सन्तानों वाला।—प्रजः, (पु०) १ शूकर। २ मूँज घास।—प्रद, (वि०) अतिशय उदार।—प्रसूः, (स्त्री०) अनेक बच्चों की माता—प्रेयसी, (वि०) अनेक प्रेमियों वाली।—फलः, (पु०) कदम्ब वृक्ष।—बलः, (पु०) शेर।—भाग्य, (वि०) बड़ा भाग्यवान्।—भाषिन्, (वि०) बक्वादी। गप्पी।—मञ्जरी, (स्त्री०) तुलसी।—मत, (वि०) अतिशय माननीय।—मलं, (न०) सीसा। जस्ता।—मानः, (पु०) अतिशय मान।—मानं, (न०) वह पुरस्कार जो बड़े से छोटे को मिले।—मान्य, (वि०) सम्माननीय। पूज्य।—माय, (वि०) मायावी। छली। कपटी। विश्वासघाती।—मार्गगा, गंगा नदी।—मार्गी, (स्त्री०) वह जगह जहाँ अनेक मार्ग मिलते हैं।—मूत्र (वि०) प्रमेह रोग से पीड़ित।—मूर्धन्, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—मूल्य, (वि०) क़ीमती। बहुत दामों का।—मृग, (वि०) जहाँ बहुत से हिरन हों। हिरनों की बहुतायत।—रूप, (वि०) १ अनेक रूप धारण करने वाला। २ चितकबरा।—रूपः, (पु०) १ सरट। गिरगट। छपकली २ केश। ३ सूर्य। ४ शिव। ५ विष्णु। ६ ब्रह्मा। ७ कामदेव।—रेतस्, (पु०) ब्रह्मा।—रोमन्, (पु०) मेढ़ा। भेड़।—लवणं, (न०) लुनिया ज़मीन।—वचनं, (न०) व्याकरण की एक परिभाषा जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का ज्ञान होता है। जमा।—वर्ण, (वि०) अनेक रंगों का।—विघ्न, (वि०) अनेक विघ्न या बाधाएँ डालने वाला।—विध, (वि०) अनेक प्रकार का।—बीजं, (बीज) (न०) शरीफ़ा। सीताफल।—व्रीहि, (वि०) १ बहुत चाँवलों वाला।—व्रीहिः, (पु०) छः प्रकार के समासों में से एक। इसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो पद बनता है वह किसी अन्य पद का विशेषण होता है।—शत्रुः, (पु०, गौरैया चिड़िया।—शल्यः, (पु०) खदिर विशेष।—शृङ्गः (पु०) विष्णु का नामान्तर।—श्रुत, (वि०) १ जिसने बहुत कुछ सुना हो। अनेक विषयों का जानकार। बड़ा विद्वान। २ वेदों का ज्ञाता।—सन्ततिः, (पु०) एक जाति का बाँस।—सारः, (पु०) खदिर वृक्ष।—सूः, (पु०) १ अनेक सन्तति वाली जननी। २ शूकरी।—सूतिः (स्त्री०) १

अनेक बच्चों की माता। २ गौ, जो बहुत व्याती हो। —स्वनः, (पु०) १ उल्लू।—बहुकः, (पु०) १ सूर्य। २ अर्क। मदार। ३ कैकड़ा। ४ कुक्कुट जातीय पक्षी विशेष।

बहुतर (वि०) अतिशय। अधिकतर।

बहुतम (वि०) अतिशय प्रचुर।

बहुतः (अव्यया०) अनेक पहलुओं से।

बहुता / बहुत्व } विपुल। प्रचुर। अनेकता

बहुतिथ (वि०) अधिक। लंबा। बहुत।

बहुधा (अव्यया०) १ अनेक ढंगों से। बहुत प्रकार से। २ बहुत करके। प्राय.। अकसर। ३ अधिकतर अवसरों पर। ४ अनेक स्थानों या दिशाओं में।

बहुल (वि०) १ प्रचुर। अधिक। ज्यादा। २ गाढ़ा। सघन। कसा हुआ। ३ काला।—आलाप, (वि०) बातूनी। बकवादी।—गन्धा, (स्त्री०) इलायची।

बहुलं (न०) १ आकाश। २ सफेद गोलमिर्च।

बहुलः (पु०) १ कृष्ण पक्ष। २ अग्नि।

बहुला (स्त्री०) १ गौ। २ इलायची। ३ नील का पौधा। ४ कृत्तिका नक्षत्र।

बहुलिका (स्त्री० बहु०) कृत्तिका नक्षत्र पुञ्ज।

बहुशस् (अव्य०) १ अधिक। अधिकता से। प्रचुरता से। २ अक्सर। बहुधा। ३ साधारणतः। मामूली तौर से।

बाकुलं (न०) बकुल वृक्ष के फल।

बाड् (धा० आत्म०) [बाडते] १ स्नान करना। २ डूबना।

बाडव. देखो वाडवः।

बाड़वेय देखो वाडवेय।

बाडव्यं देखो वाडव्यम्।

बाढ (वि०) १ दृढ़। मज़बूत। २ उच्च।

बाढं (अव्यया०) १ निश्चय रूप से। अवश्य। निश्चय। २आह। हाँ। ३ बहुत अच्छा। तथास्तु। ४ अतिशय। अत्यधिक।

बाणः (पु०) १ तीर। नरकुल। सरपत। २तीरका। ३ तीर की वह नोंका जिसमें पर लगे हों। ४ गाय का ऐन या थन। ५पौधा विशेष ६ दैत्यराज बलि के पुत्र का नाम। ७ हर्षवर्धन राजा के एक दरबारी कवि का नाम। ८ पाँच संख्या।—असनं, (न०) कमान। धनुष।—आवलिः,—आवली, (स्त्री०) १ तीरों की कतार।—आश्रयः, (पु०) तरकस। तूणीर।—गोचर, (पु०) तीर की मार।—जालं, (न०) अनेक तीर।—जित्, (पु०) विष्णु।—तूणः—धिः, (पु०) तरकस तूणीर।—पाणि, (वि०) धनुर्धर।—पातः, (पु०) १ भूमि का माप। जितनी दूर तीर जा कर पड़े। २ तीर की मार।—मुक्तिः, (पु०) —मोक्षण (न०) मारना।—योजनं, (न०) तरकस।—वृष्टिः (स्त्री०) बाणों की वर्षा।—वारः, (पु०) कवच।—सुताः, (स्त्री०) उषा जो बाणासुर की बेटी थी।—हन्, (पु०) विष्णु।

बाणिनी देखो वाणिनी।

बादर (वि०) [स्त्री०—बादरी] बेरवृक्ष सम्बन्धी। २ कपास का पेड़।

बादरं (न०) १ बेर का पेड़। २ रेशम। ३ जल। सूती कपड़ा। ४ दहिनावर्ती शङ्ख।

बादरः (पु०) रूई का झाड़।

बादरा (स्त्री०) कपास का पौधा।

बादरायणः, (पु०) वेदव्यास का नामान्तर।—सूत्रं, (न०) वेदान्त दर्शन।—सम्बन्धः, (पु०) कल्पित रिश्ता।

बादरायणिः (पु०) शुकदेव जी का नाम, जो व्यास के पुत्र हैं।

बादरिक (वि०) [स्त्री०—बादरिकी] बेरों को बीन कर एकत्र करने वाला।

बाध् (धा० आत्म०) [स्त्री०—बाधते, बाधित] १ सताना। अत्याचार करना। जुल्म करना। दबाना। छेड़छाँड़ करना। कष्ट देना। २ सामना करना। मुकाबला करना। ३ आक्रमण करना। ४ भङ्ग करना। ५ अनिष्ट करना। घायल करना। ६ भगा देना। हटा देना। ७ खारिज करना। बरतरफ करना। नष्ट करना।

बाधः (पु०) / बाधा (स्त्री०) } १ पीड़ा। कष्ट। सन्ताप। अत्याचार। २ छेड़खानी।

गड़बड़ी । ३ हानि । अनिष्ट । चोट । ४ भय । ख़तरा । जोखों । ५ मुकाबला । सामना । ६ एतराज़ । आपत्ति । ७ खण्डन । प्रतिवाद ।

बाधक (वि०) [स्त्री०—बाधिका] १ दुःखदायी । पीड़ाकारी । २ छेड़छाड़ करने वाला । ३ मिटाने वाला । मेंटने वाला । ४ बाधा डालने वाला ।

बाधनं (न०) १ अत्याचार । छेड़खानी । चिढ़ । गड़बड़ी । कष्ट । पीड़ा । २ खण्डन । ३ स्थानान्तरकरण । ४ प्रतिवाद ।

बाधना (स्त्री०) कष्ट । पीड़ा । गड़बड़ी । चिन्ता ।

बाधित (व० कृ०) अत्याचार किया हुआ । चिढ़ाया हुआ । पीड़ित । ३ मुकाबला किया हुआ । सामना किया हुआ । ४ रोका हुआ । बंद किया हुआ । ५ बरतरफ़ किया हुआ । मंसूख़ किया हुआ । ख़ारिज किया हुआ । ६ खण्डन किया हुआ ।

बाधिर्य (न०) बहिरापन ।

बांधकिनेयः } बान्धकिनेयः } (पु०) दोग़ला । वर्णसङ्कर ।

बांधवः } बान्धवः } १ रिश्तेदार । सगा । नातेदार । २ मातृ पक्षी नातेदार । ३ मित्र । ४ भाई ।—जनः, (पु०) नातेदार । नातेगोते का ।

बान्धव्यम् (न०) सम्बन्ध । नातेदारी । रिश्तेदारी ।

बाभ्रवी (स्त्री०) दुर्गा देवी का नामान्तर ।

बार्बटीरः (पु०) १ आम का गूदा । २ टीन । जस्ता । ३ अँखुआ । अङ्कुर । ४ वेश्यापुत्र ।

बार्ह (वि०) [स्त्री०—बार्ही] मोर की पूँछ के परों का बना हुआ ।

बार्हद्रथः } बार्हद्रथिः } (पु०) जरासन्ध का नाम ।

बार्हस्पत (वि०) [स्त्री०—बार्हस्पती] बृहस्पति सम्बन्धी । बृहस्पति से उत्पन्न । बृहस्पति का ।

बार्हस्पत्य (वि०) बृहस्पति सम्बन्धी ।

बार्हस्पत्यं (न०) पुष्य नक्षत्र ।

बार्हस्पत्यः (पु०) १ बृहस्पति का शिष्य । २ उन बृहस्पति का अनुयायी जिन्होंने जड़वाद का उग्रवाद लोगों को सिखलाया था । जड़वादी ।

बार्हिण (वि०) [स्त्री०—बार्हिणी] मयूर सम्बन्धी या मयूर से उत्पन्न ।

बाल (वि०) १ बालक । लड़का । जो जवान न हुआ हो । २ हाल का उगा हुआ । यथा सूर्य । ३ बालकों का सा । ४ अज्ञानी । मूर्ख ।—अरुणः, (पु०) तड़का । भोर ।—अर्कः, (पु०) हाल का निकला सूर्य ।—अवस्था, (स्त्री०) लड़कपन ।—आतपः, (पु०) प्रातःकालीन धूप ।—इन्दुः, (पु०) चन्द्रमा । (प्रतिपदा द्वितीया का) —इष्टः, (पु०) बेर का पेड़ ।—उपचारः, (पु०) लड़कों की चिकित्सा ।—कदली, (स्त्री०) छोटी जाति के केले का वृक्ष ।—कृमिः, (पु०) जूँ । चिलुआ ।—क्रीडनकं (न०) बालक का खिलौना ।—क्रीडनकः, (पु०) १ गेंद । २ शिव ।—क्रीडा, (स्त्री०) बालक का खेल । लड़क खेल ।—खिल्यः, (पु०) पुराणों के अनुसार ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न ऋषि समूह जिनके शरीर का आकार अँगूठे के बराबर है । इस समूह में साठ हजार ऋषियों की गणना है । ये सब के सब बड़े तपस्वी हैं ।—गर्भिणी (स्त्री०) वह गौ जो प्रथम बार ब्यानी हो —चरितं (न०) १ लड़कों के खेल ।—चर्यः (पु०) कार्तिकेय ।—चर्या (स्त्री०) बालक की चर्या ।—तनयः (पु०) खदिर का वृक्ष ।—तंत्र, (न०) बालकों के लालन पालन आदि की विधि । कौमार भृत्य ।—दलकः (पु०) खदिर का पेड़ ।—पाश्या, (स्त्री०) १ सिर के केशों में धारण करने का पुराने ढंग का एक गहना । २चोटी में गूँथने की मोती की लड़ी ।—पुष्पिकः,—पुष्पी, (स्त्री०) चमेली ।—बोधः (पु०) कोई पुस्तक जो बालकों या अनुभव शून्य लोगों के पढ़ने के लिये हो ।—भद्रकः (पु०) विष विशेष ।—भारः (पु०) लंबी और बालोंदार पूँछ ।—भावः, (पु०) लड़कपन ।—भैषज्यं (न०) सुर्मा विशेष ।—भोज्यः (पु०) मटर । चना ।—मृगः (पु०) हिरन का बच्चा ।—यज्ञोपवीतकं (न०) जनेऊ जो वक्षःस्थल के ऊपर होकर पहिना जाय ।

बालः (पु०) १ बच्चा । २ अवयस्क । नाबालिग । ३ बछेड़ा । ४ मूर्ख । ५ पूँछ । ६ केश । ७ पाँच वर्ष का हाथी । ८ सुगन्धद्रव्य विशेष ।

—राजं, (न०) वैदूर्यमणि —वत्सः, (पु०) १ छोटा बाछा। २ कबूतर।—वायजं, (न०) वैदूर्यमणि।—वासस् (न०) ऊनी वस्त्र। —वाह्यः, (पु०) जंगली बकरा।—विधवा, (स्त्री०) वह स्त्री जो बाल्यावस्था ही में विधवा हो गयी हो।—व्यजनं (न०) चौरी। चौर। चँवर। —सूर्यः,—सूर्यकः, (पु०) वैदूर्यमणि।—हत्या (स्त्री०) बालक का बध।—हस्तः (पु) बालदार पूँछ।

बालक (वि०) [स्त्री०—बालिका] १लड़के की तरह। जो जवान न हुआ हो। २ अज्ञानी।

बालकं (न०) अँगूठी।

बालकः (पु०) १ बच्चा। लड़का। २ अप्राप्तवयस्क। नाबालिग। ३ अँगूठी। मूर्ख। मूढ़। ४ वलय। कङ्कण। ५ घोड़ा या हाथी की पूँछ।

बाला (स्त्री०) १ लड़की। २ वह युवती जो १६ वर्ष से कम उम्र की हो। ३ युवती स्त्री। ४ चमेली विशेष। ५ नारियल का वृक्ष। ६ घीग्वार। घृत-कुमारी। ७ छोटी इलायची। ८ हल्दी।

बालिः (पु०) बानरराज सुग्रीव के बड़े भाई और अङ्गद के पिता का नाम।—हन्,—हंतृ (पु०) श्रीरामचन्द्र।

बालिका (स्त्री०) १ लड़की। २ बाली की गाँठ। ३ छोटी इलायची। ४ रेती। ५ पत्तों की खरभर।

बालिन् (पु०) बानरराज वालि।

बालिनी (न०) अश्विनी नक्षत्र।

बालिमन् (पु०) लड़कपन।

बालिश (वि०) १ लड़कपन। मूर्खता। २ जवान। ३ मूर्ख। अज्ञानी। ४ असावधान।

बालिशं (न०) तकिया।

बालिशः (पु०) १ मूर्ख। मूढ़। २ बालक। बच्चा। लड़का।

बालीश्य (न०) १ लड़कपन। जवानी। २ मूर्खता। बेवकूफी।

बाली (स्त्री०) कान का आभूषण विशेष।

बालीशः (पु०) मूत्र को रोक रखना।

बालुः (पु०)
बालुकं (न०) } सुगन्ध द्रव्य विशेष।

बालुका (स्त्री०) देखो वालुका।

बालुकी
बालुंकी
बालुङ्की
बालगी
बालुङ्गी } (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी।

बालूकः (पु०) एक प्रकार का विष।

बालेय (त्रि०) [स्त्री०—बालेयी] १ बलि देने योग्य। २ कोमल। मुलायम। नरम। वालि के वंश का।

बालेयः (पु०) गधा। रासभ।

बाल्यं (न०) १ लड़कपन। २ मूर्खता। मूढ़ता।

बाल्हकं
बाल्हिकं
बाल्हीकं } (न०) १ केसर। २ हींग।

बाल्हकः (पु०) १ बाल्हकों का राजा। २ बलखबुखारे का घोड़ा।

बाल्हकाः
बाल्हिकाः
बाल्हीकाः } (पु० बहु०) १ एक देश विशेष के अधिवासियों की संज्ञा।

बाल्हिः (पु०) बलख-बुखारा देश।

बाष्पः (पु०)
बाष्पं (न०) } १ आँसू। २ भाफ। कोहरा। ३ लोहा —अम्बु, (न०) आँसू। —कण्ठ, (वि०) गद्गद् कण्ठ।—मोक्षः, (पु०) —मोचनं, (न०) आँसू बहाना।

बास्त (वि०) [स्त्री०—बास्ती] बकरे का या बकरे से निकला हुआ।

बाहः (पु०) १ बाँह। २ घोड़ा।

बाहा (स्त्री०) बाँह।

बाहीक (पु० बहु०) पंजाब का एक निवासी।

बाहीकाः (पु०) १ पंजाबी लोग। २ बैल।

बाहुः (पु०) १ बाँह। २ कलाई। ३ पशु के अगले पैर। ४ चौखट का बाजू।

बाहू (द्वि०) आर्द्रा नक्षत्र।—कुण्ठ,—कुब्ज, (वि०) वह जिसका हाथ टूटा हो। लुंजा —कुन्थः, (पु०) पक्षी का बाजू। डैना।—चापः, (पु०) फाँसला जो हाथों से नापा हुआ हो।—जः, (पु०) १ क्षत्रिय। २ तोता। त्रः, (पु०) —त्रं, (न०)—त्राणं, (न०) बाहु को बचाने के लिये कवच विशेष।—पाशः, (पु०) मल्लयुद्ध का एक पेच।—प्रहरणम्, (न०) घूसों की

लड़ाई। घुसंघुस्सा।—बलं (न०) बाँह की शक्ति। कुव्वत बाज़ू।—भूषणं,—भूषा, (स्त्री०) बाजूबंद।—भेदिन्, (पु०) विष्णु का नामान्तर। —मूलं (न०) बग़ल।—युद्धं (न०) मल्ल युद्ध।—योधः, योधिन् (पु०) घूंसों से लड़ने वाला।—लता, (स्त्री०) बाहु जैसी लता।—वीर्य, (न०) बाँह का ज़ोर।—व्यायामः, (पु०) कसरत विशेष।—शालिन्, (पु०) १ शिव। २ भीम।—शिखरं, (न०) कंधा।—सम्भवः, (पु०) क्षत्रिय जाति का आदमी।—सहस्रभृत्, (पु०) कार्तवीर्य राजा।

वाहुकः (पु०) १ बंदर। २ राजा नल का बदला हुआ नाम।

वाहुगुण्यं (न०) अनेक गुणों की सम्पन्नता।

वाहुदन्तकं (न०) स्मृति जिसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं।

वाहुदन्तेयः (पु०) इन्द्र।

वाहुदा (स्त्री०) एक नदी का नाम।

वाहुभाष्य (न०) बकवादीपन। बातूनीपन।

वाहुरूप्यं (न०) अनेकता। विभिन्नता।

वाहुलः (पु०) १ अग्नि। २ कार्तिक मास।

वाहुलं (न०) १ अनेकता। २ हाथ के लिये परित्राण। —ग्रीवः, (पु०) मोर। मयूर।

वाहुलकं (न०) अनेकता।

वाहुलेयः (पु०)) कार्तिकेय।

वाहुल्यं (न०) विपुलता। प्राचुर्य।

वाहूवाहवि (अव्यया०) हाथापाँही।

वाह्य (वि०) १ बाहिर का। बाहिरी। २ अजनवी। अपरिचित। विदेशी। ३ समाज बहिष्कृत।

वाह्यः (पु०) १ अजनवी। विदेशी। २ पतित। जाति से निकाला हुआ।

वाह्वृच्यं (न०) ऋग्वेद की परम्परागत शिक्षा।

विट् (धा० परस्मै०) (वेटति) १ शपथ खाना। २ शपथदेना। ३ चिल्लाना।

विटकं (न०)
विटकः (पु०)
विटका (स्त्री०) } बलतोड़। फोड़ा।

विडं (न०) लवण विशेष।

विडालः (पु०) १ बिल्ली। २ आँख के डेला।—पदः, (पु०)—पदकं, (न०) तौल विशेष जो १६ माशे की होती थी।

विडालकं (न०) पीलीमरहम।

विडालकः (पु०) १ बिल्ली। पलकों पर लेप चढ़ाने की क्रिया।

विडौजस् (पु०) इन्द्र।

विद्
विन्द् } (धा० परस्मै०) [विन्दति] १ चीरना। २ विभाजित करना।

विंदुः
विन्दुः } (पु०) १ बूँद। कतरा। सूक्ष्म परिमाणु। २ बिंदी। बिन्दु। ३ हाथी पर रंगीन बूँदें जो उसे सजाने को बनायी जाती हैं। ४ शून्य। सिफर।—चित्रकः, (पु०) चित्तल। बारहसिंगा। —जालं,—जालकं, (न०) १ अनेक बिन्दु। २ हाथी के माथे और सूँड़ का चित्रण।—तंत्रः, (पु०) १ पाँसा। २ शतरंज की बिछात। —देवः, (पु०) महादेव।—पत्रः, (पु०) भोजपत्र का वृक्ष विशेष।—फलं, (न०) मोती।—रेखकः, (पु०) १ अनुस्वार। २ पक्षी विशेष।—वासरः, (पु०) गर्भस्थापन का दिवस।

विव्वोकः (पु०) अभिमान या अहङ्कारवश अपनी प्रेयसी की ओर से अनास्था। हावभाव।

विभित्सा (स्त्री०) भीतर प्रवेश करने की इच्छा।

विभीषणः (पु०) लङ्कापति रावण के सब से छोटे भाई का नाम।

विभ्रलुः
विभ्रज्जिपुः } (पु०) अग्नि। आग।

विंवः, विम्बः (पु०)
विंवं, विम्बम् (न०) } १ चन्द्रमा का या सूर्य का मण्डल। २ मण्डल। गोलाकार कोई वस्तु। ३ मूर्ति। छाया। परछाईं। ४ दर्पण। ५ घड़ा। (न०) कुंदरू।—ओष्ठ, (वि०) (= विम्बोष्ठ, विम्बौष्ठ) जिसके कुंदरू के फल जैसे लाल ओठ हों।

विंवकं
विम्बकम् } (न०) १ चन्द्र या सूर्य मण्डल। २ कुंदरू फल।

विंवित
विम्बित } (वि०) १ प्रतिच्छाया पड़ा हुआ। २ चित्र खींचा हुआ।

बिल् (धा० उभय०) [बिलति, बेलयति—बेलयते] चीड़ना। फाड़ना। तोड़ना। दो टुकड़े करना।

बिलं (न०) १ सूराख। छेद। भीटा। माँद। २ गढ़ा। गर्त। ३ झिरी। दरार। निकास। मुहाना। ४ गुफा।

बिलः (पु०) इन्द्र के घोड़े उच्चैश्रवस् का नाम। —ओकस्, (पु०) वे जन्तु जो बिल या माँद में रहते हैं।—कारिन् (पु०) चूहा।—योनि, (वि०) उस जाति के जानवर जो बिल में रहते हैं।—वासः, (पु०) खेखर (यह एक पशु है जो ऊदबिलाव की तरह होता है।—वासिन् (या बिलेवासिन्) (पु०) सर्प। साँप।

बिलंगमः } (पु०) साँप। सर्प।
बिलङ्गमः }

बिलेशयः (पु०) १ साँप। चूहा। २ माँद या बिल में रहने वाला कोई भी जन्तु।

बिल्लः (पु०) १ गर्त। गढ़ा २ आलवाल।—सू, (स्त्री०) दस बच्चों की जननी।

बिल्वः (पु०) बेल का पेड़।—दण्डः, (पु०) शिव जी।—पेशिका,—पेशी, (स्त्री०) बेल के फल की नरेरी या कड़ा छिलका।

बिल्वं (न०) १ बेल का फल। २ तौल विशेष। जो एक पल की होती है।

बिल्वकीया (स्त्री०) वह स्थान जहाँ अनेक बेल के पेड़ लगाये गये हों।

बिस् (धा० पर०) [बिस्यति] १ जाना। २ उत्तेजित करना। अनुरोध करना। भड़काना। ३ फैंकना। ४ चीरना।

बिसं (न०) कमल - नाल - तन्तु।—कण्ठिका, (स्त्री०)—कण्ठिन् (पु०) छोटा सारस — कुसुमं,—पुष्पं,—प्रसूनं, (न०) कमल का फूल।—खादिका, (न०) कमलनालतन्तु को खाने वाला।—जं, (न०) कमल का फूल।—नाभिः (स्त्री०) पद्मिनी।—नासिका (स्त्री०) सारस विशेष।

बिसलं (न०) अँखुआ। अङ्कुर। पल्लव। कली।

बिसिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा। २ कमलनाल तन्तु। ३ कमल समूह।

बिसिल (वि०) बिस सम्बन्धी या बिस से निकला हुआ।

बिस्तः (पु०) ८० रत्ती के बराबर की एक तौल जो सोना तौलने के काम में आती है।

बिल्हणः (पु०) विक्रमाङ्कदेव चरित्र के रचयिता एक कवि का नाम।

बीजं (न०) १बीजा। २ अङ्कुर। गाभ। जड़। उद्गम। तत्व। ३ उद्गम स्थान। उत्पत्ति स्थान। उपादान कारण। ४ वीर्य। ५ किसी नाटक की मूल कथा या कहानी। ६ गूदा। गरी। मिंगी। ७ बीजगणित। ८ बीजमंत्र।—अक्षरं, (न०) मंत्र का आदि अक्षर। —आढ्यः, —पूरः, —पूरकः, (पु०) नीबू। जंभीरी।—पूरं,—पूरकं, (न०) नीबू का फल।—उत्कृष्ट, (न०) उत्तम बीजा। —उदकं, (न०) ओला।—कर्तृ (पु०) शिव।—कोषः,—कोशः, (पु०) बीज। फली। छीमी रखने का पात्र।—गणितं, (न०) बीजगणित का विज्ञान।—गुप्तिः, (स्त्री०) फली। छीमी।—दर्शकः, (पु०) स्टेज मैनेजर। रंगशाला का व्यवस्थापक।—धान्यं, (न०) धनिया। कोथमीर।—न्यासः, (पु०) किसी नाटक की कथा के उद्गम स्थान को, या आधार को बतलाना।—पुरुषः (पु०) गोत्रप्रवर्तक।—फलकः, (पु०) नीबू का वृक्ष।—मंत्रः, (पु०) मंत्र के आदि का अक्षर।—मातृका, (स्त्री०) कमलगट्टा।—रुहः, (पु०) अनाज। नाज।—वापः, (न०) १ बीज बोने वाला। २ बीज बोने की क्रिया।—वाहनः, (पु०) शिव जी।—सूः, (पु०) पृथिवी।—सेक्तृ, (पु०) (वि०) उत्पन्न करने वाला। पैदा करने वाला।

बीजः (पु०) नीबू या जंभीरी का वृक्ष।—अध्यक्षः, (पु०) शिव।—अश्वः, (पु०) साँड़ घोड़ा। (वह घोड़ा जो केवल घोड़ियों को ग्याभन करने के लिये होता है।)

बीजकं (न०) बीजा। बीज।

बीजकः (पु०) १ नीबू। २ जंभीरी। ३ जनम के समय बच्चे की वह अवस्था जब उसका सिर दोनों

भुजाओं के बीच में होकर योनि के द्वार पर आ जाय।

बीजल (वि०) बीजों वाला। जिसमें अधिक बीज हों।

बीजिक (वि०) अधिक बीजों वाला।

बीजिन् (वि०) [स्त्री०—बीजिनी] बीजों वाला। (पु०) १ असली जनक। (बीज बोने वाला। २ पिता। जनक। ३ सूर्य।

बीज्य (वि०) १बीज से उत्पन्न। २ कुलीन।

बीभत्स (वि०) १ घृणित। २ डाही। ईर्ष्यालु। उपद्रवी। ३ बर्बर। निष्ठुर। भयानक। ४ मन फिरा हुआ।

बीभत्सः (पु०) १ घृणा। २ काव्य के नौरसों के अन्तर्गत सातवाँ रस। ३ अर्जुन का नामान्तर।

बीभत्सुः (पु०) अर्जुन।

बुक् (अव्यया०) नकली शब्द।—कारः, (पु०) सिंह की गर्जन।

बुक्क (धा० परस्मै०) [बुक्कति बुक्कयति बुक्कयते] १ भूकना। २ बोलना। बातचीत करना।

बुक्कं (न०) } १ हृदय। २ वक्षःस्थल। छाती।
बुक्कः (पु०) } ३ रक्त। (पु०) बकरा। २ समय।

बुक्कन् (पु०) हृदय।

बुक्कनं (न०) भूकना।

बुक्कस (पु०) चाण्डाल।

बुक्का } (स्त्री०) हृदय। दिल।
बुक्की }

बुद् (धा० उभय) [बोदति, बोदते] १ देखना। पहचानना। २ समझना। जानना।

बुद्ध (व० कृ०) १ जाना हुआ। समझा हुआ। पहचाना हुआ। २ जागा हुआ। ३ देखा हुआ। ४ बुद्धिमान। पण्डित।

बुद्धः (पु०) १ एक बुद्धिमान या पण्डित पुरुष। २ बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक शाक्यसिंह का नाम।—आगमः, (पु०) बुद्धधर्म के सिद्धान्त और यमनियम। उपासकः (पु०) बौद्ध धर्मानुयायी —गया, (स्त्री०) तीर्थ स्थान विशेष। —मार्ग, (पु०) बुद्धधर्म। बुद्धधर्म के सिद्धान्त।

बुद्धिः (स्त्री) १ धीशक्ति। बोध। २ चित्त। प्रतिभा। समझ। ३ ज्ञान। ४ विवेक। ५ मन। ६ हाज़िरजवाबी। ७ धारणा। राय। विश्वास। ख़याल। ८ इरादा। अभिप्राय। ९ सचेतता। चैतन्य।—अतीत, (वि०) समझ के बाहिर।—इन्द्रियं (न०) ज्ञानेन्द्रिय।—गम्य,—ग्राह्य, (वि०) समझ के भीतर। जो बुद्धि से समझा जा सके। —जीविन्, (वि०) वह जो बुद्धि द्वारा अपना निर्वाह करता हो।—भ्रमः, (पु०) चित्त का डाँवाडोल होना। मन की अस्थिरता।—शालिन्,—सम्पन्न, (वि०) बुद्धिमान। समझदार। अक़्लमन्द।—सखः —सहायः, (पु०) मंत्री। सचिव। वजीर।—हीन, (वि०) मूर्ख। बेवकूफ़।

बुद्धिमत् (वि०) १ बुद्धिमान। प्रतिभाशाली। २ विद्वान। ३ चतुर। चालाक।

बुद्बुदः (पु०) बबूला। बुल्ला।

बुध् (धा० आत्म०) [बोधति—बोधते, बुध्यते, बुद्ध] १ जानना। समझना। २ पहचानना। ३ ख़याल करना। विचारना। ४ ध्यान देना। ५ सोचना। विचारना। ६ जागना। ७ होश में आना। चैतन्य होना।

बुध (वि०) बुद्धिमान। चतुर। विद्वान।

बुधः (पु०) १ बुद्धिमान या विद्वान् आदमी। २ देवता। ३ बुधग्रह।—जनः, (पु०) बुद्धिमान या विद्वान् आदमी।—तातः (पु०) चन्द्रमा। —दिन, (न०)—वारः, (पु०)—वासरः, (पु०) बुधवार।—रत्नं, (न०) पन्ना।—सुतः, (पु०) राजा पुरूरवा की उपाधि।

बुधानः (पु०) १ बुद्धिमान्। गुरु।

बुधित (वि०) जाना हुआ। समझा हुआ।

बुधिल (वि०) बुद्धिमान। विद्वान्।

बुध्नः (पु०) १ बर्तन की तली। २ पेड की जड़। ३ सब से नीचे का भाग। ४ शिव।

बुंद्, बुन्द् } (धा० उभय०) [बुंदति—बुन्दते,
बुंध्, बुन्ध् } बुंधति—बुन्धते] १ पहचानना। देखना। २ समझना। विचारना।

बुभुक्षा (स्त्री०) १ भूख। २ किसी वस्तु के उपभोग की इच्छा।

बुभुक्षित (वि०) भूखा।

बुभुक्षु (वि०) भूखा। सांसारिक सुखोपभोग का इच्छुक।

बुल् (धा० उभय०) [बोलयति, बोलयते] १ डूबना। २ डुबोना।

बुलिः (स्त्री०) भय। डर।

बुस् (धा० परस्मै०) [बुस्यति] निकालना। छोड़ना।

बुसं } बुषं } (न०) १ भूसी। २ रद्दी। कूड़ा कर्कट। ३ उपरी। कंडा। ४ धन दौलत।

बुस्त् (धा० उभय०) [बुस्तयति बुस्तयते] १ सम्मान करना। अपमान करना।

बुस्तं (न०) भुना हुआ माँस विशेष।

बृशी } बृषी } बृसी } (स्त्री०) किसी महात्मा की गद्दी।

बृंह् (धा० पर०) [बृंहति, बृंहित] बढ़ना। उगना। २ दहाड़ना। गर्जना।

बृंहणं (न०) हाथी की चिंघार।

बृंहित (व० कृ०) १ उगा हुआ। बढ़ा हुआ। २ गर्जता हुआ।

बृंहितं (न०) हाथी की चिंघार।

बृह् (धा० पर०) [बर्हति, बृहति] १ बढ़ना। उन्नत होना। फैलना। २ गर्जना।

बृहत् (वि०) [स्त्री०—बृहती] १ बहुत बड़ा। विशाल। भारी। २ चौड़ा। ओंड़ा। बहुत विस्तार युक्त। ३ विपुल। ४ बलवान्। ५ लंबा। ६ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। ७ ठसा हुआ। सघन। (स्त्री०) व्याख्यान। (न०) १ वेद। २ साम वेद का नाम। ३ ब्रह्म का नाम। —अङ्ग, —काय, (वि०) बड़े भारी डीलडौल का। —अङ्गः, (पु०) हाथी। —आरण्यं, —आरण्यकं, (न०) एक प्रसिद्ध उपनिषद् जो शतपथ में ब्राह्मण के अन्तिम ६ अध्याय में वर्णित है। —एला, (स्त्री०) बड़ी इलायची। —कुक्षिः, (वि०) बड़े पेट वाला। —केतुः, (पु०) अग्नि का नाम। —गृहः, (पु०) देश विशेष। —चित्तः, (पु०) नीबू या जंभीरी का वृक्ष। —ढक्का, (स्त्री०) बड़ा ढोल। —नटः, —नलः, (पु०) नला, (स्त्री०) विराट के दरबार में जिन दिनों अर्जुन छिप कर रहते थे, उन दिनों वे इसी नाम से वहाँ परिचित थे। —नेत्र, (वि०) दूरदर्शी। विवेकी। —पाटलिः, (पु०) धतूरे का फल। —पालः, (पु०) वट या गूलर का वृक्ष। —भट्टारिका, (स्त्री०) दुर्गा का नाम। —भानुः, (पु०) अग्नि। —रथः, (पु०) १ इन्द्र। २ जरासन्ध के पिता का नाम। —राविन्, (पु०) छोटी जाति का उल्लू। —स्फिच्, (वि०) बड़े नितंबों वाला।

बृहतिका (स्त्री०) उत्तरीयवस्त्र। चादर।

बृहस्पतिः (पु०) १ देवताओं के गुरु। २ बृहस्पति ग्रह। ३ एक स्मृतिकार का नाम। —पुरोहितः, (पु०) इन्द्र का नाम। —वारः, —वासरः, (पु०) गुरुवार।

बेडा (स्त्री०) नाव। बोट।

बेह् (धा० आत्म०) [बेहते] प्रयत्न करना। उद्योग करना। कोशिश करना।

बैजिक (वि०) [स्त्री०—बैजिकी] १ बीर्य सम्बन्धी। २ असली। ३ गर्भाधान सम्बन्धी। ३ सम्भोग सम्बन्धी।

बैजिक (न०) उपादान कारण। उद्गम स्थल। निकास।

बैजिकः (पु०) अँखुआ। अङ्कुर।

बैडाल (वि०) [स्त्री०—बैडाली] बिल्ली सम्बन्धी। —व्रतं, (न०) बिल्ली की तरह ऊपर से तो बहुत सीधा साधा बना रहना पर समय पर घात करना। —व्रतिः, (पु०) कपटी। छली। वह पुरुष जो पवित्र जीवन व्यतीत इस लिये करे कि बिना ऐसा किये उसके फँसाये कोई स्त्री फँसे ही नहीं। —व्रतिकः, —व्रतिन्, (पु०) पाखण्डी साधु। दम्भी सन्त। नास्तिक।

बैन्दिकः } बैम्बिकः } (पु०) रसिक। रसीया।

बैल्व (वि०) [स्त्री०—बैल्वी] १ बेल वृक्ष सम्बन्धी

या बेल वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ। २ बेल के पेड़ों से आच्छादित।

बैल्वं (न०) बेल वृक्ष का फल।

बोधः (पु०) १ जानकारी। ज्ञान। जानने का भाव। २ विचार। ३ बुद्धि। समझ। ४ जागृति। चैतन्यता। ५ खिलना। फैलना। खुलना। ६ निर्देश। अनुमति। ७ उपाधि। संज्ञा। —अतीत, (वि०) ज्ञान के परे। —कर, (वि०) जनाने वाला। बतलाने वाला। —करः, (पु०) १ वंदीजन जो राजाओं को जगाया करते थे। २ शिक्षक। अध्यापक। —गम्य, (वि०) जो समझ में आ जाय। —पूर्व (वि०) इरादतन। जानबूझकर। —वासरः, (पु०) देवोत्थानी एकादशी, जो कार्तिक शुक्ल पक्ष में होती है।

बोधक (वि०) [स्त्री०—बोधिका] १ बतलाने वाला। आगाह करने वाला। २ सिखलाने वाला। शिक्षक। ३ सूचक। ४ जगाने वाला।

बोधकः (पु०) जासूस। भेदिया।

बोधनं (न०) ज्ञापन। जताना। सूचित करना। २ जगाना। ३ उद्दीपन। ४ धूप देना।

बोधनः (पु०) १ बुधग्रह।

बोधनी (स्त्री०) १ कार्तिक शुक्ला ११ शी। २ बड़ी पीपल।

बोधानः (पु०) १ बुद्धिमान पुरुष। २ बृहस्पति का नामान्तर।

बोधिः (पु०) १ पूर्ण ज्ञान। २ वट वृक्ष। ३ मुर्गा। ४ बुद्ध देव का नामान्तर। —तरु,—द्रुमः, —वृक्षः, (पु०) वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध भगवान् ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। —दः (पु०) जैनियों का अर्हत। —सत्त्वः, (पु०) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो परन्तु बुद्ध न हो सका हो।

बोधित (व०) १ जनाया हुआ। प्रकट किया हुआ। २ स्मरण दिलाया हुआ। ३ आदेश दिया हुआ। सूचित किया हुआ।

बौद्ध (वि०) [स्त्री०—बौद्धी] १ बुद्धि या समझ से सम्बन्ध रखने वाला। २ बुद्ध से सम्बन्ध रखने वाला।

बौद्धः (पु०) बौद्ध धर्म का मानने वाला।

बौधः (पु०) पुरूरवा का नामान्तर।

बौधायनः (पु०) एक प्राचीन लेखक का नाम।

ब्रध्नः (पु०) १ सूर्य। २ वृक्षमूल। पेड़ की जड़। ३ दिवस। ४ मदार का पौधा। ५ सीसा। जस्ता। ६ घोड़ा। ७ शिव या ब्रह्मा।

ब्रह्मं (न०) परमात्मा।

ब्रह्मण्य (वि०) १ ब्रह्म सम्बन्धी। २ पवित्र। ३ ब्राह्मण के योग्य। ४ ब्राह्मणों से प्रीति करने वाला। —देवः, (पु०) विष्णु भगवान्।

ब्रह्मण्यः (पु०) १ वह जो वेदों में निष्णात हो। २ शहतूत का वृक्ष। ३ ताड़ का पेड़। ४ मूँज। ५ शनिग्रह। ६ विष्णु का नामान्तर। ७ कार्तिकेय।

ब्रह्मण्या (स्त्री०) दुर्गा देवी की उपाधि।

ब्रह्मण्वत् (न०) अग्नि का नामान्तर।

ब्रह्मता (स्त्री०) } १ शुद्ध ब्रह्म भाव। २ ब्राह्मणत्व।
ब्रह्मत्वं (न०) } ३ ब्रह्म में लीनता।

ब्रह्मन् (न०) १ परमात्मा। परब्रह्म। २ स्तुति की एक ऋचा। ३ धर्म ग्रन्थ। ४ वेद। ५ प्रणव। ओंकार। ६ ब्राह्मण वर्ण। ७ ब्राह्मी शक्ति। ८ तप। ९ कीर्ति। शुचिता। १० मोक्ष। ११ वेदों का ब्राह्मण भाग। १२ सम्पत्ति। धन। दौलत। १३ ब्रह्मविद्या। (पु०) १ विष्णु। २ ब्राह्मण। ३ भक्तजन। ४ सोमयज्ञ के चार ऋत्विजों में से एक। ५ ब्रह्मविद्या जानने वाला। ६ सूर्य। ७ प्रतिभा। ८ सप्त प्रजापतियों का नामान्तर। [सप्त प्रजापति —मरीचि, अत्रि, अँगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ] ९ बृहस्पति का नामान्तर। १० शिव। —अक्षरं, (न०) प्रणव। ओंकार। —अङ्गभूः,— (पु०) १ घोड़ा। २ वह पुरुष जिसने मन्त्रोच्चारण पूर्वक घोड़े के भिन्न भिन्न शरीरावयवों का स्पर्श किया हो। —अञ्जलिः, (पु०) मंत्र पढ़ते हुए हाथ जोड़ना। वेदपाठारम्भ और वेदपाठ समाप्ति के समय गुरु को प्रणाम। —अण्डं, (न०) वह अँडा विशेष जिसके भीतर से यह सारा जगत् उत्पन्न हुआ। —पुराणं (=ब्रह्मपुराणम्) (न०) अठारह पुराणों में से एक। —अदि, या

—अद्रि जाता, (स्त्री०) गोदावरी नदी ।—अधिगमः, (पु०)—अधिगमनं, (न०) वेदाध्ययन ।—अम्भस्, (न०) गोमूत्र ।—अभ्यासः, (पु०) वेदाध्ययन ।—अयणः,—अयनः, (पु०) नारायण का नामान्तर । —अरण्य, (न०) १ ब्रह्मविद्या अध्ययन करने का स्थान । २ एक वन विशेष ।—अर्पणं, (न०) १ ब्रह्मज्ञान का अर्पण । २ ब्रह्म में अनुरागवान होना । ३ एक तांत्रिक प्रयोग का नाम । ४ श्राद्ध विशेष जिसमें पिण्डदान (खीर के पिण्ड) नहीं होता ।—अस्त्रं (न०) एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से अभिमन्त्रित कर चलाया जाता था । यह अमोघ अस्त्र समस्त अस्त्रों में श्रेष्ठ माना जाता था । आत्मभूः, (पु०) घोड़ा ।—आनन्दः, (पु०) ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव का आनन्द । ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्मसन्तोष ।—आरम्भः, (पु०) वेदाभ्यास का आरम्भ ।—आवर्तः, (पु०) सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच की भूमि का नाम विशेष । यथा

सरस्वती दृषद्वत्यो र्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥

—मनु

—आसन, (न०) वह आसन विशेष जिसके अनुसार बैठ कर ब्रह्म का ध्यान किया जाता है ।—आहुतिः, (स्त्री०) १ ब्रह्मयज्ञ । २ वेदाध्ययन ।—उज्झता, (स्त्री०) वेदाध्ययन सम्बन्धी प्रमाद या उनके अध्ययन से विमुखता ।—उद्यं, (न०) वेदों की व्याख्या अथवा ब्रह्मविद्या सम्बन्धी विषयों पर विचार ।—उपदेशः, (पु०) ब्रह्मविद्या या वेदों को पढ़ाना । —ऋषिः, (= ब्रह्मर्षि या ब्रह्मऋषि) ब्राह्मण ऋषि ।—ऋषिदेशः, (= ब्रह्मर्षिदेशः) (पु०) प्रान्त विशेष । [यथा

"कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः ।
एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः ॥

—मनु ।

—ओदनः, (पु०)—ओदनम्, (न०) यज्ञ में यज्ञ कराने वालों को दिया जाने वाला भोजन ।—कन्यका, (स्त्री०) सरस्वती ।—करः, (पु०) यज्ञ कराने वालों को दी जाने वाली दक्षिणा ।—कर्मन्, (न०) १ ब्राह्मण का अनुष्ठेय कर्म । २ यज्ञ में प्रधान चार यज्ञ कराने वालों में से एक ।—कला, (स्त्री०) दाक्षायणी का नामान्तर ।—कल्पः, (पु०) ब्रह्मकल्प । उतना समय जितने में एक ब्रह्मा रहता है ।—काण्डं, (न०) वेद का वह भाग जिसमें ज्ञानकाण्ड है ।—काष्ठः, (वि०) शहतूत का पेड़ ।—कूर्चम्, (न०) रजस्वला के स्पर्श या इसी प्रकार की अन्य अशुद्धि दूर करने के लिये एक व्रत विशेष । इसमें एक दिन निराहार रह कर दूसरे दिन पञ्चगव्य दिया जाता है ।—कृत, (वि०) स्तुति करने वाला । (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—कोशः, (पु०) समस्त वेदराशि ।—गुप्तः, (पु०) एक ज्योतिषी का नाम जो ईसा की ५९८ ई० में उत्पन्न हुआ था ।—गोलः, (पु०) ब्रह्माण्ड ।—ग्रन्थिः, (पु०) शरीर की ग्रन्थि विशेष ।—ग्रहः,—पिशाचः,—पुरुषः,—रक्षस्, (न०)—राक्षसः, (पु०) ब्रह्मराक्षस । ब्रह्मराक्षस होने का कारण याज्ञवल्क्य स्मृति में यह लिखा है ।

" परस्य योषितं हृत्वा ब्रह्मस्वमपहृत्य च ।
अरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षसः ॥

—घातकः,—घातिन्, (पु०) ब्राह्मण की हत्या करने वाला ।—घातिनी, (स्त्री०) रजस्वला होने के दूसरे दिन की उस स्त्री की संज्ञा ।—घोष, (पु०) १ वेदाध्ययन । २ वेदपाठ ।—घ्नः, (पु०) ब्राह्मण की हत्या करने वाला ।—चर्यं, (न०) धर्म शास्त्रानुसार ब्रह्मचारी का व्रत । प्रथम आश्रम ।—चारिकं (न०) ब्रह्मचारी का जीवन ।—चारिन्, (वि०) १ वेदाध्ययन करने वाला । २ ब्रह्मचारी (पु०) वह जो आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करने का सङ्कल्प किये हुए हो । ३ शिव जी । ४ स्कन्द ।—चारिणी, (स्त्री०) १ दुर्गा की उपाधि । २ सती स्त्री ।—जः, (पु०) कार्तिकेय ।—जन्मन्, (न०) उपनयन संस्कार । —जारः (पु०) १ ब्राह्मणी का उपपति । २ इन्द्र ।—जीविन्, (वि०) १ श्रौतस्मार्त कर्म करा कर जीविका चलाने वाला ।

२ वेतनभोगी या स्वार्थसेवी ब्राह्मण ।—ज्ञः, (पु०) १ कार्तिकेय । २ विष्णु ।—ज्ञानं (न०) ब्रह्मविद्या ।—ज्योतिस्, (न०) शिव । —तत्वं (न०) ब्रह्म सम्बन्धी सत्यज्ञान ।—दः (पु०) दीक्षा गुरु ।—दण्डः, (पु०) १ ब्राह्मण का शाप । २ब्राह्मण की प्रशंसा । ३शिव —दानं, (न०) वेद पढ़ाना ।—दायः (पु०) वेदों की शिक्षा । २ ब्राह्मण की सम्पत्ति ।—दायादः, (पु०) १ ब्राह्मण जिसकी वेद पैतृक सम्पत्ति है । २ ब्राह्मणपुत्र ।——दारु, (पु०) शहतूत का पेड़ ।—दिनं, (न०) ब्रह्मा का एक दिन जो १०० चतुर्युगियों का माना जाता है । —देय, (वि०) ब्राह्मविवाह के नियमानुसार विवाहित । - ब्रह्मदैत्यः (पु०) ब्राह्मण जो दैत्य होगया हो ।—द्विष् —द्वेषिन्, (वि०) ब्राह्मणों से घृणा करने वाला । नास्तिक । - द्वेषः, (पु०) ब्राह्मणों से घृणा ।—नदी, (स्त्री०) सरस्वती नदी ।—नाभः, (पु०) विष्णु ।—निष्ठ, (वि०) ब्रह्म के ध्यान में मग्न रहने वाला । —निष्ठः, (पु०) शहतूत का पेड़ ।—पदं, (न०) १ ब्रह्मत्व । २ ब्राह्मणत्व ।—पवित्रः, (पु०) दर्भ । कुश ।—परिषद्, (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा —पादपः—पत्रः, (पु०) पलाश का पेड़—पाशः, (पु०) ब्रह्मा का पाश नामक अस्त्र ।—पितृ, (पु०) विष्णु ।—पुत्रः, (पु०) १ ब्राह्मण का बेटा । एक नद का नाम । यह मानसरोवर से निकल कर हिमालय के पूर्वी प्रान्त आसाम में हो कर भारत में प्रवेश करता है और बंगाल की खाड़ी में गिरता है ।—पुत्री, (स्त्री०) सरस्वती नदी ।—पुरं, (न०) हृदय । —पुरं, (न०)—पुरी, (स्त्री०) १ ब्रह्मलोक । २ बनारस । – पुराणं, (न०) पुराण विशेष । – प्राप्तिः, (स्त्री०) ब्रह्म में लीनता ।—बन्धुः, (पु०) पतित ब्राह्मण । - बीजं (न०) प्रणव। ओङ्कार ।—ब्रुवः,—ब्रुवाणः, (पु०) बनावटी ब्राह्मण ।—भागः, (पु०) १ शहतूत का पेड़ । २ यज्ञ कराने वालों में प्रधान का भाग ।—मङ्गल-देवता, (स्त्री०) लक्ष्मी देवी का नामान्तर ।—महः, (पु०) ब्राह्मणों के उपलक्ष्य में किया हुआ उत्सव । —मीमांसा, (स्त्री०) वेदान्त दर्शन ।—मूर्धभृत्, (पु०) शिव ।—मेखलः, (पु०) मूंज तृण । —यज्ञ (पु०) १ पञ्चमहायज्ञों में से एक । २ विधि पूर्वक वेदाभ्यास ।—योगः, (पु०) आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि ।—योनि (वि०) ब्रह्म से उत्पन्न ।—रन्ध्रं, (न०) ब्रह्माण्ड द्वार । मूर्द्धा या छेद । मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिससे प्राण निकलने पर ब्रह्मलोक में उस जीव का जाना माना जाता है ।—रातः, (पु०) शुकदेव जी ।—राशिः, (पु०) परशुराम का एक नाम । बृहस्पति से आक्रान्त श्रवण नक्षत्र । —रीतिः, (स्त्री०) पीतल विशेष ।—रेखा,—लेखा, (स्त्री०) —लिखितं, (न०) —लेखः, (पु०) भाग्य व अभाग्य का लेख जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं ।—लोक, (पु०) ब्रह्मा का लोक ।—वक्तृ, (पु०) वेदों का व्याख्याता ।—वधः, (पु०) —वध्या, —वर्चस् (न०) —वर्चसं, (न०) वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मण तप एवं स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करता है । ब्रह्मतेज ।—वर्धनं (न०) ताँबा ।—वादिन्, (पु०) १ वेदों को पढ़ाने या सिखाने वाला । २ वेदान्ती ।—विद्,—विद, (वि०) ब्रह्म को जानने वाला । (पु०) ऋषि । ब्रह्मवेत्ता । दार्शनिक ।—विद्या, (स्त्री०) वह विद्या जिसके द्वारा कोई ब्रह्म को जान सके । —हत्या, (स्त्री०) ब्राह्मण की हत्या ।

विंदुः } विन्दुः } (पु०) वेद पाठ करते समय मुँह में गिरा हुआ थूक का छींटा ।—विवर्धनः (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।—वृक्षः, (पु०) १ पलाश या ढाँक का पेड़ । २ गूलर वृक्ष ।—वृत्तिः, (स्त्री०) ब्राह्मण की आजीविका ।—वृन्दं, (न०) ब्राह्मणों का समुदाय ।—वेदः, (पु०) १ वेद का ज्ञान । २ ब्रह्मज्ञान । ३ अथर्व वेद का नाम ।—वेदिन्, (वि०) वेदों का जानने वाला ।—वैवर्त, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक । – शिरस्,—शीर्षन्, (न०)

अस्त्र विशेष। इस अस्त्र का चलाना अगस्त्य जी से सीख कर द्रोणाचार्य ने अर्जुन और अश्वत्थामा को सिखाया था।—समद्, (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा।—सती, (स्त्री०) सरस्वती नदी।—सत्रं, (न०) ब्रह्मयज्ञ।—सदस्, (न०) ब्राह्मण का निवास स्थान।—सभा, (स्त्री०) ब्राह्मणों की कचहरी। या न्यायालय जहाँ ब्राह्मण न्याय करता हो।—सम्भव, (वि०) ब्राह्मण से उत्पन्न।—सम्भवः, (पु०) नारद जी का नाम।—सर्प (पु०) सर्प विशेष। —सायुज्य, (न०) ब्रह्मसूत्र।—सार्ष्टिका, (पु०) ब्रह्म में एकत्व।—सावर्णिः, (पु०) दसवे मनु का नाम।—सुनः (पु०) १ नारद मरीचि आदि सप्तर्षिगण। २ केतु विशेष। —सूः, (पु०) १ अनिरुद्ध। २ कामदेव।—सूत्रं, (न०) यज्ञोपवीत। बादरायण रचित ब्रह्मसूत्र। इसमें ब्रह्म का प्रतिपादन है और ये वेदान्त दर्शन के आधार हैं।—सृज्, (पु०) शिव जी।—स्तस्वः, (पु०) संसार। दुनिया।—स्तेयं, (न०) सत्यज्ञान की प्राप्ति, अनुचित उपायों से। —हन्, (वि०) ब्राह्मण की हत्या करने वाला। —हृदयः (पु०) —हृदयं, (न०) प्रथम वर्ग के १६ नक्षत्रों में से एक जिसे अँगरेजी में कैपेल्ला पुकारते हैं।

ब्रह्ममय (वि०) १ वेद सम्बन्धी। २ ब्राह्मण के योग्य।

ब्रह्ममयं (न०) ब्रह्मास्त्र।

ब्रह्मवत् (वि०) आध्यात्मिक ज्ञान सम्पन्न।

ब्रह्माणी (स्त्री०) १ ब्रह्मा जी की स्त्री। २ दुर्गा की उपाधि। ३ रेणु का नामक गन्धद्रव्य। पीतल।

ब्रह्मिन् (वि०) ब्रह्म सम्बन्धी। (पु०) विष्णु।

ब्रह्मिष्ठ (वि०) बड़ा विद्वान। वेदविद्या में विशारद।

ब्रह्मिष्ठा (स्त्री०) दुर्गा की उपाधि।

ब्रह्मी (स्त्री०) रुखरी विशेष।

ब्रह्मेशयः (पु०) १कार्तिकेय। २ विष्णु।

ब्राह्म (वि०) [स्त्री०—ब्राह्मी] १ परब्रह्म सम्बन्धी। २ ब्राह्मणों का। ३ वेदाध्यन सम्बन्धी। ४ वैदिक। ५ पवित्र। ६ जिसका अधिष्ठाता ब्रह्मा हो।

ब्राह्मं (न०) १ हाथ के अँगूठे के नीचे का स्थान। २ धर्मग्रन्थों का अध्ययन।—अहोरात्रः, (पु०) ब्रह्मा का एक दिन और एक रात।—देया, (स्त्री०) कन्या जिसका विवाह ब्रह्मविवाह की विधि से होने वाला हो।—मुहूर्तः, (पु०) रात के पिछले पहर के अन्तिम दो दण्ड। सूर्योदय से पूर्व, दो घड़ी तक का समय।

ब्राह्मः (पु०) १ आठ प्रकार के विवाहों में से एक। २ नारद।

ब्राह्मण (वि०) [स्त्री०—ब्राह्मणी] १ ब्राह्मण का। २ ब्राह्मणोपयोगी। ३ ब्राह्मण का किया हुआ।

ब्राह्मणः (पु०) १ चारों वर्णों में प्रथम और श्रेष्ठ वर्ण। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में ब्राह्मण की उत्पत्ति विराट् पुरुष के मुख से वर्णित है। २ यज्ञ कराने वाला। ब्रह्मवादी ३ अग्नि।

ब्राह्मणम् (न०) १ ब्राह्मणों की सभा। २ वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता और जिसमें वेद के मंत्रों का यज्ञ कार्यों में प्रयोग बतलाया गया है। वेद के मंत्रभाग से यह भिन्न है। प्रत्येक वेद का ब्राह्मण पृथक है। यथा

वेद	ब्राह्मण
ऋग्वेद, —	ऐतरेय, या आश्वालायन और कौशीतकी या साँख्यायन।
यजुर्वेद, —	शतपथ।
सामवेद, —	पञ्चविंश और षडविंश और ६ अन्य भी हैं।
अथर्ववेद, —	गोपथ।

—अतिक्रमः, (पु०) ब्राह्मण के प्रति अपमान। ब्राह्मण की अवज्ञा या तिरस्कार।—जातं, (न०) - जातिः, (स्त्री०) ब्राह्मण जाति। —जीविका, (स्त्री०) ब्राह्मण वृत्ति।—द्रव्यं, —स्वं, (न०) ब्राह्मण का धन।—निन्दकः, (पु०) नास्तिक। ब्राह्मण की निन्दा करने वाला। —ब्रुवः, (पु०) कहलाने भर का ब्राह्मण। कर्म और संस्कार हीन ब्राह्मण।—सन्तर्पणं, (न०) ब्राह्मणों को तृप्त या सन्तुष्ट करने वाला।

ब्राह्मणकः (पु०) १ नाम मात्र का ब्राह्मण । निकृष्ट अथवा अयोग्य ब्राह्मण । २ उस देश विशेष का नाम जहाँ शस्त्रप्रिय ब्राह्मण वास करते थे ।

ब्राह्मणत्रा (अव्यया०) १ ब्राह्मणों में । २ ब्राह्मण की दशा में ।

ब्राह्मणाच्छंसिन् (पु०) सोमयाग में ब्रह्मा का सहकारी एक ऋत्विक् ।

ब्राह्मणी (स्त्री०) १ ब्राह्मण जाति की स्त्री । २ ब्राह्मण की पत्नी । ३ बुद्धि । ४ गिरगट की जाति का एक जन्तु विशेष ।—गामिन्, (पु०) ब्राह्मणी का उपपति ।

ब्राह्मण्य (वि०) ब्राह्मणत्व ।

ब्राह्मण्यं (न०) १ ब्राह्मणत्व । २ ब्राह्मणों का समुदाय ।

ब्राह्मण्यः (पु०) शनिग्रह का नामान्तर ।

ब्राह्मी (स्त्री०) १ ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति । २ सरस्वती । ३ वाणी । ४ कहानी । कथा । ५ धर्मानुष्ठान । धार्मिक कृत्यों की रस्म । ६ रोहिणी नक्षत्र । ७ दुर्गा । ८ ब्राह्म विवाह से परिणीत स्त्री । ९ ब्राह्मण की पत्नी । १० जड़ी विशेष । ११ पीतल । १२ एक नदी का नाम ।—कन्दः, (पु०) वाराही कंद ।—गायत्री, (स्त्री०) एक वैदिक छन्द । इसमें ४२ वर्ण होते हैं ।—जगती (स्त्री०) वैदिक छन्द विशेष, जिसमें ७२ वर्ण होते हैं ।—पंक्ति, (स्त्री०) वैदिक छन्द विशेष, जिसमें ६० वर्ण होते हैं ।—बृहती, (स्त्री०) वैदिक छन्द जिसमें ५४ वर्ण होते हैं ।

ब्राह्म्य (वि०) [स्त्री०—ब्राह्म्यी] १ ब्रह्म सम्बन्धी । २ परब्रह्म सम्बन्धी । ३ ब्राह्मणों से सम्बन्ध रखने वाला ।—हुतं (न०) ब्रह्मयज्ञ ।

ब्राह्म्यं (न०) आश्चर्य । विस्मय ।

ब्रुव (वि०) बनावटी ।

ब्रू (धा० उभय०) [ब्रवीति, ब्रूते; आह,] १ कहना । २ बोलना । ३ पुकारना । ४ उत्तर देना ।

ब्लेस्कं (न०) फंदा । जाल । पाश ।

भ

भ—संस्कृत वर्णमाला का चौबीसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का चौथा वर्ण । इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है और इसका प्रयत्न संवार, नाद और घोष है । यह महाप्राण है और इसका अल्पप्राण "ब" है ।

भं (न०) १ नक्षत्र । २ राशि । ३ ग्रह । ४ तारा । ५ सत्ताइस की संख्या ६ मधुमक्खी ।

भः (पु०) १ शुक्र ग्रह । २ भ्रम । माया ।—ईनः, —ईशः (पु०) सूर्य ।—गणः,—वर्गः, (पु०) १ सितारों का समुदाय । २ राशिचक्र । ३ राशिचक्र में ग्रहों का भ्रमण ।—गोलः, (पु०) नक्षत्रचक्र । —चक्रं, —मण्डलं, (न०) राशिचक्र ।—पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।—सूचक, (पु०) ज्योतिषी ।

भक्किका (स्त्री०) गेंदबल्ला का खेल ।

भक्त (व० कृ०) १ बाँटा हुआ । निर्दिष्ट किया हुआ । २ विभाजित । ३ पूजन किया हुआ । ४ संलग्न । ५ अनुरक्त । ६ सम्हारा हुआ । पकाया हुआ ।—अभिलाषः, (पु०) भूख । भोजन करने की इच्छा ।—उपसाधकः, (पु०) रसोइया । पाचक ।—कंसः, (पु०) भोजन के पदार्थों से भरी हुई थाली ।—करः, (पु०) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य जो अनेक अन्य द्रव्यों को मिला कर बनाया जाता है ।—कारः, (पु०) रसोइया । पाचक ।—छन्दः, (न०) भूख ।—दासः, (पु०) भोजन मात्र पाने पर खिदमत करने वाला ।—द्वेषः (पु०) भोजन के प्रति अरुचि ।—मण्डं, (न०) माँड ।—रोचन, (वि०) भूख बढ़ाने वाला ।—वत्सल, (वि०) भक्तों पर कृपा करने वाला । —शाला, (स्त्री०) प्रार्थियों से मुलाकात करने का कमरा । भोजन गृह ।

भक्त (न०) १ हिस्सा । अंश । बाँट । २ भोजन । ३ भात । उबाला हुआ कोई भी भोज्य पदार्थ ।

भक्तः (पु०) पूजक । पूजन करने वाला । उपासक ।

भक्तिः (स्त्री०) १ भिन्नता । पृथकता । बटवारा । बाँट । २ विभाग । अँश । हिस्सा । ३ अनुराग । श्रद्धा । ४ सम्मान । सेवा । पूजन । मानप्रदर्शन । ५ बिनावट । ६ सजावट । ७ विशेषण ।—नम्र,-पूर्व, —पूर्वक, (अव्यया०) अनुरागयुक्त । सम्मान सहित ।—भाज, (वि०) विश्वस्त । अनुरागवान —मार्गः (पु०) भक्तियोग । भक्ति का वह साधन जिसके द्वारा भगवद् प्राप्ति हो ।—भोगः, (पु०) भक्ति का साधन ।

भक्तिमत (वि०) अनुरागी । सच्चा विश्वास रखने वाला ।

भक्तिल (वि०) १ भक्तिदायक । २ विश्वस्त । सच्चा ।

भक्ष (धा० उभय०) [भक्षयति-भक्षयते, भक्षति] खाना । भक्षण करना । २ निघटाना । ३ खराब करना । नाश करना । ४ डसना । काटना ।

भक्षः (पु०) १ भोजन करना । २ भोज्य पदार्थ ।

भक्षक (वि०) [स्त्री० - भक्षिका] १ खाने वाला । २ पेटू । भोजनभट्ट ।

भक्षण (वि०) [स्त्री०—भक्षणी] खाने वाला ।

भक्षणं (न०) खाना ।

भक्ष्य (वि०) खाने योग्य ।—कारः, (पु०) भक्ष्यंकारः भी होता है । नानबाई । पाचक । रसोइया ।

भक्ष्यं (न०) भोज्य पदार्थ ।

भगं (न०) उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।

भगः (पु०) १ सूर्य के द्वादश रूपों में से एक । २ चन्द्रमा । ३ शिव का रूप विशेष । ४ सौभाग्य । ५ समृद्धि । ६ गौरव । ७ कीर्ति । ८ मनोहरता । सौन्दर्य । ९ सर्वोत्तमता । १० प्रेम । स्नेह । ११ आमोदप्रमोद । १२ सद्गुण । नय । धर्म । १३ उद्योग । प्रयत्न । १४ निरपेक्षता (साँसारिक पदार्थों के प्रति) १५ मोक्ष । मुक्ति । १६ बल । शक्ति । १७ सर्वव्यापकता ।—अङ्कुरः, (पु०) बवासीर । अर्शरोग ।—घ्नः, (पु०) शिव जी । —देवः, (पु०) पल्ले दर्जे का कामुक या लंपट । —देवता, (स्त्री०) विवाह का अधिष्ठाता देवता । —दैवतं, (न०) उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।—नन्दनः, (पु०) विष्णु ।—भक्षकः, (पु०) कुटना । भडुआ ।

भगंदरः } (पु०) गुदावर्त के किनारे होने वाला
भगन्दरः } एक रोग ।

भगवत् (वि०) १ऐश्वर्ययुक्त । २ पूज्य । सम्माननीय । देवी । (पु०) १ देवता । २ विष्णु । ३ शिव । ४ जिन । ५ बुद्ध देव ।

भगवदीयः (पु०) भगवान विष्णु का उपासक ।

भगालं (न०) खोपड़ी ।

भगालिन् (पु०) शिव ।

भगिन् (वि०) [स्त्री०—भगिनी] १ समृद्धशाली । प्रसन्न । भाग्यवान् । २ प्रतापी । शानदार ।

भगिनिका (स्त्री०) बहिन ।

भगिनी (स्त्री०) १ बहिन । २ सौभाग्यवती स्त्री । ३ स्त्री ।—पतिः, (पु०) —भर्तृ, (पु०) बहनोई । बहिन का पति ।

भगिनीयः (पु०) भाँजा । बहिन का पुत्र ।

भगीरथः (पु०) सूर्यवंशी एक प्राचीन राजा का नाम जिसने तप कर गङ्गा को मृत्युलोक में बुलाया ।—पथः,—प्रयत्नः, (पु०) बड़ा भारी परिश्रम ।—सुता, (स्त्री०) श्रीगङ्गा जी ।

भग्न (व० कृ०) १ टूटा फूटा । फटा हुआ । २ पराजित । हताश । ३ पकड़ा हुआ । थामा हुआ । रोका हुआ । ४ निर्बल किया हुआ । ५ भलीभाँति पराजित किया हुआ । ६ नष्ट किया हुआ ।—आत्मन, (पु०) चन्द्रमा ।—आपद् (वि०) वह जिसने विपत्तियों अथवा अपने दुर्भाग्य पर विजय प्राप्त की हो ।—आश, (वि०) निराश । हताश । उत्साह, (वि०) हतोत्साह ।—पृष्ठ, (वि०) १ टूटी हुई पीठ वाला । २ सामने आने वाला । —प्रतिज्ञ, (वि०) वह जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी हो । -मनस, (वि०) हताश ।—व्रत, (वि०) वह जिसने अपना व्रत भङ्ग कर डाला

हो।—सङ्कल्प (वि०) वह जिसका विचार विफल हुआ हो।

भग्नं (न०) पैर की हड्डी का टूटना।

भग्नी (स्त्री०) बहिन।

भंकारी, भङ्कारी, भंगारी, भङ्गारी (स्त्री०) मच्छड़। डाँस।

भंक्तिः, भङ्क्तिः (स्त्री०) टूटन। (हड्डी का) टूटना।

भंगः, भङ्गः (पु०) १ टूटने का भाव। टूट। दरार। २ अलहदगी। पृथक्ता। ४ अँग। हिस्सा। टुकड़ा। टूक। ५ पात। अधःपात। नाश। विनाश। ६ भगदड़। ७ पराजय। ८ असफलता। ९ अस्वीकृति। इंकार। १० दर्द। ११ बाधा। रुकावट। गड़बड़ी। १२ प्रतिबन्ध। मुश्रत्तली। किसी कार्य के स्थगित करने की क्रिया। १३ भाग जाने की क्रिया। १४ फेर। मोड़। तह। लहरिया। १५ सिकोड़न। झुकाव। बुनन। १६ गमन। १७ लकवा का रोग। १८ छल। धोखा। १९ नहर। जलमार्ग। २० घूम घुमाकर कोई बात कहने का ढंग। २१ पटसन। पटुआ।—नयः, (पु०) बाधाओं को दूर करने की क्रिया।—वासा, (स्त्री०) हलदी। हरिद्रा।—सार्थ, (वि०) बेईमान। दगाबाज।

भंगा, भङ्गा (स्त्री०) १ पटसन पटुआ। २ भांग।

भंगिः, भङ्गिः, भंगी, भङ्गी (स्त्री०) १ टूटन। फटन। विभाजन। २ लहर ३ झुकाव। टेढ़ाई। सकुड़न। ४ लहर। ५ जल की बाढ़। धार। ६ टेढ़ा मेढ़ा मार्ग। ७ घूम घुमाकर बात कहने का ढंग। ८ बहाना। अनुग्रा। ९ फरेब। चाल। दग़ा। १० व्यङ्ग्योक्ति। ११ रसिकता पूर्ण उत्तर। १२ पग। कदम। १३ अन्तर। समय। १४ हया-दारी। लज्जाशीलता।—भक्तिः, (स्त्री०) लहरियादार जीना।

भंगिन्, भङ्गिन् (वि०) निर्बल। कमजोर। नश्वर।

भंगिमत्, भङ्गिमत् (वि०) लहरियादार।

भंगिमन्, भङ्गिमन् (पु०) (हड्डी का) टूटना। दुगर। फटन। २ मुड़ाव। टेढ़ापन। ३ घुंघराला-पन। ४ धोखा। छल। ५ व्यङ्ग। ६ हठ। निठुराई। सगराई। कुचाल।

भंगिलं, भङ्गिलम् (न०) ज्ञानेन्द्रियों का विकार।

भंगुर, भङ्गुर (वि०) १ भंग होने वाला। नाशवान। २ परिवर्तनशील। ३ टेढ़ा। ४ घूमघुमौआ। घुंघराला। ५ दगाबाज़। बेईमान। मुतफन्नी।

भंगुरः, भङ्गुरः (पु०) नदी का मोड़ या घुमाव।

भज् (धा० उभय०) [भजति, भजते] १ बँटवारा करना। २ अपने लिये प्राप्त करना। ३ अङ्गीकार करना। प्राप्त करना। ४ आश्रय लेना। सहारा पकड़ना। ५ अभ्यास करना। अनुगमन करना। आलोचना करना। ६ उपयोग करना। अधिकार में करना। ७ परिचर्या करना। ८ सम्मान करना। ९ पूजा करना। १० चुनना। छाँटना। पसंद करना। ११ सम्भोग करना। १२ अनुरक्त होना। १३ कब्ज़ा करना। अधिकार जमाना। १४ किसी के हिस्से में पड़ना।

भजकः (पु०) १ विभाग करने वाला। २ भजन करने वाला। उपासना करने वाला।

भजनं (न०) १ भाग। खण्ड। २ सेवा। पूजा। उपासना।

भजमान (वि०) १ विभाजक। २ उपयोग करने वाला। ३ योग्य। ठीक। उपयुक्त।

भंज्, भञ्ज् (धा० पर०)—[भनक्ति, भग्नः,] १ तोड़ना। चीर डालना। टुकड़े टुकड़े कर डालना। २ नाश करना। गिरा कर नष्ट कर डालना। ३ (किले में) सन्धि कर देना। ४ विफल करना। हताश करना। ५ रोकना। बाधा डालना। ६ हराना।

भंजक, भञ्जक (वि०) [स्त्री०—भञ्जिका] तोड़ने वाला। भङ्गकारी।

भंजन / भञ्जन (वि०) [स्त्री०—भंजनी] १ तोड़ने वाला। २ रोकने वाला। ३ विफल करने वाला। ४ उग्र पीड़ा देने वाला।

भंजनं / भञ्जनम् (न०) १ नाश। विनाश। ध्वंस। भंग। २ भगाना। हटाना। ३ खदेड़ना। विनय करना। ४ बाधा डालना। ५ पीड़ा देना।

भंजनः / भञ्जनः (पु०) दांतों का नष्ट होजाना।

भंजनकः / भञ्जनकः (पु०) एक रोग जिसमें दाँत गिर जाते और ओठ टेढ़ा हो जाता है।

भंजरुः / भञ्जरुः (पु०) मन्दिर के समीप लगा हुआ वृक्ष।

भट् (धा० परस्मै०) [भटति, भटित] १ पालना। पालन पोषण करना। २ भाड़े पर लेना। ३ मज़दूरी पाना।

भटः (पु०) १ योद्धा। सिपाही। लड़ने वाला। २ भाड़ेतू सिपाही। ३ पतित। जंगली। ४ राक्षस।

भटित्र (वि०) सींखचा पर भूना हुआ।

भट्टः (पु०) १ प्रभु। स्वामी। २ उपाधि विशेष। [यह उपाधि विद्वान ब्राह्मणों के नाम के पीछे लगायी जाती है।] ३ विद्वान। दार्शनिक। पण्डित। ४ वर्णसङ्कर विशेष। ५ भाट। बंदीजन। —आचार्य्यः (पु०) विद्वान की उपाधि।

भट्टार (वि०) मान्य। पूज्य।

भट्टारक (वि०) [स्त्री०—भट्टारिका,] मान्य। पूज्य।—वासरः, (पु०) रविवार।

भट्टिनी (स्त्री०) १ सम्राज्ञी। महारानी। २ ऊँचे पद की स्त्री। ३ ब्राह्मण की स्त्री।

भडः (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष।

भडिलः (पु०) १ योद्धा। शूरवीर। २ चाकर। अनुचर।

भण् (धा० परस्मै०) [भणति, भणित] १ कहना। बोलना। २ वर्णन करना। ३ नाम लेना। पुकारना।

भणनं (न०) / भणितं (न०) / भणितिः (स्त्री०) कथन। वार्तालाप। संवाद। बातचीत।

भंड् / भण्ड् (धा० आत्म०)—[भंडते] १ झिड़कना। डाँटना। पटना। २ चिढ़ाना। ३ बोलना। ४ उपहास करना। [भण्डयति, भण्डयते] १ भाग्यवान बनाना। २ ठगना। धोखा देना।

भंडः / भण्डः (पु०) १ भाँड़। हँसोड़ा। विदूषक। २ वर्णसङ्कर जाति विशेष।—तपस्विन, (पु०) कल्पित तपस्वी।—हासिनी, (स्त्री०) वेश्या। रंडी।

भंडकः / भण्डकः खञ्जन पक्षी।

भंडनं / भण्डनम् (न०) १ कवच। जिरहबख्तर। २ युद्ध। लड़ाई। ३ उपद्रव। दुष्टता।

भंडिः / भण्डिः / भंडी / भण्डी (स्त्री०) लहर।

भंडिल / भण्डिल (वि०) मङ्गलकारी। शुभ। समृद्ध-शाली। भाग्यशाली।

भंडिलः / भण्डिलः (पु०) १ सौभाग्य। आनन्द। कुशलता। २ दूत। ३ कलावन्त। कारीगर।

भंदतः / भन्दतः (पु०) १ प्रतिष्ठा सूचक बौद्ध धर्मा-नुयायी की उपाधि। २ बौद्ध भिक्षुक।

भदाकः (पु०) समृद्धि। सौभाग्य।

भद्र (वि०) शुभ। प्रसन्न। समृद्धशाली। २ मङ्गल-कारक। भाग्यवान। ३ सर्वाग्रणी। सर्वोत्तम। प्रधान। ४ अनुकूल। शुभ। ५ कृपालु। दयालु। श्रेष्ठ। अप्रतिकूल। ५ आनन्ददायी। उपभोग्य। ६ मनोहर। सुन्दर। ७ श्लाघ्य। वाञ्छित। प्रशंस्य। ८ प्यारा। प्रिय। ९ दिखावटी। बनावटी। पाखण्डी।—अङ्गः, (पु०) बलराम।—आकार,—आकृति, (वि०) शुभ डील डौल का।—आत्मजः, (पु०) खड्ग। तलवार।—आसनं, (न०) १ कुर्सी। तख्त। सिंहासन। २ ध्यान करने का आसन विशेष।—ईशः, (पु०) शिव जी।—एला, (स्त्री०) बड़ी इलायची।—कपिलः (पु०) शिव।—कारक, (वि०) मङ्गलकारी। शुभ।—काली, (स्त्री०) दुर्गा देवी।—कुम्भः, (पु०) सोने का घड़ा जिसमें गंगा जल भरा हो।—गणितं, (न०) यंत्र रचना या यंत्र लिखना।—घटः,—घटकः,

(पु०) वह घड़ा जिसमें नामों की गोली डालकर लाटरी या चिट्ठी निकाली जाती है ।—दारु, (पु० न०) सतौवर का पेड़ ।—नामन्, (पु०) खंजन पक्षी ।—पीठं (न०) १ राजसिंहासन । उच्चासन । २ एक प्रकार का पंख वाला कीड़ा । बलनः, (पु०) बलराम जी । बलदाऊ जी ।—मुख, (वि०) शुभ मुख वाला । वास्तव में यह सम्बोधन के रूप में "और सज्जन महोदय" के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।]—मृगः, (पु०) हाथी विशेष ।—रेणुः, (पु०) इन्द्र के हाथी का नाम ।—वर्मन्, (पु०) चमेली विशेष ।—शाखः, (पु०) कार्तिकेय ।—श्रयं, श्रियं, (न०) चन्दन ।—श्रीः, (स्त्री०) चन्दन का पेड़ ।—सोमा, (स्त्री०) गंगा ।

भद्रं (न०) १ प्रसन्नता । सौभाग्य । कुशलता । बरकत । समृद्धि । २ सुवर्ण । ३ लोहा । ईसपात ।

भद्रः (पु०) १ खंजन पक्षी । २ विशेष जाति के हाथी की उपाधि । ३ दंभी । पाखण्डी । ४ बैल । ५ शिव । ६ मेरु पर्वत । ७ कदम्ब वृक्ष ।

भद्रक (वि०) [स्त्री० -भद्रिका] १ शुभ । नेक । २ मनहोर । सुन्दर ।

भद्रकः (पु०) देवदारु वृक्ष ।

भद्रंकर, भद्रङ्कर } (वि०) शुभकारी । समृद्धिदाता ।

भद्रवत् (वि०) शुभ । (न०) देवदारु वृक्ष ।

भद्रा (स्त्री०) १ गौ । २ द्वितीया, सप्तमी, और द्वादशी तिथियों की संज्ञा । ३ आकाशगंगा । ४ अनेक पौधों के नाम ।—श्रयं (न०) चन्दन ।

भद्रिका (स्त्री०) तावीज़ । यन्त्र ।

भद्रिलं (न०) समृद्धि । सौभाग्य ।

भंभः, भम्भः } (पु०) १ मक्खी । २ धूम । धुआँ ।

भंभरालिका, भम्भरालिका, भंभराली, भम्भराली } (स्त्री०) गोमक्खी डाँस । पिस्सू । मच्छर ।

भंभाखः, भम्भाखः } (पु०) गाय का राँभना ।

भयं (न०) १ डर । भीति । खौफ । २ जोखों ।

भयः (पु०) बीमारी । रोग ।—अन्वित,—आक्रान्त (वि०) डरा हुआ । भयभीत ।—आतुर,—आर्त, (वि०) भयभीत । डरा हुआ ।—आवह, (वि०) १ डरावना । भयोत्पादक । २ जोखों का ।—उत्तर, (वि०) भयान्वित ।—क्रूर, (वि०) १ भयावन । डरावना । भीम । भयङ्कर । २ खतरनाक ।—डिण्डिमः, (पु०) लड़ाई में बजाया जाने वाला ढोल । मारूबाजा ।—प्रद, (वि०) भय देने वाला । भयकारी ।—विप्लुत, (वि०) डरा हुआ । भयभीत ।—व्यूहः, (पु०) सेना का व्यूह विशेष जो उस समय रचा जाता है जिस समय किसी प्रकार के भय की उपस्थिति की आशङ्का होती है ।

भयानक (वि०) डरावन ।

भयानकं (न०) भय । डर ।

भयानकः (पु०) १ चीता । २ राहु । ३ साहित्य में नौरसों के अन्तर्गत छठवाँ रस ।

भर (वि०) प्रद । देने वाला । सहारा देने वाला । समर्थक ।

भरः (पु०) १ भार । बोझ । २ समूह । संग्रह । विशेष परिमाण में । विशेष मात्रा में । ३ अतिशयता । ४ तौल विशेष ।

भरटः (पु०) १ कुम्हार । २ नौका ।

भरण (वि०) [स्त्री० -भरणी] भरण पोषण करने वाला । परवरिश करने वाला ।

भरणः (पु०) भरणी नक्षत्र ।

भरणी (स्त्री०) दूसरे नक्षत्र का नाम ।—भूः, (पु०) राहु ।

भरंडः, भरण्डः } (पु०) १ स्वामी । प्रभु । २ राजा । रईस । ३ बैल । साँड़ । ४ कीट । कीड़ा ।

भरण्यं (न०) १ भरण पोषण । २ मज़दूरी । भाड़ा । किराया । ३ भरणी नक्षत्र ।

भरण्या (स्त्री०) मज़दूरी । उजरत ।—भुज्, (पु०) भाड़े का नौकर ।

भरण्युः (पु०) १ स्वामी । मालिक । २ रक्षक । ३ मित्र । ४ अग्नि । ५ चन्द्रमा । ६ सूर्य ।

भरतः (पु०) १ दुष्यन्त और शकुन्तला से उत्पन्न । यह चक्रवर्ती राजा होगये हैं और इन्हींके नाम पर इनके राज्य का नाम भारतवर्ष पड़ा है । २ महाराज दशरथ के पुत्र जो रानी कैकेयी की कोख से उत्पन्न हुए थे । ३ एक ऋषि जिन्होंने नाटक रचना की कला में एक प्रसिद्ध ग्रन्थ रचा है । ४ नट । अभिनयकर्त्ता । ५ भाड़े का योद्धा । ६ पहाड़ी आदमी । जंगली आदमी । ७ अग्नि ।—अग्रजः, (पु०) श्रीरामचन्द्र ।—खण्डम्, (न०) भारतवर्ष का प्रान्त विशेष ।—ज्ञ, (वि०) भरत मुनि रचित नाटक शास्त्र का ज्ञाता ।—पुत्रकः, (पु०) नट । अभिनयकर्त्ता—वर्षः, (पु०) भरत का देश ।—वाक्य, (न०) नाटक का अन्तिम गान जो आशीर्वादात्मक होता है ।

भरथः (पु०) १ राजा । २ अग्नि । ३ लोकपाल ।

भरद्वाजः (पु०) १ सप्तर्षि में से एक । २ भरत पक्षी ।

भरित (वि०) १ पोषित । २ परिपूर्ण ।

भरु (पु०) १ पति । २ स्वामी । ३ शिव । ४ विष्णु । ५ सुवर्ण । ६ समुद्र ।

भरुजः (पु०) [स्त्री०—भरुजा या भरुजी] शृगाल । गीदड़ । सियार ।

भरुटकं (न०) भुना हुआ माँस ।

भर्गः (पु०) १ शिव । २ ब्रह्मा ।

भर्ग्यः (पु०) शिव का नामान्तर ।

भर्जन (वि०) १ भुना हुआ । सिका हुआ । कढ़ाई में अकोरा हुआ । २ नाश करने वाला ।

भर्जनं (न०) १ भुनने या अकोरने की क्रिया । २ कढ़ाई ।

भर्तृ (पु०) १ पति । २ प्रभु । स्वामी । ३ नेता । नायक । प्रधान । ४ समर्थक । रक्षक ।—घ्नी, (स्त्री०) पतिघातिनी स्त्री ।—दारकः, (पु०) युवराज । (यह नाटक की भाषा में युवराज को सम्बोधन करते समय प्रयुक्त होता है ।—दारिका (स्त्री०) युवराज्ञी ।—व्रतं, (न०) पतिव्रता ।—व्रता, (स्त्री०) पतिव्रता स्त्री ।—शोकः, (पु०) पति के मरने का शोक ।—हरिः, (पु०) एक प्रसिद्ध ग्रन्थ रचयिता जिनके बनाये, नीति शृङ्गार और वैराग्य शतक प्रसिद्ध हैं ।

भर्तृमती (स्त्री०) सौभाग्यवती स्त्री ।

भर्तृसात् (अव्यया०) पति के अधिकार में ।

भर्त्स (धा० आत्मै०) [भर्त्सयते] १ डाँटना डपटना । २ फटकारना । लानतमलामत करना । सख़्तसुस्त कहना । गरियाना । ३ चिढ़ाना ।

भर्त्सकः (पु०) १ डराने धमकाने वाला । २ गरियाने वाला ।

भर्त्सनं (न०), भर्त्सना (स्त्री०), भर्त्सितम् (न०) } १ डाँटडपट । गाली गलौज । २ धमकी । ३ लानत मलामत । ४ शाप । अकोसा ।

भर्मम् (न०) १ मज़दूरी । भाड़ा । २ सुवर्ण । ३ नाफ । नाभि ।

भल् (धा० आत्म०) [भालयते, भालित,] देखना । निहारना ।

भल्ल् (धा० आत्म०) १ निरूपण करना । वर्णन करना । कहना । २ घायल करना । वध करना । ३ देना ।

भल्लः (पु०), भल्ली (स्त्री०), भल्लं (न०) } बाण विशेष । एक प्रकार का तीर या अस्त्र । (पु०) १ रीछ । २ शिव । ३ भिलावे का वृक्ष ।

भल्लकः (पु०) रीछ । भालू ।

भल्लातः, भल्लातकः } (पु०) भिलावे का वृक्ष ।

भल्लुकः (पु०), भल्लूकः (पु०) } भालू । रीछ ।

भव (वि०) उत्पन्न । पैदा हुआ ।

भवः (पु०) १ सत्ता । २ उत्पत्ति । पैदायश । निकास । ४ सांसारिक अस्तित्व । ५ संसार । ६ स्वास्थ्य । तंदुरुस्ती । ७ श्रेष्ठता । उत्कृष्टता । १० प्राप्ति ।—अतिग, (वि०) सांसारिक अस्तित्व से निस्तार पाना ।—अन्तकृत, (पु०) ब्रह्मा

जी का नामान्तर ।—अन्तरं, (न०) आगे का या पिछला अस्तित्व ।—अब्धिः,—अर्णवः,—समुद्रः,—सागरः,—सिन्धुः, (पु०) सांसारिक जीवन रूपी सागर ।—आत्मजः, (पु०) गणेश जी या कार्तिकेय के नामान्तर ।—उच्छेदः, (पु०) सांसारिक जीवन का नाश ।—क्षितिः, (स्त्री०) जन्मस्थान ।—घस्मरः, (पु०) दावानल ।—छिद्, (वि०) सांसारिक जीवन के बंधनों का काटने वाला । पुनर्जन्म रोकने वाला । छेदः, (पु०) पुनर्जन्म की रोक ।—दारु, (न०) देवदारु वृक्ष ।—भूतिः, (पु०) एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि ।—रुद् (पु०) वह ढोल जो किसी के मरने पर पीटा जाता है । मातमी ढोल ।—वीति , (स्त्री०) सांसारिक प्रपञ्च से छुटकारा ।

भवत् (वि०) [स्त्री—भवन्ती] १ होने वाला । २ वर्तमान ।

भवती (स्त्री०) आप ।

भवदीय (वि०) आपका । तुम्हारा ।

भवनं (न०) १ अस्तित्व । २ उत्पत्ति । पैदायश । ३ घर । मकान । डेरा । महल । ४ स्थान । आधार । ५ इमारत । ६ प्रकृत ।—उदरं, (न०) घर के भीतर का स्थान ।—पतिः,—स्वामिन्, (पु०) पेशवा खान्दान । घर का बड़ा बूढ़ा ।

भवंतः
भवन्तः
भवतिः } वर्तमान समय । इस बीच में ।

भवंती
भवन्ती } (स्त्री०) पतिव्रता या सती पत्नी ।

भवानी (स्त्री०) पार्वती का नाम जो शिव जी की पत्नी हैं ।—गुरुः, (पु०) हिमालय पर्वत ।—पतिः (पु०) शिव जी का नाम ।

भवादृक्ष (वि०) [स्त्री०—भवादृक्षी]
भवादृश् (वि०) [स्त्री०—भवादृशी]
भवादृश (वि०) [स्त्री०—भवादृशी] } आपकी तरह । तुम्हारी तरह ।

भविक (वि०) [स्त्री०—भविकी] १ गुणकारी । लाभकारी । उपयुक्त । उपयोगी । २ प्रसन्न । समृद्धशाली ।

भविकं (न०) कुशलता । समृद्धि ।

भवितव्य (वि०) होने वाला । भावी । होनहार ।

भवितव्यं (न०) जो अवश्यम्भावी है ।

भवितव्यता (स्त्री०) १ होनी । भावी । होनहार । २ प्रारब्ध । भाग्य । किस्मत ।

भवितृ (वि०) [स्त्री०—भवित्री] भविष्यत् । होनहार ।

भविनः (पु०) कवि । [इस अर्थ में, किन्तु पुलिङ्ग में "भविनिन्" शब्द का भी प्रयोग होता है ।]

भविलः (पु०) १ उपपति । जार । आशिक । २ लंपट । कामी ।

भविष्णु (त्रि०) १ होने वाला । २ धनेच्छुक । धन-दौलत की कामना रखने वाला । काल । २ प्रत्यासन्न । निकट ।

भविष्य (वि०) १ वर्तमान काल के उपरान्त आने वाला समय । आने वाला काल । २ प्रत्यासन्न । निकट ।

भविष्यं (न०) आने वाला काल ।—ज्ञानं, (न०) आने वाले समय या घटना की जानकारी ।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।

भविष्यत् (वि०) [स्त्री०— भविष्यती या भविष्यन्ती] होने को ।—वक्तृ,—वादिन्, (वि०) आगे होने वाली घटनाओं का बतलाने वाला । पेशीन गोई करने वाला ।

भव्य (वि०) १ मौजूद । विद्यमान । वर्तमान । २ आगे होने वाला । ३ बहुत करके होने वाला । ४ उपयुक्त । ठीक । उचित । योग्य । ५ अच्छा । उम्दा । उत्कृष्ट । ६ शुभ । भाग्यवान । प्रसन्न । ७ मनोहर । सुन्दर । ८ शान्त । ९ सत्य ।

भव्या (स्त्री०) पार्वती का नाम ।

भव्यं (न०) १ अस्तित्व । २ आने वाला काल । ३ परिणाम । फल । ४ शुभपरिणाम । समृद्धि । ५ हड्डी ।

भष् (धा० प०) [भषति] १ भूकना । गुर्राना । २ गालियां देना । डाँटना । डपटना ।

भषः
भषकः } (पु०) कुत्ता । श्वान ।

भषणः (पु०) कुत्ता ।

भषणं (न०) कुत्ते का भूकना । कुत्ते का गुर्राना ।

भसद् (पु०) १ सूर्य । २ गोश्त ३ बतक विशेष । ४ समय । ५ बेड़ा । घरनैं । ६ पिछला भाग ।

भसनः (पु०) शहद की मक्खी ।

भसन्तः (पु०) समय ।

भसित (वि०) जल कर राख हुआ । भस्म हुआ ।

भसितं (न०) राख ।

भस्त्रका, भस्त्रा, भस्त्रि (स्त्री०) १ धोंकनी । २ मसक या चाम का कोई पात्र जिसमें जल भरा जाय । ३ चमड़े का थैला ।

भस्मकं (न०) १ राख । खाक । २ एक रोग विशेष जिसमें भोजन तुरन्त पच जाता है ३ नेत्र रोग विशेष ।

भस्मन् (वि०) १ राख । खाक । २ भस्म जो शरीर में लगायी जाती है —अग्निः, (पु०) भस्मक रोग । —अवशेष, (वि०) राख के रूप में रहने वाला अथवा जिसकी केवल राख बच रहे ।—आहूयः, (पु०) कपूर ।—उद्धूलन, (न०) गुएठनम्, (न०) शरीर में भस्म मलना ।—कारः, (पु०) धोबी ।—कूटः (पु०) राख का ढेर ।—गन्धा, —गन्धिका,—गन्धिनी, (स्त्री०) सुगन्धद्रव्य विशेष ।—तूलं, (न०) १ कुहरा । बर्फ । २ धूल की वर्षा । ३ कई ग्रामों का समुदाय ।—प्रियः, (पु०) शिव ।—रोगः, (पु०) रोगविशेष । —लेपनं (न०) भस्म से शरीर पोतना ।—विधिः, (पु०) कोई विधान जो भस्म से किया जाय । —वेधकः, (पु०) कपूर ।—स्नानं, (न०) भस्मस्नान ।

भस्मता (स्त्री०) भस्म होने का कार्य ।

भस्मसात् (अव्यया०) भस्म होना ।

भा (धा० परस्मै०) [भाति, भात] १ चमकना । २ दिखलाई पड़ना । ३ होना । ४ अपने को दिखलाना ।

भा (स्त्री०) १ प्रकाश । आभा । चमक । सौन्दर्य । २ प्रतिछाया । परछाईं ।—कोशः,— कोषः, (पु०) सूर्य ।—गणः, (पु०) नक्षत्रों का समुदाय ।—निकरः (पु०) किरणों का संग्रह । प्रकाशपुञ्ज ।— नेमिः, (पु०) सूर्य ।

भाक्त (वि०) १ परमुखापेक्षी । परतंत्र । २ भोज्यपदार्थ होने के योग्य । ३ गौण । अपकृष्ट । ४ गौण भाव में प्रयुक्त ।

भाक्तिकः (पु०) अनुगामी । चाकर । नौकर ।

भात्त (वि०) [स्त्री०—भात्ती] भुक्खड़ भोजनभट्ट ।

भागः (पु०) १ अंश । हिस्सा । पाती । भाग । २ बंटवारा । ३ भाग्य । प्रारब्ध । ४ किसी समूची वस्तु का एक अंश या टुकड़ा । चतुर्थांश । ६ वृत्त के व्यास का ३६० वाँ अंश । ७ किसी राशि का ३० वाँ अंश । ८ भागफल । ६ स्थान । जगह । —अर्ह (वि०) पैतृक सम्पत्ति में भाग पाने का अधिकारी ।—कल्पना, (स्त्री०) हिस्सों का विभाजन ।—जातिः, (स्त्री०) विभाग के चार प्रकारों में से एक । इसमें एक हर और एक अंश होता है । यह चाहे समभिन्न हो चाहे विषमभिन्न । जैसे $\frac{१}{५६}$ $\frac{११}{७}$ ।—धेयं, (न०) १ पाँती । हिस्सा । २ भाग्य । प्रारब्ध । ३ सौभाग्य । खुशकिस्मती । ४ सम्पत्ति । ५ आल्हाद ।—धेयः, (पु०) १ कर । टेक्स । २ उत्तराधिकारी । भाज्, (वि०) हिस्सेदार । पाँतीदार । वह जिसका कुछ लगाव हो ।—भुज, (पु०) राजा । बादशाह ।—हरः, (पु०) १ समान उत्तराधिकारी । २ भाग । (अङ्कगणित का)—हारः, (पु०) (अङ्कगणित का) भाग ।

भागवत (वि०) [स्त्री०—भागवती] १ विष्णुसम्बन्धी । विष्णुभक्त । २ भगवान सम्बन्धी । ३ पावन । दैवी (पवित्र) ।

भागवतं (न०) अष्टादश पुराणों में से एक सात्विक पुराण ।

भागवतः (पु०) विष्णुभक्त ।

भागशस् (वि०) (अव्यया०) १ टुकड़ों में हिस्सा करके । २ हिस्से के अनुसार ।

भागिक (वि०) १ हिस्सा सम्बन्धी । २ हिस्से वाला । ३ भिन्नात्मक । ४ व्याज ।

भागिन् (वि०) १ भागों या हिस्सों वाला । २ हिस्से वाला । ३ बाँट या हिस्सा लेने वाला । ४ सम्बन्ध युक्त । ५ अधिकारी । मालिक । ६ जो एक भाग पाने का अधिकारी हो । ७ भाग्यवान । ८ अपकृष्ट । गौण ।

भागिनेयः (पु०) भांजा । भगिनीपुत्र ।

भागिनेयी (स्त्री०) भांजी । भगिनी की पुत्री ।

भागीरथी (स्त्री) श्री गङ्गा ।

भाग्यं (न०) १ प्रारब्ध । क़िस्मत । २ सौभाग्य । ३ समृद्ध । ४ हर्ष । कुशलता । आयत्त, (वि०) प्रारब्ध पर निर्भर ।—उदयः, (पु०) भाग्योदय । भाग्य का खुलना ।—विलवः, (पु०) बदक़िस्मती ।—वशात्, (अव्यया०) भाग्य से । भाग्यवश ।

भाग्यवत् (वि०) १ भाग्यवान् । खुशक़िस्मत । २ हरा भरा । समृद्धवान् ।

भांग / भाङ्ग (वि०) [स्त्री—भाङ्गी] पटसन का बना हुआ । सनिया ।

भाँगकः / भाङ्गकः (पु०) चिथड़ा । चीथड़ा ।

भांगीनं / भाङ्गीनम् (न०) पटसन का खेत ।

भाज् (धा० उभय०) १ बाँटना । वितरित करना ।

भाज (वि०) १ रखने वाला । भोगने वाला । २ कर्त्तव्य । जो करणीय हो ।

भाजकः (पु०) भाग करने वाला । बाँटने वाला ।

भाजनं (न०) १ बरतन । पात्र । २ आधा । ३ योग्य व्यक्ति या वस्तु । ४ प्रतिनिधित्व । ६४ पल की तौल विशेष ।

भाजितं (न०) पाँती । हिस्सा । अंग ।

भाजी (स्त्री०) चाँवल । माँड । पीच ।

भाज्यं (न०) १ अंश । भाग । पाँती । २ वह अङ्क जिसे भाजक अङ्क से भाग दिया जाता है । ३ उत्तराधिकार । पैतृक सम्पत्ति ।

भाटं / भाटकं (न०) मज़दूरी । उजरत । किराया ।

भाटिः (स्त्री०) १ मज़दूरी । उजरत । २ रण्डियों की आमदनी ।

भाट्ट (पु०) कुमारिल भट्ट के मीमांसा सम्बन्धी सिद्धान्तानुयायी ।

भाणः (पु०) नाट्य शास्त्रानुसार एक प्रकार का रूपक, जो नाटकादि दस रूपकों में से एक माना गया है । इसमें केवल एक ही अंक होता है और इसमें हास्य रस की प्रधानता होती है । इसमें वह आकाश की ओर देखता हुआ आप ही आप सारी कहानी उक्ति प्रत्युक्ति के रूप में कह डालता है, मानों वह किसी से बातचीत कर रहा हो ।

भाणकः (पु०) घोषणा करने वाला । निरूपण करने वाला ।

भाण्डं (न०) १ बरतन । २ पेटी । ट्रंक । बक्स । ३ कोई भी औज़ार या यन्त्र । ४ बाजा । ५ माल । सामान । सौदागरी माल । ६ माल की गाँठ । ७ कीमती माल । बहुमूल्य सामान । ८ नदीगर्भ । ९ घोड़े का ज़ीन या साज । १० भाँड़पन । मसख़रापन ।

भांडाः / भाण्डाः (पु०) (बहुवचनान्त) माल । सामान ।—अगारः,—आगारः, (पु०)—अगारं,—आगारं, (न०) मालगोदाम । भण्डरिया । २ ख़ज़ाना । धनागार । ३ संग्रह । सामान । गोलाबारूद ।—पति, (पु०) व्यापारी ।—पुटः, (पु०) नाई ।—प्रतिभाण्डकम्, (न०) विनिमय ।—शाला, (स्त्री०) मालगोदाम ।

भांडकः (पु०) / भाण्डकः (पु०) / भांडकं (न०) / भाण्डकम् (न०) कटोरा । (न०) सौदागरी का माल ।

भांडारं / भाण्डारं (न०) मालगोदाम ।

भांडारिन् / भाण्डारिन् (पु०) मालगोदाम का अधिकारी ।

भांडिः / भाण्डिः (स्त्री०) १ उस्तरा रखने का घर या खोल ।—वाहः, (पु०) नाई ।—शाला, (स्त्री०) हज्जाम की दूकान ।

भांडिकः (पु०)
भाण्डिकः (पु०)
भांडिलः (पु०)
भाण्डिलः (पु०) } नाई । हज्जाम ।

भांडिका } (स्त्री०) औज़ार । लोखर । बरतन
भाण्डिका } भांडा ।

भांडिनी } (स्त्री०) पेटी । टोकरी ।
भाण्डिनी }

भांडीरः } (पु०) वट वृक्ष । बरगद का पेड़ ।
भाण्डीरः }

भात (व० कृ०) चमकीला । चमकदार ।

भातः (पु०) प्रभात । भोर ।

भातिः (स्त्री०) १ चमक । प्रकाश । आभा । दमक । २ ज्ञान । प्रतीति ।

भातुः (पु०) सूर्य ।

भाद्रः } (पु०) एक मास का नाम । भादों का
भाद्रपदः } महीना ।

भाद्रपदाः (स्त्री० बहु०) २५ वें और २६ वें नक्षत्रों का नाम । पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा ।

भाद्रपदी } (स्त्री०) भादों महीने की पूर्णमासी ।
भाद्री }

भाद्रमातुर (पु०) नेक माता का पुत्र ।

भान (न०) १ प्रकटन । प्रादुर्भाव । दृष्टिगोचर होना । २ प्रकाश । आभा । ३ ज्ञान । प्रतीति ।

भानुः (पु०) १ प्रकाश । आभा । चमक । २ किरण । ३ सूर्य । ४ सौन्दर्य । ५ दिवस । ६ राजा । बादशाह । ७ शिव । (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—केशरः,—केसरः, (पु०) सूर्य ।—जः,—(पु०) शनिग्रह ।—दिनं, (न०) वारः, (पु०) रविवार । इतवार ।

भानुमत् (वि०) १ चमकीला । प्रकाशमान । २ सुन्दर । मनोहर । (पु०) सूर्य ।

भानुमती (स्त्री०) दुर्योधन की स्त्री का नाम ।

भामः (पु०) १ चमक । आभा । २ सूर्य । ३ क्रोध । कोप । रोष । ४ बहनोई । भगिनीपति ।

भामा (स्त्री०) १ क्रोध करने वाली स्त्री । २ सत्य भामा जो श्री कृष्ण की पत्नियों में से एक थी ।

भामिनी (स्त्री०) १ कामिनी । सुन्दरी युवती स्त्री । २ क्रोधना स्त्री ।

"उपचीयत एव कापि शोभाः
परितो भामिनि ते मुखस्य नित्यं ।"

भामिनीविलास ।

भारः (पु०) १ बोझ । २ झोक । प्रचण्डता । (यथा युद्ध की) ३ अतिशयता । ४ श्रम । परिश्रम । आयास । ५ बड़ी मात्रा । ६ तौल विशेष । ७ जुआं (उस गाड़ी का जो बोझ ढोने के लिये हो ।) —आक्रान्त, (वि०) बोझ से दबा हुआ । —उद्वहः, (वि०) कुली । मज़दूर । बोझा उठाने वाला ।—उपजीवनं, (न०) बोझ ढोकर और उसकी आमदनी से आजीविका चलाने वाला ।—यष्टिः (पु०) वह बल्ली जिसमें लटका कर भारी सामान ढोया जाता है ।—वाह, (वि०) [स्त्री०—भरौही] बोझ ढोने वाला । —वाहः, (पु०) बोझ ले जाने वाला । कुली । —वाहनः, (पु०) जानवर जो बोझा ढोवे ।— वाहिकः, (पु०) कुली । हम्माल ।—सह, (वि०) जो भारी बोझा उठा सके अतएव बड़ा मज़बूत या ताक़तवर ।—हर,—हारः (पु०) कुली । हम्माल ।—हारिन, (पु०) कृष्ण का नामान्तर ।

भारंडः } (पु०) पक्षी विशेष, जिसे आज तक
भारण्डः } किसी ने नहीं देखा । इसको भारुंड, या भारुण्ड, भी कहते हैं ।

भारत (वि०) [स्त्री०—भारती] भरत का वंशज या भारत का ।

भारतं (न०) १ भारतवर्ष । हिन्दुस्थान । २ महाभारत ग्रन्थ जिसमें मुख्यतः कौरव और पाण्डवों के प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन है ।

भारतः (पु०) १ भरतवंशज । २ भारतवर्षवासी । ३ नट । अभिनय करने वाला ।

भारती (स्त्री०) १ वाणी । स्वर । शब्द । वाग्मिता । २ वाणी की अधिष्ठात्री देवी । सरस्वती । ३ रचना शैली विशेष । यथा—

"भारती संस्कृतप्रायो वाग्व्यापारो नटाश्रयः"
—साहित्यदर्पण ।

४ लवा । बटेर ।

भारद्वाजः (पु०) १ द्रोणाचार्य का नाम । २ अगस्त्य का नामान्तर । ३ मङ्गलग्रह । ४ लाल । अग्नि । चंडूल ।

भारद्वाजं (न०) हड्डी । अस्थि ।

भारवः (पु०) कमान की डोरी । धनुष का रोदा ।

भारविः (पु०) किरातार्जुनीय के रचयिता एक प्रसिद्ध एवं सफल संस्कृत भाषा के कवि ।

भारिः (पु०) शेर । सिंह ।

भारिक, भारिन् (वि०) भारी । (पु०) कुली । हम्माल ।

भार्गः (पु०) भर्गों का राजा ।

भार्गवः (पु०) १ शुक्राचार्य । असुराचार्य । २ परशुराम । ३ शिव । ४ धनुर्धर । ५ हाथी ।—प्रियः, (पु०) हीरा ।

भार्गवी (स्त्री०) १ दूब । घास । २ लक्ष्मी ।

भार्यः (पु०) नौका ।

भार्या (स्त्री०) १ पत्नी । २ मादा जानवर ।—आट, (वि०) पत्नी के वेश्यापन से आजीविका निर्वाह करने वाला ।—ऊढ, (वि०) विवाहित ।—जितः, (पु०) स्त्री का वशवर्ती पति ।

भार्यारुः (पु०) १ मृग विशेष । २ उस पुत्र का पिता जो अन्य की स्त्री से उत्पन्न हुआ हो ।

भालं (न०) १ माथा । २ प्रकाश । ३ अंधकार ।—अङ्कः, (पु०) १ भाग्यवान पुरुष । २ शिव । ३ आरा । ४ कच्छप । कछुआ ।—चन्द्रः, (पु०) १ शिव । २ गणेश ।—दर्शनं, (न०) ईंगुर । सेंदूर ।—दर्शिन्, (वि०) माथा देखने वाला अर्थात वह नौकर जो सदा मालिक की ओर ध्यान रखता हो ।—दृश्, (पु०)—लोचनः, (पु०) शिव ।—पट्टः, (पु०) —पट्टं (न०) माथा ।

भालुः (पु०) सूर्य ।

भालुकः, भालूकः, भाल्लुकः, भाल्लूकः (पु०) रीछ । भालू ।

भावः (पु०) १ अस्तित्व । विद्यमानता । २ घटना । होना । ३ अवस्था । दशा । हालत । ४ ढंग । रीति । ५ पद । ओहदा । ६ वास्तविकता । ७ स्वभाव । मिजाज । ८ झुकाव । विचार । चित्तवृत्ति । ९ प्रेम । प्यार । अनुराग । १० अभिप्राय । ११ अर्थ । १२ सङ्कल्प । दृढ़ विचार । १३ हृदय । आत्मा । मन । १४ पदार्थ । वस्तु । जीव । १५ जीवधारी । १६ भावना । १७ हावभाव । आचरण । १८ प्रेमोद्योतक हावभाव । १९ उत्पत्ति । २० संसार । दुनिया । २१ गर्भाशय । २२ सङ्कल्प । २३ अलौकिक शक्ति । २४ परामर्श । आदेश । २५ नाटक में किसी पूज्य के लिये सम्बोधन । २६ व्याकरण में "भावेक्तः" । २७ मानमन्दिर । ज्योतिष । २८ चान्द्र नक्षत्र ।—अनुग, (वि०) स्वाभाविक ।—अनुगा, (स्त्री०) प्रतिच्छाया ।—अन्तरं, (न०) भिन्न दशा ।—आकूतं, (न०) मानसिक विचार ।—आत्मक, (वि०) स्वाभाविक । असली ।—आलीना, (स्त्री०) प्रतिच्छाया ।—गम्भीर, (न०) १ हृदय से । २ गम्भीरता पूर्वक ।—गम्यं, (न०) मन द्वारा जानने योग्य ।—ग्राहिन्, (वि०) तात्पर्य समझने वाला ।—जः, (पु०) कामदेव ।—ज्ञ,—विद्, (वि०) हृदय की बात जानने वाला ।—बंधन, (वि०) हृदय को बाँधने वाला । हृदयों को मिलाने वाला ।—मिश्रः, (पु०) मान्य पुरुष । भद्रपुरुष ।—रूप, (वि०) असली । वास्तविक ।—वाचकं, (न०) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके द्वारा किसी पदार्थ का भाव, धर्म, या गुण मालूम पड़े ।—शबलत्वं, (न०) अनेक प्रकार के भावों का सम्मिश्रण ।—शून्य, (वि०) प्रेमरहित ।—समाहित, (वि०) धर्मनिष्ठ । साधु । भक्तिपूर्ण ।—सर्गः, (पु०) (सांख्य) तन्मात्राओं की उत्पत्ति ।—स्थ, (वि०) अनुरक्त ।—स्निग्ध, (वि०) अकपट भाव से अनुरक्त ।

भावक (वि०) १ भाव से पूर्ण। २ सौख्य वृद्धि कारक। ३ कल्पना करने वाला। अद्भुत रसोद्दीपक पदार्थ और सुन्दरता के प्रति रुचि रखने वाला।

भावकः (पु०) १ भावना। हृदयगत भाव। संस्कार। २ प्रेम के भावों को वहिश्चेष्टा से द्योतन करना।

भावन (वि०) [स्त्री० —भावनी] प्रभाव डालने वाला। असर करने वाला।

भावनं (न०) } १ उत्पत्ति। प्रादुर्भाव। २ किसी भावना (स्त्री०) } के स्वार्थ को आगे बढ़ाना। ३ कल्पना। विचार। ख्याल। ४ भक्ति। श्रद्धा। ५ ध्यान। धारणा। ६ अप्रमाणीकृत अनुमान। कल्पित विषय। ७ आलोचन। खोज। ८ निर्णय। ९ स्मरण। याददाश्त। १० ज्ञान। प्रतीति। ११ प्रमाण। तर्क। प्रयोग। १२ सूखे चूर्ण को किसी तरल पदार्थ से तर करना। १३ बसाना। पुष्प तथा सुगन्ध द्रव्यों से सजाना।

भावनः (न०) १ निमित्त कारण। २ सृष्टिकर्त्ता। ३ शिव जी की उपाधि।

भावटः (पु०) १ उच्छ्वास। हृदय का आवेग। २ रागद्वेष। २ प्रेमभाव का प्रकटन। ३ साधु पुरुष। ४ लंपट जन। ५ नट। अभिनयकर्त्ता। ६ सजावट।

भाविक (वि०) [स्त्री०—भाविकी] १ स्वाभाविक। नैसर्गिक। प्राकृतिक। २ भावनात्मक। ३ आने वाला। काल।

भाविकं (न०) भाषा जो प्रेम और कामेच्छा से परिपूर्ण हो। २ अलङ्कार विशेष। इसमें भूत और भावी बातों को प्रत्यक्ष वर्तमान की तरह निरूपण करना पड़ता है।

भावित (व० कृ०) १ रचा हुआ। पैदा किया हुआ। २ प्रकट किया हुआ। ३ पोसा हुआ। ४ विचारा हुआ। सोचा हुआ। कल्पना किया हुआ। ५ ध्यान किया हुआ। परिवर्तित। ६ शुद्ध किया हुआ। ७ सिद्ध किया हुआ। स्थापति किया हुआ। ८ व्याप्त। परिपूर्ण। ९ उत्साहित। १० तर। भींगा हुआ। ११ सुगन्धित किया हुआ। १२ मिला हुआ। मिश्रित।—आत्मन्, (वि०)—बुद्धि, (वि०) १ वह जिसने अपने आत्मा को परमात्म का ध्यान करके पवित्र कर लिया हो। २ भक्तिपूर्ण। साधु। ३ विचारवान। ४ संलग्न।

भावितर्कं (न०) सत्य विवरण।

भावित्रं (न०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल का समूह। त्रैलोक्य।

भाविन् (वि०) १ हुआ। २ होने वाला। ३ आगे आने वाला काल। ४ होने योग्य। ५ अवश्यम्भावी। ६ कुलीन। सुन्दर। आदर्श।

भाविनी (स्त्री०) सुथरी स्त्री। २ सती स्त्री। कुलवती स्त्री। ३ स्वेच्छाचारिणी या निरङ्कुशा स्त्री।

भावुक (वि०) १ होने वाला। भव्य। ३ समृद्धशाली। प्रसन्न। ४ शुभ गुणग्राही। कविप्रिय।

भावुकं (न०) १ प्रसन्नता। कुशलता। समृद्धि। २ भाषा जिससे प्रेम और आसक्ति प्रकट हो।

भावुकः (पु०) बहनोई। भगिनीपति।

भाव्य (वि०) १ होने वाला। २ आने वाला काल। ३ होने वाला। पूर्ण होने वाला। ४ वह जिसका विचार होने वाला हो।

भाव्यं (न०) अवश्यम्भावी। भावी।

भाष् (धा० आत्म०) [भाषते, भाषित] १ बोलना। कहना। २ सम्बोधन करना। ३ वार्तालाप करना। ४ निरूपण करना। ५ वर्णन करना।

भाषणं (न०) १ कथन। वार्तालाप। बातचीत। २ दयामय शब्द।

भाषा (स्त्री०) १ बोली। जबान। वाणी। २ परिभाषा। विवरण। ३ सरस्वती का नामान्तर। ४ अर्ज़ीदावा। अभियोगपत्र।—अन्तरं, (न०) दूसरी बोली या भाषा। –पादः, (पु०) अर्ज़ीदावा।—समः, (पु०) शब्दालङ्कार विशेष। इसमें शब्दों को इस प्रकार किसी वाक्य में क्रमबद्ध किया जाता है कि, चाहे उसे संस्कृत भाषा का वाक्य समझे चाहे प्राकृत का यथा

मञ्जुलमणि मञ्जीरे कलगम्भीरे विहाररसरसी तीरे।
विरसासि केलिकीरे किमालि धीरे च गन्धसारसमीरे॥

—साहित्यदर्पण।

भाषिका (स्त्री०) बोली । भाषा ।

भाषित (व० कृ०) कहा हुआ ।

भाषितं (न०) वाणी । बोली । कथन । भाषा ।

भाष्यं (न०) १ कथन । वार्तालाप । २ मामूली बोली या भाषा का कोई भी ग्रन्थ या रचना । ३ व्याख्या । टीका । ४ सूत्रों पर की हुई व्याख्या या टीका । पाणिनि के सूत्रों पर भाष्य ।—करः, —कारः, —कृत् (पु०) १ टीकाकार । २ पतंजलि का नामान्तर ।

भास् (धा० आत्म०) [भासते, भासित] १ चमकना । दमकना । २ स्पष्ट होना । मन में आना । ३ सामने आना । चमकना । ४ दिखलाना । प्रकट करना ।

भास् (स्त्री०) १ प्रकाश । आभा । चमक । २ किरण । ३ प्रतिबिम्ब । मूर्ति । ४ गौरव । महत्व । ५ इच्छा ।—करः, (पु०) १ सूर्य । २ वीर । ३ अग्नि । ४ शिव । ५ एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ।—करं, (न०) सुवर्ण ।—करिः, (पु०) शनिग्रह ।

भासः (पु०) १ चमक । प्रकाश । आभा । दीप्ति । २ कल्पना । ३ मुर्गा । ४ गीध । ५ गोष्ठ । ६ एक संस्कृत कवि का नाम ।

भासो हासः कविकुलगुरु कालिदासो विलासः ।

भासक (वि०) [स्त्री०—भासिका] १ दीप्तिमान् । प्रकाशवान् । २ प्रकाशक । दिखलाने वाला । ३ समझाने वाला ।

भासकः (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम ।

भासनं (न०) १ चमक । दमक । २ प्रकाश ।

भासत } (वि०) [स्त्री०—भसन्ती] १ चमकीला ।
भासन्त } सुन्दर । मनोहर ।

भासंत } (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ तारा ।
भासन्तः } नक्षत्र ।

भासनी (स्त्री०) नक्षत्र ।

भासुः (पु०) सूर्य ।

भासुरं (वि०) १ चमकीला । २ भयानक ।

भासुरः (पु०) १ शूरवीर । २ बिल्लौर ।

भास्मन (वि०) [स्त्री० –भास्मनी] भस्मयुक्त । भस्म का ।

भास्वत् (वि०) चमकीला । प्रकाशवान । (पु०) १ सूर्य । २ प्रकाश । आभा । ३ शूरवीर ।

भास्वती (स्त्री०) सूर्य की पुरी ।

भास्वर (वि०) चमकीला । दीप्तिमान ।

भास्वरः (पु०) १ सूर्य । २ दिवस । दिन ।

भिक्ष् (धा० आत्म०) [भिक्षते, भिक्षित] १ माँगना । याचना करना । २ भीख माँगना । ३ माँगना, किन्तु पाना नहीं । ४ पीडित होना ।

भिक्षणं (न०) } भीख ।
भिक्षा (स्त्री०) }

भिक्षा (स्त्री०) १ याचना । माँगना । २ माँगने पर जो मिले । ३ मज़दूरी । भाड़ा । किराया । ४ चाकरी । सेवावृत्ति ।—अटनं, (न०) भीख माँगते मारे मारे फिरना ।—अन्नं, (न०) भीख ।—अर्थिन्, (पु०) भिक्षुक ।—अर्ह, (वि०) भिक्षापात्र । वह जिसे भीख देना उचित है ।—आशिन्, (वि०) १ भीख पर निर्वाह करने वाला । २ बेईमान ।—आहारः, (पु०) भिक्षान्न ।—उपजीविन्, (वि०) भिखारी । भिक्षुक ।—करणं, (न०) याचना । पात्रं, (न०) भिक्षापात्र । खप्पर । भिक्षा लेने के लिये पात्र ।—माणवः, (पु०) युवक भिखारी ।—वृत्तिः, (स्त्री०) भीख माँगने का पेशा ।

भिक्षाकः (पु०) [स्त्री०—भिक्षाकी] भिखारी ।

भिक्षित (व० कृ०) याचित । माँगा हुआ ।

भिक्षुः (पु०) १ भिक्षुक । भिखारी । २ संन्यासी । ३ संन्यास । ४ बौद्ध भिक्षुक ।—चर्या, (स्त्री०) भिक्षुक जीवन ।—संघाती (स्त्री०) चिथड़ा । फटे कपड़े ।

भिक्षुकः (पु०) भिखारी ।

भित्तं (न०) १ अंश । भाग । २ टुकड़ा । टूक । ३ दीवार ।

भित्तिः (स्त्री०) तोड़ना । चीरना । विभाजित करना । २ दीवार । ३ स्थान । ४ टुकड़ा । ५ टूटी हुई कोई वस्तु । ६ दरार । सन्धि । झिरी । ७ चटाई । ८ छिद्र । दोष । ९ अवसर ।—खातनः, (पु०) चूहा । -चौरः, (पु०) चोर । घर में सेंध लगाने वाला ।—पातनः, (पु०) १ चूहा विशेष । २ घूँस । चूहा ।

भित्तिका (स्त्री०) १दीवाल । २छिपकली । बिस्तुइया ।

भिद् (धा०परस्मै०) [भिन्दति] १ बाँटना । टुकड़े करना । २ फोड़ना । सन्धि करना । झिरी करना । ३ खोदना । ४ गुजरना । ५ पृथक् करना । ६ भङ्ग करना । ७ गड़बड़ करना । ८ अदल बदल करना । घटाना बढ़ाना । ९ खिलाना । १० बखेरना छितराना । ११ खोलना । पृथक् करना । १२ ढीला करना ।१३ छिपी हुई बात को प्रकट करना । १४ परेशान करना । १५ पहचानना ।

भिदकं (न०) १ हीरा । २ इन्द्र का वज्र ।

भिदकः (पु०) तलवार ।

भिदा (स्त्री०) १ तोड़न । फटन । चीरन । फाड़न । २ अलहदगी । ३ अन्तर । ४ जाति । किस्म ।

भिदिः (पु०), भिदिरं (न०), भिदुः (पु०) } इन्द्र का वज्र ।

भिदुर (वि०) १ तोड़ने वाला । फटने वाला । चीरने वाला । २ भङ्गप्रवण । टूटने फूटने वाला । ३ मिश्रित । मिला हुआ । गड्डमड्ड ।

भिदुरं (न०) इन्द्र का वज्र ।

भिदुरः (पु०) प्लक्षवृक्ष ।

भिद्यः (पु०) १ तोड़ से बहने वाली नदी । २ नदी विशेष ।

भिद्रं (न०) वज्र ।

भिंदपाल, भिन्दपालः, भिंडिपालः, भिन्दिपालः } (पु०) १ छोटा एक डंडा जो प्राचीन काल में फेंक कर मारा जाता था । २ गुफना । जिसमें कंकड़ या पत्थर रख कर और उसे घुमा कर फेंका जाता है ।

भिन्न (धा० कृ०) १ टूटा हुआ । फटा हुआ । चिरा हुआ । २ विभाजित । पृथक किया हुआ । अलगाया हुआ । ३ (खोलकर) अलग किया हुआ । ४ खिला हुआ । फूला हुआ । ५ पृथक् । अलग । जुदा । ६ इतर । दूसरा । अन्य । ७ ढीला । ८ मिश्रित । ९ फिरा हुआ । १० परिवर्तित । बदला हुआ । ११ भयानक । मस्त । १२ बिना ।—अञ्जनं, (न०) कई द्रव्यों को मिला कर बनाया हुआ सुर्मा ।—उदरः, (पु०) सौतेला भाई ।—करटः, (पु०) मदमस्त हाथी ।—कूट (वि०) नायक विहीन ।—क्रम, (वि०) क्रम-रहित । गड़बड़ ।—गति (वि०) तेज़चाल से जाने वाला ।—गर्भ (वि०) तितर बितर ।—दर्शिन्, (वि०) पक्षपाती । प्रकार (वि०)दूसरी किस्म का या जाति का ।—भाजनं (न०) खप्पर । कमण्डलु ।—मर्मन्, (वि०) वह जिसके मर्मस्थल बिधे हों । -मर्याद, (वि०) १ वह जिसने मर्यादा या सीमा भङ्ग कर दी हो । असम्मानकारी । २ असंयत । जो काबू में न हो ।—रुचि, (वि०) जुदी जुदी रुचि वाला ।—वर्चस्, वर्चस्क, (वि०) मलोत्सर्ग करने वाला ।—वृत्त (वि०) असद् जीवन व्यतीत करने वाला । त्यागा हुआ ।—वृत्ति, (वि०) १ बुरी राह चलने वाला । २ इतर रुचि या भावना रखने वाला ।—संहति, (वि०) असंयुक्त । विमुक्त । —स्वर, (वि०) १ आवाज़ बदले हुए । २ बेसुरा । -हृदय (वि०) वह जिसका हृदय बिधा हो ।

भिन्नः (पु०) रत्नदोष । किसी रत्न में ऐब ।

भिन्नं (न०) १ टुकड़ा । भाग । अंश । २ फूल । मुकुल । ३ घाव । छुरी का घाव । ४ भग्नांश ।

भिरिंटिका, भिरिण्टिका } (स्त्री०) श्वेतगुञ्जा । सफेद घुंघची ।

भिल्लः (पु०) भील जाति ।—तरुः (पु०) लोध्र वृक्ष ।—भूषणं, (न०) गुंजा का पौधा ।

भिल्लोटः (पु०), भिल्लोटकः (पु०) } लोध्र वृक्ष ।

भिषज् (पु०) १ वैद्य । हकीम । डाक्टर । २ विष्णु ।

—जितं, (न०) दवाई। दवा।—पाशः (पु०) नीमहकीम।—वरः, (पु०) सर्वश्रेष्ठ वैद्य।

भिष्मा
भिष्मिका
भिष्मिटा
भिस्मटा
भिस्सिटा
} (स्त्री०) भुना हुआ अन्न।

भी (धा० परस्मै०) —[बिभेति, भीत] डरना। भयभीत होना। चिन्तित होना।

भी (स्त्री०) भय। डर। आशङ्का।

भीत (व० कृ०) १ भयभीत। डरा हुआ। २ खतरे में पड़ा हुआ।—भीत, (वि०) अतिशय डरा हुआ।

भीतंकार
भीतङ्कार
} (वि०) डराने वाला। भयभीत करने वाला।

भीतंकारं
भीतङ्कारं
} (अव्यया०) डरपोक कहना या बतलाना।

भीतिः (स्त्री०) १ डर। भय। २ कँपकपी। थर्राहट।—नाटितकं, (न०) भयभीत होने के हावभाव दिखलाना।

भीम (वि०) भयावना। डराने वाला।—उदरी, (स्त्री०) उमा का नामान्तर।—कर्मन्, (वि०) भयङ्कर शक्ति वाला।—दर्शन, (वि०) देखने में भयङ्कर।—नाद, (वि०) भयानक रूप से शब्द करने वाला।—नादः, (पु०) १ सिंह। २ प्रलय कालीन सात मेघों में से एक का नाम।—पराक्रम, (वि०) भयङ्कर शक्ति वाला।—रथी, (स्त्री०) किसी मनुष्य की उम्र की ७७वीं वर्ष के ७वें मास की ७वीं रात का नाम। [यह रात बड़ी खतरनाक बतलायी जाती है।

"सप्तसप्ततिमे वर्षे सप्तमे मासि सप्तमे।
रात्रिर्भीमरथी नाम नराणमतिदुस्तरा॥"]

—रूप, (वि०) भयानक शक्ल का।—विक्रान्तः, (पु०) शेर। सिंह।—विग्रह, (वि०) भयङ्कर डील डौल का।—शासनः, (पु०) यमराज।—सेनः, (पु०) १ दूसरे पाण्डव का नाम। २ भीमसेनी कपूर।

भीमः (पु०) १ शिव। २ पाँच पाण्डवों में से दूसरे पाण्डव का नाम। पवन के औरस से कुन्ती के गर्भ में इनकी उत्पत्ति हुई थी।

भीमरं (न०) युद्ध। लड़ाई।

भीमा (स्त्री०) १ दुर्गा। २ रोचना। ३ चाबुक। कोड़ा।

भीरु (वि०) [स्त्री०—भीरु, भीरू,] १ डरपोंक। २ भयभीत।—चेतस, (पु०) हिरन। मृग।—रन्ध्रः, (पु०) चूल्हा। भट्ठी।—सत्त्व, (वि०) भीरु,—हृदयः, (पु०) हिरन।

भीरुं (न०) चांदी। (स्त्री०) १ भीरु स्त्री। २ प्रतिछाया। परछांई।

भीरुः (पु०) १ शृगाल। २ चीता।

भीरुक
भीलुक
} (वि०) १ भीरु। डरपोंक। मुँह चुराने वाला। शर्मीला।

भीरुकं
भीलुकं
} (न०) जंगल। वन।

भीरुकः
भीलुकः
} (पु०) १ रीछ। २ उल्लू। ३ ऊख। ईख।

भीरू
भीलू
} (स्त्री०) डरपोंक स्त्री।

भीरूकः
भीलूकः
} (पु०) रीछ। भालू।

भीषण (वि०) भयानक। डरपावना भयप्रद।

भीषणं (न०) कोई वस्तु जो भय उत्पन्न करे।

भीषणः (पु०) १ भयानक रस। २ शिव जी का नामान्तर। ३ कबूतर। ४फाख़ता।

भीषा (स्त्री०) १ डराने की क्रिया। २ भय। डर।

भीषित (वि०) डरा हुआ। भयभीत।

भीष्म (वि०) भयङ्कर।—जननी, (स्त्री०) श्री गङ्गा।—पञ्चकं, (न०) कार्तिक शुक्ला ११ से १५ तक ५ दिवस को भीष्मपञ्चक कहते हैं। इन पाँच दिनों में स्त्रियाँ प्रायः व्रत किया करती हैं।—सूः, (स्त्री०) गंगा का नाम।

भीष्मः (पु०) १ भयानक रस। २ राक्षस। ३ शिव जी का नामान्तर। ४ सान्तनु पुत्र भीष्म पिता-

मह, जिनका जन्म श्रीगङ्गादेवी के गर्भ से हुआ था।

भीष्मकः (पु०) १ राजा सान्तनु के पुत्र का नाम। २ विदर्भों के एक राजा का नाम जिसकी लड़की रुक्मिणी के साथ श्रीकृष्ण ने अपना विवाह किया था।

भुक्त (व० कृ०) १ भक्षित। २ उपभुक्त। उपयोग में लाया हुआ। ३ अनुभूत। ४ भोग के लिये रखा हुआ। यथा भोग-बंधक।

भुक्तं (न०) १ भक्षण करने या उपभोग करने की क्रिया। २ भक्ष्य पदार्थ। ३ वह स्थान जहाँ किसी ने भोजन किया हो।—उच्छिष्टं, (न०)—शेषः, (पु०)—समुज्झितं, (न०) खाने से बचा हुआ। जूठन।—सुप्त, (वि०) भोजनोपरान्त सोने वाला।

भुक्तिः (स्त्री०) १ भोजन। आहार। २ विषयोपभोग। ३ कब्ज़ा। दखल। ४ भोजन। ५ ग्रहों का किसी राशि में एक एक अंश करके गमन।—प्रदः, (पु०) मूंग नामक अन्न।—वर्जित, (वि०) वह जिसका उपभोग निषिद्ध हो।

भुग्न (वि०) १ टेढ़ा। वक्र। २ टूटा हुआ।

भुज् (धा० पर०) [भुजति, भुग्न] १ झुकाना। २ टेढ़ा करना। मोड़ना। (उभय०) [भुनक्ति, भुङ्क्ते] १ खाना। भक्षण करना। निघटाना। २ उपभोग करना। बरतना। ३ सम्भोग करना। ४ शासन करना। हुकूमत करना। रक्षा करना। ५ सहना। अनुभव करना। ६ गुज़रना।

भुज् (वि०) खाने वाला। उपभोग करने वाला। सहने वाला। शासन करने वाला।

भुज् (स्त्री०) १ उपभोग। लाभ। मुनाफा। फायदा।

भुजः (पु०) १ भुजा। बाहु। २ हाथ। ३ हाथी की सूंड़। ४ मोड़। घुमाव। ५ त्रिकोण की एक भुजा।—अन्तरं,—अन्तरालं, (न०) वक्षःस्थल। छाती।—आपीडः, (पु०) कोरियाना। बाहों में दबाना।—कोटरः, (पु०) बगल।—दण्डः, (पु०) बाहुदण्ड।—दलः, (पु०) दलं, (न०) हाथ।—बन्धनं, (न०) आलिङ्गन।—बलं, (न०)—वीर्यं, (न०) बाहों की ताकत।—मध्यं, (न०) छाती। सीना।—मूलं, (न०) कंधा।—शिखरं,—शिरस्, (न०) कंधा।

भुजगः (पु०) सर्प। साँप।—अन्तकः,—अशनः,—आभोजिन्, (पु०)—दारणः,—भोजिन्, (पु०) १ गरुड। २ मोर। ३ न्योला।—ईश्वरः,—राजः, (पु०) शेष जी।

भुजंगः } (पु०) १ सर्प। साँप। उपपति। जार।
भुजङ्गः } आशिक। ३ पति। स्वामी। ४ गादू। ५ राजा का एक पार्श्ववर्ती नौकर। ६ अश्लेषा नक्षत्र।—इन्द्रः, (पु०) शेष जी। सर्पराज।—ईशः, (पु०) १ वासुकी। २ शेष। ३ पतञ्जलि। ४ पिंगलमुनि।—कन्या, (स्त्री०) सर्प की युवती कन्या।—भं, (न०) आश्लेषा नक्षत्र।—भुज्, (पु०) १ गरुड़। मयूर। मोर।—लता, (स्त्री०) ताम्बूली लता।—हन्, (पु०) गरुड।

भुजंगमः } (पु०) १ सर्प। राहु। ३ आठ की
भुजङ्गमः } संख्या।

भुजा (स्त्री०) १ बाँह। २ हाथ। ३ साँप की गिड़री।—कण्टः, (पु०) नाखून। नख।—दलः, (पु०) हाथ।—मध्य, (पु०) १ कोहनी। २ छाती।—मूलं, (न०) कंधा।

भुजिष्यः (पु०) १ दास। गुलाम। साथी। सखा। ३ कलाई का सूत्र। ४ रोग विशेष।

भुजिष्या (स्त्री०) १ दासी। २ वेश्या। रंडी।

भुंड् (धा० आत्म०) [भुंडते] १ पालना। २ चुनना। छाँटना।

भुभुरिका } (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
भुभुरी }

भुवनं (न०) १ जगत। २ पृथिवी। ३ स्वर्ग। ४ प्राणधारी। ५ मानव। मानवजाति। ६ जल। ७ चौदह की संख्या।—ईशः, (पु०) राजा। बादशाह।—ईश्वरः, (पु०) राजा। बादशाह। १ शिव जी का नाम।—ओकस्, (पु०) देवता।—त्रयं, (न०) तीन लोक—स्वर्ग,

मर्त्य, पाताल।—पावनी, (स्त्री०) गङ्गा।—शासिन्, (पु०) बादशाह। शासक।

भुवन्युः (पु०) १ स्वामी। प्रभु। २ सूर्य। ३ अग्नि। ४ चन्द्रमा।

भुवर्, भुवस् (अव्यया०) अन्तरिक्ष। आकाश। सप्तव्याहृतियों में से एक।

भुविस् (पु०) समुद्र।

भुशुंडिः, भुशुण्डीः, भुशुंडी, भुशुण्डी (स्त्री०) अस्त्र विशेष एक प्रकार का गुफना।

भू (धा० आत्म०) [भवति, भूत] १ होना। २ उत्पन्न होने को। ३ निकलना। ४ (घटना का) घटना। ५ ज़िंदा रहना। ६ किसी दशा में बना रहना। पालन करना। ७ परिचर्या करना। १० सहायता करना। ११ सम्बन्ध रखना। १२ किसी कार्य में संलग्न होना।

भू (पु०) विष्णु। (वि०) बना हुआ यथा। कमलभू। वित्तभू।—उत्तमं, (न०) सुवर्ण।—कम्पः, (पु०) कदम्ब विशेष।—कम्पः, (पु०) भूडोल। भूचाल।—कर्णः, (पु०) पृथिवी का व्यास।—कश्यपः, (पु०) वसुदेव। श्री कृष्ण के पिता का नाम।—काकः, (पु०) १ एक प्रकार का बाज या कंक पक्षी। २ नीला कबूतर। ३ क्रौंच पक्षी।—केशः, (पु०) वट वृक्ष।—केशा, (स्त्री०) राक्षसी।—क्षित्, (पु०) सूअर। शूकर।—गरं, (न०) विष विशेष।—गर्भः, (पु०) भवभूति का नामान्तर।—गृहं,—गेहं, (न०) तहखाना। जमीन के नीचे बना हुआ।—गोलः, (पु०) भूमण्डल।—घनः (पु०) शरीर। वपु।—चक्रं, (न०) पृथिवी की परिधि। विषुवरेखा।—चर, (वि०) पृथिवी पर रहने या चलने वाले।—चरः, (पु०) शिव जी।—छाया, (स्त्री०)—छायं, (न०) १पृथिवी की छाया जिसे अनजान लोग राहु कहते हैं। २अंधकार।—जन्तुः, (पु०) १ मिट्टी का एक कीड़ा। २ हाथी।—जम्बुः,—जंबूः, (स्त्री०) गेहूँ।—तलं, (न०) पृथिवी की सतह।—तृणः, (= भूस्तृणः) सुगन्ध युक्त घास विशेष।—दारः, (पु०) शूकर। सुअर।—देवः,—सुरः, (पु०) ब्राह्मण।—धनः, (पु०) राजा। बादशाह।—धरः, (पु०) १ पहाड़। २ शिव। ३ कृष्ण। ४ सात की संख्या।—नागः (पु०) मिट्टी का कीड़ा विशेष।—नेतृ, (पु०) राजा। बादशाह।—प, (पु०) राजा।—पतिः, (पु०) १ राजा। २ शिव। ३ इन्द्र।—पदः, (पु०) वृक्ष। पेड़।—पदी, (स्त्री०) चमेली विशेष।—परिधिः, (पु०) पृथिवी का व्यास या घेरा।—पालः, (पु०) राजा।—पालनं, (न०) राज्य। रियासत।—पुत्रः,—सुतः, (पु०) मङ्गलग्रह।—पुत्री,—सुता, (स्त्री०) सीता की उपाधि।—प्रकम्पः, (पु०) भूचाल। भूडोल।—बिम्बः, (पु०)—बिम्बम्, (न०) भूगोल।—भर्तृ, (पु०) राजा। बादशाह।—भागः, (पु०) पृथिवी का टुकड़ा।—भृत, (पु०) पर्वत। पहाड़। राजा। बादशाह। ३ विष्णु।—मण्डलं, (न०) पृथिवी।—रुह्,(पु०) रुहः, (पु०) वृक्ष। पेड़।—लोकः (= भूर्लोकः) (पु०) मर्त्य लोक।—वलयं, (न०) भूगोल।—वलभः, (पु०) राजा। बादशाह।—वृत्त, (न०) विषुवरेखा। भूपरिधि।—शक्रः, (पु०) राजा। बादशाह।—शयः, (पु०) विष्णु।—श्रवस्, (पु०) दीमक की मिट्टी का टीला।—सुरः, (पु०) ब्राह्मण। विप्र।—स्पृश्, (पु०) १ मानव। २ मानव जाति। ३ वैश्य।—स्वर्गः, (पु०) मेरु पर्वत।—स्वामिन्, (पु०) ज़मीदार।

भूः (स्त्री) १ पृथिवी। २ जगत। भूगोल। ३ फ़र्श। ज़मीन। ४ भूसम्पत्ति। ५ स्थान। जगह। ६ विवेच्य या आलोच्य विषय। ७ एक की संख्या। ८ व्याहृतियों में से प्रथम व्याहृति।

भूकं (न०), भूकः (पु०) १ रन्ध्र। छिद्र। २ चश्मा। सोता। ३ समय।

भूकलः (पु०) चंचल घोड़ा।

भूत (व० कृ०) १ हो गया। २ बना हुआ। ३ सत्य। ४ ठीक। उचित। उपयुक्त। ५ गुज़रा हुआ।

बीता हुआ ६ प्राप्त। ७ मिश्रित। युक्त। ८ समान। सदृश।—अनुकम्पा, (स्त्री०) प्राणिमात्र पर दया।—अन्तकः, (पु०) यमराज। धर्मराज।—अर्थः, (पु०) वास्तविक बात। वास्तविक परिस्थिति। सत्य। यथार्थता।—आत्मक, (वि०) पंचतत्वों का बना हुआ।—आत्मन्, (पु०) १ जीवात्मा। २ परमात्मा। ३ ब्रह्म की उपाधि। ४ शिव की उपाधि। ५ मूलतत्व सम्बन्धी पदार्थ। मौलिक पदार्थ। ६ शरीर। ७ युद्ध। लड़ाई।—आदिः, (पु०) १ परब्रह्म। २ अहङ्कार।—आर्त, (वि) प्रेताविष्ट।—आवासः, (पु०) १ शरीर। २ शिव। ३ विष्णु।—आविष्ट, (वि०) प्रेताविष्ट।—आवेशः, (पु०) प्रेत का किसी पर सवार होना।—इज्यं, (न०) इज्या, (स्त्री०) भूतों के लिये बलिदान।—इष्टा, (स्त्री०) कृष्ण पक्ष की १४-शी।—ईशः, (पु०) १ ब्रह्म। २ विष्णु। ३ शिव।—ईश्वरः, (पु०) शिव।—उन्मादः, (पु०) ऊपरी फिसाद। प्रेत का फेरा।—उपसृष्ट,—उपहत, (वि०) प्रेत के कब्जे में।—ओदनः, (पु०) भात का थाल।—कर्तृ,—कृत, (पु०) ब्रह्म की उपाधि।—कालः, (पु०) बीता हुआ समय।—केशी, (स्त्री०) तुलसी।—क्रान्तिः, (स्त्री०) प्रेताविष्ट।—गणः, (पु०) १ प्राणियों का समुदाय। २ मरे हुए पुरुषों के आत्माओं या राक्षसों का समुदाय।—ग्रस्त, (वि०) प्रेताविष्ट।—ग्रामः, (पु०) १ जीवधारी मात्र की समष्टि। २ भूत प्रेतों का समूह। ३ शरीर।—घ्नः, (पु०) १ ऊँट। २ प्याज।—घ्नी, (स्त्री०) तुलसी।—चतुर्दशी, नरक चौदस। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी।—चारिन्, (पु०) शिव जी की उपाधि।—जयः, (पु०) तत्वों पर विजय।—दया, (स्त्री०) प्राणि मात्र पर कृपा।—धरा,—धात्री,—धारिणी, (स्त्री०) पृथिवी।—नाथः, (पु०) शिव।—नायिका, (स्त्री०) दुर्गा देवी।—नाशनः, (पु०) १ भिलावा। २ राई। सरसों। ३ कालीमिर्च।—निचयः, (पु०) शरीर।—पतिः, (पु०) १ शिव। २ अग्नि। ३ तुलसी।—पत्री, (स्त्री०) तुलसी।—पूर्णिमा, (स्त्री०) आश्विन की पूर्णिमा।—पूर्व, (अव्यया०) पहिले। पेश्तर। वर्तमान से पहिले का।—प्रकृतिः, (स्त्री०) सब प्राणियों का उत्पत्तिस्थान या निकास।—ब्रह्मन्, (पु०) अकुलीन ब्राह्मण। देवल।—भर्तृ, (पु०) शिव की उपाधि।—भावनः, (पु०) १ परब्रह्म। २ विष्णु।—भाषा, (स्त्री०)—भाषितं, (न०) पैशाची भाषा।—महेश्वरः, (पु०) शिव जी।—यज्ञः, (पु०) पञ्च-महायज्ञों में से एक।—योनिः, (पु०) समस्त प्राणियों का उत्पत्ति स्थान या निकास।—राज, (पु०) शिव जी।—वर्गः, (पु०) पिशाच जाति।—वासः, (पु०) विभीतक वृक्ष।—वाहनः, (पु०) शिव जी की उपाधि।—विक्रिया, (स्त्री०) १ मिरगी का रोग। २ भूत या पिशाच का फेरा।—विज्ञानं,—विद्या, (स्त्री०) भूत-प्रेत-विद्या।—वृक्षः, (पु०) विभीतक वृक्ष।—संसारः, (पु०) मर्त्यलोक।—सञ्चारः, (पु०) भूत या पिशाच का फेरा।—सर्गः, (पु०) संसार की उत्पत्ति।—सूक्ष्मं, (न०) सांख्य के मतानुसार पञ्चभूतों का आदि, अमिश्र एवं सूक्ष्मरूप।—स्थानं, (न०) १ जीवधारियों का वासस्थान। २ प्रेतों के रहने का स्थान—हत्या, (स्त्री०) जीवधारियों का नाश।

भूतं (न०) १ कोई वस्तु चाहे वह मानवी हो चाहे दैवी और चाहे निर्जीव। २ प्राणधारी। ३ आत्मा। जीव। भूत। प्रेत। राक्षस। ४ तत्व। ५ वास्तविक घटना। वास्तविक बात। ६ भूतकाल। गुज़रा हुआ समय। ७ संसार। जगत। ८ कुशलता। ९ पाँच की संख्या।

भूतः (पु०) १ पुत्र। बच्चा। २ शिव। ३ कृष्ण पक्षीय चतुर्दशी।

भूतमय (वि०) जिसमें समस्त प्राणी सम्मिलित हों। २ पञ्चतत्वों का बना हुआ या उत्पन्न किये हुए जीवों से बना हुआ।

भूतिः (स्त्री०) १ अस्तित्व। होने का भाव। २ जन्म। उत्पत्ति। ३ कुशलत्व। स्वस्थता। प्रसन्नता। समृद्धि। ४ सफलता। सौभाग्य। खुशक़िस्मती। ५ धन। सम्पत्ति। ६ वैभव। राज्यश्री। ७ भस्म। राख। ८ हाथी का मस्तक रंग कर उसका श्रृङ्गार करना। ९ तप या तान्त्रिक अनुष्ठानादि से प्राप्त अलौकिक शक्ति। १० भुना हुआ माँस। ११ हाथी का मद। (पु०) १ शिव। २ विष्णु। ३ पितृगण।—कर्मन्, (न०) कोई शुभ कृत्य या उत्सव का विधान।—काम, (वि०) सम्पत्ति प्राप्ति का अभिलाषी।—कामः, (पु०) १ किसी राज्य का सचिव। २ वृहस्पति का नामान्तर।—कालः, (पु०) आनन्दप्रद शुभ घड़ी।—कीलः, (पु०) १ छिद्र। गर्त। २ नगर या दुर्ग चारों ओर जल से भरी खाई। ३ तहखाना। भूमि के नीचे की गुफानुमा छोटी कोठरी।—कृत्, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—गर्भः, (पु०) भवभूति कवि का नामान्तर।—दः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—निधानं, (न०) धनिष्ठा नक्षत्र।—भूषणः, (पु०) शिव जी।—वाहनः, (पु०) शिवजी।

भूतिकं (न०) १ कपूर। २ चन्दन। ३ कायफल।

भूमत् (वि०) पृथिवी या भूमि रखने वाला। (पु०) पृथिवीपाल। राजा।

भूमन् (पु०) १ अधिक परिमाण। विपुलता। प्राचुर्य। एक बड़ी संख्या। २ धन सम्पत्ति।

भूमन् (न०) १ पृथिवी। २ प्रान्त। ज़िला। भूखण्ड। ३ प्राणी। देहधारी। ४ बहुतायत। अनेकत्व।

भूमय (वि०) [स्त्री०—भूमयी] मिट्टी का। मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न।

भूमिः (स्त्री०) १ पृथिवी। २ कर्दममय स्थान। पङ्किल। जलाभूमि। पृथिवी का पृष्ठदेश। ३ नगर के चारो ओर का विस्तृत मैदान। २ ज़िला। देश। ज़मीन। ४ स्थान। भूखण्ड। ५ स्थल। जगह। ६ भूसम्पत्ति। ७ मंज़िल। खण्ड। ८ गोचरभूमि। चरागाह। ९ नाटक में किसी पात्र का चरित्र या अभिनय। १० आधार। ११ व्याप्ति। सीमा। १२ जिह्वा।—अन्तरः, (पु०) पड़ोसी राज्य का अधिपति।—इन्द्र,—ईश्वरः, (पु०) राजा। नृपति।—कम्पः, (पु०) भूडोल। भूचाल।—गुहा, (स्त्री०) गुफा।—गृहं, (न०) तहख़ाना।—चलः, (पु०)—चलनं, (न०) भूडोल। भूचाल।—जः, (पु०) १ मङ्गल ग्रह। नरकासुर। ३ मानव। ४ भूनिंब नामक पौधा।—जा, (स्त्री०) सीता।—जीविन्, (पु०) वैश्य। बनिया।—तलं, (न०) पृथिवी की सतह।—दानं, (न०) पृथिवी का दान।—देवः (पु०) ब्राह्मण।—धरः, (पु०) १ पर्वत। २ बादशाह। ३ सात की संख्या।—नाथः, (पु०)—पतिः,—पालः, (पु०)—भुज्, (पु०) राजा।—पक्षः, (पु०) तेज़ घोड़ा।—पिशाचं, (न०) ताड़ का पेड़।—पुत्रः, (पु०) मंगल ग्रह।—पुरन्दरः, (पु०) १ राजा। २ महाराज दिलीप का नाम।—भृत्, (पु०) १ पर्वत। २ राजा।—मण्डा, (स्त्री०) चमेली विशेष।—रक्षकः, (पु०) तेज़ घोड़ा।—लाभः, (पु०) मृत्यु। मौत।—लेपनं, (न०) गोबर।—वर्धनः, (पु०)—वर्धनं, (न०) लाश।—शय, (वि०) पृथिवी पर सोने वाला।—शयः, (पु०) जंगली कबूतर।—शयनं, (न०) शय्या, (स्त्री०) ज़मीन पर सोने वाला।—सम्भवः,—सुतः, (पु०) १ मङ्गलग्रह। २ नरकासुर।—सम्भवा,—सुता, (स्त्री०) सीता की उपाधि।—स्पृश, (पु०) १ मनुष्य। २ मानवजाति। ३ वैश्य। ४ चोर।

भूमिका (स्त्री०) १ ज़मीन। भूमि। २ पङ्किल भूमि। ३ मंज़िल। खण्ड। ४ डग। पद। ५ पटी। काला तख़्ता। ६ नाटक में किसी का चरित्र या अभिनय। ७ नाटक के नट की पोशाक। ८ श्रृङ्गार। ९ किसी ग्रन्थ के प्रारम्भ की सूचना जिससे उस ग्रन्थ के विषय में आवश्यक विषयों का ज्ञान हो।

भूमी (स्त्री०) पृथिवी।—कदम्बः, (पु०) कदम्ब

वृक्ष विशेष।—पतिः, (पु०)—भुज्, (पु०) राजा।—रुह्, (पु०)—रुहः, (पु०) वृक्ष।

भूयं (न०) (किसी वस्तु के) किसी रूप में होने की दशा या अवस्था यथा ब्रह्मभूय।

भूयशस् (अव्यया०) १ प्रायः। अक्सर। २ अतिशय। ३ पुनः। अन्तर।

भूयस् (वि०) [स्त्री०—भूयसी] १ आधिक्य। अत्यधिक। विपुल। २ अधिक बड़ा। अधिक लंबा। ३ अत्यावश्यक। ४ बहुत अधिक। बहुत लंबा। अतिशय। ५ बहुतायत। सम्पन्नता।

भूयस्त्वं (न०) १ विपुलता। बहुतायत। २ बहुमत। प्रबलता।

भूयिष्ठ (वि०) १ बहुत ही। २ प्रायः। बहुत करके।

भूर (अव्यया०) तीन व्याहृतियों में से एक।

भूरि (वि०) १ प्रचुर। अधिक। बहुत। २ बड़ा। भारी।

भूरि (पु०) १ विष्णु। २ ब्रह्मा। ३ शिव।

भूरि (न०) सुवर्ण।—गमः, (पु०) गधा।—तेजस्, (वि०) बड़ा चमकीला। (पु०) अग्नि।—दक्षिण, (वि०) १ मूल्यवान या बढ़िया वस्तुओं की दक्षिणा से युक्त। २ उदार।—दानं, (न०) उदारता।—धन, (वि०) धनवान।—धामन्, (वि०) चमकीला।—प्रयोग, (वि०) प्रायः उपभोग में आने वाला।—प्रेमन्, (पु०) लाल रंग का हंस।—भाग, (वि०) धनी। धनवान।—मायः, (पु०) शृगाल। गीदड़।—रसः, (पु०) गन्ना।—लाभः (पु०) बड़ा मुनाफा।—विक्रम, (वि०) बड़ा बहादुर।—श्रवस्, (पु०) एक रथी का नाम जो महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से पाण्डवों से लड़ा था और सात्यकि के हाथ से मारा गया था।

भूरिज् (स्त्री०) पृथिवी।

भूर्जः (पु०) भोजपत्र का वृक्ष। कण्टकः, (पु०) वर्णसङ्कर विशेष।—पत्रः, (पु०) भोजपत्र का पेड़।

भूर्णिः (स्त्री०) ज़मीन। पृथिवी।

भूष् (धा० परस्मै०) [भूषति, भूषयति, भूषयते, भूषित] १ पूजना। शृङ्गार करना। २ छा देना।

भूषणं (न०) १ शृङ्गार। सजावट। २ गहना। आभूषण।

भूषा (स्त्री०) १ शृङ्गार। सजावट। २ गहना। आभूषण। ३ रत्न।

भूषित (व० कृ०) सजा हुआ। आभूषणों से युक्त।

भूष्णु (वि०) १ होना। बनजाना। २ धन की कामना।

भृ (धा० उभय०) [भरति, भरिते, बिभर्ति, बिभृते, भृत] १ भरना। २ परिपूर्ण करना। व्याप्त होना। ३ सहना। सहारा देना। ४ पोषण करना। रक्षा करना। पालना। ५ अधिकार करना। कब्ज़ा करना। ६ पहिनना। धारण करना। ७ अनुभव करना। ८ देना। ९ रखना। पकड़ना। (स्मृति में) धारण करना। १० भाड़ा करना। ११ लाना। ले जाना।

भृकुंशः, भृकुंसः (पु०) स्त्री का वेष धारण करने वाला नट।

भृकुटिः, भृकुटी (स्त्री०) भौंह।

भृग् (अव्यया०) यह आग की चटचटाहट की आवाज़ को प्रकट करता है।

भृगुः (पु०) १ एक प्रसिद्ध मुनि। जमदग्नि। शुक्राचार्य। ४ शुक्रग्रह। ५ पहाड़ी। ६ पहाड़ के शिखर की समतल भूमि। ७ कृष्ण भगवान्।—उद्वहः, (पु०) परशुराम।—जः,—तनयः, (पु०) शुक्राचार्य।—नन्दनः, (पु०) १ परशुराम। २ शुक्र।—पतिः, (पु०) परशुराम।—वंशः, (पु०) परशुराम के वंशज।—वारः,—वासरः, (पु०) शुक्रवार। जुमा।—शार्दूलः,—श्रेष्ठः,—सत्तमः, (पु०) परशुराम।—सुतः,—सूनुः, (पु०) १ परशुराम। २ शुक्र ग्रह।

भृंगः, भृङ्गः (पु०) १ भौंरा। भ्रमर। २ बिलनी। ३ पक्षी विशेष। ४ लंपटनर। ५ सुवर्ण घट या सुवर्ण पात्र।

भृंगं } (न०) अभ्रक । भोडल । चिलचिल ।—
भृङ्गम् } अभीष्टः, (पु०) आम का पेड ।—आनन्दा, (स्त्री०) यूथिका लता ।—आवली, (स्त्री०) मधुमक्खियों का दल ।—जं, (न०) १ अगर । २ अभ्रक ।—पर्णिका, (स्त्री०) छोटी इलायची ।—राज्, (पु०) १ भौंरा । २ एक झाडी का नाम ।—रिटिः,—रीटिः, (पु०) शिव जी के गण विशेष जो बड़े बदशक्ल हैं ।—रोलः, (पु०) एक जाति की बरैया ।

भृंगारः (पु०) } १ सुवर्ण घट या सुवर्ण पात्र ।
भृङ्गारः (पु०) } २ आकार विशेष का लोटा । ३
भृंगारं (न०) } राज्याभिषेक के समय काम में
भृङ्गारं (न०) } आने वाला घट ।

भृंगारगं } (न०) १ स्वर्ण । सोना । २ लवङ्ग ।
भृङ्गारगम् } लौंग ।

भृंगारिका
भृङ्गारिका } (स्त्री०) झिल्ली नामक कीडा ।
भृंगारी
भृङ्गारी

भृंगिन् } (पु०) १ वटवृक्ष । २ शिव जी के एक
भृङ्गिन् } गण का नाम ।

भृंगिरिटिः
भृंङ्गिरिटिः } (पु०) शिव जी के द्वारपाल ।
भृंगिरीटिः
भृङ्गिरीटिः

भृंगेरिटिः } (पु०) शिव जी का गण ।
भृङ्गेरिटिः }

भृज् (धा० आत्म०) [भर्जते] भूनना । अकोरना ।

भृंटिका } (स्त्री०) पौधा विशेष ।
भृण्टिका }

भृंडिः } (स्त्री०) लहर ।
भृण्डिः }

भृत (व० कृ०) १ भरा हुआ । पूरित । १ पाला हुआ । पोषित । ३ सम्पन्न । ४ भाड़े पर लिया हुआ । अदा किया हुआ ।

भृतः (पु०) भाड़े का नौकर ।

भृतक (वि०) भाड़े किया हुआ । अदा किया हुआ । चुकाया हुआ ।—अध्यापकः, (पु०) १ वेतन भोगी शिक्षक । २ वेतन भोगी शिक्षक द्वारा पढ़ाया हुआ ।—अध्यापितः, (पु०) फीस देकर पढने वाला छात्र ।

भृतिः (स्त्री०) १ पालन पोषण । २ भोजन । ३ मज़दूरी । भाडा । ४ (वेतन पाने की शर्त पर) नौकरी । ५ पूंजी । मूलधन ।—अध्यापनं, (न०) पढ़ाना, विशेषतया वेदों का पढ़ाने के लिये वेतन लेकर ।—भुज्, (पु०) वेतन भोगी नौकर ।

भृत्य (वि०) वह जिसका पालन पोषण किया जाय ।—जनः, (पु०) नौकर । सेवक ।—भर्तृ, (पु०) घर का या परिवार का मालिक या बडा बूढ़ा ।—वर्गः, (न०) अनुचर समुदाय ।—वात्सल्यं, (न०) नौकरों के प्रति दया ।

भृत्यः (पु०) १ नौकर । चाकर । २ अमात्य । वज़ीर ।

भृत्या (स्त्री०) १ दासी । २ भोजन । ३ मज़दूरी । ४ सेवा ।

भृत्रिम (वि०) पालन पोषण किया हुआ ।

भृमिः (स्त्री०) भँवर । चक्कर ।

भृश् (धा० परस्मै०) [भृश्यति] नीचे गिरना । अधःपतन होना ।

भृश (वि०) १मज़बूत । ताकतवर । बलवान् । २ साघन । अत्यधिक । —दुःखित, —पीडित, (वि०) अत्यन्त सन्तप्त —सहृष्ट, (वि०) अत्यानन्दित ।

भृशं (अव्यया०) १ अत्यधिकता से । प्रचण्डता से । बहुतायत से । २ अक्सर । प्राय. । ३ अच्छे ढंग से । भले प्रकार ।

भृष्ट (व० कृ०) भुना हुआ । अकोरा हुआ ।—अन्नं, (न०) उबाल कर भुना हुआ दाना । लावा-खील ।

भृष्टिः (स्त्री०) १ भूनना । अकोरना । २ उजड़ा हुआ बाग या उपवन ।

भॄ (धा० परस्मै०) [भृणाति] १ पालनपोषण करना । २ भूनना । ३ कलङ्कित करना । भर्त्सना करना ।

भेकः (पु०) १ मेंड़क । २ भीरु मनुष्य । ३ बादल ।

भेकी (स्त्री०) मेंडकी। छोटा मेंडक।—भुज्, (पु०) सर्प। साँप।—रवः, (पु०) मेंडक की टर्रटर्र।

भेडः (पु०) १ मेष। भेड। २ वेडा। घन्नौती।

भेडूः (पु०) मेढा।

भेदः (पु०) १ भेदने की क्रिया। छेदना। वेधना। विदीर्ण करना। २ दरार। फटन। ३ गडबडी। होहल्ला। बाधा। ४ अलहदगी। अलगाव। ५ दरार। झिरी। सन्धि। ६ चोट। घाव। ७ अन्तर। पहिचान। ८ परिवर्तन। संशोधन। ९ झगडा। अनैक्य। १० विश्वासघात। ११ धोखा १२ किस्म। जाति। १३ द्वैतता। १४ चार प्रकार की राजनीतियों में से एक, जिसके द्वारा शत्रु और उसके मित्रों में परस्पर झगडा उत्पन्न कर दिया जाता है। १५ रेचन विधि। मल को साफ कर देने की क्रिया।—उन्मुख (वि०) खिलने वाला। फूटने वाला।—कर,—कृत, (वि०) झगडा उत्पन्न करने वाला।—दर्शिन,—दृष्टि,—बुद्धि, (वि०) संसार को परब्रह्म से भिन्न मानने वाला।—प्रत्ययः, (पु०) अद्वैतवाद में विश्वास रखने वाला।—वादिन्, (पु०) द्वैतवादी।—सह, (वि०) १ विभाजित या पृथक् होने योग्य। २ वह जो बिगाडा जा सके। जो प्रलोभन में फँसाया जा सके।

भेदक (वि०) [स्त्री०—भेदिका] १ तोडने वाला। चीरने वाला। विभाजित करने वाला। अलग करने वाला। २ नाश करने वाला। ३ पहचानने वाला। विवेचन करने वाला। ४ लक्षण वर्णन करने वाला।

भेदकः (पु०) विशेषण।

भेदनं (न०) १ चीर। फाड़। २ पृथक्त्व। अलहदगी अलगाव। ३ पहचान। ४ अनैक्य फैलाना। झगडा टंटा उत्पन्न करने वाला। ढिलाई। ५ प्रकटन। विश्वासघात।

भेदनः (पु०) शूकर।

भेदिन् (वि०) चीरने वाला। फाडने वाला। अलगाने वाला।

भेदिरं, भेदुरं (न०) इन्द्र का वज्र।

भेद्यं (न०) संज्ञा।—लिङ्गः, (वि०) लिङ्ग द्वारा पहचाना हुआ।

भेरः (पु०) भेरी। बडा ढोल या नगाडा।

भेरिः, भेरी (स्त्री०) बड़ा ढोल या नगाड़ा।

भेरुंड, भेरुण्ड (वि०) भयानक। भयप्रद। डरावन। खौफनाक।

भेरुंडं, भेरुण्डं (न०) गर्भधारण। गर्भाधान।

भेरुंडः, भेरुण्डः (पु०) पक्षी की जाति विशेष।

भेरुंडकः, भेरुण्डकः (पु०) श्रृगाल। स्यार।

भेल (वि०) १ डरपोकना। भीरु। २ मूर्ख। अज्ञानी। ३ चञ्चल। ४ लंबा। ५ फुर्तीला।

भेलः (पु०) नाव। बोट। बेडा।

भेलकः (पु०), भेलकं (न०) नाव। बोट। बेड़ा।

भेष् (धा० उभय०) [भेषति, भेषते] डरना। भयभीत होना।

भेषजं (न०) १ दवाई। २ इलाज। चिकित्सा। ३ सोआ। सोंफ।—अगारः,—आगारः, (पु०)—अगारं,—आगारं, (न०) दवाईखाना या दवाई की दूकान।—अंगं, (न०) कोई चीज़ जो दवाई खाने के बाद ली जाय।

भैक्ष (वि०) [स्त्री०—भैक्षी] भिक्षा पर निर्वाह करने वाला।—अन्न, (न०) भिक्षा का अन्न।—आशिन् (वि०) भिक्षा में मिले हुए अन्न को खाने वाला। (पु०) भिखारी।—आहारः, (पु०) भिखारी। भिक्षुक।—चरणं,—चर्यं, (न०)—चर्या, (स्त्री०) भीख माँगना।—जीविका,—वृत्तिः, (स्त्री०) भिखारीपन।—भुज्, (पु०) भिखारी। भिक्षुक।

भैक्षं (न०) भिक्षा। भीख।

भैक्षवं, भैक्षुकं (न०) कई एक भिखारी।

भैक्ष्यं (न०) भीख। खैरात।

भैम (वि०) [स्त्री०—भैमी] भीम सम्बन्धी।

भैमी (स्त्री०) १ भीम की पुत्री दमयन्ती। २ माघ-शुक्ला ११शी।

भैमसेनिः | **भैमसेन्यः** | (पु०) भीमसेन का पुत्र।

भैरव (वि०) [स्त्री०—भैरवी] १ भयानक। डरावना। ३ भैरव सम्बन्धी।—ईशः (पु०) १ विष्णु। शिव।—तर्जक (पु०)—यातना, (स्त्री०) वह यातना जो उन प्राणियों को, जो काशी में शरीर त्यागते हैं, मरते समय उनकी शुद्धि के लिये भैरव जी द्वारा दी जाती है।

भैरवं (न०) भय। डर।

भैरवः (पु०) शिव के गण विशेष जो उन्हींके अवतार माने जाते हैं।

भैरवी (स्त्री०) १ दुर्गा देवी। २ एक रागिनी विशेष। ३ वर्ष या कम की लड़की जो दुर्गापूजा में दुर्गा देवी की जगह समझी जाती है।

भैषजं (न०) दवाई।

भैषजः (पु०) लावक। लवा। बटेर।

भैषज्यं (न०) १ रोग की चिकित्सा। २ दवा दारू। ३ आरोग्य करने की शक्ति। आरोग्यता।

भैष्मकी (स्त्री०) रुक्मिणी।

भोक्तृ (वि०) १ खाने वाला। २ भोग करने वाला। ३ कब्ज़ा करने वाला। ४ उपयोग में लाने वाला बरतने वाला। ५ अनुभव करने वाला।

भोक्तृ (पु०) १ काविज़। उपभोग कर्त्ता। उपयोग कर्त्ता। २ पति। ३ राजा। नरेन्द्र। ४ प्रेमी। आशिक।

भोगः (पु०) १भक्षण। आहार करना। २ स्त्रीसम्भोग। ३ मुक्ति। कब्ज़ा। अधिकार। ४ उपयोग। लाभ। ५ शासन। हुकूमत। ६ प्रयोग। लगाना (जैसे रुपये का ब्याज पर या व्यापार में)। ७ अनुभव। ८ प्रतीति। भाव। ९ उपभोग। १० उपभोग के लिये पदार्थ। ११ भोज। दावत। ज्योंनार। १२ किसी देवविग्रह के लिये नैवेद्य। १३ लाभ। मुनाफा। १४ आय। मालगुजारी। १५ सम्पत्ति। १६ वह मजदूरी या रुपया पैसा जो किसी वेश्या को उसके साथ उपभोग करने के बदले में दिया जाय। १७ मोड़। गेंडुरी। घुमाव। १८ सर्प का फैला हुआ फन। १९ सर्प।—अर्ह, (वि०) उपभोग योग्य।—अर्हं, (न०) सम्पत्ति। धन दौलत।—अर्ह्यं (न०) अनाज। अन्न। नाज।—आधि, (पु०) गिरवी रखी हुई धरोहर जिसका उपभोग तब तक किया जासके जब तक उसका मालिक उसे छुड़ावे नहीं।—आवसः, (पु०) ज़नानखाना। घर का वह भाग जिसमें स्त्रियाँ उठे बैठें।—गुच्छ, (न० रण्डियों की उजरत।—गृहं, (न०) ज़नाना कमरा।—तृष्णा, (स्त्री०) साँसारिक पदार्थों के उपभोग की कामना या अभिलाषा।—देहः, (पु०) जीव का सूक्ष्म शरीर या कारण शरीर जिसके द्वारा वह मर्त्यलोक में किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फल परलोक में भोगता है।—धरः, (पु०) सर्प। साँप।—पतिः, (पु०) सूबेदार। ज़िलेदार।—पालः, (पु०) साईस।—पिशाचिका, (स्त्री०) भूख।—भृतकः, (पु०) नौकर। चाकर। (केवल खुराक लेकर काम करने वाला)।—वस्तु, (न०) उपभोग्य वस्तु।—स्थानं, (न०) १ शरीर। २ ज़नाना कमरा।

भोगवत् (वि०) १ आनन्दप्रद। २ सुखी। समृद्धवान्। ३ उमेठवाँ। छल्लादार। गिडुरीदार।

भोगवत् (पु०) १ सर्प। २ पर्वत। ३ एक ही साथ नाचना, गाना और अभिनय करना।

भोगवती (स्त्री०) १ पातालगंगा। २ नागिन। ३ नागों की पुरी जो पाताल में है। ४ द्वितीया तिथि की रात। ५ महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम। ६ कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

भोगिकः (पु०) साईस। घोड़े की दास्य करने वाला।

भोगिन् (वि०) १ खाने वाला। २ उपयोग करने वाला। ३ अनुभव करने वाला। ४ इस्तेमाल करने वाला। ५ टेढ़ा मेढ़ा या मोड़ों वाला। ६

फलों वाला। ७ कामी। कामुक। विषयलंपट। ८ धनी। सम्पत्तिशाली।—ईशः,—इन्द्रः, (पु०) शेष जी या वासुकी नाग।—कान्तः, (पु०) पवन। हवा।—भुज्, (पु०) १ न्यौला। २ मयूर। मोर।—वल्लभं, (न०) चन्दन।

भोगिन् (पु०) १ सर्प। २ राजा। ३ इन्द्रियपरायण व्यक्ति। लोभासक्त मनुष्य। आमोद प्रमोद में एकान्त रत नर। ४ नाई। नापित। ५ गाँव का मुखिया। ६ आश्लेषा नक्षत्र।

भोगिनी (स्त्री०) राजा की रखैल स्त्री या वेश्या।

भोग्य (वि०) १ भोगने योग्य। काम में लाने लायक। २ जो सह लिया जाय।३ लाभकारी।

भोग्यं (न०) १ जिसका भोग किया जाय। २ सम्पत्ति। अधिकारयुक्त पदार्थ। ३ अनाज। नाज। अन्न।

भोग्या (स्त्री०) रंडी। वेश्या।

भोजः (पु०) १ मालवा प्रान्त के अन्तर्गत धार नगरी के एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध प्रजाप्रिय राजा का नाम। २ एक देश का नाम। ३ विदर्भ के एक राजा का नाम। यथा—

भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः।

—रघुवंश

—अधिपः, (पु०) १ कंस। २ कर्ण।—इन्द्रः, (पु०) भोजराज।—कटं, (न०) राजकुमार रुक्मिन् द्वारा प्रतिष्ठित नगर का नाम।—देवः, राजः, (पु०) १ राजाभोज।—पतिः, (पु०) १ राजा भोज। २ कंस।

भोजनं (न०) १ आहार को मुँह में रख कर खाना। भक्षण करना। खाना। २ खाने की सामग्री। खाने का पदार्थ। ३ खाने के लिये भोजन देना। उपयोग। ५ उपभोग्य कोई पदार्थ। ३ सम्पत्ति। धन।—अधिकारः, (पु०) भंडारी। मोदी।—आच्छादनं (न०) खाना कपड़ा।—कालः (पु०)—वेलः, (स्त्री०) —समयः, (पु०) भोजनकाल। खाने का समय।—त्यागः, (पु०) आहार त्याग।—भूमिः, (स्त्री०) भोजन का कमरा।—विशेषः, बढ़िया खाने की सामग्री।—वृत्तिः, (स्त्री०) भोजन। आहार।—व्यग्र, (वि०) भोजन करने में लगा हुआ।—व्ययः, (पु०) भोजन का ख़र्च।

भोजनः (पु०) शिव जी की उपाधि।

भोजनीय (वि०) खाने योग्य।

भोजनीयं (न०) खाने का सामान।

भोजयितृ (वि०) खिलाने वाला।

भोजाः (पु० बहुव०) एक जाति के लोगों का नाम।

भोज्य (वि०) १ खाद्य पदार्थ। २ सम्भोग करने योग्य।—कालः, पु०) भोजन का समय।—सम्भवः, (पु०) आमरस। उदरस्थ भोज्य पदार्थ का अर्ध जीर्ण रस।

भोज्यं (न०) १ आहार। भोजन। २ भोजन सामग्री। स्वादिष्ट भोजन। षटरस व्यञ्जन। ४ उपयोग।—

भोज्या (स्त्री०) राजा भोज की एक रानी।

भोटः (पु०) देश विशेष।—अङ्गः, (पु०) भूतान नामक देश विशेष।

भोटीय (वि०) तिब्बतीय (जन)।

भोभीरा (स्त्री०) मूँगा।

भोस् (अव्यया०) ओ। हो। अरे। आह। सम्बोधनात्मक अव्यय।

भौजंग, भौजङ्ग, (वि०) [स्त्री०—भौजङ्गी] सर्पवत्। सर्प समान।

भौजंगं, भौजङ्गम् (न०) अश्लेषा नक्षत्र।

भौट्टः (पु०) तिब्बत का रहने वाला।

भौत (वि०) [स्त्री०—भौती] १ जीवित व्यक्तियों से सम्बन्ध युक्त। २ जड़ पदार्थ। ३ शैतानी। राक्षसी। ४ पागल।

भौतः (पु०) भूत प्रेतों को पूजने वाला। २ देवल-देवता की पूजा कर उस पर चढ़े हुए द्रव्य से निर्वाह करने वाला।

भौतं (न०) भूत प्रेतों का समुदाय।

भौतिक (वि०) [स्त्री०—भौतिकी] १ जीवधारी सम्बन्धी। २ जड़पदार्थ सम्बन्धी। ३ भूत प्रेत सम्बन्धी।—मठः, (पु०) साधु संन्यासी अथवा छात्रों के रहने का स्थान।—विद्या, (स्त्री०) जादूगरी।

भौतिकं (न०) मोती।

भौतिकः (पु०) शिव।

भौम (वि०) [स्त्री०—भौमी,] १ पृथिवी सम्बन्धी। २ मिट्टी का बना हुआ। ३ मङ्गल ग्रह सम्बन्धी।

भौमः (पु०) १ मङ्गलग्रह। २ नरकासुर। ३ जल। ४ प्रकाश।—दिनं, (न०) —वारः, (पु०) —वासरः, (पु०) मंगलवार।—रत्नं, (न०) मूंगा।

भौमनः (न०) विश्वकर्मा।

भौमिक (वि०) [स्त्री०—भौमिकी] } मर्त्य लोक
भौम्य (वि०) } वासी।

भौरिकः (पु०) कोषाध्यक्ष।

भौवनः (पु०) देखो—भौमन।

भौवादिक (वि०) [स्त्री०—भौवादिकी] भू श्रेणी की धातु सम्बन्धी।

भ्रंश् (धा० आत्मने परस्मै०) [भ्रंशते, भ्रश्यति, भ्रष्टः] १ गिरना। ठोकर खाना। २ भटकना। ३ खोना। ४ बच जाना। भाग जाना। ५ क्षीण होना। घटना। ६ लोप होना।

भ्रंशः } (पु०) १ पतन। फिसलन। ठोकर। २
भ्रंसः } क्षीणता। ह्रास। ३ पतन। नाश। ४ पीलापन। ५ लोप। ६ भटक जाना।

भ्रंशन } (वि०) —[भ्रंशनी, या भ्रंसनी]
भ्रंसन } गिराने वाला।

भ्रंशनं } (न०) १ गिराने की क्रिया। २ वञ्चित होना।
भ्रंसनं } खोना।

भ्रंशिन् (वि०) १ गिरने वाला। २ जीर्ण होने वाला। ३ भटकने वाला। ४ नाश करने वाला।

भ्रंकुशः (पु०) जनाना रूप धरे हुए नट।

भ्रक्ष (धा० आत्म०) [भ्रक्षति, भ्रक्षते] खाना। भक्षण करना।

भ्रज्जनं (न०) भूजने सेकने या अकोरने की क्रिया।

भ्रण् (धा० परस्मै०) [भ्रणति] शब्द करना। बजना।

भ्रभंगः }
भ्रभङ्गः } (पु०) देखो भ्रूभङ्ग।

भ्रम् (धा० परस्मै०) [भ्रमति, भ्रम्यति, भ्राम्यति, भ्रान्त] १ भ्रमण करना। २ घूमना। कावा काटना। ३ भटक जाना। ४ लड़खड़ाना। सन्देह युक्त होना। डाँवाडोल होना। ५ भूलना। ६ धुकधुक करना। झिलमिलाना। तिलमिलाना। पर मारना। ७ घेरना।

भ्रमः (पु०) १ भ्रमण। २ कावा काटना। ३ भूलना। भटकना। ४ भूल। गलती। धोखा। ५ गड़बड़ी। परेशानी। ६ भँवर। ७ कुम्हार का चाक। ८ चक्की का पाट। ९ खराद। १० सुरती। ११ जल-श्रोत। जलपथ।—आकुल, (वि०) घबड़ाया हुआ।—आसक्तः, (पु०) सिगलीगर।

भ्रमणं (न०) १ घूमना। फिरना। २ चक्कर। ३ लुढ़चाल। भटकना। ४ कप। कँपकपी। चञ्चलता। ५ भूल। गलती। ६ घुमरी। चक्कर।

भ्रमणी (स्त्री०) १ खेल विशेष। २ जोंक। जलौका।

भ्रमत् (वि०) घूमने वाला।—कुटी, (स्त्री०) छाता विशेष।

भ्रमरः (पु०) १ भौंरा। कामुक जन। विषयी जन। २ कुम्हार का चाक।

भ्रमरं, (न०) घुमरी। चक्कर।—अतिथिः, (पु०) चम्पा का वृक्ष।—अभिलीन, (वि०) जिसमें मधुमक्खी या भ्रमर लपटे हों।—अलकः, (पु०) माथे पर की अलक या लट।—इष्टः, (पु०) श्योनाक वृक्ष।—उत्सवा, (स्त्री०) माधवी लता।—करण्डकः, (पु०) डिब्बी जिसमें भौंरे भरे रहते हैं (चोर लोग जब चोरी करने जाते हैं तब इसे ले जाते हैं और जिस घर में चोरी करने जाते हैं उसमें यदि दीपक जलता हुआ हो तो भौंरों को छोड़ देते हैं। वे जाकर दीपक बुझा देते हैं।) —कीटः, (पु०) बर्रै विशेष।—प्रिय, (पु०) कदम्ब वृक्ष विशेष।—बाधा, (स्त्री०) भ्रमर या

मधुमक्षिका द्वारा विघ्न ।—मण्डलं, (न०) भ्रमर या मधुमक्षिकाओं का दल ।

भ्रमरकः (पु०) १ मधुमक्षिका । २ भँवर ।

भ्रमरकं (न०) / भ्रमरकः (पु०) } १ माथे पर लटकने वाली लट या अलक । २ क्रीडा के लिये गेंदा । ३ लट्टू । बिंगी ।

भ्रमरिका (स्त्री०) चारों ओर भ्रमण करने वाली ।

भ्रामः (स्त्री०) १ चक्कर खाना । घूमना । २ कुम्हार का चाक । ३ खरादी की खराद । ४ भँवर । ५ हवा का चक्कर । बवण्डर । ६ गोलाकार सैन्य व्यूह । ७ भूल । गलती ।

भ्रश् (देखो) भ्रंश ।

भ्रंशिमन् (पु०) प्रचण्डता । आधिक्य । उग्रता ।

भ्रष्ट (व० कृ०) १ गिरा हुआ । २ पतित । ३ भूला भटका । ४ वियोजित । निकाला हुआ । ५ क्षीण । बरबाद । ६ खोया हुआ । ७ दुराचारी । बदचलन । —अधिकार (वि०) बरखास्त किया हुआ । किसी पद या अधिकार से निकाला हुआ ।—क्रिय, (वि०) कर्म को छोड़े हुए ।—योगः, (पु०) धर्मच्युत । धर्म से डिगा हुआ ।

भ्रस्ज (धा० उभय०) [भृज्जति, भृष्ट] १ भूनना । अकोरना ।

भ्राज् (धा० आत्म०) [भ्राजते] १ चमकना । दमकना ।

भ्राजं (न०) एक प्रकार का साम जो गवामयनसत्र में विषुव नामक प्रधान दिन में गाया जाता था ।

भ्राजः (पु०) सप्तसूर्यों में से एक का नाम ।

भ्राजक (वि०) [स्त्री०—भ्राजिका] प्रकाशमान । दीप्तिमान ।

भ्राजक (न०) पित्त ।

भ्राजथुः (पु०) आभा । चमक । सौन्दर्य ।

भ्राजिन् (वि०) चमकीला ।

भ्राजिष्णु (वि०) चमकीला । चमकदार ।

भ्राजिष्णुः (पु०) १ विष्णु । २ शिव ।

भ्रातृ (पु०) १ भाई । २ सगा या सहोदर भाई । ३ समीपी सम्बन्धी । ३ सगा । नातेदार । ४ साधारणतः सम्बोधनात्मक शब्द । यथा । "भ्रातः कष्टमहो" भाई ! बड़ा कष्ट है ।" (द्विवचन) भाई बहिन ।—गन्धि,—गन्धिक, (त्रि०) नाम मात्र का भाई ।—जः, (पु०) भतीजा । —जा, (स्त्री०) भतीजी ।—जाया, (स्त्री०) [=भ्रातुर्जाया भी रूप होता है ।] भौजाई । भाई की स्त्री ।—दत्तं, (न०) वह सम्पत्ति जो भाई अपनी बहिन को विवाह के समय दे ।— द्वितीया, (स्त्री०) दिवाली के बाद की द्वितीया । भैयादूज ।—पुत्रः, (पु०) (भ्रातुष्पुत्रः भी रूप होता है ।) भाई का बेटा । भतीजा ।—वधूः, (स्त्री०) भाई की पत्नी । भौजाई । भाभी ।— श्वसुरः, (पु०) पति का बड़ा भाई । जेठ । भसुर ।—हत्या, (स्त्री०) भाई का वध ।

भ्रातृक (वि०) भाई सम्बन्धी ।

भ्रातृव्यः (पु०) १ भतीजा । भाई का लड़का । २ शत्रु । दुश्मन ।

भ्रात्रीयः / भ्रात्रेयः } (पु०) भाई का पुत्र । भतीजा ।

भ्रात्र्यं (न०) भाईचारा । भ्रातृभाव ।

भ्रांत / भ्रान्त } (व० कृ०) १ भ्रमण किये हुए । घूमा फिरा हुआ । २ चक्कर खाया हुआ । ३ भूला हुआ । भटका हुआ । ४ परेशान । घबड़ाया हुआ । ५ इधर उधर घूमा हुआ ।

भ्रांतं / भ्रान्तम् } (न०) १ भ्रमण । २ भूल । ग़लती ।

भ्रांतिः / भ्रान्तिः } (स्त्री०) १ भ्रमण । २ चक्कर काटना । ३ घूम कर आना । ४ ग़लती । भूल । भ्रम । ५ परेशानी । घबड़ाहट । ६ सन्देह । संशय ।—कर, (वि०) भ्रम में गलने वाला । —नाशनः, (पु०) शिव जी ।—हर, (वि०) भ्रम दूर करने वाला ।

भ्रांतिमत् / भ्रान्तिमत् } (वि०) १ घूमने वाला । २ भूल करने वाला । ३ काव्यालङ्कार विशेष, जिसमें किसी वस्तु को, दूसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देख, भ्रम से वह दूसरी वस्तु ही समझ लेना निरूपित होता है ।

भ्रामः (पु०) १ इधर उधर का भ्रमण । २ भ्रम । ग़लती । भूल ।

भ्रामक (वि०) [स्त्री०—भ्रामिका] १ घुमाने वाला । २ परेशान करने वाला । छलिया । कपटी । धूर्त । चालबाज़ ।

भ्रामकः (पु०) १ सूरजमुखी फूल । २ चुम्बक पत्थर । ३ छली । धूर्त । ४ गीदड़ । शृगाल ।

भ्रामर (वि०) [स्त्री०—भ्रामरी] मधुमक्खी सम्बन्धी ।

भ्रामरं (न०) } १ चुम्बक पत्थर । (न०) चक्कर
भ्रामरः (पु०) } काटना । २ घुमरी । चक्कर । ३ मिरगी । ४ शहद । ५ स्त्रीसम्भोग का आसन विशेष ।

भ्रामरी (स्त्री०) १दुर्गा देवी । २प्रदक्षिणा । परिक्रमा ।

भ्राश् } (धा० आत्म०) [भ्राशते, भ्राश्यते,
भ्लाश् } भ्लाशते, भ्लाश्यते] चमकना । जलना । चमकना ।

भ्राष्ट्रं (न०) } कड़ाई । (पु०) १ प्रकाश । २
भ्राष्ट्रः (पु०) } आकाश । व्योम ।

भ्राष्ट्रमिन्ध } (वि०) भड़भूजा । भुँजवा ।
भ्राष्ट्रमिन्ध }

भ्रूकुंशः
भ्रूकूंशः
भ्रूकुंसः
भ्रूकुंसः } (पु०) अभिनयकर्त्ता पुरुष जो स्त्री के भेष में हो ।

भ्रुकुटिः } (स्त्री०) भौंह ।
भ्रुकुटी }

भ्रुड् (धा० परस्मै०) [भ्रुडति] १ एकत्र करना । २ ढकना ।

भ्रू (स्त्री०) भौं ।—कुटि,—कुटी, (स्त्री०) भौं टेढ़ी करना ।—क्षेपः, (पु०) भौं टेढ़ी करना ।—भङ्ग,—भेदः, (पु०) तेवरी चढ़ाना ।—भेदिन्, (वि०) तेवरी चढ़ाने वाला ।—मध्यं, (न०) दोनों भौंवों के बीच का स्थान ।—विकारः,—विक्षेपः, (पु०),—विक्रिया, (स्त्री०) त्योरी बदलना ।

भ्रूणः, (पु०) १ स्त्री का गर्भ । २ बालक की उस समय की अवस्था जब कि वह गर्भ में रहता है ।—घ्न,—हन्, (वि०) गर्भपात करने वाला ।

भ्रेज् (धा० आत्म०) [भ्रेजते] चमकना ।

भ्रेष्, भ्लेष् (धा० उभय०) [भ्रेषति भ्रेषते, भ्लेषति, भ्लेषते] १ जाना । २ गिरना । लड़खड़ाना । फिसलना । ३ डरना । ४ नाराज़ होना ।

भ्रेषः (पु०) १ चलना । गमन । फिसलना । लड़खड़ाना । २ नाश । ३ हानि । ४ पाप । भंग करना । तोड़ना । ५ अलग करना । जुदा करना ।

भ्रौणहत्यं (न०) गर्भ गिरा कर या अन्य किसी प्रकार गर्भस्थ बालक को मार डालना ।

भ्लाश् देखो भ्राश् ।

म

म संस्कृत वर्णमाला का पचीसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का अन्तिम वर्ण । इसका उच्चारण होंठ और नासिका द्वारा होता है । जिह्वा के अग्रभाग का दोनों होठों से स्पर्श होने पर इसका उच्चारण होता है । यह स्पर्श और अनुनासिक वर्ण है । इसके उच्चारण में संवार, नादघोष और अल्पप्राण प्रयत्न लगाये जाते हैं । प, फ, ब और भ इसके सवर्ण कहे जाते हैं ।

मं (न०) १ जल । २ सुख । कुशलता ।

मः (पु०) १ समय । काल । २ विष । जहर । ३ ऐन्द्रिजालिक चुटकुला । ४ चन्द्रमा । ५ ब्रह्म । ६ विष्णु । ७ शिव । ८ यम ।

मकरः (पु०) १मगर । नक्र । घड़ियाल । २मकर राशि । ३ मकराकृत व्यूह । ४ मकराकृत कुण्डल । मकराकार मुद्रा । ६ कुबेर की नवनिधियों में से एक

निधि का नाम।—अङ्कः, (पु०) १ कामदेव। २ समुद्र।—अश्वः, (पु०) वरुण।—आकरः, —आलयः,—आवासः, (पु०) समुद्र।—कुण्डलं, (न०) मकराकृत कुण्डल।—केतनः, —केतुः,—केतुमत्, (पु०) कामदेव की उपाधियाँ।—ध्वजः, (पु०) १ कामदेव। २ सैन्य व्यूह विशेष।—राशिः, (स्त्री०) मकर राशि।—संक्रमणं, (न०) सूर्य का मकरराशि पर जाना।—सप्तमी, (स्त्री०) माघ शुक्ला ७मी।

मकरन्दः (पु०) १ फूलों का रस। २ कुन्द पुष्प। ३ कोयल। ४ मधुमक्षिका। ५ आम का वृक्ष विशेष जिसमें सुगंधि होती है।

मकरन्दं (न०) किंजल्क। फूल का केसर।

मकरन्दवत् (वि०) मकरन्द से पूर्ण।

मकरन्दवती (स्त्री०) लता विशेष या उसके फल।

मकरिन् (पु०) समुद्र की उपाधि।

मकरी (स्त्री०) मादा घड़ियाल।—पत्रं,—लेखा, (न०) लक्ष्मी जी के मुख का चिन्ह विशेष।—प्रस्थः (पु०) एक नगर विशेष।

मकुटं (न०) ताज। मुकुट।

मकुतिः, (पु०) राजा की ओर से शूद्रों के लिये आदेश। शूद्रशासन।

मकुरः (पु०) १ दर्पण। आईना। २ वकुल वृक्ष। ३ कली। ४ अरबी चमेली। ५ कुम्हार के चाक को घुमाने का डंडा।

मकुलः (पु०) १ वकुल वृक्ष। २ कली।

मकुष्ठः
मकुष्ठकः
मकुष्ठः } (पु०) मोठ नामक अन्न।

मकूलकः (पु०) १ कली। २ दन्ती वृक्ष।

मक्क् (धा० आ०) [मक्कते] जाना।

मक्कुलः (पु०) १ धूप। लोबान। २ गेरू।

मक्कोलः (पु०) खड़िया मिट्टी।

मक्ष् (धा० परस्मै०) [मक्षति] १ इकट्ठा करना। जमा करना। संग्रह करना। २ कुपित होना।

मक्षः (पु०) १ कोप। क्रोध। २ दम्भः। पाखण्ड। ३ समूह।—वीर्यः, (पु०) पियाल वृक्ष।

मक्षिका
मक्षीका } (स्त्री०) मक्खी। शहद की मक्खी।—मलं, (न०) मोम।

मख या मंख् (धा० परस्मै०) [मखति, मंखति] चलना। जाना। रेंगना।

मखः (पु०) यज्ञ। याग।—अग्निः, (पु०)—अनलः, (पु०) यज्ञीयाग्नि। यज्ञ की आग। असुहृद्, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—क्रिया, (स्त्री०) यज्ञीय कर्म विशेष।—त्रातृः, (पु०) श्रीराम जी की उपाधि।—द्विष्, (पु०) राक्षस।—द्वेषिन्, (पु०) शिव जी की उपाधि।—हन्, (न०) १ इन्द्र। २ शिव।

मगधः (पु०) १ विहार के दक्षिणी प्रान्त का प्राचीन नाम। २ वंदीजन या भाट।—उद्भवा, (स्त्री०) बड़ी पीपल।—पुरी, (स्त्री०) मगधनाम्नीपुरी।—लिपिः, (स्त्री०) मागधी लिपि या लिखावट।

मगधाः (पु० बहु०) १ मगधदेश के अधिवासी। २ बड़ी पीपल।

मग्न (वि०) १ निमज्जित। डूबा हुआ। बूड़ा हुआ। २ लवलीन। लिप्त। लीन।

मघं (न०) एक प्रकार का पुष्प।

मघः (पु०) १ पुराणों के अनुसार एक द्वीप का नाम, जिसमें म्लेच्छ रहते हैं। २ देश विशेष। ३ एक दवा का नाम। ४ हर्ष। आनन्द। ५ दसवां मघा नक्षत्र।

मघवः
मघवत् } (पु०) इन्द्र का नाम।

मघवन् (पु०) १ इन्द्र का नाम। उल्लू। पेचक। ३ व्यास जी का नाम।

मघा (स्त्री०) दसवें नक्षत्र का नाम।—त्रयोदशी, (स्त्री०) भाद्र कृष्ण त्रयोदशी।—भवः,—भूः, (पु०) शुक्रग्रह।

मंक्
मङ्क् } (धा० आत्म०) [मंकते] १ जाना। २ सजाना। शृंगार करना।

मंकिलः }
मङ्किलः } (पु०) दावानल।

मंकुरः }
मङ्कुरः } (पु०) दर्पण। आईना।

मंत्तणं (न०) टाँगों की रक्षा के लिये चर्म निर्मित कवच।

मंक्षु (अव्यया०) १ तुरन्त। फौरन। शीघ्रता से। २ अतिशय। अत्यधिक। प्रचुर।

मंखः }
मङ्खः } (पु०) १ राजा का वंदीजन। २ मरहम। लेप। दवा।

मंग् }
मङ्ग् } (धा० उभय०) [मंगति—मङ्गति, मंगते—मङ्गते] जाना। चलना।

मंगः }
मङ्गः } (पु०) १ नाव का अगला भाग। गलही। २ जहाज़ का एक बाज़ू।

मंगल }
मङ्गल } (वि०) १ शुभ। २ समृद्धवान्। ३ बहादुर। वीर।

मंगलम् }
मङ्गलम् } (न०) १ शुभत्व। आनन्द। सौभाग्य कुशल। २ शुभशकुन। ३ आशीर्वाद। दुआ। ४ शुभ पदार्थ। मंगलकारी वस्तु। ५ विवाहादि मङ्गलोत्सव। ६ शुभावसर। शुभवत्ता। उत्सव। ७ प्राचीन रीति रस्म। ८ हल्दी।—अक्षताः, (पु० बहुवचन) वे अक्षत या चाँवल जो आशीर्वाद देते समय ब्राह्मण यजमान के ऊपर छोड़ते हैं।—अगुरुः. (न०) चन्दन विशेष।—अयनं, (न०) आनन्द या समृद्धि का मार्ग।—अष्टकं. (न०) आशीर्वादात्मक श्लोक जो विवाह कराने वाला पुरोहित या पाधा वर वधू की मङ्गल कामना के लिये विवाह के समय पढ़ता है।—आह्निक,(वि०) वह धार्मिक कृत्य जो मङ्गल कामना के लिये नित्य किया जाय।—आचरणं, (न०) वह श्लोक या पद जो किसी शुभ कार्य के आरम्भ में कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिये पढ़ा या लिखा जाय।—आचारः, (पु०) १ गीतवाद्यादि शुभ कृत्य। २ आशीर्वादोच्चारण।—आतोद्यं, (न०) वह ढोल जो किसी उत्सवावसर पर बजाया जाय।—आदेशवृत्तिः, (पु०) ज्योतिषी। भाग्य में लिखा शुभाशुभ फल बताने वाला।—आरम्भः, (पु०) गणेश जी।—आलयः, —आवासः, (पु०) देवालय मंदिर।—कारक,—कारिन्, (वि०) शुभ।—क्षौमं, (न०) वह रेशमी वस्त्र जो किसी उत्सव के अवसर पर पहिना जाय।—ग्रहः, (पु०) शुभ ग्रह।—छायः, (पु०) प्लक्ष वृक्ष।—तूर्य,—वाद्यं, (न०) तुरही या ढोल जो किसी उत्सव या मंगल कृत्य होते समय बजाया जाय।—देवता, (स्त्री०) शुभ या मङ्गल देवता।—पाठकः (पु०) भाट। वंदीजन। मागध।—प्रतिसरः,—सूत्रं, (न०) १ वह डोरा जो किसी देवता के प्रसाद रूप में किसी शुभ अवसर पर कलाई में बाँधा जाता है। २ वह डोरा जो सौभाग्यवती स्त्री अपने गले में तब तक बाँधती है जब तक उसका पति जीवित रहता है। ३ तावीज़ या बाज़ूबंद की डोरी।—प्रदा, (स्त्री०) हल्दी।—प्रस्थ, (पु०) एक पर्वत।—वचस्, (पु०)—वादः, (पु०) आशीर्वचन। आशीर्वाद।—वार,—वासरः, (पु०) मङ्गलवार।—स्नानं, (न०) वह स्नान जो मङ्गल की कामना से अथवा किसी शुभ अवसर पर किया जाता है।

मंगलः }
मङ्गलः } (पु०) मंगलग्रह।

मंगला }
मङ्गला } (स्त्री०) पतिव्रता पत्नी।

मंगलीय }
मङ्गलीय } (वि०) शुभ। सौभाग्यशाली।

मंगल्य }
मङ्गल्य } (वि०) १ शुभ। २प्रसन्नकारक। अनुकूल। सुन्दर। ३ पवित्र।

मंगल्यं }
मङ्गल्यं } (न०) १ अनेक तीर्थ स्थानों से लाया हुआ जल जो राज्याभिषेक के स्नान में आता है। २ सुवर्ण। ३ चन्दन काष्ठ। ४ सिंदूर। ५ खट्टा दही।

मंगल्यः }
मङ्गल्यः } (पु०) १ वट वृक्ष। २ नारियल का वृक्ष। ३ मसूर की दाल।

मंगल्या }
मङ्गल्या } (स्त्री०) एक प्रकार का अगर। जिसमें चमेली के फूल जैसी महक निकलती है। २ दुर्गा का नाम। ३ चन्दन विशेष। ४ गन्ध द्रव्य विशेष। ५ एक प्रकार का पीला रोगन।

मंगल्यकः } (पु०) मसूर।
मङ्गल्यक }

मंघ् } (धा० परस्मै०) [मंघनि] १ सजाना। शृङ्गार करना। (आत्म०—मंघते) १ छलना। धोखा देना। २आरम्भ करना। ३ कलङ्क लगाना। दोषी ठहराना। फटकारना। ४ चलना। जाना। शीघ्रता पूर्वक चलना। ५ रवाना होना।
मङ्घ् }

मच् (धा० आत्म०) [मचते] १ दुष्टता करना दुष्ट होना। २ धोखा देना। छलना ३ शेखी मारना। अभिमान करना। ४ अभिमानी बनना।

मचर्चिका (स्त्री०) संज्ञा के अन्त में लगाया जाने वाला शब्द विशेष, जिसके अर्थ होते हैं :— सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम। अपनी जाति में सब से अच्छा। जैसे गोमचर्चिका अर्थात् सर्वश्रेष्ठ गौ।

मच्छः (पु०) मत्स्य।

मज्जनं (न०) १ स्नान। गोता। बुडकी। २ माँस या हड्डी के भीतर का कोमल चिकना गूदा।

मज्जनः (पु०) १ नली की हड्डी के भीतर का गूदा जो बहुत कोमल एवं चिकना हुआ करता है। पौधे के बीच की नस।—कृत, (न०) हड्डी।— समुद्भवः (पु०) वीर्य।

मज्जा (न०) १ हड्डी के भीतर का गूदा। माँस का गूदा। २ पौधे के बीच की नस।—जं, (न०) वीर्य।—रजस् (न०) नरक विशेष।—रसः, (पु०) वीर्य। धातु।—सारः, (पु०) कायफल।

मंच् } (धा० आत्म०) (मंचते) १ पकड़ना। २ बड़ा या लंबा होना। ४ चलना। जाना। ४ चमकना। ५ सजाना।
मञ्च् }

मंचः } (पु०) १ सेज। शय्या। पलंग। ३ उच्च स्थान। प्रतिष्ठा का स्थान। मचान। रंग-मंच। सिंहासन। व्यास गद्दी।
मञ्चः }

मंचकं } (न०) १ सेज। खाट। २ सिंहासन। ऊँचा बना हुआ चबूतरा। अग्नि रखने का स्थान। —आश्रया, (पु०) खाट के खटकीरा या खटमल।
मञ्चकं }

मंचिका } (स्त्री०) १ कुर्सी। २ कठौता।
मञ्चिका }

मंजर } (न०) फूलों का झुप्पा। २ मोती। ३ तिलक पौधा।
मञ्जरं }

मञ्जरिः } (पु०) १ छोटे पौधे या लता आदि का नया निकला हुआ कल्ला। कोपल। २ वृक्ष विशिष्ट में फूलों या फलों के स्थान में एक सींके में लगे हुए अनेक दानों का समूह। ३ समानान्तर रेखा या पंक्ति। ४ मोती। ५ लता। ६ तुलसी। ७ तिलक पौधा।—नम्रः, (पु०) वेतस पौधा।
मञ्जरी }

मंजरित } (वि०) १ फूलों से सम्पन्न। २ कलियों से युक्त। मंजरी से युक्त।
मञ्जरित }

मंजा } (स्त्री०) १ बकरी। २ फूलों का झुप्पा। ३ बेल।
मञ्जा }

मंजिः } (स्त्री०) १ फूलों का झुप्पा। २ लता। बेलें।—फला, (स्त्री०) केले का वृक्ष।
मञ्जी }

मंजिका } (स्त्री०) १ वेश्या। रंडी।
मञ्जिका }

मंजिमन् } (पु०) सौन्दर्य। मनोहरता।
मञ्जिमन् }

मंजिष्ठा } (स्त्री०) मजीठ।—मेहः, (पु०) प्रमेह रोग विशेष।—रागः, (पु०) मजीठ का रंग। (अल०) ऐसा पक्का प्रेम या अनुराग जैसा कि मजीठ का पक्का रंग होता है। स्थायी या टिकाऊ प्रेम या अनुराग।
मञ्जिष्ठा }

मंजीरः (पु०) } नूपुर। बिछिया। (न०) वह खंभा जिसमें मथानी या रई की रस्सी लपेटी जाती है।
मञ्जीरः (पु०) }
मंजीरं (न०) }
मञ्जीरं (न०) }

मंजीलः } (पु०) वह गाँव जिसमें धोबी रहते हों।
मञ्जीलः }

मंजु } (वि०) १ प्रिय। मनमोहक। मधुर। मनोहर। आकर्षक।—केशिन्, (पु०) कृष्ण।—गमन, (वि०) मनोहर चाल।— गमना, (स्त्री०) १ हंस। २ सारस जाति का जलपक्षी। लाल मेढ़क।—गर्त, (पु०) नैपाल देश का प्राचीन नाम।—गिर, (वि०) वह जिसकी मधुर वाणी हो।—गुञ्जः, (पु०) मधुर गुञ्जार।—घोष (वि०) मधुर स्वर।— नाशी, (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री। २ दुर्गा। ३ शची। इन्द्राणी।—पाठकः, (पु०) तोता।
मञ्जु }

सुग्गा।—प्राणः, (पु०) ब्रह्मा।—भाषिन्, —वाच्, (वि०) मधुरभाषी।—वक्त्र, (वि०) सुन्दर शकलवाला। ख़ूबसूरत।—स्वन,—स्वर, (वि०) मधुर स्वर करने वाला।

मंजुल } (वि०) मनोहर। सुन्दर। सुरीला।
मञ्जुल } (कण्ठ)।

मंजुलम् } (न०) १ कुञ्ज। २ जल का सोता।
मञ्जुलम् } कूप। ३ नदी या जलाशय का पाट।

मंजुलः } (पु०) जलकुक्कुट। जल का मुर्ग़ा।
मञ्जुलः }

मंजूषा } (स्त्री०) १ पेटी। बक्स। चौखटा।
मञ्जूषा } आधार। २ मंजीठ। ३ पत्थर। ४ बड़ा पिटारा या टोकरा।

मटची } (स्त्री०) ओला।
मटती }

मटःस्फटिः (पु०) अभिमान का आरम्भ। खोखला अभिमान।

मट्टकं (न०) छत की मुड़ेर।

मठ् (धा० परस्मै०) [मठति] १ रहना। बसना। २ जाना। ३ पीसना।

मठं (न०) } १ वह मकान जिसमें किसी महन्त
मठः (पु०) } के अधीन अन्य बहुत से साधु रह सकें। २ छात्रनिलय। बोर्डिंग हाउस। छात्रालय छात्रावास। ३ विद्यालय। विद्यामन्दिर। ४ मन्दिर। ५ बैलगाड़ी।—आयतनं, (न०) मठ। अखाड़ा। अस्थल। विद्यामन्दिर। विद्यालय।

मठर (वि०) नशे में। शराब पिये हुए।

मठिका (स्त्री०) मठी। मढ़ी।

मठी (स्त्री०) १ छोटा मठ। २ अखाड़ा। अस्थल।

मड्डु } (पु०) ढोल।
मड्डुकः }

मण् (धा० परस्मै०) शब्द करना। बड़बड़ाना।

मणिः (पु० स्त्री०) १ बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २ आभूषण। ३ कोई भी वस्तु जो अपनी जाति में श्रेष्ठ हो। ४ चुम्बक पत्थर। ५ कलाई। ६ घड़ा। ७ भगाङ्कुर। योनिलिङ्ग। योनि का अगला भाग। ८ लिङ्ग का अगला भाग।—इन्द्रः,—राजः, (पु०) हीरा।—कण्ठः—कण्ठः, (पु०) नीलकण्ठ पक्षी।—कण्ठकः (पु०) मुर्ग़ा।—कर्णिका,—कर्णी, (स्त्री०) बनारस या काशी में तीर्थकुण्ड विशेष।—काचः, (पु०) बाण का वह भाग जहाँ पर लगे होते हैं।—काननं, (न०) गरदन।—कारः, (पु०) जौहरी।—तारकः (पु०) सारस पक्षी।—दर्पणः, (पु०) दर्पण जिसमें रत्न जड़े हों।—द्वीपः, (पु०) १ अनन्त नाग का फन। २ अमृत सागर का एक द्वीप विशेष।—धनुः, (पु०)—धनुस् (न०) इन्द्रधनुष।—पाली, (स्त्री०) जौहरिन। स्त्री जो रत्न रखती हो।—पुष्पकः, (पु०) सहदेव के शङ्ख का नाम।—पूरः, (पु०) १ नाभि। २ चोली, जिसमें बहुत से रत्न टके हों।—पूर, (न०) कलिङ्ग देश का एक नगर।—बन्धः, (पु०) १ कलाई। पहुँचा।—बन्धनं, (न०) १ अँगूठी का वह स्थान जहाँ नगीना जड़ा जाता है। २ मोती की लड़ी। ३ कलाई।—बीजः,—वीजः, (पु०) अनार का पेड़।—भित्तिः, (स्त्री०) शेष के भवन का नाम।—भूः, (स्त्री०) रत्नजटित फ़र्श।—भूमिः, (स्त्री०) मणियों की खान। २ रत्न जटित फ़र्श।—मंथं, (न०) सेंधा निमक।—माला, (स्त्री०) १ रत्नहार। २ चमक। आभा। दीप्ति। ३ प्रेमक्रीडा में गाल पर या अन्यत्र दाँतों से काटने का गोल चकत्ता या दाग़। ४ लक्ष्मी जी का नाम। ५ एक वृत्त का नाम।—रत्नं (न०) जवाहिर।—रागः, (पु०) रत्नों का रंग।—रागं, (न०) हिङ्गुल। शिंगरफ़।—सूत्रं, (न०) सर, (पु०) हार। गुंज।—सूत्रं, (न०) मोतियों की लड़ी।

मणिकः (पु०) } जल का घड़ा। (पु०) जवाहर
मणिकं (न०) } विशेष। माणिक। चुन्नी।

मणित (न०) एक अव्यक्त सिसकारी जो स्त्रीसम्भोग के समय मुख से निकला करती है।

मणिमत् (वि०) रत्नजटित। (पु०) १ सूर्य। २ एक पर्वत का नाम। ३ एक तीर्थ का नाम।

मणीचक्रं (न०) चन्द्रकान्तमणि ।

मणीचकः (पु०) सतरंगा । रामचिड़िया । कौड़ियाला ।

मणीविकं (न०) पुष्प विशेष ।

मंठ्, मण्ठ् (धा० आत्म०) १ कामना करना । २ खेद पूर्वक स्मरण करना ।

मड्, मण्ड् (धा० परस्मै०) मण्डति, [मण्डयति—मण्डयते, मण्डित] १ सजाना । शृङ्गार करना । २ आनन्द मनाना । [आत्म०—मण्डते] १ वस्त्र धारण करना २ घेर लेना ३ बाँटना ।

मंडः (पु०), मण्डः (पु०), मंडं (न०), मण्डम् (न०) वह गाढ़ा चिकना पदार्थ विशेष जो किसी तरल पदार्थ के ऊपर छा जाता है । २ माँड । पिच्छ । सार । ३ दूध की मलाई । ४ फैन । फाग । ५ खमीरा । ६ पीच । महेरी । ७ गूदा । सार । ८ सिर । (पु०) १ आभूषण विशेष । शृङ्गार विशेष । २ मैंढक । ३ एरण्ड का वृक्ष ।—प, (वि०) माँड पीने वाला । मलाई खाने वाला ।—हारकः, (पु०) कलवार जो शराब खींचता है ।

मंडा, मण्डा (स्त्री०) शराब । मदिरा ।

मंडकः, मण्डकः (पु०) एक प्रकार का पिष्टक । मैदे की रोटी विशेष । माँड ।

मंडनम्, मण्डनम् (न०) १ शृङ्गार करना । सँवारना । २ गहना । सजावट । शृङ्गार ।

मंडनः, मण्डनः (पु०) एक पण्डित का नाम । मण्डन मिश्र जो शङ्कराचार्य द्वारा शास्त्रार्थ में हराये गये थे ।

मंडपः, मण्डपः १ मँड़वा । २ तंबू । ३ कुंज । ४ भवन जो देवता को चढ़ा दिया गया हो ।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०) किसी देवालय की प्रतिष्ठा ।

मंडयंतः, मण्डयन्तः (पु०) १ आभूषण । सजावट । २ नट । ३ भोज्य पदार्थ । ४ स्त्रियों का समुदाय ।

मडयंती, मण्डयन्ती (स्त्री०) स्त्री । नारी ।

मंडरी, मण्डरी (स्त्री०) झिल्ली । झींगुर विशेष ।

मंडल, मण्डल (वि०) गोल ।—अग्रः, (पु०) खाँडा । मुड़ी हुई तलवार ।—अधिपः, अधीशः, -ईशः,—ईश्वरः,— (पु०) १ सूबेदार । जिलेदार । २ राजा ।—आवृत्तिः, (स्त्री०) चक्करदार चाल ।—कार्मुक, (वि०) गोल धनुषधारी ।—नृत्यं, (न०) गोलाकार नाच ।—न्यासः, (पु०) वृत्त का वर्णन ।—पुच्छकः, (पु०) एक कीड़ा जो प्राणनाशक होता है । इसके काटने से सर्प जैसा विष चढ़ता है ।—वटः, (पु०) गोल वट वृक्ष ।—वर्तिन्, (पु०) एक छोटे प्रान्त का हाकिम ।—वर्षः, (पु०) सार्वत्रिक वर्षा ।

मडलं, मण्डलं (न०) १ वृत्ताकार विस्तार । गोला । पहिया । छल्ला । न्यास । गुलाई । २ ऐन्द्र जालिक की खींची हुई गोलाकार रेखा । ३ चन्द्र सूर्य का पार्श्व । ५ ग्रह के घूमने की कक्षा । ६ समुदाय । समाज । समूह । दल । ७सभा । संस्था । ८ बड़ा वृत्त । ९ चारो दिशाओं का घेरा जो गोलाकार दिखलाई पड़ता है । क्षितिज । १० समीप का ज़िला या प्रान्त । ११ ज़िला या प्रान्त । १२ बारह राज्यों का गुट्ट या समूह । १३ शिकार खेलने का पैंतरा विशेष । १४ ताँत्रिक मंत्र विशेष । १५ ऋग्वेद का एक खंड । १६ कुष्ट रोग विशेष । १७ गन्ध द्रव्य विशेष ।

मंडलः, मण्डलः (पु०) १ गोलाकार सैन्य । व्यूह । २ कुत्ता । ३ सर्प विशेष ।

मंडलकम्, मण्डलकम् (न०) १ घेरा । २ चक्र । ३ ज़िला । प्रान्त । ४ समुदाय । समूह । ५ चक्राकार । सैन्य व्यूह । ६ सफेद कुष्ट जिसमें गोल चकत्ते सारे शरीर में पड़ जाते हैं । ७ दर्पण ।

मंडलयित, मण्डलयित (वि०) गोल । चक्करदार ।

मंडलयितम्, मण्डलयितं (न०) गोला । गैंद ।

मंडलित, मण्डलित (वि०) वह जो गोल बनाया गया हो ।

मंडलिन्, मण्डलिन् (वि०) १ वर्तुलाकार बनाने वाला । २ देश का शासन करने वाला । ३ (पु०)

१ सर्प विशेष। २ बिल्ली। ३ ऊदबिलाव। ४ कुत्ता। ५ सूर्य। ६ वटवृक्ष। ७ सूबेदार। एक सूबे का हाकिम।

मंडित } (व० कृ०) सजाया हुआ। सँवारा
मण्डित } हुआ।

मंडूकं } (न०) स्त्रीसम्भोग का एक आसन
मण्डूकम् } विशेष।

मंडूकः } (पु०) मेंढक।—अनुवृत्तिः,—प्लुतिः,
मण्डूकः } (स्त्री०) मेंढक की छलांग।—कुलं, (न०) मेंढकों का समुदाय।—योगः, (पु०) मण्डूकासन से बैठ, ध्यान करने की क्रिया।—सरस्, १ (न०) तालाब जिसमें मेंढक भरे हों।

मंडूकी } (स्त्री०) १ मेंढकी। २ स्वतन्त्रा स्त्री।
मण्डूकी } स्वेच्छाचारिणी स्त्री। छिनाल औरत। ३ अनेक पौधों के नाम।

मंडूरं }
मण्डूरं } (न०) लोह कीट।

मत (व० कृ०) १ सोचा हुआ। विश्वास किया हुआ। अनुमान किया हुआ। २ विचार किया हुआ। ख़याल किया हुआ। ३ सम्मान किया हुआ। ४ प्रशंसित। मूल्यवान समझा हुआ। ५ कल्पना किया हुआ। कूता हुआ। ६ ध्यान किया हुआ। पहचाना हुआ। ७ सोच कर निकाला हुआ। ८ लक्ष्य किया हुआ। ९ पसन्द किया हुआ।

मतं (न०) १ विचार। धारणा। ख़याल। राय। विश्वास। सम्मति। २ सिद्धान्त। धर्म। धार्मिक समुदाय। ३ परामर्श। सलाह। ४ उद्देश्य। सङ्कल्प। अभिप्राय। ५ स्वीकृति। पसंदगी।—अक्ष, (वि०) पाँसे के खेल में निपुण।—अन्तरं, (न०) १ भिन्न सम्मति। २ भिन्नसम्प्रदाय।—अवलंबनम् (न०) ख़ास राय को मानने वाला।

मतंगः } (पु०) १ हाथी। २ बादल। ३ एक
मतङ्गः } ऋषि का नाम।

मतङ्गजः (पु०) १ हाथी।

मतल्लिका (स्त्री०) यह शब्द संज्ञा के अन्त में लगाया जाता है। इसका अर्थ होता है सर्वोत्कृष्ट, अपनी जाति में श्रेष्ठ। यथा—"गोमतल्लिका" अर्थात् सर्वोत्तम गौ या श्रेष्ठ जाति की गौ।

मतल्ली (स्त्री०) देखो मतल्लिका।

मतिः (स्त्री०) १ बुद्धि। समझदारी। ज्ञान। निर्णय। २ मन। हृदय। ३ विचार। धारणा। विश्वास। राय। कल्पना। ३ विचार। मंसूबा। ४ सङ्कल्प। पक्का विचार। ५ सम्मान। प्रतिष्ठा। ६ कामना। इच्छा। अभिलाष। ७ परामर्श। मशवरा। ८ स्मरण। स्मृति। याददाश्त।—ईश्वरः (पु०) विश्वकर्मा।—गर्भ, (वि०) प्रतिभाशाली। बुद्धिमान। चतुर।—द्वैधं, (न०) मतभेद।—निश्चयः, (पु०) दृढ़ विश्वास।—पूर्व, (वि०) इरादतन। जान बूझ कर।—पूर्वं—पूर्वकम्, (अव्यया०) जान बूझ कर, इरादतन। रज़ामंदी से।—प्रकर्षः, (पु०) चातुर्य। नैपुण्य।—भेदः, (पु०) मतपरिवर्तन।—भ्रमः,—विपर्यासः, (पु०) १ धोखा। विभ्रम। मानसिक भ्रम। मन की गड़बड़ी। २ भूल। गलती।—विभ्रमः—विभ्रंशः, (पु०) पागलपना। विक्षिप्तता।—शालिन्, (वि०) बुद्धिमान। चतुर।—हीन, (वि०) मूर्ख। मूढ़। बेवकूफ़।

मत्क (वि०) मेरा। हमारा।

मत्कः (पु०) खटमल। खटकीरा।

मत्कुणः (पु०) १ खटमल। २ बिना दाँतों का हाथी। ३ छोटा हाथी। ४ बेदाढ़ी का नर। ५ भैंसा। ६ नारियल का कपड़ा।

मत्कुणं (न०) टाँगों की रक्षा के लिये चर्म का बना कवच विशेष।—अरिः, (पु०) पटसन।

मत्त (व० कृ०) १ मस्त। मतवाला। २ उन्मत्त। पागल। ३ मद में मस्त (जैसे हाथी)। भयानक। ४ अभिमानी। अहंकारी। ५ प्रसन्न। खुश। ६ खिलाड़ी। रसिक।

मत्तः (पु०) १ शराबी। २ पागल आदमी। ३ मदमस्त हाथी। ४ कोयल। ५ भैंसा। ६ धतूरा।—आलम्बः (पु०) किसी बड़े भवन का घेरा।—इभः, (पु०) मदमस्त हाथी।—काशिनी,—

रूपासिनी, (स्त्री०) अत्यन्त रूपवती ।—दन्तिन्, (पु०) —नागः,—वारणः, (पु०) मदमत्त हाथी ।—वारणः, (पु०) —वारणं, (न०) १ विशाल भवन का हाता या घेरा । २ बुर्जी या अटारी जो किसी विशाल भवन के ऊपर हो । ३ बरंडा । कलसदार भवन ।—वारणं, (न०) कटी हुई सुपारी ।

मर्त्यं (न०) १ हेंगा । पाटा । २ ज्ञान प्राप्ति का साधन । ३ ज्ञान का उपयोग ।

मत्सः (पु०) १ मच्छ । २ मत्स्य देश का राजा ।

मत्सर (वि०) १ डाह । हसद । जलन । २ लोभी । कृपण । कंजूस । ३ तंगदिल । सङ्कीर्णमना । ४ दुष्ट ।

मत्सरः (पु०) १ डाह । हसद । जलन । २ शत्रुता । वैर । ३ अभिमान । ४ लोभ । ५ क्रोध । गुस्सा । ६ डांस । मच्छर ।

मत्सरिन् (वि०) १ डाही । जलने वाला । २ शत्रु । वैरी । ३ स्वार्थी । लालची ।

मत्स्यः (पु०) १मच्छ । २ विशेष जाति की मछली । मत्स्य देश का राजा ।—अक्षका,—अक्षी, (स्त्री०) सोमलता विशेष ।—अद्,—अदन,—आद, (वि०) मछली खाने वाला ।—अवतारः, (पु०) विष्णु भगवान के दस अवतारों में से प्रथम मत्स्यावतार ।—अशनः, (पु०) मछली खाने वाला । —असुरः, (पु०) एक दैत्य का नाम ।—आधानी, —धानी, (स्त्री०) मछली रखने की टोकरी ।—उदरिन्, (पु०) विराट का नामान्तर । उदरी, (स्त्री०) सत्यवती ।—उदरीयः, (पु०) वेदव्यास ।—उपजीविन्, (पु०) —आजीवः, (पु०) मछुआ । मछवाहा ।—करण्डिका, (स्त्री०) मछलियाँ रखने की कंडी ।—गन्ध, (वि०) मछराइन ।—गन्धा, (स्त्री०) सत्यवती ।—घातिन्,—जीवित्,—जीविन्, (पु०) मछुआ । —जालं, (न०) मछली पकड़ने का जाल ।—देशः, (पु०) मत्स्य देश । जहाँ का राजा विराट था ।—नारी, (स्त्री०) सत्यवती ।—नाशकः, —नाशन, (पु०) कुरर पक्षी ।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक जो महापुराणों में परिगणित है ।—बन्धः,—बन्धिन्, (पु०) मछली मारने वाला । मछली पकड़ने वाला ।—बन्धनं, (न०) मछली पकड़ने की बंसी ।—बन्धनी,—बन्धिनी, (स्त्री०) मछली रखने की टोकरी ।—रङ्कः,—रङ्ग,—रङ्गकः, (पु०) मछरंगा । रामचिड़िया ।—संघातः, (पु०) मछलियों का गट्ट या गोल ।

मत्स्यण्डिका } मत्स्यण्डी } (स्त्री०) मोटी और बिना साफ की हुई चीनी ।

मथ् देखो मन्थ् ।

मथन (वि०) [स्त्री०—मथनी] १ मथने की क्रिया । २ चोटिल करने वाला । ३ नाशक । विध्वंसक । घातक ।—अचलः,—पर्वतः, (पु०) मन्दराचल पर्वत ।

मथनः (पु०) वृक्ष विशेष । मनियारी नामक पेड़ ।

मथिः (पु०) रई मथने की लकड़ी विशेष ।

मथित (व० कृ०) १ मथा हुआ । २ आलोड़ित । घोल कर भली भाँति मिलाया हुआ । ३ पीड़ित । सन्तप्त । ४ वध किया हुआ । ५ जोड़ से उखड़ा हुआ ।

मथितं (न०) विशुद्ध माठा या छाछ ।

मथिन् (पु०) १ रई । मठा बिलोने की लकड़ी विशेष । २ पवन । ३ पुरुष की जननेन्द्रिय । ४ बिजली । वज्र ।

मथुरा } मथूरा } (स्त्री०) श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और मोक्षदा सप्तपुरियों में से एक ।—ईशः,—नाथः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

मद् (धा० परस्मै०) [माद्यति, मत्त] १ नशा पीना । नशे में चूर होना । २ पागल होना ३ धूम मचाना । विलास करना । ३ आनन्द मनाना ।

मदः (पु०) १ नशा । २ विक्षिप्तता । पागलपन । ३ लंपटता । कामुकता । ४ हाथी का मद अथवा वह गन्धयुक्त द्राव जो मतवाले हाथियों की कनपुटियों से बहता है । ५ अनुराग । प्रेम । ६ अभिमान । अहङ्कार । ७ हर्षातिरेक । ८ मदिरा । शराब ।

९ शहद । १० मुश्क । कस्तूरी । ११ वीर्य । —अत्ययः,—आतङ्कः, (पु०) नशा पीने के कारण उत्पन्न हुआ सिर का दर्द आदि ।—अन्धः, (पु०) १ नशे मे अंधा । २ अभिमान से अंधा । —अपनयनं, (न०) नशा उतारना ।—अम्बरः, (पु०) १ मदमस्त हाथी । २ इन्द्र के ऐरावत हाथी का नामान्तर ।—अलस्, (वि०) नशे मे या कामासक्ति से शिथिल ।—अवस्था, (स्त्री०) १ नशे की दशा या हालत । २ कामुकता । ३ मद। हाथी का मद ।—आकुल, (वि०) मदमस्त । —आढ्य, (वि०) नशे में चूर ।—आढ्यः, (पु०) खजूर का पेड ।—आम्नातः, (पु०) हाथी की पीठ पर रख कर बजाया जाने वाला नगाड़ा या ढोल ।—आलापिन् (पु०) कोयल । —आह्वः, (पु०) कस्तूरी । मुश्क ।—उत्कट, (वि०) १ नशे में चूर । २ कामुक । ३ अहङ्कारी । अभिमानी । ४ मदमाता ।—उत्कटः, (पु०) १ मदमस्त हाथी । २ फाकता चिड़िया ।—उत्कटा, (स्त्री०) शराब । मदिरा ।—उदग्र,-उन्मत्त, (वि०) १ नशे में चूर । २ उग्र । ३ अभिमानी । —उद्धत, (वि०) १ मदोन्मत्त । २ घमंडी । —उल्लापिन्, (पु०) कोयल । -कर (वि०) नशीला ।—करिन्, (पु०) मदमस्त हाथी । —कल, (वि०) अस्पष्टतया बोलने वाला । २ धीरे धीरे प्रेमालाप करने वाला । ३ मदोन्मत्त । ४ मन्दमधुर । ५ मदमाता ।—कलः, (पु०) मदमस्त हाथी ।—कोहलः, (पु०) छोड़ा हुआ सॉड ।—खेल, (वि०) मदमस्त ।—गन्धा, (स्त्री०) १ नशीली पेय वस्तु । २ भाँग ।—गमनः, (पु०) भैंसा ।—च्युत, (वि०) गर्व-नाशक । (पु०) इन्द्र । —जल, (न०)—वारि, (न०) मत्त हाथी के मस्तक का स्राव । हाथी का मद ।—ज्वरः, (पु०) अहङ्कार का ज्वर या अभिमान की गर्मी ।—द्विपः, (पु०) खूनी हाथी या बिगड़ा हुआ हाथी ।—प्रयोगः,—प्रसेकः,—प्रस्रवणं,—स्रावः,—स्रुतिः, (स्त्री०) मत्त हाथी के मस्तक का स्राव । हाथी का मद ।—रागः, (पु०) १ कामदेव । २ मुर्गा । ३ शराबी । —विक्षिप्त, (वि०) मदमस्त । उग्र ।—विह्वल, (वि०) १ अभिमान में चूर । नशे में बुत्त या चूर ।—वृन्दः, (पु०) हाथी ।—शौण्डकम्, (न०) कायफल ।—सारः, (पु०) कपास का पेड ।—स्थलं,—स्थानं, (न०) शराब की दूकान । कलरिया । कलवार की दूकान ।

मदन (वि०) [स्त्री०—मदनी] १ नशीला । विक्षिप्तताकारक । २ आल्हादकारक ।—अग्रकः, (पु०) कोदों नाज । कोद्रव अन्न ।—अङ्कुशः, (पु०) १ लिङ्ग । २ नख या सम्भोग के समय लगा हुआ नखाघात ।—अन्तक.,—अरिः,—दमनः,—दहनः,—नाशन.,—रिपुः, (पु०) शिव जी की उपाधियाँ ।—अवस्थ, (वि०) प्रेमासक्त ।—आतुर आर्त्त, -क्लिष्ट, -पीडित, (वि०) प्रेम का बीमार ।—आलयः, (पु०) आलयं, (न०) १ कमल । राजा ।—इच्छा-फलकं, (न०) आम विशेष ।—उत्सवः, (पु०) वसन्तोत्सव ।—उत्सवा, (स्त्री०) अप्सरा । स्वर्ग की वेश्या ।—उद्यानं, (न०) आनन्दबाग़ । —कण्टकः, (पु०) १ सात्विकरोमाञ्च । २ वृत्त विशेष ।—कलहः, (पु०) प्रेम का झगड़ा । सम्भोग । मैथुन ।—काकुरवः, (पु०) कबूतर या फाक्ता ।—गोपालः, (पु०) श्रीकृष्ण । चतुर्दशी, (स्त्री०) चैत्रशुक्ला १४शी का नाम । —त्रयोदशी, (स्त्री०) चैत्रशुक्ला १३शी । यह मदन-महोत्सव के अन्तर्गत है ।—नालिका, (स्त्री०) असती भार्या ।—पक्षिन्, (पु०) खंजनपक्षी ।—पाठकः, (पु०) कोयल ।—महोत्सवः, (पु०) प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ला १२शी से चतुर्दशी पर्यन्त मनाया जाता था । इस उत्सव में व्रत, कामदेव की पूजा, गीत वाद्य और रात्रि—जागरण किया जाता था । उत्सव में स्त्रियाँ और पुरुष दोनों सम्मिलित होते थे और बाग बग़ीचों में जा आमोद प्रमोद करते थे ।—मोहनः, (पु०) श्रीकृष्ण ।—शलाका, (स्त्री०) मैना । कोकिला। कोयल ।

मदनं (न०) १ नशीली । २ आल्हादकर । मोदकर ।

मदनः (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम । अनुराग ।

सम्भोग जन्य प्रेम । ३ वसन्तऋतु । ४ मधुमक्षिका । ५ मोम । ६ आलिङ्गन विशेष । ७ धतूरे का पौधा । ८ वकुलवृक्ष ।

मदनकः (पु०) दमनक नाम का पौधा ।

मदना } (स्त्री०) १ शराब । २ मुश्क । ३ अति-
मदनी } मुक्तावेल ।

मदयन्तिका (स्त्री०) } मल्लिका ।
मदयन्ती (स्त्री०) }

मदयित्नु (वि०) १ नशीला । बदहवास कर देने वाला । २ आल्हादकर ।

मदयित्नुः (पु०) १ कामदेव । २ बादल । ३ कलवार । शराब खींचने वाला । ४ शराबी आदमी । ५ शराब ।

मदारः (पु०) १ मदमस्त हाथी । २ शूकर । ३ धतूरा । ४ प्रेमी । कामुक । लंपट । ५ गन्धद्रव्य विशेष । ६ छलिया । कपटी । धोखा देने वाला ।

मदिः (स्त्री०) हेंगा । पाटा ।

मदिर (वि०) १ नशीला । विक्षिप्तकारी । २ आनन्दकारी । नयनाभिराम ।

मदिरः (पु०) लाल फूलों वाला खदिर वृक्ष ।—अक्षी—ईक्षणा,—नयना,—लोचना, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके नेत्र मनोहर हों या जिसकी आँखों में जादू सा हो ।—आयतनयन, (वि०) बड़ी और आकर्षण करने वाली आँखों वाला ।—आसवः, (पु०) नशीला अर्क । शराब ।

मदिरा (स्त्री०) १ शराब । २ खञ्जन पक्षी । ३ दुर्गा का नाम ।—उत्कट,—उन्मत्त, (वि०) शराब के नशे में चूर ।—गृहं, (न०)—शाला, (स्त्री०) शराब की दूकान । कलवरिया ।—सखः, (पु०) आम का वृक्ष ।

मदिष्ठा (स्त्री०) शराब ।

मदीय (वि०) मेरा ।

मद्गुः (पु०) १ एक प्रकार का जलपक्षी जिसकी लंबाई पूँछ से चोंच तक २४ इञ्च तक की होती है । २ सर्पविशेष । ३ वनजन्तु विशेष । ४ एक प्रकार का युद्धपोत । ५ वर्णसङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण जाति के पिता और बंदीजन जाति की माता से होती है । ६ जाति बहिष्कृत । पतित ।

मद्गुरः (पु०) १ गोताखोर । मोती निकालने वाला । २ मँगुरीवाँ भंगुर मछली । ३ प्राचीन काल की एक वर्णसङ्कर जाति, जिसका पेशा वन्यपशुओं का मारना था ।

मद्य (वि०) १ नशीला । २ आल्हादकर ।—आमोदः, (पु०) वकुलवृक्ष ।—कीटः (पु०) कीड़ा विशेष ।—द्रुमः, (पु०) वृक्ष विशेष ।—पः, (पु०) पियक्कड़ । शराबी ।—पानं, (न०) मदिरापान । कोई भी नशीली वस्तु का सेवन ।—पीत, (वि०) शराब के नशे में चूर ।—पुष्पा, (स्त्री०) धातकी । धौ ।—बीजं,—वीजं (न०) शराब खींचने के लिये उठाया हुआ ख़मीर ।—भाजनं, (न०) शराब रखने का करावा या कोई भी काँच का पात्र ।—मण्डः, (पु०) फेन जो मद्य का खमीर उठने पर ऊपर आता है । मद्यफेन ।—वासिनी, (स्त्री०) धातकी का पौधा । धौ ।—सन्धानं, (न०) मदिरा खींचने का व्यापार ।

मद्यं (न०) शराब । मदिरा । दारू ।

मद्रं (न०) हर्ष । आनन्द ।—कार, (= मंद्रकार) (वि०) आनन्ददायक । हर्षप्रद ।

मद्रः (पु०) १ एक प्राचीन देश का वैदिक नाम । यह देश कश्यपसागर के दक्षिणी तट पर पश्चिम की ओर था । ऐतरेय ब्राह्मण में इसे उत्तरकुरु के नाम से बतलाया है । २ पुराणों के मतानुसार वह देश जो रावी और झेलम नदी के बीच में है । ३ मद्र देश का शासक ।

मद्राः (पु०) बहुवचन । मद्रदेश वासी ।

मद्रुकः (पु०) मद्र देश का शासक या निवासी ।

मद्रुकाः (पु० बहुवचन) दक्षिण की एक नीच जाति का नाम ।

मधव्यः (पु०) वैशाख मास ।

मधु (वि०) [स्त्री०—मधु या मध्वी] मधुर । स्वादिष्ट । प्रिय । प्रसन्नकर ।

मधुं (न०) १ शहद । २ फूल का रस । ३ मदिरा जिसका स्वाद मीठा होता है । ४ जल । ५ चीनी । ६ मीठापन या मधुरता ।

मधुः (पु०) १ वसन्त ऋतु । २ चैत्र मास । ३ मधुदैत्य जिसे भगवान् विष्णु ने मारा था । लवणासुर के पिता का नाम, जिसे शत्रुघ्न जी ने मारा था। ५ अशोकवृक्ष । ६ कार्त्तवीर्य राजा ।—अष्ठीला (स्त्री०) शहद का लौदा । जमा हुआ शहद । —आधारः, (पु०) मोम । — आपात, (वि०) खाने वाला या चखने वाला ।—आम्रः, (पु०) आम का वृक्ष विशेष । - आसवः, (पु०) मीठी शराब ।—आस्वाद (वि०) जिसमें शहद का स्वाद हो । —आहुतिः, (स्त्री०) मधुर शाकल्य का हवन ।—उच्छिष्टं—उत्थं— उत्थितं, (न०) शहद की मक्खियों का बनाया मोम ।—उत्सवः (पु०) वसन्तोत्सव ।— उदकं, (न०) शहद का शरबत । शहद और जल के संयोग से बनाई हुई शराब ।—उपघ्नं, (न०) मधु का आवासस्थान । मथुरा का नामान्तर ।—कण्ठः, (पु०) कोकिल ।—करः, (पु०) १ भौंरा । २ प्रेमी । आशिक । लपट पुरुष ।—कर्कटी, (स्त्री०) मीठा नीबू । मिठ्ठा । शरबती नीबू । २ सन्तरा ।—काननं,—वनं, (न०) वह वन या जंगल जिसमें मधु रहता था। —कारः,—कारिन्, (पु०) मधुमक्षिका । — कुक्कुटिका,—कुक्कुटी, (स्त्री०) नीबू का पेड़ विशेष ।—कुल्या, (स्त्री०) पुराणानुसार कुशद्वीप की एक नदी का नाम जिसमें पानी के बदले शहद बहा करता है ।—कृत, (पु०) मधुमक्षिका ।—कैटभः, (पु०) शहद की मक्खी । —कोषः,—कोशः, (पु०) शहद की मक्खियों का छत्ता ।—क्रमः, (पु० बहुवचन) मद्यपान का उत्सव ।—क्षीरः,—क्षीरकः, (पु०) खजूर का पेड़ ।—गायनः, (पु०) कोयल पक्षी ।— ग्रहः (पु०) वाजपेय यज्ञ में एक हवन विशेष जिसमें मधु की आहुति दी जाती हैं ।—घोषः, कोयल ।—ज, (न०) मोम जो शहद के छत्ते से निकलता है ।—जा, (स्त्री०) १ मिश्री । २ पृथिवी—जम्बीरः, (पु०) जंभीरी ।—जितं (न०) —द्विष्—निषूदनः—निहन्, (पु०)—मथः, —मथन ,—रिपुः,—शत्रुः,—सूदनः, (पु०) विष्णु भगवान के नामान्तर ।—तृणः (पु०)— तृणं, (न०) गन्ना । ईख ।—त्रयं, (न०) तीन मीठी चीजें अर्थात् शक्कर, शहद, घी । —दीपः, (पु०) कामदेव ।—दूतः, (पु०) आम का पेड़ ।—दोहः (पु०) शहद या मिठास निकालने की क्रिया ।—द्रुः, (पु०) १ शहद की मक्खी । २ लपट पुरुष ।—द्रुवः (पु०) लाल सहँजन का पेड़ ।—द्रुम , (पु०) आम का पेड़ । —धातुः, (पु०) गन्धक तथा अन्यधातु मिश्रित पीले रंग का पदार्थ विशेष ।—धारा, (स्त्री०) शहद की धार ।—धूलिः (पु०) खाँड । शक्कर। चीनी । राब । शीरा ।—नारिकेलकः (पु०) नारियल विशेष ।—नेतृ, (पु०) शहद की मक्खी ।—प , (पु०) शहद की मक्खी या शराबी ।—पटलं, (न०) शहद की मक्खी का छत्ता ।— पतिः, (पु०) श्रीकृष्ण का नामान्तर । — पर्कः, (पु०) १ दही, घी, जल, शहद और चीनी के योग से बना हुआ पदार्थ विशेष । यह देवताओं को अर्पण किया जाता है । इससे देवता बड़े सन्तुष्ट होते है। इसके अर्पण करने से सुख एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है । पूजन के षोडश उपचारों में से एक उपचार मधुपर्क-अर्पण भी है । २ तंत्रानुसार घी, दही और मधु को मिलाने से मधुपर्क तैयार होता है ।—पर्क्य, (वि०) मधुपर्क अर्पण करने योग्य ।—पर्णिका,—पर्णी, (स्त्री०) नील का पौधा ।—पायिन्, (पु०) शहद को मक्खी ।— पुरं, (न०)—पुरी (स्त्री०) मथुरा नगरी । —पुष्पः, (पु०) १ अशोक वृक्ष । २ वकुल वृक्ष । ३ दन्ती नामक पेड़ । ४ सिरस वृक्ष ।—प्रणयः, (पु०) शराब पीने की लत ।—प्रमेहः, (पु०) एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें पेशाब के साथ शक्कर निकलने लगती है ।—प्राशनं, (न०) षोडश संस्कारों में से एक जिसमें नवजात शिशु को शहद चटाया जाता है ।—प्रियः, (पु०) बलराम ।—फलः, (पु०) १ नारि-

यल फल। २ दाख। ३ काँटाय या विकङ्कत नामक वृक्ष।—फलिका, (स्त्री०) मीठी खजूर।—बहुला, (स्त्री०) माधवी लता।—बीजः,—वीजः, (पु०) अनार का पेड।—बीजपुरः,—बीजपुरं (पु०) जंम्भीरी विशेष।—मत्तः,—त्ताः, (स्त्री०)—मक्षिका, (स्त्री०) शहद की मक्खी।—मज्जनः, (पु०) आखोट नामक वृक्ष।—मदः, (पु०) शराब का नशा।—मल्लिः, (स्त्री०)—मल्ली, (स्त्री०) मालती लता।—माधवी, (स्त्री०) १ मदिरा विशेष। २ वासन्ती लता। ३ एक रागिनी जो भैरव राग की सहचरी है। ४ वसन्तु ऋतु मे फूलने वाला कोई भी फूल।—माध्वीकं, (न०) शराब। मदिरा।—मारक, (पु०) शहद की मक्खी।—यष्टिः, (स्त्री०) गन्ना। ईख।—रसः, (पु०) १ ईख। ऊख। गन्ना। २ मधुरता। मिठास।—रसा, (स्त्री०) १ अँगूरो का गुच्छा। २ दाख। द्राक्षा। मुनक्का।—लग्नः, (पु०) लाल शोभाञ्जन।—लिह्,—लेह्,—लेहिन्, (पु०) शहद की मक्खी।—वनं (न०) वह वन जिसमें मधुदैत्य रहता था और जहाँ पीछे से शत्रुघ्न जी ने मथुरा बसाई।—वनः, (पु०) कोकिल। कोयल।—वारः, (पु०) मद्य पीने की रीति।—व्रतः, (पु०) भौंरा। भ्रमर।—शर्करा, (स्त्री०) शहद। चीनी।—शाखः (पु०) महुए का पेड़।—शिग्रं,—शेषं, (न०) भैम।—सखः,—सहायः,—सारथिः,—सुहृदः, (पु०) कामदेव।—सिक्थक, (पु०) एक प्रकार का स्थावर विष।—सूदनः, (पु०) १ शहद की मक्खी। भौरा। २ श्रीकृष्ण।—स्थानं (न०) शहद का छत्ता।—स्वरः, (पु०) कोकिल।—हन्, (पु०) शहद को नष्ट करने वाला या एकत्र करने वाला। २ शिकारी पक्षी। ३ आगम बतलाने वाला। ४ विष्णु का नामान्तर।

मधुकं (न०) १ टीन। जस्ता। २ मुलेठी।

मधुकः (पु०) १ महुए का पेड। २ अशोक वृक्ष। ३ पक्षी विशेष।

मधुरं (अव्यया०) मधुरता से। प्रियता से।

मधुर (वि०) १ मीठा। शहद मिला हुआ। २ सुन्दर। मनोरञ्जक। ३ जो सुनने मे भला जान पड़े।

मधुरं (न०) १ मिठास। २ शरबत। ३ विष। ४ हीन। जस्ता।

मधुरः (पु०) १ लाल गन्ना। २ चाँवल। ३ राव। शक्कर। गुड। ४ आम-विशेष।—कण्टकः, (पु०) एक प्रकार की मछली।—जम्बीरं (न०) जँभीरी।—फलः, (पु०) वेर फल। राजवदर।

मधुरता (स्त्री०) } १ मिठास। सौन्दर्य। मनोहरता। ३ सुकुमारता। कोमलता।
मधुरत्वम् (न०) }

मधुरिमन् (पु०) मिठास।

मधुलिका (स्त्री०) राई।

मधूकं (न०) महुए का फूल।

मधूकः (पु०) १ शहद की मक्खी। महूक। महुए का पेड।

मधूलः (पु०) जल महुए का पेड।

मधूलिका (स्त्री०) १ मूर्वा। २ मुलेठी।

मधूली (स्त्री०) आम का पेड।

मध्य (वि०) १ बीच का। मध्यवर्ती। २ मझोला। दरमियानी। ३ मातदिल। ४ तटस्थ। निरपेक्ष। ५ ठीक। उचित। (ज्योति०) मध्यदूरत्व। मध्यम अन्तर।

मध्यं (न०) } १ बीच। मध्य। मध्य का भाग। २ शरीर का मध्यभाग। कमर। ३ पेट। उदर। ४ किसी वस्तु का भीतर का भाग। ५ मध्यावस्था। ६ घोड़े की कोख या वक्खी। ७ संगीत में एक सप्तक जिसके स्वरों का उच्चारण वक्षस्थल से, कण्ठ के भीतर के स्थानों से किया जाता है। साधरणत. इसे बीच का सप्तक मानते हैं। (न०) दस अरब की सख्या।
मध्य. (पु०) }

मध्या (स्त्री०) पाँच ऊँगलियों में से बीच की ऊँगली।—अङ्गुलिः,—अङ्गुली, (स्त्री०) हाथ की बीच की ऊँगली।—अन्हः, (पु०) दोपहर।—कर्णः, (पु०) वे रेखाएं जो किसी वृत्त के केन्द्र से परिधि तक खींची जाती हैं।—गत, (वि०)

बीच का । मध्यवर्ती ।—गन्धः, (पु०) आम का पेड़ । - ग्रहणं, (न०) चन्द्र अथवा सूर्य के ग्रहण का मध्यकाल ।—दिनं (= मध्यदिनं) दोपहर ।—देशः, (पु०) १ कमर । २ पेट । उदर । ३ हिमालय और विन्ध्य गिरि के बीच का देश । इसकी सीमा पुराणों में इस प्रकार है । उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग । प्राचीन काल में यही देश आर्यों का प्रधान निवासस्थान था और बहुत पवित्र माना जाता था । ४ मध्यान्ह रेखा । —देहः, (पु०) उदर । पेट ।—पदलोपिन्, (पु०) देखो मध्यमपद । लोपिन् । —पातः, (पु०) जान पहचान । परिचय —भागः, (पु०) १ बीच का हिस्सा । २ कमर ।—यवः, (पु०) प्राचीन काल का एक परिमाण जो ६ पीली सरसों के बराबर होता था ।—रात्रः,—रात्रिः, (स्त्री०) अर्द्धरात्रि ।—रेखा, (स्त्री०) ज्योतिष और भूगोल शास्त्र में वह रेखा जिसकी कल्पना देशान्तर निकालने के लिये की जाती है । यह रेखा उत्तर दक्षिण मानी जाती है और उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों को काटती हुई एक वृत्त बनाती है ।—लोकः, (पु०) पृथिवी ।—वयस्, (वि०) अधेड़ उम्र का ।—वर्तिन्, (वि०) बीच का । जो मध्य में हो । (पु०) पंच । बीच में पड़ने वाला ।—वृत्तं, (न०) नाभि ।—सूत्रं, (न०) देखो मध्य रेखा ।—स्थ, (वि०) १ मध्यवर्ती । २ मझोला । ३ उदासीन । तटस्थ । ४ निरपेक्ष ।—स्थः, (पु०) १ दो में झगड़ा होने पर उस झगड़े को निपटाने वाला । बीच में पड़ कर मिटाने वाला । २ शिव जी की उपाधि ।—स्थल, (न०) १ मध्य । बीच । मध्य का देश । २ कमर ।—स्थानं, (न०) बीच की जगह । २ अन्तरिक्ष ।

मध्यतस् (अव्यया०) १बीच से । २ बीच में । बहुतों में से ।

मध्यम (वि०) १ मध्यवर्ती । बीच का । २ मझोला । ३ निरपेक्ष । पक्षपात शून्य ।

मध्यमः (पु०) संगीत कला के सप्तस्वरों में से चौथा स्वर । २ एक राग का नाम । ३ मध्य देश । ४ व्याकरण में मध्यम पुरुष । ५ तटस्थ राजा । ६ वह उपपति जो नायिका के कुपित होने पर अपना अनुराग न प्रकट करे और उसकी चेष्टाओं से उसके मन का भाव ताड़ ले । ७ साहित्य में तीन प्रकार के नायकों में से एक । ८ सूबेदार । प्रान्तीय शासक । सूबे का हाकिम ।—अगुलिः, (पु०) हाथ की बीच की ऊँगली ।—कक्षा, (स्त्री०) बीच का आँगन या सहन ।—जात, (वि०) मझला । दो के बीच का उत्पन्न ।—पदलोपिन् (पु०) व्याकरण में वह समास जिसमें प्रथम पद से द्वितीय पद का सम्बन्ध बतलने वाला शब्द लुप्त या समास से अध्याहृत रहता है । लुप्त-पद-समास ।—पाण्डवः (पु०) अर्जुन ।—पुरुषः (पु०) व्याकरणानुसार तीन पुरुषों में से वह पुरुष जिससे बात की जाय । वह पुरुष जिससे कुछ कहा जाय । - भृतकः, (पु०) किसान । खेतहर । – रात्रः, (पु०) आधीरात । —लोकः, पु०) बीच का लोक अर्थात् पृथिवी । —संग्रहः, (पु०) पुष्पादि साधारण वस्तुओं की भेंट भेज कर, दूसरे की स्त्री को अपने ऊपर अनुरक्त बना लेना । [व्यासस्मृति के अनुसार —

" प्रेषणं गन्धमाल्यानां धूप भूषणवाससां ।
प्रलोभन चान्नपानैर्मध्यमः संग्रहः स्मृत. ॥"]

—साहसः, (पु०) मनुस्मृति के अनुसार पाँच सौ पण तक का अर्थदण्ड या जुरमाना ।—स्थ, (वि०) बीच का ।

मध्यमं (न०) कमर । कटि ।

मध्यमा (स्त्री०) १ हाथ की बीच की ऊँगली । २ वह स्यानी लड़की जो विवाह योग्य हो गयी हो । ३ कमलगट्टा । ४ वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम वा दोष के अनुसार उसका आदर मान या अपमान करे । स्त्री जो अपनी जवानी की उम्र के बीच पहुँची हो ।

मध्यमक (वि०) [स्त्री—मध्यमिका] बीच का । बीचों बीच का ।

मध्यमिका (स्त्री०) लड़की जो विवाह योग्य हो गयी हो।

मध्वः (पु०) दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव-सम्प्रदायाचार्य और माध्वसम्प्रदाय के प्रवर्तक। इनको लोग वायु का अवतार मानते हैं। इनके बनाये बहुत से ग्रन्थ और भाष्य हैं। इनके सिद्धान्तानुसार सर्वप्रथम एक मात्र नारायण थे। उन्हींसे समस्त जगत तथा देवतादि की उत्पत्ति हुई। ये जीव और ईश्वर को पृथक् पृथक् सत्ता मानते है। इनके दर्शन को पूर्णप्रज्ञदर्शन कहते हैं और इनके सिद्धान्त को मानने वाले इनके सम्प्रदाय के लोग माध्व कहलाते हैं।

मध्वकः (पु०) शहद की मक्खी।

मध्विजा (स्त्री०) कोई भी नशीली चीज़ जो पीजाय। शराब। मदिरा।

मन् (धा० परस्मै०) [मनति] १ अभिमान करना। २ पूजन करना।

मननम् (न०) १ चिन्तन। २ बुद्धि। समझदारी। तर्कद्वारा निकाला हुआ परिणाम। ३ कल्पना।

मनस् (न०) १मन। हृदय। बुद्धि। प्रतीति। प्रतिभा। २ न्याय में मन को एक द्रव्य और आत्मा या जीव से भिन्न माना है। ३ वैशेषिक दर्शन में मन को एक अप्रत्यक्ष द्रव्य माना है। संख्या परिमाण पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व अपरत्व और संस्कार मन के गुण बतलाये गये हैं। मन अणु रूप है। ३ प्राणियों में वह शक्ति जिसके द्वारा उनको वेदना, सङ्कल्प, इच्छा द्वेष, प्रयत्न बोध और विचार आदि का अनुभव होता है। अन्तःकरण। चित्त। ४ विचार। धारणा। कल्पना। ख़याल। ५ संज्ञा। मनसूबा। ६ इच्छा। कामना। अभिलाषा। सम्मान। झुकाव। ७ निदिध्यासन। भावना। ८ प्राकृतिक स्वभाव। बान। ९ स्फूर्ति। उत्साह। १० मानसरोवर झील। —अधिनाथः, (पु०) प्रेमी। पति। —अनवस्थानं, (न०) अनवधानता। —अनुग, (वि०) इच्छानुसार। —अपहारिन् (वि०) मन को वश में करने वाला। —आप, (वि०) आकर्षक। —कान्त, (वि०) [मनस्कान्त या मनःकान्त] मन को प्रिय। —क्षेप, (पु०) मन की विकलता। —गत, (वि०) १ मन में वर्तमान। मन का। भीतरी। गुप्त। २ मन पर प्रभाव डालने वाला। —गतं, (न०) १ अभिलाषा। २ विचार। धारणा। मत। —गति, (स्त्री०) हृदयाभिलाष। —गवी, (स्त्री०) इच्छा। कामना। —गुप्ता, (स्त्री०) लाल मैनसिल। —ज, —जन्मन्, (वि०) मन से उत्पन्न। (पु०) कामदेव। —जव, (वि०) १ मन के समान वेगवान्। २ विचार करने या कोई बात समझने में फुर्तीला। ३ बाप का। पैतृक। —जात, (वि०) मन से उत्पन्न। —जिघ्र (वि०) मन की बात को ताड़ना। —ज्ञ (वि०) मनोहर। प्रिय। —ज्ञः, (पु०) गन्धर्व का नाम। —ज्ञा, (स्त्री०) १ मनसिल। २ नशा। ३ राजकुमारी। —तापः, —पीड़ा (स्त्री०) मानसिक कष्ट। २ पश्चात्ताप। —तुष्टिः, (स्त्री०) मन का सन्तोष। —तोका (स्त्री०) दुर्गा। —दण्डः, (पु०) मन पर पूर्ण अधिकार। —दाहः, (पु०) दुःखम् (न०) मानसिक पीड़ा। —नीत (वि०) मन के अनुकूल। पसंद। चुना हुआ। —पतिः, (पु०) विष्णु। —पूत, (वि०) १ जो मन से पवित्र माना गया हो। जिसको चित्त ने मान लिया हो। २ शुद्ध मन का। —प्रीतिः, (स्त्री०) मानसिक सन्तोष। हर्ष आनन्द। —भवः, (पु०) —भूः, (पु०) १ कामदेव। २ प्रेम। कामुकता। —मथनः, (पु०) कामदेव। —यायिन्, (वि०) १ अपनी इच्छानुसार चलने वाला। २ फुर्तीला। —योगः, (पु०) मन की एकाग्रता। मन को एकाग्र कर के किसी ओर उसको लगाना। —योनिः, (पु०) कामदेव। —रञ्जनम् (न०) मन को प्रसन्न करने वाला। दिलबहलाव। मनोविनोद। —रथः, (पु०) अभिलाषा। इच्छा। कामना। —रम, (त्रि०) मनोज्ञ। मनोहर। सुन्दर। —रमा, (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री। २ एक प्रकार का रोगन। —राज्यं, (न०) मानसिक कल्पना। —लयः, (पु०) विवेक का नष्ट होना। —लौल्यं, (न०) लहर।

उचंग।—वृत्तिः, (स्त्री०) चित्त की वृत्ति। मनोविकार।—वेगः, (पु०) विचार करने में फुर्तीलापन।—व्यथा, (स्त्री०) मानसिक कष्ट। —शीतः, (पु०)—शीला, (स्त्री०) मैनसिल।—हन, (वि०) हताश।—हर, (वि०) मनहरने वाला। चित्त को आकर्षित करने वाला। —हरः, (पु०) कुन्दपुष्प।—हरं, (न०) सोना।—हर्तृ,—हारिन्, (वि०) मन को चुराने वाला। मनोहर। मनोज्ञ।—हारी, (स्त्री०) असती या छिनाल स्त्री।—ह्लाद, (पु०) मन की प्रसन्नता।—ह्वा, (स्त्री०) मनःशिला। मैनसिल।

मनसा (स्त्री०) कश्यप की एक लड़की का नाम जो सर्पराज अनन्त की बहिन और जरत्कारु की भार्या थी। इसको मनसादेवी भी कहते हैं।

मनसिजः (पु०) १ कामदेव। २ प्रेम।

मनसिशयः (पु०) कामदेव।

मनस्तः (अव्यया०) मन से। हृदय से।

मनस्विन् (वि०) बुद्धिमान। प्रतिभाशाली। चतुर। ऊंचे मन का। २ दृढ़मन का।

मनस्विनी (स्त्री०) १ उदार मन की या अभिमानिनी स्त्री। २ बुद्धिमती या सती स्त्री। ३ दुर्गा का नाम।

मनाक् (अव्यया०) थोड़ा। कम। हल्का। अल्प मात्रा में। २ मन्द मन्द। धीमे धीमे।—कर, (वि०) कम करने वाला।—करं, (न०) अगर काष्ठ।

मनाका (स्त्री०) हथिनी।

मनित (व० कृ०) जाना हुआ। समझा हुआ। पहचाना हुआ।

मनीकं (न०) सुर्मा। अंजन।

मनीषा (स्त्री०) १ अभिलाषा। कामना। २ प्रतिभा। बुद्धि। समझ। ३ विचार। ख़याल।

मनीषिका (स्त्री०) समझ। बुद्धि।

मनीषित (वि०) १ अभिलषित। वांछित। २ अनुकूल। प्रिय।—मनीषितं, (न०) अभिलाषा। अभिलषित पदार्थ।

मनीषिन् (वि०) बुद्धिमान। पण्डित। प्रतिभाशाली चतुर। विवेकी। विचारवान। (पु०) बुद्धिमान या विद्वान् जन। पण्डित। ऋषि।

मनुः (पु०) १ ब्रह्मा के पुत्र जो मानव जाति के मूलपुरुष माने जाते हैं। २ चौदह मनु। पुराणों के अनुसार तथा सूर्यसिद्धान्त नामक ग्रन्थ के अनुसार एक कल्प में १४ मनुओं का अधिकार होता है और उनके अधिकार काल को मन्वन्तर कहते हैं:— चौदह मनुओं के नाम ये हैं:— १ स्वायंभुव। २ स्वारोचिष, ३ औत्तमि, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ७ वैवस्वत, ८ सावर्णि, ९ दक्षसावर्णि, १० ब्रह्मसावर्णि, ११ धर्मसावर्णि, १२ रुद्रसावर्णि, १३ रौच्य-देव-सावर्णि, १४ इन्द्र-सावर्णि। ३ चौदह की संख्या।—अन्तरं (न०) मनु की आयु का काल। एक मनु के रहने की अवधि। यह इकहत्तर चतुर्युगी का होता है। इसमें मानवी गणना से ४,३२०,०००वर्ष और ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग होता है।—जः, (पु०) मनुष्य। मानव जाति।—ज्येष्ठः, (पु०) तलवार।—राज्, (पु०) कुवेर का नामान्तर।—श्रेष्ठः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—संहिता, (स्त्री०) धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जो मनु का बनाया हुआ है।

मनुः (स्त्री०) मनु की पत्नी।

मनुष्यः (पु०) १ मानव। मानुस। २ नर।—इन्द्र, —ईश्वरः, (पु०) राजा।—जातिः, (पु०) मानव जाति।—देवः, (पु०) १ नरेन्द्र। राजा। २ ब्राह्मण।—धर्मन्, (पु०) कुवेर।—मारणं, (न०) नरहत्या।—यज्ञः, (पु०) आतिथ्य। नृयज्ञ।—लोकः, (पु०) मर्त्य लोक।—विश्, —विशा, (स्त्री०)—विशं, (न०) मानव जाति।—शोणितं, (न०) मनुष्य का रक्त।—सभा, (स्त्री०) १ मनुष्यों की सभा। २ मनुष्य समुदाय।

मनोमय (वि०) मानसिक। आध्यात्मिक। मनोरूप।

--कोशः,—कोषः, (पु०) वेदान्त। दर्शन के अनुसार पाँच कोशों में से तीसरा कोश। मन, अहङ्कार और कर्मेन्द्रियां, इस कोश के अन्तर्गत हैं।

मंतृः } (पु०) १ अपराध। दोष। २ मनुष्य।
मन्तृः } मनुष्य जाति। (स्त्री०) बुद्धि। समझ। (पु०) पण्डित। बुद्धिमान पुरुष। सलाहकार। परामर्शदाता।

मंत्र् (धा० आत्म०) [मंत्रयते, मंत्रयति मंत्रित] १ सलाह लेना। २ सलाह देना। ३ अभिमन्त्रित करना। ४ कहना। बोलना। बातचीत करना।

मंत्रः (पु०) १ वैदिक वाक्य। निरुक्त के अनुसार वैदिक मन्त्र तीन प्रकार के माने जाते हैं। यथा परोक्षकृत, प्रत्यक्षकृत और आध्यात्मिक। २ वेदों का मन्त्रभाग जो ब्राह्मण भाग से भिन्न है। ३ जादू। इन्द्रजाल। ४ स्तुति। प्रार्थना। ५ मंत्रणा। —आराधनं, (न०) मंत्र द्वारा किसी अभीष्ट की प्राप्ति।—उदकं,—जलं—तोयं,—वारि, (न०) मंत्र से अभिमन्त्रित जल।—उपष्टम्भः, (पु०) परामर्श द्वारा समर्थन करना।—करणं, (न०) १ वेदसंहिता। २ वेदपारायण।—कारः, (पु०) मन्त्रद्रष्टा ऋषि।—कालः, (पु०) परामर्श का समय।—कुशल, (वि०) परामर्श देने में निपुण।—कृत्, (पु०) १वेद का रचयिता। २ वेदपाठी। ३ परामर्शदाता। ४ दूत। एलची। —गण्डकः, (पु०) विज्ञान। ज्ञान।—गुप्तिः, (स्त्री०) गुप्तपरामर्श।—गूढः, (पु०) गुप्तचर। जासूस।—जिह्वः, (पु०) अग्नि।—ज्ञः, (पु०) १ परामर्शदाता। २ पण्डित। ब्राह्मण। ३ गुप्तचर। जासूस।—दः,—दातृ, (पु०) दीक्षा या मंत्रदाता गुरु।—दर्शिन् (पु०) १ मंत्रद्रष्टा ऋषि। २ वेदवित्। वेदज्ञ। दीधितिः, (पु०) अग्नि।—दृश्, (पु०) १ मन्त्रद्रष्टा। २ परामर्शदाता।—देवता, (स्त्री०) वह देवता जिसका उस मंत्र में आह्वान किया गया हो।—धर (न०) परामर्शदाता।—निर्णयः, (पु०) विचार करने के पीछे अन्तिम फैसला।—पूत, (वि०) मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ।—बीजं, —बीजं, (न०) किसी मंत्र का प्रथमाक्षर। मूलमंत्र।—भेदः, (पु०) सलाह का प्रकट कर देना।—मूर्तिः (पु०) शिव जी।—मूलं, (न०) इन्द्रजाल। जादू।—योगः, (पु०) १ मंत्र का प्रयोग। २ तंत्र।—विद्या, (स्त्री०) तंत्र विद्या।—संस्कारः, (पु०) मंत्र पढ़ कर किया हुआ संस्कार।—संहिता, (स्त्री०) वेदों का। वह अंश जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।—साधकः, (पु०) ताँत्रिक।—सिद्धिः, (स्त्री०) मंत्र का सिद्ध होना। मंत्र की सफलता। मंत्र द्वारा प्राप्त शक्ति।

मंत्रणं (न०) } परामर्श। सलाह। मशवरा।
मंत्रणा (स्त्री०) }

मंत्रित (व० कृ०) १ मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमन्त्रित। २ परामर्श किया हुआ। ३ कहा हुआ। निश्चित। तैशुदा।

मंत्रिन् (पु०) १ सचिव। राजा का आमात्य।—धुर, (वि०) सचिव के पद का दायित्व उठा लेने योग्य।—पतिः,—प्रधानः,—प्रमुखः,—वर,—श्रेष्ठः, (पु०) प्रधान सचिव या आमात्य।—प्रकाण्डः, (पु०) श्रेष्ठ सचिव। —श्रोत्रियः, (पु०) सचिव जो वेदवित् हो।

मंथ्, मन्थ् } (धा० परस्मै०) [मंथति, मथति, मथ् } मथ्नाति, मथित] १मथना। बिलोना। मथ कर निकालना। २ हिलाना। ३ पीस डालना। पीडित करना। सन्तप्त करना। ४ घायल करना। ५ नाश करना। वध करना। मसल डालना। ६ चीरना। फाड़ना।

मंथः } (पु०) १ मंथन। बिलोना। हिलाना।
मन्थः } गड़बड़ करना। २ वध करना। नाश करना। ३ शरबत जिसमें कई वस्तुएं मिली हों। ४ मथानी। रई। ५ सूर्य। ६ सूर्य की किरण। ७ आँख का कीचड़। आँख का जाला या मोतियाबिन्द। ८ यंत्र जिससे आग उत्पन्न की जाती है। —अचलः,—अद्रिः,—गिरिः,—पर्वतः,—शैलः (पु०) मन्दराचल पर्वत।—उदकः,—उदधिः, (पु०) दूध का समुद्र।—गुणः, (पु०) मंथन दण्ड की रस्सी।—जं, (न०) मक्खन। —दण्डः,—दण्डकः, (पु०) मथानी। रई।

मंथनः } मथानी । रई ।—घटी (स्त्री०) मथन
मन्थनः } करने का बरतन ।

मंथनं } (न०) १ मथना । गड्डबड्ड करना । २
मन्थनं } दो लकड़ियों को रगड़ कर आग उत्पन्न करना ।

मंथानी } (स्त्री०) वह बरतन जिसमें मथानी डाल
मन्थानी } कर मथा जाय ।

मथर } (वि०) १ सुस्त । अक्रियाशील । २ मूर्ख ।
मन्थर } मूढ़ । ३ नीचा । गहरा । पोला । मन्दस्वर वाला । ४ लंबा । बड़ा । चौड़ा । ५ झुका हुआ । मुड़ा हुआ । टेढ़ा ।

मंथरः } (पु०) १ भाण्डार । धनागार । २ सिर के
मन्थरः } बाल । ३ क्रोध । कोप । ४ ताज़ा मक्खन । ५ मथानी । ६ बाधा । रोक । अड़चन । ७ दुर्ग । ८ फल । ९ गुप्तचर । खबर देने वाला १० बैसाख मास । ११ मन्दराचल । १२ बारहसिंगा ।

मंथरम् } (न०) कुसुम का फूल ।
मन्थरम् }

मंथरा } (स्त्री०) कैकेयी की कुबड़ी चेरी, जिसने
मन्थरा } उसे भड़का कर, श्रीरामचन्द्र जी को १२ वर्ष का वनवास दिलवाया था ।

मंथारुः } (पु०) पवन जो चँवर डुलाने से निकले ।
मन्थारुः }

मंथानः } (पु०) १ मथानी । रई । २ शिवजी ।
मन्थानः }

मंथानकः } (पु०) एक प्रकार की घास ।
मन्थानकः }

मंथिन् } (वि०) १ मथने वाला २ सन्तापकारक ।
मन्थिन् } (पु०) वीर्य ।

मंथिनी } (स्त्री०) वह बरतन जिसमें कोई तरल
मन्थिनी } पदार्थ मथा जाय ।

मंद् } (धा० आत्म०) [मन्दते] १ (वैदिक) नशे
मन्द् } में होना । २ प्रसन्न होना । ३ सुस्त पड़ना । ४ चमकना । ५ मन्द चाल से चलना । मटरगश्त लगाना ।

मंद } (वि०) १ धीमा । सुस्त । काहिल । दीर्घ-
मन्द } सूत्री । २ उदासीन । तटस्थ । ३ मूर्ख । मंदबुद्धि का । अज्ञानी । निर्बल मस्तिष्क वाला । ४ नीचा । गहरा । खोखला । पोला । ५ कोमल । मुलायम । ६ छोटा । हलका । कम । ७ निर्बल । दोषयुक्त । अशक्त । ८ अभागा । दुःखी । ९ कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ । १० दुष्ट । बदमाश । पापी । ११ नशा पीने को लालायित ।

मंदं } (पु०) १ धीमे से । धीरे धीरे । क्रमशः ।
मन्दम् } २ आहिस्ता से । उग्रता या प्रचण्डता से नहीं । ३ हलकेपन से । ४ मन्द स्वर से ।—अक्ष, (वि०) कमज़ोर दृष्टि वाला ।—अक्षं, (न०) लज्जा का भाव । लज्जाशीलता ।—अग्नि, (वि०) वह जिसकी पाचन शक्ति कम हो गयी हो ।—अग्निः, (पु०) एक रोग जिसमें रोगी की पाचन शक्ति कम हो जाती है ।—अनिल, (पु०) धीमा बहने वाला वायु ।—आक्रान्ता, (स्त्री०) सत्रह अक्षर के वर्ण वृत्त का नाम ।—आत्मन्, (वि०) मन्दबुद्धि । मूर्ख । अज्ञानी ।—आदर, (वि०) १ कमसम्मान प्रदर्शित करने वाला । २ असावधान ।—उत्सह, (वि०) वह जिसका उत्साह कम हो ।—उदरी, (=मन्दोदरी) (स्त्री०) रावण की पटरानी का नाम । इसकी गणना पाँच सती स्त्रियों में है ।—उष्ण, (वि०) शीतोष्ण । गुनगुना ।—कर्ण, (वि०) थोड़ा थोड़ा बहरा ।—कान्ति, (पु०) चन्द्रमा ।—गः, (पु०) शनिग्रह ।—जननी, (स्त्री०) शनि की माता ।—स्मितं, (न०)—हासः, (पु०)—हास्यं, (न०) मुसक्यान ।

मंदः } (पु०) १ शनिग्रह । २ यम । ३ प्रलय ।
मन्दः } ४ हाथी विशेष ।

मंदटः } (पु०) मूंगा का वृक्ष ।
मन्दटः }

मंदनम् } (पु०) प्रशंसा । तारीफ़ ।
मन्दनम् }

मंदयंती } (स्त्री०) दुर्गा देवी ।
मन्दयन्ती }

मंदर } (वि०) १ सुस्त । धीमा । काहिल । २
मन्दर } गाढ़ा । घना । पुष्ट । ३ लंबा । भारी डील का ।

मंदरः } (पु०) १ मन्दराचल का नाम । मोती का
मन्दरः } हार । ३ स्वर्ग । ४ दर्पण । ५ मदार वृक्ष ।

इन्द्र के नन्दनकानन के पाँच वृक्षों में से एक —आवासा,—वासिनी, (स्त्री०) दुर्गा का नामान्तर ।

मंदसानः / मन्दसानः (पु०) १ अग्नि । २ जीवन । आयु । ३ निद्रा ।

मंदाकः / मन्दाकः (पु०) धारा । नदी ।

मंदाकिनी / मन्दाकिनी (स्त्री०) पुराणानुसार गङ्गा की वह धार जो स्वर्ग में है जो ब्रह्मवैवर्त के अनुसार एक अयुत योजन लंबी है ।

मंदारः / मन्दारः (पु०) मूँगे का वृक्ष । यह भी इन्द्र के नन्दनकानन के पाँच वृक्षों में से एक है । २ अर्क । मदार । ३ धतूरा । ४ स्वर्ग । ५ हाथी ।

मंदारं / मन्दारं (पु०) मूंगे के वृक्ष का फूल ।—माला, (स्त्री०) मदार के फूलों का हार ।—षष्ठी, (स्त्री०) माघशुक्ला ६ छठ ।

मंदारकः / मन्दारकः / मंदारवः / मन्दारवः / मंदारुः / मन्दारुः (पु०) मूँगे का वृक्ष ।

मंदिमन / मन्दिमन (पु०) १ धीमापन । दीर्घसूत्रता । २ मूढता । मूर्खता ।

मंदिरं / मन्दिरं (न०) १ रहने का घर । घर । डेरा । भवन । राजभवन । २ कस्बा । ३ शिबिर । छावनी । ४ देवालय ।—पशुः, (पु०) बिल्ला । बिलार ।—मणिः, (पु०) शिव जी का नाम ।

मंदिरा / मन्दिरा (स्त्री०) अस्तबल । तवेला । पशुशाला ।

मंदुरा / मन्दुरा (स्त्री०) १ अश्वशाला । घुड़साल । घोड़ों का तवेला । २ चटाई । गद्दा ।

मद्र / मन्द्र (वि०) नीचा । गहरा । पोला । गम्भीर ।

मंद्रः / मन्द्रः (न०) १ मन्दस्वर । २ एक प्रकार का ढोल । मृदङ्ग । ३ हाथी विशेष ।

मन्मथः (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम । कामुकता । ३ कैथा ।—आनन्दः, (पु०) आम विशेष का वृक्ष ।—आलयः, (पु०) १ आम का पेड़ ।—युद्धं, (न०) स्त्रीसम्भोग ।—लेखः, (पु०) प्रेमपत्र ।

मन्मनः (पु०) १ गुप्त कानाफूँसी । २ कामदेव ।

मन्यु (पु०) १ क्रोध । कोप । रोष । २ दुःख । शोक । सन्ताप । क्लेश । ३ दुर्दशा । कमीनापन । नीचता । ४ यज्ञ । ५ अग्नि । ६ शिव ।

मभ्र (धा० पर०) [मभ्रति] चलना । जाना ।

मम (पु०) मेरा ।—कारः, (पु०) ममता । मैं मैंपन । स्वार्थ ।

ममता (स्त्री०) १ मेरेपन का भाव । स्वार्थ । ममत्व । अपनापन । २ अभिमान । अहङ्कार । ३ व्यक्तित्व ।

ममत्व (न०) १ ममता । अपनापन । २ स्नेह । ३ गर्व । अभिमान ।

ममापतालः (पु०) ज्ञानेन्द्रिय ।

मंव् (धा० परस्मै०) चलना । डोलना ।

मम्मटः (पु०) काव्यप्रकाश के रचयिता एक विद्वान का नाम ।

मय् (वि०) [स्त्री०—मयी] तद्धित का एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य के अर्थ में शब्दों में जोड़ा जाता है ।

मयः (पु०) १ दैत्य जाति के एक शिल्पी का नाम । पाण्डवों के लिये सभाभवन इसीने बनाया था । २ दिति का पुत्र, जिसकी पुत्री मन्दोदरी रावण को ब्याही थी । ३ घोड़ा । ऊँट । ४ खच्चर । अश्वतर ।

मयटः (पु०) घास फूँस की झोपड़ी ।

मयष्टकः / मयुष्टकः (पु०) बनमूंग ।

मयुः (पु०) १ किन्नर । २ मृग । हिरन ।—राजः, (पु०) कुबेर का नाम ।

मयूखः (पु०) १ किरण । २ सौन्दर्य । ३ अँगारा । धूपघड़ी की कील ।

मयूरः (पु०) १ मोर । २ पुष्प विशेष । ३ सूर्यशतक के बनाने वाले कवि का नाम ।—अरिः, (पु०) छिपकली ।—केतुः, (पु०) कार्तिकेय ।—ग्रीवकं, (न०) तूतिया ।—चटकः, (पु०)

गोरैया पक्षी।—चूड़ा, (स्त्री०) मयूर शिखा। —तुत्थं, (न०) तूतिया।—रथः, (पु०) कार्तिकेय।—शिखा, (स्त्री०) मोर की चोटी।

मयूरी (स्त्री०) मयूर की मादा।

मयूरकं (न०) तूतिया।

मयूरकः (पु०) १ मोर। २ तूतिया।

मरकः (पु०) महामारी। प्लेग।

मरकतं (न०) पन्ना।—मणिः, (पु० स्त्री०) पन्ना।—शिला, (स्त्री०) पन्ना की सिल्ली।

मरणं (न०) १ मृत्यु। मौत। २ विष विशेष।—अन्त,—अन्तक, (वि०) मृत्यु के साथ समाप्त होने वाला।—अभिमुख,—उन्मुख, (वि०) मरणापन्न।—धर्मन्, (वि०) मरणशील। मर्त्य।

मरतः (पु०) मृत्यु।

मरंदः
मरन्दः
मरंदकः
मरन्दकः } (पु०) फूल का रस।—ओकस्, (न०) फूल।

मरारः (पु०) खत्ती। अनाज रखने की भण्डारी।

मराल (वि०) १ कोमल। चिकना।

मरालः (पु०) [स्त्री०—मराली] १ हंस। २ वत्तख की तरह का जलचर पक्षी विशेष। कारण्डव। ३ घोड़ा। ४ बादल। ५ नयनाञ्जन। सुर्मा। ६ अनार के वृक्षों की कुंज। ७ बदमाश। कपटी।

मरीचं (न०) काली मिर्च।

मरिचः
मरीचः } (पु०) काली मिर्च का झाड़।

मरीचिः (पु० स्त्री०) १ किरण। २ प्रकाश का अणु। ३ मृगमरीचिका। मृगतृष्णा।

मरीचिः (पु०) १ एक ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं और दस प्रजापतियों में इनकी गणना की जाती है। २ एक स्मृतिकार। ३ श्रीकृष्ण का नाम। ४ कंजूस।—तोयं, (न०) मृगतृष्णा। —मालिन्, (वि०) जो किरनों से घिरा हो। (पु०) सूर्य।

मरीचिका (स्त्री०) मृगतृष्णा।

मरीचिन् (पु०) सूर्य।—मरुः, (पु०) १ रेगस्तान। ऐसा देश जहाँ जल का अकाल सा हो। २ पर्वत। चट्टान। (पु०) (बहुवचन) एक देश का नाम और उसके अधिवासियों का नाम। मारवाड़। मारवाड़ी।—उद्भवा, (पु०) १ कपास का रूख। २ ककड़ी।—कच्छः, (पु०) एक प्रान्त विशेष।—द्विपः,—प्रियः, (पु०) ऊंट।—धन्वः,—धन्वन्, (पु०) रेगस्थान। मरुभूमि।—भूः, (बहुवचन) मारवाड़ देश। —भूमिः, (स्त्री०) रेगस्थान।—स्थलं, —स्थली, (स्त्री०) रेगस्थान। वीरान। जंगल।

मरुकः (पु०) मोर।

मरुत् (पु०) १ पवन। २ पवन का अधिष्ठाता देवता। ३ देवता विशेष। ४ मरुवक नामक पौधा। (न०) ग्रन्थपर्णि नामक वृक्ष।— आन्दोलः, (पु०) हिरन या भैंसे के चाम का बना पंखा विशेष।—कर्मन्, (पु०)—क्रिया, अफरा। पेट का फूलना।—गणः, (पु०) देवताओं का समुदाय।—तनयः,—पुत्रः,— सुनः,—सूनुः, (पु०) १ हनुमान। २ भीम। —पटः, (पु०) नाव का पाल।—पतिः, —पालः, (पु०) इन्द्र।—पथः, (पु०) आकाश। अन्तरिक्ष।—प्लवः, (पु०) सिंह। शेर।—फलं, (न०) ओला।—बद्धः, (पु०) १ विष्णु। २ यज्ञीयपात्र विशेष।—लोकः, (पु०) वह लोक जिसमें देवता रहते हैं— वर्त्मन्, (न०) आकाश। अन्तरिक्ष।—वाहः, (पु०) १ धूम। २ अग्नि।—सखः, (पु०) १ पवन। २ इन्द्र।

मरुतः (पु०) १ पवन। २ देवता।

मरुत्तः (पु०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम जिसके यज्ञ में देवता आकर काम करते थे।

मरुत्तकः (पु०) मरुआ नामक पौधा।

मरुत्वत् (पु०) १ बादल। २ इन्द्र। ३ हनुमान।

मरुलः (पु०) वतख विशेष।

मरुवः (पु०) १ दौनामरुआ। २ राहु का नामान्तर।

मरुवकः } (पु०) १ दौनामरुआ। २ नीबू विशेष।
मरुवकः } ३ चीता। ४ राहु। ५ सारस।

मरूकः (पु०) १ मोर। बारहसिंघा विशेष।

मर्कटः (पु०) १ वानर। लँगूर। २ मकड़ी। ३ सारस। ४ स्त्रीसम्भोग का आसन विशेष। ५ विष विशेष। —आस्य, (वि०) वानरमुख। —आस्यं (न०) ताँबा।—इन्दुः, (पु०) आबनूस।—तिन्दुकः, (पु०) आबनूस विशेष। कुपील।—पोतः, (पु०) बँदर का बच्चा।—वासः, (पु०) मकड़ी का जाला।—शीर्षः, (पु०) हिंगुल।

मर्कटक (पु०) १ लँगूर। २ मकड़ी। ३ एक जाति विशेष की मछली। ४ अनाज विशेष।

मर्करा (स्त्री०) १ बरतन। २ पात्र। २ गुफा। सुरंग। ३ बाँझ स्त्री।

मर्च् (धा० उभय०) [मर्चयति, मर्चयते] १ लेना। २ साफ करना। ३ शब्द करना।

मर्जूः (पु०) १ धोबी। २ मैथुन कराने वाला लड़का। (स्त्री०) सफाई। धुलाई। पवित्रता।

मर्तः (पु०) १ मानव। इंसान। आदमी। २ पृथिवी। मर्त्यलोक।

मर्त्य (वि०) मरणशील

मर्त्यं (न०) शरीर।——धर्मः, (पु०) विनश्वरता।—धर्मन्, (वि०) मरणशील।—निवासिन्, (पु०) मानव। मनुष्य।—भावः, (पु०) मनुष्य-स्वभाव।—भुवनं, (न०) पृथिवी।—महितः, (पु०) ईश्वर।—मुखः, (पु०) किन्नर।—लोकः, (पु०) मर्त्यलोक। भूलोक।

मर्त्यः (पु०) १ इंसान। मनुष्य। २ मर्त्यलोक। भूलोक।

मर्द (त्रि०) कुचलने वाला। कूटने वाला। पीसने वाला। नाशकरने वाला।

मर्दः (पु०) १ पीसना। कूटना। २ प्रचण्ड आघात।

मर्दन (वि०) [स्त्री०—मर्दनी] कुचलने वाला। पीसने वाला। नाश करने वाला।

मर्दनं (न०) १ कुचलना। पीसना। २ मालिश। (शरीर) दबाना। ३ लेप करना। ४ दबाव डालना। ५ पीड़ा करना। सन्तापित करना। ६ नाश करना। उजाड़ना।

मर्दलः (पु०) मृदङ्ग विशेष।

मर्ब् (धा० पर०) [मर्बति] जाना।

मर्मन् (न०) १ शरीर का मर्मस्थल। २ शरीर का सन्धिस्थान। २ रहस्य। तत्त्व। भेद।—अरं, (न०) हृदय।—छिद्,—भिद्, (वि०) १ अत्यन्त पीडाकारक। ३ साँघातिक। आघात करने वाला।—ज्ञ, (त्रि०) वह जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो। तत्त्वज्ञ। २ भेद की बात जानने वाला। रहस्य का जानकार।—ज्ञः, (पु०) प्रकाण्ड विद्वान्।—त्रं, (न०) कवच।—पारग, (वि०) भली भाँति अभिज्ञ। भेदः, (पु०) मर्मस्थलों को छेदने वाला। २ किसी की गुप्त बातों को या कमज़ोरियों को प्रकट करने वाला।—भेदनः, (पु०)—भेदिन्, (पु०) बाण। तीर।—स्थलं,—स्थानं (न०) १ शरीर के सन्धिस्थान। २ कमज़ोरियाँ। निर्बलताएँ।

मर्मर (वि०) मरमर। पत्तों या कलफदार कपड़े की खरभर।

मर्मरः (पु०) १ पत्तों की खड़कन। २ बरबराहट।

मर्मरी (स्त्री०) १ हल्दी। २ वृक्ष विशेष।

मर्मरीकः (पु०) १ गरीब आदमी। मोहताज। २ दुष्ट मनुष्य।

मर्या (स्त्री०) सीमा। हद।

मर्यादा (स्त्री०) १ सीमा। हद। २ अन्त। छोर। तट। किनारा। ३ चिन्ह। क्षेत्रसीमा चिन्ह। ४ नैतिक विधि। ५ शिष्टता की मर्यादा। ६ ठहराव। इकरार।—अचल, (पु०) –गिरिः, (पु०) —पर्वतः, (पु०) सीमा पर स्थित पहाड़।—भेदकः, (पु०) क्षेत्र-सीमा-चिन्ह को मिटाने वाला।

मर्यादिन (पु०) १ पड़ोसी। २ सीमा पर रहने वाला।

मर्ष् (गा० परस्मै०) [मर्षति] १ चलना । डोलना । २ भगना । परिपूर्ण करना ।

मर्शः (पु०) १ विचार । २ परामर्श । सलाह । ३ छींक लाने वाली वस्तु ।

मर्शनं (न०) १ मालिश । मलाई दलाई । २ परीक्षा । अनुसन्धान । ३ विचार । मनन । ४ परामर्श । ५ स्थानान्तर करण ।

मर्षः (पु०) | सहनशीलता । धीरज ।
मर्षणम् (न०) |

मर्षित (व० कृ०) सहा हुआ । गँवारा किया हुआ । २ क्षमा किया हुआ । माफ किया हुआ ।

मर्षितं (न०) सहनशीलता । धैर्य ।

मर्षिन् (वि०) सहन करने वाला । सहिष्णु ।

मल् (धा० आत्म०-परस्मै०) [मलते, मलयति] ग्रहण करना । अधिकार में करना ।

मलं (न०) } १ मैल । कीट । धूल । गर्दा । २
मलः (पु०) } तलछट । फाक । खूट । लीच्चो । ३ धातुओं का मैल । ४ पाप । ५ शरीर से निकलने वाला मैल या विकार । [मनुस्मृति के अनुसार शरीर के बारह मल हैं — १ वसा । २ शुक्र । ३ रक्त । ४ मज्जा । ५ मूत्र । ६ विष्ठा । ७ कान का मैल । ८ नख । ९ श्लेष्मा या कफ । १० आँसू । ११ शरीर के ऊपर जमा हुआ मैल । १२ पसीना ।] ६ कपूर । ७ समुद्रफेन । कमाया हुआ चमड़ा । चमड़े के बने वस्त्र । (न०) मिलावटी धातु विशेष ।—अपकर्षणं, (न०) मैल या पाप दूर करना ।—अरि, (पु०) क्षार विशेष । —अवरोधः, (पु०) कोष्ठबद्धता । कब्जियत । —आकर्षिन् (पु०) महतर । कूड़ा साफ करने वाला ।—आशय, (पु०) मेदा । पेट । —उत्सर्गः, (पु०) टट्टी जाना । पेट से मल निकालना ।—जं, (न०) पीप । मवाद ।—दूषित, (वि०) मैला । गंदा ।—द्रवः, (पु०) दस्तों की बीमारी ।—धात्री, (स्त्री०) दाई जो बच्चे की आवश्यकताओं को दूर करे ।—पृष्ठं (न०) किसी पुस्तक का पहला पन्ना । आवरण-पृष्ठ ।—भुज्, (पु०) काक । कौआ ।—मल्लकः, (पु०) कौपीन । लंगोटी ।—मासः, (पु०) अधिक मास । लौंद का महीना ।—वाससू, (स्त्री०) स्त्री जो कपड़ों से हो । रजस्वला स्त्री ।—विसर्गः,—विसर्जनं,—शुद्धिः, (स्त्री०) कोठा साफ करना ।—हारक, (वि०) मैल या पाप दूर करने वाला ।

मलनः (पु०) तंबू । डेरा ।

मलनं (न०) कुचरना । पीस डालना ।

मलय, (पु०) १ दक्षिण भारत की एक पर्वतमाला जिसके ऊपर चन्दन के वृक्ष अधिकता से पाये जाते हैं । २ मलय पर्वत के पूर्व का देश विशेष । मालाबार प्रान्त । ३ बाग । ४ इन्द्र का नन्दनकानन । —अचल',—गिरि',—अद्रिः—पर्वतः, (पु०) मलयाचल ।—अनिल',—वातः,—समीरः, (पु०) मलय पर्वत से आयी हुई हवा ।—उद्भवं, (न०) चन्दन काष्ठ ।—जः, (पु०) चन्दन वृक्ष ।—जः, (पु०) —जं, (न०) चन्दन काष्ठ ।—जं, (न०) राहु का नामान्तर ।—द्रुमः, (पु०) चन्दन का वृक्ष ।—वासिनी, (स्त्री०) दुर्गा देवी ।

मलाका (स्त्री०) १कामातुरा स्त्री । २ स्त्रीहलकारा । दूती । ३ हथिनी ।

मलिन (वि०) १ मैला । गंदा । अपवित्र । २ काला । ३ पापमय । दुष्ट । ४ नीच । कमीना । पापी । ५ मेघाच्छन्न । अन्धकारमय ।—अम्बु, (न०) मसी । स्याही । रोशनाई ।—आस्य, (वि०) १ मलिन मुख वाला । २ नीच । कमीना । गँवार । ३ बर्बर । निष्ठुर ।—मुखः, (पु०) १ अग्नि । २ भूत । प्रेत । ३ गोलाङ्गूल जाति का वानर ।

मलिनं (न०) १ पाप । अपराध । दोष । १ माठा । ३ सोहागा ।

मलिना } (स्त्री०) १ रजस्वला स्त्री । २ लाल
मलिनी } खाँड या शक्कर । ३ छोटी भटकटैया ।

मलिनयति (क्रि०) १ मैला करना । गंदा करना । २ बिगाड़ना । बुरा काम करने के लिये उत्साहित करना ।

मलिनिमन् (पु०) १ गंदगी । अशुद्धता । मैलापन । २ कृष्णता । कालापन । कलूटापन । यथा —

"मलिनिमालिनि माधवयोषिता ।"

३ पाप । नैतिक अपवित्रता ।

मलिम्लुचः (पु०) १ डाकू । चोर । २ दैत्य । ३ डाँस । मच्छर । ४ अधिकमास । लौंद का महीना । ५ पवन । हवा । ६ अग्नि । ७ वह ब्राह्मण जो पँचमहायज्ञों को नित्य नहीं करता ।

मलीमस (वि०) १ मैला । गंदा । २ काला कलूटा । काले रंग का । ३ पापी दुष्ट ।

मलीमसः (पु०) १ लोहा । २ पीले रंग का कसीस । हरे रंग का कसीस । तूतिया ।

मल्ल् (धा० आत्म०) [मल्लते] ग्रहण करना । अधिकार करना । कब्ज़ा करना ।

मल्ल (वि०) १ मज़बूत । बलवान । कसरती । रोबीला । २ अच्छा । उत्तम ।

मल्लः (पु०) १ पहलवान । कसरती आदमी । २ मज़बूत या ताकतवर आदमी । ३ प्याला । कटोरा । ४ कपोल । कनपुटी । गण्डस्थल । ५ देवता को चढ़ायी हुई वस्तु । प्रसाद ।—अरिः, (पु०) १ श्रीकृष्ण । २ शिव ।—क्रीडा, (स्त्री०) पहलवानों का दंगल ।—जं, (न०) कालीमिर्च ।—तूर्य, (न०) ढोल विशेष ।—भूः,—भूमिः, (स्त्री०) १अखाड़ा। २देश विशेष । —युद्धं, (न०) बाहुयुद्ध । कुश्ती ।—विद्या, (स्त्री०) कुश्ती लड़ने की विद्या ।—शाला, (न०) १ अखाड़ा ।

मल्लकः (पु०) १ डीवट । पतीलसोत । २ तैल-पात्र । ३ दीपक । ४ नरेरी का बना प्याला । ५ दाँत । ६ कुन्दपुष्प ।

मल्लिः } मल्ली } (स्त्री०) मोतिया ।—नाथः, (पु०) १४वीं या १५वीं शताब्दी में यह एक प्रसिद्ध टीकाकार हो गये हैं । इनकी बनायी रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत, किरातार्जुनीय, नैषधचरित और शिशुपालवध की टीकाओं का विद्वानों में बड़ा आदर है ।

मल्लिकः (पु०) १ हंस विशेष जिसकी टाँगे और चोंच धुमैले रंग की होती है । २ माघ मास । ३ जुलाहे की ढरकी ।—अक्षः, (पु०)—आख्या, हंस विशेष ।—अर्जुनः, (पु०) श्रीशैल पर स्थित शिवजी के एक लिङ्ग का नाम ।—आख्या, (स्त्री०) मोतिया ।

मल्लिका (स्त्री०) १ मोतिया । २ मोतिया का फूल । ३ डीवट । पतीलसोत । विशेष आकार का मिट्टी का बना बरतन ।

मल्लीकरः (पु०) चोर ।

मल्लुः (पु०) रीछ । भालू ।

मव् (धा० परस्मै०) [मवति] बाँधना । कसना ।

मव्य् (धा० परस्मै०) [मव्यति] बाँधना ।

मश् (धा० परस्मै०) [मशति] १ भिन भिन करना । गुनगुनाना । २ नाराज़ होना ।

मशः (पु०) १ मच्छड़ । २ गुञ्जार । ३ क्रोध ।—हरी, (स्त्री०) मसैहरी । मच्छरदानी ।

मशकः (पु०) १ मच्छर । डाँस । २ मसा नामक चर्मरोग । ३ मशक जो भिश्तियों के पास रहती है ।

मशकिन् (पु०) गूलर का पेड़ ।

मशुनः (पु०) कुत्ता ।

मष् (धा० परस्मै०) [मषति] चोटिल करना । घायल करना । वध करना । नाश करना ।

मषिः } मषी } (स्त्री०) मसी । रोशनाई । स्याही ।

मस् (धा० परस्मै०) [मस्यति] १ तौलना । नापना । २ रूप बदलना ।

मसः (पु०) माशा । एक तौल विशेष ।

मसनं (न०) १ नापना । तौल । २ रूखरी । बूटी ।

मसरा (स्त्री०) मसूर ।

मसारः } मसारकः } (पु०) पन्ना रत्न ।

मसिः (पु० स्त्री०) १ रोशनाई । स्याही । २ कालिख । ३ काजल ।—आधारः, (पु०) —कूपी,

(स्त्री०) —धानं, (न०) —धानी, (स्त्री०) —मणिः, (पु०) दावात। स्याही की बोतल। क़लमदान।—जलं, (न०) स्याही।—परायः, (पु०) लेखनी।—पथः, (पु०) १ क़लम। लेखनी।—प्रसूः, (स्त्री०) १ कलम। २ दावात।—वर्द्धनं, (न०) गन्धरस। लोबान।

मसिकः (पु०) साँप का बिल।

मसी (स्त्री०) देखो मसिः।—जलं, (न०) स्याही। रोशनाई।—पटलं (न०) कालिख। काजल।

मसुरः } मसूरः } (पु०) १ मसूर की दाल। २ तकिया।

मसुरा } मसूरा } (स्त्री०) १ मसूर की दाल। २वेश्या। रंडी।

मसूरिका (स्त्री०) १ छुरां। छोटी चेचक। २मसेहरी। ३ कुटनी।

मसूरी (स्त्री०) छोटी चेचक।

मसृण (वि०) १ स्निग्ध। चिकना। २ कोमल। नरम। मुलायम। ३ मीठा। मातदिल। ४ मनोज्ञ। मनोहर। ५ चमकीला। झलमला।

मसृणा (स्त्री०) अलसी।

मस्क् (धा० परस्मै०) [मस्कति] चलना।

मस्करः (पु०) १ बाँस। २ पोला बाँस। ३ गमन। गति। ४ ज्ञान।

मस्करिन (पु०) १ साधु। संन्यासी। २ चन्द्रमा।

मस्ज (धा० परस्मै०) [मज्जति, मग्न] १ नहाना। जल में शरीर डुबो कर स्नान करना। अवगाहन। स्नान करना। २ डूबना। ३ डूब मरना। ४ सङ्कट में डूबना। ५ हताश होना। दिल का टूटना।

मस्तं (न०) मस्तक। सिर।—दारु, (न०) देवदारु का पेड़।—मूलकं, (न०) गर्दन।

मस्तकं (न०) } मस्तकः (पु०) } १ सिर। खोंपड़ी। शिखर या चोटी।—आख्यः, (पु०) पेड़। फुनगी।—ज्वरः, (पु०)—शूलं, (न०) उग्र शिर की पीड़ा।—मूलकं, (न०) गर्दन।—स्नेहः, (पु०) मस्तिष्क दिमाग़। भेजा।

मस्तिकं (न०) } मस्तिष्कं (न०) } सिर। मस्तिष्क। दिमाग़। भेजा। मस्तक के अंदर का गूदा। भेजा। मग़ज़।

मस्तु (न०) १ दही का पानी। तोड़। २ छाँछ। मठा।—लुंगः, लुङ्गः, (पु०) —लुंगं, लुङ्गम्, (न०) —लुंगकः, लुङ्गकः, (पु०) —लुंगकम्, लुङ्गकम्, (न०) } मस्तिष्क। भेजा। दिमाग़। मगज।

मह् (धा० परस्मै०) [महति, महयति, महयते, महित] सम्मान करना। पूजन करना।

महः (पु०) १ उत्सव। २ नैवेद्य। भेंट। यज्ञ। बलिदान। ३ भैंसा। ४ दीप्ति। चमक।

महकः (पु०) १ प्रसिद्धपुरुष। २ कछुवा। ३ विष्णु का नामान्तर।

महत् (वि०) १ बड़ा। लंबा। विशाल। बड़ा लंबा चौड़ा। २ विपुल। बहुत। अनेक। ३ विस्तृत। दीर्घ। ४ मज़बूत। बलवान। ताक़तवर। ५ उग्र। प्रचण्ड। अतिशय। ६ गाढ़ा। घना। ७ आवश्यक। बड़े महत्व का। ८ ऊँचा। प्रसिद्ध। प्रख्यात। कुलीन। ९ उच्चस्वर से। १० सवेर या अबेर। ११ उच्च।

महत् (पु०) १ ऊँट। २ शिव। ३ बड़ा सिद्धान्त।

महत् (न०) १ बड़प्पन। २ अनन्तता। असंख्यता। ३ राज्य। सलतनत। ४ पवित्रज्ञान।

महत् (अव्यया०) अतिशयता से। अत्याधिक।—आवासः, (पु०) विस्तृत भवन।—आशा, (वि०) बड़ी उम्मेद।—विलं, (न०) अन्तरिक्ष।—स्था, (न०) उच्चस्थान। उच्चपद।

महती (स्त्री०) १ वीणा। २ नारद की वीणा का नाम। ३ बड़प्पन। महत्व। ४ वैंगन। भाँटा या वृन्ताक का पौधा।

महत्तर (वि०) अपेक्षा कृत बड़ा। दो पदार्थों में से बड़ा या श्रेष्ठ।

महत्तर (पु०) मुख्य प्रधान या सब से अधिक बूढ़ा आदमी। सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति। २ राजा या किसी रईस के घर का प्रबन्धकर्त्ता। ३ दरबारी। ४ गाँव का मुखिया या बड़ा बूढ़ा।

महत्तरकः (पु०) दरबारी। मुसाहिब। राजा या रईस के घर का प्रबन्धकर्त्ता।

महत्वं (न०) १ बड़प्पन। २ विशालता। ३ गुरुता। श्रेष्ठता।

महनीय (वि०) प्रतिष्ठापात्र। माननीय। पूज्य मान्य।

महंतः } (पु०) मठ का मुख्य पुरुष। साधुमण्डली
महन्तः } या मठ का मुख्याधिष्ठाता। साधुओं का मुखिया।

महर् } (अव्यया०) सात ऊर्ध्व लोकों में से चौथा
महस् } लोक। महर्लोक।

महल्लः } (पु०) रनवास का खोजा या
महल्लिकः } हिजड़ा।

महल्लक (वि०) निर्बल। कमज़ोर। वृद्ध।

महल्लकः (पु०) १ रनवास का खोजा। २ विशाल भवन। महल। राजप्रासाद।

महस् (न०) १ उत्सव। २ भेंट। नैवेद्य। बलि। ३ दीप्ति। आभा। ४ महर्लोक।

महस्वत् } (वि०) चमकीला। प्रकाशमान।
महस्विन् } प्रदीप्त।

महा (स्त्री०) गौ।

महा (वि०) अत्यन्त। बहुत अधिक [नोट ब्राह्मण पात्र, प्रस्थान, तैल और माँस इन शब्दों में महा लगाने पर इन शब्दों के अर्थ कुत्सित हो जाते हैं।] —अक्ष, (पु०) शिव जी।—अंगः, (पु०) १ ऊँट। २ चूहा। घूंस। ३ शिव।—अञ्जनः, (पु०) एक पर्वत का नाम।—अत्यय, (पु०) बड़ा भारी सङ्कट।—अध्वनिक, (वि०) मृत। मरा हुआ।—अध्वरः, (पु०) बड़ा यज्ञ।—अनसं, (न०) भारी गाड़ी।—अनसः, (पु०) —अनसं, (न०) रसोई घर।—अनुभाव, (वि०) कुलीन। गौरव युक्त। आदर्श। २ महात्मा। धर्मात्मा।—अनुभावः, (पु०) मान्य पुरुष।—अन्तक, (पु०) १ मृत्यु। २ शिव।—अन्ध्राः, (पु० बहुवचन०) आन्ध्र देश वासी।—अन्वय,—अभिजन, (वि०) कुलीन घराने में उत्पन्न।—अभिषवः, (पु०) सोम का बहुतसा खींचा हुआ रस।—अमात्यः, (पु०) प्रधान सचिव।—अम्बुकः, (पु०) शिव।—अम्बुज, (न०) दस खरब संख्या।—अम्ल, (न०) इमली का फल।—अर्घ्य, (वि०) मूल्यवान। बेशकीमती।—अर्णवः, (पु०) १ महासागर। २ शिव।—अर्ह, (वि०) १ बहुमूल्य। २ अमूल्य।—अर्हम्, (न०) सफेद चन्दन काष्ठ।—अवरोहः, (पु०) वट वृक्ष।—अशन, (वि०) पेटू। भोजनभट्ट।—अश्मन्, (पु०) लाल। माणिक।—अष्टमी, (न०) आश्विन शुक्लाष्टमी।—असुरी, (स्त्री०) दुर्गा का नाम।—अन्हः, (पु०) मध्यान्होत्तर। दोपहर के बाद का समय।—आचार्यः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—आढ्य, (वि०) धनवान। धर्म।—आढ्यः (पु०) कदम्ब का पेड़।—आत्मन्, (वि०) महात्मा। महापुरुष (पु०) परब्रह्म। परमानन्द।—आनकः, (पु०) बड़ा नगाड़ा।—आनन्दः,—नंदः, (पु०) मोक्ष।—आयुधः, (पु०) शिव।—आलयः, (पु०) १ देवालय। मंदिर। आश्रम। २ तीर्थस्थान। ३ ब्रह्मलोक। ४ परमात्मा।—आलया, (स्त्री०) देवता विशेष।—आशयः, (पु०) १ महानुभाव। २ समुद्र।—आस्पद, (वि०) उच्चपदवर्ती। २ बलवान।—आहवः, (पु०) प्रचण्डयुद्ध।—इच्छ, (वि०) १ उदाराशय। कुलीन। २ वह जिसके उद्देश्य बहुत ऊँचे हों।—इन्द्रः (पु०) १ बड़ा इन्द्र। इन्द्र का नाम। २ नेता। मुखिया। ३ पर्वतमाला विशेष।—इष्वास, (पु०) बड़ा धनुर्धर। महाभट। बड़ा योद्धा।—ईशः,—ईशानः, (पु०) शिव।—ईशानी, (स्त्री०) पार्वती।—ईश्वरः, (पु०) १ विष्णु। २ शिव।—ईश्वरी, (स्त्री०) दुर्गा।—उक्षः (पु०) बड़े भारी डीलडौल का बैल।—उत्पलं, (न०) बड़ा नील कमल।—उत्सवः (पु०) १ कोई बड़ा उत्सव। २ कामदेव।—उत्साह, (वि० बड़ा उत्साही। बड़ा स्फूर्तिमान।—उदधि, (पु०) १ महासागर। २ इन्द्र।—उदय, (पु०) १ अभ्युन्नति। २ मोक्ष। ३

स्वामी। प्रभु। ४ कन्नौज कस्बे का नाम। ५ कन्नोज राज्य की राजधानी का नाम।—उदरं, (न०) १ जलोदर या जालधर रोग। २ बड़ा पेट।—उपाध्यायः, (पु०) बड़ा शिक्षक।—उरस्कः, (पु०) शिव।—ओघः, (पु०) शिव जी।—ओजस, (वि०) बड़ा बलवान। (पु०) बड़ा योद्धा।—ओजसं, (न०) विष्णु-भगवान का सुदर्शन चक्र।—ओषधिः, (स्त्री०) १ बड़ी गुणकारी दवाई। २ दूब घास।—ओषधं (न०) सर्वरोगहरण दवा। २ सोंठ। ३ लहसुन। ४ वत्सनाभ।—कच्छ्, (पु०) १ समुद्र। २ वरुण। ३ पर्वत।—कन्द, (पु०) लहसुन।—कपित्थः, (पु०) १ विल्ववृक्ष। २ लाल लहसुन।—कवु,—कम्बु, (वि०) मादरजात नंगा।—कम्बुः, (पु०) शिव जी।—कर, (वि०) १ लवे हाथो वाला। २ जिसकी बड़ी मालगुज़ारी हो।—कणः, (पु०) शिव जी।—कर्मन् (वि०) बड़ा काम करने वाला। (पु०) शिव जी। कविः, (पु०) बड़ा कवि। २ शुक्र का नामान्तर।—कान्तः (पु०) शिव।—कान्ता, (स्त्री०) पृथिवी।—कायः, (पु०) १ हाथी। २ शिव। ३ विष्णु ४ नंदि। शिव जी का एक गण।—कार्तिकी, (स्त्री०) कार्तिक-मास की पूर्णिमा।—कालः, (पु०) १ शिव जी। २ उज्जैन में महाकाल नाम की शिवजी की प्रतिमा। ३ विष्णु। ४ कद्दू। कुम्हड़ा।—कालपुर, (न०) उज्जैन।—काली (स्त्री०) महाकाल स्वरूप शिव का पत्नी, जिसके पाँचमुख और आठ भुजाएं मानी जाती हैं।—काव्य, (न०) महाकाव्य सर्गबद्ध होता है और उसका नायक कोई देवता, राजा, अथवा धीरोदात्त गुण सम्पन्न क्षत्रिय होता है। इसमें शृङ्गार वीर व शान्त रसों में से कोई रस प्रधान होता है। बीच बीच में अन्य रसों का भी समावेश होना आवश्यक है। महाकाव्य में कम से कम आठ सर्ग अवश्य हों। इसमें सन्ध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रभात, मृगया, पर्वत, वन, ऋतु, सागर, सभोग, विप्रलंभ, मुनि, पुर, यज्ञ, रणप्रयाण, विवाहादि का यथास्थान वर्णन होना चाहिये। [संस्कृत साहित्य में साधारणतः पाच महाकाव्य माने जाते हैं। रघुवंश, कुमारसम्भव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध और नैषधचरित। यह लोगों की साधारणतः धारणा है. किन्तु संस्कृत साहित्य में इन पाँच के अतिरिक्त भट्टिकाव्य विक्रमाङ्कदेवचरित,हरविजय,यादवाभ्युदय आदि और भी कई एक महाकाव्य हैं।] कुमारः, (पु०) राजा का सब से बड़ा पुत्र। युवराज।—कुल, (वि०) वह जो बहुत उत्तम कुल में उत्पन्न हुआ हो। कुलीन।—कृच्छ्रं (न०) एक बड़ा प्रायश्चित्त।—कोशः, (पु०) शिव जी।—क्रतुः, (पु०) बड़ा यज्ञ जैसे अश्वमेध। क्रमः, (पु०) विष्णु।—क्रोधः, (पु०) शिव।—क्षीरः, (पु०) ईख। ऊख।—खर्वः, (पु०)—खर्वं, (न०) एक बहुत बड़ी संख्या जो सौ खर्व की होती है।—गजः, (पु०)—दिग्गज.—गणपतिः, (पु०) गणपति।—गन्धः, (पु०) १ जलबेत। २ कुटज।—गन्धं (न०) चन्दन। ग्रहः, (पु०) राहु।—ग्रीवः, (पु०) १ ऊँट। २ शिव।—ग्रीविन्, (पु०) ऊँट।—घूर्णा, (स्त्री०) शराव।—घोष, (न०) बाज़ार। हाट। मेला।—घोषः, (पु०) हो हल्ला। शोरगुल। कोलाहल।—चक्रवर्तिन्, (पु०) सम्राट्। बहुत बड़ा चक्रवर्ती राजा।—चमू, (स्त्री०) बड़ी फौज।—छायः, (पु०) वट वृक्ष।—जटः (पु०) शिव जी।—जत्रु, (वि०) वह जिसकी हसली की हड्डी बहुत बड़ी हो।—जत्रुः, (पु०) शिवजी।—जनः, (पु०) १ बड़ा या श्रेष्ठ पुरुष। २ साधु। ३ जनता। जनसमुदाय। ४ व्यापारी मण्डल का मुखिया। ५ व्यापारी। सौदागर।—ज्योतिस्, (पु०) शिव।—तपस्, (पु०) १ बड़ा तपस्वी। २ विष्णु।—तलं (न०) नीचे के लोकों में से पाँचवा लोक।—तिक्तः, (पु०) नीव का वृक्ष।—तेजस्, (पु०) १ शूरवीर। बहादुर। २ अग्नि। ३ कार्तिकेय। (न०) पारा। पारद।—दन्तः, (पु०) १ बड़े दाँतो वाला हाथी। २ शिवजी।—दण्डः, (पु०) १ बड़ी बाँह। २

कठोर दण्ड या सज़ा।—दारू, (न०) देवदारु वृक्ष।—देवः, (पु०) शिवजी।—देवी, (स्त्री०) पार्वती जी।—द्रुमः, (पु०) अश्वत्थ। वट।—धन, (वि०) १ बड़ा धनवान। २ बड़ा खर्चीला। बहुमूल्य।—धनं, (न०) १ सोना। २ गन्ध द्रव्य विशेष। ३ मूल्यवान पोशाक।—धनुस्, (पु०) शिवजी।—धातुः, (पु०) १ सुवर्ण। २ शिवजी। ३ मेरुपर्वत।—नटः, (पु०) शिवजी।—नदी, (स्त्री०) १ गंगा, यमुना, कृष्णा आदि बड़ी नदियाँ। २ एक नदी का नाम जो बंगाल की खाड़ी में गिरती है।—नन्दा, (स्त्री०) १ शराब। मदिरा। २ एक नदी का नाम।—नरकः, (पु०) २१ बड़े नरकों में से एक।—नलः, (पु०) एक प्रकार का नरकुल या सरपत।—नवमी, (स्त्री०) आश्विन शुक्ला ६ मी।—नाटक, (न०) नाटक के लक्षणों से युक्त दस अँकों वाला नाटक। यथा हनुमन्नाटक।—नादः, (पु०) १ कोलाहल। २ बड़ा ढोल या नगाड़ा। ३ बादल की गरज़। ४ शङ्ख। ५ हाथी। ६ सिंह। ७ कान। ८ ऊँट। ८ शिव जी।—नादं, (न०) वाद्ययन्त्र या बाजा विशेष।—नासः, (पु०) शिवजी।—निद्रा, (स्त्री०) मृत्यु। मौत।—नियमः, (पु०) विष्णु जी।—निर्वाणं, (न०) परिनिर्वाण जिसके अधिकारी केवल अर्हत या बुद्धगण हैं।—निशा, (स्त्री०) रात का मध्यभाग। आधी-रात। २ कल्पान्त या प्रलय की रात। ३ रात का दूसरा और तीसरा प्रहर।

"महानिशा तु विज्ञेया मध्यमं प्रहरद्वयम्।"

—नीचः, (पु०) धोबी।—नीलः, (पु०) एक प्रकार का नीलम नामक रत्न जो सिंहलद्वीप में होता है।—नृत्यः, (पु०) शिव जी।—नेमिः, (पु०) काक। कौआ।—पक्षः, (पु०) १ गरुड़ जी। २ एक प्रकार की बत्तख।—पक्षी, (स्त्री०) उल्लू। पेचक।—पञ्चमूलं, (न०) बेल, अरनी, सोनापाढ़, कारमरी और पाटला इन पाँचों वृक्षों का समूह।—पञ्चविषं, (न०) शृङ्गी, कालकूट, मुस्तक, वत्सनाग और शङ्खकर्णी।

—पथः, (पु०) १ बहुत लंबा और चौड़ा रास्ता। राजपथ। २ परलोक का मार्ग। मृत्यु। मौत। ३ कई एक ऊँचे पर्वत शिखरों के नाम जिन पर लोग चढ़ कर कूदते थे, जिससे वे सीधे स्वर्ग में चले जाँय। ४ शिवजी।—पद्मः, (पु०) १ सौ पद्म की संख्या। २ नारद जी का नामान्तर। ३ कुबेर की नौ निधियों में से एक निधि।—पद्मं, (न०) १ सफेद कमल। २ एक नगर का नाम।—पद्मपतिः, (पु०) नारद जी।—पातकं, (न०) बड़ा पाप। ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ सम्भोग तथा इनमें से कोई महापातक करने वाले का संसर्ग—ये महापातक कहलाते हैं। कहा जाता है कि, जो ये महापातक करते हैं वे नरकयातना भोगने के अनन्तर भी सात जन्म तक घोर कष्ट भोगते हैं।—पात्रः, (पु०) महामंत्री।—पादः, (पु०) शिव जी का नाम।—पुरुषः, (पु०) १ बड़ा आदमी। प्रसिद्ध पुरुष। २ परमात्मा। ३ विष्णु भगवान का नामान्तर।—पुष्पः, (पु०) कीट विशेष।—पृष्ठः, (पु०) ऊँट।—प्रपञ्चः, (पु०) विश्व। दुनिया।—प्रभः, (पु०) दीपक का प्रकाश।—प्रभुः, (पु०) १ बड़ा स्वामी। २ राजा। मुखिया। प्रधान। ४ इन्द्र। ५ शिवजी। ६ विष्णु भगवान।—प्रलयः, (पु०) कल्पान्त। समूची सृष्टि का सर्वनाश। पुराणानुसार कल्प या ब्रह्मा के दिन के अन्त में सम्पूर्ण सृष्टि का नाश। उस समय अनन्त जलराशि को छोड़ और कुछ भी शेष नहीं रहता।—प्रसादः, (पु०) १ बड़ा अनुग्रह। २ भगवन्मूर्ति को निवेदित वस्तु विशेष।—प्रस्थानं, (न०) १ प्राण त्यागने की इच्छा से हिमालय की ओर जाना। २ मरण। देहान्त।—प्राणः, (पु०) व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण करने में प्राणवायु का विशेष प्रयोग करना पड़ता है। वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण महाप्राण है। यथा—

कवर्ग का ख, और घ।
चवर्ग का छ और झ।

टवर्ग का ठ और ढ।

पवर्ग का फ और भ।

श, ष, स ह भी इस श्रेणी में है।

२ पहाडी कौवा।—प्लवः, (पु०) जलप्रलय।—फला, (वि०) १ कडवी तुमडी। २भाला विशेष।—फलं, (न०) बड़ा फल या पुरस्कार।—बलः, (पु०) १ पवन।—बलं, (न०) सीसा। रांगा।—बाहुः, (पु०) विष्णु।—बिलं,—विलं, (न०) १ अन्तरिक्ष। २ हृदयस्थान। ३ जलघट। घडा। ४ सूराख। बिल। गुफा। माँद।—बीजः,—बीनः, (पु०) शिव जी।—बोधिः, (पु०) बुद्धदेव।—ब्रह्मं,—ब्रह्मन्, (न०) परमात्मा।—ब्राह्मणः, (पु०) कट्टिहा ब्राह्मण। वह ब्राह्मण जो मृतक का दान लेता है। निकृष्ट ब्राह्मण।—भाग, (वि०) भाग्यवान। किस्मतवर। २ धर्मात्मा। बडा धर्मात्मा।—भागिन्, (वि०) बड़ा भाग्यवान्।—भारतं, (न०) एक परम प्रसिद्ध संस्कृत, भाषा का प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य। इसमें कौरव और पाण्डवों का वृत्तान्त मुख्यतया है। इसमें १८ पर्व हैं और वेदव्यास जी का रचा हुआ है।—भाष्यं, (न०) १ बडा टीका। पाणिनि के व्याकरण पर पतञ्जलि का लिखा हुआ प्रसिद्ध भाष्य।—भीमः, (पु०) राजा सान्तनु।—भीरुः, (पु०) ग्वालिन नाम का बरसाती कीडा।—भुज, (वि०) बलवान या लंबी भुजाओं वाला।—भूत, (न०) पाँच मुख्य तत्व।—भोगा, (स्त्री०) दुर्गा देवी।—मतिः, (पु०) बृहस्पति।—मदः, (पु०) मदमस्त हाथी।—मनस्,—मनस्क, (वि०) १ ऊँचे मन का। २ उदार। ३ अभिमानी। (पु०) शरभ।—मंत्रिन्, (पु०) प्रधान सचिव।—महोपाध्याय, (पु०) गुरुओं का गुरु। बहुत बडा गुरु। बड़े भारी पण्डितों की उपाधिविशेष।—मांसं, (न०) १ गौ का माँस। २ नर-माँस।—मात्रः, (पु०) १ प्रधान सचिव। २ महावत। ३ गजशाला का अध्यक्ष।—मात्री, (स्त्री०) १ प्रधान सचिव की पत्नी। २ दीक्षा गुरु की पत्नी।—मायः, (पु०) विष्णु।—माया, (स्त्री०) प्रकृति —मारी, (स्त्री०) हैज़ा प्लेग आदि संक्रामक रोग।—मुखः, (पु०) मगर। घडियाल। कुम्भीर।—मुनिः, (पु०) १ बड़े मुनि। २ वेदव्यास।—मूर्धन्, (पु०) शिव जी।—मूलः, (पु०) प्याज।—मूल्यः, (पु०) मालिक। लाल। चुन्नी।—मृगः, १ कोई भी बडा जन्तु। २ हाथी।—मेदः, (पु०) मूँगे का पेड।—मोहः, (पु०) साँसारिक सुखों के भोग की इच्छा जो अविद्या का रूपान्तर है।—मोहा, (स्त्री०) दुर्गा देवी।—यज्ञः, (पु०) पञ्च महायज्ञ।—यात्रा, (स्त्री०) मौत।—यास्य, (पु०) विष्णु।—युगं, (न०) मनुष्यों के चार युगों को मिला कर, देवताओं का एक युग होता है। वही देवताओं का युग। इसमें मनुष्यों के ४, ३२०, ००० वर्ष होते है।—योगिन्, (पु०) १ शिव जी। २ भगवान् विष्णु। ३ मुर्गा।—रजत, (न०) १ सोना। २ धतूरा।—रजतं, (न०) १ कुसुमपुष्प। २ सुवर्ण।—रथः, (पु०) १ बडा रथ। २ बडा भट या योद्धा।—रसः, (पु०) १ ऊख। ईख। २ पारा। ३ मूल्यवान खनिजद्रव्य।—रसं, (न०) काँजी।—राजः, (पु०) राजाओ में श्रेष्ठ। बहुत बडा राजा।—राजचूतः, (पु०) आम विशेष।—राजिकाः, (पु० बहुवचन०) देवता विशेष जिनकी संख्या २२० या २३६ बतलायी जाती है।—राज्ञी, (स्त्री०) पटरानी। प्रधान महिषी।—रात्रिः,—रात्री, (स्त्री०) महाप्रलय वाली रात।—राष्ट्रः, (पु०) १ बडा राज्य। २ दक्षिण भारत का प्रान्त विशेष। ३ महाराष्ट्र देश और वहाँ के अधिवासी।—राष्ट्री, (स्त्री०) एक प्रकार की प्राकृत भाषा जो महाराष्ट्र देश में बोली जाती है।—रूपः, (पु०) १ शिव जी। २ राल। धूना।—रेतस्, (पु०) शिव जी।—रौद्र (वि०) बडा भयानक।—रौद्री, (स्त्री०) दुर्गा देवी।—रौरवः, (पु०) २१ प्रधान नरकों में से एक।—लक्ष्मी, (स्त्री०) श्रीमन्नारायण की महा-लक्ष्मी या शक्ति।—लिङ्गः (पु०) महादेव।—लोलः, (पु०) काक। कौआ।—लोहं,

(न०) चुम्बक पत्थर ।—वनं, (न०) बड़ा वन । मथुरा ज़िले का एक स्थान विशेष ।—वराहः, (पु०) विष्णु भगवान ।—वसः, (पु०) शिशुमार । सुइस ।—वातः, (पु०) तूफान । आँधी । अँधड़ ।—वार्तिकं (न०) पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन का वार्तिक प्रसिद्ध है ।—विदेहार (स्त्री०) योगशास्त्रानुसार मन की एक बहिर्वृत्ति ।—विसापा, (स्त्री०) नियम विशेष ।—विषुवं (न०) वह समय जब सूर्य मीन से मेष राशि में जाते हैं और दिन रात दोनों बराबर होते हैं। मेषसंक्रान्ति । चैत्र की सङ्क्रान्ति —वीरः (पु०) १ बड़ा बहादुर । २ सिंह । शेर । ३ इन्द्र का वज्र । ४ विष्णु भगवान । ५ गरुड़ जी । ६ हनुमान जी । ७ कोयल । ८ सफेद रंग का घोड़ा । ९ यज्ञीय अग्नि । १० यज्ञीय पात्र विशेष । ११ बाज पक्षी ।—वीर्या, (स्त्री०) सूर्यपत्नी संज्ञा ।—वेगः, (पु०) १ बड़ी तेज़ रफ़्तार । २ वानर । ३ गरुड़पक्षी ।—व्याधिः (स्त्री०) कुष्ट या कोढ़ रोग ।—व्याहृति (स्त्री०) भूर्, भुवस् और स्वर् ।—व्रतं (न०) वह व्रत जो बारह वर्ष तक जारी रहे ।—व्रतिन् (पु०) १ भक्त । सन्यासी । २ शिव जी ।—शक्तिः, (पु०) शिव जी । २ कार्तिकेय ।—शङ्खः, (पु०) ललाट २ कनपटी की हड्डी । ३ मनुष्य की ठठरी । ४ एक बहुत बड़ी संख्या ।—शठः (पु०) पीला धतूरा ।—शल्कः (पु०) झिंगा मछली ।—शालः (पु०) एक बड़ा गृहस्थ ।—शिरस्, (पु०) सर्प विशेष ।—शुक्तिः, (स्त्री०) सीप जिसमें मोती होता है ।—शुक्ल, (स्त्री०) सरस्वती देवी ।—शुभ्रं, (न०) चाँदी ।—शूद्रः, (पु०) अहीर । ग्वाला ।—श्मशानं, (न०) काशी का नामान्तर ।—श्रमणः, (पु०) बुद्ध देव का नामान्तर ।—श्वासः, (पु०) दमें का रोग विशेष ।—श्वेता, (स्त्री०) १ सरस्वती का नामान्तर । २ दुर्गा देवी । ३ सफेद खाँड ।—सती (स्त्री०) बड़ी पतिव्रता स्त्री ।—सत्यः, (पु०) यमराज ।—सत्त्वः, (पु०) कुबेर ।—सान्धिविग्रहः; (पु०) युद्धसचिव जिसे युद्ध और सन्धि करने का अधिकार हो ।—सत्रः, (पु०) कुबेर ।—सर्जः, (पु०) कटहल के वृक्ष या कटहल फल ।—सान्तपनं, (न०) एक व्रत जिसमें पाँच दिन तक क्रम से पञ्चगव्य, छठवें दिन कुशजल पीकर सातवें दिन उपवास किया जाता है ।—सान्धिविग्रहिकः (पु०) युद्ध सचिव जो शत्रु के साथ सुलह अथवा युद्ध करने का अधिकार रखता हो ।—सारः, (पु०) खदिर वृक्ष विशेष ।—सारथिः, (पु०) अरुण देव ।—साहसिकः, (पु०) डाँकू । चोर ।—सिंहः, (पु०) शरभ पक्षी ।—सुखं, (न०) १ बड़ा आनन्द । २ स्त्रीसम्भोग । सूक्ष्मा (स्त्री०) बालू । रेत ।—सूतः, (पु०) मारू-बाजा । ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है ।—सेनः, (पु०) १ कार्तिकेय । २ एक बड़ी सेना का नायक ।—सेना, (स्त्री०) बड़ी फौज ।—स्कन्धः, (पु०) ऊँट ।—स्थली (स्त्री०) पृथिवी ।—स्वनः, (पु०) ढोल विशेष ।—हंसः, (पु०) विष्णु भगवान ।—हविस्, (न०) घी ।—हिमवत्, (न०) एक पर्वत का नाम ।

महिका (स्त्री०) कोहरा । पाला ।

महित (व० कृ०) सम्मानित । प्रतिष्ठाप्राप्त ।

महितं (न०) शिव जी का त्रिशूल ।

महिमन् (पु०) १ महत्व । महिमा । माहात्म्य । बड़ाई । गौरव । २ प्रभाव । प्रताप । २ अणिमा आदि आठसिद्धियों में से पाँचवी सिद्धि ।

महिरः, (पु०) सूर्य ।

महिला (स्त्री०) १ रमणी । २ नशे में मस्त स्त्री । मस्तानी हुई औरत । २ प्रियङ्गु लता । ३ रेणुका नाम का पौधा ।—आह्वया, (स्त्री०) प्रियंगु-लता ।

महिलारोप्यम् (न०) दक्षिण भारत के एक नगर का नाम ।

महिषः (पु०) १ भैंसा । २ महिषासुर जिसे दुर्गा ने मारा था ।—अर्दनः, (पु०) कार्तिकेय ।—घ्नी (स्त्री०) दुर्गा देवी ।—ध्वजः (पु०) यमराज ।—वहनः,—वाहनः, (पु०) यमराज ।

महिषी (स्त्री०) १ भैंस । २ पटरानी । ३ पक्षी की मादा । सैरन्ध्री । ४ छिनाल औरत । ५ पत्नी के छिनाले की कमाई ।—स्तम्भ:, (पु०) खँभा जिसके उपर भैंस का सिर सजाया गया हो ।

माहिष्मत् (वि०) बहुत से भैंसों वाला । जहाँ बहुतायत से भैसे हों ।

मही (स्त्री०) १ पृथिवी । २ ज़मीन । ३ भूसम्पत्ति । रियासत । ज़मीदारी । ४ राज्य । देश । ५ माही नदी जो खंभात की खाडी में गिरती है ।—इनः —ईश्वरः, (पु०) राजा ।—कम्पः, (पु०) भूचाल । भूकंप ।—क्षित् (पु०) राजा ।—जः, (पु०) १ मंगल ग्रह । २ वृक्ष ।—जं, (न०) अदरक । आदी ।—तलं (न०) ज़मीन की सतह ।—दुर्ग, (न०) भूदुर्ग ।—धरः, (पु०) १ पहाडी । २ विष्णु ।—ध्रः, (पु०) १ पर्वत । २ विष्णु भगवान ।—नाथः,—पतिः, —पः,—भुज्, (पु०)—मघवन्, (पु०)— महेन्द्रः, (पु०) राजा ।—पुत्र ,—सुतः,— सूनुः, (पु०) १ मंगलग्रह । २ नरकासुर ।— पुत्री —सुता, (स्त्री०) सीता जी ।—प्रकम्पः, (पु०) भूचाल ।—प्ररोहः,—रुह्, (पु०)— रुहः, (पु०) वृक्ष । पेड ।—प्राचीरं (न०) —प्रावरः (पु०) समुद्र । भर्तृ, (पु०) राजा ।—भृत्, (पु०) १ पहाड । २ राजा ।— लता (स्त्री०) केंचुवा ।—सुरः (पु०) ब्राह्मण

महीयस (वि०) अपेक्षा कृत बड़ा । दो में बडा या बलवान् । (पु०) बडा या उदारमना मनुष्य ।

महीला } **महेला** } (स्त्री०) महिला । रमणी । नारी । स्त्री ।

मा (अव्यया०) वर्जनात्मक अव्यय ।

मा (स्त्री०) १ धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी । २ माता । ३ माप या मान विशेष ।—पः,— पतिः, (पु०) विष्णु भगवान ।

मा (धा० परस्मै०) [माति, मिमीते, मीयते,मित] १ नापना । २ नाप कर सीमा का चिन्ह करना ।३ आकार की तुलना करना । शरीक होना । स्थान पाना । किसी वस्तु में शरीक होना ।

मांस् (न०) गोश्त ।

मांस (न०) १ गोश्त । २ मछली । ३ फल का गूदा ।

मांसः (पु०) १ कीडा । २ वर्णसंकर जाति जिसका पेशा मांस बेचना है ।—अद्,—अद —अदिन्, —भक्षक, (वि०) मांसभक्षी । मांसखोर ।— अर्गलः,—अर्गलं, (न०) मांस पिण्ड जो मुख से नीचे लटकता है ।—अशनं, (न०) मांस भक्षण ।—आहारः (पु०) मांसाहार ।— उपजीवित्, (पु०) मांस बेचने वाला । मांस का सौदागर ।—ओदः, (पु०) १ भोजन जिसमें मांस हो । २ चॉवल और मांस एक साथ पकाया हुआ भक्ष्य पदार्थ विशेष ।—कारि, (न०) रक्त । खून ।—ग्रन्थिः, (पु०) गाँठ । गिल्टी । —जं, (न०) —तेजस् (न०) चर्बी वसा । —द्राविन्, (पु०) खट्टा-साग विशेष ।— निर्यासः, (पु०) शरीर के रोंगटे ।—पिटकः, —पिटकं, (न०) १ मांस भरी डलिया । २ बहुत सा मांस ।—पित्तं, (न०) हड्डी ।— पेशी, १ मांस का टुकड़ा । २ रग पुट्ठा । ३ भावप्रकाश के अनुसार गर्भ की वह अवस्था जो गर्भधारण के सात दिनों के बाद और १४ दिनों के भीतर होती है और प्रायः एक सप्ताह तक रहती है ।—योनिः, (पु०) रक्त मॉस से उत्पन्न जीव ।—सारः,—स्नेहः, (न०) चर्वी । वसा ।—हासा, (स्त्री०) चमडा । चर्म ।

मांसल (वि०) १ माँस से भरा हुआ । माँस पूर्ण । २ मोटा ताज़ा । पुष्ट । ३ बलवान । मज़बूत । दृढ़ । ४ गम्भीर, जैसे स्वर ।

मांसिकः (पु०) जटाँमासी ।

माकंदः } **माकन्दः** } (पु०) आम का पेड ।

माकंदी } **माकन्दी** } (स्त्री०) १ ऑवला । २पीला चन्दन । ३ महाभारत के समय का गंगातट पर बसे हुए एक नगर का नाम ।

माकर (वि०) [स्त्री०—माकरी] मकर नामक समुद्री जन्तु विशेष सम्बन्धी ।

माकरंद } (वि०) [स्त्री०—माकरंदी] पुष्प के रस
माकरंद } से सम्बन्ध युक्त। शहद से पूर्ण या जिसमें शहद मिला हो।

माकलिः (पु०) १ मातलि का नाम। मातलि इन्द्र का सारथी है। २ चन्द्रमा।

माक्षिक } (वि०) [स्त्री०—माक्षिकी या माक्षीकी]
माक्षीक } मधुमक्षिका से उत्पन्न या निकला हुआ।

माक्षिकं } (न०) १ शहद। मधु। २ शहद जैसा
माक्षीकं } खनिज पदार्थ विशेष।—आश्रयं,—जं, (न०) मधुमक्षिका का मोम।

मागधः (पु०) १ मगध देश का राजा। २ वर्ण सङ्कर जाति विशेष, जिसकी उत्पत्ति वैश्य पिता और क्षत्रिय माता से हुई है। इस जाति का काम वंशक्रम से किसी राजा या अपने अपने यजमानों की विरुदावली पढ़ना है। ३ वंदीजन। भाट।

मागधा } (स्त्री०) बड़ी पीपल।
मागधिका }

मागधाः (पु० बहुवचन) मगधदेशवासी लोग।

मागधिकः (पु०) मगध देश का राजा।

मागधी (स्त्री०) १ मगध देश की राजकुमारी। २ मगधदेश की प्राचीन प्राकृत भाषा। ३ बड़ी पीपल। ४ सफेद खाँड। ६ जुही। जूथिका। ७ छोटी इलायची। ८ जीरा।

माघः (पु०) १ माह का महीना। २ सस्कृतभाषा के शिशुपालवध काव्य के रचयिता एक कवि का नाम।

माघमा (स्त्री०) मकरा की मादा।

माघवत् (वि०) [स्त्री०—माघवती] इन्द्र का।—चाप, (न०) इन्द्रधनुष।

माघवती (स्त्री०) पूर्व दिशा।

माघवन (वि०) [स्त्री०—माघवनी] इन्द्र का या इन्द्र द्वारा शासित।

माघ्यं (न०) कुन्द पुष्प।

मांद् (धा० परस्मै०) [मांदति] अभिलाषा करना। इच्छा करना।

मांगलिक } (वि०) [स्त्री०—माङ्गलिका] १
माङ्गलिक } शुभ। २ भाग्यवान।

मांगल्य } (वि०) शुभ। सौभाग्य सूचक।
माङ्गल्य }

मांगल्यं } (पु०) १ शुभप्रदता। समृद्धि।
माङ्गल्यम् } निरुजता। २ आशीर्वाद। ३ उत्सव।—मृदङ्गः, (पु०) वह मृदङ्ग जो, किसी शुभावसर पर बजाया जाय।

माचः (पु०) मार्ग। सड़क।

माचलः (पु०) १ चोर। डाँकू। १ मगर। नक्र।

माचिका (स्त्री०) मक्खी।

मांजिष्ठ (वि०) [स्त्री०—मांजिष्ठी] मजीठ की तरह लाल।

मांजिष्ठं (न०) लाल रंग।

मांजिष्ठिक (वि०) [स्त्री०—मांजिष्ठिकी) मजीठ के रंग में रगा हुआ।

माठरः (पु०) १ व्यास जी का नाम। २ ब्राह्मण। ३ कलवार। शौण्डिक। ४ सूर्य का एक गण।

माठी (स्त्री०) कवच। जिरहबक्तर।

माडः (पु०) १ ताड़ की जाति का वृक्ष विशेष। २ तौल। नाप।

माढिः (स्त्री०) १ अंकुर। अँखुआ। २ सम्मान। प्रतिष्ठा। ३ उदासी। ४ धनहीनता। ५ क्रोध। रोष। ६ संजाफ। गोट। किनारी। ७ एक के ऊपर एक जमे हुए दुहरे दाँत।

माणवः (पु०) १ छोकरा। लड़का जो १६ वर्ष की अवस्था तक का हो। २ बोना। गुरजी (तिरस्कार सूचक शब्द)। ३ सोलह या बीस लरों का मोतीहार।

माणवकः (पु०) १ लड़का। छोकरा। लौंडा। यह भी प्रायः तिरस्कारद्योतक है। २ खर्वाकार मनुष्य। बोना। ३ मूर्ख आदमी। ४ छात्र। धर्मशास्त्र पढ़ने वाला विद्यार्थी। ५ सोलह (या बीस) लर का मोतियों का हार।

माणवीन (वि०) लड़कपन। बचपन।

माणव्यं (न०) बालकों या छोकरों की टोली।

माणिका (स्त्री०) आठपल के बराबर की एक तौल।

माणिक्यं (न०) लाल पद्मराग । चुन्नी ।

माणिक्या (स्त्री०) छिपकली ।

माणिवंधं
माणिवन्धम्
माणिमंथं
माणिमन्थम् } (न०) सेंधा निमक। लाहौरी नौंन ।

मांडलिक } (वि०) [स्त्री०—मांडलिकी
माण्डलिक } माण्डलिकी] किसी प्रान्त या मण्डल की रक्षा या शासन करने वाला ।

मांडलिकः } (पु०) सूबेदार । किसी सूबे का
माण्डलिकः } हाकिम या शासक ।

मातंगः } (पु०) १ हाथी । २ चाण्डाल । ३
मातङ्गः } किरात । ४ समासान्त शब्द के अन्त में कोई भी अपनी जाति की सर्वश्रेष्ठ वस्तु ।—दिवाकरः, (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम ।—नक्रः, (पु०) मगर जो डील डौल में हाथी के समान हो ।

मातरिपुरुषः (पु०) वह जो केवल घर ही में अपनी माता आदि के सामने अपनी वीरता प्रकट करता हो, किन्तु घर के बाहिर कुछ भी न कर सकता हो ।

मातरिश्वन् (पु०) पवन, जो अन्तरिक्ष में चलता है ।

मातलिः (पु०) इन्द्र के रथवान् का नाम ।—सारथिः, (पु०) इन्द्र का नाम ।

माता (स्त्री०) जननी । जन्म देने वाली स्त्री । माँ ।

मातामहः (पु०) नाना । माता का पिता ।

मातामही (स्त्री०) नानी ।

मातामहौ (द्विवचन) नाना नानी ।

मतिः (स्त्री०) १ नाप । २ विचार । खयाल ।

मातुलः (पु०) १ मामा । माता का भाई । २ धतूरे का पौधा । ३ सर्प विशेष ।—पुत्रकः, (पु०) १ मामा का पुत्र । २ धतूरे का फल ।

मातुलंगः } देखो—मातुलिङ्गः ।
मातुलङ्गः }

मातुला (स्त्री०)
मातुलानी (स्त्री०)
मातुली (स्त्री०) } १ मामा की पत्नी । मामी । २ पटसन । सन ।

मातुलिंगः
मातुलिङ्गः
मातुलुंगः
मातुलुङ्गः } (पु०) बिजोरा नीबू ।

मातुलिंगं
मातुलिङ्गं
मातुलुंगं
मातुलुङ्गम् } बिजौरा नीबू का फल ।

मातुलेयः (पु०) [स्त्री०—मातुलेयी] मामा का लड़का ।

मातृ (स्त्री०) १ माता । २ पूज्य या आदरणीय शब्द । बड़ी बूढ़ी स्त्री । ३ गौ । ४ लक्ष्मी देवी । ५ दुर्गा देवी । ६ पृथिवी । ७ व्योम । आकाश । ८ देवमातृका जो संख्या में सोलह है ।—केशटः, (पु०) मामा —गणः, (पु०) षोडश मातृ का ।—गोत्रं, (न०) माता के गोत्र का ।—घातः,—घातकः,—घातिन्,—घ्नः, (पु०) मातृहन्ता ।—घातुकः, (पु०) १ मातृहन्ता । २ इन्द्र ।—चक्रं, (न०) मातृकाओं का समूह ।—देव, (वि०) वह जो अपने माता ही को अपना इष्टदेव मानता हो ।—नन्दनः, (पु०) कार्तिकेय ।—पक्ष, (वि०) माता के कुल का ।—पूजनं, (न०) मातृकाओं का पूजन ।—बन्धुः,—बान्धवः, (पु०) माता के सम्बन्ध का कोई आत्मीय ।—मण्डल, (न०) १ मातृकाओं का समुदाय । २ दोनो नेत्रों के बीच का स्थान ।—मातृ, (स्त्री०) पार्वती देवी ।—मुखः, (पु०) मूर्ख या मूढ जन ।—यज्ञः, (पु०) एक यज्ञ विशेष जो मातृकाओं के उद्देश्य से किया जाता है ।—वत्सलः, (पु०) कार्तिकेय ।—स्वसृ (स्त्री०) [=मातृष्वसृ या मातुःस्वस] मौसी का लड़का ।

मातृक (वि०) १ माता सम्बन्धी । माता से प्राप्त । २ माता का । मातापक्षीय ।

मातृकः (पु०) मामा ।

मातृका (स्त्री०) १ माता । २ दादी । ३ धात्री । दाई । ४ उद्भवस्थान । ५ देवी । देवमाता । ६ तांत्रिक यंत्र विशेष । ७ यंत्र में लिखे जाने वाले अक्षर या वर्ण ।

मात्र (वि०) [स्त्री०—मात्रा, मात्री] नाप; केवल, भर, और सिर्फ अर्थवाची अव्यय विशेष।

मात्रा (स्त्री०) १ परिमाण। मिकदार। २ नाप का परिमाण। नियम। ३ ठीक ठीक नाप। ४ एक फुट। ५ पल। लहमा। ६ अणु। ७ अंश। छोटा माप। ९ काम का। उपयोग का। [यथाः—

"राजेति कियती मात्रा।"

अर्थात् राजा किस प्रयोजन या काम का है]। १० धन। सम्पत्ति। ११ छन्दःशास्त्र में इसे मत्त, मत्ता, कल या कला कहते हैं। १२ तत्त्व। १३ जड़ात्मक संसार। १४ बारहखड़ी लिखते समय स्वरसूचक वे सङ्केत जो अक्षर के ऊपर, नीचे, आगे या पीछे लगाये जाते हैं। १५ कान की बाली। १६ आभूषण। रत्न।—भस्त्रा, (स्त्री०) रुपये रखने की थैली या बटुवा।

मात्सर (वि०) [स्त्री०—मात्सरी] } (वि०) डाही। ईर्ष्यालु।
मात्सरिक (न०) [स्त्री०—मात्सरिकी] }

मात्सर्यं (न०) ईर्ष्या। डाह। जलन।

मात्स्यिकः (पु०) मछुआ। धीवर। माहीगीर।

माथः (पु०) १ मंथन। बिलोना। गड़बड़ करना। २ हत्या। नाश। ३ मार्ग। रास्ता।

माथुर (वि०) [स्त्री०—माथुरी] १ मथुरा का। २ मथुरा में उत्पन्न। ३ मथुरा में रहने वाला।

मादः (पु०) १ नशा। मद। २ हर्ष। आनन्द। ३ अभिमान। अकड़।

मादक (वि०) [स्त्री०—मादिका] १ बेहोश करने वाला। नशा पैदा करनेवाला। २ आनन्ददायिक।

मादन (वि०) नशीला।

मादनं (वि०) १ नशा। मद। २ प्रसन्नकर। ३ लौंग।

मादनः (वि०) १ कामदेव। २ धतूरा।

मादनीयं (वि०) नशा लाने वाला पेय पदार्थ।

मादृत }
मादृश } (वि०) [स्त्री०—मादृत्ती, मादृशी] मेरी तरह। मेरे सदृश।
मादृश }

माद्रकः (पु०) मद्र देश का राजकुमार।

माद्रवती (स्त्री०) माद्री राजा पाण्डु की दूसरी रानी का नाम।

माद्री (स्त्री०) राजा पाण्डु की दूसरी रानी जिसके गर्भ से नकुल और सहदेव की उत्पत्ति हुई थी। —नन्दनः, (पु०)। नकुल और सहदेव। —पतिः, (पु०) पाण्डु का नामान्तर।

माद्रेयः(पु०) नकुल और सहदेव।

माधव (वि०) [स्त्री०—माधवी] १ शहद की तरह मीठा। २ शहद से तैयार किया गया। ३ वसन्तकालीन। मधु दैत्य के वंश का।

माधवः (पु०) १ श्रीकृष्ण। २ वसन्त ऋतु। कामदेव का सखा। ३ वैशाख मास। ४ इन्द्र। ५ परशुराम। ६ (बहुवचन में) यादव गण। ७ एक प्रसिद्ध संस्कृत के विद्वान् का नाम। यह मायण के पुत्र और सायण के भाई थे। इनका काल १९वीं शताब्दी माना गया है। इनके बनाये कितने ही प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ हैं। कहा जाता है कि, सायण और माधव ने मिल कर, ऋग्वेद भाष्य बनाया था।—श्री, (स्त्री०) वसन्त ऋतु की शोभा।

माधवकः (पु०) महुए की शराब।

माधविका (स्त्री०) माधवी लता।

माधवी (स्त्री०) १ मिस्री। २ शहद से बनायी हुई मदिरा विशेष। ३ माधवी नाम की लता। ४ तुलसी वृक्ष। ५ कुटनी।—लता, (स्त्री०) माधवी की बेल। —वनं, (न०) माधवी लता की कुञ्ज।

माधवीय (वि०) माधव सम्बन्धी।

माधुकर (वि०) मधुमक्षिका सम्बन्धी या मधुमक्षिका सदृश।

माधुकरी (स्त्री०) १ भिक्षा जो घर घर माँग कर इकट्ठी की गयी हो। २ पाँच घरों से मिली हुई भिक्षा।

माधुरं (न०) मल्लिका लता का पुष्प।

माधुरी (स्त्री०) १ मिठास। मधुर स्वाद। २ मदिरा। शराब।

माधुर्यं (न०) १ मिठास। मधुर होने का भाव। मधुरता। २ लावण्य। सौन्दर्य। ३ पाँचाली रीति के अन्तर्गत काव्य की एक विशेषता जिससे चित्त बहुत प्रसन्न होता है। ४ सात्विक नायक का एक गुण।

माध्य (वि०) बीच का। मध्य का।

माध्यन्दिनः (पु०) वाजसनेइयों की एक शाखा का नाम।

माध्यन्दिनं (न०) शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यम (वि०) [स्त्री०—माध्यमी] बीच का। बिचले भाग का। मध्य का।

माध्यमक (वि०) [स्त्री०—माध्यमिका]
माध्यमिक (वि०) [स्त्री०—माध्यमिकी]
मध्य। बीच का। केन्द्रवर्ती।

माध्यस्थं
माध्यस्थ्यं (न०) १ निरपेक्षता। २ तटस्थता। ३ बीच बिचाव।

माध्यान्हिक (वि०) दोपहर सम्बन्धी।

माध्व (वि०) मधुर।

माध्वः (पु०) मध्वाचार्य सम्प्रदाय का अनुयायी।

माध्वी (स्त्री०) मदिरा। शराब।

माध्वीकं (न०) १ मदिरा। शराब। २ द्राक्षा से निकाली हुई शराब। ३ अँगूर। द्राक्षा।—फलं, (न०) नारियल विशेष।

मानः (पु०) १ सम्मान। प्रतिष्ठा। २ अभिमान। घमंड। आत्मसम्मान। आत्मनिर्भरता। ३ गर्व। मद। ४ अहंकार से उत्पन्न क्रोध।—दण्ड, (न०) गज। नापने का एक डंडा।—धानिका, (स्त्री०) ककड़ी।—रंध्रा, (स्त्री०) जलघड़ी का कटोरा।—सूत्रं, (न०) नापने का फीता। नापने की ज़ंजीर, जिसे जरीब कहते हैं।

मानं (न०) १नाप। तौल। परिमाण। मिकदार। २ प्रमाण। ३ समानता। सादृश्य।

मानःशिल (वि०) मनःशिला या मनसल सम्बन्धी।

माननं (न०)
मानना (स्त्री०) १ प्रतिष्ठा। सम्मान। २ वध। हत्या।

माननीय (वि०) पूज्य। सम्मान योग्य।

मानव (वि०) १ [स्त्री०—मानवी] १ मनु के वंशधर या मनु के वंश वाले। २ इंसानी। मनुष्य का।

मानवः (पु०) १ मनुष्य। नर। २ मानव जाति।—इन्द्रः, देवः,—पतिः, (पु०) राजा। नरेन्द्र।—धर्मशास्त्रं, (न०) मनुसंहिता।—राक्षसः, (पु०) मनुष्य रूप धारी राक्षस।

मानवत् (वि०) अभिमानी। अहङ्कारी।

मानवती (स्त्री०) अभिमानिनी स्त्री।

मानव्यं (न०) लड़कों या युवकों की टोली।

मानस (वि०) १ मन सम्बन्धी। मानसिक। २ मन से उत्पन्न। ३ मन में विचारा हुआ। ४ मान सरोवर पर रहने वाला।

मानसं (न०) १ मन। हृदय। २ मानसरोवर। ३ लवण विशेष।—आलयः, (पु०) राजहंस।—उत्क, (वि०) मानसरोवर जाने को उत्सुक।—ओकस्,—चारिन्, (पु०) १ हँस। २ कामदेव।

मानसः (पु०) विष्णु भगवान का एक रूप।

मानसिक (वि०) मन सम्बन्धी।

मानसिकः (पु०) विष्णु भगवान का नामान्तर।

मानिका (स्त्री०) १ शराब। मदिरा। २ तौल विशेष।

मानित (व० कृ०) सम्मानित। प्रतिष्ठित।

मानुष (वि०) [स्त्री—मानुषी] १ मानवी। २ सहृदय। दयालु। अनुग्रहशील।

मानुषं (न०) १ इंसानियत। मनुष्यत्व। २ पुरुषार्थ।

मानुषः (पु०) १ मनुष्य। नर। २ मिथुन, कन्या और तुला राशियों का नामान्तर।

मानुषक (वि०) मनुष्य सम्बन्धी। मनुष्य का।

मानुष्यम्
मानुष्यकम् (न०) १ मानवी प्रकृति। मनुष्यत्व। मानव जाति। २ मानव समुदाय।

मानोज्ञकं (न०) सौन्दर्य। मनोज्ञता।

मांत्रिकः (पु०) तांत्रिक। ऐन्द्रजालिक। जादूगर। बाजीगर।

मांथर्य } (न०) १ सुस्ती । श्रान्ति । थकावट ।
मान्थर्यम् } २ निर्बलता । कमज़ोरी ।

मांदारः
मान्दारः
मांदारवः
मान्दारवः } (पु०) वृत्त विशेष ।

मांद्यं } (न०) १ सुस्ती । काहिली । दीर्घसूत्रता ।
मान्द्यं } २ मूढ़ता । ३ निर्बलता । कमज़ोरी । ४ वैराग्य । उदासीनता । ५ रोग । बीमारी ।

मांधातृ } (पु०) युवनाश्व राजा के पुत्र का नाम ।
मान्धातृ } यह एक इतिहास प्रसिद्ध राजा होगया है और राजा मान्धाता के नाम से प्रसिद्ध है ।

मान्मथ (वि०) [स्त्री०—मान्मथी] प्रेम सम्बन्धी । प्रेमोत्पन्नकारी ।

मान्य (वि०) १ मानने योग्य । माननीय । पूज्य ।

मापनं (न०) १ नाँप । २ बनावट ।

मापनः (पु०) तराजू ।

मापत्यः (पु०) कामदेव ।

माम (वि०) [स्त्री० -मामी] १ मेरा । २ चाचा (सम्बोधन में) ।

मामक (वि०) [स्त्री०—मामिका] १ मेरा । २ स्वार्थी । लालची ।

मामकः (पु०) १ कंजूस । २ मामा ।

मामकीन (वि०) मेरा ।

मायः (पु०) १ बाजीगर । जादूगर । तांत्रिक । २ राक्षस । दानव । प्रेत ।

माया (स्त्री०) १ कपट । छल । प्रवञ्चना । ठगी । धोखा । २ ऐन्द्रजाल । जादू का खेल । ३ अविद्या । अज्ञान । भ्रम । ४ राजनैतिक धोखाधड़ी । ५ प्रधान या प्रकृति । ६ दुष्टता । ७ अनुकम्पा । ८ बुद्धदेव की माता का नाम ।—कारः—कृत्—जीविन् (पु०) जादूगर । बाजीगर ।—यंत्रं, (न०) किसी को मोहने की विद्या । सम्मोहन ।—वादः, (पु०) ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य मानने का सिद्धान्त । इस सिद्धान्त के अनुसार यह सारी सृष्टि केवल मिथ्या समझी जाती है । –सुतः, (पु०) बुद्ध देव ।

मायावत् (वि०) १ छली । कपटी । धोखेबाज़ । २ मायावी । बाजीगर । जादूगर । ३ भ्रमात्मक असत्य । (पु०) कंस का एक नाम ।

मायावती (स्त्री०) प्रद्युम्न की पत्नी का नाम ।

मायाविन् (वि०) १ धोखेबाज़ । छलिया । कपटी । २ बाजीगरी में निपुण । ३ असत्य । भ्रमात्मक । (पु०) ऐन्द्रजालिक । बाजीगर । जादूगर । २ बिल्ली । (न०) माजूफल ।

मायिक (वि०) १ धोखेबाज़ । कपटी । छलिया । २ भ्रमात्मक । असत्य ।

मायिकं (न०) माजूफल ।

मायिकः (पु०) बाजीगर । जादूगर ।

मायिन् (पु०) १ बाजीगर । २ गुंडा । कपटी ३ ब्रह्मा या कामदेव का नामान्तर ।

मायुः (पु०) १ सूर्य । २ पित्र ।

मायूर (वि०) [स्त्री०—मायूरी] १ मोर का । २ मोर के पंखों का बना हुआ । ३ मोर की खींची हुई जैसे गाड़ी । ४ मोरप्रिय ।

मायूरं (न०) मोरों की टोली ।

मायूरकः } (पु०) मोर पकड़ने वाला । चिड़ी-
मायूरिकः } मार ।

मारः (पु०) १ हनन । मारण । २ बाधा । अड़चन । विरोध । ३ कामदेव । ४ प्रेम । आसक्ति । ५ धतूरा । ६ संहारक । अरिः,—रिपुः, (पु०) शिव जी ।—आत्मक, (वि०) हत्याजनक ।—जित्, (पु०) १ शिव जी का नाम । २ बुद्धदेव का नाम ।

मारकः (पु०) १ प्लेग आदि कोई भी संक्रामक या फैलने वाली बीमारी । २ कामदेव । ३ हत्यारा । घातक । ४ बाजपक्षी ।

मारकत (वि०) [स्त्री० –मारकती] पन्ना सम्बन्धी ।

मारणं (न०) १मारना । नष्ट करना । हत्या करना । २ तांत्रिक । षट्कर्मों में से एक । शत्रुनाश । ३ भस्मीकरण । ४ विष विशेष ।

मारि. (स्त्री०) १ मरी। प्लेग। २ हनन। नाश।

मारिच (वि०) [स्त्री० —मारिची] मिर्च का बना हुआ।

मारिष (पु०) १ प्रतिष्ठित। माननीय।

मारी (स्त्री०) १ प्लेग। संक्रामक रोग। २ मरी रोग की अधिष्ठात्री देवी जैसे दुर्गा।

मारीचः (पु०) १ रामायण के अनुसार वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बन कर, सीता जी को धोखा दिया था। २ राजगामी हाथी। बड़े डीलडौल का हाथी। ३ पौधा विशेष।

मारीचम् (न०) मिर्च की झाड़ियों का समुदाय।

मार्कंडः } (पु०) १ सर्प का अंडा। २ गोमय। गोबर। ३ मार्ग। सड़क।
मार्कण्डः }

मारुत (वि०) [स्त्री० —मारुती] १ मरुत सम्बन्धी। २ पवन सम्बन्धी।

मारुतं (न०) स्वाति नक्षत्र।—अशनः (पु०) सर्प। साँप।—आत्मजः,—सुतः,—सूनुः, (पु०) १ हनुमान जी। २ भीम।

मारुतः (पु०) १ पवन। हवा। २ पवनदेव। ३ स्वांसा। ४ वायु, कफ, पित्त में से वायु। ५ हाथी की सूँड़।

मार्कंडः } (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम। इनकी गणना चिरजीवियों में है।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक।
मार्कण्डः }
मार्कंडेयः }
मार्कण्डेयः }

मार्ग् (धा० परस्मै०) [मार्गति, मार्गयति, मार्गयते] १ ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। शिकार खेलना। ३ याचना करना। माँगना। ४ विवाह के लिये माँगना।

मार्गः (पु०) १ रास्ता। सड़क। पथ। २ पगडंडी। राह। ३ पहुँच। ४ गृत। निशानी। चिन्ह। ५ ग्रह का मार्ग। ६ खोज। अनुसन्धान। तहकीकात। ७ नहर। बम्बा। नाली। ८ उपाय। साधन। ६ उचित मार्ग। ठीक राह। १०ढंग। तौर। तरीका। ११ शैली। १२ गुदा। मलद्वार। १३ कस्तूरी। १४ मृगशिरस नक्षत्र। १५ मार्गशीर्ष मास।—तोरणम्, (न०) सड़क पर किसी विशेष अवसर के लिये बनाया हुआ महरावदार द्वार।—दर्शकः, (पु०) पथप्रदर्शक।—धेनुः (पु०)—धेनुकं, (न०) एक भोजन का परिमाण।—बन्धनं, (न०) कच्ची मोर्चाबंदी। आड़। नाकेबंदी।—रक्षकः, (पु०) सड़क पर पहरा देने वाला।—शोधकः, (पु०) वह मनुष्य जो औरों के लिये आगे आगे राह बनाता चलता है।—स्थ, (वि०) यात्री। पथिक।—हर्म्य (न०) सड़क के किनारे बना हुआ महल।

मार्गकः (पु०) मार्गशीर्ष मास।

मार्गणं (न०) } १ याचना। माँग। खोज। तलाश। ३ अनुसन्धान। तहकीकात।
मार्गणा (स्त्री०) }

मार्गणः (पु०) १ भिक्षुक। २ तीर। बाण। ३ पाँच की संख्या।

मार्गशिर }
मार्गशिरस् } (पु०) अगहन का महीना।
मार्गशीर्षः }

मार्गशिरी } (पु०) पूस की पूर्णमासी।
मार्गशीर्षी }

मार्गिकः (पु०) १ यात्री। पथिक। २ शिकारी।

मार्गित (व० कृ०) १ तलाशा हुआ। खोजा हुआ। दर्याप्त किया हुआ। २ अभिलषित। याचित।

मार्ज (धा० उभय०) [मार्जयति, मार्जयते] १ पवित्र करना। साफ करना। झाड़ना पोंछना। २ शब्द करना। बजाना।

मार्जः (पु०) १ माँजना। सफा करना। २ धोबी। ३ विष्णु का नामान्तर।

मार्जक (वि०) [स्त्री०—मार्जिका] साफ करने वाला। माँजने वाला।

मार्जनं (न०) १ साफ करने का भाव। स्वच्छ करना। २ झाड़ना पोंछना। ३ मिटा देना। रगड़ डालना। ४ उबटन लगा कर किसी आदमी को नहलाना। ५ कुश से पानी छिड़कना।

मार्जनः (पु०) लोध्रवृक्ष।

मालः (पु०) १ दक्षिणी पश्चिमी बंगाल के एक

जिले का नाम। २ एक पहाड़ी जाति। ३ विष्णु का नाम।

मार्जना (स्त्री०) ढोल का शब्द।

मार्जनी (स्त्री०) झाड़ू। बुहारी।

मार्जरः (पु०) } १ बिल्ली। बिलार। २ ऊद-
मार्जलः (पु०) } बिलाव।—कराठः, (पु०) मोर।—करणं, (न०) स्त्रीमैथुन का आसन विशेष।

मार्जरकः (पु०) १ बिल्ली। २ मयूर।

मार्जारी (स्त्री०) १ बिल्ली। २ गन्धमार्जार। ३ मुश्क। कस्तूरी।

मार्जारीयः (पु०) १ बिल्ली। २ शूद्र।

मार्जित (व० कृ०) १ साफ किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २ बुहारा हुआ। ३ सजाया हुआ।

मार्जिता (स्त्री०) चीनी मिला हुआ दही।

मार्तंडः } (पु०) १ सूर्य। २ अर्क। मदार। ३
मार्तण्डः } शूकर। ४ बारह की संख्या।

मार्तिक (वि०) [स्त्री०—मार्तिकी] १ मिट्टी का बना हुआ। मिट्टी का।

मार्तिकः (पु०) १ घड़ा विशेष। २ घड़ा का ढकना।

मार्तिकं (न०) मिट्टी का ढेला।

मार्त्यं (न०) मरण-धर्म-शीलता।

मार्दंगं }
मार्दङ्गम् } (न०) नगर। कस्बा।

मार्दंगः }
मार्दङ्गः } (पु०) मृदंगची।

मार्दंगिकः }
मार्दङ्गिकः } (पु०) मृदंगची।

मार्दवं (न०) १ कोमलता। २ मृदुता। सरलता।

मार्द्वीक (वि०) [स्त्री०—मार्द्वीकी] अँगूर का बना हुआ।

मार्द्वीकं (न०) अँगूरी शराब।

मार्मिक (त्रि०) मर्मज्ञ। भली भाँति किसी वस्तु या या विषय से परिचित।

मार्ष देखो मारिष।

मार्ष्टिः (स्त्री०) सफाई। स्वच्छता। विशुद्धता।

मालं (न०) १ खेत। २ ऊँची ज़मीन। ३ छल। दग़ा।—चक्रकं, (न०) पुट्ठे पर का वह जोड़ जो कमर के नीचे जाँघ की हड्डी और कूल्हे में होता है। कूल्हा।

मालकं (न०) हार। माला।

मालकः (पु०) १ नीम का पेड़। २ गाँव के समीप का वन। ३ नरेरी का बना पात्र।

मालतिः } (स्त्री०) १ लता विशेष जिसके फूल बड़े
मालती } खुशबूदार होते हैं। २ मालती का फूल। ३ कली। ४ क्वारी युवती स्त्री। ५ रात। ६ चाँदनी।—तारकः, (पु०) सुहागा।—पत्रिका, (स्त्री०) जायफल का छिलका।—फलं, (न०) जायफल।—माला, (स्त्री०) मालती पुष्पों की माला।

मालय (वि०) [स्त्री०—मालयी] मलय पर्वत का।

मालयः (पु०) चन्दन काष्ठ।

मालवः (पु०) १ मध्य भारत का स्वनामख्यात मालवा प्रान्त। २ राग विशेष।

मालवकः (पु०) १ मालवियों का देश। २ मालवा निवासी। मालवी।

मालवाः (पु० बहुवचन) मालवा देशवासी।

मालसी (स्त्री०) एक पौधे का नाम।

माला (स्त्री०) १ हार। पुष्पहार। २ पंक्ति। अवली। ३ समूह। ढेर। गुच्छा। ४ लड़। कण्ठ-हार। ५ माला। जंजीर। ६ रेखा जैसे तडिन्माला। विद्युन्माला। ७ अनेकों की उपाधियाँ।—उपमा, (स्त्री०) एक प्रकार का उपमा अलंकार जिसमें एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक उपमान के भिन्न भिन्न धर्म होते हैं।—कारः, या—करः, (पु०) १ माली। २ माली की जाति। ३ पुराणानुसार एक जाति जो विश्वकर्मा और शूद्रा के संयोग से उत्पन्न हुई है। किन्तु पराशर पद्धति से यह तेलिन और कर्मकार से उत्पन्न है। वर्णसङ्कर जाति विशेष।—तृणः, (न०) एक सुगन्ध युक्त तृण विशेष।—दीप-

कम्, (न०) एक अलंकार का नाम। मम्मट ने इसकी परिभाषा यह लिखी है।

" मालादीपकमाद्यं चैद्यथोत्तरगुणावहम्।"

काव्यप्रकाश।

मालिकः (पु०) १ माली। २ रंगरेज़। चितेरा।

मालिका (स्त्री०) १ गजरा। २ अवली। पंक्ति। ३ लर। गुंज। ४ चमेली की जाति का पौधा विशेष। ५ अलसी। ६ पुत्री। ७ विशेष। ८ नशीली पेय वस्तु।

मालिन (वि०) माला पहिने हुए। (पु०) माली।

मालिनी (स्त्री०) १ मालिन। माली की स्त्री। २ चम्पा नामक नगरी। ३ सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा में दुर्गा की प्रतिनिधि मान कर पूजी जाती है। ४ दुर्गादेवी का नामान्तर। ५ आकाश-गङ्गा। ६ एक वर्णिक वृत्त का नाम।

मालिन्यं (न०) १ मैलापन। गंदगी। अशुद्धता। २ अष्टता। ३ पापमयता। ४ कृष्णता। कालापन। ५ कष्ट। सन्ताप।

मालुः, (स्त्री०) १ लता विशेष। २ स्त्री।—धानः, (पु०) सर्प विशेष।

मालूरः (पु०) १ बेल का पेड़। २ कैथे का पेड़।

मालेया (स्त्री०) बड़ी इलायची।

माल्य (वि०) १ माला सम्बन्धी। माला के लिये उपयुक्त। २ फूल। ३ पुष्पों का बना गुच्छा जो सिर के केशों में बाँधा जाता है।—आपणः, (पु०) वह बाज़ार जहाँ फूल विकते हों। फूल-बाजार।—जीवकः, (पु०) माली।—पुष्पः, (पु०) सनई। सन का पौधा।

माल्यवत् (पु०) माला पहिने हुए। (पु०) १ एक पर्वत माला या पर्वत का नाम। २ एक दैत्य का नाम। जो सुकेतु का पुत्र था।

माल्लः (पु०) एक वर्णसंकर जाति जो ब्रह्मवैवर्त पुराणानुसार लेट जाति के पिता और धीवरी माता से उत्पन्न कही गयी है।

माल्लवी (स्त्री०) १ मल्लयुद्ध। पहलवानों का दंगल। २ मल्लों की विद्या या कला।

माषः (पु०) १ उर्द या उर्दी। २ मासा। तौल विशेष। ३ मूर्ख। मूढ़।—अदः,—आदः, (पु०) कछुवा।—आशः, (पु०) घोड़ा।—ऊन, (वि०) एक मासा कम।—वर्धकः (पु०) सुनार।

माषिक (वि०) [स्त्री०—माषिकी] एक मासा मूल्य का।

माषीणं } (न०) उर्दी का खेत।
माष्यं }

मासं (न०) } १ महीना। २ बारह की संख्या।
मासः (पु०) } —आनुमासिक, (वि०) माह व मास। प्रतिमास। माहवार।—उपवासिनी, (स्त्री०) वह औरत जो महीने भर उपासी रहे। २ कुटिनी।—प्रमितः, (पु०) अमावास्या प्रतिपदादि।—मानः, (पु०) वर्ष। साल।

मासकः (पु०) महीना।

मासरः (पु०) चाँवल का माँड़।

मासलः (पु०) वर्ष। साल।

मासिक (वि०) [स्त्री०—मासिकी] १ मास सम्बन्धी। २ प्रतिमास होने वाला। ३ एक मास तक रहने वाला। ४ प्रतिमास में अदा किया जाने वाला। ५ एक मास के लिये (कोई घर या पदार्थ) किसी काम के लिये लिया हुआ।

मासिकं (न०) मासिक श्राद्ध जो किसी मृतक के उद्देश्य से उसके मरने के प्रथम वर्ष में किया जाता है।

मासीन (वि०) १ एक मास की उम्र का। २ मासिक।

मासुरी (स्त्री०) दाढ़ी।

माह् (धा०-उभय०) [माहति, माहते] नापना।

माहाकुल (वि०) [स्त्री०—माहाकुली] }
माहाकुलीन (वि०) [स्त्री०—माहाकुलीनी] }
उच्चकुलोद्भव। खान्दानी।

माहाजनिक (वि०) [स्त्री०—माहाजनिकी] }
माहाजनीन (वि०) [स्त्री०—माहाजनीनी] }

१ व्यापारी के उपयुक्त। सौदागरों के लायक। २ बड़े लोगों के योग्य।

माहात्मिक (वि०) [स्त्री०—माहात्मिकी] उदाराशय। महानुभाव। गौरवास्पद।

माहात्म्यं (न०) महिमा। गौरव। महत्त्व।

माहाराजिक (वि०) [स्त्री०— माहाराजिकी] शाही। राजसी।

माहाराज्यं (न०) बड़ा राज्य।

माहिर (पु०) इन्द्र का नामान्तर।

माहिपकः (पु०) भैंसा रखने वाला।

माहिषिकः (पु०) १ भैंसा रखने वाला। अहीर। २ जार। छिनाल औरत का चाहने वाला।

माहिषीत्युच्यते नारी या च स्याद् व्यभिचारिणी।
तां दुष्टां कामयति यः स वै माहिषिकः स्मृतः॥

कालिकापुराण।

४ अपनी स्त्री की छिनाले की आमदनी पर निर्वाह करने वाला।

माहिष्मती (स्त्री०) हैहय राजवंशी राजाओं की राजधानी।

माहिष्य (पु०) क्षत्रिय बाप और वैश्या माता से उत्पन्न वर्णसङ्कर जाति विशेष।

माहेन्द्र (वि०) इन्द्र सम्बन्धी।

माहेन्द्री (स्त्री०) १ पूर्व दिशा। २ गौ। ३ इन्द्राणी।

माहेय (वि०) मिट्टी का बना हुआ।

माहेयः (पु०) १ मङ्गलग्रह। २ मूँगा।

माहेयी (स्त्री०) गौ।

माहेश्वरः (पु०) शैव। शिव का पूजक।

मि (धा०—उभय०) [मिनोति, मिनुते] १ फैंकना। पटकना। छितराना। २ बनाना। बना कर खड़ा करना। ३ नापना। ४ स्थापित करना। ५ देखना। पहचानना।

मिन्व् (धा० परस्मै०) [मिन्वति] १ अड़चन डालना। बाधा डालना। २ चिढ़ाना।

मित (व० कृ०) १ नापा हुआ। ३ जो सीमा के अंदर हो। परमित। ३ जाँचा हुआ। पड़ताला हुआ।—अक्षर, (वि०) १ संक्षिप्त। २ पद्यात्मक।—अर्थ, (वि०) परिमित अर्थ का।

मितंगम (वि०) धीमे चलने वाले।

मितंगमः (पु०) हाथी।

मितंपच (वि०) थोड़ा पकाने वाला।

मितिः (स्त्री०) (१) १ मान। परिणाम। २ प्रमाण। साक्षी। ३ यथार्थ ज्ञान।

मित्रं (न०) १ मित्र। २ मित्र राज्य।

मित्रः (पु०) १ सूर्य। २ आदित्य।—आचारः, (पु०) मित्र के प्रति व्यवहार।—उदयः, (पु०) सूर्योदय। २ मित्र की समृद्धि।—कर्मन्, (न०)—कार्य,—कृत्यं, (न०) मित्रता का कार्य। मित्र का कार्य।—घ्न, (वि०) विश्वासघाती।—द्रुह्,—द्रोहिन्, (वि०) मित्र के साथ विश्वासघात करने वाला। बनावटी या झूठा मित्र।—भावः, (पु०) मैत्री।—भेदः, (पु०) मैत्री-भङ्ग।—वत्सल, (वि०) मित्र पर दया करने वाला।—हत्या, (स्त्री०) दोस्त का वध।

मित्रयु (वि०) १ मिलनसार। मित्र बनाने वाला।

मिथ् (धा० उभय) [मेथति—मेथते] १ संग करना। २ मिलाना। जोड़ा बाँधना। संगम करना। ३ चोटिल करना। घायल करना। आघात पहुँचाना। प्रहार करना। वध करना। ४ समझाना। पहचानना। जानना। ५ झगड़ा करना।

मिथस् (अव्यया०) १ पारस्परिक। आपस का। एक दूसरे का। २ चुपके चुपके। गुप्तरीत्या। निजु तौर से।

मिथिलः (पु०) एक राजा का नाम।

मिथिला (स्त्री०) एक नगरी का नाम, जो विदेह देश की राजधानी थी।

मिथिलाः (पु०—बहुवचन०) मैथिल जाति के लोग।

मिथुनं (न०) १ जोड़ा। जुट। २ एक साथ पैदा हुए

ने बच्चे। ३ सङ्गम । समागम। ४ स्त्रीसम्भोग। ५ मिथुन राशि।—भावः, (पु०) १ मिथुन का भाव या धर्म। जुट होने की दशा। २ सम्भोग। —व्रतिन्, (वि०) जो मैथुन करता हो।

मिथुनेचरः (पु०) चक्रवाक पक्षी।

मिथ्या (अव्यया०) मिथ्यापन से । धोखे से । ग़लती से। अशुद्धता से। २ विपरीत प्रकार से। ३ व्यर्थ। निरर्थक।—अध्यवसितिः, (स्त्री०) एक काव्यालङ्कार जिसमें किसी एक असम्भव बात के मानकर, दूसरी बात कही जाती है।—अपवादः, (पु०) झूठा इलज़ाम या कलङ्क।—अभियोगः, (पु०) झूठा आरोप । किसी पर झूठमूठ अभियोग लगाने की क्रिया।—अभिशंसनम्, (न०) झूठा इलज़ाम। झूठा दोष। झूठा कलङ्क।—अभिशापः, (पु०) १ झूठा दावा। २ मिथ्या भविष्यद्वाणी।—आचारः, (पु०) कपट पूर्ण आचरण।—आहारः, (पु०) अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन।—उत्तरं, (न०) व्यवहार में चार प्रकार के उत्तरों में से एक प्रकार का उत्तर। अभियुक्त का अपना अपराध छिपाने के लिये मिथ्या बयान।—उपचारः, (पु०) बनावटी या दिखाने के लिये परिचर्या या सेवा या दिखावटी कृपा।—कर्मन्, (न०) मिथ्या काम।—कोपः,—क्रोधः, (पु०) बनावटी क्रोध।—क्रयः, (पु०) झूठी कीमत।—ग्रहः—ग्रहणं, (न०) समझने की भूल या समझने में भूल।—चर्या, (स्त्री०) झूठा या कपट व्यवहार—ज्ञानं, (न०) भूल। भ्रम।—दर्शनं, (न०) नास्तिकता।—दृष्टिः, (स्त्री०) नास्तिकता। नास्तिक।—पुरुषः, (पु०) छाया पुरुष।—प्रतिज्ञ, (वि०) झूठा वादा करने वाला। दगाबाज़। विश्वासघाती।—मतिः (पु०) भ्रम। भूल । ग़लती —वचनं—वाक्यं, (न०) झूठ। मिथ्या।—वार्ता, (स्त्री०) झूठी इत्तिला। झूठी रिपोर्ट।—साक्षिन्, (पु०) झूठा गवाह।

मिद् (धा०—आत्म) [मेदते, मेद्यति, मेद्यते, मेदयति - मेदयते] १ चिकना होना । स्निग्ध होना। २ पिघलना। ३ मोटा होना। ४ प्यार करना। स्नेहवान होना।

मिद्धं (न०) १ सुस्त। काहिल। २ तन्द्रा। निद्रा। मन की उदासी।

मिन्द् (धा० पर०) [मिन्दति, मिन्दयति] देखो मिद्।

मिन्व् (धा०—उभय०) [मिन्वति] पानी १ छिड़कना । तर करना । नम करना । २ सम्मान करना। पूजन करना।

मिल् (धा० उभय) [मिलति—मिलते] किन्तु साधारणतः इसके रूप मिलति, मिलित होते हैं] १ जोड़ना। मिलजाना। २ एकत्र होना । जमा होना। ३ मिश्रित हो जाना। ४ मुठभेड़ होना। ५ (किसी घटना का) घटना। ६ पाना।

मिलनं (न०) १ मिलन । मिलाप । भेंट। समागम। योग। २ मिश्रण। मिलावट।

मिलित (व० कृ०) १ मिला हुआ। भेंटा हुआ। समागत। २ आमने सामने आया हुआ । ३ मिश्रित एक साथ रखा हुआ।

मिलिंदः } (पु०) मधुमक्षिका।
मिलिन्दः }

मिलिंदकः } (पु०) एक जाति विशेष का
मिलिन्दकः } साँप।

मिश् (धा०—परस्मै०) [मेशति] १ कोलाहल करना। २ क्रोध करना।

मिश्र् (धा०—उभय०) [मिश्रयति, मिश्रयते] संमिश्रण करना । मिलाना । जोड़ना। एकत्र करना।

मिश्र (वि०) १ मिला हुआ। जुड़ा हुआ। मिश्रित। २ सम्बन्ध युक्त। ३ बहुगुणित । नाना विध। नाना प्रकार । ४ गुथा हुआ।—जः, (पु०) खच्चर। अश्वतर।—शब्दः (पु०) खच्चर। अश्वतर।

मिश्रं (न०) १ मिश्रित पदार्थ। २ सलजम। मूली।

मिश्रः (पु०) १ भद्र जन। प्रतिष्ठित व्यक्ति । यह एक उपाधि है जो बड़े नामी विद्वानों के नामों के

साथ लगायी जाती है, जैसे "आर्यमिश्रा प्रमाणं।" २ हाथी विशेष।

मिश्रक (वि०) १ मिला हुआ। मिलावटी। २ फुटकल।

मिश्रकं (न०) खारी नमक।

मिश्रकः (पु०) १ कंपाउडर। मिलाकर दवाइयाँ बनाने वाला। २ सौदागरी माल में मिलावट करने वाला।

मिश्रणं (न०) मिलावट। सम्मिश्रण।

मिश्रित (व० कृ०) १ मिला हुआ। २ जोड़ा हुआ। ३ सम्मानित या सम्मान किया हुआ।

मिष् (धा० पर०) [मिषति] १ आँखें खोलना। आँख झपकाना। २ वैराग्य की दृष्टि से देखना। ३ स्पर्द्धा करना। हसद करना। ईर्ष्या करना।

मिषः (पु०) स्पर्द्धा। प्रतियोगिता।

मिषम् (न०) बहाना। मिस। अगुआ। धोखा। चाल। जाल। बनावटी दिखावट।

मिष्ट (वि०) १ मधुर। २ स्वादिष्ट। २ नम। तर।

मिष्टं (न०) मिठाई।

मिह् (धा० परस्मै०) [मेहति, मीढ] १ मूत्र करना। २ तर करना। नम करना। (जल) छिड़कना। ३ वीर्य निकालना।

मिहिका (स्त्री०) कोहरा। बर्फ।

मिहिरः (पु०) १ सूर्य। २ बादल। ३ चन्द्रमा। ४ पवन। ५ वृद्धजन।

मिहिराणः (पु०) शिव जी का नामान्तर।

मी (धा०—उभ०) [मीनाति, मीनीते] १ वध करना। हत्या करना। नाश करना। चोटिल करना। अनिष्ट करना। २ कम करना। घटाना। ३ बदलना। तबदील करना। ४ तोड़ना। भङ्ग करना।

मीढ (व० कृ०) १ पेशाब किया हुआ। वह जो पेशाब कर चुका हो।

मीढुष्टमः मीढुष (पु०) शिव जी का नामान्तर।

मीनः (पु०) १ मछली। २ मीन राशि। ३ भगवान् विष्णु का मत्स्यावतार।—आघातिन् - घातिन्, (पु०) १ मछली पकड़ने वाला। मछुआ। २ सारस। बगला।— आलयः, (पु०) समुद्र।—केतनः, (पु०) कामदेव।—गन्धा, (स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती।—गन्धिका, (स्त्री०) तालाव।—रङ्कः,—रङ्गः, (पु०) १ जलकौवा। मुरगाबी। २ मछरंग नामक पक्षी जो मछली खाता है।

मीनारः (पु०) मकर। मगर। घड़ियाल।

मीम् (धा०—परस्मै०) (मीमति) १ गमन करना। गतिशील होना। २ आवाज़ करना। बजाना।

मीमांसकः (पु०) १ अन्वेषक। खोजी। २ वह जो मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता हो।

मीमांसनम् (न०) अनुसन्धान। परीक्षा। खोज।

मीमांसा (स्त्री०) १ गम्भीर विचार। खोज। परीक्षा। अनुसन्धान। २ षड् आस्तिक दर्शनों में से एक, जो पूर्वमीमाँसा और उत्तरमीमाँसा के नाम से प्रसिद्ध है। साधारणतः मीमाँसा शब्द से पूर्वमीमाँसा ही का बोध होता है। क्योंकि उत्तर-मीमाँसा तो वेदान्त के नाम से प्रसिद्ध है। ३ जैमिन कृत दर्शन जिसे पूर्वमीमाँसा कहते हैं। इसमें वेद के यज्ञपरक वचनों की व्याख्या तथा उनका समन्वय बड़े विचार पूर्वक किया गया है।

मीरः (पु०) १ समुद्र। २ सीमा। हद।

मील् (धा० परस्मै०) [मीलति, मीलित] १ बंद करना। मूँद लेना। २ मुंद जाना। बंद हो जाना (जैसे आँख या फूल का) ३ कुम्हलाना। नष्ट होना। अन्तर्धान होना। ४ मिलना। जमा होना।

मीलनं (न०) १ आँखों का बंद करना। २ आँखें बंद करने की क्रिया। ३ फूल के बंद होने की क्रिया।

मीलित (व० कृ०) १ बंद। मुंदा हुआ। २ पलक

झपकाये हुए । ३ अधखुला । अनखिला । ४ लुप्त । जो नष्ट हो चुका हो ।

मीलितं (न०) एक अलङ्कार । इसमें दो पदार्थों की समानता के कारण, उन दोनों में भेद नहीं जान पड़ता ।

मीव् (धा०-पर०) [मीवति] १ गमन करना । २ मोटा ताज़ा होना ।

मीवरः (पु०) सेनानायक । चमूपति ।

मीवा (स्त्री०) १ पेट में का कीड़ा । २ वायु । हवा ।

मुः (पु०) १ शिव जी का नाम । बन्धन । कारागार । ३ मोक्ष । ४ चिता ।

मुकुंदकः } मुकुन्दकः } (पु०) १ प्याज़ । २ साठीधान ।

मुकुः (पु०) मोक्ष ।

मुकुटं (न०) १ ताज । शिरोभूषण । २ कलँगी । चोटी । ३ शिखर । शृङ्ग ।

मुकुटी (स्त्री०) उँगली चटकाना ।

मुकुंदः (पु०) १ विष्णु भगवान का नाम । श्रीकृष्ण जी का नाम । २ पारा । पारद । ३ रत्न विशेष । ४ नवनिधियों में से एक निधि । ५ ढोल विशेष ।

मुकुरः (पु०) १ दर्पण । २ कली । ३ कुम्हार के चाक का डंडा । ४ बकुलवृक्ष ।

मुकुल (पु०) } मुकुलं (न०) } १ कली । २ कोई वस्तु जो कली के आकार की हो । ३ शरीर । देह । ४ आत्मा । जीवात्मा ।

मुकुलित (वि०) १ वह वृक्ष जिसमें कलियाँ आ गयी हों । २ अधमुंदा ।

मुकुष्ठः } मुकुष्ठकः } (पु०) मोंठ ।

मुक्त (व० कृ०) १ ढीला । बंधन से छूटा हुआ । २ छोड़ा हुआ । स्वतंत्र किया हुआ । ३ त्यागा हुआ । ४ फैंका हुआ । क्षिप्त । छोड़ा हुआ । ५ गिरा हुआ । ६ दिया हुआ । ७ भेजा हुआ । ८ मोक्ष प्राप्त किये हुए । —अम्बरः, (पु०) दिगंबर जैन साधु ।—आत्मन्, (वि०) वह आत्मा जिसकी मोक्ष हो । (पु०) वह जीव जो सांसारिक एषणाओं या पापों से छूट चुका हो । —आसन, (वि०) वह जो अपने आसन से उठ खड़ा हो ।—कच्छः, (पु०) बौद्ध ।—कञ्चुकः, (पु०) केंचुली छोड़े हुए साँप । —कण्ठ, (वि०) चिल्लाने वाला ।—कर, —हस्त, (वि०) उदार ।—चक्षुस्, (पु०) सिंह ।—वसन, (वि०) जैनी दिगम्बर साधु ।

मुक्तः (पु०) वह जीव जो सांसारिक बंधनों से छूट कर, मोक्ष पावे ।

मुक्तकं (न०) १ अस्त्र । २ एक प्रकार का काव्य जो एक ही पद्य में पूरा हो । ३ फुटकर कविता । प्रबन्ध का उलटा जिसे उद्भट भी कहते हैं ।

मुक्ता (स्त्री०) १ मोती । २ वेश्या । रंडी ।—अगारः —आगारः, (पु०) सीपी जिसमें से मोती निकलता है ।—आवलिः,—आवली, (स्त्री०) —कलापः (पु०) मोतियों का हार ।—गुणः, (पु०) मोतियों की माला या लड़ी ।—जालं, (न०) मोतियों की लड़ी ।—दामन्, (न०) मोतियों की लर ।—पुष्पः, (पु०) कुन्द का फूल ।—प्रसूः (स्त्री०) सीप । शुक्ति ।—प्रालम्बः, (पु०) मोतियों की लर ।—फलं, (न०) १ मोती । २ हरफा रेवरी । लवनीफल । ३ एक प्रकार का छोटी जाति का लिसोड़ा । ४ कपूर ।—मणिः, (पु०) मोती ।—मातृ, (स्त्री०) सीप ।—लता, (स्त्री०)—स्रज्, (स्त्री०)—हारः, (पु०) मोती का हार ।—शुक्तिः,—स्फोटः (पु०) सीप ।

मुक्तिः (स्त्री०) १ छुटकारा । रिहाई । २ स्वतंत्रता । ३ मोक्ष । ४ त्याग । ५ फेंकने की क्रिया । छोड़ने की क्रिया । ६ खोलने की क्रिया । बंधन से मुक्त करने की क्रिया । ७ अदायगी । (क़र्ज़ का) अदा करना ।—क्षेत्रं, (न०) काशी का नाम । —मार्गः, (पु०) मोक्ष का रास्ता ।—मुक्तः, (पु०) शिलारस । सिल्हक ।

मुक्त्वा (अव्यया०) १ छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। २ सिवाय। बिना। छोड़कर।

मुखं (न०) १ मुख। २ चेहरा। शक्ल। सूरत। ३ पशु का थूथन। ४ अगला भाग। सामना। ५ नोंक। ६ बाढ। धार। ७ चूची के ऊपर की घुंडी। ८ पक्षी की चोंच। ९ दिशा। १० हार। दरवाज़ा। मुहाना। ११ घर का दरवाज़ा। १२ आरम्भ। १३ भूमिका। १४ प्रधान। मुख्य। १५ सतह या ऊपरी भाग। १६ साधन। १७ कारण। उच्चारण। १८ वेद। धर्मशास्त्र। १९ नाटक में एक प्रकार की सन्धि।—अग्निः, (पु०) १ दावानल। २ अगिया बेताल। ३ यज्ञीय अग्नि। ४ वह आग जो मुर्दा जलाते समय मुर्दे के मुख के ऊपर रखी जाती है।—अनिलः, —उच्छ्वास, (पु०) साँस।—अस्रः, (पु०) केंकड़ा।—आसव, (पु०) अधरामृत।—आस्रावः, —स्रावः, (पु०) थूक। खखार।—इन्दुः, (पु०) चन्द्रमुख। चन्द्रमा जैसा मुख। गोल सुन्दर चेहरा।—उल्का, (स्त्री०) दावानल।—कमलं, (न०) कमल जैसा मुख।—खुरः, (पु०) दाँत।—गन्धकः, (पु०) प्याज।—चपल, (वि०) वह जो बहुत अधिक या बढ़ कर बोलता हो।—चपेटिका, (स्त्री०) थप्पड़। चनकटा।—चीरिः, (स्त्री०) जिह्वा।—जः, (पु०) ब्राह्मण।—दूषणः, (पु०) प्याज।—दूषिका, (स्त्री०) मुँहासा।—निरीक्षकः, (पु०) सुस्त या काहिल आदमी।—निवासिनी, (स्त्री०) सरस्वती।—पटः, (पु०) घूंघट। नकाब।—पिण्डः, (पु०) १ कँवर। कौर। २ वह पिण्ड जो मृत व्यक्ति के उद्देश्य से उसकी अन्त्येष्टि क्रिया करने के पूर्व दिया जाता है।—पूरणम्, (न०) कुल्ला।—प्रियः, (पु०) संतरा। नारंगी।—बन्धः, (पु०) प्रस्तावना भूमिका।—बन्धनं, (न०) १ भूमिका। २ ढक्कन।—भूषणं, (न०) ताम्बूल। पान।—मार्जनं, (न०) दतवन। मुखप्रक्षालन।—यंत्रणं, (न०) लगाम।—लाङ्गलः, (पु०) शूकर।—लेपः, (पु०) १ वह लेप जो मुख पर शोभा के लिये लगाया जाय। २ मुखरोग विशेष।—वल्लभः, (पु०) अनार का पेड़।—वाद्यं, (न०) १ मुख से फूंक कर बजाया जाने वाला बाजा। २ मुख से निकला बम् बम् शब्द।—विलुण्ठिका, (स्त्री०) बकरी। छेरी।—व्यादनं, (न०) जमुहाई।—शफ, (वि०) मुखर। कटुभाषी।—शेषः, (पु०) राहु।—शोधन, (वि०) १ मुख साफ करने वाला। २ तीता। चटपटा।—शोधनः, (पु०) चटपटी वस्तु।—श्रीः, (स्त्री०) मुख का सौन्दर्य। सुन्दर चेहरा।

मुखंपचः (पु०) भिक्षुक। भिखारी।

मुखर (वि०) १ बातूनी। २ रुनझुन शब्द करने वाला। पायजेब। नूपुर। ३ द्योतक। प्रकाशक। ४ मुखशफ। कटुभाषी। गाली गलौज करनेवाला। ५ मज़ाक उड़ाने वाला। उपहास करने वाला।

मुखरः (पु०) १ काक। कौआ। २ नेता। प्रधान पुरुष। ३ शङ्ख।

मुखरिका (स्त्री०) } लगाम।
मुखरी (स्त्री०) }

मुखरिन (वि०) शब्दायमान।

मुख्य (वि०) १ मुख सम्बन्धी। २ प्रधान —अर्थः, (पु०) प्रधान अर्थ। (गौण का उलटा)।—चान्द्रः, (पु०) मुख्य चन्द्रमास।—नृपतिः, (पु०) प्रधानराजा।—मंत्रिन्, (पु०) प्रधान सचिव।

मुख्यः (पु०) नेता। पथप्रदर्शक।

मुख्यं (न०) १ यज्ञ का प्रथम कल्प। २ वेद का अध्ययन या अध्यापन।

मुगूह (पु०) १ पपीहा। २ एक प्रकार का हिरना।

मुग्ध (वि०) १ मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। २ मूर्ख। मूढ़। अज्ञानी। ४ सादा। सीधा। अनजान। ५ भूला हुआ। भूल में पड़ा हुआ। ६ भोलेपन के कारण आकर्षक।—अक्षी, (स्त्री०) सुन्दर आँखों वाली युवती।—आनना, (स्त्री०) सुन्दर शक्ल वाली स्त्री।—धी,—बुद्धि,—मति, (वि०) मूर्ख। मूढ़। सीधा। सादा।—भावः, (पु०) सीधापन। मूर्खता।

मुच् (धा० आत्म०) [मोचते] ठगना । धोखा देना । [उभय०—मुञ्चति,—मुचते, मुक्त] ढीला करना । छोड़ देना । मुक्त करना । रिहा करना ।

मुचकः (पु०) लाख ।

मुचकुंदः, मुचकुन्दः मुचुकुंदः मुचुकुन्दः (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ भागवत पुराण के अनुसार एक राजा का नाम । यह राजा मान्धाता का पुत्र था । इसीके नेत्राग्नि से कालयवन को श्री कृष्ण जी ने भस्म करवाया था । —प्रसादकः, (पु०) श्री कृष्ण का नाम ।

मुचिरः (पु०) १ देवता । २ भलाई । गुण । ३ पवन । हवा ।

मुचिलिन्दः (पु०) तिलपुष्पी ।

मुचटी (स्त्री०) १ उँगली चटकाने या मटकाने की क्रिया । मुट्ठी ।

मुज्, मुंज् (धा० परस्मै०) [मोजति, मुञ्जति, मोजयति, मोजयते, मुञ्जयति—मुञ्जयते] १ साफ करना । पवित्र करना । २ बजाना । शब्द करना ।

मुञ्जः (पु०) १ मूंज घास । २ धारापति राजा भोज के चचा का नाम ।—केशः, (पु०) शिव जी का नाम —वन्धनं, (न०) यज्ञोपवीत संस्कार । —वासस्, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

मुंजरं, मुञ्जरं (न०) कमल की रेशेदार जड़ । भसीडा ।

मुट् (धा० परस्मै०) [मोटति, मोटयति—मोटयते] १ कुचलना । तोड़ना । पीसना । चूर्ण करना । २ दोषी ठहराना । भर्त्सना करना । गाली देना ।

मुण् (धा० परस्मै०) [मुणति] प्रतिज्ञा करना ।

मुंट्, मुण्ट् (धा० परस्मै०) कुचलना । पीसना ।

मुंड्, मुण्ड् (धा० परस्मै०) १ मूड़ना । २ कुचलना । पीसना । (आत्म०—मुण्डते] डूबना ।

मुंड, मुण्ड (वि०) १ मुड़ा हुआ । २ किसी वस्तु का अग्र भाग । कटा हुआ । ३ मौथरा । गुंठल । ४ कमीना । नीच ।—अयसं, (न०) लोहा । —फलः, (पु०) नारियल का वृक्ष ।—मण्डली (स्त्री०) ऐसे लोगों का दल जिसके सब मनुष्यों का सिर मुड़ा हुआ हो ।—लोहं, (न०) लोहा । —शालिः, (पु०) एक प्रकार के चाँवल ।

मुंडः, मुण्डः (पु०) १ मनुष्य जिसका सिर मुड़ा हुआ हो या जो गँजा हो । २ मुड़ा हुआ या गँजा । सिर । ३ माथा । ४ नाई । नापित । ५ पेड़ का तना जिसकी डालियाँ काट दी गयी हों ।

मुंडा, मुण्डा (स्त्री०) भिक्षुकी विशेष । भिखारिन विशेष ।

मुंडं, मुण्डम् (न०) १ सिर । २ लोहा ।

मुंडकः, मुण्डकः (न०) मूड़ । सिर ।—उपनिषद्, (स्त्री०) अथर्ववेद के एक उपनिषद् का नाम ।

मुंडकार, मुण्डकार (न०) मुण्डन संस्कार ।

मुंडित, मुण्डित (व० कृ०) १ मुड़ा हुआ । २ फुनगी कटा हुआ । अग्रभाग कटा हुआ ।

मुंडितं, मुण्डितं (न०) लोहा ।

मुंडिन्, मुण्डिन् (पु०) १ नाई । २ शिव जी का नामान्तर ।

मुत्यं (न०) मोती ।

मुद् (धा० उभय०) [मोदयति—मोदयते] १ मिलाना । मिश्रण करना । २ साफ करना । पवित्र करना ।

मुद्, मुदा (स्त्री०) हर्ष । प्रसन्नता । आल्हाद ।

मुदित (व० कृ०) आनन्दित । हर्षित ।

मुदितं (न०) १ आनन्द । हर्ष । २ एक प्रकार का मैथुनोपयोगी आलिङ्गन ।

मुदिता (स्त्री०) हर्ष । आनन्द ।

मुदिरः (पु०) १ बादल । २ प्रेमी । लंपट पुरुष । ३ मेंढक ।

मुदी (स्त्री०) चाँदनी । जुन्हाई ।

मुद्गः (पु०) १ मूंग । २ ढकना । ढक्कन । गिलाफ । आच्छादन । ३ समुद्री पक्षी ।—भुज,—भोजिन्, (पु०) घोड़ा ।

मुद्गरः (पु०) १ हथौड़ा । २ गदा । डंडा । ३ मोंगी । मुंगरिया जिससे मिट्टी के ढेले फोड़े जाते हैं । ४ काठ का बना हुआ एक प्रकार का गावदुम दण्ड जो मूठ की ओर पतला और आगे की ओर बहुत भारी होता है । इसको घुमाने से कलाइयों और हाथों में बल आता है । ५ केली । ६ मोगरा । चमेली का भेद ।

मुद्गल (पु०) घास या तृण विशेष ।

मुद्गष्टः (पु०) बनमूंग । मुगवन ।

मुद्रणं (न०) १ किसी चीज़ पर अक्षर आदि अङ्कित करना । छपाई । २ बंद करने या मूंदने की क्रिया ।

मुद्रा (स्त्री०) १ किसी के नाम की छाप । मोहर । २ अँगूठी । छाप । छल्ला । ३ मोहर । रुपया । पैसा आदि सिक्के । ४ पदक । तगमा । ५ चपरास आदि के ऊपर छापी जाने वाली मूर्त्ति आदि का ठप्पा । ६ बंद करने या मोहर लगा कर बंद करने की क्रिया । ७ रहस्य । गुप्त भेद । ८ हाथ, पाँव, आँख, मुंह, गर्दन आदि की कोई स्थिति विशेष ।—अक्षरं, (न०) मोहर पर खुदे हुए अक्षर ।—कारः, (पु०) मोहर बनाने वाला ।—मार्ग, (पु०) मस्तक के भीतर का वह रन्ध्र जहाँ से योगियों का प्राणवायु बाहिर निकलता है । ब्रह्मरन्ध्र ।

मुद्रिका (स्त्री०) मोहरछाप वाली अँगूठी ।

मुद्रित (व० कृ०) १ मोहर किया हुआ । चिन्हित । अङ्कित । २ बंद । मोहर लगा कर बंद किया हुआ । ३ अनखिला हुआ ।

मुधा (अव्यया०) १ व्यर्थ । निरर्थक । बेकाम । २ भूल से ।

मुनि (पु०) १ वह जो मनन करे । ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य प्रभृति सूक्ष्म विषयों का विचार करने वाला व्यक्ति । मननशील महात्मा । धर्मात्मा । भक्त । साधु । २ अगस्त्य मुनि । ३ वेदव्यास । ४ बुद्धदेव । ५ आम का पेड़ । ६ सात की संख्या । (बहुवचन०) सप्तर्षि ।—त्रयं, (न०) पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि ।—पित्तलं, (न०) ताँबा ।—पुङ्गवः, (पु०) मुनिश्रेष्ठ ।—पुत्रकः, (पु०) खंजन पक्षी ।—भेषजं (न०) १ अगस्त्य का फूल । २ हड़ । हर्रा । ३ लङ्घन । उपवास ।—व्रतं (न०) मुनियों के योग्य व्रत ।

मुंथ् (धा० परस्मै०) (मूंथति) जाना ।

मुमुक्षा (स्त्री०) मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा ।

मुमुक्षु (वि०) १ मोक्ष प्राप्ति का अभिलाषी । २ बंधन से छूटने का इच्छुक । ३ दागने या छोड़ने ही को गोली या तीर । ४ साँसारिक आवागमन से छूटने की इच्छा रखने वाला । मोक्ष के लिये प्रयत्नवान ।

मुमुक्षुः (पु०) वह साधु जो मोक्ष प्राप्ति के लिये यत्नवान हो ।

मुमुचानः (पु०) बादल । मेघ ।

मुमूर्षा (स्त्री०) मरने की इच्छा ।

मुमूर्षु (वि०) मरणापन्न । जो मरने ही वाला हो ।

मुर् (धा० परस्मै०) [मुरति] घेरा डालना । घेरना । फँसाना ।

मुरः (पु०) एक दैत्य जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था ।—अरिः, (पु०) १ श्रीकृष्ण का नाम । २ अनर्घराघव रचयिता कवि का नाम ।—जित्,—द्विष्—भिद्,— मर्दनः,— रिपुः,—वैरिनः—हन्, (पु०) श्रीकृष्ण ।

मुरं (न०) घेरने या घेरा डालने की क्रिया ।

मुरजः (पु०) मृदङ्ग ।—बंधः, (पु०) काव्यरचना शैली विशेष ।—फलः, (पु०) कटहल का फल ।

मुरजा (स्त्री०) १ बड़ा मृदङ्ग । २ कुबेरपत्नी का नाम ।

मुरन्दला (स्त्री०) एक नदी का नाम । (बहुत कर नर्मदा ।)

मुरला (स्त्री०) केरल देश से निकलने वाली एक नदी का नाम ।

मुरली (स्त्री०) बाँसुरी ।—धरः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

मुर्ध (धा० परस्मै०) [मूर्छति, मूर्छित, या मूर्त] १ जमना । तरल पदार्थ का जम कर गाढ़ा होना । २ मूर्च्छित होना । ३ वृद्धि को प्राप्त होना । ४ शक्ति सञ्चय करना । ५ पूर्ण करना । व्याप्त होना । घुसना । छाजाना । ६ जोट का होना । ७ चिल्ला कर बुलवाना । पुकरवाना ।

मुर्मुरः (पु०) १ तुषाग्नि । चोकर या भूसी की आग । २ कामदेव । ३ सूर्य के एक घोड़े का नाम ।

मुर्व (धा० परस्मै०) [मुर्वति] बाँधना ।

मुशटी (स्त्री०) अनाज विशेष ।

मुष् (धा० परस्मै०) [मुष्णाति, मुषित] १ चुराना । लूटना । छीन लेना । २ ग्रसना । ढकना । घेर लेना । छिपाना । ३ पकड़ लेना । ४ आगे निकल जाना ।

मुषकः (पु०) चूहा ।

मुषा } (स्त्री०) घरिया । कुठाली । कुल्हिया ।
मुषी }

मुषित (व० कृ०) १ लुटा हुआ । चुराया हुआ । २ छीना हुआ । ३ रहित । वञ्चित । ४ ठगा हुआ । धोखा खाया हुआ ।

मुषितकं (न०) चोरी का माल ।

मुष्कः (पु०) १ अण्डकोष का अँडा । २ अण्डकोष । ३ हृष्ट पुष्ट पुरुष । ४ ढेर । समुदाय । ५ चोर । - देशः, (पु०) अण्डकोष का स्थान ।—शून्यः, (पु०) हिजड़ा ।—शोफः, (पु०) अण्डकोष की सूजन ।

मुष्ट (व० कृ०) चुराया हुआ ।

मुष्टं (न०) चोरी का माल ।

मुष्टिः (पु० स्त्री०) १ मुट्ठी । २ मुट्ठी भर । ३ मुठिया । मूंठ । ४ माप विशेष । ५ लिङ्ग ।—देशः, (पु०) धनुष का मध्य भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है । —द्यूतं, (न०) एक प्रकार का जुआ ।—पातः, (पु०) घूंसेवाज़ी ।—बन्धः, (पु०) १ बंधी हुई मुट्ठी । २ मुट्ठी भर ।—युद्धं, (न०) घूँसेवाज़ी ।

मुष्टिकः (पु०) १ सुनार । २ मुक्का । घूँसा । ३ राजा कंस के पहलवानों में से एक का नाम जिसे बलदाऊ जी ने पछाड़ा था ।—अन्तकः, (पु०) बलराम जी का नाम ।

मुष्टिका (स्त्री०) मुक्का । घूँसा ।

मुष्टिंधयः (पु०) बच्चा ।

मुष्टीमुष्टि (अव्यया) घुसंघुस्सा ।

मुष्ठकः (पु०) राई ।

मुस् (धा० परस्मै०) [मुस्यति] चीरना । विभाजित करना । टुकड़े टुकड़े कर डालना ।

मुसलः (पु०) } १ मूसल । २ एक प्रकार का डंडा ।
मुसलं (न०) } गदा का भेद ।—आयुधः, (पु०) बलराम जी ।—उलूखलं, (न०) इमामदस्ता । खल्लोढ़ा ।

मुसलामुसलि (अव्यया०) डंडेवाज़ी ।

मुसलिन् (पु०) १ बलराम । २ शिव जी ।

मुसल्य (वि०) डंडे से मार डालने योग्य ।

मुस्त (धा० उभय०) [मुस्तयति, मुस्तयते] जमा करना । ढेर लगाना ।

मुस्तः (पु०) } एक प्रकार की घास ।—अदः—
मुस्तं (न०) } आदः, (पु०) शूकर ।
मुस्ता (स्त्री०) }

मुस्नं (न०) १ मूसल । लोढ़ा । २ आँसू ।

मुह् (धा० परस्मै०) [मुह्यति, मुग्ध या मूढ] १ मूर्च्छित होना । २ व्याकुल होना । परेशान होना । ३ मूर्ख बनना । ४ भूलना ।

मुहिर (वि०) मूर्ख । मूढ़ ।

मुहिरः (पु०) १ कामदेव । २ मूर्ख । मूढ़ ।

मुहुस् (अव्यया०) १ अक्सर । सदैव । बारंबार । २ कुछ देर के लिये ।—भाषा, (स्त्री०)—वचस्, (न०) पुनरावृत्ति ।—भुज्, (पु०) घोड़ा ।

मुहूर्तं (न०) } काल का एक मान जो ४८ मिनिट
मुहूर्तः (पु०) } का होता है । दिन रात का तीसवाँ भाग ।

मुहूर्त्तः (पु०) ज्योतिषी ।

मुहूर्तकः (पु०) १ पल । लहमा । २ ४८ मिनिट का समय का मान ।

मू (धा० परस्मै०) [मवते] बाँधना ।

मूक (वि०) गूंगा । मौन । वाणी रहित । २ बापुरा । अभागा ।

मूकः (पु०) १ गूंगा आदमी । २ अभागा या धनहीन आदमी । ३ मछली ।—अंबा, (स्त्री०) दुर्गा का रूपान्तर ।—भावः, (पु०) मौन भाव । गूंगापन ।

मूकिमन् (पु०) गूंगापन । मौनत्व ।

मूढ (व० कृ०) १ मूर्च्छित । मूढ़ । २ व्याकुल । परेशान । ३ बेवकूफ । भूला हुआ । भटका हुआ । ४ समय से पूर्व जन्मा हुआ । ६ चकित ।

मूढः (पु०) मूर्खजन । अज्ञजन ।—आत्मन्, (वि०) १ विकल मन । २ मूर्ख । बेवकूफ ।—गर्भः, (पु०) गर्भस्राव आदि ।—ग्राहः, (पु०) समझने में भ्रम । नासमझी ।—चेतन,—चेतस्, (वि०) मूर्ख । अज्ञान ।—धी,—बुद्धि,—मति, (वि०) मूर्ख । मूढ़ । अज्ञानी ।—सत्त्व, (वि०) पागल । विक्षिप्त ।

मूत (वि०) १ बंधा हुआ । बंधन युक्त । २ क़ैद में पड़ा हुआ ।

मूत्रं (न०) पेशाब ।—आघातः, (पु०) एक पेशाब की बीमारी ।—आशय, (पु०) तरेट । मूत्रस्थली ।—कृच्छ्रं, (न०) पेशाब की एक बीमारी जिसमें पेशाब करते समय जलन या दर्द होता है ।—कोशः, (पु०) अण्डकोष ।—क्षय, (पु०) पेशाब की बीमारी विशेष ।—जठरः, (पु०)—जठरं, (न०) पेट की सूजन जो पेशाब रुक जाने से हो गयी हो ।—दोषः, (पु०) पेशाब की बीमारी ।—निरोधः, (पु०) पेशाब का रुक जाना या बंद हो जाना ।—पतनः, (पु०) गन्धमार्जार । गन्धबिलाव ।—पथ, (पु०) पेशाब निकलने का रास्ता ।—परीक्षा, (स्त्री०) चिकित्सा में रोगी के पेशाब की परीक्षा करने की क्रिया ।—पुटं, (न०) पेट का निचला भाग । तरेट ।—मार्गः, (पु०) मूत्रद्वार ।

मूत्रल (वि०) मूत्र को बढ़ाने वाला ।

मूत्रित (वि०) मूत्र की तरह निकाला हुआ ।

मूर्ख (वि०) मूढ़ । बेवकूफ ।

मूर्खः (पु०) १ बेवकूफ । मूढ । २ उर्द । वनमूंग ।—भूयम्, (न०) बेवकूफी । मूर्खता ।

मूर्च्छन (वि०) [स्त्री०—मूर्च्छनी] संज्ञा लोप करने वाला । २ वृद्धिकारक । पुष्टकारक ।

मूर्च्छनं (न०) १ मूर्च्छा । २ संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह अवरोह ।

मूर्च्छा (स्त्री०) १ बेहोशी । संज्ञाहीनता । २ अचेतनावस्था ।

मूर्च्छाल (वि०) मूर्च्छित । बेहोश ।

मूर्च्छित (व० कृ०) १ मूर्च्छा को प्राप्त । संज्ञाहीन । २ मूर्ख । मूढ । ३ परेशान । विकल । ४ परिपूर्ण । ५ फूंकी हुई धातु ।

मूर्त (वि०) १ मूर्छित । बेहोश । मूर्तिमान । शरीरधारी । अवतार । ३ पार्थिव । ४ ठोस । कड़ा ।

मूर्तिः (स्त्री०) १ आकृति । स्वरूप । सूरत । शरीर । देह । २ शरीरधारण । अवतरण । ३ प्रतिमा । ४ सौन्दर्य । ५ ठोसपन । कड़ापन ।—धर,—सञ्चर, (वि०) शरीर धारण किये हुए ।—पः, (पु०) मूर्तिपूजक पुजारी ।

मूर्तिमत (वि०) १ पार्थिव । शारीरिक । २ शरीरधारी । अवतरित । मूर्तिमान । ३ कड़ा । ठोस ।

मूर्धन (पु०) १ माथा । भौं । २ सिर । ३ चोटी । शिखर । शृङ्ग । ४ नेता । नायक । प्रधान । अग्रणी । मुख्य । ५ सामना । अगला भाग ।—अन्तः, (पु०) चोटी ।—अभिषिक्त, (वि०) जिसके सिर पर अभिषेक किया गया हो ।—अभिषिक्तः, (पु०) १ राजतिलक प्राप्त राजा । २ क्षत्रिय जाति का पुरुष । ३ सचिव ।—अभिषेकः, (पु०) राजगद्दी ।—अवसिक्तः, १ वर्ण

सङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और क्षत्रिया माता मे हुई हो। २ राजतिलक प्राप्त राजा।—कर्परी,—कर्परी, (स्त्री०) छतरी। छाता।—ज, (पु०) १ केश। वाल। २ सिंह या घोड़े की गर्दन के वाल। अयाल।—ज्योतिष, (न०) ब्रह्मरन्ध्र।—पुष्प, (पु०) सिरस का वृक्ष।—रसः, (पु०) चाँवल की माँडी।—वेष्टनं, (न०) पगडी। साफा। मुकुट।

मूर्धन्य (वि०) १ सिर सम्बन्धी। सिर या मस्तक में स्थित। २ वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड ढ ण, र, ष। ३ मुख्य। प्रधान। सर्वोत्कृष्ट।

मूर्वा, मूर्व्वा, मूर्विका (स्त्री०) मरोडफली नाम की वेल जिसके रेशे निकाल कर धनुष के रोदे की डोरी और क्षत्रिय का कटिसूत्र बनाया जाता है।

मूल् (धा० उभय०) [मूलति—मूलते] दृढ होना। जड जमाना।

मूलं (न०) १ जड। २ किसी वस्तु के सब से नीचे का भाग। ३ किसी वस्तु का छोर, जिससे वह किसी अन्य वस्तु से जुडी हो। ४ आरम्भ। प्रारम्भ। शुरुआत। ५ आधार। नींव। उद्भवस्थल। उत्पत्तिस्थान। उपादान कारण। ६ पाददेश। तली। ७ मूलकृति (टीका से भिन्न अथवा जिसका टीका हो।) ८ पड़ोस। सामीप्य। ९ पूंजी। सरमाया। १० परम्परानुगत सेवक। ११ वर्गमूल। १२ किसी राजा का अपना निजू राज्य। १३ वह विचवाल जो उस सौदा का जिसे वह बेचता है, स्वयं धनी न हो। अस्वामि विक्रेता। १४ सत्ताइस नक्षत्रों में से उन्नीसवाँ नक्षत्र। १५ निकुञ्ज। १६ पीपरामूल। १७ मुद्रा विशेष।——आधारं, (न०) १ नाभि। २ योगानुसार मानव शरीर के षट् चक्रों में से एक, जो गुदा और शिश्न के बीच में है।—आभं, (न०) मूली। आयतनं, (न०) असली रहायस का स्थान।—आशिन्, (वि०) जड को खाकर रहने वाला।—आह्वं, (न०) मूली।—उच्छेदः, (पु०) सर्वनाश। विनाश।—कर्मन्, (न०) इन्द्रजाल। जादू।—कारणं, (न०) उपादान कारण—कारिका, (स्त्री०) भट्टी। चूल्हा।—कृच्छ्रः, (पु०)—कृच्छ्रं, (न०) व्रत विशेष इसमें मूली आदि जडों के क्वाथ को पीकर एक मास तक व्रत करना पड़ता है।—केशर, (पु०) नीवू।—जः (पु०) एक पौधा जो जड वोने से उत्पन्न होता है। वीज से नहीं।—जं, (न०) अदरक। आदी।—देव, (पु०) कंस का नामान्तर।——द्रव्यं,—धनं (न०) पूँजी।—धातुः, (पु०) मज्जा।—निकृंतन, (वि०) जड डाली नाशक।—पुरुषः, (पु०) किसी वंश का आदि पुरुष। सब से पहला पुरखा जिससे वंश चला हो।—प्रकृतिः, (स्त्री०) संसार की वह आदिम सत्ता, जिसका कि यह संसार परिणाम या विकास है। साँख्य मतानुसार "प्रधान"।—फलदः, (पु०) कटहल।—भद्रः, (पु०) कंस का नामान्तर।—भृत्यः, (पु०) पुश्तैनी नौकर।—वचनं, (न०) मूल ग्रन्थ के पद्य।—वित्तं, (न०) पूंजी। जमा।—विभुजः, (पु०) रथ।—शाकटः, (पु०)—शाकिनं, (न०) वह खेत जिसमें मूली गाजर आदि मीठी जडवाले पौधे वोये जाते हैं।—स्थानं, (न०) १ नींव। आधार। २ परमात्मा। ३ पवन। हवा।—स्रोतस्, (न०) मुख्य धार अथवा किसी नदी का उद्गमस्थान।

मूलकं (पु०), मूलकः (न०) १ मूली। २ खाने योग्य जड़। कंदमूल। (पु०) चौतीस प्रकार के स्थावर विषों में से एक प्रकार का विष।—पोतिका, (स्त्री०) मूली।

मूला (स्त्री०) १ एक पौधे का नाम। २ मूल नक्षत्र।

मूलिक (वि०) मूल सम्बन्धी।

मूलिकः (पु०) कंदमूल खाकर रहने वाला साधु।

मूलिन् (पु०) वृक्ष।

मूलिन (वि०) जड़ से उत्पन्न होने वाला।

मूली (स्त्री०) छिपकली।

मूलेरः (पु०) १ राजा। २ जटामाँसी। वालछड।

मूल्य (वि०) १ जड़ से उखाड़ने योग्य। २ खरीदने योग्य।

मूल्यं (न०) १ क़ीमत । दाम । २ मजदूरी । भाड़ा । वेतन । ३ लाभ । ४ पूँजी ।

मूष् (धा० परस्मै०) [मूषति, मूषित] चुराना । लूटना ।

मूषः (पु०) १ चूहा । २ झरोखा । रोशनदान ।

मूषकः (पु०) १ चूहा । २ चोर ।—अरातिः, (पु०) विलार ।—वाहनः, (पु०) श्री गणेश जी ।

मूषणं (न०) चोरी । डाँकाजनी ।

मूषा } (पु०) १ चूहा । २ चोर । सिरस का पेड़ ।
मूषिकः } ४ एक देश का नाम ।—अङ्कः,—अञ्चनः,—रथः, (पु०) श्री गणेश जी के नामान्तर ।—अदः, (पु०) विलार । बिल्ला ।—अरातिः, (पु०) बिलार । बिल्ला ।—उत्करः, (पु०) —स्थलं, (न०) छछूंदर का तोदा या टिब्बा । ढेरी ।

मूषा (स्त्री०) } १ चुहिया । २ सोना आदि
मूषिका (स्त्री०) } गलाने की घरिया ।

मूषिकारः (पु०) चूहा ।

मूंषी (स्त्री०) } मुसरिया । चूहा । मूंसा ।
मूषीकः (पु०) } चुहिया ।
मूषीका (स्त्री०) }

मृ (धा० आत्म०) [म्रियते, मृत] मरना । नष्ट होना ।

मृग् (धा० आत्म०) [मृग्यति, मृगयते, मृगित] १ खोजना । ढूँढ़ना । तलाश करना । २ शिकार करना । खदेड़ना । ३ लक्ष्य बाँधना । ४ परीक्षा करना । जाँचना । ५ माँगना । जाच करना ।

मृगः (पु०) १ चौपाया मात्र । २ हिरन । बारहसिंहा । ३ शिकार । ४ चन्द्रलाञ्छन । ५ कस्तूरी । मुश्क । ६ खोज । तलाश । ७ खदेड़ने की क्रिया । ८ अनुसन्धान । तहक़ीक़ात । ९ याचना । माँग । १० एक जाति का हाथी । ११ मानव जाति विशेष । १२ मृगशिरस नक्षत्र । १३ मार्गशीर्ष मास । १४ मकर राशि ।—अक्षी, (स्त्री०) हिरनी जैसी आँखों वाली स्त्री ।—अङ्कः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ पवन ।—अङ्गना, (स्त्री०) हिरनी ।—अजिनं, (न०) मृगचर्म ।—अण्डजा, (स्त्री०) मुश्क । कस्तूरी ।—अद्,—अदनः, = अन्तकः, (पु०) चीता । तेंदुआ । सेई ।—अधिपः,—अधिराजः, (पु०) शेर ।—अरातिः, (पु०) १ सिंह । २ कुत्ता ।—अरिः, (पु०) १ शेर । २ कुत्ता । ३ चीता । ४ वृक्ष विशेष ।—अशनः, (पु०) सिंह ।—आविध् (पु०) शिकारी ।—आस्यः, (पु०) मकर राशि ।—इन्द्रः, (पु०) १ शेर । २ चीता । ३ सिंह राशि ।—ईश्वरः, (पु०) १ सिर । २ सिंह राशि ।—उत्तमं,—उत्तमाङ्गम्, (न०) मृगशिरस् नक्षत्र ।—कानन, (न०) उद्यान ।—गामिनी, (स्त्री०) औषधि विशेष —जलं, (न०) मृगतृष्णा की लहरें ।—जीवनः, (पु०) बहेलिया । शिकारी ।—तृष्—तृषा,—तृष्णा,—तृष्णिका, (स्त्री०) जलाव । जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊसर मैदानों में कड़ी धूप पड़ने के समय होती है ।—दंशः,—दंशकः (पु०) कुत्ता ।—दृश्, (स्त्री०) मृगनयनी स्त्री ।—धूः, (पु०) शिकारी ।—द्विष् (पु०) सिंह ।—धरः, (पु०) चन्द्रमा ।—धूर्तः,—धूर्तकः, (पु०) शृगाल । गीदड़ ।—नयना, (स्त्री०) मृगनयनी स्त्री —नाभिः, (पु०) कस्तूरी । २ हिरन जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है ।—पतिः, (पु०) १ सिंह । २ नर हिरन । ३ चीता ।—पालिका, (स्त्री०) मृगनाभि ।—पिप्लुः (पु०) चन्द्रमा ।—प्रभुः, (पु०) सिंह ।—बधाजीवः, - वधाजीवः, (पु०) शिकारी ।—बन्धिनी, (स्त्री०) हिरन पकड़ने का जाल । मदः, (पु०) मुश्क ।—मन्द्रः, (पु०) हाथियों की जाति विशेष ।—मातृका, (स्त्री०) हिरनी ।—मुखः, (पु०) मकर राशि ।—यूथं (न०) हिरनों की टोली ।—राज्, (पु०) १ सिंह । २ चीता । ३ सिंहराशि ।—राजः, (पु०) १ सिंह । २ सिंहराशि । ३ चीता । ४ चन्द्रमा ।—रिपुः, (पु०) सिंह ।—रोमं, (न०) ऊन ।—लाञ्छनः, (पु०) चन्द्रमा ।—लेखा, (स्त्री०) हिरन जैसे चिन्ह जो चन्द्रमा में दिखलाई पड़ते

है।—लोचनः, (पु०) चन्द्रमा।—लोचना, —लोचनी, (स्त्री०) मृगनयनी स्त्री।—वाहनः, (पु०) चन्द्रमा।—व्याधः, (पु०) १ बहेलिया। शिकारी। २ तारागण विशेष। ३ शिव जी का नामान्तर।—शावः, (पु०) हिरन का बच्चा।—शिरः, (पु०) शिरस् (न०)—शिरा, (स्त्री०) पाँचवें नक्षत्र का नाम।—शीर्षं, (न०) मृगशिरस् नक्षत्र। —शीर्षः, (पु०) अगहन मास।—शीर्षन्, (पु०) मृगशिरस नक्षत्र।—श्रेष्ठः, (पु०) चीता।—हन्, (पु०) शिकारी।

मृगणा (स्त्री०) खोज। तलाश। अनुसन्धान।

मृगया (स्त्री०) शिकार।

मृगयुः (पु०) १ शिकारी। बहेलिया। २ गीदड़। ३ ब्रह्मा।

मृगव्यं (न०) १ शिकार। मृगया। २ लक्ष्य। निशाना। चाँद।

मृगी (स्त्री०) १ हिरनी। २ मिरगी रोग। ३ स्त्री जाति विशेष।—पतिः, (पु०) श्रीकृष्ण।

मृग्य (वि०) शिकार के लिये खोजने योग्य।

मृज् (धा० परस्मै०) [मार्जति] बजाना। शब्द करना।

मृजः (पु०) ढोल विशेष।

मृजा (स्त्री०) १ शुद्धि। सफाई। मार्जन। प्रक्षालन। २ शरीर का रंग।

मृजित (वि०) पोंछा हुआ। साफ किया हुआ। झाड़ा हुआ।

मृड. (पु०) शिव।

मृडा
मृडानी } (स्त्री०) पार्वती। दुर्गा। भवानी।
मृडी

मृण् (धा० परस्मै) १ वध करना। हत्या करना।

मृणालं (न०) कमल की जड़। मुहार। भसींड़ा।

मृणालं (न०)
मृणालः (पु०) } कमल का डंठल जिसमें फूल लगा रहता है। कमलनाल।

मृणालिका (स्त्री०)
मृणाली (स्त्री०) } कमल की डंठी। कमलनाल।

मृणालिन् (पु०) कमल।

मृणालिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा। २ कमल का ढेर। ३ स्थान जहाँ कमल बहुत होते हों।

मृत (व० कृ०) १ मरा हुआ। २ व्यर्थ। निर्गुण। ३ भस्म किया हुआ। फूंका हुआ।—अंगम्, (न०) मुर्दा।—अण्डः, (पु०) सूर्य।—अशौचं, (न०) किसी गोत्री या वंश वाले के मरने से लगा हुआ सूतक।—उद्भवः, (पु०) समुद्र।—कल्प, (वि०) मृतप्राय। बेहोश। अचेत।—गृहं, (न०) समाधि। कब्र।—दारः, (पु०) रड़ुआ।—निर्यातकः, (पु०) मुर्दा ढोने वाला।—मत्तः,—मत्तकः, (पु०) गीदड़।—संस्कारः, (पु०) मृतक के क्रिया कर्म।—सञ्जीवन, (वि०) मुर्दे को जिलाने वाला।—सञ्जीवनं, (न०)—सञ्जीवनी, (स्त्री०) मुर्दे को जिलाने की क्रिया।—सूतक, (वि०) मृत बालक जनने वाली।—स्नानं, (न०) किसी भाई बंधु के मरने पर किया जाने वाला स्नान।

मृतं (न०) १ मृत्यु। २ भिक्षान्न।

मृतकं (न०)
मृतकः (पु०) } १ मुर्दा। मुर्दा की लाश। (न०) २ मृतक सूतक।—अन्तकः, (पु०) सियार। गीदड़।

मृतण्डः (पु०) सूर्य।

मृतालकं (न०) एक प्रकार की मिट्टी।

मृतिः (स्त्री०) मृत्यु। मौत।

मृत्तिका (स्त्री०) १ मिट्टी। २ ताज़ी खोदी हुई मिट्टी। ३ मिट्टी जिसमें सुगन्धि आती है।

मृत्युः (पु०) १ मौत। २ यमराज। ३ ब्रह्मा। ४ विष्णु। ५ माया। ६ काली। ७ कामदेव।—तूर्य, (न०) ढोल जो किसी के मृतक क्रिया कर्म के समय बजाया जाय।—नाशक, (पु०) पारा।—पः, (पु०) शिवजी का नाम।—पाश (पु०) यमराज का फंदा।—पुष्पः,

(पु०) गन्ना । ऊख । ईख ।—प्रतिबद्ध, (वि०) मरणशील । मर्त्य ।—फला,—फली, (स्त्री०) केला ।—बीजः,—वीजः, (पु०) बाँस ।—राज, (पु०) यमराज ।—लोकः, (पु०) १ मर्त्यलोक । २ यमलोक ।—वञ्चनः, (पु०) १ शिवजी । २ जंगली कौआ । वनकाक ।—सूतिः, (स्त्री०) कैकड़े की मादा । यह अँडे देती है और अँडे देते ही मर जाती है ।

मृत्युंजयः, मृत्युञ्जयः (पु०) १ वह जिसने मौत को जीत लिया हो । २ शिवजी का एक नाम ।

मृत्सा, मृत्स्ना (स्त्री०) १ मट्टी । २ अच्छी मट्टी । ३ सुगन्धि युक्त मट्टी ।

मृद् (धा० परस्मै०) [मृद्गाति, मृदित] १ निचोड़ना । दबाना । मलना । २ कुचलना । पैरों से रूधना । कुचल कुचल कर टुकड़े २ कर डालना । नाश कर डालना । मार डालना । ३ रगड़ना । घिसना । स्पर्श करना । ४ भाड़ डालना । रगड़ कर साफ कर डालना ।

मृद् (स्त्री०) १ मिट्टी । मृत्तिका । २ मिट्टी का ढेला । ३ मिट्टी का ढीला । ४ एक प्रकार की गन्धदार मिट्टी ।—करः, (पु०) कुम्हार ।—कांस्यं, (न०) मिट्टी का बरतन ।—गः, (पु०) मछली विशेष ।—चयः, (=मृच्चयः,) (पु०) मिट्टी का ढेर ।—पचः, (पु०) कुम्हार ।—पात्रं,—भाण्डं, (न०) मिट्टी के बने बरतन ।—पिण्डः, (पु०) मिट्टी का ढेला ।—लोष्टः, (पु०) मिट्टी का ढेला ।—शकटिका, (= मृच्छकटिका) मिट्टी की बनी छोटी गाड़ी । मिट्टी का बना गाड़ी का खिलौना ।

मृदंगः, मृदङ्गः (पु०) १ मृदङ्ग । ढोलक विशेष । २ बाँस ।—फलः, (पु०) कटहल का पेड़ ।

मृदर (वि०) १ चचल । चपल । खेलाड़ी । २ कच्चा । उड़ाऊ । उदन ट्टू ।

मृदा देखो मृद् ।

मृदित (व० कृ०) १ माया हुआ । निचोड़ा हुआ । पीसा हुआ । रूटा हुआ । मला हुआ ।

मृदिनी (स्त्री०) कोमल या अच्छी मिट्टी ।

मृदु (वि०) [स्त्री०—मृदु या मृद्वी,] १ कोमल । नरम । मुलायम । २ निर्बल । कमज़ोर । ४ परमिताचारी ।—अङ्गम्, (न०) टीन । जस्ता ।—अङ्गी (स्त्री०) कोमलाङ्गी स्त्री ।—उत्पलं, (न०) कोमल नीला कमल ।—कार्ष्णायसं (न०) सीसा । जस्ता ।—गमना, (स्त्री०) हंसी ।—पर्वकः, (पु०)—पर्वन्, (न०) सरपत । नरकुल ।—पुष्पः, (पु०) सिरस का पेड़ ।—भाषिन्, (वि०) मधुर भाषी । मीठा बोलने वाला ।—रोमन्, (पु०)—रोमकः, (पु०) खरगोश । खरा ।

मृदुः (पु०) शनिग्रह ।

मृदुलकं (न०) सुवर्ण । सोना ।

मृदुल (वि०) नम्र । कोमल । मुलायम ।

मृदुलं (न०) १ पानी । २ अगर काष्ठ विशेष ।

मृद्वी, मृद्वीका (स्त्री०) अंगूरों या दाखों का गुच्छा ।

मृध् (धा० उभय०) [मर्धति—मर्धते] नम होना या नम अथवा तर करना ।

मृधं (न०) युद्ध । लड़ाई ।

मृन्मय (वि०) मिट्टी का ।

मृश् (धा० परस्मै०) [मृशति, मृष्ट] १ स्पर्श करना । छूना । २ रगड़ना । मलना । ३ विचारना खयाल करना ।

मृष् (धा० परस्मै०) [मर्षति] छिड़कना । (उभय०-मर्षति, मर्षते) सहना । सहन करना ।

मृषा (स्त्री०) १ झूठ । ग़लत । असत्यता । झूठमूठ । २ व्यर्थ । निरर्थक । अनुपयोगी ।—अध्यायिन्, (पु०) सारस विशेष ।—अर्थक, (वि०) १ असत्य । २ वाहियात ।—अर्थकं, (न०) वाहियातपना । असम्भवत्व ।—उद्यं, (न०) झूठ । असत्य । झूठा बयान ।—ज्ञानं, (न०) अज्ञानता । भ्रम । भूल ।—भाषिन्—वादिन्, (पु०) झूठा । असत्य बोलने वाला ।—वाच,

(स्त्री०) असत्य वचन। व्यङ्ग्य।—वादः, (पु०) १ असत्य भाषण। असत्य। झूठ। २ अयथार्थ भाषण। चापलूसी। ३ व्यङ्ग्य।

मृषालकः (पु०) आम का पेड़।

मृष्ट (व० कृ०) १ साफ किया हुआ। पवित्र किया हुआ। २ मालिश किया हुआ। मला हुआ। ३ पकाया हुआ। ४ स्पर्श किया हुआ। ५ विचार किया हुआ। ६ स्वादिष्ट।

मृष्टिः (स्त्री०) १ सफाई। पवित्रता। २ पाक-क्रिया। ३ स्पर्श।

मे (धा० आत्म०) [मयते, मित] विनिमय करना। बदलौवल करना।

मेकः (पु०) बकरा।

मेकलः (पु०) एक पर्वत का नाम। इसको मेखल भी कहते हैं।—अद्रिजा, (स्त्री०)—कन्यका, (स्त्री०)—कन्या, (स्त्री०) नर्मदा नदी के नामान्तर।

मेखला, (स्त्री०) १ करधनी। तागड़ी। किङ्किणी। २ कमरबंद। इज़ारबंद। कमरपेटी। ३ कोई भी वस्तु जो दूसरी वस्तु के मध्यभाग में उसे चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो। ४ कटिसूत्र जो तीन लर का होता है और जिसे द्विजाति पहिनते हैं। ४ पहाड़ का उतार। ५ कूल्हा। कमर। ६ तलवार का परतला। ७ तलवार की मूठ में बंधी डोरी की गाँठ। ८ घोड़ा का जेरबंद। ९ नर्मदा नदी का नाम।-पदं, (न०) कूल्हा।—बन्ध, (पु०) कटिसूत्र धारण करने की क्रिया।

मेखलालः (पु०) शिव जी।

मेखलिन् (पु०) १ शिवजी का नाम। २ ब्रह्मचारी।

मेघं (न०) अबरक।

मेघः (पु०) १ बादल। २ समुदाय। ३ एक प्रकार की घास जिसमें सुगन्धि आती है।—अध्वन्, (पु०), —पथः, (पु०)—मार्गः, (पु०) अन्तरिक्ष।—अन्तः, (पु०) शरतकाल।—अरिः, (पु०) पवन।—अस्थि, (न०) ओला।—आख्यं, (न०) अबरक।—आगमः, (पु०) वर्षाऋतु।—आटोप:, (पु०) मेघों की घटा।—आडम्बर:, (पु०) मेघों की गर्जन।—आनन्दा, (स्त्री०) सारस विशेष। आनन्दिन्, (पु०) मोर।—आलोकः, (पु०) मेघों का दृष्टिगोचर होना।—आस्पदं, (न०) आकाश। अन्तरिक्ष।—उदक, (न०) वर्षा। वृष्टि।—कफः, (पु०) ओला।—कालः, (पु०) वर्षाऋतु।—गर्जनं (न०)—गर्जना, (स्त्री०) बादलों की गर्जन।—चिन्तकः, (पु०) चातक पक्षी।—जः (पु०) बड़ा मोती।—जाल, (न०) १ मेघ। घटा। २ अबरक।—जीवकः,—जीवनः, (पु०) चातक पक्षी।—ज्योतिस्, (पु०) बिजली।—डम्बरः, (पु०) मेघ गर्जन।—दीपः, (पु०) बिजली।—द्वारं, (न०) आकाश। व्योम।—नादः, (पु०) १ बादलों की गर्जन। २ वरुण का नामान्तर। ३ रावण के पुत्र इन्द्रजीत का नाम।—निर्घोषः, (पु०) बादलों की गर्जन।—पङ्क्तिः, (पु०) माला, (स्त्री०) मेघघटा।—पुष्पं, (न०) १ जल। २ ओला ३ नदी का जल।—प्रसवः, (पु०) जल।—भूति, (स्त्री०) बिजली।—मण्डलं, (न०) अन्तरिक्ष। आकाश।—माल,—मालिन्, (वि०) मेघाश्लिष्ट।—योनिः, (पु०) कोहरा। धूम।—रवः, (पु०) बादल की गर्जन।—वर्णा, (स्त्री०) नील का पौधा।—वर्त्मन्, (न०) आकाश।—वन्हिः, (पु०) बिजली।—वाहनः (पु०) १ इन्द्र। २ शिव।— विस्फूर्जितं, (न०) १ मेघों की गड़गड़ाहट। २ एक वर्णवृत्त का नाम। वेश्मन्, (न०) आकाश।—सारः, (पु०) चीनिया कपूर।—सुहृद्, (पु०) मयूर। मोर।—स्तनितं, (न०) बिजली। कड़क।

मेचक (वि०) काला। श्यामल।

मेचकं (न०) अन्धकार।

मेचकः (पु०) १ कालापन। २ श्यामलरंग। २ मोर की चन्द्रिका। ३ बादल। ४ धुआँ। ५ थन की ढेंपनी। स्तन के ऊपर की काली घुंडी। ६

रत्न विशेष ।—आपगा, (स्त्री०) यमुना का नाम ।

मेट्, मेड् } (धा० परस्मै०) [मेटति, मेडति] पागल होना । विक्षिप्त होना ।

मेडुला (स्त्री०) आँवले का वृक्ष ।

मेठः (पु०) १ मेढ़ा । २ महावत ।

मेठिः, मेथिः } (पु०) १ खंभा । २ खूँटा । थुनकिया ।

मेढ़ (न०) १ लिङ्ग । पुरुष की जननेन्द्रिय ।—चर्मन्, (न०) सुपाड़ी के ऊपर का चमड़ा । खलडी जो लिङ्ग के अग्रभाग को ढके रहती है । छेवर । छुछुरी ।—जः, (पु०) शिव ।—रोगः, (पु०) लिङ्ग सम्बन्धी रोग ।

मेढ़ः (पु०) मेढ़ा ।

मेढ़कः (पु०) १ बाँह । भुजा । २ लिङ्ग ।

मेंठः, मेण्ठः, मेंडः, मेण्डः } (पु०) महावत ।

मेढः, मेंढ़कः, मेण्ढकः } (पु०) मेढ़ा ।

मेथ् (धा० उभय०) [मेथति, मेथते] १ मिलना । २ आलिङ्गन करना । ३ (आत्मने०) गालियाँ देना । ४ जानना । समझना । ५ घायल करना । मार डालना ।

मेथिका, मेथिनी } (स्त्री०) एक प्रकार की घास ।

मेद (पु०) १ चर्बी । २ वर्णसङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति मनुस्मृति के अनुसार वैदेहिक पुरुष और निषाद जाति की स्त्री से हो । ३ एक नाग का नाम ।—जं, (न०) एक प्रकार का गूगल ।—भिल्लः, (पु०) एक अन्त्यज जाति विशेष ।

मेदक (पु०) अर्क जो शराब खींचने के काम में आता है ।

मेदस् (न०) १ चर्बी । वसा । शरीर स्थित सप्त धातुओं में इसकी गणना है और यह उदर में इकट्ठी होती है । २ स्थूलता । मोटाई या चरबी बढ़ने का रोग ।—अर्बुदं, (न०) मेद युक्त गाँठ या गिल्टी जिसमें पीड़ा हो ।—कृत्, (पु० न०) माँस ।—ग्रन्थिः, (पु०) मेदयुक्त गाँठ ।—जं, —तेजस् (न०) हड्डी ।—पिण्डः, (पु०) चर्बी का गोला ।—वृद्धिः, (स्त्री०) १ मेद की बाढ़ । चर्बी की वृद्धि । मोटाई । २ अण्डवृद्धि ।

मेदस्विन् (वि०) १ मौटा । स्थूल । २ बलवान । रोबीला ।

मेदिनी (स्त्री०) १ पृथिवी । २ ज़मीन । भूमि । धरती । ३ स्थान । स्थल । ४ एक संस्कृत कोश का नाम (मेदिनीकोश) ।—ईशः, —पतिः, (पु०) राजा ।—द्रवः, (पु०) धूल । गर्दा ।

मेदुर (वि०) १ चर्बी । २ स्निग्ध । चिकना । कोमल । ३ गाढ़ा । सघन ।

मेदुरित (वि०) गाढ़ा किया हुआ । घना बनाया हुआ ।

मेद्य (वि०) १ मौटा । २ गाढ़ा । सघन ।

मेध देखो मेथ् ।

मेधः (पु०) १ यज्ञ । २ यज्ञीय पशु । यज्ञ में बलि दिया जानेवाला पशु ।—जः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

मेधा (स्त्री०) १ बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति । धारणा शक्ति । २ बुद्धि । धी । ३ सरस्वती का रूप विशेष । ४ यज्ञ ।—अतिथिः, (पु०) कई लोगों के नाम । यथा—१ काण्ववंश उद्भव एक ऋषि जो ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १२—३२ सूक्तों के द्रष्टा थे । २ कण्व मुनि के पिता । ३ महावीर स्वामी के पुत्र जिनकी बनायी मनुसंहिता की टीका प्रसिद्ध है । ४ प्रियव्रत के पुत्र और शाकद्वीप के अधिपति । ५ कर्दम प्रजापति के पुत्र ।—रुद्रः, (पु०) कालिदास की एक उपाधि ।—मेधावत् (वि०) बुद्धिमान । धीमान ।

मेधाविन् (वि०) १ तीव्र स्मरणशक्ति वाला । २ बुद्धिमान् । धीमान् । (पु०) १ विद्वान् पण्डित । २ तोता । ३ नशीला पेय पदार्थ विशेष ।

मेधि देखो मेथि ।

मेथिका / मेथी (स्त्री०) मेहदी ।

मेध्य (वि०) १ यज्ञ के योग्य । २ यज्ञ सम्बन्धी । यज्ञीय । ३ पवित्र ।

मेध्यः (पु०) १ बकरा । २ खदिर का वृक्ष । ३ यव । जौ । जवा ।

मेध्या (स्त्री०) कई एक पौधों का नाम ।

मेनका (स्त्री०) १ शकुन्तला की माता एक अप्सरा का नाम । २ हिमालय की पत्नी का नाम ।—आत्मजा, (स्त्री०) पार्वती का नाम ।

मेना (स्त्री०) १ हिमालय की पत्नी का नाम । २ एक नदी का नाम ।

मेनादः (पु०) १ मयूर । मोर । २ बिल्ली । ३ बकरा ।

मेप् (धा० आत्म०) [मेपते] जाना ।

मेय (वि०) १ नापने योग्य । नापने का । २ वह जिसका तख़मीना या अनुमान किया जा सके । ३ ज्ञेय । जानने योग्य ।

मेरुः (पु०) १ एक सुवर्णमय पर्वत जो सोने का कहा गया है और जिसके बारे में कहा जाता है कि इसके गिर्द समस्त ग्रह घूमा करते हैं । २ माला के बीच का गुरिया जिससे जप आरम्भ किया जाता है । मध्यहार के बीच का रत्न ।—धामन्, (पु०) शिवजी ।—यंत्रं (न०) बीजगणित का चक्र विशेष ।

मेलकः (पु०) यजबूर । चूना ।

मेलः (पु०) संयोग । समागम । मिलाप ।

मेलनं (न०) १ संयोग । मिलाप । २ जमावड़ा । ३ संमिश्रण ।

मेला (स्त्री०) १ समागम । २ सभा । समाज । ३ सुर्मा । ४ नील का पौधा । ५ स्याही । ६ (संगीत में) स्वरग्राम ।—अन्धुकः (पु०)—अम्बुः—(पु०)—नन्दः, (पु०)—नन्दा, (स्त्री०)—मंदा (स्त्री०) कलमदान । मसीपात्र । दावात ।

मेव् (धा० आत्म०) [मेवते] पूजन करना । सेवा करना । परिचर्या करना ।

मेषः (पु०) १ मेढ़ा । भेड़ा । २ मेषराशि ।—अण्डः (पु०) इन्द्र की उपाधि ।—कम्बलः, (पु०) ऊनी कंबल ।—पालः,—पालकः, (पु०) गड़रिया ।—मांसम् (न०) भेड़ का माँस ।—यूथं (न०) भेड़ों का गल्ला ।

मेषा (स्त्री०) छोटी इलायची ।

मेषिका / मेषी (स्त्री०) भेड़ ।

मेहः (पु०) १ पेशाब करने की क्रिया । २ पेशाब । मूत्र । ३ पेशाब की बीमारी । ४ मेढ़ा । ५ बकरा ।—घ्नी (स्त्री०) हल्दी ।

मेहनं (न०) १ मूत्र विसर्जन करने की क्रिया । २ मूत्र । ३ लिङ्ग ।

मैत्र (वि०) [स्त्री०—मैत्री] १ मित्र का । मित्र सम्बन्धी । २ मित्र का दिया हुआ । ३ सद्भावात्मक । ४ मित्र नामक देवता सम्बन्धी ।

मैत्रं (न०) १ दोस्ती । २ मलोत्सर्ग । ३ अनुराधा नक्षत्र । [मैत्रभं भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।]

मैत्रः (पु०) १ कुलीन ब्राह्मण । २ प्राचीन कालीन एक वर्णसङ्कर जाति । ३ गुदा । मलद्वार ।

मैत्रकं (न०) मित्रता ।

मैत्रावरुणः (पु०) १ वाल्मीकि जी का नाम । २ अगस्त्य जी का नाम । ३ सोलह ऋत्विजों में से पाँचवाँ ऋत्विज ।

मैत्रावरुणिः (पु०) १ अगस्त्य । २ वसिष्ठ । ३ वाल्मीकि ।

मैत्री (स्त्री०) १ दोस्ती । सद्भाव । २ घनिष्ट सम्बन्ध । ३ अनुराधा नक्षत्र ।

मैत्रेय (वि०) [स्त्री०—मैत्रेयी] मित्र सम्बन्धी । सद्भाव युक्त ।

मैत्रेयः (पु०) एक वर्णसङ्कर जाति विशेष।

मैत्रेयकः (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष।

मैत्रेयिका (स्त्री०) मित्रों की लडाई। मित्रयुद्ध।

मैत्र्यं (न०) दोस्ती। मेल मिलाप।

मैथिलः (पु०) मिथिला देश का राजा।

मैथिली (स्त्री०) सीता जी।

मैथुन (वि०) [स्त्री०—मैथुनी] १ जोड मिला हुआ। २ विवाह में जोडा मिला हुआ। ३ सम्भोग सम्बन्धी।

मैथुनं (न०) १ स्त्रीप्रसङ्ग। २ विवाह ३ संसर्ग। समागम।—ज्वरः, (पु०) मैथुनेच्छा की उद्विग्नता।—धर्मिन्, (वि०) सम्भोग क्रिया। —वैराग्यं, (न०) स्त्री प्रसङ्ग से अरुचि।

मैथुनिका (स्त्री०) विवाह द्वारा संयोग। वैवाहिक सम्बन्ध या मेल।

मैधावकं (न०) बुद्धि। प्रतिभा।

मैनाकः (पु०) मेना के गर्भ से और हिमालय के वीर्य से उत्पन्न पर्वत विशेष। केवल इसीके पर रह गये हैं।—स्वसृ, (स्त्री०) पार्वती।

मैनालः (पु०) मछुवा। धीमर।

मैंदः (पु०) एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।—हन्, (पु०) श्रीकृष्ण का नाम।

मैरेयं (न०), मैरेयः (पु०), मैरेयक (पु०), मैरेयकः (न०) गुड और धौ के फूलों की बनी हुई एक प्रकार की शराब जो प्राचीन काल में व्यवहृत की जाती थी।

मैलिन्दः (पु०) भ्रमर। भौंरा। मधुमक्षिका।

मोकं (न०) किसी जानवर का निकाला हुआ चाम।

मोक्ष् (धा० परस्मै० उभय०) [मोक्षति, मोक्षयति, मोक्षयते] १ मुक्त करना। छोड देना। रिहा कर देना। २ खोल देना। बंधन से रहित कर देना। ३ छीन लेना। खींच लेना। ४ फेंकना। घुमा कर मारना। ५ वहाना। गिराना।

मोक्षः (पु०) १ छुटकारा। स्वतंत्रता। २ बचाव। ३ मुक्ति। आवागमन या जन्ममरण से छुटकारा। ४ मृत्यु। ५ अधःपात। अधोगमन। गिर जाना। ६ ढील। बंधन से मुक्ति। ७ पात। बहाव। ८ छोडने की क्रिया। दागने की क्रिया। ९ बखेरने की क्रिया। १० उऋण होने की क्रिया। ११ ग्रहण के छूटने की क्रिया।—उपायः, (पु०) मोक्ष प्राप्ति के साधन।—देवः, (पु०) चीनी यात्री हुएन सांग की उपाधि।—द्वारं, (न०) सूर्य।—पुरी, (स्त्री०) काञ्ची की उपाधि।

मोक्षणं (न०) १ रिहाई। छुटकारा। २ मोचन। ३ वन्धन राहित्य। ४ त्याग। ५ वहाव। गिराव (जैसे आँसुओं का) ६ वरवाद कर देने की क्रिया।

मोघ (वि०) १ निष्फल। व्यर्थ। जिसका कुछ फल न हो। जिसमें कुछ लाभ न हो। असफल। २ निष्प्रयोजन। निरुद्देश्य। ३ त्यक्त। त्यागा हुआ। ४ सुस्त। काहिल।—कर्मन् (वि०) ऐसे कर्म में लगा हुआ जिसका फल कुछ भी न हो। —पुष्पा, (स्त्री०) वाँझ स्त्री।

मोघं (अव्यया०) व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

मोघः (पु०) घेरा। हाता। मेंड।

मोघोलिः (पु०) मेंड। हाता। बाड़ा।

मोचं (न०) केले का फल।

मोचः (पु०) १ केले का वृक्ष। २ शोभाञ्जन वृक्ष।

मोचकः (पु०) १ भक्त। साधु। २ मोक्ष। मुक्ति। ३ केले का पेड़।

मोचन (वि०) [स्त्री० मोचनी] छुड़ाने वाला। रिहा करने वाला।

मोचनम् (न०) १ रिहाई। छुटकारा। मोक्ष। २ जुआँ में से खोलने की क्रिया। ३ छोड़ने की क्रिया। ४ उऋण होने की क्रिया।—पट्टकः, (पु०) छन्नी। साफी। जल साफ करने का यंत्र।

मोचयितृ (वि०) छुड़ाने वाला। छुटकारा देने वाला।

मोचा (स्त्री०) १ केले का पेड़। २ कपास का पौधा।

मोचाटः (पु०) १ केले के फल का गूदा। केले का फल। २ चन्दन काष्ठ।

मोटकः (पु०), मोटकं (न०) गोली। (न०) भग्नकुशपत्र द्वय।

मोटनं (न०) } मलना । रगड़ना । पीसना ।
मोटनकं (न०) } कूटना कचरना ।

मोट्टायिते (पु०) साहित्य में एक हाव जिसमें नायिका अनुपस्थित प्रेमी के प्रति अपने आन्तरिक प्रेम को इच्छा न रहते भी प्रकट कर देती है ।

मोदः (पु०) १ आनन्द । हर्ष । २ सुगन्ध । खुशबू । —आख्यः, (पु०) आम का वृक्ष ।

मोदक (वि०) [स्त्री०—मोदका, मोदकी,] प्रसन्न कारक । हर्षप्रद ।

मोदकं (न०) } लड्डू । लड्डुआ । मिठाई विशेष ।
मोदकः (पु०) }

मोदकः (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से होती है ।

मोदनं (न०) १ हर्ष । आनन्द । २ प्रसन्न रखने की क्रिया । ३ मोम ।

मोदयन्तिका } (स्त्री०) वनमल्लिका । जंगली
मोदयन्ती } चमेली ।

मोदिन् (वि०) १ प्रसन्न । हर्षित । २ प्रसन्नकारक ।

मोदिनी (स्त्री०) १ अजमोदा । २ मल्लिका । ३ यूथिका । २ मुश्क । कस्तूरी । ३ मदिरा । शराब ।

मोरटः (पु०) १ एक पौधे की जड़ जो मीठी होती है । २ प्रसव से सातवीं रात के बाद का दूध ।

मोरटं (न०) गन्ने की जड़ ।

मोषः (पु०) १ चोर । डाँकू । २ चोरी । लूट । ३ लूटने या चुराने की क्रिया । ४ लूट या चोरी का माल ।—कृत, (पु०) चोर ।

मोषकः (पु०) चोर । डाँकू ।

मोषणं (न०) १ चुराने या लूटने की क्रिया । २ काटने की क्रिया । ३ नाश करने की क्रिया ।

मोषा (स्त्री०) चोरी । लूट ।

मोहः (पु०) १ भ्रम । भ्रान्ति । २ परेशानी । उद्विग्नता । घबड़ाहट । ३ अज्ञान । मूर्खता । ४ भूल । ग़लती । ५ आश्चर्य । विस्मय । ६सन्ताप । पीड़ा । ७ ताँत्रिक क्रिया विशेष जिससे शत्रु घबड़ा जाता है ।—कलिलं, (न०) माया का फंदा या जाल ।—निद्रा, (स्त्री०) उत्कट आत्मविश्वास । आवश्यकता से अधिक आत्मविश्वास । —रात्रिः, (स्त्री०) वह कालरात्रि जब सारा संसार नष्ट हो जायगा ।—शास्त्रं, (न०) झूठा सिद्धान्त जो भ्रम में डाले ।

मोहन (वि०) [स्त्री०—मोहनी] १ मोह उत्पन्न करने वाला । २ परेशान करने वाला । व्याकुल करने वाला । ३ माया में डालने वाला । ४ मनोमोहक । मन को मोहने वाला ।

मोहनं (न०) १ मोह लेने की क्रिया । २ परेशानी । ३ व्यामोह । ४ माया । भ्रम । ५ लालच । ६ स्त्रीप्रसङ्ग । ७ ताँत्रिक प्रयोग जिसके द्वारा शत्रु को घबड़ा देते हैं ।—अस्त्रं, (न०) प्राचीन कालीन अस्त्र विशेष, जिसके द्वारा शत्रु मूर्च्छित हो जाता था ।

मोहनः (पु०) १शिव जी का नामान्तर । २ कामदेव के पाँच बाणों में से एक का नाम । ३ धतूरा ।

मोहनकः (पु०) चैत्र मास ।

मोहित (व० कृ०) १ व्यामोह । २ परेशान । विकल । ३ भ्रम में पड़ा हुआ । मोह में पड़ा हुआ ।

मोहिनी (स्त्री०) १ एक अप्सरा का नाम । २ मोहने वाली स्त्री । ३विष्णु का एक रूप जो अमृत बाँटने के समय असुरों को मोहित करने के लिये उनको रखना पड़ा था । ३ चमेली विशेष ।

मौकलिः } (पु०) काक । कौआ ।
मौकुलिः }

मौक्तिकं (न०) मोती ।—अवली, (स्त्री०) मोतियों की लड़ी ।—गुंफिका, (स्त्री०) स्त्री जो मोती का हार बनाकर तैयार करे ।—दामन्, (न०) मोतियों की लर ।—शुक्तिः, (स्त्री०) मोती की सीप ।—सरः, (पु०) मोती का हार ।

मौक्यं (न०) गूंगापन । मूकत्व ।

मौख्यं (न०) मुख्यत्व । प्रधानता ।

मौखरिः (पु०) भारत के एक प्राचीन राजवंश का नाम ।

मौखर्य (न०) १ वातूलीपना । बक्कीपन । २ गाली । अपमान । तिरस्कार ।

मौग्ध्यं (न०) १ मूर्खता । मूढ़ता । २ सादगी । निर्दोषता । ३ मनोहरता । सौन्दर्य ।

मौचं (न०) केले का फल ।

मौंज / मौञ्ज (वि०) [स्त्री०—मौंजी,—मौञ्जी] मूंज तृण का बना हुआ ।

मौंजी / मौञ्जी (स्त्री०) मूंज का बना ब्राह्मण का कटि-सूत्र ।—बंधनं, (न०) यज्ञोपवीत सस्कार ।

मौढ्यं (न०) १ अज्ञानता । मूर्खता । २ लड़कपन ।

मौत्रं (न०) मूत्र ।

मौदकिकः (पु०) हलवाई ।

मौद्गलिः (पु०) काक । कौआ ।

मौद्गीन (वि०) मूंग बोने योग्य खेत ।

मौनं (न०) खामोशी । चुप्पी ।—मुद्रा, (स्त्री०) मौन भाव ।—व्रत, (न०) मौन धारण करने का व्रत ।

मौनिन् (वि०) [स्त्री०—मौनिनी] मौन व्रत धारण करने वाला । (पु०) मुनि । संन्यासी । साधु ।

मौरजिकः (पु०) ढोल बजाने वाला ।

मौर्ख्यम् (न०) मूर्खता । बेवकूफी ।

मौर्यः (पु०) एक राजवंश का नाम जिसका प्रथम राजा चन्द्रगुप्त था ।

मौर्वी (स्त्री०) १ कमान की डोरी । धनुष का रोदा । २ मूर्वा घास का बना क्षत्रिय के पहिनने योग्य कटिसूत्र ।

मौल (वि०) [स्त्री०—मौला—मौली] १ मौलिक । मूलोद्भूत । २ प्राचीन । पुराकालीन । ३ कुलीन वंशउत्पन्नभूत । ४ राजा का पुश्तैनी नौकर । पुश्तैनी ।

मौलः (पु०) पुश्तैनी दीवान ।

मौलि (वि०) सर्वोच्च । मुख्य । सर्वोत्तम ।

मौलिः (पु०) १ सिर । सीस । २ मुकुट । ३ किसी वस्तु का सर्वोच्च भाग । ४ अशोकवृक्ष ।

मौलिः (पु० या स्त्री०) १ मुकुट । ताज । कलंगी । २ चुटिया । शिखा । ३ केश विन्यास ।

मौलिः / मौली (स्त्री०) पृथिवी ।—मणिः, (पु०)—रत्नं, (न०) मुकुट का रत्न या जवाहर ।—मण्डनं (न०) सीसफूल । शिरोभूषण ।—मुकुटं (न०) किरीट । ताज ।

मौलिक (वि०) [स्त्री०—मौलिकी] १ मूलोद्भूत । २ मुख्य । प्रधान । ३ अपकृष्ट ।

मौल्यं (न०) क़ीमत । दाम । मोल ।

मौष्टा (स्त्री०) घुस्संघुस्सा ।

मौष्टिकः (पु०) गुंडा । बदमाश । कपटी । छलिया ।

मौसल (वि०) [स्त्री०—मौसली] १ मूसल के आकार का । २ मूसल से युद्ध में लड़ा हुआ । ३ मूसल की लड़ाई से सम्बन्ध युक्त ।

मौहूर्तः / मौहूर्तिकः (पु०) ज्योतिषी ।

म्ना (धा० परस्मै०) [मनति, म्नात] १ मन ही मन आवृत्ति करना । समझदारी से सीखना । ३ याद करना ।

म्नात (व० कृ०) १ दुहराया हुआ । २ सीखा हुआ । अध्ययन किया हुआ ।

म्रक्ष् (धा० परस्मै०) १ रगड़ना । २ ढेर करना । जमा करना ।

म्रक्षः (पु०) दम्भ । पाखंड ।

म्रक्षणं (न०) १ शरीर में उबटन या खुशबूदार कोई लेप लगाने की क्रिया । २ जमा या ढेर लगाने की क्रिया । ३ तेल । लेप ।

म्रद् (धा० आत्म०) (म्रदते) कूटना । पीसना । कुचरना ।

म्रदिमन् (पु०) १ कोमलता । २ निर्बलता ।

म्रुच् (धा० परस्मै०) [म्रोचती] जाना । चलना ।

म्रुंच / म्रुञ्च (धा० परस्मै०) [म्रुंचति] जाना ।

म्लक्ष् (धा० उभय०) [म्लक्षयति—म्लक्षते] काटना । विभाजित करना ।

म्लात (व० कृ०) १ कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ । २ थका हुआ । परिश्रान्त । ३ निर्बल । कमज़ोर । मूर्च्छित । ४ उदास । ग़मगीन । ५ गंदा । मैला ।—अंग, (वि०) निर्बल शरीर का । अंगी, (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।—मनस्, (वि०) उदास मन ।

म्लानिः (स्त्री०) १ मुरझाना । कुम्हलान । २ थकावट । ३ उदासी । गंदगी ।

म्लायत् } (वि०) कुम्हलाया हुआ । लटा हुआ ।
म्लायित् } दुबला ।

म्लास्नु (वि०) १ कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ । २ जो दुबला होता जाय । ३ थका हुआ ।

म्लिष्ट (वि०) १ अस्पष्ट कहा हुआ । अस्पष्ट । २ बर्बर । जंगली । ३ कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ ।

म्लिष्टं (न०) जंगली बोली । ऐसी बोली जो समझ में न आवे ।

म्लेच्छ् } (धा० परस्मै०) [म्लेच्छति, म्लिष्ट,
म्लेक्ष् } म्लेच्छित] अस्पष्ट रूप से बोलना । जंगलियों की तरह बोलना । अंडबंड बोलना ।

म्लेच्छं (न०) ताँबा ।

म्लेच्छः (पु०) जंगली जाति का मनुष्य । अनार्य जाति के लोग जो संस्कृत भाषा न बोलते हों और हिन्दू धर्मशास्त्रों को न मानते हों । विदेशी । २ जातिबहिष्कृत । जातिच्युत । बोधायन ने म्लेच्छ की परिभाषा यह बतलायी है :—

> गोमांसखादको यस्तु विरुद्धं बहु भाषते ।
> सर्वाचार विहीनश्च म्लेच्छ इत्यभिधीयते ॥

३ पापी । दुष्ट मनुष्य ।—आख्यं, (न०) ताँबा ।—आशः, (पु०) गेहूँ ।—आस्यं,—मुखं, (न०) ताँबा ।—कन्दः, (पु०) प्याज ।—जातिः, (स्त्री०) जंगली जाति । पहाड़ी जाति ।—देशः,—मण्डलः, (पु०) वह देश जिसमें म्लेच्छ रहते हों ।—भाषा, (स्त्री०) विदेशियों की भाषा ।—भोजनः, (पु०) गेहूँ ।—भोजनं, (न०) जौ । जव ।—वाच्, (वि०) विदेशी भाषा बोलने वाला ।

म्लेच्छित (व० कृ०) अस्पष्ट रूप से कहा हुआ ।

म्लेच्छितं (न०) १ विदेशी भाषा । २ व्याकरणविरुद्ध शब्द या बोली ।

म्लेट् } (म्लेटति, म्लेडति) पागल होना ।
म्लेड् }

म्लेव् (धा० आत्म०) [म्लेवते] सेवा करना । पूजा करना ।

म्लै (धा० परस्मै०) [म्लायति, म्लान] १ कुम्हलाना । मुरझाना । २ थक जाना । ३ उदास होना । ४ लट जाना । दुबला हो जाना । ५ अन्तर्धान होना । अदृष्ट होना ।

य

य—संस्कृत या नागरी वर्णमाला का २६ वाँ अक्षर । इसका उच्चारणस्थान तालू है । यह स्पर्शवर्ण और ऊष्मवर्ण के बीच का वर्ण कहा जाता है । इसी से यह अन्तःस्थ वर्ण कहा जाता है । इसके उच्चारण में कुछ आभ्यन्तर प्रयत्न के अतिरिक्त बाह्य प्रयत्न, यथा संवार और घोष अपेक्षित होते हैं । य वर्ण अल्पप्राण है ।

यः (पु०) १ जाने वाला । २ गाड़ी । ३ हवा । पवन । ४ सम्मिलन । ५ कीर्ति । ६ यव । जौ । ७ रोक । ८ बिजली । ९ त्याग । १० गण विशेष । ११ यम का नाम ।

यकन् (न०) यकृत् । जिगर । यकृत द्वारा शिराओं का रक्त परिष्कृत हुआ करता है । यह दाहिनी कोख में रहता है । इसे कालखण्ड भी कहते हैं ।—आत्मिका, (स्त्री०) कीट विशेष ।—उदरम्, (न०) जिगर की वृद्धि ।

यक्षः (पु०) देवयोनि विशेष जिनके राजा कुबेर हैं। ये लोग ही कुबेर के धनागारों की रखवाली किया करते हैं। २ आत्मा विशेष। ३ इन्द्र के राजभवन का नाम। ४ कुबेर का नाम।—अधिपः, (पु०) —अधिपतिः, (पु०)—इन्द्रः, (पु०) यक्षों के राजा कुबेर।—आवासः, (पु०) वट का वृक्ष। —कर्दमः, (पु०) एक प्रकार का अङ्गलेप जिसमें कपूर, अगरु, कस्तूरी और ककोल समान भाग में पड़ते हैं। यह अङ्गलेप यक्षों को परमप्रिय है।—ग्रहः, (पु०) १ वह जिस पर यक्ष अथवा अन्य किसी प्रेतादि का ऊपरी फेरा हो। २ पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह। कहते हैं कि, जब इस ग्रह की दशा का आक्रमण होता है, तब वह मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है।—तरुः, (पु०) वट वृक्ष।—धूपः, (पु०) गूगल। लोबान।—रसः, (पु०) एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ। —राज्, (पु०) कुबेर का नाम।—रात्रिः, (स्त्री०) किसी के मतानुसार कार्तिकी अमावास्या और किसी के मतानुसार कार्तिकी पूर्णिमा यक्षरात्रि है।—वित्तः, (पु०) वह जिसके पास विपुल धन राशि तो हो, पर वह उसमें से व्यय एक कौड़ी भी न करे।

यक्षिणी (स्त्री०) १ यक्ष की स्त्री। २ कुबेर की पत्नी का नाम। ३ दुर्गा की एक अनुचरी का नाम। ४ अप्सरा विशेष जो मर्त्यलोक वासियों से सम्बन्ध रखती है।

यक्षी (स्त्री०) यक्ष की स्त्री।

यक्ष्मः (पु०) } क्षयी नामक रोग। तपेदिक।—
यक्ष्मन् (पु०) } ग्रहः, (पु०) क्षयीरोग का आक्रमण।—ग्रस्त, (वि०) क्षय का रोगी।—घ्नी, (स्त्री०) अँगूर।

यक्ष्मिन् (वि०) क्षयी रोग से पीड़ित।

यज् (धा० उभय०) [यजति, यजते, इष्ट] १ यज्ञ करना। २ बलिदान करना। चढ़ाना। नैवेद्य रखना। ३ पूजन करना। [णिजन्त,—याजयति, —याजयते] १ यज्ञ करवाना। २ यज्ञ में सहायता देना।

यजत्रः (पु०) अग्निहोत्री।

यजत्रं (न०) अग्निहोत्र के अग्नि को सुरक्षित रखने की क्रिया।

यजनं (न०) १ यज्ञ करने की क्रिया। २ यज्ञ। ३ यज्ञ करने का स्थान।

यजमानः (पु०) १ वह व्यक्ति जो यज्ञ करता हो। दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणों द्वारा यज्ञादि क्रिया कराने वाला व्रती। यष्टा। २ धनी। संरक्षक। आश्रयदाता। ३ अपने घर का बड़ा बूढ़ा।

यजिः (पु०) १ यज्ञ करने वाला। २ यज्ञ करने की क्रिया। ३ यज्ञ।

यजुस् (न०) १ यज्ञीय मंत्र। २ यजुर्वेद संहिता। वे मंत्र जो यज्ञ के समय पढ़े जायँ। ३ यजुर्वेद का नाम।—वेदः, (पु०) वेदत्रयी में से दूसरा वेद। यजुर्वेद की मुख्य दो शाखाएँ हैं—तैत्तरी या कृष्णयजुर्वेद और वाजसनेयि अथवा शुक्ल यजुर्वेद।

यज्ञः (पु०) १ यज्ञ। २ पूजन की क्रिया। ३ अग्नि का नाम। ४ विष्णु का नामान्तर।—अङ्गः, (पु०) १ गूलर का पेड़। २ विष्णु का नामान्तर —अरिः, (पु०) शिवजी का नाम।—अशनः, (पु०) देवता।—आत्मन्, (पु०)—ईश्वरः, विष्णुभगवान्।—उपवीतं, (न०) जनेऊ।—कर्मन्, (वि०) यज्ञीय कोई कर्म।—कीलकः, (पु०) वह खंभा जिसमें यज्ञीय पशु बाँधा जाता है।—कुण्डं, (न०) हवनकुण्ड। अग्निकुण्ड।—कृत्, (पु०) १ विष्णु। २ यज्ञ कराने वाला ऋत्विज।—क्रतुः, (पु०) १ यज्ञीय कर्म विशेष। २ यज्ञीय मुख्य कर्म। ३ विष्णु का नाम।—घ्नः, (पु०) राक्षस जो यज्ञ कार्यों में बाधा दे।—पतिः, (पु०) विष्णुभगवान्।—पशुः, (पु०) १ वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय। २ घोड़ा।—पुरुषः,—फलदः, (पु०) श्री विष्णुभगवान्।—भागः, (पु०) १ यज्ञ का अंश जो देवताओं को दिया जाता है। २ देवता।—भुज, (पु०) देवता।—भूमिः, (स्त्री०) वह स्थान जहाँ यज्ञ किया जाय।—भृत्, (पु०)

विष्णु का नाम।—भोक्तृ, (पु०) विष्णु का नाम।—रसः, (पु०)-रेतस् (न०) सोम। —वराहः, (पु०) भगवान् विष्णु का वराहावतार।—वल्लिः,—वल्ली (स्त्री०) सोमवल्ली या लता।—वाटः, (पु०) यज्ञमण्डप का हाता। -वाहनः, (पु०) श्री विष्णु। -वृक्षः (पु०) वटवृक्ष।—शरणं, (न०) यज्ञमण्डप।—शाला, (स्त्री०) यज्ञमण्डप।—शेषः, (पु०)—शेष, (न०) यज्ञ करने के बाद बचा हुआ उपस्कर।—श्रेष्ठा, (स्त्री०) सोम लता।—सदस्, (न०) यज्ञकृत्य में भाग लेने वाले जन।—सम्भारः, (पु०) यज्ञ की सामग्री।—सारः, (पु०) श्री विष्णु भगवान।—सिद्धिः (स्त्री०) यज्ञ की समाप्ति।—सूत्रं, (न०) यज्ञोपवीत।—सेनः, (पु०) राजा द्रुपद की उपाधि।—स्थाणुः, (पु०) यज्ञस्तम्भ।—हन्, (पु०)—हनः, (पु०) शिव।

यज्ञिकः (पु०) पलास का पेड़।

यज्ञिय (वि०) १ यज्ञ का। यज्ञ सम्बन्धी। यज्ञकर्म के योग्य। २ पवित्र। ३ पूजनीय। अर्चनीय। ४ धर्मात्मा। भक्त।

यज्ञियः (पु०) १ देवता। २ द्वापर युग।—देशः, (पु०) वह देश जहाँ यज्ञ करना चाहिये। मनुस्मृति में इस देश की व्याख्या इस प्रकार की गयी है:—

> कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः।
> स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशः तत परः॥

—शाला, (स्त्री०) यज्ञमण्डप।

यज्ञीय (पु०) यज्ञ सम्बन्धी।

यज्ञीयः (पु०) गूलर का पेड़।

यज्ञीयब्रह्मपादपः (पु०) विकङ्कत नामक पेड़।

यज्वन् (वि०) [स्त्री०—यज्वरी] यज्ञ करने वाला। पूजन करने वाला। (पु०) १ वह जो वैदिक विधान से यज्ञ करता हो। श्री विष्णु भगवान्।

यत् (धा० आत्म०) [यतते, यतित] १ प्रयत्न करना। उद्योग करना। कोशिश करना। २ उत्कण्ठित होना। लालायित होना। ३ परिश्रम करना। ४ सतर्क होना।

यत (व० कृ०) १ रोका हुआ। काबू में किया हुआ। संयत। २ परिमित।—आत्मन्, (वि०) जितेन्द्रिय।—आहार, (वि०) मिताहारी।—इन्द्रिय, (वि०) इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला। जितेन्द्रिय। पवित्र। धर्मात्मा।—चित्त,—मनस्,—मानस्, (वि०) मन को वश में रखने वाला।—वाच्, (वि०) वाणी को वश में रखने वाला। मौनी।—व्रत (वि०) व्रत रखने वाला। सङ्कल्प को पूरा करने वाला।

यतं (न०) हाथी को पैर की एड़ से चलाने की क्रिया।

यतन (न०) प्रयत्न। उद्योग।

यतम (वि०) } यतमत् (न०) } बहुतों में से कौन या कौन सा।

यतर (वि०) } यतरत् (न०) } दो में से कौन सा या कौन।

यतस् (अव्यया०) १ कहाँ से। किससे। किस स्थान से। किस दिशा से। २ इस कारण—इसलिये। ३ क्योंकि। चूंकि। ४ किस समय से। जब से। ५ कि जिससे।

यतिः (सर्वनाम. विशेषण) जितने। जितनी बार। कितने।

यतिः (स्त्री०) १ रोक। थाम। नियंत्रण। २ बंदी। ३ पथप्रदर्शन। ४ सङ्गीत में स्थायी। ५ पाठच्छेद। छन्द में विरामस्थान। ६ विधवा।

यतिः (पु०) संन्यासी, जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर रखा हो और जो सांसारिक जंजाल से विरक्त हो।

यतित (वि०) यत्नित। यत्न किया हुआ। जिसके लिये उद्योग किया गया हो।

यतिन् (पु०) यती। संन्यासी।

यतिनी (स्त्री०) विधवा।

यत्नः (पु०) १ यत्न। उद्योग। २ धुन। परिश्रम। दृढ़ता। ३ सावधानी। सतर्कता। मनोयोग। उत्साह। जागरितावस्था। ४ कष्ट। कठिनाई।

यत्र (अव्यया०) जहाँ। कहाँ। जिस स्थान में। किधर। २ कब जैसे "यत्र काल"। ३ चूंकि। क्योंकि।

यत्रत्य (वि०) किस स्थान का। किस स्थान का रहने वाला।

यथा (अव्यया०) १ जिस प्रकार। जैसे। ज्यों। २ उदाहरणार्थ।—कामिन्, (वि०) स्वतंत्र। स्वेच्छाचारी।—कालः, (पु०) ठीक समय। उचित समय पर।—कालं, (अव्यया०) ठीक समय पर।—क्रम,—क्रमेण, (अव्यया०) तरतीबवार। क्रमशः। क्रमानुसार।—क्षमं, (अव्यया०) यथाशक्य। अपनी सामर्थ्य भर —जात, (वि०) मूर्खतापूर्ण। बेहूदा। वाहियाद। मूढ़।—ज्ञानं, (अव्यया०) अपनी समझ या जानकारी से सर्वोत्तम।—तथ, (वि०) १ सत्य। सही। २ ठीक। बिल्कुल ठीक।—तथं, (न०) किसी वस्तु का विस्तृत वर्णन। ब्योरेवार या विगत वार वर्णन।—तथं, (अव्यया०) १ ठीक तौर से। सही तौर से। २ उचित रीति से। ज्यों का त्यों।—दिक्,—दिशं, (अव्यया०) हर ओर। हरतरफ।—निर्दिष्ट, (वि०) जैसा कि पहले कहा जा चुका है।—न्यायं, (अव्यया०) ठीक ठीक। सही सही।—पुरं, (अव्यया०) जैसा कि पहिले। जैसा कि पूर्व अवसरों पर।—पूर्व, (वि०) —पूर्वक, (वि०) १ जैसा पहिले था वैसा ही। पहले की नाईं। पूर्ववत्। ज्यों का त्यों।—भागं, (न०) —भागशः, (अव्यया०) भाग के अनुसार। हिस्से के मुताविक। यथोचित।—योग्य, (वि०) उपयुक्त। जैसा चाहिये वैसा। यथोचित। मुनासिब।—विधि, (अव्यया०) विधि के अनुसार।—शक्ति, —शक्त्या (अव्यया०) सामर्थ्यानुसार।—शास्त्रं, (न०) शास्त्रानुसार। शास्त्र के मुताविक।—श्रुतं, (अव्यया०) १ जैसा सुना या जैसा कहा गया। २ वेद के अनुसार।—संख्यं, (न०) अलङ्कार विशेष।—

"यथासंख्यं क्रमेणैव क्रमिकाणां समन्वयः॥"

—काव्यप्रकाश।

—संख्यं,—संख्येन, (अव्यया०) संख्या के अनुसार।—समयं, (अव्यया०) १ ठीक समय पर। २ इकरार के मुताविक। ठहराव के अनुसार। चलन के अनुसार।—सम्भव, (वि०) जहाँ तक हो सके। जितना मुमकिन हो।—स्थानं, (न०) उपयुक्त स्थान।—स्थानं, (अव्यया०) ठीक जगह पर।

यथावत् (अव्यया०) ज्यों का त्यों। जैसा था वैसा ही। २ नियमानुसार।

यद् (सर्वनाम विशेषण) कर्त्ता एकवचन पुल्लिङ्ग यः। स्त्री० या। न० यत् अथवा यद्) कौन। कौनसा। क्यों।

यदा (अव्यया०) १ जिस समय। जिस वक्त। जब। २ यदि। अगर। ३ जब कि। क्योंकि।

यदि (अव्यया०) १ अगर। जो। २ अथवा। ३ बशर्ते कि। जब कि। ४ कदाचित्।

यदुः (पु०) देवयानी से महाराज ययाति का ज्येष्ठ पुत्र और यादवों का पूर्वपुरुष। प्राचीन कालीन एक प्रसिद्ध राजा।—कुलोद्भवः,—नन्दनः,—श्रेष्ठः, (पु०) श्रीकृष्ण के नामान्तर।

यदृच्छा (स्त्री०) १ मनमानापन। स्वेच्छाचरण। २ इत्तिफाकिया। अचानचक।—अभिज्ञः, (पु०) अपने मन से (किसी के कहे बिना ही) गवाही देने वाला साक्षी।—संवादः, (पु०) १ आकस्मिक वार्त्तालाप। २ स्वतः प्रवृत्त आलाप। आकस्मिक सम्मिलन।

यदृच्छातस् (अव्यया०) १ आकस्मिक। इत्तिफाकिया।

यन्तृ (पु०) १ परिचालक। शासनकर्त्ता। नियन्ता। २ हाँकने वाला (हाथी का, गाड़ी का) ३ महावत या हाथी का सवार।

यंत्र् (धा० उभय०) [यंत्रति—यंत्रते, यंत्रयति—यंत्रयते] रोकना। निग्रह करना। विवश करना। बंधन में डालना।

यंत्रम् (न०) १ निग्रह करने वाला। टेक। थूनी। खम्भ। २ बेड़ी। बंधन। रस्सी। चमड़े का तस्मा। ३ जर्राही औज़ार। विशेष कर वह जो गुठ्ठिल या भौथरा हो। ४ किसी कार्य विशेष के

लिये बनाई हुई कोई कल या औज़ार । ५ चटख़नी । ताला । ६ संयम । दमन । बल । जोर । ७ तावीज़ । कवच ।—उपलः, (पु०) चक्की । —करण्डिका, (स्त्री०) बाजीगरों का पिटारा, जिसके द्वारा वे तरह तरह के करतब करके दिखलाते हैं ।—कर्मकृत, (पु०) कारीगर । शिल्पी । —गृहं, (न०) १ कोल्हू ।। २ पुतलीघर ।—चेष्टितं, (न०) जादूगरी का कोई करतब ।—नालं, (न०) वह नल जिसके द्वारा कूपादि से जल निकाला जाय ।—पुत्रकः, (पु०)—पुत्रिका, (स्त्री०) कल से नाचने वाला गुड्डा या गुड़िया । —मार्गः, (पु०) नहर । बंबा ।

यंत्रकं (न०) १ पट्टी । २ खराद । चक्रयंत्र ।

यंत्रकः, (पु०) १ वह जो कलपुर्ज़ों की पूरी पूरी जानकारी रखता हो । २ वह शिल्पी जो यंत्रादि के द्वारा वस्तुएं बनाता हो ।

यंत्रणम् (न०) } यंत्रणा (स्त्री०) } १ नियंत्रण । २ दमन । ३ बंधन । ४ बरजोरी । बलात् । विवशता । कष्ट । पीड़ा । ५ रक्षण । चौकसी । ६ पट्टी ।

यंत्रणी } यंत्रिणी } (स्त्री०) पत्नी की छोटी बहिन । छोटी साली ।

यंत्रिन् (वि०) १ जीन या चारजामा कसा हुआ (जैसे घोड़ा) । २ पीड़ाकारक । ३ कवच या तावीज़ धारी ।

यम् (धा० परस्मै०) [यच्छति, यत] दमन करना । निग्रह करना । रोकना । नियंत्रण करना । वशवर्ती करना । दबाना । बंद करना । २ देना । भेंट करना । प्रदान करना ।

यमः (पु०) १ दमन । निग्रह । २ नियंत्रण । ३ आत्मसंयम । ४ चित्त को धर्म में स्थिर रखने वाले कर्मों का साधन । स्मृतिकारों ने यमों का निरूपण इस प्रकार किया है :—

ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं सत्यमकल्कता ।
अहिंसाऽस्तेय माधुर्ये दमश्चेति यमाः स्मृताः ॥
याज्ञवल्क्यः ।

अथवा

आनृशंस्य दया सत्यमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
प्रीतिः प्रसादो माधुर्य मार्दवं च यमा दश ।

कहीं कहीं पर पाँच ही यमों का उल्लेख है । यथाः—

अहिंसा सत्यवचनं ब्रह्मचर्यमकल्कता ।
अस्तेयमिति पञ्चैते यमाख्यानि व्रतानि च ।

५ योग के आठ अंगों में से प्रथम । [योग के आठ अंग ये है :—
१ यम । २ नियम । ३ आसन । ४ प्राणायाम । ५ प्रत्याहार । ६ धारणा । ७ ध्यान और ८ समाधि ।] ६ यमराज । धर्मराज । ७ एक साथ उत्पन्न बच्चों का जोड़ा । ८ जोड़े में का या दो में से एक ।—अनुगः,—अनुचरः, (पु०) यमकिङ्कर । यमदूत ।—अन्तकः, (पु०) १ शिव । २ यमराज ।—किङ्करः, (पु०) यमराज के दूत । —कीलः, (पु०) श्री विष्णु भगवान् ।—ज, (वि०) जुलही जुलहा । जो जुट्ट मे उत्पन्न हुए हो ।—दूतः, (पु०) १ यमराज का दूत । मौत । २ काक ।—द्वितीया, (स्त्री०) कार्तिक शुक्ला २या जब बहिनें अपने भाइयों को भोजन कराती हैं । भैयादूज । भ्रातृद्वितीया ।—धानी, (स्त्री०) यमपुरी ।—भगिनी, (स्त्री०) यमुना नदी का नाम ।—यातना, (स्त्री०) वह दण्ड जो यमराज द्वारा पापी जीवों को मृत्यु के अनन्तर दिया जाता है । [यह शब्द प्रायः घोर अत्याचार प्रदर्शन करने के लिये प्रयुक्त किया जाता है ।]—राज्, (पु०) यम ।—सभा, (स्त्री०) यमराज की कचहरी ।—सूर्यं, (न०) ऐसा मकान जिसमें दो बड़े कमरे हों । इनमें से एक का मुह पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर होता है ।

यमं (न०) जोड़ा । जुट्ट ।

यमकं (न०) १ दुहरी पट्टी । २ एक प्रकार का शब्दालङ्कार या अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द कई बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न भिन्न होते हैं ।

यमकः (पु०) १ संयम । दमन । २ यमज । जोड़े । ३ यम ।

यमन (वि०) [स्त्री०—यमनी] दमन करने वाला। संयमी। निग्रह करने वाला।

यमन (न०) १ निग्रह अथवा दमन करने की क्रिया। २ समाप्ति। विश्राम। ३ प्रतिबंध। बंधन।

यमनः (न०) यमराज। धर्मराज।

यमनिका (स्त्री०) पर्दा। नाटक का पर्दा। कनात।

यमल (वि०) जोड़ा। यमज। जुट्ट में का एक।

यमलं (न०) } जोड़ा। जुट्ट।
यमली (स्त्री०) }

यमलः (पु०) दो की संख्या।

यमलौ (द्विवचन) जोड़ा।

यमवत् (वि०) आत्मसंयमी। जितेन्द्रिय।

यमसात् (अव्यया०) यमराज के हाथ में।

यमुना (स्त्री०) एक प्रसिद्ध नदी का नाम।—भ्रातृ, (पु०) यमराज।

ययातिः (पु०) चन्द्रवंशी एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा का नाम जो महाराज नहुष का पुत्र था।

ययावरः (पु०) देखो यायावरः।

ययिः } (पु०) १ अश्वमेध के योग्य घोड़ा। २ घोड़ा। अश्व।
ययी }

यर्हि (अव्यया०) १ कब। जब। जब कभी। २ क्योंकि। चूंकि।

यवः (पु०) १ जवा। जौ। जव नामक अन्न। २ बारह सरसों या एक जवा की तौल का एक मान। ३ नापने का एक नाप विशेष जो $\frac{१}{६}$ या $\frac{१}{८}$ अँगुल का होता है। ४ सामुद्रिक शास्त्रानुसार जौ के आकार की एक रेखा विशेष, जो अँगूठे में होती है। अपने स्थानानुसार यह धन, सन्तान अथवा सौभाग्य-दायिनी मानी जाती है।—क्षारः, (पु०) जवाखार।—फलः, (पु०) बाँस।—लासः, (पु०) सोरा। खार। जवाखार।—शूकः,—शूकज., (पु०) जवाखार।—सुरं, (न०) जौ की शराब।

यवनः (पु०) १ यूनानी। २ कोई भी विदेशी। ३ गाजर।

यवनानी (स्त्री०) यवनों की लिपि।

यवनिका } (स्त्री०) १ यूनानी स्त्री। मुसलमानी।
यवनी } यथाः—

"यवनी नवनीतकोमलाङ्गी"

[प्राचीन नाटकों को देखने से जान पड़ता है कि, यवनों की छोकरियाँ राजाओं की परिचर्या किया करती थीं और धनुष तथा तरकसों की देख भाल और रखवाली का काम विशेष रूप से उनको करना पड़ता था। यथाः—

(१) "बाणासनहस्ताभिर्यवनीभिः परिवृत इत एवागच्छति प्रियवयस्यः।" - शकुन्तला।—२

(२) "प्रविश्य शार्ङ्गहस्ता यवनी।"—शकुन्तला—६

(३) "प्रविश्य चापहस्ता यवनी।"—विक्रमोर्वशी—५

२ नाटक की पर्दा। पर्दा। कनात।

यवसं (न०) घास। तृण। चारा।

यवागू (स्त्री०) जौ या चावल का वह माँड जो सड़ा कर कुछ खट्टा कर दिया गया हो। माँड की काँजी।

यवानिका } १ "दुष्टो यवो यवानी।" बुरी जाति
यवानी } का एक यव। २ अजवायन।

यविष्ठ (वि०) सब से छोटा। बहुत छोटा। (पु०) १ छोटा भाई। २ शूद्र।

यशस् (न०) कीर्ति। नामवरी। बड़ाई। प्रसिद्धि।—कर, (=यशस्कर) (वि०) यशप्रद।—काम (=यशस्काम) १ कीर्ति। कामी। नामवरी चाहने का अभिलाषी।—द, (=यशोद) (वि०) यश देने वाला।—दः, (=यशोदः) (पु०) पारा। पारद।—दा (=यशोदा) (स्त्री०) नन्द गोप की स्त्री का नाम जिसने श्रीकृष्ण का बाल्यावस्था में पालन पोषण किया था।—पटहः, (पु०) ढोल विशेष।—शेषः, (पु०) मृत्यु। मौत।

यशस्य (वि०) १ यश को देने वाला। यशस्कर। २ प्रख्यात। प्रसिद्ध।

यशस्विन् (वि०) प्रसिद्ध।

यष्टिः } (स्त्री०) १ लाठी। छड़ी। डंडा। २ गदा।
यष्टी } ३ खंभा। चोब। ४ चक्कस। अड्डा। अड्डी।

५ डंठुल । ६ टहनी । डाल । शाखा । ७ पताका या ध्वजा का बाँस । ८ लड़ी । हार । ९ बेल । लता । १० कोई भी वस्तु जो पतली हो ।—ग्रहः, (पु०) असावरदार ।—निवासः, (पु०) कबूतरों की अड्डी ।—प्राण, (वि०) १ निर्बल । कमज़ोर । शक्तिहीन ।

यष्टिकः (पु०) शिखरी पक्षी जो टिटहरी की जाति का होता है ।

यष्टिका (स्त्री०) १ लाठी । छड़ी । डंडा । २ गले में पहनने का हार ।

यष्टी (स्त्री०) देखो यष्टि ।

यष्टृ (पु०) १ पूजक । अर्चक । पुजारी । २ ऋत्विज ।

यस् (धा० परस्मै०) [यसति, यस्यति, यस्त] प्रयत्न करना । उद्योग करना ।

या (धा० परस्मै०) [याति, यात] १ जाना । गमन करना । २ आक्रमण करना । चढ़ाई करना । ३ प्रस्थान करना । कूँच करना । ४ गुज़र जाना । ५ अदृष्ट हो जाना । अन्तर्धान हो जाना । ६ गुज़र जाना । बीत जाना । ७ प्रचलित रहना । ८ हो जाना । आपड़ना । ९ किसी (नीची) अवस्था को पहुँच जाना । १० किसी काम को करने का बीड़ा उठाना । ११ किसी के साथ मैथुन सम्बन्धी सम्बन्ध स्थापित करना । १२ प्रार्थना करना । याचना करना । १३ पता लगाना । ढूँढ निकालना ।

यागः (पु०) यज्ञ ।

याच् (धा० आत्म०) [याचते] माँगना । भिक्षा माँगना । प्रार्थना करना । विनती करना ।

याचकः (पु०) [स्त्री०—याचकी] भिक्षुक । भिखारी । मँगता । प्रार्थी ।

"तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः ॥"

—सुभाषित ।

याचनं (न०) } १ प्राप्त करने के लिये विनती करने की क्रिया । माँगने की
याचना (स्त्री०) } क्रिया । २ प्रार्थना । विनती । प्रार्थनापत्र ।

याचनकः (पु०) भिखारी । निवेदक । प्रार्थी ।

याचिष्णु (वि०) याचनाशील । माँगने की प्रवृत्ति वाला ।

याचित (व० कृ०) माँगा हुआ । प्रार्थित ।

याचितकं (न०) वह वस्तु जो याचना करने से प्राप्त हुई हो । मँगनी की चीज़ ।

याच्ञा (स्त्री०) १ याचना । मँगनी । २ प्रार्थना । विनती ।

याजकः (पु०) १ ऋत्विज । यज्ञ कराने वाला । २ राजा का हाथी । ३ मदमाता हाथी ।

याजनं (न०) यज्ञ की क्रिया ।

याज्ञसेनी (स्त्री०) द्रौपदी का एक नाम ।

याज्ञिक (वि०) [स्त्री०—याज्ञिकि] यज्ञ सम्बन्धी ।

याज्ञिक (पु०) ऋत्विज् या यज्ञ करने वाला ।

याज्य (वि०) १ यजन करने योग्य । २ यज्ञीय । ३ वह जिसके लिये यज्ञ किया जाय । ४ वह जिसे शास्त्रानुसार यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त है ।

याज्यः (पु०) यज्ञ करने वाला ।

याज्यं (न०) ऋत्विज की दक्षिणा ।

यात (व० कृ०) गया हुआ । प्रस्थानित ।

यातं (न०) १ गमन । गति । २ कूच । प्रस्थान । ३ बीता हुआ समय । भूतकाल ।—याम,—यामन्, (वि०) १ बासी । रात का रखा हुआ । इस्तेमाल किया हुआ । चुसा हुआ । २ कच्चा । अनपका । जीर्ण । बूढ़ा । घिसा हुआ ।

यातनं (न०) बदला । [जैसे वैरयातनं]

यातना (स्त्री०) यम द्वारा दिया जाने वाला पापियों को दण्ड । (बहुवचन)

यातुः (पु०) १ पथिक । बटोही । २ पवन । ३ समय । (पु० न०) प्रेत । भूत । राक्षस ।—धानः, (पु०) प्रेत । भूत । राक्षस ।

यातृ (स्त्री०) पति के भाई की पत्नी । जिठानी । दौरानी ।

यात्रा (स्त्री०) सफर । एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया । २ कूच । प्रस्थान । चढ़ाई के लिये सेना का प्रस्थान । चढ़ाई । ३ तीर्थाटन । ४ तीर्थ

यात्रियों का समुदाय। ५ उत्सव। ६ जलूस। उत्सव का जलूस। ७ सड़क। ८ जीविका। ९ (समय) यापन। १० संसर्ग। [यथा—यात्रा चैव हि लौकिकी] ११ उपाय। साधन। १२ प्रथा। रस्म। १३ वाहन। सवारी।

यात्रिक (वि०) [स्त्री०—यात्रिकी] १ प्रस्थान करने वाला। २ यात्रा सम्बन्धी। ३ वह जो जीवन धारण करने के उपयुक्त हो। ४ मामूली।

यात्रिकः (पु०) यात्री।

यात्रिकं (न०) १ कूंच। चढ़ाई। २ यात्रा सम्बन्धी रसद।

याथातथ्यं (न०) वास्तविकता। सत्यता।

याथार्थ्यम् (न०) १ यथार्थ होने का भाव। २ उपयुक्तता। ३ किसी उद्देश्य की सिद्धि।

यादवः (पु०) यदुवंशी।

यादस् (न०) कोई भी (विशाल वपुधारी) जल-जन्तु।—पतिः,—नाथः, (= यादसांपति, यादसांनाथः,] (पु०) १ समुद्र। २ वरुण देव का नाम।

यादृत्त (वि०) [स्त्री०—यदृत्ती]
यादृश (वि०) [स्त्री०—यादृशी]
यादृश (वि०) [स्त्री०—यादृशी]
} (वि०) जिस प्रकार का। जैसा।

यादृच्छिक (वि०) [स्त्री०—यादृच्छिकी] १ स्वेच्छाचारी। स्वतंत्र। २ आकस्मिक। इत्तिफाकिया।

यानं (न०) १ गमन। पादचारण। (घोड़े या हाथी की) सवारी। २ समुद्र यात्रा। यात्रा। ३ आक्रमण। चढ़ाई। हमला। ४ जलूस। ५ वाहन। रथ। गाड़ी।—पात्रं (न०) नाव। जहाज।—भंगः, (पु०) जहाज़ के नष्ट होने की क्रिया।—मुखं, (न०) सवारी का आगे का भाग, जिसमें घोड़ा जोता जाता है।

यापनं (न०)
यापना (स्त्री०)
} १ चलाना। हँका देना। निकाल देना। २ रोग को दूर करना। ३ समय का व्यतीत करना। ४ दीर्घसूत्रता। ५ सहायता। सहारा। ६ अभ्यास।

याप्य (वि०) हटाने, निकाल देने या अस्वीकृत करने योग्य। २ नीच। तिरस्करणीय। अनावश्यक।—यानं, (न०) डोली। पालकी। म्याना।

यामः (पु०) १ दमन। संयम। सहनशीलता। २ प्रहर। तीन घंटे का समय।—घोषः, (पु०) मुर्गा। २ घड़ियाली।—यामः, (पु०) प्रत्येक घंटे के लिये निर्दिष्ट कार्य।—वृत्तिः, (स्त्री०) चौकीदारी। पहरेदारी।

यामलं (न०) जोड़ा। जुट।

यामवती (स्त्री०) रात्रि।

यामिः
यामी
} (स्त्री०) १ भगिनी। बहिन। २ रात। रात्रि।

यामिकः (पु०) चौकीदार। पहरेदार जो रात को पहरा दे।

यामिका
यामिनी
} (स्त्री०) रात।—पतिः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।

यामुन (वि०) [स्त्री०—यामुनी] यमुना नदी सम्बन्धी या यमुना से निकला हुआ या यमुना से उत्पन्न।

यामुनं (न०) सुर्मा विशेष।

यामुनेष्टकं (न०) सीसा। राँगा।

याम्य (वि०) १ दक्षिणी। २ यमराज सम्बन्धी या यम जैसा।—अयनं, (न०) दक्षिणायन।—उत्तर, (वि०) दक्षिण से उत्तर की ओर जाने वाला।

याम्या (स्त्री०) १ दक्षिण। २ रात।

याययूकः (पु०) इज्याशील। वह पुरुष जो प्रायः यज्ञ किया करता हो।

यायावरः (पु०) एक स्थान पर न रहने वाला साधु।

यावः (पु०)
यावकं (न०)
यावकः (पु०)
} १ भोज्य पदार्थ जो यव का बना हो। २ लाख।

यावत् (वि०) [स्त्री०—यावती] जितना।

यावन् (वि०) [स्त्री०—यावनी] यवन सम्बन्धी।

यावनः (पु०) लोबान।

यावसः (पु०) १ घास का ढेर। २ चारा। रसद।

याष्टीक (वि०) [स्त्री०—याष्टीकी] लट्ठधर। लठैत।

याष्टीकः (पु०) योद्धा जो लाठी से लड़े ।

यास्कः (पु०) निरुक्तकार का नाम ।

यु (धा० परस्मै०) [यौति, युन] १ मिलाना । जोड़ना । २ गड्डवड्ड करना । संमिश्रण करना ।

युक्त (व० कृ०) १ जुड़ा हुआ । मिला हुआ । २ बंधा हुआ । जुए में जुता हुआ । नधा हुआ । ३ सुव्यवस्थित किया हुआ । ४ सहित । संयुक्त । ५ सम्पन्न । परिपूर्ण । ६ लीन । एकाग्र । ७ क्रियाशील । ८ निपुण । अनुभवी । चतुर । ९ उपयुक्त । योग्य । ठीक । १० अयौगिक ।—अर्थ, (वि०) ज्ञानी । समझदार —कर्मन् (वि०) वह जिसे कोई कर्त्तव्य कर्म सौंपा गया हो —दण्ड, (वि०) उपयुक्त दण्ड देने वाला । मनस्, (वि०) जो किसी काम में मन लगाये हो । मुस्तातिब ।

युक्तं (न०) जोड़ी । जुट्ट ।

युक्त. (पु०) वह सन्यासी जो ब्रह्मीभूत हो गया हो ।

युक्तिः (स्त्री०) १ मेल । मिलाप । सङ्गम । मिलावट । २ प्रयोग । व्यवहार । इस्तेमाल । ३ साधना । ४ चलन । रस्म । ५ उपाय । ढंग । तरकीब । ६ उपयुक्तता । ७ चातुरी । कला । ८ उपपत्ति । हेतु । ९ परिणाम । नतीजा । १० आधार । कारण । ११ रचना । सम्भावना । योग । १२ अलङ्कार विशेष जिसमें अपने कर्म को छिपाने के लिये दूसरे को किसी क्रिया या युक्ति द्वारा वञ्चित करने का वर्णन किया जाता है । १३ मीज़ान । जोड़ । १४ धातु की मिलावट ।—कर, (वि०) १ उपयुक्त । २ सिद्ध ।—युक्त, (वि०) युक्तिसङ्गत । ठीक । वाजिब ।

युगं (न०) १ जुआ । जुआठ । २ जोड़ा । जुट्ट । ३ समय या काल विशेष । पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण । ३ पुरुष । पुश्त । पीढ़ी । ४ चार की संख्या का सङ्केत ।—अन्तः, (पु०) युग का अन्त । प्रलय । मध्यान्ह ।—अवधिः, (पु०) प्रलय ।—कीलक, (पु०) वह खूंटी जो बम और जुए के मिले छिद्रों में डाली जाती है । सैल । सैला ।—बाहु, (वि०) लंबी भुजा वाला ।

युगंधरः (पु०), युगन्धरः (पु०), युगधरम् (न०), युगन्धरम् (न०) गाड़ी के अगले भाग की वह लंबी निकली हुई लकड़ी जिसमें जुआँ अटकाया जाता है ।

युगपद् (अव्यया०) समसामयिकता से । एक साथ । एक ही समय में ।

युगलं (न०) जोड़ा । जोड़ी ।

युगलकं (न०) १ जुट्ट । जोड़ा । २ वह कुलक (गद्य) जिसमें दो श्लोकों वा पद्यों का एक साथ अन्वय हो ।

युग्म (वि०) सम ।

युग्म (न०) १ जोड़ा । २ सङ्गम । सम्मिलन । ३ (दो नदियों का) समागम । ४ जुलहीं सन्तान । यमज सन्तान । ५ कुलक या युगलक । ६ मिथुन राशि ।

युग्य (वि०) १ जोते जाने योग्य । २ जुता हुआ । चारजामा या साज कसा हुआ । ३ खींचने योग्य ।

युग्यः (पु०) रथ में जोतने योग्य घोड़ा या कोई जानवर ।

युज् (धा० उभय०) [युनक्ति, युंक्ते, युक्त] १ जोड़ना । मिलाना । लगाना । संयुक्त करना । २ जुएँ में जोतना । ३ सम्पन्न करना । ४ इस्तेमाल करना । प्रयोग करना । ५ लगाना । नियुक्त करना । ६ घुमाना । फेरना । लगाना (जैसे मन को किसी वस्तु पर । ७ एकाग्र चित्त करना । ८ रखना । स्थापित करना । ९ बना कर तैयार करना । सुव्यवस्था से रखना । तैयार करना । योग्य बनाना । १० देना । प्रदान करना ।

युज् (वि०) १ जुता हुआ । २ सम । विषम नहीं । (पु०) १ संयोजक । जोड़ने वाला । २ योगी । ३ जोड़ा । (इस अर्थ में यह शब्द नपुंसक भी है ।)

युंजानः, युञ्जानः (पु०) १ हाँकने वाला । सारथी । २ योगाभ्यासी ब्राह्मण जो ब्रह्म में एकीभूत होने का अभिलाषी हो ।

युत (व० कृ०) १ संयुक्त । मिला हुआ । जुड़ा हुआ । २ सम्पन्न सहित ।

युतकं (न०) १ जोड़ा। २ मेल। दोस्ती। मैत्री। ३ विवाहोपलब्ध का उपहार या भेंट। ४ स्त्रियों की पोशाक विशेष। ५ स्त्रियों के पहिनने के कपड़े की गोट या संजाफ।

युतिः (स्त्री०) १ सम्मिलन। सङ्गम। २ सहित। युक्त। अधिकार-प्राप्ति। ४ जोड़। मीज़ान। ५ ग्रहों का योग।

युद्धं (न०) १ लड़ाई। संग्राम। रण।—अवसानं, (न०) सुलह। सन्धि।—आचार्यः, (पु०) युद्धविद्या की शिक्षा देने वाला।—उन्मत्त, (वि०) लड़ाका। युद्ध में विक्षिप्त।—कारिन् (वि०) लड़ने वाला। योद्धा।—भूः, (पु०) —भूमिः (स्त्री०) रणक्षेत्र।—मार्गः (पु०) युद्ध के दाँव पेंच।—रङ्गः, (पु०) रणक्षेत्र। वीरः, (पु०) १ सैनिक। सिपाही। वीररस।— —सारः, (पु०) घोड़ा।

युध् (धा० आत्म०) [युध्यते, युद्ध] लड़ना। झगड़ना। युद्ध करना।

युध् (स्त्री०) युद्ध। लड़ाई। रण। संग्राम।

युधानः (पु०) सैनिक। सिपाही। क्षत्रिय जाति का मनुष्य।

युप् (धा० परस्मै०) [युप्यति] १ मिटा देना। खरोच डालना। २ कष्ट देना। पीड़ित करना। सताना।

युयुः (पु०) घोड़ा।

युयुत्साः (स्त्री०) लड़ने की अभिलाषा। भिड़न्त करने की इच्छा।

युयुत्सु (वि०) लड़ने का अभिलाषी।

युवतिः } युवती } (स्त्री०) जवान औरत।

युवन् (वि०) [स्त्री०—युवतिः, युवति, यूनी] १ जवान। वयस्क। २ स्वस्थ्य। तंदुरुस्त। ३ उत्तम। उत्कृष्ट।

युवन् (पु०) [कर्ता—युवा, युवानौ, युवानः] १ जवान आदमी। २ छोटा वंशधर। (जिसका दद्दा जीवित हो। जीवति तु वश्ये युवा।— खलति, (वि०) [स्त्री० —खलतिः, खलती] जवानी में गंजा।—जरत्, (वि०) [स्त्री०— जरती] वह जो जवानी की अवस्था में बूढ़ा देख पड़े।—राज्, (पु०)—राजः, (पु०) राजा का वह राजकुमार जो राजसिंहासन के लिये मनो-नीत कर लिया गया हो। राजा का उत्तराधिकारी।

युष्मद् (सर्वनाम) तू। तुम।

युष्मादृश } युष्मादृश } (वि०) तुम जैसा। तुम्हारे जैसा।

यूकः (पु०) } यूका (स्त्री०) } जुआँ। चील्हर। चिलुआ।

यूतिः (स्त्री०) मिला। मेल। संमिलन। सम्बन्ध।

यूथं (न०) गल्ला। गिरोह। हेड़। समूह। दल। टोली।—नाथः,—पः,—पतिः, (पु०) किसी टोली या दल का नायक। अगुआ।

यूथिका } यूथी } (स्त्री०) जुही नाम का फूल और उसका पौधा।

यूपः (पु०) १ यज्ञमण्डप का वह खंभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है। यह खंभा या तो बाँस का होता है अथवा खदिर की लकड़ी का। २ वह स्तम्भ जो किसी विजय अथवा कीर्ति के लिये बना कर खड़ा किया गया हो।

यूषं (न०) } यूषः (पु०) } यूषन् (पु०) } रसा। शोरवा। झोर। जूस। परेह।

येन (अव्यया०) १ जिससे। २ चूंकि। क्योंकि।

योक्त्रं (न०) १ रस्सा। रस्सी। चमड़े का तस्मा। २ हल के जुए की रस्सी। ३ गाड़ी का जोत।

योगः (पु०) १ दो अथवा अधिक पदार्थों का एक में मिलना। संयोग मिलना। मिलान। २ मेल। मिलाप। ३ संसर्ग। स्पर्श। सम्बन्ध। ४ प्रयोग। उपयोग। इस्तेमाल। ५ ढंग। रीति। तरीका। ६ परिणाम। नतीजा। ७ जुआ। ८ सवारी। वाहन। गाड़ी। ९ कवच। १० योग्यता। उप-युक्तता। ११ पेशा। धंधा। कारोबार। १२ धोखा। चालबाज़ी। दग़ाबाज़ी। १३ उपाय। तरकीब। १४ उत्साह। उद्योग। आयास। १५

इलाज। चिकित्सा। १६ जादू। टोना। तांत्रिक कर्म। ऐन्द्रजालिक विद्या। १७ प्राप्ति। उपलब्धि। १८ धन। सम्पत्ति। १९ नियम। आदेश। २० निर्भरता। सम्बन्ध। एक शब्द की दूसरे शब्द पर निर्भरता। २१ शब्दविन्यास। शब्दव्युत्पत्ति। २२ शब्दव्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ। २३ योगदर्शनानुसार चित्त की चञ्चलता का निग्रह। चित्तवृत्ति निरोध। २४ पतञ्जलि का योगदर्शन। २५ (गणित में) जोड़। मीज़ान। २६ (ज्योतिष में) शुभयोग। २७ तारागण का मिलन। २८ ज्योतिष सम्बन्धी (काल) योग विशेष। २९ किसी नक्षत्र का तारा विशेष। ३० भक्ति। ३१ जासूस। भेदिया। ३२ विश्वासघातक।—अंगम्, (न०) योग का साधन। —आचारः, (पु०) १ योगाभ्यास। २ बौद्ध विशेष। इस सम्प्रदाय के बौद्धों का मत है कि (बाह्य) पदार्थ जो देख पड़ते हैं, शून्य हैं। वे केवल आन्तरिक ज्ञान से जनाते हैं, बाहर उनमें कुछ नहीं है।—आचार्यः, (पु०) १ शिक्षक जो इन्द्रजाल विद्या सिखाता हो। २ योगाभ्यास की शिक्षा देने वाला अध्यापक। -आधमानं, (न०) जाली बन्धक।—आरूढ़, वह योगी जिसने अपनी चित्त की वृत्तियों का निरोध कर लिया हो।—आसनं (न०) योगसाधन के आसन अर्थात् बैठने का ढंग विशेष। —इन्द्रः,—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) १ बहुत बड़ा योगी। २ वह जिसने अलौकिक शक्ति सम्पादन कर ली हो। ३ ऐन्द्रजालिक। ४ देवता विशेष। ५ शिव जी। ६ याज्ञवल्क्य।—क्षेमः, (पु०) १ नया पदार्थ प्राप्त करना और प्राप्त पदार्थ की रक्षा। २ बीमार। ३ कुशल क्षेम। राजी खुशी। सुरक्षा। समृद्धि। ४ सम्पत्ति। लाभ। मुनाफा। —तारका,—तारा, (स्त्री०) किसी नक्षत्र का प्रधान तारा।—दानं, (न०) १ योगदीक्षा। २ कपटदान। —धारणा, (स्त्री०) भक्ति में दृढ़ता।—नाथः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—निद्राः, (स्त्री०) १ सोने और जागने के बीच की दशा। २ युगान्त में होने वाली विष्णु की निद्रा।—पट्टं, (न०) प्राचीनकालीन एक पहनावा जो पीठ पर से जाकर कमर में बाँधा जाता था और जिससे घुटनों तक का अंग ढका रहता था।—पतिः, (पु०) विष्णु का नाम।—बलं, (न०) वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त होता है। तपोबल। २ ऐन्द्रजालिक शक्ति।—माया, (स्त्री०) १ योग की अलौकिक शक्ति। २भगवान की सृजन शक्ति। (भगवतः सर्जनार्था शक्तिः) ३ दुर्गा का नाम।—रङ्गः, (पु०) नारंगी।—रूढ, (वि०) दो शब्दों के योग से बनने वाला (वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़ कर कोई विशेष अर्थ बतलावे।—रोचना, (स्त्री०) इन्द्रजाल करने वालों का एक प्रकार का लेप।—वर्तिका, (स्त्री०) जादू की बत्ती या दीपक। —वाहिन्, (पु० न०) भिन्न गुणों की दो या कई ओषधियों को एक में मिलाने योग्य करने वाली ओषधि या द्रव्य।—वाही, (स्त्री०) १ सज्जी। खार। जवाखार। २ शहद। मधु। ३ पारा।—विक्रयः, (पु०) जाली फरोख़्त या बिक्री।—विद्, (वि०) योग को जानने वाला। (पु०) १ शिव जी। २ योगी। ३ दर्शन का अनुयायी। ४ बाजीगर। जादूगर। ५ दवाइयों को बनाने वाला। कम्पौंडर।—शास्त्रं, (न०) पतञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योगसाधन पर एक ग्रन्थ विशेष।—सारः, (पु०) सर्वव्याधिहर ओषधि।

योगिन् (वि०) १ संयुक्त। सहित। २ वह जिसमें ऐन्द्रजालिक शक्ति हो। (पु०) १ योगी। २ बाजीगर। ३ योगदर्शन का अनुयायी।

योगिनी (स्त्री०) १ बाजीगरिन। २ भगतिन। ३ रणपिशाचिनी। दुर्गा की सहचरी जिनकी संख्या आठ है।

योगेष्टं (न०) सीसा। राँगा।

योग्य (वि०) १ उपयुक्त। योग्य। ठीक। वाजिब। २ उपयोगी। कामलायक। मुफीद। ४ योगाभ्यास के योग्य।

योग्यः (पु०) युक्ति भिड़ाने वाला। उपाय लगाने वाला। उपायी।

योग्यं (न०) १ सवारी। गाड़ी। चन्दन। ३ चपाती। ४ दूध।

योग्या (स्त्री०) १ अभ्यास। कसरत। २ कवायद। फौजी शिक्षा।

योग्यता (स्त्री०) १ क्षमता। लायकी। २ लियाकत। विद्वत्ता। बुद्धिमानी। ३ तात्पर्य बोध के लिये वाक्य के तीन गुणों में से एक। शब्दों के अर्थ संबन्ध की सङ्गति या सम्भवनीयता।

योजनं (न०) १ संयोग। मिलान। मेल। एक में मिलाने की क्रिया। जुए में जोतने की क्रिया। २ प्रयोग। नियुक्ति। ३ तैयारी। व्यवस्था। ४ शब्दान्वय ५ दूरी नापने का प्राचीन कालीन माप विशेष जो ४ कोस या आठ मील का होता है। ६ उत्तेजित करने या भड़काने की क्रिया। ७ मन को एकाग्र करने की क्रिया।—गन्धा, (स्त्री०) व्यास-माता सत्यवती का नामान्तर।

योजना (स्त्री०) संयोग। मेल। मिलाप। २ व्याकरणसिद्ध अन्वय।

योधः (पु०) १ योद्धा। सिपाही। २ लड़ाई। समर। संग्राम।—अगारः, (पु०) —अगारं, (न०) सिपाहियों के रहने का मकान। बारक।—धर्मः (पु०) योद्धाओं के नियम या आईन।—संरावः, (पु०) सिपाहियों या लड़ने वालों की पारस्परिक ललकार।

योधनं (न०) युद्ध। लड़ाई। रण। समर।

योधिन् (पु०) योद्धा। सिपाही। भट। लड़ाका।

योनिः (पु० स्त्री०) १ गर्भाशय। भग। २ कोई भी उद्भव स्थान। उपादान कारण। स्रोत। चश्मा। ३ खान। ४ आवासस्थान। आश्रयस्थान। आधार। ५ घर। तह। ६ वंश। कुल। खान्दान। जाति। उत्पत्ति। अस्तित्व का रूप। ७ जल।—ज (वि०) गर्भाशय से उत्पन्न होने वाला। योनि से उत्पन्न।—देवता, (स्त्री०) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र।—भ्रंशः, (पु०) योनि रोग विशेष, जिसमें गर्भाशय अपने स्थान से कुछ हट जाता है।—रञ्जनं, (न०) रजस्वला धर्म।—लिङ्गम्, (न०) भगाङ्कुर। भगलिङ्ग। - सङ्कर, (वि०) नियम विरुद्ध संयोग से जातियों का सङ्करत्व।

योनी (स्त्री०) देखो योनि।

योपनं (न०) १ मिटा देने या छील डालने की क्रिया। २ कोई वस्तु जिससे मिटाया जाय। ३ परेशानी। घबड़ाहट। विकलता। ४ अत्याचार। पीड़न। नाशन।

योषा (स्त्री०), योषित् (स्त्री०), योषिता (स्त्री०) } स्त्री। लड़की। युवती स्त्री।

यौक्तिक (वि०) [स्त्री० —यौक्तिकी] १ उपयुक्त। योग्य। मुनासिब। २ युक्तियुक्त। ३ परिणाम निकालने योग्य। ३ साधारण। मामूली। रीति-रस्म के अनुसार।

यौक्तिकः (पु०) राजा का विनोद या क्रीड़ा का साथी। नर्मसखा।

यौगः (पु०) योग दर्शन को मानने वाला।

यौगपद्यं (न०) समकालीनता।

यौगिक (वि०) [स्त्री०—यौगिकी] १ उपयोगी। उचित। कामलायक। २ मामूली। साधारण। ३ शब्द व्युत्पत्ति के अनुकूल। ४ योग सम्बन्धी प्रतिकारकर। दुःखहर।

यौतक (वि०) [स्त्री०—यौतकी] वह सम्पत्ति जिस पर किसी एक ही व्यक्ति का एकमात्र अधिकार हो।

"विभागभावना ज्ञेया गृहक्षेत्रैश्च यौतकैः।"

याज्ञवल्क्य।

यौतकं (न०) १ निजी सम्पत्ति। खास अपनी सम्पत्ति। २ दाइजा। दहेज़। वह सम्पत्ति जो स्त्री को विवाह के समय मिलती है।

यौतव (न०) माप। नाप।

यौध (वि०) [स्त्री०—यौधी] लड़ाकू। लड़ने वाला।

यौन (वि०) [स्त्री०—यौनी] १ योनि सम्बन्धी। २ विवाह सम्बन्धी।

यौनं (न०) विवाह। वैवाहिक सम्बन्ध।

यौवतं (न०) १ युवती स्त्रियों की टोली। २ युवती स्त्री की खूबी (सौन्दर्य आदि)। युवा स्त्री होने का भाव।

यौवनं (न०) जवानी। – आरम्भः, (पु०) जवानी का उभाड़।—दर्पः, (पु०) १ जवानी का अभिमान। २ अविवेक।—लक्षणं (न०) १ जवानी का चिन्ह। २ मनोहरता। सौन्दर्य। ३ (स्त्रियों के) कुच।

यौवनकं (न०) जवानी।

यौवनाश्वः (पु०) युवनाश्व के पुत्र का नाम। अर्थात् राजा मान्धाता का नाम।

यौवराज्यं (न०) युवराज का पद।

यौष्माक, यौष्माकीण (वि०) [स्त्री०—यौष्माकी] तुम्हारा त्वदीय।

र

र (पु०) संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यञ्जन। जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्द्धा के साथ थोड़ा सा स्पर्श कराने से हुआ करता है। यह ऊष्म और स्पर्श वर्णों के बीच का वर्ण है। इसका उच्चारण स्वर और व्यञ्जन का मध्यवर्ती है। अतएव यह अन्तस्थ कहलाता है। इसके उच्चारण में संवार, नाद और घोष नाम के प्रयत्न हुआ करते हैं।

रः (पु०) १ अग्नि। २ गर्मी। ताप। ३ प्रेम। कामना। ४ वेग। रफ़्तार।

रंह् (धा० परस्मै०) [रंहति] तेज़ी से या वेग से जाना या चलना।

रंहतिः (स्त्री०) १ वेग। रफ़्तार। २ उत्सुकता। प्रचण्डता।

रक्त (व० कृ०) १ रंगा हुआ। रंगीन। २ लाल। ३ अनुरक्त। अनुरागवान्। ४ प्यारा। प्रिय। माशूक। ५ मनोहर। सुन्दर। मनोज्ञ। ६ क्रीडा प्रिय। खिलाड़ी।—अक्ष, (वि०) लाल नेत्रों वाला। २ भयानक।—अक्षः, (पु०) १ भैंसा। २ कबूतर।—अङ्कः, (पु०) प्रवाल। मूँगा।—अङ्गः, (न०) १ खटमल। खटकीरा। २ मङ्गलग्रह। ३ सूर्य या चन्द्रमण्डल। अधिमन्थः, (पु०) आँखों की सूजन। - अम्बरं, (न०) लाल रंग का वस्त्र।—अम्बरः, (पु०) गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासी या परिव्राजक।—अर्बुदः. (पु०) रोग विशेष जिसमें पकने और बहने वाली गाँठें शरीर में निकल आती हैं।—अशोकः, (पु०) लाल फूलों वाला अशोक वृक्ष। - आधारः, (पु०) चमड़ा।—आभ (वि०) लाल आभा वाला। —आशयः. (पु०) शरीर के सात आशयों में से चौथा जिसमें रक्त का रहना माना गया है।—उत्पलं, (न०) लाल कमल —उपलं, (न०) गेरू।—कण्ठ,—कण्ठिन, (वि०) मधुर कण्ठ वाला। (पु०) कोकिल पक्षी।—कन्दः, —कन्दलः, (पु०) मूँगा। प्रवाल।—कमलं, (न०) लाल कमल।—चन्दनं, (न०) १ लाल चन्दन। २ केसर।—चूर्णं, (न०) सेंदूर। ईंगुर।—छर्दिः, (स्त्री०) रक्त की वमन।—जिह्व, (पु०) शेर। सिंह।—तुण्डः, (पु०) तोता।—दृश्, (पु०) कबूतर।—धातुः, (पु०) १ गेरू। २ ताँबा।—पः, (पु०) राक्षस।—पल्लवः, (पु०) अशोक वृक्ष। - पा, (स्त्री०) जौंक।—पाद, (वि०) लाल पैरों वाला। - पाद, (पु०) १ पक्षी विशेष, जिसके पैर लाल हों। तोता। २ संग्राम-रथ। ३ हाथी।—पायिन् (पु०) खटमल। खटकीरा।—पायिनी, (स्त्री०) जौंक।—पिण्डम्, (न०) १ लाल मुँहासा। २ नाक व मुँह से अपने आप रक्त का गिरना।—प्रमेहः, (पु०) पेशाब की राह खून का गिरना। - भवं, (न०) मांस।—मोक्षः. (पु०) —मोक्षणं, (न०) रक्त का बहना।—वटी,—वरटी, (स्त्री०) चेचक।—वर्गः, (पु०) १ लाख। २ अनार का वृक्ष। ३ कुसुम का फूल।—वर्ण. (वि०) लाल रंगा हुआ। २ बीरबहूटी।—वर्णं, (न०) सोना।

—शासनं, (न०) सेन्दूर । ईंगुर । - शीर्षकः, (पु०) १ गधाविरोजा । २ सारस ।—सन्ध्यकं, (न०) लाल कमल ।—सार, (न०) लाल चन्दन ।

रक्तं (न०) १ खून । लोहू । २ ताँबा । ३ कुसम का फूल । ४ सिंदूर । इंगूर ।

रक्तः (पु०) १ लाल रंग । २ कुसूम का फूल ।

रक्तक (वि०) १ लाल । २ अनुरक्त । आशिक । शौकीन । ३ प्रसन्नकर । ४ खूनी ।

रक्तकः (पु०] १ लाल वस्त्र । २ प्रेम करने वाला आदमी । ३ विनोदी । मसखरा ।

रक्ता (स्त्री०) १ लाख । २ गुञ्जा या घुंघची का पौधा ।

रक्तिः (स्त्री०) १ मनोहरता । मनोज्ञता । अनुराग । प्रेम । राजभक्ति । भक्ति ।

रक्तिका (स्त्री०) घुंघची ।

रक्तिमन् (पु०) ललाई ।

रक्ष् (धा० परस्मै०) [रक्षति, रक्षित] १ रक्षा करना । रखवाली करना । चौकसी करना । शासन करना । २ गुप्त रखना । प्रकट करना । ३ बचाना ।

रक्षक (वि०) [स्त्री०—रक्षिका] रक्षण करने वाला । चौकसी करने वाला । बचाने वाला

रक्षकः (न०) रखवाला । रखैया । चौकीदार । पहरेदार ।

रक्षणं (न०) रखवाली । रक्षा । चौकसी । पहरेदारी ।

रक्षणी (स्त्री०) लगाम । रास ।

रक्षस् (न०) राक्षस । दैत्य । दानव ।—ईशः,—नाथः, (पु०) रावण ।—जननी, (स्त्री०) रात ।—सभं, (न०) राक्षसों की टोली या सभा ।

रक्षा (स्त्री०) १ बचाव । रक्षण । चौकसी । २ सावधानी । सुरक्षा । ३ चौकीदार । पहरेदार । ४ यंत्र । कवच । तावीज़ । ४ अधिष्ठातृ देवता । अधिदैवत । ५ भस्म । ६ राखी जो कलाई में बाँधी जाती है ।—अधिकृतः, (पु०) १ सरक्षक । शासक । २ मजिस्ट्रेट । ३ पुलिस का प्रधान अध्यक्ष ।—अपेक्षकः, (पु०) १ द्वारपाल । दरवान । २ जनानखाने का दरवान । ३ लौंडा । (जो पुरुष से मैथुन करवाता है) ४ नट । अभिनयकर्ता ।—करण्डकः, (पु०) —करण्डकम्, (न०) तावीज़ । कवच । गृहं, (न०) प्रसूति का गृह । जच्चाखाना । सौरी ।—पालः,—पुरुषः (पु०) चौकीदार । रखवाला ।—प्रदीपः, (पु०) तंत्र के अनुसार वह दीपक जो भूत प्रेतादि की बाधा मिटाने को जलाया जाता है ।—भूषणं,—मणिः,—रत्नं, (न०) वह भूषण जिसमें किसी प्रकार का कवच आदि हो ।

रक्षितृ, रक्षिन् (वि०) रखवाला । (पु०) १ बचाने वाला । २ चौकीदार । सन्तरी । पुलिस वाला ।

रघुः (पु०) सूर्यवंशी एक प्रसिद्ध राजा । यह राजा दिलीप का पुत्र और राजा अज का पिता था ।—नन्दनः, नाथः,— पतिः,— श्रेष्ठः,—सिंहः, (पु०) श्री रामचन्द्र जी का नामान्तर ।

रंक, रङ्क (वि०) १ कमीना । ग़रीब । भिक्षुक । अभागा । २ सुस्त ।

रंकः, रङ्कः (पु०) फकीर । मँगता । भूखा ।

रंकुः, रङ्कुः (पु०) हिरन । मृग ।

रंगः (पु०), रङ्गः (पु०), रंगं (न०), रङ्गम् (न०) टीन । जस्ता ।

रंगः, रङ्गः (पु०) १ रंग । २ अभिनय खेलने का स्थान । रंगमञ्च । ३ सभा-स्थान । ४ सभा के सदस्य । दर्शक गण । ५ रणभूमि । ६ नृत्य । गान । अभिनय । ७ खेल । तमाशा । बहलाव । ८ सुहागा ।—अङ्गणम्, (न०) रंगभूमि । अखाड़ा ।—अवतरणम्, (न०) १ रङ्गभूमि में जाने का द्वार । २ नट का पेशा ।—आजीवः —उपजीवीन् (पु०) १ नट । २ चित्रकार ।—कारः,—जीवकः, (पु०) चित्रकार ।—चरः, (पु०) १ नट । खिलाड़ी । २ पटेबाज़ ।—जं, न०) सेंदुर । ईंगुर ।—द्वारं, (न०) १ रंगमञ्च ।

का प्रवेशद्वार । २ किसी नाटक का मङ्गलाचरण, नान्दीमुख पाठ या प्रस्तावना ।—भूतिः, (स्त्री०) आश्विनमास की पूर्णिमा वाली रात ।—भूमिः, (स्त्री०) १ रंगमंच । २ अखाड़ा । ३ रणक्षेत्र । —मण्डपः, (पु०) अभिनयशाला । नाटकघर ।—मातृ, (स्त्री०) १ लाख । २ कुटनी । —वस्तु, (न०) चित्रण । रंगसाज़ी ।—वाटः, (पु०) अखाड़ा ।—शाला, (स्त्री०) नाटकघर । नाचघर ।

रंघ } (धा० उभय) [रंघति, रंघते] १ जाना ।
रङ्घ } तेज़ी के साथ जाना ।

रच् (धा० उभय०) [रचयति—रचयते, रचित] १ क्रमबद्ध करना । प्रस्तुत करना । तैयार करना । उद्भावित करना । २ बनाना । सरजना । पैदा करना । ३ लिखना । निबन्ध रचना । ४ स्थापित करना । ५ सजाना । शृङ्गार करना । ६ लगाना ।

रचनं (न०) } १ रचने या बनाने की क्रिया या
रचना (स्त्री०) } भाव । निर्माण । बनावट । २ बनाने का ढंग । ३ ग्रन्थ । ४ बाल सम्हालना या गूंधना । ५ व्यूह रचना । ६ मानसिक कल्पना ।

रजकः (पु०) धोबी ।

रजका } (स्त्री०) धोबिन ।
रजकी }

रजत (वि०) १ रुपैहला । चाँदी का बना । २ सफेद ।

रजतं (न०) १ चाँदी । २ सुवर्ण । ३ मोती का हार या आभूषण । ४ रक्त । खून । ५ हाथीदाँत । ६ नक्षत्र ।

रजनिः } (स्त्री०) रात ।—करः, (पु०) चन्द्रमा ।
रजनी } —चरः, (पु०) रात को घूमने वाला । राक्षस ।—जलं (न०) ओस । कोहरा ।—पतिः—रमणः, (पु०) चन्द्रमा ।—मुखं, (न०) सन्ध्या । रात्रि का आरम्भ ।

रजस् (पु०) १ धूल । रज । मैल । २ पुष्परज । मकरन्द । सूर्यकिरण में का एक रजकण । ३ जुता हुआ खेत । ४ अन्धकार । अन्धयारी । ६ मानसिक अन्धकार । ७ तीन गुणों में से (जो समस्त पदार्थों में पाये जाते हैं) दूसरा रजोगुण । ८ स्त्रियों का रजोधर्म । -तोकः, (पु०) —तोकं (न०) —पुत्रः, (पु०) —दर्शनं, (न०) लालच । लोभ । स्त्रियों का प्रथम बार रजस्वला होना । —बन्धः, (पु०) रजस्वला धर्म का रुक जाना । —रसः, (पु०) अन्धकार ।—शुद्धिः, (स्त्री०) रजस्वला धर्म का साफ साफ नियत समय पर होना ।—हरः, (पु०) धोबी ।

रजसानुः (पु०) १ बादल । २ जीव । हृदय ।

रजस्वल (वि०) गर्दीला । धूलधूसरित ।

रजस्वलः, (पु०) भैंसा ।

रजस्वला (स्त्री०) १ मासिक धर्मवती स्त्री । २ लड़की जो विवाह योग्य हो गयी हो ।

रज्जुः (पु०) १ रस्सी । रस्सा । डोरी । २ शरीरस्थ रंग विशेष । ३ स्त्रियों के सिर की चोटी ।—दालकं, (न०) एक प्रकार का जलचर पक्षी । —पेडा, (स्त्री०) सुतली की टोकनी ।

रंज् } (धा० उभय०) [रजति,—रजते,
रञ्ज् } रज्यति, रज्यते, रक्त] १ लाल हो जाना । रंगना । ३ अनुरक्त होना । ४ प्रेम में फंसना । ५ प्रसन्न होना । सन्तुष्ट होना ।

रंजकं } (न०) १ लालचन्दन । २ सेंदुर । ईंगुर ।
रञ्जकम् }

रंजकः } (पु) १ रंगरेज़ । चितेरा । २ उत्तेजक ।
रञ्जकः }

रंजनम् } (न०) १ रंगना । रंग चढ़ाना । २ रंग ।
रञ्जनम् } ३ प्रसन्नता । प्रसन्नकारक । ४ लालचन्दन की लकड़ी ।

रंजनी } (स्त्री०) नील का पौधा ।
रञ्जनी }

रट् (धा० परस्मै०) [रटति, रटित] चिल्लाना । चीख मारना । गर्जना । भूंकना । २ चिल्ला कर घोषणा करना । ३ आनन्द में भर चिचयाना ।

रटनं (न०) १ चिल्लाने की क्रिया । २ प्रसन्नता सूचक चिल्लाहट ।

रण् (धा० परस्मै०) [रणति रणित] बजाना । झुनझुनाना । रुनझुन का शब्द करना ।

रणः (पु०) } १ संग्राम। युद्ध। समर। लड़ाई।
रणम् (न०) } २ रणक्षेत्र। (पु०) १ शोरगुल। कोलाहल। २ वीणा बजाने का गज। ३ गति। गमन।—अङ्गं (न०) तलवार आदि कोई भी शस्त्र।—अंगणं,—अंगनं (न०) रणक्षेत्र। समरभूमि।—अपेत, (वि०) (रणक्षेत्र का) भगोड़ा।—आतोद्य, (न०)—तूर्य, (न०) दुन्दुभिः, (पु०) मारू बाजा।—उत्साहः, (पु०) समर में पराक्रम।—क्षितिः, (स्त्री०)—क्षेत्रं, (न०)—भूः, (स्त्री०)—भूमिः, (स्त्री०),—स्थानं, (न०) संग्राम क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।—धुरा, (स्त्री०) १ युद्ध में सामना। २ युद्ध की प्रचण्डता।—मत्तः, (पु०) हाथी। गज।—मुखं, (न०)—मूर्धन्, (पु०)—शिरस्, (न०) युद्ध में आगे का भाग। लड़ने वाली सेना का सब से अगला भाग।—रङ्कः, (पु०) हाथी के दोनों दाँतों के मध्य का भाग।—रङ्गः, (पु०) रणभूमि।—रणः, (पु०) मच्छर। डाँस।—रणम्, (न०) १ उत्कण्ठा। लालसा। किसी वस्तु के खोजाने का खेद।—रणकः, (पु०) रणकं, (न०) १ चिन्ता। व्याकुलता। घबड़ाहट। विकलता। (पु०) कामदेव।—वाद्यं, (न०) मारूबाजा।—शिक्षा, (स्त्री०) लड़ाई का विज्ञान।—सङ्कुलं, (न०) लड़ाई की गड़बड़ी।—सज्जा, (स्त्री०) युद्ध के उपस्कर।—सहायः, (पु०) मित्र।—स्तम्भः, (पु०) युद्ध का स्मारक। युद्धस्मारक-स्तम्भ।

रणत्कारः (पु०) १ खड़खड़। झंकार। २ शब्द। ३ गुञ्जार।

रणितं (न०) खड़खड़। झंकार।

रंडः } (पु०) १ वह मनुष्य जो पुत्रहीन मरे।
रण्डः } २ बाँझ वृक्ष।

रंडा } (स्त्री०) १ स्त्री के लिये एक गाली।
रण्डा } नीची। पतुरिया। २ विधवा स्त्री।

रत (व० कृ०) १ प्रसन्न। हर्षित। २ अनुरक्त। ३ लीन।—अयनी, (स्त्री०) वेश्या। रंडी। पतुरिया।—अर्थिन्, (वि०) कामुक। ऐयाश।—उद्वहः, (पु०) कोकिल।—ऋद्धिकं, (न०) १ दिवस। २ आनन्द के लिये स्थान।—कीलः (पु०) कुत्ता।—कूजित, (न०) मैथुन के समय की सिसकारी।—ज्वरः, (पु०) काक। कौआ।—तालिन्, (पु०) कामी। लंपट। ऐयाश।—ताली, (स्त्री०) कुटनी।—नारीच, (पु०) १ कामदेव। २ आवारा। लंपट। बदचलन। ३ कुत्ता। ४ मैथुन के समय की सिसकारी।—बन्धः, (पु०) मैथुन का आसन।—हिण्डकः, (पु०) १ औरतों को फुसलाने या बहकाने अथवा बिगाड़ने वाला। २ आवारा। बदचलन। लंपट।

रतं (न०) १ हर्ष। आनन्द। २ मैथुन। ३ गुह्याङ्ग।

रतिः (स्त्री०) आनन्द। हर्ष। सन्तुष्टि। आह्लाद। २ अनुराग। प्रेम। ३ प्रीति। यार। ४ कामक्रीड़ा। सम्भोग। ५ कामदेव की स्त्री का नाम।—गृहं, (न०)—भवनं, (न०),—मन्दिरं, (न०) १ आनन्दभवन। २ चकला। रंडीखाना।—तस्करः, (पु०) वह पुरुष जो स्त्रियों को अपने साथ व्यभिचार करने में प्रवृत्त करता हो।—पतिः,—प्रियः,—रमणः, (पु०) कामदेव।—रसः, (पु०) रतिक्रीड़ा। सम्भोग।—लम्पट, (वि०) कामी। ऐयाश।

रत्नं (न०) जवाहर। बहुमूल्य चमकीले, छोटे और रंग विरंगे पत्थर। [रत्नों की संख्या या तो ५ या ९ या १४ बतलायी जाती है।] २ कोई भी बहुमूल्य प्रिय पदार्थ। ३ कोई भी सर्वोत्तम वस्तु।—अनुविद्ध, (वि०) रत्नों से जड़ा हुआ या जिसमें रत्न जड़े हुए हों।—आकरः, (पु०) १ रत्नों की खान। २ समुद्र।—आलोकः, (पु०) रत्न की आभा।—आवली,—माला, (स्त्री०) रत्नों का हार।—कन्दलः, (पु०) मूंगा। प्रवाल।—खचित, (वि०) जिसमें रत्न जड़े हों।—गर्भः, (पु०) समुद्र।—गर्भा, (स्त्री०) पृथिवी।—दीपः,—प्रदीपः, (पु०) १ रत्न का दीपक। २ एक कल्पित रत्न का नाम। कहा जाता है, पाताल में इसीके प्रकाश से उजाला रहता है।—मुख्यं, (न०) हीरा।—राजः, (पु०) माणिक्य।

मानिक। चुन्नी।—राशिः, (पु०) १ रत्नों का ढेर। २ समुद्र।—सानुः, (पु०) मेरु पर्वत का नाम।—सू, (वि०) रत्न उत्पन्न करने वाला।—सू,—सूति., (स्त्री०) पृथिवी। धरा।

रत्निः (पु० स्त्री०) १ कोहनी। २ कोहनी से मुट्ठी तक। एक हाथ (नाप विशेष) (पु०) मुट्ठी। मूंका।

रथः (पु०) १ प्राचीन कालीन एक सवारी। २ योद्धा। ३ चरण। पैर। ४ अंग। अवयव। ५ शरीर। देह। ६ नरकुल। सरपत।—अक्षः, (पु०) धुरा। धुरी।—अङ्गम्, (न०) १ गाड़ी का कोई भाग। २ विशेष कर पहिये। ३ विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र। कुम्हार का चक्का। ईशः. (पु०) रथ में बैठ कर युद्ध करने वाला।—ईषा (स्त्री०) गाडी का वम्।—उद्वहः,—उपस्थः, (पु०) कोचवक्स। रथ का वह स्थान जहाँ सारथी बैठता है।—कस्या—कड्या, (स्त्री०) रथों का समुदाय।—कल्पकः (पु०) राजा की रथशाला का अधिकारी।—कारः, (पु०) रथ बनाने वाला।—कुटुंबिकः, कुटुम्बिन् (पु०) रथवान। सारथी।—कूवरः (पु०) कूवरं (न०) रथ का वह अगला लम्बा भाग जिसमें जुआँ बंधा रहता है।—क्षोभः, (पु०) रथ का झटका।—गर्भकः, (पु०) डोली। पालकी।—गुप्ति, (स्त्री०) रथ के किनारे या चारों ओर लगा हुआ काठ या लोहे का ढाँचा जो रथ को दूसरे रथ से टकराने से बचाता था।—चरणः,—पादः, (पु०) एक रथ के पहिये। २ चक्रवाक। चकवा।—धुर (स्त्री०) रथ का वम्व।—नाभिः, (स्त्री०) रथ के पहियों का मध्य-भाग जिसमें धुरी रहती है।—नीड़ः, (पु०) रथ का खटोला। रथ का वह भाग जहाँ सवारी बैठती है।—बन्धः, (पु०) रथ का साज या सामान।—महोत्सवः, (पु०)—यात्रा, (स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला उत्सव विशेष। इसमें लोग प्रायः जगन्नाथ जी, बलराम जी और सुभद्रा जी की प्रतिमाओं को रथ पर सवार कर उस रथ को लोग स्वयं खींचते हैं। बौद्धों और जैनों में भी उनके देवता रथ में सवार करा कर निकाले जाते हैं।—मुखं, (न०) . का अगला हिस्सा।—युद्धं, (न०) रथों बैठ कर लड़ने वालों की लड़ाई।—वर्त्मन् , (न०) —वीथिः, (पु०) सडक। आमसड़क। रास्ता।—वाहः, (पु०) १ रथ का घोडा। २ सारथी।—शक्तिः, (स्त्री०) रथ की पर का वह बाँस जिसमें लड़ाई के रथों की लटकायी जाती थी।—सप्तमी, (स्त्री०) शुक्ला ७मी।

रथिक (वि०) (स्त्री०—रथिकी) १ गाड़ी पर सवार। २ गाड़ी का मालिक।

रथिन् (स्त्री०) १ रथ पर सवार होना या रथ को हाँकना। २ रथ को रखने वाला। (पु०) १ रथ का मालिक। रथ में बैठ कर लड़ने वाला।

रथिन, रथिर (पु०) देखो—"रथिन्"।

रथ्यः (पु०) १ रथ में जोता जानेवाला घोड़ा। २ रथ का एक भाग।

रथ्या (स्त्री०) १ रथों के आने जाने का रास्ता या सडक। २ वह स्थान जहाँ कई एक सड़कें एक दूसरे को काटती हों। ३ कई एक रथ या गाडियां।

रद् (धा० परस्मै०) [रदति] १ चीरना। फाड़ना। २ खरोचना।

रदः (पु०) १ चीर। फाड। खरोच। २ दाँत। हाथी का दाँत।—छदः, (पु०) ओठ।

रदनः (पु०) दाँत।—छदः, (पु०) ओठ।

रध् (धा० परस्मै०) [रध्यति, रद्ध] १ चोटिल करना। घायल करना। मार डालना। नाश कर डालना। २ सम्हारना। साफ करना। अमनिया करना। (भोजन)

रंतिदेवः, रन्तिदेवः (पु०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम।

रंतुः, रन्तुः (पु०) १ सडक। मार्ग। २ नदी।

रंधनं (न०), रन्धनं (न०), रंधिः (स्त्री०), रन्धिः (स्त्री०) १ अनिष्ट। चोट। २ पाचन। पकाने की क्रिया।

रंध्रं } (न०) १ छेद। सूराख। गुफा २। गह्वर। सन्धि
रन्ध्रं } २ कमज़ोर स्थल। वह स्थल जिस पर आक्रमण किया जा सके। ऐब। त्रुटि। अपूर्णता। - बभ्रुः, (पु०) चूहा। मूंसा।—वशः, (पु०) पोला,

रभ् (धा० आत्म०) [रभते; रब्ध] आरम्भ करना। प्रारम्भ करना।

रभस् (न०) १ धुन। उत्साह। २ ताकत। ज़ोर।

रभस (वि०) १ उग्र। भयानक। २ ताकतवर। प्रचण्ड। उत्कण्ठित। उत्सुक।

रभसः (पु०) १ उग्रता। ज़बरदस्ती। बरजोरी। उतावलापन। वेग। २ जल्दबाज़ी। ३ क्रोध। रोष। ४ खेद। शोक। ५ हर्ष। आनन्द।

रम् (धा० आत्म०) [रमते] १ प्रसन्न होना। २ खेलना। क्रीडा करना। ३ मैथुन करना। ४ बना रहना। ठहरना। टिकना।

रम (वि०) प्रसन्नकारक। आनन्ददायी।

रमः (पु०) १ हर्ष। आनन्द। २ प्रेमी। आशिक। पति। ३ कामदेव।

रमठं (न०) हींग।—ध्वनिः, (पु०) हींग।

रमण (वि०) [स्त्री०—रमणी] आनन्ददायी। प्रसन्नकारक। मनोहर।

रमणं (न०) १ क्रीडा। २ आमोदप्रमोद। ३ प्रीति। मैथुन। ४ आनन्द। ५ कूल्हा। कमर।

रमणः (पु०) १ प्रेमी। पति। प्रीतम। २ कामदेव ३ गधा। रासभ। ४ अण्डकोश।

रमणा } १ एक सुन्दरी युवती स्त्री। २ प्रियतमा।
रमणी } पत्नी।

रमणीय (वि०) सुन्दर। मनोहर।

रमा (स्त्री०) १ पत्नी। स्वामिनी। २ लक्ष्मीजी का नाम। ३ धन। सम्पत्ति।—कान्तः—नाथ.—पतिः, (पु०) विष्णु।—वेष्टः (पु०) तारपीन। चन्दन विशेष। इसीसे तारपीन का तेल निकलता है।

रंभा } (स्त्री०) १ केले का पेड़। २ गौरी का
रम्भा } नाम। ३ एक अप्सरा का नाम। यह नलकूबर की पत्नी है। इससे बढ़कर सुन्दरी अप्सरा इन्द्रलोक में दूसरी नहीं है।

रम्य (वि०) मनोहर। सुन्दर।

रम्यः (पु०) चम्पा का पेड़।

रम्यं (न०) वीर्य।

रय् (धा० आत्म०) [रयते, रयित] जाना। गमन करना।

रयः (पु०) १ नदी का प्रवाह। धारा। २ रफ़्तार। वेग। तेज़ी। गति। ३ उत्साह। धुन।

रल्लकः (पु०) १ कंबल। ऊनीवस्त्र। २ पलक।

युवतिरल्लकमल्लसमाहृतो।
भवति को न युवा गतचेतन ॥"

३ हिरन।

रवः (पु०) १ चीख। गर्ज। नाद। २ गान। (चिड़िया का) चहकना। ३ खड़बड़ी। ४ शोर।

रवण (वि०) १ चिल्लाने वाला। नाद करने वाला। गर्जने वाला। २ शब्दायमान। ३ तीक्ष्ण। उष्ण। ४ चपल। चञ्चल।

रवणः (पु०) १ ऊँट। २ कोयल।

रवणं (न०) पीतल। काँसा। फूल।

रविः (पु०) सूर्य।—कान्तः, (पु०) सूर्यकान्त। आतिशी शीशा।—जः,—तनयः,—पुत्रः, (पु०)—सूनुः, (पु०) १ शनिग्रह। २ कर्ण। ३ वालि। ४ वैवस्वत मनु। ५ यमराज। ६ सुग्रीव।—दिनं, (न०)—वारः, (पु०)—वासरः, (पु०)—वासरं, (न०) रविवार। इतवार।—संक्रान्तिः, (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में गमन। सूर्यसंक्रमण।

रशना } (स्त्री०) १ रस्सी। डोरी। २ रास। लगाम।
रसना } ३ पटका। कमरबंद। कमरपेटी। ४ ज़बान। जीभ।—उपमा, (स्त्री०) उपमा विशेष जिसमें उपमाओं की शृङ्खला बँधी रहती है तथा पूर्वकथित उपमेय आगे चल कर उपमान होता जाता है। इसको गमनोपमा भी कहते हैं।

रश्मि (पु०) १ डोरी। रस्सी। रस्सा। २ रास। लगाम। ३ अङ्कुश। चाबुक। ४ किरण।—कलापः, (पु०) ५४ लड़ियों का मोतीहार।

रश्मिमत् (पु०) सूर्य।

रस् (धा० परस्मै०) [रसति, रसित] १ गर्जना। चीख़ना। चिल्लाना। दहाड़ना। २ शोरगुल करना। ३ प्रतिध्वनि करना।

रसः (पु०) (वृक्षों से निकलने वाला एक प्रकार का) सार। तत्त्व। २ तरल पदार्थ। ३ जल। ४ अर्थ। ५ मदिरा। आसव। ६ स्वाद। ज़ायक़ा। ७ चटनी। मसाला। ८ स्वादिष्ट पदार्थ। ९ रुचि। १० प्रीति। प्रेम। ११ आनन्द। हर्ष। प्रसन्नता। १२ मनोज्ञता। सौन्दर्य। सुडौलता। १३ भाव। भावना। १४ साहित्य में वह आनन्दात्मक चित्त वृत्ति या अनुभव जो विभाव, अनुभाव, और सञ्चारी से युक्त किसी स्थायी भाव के व्यञ्जित होने से पैदा होता है। साधारणतः साहित्य में आठ रस माने गये हैं। यथा

> शृङ्गार हास्य करुण रौद्रवीर भयानकः।
> बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥

किन्तु कभी कभी इनमें शान्त रस और जोड़ देने से इनकी संख्या नौ हो जाती है। इसीसे काव्यप्रकाशकार ने लिखा है :—

> निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमोरसः।

इसी प्रकार कोई कोई "वात्सल्यरस" को और बढ़ा कर रसों की संख्या दस बतलाते हैं। [रस कविता की जान है। इसीसे विश्वनाथ का मत है

> " वाक्यं रसात्मकं काव्यं। "

१५ गूदा। मिंगी। १६ शरीरस्थ पदार्थ विशेष। १७ वीर्य। १८ पारा। १९ ज़हर। विष। २० कोई भी खनिज पदार्थ।—अञ्जनं, (न०) रसवत। रसौत।—अम्लः, (पु०) १ आम्लवेतस्। अमलवेद। २ चूक नाम की खटाई।—अयनं, (न०) १ वैद्यक के अनुसार वह ओषधि जो जरा और व्याधि का नाश करने वाली हो। २ पदार्थों के तत्त्वों का ज्ञान।—आभासः, (पु०) साहित्य में किसी रस की ऐसे स्थान में अवतारणा करना जो उचित या उपयुक्त न हो। २ किसी रस का अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन।—आस्वादः, (पु०) १ स्वाद लेने वाला। २ कविता के भावों को जानने वाला।—इन्द्रः, (पु०) १ पारा। २ पारस पत्थर।—उद्भवं,—उपलं, (न०) मोती।—कर्मन्, (न०) पारे का तैयार करना।—केसरं, (न०) कपूर।—गन्धः, (पु०) —गन्धं, (न०) रसौत। रसाञ्जन।—जः, (पु०) राब। शीरा।—जं, (न०) खून।—ज्ञ, (वि०) १ वह जो रस का ज्ञाता हो। रस का जानने वाला। २ काव्यमर्मज्ञ।—ज्ञः, (पु०) १ समालोचक। गुणग्राही। कवि। २ रसायनी। ३ पारद के योग से दवाइयाँ बनाने वाला वैद्य।—ज्ञा (स्त्री०) जीभ।—तेजस्, (न०) खून।—दः, (पु०) वैद्य। हकीम।—धातु, (न०) पारा। पारद।—प्रबन्धः, (पु०) नाटक।—फलः, (पु०) नारियल।—भङ्गः, (पु०) भाव का नष्ट होना।—भवं, (न०) खून। रक्त। लोहू।—राजः, (पु०) पारा। पारद।—विक्रयः, (पु०) शराब की बिक्री।—शास्त्रं, (न०) रसायन शास्त्र।—सिद्धिः, (स्त्री०) रसायन विद्या में कुशलता या निपुणता।

रसनं (न०) रोना। चिल्लाना। चीखना। दहाड़ना। भुनभुनाना। २ गर्ज। दहाड़। बादल की गड़गड़ाहट। ३ स्वाद। जायका। ४ जिह्वा। जीभ।

रसना (स्त्री०) देखो "रशना"।—रदः, (पु०) पक्षी।—लिहः, (पु०) कुत्ता।

रसवत् (वि०) १ जिसमें रस हो। २ स्वादिष्ट। ज़ायकेदार। ३ नम। तर। भली भाँति पानी से भिगोया हुआ। ४ मनोहर। मनोज्ञ। ५ भावपूर्ण। ६ प्रीतिपरिपूर्ण। प्रेममय। ७ ज़िन्दादिल। हाज़िरजवाब।

रसा (स्त्री०) १ नरक। २ पृथिवी। धार। ३ जिह्वा। जीभ।—तलं, (न०) १ सप्त अधोलोकों में से एक लोक रसातल भी है। २ अधोलोक। नरक।

रसालं (न०) लोबान। गुग्गुल।

रसालः (पु०) १ आम का वृक्ष। २ ऊख। ईख।

रसाला (स्त्री०) १ जिह्वा। जीभ। २ शक्कर तथा मसाले पड़ा हुआ दही। सिखरन। सिखिन्न। ३ दूर्वावास। ४ अँगूर।

रसिक (वि०) १ स्वादिष्ट। २ मनोज्ञ। मनोहर। सुन्दर। ३ गुणग्राही। ४ रसिया।

रसिकः (पु०) १ सहृदय मनुष्य। भावुक नर। २ रसिया आदमी। लंपट मनुष्य। ३ हाथी। ४ घोड़ा।

रसिका (स्त्री०) १ गन्ने का रस। शीरा। २ जिह्वा। जीभ। ३ कमरबंद।

रसित (व० कृ०) १ चाखा हुआ। २ भावपूर्ण। ३ मुलम्मा चढ़ा हुआ।

रसितं (न०) १ शराब। मदिरा। २ चीख। दहाड़। गर्जन।

रसोनः (पु०) लशुन। लहसन।

रस्य (वि०) रसवाला।

रह् (धा० परस्मै०) [रहति, रहयति ते, रहित] त्यागना। छोड़ना। परित्याग करना। छोड़ देना।

रहणं (न०) वियोग। त्याग।

रहस् (न०) १ एकान्त। निर्जनता। विजनता। विविक्तता। २ निर्जनता। ३ रहस्य। भेद। ४ स्त्री-मैथुन।

रहस् (अव्यया०) गुपचुप। चुपके से।

रहस्य (वि०) गुप्तभेद। गोप्य विषय। २ वह जिसका तत्व सहज में सब की समझ में न आसके।

रहस्यं (न०) १ गुप्त भेद। २ एक ताँत्रिक प्रयोग। किसी अस्त्र का रहस्य। सरहस्यानि जृंभकास्त्राणि। ३ किसी के चालचलन का गुप्त भेद। ४ गोप्य सिद्धान्त।

रहस्यं (अव्यया०) गुपचुप। चुपचाप।—आख्यायिन्, (वि०) गुप्त बात कहने वाला।—भेद, —विभेदः, (पु०) किसी गुप्त भेद का प्राकट्य। —व्रतं, (न०) गुप्त व्रत या प्रायश्चित्त।

रहित (व० कृ०) १ त्यक्त। त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। २ पृथक किया हुआ। बिना। ३ अकेला। निर्जन।

रा (धा० परस्मै०) [राति, रात] देना। प्रदान करना।

राका (स्त्री०) १ पूर्णमासी। पूर्णिमा। रात। २ वह स्त्री जिसको पहले पहल रजोदर्शन हुआ हो। ३ खुजली। खाज। ४ पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी। ५ खर तथा सूपनखा की माता।

राक्षस (वि०) [स्त्री०—राक्षसी] राक्षस सम्बन्धी। राक्षस स्वभाव का। राक्षस जैसा। शैतानी।

राक्षसः (पु०) १ निशाचर। २ आठ प्रकार के विवाहों में से एक प्रकार का राक्षस विवाह भी है। इसमें कन्या के लिये उभयपक्ष में युद्ध होता है। ३ ज्योतिष सम्बन्धी योग विशेष। ४ मुद्राराक्षस नाटक के राजा नन्द के एक मंत्री का नाम। ५ साठ संवत्सरों में से उनचासवाँ संवत्सर।

राक्षसी (स्त्री०) राक्षस की स्त्री।

रागः (पु०) १ रंग। २ लाल रंग। ललाई। ३ लाखी रंग। ४ अनुराग। प्रीति। मैथुन सम्बन्धी। भावना। ५ भाव। ६ हर्ष। आनन्द। ७ क्रोध। रोष। ८ मनोज्ञता। सौन्दर्य। ९ संगीत में राग। राग छः माने गये हैं यथा:—

> भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा।
> श्रीरागो मेघरागश्च रागाः षडिति कीर्तिताः॥

१० संगीत सम्बन्धी संगती। ११ खेद। शोक। १२ लालच। डाह।—चूर्णः, (पु०) कत्था का पेड़। २ इंगुर। सिन्दूर। ३ लाख। ४ अबीर। गुलाल। ५ कामदेव।—भुज्, (पु०) चुन्नी। मानिक।—सूत्रं, (न०) १ रंगा हुआ सूत या डोरा। २ रेशमी डोरा। ३ तराजू की डोरी।

रागिन् (वि०) १ रंगीन। २ लाल रंग का। ३ भावपूर्ण। ४ प्रेमपूरित। प्रीतिपूर्ण। ५ अनुरागवान्। (पु०) १ चित्रकार। २ प्रेमी। अनुरागी। ३ कामुक। लंपट।

रागिणी (स्त्री०) १ रागिनियां या राग की पत्नियां। इनकी संख्या किसी के मतानुसार ३० और किसी के मतानुसार ३६ है। २ विदग्धा स्त्री। स्वेच्छाचारिणी स्त्री। छिनाल स्त्री।

राघवः (पु०) १ रघु का वंशधर। श्रीरामचन्द्र। २ बड़ी जाति की मच्छली।

रांकव, राङ्कव (वि०) [स्त्री०—रांकवी, राङ्कवी] रङ्कु जाति के हिरन सम्बन्धी या उसके चर्म का बना हुआ। ऊनी।

रांकवम्, राङ्कवम् (न०) १ हिरन के बालों का बना ऊनी वस्त्र। ऊनी वस्त्र। २ कंबल।

राज् (धा० उभय०) [राजति-राजते, राजित] १ चमकना। २ सुन्दर देख पड़ना।

राज् (पु०) राजा। नरेन्द्र। नरपति।

राजकः (पु०) छोटा राजा।

राजकं (न०) कितने ही राजाओं का समुदाय।

राजत (वि०) [स्त्री०—राजती] रुपहला। चाँदी का बना हुआ।

राजतं (न०) चाँदी।

राजन् (पु०) १ राजा। २ क्षत्रिय। ३ युधिष्ठिर का एक नाम। ४ इन्द्र का नाम। ५ चन्द्रमा। ६ यक्ष।—अङ्गन, (न०) शाही अदालत। राजप्रसाद का आँगन।—अधिकारिन्,—अधिकृतः, (पु०) १ सरकारी अफसर। २ न्यायाधीश। जज।—अधिराजः,—इन्द्रः, (पु०) महाराज। राजाओं का राजा।—अनकः, (पु०) १ छोटा राजा। २ प्राचीन कालीन एक उपाधि जो प्रसिद्ध कवियों और विद्वानों को दी जाती थी।—अपसदः, (पु०) अयोग्य या पतित राजा।—अभिषेकः, (पु०) राजा का राजतिलक।—अर्हं, (न०) अगर काष्ट।—अर्हणम्, (न०) राज की दी हुई सम्मानसूचक उपहार की वस्तु।—आज्ञा, (स्त्री०) राजघोषणा।—ऋषिः, (= राजर्षिः या राजऋषिः) (पु०) क्षत्रिय जाति का ऋषि। [राजर्षियों में पुरूरवस्, जनक और विश्वामित्र की गणना है।]—करः, (पु०) कर जो राजा को दिया जाय।—कार्य, (न०) राजकाज।—कुमारः, (पु०) राजा का पुत्र।—कुलं, (न०) १ राजवंश। २ राजा का दरबार। ३ न्यायालय। ४ राजप्रासाद। ५ राजन्। स्वामिन् (प्रतिष्ठासूचक सम्बोधन करने की शैली)—गामिन्, (वि०) (वह) राजा को प्राप्त होने वाली (सम्पत्ति, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो) लावारिसी (जायदाद)—गृहं, (न०) १ राजप्रासाद। महल। २ मगध के एक प्रधान नगर का नाम।—तालः, (पु०)—ताली, (स्त्री०) सुपारी का पेड़।—दण्डः, (पु०) १ राजा के हाथ का डंडा विशेष। २ राजशासन। ३ वह दण्ड या सज़ा जो राजा द्वारा दी गयी हो।—दन्तः, (पु०) सामने का दाँत।—दूतः, (पु०) एलची।—द्रोहः, (पु०) बग़ावत। ऐसा काम जिससे राजा या राज्य के अनिष्ट की सम्भावना हो।—द्वारिकः, (पु०) राजा का ड्योढ़ीवान्।—धर्मः, (पु०) १ राजा का कर्त्तव्य। २ महाभारत के शान्तिपर्व के एक अंश का नाम।—धानं, (न०)—धानिका, (स्त्री०)—धानी, (स्त्री०) वह प्रधान नगर जहाँ किसी देश का राजा या शासक रहे।—नयः (पु०)—नीतिः, (स्त्री०) वह नीति जिसका पालन करता हुआ राजा अपने राज्य की रक्षा और शासन को दृढ़ करता है।—नीलं, (न०) पन्ना।—पट्टः, (पु०) कमकीमत का हीरा।—पथः, (पु०)—पद्धतिः, (स्त्री०) राजमार्ग।—पुत्रः, (पु०) १ राजकुमार। २ राजपूत। क्षत्रिय। ३ बुधग्रह।—पुत्री, (स्त्री०) राजकुमारी।—पुरुषः, (पु०) १ राजकर्मचारी। २ अमात्य।—प्रेष्यः, (पु०) राजा का नौकर।—प्रेष्यं, (न०) राजा की नौकरी।—बीजिन्,—वंश्य, (वि०) राजा के वंश का।—भृतः, (पु०) राजा का सिपाही।—भृत्यः, (पु०) १ राजा का मंत्री। २ कोई भी सरकारी नौकर।—भौतः, (पु०) राजा का विदूषक।—मात्रधरः,—मंत्रिन्, (पु०) राजदरबारी।—मार्गः, (पु०)

१ आम सड़क। २ राजपद्धति।—मुद्रा, (स्त्री०) राजा की मोहर। यक्ष्मन्, (पु०) क्षयी। यक्ष्मा। तपेदिक।—यानं, (न०) पालकी। शाही सवारी।—योगः, (पु०) १ फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का एक योग विशेष जिसके जन्म-कुण्डली में पड़ने से राजा या राजा के तुल्य होता है। २ वह योग विशेष जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है।—रङ्गम्, (न०) चाँदी।—राजः, (पु०) १ सम्राट्। महाराज। २ कुबेर का नाम। ३ चन्द्रमा।—रीतिः, (स्त्री०) काँसा। कलकुट।—लक्षणं, (न०) १ सामुद्रिक के अनुसार वे चिन्ह या लक्षण जिनके होने से मनुष्य राजा होता है। २ राजचिन्ह। (छत्र-चँवर आदि)—लक्ष्मीः,—श्रीः, (स्त्री०) राजवैभव।—वंशः (पु०) राजकुल।—विद्या, (स्त्री०) राजनीति।—विहारः, (पु०) राजमठ।—शासन, (न०) राजा की आज्ञा।—शृङ्गं, (न०) सोने की डंडी का छत्र जो राजा के ऊपर ताना जाय।—सभा, (स्त्री०) न्यायालय।—सदनं, (न०) राजप्रासाद।—सर्षपः, (पु०) राई।—सायुज्यं, (न०) राजत्व।—सारसः (पु०) मयूर।—सूयः (पु०)—सूयं, (न०) राजाओं के करने योग्य यज्ञविशेष।—स्कन्धः, (पु०) घोड़ा।—स्वं, (न०) १ राजा की सम्पत्ति। २ राजकर।—हंसः, (पु०) एक प्रकार का हंस जिसे सोना-पची भी कहते हैं।—हस्तिन् (पु०) १ वह हाथी जिस पर राजा सवार हो। २ बड़ा और सुन्दर हाथी।

राजन्य (वि०) शाही। राजसी।

राजन्यः (पु०) १ क्षत्रिय। २ सरदार।

राजन्यकं (न०) योद्धाओं या क्षत्रियों की टोली या समुदाय।

राजन्वत् (वि०) अच्छे राजा द्वारा शासित।

राजस् (वि०) [स्त्री०—राजसी] रजोगुण सम्बन्धी।

राजसात् (अव्यया०) राजा के अधिकार में।

राजिः }
राजी } (स्त्री०) धारी। रेखा। पंक्ति।

राजिका (स्त्री०) १ रेखा। पंक्ति। २ खेत। ३ राई। ४ सरसों।

राजिलः (पु०) विषरहित और सीधे सर्पों की एक जाति।

राजीवः (पु०) १ हिरन विशेष। २ सारस। ३ हाथी।

राजीवं (न०) नील कमल।—अक्ष, (वि०) कमललोचन।

राज्ञी (स्त्री०) राजा की पत्नी। रानी।

राज्यं (न०) १ राज्याधिकार। २ वह देश जिसमें एक राजा का शासन हो। ३ शासन। हुकूमत।—तंत्र, (न०) राज्य की शासन प्रणाली।—व्यवहारः (पु०) शासन। हुकूमत।—सुखं, (न०) राज्य के सुख या आनन्द।

राढा, (स्त्री०) १ आभा। दीप्ति। २ बंगाल के एक ज़िले का नाम। उसकी राजधानी का नाम। यथा :—

गौडं राष्ट्रमनुत्तमं निरुपमा तत्रापि राढापुरी।

—प्रबोधचन्द्रोदय।

रात्रिः }
रात्री } (स्त्री०) रात। रजनी। निशा।—अटः, (पु०) १ राक्षस। भूत। प्रेत। २ चोर।—अन्ध, (वि०) जिसे रात में न देख पड़े।—करः, (पु०) चन्द्रमा।—चरः, [रात्रिंचर, भी होता है।] १ चोर। डाँकू। २ चौकीदार। ३ भूत। प्रेत। राक्षस।—जं, (न०) नक्षत्र। तारा।—जल, (न०) ओस।—जागरः, (पु०) कुत्ता।—पुष्पं, (न०) रात में खिलने वाला कमल।—योगः, (पु०) रात हो जाना।—रक्षः,—रक्षकः, (पु०) चौकीदार।—रागः, (पु०) अन्धकार।—वासस्, (न०) १ रात में पहनने की पोशाक। २ अँधकार।—विगमः, (पु०) रात का अवसान। भोर। तड़का। सवेरा।—वेदः,—वेदिन् (पु०) मुर्गा। कुक्कुट।

रात्रिंदिवं }
रात्रिंदिवा } (अव्यया०) दिनरात। सदैव।

रात्रिमन्य (वि०) रात के समान देख पड़ने वाला। (बदली का दिन) अँधियारा दिन।

राद्ध (व० कृ०) १ पका हुआ। राधा हुआ। २ प्रसन्न। मनाया हुआ। राज़ी किया हुआ। ३ सिद्ध। पूरा किया हुआ। ४ तैयार किया हुआ। ५ पाया हुआ। प्राप्त। उपलब्ध। ६ सफल मनोरथ। भाग्यवान्। सुखी। ७ ऐन्द्रजालिक विद्या में निपुण।

राध् (धा० परस्मै०) [राध्नोति, राद्ध] १ राज़ी कर लेना। प्रसन्न कर लेना। २ पूरा करना। सिद्ध करना। ३ तैयार करना। ४ मार डालना। घायल करना। जड़ से नष्ट कर डालना।

राधः (वि०) वैशाख मास।

राधा (स्त्री०) १ समृद्धि। सफलता। २ एक प्रसिद्ध गोपी का नाम, जिस पर श्रीकृष्ण का बड़ा अनुराग था और जो वृषभानु गोप की कन्या थी। ३ अधिरथ की स्त्री का नाम, जिसने कर्ण को पाला पोसा था। ४ विशाखा नक्षत्र। ५ बिजली।

राधिका (स्त्री०) देखो राधा।

राधेयः (पु०) कर्ण की उपाधि।

राम (वि०) १ प्रसन्न करने वाला। २ सुन्दर। खूबसूरत। मनोहर। मनोज्ञ। ३ कृष्ण वर्ण। काले रंग का। ४ सफेद। —अनुजः (= रामानुजः) (पु०) १ दक्षिण प्रदेश में प्रादुर्भूत एक प्रसिद्ध श्रीवैष्णवाचार्य। २ श्रीरामचन्द्र जी के छोटे भाई, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न। किन्तु विशेष कर लक्ष्मण। —अयनं, —अयणं, (न०) १ श्रीरामचरित्र। २ श्री महर्षिवाल्मीकि रचित ऐतिहासिक एक काव्य ग्रन्थ विशेष, जिसमें २४,००० श्लोक और सात काण्ड हैं। —गिरिः, (पु०) नागपुर के निकट एक पहाड़ी जिसका वर्णन कालिदास ने मेघदूत काव्य में किया है। इसका आधुनिक नाम रामटेक है।

"स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।"

—मेघदूत।

—चन्द्रः, —भद्रः, (पु०) दशरथनन्दन श्री रामचन्द्र जी। —दूतः (पु०) हनुमान जी। —नवमी, (स्त्री०) चैत्र शुक्ला नवमी। —सेतुः, (पु०) श्रीरामचन्द्र जी का बनाया पुल जो लंका और भारतवर्ष के बीच में है, जिसे आज कल एडमस् ब्रिज कहते हैं।

रामः (पु०) १ तीन प्रसिद्ध महापुरुषों का नाम। यथा (क) दशरथपुत्र श्रीरामचन्द्र। (ख) जमदग्निपुत्र परशुराम। (ग) वसुदेवपुत्र बलराम। २ हिरन विशेष।

रामठं (न०) } हींग।
रामठः (पु०) }

रामणीयक (वि०) [स्त्री०—रामणीयकी] मनोहर। सुन्दर।

रामणीयकं (न०) सौन्दर्य। मनोहरता।

रामा (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री। २ प्रेयसी। भार्या। ३ स्त्री। ४ अकुलीन स्त्री। ५ इंगुर। शिंगरफ। ६ हींग।

रामः (पु०) ब्रह्मचारी या संन्यासी का (बाँस का) दण्ड।

रावः (पु०) चीत्र। चीत्कार। नाद। गर्जन।

रावण (वि०) रोने वाला। चिल्लाने वाला।

रावणः (पु०) राक्षसराज दशानन का नाम जिसे लङ्का में जा दशरथनन्दन श्रीरामचन्द्र ने युद्ध में मारा था। क्योंकि रावण श्रीरामचन्द्र जी की स्त्री सीता को वन में से अकेले में हर ले गया था।

रावणिः (पु०) १ रावणपुत्र इन्द्रजीत या मेघनाद। २ रावण का (कोई भी) पुत्र।

राशिः (पु०) १ ढेर। पुञ्ज। एक ही प्रकार की बहुत सी चीज़ों का समूह। २ क्रान्ति वृत्त में अवस्थित विशिष्ट तारा समूह जो संख्या में बारह है। —चक्रं, (न०) मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मण्डल। भचक्र। —त्रयं, (न०) त्रैराशिक गणित। —भागः, (पु०) भस्तांश। किसी राशि का भाग या अँश। —भोगः, (पु०) किसी ग्रह का किसी राशि में कुछ काल तक रहना।

राष्ट्रं (पु०) १ राज्य । साम्राज्य । २ देश । मुल्क । ३ प्रजा । जाति ।

राष्ट्रं (न०) } किसी भी प्रकार का जातीय या
राष्ट्रः (पु०) } देश व्यापी सङ्कट ।

राष्ट्रिकः (पु०) १ किसी देश या राज्य का रहने वाला । २ किसी राज्य का राजा या शासक ।

राष्ट्रिय (वि०) किसी राज्य सम्बन्धी ।

राष्ट्रियः (पु०) १ राजा किसी राज्य का शासक । २ राजा का साला । यथा"

"अत्र राष्ट्रियमुखाद्व्यावदगुलीकदर्शनम् ।"

रास् (धा० आत्म०) [रासते] चिचियाना । चीखना । भूँकना ।

रासः (पु०) १ कोलाहल । शोरगुल । हल्ला । गोपों की प्राचीन काल की क्रीड़ा जिसमें वे सब मण्डल बना कर एक साथ नाचते थे । —क्रीडा, (स्त्री०) —मण्डलं, (न०) मण्डलाकार श्रीकृष्ण और गोपियों का नृत्य ।

रासकं (न०) नाटक का एक भेद जो केवल एक अङ्क का होता है । इसमें केवल ५ नट या अभिनय करने वाले होते हैं । इसमें हास्यरस प्रधान होता है और सूत्रधार नहीं आता ।

रासभः (पु०) गधा । गर्दभ ।

राहित्यं (न०) अभाव ।

राहुः (पु०) १ पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक जो विप्रचित्त के वीर्य और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । २ ग्रहण । —ग्रसनं, (न०) —ग्रासः, (पु०)—दर्शनं, (न०) –संस्पर्शः, चन्द्र या सूर्य का ग्रहण ।—सूतकं, (न०) ग्रहण का सूतक ।

रि (धा० परस्मै०) [रियति, रीण] जाना । चलना ।

रिक्त (व० कृ०) १ रीता किया हुआ । खाली किया हुआ । २ खाली । रीता । ३ रहित । विना । ४ खोखला (जैसे हाथ की अंजलि) ५ मोहताज । कंगाल । ७ विभक्त । वियुक्त ।—पाणि,—हस्त, (वि०) खाली हाथ । रीते हाथ ।

रिक्तं (न०) १ रिक्त या खाली स्थान । २ वन । जंगल ।

रिक्तक (वि०) देखो रिक्त ।

रिक्ता (स्त्री०) चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियाँ रिक्ता तिथियां कहलाती हैं ।

रिक्थं (न०) १ उत्तराधिकार या विरासत में मिली हुई सम्पत्ति । २ धन । सम्पत्ति । ३ सुवर्ण ।—आदः, —ग्राहः, —भागिन्, (पु०) —हरः, —हारिन्, (पु०) उत्तराधिकारी ।

रिंख् }
रिङ्ख् } [रिंखति, रिङ्खति, रिंगति, रिङ्गति] १
रिंग् } रेंगना । २ धीरे धीरे जाना ।
रिङ्ग् }

रिंखणं, (न०) }
रिङ्खणं (न०) } १ रेंगना । घुटनों चलना । २
रिंगणं, (न०) } विचलित होना ।
रिङ्गणम् (न०) }

रिच् (धा० उभ०) [रिणक्ति, रिंक्ते, रिक्त] १ खाली करना । साफ़ करना । निकाल डालना । २ वञ्चित करना । मुहताज करना ।

रिटिः (पु०) १ बाजा । २ शिवजी के एक गण का नाम ।

रिपुः (पु०) शत्रु ।

रिफ् (धा० परस्मै०) [रिफति, रिफित] १ गाली देना । दोषी ठहराना । कलङ्क लगाना । २ कट-कटाने का शब्द करना ।

रिष् (धा० परस्मै०) [रेषति, रिष्ट] १ चोटिल करना । नुकसान पहुँचाना । अनिष्ट करना । २ वध करना । नाश करना ।

रिष्ट (व० कृ०) १ घायल । चोटिल । ३ अभागा । बदकिस्मत ।

रिष्टं (न०) १ उपद्रव । अनिष्ट । हानि । २ अभागापन । बदकिस्मती । ३ नाश । हानि । ४ पाप । ५ सौभाग्य । समृद्धि ।

रिष्टिः (पु०) तलवार ।

री (धा० आत्म०) [रीयते] १ चूना । टपकना । उमड़ना । बहना ।

रीज्या (स्त्री०) १ भर्त्सना । फिटकार । कलङ्क । २ लज्जा । लज्जाशीलता ।

रीढकः (पु०) मेरुदण्ड । पीठ के बीच की हड्डी । रीढ़ की हड्डी ।

रीढा (स्त्री०) अपमान । तिरस्कार । असम्मान ।

रीण (व० कृ०) उमड़ा हुआ । बहा हुआ । चूता हुआ ।

रीतिः (स्त्री०) १ गति । बहाव । २ नदी । सोता । ३ रेखा । सीमा । ४ ढंग । प्रकार । ५ चलन । रवाज़ । रस्म । ६ तर्ज़ । शैली । ७ पीतल । काँसा । कसकुट । ८ लोहे का मोर्चा । जंग । ९ बरतनों पर की क़लई ।

रु (धा० परस्मै०) [रौति, रवीति, रुत] १ चिल्लाना । हौ हौ करना । चीख़ना । चिचियाना । दहाड़ना । गुञ्जार करना ।

रुक्म (वि०) चमकीला । चमकदार ।

रुक्मन् (न०) १ सुवर्ण । २ लोहा ।—कारकः, (पु०) सुनार ।—पृष्ठक, (वि०) सोने का पानी चढ़ा हुआ । मुलम्मा किया हुआ ।—वाहनः, (पु०) द्रोणाचार्य का नामान्तर ।

रुक्मिन् (पु०) राजा भीष्मक के ज्येष्ठ राजकुमार का नाम ।

रुक्मिणी (स्त्री०) राजा भीष्मक की राजकुमारी और श्रीकृष्ण की पटरानी ।

रुग्ण (व० कृ०) १ टूटा हुआ । चकना चूर । २ झुका हुआ । मुड़ा हुआ । नमित । ३ चोटिल । घायल । ४ बीमार । रोगी । रोगग्रस्त । ५ बिगड़ा हुआ ।

रुच् (धा० आत्म०) [रोचते, रुचित] १ चमकना । सुन्दर जान पड़ना । २ पसन्द करना । प्रसन्न होना ।

रुच } (स्त्री०) १ चमक । आभा । दीप्ति । २
रुचा } मनोहरता । सुन्दरता ३ वर्ण । सूरत । ४ रुचि । अभिलाषा ।

रुचक (वि०) १ पसंद आने वाला । प्रसन्नकारक । २ पाकस्थली सम्बन्धी । ३ तीक्ष्ण । चरपरा ।

रुचकं (न०) १ दाँत । २ गले में धारण किया जाने वाला आभूषण । हार । पुष्पहार । गजरा । ५ सज्जीखार । काला निमक ।

रुचकः (पु०) १ बिजौरा नीबू । जँभीरी । २ कबूतर ।

रुचा (देखो रुच्)

रुचिः (स्त्री०) १ आभा । प्रकाश । दीप्ति । चमक । २ किरन । ३ वर्ण । रूपरंग । सौन्दर्य । ४ स्वाद । ज़ायका । ५ भूख । बुभुक्षा । ६ अभिलाषा । इच्छा । आनन्द । ७ पसंदगी । अभिरुचि । ८ लवलीनता । लौ । लगन ।—कर, (वि०) १ स्वादिष्ट । २ अभिरुचि को उत्पन्न करने वाला । ३ पाकस्थली सम्बन्धी ।—भर्तृ (पु०) १ सूर्य । २ पति ।

रुचिर (वि०) १ चमकीला । चमकदार । २ स्वादिष्ट । ३ मधुर । मीठा । ४ पाकस्थली सम्बन्धी । भूख बढ़ाने वाला । ५ बलद । शक्तिप्रद । बलवर्द्धक ।

रुचिरं (न०) १ केसर । २ लौंग ।

रुचिरा (स्त्री०) १ एक प्रकार का पीला रोगन । २ वृत्त विशेष ।

रुच्य (वि०) चमकीला । मनोहर ।

रुज् (धा० परस्मै०) [रुजति रुग्ण] १ टुकड़े टुकड़े कर डालना । २ पीड़ित करना । रोगाक्रान्त होना । गड़बड़ी करना ।

रुज } (स्त्री०) १ भङ्ग । २ वेदना । कष्ट । ३
रुजा } रोग । बीमारी । ४ थकावट । श्रान्ति । श्रम ।—प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रोग की चिकित्सा ।—भेषजं, (न०) दवा ।—सद्मन्, (न०) मल । विष्ठा ।

रुंडः (पु०) }
रुण्डः (पु०) } सिर शून्य शरीर । कबन्ध । धड़
रुंडं (न०) } मात्र ।
रुण्डम् (न०) }

रुतं (न०) १ शब्द । ध्वनि ।—व्याजः, (पु०) १ उत्तेजक उद्घोष । २ नकल । हास्योद्दीपक अनुकरण ।

रुद् (धा० परस्मै०) [रोदिति, रुदित] १ रोना । चिल्लाना । विलाप करना । शोक मनाना । आंसू बहाना । २ गुर्राना । भूंकना । दहाड़ना । चीखना ।

रुदनं } (न०) रोदन । चीत्कार । विलाप ।
रुदितं }

रुद्ध (व० कृ०) १ रुका हुआ । छिपा हुआ । २ वेष्टित । घिरा हुआ ।

रुद्र (वि०) भयानक । भयङ्कर । खौफ़नाक ।

रुद्रः (पु०) १ एकादश संख्यक एक प्रकार के गण देवता । ये शिव जी के अपकृष्ट रूप हैं । शिवजी इनके मुख्य हैं । गीता में कहा भी है —

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि ।

२ शिव जी का नाम ।—अक्षः, (पु०) एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़ । इसी वृक्ष के फल के बीजों की रुद्राक्ष की माला बनायी जाती है ।—आवासः, (पु०) १ रुद्र का निवास स्थान । कैलास पर्वत । २ काशी । ३ श्मशान ।

रुद्राणी (स्त्री०) रुद्र की पत्नी अर्थात पार्वती जी ।

रुध् (धा० उभय०) [रुणद्धि, रुंद्धे, रुद्ध] १ रोकना । बंद करना । थामना । बाधा डालना । २ रोक रखना । ३ ताले में बंद कर रखना । ४ बंधन में रखना । क़ैद करना । ५ घेरा डालना । ६ छिपाना । ढकना ७ पीडित करना । सताना ।

रुरुः (पु०) मृग विशेष ।

रुश् (धा० परस्मै०) [रुशति] घायल करना । वध करना । नाश करना ।

रुशत् (वि०) चोट पहुँचाने वाला । अप्रिय । बुरा लगने वाला (जैसे शब्द) ।

रुष् (धा० परस्मै०) [रुष्यति, रुषित रुष्ट] रूठना । अप्रसन्न होना । नाराज़ होना [रोषति] १ घायल करना । वध करना । २ चिढ़ाना । चिगाना । छेड़छाड़ करना ।

रुष } (स्त्री०) क्रोध । गुस्सा । रोष ।
रुषा }

रुह् (धा० परस्मै०) [रोहति, रूढ] १ बढ़ना । उगना । अङ्कुरित होना । जड़ पकड़ना । उत्पन्न होना । बढ़ना । ३ निकलना । ऊपर को उठना । ऊपर चढ़ना । ४ पूरना (घाव का) भरना ।

रुह } (वि०) उत्पन्न होने वाला । निकलने वाला ।
रूह }

रुहा (स्त्री०) दूर्वा या दूब घास ।

रूक्ष (वि०) १ खुरखुरा । कड़ा । अस्निग्ध । २ रूखा । ३ असम । ऊबड़खाबड़ । कठिन । ४ मैला कुचैला । ५ निष्ठुर । संगदिल । ६ सूखा । नीरस ।

रूक्षणं (न०) सुखाने या पतले करने की क्रिया । २ मुटाई कम करने की क्रिया ।

रूढ (व० कृ०) १ उगा हुआ । निकला हुआ । अङ्कुरित । जमा हुआ । २ उत्पन्न । ३ वृद्धि को प्राप्त । ४ उगा हुआ (जैसे कोई ग्रह) ऊपर को चढ़ा हुआ । ५ बड़ा । लंबा । मज़बूत पड़ा हुआ । ६ व्याप्त । फैला हुआ । ७ प्रचलित । प्रसिद्ध । ८ सर्वजन स्वीकृत । ९ निश्चित किया हुआ । खोजा हुआ । दर्याफ्त किया हुआ ।

रूढिः (स्त्री०) १ बाढ़ । अङ्कुरोत्पत्ति । २ जन्म । उत्पत्ति । ३ वृद्धि । बढ़ती । फैलाव । ४ उभार । उठान । ५ ख्याति । प्रसिद्धि । ६ प्रथा । चाल । ७ प्रचलन । ८ प्रचलित अर्थ ।

रूप् (धा० उभय०) [रूपयति, रूपयते, रूपित] १ बनाना । गढ़ना । २ रंगमञ्च पर रूप भरना । ३ चिन्हानी करना । ध्यान से देखना । ४ तलाश करना । ढूंढ़ना । ५ ख्याल करना । विचार करना । ६ निश्चय करना । ७ परीक्षा करना । अन्वेषण करना । ८ नियत करना ।

रूपं (न०) १ शक्ल । सूरत । आकार । २ कोई भी पदार्थ जो देख पड़े । ३ सुन्दर पदार्थ । खूबसूरत शक्ल । ४ स्वभाव । प्रकृति । ५ रीति । ढंग । ६ पहचान । लक्षण । ७ जाति । प्रकार । किस्म । ८ मूर्ति । प्रतिमा । ९ सादृश्य । समानता । प्रतिकृति । १० आदर्श । नमूना । बानगी । ११ किसी संज्ञा या क्रिया को विभक्तियों और उसके लकारों के रूप । १२ एक की संख्या । १३ पूर्ण संख्या । अखण्ड संख्या । अखण्ड राशि । पूर्णाङ्क । १४ नाटक । रूपक । १५ किसी ग्रन्थ को कण्ठस्थ करके अथवा बार बार पढ़ कर, उसके

अवगत करने की क्रिया । १६ मवेशी । पशु । १७ शब्द । ध्वनि ।—अभिग्राहित, (वि०) वह जो अपराध करते हुए गिरफ्तार किया गया हो ।—आजीवा, (स्त्री०) वेश्या । रंडी ।—आश्रयः, (पु०) अत्यन्त सुन्दर पुरुष ।—इन्द्रियं, (न०) वह इन्द्रिय जो रूप वर्ण का ज्ञान सम्पादन करती है अर्थात् आँखे ।—उच्चयः, (पु०) सुन्दर रूपों का संग्रह ।—कार,—कृत्, (पु०) शिल्पी ।—तत्त्वं (न०) पैतृक सम्पत्ति । परमसत्ता ।—धर, (वि०) (किसी की) शक्ल का बना हुआ । स्वाँग बनाये हुए ।—नाशनः, (पु०) उल्लू ।—लावण्यं, (न०) सौन्दर्य । सुन्दरता ।—विपर्ययः, (पु०) भद्दापन । कुरूपता । बदसूरती ।—शालिन्, (वि०) सुन्दर ।—सम्पद्,—सम्पत्ति, (स्त्री०) सौन्दर्य । उत्तम रूप ।

रूपकं (न०) १ आकृति । सूरत । शक्ल । २ मूर्ति । प्रतिकृति । ३ चिन्हानी । लक्षण । ४ किस्म । जाति । ५ वह काव्य जो पात्रों द्वारा खेला जाता है । दृश्यकाव्य । ६ एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमेय में उपमान के साधर्म्य का आरोप कर, उसका वर्णन, उपमान के रूप से किया जाता है । ७ मान या तौल विशेष ।—तालः, (पु०) सङ्गीत में "दोताला" एक ताल ।

रूपकः (पु०) १ मुद्रा विशेष रुपैया ।

रूपणं (न०) १ आलङ्कारिक वर्णन । २ अन्वेषण । अनुसन्धान । परीक्षा ।

रूपवत् (वि०) १ रंग या रूप वाला । २ शारीरिक । ३ शरीरधारी । ४ सुन्दर । मनोहर ।

रूपवती (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।

रूपिन् (वि०) १ मानों । सदृश । २ शरीरधारी । अवतारी । ३ सुन्दर ।

रूप्य (वि०) सुन्दर । मनोहर । प्रिय ।

रूप्यं, (न०) १ चाँदी । २ रुपैया । ३ गढ़ा हुआ सोना ।

रूष् (धा० परस्मै०) [रूषति, रूषित] सजाना । शृङ्गार करना । २ मालिश करना । मलना । उबटन करना । ढक जाना । आच्छादित होना । (उभय० रूषयति, रूषयते) १ काँपना । २ फट जाना । तड़क जाना ।

रूषित (व० कृ०) १ सजा हुआ । २ लेप किया हुआ । उबटन किया हुआ । ढका हुआ । ३ दाग दगीला । दागी । खुरदरा । ४ कुटा हुआ ।

रे (अव्यया) सम्बोधनात्मक अव्यय ।

रेखा (स्त्री०) १ लकीर । धारी । २ पंक्ति । कतार । ३ रूपरेखा । ढाँचा । खफ़ा । ४ अघाने की क्रिया । ५ दगा । छल । कपट ।—अंशः (पु०) द्राघिमांश या मोत्तर वृत्त का एक एक अंश ।—गणितं, (न०) गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं से कतिपय सिद्धान्त निर्द्धारित किये गये हैं ।

रेचक (वि०) [स्त्री०—रेचिका] १ दस्तावर । दस्त लाने वाला । २ फेफड़ों को साफ करने वाला । स्वाँस निकालने वाला ।

रेच देखो रेचक ।

रेचकः (पु०) १ पूरक का उल्टा । नथुने से पेट में रुकी हुई स्वाँस को निकालने की क्रिया । २ पिचकारी । ३ शोरा । जवाखार ।

रेचकं (न०) जमालगोटा ।

रेचनं (न०) } रेचना (स्त्री०) } १ खाली करने की क्रिया । २ कम करने की क्रिया । घटाने की क्रिया । ३ साँस बाहिर निकालने की क्रिया । ४ मलस्थली साफ करने की क्रिया । ५ मल ।

रेचित (व० कृ०) साफ । रीता किया हुआ ।

रेचितं (न०) घोड़े की दुलकी की चाल ।

रेणु (पु०) (स्त्री०) १ रज । धूल । रेत । बालू । २ पुष्पपराग ।

रेणुका (स्त्री०) परशुराम जी की माता का नाम ।

रेतस् (न०) वीर्य । धातु ।

रेप (वि०) १ तिरस्करणीय । नीच । २ निष्ठुर ।

रेफ (वि०) नीच । कमीना । दुष्ट ।

रेफः (पु०) १ रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के र पूर्व आने पर उसके ऊपर रहता है । २ ध्वनि विशेष । ३ अनुराग । स्नेह ।

रेवटः (पु०) १ शूकर । २ बाँस की छड़ी । ३ भँवर ।

रेवतः (पु०) बिजौरा नीबू । जँभीरी ।

रेवती (स्त्री०) १ सत्ताइसवें नक्षत्र का नाम । २ बलराम जी की स्त्री का नाम ।

रेवा (न०) नर्मदा नदी का नाम ।

रेष् (धा० आत्म०) [रेषते, रेषित] १ दहाड़ना । गुर्राना । चीख़ना । २ हिनहिनाना ।

रेषणं (न०) }
रेषा (स्त्री०) } दहाड़ । हिनहिनाहट ।

रै (पु०) धन दौलत । सम्पत्ति । [कर्त्ता—राः, रायौ, रायः]

रैवतः (पु०) }
रैवतकः (पु०) } द्वारका के समीपवर्त्ती एक पर्वत का नाम ।

रोकं (न०) १ छिद्र । २ नाव । जहाज़ । ३ कम्प । प्रकम्प ।

रोगः (पु०) बीमारी ।—आयतनं, (न०) शरीर । देह ।—आर्त, (वि०) बीमार । रोगी ।—हृर, (वि०) रोग दूर करने वाला ।—हृरं, (न०) दवा ।—हारिन्, (वि०) आरोग्यकर । (पु०) वैद्य । हकीम । डाक्टर ।

रोचक (वि०) १ रुचिकारक । रुचने वाला । २ २ भूँख बढ़ाने वाला ।

रोचकं (न०) १ भूख । २ वह दवा जिससे भूख बढ़े । ३ काँच की चूड़ियाँ या अन्य आभूषण बनाने वाला ।

रोचन (वि०) [रोचनी या रोचना] १ दीप्तिमान । शोभाप्रद । मनोहर । प्रिय । २ पाकस्थली सम्बन्धी ।

रोचनं (न०) १ आकाश । निर्मलाकाश । २ सुन्दरी स्त्री । ३ गोरोचन ।

रोचनः (पु०) पाकस्थली सम्बन्धी ।

रोचमान (वि०) १ चमकीला । दीप्तमान । २ प्रिय । सुन्दर । मनोहर ।

रोचनं (न०) घोड़े की गर्दन के बालों का जूड़ा ।

रोचिष्णु (वि०) १ चमकीला । २ हर्षित । प्रफुल्लित । अच्छे अच्छे कपड़े पहिने हुए । ३ भूख को बढ़ाने वाला ।

रोचिस् (न०) चमक । दमक । तेज ।

रोदनं (न०) १ रोना । रुदन । २ आँसू ।

रोदस् [स्त्री०—रोदसी] स्वर्ग और पृथिवी का ।

रोधः (पु०) १ रोक । रुकावट । २ अड़चन । अटकाव । ३ बंदी । घेरा । बाँध ।

रोधनं (न०) रोक । प्रतिबन्ध ।

रोधनः (पु०) १ बुध ग्रह ।

रोधस् (न०) १ नदी का तट या बाँध । २ नदी का कगारा । समुद्र तट ।—वक्रा,—वती, (स्त्री०) १ नदी । २ वेग से बहने वाली नदी ।

रोध्रः (पु०) लोध्र वृक्ष । लोध का पेड़ ।

रोध्रः (पु०) }
रोध्रं (न०) } १ पाप । २ जुर्म । अपराध । अनिष्ट ।

रोपः (पु०) १ उठाने या स्थापित या लगाने की क्रिया । २ वृक्ष लगाने की क्रिया । ३ तीर । ४ छेद । छिद्र ।

रोपणं (न०) १ उठाने लगाने या खड़ा करने की क्रिया । २ वृक्ष लगाने की क्रिया । ३ घाव पुरना । ४ घाव पुरने वाली दवा लगाने की क्रिया ।

रोमकः (पु०) १ रोम नगर । २ रोमनिवासी ।—पत्तनं, (न०) रोम नगरी ।—सिद्धान्तः (पु०) मुख्य पाँच सिद्धान्तों में से एक ।

रोमन् (न०) रोंगटा ।—अञ्चः, (पु०) आनन्द या भय से शरीर के रोंगटों का खड़ा होना ।—अञ्चित, (वि०) पुलकित । हृष्टरोम ।—अन्तः, (पु०) हथेली की पीठ पर के बाल ।—आली,—आवलिः—आवली, (स्त्री०) रोमों की पंक्ति जो पेट के बीचों बीच नाभि से ऊपर की ओर गयी हो ।—उद्गमः —उद्भेदः, (पु०) रोंगटों का खड़ा होना ।—कूपः, (पु०) —कूपं, (न०)—गर्तः, (पु०) शरीर के चाम के ऊपर वे छिद्र जिनमें से रोएं निकले हुए होते हैं । लोमछिद्र ।—केशरं,—केसर, (पु०) चँवर । चामर । चैरी ।—पुलक, (पु०) रोंगटों का खड़ा होना । —भूमिः, (पु०) चमड़ा । चर्म । रन्ध्रः, (पु०) रोमकूप ।—राजिः,—राजीः,

—लता, (स्त्री०) तरेट पर की रोमावली।—विकारः, (पु०)—विक्रिया, (स्त्री०)—विभेदः, (पु०) रोमाञ्च। रोंगटों का खड़ा होना।—हर्षः, (पु०) रोंगटों का खड़ा होना।—हर्षणः, (पु०) व्यास देव के एक शिष्य का नाम, जिसने कई एक पुराणों की कथा शौनक को सुनायी थी।—हर्षणं, (न०) रोओं का खड़ा होना।

रोमन्थं (न०) जुगाली। खाये हुए को चबाना। अतः बारंबार की आवृत्ति। पुनरावृत्ति।

रोमश (वि०) बालों वाला।

रोमशः (पु०) १ मेढ़। भेड़ा। २ शूकर।

रोरुदा (स्त्री०) अत्यधिक रोदन या विलाप।

रोलंबः }
रोलम्बः } (पु०) भौंरा।

रोषः (पु०) क्रोध। गुस्सा।

रोषण (वि०) [स्त्री०—रोषणी] क्रुद्ध।

रोषणः (पु०) १ कसौटी। २ पारा। ३ ऊसर ज़मीन। नुनही ज़मीन।

रोहः (पु०) १ उठान। चढ़ाव। २ ऊपर चढ़ना (जैसे किसी वस्तु के मूल्य का) ३ उपज। बाढ़। ४ कली। अङ्कुर।

रोहणं (न०) ऊपर चढ़ने, सवार होने की क्रिया।

रोहणः (पु०) लङ्का के एक पर्वत का नाम।—द्रुमः, (पु०) चन्दन का पेड़।

रोहंतः }
रोहन्तः } (पु०) वृक्ष।

रोहंती }
रोहन्ती } (स्त्री०) लता। बेल।

रोहिः (पु०) १ मृग विशेष। २ धार्मिक पुरुष। ३ वृक्ष। ४ बीज।

रोहिणी (स्त्री०) १ लाल गौ। २ चौथे नक्षत्र का नाम। ३ वसुदेव की एक पत्नी का नाम जिसके गर्भ से बलराम जी की उत्पत्ति हुई थी। ४ हाल की रजस्वला स्त्री। ६ बिजली।—पतिः,—प्रियः,—वल्लभः, (पु०) चन्द्रमा।—रमणः, (पु०) १ साँड़। २ चन्द्रमा।—शकटः, (पु०) रोहिणी नक्षत्र, जिसका आकार शकट जैसा है।

रोहित (वि०) [स्त्री० —रोहिता या रोहिणी] लाल। लाल रंग का।—अश्वः, (पु०) अग्नि।

रोहितं (न०) १ रक्त। २ केसर।

रोहितः (पु०) १ लाल रंग। २ लोमड़ी। ३ मृग विशेष। ४ मछली विशेष।

रोहिषः (पु०) १ मछली विशेष। मृग विशेष।

रौक्ष्यं (न०) १ कड़ाई। सख्ती। २ रूखापन। निठुरता।

रौद्र (वि०) [स्त्री०—रौद्रा, रौद्री] १ रुद्र की तरह। उग्र। प्रचण्ड। क्रोधाविष्ट। २ भयंकर। बहशी। जंगली।

रौद्रं (न०) १ क्रोध। २ भयङ्करता। ३ गर्मी। उत्ताप। सौर्यताप। धूप की गर्मी।

रौद्रः (पु०) १ रुद्र का पूजक। २ गर्मी। तेज़ी। ३ रौद्र रस।

रौप्य (वि०) चाँदी का बना हुआ। चाँदी जैसा।

रौप्यं (न०) चाँदी।

रौरव (वि०) [स्त्री०—रौरवी] १ रुरु के चर्म का बना हुआ। २ भयङ्कर। ३ बेईमान। जुआचोर।

रौरवः (पु०) १ एक प्रकार का कबाब। २ इक्कीस नरकों में से एक नरक का नाम।

रौहिणः (पु०) १ चन्दन वृक्ष। २ वट का वृक्ष।

रौहिणेयः (पु०) १ बछड़ा। बलराम जी। २ बुधग्रह।

रौहिणेयं (न०) पन्ना। मरकत मणि।

रौहिष् (पु०) हिरन विशेष।

रौहिषं (न०) एक प्रकार की घास।

रौहिषः (पु०) देखो रौहिष।

ल

ल—संस्कृत या नागरी वर्णमाला का अट्ठाइसवाँ व्यञ्जन वर्ण। इसके उच्चारण में सँवार, नाद और घोष प्रयत्न होने के कारण यह अल्पप्राण माना गया है।

लः (पु०) १ इन्द्र। २ छन्दः शास्त्र में आठगणों में से एक गण। ३ व्याकरण में समय विभाग के लिये पाणिनि ने दस लकार माने हैं, उन्हींका यह अर्थवाची है। [दस लकार ये हैं। १, लट्, २ लिट् ३ लुट्, ४ लृट्, ५ लेट्, ६ लोट्, ७ लङ्, ८ लिङ्, ९ लुङ् और लृङ्।]

लक् (धा० उभय०) [लाकयति—लाकयते] १ चखना। २ पाना प्राप्त करना।

लकः (पु०) १ माथा। ललाट। २ वन्य चावलों की बाल।

लकचः / लकुचः } (पु०) कटहल विशेष का वृक्ष।

लकचं (न०) / लकुचं (न०) } कटहल का फल।

लकुटः (पु०) लाठी। छड़ी।

लक्तकः (पु०) १ लाख। २ चिथड़ा। ३ फटा कपड़ा।

लक्तिका (स्त्री०) छिपकली। बिस्तुइया।

लक्ष् (धा० आत्मने) [लक्षते, लक्षित] १ देखना। २ पहचानना। ३ चिन्ह करना। परिभाषा निरूपण करना। ५ गौण अर्थ बतलाना ६ निशाना लगाना। ७ सोचना। विचारना।

लक्षं (न०) १ एक लाख। २ चिन्ह। निशाना। ३ चिन्हानी। निशानी। ४ दिखावट। बहाना। छल। बनावट।—अधीशः, (पु०) लखपती आदमी।

लक्षक (वि०) लक्ष्य कराने वाला। जता देने वाला।

लक्षकं (न०) एक लाख।

लक्षणं (न०) १ किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचाना जाय। २ रोग की पहचान। ३ उपाधि। ४ परिभाषा। ५ शरीर पर का शुभ चिन्ह। ६ शरीर पर का कोई शुभ या अशुभ चिन्ह।

> क्व तद्विधस्त्वं क्व च पुण्यलक्षणा।
> क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहं।

७ नाम। पद। ८ विशिष्टता। उत्तमता। श्रेष्ठता। ९ लक्ष्य। उद्देश्य। १० निर्धारित कर (या चुंगी का महसूल) ११ आकार। प्रकार। किस्म। १२ कार्य। क्रिया। १३ कारण। १४ विषय। प्रसङ्ग। १५ बहाना। मिस। बनावट।—अन्वित, (वि०) शुभ लक्षणों से युक्त।—भ्रष्ट, (वि०) अभागा। बदकिस्मत।—सन्निपातः, (पु०) अङ्कन। चिन्हन। दागने की क्रिया।

लक्षणः (पु०) सारस।

लक्षणा (स्त्री०) १ लक्ष्य। उद्देश्य। २ लक्षण शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अर्थ लक्षित हो। शब्द की वह शक्ति जिससे उसका साधारण से भिन्न और वास्तविक अर्थ प्रकट हो। यह शक्ति दो प्रकार की होती है। अर्थात् 'निरूढ" और "प्रयोजनवती"। ३ हंस।

लक्षण्य (वि०) १ चिन्ह का काम देने वाला। २ जिसके अच्छे चिन्ह हों। अच्छे चिन्हों वाला।

लक्षशस् (अव्यया०) सैकड़ों। हजारों। असंख्य।

लक्षित (व० कृ०) १ देखा हुआ। लक्ष्य किया हुआ। २ निरूपित। वर्णित। कहा हुआ। ३ चिन्हित। पहिचाना हुआ। ४ परिभाषा किया हुआ। ५ निशाना बँधा हुआ। ६ अन्य प्रकार से प्रकट किया हुआ। ७ ढूँढा हुआ। तलाश किया हुआ।

लक्ष्मण (वि०) १ लक्षण युक्त। २ भाग्यवान। खुशकिस्मत। ३ समृद्धशाली हर प्रकार से भरा पूरा।

लक्ष्मणः (पु०) महाराज दशरथ के एक पुत्र का नाम जो सुमित्रा रानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

—प्रसूः (स्त्री०) १ लक्ष्मण-जननी । सुमित्रा रानी ।

लक्ष्मणं (न०) १ नाम । उपाधि । २ चिन्ह । निशान ।

लक्ष्मणा (स्त्री०) हंसी । मादा हंस ।

लक्ष्मन् (न०) १ चिन्हानी । निशान । २ दाग । धब्बा । ३ परिभाषा । (पु०) १ सारस पक्षी । २ लक्ष्मण का नाम ।

लक्ष्मीः (स्त्री०) १ सौभाग्य । समृद्धि । सम्पत्ति । २ अच्छा भाग्य । खुश क़िस्मती । ३ सफलता । ४ सौन्दर्य । ५ धन की अधिष्ठात्री देवी । ६ राज-शक्ति । ७ वीर पत्नी । ८ मोती । ९ हल्दी ।—ईशः, (पु०) विष्णु का नाम । २ आम का पेड़ । ३ भाग्यवान् आदमी ।—कान्तः, (पु०) १ विष्णु भगवान् । २ राजा ।—गृहं, (न०) लाल कमल का फूल ।—तालः, (पु०) एक प्रकार का ताड़ का पेड ।—नाथः, (पु०) विष्णु का नाम ।—पतिः, (पु०) १ विष्णु । २ राजा । ३ सुपाड़ी का पेड । ४ लवंग का वृक्ष ।—पुत्रः, (पु०) १ घोड़ा । २ कामदेव ।—पुष्पः, (पु०) मानिक । चुन्नी ।- पूजनं, (न०) लक्ष्मी जी का उस समय का पूजन जिस समय वर और वधू प्रथम वार (वर के) घर में प्रवेश करते हैं ।—फलः, (पु०) बेल वृक्ष ।—रमणः, (पु०) श्री विष्णु भगवान ।—वसति, (स्त्री०) लाल कमल पुष्प । —वारः, (पु०) गुरुवार ।—वेष्टः, (पु०) तारपीन ।—सखः, (पु०) लक्ष्मीप्रिय ।—सहजः,—सहोदरः, (पु०) चन्द्रमा ।

लक्ष्मीवत् (वि०) १ भाग्यवान् । खुशक़िस्मत २ धनी । धनवान् । ३ सुन्दर । ख़ूबसूरत ।

लक्ष्य (स० व० कृ०) १ दिखलाई पड़ने वाला । २ पहचाना जाने वाला । ३ जानने लायक । वह जिसका पता चल सके । ४ चिन्हित किया जाने वाला । ५ निरूपण किया जाने वाला । ६ निशाना लगाने के योग्य । ७ घूम घुमाकर वतलाने योग्य । ८ विचारणीय ।

लक्ष्यं (न०) १ निशाना । २ चिन्ह । निशानी । ३ वह वस्तु जो लक्षणवती हो । ४ गौण अर्थ । लक्षण से उपलब्ध अर्थ । ५ वहाना । कल्पित । बनावटी । ६ एक लाख ।—भेदः,—वेधः, (पु०) निशानाबाज़ी ।—हन्, (पु०) तीर । गोली ।

लख्, लंख्, लङ्ख् (धा० परस्मै०) [लखति, लंखति, लङ्खति] जाना ।

लग् (धा० परस्मै०) [लगति, लग्न] १ लगना । चिपकना । चिपटना । अनुरक्त होना । २ छूना । ३ मिल जाना । एक हो जाना । ४ पीछे लगना या पीछा करना । ५ रोक रखना । काम में लगा रखना ।

लगड (वि०) प्रिय । मनोहर । सुन्दर ।

लगित (वि०) १ चिपटा हुआ । लगा हुआ २ जुड़ा हुआ । सम्बन्ध युक्त । ३ प्राप्त । पाया हुआ ।

लगुडः, लगुरः, लगुलः (पु०) छड़ी । लकड़ी । लाठी ।

लग्न (व० कृ०) १ चिपटा हुआ । लगा हुआ । दृढ़ता पूर्वक पकड़ा हुआ । २ छुआ हुआ । स्पर्श किया हुआ । ३ सम्बन्ध युक्त ।—मासः, (पु०) शुभ मास जिसमें शुभकार्य विवाहादि हो सके ।

लग्नः (पु०) १ मदमस्त हाथी । २ भाट । वंदीजन ।

लग्नं (न०) १ ज्योतिष में दिन का उतना अँश जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है । २ वह समय जब सूर्य किसी राशि में जाता है । ३ शुभ कार्य करने का शुभ मुहूर्त ।

लग्नकः (पु०) प्रतिभू । ज़ामिन । वह जो जमानत करे ।

लघिमन् (पु) १ हलकापन । अगुरुत्व । गुरुत्वाभाव । २ ओछापन । नीचता । ३ विचारहीनता । ४ अष्टसिद्धियों में से चौथी सिद्धि, जिसके प्राप्त होने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन जाता है ।

लघिष्ठ (वि०) सब से हलका । सब से नीचा ।

लघीयस् (वि०) अपेक्षाकृत लघुतर । निम्नतर ।

लघु (वि०) [स्त्री०—लघ्वी या लघु] १ हल्का । २ छोटा । ३ संक्षिप्त । ४ अकिञ्चित्कर । ५ कमीना ।

नीच। ६ निर्बल। कमजोर । ७ अभागा। ८ चंचल। ९ तेज़। १० सरल। ११ सहज में पचने वाला। १२ ह्रस्व (जैसे स्वर) १३ मंद। कोमल। १४ प्रिय। वाञ्छनीय। १५ विशुद्ध । साफ़।—आशिन्,—आहार, (वि०) कम खाने वाला।—उक्तिः, (स्त्री०) संक्षिप्त रूप से कहने का ढंग।—उत्थान,—समुत्थान (वि०) तेज़ी से काम करने वाला।—काय, (वि०) हलके शरीर का।—कायः, (पु०) बकरा।—क्रम, (वि०) तेज़ चलने वाला।—खट्टिका (स्त्री०) छोटी चारपाई।—गोधूमः (पु०) छोटी जाति का गेहूँ।—चित्त,—चेतस्,—मनस्—हृदय (वि०) १ हलके मन का २ चंचलचित्त।—जङ्गलः, (पु०) लावक पक्षी।—द्राक्षा, (स्त्री०) किशमिश मेवा।—द्राविन् (वि०) सहज में पिघलने वाला।—पाक, (वि०) सहज में पचने वाला।—पुष्पः, (पु०) कदंब वृक्ष।—बदर, (पु०)—बदरी, (स्त्री०) बेरी का वृक्ष या फल।—भवः, (पु०) नीच योनि का।—भोजन, (न०) हलका भोजन।—मांसः, (पु०) तीतर विशेष।—मूलकं, (न०) मूली।—लयं, (न०) बीरनमूल।—वृत्ति, (वि०) १बदचलन। २ हलका। ३ बुरी तरह किया हुआ।—हस्त, (वि०) हलके हाथ का। चतुर। निपुण। कुशल।—हस्तः, (पु०) कुशल तीरंदाज़।

लघु (अव्यया०) १ कमीनेपन से। नीचता से। २ तेज़ी से। फ़ुर्ती से।

लघुः (पु०) १ काला अगर। २ समय का एक परिमाण, जिसमें १५ क्षण होते हैं।

लघुता (स्त्री०) } १ हलकापन। २ छुटाई। कमी।
लघुत्व (न०) } ३ तुच्छता। अकिंचनता। ४ तिरस्कार। अप्रतिष्ठा। ५ तेज़ी। फ़ुर्ती। ६ संक्षिप्तता। ७ सरलता। सहजता। ८ विचार-हीनता। ९ लंपटता।

लघ्वी (स्त्री०) १ नज़ाकत से भरी औरत। कोमलाङ्गी स्त्री। २ छोटी गाड़ी।

लङ्का } (स्त्री०) १ राक्षसराज रावण की राजधानी का
लंका } नाम। २ वेश्या। रंडी। ३ शाखा। ४ अन्न विशेष।—अधिपः—अधिपतिः,—ईशः,—ईश्वरः,—नाथ,—पतिः (पु०) रावण या विभीषण।—दाहिन्, (पु०) श्रीहनुमान जी।

लंखनी } (स्त्री०) लगाम।
लङ्खनी }

लंगः } (पु०) १ लंगड़ापन। २ संयोग। ३ प्रेमी।
लङ्गः } अनुरागी। आशिक।

लंगकः } (पु०) प्रेमी। आशिक।
लङ्गकः }

लंगलं } (न०) हल।
लङ्गलं }

लंगूलं } (न०) पूंछ।
लङ्गूलं }

लंघ् } (धा० उभय०) [लंघति, लंघते—लंघित] १
लङ्घ् } उछलना। कूदना। कुलांच मारना। २ सवार होना। चढ़ना। ३ पार जाना। नांघना। ४ लंघन करना। उपवास करना। ५ सुखा डालना। ६ आक्रमण करना। खा डालना। अनिष्ट करना।

लंघनं } (न०) १ फांदना। नांघना। २ कुलाँच
लङ्घनम् } मारने आना। ३ चढ़ना। ४ आक्रमण करना। ५ सीमा के बाहिर होना। ६ तिरस्कार करना। ७ समुहाना। अपराध। जुर्म। ८ हानि। अनिष्ट। ९ लंघन। कड़ाका। १० घोड़े की चाल विशेष।

लंघित } (व० कृ०) १ नाँघा हुआ। फलांगा
लङ्घित } हुआ। २ आरपार गया हुआ। ३ भंग किया हुआ। ४ तिरस्कृत। अपमानित।

लच्छ (धा० परस्मै०) [लच्छति] चिन्ह करना। चिन्हानी करना।

लज् } (धा० आत्म०) [लजते] लज्जित होना।
लज् } शर्माना।

लज्ज् (धा० आत्म०) [लज्जते, लज्जित] शर्माना। लजाना।

लज्जका (स्त्री०) जंगली कपास का वृक्ष।

लज्जा (स्त्री०) १ शर्म । लाज । २ छुईमुई का पेड़ । —अन्वित, (वि०) लज्जालु । लजीला ।— —शील, (वि०) लजीला ।—रहित,—शून्य —हीन, (वि०) वेहया । वेशर्म ।

लज्जालु (वि०) लजीला । शर्मीला । (पु० स्त्री०) लजालू या लज्जावन्ती का पौधा ।

लज्जित (व० कृ०) १ शर्मीला ।

लंज् } लञ्ज् } (धा० परस्मै०) [लंजति] १ दोपी ठहराना । भर्त्सना करना । २ भूनना । [उभय०—लंजयति —लंजयते] १ अनिष्ट करना । मारना । ताडन करना । मार डालना । २ देना । ३ बोलना । ४ मज़बूत होना । ५ बसना । ६ चमकना ।

लंज: } लञ्जः } (पु०) १ पाद । पैर । २ कांछ । ३ पूछ ।

लंजा } लञ्जा } (स्त्री०) १ प्रवाह । धार । २ छिनाल स्त्री । ३ लक्ष्मी जी का नाम । ४ निद्रा ।

लंजिका } लञ्जिका } (स्त्री०) रंडी । वेश्या ।

लट् (धा० परस्मै०) [लटति] १ बालक बन जाना । २ लड़कों की तरह काम करना । ३ बालकों की तरह बातें करना । तुतलाना । ४ रोना । चिल्लाना ।

लटः (पु०) १ मूर्ख । २ अपराध । चूक । ३ डाँकू ।

लटकः (पु०) ठगावाज़ । बदमाश । गुंडा ।

लटभ (वि०) मनोज्ञ । मनोहर । खूबसूरत ।

लट्टः (पु०) दुष्ट । बदमाश ।

लट्वं (न०)) १ पक्षी विशेष । २ जुल्फ । अलक । लट । ३ गौरैया चिड़िया । ४ बाजा विशेष । ५ क्रीड़ा विशेष । ६ कुसुम का फूल । ७ असती स्त्री ।

लट्वः (पु०) १ घोड़ा । २ नचैया लड़का । ३ एक जाति विशेष ।

लड् (धा० परस्मै०) [लडति] खेलना । क्रीडा करना । [लड्नि, लडयति] १ उछालना । फेंकना । २ दोपी ठहराना । ३ जीभ लप लपाना । ४ तंग करना । चिढ़ाना । ५ (उभय०—लाडयति —लाडयते] १ थपकी लगाना । २ चिढ़ाना ।

लडह (वि०) खूबसूरत । सुन्दर ।

लड्डुः } लड्डुकः } (पु०) लड्डू । लडुआ ।

लड् } लण्ड् } (धा० उभय०) [लडति, लंडयति— लडयते] १ उछालना । ऊपर फेंकना । २ बोलना ।

लंडं } लण्डं } (न०) विष्ठा । मल ।

लंडूः } लण्डूः } (पु०) लंदन नगर ।

लता (स्त्री०) १ बेल । लतर । २ शाखा । डाली । ३ प्रियङ्गुलता । ४ माधवी लता । ५ मुश्क लता । ६ चाबुक । कोड़ा । ७ मोतियों की लड़ी । ८ सुन्दरी स्त्री ।—अन्तं, (न०) फूल ।—अंबुजं, (न०) ककड़ी —अर्कः, (पु०) हरा लहसन । —अलकः, (पु०) हाथी ।—गृहः, (पु०) —गृहं, (पु०) कुज । लतामण्डप ।—जिह्वः, —रसनः, (पु०) —तरुः, (पु०) १ साल वृक्ष । सारंगी का पेड़ ।—पनसः, (पु०) तरबूज । हिंगवाना । कलींदा ।—प्रतानः, (पु०) बेल का सूत ।—भवनं, (न०) लतागृह । लतामण्डप ।—यावक, (न०) अङ्कुर । कल्ला । —वलयः,—वलयं, (न०) लतामण्डप ।— वृक्षः, (पु०) नारियल का वृक्ष ।—वेष्टः (पु०) कामशास्त्र में वर्णित सोलह प्रकार के रतिबंधों में से तीसरा ।—वेष्टनं, —वेष्टितकं, (न०) एक प्रकार का आलिङ्गन ।

लतिका (स्त्री०) १ छोटी लता । २ मोती की लड़ी ।

लत्तिका (स्त्री०) विस्तुइया । छिपकली ।

लप् (धा० परस्मै०) [लपति] १ बोलना । बातचीत करना । २ बिना प्रयोजन बकबक करना । ३ काना-फूसी करना ।

लपनं (न०) १ वार्तालाप । बातचीत । २ मुख ।

लपित (व० कृ०) कहा हुआ ।

लपितं (न०) कथन वाणी

लब्ध (व० कृ०) १ प्राप्त । पाया हुआ । २ लिया हुआ । वसूल किया हुआ । ३ जाना हुआ । समझा हुआ । ४ (भाग देकर) निकाला हुआ ।

लब्ध (न०) वह जो प्राप्त हो या उपलब्ध हो।—अन्तरं, (न०) १ वह जिसे प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो गया हो। २ वह जिसे अवसर प्राप्त हुआ हो।—उदय, (वि०) १ उत्पन्न। २ वह जिसका भाग्योदय हुआ हो। काम, (वि०) वह जिसकी कामना सिद्ध होगयी हो। सफलमनोरथ —कीर्ति, (वि०) जिसने यश पाया हो। प्रसिद्ध। प्रख्यात।—चेतस्, —संज्ञ, (वि०) होश में आया हुआ।—जन्मन्, (वि०) उत्पन्न। —नामन्, —शब्द, (वि०) प्रसिद्ध। प्रख्यात। —नाशः, (पु०) जो पास हो उसका नाश होना या खोजाना।—प्रशमनं, (न०) १ मिले हुए धन का सत्पात्र को दान। २ उपार्जित धन की रक्षा।—लक्ष, —लक्ष्य, (वि०) १ वह जिसका निशाना ठीक बैठा हो। २ निशाना लगाने में निपुण।—वर्ण, (वि०) १ विद्वान्। पण्डित। २ प्रसिद्ध। प्रख्यात।—विद्य, (वि०) विद्वान। शिक्षित। बुद्धिमान।—सिद्धि, (वि०) वह जिसका मनोरथ पूर्ण हो गया हो। जो किसी कला में पूर्ण निपुणता प्राप्त कर चुका हो।

लब्धिः (स्त्री०) १ प्राप्ति। लाभ। मुनाफा। २ (गणित में) लब्धाङ्क।

लब्धिम (वि०) पाया हुआ। प्राप्त किया हुआ।

लभ् (धा० आत्म०) [लभते, लब्ध] १ प्राप्त करना। पाना। २ अधिकार में करना। कब्ज़ा करना। ३ लेना। ४ पकड़ना। थामना। ५ मिलना। ६ (खोई हुई वस्तु को) ढूँढ़ निकालना। पुनः प्राप्त करना। ७जानना। सीखना। पहचानना। समझना।

लभनं (न०) १ प्राप्त करने की क्रिया। २ पहचानने की क्रिया।

लभसं (न०) घोड़ा बाँधने की रस्सी। (पु० भी होता है)।

लभसः (पु०) १ धन दौलत। २ याचक।

लभ्य (वि०) १ पाने योग्य। २ पता पाने योग्य। जो मिल सके। ३ न्याययुक्त। उचित। मुनासिब। ४ बोधगम्य।

लमकः (पु०) प्रेमी। अनुरागी। आशिक।

लंपट, लम्पट (वि०) १ मरभुका। लालची। २ कामुक। ऐयाश।

लंपटः, लम्पटः (पु०) व्यभिचारी। विषयी। कामी।

लंफः, लम्फः (पु०) उछाल। फलांग। झपट।

लंफनं, लम्फनं फलांग। कूद। झपट। लपक।

लंब्, लम्ब् (धा० आत्म०) [लंबते, लंबित] १ लटकना। २ किसी के साथ लगना या नत्थी होना। ३ नीचे उतरना। डूबना। ४ पीछे रह जाना। ५ विलंब करना। ६ ध्वनि करना।

लंब, लम्ब (वि०) १ लंबा। २ बड़ा। ३ प्रशस्त।

लंबः (पु०) वह खड़ी रेखा जो किसी बेंड़ी रेखा पर इस तरह गिरे कि, उसके साथ वह समकोण बनावे उसे लंबरेखा कहते हैं।—उदर, (वि०) बड़े पेट का।—उदरः, (पु०) १ गणेशजी। २ मरभुका। भोजनभट्ट।—ओष्ठः, (लम्बोष्ठः, लम्बौष्ठः) (पु०) ऊँट।—कर्णः, (पु०) १ गधा। २ बकरा। ३ हाथी। ४ बाज पक्षी। ५ राक्षस। दैत्य।—जठर, (वि०) बड़े पेट वाला।—पयोधरा, (स्त्री०) स्त्री जिसकी छातियां या कुच लंबे और नीचे लटकते हों।—स्फिच्, (वि०) भारी या बड़े चूतरों वाला।

लंबकः, लम्बकः (पु०) १ लंबरेखा। २ ज्योतिष में एक प्रकार का योग। इनकी संख्या १५ है।

लंबनः, लम्बनः (पु०) १ शिव जी। २ कफ।

लंबनं, लम्बनं (न०) १ झूलने वाला। लटकने वाला। २ गोट। झालर। ३ गले का हार जो नाभि तक लटकता हो।

लंबा, लम्बा (स्त्री०) १ दुर्गा। २ लक्ष्मी।

लंबिका, लम्बिका (स्त्री०) गले के अंदर की घंटी या कौआ।

लंबित } (व० कृ०) १ लटकता। हुआ। २
लम्बित } झूलता हुआ। ३ डूबा हुआ। नीचे पैठा हुआ। ४ आश्रित। टिका हुआ।

लंबुषा } (स्त्री०) सात लड़ी का हार। सतलड़ी।
लम्बुषा }

लंभः } १ प्राप्ति। उपलब्धि। २ मिलन। ३ पुनः
लम्भः } प्राप्ति। ४ लाभ।

लंभनं } (न०) १ प्राप्ति। उपलब्धि। २ पुनः
लम्भनम् } प्राप्ति।

लंभित } (व० कृ०) १ प्राप्त किया हुआ। हासिल
लम्भित } किया हुआ। २ प्रदत्त। दिया हुआ। ३ वर्द्धित। बढ़ाया हुआ। ४ प्रयोग किया हुआ। लगाया हुआ। ५ लालन पालन किया हुआ। ६ कथित। सम्बोधित।

लय् (धा० आत्म०) [लयते] जाना।

लयः (पु०) १ विलीन होना। लीनता। मग्नता। २ एकाग्रता। ३ नाश। विनाश। ४ संगीत की लय [जो तीन प्रकार की मानी गयी है, द्रुत, मध्य और विलंबित]। ५ संगीत का ताल। ६ विश्राम। ७ विश्रामस्थान। आलय। वासस्थान। ८ मन की सुस्ती। मानसिक अकर्मण्यता। ९ आलिङ्गन।—आरम्भः, —आलम्भः, (पु०) नट। नचैया। —कालः, (पु०) प्रलय काल।—गत, (वि०) गलता हुआ। पिघला हुआ।—पुत्री, (स्त्री०) (नाटक की) पात्री। नाचने वाली।

लयनं (न०) १ चिपकन। लिपटन। २ आराम। विश्राम। ३ विश्राम गृह।

लर्व् (धा० परस्मै०) [लर्वति] जाना। चलना।

लल् (धा० उभय०) [ललति-ललते] खेलना। क्रीड़ा करना। आमोदप्रमोद करना।

लल (वि०) १ खिलाड़ी। क्रीड़ाप्रिय। २ अभिलाषी।

ललत् (वि०) १ खिलाड़ी। २ मुंह से बाहिर निकाले हुए।—जिह्व, (वि०) (=लल्लज्जिह्व) १ जिह्वा मुंह के बाहिर निकाले हुए। २ बहशी। भयानक। —जिह्वः, (पु०) १ कुत्ता। २ ऊँट।

ललनः (पु०) १ क्रीड़ा। खेल। आमोद। २ जिह्वा को मुंह से बाहिर निकालना।

ललना (स्त्री०) १ स्त्री। रमणी। २ स्वेच्छाचारिणी स्त्री। ३ जिह्वा।—प्रियः, (पु०) कदम्ब वृक्ष।

ललनिका (स्त्री०) छोटी अथवा अभागी स्त्री।

ललंतिका } (पु०) १ लंबी माला। २ छपकली
ललन्तिका } या गिरगट।

ललाकः (पु०) लिङ्ग। जननेंद्रिय।

ललाटं (न०) माथा। भाल। मस्तक।—अक्षः, (पु०) शिवजी का नाम।—पट्टः, (पु०) —पट्टिका, (स्त्री०) १ माथे का चपटा भाग। २ मुकुट। किरीट।—लेखा, (स्त्री०) कपाल का लेख। भाग्यलेख।

ललाटकं (न०) १ माथा। २ सुन्दर माथा।

ललाटंतप } (वि०) १ माथे को तपाने वाला। २
ललाटन्तप } अत्यन्त पीड़ाकारी।

ललाटंतपः } (पु०) सूर्य।
ललाटन्तपः }

ललाटिका (स्त्री०) १ आभूषण। २ माथे पर लगा हुआ तिलक।

ललाटूल (वि०) वह जिसका माथा ऊँचा या सुन्दर हो।

ललाम (वि०) [स्त्री—ललामी] १ रमणीय। सुन्दर। बढ़िया।

ललामं (न०) १ माथे पर धारण किये जाने वाले आभूषण (यथा—बैनाबेंदियाः बदियाँ, झूमर) [यह शब्द पुलिङ्ग भी होता है, जब यह भूषण के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है]। २कोई भी सर्वोत्तम जाति की वस्तु। ३ माथे का चिन्ह या निशान। ४ चिन्ह। निशानी। ५ झंडा। पताका। ६ पङ्क्ति। रेखा। अवली। ७ पूँछ। दुम। ८ गर्दन के बाल। अयाल। ९ प्राधान्य। गौरव। सौन्दर्य। १० सींग। शृङ्ग।

ललामः (पु०) घोड़ा।

ललामकम् (न०) माथे पर धारण किया जाने वाला पुष्पगुच्छ अथवा पुष्पमाला।

ललामन् (न०) १ आभूषण। सजावट। २ कोई भी सर्वोत्तम वस्तु। ३ झंडा। पताका। ४ साम्प्रदायिक तिलक। चिन्ह। चिन्हानी। ५ पूंछ। दुम।

ललित (वि०) १ क्रीडासक्त। खिलाड़ी। २ कामुक। भोजनभट्ट। ३ मनोहर। सुन्दर। ४ मनोमुग्धकारी। प्रिय। उत्तम। ५ अभिलषित। ६ कोमल। सीधा। ७ कपकपा। हिलता डोलता हुआ।

ललितं (न०) १ खेल। क्रीडा। २ आमोद प्रमोद। शृङ्गार रस में कायिक हाव या अङ्गचेष्टा जिसमें सुकुमारता के साथ भौं, आँख, हाथ, पैर आदि अंग हिलाये जाते हैं। ३ सौन्दर्य। मनोहरता। ४ कोई भी स्वाभाविक क्रिया। ५ भोलापन। अल्हड़पन।—अर्थ, (वि०) जिसका सुन्दर अर्थ हो।—पद, (वि०) जिसमें सुन्दर पद या शब्द हो।—प्रहारः, (पु०) प्यार की थपथपी।

ललिता (स्त्री०) १ रमणी। २ स्वेच्छाचारिणी। स्त्री। ३ मुश्क। कस्तूरी। ४ दुर्गादेवी का रूप। ५ अनेक प्रकार के वृत्त।—पञ्चमी, (स्त्री०) आश्विन शुक्ला पंचमी जिसमें ललिता देवी का पूजन होता है।—सप्तमी, (स्त्री०) भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी।

लवं (न०) १ लौंग। लवंग। २ जायफल। जातीफल।

लवं (अव्यया०) अत्यन्त अल्प परिमाण।

लवः (पु०) १ कटाई। २ पके हुए अनाज की कटाई। ३ विभाग। टुकड़ा। खण्ड। ४ परिमाणु। क़तरा। बूंद। बहुत थोड़ी मात्रा। ५ ऊन। केश। ६ क्रीड़ा। ७ काल का एक मान। ८ भिन्न के ऊपर की राशि (यथा $\frac{४}{६}$। इसमें ४ की संख्या लव है) ९ लग्नाश। १० विनाश। ११ श्रीरामचन्द्र जी के एक पुत्र का नाम।

लवग } (न०) लवग का पौधा।
लवङ्गम्

लवग. } (पु०) लौंग का वृक्ष।—कलिका, (स्त्री०) लौंग।
लवङ्ग.

लवगक } (न०) लौंग।
लवङ्गकम्

लवण (वि०) १ निमकीन। खारा। २ सलौना। सुन्दर। प्रिय। मनोज्ञ।—अन्तकः, (पु०) शत्रुघ्न।—अब्धिः, (पु०) खारी समुद्र।—अम्बुराशिः, (पु०) समुद्र।—अम्भस्, (पु०) समुद्र। (न०) खारी जल।—आकरः, (पु०) १ निमक की खान। २ खारीजल का कुण्ड अर्थात् समुद्र। (आलं०) सौन्दर्य की या सलोनेपन की खान।—आलयः, (पु०) समुद्र।—उत्तमं, (न०) १ सेंधा नमक। २ सोरा।—उदः, (पु०) १ समुद्र। २ खारीजल का समुद्र।—उदकः,—उदधिः, (पु०)—जलः, (पु०) समुद्र।—मेहः, (पु०) प्रमेह का एक भेद।—समुद्रः, (पु०) खारी जल का समुद्र।

लवणं (न०) १ निमक। २ बनाया हुआ निमक विशेष।

लवणः (पु०) १ निमकीन स्वाद। २ खारी जल का समुद्र। ३ मधुदैत्य का पुत्र लवणासुर। ४ नरक विशेष।

लवणा (स्त्री०) दीप्ति। आभा। सौन्दर्य।

लवणिमन् (पु०) १ निमकीनपना। २ सलौनापन। सौन्दर्य।

लवनं (न०) १ लुनना। (अनाज का) काटना। २ हंसिया।

लवली (स्त्री०) लता विशेष। हरफोरवरी नाम का वृक्ष विशेष।

लवित्रं (न०) हंसिया।

लश् (धा० उभय०) [लशयति, लशयते] किसी कलाकौशल को सीखने का अभ्यास करना।

लशुनः (पु०)
लशूनः (पु०)
लशुनं (न०)
लशूनं (न०) } लहसुन।

लष् (धा० परस्मै०) १ अभिलाष करना। चाहना।

लषित (व० कृ०) अभिलषित। चाहा हुआ।

लष्वः (पु०) नट। अभिनयकर्त्ता। नचैया।

लस् (धा० परस्मै०) [लसति, लसित] १ चमकना। २ निकलना। उदय होना। प्रकट होना। ३ आलिङ्गन करना। ४ खेलना। नाचना। भटकना।

लसा (स्त्री०) १ केसर। २ हल्दी।

लसिका (स्त्री०) थूक। लार [illegible]

लसित (व० कृ०) खेला हुआ। प्रकट हुआ। प्रादुर्भूत।

लसीका (स्त्री०) लार। थूक।

लज्ज् (धा० आत्म०) [लज्जते, लज्जित] शर्माना। लजाना।

लग्न (वि०) १ आलिङ्गित। २ निपुण। दक्ष।

लग्नकः (पु०) धनुष का मध्यभाग।

लग्नकिन् (पु०) धनुष। कमान।

लहरिः }
लहरी } लहर। तरङ्ग।

ला (धा० परस्मै०) [लाति] लेना। पाना। प्राप्त करना। ले लेना।

लाकुटिक (वि०) [स्त्री० —लाकुटिकी] लठैत। लाठी धारण किये हुए।

लाकुटिकः (पु०) सन्तरी। पहरेदार।

लाक्षकी (स्त्री०) सीताजी का नाम।

लाक्षणिक (वि०) [स्त्री० —लाक्षणिकी] १ वह जो लक्षणों का ज्ञाता हो। लक्षण जानने वाला। २ जिससे लक्षण प्रकट हो। ३ गौणार्थ-वाची। ४ गौण। अपकृष्ट। ५ पारिभाषिक।

लाक्षणिकः (पु०) पारिभाषिक शब्द।

लाक्षण्य (वि०) १ लक्षण सम्बन्धी। २ लक्षण जानने या बतलाने वाला।

लाक्षा (स्त्री०) १ लाख। २ वह कीड़ा जो लाख उत्पन्न करता है।—तरुः, —वृक्षः, (पु०) पलास। ढाक।—रक्त, (वि०) लाख के रंग में रंगा हुआ।—प्रसाधनः (पु०) लाख। लोध्र वृक्ष।

लाक्षिक (वि०) [स्त्री०—लाक्षिकी] १ लाख सम्बन्धी। लाख का बना हुआ। लाखी रंग का। २ लाख सम्बन्धी।

लाख् (धा० परस्मै०) [लाखति] १ सूख जाना। २ सजाना। ३ काफी होना ४ देना। ५ रोकना।

लागुडिक देखो लाकुटिक।

लाघ् (धा० आत्म०) [लाघते] समान होना। पर्याप्त होना।

लाघवं (न०) १ लघुता। अल्पता। २ हलकापन। ३ विचारहीनता। ४ अकिञ्चित्करता। ५ असम्मान। अप्रतिष्ठा। तिरस्कार। अपमान। ६ फुर्ती। वेग। तेज़ी। शीघ्रता। ७ क्रियाशीलता। तत्परता। ८ सब विषयों की पारदर्शिता। ९ संक्षिप्तता।

लांगलं }
लाङ्गलम् } (न०) १ हल। २ हल के आकार का शहतीर या लट्ठा। ३ ताड का वृक्ष। ४ शिश्न। लिङ्ग। ५ पुष्प विशेष।—ग्रहः, (पु०) हलवाहा।—दण्डः, (पु०) हल का लट्ठा। हरिस।—ध्वजः, (पु०) बलरामजी का नाम। —पद्धतिः, (स्त्री०) कूँड़। हलाई। सीर।—फालः, (पु०) हल की फाल।

लांगलिन् }
लाङ्गलिन् } (पु०) १ बलरामजी का नाम। २ नारियल का पेड़। ३ सर्प।

लांगली }
लाङ्गली } (स्त्री०) नारियल का वृक्ष।

लांगलीषा }
लाङ्गलीषा } (स्त्री०) हल का लट्ठा। हरिस।

लांगुलं }
लाङ्गुलम् } (न०) १ पूंछ। २ लिङ्ग। जननेन्द्रिय।

लांगूलिन् }
लाङ्गूलिन् } (पु०) बंदर। लंगूर।

लाज् }
लांज् } (धा० परस्मै०) [लाजति, लांजति] १ कलङ्क लगाना। धिक्कारना। २ भूनना। तलना।

लाजः (पु०) भीगा अनाज।

लाजाः (पु०) (बहुवचन) भुना हुआ अनाज।

लांछ् }
लाञ्छ् } (धा० परस्मै०) [लांछति] १ चिन्हित करना। २ सजाना।

लांछनं }
लाञ्छनं } (न०) १ चिन्ह। निशान। पहचान का चिन्ह। २ नाम। संज्ञा। ३ दाग़। धब्बा। लाञ्छन। ४ चन्द्रलाञ्छन। ५ सूसीमा।

लांछित }
लाञ्छित } (पु०) १ चिन्हित। २ नामक। ३ सजा हुआ। ४ सम्पन्न।

लाट (पु० बहुवचन०) एक देश विशेष का नाम और उसके निवासी।

लाटः (पु०) १ लाट देशाधिपति । २ पुराना कपड़ा। जीर्णवस्त्र । ३ वस्त्र । ४ लड़कों जैसी बोली ।—अनुप्रासः, (पु०) एक शब्दालङ्कार । इसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है किन्तु अन्वय में हेरफेर करने से अर्थ बदल जाता है ।

लाटक (वि०) [स्त्री—लाटिका] लाटों सम्बन्धी।

लाटिका } (स्त्री०) साहित्य की चार प्रकार की
लाटी } शैलियों में से एक । इसमें वैदर्भी और पांचाली रीतियों का कुछ कुछ अनुसरण किया जाता है । इसमें छोटे छोटे पद तथा समास हुआ करते हैं ।

लाड् (धा० उभय०) [लाडयति—लाडयते] १ थपथपाना । थपकी देना । २ दोषी ठहराना । धिक्कारना । ३ फैंकना । उछालना ।

लांठनी (स्त्री०) कुलटा स्त्री ।

लात (व० कृ०) पाया हुआ । वसूल पाया हुआ ।

लापः (पु०) १ वार्तालाप । बातचीत । २ तुतलाना ।

लावः } (पु०) लवा नामक पक्षी ।
लावकः }

लावुः } (पु०) लौकी । लौआ ।
लावूः }

लावुकी (स्त्री०) वीणा विशेष ।

लाभः (पु०) १ प्राप्ति । लब्धि । २ मुनाफा । फायदा । ३ उपभोग । ४ विजय । जीत । ५ ज्ञान । प्रतीति ।—कर,—कृत, (वि) लाभदायक । फायदेमंद ।—लिप्सा, (स्त्री०) मुनाफे की ख्वाहिश । लाभ की अभिलाषा । लोभ । लालच ।

लाभकः (पु०) मुनाफा । फायदा ।

लांभज्जकं } (न०) वीरनमूल ।
लाम्भज्जक }

लांपट्यं } (न०) लंपटता । कामुकता । ऐयाशी।
लाम्पट्यं }

लालन (न०) थपथपाना । प्यार । लाड़ ।

लालस (वि०) १ उत्सुकता पूर्वक अभिलाषी । उत्कट इच्छुक । २ अनुरागी । अनुरागवान् ।

लालसा (स्त्री०) १ अभिलाषा । उत्सुकता। २ मांग। याचना । विनय । ३ खेद । शोक । ४ गर्भिणी स्त्री की रुचि ।

लालसीकं (न०) चटनी ।

लाला (स्त्री०) लार । थूक ।—स्रवः, (पु०) मकड़ी ।—स्रावः, (पु०) १ लार का टपकना । २ मकड़ी ।

लालाटिक (वि०) [स्त्री०—लालाटिकी] १ भाल सम्बन्धी । २ भाग्य पर निर्भर रहने वाला । ३ निरर्थक । नीच । कमीना ।

लालाटिकः (पु०) १ सावधान अनुचर । २ निठल्ला ३ आलिङ्गन विशेष ।

लालाटी (न०) माथा ।

लालिकः (पु०) भैंसा ।

लालित (व० कृ०) १ दुलारा हुआ । लड़ाया हुआ। २ बहकाया हुआ । ३ प्रिय । अभिलषित ।

लालितं (न०) प्रेम । प्रसन्नता ।

लालितकः (पु०) लड़ैता बालक ।

लालित्यं (न०) १ मनोहरता । सौन्दर्य । सरस । २ प्रीतिद्योतक हावभाव ।

लालिन् (पु०) बहकाने वाला । स्त्रियों को कुपथ में प्रवृत्त करने वाला ।

लालिनी (स्त्री०) स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।

लालुका (स्त्री०) कण्ठहार विशेष ।

लाव (वि०) [स्त्री०—लावी] १ काटनेवाला । कतरने वाला । २तोड़ने वाला । नाशक । विनाशक।

लावः (पु०) १ कतरन । २ बटेर । पक्षी विशेष ।

लावकः (पु०) १ काटने वाला । विभाजक । बाँटने वाला । २ (अनाज) काटने वाला । जमा करने वाला । ३ बटेर । पक्षी विशेष ।

लावण (वि०) [स्त्री०—लावणी] १ निमक । निमक पड़ा हुआ ।

लावणिक (वि०) [स्त्री०—लावणिकी] १निमकीन । २ निमक का व्यापारी ३ प्रिय। मनोहर।

लावणिकं (न०) लवण-पात्र ।

लावणिकः (पु०) निमक का व्यापारी ।

लावण्यं (न०) १ निमकीनपन । २ सलौनापन । मनोहरता । सौन्दर्य ।—अर्जितं, (न०)

विवाहित स्त्री की व्यक्तिगत सम्पत्ति जो उसे विवाह के समय उसके पिता अथवा उसकी सास द्वारा मिली हो ।

लावण्यमय } लावण्यवत् } (वि०) सलौना । सुन्दर । मनोहर ।

लावाणकः (पु०) मगध देश के समीप एक ज़िले का नाम ।

लाविकः (पु०) भैंसा ।

लापुक (वि०) [स्त्री०—लापुका, लापुकी] लोभी । लालची ।

लासः (पु०) १ नृत्य विशेष । २ क्रीडा । विहार । ३ स्त्रियों का नृत्य । ४ झोल । शोरुवा ।

लासक (वि०) [स्त्री—लासिका] १ खिलाडी । क्रीड़ाप्रिय । २ इधर उधर हिलने वाला ।

लासकः (पु०) १ नचैया । २ मोर । मयूर । ३ आलिङ्गन । शिव जी ।

लासकं (न०) अटारी । अटा ।

लासकी (स्त्री०) १ नृत्यकी । नाचने वाली । २ रंडी । वेश्या ।

लास्यः (पु०) नचैया । नट ।

लास्यं (न०) १ नृत्य । नाच । २ गान वादन सहित नृत्य । ३ वह नृत्य जिसमें हाव भाव दिखला कर प्रेमभाव प्रदर्शित किया जाता है ।

लास्या (स्त्री०) नृत्यकी । नाचने वाली ।

लिकुचः देखो लकुच ।

लिक्षा (स्त्री०) १ जुएं या चील्हर का अंडा । २ चार या आठ त्रसरेणु के बराबर की तौल विशेष ।

लिक्षिका (स्त्री०) लीक जूं का अंडा ।

लिख् (धा० परस्मै) [लिखति,—लिखित] १ लिखना । २ खाका खींचना । १ रेखाङ्कित करना । ३ खरोचना । छीलना । फाडना । ४ भाला से छेदना । ५ स्पर्श करना । चराना । ६ चोंच मारना । ७ चिकनाना । ८ स्त्री के साथ संगम करना ।

लिखनं (न०) १ लेख । २ लिखंत । टीप । पट्टा ।

लिखितं (न०) १ लेख । टीप । २ कोई ग्रन्थ या निबन्ध ।

लिखित (व० कृ०) लिखा हुआ । चित्रित ।

लिखितः (पु०) एक स्मृतिकार का नाम ।

लिख् } लिङ्ख् } (धा० परस्मै) [लिंखति] जाना । चलना ।

लिंगु } लिङ्गुः } (पु०) १ मृग । हिरन । २ मूर्ख । मूढ़ । (न०) हृदय ।

लिग } लिङ्ग } (धा० परस्मै०) [लिंगति, लिंगित] चलना । जाना ।

लिंगं } लिङ्गम् } १ चिन्ह । निशान । चिन्हानी । प्रतीक । २ बनावटी निशानी । बनावट । धोखे देने वाली चिन्हानी । ३ रोग के लक्षण । ४ प्रमाण । साक्षी । ५ (न्याय में) वह जिससे किसी का अनुमान हो । साधक हेतु । ६ नर या मादा पहचानने की चिन्हानी । ७ शिव जी की मूर्ति विशेष । ८ देवता की मूर्ति या प्रतिमा । ९ एक प्रकार का सम्बन्ध या सूचक । (जैसे संयोग । वियोग, साहचर्य) इससे शब्दार्थ का बोध होता है । १० वह सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर के नष्ट होने पर कर्मफल भोगने के लिये प्राप्त होता है ।—अग्रं, (न०) लिङ्ग का अग्रभाग । अनुशासनं, (न०) व्याकरण के वे नियम जिनके द्वारा शब्द के लिङ्गों का ज्ञान प्राप्त होता है ।—अर्चनं, (न०) महादेव की पिंडी की पूजा । —देहः, (पु०)—शरीरं, (न०) सूक्ष्म शरीर —धारिन्, (वि०) चपरासधारी ।—नाशः, (पु०) १ पहिचान के चिन्ह का नाश । २ जननेन्द्रिय का । ३ दृष्टि का नाश । नेत्र रोग विशेष । —पुराणं, (न०) १८ पुराणों में से एक पुराण का नाम ।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०) शिव जी की पिण्डी की स्थापना ।—विपर्ययः, (पु०) लिङ्ग परिवर्तन ।—वृत्ति, (वि०) आडम्बरी । ढकोसलेबाज़ ।—वेदी, (स्त्री०) वह पीठ जिस पर शिव की पिण्डी स्थापित की जाती है

लिंगकः } लिङ्गकः } (पु०) कपित्थ वृक्ष ।

लिंगनं, लिङ्गनं } (पु०) आलिङ्गन । गले लगाना ।

लिंगिन्, लिङ्गिन् } (पु०) १ चिन्हित । २ लक्षणयुक्त । ३ चपरासधारी । दम्भी । बनावटी । ४ लिङ्गसम्पन्न । ५ सूक्ष्मशरीरधारी । (पु०) १ ब्रह्मचारी । २ शैव । लिङ्गायत्त । ३ पाखंडी । ढंभी । ढोंगी । ४ हाथी ।

लिंप्, लिम्प् } (धा० उभय०) [लिंपति—लिंपते, लिप्त] १ मालिश करना । उपटन करना । २ ढकना । बिछाना । ३ कलङ्कित करना । भ्रष्ट करना । धब्बा लगाना । ४ जलाना । सुलगाना ।

लिपिः, लिपी } (स्त्री०) १ मालिश । उबटन । २ लेख । हस्तलेख । ३ अक्षर । लिखावट । ५ टीप । दस्तावेज । ६ चित्रण ।—करः, (पु०) १ पोतने वाला । राज । मैमार । २ लेखक । ३ खुदैया । अक्षर खोदने वाला ।—ज्ञ, (वि०) वह जो लिख सके ।—न्यासः, (पु०) लेखन कला ।—फलकं, (वि०) पट्टी या दस्ती जिस पर कागज़ रख कर लिखा जाय ।—शाला, (स्त्री०) वह स्थान जहाँ लिखना सिखलाया जाय ।—सज्जा, (स्त्री०) लिखने की सामग्री ।

लिपिका (पु०) देखो लिपी ।

लिप्त (व० कृ०) १ लिपा हुआ । ढका हुआ । २ दगीला । धब्बेदार । भ्रष्ट । ३ विष में बुझा हुआ । ४ भक्षित । ५ संयुक्त । जुड़ा हुआ ।

लिप्तकः (पु०) विष का बुझा तीर ।

लिप्सा (स्त्री०) १ किसी वस्तु की प्राप्ति की अभिलाषा । २ कामना । इच्छा ।

लिप्सु (वि०) प्राप्ति की इच्छा वाला ।

लिविः, लिवी } (स्त्री०) देखो लिपि ।

लिविकरः, लिविङ्करः } (पु०) लेखक । प्रतिलिपि करने वाला। नकलनवीस ।

लिंप., लिम्प. } (पु०) लेप । मालिश ।

लिंपट, लिम्पट } (वि०) व्यभिचारी । लम्पट ।

लिंपटः, लिम्पटः } (पु०) व्यभिचारी पुरुष । लंपट आदमी ।

लिंपाकः, लिम्पाकः } (पु०) १ बिजौरा नीबू का पेड़ । २ गधा ।

लिंपाकम्, लिम्पाकम् } (न०) बिजौरा नीबू ।

लिश् (धा० परस्मै०) [लिशति] १ जाना । २ चोटिल करना ।

लिष्ट (व० कृ०) छोटा । घटा हुआ ।

लिष्वः (पु०) नट । नृत्यक । नचैया ।

लिह् (धा० उभय०) [लेढि, लीढे, लीढ] १ चाटना । २ चुसक चुसक कर पीना ।

ली (धा० प०) [लयति] गलाना । घोलना ।

लीक्षा (स्त्री०) जूं का अण्डा ।

लीढ (व० कृ०) चाटा हुआ । चाखा हुआ । खाया हुआ ।

लीन (व० कृ०) १ चिपटा हुआ । सटा हुआ । ३ छिपा हुआ । ३ सहारा लिये हुए । रखा हुआ । पिघला हुआ । घुला हुआ । ५ बिल्कुल मिला हुआ । एकीभूत । ६ अनुरागी । भक्त । ७ अन्तर्धान । लुप्त ।

लीला (स्त्री०) १ खेल । क्रीड़ा । २ आमोदप्रमोद । ३ लड़कखेल । सरल । सहज । ४ सादृश्य । समानता । तद्रूपता । ५ सौन्दर्य । मनोहरता । ६ बहाना । बनावट ।—अगारं—आगारं—गृहं—गेहं,—वेश्मन् (न०) आनन्दभवन ।—अंग (वि०) सुडौल अंगोंवाला ।—अब्जं,—अम्बुजं,—अरविन्दं, कमलं,— तामरसं,—पद्मं, (न०) खिलवाड़-करने के लिये खिलौने की तरह हाथ में लिया हुआ कमल पुष्प । अवतारः, (पु०) लीला करने के लिये धारण किया हुआ विष्णु भगवान् का अवतार ।—उद्यानं, (न०) १ आनन्दबाग़ । २ इन्द्र का स्वर्गलोक । देवताओं का उद्यान ।—कलहः, (पु०) बनावटी झगड़ा ।

लीलायितं (न०) खेल । क्रीड़ा । मनोरंजन । आनन्द ।

लीलावत् (पु०) खिलाड़ी । क्रीड़ामय ।

लीलावती (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ स्वेच्छाचारिणी अथवा व्यभिचारिणी स्त्री । ३ दुर्गा का नाम । ४ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की कन्या का नाम, जिसने अपने नाम पर लीलावती नाम की गणित की एक प्रसिद्ध पुस्तक बनायी थी ।

लुंच } लुञ्च } (धा० प०) [लुंचति, लुंचित] १ तोड़ना । उखाड़ना । उचेलना २ चीरना । फाड़ना । खींचना ।

लुंचः (पु०) } लुञ्चः (पु०) } लुचनं (न०) } लुञ्चनं (न०) } १ छीलने या बकला उतारने की क्रिया । २ तोड़ने की क्रिया ।

लुंचित } लुञ्चित } (वि० कृ०) १ छिकला उतारा हुआ । तोड़ा हुआ ।

लुट् (धा० आ०) [लोटते] १ सामना करना । समुहाना । २ चमकाना । ३ पीड़ित होना ।

लुठनं (न०) लोटपोट ।

लुठित (व० कृ०) लुढ़का हुआ । ज़मीन पर लोटता हुआ ।

लुड् (धा० प०) [लोडति] हिलाना डुलाना । गड्डवड्ड करना ।

लुंट् (धा० प०) [लुण्टति] १ जाना । २ चुराना । लूटना । ३ लंगड़ाना । लंगड़ा होना । ४ सुस्त होना ।

लुंटाक } लुण्टाक } (वि०) [स्त्री०—लुण्टाकी] चोर । चुरानेवाला ।

लुंठ् } लुण्ठ् } (धा० प०) [लुण्ठति] १ जाना । २ गड्डवड्ड करना । हिलाना डुलाना । चालू करना । ३ सुस्त पड़ना । ४ लंगड़ा होना । ५ लूटना । ६ सामना करना ।

लुंठकः } लुण्ठकः } (पु०) डाँकू । चोर ।

लुंठनं } लुण्ठनम् } (न०) लूट । चोरी । डाकेज़नी ।

लुंठा } लुण्ठा } (स्त्री०) १ लूट । डाँका । २ लुढ़क पुढ़क ।

लुंठाकः } लुण्ठाकः } (पु०) १ डाँकू । २ कौआ ।

लुंठिः } लुण्ठिः } लुंठी } लुण्ठी } (स्त्री०) लूट । लूट का माल ।

लुंड } लुण्ड् } (धा० अ०) [लुडयति-लुंडयते] लूटना ।

लुंडिका } लुण्डिका } (स्त्री०) १ गोलाकार वस्तु । गेंदा । २ उचितवृत्ति ।

लुंडी } लुण्डी } (स्त्री०) शिष्टाचरण ।

लुंथ् } लुन्थ् } (धा० प०) [लुंथति] १ आघात करना । चोटिल करना । वध करना । २ कष्ट उठाना । पीड़ित होना ।

लुप् (धा० प०) [लुप्यति] १ घबड़ाना । परेशान होना । २ परेशान करना । घबड़ा देना ।

लुप्त (व० कृ०) १ टूटा हुआ । भङ्ग । नष्ट । २ खोया हुआ । वञ्चित । ३ लूटा हुआ । गिरा हुआ । लुप्त । ५ छोड़ा हुआ । ६ अव्यवहृत । अप्रव्यवहृत । जो काम में न लाया जाता हो ।

लुब्ध (व० कृ०) १ लालची । लोभी । २ अभिलाषी ।

लुब्धः (पु०) १ शिकारी । बहेलिया । २ व्यभिचारी । लम्पट ।

लुब्धकः (पु०) १ शिकारी । बहेलिया । २ लोभी या लालची आदमी । ३ उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत तेजवान तारा ।

लुभ् (धा० प०) [लुभ्यति, लुब्ध] १ लोभ करना । उत्सुकता पूर्वक अभिलाषा करना । २ बहकाना । ३ घबड़ाना । परेशान होना ।

लुंब् } लुम्ब् } (धा० परस्मै०) [लुम्बति, ,लुम्बयति] लुम्बयते] १ अत्याचार करना । तंग करना । सन्तप्त करना ।

लुंबिका } लुम्बिका } (स्त्री०) एक प्रकार का बाजा ।

लुल् (धा० प०) [लोलति, लुलित] १ लुढ़कना। २ हिलाना। ३ दबाना। कुचलना।

लुलापः (पु०) } भैंसा।
लुलायः (पु०) }

लुलित (व० कृ०) १ हिला हुआ। २ गड्डबड्ड किया हुआ। ३ खुला हुआ। बिखरा हुआ।

लुष् (धा० प०) [लोषति] देखो लूष्।

लुषभः (पु०) मदमस्त हाथी।

लुह् (धा० प०) [लोहति] इच्छा करना। अभिलाषा करना।

लू (धा० उभय०) [लुनाति, लुनीते, लून] १ काटना। पृथक करना। विभाजित करना। तोड़ना। काटना। एकत्र करना। २ काट डालना। नाश कर डालना।

लूता (स्त्री०) १ मकड़ी। २ चींटी।—तन्तुः, (पु०) मकड़ी का जाला। -मर्कटकः, (पु०) १ लंगूर। २ चमेली।

लूतिका (स्त्री०) मकड़ी।

लून (व० कृ०) १ कटा हुआ। अलग किया हुआ। २ तोड़ा हुआ। एकत्र किया हुआ। ३ नष्ट किया हुआ। ४ काटा हुआ। कुतरा हुआ। ५ घायल किया हुआ।

लूनं (न०) पूंछ। दुम।

लूमं (न०) पूंछ।

लूष् (धा० प०) [लूषति] १ चोट करना। अनिष्ट करना। २ लूटना। चुराना।

लेखः (पु०) १ लिपि। लिखंत। टीप। दस्तावेज़। २ देवता।—अधिकारिन्, (न०) मन्त्री। (राजा का)—अर्हः, (पु०) ताड़ वृक्ष विशेष।—ऋषभः, (पु०) इन्द्र का नाम।—पत्रं, (न०) —पत्रिका, (स्त्री०) १ चिट्ठी। पुर्ज़ा। २ टीप। दस्तावेज़।—संदेशः, (पु०) लिखा हुआ सदेसा।—हारः,—हारिन्, (पु०) पत्रवाहक। चिट्ठीरसा। डाँकिया।

लेखकः (पु०) १ लेखक। क्लार्क। नक़लनवीस। २ चितेरा। चित्रकार।

—दोषः,—प्रमादः, (पु०) लिखने की भूल। नक़ल करने में ग़लती।

लेखन (वि०) [लेखनी] लेख। लिखन्त। चित्रण।

लेखनं (न०) १ लेख। लिखंत। नक़ल। २ छीलन। खरोचन। ३ संशोधन। ४ ताड़पत्र।

लेखनः (पु०) नरकुल जिसकी क़लम बनाई जाती है।

लेखनिकः (पु०) चिट्ठी-लेजानेवाला।

लेखनी (स्त्री०) १ कलम। नरकुल की कलम। २ चंमच।

लेखिनी (स्त्री०) १ कलम। २ चंमच।

लेखा (स्त्री०) १ रेखा। लकीर। धारी। २ बाढ़। किनारी। ३ चोटी।

लेख्य (वि०) १ लिखने योग्य। २ जो लिखा जाने को हो।

लेख्यं (न०) १ लेखनकला। २ लेख। पत्र। टीप। दस्तावेज। हस्तलिपि। ४ अक्षर। खोद कर लिखा हुआ। ५ चित्रण। ६ चित्रित। आकृति।—आरूढ़,—कृत, (वि०) लिखा हुआ।—गत, (वि०) चित्रित।—चूर्णिका, (स्त्री०) कूंची। पेंसिल।—पत्रं,—पत्रकं, (न०) १ लिखन्त। पत्र। टीप। २ ताड़पत्र।—प्रसङ्गः, (पु०) दस्तावेज। टीप।—स्थान, (न०) लिखने का स्थान।

लेंडं } (न०) लेंड़। विष्ठा।
लेण्डम् }

लेतं (पु०) } आँसू।
लेतः (न०) }

लेप् (धा० आ०) [लेपते] १ जाना। २ पूजन करना।

लेपः (पु०) १ पोतने, छोपने या चुपड़ने की चीज़। २ धब्बा। दाग़। ३ पाप। ४ भोजन।—करः, (पु०) लेप करने वाला। लेप बनाने वाला। प्लास्टर करने वाला। मैंमार।—भागिन्,—भुज्, (पु०) ४थी, ५वीं और छठवीं पीढ़ी के पूर्व पुरुष।

लेपकः (पु०) थवई। राज। मेंमार।

लेपनः (पु०) सुगन्ध द्रव्य।

लेपनं (न०) १ लेपना। पोतना। २ लेप। प्लास्टर। मलहम। गारा। क़लई। ४ गोश्त।

लेप्य (वि०) प्लास्टर करने योग्य।—कृत्, (वि०) १ नमूना बनाने वाला। २ राज। थवई। मेंमार। —स्त्री, (स्त्री०) वह स्त्री जो उबटन या चन्दनादि का लेप लगाये हो।

लेप्यमयी (स्त्री०) गुड़िया। पुतली।

लेलायमाना (स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

लेलिहः (पु०) साँप, सर्प।

लेलिहानः (पु०) १ सर्प। साँप। २ शिवजी।

लेशः (पु०) १ अणु। २ सूक्ष्मता। ३ समय का माप विशेष जो २ कला के समान होता है। ४ एक अलंकार विशेष। इसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक-ही भाग या अँश में रोचकता आती है।

लेश्या (स्त्री०) प्रकाश। उजियाला।

लेष्टुः (पु०) ढेला। मट्टी का ढेला।

लेसिकः (पु०) हाथी पर चढने वाला।

लेहः (पु०) १ चाटना। २ स्वाद लेना। चखना। ३ चाट कर खाने का पदार्थ। ४ भोजन। भोज्य पदार्थ।

लेहनं (न०) चाटना।

लेहिनः (पु०) सुहागा।

लेह्य (वि०) चाटने योग्य।

लेह्यं (न०) वह वस्तु जो चाट कर खायी जाय।

लैंगं, लैङ्गम् } (न०) अष्टादश पुराणों में से लिङ्गपुराण।

लैंगिक, लैङ्गिक } (वि०) [स्त्री०—लैङ्गिकी] १ चिन्ह सम्बन्धी। २ अनुमित।

लैंगिकः, लैङ्गिकः } (पु०) मूर्ति बनाने वाला।

लोक् (धा० आ०) [लोकते, लोकित] देखना। ताकना। पहचानना।

लोकः (पु०) १ संसार। भुवन का एक भाग। साधारणतः स्वर्ग, पृथिवी और पाताल तीन लोक माने जाते हैं। किन्तु विशेष रूप से वर्णन करने वालों ने लोकों की संख्या १४ मानी है। सात ऊर्ध्वलोक और सात अध.लोक।

१ ऊर्ध्वलोकः—

भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपर्लोक। और सत्यलोक।

२ अधःलोकः -

अतल, वितल सतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल। ३ भूर्लोक। ४ मानवगण। ५ समूह। समुदाय। ६ प्रदेश। अँचल। प्रान्त। ७ साधारण जीवन। ८ साधारण चलन या प्रथा। साधारण या लौकिक व्यवहार। ९ दृष्टि। चितवन। अवलोकन। १० या १४ की संख्या।—अतिगा, (वि०) असाधारण। अलौकिक।—अतिशय, (वि०) लोकोत्तर। असाधारण।—अधिक, (वि०) असाधारण। असामान्य।—अधिपः, (पु०) १ सज्ञा। २ देवता।—अधिपतिः, (पु०) संसार पति। ब्रह्माण्डनायक।—अनुरागः, (पु०) मानव जाति का प्रेम। सार्वजनिक प्रेम। लोकहितैषिता। उदारता।—अन्तरं, (न०) परलोक। आगे होने वाला जन्म।—अपवादः, (पु०) लोकनिन्दा। —अयनः, (न०) नारायण का नामान्तर।—अलोकः, (पु०) एक पौराणिक पहाड़ जो भूमण्डल के चारों ओर और मधुर जल पूरित सागर के परे है।—अलोकौ, (पु०) दृष्ट और अदृष्ट लोक।—आचारः, (पु०) लोकव्यवहार। संसार में बरता जाने वाला व्यवहार। —आयतः, (पु०) १ वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २ चार्वाक दर्शन का मानने वाला।—आयत, (न०) नास्तिकवाद। चार्वाक दर्शन।—आयतिकः, (पु०) नास्तिक। चार्वाक।—ईशः,

(पु०) १ राजा । २ ब्राह्मण । ३ पारा । पारद । —उक्तिः, (स्त्री०) १ कहावत । मसल । सार्वजनिक मत ।—उत्तर, (वि०) अलौकिक । असाधारण । असामान्य ।—उत्तरः, (पु०) राजा ।—एषणा, (स्त्री०) स्वर्गसुख प्राप्ति की कामना ।—कण्टक, (पु०) वह जो समाज का कण्टक विरोधी या हानिकर हो । दुष्टप्राणी । —कथा, (स्त्री०) प्रसिद्ध प्राचीन कहानी ।—कर्तृ,—कृत्, (पु०) संसार का रचने या बनाने वाला ।—गाथा, (स्त्री०) प्रचलित गीत ।—चक्षुस्, (न०) सूर्य ।—चारित्रं, (न०) ससार का ढंग ।—जननी, (स्त्री०) लक्ष्मी जी का नाम । —जित्, (पु०) १ बुद्धदेव । २ कोई भी संसार विजयी ।—ज्ञ, (वि०) ससार का ज्ञाता ।—ज्येष्ठः, (पु०) बुद्धदेव की उपाधि ।—तत्त्वं, (न०) मानव जाति का ज्ञान ।—तुषारः, (पु०) कपूर ।—त्रय, (न०)—त्रयी, (स्त्री०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल-तीनों लोकों की समष्टि ।—धातृ, (पु०) शिव जी का नाम ।—नाथः, (पु०) १ ब्राह्मण । २ विष्णु । ३ शिव । ४ राजा । महाराज । ५ बौद्ध ।—नेतृ, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—पः,—पालः, (पु०) दिग्पाल । इनकी संख्या आठ है ।—पतिः, (पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ राजा । महाराज ।—पथ ,—पद्धति , (स्त्री०) सार्वजनिक व्यवहार या कार्य करने का ढंग ।—पितामहः, (पु०) ब्रह्मा जी ।—प्रकाशनः, (पु०) सूर्य । —प्रवादः, (पु०) किंवदन्ती । अफवाह ।—प्रसिद्ध, (वि०) विश्वविख्यात ।—बन्धुः,—बान्धवः, (पु०) सूर्य ।—बाह्य,—वाह्य, (वि०) १ लोकबहिष्कृत । समाज से खारिज या निकाला हुआ । २ संसार से निराला । अकेला । बाह्यः, (पु०) जातिच्युत ।—मर्यादा, (स्त्री०) लौकिक व्यवहार लौकिक चलन या रस्म ।—मातृ, (स्त्री०) लक्ष्मी जी ।—मार्गः, (पु०) लौकिक चलन ।—यात्रा, (स्त्री०) १ व्यवहार । २ व्यापार । ३ आजीविका ।—रक्षः, (पु०) राजा । महाराज ।—रंजनं, (न०) सर्वप्रियता ।—लोचनं, (न०) सूर्य ।—वचनं, (न०) —वादः, (पु०)—वार्ता, (स्त्री०) अफवाह । किंवदन्ती ।—विद्विष्ट (वि०) वह जो सब को नापसंद हो या जिसे सब नापसंद करें ।—लोकविधिः, (पु०) १ प्रचलित पद्धति । २ संसार का रचयिता । विश्रुत, (वि०) जगद्विख्यात । संसार भर में प्रसिद्ध ।—वृत्तं, (न०) लोकरीति । गप्पाष्टक ।—श्रुतिः, (स्त्री०) १ जनश्रुति । अफवाह । २ जगप्रसिद्धि या कीर्ति ।—सङ्करः, (पु०) ससार की गड़बड़ी । गोलमाल । —संग्रहः, (पु०) संसार का कल्याण या सब की भलाई ।—साक्षिन्, (पु०) १ ब्रह्मा । २ अग्नि ।—सिद्ध, (वि०) मामूली । प्रचलित । रसूमी ।

लोकनं (न०) अवलोकन । चितवन ।

लोकपृण (वि०) ससार व्यापी ।

लोच् (धा० आ०) [लोचते] देखना ।

लोचं (न०) आँसू ।

लोचकः (पु०) १ मूर्खपुरुष । २ आँख की पुतली । ३ दीपक की कालिख या काजल । सुर्मा । अँजन । ४ कर्णभूषण विशेष । ५ काला या आसमानी वस्त्र । ६ धनुष का रोदा । शीशफूल । ८ साँप की कैंचुली । १० झुर्रियाँ पड़ा हुआ चर्म । ११ झुर्री पड़ी हुई भौंएँ । १२ केला का पेड़ ।

लोचनं (न०) १ देखन । चितवन । अवलोकन । २ आँख ।——गोचरः,—पथः,—मार्गः (पु०) दृष्टि की दौड़ ।—हिता, (स्त्री०) नीलाथोथा । तूतिया ।

लोट् (धा० पर०) [लोटति] पागल होना । मूर्ख होना ।

लोठः (पु०) भूमि पर लेटना ।

लोड् (धा० पर०) [लोडति] पागल होना । मूर्ख होना ।

लोडनं (न०) हिलाना । डुलाना ।

लोणारः (पु०) निमक विशेष ।

लोतः (पु०) १ आँसू । २ चिन्ह । निशान ।

लोत्रं (न०) चोरी का माल ।

लोध्रः } (पु०) इस नाम का पेड़ । इसमें लाल और
लोध्रः } सफेद फूल लगते हैं ।

लोपः (पु०) १ अदर्शन । अभाव । २ नाश । क्षय । ३ किसी रस्म या प्रथा की बंदी । ४ भंग । अतिक्रम । लंघन । ५ अभाव । असफलता । अनुपस्थिति । ६ छूट । ७ वर्णलोप ।

लोपनं (न०) १ अतिक्रम । लंघन । २ छूट ।

लोपा } विदर्भाधिपति की कन्या और महर्षि
लोपामुद्रा } अगस्त्य की पत्नी का नाम ।

लोपाकः } (पु०) शृगाल । गीदड़ । सियार ।
लोपापकः }

लोपाशः } (पु०) गीदड़ । नरलोमड़ी ।
लोपाशकः }

लोपिन् (वि०) हानिकारक । अनिष्टकारक । २ वर्णलोप करने योग्य ।

लोभः (पु०) १ लालच । तृष्णा । लिप्सा । २ अभिलाषा ।—अन्वित, (वि०) लालची । लोभी । —विरहः, (पु०) लोभ का अभाव ।

लोभनं (न०) १ लालच । फुसलाहट । बहक । २ सुवर्ण । सोना ।

लोभनीय (वि०) जो लुभाया जा सके । जो आकर्षित किया जा सके ।

लोमः (पु०) पूंछ ।

लोमकिन् (पु०) पक्षी ।

लोमन् (न०) मनुष्य या पशु के शरीर के ऊपर के रोएं ।—कर्णः, (पु०) खरा । खरगोश । शशक । —कीटः, (पु०) जूं । चील्हर ।—कूपः, —गर्तः,(पु)—रन्ध्रं,—विवरं. (न०) रोमकूप । —वाहिन्, (वि०) परवाला ।—संहर्षण (वि०) रोमाञ्चित ।— सारः, (पु०) पन्ना । —हृत्, (पु०) हरताल ।

लोम (वि०) १ बालदार । ऊनी । २ बालोंदार ।

लोमशः (पु०) १ भेड़ । मेढ़ा ।

लोमशा (स्त्री०) १ लोमड़ी । २ सियारिन । शृगाली । ३ लंगूर । ४ कसीस ।—मार्जारः, (पु०) गन्धविलाव ।

लोमाशः (पु०) गीदड़ । शृगाल ।

लोल (पु०) १ कँपकँपा । हिलने वाला । कम्पायमान । २ चंचल । ३ बेचैन । विकल । घबड़ाया हुआ । ४ क्षणभङ्गुर । विनश्वर । ५ उत्सुक ।—अक्षि, (न०) आँख मटकाना ।—लोल, (वि०) सदैव बेचैन रहने वाला ।

लोला (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी । २ बिजली । ३ जिह्वा ।

लोलुप (वि०) अत्यन्त उत्सुक ।

लोलुपा (स्त्री०) उत्कण्ठा । उत्सुकता ।

लोलुभ (वि०) अत्यन्त लोलुप ।

लोष्ट् (धा० आ०) [लोष्टते] जमा करना । ढेर करना ।

लोष्ट (पु०) } १ मिट्टी का ढेला । २ (न०)
लोष्टं (न०) } लोहे का मोर्चा ।

लोष्टुः (पु०) मिट्टी का ढेला ।

लोह (वि०) १ लाल । सुर्खीमाइल । ललोहाँ । २ ताँबे का बना हुआ ।—अभिसारः, (पु०)—अभिहारः, (पु०) सामरिक रीति भाँति ।—कान्तः, (पु०) चुम्बक ।—कारः, (पु०) लुहार । —किट्टं, (न०) लोहे का मोर्चा ।—घातकः, (पु०) लुहार ।—चूर्ण, (न०) लोहे का चूरा । लोहे का मोर्चा ।—जं, (न०) १ काँसा । फूल । २ लोहचूर्ण । लोहे की चूर जो रेतने से निकले ।—जालं, (न०) कवच । बख्तर । ।—जित्, (पु०) हीरा ।—द्राविन्, (पु०) सोहागा ।—नालः, (पु०) लोहे का तीर ।—पृष्ठः, (पु०) बगला । बूटीमार ।—प्रतिमा, (स्त्री०) १ निहाई । २ लोहे की मूर्ति ।—बद्ध, (वि०) लोहे से जड़ा हुआ या जिसकी नोंक पर लोहा जड़ा हो ।—मुक्तिका, (स्त्री०) लाल मोती ।—रजस्, (न०) लोहे का मुर्चा । —राजकं, (न०) चाँदी ।—वरं, (न०) सुवर्ण । सोना ।—शङ्कुः, (पु०) लोहे की कील ।—श्लेषणः, (पु०) सुहागा ।—संकरं, (न०) नीले रंग का ईसपात लोहा ।

लोहं (न०) } १ ताँवा । २ लोहा । ३ इस्पात ।
लोहः (पु०) } ४ कोई भी धातु । ५ सोना । ६ रक्त । लोहू । ७ हथियार । ८ मछली फँसाने की बंसी ।

लोहः (पु०) लाल बकरा ।

लोहं (न०) अगर की लकड़ी ।—अजः, (पु०) लाल बकरा ।

लोहल (वि०) १ लोहे का बना हुआ । २ फुस-फुसाहट । अस्पष्ट भाषण ।

लोहिका (स्त्री०) लोहे का पात्र ।

लोहित (वि०) [स्त्री० लोहिता, लोहिनी] १ लाल । लालरंग का । २ ताँवा । ताँवे का बना हुआ ।

लोहितः (पु०) १ लालरंग । २ मङ्गल ग्रह । ३ सर्प । ४ मृग विशेष । ५ चाँवल विशेष ।

लोहिता (स्त्री०) अग्नि की सप्तजिह्वाओं में से एक का नाम ।

लोहितं (न०) १ ताँवा । २ खून । लोहू । ३ केसर । ४ युद्ध । ५ लालचन्दन । ६ चन्दन विशेष । ७ अधूरा इन्द्रधनुष ।—अक्षः, (पु०) १ लाल-रंग का पाँसा या दाना । लाल रंग का सर्प विशेष । ३ कोमल । ४ विष्णु का नाम ।—अङ्गः, (पु०) मंगलग्रह ।—अयसः, (न०) ताँवा ।—अशोकः (पु०) अशोक वृक्ष ।—अश्वः, (पु०) अग्नि —आननः, (पु०) न्योला ।—ईक्षण, (वि०) लाल नेत्रों वाला ।—उद, (वि०) वह जिसमें लाल या लोहे जैसा लाल जल हो ।—कल्माष, (वि०) लाल धब्बेदार ।—क्षयः, (पु०) रक्त का नाश । —ग्रीवः, (पु०) अग्निदेव ।—चंदनं, (न०) केसर ।—मृत्तिका, (स्त्री०) गेरू । लाल खड़िया मिट्टी ।—शतपत्रं, (न०) लाल कमल का फूल ।

लोहितक (वि०) [स्त्री—लोहितिका] लाल ।

लोहितकः (पु०) १ माणिक । चुन्नी । २ मंगलग्रह । ३ चाँवल विशेष ।

लोहितकं (न०) काँसा । फूल ।

लोहितिमन् (पु०) लाली ।

लोहिनी (स्त्री०) स्त्री जिसके शरीर का रंग लाल हो ।

लौकायतिकः (पु०) चार्वाक मतानुयायी नास्तिक ।

लौकिक (वि०) [लौकिकी] १ साँसारिक । २ साधारण । मामूली । गँवारू । ३ रोज़मर्रे का । सर्वजन स्वीकृत । सर्वप्रिय । ४ ऐहिक । पार्थिव । साँसारिक । ५ भ्रष्ट । अपावन ।

लौकिकं (न०) लोकाचार ।

लौकिकाः (बहुवचन० पु०) सर्वसाधारण जन । संसार के लोग ।

लौक्य (वि०) १ साँसारिक । पार्थिव । मानवी । २ साधारण । मामूली ।

लौड् (धा० परस्मै०) (लौडति) पागल होना । मूर्ख बनाना ।

लौल्यं (न०) १ चंचलता । अस्थिरता । अव्यवस्थित-चित्तता । २ उत्सुकता । प्रलोभन । कामुकता । उत्कट कामना ।

लौह (वि०) [स्त्री०—लौही] लोहे का बना । २ ताँवे का । ३ धातु का । ४ ताँवे के रंग का । लाल ।

लौहं (न०) लोहा ।

लौहा (स्त्री०) पतीली । डेगची । बटलोई ।—आत्मन्, (पु०)—भूः, (स्त्री०) पतीली । डेगची ।—कारः, (पु०) लुहार । —जं, (न०) लोहे का मुर्चा ।—बंधः, (पु०)—बंधं, (न०) लोहे की बेड़ी । जंज़ीर, ।—शङ्कुः, (पु०) लोहे की कील ।

लौहित (पु०) शिव जी का त्रिशूल ।

लौहित्य (पु०) ब्रह्मपुत्र नद का नाम ।

लौहित्यं (न०) लालिमा । ललाई ।

ल्पी } (धा० परस्मै०) [लिपनाति, ल्यिनाति]
ल्यी } जोड़ना । मिलाना । मिल जाना ।

ल्वी (धा० प०)·[लिवनाति,] जाना । समीप जाना ।

व

व—संस्कृत अथवा देवनागरी वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यञ्जन वर्ण। यह उकार का विकार और अन्तस्थ अर्द्धव्यञ्जन माना गया है। यह दाँत और ओठ की सहायता से उच्चारण किया जाता है, अतः इसे दन्त्यौष्ठ कहते हैं। प्रयत्न ईषत्स्पृष्ट होता है अर्थात इसका उच्चारण जब किया जाता है, तब दाँतों का ओठ के साथ थोड़ा सा स्पर्श होता है।

वं (न०) [स्त्री०—मेदिनीकोश] वरुण का नाम (अव्यया०) जैसा। समान।

वः (पु०) १ पवन। हवा। २ बाहु। ३ वरुणदेव। ४ तुष्टिसाधन। ५ सम्बोधन। ६ कल्याण। मङ्गल। ७ वास। निवास। ८ समुद्र। ९ चीता। १० वस्त्र। ११ राहु का नाम।

वंशः (पु०) १ बाँस। २ कुल। खान्दान। गोत्र। ३ बेड़ा। ४ नफीरी। बाँस की बंसी। ५ समूह। समुदाय। ६ शहतीर। बल्ली। लट्ठा। ७ गाँठ (जो बाँस में होती है)। ८ गन्ना। ऊख। ९ मेरुदण्ड। रीढ़ की हड्डी। १० साल का पेड़। ११ बारह हाथ का एक मान।—अङ्कं, (न०)—अङ्कुरः, (पु०) १ बाँस की छड़ी की नोंक। २ बाँस का अङ्कुर।—अनुकीर्तनं (न०)—अनुक्रमः (पु०) वंशावली।—अनुचरितं, (न०) किसी वंश या खान्दान का इतिहास या तवारीख़।—अवली, (स्त्री०) किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची।—आह्वः, (पु०) वंशलोचन।—कठिनः, (पु०) बाँस का जंगल।—कर, (वि०) १ वंशस्थापक।—करः, (पु०) मूलपुरुष।—कर्पूररोचना, (स्त्री०)—रोचना, (स्त्री०)—लोचना, (स्त्री०) वंसलोचन।—कृत, (पु०) देखो वंशकर।—क्रमः, (पु०) किसी वंश की परंपरा।—क्षीरी, (स्त्री०) वंसलोचन।—चिन्तक, (पु०) वंशावली जानने वाला।—छेत्तृ, (वि०) किसी वंश का अन्तिम पुरुष।—जः, (पु०) १ सन्तान। औलाद। २ बाँस का बिया।—जम्,—(न०]—जा, (स्त्री०) वंसलोचन।—नर्तिन्, (पु०) मसखरा। विदूषक।—नाडका,—नालिका, (स्त्री०) बाँस की नली।—नाथः, (पु०) किसी वंश का प्रधान पुरुष। पेशवा खान्दान।—नेत्रं, (न०) गन्ने की जड़।—पत्रं, (न०) बाँस का पत्ता।—पत्रः, (पु०) नरकुल। सरपत।—पत्रकः, (पु०) १ नरकुल। सरपत। २ सफेद पौंडा।—पत्रकं, (न०) हरताल।—परंपरा, (स्त्री०) किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रमानुसार सूची।—पूरकं, (न०) ऊख की जड़।—भोज्य, (वि०)—पैतृक, बाप दादों की।—भोज्यं, (न०) पैतृक सम्पत्ति।—विततिः, (स्त्री०) १ खान्दान। कुल। २ बाँस का वन।—शर्करा, (स्त्री०) वंसलोचन।—शलाका, (स्त्री०) वीणा के नीचे के भाग में लगायी जाने वाली बाँस की छोटी परेग।—स्थितिः, (स्त्री०) किसी वंश का चिरस्थायीकरण।

वंशकः (पु०) १ गन्ना। २ बाँस की गाँठ। ३ मछली।

वंशकं (न०) अगर की लकड़ी।

वंशिका (स्त्री०) १ बंसी। मुरली। २ अगर की लकड़ी।

वंशी (स्त्री०) १ मुरली। २ नस। रक्तप्रवाहिनी शिरा। ३ वंसलोचन। ४ चार कर्ष या आठ तोले का एक मान।—धरः,—धारिन्, (पु०) १ श्रीकृष्ण। २ वंसी बजाने वाला।

वंश्य (वि०) १ मुख्य बल्ली सम्बन्धी। २ मेरुदण्ड से सम्बन्ध युक्त। ३ किसी वंश से सम्बन्ध युक्त। ४ कुलीन। उत्तम कुल का। वंशावली सम्बन्धी।

वंश्यः (पु०) १ वंशधर। २ पूर्वपुरुष। पूर्वज। ३ किसी वंश का कोई भी पुरुष। ४ बल्ली या लट्ठा। ५ बाँह या टाँग की हड्डी। ६ शिष्य।

वक देखो बक

वकुल देखो वकुल

वक्क् (धा० आ०) [वक्कते] जाना।

वक्तव्य (स० का० कृ०) १ कहने लायक । कहने योग्य । २ वह जिसके विषय में कहा जाय । ३ तिरस्करणीय । धिक्कारने योग्य । फटकारने योग्य । ४ कमीना । नीच । क्षुद्र । ५ ज़िम्मेदार। उत्तरदायी । ६ पराधीन । परतंत्र ।

वक्तव्यं (न०) १ कथन । वक्तृता । २ अनुशासन । नियम । आज्ञा । ३ कलङ्क । भर्त्सना । धिक्कार ।

वक्तृ (वि० पु०) कथन । वार्तालाप । बोलने वाला २ वाग्मी । व्याख्यानदाता । ३ शिक्षक । व्याख्याता । ४ विद्वान् । पण्डित ।

वक्त्रं (न०) १ मुख । २ चेहरा । ३ थूथन । चोंच । टोंटी । ४ आरम्भ । ५ (तीर की) नोंक। ६ वर्तन की टोंटी । ६ वस्त्रविशेष । ७ अनुष्टुप छद के समान एक छंद । —आसवः, (पु०) थूक । खखार ।—खुरः, (पु०) दाँत ।—जः, (पु०) ब्राह्मण ।—तालं, (न०) वह ताल जो मुख से निकाला जाय ।—दलं, (न०) तालू ।—रन्ध्रं, (न०) मुख का छेद ।—परिस्पन्दः, (पु०) भाषण । वाणी । -भेदिन्, (वि०) तीक्ष्ण । तीता । चरपरा ।—वासः, (पु०) नारंगी ।—शोधन. (न०) मुखप्रक्षालन । नीबू । विजौरा । (पु०) विजौरे का पेड़ ।

वक्र (वि०) १ टेढ़ा । बाँका । २ गोलमोल । टालादूली का । ३ घुँघराला । छल्लेदार । ४ पश्चाद्गामी । ५ बेईमान । धोखेबाज़ । ६ निष्ठुर । बेरहम । ७ छन्दःशास्त्र के अनुसार दीर्घ ।—अङ्गं, (न०) टेढ़ा शरीरावयव ।—अङ्गः, (पु०) १ हँस । २ चक्रवाक । चकई चकवा । ३ सर्प । —उक्तिः, (स्त्री०) १एक प्रकार का काव्यालङ्कार । इसमें काकु या श्लेष से किसी वाक्य का और का और ही अर्थ किया जाता है । २ काकूक्ति । ३ बढ़िया या चमत्कार पूर्ण कथन ।—कण्टः (पु०) बेर का पेड़ ।—कण्टकः, (पु०) खदिर वृक्ष । —खड्गः,—खड्गकः, (पु०) असा । राजदण्ड । —गति,—गामिन्, (वि०) १ घूमघुमौवा । टेढ़ा मेढ़ा । २ धोखेबाज़ । बेईमान ।—ग्रीवः, (पु०) ऊँट ।—चञ्चुः, (पु०) तोता ।—तुण्डः, (पु०) १ गणेशजी । २ तोता ।—दंष्ट्रः (पु०) शूकर ।—दृष्टि, (वि०) १ ऐंचाताना । भैंडा । २ वह जिसकी निगाह में दुष्टता भरी हो । ३ डाही । ईर्ष्यालु । (स्त्री०) भैंड़ापन ।—नक्रः, (पु०) १ तोता । २ नीच आदमी ।—नासिकः, (पु०) उल्लू । -पुच्छः, (पु०)—पुच्छिकः, (पु०) कुत्ता ।—पुष्पः, (पु०) पलास का वृक्ष । वालधिः,—लाङ्गूलः, (पु०) कुत्ता । —भावः, (पु०) १ बाँकापन । टेढ़ापन । २ दग़ाबाज़ी ।—वक्त्रः, (पु०) शूकर ।

वक्रः (पु०) १ मङ्गलग्रह । २ शनिग्रह । ३ शिव । ४ त्रिपुरासुर ।

वक्रं (न०) नदी का मोड़ । ग्रह की वक्री गति ।

वक्रयः (पु०) मूल्य । कीमत ।

वक्रिन् (वि०) १ टेढ़ामेढ़ा । २ विपरीत । उल्टा । (पु०) जैनी या बौद्ध ।

वक्रिमन् (पु०) १ बाँकापन । ढिठाई । २ द्व्यर्थकश्लेष अथवा अनिश्चितार्थक वाक्य । श्लेषवाक्य । ३ चालाकी ।

वक्रोष्ठिः (पु०) } मन्द मुसक्यान ।
वक्रोष्ठिका (स्त्री०) }

वक्ष् (धा० प०) [वक्षति] १ बढ़ना । उगना । २ बलिष्ठ होना । ३ क्रुद्ध होना । ४ जमा करना ।

वक्षस् (न०) छाती । कुच । चूची ।—जः,—रुह्, —रुहः, (=वक्षोजः, वक्षोरुह, वक्षोरुहः) (पु०) स्त्री के कुच । चूँची ।—स्थलं, (न०) (=वक्ष या वक्षःस्थल) छाती ।

वख } (धा० प०) [वखति, वंखति] जाना ।
वंख }

वगाहः (पु०) देखो अवगाहः ।

वंकः } (पु०) नदी का मोड़ ।
वङ्कः }

वंका } (स्त्री०) घोड़े के चारजामें की अगली
वङ्का } मेंढी ।

वंकिलः } (पु०) भाँटा।
वङ्किलः }

वंक्रिः (पु०) १ पसली। २ छत्त का शहतीर। ३ एक प्रकार का बाजा।

वंक्षुः (पु०) गंगा की शाखा।

वंग् } (धा० प०) [वंगति] १ जाना। २
वङ्ग् } लंगड़ाना।

वंगाः } (बहु०) बंगाल।
वङ्गाः }

वंगः } (पु) १ रुई। २ बैंगन।
वङ्गः }

वंगं (न०) १ सीसा। २ रांगा। टीन।—अरिः, (पु०) हरताल।—जः, (पु०) पीतल। २ ईंगुर। सेंदुर।—जीवनं, (न०) चाँदी।—शुल्वजं, (न०) काँसा।

वंघ् } (धा० आ०) [वंघते] १ जाना। तेज़ी के
वङ्घ् } साथ जाना। २ आरम्भ करना। ३ भर्त्सना करना। दोष लगाना।

वच् (धा० प०) १ कहना। बोलना। २ वर्णन करना। निरूपण करना। ३ बतलाना।

वंचः } (पु०) १ तोता। ३ सूर्य।
वञ्चः }

वंचा } (स्त्री०) एक पक्षी विशेष जो बातचीत करे।
वञ्चा } एक खुशबूदार जड़।

वंचं } (न०) वार्तालाप। बातचीत।
वञ्चम् }

वचन (न०) १बोलने की क्रिया। २ वाणी। कथन। ३ पुनरावृत्ति। पाठ। ४ नियम। आदेश। ५ निर्देश। ६ परामर्श। सलाह। ७ शपथ पूर्वक वर्णन। बयान। ८ शब्दार्थ। ६ (व्याकरण में) वचन यथा एकवचन। द्विवचन। बहुवचन। १० सोंठ।—उपक्रमः, (पु०) भूमिका। आरम्भिक वक्तव्य।—करः, (वि०) आज्ञाकारी। आज्ञा पालक।—कारिन् (वि०) आज्ञाकारी।—क्रमः, (पु०) संवाद। कथोपकथन।—ग्राहिन् (वि०) विनम्र। आज्ञाकारी।—पटु. (वि०) बोलने में चतुर।—विरोधः, (पु०) कथन में परस्पर विरोध।—स्थितः, (पु०), आज्ञाकारी।

वचनीय (वि०) १ कहने योग्य। वर्णन करने योग्य। २ धिक्कारने योग्य।

वचनीयं (न०) कलङ्क। अपवाद।

वचरः (पु०) १ मुर्गा। २ दुष्ट। नीच। शठ।

वचस् (न०) १ वाक्य। शब्द। २ आदेश। आज्ञा। ३ परामर्श। मशवरा। ४ (व्याकरण में) वचन।—कर, (वि०) १ आज्ञाकारी। २ दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम करने वाला।—ग्रहः, (पु०) कान।—प्रवृत्तिः, (स्त्री०) बोलने का प्रयत्न।

वचसांपतिः (पु०) बृहस्पति।

वज् (धा० प०) [वजति] १ चलना। सम्हालना। तैयार करना। २ तीर में पर लगाना ३ चलना।

वज्रं (न०) } १ इन्द्र का वज्र। २ कोई भी
वज्रः (पु०) } विनाशक हथियार। ३ हीरा काटने का औज़ार। ४ हीरा। ५ काँजी।

वज्रः (पु०) १ व्यूहरचना विशेष। २ कुश। ३ भिन्न भिन्न पौधों के नाम।

वज्रं (न०) १ ईसपात। अबरक। ३ वज्र या कठोर भाषा। ४ बच्चा। ५ वज्रपुष्प।—अङ्गः, (पु०) सर्प।—अशनिः, (पु०) इन्द्र का वज्र।—आकारः, (पु०) हीरा की खान।—आयुधः, (पु०) इन्द्र।—कङ्कटः, (पु०) हनुमान।—कीलः. (पु०) वज्र।—क्षारं, (न०) वैद्यक का एक रसायन योग।—गोपः,—इन्द्रगोपः,—चञ्चुः, (पु०) गीध।—चर्मन्, (पु०) गैंडा।—जित्, (पु०) गरुड़ का नाम।—ज्वलनं, = ज्वाला, (स्त्री०) बिजली।—तुण्डः (पु०) १ गीध। २ मच्छर। डाँस। ३ गरुड़। ४ गणेश।—दंष्ट्रः, (पु०) कीट विशेष।—दन्तः, (पु०) १ शूकर। २ चूहा।—दशनः, (पु०) चूहा।—देह,—देहिन् (वि०) दृढ़ शरीर वाला।—धरः, (पु०) इन्द्र।—नाभः, (पु०) श्री कृष्ण का चक्र।—निर्घोषः, (पु०) इन्द्र।—निष्पेषः, (पु०) बादल की गड़गड़ाहट।—

पाणिः, (पु०) इन्द्र ।—पातः, (पु०) वज्रपात । बिजली का गिरना ।—पुष्पं:, (न०) तिल्ली का फूल ।—भृत्, (पु०) इन्द्र ।—मणिः, (पु०) हीरा ।—मुष्टिः, (पु०) इन्द्र ।—रदः (पु०) शूकर ।—लेपः, (पु०) एक प्रकार का सीमंट ।—लोहकः. (पु०) चुंबक ।—व्यूहः, (पु०) सैनिक कवायद ।—शल्यः, (पु०) सूँस ।—सार, (वि०) हीरा की तरह कड़ा । —हृदयं, (न०) हीरा की तरह कड़ा दिल ।

वज्रिन् (पु०) १ इन्द्र का नाम । २ उल्लू । घुग्घू ।

वंच् }
वञ्च् } (धा० पर०) [वंचति] १ जाना । पहुँचना । आना । २ चुपचाप जाना ।

वंचक }
वञ्चक } (वि०) १ धोखेबाज़ । छलिया । कपटी । मुतफन्नी ।

वंचकः }
वञ्चकः } (पु०) १ शठ । धोखेबाज़ । ठग । २ शृगाल । ३ छछूंदर । ४ पालतू न्योला ।

वंचतिः }
वञ्चतिः } (पु०) अग्नि ।

वंचथः }
वञ्चथः } (पु०) १ ठगी । धोखेबाज़ी । चाल । २ ठगिया । धोखेबाज़ । कपटी । ३ कोमल ।

वंचन (न०) }
वञ्चनम् (न० }
वंचना (स्त्री०) }
वञ्चना (स्त्री०) } १ धोखा । चालबाज़ी । २ भ्रम । माया । ४ हानि । रुकावट ।

वंचित }
वञ्चित } (व० कृ०) १ छला हुआ । धोखा दिया हुआ । २ अलग किया हुआ ।

वंचिता }
वञ्चिता } (स्त्री०) एक प्रकार की पहेली या बुझौवल ।

वंचुक }
वञ्चुक } (वि०) [वंचुकी] धोखेबाज़ । छलिया । बेईमान । मुत्फन्नी । चालाक ।

वंचुकः }
वञ्चुकः } (पु०) शृगाल ।

वंजुलः }
वञ्जुलः } (पु०) १ नरकुल या बेत । २ पुष्प विशेष । ३ अशोक वृक्ष । ४ पक्षी विशेष । —द्रुमः, (पु०) अशोक वृक्ष ।—प्रियः, (पु०) छड़ी । बेत ।

वट् (धा० प०) [वटति] घेरना । [उभय० वाटयति—वाटयते] १ कहना । २ बाँटना । बँटवारा करना । ३ घेरना ।

वटः (पु०) १ बरगद का पेड़ । २ कौड़ी । ३ गोली । टिकिया । ४ शून्य । सिफर । ५ चपाती । ६ डोरी । रस्सा । ७ रूप की समानता या रूपसादृश्य ।—पत्रं, (न०) रामतुलसी विशेष ।—पत्रा, (स्त्री०) चमेली ।—वासिन्, (पु०) यक्ष ।

वटकः (पु०) १ चपाती । ३ गोला । गोली । टिकिया ।

वटरः (पु०) १ मुर्गा । २ चटाई । ३ पगड़ी । ४ चोर । डाँकू । ५ रई । ६ सुगन्धयुक्त घास ।

वटाकरः }
वटारकः } (पु०) डोरी । रस्सी ।

वटिकः (पु०) शतरंज का दाँव ।

वटिका (स्त्री०) १ वटी । गोली । २ शतरंज का मोहरा ।

वटिन् (वि०) गोल । डोरीदार ।

वटी (स्त्री०) १ रस्सी । डोरी । २ गोली या टिकिया ।

वटुः (पु०) १ छोकरा । बालक । २ ब्रह्मचारी । माणवक ।

वटुकः (पु०) १ बालक । २ ब्रह्मचारी । माणवक । ३ मूढ़ । मूर्ख ।

वठ् (धा० प०) [वठति] १ मज़बूत होना । २ हृष्टपुष्ट होना ।

वठर (वि०) १ सुस्त । काहिल । २ दुष्ट । शठ ।

वठरः (पु०) मूढ़जन । मूर्ख आदमी । २ शठजन । दुष्टजन । ३ चिकित्सक । ४ जल का घड़ा ।

वडभिः }
वडभी } (पु०) देखो वल्लभिः, वलभी ।

वडवा (स्त्री०) १ घोड़ी । २ अश्विनी नाम की अप्सरा जिसने घोड़ी का रूप धर, सूर्य से दो पुत्र उत्पन्न करवाये थे । वे दोनों अश्विनीकुमार के नाम से प्रसिद्ध हैं । ३ दासी । ४ रंडी । वेश्या ।

५ द्विजयोषित् । ब्राह्मणी ।—अग्निः,—अनलः, (पु०) वाडवानल । समुद्र के भीतर रहने वाला अग्नि ।—मुखः, (पु०) १ वाडवानल । २ शिव का नाम ।

वडा (स्त्री०) उर्द की पीठी का बना वडी पूड़ीनुमा पदार्थ विशेष ।

वडिशं (न०) देखो वडिश ।

वड् (वि०) वड़ा । दीर्घाकार । महान् ।

वण् (धा० परस्मै०) [वणति] शब्द करना । बजाना ।

वणिज (पु०) १ सौदागर । व्यापारी । २ तुलाराशि । (स्त्री०) सौदागरी । व्यापार ।—जनः, (पु०) १ व्योपारी । तिजारती । सौदागर । २ बनिया या व्योपारी लोग ।—पथः, (पु०) १ सौदागरी । व्यापार । ४ व्यापारी । सौदागर । ३ व्यापारी की दूकान । तुलाराशि ।—वृत्तिः, (स्त्री०) व्यापार । सौदागरी ।—सार्थः, (पु०) काफिला । व्यापारियों की टोली ।

वणिजः (पु०) १ व्यापारी । २ तुलाराशि ।

वणिजकः (पु०) व्यापारी ।

वणिज्यं (न०) } व्यापार । सौदागरी । तिजा-
वणिज्या (स्त्री०) } रत ।

वंट् } (धा० प०) [स्त्री०—[वंटति, वंटयति,
वण्ट् } वंटयते] बटवारा करना । बाँटना ।

वंटः } (पु०) १ हिस्सा । बाँट । अंश । २
वण्टः } हसिया का वेंट । ३ बिधुर । वह पुरुष जिसका विवाह न हो ।

वंटकः } (पु०) १ बटवारा । २ बाँटने वाला ।
वण्टकः } ३ अंश । भाग । हिस्सा ।

वंटनं }
वण्टनं } (न०) बटवारा । हिस्सा । बाँट ।

वंटालः }
वण्टालः } (पु०) १ शूरवीरों का झगडा । २
वंडालः } वेलचा । कलछा । ३ नौका । बोट ।
वण्डालः }

वंठ् } (धा० आत्मा०) [वठते] अकेले जाना ।
वण्ठ् } दुकेला जाना ।

वंठ } (वि०) १ अविवाहित । २ बोना ।
वण्ठ } कार । ३ पंगा ।

वंठः } (पु०) १ अविवाहित पुरुष । २
वण्ठः } चाकर । ३ बर्छा । शक्ति । शूल ।

वंठरः } (पु०) १ बाँस के कल्ले का वह
वण्ठरः } पत्ता जो उसे छिपाये रहता है । [पत्ता गाँठ गाँठ पर होता है] २ ताड़ वृक्ष का अङ्कुर । ३ बकरा बाँधने की रस्सी । ४ कुत्ता । कुत्ते की पूंछ । ६ बादल । ७ छाती । चूंची ।

वंड् } (धा० आ०) [वण्डते] १ ...
वण्ड् } करना । बाँटना । हिस्सा करना । घेरना ।

वंड } (वि० । १ अङ्गभङ्ग । पंगु । २ ...
वण्ड } ३ बधिया किया हुआ । आख्ता हुआ ।

वंडः } (पु०) १ वह पुरुष जिसकी लिङ्गेन्द्रिय
वण्डः } अग्रभाग पर वह चमड़ा न हो, जो ... को ढाँके रहता है । २ विना पूंछ का बैल ।

वंडा } (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री । पुंश्चली स्त्री
वण्डा } छिनाल औरत ।

वंडरः } (पु०) १ कंजूस आदमी । २ नपुंसक
वण्डरः } पुरुष । हिजड़ा आदमी ।

वत् (वि०) यह एक प्रत्यय है जो संज्ञावाची शब्दों ... किसी वस्तु की सम्पन्नता प्रकट करने को लगाया जाता है । जैसे "धनवत्" अर्थात धनी या धन से सम्पन्न । यह सादृश्यता अथवा समानता भी प्रकट करता है-यथा "आत्मवत्" ।

वत (अव्यया०) १ कष्ट । २ दया । ३ सुखी । ४ विस्मय । ५ आमंत्रण ।

वतंसः (पु०) अवतंस का अपभ्रंश । (अकार का लोप होने से । १ आभूषण । २ चोटी । ३ हर प्रकार का गहना । ४ कर्णफूल ।

वतोका (स्त्री०) सन्तानरहित स्त्री या गौ । वह स्त्री या गौ जिसका गर्भ किसी घटना विशेष से गिर पड़ा हो ।

वत्सः (पु०) १ बछड़ा । किसी भी जानवर का बच्चा । २ बेटा । ३ सन्तान । औलाद । वर्ष । ५ एक देश का नाम जहाँ उदयन नामक राजा राज्य करता था

और जिसकी राजधानी का नाम कौशांबी था।—अदनी, (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी की जाति का फल। कलींदा। तरबूज़।—अदनः, (पु०) भेड़िया।—काम, (वि०) बच्चों का अनुरागी।—नाभः, (पु०) १ वृक्ष विशेष। २ बछनाभ नामक विष जो मीठा होता है।—पालः, (पु०) श्रीकृष्ण या बलराम।—शाला, (स्त्री०) गौशाला।

वत्सकः (पु०) १ छोटा बछवा। बछड़ा। २ बच्चा। ३ कुटज का पौधा।

वत्सकं (न०) १ पुष्पकसीस। २ कुटज। ३ इन्द्रजौ। ४ निर्गुण्डी।

वत्सतरः (पु०) जवान बछवा जो जोता न गया हो।

वत्सतरी (स्त्री०) वह बछिया जिसकी उम्र ३ वर्ष की हो। कलोर।

वत्सरः (पु०) १ वर्ष। २ विष्णु का नाम।—अन्तकः, (पु०) फागुन मास।—ऋणं, (न०) वह कर्ज़ जिसका चुकाना वर्ष के अन्त में आवश्यक हो।

वत्सल (वि०) पुत्र या सन्तान के प्रति पूर्ण स्नेह युक्त। बच्चे के प्रेम से भरा हुआ है।

वत्सलः (पु०) फूँस की घास।

वत्सला (स्त्री०) वह गाय जिसका अपने बच्चे पर पूर्ण अनुराग हो।

वत्सलं (न०) स्नेह। अनुराग।

वत्सा, वत्सिका } (स्त्री०) ओसर या कलोर गौ।

वत्सिमन् (पु०) लड़कपन। जवानी।

वत्सीयः (पु०) अहीर। गोपाल। ग्वाला।

वद् (धा० प०) [वदति] १ बोलना। २ सूचना देना। ३ कहना। वर्णन करना। ४ निर्दिष्ट करना। ५ पुकारना। ६ बतलाना। ७ चिल्लाना। ८ किसी कार्य में पटुता प्रदर्शन करना। ९ चमकना। १० परिश्रम करना। उद्योग करना।

वद (वि०) बोलने वाला। बातचीत करने वाला। भली भाँति बोलने वाला।

वदनं (न०) १ चेहरा। २ मुख। ३ शक्ल। सूरत। रूप। ४ सामना। अगला भाग। ५ प्रथम संख्या (किसी माला का)—आसवः, (पु०) थूक।

वदन्ती (स्त्री०) वाणी। वक्तृता। संवाद।

वदन्य (वि०) देखो "वदान्य"।

वदरः (पु०) देखो "बदर"।

वदालः (पु०) १ भँवर। २ पाठीन मत्स्य। पाठीन मछली।

वदावद (वि०) १ वक्ता। २ गप्पी।

वदान्य (वि०) १ तेज़ बोलने वाला। सुभाषी। २ अपनी बातचीत से दूसरे को सन्तुष्ट करने वाला। ३ उदार। अतिशय दाता।

वदि (अव्यया०) कृष्णपक्ष।

वद्य (वि०) १ बोलने योग्य। तिरस्कार करने के अयोग्य। २ कृष्णपक्ष।

वद्यं (न०) भाषण। बातचीत।

वध् (धा० प०) [वधति] १ वध करना।

वधः (पु०) १ हत्या। वध। २ आघात। प्रहार। ३ लकवा। ३ अन्तर्धान क्रिया। ५ (अङ्कगणित में) गुणा की क्रिया।—अंगकं, (न०) विष।—अर्ह, (वि०) प्राणदण्ड पाने योग्य।—उपायः, (पु०) वध के साधन।—कर्माधिकारिन्, (पु०) जल्लाद। बधिक।—जीविन्, (पु०) १ व्याधा। बहेलिया। २ कसाई। बूचर।—दण्डः, (पु०) १ शारीरिक दण्ड। २ प्राणदण्ड।—भूमिः, (स्त्री०) स्थली, (स्त्री०) स्थानं, (न०) १ वह स्थान जहाँ प्राणदण्ड दिया जाय। २ कसाईखाना।—स्तम्भः, (पु०) फाँसी।

वधकः (पु०) १ जल्लाद। २ घातक। हत्यारा।

वधत्रं (न०) वध करने का हथियार।

वधित्रं (न०) १ कामदेव। २ मैथुन करने की इच्छा। शहवत।

वधुः, वधुका } (स्त्री०) १ बहू। पुत्र की पत्नी। २ युवती स्त्री।

वधूः (स्त्री०) १ वहू । २ पत्नी । ३ पुत्रवधू । ४ स्त्री । औरत । ५ अपने से छोटे सम्बन्धी की स्त्री । नाते में छोटी स्त्री । ६ पशु की माता ।—जनः, (पु०) पत्नी । स्त्रीलोग ।—वस्त्र, (न०) वे कपड़े जो विवाह के समय धारण किये जाते है ।

वधूटी (स्त्री०) १ युवती स्त्री । २ पुत्रवधू ।

वध्य (वि०) १ वध करने योग्य । २ प्राणदण्ड की आज्ञा पाये हुए । ३ शारीरिकदण्ड पाने योग्य ।

वध्यः (पु०) १ शिकार । आपद्ग्रस्त व्यक्ति । २ शत्रु ।—पटहः, (पु०) वह ढोल जो किसी को प्राणदण्ड देते समय बजाया जाय ।—भूः, ।—भूमिः, (स्त्री०) —स्थलं,—स्थानं, (न०) वध करने की जगह ।—माला, (स्त्री०) वह माला जो प्राणदण्ड प्राप्त पुरुष के गले में उस समय पहनायी जाय, जिस समय उसका वध किया जाय ।

वध्या (स्त्री०) हत्या । कत्ल ।

वध्रं (न०) १ चमड़े का तस्मा । २ शीशा ।—ध्री, (स्त्री०) चमड़े का तस्मा ।

वध्र्यः (पु०) जूता ।

वन् (धा० परस्मै०) [वनति] १ प्रतिष्ठा करना । सम्मान करना । पूजन करना । २ सहायता करना । ३ ध्वनि करना । ४ संलग्न होना । किसी काम में लगना । [उभय० —वनोति, वनुते] १ याचना करना । माँगना । प्रार्थना करना । २ ढूँढना । तलाश करना । ३ जीतना । अधिकार में करना । कब्जा करना ।(उभय०वनति, वानयति वानयते) १ कृपा करना । अनुग्रह करना । २ चोटिल करना । अनिष्ट करना । ३ ध्वनित करना । ४ विश्वास करना ।

वनं (न०) १ जंगल । २ कमल के फूलों का दस्ता । ३ आवासस्थान । ४ जल का चश्मा या सोता । ५ जल । ६ काष्ठ । लट्ठा ।—अग्निः, (पु०) दावानल । दावाग्नि ।—अजः, (पु०) जंगली बकरा ।—अन्तः, (पु०) १ वन की सीमा । वन प्रान्त ।—अन्तरं, (न०) १ दूसरा वन । २ वन का भीतरी हिस्सा ।—अरिष्टा, (स्त्री०) जंगली हल्दी ।—अलक्तं, (न० लालमिट्टी ।—अलिका, (स्त्री०) सूरजमुखी ।—आखुः, (पु०) खरगोश । खरा ।—आखुकः, (पु०) बनमूँग ।—आपगा, (स्त्री०) वन की नदी ।—आर्द्रका, (स्त्री०) जंगली अदरक ।—आश्रमः, (पु०) १ वानप्रस्थाश्रम । २ वन का वास ।—आश्रमिन्, (पु०) तपस्वी । महात्मा ।—आश्रयः, (पु०) १ वनवासी । २ काला कौआ । डोम-कौआ ।—उत्साहः, (पु०) गैंड़ा ।—उद्भवा, (स्त्री०) जगली कपास का पौधा ।—ओकस्, (पु०) १ वनवासी । जंगल का रहने वाला । २ वानप्रस्थाश्रमी । तपस्वी । मुनि । ३ वन्यपशु । (यथा बंदर, शूकर आदि) —कणा, (स्त्री०) वनपिप्पली ।—कदली (स्त्री०) जगली केला । —करिन्, (पु०) —कुंजरः, —गजः (पु०) जंगली हाथी ।—कुक्कुटः (पु०) जंगली मुर्गा । —खण्डं, (न०) जंगल ।—गहनं, (न०) वन का वह भाग जहाँ, वह अति सघन हो ।—गुप्तः, (पु०) जासूस । भेदिया ।—गुल्मः, (पु०) जंगली झाड़ी ।—गोचर, (वि०) वन में रहने वाला ।—गोचरः, (पु०) १ वहेलिया । २ वनवासी ।—गोचरं, (न०) वन । जंगल ।—चन्दनम्, (न०) १ देवदारु वृक्ष । २ अगर काष्ठ । —चर, (वि०) वन में विचरने वाला ।—चर, (पु०) १ वनवासी । २ वन्यपशु । ३ शरभ ।—चर्या, (स्त्री०) वनवासी । वन में घूमने वाला । —छागः, (पु०) १ जंगली बकरा । २ शूकर । —जः, (पु०) १ हाथी । २ सुगन्धयुक्त तृण विशेष । ३ जंगली बिजौरा जाति का नीवू ।—जं, (न०) १ नीलकमल का पुष्प । २ जंगली कपास का पौधा ।—जीविन्, (वि०) लकड़हारा ।—दः, (पु०) बादल । मेघ ।—दहः (पु०) दावानल ।—देवता, (स्त्री०) वन का अधिष्ठाता देवता ।—पांसुलः, (पु०) शिकारी । बहेलिया । —पूरकः, (पु०) वनैला । बिजौरा नीबू का वृक्ष ।—प्रवेशः, (पु०) वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश । —प्रियः, (पु०) कोयल ।—प्रियं, (न०) दालचीनी का पेड़ ।—मालिन्, (पु०) श्रीकृष्ण ।

—मालिनी, (स्त्री०) द्वारकापुरी का नामान्तर । —मूतः, (पु०) बादल । मेघ ।—मोचा, (स्त्री०) जंगली केला ।—राजः, (पु०) सिंह । शेर । —रुह, (न०) कमल का फूल ।—लक्ष्मीः, (स्त्री०) वनश्री । वन की शोभा । २ केला ।— वासनः, (पु०) ऊदबिलाव ।—वासिन् (पु०) १ वन में बसने वाला । २ मुनि । वानप्रस्थ ।— वनस्थायिन्, —व्रीहिः, (पु०) जंगली चाँवल । —शोभनं, (न०) कमल ।—श्वन्, (पु०) शृगाल । १ चीता २ ऊदबिलाव ।—सङ्कट (पु०) मसूर ।—सरोजिनी, (स्त्री०) कपास का पौधा ।—स्थः, (पु०) १ हिरन । २ मुनि । —स्था, (स्त्री०) वटवृक्ष ।—स्थली, (स्त्री०) वनभूमि । आरण्यदेश । जंगली ज़मीन ।

वनस्पतिः (पु०) १ बड़ा जंगली वृक्ष, विशेष कर वह पेड़ जिसमें पुष्प लगे विना ही फल लगें । वृक्ष । पेड़ ।

वनायुः (पु०) एक प्राचीन देश का नाम जहाँ का घोड़ा अच्छा होता था ।—ज, (न०) वनायु देश में उत्पन्न (घोड़ा) ।

वनिः (स्त्री०) कामना । अभिलाषा ।

वनिका (स्त्री०) छोटा वन ।

वनिता (स्त्री०) १ स्त्री । २ पत्नी । स्वामिनी । ३ कोई भी प्रेमपात्री (माशूका) स्त्री । ४ पशु की मादा ।—द्विष् (पु०) स्त्रियों से घृणा करने वाला ।—विलासः, (पु०) स्त्री का आमोद प्रमोद ।

वनिन् (पु०) १ वृक्ष । २ सोमलता । ३ वानप्रस्थ ।

वनिष्णु (वि०) याचक । मँगता ।

वनी (स्त्री०) जंगल । वन । कुंज ।

वनीपकः } वनीयकः } (पु०) भिक्षुक । भिखारी ।

वनेकिंशुक (पु०) जंगल का किंशुक । अर्थात् वह वस्तु जो वैसे ही विना माँगे मिले । जैसे वन में किंशुक विना माँगे या प्रयास किये मिलता है ।

वनेचर (न०) वन मे रहने वाला ।

वनेचरः (पु०) १ वनरखा । जंगल में रखने वाला । २ मुनि । ३ वन्यपशु । ४ वनमानुष । ५ राक्षस ।

वनेज्यः (पु०) आम विशेष ।

वद् (धा० आ०) [वन्दते, वन्दित] १ प्रणाम करना । २ अर्चन करना । पूजन करना । ३ प्रशंसा करना ।

वंदकः } वन्दकः } (पु०) प्रशंसक । भाट । बंदीजन ।

वंदथः } वन्दथः } (पु०) प्रशंसक । भाट । बंदीजन ।

वंदनं (न०) १ प्रणाम । नमस्कार । २ सम्मान । अर्चन । पूजन । ३ सम्मान या प्रणाम जो ब्राह्मण को किया जाय । ४ प्रशंसा । तारीफ ।

वंदना } वन्दना } (स्त्री०) १ अर्चन । पूजन । २ प्रशंसा ।

वंदनी } वन्दनी } (स्त्री०) १ पूजन । अर्चन । २ प्रशंसा । याचना । ३ एक अर्क जो मृतक को जीवित करे ।—माला,—मालिका, (स्त्री०) बंदनवार ।

वंदनीय } वन्दनीय } (वि०) प्रणाम करने योग्य । सम्माननीय ।

वंदनीया } वन्दनीया } (स्त्री०) हरताल ।

वंदा } वन्दा } (स्त्री०) भिखारिनी ।

वंदारु } वन्दारु } (वि०) १ प्रशंसा करने वाला । २ श्रद्धेय । माननीय । (न०) प्रशंसा ।

वंदिन् (पु०) } वन्दिन् (पु०) } १ बंदीजन । भाट । २ कैदी । बंदी ।

वंदी } वन्दी } (स्त्री०) देखो बंदी ।—पालः, (पु०) जेलर । बंदीगृह का रक्षक ।

वंद्य } वन्द्य } (वि०) १ पूज्य । २ प्रणम्य । ३ प्रशंस्य । प्रशंसा है ।

वंद्रः } वन्द्रः } (पु०) १ पूजक । पूजा करने वाला । भक्त ।

वंद्रं } वन्द्रं } (न०) समृद्धि ।

वन्य (वि०) १ वन का । वन सम्बन्धी । जंगली । २ वहशी ।

वन्यं (न०) वन की पैदावार ।—इतर, (वि०) पालतू ।—गजः,—द्विपः, (पु०) जंगली हाथी ।

वन्या (स्त्री०) १ बड़ा वन । अनेक वन । २ जल । जल की बाढ़ । जल का बूड़ा ।

वप् (धा० उभय०) [वपति, वपते] १ बोना । बीज बोना । २ (पाँसे) फेंकना । ३ पैदा करना । ४ बुनना । कपड़ा । ५ कपटना । मूँड़ना ।

वपः (पु०) १ बीज बोने की क्रिया । २ बीज बोने वाला । ३ मुण्डन । ४ बुनना ।

वपनं (न०) १ बुअनी । २ मुण्डन । ३ वीर्य ।

वपनी (स्त्री०) १ नाई की दूकान । २ बुनने का औज़ार । तन्तुशाला ।

वपा (स्त्री०) १ चर्बी । वसा । २ रन्ध्र । गुफा । ३ मिट्टी का टीला जो चीटियों द्वारा बनाया गया हो ।

वपिलः (पु०) पिता । जनक ।

वपुपः (पु०) देवता ।

वपुष्मत् (वि०) १ शरीरधारी । अवतार । शारीरिक २ सुन्दर । मनोहर । (पु०) विश्वेदेवों में से एक ।

वपुस् (न०) १ व्यक्ति । पुरुष । रूप । आकार । २ सार । ३ सौन्दर्य ।—गुणः,—प्रकर्षः, (पु०) शारीरिक सौन्दर्य ।—धर, (वि०) १ शरीरधारी । २ सुन्दर ।

वप्तृ (पु०) १ बोने वाला । किसान । खेतिहर । २ पिता । जनक । ३ कवि ।

वप्रः (पु०) }
वप्र (न०) } मट्टी की दीवाल । शहरपनाह । २ टीला । ३ पहाड़ का उतार । ४ चोटी । शिखर । ५ नदीतट । ६ किसी भवन की नींव । ७ शहरपनाह का द्वार या फाटक । ८ परिखा । ९ वृत्त का व्यास । १० खेत । ११ मट्टी का धुस ।—प्र, (पु०) पिता ।—प्रं, (न०) सीसा ।

वप्रिः (पु०) १ खेत । २ समुद्र ।

वप्री (स्त्री०) टीला । पहाड़ी ।

वभ्र (धा० प०) [वभ्रति] जाना ।

वम् (धा० प०) [वमति, वाँत] १ कै करना । थूकना । २ उड़ेलना । ३ फेंकना । ४ खारिज करना । अस्वीकृत करना ।

वमः (पु०) वमन । छाँट । उगाल ।

वमथुः (पु०) १ कै । छाँट । २ जल जिसे हाथी ने अपनी सूँड़ में भर फेंकता है ।

वमनं (न०) १ वमन । कै । थूक । २ खींचने की या बाहिर निकालने की क्रिया । ३ वमन कराने वाली दवा ।

वमी (स्त्री०) वमन । उछाँट ।

वंभारवः }
वम्भारवः } (पु०) पशु का रंभाना ।

वम्रः (पु०) }
वम्री (स्त्री०) } चीटी ।—कूटं, (न०) टीला ।

वय् (धा० आ०) [वयते] जाना ।

वयनं (न०) बुनना ।

वयस् (न०) १ उम्र । २ जवानी । ३ पक्षी । ४ कौआ ।—अतिग,—अतीत, (वि०) बूढ़ा । अवस्था, (स्त्री०) अवस्था ।—कर, (वि०) उम्र बढ़ाने वाला ।—परिणतिः,—परिणामः, (पु०) बुढ़ापा ।—वृद्ध, (वि०) (=वयोवृद्ध) बूढ़ा ।—स्थ, (वि०) १ बालिग । जवान । २ बलवान । दृढ़ ।—स्था, (स्त्री०) १ सखी । सहेली ।

वयस्य (वि०) १ समान उम्र वाला । २ सहयोगी ।

वयस्यः (पु०) १ मित्र । साथी ।

वयस्या (स्त्री०) सखी । सहेली ।

वयुनं (न०) १ ज्ञान । बुद्धि । समझने की शक्ति । २ मन्दिर ।

वयोधस् (पु०) जवान या अधेड़ उम्र का आदमी ।

वयोरंगम् }
वयोरङ्गम् } (न०) सीसा ।

वर् (धा० उ०) [वरयति,—वरयते] १ माँगना । याचना करना । पसंद करना ।

वर (वि०) १ उत्तम । सर्वोत्तम । २ बेहतर ।

वरः (पु०) चुनने या पसंद करने की क्रिया । २ चुनाव । पसंदगी । ३ वरदान । आशीर्वाद । अनुग्रह । ४ भेंट । पुरस्कार । ५ अभिलाषा । इच्छा । ६ याचना । विनय । ७ दूल्हा । पति । ८ वधू । प्रार्थी । ९ दहेज़ । १० दामाद । ११ लंपट आदमी । १२ गोरैया पक्षी ।

वरं (न०) केसर ।—अङ्गः, (पु०) हाथी ।—अङ्गी, (स्त्री०) हल्दी ।—अङ्गम्, (न०) १ सिर । २ उत्तम अवयव । ३ सुडौल शरीर । ४ दालचीनी ।—अङ्गना, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—अर्ह, (पु०) वरदान पाने योग्य ।—आजीविन्, (पु०) ज्योतिषी ।—आरोह, (पु०) सुन्दर कूल्हे या कमर वाला ।—आरोहः, (पु०) उत्तम सवार ।—आरोहा, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—आलिः, (पु०) चन्द्रमा ।—क्रतुः, (पु०) इन्द्र ।—चन्दनं (न०) १ काला चंदन । २ देवदारु ।—तनुः, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—तन्तुः, (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।—त्वचः, (पु०) नीम का पेड़ ।—द, (वि०) १ वरदानदाता । २ शुभ ।—दः, (पु०) दा, (स्त्री०) १ एक नदी का नाम । २ क्वारी कन्या ।—दक्षिणा, (स्त्री०) वह धन जो वर को विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है । दहेज । दायजा ।—दानं, (न०) देवता या बड़ों का प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि का प्रदान करना ।—द्रुमः, (पु०) अगर का वृक्ष ।—पक्षः, (पु०) बरात ।—यात्रा, (स्त्री०) विवाह के लिये वर का अपने इष्टमित्रों और सम्बन्धियों के साथ कन्या के घर गमन ।—फलः, (पु०) नारियल ।—वाल्हिकं (न०) केसर ।—युवतिः,—युवती, (स्त्री०) सुन्दरी जवान औरत ।—रुचिः, (पु०) एक अत्यन्त प्रसिद्ध प्राचीन पण्डित जो व्याकरण और काव्य, के मर्मज्ञ थे ।—लब्धः, (पु०) चंपा का पेड़ ।—वत्सला, (स्त्री०) सास ।—वर्णं, (न०) सुवर्ण । सोना ।—वर्णिनी, (स्त्री०) १ सुवर्णा । सुन्दरी स्त्री । २ स्त्री । ४ लाख । ५ लक्ष्मी । ६ दुर्गा । ७ सरस्वती । ८ प्रियंगुलता ।—स्रज्, (स्त्री०) वर की माला या गजरा । वह माला जो दुलहिन दूल्हा को पहनाती है ।

वरकः (पु०) १ इच्छा । चाहना । वर । २ चुगा । ३ जंगल में उत्पन्न होने वाला मूंग ।

वरकं (न०) तोलिया । दस्तर । झाड़न ।

वरटः (पु०) १ हंस । २ विर्रा अनाज । ३ बर्रे । बरैंया ।

वरटा, वरटी (स्त्री०) हंसी । २ बरैंया ।

वरटं (न०) कुन्द का फूल ।

वरणं (न०) १ चुनाव । पसंदगी । २ याचना । प्रार्थना । ३ फेरा । घिराव । ४ पर्दा । चादर । ५ वर का चुनाव ।

वरणः (पु०) १ शहरपनाह की दीवाल । २ पुल । ३ वरुण नामक पेड़ । ४ ऊंट ।—माला, (स्त्री०)—स्रज्, (न०) वह माला जो दुलहिन अपने दूल्हा की गरदन में पहनाती है ।

वरणसी (स्त्री०) वाराणसी । काशीपुरी ।

वरंडः, वरण्डः (पु०) १ समूह । समुदाय । २ चेहरे पर के मुहाँसे या मुरसे । ३ बरामदा । ४ घास का ढेर । ५ जेब । खीसा ।

वरंडकः, वरण्डकः (पु०) १ मिट्टी का टीला । २ हौदा । ३ दीवाल । ४ मुरसा या मुहांसा ।

वरंडा, वरण्डा (स्त्री०) १ खंजर । छुरी । २ सारिका पक्षी । ३ लैंप की बत्ती ।

वरत्रा (स्त्री०) १ तस्मा । २ घोड़ा या हाथी का जेरबंद ।

वरं (अव्यया०) अपेक्षाकृत भला । बहतर ।

वरलः (पु०) १ बरैंया ।

वरला (स्त्री०) १ हंसी । २ बरैंया ।

वरा (स्त्री०) १ त्रिफला । २ रेणुका नामक गन्धद्रव्य । ३ हल्दी । ४ पार्वती ।

वराक (वि०) [स्त्री०—वराकी] १ गरीब । मिसकीन । बपुरा । अभागा ।

वराकः (पु०) १ शिव । २ युद्ध । लड़ाई ।

वराटः (पु०) १ कौड़ी । २ रस्सा । डोरी ।

वराटकः (पु०) १ कौड़ी । २ कमलगट्टा । ३ रस्सी । डोरी ।—रजस् (पु०) नागकेसर का पेड़ ।

वराटिका (स्त्री०) कौड़ी ।

वराणः (पु०) इन्द्र ।

वराणसी (स्त्री०) वाराणसी ।

वरारकं (न०) हीरा ।

वरालः
वरालकः } (पु०) लौंग । लवंग ।

वराशि)
वरासिः } (पु०) मोटा कपड़ा ।

वराहः (पु०) १ सुअर । शूकर । २ मेढ़ा । ३ साँड़ । ४ बादल । ५ घड़ियाल । नक्र । मगर । ६ शूकर के रूप का व्यूह । ७ विष्णु का अवतार । ८ माप विशेष । ९ वराहमिहिर । १० अष्टादश पुराणों में से एक का नाम ।—अवतारः, (पु०) भगवान् विष्णु का तीसरा अवतार ।—कन्दः, (पु०) वराहीकंद ।—कल्पः, (पु०) वह काल जब भगवान ने वराहावतार धारण किया था ।—मिहिरः, (पु०) ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनकी बनायी बृहत्संहिता बहुत प्रसिद्ध है ।—शृङ्गः, (पु०) शिव का नाम ।

वरिमन् (पु०) श्रेष्ठत्व । उत्तमता । उत्कृष्टता ।

वरिवसित
वरिवस्यित } (वि०) अर्चित । सम्मानित । पूजित ।

वरिवस्या (स्त्री०) पूजन ।

वरिष्ठ (वि०) १ उत्तम । २ सब से बड़ा । सब से अधिक लंबा । ३ सब से अधिक चौड़ा । ४ सब से अधिक भारी ।

वरिष्ठः (पु०) १ तित्तिर पक्षी । तीतर । २ नारंगी का पेड़ ।

वरिष्ठं (न०) १ ताम्र । ताँबा । २ मिर्च ।

वरी (स्त्री०) १ सूर्यपत्नी छाया का नाम । २ शतावरी का पौधा ।

वरीयस् (वि०) १ अपेक्षाकृत अच्छा । बढ़तर । २ अपेक्षाकृत लंबा या चौड़ा ।

वरीवर्दः
वलीवर्दः } (पु०) बैल । साँड़ ।

वरीषु (पु०) कामदेव का नाम ।

वरुटः (पु०) म्लेच्छ विशेष ।

वरुडः (पु०) एक नीच जाति का नाम ।

वरुणः (पु०) मित्र देवता के साथ रहने वाले एक आदित्य का नाम । २ समुद्र के अधिष्ठातृ देवता और पश्चिम दिशा के दिक्पाल । ३ समुद्र । ४ आकाश ।—अङ्गरुहः, (पु०) अगस्त्य जी की उपाधि ।—आत्मजा, (स्त्री०) मदिरा । सुरा ।—आलयः,—आवासः, (पु०) समुद्र ।—पाशः, (पु०) समु में रहने वाला एक भयङ्कर जलजन्तु विशेष । इसे अँगरेज़ी में शार्क कहते हैं ।—लोकः, (पु०) वरुण जी का लोक । २ जल ।

वरुणानी (स्त्री०) वरुण की स्त्री ।

वरुत्रं (न०) लबादा । चुगा ।

वरूथं (न०) १ लोहे की चद्दर या सीकचों का बना हुआ आवरण जो शत्रु के आघात से रथ को रक्षित रखने के लिए उसके ऊपर डाला जाता था । २ कवच । बख़्तर । ३ ढाल । ४ समूह । समुदाय ।

वरूथिन् (वि०) १ कवचधारी । बख़्तर पहिने हुए । २ रथारूढ़ । (पु०) १ रथ । २ रक्षक ।

वरूथी (स्त्री०) सेना ।

वरेण्य (वि०) १ वाञ्छनीय । २ सर्वोत्तम । मुख्य ।

वरेण्यं (न०) कुङ्कुम । केसर ।

वरोटं (न०) मरुवा के फूल ।

वरोटः (पु०) मरुवादोना । मरुवा ।

वरोलः (पु०) एक प्रकार की बर्रै ।

वर्करः (पु०) १ मेमना । बकरी का बच्चा । २ बकरा । ३ कोई भी पालतू जानवर का बच्चा । ४ आमोद प्रमोद । क्रीड़ा । विहार ।

वर्कराटः (पु०) १ कटाक्ष । २ स्त्री के कुच के ऊपर लगे हुए नखों का घाव या खरौंच ।

वर्कुटः (पु०) पिन । बोल्टू । कील । चाबी ।

वर्गः (पु०) १ श्रेणी । विभाग । जमात । कक्षा । समाज । जाति । समुदाय । २ दल । टोली । पक्ष । ३ न्यायशास्त्र के नव या सप्त पदार्थ विभाग । ४ शब्दशास्त्र में एक स्थान से उच्चारित होने वाले स्पर्श व्यञ्जन वर्णों का समूह । (यथा कवर्ग, चवर्ग आदि । ५ आकार प्रकार में कुछ भिन्न, किन्तु कोई भी एक सामान्य धर्म रखने वालों का समूह । (यथा—मनुष्यवर्ग, वनस्पति वर्ग) ६ ग्रन्थ विभाग । प्रकरण । परिच्छेद । अध्याय । ७ विशेष कर ऋग्वेद के अध्याय के अन्तर्गत उपअध्याय । ८ दो समान अङ्कों या राशियों का घात या गुणनफल । (यथा ४ का १६।) ९ शक्ति । ताकत ।—अंत्यं,—उत्तमं, (न०) पाँचों वर्गों के अन्त के अक्षर । अनुनासिक वर्ण ।—घनः, (पु०) वर्ग का घनफल ।—पदं,—मूलं, (न०) वह अङ्क जिसके घात से कोई वर्गाङ्क बनावे । वर्गमूल ।

वर्गणा (स्त्री०) गुणन । घात ।

वर्गशस् (अव्यया०) श्रेणी या समूहों के अनुसार ।

वर्गीय (वि०) किसी वर्ग का या श्रेणी का । वर्ग सम्बन्धी ।

वर्गीयः (पु०) सहपाठी ।

वर्ग्य (वि०) एक ही श्रेणी का ।

वर्ग्य (पु०) सहपाठी । साथी ।

वर्च् (धा० आ०) [वर्चते] १ चमकना । चमकीला होना ।

वर्चस् (न०) १ शक्ति । २ पराक्रम । प्रभाव । २ तेज । कान्ति । दीप्ति । ३ रूप । शक्ल । ४ विष्ठा ।—ग्रहः, (पु०) कोष्टबद्धता । कब्ज़ियत ।

वर्चस्कः (पु०) १ दीप्ति । तेज । २ पराक्रम । ३ विष्ठा ।

वर्चस्विन् (वि०) १ पराक्रमी । शक्तिशाली । क्रियाशील । तेजस्वी । समुज्ज्वल ।

वर्जः (पु०) त्याग । परित्याग ।

[illegible] (न०) १ त्याग । २ वैराग्य । ३ मनाई । मुमानियत । ४ हिंसा । मारण ।

वर्जित (व० कृ०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । त्यक्त । २ निषिद्ध । ३ बाहिर किया हुआ । ४ रहित ।

वर्ज्य (वि०) १ छोड़ने योग्य । त्याज्य । वर्जनीय । २ जिसका निषेध किया गया हो । निषिद्ध ।

वर्ण् (धा० उभय०) [वर्णयति, वर्णित] १ रंग चढ़ाना । रंगना । २ वर्णन करना । बयान करना । व्याख्या करना । लिखना । ३ प्रशंसा करना । सराहना । फैलाना । बढ़ाना । ४ प्रकाश करना ।

वर्णः (पु०) १ रंग । २ रोगन । ३ रूपरंग । सौन्दर्य । ४ मनुष्य समुदाय के चार विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । ५ श्रेणी । जाति । किस्म । ६ अक्षर । स्वर । ७ कीर्ति । महिमा । प्रख्याति । प्रसिद्धि । ८ प्रशंसा । ९ परिच्छेद । सजावट । १० बाह्य आकार प्रकार । रूपरेखा । शक्ल सूरत । ११ लबादा । चुग़ा । जामा । १२ ढकना । ढक्कन । १३ गीतक्रम । १४ हाथी की झूल । १५ गुण । १६ धर्मानुष्ठान । १७ अज्ञात राशि ।—अङ्का, (स्त्री०) लेखनी । क़लम ।—अपसदः, (पु०) जातिच्युत ।—अपेत, (वि०) जो किसी भी जाति में न हो । जातिबहिष्कृत पतित ।—अर्हः, (पु०) मूंग ।—आत्मन्, (पु०) शब्द ।—उदकं, (न०) रंगीन जल ।—कूपिका, (स्त्री०) दावात ।—क्रमः, (पु०) १ वर्णव्यवस्था । २ अक्षरक्रम ।—चारकः, (पु०) चितेरा । रंगैया ।—ज्येष्ठः, (पु०) ब्राह्मण ।—तूलिः,—तूलिका,—तूली, (स्त्री०) पैंसिल । चितेरे की कूंची ।—द, (वि०) रंगसाज़ ।—दं, (न०) सुगन्धि युक्त पीला काष्ठ विशेष ।—दात्री (स्त्री०) हल्दी ।—दूतः, (पु०) अक्षर ।—धर्मः, (पु०) प्रत्येक जाति के कर्म विशेष ।—पातः, (पु०) किसी अक्षर का लोप होना ।—प्रकर्षः, (पु०) रंग की उत्तमता ।—प्रसादनं, (न०) अगर की लकड़ी —मातृ, (स्त्री०) क़लम । पेंसिल ।—मातृका, (स्त्री०) सरस्वती ।—माला,—राशिः, (स्त्री०) अक्षरों के रूपों की श्रेणी या लिखित सूची ।—वर्तिः,—वर्तिका, (स्त्री०) चितेरे की कूंची ।—

विपर्ययः. (पु०) निरुक्त के अनुसार शब्दों में वर्णों का उलट फेर।—विलासिनी, (स्त्री०) हल्दी।—विलोडकः, (पु०) १ सेंध लगाने वाला। ऐंड़ा लगाने वाला। २ लिखनतस्कर। ग्रन्थतस्कर। लेखचोर। काव्यचोर। भावचोर। उक्तिचोर।—वृत्तं, (न०) वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघुगुरु के क्रम मे समानता हो। (मात्रावृत्त का उल्टा।)—व्यवस्थितिः, (स्त्री०) वर्णव्यवस्था।—श्रेष्ठः, (पु०) ब्राह्मण।—सयोगः, (पु०) एक ही जाति के लोगों मे वैवाहिक सम्बन्ध।—सङ्करः, (पु०) १ वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो। २ रंगों का मिश्रण।—संघातः,—समाम्नायः, (पु०) वर्णमाला। ओलं।

वर्णं (न०) १ कुङ्कुम। केसर। २ अँगराग विशेष।

वर्णकः (पु०) १ एक्टर की पोशाक। अभिनेता का परिधान या परिच्छद। २ रंग। रोगन। ३ अनुलेपन। उवटन। ४ चारण। भाट। वंदीजन। ५ चन्दन।

वर्णकं (न०) १ रंग। रोगन। हरताल। २ चंदन। ३ ग्रन्थ का अध्याय। सर्ग।

वर्णका (स्त्री०) १ मुश्क। कस्तूरी। २ रंग। रोगन। ३ लबादा। चुग़ा।

वर्णनं (न०) } १ चित्रण। रंगने की क्रिया। २
वर्णना (स्त्री०) } वर्णन। निरूपण। निवेदन। ३ लेखन। ४ बयान। ५ श्लाघा। सराहना।

वर्णसिः (पु०) पानी। जल।

वर्णाटः (पु०) १ चितेरा। रंगसाज़। २ गवैया। ३ स्त्री की आमदनी से निर्वाह करने वाला। स्त्रीकृताजीव।

वर्णिका (स्त्री०) १ अभिनयकर्त्ता का परिच्छेद। २ रंग। रोग़न। ३ स्याही। ४ कलम। पैंसिल।

वर्णित (व० कृ०) १ रंगा हुआ। रोग़न किया हुआ। २ निरूपित। वर्णन किया हुआ। ३ प्रशंसित। सराहा हुआ।

वर्णिन् (वि०) १ रंग या रूप सम्पन्न। २ किसी वर्ण या जाति का। (पु०) १ चितेरा। रंगसाज़। २ लेखक। ३ ब्रह्मचारी। ४ मुख्य चार वर्णों में से किसी वर्ण का पुरुष।—लिंगिन्, (वि०) बनावटी रूप धारण किये हुए ब्रह्मचारी। [यथा—

स वर्णलिङ्गी विदितः समाययौ,
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचर ॥

—किरातार्जुनीय।

वर्णिनी (स्त्री०) १ स्त्री। २ चार वर्णों में से किसी भी वर्ण की स्त्री। ३ हल्दी।

वर्णुः (पु०) सूर्य।

वर्ण्य (वि०) वर्णन करने योग्य।

वर्ण्यं (न०) कुङ्कुम। केसर।

वर्तः (पु०) आजीविका। नाश।—जन्मन्, (पु०) बादल।—लोहं, (न०) फूल। काँसा।

वर्तक (वि०) जीवित। जिंदा। वर्तमान।

वर्तकः (पु०) १ बटेर। २ घोड़े का खुर।

वर्तकं (न०) फूल। काँसा।

वर्तका (स्त्री०) तीतर। बटेर।

वर्तन (वि०) १ रहने वाला। जीवित। २ अचल।

वर्तनं (न०) १ सजीव। जीवधारी। २ वासी। निवासी। ३ जीवित रहने का ढंग। ४ निर्वाह। ५ आजीविका। ६ पेशा। धंधा। ७ चरित्र। व्यवहार। कारवाई। ८ मज़दूरी। वेतन। भाड़ा। ९ व्यवसाय। व्यापार। १० तकुआ। ११ गोला। गेंद।

वर्तनः (पु०) बौना।

वर्तनिः (पु०) १ भारत का पूर्वी अंचल। पूर्वी देश। २ स्तव। स्तोत्र।

वर्तनिः (स्त्री०) रास्ता। सड़क। राह।

वर्तनी (स्त्री०) १ रास्ता। मार्ग। २ जीवन। जिंदगी। ३ कूटना। पीसना। ४ तकुआ।

वर्तमान (वि०) १ विद्यमान। मौजूद। २ जीवधारी। जिंदा। सहयोगी। ३ घूमने वाला। फिरने वाला।

वर्तमानः (पु०) व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक जिसके द्वारा सूचित किया जाता है कि, क्रिया अभी चली चलती है और समाप्त नहीं हुई।

वर्तरूकः (पु०) १ पोखर । गढ़ैया । २ भवर । ३ कौवे का घोंसला । ४ द्वारपाल । ५ एक नदी का नाम ।

वर्तिः } (स्त्री०) १ गद्दी । वह बत्ती जो वैद्य घाव
वर्ती } में देता है । लपेटा । २ अंजन । मलहम । ३ लैंप या दीपक की बत्ती । ४ किसी कपडे के छोरों के सूत जो बुने न गये हों । ५ जादू का दीपक । ६ बर्तन के चारों ओर को बाहिर निकला हुआ किनारा । ७ जर्राही औज़ार । ८ धारी । रेखा ।

वर्तिकः (पु०) तीतर । बटेर ।

वर्तिका (स्त्री०) १ चितेरे की कूंची । २ दीपक की बत्ती । ३ रंग । रोगन । ४ तीतर । बटेर ।

वर्तिन् (वि०) [स्त्री०—वर्तिनी] १ स्थित रहने वाला । २ वर्त्तनशील । ३ घूमने वाला ।

वर्तिर } (पु०) एक प्रकार का तीतर ।
वर्तीर }

वर्तिष्णु (वि०) १ घूमने वाला । २ गोल । चक्करदार ।

वर्तुल (वि०) गोलाकार । गोल ।

वर्तुलः (पु०) १ मटर । २ गोला । गेंद ।

वर्तुलं (न०) चक्कर । वृत्त । परिधि ।

वर्त्मन् (न०) १ राह । रास्ता । सड़क । पगडंडी । २ (आलं०) चलन । रस्म । पद्धति । ३ स्थान । कार्य करने की समाई । ४ पलक । ५ किनारा । कोर ।—पातः, (पु०) रास्ता भटक जाना ।—बन्धः,—बन्धक, (पु०) पलकों का रोग विशेष ।

वर्त्मनिः } (स्त्री०) रास्ता । सड़क ।
वर्त्मनी }

वर्ध (धा० उभय०) [वर्धयति, वर्धयते] १ काटना । विभाजित करना । कतरना । २ भरना । परिपूर्ण करना ।

वर्धं (न०) १ सीसा । २ इंगुर । सेंदूर ।

वर्धः (पु०) १ काट । तराश । विभाजन । २ वृद्धि । सम्पत्ति वृद्धि ।

वर्धकः }
वर्धकिः } (पु०) बढ़ई । तक्षक ।
वर्धकिन् }

वर्धन (वि०) १ बढ़ाने वाला । उन्नति करने वाला ।

वर्धनं (न०) १ वृद्धि । बढ़ती । २ उन्नयन । ३ सजीवता । ४ शिक्षण । पोषण । ५ काट ।

वर्धनः (पु०) १ समृद्धिदाता । २ वह दाँत जो दाँत के ऊपर उगता है । ३ शिव जी । विभाजन ।

वर्धनी (स्त्री०) १ बुहारी । झाडू । २ विशिष्ट रूप सम्पन्न जलघट ।

वर्धमान (वि०) बढ़ने वाला । बढ़ता हुआ ।

वर्धमानः (पु०) } १ विशेष रूप की बनी तश्तरी
वर्धमानं (न०) } या पात्र । ढक्कन । २ तांत्रिक चित्र । ३ घर जिसका दरवाज़ा दक्षिण दिशा की ओर न हो ।

वर्धमानः (पु०) १ रेंडी का पौधा । २ पहेली । बुझौवल । ३ विष्णु का नाम । ४ बंगाल के एक ज़िले का नाम । (वर्दवान जिला) ।

वर्धमाना (स्त्री०) बंगाल के एक ज़िले का नाम ।

वर्धमानकः (पु०) तश्तरी । मिट्टी का प्याला । सकोरा ।

वर्धापनं (न०) १ काटना । तराशना । विभाजन । २ नाड़ा काटने की क्रिया या इसका संस्कार विशेष । नालच्छेदन संस्कार । ३ वर्षगाँठ का उत्सव । ४ कोई भी उत्सव ।

वर्धित (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ । वृद्धि को प्राप्त । २ बढ़ा हुआ ।

वर्ध्रं (न०) १ चमड़े का तस्मा या बद्धि । २ चमड़ा । ३ सीसा ।

वर्ध्रिका }
वर्ध्री } (स्त्री०) तस्मा । चमड़े का बंधन ।

वर्मन् (न०) १ कवच । बख़्तर । २ छाल । गूदा । (पु०) क्षत्रिय सूचक उपाधि ।—हर, (वि०) १ कवचधारी । २ इतना बूढ़ा कि जो कवच धारण करने या युद्ध में भाग लेने को असमर्थ हो ।

वर्मणः (पु०) नारंगी का पेड़ ।

वर्मिः (पु०) मत्स्य विशेष ।

वर्मित (वि०) वर्म या कवचधारी ।

वर्य (वि०) १ चुनने योग्य । २ सर्वोत्तम । मुख्य । प्रधान ।

वर्यः (पु०) कामदेव ।

वर्या (स्त्री०) १ वह लड़की जो स्वयं अपना पति वरण करे । २ लड़की ।

वर्वट (न०) देखो वर्वट ।

वर्वणा (स्त्री०) दावा वर्वणा ।

वर्वर (वि०) १ हकलाने वाला । २ घुंघराला ।

वर्वरः (पु०) १ जंगली । २ मूर्ख । गवडमूर्ख । ३ पतित । ४ घुंघराले बाल । ५ हथियारों की खटापटी या झकार । ६ नृत्य विशेष ।

वर्वरं (न०) १ गोपीचन्दन । पीलाचन्दन । २ हिंगुल । ईंगुर । ३ लोबान । गूगुल ।

वर्वरा } वर्वरी } (स्त्री०) १ मक्खी विशेष । २ तुलसी ।

वर्वरकं (न०] चन्दन विशेष ।

वर्वरीकः (पु०) १ घुंघराले बाल । २ तुलसी । ३ झाड़ी विशेष ।

वर्वुरः } वर्वूरः } (पु०) बबूर नामक वृक्ष ।

वर्षः (पु०) } वर्ष (न०) } १ वर्षा । पानी की झड़ी । २ छिड़काव । ३ वीर्य का बहाव या ढरकाव । ४ साल । ५ पुराणानुसार सातद्वीपों का एक विभाग । ६ हिन्दुस्तान । भारतवर्ष । ७ बादल (केवल पु० में) ।—अग्रं,—अंशकः, अङ्गः, (पु०) मास । महीना । —अम्बु, (न०) वृष्टि का जल ।—अयुत, (न०) दस हज़ार ।—अर्चिस् (पु०) मङ्गलग्रह ।—अवसानं, (न०) शरदृतु ।—आघोषः, (पु०) मेंढक ।—आमदः (पु०) मयूर । मोर ।—उपलः, (पु०) ओला ।—करः, (पु०) बादल ।—करी, (स्त्री०) झिल्ली । झींगुर ।—कोशः, —कोषः, (पु०) १ मास । २ ज्योतिषी ।—गिरिः,—पर्वतः, (पु०) पर्वत विशेष ।—जः, (= वर्षेज) (वि०) बरसात में उत्पन्न ।—धरः, (पु०) १ बादल । २ हिजड़ा ।—प्रतिबंधः, (पु०) सूखा । अनावृष्टि ।—प्रियः, (पु०) चातक पक्षी ।—वरः, (पु०) खोजा ।—वृद्धिः, (स्त्री०) वर्षगांठ ।—शतं, (न०) शताब्दी । सदी । सौ वर्ष ।—सहस्रं, (न०) एक हज़ार वर्ष ।

वर्षक (वि०) बरसने वाला ।

वर्षणं (न०) १ वर्षा । वृष्टि । २ छिड़काव ।

वर्षणिः (स्त्री०) १ वृष्टि । २ यज्ञ । यज्ञीय कर्म । ३ क्रिया । ४ वर्तन । व्यवहार ।

वर्षा (स्त्री०) १ वर्षाऋतु । बर्सात का मौसम । २ पीढ़ा ।—कालः, (पु०) बर्साती मौसम ।—भू, (पु०) मेंढक । २ बीरबहूटी । इन्द्रगोप ।—भूः,—भ्वी, (स्त्री०) मेंढकी ।—रात्रः, (पु०) १ वर्षाऋतु ।

वार्षिक (वि०) बरसाती । बरसने वाला ।

वार्षिकं (न०) अगर की लकड़ी ।

वर्षितं (न०) वृष्टि । वर्षा ।

वर्षिष्ठ (वि०) १ बहुत बूढ़ा । २ बहुत मज़बूत । ३ सब से बड़ा ।

वर्षीयस् (वि०) [वर्षीयसी] १ बहुत बूढ़ा या पुराना । २ दृढतर ।

वर्षुक (वि०) [स्त्री०—वर्षुकी] बरसने वाला । पनीला । पानी उड़ेलने वाला ।—अब्दः,—अम्बुदः, (पु०) बादल । जल बरसाने वाला ।

वर्ष्म (न०) वपु । शरीर ।

वर्ष्मन् (न०) १ शरीर । देह । २ माप । ऊँचाई । ३ सुन्दर रूप ।

वर्ह } वर्ह } वर्हण } वर्हिण } वर्हिन् } वर्हिस् } (पु०) देखो वर्ह, वर्ह, वर्हण, वर्हिण, वर्हिन्, वर्हिस् ।

वल् (धा० आ०) [वलते] १ जाना । समीप जाना । २ घूमना । ३ बढ़ाना । ४ (किसी ओर)

आकर्षित होना। ५ ढकना। लपेटना। ६ घिर जाना। लपेटा जाना।

वल (न०) देखो बल।

वलत्त (न०) देखो वलक्ष।

वलग्नः (पु०)
वग्लनं (न०) } कमर।

वलनं (न०) १ घुमाव। फिराव। २ फेरा। कावा। ३ विपथगमन। पार्श्व विचरण। विचलन।

वलभिः } (स्त्री०) १ ढलुवा छत्त। २ छप्पर का
वलभी } ठाठ। ३ घर का सब से ऊँचा भाग। ४ काठियावाड प्रान्त की एक प्राचीन नगरी का नाम।

वलंब
वलम्ब } (न०) देखो अवलम्ब।

वलयः (पु०) } १ कंकण। बाजूबंद। २ छल्ला।
वलयं (न०) } गडरी। ३ कमरपेटी। इजारबद। ४ घेरा। कुंज।

वलयः (पु०) १ किनारी। छोर। २ गलगण्ड रोग विशेष।

वलयति (वि०) घेरा हुआ। लपेटा हुआ। वेष्ठित।

वलाक देखो वलाक।

वलाकिन् देखो वलाकिन्।

वलासकः (पु०)। १ कोयल। २ मेंढ़क।

वलाहक देखो वलाहक।

वलिः } (स्त्री०) १ सिकुडन। झुर्री। २ चर्म पर
वली } की मुड़न। पेट के दोनों ओर पेटी के सुकड़ने से पड़ी हुई लकीर। ३ छप्पर की वडरी।—भृत्, (वि०) घुघराले।—मुखः, —वदनः, (पु०) वानर। वंदर।

वलिकं (पु०)
वलिकः (न०) } छप्पर की वड़ियारी।

वलित (व० कृ०) १ गतिशील। २ घूमा हुआ। मुड़ा हुआ। ३ घिरा हुआ। लपटा हुआ। ४ झुर्री पड़ा हुआ।

वलिन
वलिभ } (वि०) झुर्री पड़ा हुआ। विखरा हुआ।

वलिमन् (वि०) झुर्री पड़ा हुआ।

वलिर (वि०) ऐंचाताना। भैंड़ी आँख वाला। भैंड़ा।

वलिशं (पु०) } बंसी। मछली पकड़ने का
वलिशी (स्त्री०) } काँटा।

वलीकं (न०) छत्त की बड़ेरी।

वलूकः (पु०) पक्षी विशेष।

वलूकं (न०) कमल की जड़। भसीड़ा।

वलूल (वि०) मज़बूत। रोबीला। हृष्टपुष्ट।

वल्क् (धा० उभ०) [वल्कयति, —वल्कयते] बोलना।

वल्कं (पु०) } १ पेड़ की छाल। बल्कल। २
वल्कः (न०) } मछली के शरीर का आवरण या पपड़ी। ३ खण्ड। टुकड़ा।—तरुः, (पु०) वृक्ष विशेष।—लोध्रः, (पु०) पठानी लोध।

वल्कलं (न०) } १ वृक्ष की छाल। २ छाल के
वल्कलः (पु०) } बने वस्त्र।—संवीत, (वि०) वल्कलवस्त्रधारी।

वल्कवत् (वि०) मछली जिसके शरीर पर पपड़ी हो।

वल्किलः (पु०) काँटा।

वल्कुटं (न०) छाल। गूदा।

वल्ग (धा० उ०) [वल्गति,—वल्गते, वल्गित] १ जाना। हिलाना। २ उछलना। उछल उछल कर चलना। ३ नाँचना। ४ प्रसन्न होना। ५ खाना भोजन करना। ६ डींगे मारना। शेखी बघारना।

वल्गनं (न०) उछाल। फलांग। दुलकी चाल।

वल्गा (स्त्री०) लगाम। रास।

वल्गित (व० कृ०) १ कूदा हुआ। उछला हुआ। नचाया हुआ।

वल्गितं (न०) १ घोड़े की दुल्की या सरपट चाल। २ डींग। शेखी।

वल्गु (वि०) १ प्यारा। मनोहर। मनोज्ञ। चित्ताकर्षक। २ मधुर। ३ वेशकीमती। बहुमूल्यवान।

वल्गुः (पु०) वकरा।—पत्रः, (पु०) वनमूँग।

वल्गुक (वि०) सुन्दर। मनोहर। खूबसूरत।

वल्गुकं (न०) १ चन्दन। २ कीमत। ३ जगल।

वल्गुलः (पु०) शृगाल। गीदड़।

वल्गुलिका (स्त्री०) १ कत्थई रंग का पतंग जाति का कीटः जिसका दूसरा नाम तैलपायी है। २ मंजूषा। पेटी। पिटारा।

वल्भ् (धा० आ०) (वल्भते) १ खाना। भक्षण करना।

वल्मिक } (पु० न०) वल्मीक।
वल्मिकि }

वल्मी (स्त्री०) चेंटी।—कूटं, (न०) दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर।

वल्मीकं (पु०) } दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का ढेर। विमौट।
वल्मीकः (न०) }

वल्मीकः (पु०) १ शरीर के कतिपय अंगों की सूजन। फीलपा का रोग। २ आदि कवि वाल्मीकि।—शीर्ष (न०) सुर्मा विशेष। लालसुर्मा। स्रोताञ्जन।

वल्युल } (धा० प०) [वल्युलयति] १ काट डालना। २ पवित्र करना।
वल्यूल् }

वल्ल् (धा० आ० [वल्लते] १ ढकना। २ ढका जाना। ३ गमन करना।

वल्लः (पु०) १ चादर। उवार। गिलाफ। २ तीन घुंघची के बराबर की तौल। ३ दूसरी तौल जिसमें एक या डेढ़ घुंघची पड़ती है। ४ वर्जन। निषेध।

वल्लकी (स्त्री०) वीणा। बीन।

वल्लभ (वि०) १ प्यारा। वाञ्छनीय। २ सर्वोपरि।

वल्लभः (पु०) १ प्रेमी। पति। २ चहीता। प्रेमपात्र। ३ अध्यक्ष। पर्यवेक्षक। ४ मुख्य या प्रधान ग्वाला या गोप। ५ शुभलक्षण युक्त अश्व या घोड़ा।—आचार्यः, (पु०) चार वैष्णव सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य का नाम।—पालः, (पु०) घोड़े का सईस।

वल्लभायितं (न०) रतिक्रिया का आसन विशेष।

वल्लरिः } (स्त्री०) १ लता। बेल। २ मंजरी।
वल्लरी }

वल्लवः (पु०) [स्त्री० —वल्लवी] देखो वल्लवः।

वल्लिः (स्त्री०) १ बेल। २ मिट्टी।—दूर्वा, (स्त्री०) एक प्रकार की घास।

वल्ली (स्त्री०) १ बेल। लता।—जं, (न०) मिर्च।—वृक्षः (पु०) साल का पेड़।

वल्लुरं (न०) १ लता कुञ्ज। लतामण्डप। २ पवन। ३ मंजरी। ४ अनजुता खेत। ५ रेगस्तान। वीरान। जंगल। ६ सूखी मछली।

वल्लूरं (न०) १ उपवन। २ रेगस्तान। वन। ३ अनजुता खेत।

वल्लूरः (पु०) १ सूखा माँस। २ जंगली शूकर का माँस।

वल्ह् (धा० आ०) [वल्हते) १ प्रसिद्ध होना। २ ढकना। ३ मारना। चोटिल करना। ४ बोलना। ५ देना।

वल्हिक } (स्त्री०) वल्हिक। वल्हीक।
वल्हीक }

वश् (धा० प०) [वष्टि, उशित] १ चाहना। २ अनुकंपा करना। ३ चमकना।

वश (वि०) १ काबू में आया हुआ। अधीन। २ आज्ञानुवर्ती। फर्माबरदार। ३ नीचा दिखलाया हुआ। नम्र किया हुआ। ४ जादू टोना से वश में किया हुआ।—अनुग,—वर्तिन्, (पु०) चाकर। नौकर।—आढ्यकः, (पु०) सूंस। शिशुमार।—गा, (स्त्री०) आज्ञाकारिणी स्त्री।

वशं (पु०) } १ इच्छा। कामना। अभिलाषा। सङ्कल्प। २ शक्ति। प्रभाव। नियंत्रण। प्रभुत्व। स्वामित्व। अधिकार। वशवर्तित्व। अधीनताई। ३ उत्पत्ति।
वशः (न०) }

वशः (पु०) रंडियों का चकला। रंडीखाना।

वशंवद (वि०) १ वशीभूत। वशवर्ती। २ आज्ञाकारी। दास।

वशका (स्त्री०) आज्ञाकारिणी स्त्री।

वशा (स्त्री०) १ औरत। २ पत्नी। ३ लड़की। ४ ननद। पति की बहिन। ५ गौ। ६ बांझ स्त्री। ७ बांझ गौ। ८ हथिनी।

वशिः (पु०) १ अधीनताई। २ मनमोहकता। (न०) वशित्व।

वशिक (वि०) शून्य। रहित। रीता। खाली।

वशिका (स्त्री०) अगर की लकड़ी।

वशिन् (वि०) [स्त्री—वशिनी] १ ताकतवर। २ अधीन। ३ इन्द्रजीत।

वशिनी (स्त्री०) शमी या छेंकुर का पेड़।

वशिरं (न०) समुद्री निमक।
वशिरः (पु०) मिर्चा।
वशिष्ठः (पु०) देखो वसिष्ठः,।
वश्य (वि०) १ वश करने योग्य। वश में किया हुआ। जीता हुआ। ३ निमंत्रित। आज्ञाकारी। अवलम्बित
वश्यं (न०) लवंग।
वश्य (पु०) दास। अनुचर।
वश्या (स्त्री०) आज्ञाकारिणी स्त्री।
वश्यका (स्त्री०) देखो वश्या।
वष् (धा० प०) [वषति] १ अनिष्ट करना। चोटिल करना। वध करना।
वषट् (अव्यया०) एक शब्द जिसका उच्चारण अग्नि में आहुति देते समय यज्ञों में किया जाता है।—
[यथा—इन्द्रायवषट्। पूष्णे वषट्]
कर्तृ, (पु०) ऋत्विज जो वषट् उच्चारण पूर्वक आहुति दे।
वष्क (धा० आ०) [वष्कते] जाना। चलना।
वष्कयः (पु०) एक वर्ष का बछड़ा।
वष्कयणी } (स्त्री०) चिरप्रसूता गौ। बहुत दिनों
वष्कयिणी } की ब्यायी हुई गौ या वह गाय जिसका बछड़ा बहुत बड़ा हो गया हो।
वस् (धा० प०) [वसति, कभी कभी वंसते रूप भी होता है।] १ बसना। २ होना। ३ तेज़ी से गुज़रना।
वसतिः } (स्त्री०) १ रहाइस। वास। २ घर।
वसती } वासा। डेरा। बस्ती। ३ आधार। ४ शिविर। ५ रात (जब सब लोग अपना अपना सफर बंद कर टिक जाते हैं।)
वसनं (न०) १ वास। रहन। २ घर। वासा। ३ वस्त्रधारण करने की क्रिया। ४ वस्त्र। परिधान। ५ करधनी। स्त्रियों की कमर का एक आभूषण।
वसंतः } (पु०) १ वर्ष की छः ऋतुओं में से
वसन्तः } प्रथम ऋतु, जिसके अन्तर्गत चैत्र और वैशाख मास हैं। मौसम बहार। २ मूर्तिमान ऋतु जो कामदेव का सखा माना गया है। ३ अतीसार रोग। ४ शीतला या चेचक की बीमारी। ५ मसूरिका रोग।—उत्सवः, (पु०) उत्सव विशेष जो प्राचीन काल में वसन्त पञ्चमी के अगले दिन मनाया जाता था। इसी उत्सव का दूसरा नाम "मदनोत्सव" है। आधुनिक पण्डित होली के उत्सव को ही वसन्तोत्सव कहते हैं।—घोषिन्, (पु०) कोयल।—जा, (स्त्री०) वासन्ती या माधवीलता। २ वसन्तोत्सव।—तिलकः. (पु०) —तिलकं. (न०) वसन्त का आभूषण।
"फुल्ल वसन्त तिलकतिलक वनालयाः।"
छन्दोमञ्जरी।
—तिलकः (पु०) } एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक
—तिलका (स्त्री०) } चरणमें तगण, भगण, जगण,
—तिलकं (न०) } भगण और दो गुरु—इस तरह सब मिलाकर चौदह वर्ण होते हैं।—दूतः (पु०) १ कोयल। २ चैत्र मास। ३ आम का वृक्ष ४ पंचमराग।—दूती, (स्त्री०) १ पारुल-पुष्प। द्रुः,—द्रुमः (पु०) आम का पेड़। —पञ्चमी, (स्त्री०) माघशुक्ला ५मी।—बन्धुः, —सखः, (पु०) कामदेव का नाम।
वसा (स्त्री०) १ मेद। चरबी। २ मस्तिष्क। आढ्यः,—आढ्यकः, (पु०) गङ्गा में रहनेवाली सूंस या शिशुमार।—पायिन् (पु०) कुत्ता।
वसिः (पु०) १ वस्त्र। २ वासा। डेरा। रहने का स्थान।
वसित (व० कृ०) १ पहिना हुआ। धारण किया हुआ। २ बसा हुआ। ३ जमा किया हुआ (अनाज)।
वसिरं (न०) समुद्री निमक।
वसिष्ठः (पु०) [इसका वशिष्ठ भी रूप होता है] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित थे। २ एक स्मृतिकार ऋषि का नाम।
वसु (न०) १ धनदौलत। २ रत्न। जवाहर। ३ सुवर्ण। ४ जल। ५ पदार्थ। वस्तु ६ लवण-विशेष। ७ एक जड़ी विशेष। (पु० बहुवचन) १ एक श्रेणी के देवताओं की संज्ञा। वसु आठ माने गये हैं (उनके नाम—आप। ध्रुव। सोम। धर या धव। अनिल। अनल। प्रत्यूष। और प्रभास। कहीं कहीं 'आप" के बजाय "अह" भी लिखा पाया जाता है।) २ आठ की संख्या। ३ कुबेर का नाम। ४ शिवजी का नाम। ५ अग्नि

का नाम। ६ एक वृक्ष। ७ एक झील या सरोवर। ८ लगाम। रास। ९ हल के जुए की जोत की रस्सी या गाँठ। १० बागडोर। ११ किरन। १२ सूर्य। (स्त्री०) किरन।—ओकसारा (स्त्री०) १ इन्द्र की अमरावती पुरी का नाम। २ कुबेर की अलकापुरी का नाम। ३ अमरावती और अलकापुरी में बहने वाली एक नदी का नाम।—कृमिः,—कीटः (पु०) भिक्षुक। भिखारी।—दा, (स्त्री०) पृथिवी। ज़मीन।—देवः (पु०) श्रीकृष्ण के पिता का नाम।—देवसुतः (पु०) श्रीकृष्ण।—देवता,—देव्या (स्त्री०) ६ धनिष्ठानक्षत्र।—धर्मिका, (स्त्री०) बिल्लौर।—धा, (स्त्री०) १ पृथिवी। ज़मीन।—धारा,—भारा (स्त्री०) कुबेर की राजधानी।—प्रभा, (स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम।—प्राण', (पु०) अग्निदेव।—रेतस् (पु०) अग्नि।—श्रेष्ठं, (न०) बनाया हुआ सोना। चांदी—षेणः, (पु०) कर्ण का नाम।—स्थली, (स्त्री०) कुबेर की नगरी का नाम।

वसुकः } (पु०) अर्क का पौधा। मदार।
वसूकः } अकौआ।

वसुकं (न०) १ समुद्री निमक। २ पाँशु लवण। रेह। क्षार लवण।

वसुंधरा } (स्त्री०) धरा। पृथिवी।
वसुन्धरा }

वसुमत् (वि०) धनी। धनवान।

वसुमती (स्त्री०) पृथिवी।

वसुलः (पु०) देवता।

वसूरा (स्त्री०) वेश्या। रंडी।

वस्क (धा० आ०) [वस्कते] जाना। चलना।

वस्कय देखो वष्कय।

वस्कयणी देखो वष्कयणी।

वस्कराटिका (स्त्री०) बीछी।

वस्त् (धा० उ०) [वस्तयति—वस्तयते] १ घायल करना। मार डालना। २ माँगना। याचना करना। ३ चलना। जाना।

वस्तं (न०) वासा। डेरा।

वस्तः (पु०) बकरा।

वस्तकं (न०) बनावटी निमक।

वस्तिः (पु० स्त्री०) १ वास। रहन। ठहराव। २ तरेट। पेट का नाभि के नीचे का भाग। ३ कोख। वंखी। पेडू। ४ मूत्राशय। ५ पिचकारी।—मलं (न०) मूत्र। पेशाब।—शिरस् (न०) पिचकारी की नली।—शोधनं (न०) मूत्राशय साफ करने वाली दवा।

वस्तु (न०) १ वह जिसका अस्तित्व हो। वह जिसकी सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। २ धन दौलत। सारवानवस्तु। वास्तविक सम्पत्ति। ३ वे साधन या सामग्री जिससे कोई चीज़ बनी हो। ४ किसी नाटक का कथानक। किसी काव्य की कथा। ५ किसी वस्तु का सार। ६ खाका। ढाँचा। प्लान।—अभावः, (पु०) १ वास्तविकता का राहित्य। २ धन सम्पत्ति का नाश।—रचना, (स्त्री०) शैली। क्रम।

वस्तुतस् (अव्यय) १ दरहकीकत। वास्तव में। दरअसल में। २ वस्तुगत्या। अवश्य।

वस्त्यं (न०) घर। वासा। डेरा।

वस्त्र (न०) १ कपड़ा। २ पोशाक। परिच्छद।—अगारः,—अगारं,—गृहं, (न०) खेमा। तंबू। कनात।—अंचलः,—अन्तः, (पु०) कपड़े की गोट। मग़ज़ी। संजाफ।—कुट्टिमं (न०) १ तंबू २ छाता।—ग्रन्थिः, (पु०) धोती की गाँठ जो नाभि के पास लगती है। नीवी। नाडा। इज़ारबन्द।—निर्णेजकः, (पु०) धोबी—परिधानं, (न०) पोशाक पहिनना।—पुत्रिका, (स्त्री०) गुड़िया पुतली।—पूत, (वि०) कपड़े में छना हुआ।—भेदकः,—भेदिन्, (पु०) दर्ज़ी।—योनिः, (पु०) रुई या जिससे कपड़ा बना हो।—रञ्जनं, (न०) कुसुम का फूल।

वस्नं (न०) १ भाड़ा। मज़दूरी। (मज़दूरी के अर्थ में यह शब्द पुलिङ्ग में भी व्यवहृत होता है।) २ वास। ३ धन। ४ वसन। वस्त्र। ५ चमड़ा। ६ मूल्य। ७ मृत्यु।

वस्ननं (न०) पटुका। कमरबंद। करधनी।

वस्नसा (स्त्री०) स्नायु । अतड़ी । नारा ।

वंह् (धा० उ०) [वंह्यति—वंह्यते] प्रकाशित करवाना । चमकवाना ।

वह् (धा० उ०) [वहति—वहते, ऊढ़] १ ले जाना । ढोना । ढोकर पहुँचाना । २ आगे बढ़वाना । ३ जाकर लाना । ४ समर्थन करना । ५ निकाल ले जाना । ६ विवाह करना । ७ अधिकार में कर लेना । कब्ज़ा कर लेना । ८ प्रदर्शित करना । दिखलाना । ९ रखवाली करना । ख़बरदारी करना । ख़बर लेना । १० अनुभव करना । सहना ।

वहः (पु०) १ समर्थन । ले जाने की क्रिया । २ बैल का कंधा । ३ वाहन । सवारी । ४ विशेष कर घोड़ा । ५ हवा । पवन । ६ मार्ग । सड़क । ७ नद । ८ चार द्रोण भर का एक नाप ।

वहतः (पु०) १ यात्री । २ बैल ।

वहतिः (पु०) १ बैल । २ हवा । पवन । ३ मित्र । परामर्शदाता । सलाहकार ।

वहती } वहा } (स्त्री०) १ नदी । चरमा । सोता ।

वहतुः (पु०) बैल ।

वहनं (न०) १ ले जाना । पहुँचाना । २ समर्थन । ३ बहाव । ४ सवारी । ५ नाव । बेड़ा ।

वहंत } वहन्तः } (पु०) १ हवा । २ बच्चा ।

वहल देखो वहल ।

वहित्रं (न०) } वहित्रकं (न०) } वहिनी (स्त्री०) } बेड़ा । नाव । जहाज । पोत ।

वहिष्क (वि०) वाहिरी । वाहिर का ।

वहेडुकः (पु०) वहेड़ा या बिभीतक का पेड़ ।

वन्हिः (पु०) १ अग्नि । आग । २ अन्नपचाने या जो खाया जाय उसे पचाने वाली शक्ति । ३ हाज़मा । भूख । ४ सवारी ।—कर, (वि०) जलाने वाला । भूख बढ़ाने वाला ।—काष्ठं, (न०) अगरु की लकड़ी ।—गर्भः, (पु०) १ बाँस । २ शमी का पेड़ ।—दीपकः, (पु०) कुसुंभ का पेड़ ।—भोग्यं, (न०) घी ।—मित्रः, (पु०) पवन । हवा ।—रेतस्, (पु०) शिव जी ।—लोहं,—लोहकं, (न०) ताँबा ।—वल्लभः, (पु०) राल ।—बीजं, (न०) १ सुवर्ण । २ नीबू ।—शिखं, (न०) १ केसर । २ कुसुंभ ।—सखः, (पु०) पवन ।—संज्ञकः, (पु०) चित्रक का पेड़ ।

वह्यं (न०) १ गाड़ी । २ सवारी कोई भी ।

वह्या (स्त्री०) ऋषिपत्नी ।

वल्हिक } वल्हीक } देखो वल्हिक, वल्हीक ।

वा (अव्यया०) १ या । अथवा । २ और । तथा । भी । ३ जैसा । सदृश । ४ विकल्प या सन्देह-वाचक ।

वा (धा० प०) [वाति, वात, या वान] १ फूंकना । धौंकना । २ जाना । ३ आघात करना अनिष्ट करना ।

वांश (वि०) [स्त्री०—वांशी] बाँस का बना हुआ ।

वांशी (स्त्री०) बंसलोचन ।

वांशिकः (पु०) १ बाँस काटने वाला । २ बंसी बजाने वाला । नफीरी बजाने वाला ।

वाकं (न०) सारसों की लड़ाई ।

वाकुल देखो वाकुल ।

वाक्यं (न०) १ भाषण । शब्द । वाक्य । कथन । जो बोला जाय । २ आदेश । आज्ञा । सिद्धान्त ।—पदीयं, (न०) एक ग्रन्थ का नाम जो भर्तृहरि का बनाया हुआ बतलाया जाता है ।—पद्धतिः, (स्त्री०) वाक्यरचना की विधि ।—भेदः, (पु०) मीमाँसा के एक ही वाक्य का एक ही काल में परस्पर विरोधी अर्थ करना ।

वागरः (पु०) १ मुनि । ऋषि । २ विद्वान ब्राह्मण । पण्डित । ३ वीरपुरुष । शूरवीर । ४ सान रखने का पत्थर । ५ रोक । अड़चन । ६ निश्चय । निर्णय । ७ वाड़वानल । ८ भेड़िया ।

वागा (स्त्री०) बागडोर । लगाम । रास ।

वागुरा (स्त्री०) फंदा । जाल । लासा ।—वृत्तिः, (स्त्री०) जंगली जीवों को पकड़ कर आजीविका करने वाला ।—वृत्तिः, (पु०) बहेलिया । बधिक ।

वागुरिकः (पु०) बहेलिया । चिड़ीमार । हिरन पकड़ने वाला ।

वाग्मिन् (वि०) १ वाक्पटुता । वाग्मिता । २ बातूनी । ३ बहुवाक्य । (पु०) १ वक्ता । वाग्मी । वाक्पटु मनुष्य । २ बृहस्पति का नाम ।

वाग्य (वि०) १ कम बोलने वाला । बोलते समय सावधानी करने वाला । २ यथार्थ या सत्य कहने वाला ।

वाग्यः (पु०) लज्जाशीलता । विनम्रता ।

वांकः } (पु०) समुद्र ।
वाङ्कः

वांच् (धा० प०) [वांचति] अभिलाषा करना । इच्छा करना ।

वाङ्मय (वि०) [स्त्री०—वाङ्मयी] १ शब्दमयी । २ वाक्यात्मक वचन सम्बन्धी । ३ वाणीसम्पन्न । ४ वाक्पटु ।

वाङ्मयं (न०) १ भाषा । वाणी । २ वाक्पटुता । ३ अलङ्कार शास्त्र ।

वाङ्मयी (स्त्री०) सरस्वती देवी ।

वाच् (स्त्री०) १ शब्द । ध्वनि । वाणी । भाषा । २ कहावत । कहनूत । ३ बयान । ४ वादा । इकरार । ५ सरस्वती का नाम ।—अर्थः, (पु०) (=वागर्थः) शब्द और उसका अर्थ ।—आडंबरः, (=वागाडम्बरः) बहुवाक्यता । बहुशब्दत्व ।—आत्मन्, (= वागात्मन्) (वि०) शब्दों से सम्पन्न ।—ईशः, (= वागीशः) (पु०) १ वाग्मी । वक्ता । २ बृहस्पति का नामान्तर । ३ ब्रह्मा ।—ईश्वरः, (=वागीश्वरः,) १ वाक्पटु । वक्ता ।—ईश्वरी (स्त्री०) सरस्वती ।—ऋषभः (=वागृषभः) (पु०) वाक्पटु या विद्वान् पुरुष ।—कलहः (=वाक्कलहः) झगड़ा । टंटा । वाक्युद्ध ।—कीरः, (=वाक्कीरः) (पु०) पत्नी का भाई । साला ।—गुदः, (=वाग्गुदः,) (पु०) पक्षी विशेष ।—गुलिः, —गुलिकः, =वाग्गुलिः, = वाग्गुलिकः) (पु०) राजा का वह अनुचर जो उनको पान का बीड़ा खिलाया करे ।—चपल, (वि०) (=वाक्चपल) बक्की । बातूनी ।—छलं, (= वाक्छलं) बातूनी चालाकी ।—जालं (=वाग्जालं) (न०) कोरी बातचीत ।—दंडः, (=वाग्दण्डः) (पु०) १ धिक्कार । फटकार । २ वाक्संयम ।—दत्त, (=वाग्दत्त) प्रतिज्ञात ।—दत्ता, (स्त्री०) (=वाग्दत्ता) सगाई की हुई क्वारी लड़की ।—दलं, (=वाग्दलं) (न०) ओठ । —दानं, (न०) (=वाग्दान) सगाई । मँगनी ।—दुष्ट (=वाग्दुष्ट) (वि०) गाली गलौज से भरा हुआ । वह जो व्याकरण के नियमों के विरुद्ध अशुद्ध भाषा का प्रयोग करे ।—दुष्टः, (=वाग्दुष्टः) (पु०) १ निन्दक । २ वह ब्राह्मण जिसका यज्ञोपवीत समय पर न हुआ हो । —देवता,—देवी. (=वाग्देवता, वाग्देवी) (स्त्री०) सरस्वती देवी ।—दोषः, (=वाग्दोषः) (पु०) १ गाली । निन्दा । व्याकरण विरुद्ध भाषण । निबन्धन, (वि०) शब्दों पर निर्भर रहने वाला ।—निश्चयः, (=वाङ्निश्चयः) सगाई ।—निष्ठा, (=वाङनिष्ठा) वचनपालन । —पटु, (वि०) (=वाक्पटु) वाक्नैपुण्य । —पतिः, (पु०) (=वाक्पतिः) बृहस्पति । —पारुष्यं, (न०) (=वाक्पारुष्यं) कठोर शब्द । गाली गलौज निन्दा ।—प्रचोदनं, (न०) (=वाक्प्रचोदनं) मौखिक आज्ञा । प्रमोदः, (पु०) व्यङ्ग्य । कटाक्ष । आक्षेप ।—प्रलापः, (=वाक्प्रलापः) वाक्पटुता —मनसे, (द्विवचन) (=वाङ्मनसी) (वैदिक) वाणी और मन ।—मात्रं, (=वाङ्मात्रं) (न०) शब्द मात्र ।—मुखं, (=वाङ्मुखं) (न०) भूमिका । —यत, (वाग्यत) मौन या वह जिसने अपनी वाणी को वश में कर रखा हो ।—यमः, (=वाग्यमः) वाणी को संयम में करने वाला । ऋषि । मुनि ।—यामः, (=वाग्यामः) (पु०)

गूंगा आदमी ।—युद्ध (=वायुद्धं) जवानी लड़ाई । गरम बहस या वादविवाद ।—वज्रः, (=वाग्वज्रः) (पु०) १ शाप । अकोसा । २ कठोर शब्द ।—विदग्ध, (=वाग्विदग्ध) वाक्पटु । बोल चाल में निपुण ।—विदग्धा, (=वाग्विदग्धा) (स्त्री०) मधुरभाषिणी या मनोमोहिनी स्त्री ।—विभवः, (=वाग्विभवः) (पु०) वर्णन करने की शक्ति ।—विलासः, (=वाग्विलासः) गौरवमयी वाणी ।—व्यवहारः, (=वाग्व्यवहारः) (पु०) मौखिक वादविवाद । जवानी बहस ।—व्यापारः, (पु०) (=वाग्व्यापारः) १ बोलने की शैली या ढग ।—संयमः, (पु०) (=वाक्संयमः) वाणी का नियंत्रण ।

वाचः (पु०) १ मछली । २ मदन नामक पौधा ।

वाचंयम (वि०) जवान बन्द रखने वाला । मौनी ।

वाचंयम (पु०) मौन रहने वाला मुनि ।

वाचक (वि०) बताने वाला । कहने वाला । सूचक । व्याख्याता ।

वाचकः (पु०) १ वक्ता । २ व्यञ्जक शब्द । पाठक । पाठ करने वाला । ४ सदेसा लेजाने वाला । कासिद । दूत ।

वाचनं (न०) १ पाठ । २ घोषणा । कथन ।

वाचनकं (न०) पहेली ।

वाचनिक (वि०) [स्त्री०—वाचनिकी] मौखिक । वाचिका शब्दों द्वारा प्रकटित ।

वाचस्पतिः (पु०) "वाणी का प्रभु"; देवगुरु बृहस्पति की उपाधि ।

वाचस्पत्यं (न०) वाक्पटुता । भाषण । उच्चस्वर से सुनाई हुई वक्तृता ।

वाचा (स्त्री०) १ वाणी । २ वाक् । वचन । शब्द । ३ सिद्धान्त । स्मृति या श्रुतिवाक्य । ४ शपथ ।

वाचाट (वि०) बातूनी । बकी ।

वाचाल (वि०) बकवादी । व्यर्थ बकने वाला ।

वाचिक (वि०) [स्त्री०—वाचिकी, वाचिका] १ वाणी सम्बन्धी । वाणी से किया हुआ । शाब्दिक । ३ मौखिक ।

वाचिकं (न०) १ ज़बानी संदेसा । मौखिक सूचना । २ समाचार । संवाद । ख़बर ।

वाचोयुक्ति (वि०) वाक्पटु ।

वाचोयुक्तिः (स्त्री०) घोषणा । बयान ।

वाच्य (वि०) १ कहने योग्य । जो कथन में आवे । २ शाब्दिक सङ्केत द्वारा जिसका बोध हो । ३ अभिधेय । ४ तिरस्करणीय । दोषी ठहराने लायक ।—वज्रं (न०) कठोर शब्द ।

वाच्यं (न०) १ कलङ्क । भर्त्सना । निन्दा । २ अभिधा द्वारा बोधगम्य । ३ विधेय । ४ क्रिया का वाच्य (क्रिया दो प्रकार की मानी गयी हैं । कर्मवाच्य, कर्तृवाच्य)

वाजः (पु०) १ बाज़ । २ पर । डैना । ३ तीर में लगे हुए पर । ४ युद्ध । संग्राम । ५ ध्वनि । नाद ।

वाजं (न०) १ घी । २ श्राद्धपिण्ड । ३ भोज्य पदार्थ । ४ जल । ५ वह स्तव या मंत्र जिसको पढ़ कर कोई यज्ञ समाप्त किया जाय ।—पेयः, (पु०) —पेयं, (न०) एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है ।—सनः, (पु०) १ श्रीविष्णु भगवान का नाम । २ शिव ।—सनिः, (पु०) सूर्य ।

वाजसनेयः (पु०) याज्ञवल्क्य का नाम । [यह ऋषि वे हैं, जिनके नाम से शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता प्रसिद्ध है ।]

वाजसनेयिन् (पु०) १ याज्ञवल्क्य ऋषि का नाम । २ शुक्लयजुर्वेदी ।

वाजिन् (पु०) १ घोड़ा । २ तीर । ३ पक्षी । यजुर्वेद की वाजसनेयी शाखा वाला । ५ शुक्ल यजुर्वेदी ।—मेधः, (पु०) अश्वमेध यज्ञ ।—शाला, (स्त्री०) अस्तबल ।

वाजीकर (वि०) मनुष्य में वीर्य और पुंसत्व की वृद्धि करने वाला ।

वाजीकरणः (पु०) आयुर्वेदिक वह प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य और पुंसत्व की वृद्धि होती है ।

वांछ्, वाञ्छ् (धा० प०) [वांछति, वांछित] चाहना। इच्छा करना। कामना करना।

वांछनं, वाञ्छनं (न०) वाञ्छा। अभिलाषा। कामना।

वांछा, वाञ्छा (स्त्री०) इच्छा। अभिलाषा। ख्वाहिश।

वांछित, वाञ्छित (व० कृ०) चाहा हुआ। अभिलषित।

वांछितं, वाञ्छितं (न०) कामना। इच्छा। अभिलाषा।

वांछिन्, वाञ्छिन् (वि०) १ चाहने वाला। कामना करने वाला। इच्छा करने वाला। २ लंपट। कामुक।

वाटं (न०), वाटः (पु०) १ घेरा हाता। २ बाग़। उद्यान। लतामण्डप। ३ मार्ग। राह। रास्ता। ४ कमर। कटि। कूल्हा। ५ अन्नविशेष।—धानः, (पु०) ब्राह्मणी माता और कर्महीन या नाममात्र के ब्राह्मण से उत्पन्न एक पतित या सङ्कर जाति।

वाटिका (स्त्री०) १ फुलवगिया। २ वह भूखण्ड जिस पर कोई इमारत या भवन खड़ा हो।

वाटी (स्त्री०) १ वह भूखण्ड जिस पर कोई भवन खड़ा हो। २ घर। डेरा। ३ आँगन। सहन। घेरा। ४ बाग़। उपवन। कुञ्ज। ५ मार्ग। सड़क। ६ कमर। कटि। अनाज विशेष।

वाट्या (स्त्री०), वाट्यालः (पु०), वाट्याली (स्त्री०) अतिवला नाम का पौधा।

वाड् (धा० आ०) [वाडते] स्नान करना। गोता लगाना।

वाडवः (पु०) १ बाड़वानल। २ ब्राह्मण।

वाडवं (न०) घोड़ियों का समुदाय।—अग्निः, —अनलः, (पु०) बाड़वानल।

वाडवेयः (पु०) साँड़।

वाडवेयौ (द्वि० वच०) अश्विनीकुमार।

वाडव्यं (न०) ब्राह्मण समुदाय।

वाणिः (स्त्री०) १ बुनन। बुनावट। २ कम्घा।

वाणिजः (पु०) व्यापारी। सौदागर।

वाणिज्यं (न०) वनिज। व्यापार।

वाणिनी (स्त्री०) १ चालाक औरत। २ नृत्यकी। अभिनय पात्री। ३ शराब के नशे में चूर स्त्री। स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

वाणी (स्त्री०) १ वचन। शब्द। भाषा। २ वाचा-शक्ति। ३ नाद। ध्वनि। स्वर। ४ ग्रन्थ। साहित्यिक निबन्ध। ५ प्रशंसा। ६ सरस्वती देवी।

वात् (धा० उभय०) [वातयति, वातयते] १ फूँकना। धोंकना। २ हवा करना। पंखा करना। ३ परिचर्या करना। ४ प्रसन्न करना। ५ जाना।

वात (व० कृ०) १ उड़ाया हुआ। फूँका हुआ। २ अभिलषित। याचित।—अटः, (पु०) १ वातमृग। बारहसिंगा। २सूर्य के घोड़ों में से एक।—अण्डः, (पु०) अण्डकोष का रोग विशेष।—अश्रं, (न०) पत्ता।—अयनः, (पु०) घोड़ा।—अयनं, (न०) १ खिड़की। झरोखा। रोशनदान। २ बरसाती। घर के दरवाज़े के आगे की पटी हुई जगह। ३ फ़र्श। गच।—अयुः, (पु०) बारहसिंगा।—अश्वः, (पु०) तेज़ घोड़ा।—आमोदा, (स्त्री०) मुश्क। कस्तूरी।—आलिः (स्त्री०) भँवर।—आहत, (वि०) १ वायु से ताड़ित। २गठिया से ग्रस्त।—आहतिः (स्त्री०) पवन का प्रचण्ड झोका।—ऋष्टिः, (स्त्री०) १ वायुवृद्धि। २ गदा। काठ का डंडा। लोहे की मूँठ वाली छड़ी।—कर्मन्, (न०) अपान वायु निकलने की क्रिया।—कुण्डलिका, (स्त्री०) मूत्र रोग विशेष जिसमें रोगी को पेशाब करने में पीड़ा होती है और बूँद बूँद करके पेशाब निकलता है।—कुम्भः, (पु०) हाथी के मस्तक का भाग विशेष।—केतुः, (पु०) धूल।—केलिः, (पु०) १ प्रेमरसपूर्ण आलाप। २ उपपति के दाँतों या नखों का घाव।—गुल्मः, (पु०) १ बवंडर। २ गठिया।—ज्वरः, (पु०) वातज्वर।—ध्वजः, (पु०) बादल।—पुत्रः, (पु०) १ हनुमान। २ भीम।—पोथः,—पोथकः, (पु०) पलाश वृक्ष।—प्रमी, (पु० स्त्री०) तेज़ दौड़ने वाला

हिरन।—मण्डली, (स्त्री॰) १ बवंडर। हवा का चक्कर।—रक्तं,—शोणितं, (न॰) रोग विशेष।—रगः, (पु॰) वटवृक्ष।—रूषः, (पु॰) १ आँधी। तूफान। २ इन्द्रधनुष। ३ घूस। रिशवत।—रोगः,—व्याधिः, (पु॰) गठिया।—वस्तिः, (पु॰) मूत्र का न उतरना।—वृद्धिः, (स्त्री॰) अण्डकोष की सूजन।—शीर्ष, (न॰) पेडू। तरेट।—सारथिः, (पु॰) अग्नि।

वातः (पु॰) १ पवन। हवा। २ पवनदेव। वायु का अधिष्ठातृ देवता। ३ शरीरस्थ कफ वात और पित्त में से दूसरा। ४ गठिया।

वातकः (पु॰) १ जार। आशिक। उपपति। २ अशनपर्णी।

वातकिन् (वि॰) [स्त्री॰—वातकिनी] गठिया वाला।

वातमजः (पु॰) तेज़ चलने वाला मृग।

वातर (वि॰) १ तूफ़ानी। २ तेज़।—अयणः, (पु॰) १ तीर। २ तीर का उड़ान। धनुष की टकार। ३ शृङ्ग। शिखर। ४ आरा। ५ नशे में चूर या पागल मनुष्य। ६ ठलुआ। अकर्मण्य आदमी। ७ सरल नामक वृक्ष।

वातल (वि॰) [स्त्री॰—वातली] १ तूफ़ानी। हवाई। २ वायुवर्द्धक।

वातलः (पु॰) १ पवन। २ चना।

वातापिः (पु॰) अगस्त्य द्वारा पचाया हुआ राक्षस विशेष।—द्विष्, (पु॰)—सूदनः, (पु॰)—हन्, (पु॰) अगस्त्य जी की उपाधियाँ।

वातिः (पु॰) १ सूर्य। २ हवा। ३ चन्द्रमा।—गः,—गमः, (पु॰) भटा। बैंगन। (वातिगण का भी अर्थ भाटा है)

वातिक (वि॰) [स्त्री॰—वातिकी] १ तूफ़ानी। हवाई। २ गठिया वाला। ३ पागल।

वातिकः (पु॰) वायु के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।

वातीय (वि॰) हवाई।

वातीयं (न॰) कांजी।

वातुल (वि॰) १ वायु से पीड़ित। गठिया का रोगी। २ पागल। फिरे हुए मग्ज़ का।

वातुलः (पु॰) वगूला। बबूला।

वातुलिः (पु॰) बड़ा चिमगादड़।

वातूल (वि॰) देखो वातुल।

वातृ (पु॰) पवन। वायु।

वात्या (स्त्री॰) आँधी। अंधड़। तूफ़ान। वगूला।

वात्सकं (न॰) बछड़ों की हेड़।

वात्सल्यं (न॰) स्नेह जो अपने से छोटों में होता है।

वात्सिः } वात्सी } (स्त्री॰) ब्राह्मण के वीर्य और शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न लड़की।

वात्स्यायनः (पु॰) १ कामसूत्र के बनाने वाले का नाम। २ न्यायसूत्रों पर भाष्य रचयिता का नाम।

वादः (पु॰) १ बातचीत। कथन। २ वाणी। शब्द। वचन। ३ कथन। बयान। ४ वर्णन। निरूपण। ५ वादविवाद। शास्त्रार्थ। खण्डन-मण्डन। बहस। ६ उत्तर। ७ टीका। व्याख्या। भाष्य। ८ किसी पक्ष के तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित सिद्धान्त। उसूल। ९ ध्वनिनाद। १० अफवाह। ११ अर्ज़ीदावा।—अनुवादौ, (द्वि॰) १ अर्ज़ी-दावा और उसका जवाब। २ विवाद। बहस।—ग्रस्त (वि॰) झगड़े में पड़ा हुआ।—प्रति-वादः, (पु॰) शास्त्रार्थ।

वादकः (पु॰) गवैया।

वादनं (न॰) बजाने की क्रिया। बाजा बजाना।

वादर (वि॰) [स्त्री॰—वादरी] रुई का बना हुआ।

वादरं (न॰) सूती कपड़ा।

वादरा (स्त्री॰) कपास का पौधा।

वादरंग } वादरङ्ग } (पु॰) वटवृक्ष। अश्वत्थवृक्ष।

वादरायण देखो बादरायण।

वादालः (पु॰) सहस्रदंष्ट्र नामक मछली।

वादि (वि॰) विद्वान। निपुण।

वादित (व॰ कृ॰) नादित। बजाया हुआ।

वादित्रं (न०) १ बाजा । २ वादन ।

वादिन् (वि०) १ बोलने वाला । झगड़ा करने वाला । (पु०) १ वक्ता । २ वादी । ३ मुद्दई । दावीदार । ४ भाष्यकार । शिक्षक ।

वादिशः (पु०) विद्वान् । पण्डित । ऋषि ।

वाद्यं (न०) १ बाजा । २ बाजे की ध्वनि । वाद्य ध्वनि ।—करः, (पु०) बाजा बजाने वाला । बजंत्री ।—भाण्ड, (न०) १ मृदङ्गादि बाजे । २ बाजा ।

वाध्, वाध, वाधक, वाधन, वाधना, वाधा } देखो बाध्, बाध, बाधक आदि ।

वाधुक्यं, वाधूक्यं } (न०) विवाह । परिणय ।

वाध्रीणसः (पु०) गैंडा ।

वान (वि०) १ फूँका हुआ । २ जंगली या जंगल का ।

वानं (न०) १ सूखा या सुखाया हुआ फल । (यह पु० भी होता है) २ फूलना । ३ रहना । ४ घूमना । डोलना । फिरना । ५ सुगन्ध द्रव्य । ६ वन या उपवन समूह । ७ बुनावट । बिनन । ३ तृण की चटाई । ६ घर की दीवाल का रन्ध्र ।

वानप्रस्थः (पु०) १ ब्राह्मण का तीसरा आश्रम । वानप्रस्थाश्रमी । ३ महुए का पेड़ । ४ पलास वृक्ष ।

वानरः (पु०) वानर । लंगूर —अक्षः, (पु०) जंगली बकरा ।—आघातः, (पु०) लोध्रवृक्ष । —इन्द्रः, (पु०) सुग्रीव या हनुमान ।—प्रियः, (पु०) क्षीरिन् वृक्ष ।

वानलः (पु०) तुलसी का वृक्ष । श्यामा तुलसी ।

वानस्पत्यः (पु०) वह वृक्ष जिसमें बौर लगने पर फल लगे, यथा आम ।

वाना (स्त्री०) बटेर । लवा ।

वनायुः (पु०) भारतवर्ष का उत्तर पश्चिमीय प्रान्त ।

वानीरः (पु०) १ बेंत । २ पाकर का पेड़ ।

वानीरकः (पु०) मूँज । तृण ।

वानेयं (न०) कैवर्त मुस्तक । मुस्ता ।

वान्तं (व० कृ०) १ उगला हुआ । थूका हुआ । २ निकाला हुआ ।—अदः, (पु०) कुत्ता ।

वान्तिः, वान्ति } (स्त्री०) १ वमन । २ उगाल ।—कृत्, —दः, (वि०) वमन कराने वाला ।

वान्या (स्त्री०) कुञ्ज समूह ।

वापः (पु०) १ बीजवपन । २ बिनावट । ३ मुण्डन । कपटन ।—दण्डः, (पु०) करघा ।

वापनं (न०) १ बुवाई । २ मुण्डन ।

वापित (व० कृ०) १ बोया हुआ । २ मुड़ा हुआ ।

वापिः, वापी } (स्त्री०) बावली । छोटा चौकोर जल कुण्ड ।—दः, (पु०) चातकपक्षी ।

वाम (वि०) १ बायाँ । २ वामभाग स्थित । ३ उल्टा । ४ विपरीत स्वभाव । ५ कुटिल स्वभाव का । ६ दुष्ट । शठ । नीच । ५ मनोज्ञ । मनोहर । सुन्दर ।—आचारः, (पु०) तान्त्रिकमत का एक भेद । [इसमें पञ्चमकार अर्थात् मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव का आराधना किया जाता है । इस मतवाले, अपने मतवाले को वीर साधक आदि कहते हैं और विरोधियों को कटक बतलाते हैं ।] —मार्गः, (पु०) वेदविहित दक्षिण मार्ग के प्रतिकूल तान्त्रिकमत विशेष ।—आवर्तः, (पु०) वह शङ्ख जिसमें बाईं ओर का घुमाव या भँवरी हो ।—उरु, —ऊरू (वि०) सुन्दर उरुवाली स्त्री । सुन्दरी स्त्री । —देवः, (पु०) १ गौतम गोत्रीय एक वैदिक ऋषि जो ऋग्वेद के चौथे मण्डल के अधिकांश सूक्तों के द्रष्टा थे । २ दशरथ महाराज के एक मंत्री का नाम । ३ शिवजी का नाम ।—लोचना, (वि०) वह स्त्री जिसके नेत्र सुन्दर हो ।—शीलः, (पु०) कामदेव की उपाधि ।

वामं (न०) धन सम्पत्ति ।

वामः (पु०) १ जन्तु । २ शिव । ३ कामदेव । ४ सर्प । ५ पेन । थन ।

वामक (वि०) १ बाँया । २ उलटा ।

वामन (वि०) १ बौना । छोटे डील का । ह्रस्व । खर्व । २ नम्र । ३ नीच । कमीना । शठ ।

वामनः (पु०) १ बौना आदमी । २ विष्णु भगवान के पाँचवें अवतार का नाम । ३ दक्षिण दिग्गज का नाम । ४ काशिका वृत्ति के रचयिता का नाम । ५ अंकोट वृक्ष का नाम ।—आकृति, (वि०) खर्वाकार ।—पुराणं (न०) १८ पुराणों में से एक ।

वामनिका (स्त्री०) बौनी स्त्री ।

वामनी (स्त्री०) १ स्त्री जो बौने डील की हो । २ घोड़ी । ३ स्त्रीविशेष ।

वामलूरः (पु०) दीमकों द्वारा बनाया हुआ मट्टी का टीला ।

वामा (स्त्री०) १ रमणी । २ सुन्दरी स्त्री । ३ गौरी । ४ लक्ष्मी । ५ सरस्वती ।

वामिल (वि०) १ सुन्दर । मनोहर । २ अभिमानी । अहङ्कारी । ३ चालाक । दगावाज़ ।

वामी (स्त्री०) १ घोड़ी । २ गधी । ३ हथिनी । ४ गीदड़ी ।

वायः (पु०) बुनन । बुनावट । सिलाई ।—दण्डः, (पु०) जुलाहे का करघा ।

वायकः (पु०) १ जुलाहा । २ ढेर । संग्रह । समुदाय ।

वायन } (न०) देवता के लिये मिष्टान्न का नैवेद्य ।
वायनक } ब्राह्मण के लिये उद्यापन में मिष्टान्न का भोजन ।

वायव (वि०) [स्त्री —वायवी] १ वायु सम्बन्धी । वायु के कारण उत्पन्न । २ हवाई ।

वायवीय } (वि०) पवन सम्बन्धी । हवाई ।—
वायव्य } पुराणं, (न०) एक पुराण का नाम ।

वायसः (पु०) १ काक । कौआ । २ अगरु काष्ठ । ३ तारपीन ।—अरातिः, —अरिः, (पु०) उल्लू । —इक्षुः, (पु०) तृण या घास विशेष जो लंबी होती है ।

वायु (पु०) १ हवा । पवन । २ पवन देव । ३ शरीरस्थ पाँच प्रकार का वायु । [प्राण, अपान समान, व्यान । और उदान] —आस्पदं, (न०) आकाश । अन्तरिक्ष ।—केतुः, (पु०) धूल । रज ।—कोणः, (पु०) उत्तर पश्चिम कोण । गण्ड, (पु०) पेट का फूलना जो अनपच के कारण हुआ हो ।—गुल्मः, (पु०) आँधी । तूफान । २ बवंडर । बवूला ।—ग्रस्त, (वि०) गठिया का रोगी ।—जातः, —तनयः —नन्दनः, —पुत्रः, —सुतः, —सूनुः, (पु०) हनुमान या भीम ।—दारुः (पु०) बादल ।—निघ्न, (वि०) पागल । सिड़ी । सनकी ।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।—फलं, (न०) १ ओला । २ इन्द्रधनुष ।—भक्षः, भक्षणः, —भुज्, (पु०) १ केवल वायु पीकर रहने वाला । तपस्वी । २ सर्प ।—रोषा, (स्त्री०) रुग्ण, वायु का रोगी ।—वर्त्मन्, (पु० न०) आकाश । व्योम । अन्तरिक्ष ।—वाहः, (पु०) धुआँ ।—वाहिनी (स्त्री०) शिरा । धमनी ।—सखः, —सखिः (पु०) अग्नि ।

वार् (न०) जल । पानी ।—आसनं, (न०) जल का कुण्ड ।—किटिः, (=वाःकिटिः) (पु०) सूँस । शिशुमार ।—चः, (पु०) हंस ।—दः, (पु०) बादल ।—दरं, (न०) १ पानी । २ रेशम । ३ वाणी । ४ आम की गुठली । ५ घोड़े की गरदन की भौरी । ६ शङ्ख ।—धिः, (पु०) समुद्र ।—धिभवं, (न०) निमक । लवण ।—पुष्पं, (न०) (=वा पुष्पं) लौंग ।—भटः, (पु०) मगर । घड़ियाल । नाका ।—मुच्, (पु०) बादल ।—राशिः, (पु०) समुद्र ।—वटः, (पु०) नाव । जहाज़ ।—सदनं, (=वाःसदनं) जल-कुण्ड । जल का हौद ।—स्थ, (वि०) (=वाःस्थ) जल में । जल का ।

वार (पु०) १ ढकना । २ बड़ी संख्या । समुदाय । ३ ढेर । ४ गल्ला । झुंड । ५ दिन यथा बुधवार । ६ वारी । दाँव । ७ अवसर । दफ़ा मरतवः । ८ द्वारा । फाटक । ९ नदी का सामने का तट । पल्लीपार । १० शिवजी ।

वारं (न०) १ मद्यपात्र । २ जलसंघ ।—अंगना,—नारी —युवति, —योषित, —वनिता, —

विलासिनी, —सुन्दरी, —स्त्री, (स्त्री०) रंडी। वेश्या।—कीरः, (पु०) १ पत्नी का भाई। साला। २ वाडवानल। ३ कंघी। ४ जूँ। चील्हर। ५ तुरंग। युद्ध का घोड़ा।—बुषा, —बूषा, (स्त्री०) केले का पेड़।—मुख्या, (स्त्री०) रंडियों के गिरोह का सर्दार।—वाणः, —वाणः, (पु०) वाणं, —वाणं, (न०) कवच। बख़्तर।—वाणिः, (पु०) नफ़ीरी बजाने वाला। बाजा बजाने वाला। ३ वर्ष। ४ न्यायकर्त्ता। जज। —वाणिः, (स्त्री०) रंडी। वेश्या।—वाणी, (स्त्री०) रंडी।—सेवा (स्त्री०) वेश्यापना। छिनाला। रंडियों का समुदाय।

वारक (वि०) अड़चन डालने वाला। रोकने वाला। अवरोधक।

वारकं (न०) १ वह स्थान जहाँ पीड़ा होती हो। २ बालछड़। ह्रीवेर।

वरकः (पु०) १ अश्व विशेष। २ घोड़ा। ३ घोड़े की चाल।

वारकिन (पु०) १ विरोधी। शत्रु। २ समुद्र। ३ शुभलक्षणों से युक्त अश्व। ४ पत्ते खाकर रहने वाला तपस्वी।

वारंकः } (पु०) पक्षी।
वारङ्कः }

वारंगः } (पु०) तलवार की मूठ। छुरी का दस्ता।
वारङ्गः }

वारटं (न०) १ खेत। २ अनेक खेत।

वारटा (स्त्री०) हंस। राजहंस।

वारण (वि०) [स्त्री०—वारणी] रोकने वाला। मना करने वाला। सामना करने वाला। समुहाने वाला।

वारणं (न०) १ रोक। संयम। रुकावट। २ अड़चन। ३ सामना। समुहाने की क्रिया। ४ बचाव। रक्षा।

वारणः (पु०) १ हाथी। २ कवच।—बुषा,—बुसा,—वल्लभा, (स्त्री०) केले का पेड़।—साह्वयं, (न०) हस्तिनापुर का नाम।

वारणसी (स्त्री०) काशी। बनारस।

वारत्रं (न०) चमड़े का तस्मा।

वारंवारं (अव्यया०) अक्सर। कई बार। फिर फिर।

वारला (स्त्री०) १ बरैया। २ हंस।

वाराणसी (स्त्री०) बनारस। काशीपुरी।

वारांनिधिः (पु०) समुद्र।

वाराह (वि०) [स्त्री०—वाराही] शूकर सम्बन्धी। —कल्पः, (पु०) वर्तमान कल्प का नाम।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक।

वाराहः (पु०) १ शूकर। २ वृक्ष विशेष।

वाराही (स्त्री०) १ सुअरी। २ पृथिवी। ३ विष्णु की शूकर के रूप में शक्ति। ४ माप विशेष।—कन्दः (पु०) एक प्रकार का महाकन्द जिसे गेंठी कहते हैं।

वारि (न०) १ जल। २ तरल पदार्थ। ३ बालछड़ या ह्रीवर।

वारिः } (स्त्री०) १ हाथी के बाँधने की रस्सी
वारी } जंज़ीर आदि। २ हाथी पकड़ने के लिये बनाया हुआ गढ़ा। ३ कैदी। बंदी। ४ जलपात्र। ५ सरस्वती का नाम।—ईशः, (पु०) समुद्र। —उद्भवं, (न०) कमल।—ओकः, (पु०) जौंक। जलौका।—कर्पूरः, (पु०) मत्स्य विशेष। इलीश।—किमिः, (पु०) जौंक।—चत्वरः, (पु०) जलाशय।—चर, (वि०) पानी में रहने वाला जन्तु।—चरः, (पु०) १ मत्स्य। २ जलचर कोई भी जन्तु।—ज, (वि०) जल में उत्पन्न।—जः, (पु०) १ शङ्ख। घोंघा।—जं, (न०) १ कमल। २ निमक विशेष। ३ गौर सुवर्ण नामक पौधा। ४ लवंग।—तस्करः, (पु०) बादल। मेघ।—त्रा, (स्त्री०) छतरी। छाता। दः, (पु०) बादल।—द्रः, (पु०) चातक पक्षी।—धरः, (पु०) बादल।—धिः, (पु०) समुद्र।—नाथः, (पु०) १ समुद्र। २ वरुण देव। ३ बादल।—निधिः, (पु०) समुद्र।—पथः, (पु०)—पथं, (न०) समुद्रयात्रा।—प्रवाहः, (पु०) पानी का झरना। जलप्रपात। —मसि, (पु०)—मुच्, (पु०)—रः, (पु०) बादल। मेघ।—यंत्रं, (न०) जल

निकालने की कल।—रथः, (पु०) नाव। जहाज। बेड़ा।—राशि, (पु०) १ समुद्र। २ झील।—रुहं, (न०) कमल।—वासः, (पु०) कलवार। शराब बेचने वाला।—वाहः,—वाहनः, (पु०) बादल। मेघ।—शः, (पु०) विष्णु भगवान।—सम्भवः, (पु०) १ लवंग। लौंग। २ सुर्मा विशेष। ३ उशीर। खस।

वारित (व० कृ०) १ रोका हुआ। अवरुद्ध। २ रक्षा किया हुआ। बचाया हुआ।

वारीहट (पु०) हाथी।

वारुः (पु०) विजय कुञ्जर। वह हाथी जिस पर सेना में विजय पताका रहती है।

वारुठः (पु०) अन्तशय्या। मरणखाट। वह टिकठी जिस पर मुर्दे को रखकर ले जाते हैं। अरथी।

वारुण (वि०) [स्त्री०—वारुणी] १ वरुण सम्बन्धी। २ वरुण को समर्पित किया हुआ। ३ वरुण को दिया हुआ।

वारुणं (न०) जल।

वारुणः (पु०) भारतवर्ष के नवखण्डों में से एक।

वारुणिः (पु०) १ अगस्त्य ऋषि। २ भृगु जी।

वारुणी (स्त्री०) १ पश्चिम दिशा। २ किसी भी प्रकार की मदिरा या शराब। ३ शतभिष् नक्षत्र। ४ दूर्वा या दूब।—वल्लभः (पु०) वरुण जी।

वारुंडः, वारुण्डः } (पु०) नाग जाति का प्रधान।

वारुंडः (पु०), वारुण्डः (पु०), वारुंडं (न०), वारुण्डं (न०) } १ आँख का मैल या कीचड़। २ कान का मैल या ठेठ। ३ नाव का पानी उलीचने का कठौता या पात्र विशेष।

वारेंद्री, वारेन्द्री } (स्त्री०) बंगाल के एक अंचल का नाम जिसका आधुनिक नाम राजशाही है।

वार्क्ष (वि०) [स्त्री०—वार्क्षी] वृक्षों से सम्पन्न।

वार्क्षम् (न०) वन। जंगल।

वार्णिकः (पु०) लेखक।

वार्ताक (स्त्री०), वार्ताकि (स्त्री०), वार्ताकिन् (पु०), वार्ताकी (स्त्री०), वार्ताकुः (पु० स्त्री०) } बैंगन या भाँटे का पौधा।

वार्तिका (स्त्री०) तीतर। बटेर।

वार्त्त (वि०) तंदुरुस्त। स्वस्थ। २ हलका। कमज़ोर। असार। ३ धंधा करने वाला। पेशे वाला।

वार्त्तं (न०) १ तंदुरुस्ती। २ निपुणता। पटुता।

वार्ता (स्त्री०) १ पालन। २ संवाद। ख़बर। ३ पेशा। आजीविका। ४ खेती। वैश्यवृत्ति। वैश्य का धंधा (अर्थात् कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा और कुसीद) ५ बैंगन का पौधा।—वहः,—हरः, (पु०) १ दूत। कासिद। २ बत्ती बनाने वाला।—वृत्तिः, (पु०) जो किसानी पेशे से निर्वाह करता हो।

वार्तायनः (पु०) संवाददाता। जासूस। दूत।

वार्तिक (वि०) [स्त्री०— वार्तिकी] संवाद संबन्धी। २ खबर लाने वाला। ३ व्याख्याकारी।

वार्तिकः (पु०) १ गोइंदा। जासूस। २ किसान।

वार्तिकं (न०) किसी ग्रन्थ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करने वाला वाक्य या ग्रंथ। [वार्तिक और भाष्य में यह भेद है कि, भाष्य में केवल मूल ग्रन्थ का आशय स्पष्ट किया जाता है, किन्तु वार्तिक में पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है। वार्तिककार नयी बातें भी कह सकता है।]

वार्त्रघ्नः (पु०) अर्जुन का नाम।

वार्द्धकं (न०) १ बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २ बुढ़ापे के कारण उत्पन्न अङ्गशैथिल्य। ३ वृद्धजनों का समुदाय।

वार्द्धक्यं (न०) १ बुढ़ापा। २ बुढ़ापे की निर्बलता।

वार्द्धुषिः, वार्द्धुषिकः, वार्द्धुषिन् } (पु०) सूदख़ोर। ब्याजख़ोर।

वार्द्धुष्यं (न०) ब्याज। सूद।

वार्ध्र, वार्ध्री } (स्त्री०) चमड़े का तस्मा।

वार्ध्रीणसः (पु०) गैंडा।

वार्मणं (न०) कवचधारी लोगों का जमाव।

वार्यं (न०) आशीर्वचन । वर । (बहुवचन) अधिकृत सम्पत्ति।

वार्वणा (स्त्री०) नीले रंग की मक्खी।

वार्ष (वि०) [स्त्री०—वार्षी] १ वर्षा सम्बन्धी। २ सालाना। बर्साऊ।

वार्षिक (वि०) [स्त्री०—वार्षिकी] १ वर्षाऋतु या वर्षा सम्बन्धी। २ सालाना। ३ एक वर्ष भर का या एक वर्ष तक रहने वाला।

वार्षिकं (न०) एक त्रायमाण विशेष।

वार्षिला (स्त्री०) ओला।

वार्ष्णेय. (पु०) १ वृष्णिवंशी। २ विशेष कर श्री कृष्ण। ३ राजानल के सारथी का नाम।

वार्ह
वार्हद्रथ
वार्हद्रथि
वार्हस्पत
वार्हस्पत्य
वार्हिण
वाल
वालक
} देखो वार्ह, वार्हद्रथ वार्हस्पत्य। आदि।

वालखिल्य (न०) देखो वालखिल्य।

वालिः (पु०) वानरराज सुग्रीव के बड़े भाई और अँगद के पिता का नाम।

वालुका (स्त्री०) १ वालू। रेत। २ चूर्ण। बुकनी। ३ कपूर।—आत्मिका, (स्त्री०) शक्कर। चीनी।

वालुका
वालुकी } (स्त्री०) ककड़ी।

वालेय (न०) देखो वालेय।

वाल्क (वि०) [स्त्री०—वाल्की] वृक्षों की छाल का बना हुआ।

वाल्कल (वि०) [स्त्री०—वाल्कली] वृक्ष की छाल का बना हुआ।

वाल्कलं (न०) वृक्ष की छाल के बने कपड़े।

वाल्कली (स्त्री०) शराब। मदिरा।

वाल्मीकः
वाल्मीकिः } (पु०) आदिकाव्य श्रीमद्रामायण के रचयिता का नाम।

वाल्लभ्यम् (न०) प्रेमपात्र। माशूक।

वावदूक (वि०) १ बातूनी। बतोरा। बकवादी। २ अच्छा बोलने वाला वक्ता।

वावय. (पु०) तुलसी।

वावुटः (पु०) नाव। बेड़ा।

वावृत् (धा० आ०) [वावृत्यते] १ चुनना। पसंद करना। प्यार करना। २ सेवा करना।

वावृत्त (वि०) चुना हुआ। छाँटा हुआ। पसंद किया हुआ।

वाश् (धा० आ०) [वाश्यते, वाशित] १ गरजना।। दहाड़ना। चिल्लाना। भूंकना। गुंजना। २ बुलाना। पुकारना।

वाशक (वि०) दहाड़ने वाला। ध्वनि करने वाला।

वाशनं (न०) १ दहाड़। गर्जन। भूंकना। गुर्राहट। चीत्कार। चीख। २ पक्षियों की चहक। भौंरे की गुंजार।

वाशिः (पु०) अग्निदेव।

वाशितं (न०) पक्षियों का कलरव।

वाशिता (स्त्री०) १ हथिनी। २ स्त्री।

वाश्रः (पु०) दिवस।

वाश्रं (न०) १ रहने का घर। २ चौराहा। ३ गोबर। विष्ठा।

वाष्पः (पु०)
वाष्पं (न०) } देखो वाष्प।

वास् (धा० उभय०) [वासयति, वासयते] १ सुवासित करना। खुशबू उत्पन्न करना। २ सिक्त करना। भिगोना। डुबाना। ३ मसाले डालना। पकाना। सुस्वाद बनाना।

वासः (पु०) १ बू। सुगन्ध। २ अवस्थान। रहाइस। निवास। ३ घर। मकान। डेरा। ४ स्थान। जगह। ५ परिच्छद। परिधान। पोशाक।—कर्णी, (स्त्री०) एक बड़ा कमरा या मण्डप जिसमें पहलवानों का दंगल या नृत्य हो।

आदि हुआ करे ।—यष्टिः, (स्त्री०) पालतू पक्षियों के बैठने की अड्डी ।

वासक (वि०) [स्त्री०—वासका, वासिका] १ खूशबूदार । खुशबू उत्पन्न करने वाला । २ बसाने वाला । आबाद करने वाला ।—सज्जा, (स्त्री०) वह नायिका जो अपने नायक से मिलने को स्वयं बनठन कर और अपने घर को सजा कर उसके आने की प्रतीक्षा में बैठी हो ।

वासकं (न०) कपड़े । वस्त्र ।

वासतः (पु०) गधा ।

वासतेय (वि०) [स्त्री०—वासतेयी] आबाद करने योग्य । बसाने योग्य । रहने योग्य । बसने योग्य ।

वासतेयी (स्त्री०) रात । निशा ।

वासनं (न०) १ बसाना । खुशबू पैदा करना । २ तर करना । ३ वास । रहायस । ४ घर । मकान । ५ कोई पात्र, यथा टोकरा, पेटी, बर्तन आदि । ६ ज्ञान । ७ वस्त्र । परिधान । ८ आच्छादन । चादर । गिलाफ़ ।

वासना (स्त्री०) १ भावना । जन्मान्तर के जमे प्रभाव से उत्पन्न मानसिक सुख दुःख की भावना संस्कार । स्मृतिहेतु । ३ कल्पना । विचार । ख्याल । ४ मिथ्या विचार । झूठा ख्याल । अज्ञता । अज्ञान । ५ अभिलाषा । कामना । ६ सम्मान ।

वासंत } वासन्त } (वि०) [स्त्री०—वासंती, वासन्ती] १ बसन्त सम्बन्धी । वसन्तऋतु के योग्य या वसन्तऋतु में उत्पन्न । २ जवान । ३ बुद्धिमान ।

वसंतः } वसन्तः } (पु०) १ ऊँट । २ जवान हाथी । ३ किसी जानवर का बच्चा । ४ कोयल । ५ मलयाचल हो कर आयी हुई हवा । मलयसमीर । ६ मूँग । ७ लंपट या दुराचारी पुरुष ।

वासंती } वासन्ती } (स्त्री०) १ माधवी लता । २ बड़ी पीपल । जुही । ३ गनियारी नामक फ़ूल । ४ वसन्तोत्सव ।

वासंतिक } वासन्तिक } (वि०) १ वसन्त सम्बन्धी ।

वासंतिकः } वासन्तिकः } (पु०) १ विदूषक । भाँड । २ नट । अभिनयपात्र ।

वासरः (पु०) } वासरं (न०) } दिवस । दिन ।—संगः, सङ्गः, (पु०) प्रातःकाल । सवेरा ।

वासव (वि०) [स्त्री०—वासवी] इन्द्र का । इन्द्र सम्बन्धी ।

वासवः (पु०) इन्द्र का नाम ।—दत्ता, (स्त्री०) १ सुबन्धु नामक कवि का बनाया नाटक । २ कई एक कथानकों की एक नायिका का नाम ।

वासवी (स्त्री०) व्यास की माता का नाम ।

वासस् (न०) १ कपड़ा । वस्त्र ।

वासिः (पु० स्त्री०) कुठार । वसूला । छैनी ।

वासित (व० कृ०) १ सुवासित । २ तर । भिगोया हुआ । ३ सुस्वादु बनाया हुआ । ४ वस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ । ५ बसा हुआ । आबाद । ६ प्रसिद्ध । मशहूर ।

वासित (न०) १ पक्षियों का कलरव । २ ज्ञान ।

वासिष्ठ } वाशिष्ठ } (वि०) [स्त्री०—वासिष्ठी, वाशिष्ठी] वसिष्ठ सम्बन्धी । (ऋग्वेद का एक मण्डल जो) वसिष्ठ जी का देखा हुआ हो ।

वासिष्ठः } वाशिष्ठः } वशिष्ठ का वंशधर या वंश वाला ।

वासुः (पु०) १ जीव । आत्मा । २ विश्वात्मा । परमात्मा । ३ विष्णु भगवान का नामान्तर ।

वासुकिः } वासुकेयः } (पु०) कश्यपपुत्र और सर्पराज वासुका ।

वासुदेवः (पु०) १ वसुदेव का वंशज । २ विशेष कर श्रीकृष्ण का नाम ।

वासुरा (स्त्री०) १ पृथिवी । २ रात । ३ स्त्री । ४ हथिनी ।

वासूः (स्त्री०) १ जवान लड़की । क्वारी लड़की ।

वास्त देखो वास्त ।

वास्तव (वि०) [स्त्री०—वास्तवी] १ असली । सच्चा । प्रकृत । सारवान । २ निश्चय किया हुआ । निर्दिष्ट किया हुआ ।

वास्तवं (न०) कोई वस्तु जो निश्चित या निर्दिष्ट कर ली गयी हो ।

वास्तवा (स्त्री०) प्रातःकाल । भोर । तड़का ।

वास्तविक (वि०) [स्त्री०—वास्तविकी] यथार्थ । सत्य । प्राकृत । ठीक । सच्चा ।

वास्तिकं (न०) बकरों का गल्ला ।

वास्तव्य (वि०) १ रहने वाला । निवासी । बाशिन्दा । २ रहने योग्य । रहने लायक ।

वास्तव्यं (न०) रहने लायक स्थान । बस्ती । आबादी ।

वास्तु (पु० न०) १ वह स्थान जिस पर कोई इमारत खड़ी हो । ज़मीन । २ घर । मकान । डेरा ।—यागः, (पु०) उस समय का धर्मानुष्ठान विशेष, जिस समय किसी मकान की नींव रखी जाय ।

वास्तेय (वि०) [स्त्री०—वास्तेयी] १ रहने योग्य । रहने लायक । २ पेडू सम्बन्धी । कुक्षि सम्बन्धी । उदर सम्बन्धी ।

वास्तोष्पतिः (पु०) १ वास्तुपति । २ इन्द्र ।

वास्त्र (वि०) वस्त्र का बना हुआ ।

वास्त्रः (पु०) गाड़ी या सवारी जिस पर कपड़े का उघार या पर्दा पड़ा हो ।

वास्पेयः (पु०) नागकेसर का पेड़ ।

वाह् (धा० आ०) [वाहते] उद्योग करना । प्रयत्न करना । कोशिश करना ।

वाह (वि०) लेजाने वाला ।

वाहः (पु०) १ लेजाने वाला । २ कुली । मज़दूर । ३ बोझ लादने वाला जानवर । ४ घोड़ा । ५ बैल । ६ भैंसा । ७ गाड़ी । सवार । ८ बाहु । ९ हवा । पवन । १० प्राचीन काल की एक तौल जो ४ गोन की होती थी ।—द्विषत्, (पु०) भैंसा ।—श्रेष्ठः, (पु०) घोड़ा ।

वाहकः (पु०) १ कुली । २ गाड़ीवान । ३ घुड़सवार ।

वाहनं (न०) १ ढोना । २ हाँकना । ३ वाहन । सवारी । ४ ज़ीनसवारी का घोड़ा । ५ हाथी ।

वाहसः (पु०) १ जलप्रवाहमार्ग । जलप्रणाली । २ अजगर सर्प ।

वाहिक्थः (पु०) १ बड़ा ढोल । २ बैलगाड़ी । ३ बोझ ढोने वाला कुली ।

वाहितं (न०) भारी बोझा ।

वाहित्थं (न०) हाथी का माथा ।

वाहिनी (स्त्री०) १ सेना । २ एक सैन्यदल विशेष । जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़सवार और ४०५ पैदल होते हैं । ३ नदी ।—निवेशः, (पु०) फौज की छावनी ।—पतिः, (पु०) १ चमूपति । सेनापति । २ समुद्र ।

वाहीक देखो वाहीक ।

वाहुक देखो वाहुक ।

वाह्य देखो वाह्य ।

वाह्लिः (पु०) आधुनिक बलख (बुखारा) का नाम । —जः, (पु०) बलख देश का घोड़ा ।

वाह्लिकः } वाह्लीकः } (पु०) १ आधुनिक बलख का नाम । २ बलख देश का घोड़ा ।

वाह्लिकं } वाह्लीकं } (न०) १ केसर । २ हींग ।

वि (अव्यया०) क्रिया शब्द के पूर्व जोड़े जाने पर इसके ये अर्थ होते हैं:—१ पार्थक्य । बिलगाव । २ किसी क्रिया का विपरीत कर्म । ३ विभाग । ४ विशिष्टता । ५ आँक । जाँच । भेद । ६ क्रम । ७ विरोध । ८ तंगी । ९ विचार । १० आधिक्य ।

विः (पु० स्त्री०) १ पक्षी । २ घोड़ा ।

विंश (वि०) [स्त्री० - विंशी] बीसवाँ ।

विंशः (पु०) बीसवाँ भाग ।

विंशकः (पु०) [स्त्री० —विंशकी] बीस की संख्या ।

विंशतिः (स्त्री०) कोड़ी । बीस ।—ईशः,—ईशिन्, (पु०) बीस गाँव का ठाकुर या मालिक ।

विंशतितम (वि०) [स्त्री —विंशतितमी] बीसवाँ ।

विंशिन् (पु०) १ बीस । एक कोड़ी । २ बीस गाँव का शासक या ज़मींदार ।

विकं (न०) हाल की ब्यायी गौ का दूध ।

विकङ्कटः (पु०)
विकङ्कटः (पु०)
विकंकत (पु०)
विकङ्कत (पु०) } वृक्ष विशेष जिसकी, लकड़ी की कलछियाँ बनती हैं ।

विकच (वि०) १ खिला हुआ । फैला हुआ । २ बिखरा हुआ । ३ केशविहीन ।

विकच (पु०) १ बौद्ध भिक्षुक । २ केतु का नाम ।

विकट (वि०) १ बदशक्ल । कुरूप । २ भयङ्कर । डरावना । जंगली । उग्र । ३ बड़ा । चौड़ा । प्रशस्त । ४ अहंकारी । अभिमानी । ५ सुन्दर । ६ त्योरी चढ़ाए हुए । ७ धुंधला । ८ शक्ल बदले हुए ।

विकटं (न०) बालतोड़ । गूमड़ा ।

विकत्थन (वि०) १ डींगे मारने वाला । शेखी मारने वाला । २ व्याज स्तुति करने वाला ।

विकत्थनं (न०) १ शेखी । डींग । २ व्यङ्गय । झूठी प्रशंसा ।

विकत्था (स्त्री०) १ डींग । शेखी । २ प्रशंसा । ३ झूठी प्रशंसा ।

विकंप
विकम्प } (वि०) अदृढ़ । हिलता डोलता ।

विकरः (पु०) बीमारी । रोग ।

विकराल (वि०) बड़ा भयानक । बड़ा भयङ्कर ।

विकर्णः (पु०) एक कौरव राजकुमार का नाम ।

विकर्तनः (पु०) १ सूर्य । २ अर्क । मदार । अकौवा । ३ वह पुत्र जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो ।

विकर्मन् (वि०) निषिद्ध कर्म करने वाला । (न०) निषिद्ध कर्म ।

विकर्मस्थ (वि०) धर्मशास्त्र के मत से वह पुरुष जो वेदविरुद्ध काम करता हो ।

विकर्षः (पु०) १ तीर । बाण ।

विकर्षणं (न०) आकर्षण । खिंचाव ।

विकर्षणः (पु०) कामदेव के पाँच बाणों में से एक का नाम ।

विकल (वि०) १ खण्डित । अपूर्ण । अङ्गहीन । २ भयभीत । डरा हुआ । ३ रहित । हीन । ४ विह्वल । घबड़ाया हुआ । उदास । ५ कुम्हलाया हुआ । मुर्झाया हुआ । मड़ा हुआ ।—अङ्ग, (वि०) जिसका कोई अंग भङ्ग हो । न्यूनाङ्ग । अङ्गहीन ।—पाणिकः, (पु०) लुंजा ।

विकला (स्त्री०) एक कला का ६० वाँ अंश ।

विकल्पः (पु०) १ सन्देह । अनिश्चय । सङ्कोच । हिचकिचाहट । २ भ्रम । अविश्वास । ३ कौशल । कला । ४ इच्छा । अभिरुचि ५ किस्म । जाति । ६ भूल । चूक । अज्ञानता ।—जालं, (न०) दुविधा । द्वैध ।

विकल्पनं (न०) १ सन्देह में पड़ना । २ अनिश्चय ।

विकल्मष (वि०) पापरहित । कलङ्कशून्य । निरपराध ।

विकषा
विकसा } (स्त्री०) मजीठ ।

विकसः (पु०) चन्द्रमा ।

विकसित (व० कृ०) खिला हुआ । पूरा फैला हुआ ।

विकस्वर
विकश्वर } (वि०) १ खुला हुआ । फैला हुआ । २ स्पष्ट समझ में आने वाला ।

विकारः (पु०) १ विकृति । २ तबदीली । परिवर्तन । ३ बीमारी । रोग । ४ मनपरिवर्तन । ५ भावना । उचङ्ग । मनोवेग । ६ उद्वेग । विकलता । घबड़ाहट । ७ वेदान्त और साँख्य दर्शन के अनुसार किसी के रूप आदि का बदल जाना । परिणाम ।—हेतुः, (पु०) प्रलोभन । लालच । विकलता का कारण ।

विकारित (वि०) बदला हुआ । बिगड़ा हुआ ।

विकारिन् (वि०) परिवर्तनशील ।

विकालः
विकालिकः } (पु०) शाम । सन्ध्या काल । दिनान्त काल ।

विकालिका (स्त्री०) जलघड़ी की कटोरी ।

विक्रान्तिः (स्त्री०) १ गति। २ घोड़े की सरपट चाल। ३ विक्रम। बल। वीरता। बहादुरी।

विक्रांतृ } (वि०) बहादुर। शूरवीर। (पु०)
विक्रान्तृ } सिंह।

विक्रिया (स्त्री०) १ विकार। संशोधन। २ उद्वेग। विकलता। घबड़ाहट। ३ क्रोध। रोष। अप्रसन्नता। ४ बुराई। विगाड़। ५ भ्रूकुञ्चन। ६ रोग जो अचानक उत्पन्न हो जाय। ७ खण्डन। भञ्जन। त्याग (जैसे कर्म का)।—उपमा, (स्त्री०) काव्यालङ्कार विशेष।

विकुष्ट (व० कृ०) १ पुकारा हुआ। चिल्लाया हुआ। २ निष्ठुर। बेरहम।

विकुष्टं (न०) १ सहायता के लिये बुलाहट। २ गाली।

विक्रेय (वि०) बिकाऊ।

विक्रोशनं (न०) १ गाली। २ चीत्कार। चिल्लाहट।

विक्लव (वि०) १ डरा हुआ। भयभीत। २ भीरु। डरपोंक। ३ उद्विग्न। घबड़ाया हुआ। ४ सन्तप्त। पीड़ित। दुःखित। ५ विह्वल। बेचैन।

विक्लिन्न (व० कृ०) १ बिल्कुल तराबोर या भींगा हुआ। २ सड़ा हुआ। गला हुआ। मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ। ३ जीर्ण।

विक्लिष्ट (पु०) १ अत्यन्त सन्तप्त। २ घायल। नष्ट किया हुआ।

विक्लिष्टं (न०) उच्चारण का दोष।

विक्षत (व० कृ०) घायल। ताड़ित।

विक्षावः (पु०) १ खखारन। छींक। २ ध्वनि। नाद।

विक्षिप्त (व० कृ०) १ बिखरा हुआ। फैका हुआ। २ खारिज किया हुआ। त्यागा हुआ। ३ भेजा हुआ। ४ घबड़ाया हुआ। बेचैन। ५ खण्डन किया हुआ।

विक्षीणकः (पु०) १ शिवगणों का मुखिया। २ देवसभा।

विक्षीरः (पु०) मदार या अर्क या अकौआ का पेड़।

विक्षेपः (पु०) १ ऊपर की ओर अथवा इधर उधर फैंकना या डालना। २ झटका देना। इधर उधर हिलाना डुलाना। ३ प्रेषण। ४ घबड़ाहट। विकलता। परेशानी। बेचैनी ५। भय। डर। ६ खण्डन।

विक्षेपणं (न०) १ ऊपर अथवा इधर उधर फेंकने की क्रिया। २ हिलाने या झटका देने की क्रिया। ३ प्रेषण। ४ घबड़ाहट। बेचैनी।

विक्षोभ (पु०) १ मन की उद्विग्नता या चञ्चलता। क्षोभ। २ झगड़ा। टंटा।

विख }
विखु }
विख्य } (वि०) नासिका हीन। बिना नाक वाला। जिसके नाक न हो।
विख्र }
विग्र }

विखंडित } (व० कृ०) १ टूटा हुआ। विभाजित। २ बीच से चिरा या फटा हुआ।
विखण्डित }

विखानसः (पु०) वैखानस।

विखुरः (पु०) १ राक्षस। दैत्य। दानव। २ चोर।

विख्यात (व० कृ०) १ प्रसिद्ध। भली भाँति परिचित। २ नामक। ३ माना हुआ। मान्य। स्वीकृत।

विख्यातिः (स्त्री०) प्रसिद्धि। कीर्ति। ख्याति। नामवरी।

विगणनं (न०) १ गिनती। गणना। २ विचार। मनन। ३ ऋण की आदायगी या फारकती।

विगत (व० कृ०) १ प्रस्थानित। २ वियोजित। जुदा। ३ मृत। ४ रहित। हीन। ५ खोया हुआ। ७ धुँधला। अँधियारा।—आर्तवा, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके बच्चा होना बंद हो चुका हो अथवा जिसका रजोधर्म बंद हो गया हो।—कल्मष, (वि०) पापरहित। निष्पाप। शुद्ध।—भी, (वि०) निडर। निःशङ्क। बेखौफ।—लक्षण, (वि०) अभागा। अशुभ। अमङ्गलकारी।

विगंधकः (पु०) }
विगन्धकः (पु०) } इंगुदी या हिंगोट का पेड़।

विगमः (पु०) १ प्रस्थान। रवानगी। २

समाप्ति। अन्त। खातमा। ३ त्याग। ४ हानि। नाश। ५ मृत्यु।

विगरः (पु०) १ परमहंस। वह तपस्वी साधु जो नंगा रहे। ३ पर्वत। ४ वह मनुष्य जिसने भोजन करना त्याग दिया हो।

विगर्हणं (न०) } भर्त्सना। फटकार। धिक्कार।
विगर्हणा (स्त्री०) } डाँट डपट। गाली गलौज।

विगर्हित (व० कृ०) १ भर्त्सित। फटकारा हुआ। २ नफ़रत किया हुआ। घृणित। ३ वर्जित। ४ नीच। कमीना। ५ बुरा। शठ। दुष्ट।

विगलित (वि०) १ चूकर या टपक कर निकला हुआ। २ किया हुआ। जो अन्तर्धान होगया हो। ३ गिरा हुआ। टपका हुआ। ४ पिघला हुआ। घुला हुआ। ५ विसर्जित। ६ ढीला किया हुआ। खुला हुआ। ७ अस्तव्यस्त। बिखरा हुए (जैसे केश)

विगानं (न०) १ भर्त्सना। गालीगलौज। अपमान। बदनामी। २ खण्डनात्मक कथन। खण्डन।

विगाहः (पु०) स्नान। गोता।

विगीत (व० कृ०) १ भर्त्सित। गाली दिया हुआ। २ असगत। विरोधी।

विगीतिः (स्त्री०) १ भर्त्सना। गाली। २ खण्डन।

विगुण (वि०) १ निकम्मा। २ गुणविहीन। ३ बिना डोरी का।

विगूढ (व० कृ०) १ गुप्त। छिपा हुआ। २ भर्त्सित। फटकारा हुआ।

विगृहीत (व० कृ०) १ विभाजित। घुला हुआ। अलगाया हुआ। २ पकड़ा हुआ। ३ जिसके साथ मुठभेड़ हुई है।

विग्रहः (पु०) १ फैलाव। प्रसार। २ आकृति। शक्ल। रूप। ३ शरीर। ४ यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना। ५ झगड़ा। ६ विग्रह। समर। नीति के छः गुणों में से एक। ७ अनुग्रह का अभाव। ८ अंश। भाग।

विघटनं (न०) बरबादी। नाश।

विघटिका (स्त्री०) घड़ी का ६०वाँ अंश। २४ सैकण्ड।

विघटित (व० कृ०) १ वियोजित। अलग किया हुआ। २ विभाजित।

विघट्टनं } १ रगड़। पटकन। २ खोलना। वियोजित
विघट्टना } करना। ३ चोट।

विघनः (पु०) हथोड़ा। मुगरी।

विघसः (पु०) १ अधचबाया हुआ कौर। उच्छिष्ठ। २ भोज्य पदार्थ।

विघस (न०) मोम।

विघातः (पु०) नाश। स्थानान्तरकरण। रोक। बचाव। २ हिंसन। वध। ३ अड़चन। अटकाव। ४ प्रहार। ५ त्याग।

विघूर्णित (व० कृ०) चारों ओर घुमाया हुआ।

विघृष्ट (व० कृ०) १ अत्यन्त मला हुआ। २ पीड़ा। दर्द।

विघ्नः (पु०) अड़चन। रुकावट। बाधा। व्याघात। अन्तराय। खलल। —ईश,: —ईशानः, (पु०) गणेशजी। —नायकः, —नाशकः, —नाशनः, श्रीगणेशजी। —राजः, —विनायकः, —हारिन्, (पु०) गणेशजी।

विघ्नित (वि०) विघ्न डाला हुआ।

विङ्खः } (पु०) घोड़े का सुम।
विङ्क्षः }

विच् (धा० उ०) [वेवेक्ति, वविक्ते, विनक्ति] १ अलगाना। विभाजित करना। अलग करना। २ पहचानना। ३ वञ्चित करना। वर्जित करना।

विचकिलः (पु०) एक प्रकार की मल्लिका या चमेली। मदनक।

विचक्षण (वि०) १ पारदर्शी। दीर्घदर्शी। सतर्क। सावधान। चौकस। २ बुद्धिमान। चतुर। विद्वान। ३ निपुण। पटु। योग्य। काबिल।

विचक्षणः (पु०) बुद्धिमान आदमी। चतुर नर।

विचक्षुस् (वि०) १ अंधा। दृष्टिहीन। २ उदास। परेशान।

विचयः (पु०) १ तलाश। खोज। २ अनुसन्धान। तहकीकात।

विचयन (न०) खोज । तलाश ।

विचर्चिका (स्त्री०) खुजली । रोगविशेष जिसमें दाने निकलते और उनमें खुजली होती है । ब्योंची ।

विचर्चित (वि०) मालिश किया हुआ । लेप किया हुआ । मला हुआ ।

विचल (वि०) १ जो बराबर हिलता रहता हो । अस्थिर । २ अभिमानी । अहँकारी ।

विचलनं (न०) १ कम्पन । २ उत्पथगमन । अन्यथा चरण । ३ अस्थिरता । चञ्चलता । ४ अहङ्कार ।

विचारः (पु०) १ वह जो कुछ मन से सोचा अथवा सोच कर निश्चित किया जाय । मन में उठने वाली बात । भावना । खयाल । २ परीक्षा । जांच । अनुसन्धान । ३ राजा या न्यायकर्त्ता का वह कार्य जिसमें वादी और प्रतिवादी के अभियोग और उत्तर आदि सुनकर न्याय किया जाय । ४ निर्णय । फैसला । ५ निश्चय । सङ्कल्प । ६ चुनाव । ७ सन्देह । शङ्का । पशोपेश । हिचकिचाहट । ८ सतर्कता । सावधानता ।—ज्ञः (वि०) निर्णायक । न्यायकर्त्ता ।—भूः, (स्त्री०) १ न्यायालय । विशेष कर यमराज का न्यायालय या न्यायासन । शील, (वि०) विचारवान् ।—स्थलं, (न०) १ न्यायालय । अदालत । २ वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार होता हो ।

विचारकः (पु०) विचारकर्त्ता । न्यायकर्त्ता ।

विचारणं (न०) १ विचार करने की क्रिया या भाव । अनुसन्धान । २ सन्देह । पशोपेश हिचकिचाहट ।

विचारणा (स्त्री०) १ समालोचना । वादविवाद । अनुसन्धान । २ सन्देह । ३ मीमांसा दर्शन ।

विचारित (व० कृ०) १ जिस पर विचार किया जा चुका हो । परीक्षित । २ निर्णय किया हुआ । निश्चित किया हुआ ।

विचिः (पु० स्त्री०) } लहर । तरङ्ग ।
विचि (स्त्री०) }

विचिकित्सा (स्त्री०) १ सन्देह । शक । २ भूल । चूक ।

विचित (व० कृ०) तलाश किया हुआ । खोजा हुआ ।

विचितिः (स्त्री०) खोज । तलाश ।

विचित्र (वि०) १ रंग विरंगा । चित्तीदार । चितकवरा । भिन्न भिन्न प्रकार का । ३ चित्रित । ४ सुन्दर । मनोहर । ५ अद्भुत । विलक्षण ।—अंग, (वि०) १ चित्तीदार रंग वाला ।—अङ्गः, (पु०) १ मयूर । मोर । २ चीता ।—देह, (वि०) सुन्दर शरीर वाला ।—देहः (पु०) बादल । मेघ ।—वीर्यः, (पु०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम ।

विचित्रं (न०) १ चितकबरा रंग । २ आश्चर्य ।

विचित्रकः (पु०) भोजपत्र का पेड़ ।

विचिन्वत्कः (पु०) १ तलाशी । खोज । २ तहकीकात । अनुसन्धान । ३ चौर पुरुष ।

विचिर्ण (वि०) १ भ्रमणकारी । २ प्रवेशित ।

विचेतन (वि०) १ जीवरहित । मरा हुआ । बेहोश । २ अचेतन । निर्जीव ।

विचेतस् (वि०) १ विवेकहीन । मूढ़ । अज्ञ । २ विकल । परेशान । उदास ।

विचेष्टा (स्त्री०) उद्योग । प्रयत्न ।

विचेष्टित (व० कृ०) १ उद्योग किया हुआ । प्रयत्न किया हुआ । २ परीक्षित । जाँचा हुआ । अनुसन्धान किया हुआ । ३ बुरी तरह या मूर्खतापूर्वक किया हुआ ।

विचेष्टितं (न०) १ क्रिया । कर्म । २ उद्योग ३ चेष्टा । मुँह बनाना या हाथ पैर पटकना । ४ चैतन्य । इन्द्रियवृत्ति । क्रीड़ा । ५ कौशल ।

विच्छ् (धा० प०) [विच्छति, विच्छयति, विच्छयते] जाना । (उभय०) १ चमकाना । २ बोलना ।

विच्छंदः }
विच्छन्दः } (पु०) विशाल भवन, जिसमें कई
विच्छंदकः } खण्ड हों ।
विच्छन्दकः }

विच्छर्दकः (पु०) राजभवन ।

विच्छर्दनं (न०) वमन । उगाल ।

विच्छर्दित (व० कृ०) १ वमन किया हुआ। उगला हुआ। २ भूला हुआ। तिरस्कृत। ३ निर्बल किया हुआ। छोटा या कम किया हुआ।

विच्छाय (वि०) पोला। धुंधला।

विच्छायः (पु०) रत्न। जवाहर।

विच्छित्ति (स्त्री०) १ काटकर अलग या टुकड़े करना। २ विच्छेद। अलगाव। ३ कमी। त्रुटि। ३ अवसान। ५ शरीर पर रंग विरंगे लिखना बनाना। ६ सीमा। ७ हद। कविता में या तो वेष भूषा आदि में होने वाली लापरवाही या बेढंगापन।

विच्छिन्न (व० कृ०) १ काटकर अलग या टुकड़े करना। २ टूटा हुआ। पृथक् किया हुआ। विभाजित। पृथक् किया हुआ। जुदा। अलग। ३ वाधा डाला हुआ। रोका हुआ। ४ समाप्त किया हुआ। ५ रंगबिरंगा बना हुआ। ६ छिपा हुआ। ७ उबटन लगाया हुआ।

विच्छेदः (पु०) १ काटकर अलग या टुकड़े करने की क्रिया। २ तोड़ने की क्रिया। ३ क्रम का बीच से भङ्ग होना। सिलसिला टूटना। ४ स्थानान्तर करण। निषेध। ५ मतानैक्य। वाग्युद्ध। ६ ग्रन्थ का परिच्छेद या अध्याय। ७ बीच में पढ़ने वाला खाली स्थान। अवकाश।

विच्छेदनं (न०) काट कर या छेद कर अलगाने की क्रिया।

विच्युत (व० कृ०) १ गिरा हुआ। फिसला हुआ। २ स्थानच्युत। नीचे गिराया हुआ। ३ अलगाया हुआ।

विच्युतिः (स्त्री०) १ नीचे गिरना। वियोग। अलगाव। २ अधःपात। नाश ३ गर्भपात।

विज् (धा० उ०) [वेवेक्ति, वेविक्ते, विक्त] १ अलगाना। विभाजित करना। २ पहचानना।

विजन (वि०) अकेला। जनशून्य।

विजनं (न०) एकान्त स्थान। निराला स्थान।

विजननं (न०) उत्पत्ति। जन्म। जनन।

विजन्मन (वि० अथवा पु०) वर्णसङ्कर। ढोगला।

विजपलं (न०) कीचड़।

विजयः (पु०) १ जीत। जय। २ देवरथ। स्वर्गीय रथ। ३ अर्जुन का नाम। ४ यमराज। ५ बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष। ६ विष्णु के एक द्वारपाल का नाम। —अभ्युपायः, (पु०) जीत का उपाय। —कुञ्जर, (पु०) लड़ाई का हाथी। —छन्दः, (पु०) पाँच सौ लड़ियों का हार। —डिण्डिमः (पु०) लड़ाई का बड़ा ढोल। नगरं, (न०) एक नगर का नाम। —मर्दलः, (पु०) एक बड़ा ढोल —सिद्धिः, (स्त्री०) सफलता। जीत।

विजयन्तः (पु०) इन्द्र का नाम।

विजया (स्त्री०) १ दुर्गा। २ दुर्गा की एक सहचरी परिचारिका या योगिनी का नाम। ३ एक विद्या विशेष जिसे विश्वामित्र ने श्रीरामचन्द्र जी को सिखाया था। ४ भाँग। ५ विजयोत्सव। ६ हर्रे। हरीतकी। —उत्सवः, (पु०) एक उत्सव, जो आश्विन शुक्ला १० मी को मनाया जाता है। इसीको दुर्गोत्सव भी कहते हैं। —दशमीः, (पु०) आश्विन शुक्ला १० मी।

विजयिन् (पु०) जीतने वाला। फतहयाब। विजयी।

विजरं (न०) वृक्ष का तना।

विजल्पः (पु०) १ सच, झूठ और तरह तरह का ऊट पटाँग वार्तालाप। बकवाद। २ वार्तालाप। द्वेषपूर्ण या निन्दात्मक वार्तालाप।

विजल्पित (व० कृ०) १ कहा हुआ। जिसके विषय में वार्तालाप हो चुका हो या किया गया हो। २ बकबक किया हुआ।

विजात (व० कृ०) १ वर्णसङ्कर। ढोगला। २ हरामजादा। २ उत्पन्न। पैदा किया हुआ। ३ बदला हुआ। परिवर्तित।

विजाता (स्त्री०) १ वह लड़की जिसके हाल में सन्तान हुई हो। माता। जननी। २ जारज लड़की। ढोगदी।

विजाति (स्त्री०) १ भिन्न या दूसरी जाति का। २ दूसरी किस्म या प्रकार का।

विजातीय (वि०) १ दूसरी जाति का। असमान। असदृश। २ वर्णसङ्कर। दोगला।

विजिगीषा (स्त्री०) १ विजय प्राप्त करने की इच्छा। २ सब से आगे बढ़ जाने की अभिलाषा।

विजिगीषु (वि०) १ विजयाभिलाषी। २ ईर्ष्यालु। इच्छावान।

विजिगीषुः (पु०) १ योद्धा। भट। २ प्रतिस्पर्धी। वैरी। प्रतिद्वन्द्वी।

विजिज्ञासा (स्त्री०) स्पष्ट या साफ जानने का अभिलाषी।

विजित (व० कृ०) जीता हुआ। जिसने परास्त किया हो।—आत्मन्, (वि०) जितेन्द्रिय।—इन्द्रिय, (वि०) अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लेने वाला।

विजितिः (स्त्री०) जीत। विजय।

विजिनः (पु०) } चटनी।
विजिलः (पु०) }
विज्जिनं (न०) }
विजिलं (न०) }

विजिह्म (वि०) १ टेढा मेढ़ा। मुड़ा हुआ। घूमा हुआ। झुका हुआ। २ बेईमान।

विजुलः (पु०) शाल्मलि वृक्ष।

विजृंभणं } (न०) १ जंभाई। २ प्रस्फुटन। खिलना। कली लगना। ३ खोलना। दिखलाना। प्रकट करना। ४ फैलाव। ५ आमोद प्रमोद। क्रीडा। विहार।
विजृम्भणम् }

विजृंभित } (व० कृ०) १ मुँह चीरे हुए। जमुहाई लेता हुआ। २ खुला हुआ। खिला हुआ। फैला हुआ। ३ प्रादुर्भूत। प्रदर्शित। ४ प्रत्यक्ष हुआ। ५ खेलता हुआ।
विजृम्भित् }

विजृंभितं } (न०) १ क्रीडा। आमोद प्रमोद। २ इच्छा। अभिलाषा। ३ प्रदर्शन। ४ क्रिया। कर्म। आचरण।
विजृम्भितम् }

विज्जनं } (न०) १ एक प्रकार की चटनी। २ बाण। तीर।
विज्जलं }

विज्जुलं (न०) दालचीनी।

विज्ञ (वि०) १ जानकार। जानने वाला। २ चतुर। पटु। निपुण।

विज्ञः (पु०) विद्वान आदमी।

विज्ञप्त (व० कृ०) प्रार्थित। सम्मान पूर्वक निवेदन किया हुआ।

विज्ञप्तिः (स्त्री०) १ विनय। प्रार्थना। विनती। २ घोषणा।

विज्ञात (व० कृ०) १ जाना हुआ। समझा हुआ। पहिचाना हुआ। २ प्रसिद्ध। प्रख्यात। मशहूर।

विज्ञानं (न०) १ ज्ञान। जानकारी। बुद्धि। प्रतिभा २ विवेक। ३ निपुणता। पटुता। ४ लौकिक ज्ञान। ५ काम धन्धा। व्यवसाय। ६ संगीत।—ईश्वरः, (पु०) याज्ञवल्क्य स्मृति के मिताक्षरा टीका के बनाने वाले विज्ञानेश्वर।—पादः, (पु०) व्यास जी का नाम।—मातृकः, (पु०) बुधदेव का नाम।—वादः, (पु०) वह वाद या सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और आत्मा का ऐक्य प्रतिपादित हो। बुद्धदेव द्वारा प्रचारित सिद्धान्त विशेष।

विज्ञानिक (वि०) बुद्धिमान। पण्डित।

विज्ञापकः (पु०) १ इत्तिला देने वाला। मुख़बर। २ शिक्षक। उपदेशक।

विज्ञापनं (न०) } १ विनय। प्रार्थना। नम्र निवेदन। २ विज्ञप्ति। आवेदन। ३ निर्देश।
विज्ञापना (स्त्री०) }

विज्ञापित (व० कृ०) १ सम्मान पूर्वक कहा हुआ या सूचित किया हुआ। २ प्रार्थित। ३ सूचित। ४ आदिष्ट।

विज्ञाप्ति देखो विज्ञप्ति।

विज्ञाप्यं (न०) प्रार्थना।

विज्वर (पु०) ज्वर से मुक्त। चिन्ता या कष्ट से मुक्त।

विझामरं } (न०) नेत्र का सफेद भाग।
विझामरम् }

विंझोलि }
विञ्झोलि }
विंझोली } (पु०) पंक्ति। कतार।
विञ्झोली }

विंट्, विराट् (धा० प०) [वेटति] १ नाद करना। ध्वनि करना। शब्द करना। २ अकोसना। गाली गलौज करना।

विटः (पु०) १ जार। २ कामुक। लंपट। ३ साहित्य में एक प्रकार का नाटक। ४ छली। कपटी। धूर्त। ५ वह लौंडा जो मैथुन करवावे। ६ चूहा। ७ खदिर वृक्ष। ८ नारंगी का पेड़। ९ पल्लव युक्त शाखा या डाली।—माक्षिकं, (न०) सोनामक्खी नामक खनिज पदार्थ। - लवणं, (न०) साँचर नमक।

विटंकः, विटङ्कः (पु०) १ कबूतर का दरबा। काबुक। कबूतर की अड्डी। २ सब से ऊंचा सिरा या स्थान।

विटंकक, विटङ्कक (वि०) देखो विटंक।

विटंकित, विटङ्कित (वि०) चिन्हित। छापा हुआ।

विटपः (पु०) १ शाखा। डाल। गुच्छा। वृक्ष या लता की नयी शाखा। २ छतनार पेड़। ३ भाड़ी। ४ कोंपल। अङ्कुर। ५ सघन वृक्षों का झुरमुट। ६ प्रसारण। व्याप्ति। ७ अण्डकोष का मध्यस्थ परदा।

विटपिन् (पु०) १ वृक्ष। पेड़। २ वटवृक्ष।—मृगः, (पु०) बंदर। लंगूर।

विट्ठलः, विठ्लः १ पंढरपुर में भगवान् विष्णु की मूर्ति का नाम।

विंठक (वि०), विराठक (वि०) दुष्ट। खराब। नीच। कमीना।

विठरः (पु०) बृहस्पति।

विड् (धा० पर०) [वेडति] १ अकोसना। शाप देना। गरियाना। २ ज़ोर से चिल्लाना।

विडं (न०) बनावटी निमक।

विडंगं (न०), विडङ्गम् (न०), विडंगः (पु०), विडङ्गः (पु०) वायविडंग।

विडंबः, विडम्बः (पु०) १ नक़ल। २ कष्ट। पीड़ा। सन्ताप।

विडंबनं (न०), विडम्बनम् (न०), विडंबना (स्त्री०), विडम्बना (स्त्री०) १ किसी के रंगढंग या चाल ढाल आदि की ज्यों की त्यों नक़ल उतारना। २ अनुकरण करके चिढ़ाने या अपमान करने वाला। ३ वेश बदलने की क्रिया। ४ छल। धोखा। ५ चिढ़ाना। ६ पीडन। सन्तापन। ७ हताश करण। ८ मज़ाक। उपहास।

विडंबित, विडम्बित (व० कृ०) १ नकल उतारा हुआ। नकल किया हुआ। २हँसी उड़ाया हुआ। जीट उड़ाया हुआ। ३ छला हुआ। ४ चिढ़ाया हुआ। ५ हताश किया हुआ। ६ नीच। धनहीन। ग़रीब।

विडारकः (पु०) बिल्ली।

विडाल, विडालक (पु०) देखो बिडाल, बिडालक।

विडीनं (न०) पक्षियों का उड़ान का एक प्रकार।

विडुलः (पु०) सारस विशेष।

विडौजस्, विडौजम् (पु०) इन्द्र का नाम।

वितसः (पु०) १ पिंजड़ा। २ रस्सी। जंज़ीर। बेड़ी जिनके द्वारा वनपशु या पक्षी क़ैद किये जाँय।

वितंडः, वितण्डः (पु०) १ हाथी। २ ताला या चटखनी।

वितंडा, वितण्डा (स्त्री०) १ दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत का स्थापन। २ व्यर्थ का झगड़ा या कहासुनी। ३ कलछी। दर्वी। ४ शिलारस।

वितत (व० कृ०) १ फैला हुआ। पसारा हुआ। आगे बढ़ाया हुआ। २ विस्तृत। लंबा। चौड़ा। ३ सम्पन्न किया हुआ। पूर्ण किया हुआ। ४ ढका हुआ। ५ व्याप्त।—धन्वन्, (वि०) कमान को ताने हुए।

विततं (न०) वीणा अथवा उसी प्रकार का तार वाला कोई बाजा।

विततिः (स्त्री०) १ विस्तार। फैलाव। २ समुदाय। भप्पा। गुच्छा। ३ पंक्ति। कतार।

वितथ (वि०) १ झूठ। मिथ्या।

वितथ्य (वि०) झूठ ।

वितंद्रुः } (स्त्री०) पंजाब की एक नदी का नाम ।
वितन्द्रु. }

वितंतुः } (पु०) १ अच्छा घोड़ा । (स्त्री०)
वितन्तुः } विधवा स्त्री ।

वितरणं (न०) १ पार होना । २ दान । ३ अर्पण । समर्पण ।

वितर्कः (पु०) १ एक तर्क के बाद होने वाला दूसरा तर्क । २ अनुमान । कल्पना । विश्वास । ३ विचार । ४ सन्देह । शक । ५ विचार । विवाद ।

वितर्कणं (न०) १ वादविवाद । वहस । २ अनुमान । कल्पना । ३ सन्देह । ४ वादविवाद ।

वितर्दिः }
वितर्दी } (स्त्री०) ० वेदी । मंच । २ छज्जा । गौख । वरंडा ।
वितर्दिका }

वितर्द्धिः }
वितर्द्धीः } (न०) देखो वितर्दिः, आदि ।
वितर्द्धिका }

वितलं (न०) पुराणानुसार सात पातालों में से एक ।

वितस्ता (स्त्री०) पंजाब की एक नदी का नाम । इसका आधुनिक नाम झेलम नदी है ।

वितस्तिः (पु०) १२ अंगुल का परिमाण । एक वालिश्त । एक बित्ता ।

वितान (वि०) १ रीता । खाली । २ निस्सार । सार हीन । ३ उदास । ग़मगीन । ४ कुंद । मूढ़ । ५ शठ । त्यक्त । पतित ।

वितानं (न०) अवकाश । विश्राम का समय ।

वितानं (पु०) } १ फैलाव । विस्तार । २ चँदोवा ।
वितानः (न०) } शामियाना । चन्द्रातप । चाँदनी । ३ गद्दा । ४ समूह । संग्रह । ५ यज्ञ । ६ यज्ञीय कुण्ड या वेदी । ७ अवसर । मौक़ा ।

वितानकं (पु०) } १ विस्तार । २ ढेर समूह । ३
वितानकः(न०) } चाँदनी । चन्द्रातप । शामियाना । ४ धनिया । ५ मादनामक वृक्ष ।

वितीर्ण (व० कृ०) १ गुज़रा हुआ । २ दिया हुआ । प्रदत्त । ३ नीचे गया हुआ । उतरा हुआ । ४ लेजाया हुआ । सवारी द्वारा पहुँचाया हुआ । ५ वशवर्ती किया हुआ ।

वितुन्नं (न०) १ शिरियारी या सुसना नामक साग । २ शैवाल । सिवार ।

वितुन्नकं (न०) १ धनिया । २ तूतिया ।

वितुन्नकः (पु०) तामलकी नाम का वृक्ष ।

वितुष्ट (व० कृ०) असन्तुष्ट । नाराज ।

वितृष्ण (वि०) सन्तुष्ट । कामनाशून्य ।

वित्त् (धा० उ०) [वित्तयति—वित्तयते - वित्तापयति—वित्तापयते] दे डालना । दान कर देना ।

वित्त (व० कृ०) १ पाया हुआ । मिला हुआ । खोजा हुआ । २ प्राप्त । उपलब्ध । ३ परीचित । अनुसन्धान किया हुआ । ४ प्रसिद्ध प्रख्यात ।—ईशः, (पु०) कुवेर । – दः, (पु०) धनदाता । दानी । उपकारी ।—मात्रा, (स्त्री०) सम्पत्ति । वित्तं, (न०) धन । सम्पति । शक्ति । ताकत ।

वित्तवत् (वि०) धनी । धनवान ।

वित्तिः (स्त्री०) १ ज्ञान । २ विवेक । विचार । ३ उपलब्धि । सम्भावना ।

वित्रासः (पु०) भय । डर ।

वित्सनः (पु०) वैल । साँड़ ।

विथ् (धा० आ०) [वेथते] माँगना । याचना करना ।

विथुरः (पु०) १ दैत्य । दानव । २ चोर ।

विद् (धा० प०) [वेत्ति, वेद, विदित] १ जानना । समझना । सीखना । पता लगाना । खोज निकालना । २ अनुभव करना । ३ विचार करना ।

विद् (वि०) जानने वाला । परिचित । (पु०) बुधग्रह । २ बुद्धिमान्जन । पण्डितजन । (स्त्री०) १ ज्ञान । जानकारी । २ समझदारी । प्रतिभा ।

विदः (पु०) १ पण्डित जन । २ बुधग्रह ।—दा, (स्त्री०) १ ज्ञान । विद्या । २ समझदारी ।

विदंशः (पु०) ऐसा भोजन जो प्यास लगावे ।

विदग्ध (व० कृ०) १ जला हुआ । आग से भस्म किया

हुआ। २ पकाया हुआ। ३ पचाया हुआ। हज़म किया हुआ। ४ नष्ट किया हुआ। सड़ा हुआ। ५ चतुर। चालाक। ६ मुतफन्नी। चालाक। ७ अनपचा हुआ।

विदग्धः (पु०) १ पण्डित। विद्वान्। २ रसिक जन। लंपट जन।

विदग्धा (स्त्री०) चालाक औरत। नायिका विशेष।

विदथः (पु०) १ विद्वान् जन। पण्डित जन। २ साधु। संन्यासी।

विदरः (पु०) फाड़ना। विदीर्ण करना।

विदरं (न०) कंकारी। विश्वसारक।

विदर्भः (पु०) १ विदर्भ देश का राजा। २ रेगिस्तान। —जा,—तनया—राजतनया, (स्त्री०) —सुभ्रूः, (स्त्री०) दमयन्ती के नामान्तर।

विदर्भा (पु० बहुवचन०) १ वराड़ा प्रान्त का प्राचीन नाम। २ वरार प्रान्त निवासी।

विदल (वि०) १ चिरा हुआ। २ खिला हुआ। विकसित।

विदलं (न०) १ बाँस की खपाचियों की बनी टोकरी। २ अनार की छाल। ३ डाली। टहनी। ४ किसी वस्तु के टुकड़े।

विदलः (पु०) १ चपाती। २ चीरन। फाड़न। ३ दलना। दरना। जैसे चना या मूँग, उर्द आदि का। ४ पहाड़ी आबनूस।

विदलनं (न०) दो टुकड़े करना।

विदारः (पु०) चीरना। विदीर्ण करना।

विदारकः (पु०) चीरने वाला। फाड़ने वाला। २ नदी के बीच की पहाड़ी या वृक्ष। ३पानी निकालने को नदी गर्भ में खोदा हुआ कूप जैसा गढ़ा।

विदारणः (पु०) १ नदी के बीच में उगा हुआ वृक्ष अथवा चट्टान। २ युद्ध। संग्राम। ३ कर्णिकार नामक पेड़।

विदारणं (न०) १ बीच में से अलग करके दो या अधिक टुकड़े करना। फाड़ना। २ सताना। ३ मार डालना। हत्या करना।

विदारणा (स्त्री०) युद्ध। लड़ाई।

विदारुः (पु०) छपकली। विस्तुइया।

विदित (व० कृ०) १ जाना हुआ। अवगत। ज्ञात। २ सूचित किया हुआ। ३ प्रसिद्ध। प्रख्यात। ४ प्रतिज्ञात। इकरार किया हुआ।

विदितः (पु०) विद्वान पुरुष। पण्डित।

विदितं (न०) ज्ञान। जानकारी।

विदिश् (स्त्री०) दो दिशाओं के बीच का कोना।

विदिशा (स्त्री०) १ वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २ मालवा की एक नदी का नाम।

विदीर्ण (व० कृ०) १ बीच से फाड़ा या विदारण किया हुआ। २ खिला हुआ। फैला हुआ।

विदुः (पु०) हाथी के मस्तक के बीच का भाग।

विदुर (वि०) चतुर। प्रतिभावान्।

विदुरः (पु०) १ विद्वज्जन। २ चालाक या मुतफन्नी आदमी। ३ पाण्डु के छोटे भाई का नाम।

विदुलः (पु०) १ बेत। जलबेत। २ बोल या गन्धरस नामक गन्धद्रव्य।

विदून (व० कृ०) सन्तप्त। सताया हुआ। पीड़ित किया हुआ।

विदूर (वि०) जो बहुत दूर हो।

विदूरः (पु०) एक पर्वत का नाम जिससे वैदूर्य मणि निकलती है।

विदूरजं (न०) वैदूर्य मणि।

विदूषक (स्त्री०) [विदूषकी] १ भ्रष्ट करने वाला। बिगाड़ने वाला। खराब करने वाला। २ गाली देने वाला। ३ हाज़िर जवाब। मसखरा। भाँड़।

विदूषकः (पु०) १ हँसोड़ा। मसखरा। २ विशेष कर राजाओं अथवा बड़े आदमियों के पास उनके मनोविनोद के लिये रहने वाला मसख़रा। ३ वह जो बहुत अधिक विषयी हो। कामुक।

विदूषणं (न०) भ्रष्टता। बिगाड़। २ गाली। कुवाच्य। ऐब लगाना।

विद्वतिः (पु०) चर्बी।

विदेशः (पु०) अन्यदेश।

विदेशजः (पु०) विदेश या अन्यदेश का बना हुआ या उत्पन्न हुआ ।

विदेशीय (वि०) अन्यदेश का ।

विदेहः (पु०) }
विदेहाः (स्त्री०) } मिथिला प्रान्त ।

विदेहाः (पु० बहु०) १ मिथिला देश का प्राचीन नाम । २ इस देश के अधिवासी ।

विद्ध (व० कृ०) १ बीच में से छेद किया हुआ । २ घायल किया हुआ । छुरी या कटार से घायल किया हुआ । २ पीटा हुआ । बेतों से पीटा हुआ । कोड़ा से मारा हुआ । ३ फैंका हुआ । ४ वह जिसमें बाधा पड़ी हो या डाली गयी हो । ५ समान । तुल्य । बराबर ।—कर्ण, (वि०) वह जिसके कान छिदे हों ।

विद्धं (न०) घाव ।

विद्या (स्त्री०) १ ज्ञान । विद्वत्ता । विज्ञान । इल्म । [परा और अपरा विद्या के अतिरिक्त किसी किसी शास्त्रकार के अनुसार विद्या के चार प्रकार माने गये हैं । यथा

"आन्वीक्षकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती ।"

मनु ने इनमें पाँचवीं आत्मविद्या और जोड़ी है ।] २ यथार्थ या सत्यज्ञान । आत्मविद्या । ३ जादू । टोना । ४ दुर्गा देवी । ५ ऐन्द्रजालिक विद्या या निपुणता ।—अनुपालिन्—अनुसेविन्, (वि०) ज्ञानोपार्जन करने वाला ।—अभ्यासः, (पु०) —अर्जनं, (न०)—आगमः, (पु०) विद्योपार्जन । ज्ञानसञ्चय । अध्ययन ।—अर्थः, (पु०)—अर्थिन्, (पु०) विद्यार्थी । छात्र । —आलयः, (पु) स्कूल । विद्यामन्दिर ।—करः, (पु०) पण्डित । विद्वान् ।—चण,—चञ्चु, (वि०) वह जो अपनी विद्वत्ता के लिये प्रसिद्ध हो ।—धनं, (न०) विद्या रूपी धन ।—धरः, (पु०)—धरी, (स्त्री०) देवयोनि विशेष ।—व्रतस्नातकः, (पु०) मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के निकट रह कर वेद और विद्याव्रत दोनो समाप्त कर अपने घर लौटे ।

विद्युत् (स्त्री०) १ बिजली । २ वज्र ।—उन्मेषः, (पु०) बिजली की कौंध या कौंधा ।—जिह्वः, (पु०) १ श्रीमद्रामायण के अनुसार रावण के पक्ष के एक राक्षस का नाम, जो शूर्पणखा का पति था । २ एक यक्ष का नाम । ३ एक जाति विशेष के राक्षस ।—ज्वाला, (स्त्री०)—द्योतः, (पु०) बिजली का कौंधा या दीप्ति ।—पातः, (पु०) बिजली का गिरना । वज्रपात ।—लता, (= विद्युल्लता) (स्त्री०)—लेखा, (= विद्युल्लेखा) (स्त्री०) बिजली की धारी या रेखा ।

विद्युत्वत् (वि०) वह जिसमें बिजली हो । (पु०) बादल ।

विद्योतन (वि०) [स्त्री०—विद्योतनी] १ प्रकाश करने वाला । २ व्याख्याकार ।

विद्रः (पु०) १ विदारण । २ छिद्र । छेद ।

विद्रधिः (पु०) फोड़ा ।

विद्रवः (पु०) १ पलायन । भगदड़ । २ भय । डर । ३ बहाव । ४ पिघलन ।

विद्राण (वि०) १ नींद से जागा हुआ । जागृत ।

विद्रावणं (न०) १ खदेड़ना । भगाना । हराना । २ गलाना । तरल करना ।

विद्रुमः (पु०) १ मूंगे का वृक्ष । मुक्ताफल नामक वृक्ष । २ मूंगा । प्रवाल । ३ कोंपल । वृक्ष का नया पत्ता या अङ्कुर ।—लता, (स्त्री०) या —लतिका (स्त्री०) १ नलिका या नली नामक गन्धद्रव्य । २ मूंगा ।

विद्वस् (वि०) [कर्त्ता, एकवचन, (पु०) विद्वान्
" (स्त्री०) विदुषी
" (न०) विद्वत्]

१ ज्ञाता । जानकार । २ पण्डित । विद्वान् । (पु०) विद्वज्जन ।—कल्प, (= विद्वत्कल्प)—देशीय, (= विद्वद्देशीय)—देश्य, (= विद्वद्देश्य) (वि०) थोड़ा या कम विद्वान् ।—जनः, (पु०) (= विद्वज्जनः) विद्वान् । पण्डित ।

विद्विषः (पु०) }
विद्विषं (न०) } शत्रु । दुश्मन ।

विद्विष्ट (व० कृ०) घृणित । नापसंद ।

विद्वेषः (पु०) १ शत्रुता । घृणा । निन्दा । २ तिरस्कार ।

विद्वेषणः (पु०) घृणा करने वाला । शत्रु ।

विद्वेषणी (स्त्री०) विद्वेष करने वाली स्त्री ।

विद्वेषणं (न०) १ घृणोत्पादक । विद्वेषकारक । २ शत्रुता । घृणा ।

विद्वेषिन् } (वि०) विद्वेषी । घृणा करने वाला ।
विद्विष् } (पु०) शत्रु ।

विध् (धा० प०) [विधति] १ चुभोना । घुसेड़ना । वेधना । काटना । २ सम्मान करना । पूजन करना । ३ शासन करना । हुकूमत करना ।

विधः (पु०) १ प्रकार । किस्म । जाति । २ ढंग । रूप । ३ गुना यथा अष्टविध अठगुना । ४ हाथी का खाद्यपदार्थ । ५ समृद्धि । ६ वेध ।

विधवनं (न०) १ कंपन । हिलन । २ थरथरी । कंपकपी ।

विधव्यं (न०) कंपकपी ।

विधवा (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो । पतिहीन स्त्री । राँड़ । बेवा ।

विधस (पु०) सर्वसृष्टिउत्पादक ब्रह्म ।

विधा (स्त्री०) १ ढंग । तौर । तरीका । रूप । २ किस्म । जाति । ३ धनदौलत । ४ हाथी या घोड़े का चारा । ५ प्रवेशन । वेधन । ६ भाड़ा । मज़दूरी ।

विधातृ (पु०) १ बनानेवाला । सृष्टिकर्त्ता । २ ब्रह्म । ३ देने वाला । दाता । ४ प्रारब्ध । भाग्य । किस्मत । ५ विश्वकर्मा । ६ कामदेव । ७ मदिरा । शराब ।—आयुस्, (पु०) १ धूप । सूर्य का प्रकाश । २ सूरजमुखी का फूल ।—भूः, (पु०) नारद जी की उपाधि ।

विधानं (न०) १ किसी कार्य का आयोजन । २ सम्पादन क्रम । विन्यास । अनुष्ठान । ३ सृष्टि । ४ निर्देशकरण । ५ आज्ञा । आदेश । धर्मशास्त्र की आज्ञा । ६ ढंग । तौर । तरीका । ७ तरकीब । उपाय । ८ हाथियों को नशे में लाने के लिये दिया गया खाद्यपदार्थ विशेष । ९ धन । सम्पत्ति । १० कष्ट । पीड़ा । सन्ताप । ११ विद्वेषण ।—ज्ञः, ज्ञ., (पु०) विद्वज्जन । पण्डित जी ।

विधानकं (न०) कष्ट । पीड़ा । सन्ताप ।

विधायक (वि०) [स्त्री० —विधायिका] १ वह कार्य जो सम्पादन क्रम में हो । २ अनुष्ठित । सम्पादित । ३ रचा हुआ । ४ आज्ञप्त । निर्दिष्ट । ५ न्यस्त । सौंपा हुआ ।

विधिः (पु०) १ कार्य करने की रीति । २ कार्यक्रम । प्रणाली । ढंग । नियम । कायदा । ३ आज्ञा । ४ धर्मशास्त्र की आज्ञा या आदेश । ५ धार्मिक विधान या संस्कार । ६ आचरण । व्यवहार । ७ सृष्टि । रचना । ८ सृष्टिकर्त्ता । ९ भाग्य (प्रारब्ध) १० हाथी का चारा । ११ समय । १२ वैद्य । हकीम । चिकित्सक । १३ विष्णु का नामान्तर ।—ज्ञः, (पु०) विधि विधान जानने वाला ब्राह्मण ।—दृष्ट,—विहित, (वि०) नियमानुसार । शास्त्रानुसार ।—द्वैधं (न०) नियमों का विभिन्नत्व । —पूर्वकं, (अव्यय०), नियम या विधि के अनुसार ।—प्रयोगः, (पु०) नियम का विनियोग । —योगः, (पु०) भाग या किस्मत की खूबी ।—वधूः, (स्त्री०) सरस्वती देवी ।—हीन, (वि०) विधिरहित । शास्त्रविरुद्ध । अंटसंट ।

विधित्सा (स्त्री०) १ कार्य करने की अभिलाषा । २ युक्ति । विधि । विधान ।

विधित्सित (वि०) वह कार्य जो करना है ।

विधित्सितं (न०) इरादा । विचार ।

विधुः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ राक्षस । दैत्य । ४ प्रायश्चित्तात्मक कर्म । पापमोचन । पापक्षालन । ५ विष्णु का नामान्तर ६ ब्रह्मा ।—पञ्जरः, (पिञ्जरः भी होता है) खड्ग । खाँड़ा ।—प्रियाः, (स्त्री०) चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी ।

विधुतिः (स्त्री०) कँपन । थरथराहट ।

विधुननं (न०) कंपन । थरथरहाट ।

विधुंतुदः } (पु०) राहु का नाम ।
विधुन्तुदः }

विधुर (वि०) १ पीड़ित । दुःखी । सन्तप्त । दुःख से विह्वल । २ पति या पत्नी के वियोगजन्य दुःख से विकल । विरहव्यथा से विकल । ३ रहित । हीन । मोहताज । ४ विरोधी । शत्रु ।

विधुरः (पु०) रंडुआ । वह जिसकी पत्नी मर गयी हो ।

विधुरं (न०) १ भय । डर । चिन्ता । विरह । वियोग । जुदाई ।

विधुरा (स्त्री०) चीनी और मसालों से मिश्रित दही ।

विधुवनं (न०) कंपन । थरथराहट ।

विधूत (व० कृ०) १ कंपित । काँपता हुआ । लहराता हुआ । २ हिलता हुआ । डोलता हुआ । ३ हटाया हुआ । अलग किया हुआ । स्थानान्तरित किया हुआ । ४ चञ्चल । अदृढ़ । ५ त्यक्त । त्यागा हुआ ।

विधूतं (न०) घृणा । अरुचि । नफ़रत ।

विधूतिः (स्त्री०) }
विधूतनं (न०) } कंपन । थरथराहट ।

विधृत (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ । ग्रहण किया हुआ । २ विभाजित । पृथक किया हुआ । ३ अधिकृत । ४ दमन किया हुआ । रोका हुआ । ५ समर्थित । रक्षित ।

विधृतं (न०) आज्ञा की अवहेलना । २ असन्तोष । असन्तुष्टि ।

विधेय (स० क० कृ०) १ जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो । जिसका करना उचित हो । विधान के योग्य । कर्तव्य । २ जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय । ३ अधीन । वचन या आज्ञा के वशीभूत । आज्ञापालक । विनम्र । ५ (व्याकरण में) वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा जाय ।—अविमर्शः, (विधेयाविमर्शः) (पु०) साहित्य में एक वाक्यदोष; जो विधेय अंश को अप्रधान अंश प्राप्त होने पर होता है । कहीं जाने वाली मुख्य बात का वाक्यरचना के बीच में दब जाना ।—आत्मन्, (पु०) विष्णु भगवान् का नामान्तर ।—ज्ञ, (वि०) अपने कर्त्तव्य को जानने वाला ।—पदं, (न०) वह कर्म जो पूरा किया जाने वाला हो । विधेय ।

विधेयं (न०) कर्त्तव्य ।

विधेयः (पु०) अनुचर । नौकर ।

विध्वंसः (पु०) १ नाश । बरबादी । २ वैर । घृणा । नफ़रत । ३ तिरस्कार । अनादर ।

विध्वंसिन् (वि०) जो नष्ट होता हो । जो टुकड़े टुकड़े हो कर गिर रहा हो ।

विध्वस्त (व० कृ०) १ नष्ट । बरबाद । २ बिखरा हुआ । ३ धुंधला । अन्धकारमय । ४ ग्रस्त । ग्रसा हुआ ।

विनत (व० कृ०) १ झुका हुआ । नवा हुआ । नीचे की ओर प्रवृत्त । २ टेढ़ा पड़ा हुआ । वक्र । ३ नीचे धसा हुआ । दबा हुआ । विनीत । नम्र ।

विनता (स्त्री०) १ कश्यप की एक पत्नी और गरुड़ तथा अरुण की जननी का नाम । २ एक प्रकार की टोकरी वा डलिया ।—नन्दः,—सुतः,—सूनुः, (पु०) गरुड़ या अरुण के नामान्तर ।

विनतिः (स्त्री०) १ झुकन । नवन । २ नम्रता । विनय । ३ प्रार्थना ।

विनदः (पु०) १ ध्वनि । नाद । कोलाहल । २ वृक्ष विशेष ।

विनमनं (न०) झुकन । नवन ।

विनम्र (वि०) १ झुका हुआ । नवा हुआ । २ दबा हुआ । डूबा हुआ । ३ विनयी । नम्र ।

विनम्रकं (न०) तगर वृक्ष का फूल ।

विनय (वि०) १ पटका हुआ । फैंका हुआ । २ गुप्त । गोपनीय । ३ असदाचरणी ।

विनयः (पु०) १ नम्रता । प्रणति । आजिज़ी । २ शिक्षा । ३ शील । भव्यता । शिष्टता । ३ व्यवहार में अधीनता का भाव । शिष्टोचित व्यवहार । ४ विनम्रता । ५ भद्रता । नम्रता । ६ आचरण । ७ स्थानान्तरकरण । ८ जितेन्द्रिय पुरुष । ९ व्योपारी । सौदागर ।

विनयनं (न०) १ हटाना । ले जाना । २ शिक्षण । नियमन ।

विनशनं (न०) नाश । बरबादी ।

विनशनः (पु०) रेगिस्तान के उस स्थान का नाम जहाँ सरस्वती नदी गुप्त हो जाती है ।

विनष्ट (व० कृ०) १ नष्ट । बरबाद । २ खोया हुआ । अदृश्य हुआ । ३ भ्रष्ट । बिगड़ा हुआ ।

विनस (वि०) [स्त्री०— विनसा, विनसी] नासिकाहीन ।

विना (अव्यया० १ बगैर । अभाव में । न रहने की अवस्था में । २ सिवा । अतिरिक्त । छोड़कर ।

विनाडिः } विनाडिका } (स्त्री०) पल । एक घड़ी का ६०वाँ भाग ।

विनायकः (पु०) १ विघ्नविनाशक । । २ गणेश जी । ३ बौद्ध आचार्य विशेष । ४ गरुड़ । ५ विघ्न । बाधा । रोकटोक ।

विनाशः (पु०) १ नाश । बरबादी । २ स्थानान्तरकरण ।—धर्मन्,—धर्मिन्, (वि०) नाशवान् ।

विनाशनं (न०) नाश । बरबादी ।

विनाशनः (पु०) नाशक । नाश करने वाला । बरबाद करने वाला ।

विनाहः (पु०) कुए के मुख का ढकना ।

विनिक्षेपः (पु०) फैंकना । पटकना ।

विनिग्रहः (पु०) १ संयम । दमन । २ परस्पर विरोध ।

विनिद्र (वि०) १ निद्रारहित । जागा हुआ । २ खिला हुआ । फूला हुआ ।

विनिपातः (पु०) १ अधःपात । पात । २ महासङ्कट । नाश । बरबादी । मृत्यु । ४ नरक । ५ धरना । ६ कष्ट । पीड़ा । ७ अपमान । निरादर ।

विनिमयः (पु०) १ अदलबदल । २ एक वस्तु ले कर बदले में दूसरी वस्तु देने का व्यवहार । २ बन्धक । गिरवी ।

विनिमेषः (पु०) (आँख के) आँख के झपकने की क्रिया ।

विनियत (व० कृ०) निमंत्रित । संमत ।

विनियमः (पु०) नियंत्रण । सयमन । दमन ।

विनियुक्त (व० कृ०) १ वियोजित । बिछुरा हुआ । अलग किया हुआ । २ विनियोग किया हुआ । व्यवहृत । ३ संयुक्त । लगा हुआ । नियुक्त । ४ आज्ञा दिया हुआ ।

विनियोगः (पु०) १ बिछोह । बिलगाव । वियोग । २ त्याग । ३ उपयोग । ४ किसी कार्य को करने के लिये नियुक्ति भारार्पण । ५ अड़चन । रुकावट ।

विनिर्जयः (पु०) सब प्रकार से या पूर्ण रूप से विजय ।

विनिर्णयः (पु०) पूर्णरूप से निबटारा या फैसला । २ निश्चय । ३ निर्धारित नियम ।

विनिर्बंधः } विनिर्बन्धः } (पु०) अटलता । दृढ़ता । आग्रह । ज़िद ।

विनिर्मित (व० कृ०) १ बना हुआ । बनाया हुआ । २ रचा हुआ । उत्पन्न किया हुआ ।

विनिवृत्त (व० कृ०) १ लौटा हुआ । लौटाया हुआ । २ बंद किया हुआ । ठहराया हुआ । रोका हुआ । ३ कार्य त्याग किया हुआ ।

विनिवृत्तिः (स्त्री०) १ अवसान । बंदी । रोक । २ अन्त । समाप्ति ।

विनिश्चयः (पु०) १ निर्णय । निर्धारण । २ मन्तव्य । फैसला ।

विनिश्वासः (पु०) आह । उसास । ज़ोर की साँस ।

विनिष्पेषः (पु०) कुचलना । पीस डालना ।

विनिहत (व० कृ०) १ ताड़ित । घायल किया हुआ । २ मार डाला हुआ । ३ सम्पूर्णतः वशवर्ती किया हुआ ।

विनिहतः (पु०) कोई बड़ा अनिवार्य सङ्कट या आपत्ति जो भाग्यदोष से अथवा दैवप्रेरित आया हो । २ अशकुन । कुलक्षण । धूम्रकेतु । पुच्छलतारा ।

विनीत (व० कृ०) १ हटाया हुआ । अलग किया हुआ । २ भली भाँति शिक्षित । सुशिक्षित ।

सुनियन्त्रित। ३ सदाचारणी। ४ विनम्र। भद्र। ५ शिष्टोचित। भद्रोचित। ६ भेजा हुआ। प्रेषित। विसर्जित। ७ पालतू। ८ साफ। सादा। ६ आत्म-संयमी। जितेन्द्रिय। १० दण्डित। सज़ायाफ़्ता। ११ शासनीय। शासन करने योग्य। १२ प्रिय। मनोहर।

विनीतः (पु०) १ सिखाया हुआ घोड़ा। २ व्यापारी। सौदागर।

विनीतकं (न०) १ सवारी। गाड़ी। डोली। पालकी। २ लेजाने वाला। ढोने वाला।

विनेतृ (पु०) १ नेता। रहनुमा। २ शिक्षक। ३ राजा। शासक। ४ दण्डविधानकर्त्ता।

विनोदः (पु०) १ हटाना। दूर करना। २ वहलाव। मनोरञ्जन। कोई कार्य जिससे मनोरंजन हो। ३ खेल। क्रीड़ा। आमोदप्रमोद। ४ उत्सुकता। उत्कण्ठा। ५ आल्हाद। प्रसन्नता। ६ रतिक्रिया का आसन विशेष।

विनोदनं (न०) १ हटाने की क्रिया। वहलाने की क्रिया।

विन्दु } विन्दु } (वि०) १ प्रतिभाशाली। बुद्धिमान। २ उदार।

विदुः } विन्दुः } (पु०) बूँद। कृतरा।

विंध्यः } विन्ध्यः } (पु०) विन्ध्याचल नाम का पहाड़। यह मध्यदेश की दक्षिणी सीमा हो।—अटवी, (स्त्री०) विन्ध्याचल का विशाल वन।—कूटः, (पु०)—कूटनं, (न०) अगस्त्य जी की उपाधि।—वासिन्, (पु०) संस्कृत व्याकरणी व्याडि की उपाधि।—वासिनी, (स्त्री०) दुर्गा देवी की उपाधि।

विन्न (व० कृ०) १ जाना हुआ। प्रसिद्ध। २ प्राप्त। उपलब्ध। ३ वहस किया हुआ। अनुसन्धान किया हुआ। ४ स्थापित। प्रतिष्ठित। ५ विवाहित।

विन्नकः (पु०) अगस्त्य जी का नाम।

विन्यस्त (व० कृ०) १ स्थापित। रखा हुआ। २ जटा हुआ। बैठाया हुआ। ३ गाढ़ा हुआ। ४ क्रम से रखा हुआ। ५ सौंपा हुआ। ६ अर्पित। ७ न्यस्त। जमा किया हुआ।

विन्यासः (पु०) १ स्थापन। अमानत रखना। २ अमानत। धरोहर। ३ सजावटी ठीक जगह पर करीने से रखना। ४ समूह। संग्रह। ५ स्थान। आधार।

विपक्त्रिम (वि०) १ अच्छी तरह पका हुआ। २ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। परिपक्वता को प्राप्त।

विपक्व (वि०) १ पूर्ण रूप से पका हुआ या परिपक्व। २ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। परिपूर्ण। ३ रँधा हुआ। पकाया हुआ।

विपक्ष (वि०) १ विरुद्ध। ख़िलाफ़। प्रतिकूल। २ उलटा। विपरीत।

विपक्षः (पु०) १ शत्रु। दुश्मन। प्रतिपक्षी। २ सौत। ३ वादी। मुद्दई। ४ न्याय या तर्क शास्त्र में वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो।

विपंचिका } विपञ्चिका } विपंची } विपञ्ची } (स्त्री०) १ वीणा। २ क्रीड़ा। खेल। आमोद प्रमोद।

विपणः (पु०) } विपणनं (न०) } १ विक्री। २ हलकी तिजारत। छोटा व्यपार।

विपणिः } विपणी } (स्त्री०) १ बाजार। हाट। दूकान। २ व्यापारी माल। विक्री के लिये रखा हुआ माल। ३ व्यापार। वाणिज्य।

विपणिन् (पु०) व्यापारी। सौदागर। दूकानदार।

विपत्ति (स्त्री०) १ आपत्ति। सङ्कट। मृत्यु। नाश। ३ यातना।

विपत्तिः (पु०) उत्तम या प्रसिद्ध पैदल सिपाही।

विपथः (पु०) कुपथ। बुरा मार्ग।

विपद् (स्त्री०) १ आपत्ति। विपत्ति। सङ्कट। २ मृत्यु। मौत।—उद्धरणं, (न०)—उद्धारः, (पु०) विपत्ति से निस्तार।—युक्त, (वि०) अभागा। दुःखी।

विपदा देखो विपद्।

विपन्न (व० कृ०) १ मृत। मारा हुआ। २ खोया

हुआ। नष्ट किया हुआ । ३ अभागा । बद-किस्मत । पीड़ित । विपद्ग्रस्त । ४ अशक्त । बेकाम।

विपन्नः (पु०) साँप । सर्प ।

विपरिणमनं (न०) } १ परिवर्तन । २ रूप परि-
विपरिणामः (पु०) } वर्तन । रूपान्तर ।

विपरिवर्तनं (न०) लोटन । लोटने की क्रिया ।

विपरीत (वि०) १ उलटा । विरुद्ध । खिलाफ । २ अशुद्ध । नियम विरुद्ध । ३ झूठा । असत्य । प्रतिकूल । ५ अप्रिय । अशुभ । ६ चिड़चिड़ा ।

विपरीतः (पु०) रतिक्रिया का आसन विशेष ।

विपरीता (स्त्री०) १ असती स्त्री । २ दुश्चरित्रा स्त्री ।

विपर्णकः (पु०) पलास वृक्ष ।

विपर्ययः (पु०) १ विरुद्धता । विपरीतता । उलटा पन । २ परिवर्तन (भेष या पोशाक का) ३ अभाव । अनस्तित्व । ४ हानि । ५ सम्पूर्णतः नाश । ६ अदल बदल । विनिमय । ७ भूल । चूक । गलती । भ्रम । ८ आपत्ति । विपत्ति । दुर्भाग्य । ९ द्वेष । वैमनस्य । शत्रुता ।

विपर्यस्त (व० कृ०) १ परिवर्तित । बदला हुआ । उलटा । २ भ्रमात्मक ।

विपर्यायः (पु०) उलटा । विपरीत ।

विपर्यासः (पु०) १ परिवर्तन । उलटापन । २ प्रतिकूलता । विरुद्धता । ३ अदल बदल । बदलौ-वल । उलट पलट । ४ भूल । चूक ।

विपलं (न०) समय का एक अत्यन्त छोटा विभाग जो एक पल का साठवाँ भाग होता है ।

विपलायनं (न०) भिन्न भिन्न दिशाओं में अथवा चारों ओर भाग जाना ।

विपश्चित् (वि०) पण्डित । बुद्धिमान । सूक्ष्मदर्शी ।

विपश्चित् (पु०) पण्डितजन । बुद्धिमान जन ।

विपाकः (पु०) १ परिपक्व होना । पचन । पकना । २ पूर्ण दशा को पहुँचना । तैयारी पर आना । चरम उत्कर्ष । ३ फल । परिणाम । ४ कर्म का फल । ५ कठिनाई । साँसत । ६ स्वाद । ज़ायका ।

विपाटनं (न०) १ उखाड़ना । खोदना । चीरना । फाड़ना । २ मूलोच्छेद । समूलोत्पाटन । ३ अपहरण । लुण्ठन ।

विपाठः (पु०) लंबा तीर विशेष ।

विपांडु } (वि०) पीला । पीत ।
विपाण्डु }

विपांडुर } (वि०) पीला । पीत ।
विपाण्डुर }

विपांडुरा } (स्त्री०) महामेदा ।
विपाण्डुरा }

विपादिका (स्त्री०) १ कुष्ट रोग का एक भेद । अपरस । प्रहेलिका । पहेली ।

विपाश } (स्त्री०) पंजाब की ब्यास नदी का
विपाशा } प्राचीन नाम ।

विपिनं (न०) वन । जंगल । अरण्य ।

विपुल (वि०) १ बड़ा । विस्तारित । विस्तृत । चौड़ा । औंडा । २ अधिक । बहुत । ३ अगाध । गहरा । ४ रोमाञ्चित ।—छाय, (वि०) सघन । छायादार । —जघना, (वि०) बड़े चूतड़ों वाली स्त्री ।—मति, (वि०) बहुत बुद्धि वाला । बड़ा बुद्धिमान् । —रसः, (पु०) गन्ना । ऊख । ईख ।

विपुलः (पु०) १ मेरुपर्वत । २ हिमालय पर्वत । ३ प्रतिष्ठितजन ।

विपुला (स्त्री०) पृथिवी । वसुन्धरा ।

विपूयः (पु०) मूंज । मुञ्जतृण ।

विप्रः (पु०) १ ब्राह्मण । २ पण्डित । बुद्धिमान जन । ३ अश्वत्थवृक्ष ।—प्रियः, (पु०) पलाश वृक्ष । —स्वं, (न०) ब्राह्मण की सम्पत्ति ।

विप्रकर्षः (पु०) फासला । दूरी ।

विप्रकारः (पु०) १ तिरस्कार । अनादर । २ अपकार । अनिष्ट । ३ दुष्टता । शठता । ४ प्रतिकूलता । ५ प्रतिहिंसन । बदला ।

विप्रकीर्ण (व० कृ०) १ तितर बितर छितरा हुआ । बिखरा हुआ । २ ढीला । बिखरे हुए (बाल) ३ फैला हुआ । निकला हुआ । ४ चौड़ा । औंड़ा ।

विप्रकृत (व० कृ०) १ चोट खाया हुआ । अनिष्ट किया हुआ । अपकार किया हुआ । ३ अपमानित । तिरस्कृत । कुवाच्य कहा हुआ । ४ सामना किया हुआ । ४ बदला लिया हुआ ।

विप्रकृतिः (स्त्री०) १ अनिष्ट । अपकार । २ अपमान । तिरस्कार । कुवाच्य । ३ बदला । प्रतिउत्तर ।

विप्रकृष्ट (व० कृ०) १ खींच कर दूर किया हुआ या हटाया हुआ । २ दूरस्थ । दूर । फासले पर । ३ निकला हुआ । आगे बढ़ा हुआ । लंबा किया हुआ ।

विप्रकृष्टक (वि०) दूरस्थ । दूर का ।

विप्रतिकारः (पु०) १ प्रतिरोध । प्रतिक्रिया । २ प्रतिहिंसा । बदला ।

विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) १ विरोध (मत का राय का) २ आपत्ति । एतराज । ३ परेशानी । विकलता । ४ ४ पारस्परिक सम्बन्ध । ५ अभिज्ञता ।

विप्रतिपन्न (व० कृ०) १ परस्पर विरुद्ध । मतविरोधी । २ विकल । व्याकुल । परेशान । ३ विवादग्रस्त । झगड़े में पड़ा हुआ । ४ परस्पर सम्बन्ध युक्त ।

विप्रतिषेधः (पु०) १ नियंत्रण । २ दो बातों का परस्पर विरोध । समानबल वालों का आपुस का विरोध ।

"तुल्यबल विरोधो विप्रतिषेधः ।"

३ वर्जन ।

विप्रतिसारः } विप्रतीसारः } (पु०) १ अनुताप । परिताप । पछतावा । २ रोष । क्रोध । ३ दुष्टता ।

विप्रदुष्ट (व० कृ०) १ पापरत । २ कामी । ३ मन्द । नष्ट ।

विप्रनष्ट (व० कृ०) १ खोया हुआ । २ व्यर्थ । निरर्थक ।

विप्रमुक्त (व० कृ०) १ छूटा हुआ । छुटकारा पाया हुआ । (तीर, गोली, गोला) । फेंका हुआ । चलाया हुआ । ३ रहित ।

विप्रयुक्त (व० कृ०) १ वियोजित । अलगाया हुआ । विश्लिष्ट । विभिन्न । जो मिला न हो । २ बिछुड़ा हुआ । ३ मुक्त किया हुआ । छोड़ा हुआ । ४ रहित किया हुआ । बिना ।

विप्रयोगः (पु०) १ अनैक्य । पार्थिक्य । बिलगाव । असङ्गति । २ (प्रेमियों का) बिछोह । वियोग । ३ झगड़ा । मनमुटाव ।

विप्रलब्ध (व० कृ०) १ छला हुआ । प्रतारित । धोखा दिया हुआ । २ हताश । निराश । ३ अपकार किया हुआ । अनिष्ट किया हुआ ।

विप्रलब्धा (स्त्री०) वह नायिका जो सङ्केत-स्थान में प्रियतम को न पा कर निराश या दुःखी हुई हो ।

विप्रलंभ } विप्रलम्भः } (पु०) १ धोखा । प्रतारण । छल । कपट । २ विशेष कर प्रतिभङ्ग करके अथवा मिथ्या बोल कर दिया हुआ । धोखा । ३ झगड़ा । विवाद । ४ बिछोह । वियोग । ५ प्रेमियों का वियोग । ६ साहित्य में विप्रलम्भ शृङ्गार । [विप्रलम्भ शृङ्गार में नायक नायिका के विरहजन्य सन्ताप आदि का वर्णन किया जाता है ।]

विप्रलापः (पु०) १ बकवाद । व्यर्थ की बकबक । सारहीन वाक्य । २ विवाद । झगड़ा । ३ विरुद्ध कथन । ४ प्रतिज्ञाभङ्ग ।

विप्रलयः (पु०) समूलनाश । विनाश ।

विप्रलुप्त (व० कृ०) १ अपहृत जो उड़ा लिया गया हो । २जिसके कार्य में विघ्न या बाधा डाली गयी हो ।

विप्रलोभिन् (पु०) किङ्किरात और अशोक नामक वृक्ष द्वय का नाम ।

विप्रवासः (पु०) परदेश-निवास । विदेशवास ।

विप्रश्निका (स्त्री०) स्त्री दैवज्ञ । स्त्री ज्योतिषी ।

विप्रहीण (वि०) रहित । विहीन ।

विप्रिय (वि०) अप्रिय । अरुचिकर । दुस्स्वादु ।

विप्रियं (न०) अपकार । अप्रियकार । बुरा कार्य ।

विप्रुष् (स्त्री०) १ बूंद । कतरा । २ चिन्ह । धब्बा । दाग । बिन्दु ।

विप्रोषित (व० कृ०) १ विदेश में रहने वाला । प्रवास में गया हुआ । २ निर्वासित ।—भर्तृका, (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी प्रवास में हो ।

विप्लवः (पु०) १ उतराना । तैरना । २ विरोध । ३ परेशानी । विकलता । ४ उपद्रव । हंगामा । ५

बरबादी। वह युद्ध जिसमें लूट पाट की जाय। शत्रुभय। परचक्र-भय। ६ हानि। नाश। ७ उत्पीड़न। अत्याचार। ८ वैपरीत्य। विरोध। ९ धूल या गर्द जो आईने पर या दर्पण पर जम जाती है। यथा—

प्रपर्यासितविप्लवे गुणी

× × ×

मतिरादर्श इवाभिदृश्यते।

—किरातार्जुनीय।

१० लङ्घन। अतिक्रमण। भङ्गकरण। ११ आफत। विपत्ति। १२ दुष्टता। पापकर्म। पापमयता।

विप्लावः (पु०) १ बाढ़। बूड़ा। २ उपद्रवकारक। ३ घोड़े की बहुत तेज़ चाल।

विप्लुत (व० कृ०) १ छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २ डूबा हुआ। बूड़ा हुआ। ३ आकुल। घबड़ाया हुआ। ४ मार काट या लूट पाट करके नष्ट किया हुआ। ५ खोया हुआ। हिराना हुआ। ६ अपमानित। तिरस्कृत। ७ बरबाद किया हुआ। उजाड़ा हुआ। ८ बदशक्ल किया हुआ। ९ जारकर्म का अपराधी। व्यभिचारी। १० विरुद्ध। उलटा। ११ झूठा। असत्य।

विप्सप् देखो विप्रुष्"।

विफल (वि०) १ व्यर्थ। निरर्थक। बेकाम। बेफायदा।

विबंधः } (पु०) १ कोष्ठबद्धता। मलावरोध।
विबन्धः } कब्ज़ियत। २ अवरोध। रुकावट।

विबाधा (स्त्री०) पीड़ा। कष्ट। सन्ताप।

विबुद्धः (व० कृ०) १ जागृत। जागता हुआ। २ खिला हुआ। फूला हुआ। फैला हुआ। ३ चतुर। निपुण। पटु।

विबुधः (पु०) १ बुद्धिमानजन। विद्वान पुरुष। २ देवता। ३ चन्द्रमा।—अधिपतिः, —इन्द्रः, —ईश्वरः, (पु०) इन्द्र की उपाधियां।—द्विष्। —शत्रु, (पु०) दैत्य। राक्षस।

विबुधानः (पु०) १ पण्डित पुरुष। २ शिक्षक।

विबोधः (पु०) १ जागृति। जागरण। २ बुद्धि। प्रतिभा। ३ व्यभिचार भाव (अलङ्कार साहित्य में) ४ सम्यक् बोध। ५ होश में आना।

विभक्त (व० कृ०) १ बँटा हुआ। विभाजित। पृथक् किया हुआ। २ जो अपने पिता की सम्पत्ति से अपना भाग पा चुका हो और अलग रहता हो। ३ विमुक्त। ५ भिन्न। बहुसंख्यक। ६ कार्य से अवकाश प्राप्त। एकान्तवासी। ७ नियमित। व्यवस्थित। यथा विहित। ८ शोभित। भूपित।

विभक्तः (पु०) कार्तिकेय का नाम।

विभक्तिः (स्त्री०) १ विभाग। बाँट। २ अलग होने की क्रिया या भाव। पार्थक्य। अलगाव। ३ पैतृक सम्पत्ति का भाग या हिस्सा। ४ शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिन्ह जो यह बतलाता है कि, उस शब्द का क्रियापद से क्या सम्बन्ध है। संस्कृत व्याकरण में विभक्ति वास्तव में शब्द का रूपान्तरित अङ्ग है।

विभंगः } (पु०) १ टूटन। (हड्डी का) टूटना। २
विभङ्गः } बंदी। अवरोध। ३ मोड़। सकुड़न। ४ झुर्री। पर्त। शिकन। ५ सीढ़ी। जीना। ५ विकसन। प्राकट्य।

विभवः (पु०) १ धन दौलत। सम्पत्ति। २ महिमा बड़प्पन। अधिकार। ३ विक्रम। पराक्रम। बल। ४ उच्चपद। महिमान्वितपद। ५ औदार्य। ६ मोक्ष। मुक्ति। स्वर्गीय सुख।

विभा (स्त्री०) १ दीप्ति। आभा। २ किरन। ३ सौन्दर्य।—करः, (पु०) १ सूर्य। २ अर्क। मदार। अकौआ। ३ चन्द्रमा।—वसुः, (पु०) १ सूर्य। २ अग्नि। ३ चन्द्रमा। ४ हार। गले का आभूषण विशेष।

विभागः (पु०) १ हिस्सा बाँट। बटवारा। २ पैतृक सम्पत्ति में का एक भाग। ३ अंश। भाग। ४ अलगाव। विभाजन। ५ परिच्छेद खण्ड।—कल्पना, (स्त्री०) बटवारा या हिस्सों का बाँटना।—धर्मः, (पु०) दायभाग।

विभाजन (न०) बँटवारा। बाँटने की क्रिया।

विभाज्य (वि०) १ बाँटे जाने के योग्य। २ खण्डनीय। विभेद्य।

विभात (न०) प्रभात। तड़का।

विभावः (पु०) १ (साहित्य में) रसविधान में भाव का उद्बोधक। शरीर या मन के किसी विशेष परिस्थिति में पहुँचाने वाली अवस्था विशेष। २ मित्र। परिचित।

विभावनं (न०) / विभावना (स्त्री०) १ विवेक। विचार। २ वाद विवाद। अनुसन्धान। परीक्षण। ३ चिन्तन। (स्त्री०) साहित्य में एक अर्थालङ्कार। इसमें कारण के विना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबन्ध होने पर भी, कार्य की सिद्धि दिखलायी जाती है।

विभावरी (स्त्री०) १ रात। २ हल्दी। ३ कुटनी। दूती। ४ वेश्या। रंडी। ५ व्यभिचारिणी स्त्री। ६ मुखरा स्त्री।

विभावित (व० कृ०) १ प्रादुर्भूत। जो स्पष्ट दिखलायी दे। २ जाना हुआ। समझा हुआ। चिन्तित किया हुआ। ३ देखा हुआ। पहचाना हुआ। ४ विचारा हुआ। विवेचित। विवेचना किया हुआ। ५ लक्षित। सूचित। बतलाया हुआ। ६ सिद्ध किया हुआ। स्थापित किया हुआ। साबित किया हुआ।

विभाषा (स्त्री०) १ संस्कृत व्याकरण में वे स्थल जहाँ ऐसे वचन पाये जाँय कि " ऐसा न होता। " तथा ऐसा हो भी सकता है। २ विकल्प। ३ नियम की विकल्पना।

विभासा (स्त्री०) दीप्ति। प्रभा। आभा।

विभिन्न (व० कृ०) १ तोड़ा हुआ। अलग किया हुआ। चीरा हुआ। फाड़ा हुआ। छिदा हुआ। २ घायल। विधा हुआ। विद्ध। ३ भगाया हुआ। हटाया हुआ। ४ परेशान। विकल। उद्विग्न। ५ इधर उधर फिरता हुआ। ६ हताश। ७ अनेक प्रकार का। कई तरह का। ८ मिश्रित किया हुआ। रंगबिरंगा।

विभिन्नः (पु०) शिव जी।

विभीतः (पु०) / विभीतं (न०) / विभीतकः (पु०) / विभीतकं (न०) / विभीतकी (स्त्री०) / विभीता (स्त्री०) बहेड़े का पेड़।

विभीषक (वि०) भयप्रद। डराने वाला।

विभीषिका (स्त्री०) १ भय। डर। २ डराने का साधन। पक्षियों को डराने का पुतला।

विभु (वि०) [स्त्री०—विभु, विभ्वी] १ ताक़तवर। बलिष्ठ। बलवान। २ प्रसिद्ध। ३ योग्य। ४ दृढ़। आत्मसंयमी। जितेन्द्रिय। ५ अनादि। सर्वगत। सर्वव्यापक।

विभुः (पु०) १ एक प्रकार का उड़ायी तरल पदार्थ। २ आकाश। शून्य स्थान। ३ काल। समय। ४ आत्मा। जीवात्मा। ५ प्रभु। स्वामी। ६ ईश्वर। ७ भृत्य। नौकर। ८ ब्रह्मा। ९ शिव। १० विष्णु।

विभुग्न (व० कृ०) टेढ़ामेंढ़ा। मुड़ा हुआ। झुका हुआ।

विभूतिः (स्त्री०) १ बड़प्पन। अधिकार। शक्ति। २ समृद्धि। स्वास्थ्यता। ३ महत्त्व। महिमान्वितपद। ४ विभव। ऐश्वर्य। ५ धन। सम्पत्ति। ६ अलौकिक शक्ति। ७ कंडे की राख।

विभूषणं (न०) गहना। भूषण।

विभूषा (स्त्री०) १ दीप्ति। प्रभा। २ सौन्दर्य। मनोहरता।

विभूषित (व० कृ०) अलङ्कृत। सजा हुआ।

विभृत (व० कृ०) समर्थित। समर्थन किया हुआ। रक्षित। धारण किया हुआ।

विभ्रंशः (पु०) १ पतन। अवनति। २ विनाश। ध्वंस। ३ ऊँचा कगारा। ४ पहाड़ की चोटी के ऊपर का चौरस मैदान।

विभ्रंशित (व० कृ०) १ बहकाया हुआ। फुसलाया हुआ। २ रहित किया हुआ।

विभ्रमः (पु०) १ भ्रमण। चक्कर। फेरा। २ भूल। चूक। ग़लती। ३ उतावली। उद्विग्नता। ४ स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम से उलटे सीधे

आभूषण और वस्त्र पहन लेती हैं तथा ठहर ठहर कर मतवालियों की तरह कभी क्रोध, कभी हर्ष प्रकट करती हैं । ५ किसी प्रकार की भी कामप्रणोदित क्रिया । प्रीतिद्योतक हावभाव । ६ सौन्दर्य । शोभा । ७ शङ्का । सन्देह । ८ भ्रान्ति । धोखा । भूल ।

विभ्रमा (स्त्री०) बुढ़ापा ।

विभ्रष्ट (व० कृ०) १ गिरा हुआ । अलगाया हुआ २ उजाड़ा हुआ । नष्ट किया हुआ । ३ अन्तर्निहित । दृष्टि के बहिर्भूत ।

विभ्राज् ((वि०) चमकीला । प्रकाशमान ।

विभ्रान्त (व० कृ०) १ घूमता हुआ । चक्कर खाता हुआ । २ उद्विग्न । विकल । व्याकुल । ३ भ्रम में पड़ा हुआ । विभ्रमयुक्त । —शील, (वि०) वह जिसका मन व्याकुल हो । २ नशे में चूर ।—शीलः, (पु०) १ वानर । २ सूर्य का या चन्द्रमा का मण्डल ।

विभ्रान्तिः (स्त्री०) १ चक्कर । फेरा । २ भ्रान्ति । भ्रम । ३ सन्देह । हड़बड़ी । घबड़ाहट ।

विमत (व० कृ०) १ असंगत । विषम । २ वे जिनका मत या राय एक न हो । ३ तिरस्कृत । तुच्छ समझा हुआ ।

विमतः (पु०) शत्रु ।

विमति (वि०) मूर्ख । मूढ़ । बुद्धिहीन ।

विमतिः (पु०) १ मतानैक्य । एक मत का अभाव । २ अरुचि । नापसन्दगी । ३ मूर्खता । मूढ़ता ।

विमत्सरं (न०) ईर्ष्या रहित । जो ईर्ष्यालु न हो ।

विमद (वि०) १ नशे से मुक्त । २ हर्ष रहित । ईर्ष्यालु ।

विमनस् } (वि०) १ उदास । खिन्न । रंजीदा ।
विमनस्क } २ जिसका मन उच्चाट हो । अनमना । ३ परेशान । विकल । ४ अप्रसन्न । ५ वह जिसका मन या भाव बदला हुआ हो ।

विमन्यु (वि०) १ क्रोध शून्य । २ शोकरहित ।

विमयः (पु०) अदल बदल । विनिमय ।

विमर्दः (पु०) १ खूब मर्दन करना । अच्छी तरह मलना दलना । २स्पर्श । ३शरीर में उबटन करना । ४ युद्ध । संग्राम । मुठभेड़ । ५ नाश । बरबादी । ६ सूर्यचन्द्र का समागम । ७ ग्रहण ।

विमर्दकः (पु०) १ मर्दन करने वाला । मसल डालने वाला । चूर चूर कर डालने वाला । पीस डालने वाला । २ सुगन्ध द्रव्यों की पिसाई या कुटाई । ३ (चन्द्र सूर्य) ग्रहण । ४ सूर्य एवं चन्द्र का समागम ।

विमर्शः (पु०) १ किसी तथ्य का अनुसन्धान । किसी विषय का विवेचन या विचार । २ आलोचना । समीक्षा । ३ बहस । ४ विरुद्ध निर्णय या फैसला । ५ शङ्का । सन्देह । हिचकिचाहट । ६ वासना ।

विमर्षः (पु०) १ विवेचन । विचार । २ अधैर्य । असहिष्णुता । ३ असन्तोष । अप्रसन्नता । ४ नाटक का एक अङ्क । इसके अन्तर्गत अपवाद, संकेत, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसंग, खेद, प्रतिषेध, विरोध, प्ररोचना, आदान और छादन का निरूपण किया जाता है ।

विमल (वि०) १ मलरहित । निर्मल । बेदाग । २ स्वच्छ । साफ । ३ सफेद । चमकीला ।

विमलं (न०) १ चाँदी की कलई । २ अबरक ।—दानं, (न०) देवता का चढ़ावा ।—मणिः, (पु०) स्फटिक ।

विमांसं (न०) } अशुद्ध, अपवित्र या वर्जित माँस ।
विमांसः (पु०) } जैसे कुत्ते का माँस ।

विमातृ (स्त्री०) सौतेली माता ।—जः, (पु०) सौतेली माता का पुत्र ।

विमानं (न०) } १ अपमान । तिरस्कार । २ माप-
विमानः (पु०) } विशेष । ३ गुब्बारा । व्योमयान । ४ सवारी । ५ बड़ा कमरा । सभाभवन । ६ राज प्रासाद या महल जो सतखना हो । यथा—

"नेत्रा नीताः सततगतिना
यद्विमानाग्रभूमीः ।"

—मेघदूत ।

७ घोड़ा ।—चारिन्,—यान, (वि०) व्योमयान में बैठ कर घूमने वाला ।—राजः, (पु०) सर्वोत्तम

व्योमयान । २ व्योमयान का सञ्चालक या चलाने वाला ।

विमानना (स्त्री०) असम्मान । तिरस्कार ।

विमानित (व० कृ०) अपमानित । तिरस्कृत ।

विमार्गः (पु०) १ कुपथ । बुरा रास्ता । २ कदाचार । बुरी चाल । ३ झाड़ू । बुहारी ।

विमार्गणं (न०) खोज । तलाश । अनुसन्धान ।

विमिश्र, विमिश्रित (वि०) मिला हुआ । मिश्रित । मिला जुला ।

विमुक्त (व० कृ०) १ छूटा हुआ । छुटकारा पाये हुए । २ त्यागा हुआ । त्यक्त । ३ फेंका हुआ । छोड़ा हुआ (जैसे अस्त्र) ।—कण्ठः (पु०) बड़े ज़ोर से चिल्लाना । फूट फूट कर रुदन करना ।

विमुक्तिः (स्त्री०) १ छुटकारा । २ अलगाव । ३ मोक्ष ।

विमुख (वि०) [स्त्री—विमुखी] १ जिसने अपना मुख किसी कारण वशात् फेर लिया हो । २ जो किसी कार्य या विषय में दत्तचित्त न हो । अमनस्क । ३ विरुद्ध । ४ रहित । विना ।

विमुग्ध (वि०) घबड़ाया हुआ । विकल । परेशान ।

विमुद्र (वि०) १ विना मोहर किया हुआ । २ खुला हुआ । खिला हुआ । फूला हुआ ।

विमूढ (व० कृ०) १ मोहप्राप्त । भ्रम में पड़ा हुआ । २ बहकाया हुआ । लालच दिखलाया हुआ । ३ मूढ़ ।

विमृष्ट (व० कृ०) १ मला हुआ । पौंछा हुआ । साफ़ किया हुआ । २ सोचा विचारा हुआ ।

विमोक्षः (पु०) १ छुटकारा । रिहाई । २प्रक्षेपण । छोड़ना (जैसे तीर का) ३ मोक्ष । मुक्ति । जन्म मरण से छुटकारा ।

विमोक्षणं (न०), विमोक्षणा (स्त्री०) १ रिहाई । छुटकारा । मुक्ति । २ फैंकना । छोड़ना । ३ त्यागना । ४ (अंडे) देना ।

विमोचन (न०) १ वंधन या गाँठ खोलना । २ बंधन से मुक्ति । छुटकारा । रिहाई । ३ मोक्ष । मुक्ति ।

विमोहन (वि०) [स्त्री०—विमोहना, विमोहनी] १ ललचाने वाला । मुग्धकारी । दूसरे के मन को वश में करने वाला ।

विमोहनं (न०), विमोहनः (पु०) नरक विशेष ।

विमोहनं (न०) फुसलाना । बहकाना । मोहना ।

विवः (पु०), विम्बः (न०), विंवं (न०), विम्बं (न०) देखो विम्ब या विंव ।

विंवकः, विम्बकः (पु०) देखो विम्बकः ।

विंवटः, विम्बटः (पु०) राई का पौधा ।

विंवा, विम्बा, विंवी, विम्बी (स्त्री०) एक लता या वेल का नाम ।

विंविका, विम्बिका (स्त्री०) देखो विंविका ।

विंवित, विम्बित (न०) देखो विम्बित ।

विंवुः, विम्बुः (पु०) सुपाड़ी का पेड़ ।

वियत् (न०) आसमान । अन्तरिक्ष । व्योम । वायुमण्डल ।—गङ्गा, (स्त्री०) १ आकाश गंगा । २ छायापथ ।—चारिन्, (=वियच्चारिन्) (पु०) पतंग । कनकौआ ।—भूतिः, (स्त्री०) अन्धकार ।—मणिः, (=वियन्मणिः) (पु०) सूर्य ।

वियातिः (पु०) पक्षी ।

वियमः (पु०) १ रोक । नियंत्रण । २ कष्ट । पीड़ा । सन्ताप । ३ अवसान । बंदी ।

वियात (वि०) १ साहसी । धृष्ट । २ निर्लज्ज । बेहया । बेशर्म ।

वियाम देखो वियमः ।

वियुक्त (व० कृ०) १ जो युक्त न हो । अलग । अलहदा । २ जुदा । छोड़ा हुआ । जिसकी जुदाई हो चुकी हो । वियोग प्राप्त । ३ रहित । हीन ।

वियुत (व० कृ०) वियोग प्राप्त । रहित । हीन ।

वियोगः (पु०) १ वियोग । विछोह । २ अभाव । हानि । २ व्यवकलन । काट ।

वियोगिन् (वि०) अलगाया हुआ । वियोजित । वियोगप्राप्त । (पु०) चक्रवाक । चकवा ।

वियोगिनी (स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम से विछुडी हो । २ वृत्तविशेष ।

वियोजित (व० कृ०) १ अलगाया हुआ । विछोह प्राप्त । २ रहित किया हुआ ।

वियोनिः / वियोनी (पु०) १ अनेक जन्म । २ पशुओं का गर्भाशय । ३ हीन उत्पत्ति ।

विरक्त (व० कृ०) १ अत्यन्त लाल । २ बदरंग । ३ असन्तुष्ट । मन फिरा हुआ । अप्रसन्न । ४ सांसारिक बन्धनों से मुक्त । विमुख । ५ उत्तेजित । क्रोधाविष्ट ।

विरक्तिः (स्त्री०) १ असन्तोष । असन्तुष्टता । अनुराग का अभाव । विमुखता । विराग । २ उदासीनता । ३ खिन्नता । अप्रसन्नता ।

विरचनं (न०) / विरचना (स्त्री०) प्रणयन । निर्माण । बनाना ।

विरचित (व० कृ०) १ निर्मित । बनाया हुआ । तैयार किया हुआ । २ रचा हुआ । लिखित । ३ सम्हाला हुआ । भूषित । अलंकृत । ४ धारण किया हुआ । पहिना हुआ । ५ जड़ा हुआ । बैठाया हुआ ।

विरज (वि०) १ जिस पर धूल या गर्द न हो । २ जिसमें अनुराग न हो ।

विरजः (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

विरजस् / विरजस्क (वि०) १ धूल गर्द से रहित । २ अनुराग शून्य । सुखवासना से मुक्त । ३ जिसका रजोधर्म बंद हो गया हो ।

विरजस्का (स्त्री०) वह स्त्री जिसका रजो धर्म बंद हो गया हो ।

विरंचः / विरञ्चः / विरंचिः / विरञ्चिः (पु०) ब्रह्मा का नाम ।

विरटः (पु०) काला अगुरु । अगर का वृक्ष ।

विरणं (न०) बारिन या वीरन नाम की घास ।

विरम (व० कृ०) १ बंद । २ थमा हुआ । बंद किया हुआ । ३ समाप्त किया हुआ ।

विरतिः (स्त्री०) १ अवसान । बंदी । समाप्ति । २ छोर । अखीर । ३ सांसारिक वस्तुओं से उदासीनता ।

विरमः (पु०) १ विराम । ठहरना । २ सूर्यास्त ।

विरल (वि०) १ जिसके बीच बीच में अवकाश या खाली जगह हो । सघन नहीं । पतला । २ नाज़ुक । ३ ढीला । चौड़ा । ४ दुर्लभ । ५ थोड़ा । कम । दूरस्थ ।—जानुक, (वि०) घुटना टेके हुए ।

विरलं (न०) दही । जमा हुआ दूध ।

विरलं (अव्यया०) थोड़ा । बहुतायत से नहीं ।

विरस (वि०) १ स्वादहीन । फीका । रसहीन । २ अरुचिकर । अप्रिय । पीड़ाकारक । ३ निष्ठुर । हृदयहीन ।

विरसः (पु०) पीड़ा । कष्ट ।

विरहः (पु०) १ वियोग । विछोह । २ विशेष कर दो प्रेमियों का वियोग । ३ अनुपस्थिति । ४ अभाव । ५ त्याग । —अनलः, (पु०) विरहाग्नि ।—अवस्था, (स्त्री०) वियोग की दशा ।—आर्त,—उत्कण्ठ,—उत्सुक (वि०) वियोग पीड़ित ।—उत्कठिता, (= विरहोत्कण्ठिता) (स्त्री०) नायिका भेद के अनुसार प्रिय के न आने से दुखित नायिका ।—ज्वरः, (पु०) ज्वर जो वियोग की पीड़ा के कारण चढ़ आया हो ।

विरहिणी (स्त्री०) १ वह स्त्री जिसका अपने प्रियतम या अपने पति से वियोग हो गया हो । २ भाड़ा । उजरत । मज़दूरी ।

विरहित (व० कृ०) १ त्यक्त । त्यागा हुआ । २ अलग किया हुआ । ३ अकेला । एकान्त । ४ रहित विहीन ।

विरहिन (वि०) [स्त्री०—विरहिनी] वियोजित । वियोगी (अपने प्रियतम या प्रियतमा से) ।

विरागः (पु०) १ रंग का परिवर्तन । २ मिजाज का बदलना । ३ अनुराग का अभाव । असन्तोष । ४

विरोध। अरुचि। ५ सांसारिक बन्धनों की ओर से अनुराग का अभाव। क्रोध राहित्य।

विराज् (पु०) १ सौन्दर्य। आभा। २ क्षत्रिय जाति का आदमी। ३ ब्रह्म का प्रथम सन्तान। ४ शरीर। देह। (स्त्री०) एक वैदिक छन्द का नाम।

विराज देखो विराज्।

विराजित (व० कृ०) प्रकाशित। २ प्रदर्शित। प्रकटित।

विराटः (पु०) १ एक प्रान्त का नाम। २ मत्स्यदेशी एक राजा का नाम।—जः, (पु०) कम मूल्य का हीरा। घटिया हीरा।—पर्वन्, (न०) महाभारत का चौथा पर्व।

विराटकः (पु०) घटिया हीरा।

विराणिन् (पु०) हाथी। गज।

विराद्ध (व० कृ०) १ विरुद्ध। २ अपमानित। अपकारित। तिरस्कृत।

विराधः (पु०) १ विरोध। २ अपमान। छेड़छाड़। ३ एक बड़ा बलवान राक्षस जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने दण्डकवन में मारा था।

विराधनं (न०) १ विरोध करना। २ अनिष्ट करना। अपकार करना। ३ पीड़ा। कष्ट।

विरामः (पु०) १रोकना। थामना। २अन्त। समाप्ति। ३ ठहरना। ठहराव। वाक्य के अन्तर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय कुछ काल ठहरना पड़ता है। ४ छंद के चरण में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय कुछ काल के लिये ठहरना पड़े। यति। ६ विष्णु का नामान्तर।

विराल देखो विडाल।

विरावं (न०) कोलाहल। हैहल्ला। शोरगुल।

विराविन् (वि०) १ रुदनकारी। चिल्लाने वाला। पुकारने वाला। २ विलाप करने वाला।

विराविणी (स्त्री०) १ रुदन करने वाली। चिल्लाने वाली। २ झाड़ू। बुहारी। बढ़नी।

विरिंचः, (पु०)
विरिञ्चः (पु०)
विरिंचनं (न०)
विरिञ्चनं (न०) } ब्रह्मा का नाम।

विरिंचिः
विरिञ्चिः } (पु०) १ ब्रह्मा का नाम। २ विष्णु का नाम। ३ शिव जी का नाम।

विरुग्ण (व० कृ०) १ टुकड़े टुकड़े करके टूटा हुआ। २ नष्ट किया हुआ। ३ मुड़ा हुआ। ४ मौंथरा। गुठ्ठल।

विरुत (व० कृ०) रवयुक्त। अव्यक्त शब्द-युक्त। कूजित। गुञ्जायमान।

विरुतं (न०) १ चीत्कार। रव। गर्जन। दहाड़न। २ रुदन। ध्वनि। नाद। कोलाहल। ३ गान। कूजन। कलरव।

विरुदं (न०)
विरुदः (पु०) } १घोषणा। ढिंढोरा। २ चिल्लाहट। ३ प्रशस्ति। यशकीर्तन।

विरुदितं (न०) चीत्कार। विलाप।

विरुद्ध (व० कृ०) १ अवरुद्ध। अटकाया हुआ। रोका हुआ। २ घेरा हुआ। (क़ैद में) बंद किया हुआ। ३ चारों ओर से आक्रमण कर घेरा हुआ। ४ असङ्गत। बेमेल। ५ उलटा। ६ विरोधी। जो खण्डन करे। ७ विद्वेषी। वैरी। ८ प्रतिकूल। अशुभ। ९ वर्जित। निषिद्ध। १० अनुचित।

विरुद्धं (न०) १ विरोध। विद्वेष। वैर। २ विवाद। अनैक्य।

विरूक्षणं (न०) १ रूखा करने की क्रिया। २ समेटने वाला। कब्ज पैदा करने वाला। ३ कलङ्क। आरोप। भर्त्सना। ४ शाप। अकोसा।

विरूढ (व० कृ०) १ उगा हुआ। जड़ पकड़े हुए। बीज से फूटा हुआ। २ निकला हुआ। उत्पन्न। ३ वृद्धि को प्राप्त। बढ़ा हुआ। ४ कली लगा हुआ। फूला हुआ। कुसमित। ५ चढ़ा हुआ। सवार।

विरूप (वि०) [विरूपा, विरूपी] १ बदशक्ल। कुरूप। बदसूरत। २ अप्राकृतिक। अनोखा। भयङ्कर। ३ बहुरूप वाला। भिन्न भिन्न।—करणं, (न०) १ बदसूरत बनाना। २ अनिष्ट करण।—चक्षुस्, (पु०) शिव जी।—रूप, (वि०) भद्दा। बेडौल।

विरूपं (न०) १ बदसूरती । कुरूपता । भौंडापन । २ विभिन्नरूपता । स्वभाव या प्रकृति ।—अक्ष, (वि०) वह जिसकी आँखे भद्दी हों ।—अक्षः, (पु०) शिव जी का नाम ।

विरूपिन् (वि०) [स्त्री०—विरूपिणी] भद्दा । बेडौल । बदशक्ल । बदसूरत ।

विरेकः (पु०) १ दस्तावर । कोठा साफ करने वाला । २ जुलाव ।

विरेचनं (न०) देखो विरेकः ।

विरेचित (व० कृ०) दस्त कराये हुए ।

विरेफः (पु०) १ नदी । जलस्रोत । २ " र "

विरोक (न०) } १ अक्षर का लोप । २ छेद ।
विरोकः (पु०) } सूराख । (पु०) किरन ।

विरोचनः (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि । ४ प्रह्लाद के पुत्र और राजा बलि के पिता का नाम ।—सुतः, (पु०) राजा बलि ।

विरोधः (पु०) १ विपरीत भाव । अनैक्य । २ अवरोध । रुकावट । अड़चन । २ घेरा । मुहासरा ३ नियंत्रण । दमन । ४ वैपरीत्य । विभिन्नता । ५ असङ्गति । बेमेलपन । ६ शत्रुता । विद्वेष । वैर । ७ झगड़ा । विवाद । ८ विपत्ति । सङ्कट । ९ एक अर्थालङ्कार । इसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है । —कारिन् (वि०) झगड़ा कराने वाला । —कृत् (पु०) शत्रु । वैरी ।

विरोधनं (न०) १ रुकावट । विरोध । अवरोध । २ घेरा डालना । २ सामना करना । समुहाना । ३ खण्डन । असङ्गति ।

विरोधिन् (वि०) [स्त्री०—विरोधिनी] सामना करने वाला । समुहाने वाला । रोकने वाला । २ घेरा डालने वाला । ३ खण्डनात्मक । विरुद्ध । असङ्गत । ४ द्वेषी । विरोधी । ५ झगड़ालू । (पु०) शत्रु । वैरी ।

विरोपणं } (न०) घाव का पूरना या भरना ।
विरोहणं }

विल् (धा० प०) [विलति] १ ढकना । छिपाना । २ तोड़ना । अलगाना । [उभय० वेलयति—वेलयते] फेंकना । आगे भेजना ।

विलं देखो बिल ।

विलक्ष (वि०) १ लक्षण हीन । २ विकल । व्याकुल । परेशान । ३ विस्मित । आश्चर्यान्वित । ४ लज्जित । ५ विलक्षण । अनोखा ।

विलक्षण (वि०) लक्षण हीन । २ भिन्न । दूसरा । ३ अद्भुत । अनोखा । ४ अशुभ लक्षणों वाला ।

विलक्षणं (न०) निकम्मी हालत या दशा ।

विलक्षित (व० कृ०) १ पहिचाना हुआ । देखा हुआ । खोज कर निकाला हुआ । ३ जान लेने योग्य । ३ घबड़ाया हुआ । परेशान । ४ छेड़ा हुआ । चिढ़ाया हुआ ।

विलग्न (वि०) चिपटा हुआ । लगा हुआ । अवलम्बित । बँधा हुआ । २ फँका हुआ । गढ़ा हुआ । लगा हुआ । घुमाया हुआ । ३ बीता हुआ । ४ पतला । नाजुक ।

विलग्नं (न०) १ कमर । २ कूल्हा । ३ नक्षत्रोदय ।

विलंघनं } (न०) १ अतिक्रमण । २ जुर्म ।
विलङ्घनं } नियमोल्लङ्घन ।

विलंबित } (व० कृ०) १ विलंब किया हुआ ।
विलम्बित } देरी किये हुए । २ अतिक्रान्त । ३ आगे निकला हुआ । चढ़ाबढ़ा । ४ पराजित । हराया हुआ ।

विलज्ज (वि०) लज्जाहीन । बेशर्म । बेहया ।

विलपनं (वि०) वार्तालाप । व्यर्थ की बकवाद । २ विलाप । ४ तलछट । कीट ।

विलपित (न०) १ विलाप । २ रुदन ।

विलंबः } (पु०) १ लटकाव । २ दीर्घसूत्रता ।
विलम्बः }

विलंबनं } (न०) १ लटकना । टँगना । सहारा
विलम्बनं } लेना । २ देरी । दीर्घसूत्रता ।

विलंबिका } (स्त्री०) कोष्ठबद्धता । कब्ज़ियत ।
विलम्बिका }

विलंबित } विलम्बित } (व० कृ०) १ लटकता हुआ। झूलता हुआ। २ लम्बित। लम्बमान। बहिर्गत। दोदूल्यमान। ३ आश्रित। परस्पर आश्रय ग्रहण किये हुए। ४ दीर्घसूत्री। ५ धीमा। मन्द।

विलंबितं } विलम्बितं } (न०) विलंब। देरी।

विलंबिन् } विलम्बिन् } (वि०) [स्त्री०—विलम्बिनी] १ लटकनेवाला। झूलने वाला। लम्बित। २ दीर्घसूत्री। काहिल।

विलंभः } विलम्भः } (पु०) १ उदारता। २ भेंट। दान।

विलसः (पु०) १ द्रवीकरण। घोलने की क्रिया। २ नाशन। मृत्यु। समाप्ति। ३ नाश। लय। प्रलय।

विलयनं (न०) १ लयता। विलीनता। द्रवीकरण। २ क्षयकरण। ३ स्थानान्तरकरण। ४ क्षीणकरण। ५ विद्रावक।

विलसत् (वि०) [स्त्री०—विलसन्ती] १ चमकीला। चमकदार। २ कौंधन। तड़पन। ३ हिलन। डुलन। ४ क्रीडासक्त।

विलसनं (न०) १ चमक। कौंधन। २ विनोदन। मनोरञ्जन।

विलसित (व० कृ०) १ चमकदार। चमकीला। २ प्रकट। प्रादुर्भूत। ३ खिलाड़ी। मनमौजी।

विलसितं (न०) १ चमकीला। २ कौंधा। चमक। ३ प्रादुर्भाव। प्रकटन। प्राकट्य। ४ क्रीडा। आमोद प्रमोद। प्रेमोद्योतक हावभाव।

विलापः (पु०) विलख विलख कर या विकल होकर रोने की क्रिया। रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया। क्रन्दन। रुदन।

विलालः (पु०) १ बिल्ली। २ औजार। कल। मैशीन।

विलासः (पु०) १ क्रीडा। खेल। आमोदप्रमोद। २ प्रेमपूर्ण आमोदप्रमोद। आह्लाद। ३ सुख भोग। आनन्दमयी क्रीड़ा। मनोरञ्जन। मनोविनोद। ४ हावभाव। नाज़ नखरा। ५ सौन्दर्य। सुन्दरता। मनोहरता। ६ कौधा। चमक। ज्योति।

विलासनं (न०) १ क्रीडा। खेल। मनोविनोद। २ अठखेलियाँ।

विलासवती (स्त्री०) रसिक स्त्री। स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

विलासिका (स्त्री०) एक प्रकार का रूपक जो एक ही अङ्क का होता है। इसमें प्रेमलीला ही दिखलायी जाती है।

विलासिन् (वि०) [स्त्री—विलासिनी] १ क्रीडासक्त। रसिक।

विलासिन् (पु०) १ कामी। रसिकजन। २ अग्नि। ३ चन्द्रमा। ४ सर्प ५ श्रीकृष्ण या विष्णु। ६ शिव। ७ कामदेव।

विलासिनी (स्त्री०) १ स्त्री। औरत। २ कामिनी। ३ वेश्या। गणिका। रंडी।

विलिखनं (न०) खरोचना। खोदना। लिखना।

विलिप्त (व० कृ०) पुता हुआ। लिपा हुआ।

विलीन (व० कृ०) १ लगा हुआ। सटा हुआ। चिपटा हुआ। २ बसा हुआ। बैठा हुआ। उतरा हुआ। ३ पिघला हुआ। मिला हुआ। तरलित। ४ छिपा हुआ। ५ नष्ट। मृत।

विलुंचनं } विलुञ्चनं } (न०) उखाड़ना। नोंचना। चीर डालना।

विलुंठनं } विलुण्ठनं } (न०) लूटपाट। डाकेज़नी।

विलुप्त (व० कृ०) १ भङ्ग। टूटा हुआ। नुचा हुआ। २ पकड़ा हुआ। छीना हुआ। अपहृत। ३ लूटा हुआ। ४ नाश किया हुआ। बरबाद किया हुआ। ५ कमज़ोर किया हुआ। निर्बल किया हुआ। अङ्गभङ्ग किया हुआ।

विलुंपकः } विलुम्पकः } (पु०) चोर। डाकू। लुटेरा।

विलुलित (व० कृ०) १ इधर उधर हिलने वाला। अदृढ़। काँपने वाला। २ अव्यवस्थित किया हुआ। क्रमभङ्ग किया हुआ।

विलून (व० कृ०) काट कर अलग किया हुआ। कटा हुआ।

विलेखनं (न०) गोरोचना । छीलना । धारी करना । चिह्न बनाना ।

विलेपनं (न०) १ लेप करने या लगाने की क्रिया । २ लेप । मरहम । ३ चन्दन, केसर आदि कोई भी सुगन्ध द्रव्य जो शरीर में लगाई जाय ।

विलेपः (पु०) १ शरीर आदि पर चुपड़ कर लगाने की चीज़ । लेप । २ पलस्तर । ३ गारा ।

विलेपनी (स्त्री०) १ स्त्री जिसके शरीर पर सुगन्ध द्रव्य लगाये गये हों । २ सुवेशा स्त्री । ३ चावल की काँजी ।

विलेपिका (स्त्री०)
विलेपी (स्त्री०) } भात की माँड़ी ।
विलेप्यः (पु०)

विलोकनं (न०) १ चितवन । अवलोकन । २ दृष्टि ।

विलोकित (व० कृ०) १ देखा हुआ । २ जाँचा हुआ । पड़ताला हुआ । विचारा हुआ ।

विलोकितं (न०) चितवन । झलक ।

विलोचनं (न०) आँख । नेत्र ।—अम्बु, (न०) आँसू ।

विलोडनं (न०) हिलाना डुलाना । आन्दोलित करना । बिलोना । मथना ।

विलोडित (व० कृ०) हिलाया हुआ । बिलोया हुआ । मथा हुआ ।

विलोडितं (न०) माठा । तक्र ।

विलोपः (पु०) १ किसी वस्तु को लेकर भाग जाने की क्रिया । लूटपाट । अपहरण । २ अभाव । नाश ।

विलोपनं (न०) १ काटना । २ लेभागना । ३ नाशन । विनाशन ।

विलोभः (पु०) आकर्षण । लालच । प्रलोभन । बहकाना । फुसलाना ।

विलोभनं (न०) १ लोभ दिखाने या लुभाने की क्रिया । २ बहकाने या फुसलाने की क्रिया । ३ प्रशंसा । चापलूसी ।

विलोम (वि०) [स्त्री०—विलोमी] १ विपरीत । उलटा । प्रतिकूल । २ पिछड़ा हुआ । पीछे पड़ा हुआ । ३ विपरीत क्रम से उत्पन्न किया हुआ । उत्पन्न,—ज,—जात,—वर्ण, (वि०) विपरीत क्रम से उत्पन्न । अर्थात् ऐसी माता से उत्पन्न जिसकी जाति, उसके पति से ऊँची हो । ऊँची जाति की माता और माता की अपेक्षा हीन जाति के पिता से उत्पन्न सन्तान ।—क्रिया, (स्त्री०) —विधिः, (पु०) विपरीत क्रिया । वह क्रिया जो अन्त से आदि की ओर को जाय । उलटी ओर से होने वाली क्रिया ।—जिह्वः, (पु०) हाथी ।

विलोमं (न०) रहट । कूप से जल निकालने का यंत्र विशेष ।

विलोमः (पु०) १ विपरीत क्रम । २ कुत्ता । ३ साँप । ४ वरुण का नाम ।

विलोमी (स्त्री०) आँवला । आँवलकी

विलोल (वि०) १ हिलने डुलने वाला । काँपने वाला । चंचल । २ ढीला । अस्तव्यस्त । बिखरे हुए (बाल) ।

विलोहितः (पु०) रुद्र का नाम ।

विल्ल देखो बिल्ल ।

विल्वः (पु०) बेल का पेड़ ।

विवक्षा (स्त्री०) १ बोलने की अभिलाषा । २ इच्छा । अभिलाषा । ३ अर्थ । भाव । ४ इरादा । अभिप्राय । उद्देश्य ।

विवक्षित (वि०) १ जिसके कहने की इच्छा हो । २ इच्छित । अपेक्षित । ३ प्रिय ।

विवक्षितं (न०) १ इरादा । उद्देश्य । अभिप्राय । २ भाव । अर्थ ।

विवक्षु (वि०) बोलने या कोई बात कहने की इच्छा करने वाला ।

विवत्सा (स्त्री०) वह गाय जिसका बछड़ा न हो ।

विवधः (पु०) १ वह लकड़ी जो बैलों के कंधों पर, बोझ खींचने के लिये रखी जाती है जुआठा । २ राजमार्ग । आम रास्ता । ३ बोझा । ४ अनाज की राशि । ५ घड़ा । जलकुम्भ ।

विवधिकः (पु०) १ बोझ ढोने वाला । कुली । २ फेरी लगाकर सौदागरी माल वेचने वाला। फेरी वाला ।

विवरं (न०) १ छिद्र । बिल । २ गढ़ा । दरार । गर्त । ३ गुफा । कन्दरा । ४ निर्जन स्थान । ४ दोष । त्रुटि । ऐब । निर्बलता । कमी । ५ घाव । ६ नौ की सख्या । ७ विच्छेद । सन्धिस्थल ।—नालिका, (स्त्री०) बंसी । नफीरी ।

विवरणं (न०) १ प्रकटन । प्रकाशन । प्रदर्शन । २ उद्घाटन । खोल कर सब के सामने रखने की क्रिया । ३ भाष्य । टीका । सविस्तर वर्णन ।

विवर्जनं (न०) परित्याग । त्याग करने की क्रिया ।

विवर्जित (व० कृ०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २ अनादृत । उपेक्षित । ३ वञ्चित । रहित । बाँटा हुआ । दिया हुआ । ४ मना किया हुआ । वर्जित । निषिद्ध ।

विवर्ण (वि०) १ रंगहीन । पीला । जिसका रंग बिगड़ गया हो । २ पानी उतरा हुआ । ३ नीच । कमीना । ४ अज्ञानी । मूर्ख । कुपढ़ । अपढ़

विवर्णः (पु०) जातिच्युत । नीच जाति का आदमी ।

विवर्तः (पु०) १ चक्कर । फेरा । २ प्रत्यावर्तन । लौटाव । ३ नृत्य । नाँच । ४ परिवर्तन । संशोधन । ५ भ्रम । भ्रान्ति । ६ समुदाय । समूह । ढेर ।—वादः, (पु०) वेदान्तियों का सिद्धान्त विशेष जिसके अनुसार ब्रह्म को छोड़ और सब मिथ्या है।

विवर्तन (न०) १ परिभ्रमण । चक्कर । फेरा । २ प्रत्यावर्तन । ३ उतार । नीचे आने की क्रिया । ४ प्रणाम । आदर सूचक नमस्कार । भिन्न भिन्न दशाओं या योनियों में होकर गुजरना । ५ परिवर्तित दशा । बदली हुई हालत ।

विवर्धनं (न०) १ वृद्धि । बढ़ती । उन्नति । २ बढ़ाने या वृद्धि करने की क्रिया । ३ महोन्नति । समृद्धि ।

विवर्धित (व० कृ०) १ वृद्धि को प्राप्त । बढ़ा हुआ । २ आगे बढ़ा हुआ । ऊपर को गया हुआ । ३ सन्तुष्ट । प्रसन्न ।

विवश (वि०) १ लाचार । बेबस । मजबूर । २ जो अपने को अपने काबू में न रख सके । ३ बेहोश । ४ मृत । ५ मृत्युकामी । मृत्यु से शङ्कित ।

विवसन (वि०) नंगा । बिना वस्त्र का ।

विवसनः (पु०) जैन भिक्षुक ।

विवस्वत् (पु०) १ सूर्य । २ अरुण । ३ वर्तमान काल के मनु । ४ देवता । ५ अर्क । मदार ।

विवहः (पु०) अग्नि की सप्त जिह्वाओं में से एक का नाम ।

विवाकः (पु०) न्यायाधीश । जज ।

विवादः (पु०) किसी विषय को लेकर या बात को लेकर वाक्कलह । वाग्युद्ध । झगड़ा । कलह । २ खण्डन । प्रतिवाद । ३ मुक़दमाबाज़ी । मुक़दमा । अभियोग । ४ चीत्कार । उच्च रव । ५ आज्ञा । आदेश ।—अर्थिन्, (पु०) मुक़दमेबाज़ । २ वादी । अभिशाप लगाने वाला ।—पदं (न०) जिसपर विवाद या झगड़ा हो । विवाद युक्त विषय ।—वस्तु, (न०) विवाद ग्रस्त वस्तु ।

विवादिन् (वि०) १ झगड़ालू । झगड़ने वाला । कलह करने वाला । २ अदालतबाज़ । मुक़दमेबाज़ किसी मुक़दमे का आसामी ।

विवारः (पु०) १ प्रस्फुटन । फैलाव । २ अभ्यन्तर प्रयत्नों में से एक संवार का विपरीत ।

विवासः (पु०) }
विवासन (न०) } निर्वासन । देश निकाला ।

विवासित (व० कृ०) निकाला हुआ । देश से निकाल बाहर किया हुआ ।

विवाहः (पु०) परिणय । एक शास्त्रीय प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दाम्पत्य-सूत्र में आबद्ध होते हैं।

विवाहित (व० कृ०) वह जिसका विवाह हो चुका हो । ब्याहा हुआ ।

विवाह्यः (पु०) १ दामाद । जामाता । २ दूल्हा । वर ।

विविक्त (व० कृ०) १ पृथक् किया हुआ । २ विजन । निर्जन । एकान्त । ३ अकेला । ४ पहचाना हुआ । ५ विवेकी । ६ पापरहित । विशुद्ध ।

विविक्तं (न०) निर्जन या एकान्त स्थल ।

विविक्ता (स्त्री०) अभागी स्त्री । दुर्भगा । वह स्त्री जो अपने पति की अरुचि का कारण हो ।

विविग्न (वि०) अत्यन्त उद्विग्न या भयभीत ।

विविध (वि०) बहुत प्रकार का । भाँति भाँति का अनेक तरह का ।

विवीतः (पु०) वह स्थान जो चारों ओर से घिरा हो । बाड़ा । चरागाह ।

विवृक्त (व० कृ०) त्यक्त । त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।

विवृक्ता (स्त्री०) विविक्ता स्त्री । स्त्री जिसे उसके पति ने छोड़ दिया हो ।

विवृत (व० कृ०) १ प्रकटित । प्रदर्शित । २ प्रत्यक्ष । स्पष्ट । खुला हुआ ३ खोलकर सामने रक्खा हुआ । अनढका । ४ घोषित । ५ टीका किया हुआ । व्याख्या किया हुआ । ६ पसरा हुआ । फैला हुआ । ७ बड़ा । विस्तृत ।—अक्ष, (वि०) बड़ी आँखों वाला ।—अक्षः (पु०) मुर्गा ।—द्वार, (वि०) खुला हुआ फाटक का ।

विवृतं (न०) ऊष्मस्वरों के उच्चारण करने का एक प्रयत्न ।

विवृतिः (स्त्री०) १ प्राकट्य । प्रादुर्भाव । २ फैलाव । पसार । ३ आविष्क्रिया । ४ टीका । भाष्य । व्याख्या ।

विवृत्त (व० कृ०) १ घूमा हुआ । २ घूमने वाला । भ्रमणकारी ।

विवृत्तिः (स्त्री०) १ चक्कर । भ्रमण । फेरा । २ सन्धिविश्लेष । सन्धिभङ्ग ।

विवृद्ध (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ । वृद्धि को प्राप्त । २ बहुत । विपुल । अधिक । बड़ा ।

विवृद्धिः (स्त्री०) १ बाढ़ । वृद्धि । २ समृद्धि ।

विवेकः (पु०) १ भली बुरी वस्तु का ज्ञान । सत् असत् का ज्ञान । २ मन की वह शक्ति जिसके द्वारा भले बुरे का ज्ञान हुआ करता है । भला बुरा पहचानने की शक्ति । ३ समझ । विचार । बुद्धि । ४ सत्यज्ञान । ५ प्रकृति और पुरुष की विभिन्नता का ज्ञान । ६ जलपात्र । पानी रखने का बरतन । जलकुण्ड ।

विवेकज्ञ (वि०) भले बुरे का ज्ञान रखने वाला । विचारवान् । बुद्धिमान ।

विवेकिन् (वि०) विचारवान । बुद्धिमान । (पु०) १ निर्णायक । विचारकर्त्ता । २ दर्शनशास्त्री ।

विवेक्तृ (पु०) १ न्यायाधीश २ पण्डित । दर्शन शास्त्री ।

विवेचनं (न०) } १ विवेक । भली बुरी वस्तु का
विवेचना (स्त्री०) } ज्ञान । २ वाद विवाद । ३ निर्णय । फैसला ।

विवोढृ (पु०) वर । दूल्हा । पति ।

विश् (धा० प०) [विशति, विष्ट] १ प्रवेश करना । २ जाना या आना । हिस्से में आना । बाँट में पड़ना । अधिकार में आना । ३ बैठ जाना । बस जाना । ४ घुसना । व्याप्त होना । ५ किसी कार्य को अपने हाथ में लेना ।

विश् (पु०) १ वैश्य । बनिया । २ मानव । मनुष्य । ३ लोभ । (स्त्री०) १ प्रजा । रैयत । २ कन्या । बेटी ।—पण्यं, (न०) सौदागरी माल ।—पतिः, (या विशांपतिः,) (पु०) राजा । नृपति ।

विशं (न०) १ भसीड़े के रेशे ।—आकरः, (पु०) भद्रचूड़ नामक पौधा ।—कण्ठा, (स्त्री०) सारस ।

विशंकट } (वि०) [स्त्री०—विशंकटा, विशंकटी]
विशङ्कट } १ बड़ा । बहुत बड़ा । २ दृढ । प्रचण्ड । बलवान ।

विशंका }
विशङ्का } (स्त्री०) भय । डर । आशङ्का ।

विशद (वि०) १ साफ । शुद्ध । स्वच्छ । बेदाग । २ उज्ज्वल । सफेद । सफेद रंग का । ३ चमकीला । सुन्दर । ४ स्पष्ट । व्यक्त । ५ शान्त । निश्चिन्त । चैन से ।

विशयः (पु०) १ सन्देह । शक । अनिश्चय । २ आश्रय । सहारा ।

विशरः (पु०) १ दो टुकड़े करना। फट जाना। २ हत्या। कत्ल। बध। नाशन।

विशल्य (वि०) कष्ट और चिन्ता से रहित। निश्चिन्त।

विशसनं (न०) १ हत्या। बध। २ बरबादी।

विशसनः (पु०) १ कटार। खाँड़ा। २ तलवार।

विशस्त (व० कृ०) १ काटा हुआ। गँवार। शिष्टाचारविहीन। बदतहज़ीब। ३ प्रशंसित। प्रसिद्ध किया हुआ।

विशस्तृ (पु०) १ बलि देने वाला। २ चाण्डाल।

विशस्त्र (वि०) हथियार हीन। जिसके पास बचाव अथवा आत्मरक्षा के लिये कोई हथियार न हो।

विशाखः (पु०) १ कार्तिकेय का नाम। २ धनुष चलाने के समय एक पैर आगे और दूसरा उससे कुछ पीछे रखना। ३ याचक। भिक्षुक। ४ तकुआ। ५ शिव जी का नाम।—जः, (पु०) नारंगी का पेड़।

विशाखल देखो विशाख का दूसरा अर्थ।

विशाखा (प्रायः द्विवचन) १६ वें नक्षत्र का नाम जिसमें दो तारे होते हैं।

विशायः (पु०) पहरेदारों का पारी पारी से सोना।

विशारणं (न०) १ चीरना। दो टुकड़े करना। २ हनन। मारण।

विशारद (वि०) १ चतुर। निपुण। २ पण्डित। बुद्धिमान। ३ प्रसिद्ध। प्रख्यात। ४ हिम्मती। साहसी।

विशारदः (पु०) बकुल वृक्ष।

विशाल (वि०) १ बड़ा। महान्। लंबा चौड़ा। प्रशस्त। चौड़ा। २ सम्पन्न। बहुतायत से। ३ प्रसिद्ध। आदर्श। महान्। कुलीन।—अक्षः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—अक्षी, (स्त्री०) दुर्गा। पार्वती जी।

विशालः (पु०) १ मृग विशेष। २ पक्षी विशेष।

विशाला (स्त्री०) १ उज्जयनी नगरी। २ एक नदी का नाम।

विशिख (वि०) चोटी रहित। शिखाहीन। जिसके सिर पर कलँगी न हो।

विशिखः (पु०) १ तीर। २ नरकुल। ३ गदाला।

विशिखा (स्त्री०) १ फावड़ा। २ तकुआ। ३ सुई या आलपिन। ४ छोटा बाण। ५ राजमार्ग। आम रास्ता। ६ नाऊ की स्त्री। नाइन।

विशित (वि०) पैना। तीक्ष्ण।

विशिपं (न०) १ मन्दिर। घर। मकान।

विशिष्ट (वि०) १ प्रसिद्ध। मशहूर। यशस्वी। कीर्तिशाली। ३ जो बहुत अधिक शिष्ट हो। ४ विलक्षण। अद्भुत। ५ विशेषता युक्त। जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो।—अद्वैतवादः, (विशिष्टाद्वैतवादः) (पु०) श्रीरामानुजाचार्य का एक प्रसिद्ध दार्शनिक सिद्धान्त। [इसमें ब्रह्म जीवात्मा और जगत् तीनों मूलतः एक ही माने जाते हैं, तथापि तीनों कार्य रूप में एक दूसरे से भिन्न तथा कतिपय विशिष्ट गुणों से युक्त माने गये हैं।]

विशीर्ण (व० कृ०) १ टूटाफूटा। २ सड़ा हुआ। मुरझाया हुआ। ३ गिरा हुआ। ४ झुरियाया हुआ। झुर्रियाँ पड़ा हुआ।—पर्णः, (पु०) नीम का पेड़।—मूर्तिः (पु०) कामदेव का नाम।

विशुद्ध (वि०) १ साफ किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २ पापरहित। ३ कलङ्कशून्य। ४ ठीक। सही। ५ गुणवान। धर्मात्मा। ईमानदार। ६ विनम्र।

विशुद्धिः (स्त्री०) १ शुद्धता। पवित्रता। २ सहीपन। ३ भूल संशोधन। ४ समानता। सादृश्य।

विशूल (वि०) भाला रहित। जिसके पास भाला न हो।

विशृंखल } विशृङ्खल } (वि०) १ जिसमें शृङ्खला न हो या न रह गयी हो। शृङ्खला विहीन। २ जो किसी प्रकार काबू में न लाया जा सके या दबाया अथवा रोका न जा सके। ३ लंपट। दुराचारी। लुंगाड़ा।

विशेष (वि०) १ विलक्षण। २ विपुल।

विशेषः (पु०) १ विशिष्टता । पहिचान । २ अन्तर। भेद । फरक । ३ विलक्षणता । ४ तारतम्य । ५ अवयव । अंग । ६ प्रकार । तरह । ढंग । किस्म । ७ वस्तु । पदार्थ । चीज़ । ८ उत्तमता । उत्कृष्टता । ६ श्रेणी । कक्षा । १० माथे पर का तिलक । टीका । ११ विशेषण । १२ साहित्य में एक प्रकार का पद्य जिसमें तीन श्लोकों या पदों में एक ही क्रिया रहती है । अतः उन तीनों का एक साथ ही अन्वय होता है । १३ वैशेषिक दर्शन के सप्त पदार्थों में से एक ।—उक्तिः, (स्त्री०) काव्य में एक प्रकार का अलङ्कार इसमें पूर्ण कारण के रहते भी कार्य के न होने का वर्णन किया जाता है ।

विशेषक (वि०) १ विशिष्ट । विलक्षण ।

विशेषकं (न०) } १ विशेषण । २ टीका । तिलक ।
विशेषकः (पु०) } ३ चन्दन आदि से अनेक प्रकार की रेखाएँ बनाकर शृङ्गार करने की क्रिया ।

विशेषकं (न०) ऐसे तीन श्लोकों का समुदाय जिनका एक साथ ही अन्वय हो ।

विशेषण (वि०) जिसके द्वारा विशेष्य निरूपण किया जाय । गुण रूप आदि का बताने वाला ।

विशेषणं (न०) किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करने वाला या बतलाने वाला शब्द । २ अन्तर । फरक । भेद । ३ व्याकरण में वह विकारी शब्द, जिससे किसी संज्ञावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो । ४ लक्षण । ५ किस्म । जाति ।

विशेषतस् (अव्यया०) खास कर के । खास तौर पर ।

विशेषित (व० कृ०) १ विशेष । खास । २ परिभाषित जिसकी परिभाषा की गयी हो या जिसकी पहचान बतलायी गयी हो । ३ विशेषण द्वारा पहिचाना हुआ । ४ उत्कृष्टतर । उत्तम ।

विशेष्य (वि०) मुख्य । प्रधान । उत्कृष्ट ।

विशेष्यं (न०) (व्याकरण में) वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो । वह संज्ञावाची शब्द जिसकी विशेषता विशेषण लगाकर प्रकट की जाय ।

विशोक (वि०) शोकरहित । सुखी ।

विशोकः (पु०) अशोक वृक्ष ।

विशोका (स्त्री०) शोक विवर्जित ।

विशोधनं (न०) १ अच्छी तरह साफ करने की क्रिया । विशुद्धता । २ सफ़ाई । पापमोचन । ३ प्रायश्चित्त ।

विशोध्य (वि०) साफ़ करने योग्य । स्वच्छ । सही करने योग्य ।

विशोध्यं (न०) ऋण । कर्ज़ा ।

विशोषणं (न०) सुखाने की क्रिया ।

विश्रणनं } (न०) दान । भेंट । पुरस्कार ।
विश्राणनं }

विश्रब्ध (व० कृ०) १ जो उद्धत न हो । शान्त । २ जिसका विश्वास किया जाय । विश्वस्त । विश्वसनीय । ३ निर्भय । निडर । ४ दृढ । अचञ्चल । ५ दीन । ६ अत्यधिक । बहुतअधिक ।

विश्रब्धं (अव्यया०) विश्वस्तता से । निर्भयता से । निस्सङ्कोच भाव से ।

विश्रमः (पु०) १ विश्राम । २ बंदी । समाप्ति ।

विश्रंभः } (पु०) विश्वास । घनिष्टता । परिचय ।
विश्रम्भः } २ गुप्त बात । रहस्य । ३ विश्राम । ४ प्रेम पूर्वक (कुशल) प्रश्न । ५ प्रेम कलह । प्रेमियों का झगड़ा । ६ हत्या । वध ।—आलापः, (पु०) भाषणं, (न०) गुप्त वार्तालाप ।—पात्रं, (न०)—भूमिः, (न०)—स्थानं, (न०) विश्वस्त मनुष्य । विश्वसनीय पदार्थ । विश्वासपात्र जन ।

विश्रवः (पु०) आश्रय । आश्रम ।

विश्रवस् (पु०) पुलस्त्य ऋषि के पुत्र और रावण के पिता का नाम ।

विश्राणित (व० कृ०) दिया हुआ । बख्शा हुआ ।

विश्रान्त (व० कृ०) १ बंद । बंद किया हुआ । २ विश्राम किये हुए । आराम किये हुए । ३ शान्त ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) १ विश्राम । आराम । २ अवसान ।

विश्रामः (पु०) अवसान । वदी । विश्राम । आराम । ३ शान्ति ।

विश्रावः (पु०) १ चुआव । टपकन । बहाव । २ प्रसिद्धि । शोहरत ।

विश्रुत (व० कृ०) १ प्रसिद्ध । प्रख्यात । २ प्रसन्न । आह्लादित । हर्षित ।

विश्रुतिः (स्त्री०) कीर्ति । यश । ख्याति ।

विश्लथ (वि०) १ ढीला । खुला हुआ । २ मंद । सुस्त । थका हुआ ।

विश्लिष्ट (व० कृ०) खुला हुआ । अलहदा किया हुआ ।

विश्लेषः (पु०) १ अनैक्य । २ पार्थक्य । ३ प्रेमियों का विछोह या पति और पत्नी का विछोह । ४ अभाव । हानि । शोक । ५ दरार । दर्ज़ ।

विश्लेषित (व० कृ०) वियोजित । अलहदा किया हुआ । अनमिला हुआ ।

विश्व (सर्वनाम०) १ सम्पूर्ण । तमाम । कुल । समूचा । सार्वजनिक । २ प्रत्येक । हरेक ।

विश्वं (न०) १ चौदह भवनों का समूह । समस्त ब्रह्माण्ड । २ संसार । जगत । दुनिया । ३ सोंठ । ४ बोलनामक गन्ध द्रव्य ।

विश्वः (पु०) १ देवताओं का एक गण जिसमें वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा परिगणित हैं ।—आत्मन्, (पु०) १ परमात्मा । २ ब्रह्मा । ३ विष्णु । ४ शिव ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) १ परमात्मा । २ विष्णु । ३ शिव ।—कद्रु, (वि०) नीच । कमीना ।—कद्रुः, (पु०) १ ताज़ी या शिकारी कुत्ता । २ ध्वनि । शब्द ।—कर्मन्, (पु०) १ विश्वकर्मा अर्थात् देवताओं का शिल्पी । २ सूर्य । -कृत्, (पु०) १ सृष्टिकर्त्ता । २ विश्वकर्मा का नामान्तर ।—केतुः, (पु०) अनिरुद्ध ।—गन्धः, (पु०) लहसन ।—गन्धं, (न०) १ लोबान । गुग्गुल । २ बोल नामक गन्ध द्रव्य ।—गन्धा, (स्त्री०) पृथिवी ।—जनं, (न०) मानवजाति ।—जनीन,—जन्य, (वि०) मनुष्य जाति मात्र के लिये भला या हितकर ।—जित्, (पु०) १ यज्ञ विशेष । २ वरुण का पाश ।—धारिणी, (स्त्री०) पृथिवी ।—धारिन्, (पु०) देवता विशेष ।—नाथः (पु०) विश्व का स्वामी । शिव । महादेव । काशी के एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिङ्ग का नाम ।—पा, (पु०) १ ईश्वर । २ सूर्य । ३ चन्द्रमा । ४ अग्नि ।—पाविनी —पूजिता, (स्त्री०) तुलसी ।—प्सन् (पु०) १ देवता । २ सूर्य । ३ चन्द्र । ४ अग्नि ।—भुज्, (वि०) सब का उपभोग करने वाला । सर्वभक्षी । (पु०) १ ईश्वर । २ इन्द्र ।—भेषजं, (न०) सोंठ ।—मूर्ति, (वि०) सर्वरूपमय । सर्वव्यापी । सर्वत्र विद्यमान ।—योनिः, (पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु ।—राज्,—राजः, (पु०) सार्वदेशिक अधिपति ।—रूप, (वि०) सर्वव्यापी । सर्वत्र विद्यमान ।—रूपः, (पु०) विष्णु ।—रूपं (न०) काला अगर ।—रेतस् (पु०) ब्रह्मा ।—वाह,(=विश्वौही स्त्री०) सब सहने वाला ।—सहा, (स्त्री०) पृथिवी ।—सृज्, (पु०) सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा जी ।

विश्वंकरः } विश्वङ्करः } (पु०) आँख । नेत्र । (किसी किसी के मतानुसार यह नपुंसक लिङ्ग भी है ।)

विश्वतस् (अव्यया०) हर ओर । हर तरफ । हर जगह । सर्वत्र । चारों ओर ।—मुख, (वि०) हर ओर एक एक मुख वाला ।

विश्वथा (अव्यया०) सर्वत्र । सब जगह ।

विश्वंभर } विश्वम्भर } (वि०) सारे विश्व का पालन या भरण करने वाला ।

विश्वंभर } विश्वम्भरः } (पु०) १ परमात्मा । सर्वव्यापी परमेश्वर । २ विष्णु । ३ इन्द्र ।

विश्वंभरा } विश्वम्भरा } (स्त्री०) पृथिवी । धरा । मही ।

विश्वसनीय (स० का० कृ०) १ विश्वास करने योग्य । विश्वस्त । मातवर । २ विश्वास उत्पन्न करने की शक्ति रखने वाला ।

विश्वस्त (व० कृ०) १ मातवर । विश्वसनीय । जिसका विश्वास किया जाय । २ निर्भय । निःशङ्क ।

विश्वस्ता (स्त्री०) विधवा ।

विश्वाधायस (पु०) देवता ।

विश्वानरः (पु०) सावित्री की उपाधि ।

विश्वामित्रः (पु०) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाधिज गाधेय और कौशिक भी कहलाते हैं।

विश्वावसुः (पु०) एक गन्धर्व का नाम।

विश्वासः (पु०) १ मातवरी। २ गुप्त सूचना।—घातः, —भङ्गः, (पु०) किसी के विश्वास के विरुद्ध की हुई क्रिया।—घातिन्, (पु०) विश्वासघातक। दग़ाबाज़।

विष् (धा० उ०) [वेवेष्टि, वेविष्टे, विष्ट] १ घेरना। २ छा जाना। व्याप्त हो जाना। ३ मुठभेड होना।

विष् (स्त्री०) १ विष्ठा। मल। २ व्याप्ति। फैलाव। पसार। ३ लड़की (यथा विट्पति)—कारिका, (स्त्री०) (= विट्कारिका) पक्षी विशेष।—ग्रहः, (विड्ग्रहः) कोष्ठबद्धता। कब्ज़ियत।—चरः, (= विट्चर) —वराहः, (पु०) (= विड्वराहः) विष्ठा भक्षी गाँव शूकर।—लवणं, (विड्लवणं) (न०) लवण विशेष।—सङ्गः, (विट्सङ्गः) (पु०) कब्ज़ियत। कोष्ठबद्धता। सारिका, (स्त्री०) पक्षी विशेष।

विषं (न०) १ ज़हर। सर्पविष। २ जल। ३ कमल की जड़ अथवा भसीड़े के रेशे। ४ गुग्गुल। बोल नामक गन्धद्रव्य।—अक्त,—दिग्ध, (वि०) ज़हर मिला हुआ। विषयुक्त। विषपूर्ण। ज़हरीला।—अङ्कुरः, (पु०) १ भाला। २ विष में बुझा तीर।—अन्तकः, (पु०) शिव।—अपह, घ्न, (वि०) विषनाशक।—आननः, —आयुधः, —आस्यः, (पु०) सर्प।—कुम्भः, (पु०) विष से भरा घड़ा।—कृमिः, (पु०) वह कीड़ा जो विष में पले।—ज्वरः, (पु०) भैंसा।—दः, (पु०) बादल।—दं, (न०) तूतिया।—दन्तकः (पु०) सर्प। साँप।—दर्शनमृत्युकः, —मृत्युः, (पु०) चकोर पक्षी।—धरः, (पु०) साँप। सर्प।—पुष्पं, (न०) नील कमल।—प्रयोगः, (पु०) विष देना। विष का व्यवहार या इस्तेमाल।—भिषज्, (पु०)—वैद्यः, (पु०) विष उतारने की चिकित्सा करने वाला। साँप के काटे हुए का इलाज करने वाला।—मंत्रः, (पु०) १ विष उतारने का मंत्र। २ सपेरा। कालबेलिया। मदारी।—वृक्षः, (पु०) ज़हरीला पेड़।—शालूका, (स्त्री०) कमल की जड़।—शूकः, —शृङ्गिन्, —सृक्कन्, (पु०) बर्र। बरैया।—हृदय, (वि०) दुष्ट हृदय वाला। मलिन मन वाला।

विषक्त (व० कृ०) १ मज़बूती से गड़ा हुआ। २ दृढ़ता से चिपटा या सटा हुआ।

विषंडं, विषण्डं (न०) कमल की जड़ के रेशे।

विषण्ण (व० कृ०) उदास। रंजीदा। विषादयुक्त।—मुख, —वदन, (वि०) जो उदास देख पड़े। उदास। रंजीदा। ग़मग़ीन।

विषम (वि०) १जो सम या समान न हो। असमान। २ वह संख्या जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। सम या जूल का उल्टा। ताक। ३ अनियमित। अव्यवस्थित। ४ बहुत कठिन। जो सहज में समझ में न आवे। रहस्यमय। ५ अप्रवेश्य। दुष्प्रवेश्य। ६ मोटा। खरदरा। ७तिरछा। बाँका। ८कष्टदायी। पीड़ाकारक। ९ प्रचण्ड। विकट। भीषण। १० भयानक। भयप्रद। ११ बुरा। प्रतिकूल। विपरीत। १२ अजीब। अनोखा। असमान। १३ चालाक। बेईमान।—अक्षः, —ईक्षणः, —नयनः, —नेत्रः, —लोचनः, (पु०) शिव जी के नामान्तर। अन्नं, (न०) असाधारण भोजन।—आयुधः, इषुः, —शर, (पु०) कामदेव।—कालः, (पु०) प्रतिकूल मौसम या ऋतु।—चतुरस्रः,—चतुर्भुजः, (पु०) वह चौकोर क्षेत्र जिसके चारों कोन समान न हों। विषम कोणवाला चतुष्कोण।—छदः, (पु०) छतिवन का पेड़।—ज्वर., (पु०) ज्वर विशेष। इसके चढ़ने का कोई समय नियत नहीं रहता और न तापमान ही सदा समान रहता है।—लक्ष्मीः, (पु०) दुर्भाग्य। बदक़िस्मती।

विषमं (न०) १ असमानता। २ अनोखापन। ३ दुष्प्रवेश्य स्थान। गढ़ा। गर्त। ४ सङ्कट। आपत्ति। ५ एक अर्थालङ्कार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का सवन्ध वर्णन किया जाय या यथायोग्य का अभाव निरूपण किया जाय।

विषमः (पु०) विष्णु का नाम।

विषमित (वि०) १ ऊबड़ खाबड़। असम। २ सङ्कुचित। सिकुड़ा हुआ। ३ कठिन या दुर्गम बनाया हुआ।

विषयः (पु०) १ पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ। २ सांसारिक पदार्थ। दैनलैन। ३ लौकिक आनन्द या मैथुन सम्बन्धी आनन्द भोग। ४ वस्तु। पदार्थ। चीज़। ५ उद्देश्य। ६ दौड़। सीमा। अवकाश। दूरता। परिसर। ७ विभाग। प्रान्त क्षेत्र। कोटि। स्थान। ८ प्रसङ्ग। विवेच्य या आलोच्य विषय। ९ स्थान। जगह। १० देश। राज्य। सल्तनत। बादशाहत। ११ आश्रमस्थल। आश्रम। १२ ग्रामों का समूह। १३ प्रियतम। पति। १४ वीर्य। १५ धार्मिक कृत्य।—अभिरतिः, (पु०) इन्द्रिय-सम्बन्धी भोगों के प्रति अनुरक्ति।—आसक्त, —निरत, (वि०) कामी। रतिक्रिया।—सुखं, (न०) इन्द्रिय सुख।

विषयायिन् (पु०) १ कामी। कामुक। २ सांसारिक या संसार में फँसा हुआ आदमी। विषयों में फँसा हुआ। ३ कामदेव। ४ राजा। ५ इन्द्रिय। ६ जड़वादी।

विषयिन् (वि०) दैहिक (पु०) १ संसारी पुरुष। २ राजा। ३ कामदेव। ४ विषय वासना में फँसा हुआ। (न०) १ इन्द्रिय। २ ज्ञान।

विषलः (पु०) विष। सर्पविष।

विषह्य (वि०) १ सहने योग्य। बरदाश्त करने योग्य। २ निर्णय करने या फ़ैसला करने योग्य। ३ सम्भव।

विषा (स्त्री०) } विषाणः (पु०) } विषाणं (न०) } विषाणी (स्त्री०) } १ विष्ठा। मल। २ बुद्धि। प्रतिभा। ३ सींग। शृङ्ग।

विषाणिन् (वि०) सींग या नोंकदार दाँतों वाला (पु०) १ सींग या नोकदार दाँतों वाला कोई भी जानवर। २ हाथी। ३ साँड़।

विषादः (पु०) १ उदासी। रंजीदगी। दुःख। शोक। २ नाउम्मेदी। हताशा। नैराश्य। ३ शिथिलता। दौर्बल्य। ४ मूढ़ता। अज्ञानता।

विषादिन् (वि०) विषादयुक्त। उदास। ग़मग़ीन।

विषारः (पु०) साँप। सर्प।

विषालु (वि०) ज़हरीला।

विषु (अव्यय०) १ दो समान भागों में। बराबर का। २ भिन्न रूप में। ३ समान। सदृश।

विषुपं (न०) ज्योतिष के अनुसार वह समय जब कि सूर्य विषुव रेखा पर पहुँचता है और दिन रात दोनों बराबर होते हैं।

विषुवं (न०) देखो विषुपं।

विषुवरेखा (स्त्री०) ज्योतिष के कार्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथिवी तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व पश्चिम पृथिवी के चारों ओर मानी जाती है। यह रेखा दोनों मेरुओं के ठीक मध्य में और दोनों से समान अन्तर पर है।

विषूचिका (स्त्री०) हैज़ा।

विष्क (धा० उ०) [विष्कयति, विष्कयते] १ हत्या करना। चोटिल करना। २ देखना। पहचानना।

विष्कंदः } विष्कन्दः } (पु०) १ छितराने या तितर बितर करने की क्रिया। २ गमन।

विष्कंभः } विष्कम्भः } (पु०) १ रोक। रुकावट। अड़चन। २ अर्गल। किवाड़ का बेंड़ा या बिल्ली। ३ छत्त का वह मुख्य शहतीर जिस पर छत्त रक्खी हो। ४ खंभा। स्तम्भ। ५ वृक्ष। ६ नाटक का एक अङ्क विशेष जो प्रायः गर्भाङ्क के निकट होता है जो दृश्य पहले दिखालाया जा चुका है अथवा जो अभी होने वाला है, उसकी इसमें मध्यम पात्रों द्वारा सूचना दी जाती है। ७ वृत्त का व्यास। ८ योगियों का एक प्रकार का बन्ध। ९ प्रसार। लंबाई।

विष्कंभक } विष्कम्भक } (न०) देखो विष्कंभ।

विष्कंभित } विष्कम्भित } (वि०) अवरुद्ध। रोका हुआ। अड़चन डाला हुआ।

विष्कंभिन् } विष्कम्भिन् } (पु०) अर्गल। किवाड़ों का बेंड़ा।

विष्किरः (पु०) १ छितराने या नख से कुरेदने की क्रिया। २ मुर्गा। ३ तीतर बटेर की जाति के पक्षी।

किसी ब्राह्मण को बिना लगान दान दे दी गयी हो।—रथः, (पु०) गरुड़ का नाम। —लिङ्गी, (स्त्री०) बटेर।—लोकः, (पु०) वैकुण्ठधाम। —वल्लभा, (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी। २ तुलसी। —वाहनः—वाह्यः, (पु०) गरुड़ जी।

विष्पंदः / विष्पन्दः (पु०) फिसलन। खिसकन। धड़कन।

विष्फारः (पु०) १ धनुष की टंकार। २ कम्पन।

विष्यद / विष्यन्द (पु०) बहाव। चुअन। टपकन। झरन।

विष्व (वि०) अनिष्टकर। उत्पाती। अपकारी।

विष्वच् / विष्वञ्च् (वि०) [कर्ता, एकवचन, पु०—विष्वङ्, स्त्री०—विषूची। न०—विष्वक्] १ सर्वगत। सर्वव्यापी। २ भागों में पृथक् किया हुआ या करने वाला। ३ विभिन्न। —सेनः, (= विष्वक्सेनः विष्वक्सेनः) (पु०) १ विष्णु भगवान का नाम। २ एक मनु का नाम जो मत्स्यपुराण के अनुसार तेरहवें और विष्णु-पुराण के अनुसार चौदहवें हैं। ३ शिव का नाम। ४ एक प्राचीन ऋषि का नाम।—प्रिया, (स्त्री०) लक्ष्मी जी का नामान्तर।

विष्वाणं / विष्वाणः (पु०) भोजन करने की क्रिया।

विष्वद्र्यच् / विष्वद्र्यञ्च् (वि०) [स्त्री०—विष्वद्रीची] सर्वगत, सर्वव्यापी।

विस् (धा० प०) [विस्यति] फेंकना। पटकना। भेजना।

विस देखो बिस।

विसंयुक्त (व० कृ०) असंयुक्त। पृथक्।

विसंयोगः (पु०) अलगाव। असंयोग।

विसंवादः (पु०) १ छल। धोखा। प्रतिज्ञाभङ्ग। नैराश्य। २ असङ्गति। ३ विरोध। खण्डन।

विसंवादिन् (वि०) १ निराश करने वाला। धोखा देने वाला। २ असङ्गत। विरोधात्मक। ३ भिन्न। असम्मत। ४ छली। धोखेबाज़। मुकरी।

विसंष्ठुल (वि०) १ चंचल। आन्दोलित। २ असम। विषम।

विसंकट } (वि०) भयानक । डरावना । भयप्रद ।
विसङ्कट } भयङ्कर ।

विसंकटः } (पु०) १ सिंह । २ इंगुदी का पेड़ ।
विसङ्कटः }

विसंगत } (वि०) अयोग्य । असङ्गत । बेमेल ।
विसङ्गत }

विसंधिः } (पु०) कुसन्धि । सन्धि का अभाव ।
विसन्धिः }

विसरः (पु०) १ गमन । प्रस्थान । रवानगी । २ वृद्धि । निकास । ३ भीड़ भड़क्का । गल्ला । झुंड । हेड़ । ४ अत्यधिक परिमाण । ढेर ।

विसर्गः (पु०) १ प्रेरण । त्याग । २ बहाव । उड़ेलन । टपकाव । ३ प्रक्षेपण । छोड़ना । ४ प्रदान । भेंट । दान । ५ विसर्जन । बरखास्तगी । ६ छोड़ देना । त्याग कर देना । ७ उत्सर्जन । (जैसे मल मूत्र का) ८ प्रस्थान । विछोह । ९ मोक्ष । मुक्ति । १० दीप्ति । प्रभा । ११ व्याकरणानुसार एक वर्ण जिसका चिन्ह खड़े दो विन्दु (:) होते हैं । १२ सूर्य का दक्षिण अयन । १३ लिङ्ग । जननेन्द्रिय ।

विसर्जनं (न०) १ परित्याग । त्याग । २ दान । प्रदान । भेंट । ३ मल का त्याग करना । ४ छोड़ देना । ५ बरखास्तगी । ६ किसी देवता की बिदा । आवाहन का उलटा । ७ वृषोत्सर्ग । साँड़ दाग कर छोड़ना ।

विसर्जनीय (वि०) त्यागने योग्य ।

विसर्जनीयः देखो विसर्गः ।

विसर्जित (व० कृ०) प्रेरित । त्यक्त । २ दत्त । प्रदत्त । ३ छोड़ा हुआ । त्याग किया हुआ । ४ प्रेषित । भेजा हुआ । ५ बरखास्त किया हुआ ।

विसर्पः (पु०) १ रेंगना । फिसलना । सरकना । २ इधर उधर घूमना । ३ फैलना । भ्रमण करना । ४ किसी कर्म का अनाश्रित और अनपेक्षित परिणाम । ५ रोग विशेष जिसमें ज्वर के साथ साथ सारे शरीर में छोटी छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं । सूखी खुजली ।

विसर्पथुः (न०) मोम ।

विसर्पणम् (न०) १ रेंगना । फिसलना । धीमी चाल से चलना । २ व्याप्ति । प्रसार । बढ़ोत्तरी ।

विसर्पिः (पु०) } देखो विसर्प का पाँचवा अर्थ ।
विसर्पिका (स्त्री०) }

विसल देखो बिसल ।

विसारः (पु०) १ व्याप्ति । फैलाव । २ रेंगन । फिसलन । ३ मछली ।

विसारं (न०) १ काठ । लकड़ी । २ शहतीर । लट्ठा ।

विसारिन् (वि०) [स्त्री०—विसारिणी] १ व्याप्ति । फैलाव । २ रेंगन । फिसलन । सरकन । (पु०) मछली ।

विसिनी देखो बिसिनी ।

विसूचिका (स्त्री०) हैज़ा ।

विसूरणं (न०) } कष्ट । शोक ।
विसूरणा (स्त्री०) }

विसूदितं (न०) पश्चात्ताप । पछतावा । परिताप ।

विसूरिता (स्त्री०) ज्वर ।

विसृत (व० कृ०) १ फैला हुआ । छाया हुआ । व्याप्त । २ आगे बढ़ा हुआ । पसारा हुआ । ३ उच्चारित ।

विसृत्वर (वि०) [स्त्री०—विसृत्वरी] १ फैला हुआ । विस्तारित । व्याप्त । २ रेंगने वाला । फिसलने वाला ।

विसृमर (वि०) रेंगने वाला । फिसलने वाला । चलने वाला ।

विसृष्ट (व० कृ०) १ प्रेरित । त्यक्त । २ रचा हुआ । स्पष्ट । ३ बहाया हुआ । फेंका हुआ । भेजा हुआ । प्रेषित । ४ निकाला हुआ । बरखास्त किया हुआ । ५ फेंका हुआ । या चलाया हुआ या छोड़ा हुआ । (अस्त्र) । ६ दिया हुआ । ७ बख्शा हुआ । ८ त्यागा हुआ । अलगाया हुआ । हराया हुआ ।

विस्त देखो बिस्त ।

विस्तारः (पु०) १ विस्तार । प्रसार । फैलाव । २ विस्तृत विवरण । सविस्तर वर्णन । ३ व्याप्ति ४ विपुलता । बहुत्व । समूह । संख्या । ५ आधार । ६ बैठकी । पीढ़ा ।

विस्तरः (पु०) १ लंबे या चौड़े होने का भाव । फैलाव । २ चौड़ाई । ३ बढ़ाव । वृद्धि । ४ ब्योरा ।

५ वृत्त का व्यास । ६ झाड़ी । ७ पेड़ की डाली या शाखा जिसमें नये पत्ते लगे हों ।

विस्तीर्ण (व० कृ०) १ विस्तृत । दूर तक फैला हुआ । २ चौड़ा । ३ लंबा । बड़ा । फैला हुआ ।—पर्ण, (न०) मानकन्द ।

विस्तृत (व० कृ०) १ व्याप्त । फैला हुआ । बड़ा हुआ । २ चौड़ा । विस्तारित । ३ विपुल । परिव्याप्त । चारों ओर फैला हुआ ।

विस्तृतिः (स्त्री०) १ फैलाव । विस्तार । २ व्याप्ति । ३ लंबाई । चौड़ाई । ऊँचाई । गहराई । ४ वृत्त का व्यास ।

विस्पष्ट (वि०) १ साफ । स्पष्ट । बोधगम्य । २ प्रत्यक्ष । प्रकाशित । खुला हुआ । ज़ाहिर ।

विस्फारः (पु०) १ कंपन । सिसकन । २ धनुष की टंकार ।

विस्फारित (व० कृ०) १ कँपाया हुआ । २ कम्पित । थरथराता हुआ । ३ टंकोरा हुआ । ४ खैंचा हुआ । ताना हुआ । ५ प्रदर्शित । दिखलाया हुआ ।

विस्फुरित (व० कृ०) १ काँपता हुआ । कम्पित । २ सूजा हुआ । फूला हुआ ।

विस्फुलिंगः, विस्फुलिङ्गः (पु०) १ शोला । अंगारा । आग का जलता हुआ कोयला । २ विष विशेष ।

विस्फूर्जथुः (पु०) १ गर्जन । दहाड़ । नाद । २ बादल की गड़गड़ाहट । ३ लहरों का उत्थान ।

विस्फूर्जितं (न०) १ गरजन । चीत्कार । २ लहरदार । लुढ़कन । ३ फल । परिणाम ।

विस्फोटः (पु०), विस्फोटा (स्त्री०) १फोड़ा । २गुमड़ा । ३चेचक । माता की बीमारी ।

विस्मयः (पु०) १ आश्चर्य । ताज़्जुब । २ अद्भुत रस का एक स्थायी भाव । (यह अनेक प्रकार के अलौकिक अथवा विलक्षण पदार्थों के वर्णन करने या सुनने से मन में उत्पन्न होता है ।] ३ अभिमान । अहङ्कार । अकड़ । शेखी । ४ सन्देह । शक ।—आकुल,—आविष्ट, (वि०) विस्मित । आश्चर्य चकित ।

विस्मयंगम (वि०) आश्चर्यकारक । अद्भुत ।

विस्मरणं (न०) विस्मृति । याद या स्मरण का न रहना । भूलजाना । [प्रद ।

विस्मापन (वि०) [स्त्री० —विस्मापनी] आश्चर्य-

विस्मापनं (न०) १ विस्मयोत्पादन करने वाला । २ कोई भी वस्तु जो ताज्जुब में डाले । ३ गन्धर्वों की नगरी । (यह पु० भी है)

विस्मापनः (पु०) १ कामदेव । २ चाल । फरेब । छल । भ्रम ।

विस्मित (व० कृ०) चकित । आश्चर्य में पड़ा हुआ ।

विस्मृत (व० कृ०) भूला हुआ । जो स्मरण न हो ।

विस्मृतिः (स्त्री०) विस्मरण । भूल जाना ।

विस्मेर (वि०) चकित । आश्चर्यान्वित ।

विस्रं (न०) कच्चेमाँस जैसी दुर्गन्धि ।—गन्धिः, (पु०) हरताल ।

विस्रंसः (पु०), विस्रसा (स्त्री०) १ पतन । २ गलन । जीर्णता । निर्बलता । कमज़ोरी ।

विस्रसन (वि०) १ गिराने वाला । चुआने वाला । २ खुला हुआ ढीला ।

विस्रंसनं (न०) १ पतन । २ बहाव । टपकन । ३ खुलाव । ढीलापन । ४ दस्तावर । रेचक ।

विस्रब्ध, विस्रंभः, विस्रम्भः देखो विश्रब्ध । विश्रम्भ ।

विस्रसा (स्त्री०) जीर्णता । निर्बलता । बुढ़ापा ।

विस्रस्त (व० कृ०) १ ढीला किया हुआ । २ कमज़ोर । निर्बल ।

विस्रवः, विस्रावः (पु०) बहाव । टपकन । चूअन ।

विस्रावणं (न०) खून का बहाव ।

विस्रुतिः (स्त्री०) बहाव । चुआव । टपकन ।

विस्वर (वि०) बेसुरा ।

विहगः (पु०) १ पक्षी । २ बादल । ३ तीर । ४ सूर्य । ५ चन्द्रमा । ६ ग्रह ।

विहंगः } (पु०) १ पक्षी । २ बादल । ३ तीर ।
विहङ्गः } ४ सूर्य । ५ चन्द्रमा ।—इन्द्रः,—ईश्वरः, राजः, (पु०) गरुड़ जी ।

विहंगमः } (पु०) पक्षी ।
विहङ्गमः }

विहंगमा }
विहङ्गमा } (स्त्री०) बहँगी में की वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर बोझ बाँध कर लटकाया जाता है ।
विहगिका }
विहङ्गिका }

विहत (व० कृ०) १ सम्पूर्णतया आहत । वध किया हुआ । २ चोटिल किया हुआ । ३ विरोध किया हुआ । रोका हुआ । अटकाया हुआ ।

विहतिः (पु०) मित्र । सखा । सहचर ।

विहतिः (स्त्री०) १ वध करना । प्रहार करना । २ असफलता । नाकामयाबी । ३ पराजय । हार ।

विहननं (न०) १ ताड़न । मारण । २ चोट । अनिष्ट । ३ अड़चन । रुकावट । ४ धुना की धुनही ।

विहरः (पु०) १ हटाना । ले जाना । २ विछोह । वियोग ।

विहरणं (न०) १ हटाने या लेजाने की क्रिया । २ चहलकदमी । हवाख़ोरी । सैर सपाटा । ३ आमोद प्रमोद । मनोरञ्जन ।

विहर्तृ (पु०) १ भ्रमण करने वाला । २ लुटेरा ।

विहर्षः (पु०) बड़ा आनन्द । आह्लाद ।

विहसनं (न०) }
विहसित (न०) } मुसक्यान । मुसकुराहट । मन्द हास ।
विहासः (पु०) }

विहस्त (वि०) १ हाथरहित । करहीन । २ घबराया हुआ व्याकुल । ३ निकम्मा किया हुआ । ४ विद्वान् । पण्डित ।

विहा (अव्यया०) स्वर्ग । विहिश्त ।

विहापित (व० कृ०) १ छुड़ाया हुआ । वियोग कराया हुआ । २ देने के लिये विवश किया हुआ ।

विहापितं (न०) दान । उपहार ।

विहायस् } (पु० न०) आकाश । व्योम ।
विहायसः } (पु०) पक्षी ।

विहारः (पु०) १ हटाने या लेजाने की क्रिया । २ सैल सपाटा । चहलकदमी । हवाख़ोरी । भ्रमण । विचरण । ३ क्रीड़ा । आमोदप्रमोद । ४ कुचलना । पैर से रूँधना । पैर रखना । ५ उपवन । आमोद वन । ६ कंधा । । ७ जैन या बौद्ध मठ । सघाराम । ८ मन्दिर ।—गृहं, (न०) आमोदभवन ।—दासी, (स्त्री०) मठवासिनी । संन्यासिनी ।

विहारिका (स्त्री०) मठ ।

विहारिन् (वि०) विहार करने वाला । आमोदप्रमोद में व्यस्त ।

विहित (व० कृ०) १ किया हुआ । बनाया हुआ । अनुष्ठित । २ सुव्यवस्थित । निश्चित किया हुआ । नियुक्त किया हुआ । तै किया हुआ । ३ विधान किया हुआ । ४ निर्माण किया हुआ । रचा हुआ । ५ स्थापित । जमा किया हुआ । ६ सम्पन्न किया हुआ । ७ करने योग्य । ८ विभाजित । बाँटा हुआ ।

विहितं (न०) विधान । विधि । आदेश । आज्ञा ।

विहितिः (स्त्री०) १ कृति । कार्य । २ विधान ।

विहीन (व० कृ०) १ त्यक्त । परित्यक्त । त्यागा हुआ । २ रहित । बग़ैर । विना । ३ कमीना । नीच ।—जाति,—योनि, (वि०) नीच जाति में उत्पन्न । अकुलीन ।

विहृत (व० कृ०) १ खेला हुआ । क्रीड़ा किया हुआ । २ बढ़ा हुआ । विस्तृत ।

विहृतं (न०) (साहित्य में) रमणियों के दस प्रकार के अलङ्कारों में से एक ।

विहृतिः (स्त्री०) १ हटाने या छीन लेने की क्रिया । २ क्रीड़ा । आमोद प्रमोद । ३ विस्तार ।

विहेठकः (पु०) अपकारक । हिंसक ।

विहेठनं (न०) १ अपकार । अनिष्ट । २ रगड़ पीसना । ३ सन्ताप । ४ पीड़ा । क्लेश । शोक ।

विह्वल (वि०) १ भय अथवा वैसे ही किसी अन्य कारण से जिसका जी ठिकाने न हो । घबराया हुआ । व्याकुल । विकल । २ भयभीत ।

डरा हुआ । ३ मतिभ्रष्ट । । ४ पीड़ित । सन्तप्त । ५ उदास । ६ गला हुआ । पिघला हुआ ।

वी (धा० पर०) १ जाना । गमन करना । २ समीप गमन करना । नज़दीक जाना । ३ व्याप्त होना । ४ लाना । ५ फेंकना । प्रक्षेप करना । ६ खाना । निपटाना । ७ प्राप्त करना । ८ पैदा करना । ९ उत्पन्न होना । पैदा होना । १० चमकना । सुन्दर होना ।

वीकः (पु०) १ पवन । २ पक्षी । ३ मन ।

वीकाश देखो विकाश ।

वीक्षं (न०) १ कोई भी दृश्य पदार्थ । २ आश्चर्य । अचरज ।

वीक्षः (पु०)
वीक्षा (स्त्री०) } अवलोकन । चितवन । घूरन ।

वीक्षणं (न०)
वीक्षणा (स्त्री०) } चितवन । अवलोकन । दृष्टि ।

वीक्षितं (न०) अवलोकन । झलक ।

वीक्ष्य (वि०) १ देखने योग्य । २ जो दिखलाई पडे ।

वीक्ष्यः (पु०) १ नचैया । नाचने वाला । नट । अभिनय का पात्र । २ घोड़ा ।

वीक्ष्यं (न०) १ कोई देखने योग्य या दिखलाई पड़ने वाला पदार्थ या वस्तु । २ आश्चर्य । अचंभा ।

वीखा (स्त्री०) १ गमन । गति । उन्नति । २ घोडे की चालों में से एक चाल । ३ नृत्य । नाच । ४ सङ्गम । मिलन ।

वीचिः
वीची } (पु० स्त्री०) १ लहर । तरंगा । २ अविवेकता । चाञ्चल्य । ३ आनन्द । आह्लाद । ४ विश्राम । अवकाश । ५ किरन । ६ अल्प । स्वल्प ।—मालिन् (पु०) समुद्र ।

वीची देखो वीचि ।

वीज् (धा० आ०) [वीजते] १जाना । गमन करना । (उभ० —वीजयति–वीजयते) २ पंखा करना । ठंडा करना । पंखा हाँक कर ठंडा करना ।

वीज
वीजक
वीजल
वीजिक
वीजिन्
वीज्य } देखो बीज । बीजक । बीजल आदि ।

वीजनः (पु०) १ चक्रवाक । २ चकोर ।

वीजनं (न०) १ पंखा । २ पंखा झलने की क्रिया ।

वीटा (स्त्री०) प्राचीन कालीन एक प्रकार का खेल किली डंडा के ढंग पर ।

वीटिः
वीटिका
वीटी } (स्त्री०) १ पान की बेल । २ पान का बीड़ा तैयार करने की क्रिया । ३ बंधन । गाँठ । ४ चोली की गाँठ ।

वीणा (स्त्री०) १ बीन । २ बिजली ।—आस्यः, (पु०) नारद जी का नाम—दण्डः, (पु०) वीणा का लंबा डंडा जो मध्य मे होता है । —वादः,—वादकः, (पु०) वीणा बजाने वाला ।

वीत (व० कृ०) १ अन्तर्धान हुआ । २ प्रस्थानित । गया हुआ । ३ छोड़ा हुआ । ढीला किया हुआ । मुक्त किया हुआ । ४ प्रवर्जित । ५ पसंद किया । हुआ । स्वीकृत किया हुआ । ६युद्ध के अयोग्य ।७ पालतू । सीधा । ८ जो रहित हो ।–दम्भ, (वि०) विनम्र ।—भय, (वि०) निर्भय, निशङ्क ।—भयः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—मल, (वि०) विशुद्ध ।—राग, (वि०) १ कामनाशून्य । निस्पृह । शान्त । २ बिना रंग का । —रागः, (पु०) जितेन्द्रिय साधु ।—शोकः, (पु०) अशोक वृक्ष ।

वीतः (पु०) घोड़ा या हाथी जो लड़ाई के काम के अयोग्य हो ।

वीतं (न०) हाथी को अंकुश से गोद कर और पैरों की मार से मारने की क्रिया ।

वीतंसः (पु०) १ पिंजड़ा । पिंजड़ा या जाल जिसमे पक्षी या जानवर फँसाये जाते हैं । २ चिड़ियाघर । ३ वह स्थान जहाँ शिकार पाले जायँ ।

वीतनौ (पु० द्वि०) गले के अगल बगल के दोनों स्थान ।

वीतिः (पु०) घोड़ा । अश्व ।

वीतिः (स्त्री०) १ गति । गमन । २ पैदायश । पैदावार । ३ उपभोग । ४ भोजन । ५ चमक । आभा । —होत्रः, (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य ।

वीथिः } (स्त्री०) १ मार्ग । रास्ता । २ पंक्ति ।
वीथी } कतार । ३ हाट । दूकान । ४ दृश्य काव्य या रूपक के २७ भेदों में से एक भेद । यह एक ही अङ्क का होता है और इसमें नायक भी एक ही होता है । इसमें आकाश-भाषित और शृङ्गार-रस का आधिक्य रहता है ।

वीथिका (स्त्री०) १ मार्ग । २ चित्रशाला । ३ कागज का तख़्ता (जिस पर चित्र चित्रित किया जाता है ।) भीत या दीवाल (जिस पर चित्र खींचा जाय ।

वीध्र (वि०) स्वच्छ । साफ ।

वीध्रं (न०) १ आकाश । २ पवन । ३ अग्नि ।

वीनाहः (पु०) कूप का ढकना ।

वीपा (स्त्री०) विद्युत् । बिजली ।

वीप्सा (स्त्री०) १ परिव्याप्ति । २ शब्ददुरुक्ति । ३ दुरुक्ति ।

वीभ् (धा० आ०) डींगें मारना । शेखी मारना ।

वीर (वि०) १ बहादुर । शूर । २ बलवान । ताकतवर ।—आशनं, (न०) १ रखवाली । चौकसी । २ युद्ध में जोखों का पद । ३ वे सिपाही जो जीवन से हाथ धो युद्ध में आगे जाते हैं ।—आसनं, (न०) १ बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसका व्यवहार तांत्रिकों के साधानों में हुआ करता है । २ एक घुटना मोडकर बैठना । ३ रणभूमि । ४ वह स्थान जहाँ पहरेदार पहरा देता है । पहरा देने का स्थान ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) १ शिवजी । २ बड़ा बहादुर ।—उज्झः, (पु०) वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र नहीं करता ।—कीटः, (पु०) तुच्छ योद्धा ।—जयन्तिका (स्त्री०) रण-नृत्य । २ युद्ध । समर ।—तरुः, (पु०) अर्जुनवृक्ष ।—धन्वन् (पु०) कामदेव ।—पानं,—पाणं, (न०) वह पेय पदार्थ जो वीर लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिये पान करते हैं ।—भद्रः, (पु०) १ शिवजी के एक प्रसिद्धगण का नाम, जिसकी उत्पत्ति शिव जी की जटा से हुई थी । २ प्रसिद्ध भट । ३ अश्वमेध यज्ञ के योग्य घोड़ा । ४ एक सुगन्धित घास ।—मुद्रिका, (स्त्री०) पैरकी बिचली उँगली में पहनी जाने वाली छल्ली ।—रजस्, (न०) सेंदूर । ईंगुर ।—रसं, (न०) १ वीर रस । २ सामरिक भाव ।—रेणुः, (पु०) भीमसेन का नाम ।—वृक्षः, (पु०) १ अर्जुन-वृक्ष । २ भिलावे का पेड़ ।—सूः, (स्त्री०) वीर जननी । इसी अर्थ में वीरप्रसवा, वीरप्रसूः, और वीरप्रसविनी शब्दों का भी प्रयोग होता है ।—सैन्यं, (न०) ब्याज ।—स्कन्धः (पु०) भैंसा ।—हन्, (पु०) वह ब्राह्मण जिसने यज्ञ करना त्याग दिया हो । २ विष्णु का नाम ।

वीरं (न०) १ नरकुल । काली मिर्च । ३ काँजी । ४ खस की जड़ ।

वीरः (पु०) १ शूरवीर । भट । योद्धा । २ वीरभाव । ३ वीररस । ३ नट । ४ अग्नि । ५ यज्ञीय अग्नि । ६ पुत्र । ७ पति । ८ अर्जुन वृक्ष । ९ विष्णु का नामान्तर ।

वीरणं (न०) उशीर । खस ।

वीरणी (स्त्री०) १ कटाक्ष । तिरछी चितवन । २ गहरा स्थान ।

वीरतरः (पु०) १ बड़ा शूर । २ तीर ।

वीरतरं (न०) तृण विशेष । उशीर । खस ।

वीरंधरः } (पु०) १ मयूर । मोर । २ पशुओं के
वीरन्धरः } साथ लड़ाई । ३ चमड़े की नीमास्तीन या जाकेट ।

वीरवत् (वि०) शूरों से परिपूर्ण ।

वीरवती (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हों ।

वीरा (स्त्री०) १ वीरपत्नी । २ पत्नी । ३ माता । ४ मुरा । मुरामाँसी । ५ शराब । ६ एलुवा । ७ केला ।

वीराध } (स्त्री०) १ फैलने वाली लता या बेल ।
वीराधा } २ अङ्कुर । डाली । ३ एक पौधा जो जितना काटो उतना ही बढ़ता है या काटने परही बढ़ता है । ४ बेल । झाड़ी ।

वीर्य (न०) १ वीरता । पराक्रम । विक्रम । २ शक्ति । सामर्थ्य । ३ पुंसत्व । जनन शक्ति । ४

स्फूर्ति । साहस । दृढ़ता । ५ (किसी दवा का लाभकारी) गुण । ६ धातु । बीज । ७ चमक । आभा । ८ महिमा । मर्यादा ।—जः, (पु०) पुत्र । प्रपात, (पु०) वीर्य का पात ।

वीर्यवत् (वि०) १ मज़बूत । बलिष्ट । २ गुणकारी ।

वीवधः (पु०) १ बहंगी का बाँस । २ बोझ । ३ अनाज का ढेर । ४ मार्ग । रास्ता । सड़क ।

वीवधिकः (पु०) बहँगी वाला ।

वीहार (पु०) १ बौद्धों का संघाराम । २ मठ ।

वुंग, वुङ्ग् } (धा० प०) [वुंगति,] त्यागना । छोड़ना ।

वुंट्, वुण्ट् } (धा० उ०) [वुण्टयति, वुण्टयते] १ चोटिल करना । वध करना । २ नाश होना ।

वुवूर्षु (वि०) चुनने के लिये अभिलाषी ।

वूर्ण (वि०) चुना हुआ । छाँटा हुआ ।

वृ (धा० उ०) [वरति,—वरते, वृणोति,—वृणुते, वृणाति,—वृणीते, वृत] १ चुनना । छाँटना । २ विवाह करने के लिये छाँट कर पसंद करना । ३ याचना करना । माँगना । ४ ढकना । छिपाना । पर्दा डालना । लपेटना । ५ घेरना । ६ रोकना । बचाना । ८ अड़चन डालना । विरोध करना ।

वृंह, वृंहित } देखो बृंह बृंहित ।

वृक (धा० आ०) [वर्कते,] ग्रहण करना । लेना । पकड़ना ।

वृकः (पु०) १ भेड़िया । २ सेही । ३ गीदड़ । शृगाल । ४ काक । कौवा । ५ उल्लू । ६ डाकू । ७ क्षत्रिय । ८ तारपीन । ९ सुगन्ध पदार्थों का संमिश्रण । १० एक राक्षस का नाम । ११ वकवृक्ष । १२ उदरस्थ अग्नि विशेष ।—अरातिः,—अरिः (पु०) कुत्ता । - उदरः, (पु०) १ ब्रह्म का नाम । २ भीम का नाम ।—दंशः, (पु०) कुत्ता ।—धूपः, (पु०) १ तारपीन । कई खुशबूदार द्रव्यों से बना हुआ सुगन्ध पदार्थ विशेष ।—धूर्तः, (पु०) शृगाल ।

वृक्कः (पु०), वृक्का (स्त्री०) } १ हृदय । २ गुरदा ।

वृक्ण (व० कृ०) १ विभाजित । कटा हुआ । २ फटा हुआ । ३ टूटा हुआ ।

वृक्त (व० कृ०) साफ़ किया हुआ । शुद्ध किया हुआ ।

वृक्ष् (धा० आ०) [वृक्षते] १ अंगीकार करना । पसंद करना । चुनलेना । २ ढांकना ।

वृक्षः (पु०) पेड़ । रूख । पादप । विटप ।—अदनः, (पु०) १ बढ़ई की छैनी । २ कुल्हाड़ी । बसूला । ३ अश्वत्थ का पेड़ । ४ पियाल वृक्ष ।—अम्लः, (पु०) आमड़ा ।—आलयः, (पु०) पक्षी ।—आवासः, (पु०) १ पक्षी । २ साधु ।—आश्रयिन्, (पु०) छोटी जाति का उल्लू । कुक्कुटः, (पु०) जंगली मुर्गा ।—खण्डम्, (न०) कुञ्जवन । उपवन ।—चरः, (पु०) वानर ।—धूपः, (पु०) तारपीन ।—निर्यासः, (पु०) गोंद । गुग्गुल ।—पाकः, (पु०) अश्वत्थवृक्ष ।—भिद् (पु०) कुल्हाड़ी ।—मर्कटिका, (स्त्री०) गिलहरी ।—वाटिका,—वाटी, (स्त्री०) बाग । बगिया ।—शः, (पु०) छपकली ।—शायिका, (स्त्री०) गिलहरी ।

वृक्षकः (पु०) १ छोटा वृक्ष । २ वृक्ष ।

वृच् (धा० प०) [वृणक्ति] चुनना । पसंद करना ।

वृज् (धा० आ० [वृक्ते] १ बचाना । त्यागना । [प०—वृणक्ति] १ बचा जाना । छोड़ देना । त्याग देना । २ पसंद करना । चुनना । ३ प्रायश्चित्त करना । ४ टाल देना ।

वृजनः (पु०) १ केश । २ घुंघराले बाल ।—वृजन (न०) १ पाप । २ विपत्ति । ३ आकाश । ४ हाता । बाड़ा । घिरा हुआ भूखण्ड जो कारतकारी या चरागाह के काम के लिये हो ।

वृजिन (पु०) १ मुड़ा हुआ । टेढ़ा । दुष्ट । पापी ।

वृजिनं (न०) १ पाप । २ पीड़ा । कष्ट । (इस अर्थ में पु० भी)

वृजिनः (पु०) १ केश । घुंघराले केश । २ दुष्ट जन ।

वृण् (धा० उ०) [वृणोति, वृणुते] खाना। निपटाना।

वृत् (धा० आ०) (वृत्यते) १ पसंद करना। चुन लेना। २ बाँटना। [उभ०–वर्तयति–वर्तयते] चमकाना।

वृत (व० कृ०) १ चुना हुआ। छाँटा हुआ। २ पर्दा पड़ा हुआ। ढका हुआ। ३ छिपा हुआ। ४ घिरा हुआ। ५ रज़ामंद। ६ भाड़े पर उठाया हुआ। ७ अष्ट किया हुआ। ८ सेवित।

वृतिः (स्त्री०) १ चुनाव। छाँट। २ छिपाव। दुराव। ३ याचना। ४ विनय। प्रार्थना। ५ घेरा। लपेटन। ६ हाता। घेरा। घेरने वाला।

वृतिकर }
वृतिङ्कर } (वि०) घेरने वाला। लपेटने वाला।

वृतिकरः }
वृतिङ्करः } (पु०) विकङ्कत नामक वृक्ष।

वृत्त (व० कृ०) १ जीवित। वर्तमान। २ हुआ। घटित हुआ। ३ पूर्णता को प्राप्त। ४ कृत। किया हुआ। ५ बीता हुआ। गुज़रा हुआ। ६ वर्तुल। गोल। ७ मृत। मरा हुआ। ८ दृढ़। मज़बूत। ९ अधीत। पढ़ा हुआ। १० (किसी से) निकला हुआ। ११ प्रसिद्ध। —अन्तः, (पु०) १ अवसर। मौक़ा। २ सवाद। समाचार। ख़बर। ३ किसी बीती हुई घटना का विवरण। इतिहास। इतिवृत्त। कथा। कहानी। ४ विषय। प्रसङ्ग। ५ जाति। क़िस्म। तरह। ६ तौर। तरीका ढंग। ७ दशा। हालत। ८ सम्पूर्णता। समस्तता। ९ विश्राम। अवकाश। फ़ुरसत। १० भाव।—इर्वारुः, (पु०)—कर्कटी, (स्त्री०) हिंगवाना। कलींदा। तरबूज़।—गन्धि, (न०) वह गद्य जिसमें अनुप्रासों और समासों की अधिकता हो। वह गद्य जिसे पढ़ने से पद्य पढ़ने जैसा आनन्द प्राप्त हो।—चूड, —चौल (वि०) वह जिसका मुण्डन संस्कार हो चुका हो।—पुष्पः, (पु०) १ जलबेत। २ सिरिस का पेड़। ३ कदंब का पेड़। ४ मुद्गकदंब। ५ सदागुलाब। सेवती। ६ मोतिया। ७ मल्लिका।—फलः, (पु०) १ कैथा का पेड़। २ अनार का पेड़।—शास्त्र, (वि०) शस्त्रचालन कला में पारदर्शी या पटु।

वृत्तः (पु०) कछुवा।

वृत्तं (न०) १ घटना। २ इतिहास। वृत्तान्त। ३ संवाद। खबर। ४ पेशा। धंधा। ५ चरित्र। चालचलन। ६ सच्चरित्र। अच्छा चालचलन। ७ शास्त्रानुमोदित विधान। चलन। पद्धति। कर्त्तव्य। ८ वृत्त। वृत्त का व्यास। ९ छन्द।

वृत्तिः (स्त्री०) १ अस्तित्व। २ परिस्थिति। ३ दशा। हालत। ४ क्रिया। कर्म। विधान। ५ तौर। तरीक़ा। ढंग। ६ चालचलन। आचरण। ७ धंधा। पेशा। ८ जीविका। रोज़ी। ९ मज़दूरी। उजरत। भाड़ा १० सम्मानपूर्ण व्यवहार। ११ व्याख्या। टीका। शब्दार्थ। १२ चक्कर। घुमाव। १३ वृत्त या पहिये का व्यास या घेरा। १४ व्याकरण में सूत्र जो व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। १५ शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा वह किसी अर्थ को बतलाता या प्रकट करता है। (यह अर्थ तीन प्रकार के माने गये हैं—यथा –अभिधात्मक, लक्षणात्मक, और व्यञ्जनात्मक)। १६ वाक्यरचना की शैली [शैली चार प्रकार की मानी गयी है। यथा—कैशिकी, भारती, सात्वती और आरभटी। इनमें से शृङ्गार रस वर्णन के लिये कैशिकीवृत्ति, वीररस के लिये सात्वतीवृत्ति, रौद्र और बीभत्स रसों का वर्णन करने के लिये आरभटी वृत्ति तथा अवशेष रसों का वर्णन करने के लिये भारतीवृत्ति से काम लिया जाता है।] —अनुप्रासः, (=वृत्त्यनुप्रासः) (पु०) पाँच प्रकार के अनुप्रासों में से एक प्रकार का अनुप्रास जो काव्य में एक शब्दालङ्कार माना गया है। इसमें एक अथवा अनेक व्यञ्जन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न रूपों में बराबर व्यवहृत किये जाते हैं। —उपायः (पु०) जीविका का ज़रिया या साधन। —कर्षित (वि०) जीविका के अभाव से दुःखी। —चक्रं, (न०) राजचक्र।—छेदः, (पु०) किसी की जीविका का अपहरण।—भङ्गः, (पु०) —वैकल्यं. (न०) जीविका का अभाव।—स्थः, (वि०) १ वह जो अपनी वृत्ति पर स्थित हो।

२ सदाचारी। अच्छे चालचलन का। स्थः, (पु०) गिरगिट। छपकली। बिस्तुइया।

वृत्रः (पु०) १ पुराणानुसार त्वष्टा के पुत्र एक दानव का नाम जो इन्द्र के हाथ से मारा गया था। २ बादल। ३ अन्धकार। ४ शत्रु। ५ शब्द। ध्वनि। ६ पर्वत विशेष।—अरिः,-द्विष्, (पु०)—शत्रुः, —हन्, (पु०) इन्द्र की उपाधियाँ।

वृथा (अव्यया०) १ व्यर्थ। बेफ़ायदा। निरर्थक। २ अनावश्यकता से। ३ मूर्खता से। ४ ग़लती से। अनुचित रीति से।—मति, (वि०) वह जिसकी बुद्धि में मूर्खता भरी हो। मूर्ख।—वादिन्, (वि०) मिथ्याभाषी। झूठ बोलने वाला।

वृद्ध (वि०) १ वृद्धि को प्राप्त। बढ़ा हुआ। २ पूर्ण रूप से वृद्धि को प्राप्त। ३ बूढ़ा। बड़ी उम्र का। ४ बड़ा। लंबा। ५ एकत्रित। ढेर किया हुआ। ६ बुद्धिमान। पण्डित।—अङ्गुलिः, (स्त्री०) पैर की बड़ी उँगली।—अवस्था, (स्त्री०) बुढ़ापा।—आचारः (पु०) पुरानी रीतिरस्म। उक्षः, (पु०) बूढ़ा बैल।—काकः, (पु०) द्रोणकाक। पहाड़ी कौआ।—नाभि, (वि०) तोंदल।—भावः, (पु०) बुढ़ापा।—मतं, (न०) प्राचीन ऋषियों की आज्ञा।—वाहनः, (पु०) आम की लकड़ी। —श्रवस्, (पु०) इन्द्र की उपाधि—संघ, (पु०) वृद्धजनों की सभा।—सूत्रकं, (न०) कपास।

वृद्धं (न०) शैलजनामक गन्धद्रव्य।

वृद्धः (पु०) १ बूढ़ा आदमी। २ सम्माननीय पुरुष। ३ तपस्वी। ऋषि। ४ वंशधर। पुत्र। सन्तान।

वृद्धा (स्त्री०) १ बुढ़िया स्त्री। २ कन्यासन्तान।

वृद्धिः (पु०) १ बढ़ती। उन्नति। २ चन्द्रकलाओं की वृद्धि। ३ धन की वृद्धि। ४ सफलता। सौभाग्य। ५ धनदौलत। समृद्धि। ६ ढेर। समुदाय। ७ सूद। सूद दर सूद। ८ सूदख़ोरी। ९ लाभ। मुनाफा। १० अण्डकोष की वृद्धि। ११ शक्ति की वृद्धि। राजस्व की वृद्धि। १२ वह अशौच या सूतक जो घर में सन्तान उत्पन्न होने पर होता है। जननाशौच।—आजीवः, —आजीविन्, (पु०) महाजन जो सूदख़ोरी का रोज़गार करता है।—जीवनं, —जीविका, (स्त्री०) सूदख़ोरी का धंधा या पेशा।—द, (वि०) समृद्धिकारक।—पत्रं, (न०) छुरा।—श्राद्धं, (न०) नान्दीमुखश्राद्ध। आभ्युदयिक श्राद्ध।

वृध् (धा० आ०) [वर्धते. वृद्ध] १ बढ़ना। बड़ा हो जाना मजबूत हो जाना। फलना-फूलना। २ जारी रहना। चालू रहना। ३ निकलना। चढ़ना (जैसे सूर्य इतना चढ़ आया)। ४ बधाई देने का हेतु होना। [णिजन्त—वर्धयति—वर्धयते] बढ़वाता है। गौरव बढ़वाना बधाई देना। (उ०—वर्धयति —वर्धयते] १ बोलना। २ चमकना।

वृधसानः (पु०) मनुष्य। मानव।

वृधासानुः (पु०) १ मानव। मनुष्य। २ पत्ता। पत्र। ३ क्रिया। कर्म।

वृंतं / वृन्तं (न०) फल या पत्र का डण्ठल। २ पत्लहेटी। घड़ा रखने की तिपाई। ३ कुच की वोंडी या अग्रभाग।

वृंताकः (पु०) / वृन्ताकः (पु०) / वृंताकी (स्त्री०) / वृन्ताकी (स्त्री०) भटा का पौधा। बैंगन का पौधा।

वृंतिका / वृन्तिका (स्त्री०) छोटा डण्ठल।

वृंदं / वृन्दं (न०) १ समुदाय। समूह। २ ढेर। समुच्चय।

वृंदा / वृन्दा (स्त्री०) १ तुलसी। २ गोकुल के समीप एक वन का नाम।—अरण्यं, —वनं (न०) मथुरा में एक तीर्थस्थल विशेष।—वनी, (स्त्री०) तुलसी।

वृंदार / वृन्दार (वि०) १ अधिक। बड़ा लंबा। २ मुख्य। उत्तम। उत्कृष्ट। ३ मनोहर। प्रिय। सुन्दर।

वृंदारक / वृन्दारक (वि०; [स्त्री—वृन्दारका. वृन्दारिका] १ अत्यधिक। बहुत ज्यादा। २ मुख्य। उत्तम। उत्कृष्ट। ३ मनोहर। प्रिय। सुन्दर। ४ मान्य। प्रतिष्ठित। माननीय।

वृंदारकः / वृन्दारकः (पु) १ देवता। २ किसी वस्तु का मुख्य अंश।

वृंदिष्ठ } (वि०) १ बहुत बड़ा या लंबा । २ बड़ा
वृन्दिष्ठ } सुन्दर ।

वृंदीयस् } (वि०) अपेक्षाकृत बड़ा । अपेक्षाकृत
वृन्दीयस् } लंबा । २ सुन्दरतर । मनोहरतर ।

वृश् (धा० प०) [वृश्यति] चुनना । पसंद करना । छाँटना ।

वृशं (न०) अदरक । आदि ।

वृशः (पु०) चूहा ।

वृशा (स्त्री०) एक प्रकार की ओषधि ।

वृश्चिकः (पु०) १ बिच्छू । २ वृश्चिक राशि । ३ मकरा । ४ कनखजूरा । गोजर । ५ केंकड़ा । ६ एक कीड़ा जिसके शरीर पर बाल होते हैं ।

वृष् (धा० प०) [वर्षति, वृष्ट] १ बरसना । २ वृष्टि होना । ३ बकशना । देना । ४ नम करना । ५ उत्पन्न करना । ६ सर्वोपरि शक्ति रखना । ७ आघात करना ।

वृषः (पु०) १ साँड़ । बैल । २ वृष राशि । ३ सर्वश्रेष्ठ (किसी समुदाय में) ४ कामदेव । ५ बलिष्ट आदमी । ६ कामुक । ७ शत्रु । विरोधी । ८ मूसा । ९ शिव का नादिया । १० न्याय । ११ सत्कर्म । पुण्य कर्म । १२ कर्ण का नाम । १३ विष्णु का नाम । १४ एक ओषधि विशेष ।—अङ्कः, (पु०) १ शिव जी । २ पुण्यात्मा जन । ३ भिलावे का पेड़ । ४ हिजड़ा ।—अंचन. (पु०) शिव ।—अन्तकः, (पु०) विष्णु ।—आहारः, (पु०) बिल्ली ।—उत्सर्गः, (पु०) किसी की मृत्यु होने पर बछड़े को दाग कर और उसे साँड़ बना कर छोड़ने की क्रिया ।—दंशः,—दशक, (पु०) बिल्ली ।—ध्वजः, (पु०) १ शिव । २ गणेश । ३ पुण्यात्माजन ।—पतिः, (पु०) १ शिव जी । २ एक दैत्य का नाम जिसकी बेटी शर्मिष्ठा को राजा ययाति ने ब्याहा था । ३ बर्रे ।—भासः, (स्त्री०) इन्द्र और देवताओं का आवासस्थान अर्थात् अमरावती पुरी ।—लोचन, (पु०) बिल्ली ।—वाहनः, (पु०) शिवजी का नाम ।

वृषं (न०) मोर का पख ।

वृषणः (पु०) अण्डकोष ।

वृषणश्वः (पु०) इन्द्र के एक घोड़े का नाम ।

वृषन् (पु०) १ साँड़ । २ वृषभ राशि । ३ किसी श्रेणी या जाति का मुखिया । ४ साँड़ । घोड़ा । ५ कष्ट । शोक । ६ पीड़ा का ज्ञान न होना । ७ इन्द्र । ८ कर्ण । ९ अग्नि ।

वृषभः (पु०) १ साँड़ । २ वृषभ राशि । ३ किसी श्रेणी या जाति का मुखिया । ४ कोई भी नर जानवर । ५ एक प्रकार की ओषधि । ६ हाथी का कान । ७ कान का छेद ।—गतिः,—ध्वजः, (पु०) शिव जी ।

वृषभी (स्त्री०) १ विधवा । २ गौ ।

वृषलः (पु०) १ शूद्र । २ घोड़ा । ३ गाजर । शलगम । ४ वह जिसे धर्म आदि का कुछ भी ध्यान न हो । पापी । दुष्टात्मा । ५ पतित । ६ चन्द्र गुप्त का नाम जो चाणक्य ने रख छोड़ा था ।

वृषलकः (पु०) तिरस्कारणीय शूद्र ।

वृषली (स्त्री०) १ वह कन्या जो रजस्वला हो गयी हो, पर जिसका विवाह न हुआ हो ।

> पितुर्गेहे च या नारी रजः पश्यत्यसंस्कृता ।
> भ्रूणहत्या पितुस्तस्याः सा कन्या वृषली स्मृता ॥

२ रजस्वला स्त्री याँ वह स्त्री जो मासिक धर्म से हो । ३ बाँझ स्त्री । ४ मरी हुई सन्तान उत्पन्न करने वाली स्त्री । ५ शूद्र जाति की स्त्री ।—पतिः, (पु०) शूद्रा स्त्री का पति ।—सेवनं, (न०) शूद्रा स्त्री से संसर्ग ।

वृषस्कंधी (स्त्री०) बर्रे ।

वृषस्यंती } (स्त्री०) १ वह स्त्री जिसे पुरुष समागम
वृषस्यन्ती } की लालसा हो । २ छिनाल औरत । ३ उठी हुई गौ या गर्मानी हुई गाय ।

वृषाकपायी (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ गौरी । ३ शची । ४ अग्नि पत्नी स्वाहा । ५ सूर्यपत्नी ।

वृषाकपिः (पु०) १ सूर्य । २ विष्णु । ३ शिव । ४ इन्द्र । ५ अग्नि ।

वृषायणः (पु०) १ शिव । २ गौरैया ।

वृषिन् (पु०) मयूर । मोर ।

वृषी (स्त्री०) कुशासन।

वृष्ट (व० कृ०) १ बरसा हुआ। २ बरसता हुआ।

वृष्टिः (स्त्री०) १ बरसात। २ बौछार। फुआर।—कालः, (पु०) वर्षा ऋतु।—भूः, (पु०) मेंढक।

वृष्टिमत् (वि०) बरसाती। बरसने वाला। (पु०) बादल।

वृष्णि (वि०) १ विधर्मी। पाखण्डी। २ क्रोधी।

वृष्णिः (पु०) १ बादल। २ मेढा। ३ किरन। ४ श्रीकृष्ण के एक पूर्वज का नाम। ५ श्रीकृष्ण का नामान्तर। ६ इन्द्र का नामान्तर। ७ अग्नि का नामान्तर।—गर्भः, (पु०) श्रीकृष्ण की उपाधि।

वृष्य (वि०) १ बरसने वाला। २ वह वस्तु जो वीर्य और बल को बढाने वाली हो। कामोद्दीपक।

वृष्यः (पु०) उडद की दाल।

वृह्, वृहत्, वृहतिका — देखो बृह्, बृहत्, बृहतिका।

वृहती (स्त्री०) १ नारद की वीणा। २ छत्तीस की संख्या। ३ चुग़ा। लबादा। रैपर। ४ वाणी। वाक्य। ५ कुण्ड (जैसे जल का)। ६ छन्द विशेष।—पतिः, (पु०) वृहस्पति की उपाधि।

वृहस्पति देखो बृहस्पति।

वॄ (धा० उ०) [वृणाति, वृणीते, वूर्ण] चुनना। छाँटना।

वे (धा० उ०) [वयति—वयते, उत] १ बुनना। २ लगाना। जमाना। ३ सीना। ४ बनाना। ५ जड़ना। ६ ओतप्रोत करना।

वेकटः (पु०) १ मसख़रा। विदूषक। २ जौहरी। ३ युवा पुरुष।

वेगः (पु०) १ उत्तेजना। प्रवृत्ति। २ गति। तेज़ी। रफ़्तार। ३ उद्योग। उद्यम। ४ प्रवाह। बहाव। ५ किसी काम को करने की दृढ़ प्रतिज्ञा। ६ बल। शक्ति। ७ फैलाव (जैसे विष का रक्त के साथ मिल कर सारे शरीर में फैल जाना। ८ उतावली। जल्दबाज़ी। ९ धनुषबाण की लड़ाई। १० प्रेम। अनुराग। ११ किसी आन्तरिक भाव का बाहिर प्रकट होना। १२ आनन्द। आह्लाद। १३ शरीर में से मल मूत्रादि के निकलने की प्रवृत्ति। १४ वीर्यपात।—नाशनः (पु०) श्लेष्मा। कफ।—वाहिन्, (वि०) तेज़। फुर्तीला।—सरः, (पु०) खच्चर। अश्वतर।

वेगिन् (वि०) [स्त्री०—वेगिनी] तेज़। फुर्तीला।

वेगिन् (पु०) १ हलकारा। २ बाज पक्षी।

वेगिनी (स्त्री०) नदी।

वेंकटः, वेङ्कटः — (पु०) वेंकटाचल, पर्वत विशेष।

वेचा (स्त्री०) भाड़ा। किराया। उजरत।

वेडं (न०) चन्दन विशेष।

वेडा (स्त्री०) नाव। बोट।

वेण्, वेन् — (धा० उ०) [वेणति—वेणते, वेनति-वेनते] १ जाना २ जानना। पहचानना। ३ सोचना। विचारना। ४ लेना। ग्रहण करना। बाजा बजाना।

वेणः (पु०) मनु के अनुसार एक प्राचीन वर्णसङ्कर जाति, जिसकी उत्पत्ति वैदेहक माता और अंबष्ट पिता से मानी गयी है। गवैया जाति। २ सूर्य वंशी राजा पृथु के पिता का नाम।

वेणा (स्त्री०) कृष्णा नदी में गिरने वाली एक नदी का नाम।

वेणिः, वेणी — (स्त्री०) १ केशों की चोटी। गुथी हुई चोटी। २ जल का प्रवाह। पानी का बहाव। ३ दो या अधिक नदियों का संगम। ४ गङ्गा यमुना और सरस्वती नदी का संगम। ५ एक नदी का नाम।—बन्धः, (पु०) गुथी हुई चोटी।—वेधिनी, (स्त्री०) जोंक। जलौका।—वेधिनी, (स्त्री०) कंघी।—संहारः, (पु०) १ चोटी बना कर केशों को बाँधने की क्रिया। २ नारायण भट्ट का बनाया संस्कृत का एक नाटक।

वेणुः (पु०) १ बाँस। २ नरकुल। सरपत। ३ वंसी। नफीरी।—जः, (पु०) बाँस का बीज।—ध्मः, नफीरी या वंसी का बजाने वाला।—निस्रुतिः (पु०) गन्ना। ऊख।—यवः, (पु०) बाँस का

बीज।—यष्टिः, (स्त्री०) बाँस की छड़ी।—वादः,—वादकः, (पु०) नफ़ीरी वाला।—बीजं, (न०) बाँस का बीज।

वेणुकं (न०) वह अंकुश जिसमें बाँस की मूठ हो।

वेणुनं (न०) काली मिर्च।

वेतंड
वेतण्ड
वेदंड
वेदण्ड } (पु०) हाथी।

वेतनं (न०) १ भाड़ा। तनख्वाह। मासिक। २ आजीविका।—अदानं,—अनपाकर्मन्, (न०)—अनपक्रिया. (स्त्री०) १ वेतन न चुकाना। २ वेतन न चुकाने पर वेतन वसूल करने के लिये किया गया उद्योग विशेष।—जीविन्, (पु०) वृत्तिहा। वृत्तिवाला।

वेतसः (पु०) १ वेत। नरकुल। २ जंभीरी। बिजौरा।

वेतसी (स्त्री०) वेत। जलबेत।

वेतस्वत् (वि०) [स्त्री०—वेतस्वती] वह स्थान जहाँ वेतों का बाहुल्य हो।

वेताल (पु०) १ भूत योनि विशेष। २ द्वारपाल। पौरुआ। दरवान।

वेतृ (पु०) १ ज्ञाता। जानने वाला। २ विद्वान। पति।

वेत्र (पु०) १ बेंत। जलबेंत। २ द्वारपाल के हाथ की छड़ी।—आसनं, (न०) बेत का बना हुआ आसन।—धर,—धारक, (पु०) १ द्वारपाल। २ असाधारी। चोबदार।

वेत्रकीय (वि०) बेंत का।

वेत्रवती (स्त्री०) १ स्त्री द्वारपाल। २ वेतवा नदी का नाम।

वेत्रिन् (पु०) १ द्वारपाल। दरवान। २ चोबदार।

वेथ् (धा० आ०) [वेथन्ते] याचना करना। माँगना।

वेद (पु०) १ ज्ञान। २ विशेषतः आध्यात्मिक विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञानी। ३ ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद। ४ कुशों का मूठा। ५ विष्णु का नामान्तर।—अङ्गं, (न०) वेदाङ्ग छः हैः—यथा १ शिक्षा। २ छंदस्। ३ व्याकरण। ४ निरुक्त। ५ ज्योतिष। ६ कल्प।—अधिगमः, (पु०) वेदाध्ययन।—अध्ययनं, (न०)वेदाध्ययन।—अध्यापकः (पु०) वेदों का पढ़ाने वाला।—अन्तः, (पु०) १ उपनिषद और आरण्यक आदि वेद के अन्तिम भाग जिनमें, आत्मा, परमात्मा और जगत् आदि का विषय वर्णित है। २ छः दर्शनों में से प्रधान वेदान्त दर्शन।—अन्तिन्, (पु०) वेदान्त दर्शन का अनुयायी या मानने वाला।—आदि, (न०)—आदिवर्णः,—आदिबीजं, (न०) प्रणव। ओं।—उक्त, (वि०) वेदविहित।—कौलेयकः, (पु०) शिव जी।—गर्भः (पु०) १ ब्रह्मा। २ वेदविद् ब्राह्मण।—ज्ञः, (पु०) ब्राह्मण जिसने वेद का अध्ययन किया हो।—त्रयं, (न०)—त्रयी, (स्त्री०) तीन वेदों का समुच्चय।—निन्दकः, (पु०) नास्तिक।—निन्दा, (स्त्री०) वेद की बुराई।—पारगः, (पु०) वेदविद्या में निष्णात ब्राह्मण।—मातृ, (स्त्री०) गायत्रीमंत्र।—वचनं,—वाक्यं, (न०) वैदिक मंत्र या ऋचा।—वदनं, (न०) व्याकरण।—वासः, (पु०) ब्राह्मण।—बाह्य (वि०) जिसका उल्लेख वेद में न हो। वेदविरुद्ध।—विहित, (वि०) वेदानुकूल।—व्यासः, (पु०) वेदव्यास जी जिन्होंने वेदों के विभाग किये।—संन्यासः, (पु०) वैदिक कर्मकाण्ड का त्याग।

वेदनं, (न०)
वेदना (स्त्री०) } १ ज्ञान। अवगति। २ अनुभव। पीड़ा। ३ धन दौलत। सम्पत्ति। ४ विवाह।

वेदारः (पु०) गिरगट।

वेदिः (पु०) पण्डित। विद्वान्।

वेदिः
वेदी } (स्त्री०) १ यज्ञकार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि। २ अँगूठी जिसमें नाम की मोहर हो। ३ सरस्वती का नाम। ४ भूखण्ड। देश।—जा, (स्त्री०) द्रौपदी का नामान्तर।

वेदिका (वि०) १ वह स्थान या ऊँचा चबूतरा जो यज्ञ के लिये ठीक किया गया हो। २ बैठकी।

छछूंदर ।—भूः, (स्त्री०) वह स्थान जो मकान बनाने के लिये उपयुक्त हो ।

वेश्यं (न०) रंडी ख़ाना ।

वेश्या (स्त्री०) रंडी । पतुरिया ।—आचार्यः, (पु०) वह पुरुष जो वेश्याओं को रखता हो और परपुरुषों से उन्हे मिलाता हो । भडुआ ।—आश्रयः, (पु०) रंडियों के रहने की जगह । रंडियो की आबादी ।—गमनं, (न०) रंडीबाज़ी ।—गृहं, (न०) चकला ।—जनः, (पु०) रंडी ।—पणः, (पु०) फीस जो रंडी को दी जाती है ।

वेश्वर (पु०) खच्चर । अश्वतर ।

वेषणं (न०) कब्ज़ा । दखल । अधिकार ।

वेष्ट्, (धा० आ०) [वेष्टते] १ घेरना । लपेटना । २ उमेंठना । मरोड़ना । ३ पोशाक धारण करना ।

वेष्टः (पु०) १ घिराव । लपेटन । २ घेरा । हाता । ३ पगड़ी । ४ गोंद । राल । ५ तारपीन ।—वंशः, (पु०) एक प्रकार का बाँस ।—सारः, (पु०) तारपीन ।

वेष्टकं (न०) १ पगड़ी । २ चादर । पिछौरी । ३ गोंद ४ तारपीन ।

वेष्टकः (पु०) १ हाता । घेरा । २ सफेद कुम्हड़ा ।

वेष्टनं (न०) १ घेरन । लपेटन । २ उमेंठन । मरोड़न । ३ लिफाफा । बंधन । ४ पगड़ी । साफा । ५ घेरा । हाता । ६ कमरबंद । पटका । ७ पट्टी । ८ गुग्गुल । ९ कान का छेद । १० नृत्य का भाव विशेष ।

वेष्टनकः (पु०) रतिबंध की क्रिया विशेष ।

वेष्टित (व० कृ०) १ चारों ओर से घिरा हुआ । २ लपेटा हुआ । ३ रोका हुआ । अवरुद्ध । ४ घेरा हुआ ।

वेष्पः }
वेष्यः } (पु०) पानी ।

वेष्या (स्त्री०) देखो वेश्या ।

वेसरः (पु०) खच्चर । अश्वतर ।

वेसवारः }
वेशवारः } (पु०) जीरा, मिर्च, लौंग या राई, काली मिर्च सोंठ आदि मसालों का चूर्ण ।

वेह् (धा० आ०) [वेहते] देखो "वेढ्" ।

वेहत् (स्त्री०) बाँझ गौ ।

वेहारः (पु०) विहार प्रदेश का नाम ।

वेह्ल् (धा० प०) [वेह्लते] जाना ।

वै (धा० प०) [वायति] १ सुखाना । सूख जाना । २ थक जाना ।

वै (अव्यया०) अव्यय विशेष जिसका प्रयोग निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ में किया जाता है । किन्तु अधिकांश प्रयोग इसका पद पूर्ण करने के लिये ही होता है । यथा

"आपो वै नरसूनवः ।"

—मनुः ।

कभी कभी यह सम्बोधन और अनुनय द्योतक भी होता है ।

वैशतिक (वि०) [स्त्री०—वैशतिकी] बीस में खरीदा हुआ ।

वैकक्षं (न०) १ माला जो जनेऊ की तरह पहनी गयी हो । २ उत्तरीय वस्त्र । लबादा । चोगा ।

वैकक्षकं }
वैकक्षिकं } (न०) "देखो वैकक्षं"

वैकटिकः (पु०) जौहरी । रत्नपारखी ।

वैकर्तनः (पु०) कर्ण का नाम ।

वैकल्पं (न०) १ विकल्प का भाव । २ असमञ्जसता । ३ अनिश्चयता ।

वैकल्पिक (वि०)[स्त्री०—वैकल्पिकी] १ ऐच्छिक । एकाङ्गी । २ सन्दिग्ध । सन्देहात्मक । अनिश्चित ।

वैकल्यं (न०) १ न्यूनता । कमी । त्रुटि । अपूर्णता । २ अङ्गहीनता । लंगड़ा होने का भाव । ३ अयोग्यता । ४ घबड़ाहट । विकलता । ५ अभाव । अनस्तित्व ।

वैकारिक (वि०) [स्त्री—वैकारिकी] १ संशोधन सम्बन्धी । २ संशोधनात्मक । ३ संशोधित ।

वैकालः (पु०) मध्याह्नोत्तर । सायंकाल ।

वैकालिक (वि०) [स्त्री०—वैकालिकी] }
वैकालीन (वि०) [स्त्री—वैकालिनी] } सायंकाल सम्बन्धी या शाम को होने वाला ।

वैकुंठः, वैकुराठः (पु०) १ विष्णु का एक नाम। २ इन्द्र का एक नाम। ३ तुलसी।

वैकुंठ चतुर्दशी, वैकुराठम् (स्त्री०) कार्तिक शुक्ला १४ शी। —लोकः, (पु०) विष्णुलोक। (न०) १ विष्णुलोक। २ अत्रक।

वैकृत (वि०) [स्त्री—वैकृती] १ परिवर्तित। २ संशोधित।

वैकृतं (न०) परिवर्तन। अदलबदल। संशोधन। २ घृणा। ३ परिस्थिति अथवा सूरत शक्ल में अदल बदल। ४ अशुभ सूचक अशकुन।—विवर्तः, (पु०) दुर्दशा।

वैकृतिक (वि०) [स्त्री—वैकृतिकी] १ परिवर्तित। संशोधित। २ विकृति सम्बन्धी।

वैकृत्यं (न०) १ परिवर्तन। रद्दोबदल। २ दुर्दशा। ३ घृणा। अरुचि।

वैक्रांतं, वैक्रान्तं (पु०) एक प्रकार का रत्न। चुन्नी।

वैक्लवं, वैक्लव्यं (पु०) १ गड़बड़ी। विक्लता। घबड़ाहट। २ हड़बड़ी। मानसिक अस्थिरता। ३ सन्ताप। दुःख। पीड़ा।

वैखरी (स्त्री) १ वाक्शक्ति। २ वाग्देवी। ३ कण्ठ से उत्पन्न होने वाला स्वर का एक विशिष्ट प्रकार। ऐसा स्वर उच्च और गम्भीर होता है और स्पष्ट सुनाई पड़ता है।

वैखानस (वि०) [स्त्री०—वैखानसी] संन्यासी सम्बन्धी।

वैखानसः (पु०) वानप्रस्थ। वानप्रस्थाश्रमी ब्राह्मण।

वैगुण्यं (न०) १ गुण का अभाव। विगुणता। २ ऐब। अवगुण। त्रुटि। ३ वैषम्य। विपर्यय। विरुद्धता। ४ नीचता। क्षुद्रता। ५ अनिपुणता।

वैचक्षण्यं (न०) चातुरी। निपुणता। योग्यता।

वैचित्यं (न०) दुःख। मानसिक विकलता। शोक।

वैचित्र्यं (न०) १ विचित्रता। विलक्षणता। २ बहुप्रकारत्व। ३ विभिन्नता। ४ मर्मवेधी। ५ आश्चर्य।

वैजननं (न०) गर्भ का अन्तिम मास।

वैजयंतः, वैजयन्तः (पु०) १ इन्द्र का राजभवन। २ इन्द्र का झंडा। ३ पताका। झंडा। ४ घर।

वैजयंतिकः, वैजयन्तिकः (पु०) झंडा उठाने वाला।

वैजयंतिका, वैजयन्तिका (स्त्री०) १ झंडा। पताका। २ मोती का हार।

वैजयंती, वैजयन्ती (पु०) १ झंडा। पताका। २ चिह्न। बिल्ला। ३ हार। ४ भगवान विष्णु की माला विशेष। ५ एक शब्दकोश का नाम।

वैजात्यं (न०) १ विजातीयता। विजातीय होने का भाव। २ वर्णभेद। ३ विलक्षणता। ४ जाति-बहिष्कार ५ बदचलनी। लंपटता।

वैजिक देखो बैजिक।

वैज्ञानिक (वि०) [स्त्री०—वैज्ञानिकी] चतुर। निपुण। योग्य।

वैडाल देखो बैडाल।

वैणः (पु०) बँसफोड़ा। बाँस की चीज़ें बनाने वाला।

वैणव (वि०) [स्त्री०—वैणवी] बाँस से उत्पन्न या बाँस का बना हुआ।

वैणवं (न०) बाँस का फल या बीज।

वैणवः (पु०) १ बाँस का डंडा। २ टोकरी सी बिनावट।

वैणविक (पु०) वंसी बजाने वाला। नफीरी बजाने वाला।

वैणविन् (पु०) शिव जी का नाम।

वैणवी (स्त्री०) वंशलोचन।

वैणिक (पु०) वंसी बजाने वाला।

वैणुकं (न०) हाथी का अंकुस।

वैणुकः (पु०) वंसी बजाने वाला।

वैतंसिकः (पु०) माँस बेचने वाला।

वैतंडिक, वैतण्डिक (पु०) वितंडावादी। व्यर्थ का झगड़ा या बहस करने वाला।

वैतनिक (वि०) [स्त्री०—वैतनिकी] वेतनभोगी। वेतन लेकर काम करने वाला।

वैतनिक· (पु०) १ मज़दूर । मज़दूरी के ऊपर काम करने वाला । २ वृत्तिहा । वृत्ति वाला ।

वैतरणि· } (स्त्री०) १ नरकस्थित एक नदी का
वैतरणी } नाम । २ कलिङ्ग देशस्थ एक नदी का नाम ।

वैतस (वि०) [स्त्री०—वैतसी] १ बेंत सम्बन्धी । २ नरकुल जैसा । बलवान शत्रु के सामने नवने वाला । बलिष्ठ शत्रु से हार मानने वाला । [यथा " वैतसीवृत्ति "]

वैतान (वि०) [स्त्री०—वैतानी] यज्ञीय। पवित्र।

वैतानं (न०) १ यज्ञीय विधान । २ यज्ञीय बलिदान ।

वैतानिक (वि०) [स्त्री०—वैतानिकी] देखो वैतान ।

वैतालिकः (पु०) १ बंदीजन । भाट । २ मदारी। ऐन्द्रजालिक । ३ वेताल को सिद्ध करने वाला ।

वैत्रक (वि०) [स्त्री०—वैत्रकी] बेंतदार । नरकुलदार ।

वैदः (पु०) विद्वज्जन । पण्डित जन।

वैदग्ध (न०) } १ निपुणता । पटुता । हाथ की
वैदग्धी (स्त्री०) } सफ़ाई । चातुर्य । २ सौन्दर्य
वैदग्ध्यं (न०) } ३ चालाकी । ४ हाजिरजवाबी।

वैदर्भः (पु०) विदर्भ देश का राजा ।

वैदर्भी (स्त्री०) १ दमयन्ती का नाम । २ रुक्मिणी का नाम । ३ काव्य की एक शैली जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना की जाती है । साहित्य दर्पणकार ने इसकी परिभाषा यह दी है :—

' माधुर्य व्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका ।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥ '

वैदल (वि०) [स्त्री०—वैदली] बेंत का बना हुआ।

वैदल· (पु०) १ परॉवठा । उलटा । २ दाल का अनाज । जैसे उर्द, मूग, अरहर आदि । कोई भी शाक जिसमें छीमी हों, जैसे रोंसा, वनछिमियाँ सेंम, मटर आदि ।

वैदलं (न०) मिट्टी का वह पात्र जिसमें भिखारी भीख माँगते हैं । २ बाँस की बुनावट का आसन या मोढ़ा या टोकरी ।

वैदिक (वि०) [स्त्री०—वैदिकी] १ वेद से निकला हुआ या वेदोक्त । २ शास्त्रीय । धर्मशास्त्रीय ।—पाश . (पु०) वह जिसे वेद का पूर्ण ज्ञान न हो।

वैदिकः (पु०) वेदज्ञ ब्राह्मण ।

वैदुषी (स्त्री०) } पाण्डित्य । विद्वत्ता ।
वैदुष्यं (न०) }

वैदूर्य (वि०) [स्त्री०—वैदूरी, वैदूर्यी] विदुर से लाया हुआ या उत्पन्न किया हुआ ।

वैदूर्यं (न०) लहसुनिया रत्न ।

वैदेशिक (वि०) [स्त्री०—वैदेशिकी] अन्यदेश का विदेश का ।

वैदेशिकः (पु०) अजनबी । विदेशी । अन्य देश का ।

वैदेश्यं (न०) विदेशीपना ।

वैदेह· (पु०) १ विदेहराज । २ विदेहवासी । ३ वैश्य । पैदायशी व्यापारी । ४ वैश्य पुत्र जो ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो ।

वैदेहकः (पु०) व्यापारी । सौदागर ।

वैदेहा (पु० बहु०) विदेह देशवासी ।

वैदेही (स्त्री०) सीता का नाम ।

वैदेहिक (पु०) व्यापारी । सौदागर ।

वैद्य (वि०) [स्त्री०—वैद्यी] १ वेद सम्बन्धी । आत्मा सम्बन्धी । २ ओषधि सम्बन्धी । चिकित्सा सम्बन्धी ।—क्रिया, (स्त्री०) चिकित्सा कर्म ।—नाथ, (पु०) १ धन्वन्तरि । २ शिव ।

वैद्य (पु०) १ विद्वान् । शास्त्राचार्य । २ चिकित्सक । ३ वैद्य जाति का आदमी । यह वर्णसङ्कर जाति का होता है । इसकी उत्पत्ति वैश्य माता और ब्राह्मण पिता से बतलायी जाती है ।

वैद्यकं (न०) वैद्य विद्या ।

वैद्यकः (पु०) डाक्टर । हकीम । वैद्य ।

वैद्युत (वि०) [स्त्री०—वैद्युती] बिजली

सम्बन्धी । बिजली से उत्पन्न ।—अग्नि:,—अनलः,—वह्नि, (पु०) बिजली की आग ।

वैध (वि०) [स्त्री०—वैधी] ।

वैधिक (वि०) [स्त्री० - वैधिकी] १ नियमानुसार । २ आईनी । आईन के मुताबिक ।

वैधर्म्य (न०) १ असमानता । भिन्नता । २ विभिन्नता । ३ नास्तिकता । ४ अन्याय ।

वैधवेयः (पु०) विधवा का पुत्र ।

वैधव्यं (न०) विधवापन ।

वैधुर्य (न०) १ कातरता । २ कंपित होने का भाव ।

वैधेय (वि०) [स्त्री०—वैधेयी] १ नियमानुकूल । निर्दिष्ट । २ मूर्ख । मूढ़ ।

वैधेयः (पु०) मूर्ख । विमूढ ।

वैनतेयः (पु०) १ गरुड का नाम । २ अरुण का नाम ।

वैनयिक (वि०) [स्त्री०—वैनयिकी] १ विनय सम्बन्धी । २ शिष्टाचार का व्यवहार करवाने वाला ।

वैनायक (वि०) [स्त्री०—वैनायकी] गणेश का ।

वैनायिकः (पु०) १ बौद्ध दर्शन विशेष के सिद्धान्त । २ उक्त दर्शन का मानने वाला ।

वैनाशिकः (पु०) १ गुलाम । दास । २ मकड़ी । ३ ज्योतिषी । ४ बौद्ध सिद्धान्त । ५ बौद्ध सिद्धान्तानुयायी ।

वैपरीत्यं (न०) १ विपरीतता । विरोध । २ असंगति ।

वैपुल्यं (न०) १ विस्तार । विशालता । २ विपुलता । बाहुल्य ।

वैफल्यं (न०) निरर्थकता । व्यर्थता । विफलता ।

वैबोधिकः (पु०) १ चौकीदार । रखवाला । २ विशेष कर वह जो सोने वालों को बीता हुआ समय बतला कर जगावे ।

वैभवं (न०) १ ऐश्वर्य । विभव । २ महिमा । महत्त्व । बड़प्पन । ३ सामर्थ्य । शक्ति । ताकत ।

वैभाषिक (वि०) [स्त्री०—वैभाषिकी] ऐच्छिक । वैकल्पिक ।

वैभ्र (न०) वैकुण्ठ । विष्णु लोक ।

वैभ्राज्यं (न०) स्वर्गीय उपवन या बाग़ ।

वैमत्य (न०) १ मतभेद । अनैक्य । २ घृणा । अरुचि ।

वैमनस्य (न०) १ विकलता । व्याकुलता । २ शोक । उदासी । ३ बीमारी ।

वैमात्रः, वैमात्रेयः (पु०) सौतेली माता का पुत्र ।

वैमात्रा, वैमात्री, वैमात्रेयी (स्त्री०) सौतेली माता की लड़की ।

वैमानिक (वि०) देवयान में सवार हो अन्तरिक्ष में विहार करने वाला ।

वैमानिकः (पु०) आकाशचारी गुब्बाड़े में या व्योमयान में बैठ कर उड़ने वाला मनुष्य ।

वैमुख्यं (न०) १ विमुखता । पीठ फेरना । २ घृणा । अरुचि ।

वैमेयः (पु०) अदल बदल । एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना । विनिमय ।

वैयग्र्यं, वैयग्र्यं (न०) १ विकलता । घबड़ाहट । २ किसी विषय में लीनता या एकाग्रता ।

वैयर्थ्य (न०) व्यर्थता । विफलता ।

वैयधिकरण्यं (न०) भिन्न भिन्न सम्बन्धों या अवस्थितियों में होने की दशा ।

वैयाकरण (वि०) [स्त्री०—वैयाकरणी] व्याकरण सम्बन्धी । व्याकरण का ।

वैयाकरणः (पु०) व्याकरण का पण्डित ।—पाश, (पु०) अपटु व्याकरण जानने वाला । वह जिसे व्याकरण अच्छी तरह न आता हो ।

वैयाघ्र (वि०) [स्त्री०—वैयाघ्री] १ चीते की तरह । २ चीते के चर्म से आच्छादित ।

वैयाघ्रः (पु०) चीते के चर्म से आच्छादित गाड़ी ।

वैयात्यं (न०) १ साहस । बहादुरी । लज्जा का या विनय का अभाव । २ उद्दण्डता । औद्धत्य ।

वैयासिकः (पु०) व्यासपुत्र।

वैरं (न०) १ शत्रुता। विरोध। २ प्रतिहिंसा। बदला।—आतंकः, (पु०) अर्जुन का पेड़।

वैरक्तं } (न०) १ वासना शून्यता। २ अरुचि। घृणा।
वैरक्त्यं }

वैरगिक } (पु०) जितेन्द्रियजन। संन्यासी।
वैरङ्गिक }

वैरल्य (न०) १ विरलता। २ ढीलापन। ३ सूक्ष्मता।

वैरागं देखो वैराग्यं।

वैराग्यं (न०) १ सांसारिक पदार्थों में अनासक्ति अथवा उनसे विरक्ति। २असन्तोष। अप्रसन्नता। ३ घृणा। अरुचि। ४ रंज। शोक।

वैराज (वि०) [स्त्री०—वैराजी] ब्राह्मण सम्बन्धी।

वैराट (वि०) [स्त्री० — वैराटी] विराट सम्बन्धी।

वैराटः (पु०) इन्द्रगोप नामक कीट। वीर बहूटी।

वैरिन् (वि०) विरोधात्मक।

वैरिन् (पु०) शत्रु। वैरी।

वैरूप्यं (न०) १ कुरूपता। बदशक्लपना। २ रूपों की विभिन्नता।

वैरोचनः } (पु०) विरोचन के पुत्र दैत्यराज बलि की उपाधियाँ।
वैरोचनिः }
वैरोचिः }

वैलक्षण्यं (न०) १ विचित्रता। २ विरोध। ३ विभिन्नता।

वैलक्ष्यं (न०) १ गड़बड़ी। २ अप्राकृतित्व। ३ लज्जा। शर्म। ४ वैपरीत्य।

वैलोम्यं (न०) वैपरीत्य। उलटापन।

वैवधिक (पु०) १ फेरीवाला। घूम घूम कर माल बेचने वाला। २ बहँगी उठाने वाला।

वैवर्ण्य (न०) १ रंग बदलौअल। पीलापन। २ भिन्नता। ३ जातिभ्रंशत्व।

वैवस्वतं (न०) वैवस्वत मनु का वर्तमान मन्वन्तर।

वैवस्वतः (पु०) १ सातवें मनु का नाम। आज कल का मन्वन्तर इन्हीं मनु का माना जाता है। २ यमराज। ३ शनिग्रह।

वैवस्वती (स्त्री०) १ दक्षिण। दिशा। २ यमुना नदी का नाम।

वैवाहिक (वि०) [स्त्री—वैवाहिकी] विवाह सम्बन्धी।

वैवाहिकः (पु०) } विवाह। परिणय। शादी।
वैवाहिकं (न०) }

वैवाहिकः (पु०) वधू का पिता या दामाद का पिता। ससुर।

वैशद्यं (न०) १ स्वच्छता। निर्मलता। २ सफाई। ३ उज्ज्वलता। ४ स्वस्थता। शान्ति (मन की)।

वैशस (न०) १ नाश। वध। कसाईपन। २ उत्पीड़न। अत्याचार। कष्ट। पीड़ा। तकलीफ।

वैशस्त्र (न०) १ अरक्षकता। २ हुकूमत। शासनतंत्र।

वैशाखं (न०) शिकार करने के समय का एक पैतरा।

वैशाखः (पु०) १ दूसरे मास का नाम। २ मन्थन दण्ड। मथानी।

वैशाखी (स्त्री०) वैशाख मास की पूर्णमासी।

वैशिक (वि०) वेश्याओं द्वारा अनुष्ठित।

वैशिकं (न०) रंडीपना। वेश्यापन। वेश्याओं का हुनर।

वैशिकः (पु०) साहित्य में तीन प्रकार के नायकों में से एक, जो वेश्याओं के साथ भोग विलास करता हो। वेश्यागामी।

वैशिष्ट्यं (न०) १ भेद। पहचान। २ विलक्षणता। विशेषता। ३ उत्तमता। विशिष्ट लक्षण सम्पन्नता।

वैशेषिक (वि०) [स्त्री—वैशेषिकी] १ विशिष्टता। वैशेषिक दर्शन सम्बन्धी।

वैशेषिकं (न०) छः दर्शनों में से एक। इसके आचार्य कणाद हैं।

वैशेष्यं (न०) उत्तमता। मुख्यता।

वैश्यः (पु०) तृतीय वर्ण का मनुष्य।—कर्मन्, (न०) —वृत्तिः, (स्त्री०) वैश्य वर्ण के कर्म।

वैश्रवण (पु०) १ कुबेर का नाम। २ रावण का नाम।—आलय, —आवासः, (पु०) १ कुबेर

के रहने का स्थान। २ वटवृक्ष।—उदयः, (पु०) बरगद का वृक्ष।

वैश्वदेव (वि०) [स्त्री—वैश्वदेवी] विश्वेदेव सम्बन्धी।

वैश्वदेवं (न०) १ विश्वेदेव की बलि या नैवेद्य। भोजन करने के पूर्व सब देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में दी हुई आहुति।

वैश्वानरः (पु०) १ अग्नि की उपाधि। २ वह अग्नि जो अन्न पचाती है। ३ वेदान्त में चेतन शक्ति। ४ परमात्मा।

वैश्वासिक (वि०) [स्त्री—वैश्वासिकी] विश्वस्त। इतमीनानी।

वैषम्यं (न०) १ असमानता। २ औद्धत्य। उद्दण्डता। ३ अलहदगता। ४ अन्याय। ५ कठिनाई। मुसीबत। आफत। ६ एकान्तता।

वैषयिक (वि०) [स्त्री०—वैषयिकी] १ किसी पदार्थ सम्बन्धी। २ विषयी। लंपट।

वैषयिकः (पु०) विषयीपुरुष। लंपट आदमी।

वैष्टुतं (न०) हवन की भस्म।

वैष्टुः (पु०) १ आकाश। २ पवन। हवा। ३ लोक।

वैष्णव (वि०) [स्त्री—वैष्णवी] १ विष्णु सम्बन्धी। २ विष्णु की उपासना करने वाला।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक।

वैष्णवं (न०) हवन की भस्म।

वैष्णवः (पु०) वैदिक धर्म के अन्तर्गत मुख्य तीन विभागों में से एक विभाग। अन्य दो हैं, शैव और शाक्त।

वैसारिणः (पु०) मछली।

वैहायस (वि०) [स्त्री—वैहायसकी] व्योम सम्बन्धी। आकाश सम्बन्धी। आसमानी। आकाशी।

वैहार्य (वि०) वह जिसके साथ मज़ाक किया जाय (जैसे साला या ससुराल का अन्य ऐसा ही कोई रिश्तेदार)

वैहासिकः (पु०) मसख़रा। विदूषक।

वोढृ (पु०) १ कुली। वाहक। २ नेता। ३ पति। ४ साँड। ५ रथ। ६ गोह। गोनस सर्प।

वोढुः (पु०) १ सर्प विशेष। २ मछली विशेष।

वोढ्री (स्त्री०) चौथाई पण। सिक्का विशेष।

वोट / वोण्टः (पु०) डंठल।

वोद्र (वि०) नम। तर। सीलवाला।

वोद्दालः (पु०) बोआरी नामक मछली।

वोरकः / वोलकः (पु०) लेखक।

वोरटः (पु०) कुन्द।

वोलः (पु०) गुग्गुल।

वोल्लाह (पु०) पीले अयालों और पीले रंग की पूँछ वाला घोड़ा।

वोढ (पु०) देखो वौढ।

वौषट् (अव्यया०) पितरों या देवताओं को कोई वस्तु अर्पण करते समय बोला जाने वाला अव्यय विशेष।

व्यंशकः (पु०) पहाड़।

व्यंशुक (वि०) नंगा। वस्त्र विवर्जित।

व्यंसकः (पु०) बदमाश। छली कपटी।

व्यंसनं (न०) धोखेबाजी। छल। कपट।

व्यक्त (व० कृ०) १ प्रादुर्भूत। प्रकटित। २ निर्मित। बुद्धिगत। ३ स्पष्ट। साफ। ४ वर्णित। ज्ञात। पहचाना हुआ। ५ व्यक्त। ६ बुद्धिमान। पण्डित।

व्यक्तं (अव्यय०) स्पष्टतः। साफ तौर पर। निश्चयरूप से।—गणितं (न०) अङ्कगणित।—दृष्टार्थः, (पु०) चश्मदीदगवाह। वह साक्षी जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो।—राशिः, (पु०) अङ्कगणित में वह राशि या अङ्क जो बतला दिया गया हो या ज्ञात अङ्क।—रूपः, (पु०) विष्णु।

व्यक्तिः (स्त्री०) १ व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकटन। प्रादुर्भाव। २ मनुष्य। आदमी। ३ मनुष्य या किसी अन्य शरीरधारी का सारा शरीर, जिसकी पृथक् सत्ता मानी जाय और जो किसी समूह या समाज का अंग माना जाय। व्यष्टि। ३ लिङ्ग प्रकरण।

व्यग्र (वि०) १ विकल । व्याकुल । परेशान । २ भयभीत । डरा हुआ । ३ किसी कार्य में लीन ।

व्यंग } (वि०) १ शरीरहीन । २ अवयवहीन ।
व्यङ्ग } विकलाङ्ग । लुंजा ।

व्यंगः } (पु०) १ लुंजा । २ मेंढक । ३ गालों पर
व्यङ्गः } के काले दाग ।

व्यंगुलं } (न०) अंगुल का १/६० वाँ अंश ।
व्यङ्गुलं }

व्यंग्यं } (न०) शब्द का वह अर्थ जो उसका
व्यङ्ग्यं } व्यञ्जना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो । गूढ़ और छिपा हुआ अर्थ । २ वह लगती हुई बात जिसका कुछ गूढ़ अर्थ हो । ताना । बोली । चुटकी ।

व्यच् (धा० प०) [विचति] धोखा देना । छलना ।

व्यजः (पु०) पखा ।

व्यजनं (न०) पंखा ।

व्यंजक } (वि०) [स्त्री—व्यंजिका, व्यञ्जिका]
व्यञ्जक } प्रकट करने वाला । ज़ाहिर करने वाला ।

व्यंजकः } (पु०) १ नाटकीय हाव भाव । हाव
व्यञ्जकः } भाव द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटन । २ सङ्केत ।

व्यंजनं } (न०) १ स्पष्ट करने वाला । २ चिह्न ।
व्यञ्जनं } निशान । चिन्हानी । ३ स्मारक । स्मरण कराने वाला । ४ परिच्छद । बनावटीपन । ५ वर्ण-माला का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के न बोला जा सके । संस्कृत वर्णमाला में के "क से ह" तक सब वर्ण व्यञ्जन कहे जाते हैं । ६ लिङ्गवाची चिह्न । अर्थात् स्त्री या पुरुष पहचानने का चिह्न । ७ बिल्ला । चपरास । ८ वयस्कता प्राप्ति का लक्षण । ९ दाढ़ी । १० अवयव । प्रत्यङ्ग । ११ मसाला । चटनी । अचार । १२ व्यञ्जना । शक्ति की तीन प्रकार की शक्तियों में से एक प्रकार की शक्ति, जिससे किसी शब्द या वाक्य के वाच्यार्थ अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी अन्य ही अर्थ का बोध होता है ।

व्यंजित } (व० कृ०) १ स्पष्ट किया हुआ । प्रकटित ।
व्यञ्जित } २ चिन्हित । ३ सङ्केत किया हुआ । प्रकारान्तर से कहा हुआ ।

व्यडंनकः } (पु०) अंडौआ का रूख ।
व्यडवनः }

व्यतिकरः (पु०) १ संमिश्रण । मिलावट । २ सम्बन्ध । संसर्ग । लगाव । तअल्लुक । ३ आघात । प्रत्याघात । ४ रुकावट । अड़चन । ५ घटना । हादसा । ६ अवसर । मौका । ७ आफत । विपत्ति । ८ पारस्परिक सम्बन्ध । ९ अदलबदल । आपस का लेनदेन ।

व्यतिकीर्ण (व० कृ०) १ मिश्रित । २ संयुक्त । जुड़ा हुआ ।

व्यतिक्रमः (पु०) १ उलट फेर जो सिलसिलेवार हो । क्रमानुसार होने वाला विपर्यय । २ पाप । असत्कर्म । जुर्म । अपराध । ३ विपत्ति । सङ्कट । ४ अतिक्रमण । ५ अवहेला । लापरवाही । ६ वैपरीत्य ।

व्यतिक्रान्त (व० कृ०) १ अतिक्रम किया हुआ । जिसमें विपर्यय हुआ हो । भङ्ग किया हुआ । (नियम) । अवहेला किया हुआ । २ उलट फेर किया हुआ । ३ बीता हुआ । गुज़रा हुआ । (जैसे समय ।)

व्यतिरिक्त (व० कृ०) १ अलगाया हुआ । अलहदा किया हुआ । २ बढ़ा हुआ । ३ रोका हुआ । ४ वर्जित ।

व्यतिरेकः (पु०) १ भेद । अन्तर । भिन्नता । २ अलगाव । ३ वर्जन । बहिष्करण । ४ असमानता । असादृश्य । ६ विच्छेद । क्रमभङ्ग । ७ अर्थालङ्कार विशेष जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन किया जाता है ।

व्यतिरेकिन् (वि०) १ भिन्न । २ आगे बढ़ा हुआ । ३ वर्जित । बहिष्कृत । ४ अभाव या अनस्तित्व प्रदर्शन करने वाला ।

व्यतिषक्त (व० कृ०) १ पारस्परिक सम्बन्ध युक्त या जुड़ा हुआ । २ ओतप्रोत । ३ परस्पर परिणय या विवाह सम्बन्ध में आबद्ध ।

व्यतिषंगः } (पु०) १ पारस्परिक सम्बन्ध । २
व्यतिषङ्गः } मिलावट । ३ संयोग । सङ्गम ।

व्यतिहारः } (पु०) विनिमय । बदला ।
व्यतीहारः

व्यतीत (व० कृ०) १ गया हुआ । गुज़रा हुआ । बीता हुआ । २ मरा हुआ । ३ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । प्रस्थानित । ४ निरस्कृत । अवहेलना किया हुआ ।

व्यतीपातः (पु०) १ सम्पूर्णरीत्या प्रस्थान । सम्पूर्णतः विच्छेद । २ बड़ा भारी उत्पात या उपद्रव । [जैसे भूकम्प उल्कापात आदि] ३ अपमान । तिरस्कार । अपमान । ४ ज्योतिष शास्त्र में सत्ताइस योगों में से सत्रहवाँ योग । इस योग में कोई शुभ कार्य या यात्रा निषिद्ध है । ५ योग विशेष जो अमावास्या के दिन रविवार या श्रवण धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, अथवा मृगशिरा नक्षत्र होने पर होता है । इस योग में गङ्गास्नान का बड़ा पुण्य फल बतलाया गया है ।

व्यत्ययः (पु०) १ व्यतिक्रम । उलटफेर । २ उल्लङ्घन । ३ रोक । अड़चन ।

व्यत्यस्त (व० कृ०) १ उलटा । औंधा किया हुआ । २ विरुद्ध । विपरीत । ३ असंलग्न । ४ आड़ा । तिरछा ।

व्यत्यासः (पु०) १ व्यतिक्रमण । २ वैपरीत्य । विरुद्धता ।

व्यथ् (धा० आ०) [व्यथते, व्यथित] १ दुःखी होना । रंजीदा होना । सन्तप्त होना । अशान्त होना । २ आन्दोलित होना । विकल होना । ३ काँपना । ४ भयभीत होना । ५ सूख जाना ।

व्यथक (वि०) [स्त्री०—व्यथिका] दुःख पूर्ण । पीड़ाकारक ।

व्यथनं (न०) पीड़ादायी । सन्तापकारी ।

व्यथा (स्त्री०) १ कष्ट । दुःख । २ भय । डर । चिन्ता । ३ विकलता । व्याकुलता । ४ रोग । बीमारी

व्यथित (व० कृ०) १ पीड़ित । सन्तप्त । २ भयभीत । ३ व्याकुल । विकल ।

व्यध् (धा० प०) [विध्यति, विद्ध] १ वेधना । छेदना । ताड़न करना । भोंक देना । मार डालना २ छेद करना । ३ कोंचना ।

व्यध (पु०) १ छेदन । भेदन । २ ताड़न । घायल करण । ३ पास पास छेद करने की क्रिया ।

व्यध्यः (पु०) निशाना जो वेधा जाय । निशानेबाज़ी का चाँद ।

व्यध्व (पु०) बुरा मार्ग । कुपथ ।

व्यनुनादः (पु०) उच्च प्रतिध्वनि ।

व्यंतर } (पु०) अलौकिक जीव या आत्मा ।
व्यन्तर

व्यप् (धा०उ०) [व्यपयति व्यपयते] १ फेंकना । २ कम करना । ख़राब करना । बरबाद करना । घटाना ।

व्यपकृष्ट (व० कृ०) हटाया हुआ । खींचा हुआ । स्थानान्तरित किया हुआ ।

व्यपगत (व० कृ०) १गया हुआ । प्रस्थानित । २ हटाया हुआ । ३ गिरा हुआ ।

व्यपगमः (पु०) प्रस्थान ।

व्यपत्रप (वि०) निर्लज्ज । बेहया ।

व्यपदिष्ट (व० कृ०) १ नामाङ्कित । २ निर्दिष्ट । बतलाया हुआ ।

व्यपदेशः (पु०) १ सूचना । इत्तिला । २ नामकरण । ३ नाम । उपाधि । ४ वंश । कुल । जाति । ५ कीर्ति । प्रसिद्धि । प्रख्याति । ६ चालाकी । चाल । बहाना । तरकीब । ७ जाल । कपट । छल ।

व्यपदेष्टृ (पु०) कपटी । छलिया । धोखेबाज़ ।

व्यपरोपणं (न०) १ जड़ से उखाड़ कर फेंक देने की क्रिया । बहिष्करण । हराना । निकाल बाहिर करना । ३ कर्तन । तोड़ना ।

व्यपायः (पु०) समाप्ति । बंदी ।

व्यपाश्रयः (पु०) १ आश्रय । अवलम्ब । २ निर्भरता । ३ एक के बाद एक होना । परंपराक्रम ।

व्यपेक्षा (स्त्री०) १ आकाँक्षा । अभिलाषा । २ आग्रह । अनुरोध । ३ पारस्परिक सम्बन्ध । ४ संलग्नता । ४ अपेक्षा ।

व्यपेत (व० कृ०) १ वियोजित । २ प्रस्थानित ।

व्यपोढ (व० कृ) १ निकाला हुआ । हटाया हुआ । २ विरुद्ध । विपरीत । ३ प्रादुर्भूत । प्रकटित । प्रदर्शित ।

व्यपोह. (पु०) वहिष्करण । रोक रखने या भगा देने की क्रिया ।

व्यभिचारः } (पु०) १ कदाचार । बदचलनी ।
व्यभीचारः } कुपथगमन । अनुचित मार्गानुसरण । २ अतिक्रमण । भङ्गीकरण । ३ भूलचूक । अपराध । ४ अलहदगी । ५ असतीत्व । ६ अनियमितता । अपवाद (किसी नियम का) । ७ न्याय में हेतु दोष ।

व्यभिचारिणी (स्त्री०) असती स्त्री । छिनाल औरत ।

व्यभिचारिन् (वि०) १ मार्ग भ्रष्ट । २ बदचलन । परस्त्रीगामी । ३ असत्य । झूठ ।

व्यभिचारिभावः (पु०) साहित्य में वे भाव जो रस के उपयोगी होकर जलतरङ्गवत् उनमें सञ्चरण करते है और समय समय पर मुख्य भाव का रूप भी धारण कर लेते हैं । अर्थात् चंचलता पूर्वक सब रसों में सञ्चारित होते रहते हैं । सञ्चारी भाव ।

व्यय (वि०) परिवर्तनशील । नाशवान् ।

व्ययः (पु०) १ नाश । बरबादी । ३ रोक । रुकावट अड़चन । ३ अधःपात । ह्रास । घटती । ३ खर्च । लागत । ४ फ़ज़ूलख़र्ची ।—शील, (वि०) अपव्ययी । फ़ज़ूलख़र्च । शाहखर्च ।

व्ययनं (न०) ख़र्च करना । बरबाद करना । नष्टकर डालना ।

व्ययित (व०कृ०) १ व्यय किया हुआ । १ बरबाद किया हुआ । घटती को प्राप्त ।

व्यर्थ (वि०) १ निरर्थक । २ अर्थरहित । जिसका कुछ मतलब ही न हो ।

व्यलीक (वि०) १ झूठा । मिथ्या । २ अप्रिय । अप्रीतिकर । ३ असत्य नहीं ।

व्यलीकं (न०) १ अप्रियता । अप्रीतिकर । २ कोई कारण जिससे दुःख उत्पन्न हो । कष्ट । शोक । दुःख । ३ अपराध । जुर्म । ४ कपट । छल । धोखा । ५ झुठाई । असत्यता । ६ वैपरीत्य । विरुद्धता ।

व्यलीकः (पु०) १ लंपट पुरुष । २ वह लौंडा जो पुरुष मैथुन कराता हो ।

व्यवकलनं (न०) १ विच्छेद । २ अङ्कगणित में बाकी घटाने की क्रिया । बाकी निकालने की क्रिया ।

व्यवक्रोशनं (न०) आपस में गाली गलौज़ ।

व्यवच्छिन्न (व० कृ०) १ कटा हुआ । चिरा हुआ । फटा हुआ । २ वियोजित । विभक्त । ३ निर्द्धारण किया हुआ । निश्चित । ४ चिह्नित । ५ बाधा डाला हुआ ।

व्यवच्छेदः (पु०) १ पृथक्ता । पार्थक्य । अलगाव । २ विभाग । खण्ड । हिस्सा । ३ विराम । ४ निर्द्धारण । ५ छोड़ना । दागना । चलाना जैसे बाण । ५ किसी ग्रन्थ का अध्याय या पर्व ।

व्यवधा (स्त्री०) १ वह जो बीच में हो । २ पर्दा । ३ छिपाव । दुराव ।

व्यवधान (न०) वह वस्तु जो बीच में पड़ पृथक् करती हो । २ रुकावट । दृष्टि को रोकने वाली वस्तु । ३ दुराव । छिपाव । ४ परदा । दीवाल । ५ गिलाफ । चादर । ६ अवकाश । स्थान ।

व्यवधायक (वि०) [स्त्री०—व्यवधायिका] १ आड़ करने वाला । अन्तर डालने वाला । परदा करने वाला । २ रुकावट डालने वाला । छिपाने वाला । ३ बीच का । मझौला ।

व्यवधिः (पु०) व्यवधान । परदा । आड़ । रोक ।

व्यवसायः (पु०) १ उद्योग । उद्यम । २ निश्चय-धारणा । सङ्कल्प । पक्का इरादा । ३ कार्य । क्रिया । ४ धंधा । व्यवसाय । व्यापार । ५आचरण । चाल-चलन । व्यवहार । ६ तरकीब । चालाकी । छल । कपट । ७ डींग । अकड़बाज़ी । ८ विष्णु का नामान्तर ।

व्यवसायिन् (वि०) १ उद्यमी । परिश्रमी । २ दृढ विचारवान । दृढ अध्यवसायी ।

व्यवसित (व० कृ०) १ जिसका अनुपान किया गया हो। व्यवसाय किया हुआ। २ उद्यत। तत्पर। ३ निश्चित। ४ छला हुआ। प्रवञ्चित।

व्यवसितं (न०) सङ्कल्प। दृढ़ विचार।

व्यवस्था (स्त्री०) १ प्रबन्ध। इन्तज़ाम। २ नज़ीर। युक्ति। ३ निर्धारित नियम या विधान। ४ शर्तनामा। ठहराव। इकरार नामा। ५ परिस्थिति। हालत। दशा। ६ दृढ़ आधार।

व्यवस्थानं (न०) } १ व्यवस्था। प्रबन्ध। २
व्यवस्थितिः (स्त्री०) } नियम। निर्णय। ३ दृढ़ता। सङ्गति। ४ अध्यवसाय। ५ विच्छेद।

व्यवस्थापक (वि०) [स्त्री०—व्यवस्थापिका] १ प्रबन्धक। व्यवस्था करने वाला। मुन्तज़िमकार। २ वह जो कानूनी व्यवस्था देता हो। ३ यथास्थान क्रम से सजाने वाला।

व्यवस्थापनं (न०) १ व्यवस्था करने की क्रिया। २ निर्धारण। निश्चयकरण।

व्यवस्थापित (व० कृ०) व्यवस्था किया हुआ। निर्धारण किया हुआ।

व्यवस्थित (व० कृ०) १ क्रम से रखा हुआ। सजाया हुआ। २ तै किया हुआ। निर्धारित। ३ निर्णीत। ४ वियोजित। ५ निकाला हुआ। ६ निर्भरित। अवलम्बित।

व्यवहर्तृ (पु०) १ किसी व्यापार का प्रबन्धक। २ मुकदमाबाज़ी करने वाला। वादी। ३ न्यायाधीश। ४ साथी। संगी।

व्यवहारः (पु०) १ आचरण। चालचलन। २ धंधा। व्यवसाय। ३ पेशा। ४ ब्योहार। लैनदैन। ५ तिजारत। व्योपार। व्याज बट्टे का धंधा। ६ रीति। रस्म। रिवाज़। ७ सम्बन्ध। रिश्तेदारी। ८ मुकदमे की जाँच पड़ताल। मुकदमे को फैसल करना। १० मुकदमा। अभियोग। नालिश। फरियाद।—पादः, (पु०) व्यवहार के पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष, क्रियापाद और निर्णय इन चारों का समूह।—मातृका, (स्त्री०) व्यवहारशास्त्रानुसार होने वाली क्रियाएँ। [जैसे मुकदमा का दायर होना, पेश होना, गवाहों की तलबी। उनकी साची। जिरह। वहस। फैसला। आदि।]—विधिः, (पु०) वह शास्त्र जिसमें व्यवहार सम्बन्धी बातों का उल्लेख किया गया हो। धर्मशास्त्र।—विषय', (वि० , पदं (न०)—मार्गः, (पु०)—स्थान, (न०) व्यवहार का विषय या स्थान।

व्यवहारकः (पु०) व्यवसायी। व्योपारी सौदागर।

व्यवहारिक (वि०) [स्त्री० व्यवहारिका, व्यवहारिकी] १ व्यापार सम्बन्धी। २ व्यापार में संलग्न। ३ फौजदारी। आईनी या कानूनी। ४ मुकदमाबाज़। मामूली रस्म के मुताबिक।

व्यवहारिका (स्त्री०) चलन। पद्धति। रवाज़। रस्म। २ झाड़। ३ इंगुदी का वृक्ष।

व्यवहारिन् (वि०) १ ब्योहारी। जिसके साथ लैन दैन का व्यवहार होता हो। २ मुकदमाबाज़। ३ मामूली। रस्म के मुताबिक।

व्यवहित (व० कृ०) १ अलग रखा हुआ। २ बीच में पड़ी किसी वस्तु से अलगाया हुआ। ३ बाधा दिया हुआ। बंद किया हुआ। रोका हुआ। ४ परदा डाला हुआ। आड़ में किया हुआ। ५ सम्बन्ध न किया हुआ। ६ किया हुआ। सम्पादित। ७ छोड़ा हुआ। ८ आगे बढ़ा हुआ। ९ विरोधी। विरुद्ध।

व्यवहृतिः (स्त्री०) १ उद्यम। धधा। २ क्रिया। कृति।

व्यवाय (न०) चमक। दीप्ति। आभा।

व्यवायः (पु०) १ विच्छेद। २ लीनता। ३ परदा। दुराव। छिपाव। ४ मध्यवर्तित्व। अन्तराल। विराम। ५ अड़चन। रोक। ६ स्त्रीसम्भोग। स्त्रीमैथुन। ७ शुद्धता।

व्यवायिन् (पु०) १ कामी पुरुष। ऐयाश आदमी। २ कामोद्दीपक औषध।

व्यवेत (व० कृ०) १ वियोजित। २ भिन्न।

व्यष्टि (स्त्री०) व्यक्तित्व। समष्टि का एक पृथक् एवं विशिष्ट अंश। समष्टि का उलटा।

व्यसनं (न०) १ प्रक्षेप। २ वियोग। विच्छेद।

३ अतिक्रमण। भङ्गकरण। ४ नाश। पराजय। अधःपात। निर्बलता। ५ आपत्ति। विपत्ति। सङ्कट। अभाव। ६ अस्त होने की क्रिया। ७ पापाचार। दुष्टाचार। बुरी आदत। बुरीलत। ८ लीनता किसी कार्य में। ९ जुर्म। अपराध। १० सजा। ११ अयोग्यता। १२ निरर्थक उद्योग। १३ पवन। हवा।—अतिभारः, (पु०) बड़ी भारी विपत्ति।—अन्वित,—आर्त,—पीड़ित, (वि०) आपदग्रस्त। सङ्कटापन्न। मुसीबतज़दा।

व्यसनिन् (वि०) १ किसी बुरीलत में फँसा हुआ। दुष्ट। २ अभागा। बदकिस्मत। ३ अत्यन्त अनुरक्त।

व्यसु (वि०) निर्जीव। मृत।

व्यस्त (व० कृ०) १ प्रक्षिप्त। निक्षिप्त। २ विकीर्ण। बिखरा हुआ। ३ निकाला हुआ। ४ वियोजित। अलहदा किया हुआ। ५ एक एक कर विचार किया हुआ। अलग अलग। ६ अमिश्रित। सादा। ७ विभिन्न। ८ स्थानान्तरित किया हुआ। ९ घबड़ाया हुआ। विकल। १० गड़बड़। अस्तव्यस्त। ११ उलटा पुलटा। ऊपर नीचे। १२ विपरीत।

व्यस्तार. (पु०) हाथी की कनपुट्टियों से मद का चूना।

व्याकरण (न०) १ वाक् पृथक्करण प्रक्रिया। २ व्याकरण शास्त्र जो वेद के छः अङ्गों में से एक है।

व्याकारः (पु०) १ परिवर्तन। रूप का पलटना। २ कुरूपता।

व्याकीर्ण (व० कृ०) १ बिखरा हुआ। छिटका हुआ। २ अस्तव्यस्त किया हुआ।

व्याकुल (वि०) १ विकल। परेशान। भयभीत। डरा हुआ। ३ परिपूर्ण ४ मशगूल कार्य में सलग्न या फँसा हुआ।

व्याकुलित (व० कृ०) विकल। परेशान। घबड़ाया हुआ।

व्याकूतिः (स्त्री०) छल। कपट। धोखा। फरेब।

व्याकृत (व० कृ०) १ पृथक् किया हुआ। २ व्याख्या किया हुआ। ३ बदशक्ल। बनाया हुआ।

व्याकृतिः (स्त्री०) १ पृथक्करण। २ व्याख्या। टीका। ३ शक्ल की बदलौवल। ४ व्याकरण।

व्याकोश | व्याकोप (वि०) १ बढ़ाया हुआ। फुलाया हुआ। खिला हुआ। २ वृद्धि को प्राप्त।

व्याक्षेपः (पु०) १ उछल कूद। २ अड़चन। रुकावट। ३ विलम्ब। ४ विकलता।

व्याख्या (स्त्री०) १ वर्णन। निरूपण। २ टीका। टिप्पणी।

व्याख्यात (व० कृ०) निरूपित। वर्णित। टीका किया हुआ।

व्याख्यातृ (पु०) टीकाकार। टिप्पणीकार।

व्याख्यानं (न०) निरूपण। २ भाषण। तकरीर। ३ व्याख्या। टीका।

व्याघट्टन (न०) १ मन्थन। रगड़। संघर्ष।

व्याघात. (पु०) १ ताड़न। २ आघात। प्रहार। ३ अड़चन। रुकावट। ४ खण्डन। प्रतिवाद। ५ अलङ्कार विशेष जिसमें एक ही उपाय के द्वारा दो विरुद्ध कार्यों के होने का वर्णन किया जाता है।

व्याघ्रः (पु०) १ चीता। बाघ। २ (समासान्त शब्दों के अन्त में आने पर इसका अर्थ होता है— सर्वोत्तम। मुख्य। प्रधान। यथा ' नरव्याघ्र "। ३ लालरेंड। करंज।—आस्यः, (पु०) बिलार।—नखः, (पु०)—नखं, (स्त्री०) १ चीते के नाखून। २ बगनहा नामक प्रसिद्ध गन्धद्रव्य। ३ खरौंच। नखक्षत। ४ थूहर। ५ एक प्रकार का कद।—नायकः, (पु०) गीदड़। शृगाल।

व्याघ्री (स्त्री०) चीते की मादा।

व्याज (पु०) १ कपट। छल। फरेब। २ कौशल। चालाकी। ३ बहाना। मिस। ४ तरकीब युक्ति।—उक्तिः, (स्त्री०) १ कपटभरी बात। २ अलङ्कार विशेष। इसमें किसी स्पष्ट बात को दुहाने के लिये कोई बहाना किया जाता है।—निन्दा, (स्त्री०) वह निन्दा जो छल या कपट से की जाय।—सुप्त, (वि०) सोने का बहाना किये हुए।—स्तुतिः, (स्त्री०) वह

स्तुति या प्रशंसा जो किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में तो स्तुति जान पड़े, किन्तु हो निन्दा।

व्याडः (पु०) १ माँस भक्षी जीव जैसे शेर चीता आदि। २ गुंडा। शठ। ३ सर्प। ४ इन्द्र का नामान्तर।

व्याडिः (पु०) संस्कृत साहित्य का एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार जिसके बनाये व्याकरण और शब्दकोश प्रसिद्ध हैं।

व्यात्युक्षी (स्त्री०) जलक्रीड़ा।

व्यात्त (व० कृ०) खिला हुआ। फैला हुआ। पसरा हुआ।

व्यादानं (न०) १ फैलाव। विस्तार। २ उद्घाटन।

व्यादिशः (पु०) विष्णु की उपाधि।

व्याधः (पु०) १ शिकारी। बहेलिया। चिड़ीमार २ दुष्ट। नीच आदमी।

व्याधामः } (पु०) इन्द्र का वज्र।
व्याधावः }

व्याधिः (पु०) १ बीमारी। रोग। पीड़ा। २ कोढ़। —ग्रस्त, (वि०) बीमार। रोगी।

व्याधित (वि०) रोगी। बीमार।

व्याधूत (व० कृ०) हिलाया डुलाया हुआ। काँपता हुआ। थरथराता हुआ।

व्यानः (पु०) शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक। यह सारे शरीर में व्याप्त रहता है।

व्यानतं (न०) रतिबन्ध।

व्यापक (वि०) [स्त्री०—व्यापिका] १ चारों ओर फैला हुआ। २ जो ऊपर या चारों ओर से घेरे हुए हो। घेरने या ढकने वाला।

व्यापत्तिः (स्त्री०) १ बरबादी। सर्वनाश। विपत्ति। आपत्ति। २ एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का रखना। ३ मृत्यु।

व्यापद् (स्त्री०) १ विपत्ति। सङ्कट। २ रोग। बीमारी। ३ अस्वस्थता। ४ मृत्यु। रोग।

व्यापनं (न०) व्याप्ति। फैलाव।

व्यापन्न (व० कृ०) १ सङ्कटापन्न। विपन्न। २ गिरा हुआ (जैसे गर्भ)। ३ चोटिल। घायल। ४ मृत। मरा हुआ ५ अस्तव्यस्त। गड़बड़। ६ परिवर्तित। बदला हुआ।

व्यापादः (पु०) } १ हनन। मारण। २ नाश।
व्यापादनं (न०) } बरबादी। ३ दुष्टता। मलिनता। मन में दूसरे के अपकार की भावना करना। किसी की बुराई सोचना।

व्यापारः (पु०) १ कर्म। कार्य। काम। २ धंधा। पेशा। ३ उद्योग। उद्यम। ४ न्याय के अनुसार विषय के साथ होने वाला इन्द्रियों का संयोग।

व्यापारित (व० कृ०) १ काम में लगा हुआ। २ स्थापित। गढ़ा हुआ। जड़ा हुआ।

व्यापारिन् (वि०) १ व्यापारी। रोज़गारी। सौदागर। २ कोई भी कार्य करने वाला।

व्यापिन् (वि०) १ व्यापक। २ सर्वव्यापी। ३ आच्छादक। (पु०) विष्णु का नाम।

व्यापृत (व० कृ०) १ किसी काम में लगा हुआ। २ स्थापित। नियत। (पु०) सचिव। नौका।

व्यापृतिः (स्त्री०) १ धंधा। काम काज। २ कार्य। कर्म। ३ उद्योग। ४ पेशा।

व्याप्त (व० कृ०) १ फैला हुआ। घुसा हुआ। २ चारों ओर फैला हुआ। ३ भरा हुआ। परिपूर्ण। ४ घिरा हुआ। ५ स्थापित। नियत। ६ अधिकृत। प्राप्त। ७ सम्मिलित। ८ (न्यायदर्शन के अनुसार किसी पदार्थ का दूसरे पदार्थ में) पूर्ण रूप से मिला हुआ या फैला हुआ (होना)। ९ प्रसिद्ध। प्रख्यात। १० फैला हुआ। पसरा हुआ।

व्याप्तिः (स्त्री०) १ व्याप्त होने की क्रिया। २ न्यायदर्शनानुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्णरूपेण मिला या फैला हुआ होना। एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के साथ सदा पाया जाना। ३ सर्वमान्य नियम। सार्वजनिक नियम। परिपूर्णता। ५ प्राप्ति। —ज्ञानं, (न०) न्यायदर्शनानुसार वह ज्ञान जो साध्य को देख कर साध्यवान्

के अस्तित्व के सम्बन्ध में अथवा साध्यवान् को देखकर साध्य के अस्तित्व के सम्बन्ध में उपलब्ध होता है।

व्याप्य (वि०) व्यापनीय। व्याप्त करने के योग्य।

व्याप्यं (न०) वह जिसके द्वारा कोई कार्य हो। हेतु। साधन।

व्याप्यत्वं (न०) नित्यता। अविकारता। अपरिवर्तनीयता।

व्याभ्युक्षी देखो व्यात्युक्षी।

व्यामः (पु०) } लंबाई का नाप। दोनों भुजाओं
व्यामनं (न०) } को दोनों ओर फैलाने पर एक हाथ की उँगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियों के सिरे तक जितनी दूरी होती है उसे "व्याम" कहते हैं।

व्यामिश्र (वि०) मिश्रित। मिला हुआ।

व्यामोहः (पु०) १ मोह। अज्ञान। २ व्याकुलता। परेशानी।

व्यायत (व० कृ०) १ लंबा। आगे बढ़ा हुआ। २ फैला हुआ। पसरा हुआ ३ नियंत्रित। ४ कार्य में व्यग्र। मशगूल। ५ सख्त। दृढ़। ६ मज़बूत। अत्यधिक। सघन। ७ ताक़तवर। बलवान। ८ गहरा। गम्भीर।

व्यायतत्वं (न०) रगपट्ठों की वृद्धि।

व्यायामः (पु०) १ फैलाव। बढ़ाव। २ कसरत। ३ थकावट। श्रान्ति। ४ उद्योग। उद्यम। ५ झगड़ा। विवाद। ६ माप विशेष।

व्यायामिक (वि०) [स्त्री०—व्यायामिकी] कसरती। कसरत सम्बधी।

व्यायोगः (पु०) साहित्य में दस प्रकार के रूपकों में से एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

व्याल (वि०) १ दुष्ट। शठ। २ बुरा। उपद्रवी। ३ नृशंस। भयानक। वहशी।

व्यालः (पु०) १ खूनी हाथी। २ शिकार करने वाला जन्तु। हिंस्र जन्तु। ३ सर्प। ४ चीता। बाघ। ५ बघर्रा। लकड़ बग्घा। ६ राजा। ७ छली। कपटी धोखा देनेवाला। ८ विष्णु का नाम।—खड्गः,।—नखः, (पु०) नख या बगनहा नामक गन्ध द्रव्य —ग्राहः,।—ग्राहिन्, (पु०) सपेरा। सर्प पकड़ने वाला।—मृगः, (पु०) वनजन्तु। २ शिकारी चीता।—रूपः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।

व्यालकः (पु०) दुष्ट या उपद्रवी हाथी।

व्यालंबः } (पु०) रेंड का रूख।
व्यालम्बः }

व्यालोल (वि०) १ काँपने वाला। थरथराने वाला। २ अस्तव्यस्त। गड़बड़। बिखरा हुआ (जैसे सिर के केश)।

व्यावकलनं (न०) बाकी निकालने की क्रिया।

व्यावक्रोशी } (स्त्री०) आपस में गाली गलौज।
व्यावभाषी } अकोसी अकोसा।

व्यावर्तः (पु०) १ घिराव। घेरना। २ भ्रमण। चक्कर करना। ३ आगे को निकली हुई नाभि। नाभिकण्टक।

व्यावर्तक (वि०) [स्त्री०—व्यावर्तिका] १ व्यावर्तन करने वाला। घेरने वाला। २ पृथक् करने वाला। ३ पीछे की ओर लौटाने वाला। ४ विमुख होने वाला।

व्यावर्तनं (न०) १ घेरने की या चारों ओर से छेक लेने की क्रिया। २ घूमने की या चक्कर खाने की क्रिया। ३ लपेट। पट्टी।

व्यावलित (व० कृ०) हिला हुआ। आन्दोलित।

व्यावहारिक (वि०) [स्त्री०—व्यावहारिकी] काम धंधे सम्बन्धी। बर्ताव सम्बन्धी। २ आईनी। कानूनी। ३ रसूमी। रीति रिवाज के मुताबिक मामूली। ४ प्रातिभासिक।

व्यावहारिकः (पु०) राजा का वह अमात्य या मंत्री जिसके अधिकार में भीतरी और बाहिरी समस्त प्रकार के कार्य हों।

व्यावहारी (वि०) परस्पर पकड़ने वाले।

व्यावहासी (वि०) एक दूसरे को चिढ़ाने वाले या पारस्परिक उपहास करने वाले।

व्यावृत्त (व० कृ०) १ छूटा हुआ। निवृत्त। २ मना किया हुआ। वर्जित। ३ खण्डित। टूटा हुआ। ४ अलहदा किया हुआ। विभाजित ५ मनोनीत। ६ चारों ओर से घेरा हुआ। ७ आच्छादित। ढका हुआ। ८ प्रशंसित। सराहा हुआ। ९ घुमाया हुआ।

व्यावृत्तिः (स्त्री०) आच्छादन। परदा करने की क्रिया। २ बहिष्करण।

व्यासः (पु०) १ बाँट। वितरण। भाग भाग करके अलगाने की क्रिया। २ विश्लेषण। ३ बाहुल्य। विस्तार। ४ अंतर। भेद। जाँच। चौड़ाई। औड़ाई। ६ वृत्त का व्यास या वह रेखा जो किसी बिल्कुल गोल रेखा या वृत्त के किसी एक स्थान से बिल्कुल सीधी चल कर दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ७ उच्चारण का दोष। ८ सग्रहकर्त्ता। विभागकर्त्ता। ९ एक प्रसिद्ध ऋषि जो पराशर के औरस और सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। १० कथावाचक। पुराणों की कथा सुनाने वाला।

व्यासक्त (व० कृ०) १ जो बहुत अधिक आसक्त हुआ हो। जिसका मन बेतरह आ गया हो। २ वियोजित। वियुक्त। ३ व्याकुल। विकल। घबड़ाया हुआ। परेशान।

व्यासंगः } (पु०) १ बहुत अधिक आसक्ति।
व्यासङ्गः } २ बहुत अधिक भक्ति या अनुराग। ३ ध्यान। वियुक्ति। विच्छेद ५ परिश्रम पूर्वक अध्ययन।

व्यासिद्ध (व० कृ०) १ वर्जित। निषिद्ध। २ रोका हुआ (माल)।

व्याहत (व० कृ०) १ मना किया हुआ। निवारित। निषिद्ध। २ व्यर्थ। ३ रोका हुआ। अड़चन डाला हुआ। ४ हताश किया हुआ। ५ घबड़ाया हुआ। भयभीत।—अर्थता, (स्त्री०) निबन्ध रचना-शैली के दोषों में से एक।

व्याहरणं (न०) १ उच्चारण। कथन। २ वक्तृता। वर्णन।

व्याहारः (पु०) १ वक्तृता। भाषण। शब्द राशि २ ध्वनि। नाद।

व्याहृत (व० कृ०) कहा हुआ। बोला हुआ। उच्चारण किया हुआ।

व्याहृतिः (स्त्री०) १ भाषण। वक्तृता। २ बयान। ३ गायत्री के साथ जपे जाने वाले मंत्र विशेष। यथा —भूः, भुवः, स्वः। [व्याहृति की संख्या कोई तीन और कोई सात मानते है।

व्युच्छित्ति (स्त्री० } विनाश। बरबादी।
व्युच्छेदः (पु०) }

व्युत्क्रमः (पु०) १ व्यतिक्रम। गड़बड़ी। क्रम में उलट फेर। २ मार्गभ्रंशता। ३ वैपरीत्य।

व्युत्क्रांत } (व० कृ०) १ अतिक्रमण किया हुआ।
व्युत्क्रान्त } २ प्रस्थानित। गया हुआ।

व्युत्थानं (न०) } १ महान् उद्योग। २ किसी के
व्युत्थिति (स्त्री०) } विरुद्ध उठ खड़ा होना। विरोध। अवरोध। ३ स्वतंत्र होकर काम करना। स्वेच्छानुसार काम करना। ४ समाधि। ५ नृत्य विशेष। ६ हाथी को उठाने की क्रिया।

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) १ किसी पदार्थ आदि की विशेष उत्पत्ति या उसका निकास। २ शब्दसाधन विद्या। ३ पूर्ण अवगति। पूरी पूरी जानकारी। ४ पाण्डित्य। विद्वत्ता।

व्युत्पन्न (व० कृ०) १ निकला हुआ। २ शब्द साधन विद्या द्वारा बना हुआ। ३ संस्कृत। ४ जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।

व्युत्त (व० कृ०) भीगा हुआ। पानी से तर।

व्युदस्त (व० कृ०) खारिज किया हुआ। फेंका हुआ।

व्युदासः (पु०) १ दूर करने या फेंकने की क्रिया। २ बहिष्करण। ३ निरादर। तिरस्कार। ४ मारण। हनन। नाशकरण।

व्युपदेशः (पु०) बहाना। मिस।

व्युपरमः (पु०) अवसान। समाप्ति।

व्युपशमः (पु०) १ अनवसान। २ अशान्ति। ३ नितान्त अवसान। [यहाँ वि उपसर्ग का अर्थ नितान्तता है।]

व्युष्ट (व० कृ०) १ जला हुआ। झुलसा हुआ। २

सवेरे के प्रकाश से प्रकाशित। ३ चमकीला। स्पष्ट। ४ बसा हुआ।

व्युष्टं (न०) १ तड़का। भोर। प्रभातकाल। २ दिवस। दिन। ३ फल।

व्युष्टिः (स्त्री०) तड़का। भोर। २ समृद्धि। ३ प्रशंसा। ४ फल। परिणाम।

व्यूढ (व० कृ०) १ फैला हुआ। वृद्धि को प्राप्त। चौड़ा। श्रोंडा। २ दृढ़। ससक्त। ३ क्रम में रखा हुआ। सिलसिलेवार रखा हुआ। ४ अस्तव्यस्त। गड़बड़। ५ विवाहित।—कङ्कट, (वि०) कवचधारी। जिरहबख्तर पहिने हुए।

व्यूत (वि०) ओतप्रोत। सिला हुआ। बुना हुआ।

व्यूतिः (स्त्री०) १ सिलाई। बुनावट। २ बुनाई की उजरत।

व्यूहः (पु०) १ युद्ध करने के लिये जाने वाली अथवा युद्ध के समय की सेना की स्थापना। बलविन्यास। सेना का विन्यास। २ सेना। ३ समूह। जमघट। ४ अंश। भाग। अन्तर्गत भाग। ५ शरीर। ६ ठाठ। बनावट। ७ तर्क।—पार्ष्णिः, (स्त्री०) सेना का पिछला भाग।—भंगः,—भेदः, (पु०) सेना के व्यूह को तोड़ देना।

व्यूहन (न०) १ युद्ध के समय सेना की भिन्न भिन्न स्थानों में नियुक्त करने की क्रिया। २ शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्गों की बनावट।

व्यृद्धिः (स्त्री०) असमृद्धि। अभाग्य। दुर्भाग्य। बदक़िस्मती।

व्ये (धा० उभ०) [व्ययति—व्ययते, ऊत] १ आच्छादन करना। ऊपर से ढाँकना। २ सीना।

व्योकारः (पु०) लुहार।

व्योमन् (न०) १ आकाश। आसमान। २ जल। ३ सूर्य का मन्दिर। ४ भोडर। अबरक।—उदकं, (न०) वृष्टिजल। ओस।—केश,—केशिन्, (पु०) शिव जी।—गङ्गा, (स्त्री०) आकाश गंगा।—चारिन्, (पु०) १ देवता। २ पक्षी। ३ सन्त। महात्मा। ४ ब्राह्मण। ५ नक्षत्र।—धूमः, (पु०) बादल।—नाशिका, (स्त्री०) तीतर। बटेर।—मञ्जरं,—मण्डलं (न०) पताका। झंडा।—मुद्गरः (पु०) पवन का झोंका। झूका।—यानं (न०) आकाशयान। देवयान।—सद् (पु०) १ देवता। २ गन्धर्व। ३ आत्मा।—स्थली, (स्त्री०) पृथिवी।—स्पृश्, (वि०) बहुत ऊँचा।

व्रज् (धा० प०) [व्रजति] १ जाना। गमन करना। टहलना। आगे बढ़ना। २ पास जाना। मुलाकात करने को जाना। ३ प्रस्थान करना। रवाना होना। ४ गुज़र जाना।

व्रजनं (न०) १ भ्रमण। यात्रा। २ निर्वासन।

व्रज्या (स्त्री०) १ घूमना फिरना। पर्यटन। २ आक्रमण। चढ़ाई। ३ गल्ला (भेड़ों का।) झुंड। गिरोह। समूह। समुदाय। हेड़। ४ थियेटर। रंगभूमि। नाट्यशाला।

व्रण् (धा० प०) [व्रणति] शब्द करना। बजाना। [उ० व्रणयति—व्रणयते] घायल करना। चोटिल करना।

व्रणं (न०) } १ घाव। क्षत। चोट। खरोंच।
व्रणः (पु०) } २ बलतोड़। फोड़ा।—अरिः (पु०) बोल नामक गन्धद्रव्य। गूगल।—कृत (वि०) घायल किया हुआ या घायल। (पु०) भिलावे का पेड़।—विरोपण, (वि०) घाव पूरने वाला।—शोधनं, (न०, घाव की मलहम पट्टी।—हः, (पु०) अरंड वृक्ष। रेंडी का रूख।

व्रणित (वि०) घायल। चोटिल।

व्रतं (न०) } १ किसी बात का पक्का सङ्कल्प। २
व्रतः (पु०) } प्रतिज्ञा। ३ आराधना। भक्ति। ४ पुण्य के साधन उपवासादि नियम विशेष। ५ व्यवस्था। विधि। निर्दिष्ट अनुष्ठान-पद्धति। ६ यज्ञ। ७ अनुष्ठान। कर्म। कार्य।—चर्या (स्त्री०) किसी प्रकार का व्रत रखने या करने का काम।—पारणं (न०)—पारणा, (स्त्री०) किसी व्रत की समाप्ति। २ प्रतिज्ञा-भङ्ग।—लोपनं, (न०) किसी व्रत को भंग करना।—वैकल्यं, (न०) किसी धार्मिक व्रत की अपूर्णता।—स्नातकः, (पु०) तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों में

से एक। वह ब्रह्मचारी जिसने गुरु के निकट रह, व्रत तो समाप्त कर लिया हो, किन्तु वेदाध्ययन पूरा किये ही विना घर चला आया हो।

व्रततिः } (स्त्री०) १ वेल। लता। २ फैलाव।
व्रती } वृद्धि।

व्रतिन् (वि०) व्रतधारी। तपस्वी। भक्त। धर्मात्मा। (पु०) १ ब्रह्मचारी। २ साधु। महात्मा। ३ यजमान। यज्ञ करने वाला।

व्रश्च (धा० प०) [वृश्चति, वृक्ण] १ काटना। काट कर अलग करना। फाड़ना। २ घायल करना।

व्रश्चनं (न०) काट। चीरना। घाव करना।

व्रश्चनः (पु०) १ आरी। २ सुनार की रेती।

व्राजिः (स्त्री०) तूफान। आंधी।

व्रातं (न०) १ शारीरिक श्रम। मजदूरी। २ वह परिश्रम या मज़दूरी जो जीविका के लिये की जाय। ३ नैमित्तिक धंधा।

व्रातः (पु०) समूह। समुदाय।

व्रातीन (वि०) कुली। उजरत लेकर काम करने वाला मज़दूर।

व्रात्यः (पु०) १ वह द्विज जो समय पर संस्कार विशेष कर यज्ञोपवीत संस्कार के न होने से, पतित हो गया हो, जिसे वैदिक कृत्यादि करने का अधिकार न रह गया हो। २ नीच आदमी। कमीना पुरुष। ३ वर्णसङ्कर विशेष जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता और क्षत्रियाणी माता से हुई हो।—**ब्रुवः**, (पु०) अपने को व्रात्य बतलाने वाला।—**स्तोमः**, (पु०) प्राचीन कालीन एक यज्ञ, जिसे व्रात्य लोग अपना व्रात्यपना दूर करने के लिये किया करते थे।

व्री (धा० प०) [व्रिणाति, व्रीणाति] छाँटना। चुनना। पसंद करना। [आ० व्रीयते, व्रीण] १ जाना। चुना जाना। छाँटा जाना।

व्रीड् (धा० प०) [व्रीडयति] १ लज्जित होना। शर्माना। २ फेंकना। पटकना।

व्रीडः (पु०) } १ शर्म। लज्जा। २ विनम्रता।
व्रीडा (स्त्री०) } विनय शील।

व्रीडित (व० कृ०) लज्जित करना। शर्माना।

व्रीस् (धा० प०) [व्रीसति, व्रीसयति, व्रीसयते] अनिष्ट करना। हनन करना। मार डालना।

व्रीहिः (पु०) १ चावल। २ चावल का कण।—**अगारं**, (न०) अनाज की खत्ती या भंडारी।—**कांचनं**, (न०) मसूर की दाल।—**राजिकं**, (न०) चेना धान।

व्रुड् (धा० प०) [व्रुडति] १ आच्छादन करना। २ जमा किया जाना। ढेर लगाया जाना। ३ ढेर करना। जमा करना। ४ बूढ़ना। डूबना।

व्रूस् (धा० प०) देखो व्रीस्

व्रैहेय (वि०) [स्त्री—व्रैहेयी] १ चावल के योग्य। २ चाँवलों के साथ बोया हुआ।

व्रैहेयं (न०) धान का खेत। वह खेत जिसमें धान उग सके।

व्ली (धा० प०) [व्लिनाति, व्लीनाति, । निजन्त व्लेपयति] १ गमन करना। जाना। २ समर्थन करना। सहारा देना। ३ चुनना। छाँटना।

व्लेक्ष् (धा० उभ०) [व्लेक्षयति—व्लेक्षयते] देखना। अवलोकन करना।

श

श—संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला में तीसवाँ व्यञ्जन वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान प्रधानतया तालु है। अतः इसे तालव्य "श" कहते हैं। यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होने के कारण इसे ऊष्म भी कहते हैं। यह आभ्यन्तर प्रयत्न के विचार में ईषत् स्पृष्ट है और इसमें वाह्य प्रयत्न श्वास और घोष होता है।

शं (न०) आनन्द। हर्ष। प्रसन्नता।

शः (पु०) १ काटने वाला। नाश करने वाला। २ हथियार। ३ शिवजी का नाम।

शयु (वि०) प्रसन्न । समृद्धिवान् ।

शव· (पु०) १ हलचालन । २ इन्द्र का वज्र । ३ खल्ल के दस्ते का लोहे वाला अग्र भाग ।

शंस् (धा० प०) [शंसति, शस्त] १ प्रशंसा करना । २ कहना । वर्णन करना । प्रकट करना । ३ प्रदर्शित करना । ४ दुहराना । पाठ करना । ५ अनिष्ट करना । घायल करना । ६ गाली देना । अकोसना ।

शंसनं (न०) १ प्रशंसाकरण । २ कथन करना । वर्णन करना । ३ पाठ करना ।

शंसा (स्त्री०) १ प्रशंसा । २ अभिलाष । इच्छा । ३ पुनरावृत्ति । वर्णन ।

शंसित (व० कृ०) १ प्रशंसित । २ कथित । घोषित । ३ अभिलषित । ४ निश्चित । निर्द्धारित । विचारित । ५ मिथ्या दोष लगाया हुआ । झूठा इलज़ाम लगाया हुआ ।

शंसिन् (वि०) १ प्रशंसन । २ कथन । ३ प्रकटन । ४ भविष्यत्कथन ।

शक् (धा० प०) [शक्नोति, शक्त] १ योग्य होना । सकना । करने की शक्ति रखना । २ सहना । सहन करना । ३ शक्तिमान होना ।

शकः (पु०) १ एक प्राचीन राजा का नाम । विशेष कर शालिवाहन का । २ शालिवाहन का चलाया शक (=वत्सर गणना ।) [ईसा के सन् के ७८ वर्ष पीछे शक संवत्सर का आरम्भ होता है ।]

शकाः (पु० बहु०) १ एक देश का नाम । २ एक जाति विशेष का नाम ।—अन्तकः,—अरिः, (पु०) विक्रमादित्य की उपाधि, जिसने इस जाति का उन्मूलन किया था ।—अब्दः, (पु०) शालिवाहन का चलाया संवत्सर ।—कर्तृ,—कृत्, (पु०) संवत्सर विशेष का चलाने वाला ।

शकटं (न०) } शकटः (पु०) } १ गाड़ी । बग्घी । छकड़ा । २ सैन्य-व्यूह विशेष । ३ तौल विशेष जो छकड़ा भर या २००० पलों भर की होती थी । ४ एक दैत्य का नाम जिसका वध श्री कृष्ण ने किया था । ५ तिनिश वृक्ष ।—अरिः, हन् (पु०) श्रीकृष्ण की उपाधि ।—अह्वा, (स्त्री०) रोहिणी नक्षत्र ।—बिलः, (पु०) जलकुक्कुट जातीय पक्षी विशेष ।

शकटिका (स्त्री०) छोटी गाड़ी । गाड़ी का खिलौना ।

शकन् (न०) विष्ठा । मल । विशेष कर पशुओं का ।

शकलः (पु०) १ भाग । अंश । हिस्सा । टुकड़ा । २ छाल । ३ मछली का काँटा ।

शकलित (वि०) टुकड़े टुकड़े किया हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ ।

शकलिन् (पु०) मछली ।

शकारः (पु०) १ अनूढा भ्रातृ । राजा की रखैल या बिन ब्याही स्त्री का भाई । साहित्य दर्पणकार ने "अनूढा भ्राता" की परिभाषा इस प्रकार दी है :—

> मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः ।
> सोयमनूढाभ्राता राज्ञः श्यालः शकार इत्युक्तः ॥

नाटक की भाषा में शकार मूर्ख, चंचल, अभिमानी, नीच तथा कठोर हृदय का दिखलाया जाता है ।

शकुनं (न०) १ सगुन । शुभसूचक चिह्न या लक्षण । किसी कार्य के समय दिखलाई देने वाले लक्षण जो उस काम के सम्बन्ध में शुभ या अशुभ की सूचना देते हैं ।—ज्ञ, (वि०) शकुनों को जानने वाला ।—शास्त्रं, (न०) एक ग्रन्थ विशेष जिसमें शकुनों पर विचार किया गया है ।

शकुनः (पु०) १ पक्षी । चील । गिद्ध ।

शकुनिः (पु०) १ पक्षी । २ गीध । चील । उकाब । ३ मुर्गा । ४ गान्धारराज सुबल के एक पुत्र का नाम जो धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी का भाई और दुर्योधन का मामा था ।—ईश्वरः, (पु०) गरुड़ का नाम । -प्रपा, (स्त्री०) कूंड़ा जिसमें पक्षियों के पीने के लिये जल भरा जाय ।—वादः, (पु०) १ चिड़ियों की बोली । २ मुर्गे की बाँग ।

शकुनी (न०) १ श्यामा पक्षी । २ गौरैया पक्षी । ३ पुराणानुसार एक पूतना का नाम जो बड़ी क्रूर और भयङ्कर कही गयी है । ४ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह ।

शकुंतः } शकुन्तः } (पु०) १ पक्षी । चिड़िया । २ नीलकण्ठ । पक्षी । ३ पक्षीविशेष ।

शकुंतकः } (पु०) पक्षी ।
शकुन्तकः }

शकुंतला } (स्त्री०) राजा दुष्यन्त की स्त्री जिसके
शकुन्तला } गर्भ से राजा भरत का जन्म हुआ था । इन्ही राजा भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है । शकुन्तला, मेनका अप्सरा की बेटी थी ।

शकुंतिः } (स्त्री०) पक्षी ।
शकुन्तिः }

शकुंनिका } १ पक्षी । २ पक्षी विशेष । ३ टिड्डी ।
शकुन्तिका } टिड्डा ।

शकुलः (पु०) } एक प्रकार की मछली ।—अदनी,
शकुली (स्त्री०) } (स्त्री०) कुटकी या कटुकी ।—अर्भकः, (पु०) गडई मछली

शकृत (न०) १ विष्ठा । गूह । २ गोबर ।—करि, (पु०) (स्त्री०)—करी, (स्त्री०) बछवा, बछिया ।—द्वारं (न०) मलद्वार । गुदा ।

शक्करः } (पु०) बैल । साँड़ । वृष ।
शक्करिः }

शक्करी (स्त्री०) १ नदी । २ मेखला । ३ एक अछूत जाति की औरत ।

शक्त (व० कृ०) १ शक्ति सम्पन्न । समर्थ । ताकतवर । २ योग्य । लायक । ३ धनी । धनवान । ४ द्योतक । व्यञ्जक । ५ चतुर । ६ मिष्टभाषी । प्रियवादी ।

शक्तिः (स्त्री०) १ बल । पराक्रम । ताकत । जोर । २ कवित्वशक्ति । ३ किसी देवता का पराक्रम या बल जो किसी विशिष्ट कार्य का साधन माना जाता है । ४ फैंक कर चलाने वाला हथियार विशेष । ५ भाला । शूल । तीर । ६ न्यायदर्शनानुसार वह सम्बन्ध जो किसी पदार्थ और उसका बोध कराने वाले शब्द में होता है । ७ शब्द की अर्थद्योतक शक्ति जो तीन मानी गयी है (अर्थात् १ अभिधा, २ लक्षणा और ३ व्यञ्जना ।) ८ शब्द की लक्षणा और व्यञ्जना शक्ति की उल्टी शक्ति । ९ (तांत्रिक) स्त्री की मूत्रेन्द्रिय । भग । १० ईश्वर की वह कल्पित माया, जो उसकी आज्ञा से सब काम करने वाली और सृष्टि की रचना करने वाली मानी जाती है । प्रकृति । माया ।—अर्धः, (पु०) श्रम करने पर शरीर से निकला हुआ पसीना और दम फूलना या हाँफी ।—ग्रह, (वि०) १ शक्ति को ग्रहण करने वाला । २ भालाधारी ।—ग्रहः (पु०) १ बल्लमधारी । २ शिव । महादेव । ३ कार्तिकेय ।—ग्राहकः, (पु०) कार्तिकेय ।—धर, (वि०) ताकतवर । बलवान ।—धरः, (पु०) १ भालाधारी । २ कार्तिकेय ।—पाणिः,—भृत्, (पु०) १ भालाधारी । २ कार्तिकेय ।—पूजा, (स्त्री०) शक्ति का शाक्त द्वारा होने वाला पूजन ।—वैकल्यं, (न०) शक्ति का नाश । कमजोरी । निर्बलता ।—हीन, (वि०) निर्बल । कमजोर । नपुंसक ।—हेतिकः, (पु०) भालाधारी ।

शक्तितस् (अव्यया०) शक्ति भर । ताकत भर । यथाशक्ति ।

शक्र } (वि०) मिष्टभाषी । मधुरभाषी । प्रिय-
शक्लु } वादी ।

शक्य (स० का० कृ०) १ सम्भव । होने योग्य । २ करने योग्य । ३ सहज में करने लायक । ४ शब्द का वाच्य । ५ सम्भावनात्मक । भविष्य सम्भाव्य । प्रच्छन्न शक्ति ।

शक्रः (पु०) १ इन्द्र का नाम । २ अर्जुन वृक्ष । ३ कुटज वृक्ष । ४ उल्लू ५ । ज्येष्ठा नक्षत्र । ६ चौदह की संख्या ।—अशनः, (पु०) कुटज वृक्ष ।—आख्यः, (पु०) उल्लू ।—आत्मजः, (पु०) १ इन्द्रपुत्र जयन्त । २ अर्जुन ।—उत्थानं, (न०)—उत्सवः, (पु०) भाद्रशुक्ला १२ को किया जाने वाला इन्द्रोत्सव विशेष ।—गोपः, (पु०) वीरवहूटी नामक कीड़ा ।—जः,—जातः, (पु०) काक । कौवा ।—जित्,—भिद्, (पु०) रावणपुत्र मेघनाद की उपाधि ।—द्रुमः (पु०) देवदारु वृक्ष ।—धनुस्, (न०)—शरासनं (न०) इन्द्रधनुष ।—ध्वजः, (पु०) वह पताका जो इन्द्र के उपलक्ष मे खड़ी की जाय ।—पर्यायः, (पु०) कुटज वृक्ष ।—पादपः, (पु०) १ कुटज वृक्ष । २ देवदारु वृक्ष ।—भवनं,—भुवनं, (न०)—वासः, (पु०) स्वर्ग ।—मूर्धन्, (न०), —शिरस्, (पु०) वल्मीक, बाँबी ।

—लोकः, (पु०) इन्द्रलोक । स्वर्ग ।—वाहनं (न०) बादल । शाखिन्, (पु०) कुटज वृक्ष ।—सारथिः, (पु०) इन्द्र का रथवान। मातली का नामान्तर ।—सुतः, (पु०) १ जयन्त । २ अर्जुन । ३ बाली ।

शक्राणी (स्त्री०) इन्द्रपत्नी शची देवी ।

शक्रिः (पु०) १ बादल । २ इन्द्र का वज्र । ३ पहाड़ । ४ हाथी । गज ।

शक्करः (पु०) वृष । बैल । साँड ।

शंक / शङ्क (धा० आ०) [शङ्कते, शङ्कित] १ सन्देह करना । हिचकिचाना । २ डरना । भय मानना । ३ अविश्वास करना । ४ समझना । सोचना । कल्पना करना । ५ आपत्ति या आशङ्का करना ।

शंकः / शङ्कः (पु०) वह बैल जो जोता जाय या छकड़ा खींचे ।

शंकर / शङ्कर (वि०) [स्त्री०—शंकरी या शंकरा] शुभसूचक । शुभदायी । मङ्गलकारी ।

शंकरः / शङ्करः (पु०) १ महादेव जी । २ हिन्दूधर्म के एक आचार्य । शङ्कराचार्य ।

शंकरी / शङ्करी (स्त्री०) १ पार्वती का नाम । २ मजीठ । मञ्जिष्ठा । ३ शमी का पेड़ ।

शंका / शङ्का (स्त्री०) १ सन्देह । शक । अनिश्चयता । २ हिचकिचाहट । पशोपेश । ३ अविश्वास । ४ भय । आशङ्का । डर । ५ आशा ।

शंकित / शङ्कित (व० कृ०) १ सन्देहयुक्त । संशयग्रस्त । भयभीत । २ अविश्वासपूर्ण । ३ अनिश्चित । ४ भयाकुल ।—चित्, —मनस्, (वि०) १ डरपोंक । भीरु । २ संशयग्रस्त । अविश्वासपूर्ण । ३ सन्दिग्ध ।

शंकिन् / शङ्किन् (वि०) सन्देह करने वाला । संशयात्मा ।

शंकुः / शङ्कुः (पु०) १ तीर । बाण । भाला । बरछा । कोई नुकीली वस्तु । २ मेख । कील । ३ खूटी । ४ खंभा । खूँटा । ५ बाण की पैनी नोक । ६ कटे हुए वृक्ष का तना । ७ घड़ी की सुई । ८ बारह अंगुल का माप । ९ नापने का गज । १० दस लक्ष कोटि की संख्या । शङ्ख । ११ पत्तों की नसें । १२ बाँबी । १३ लिङ्ग । जननेन्द्रिय । १४ एक प्रकार की मछली । १५ दैत्य विशेष । १६ विष । ज़हर । १७ पाप । १८ जलजन्तु विशेष । विशेष कर हंस । १९ शिव जी का नाम । २० साल वृक्ष ।—कर्ण, (वि०) वह जिसके कान शङ्कु के समान लंबे और नुकीले हों ।—कर्णः, (पु०) गधा । रासभ । -तरुः,—वृक्षः, (पु०) साल के पेड़ ।

शंकुला / शङ्कुला (स्त्री०) १ सुपारी काटने का सरौता । २ एक प्रकार का नश्तर या छुरी ।—खण्डः, (पु०) सरौता से काटा हुआ टुकड़ा ।

शंखं (न०) / शङ्खं (न०) / शंखः (पु०) / शङ्खः (पु०) १ एक प्रकार का बड़ा घोंघा, जिसमें रहने वाले जन्तु को मार कर लोग बजाने के काम में लाते हैं । २ माथे की हड्डी । ३ कनपुटी की हड्डी । ४ हाथी का गण्डस्थल । ५ दस खर्व की संख्या । एक लाख करोड़ । ६ मारूबाजा या ढोल । ७ नखी नामक सुगन्ध द्रव्य । ८ कुवेर की नवनिधियों में से एक । ९ एक दैत्य का नाम जिसे भगवान् विष्णु ने मारा था । १० लिखित के भाई शङ्ख जिनकी लिखी स्मृति प्रसिद्ध है । ११ चरण-चिन्ह । १२ राजा विराट का पुत्र ।—उदकं, (न०) शङ्ख में डाला हुआ जल ।—कारः, —कारकः, (पु०) पुराणानुसार एक वर्णसङ्कर जाति, जिसकी उत्पत्ति शूद्रामाता और विश्वकर्मा पिता से मानी जाती है । इस जाति के लोगों का काम शङ्ख की चीज़ें बनाना है ।—चरी,—चर्ची, (स्त्री०) चंदन की खौर ।—द्रावः, —द्रावकः, (पु०) एक प्रकार का अर्क जिसमें शङ्ख भी गल जाता है ।—ध्मः,—ध्मा, (पु०) शङ्ख बजाने वाला । ध्वनिः, (पु०) शङ्ख की आवाज़ । -प्रस्थ, (पु०) चन्द्रकलङ्क ।—भृत्, (पु०) विष्णु ।—मुखः, (पु०) मगर । कुम्भीर । घड़ियाल ।—स्वनः, (पु०) शङ्ख की आवाज़ ।

शंखकं (न०) / शङ्खकं (न०) / शंखकः (पु०) / शङ्खकः (पु०) १ शङ्ख । २ कनपुटी की हड्डियाँ (पु०) शङ्ख का बना वलय । हाथ का कंगन ।

शंखनकः
शङ्खनकः
शंखनखः
शङ्खनखः } (पु०) छोटा शङ्ख ।

शंखिन्
शङ्खिन् } (पु०) १ समुद्र । २ विष्णु । ३ शङ्ख बजाने वाला ।

शंखिनी
शङ्खिनी } (स्त्री०) १ पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद । [चार भेद— शङ्खिनी, पद्मिनी, चित्रिणी, हस्तिनी] २ एक प्रकार की अप्सरा । ३ गुदा द्वार की नस । ४ मुँह की नाडी । ५ एक देवी का नाम । ६ सीप । ७ बौद्धों की पूजने की एक शक्ति । ८ एक तीर्थ स्थान । ९ शङ्खाहूली ।

शच् (धा० आ०) [शचते] बोलना । कहना ।

शचिः
शची } (स्त्री०) इन्द्र की स्त्री का नाम ।—पतिः, (पु०) —भर्तृ, (पु०) इन्द्र ।

शंच् (धा० आ०) जाना ।

शट् (धा० प०) [शटति] १ बीमार होना । २ पृथक् करना । विभाजित करना ।

शट (वि०) खट्टा । तीता ।

शटा (स्त्री०) साधू की जटा ।

शटिः (स्त्री०) १ कचूर । २ गन्धपलाशी । कपूर-कचरी । ३ अमिया हल्दी । आम्रहरिद्रा । ४ नेग-वाला । सुगन्धवाला ।

शठ् (धा० प०) [शठति] १ छलना । ठगना । धोखा देना । २ घायल करना । मार डालना । ३ पीडित होना । [शाठयति] १ समाप्त करना । २ असम्पूर्ण या अधूरा छोड़ देना । ३ जाना । ४ सुस्त पड़ा रहना । ५ छलना । धोखा देना ।

शठ (वि०) १ फितरती । छलिया । कपटी । दगाबाज़ । बेईमान । २ दुष्ट ।

शठं (न०) १ लोहा । २ कुङ्कुम । केसर ।

शठः (पु०) १ दुष्ट । गुंडा । बदमाश । उठाईगीरा । धूर्त । २ साहित्य में पांच प्रकार के नायकों में से एक । यह नायक किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करने का कपट रचता हैं । ३ बेवकूफ । जड़बुद्धि । ४ वह जो झगड़ने वाले दो आदमियों के बीच में पड कर, उनका झगड़ा निपटाता है । पंच । मध्यस्थ । ५ धतूरा का पौधा । ६ आलसी ।

शणं (न०) सन । पटसन ।—सूत्रं, (न०) १ सन की डोरी । सुतली । २ सन का बटा हुआ जाल । ३ पाल की रस्सी । मस्तूल का बंधन ।

शडं
शण्डं } (न०) संग्रह । समूह ।

शडः
शण्ड. } (पु०) १ नपुंसक पुरुष । हिजडा । २ वृष । बैल । ३ साँड जो छोड दिया जाता है ।

शढः
शण्ढ. } (पु०) १ नपुंसक । हिजडा । २ खोजा जो रनवास में काम करते हैं । ३ साँड । ४ छुट्टा साँड । ५ पागल आदमी ।

शतं (न०) १ सौ । २ कोई भी बडी संख्या ।—अक्षी, (स्त्री०) १ रात । २ दुर्गा देवी ।—अंगः, (पु०) गाडी । युद्ध का रथ ।—अनीकः, (पु०) बूढ़ा मनुष्य ।—अरं,—आरं, (न०) इन्द्र का वज्र ।—आननं, (न०) श्मशान । कब्रगाह ।—आनन्दः, (पु०) १ ब्राह्मण का नाम । २ विष्णु या कृष्ण । ३ विष्णु के रथ का नाम । ४ गौतम के पुत्र का नाम जो जनक राजा के पुरोहित थे ।—आयुस्, (वि०) सौ वर्ष तक रहने वाला या जीने वाला । —आवर्तः, —आवर्तिन् (पु०) विष्णु ।—ईशः, (पु०) सौ पर शासन करने वाले । २ सौ गाँव का ठाकुर ।—कुम्भः, (पु०) पर्वतविशेष जहाँ सुवर्ण पाया जाता है ।—कुम्भं, (न०) सुवर्ण । सोना ।—कृत्वस्, (अव्यय०) सौगुना ।—कोटि, (वि०) सौ धार का ।—कोटिः, (पु०) इन्द्र का वज्र । (स्त्री०) सौ करोड ।—क्रतुः, (पु०) इन्द्र ।—खण्डं, (न०) सुवर्ण ।—गु, (वि०) सौ गौ रखने वाला ।—गुण, —गुणित (वि०) सौगुना । सौगुना अधिक ।—ग्रन्थिः, (स्त्री०) दूर्वा । दूब ।—घ्नी, (स्त्री०) १ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जो किसी बड़े पत्थर या लकडी के कुंदे में बहुत से कील काँटे ठोंक कर बनाया जाता था और जो युद्ध में शत्रुओं पर वार करने के काम में आता था । २

बिच्छू की मादा। ३ कण्ठरोग।—जिह्वः, (पु०) शिव जी।—तारका, —भिषज्, —भिषा, (स्त्री०) २४वें नक्षत्र का नाम।—दला, (स्त्री०) सफेद गुलाब।—द्रुः, (स्त्री०) सतलज नदी का नाम।—धामन्, (पु०) विष्णु।—धार, (वि०) सौ धारों वाला।—धारं, (न०) वज्र।—धृतिः, (स्त्री०) १ इन्द्र। २ ब्राह्मण। ३ स्वर्ग।—पत्रः, (पु०) १ मोर। २ सारस। ३ कठफोड़वा नामक पक्षी। ४ तोता। मैना।—पत्रा, (स्त्री०) स्त्री। औरत।—पत्रं, (न०) कमल।—पत्रयोनिः, (पु०) ब्रह्मा।—पत्रकः, (पु०) कठफोड़वा पक्षी।—पाद, (वि०) सौ पैरों वाला।—पादी, (स्त्री०) कनखजूरा। गोजर।—पद्मं, (न०) सफेद कमल।—पर्वन्, (पु०) बाँस। (स्त्री०) १ आश्विन मास की पूर्णिमा। २ दूब। दूर्वा। ३ कटुकी का पौधा।—भीरुः, (स्त्री०) मल्लिका। चमेली।—मखः, —मन्युः, (पु०) १ इन्द्र। २ उल्लू।—मुख, (वि०) सौ द्वार या निकास वाला।—मुखी, (स्त्री०) कुश। झाड़ू।—मूला, (स्त्री०) दूर्वा। दूब।—यज्वन्, (पु०) इन्द्र का नाम।—यष्टिकः, (पु०) सौ लड़ियों का हार।—रूपा, (स्त्री०) ब्रह्मा की पुत्री का नाम।—वर्ष, (न०) शताब्दी। सदी।—वेधिन्, (पु०) चूका या चुक्रिका नामक साग।—सहस्रं, (न०) १ सौ हज़ार। २ हज़ारों।—साहस्र, (वि०) १ जिसमें कितने ही हज़ार हों। २ एक लक्षमूल्य देकर ख़रीदा हुआ।—ह्रदा, (स्त्री०) १ बिजली। २ इन्द्र का वज्र।

शतक (वि०) १ सौ। २ सौ वाला।

शतकं (न०) शताब्दी। २ सौ श्लोकों का संग्रह।

शततम (वि०) [स्त्री०—शततमी] सौवाँ।

शतधा (अव्यया०) १ सौ प्रकार से। २ सौ हिस्सों में या सौ टुकड़ों में।

शतशस् (अव्यया०) १ सैकड़ों। सौ गुना। २ अनेक प्रकार से। बहुप्रकार से। सौ विस्वाँ।

शत्य (वि०) १ सौ वाला या सौ से बना हुआ। २ सौ सम्बन्धी। ३ सौ के हिसाब से टेक्स या व्याज देने वाला। ४ सौ बतलाने वाला। सौ का व्यञ्जक।

शतिन् (वि०) १ सौगुना। अनेक। बहुप्रकार। (पु०) शतपति। सौ का मालिक।

शत्रिः (पु०) हाथी।

शत्रुः (पु०) १ विजयी। नाश करने वाला। जितैया। २ वैरी। दुश्मन। विरोधी। ३ राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वी। पड़ोसी प्रतिद्वन्द्वी राजा।—उपजापः, (पु०) शत्रु की गुपचुप कानाफूसी। शत्रु का विश्वासघात।—कर्षण, —दमन, —निवर्हण, (वि०) शत्रु का दबाना या नाश करना।—घ्नः, (पु०) १ शत्रु का नाश करने वाला। २ दशरथ महाराज के चतुर्थ पुत्र का नाम।—पक्षः, (पु०) शत्रु का पक्ष। विरोधी दल।—विनाशनः, (पु०) शिव जी का नाम।—हन्, (वि०) शत्रुहन्ता।

शत्रुंजयः, शत्रुञ्जयः } (पु०) १ हाथी। २ एक पर्वत का नाम।

शत्रुंतप (वि०) शत्रु का नाश करने वाला या शत्रु को जीतने वाला।

शत्वरी (स्त्री०) रात।

शद् (धा० प०) [शीयते] पतन होना। नाश होना। सड़ना। कुम्हलाना।

शदः (पु०) शाक मूल आदि खाद्य वस्तु।

शद्रिः (पु०) १ हाथी। २ बादल। ३ अर्जुन का नाम। (स्त्री०) बिजली।

शद्रु (वि०) १ गमन। २ पतन। विनाश। जीर्णता।

शनकैस् (अव्यया०) धीरे धीरे।

शनिः (पु०) १ शनि नामक ग्रह। २ शनिवार। ३ शिव जी का नाम।—जं, (न०) काली मिर्च।—प्रदोषः, (पु०) जब शुक्ला १३ शनिवार को पड़े, तब प्रदोष कहलाता है और उस दिन शिव जी के पूजन का विशेष माहात्म्य है।—प्रियं, (न०) नीलम मणि।—वारः,—वासरः, (पु०) शनिवार।

शनैस् (अव्यया०) १ धीमे। अहिस्ते। चुपचाप। २ क्रमश। शनैः शनैः। थोड़ा थोड़ा। ३ सिलसिलेवार। ४ कोमलता से। ५ धीमे धीमे।—चरः, (पु०) शनिवार ग्रह।

शंतनुः
शन्तनुः } चन्द्रवंशीय एक राजा का नाम।

शप् (धा० उ०) [शपति—शपते, शप्यति—शप्यते, शप्त] १ शाप देना। अकोसना। २ शपथ खाना। कसम खाना। ३ दोषी ठहराना। डाँटना। डपटना। धिक्कारना।

शपः (पु०) १ शाप। अकोसा। २ शपथ। कसम।

शपथः (पु०) १ अकोसा। बददुआ। २ अभिशप्त वस्तु। अभिशाप का पात्र। ३ कसम। किरिया। ४ किरिया में बाँधने की क्रिया।

शप्त (व० कृ०) १ शापित। शाप दिया हुआ। २ शपथ खाये हुए। ३ गरियाया हुआ।

शफं (न०)
शफः (पु०) } १ खुर। २ पेड़ की जड़।

शफरः (पु०) [स्त्री०—शफरी] छोटी मछली जिसके शरीर में चमक होती है।—अधिपः, (पु०) इलिशा या हिलसा जाति की मछली।

शबरः
शवरः } (पु०) १ पहाड़ी। जंगली। २ शिव जी। ३ हाथ। ४ जल। ५ शास्त्र विशेष अथवा मीमांसा शास्त्र के एक प्रसिद्ध भाष्यकार। —लोध्रः, (पु०) जंगली लोध्र वृत्त।

शबरी
शवरी } (स्त्री०) शबर जातीय स्त्री। २ किरात जातीय स्त्री, जिसका श्रीरामचन्द्र जी ने उद्धार किया था।

शबल
शवल } (वि०) १ चितकबरा। रंगबिरंगा। २ विभिन्न। कई भागों में विभक्त।

शबलं
शवलं } (न०) जल। पानी।

शबलः
शवलः } (पु०) चितकबरा रंग।

शबला
शवला
शबली
शवली } (स्त्री०) १ चितकबरी या रंगबिरंगी गौ। २ कामधेनु।

शब्द् (धा० उ०) [शब्दयदि—शब्दयते, शब्दित] १ शब्द करना। शोर करना। २ बोलना। बुलाना। पुकारना। ३ नाम लेना। नाम ले कर पुकारना।

शब्दः (पु०) १ आवाज़। ध्वनि। २ पक्षियों का कलरव। ३ बाजे की आवाज़। ४ अर्थयुक्त शब्द। ५ संज्ञा। ६ उपाधि। पदवी। ७ नाम। ८ मौखिक प्रमाण।—अधिष्ठानं, (न०) कान। कर्ण।—अनुशासनं, (न०) व्याकरण।—अलङ्कारः, (पु०) वह अलङ्कार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से भाषा में लालित्य उत्पन्न होता है।—आख्येय, (वि०) ज़ोर से या चिल्ला कर कहा जाने वाला।—आख्येयं (न०) ज़बानी संदेशा या पैग़ाम।—आडम्बरः, (पु०) बड़े बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की न्यूनता हो।—कोशः, (पु०) डिक्शनरी। लुग़त। ग्रन्थ विशेष जिसमें अक्षर क्रम से या समूह क्रम से शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची शब्दों का संग्रह किया गया हो।—ग्रहः, (पु०) कान।—चातुर्य, (न०) शब्दप्रयोग सम्बन्धी चतुरता। वाग्मिता।—चित्रं, (न०) अनुप्रास नामक अलङ्कार।—पतिः, (पु०) नाममात्र का स्वामी या मालिक।—पातिन्, (वि०) शब्द-वेधी (निशाना) लगाने वाला।—प्रमाणं, (न०) वह प्रमाण या साक्षी जो किसी के कथन पर निर्भर हो।—ब्रह्मन्, (न०) १ वेद। २ ब्रह्म जीव का ज्ञान। आध्यात्मिक ज्ञान।—भेदिन्, (वि०) शब्द को सुन कर निशाना वेधने वाला। (पु०) अर्जुन। २गुदा। ३वाण विशेष।—योनि, (स्त्री०) शब्द की उत्पत्ति।—विद्या, (स्त्री०)—शासनं, —शास्त्रं, (न०) व्याकरण शास्त्र।—विरोधः, (पु०) वाचिक विरोध।—वेधिन् (वि०) देखो भेदिन्, (पु०) १ अर्जुन। २ वाण विशेष। —शक्तिः, (स्त्री०) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उस शब्द से कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।—शुद्धिः, (स्त्री०) शब्द का शुद्ध प्रयोग। —श्लेषः, (पु०) वह शब्द जो दो या अधिक अर्थों में व्यवहृत किया जाय।—संग्रहः, (पु०) शब्दकोश।—सौष्ठवं, (न०) किसी लेख या शैली आदि में प्रयुक्त किये हुए शब्दों की सुन्दरता या कोमलता।—सौकर्य, (न०) शब्दव्यवहार की सरलता।

शब्दन (वि०) शब्द करने वाला। बजने वाला।

शब्दनं (न०) १ शोर करने वाला। २ ध्वनि। कोलाहल। ३ पुकारना। बुलाहट। ४ नाम लेकर पुकारने की क्रिया।

शब्दायते (क्रि०) १ कोलाहल करना। २ चिल्लाना। दहाड़ना। गरजना। चीख़ मारना।

शब्दित (व० कृ०) १ शब्द करता हुआ। बजा हुआ। २ कथित। उच्चारित। ३ पुकारा हुआ। ४ नामाङ्कित किया हुआ।

शम् (अव्यया०) कुशलता, प्रसन्नता। समृद्धि, स्वस्थ्यता, आदि सूचक अव्यय।

शम् (धा० प०) [शाम्यति, शान्त] १ चुपका होना। शान्त होना। अघाना। शमन होना। २ बंद करना। समाप्त करना ३ बुझाना। ४ नाश करना। मार डालना।

शमथः (पु०) १ शान्ति। निस्तब्धता। २ मुसाहिब। सलाहकार। मंत्रदाता। मंत्री।

शमन (वि०) [स्त्री०—शमनी] शान्तकारी। शमनकारी।

शमनं (न०) अघाना। शान्त करना। जीतना। २ शान्ति। निस्तब्धता। ३ अवसान। समाप्ति। नाश। ४ अनिष्ट। चोट। ५ बलि के लिये पशुहनन। ६ निगलना। चबाना।

शमन (पु०) १ बारह सिंहा। २ यमराज का नाम। —स्वसृ, (स्त्री०) यम की बहिन। यमुना नदी का नामान्तर।

शमनी (स्त्री०) रात।—सदः,—षदः, (पु०) दैत्य। दानव। राक्षस।

शमलं (न०) १ विष्ठा। गूह। मल। २ छानन। तलछट। ३ पाप। नैतिक अपवित्रता।

शमित (व० कृ०) १ शान्त किया हुआ। शमित किया हुआ। खामोश किया हुआ। २ आराम किया हुआ। आरोग्य किया हुआ। ३ ढीला किया हुआ। ४ नरम किया हुआ।

शमिन् (वि०) १ शान्त। निस्तब्ध। शमित। २ संयमी। जितेन्द्रिय।

शमी (कभी कभी शमि भी) १ छेंकुर का पेड़। सफेद कीकर। २ शिंबी धान्य। मूंग। मसूर। मोठ। उड़द। चना। अरहर, मटर, कुलथी। लोबिया आदि।—गर्भः, (पु०) १ अग्नि। २ अग्निहोत्री ब्राह्मण।—धान्यं, (न०) वह अनाज जो छीमियों से निकले।

शंपा (स्त्री०) बिजली।

शंब् (धा० प०) [शंबति] जाना। [शंबयति] जमा करना। संग्रह करना।

शंब } (वि०) १ प्रसन्न। भाग्यवान। २ निर्धन।
शम्ब } अभागा।

शंबः }
शम्बः } (पु०) १ इन्द्र का वज्र। २ खल्ल का लोहे की नोंक का दस्ता। ३ लोहे की जंजीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय।
शंवः } ४ नियमित रूप से हल चलाने की क्रिया। ५ जुते हुए खेत को पुन जोतने की क्रिया।

शंबरं }
शम्बरं } (न०) १ जल। २ मेघ। ३ धन दौलत।
शंवरं } ४ धर्मानुष्ठान। धर्मकृत्य।

शंबरः }
शम्बरः } (पु०) १ एक दैत्य का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मारा था। २ पर्वत। ३ मृग विशेष। ४
शंवरः } मत्स्य विशेष। ५ संग्राम। युद्ध।—अरिः, —सूदनः, (पु०) प्रद्युम्न की उपाधियाँ। —असुरः, (पु०) शंबरासुर।

शंबरी }
शम्बरी } (स्त्री०) १ इन्द्रजाल। जादूगरी। २ स्त्री
शंवरी } ऐन्द्रजालिक।

शंबलः (पु०) }
शम्बलः (पु०) } १ समुद्रतट। २ पाथेय। रास्ते में
शंबलं (न०) } खाने का भोजन। ३ डाह। ईर्ष्या।
शम्बलं (न०) }

शंबली }
शम्बली } (स्त्री०) कुटनी।

शंबुः }
शम्बुः }
शंबुकः }
शम्बुकः } (पु०) घोंघा। दुपटा। शङ्ख।
शंवुकः }
शम्बुकः }

शंबूकः } **शम्बूकः** } (पु०) १ घोंघा । २ शङ्ख । ३ हाथी की सूंड का अगला भाग । ४ एक शूद्र तपस्वी का नाम जिसके अनधिकार कर्म करने पर श्रीराम-चन्द्र जी ने उसे जान से मार डाला था ।

शंभः } **शम्भः** } (पु०) १ प्रसन्न पुरुष । २ इन्द्र का वज्र ।

शंभली } **शम्भली** } (स्त्री०) कुटनी । दूती ।

शंभु } **शम्भु** } (वि०) आह्लादकारी । आनन्ददायी ।

शंभुः } **शम्भुः** } (पु०) १ शिव । २ ब्रह्मा । ३ ऋषि । मान्यपुरुष । ४ सिद्धपुरुष ।—तनयः,—नन्दनः,—सुतः. (पु०) कार्तिकेय या गणेश । —प्रिया (स्त्री०) १ दुर्गा । २ आमलकी । —वल्लभं, (न०) सफेद कमल ।

शम्या (स्त्री०) १ काठ की छड़ी या खंभा । २ डंडा । ३ जुआ की खूंटी । ४ करताल । मंजीरा । ५ यज्ञीयपात्र विशेष ।

शय (वि०) [स्त्री०—शया, शयी] लेटने वाला । सोने वाला ।

शयः (पु०) १ निद्रा । नींद । २ सेज । खाट । शय्या । ३ हाथ । ४ साँप विशेष । अजगर । ५ गाली । अकोसा । शाप ।

शयंड } **शयण्ड** } (वि०) निद्रालु । सोने वाला ।

शयथ (वि०) निद्रालु । सोया हुआ ।

शयथः (पु०) १ मृत्यु । २ सर्प विशेष । अजगर सर्प । ३ शूकर । ४ मछली विशेष ।

शयनं (न०) १ निद्रा । नींद । २ सेज । शय्या । चारपाई । ३ स्त्रीप्रसंग । स्त्रीमैथुन ।—अगारः, —आगारः, (पु०)—अगारं,—आगारं, (न०)—गृहं, (न०) शयनगृह । सोने का कमरा ।—एकादशी, (स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी, जब भगवान् विष्णु शयन करना आरम्भ करते हैं ।—सखी, (स्त्री०) एक सेज पर साथ सोने वाली सहेली ।—स्थानं, (न०) शयन-गृह ।

शयनीयं (न०) सेज । शय्या ।

शयानकः (पु०) १ गिरगट । २ अजगर सर्प ।

शयालु (वि०) निद्रालु । आलसी ।

शयालुः (पु०) १ अजगर सर्प । २ कुत्ता । ३ शृगाल ।

शयित (व० कृ०) १ सोया हुआ । सुप्त । २ लेटा हुआ ।

शयुः (पु०) बड़ा सर्प । अजगर ।

शय्या (स्त्री०) १ सेज । पलंग । २ बंधन । —अध्यक्षः,—पालः, (पु०) राजा के शयनागार का प्रबन्धक ।—उत्सङ्गः, (पु०) सेज की बगल । —गत, (वि०) १ सेज पर लेटा हुआ । २ बीमार ।—गृहं, (न०) शयनागार ।

शरं (न०) जल । पानी ।

शरः (पु०) १ बाण । तीर । २ एक प्रकार का नरकुल या सरपत । ३ मलाई । अनिष्ट । चोट । घाव । ५ पाँच की संख्या ।—अग्र्यः, (पु०) उत्तम बाण ।—अभ्यासः, (पु०) तीरंदाज़ी । —असनं,—आस्यं, (न०) तीरंदाज़ । कमान । —आक्षेपः (पु०) तीर की वर्षा । तीर बर-साना ।—आरोपः,—आवापः, (पु०) धनुष । कमान ।—आश्रयः, (पु०) तूणीर । तरकस । —ईषिका, (स्त्री०) तीर । बाण ।—इष्टः, (पु०) आम का पेड़ ।—ओघः, (पु०) बाण-वर्षा ।—काण्डः, (पु०) १ नरकुल । २ बाण की लकड़ी ।—घातः, (पु०) तीरंदाज़ी ।—जं, (न०) ताज़ा या टटका मक्खन ।—जन्मन्, (पु०) कार्तिकेय ।—धिः, (पु०) तूणीर । तरकस ।—पुंखः, (पु०)—पुंखा, (स्त्री०) तीर का वह भाग जहाँ पर लगे होते हैं ।—फलं, (न०) तीर की पैनी नोंक जहाँ नुकीला लोहा लगा होता है ।—भङ्गः, (पु०) एक ऋषि, जो दण्डक वन में श्री रामचन्द्र जी से मिले थे । —भूः, (पु०) कार्तिकेय ।—मल्लः, (पु०) धनु-र्धर ।—वनं, (वर्णं) (न०) सरपत का वन । —वाणिः, (पु०) १ तीर का सिरा । २ धनु-र्धर । तीरंदाज़ । ३ तीर बनाने वाला । ४ पैदल

सिपाही।—वृष्टिः, (स्त्री०) तीरों की वर्षा। —व्रातः, (पु०) बाणसमूह।—सन्धानं, (न०) तीर का निशाना बाँधना।—संबाध, (वि०) तीरों से ढका हुआ।—स्तम्बः, (पु०) सरपत का गट्ठर।

शरटः (पु०) १ गिरगट। २ कुसुम।

शरणं (न०) १ रक्षा। आड़। आश्रय। पनाह। २ आश्रयस्थल। बचाव की जगह। ३ घर। मकान। ४ कोठरी। कमरा। ५ विश्रामस्थल। आराम करने की जगह। ६ अनिष्टकरण। हिंसन। वध करना।—अर्थिन्, (वि०)—एषिन्, (वि०) रक्षा चाहने वाला। आसरा तकने वाला।—आगत,—आपन्न, (वि०) रक्षा करवाने को आया हुआ। शरण में आया हुआ। —उन्मुख, (वि०) रक्षा करवाने को इच्छुक।

शरंडः } (पु०) १ पक्षी। २ गिरगट। ३ ठग।
शरण्डः } कपटी। दग़ाबाज़। ४ लंपट। ऐयाश। ५ भूषण विशेष।

शरणय (वि०) १ शरण में आये हुए की रक्षा करने वाला। २ बपुरा। अभागा।

शरण्यं (न०) आश्रयस्थल। २ रक्षक। ३ रक्षा। बचाव। ४ अनिष्ट। अपकार।

शरण्यः (पु०) शिवजी की उपाधि।

शरण्युः (पु०) १ रक्षक। २ बादल। ३ पवन। हवा।

शरद् (स्त्री०) १ एक ऋतु जो आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है। २ वर्ष। साल। —अन्तः, (पु०) जाड़े का मौसम।—अम्बुधरः, (पु०) शरत्कालीन बादल।—उदाशयः, (पु०) शरत्कालीन झील।—कामिन्, (पु०) कुत्ता।—कालः, (पु०) शरत् ऋतु।—घनः, —मेघः, (पु०) शरत्कालीन मेघ।—चन्द्रः, (=शरच्चन्द्रः) (पु०) शरत् ऋतु का चन्द्रमा।—पद्मः, (पु०)—पद्मं (न०) सफेद कमल।—पर्वन्, (न०) कोजागर उत्सव। —मुख, (न०) शरत् ऋतु का आरम्भ।

शरदा (स्त्री०) १ शरत् ऋतु। २ वर्ष।

शरदिज (वि०) शरत् कालीन।

शरभः (पु०) १ हाथी का बच्चा। २ आठ पैरों वाला एक जन्तु विशेष जिसका वर्णन पुराणों में पाया जाता है, किन्तु वह देखने में नहीं आया। शरभ को शेर से कहीं बढ़कर बलवान और मज़बूत बतलाया गया है। ३ ऊँट। ४ टिड्डी। ५ कीट विशेष।

शरयु } (स्त्री०) सरजू नदी।
शरयूः }

शरल (वि०) सरल।

शरलकं (न०) जल। पानी।

शरव्यं (न०) वह निशाना जिस पर तीर का सन्धान किया जाय। लक्ष्य। निशाना।

शराटि. } (पु०) पक्षी विशेष। टिटिहरी।
शरातिः }

शरारु (वि०) अनिष्टकर। विषैला। आरोग्यता-नाशक।

शरावं (न०) } १ सैनकिया। परई। २ ढकना।
शरावः (पु०) } ३ माप विशेष।

शरावती (स्त्री०) एक नगरी जो श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव की राजधानी थी।

शरिमन् (पु०) निकालने की क्रिया। उत्पादन।

शरीरं (न०) १ कलेवर। गात्र। काय। देह। तनु। २ शारीरिक बल। ३ शव। मुर्दा शरीर। —अन्तरं, (न०) शरीर के भीतर का भाग। —आवरणं, (न०) चमड़ा। चाम। खाल। चर्म।—कर्तृ, (पु०) पिता।—कर्षणं, (न०) शरीर का दुबलापन।—जः, (पु०) १ बीमारी। २ कामुकता। विषयवासना। ३ कामदेव। ४ पुत्र। सन्तति।—तुल्य, (वि०) शरीर के समान प्रिय।—दण्डः, (पु०) १ देह सम्बन्धी दण्ड। २ शारीरिक तप।—धृक्, (वि०) शरीरधारी। शरीर वाला।—पतनं, (न०) —पातः, (पु०) मृत्यु। मौत।—पाकः, (पु०) शरीर का दुबलापन।—बद्ध, (वि०) शरीरान्वित। शरीर सम्पन्न।—बन्धकः, (पु०) प्रतिभू। जामिन।—भाज्, (वि०) शरीर

धारी । अवतार । मूर्तिमान । (पु०) जीवधारी । शरीरधारी जीव ।—भेदः, (पु०) मृत्यु । —यष्टिः, (स्त्री०) लटा दुबला शरीर ।—यात्रा, (स्त्री०) आजीविका । रोज़ी ।—विमोक्षणं, (न०) मुक्ति । आवागमन से छुटकारा ।—वृत्तिः, (स्त्री०) शरीर का पालन पोषण । जीविका । —वैकल्यं, (न०) रोग । बीमारी ।—संस्कारः, (पु०) १ शरीर की शोभा तथा मार्जन । २ गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के वेद विहित सोलह संस्कार ।—सम्पत्तिः, (स्त्री०) शारीरिक स्वस्थता ।—सादः, (पु०) शरीर का दुबलापन ।—स्थितिः, (स्त्री०) शरीर का पालन पोषण । भोजन । खाना ।

शरीरकं (न०) १ देह । शरीर । २ छोटा शरीर ।

शरीरकः (पु०) जीवात्मा ।

शरीरिन् (वि०) [स्त्री०—शरीरिणी] १ शरीरधारी । मूर्तिमान । २ जीवित । (पु०) १ शरीरधारी कोई भी वस्तु चाहे वह स्थावर हो चाहे जंगम । २ सचेतन शरीर । संवित्-सम्पन्न शरीर । ३ पागल आदमी । ४ आत्मा । जीव ।

शर्करजा (स्त्री०) मिश्री । कंद ।

शर्करा (स्त्री०) १ मिश्री । कंद । चीनी । शक्कर । २ बालू का कण । कंकरी । रोड़ा । ३ रेतीली या कंकड़ही ज़मीन । बालू । रेत । ४ खण्ड । टुकड़ा । टूक । ५ कमण्डलु । ६ ओला । बिनौरा । ७ पथरी का रोग ।—उदकं, (न०) शरबत ।—सप्तमी । वैशाख शुक्ला सप्तमी ।

शर्करिक (वि०) [स्त्री०—शर्करिकी]

शर्करिल (वि०) पथरीला । कँकरीला ।

शर्करी (स्त्री०) १ नदी । २ मेखला ।

शर्धः (पु०) १ अपानवायु का त्याग । २ दल । समूह । ३ बल । ताकत ।

शर्धजह (वि०) अफरा उत्पन्न करने वाला । पेट को फुलाने वाला ।

शर्धजहः (पु०) उर्द । एक प्रकार की दाल ।

शर्धनं (न०) अपान वायु त्यागने की क्रिया ।

शर्ब् (धा० प०) [शर्बति] १ जाना । २ अनिष्ट करना । वध करना ।

शर्मन् (पु०) उपाधि विशेष जो ब्राह्मण के नाम के पीछे लगायी जाती है । (न०) १ हर्ष । आनन्द । २ आशीर्वाद । ३ घर । आधार ।—द, (वि०) हर्षदायी ।—दः, (पु०) विष्णु ।

शर्मरः (पु०) वस्त्रविशेष ।

शर्या (स्त्री०) १ रात । २ उँगली ।

शर्व (धा० प०) [शर्वति] १ जाना । २ अनिष्ट करना । वध करना ।

शर्वः (पु०) १ शिव जी का नाम । २ विष्णु भगवान का नाम ।

शर्वरं (न०) अन्धकार । अँधियारी ।

शर्वरः (पु०) कामदेव ।

शर्वरी (स्त्री०) १ रात । २ हल्दी । ३ स्त्री ।—ईशः, (पु०) चन्द्रमा ।

शर्वाणी (स्त्री०) पार्वती या दुर्गा का नाम ।

शर्शरीक (वि०) उत्पाती । नृशंस ।

शर्शरीकः (पु०) १ बदमाश । दुष्ट । शठ । उत्पाती ।

शल् (धा० आ०) [शलते] १ हिलाना । आन्दोलन करना । २ काँपना । [शलति] १ जाना । २ तेज़ दौड़ना ।

शलं (न०) १ साही का काँटा । किसी किसी के मतानुसार यह पुं० भी है ।

शलः (पु०) १ बर्छी । भाला । २ शिव के भृङ्गी नामक गण का नाम । ३ ब्रह्मा ।

शलकः (पु०) मकड़ी ।

शलंगः } (पु०) राजा । महाराज ।
शलङ्गः }

शलभः (पु०) १ टिड्डी । टीडी । शरभ । २ पतंगा । फतिंगा ।

शलल्लं (न०) साही का काँटा ।

शलली (स्त्री०) १ साही का काँटा । २ छोटी साही ।

शलाका (स्त्री०) लोहे या लकड़ी की सलाई। मीख़चा। सलॉग। २ सुर्मा लगाने की सीसे की सलाई। ३ तीर। बाण। ४ बर्छी। बर्छा। ५ वह सलाई जिससे घाव की गहराई नापी जाती है। ६ छाता की तीली। ७ नली की हड्डी। ८ अँखुआ। कल्ला। कोपल। ९ चितेरे की कूंची १० दाँत साफ करने की कूंची। दँतवन। खरका। ११ साही। १२ जुआ खेलने का पाँसा।—धूर्तः, (=शलाकाधूर्तः) (पु०) ठग।—परि, (अव्यया०) पाँसे की फैकन जिसमें फैंकने वाला दाँव हार जाय। अक्षपरि।

शलाटु (वि०) अनपका।

शलाटुः (पु०) कंद विशेष।

शलाभोलिः (पु०) ऊँट।

शल्कं } शल्कलं } (न०) १ मछली का काँटा। २ छाल। गूदा। ३ भाग। हिस्सा। टुकड़ा।

शल्कलिन् } शल्किन् } (पु०) मछली।

शल्भ् (धा० आ०) [शल्भते] प्रशंसा करना।

शल्मलिः } शल्मली } (स्त्री०) शाल्मली वृक्ष। सेमल का पेड़।

शल्यं (न०) १ भाला। बर्छी। सांग। २ तीर। बाण। ३ काँटा। ४ कील। खूंटी। ५। शरीर में चुभा हुआ काँटा जो बड़ा पीड़ाकारक होता है। ५ (आलं०) कोई भी कारण जो हृदय दहलाने वाला दु:खप्रद हो। ७ हड्डी। ८ सङ्कट। विपत्ति। ९ पाप। जुर्म। अपराध। १० ज़हर। विप।

शल्यः (पु०) १ साही। जीवविशेष। २ कटीली झाड़ी। ३ अस्त्रचिकित्सा जिसके द्वारा शरीर में गड़ा काँटा या अन्य कोई वस्तु निकाली जाय। ४ हाता। सीमा। ५ शिलिंद मछली। ६ मद्रदेश के राजा का नाम जो माद्री का भाई था और नकुल तथा सहदेव का मामा था।—अरिः, (पु०) युधिष्ठिर।—आहरणं, —उद्धरणं, (न०) —उद्धार, (पु०)—क्रिया, (स्त्री०)—शास्त्रं, (न०) अस्त्रचिकित्सा द्वारा काँटा या अन्य कोई नुकीली चीज़ जो शरीर में घुसगयी हो, निकालने की क्रिया।—कण्ठः, (पु०) साही। जन्तु विशेष।—लोमन्, (न०) साही का काँटा। —हृत् (पु०) काँटे बीनने वाला या बीन बीन कर निकालने वाला।

शल्लं (न०) वृक्ष की छाल या गूदा।

शल्लः (पु०) मेंढक।

शल्लकं (न०) वृक्ष की छाल या गूदा।

शल्लकः (पु०) शोण वृक्ष। सलई।

शल्लकी (स्त्री०) १ साही। २ सलई नामक वृक्ष जो हाथियों को बड़ा प्रिय है। -द्रव, (पु०) शिलारस। सल्हक।

शल्वः (पु०) शाल्व नामक देश।

शव् (धा० प०) [शवति] १ जाना। २ परिवर्तन करना। अदल बदल करना। रूप बदल डालना।

शवं (न०) } शवः (पु०) } मुर्दा। लाश।—आच्छादनं, (न०) कफन।—आश, (वि०) मुर्दाखाने वाला।—काम्यः, (पु०) कुत्ता।—यानं, (न०) —रथः (पु०) ठठरी। अरथी। मुर्दा ढोने की काठ की बनी वस्तु विशेष। टिकठी।

शवं (न०) जल।

शवर } शवल } देखो शबर, शबल।

शवसानः (पु०) १ यात्री। पथिक। मुसाफिर। २ मार्ग। रास्ता।

शवसानं (न०) श्मशान। कबरगाह।

शशः (पु०) १ खरगोश। २ चन्द्रकलङ्क। ३ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में से एक भेद। ऐसे मनुष्य के लक्षण ये हैं :—

> मृदुवचनसुशीलः कोमलाङ्गः सुकेशः।
> सकलगुणनिधान सत्यवादी शशोऽयम्।

४ लोध्र वृक्ष। ५ गन्धरस।—अङ्कः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।—अदः, (पु०) १ बाज पक्षी। श्येन पक्षी। २ इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम।—अदनः, (पु०) बाज पक्षी। श्येन पक्षी। —धरः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। —प्लुतकं, (न०) नख का घाव।—भृत्,

(पु०) चन्द्रमा।—लक्ष्मणः, (पु०) चन्द्रमा। —लाञ्छन, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर। —बिन्दुः,—बिन्दुः, (पु०) १ चन्द्रमा २ विष्णु-भगवान्।—विषाणं,—शृङ्गं, (न०) खरहे के सींग। कोई अलीक या असंभव बात।—स्थली, (स्त्री०) गङ्गा और यमुना के मध्य का प्रदेश। दोआब।

शशकः (पु०) खरगोश। खरहा।

शशिन् (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।—ईशः, (पु०) शिवजी। –कला, (स्त्री०) चन्द्रमा की कला। —कान्तः (पु०) चन्द्रकान्त मणि।—कान्तं, (न०) कुमुद। कोईं। बवोला।—कोटि', (पु०) चन्द्रशृङ्ग।—ग्रहः, (पु०) चन्द्रग्रहण। —जः, (पु०) बुधग्रह।—प्रभ, (वि०) चन्द्रमा जैसी प्रभावाला।—प्रभं, (न०) १ कुमुद। २ मुक्ता। मोती।—प्रभा (स्त्री०) चाँदनी। ज्योत्स्ना।—भूषणः,—भृत्, (पु०)—मौलिः, —शेखरः (पु०) शिवजी।—लेखा, (स्त्री०) चन्द्रकला।

शश्वत् (अव्यया०) १ सदैव। अनन्त काल से। २ लगातार। बारंबार। अक्सर। फिर फिर।

शष्कुली } (स्त्री०) १ कान का छेद। २ पूरी।
शस्कुली } पकान्न आदि। ३ काँजी। ४ कान का रोग विशेष।

शष्पं } (न०) घास। तृण। तिनका।
शस्पं }

शष्पः } (पु०) प्रतिभाक्षय।
शस्पः }

शस् (धा० प०) [शसति] १ काट डालना। मार डालना। नाश कर डालना।

शसनं (न०) १ घाव करना। वध करण। २ पशु का बलि के लिये हनन।

शस्त (व० कृ०) १ प्रशंसित। सराहा हुआ। २ सुखकारी। मंगलकारी। ३ सही। समीचीन। ४ घायल। चोटिल। ५ हनन किया हुआ।

शस्तं (न०) १ प्रसन्नता। कुशलमङ्गलत्व। २ शुभता। उत्तमता। ३ शरीर। देह। ४ अङ्गुलित्राण। दस्ताना।

शस्तिः (स्त्री०) प्रशंसा। स्तव।

शस्त्रं (न०) १ हथियार। २ औज़ार। ३ लोहा। ४ ईसपात लोहा। ५ स्तोत्र।—अभ्यासः, (पु०) हथियार चलाने की मश्क। सैनिक कसरत। —अयसं, (न०) १ ईसपात लोहा। २ लोहा। —अस्त्रं, (न०) हथियार जो फेंक कर चलाये जाँय और यंत्रविशेष द्वारा छोड़े जाँय।—आजीवः, —उपजीविन्, (पु०) पेशेवर सिपाही।—उद्यमः, (पु०) प्रहार करने को हथियार उठाना —उपकरणं, (न०) लड़ाई का हथियार आदि सामान। —कारः, (पु०) कवच। बख्तर।—कोपः, (पु०) म्यान। परतला।—ग्राहिन्, (वि०) हथियार धारण करने वाला।—जीविन्,—वृत्ति, (पु०) पेशेवर सिपाही।—देवता, (स्त्री०) युद्ध का अधिष्ठाता देवता।—धरः, (पु०) शस्त्रधारी।—पाणि, (वि०) शस्त्र से सुसज्जित। —पूत, (वि०) शस्त्र से पवित्र किया हुआ। अर्थात् युद्धक्षेत्र में युद्ध में शस्त्र से मारे जाने के कारण पापों से छूटा हुआ। - प्रहारः, (पु०) हथियार का घाव।—भृत् (पु०) शस्त्रधारी। —मार्जः, (पु०) हथियार साफ करने वाला। सिगलीगर।—विद्या, (स्त्री०)—शास्त्रं, (न०) वह विद्या या शास्त्र जो हथियार चलाने आदि की बातें बतलावें या सिखलावें।—संहतिः, (स्त्री०) १ हथियारों का संग्रह। २ हथियारों का भाण्डार-गृह।—हत, (वि०) हथियार से मारा हुआ। —हस्तः, (पु०) सिपाही। योद्धा।

शस्त्रकं (न०) १ ईसपात लोहा। २ लोहा।

शस्त्रिका (स्त्री०) चाकू।

शस्त्रिन् (वि०) हथियारबंद।

शस्त्री (स्त्री०) छुरी।

शस्यं (न०) १ अनाज। नाज। २ किसी वृक्ष का फल या उसकी पैदावार। ३ सद्गुण।—क्षेत्रं, (न०) अनाज का खेत।—भक्षक, (वि०) अन्नभक्षी। अनाज खाने वाला।—मंजरी, (स्त्री०)

अनाज की बाल ।—मालिन्, (वि०) फसल से सम्पन्न । शालिन्,—सम्पन्न, (वि०) जिसमें बहुत अनाज हो ।—संपद्, (स्त्री०) अनाज का बाहुल्य ।—संबरः,—संवरः, (पु०) साल वृक्ष ।

शाकं (न०) } शाक । तरकारी । भाजी । पत्ती
शाकः (पु०) } फूल, फल आदि जो पका कर खाये जाँय । (पु०) १ ताकत, बल । पराक्रम । २ सागौन का पेड़ । ३ सिरिस का पेड़ । ४ मानव जाति विशेष । ५ शालिवाहन का शाका ।—अग्रं, (न०) कालीमिर्च ।—अम्लं, (न०) १ महाटा । वृक्षाम्ल । २ इमली ।—आख्यः, (पु०) सागौन का पेड़ ।—आख्यं, (न०) शाक । भाजी । चुक्रिका, (स्त्री०) इमली ।—तरुः, (पु०) सागौन का पेड़ ।—पणः, (पु०) १ मान विशेष जो एक हाथभर का होता है । हाथभर २ भाजी ।—पार्थिवः, (पु०) वह राजा जो अपना शाका या सन् चलाने का शौकीन हो ।—योग्यः, (पु०) धनिया । धन्याक ।—वृक्षः (पु०) सगौन का पेड़ ।—शाकटं,—शाकिनं, (न०) शाकभाजी का खेत ।

शाकट (वि०) [स्त्री०—शाकटी] १ छकड़ा सम्बन्धी । २ छकड़े में जाने वाला ।

शाकटः (पु०) बैल जो गाड़ी या हल में चला हुआ हो । गाड़ी का बैल ।

शाकटं (न०) खेत । क्षेत्र ।

शाकटायनः (पु०) एक बहुत प्राचीन वैयाकरण, जिसका उल्लेख पाणिनि और यास्क ने किया है ।

शाकटिक (वि०) [स्त्री०—शाकटिकी] छकड़ा सम्बन्धी । छकड़े में बैठ कर जाने वाला ।

शाकटीनः (पु०) १ गाड़ी का बोझ । २ प्राचीन कालीन एक तौल जो बीस तुला या २ हजार पल की होती थी ।

शाकल (वि०) [स्त्री०—शाकली] शकल नामक द्रव्य सम्बन्धी । एक खण्ड या टुकड़ा सम्बन्धी ।—प्रातिशाख्यं, (न०) ऋग्वेद प्रातिशाख्य का नाम ।—शाखा, (स्त्री०) ऋग्वेद का वह पाठ या संशोधित संस्करण जो शाकलों में परम्परागत चला आता है ।

शाकलः (पु०) ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता या उस शाखा वाले या उस संहिता के मानने वाले ।

शाकल्यः (पु०) एक प्राचीन कालीन वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है ।

शाकारी (स्त्री०) शकों अथवा शकारों की भाषा, जो प्राकृत का एक भेद है ।

शाकिनं (न०) खेत । क्षेत्र ।

शाकिनी (स्त्री०) १ शाक या भाजी का खेत । २ दुर्गा देवी की सहचरी ।

शाकुन (वि०) [स्त्री०—शाकुनी] १ पक्षी सम्बन्धी । २ शकुनसम्बन्धी । ३ शुभ ।

शाकुनिकं (न०) शकुनों का फल ।

शाकुनिकः (पु०) चिड़ीमार । बहेलिया ।

शाकुनेयः (पु०) छोटा उल्लू ।

शाकुंतलं } (न०) कालिदास रचित अभिज्ञान
शाकुन्तलं } शकुन्तला नाटक ।

शाकुंतलः }
शाकुन्तलः } (पु०) शकुन्तला का पुत्र राजा भरत ।

शाकुलिकः (पु०) धीमर । मछुआ । मछली मारने वाला ।

शाक्करः (पु०) बैल ।

शाक्तः (पु०) शक्ति पूजक । शक्तिउपासक । तन्त्र पद्धति से शक्ति की पूजा करने वाला । [तन्त्रपद्धति दो प्रकार की है । एक दक्षिणाचार, दूसरी, वामाचार । वामाचार या वाममार्गियों की पद्धति में मद्य, मांस, स्त्री आदि का व्यवहार किया जाता है, किन्तु दक्षिणाचार में इन सब अपवित्र वस्तुओं का व्यवहार नहीं किया जाता ।

शाक्त (वि०) [स्त्री०—शाक्ती] बल या शक्ति सम्बन्धी । शक्तिरूपिणी मूर्तिमती देवी सम्बन्धी ।

शाक्तिक (पु०) १ शक्ति का उपासक । २ भालाधारी ।

शाक्तीकः (पु०) भालादारी।

शाक्तेयः (पु०) शक्ति-पूजक।

शाक्यः (पु०) एक प्राचीन क्षत्रिय जाति, जो नेपाल की तराई में रहती थी और जिसमें गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था।—भिक्षुकः, (पु०) बौद्ध भिक्षुक।—मुनिः,—सिंह, (पु०) बुद्ध देव के नामान्तर।

शाक्री (स्त्री०) १ शची। २ दुर्गा।

शाक्वरः (पु०) बैल। वृषभ।

शाखा (स्त्री०) १ डाली। शाख। २ बाँह। बाजू। ३ विभाग। ४ किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद। ५ सम्प्रदाय। पंथ। सिद्धान्त। ६ वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रमभेद जो कई ऋषियों ने अपने गोत्र या शिष्यपरंपरा में चलाए।—पित्तः, (पु०) एक रोग जिसमें हाथ और पैर में जलन और सूजन हो जाती है।—मृगः, (पु०) १ वानर। बंदर। २ गिलहरी।—रण्डः, (पु०) वेद विहित कर्मों को अपनी शाखा के अनुसार न करने वाला। अपनी शाखा को छोड़ अन्य शाखा के अनुसार कार्य करने वाला।—रथ्या, (स्त्री०) पगडंडी।

शाखालः (पु०) वानीर। बेंत विशेष।

शाखिन् (वि०) १ डालियों वाला। शाखाओं से युक्त। २ किसी शाखा वाला। वृक्ष। ३ वेद। ४ वैदिक किसी शाखा को मानने वाला।

शाखोटः }
शाखोटकः } सिहोर का पेड़। पीतवृक्ष।

शांकरः }
शाङ्करः } (पु०) बैल। वृषभ।

शांकरिः }
शाङ्करिः } (पु०) १ कार्तिकेय का नाम। गणेश जी का नाम। २ आमीर।

शांखिकः }
शाङ्खिकः } (पु०) १ शङ्ख को काट कर शङ्ख की चीजें बनाने वाला। २ एक वर्णसङ्कर जाति। ३ शङ्ख बजाने वाला।

शाटः }
शाटी } १ वस्त्र। २ कुर्ती। जाकट।

शाटकं (न०) }
शाटकः (पु०) } वस्त्र। कपड़ा। कुर्ती। जाकट।

शाठ्यं (न०) बेईमानी। धोखाधड़ी। चालाकी। कपट। जाल। दुष्टता।

शाण (वि०) [स्त्री०—शाणी] सन का। पट-सन का।

शाणं (न०) सन का वस्त्र। सनिया। मोटा कपड़ा।

शाणः (पु०) १ कसौटी का पत्थर। २ सान रखने वाला पत्थर। ३ आरा। ४ चार माशे की तौल।—आजीवः, (पु०) कवचधारी।

शाणिः (पु०) सन जिसके रेशों से वस्त्र बनाया जाता है।

शाणित (व०) शान रखा हुआ। बाढ़ रखा हुआ। पैनाया हुआ।

शाणी (स्त्री०) १ कसौटी। २ शान का पत्थर। ३ आरा। ४ पटसन का बना वस्त्र। ५ फटा कपड़ा। ६ छोटी कनात या तंबू। हाथ या आँख मटकौवल।

शाणीरं (न०) सोन नदी का तट। सोन नदी के बीच में स्थित भूभाग।

शाण्डिल्यः (पु०) १ भक्ति शास्त्र को बनाने वाले एक मुनि। गोत्र प्रवर्तक एक ऋषि। २ बिल्ववृक्ष। ३ अग्नि का रूप विशेष।—गोत्रं, (न) शाण्डिल्य गोत्र वाले।

शात (व० कृ०) १ शान पर चढ़ा हुआ। पैना। २ पतला। दुबला। ३ निर्बल। कमज़ोर। ४ सुन्दर। मनोहर। ५ प्रसन्न।

शातं (न०) धतूरा वृक्ष।

शातः (पु०) आनन्द। हर्ष। आह्लाद।—उदरी, (स्त्री०) पतली कमर वाली।—शिख, (वि०) पैनी नौक वाला।

शातकुंभं }
शातकुम्भं } (न०) १ सोना। २ धतूरा।

शातकौंभं (न०) सुवर्ण। सोना।

शातनं (न०) १ छोटा करना। तेज़ करना। २ विनाशन।

शातपत्रकः (पु०) } चाँदनी । जुन्हाई ।
शातपत्रकी (स्त्री०) }

शातभीरुः (पु०) मल्लिका विशेष ।

शातमान (वि०) [स्त्री०—शातमानी] एक सौ के मूल्य का ।

शात्रव (वि०) [स्त्री०—शात्रवी] १ शत्रु सम्बन्धी । २ वैरी । विरोधी ।

शात्रवं (न०) १ शत्रुओं का समुदाय । २ शत्रुता । विरोध ।

शात्रवः (पु०) शत्रु ।

शात्रवीय (वि०) १ शत्रु सम्बन्धी । २ वैरी । विरोधी ।

शादः (पु०) १ छोटी घास । २ कीचड़ ।—हरितः, (पु०)—हरितं, (न०) दूब का मैदान ।

शाद्वल (वि०) १ वह स्थान जहाँ घास हो । २ वह स्थान जहाँ छोटी और हरी घास बहुतायत से हो । ३ सब्ज । हरा भरा ।

शाद्वलं } चरागाह । गोचरभूमि ।
शाद्वलः }

शान् (धा० उ०) [शीशांसति—शीशांसते] तीक्ष्ण करना । पैनाना । तेज़ करना । शान पर रखना ।

शानः (पु०) १ कसौटी । २ शान रखने का पत्थर । —पादः, (पु०) १ वह पत्थर जिस पर चन्दन रगड़ा जाय । २ पारियात्र पर्वत ।

शांत } (व० कृ०) १शमयुक्त। शान्ति वाला । सन्तुष्ट ।
शान्त } अघाया हुआ । २ बन्द । मिटा हुआ । ३ घटा हुआ । दबा हुआ । बुझा हुआ । ४ मृत । मरा हुआ । ५ सौम्य । गम्भीर । ६ पालतू । ७ मौन । चुप । खामोश । ८ शिथिल । ढीला । ९ श्रान्त । थका हुआ । १० रागादि शून्य । जितेन्द्रिय । ११ विघ्न बाधा रहित । स्थिर । १२ स्वस्थचित्त । १३ अप्रभावित । १४ शुभ । मङ्गलकारी ।—[शान्तं पापं,] संस्कृत का यह एक मुहाविरा है जिसका अर्थ है, ईश्वर न करे, ऐसा हो, या ईश्वर को ऐसा न हो । अथवा "नहीं नहीं"। "ऐसा नहीं । ऐसा कैसे हो सकता है ।"] ।—आत्मन्,—चेतस्, (वि०) शान्त स्वभाव वाला । स्वस्थ चित्त । —रसः, (पु०) काव्य के नौ रसों में से एक । इसका स्थायी भाव "निर्वेद" (अर्थात काम क्रोधादि वेगों का शमन) है ।

शांतनवः } (पु०) शान्तनुपुत्र भीष्म का नाम ।
शान्तनवः }

शांता } (स्त्री०) महाराज दशरथ की पुत्री का नाम
शान्ता } जो ऋष्यश्रृङ्ग को व्याही गयी थी ।

शांतिः } (स्त्री०) १ वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव ।
शान्तिः } स्थिरता । २ सन्नाटा । स्वस्थता । नीरवता । ३ स्वस्थता । चैन । इतमीनान । आराम । ४ युद्ध की बंदी । ५ अवसान । समाप्ति । ६ रागादि का अभाव । विरक्ति । वैराग्य । ७ पारस्परिक मतभेदों का दूर हो मेल मिलाप होना । ८ भूख को भोजन करके शान्त करना । ९ प्रायश्चित्त अथवा वह कर्म जिससे किसी ग्रह का बुरा फल दूर हो जाय। अशुभ या अनिष्ट का निवारण । अमङ्गल दूर करने का उपचार । १० सौभाग्य । शुभत्व । मङ्गल । ११ कलङ्क का दूर होना । १२ बचाव ।

शांतिकं } (न०) पालन । रक्षण । [स्त्री०—
शान्तिकं } शान्तिकी] उपद्रवों को शान्त करने वाली होम आदि क्रिया ।

शापः (पु०) १ अहितकामना सूचक शब्द । बद्दुआ । अकोसा । २ शपथ । ३ गाली । भर्त्सना ।—अस्त्रः (पु०) वह व्यक्ति जिसके पास अस्त्रों की जगह शाप देने की शक्ति हो । मुनि । ऋषि । महात्मा । —उत्सर्गः, (पु०) शापोच्चारण । शाप देना । उद्धारः,—(पु०)—मुक्तिः,—(स्त्री०) - मोक्षः, (पु०) शाप या उसके प्रभाव से छुटकारा । शापमुक्ति ।—ग्रस्त, (वि०) शापित ।—मुक्त, (वि०) शाप से छूटा हुआ ।—यंत्रित, (व० कृ०) शाप द्वारा नियंत्रण किया हुआ ।

शापित (व० कृ०) १ शापग्रस्त । २ किरिया खाये हुए । शपथ खाये हुए ।

शाफरिकः (पु०) धीवर । मछवाहा । माहीगीर ।

शाबर } (वि०) [स्त्री०—शाबरी—शावरी] १
शावर } जङ्गली । बर्बर । २ नीच । २ कमीना । ओछा ।—भेदाख्यं, (न०) ताँबा ।

शाबरः }
शावरः } (पु०) लोध्र वृक्ष।

शाबरी } (स्त्री०) शबरों की भाषा। एक प्रकार की
शावरी } प्राकृत भाषा।

शाब्द (वि०) [स्त्री०—शाब्दी] १ शब्द सम्बन्धी। शब्द से उत्पन्न। २ ध्वनि पर निर्भर। ध्वनि सम्बन्धी। ३ मौखिक। ज़बानी। ४ ध्वनिकारक। बजने वाला।—बोधः, (पु०) शब्दों के प्रयोग द्वारा अर्थ का ज्ञान। वाक्य के तात्पर्य की जानकारी—व्यञ्जना, (स्त्री०) वह व्यञ्जना जो शब्द विशेष के प्रयोग पर ही निर्भर होती है, अर्थात् यदि उसका पर्यायवाची शब्द व्यवहृत किया जाय तो वह न रह जाय।

शाब्दिक (वि०) [स्त्री०—शाब्दिकी] १ मौखिक। ज़बानी। २ ध्वनिकारक। बजने वाला।

शाब्दिकः (पु०) वैयाकरण।

शामनः (पु०) १ यमराज का नाम।

शामनं (न०) १ वध। हत्या। २ शान्ति। नीरवता।

शामनी (स्त्री०) दक्षिण दिशा।

शामित्रं (न०) १ यज्ञ। २ यज्ञ के लिये पशुवध। ३ बलिदान के लिये पशु को बांधने की क्रिया। ४ यज्ञीय पात्र विशेष।

शामिलं (न०) भस्म। राख।

शामिली (स्त्री०) स्रुवा।

शांबरी }
शाम्बरी } (स्त्री०) १ माया। इन्द्रजाल। जादूगरी। २ जादूगरनी।

शांखविकः (पु०) शंख बेंचने वाला।

शांभव }
शाम्भव } (वि०) [स्त्री०—शांभवी] १ शिव सम्बन्धी।

शांभवं }
शाम्भवं } (न०) देवदारु का पेड़।

शांभवः }
शाम्भवः } (पु०) (१) शिव का भक्त या पूजक। २ शिवपुत्र। ३ कपूर। ४ विष विशेष।

शांभवी }
शाम्भवी } (स्त्री०) १ पार्वती। २ नील दूर्वा।

शायकः }
सायकः } (पु०) १ तीर। २ खड्ग। तलवार।

शार् (धा० उ०) [शारयति,—शारयते] १ निर्बल करना। २ निर्बल होना।

शार (वि०) रंगबिरंगा। चितकबरा। चित्तियोंदार।

शार (पु०) १ रंगबिरंगा रंग। २ हरा रंग। ३ पवन। हवा। ४ शतरंज का मोहरा। ५ अनिष्ट। चोट।

शारंगः }
शारङ्गः } (पु०) १ चातक पक्षी। २ मोर। मयूर। ३ मधुमक्षिका। ४ हिरन। मृग। ५ हाथी।

शारंगी }
शारङ्गी } (स्त्री०) सारंगी। एक बाजा जो गज से बजाया जाता है।

शारद (पु०) १ शारदी। शरत् ऋतु का। २ वार्षिक। ३ नया। हाल का। ४ ताजा। टटका। ५ शर्मीला। शर्मदार। लज्जालु। लजीला। ६ जो साहसी न हो।

शारदं (न०) १ अनाज। नाज। २ सफेद कमल।

शारदा (स्त्री०) १ वीणा विशेष। २ दुर्गा का नाम। ३ सरस्वती का नाम।

शारदः (पु०) १ वर्ष। २ शारदी रोग। शरत् ऋतु में उत्पन्न होने वाला रोग। ३ हरी मूंग। शरत् ऋतु की धूप। ५ वकुल वृक्ष।

शारदिकं (न०) वार्षिक श्राद्ध या शरत् ऋतु में किया जाने वाला श्राद्ध कर्म।

शारदिकः (पु०) १ शरत् ऋतु में उत्पन्न होने वाले रोग। २ शरत् ऋतु का सूर्यातप या घाम या धूप।

शारदी (स्त्री०) कार्तिक मास की पूर्णमासी।

शारदीय (वि०) शरत्कालीन।

शारिः (पु०) १ शतरंज का मोहरा या गोटी। २ छोटी गेंद। ३ एक प्रकार का पाँसा।

शारिः (स्त्री०) १ सारिका या मैना पक्षी। २ कपट। छल। धोखा। दगा। ३ हाथी का पलान या झूल।—फलं—फलकं, (न०)—फलकः, (पु०) शतरंज या चौसर की बिछौत।

शारिका (स्त्री०) १ मैना पक्षी। २ सारंगी। बेहला

आदि बाजों के बजाने का गज । ३ शतरंज खेलने की क्रिया । ४ शतरंज का मोहरा या उसकी गोट या गोटी ।

शारी (स्त्री०) पक्षी विशेष ।

शारीर (वि०) [स्त्री०-शारीरी] शरीर सम्बन्धी । दैहिक । कायिक । २ शरीर धारी । मूर्तिमान ।

शारीरः (पु०) १ जीवात्मा । २ साँड़ । वृष । ३ एक प्रकार का अर्थ ।

शारीरक (वि०) [स्त्री०—शारीरकी] शरीरसम्बन्धी ।

शारीरकं (न०) १ शरीरधारी जीवात्मा । २ जीव के स्वरूप ज्ञान की खोज या जिज्ञासा ।—सूत्रं, (न०) वेदान्त के दार्शनिक विचार । वेदव्यासजी के बनाये हुए वेदान्त सूत्र ।

शारीरिक (वि०) [स्त्री०—शारीरिकी] शरीर सम्बन्धी । दैहिक । कायिक । पार्थिव ।

शारुक (वि०) [स्त्री० —शारुकी] अनिष्टकर । हानिकारी । कष्टदायी ।

शार्कक (पु०) शर्करापिण्ड । मिश्री । कंद ।

शार्कर (वि०) [स्त्री०—शार्करी] १ चीनी की बनी हुई । २ पथरीली । कँकरीली ।

शार्करः (पु०) कँकरीली जगह । २ दूध का फेना । ३ मलाई ।

शार्ग } (वि०) १ सींग का बना हुआ । सींगदार ।
शार्ङ्ग } २ धनुषधारी । धनुर्धर ।

शार्गः (पु०) } १ धनुष । २ विष्णु भगवान के धनुष
शार्ङ्गः (पु०) } का नाम । —धन्वन्, (पु०)—धरः,
शार्ग (न०) } —पाणि ,—भृत, (पु०) विष्णु
शार्ङ्ग (न०) } भगवान् के नामान्तर ।

शार्गिन् } (पु०) १ धनुर्धारी । २ विष्णु ।
शार्ङ्गिन् }

शार्दूलः (पु०) १ व्याघ्र । चीता । २ बबरा । लकड़बग्घा । ३ राक्षस । दैत्य । दानव । ४ पक्षी विशेष । ५ समासान्त शब्दों में पीछे आने पर इसका अर्थ होता है :— सर्वश्रेष्ठ । उत्तम । प्रसिद्ध पुरुष ।—चर्मन्, (न०) चीते की छाल ।—विक्रीडितं (न०) १ चीते की क्रीड़ा । २ उन्नीस अक्षरों के पादवाला एक छन्द विशेष ।

शार्वर (वि०) [स्त्री०—शार्वरी] १ नैशिक । रात्रिकालीन । २ उत्पाती । उपद्रवी ।

शार्वरं (न०) अँधियारी । अन्धकार ।

शार्वरी (स्त्री०) रात्रि । रात । निशा ।

शाल् (धा० आ०) [शालते] १ प्रशंसा करना । चापलूसी करना । २ चमकना । ३ सम्पन्न होना । ४ कहना ।

शालः (पु०) १ शालनामक पेड़ । २ वृक्ष । ३ हाता । घेरा । ४ मछली विशेष । ५ शालिवाहन राजा का नाम ।—ग्रामः, (पु०) विष्णु भगवान की एक प्रकार की मूर्त्ति जो गंडकी नदी में पाई जाती है । —निर्यासः, (पु०) शालवृक्ष का गोंद ।—भञ्जिका, (स्त्री०) गुड़िया । पुतली । पुतला । २ रंडी । वेश्या ।—भञ्जी, (स्त्री०) गुड़िया । पुतली ।—वेष्टः, (पु०) सालवृक्ष का गोंद ।—सारः, (पु०) १ उत्कृष्टतर वृक्ष । २ हींग ।

शालवः (पु०) लोध्र वृक्ष ।

शाला (स्त्री०) १ कमरा । कोठा । बड़ा कमरा । २ घर । मकान । ३ वृक्ष की ऊपर की डाली । ४ वृक्ष का तना या धड़ ।—मृगः, (पु०) सियार । श्रृगाल ।—वृकः, (पु०) १ भेड़िया । २ कुत्ता । ३ हिरन । ४ बिल्ली । ५ श्रृगाल । गीदड़ । ६ बंदर ।

शालाकः (पु०) पाणिनि का नाम ।

शालाकिन् (पु०) १ भालाधारी । २ जर्राह । हज्जाम । नापित । नाई ।

शालातुरीयः (पु०) पाणिनि का नाम । ["शालातुर" पाणिनि के जन्मस्थान का नाम है]

शालारं (न०) १ जीना । सीढ़ियां । २ पक्षी का पिंजड़ा ।

शालिः (पु०) १ चाँवल । २ ऊदबिलाव । —ओदनः, (पु०) —ओदनं, (न०) भात ।—गोपी, (स्त्री०) वह स्त्री जो धान के खेत की रखवाली के लिये नियुक्त की गयी हो ।—पिष्टं, (न०) बिल्लौर पत्थर । स्फटिक ।—वाहनः, (पु०) शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा ।

इसका संवत्सर भी चलता है और ईसा के जन्म के ७८ वर्ष पीछे से इसके वर्ष की गणना आरम्भ होती है।—होत्रः, (पु०) १ एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार का नाम जिसने अश्वचिकित्सा पर एक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा। २ घोड़ा।—होत्रिन्, (पु०) घोड़ा।

शालिकः (पु०) १ कोरी। जुलाहा। २ कर। महसूल

शालिन् (वि०) [स्त्री० —शालिनी] १ सम्पन्न। २ चमकदार। ३ घरेलू।

शालिनी (स्त्री०) १ गृहिणी। गृहस्वामिनी। २ ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त। ३ भसींडा। पद्मकन्द। ४ मैथी।

शालीन (वि०) १ विनीत। नम्र। २ सलज्ज। ३ सदृश। समान। तुल्य।

शालीनः (पु०) गृहस्थ।

शालु (न०) भसींडा। पद्मकन्द।

शालुः (पु०) १ मेंढक। २ गन्ध द्रव्य विशेष।

शालुकं } (न०) पद्मकंद। भसींडा। २ जायफल।
शालूकं } जातीफल।

शालुकः } (पु) मेंढक। मंडूक।
शालूकः }

शालुरः } (पु०) मेंढक। मंडूक।
शालूरः }

शालेयं (न०) धान का खेत।

शालोत्तरीयः (पु०) पाणिनि का नामान्तर।

शाल्मल- (पु०) १ सेंमर का पेड़। २ भूमण्डल के सप्त विभागों में से एक। एक द्वीप का नाम।

शाल्मलिः (पु०) १ सेंमर का पेड़। २ भूमण्डल के सप्त बृहद् भूखण्डों में से एक। ३ नरक विशेष। —स्थः, (पु०) गरुड़ जी।

शाल्मली (स्त्री०) १ सेंमर का वृक्ष। २ पाताल की एक नदी का नाम। ३ नरक विशेष।—वेष्टः, वेष्टकः, (पु०) सेंमर का गोंद।

शाल्वः (पु०) १ एक देश का नाम। २ शाल्व देश का राजा।

शाव (वि०) [स्त्री० —शावी] १ शव सम्बन्धी। मुर्दा सम्बन्धी। २ भूरा रंग।

शाव- (पु०) बच्चा। विशेष कर पशुओं का।

शावकः (पु०) किसी भी पशु का बच्चा।

शाश्वत (वि०) [स्त्री०—शाश्वती] जो सदा स्थायी रहे। नित्य।

शाश्वती (स्त्री०) पृथिवी। धरा।

शाष्कुल (वि०) [स्त्री०—शाष्कुली] माँसभक्षी। माँसाहारी। गोश्तख़ोर।

शाष्कुलिकं (न०) पूड़ियाँ।

शास् (धा० प०) (शास्ति, शिष्ट) १ शिक्षा देना। २ शासन करना। ३ आज्ञा देना। निर्देश करना। ४ कहना। सूचना देना। ५ सलाह देना। ६ डिक्री करना। ७ दण्ड देना। ८ वशवर्ती करना। पालतू बनाना।

शासनं (न०) १ आज्ञा। आदेश। हुक्म। २ वशवर्ती करना। अधिकारयुक्त करना। ३ लिखित प्रतिज्ञा। पट्टा। दीप। ४ शास्त्र। ५ राजा की दान की हुई भूमि। ६ वह परवाना या फ़रमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया गया हो। ८ इन्द्रिय निग्रह।—पत्र, (न०) वह ताम्रपत्र या शिला, जिस पर कोई राजाज्ञा खोदी गयी हो।—हरः, (पु०) राजदूत।—हारिन्, (पु०) एलची। राजदूत।

शासित (व० कृ०) १ शासन किया हुआ। २ दण्डित।

शासिन् (पु०) १ शासनकर्ता। २ दण्डदाता।

शास्तृ (पु०) १ शिक्षक। २ शासनकर्ता। राजा। महाराज। ३ पिता। ४ बौद्ध या जैन। बौद्धों या जैनों का गुरु।

शास्त्रं (न०) १ आज्ञा। आदेश। नियम। २ धर्माज्ञा। धर्मशास्त्र की आज्ञा। ३ धर्मग्रन्थ। ४ किसी विशिष्ट विषय का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो। ५ पुस्तक।—अतिक्रमः, (पु०) शास्त्र की आज्ञा का उल्लङ्घन।—अनुष्ठानं (न०)

शास्त्रीय आज्ञा का पालन।—अभिज्ञ, (वि०) शास्त्र जानने वाला।—अर्थः, (पु०) १ शास्त्र का अर्थ। २ धर्मशास्त्र की आज्ञा।—आचरणं (न०) शास्त्रीय आज्ञाओं का पालन।—उक्त, (वि०) शास्त्रकथित। शास्त्रीय। शास्त्रानुमोदित।—कारः,—कृतः, (पु०) धर्मशास्त्र का बनाने वाला।—कोविद, (वि०) शास्त्र-निष्णात। शास्त्रों को भली भाँति जानने वाला।—गण्डः (न०) पल्लवग्राही पण्डित। पण्डितमन्य।—चक्षुस, (न०) शास्त्र का नेत्र अर्थात् व्याकरण।—दर्शिन्, (वि०) शास्त्र-कथित।—दृष्टिः, (स्त्री०) शास्त्र का मत। शास्त्र की निगाह से।—योनि, (पु०) शास्त्रों का उद्गमस्थल।—विधान,—विधिः, शास्त्र की आज्ञा।—विप्रतिषेधः,—विरोधः, (पु०) धर्मशास्त्र की आज्ञाओं में परस्पर विरोध। २ कोई कार्य जो धर्मशास्त्र के विरुद्ध हो।—विमुख, (वि०) धर्मशास्त्र के अध्ययन से पराङ्मुख।—विरुद्ध, (वि०) धर्मशास्त्र की आज्ञाओं के विरुद्ध या बरखिलाफ़।—व्युत्पत्तिः, (स्त्री०) शास्त्रज्ञ। शास्त्रों में पूर्ण ज्ञान रखने वाला।—शिल्पिन्, (पु०) काश्मीर देश।—सिद्ध, (वि०) धर्मशास्त्र के मतानुसार। धर्मशास्त्र-प्रतिपादित।

शास्त्रिन् (वि०) [स्त्री०—शास्त्रिणी] शास्त्री। शास्त्र का जानने वाला।

शास्त्रीय (वि०) १ शास्त्र सम्बन्धी। शास्त्र का। २ वैज्ञानिक। विज्ञान सम्बन्धी।

शास्य (वि०) १ शासन करने के योग्य। २ सिखलाने या समझाने योग्य। ३ दण्डनीय। [सजा देने योग्य]

शि (धा० उ०) [शिनोति, शिनुते] १ पैना करना। धार रखना। २ पतला करना। ३ भड़काना। उत्तेजित करना। ४ ध्यान देना। ५ तेज होना।

शिः (पु०) १ शुभत्व। सौभाग्य शीलत्व। २ स्वस्थता। शान्ति। ३ शिव जी।

शिंशपा (स्त्री०) १ शीशम का पेड़। २ अशोक वृक्ष।

शिंड (वि०) नुम्न। वाहिल। असंगत।

शिक्थं (न०) मोम।

शिक्यं (न०) } १ सींका। सिकहर। २ बँहगी
शिक्या (स्त्री०) } के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सी का जाल, जिस पर बोझ रखते हैं। ३ तराजू की डोरी।

शिक्यित (वि०) १ सींके में लटकाया हुआ। २ बँहगी में रखा हुआ।

शिक्ष् (धा० आ०) [शिक्षते, शिक्षित] पढ़ना। सीखना। ज्ञान की प्राप्ति।

शिक्षकः (पु०) [स्त्री०—शिक्षका शिक्षिका] १ सिखलाने वाला। २ उस्ताद।

शिक्षणं (न०) शिक्षा। तालीम। पढ़ाने का काम।

शिक्षा (स्त्री०) १ किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। तालीम। २ गुरु के निकट विद्याभ्यास। विद्या का ग्रहण। ३ दक्षता। निपुणता। ४ उपदेश। मंत्र। सलाह। ५ छः वेदाङ्गों में से एक-जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण रहता है। ६ विनय। विनम्रता।—करः, (पु०) १ अध्यापक। शिक्षक। २ वेदव्यास।—नरः, (पु०) इन्द्र।—शक्तिः, (स्त्री०) निपुणता।

शिक्षित (व० कृ०) १ पढ़ा लिखा। अधीत। २ सिखाया हुआ। पढ़ाया हुआ। ३ नियन्त्रित। ४ पालतू। ५ निपुण। चतुर। ६ विनम्र। लज्जालु।—अक्षरः, (पु०) शिष्य। शागिर्द।—आयुध, (वि०) हथियार चलाने में निपुण।

शिक्षमाण (पु०) शागिर्द। शिष्य।

शिखंड } (पु०) १ चोटी। शिखा। २ काकपक्ष।
शिखण्डः } काकुल। ३ मयूरपुच्छ।

शिखंडक. } (पु०) १ चूड़ाकरण संस्कार के
शिखण्डकः } समय सिर पर रखी गयी चोटी या चुटिया। २ काकपक्ष। काकुल। ३ मयूरपुच्छ। ४ कलँगी।

शिखंडिकः } (पु०) मुर्गा।
शिखण्डिकः }

शिखंडिका } (स्त्री०) १ शिखा। चोटी। २
शिखण्डिका } काकपक्ष। काकुल। ३ मयूरपुच्छ।

शिखंडिन् (वि०)
शिखण्डिन् (वि०) } १ शिखावाला। कलँगीदार।

शिखंडिन् } (पु०) १ मयूर। मोर। २ मुर्गा। ३
शिखण्डिन् } तीर। ४ मयूरपुच्छ। ५ पीली जुही।
६ विष्णु का नामान्तर। ७ द्रुपदराज के एक पुत्र का नाम।

शिखंडिनी } (स्त्री०) १ मयूरी। २ पीली जुही।
शिखण्डिनी } ३ राजा द्रुपद की एक कन्या का नाम।

शिखर (न०) } १ चोटी या सबसे ऊँचा भाग।
शिखर (पु०) } (पर्वत का) शृङ्ग। २ वृक्ष की फुनगी। ३ चुटिया। शिखा। ४ तलवार की धार या बाढ़। ५ बगल। ६ रोमाञ्च। ७ कुन्द की कली। ८ चुन्नी की तरह का एक रत्न। सिरा। अग्रभाग।—वासिनी, (स्त्री०) दुर्गा देवी का नाम।

शिखरिणी (स्त्री०) १ उत्तम स्त्री। २ शिखरन। मिखिन्न। ३ रोमावली। ४ सत्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसके छठे और ग्यारहवें वर्ण पर यति हो।

शिखरिन् (वि०) १ चोटीवाला। शिखावाला। २ नुकीला। शृङ्गवाला। (पु०) १ पहाड़। २ पर्वतदुर्ग। ३ वृक्ष। ४ शिखरी नामक पक्षी। ५ अपामार्ग। अज्जाझारा।

शिखा (स्त्री०) १ (सिर पर) चोटी। चुटिया। २ कलँगी। ३ वेणी। केशों या परों का गुच्छा। ४ धार। बाढ़। ५ वस्त्र की किनार। दामन या गोट या अंचल। ६ अँगारा। ७ शिखर। शृङ्ग। ८ लौ। किरन। ९ मोर की कलँगी १० कलियारी विष। लांगली। ११ मूर्वा। मरोड़फली। १२ जटामासी। बालछड़। १३ वच। १४ शिफा। १५ तुलसी। १६ डाली। टहनी। शाख। १७ मुख्य। प्रधान। १८ कामज्वर।—तरुः, (पु०) दीपवृक्ष। दीवट। दीयट। पतीलसोत।—धर, (पु०) मयूर। मोर।—मणि, (पु०) वह मणि जो सिर पर पहना जाय।—मूलं, (न) १ वह कंद जिसके ऊपर पत्तियों का गुच्छा हो। गाजर। गोभी। २ शलजम।—वरः, (पु०) कटहल का पेड़।—वलः, (पु०) मयूर। वृक्षः, (पु०) दीयट। दीवट।—वृद्धिः, (स्त्री०) १ सूद-दर-सूद। वह ब्याज जो प्रति दिन बढ़े।

शिखालुः (पु०) मयूर की कलँगी।

शिखावत् (वि०) १ चोटीदार। २ लौ दार। (पु०) १ दीपक। २ अग्नि।

शिखिन् (वि०) १ नोकदार। २ चोटीदार। शिखा-वाला। ३ अभिमानी। (पु०) १ मयूर। मोर। १ अग्नि। ३ मुर्गा। ४ तीर। ५ वृक्ष। ६ दीपक। ७ साँड़। ८ घोड़ा ९ पहाड़। पर्वत। १० ब्राह्मण। ११ सन्यासी साधु। १२ केतु उपग्रह। १३ तीन की संख्या। १४ चित्रक का वृक्ष।—कण्ठं,—ग्रीवं, (न०) तूतिया।—ध्वजः, (पु०) १ कार्तिकेय। २ धूम। धुआँ।—पिच्छं,—पुच्छं, (न०) मयूर की पूँछ।—यूपः, (पु०) बारहसिंगा।—वर्धकः, (पु०) कुम्हड़ा। तरबूज।—वाहनः, (पु०) कार्तिकेय।—शिखा, (स्त्री०) १ अँगारा। शोला। २ मयूर की कलँगी या सिरा।

शिग्रुः (पु०) १ सहिजन का पेड़। शोभाञ्जन। २ शाक। साग।

शिङ्ख् (धा० प०) [शिङ्खति] चलना।

शिङ्घ् (धा० प०) सूँघना।

शिघाणं (न०) १ नाक से निकलने वाला मल।

शिंघाणः (पु०) १ फेना। फेन। २ कफ। रेंट। २ लोहे का मैल। ३ काँच का बरतन।

शिंघाणकं (न०)
शिङ्घाणकं (न०)
शिंघाणकः (पु०)
शिङ्घाणकः (पु०) } नाक का मैल। रेंट। (पु०) कफ। श्लेष्मा।

शिञ्ज् } (धा० आ०) [शिञ्जते—शिक्त—शिञ्जयति
शिञ्ज् } —शिञ्जयते,—शिञ्जित] बजना। खड़-खड़ाना। रनझुनाना। (विशेषत. आभूषणों का)

शिञ्ज (पु०) भूषण का शब्द।

शिंजिका }
शिञ्जिका } (स्त्री०) कमर में बाँधने की जंजीर।

शिञ्जा } (स्त्री०) १ रुनझुन । २ कमान की डोरी ।
शिञ्जा } रोदा । कमान का चिल्ला ।

शिञ्जित } (व० कृ०) रुनझुन का शब्द करते हुए ।
शिञ्जित } खनखनाते हुए ।

शिञ्जितं } (न०) आभूषण, विशेष कर पायजेब या
शिञ्जितं } बिछियों का शब्द ।

शिञ्जिनी } (स्त्री०) १ धनुष का रोदा । कमान का
शिञ्जिनी } चिल्ला । २ पायजेब । पैर का आभूषण विशेष ।

शिट् (धा० प०) [शेटति] तुच्छ समझना । तिरस्कार करना । अपमान करना ।

शित (व० कृ०) १ पैनाया हुआ । शान रखा हुआ । २ पतला । लटा हुआ । ३ जीर्ण । ४ निर्बल । कमज़ोर ।—अग्रः, (पु०) काँटा ।—धार, (वि०) पैनी धार वाला ।—शूकः, (पु०) १ जौ । २ गेहूं ।

शितद्रुः, (स्त्री०) सतलज नदी ।

शिति (वि०) १ सफेद । २ काला ।

शितिः (पु०) भोजपत्र का वृक्ष ।—कण्ठः, (पु०) १ शिव जी का नामान्तर । २ मयूर । ३ बटेर जाति का एक पक्षी विशेष ।—छदः,—पक्षः, (पु०) हंस ।—रत्नं, (न०) नीलमणि । नीलम ।—वासस्, (पु०) श्रीरामचन्द्र ।

शिथिल (वि०) १ ढीला । २ जो बँधा न हो । अनबँधा हुआ । ३ (वृक्ष से) गिरा हुआ । अलहदा हुआ । वृक्ष के तने से पृथक् हुआ । ४ निर्बल । कमज़ोर । ५ नरम । कोमल । ६ घुला हुआ । ७ सड़ा हुआ । ८ व्यर्थ । अकिञ्चित्कर । विफल । १० असावधान । ११ भली प्रकार न किया हुआ । १२ त्यक्त । त्यागा हुआ ।

शिथिलं (न०) १ ढीलापन । २ सुस्ती ।

शिथिलयति (क्रि०) १ ढीला करना । २ त्याग देना । त्यागना । ३ कम करना ।

शिथिलित (वि०) १ ढीला । २ ढीला किया हुआ । ३ घुला हुआ ।

शिनि (पु०) १ यादवों के पक्ष का एक योधा । २ सात्यकि का नाम ।

शिपिः (पु०) किरन । (स्त्री०) चर्म । चमड़ा । (न०) जल ।-विष्ट, (वि०) १ किरन से व्याप्त । २ गंजा । ३ कोढ़ी ।—विष्टः, (पु०) १ विष्णु । २ शिव । ३ साहसी आदमी । ४ वह मनुष्य जिसकी सुपाड़ी पर चमड़ा न हो । ५ कोढ़ी ।

शिप्रः (पु०) हिमालय पर्वत की एक झील का नाम ।

शिप्रा (स्त्री०) शिप्र झील से निकलने वाली एक नदी जिसके तट पर उज्जयनी नगरी है ।

शिफा (स्त्री०) १ भसीड़ा । पद्मकंद । २ जड़ । ३ एक वृक्ष की रेशादार जड़ जिससे प्राचीन काल में कोड़े बनाये जाते थे । ४ कशाघात । कोड़े की मार । ५ माता । ६ नदी ।—धरः, (पु०) डाली । शाखा ।—रुहः, (पु०) वट वृक्ष । बरगद का पेड़ ।

शिफाकः (पु०) भसीडा ।

शिबिः } १ शिकारी जानवर । २ भोजपत्र का पेड़ ।
शिविः } ३ एक देश का नाम । ४ राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा का नाम ।

शिबिका } (स्त्री०) १ पालकी । डोली । २ टिकटी ।
शिविका }

शिबिरं } १ डेरा । खेमा । निवेश । २ शाही खेमा ।
शिविरं } राजकीय निवेश । ३ पड़ाव । छावनी । सेना की रक्षा के लिये खाँई । ४ धान्य विशेष ।

शिबिरथः } (पु०) पालकी । पीनस । म्याना ।
शिविरथः }

शिम्बा } (स्त्री०) छीमी । सेंम फली ।
शिम्बा }

शिम्बिका } (स्त्री०) १ छीमी । सेंम । फली । २
शिम्बिका } पौधा विशेष ।

शिरं (न०) सीस । २ पिप्परीमूल । पिपरामूल ।

शिरः (पु०) १ शय्या । २ एक बड़ा सर्प ।—जं, (न०) केश । बाल ।

शिरस् (न०) १ सिर । सीस । २ खोपड़ी । ३ चोटी । शिखा । ४ वृक्ष की फुनगी । ५ किसी भी वस्तु का अग्रभाग । ६ सर्वोच्चस्थान । ८ मुख्य ।

प्रधान ।—अस्थि, (=शिरोऽस्थि) (न०) खोपड़ी । —कपालिन्, (पु०) कापालिक । अघोर पंथी । —ग्रहः, (पु०) सिर का दर्द—तापिन्, (पु०) हाथी ।—त्रं,—त्राणं, (न०) १ युद्ध के समय सिर के बचाव के लिये पहनी जाने वाली लोहे की टोपी । कूँड़ । खोद । २ पगड़ी । साफा । टोपी ।—धरा, (स्त्री०) —धिः, (पु०) गरदन ।—पीडा, (स्त्री०) सिर का दर्द । —फलः, (पु०) नारियल का वृक्ष ।—भूषणं, (न०) गहना जो सिर पर पहना जाय । —मणिः, (पु०) १ रत्न जो सीस पर धारण किया जाय । २ प्रतिष्ठा सूचक उपाधि जो विद्वानों को दी जाती है ।—मर्मन्, (पु०) सूकर । बराह ।—मालिन्, (पु०) शिव जी का नाम । —रत्नं, (न०) शिरोमणि ।—रुजा, (स्त्री०) सिर की पीड़ा ।—रुह्, (पु०)—रुहः, (पु०) —(शिरसिरुह्) सिर के केश ।—वर्तिन्, (पु०) प्रधान । अध्यक्ष ।—वृत्तं, (न०) काली मिर्च । —वेष्टः,(पु०)—वेष्टनं, (न०) पगड़ी । साफा । —हारिन्, (पु०) शिव जी ।

शिरसिजः (पु०) सिर के बाल ।

शिरस्कं (न०) १ कूँड़ । खोद । शिरस्त्राण । २ पगड़ी । साफा । टोपी ।

शिरस्का (स्त्री०) पालकी ।

शिरस्तस् (अव्यया०) सिर से ।

शिरस्य (वि०) सिर सम्बन्धी ।

शिरस्यः (पु०) साफ बाल ।

शिरा (स्त्री०) रक्त की छोटी नाड़ी । खून की छोटी नली । नसें । रगें ।—पत्रः, (पु०) कैथ ।—वृत्तं, (न०) सीसा । जस्ता ।

शिराल (वि०) नसों या नाड़ियों वाला ।

शिरिः (पु०) १ तलवार । २ मार डालने वाला । हत्यारा । ३ तीर । ४ टीड़ी ।

शिरीषं (न०) सिरस का फूल ।

शिरीषः (पु०) सिरस का पेड़ ।

शिल् (भा०) [शिलति] लुनने के पीछे जो दाने खेत में पड़े रहते हैं, उन्हें बीनना ।

शिलं (न०), शिलः (पु०) अनाज की बालों को बीनने की क्रिया ।—उञ्छः, (पु०) १ फसल कट जाने पर खेत में गिरे दाने चुनने की क्रिया । २ अनिर्धारित वृत्ति । आकाशवृत्ति ।

शिला (स्त्री०) १ पत्थर । चट्टान । २ चक्की । ३ चौखट के नीचे की लकड़ी । ४ खंभे का अग्र-भाग । ५ शिरा । नाड़ी । ६ मैनसिल । ७ कपूर । —अष्टकः, (पु०) सुराख । रन्ध्र । २ दाना । बेग । ३ अँटिया । अटा ।—आत्मजं, (न०) लोहा ।—आत्मिका, (स्त्री०) सोना या चाँदी गलाने की घरिया ।—आरम्भा, (स्त्री०) केले का वृक्ष ।—आसनं, (न०) १ बैठने के लिये पत्थर की सिल्ली । २ शैलेय नामक गन्धद्रव्य । ३ शिलाजीत ।—आह्वं, (न०) शिलाजीत । —उच्चयः, (पु०) पहाड़ । पर्वत । बड़ी चट्टान । —उत्थं, (न०) १ छरीला या शैलेय नामक गन्ध द्रव्य । २ शिलाजीत ।—उद्भवं, (न०) १ शैलेय । छरीला । २ पीला चन्दन ।—ओकस्, (पु०) गरुड़ जी ।—कुट्टकः, (पु०) संगतराश की छेनी ।—कुसुमं,—पुष्पं, (न०) शिलाजीत । —ज, (वि०) खनिज ।—जं, (न०) १ छरीला । पत्थर का फूल । २ लोहा । ३ शिला-जीत ।—जतु, (न०) १ शिलाजीत । २ गेरू । —जित्,—दद्रुः, (पु०) शिलाजीत ।—धातुः, (पु०) १ खरिया मिट्टी । २ गेरू । ३ खनिज पदार्थ ।—पट्टः, (पु०) पत्थर की शिला की बैठकी ।—पुत्रः,—पुत्रकः, (न०) मसाले पीसने की सिल ।—प्रतिकृतिः, (स्त्री०) पत्थर की मूर्ति ।—फलकं, (न०) पत्थर का टुकड़ा । —भवं, (न०) १ शिलाजीत । २ छरीला । —वल्कलं,(न०)—वल्का, (स्त्री०) एक प्रकार की ओषधि जिसे शिलजा और श्वेता भी कहते हैं । —वृष्टिः, (स्त्री०) ओलों की वर्षा । पत्थरों की वर्षा ।—वेश्मन्, (न०) कंदरा । गुफा । —व्याधिः (पु०) शिलाजीत ।

शिलिः (पु०) भोजपत्र का पेड़ । (स्त्री०) चौखट के नीचे की लकड़ी ।

शिलिंद्रः, शिलिन्द्रः (पु०) मछली विशेष ।

शिली (स्त्री०) १ दरवाज़े के नीचे की लकड़ी। २ केंचुआ। गंडूपदी। ३ भाला। ४ बाण। ५ मेढ़की।—मुखः, (पु०) १ मधुमक्षिका। २ तीर। ३ मूर्ख। बेवकूफ़।

शिलींध्रं } (न०) १ कुकुरमुत्ता। भुइछत्ता।
शिलीन्ध्रं } २ केले का फूल। ३ ओला।

शिलींध्रः } (पु०) १ मत्स्यविशेष। शिलिंद नामक
शिलीन्ध्रः } मछली। २ कठकेला।

शिलींध्रकं } (न०) १ कुकुरमुत्ता। भुइछत्ता।
शिलीन्ध्रकं }

शिलींध्री } (स्त्री०) १ मिट्टी। २ केंचुआ।
शिलीन्ध्री } गिजियायी।

शिल्पं (न०) १ दस्तकारी। कारीगरी। हुनर। २ श्रुवा।—कर्मन्, (न०)—क्रिया (स्त्री०) दस्तकारी। हाथ की कारीगरी।—कारः,—कारकः,—कारिन्, (पु०) दस्तकार। कारीगर।—शालं, (न०)—शालः, (पु०) कारखाना।—शास्त्रं, (न०) १ वह शास्त्र जो दस्तकारी की शिक्षा दे। २ यंत्र विद्या।

शिल्पिन् (वि०) १ यंत्र निर्माण-कला-विज्ञान सम्बन्धी। २ यंत्रसम्बन्धी (पु०) १ शिल्पी। कारीगर। यंत्र कलाविद्। २ किसी भी दस्तकारी के काम में निपुण।

शिव (वि०) १ शुभ। कल्याणकारी। २ अच्छे स्वास्थ्य वाला।—आत्मकं, (न०) सेंधा निमक।—आदेशकः, (पु०) १ शुभ संवाद देने वाला। २ ज्योतिषी।—आलयः, (पु०) शिव जी का मन्दिर। २ लाल तुलसी।—आलयं, (न०) शिव जी का मन्दिर। २ श्मशान।—इतर, (वि०) अशुभ। अमङ्गलकारी। कर, (= शिवंकर,) (वि०) शुभकारी। आनन्ददायी।—कीर्तनः, (पु०) भङ्गी का नाम।—गति, (वि०) समृद्ध। हर्षित।—धर्मजः, (पु०) मङ्गलग्रह।—ताति, (वि०) शुभकारी। कल्याणकारी। कोमल।—तातिः, (पु०) शुभत्व। मङ्गलत्व। आनन्द।—दत्तं, (न०) विष्णु भगवान का चक्र।—दारु, (न०) देवदारु का पेड़।—द्रुमः, (पु०) विल्व वृक्ष।—द्विष्टा, (स्त्री०) केतक वृक्ष।—धातुः, (पु०) पारा।—पुरं, (न०)—पुरी (स्त्री०) बनारस। काशी।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक।—प्रियः, (पु०) १ स्फटिक। २ अगस्त। वकवृक्ष। ३ धतूरा। ४ रुद्राक्ष।—वल्कलकः, (पु०) अर्जुन वृक्ष।—राजधानी, (स्त्री०) बनारस। काशी।—रात्रि, (स्त्री०) माघ कृष्ण १४शी।—लिङ्गं, (न०) महादेव की पिंडी।—लोकः, (पु०) शिव जी का लोक या कैलास।—वल्लभः, (पु०) आम का पेड़।—वल्लभा, (स्त्री०) पार्वती।—वाहनः, (पु०) बैल।—बीजं, (न०) पारा।—शेखरः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ धतूरा।—सुन्दरी, (स्त्री०) दुर्गा।

शिवं (न०) १ समृद्धि। कुशल। कल्याण। आनन्द। २ मोक्ष। ३ जल। ४ समुद्री निमक। ५ सेंधा निमक। ६ शुद्ध सोहागा।

शिवः (पु०) १ महादेव। २ लिङ्ग। जननेन्द्रिय। ३ शुभ भोग विशेष। ४ वेद। ५ मोक्ष। ६ खूँटा। ७ देवता। ८ पारा। ९ शिलाजीत। १० काला धतूरा।

शिवकः (पु०) १ गौ आदि बाँधने का खूंटा। २ पशुओं के खुजाने के लिये बनाया हुआ खंभा।

शिवा (स्त्री०) १ पार्वती। २ गीदड़ी। शृगाली। सियारिन। ३ मोक्ष। ४ शमी वृक्ष। ५ हलदी। ६ दूर्वा। ७ गौरोचन।—अरातिः, (पु०) कुत्ता।—प्रियः, (पु०) बकरा।—फला, (स्त्री०) शमी वृक्ष।—रुतं, (न०) गीदड़ का हूहा।

शिवानी (स्त्री०) पार्वती। शिवपत्नी।

शिवालुः (पु०) गीदड़। सियार।

शिवौ (वि०) शिव और पार्वती।

शिशिर (वि०) ठंडा। शीतल। - अंशुः,—किरणः,—दीधितिः,—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा।—अत्यय, (पु०)—अपगमः, (पु०) जाड़े का अन्त।—कालः,—समयः, (पु०) जाड़े का मौसम।—घ्नः (पु०) अग्नि।

शिशिरं (न०) } १ ओस। कोहरा। कोहासा। २
शिशिर (पु०) } जाड़े का मौसम। (माघ और फागुन) ३ ठंडक। शीतलता।

शिशुः (पु०) १ बच्चा। बालक। २ किसी जानवर का बच्चा। ३ बालक जो ८ और १६ वर्ष की अवस्था के बीच हो।—क्रन्दः (पु०)—क्रन्दनं, (न०) बच्चे का रुदन।—गन्धा, (स्त्री०) मल्लिका। मोतिया।—पालः, (पु०) चेदि देश का एक राजा, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।—मारः, (पु०) सूँस नामक जलजन्तु।—वाहकः,—वाह्यकः, (पु०) जंगली बकरा।

शिशुकः (पु०) १ बच्चा। २ किसी जानवर का बच्चा। ३ वृक्ष। ४ सूंस।

शिश्नं } (न०) लिंग। जननेन्द्रिय।
शिस्नं }

शिश्विदान (वि०) १ सदाचारी। पुण्यात्मा। धर्मात्मा। २ दुष्टात्मा। पापी। पापात्मा।

शिष् (धा० प०) [शेषति] घायल करना। मार डालना।

शिष्ट (व० कृ०) १ बचा हुआ। बचा खुचा। २ आज्ञा दिया हुआ। आदेश किया हुआ। ३ सिखाया हुआ। शिक्षित। नियमाधीन किया हुआ। ४ शालीन। आज्ञाकारी। ५ बुद्धिमान। विद्वान। ६ पुण्यात्मा। प्रतिष्ठित। ७ शान्त। धीर। ८ मुख्य। प्रधान। उत्कृष्टतर। उत्तम। प्रसिद्ध। प्रख्यात। ९ वेद के वचनों पर विश्वास रखने वाला। अच्छी समझ वाला। १० अच्छे स्वभाव और आचरण वाला। आचार व्यवहार में निपुण। सुशील। ११ सभ्य। सज्जन। भला आदमी।—आचारः, (पु०) बुद्धिमानों का आचरण। २ अच्छा स्वभाव। अच्छा आचरण।—सभा,(स्त्री०) राजसभा। राज्यपरिषद्।

शिष्टः (पु०) १ प्रसिद्ध या प्रख्यात पुरुष। २ बुद्धिमान जन। ३ मंत्री। वज़ीर। मशवरा देने वाला।

शिष्टि (स्त्री०) १ अनुशासन। शासन। २ आदेश। आज्ञा। ३ दण्ड। सज़ा।

शिष्यः (पु०) १ अन्तेवासी। विद्यार्थी। शागिर्द। २ क्रोध। रोष।—परम्परा, (स्त्री०) शिष्यानुक्रम।—शिष्टिः, (स्त्री०) शिष्य का सुधार।

शिह्लः } (पु०) शिलारस नामक गन्धद्रव्य।
शिह्लकः }

शी (धा० आ०) [शेते, शयित] १ लेटना। पड़ना। आराम करना। विश्राम करना। २ सोना।

शी (स्त्री०) १ निद्रा। आराम। शान्ति।

शीक् (धा० आ०) [शीकते] १ जल से तर करना। (पानी) छिड़कना। २ धीरे धीरे गमन करना। (उ०—शीकति, शीकयति—शीकयते] १ क्रोध करना। २ नम करना। तर करना।

शीकरः (पु०) १ जलकण। पानी की बूँद। २ वायु द्वारा उत्क्षिप्त जल विन्दु। वर्षा की फुआर। तुषार। ओस। शबनम।

शीकरं (न०) १ सरल वृक्ष। २ गन्धाविरोजा।

शीघ्र (वि०) १ अविलम्ब। चटपट। तुरन्त। जल्द। २ वह अन्तर जो पृथिवी के दो भिन्न भिन्न स्थानों से ग्रहों के देखने में होता है।—कारिन्, (वि०) फुर्त्तीला। जल्दी करने वाला।—कोपिन्, (वि०) जल्दी गुस्सा होने वाला। चिड़चिड़ा।—चेतन, (पु०) कुत्ता।—बुद्धिः (वि०) तीक्ष्णबुद्धि वाला।—लंघन (वि०) तेज़ जाने वाला। तेज़ चलने वाला।—वेधिन्, (पु०) अच्छा निशाने वाला। अच्छा बाणवेधी।

शीघ्रं (अव्यया०) जल्दी से। फुर्ती से।

शीघ्रिन् (वि०) फुर्त्तीला। तेज़।

शीघ्रिय (वि०) तेज़।

शीघ्रियः (पु०) १ विष्णु। २ शिव। ३ बिल्लियों की लड़ाई।

शीघ्रियं (न०) तेज़ी। फुर्त्ती।

शीत् (अव्यया०) १ सहसा आनन्दोद्रेक या भयोद्रेक व्यञ्जक अव्यय विशेष। मैथुन के समय की सिसकारी।—कारः,—कृत्, (पु०) सिसकारी।

शीत (वि०) १ ठंडा। सर्द। शीतल। २ सुस्त। काहिल। सदा ऊँघने वाला। ३ मूर्ख। कुन्दज़हन।

मन्दबुद्धि।—अंशुः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर।—अदः, (पु०) दाँतों के मसूढ़ों का एक रोग ।—अद्रिः, (पु०) हिमालय पहाड़ । —अश्मन्, (पु०) चन्द्रकान्त मणि।—आर्त, (वि०) शीत से पीड़ित । थरथराता हुआ । —उत्तमं, (न०) जल ।—कालः, (पु०) शीत ऋतु । जाड़े का मौसम ।—कृच्छ्रः, (पु०)—कृच्छ्रं, (न०) मिताचरा के अनुसार एक प्रकार का व्रत जिसमें तीन दिन तक ठंडा जल, तीन दिन तक ठंडा दूध और ३ दिन तक ठंडा घी पीकर और ३ दिन तक बिना कुछ खाए रहना पड़ता है ।—गन्धं, (न०) सफेद चन्दन ।—गु, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर।—चम्पकः,(पु०) १दीपक । २ आईना । दर्पण ।—दीधितिः, (पु०) चन्द्रमा । —पुष्पः (पु०) सिरिस वृक्ष । - पुष्पक, (न०) शैलेय । छरीला ।—प्रभः, (पु०) कपूर ।—भानुः, (पु०) चन्द्रमा ।—भीरुः, मल्लिका । मोतिया।—मयूखः,—मरीचिः,—रश्मि', (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—रम्यः, (पु०) दीपक । —रुच्, (पु०) १ चन्द्रमा ।—वल्कः, (पु०) उदुम्बर या गूलर का पेड़ ।—वीर्यकः (पु०) वट वृक्ष । बरगद का पेड़।—शिवः, (पु०) शमी वृक्ष ।—शिवं, (न०) १ सेंधा निमक । २ सोहागा।—शूक, (पु०) जवा । जौ । यव । —स्पर्श, (वि०) ठंडा । शीतल ।

शीतं (न०) १ ठंडक सर्दी । शीतलता । २ जल । ३ दालचीनी ।

शीतः (पु०) १ सरपत । नरकुल । २ नीम का पेड़ । सर्दी का मौसम । ४ कपूर ।

शीतक (वि०) शीतल । ठंडा ।

शीतकः (पु०) १ कोई भी शीतल वस्तु । २ जाड़ा । जाड़े का मौसम । ३ सुस्त या काहिल जन । ४ प्रसन्न । वह मनुष्य जिसे किसी प्रकार की चिन्ता न हो । ५ बिच्छू । बीछी ।

शीतल (वि०) ठंडा । सर्द ।—कन्दः, (पु०) चम्पा का पेड़ ।—जलं, (न०) कमल ।—प्रदः, (पु०) —प्रदं, (न०) चन्दन —षष्ठी, (स्त्री०) माघ शुक्ला छठ ।

शीतलं (न०) १ ठंडक । शीतलता । २ जाड़े का मौसम । ३ शैलेय । शिलारस । ४ सफेद चन्दन । ५ मोती । ६ तूतिया । ७ कमल । ८ वीरण ।

शीतलः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ तारपीन । ४ चम्पा का पेड़ । ५ जैनियों का व्रत विशेष ।

शीतलकं (न०) सफेद कमल ।

शीतला (स्त्री०) १ विस्फोटक रोग । चेचक । २ इस नाम की देवी जिनका वाहन खर है ।

शीतली (स्त्री०) चेचक । माता । वसन्त रोग ।

शीता देखो सीता ।

शीतालु (वि०) जाड़े का मारा हुआ । जाड़े से काँपता हुआ ।

शीत्य देखो सीत्य ।

शीधु (पु० न०) १ सुरा । शराब । मदिरा । २ अंगूरी शराब । द्राक्षासव ।—गन्ध., (पु०) बकुल वृक्ष । –पः, (पु०) शराबी । मदिरापान करने वाला ।

शीन (वि०) गाढ़ा । जमा हुआ ।

शीनः (पु०) १ मूर्ख । जड़बुद्धि वाला । २ अजगर सर्प ।

शीभ् (धा० आ०) [शीभते] १ डींगे मारना । २ कहना ।

शीभ्यः (पु०) १ बैल । २ शिव ।

शीर. (पु०) बड़ा सर्प ।

शीर्ण (व० कृ०) १ कुम्हलाया हुआ । मुर्झाया हुआ । सड़ा हुआ । गला हुआ । २ शुष्क । सूखा । ३ टुकड़े टुकड़े । टूटा फूटा । ४ लटा । दुबला । —अंघ्रिः, —पादः, (पु०) १ यमराज । २ शनिग्रह ।—पर्ण, (न०) कुम्हलाया हुआ पत्ता । —पर्णः, (पु०) नीम का पेड़ । –वृन्तं, (न०) कलींदा । तरबूज़ । हिंगवाना ।

शीर्णि (न०) एक गन्ध द्रव्य ।

शीर्वि (वि०) नाशक । अनिष्टकारी । हानिकारी ।

शीर्षं (न०) १ सिर। २ काला अगर।—आमयः, (पु०) सिर का कोई भी रोग।—छेदः, (पु०) सिर का काट डालना।—छेद्य, (वि०) सिर काट डालने योग्य।—रक्षकं (न०) न्वूंड। शिरस्त्राण।

शीर्षकं (न०) १ सिर। २ खोपड़ी। ३ शिरस्त्राण। ४ टोपी। साफा। पगड़ी। ५ फैसला। न्याय का परिणाम। दण्डाज्ञा।

शीर्षकः (पु०) १ राहु।

शीर्षण्य. (पु०) साफ और बिना उलके पुलके केश।

शीर्षण्यं (न०) १ शिरस्त्राण। २ टोपी। टोप।

शीर्षन् (न०) सिर।

शील् (धा० प०) [शीलति] १ ध्यान करना। २ पूजन करना। अर्चन करना। ३ अभ्यास करना। [उ०—शीलयति—शीलयते] १ अर्चन करना। पूजा करना। २ अभ्यास करना। अध्ययन करना। आवृत्ति करना। मनन करना। ३ धारण करना। पहनना। ४ भेंट करना।

शीलं (न०) १ स्वभाव। लक्षण। सम्मान। झुकाव। आदत। वान। २ आचरण। चालचलन। ३ अच्छा स्वभाव। ४ सदाचरण। सदाचार। ५ सौन्दर्य। सुन्दररूप।—खण्डनं, (न०) सदाचार का नाश करना।—धारिन्, (पु०) शिव जी।—वञ्चना (स्त्री०) सदाचार का नाश करना।

शीलः (पु०) बड़ा साँप।

शीलनं (न०) १ अभ्यास। सम्मान करण। २ धारण करण।

शीलित (व० कृ०) १ अभ्यास किया हुआ। २ धारण किया हुआ। पहिना हुआ। बसा हुआ। ४ निपुण। पटु। ५ सम्पन्न। युक्त।

शीवन् (पु०) अजगर सर्प।

शुंशुमारः (पु०) शिशुमार। सुइस।

शुक् (धा० प०) [शोकति] जाना।

शुकं (न०) १ वस्त्र। २ शिरस्त्राण। ३ पगड़ी। साफा। ४ कपड़े का दामन। अंचल।—अदन., (पु०) अनार का पेड़।—तरुः,—द्रुमः, (पु०) सिरिस का पेड़।—नासिका, (वि०) तोते की चोंच जैसी नाक।—पुच्छः, (पु०) गन्धक।—पुष्पः,—प्रियः, (पु०) सिरिस का पेड़।—पुष्पा, (स्त्री०) १ थुनेर। २ अगस्त का पेड़।—वल्लभः. (पु०) अनार। वाहः, (पु०) कामदेव।

शुकः (पु०) १ तोता। सुग्गा। २ सिरिस का पेड़। ३ व्यास के एक पुत्र का नाम।

शुक्त (व० कृ०) १ चमकीला। पवित्र स्वच्छ। २ खट्टा। अम्ल। ३ कड़ा। कठोर। ४ संयुक्त। श्लिष्ट। मिला हुआ। ५ निर्जन। सुनसान। उजाड़।

शुक्तं (न०) १ माँस। २ काँजी। ३ एक प्रकार का खट्टा पेय पदार्थ।

शुक्तिः (स्त्री०) १ सीप। २ शख। ३ घोंघा। ४ खोपड़ी का भाग विशेष। ५ घोड़े की गरदन या छाती की भौंरी। ६ गन्ध द्रव्य विशेष। ७ दो कर्ष या चार तोले की एक तौल।—उद्भवं,—जं, (न०) मोती। मुक्ता।—पुटं, (न०)—पेशी, (स्त्री०) वह सीप जिसमें मोती निकलता है।—वधू. (स्त्री०) सीप।—बीजं, (न०) मोती।

शुक्तिका (स्त्री०) सीप, जिसमें मोती निकले।

शुक्रः (पु०) १ शुक्र ग्रह। २ दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य। ३ ज्येष्ठ मास का नाम। ४ अग्नि देव का नाम।

शुक्रं (न०) १ पुरुष का वीर्य या धातु। २ किसी भी वस्तु का सार या निष्कर्ष।—अङ्गः, (पु०) मोर।—कर, (वि०) धातु सम्बन्धी।—करः, (पु०) मज्जा।—वारः,—वासरः,(पु०) भृगुवार। शुक्रवार।—शिष्यः, (पु०) दैत्य। दानव।

शुक्रल } (वि०) १ वीर्य सम्बन्धी। २ शुक्र या पीप
शुक्रिय } को बढ़ाने वाला।

शुक्ल (वि०) १ सफेद। २ स्वच्छ। चमकीला।—अङ्गः,—अपाङ्गः, (पु०) मोर।—उपला, (स्त्री०) मिश्री।—कण्टकः (पु०) पक्षी विशेष। मुर्गाबी। जलकाक।—कर्मन्, (वि०)

पुण्यात्मा । धर्मात्मा ।—कुष्ठ, (न०) सफेद कोढ़ ।—धातुः, (पु०) चाक । खड़िया मिट्टी ।—पक्ष, (पु०) उजियाला पाख ।—वायस, (पु०) सारस ।

शुक्लं (न०) १ चाँदी । २ नेत्ररोग विशेष जो आँखों के सफेद तल या डेले पर होता है । ३ ताज़ा मक्खन । ४ खट्टी काँजी या माँडी ।

शुक्लः (पु०) १ सफेद रङ्ग । २ शुक्ल पक्ष । ३ शिव का नाम ।

शुक्लक (वि०) सफेद ।

शुक्लकः (पु०) १ सफेद रङ्ग । २ शुक्लपक्ष । उजियाला पाख ।

शुक्लल (वि०) सफेद । उज्ज्वल ।

शुक्ला (स्त्री०) १ सरस्वती । २ मिश्री । कन्द । ३ गोरे वर्ण की स्त्री । ४ काकोली पौधा ।

शुक्लिमन्, (पु०) सफेदी ।

शुक्तिः (पु०) । १ पवन । हवा । २ चमक । दीप्ति । ३ आग ।

शुंगः } (पु०) १ वटवृक्ष । बरगद का पेड़ । २ आँवला
शुङ्गः } ३ जौ या अनाज की बाल । सुद्दा । पाकड़ का पेड़ ।

शुंगा } (स्त्री०) १ कली का कोप २ जवा या अनाज
शुङ्गा } की बाल ।

शुंगिन् }
शुङ्गिन् } (पु०) १ वटवृक्ष । बरगद का पेड़ ।

शुच् (धा० प०) [शोचति] १ शोक करना । दुःखी होना । विलाप करना । २ पछताना । खेद करना ।

शुच् }
शुचा } (स्त्री०) खेद । दुःख । सन्ताप । पीड़ा ।

शुचि (वि०) १ साफ़ । विशुद्ध । स्वच्छ । २ सफेद । ३ चमकीला । ४ पुण्यात्मा । धर्मात्मा । जो भ्रष्ट न हो । ५ पवित्र । ६ ईमानदार । निष्कपट । सच्चा । ७ ठीक । सही । ठीक ठीक ।—द्रुम, (पु०) वटवृक्ष ।—मणिः, (पु०) स्फटिक । बिल्लौर पत्थर ।—मल्लिका, (स्त्री०) नेवारी । नवमल्लिका ।—रोचिस्, (पु०) चन्द्रमा ।—व्रत (वि०) पूत । पवित्र । पुण्यात्मा ।—स्मित, (वि०) मधुर मुसक्यान वाला ।

शुचि (पु०) १ सफेद रङ्ग । २ विशुद्धता । सफाई । ३ निर्दोषता । भलाई । पुण्य । ईमानदारी । शुद्धता । सहीपन । ५ ब्रह्मचर्य । ६ पवित्रजन । ७ ब्राह्मण । ८ ग्रीष्मऋतु । ९ ज्येष्ठ और आषाढ़ का महीना । १० ईमानदार और सच्चा मित्र । ११ सूर्य । १२ चन्द्रमा । १३ अग्नि । १४ शृङ्गार रस । १५ शुक्र ग्रह । १६ चित्रक वृक्ष ।

शुचिस् (न०) चमक । प्रकाश । दीप्ति । आभा ।

शुच्य् (धा० प०) [शुच्यति] १ स्नान करना । मार्जन करना । २ निचोड़ना । ३ (अर्क का) खींचना । मथना ।

शुटीरः (पु०) वीर । नायक ।

शुठ् (धा० प०) [शोठति] १ रोका जाना । रुकावट डाला जाना । २ लँगड़ाना । ३ बचाव करना । समुहाना । (उ०—शोठयति-शोठयते) सुस्त होना ।

शुंठ् } (धा० प० उ०) [शुण्ठति, शुण्ठयति—
शुण्ठ् } शुण्ठयते] १ साफ करना । २ सूखना ।

शुंठि (स्त्री०) }
शुण्ठि (स्त्री०) }
शुंठी (स्त्री०) }
शुण्ठी (स्त्री०) } सोंठ ।
शुंठ्य (न०) }
शुण्ठ्य (न०) }

शुंडः } (पु०) १ मदमाते हाथी का मद जो उसकी
शुण्डः } कनपुटी से चूता है । २ हाथी की सूँड ।

शुंडकः }
शुण्डकः } (पु०) कलवार । शराब खींचनेवाला ।

शुंडिन् } १ कलवार । शराब बनाने वाला । २
शुण्डिन् } हाथी ।—मूषिका (स्त्री०) छछूँदर ।

शुतुद्रि }
शुतुद्रु } (स्त्री०) सतलज नदी ।

शुद्ध (व० कृ०) १ पवित्र । स्वच्छ । विशुद्ध । २ निर्दोष । ३ सफेद । चमकीला । ४ बेदाग़ ५ भोलाभाला । आडम्बररहित । ६ ईमानदार । धर्मात्मा । ७ सही । ठीक । दोषरहित । शुद्ध । ८ निर्दोष समझ कर बरी किया हुआ । ९ केवल ।

सिर्फ़। १० अमिश्रित। बिना मिलावट का। ११ असमान। १२ अधिकार प्राप्त। १३ पैनाया हुआ।

शुद्धं (न०) १ कोई भी वस्तु जो विशुद्ध हो। २ विशुद्धात्मा। ३ सेंधा निमक ४। काली मिर्च। —अन्तः, (पु०) ज़नानख़ाना। राजा का रनवास। अन्तःपुर।—ओदनः (=शुद्धोदन.) (पु०) बुद्धदेव के पिता का नाम। —चैतन्यं, (न०) विशुद्ध बुद्धि।—जंघः, (पु०) गधा।—धी,-भाव,-मति, (वि०) विशुद्ध मन का। आडम्बररहित। ईमानदार।

शुद्धः (पु०) शिव जी।

शुद्धिः (स्त्री०) १ विशुद्धता। सफाई। २ चमक। आभा। ३ पवित्रता। प्रायश्चित्त। ५ प्रायश्चित्तात्मककर्म। ६ अदायगी। भुगतान। ७ बदला। ८ रिहाई। छुटकारा। ९ सत्य। १० संशोधन। संस्कार। ११ बाकी निकालने की क्रिया। १२ दुर्गादेवी का नाम।—पत्रं, (न०) १ भूल संशोधन सूची। २ २ प्रायश्चित्त द्वारा पापनिर्मुक्त होने का प्रमाण पत्र।

शुध् (धा० प०) [शुध्यति-शुद्ध] १ शुद्ध हो जाना। पवित्र होना। २ अनुकूल होना। ३ संशयों को निवृत्त करना।

शुन् (धा० प०) [शुनति] जाना।

शुनःशेपः } (पु०) अजीगर्तपुत्र एक ब्राह्मण का नाम।
शुनःशेफः } इसका नाम ऐतरेय ब्राह्मण में आया है।

शुनकः (पु०) १ भृगुवंशीय एक ऋषि का नाम। २ कुत्ता।

शुनाशीरः }
शुनासीरः } (पु०) १ इन्द्र। २ उल्लू।

शुनिः (पु०) कुत्ता।

शुनी (स्त्री०) कुतिया।

शुनीरः (पु०) अनेक कुतिया।

शुंध् } (धा० उ०) [शुन्धति—शुन्धते, शुन्धयति-
शुन्ध् } शुन्धयते] १ पवित्र होना। स्वच्छ होना। २ साफ करना। पवित्र करना।

शुध्युः (पु०) पवन। हवा।

शुभ् (धा० आ०) [शोभते] १ चमकना। सुन्दर लगना। २ लाभदायक प्रतीत होना। ३ उपयुक्त होना। ४ सजाना।

शुभ (वि०) १ चमकीला। चमकदार। २ सुन्दर। ख़ूबसूरत। ३ शुभ। कल्याणप्रद। सुखी। भाग्यवान। ४ प्रसिद्ध। नेक। धर्मात्मा। —अदः, (पु०) महादेव।—अङ्ग, (वि०) ख़ूबसूरत। सुन्दर।—अङ्गी, (स्त्री०), १ सुन्दरी स्त्री। २ कामदेव पत्नी रति।—अपाङ्गा, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।—अशुभं, (न०) सुख दुःख। भलाबुरा।—आचार, (वि०) पुण्यात्मा। —आनना, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।—इतर, (वि०) १ बुरा। ख़राब। २ अशुभ।—उदर्क, (वि०) वह जिसका अन्त शुभ हो या आनन्दमय हो। —कर, (वि०) शुभ। मङ्गलकारी।—कर्मन्, (न०) पुण्यकार्य। गन्धवाला। बोल नामक गन्धद्रव्य।—ग्रहः, (पु०) अच्छाग्रह। अच्छा फल देनेवाला ग्रह।—दः, (पु०) पीपल का वृक्ष। —दन्ती, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके सुन्दर दाँत हों। —लग्नः, (पु०)—लग्नं, (न०) अच्छा मुहूर्त। —वार्ता, (स्त्री०) शुभ संवाद। ख़ुशख़बरी। —वासनः, (पु०) मुँह को ख़ुशबूदार करने वाला गन्धद्रव्य विशेष।—शंसिन्, (वि०) शुभ या मङ्गलद्योतक।—स्थली (स्त्री०) १ वह मण्डप जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञभूमि। २ मङ्गल भूमि। पवित्र स्थान।

शुभं (न०) १ कल्याण। मङ्गल। सौभाग्य। प्रसन्नता। समृद्धि। २ आभूषण। ३ जल। पानी। ४ गन्धकाष्ठ विशेष।

शुभंयु (वि०) १ शुभ। २ आनन्दवर्द्धक।

शुभंकर }
शुभङ्कर } १ (वि०) कल्याणकारी। २ आनन्दवर्द्धक।

शुभंभावुक }
शुभम्भावुक } (वि०) सुसज्जित। भूषित।

शुभा (स्त्री०) १ आभा। कान्ति। २ सौन्दर्य। ३ कामना। अभिलाष। ४ गोरोचन। ५ शमी

वृक्ष। ६ देवताओं की सभा। ७ दूर्वा। दूब। ८ प्रियंगुलता।

शुभ्र (वि०) १ कान्तिमान्। सुन्दर। २ सफेद। उज्ज्वल।—अंशुः,—करः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा।

शुभ्रं (न०) १ चाँदी। २ अबरक। ३ सेंधानिमक। ४ तूतिया।

शुभ्रः (पु०) १ सफेद रंग। २ चन्दन।

शुभ्रा (स्त्री०) १ गंगा। २ स्फटिक। ३ वंशलोचन।

शुभ्रिः (पु०) ब्रह्मा।

शुंभ् (धा० प०) [शुंभति] १ चमकना। २ बोलना। ३ अनिष्ट करना। घायल करना।

शुंभ } शुम्भः } (पु०) एक दैत्य जिसका वध दुर्गा देवी ने किया था।—घातिनी,—मर्दिनी (स्त्री०) दुर्गा का नाम।

शुर् } शूर् } (धा० आ०) [शूर्यते] १ घायल करना। वध करना। २ दृढ़ करना। रोकना। थामना।

शुल्क् (धा० उ०) [शुल्कयति—शुल्कयते] १ पाना। २ देना। अदा करना। ३ उत्पन्न करना। ४ कहना। वर्णन करना ५ त्यागना। छोड़ देना।

शुल्कं (न०) } शुल्कः (पु०) } १ कर। महसूल। चुंगी। (विशेष) १ कर। (घाट की उतराई का, महसूल। २ लाभ। मुनाफा। ३ साई। ४ वह मूल्य जो कन्या को ख़रीदने के लिये उसके पिता को दिया जाय। ५ विवाह के समय की भेंट। ६ विवाह का दैलदायजा। ७ वह भेंट जो वर अपनी दुलहिन को दे।—ग्राहक,—ग्राहिन् (वि०) कर उगाहने वाला।—द, (पु०) विवाहोपलक्ष्य में भेंट देने वाला।

शुल्लं (न०) १ रस्सी। कमानी। २ ताँबा।

शुल्व् } शुल्ब् } (धा० उ०) [शुल्वयति शुल्बयति, शुल्वयते, शुल्बयते] १ देना। दान करना। २ भेजना। पठाना विसर्जन करना। विदा करना। नापना।

शुल्वं } शुल्बं } (न०) १ रस्सा। डोरी। २ ताँबा। यज्ञीय कर्म विशेष। ४ जल का सामीप्य या वह स्थान जो जल के समीप हो। ५ नियम। विधि। आदेश।

शुल्वा } शुल्वी } (स्त्री०) देखो शुल्व।

शुश्रु (स्त्री०) माता।

शुश्रूषक (वि०) आज्ञाकारी।

शुश्रूषक (पु०) नोकर। सेवक।

शुश्रूषणं (न०) } शुश्रूषणा (स्त्री०) } १ सुनने का अभिलाप २ सेवा। परिचर्या। ३ कर्त्तव्य-परायणता। आज्ञापालन करने की क्रिया।

शुश्रूषा (स्त्री०) १ श्रवण करने का अभिलाप। २ सेवा। चाकरी। ३ आज्ञावर्तित्व। आज्ञापालन। कर्त्तव्यपरायणता। ४ सम्मान। प्रतिष्ठा। ५ कथन। उक्ति।

शुश्रूषु (वि०) १ सुनने का अभिलाषी। २ सेवा करने की कामना रखने वाला ३ आज्ञाकारी।

शुष् (धा० प०) [शुष्यति, शुष्क] १ सूख जाना। २ कुम्हला जाना। मुरझा जाना।

शुष. (पु०) } शुषी (स्त्री०) } १ सुखाने की क्रिया। २ भूमिरन्ध्र।

शुषिः (स्त्री०) १ सुखाने की क्रिया। २ छेद। ३ सर्प के विषदन्त का खोखला भाग।

शुषिर (वि०) सूराखों से पूर्ण। छिद्रदार।

शुषिर (न०) १ सूराख। २ अन्तरिक्ष। ३ वह बाजा जो फूंक से या हवा देकर बजाया जाय।

शुषिरः (पु०) १ अग्नि। २ चूहा। मूस।

शुषिरा (स्त्री०) १ नदी। २ गन्धद्रव्य विशेष। ३ लौंग।

शुषिलः (पु०) पवन। हवा।

शुष्क (वि०) १ सूखा। २ भुना हुआ। ३ कृश। दुबला। बनावटी। झूठा। ५ रीता। व्यर्थ। निकम्मा। ६ अकारण। कारण रहित। आधार-शून्य। ७ कटु। बुरा लगने वाला।—अङ्गी, (स्त्री०) छिपकली। बिसतुइया।—कलह, (पु०) निरर्थक झगड़ा।—वैरं, (न०) अका-

रक्त शत्रुता।—व्रणां, (न०) फोड़े या छाप का निशान।

शुष्कलं (न०)
शुष्कलः (पु०) } १ सूखा मांस। मांस।

शुष्मं (न०) १ पराक्रम। बल। २ दीप्ति। आभा।

शुष्मः (पु०) १ सूर्य। २ आग। ३ पवन। ४ पक्षी। चिड़िया।

शुष्मन् (पु०) अग्नि। (न०) १ बल। पराक्रम। २ आभा। दीप्ति।

शूकं (न०)
शूकः (पु०) } १ जवा की बाल। भुट्टा। २ सुअर का बाल। कड़ा बाल। ३ नोंक। पैनी नोंक। ४ कोमलता। दयालुता। ५ एक प्रकार का विषैला कीड़ा।—कीट,—कीटकः (पु०) एक जाति का रोएँदार कीड़ा।—धान्यं, (न०) वह अन्न जिसके दाने बालों या सींकों में लगते हैं, जैसे गेहूँ, जवा आदि।—पिंडि,—पिण्डी, (स्त्री०)—शिंबा,—शिंबिका,—शिंबी, (स्त्री०) कपिकच्छु। किंवाछ। कौंछ। दोंदिया।

शूकक. (पु०) अनाज विशेष। कोमलता। दयालुता।

शूकर (पु०) शूकर। सूअर।—इष्टः, (पु०) मुस्ता। कसेरू।

शूकलः (पु०) चमकने या भड़कने वाला घोड़ा।

शूद्र (पु०) स्मृत्यनुसार अथवा हिन्दूधर्म शास्त्रानुसार चारवर्णों में से चौथा और अन्तिम वर्ण।—उदकं, (न०) वह जल जो शूद्र के छूने से भ्रष्ट हो गया हो।—प्रिय., (पु०) पलाण्डु। प्याज।—प्रेष्यः, (पु०) वह ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य जो किसी शूद्र की नौकरी या सेवा करता हो।—याजकः, (पु०) वह ब्राह्मण जो शूद्र को यज्ञ कराता हो या उसके लिये यज्ञ करता हो।—वर्ग, (पु०) शूद्र जाति।—सेवनं, (न०) शूद्र की सेवा।

शूद्रकः (पु०) विदिशा नगरी का एक राजा और मृच्छकटिक का रचयिता महाकवि।

शूद्रा (स्त्री०) शूद्रजाति की स्त्री।—भार्यः, (पु०) वह पुरुष जिसकी स्त्री शूद्र जाति की हो।—वेदनं, (न०) शूद्रा स्त्री के साथ विवाह करने वाला।—सुतः, (पु०) शूद्र स्त्री का वह पुत्र जिसका पिता किसी भी जाति का हो।

शूद्राणी
शूद्री } (स्त्री०) शूद्र की पत्नी।

शून (व० कृ०) १ सूजा हुआ। बढ़ा हुआ। समृद्ध।

शूना (स्त्री०) १ तालु के ऊपर की छोटी जीभ। २ बूचड़ख़ाना। कसाईख़ाना। ३ गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजाने अनेक जीवों की हत्या होती हो; जैसे चूल्हा, चक्की, पानी का पात्र आदि या गृहस्थी के वे उपस्कर जिनसे जीवहिंसा होती हो। वे पाँच ये बतलाये गये हैं—यथा चूल्हा चक्की, झाड़ू, उखली और जलपात्र।

शून्य (वि०) १ रीता। खाली। २ अभाव राहित्य। ३ निर्जन। एकान्त। ४ उदास। रंजीदा। ५ रहित। अभावयुक्त। ६ अनासक्त। विरक्त। ७ अकपट। सरल। सीधासादा। ८ ऊटपटांग। अर्थशून्य। ९ नंगा। परिच्छद रहित।—मध्यः, (पु०) पोला नरकुल।—वादः, (पु०) बौद्धों का एक सिद्धान्त जिसमें ईश्वर या जीव किसी को कुछ भी नहीं मानते।—वादिन्. (पु०) १ नास्तिक। २ बौद्ध।

शून्यं (न०) १ खाली स्थान। २ आकाश। ३ शून्य। बिंदी। ४ अभाव। अनस्तित्व।

शून्या (स्त्री०) पोली नरकुल। २ बांझ स्त्री।

शूर् (धा० उ०) [शूरयति,—शूरयते] बहादुरी दिखाना। वीरता प्रदर्शित करना। २ जी खोलकर उद्योग करना।

शूर (वि०) बहादुर। वीर।

शूरः (पु०) १ वीर। भट। योद्धा। २ शेर। ३ शूकर। ४ सूर्य। ५ साल वृक्ष; ६ श्रीकृष्ण के पितामह का नाम।—कीटः, (पु०) तुच्छ योद्धा।—मानं, (न०) अहंकार। अकड़। सेन, (पु०) (बहुवचन) मथुरामण्डल या उसके अधिवासी।

शूरणः (पु०) ज़मीकंद। सूरन।

शूरंमन्य (वि०) वह पुरुष जो अपने को शूर लगाता हो।

शूर्पं (न०) } सूप। (पु०) दो द्रोण की एक
शूर्पः (पु०) } तौल।—कर्णः, (पु०) हाथी। —णखा,—णखी, (स्त्री०) वह जिसके नाखून सूप जैसे हों। रावण की बहिन का नाम। —वात., (पु०) सूप से निकाली हुई हवा। —श्रुतिः, (पु०) हाथी।

शूर्पी (स्त्री०) १ छोटा सूप। २ सूपनखा का नामान्तर।

शूर्मः } (पु०) [स्त्री०—शूर्मिका, शूर्मी] १
शूर्मिः } लोहे की बनी मूर्ति। २ निहाई।

शूल् (धा० प०) [शूलति] १ बीमार होना। २ बहुत शोर करना। ३ गड़बड़ी करना।

शूलं (न०) } १ प्राचीन कालीन एक अस्त्र, जो
शूलः (पु०) } प्रायः बरछे के आकार का होता था। सूली जिससे प्राचीन काल में लोगों को प्राणदण्ड दिया जाता था। ३ लोहे की सींक जिस पर लपेट कर कवाब भूनी जाती है। ४ कोई भी उग्र पीड़ा या दर्द। ५ वाय गोले का दर्द। ६ गठिया। बतास। ७ मृत्यु। ८ झंडा। पताका। —धन्वन्,—धर,—धारिन्,—धृक्,—पाणिः,—भृत्, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—शत्रुः, (पु०) रेंड का रूख।—स्थ, (वि०) सूली दिया हुआ।—हंत्री, (स्त्री०) एक प्रकार का जौ।—हस्तः, (पु०) भाला धारी।

शूलकः (पु०) भड़कने वाला घोड़ा।

शूलाकृतं (न०) भुना हुआ गोश्त।

शूलिक (वि०) १ शूलधारी। २ वायु गोले से पीड़ित। (पु०) भालाधारी। २ खरगोश। ३ शिव जी का नामान्तर।

शूलिनः (पु०) १ भाण्डीर वृक्ष। २ गूलर का पेड़। उदुम्बर।

शूल्य (वि०) १ सींक पर भुना हुआ। २ सूली पाने का अधिकारी।

शूल्यं (न०) भुना हुआ गोश्त।

शूष् (धा० प०) [शूषति] १ उत्पन्न करना।

शृकालः (पु०) गीदड़।

शृगालः (पु०) १ गीदड़। सियार। २ दग़ाबाज़। धोखेबाज़। छलिया। कपटी। ३ भीरु। डरपोंक। ४ कटुभाषी। बदमिज़ाज़ ५ कृष्ण का नामान्तर —केलिः (पु०) एक प्रकार का बेर या उन्नाव। —योनिः. (पु०) अगले जन्म में शृगाल के शरीर में उत्पत्ति।—रूपः, (पु०) शिव जी का रूपान्तर।

शृगालिका } (स्त्री०) १ गीदड़ी। सियारिन। २
शृगाली } लोमड़ी। ३ भगदड़। पलायन।

शृङ्खलः (पु०) } १ लोहे की जंज़ीर। बेड़ी। २
शृङ्खला (स्त्री०) } जंज़ीर। ३ हाथी के पैर में बाँधने
शृङ्खलं (न०) } की जंजीर। ४ कमरपेटी। ५ जरीब नापने की जंज़ीर।—यमकं, (न०) एक प्रकार का अलंकार, जिसमें कथित पदार्थों का वर्णन शृङ्खला के रूप में सिलसिलेवार किया जाता है।

शृंखलकः, } (पु०) १ जंजीर। २ ऊंट।
शृङ्खलकः }

शृंखलित } (वि०)जंजीर में बंधा हुआ।
शृङ्खलित }

शृंगं, } (न०) १ सींग। २ पहाड़ की चोटी।
शृङ्गम् } भवन का सब से ऊँचा भाग। ३ ऊँचाई। आधिपत्य। ५ बालचन्द्र का शृङ्गाकार अग्रभाव। ६ चोटी या आगे निकला हुआ भाग। ७ सींग (भैंस आदि का) जो बजाया जाता है। ८ पिचकारी। ६ अनुराग का उद्रेक। १० चिन्ह। निशानी। ११ कमल।—उच्चयः (पु०) बड़ी ऊँची चोटी।—जः (पु०) तीर।—जं, (न०) अगर।—प्रहारिन्, (वि०) सींग मारने वाला। —प्रियः, (पु०) शिव का नामान्तर।—मोहिन्, (पु०) चंपा का वृक्ष।—वेरं, (न०) १ गंगातट पर के एक प्राचीन नगर का नाम जो आधुनिक मिर्जापुर के समीप था। २ अदरक।

शृंगकः (पु०) }
शृङ्गकः (पु०) } १ सींग। २ बालचन्द्र का शृङ्गा-
शृंगकं (न०) } कार अग्रभाग। ३ कोई नोकदार
शृङ्गकं (न०) } चीज़। ४ पिचकारी।

शृंगवत्, शृङ्गवत् (वि०) चोटीदार । शिखरदार । (पु०) पहाड़ ।

शृंगाटः, शृङ्गाटः, शृंगाटकः, शृङ्गाटकः (पु०) १ वह जगह जहाँ चार सड़कें मिलती हैं । चौराहा । चतुष्पथ । २ एक पौधे का नाम ।

शृंगाटं, शृङ्गाटं, शृंगाटकं, शृङ्गाटकं (न०) चतुष्पथ । चौराहा ।

शृंगारः, शृङ्गारः (पु०) साहित्य के अनुसार नौ रसों में से एक रस जो सब से अधिक प्रसिद्ध है । २ प्रेम । रसिकता । दाम्पत्य प्रेम । ३ सजावट । ४ मैथुन । ५ सेंदुर से बनाये हुए हाथी के ऊपर चिह्न । ६ चिह्न ।

शृंगारं, शृङ्गारं (न०) १ लौंग । २ सेंदुर । ३ अदरक । ४ सुगन्ध चूर्ण जो शरीर में मला जाय या खुशबू के लिए वस्त्र पर लगाया जाय । ५ काला अगर । —भूषणं, (न०) सेंदुर । सिंदूर ।—योनिः, (पु०) कामदेव ।—रसः, (पु०) प्रेमभाव ।—सहायः, (पु०) नर्म सचिव ।

शृंगारकं, शृङ्गारकं (न०) सेंदूर । सिंदूर ।

शृंगारकः, शृङ्गारकः (पु०) प्रेम । प्रीति ।

शृंगारित, शृङ्गारित (वि०) सजा हुआ । सँवारा हुआ । रसिक । रसिया । प्रेमासक्त ।

शृंगारिन्, शृङ्गारिन् (वि०) १ उत्तेजित प्रेमी । २ चुन्नी । लाल । ३ हाथी । ४ परिच्छद । पोशाक । ५ सुपारी का वृक्ष । ताम्बूल । पान का बीड़ा ।

शृंगिः, शृङ्गिः (पु०) १ आभूषण के लिये सोना । २ सिंगी मछली ।

शृंगिकं, शृङ्गिकं (न०) एक प्रकार का विष ।

शृंगिका, शृङ्गिका (स्त्री०) भोजपत्र का वृक्ष ।

शृंगिणः, शृङ्गिणः (पु०) भेड़ा । मेष ।

शृंगिणी, शृङ्गिणी १ गौ । २ मल्लिका । मोतिया ।

शृंगिन्, शृङ्गिन् (वि०) [स्त्री०—शृङ्गिणी] १ सींगवाला । २ चोटीदार । शिखर वाला । (पु०) १ पर्वत । २ हाथी । ३ वृक्ष । ४ शिव का नामान्तर । ५ शिव जी के एक गण का नाम ।

शृंगी, शृङ्गी १ वह सुवर्ण जो आभूषणों के बनाने के काम में आता है । २ एक प्रकार का जड़ । ३ एक प्रकार का विष । ४ शृंगी मछली ।—कनकं, (न०) सुवर्ण जिसके आभूषण बनाये जायँ ।

शृणिः (स्त्री०) अंकुश ।

शृत (व० कृ०) १ पकाया हुआ । रँधा हुआ । २ उबाला हुआ ।

शृध् (धा० आ०) [शर्धते] पादना । अपान वायु छोड़ना । [उ०—शर्धति—शर्धते] १ नम करना । भिगोना । २ प्रयत्न करना । ३ ग्रहण करना । पकड़ना । ४ काटना । चिढ़ाना ।

शृधुः (पु०) १ बुद्धि । २ गुदा । मलद्वार ।

शॄ (धा० प०) [शृणाति—शीर्ण] १ टुकड़े टुकड़े करना । २ चोटिल करना । ३ वध करना । ४ नाश करना ।

शेखरः (पु०) १ सिर का आभूषण । मुकुट । किरीट । सिर पर धारण की जाने वाली पुष्पमाला । २ चोटी । शृङ्ग । ३ श्रेष्ठता वाचक शब्द । ४ संगीत में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद ।

शेखरं (न०) लौंग ।

शेपः (पु०), शेपस् (न०), शेफः (पु०), शेफं (न०), शेफस् (न०) १ लिङ्ग । जननेन्द्रिय । अण्डकोश । २ पूंछ । दुम ।

शेफालिः, शेफाली, शेफालिका (स्त्री०) एक प्रकार का पौधा ।

शेमुषी (स्त्री०) समझदारी । बुद्धि ।

शेल् (धा० प०) १ जाना । २ कुचलना ।

शेवं (न०) १ लिङ्ग । जननेन्द्रिय । २ हर्ष । प्रसन्नता ।

शेवः (पु०) १ सर्प। साँप। २ लिंग। जननेन्द्रिय। ३ ऊँचाई। ऊँचान। ४ प्रसन्नता। ५ धन। सम्पत्ति। —धिः, (पु०) १ मूल्यवान खजाना। २ कुबेर की नवनिधियों में से एक।

शेवलं (न०) १ सिवार घास जो पानी में उगती है। एक पौधा विशेष।

शेवलिनी (स्त्री०) नदी।

शेवालः (पु०) देखो शेवाल।

शेष (वि०) वह जो कुछ भाग निकल जाने पर कट गया हो। बची हुई वस्तु। बाकी।

शेषं (न०) }
शेषः (पु०) } १ बचा हुआ। उच्छिष्ट। २ वह जो कुछ कहने से छोड़ दिया गया हो। ३ मुक्ति। छुटकारा। —(पु०) १ परिमाण २ समाप्ति। अन्त। ३ मृत्यु। मौत। ४ शेषनाग। अनन्त नाग। (न०) उच्छिष्ठ।—अन्नं, (न०) उच्छिष्ठ अन्न।—अवस्था, (स्त्री०) बुढ़ापा। —भागः, (पु०) बचत। बचा हुआ अंश। —रात्रिः, (पु०) रात का अन्तिम प्रहर।—शयनः,—शायिन्, (पु०) विष्णु के नामान्तर।

शैक्षः (पु०) १ वह विद्यार्थी जिसने वेद का एक अंग शिक्षा का अध्ययन किया हो या जिसने वेद पढ़ना आरम्भ ही किया हो। २ नौसिखिया।

शैक्षकः (पु०) शिक्षा में पटु। निपुण।

शैक्ष्यं (न०) विद्वत्ता। योग्यता।

शैघ्र्यं (न०) फुर्ती। तेज़ी।

शैत्यं (न०) ठंडक। शीतलता। इतनी ठंडक जिससे (जल आदि तरल पदार्थ) जम जाँय। ठिठुरन।

शैथिल्यं (न०) १ शिथिल होने का भाव। शिथिलता। ढिलाई। २ तत्परता का अभाव। सुस्ती। ३ दीर्घसूत्रता। ४ निर्बलता। भीरुता।

शैनेय (पु०) सात्यकि का नाम।

शैन्याः (पु० बहु०) शिनि के वंश वाले जो क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये थे।

शैव्य देखो शैब्य।

शैलं (न०) १ शिलारस। शैलेय। २ सोहागा। ३ रसौत। रसवत्। ४ शिलाजीत। -अग्रं, (न०) पर्वत शृङ्ग।

शैलः (पु०) १ पहाड़। पहाड़ी। चट्टान। बड़ा भारी पत्थर।—अटः, (पु०) १ पहाड़ी। जंगली। २ पुजारी। ३ शेर। ४ स्फटिक पत्थर। - अधिपः, —अधिराजः,—इन्द्र. —पतिः, -राजः, (पु०) हिमालय पर्वत के नामान्तर।—आख्यं, (न०) १ शैलरस। शिलाजीत।—गन्धं, (न०) चन्दन।—जं, (न०) १ शिलाजीत। २ राल। नफ़ता।—जा,—तनया,—पुत्री,—सुता, (स्त्री०) पार्वती का नामान्तर।—धन्वन्, (पु०) शिव जी का नाम। अग्रः, (पु०) कृष्ण जी का नामान्तर।—निर्यासः, (पु०) शिलाजीत।—पत्रः, (पु०) बिल्व या बेल का वृक्ष।—भित्ति, (स्त्री०) पत्थर काटने का औज़ार विशेष। पत्थर काटने की छैनी।—रन्ध्रं, (न०) गुफा। पहाड़ी कंदरा।—शिविरं, (न०) समुद्र।

शैलकं (न०) १ शिलाजीत। २ राल। नफ़ता।

शैलादिः (पु०) शिवजी का गण नन्दी।

शैलालिन् (पु०) नट। नृत्यक।

शैलिक्य (पु०) दंभी। पाखंडी। ठगावाज़। कपटी।

शैली (स्त्री०) १ लिखने का ढंग। वाक्यरचना का प्रकार। २ चाल। ढब। ढंग। ३ परिपाटी। तर्ज़। तरीका। ४ रीति। रस्म। प्रथा। रवाज़। ५ आचरण। चाल चलन।

शैलूषः (पु०) १ नट। नर्तक। नचैया। २ अभिनय करने वाला। नाटक खेलने वाला। ३ गंधर्वों का स्वामी। रोहित गण। ४ बेल का पेड़। ५ धूर्त।

शैलूषिकः (पु०) वह जो अभिनय करने का पेशा करता हो।

शैलेय (वि०) [स्त्री०—शैलेयी] १ पहाड़ी। २ चट्टान से उत्पन्न या निकला हुआ। ३ सख़्त। कड़ा। पथरीला।

शैलेयं (न०) १ शिलाजीत। २ गूगुल। ३ सेंधा निमक।

शैलेयः (पु०) १ सिंह। २ मधुमक्षिका।

शैल्य (वि०) पथरीला।

शैल्यं (न०) पथरीलापन। कड़ापन।

शैव (वि०) [स्त्री०—शैवी] शिव सम्बन्धी।

शैवं (न०) अष्टादश पुराणों में से एक।

शैव (पु०) १ शैव सम्प्रदाय। २ शैव सम्प्रदायी।

शैवलं (न०) पद्माक। पद्मकाष्ठ। पद्मास्व।

शैवलः (पु०) सिवार।

शैवलिनी (स्त्री०) नदी।

शैवाल देखो शैवलः।

शैव्य (पु०) १ कृष्ण के चार घोड़ों में से एक का नाम। २ पाण्डव दल के एक योद्धा राजा का नाम। ३ घोड़ा।

शैशव (न०) बचपन। (सोलह वर्ष के नीचे)।

शैशिर (वि०) [स्त्री०—शैशिरी] जाड़े की ऋतु सम्बन्धी।

शैशिरः (पु०) काले रङ्ग का चातक पक्षी।

शैष्योपाध्यायिका (स्त्री०) बच्चों की शिक्षा।

शो (धा० प०) [श्यति, शात या शित] १ पैनाना। पैना करना। २ पतला करना।

शोकः (पु०) शोक। रञ्ज। सन्ताप। पीड़ा।—अग्नि,—अनलः (पु०) दुःख की आग।—अपनोदः, (पु०) दुःख का दूर होना।—अभिभूतः,—आकुल,—आविष्ट,—उपहत,—विह्वल, (वि०) शोक से पीड़ित।—नाश, (पु०) अशोकवृक्ष।

शोचनं (न०) दुःख। शोक। विलाप।

शोचनीय (वि०) १ शोक करने योग्य। २ जिसकी दशा देख कर दुःख हो। दुष्ट।

शोचिस् (न०) १ प्रकाश। दीप्ति। आभा। चमक। २ शोभा।—केश, (शोचिष्केशः) अग्नि का नामान्तर।

शोधकः (पु०) शुद्धि करने वाला।

शोधन (वि०) [स्त्री०—शोधनी] साफ करने वाला। शोधन करने वाला।

शोधनं (न०) १ शुद्ध करना। साफ़ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३ छान बीन। जाँच। ४ अनुसन्धान। ५ ऋणशोध। ६ प्रायश्चित्त। ७ धातुओं के साफ़ करने की क्रिया। ७ चाल सुधारने के लिये दण्ड। ८ घटाना। निकालना। ९ तूतिया। १० मल। विष्ठा।

शोधनी (स्त्री०) झाड़ू।

शोधनकः (पु०) फौज़दारी अदालत का हाकिम।

शोधित (व० कृ०) १ साफ किया हुआ। २ संशोधित। ३ (जल) साफ किया हुआ। ४ ठीक किया हुआ। सही किया हुआ। ५ अदा किया हुआ। ६ बदला लिया हुआ।

शोध्य (वि०) शुद्ध किया हुआ। साफ किया हुआ। अदा किया हुआ।

शोध्यः (पु०) वह अपराधी जिसे अपने अपराध की सफाई देनी हो।

शोफः (पु०) सूजन। गुमड़ा।—जित्,—हृत्, (पु०) भिलावा।

शोभन (वि०) [स्त्री०—शोभनी] १ चमकीला। २ सुन्दर। ख़ूबसूरत। मनोहर। प्यारा। ३ शुभ। कल्याणकारी। ४ अच्छी तरह सुसज्जित। ५ पुण्यात्मा। धर्मात्मा।

शोभनं (न०) १ सौन्दर्य। आभा। चमक। २ कमल।

शोभनः (पु०) १ शिव। २ ग्रह।

शोभना (स्त्री०) १ हल्दी। २ सुन्दरी या पतिव्रता स्त्री। ३ गोरोचन।

शोभा (स्त्री०) १ आभा। दीप्ति। चमक। २ सौन्दर्य। मनोहरता। ३ छवि। छटा। ४ हल्दी। ५ गोरोचन।

शोभाञ्जनः (पु०) एक बड़ा उपयोगी वृक्ष।

शोभित (व० कृ०) १ सुन्दर। शोभायुक्त। २ सुन्दर। मनोहर।

शोषः (पु०) सूखने का भाव। खुश्क होना। रस या गीलापन दूर होने का भाव।—सम्भवं, (न०) पिपला मूल।

शोषण (वि०) [स्त्री०—शोषणी] १ सोखना। २ कुम्हला देना।

शोषणं (न०) १ सोखना। २ चूसना। ३ निघटाना। ४ कुम्हलाना। मुरझाना। ५ सोंठ।

शोषित (व० कृ०) १ सूखा हुआ। २ लटा हुआ। मुर्झाया हुआ। ३ थका हुआ।

शोषिन् (वि०) [स्त्री०—शोषिणी] सुखाने वाला। मुर्झाने वाला।

शौकं (न०) तोतों का झुंड।

शौक्त (वि०) [स्त्री०—शौक्ती] खट्टा। अम्ल।

शौक्तिक (वि०) [स्त्री०—शौक्तिकी] मोती सम्बन्धी। २ खट्टा। तेज़। तीक्ष्ण।

शौक्तिकेयं } शौक्तेयं } (न०) मोती। मुक्ता।

शौक्लिकेयः (पु०) एक प्रकार का ज़हर।

शौक्ल्यं (न०) सफेदी। स्वच्छता।

शौचं (न०) १ शुद्धता। २ मृतक सूतक से शुद्धि। ३ सफाई। संस्कार। ४ मलत्याग। मलोत्सर्ग। ५ धर्मात्मापन। ईमानदारी।—आचारः, (पु०)—कर्मन्, (न०)—कल्पः, (पु०) प्रायश्चित्तात्मक कर्म।—कूपः, (पु०) पाख़ाना। टट्टी। संडास।

शौचेयः (पु०) धोबी।

शौट् (धा० प०) (शौटति) अभिमान करना। अकड़ना।

शौटीर (वि०) अभिमानी। घमंडी।

शौटीरः (पु०) १ शूरवीर। २ अभिमानी पुरुष। ३ साधु।

शौटीर्य } शौंडर्य } शौण्डर्य } (न०) अभिमान। घमंड।

शौड् (धा० प०) (शौडति) देखो शौट्।

शौंड / शौण्ड (वि०) [शौण्डी] १ शराबी। मद्यप। २ नशे में चूर। उत्तेजित। ३ निपुण। पटु।

शौंडिकः / शौण्डिकः / शौंडिन् / शौण्डिन् (पु०) कलवार। शराब बेचने वाला।

शौंडिकेयः / शौण्डिकेयः (पु०) दैत्य। दानव।

शौंडी / शौण्डी (स्त्री०) बड़ी पीपल।

शौंडीर / शौण्डीर (वि०) १ अभिमानी। क्रोधी। २ उठा हुआ। उन्नत।

शौद्धोदनिः (पु०) बुद्ध का नाम अर्थात् शुद्धोदन का पुत्र।

शौद्र (वि०) [स्त्री०—शौद्री] शूद्र सम्बन्धी।

शौद्रः (पु०) शूद्रा का पुत्र जो शूद्र भिन्न किसी जाति के पुरुष से पैदा हुआ हो।

शौनं (न०) कसाईखाने में रखा हुआ माँस।

शौनकः (पु०) एक प्राचीन वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे। इनके नाम से कई ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

शौनिकः (पु०) १ कसाई। बूचड़। २ बहेलिया। चिड़ीमार। ३ शिकार। आखेट।

शौभः (पु०) १ ईश्वर। दैवी। २ सुपाड़ी का वृक्ष।

शौभांजनः (पु०) एक वृक्ष का नाम।

शौभिकः (पु०) मदारी। ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

शौरसेनी (स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा जो शौरसेन प्रदेश में बोली जाती थी।

शौरिः (पु०) १ श्रीकृष्ण या विष्णु। २ बलराम। ३ शनिग्रह।

शौर्य (न०) १ शूरता। वीरता। पराक्रम। २ बल। ताकत। ३ आरभटी।

शौल्कः / शौल्किकः (पु०) चुंगी विभाग का दरोगा।

शौल्विक / शौल्विकः (पु०) ताँबे के बरतन आदि बनाने वाला। कसेरा।

शौव (त्रि०) [स्त्री०—शौवी] कुत्ता सम्बन्धी।

शौवं (न०) १ कुत्तों का दल। २ कुत्ते जैसी प्रकृति।

शौवन (वि०) [स्त्री० —शौवनी] कुत्ता सम्बन्धी। २ कुत्तों जैसे गुणों वाला।

शौवनं (न०) १ कुत्ते की प्रकृति। २ कुत्ते की औलाद।

शौवस्तिक (त्रि०) [स्त्री०—शौवस्तिकी] आने वाले कल का या कल तक रहने वाला।

शौष्कलं (न०) खुश्क गोश्त का मूल्य।

शौष्कलः (पु०) १ गोश्त बेचने वाला। २ गोश्त खोर।

श्चुत् देखो श्च्युत्

श्च्युत् (धा० प०) [श्च्योतति] १ टपकना। बहना। २ गिरना।

श्च्योतः (पु०) / श्चोतः (पु०) / श्चोतनं (न०) / श्च्योतनं (न०) टपकना। चूना। बहाव।

श्मशानं (न०) मसान। कबरगाह।—अग्नि, (पु०) मसान की आग।—आलय, (पु०) श्मशान घाट।—गोचर, (त्रि०) श्मशान पर रहने वाला।—निवासिन्,—वासिन्, (पु०) भूत। प्रेत।—भाज् (पु०)—पालिन् (पु०) शिव।—वेश्मन्, (पु०) १ शिव। २ भूत। प्रेत।—वैराग्य, (न०) क्षणिक वैराग्य (जो श्मशान देखने से उत्पन्न होता है)।—शूलं, (न०)—शूलः, (पु०) श्मशान घाट पर लगी हुई सूली।—साधनं (न०) भूत प्रेत को वश में करने के लिये श्मशान जगाना।

श्मश्रु (न०) मूछ। दाढ़ी।—प्रवृद्धि, (पु०) दाढ़ी की बाढ़।—मुखी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके दाढ़ी हो।—वर्धक, (पु०) नाई।

श्मश्रुल (वि०) दाढ़ी वाला।

श्मील् (धा० प०) [श्मीलति] आँख मटकाना। आँख मारना।

श्मीलन (न०) आँख झपकाना ।

श्यान (व० कृ०) १ गया हुआ । प्रस्थानित । २ जमा हुआ । जमौआ । ३ गाढ़ा । लिबलिबा । ४ सिकुड़ा हुआ । झुर्रीदार । सूखा ।

श्यानं (न०) धूम ।

श्याम (वि०) १ कृष्ण । काला । २ भूरा । ३ काही ।

श्यामं (न०) १ समुद्री निमक । २ काली मिर्च ।

श्यामः (पु०) १ काला रंग । २ बादल । ३ कोमल । ४ प्रयाग का अक्षयवट ।—अङ्ग, (वि०) काला । —अङ्गः, (पु०) बुधग्रह । (इनका वर्ण दूर्वा-श्याम माना गया है ।)—कण्ठः, (पु०) १ महादेव जी । २ मयूर ।—पत्रः, (पु०) तमाल वृक्ष ।—भास्,—रुचि, (वि०) चमकदार । काला । —सुन्दरः, (पु०) श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

श्यामल (वि०) साँवला । कलौंहाँ ।

श्यामलः (पु०) १ काला रंग । २ काली मिर्च । ३ भौंरा । ४ पीपल । अश्वत्थ वृक्ष ।

श्यामलिका (स्त्री०) नील का पौधा ।

श्यामलिमन् (पु०) कालापन । कृष्णत्व ।

श्यामा (स्त्री०) रात । (विशेषतः) कृष्ण पक्ष की रात । २ साया । छाईं । ३ काले रंग की स्त्री । ४ सोलह वर्ष की तरुणी स्त्री । ५ वह स्त्री जिसके सन्तान न हुई हो । ६ गौ । ७ हल्दी । ८ मादा कोयल । ९ प्रियंगु लता । १० नील का पौधा । ११ श्यामा तुलसी । १२ पद्मबीज । १३ यमुना नदी । १४ अनेक पौधों का नाम ।

श्यामाकः (पु०) साँमा नाम का अनाज ।

श्यामिका (स्त्री०) १ कालापन । कृष्णत्व । २ अपवित्रता । मिलावट । टाँका ।

श्यामित (वि०) काला । कलूटा ।

श्यालः (पु०) साला । जोरु का भाई ।

श्यालकः (पु०) १ साला । जोरु का भाई । २ अभागा बहनोई ।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली (स्त्री०) पत्नी की बहिन । साली । सरहज ।

श्याव (वि०) [स्त्री०—श्यावा या श्यावी,] १ धुमैला । धूम्र । २ भूरा ।—तैल, (पु०) आम का पेड़ ।

श्यावः (पु०) भूरा रंग ।

श्येत (वि०) [स्त्री०—श्येता—श्येनी] सफेद । उज्ज्वल ।

श्येतः (पु०) सफेद रंग ।

श्येनः (पु०) १ सफेद रंग । २ सफेदी । ३ बाज पक्षी । ४ प्रचण्डता । उग्रता ।—करणं, (न०) —करणिका, (स्त्री०) दूसरी चिता पर भस्म करने की क्रिया । २ किसी काम को उतनी ही तेज़ी या फुर्ती से करना जितनी तेज़ी या फुर्ती से बाज पक्षी अपने शिकार पर झपटता है ।

श्यै (धा० आ०) [श्यायते, श्यान, शीत या शीन] १ जाना । २ जमाने को । जमने को । ३ सूखना । कुम्हलाना ।

श्यैनंपाता (स्त्री०) शिकार । झपट । खदेरन ।

श्योणाकः, श्योनाकः (पु०) एक वृक्ष का नाम ।

श्रंक् (धा० आ०) [श्रंकते] जाना । रेंगना ।

श्रंग् (धा० प० [श्रंगति] जाना ।

श्रण् (धा० प०) [श्रणति, श्राणयति—श्राणयते] देना । दे डालना ।

श्रत् (अव्यया०) एक उपसर्ग जो "धा" धातु के साथ व्यवहृत की जाती है ।

श्रथ् (श्रथति, श्रथ्नाति) चोटिल करना । हत्या करना । अनिष्ट करना ।

श्रथनं (न०) १ हिंसन । हत्या । २ खोलना । छुटकारा देना । मुक्त करना । बंधन खोलना । ३ उद्योग । प्रयत्न । ४ बंधन करण । बाँधना ।

श्रद्धा (स्त्री०) १ एक प्रकार की मनोवृत्ति, जिसमें किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति के प्रति भक्तिपूर्वक विश्वास के साथ उच्च और पूज्य भाव उत्पन्न होता

है। २ विश्वास। ३ वेदादि शास्त्रों में और आस-वाक्यों में विश्वास। ४ शुद्धि। ५ चित्त की प्रसन्नता। ६ घनिष्ठता। घनिष्ठ परिचय। ७ सम्मान। प्रतिष्ठा। ८ उग्र कामना। ९ गर्भवती स्त्री की अभिलाषाएं।

श्रद्धालु (वि०) १ श्रद्धा रखने वाला। श्रद्धावान। २ अभिलाषी। इच्छावान।

श्रद्धालुः (स्त्री०) दोहदवती। वह स्त्री जिसके मन में गर्भावस्था के कारण, तरह तरह की अभिलाषाएँ उत्पन्न हों।

श्रंथ्, श्रन्थ् (धा० आ०) [श्रंथते] १ कमज़ोर होना। निर्बल होना। २ ढीला होना। ३ ढीला करना। [प०—श्रथ्नाति] १ ढीला करना। छोड़ना। मुक्त करना। २ बार बार प्रसन्न होना।

श्रंथः, श्रन्थः (पु०) १ छुटकारा। मुक्ति। २ ढीलापन। ३ विष्णु का नाम।

श्रंथनं, श्रन्थनं (न०) १ छुटकारा। मुक्ति। २ वध। नाश। विनाश। ३ बंधन।

श्रंपणा, श्रंपणा (स्त्री०) उबलवाना। उबाल।

श्रपित (व० कृ०) उबाला हुआ या उबलाया हुआ।

श्रपिता (स्त्री०) चाँवल का माँड़।

श्रम् (धा० प०) [श्राम्यति, श्रान्त] १ स्वयं प्रयत्न करना। कष्ट उठाना। परिश्रम करना। मिहनत करना। २ तप करना। शरीर को तपद्वारा तपाना। ३ थकना। पीड़ित होना। दुःखी होना।

श्रमः (पु०) १ मिहनत। श्रम। उद्योग। प्रयत्न। २ थकावट। श्रान्ति। ३ सन्ताप। कष्ट। ४ तपस्या। तप। ५ कसरत। कवायद। अभ्यास। ६ कठिन अध्ययन।—अम्बु, (न०)—जलं, (न०) पसीना।—कर्षित, (वि०) थका हुआ। थका-माँदा।—साध्य, (वि०) कष्टसाध्य। परिश्रम द्वारा पूर्ण होने वाला।

श्रमण (वि०) [स्त्री०—श्रमणा, श्रमणी] १ परिश्रम करने वाला। मिहनती। २ नीच। कमीना।

श्रमणः (पु०) १ यति। मुनि। २ बौद्ध भिक्षुक।

श्रमणा, श्रमणी १ संन्यासिनी। २ सुन्दरी स्त्री। ३ नीच जाति की स्त्री। ४ बालछड़। जटामाँसी। ५ मुंडी। बुंडी। ६ सुदर्शना नामक ओषधि।

श्रम्भ् (धा० आ०) [श्रंभते, श्रब्ध] १ असावधान होना। लापरवाही दिखाना। २ भूलना। गलती करना।

श्रयः (पु०), श्रयणं (न०) आश्रय। पनाह। रक्षा।

श्रवः (पु०) १ सुनना। श्रवण। २ कान। कर्ण। समकोण त्रिभुज के समकोण के सामने वाला बाहु। कर्ण।

श्रवणं (न०), श्रवणः (पु०) १ कान। २ कर्ण। समकोण त्रिभुज का समकोण के सामने वाला बाहु।—इन्द्रियं, (न०) सुनने का भाव। कान।—उदरं, (न०) कान का बाहिरी भाग।—गोचरः, (पु०) श्रवण योग्य दूरत्व। श्रुति-सीमा। कर्णपथ।—पथः,—विषयः, (पु०) श्रवणयोग्य दूरत्व।—पालिः,—पाली, (स्त्री०) कान की नोंक।—सुभग, (वि०) कर्णसुखद।

श्रवणः (पु०), श्रवणा (स्त्री०) नक्षत्र विशेष।

श्रवस्यं (न०) कीर्त्ति। महत्व। ख्याति।

श्रवाय्यः, श्रवाय्यः वह पशु जो बलिदान के योग्य हो।

श्रवस् (न०) १ कान। २ कीर्ति। गौरव। ३ सम्पत्ति। धनदौलत। ४ गीत। वेदमंत्र।

श्रविष्ठा (स्त्री०) १ धनिष्ठा नक्षत्र। २ श्रवण नक्षत्र।—जः, (पु०) बुधग्रह।

श्रा (धा० प०) [श्राति, श्राण, शृत,] १ राँधना। पकाना। उबालना। २ तर करना। नम करना।

श्राणा (स्त्री०) माँड़ी। काँजी।

श्राद्ध (वि०) निमकहलाल। विश्वस्त।—कर्मन्, (न०)—क्रिया, (स्त्री०) अन्त्येष्टि क्रिया।—कृत्, (पु०) अन्त्येष्टि क्रिया करने वाला।—दः (पु०) श्राद्ध करने वाला।—दिन,

(पु०) दिनं, (न०) वह दिन जिस दिन किसी मरे हुए के उद्देश्य से श्राद्ध कर्म किया जाय। —देव, (पु०) —देवता, (स्त्री०) १ श्राद्ध का अधिष्ठाता देवता। २ यमराज। ३ वैश्वेदेव। —भुज्, —भोक्तृ, (पु०) मृतक। पूर्वपुरुष।

श्राद्धम् (न०) १ वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २ वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है।

श्राद्धिक (वि०) [स्त्री०—श्राद्धिकी] श्राद्ध सम्बन्धी।

श्राद्धिकं (न०) श्राद्ध में दी हुई भेंट।

श्राद्धिक (पु०) वह जो श्राद्ध के अवसर पर पितरों के उद्देश्य से भोजन कराता हो।

श्राद्धीय (वि०) श्राद्ध सम्बन्धी।

श्रांत } श्रान्त } (व० कृ०) १ थका हुआ। २ शान्त।

श्रांतः } श्रान्तः } (पु०) साधु। संन्यासी।

श्रांतिः } श्रान्तिः } (स्त्री०) थकावट।

श्रामः (पु०) १ मास। २ समय। ३ उठाऊ छप्पर।

श्रायः (पु०) संरक्षण। रक्षा। आश्रय।

श्रावः (पु०) सुनना। श्रवण।

श्रावक (पु०) १ सुनने वाला। २ शिष्य। चेला। ३ बौद्ध भिक्षुक। ४ बौद्ध भक्त। ५ नास्तिक। ६ कौआ।

श्रावण (वि०) [स्त्री०—श्रावणी] कान सम्बन्धी। २ श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न।

श्रावणः (पु०) १ एक मास का नाम। २ नास्तिक। ३ प्रतारक। छद्मवेशी। भगड। ४ एक वैश्य तपस्वी, जो महाराज दशरथ के राज्यत्व काल में था।

श्रावणिक (वि०) १ श्रावण मास सम्बन्धी।

श्रावणिकः (पु०) श्रावण मास।

श्रावणी (स्त्री०) १ श्रावण मास की पूर्णिमा। २ २ श्रावण मास की पूर्णिमा, जिस दिन ब्राह्मणों का प्रसिद्ध त्योहार रक्षाबंधन होता है। इस दिन लोग यज्ञोपवीत का पूजन करते और नवीन यज्ञोपवीत भी धारण करते हैं।

श्रावस्तिः } श्रावस्ती } (स्त्री०) उत्तर कोशल में गंगा के तट पर बसी हुई एक बहुत प्राचीन नगरी।

श्रावित (वि०) कथित। वर्णित। कहा हुआ।

श्राव्य (वि०) १ सुनने योग्य। २ जो सुन पड़े।

श्रि (धा० उ०) [श्रयति—श्रयते, श्रित] १ जाना। २ प्राप्त करना। ३ झुकना। आश्रय लेना। ४ बसना। ५ परिचर्या करना। ६ व्यवहार करना। ७ अनुरक्त होना।

श्रित (व० कृ०) १ गया हुआ। रक्षा के लिये समीप आया हुआ। २ चिपटा हुआ। ३ संयुक्त। ४ रक्षित। ५ सम्मानित। परिचर्या किया हुआ। ६ सहकारी। ७ छाया हुआ। ढका हुआ। ८ सम्पन्न। ७ एकत्रित। जमा हुआ। ९ अधिकृत।

श्रितिः (स्त्री०) आश्रय।

श्रियंमन्य (वि०) १ अपने को योग्य समझने वाला। २ अभिमानी।

श्रियापतिः (पु०) शिव जी का नामान्तर।

श्रिष् (धा० प०) [श्रेषति] जलाना।

श्री (धा० उ०) [श्रीणाति, श्रीणीते] राँधना। उबालना। तैयार करना।

श्री (स्त्री०) १ धन। सम्पत्ति। समृद्धि। २ राजसी सम्पत्ति। ३ गौरव। उच्चपद। ४ सौन्दर्य। आभा। ५ रंग। ७ धन की अधिष्ठात्री देवी। ७ कोई गुण या सत्कर्म। ८ सजावट। शृंगार। ९ बुद्धि। प्रतिभा। १० अलौकिक शक्ति। ११ धर्म, अर्थ और काम। १२ सरल वृक्ष। १३ बेल का पेड़। १४ लवङ्ग। लौंग। १५ कमल। —आह्वं, (न०) कमल। —ईशः, (पु०) विष्णु का नामान्तर। —कण्ठः, (पु०) १ शिव। २ भवभूति कवि। —करः, (पु०) विष्णु। —करं, (न०) लाल कमल। —करणं, (न०) कलम। —कान्तः, (पु०) विष्णु। —कारिन् (पु०) एक प्रकार का साग। —गदितं, (न०) उपरूपक के

अठारह भेदों में से एक भेद। इसका दूसरा नाम श्रीरासिका भी है।—गर्भः, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर। २ तलवार।—ग्रहः (पु०) कुण्ड या कठोता, जिसमें पक्षियों के लिये जल भरा जाय।—घनं (न०) खट्टा दही।—घन, (पु०) बौद्ध भिक्षुक।—चक्रं, (न०) भूगोल। २ इन्द्र के रथ का एक पहिया। -जः, (पु०) कामदेव का नामान्तर।—दः, (पु०) कुबेर का नामान्तर।—दयितः—धरः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—नगरं, (न०) एक नगर का नाम। —नन्दनः, (पु०) श्रीरामचन्द्र जी का नामान्तर। —निकेतनः,—निवासः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—पतिः, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर। २ राजा। महाराज।—पथः, (पु०) राजमार्ग।—पर्णं, (न०) कमल।—पर्वतः, (पु०) एक पहाड़ का नाम।— पिष्ट. (पु०) तारपीन।—पुष्पं (न०) लवंग।—फलः (पु०) बेल का पेड़।—फलं, (न०) बेल का फल। — फला,— फली, (स्त्री०) १ नील का पौधा। २ आँवला।—भ्रातृ, (पु०) १ चन्द्रमा। २ घोड़ा।—मस्तकः, (पु०) १ लहसन। २ लाल आलू।—मुद्रा, (स्त्री०) मस्तक पर लगाया जाने वाला वैष्णवों का तिलक-विशेष।—मूर्तिः, (स्त्री०) १ श्रीलक्ष्मी जी की मूर्ति। २ किसी की भी मूर्ति।—युक,—युत, (वि०) १ भाग्यवान। आह्लादित। २ धनवान। समृद्धशाली।—रङ्गः, (पु०) विष्णु भगवान का नामान्तर।—रसः, (पु०) १ तारपीन। २ राल।—वत्सः, (पु०) १ श्रीविष्णु का नामान्तर। २ विष्णु के वक्षःस्थल का चिह्न विशेष। यह अंगुष्ठ प्रमाण श्वेत बालों का दक्षिणावर्त भौंरी कासा चिह्न। इसे भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न बतलाते हैं।—वत्सकिन्, (पु०) वह घोड़ा जिसकी छाती पर भौंरी हो।—वर— वल्लभः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।— वल्लभः, (पु०) १ भाग्यवान पुरुष। सौभाग्यशाली पुरुष।—वासः, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर। २ शिव। ३ कमल। ४ तारपीन।—वासस्, (पु०) तारपीन।—वृक्षः, (पु०) १ बेल का वृक्ष। २ अश्वत्थ का वृक्ष। ३ घोड़े के माथे और छाती की भौंरी।—वेष्ट, (पु०) १ तारपीन। २ राल।—संज्ञं, (न०) लवंग।—सहोदरः, (पु०) चन्द्रमा।—सूक्तं, (न०) एक वैदिक सूक्त।—हरिः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—हस्तिनी, (स्त्री०) सूर्यमुखी का फूल।

श्रीमत् (वि०) १ धनवान। धनी। २ हर्षित। भाग्यवान। ३ सुन्दर। मनोहर। ४ प्रसिद्ध। (पु०) १ विष्णु का नामान्तर। २ कुबेर। ३ शिव। ४ तिलक वृक्ष। ५ अश्वत्थ वृक्ष।

श्रील (वि०) १ धनी। २ भाग्यवान। समृद्धिशाली। ३ सुन्दर। खूबसूरत। ४ प्रसिद्ध। विख्यात।

श्रु (धा० प०) [श्रवति] जाना। चलना। [शृणोति, श्रुत] १ सुनना। २ सीखना। पढ़ना। ३ ध्यान देना। आज्ञा का पालन करना।

श्रुत (व० कृ०) १ सुना हुआ। २ जाना हुआ। सीखा हुआ। ३ प्रसिद्ध। प्रख्यात। ४ नामक।

श्रुतं (न०) १ सुनने की वस्तु। २ वेद। ३ विद्या। -अध्ययनं, (न०) वेदों का अध्ययन —अन्वित, (वि०) वेदों का जानकार।—अर्थः, (पु०) कोई बात जिसकी सूचना मौखिक दी गयी है।—कीर्ति, (वि०) प्रसिद्ध। (पु०) १ उदार पुरुष। २ ब्रह्मर्षि। (स्त्री०) शत्रुघ्न की स्त्री का नाम।—देवी, (स्त्री०) सरस्वती का नाम।—धर. (वि०) जो पढ़ा हो उसे याद रखने वाला।

श्रुतवत् (वि०) वेदज्ञ।

श्रुतिः (स्त्री०) १ सुनने की क्रिया। २ कान। ३ अफवाह। ४ ध्वनि। आवाज़। ५ वेद। ६ वेद-संहिता। ७ श्रवण नक्षत्र। ८ संगीत में किसी सप्तक के बाईस भागों में से एक भाग अथवा किसी स्वर का एक अंश। स्वर का आरम्भ और अन्त इसी से होता है।—उक्त—उदित, (वि०) वेदों द्वारा आज्ञप्त।—कट. (पु०) सर्प। २ तप। प्रायश्चित्त।—कटु, (वि०) सुनने में कठोर।—कटुः, (पु०) काव्यरचना का एक दोष। कठोर

एवं कर्कश वर्णों का व्यवहार। दुःश्रवणत्व। —चोदनं, (न०) —चोदना, (स्त्री०) वेद की आज्ञा। वेदवाक्य।—जीविका, (स्त्री०) स्मृति। धर्मशास्त्र।—द्वैधं, (न०) वेदवाक्यों का परस्पर विरोध या अनैक्य।—निदर्शनं, (न०) वेद का प्रमाण।—प्रसादन, (वि०) कर्णमधुर। —प्रामाण्यं, (न०) वेद का प्रमाण। —मण्डलं, (न०) कान का बाहिरी भाग। —मूल, (न०) १ कान के नीचे का भाग। २ वेद-संहिता।—मूलक, (वि०) वेद से प्रमाणित।—विषयः, (पु०) १ शब्द। ध्वनि। आवाज़। २ वेद सम्बन्धी विषय। ४ कोई भी वैदिक आज्ञा।—स्मृति, (स्त्री०) वेद और धर्मशास्त्र।

श्रुवः (पु०) १ यज्ञ। २ श्रुवा।

श्रुवा (स्त्री०) श्रुवा। चम्मच नुमा लकड़ी का पात्र जिसमें भर कर शाकल्य की आहुति अग्नि में छोड़ी जाती है।—वृक्षः, (पु०) विकंकट वृक्ष।

श्रेढी (स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ा।

श्रेणिः (स्त्री० पु०) } १ रेखा। पंक्ति। अवली। २
श्रेणी (स्त्री०) } समूह। समुदाय। गिरोह। ३ व्यवसाइयों का संघ। कारीगरों का संघ। ४ वाल्टी। डोल।—धर्माः, (पु० बहु०) व्यवसाइयों की मंडली या पंचायत की रीति या नियम।

श्रेणिका (स्त्री०) खेमा।

श्रेयस् (वि०) १ बेहतर। उत्कृष्टतर। २ उत्कृष्टतम। सर्वोत्तम। ३ बहुत प्रसन्न। सौभाग्यवान। ४ माङ्गलिक अवसर। ५ मोक्ष।—अर्थिन्, (वि०) सुख प्राप्ति का अभिलाषी। मङ्गलाभिलाषी।—कर, (वि०) कल्याणकारी। शुभदायक। —परिश्रमः, (पु०) मोक्ष के लिये प्रयत्न।

श्रेष्ठ (वि०) १ सर्वोत्तम। सर्वोत्कृष्ट। २ अत्यन्त प्रसन्न। अत्यन्त समृद्धशाली। ४ सब से अधिक वृद्ध।—आश्रमः, (पु०) गृहस्थाश्रम। २ गृहस्थ।—वाच्, (वि०) वाग्मी।

श्रेष्ठं (न०) गौ का दूध।

श्रेष्ठः (पु०) १ ब्राह्मण। २ राजा। ३ कुबेर। ४ विष्णु।

श्रेष्ठिन् (पु०) व्यापारियों की पंचायत का मुखिया।

श्रै (धा० प०) [श्रायति] १ पसीना निकालना। पसीजना। २ रांधना। उबालना।

श्रोण् (धा० प०) [श्रोणति] १ जमा करना। ढेर लगाना। २ एकत्रित किया जाना।

श्रोण (वि०) लंगड़ा। लूला।

श्रोणः (पु०) रोग विशेष।

श्रोणा (स्त्री०) १ काँजी। भात का माँड। २ श्रवणनक्षत्र।

श्रोणिः } (स्त्री०) १ कटि। कमर। २ चूतड़। नितंब।
श्रोणी } ३ मार्ग। सड़क। रास्ता।—फलकं, (न०) १ चौड़े चूतड़। २ चूतड़। नितंब।—बिम्बं, (न०) १ गोल कमर। २ कमरबंद। पटुका।—सूत्रं, (न०) करधनी। मेखला।

श्रोतस् (न०) १ कर्ण। कान। २ हाथी की सूंड। ३ इन्द्रिय। सोता। चश्मा।

श्रोतृ (पु०) १ सुनने वाला। २ शिष्य।

श्रोत्रं (न०) १ कान। २ वेदज्ञान। ३ वेद।

श्रोत्रिय (वि०) १ वेद वेदाङ्ग में पारङ्गत। २ शिक्षा देने योग्य। काबू में लाने योग्य।—स्वं, (न०) विद्वान् ब्राह्मण की सम्पत्ति।

श्रोत्रियः (पु०) विद्वान् ब्राह्मण। वेद में या धर्म्मशास्त्रों में निष्णात पुरुष।

श्रौत (वि०) [स्त्री०—श्रौती] कान सम्बन्धी। वेदसम्बन्धी। वेद पर अवलम्बित। वेदोक्त।

श्रौतं १ वेदोक्त कर्म या क्रियाकलाप। २ वैदिक विधान। ३ यज्ञीय अग्नि का सदैव बनाये रखना। ४ तीनों प्रकार की (अर्थात् गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण) अग्नि।—सूत्रं, (न०) यज्ञादि के विधान वाले सूत्र। कल्पग्रन्थ का वह अंश जिसमें पौर्णमास्येष्टि से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों के विधान का निरूपण किया गया है।

श्रौत्रं (न०) १ कान। २ वेद में योग्यता।

श्रौषट् (अव्यय०) वषट् या वौषट् का पर्यायवाची शब्द।

श्लक्ष्ण (वि०) १ कोमल । मुलायम । सुकुमार । २ चमकदार । चिकना । पालिश किया हुआ । ३ छोटा । सूक्ष्म । पतला । ४ खूबसूरत । मनोहर । ५ ईमानदार । साफदिल का ।

श्लक्ष्णकं (न०) सुपारी । पुंगीफल ।

श्लंक, श्लङ्क् (धा० आ०) [श्लङ्कते] चलना । जाना ।

श्लंग्, श्लङ्ग् (धा० आ०) [श्लङ्गते] चलना । जाना ।

श्लथ् (धा० उ०) १ ढीला होना । शिथिल होना । २ कमज़ोर होना । निर्बल होना । ३ ढीला करना । शिथिल करना । ४ चोटिल करना । वध करना ।

श्लथ (वि०) १ अयुक्त । बंधनरहित । २ ढीला । खसका हुआ । ३ बिखरे हुए (जैसे बाल) ।

श्लाख् (धा० प०) [श्लाखति] घुसना । व्याप्त होना ।

श्लाघ् (धा० आ०) [श्लाघते] १ सराहना । प्रशंसा करना । तारीफ करना । २ डींगे हाँकना । अकड़ना । अभिमान करना । ३ चापलूसी करना ।

श्लाघनं (न०) १ श्लाघा । प्रशंसा । सराहना । २ चापलूसी ।

श्लाघा (स्त्री०) १ प्रशंसा । सराहना । तारीफ । २ आत्मश्लाघा । अभिमान । ३ चापलूसी । ४ सेवा । परिचर्या । ५ कामना । अभिलाष । —विपर्ययः, अभिमान का अभाव ।

श्लाघित (व० कृ०) प्रशंसित । तारीफ किया हुआ ।

श्लाघ्य (वि०) १ प्रशंसनीय । योग्य । २ सम्माननीय । प्रतिष्ठित ।

श्लिकुः (पु०) लंपट । कामुक । २ गुलाम । चाकर (न०) ज्योतिर्विद्या के अन्तर्गत गणित ज्योतिष और फलित ज्योतिष ।

श्लिक्युः (पु०) १ लंपट । कामुक । २ चाकर ।

श्लिष (धा० प०) [श्लेषति] जलाना । [श्लिष्यति श्लिष्ट] चिपटाना । गले लगाना । छाती से लगाना । चिपकाना । चिपटना । ३ मिलाना । जोड़ना । ४ पकड़ना । ग्रहण करना । समझना ।

श्लिषा (स्त्री०) १ आलिङ्गन । २ चिपक ।

श्लिष्ट (व० कृ०) १ आलिङ्गन किया हुआ । २ चिपका हुआ । चिपटा हुआ । ३ अवलम्बित । झुका हुआ । ४ साहित्य में श्लेषयुक्त अर्थात जिसके दुहरे अर्थ हों ।

श्लिष्टिः (स्त्री०) आलिङ्गन । २ लगाव । चिपक ।

श्लीपदं (न०) टाँग फूलने का रोग । पील पाँव । —प्रभवः, (पु०) आम का वृक्ष ।

श्लीलः (वि०) १ मङ्गलकारी । शुभ । २ उत्तम । नफीस । जो भद्दा न हो ।

श्लेषः (पु०) आलिंगन । परिरम्भण । २ जोड़ । मिलान । ३ एक में सटने या लगने का भाव । ४ साहित्य में एक अलङ्कार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं । दो अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग ।

श्लेष्मकः, (पु०) कफ । बलगम ।

श्लेष्मण (वि०) बलगमी । कफ वाला या कफ की प्रकृति वाला ।

श्लेष्मन् (पु०) कफ । बलगम । कफ की प्रकृति । —अतीसारः, (पु०) कफ के प्रकोप से उत्पन्न हुआ अतीसार अर्थात् दस्तों का रोग ।—ओजस्, (न०) कफ की प्रकृति ।—घ्ना, —घ्नी, (स्त्री०) १ मल्लिका । मोतिया का एक भेद । २ केतकी केवड़ा । ३ महा ज्योतिष्मती लता । ४ त्रिकुट । ५ पुनर्नवा ।

श्लेष्मल (वि०) कफ का । बलगमी ।

श्लेष्मातः, श्लेष्मान्तः, श्लेष्मातकः, श्लेष्मान्तकः (पु०) लिसोढ़ा । सेरा । बहुवार वृक्ष ।

श्लोक् (धा० आ०) [श्लोकते] १ श्लोक बनाना । पद्य रचना । २ प्राप्त करना । ३ त्याग देना । छोड़ देना ।

श्लोकः (पु०) १ स्तुति । प्रशंसा । २ नाम । कीर्ति । यश । ३ छंद । गीत । ऐसा छंद या गीत जो प्रशंसा करने के लिये बनाया गया हो । ४ प्रशंसा करने की वस्तु । ५ लोकोक्ति । कहावत । ६ संस्कृत का कोई पद्य जो अनुष्टुप् छन्द में हो ।

श्लोण् (धा० प०)—[श्लोणति] ढेर करना। एकत्र करना। जमा करना।

श्लोण. (पु०) लंगड़ा। लूला।

श्वंक्, श्वङ्क् } (धा० आ०) [श्वङ्कते] चलना। जाना।

श्वच्, श्वंच् } (धा० आ०) [श्वचते,—श्वंचते] १ जाना। चलना। २ फटना। दरार होना।

श्वज् (धा० आ०) [श्वजते] जाना। चलना।

श्वठ् (धा० उ०) [श्वठयति—श्वठयते] श्वाठयति—श्वाठयते] १ जाना। चलना। २ सजाना। ३ समाप्त करना। पूरा करना।

श्वंठ्, श्वण्ठ् } (धा० उ०) [श्वंठयति] बुराई करना।

एकव० द्विवच० बहुवच०

श्वन् (पु०) [कर्त्ता-श्वा, श्वानौ, श्वानः] कुत्ता। कुकुर।—क्रीडिन् (पु०) शिकारी कुत्तों को पालनेवाला।– गणः, (पु०) शिकारी कुत्तों का झुंड।—गणिकः, (पु०) शिकारी। २ कुत्तों को खिलाने वाला।—धूर्तः, (पु०) श्रृगाल।—नरः, (पु०) कठोर बातें कहने वाला।—निशं, (न०) निशा, (स्त्री) वह रात जब कुत्ते भोंके।—पच्, (पु०)—पचः, (पु०) चाण्डाल। पतित जाति का आदमी। २ कुत्ते का माँस खाने वाला।—पाकः, (पु०) चाण्डाल।—फलं, (न०) नीबू या जंभीरी।—फल्कः, (पु०) अक्रूर के पिता का नाम।—भीरुः, (पु०) स्यार। श्रृगाल।—यूथ्यं (न०) कुत्तों का झुण्ड।—वृत्तिः, (स्त्री०) सेवा वृत्ति। — व्याघ्रः, (पु०) १ शिकारी जानवर। २ चीता। ३ बघर्रा।—हन्, (पु०) शिकारी।

श्वभ्र् (धा० उ०) [श्वभ्रयति-श्वभ्रयते] १ चलना। जाना। २ घुसेड़ना। छेद करना। ३ दरिद्रता में रहना।

श्वभ्रं (न०) सूराख। दरार। सन्धि।

श्वयः (पु०) सूजन। वृद्धि।

श्वयथुः (पु०) सूजन।

श्वयीची (स्त्री०) बीमारी। रोग।

श्वल् (धा० प०) [श्वलति] दौड़ना। चलना।

श्वल्क् (धा० उ०) [श्वल्कयति, श्वल्कयते] कहना। वर्णन करना।

श्वल्ल् (धा० प०) [श्वल्लति] दौड़ना।

श्वशुरः (पु०) ससुर। पत्नी या पति का पिता।

श्वशुरकः (पु०) ससुर।

श्वशुर्यः (पु०) साला। पत्नी या पति का भाई। २ देवर। पति का छोटा भाई।

श्वस् (धा० प०) [श्वसिति, स्वस्त या श्वसित] स्वाँस लेना। साँस खींचना। २ उसाँस लेना। आह भरना। ठंडी साँस लेना। सुसकारी भरना। खुर्राटा लेना।

श्वस् (अव्यय०) १ कल (जो आने वाला है)। २ भविष्यद्।—भूत, (वि०) [= श्वोभूत] कल होने पर।—वसीय,-वसीयस्, (=श्वोवसीय,= श्वोवसीयस्) शुभ। भाग्यवान्। (न०)प्रसन्नता। सौभाग्य।—श्रेयस, (=श्वःश्रेयस) आनन्दित समृद्धवान।—श्रेयसं, (न०) १ हर्ष। समृद्धि। २ ब्रह्म।

श्वसनं (न०) १ स्वाँस। साँस। २ आह। ठंडी साँस।—अशनः, (पु०) साँप।—ईश्वरः, (पु०) अर्जुन वृक्ष।—उत्सुकः (पु०) साँप।—ऊर्मिः, (स्त्री०) हवा का झोंका।

श्वसनः (पु०) १ हवा। पवन। २ एक दैत्य का नाम जिसका वध इन्द्र ने किया था।

श्वसित (व० कृ०) आह लिए हुए। ठंडी सांस भरे हुए।

श्वसितं (न०) १ साँस। उसाँस। २ आह।

श्वस्तन, श्वस्त्य } (वि०) [स्त्री०—श्वस्तनी] आने वाले कल से सम्बन्ध युक्त भविष्य।

श्वाकर्णः (पु०) कुत्ते के कान।

श्वागणिक. (पु०) वह जो कुत्ते पालकर जीविका निर्वाह करे।

श्वादंतः, श्वादन्तः } कुत्ते का दाँत।

श्वानः (पु०) कुत्ता।—निद्रा. (स्त्री०) ऐसी नींद जो जरा सा खटका होते ही उचट जाय। झपकी।

श्वापद (वि०) [स्त्री०—श्वापदी] हिंसक। भयङ्कर।

श्वापदः (पु०) १ हिंसकपशु, व्याघ्रादि २ चीता।

श्वापुच्छं (न०)
श्वापुच्छः (पु०) } कुत्ते की पूँछ।

श्वाविध् (पु०) सूइस। शिशुमार।

श्वासः (पु०) १ स्वाँस। साँस। २ आह ३ हवा। पवन। ४ दमा की बीमारी।—कासः, (पु०) दमें का रोग।—रोधः (पु०) साँस की रुकावट। —हिक्का, (स्त्री०) हुचकी।—हेतिः, (स्त्री०) निद्रा। नींद।

श्वासिन् (वि०) साँस लेने वाला। (पु०) १ हवा। पवन। सजीव। जीवधारी स् स् स् कह कर बोलने वाला। एक प्रकार का हकला।

श्वि (धा० प०) [श्वयति, शून] १ उगना। बढ़ना। सूजना। २ फलना फूलना। ३ समीप जाना।

श्वित् (धा० आ०) [श्वेतते] सफेद होना।

श्वित (वि०) सफेद। उज्ज्वल।

श्वितिः (स्त्री) सफेदी।

श्वित्य (वि०) सफेद। उजला।

श्वित्रं (न०) १ सफेद कोढ़। २ कोढ़ का दाग।

श्वित्रिन् (वि०) [स्त्री० —श्वित्रिणी] कोढ़ी। कोढ़-वाला। (पु०) कोढ़ का रोगी।

श्विंद्
श्विन्द् } (धा० आ०) [श्विन्दते] सफेद हो जाना।

श्वेत (वि०) [स्त्री० श्वेता या श्वेती] सफेद। उजला। —अम्बरः, (पु०) जैन साधुओं का एक भेद। जैनियों की दो प्रधान सम्प्रदायों में से एक। —इक्षुः, (पु०) एक प्रकार का गन्ना।—उदरः, (पु०) कुबेर का नामान्तर।—कमलं,—पद्मं, (न०) सफेद कमल।—कुंजरः, (पु०) ऐरावत हाथी।—कुष्ठं, (न०) सफेद कोढ़।—केतुः, (पु०) १ महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २ बोधिसत्व की अवस्था में गौतम बुद्ध का नाम।—कोलः, (पु०) मछली विशेष।—गजः,—द्विपः, (पु०) १ सफेद हाथी। इन्द्र का हाथी। —गरुत्, (पु०)—गरुतः (पु०) हंस।—छदः, (पु०) १हंस। २तुलसी।—द्विपः (पु०) महाद्वीप के अष्टादश विभागों में से एक।—धातुः (पु०) सफेद खनिज पदार्थ। २ खड़िया मिट्टी। —धामन्, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ समुद्रफेन।—नीलः, (पु०) बादल।—पत्रः, (पु०) हंस।—पाटला, (स्त्री०) पुष्प विशेष। —पिङ्गः, (पु०) १ शेर। सिंह। २ शिव का नामान्तर।—मरिचं, (न०) सफेद मिर्च। —मालः, (पु०) १ बादल। २ धूम। धुआँ। —रक्तः, (पु०) गुलाबी रङ्ग।—रंजनं, (न०) सीसा। राँगा।—रथः, (पु०) शुक्रग्रह। —रोचिस्, (पु०) चन्द्रमा।—रोहितः (पु०) गरुड़ का नामान्तर।—वल्कलः (पु०) गोलाकार वट वृक्ष।—वाजिन्, (पु०) १ चन्द्रमा। २ अर्जुन। —वाह, (पु०) इन्द्र का नाम। —वाहः, (पु०) १ अर्जुन का नाम। २ इन्द्र का नाम।—वाहनः, (पु०) १ अर्जुन। २ २ चन्द्रमा। ३ मकर। घड़ियाल।—वाहिन्, (पु०) अर्जुन।—शुङ्गः—शूङ्गः (पु०) जौ। यव।—हयः, (पु०) इन्द्र का घोड़ा। २ अर्जुन।—हस्तिन्, (पु०) इन्द्र का हाथी ऐरावत।

श्वेतं (न०) १ चाँदी।

श्वेतः (पु०) १ सफेद रङ्ग। २ शंख। ३ कौड़ी। ४ शुक्रग्रह। ५ शुक्रग्रह का अधिष्ठातृ देवता। ६ सफेद बादल। ७ सफेद जीरा। ८ एक पर्वत-माला का नाम। ९ ब्रह्माण्ड का एक भाग।

श्वेतकः (पु०) कौड़ी।

श्वेतकं (न०) चाँदी।

श्वेता (स्त्री०) १ कौड़ी। २ पुनर्नवा ३ सफेद दूर्वा। ४ स्फटिक ५ मिश्री कन्द। ६ वंशलोचन। ७ भिन्न भिन्न पौधों के अनेक नाम।

श्वेतौही (स्त्री०) इन्द्र पत्नी शची का नाम।

श्वेत्रं (न०) सफेद कोढ़।

श्वैत्यं (न०) १सफेदी। २ सफेद कोढ़।

श्वैत्रं, श्वैत्र्यं (न०) सफेद कोढ़।

(= षड्ग्रन्थिः) (पु०) पिपलामूल ।—ग्रन्थिका, (= षड्ग्रन्थिका,) (स्त्री०) पिपरामूल ।—चक्रं, (= षट्चक्रं,) (न०) हठ योग में माने हुए कुण्डलिनी के ऊपर पड़ने वाले छः चक्र ।—चत्वारिंशत् (=षट्चत्वारिंशत्) छियालीस ।—चरणः, (= षट्चरणः,) (पु०) १ भौंरा । भ्रमर । २ टीड़ी । ३ जुआँ ।—जः, (= षड्जः,) (पु०) सरगम का प्रथम या चौथा स्वर । –त्रिंशत्, (= षट्त्रिंशत्,) छत्तीस ।—त्रिंश, (= षट्त्रिंश,) (वि०) छत्तीसवाँ ।—दर्शनं, (= षड्दर्शनं) (न०) हिन्दूशास्त्र के छः दर्शन या छः दार्शनिक सिद्धान्त । [यथा—सांख्य, योग, न्याय वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त]—दुर्ग, (= षड्दुर्ग,) छः प्रकार के दुर्गों का समुदाय । [यथा

धन्वदुर्ग, महीदुर्ग, गिरिदुर्गं, तथैव च ।
मनुष्यदुर्गं, मृद्दुर्गं वनदुर्गमिति क्रमात् " ॥]

— नवतिः, (=षण्णवतिः) (पु०) ६६ छियानवे ।—पंचाशत्, (स्त्री०)—(=षट्पञ्चाशत्) छप्पन ।—पदः, (= षट्पदः,) (पु०) भौंरा । भ्रमर । १ जुआँ ।—पदी, (=षट्पदी,) (स्त्री०) १ एक छंद जिसमें छः पद या चरण होते हैं । २ भौंरी । भ्रमरी । ३ जुआँ ।—प्रज्ञः, (पु०) (= षट्प्रज्ञः,) १ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञाता । २ कामुक ।—बिन्दुः (= षड्बिन्दुः,) (पु०) विष्णु ।—भुजा, (= षड्भुजा,) (स्त्री०) १ दुर्गा देवी । २ तरबूज़ । हिंगवाना । कलींदा ।—मासिक, (वि०) (= षाण्मासिक,) छःमाही ।—मुखः, (= षण्मुखः,) (पु०) कार्तिकेय ।—मुखा, (षण्मुखा) (स्त्री०) कलींदा । हिंगवाना । तरबूज़ ।—रसम् (न०) —रसाः, (बहु० पु०) (=षड्रसं) छः प्रकार के रस या स्वाद ।—वर्गः, (= षड्वर्गः,) (पु०) १ छः वस्तुओं का समुदाय । २ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर का समूह ।—विंशतिः, (स्त्री०) (= षड्विंशतिः,) छब्बीस ।—विंश, (= षड्विंश,) (वि०) छब्बीसवाँ ।—विध, (= षड्विध,) (वि०) छः प्रकार का । छः गुना ।—षष्टिः, (= षट्षष्टि,) (स्त्री०) छियासठ ।—सप्ततिः, (= षट्सप्ततिः,) छियत्तर । ७६ ।

षष्टिः, (स्त्री०) साठ ।—भागः, (पु०) शिव जी ।—मत्तः (पु०) वह हाथी जो ६० वर्ष का होने पर भी मदमत्त हो ।—योजनी, (स्त्री०) साठ योजन की दूरी या यात्रा ।—हायनः, (पु०) १ ६० वर्ष की उम्र का हाथी । २ चावल विशेष ।

षष्ठ, (वि०) [स्त्री०—षष्ठी,] छठवाँ ।—अंशः (पु०) १ छठवाँ भाग । विशेष कर पैदावार का छठवाँ भाग जो राजा अपनी प्रजा से ले ।

षष्ठी (स्त्री०) १ तिथि छठ । सम्बन्धकारक । २ कात्यायनी देवी ।—तत्पुरुषः, (पु०) समासविशेष ।—पूजनम् (न०)—पूजा, (स्त्री०) बालक उत्पन्न होने से छठाँ दिन तथा उस दिन का उत्सव ।

षहसानुः (पु०) १ मयूर । मोर । २ यज्ञ ।

षाट् (अव्यया०) सम्बोधनात्मक अव्यय ।

षाट्कौशिक (वि०) [स्त्री०—षाट्कौशिकी] छः पर्त्तों में लपेटा हुआ या छः म्यानों वाला ।

षाडवः (पु०) १ मनोविकार । मनोराग । २ संगीत । गान । ३ राग की एक जाति जिसमें केवल छः स्वर (स, रे, ग, म, प और ध) लगते हैं और जो निषाद वर्जित हैं ।

षाड्गुण्यं (न०) १ छः उत्तम गुणों का समूह । २ राजनीति के छः अङ्ग । ३ किसी वस्तु को छः से गुणा करने से प्राप्त गुणनफल ।—प्रयोगः, (पु०) राजनीति के छः अङ्गों का प्रयोग ।

षाण्मातुरः (पु०) वह जिसकी छः माताएँ हैं । कार्तिकेय ।

षाण्मासिक (वि०) [षाण्मासिकी] १ छःमाही । २ छः मास का या छः मास का पुराना ।

षाष्ठ (वि०) [स्त्री०—षाष्ठी] छठवाँ

षिड्गः (पु०) १ कामुक पुरुष । व्यभिचारी पुरुष । २ विट ।

षुं (पु०) जनन। पुनर्जनन।

षोडश (वि०) [स्त्री०—षोडशी) सोलहवाँ।

षोडशन्, (वि०) सोलह।—अंशु, (पु०) शुक्रग्रह। —अङ्ग, (पु०) एक प्रकार का सुगन्धद्रव्य।—अङ्गुलक, (वि०) सोलह अंगुल चौड़ा।—अंघ्रिः, (पु०) कैकड़ा।—अर्चिस्, (पु०) शुक्रग्रह।—आवर्तः, (पु०) शङ्ख।—उपचार, (पु० बहुव०) पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह माने गये हैं। [आवाहन। आसन। अर्घ्यपाद्य। आचमन। मधुपर्क। स्नान। वस्त्राभरण। यज्ञोपवीत। गन्ध (चन्दन)। पुष्प। धूप। दीप। नैवेद्य। ताम्बूल। परिक्रमा। वंदना।

'आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्काचमस्नानं वसनाभरणानि च॥
गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वदनं तथा॥]

—कला, (पु०) चन्द्रमा की सोलह कला। [चन्द्रमा की सोलह कला ये हैं:—

अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टीरतिर्धृतिः।
शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीःप्रीतिरेव च।
अङ्गदा च तथा पूर्णामृता षोडश वै कलाः।]

—भुजा, (स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति।—मातृका (स्त्री०) एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह हैं। [उनके नाम ये हैं गौरी। पद्मा। शची। मेधा। सावित्री। विजया। जया। देवसेना। स्वधा। स्वाहा। शान्ति। पुष्टि। धृति। तुष्टि। मातरः और आत्मदेवता।]

षोडशधा (अव्यया०) १६ प्रकार का।

षोडशिक (वि०) [स्त्री०—षोडशिकी,] १६ भागों का। सोलह गुना।

षोडशिन् (पु०) अग्निष्टोम यज्ञ का विधान विशेष।

षोढा (अव्यया०) छः प्रकार से —मुखः (पु०) छः मुखों वाला। कार्तिकेय।

ष्ठिव् (धा० प०) [ष्ठीवति, ष्ठीव्यति, ष्ठ्यूत] थूकना।

ष्ठीवनं, ष्ठिवनं (न०) १ थूकने की क्रिया। २ थूक। खखार।

ष्ठ्यूत (व० कृ०) थूका हुआ। उगला हुआ।

ष्वक्, ष्वस्क् (धा० आ०) [ष्वकते, ष्वस्कते] जाना। चलना।

स

स संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यञ्जन। इसका उच्चारणस्थान दन्त है। अतएव यह दन्त्य स कहा जाता है।

स (अव्यया०) यह संज्ञात्मक शब्दों के पहले सम्, सम, तुल्य, सदृश सह के अर्थ में लगाया जाता है। [जैसे सपुत्र, सभार्या, सतृष्ण]

स (पु०) १ सर्प। साँप। २ हवा। पवन। ३ पक्षी। ४ षड्ज। ५ शिव। ६ विष्णु।

संकः (पु०) कंकाल। पंजर।

संयत् (स्त्री०) युद्ध। संग्राम। लड़ाई।—वरः, (पु०) राजा। महाराज।

संयत (व० कृ०) १ बद्ध। बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। २ पकड़ में रखा हुआ। क़ाबू में रखा हुआ। ३ रोका हुआ। दमन किया हुआ। क़ाबू में लाया हुआ। वशीभूत। ४ बंद किया हुआ। क़ैद किया हुआ। ५ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। नियमबद्ध। क़ायदे का पाबंद। ६ उद्यत। तैयार। सन्नद्ध। ७ इन्द्रियजीत। निग्रही। ८ उचित सीमा के भीतर रोका हुआ।—अंजलि, (वि०) हाथ जोड़े हुए। —आत्मन् (वि०) आत्म-निग्रही।—आहार, (वि०) जो आहार करने में संयम रखे।—उपस्कर, (वि०) वह जिसका घर सुव्यवस्थित हो।—चेतस्,—मनस्, (वि०) मन को संयम में रखने वाला।—प्राण, (वि०) वह जिसकी साँस रुकी हो।—वाच्, (वि०) ख़ामोश। जिसने अपनी वाणी को वश में कर रखा हो।

संयत्त (वि०) १ तैयार। सन्नद्ध। सावधान।

संयम, (पु०) १ निग्रह। रोक। २ मन की एकाग्रता। ३ धार्मिक व्रत। ३ तपनिष्ठा। ४ दयालुता।

संयमनं (न०) १ रोक। निग्रह। २ खिंचाव। तनाव। ३ बंधन। ४ बंदी करने की क्रिया। क़ैद। ५ आत्मसंयम। ६ धार्मिक व्रत। ७ चार घरों का चौकोर चौगान।

संयमनः (पु०) शासक।

संयमनी (स्त्री०) यमराज की नगरी का नाम।

संयमित (व० कृ०) १ निग्रह किया हुआ। २ बाँधा हुआ। बेड़ी डाला हुआ। ३ रोका हुआ।

संयमिन् (वि०) संयमी। निग्रही। (पु०) तपस्वी। ऋषि। साधु।

संयानं (न०) १ सहगमन। साथ जाना। २ यात्रा। सफ़र। ३ मुर्दे को ले चलना।

संयान. (पु०) साँचा।

संयाम देखो संयम।

संयाव. (पु०) गुझिया। पिराक। पकवान विशेष।

संयुक्त (व० कृ०) १ जुड़ा हुआ। लगा हुआ। मिला हुआ। २ मिश्रित। वास्ते मेल। ३ साथ आया हुआ। ४ सम्बद्ध। ५ समन्वित। ६ लिये हुए।

संयुगः (पु०) १ संयोग। समागम। २ युद्ध। भिड़न्त। लड़ाई।—गोष्पदं, (न०) तुच्छ भगड़ा।

संयुज् (वि०) संयुक्त। सम्बन्ध युक्त।

संयुत (व० कृ०) १ मिला हुआ। जुड़ा हुआ। संयुक्त। २ सम्बद्ध। समन्वित।

संयोगः (पु०) १ समागम। मेल। मिलान। मिलाप। २ वैशेषिक दर्शन के २४ गुणों में से एक। ३ जोड़ लेना। मिला लेना। अन्तर्मुक्त कर लेना। ४ जोड़। जोड़ी। ५ दो राजाओं के बीच किसी समान उद्देश्य की सिद्धि के लिये सन्धि। ६ व्याकरण में दो या अधिक व्यञ्जनों का मेल। ७ दो ग्रहों या नक्षत्रों का समागम। ८ शिव जी का नामान्तर।—पृथक्त्वं, (न०) (न्याय में) ऐसा अलगाव जो नित्य न हो।—विरुद्धं, (न०) वे खाद्य पदार्थ जो मिला कर खाये जाने पर अवगुण करें, अर्थात रोगों की उत्पत्ति करें।

संयोगिन् (वि०) १ संयुक्त। युक्त। २ मिलवैया।

संयोजनं (न०) १ मेल। मिलाप। २ मैथुन। समागम।

संरक्षः, (पु०) रक्षण। हिफ़ाज़त। देख रेख। निगरानी।

संरक्षणं, (न०) १ हिफ़ाज़त। निगरानी। रक्षा। देखरेख। २ अधिकार। क़ब्ज़ा।

संरक्त, (व० कृ०) १ रंगीन। लाल। २ अनुरागवान्। आसक्त। प्रेम मग्न। ३ क्रोधान्वित। कुपित। ४ मुग्ध। प्रेम में फँसा हुआ। ५ सुन्दर। मनोमुग्धकारी।

संरब्ध, (व० कृ०) १ उत्तेजित। जोश में भरा हुआ। २ क्षुब्ध। उद्विग्न। ३ क्रोध में भरा हुआ। क्रुद्ध। ४ फूला हुआ। सूजा हुआ। ५ बढ़ा हुआ। वृद्धि को प्राप्त। ६ अभिभूत। मग्न। आकुलित।

संरम्भः (पु०) १ आरम्भ। २ उत्पात। उपद्रव। हंगामा। ३ आन्दोलन। उत्तेजना। क्षोभ। ४ उत्सुकता। उत्कण्ठा। उत्साह। ५ क्रोध। रोष। कोप। ६ अभिमान। घमंड। ७ गर्मी और सूजन से फूल उठना।—परुष, (वि०) क्रोध के कारण रूक्ष या रूखा।—रस, (वि०) अत्यन्त क्रुद्ध।—वेग., (पु०) क्रोध की प्रचण्डता।

संरम्भिन् (वि०) [स्त्री०—संरम्भिणी] १ उत्तेजित। उद्विग्न। २ क्रोधयुक्त। क्रोधाविष्ट। ३ अभिमानी। अहंकारी।

संरागः (पु०) १ रंगत। २ अनुराग। स्नेह। ३ क्रोध। कोप।

संराधनं (न०) आराधना करके प्रसन्न करने की क्रिया। २ सम्पादन। ३ गम्भीरध्यानमग्नता। गम्भीर विचार।

संरावः (पु०) १ कोलाहल। शोर। होहल्ला। गड़बड़ी।

संरुग्ण (व० कृ०) टुकड़े टुकड़े किया हुआ। टूटा हुआ।

संरुद्ध, (व० कृ०) १ अवरुद्ध । रोका हुआ । सामना किया हुआ । २ भरा हुआ । परिपूर्ण । ३ घेरा हुआ । अच्छी तरह बंद । ४ ढका हुआ । छिपाया हुआ । ५ अस्वीकृत । वर्जित । मना किया हुआ ।

संरूढ (व० कृ०) १ साथ साथ उगा हुआ । २ पुरा हुआ । भरा हुआ । ३ अंकुरित । कलियाना हुआ । अच्छी तरह जमा या जड पकड़े हुए । ४ धृष्ट । प्रगल्भ । ५ प्रौढ । दृढ ।

संरोधः (पु०) रुकावट । रोकटोक । अड़चन । निग्रह । २ घेरा । ३ बन्धन । बेडी । ४ प्रक्षेप । निक्षेप ।

संरोधन (न०) रोकना । बाधा डालना ।

संलक्षणं (न०) १ निशान लगाने की क्रिया । चिह्नानी । २ लखना । पहचानना । ताड़ना । तमीज़ करना ।

संलग्न (व० कृ०) १ सटा हुआ । संयुक्त । मिला हुआ । २ भिड़ा हुआ । परस्पर मूँकावाज़ी करता हुआ ।

संलयः (पु०) १ लेटना । सोना । निद्रा । २ घुलना । घुलाव । लीनता । ३ प्रलय ।

संलयनं (न०) १ चिपकना । सटना । २ लीनता । विलीनता ।

संलालित (व० कृ०) दुलारा हुआ । प्यार किया हुआ ।

संलापः (पु०) १ परस्पर वार्तालाप । आपस की बातचीत । २ विशेष कर गुप्त या गोपनीय वार्तालाप । रहस्य वार्ता । ३ नाटक में एक प्रकार का संवाद जिसमें क्षोभ या आवेग तो नहीं होता, बल्कि धैर्य होता है ।

संलापकः (पु०) नाटक में एक प्रकार का संवाद । संलाप । २ एक प्रकार का उपरूपक ।

संलीढ (व० कृ०) चाटा हुआ । उपभोग किया हुआ ।

संलीन (व० कृ०) १ अच्छी तरह लगा हुआ । सटा हुआ । ३ छिपा हुआ । ४ ढाँका हुआ । ५ सिकुड़ा हुआ । सङ्कुचित ।—मानस, (वि०) उदास मन ।

संलोडनं (न०) गड़बड़ी । उथल पुथल । उलट पुलट ।

संवत् (अव्यय०) १ वर्ष । २ विशेष कर विक्रमी वर्ष ।

संवत्सरः (पु०) १ वर्ष । साल । २ विक्रमादित्य के काल से प्रचलित वर्ष गणना । ३ शिव जी का नाम । -कर, (पु०) शिव ।—रथः, (पु०) एक वर्ष का मार्ग या वह मार्ग जो एक वर्ष में पूरा हो ।

संवदनं (न०) १ परस्पर वार्तालाप । २ ख़बर देना । ३ परीक्षा । ४ मन्त्र द्वारा वशवर्ती करना । ५ यंत्र तावीज़ ।

संवरं (न०) १ दुराव । छिपाव । २ सहनशीलता । आत्मसंयम । ३ जल । ४ बौद्धों का एक प्रकार का मत ।

संवरः (पु०) १ ढक्कन । २ धीशक्ति । बोध । ३ सिकुड़न । सङ्कोच । ४ बाँध । पुल । सेतु । ५ मृग विशेष । ६ एक दैत्य का नाम ।

संवरणम् (न०) १ आच्छादन । ढकना । २ छिपाव । दुराव । ३ बहाना । मिस ।

संवर्जनं (न०) १ आत्मसात् करना । २ भक्षण कर जाना । खा जाना । उड़ा जाना ।

संवर्त (पु०) १ फेरा । घुमाव । २ लीनता । नाश । ३ कल्पान्त । प्रलय । ४ बादल । ५ बहुत जल वाला बादल । प्रलयकालीन सप्तमेघों में से एक का नाम । ७ वर्ष विशेष । राशि । समूह ।

संवर्तकः (पु०) १ बादल विशेष । २ प्रलयाग्नि । ३ बडवानल । ४ बलराम जी का नाम ।

संवर्तकिन् (पु०) बलराम का नाम ।

संवर्तिका (स्त्री०) १ कमल का बँधा पत्ता । २ कोई बँधा हुआ पत्ता । ३ दीपक की बत्ती ।

संवर्धक (वि०) [स्त्री०—संवर्धिका] बढ़ाने वाला । २ (अतिथि का) स्वागत । बधाई ।

संवर्धित (व० कृ०) १ पाला पोसा । २ वर्धित ।

संवलित (व० कृ०) १ मिला हुआ । मिश्रित । २ छिड़का हुआ । ३ सम्बन्ध युक्त । ४ टूटा हुआ ।

संवलित (वि०) आक्रमण किया हुआ। उच्छिन्न किया हुआ। पददलित किया हुआ।

संवलितं (न०) स्वर। आवाज़।

संवसथः (पु०) आबादी। गाँव या वह स्थान जहाँ लोग आस पास रहते हों।

संवहः (पु०) वायु के सात पथों में से एक का नाम।

संवाद (पु०) १ वार्तालाप। बातचीत। संवाद। २ बहस। वादविवाद। संवाद की सूचना। ५ स्वीकृति। मंजूरी। ६ समानता। सहमति।

संवादिन् (वि०) भाषण करने वाला। वार्तालाप करने वाला।

संवारः (पु०) १ आच्छादन। ढाँकना। छिपाना। २ उच्चारण में कंठ का आकुञ्चन या दबाव। ३ उच्चारण के बाह्य प्रयत्नों में से एक, जिसमें कण्ठ का आकुञ्चन होता है। विवाह का उलटा। ४ रक्षण। हिफ़ाज़त। ५ सुव्यवस्था। ६ ह्रास। न्यूनता। कमी।

संवास (पु०) १ साथ साथ बसना। २ सहवास। साथ। ३ घरेलू व्यवहार या रसज़ब्त। ४ घर। आवासस्थान। ५ सभा के लिये या आमोद प्रमोद के लिये खुला हुआ मैदान।

संवाहः (पु०) १ लेजाना। ढोना। २ मिला कर दबाना। ३ पगचप्पी। पैर दबाना। ४ वह नौकर, जो पैर दबाने और बदन में मालिश करने को रखा गया हो।

संवाहकः (पु०) पैर दबाने वाला।

संवाहनं (न०), संवाहना (स्त्री०) १ बोझ ले जाना या ढोना। २ पैर दबाना। मालिश करना।

संविक्तं (न०) जो अलगाया गया हो।

संविग्न (वि०) १ क्षुब्ध। उद्विग्न। घबराया हुआ। २ भीत। आतुर। डरा हुआ।

संविज्ञात (व० कृ०) सब का जाना हुआ।

संवित्ति (स्त्री०) १ प्रतिपत्ति। चेतना। संज्ञा। ३ अविवाद। ऐकमत्य। ४ अनुभव। ५ बुद्धि।

संविद् (स्त्री०) १ चेतना। ज्ञान। बोध। २ प्रतीति। ३ इकरार। ठहराव। ठेका। प्रतिज्ञा। ४ रज़ामंदी स्वीकृति। ५ प्रचलन। पद्धति। रीति रस्म। ६ युद्ध। संग्राम। लड़ाई। ७ युद्ध की ललकार। वह शब्द या वाक्य जिससे रात को संतरी मित्र या शत्रु को पहचान सके। पलवल। ८ नाम। संज्ञा। ९ सङ्केत। इशारा। १० तोषण। तुष्टि। प्रसन्नता। ११ सहानुभूति। १२ ध्यान। १३ वार्तालाप। १४ भाँग। विजया। बूटी। —व्यतिक्रम, (पु०) वादे को तोड़ना। प्रतिज्ञा भङ्ग करना।

संविदा (स्त्री०) इकरार। प्रतिज्ञा। इकरारनामा।

संविदित (व० कृ०) १ जाना हुआ। समझा हुआ। २ पहचाना हुआ। माना हुआ। ३ प्रसिद्ध। प्रख्यात। ४ खोजा हुआ। ढूँढा हुआ। ५ तै पाया हुआ। सब की राय से निश्चित किया हुआ। ६ उपदिष्ट। समझाया बुझाया हुआ।

संविदितं (न०) इकरारनामा। प्रतिज्ञापत्र।

संविधा (स्त्री०) १ व्यवस्था। आयोजन। प्रबन्ध। २ ढंग। तरीका। ४ विधान। ५ अभिनय। ६ किसी नाटक की घटनाओं को क्रमबद्ध करना।

संविधानकं (न०) १ बटवारा। विभाजन। भाग। अंश।

संविभागिन् (पु०) साझीदार। पत्तीदार। भागीदार।

संविष्ट (व० कृ०) १ सोया हुआ। लेटा हुआ ३ साथ साथ घुसा हुआ। साथ साथ बैठा हुआ। ४ पोशाक पहने हुए।

संवीक्षणं (न०) चारों ओर ताकना। खोजना।

संवीत (व० कृ०) १ पोशाक पहिने हुए। कपड़े पहिने हुए। २ ढका हुआ। छाया हुआ। आच्छादित। सजा हुआ। ४ घिरा हुआ। छिका हुआ। बंद। ५ अभिभूत। मग्न।

संवृक्त (व० कृ०) १ भक्षण किया हुआ। खाया हुआ। २ नष्ट किया हुआ।

संवृत (व० कृ०) १ ढका हुआ। २ छिपा हुआ ३ गुप्त। ४ बंद। सुरक्षित। ५ अवकाश प्राप्त। जो अलग हो गया हो। ६ दबाया हुआ। सकोड़ा हुआ। सङ्कुचित। ७ ज़ब्त किया हुआ। अपहृत।

छीना हुआ। ८ परिपूर्ण। भरा हुआ। ६ समन्वित। सहित।—आकार, (वि०) वह जो अपने मन का भेद किसी प्रकार प्रकट न होने दे। —मंत्र, (वि०) वह जो अपने विचार गुप्त रखे।

संवृतं (न०) १ गुप्त स्थान। २ उच्चारण का ढंग विशेष।

संवृतिः (स्त्री०) १ ढकने या छिपाने की क्रिया। २ छिपाव। दुराव। ३ गुप्त मंसूबे।

संवृत्त (व० कृ०) १ जो हुआ हो। घटित। २ परिपूर्ण। निष्पन्न। ३ एकत्रित। ४ व्यतीत। ५ आच्छादित। ६ अन्वित।

संवृत्तः (पु०) वरुण का नाम।

संवृत्तिः (स्त्री०) १ होना। घटित होना। २ सिद्धि। निष्पत्ति। ३ आच्छादन।

संवृद्ध (व० कृ०) १ पूरा बढ़ा हुआ। २ लंबा उगा हुआ। लंबा। ऊँचा। ३ फला फूला हुआ। उन्नत।

संवेगः (पु०) १ उत्तेजना। क्षोभ। २ पूर्ण वेग। या तेज़ी। प्रचण्डता। ३ उतावली। आवेग। ४ चटपराहट। कड़ुआपन।

संवेदनं (पु०) १ अनुभव। प्रतीति। बोध।

संवेदः (पु०) } १ प्रतीति। बोध। २ अनुभव
संवेदना (स्त्री०) } करना। ३ उत्सर्ग। समर्पण।

संवेशः (पु०) १ निद्रा। विश्राम। २ स्वप्न। ३ बैठकी। ४ मैथुन। सम्भोग। रतिबन्ध।

संवेशनं (न०) रति। रमण। समागम।

संव्यानं (न०) उत्तरीय वस्त्र। चादर। दुपट्टा। २ वस्त्र। आच्छादन। कपड़ा।

संशप्तकः (पु०) १ वह योद्धा जिसने विना सफल हुए लड़ाई से न हटने की शपथ खायी हो। २ वह योद्धा जिसने शत्रु को मारे विना, रणक्षेत्र से न हटने की शपथ खायी हो। ३ चुना हुआ योद्धा ४ सहयोगी योद्धा। ५ षड्यंत्रकारी जिसने किसी की हत्या करने का बीड़ा उठाया हो।

संशयः (पु०) १ शक। सन्देह। दुविधा। २ अनिश्चयात्मक ज्ञान। ३ खतरा। जोखों। ४ सम्भावना। —आत्मन् (वि०) संशयात्मक। सन्दिग्ध। —आपन्न,—उपेत,—स्थ, (वि०) सन्दिग्ध। संशयी। अनिश्चयात्मक।—गत, (वि०) खतरे में पड़ा हुआ।—छेदः, (पु०) संशय का निरसन। निश्चयात्मक।

संशयान } (वि०) सन्दिग्ध। शक्की। डॉवाडोल।
संशयालु }

संशरणं (न०) चढ़ाई का उपक्रम। आक्रमण।

संशित (व० कृ०) १ शान पर चढ़ाया हुआ। तेज़ किया हुआ। टेया हुआ। २ पूर्णरीत्या पूरा किया हुआ। ३ निश्चय किया हुआ। निर्णय किया। हुआ। तै किया हुआ।—व्रतः, (पु०) वह जिसने अपना व्रत पूरा कर डाला हो।

संशुद्ध (वि०) १ विशुद्ध। यथेष्टशुद्ध। २ पालिश किया हुआ। साफ किया हुआ। ३ प्रायश्चित्त से निष्पाप किया हुआ।

संशुद्धिः (स्त्री०) १ पूर्ण रूप से शुद्धि। २ सफ़ाई। शुद्धि। ३ सही करने की क्रिया। भूल को सुधारने की क्रिया। ४ ऋणशोध। ५ निकासी।

संशोधनं (न०) सफ़ाई। निकासी।

संश्चत् (न०) हाथ की सफाई। जादूगरी। इन्द्रजाल। (पु०) जादूगर।

संश्यान (व० कृ०) १ सङ्कुचित। सिकुड़ा हुआ। ठिठुरा हुआ। २ जमा हुआ। जमौआ। ३ लपटा हुआ। ४ सहसा विनष्ट हुआ।

संश्रयः (पु०) १ आश्रय। शरण। पनाह। २ विश्रामस्थान। आवसस्थान। निवासस्थान। डेरा। टिकासरा। ३ आश्रयाभिलाषी। पनाह चाहने वाला। सन्धि करने वाला।

संश्रवः (पु०) १ सुनना। कान देना। २ प्रतिज्ञा। इकरार।

संश्रवणं (न०) १ श्रवण। सुनना। २ कान।

संश्रित (व० कृ०) १ आश्रय ग्रहण या रक्षा कराने के लिये गया हुआ। २ समर्थन किया हुआ। आश्रय दिया हुआ।

संश्रुत (व० कृ०) १ प्रतिज्ञात। आपस में तै किया हुआ। २ भली भाँति सुना हुआ।

संश्लिष्ट (व० कृ०) १ ख़ूब मिला हुआ। २ आलिङ्गित। ३ सम्बन्ध युक्त। ४ पड़ोस का। समीप का। ५ अन्वित। सम्पन्न।

संश्लेषः (पु०) १ आलिङ्गन। परिरंभण। मिलन। भेंटन। २ मेल। संयोग। संस्पर्श।

संश्लेषणं (न०) } १ मिला कर दबाना। २ दो
संश्लेषणा (स्त्री०) } को एक साथ मिलाने का साधन।

संसक्त (व० कृ०) १ लगा हुआ। सटा हुआ। २ जुड़ा हुआ। ३ समीप। निकट। ४ गड़बड़। घोल मेल। संमिश्रित। ५ लवलीन। ६ सम्पन्न। ७ बँधा हुआ। रोका हुआ। —मनस्, (वि०) मन लगाये हुए। —युग, (वि०) जुआ में लगा हुआ। साज या ज़ीन लगा हुआ।

संसक्तिः (स्त्री०) १ घनिष्ट सम्बन्ध। २ सामीप्य। ३ अत्यन्त परिचय। ४ बन्धन। ५ भक्ति।

संसद् (स्त्री०) १ सभा। मजलिस। मण्डल। २ न्यायालय।

संसरणं (न०) १ गमन। २ संसार। सांसारिक जीवन। ३ जन्म और पुनर्जन्म। ४ सेना का अबाधित प्रस्थान। ५ राजमार्ग। आम सड़क। ६ युद्धारम्भ। ७ नगरद्वार के समीप की मुसाफ़िरों की धर्मशाला।

संसर्गः (पु०) १ संगम। मेल मिलाप। २ संस्था। सभा। ३ सस्पर्श। ४ हेलमेल। रसज़ब्त। ५ मैथुन। सम्भोग। ६ घनिष्ट सम्बन्ध। —अभावः, (पु०) १ संसर्ग का अभाव। सम्बन्ध का न होना। २ न्याय में अभाव का एक भेद। किसी वस्तु के सम्बन्ध में दूसरी वस्तु का अभाव। —दोषः, (पु०) वह बुराई जो बुरी संगत के कारण उत्पन्न हो। संगत का दोष।

संसर्गिन् (वि०) संसर्ग या लगाव रखने वाला। (पु०) साथी। संगी।

संसर्जनं (न०) १ संयोग। मिलान। २ त्याग। वैराग्य। ३ वर्जन। राहित्य।

संसर्पः (पु०) १ रेंगना। सरकना। २ वह अधिक मास जो क्षय मास वाले वर्ष में होता है।

संसर्पणं (न०) १ रेंगना। सरकना। २ सहसा आक्रमण। अचानक हमला।

संसर्पिन् (वि०) रेंगने वाला। सरकने वाला।

संसादः (पु०) जमावड़ा। गोष्ठी। सभा। समाज।

संसारः (पु०) १ मार्ग। रास्ता। २ सांसारिक जीवन। ३ पुनर्जन्म। बार बार जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। भवचक्र। ४ मायाजाल। —गमनं, (न०) पुनर्जन्म। —गुरुः (पु०) कामदेव। —मार्गः, (पु०) सांसारिक जीवन का मार्ग। २ स्त्री की जननेन्द्रिय। भग। —मोक्षः, (पु०)—मोक्षणं (न०) मुक्ति। मोक्ष। आवागमन से छुटकारा।

संसारिन् (वि०) [स्त्री०—संसारिणी] लौकिक। सांसारिक। (पु०) जीवधारी। मख़लूक़। जीवात्मा।

संसिद्ध (व० कृ०) १ पूर्णतया सम्पन्न। २ जिसका योग सिद्ध होगया हो। मुक्त।

संसिद्धिः (स्त्री०) १ सम्यक् पूर्ति। किसी कार्य का अच्छी तरह पूरा होना। मोक्ष। मुक्ति। ३ प्रकृति। स्वभाव। निसर्ग। ४ मदमस्त स्त्री। मदोन्मा।

संसूचनं (न०) १ ज़ाहिर करना। जताना। प्रकट करना। सूचना देने वाला। २ सङ्केत करने वाला। इशारा देने वाला। भर्त्सना। फटकार।

संसृतिः (स्त्री०) १ धार। प्रवाह। २ नैसर्गिक जीवन। ३ आवागमन। भवचक्र।

संसृष्ट (व० कृ०) १ मिश्रित। मिला हुआ। साझीदार की तरह शामिल। ३ रचित। संयोजित। ४ पुनर्मिलित। ५ रचा हुआ। ६ शुद्ध किया हुआ।

संसृष्टता (स्त्री०) } संसृष्ट होने का भाव। जायदाद
संसृष्टत्वं (न०) } का बँटवारा हो जाने के पीछे फिर एक में होना या रहना।

संसृष्टिः (स्त्री०) १ एक में मेल या मिलावट। मिश्रण। २ परस्पर सम्बन्ध। लगाव। ३ हेलमेल। घनिष्ठता। मेल मुलाक़ात। ४ एक ही

परिवार में रहने की क्रिया। शिरकत खान्दान। ५ संग्रह। ६ जमावड़ा। समुदाय। ७ दो या अधिक काव्यालंकारों का एक ऐसा मेल जिसमें सब परस्पर निरपेक्ष हों, अर्थात् एक दूसरे के आश्रित, अन्तर्भूत आदि न हों।

संसेकः (पु०) अच्छी तरह पानी आदि का छिड़काव।

संस्कर्तृ (पु०) १ वह जो राँधता है, तैयार करता है। रसोइया। २ संस्कार कराने वाला। संस्कारकारक।

संस्कारः (पु०) १ ठीक करना। सुधारना। २ शुद्धि। ३ सजावट। ४ परिष्कार। ५ बदन की सफाई। शौच। ६ मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन। मानसिक शिक्षा। ७ शिक्षा। उपदेश। ८ पूर्वजन्म की वासना। ९ पवित्र करना। १० वे कृत्य जो जन्म से लेकर मरणकाल तक द्विजातियों के संबंध में आवश्यक हैं।

संस्कृत (व० कृ०) १ साफ किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २ परिमार्जित। परिष्कृत। ३ धो मांज कर शुद्ध किया हुआ। निखारा हुआ। ४ पकाया हुआ। ५ सिजाया हुआ। सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। दुरुस्त किया हुआ। ६ अच्छे रूप में लाया हुआ। सजाया हुआ। ७ विवाहित।

संस्कृतं (न०) संस्कृत भाषा।

संस्कृतः (पु०) १ वह शब्द जो संस्कृत भाषा के व्याकरणानुसार बना हो। २ वह पुरुष जिसके उपनयनादि संस्कार हुए हों। ३ विद्वज्जन।

संस्क्रिया (स्त्री०) १ प्रायश्चित्त कर्म। २ संस्कार। ३ अन्त्येष्टि क्रिया।

संस्तभः } (पु०) १ सहारा। २ दृढ़ता। धीरता।
संस्तम्भः } ३ रोक। मान। ४ लकवा। स्तंभन।

संस्तरः (पु०) १ खाट। चारपाई। शय्या। बिस्तर। २ तह। पहल। ३ यज्ञ।

संस्तवः (पु०) १ प्रशंसा। स्तुति। तारीफ़। २ परिचय। जान पहचान।

संस्तावः (पु०) १ प्रशंसा। प्रख्याति। २ एक स्वर से मिल कर गान। ३ यज्ञ में स्तुति करने वाले ब्राह्मणों की अवस्थान भूमि।

संस्तुत (व० कृ०) १ जिसकी खूब स्तुति या प्रशंसा की गयी हो। २ एक साथ। ऐकमत्य। ४ घनिष्ट। परिचित।

संस्त्यायः (पु०) १ ढेर। संग्रह। समुदाय। २ पड़ोस। नैकट्य। सामीप्य। ३ विस्तार। फैलाव। व्याप्ति। ४ घर। आवासस्थल। ५ परिचय। रसज्ञता की बातचीत।

संस्थ (वि०) १ ठहराऊ। २ पालतू। घरेलू। अचल। स्थिर। ३ समाप्त। मरा हुआ।

संस्थः (पु०) रहने वाला। अधिवासी। २ पड़ोसी। देशवासी। ३ भेदिया। जासूस।

संस्था (स्त्री०) १ सभा। मजलिस। समूह। २ स्थिति। दशा। हालत। ३ रूप। आकार। आकृति। ४ पेशा। धंधा। आजीविका। ५ ठीक ठीक आचरण। ६ समाप्ति। पूर्णता। ७ रोकथाम। सहारा। ८ हानि। नाश। ९ संसार का नाश। प्रलय। १० समानता। सादृश्य। ११ राजाज्ञा। राजशासन। १२ सोमयज्ञ का विधान विशेष।

संस्थानं (न०) १ संग्रह। ढेर। २ रूप। आकृति। ३ बनावट। रचना। ४ सामीप्य। ५ परिस्थिति। हालत। ६ स्थान। ठहरने का स्थान। ७ चौराहा। चिह्न। निशान। लक्षण। १२ मृत्यु। मौत।

संस्थापनं (न०) १ संग्रह। २ निश्चय। निर्णय। २ जमाना। बैठाना। स्थित करना। ३ रोकना। थामना।

संस्थापना (स्त्री०) शान्त करने का साधन।

संस्थित (व० कृ०) १ खड़ा। उठाया हुआ। २ ठहरा हुआ। टिका हुआ। ३ बैठा हुआ। जमा हुआ। दृढ़ता से अड़ा हुआ। पड़ोस का। पास का। मिलता जुलता हुआ। समान। ५ एकत्रित किया हुआ। ढेर लगाया हुआ। ६ स्थिर। अचल। ७ मृत। मरा हुआ।

संस्थितिः (स्त्री०) साथ साथ होना। साथ ठहरना। २ सामीप्य। नैकट्य। ३ आवासस्थान। रहने का

स्थान । विश्राम स्थान । ४ संग्रह । ढेर । ५ सातत्य । ६ परिस्थिति । हालत । दशा । ७ रोक थाम । ८ मृत्यु ।

संस्पर्शः (पु०) १ छुआव । लगाव । संगम । संयोग । २ इन्द्रियों का विषय ग्रहण ।

संस्पर्शी (स्त्री०) एक प्रकार का सुगन्धयुक्त पौधा ।

संस्फालः (पु०) १ मेढ़ा । मेष । २ बादल । मेघ ।

संस्फेटः } **संस्फोटः** } (पु०) लड़ाई । युद्ध । संग्राम । जंग ।

संस्मरणं (न०) पूर्ण स्मरण । खूब याद ।

संस्मृतिः (स्त्री०) याददास्त । स्मरण शक्ति ।

संस्रवः } **संस्रावः** } (पु० , १ बहाव । प्रवाह । चुआव । २ धारा । चश्मा । ३ देवता या पितृ के उद्देश्य से दिये हुए जल आदि का अवशिष्ट भाग । ४ एक प्रकार का नैवेद्य या भेंट ।

संहत (व० कृ०) १ भिड़ा हुआ । आपस में टकराया हुआ । घायल । २ बंद । मुँदा हुआ । ३ भली भाँति बुना हुआ । दृढ़ता पूर्वक मिला हुआ । ४ पूर्ण रूप से मिलाया हुआ । दृढ़ । ठोस । ५ युक्त । संयुक्त । ६ ऐकमत्य । ७ एकत्रित । जमा हुआ ।—जानु, (वि०) घुटने मिलाये हुए । घुटने टेके हुए ।—भ्रू, (वि०) भौंएं सकोड़े हुए ।—स्तनी. (स्त्री०) वह स्त्री जिसके दोनों कुच आपस में सटे हों ।

संहतता (स्त्री०) } **संहतत्वं** (न०) } १ संयोग । २ संहति । संक्षेप । ३ आनुकूल्य । मेल । ४ ऐक्य । एका ।

संहतिः (स्त्री०) १ मिलाव । मेल । २ जुटाव । बटोर । इकट्ठा होने का भाव । ३ निविडसंयोग । गठन । ठोसपन , घनत्व । ४ सन्धि । जोड़ । ५ परमाणुओं का परस्पर मेल । राशि । ढेर । अटाला । ७ समूह । झुंड । ८ ताक़त । बल । शक्ति । ६ शरीर । तन । बदन ।

संहननं (न०) १ संहति । दृढ़ता । २ शरीर । ३ शक्ति । बल ।

संहरणं (न०) १ एक साथ करना । बटोरना । एकत्र करना । संग्रह करना । २ ग्रहण करना । पकड़ना । ३ सङ्कोचन । ४ निग्रह । ५ नाश । विनाश ।

संहर्तृ (पु०) नाशक ।

संहर्षः (पु०) रोमाञ्च । पुलक । उमङ्ग से रोओं का खड़ा होना । २ हर्ष । आनन्द । ३ स्पर्द्धा । प्रतिद्वन्द्वता । ४ पवन । ५ रगड़ । मसलन ।

संहानः (पु०) २१ नरकों में से एक नरक ।

संहारः (पु०) १ समेटना । इकट्ठा करना । बटोरना । २ सङ्कोच । आकुञ्चन । सिकुड़न । ४ खुलासा । सार । संक्षेप कथन । ५ छोड़े हुए बाण को वापिस लेना । ६ रोक लेना । ७ अलग । ८ अन्त । छोर । समाप्ति । ६ जमावड़ा । समुदाय । १० उच्चारण का एक दोष । ११ निवारण । परिहार । रोक । १२ निपुणता । अभ्यास । १३ नरक विशेष ।—भैरवः, (पु०) भैरव के रूपों में से एक कालभैरव ।—मुद्रा, (स्त्री०) तांत्रिक पूजन में अङ्गों की एक प्रकार की स्थिति । इसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं ।

संहित (व० कृ०) १ एक साथ किया हुआ । एकत्र किया हुआ । बटोरा हुआ । समेटा हुआ । २ २ सम्मिलित । मिलाया हुआ । ३ जुड़ा हुआ । लगा हुआ । संबद्ध । ४ संयुक्त । सहित । अन्वित । पूर्ण । ५ मेल में आया हुआ । मेली । हेलमेल वाला ।

संहिता (स्त्री०) १ संयोग । मेल । २ संग्रह । ३ वह ग्रन्थ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो । ४ धर्मशास्त्र । स्मृति । ५ वेदों का मन्त्रभाग । ६ जगन्नियन्ता परमात्मा ।

संहूतिः (स्त्री०) होहल्ला । कोलाहल । शोर ।

संहृत (व० कृ०) १ समेटा हुआ । एकत्र किया हुआ । २ संक्षिप्त । खुलासा । ३ वापिस लिया हुआ । निवारित । जमा लिया हुआ । ४ पकड़ा हुआ । हथियाया हुआ । ५ नष्ट किया हुआ ।

संहृतिः (स्त्री०) १ सिकुड़न । २ हानि । नाश । ३ ग्रहण । पकड़ । ४ रोक । निवारण । ५ संग्रह ।

संहृष्ट (व० कृ०) १ उमङ्ग से खड़े हुए रोएँ। पुलकित। प्रफुल्ल। प्रसन्न। आह्लादित। २ अत्यन्त उत्साही।

संह्रादः (पु०) ऊँचा शोर। शोर। कोलाहल। चीख।

संह्रीण (वि०) १ शर्मीला। सकुचीला। २ अत्यन्त लज्जित किया हुआ।

सकट (वि०) बुरा। कुत्सित। पापी।

सकंट } सकण्ट } (वि०) १ कटीला। काँटेदार। कष्टदायक भयानक।

सकंटकः } सकण्टकः } (पु०) शैवल। सिवार।

सकंप, सकम्प संकपन सकम्पन } (वि०) कँपकपा। थरथराने वाला।

सकरुण (वि०) दयालु।

सकर्ण (वि०) [स्त्री०—सकर्णा, सकर्णी] १ कानों वाला। २ सुनने वाला।

सकर्मक (वि०) १ जो कर्म करता हो या जिसने कोई कर्म किया हो। २ व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य्य उसके कर्म पर समाप्त हो।

सकल (वि०) १ अवयवों या भागों सहित। २ सब। सर्व। समस्त। कुल। ३ धीमे और कोमल स्वरों वाला।—वर्ण, (वि०) वह जिसमें क और ल अक्षर हों।

सकल्पः (पु०) शिव जी का नाम।

सकाकोलः (पु०) २१ नरकों में से एक का नाम।

सकाम (वि०) १ वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २ वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। लब्धकाम। ३ कामवासनायुक्त व्यक्ति। मैथुन की इच्छा रखने वाला व्यक्ति। कामी।

सकामं (अव्यया०) १ सहर्ष। २ सन्तोष सहित। ३ दरहकीकत।

सकाल (वि०) सामयिक।

सकालं (अव्यया०) समय से। बड़े तड़के। बड़े भोर।

सकाश (वि०) जो दिखलाई पड़े। पास। निकट। समीप।

सकाशः (पु०) वर्तमान। पड़ोस। सामीप्य।

सकुक्षि (वि०) सहोदर। एक पेट से उत्पन्न।

सकुल (वि०) १ उच्चकुल का। २ एक ही कुल का। ३ वह जो परिवार वाला हो। ४ परिवार सहित।

सकुलः (पु०) १ जात बिरादरी का। २ सकुली जाति की मछली।

सकुल्यः (पु०) १ परिवार के लोगों में से एक। २ चौथी, पाँचवी या छठवीं अथवा सातवीं, आठवीं या नवमी पीढ़ी का भाई बिरादर। ३ दूर का सम्बन्धी।

सकृत् (अव्यया०) १ एक बार। २ एक अवसर पर। पहले। पूर्वकाल में। ३ एकदम। फ़ौरन। तुरन्त ४ साथ साथ। (पु०-स्त्री०) मल। विष्ठा। —गर्भा, (स्त्री०) खच्चर। —प्रजः, (पु०) काक। कौआ। —प्रसूता, —प्रसूतिका, (स्त्री०) वह स्त्री जिस के एक सन्तान हुई हो। वह गाय जो केवल एक बार ब्याई हो।—फला, (स्त्री०) केले का वृक्ष।

सकैतव (वि०) धूर्त। दगाबाज़।

सकैतवः (पु०) ठग आदमी। धूर्त आदमी। गुंडाजन।

सकोप (व०) क्रुद्ध। क्रोध में भरा।

सकोपं (अव्यया०) क्रोध के साथ। कुपित होकर।

सक्त (व० कृ०) १ मिला हुआ। सटा हुआ। संलग्न। २ जड़ा हुआ। गड़ा हुआ। ३ सम्बन्धयुक्त।—वैर, (वि०) जो सदैव बैर रखता हो।

सक्तिः (स्त्री०) १ स्पर्श। संसर्ग। संगम। २ अनुराग। अनुरक्तता। भक्ति।

सक्थि (पु०) १ जाँघ। जंघा। २ हड्डी। ३ गाड़ी या छकड़े का अंग।

सक्रिय (वि०) क्रियात्मक । जंगम । चल ।

सक्षण (वि०) वह जिसको अवकाश हो ।

सखि (पु०) [सखा, सखायौ, सखायः] १ मित्र । संगी ।

सखी (स्त्री०) सहेली ।

सख्यं (न०) १ मित्रता । दोस्ती । हेलमेल । २ समानता ।

सख्यः (पु०) दोस्त । मित्र ।

सगण (वि०) दल सहित । समुदाय सहित ।

सगणः (पु०) शिव जी का नाम ।

सगर (वि०) ज़हरीला । विषैला

सगरः (पु०) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम ।

सगर्भः, सगर्भ्यः (पु०) एक गर्भ का ।

सगुण (वि०) १ गुणसहित । गुणों वाला । २ धार्मिक । साधु । पवित्र । ३ सांसारिक । ४ वह धनुष जिस पर डोरी या रोदा या चिल्ला चढ़ा हो ।

सगोत्र (वि०) एक कुल का । सम्बन्ध युक्त ।

सगोत्रः (पु०) १ एक कुल के लोग । आपसदारी या रिश्तेदारी के लोग । सजातीय । उस वंश के जिनके साथ श्राद्ध और तर्पण का सम्बन्ध हो । दूर का नातेदार । ४ कुल । परिवार । खानदान ।

सग्धिः (स्त्री०) साथ साथ खाने वाला ।

संकट, सङ्कट (वि०) १ सिकुड़ा हुआ । सङ्कीर्ण । पतला २ अगम्य ३ परिपूर्ण । सम्पन्न । घिरा हुआ ।

संकटं, सङ्कटं (न०) सङ्कीर्ण रास्ता । दर्रा । पर्वतों के बीच का रास्ता । २ आफत । विपत्ति । जोखों । खतरा ।

संकथा, सङ्कथा (स्त्री०) वार्तालाप । बातचीत ।

संकरः, सङ्करः (पु०) १ मिलावट । २ संयोग । ३ वर्ण-असमानता । वर्णों की गड़बड़ी । दोगलापन । ४ धूल । बटोरन । झाड़न

संकरी, सङ्करी देखो संकारी या सङ्कारी ।

संकर्षणं, सङ्कर्षणं (न०) १ खींचने की क्रिया । २ आकर्षण । हलसे जोतने की क्रिया । जुताई ।

संकर्षणः, सङ्कर्षणः (पु०) श्रीकृष्ण के भाई बलराम का नाम ।

संकलः, सङ्कलः १ संग्रह । २ जोड़ । योग ।

संकलनं (न०), सङ्कलनं (न०), संकलना (स्त्री०), सङ्कलना (स्त्री०) १ बहुत सी वस्तुओं को एक स्थान पर एकत्र करने की क्रिया । २ संभोग । ३ टक्कर । ४ मरोड़ । ऐंठना । ५ जोड़ ।

संकलित, सङ्कलित (व० कृ०) १ ढेर लगाया हुआ । एकत्र किया हुआ । २ मिश्रित । ३ पकड़ा हुआ । ४ योजित । जोड़ा हुआ । जोड़ लगाया हुआ ।

संकल्पः, सङ्कल्पः (पु०) १ कार्य करने की इच्छा जो मन में उत्पन्न हो । विचार । इरादा । २ अभिलाष । कामना । ३ मन । चित्त । हिया । ४ दान । पुराण । कोई देवकार्य आरम्भ करने के पूर्व एक निश्चित मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़ निश्चय या विचार प्रकट करना । —जः, —जन्मन्, (न०)—योनिः, (पु०) कामदेव की उपाधि । रूप, इच्छा प्रकाश करने वाला । इच्छानुसार ।

संकसुक (वि०) १ अदृढ़ । चंचल । परिवर्तनशील । २ अनिश्चित । ३ सन्दिग्ध । संशयग्रस्त ४ बुरा । दुष्ट । ५ कमज़ोर । निर्बल ।

संकारः, सङ्कारः (पु०) १ धूल । गर्दा । झाड़न । बटोरन । २ अंगारों की चटापट ।

संकारी, सङ्कारी (स्त्री०) वह लड़की जिसका कौमार्य हाल ही में हरण किया गया हो ।

संकाश, सङ्काश (वि०) १ समान । सदृश । २ समीप । निकट ।

संकाशः, सङ्काशः (पु०) १ मौजूदगी । विद्यमानता । २ सामीप्य । नैकट्य ।

संकिलः, सङ्किलः (पु०) लुआठ । अधजली लकड़ी । जलती हुई मशाल ।

संकीर्ण, सङ्कीर्ण (वि०) १ मिश्रित । मिला हुआ । २ गड़बड़ । फुटकर । ३ बिखरा हुआ । फैला

हुआ । ४ अस्पष्ट । ५ मदमस्त । नशे में चूर । ६ दोगला । अकुलीन । ७ अविशुद्ध । मिलावटी । ८ तंग । सँकरा । सङ्कुचित ।

संकीर्णः, सङ्कीर्णः (पु०) १ वर्णसङ्कर जाति का आदमी। २ वह राग या रागिनी जो अन्य दो रागों या रागिनियों को मिला कर बने । ३ मदमस्त हाथी । नशे में चूर हाथी ।

संकीर्णं, सङ्कीर्णं (न०) कठिनाई । विपत्ति । सङ्कट ।—जाति,—योनि, (वि०) दोगली नस्ल का ।—युद्धं, (न०) गड़बड़ लड़ाई ।

संकीर्तनं (न०), सङ्कीर्तनं (न०), संकीर्तना (स्त्री०), सङ्कीर्तना (स्त्री०) १ प्रशंसा । स्तव । स्तुति । तारीफ़ । २ किसी देवता की महिमा का वर्णन या स्तवन । ३ किसी देवता के नाम का बार बार नाम लेना ।

संकुचित, सङ्कुचित (व० कृ०) १ सिकुड़ा हुआ । सिमटा हुआ । संक्षेप किया हुआ । २ सिकुड़नदार । झुर्रियाँ पड़ा हुआ । ३ बंद । मुँदा हुआ । ४ ढका हुआ ।

संकुल, सङ्कुल (वि०) १ गड़बड़ । २ भरा हुआ । परिपूर्ण । ३ अस्तव्यस्त । ४ असंगत ।

संकुलं, सङ्कुलं (न०) १ भीड़भाड़ । जनसमुदाय । झुंड । दल । गल्ला ।

संकुलं, सङ्कुलं (न०) १ गिरोह । झुंड । गल्ला । २ तुमुल युद्ध । ३ असंगत या परस्पर विरोधिनी वक्तृता ।

संकेतः, सङ्केतः (पु०) १ स्वल्पाक्षर उल्लेख या निर्देश । इशारा । २ चिह्न । चिन्हानी । निशान । ३ नियमावली । नियमपत्र । ४ कामशास्त्र सम्बन्धी इङ्गित । शृङ्गारचेष्टा । ५ प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का वादा । ६ प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का स्थान । ७ ठहराव । शर्त । ८ (व्याकरण का) सूत्र ।—गृहं,—निकेतनं,—स्थानं, (न०) प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का स्थान ।

संकेतकः, सङ्केतकः (पु०) १ नियम । इकरार । २ नियुक्ति । ठहराव । ३ प्रेमी प्रेमिका के मिलने का स्थान । ४ प्रेमी या प्रेयसी जो मिलने के लिये समय का सङ्केत करें । ५ नियुक्ति ।

संकेतित, सङ्केतित (वि०) १ संकेत किया हुआ । नियमानुसार निर्द्धारित । २ आमंत्रित । बुलाया हुआ ।

संकोचः, सङ्कोचः (पु०) १ सिकुड़न । २ संक्षेपकरण । ह्रास । ३ भय । डर । ४ बदी । रोक । ५ बंधन । ६ एक प्रकार की मछली ।

संक्रदनः, सङ्क्रन्दनः (पु०) श्रीकृष्ण भगवान का नाम ।

संक्रमः, सङ्क्रमः (पु०) १ सहमत्य । २ सहमगन । ३ परिवर्तन । अवस्थान्तर प्रवृत्ति । विषयान्तर प्रसङ्ग । ४ किसी ग्रह का एक राशि से निकल कर दूसरी राशि में जाना । ५ गमन । यात्रा ।

संक्रमं (न०), सङ्क्रमं (न०), संक्रमः (पु०), सङ्क्रमः (पु०) १ दुरधिगम्य मार्ग । सँकरा रास्ता । २ पुल । सेतु । ३ किसी वस्तु की प्राप्ति का साधन ।

संक्रमणं, सङ्क्रमणं (न०) १ ऐकमत्य । २ एक विन्दु से दूसरे विन्दु पर गमन । ३ सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि पर गमन । ४ वह विशेष दिन जिस दिन सूर्य उत्तरायण होते हैं ।

संक्रांत, संक्रान्त (व० कृ०) १ प्रविष्ट । घुसा हुआ । २ परिवर्तित । बदला हुआ । ३ पकड़ा हुआ । ४ विचारा हुआ । सोचा हुआ । ५ वर्णित । रक्षित ।

संक्रांतिः, सङ्क्रान्तिः (स्त्री०) १ ऐक्य । मेल । २ अवस्थान्तर प्रवृत्ति । ३ सूर्य अथवा अन्य किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि पर गमन । ४ परिवर्तन । (दूसरे को देना) ५ प्रदान शक्ति । ६ प्रतिछवि । प्रतिमूर्ति । ७ वर्णन । रञ्जन ।

संक्राम, सङ्क्राम देखो संक्रम ।

संक्रीडनं, सङ्क्रीडनं (न०) साथ साथ खेलने वाले ।

संक्लेदः, सङ्क्लेदः (पु०) १ नमी । तरी । सील । २ एक प्रकार का पनीला पदार्थ जो प्रथम मास में गर्भ के रूप में रहता है ।

संक्षय. (पु०) १ नाश । विनाश । २ पूर्ण विनाश । ३ हानि । बरबादी । ४ अन्त । अवसान । प्रलय ।

संक्षिप्ति (स्त्री०) १ साथ साथ प्रक्षेपण । २ सङ्कुचन । संक्षेप करण । ३ फेंकना । प्रेषण । ४ दाँव । घात । घात की जगह ।

संक्षेपः (पु०) १ निक्षेप । प्रक्षेप । २ खुलासा । मुख़्तसर । ३ संकोचन । घटाना । ४ सार । संग्रह । ५ फिकाव । प्रेषण । ६ ले जाना । ७ किसी अन्य के कार्य में साहाय्य प्रदान ।

संक्षेपणं (न०) १ ढेर करना । २ संक्षेपकरण । सार निकाल लेना । ३ प्रेषण ।

संक्षोभः (पु०) १ कँपकपी । थरथराहट । २ घबड़ाहट । उत्तेजना । ३ अस्तव्यस्तता । उलट पलट । ४ अभिमान । अहङ्कार ।

संख्यं (न०) युद्ध । लड़ाई । संग्राम ।

संख्या (स्त्री०) १ गणना । गिनती । २ हिंदसा । अङ्क । ३ जोड़ । ५ हेतु । युक्ति । समझ । बुद्धि । ६ विचार । ढंग । तौर । तरीका ।—अतिग,—अतीत, (वि०) संख्या से परे । वह जिसकी गिनती न हो सके ।—वाचकः, (पु०) संख्या सम्बन्धी ।

संख्यात (व० कृ०) १ गिना हुआ ।

संख्यातं (न०) संख्या । अङ्क ।

संख्याता (स्त्री०) पहेली विशेष ।

संख्यावत् (वि०) १ गिना हुआ । २ युक्ति वाला । (पु०) पण्डित जन ।

संगः } सङ्गः } (पु०) १ संयोग । २ मेल । ऐक्य । संगम । ३ संसर्ग । संस्पर्श । ४ साथ । मैत्री । मैत्रोपयोगी व्यवहार । ५ अनुराग । अनुरक्तता । अभिलाप । ६ सांसारिक वस्तुओं में आसक्ति । ७ भिड़न्त । लड़ाई ।

संगणिका } सङ्गणिका } (स्त्री०) उत्तम संवाद । अनुपम संवाद ।

संगत } सङ्गत } (व० कृ०) १ जुड़ा हुआ । मिला हुआ । २ गया हुआ । एकत्रित । ३ विवाहित । मैथुन द्वारा मिला हुआ । ४ उपयुक्त । मुनासिब । ५ एक राशि पर एकत्रित । ६ संकुचित । सकुड़ा हुआ ।

संगतं } सङ्गतं } (न०) १ ऐक्य । मेल । सन्धि । २ साथ । संगति । ३ परिचय । मैत्री । घनिष्टता । ४ संगत कथन । युक्तियुक्त भाषण ।

संगति } सङ्गतिः } (स्त्री०) १ ऐक्य । मेल । २ संग । साथ । सुहबत । संगत । ३ स्त्रीमैथुन । ४ योग्यता । उपयुक्तता । उपयोगता । उपयुक्त सम्बन्ध । ५ संयोग । इत्तिफाक़िया । इत्तिफाक़िया घटना । ६ ज्ञान । ७ ज्ञान प्राप्त करने के लिये बार बार प्रश्न करने की क्रिया ।

संगमः } सङ्गमः } (पु०) १ ऐक्य । मिलाप । २ साथ । सुहबत । ३ संसर्ग । संस्पर्श । ४ स्त्रीमैथुन । स्त्रीप्रसंग । ५ (नदियों का) संगम । ६ भिड़न्त । मुठभेड़ । लड़ाई । ७ योग्यता । उपयुक्तता । ८ ग्रहों का समागम ।

संगमनं } सङ्गमनं } (न०) मेल । ऐक्य ।

संगरः } सङ्गरः } (पु०) १ प्रतिज्ञा । वादा । इक़रार । २ स्वीकार । अङ्गीकार । ३ सौदा । ४ युद्ध । लड़ाई । समर । ५ ज्ञान । ६ भक्षण । ८ विपत्ति । सङ्कट । ८ विष । ज़हर ।

संगव } सङ्गवः } (पु०) तड़का होने से ३ मुहूर्त्त बाद का काल । वह समय जब चरवाहा बछड़ों को दूध पिला कर और गौवों को दुह कर चराने को ले जाता है ।

संगादः } सङ्गादः } (पु०) संवाद । वार्तालाप ।

संगिन् } सङ्गिन् } (वि०) १ सयुक्त । मिला हुआ । २ भक्त । अनुरक्त ।

संगीत } सङ्गीत } (व० कृ०) मिल कर गाया हुआ ।

संगीतं } सङ्गीतं } (न०) १ वह गाना जो कई लोगों द्वारा मिल कर गाया जाय । २ वह गान जो वाद्ययंत्रों के साथ लय ताल के साथ गाया जाय । ३ गाने बजाने की कला ।—शास्त्रं, (न०) वह शास्त्र जिसमें सङ्गीतकला का निरूपण हो ।

संगीतकं } सङ्गीतकं } (न०) १ गाना बजाना । २ एक प्रकार का सार्वजनिक संगीत का अभिनय जिसमें गाना बजाना हो ।

संगीर्ण } (व० कृ०) १ स्वीकृत । मंजूर किया हुआ ।
सङ्गीर्ण } २ प्रतिज्ञात ।

संग्रह } (पु०) १ ग्रहण । पकड़ । पकड़ना । २ पहुँचा
सङ्ग्रह } पकड़ना । ३ स्वागत । प्रवेश करण । ४ संरक्षण । ५ अनुग्रह करना । सहारा देना । समर्थन करना । ६ एकत्रकरण । ढेर लगाना । ७ शासन करना । निग्रह करण । ८ राशि । स्तूप । ९ समागम । १० एक प्रकार का संयोग । ११ सम्मिलित करना । १२ संग्रह करना । १३ सारसग्रह । १४ योग । जोड़ । टोटल । १५ तालिका । सूची । १६ भाण्डार ग्रह । १७ उद्योग । १८ हवाला । वर्णन । १९ बड़प्पन । ऊँचापन । २० वेग । २१ शिवजी का नामान्तर ।

संग्रहणं } (न०) १ पकड़ । ग्रहण । २ समर्थन ।
सङ्ग्रहणं } उत्साह प्रदान करना । ३ संग्रहकरण । ४ मिलाव । मेल । मिलौनी । ५ जड़ना । चौखटे में रखना । ६ मैथुन । स्त्रीसमागम । ७ व्यभिचार । ८ आशा करना । ९ स्वीकार करना । प्राप्त करना ।

संग्रहणी } (पु०) दस्तों का रोग विशेष ।
सङ्ग्रहणी }

संग्रहीतृ } (पु०) रथवान । सारथी ।
सङ्ग्रहीतृ }

संग्रामः } (पु०) लड़ाई । युद्ध ।—पटह, (पु०)
सङ्ग्रामः } युद्ध में बजाया जाने वाला एक बड़ा भारी ढोल ।

संग्राह } (पु०) १ हाथ मारना । ग्रहण करना । २
सङ्ग्राहः } छीन लेना । बरजोरी ले लेना । ३ कलाई पकड़ना । ४ ढाल का बेंट ।

संघः } (पु०) १ समूह । समुदाय । २ कितने ही
सङ्घः } लोग जो साथ रहते हों ।—चारिन् (पु०) मछली ।—जीविन्, (पु०) कुली । मज़दूर । —वृत्ति, (स्त्री०) घनिष्ट मेल ।

संघटना } (स्त्री०) संयोग । मिलाप ।
सङ्घटना }

संघट्टः } (पु०) १ रगड़ । रगड़न । २ टक्कर ।
सङ्घट्ट } भिड़न्त । ३ लड़ाई । मुठभेड़ । मेल । योग भिड़न्त या स्पर्द्धा (दो पत्नियों की) ५ आलिङ्गन ।

संघट्टनं }
सङ्घट्टनं } १ रगड़ना । रगड़ । २ भिड़न्त । टक्कर ।
संघट्टना } ३ संसर्ग । लगाव । ४ संयोग । मेल । ५
सङ्घट्टना } पहलवानों की भिड़न्त ।

संघशस् } (अव्यया०) दल में । टोली में ।
सङ्घशस् }

संघर्षः } (पु०) १ रगड़न । रगड़ । २ पसीना ।
सङ्घर्षः } ३ टक्कर । भिड़ंत । ४ स्पर्द्धा । प्रतिद्वन्द्वता । ५ डाट । हसद । ६ फिसलन । खसकन ।

संघाटिका } (स्त्री०) १ जोड़ा । जोड़ी । २ कुटनी ।
सङ्घाटिका } ३ गन्ध ।

संघाणकः (पु०) }
सङ्घाणकः (पु०) }
संघाणक (न०) } नाक का मैल ।
सङ्घाणकं (न०) }

संघातः } (पु०) १ ऐक्य । संयोग । २ जनसमुदाय ।
सङ्घातः } समूह । ३ हत्या । हिंसन । ४ कफ । ५ समासान्त शब्दों की बनावट । ६ नरक विशेष ।

सचकित (वि०) भड़का हुआ । भीरु । डरपोंक ।

सचकितं (अव्यय०) काँपते हुए ।

सचिः (पु०) १ मित्र । २ मित्रता । मैत्री । दोस्ती । (स्त्री०) इन्द्र की पत्नी । इन्द्राणी ।

सचिल्लक (वि०) भेंड़ा । ऐंचाताना ।

सचिवः (पु०) १ मित्र । साथी । २ मंत्री । मशीरकार । सलाहकार । दरबारी ।

सची देखो शची ।

सचेतन (वि०) जीवधारी । जीवित । जानदार ।

सचेतस् (वि०) १ बुद्धिमान । २ वह जो समवेदनापूर्ण या दयालु हो । ऐकमत्य ।

सचेल (वि०) वस्त्रों सहित । वस्त्र धारण किए हुए ।

सचेष्टः (पु०) आम का वृक्ष ।

सज्जन (वि०) मनुष्यों या जीवधारियों वाला ।

सज्जन (पु०) सजाति । जाति बिरादरी का आदमी ।

सजल (व०) पनीला । गीला । तर ।

सजाति } (वि०) १ एक ही जाति का । २ एक ही
सजातीय } किस्म का । ३ समान । सदृश । (पु०) एक ही जाति के माता और पिता से उत्पन्न पुत्र ।

सजुष् } १ प्यारा। अनुरक्त। २ संगी। साथी।
सजुस् } (पु०) [कर्ता—सजूः,सजुषौ, सजुषः] मित्र। दोस्त। सखा। (अव्यया०) सहित। साथ।

सज्ज (वि०) १ तैयार। तैयार किया या कराया हुआ। २ सम्हारा हुआ। ठीक किया हुआ। ३ सब प्रकार से लैस। हथियारधारी। ४ किलाबंदी किया हुआ।

सज्जनं (न०) १ बाँधना। कसना। २ पोशाक धारण करना। सजाना। ३ तैयार करना। हथियार धारण करना। हरबा हथियार से लैस करना। ४ चौकीदार। संतरी। ५ घाट। उतारा।

सज्जनः (पु०) भला मनुष्य।

सज्जना (स्त्री०) १ सजावट। २ वस्त्राभूषण से सुसज्जित करने की क्रिया।

सज्जा (स्त्री०) १ परिच्छद। सजावट। २ सज्जाकरण। साज। सामान ३ सैनिक साज सामान। कवच।

सज्जित (वि०) सजाया हुआ। २ शृङ्गार किया हुआ। तैयार किया हुआ। साजसामान से लैस। ४ शस्त्रधारण किये हुए।

सज्य (वि०) १ डोरी या रोदा लगा हुआ।

सज्योत्स्ना (स्त्री०) चाँदनी रात।

संचः } (न०) १ ऐसे पत्तों का ढेर जिन पर लिखा
सञ्चः } जाता है।

संचत् } (पु०) धूर्त। गुंडा। जादूगर।
सञ्चत् }

संचयः } (पु०) १ ढेर करना। जमा करना। ढेर।
सञ्चयः } राशि। २ एकत्र या राशि करने की क्रिया।

संचयनं } (न०) १ एकत्र करने की क्रिया। एकत्र
सञ्चयनं } या संग्रह करने की क्रिया। २ सब भस्म होने के पीछे अस्थि बीनने की क्रिया।

संचरः } (पु०) १ गमन। चलन। एक राशि से
सञ्चरः } दूसरी राशि में गमन। २ मार्ग। पथ। रास्ता। ३ सङ्कीर्ण पथ। कष्ट साध्य मार्ग। ४ द्वार। प्रवेशद्वार। ५ शरीर। हनन। हिंसन। ६ वृद्धि।

संचरणं } (न०) गमन। चलन। यात्रा करना।
सञ्चरणं }

संचल } (वि०) काँपता हुआ। थरथराता हुआ।
सञ्चल }

संचलनं } (न०) हिलना डोलना। काँपना।
सञ्चलनं } थरथराना।

संचाय्य } (पु०) यज्ञ विशेष।
सञ्चाय्य: }

संचारः } (पु०) १ गमन। चलन। चलना फिरना।
सञ्चारः } २ गुज़रना। ३ मार्ग। पथ। रास्ता। ४ कठिन मार्ग। कठिन यात्रा। ५ कठिनाई। कष्ट। ६ चलाने की क्रिया। ७ भड़काने की क्रिया। ८ मार्गप्रदर्शन। रास्ता दिखलाने की क्रिया। ९ स्पर्श द्वारा संक्रामक। प्रेरण। चालन। १० साँप के फन में मिली हुई मणि।

संचारक } (वि०) १ संचार करने वाला। फैलाने
सञ्चारक } वाला। चलाने वाले।

संचारकः } (पु०) १ दलपति। नायक। नेता।
सञ्चारकः } २ साजिश करने वाला। षड्यंत्रकारी।

संचारिका } (स्त्री०) १ दूती। २ कुटनी। ३
सञ्चारिका } जोड़ी। जोड़। ४ गंध। वास।

संचारणं } (न०) १ प्रणोदित करने की क्रिया।
सञ्चारणं } उत्तेजित करने की क्रिया। २ पहुँचाने की क्रिया। मार्गप्रदर्शन की क्रिया।

संचारिन् } (वि०) [स्त्री०—संचारिणी] १
सञ्चारिन् } गमनशील। २ घूमने फिरने वाला। ३ परिवर्तन शील। चंचल। अदृढ ४ दुर्गम। दुरधिगम्य। ५ भाव विशेष। ६ प्रभावित। प्रभावान्वित। ७ वंशपरम्परा गत। पुश्तैनी। पैतृक (जैसे कोई बीमारी) ८ छुआछूत वाला। (पु०) १ पवन। हवा। २ धूप। ३ संचारी भाव।

संचाली } (स्त्री०) घुँघची का पौधा।
सञ्चाली }

संचित } (व० कृ०) १ जमा किया हुआ। एकत्र
सञ्चित } किया हुआ। २ गणना किया हुआ। गिना हुआ। ३ परिपूर्ण। भरा हुआ। ४ बाधा डाला हुआ। ५ घना। घनीभूत।

संचितिः } (स्त्री०) संग्रह।
सञ्चितिः }

संचिन्तनं } (न०) सोचना। विचारना।
सञ्चिन्तनं }

सच्चूर्णनं } (न०) टुकड़े टुकड़े कर डालने की क्रिया।
सञ्चूर्णनं }

संछन्न } (व० कृ०) १ लपेटा हुआ। छिपाया
सञ्छन्न } हुआ। २ कपड़े से लपेटा हुआ।

संछादनं } (न०) छिपाव। दुराव।
सञ्छादनं }

संज } (धा० प०) [सजति, सक्त] १
सञ्ज् } चिपटाना। चिपकाना। २ बाँधना।

संजः } (पु०) १ ब्रह्मा का नाम। २ शिव का नाम।
सञ्जः }

संजयः } (पु०) धृतराष्ट्र के सारथी का नाम।
सञ्जयः }

संजल्पः } (पु०) १ वार्तालाप। गड़बड़ बातचीत।
सञ्जल्पः } गड़बड़ी। २ गर्जन। दहाड़।

संजवनं } चतुष्क, गृहवेष्टित चत्वर या चबूतरा।
सञ्जवनं } चार मकानों के बीच का चबूतरा।

सजा } (स्त्री०) बकरी। छेरी।
सञ्जा }

संजीवनं } १ साथ साथ रहने की क्रिया। २
सञ्जीवनं } जीवित करने की क्रिया। पुनर्जीवित करण। ३ इक्कीस नरकों में से एक। ४ गृह-वेष्टित-चत्वर।

संज्ञ (वि०) घुटनों के बल ठुकराया हुआ। २ सचेत। ३ नामक।

संज्ञं (न०) पीतकाष्ठ। झाऊ।

सञ्ज्ञपनं (न०) हिंसन। वधकरण। मार डालना।

सञ्ज्ञा (स्त्री०) १ चेतना। होश। २ बुद्धि। अक्ल। ३ ज्ञान। ४ सङ्केत। इशारा। ५ बोधक शब्द। नाम। आख्य। ६ व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध हो। ७ गायत्री मंत्र। ८ सूर्यपत्नी जो विश्वकर्मा की कन्या थी। मार्कण्डेय नामक पुराण के अनुसार यम और यमुना का जन्म इसीके गर्भ से हुआ है।—विषयः, (पु०) उपाधि। विशेषण।—सुत, (पु०) शनि का एक नाम।

सञ्ज्ञानं (न०) ज्ञान। बुद्धि।

संज्ञापनं (न०) १ सूचन। २ शिक्षण। ३ हनन। वधकरण।

संज्ञावत् (वि०) १ होश में। हवास में। सचेत। २ वह जिसका कोई नाम हो।

संज्ञित (वि०) नामवाला। नामक।

सञ्ज्ञिन् (वि०) १ नामक। नाम्ना। नामवाला। २ वह जिसका कुछ नाम रखा जाय।

संज्ञु (वि०) घुटनों के बल।

सज्वरः } (पु०) १ बहुत गर्म। ज्वर। २ ताप।
सञ्ज्वरः } उष्णता। ३ क्रोध आदि का बहुत अधिक आवेग।

सट् (धा० प०) [सटति] १ किसी पदार्थ का एक भाग होना। २ दिखलाना। प्रादुर्भाव होना।

सटं (न०) } १ साधु की जटा। २ सिंह की
सटा (स्त्री०) } गरदन के बाल। अयाल। ३ शूकर के बाल। ४ कलँगी। चोटी। शिखा।

सट्ट् (धा० उ०) [सट्टयति-सट्टयते] १ हनन करना। घायल करना। २ मज़बूत होना ३ देना। ४ लेना। ५ बसना। रहना।

सट्टकं (न०) प्राकृत भाषा में रचा हुआ छोटा रूपक।

सट्वा (स्त्री०) १ पक्षी विशेष। २ बाजा विशेष।

सठ् (धा० उ०) [साठयति,—साठयते] १ समाप्त करना। पूर्ण करना। २ अधूरा छोड़ देना। ३ चलना। जाना। ४ सजाना।

सणसूत्रं (न०) सन की डोरी या रस्सी।

संड देखो षढ।

संडिशः } (पु०) चिमटा। सँड़सी।
सण्डिशः }

संडीनं } पक्षियों का उड़ान विशेष।
सण्डीनं }

सत् (वि०) [स्त्री०—सती] १ विद्यमान। २ असली। सत्य। ३ नेक। पुण्यात्मा। धर्मात्मा। ४ कुलीन। भद्र। ५ ठीक। उचित। ६ उत्तम। श्रेष्ठ। ७ प्रतिष्ठित। सम्माननीय। ८ बुद्धिमान।

पण्डित। ६ मनोहर। सुन्दर। १० मज़बूत। दृढ़। (पु०) नेक या धर्मात्मा आदमी। (न०) १ वह जो यथार्थ में विद्यमान हो। २ यथार्थ सत्य। ३ श्रेष्ठ। ४ ब्रह्म। -आचारः, (पु०) (=सदाचारः) १ अच्छा आचरण। सद्वृत्ति २ शिष्टाचार।—आत्मन्, (वि०) पुण्यात्मा। नेक।—उत्तरं (न०) उचित या अच्छा उत्तर। —कर्मन्, (न०) १ पुण्यकर्म। धर्मकार्य। २ धर्म। पुण्य। आतिथ्य। अतिथि सत्कार। —काण्डः (पु०) चील। बाज पक्षी।—कारः, (पु०) १ एक प्रकार का आतिथ्यसत्कार। २ सम्मान। प्रतिष्ठा। ३ खबरदारी। मनोयोग। ४ भोजन ५ पर्व। उत्सव।—कुलं, (न०) अच्छा वंश। अच्छा खानदान।—कृत, (वि०) १ भलीभाँति किया हुआ। २ सत्कार किया हुआ ३ सम्मान किया हुआ। आदर किया हुआ। ५ स्वागत किया हुआ।—कृतं, (न०) १ आदर। सत्कार। आतिथ्य। २ पुण्य।—कृतः, (पु०) शिव जी का नाम।—क्रिया, (स्त्री०) १ सत्कर्म। पुण्य। धर्म का काम। २ सत्कार। आदर। खातिरदारी। ३ आयोजन। तैयारी। ४ नमस्कार। प्रणाम। ५ प्रायश्चित्त का कोई कर्म। ६ अन्त्येष्टि कर्म। और्ध्वदेहिक कर्म। —गतिः, (स्त्री०) (=सद्गति) अच्छी गति। मोक्ष। मुक्ति।—गुणः, (पु०) उत्तमता। विशिष्टता।—चरित,—चरित्र, (=सच्चरित या सच्चरित्र) अच्छे चाल चलन का। ईमानदार। धर्मात्मा। पुण्यात्मा। (न०) अच्छा चाल चलन। २ अच्छे लोगों का इतिहास या जीवनी।—चारा, (=सच्चारा) हल्दी। चिद्, (=सच्चिद्) (न०) परब्रह्म।—जनः, (=सज्जनः) (पु०) नेक या धर्मात्मा आदमी।—पत्र, (न०) कुमोदनी का ताज़ा पत्ता।—पथः, (पु०) १ अच्छा मार्ग। २ कर्त्तव्यपालन का ठीक मार्ग। ३ उत्तम सम्प्रदाय या सिद्धान्त।—परिग्रहः, (पु०) उपयुक्त पात्र से (दान) ग्रहण।—पशुः, (पु०) देवताओं की वलि योग्य अच्छा पशु।—पात्रं, (न०) दान आदि देने योग्य उत्तम व्यक्ति।—पुत्रः, (पु०) सुपात्र बेटा। सपूत।—प्रतिपक्षः, (पु०) (न्याय दर्शन में) वह पक्ष जिसका उचित खण्डन हो सके अथवा जिसके विपक्ष में बहुत कुछ कहा जा सके। पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक—फलः, (पु०) अनार का पेड़। —भावः, (=सद्भावः) १ विद्यमानता। २ साधुभाव। अच्छा भाव।-मात्रः, (=सन्मात्रः) (पु०) जीव। आत्मा।—मानः, (=सन्मानः) भले लोगों की प्रतिष्ठा। —वंश, (वि०) उच्च कुल का।—वचस्, (न०) प्रसन्नकारक भाषण।—वस्तु, (न०) १ अच्छा पदार्थ। २ अच्छी कहानी।—विद्य, (वि०) भली भाँति शिक्षित।—वृत्त, (वि०) १ भले आचरण का। अच्छे चालचलन का। २ बिल्कुल गोल। -वृत्तं, (न०) १ अच्छा चाल चलन। २ अच्छा स्वभाव।—संसर्गः, संनिधानं,—संगः,—संगतिः-समागमः,(पु०) (पु०) अच्छे लोगों की सुहबत या साथ। —सहाय, (वि०) अच्छे मित्रों वाला।—सहायः, (पु०) अच्छा साथी या संगी। —सारः, (पु०) १ वृक्ष विशेष। २ कपि। ३ चित्रकार।

सतत, (वि०) निरन्तर। सदा। सर्वदा। हमेशा। बराबर।—गः—गतिः, (पु०) पवन। हवा। —यायिन्, (वि०) १ सदैव चलते रहने वाला। २ सदैव नाशोन्मुख।

सततं (अव्यया०) सदैव। हमेशा।

सतर्क (वि०) १ तर्क करने में पटु। न्यायशास्त्र-निष्णात। २ विचारवान।

सति (स्त्री०) १ भेंट। पुरस्कार। २ नाश। अवसान।

सती (स्त्री०) १ पतिव्रता स्त्री। २ साधुनी। तपस्विनी। ३ दुर्गा का नाम।

सतीत्वं (न०) पातिव्रत्य।

सतीनः (पु०) १ एक प्रकार की दाल या मटर। २ बाँस।

सतीर्थः } सतीर्थ्यः } (पु०) सहपाठी। साथ पढ़ने वाला।

सतीन, (पु०) १ बांस। २ पवन। हवा। ३ दाल। मटर।

सतेर (पु०) भूसी। चोकर।

सत्ता (स्त्री०) १ विद्यमानता। होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। होना। भाव। २ वास्तविक अस्तित्व। ३ भलापन। उत्तमता। श्रेष्ठता।

सत्रं (न०) (सत्रं ही प्रायः लिखा जाता है) १ सोमयज्ञ का काल जो १३ से १०० दिवसों के भीतर पूरा होता है। २ यज्ञ। ३ भेंट। नैवेद्य। ४ उदारता। ५ पुण्य। धर्म। ६ घर। मकान। ७ पर्दा। चादर। ८ सम्पत्ति। धन दौलत। ९ जंगल। वन। १० ताल। तलैया। ११ धोखा। दगा। धूर्तता। १२ आश्रयस्थान। शरण पाने की जगह।—अयनं—अयणं, (न०) दीर्घ यज्ञीय काल।

सत्रा (अव्यया०) साथ। सहित।—हन् (पु०) इन्द्र का नामान्तर।

सत्त्रिः (पु०) १ बादल। मेघ। २ हाथी। गज।

सत्त्रिन् (पु०) १ वह जो सदैव यज्ञ किया करता हो। २ उदार गृहस्थ।

सत्त्वं (न०) [नीचे दिये हुये प्रथम दस अर्थों में (पु०) भी होता है।] १ होने का भाव। अस्तित्व २ स्वाभाविक आचरण। स्वाभिगत। अवस्थित। स्वभाव। पैदायशी गुण। ३ प्रकृति। ४ ज़िन्दगी। जीवन। स्वांसा। जीवनी शक्ति। ५ चैतन्यता। मन। ज्ञान। ६ कच्चा। अधूरा। गर्भ। मांसपिण्ड। ७ सार। पदार्थ। दौलत। ८ तत्त्व यथा जल, वायु, आकाशादि। ९ जीवधारी। चेतन। जानदार १० भूत। प्रेत राक्षस। दैत्य। ११ भलाई भलाई। उत्तमता। १२ सत्य। यथार्थता। निश्चय। १३ बल। साहस। स्फूर्ति। पराक्रम। १४ बुद्धिमानी। सद्भाव। १५ अच्छा-पन। ईर्षा। स्वाभाविक भाव। १६ विशिष्टता। लक्षण। १७ संज्ञा। संज्ञावाची (शब्द)।—अनुरूप, (वि०) १ पैदायशी स्वाभिगत के मुताबिक। २ अपने वित्त के अनुसार। —उद्रेकः, (पु०) भलाई का आधिक्य। २ बल या साहस की प्रधानता।—लक्षणा, (न०) गर्भवती होने के चिह्न।—विप्लवः, (पु०) विवेक की हानि।—विहित, (वि०) १ प्रकृति-द्वारा किया हुआ। पुण्यात्मा।—संप्लवः, (पु०) वीर्य या पराक्रम की हानि।।—सारः, (पु०) बल का सार या निचोड़। २ बलिष्ठ आदमी।—स्थ, (वि०) १ अपनी प्रकृति में स्थित। २ दृढ़। अविचलित। धीर। ३ अशक्त। ४ प्राणयुक्त।

सत्त्वमेजय (वि०) जानवरों या प्राणधारियों को भयभीत करने वाला।

सत्य (वि०) १ यथार्थ। ठीक। वास्तविक। याथातथ्य। २ असल। ३ ईमानदार। सच्चा। निमक हलाल। ४ पुण्यात्मा।—अनृत, (वि०) १ सच्चा और झूठा। २ देखने में सत्य किन्तु वास्तविक में असत्य।—अनृतं,—अनृते, १ सत्यता और झुठाई। २ झूठ सच का अभ्यास अर्थात् व्यापार। व्यवसाय।—अभिसन्ध, (वि०) अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने वाला।—उत्कर्षः, (पु०) १ सत्य बोलने में प्रधानता। २ वास्तविक उत्कृष्टता।—उद्य, (वि०) सत्य बोलने वाला।—उपयाचन, (वि०) प्रार्थना या याचना को पूरा करने वाला।—कामः, (पु०) सत्यप्रेमी।—तपस्, (पु०) एक ऋषि का नाम।—दर्शिन्, (वि०) सत्य का देखने वाला। पहले ही से सत्य देखने या जान लेने वाला।—धन, (वि०) सत्य का धनी। अत्यन्त सत्य बोलने वाला।—धृति, (वि०) नितान्त सत्य।—पुरं, (न०) विष्णु लोक।—पूत, (वि०) सत्य से पवित्र किया हुआ। यथाः—

"सत्यपूतां वदेद्वाणीं।"

—मनु।

—प्रतिज्ञ, (वि०) प्रतिज्ञा को सत्य करने वाला। बात का धनी। वचन का सच्चा।—भामा, (स्त्री०) सत्राजित की पुत्री और श्रीकृष्ण की एक पटरानी का नाम।—युगं, (न०) चार युगों में से प्रथम युग। स्वर्ण युग।—सङ्गर, (वि०)

सच्चा। (पु०) १ भविष्यद्वक्ता। २ ऋषि। मुनि। (न०) सचाई। सत्यता।—वद्य, (वि०) सच्चा।—वद्यं, (न०) सचाई। सत्यता।—वाच्, (वि०) सच्चा। स्पष्टवक्ता। (पु०) १ ऋषि। २ काक। कौवा।—वाक्यं, (न०) सत्य-कथन।—वादिन्, (वि०) १ सत्य बोलने वाला। २ सच्चा। निष्कपट। स्पष्ट वक्ता।—व्रत,—सङ्गर,—सन्ध, (वि०) १ सत्यप्रतिज्ञ। वचन को पूरा करने वाला। २ ईमानदार। सच्चा—श्रावणं, (न०) शपथ खाने वाला।—सङ्काश, (वि०) आपाततः अनुमोदनीय या सन्तोषजनक।

सत्यं (न०) १ सच। २ सचाई। ३ नेकी। भलाई। पुण्य। ४ शपथ। प्रतिज्ञा। ५ प्रत्यक्ष सिद्ध सत्य। ६ चार युगों में से प्रथम युग। स्वर्ण युग। ७ जल। पानी।

सत्यं (अव्यया०) सचाई से। यथार्थतः। वस्तुतः।

सत्यः (पु०) १ ऊपर के सप्त लोकों में से सब से ऊँचा लोक, जहाँ ब्रह्मा जी रहते हैं। २ अश्वत्थ वृक्ष। ३ श्री राम जी का नामान्तर। ४ विष्णु का नामान्तर। ५ नान्दीमुख श्राद्ध का अधिष्ठाता देवता।

सत्यंकार (पु०) १ किसी सौदा या ठेके का सकारना। २ पेशगी। साही।

सत्यवत् (वि०) सच्चा। (पु०) सावित्री के पति सत्यवान् का नामान्तर।

सत्यवती (स्त्री०) एक मछुवे की लड़की जो पीछे वेदव्यास की माता हुई थी।—सुतः, (पु०) वेदव्यास।

सत्या (पु०) १ सच्चाई। सत्यता। २ सीता का नामान्तर। ३ दुर्गा देवी। ४ सत्यभामा। ५ द्रौपदी। ६ सत्यवती, जो वेदव्यास की जननी थी।

सत्यापनं (न०) सत्य का पालन। सत्य का भाषण। (ठेके या किसी लैन दैन को) सकारना।

सत्र देखो सत्व।

सत्रप (वि०) लज्जित। शर्मीला।

सत्राजित् (पु०) सत्यभामा के पिता का नाम।

सत्वर (वि०) शीघ्र। तुरन्त।

सत्वरं (अव्यया०) शीघ्रता से। फुर्ती से।

सत्थूत्कार (वि०) शीघ्रता से अस्पष्ट बोला हुआ।

सत्थूत्कार (पु०) वह भाषण जिसमें शीघ्रता से कहे गये अस्पष्ट वचन हों।

सद् (धा० प०) [सीदति, सन्न] १ बैठना। लेटना। उठक जाना। २ डूब जाना। ३ रहना। बसना। ४ उदास होना। हिरासा होना। ५ सड़ना। नष्ट होना। बरबाद होना। नष्ट होना। ६ कष्ट में पड़ना। पीड़ित होना। ७ रोका जाना। ८ थक जाना। शिथिल पड़ जाना। ९ जाना।

सद (पु०) वृक्ष के फल।

सदंशकः (पु०) केकड़ा।

सदंशवदनः (पु०) बगुला। बूटीमार।

सदनं (न०) १ घर। महल। भवन। हवेली २ शैथिल्य। थकावट। ३ जल। ४ यज्ञमण्डप। ५ विराम। स्थिरता। ६ यमराज का आवासस्थान।

सदय (वि०) दयालु। रहमदिल। कृपालु।

सदयं (अव्यया०) कृपया। रहम दिली से।

सदस् (न०) १ आवास स्थान। रहने की जगह। २ सभा। मजलिस।—गतः, (वि०) सभा या मजलिस में बैठा हुआ। गृह। सभाभवन।

सदस्यः (पु०) १ सभासद। २ असेसर। जूरर। पञ्च। ३ यज्ञ कराने वाला। याजक।

सदा (अव्यया०) १ नित्य। सदैव। हमेशा। सर्वदा निरन्तर। सब समय।—आनन्द, (वि०) सदैव प्रसन्न।—आनन्दः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—गतिः, (पु०) १ पवन। २ सूर्य। ३ मोक्ष। मुक्ति।—नोया,—नीरा, (स्त्री०) १ करतोया नदी का नामान्तर। २ वह नदी या सोता जिसमें सदैव जल बहा करे।—दान, (वि०) १ सदैव दान करने वाला। २ (वह हाथी) जिसके सदा मद बहता हो।—

दानः, (पु०) १ इन्द्र का ऐरावत हाथी। २ गन्धद्विप नामक रूखरी। ३ गणेश जी।—नर्तः, (पु०) खंजन पक्षी।—फलः, (पु०) १ बिल्व वृक्ष। २ कटहल का पेड़। ३ सघन वट वृक्ष। ४ नारियल का पेड़।—योगिन्, (पु०) कृष्ण का नामान्तर।—शिवः, (पु०) शिव जी का नाम।

सदृक्ष (वि०) [स्त्री०—सदृक्षी]
सदृश् (वि०) [स्त्री०—सदृशी]
सदृश (वि०)
१ समान। अनुरूप। तुल्य। बराबर। २ उपयुक्त। योग्य।

सदेश (वि०) १ देश रखने वाला। २ एक ही स्थान या देश का। ३ समीपी। पड़ोसी।

सद्मन् (न०) १ घर। मकान। २ स्थान। टिकने की जगह। ३ मन्दिर। ४ वेदी। ५ जल।

सद्यस् (अव्यया०) १ आज ही। २ तुरन्त ही। अभी। ३ हाल ही में। कुछ ही समय पीछे।—काल, (पु०) वर्तमान काल।—कालीन, (वि०) हाल ही का।—जात, (वि०) [=सद्योजात] हाल का उत्पन्न।—जातः (पु०) १ बछड़ा। २ शिव जी का नामान्तर।—पातिन् (वि०) शीघ्र नष्ट होने वाला। नश्वर।—शुद्धिः, (स्त्री०)—शौचं, (न०) तुरन्त की हुई शुचता।

सद्यस्क (वि०) १ नया। टटका। हाल का। २ तुरन्त का।

सद्रु (वि०) १ टिका हुआ। अवलम्बित। प्रस्थानित। जाता हुआ। गमनकारी।

सद्वंद्व (वि०) झगड़ालू। कलहप्रिय। लड़ाकू।

सद्वसथः (पु०) ग्राम। गाँव।

सधर्मन् (त्रि०) एक ही गुणों वाला। समान गुणों वाला। २ समान कर्त्तव्यों वाला। ३ एक ही जाति या सम्प्रदाय वाला। ४ सदृश। अनुरूप।—चारिणी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके साथ शास्त्रोक्त विवाह हुआ हो।

सधर्मिणी देखो "सधर्मचारिणी"।

सधर्मिन् (वि०)[स्त्री०—सधर्मिणी] देखो "सधर्मन्"

सधिस (पु०) बैल। वृषभ। सांड़।

सध्रीची (स्त्री०) सखी। सहेली।

सध्रीचीन (वि०) सहित। अन्वित।

सध्र्यंच् (पु०) पति। साथी।

सन् (धा० उ०) [सनति,—सनोति,—सनुते,—सात,] १ प्यार करना। पसंद करना। २ पूजन करना। अर्चा करना। सम्मान करना ३ प्राप्त करना। उपलब्ध करना। ४ सम्मान या गौरव के साथ प्राप्त करना। ५ भेंट। पुरस्कार आदि भेंट का सम्मान करना। देना। बाँटना।

सनः (पु०) हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

सनत् (पु०) ब्रह्मा का नामान्तर। (अव्यया०) सदैव। निरन्तर।—कुमारः, (पु०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम।

सनसूत्र देखो "सणसूत्र"।

सना (अव्यया०) सदैव। निरन्तर।

सनात् (अव्यया०) सदैव।

सनातन (वि०) [स्त्री०—सनातनी] १ निरन्तर। बराबर। अनादि। स्थायी। २ दृढ़। निश्चित। निर्धारित। ३ प्राचीन। आदि काल का।

सनातनः (पु०) १ विष्णु भगवान् का नामान्तर। २ शिव। ३ ब्रह्मा।

सनातनी (स्त्री०) १ लक्ष्मी। २ दुर्गा या पार्वती। ३ सरस्वती।

सनाथ (वि०) १ जिसकी रक्षा करने वाला कोई स्वामी हो। २ जिसका कोई रक्षक या पति हो। ३ रोका हुआ। अधिकार में किया हुआ। ४ अन्वित। पूरित। सम्पन्न।

सनाभि (वि०) १ एक ही गर्भ का। सहोदर। २ सजातीय। सम्बन्धी। ३ अनुरूप। सदृश। ४ स्नेहान्वित।

सनाभि (पु०) १ सहोदर भाई। २ नज़दीक का रिश्तेदार। सात पीढ़ी के भीतर का नातेदार।

सनाभ्यः (पु०) सात पीढ़ियों के भीतर एक ही वंश का मनुष्य। सपिण्ड।

सनिः (पु०) १ अर्चा। पूजन। २ नैवेद्य। भेंट। ३ याचना।

सनिष्ठीवं } (न०) ऐसी बोली जिसके बोलने में
सनिष्ठेवं } थूक उड़े।

सनी (स्त्री०) १ दिशा। २ याञ्जा। ३ हाथी के कान की फड़फड़ाहट।

सनीड } (वि०) १ साथ रहने वाले। एक ही
सनील } घोंसले में रहने वाला २ समीप। निकट।

संतः } (पु०) दोनों हाथों की अँगुली।
सन्तः }

संतक्षणं } (न०) कटाक्षपूर्ण वचन। व्यङ्ग्य वचन।
सन्तक्षणं }

संतत } (व० कृ०) १ बढ़ाया हुआ। फैलाया
सन्तत } हुआ। २ अविच्छिन्न। सतत। लगातार। ३ अनादि। ४ बहुत। अधिक।

संततं } (अव्यया०) १ सदैव। हमेशा। निरन्तर।
सन्ततं }

संततिः } (स्त्री०) १ फैलने वाला। पसरने वाला।
सन्ततिः } २ फैलाव। प्रसार। ३ अवली। पंक्ति। ३ अविच्छिन्न। सिलसिला। ४ वंश। कुल। खानदान। ५ औलाद। सन्तान। ६ ढेर। राशि।

संतपनं } (न०) १ तपन। जलन। २ पीडन।
सन्तपनं } सन्तापन।

संतप्त } (व० कृ०) १ गर्माया हुआ। गर्मागर्म।
सन्तप्त } दहकता हुआ। २ पीड़ित। कष्ट में पड़ा हुआ।—अयस्, (न०) गर्म लोहा।—वक्षस्, (न०) मन्द स्वास वाला।

संतमस् } (न०) सर्वव्यापी अन्धकार। घोर
सन्तमस् } अन्धकार।
संतमसं }
सन्तमसं }

संतर्जनं } डाँटना। डपटना। भर्त्सना करना।
सन्तर्जनं }

संतर्पणं } (न०) १ सन्तोषकरण। अघाना। २
सन्तर्पणं } प्रसन्न। ३ हर्षप्रद। ४ पकवान विशेष।

संतानं (न०) } १ बढ़ाव। प्रसार। व्याप्ति। फैलाव।
सन्तानं (न०) } २ कुल। वंश। ३ सन्तान। औलाद
संतानः (पु०) } ४ स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक।
सन्तानः (पु०) }

संतानकः } (पु०) स्वर्ग के ५ वृक्षों में से एक वृक्ष
सन्तानकः } और उसके फूल।

संतानिका } (स्त्री०) १ फेन। झाग। २ मलाई।
सन्तानिका } साढ़ी। मर्कटजाल नामक घास। ३ छुरी या तलवार की धार।

संतापः } (पु०) १ उष्णता। गर्मी। जलन। ताप।
सन्तापः } २ दुःख। कष्ट। व्यथा। ३ मानसिक कष्ट। मनोव्यथा। पश्चात्ताप। ४ तप। तप की थकावट। ५ क्रोध। रोष।

संतापन } (वि०) [स्त्री०—सन्तापिनी] जलने
सन्तापन } वाला। धधकने वाला।

संतापनं } (न०) १ दाह। जलन। २ पीड़ा।
सन्तापनं } तकलीफ। दर्द। ३ भड़काने वाला रोष।

संतापन } (पु०) १ कामदेव के पाँच शरों में से
सन्तापन. } एक।

संतापित } (व० कृ०) तपाया हुआ। सन्तप्त।
सन्तापित } उत्पीड़ित।

संतिः } (पु०) १ अवसान। नाश। २ भेंट।
सन्तिः }

संतुष्टिः } (स्त्री०) नितान्त सन्तोष।
सन्तुष्टिः }

संतोषः } (पु०) १ मन की वह वृत्ति या अवस्था
सन्तोषः } जिसमें मनुष्य अपनी वर्तमान दशा में ही पूर्ण सुख अनुभव करता है। तृप्ति। शान्ति। २ प्रसन्नता। सुखाहर्ष। आनन्द। ३ अंगुष्ठ या तर्जनी उँगली।

संतोषणं } (न०) सन्तोष। तृप्ति। शान्ति।
सन्तोषणं }

संत्यजनं } (न०) त्याग। विरक्ति।
सन्त्यजनं }

संत्रासः } (पु०) डर। भय।
सन्त्रासः }

संदंश } (पु०) १ चिमटा। सँडसी। २ जर्राही
सन्दंशः } का एक औज़ार। कंकमुख। ३ एक नरक का नाम।

संदंशकः } (पु०) सँडसी।
सन्दंशकः }

संदर्भः } (पु०) १ रचना। ग्रन्थन। गूँथन।
सन्दर्भ } बुनावट। २ संमिश्रण। एकीकरण। ३ नियमित सम्बन्ध। सातत्य। ४ बनावट। ५ ग्रन्थ रचना।

संदर्शनं / सन्दर्शन } (न०) १ अवलोकन । चितवन । २ घूरन । ३ भेंट । परस्पर दर्शन । ४ दृश्य । दर्शन । ५ विचार । लिहाज । शील ।

संदानः / सन्दानः } (पु०) १ रस्सा । रस्सी । २ बेडी । शृङ्खला ।

संदानं / सन्दानं } (न०) हाथी की कनपटी जहाँ से मद चूता है ।

संदानित / सन्दानित } (वि०) १ बँधा हुआ । २ बेडी पड़ा हुआ । जंजीर में जकड़ा हुआ ।

संदानिनी / सन्दानिनी } (स्त्री०) गोष्ठ । गोशाला ।

संदावः / सन्दावः } (पु०) पलायन । भगाड़ ।

संदाहः / सन्दाहः } (पु०) जलन । दाह ।

संदिग्ध / सन्दिग्ध } (व० कृ०) १ लेप किया हुआ । ढका हुआ । २ मशकूक । अनिश्चित । सन्देह-युक्त । ३ अमित । ५ गड़बड़ । अस्पष्ट । ६ भयानक । खतरनाक । अरक्षित । ७ विषाक्त ।

संदिष्ट / सन्दिष्ट } (व० कृ०) १ बतलाया हुआ । बताया हुआ । २ निर्दिष्ट किया हुआ । ३ कहा हुआ । कथित । ४ स्वीकृत । मंज़ूर किया हुआ ।

संदिष्टं / सन्दिष्टं } (न०) इत्तिला । सूचना । खबर । समाचार । संवाद ।

संदिष्टः / सन्दिष्टः } (पु०) वार्तावह । हलकारा । क़ासिद ।

संदित / सन्दित } (वि०) बन्धन युक्त । जंजीर में जकड़ा हुआ । कसा हुआ ।

संदी / सन्दी } (स्त्री०) छोटी खाट या खटोला ।

संदीपन (वि०) [स्त्री०—सन्दीपनी] १ जलाने वाला । भड़कने वाला । २ उत्तेजित करने वाला ।

संदीपनं / सन्दीपन } (न०) १ उद्दीपन करने की क्रिया । २ उत्तेजना देने वाला ।

संदीपनः / सन्दीपनः } (पु०) १ कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

संदीप्त / सन्दीप्त } (व० कृ०) १ दहकता हुआ । जलता हुआ । २ उद्दीपित । उद्दीप्त । ३ भड़काया हुआ । गरमाया हुआ ।

संदुष्ट / सन्दुष्ट } (व० कृ०) १ भ्रष्ट किया हुआ । बिगाड़ा हुआ । २ दुष्ट । धूर्त ।

संदूषणं / सन्दूषणं } (न०) भ्रष्टता-करण । भ्रष्ट करने की क्रिया । भ्रष्टता ।

संदेशः / सन्देश } (पु०) १ सूचना । संवाद । खबर । २ संदेसा । ३ आदेश ।—अर्थः, (पु०) संदेश का विषय ।—वाच्, (पु०) संदेश ।—हरः, (पु०) १ दूत । कासिद । वार्तावह । २ एलची । राजदूत ।

संदेहः / सन्देहः } (पु०) १ सन्देह । संशय । अनिश्चयता । अँदेशा । २ खतरा । भय । ३ एक प्रकार का अर्थालंकार ।—दोलाः, (स्त्री०) द्विविधा ।

संदोहः / सन्दोहः } (पु०) १ दुहना । दोहन । २ समूह । ढेर । राशि ।

संद्रावः / सन्द्रावः } (पु०) पलायन । भगाड ।

संधा / सन्धा } (स्त्री०) १ संयोग । २ घनिष्ट सम्बन्ध । ३ हालत । दशा । ४ ठहराव । प्रतिज्ञा । शर्त । ५ सीमा । हद । ६ दृढ़ता । ७ सायंकाल का धुंधला प्रकाश । ८ भभके से खींचने की क्रिया ।

संधान / सन्धान } (न०) १ जोड़ । मिलान । २ संयोग । ३ संमिश्रण । ४ सन्धि । मैत्री । ५ जोड़ । गाँठ । ६ मनोयोग । एकाग्रता । ७ दिशा । ओर । ८ समर्थन । ९ शराब खींचने की क्रिया । १० मदिरा या शराब की तरह कोई मादक वस्तु । ११ कोई भी सुस्वादु व्यञ्जन जिसके खाने पर प्यास बढ़े । १२ मुरब्बे और अचार के बनाने की प्रक्रिया । १३ ओषधोपचार से चमड़े को सिकोड़ने की क्रिया । खट्टी काँजी ।

संधानित / सन्धानित } १ संयुक्त । मिला हुआ । एक डोरे में नत्थी । २ बंधा हुआ । कसा हुआ ।

संधानी / सन्धानी } (स्त्री०) १ वह स्थान जहाँ मदिरा खींची जाती है । २ वह स्थान जहाँ पीतल आदि की ढलाई की जाती है ।

संधिः / सन्धिः } (पु०) १ दो वस्तुओं का एक में मिलना । मेल । संयोग । २ कौलकरार । इकरार । ३ सुलह । मैत्री । मित्रता । ४ शरीर की जोड़ या गाँठ । ५ (कपड़े की) तह या टूटन । ६ सुरंग । सेंध । ७ पृथक्करण । विभाजन । ८ व्याकरण

में वह विकार जो दो अक्षरों के पास पास आने के कारण उनके मेल से हुआ करता है। १० अवकाश। दो वस्तुओं के बीच की खाली जगह। ११ अवकाश। विश्राम। १२ सुअवसर। १३ एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरम्भ के बीच का समय। युग-सन्धि। १४ नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होने वाला सम्बन्ध। [ऐसी सन्धियां ५ प्रकार की होती हैं यथा—मुखसन्धि, प्रतिमुख-सन्धि, गर्भ-सन्धि, अवमर्श या विमर्श सन्धि और निर्वहण-सन्धि] १५ स्त्री की जननेन्द्रिय। भग।—अक्षर, (न०) दो स्वरों का योग। संयुक्त स्वरवर्णद्वय (जिनका उच्चारण सम्मिलित किया जाता है)।—चौरः, (पु०) सेंध लगाने वाला चोर। – जं, (न०) शराब। —जीवकः, (पु०) दलाल। कुटना।—दूषणं, (न०) सन्धि को भङ्ग करने की क्रिया।—बंधन, (न०) शिरा। नाड़ी। नस।—भङ्गः, (पु०)—मुक्ति, (स्त्री०) वैद्यक के मतानुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ का टूटना या स्थानच्युत होना।—विग्रहः, (पु० द्विवचन) शान्ति और युद्ध।—विचक्षण, (पु०) सन्धि करने के कार्य में निपुण।—वेला, (स्त्री०) सन्ध्याकाल। सायंकाल। शाम।—हारकः, (पु०) घर में सेंध या नकब लगाने वाला।

संधिकः / सन्धिकः } (पु०) एक प्रकार का ज्वर।

संधिका / सन्धिका } (स्त्री०) शराब खींचने की क्रिया।

संधित / सन्धित } (वि०) १ संयुक्त। जुड़ा हुआ। २ बँधा हुआ। कसा हुआ। ३ मेल मिलाप किये हुए। मैत्री स्थापित किये हुए। ४ जड़ा हुआ। बैठाया हुआ। ५ मिश्रित किया हुआ। ६ अचार डाला हुआ।

संधितं (न०) / सन्धितं (न०) / संधिनी (स्त्री०) / सन्धिनी (स्त्री०) } १ अाचार। मुरब्बा। २शराब। मदिरा। ३उठी हुई गाय।गाभिन होने के लिये विकल गाय। गर्भिनी हुई गौ। ४ वेवक्त दुही हुई गौ।

संधिला / सन्धिला } (स्त्री०) १ दीवाल में किया हुआ छेद। २ नदी। ३ शराब।

संधुक्षणं / सन्धुक्षणं } (न०) १ जलाना। बालना। दहकाना। २ उद्दीपन करने की क्रिया।

संधुक्षित / सन्धुक्षित } (व० कृ०) जलाया हुआ। दहकाया हुआ। भड़काया हुआ। उत्तेजित किया हुआ।

संधेय / सन्धेय } (वि०) १ मिलाने को। जोड़ने को। २ मिलाने या मना लेने के योग्य। ३ सन्धि करने के योग्य। जिसके साथ सन्धि की जासके। निशाना लगाने योग्य।

संध्या / सन्ध्या } (स्त्री०) १ मेल। सन्धि। २ जोड़। विभाग। ३ प्रातः या सन्ध्या का समय। ४ तड़का। भोर। ५ सन्ध्या। शाम। ६ युग-सन्धि। ७प्रातः। मध्याह्न और सायं सन्ध्योपासन कृत्य। ८ कौलकरार। इकरार। ९ सीमा। हद्द। १० ध्यान। विचार। ११ पुष्प विशेष। १२ नदी का नाम। १३ ब्राह्मणी। ब्राह्मणपत्नी। – अभ्रं, (न०) १ सन्ध्या कालीन मेघ जिनमें सुनहली आभा होती है। २ गेरू। लाल खड़िया।—कालः, (पु०) शाम।—नाटिन्, (पु०) शिवजी। – पुष्पी, (स्त्री०) १ कुन्द की जाति का फूल। २ जायफल।—बलः, (पु०) राक्षस। —रागः, (पु०) ईंगुर। सेंदूर।—रामः, (पु०) ब्रह्माजी।—वन्दनं, (न०) आर्यों की प्रातः सायं की विशिष्ट उपासना।

सन्न (व० कृ०) १ उपविष्ट। बैठा हुआ। बसा हुआ। लेटा हुआ। २ उदास। ग़मगीन। ३ ढीला। लटकता हुआ। ४ निर्बल। मन्द। कमज़ोर। ५ बरबाद किया हुआ। नाश किया हुआ। ६ विनष्ट। ७ गतिहीन। स्थिर। ८ घुसा हुआ। ९ समीप। नज़दीक।

सन्नं (न०) थोड़ा। थोड़े परिमाण में।

सन्नः (पु०) पियाल वृक्ष।

सन्नक (वि०) ह्रस्व। बौना। खर्वाकार।—द्रुः, (पु०) पियाल वृक्ष।

सन्नतर (वि०) मन्द। दबा हुआ (स्वर जैसे)

संनत, सन्नत (व० कृ०) १ झुका हुआ। नवा हुआ। २ उदास। ३ सिकुड़ा हुआ।

संनतिः, सन्नतिः (स्त्री०) १ सम्मान पूर्वक प्रणाम। २ विनम्रता। ३ यज्ञ विशेष। शोरगुल।

संनद्ध, सन्नद्ध (व० कृ०) १ एक साथ मिला कर बाँधा हुआ। २ कवच धारण किये हुए। ३ युद्ध करने को लैस। ४ तैयार। प्रस्तुत। ५ व्याप्त। ६ किसी भी वस्तु से पूर्ण रीत्या सम्पन्न। ७ हिंसक। हिंसालु। घातकी। ८ नज़दीकी। समीप का।

सनयः, सन्नय (पु०) १ समूह। ढेर। राशि। परिमाण। २ पिछाड़ी। (सेना की पिछाड़ी का रक्षक दल)

संनहनं, सन्नहन (न०) तैयारी। सजावट। हथियार से लैस। २ तैयारियां। ३ मज़बूत बंधन। ४ उद्योग। धधा।

सनाहः, सन्नाहः (पु०) १ कवच और अस्त्रशस्त्र से सज्जित होने की क्रिया। २ युद्ध करने जाने जैसी सजावट। ३ कवच।

संनह्यः, सन्नह्यः (पु०) लड़ाई का हाथी।

सनिकर्षः, सन्निकर्षः (पु०) १ समीप खींचना या लाना। २ सामीप्य। पड़ोस। उपस्थिति। ३ सम्बन्ध।। रिश्ता। ४ (न्याय में इन्द्रिय और विषय का सम्बन्ध जो कई प्रकार का माना गया है।

सनिकर्षणं, सन्निकर्षण (न०) १ समीप लाना। २ समीप जाना। ३ सामीप्य। पड़ोस।

सनिकृष्ट, सन्निकृष्ट (व० कृ०) १ प्राय: ठीक। लगभग। अनकरीब। २ पड़ोसी। निकट का। पास का।

सनिकृष्ट, सन्निकृष्ट (न०) सामीप्य। पड़ोस।

संनिचयः, सन्निचयः (पु०) संग्रह। समुचय।

सनिधातृ, सन्निधातृ (पु०) १ समीप लाने वाला। २ जमा कराने वाला। ३ चोरी का माल लेने वाला। ४ अदालत का पेशकार।

संनिधानं, सन्निधान (न०), संनिधिः, सन्निधिः (पु०) १ आमने सामने की स्थिति। २ निकटता। समीपता। ३ प्रत्यक्षगोचरत्व। ४ आधार। पात्र। ५ रखना। धरना। ६ जोड़। औसत।

संनिपातः, सन्निपातः (पु०) १ एक साथ गिरना या पड़ना। नीचे आना। उतरना। २ मिलना। एकत्र होना। ३ टक्कर। संघर्ष। ४ संगम। संयोग। ५ समूह। समुदाय। ६ आगमन। ७ कफ बात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना। त्रिदोष। सरसाम। संगीत में समय का एक प्रकार का परिमाण।—ज्वरः, (पु०) त्रिदोषज ज्वर।

संनिबंधः, सन्निबन्धः (पु०) १ मज़बूती से बाँधना। जकड़ना। २ सम्बन्ध। लगाव। ३ प्रभाव। तासीर।

सनिभ, सन्निभ (वि०) सदृश। समान।

संनियोगः, सन्नियोगः (पु०) १ मेल। लगाव। २ नियुक्ति।

संनिरोधः, सन्निरोध (पु०) अड़चन। रुकावट। रोक। बाधा।

संनिवृत्ति, सन्निवृत्तिः (स्त्री०) १ फिरना (मन का)। २ विरक्ति। ३ निग्रह। सहिष्णुता।

सनिवेश, सन्निवेशः (पु०) १ लवलीनता। संलग्नता। २ समूह। समाज। ३ जुटाव। मेल। ४ स्थान। जगह। स्थिति। ५ पड़ोस। सामीप्य। ६ बनावट। शक्क। ७ झोपड़ी। रहने की जगह। ८ यथास्थान बिठाना। ९ बैठाना। जड़ना। १० चौगान। खेलने की जगह या मैदान।

सनिहित, सन्निहित (व० कृ०) १ समीप रखा हुआ। एक साथ या पास रखा हुआ। २ निकटस्थ। समीपस्थ। ३ स्थापित। जमा किया हुआ। ४ उद्यत। तत्पर। ५ ठहराया हुआ। टिकाया हुआ।—अपाप, (वि०) नश्वर। विनश्वर। नाशवान्।

संन्यसनं (न०) १वैराग्य। विराग। २ सांसारिक वस्तुओं से पूर्ण रूप से विरक्ति। ३ सौंपना। सुपुर्द करना।

संन्यस्त (व० कृ०) १ बैठाया हुआ । जमाया हुआ । २ जमा कराया हुआ । ३ सौंपा हुआ । ४ फेंका हुआ । छोड़ा हुआ । अलग किया हुआ ।

संन्यासः (पु०) १ वैराग्य । त्याग । २ सांसारिक प्रपञ्चों के त्याग की वृत्ति । ३ धरोहर । थाती । ४ जुआ का दाव । होड़ । ५ शरीरत्याग । मृत्यु । ६ जटामाँसी ।

संन्यासिन् (पु०) १ धरोहर रखने वाला । जमा कराने वाला । २ वह पुरुष जिसने संन्यास धारण किया हो । चतुर्थ आश्रमी । ३ त्यक्ताहार ।

सप् (धा० प०) [सपति] १ सम्मान करना । पूजन करना । २ मिलाना । जोड़ना ।

सपक्ष (वि०) १ पंखों वाला । २ दलवंदी वाला । ३ अपने पक्ष या दल का । ४ सजातीय । सदृश । समान ।

सपक्षः (पु०) १ तरफदार । पक्षपाती । २ सजातीय । ३ न्याय में वह बात या दृष्टान्त जिसमें साध्य अवश्य हो ।

सपत्नः (पु०) शत्रु । वैरी । प्रतिद्वन्द्वी ।

सपत्नी (स्त्री०) सौत ।

सपत्नीक (वि०) पत्नी सहित ।

सपत्राकरणं (न०) १ शरीर में बाण इतनी ज़ोर से मारना कि बाण का वह भाग जिसमें पर लगे होते हैं, शरीर के भीतर घुस जाय । २ अत्यन्त पीड़ा उत्पन्न करना ।

सपत्राकृतिः (स्त्री०) बड़ी पीड़ा या दर्द ।

सपदि (अव्यया०) तुरन्त । फ़ौरन ।

सपर्या (स्त्री०) १ पूजन । अर्चन । २ सेवा । परिचर्या ।

सपाद (वि०) १ पैरों वाला । २ सवाया ।

सपिंड, सपिण्ड (पु०) एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिण्ड दान करता हो । एक ही खानदान का ।

सपिंडीकरणं, सपिण्डीकरणं (न०) किसी मृत नातेदार के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध कर्म विशेष । [असल में यह कृत्य एक वर्ष बाद करना चाहिये; किन्तु आज कल लोग बारहवें दिन ही इसे कर डाला करते हैं ।]

सपीतिः (स्त्री०) साथ साथ पान करने वाला । हमप्याला ।

सप्तक (वि०) [स्त्री०—सप्तका, सप्तकी] १ जिसमें सात हों । २ सात । ३ सातवाँ ।

सप्तकं (न०) सात का समुदाय ।

सप्तकी (स्त्री०) स्त्री की करधनी या कमरबंद ।

सप्ततिः (स्त्री०) सत्तर ।

सप्तधा (अव्यया) सातगुना ।

सप्तन् (संख्यावाची विशेषण) सात ।—अर्चिस्, (वि०) १ सात जिह्वा या लौ वाला । २ अशुभ दृष्टि वाला । (पु०) १ अग्नि । २ शनि ।—अशीतिः, (स्त्री०) सतासी ।—अस्रं, (न०) सतकोना ।—अश्वः, (पु०) सूर्य ।—अश्ववाहनः, (पु०) सूर्य ।—अहः, (पु०) सप्तदिवस अर्थात् सप्ताह । हफ़्ता ।—आत्मन्, (पु०) ब्रह्म की उपाधि ।—ऋषि, (पु० बहुवचन) १ मरीचि, अत्रि, आंगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ नामक सात ऋषियों का समुदाय । २ आकाश में उत्तर दिशा में स्थित सात तारों का समूह जो ध्रुव के चारों ओर घूमता दिखलाई पड़ता है ।—चत्वारिंशत्, (स्त्री०) ४७ । सैंतालीस ।—जिह्व, —ज्वाल, (पु०) अग्नि । —तन्तुः, (पु०) यज्ञ विशेष ।—दशन्, (वि०) सत्रह । १७ ।—दीधितिः, (स्त्री०) अग्नि । —द्वीपा, (स्त्री०) पृथिवी की उपाधि ।—धातु, (पु० बहुव०) शरीरस्थ सात धातुएं या शरीर के संयोजक द्रव्य अर्थात रक्त, पित्त, माँस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र ।—नवतिः, (स्त्री०) ९७ सत्तानवे ।—नाडीचक्रं, (न०) फलित ज्योतिष में सात टेढ़ी रेखाओं का एक चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं और जिसके द्वारा वर्षा का आगम बतलाया जाता है । —पर्ण, (पु०) छतिवन का पेड़ ।—पदी (स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू गाँठ जोड़ कर अग्नि के चारों ओर सात परि-

क्रमाएं करते हैं। भाँवर। भँवरी।—प्रकृतिः, (स्त्री०) राज्य के सात अंग। [यथा राजा, मंत्री, सामन्त, देश, कोश, गढ़ और सेना]—भद्रः, (पु०) सिरिस का पेड़।—भूमिक, —भौम, (वि०) सातखना ऊँचा।—विंशतिः, (स्त्री०) सत्ताइस।—शतं, (न०) १ सातसौ। २ एक सौ सात।—शती, (स्त्री०) ७०० पद्यों का संग्रह।—सप्तिः, (पु०) सूर्य की उपाधि।

सप्तम (वि०) [स्त्री०—सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमी (स्त्री०) १ सप्तम कारक। अधिकरण कारक। २ किसी पक्ष की सातवीं तिथि।

सप्तला (स्त्री०) चमेली की जाति का पौधा विशेष।

सप्तिः (पु०) १ जुआ। जुगन्धर। २ घोड़ा।

सप्रणय (वि०) प्यारा। मित्रतायुक्त।

सप्रत्यय (वि०) १ विश्वस्त। २ निश्चय। बेशक।

सफरः (पु०)
सफरी (स्त्री०) } छोटी जाति की मछली जो चमकीले रंग की होती है।

सफल (वि०) १ फलवाला। फल देने वाला। २ सार्थक। २ कृतकार्य। कामयाब।

सबंधु
सबन्धु } (वि०) घनिष्ट सम्बन्ध युक्त। मित्र वाला।

सबंधुः
सबन्धुः } (पु०) नातेदार। सजातीय।

सबलिः (पु०) सायंकाल का झुटपुटा उजियाला।

सबाध (वि०) १ अनिष्टकर। २ ज़ालिम। उत्पीडक।

सब्रह्मचर्य (न०) सहपाठी। एक ही गुरु से पढ़ने वाला।

सब्रह्मचारिन् (पु०) १ वे सहपाठी जो एक ही साथ पढ़ते हों और एक ही व्रत रखते हों। २ सहानुभूति रखने वाला।

सभा (स्त्री०) १ परिषद्। गोष्ठी। समिति। मजलिस। २ सभाभवन। सभामण्डप। ३ न्यायालय। ४ ४ दरबार। ५ द्यूतगृह। जुआड़खाना।—आस्तारः, (पु०) सभासद। सदस्य।—पति (पु०) १ सभा का प्रधान या नेता। २ जुआड़खाने का मालिक।—सद्, (पु०) १ सदस्य। २ जूरर। असेसर। पंच।

सभाज् (धा० उ०) [सभाजयति—सभाजयते] १ प्रणाम करना। २ सम्मान प्रदर्शित करना। पूजन करना। ३ प्रसन्न करना। ४ श्रृङ्गार करना। सजाना। ५ दिखलाना। प्रदर्शित करना।

सभाजनं (न०) १ प्रणाम। नमस्कार। २ शिष्टता विनम्रता। ३ परिचर्या।

सभावनः (पु०) शिवजी का नाम।

सभिकः
सभीकः } (पु०) जुआड़खाना चलाने वाला।

सभ्य (वि०) १ सभासद। २ समाज के उपयुक्त। ३ सभ्यता का व्यवहार करने वाला। ४ कुलीन। विनम्र। ५ विश्वस्त। विश्वासपात्र।

सभ्यः (पु०) १ सभासद। २ कुलीन वंशज। ३ जुआड़खाना चलाने वाला। ४ जुआड़खाने के मालिक का नौकर।

सभ्यता (स्त्री०)
सभ्यत्वं (न०) } १ सभ्य होने का भाव। २ सदस्यता। ३ सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ४ भलमनसाहत। शराफत।

सम् (धा० प०) [समति] १ घबड़ा जाना। जो घबड़ाया या परेशान न किया जा सके।

सम् (अव्यया०) १ समान। तुल्य। बराबर। २ सारा। ३ साधु। भला। ४ युग्म। जोड़ा।

सम (वि०) १ एकसा। समान। २ बराबर। तुल्य। ३ सदृश। एक रूप। समतल। समभूमि। चौरस। ४ जूस। (संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर कुछ न बचे। ५ पक्षपातहीन। ६ न्यायवान। ईमानदार। सच्चा। ७ नेक। धर्मात्मा। ८ साधारण। मामूली। ९ मध्य का। मध्यम। १० सीधा। ११ उपयुक्त। १२ उदासीन। विरक्त। १३ सब। हर कोई। १४ समूचा। तमाम। सम्पूर्ण।—अंशः, (पु०) बराबर का हिस्सा।—अन्तर, (वि०) समान्तराल। समान। तुल्य।—उदर्क, (न०) दूध और जल की ऐसी मिलावट जिसमें समान भाग जल और समान भाग दूध का हो।—उपमा, (स्त्री०) एक अलङ्कार विशेष।—कन्या, (स्त्री०)

विवाह योग्य लड़की ।—कालः, (पु०) तत्क्षण। उसी समय ।—कालं (अव्यया०) एक ही समय में ।—कालीन (वि०) एक ही समय में होने वाले ।—कोलः, (पु०) साँप। सर्प ।—गन्धक, (पु०) नक्ली धूप ।—चतुरस्र, (वि०) चार समान भुजाओं वाला ।—चतुर्भुजः, (पु०) —चतुर्भुजं, (न०) वह चतुर्भुज शक्ल जिसके चारों भुज समान हो ।—चित्त, (वि०) १ वह जिसके मन की अवस्था सर्वत्र समान रहती हो। समचेता । २ विरक्त ।—छेद,—छेदन, (वि०) समान विभाजक वाला ।—जाति, (वि०) समान जाति वाला ।—ज्ञा, (स्त्री०) कीर्ति ।—त्रिभुजः, (पु०) —त्रिभुजं, (न०) वह त्रिकोण जिसकी तीनों भुजा समान या बराबर की हों ।—दर्शन, —दर्शिन्, (वि०) सब को एक निगाह से देखने वाला । अपक्षपाती ।—दुःख, (वि०) समवेदना रखने वाला ।—दुःखसुख, (वि०) दुःख सुख का साथी ।—दृश्,—दृष्टि, (वि०) जो पक्षपाती न हो ।—बुद्धि, (वि०) १ अपक्षपाती । २ विषयविरागी ।—भावः, (पु०) समानता । तुल्यता । रंजित, (वि०) रंगा हुआ ।—रम्भः, (पु०) रतिबन्ध ।—रेख, (वि०) सीधा ।—लंब, (पु०) —लम्बं, (न०) वह चतुर्भुज शक्ल जिसकी दो भुजा मात्र समान्तराल हों ।—वर्तिन्, (वि०) समचेता । अपक्षपाती । (पु०) यमराज ।—वृत्तं, (न०) वह छंद जिसके चारों चरण समान हों । -वृत्ति, (वि०) स्थिर । प्रशान्त ।—वेध, (पु०) मध्यम गहराई । —संधिः, (पु०) वह सुलह जो बराबर की शर्तों पर हुई हो ।—सुप्तिः, (स्त्री०) वह निद्रा जिसमें समस्त चराचर निद्राभिभूत हों । ऐसा कल्प के अन्त में होता है ।—स्थ, (वि०) १ समान । एकसा । २ समतल । ३ समान ।—स्थलं, (न०) असमान जगह । ऊबड़ खाबड़ जगह ।

समं (न०) चौरस मैदान । (अव्यया०) १ साथ । साथ में । साथ साथ । २ बराबर बराबर । ३ उसी प्रकार । उसी तरह । ४ पूर्णतः । ५ एक ही समय में । सब एक बार ।

समक्ष (वि०) दृष्टिगोचर

समक्षं (अव्यया०) नेत्रों के सामने ।

समग्र (वि०) तमाम । समूचा । सम्पूर्ण ।

समंगा, समङ्गा (स्त्री०) मंजिष्ठा ।

समजं (न०) जंगल । वन ।

समज्ञः (पु०) १ पशुओं का गिरोह । २ मूर्खों का जमाव ।

समज्या (स्त्री०) १ सभा । मजलिस । २ कीर्ति । प्रसिद्धि ।

समंजस (वि०) १ उचित । युक्तियुक्त । ठीक । उपयुक्त । २ सही । सच्चा । बिल्कुल ठीक । ३ साफ । बोधगम्य । ४ धर्मात्मा । भला । न्यायवान । ५ अभ्यस्त । अनुभवी । ६ तंदुरुस्त ।

समंजसं (न०) १ योग्यता । २ यथार्थता । ३ सच्ची साक्षी ।

समता (स्त्री०), समत्वं (न०) १ एकरूपता । २ सादृश्य । समानता । ३ तुल्यता । ४ निष्पक्षपातता । ५ मनस्थिरता । ६ सम्पूर्णता । ७ साधारणत्व । ८ असमता ।

समतिक्रमः (पु०) लङ्घन । भङ्ग ।

समतीत (वि०) गुज़रा हुआ । बीता हुआ ।

समद (वि०) १ मतवाला । ख़ूनी । २ मदमाता । ३ मद से पगलाया हुआ ।

समधिक (वि०) १ अधिक । ज्यादा । बहुत ।

समधिकं (अव्यया०) अत्यधिक ।

समधिगमनं (न०) जीतना । दमन करना ।

समध्व (वि०) साथ साथ यात्रा करना ।

समनुज्ञानं (न०) १ स्वीकृति । रज़ामंदी । २ सम्पूर्ण रीत्या पसंदगी ।

समंत, समन्त (वि०) १ हर ओर । २ समूचा ।

समंतः, समन्तः (पु०) सीमा । हद ।—दुग्धा, (स्त्री०) थूहर । स्नुही ।—पंचकं, (न०) कुरुक्षेत्र अथवा कुरुक्षेत्र के निकट का स्थान विशेष ।

—भद्रः, (पु०) बुद्धदेव ।—भुज्, (पु०) अग्नि ।

समन्यु (वि०) १ दुःखी । २ क्रोधी ।

समन्वयः (पु०) १ संयोग । मिलन । मिलाप । २ विरोध का अभाव । ३ कार्य कारण का प्रवाह या निर्वाह ।

समन्वित (व० कृ०) १ संयुक्त । मिला हुआ । २ जिसमें कोई रुकावट न हो । ३ सम्पन्न । अन्वित । ४ प्रभावान्वित या प्रभाव पड़ा हुआ ।

समभिप्लुत (व० कृ०) १ जलप्लावित । जल के बूड़े में बूड़ा हुआ । २ ग्रस्त ।

समभिव्याहारः (पु०) १ एकसाथ वर्णन या कथन । २ साहचर्य । अच्छी तरह कहना ।

समभिसरणं (न०) १ समीप आगमन । २ जिज्ञासु । अभिलापवान् ।

समभिहारः (पु०) १ एक साथ ग्रहण । २ दुहराव । पुनरावृत्ति । ३ फालतू । अतिरिक्त ।

समभ्यर्चनं (न०) अर्चा । सम्मान । पूजन ।

समभ्याहारः (पु०) साहचर्य ।

समयः (पु०) १ वक्त । काल । २ मौक़ा । अवसर । ३ उचित समय । ठीक वक्त । ४ कौल करार । ५ पद्धति । रीतिरस्म । रवाज़ । प्रथा । ६ मामूली रीति रस्म । ७ कवियों का निश्चय किया हुआ सिद्धान्त । ८ सङ्केत स्थान या कालनिरूपण । ९ ठहराव । शर्त । १० क़ानून । कायदा । नियम । ११ आदेश । निर्देश । आज्ञा । १२ गुरुतर विषय । नितान्त आवश्यकता । १३ शपथ । १४ सङ्केत । इशारा । १५ सीमा । हद । १६ सिद्धान्त । सूत्र । १७ समाप्ति । अवसान । अन्त । १८ साफल्य । समृद्धि । १९ दुःख की समाप्ति ।—अध्युषितं, (न०) वह समय जब न तो सूर्य और न तारागण दिखलाई पड़ें ।—अनुवर्तिन्, (वि०) किसी प्रतिष्ठित पद्धति पर चलने वाला ।—आचारः, (पु०) पद्धति । रीतिरस्म ।—क्रिया, (स्त्री०) कौल करार करना ।—परिरक्षणं, (न०) सन्धि या किसी इकरार नामे की शर्तों पर चलने की क्रिया ।—व्यभिचारः, (पु०) किसी इकरार या कौलकरार को तोड़ना ।—व्यभिचारिन्, (वि०) कौल करार को भंग करने वाला ।

समया (अव्यया०) १ समय से । २ निर्दिष्ट समय से । ३ बीच में । भीतर ।

समरं (न०) } युद्ध । लड़ाई । संग्राम ।—उद्देश
समरः (पु०) } —भूमिः, (पु०) युद्धक्षेत्र ।
—शिरस्, (न०) सेना का अग्रभाग ।

समर्चनं (न०) अर्चन । पूजन । सम्मानकरण ।

समर्ण (वि०) १ पीड़ित । कष्टित । घायल । २ याचित । माँगा हुआ ।

समर्थ (वि०) १ मज़बूत । बलवान । २ निष्णात । योग्यता सम्पन्न । ३ योग्य । ठीक । उचित । ४ तैयार किया हुआ । ५ समानार्थवाची । ६ गूढार्थ प्रकाशक । ७ बहुत ज़ोरदार । ८ अर्थ से सम्बन्ध रखने वाला ।

समर्थकं (न०) अगर की लकड़ी ।

समर्थनं (न०) १ स्थापन । अनुमोदन । २ संभावना । ३ उत्साह । ४ सामर्थ्य । शक्ति । ५ मतभेद दूर करना । झगड़ा मिटाना ।

समर्धक (वि०) १ अभीष्ट पूरा करने वाला । वरदाता ।

समर्पणं (न०) प्रतिष्ठा पूर्वक देना ।

समर्याद (वि०) १ सीमाबद्ध । २ समीप । निकट । ३ चाल चलन में दुरुस्त । शिष्ट ।

समल (वि०) १ मैला । गंदा । अपवित्र । २ पापी ।

समलं (न०) विष्ठा । मल ।

समवकारः (पु०) एक प्रकार का नाटक । इसकी कथावस्तु का आधार, किसी देवता या असुर के जीवन की कोई घटना होती है । इसमें वीररस प्रधान होता है । इसमें अक्सर देवासुर-संग्राम का वर्णन किया जाता है । इसमें तीन अङ्क होते हैं, और विमर्श सन्धि के अतिरिक्त शेष चारों सन्धियाँ रहती हैं । इस नाटक में बिन्दु या प्रवेशक की आवश्यकता नहीं समझी जाती ।

समवतार (पु०) १ उतरने की जगह । उतारा । २ जल में या तीर्थ में घुसने की क्रिया ।

समवस्था (स्त्री०) १ निर्द्धारित अवस्था । २ समान-हालत । ३ दशा । हालत ।

समवस्थित (व० कृ०) १ अचल रहा हुआ । २ दृढ़ ।

समवाप्तिः (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि ।

समवायः (पु०) १ समुदाय । समूह । २ ढेर । राशि । ३ घनिष्ट सम्बन्ध । ४ (वैशेषिक दर्शन में) अटूट सम्बन्ध । (न्याय में) नित्य सम्बन्ध । वह सम्बन्ध जो अवयवी के साथ अवयव का, गुणी के साथ गुण का अथवा जाति के साथ व्यक्ति का होता है ।

समवायिन् (वि०) १ जिसमें समवाय या नित्य सम्बन्ध हो । २ बहुसंख्यक । बह्वाकार । बहुगुणित ।

समवेत (व० कृ०) १ एक में मिला हुआ । एकत्र । २ अटूट सम्बन्ध युक्त । ३ बहु संख्यक ।

समष्टिः (स्त्री०) सब का समूह । कुल एक साथ । व्यष्टि का उलटा ।

समसनं (न०) १ मेल । संयोग । २ शब्दों का योग । समासान्त शब्दों की बनावट । ३ सङ्कोचन ।

समस्त (वि०) १ सब । कुल । समग्र । २ एक में मिलाया हुआ । संयुक्त । ३ समास युक्त । ४ संक्षिप्त ।

समस्या (स्त्री०) १ किसी श्लोक या छंद का वह अन्तिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये बना कर दूसरों को दिया जाय और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद तैयार किया जाय । २ अपूर्ण की पूर्ति ।

समा (स्त्री०) वर्ष । (अव्यया०) साथ । सहित ।

समासमीना (स्त्री०) वह गौ जो प्रतिवर्ष बच्चा दे । वर्षौढ गाय ।

समाकर्षिन् (वि०) [स्त्री०—समाकर्षिणी] १ आकर्षक । भली भाँति खींचने वाला । २ दूर तक गन्ध फैलाने वाला । (पु०) गन्ध जो दूर तक व्याप्त हो ।

समाकुल (वि०) १ परिपूर्ण । भीड़भाड़ युक्त । २ अत्यन्त घबड़ाया हुआ ।

समाख्या (स्त्री०) १ कीर्त्ति । नामवरी । ख्याति । नाम । संज्ञा ।

समाख्यात (व० कृ०) १ गिना हुआ । जोड़ा हुआ । २ भलीभाँति वर्णित । घोषित । ३ प्रख्यात । प्रसिद्ध ।

समागत (व० कृ०) साथ आया हुआ । संयुक्त । मिला हुआ । २ आया हुआ । वह जिसका समागम हुआ हो ।

समागतिः (स्त्री०) १ सहआगमन । २ आगमन । ३ एकसी दशा या एकसी उन्नति ।

समागमः (पु०) १ मेल । भेंट । मुठभेड़ । मिलन । २ रतज़गा । हेलमेल । ३ समीप आगमन । ४ (ज्योतिष में) (दो ग्रहों का) मेल ।

समाघातः (पु०) १ हिंसन । वध । २ युद्ध । लड़ाई ।

समाचयनं (न०) सञ्चय करण । जमा करने की क्रिया ।

समाचरणं (न०) भली भाँति आचरण करना ।

समाचारः (पु०) १ गमन । जाना । २ आचरण । चालचलन । ३ उचित चाल चलन या व्यवहार । ४ संवाद । ख़बर । रिपोर्ट । सूचना ।

समाजः (पु०) १ सभा । मजलिस । २ गोष्ठी । क्लब । संस्था । ३ समूह । समुदाय । ४ दल । टोली । ५ हाथी ।

समाजिकः (पु०) सभा का सदस्य ।

समाज्ञा (स्त्री०) कीर्ति । ख्याति ।

समादानं (न०) १ पूरा पूरा देना । २ उपयुक्त दान पाना । ३ जैनियों का आह्निक कृत्य विशेष ।

समाधा (स्त्री०) देखो समाधान ।

समाधानं (न०) १ मिलान करना । २ मन को ब्रह्म

में लगाना। ३ ध्यान। समाधि। ४ एकाग्रता। ५ चित्त की शान्ति। ६ शङ्कानिरसन। पूर्वपक्ष का उत्तर। ७ प्रतिज्ञा करण। ८ (नाटक में कथा-भाग की मुख्य घटना।

समाधिः (पु०) १ (मन की) एकाग्रता। २ ध्यान विशेष। ३ तप। ४ मिलाना। जोड़ना। ५ समाधान करना। ६ शान्ति। निस्तब्धता। ७ वचनदान। ८ त्याग। ९ पूर्णता। सम्पन्न करने की क्रिया। १० कठिन समय में धैर्य धारण। ११ असम्भव कार्य करने का प्रयत्न। १२ अन्न बाँटना। दुर्भिक्ष के लिये अन्न जमा करना। १३ कब्र। १४ गरदन का भाग या जोड़ विशेष। १५ अलंकार विशेष जिसकी परिभाषा यह है—

"समाधिः सुकरं कार्यं कारणान्तरयोगतः।"

—मम्मट।

समाध्मात (व० कृ०) १ फूँका हुआ। २ फुलाया हुआ।

समान (वि०) १ वही। तुल्य। सदृश। २ एक। एकसा। ३ नेक। पुण्यात्मा। न्यायवान। ४ साधारण। ५ सम्मानित।

समानं (अव्यया०) बराबर बराबर। सदृश।

समानः (पु०) १ बराबर वाला। मित्र। २ शरीरस्थ पाँच पवनों में से एक। यह नाभि के पास रहता है और अन्न आदि पचाने के लिये आवश्यक माना गया है।—अर्थः, (वि०) एक अर्थ वाला।—उदकः, (पु०) ऐसा सम्बन्धी जिसे तर्पण में दिया हुआ जल मिले। चौदहवीं पीढ़ी के बाद समानोदक सम्बन्ध समाप्त हो जाता है।—उदर्यः, (पु०) सगा भाई।—उपमा, (स्त्री०) उपमा विशेष।

समानयनं (न०) राशीकरण। एकत्रीकरण।

समापः (पु०) देवताओं को बलिदान या भेंट चढ़ाने की क्रिया।

समापत्तिः (स्त्री०) मिलन। भेंटन। संयोग। इत्तिफ़ाक़। २ इत्तिफ़ाक़िया मुठभेड़।

समापक (वि०) [स्त्री०—समापिका] पूरा करने वाला। समाप्त करने वाला।

समापनं (न०) १ समाप्ति करने की क्रिया। सम्पूर्णता। २ उपलब्धि। ३ हिंसन। नाशन। ४ अध्याय। ५ ध्यान। समाधि।

समापन्न (व० कृ०) १ पाया हुआ। उपलब्ध किया हुआ। २ घटित। वाके हुआ भया। ३ आया हुआ। पहुँचा हुआ। ४ समाप्त किया हुआ। ५ गुणी। प्रवीण। ६ सम्पन्न। अन्वित। ७ पीड़ित। दुःखी। ८ हत। मारा हुआ।

समापादनं (न०) पूर्ण करने की क्रिया।

समाप्त (व० कृ०) १ पूरा किया हुआ। पूर्ण किया हुआ। २ चतुर। चालाक।

समाप्तालः (पु०) स्वामी। पति।

समाप्तिः (स्त्री०) १ अन्त। अवसान। २ पूर्णता। ३ झगड़ों का निपटारा।

समाप्तिक (वि०) १ अन्तिम। २ ससीम। परिच्छिन्न। ३ सम्पूर्ण कर चुकने वाला।

समाप्तिकः (पु०) १ समापक। पूर्ण करने वाला। २ वेदाध्ययन पूर्ण कर चुकने वाला।

समाप्लुत (व० कृ०) १ जल की बाढ़ में डूबा हुआ। २ परिपूर्ण।

समाभाषण (न०) वार्तालाप। संभाषण।

समाम्नानं (न०) १ पुनरावृत्ति। २ गणना। ३ परंपरागत प्राप्त पाठ।

समाम्नायः (पु०) १ परपरागत पाठ। २ परम्परागत (शब्द) संग्रह। ३ परम्परा। ४ पाठ। गणना। ५ योग। जोड़। जमा। समूह। (यथा अक्षर-समाम्नाय।)

समायः (पु०) १ आगमन। २ भेंट। मुलाक़ात।

समायत (व० कृ०) बाहिर खींचा हुआ। बढ़ाया हुआ। लंबा किया हुआ।

समायुक्त (व० कृ०) १ जोड़ा हुआ। सम्बन्धयुक्त। २ अनुरक्त। ३ तैयार किया हुआ। ४ अन्वित। सम्पन्न। ५ नियुक्त किया हुआ। सौंपा हुआ।

समायुत (व० कृ०) १ जोड़ा हुआ। मिलाया हुआ। २ जमा किया हुआ। ३ सम्पन्न किया हुआ।

समायोग (पु०) १ संयोग । समागम । सम्बन्धी । २ तैयारी । ३ धनुष पर बाण रखना । ४ ढेर । राशि । ५ कारण । हेतु । उद्देश्य ।

समारंभः } **समारम्भः** } (पु०) १ आरम्भ । शुरूआत । २ उद्योग । कार्य । क्रिया । ३ लेप । मलहम ।

समाराधनं (न०) १ सन्तुष्ट करने का साधन । सन्तुष्ट करना प्रसन्न करना । २ परिचर्या । सेवा ।

समारोपणं (न०) १ सौंपना । जमा कराना । रखना । २ हवाले करना ।

समारोपित (व० कृ०) १ ऊपर चढ़वाया हुआ । २ चढ़ा हुआ (रोदा धनुष पर) । ३ धरोहर रखा हुआ । स्थापित किया हुआ । जमाया हुआ । ४ हवाले किया हुआ । सौंपा हुआ ।

समारोहः (पु०) १ ऊपर चढ़ना । ऊपर जाना । २ (घोड़े या किसी के ऊपर) सवार होना । ३ राज़ी होना । मान लेना ।

समालंबनं (न०) टेक । सहारा ।

समालंबिन् } **समालम्बिन्** } (वि०) लटकने वाला ।

समालंभः (पु०) } **समालम्भः** (पु०) } **समालंभनं** (न०) } **समालम्भनं** (न०) } १ पकड़न । २ बलिदान के लिये पशु को पकड़ने की क्रिया । ३ शरीर पर लेप करना ।

समावर्तनं (न०) १ लौटना । प्रत्यावर्तन । २ विशेष कर घर लौट आना । वेदाध्ययन समाप्त कर ब्रह्मचारी का गुरुकुल से ।

समावायः (पु०) १ सवन्ध । लगाव । २ अटूट सम्बन्ध । ३ समूह । समुदाय । ४ राशि । ढेर ।

समावास (पु०) वासा । रहने का स्थान ।

समाविष्ट (व० कृ०) १ भली भाँति घुसा हुआ । भली तरह व्याप्त । २ पकड़ा हुआ । वश में किया हुआ । घेरा हुआ । ३ भूताविष्ट । ४ अन्वित । सम्पन्न । ५ तै किया हुआ । निर्द्धारित किया हुआ । ६ भली भाँति शिक्षा दिया हुआ ।

समावृत (व० कृ०) १ घिरा हुआ । छिका हुआ । २ पर्दा पड़ा हुआ । घूंघट में छिपा हुआ । ३ छिपा हुआ । दुरा हुआ । ४ रक्षित । ५ निकाला हुआ । छेका हुआ । ६ रोका हुआ । रुका हुआ ।

समावृत्तः } **समावृत्तकः** } (पु०) वह ब्रह्मचारी, जो गुरुकुल में वास कर और विद्याध्ययन पूर्ण कर, घर लौट कर आया हो ।

समावेशः (पु०) १ एकत्र वास करना । २ मिलाव । लगाव । ३ प्रवेश । ४ घुसाव । ५ भूत का आवेश । ६ क्रोध । उमंग ।

समाश्रय (पु०) १ रक्षा की खोज करने वाला । २ रक्षा । पनाह । ३ रक्षा का स्थान । आश्रयस्थल । ४ आवसस्थान । निवासस्थान ।

समाश्लेषः (पु०) आलिङ्गन ।

समाश्वासः (पु०) दम में दम आना । किसी कठिनाई से पार पाकर दम लेना । छुटकारा । उत्साह । आश्वासन । ३ भरोसा । आसरा । विश्वास ।

समाश्वासनं (न०) १ उत्साहित करना । आश्वासन देना । २ आश्वासन ।

समासः (पु०) १ संक्षेप । खुलासा । २ समर्थन । सिद्ध करना । ३ समाहार । एकत्रकरण । ४ व्याकरण में दो अथवा अधिक पदों को एक बनाने वाला विधान विशेष ।—उक्तिः, (पु०) अलङ्कार विशेष ।

समासक्तिः (स्त्री०) } **समासंगः** (पु०) } **समासङ्गः** (पु०) } १ संयोग । मेल । २ स्थापन । ३ सम्बन्ध ।

समासर्जनं (न०) १ पूर्ण रीत्या वैराग्य । २ त्याग ।

समासादनं (न०) १ समीपागमन । २ पाना । मिलना । ३ पूर्ण करना । सम्पन्न करना ।

समाहरणं (न०) मिलाना । जमा करना । ढेर करना ।

समाहर्तृ (पु०) १ एकत्र करने या जमा करने का आदी । २ वसूल करने वाला ।

समाहारः (पु०) १ संग्रह । समूह । २ शब्दों की रचना । ३ शब्दों या वाक्यों को एक करने की क्रिया । ४ द्वन्द्व और द्विगु समासों का भेद विशेष । ५ संक्षिप्त करण । सङ्कोचन ।

समाहित (व० कृ०) १ जमा किया हुआ । एकत्र किया हुआ । २ तै किया हुआ । ३ शान्त (चित्त) स्वस्थ । एकाग्र । ४ लवलीन । संलग्न । ५ समाप्त किया हुआ । ६ कौलकरार किया हुआ ।

समाहृत (व० कृ०) १ एक जगह किया हुआ । जमा किया हुआ । २ विपुल । बहुत । अत्यधिक । बहुत अधिक । ३ प्राप्त । स्वीकृत । लिया हुआ । ४ संक्षिप्त किया हुआ । खुलासा किया हुआ ।

समाहृति (स्त्री०) १ संग्रह । संक्षेप ।

समाह्वः (पु०) चिनौती । ललकार ।

समाह्वयः (पु०) १ ललकार । निमंत्रण । २ युद्ध । संग्राम । ३ लड़ाई जो केवल दो आदमियों में हो (समूह बाँध कर नहीं) । ४ जानवरों की लड़ाई जो आमोद प्रमोद के लिये हो । ५ नाम । संज्ञा ।

समाह्वा (स्त्री०) नाम । उपाधि ।

समाह्वानं (न०) १ बुलौआ । समाहूत सभामण्डली । २ ललकार । रणनिमंत्रण ।

समिकं (न०) भाला । बरछा । बल्लम ।

समित् (स्त्री०) संग्राम । लड़ाई ।

समिता (स्त्री०) गेहूँ का आटा ।

समितिः (पु०) १ सभा । समाज । २ मजलिस । ३ गल्ला । झुंड । हेड़ । गौहर । ४ लड़ाई । जंग । समर । ५ सादृश्य । समानता । ६ शान्ति । सन्तोष । सहनशीलता ।

समितिंजय } समितिञ्जय } (वि०) विजयी ।

समिथः (पु०) १ युद्ध । लड़ाई । समर । २ अग्नि । आग ।

समिद्ध (व० कृ०) १ जलाया हुआ । सुलगाया हुआ । २ आग लगाया हुआ । फूका हुआ । ३ भड़काया हुआ ।

समिध (स्त्री०) लकड़ी । ईंधन । समिधा । हवन में जलायी जाने वाली लकड़ी ।

समिधः (पु०) आग । अग्नि ।

समिधनं } समिन्धनं } (न०) १ जलन । बलन । २ ईंधन ।

समिरः (पु०) हवा । पवन ।

समीकं (न०) युद्ध । लड़ाई ।

समीकरणं (न०) १ असम को सम करना । २ बीजगणित में अनजानी हुई संख्याओं को जानने के लिये प्रक्रिया विशेष । ३ सांख्य दर्शन ।

समीक्षा (स्त्री०) १ खोज । अनुसंधान । २ विचार । ३ भली भाँति पर्यवेक्षण या सुआयना । ४ समझ । बुद्धि । ५ सत्यप्रकृति या नैसर्गिक सत्य । ६ मुख्य सिद्धान्त । ७ मीमांसा दर्शन ।

समीचः (पु०) समुद्र ।

समीचकः (पु०) संयोग । स्त्रीमैथुन ।

समीची (स्त्री०) १ मृगी । हिरनी । २ प्रशंसा । तारीफ़ ।

समीचीनं (न०) १ सत्य । २ उपयुक्तता ।

समीचीनः (पु०) १ सही । ठीक । २ सत्य । यथार्थ । ३ उपयुक्त । संगत ।

समीदः (पु०) मैदा । गेहूँ का अति महीन आटा ।

समीन (वि०) १ वार्षिक । सालाना । २ एक वर्ष के लिये भाड़े पर लिया हुआ । ३ एक वर्ष का ।

समीनिका (स्त्री०) बसौंद गाय । प्रतिवर्ष ब्याने वाली गाय ।

समीप (वि०) समीप । निकट ।

समीपं (न०) नैकट्य । समीपत्व ।

समीरः (पु०) १ पवन । हवा । २ शमी वृक्ष ।

समीरणः (पु०) १ पवन । हवा । २ स्वांस । दम । यात्री । पथिक । ३ मरुवा का पौधा ।

समीहा (स्त्री०) अभिलाष । कामना । वांछा ।

समीहित (व० कृ०) १ अभिलषित । वांछित । इच्छित । २ हाथ में लिया हुआ ।

समीहितं (न०) कामना । इच्छा । अभिलाष ।

समुत्क्षणं (न०) गिराना ।

समुच्चय (पु०) १ समूहन । समूह । समुच्चय । २ आपस में अनपेक्षित बहुत से शब्दों का एक क्रिया में अन्वय । ३ अलङ्कार विशेष ।

समुच्चरः (पु०) १ आरोहण । २ पार करना ।

समुच्छेदः (पु०) पूर्णरीत्या नाश । जड से नाश । मूलोच्छेद ।

समुच्छ्रयः (पु०) १ उन्नयन । ऊँचाई । २ विरोध । शत्रुता ।

समुच्छ्रायः (पु०) ऊँचाई । उठान ।

समुच्छ्वसितं (न०) } आह । ठंडीसाँस ।
समुच्छ्वास. (पु०) }

समुज्झित (वि०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २ मुक्त किया हुआ । ३ मुक्त ।

समुत्कर्षः १ उन्नति । बढ़ती । २ अपनी जाति से ऊँची किसी अन्य जाति में जाना ।

समुत्क्रमः (पु०) १ ऊपर चढ़ना । उन्नति करना । २ सीमोल्लङ्घन । मर्यादा लांघना ।

समुत्क्रोशः (पु०) १ चिल्लाना । २ विकट कोलाहल । ३ कुररी नामक पक्षी ।

समुत्थ (वि०) १ उठा हुआ । उन्नत । २ निकला हुआ । उत्पन्न । ३ (घटना का) होना ।

समुत्थानं (न०) १ उठान । उत्थान । २ (मरकर) जी उठना । ३ पूर्णरीत्या आरोग्य । ४ (घाव का) पुरना । ५ रोग का लक्षण । ६ उद्योग धंधे में लगना ।

समुत्पतनं (न०) १ उठान । २ उड़ान ३ उद्योग ।

समुत्पत्तिः (स्त्री०) १ पैदायश । उत्पत्ति । २ घटना ।

समुत्पिञ्ज
समुत्पिञ्ञ
समुत्पिञ्जल
समुत्पिञ्जल } (वि०) अत्यन्त गड़बड़ाया हुआ । अस्तव्यस्त ।

समुत्पिञ्जः
समुत्पिञ्ञः
समुत्पिञ्जलः
समुत्पिञ्जल } (पु०) १ सेना जो हड़बड़ी में अस्त-व्यस्त हो गयी हो । २ बड़ी भारी गड़बड़ ।

समुत्सवः (पु०) बड़ा उत्सव ।

समुत्सर्गः (पु०) १ त्याग । विराग । २ गिरन । गिराव । ३ मल का त्याग । दस्त होना ।

समुत्सारणं (न०) १ हँका देना । भगा देना । २ पीछा करना । शिकार करना ।

समुत्सुक (वि०) १ अत्यन्त विकल या चिन्तित । २ अभिलाषी । ३ शोकान्वित ।

समुत्सेधः (पु०) १ ऊँचान । उठान । २ मोटापन । गाढ़ापन ।

समुदक्त (व० कृ०) (कुएं से जैसे) खींचा हुआ । निकाला हुआ ।

समुदयः (पु०) १ चढ़ाव । उठान । २ निकास । ३ संग्रह । समूह राशि । ४ योग । मिलावट । ५ समूचा । तमाम । ६ राजस्व । ७ उद्योग । ८ लड़ाई समर । ९ दिवस । १० सेना का पिछला भाग ।

समुदागमः (पु०) पूर्णज्ञान ।

समुदाचार (पु०) १ उचित अभ्यास या व्यवहार । २ सम्बोधन करने का उपयुक्त विधान । ३ अभि-प्राय । प्रयोजन । मतलब ।

समुदायः (पु०) संग्रह । समुदाय ।

समुदाहरणं (न०) १ कथन । उच्चारण । २ उदाह-रण । मिसाल । नज़ीर ।

समुदित (व० कृ०) १ ऊपर गया हुआ । उठा हुआ । ऊपर चढ़ा हुआ । २ ऊँचा । उन्नत । ३ उत्पन्न । निकला हुआ । ४ समवेत । एकत्रित । मिला हुआ । ५ सम्पन्न ।

समुदीरणं (न०) १ कथन । वर्णन । उच्चारण । २ दुहराना ।

समुद्ग (वि०) १ उठान । चढ़ान । २ पूर्णरीत्या । व्याप्ति । ३ ढक्कन वाला । ४ छीमी वाला ।

समुद्गः (पु०) १ ढक्कनदार पिटारा या टोकरी । श्लोक विशेष ।

समुद्गकः (पु०) १ ढक्कनदार पेटी या टोकरी । २ श्लोक विशेष ।

समुद्गमः १ उठना । उगना । २ निकलना । ३ उत्पत्ति । पैदायश ।

समुद्गिरणं (न०) १ वमन । उगलन । २ वह जो उगला गया हो । ३ उठना । ऊपर करना ।

समुद्गीतं (न०) उच्चस्वर का गीत या राग ।

समुद्देशः (पु०) १ पूर्णरीत्या। बतलाना। २ पूर्ण वर्णन।

समुद्धत (व० कृ०) १ उठाया हुआ। ऊपर किया हुआ। २ उत्तेजित। उभाड़ा हुआ ३ अभिमान में चूर। अकड़ा हुआ। ४ बुरे तौर तरीके का। दुष्ट व्यवहार करने वाला। ५ अहङ्कारी। अशिष्ट।

समुद्धरणं (न०) १ उठान। ऊपर करना। २ उठा लेना। ३ ऊपर खींच लेना। ४ मुक्ति। छुटकारा। ५ मूलोच्छेदन। ६ (समुद्र तट से) निकाल लेना। ७ भोजन जो वमन द्वारा निकल पड़ा हो।

समुद्धर्तृ (पु०) छुटाने वाला। छुटकारा देने वाला।

समुद्भवः (पु०) निकास। उद्भवस्थान।

समुद्यमः (पु०) १ उठान। २ महान् उद्योग। ३ उद्योगारम्भ। ४ आक्रमण। चढ़ाई।

समुद्योगः (पु०) क्रियात्मक उद्योग। उत्साह।

समुद्र (वि०) मोहर से बंद। मोहर वाला। मोहर लगा हुआ।—अन्तं, (न०) १ समुद्रतट। २ जायफल।—अन्ता, (स्त्री०) १ कपास का पौधा। २ पृथिवी।—अंबरा, (स्त्री०) पृथिवी।—अरुः, —आरु, (पु०) १ मगर। नक्र। २ वृहदाकार मत्स्य विशेष। ३ श्रीराम जी का बाँधा हुआ समुद्र।—कफः,—फेनः, (पु०) समुद्रफेन। —गः, (पु०) समुद्री देशों में व्यापार करने वाला।—गा, (स्त्री०) नदी।—गृहं, (न०) जल के भीतर बनाया हुआ ग्रीष्मभवन।—चुलुकः, (पु०) अगस्त्य जी का नामान्तर।—नवनीत,(न०) १ चन्द्रमा। अमृत।—मेखला, —रसना, (स्त्री०) पृथिवी।—यानं, (न०) १ समुद्रयात्रा। २ जहाज़। पोत।—यात्रा, (स्त्री०) समुद्री सफर।—योषित्, (स्त्री०) नदी।—वह्निः, (पु०) वड़वानल।—सुभगा, (स्त्री०) गङ्गा नदी।

समुद्रः (पु०) १ सागर। २ शिव। ३ चार की संख्या।

समुद्वहः (पु०) १ ढोने वाला। २ उठाने वाला।

समुद्वाहः (पु०) १ वहन। ढुलाई। २ विवाह। शादी।

समुद्वेगः (पु०) महा भय। डर। भीति।

समुंदनं } (न०) १ नमी। तरी। २ गीलापन।
समुन्दनं } ओदापन।

समुन्न (वि०) गीला। नम। तर।

समुन्नत (व० कृ०) १ ऊपर उठाया हुआ। २ ऊँचा। ३ गंभीर। श्रेष्ठ। ४ अभिमानी। अहंकारी। ५ निकला हुआ। ६ ईमानदार। न्यायी।

समुन्नतिः (स्त्री०) १ उठान। २ ऊँचाई। ऊँचान। ३ उच्चपद। मुख्यता। प्रधानता। ४ अभ्युदय। समृद्धि। ५ अभिमान। अहंकार।

समुन्नद्ध (व० कृ०) १ उठा हुआ। उन्नत। २ सूजा हुआ। ३ भरा हुआ। ४ अभिमानी। ५ पण्डितंमन्य। ६ बिना बेड़ियों का। मुक्त। खुला हुआ।

समुन्नयः (पु०) १ प्राप्ति। उपलब्धि। २ घटना। हादसा।

समुन्मूलनं (न०) जड़ से उखाड़ना। नाश।

समुपगमः (पु०) लगाव। संस्पर्श।

समुपजोषम् (अव्यया०) नितान्त इच्छानुसार।

समुपभोगः (पु०) मैथुन।

समुपवेशनं (न०) १ इमारत। भवन। बस्ती। २ बैठना।

समुपस्था (स्त्री०) } १ समीपता। २ नैकट्य।
समुपस्थानं (न०) } होना। घटना।

समुपार्जनं (न०) एक साथ एक समय में प्राप्ति।

समुपेत (व० कृ०) १ सह आगमन। २ आया हुआ। ३ अन्वित। सम्पन्न।

समुपोढ (व० कृ०) १ ऊंचा उठा हुआ। २ उन्नत। वढ़ा हुआ। ३ समीप लाया हुआ। ४ संयत। रोका हुआ।

समुल्लासः (पु०) अत्यधिक चमकीला। २ महान् हर्ष।

समूढ (व० कृ०) एकत्र किया हुआ। जमा किया हुआ। २ एकत्रित किया हुआ। लपेटा हुआ। ४ सहित।

५ फुर्ती से उत्पन्न किया हुआ। ६ शान्त किया हुआ। चुप किया हुआ। ७ मोडा हुआ। झुका हुआ। ८ साफ किया हुआ। पवित्र किया हुआ। ९ ले जाया हुआ। १० रहनुमा किया हुआ। आगे चलाया हुआ। ११ विवाहित।

समूरः
समूरुः
समूरकः } (पु०) एक प्रकार का मृग।

समूल वि०) जड समेत।

समूहः (पु०) १ संग्रह। २ गिरोह। झुंड। समुदाय।

समूहनं (न०) १ एकत्रीकरण। २ समूह। संग्रह।

समूहनी (स्त्री०) झाडू। बुहारी।

समूह्यः (पु०) यज्ञ का अग्नि विशेष।

समृद्ध (व० कृ०) १ फलता फूलता हुआ। भरा पूरा। २ प्रसन्न। सुखी। भाग्यवान। ३ धनी। सम्पत्तिशाली। ४ सफल।

समृद्धिः (स्त्री०) १ बढ़ती। उन्नति। २ धनदौलत का होना। धनी होने का भाव। ३ धन दौलत ४ विपुलता। बाहुल्य।

समेत (व० कृ०) १ जमा हुआ। एकत्रित। २ मिला हुआ। ३ पास आया हुआ। ४ सहित। अन्वित ५ सम्पन्न। युक्त। ६ संघर्षित। टकराया हुआ। ७ कौल करार किये हुए।

संपत्तिः
सम्पत्तिः } (स्त्री०) १ धन की वृद्धि। धन दौलत। २ सफलता। कामयाबी। ३ पूर्णता। सम्पन्नता। ४ बाहुल्य। विपुलता।

संपद्
सम्पद् } (स्त्री०) १ धन दौलत। २ समृद्धि। ३ सौभाग्य। ४ सफलता। ५ पूर्णता। उत्कृष्टता। ६ धन का भाण्डार। ७ लाभ। फ़ायदा। आशीर्वाद। ८ सजावट। ९ ठीक ढङ्ग या क़ायदा। १० मोती का हार।—वरः, (पु०) राजा।

संपन्न
सम्पन्न } (व० कृ०) १ समृद्धवान। भरा पूरा। २ भाग्यवान। सुखी। ३ पूर्ण किया हुआ। सम्पन्न किया हुआ। ४ पूर्ण। निष्णात। ५ पूरा बढ़ा हुआ। पका हुआ। ६ पाया हुआ। प्राप्त। ७ सही। ठीक। ८ सम्पन्न। युक्त। सहित। ९ हुआ।

संपन्नं
सम्पन्नम् } (न०) १ धन दौलत। २ रुचिकर खाद्य सुखाद्य पदार्थ।

संपन्नः
सम्पन्नः } (पु०) शिव।

संपरायः
सम्परायः } (पु०) १ लड़ाई। मुठभेड। २ संकट। आपत्ति। ३ भावी दशा। ४ पुत्र।

संपरायकं
सम्परायकं
सम्परायिकं
सम्परायिकं } (न०) मुठभेड। लड़ाई। संग्राम। जंग।

संपर्कः
सम्पर्कः } (पु०) १ संमिश्रित पदार्थ। २ संयोग। स्पर्श। लगाव। ३ समाज। सभा। ४ मैथुन। सम्भोग।

संपा
सम्पा } (स्त्री०) विद्युत्। बिजली।

संपाक
सम्पाक } (वि०) १ अच्छी बहस करने वाला। २ चालाक। चतुर। ३ कामुक। लंपट। ४ छोटा। थोड़ा।

संपाकः
सम्पाकः } (पु०) १ पका हुआ पदार्थ। पकावट। २ एक वृक्ष विशेष।

संपाटः
सम्पाटः } (पु०) १ परस्पर छेदन। अन्योन्यछिन्नता २ तकुआ।

संपातः
सम्पातः } (पु०) १ सहपतन। सहमत्य। २ एक साथ मिलन। ३ मुठभेड। संघर्ष। ४ पतन। उतार। ५ नीचे आगमन। ६ तीर का प्रक्षेप। ७ गमन। चलन। ८ स्थानान्तर करण। हटाना ९ पक्षियों का उड़ान विशेष। १० नैवेद्य का उच्छिष्ट।

संपातिः
सम्पातिः } (पु०) गृद्ध जटायु का बड़ा भाई।

संपादः
सम्पादः } (पु०) १ पूर्णता। २ उपलब्धि। प्राप्ति।

संपादनं
सम्पादनं } (न०) पूरा करना। २ प्राप्ति। उपलब्धि। हासिल करना। ३ सफा करना। तैयार करना।

संपिंडित, सम्पिण्डित (व० कृ०) १ पिंड बनाया हुआ। २ सङ्कुचित। सिकुड़ा हुआ।

संपीडनं (न०), सम्पीडनं (न०) १ निचोड़ना। दबाना। २ प्रेषण। ३ दण्ड। सज़ा। ४ घँघोलना।

संपीडः, सम्पीडः (पु०) १ निचोड़ना। २ पीड़ा।

संप्रीतिः, सम्प्रीतिः (स्त्री०) साथ साथ पीना।

संपुटः, सम्पुटः (पु०) १ गह्वर। गुहा। गर्त। २ डिबिया। ३ कुरवक का फूल।

संपुटकः (पु०), सम्पुटकः (पु०), संपुटिका (स्त्री०), सम्पुटिका (स्त्री०) रत्नपेटी। गहना रखने का डिब्बा।

संपूर्ण, सम्पूर्ण (वि०) १ परिपूर्ण। भरा हुआ। २ तमाम। सब। समूचा।

सम्पूर्ण, सम्पूर्णम् (न०) १ आकाश। २ पदार्थ विशेष।

संपृक्त, सम्पृक्त (व० कृ०) १ मिश्रित। २ सम्बन्धयुक्त। ३ छूने वाला।

संप्रक्षालन, सम्प्रक्षालनम् (न०) १ जल द्वारा भली भाँति पेट की शुद्धि। २ स्थान। ३ जल का बहाव।

सम्प्रणेतृ, सम्प्रणेतृ (पु०) शासक। न्यायाधीश। जज।

सम्प्रति, सम्प्रति (अव्यया०) अभी। हाल में। इस समय।

संप्रतिपत्तिः, सम्प्रतिपत्तिः (स्त्री०) १ समीप आगमन। आगमन। २ विद्यमानता। मौजूदगी। ३ प्राप्ति। उपलब्धि। ४ इक़रारनामा। ५ स्वीकृति। इकरार। ६ (आईन में) विशेष प्रकार का उत्तर। ७ आक्रमण। चढ़ाई। ८ घटना। ९ सहयोग। १० क्रम।

संप्रतिरोधक, सम्प्रतिरोधकः (पु०) १ पूर्णरीत्या रोक या बाधा। २ जेल या बन्दीगृह।

संप्रतीत, सम्प्रतीत (व० कृ०) १ लौटाया हुआ। २ भली भाँति विश्वास कराया हुआ। ३ सिद्ध किया हुआ। स्थापित किया हुआ। ४ प्रसिद्ध। ५ माननीय।

संप्रतीतिः, सम्प्रतीतिः (स्त्री०) १ भली प्रकार प्रतीति या विश्वास। २ ख्याति। कीर्ति।

संप्रत्ययः, सम्प्रत्ययः (पु०) १ दृढ विश्वास। २ इकरार। कौल करार।

संप्रतीक्षा, सम्प्रतीक्षा (स्त्री०) आशा। उम्मेद।

सम्प्रदानं, सम्प्रदानं (न०) १ भली प्रकार दे डालना या सौंप देना अर्थात् दी हुई वस्तु में देने वाले का कुछ भी स्वत्व न रखना। २ विवाह। ३ कारक विशेष।

संप्रदानीयं, संप्रदानीयं (स्त्री०) भेंट। दान। पुरस्कार।

संप्रदायः, सम्प्रदायः (पु०) १ परम्परा। परम्परागत प्राप्त सिद्धान्त या विषय विशेष का सम्बन्ध में ज्ञान। धर्म सम्बन्धी समुदाय विशेष। ३ परंपरागत प्रचलित रीति रवाज़ या पद्धति।

संप्रधानं, सम्प्रधानं (न०) निश्चयकरण।

संप्रधारणं (न०), सम्प्रधारणं (न०), संप्रधारणा (स्त्री०), सम्प्रधारणा (स्त्री०) १ विचार। २ किसी वस्तु के औचित्य अनौचित्य के विषय में निश्चय करने की क्रिया।

संप्रपदः, सम्प्रपदः (पु०) भ्रमण।

संप्रभिन्न, सम्प्रभिन्न (व० कृ०) १ चिरा हुआ। फटा हुआ। २ मद में मत्त।

संप्रमोद, सम्प्रमोदः (पु०) अतिहर्ष।

संप्रमोषः, सम्प्रमोषः (पु०) हानि। नाश। विनाश।

संप्रयाणं, सम्प्रयाणं (न०) प्रस्थान। रवानगी।

संप्रयोगः, सम्प्रयोगः (पु०) १ संयोग। मेल। मिलाप। २ मिलाने वाली शृङ्खला। ३ सम्बन्ध। अधीनता। ४ पारस्परिक सम्बन्ध। ५ क्रमबद्ध संख्या या सिलसिला। ६ स्त्रीमैथुन। ७ संलग्नता। ८ इन्द्रजाल। जादू।

संप्रयोगिन्, सम्प्रयोगिन् (वि०) संयोग। मिलन। (पु०) १ मिलाने वाला। जोड़ने वाला। २

ऐन्द्रजालिक। मदारी। ३ लंपट पुरुष। ४ मैथुन कराने वाला लौंडा।

संप्रवृष्टं } सम्प्रवृष्टं } (न०) अच्छी वर्षा।

संप्रश्नः } सम्प्रश्नः } (पु०) १ भली भाँति या शिष्टतापूर्ण अनुसन्धान। २ अनुसन्धान।

संप्रसादः } सम्प्रसादः } (पु०) १ सन्तोषण। समाराधन। प्रसादन। २ अनुग्रह। कृपा। ३ मन का धैर्य। सुस्थिरता। ४ विश्वास। भरोसा। ५ जीव। आत्मा।

संप्रसारणं } सम्प्रसारणं } (न०) क्रमशः य्, व्, र् और ल् का इ, उ, ऋ और लृ में परिवर्तन।—

'इग्यणः सम्प्रसारणम्'

संप्रहारः } सम्प्रहारः } (पु०) १ पारस्परिक ताड़न। २ युद्ध। मुठभेड़।

संप्राप्तिः } सम्प्राप्तिः } (स्त्री०) प्राप्ति। उपलब्धि।

संप्रीतिः } सम्प्रीतिः } (स्त्री०) १ लगाव। स्नेह। २ मैत्री। ३ हर्ष। प्रसन्नता।

संप्रेक्षणं } सम्प्रेक्षणं } (न०) १ देखना। अवलोकन। चितवन। २ अनुसन्धान। विचार।

संप्रैषः } सम्प्रैषः } (पु०) १ भेजना। विदा कर देना। २ आदेश। आज्ञा। निर्देश।

संप्रोक्षणं } सम्प्रोक्षणं } (न०) मार्जन। प्रोक्षण। जल को मंत्र पढ़ कर छिड़कना।

संप्लवः } सम्प्लवः } (पु०) १ जल में डूबना या जल की बाढ़ में जलमग्न होना। २ लहर। तरंग। ३ जल की बाढ़। ४ बरबादी। ५ विपर्यास।

संफालः } सम्फाल } (पु०) मेढ़ा। मेष।

संफेटः } सम्फेटः } (पु०) दो क्रुद्ध जनों की लड़ाई।

संब् } सम्ब् } (धा० प०) [सम्बति] जाना। [उ०— सम्बयति, सम्बयते] जमा करना। एकत्र करना।

संबं } सम्बम् } (न०) किसी खेत की दुबारा जुताई।

संबद्ध } सम्बद्ध } (व० कृ०) १ बंधा हुआ। २ अटका हुआ। ३ सम्बन्ध युक्त। ४ युक्त। अन्वित।

संबंध } सम्बन्धः } (पु०) १ संयोग। मेल। संगति। २ रिश्ता। रिश्तेदारी। ३ कारक विशेष। ४ वैवाहिक सम्बन्ध। ६ औचित्य। उपयुक्तता। ७ समृद्धि। साफल्य।

संबंधक } सम्बन्धक } (वि०) १ सम्बन्ध करने वाला। २ योग्य। उपयुक्त।

संबंधकः } सम्बन्धकः } (पु०) १ मित्र। दोस्त। २ विवाह से या जन्म से सम्बन्धी या नातेदार। ३ एक प्रकार की सन्धि।

संबंधिन् } सम्बन्धिन् } (वि०) १ सम्बन्ध युक्त। २ जुड़ा हुआ। २ सद्गुणों वाला। वैवाहिक नातेदार। ४ नतैत। नातेदार।

संबरं } सम्बरं } (न०) १ रोक। निग्रह। २ जल।—अरिः, —रिपुः, (पु०) कामदेव।

संबरः } सम्बरः } (पु०) १ बाँध। पुल। २ मृग विशेष। ३ एक दैत्य का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मारा था। ४ एक पर्वत का नाम।

संबलं (न०) } सम्बलं (न०) } संबलः (पु०) } सम्बलः (पु०) } पाथेय। पेंडा। रास्ते के लिये भोजन। (न०) जल। पानी।

संबाध } सम्बाध } (वि०) १ भीड़ भाड़ से बंद। अवरुद्ध। २ सङ्कीर्ण।

संबाधः } सम्बाधः } (पु०) १ आपस की रगड़। ठेलंठेला। २ रुकावट। कठिनाई। जोखों। अड़चन। ३ नरक का मार्ग। ४ भय। डर। खौफ। ५ योनि भग।

संबुद्धि } सम्बुद्धिः } (स्त्री०) १ पूर्ण ज्ञान या प्रतीति। २ पूर्ण विवेक। ३ सम्बोधन। ४ सम्बोधन कारक।

संबोध } सम्बोधः } (पु०) १ ठीक कर बतलाना। शिक्षण। सूचन। २ सत्य या पूर्ण प्रतीति। ३ निक्षेप। प्रक्षेप। ४ हानि। नाश।

संबोधनं } सम्बोधनं } (न०) १ व्याख्या। २ सम्बोधन। ३ आठवीं विभक्ति। सम्बोधनकारक।

संभक्तिः } सम्भक्तिः } (स्त्री०) १ हिस्सा लगाना। २ बाँटना।

संभग्न } सम्भग्न } (व० कृ०) तितर बितर। भङ्ग किया हुआ।

संभग्नः } (पु०) शिव जी की उपाधि ।
सम्भग्न }

संभली } (स्त्री०) कुटनी । दूती ।
सम्भली }

संभवः } (पु०) १ उत्पत्ति । पैदायश । निकाप । सम्भव } २ उत्पन्न करने की क्रिया । कारण । हेतु । ३ समिश्रण । मेल । मिलावट । ४ सम्भावना । ५ सङ्गति । सुसङ्गति । ७ उपयुक्तता ८ अनुसारता । ६ धारणा शक्ति । १० प्रमाण विशेष । ११ परिचय । १२ बरबादी । हानि । नाश ।

संभारः } (पु०) १ संयोग । २ आवश्यकताएं । ३ सम्भारः } उपादान । उपकरण । ४ समूह । ढेर । राशि । ५ भरापन । पूर्णता । ६ धन दौलत । सम्पत्ति । ७ परवरिश । पोषण ।

संभावन (न०) }
सम्भावन (न०) }
संभावना (स्त्री०) }
सम्भावना (स्त्री०) } १ विचार । मनन । २ कल्पना । ३ खयाल । विचार । ४सम्मान । प्रतिष्ठा । ५ मुमकिन । ६ उपयुक्तता । ७ योग्यता । ८ सन्देह । ६ प्रेम । स्नेह । १४ प्रसिद्धि ।

संभावित } (व० कृ०) १ विचारा हुआ । कल्पना सम्भावित } किया हुआ । २ सम्मानित । ३ उपयुक्त । योग्य । ४ सम्भव ।

संभाषः } (पु०) बातचीत ।
सम्भाषः }

संभाषा } (स्त्री०) १ वार्तालाप । सम्भाषण । २ सम्भाषा } बधाई । ३ आईन विरुद्ध सम्बन्ध । ऐसा सम्बन्ध जो जुर्म समझा जाय । ४ इकरारनामा । कौलकरार । ५ पहरेदार का सङ्केत शब्द या वाक्य ।

संभूतिः } (स्त्री०) १ उत्पत्ति । पैदायश । २ सम्भूतिः } मिलावट । मेल । ३ उपयुक्तता । योग्यता । ४ ताकत ।

संभृत } (व० कृ०) १ एकत्र किया हुआ । जमा सम्भृत } किया हुआ । २ तैयार किया हुआ । लैस किया हुआ । ३ सुसम्पन्न । ४ धरा हुआ । जमा कराया हुआ । ५ पूर्ण । पूरा । समूचा । ६ प्राप्त । पाया हुआ । ७ ढोया हुआ । ले जाया हुआ । ८ पालन पोषण किया हुआ । ६ उत्पन्न किया हुआ ।

संभृतिः } (स्त्री०) १ संग्रह । २ उपस्कर । सामग्री । सम्भृतिः } ३ पूर्णता ४ परवरिश । पालन पोषण ।

संभेदः } (पु०) १ तोड़ना । चीरना । २ मेल । सम्भेदः } मिलावट । संयोग । ३ (नज़र का) मिलना । ४ (नदियों का) संगम ।

संभोगः } (पु०) १ अच्छी क्रीड़ा । २ उपभोग । सम्भोगः } ३ मैथुन । ४वह लौंडा जो मैथुन करवावे । ५ शृङ्गाररस का एक प्रकारान्तर ।

संभ्रमः } (पु०) १ घूमना । चक्कर खाना । २ हड़सम्भ्रमः } बड़ी । जल्दबाज़ी । ३ गड़बड़ी । गोलमाल । ४ भय । डर । ५ ग़लती । भूल । अज्ञानता । ६ उत्साह । ७ मान । सम्मान ।

संभ्रांत } (व० कृ०) १ घूमा हुआ । २ घबड़ाया सम्भ्रान्त } हुआ । परेशान ।

संमत } (व० कृ०) १ राज़ी । रज़ामन्द । २ प्यारा । सम्मत } प्रेमपात्र । ३ सदृश । समान । ४ सोचा हुआ । विचारा हुआ । ५ अत्यन्त सम्मानित ।

संमतं } (न०) इक़रार नामा । कौलकरार ।
सम्मतं }

संमतिः } (स्त्री०) १ इकरार । कौलकरार । २ सम्मतिः } स्वीकृति । रज़ामंदी । ३ अभिलाष । इच्छा । ४ आत्मज्ञान । ५ मान । प्रतिष्ठा । ६ प्यारा । स्नेह ।

संमदः } (पु०) बड़ी प्रसन्नता । आह्लाद । हर्ष ।
सम्मदः }

संमर्दः } (पु०) १ रगड़ । संघर्ष । २ भीड़भाड़ । सम्मर्दः } ३ कुचलना । पैरों से रूँधना । ४ युद्ध । समर । लड़ाई ।

संमादः } (पु०) नशा । मद ।
सम्मादः }

संमानं } (न०) १ माप । तुलना ।
सम्मानं }

संमानः } (पु०) मान । प्रतिष्ठा ।
सम्मानः }

संमार्जकः } (पु०) मेहतर । भंगी । झाड़ने सम्मार्जकः } वाला ।

संमार्जनं } (न०) झाड़ना । बुहारना । सफाई ।
सम्मार्जनं }

संमार्जनी } (स्त्री०) झाड़ू ।
सम्मार्जनी }

संमित / सम्मित (व० कृ०) १ नापा हुआ। २ समान माप का। समान। बराबर।

समिश्र / सम्मिश्र / संमिश्रित / सम्मिश्रित (वि०) मिला जुला।

संमिश्लः / सम्मिश्लः (पु०) इन्द्र।

संमीलनं / सम्मीलनं (न०) (फूल का) मुंदना। ढकना। लपिटना।

संमुख / सम्मुख / संमुखीन / सम्मुखीन (वि०) [स्त्री०—सम्मुखा, सम्मुखी] १ सामने का। आमने सामने। २ मिलने वाला।

संमुखिन् / सम्मुखिन् (पु०) शीशा। दर्पण। आईना।

संमूर्छनं / सम्मूर्छनं (न०) १ बेहोशी। मूर्छा। २ जमावट। गाढ़ा होना। ३ वृद्धि। ४ ऊंचान। ऊँचाई। ५ सर्वव्याप्ति।

संमृष्ट / सम्मृष्ट (व०कृ०) १ अच्छी तरह फाड़ा बटोरा हुआ। २ अच्छी तरह छाना हुआ।

संमेलनं / सम्मेलनं (न०) १ मेल। मिलावट। ऐक्य। २ संमिश्रण। ३ एकत्र होना। जमा होना।

संमोहः / सम्मोहः (पु०) १ घबड़ाहट। परेशानी। २ बेहोशी। मूर्छा। ३ मूर्खता। अज्ञानता। ४ मोहन। वशीकरण।

संमोहनं / सम्मोहनं (न०) वशीकरण। मोहने की क्रिया।

संमोहनः / सम्मोहनः (पु०) कामदेव के पांच शरों में से एक।

सम्यच् / सम्यंच् / सम्यञ्च् (वि०) [स्त्री०—समीची] १ सहगमन। २ ठीक। उपयुक्त। उचित। वाजवी। ३ सही। शुद्ध। ४ अनुकूल। आनन्दप्रद। ५ एकसा। ६ तमाम। सब। समस्त।

सम्यक् (अव्यया०) १ साथ। सहित। २ ठीक ठीक। ३ सही सही। शुद्धता से। ४ प्रतिष्ठापूर्वक। ५ सम्पूर्ण रीत्या। ६ स्पष्टतया।

सम्राज् (पु०) सम्राट्। महाराज। शाहंशाह। राजाधिराज [वह राजाधिराज कहलाता है जिसने राजसूययज्ञ किया हो]

सय् (धा० आ०) [सयते] जाना। हिलना। डोलना।

सयूथ्यः (पु०) किसी गिरोह या जाति का।

सयोनि (वि०) एक ही गर्भ का।

सयोनिः (पु०) १ सहोदर भाई। २ सरोता। सुपाड़ी काटने का औज़ार विशेष। ३ इन्द्र।

सर (वि०) १ गमनशील। गतिशील। २ दस्त लाने वाला। पैगाम लाने वाला।

सरं (न०) १ जल। २ सरोवर। झील। जलकुण्ड।

सरः (पु०) १ गमन। गति। २ तीर। ३ मलाई। दही का थक्का। ४ निमक। लवण। ५ लड़ी। हार। ६ जलप्रपात।

सरकं (न०) / **सरकः** (पु०) १ वह सड़क जिसका सिलसिला बराबर चला जाय। २ शराब। मदिरा। ३ पानपात्र। शराब पीने का पात्र। ४ शराब का वितरण। (न०) १ गमन। २ जल-कुण्ड। झील। ३ स्वर्ग।

सरघा (स्त्री०) भौंरा। मधुमक्षिका।

सरंगः / सरङ्गः (पु०) १ चौपाया। २ पक्षी।

सरजस् [स्त्री०—सरजसा] / **सरजस्का** [स्त्री०—सरजस्की] (वि०) रजस्वला स्त्री।

सरड् (पु०) १ पवन। वायु। २ बादल। ३ छिपकली। ४ मधुमक्षिका।

सरटिः (पु०) १ पवन। २ छपकली। घिसतुइया। ३ बादल।

सरडुः (पु०) गिरगट। छपकली।

सरण (वि०) गमनशील। गतिशील। बहनेवाला।

सरणं (न०) १ आगे गमन करना। बहाव। २ लोहे की जंग।

सरणिः / सरणी (स्त्री०) १ मार्ग। रास्ता। सड़क। २ ढग। तौर तरीका। ३ सरल या सीधी रेखा। ४ गले का रोग विशेष।

सरंडः / सरण्डः (पु०) १ पक्षी। २ लंपट जन। ३ छपकली। ४ बदमाश। धूर्त। ५ आभूषण विशेष।

सरण्युः (पु०) १ पवन । हवा । २ बादल । मेघ । ३ जल । पानी । ४ वसन्त ऋतु । ५ अग्नि । आग । ६ यमराज । धर्मराज ।

सरलिः (पु० स्त्री०) नाप विशेष ।

सरथ (वि०) एक ही रथ पर सवार ।

सरथः (पु०) रथ पर सवार योद्धा ।

सरभस (वि०) १ तेज़ । फुर्तीला । २ प्रचण्ड । उग्र । ३ क्रोधी । ४ हर्षित ।

सरभसं (अव्यया०) प्रचण्डवेग से · हड़बड़ी से ।

सरमा (स्त्री०) १ देवताओं की कुतिया । २ दक्ष की एक कन्या का नाम । ३ विभीषण की पत्नी का नाम ।

सरयुः (पु०) पवन । हवा । वायु ।

सरयुः } (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तट
सरयूः } पर अयोध्या बसी हुई है ।

सरल (वि०) १ सीधा । टेढा नहीं । २ ईमानदार । सच्चा । स्पष्टवक्ता । ३ सीधासाधा ।

सरलः (पु०) १ पीतदारु वृक्ष । २ अग्नि । आग ।

सरस् (न०) सरोवर । झील । जलकुण्ड ।—जं, —जन्मन् —रुहं, (न०) कमल ।—जिनी, —रुहिणी, (स्त्री०) १ कमल का पौधा । २ वह सरोवर जिसमें कमलों की बहुतायत हो ।—रुह, (न०) कमल ।—वरः, (सरोवरः) (पु०) झील ।

सरस (वि०) १ रसदार । रसीला । २ स्वादिष्ट । ३ पसीने से तराबोर । ४ तर । भींगा हुआ । ५ रसिक । ६ मनोहर । मनोमुग्धकारी । सुन्दर । ७ ताज़ा । टटका । नया ।

सरसं (न०) १ झील । जल का तालाब । २ कीमियागरी । रसायन विद्या ।

सरसी (स्त्री०) झील । जल का कुंड ।—रुहं, (न०) कमल

सरस्वत् (वि०) १ पनीला । २ रसादार । रसदार । ३ सुन्दर । ४ रसात्मक । भावपूर्ण । (पु०) १ समुद्र । २ झील । ३ नद । ४ भैंसा । ५ वायु विशेष ।

सरस्वती (स्त्री०) १ विद्या की अधिष्ठात्री देवी । २ वाणी । गिरा । ३ एक नदी का नाम । ४ नदी । ५ गौ । गाय । ६ उत्तमा स्त्री । ७ दुर्गा देवी का नाम । ८ बौद्धों की एक देवी का नाम । ९ सोमलता । १० ज्योतिष्मती रूखरी ।

सराग (वि०) १ रंगीन । २ लाखी । लाल रंग से रंगा हुआ । ३ रसिक । आसक्त । आशिक ।

सराव (वि०) रव करने वाला । शब्द करने वाला ।

सरावः (पु०) १ सकोरा । परई । २ ढक्कन ।

सरिः (स्त्री०) सोता । श्रोत । फव्वारा ।

सरित् (स्त्री०) १ नदी । २ डोरी । डोरा ।—नाथः, पतिः, —भर्तृ, (पु०) समुद्र । सागर ।—वरा, [सरितांवरा भी] गंगा ।—सुतः, (पु०) भीष्मपितामह ।

सरिमन् } (पु०) १ गति । चाल । रेंगन । २
सरीमन् } पवन । वायु ।

सरिलं (न०) जल । पानी ।

सरीसृपः (पु०) सर्प या वे जानवर जो रेंग कर चले ।

सरुः (पु०) तलवार की मूंठ ।

सरूप (वि०) १ एक ही शक्ल का । एक ही रूप रंग का । २ समान । मिलता जुलता ।

सरूपता (स्त्री०) } १ समानता । सादृश्य । एक
सरूपत्वं (न०) } रूपता । २ चार प्रकार की मुक्तियों में से एक ।

सरोष (वि०) १ क्रोधी । क्रोध में भरा । २ गुस्सैल ।

सर्कः (पु०) १ पवन । हवा । २ मन ।

सर्गः (पु०) १ त्याग । विराग । २ सृष्टि । ३ संसार की सृष्टि । ४ प्रकृति । स्वभाव । ५ जड़ जगत । ६ सङ्कल्प । विचार । क़स्द । ७ स्वीकृति । रज़ामंदी । ८ परिच्छेद । बाब । अध्याय । ९ हमला । आक्रमण । १० मलत्याग । ११ शिवजी का नामान्तर ।—क्रमः, (पु०) सृष्टिक्रम ।—बन्धः, (पु०) महाकाव्य ।

"सर्गबन्धो महाकाव्यम् ।"

सर्ज् (धा० प०) [सर्जति] १ प्राप्त करना । हासिल करना । २ परिश्रम से प्राप्त करना ।

सर्जः (पु०) १ साल का पेड़। २ राल।—निर्यासकः, —मणिः, —रसः, (पु०) राल।

सर्जकः (पु०) साल वृक्ष।

सर्जनं (न०) १ त्याग। विराग। २ छुटकारा। मुक्ति। ३ सिरजन। ४ निकालना। ५ सेना का पिछला भाग।

सर्जिः, सर्जिका, सर्जी (स्त्री०) सज्जी। खार या क्षार विशेष।

सर्जूः (पु०) १ व्यापारी। (स्त्री०) बिजली। विद्युत्। २ गले की सकरी। ३ गमन। अनुवर्तन।

सर्पः (स्त्री०) १ घूम घुमाव की चाल। २ बहाव। ३ साँप।—अरातिः,—अरिः, (पु०) १ न्योला। नकुल। २ मयूर। मोर। ३ गरुड।—अशनः, (पु०) मयूर। मोर।—आवासं,—इष्टं, (न०) चन्दन का पेड़।—छत्रं, (न०) कुकुरमुत्ता। कटफूल।—तृणः, (पु०) न्योला। नकुल।—दंष्ट्रः, (पु०) साँप का विषदन्त।—धारकः, (पु०) कालबेलिया। सर्प पकड़ने वाला।—भुज्, (पु०) १ मयूर। २ सारस। ३ बड़ा साँप।—मणिः, (पु०) सर्प के फन का रत्न।—राजः, (पु०) वासुकी का नामान्तर।

सर्पणं (न०) १ रेंगन। फिसलन। २ वक्रगति। ३ बाण का ऐसा प्रक्षेप जो ज़मीन से मिलता जुलता जाकर अपने निशाने पर लगे।

सर्पिणी (स्त्री०) १ साँपिन। २ रूखरी विशेष।

सर्पिन् (वि०) रेंगनेवाला। सरकने वाला। वक्रगति से चलने वाला।

सर्पिस् (न०) घी। घृत।—समुद्रः, (पु०) सप्त समुद्रों में से एक। घी का समुद्र।

सर्पिष्मत् (वि०) घी मले हुए।

सर्व् (धा० प०) [सर्वति] जाना।

सर्मः (पु०) १ गमन। गति। २ आकाश।

सर्व् (धा० प०) [सर्वति] वध करना। अनिष्ट करना। घायल करना।

सर्व (सर्वनाम वि०) [कर्त्ता बहुवचन सर्वे पु०] १ सब। हरेक। २ समूचा। नितान्त। सम्पूर्ण।—अंगं, (न०) समस्त शरीर।—अंगीण, (वि०) सर्व शरीरगत। समस्त शरीर में व्याप्त।—अधिकारिन्,—अध्यक्षः, (पु०) जनरल सुपरिंटेंडेंट। व्यवस्थापक।—अन्नीन, (वि०) हर प्रकार का अनाज खाने वाला। सर्वान्नभोजी।—आकारं, (न०) समूचेपन से। बिल्कुल। सम्पूर्णतः।—आत्मन्, (पु०) समूचा जीव या रूह। सर्वात्मना।—ईश्वरः, (पु०) सर्वेश्वर। सब का मालिक।—ग,—गामिन्, (वि०) सर्वगत। सर्वव्यापी।—जित् (वि०) अजेय। सर्वजयी।—ज्ञ,—विद्, (वि०) सर्वज्ञ। सब जानने वाला। (पु०) १ शिव। २ बुद्धदेव।—दमन, (वि०) सब को दमन करनेवाला।—नामन्, (न०) सर्वनाम।—मङ्गला, (स्त्री०) पार्वती का नाम।—रसः, (पु०) राल।—लिंगिन्, (पु०) नास्तिक। पापण्डी।—व्यापिन्, (वि०) सर्वव्यापी।—वेदस्, (पु०) यज्ञ में सर्वस्व दक्षिणा देने वाला यज्ञकर्त्ता।—सहा, (सर्वंसहा भी) (स्त्री०) पृथिवी।—स्वं, (न०) १ सकल धन। सारा धन। २ किसी वस्तु का सार।

सर्वः (पु०) १ विष्णु। २ शिव।

सर्वकष (वि०) सर्वनाशक। सर्वशक्तिमान।

सर्वकषः (पु०) धूर्त्त। बदमाश।

सर्वतस् (अव्यया०) १ सब ओर से। सब तरह से। २ सर्वत्र। चारों ओर। ३ सम्पूर्णतः।—गामिन्, (वि०) सर्वत्र जा सकने वाला।—भद्रः, (पु०) १ विष्णु का रथ। २ बाँस। ३ छन्द विशेष। ४ भवन या देवालय जिसमें चारों ओर चार द्वार हों।—भद्रा, (स्त्री०) नृत्यकी। नाटक की पात्री। नटी।—मुख, (वि०) पूर्ण। हर प्रकार का। असीम।—मुखः, (पु०) १ शिव जी। २ ब्रह्मा जी। ३ परब्रह्म। जीवात्मा। ५ ब्राह्मण। ६ अग्नि। ७ स्वर्ग।

सर्वत्र (अव्यया०) १ सब जगह। सब जगहों पर। २ सब समय। सब समयों में।

सर्वथा (अव्यया०) १ हर प्रकार से। सब तरह से।

२ बिल्कुल । ३ सम्पूर्णतः । नितान्त । ४ सर्वत्र ।

सर्वदा (अव्यया०) सदैव । हमेशा ।

सर्वशस् (अव्यया०) १ पूर्ण रूप से । समूचेपन से । २ सर्वत्र । ३ सब ओर ।

सर्वाणी देखो शर्वाणी ।

सर्षपः (पु०) १ राई । सरसों । २ तोल विशेष । ३ विष विशेष ।

सल् (धा० प०) [सलति] जाना । हिलना । डोलना ।

सलं (न०) पानी । जल ।

सलिल (न०) पानी ।—अर्थिन्, (वि०) प्यासा ।—आशयः, (पु०) तालाव । जलाशय ।—इन्धनः, (पु०) वड़वानल ।—उपप्लवः, (पु०) जल का बूड़ा । जलप्रलय ।—क्रिया, (स्त्री०) १ मुर्दा को जल से स्नान कराने की क्रिया । २ उदकक्रिया ।—जं, (न०) कमल । निधिः, (पु०) समुद्र ।

सलज्ज (वि०) लज्जालु । लजीला । हयादार ।

सलील (वि०) १ खिलाड़ी । रसिक । लंपट ।

सलोकता (स्त्री०) चार प्रकार की मोक्षों में से एक । अपने आराध्य देव के लोक में वास ।

सल्लकी (स्त्री०) वृक्ष विशेष ।

सवं (न०) १ जल । फूल का शहद ।

सवः (पु०) १ सोमरस निकालने की क्रिया । २ भेंट । नैवेद्य । ३ यज्ञ । ४ सूर्य । ५ चन्द्रमा । ६ सन्तति । औलाद ।

सवनं (न०) १ सोमरस का निकालना या पीना । २ यज्ञ । ३ स्नान । प्रक्षालन । ४ उत्पत्ति । लड़के उत्पन्न करना ।

सवयस (वि०) १ एक उम्र का । हमउम्र । २ समवयस्क । साथी । ३ सहयोगी । (स्त्री०) सहेली । सखी ।

सवर (पु०) १ शिव जी । २ पानी । जल ।

सवर्ण (वि०) १ समान रंग का । २ समान रूप रंग का । ३ एक ही जाति का । ४ एक ही प्रकार का । ५ एक ही उच्चारण-स्थान से उच्चारण किये जाने वाले वर्ण ।

सविकल्प } सविकल्पक } (वि०) १ ऐच्छिक । पसंद का । २ सन्दिग्ध । ३ निर्विकल्पक का उलटा ।

सविग्रह (वि०) १ शरीरधारी । २ अर्थवाला । जिसका कुछ अर्थ या मानी हो । ३ झगडालू । झगड़ने वाला ।

सवितर्क } सविमर्श } (वि०) विचारवान । विवेकी ।

सवितर्कं } सविमर्शं } (अव्यया०) विचार पूर्वक । समझदारी से ।

सवितृ (वि०) [स्त्री०—सवित्री] उत्पादक । पैदा करने वाला । देने वाला । (पु०) १ सूर्य । २ शिवजी । ३ इन्द्रदेव । ४ अर्क वृक्ष । मदार का पौधा ।

सवित्री (स्त्री०) १ माता । २ गौ ।

सविध (वि०) १ एक ही तरह का या प्रकार का । २ समीप । निकट ।

सविधं (न०) पड़ोस । नैकट्य । सामीप्य ।

सविनय (वि०) लज्जालु । हयादार । विनम्र ।

सविनयं (अव्यया०) हयादारी से ।

सविभ्रम (वि०) क्रीडासक्त । रंगीला । रसिक ।

सविशेष (वि०) १ विशिष्ट गुणों वाला । विशेष लक्षणाक्रान्त । २ विलक्षण । विचित्र । असाधारण । ३ ख़ास । विशेष । ४ मुख्य । प्रधान । उत्कृष्ट । सर्वोत्तम । ५ प्रभेदात्मक । विभेदक ।

सविस्तर (वि०) ब्यौरे वार । विस्तार पूर्वक ।

सविस्मय (वि०) आश्चर्यचकित । विस्मित ।

सवृद्धिक (वि०) ब्याजू । ब्याज देने वाला ।

सवेश (वि०) १ सजा हुआ । भूषित । २ समीप । नज़दीक ।

सव्य (वि०) १ वायाँ । बायाँ हाथ । २ दक्षिणी । ३ उलटा । विपरीत । पिछाड़ी । ४ सीधा ।—इतर, (वि०) दहिना ।—साचिन्, (पु०) अर्जुन की उपाधि । कारण यह है :—

उभौ मे दक्षिणौ पाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे।
तेन देवमनुष्येषु सव्यसाचीति मां विदुः॥

सव्यं (अव्यया०) बायें कंधे पर रखा हुआ यज्ञोपवीत ।

सव्यपेक्ष (वि०) सम्बन्ध युक्त । अवलम्बित ।

सव्यभिचारः (पु०) न्यायदर्शन के पांच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक ।

सव्याज (वि०) १ चालाक । मुरफत्ती । धूर्त ।

सव्यापार (वि०) सलग्न । लगा हुआ ।

सव्रीड (वि०) १ लज्जालु । लजीला । २ लज्जित ।

सव्येष्ट } **सव्येष्ठः** } (वि०) सारथी । रथ हाँकने वाला ।

सशल्य (वि०) १ कटीला । २ बरछा या काँटों से विधा हुआ ।

सशस्य (वि०) अन्नोत्पादक ।

सशस्या (स्त्री०) सूरजमुखी का फूल विशेष ।

सश्मश्रु (वि०) डढियल । (स्त्री०) वह स्त्री जिसके डाढी हो ।

सश्रीक (वि०) १ समृद्धवान । भाग्यवान । २ सुन्दर । मनोहर ।

सस् (धा० प०) [सस्ति] सोना ।

ससत्त्व (वि०) १ शक्तिवान । विक्रमी । साहसी । २ फलदार । भरा हुआ ।

ससत्त्वा (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।

ससंदेह } **ससन्देह** } (वि०) संशयग्रस्त । सन्दिग्ध ।

ससंदेहः } **ससन्देहः** } (पु०) अलङ्कार विशेष । देखो सन्देह ।

ससनं (न०) बलिप्रदान । हनन ।

ससाध्वस (वि०) भयभीत । डरा हुआ ।

सस्यं (न०) १ अनाज । नाज । अन्न । २ किसी वृक्ष का फल या उसकी पैदावार । ३ शस्त्र । हथियार । ४ सद्गुण । खूबी ।—इष्टि:, (स्त्री०) नवान्नेष्टि । नये अन्न से यज्ञ करने की क्रिया ।—प्रद, (वि०) फलने वाला । उपजाऊ ।—मारिन्, (वि०) अनाज का नाश करने वाला । (पु०) चूहा । मूस ।—संवरः (पु०) साल वृक्ष ।

सस्यक (वि०) सद्गुण सम्पन्न । खूबियों वाला ।

सस्यकः (पु०) १ तलवार । खड्ग । २ हथियार । ३ रत्न विशेष ।

सस्वेद (वि०) पसीने से तर ।

सस्वेदा (स्त्री०) वह लडकी जिसका कौमार्य हाल ही में नष्ट किया गया हो ।

सह् (धा० प०) [सहति] १ सन्तुष्ट करना । २ प्रसन्न होना । ३ सहना । बरदाश्त करना ।

सह (वि०) १ सहिष्णु । सहनशील । बरदाश्त कर लेने वाला । २ मरीज़ । रोगी । ३ योग्य । क़ाबिल ।

सह (अव्यया०) १ साथ । सहित । २ एक ही समय में । एक साथ ।

सहं (न०) } **सहः** (पु०) } ताक़त । शक्ति ।

सहः (पु०) मार्गशीर्ष मास ।—अध्यायिन्, (पु०) सहपाठी ।—अर्थ, (वि०) समानार्थ वाची ।—उक्तिः, (स्त्री०) अलङ्कार विशेष । —उटजः, (पु०) पर्णकुटी ।—उदरः, (पु०) सगा भाई । सहोदर भाई ।—उपमा, (स्त्री०) उपमा विशेष ।—ऊढः,—ऊढजः, (पु०) विवाह के समय गर्भवती स्त्री का पुत्र ।—कारः, (पु०) १ सहयोग । २ आम का वृक्ष ।—भञ्जिका, (स्त्री०) एक प्रकार का खेल ।—कारिन्,—कृत, (वि०) सहयोगी । सहयोग देने वाला । (पु०) साथी । संगी । सखा ।—कृत, (वि०) सहायता दिया हुआ । —गमनं, (न०) १ साथ गमन । २ सती स्त्री जो अपने पति के साथ भस्म हो जाय ।—चर, (वि०) साथ रहने वाला ।—चरः, (पु०) १ साथी । मित्र । सहचरी । २ पति । ३ जामिन । जमानत करने वाला ।—चरी, (स्त्री०) १ सखी । सहेली । २ भार्या । पत्नी । —चार:, (पु०) १ साहचर्य । २ अनुकूलता । ऐकमत्य ।—ज, (वि०) १ स्वाभाविक । २

परपरागत। पुश्तैनी।—जः, (पु०) सहोदर भाई। सगा भाई।—जात, (वि०) स्वाभाविक। प्राकृतिक।—दार, (वि०) १ पत्नी सहित। २ विवाहित।—देवः, (पु०) पाँच पाण्डवों में सब से छोटे पाण्डव का नाम।—धर्मचारिन्, (पु०) पति।—धर्मचारिणी, (स्त्री०) १ पत्नी। जोरू। २ साथ काम करने वाली।—पांशुक्रीडिन्,—पाँशुकिल, (पु०) बचपन का दोस्त। लँगोटिया यार।—भाविन्, (पु०) मित्र। साझीदार। अनुयायी।—भू, (वि०) स्वाभाविक।—भोजनं, (न०) मित्रों के साथ भोजन करना।—मरणं, (न०) देखो सहगमन।—वसतिः,—वासः, (पु०) साथ साथ बसने वाला या रहने वाला।

सहता (स्त्री०) } एक होने का भाव। एकता। सहत्वं (न०) } मेल जोल।

सहनं (न०) १ सहने की क्रिया। बरदाश्त करना। २ सब्र।

सहस् (पु०) १ मार्गशीर्ष मास। २ जाड़े का मौसम। (न०) १ शक्ति। ताकत। २ प्रचण्डता। उग्रता। ३ विजय। जीत। ४ चमक। दीप्ति। आभा।

सहसा (अव्यया०) १ बरजोरी। ज़बरदस्ती। बलपूर्वक। २ अविचारता पूर्वक। ३ सहसा। एक बारगी।

सहसानः (पु०) १ मयूर। मोर। २ यज्ञ। नैवेद्य। भेंट।

सहस्यः (पु०) पूष मास।

सहस्रं (न०) एक हज़ार।—अंशु,—अर्चिस्,—कर,—किरण—दीधिति,—धामन्,—पाद,—मरीचि,—रश्मि, (पु०) सूर्य। दिवाकर। मार्त्तण्ड।—अक्ष, (वि०) हज़ार नेत्रों वाला।—अक्षः, (पु०) १ इन्द्र। २ पुरुष। ३ विष्णु।—काण्डा, (स्त्री०) सफेद दूर्वा घास।—कृत्वस्, (अव्यया०) हज़ार बार।—द, (वि०) उदार।—दः, (पु०) शिवजी।—दंष्ट्रः, (पु०) मत्स्य विशेष।—दृश्,—नयन,—नेत्र,—लोचन, (पु०) १ इन्द्र। २ विष्णु।—धारः, (पु०) विष्णु भगवान का चक्र।—पत्रं, (न०) कमल।—बाहुः, (पु०) कार्तवीर्य। २ बाणासुर। ३ शिव। ४ किसी किसी के मतानुसार विष्णु (भी)।—भुजः,—मूर्धन्—मौलिः (पु०) विष्णु।—रोमन्, (न०) कंबल।—वीर्या, (स्त्री०) हींग।—शिखरः, (पु०) विन्ध्याचल।

सहस्रधा (अव्यया०) सहस्र भागों में। सहस्र गुना।

सहस्रशस् (अव्यया०) हज़ारों से।

सहस्रिन् (वि०) १ हज़ारपती। २ हज़ार वाला। ३ हज़ार तक (जैसे अर्थ दण्ड) (पु०) हज़ार आदमियों की टोली। २ हज़ार सिपाहियों पर अफसर। हज़ारी।

सहस्वत् (वि०) मज़बूत। ताक़तवर।

सहा (स्त्री०) १ पृथिवी। धरा। धरिणी। २ घीकुआर। ग्वारपाठा। २ वनमूंग। ३ दण्डोत्पल। ४ सफेद कटसरैया। ५ ककरी या कंघी नाम का वृक्ष। ६ सर्पिणी। ७ रासना। ८ सत्यानाशी। ९ सेवती। १० मेंहदी। ११ मखवन। १२ अगहन मास। १३ हेमन्त ऋतु।

सहायः (पु०) १ मित्र। दोस्त। सखा। २ अनुयायी। चाकर। ३ सन्धि की शर्तों के अनुसार बनाया गया मित्र (राजा)। ४ सहकारी। संरक्षक। ५ चक्रवाक। चकई चकवा। ६ गन्ध पदार्थ विशेष। ७ शिवजी।

सहायता (स्त्री०) } १ कई एक साथी। २ मेल-सहायत्वं (न०) } मिलाप। मैत्री। ३ सहायता। मदद।

सहायवत् (वि०) १ वह जिसका मित्र हो। २ मित्र बनाया हुआ। सहायता दिया हुआ।

सहारः (पु०) १ आम का वृक्ष। २ प्रलय।

सहिन (वि०) साथ। समेत। संग। युक्त।

सहितं (अव्यया०) साथ में। साथ साथ।

सहितृ (वि०) धीरज। सब्र।

सहिष्णु (वि०) १ सह लेने वाला । बरदाश्त कर लेने वाला ।

सहिष्णुता (स्त्री०) } १ सहन करने की शक्ति । २
सहिष्णुत्वं (न०) } धैर्य । सब्र ।

सहुरि: (पु०) सूर्य । (स्त्री०) पृथिवी ।

सहृदय (वि०) १ अच्छे हृदय वाला । नेक तबियत का । कृपालु । दयालु । २ सच्चा ।

सहृदयः (पु०) १ विद्वज्जन । २ गुणग्राही । ३ रसिक । ४ सज्जन ।

सहल्लेख (वि०) सन्दिग्ध । सन्देहयुक्त ।

सहल्लेखं (न०) सन्दिग्ध भोज्य पदार्थ ।

सहेल (वि०) क्रीड़ासक्त । खिलाड़ी ।

सहोढः (पु०) वह चोर जो मय चोरी के माल के पकड़ा गया हो ।

सहोर (वि०) श्रेष्ठ । उत्तम ।

सहोर: (पु०) ऋषि । मुनि ।

सह्य (वि०) १ सहन करने योग्य । सहारने लायक । २ सह लेने योग्य । ३ मजबूत । ताकतवर ।

सह्यं (न०) १ तंदुरुस्ती । २ सहायता । ३ योग्यता । यथोचितता ।

सह्यः (पु०) सह्याद्रि नामक पर्वत जो पश्चिमी घाट का एक भाग है और जो समुद्रतट से कुछ हट कर है ।

सा (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ पार्वती ।

सांयात्रिकः (पु०) पोतवणिक । समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला व्यापारी ।

सांयुगीन (वि०) युद्धविद्या में निपुण ।

सांयुगीन: (पु०) एक बड़ा योद्धा । योद्धा जो युद्ध विद्या में निपुण हो ।

सांराविणं (न०) कोलाहल । शोरगुल ।

सांवत्सर (वि०) [स्त्री०—सांवत्सरी] }
सांवत्सरिक (वि०) [स्त्री०—सांवत्सरिकी] } सालाना । वार्षिक ।

सांवत्सरिक: (पु०) ज्योतिषी । गणितज्ञ । दैवज्ञ ।

सांवादिक (वि०) [स्त्री०—सांवादिकी] १ बोलचाल की । २ विवादात्मक ।

सांवादिक (पु०) विवादकारी ।

सांवृत्तिक (वि०) [स्त्री०—सांवृत्तिकी] अद्भुत । भ्रमात्मक । मायामय । मिथ्या ।

सांसिद्धिक (वि०) १ स्वाभाविक । प्रकृतिगत । २ स्वेच्छाप्रसूत । स्वतःप्रवृत्त । स्वयंसिद्ध । ३ अनियंत्रित । स्वतंत्र ।

सांस्थानिकः (पु०) स्वदेशवासी ।

सांस्राविणं (वि०) बहाव ।

सांहननिक (वि०) [स्त्री०—सांहननिकी] शारीरिक । देह सम्बन्धी ।

साकम् (अव्यया०) १ साथ । सहित । २ एक ही समय में ।

साकल्यं (न०) नितान्तता । समूचापन ।

साकूत (वि०) १ वह जिसका कुछ अर्थ हो । २ इरादतन । जानबूझ कर । ३ रसिक । लंपट ।

साकेतं (न०) अयोध्या का नामान्तर ।

साकेताः (पु०) अयोध्यावासी गण ।

साकेतकः (पु०) अयोध्यावासी ।

साक्तुकं (न०) सत्तू ।

साक्तुकः (पु०) जवा । जौ ।

साक्षात् (अव्यया०) खुलंखुल्ला । साफ साफ आँखों के सामने । प्रत्यक्षत ।—कारः, (पु०) प्रतीति । ज्ञान । पदार्थों का इन्द्रियों द्वारा होने वाला ज्ञान ।

साक्षिन् (वि०) [स्त्री०—साक्षिणी] देखने वाला । २ समर्थक । पुष्ट करने वाला (पु०) साक्षी । गवाह । साखी । चश्मदीद गवाह । ऐसा गवाह जिसने घटना अपनी आँखों से देखी हो ।

साक्ष्यं (न०) १ गवाही । साखी । २ समर्थन । पुष्टि ।

साक्षेप (वि०) आक्षेप युक्त । कुवाच्य युक्त ।

साखेय (वि०) [स्त्री०—साखेयी] १ मित्र सम्बन्धी । २ बन्धुता जनित । सद्भावात्मक ।

साख्यं (न०) मैत्री । दोस्ती ।

सागरः (पु०) १ समुद्र । सागर । २ चार की

संख्या। सात की संख्या। ३ मृग विशेष।—अनुकूल, (वि०) समुद्रतट पर बसा हुआ।—अन्त, (वि०) समुद्र से घिरा हुआ।—अंबरा,—नेमिः,—मेखला. (स्त्री०) धरती। पृथिवी।—आलयः, (पु०) वरुण।—उत्थं, (न०) समुद्री लवण।—गा, (स्त्री०) गंगा।—गामिनी, (स्त्री०) नदी।

साग्नि (वि०) १ अग्नि सहित। २ यज्ञ की आग को रखने वाला।

साग्निक (वि०) १ अग्निहोत्र के लिये अग्नि घर में जीवित रखने वाला। २ अग्नि सहित।

साग्निकः (पु०) गृहस्थ, जिसके पास यज्ञ या हवन की आग रहती हो। वह जो नियमित रूप से अग्निहोत्रादि करता हो।

साग्र (वि०) १ समूचा। २ समस्त। कुल। सब। ३ जिसके पास अधिक हो।

सांकर्यं } साङ्कर्यं } (न०) मिलावट। मिश्रण। गड़बड़ी।

सांकल } साङ्कल } (वि०) [स्त्री०—सांकली] योग या जोड़ से उत्पन्न।

सांकाश्यं (न०) } साङ्काश्यं (न०) } सांकाश्या (स्त्री०) } साङ्काश्या (स्त्री०) } जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी का नाम।

सांकेतिक } साङ्केतिक } (वि०) [स्त्री०—सांकेतकी] १ सङ्केत सम्बन्धी। इशारे का। २ प्रथा-जनित।

सांक्षेपिक (वि०) [स्त्री०—सांक्षेपिकी] संक्षिप्त। खुलासा। संक्षिप्त किया हुआ।

सांख्य (वि०) १ संख्या सम्बन्धी। २ गणनात्मक। ३ प्रभेदात्मक। ४ बहस करने वाला।

सांख्यं (न०) } सांख्यः (पु०) } आस्तिक छः दर्शनों में से एक। इसमें सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम वर्णित है। इसमें प्रकृति ही जगत् का मूल मानी गयी है। इसमें कहा है सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणों के योग से सृष्टि का तथा उसके अन्य समस्त पदार्थों का विकास होता है। इसमें ईश्वर की सत्ता नहीं मानी गयी है और आत्मा ही पुरुष माना गया है। सांख्यमतानुसार आत्मा अकर्त्ता, साक्षी और प्रकृति से भिन्न है। (पु०) सांख्य-मतानुयायी।—प्रसादः,—मुख्यः, (पु०) शिव जी।

सांग } साङ्ग } (वि०) १ अंगों या अवयवों वाला। २ सब प्रकार से परिपूर्ण। ३ अंगों सहित।

सांगतिक } साङ्गतिक } (वि०) [स्त्री०—सांगतिकी] समाज या सभा सम्बन्धी। संग करने वाला।

सांगतिक } साङ्गतिकः } (पु०) नवागत। अतिथि। महमान।

सांगमः } साङ्गमः } (पु०) मेल। संगम।

सांग्रामिक } साङ्ग्रामिक } (वि०) [स्त्री०—सांग्रामिकी] समर सम्बन्धी।

सांग्रामिकः } साङ्ग्रामिकः } (पु०) सेनाध्यक्ष। जनरल। सिपह-सालार। कमांडर।

साचि (अव्यया०) टेढ़ेपन से। तिरछेपन से।

साचिव्यं (न०) १ मंत्री का पद। सचिव का पद। २ दीवानी। अामात्यपना। ३ मैत्री। दोस्ती।

साजात्यं (न०) एक ही जाति वाला। एक ही प्रकार या तरह का। २ समजातिकत्व। साजात्य।

सांजनः } साञ्जनः } (पु०) छिपकली।

साट् (धा० उ०) [साटयति, साटयते] दिख-लाना। प्रकट होना।

साटोप (वि०) १ अभिमान में चूर। २ राजसी। ३ फूला हुआ।

साटोपं (अव्यया०) अभिमान से।

सातत्यं (न०) स्थिरता। अविच्छिन्नता।

सातिः (स्त्री०) १ भेंट। दान। २ प्राप्ति। उप-लब्धि। ३ सहायता। ४ नाश। ५ अन्त। ६ तीव्र वेदना।

सातीनः } सातीनकः } (पु०) मटर।

सात्त्विक (वि०) [स्त्री०—सात्त्विकी] १ असली।

यथार्थ । २ सच्चा । सत्य । स्वाभाविक । ३ ईमानदार । नेक । ४ गुणवान । ५ साहसी । हिम्मती । ६ सत्त्वगुण सम्पन्न । ७ सत्त्वगुण-सम्भूत । ८ आन्तरिक भावोत्पन्न ।

सात्त्विकः (पु०) १ साहित्य शास्त्र का भावविशेष जिससे हृदय की बात बाहिरी भाव से प्रकट होती है। २ ब्रह्मा । ३ ब्राह्मण ।

सात्यकिः (पु०) यादववंशीय योद्धा जो श्रीकृष्ण का सारथी था ।

सात्यवतः (पु०) } कृष्णद्वैपायन व्यास का
सात्यवतेय (पु०) } नामान्तर ।

सात्वत् (पु०) अनुयायी । श्री कृष्णका पूजक ।

सात्वतः (पु०) १ विष्णु । २ बलराम । ३ जाति-च्युत वैश्य का पुत्र ।

सात्वताः (पु० बहुवचन) एक जाति के लोगों की संज्ञा ।

सात्वती (स्त्री०) १ चार प्रकार के नाटकों की रीति या शैली । २ शिशुपाल की माता का नाम ।

सादः (पु०) १ बैठना । लगना । २ थकावट । श्रान्ति । ३ दुबलापन । पतलापन । लटापन । ४ नाशन । समाप्ति । ५ पीडा । पीड़न । ६ सफाई । स्वच्छता ।

सादनं (न०) १थकावट । श्रान्ति । २ नाशन । ३ ३ आवासस्थान । घर । मकान ।

सादिः (पु०) १ रथवान । सारथी । २ योद्धा ।

सादिन् (वि०) १ बैठा हुआ । २ नाश करने वाला । (पु०) १ घुड़सवार । २ हाथी पर या रथ पर सवार मनुष्य ।

सादृश्यं (न०) १ समानता । एकरूपता । २ प्रतिकृति । मूर्ति । पुतला ।

साद्यंत } (वि०) आदि से अन्त तक । समूचा ।
साद्यन्त } सम्पूर्ण ।

साद्यस्क (वि०) [स्त्री०—साद्यस्की] फुर्तीला । तुरन्त । फौरन ।

साध् (धा० प०) [साध्नोति] १ समाप्त करना । पूरा करना । खतम करना । २ जीत लेना ।

साधक (वि०) [स्त्री०—साधका,—साधिका] १ पूरा करने वाला । सम्पूर्ण करने वाला । २ फलोत्पादक । ३ निपुण । पटु । ४ ऐन्द्रजालिक । जादू से होने वाला । ५ सहायक ।

साधन (वि०) [स्त्री०—साधनी] साधन करने वाला । पूरा करने वाला ।

साधनं (न०) किसी कार्य को सिद्ध करने की क्रिया । सिद्धि । विधान । २ सामग्री । सामान । उपकरण । ३ उपाय । युक्ति । हिकमत । ४ उपासना । साधना । ५ सहायता । मदद । ६ शोधन । ७ कारण । हेतु । ८ अनुसरण । ९ प्रमाण । १० वशवर्ती करण । दमन करना । ११ तंत्र मंत्र से कोई कार्य पूरा करना । १२ आरोग्य करना । पूरना । भरना । (घाव का) १३ वध करना । मारडालना । १४ राजी करना । १५ प्रस्थान । रवानगी । १६ तपस्या । १७ मोक्षप्राप्ति । १८ अर्थदण्ड करना । आईन के बल से देना चुकवाना या किसी वस्तु को दिलवा देना । १९ कर्मेन्द्रियाँ । २० लिंग । जननेन्द्रिय । २१ गर्भाशय । २२ सम्पत्ति । २३ मैत्री । २४ लाभ । फायदा । २५ मृतक का अग्निसंस्कार ।

साधनता (स्त्री०) } किसी कार्य को पूरा करने का
साधनत्वं (न०) } सामान या युक्ति ।

साधना (स्त्री०) १ सिद्धि । २ आराधना । अर्चा । ३ राज़ीनामा । रज़ामंदी ।

साधंतः } (पु०) भिक्षुक । भिखारी ।
साधन्तः }

साधर्म्यं (न०) १ समान धर्म होने का भाव । तुल्यधर्मता ।

साधारण (वि०) [स्त्री०—साधारणा,—साधारणी] १ मामूली । सामान्य । २ सार्वजनिक । आम । ३ समान । सदृश । तुल्य । ४ मिश्रित । ५ न्याय में एक प्रकार का हेत्वाभास । वह हेतु जो सपक्ष और विपक्ष दोनों में एक सा रहे ।—धनं (न०) मिलीजुली सम्पत्ति । वह सम्पत्ति जिस पर किसी परिवार के सब पातीदारों का स्वत्व हो ।

साधारणं (न०) मामूली नियम । सार्वजनिक नियम ।

साधारणता (स्त्री०) } १ सार्वजनिकता । समाज ।
साधारणत्वं (न०) } २ समान स्वार्थ या स्वत्व ।

साधारण्यं (न०) साधारणता ।

साधिका (स्त्री०) १निपुणा स्त्री । २ गहरी निद्रा ।

साधित (व० कृ०) १ सिद्ध किया हुआ । ३ साबित किया हुआ । प्रत्यक्ष करके दिखलाया हुआ । ४ प्राप्त । हासिल किया हुआ । ५ छुटाया हुआ । छोड़ा हुआ । ६ दमन किया हुआ । वशवर्ती किया हुआ । ७ फिर से पाया हुआ । ८ जुर्माना किया हुआ । ९ दिलवाया हुआ । १० (दण्ड) दिया हुआ ।

साधिमन् (पु०) नेकी । उत्तमता ।

साधिष्ठ (वि०) १ सर्वोत्तम । सर्वोत्कृष्ट । बहुत ठीक । २ बहुत मज़बूत । सख़्त । दृढ़ ।

साधीयस् (वि०) २ अपेक्षा कृत अच्छा । उत्कृष्टवर । अपेक्षा कृत कड़ा या मज़बूत ।

साधु (वि०) [स्त्री०—साधु, साध्वी] १ नेक । उत्तम । २ योग्य । उचित । ठीक । ३ पुण्यात्मा । धर्मात्मा । प्रतिष्ठित । पवित्रात्मा । ४ दयालु । नेक मिज़ाज । ५ शुद्ध । विशुद्ध । ६ मनोहर । हर्षदायी । कुलीन ।—धी, (वि०) अच्छे स्वभाव का ।—वादः, (पु०) शाबाशी ।—वृत्त, (वि०) १ अच्छे आचरण वाला । पुण्यात्मा । ईमानदार । सच्चा ।—वृत्त, (पु०) साधु आचरण करने वाला पुरुष । —वृत्तं, (न०) सदाचरण । सज्जनता । सौजन्य ।

साधुः (पु०) १ पुण्यात्मा जन । २ ऋषि । महात्मा । ३ व्यापारी । ४ जैन भिक्षुक । ५ महाजन । सूदखोर । (अव्यया०) बहुत अच्छा । बहुत अच्छी तरह किया हुआ । शाबाश । २ काफी । अलं ।

साधृतं (न०) १ दूकान । २ छतरी । ३ मयूरों का झुंड ।

साध्य (वि०) १ साधनीय । २ सम्भव । होने योग्य । ३ सिद्ध करने योग्य । ४ स्थापित करने योग्य । ५ प्रतिकार करने योग्य ६ जानने के योग्य । ७ जीतने के योग्य। । दमन करने के योग्य । आराम होने योग्य । आरोग्य होने योग्य । ८ नाश करने योग्य । मार डालने योग्य ।

साध्यं (न०) १ पूर्णता । २ वह वस्तु जिसे सिद्ध करना हो । ३ न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय ।—सिद्धि, (स्त्री०) निष्पत्ति । काम का पूरा होना ।

साध्यः (पु०) १ एक प्रकार के गण देवता । २ देवता । ३ एक मंत्र का नाम ।

साध्यता (स्त्री०) १ सम्भावना । २ आरोग्य होने की सम्भावना ।—अवच्छेदकं, (न०) जिस रूप से जिसकी साध्यता निश्चित हो ।

साध्वसं (न०) १ भय । डर । आतङ्क । २ गतिशक्तिहीनता । स्पन्दहीनता । जड़ता । ३ घबड़ाहट । परेशानी ।

साध्वी (स्त्री०) १ सती स्त्री । पतिव्रता स्त्री । २ शुद्ध चरित्रवाली स्त्री । ३ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि ।

सानद (वि०) हर्षित । प्रसन्न ।

सानसिः (पु०) सुवर्ण । सोना ।

सानिका }
सानेयिका } (स्त्री०) नफीरी । शहनाई ।
सानेयी }

सानु (पु० न०) १ चोटी । शिखा । २ पर्वत शिखर की समतल भूमि । ३ अङ्कुर । अँखुआ । ४ वन । जंगल । ५ सड़क । रास्ता । ६ नोंक । छोर । ७ ढालुवा ज़मीन । ८ पवन का झोंका । ९ पण्डितजन । १० सूर्य ।

सानुमत् (पु०) पर्वत ।

सानुमती (स्त्री०) एक अप्सरा का नाम ।

सानुक्रोश (वि०) दयालु । दयार्द्रचित्त वाला ।

सानुनय (वि०) शिष्ट । सज्जन ।

सानुबंध } (वि०) अबाधित । अविच्छिन्न ।
सानुबन्ध } लगातार ।

सानुराग (वि०) आसक्त । अनुरक्त । अनुरागवान ।

सांतपनं } (न०) दो दिन में पूरा होने वाला ।
सान्तपनं }

सांतर } (वि०) बीच के अवकाश वाला।
सान्तर }

सांतानिक } (वि०) १ फैला हुआ। सघन (वृक्ष) २ सन्तान का साधन विशेष । ३ सन्तान सम्बन्धी। ४ सन्तान वृक्ष सम्बन्धी।
सान्तानिक }

सांतानिकः } (पु०) वह ब्राह्मण जो सन्तानोत्पत्ति के लिये विवाह करे।
सान्तानिकः }

सांत्व् } (धा० उ०) [सान्त्वयति—सान्त्वयते] शमन करना। शान्त करना। (शोक) दूर करना।
सान्त्व् }

सांत्वः (पु०) } ढाँरस। आश्वासन। चित्त की शान्ति। सुख। शान्ति देने का काम। किसी दु:खी आदमी को उसका दुःख हलका करने के लिये समझा बुझा कर शान्त करने का काम।
सान्त्वः (पु०)
सांत्वनं (न०)
सान्त्वनं (न०)
सांत्वना (स्त्री०)
सान्त्वना (स्त्री०)

सांदीपनिः } (पु०) श्रीकृष्ण के विद्यागुरु का नाम।
सान्दीपनि }

सांदृष्टिक } (वि०) [स्त्री०—सान्दृष्टिकी] एक ही दृष्टि में होने वाला। तात्कालिक। देखते देखते ही होने वाला।
सान्दृष्टिक }

सांद्र } (वि०) १ घना। गहरा। घोर। २ मज़बूत। रोबदार। ३ विपुल। अधिक। अत्यधिक। ४ उग्र। प्रचण्ड। ५ स्निग्ध। चिकना। ६ मृदु। कोमल। नरम। ७ मनोहर। सुन्दर। ख़ूबसूरत।
सान्द्र }

सांद्रः } (पु०) गुच्छा। स्तवक। राशि। ढेर।
सान्द्रः }

सांधिकः } (पु०) १ शौंडिक। कलवार। वह जो शराब बनाता हो। २ वह जो सन्धि करता हो। सन्धि करने वाला।
सान्धिकः }

सांधिविग्रहकः } (पु०) परराष्ट्रसचिव। वह अमात्य जिसके अधिकार में, अन्य राज्यों से सन्धि, विग्रह, सुलह, जंग करना हो।
सान्धिविग्रहकः }

सांध्य } (वि०) [स्त्री०—सान्ध्यी] सन्ध्या सम्बन्धी।
सान्ध्य }

सांनहनिक } (वि०) [सांनहनिकी] १ कवच-धारी। जरहबख्तर पहने हुए।
सान्नहनिक }

सांनाय्य } घी मिला हुआ हवन के लिये शाकल्य।
सान्नाय्य }

सांनिध्यं } (न०) १ नैकट्य। सामीप्य। २ उपस्थिति विद्यमानता।
सान्निध्यं }

सांनिपातिक } (वि०) [स्त्री०—सान्निपातिकी] १ फुटकल। २ उलझन डालने वाला। उलझा हुआ। ३ वह रोगी जिसके कफ, पित्त और वायु गड़बड़ा गये हों।
सान्निपातिक }

सांन्यासिक (पु०) १ वह ब्राह्मण जो चतुर्थ आश्रम अर्थात् संन्यासाश्रम में हो। २ कोई भी भिक्षुक।

सान्वय (वि०) पुश्तैनी। पैतृक।

सापत्न (वि०) [स्त्री०—सापत्नी] सौत की कोख से उत्पन्न या सौत सम्बन्धी।

सापत्नाः (पु० बहु०) एक ही पति से कई एक पत्नियों की कोख से उत्पन्न लड़के।

सापत्न्यं (न०) १ सौत की दशा। सौतियाभाव। २ प्रतिद्वन्द्वता। स्पर्धा। वैर भाव।

सापत्न्यः (पु०) १ सौत का बेटा। २ शत्रु। वैरी।

सापराध (वि०) अपराधी। मुजरिम।

सापिंड्यं } (न०) सपिंड होने का भाव या धर्म।
सापिण्ड्यं }

सापेक्ष (वि०) अपेक्षित। अपेक्षा सहित।

साप्तपद } (वि०) [स्त्री०—साप्तपदी] सात पग चलने से अथवा सात वाक्य आपस में कहने सुनने से उत्पन्न हुई मैत्री या सम्बन्ध।
साप्तपदीन }

साप्तपदं (न०) १ भाँवर। फेरा। २ मैत्री। दोस्ती।

साप्तपौरुष (वि०) [साप्तपौरुषी] सात पीढ़ी तक या सात पीढ़ियों का।

साफल्यं (न०) १ सफलता। कृतकार्यता। उपयोगिता। २ लाभ। फ़ायदा।

साब्दी (स्त्री०) एक प्रकार के अंगूर।

साभ्यसूय (वि०) डाही। ईर्ष्यालु।

साम् (धा० उ०) [सामयति—सामयते] शमन करना। शान्त करना।

सामकं (न०) वह मूल धन जो ऋण स्वरूप लिया या दिया गया हो।

सामक (पु०) सान धरने का पत्थर।

सामग्री (स्त्री०) सामान। वे पदार्थ जिनका किसी कार्य विशेष में उपयोग होता है।

सामग्र्य (न०) १ समूचापन। पूर्णता। नितान्तता। २ नौकर। चाकर। अनुचरवर्ग। ३ सामान का ढेर या ज़ख़ीरा। ४ भंडार। ज़ख़ीरा।

सामंजस्य, सामञ्जस्यं (न०) १ संगति। मेल। मिलान। २ शुद्धता। याथार्थ्य।

सामन् (न०) १ शान्तिकरण। तुष्टिसाधन। २ राजाओं के लिये शत्रु को वश करने का उपाय विशेष। ३ कोमलता। मृदुता (वाक्य सम्बन्धी)। ४ प्रशंसात्मक छंद या गान। ५ सामवेद का मंत्र। ६ सामवेद।—उद्भवः, (पु०) हाथी।—उपचारः,—उपायः, (पु०) शमन करने के साधन।—गः, (पु०) सामवेदी ब्राह्मण या वह ब्राह्मण जो सामवेद का गान कर सके।—ज,—जात, (वि०) १ सामवेद से उत्पन्न। २ शान्त साधनों से पैदा हुआ।—जः,—जातः, (पु०) हाथी।—योनिः, (पु०) १ ब्राह्मण। २ हाथी।—वादः, (पु०) मृदुशब्द। मधुर शब्द।—वेदः, (पु०) चार वेदों में तीसरा वेद।

सामन्त, सामन्त (वि०) १ सीमावर्ती। समीपी। पड़ोस का। २ सार्वजनिक।

सामंत, सामन्त (न०) १ पड़ोसी। २ पड़ोसी राजा। ३ करद राजा। ४ नायक।

सामंत, सामन्त (पु०) पड़ोस।

सामयिक (वि०) [स्त्री०—सामयिकी] १ रस्मी। रीति जो सदा से होती चली आयी हो। २ कौल-करार की हुई। ठहराई हुई। ३ ठीक समय का। ४ समय में। ५ समयानुसार। समय की दृष्टि से उपयुक्त। ६ समय सम्बन्धी। समय से सम्बन्ध रखने वाला। ७ अस्थायी। थोड़े समय के लिये।

सामर्थ्य (न०) १ शक्ति। ताक़त। योग्यता। २ उद्देश्य की समानता। ३ अर्थ या अभिप्राय की समानता या एकता। ४ उपयुक्तता। ५ शब्द की अर्थ बतलाने वाली शक्ति। ६ लाभ। स्वार्थ। ७ सम्पत्ति। धन दौलत।

सामवायिक (वि०) [स्त्री० – सामवायिकी] समाज या समूह या कंपनी से सम्बन्ध युक्त। २ अटूट सम्बन्ध से सम्बन्ध रखने वाला।

सामाजिक (वि०) [स्त्री०—सामाजिकी] समाज सम्बन्धी।

सामाजिकः (पु०) किसी समाज का सदस्य।

सामानाधिकरण्यं (न०) एक ही पद पर दोनों का होना। समान या बराबर अधिकार। समानता का सम्बन्ध।

सामान्य (वि०) १ साधारण। जिसमें कोई विशेषता न हो। मामूली। २ समान। बराबर का। ३ समानांश का। ४ तुच्छ। नाचीज़। ५ समूचा। समस्त।—पक्षः, (पु०) मध्यम।—लक्षणा, (स्त्री०) वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देख कर उसी के अनुसार उस जाति के अन्य सब पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है। किसी पदार्थ को देख, उस जाति के अन्य पदार्थों का बोध करा देने वाली शक्ति।—वनिता, (स्त्री०)—शास्त्रं, (न०) साधारण नियम या विधान।

सामान्यं (न०) १ सार्वजनिकता। २ सामान्य। लक्षण। ३ समूचापन। ४ किस्म। प्रकार। ५ समता। एक स्वरूपत्व। ६ निर्विकार अवस्था। समता। धैर्य। ७ सार्वजनिक मामले। ८ सार्वजनिक प्रस्तावित विषय। ९ साहित्य में अलंकार विशेष। यह तब माना जाता है जब एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है; जिनमें देखने में कुछ भी अन्तर नहीं जान पड़ता।

सामासिक (वि०) [स्त्री०—सामासिकी] १समूचा। समष्टि। २ संक्षिप्त। ३ सामासिक शब्द सम्बन्धी।

सामासिकं (न०) सब प्रकार के समासों का संग्रह।

सामि (अव्यया०) १ आधा। अधूरा। २ कलङ्की। तिरस्करणीय।

सामिधेनी (स्त्री०) १ एक प्रकार का ऋग्मंत्र जिसका पाठ, होम का अग्नि प्रज्वलित करते समय अथवा हवन के अग्नि में समिधाएं छोड़ते समय किया जाता है। २ समिधा। ईंधन।

सामीची (स्त्री०) प्रशंसा। स्तव। स्तुति।

सामीप्यं (न०) समीप होने का भाव। निकटता।

सामीप्यः (पु०) पड़ोसी। अन्तेवासी।

सामुद्र (वि०) [स्त्री०—सामुद्री] समुद्र सम्भूता। समुद्र में उत्पन्न।

सामुद्रं (न०) १ समुद्री निमक। २ समुद्रफेन। ३ शरीर का दाग़ या चिह्न।

सामुद्रः (पु०) समुद्र यात्री। समुद्री सफर करने वाला।

सामुद्रकं (न०) समुद्री लवण।

सामुद्रिक (वि०) [स्त्री०—सामुद्रिकी] समुद्र में उत्पन्न। समुद्र सम्भूत। शरीर के शुभाशुभ चिह्नों सम्बन्धी।

सामुद्रिकं (न०) हस्त रेखाओं से शुभाशुभ कहने की विद्या।

सामुद्रिकः (पु०) वह आदमी जो मनुष्य के शरीर के चिह्नों या लक्षणों को देख उस मनुष्य को शुभाशुभ फलों का विवेचन करे।

सांपराय } (वि०) [स्त्री०—सांपरायी] १
साम्पराय } युद्ध सम्बन्धी। सामरिक। २ परलोक सम्बन्धी। भविष्य।

सांपरायं, (न०) } १ मुठभेड। लड़ाई। २
साम्परायं (न०) } भविष्य जीवन। भविष्य।
सांपरायः (पु०) } ३ परलोक प्राप्ति के साधन।
साम्परायः (पु०) } ४भविष्य सम्बन्धिनी जिज्ञासा। ५ जिज्ञासा। अनुसन्धान। ६ अनिश्चयता।

सांपरायिक } (वि०) [स्त्री०—साम्परायिकी]
साम्परायिकी } १ युद्ध में काम आने वाला। २ सामारिक। ३ विपत्तिकारक। ४ परलोक सम्बन्धी। —कल्पः, (पु०) सैन्य-व्यूह विशेष।

सांपरायिकं } (न०) युद्ध। समर। लड़ाई।
साम्परायिक } जङ्ग।

सांपरायिक } (पु०) लड़ाई का रथ।
साम्परायिकः }

सांप्रतिक } (वि०) [स्त्री०—साम्प्रतिकी] १वर्तमान
साम्प्रतिक } समय सम्बन्धी। २योग्य। उचित। ठीक।

सांप्रदायिक } (वि०) [स्त्री०—सांप्रदायिकी]
साम्प्रदायिक } परंपरागत सिद्धान्त सम्बन्धी। परंपरागत प्राप्त। परंपरागत।

सांब } (पु०) शिव का नामान्तर।
साम्बः }

सांबंधिक } (वि०) [स्त्री०—साम्बन्धिकी]
साम्बन्धिक } सम्बन्ध से उत्पन्न।

सांबंधिकं } (न०) १ नातेदारी। रिश्तेदारी।
साम्बन्धिकं } २ सन्धि द्वारा स्थापित मैत्री।

सांबरी } (स्त्री०) माया। जादूगरी। जादूगरनी।
साम्बरी }

सांभवी } (स्त्री०) १ लाल लोध्र वृक्ष। २
साम्भवी } सम्भावना।

साम्यं (न०) १ समानता। एक सा पन। समत्व। २ सादृश्य। ३ ऐकमत्य। ४ अपक्षपातित्व। साहमत्य।

साम्राज्यं (न०) १ वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौमराज्य। सलतनत। २ आधिपत्य। पूर्ण अधिकार।

सायः (पु०) १ समाप्ति। अन्त। २ दिन का अन्त। सन्ध्याकाल। तीर। —अह्नन्, (पु०) (=सायाह्नः) सायंकाल।

सायकः (पु०) १ तीर। २ तलवार। —पुंखः, तीर का वह भाग जिसमें पंख लगे होते हैं।

सायंतन } (वि०) [स्त्री०—सायंतनी] सन्ध्या
सायन्तन } सम्बन्धी। सन्ध्या।

सायम् (अव्यया०) सन्ध्याकाल में। —कालः, (पु०) सन्ध्याकाल। —मण्डनं, (न०) १ सूर्यास्त। २ सूर्य। —सन्ध्या, (स्त्री०) सन्ध्या काल की लाली। ३ सन्ध्या काल की भगवदुपासना।

सायिन् (पु०) घुड़सवार।

सायुज्यं (न०) १ एक में इस प्रकार मिल जाना कि भेद न रहे। २ पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार का मोक्ष। इसमें जीवात्मा का परमात्मा में लीन हो जाना माना गया है। ३ समानता। सादृश्य।

सार (वि०) १ निष्कर्ष । निचोड । २ सर्वोत्तम । अत्युत्तम । ३ असली । सत्य । यथार्थ । ४ मज़बूत । विक्रमी । ५ भलीभाँति सिद्ध किया हुआ । दृढ़ ।

सारं (न०) } सारः (पु०) } १ किसी पदार्थ का मूल, मुख्य या काम का अथवा असली अंश । तत्व । सत्त । २ मिंगी । ३ गूदा । ४ वृक्ष का रस । ५ किसी ग्रन्थ का सार । निचोड । ६ शक्ति । ताकत । ७ शूरता । ८ दृढ़ता । मज़बूती । ९ धन । सम्पत्ति । १० अमृत । ११ ताज़ा मक्खन । १२ हवा । पवन । १३ मलाई । १४ रोग । बीमारी १५ पीप । मवाद । १६ उत्तमता । १७ शतरंज का मोहरा । १८ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है ।

सारं (न०) १ जल । पानी । २ योग्यता । उपयुक्तता । ३ वन । जंगल । ४ ईसपात लोहा ।—असार, (वि०) मूल्यवान और निकम्मा । मज़बूत और कमज़ोर ।—असारं, (न०) सारता और निस्सारता । २ पोढ़ापन और खुखलापन । ३ ताकत और कमजोरी ।—गन्धः, (पु०) चन्दन की लकड़ी ।—ग्रीवः, (पु०) शिव ।—ज्ञं, (न०) ताज़ा नवनीत ।—तरुः, (पु०) केले का वृक्ष । —दा, (स्त्री०) १ सरस्वती देवी । २ दुर्गा देवी ।—द्रुमः, (पु०) खदिर वृक्ष ।—भङ्गः शक्ति का नाश ।—भाण्डः, (पु०) व्यापार की बहुमूल्य वस्तु । २ सौदागरी माल की गाँठ । सौदागरी माल । ३ औज़ार ।—लोहं, (न०) ईसपात लोहा ।

सारघं (न०) शहद ।

सारंग } सारङ्ग } सारंगी } सारङ्गी } (वि०) [स्त्री०—सारंगी] चितकबरा । रंगविरंगा ।

सारंगः } सारङ्गः } (पु०) १ रंगविरंगा रंग । २ चित्तल हिरन । बारहसिंहा । ३ हिरन । मृग । ४ शेर । ५ हाथी । ६ भौंरा । भ्रमर । ७ कोकिल । ८ बड़ा सारस । ९ लाल । लमढेंक । १० मयूर । मोर । ११ छाता । १२ बादल । १३ वस्त्र । १४ बाल । १५ शङ्ख । १६ शिवजी । १७ कामदेव । १८ कमल । १९ कपूर । २० धनुष । कमान । २१ चन्दन । २२ वाद्ययंत्रविशेष । सारंगी । चिकारा । २३ आभूषण विशेष । २४ सुवर्ण । २५ पृथिवी । २६ रात्रि । २७ प्रकाश ।

सारंगिकः } सारङ्गिकः } (पु०) चिड़ीमार । बहेलिया ।

सारंगी } सारङ्गी } (स्त्री०) १ सारंगी । चित्तल हिरन ।

सारण (वि०) [स्त्री०—सारणी] बहाने वाला । भेजने वाला ।

सारणं (न०) एक प्रकार की गंध या महक ।

सारणः (पु०) १ दस्तों की बीमारी । अतीसार । २ आमड़ा । ३ आँवला ।

सारणा (स्त्री०) पारद आदि रसों का एक प्रकार का संस्कार ।

सारणिः } सारणी } (स्त्री०) १ छोटी नदी । २ नहर । नाली ।

सारंडः } सारण्डः } (पु०) सर्प का अंडा ।

सारतस् (अव्यया०) १ धन के अनुसार । वित्तानुसार । २ विक्रम पूर्वक ।

सारथिः (पु०) १ रथवान । रथ हाँकने वाला । २ साथी । सहायक । ३ समुद्र ।

सारथ्यं (न०) रथवानी । कोचवानी ।

सारमेयः (पु०) कुत्ता ।

सारमेयी (स्त्री०) कुतिया ।

सारल्यं (न०) सरलता । सीधापन । ईमानदारी । सच्चाई ।

सारवत् (वि०) १ सारवान । उपजाऊ ।

सारस (वि०) [स्त्री०—सारसी] जलाशय सम्बन्धी । झील सम्बन्धी ।

सारसं (न०) १ कमल । २ स्त्री की कमर की करधनी या कमरबंद ।

सारसः (पु०) १ सारस। हंस। २ पक्षी। ३ चन्द्रमा।

सारसनं } सारशनं } (न०) १ करधनी। पटुका। कमरपेटी। कमरबंद। २ सामरिक कमरबंद विशेष।

सारस्वत (वि०) [स्त्री०—सारस्वती] १ सरस्वती देवी सम्बन्धी। २ सरस्वती नदी सम्बन्धी। ३ वाक्पटु।

सारस्वतं (न०) वाकपटुता। भाषण। वाणी।

सारस्वतः (पु०) १ सरस्वती नदी के तटवर्ती एक देश विशेष का नाम। २ इस नाम की ब्राह्मण जाति विशेष। ३ बेल की लकड़ी का दण्ड।

सारस्वताः (पु० बहु०) सारस्वत देश वासी।

सारालः (पु०) तिल्ली। तिल।

सारिः } सारी } (स्त्री०) १ शतरंज का मोहरा। २ पक्षी विशेष।—फलकः, (पु०) शतरंज की बिछौत।

सारिका (स्त्री०) मैना जाति की चिड़िया।

सारिन् (वि०) [स्त्री०—सारिणी] १ जाने वाला। चलने वाला। २ सारवान्।

सारूप्यं (न०) १ समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता। २ पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति। इसमें उपासक अपने उपास्य देव के रूप में रहता है और अन्त में उसी उपास्य देवता का रूप प्राप्त करता है। ३ नाटक में शक्ल मिलती जुलती होने के कारण किसी के धोखे में किसी की क्रोधावेश में भर्त्सना।

सारोष्ट्रिकः (पु०) विष विशेष।

सार्गल (वि०) रोका हुआ। अवरुद्ध। अड़चन डाला हुआ।

सार्थ (वि०) १ अर्थसहित। २ वह जिसका कोई उद्देश्य हो। ३ एक ही अर्थ वाला। समानार्थक। ४ उपयोगी। काम लायक। ५ धनी। धनवान।

सार्थः (पु०) १ धनी आदमी। २ यात्री। सौदागरों की टोली। (काफ़िला)। ३ टोली। दल। ४ (एक जाति के पशुओं का) हेड। रेवड़। गल्ला। ५ समुदाय। समूह। ६ तीर्थ यात्रियों की टोलियों में से एक।—ज, (वि०) वह जो यात्री सौदागरों की टोली या काफ़िले में पालापोसा हुआ हो।—वाहः, (पु०) यात्रीव्यापारी। दल का नेता या नायक। व्योपारी। सौदागर।

सार्थक (वि०) १ अर्थवाला। अर्थ सहित २ उपयोगी। काम का। मुफीद। लाभप्रद।

सार्थवत् (वि०) १ अर्थ वाला। अर्थ सहित। २ बड़े समुदाय या समूह वाला।

सार्थिकः (पु०) व्यापारी। सौदागर।

सार्द्र (वि०) भींगा। तर। सील वाला। तरी वाला। नम।

सार्ध (वि०) ड्योढ़ा।

सार्धम् (अव्यया०) सहित। साथ। समेत।

सार्पः } सार्प्यः } (पु०) आश्लेषा नक्षत्र।

सार्पिष (वि०) [स्त्री०—सार्पिषी] } सार्पिष्क (वि०) [स्त्री०—सार्पिष्की] } घी में राँधा हुआ। घी में तला हुआ। घी मिश्रित।

सार्वकामिक (वि०) [स्त्री०—सार्वकामिकी] हर प्रकार की समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला।

सार्वजनिक (वि०) [स्त्री०—सार्वजनिकी] } सार्वजनीन (वि०) [स्त्री०—सार्वजनीनी] } सर्वसाधारण सम्बन्धी। आम। पबलिक का।

सार्वज्ञं (न०) सर्वज्ञता।

सार्वत्रिक (वि०) [स्त्री०—सार्वत्रिकी] हर स्थान का। सर्वत्र से सम्बन्ध रखने वाला।

सार्वधातुक (वि०) [स्त्री०—सार्वधातुकी] सब धातुओं में व्यवहृत होने वाला।

सार्वभौतिक (वि०) [स्त्री०—सार्वभौतिकी] १ हरेक तत्व या प्राणी से सम्बन्ध रखने वाला। २ जिसमें समस्त प्राणधारी सम्मिलित हों।

सार्वभौम (वि०) [स्त्री०—सार्वभौमी] समस्त भूमि सम्बन्धी। सम्पूर्ण भूमि की।

सार्वभौमः (पु०) १ सम्राट्। चक्रवर्ती राजा। शाहंशाह। २ उत्तर दिशा का दिक्कुञ्जर।

सार्वलौकिक (वि०) [स्त्री०—सार्वलौकिकी] सर्वसंसार में व्याप्त

सार्ववर्णिक (वि०) [स्त्री० —सार्ववर्णिकी] १ हर प्रकार का। हर तरह का। हर जाति का। हर वर्ण का।

सार्वविभक्तिक (वि०) [स्त्री०—सार्वविभक्तिकी] सब विभक्तियों में लगने वाला। सब विभक्ति सम्बन्धी।

सार्ववेदसः (पु०) अपना समस्त द्रव्य यज्ञ की दक्षिणा अथवा अन्य किसी वैसे ही धर्मानुष्ठान में दे डालने वाला।

सार्ववैद्यः (पु०) वह ब्राह्मण जो सब वेदों का जानने वाला हो।

सार्षप (वि०) [स्त्री०—सार्षपी] सरसों का बना हुआ।

सार्षपं (न०) सरसों का तेल। कड़ुआ तेल।

सार्ष्टि (वि०) समान पद या अधिकार वाला। समान पदवी वाला।

सार्ष्टिता (स्त्री०) १ पद या अधिकार में समानता या तुल्यता। पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति।

सार्ष्ट्यं (न०) चौथे दर्जे की मुक्ति।

साल (पु०) १ साल नाम का वृक्ष। उसकी राल। २ वृक्ष। ३ किसी भवन के चारों ओर की परकोटे की दीवालें या छारदीवारी। ४ दीवाल। ५ मछली विशेष।

सालनः (पु०) साल वृक्ष की राल।

साला (स्त्री०) १ दीवाल। छारदीवाली। २ मकान। कमरा। कोठा। कोठरी। —करी, १ वह कारीगर जो अपने घर ही में काम करे। २ पुरुषक़ैदी (विशेषकर युद्धक्षेत्र में पकड़ा हुआ)।

सालारं (न०) दीवाल में जड़ी हुई और बाहर निकली हुई खूँटी।

सालूर (पु०) मेंढक।

सालेयं (न०) सौंफ या सोए जैसा पदार्थ विशेष।

सालोक्यं (न०) १ दूसरे के साथ एक ही लोक या स्थान में निवास। २ पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक। इसमें मुक्तजीव भगवान् के साथ अथवा अपने अन्य आराध्य देव के साथ एक ही लोक में वास करता है। सलोकता।

साल्वः (पु०) १ देश विशेष। २ एक दैत्य जिसे विष्णु भगवान् ने मारा था।—हन्, (पु०) विष्णु भगवान्।

साल्विकः (पु०) सारिका (मैना) नामक पक्षी।

सावः (पु०) देवता या पितृ के उद्देश्य से किया हुआ जल मद्यादि का दान।

सावक (वि०) [स्त्री० साविका] उपजाऊ। उत्पादक।

सावकः (पु०) शावक। किसी भी जानवर का बच्चा।

सावकाश (वि०) वह जिसको अवकाश हो। अवकाश के समय का। खाली। निठल्ला। ठलुआ।

सावग्रह (वि०) अवग्रह चिह्न वाला।

सावज्ञ (वि०) घृणय। निन्द्य। तिरस्करणीय।

सावद्य (न०) ऐश्वर्य। तीन प्रकार की योग-शक्तियों में से एक। यह योगियों को प्राप्त होती है। अन्य दो शक्तियों के नाम "निरवद्य" और "सूक्ष्म" हैं।

सावधान (वि०) १ सचेत। सतर्क। होशियार। सजग। चौकस। २ चौकन्ना। ख़बरदार। ३ बुद्धिमान्।

सावधि (वि०) सीमा सहित। सीमाबद्ध। मर्यादित। सान्त।

सावन (वि०) [स्त्री०—सावनी] तीन सवनों वाला। तीन सवनों से सम्बन्ध रखने वाला।

सावन (पु०) १ यजमान। यज्ञकर्त्ता। यज्ञ कराने के लिये ऋत्विक, होता आदि नियत करने वाला। यज्ञ की समाप्ति। वह कर्म विशेष जिसके द्वारा यज्ञ समाप्त किया जाता है। ३ वरुण। ४ तीस दिवस का सौर्यमास। ५ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का मामूली दिन या दिनमान। ६० दण्ड का समय। ६ वर्ष विशेष।

सावयव (वि०) अवयवों या अंगों या भागों से बना हुआ।

सावरः (पु०) १ अपराध । जुर्म । २ पाप । गुनाह । दुष्टता । ३ लोध्र का पेड़ ।

सावरण (वि०) १ गुप्त । गोप्त । छिपा हुआ । २ ढका हुआ । मुंदा हुआ । बंद ।

सावर्ण (वि०) [स्त्री०—सावर्णी] एक ही रंग, नस्ल या जाति का । एक ही रंग, नस्ल या जाति से सम्बन्ध रखने वाला ।

सावर्णः (पु०) आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे ।

सावर्ण्य (न०) १ रंग की समानता । इकरंगापन । २ श्रेणी या जाति की एकरूपता । ३ सावर्णिमनु का मन्वन्तर ।

सावलेप (वि०) अभिमानी । अकड़बाज़ । घमंडी ।

सावलेपं (अव्यया०) अभिमान से । क्रोध से । अकड़-बाज़ी से ।

सावशेष (वि०) १ वह जिसमें कुछ शेष हो । अव-शिष्ट । २ अपूर्ण । अधूरा ।

सावष्टंभ (वि०) दृढ़ता से । मज़बूती से । सोत्साह । हिम्मत के साथ ।

सावहेल (वि०) घृण्य । निन्द्य । तिरस्करणीय ।

सावहेलं (अव्यया०) घृणा के साथ । तिरस्कार के साथ ।

साविका (स्त्री०) दाई ।

सावित्र (वि०) [स्त्री०—सावित्री] १ सूर्य सम्बन्धी । २ सूर्यवंशी । ३ गायत्री सहित ।

सावित्रं (न०) यज्ञसूत्र । यज्ञोपवीत ।

सावित्रः (पु०) १ सूर्य । २ गर्भ । गर्भ की झिल्ली । ३ ब्राह्मण । ४ शिव । ५ कर्ण ।

सावित्री (स्त्री०) १ किरण । २ ऋग्वेद का स्वनाम-ख्यात मंत्र विशेष । गायत्री मंत्र । ३ यज्ञोपवीत संस्कार । ४ ब्राह्मणी । ५ पार्वती । ६ कश्यप की एक पत्नी का नाम । ७ साल्व देशाधिपति सत्यवान की पत्नी का नाम ।—पतितः, —परिभ्रष्टः (पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य वर्ण का वह पुरुष, जिसका उपनयन-संस्कार निर्दिष्ट समय पर न हुआ हो । व्रात्य ।—व्रतं, (न०) व्रत विशेष । यह व्रत वे स्त्रियाँ रखती हैं, जो अपने पति की दीर्घायु की कामना रखने वाली होती हैं । यह व्रत ज्येष्ठ कृष्ण १४ को रखा जाता है । इस व्रत की रखने वाली स्त्रियाँ विधवा नहीं होतीं ।

साविष्कार (वि०) १ अभिमानी । क्रोधी । २ प्रादुर्भूत ।

साशंस (वि०) आशावान । कामना से पूर्ण ।

साशंक } साशङ्क } (वि०) भयभीत । डरा हुआ ।

साशयंदकः } साशयन्दकः } (पु०) छपकली । बिसतुइया ।

साशूकः (पु०) कंबल ।

साश्चर्य (वि०) १ अद्भुत । विलक्षण । २ आश्चर्य-चकित ।

साश्र } सास्र } (वि०) १ कोण वाला । जिसमें कोण हों । २ रोता हुआ । आँखों में आँसू भरे हुए ।

साश्रुधी (स्त्री०) सास । पत्नी अथवा पति की माता ।

साष्टांगम् } साष्टाङ्गं } (न०) अष्टाङ्ग प्रणाम । [अष्टाङ्ग ये हैं :—मस्तक, हाथ, पैर, छाती, आँख, जाँघ, वचन और मन । इन सहित भूमि पर लेट कर प्रणाम करना ।]

सास (वि०) धनुर्धारी ।

सासुस् (वि०) तीरों वाला ।

सासूय (वि०) डाही । ईर्ष्यालु ।

सास्ना (स्त्री०) गौ आदि का गलकंबल ।

साहचर्यं (न०) सहचारता । सहवर्तित्व ।

साहनं (न०) सहनशीलता । सहिष्णुता ।

साहसं (न०) १ जबरदस्ती । बरजोरी । लूटना । २ कोई बुरा काम जैसे लूटपाट, बलात्कार आदि । ३ बेरहमी । नृशंसता । ४ हिम्मत । जुरंत । ५ बेसमझे बूझे काम कर बैठना । ६ सज़ा । दण्ड । जुर्माना । अर्थदण्ड ।—अङ्कः, (पु०) विक्रमा-दित्य का नामान्तर ।—अध्यवसायिन्, (वि०) बेसमझे बूझे सहसा हड़बड़ी में काम कर बैठने वाला । —ऐकरसिक, (वि०) खूखार ।

भयानक। पाशविक।—कारिन्, (वि०) १ साहसी। २ दुस्साहसी। अविवेकी।

साहसिक (वि०) [स्त्री०—साहसिकी] १ पाशविक। लुटेरा। २ हिम्मतवर। पराक्रमी। ३ दण्डदेने वाला।

साहसिकः (पु०) १ पराक्रमी पुरुष। २ प्रचण्ड या उन्मत्त व्यक्ति। ३ चोर। डॉकू। लुटेरा।

साहसिन् (वि०) १ प्रचण्ड। भयानक। नृशंस। २ साहसी। पराक्रमी।

साहस्र [स्त्री०— साहस्री] १ हजार सम्बन्धी। २ जिसमें एक हज़ार हो। ३ एक हज़ार में खरीदा हुआ। ४ प्रति सहस्र के हिसाब से दिया हुआ (सूद) ५ सहस्र गुना।

साहस्रं (न०) एक हजार का जोड़।

साहस्रः (पु०) सैनिक टोली जिसमे एक सहस्र सैनिक हों।

साहायकं (न०) १ सहायता। मदद। २सहचरत्व। मैत्री। ३ सहायक सैन्य।

साहाय्यं (न०) १ सहायता। मदद। २ मैत्री। दोस्ती।

साहित्यं (न०) १ एकत्र होना। मिलन। समुदाय। समूह। सभा। २ गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रन्थों का समूह, जिनमें सार्वजनीन हित सम्बन्धी स्थायी विचार रचित रहते हैं।

साह्यं (न०) १ संयोग। संगम। मेल। मिलाप। समुदाय। २ सहायता। मदद।—कृत्, (पु०) साथी। सखा।

साह्वयः (पु०) जानवरों की लड़ाई का जुआ या द्यूत।

सि (धा० उ०) [सिनोति, सिनुते, सिनाति, सिनीते] १ बाँधना। २ जाल में फँसाना। फँदे में फसाना।

सिंहः (पु०) १ शेर। २ सिंहराशि। ३ सर्वोत्तमता। सर्वोत्कृष्टता। (यथा पुरुषसिंहः) —अवलोकनं, (न०) १ शेर की चितवन। २ शेर की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। ३ आगे वर्णन करने के पूर्व पिछली बातों का संक्षेप में वर्णन।—अवलोकनः, (पु०) रतिबन्ध। स्त्रीमैथुन का ढङ्ग विशेष।—आस्यः, (पु०) हाथों की मुद्रा विशेष।—गः, (पु०) शिव जी का नाम।—तलं, (न०) हाथों की मिली और खुली हुई दोनों हथेली।—तुण्डः, (पु०) १ एक प्रकार की मछली। २ सेहुँड। स्नुही। थूहर।—दंष्ट्रः, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—दर्प, (वि०) सिंह जैसा अभिमानी।—ध्वनिः—नादः, (पु०) १ सिंह की दहाड़ या गर्जन। २ युद्ध की ललकार।—द्वारं, (न०) मुख्य द्वार या दरवाजा। सदर फाटक।— वाहन (पु०) शिवजी की उपाधि।—संहनन, (वि०) १ सिंह जैसा मज़बूत। सुन्दर। ख़ूबसूरत।—संहननं, (न०) सिंह का वध।

सिंहलं (न०) १ टीन। जस्ता। २ पीतल। ३ छाल। ४ लंका द्वीप।

सिंहलकं (न०) लंका का टापू।

सिंहलाः (पु० ब०) सिंहल। (लंका) द्वीप निवासी लोग।

सिंहाणं, सिंहानं १ लोहे का मोर्चा। २ नाक का मल या रहट।

सिंहिका (स्त्री०) राहु की माता।—तनयः,—पुत्रः,—सुतः,—सूनुः, (पु०) राहु का नामान्तर।

सिंही (स्त्री०) १ सिंहिन। २ राहु की माता का नाम।

सिकता (स्त्री०) १ रेतीली भूमि। २ रेत। बालू। ३ प्रमेह का एक भेद।

सिकतिल (वि०) रेतीली।

सिक्त (व० कृ०) १ जल से सींचा हुआ। तर। नम। ३ गीला।

सिक्थं (न०) १ मधुमक्षिका का मोम। २ नील।

सिक्थः (पु०) १ भात। २ भात का पिंड।

सिद्यः (पु०) स्फटिक। शीशा।

सिंघाणं } (न०) १ नाक का मैल। २ लोहे का
सिंघाणं } मोर्चा।

सिंघिणी (स्त्री०) नाक।

सिंच् (धा० उ०) [सिंचति-सिंचते, सिक्त] १ छिड़कना। २ पानी देना। नम करना। ३ उड़ेलना।

सिंचयः } (पु०) कपड़ा।
सिञ्चयः }

सिंचिता } (स्त्री०) पिपरा मूल।
सिञ्चिता }

सिंजा } (स्त्री०) आभूषणों की झनकार।
सिञ्जा }

सिंजितं } (न०) झनकार।
सिञ्जितं }

सिट् (धा० प०) [सेटति] तिरस्कार करना। हिकारत करना।

सित (वि०) १ सफ़ेद। २ बँधा हुआ। ३ घिरा हुआ। ४ सम्पूर्ण किया हुआ। समाप्त किया हुआ। —अग्रः, (पु०) काँटा।—अपाङ्गः, (पु०) मयूर।—अभ्रः, (पु०)—अभ्रं, (न०) कपूर।—अम्बरः, (पु०) श्वेताम्बरी साधू। —अर्जकः, (पु०) सफेद तुलसी।—अश्वः, (पु०) अर्जुन।—असितः, (पु०) बलराम। —आदिः, (पु०) गुड़। शीरा।—आलिका, (स्त्री०) ताल की सीपी। जलसीप।—इतर, (वि०) कृष्ण। काला।—उद्भवं, (न०) सफेद चन्दन।—उपलः (पु०) बिल्लौर। फटिक।—उपला, (स्त्री०) मिश्री।—करः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।—धातुः, (पु०) खड़ी मिट्टी।—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा। —वाजिन्, (पु०) अर्जुन। —शर्करा, (स्त्री०) मिस्री।—शिंबिकः, (पु०) गेहूँ। —शिवं, (न०) सेंधा निमक।—शूकः, (पु०) जवा। जौ।

सितं (न०) १ चाँदी। २ चन्दन। ३ मूली। मुराई।

सितः (पु०) १ सफेद रंग। २ शुक्लपक्ष। ३ शुक्र ग्रह। ४ तीर।

सिता (स्त्री०) १ मिस्री। चीनी। २ जुन्हाई। ३ सुन्दरी स्त्री। ४ शराब। मदिरा। ५ सफेद दूब घास। ६ मल्लिका। मोतिया।

सिति (वि०) १ सफेद। काला।

सितिः (पु०) सफेद या काला रङ्ग।

सिद्ध (व० कृ०) १ जिसका साधन हो चुका हो। जो पूरा हो गया हो। जो किया जा चुका हो। सम्पन्न। सम्पादित। २ प्राप्त। उपलब्ध। ३ सफल। ४ स्थापित। बसा हुआ। सिद्ध किया हुआ। ६ वैद्य। दृढ़। न्याय्य। ७ सत्य माना हुआ। ८ फैसल किया हुआ। ९ अदा किया हुआ। चुकता हुआ। १० राँधा हुआ। ११ पक्का। पका हुआ। निश्चित किया हुआ। १२ तैयार। १३ दमन किया हुआ। १४ वशीभूत किया हुआ। १५ निपुण। पटु। १६ प्रायश्चित द्वारा पवित्र किया हुआ। १७ अधीनता से मुक्त किया हुआ। १८ अलौकिक शक्ति सम्पन्न। १९ पवित्र। २० दैवी। अनादि। अविनाशी। २१ प्रसिद्ध। प्रख्यात। २२ चमकीला। प्रकाशमान।—अन्त, (पु०) १ भलीभाँति सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत। उसूल। २ वह बात जो विद्वानों द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत। ३ निर्णीत अर्थ या विषय। नतीजा। तत्व की बात।—अन्नं, (न०) राँधा हुआ अन्न।—अर्थ, (वि०) वह जिसका अभीष्ट सिद्ध हो चुका हो।—अर्थः, (पु०) १ सफेद सरसों। २शिव जी का नामान्तर। ३ बुद्ध देव।—आसनं (न०) हठ योग के ८४ आसनों में से एक प्रधान आसन।—गङ्गा,—नदी (स्त्री०)—सिन्धुः (पु०) आकाशगङ्गा।—ग्रहः, (पु०) उन्माद विशेष।—जलं, (न०) खट्टी काँजी। —धातुः, (पु०) पारा।—पक्षः, (पु०) किसी प्रतिज्ञा या बात का वह अंश जो प्रमाणित हो चुका हो। २ साबित बात।—प्रयोजनः, (पु०) सफेद सरसों।—योगिन्, (पु०) शिव।—रस, (वि०) खनिज। खान का। —रस, (पु०) १ पारा। २ सिद्ध रसायनी। —सङ्कल्प, (वि०) जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो चुकी हों।—सेनः, (पु०) कार्तिकेय

का नाम ।—स्थाली, (स्त्री०) सिद्ध योगियों की बटलोई ।

सिद्धं (न०) समुद्री निमक ।

सिद्ध. (पु०) १ देवयोनि विशेष । २ दैवी शक्ति सम्पन्न । करामाती । ऋषि या महात्मा । ३ ऋषि । देवदूत । फरिश्ता । ४ ऐन्द्रजालिक । जादूगर । ५ अभियोग । फौजदारी मामला । दीवानी मुकद्दमा । ६ गुड़ ।

सिद्धता (स्त्री०) } १ सिद्ध होने की अवस्था । २
सिद्धत्वं (न०) } प्रामाणिकता । सिद्ध । ३ पूर्णता ।

सिद्धिः (स्त्री०) १ काम का पूरा होना । २ सफलता । कृतकार्यता । ३ संस्थापन । प्रतिष्ठा । आवास । ४ प्रमाण । विवाद रहित परिणाम । ५ किसी नियम या विधान का वैधत्व । ६ निर्णय । फैसला । निपटारा । ७ निश्चय । सत्यता । शुद्धता । ८ परिशोध । बेबाकी । चुकता होना ९ पकना । सीझना । १० किसी प्रश्न का हल होना । ११ तत्परता । १२ नितान्त विशुद्धता । १३ अलौकिक सिद्धियाँ जो गणना में आठ हैं । [यथाः—
अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा ।
ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता ॥]
१४ ऐन्द्रजालिक विद्या द्वारा अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति । १५ विलक्षण नैपुण्य । १६ अच्छा प्रभाव या फल । १७ मोक्ष । मुक्ति । १८ समझदारी । बुद्धि । १९ छिपाव । दुराव । अपने आपको अन्तर्धान करने की क्रिया । २० जादू की खड़ाऊँ या जूती । २१ एक प्रकार का योग । २२ दुर्गा का नाम ।—द, (वि०) सिद्धि देने वाला ।—द, (पु०) शिव जी का नाम । —दात्री, (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।—योगः, ज्योतिष विद्या के अनुसार शुभ काल विशेष ।

सिध् (धा० प०) [सिध्यति, सिद्ध] १ सिद्ध करना । पूरा करना । २ सफल होना । ३ पहुँचना । ४ अभीष्ट प्राप्त करना । ५ साबित करना । ६ तैकरना । ७ राँधना । पकाना । ८ जीतना । विजय प्राप्त करना ।

सिध्मं } (न०) १ चट्टा । ददोरा । चकत्ता । २
सिध्मन् } कोढ़ । ३ कोढ़ का दाग ।

सिध्मल (वि०) १ सेंहुए वाला । छींटा रोग वाला । कोढ़ी ।

सिध्मा (स्त्री०) १ चट्टा । ददोरा । कोढ़ का दाग । २ कोढ़ ।

सिध्यः (पु०) पुष्य नक्षत्र ।

सिध्रः (पु०) १ साधु पुरुष । २ वृक्ष । पेड़ ।

सिध्रकावणं (न०) स्वर्ग के बागों में से एक बाग का नाम ।

सिनः (पु०) गस्सा । कवर । निवाला ।

सिनी (स्त्री०) गौरवर्ण की स्त्री ।

सिनीवाली (स्त्री०) १ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा ।

सिंदुकः }
सिन्दुकः } (पु०) सँभालू वृक्ष । निर्गुण्डी का
सिंदुवारः } पेड़ ।
सिन्दुवारः }

सिंदूरं } (न०) ईंगुर । सेंदुर ।
सिन्दूरं }

सिंदूरः } (पु०) बलूत की जाति का एक पहाड़ी
सिन्दूरः } वृक्ष ।

सिंधुः } (वि०) १ समुद्र । सागर । २ सिन्धुनद ।
सिन्धुः } ३ सिन्धुनदी के आसपास का देश । ४ मालवा की एक नदी का नाम । ५ हाथी की सूँड़ से निकला हुआ पानी । ६ हाथी का मद । ७ हाथी । (पु०) सिन्धु देशवासी । (स्त्री०) बड़ी नदी ।—ज, (वि०) १ नदी से उत्पन्न । २ समुद्र से उत्पन्न । ३ सिन्धु देश में उत्पन्न ।—जः, (पु०) चन्द्रमा ।—जं, (न०) सेंधा निमक ।—नाथः, (पु०) समुद्र ।

सिंधुकः }
सिन्धुकः } (पु०) सँभालू वृक्ष । निर्गुण्डी का
सिंधुवारः } पेड़ ।
सिन्धुवारः }

सिंधुरः } (पु०) हाथी ।
सिन्धुरः }

सिन्व् (धा० प०) [सिन्वति] भिंगाना । तर करना ।

सिप्रः (पु०) १ पसीना । २ चन्द्रमा ।

सिप्रा (स्त्री०) १ स्त्री की करधनी। कमरपेटी। २ भैंस। ३ उज्जैन के नीचे बहने वाली नदी।

सिम (वि०) हरेक। सब। तमाम। समूचा।

सिरः (पु०) पिपरामूल की जड़।

सिरा (स्त्री०) १ रक्त नाड़ी। २ डोलची। बाल्टी।

सिव् (धा० प०) [सीव्यति, स्यूत] १ सीना। २ जोड़ना।

सिवरः (पु०) हाथी।

सिषाधयिषा (स्त्री०) १ किसी काम को पूरा करने की इच्छा। २ किसी बात को सिद्ध करने या स्थापित करने की अभिलाषा।

सिसृक्षा (स्त्री०) सृष्टि करने की अभिलाषा।

सिहुंडः } सिहुण्डः } (पु०) सेहुड़। थूहर।

सिह्ल } सिह्लकः } (पु०) शिलारस

सिह्लकी } सिह्ली } (स्त्री०) शिलारस का पेड़।

सीक् (धा० आ०) [सीकते] १ छिड़कना। २ जाना। चलना। [उ०—सीकति, सीकयति, सीकयते] १ उतावला होना। २ धीरज धरना। ३ छूना।

सीकरः (पु०) जलकण। पानी की फुआर। छींट।

सीता (स्त्री०) १ वह रेखा जो ज़मीन जोतते समय हल की फाल के धंसने से ज़मीन पर बन जाती है। कूँड़। २ जोती हुई ज़मीन। ३ किसानी। खेती। ४ जनक की पुत्री और श्रीरामचन्द्र जी की भार्या। ५ एक देवी जो इन्द्र की पत्नी है। ६ उमा का नाम। ७ लक्ष्मी का नाम। ८ आकाशगंगा की उन चार धाराओं में से एक, जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरान्त हो जाती है। ९ मदिरा। शराब।

सीतानकः (पु०) मटर।

सीत्कारः (पु०) } सीत्कृतिः (स्त्री०) } सिसकारी। सी सी शब्द।

सीत्यं (वि०) हल से माँपा हुआ।

सीत्यं (न०) चावल। अनाज।

सीद्यं (न०) काहिली। सुस्ती। दीर्घसूत्रता।

सीधु (पु०) गुड़ की शराब।—गन्धः, (पु०) वकुल वृक्ष।—पुष्पः, (पु०) कदंब का पेड़।—रसः, (पु०) आम का पेड़।—संज्ञः, (पु०) वकुल वृक्ष।

सीध्रं (न०) गुदा। मलद्वार।

सीपः (पु०) नावनुमा यज्ञीय पात्र विशेष।

सीमन् (स्त्री०) १ सीमा। २ अण्डकोष।

सीमंतः } सीमन्तः } (पु०) १ सीमा का चिह्न या रेखा। २ सिर के केशों की माँग। ३ एक वैदिक संस्कार जो प्रथम गर्भस्थिति के चौथे, छठे या अष्टम मास में किया जाता है।

सीमंतकः } सीमन्तकः } (पु०) १ जैनियों के सात नरकों में से एक नरक का अधिपति। २ नरक विशेष का रहने वाला।

सीमंतयति } सीमन्तयति } (क्रि०) १ बालों की तरह विभाजित करना। २ रेखा से अलग करना या चिह्नित करना।

सीमंतित } सीमन्तित } (वि०) १ माँग की तरह अलहदा किया हुआ। २ रेखा से पृथक् या चिह्नित किया हुआ।

सीमंतनी } सीमन्तिनी } (स्त्री०) नारी। औरत। स्त्री।

सीमा (स्त्री०) १ हद। सरहद। मर्यादा। २ सीमा चिह्न। सीमास्तूप। ३ चिह्न। सीमा का निशान। ४ तट। समुद्रतट। ५ अन्तरिक्ष। ६ (जैसा कि खोपड़ी का) जोड़। ७ सदाचार या शिष्टाचार की मर्यादा। ८ सर्वोच्च या दूरातिदूर की हद्द। ९ खेत। क्षेत्र। १० गर्दन का पिछला भाग। ११ अण्डकोष।—अधिप, (पु०) सीमा से मिले हुए राज्य का राजा। पड़ोसी राजा।—अन्तः, (पु०) सीमा की रेखा। सीमा चिह्न।—उल्लङ्घनं, (न०) १ मर्यादा तोड़ना। २ सीमा नाँघना। सरहद्द के बाहिर जाना।—लिङ्गं, (न०) सीमा का निशान।—वादः, सरहद्द निश्चय सम्बन्धी झगड़ा।—विनिर्णय,

(पु०) विवादग्रस्त सीमा का निर्णय।—वृक्षः, (पु०) सीमा पर का पेड़ जो सीमा का चिह्न मान लिया गया हो।—सन्धिः, (पु०) दो सीमाओं का मिलान या मेल।

सीमिकः (पु०) १ वृक्ष विशेष। २ दीमक। ३ दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर।

सीरः (पु०) १ हल। २ सूर्य। ३ मदार का पौधा।—ध्वजः, (पु०) राजा जनक की उपाधि।—पाणिः,—भृत्, (पु०) बलराम।—योगः, (पु०) पशु को हल में जोतना।

सीरकः (पु०) देखो सीर।

सीरिन् (पु०) बलरामजी का नामान्तर।

सीलंदः, सीलन्दः, सीलंधः, सीलन्धः (पु०) एक प्रकार की मछली।

सीव् देखो सिव्,

सीवनं (न०) १ सियन। सिलाई। २ जोड़ (जैसे खोपड़ी का)।

सीवनी (स्त्री०) १ सुई। सूची। २ वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है।

सीसं, सीसकं, सीसपत्रकं (न०) सीसा नामक धातु।

सीहुंडः, सीहुण्डः (पु०) सेंहुड़। थूहर।

सु (धा० उ०) [सुवति, सुवते] (धा० प०) [सवति-सौति] अधिकार रखना। सर्वप्रधानत्व रखना। [उ०—सुनोति, सुनते, सुत] १ दबा कर रस निकालना। २ अर्क खींचना। ३ छिड़कना। छिटकाना। ४ यज्ञ करना, विशेष कर सोम यज्ञ। ५ स्नान करना।

सु (अव्यया०) यह एक अव्यय है जो संज्ञावाची शब्दों के साथ कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में तथा विशेषणवाची एवं क्रिया विशेषण-वाची शब्दों के साथ व्यवहृत किया जाता है। सु के निम्न लिखित अर्थ होते हैं:— १ अच्छा। भला। सर्वोत्तम। यथा सुगन्धि। २ सुन्दर। सुस्वरूप। मनोहर। यथा सुकेशी। ३ भली भाँति। पूरी तौर पर। यथा सुजीर्ण। ४ सहज। तुरन्त। यथा सुकर या सुलभ। ५ अधिक। अत्यधिक। यथा सुदारुण।—अक्ष, (वि०) अच्छी आँखों वाला।—अङ्ग, (वि०) ख़ूबसूरत। सुन्दर।—आकर,—आकृति, (वि०) सुन्दर। मनोहर। ख़ूबसूरत।—आभास, (वि०) बड़ा चमकीला।—इष्ट, (वि०) उपयुक्त रीत्या यज्ञ किया हुआ।—उक्त, (वि०) भलीभाँति कथित।—सूक्तं, (न०) बुद्धिमानी की कहतूत या कहावत।—उक्ति, (स्त्री०) १ मैत्री के कारण कहा हुआ वचन। २ चातुर्यपूर्ण कथन। ३ शुद्ध वाक्य।—उत्तर, (वि०) १ अत्यन्त उत्कृष्ट। २ उत्तर दिशा की ओर।—उत्थान, (वि०) अच्छा उद्योग करने वाला। पराक्रमी। क्रियावान।—उत्थानं, (न०) ज़ोरदार उद्योग या प्रयत्न।—उन्मद,—उन्माद, (वि०) नितान्त पागल या सनकी।—उपसद्न, (वि०) सहज में पास जाने योग्य।—उपस्करः, (वि०) वह जिसके पास अच्छे औज़ार हों।—कण्डुः, (पु०) खुजली। खाज।—कंदः, (पु०) १ कसेरू। २ रतालू। ज़मीनकंद। ३ घास विशेष।—कन्दकः, (पु०) १ प्याज। २ बाराहीकंद। ३ मिर्वोली कन्द। गेंठी।—कर, (वि०) [स्त्री०—सुकरा, सुकरी] १ जो सहज में हो सके। जो आसानी से हो सके। २ जो सहज में सुव्यवस्थित किया जा सके या जिसका इन्तजाम आसानी से हो सके।—सुकरा, (स्त्री०) अच्छी और सीधी गौ।—सुकरं, (न०) धर्मादा। पुण्यदान।—कर्मन्, (वि०) १ पुण्यात्मा। धर्मात्मा। २ परिश्रमी। मिहनती। (पु०) विश्वकर्मा का नाम।—कल, (वि०) ऐसा पुरुष जिसने उदारता पूर्वक अपना धन देने और उसका सद्व्यय करने के लिये प्रसिद्धि प्राप्त की हो।—काण्डिन्, (वि०) १ सुन्दर डाली वाला। २ सुन्दर रीति से जुड़ा हुआ (पु०) भौंरा। मधु-

मक्खिका।—कालुका, (स्त्री०) भटकटैया।—काष्ठं, (न०) ईंधन।—कुन्दकः, (पु०) प्याज।—कुमार, (वि०) अत्यन्त नाज़ुक या कोमल। अत्यन्त चिकना।—कुमार, (पु०) १ ख़ूबसूरत जवान। २ ऊख। ईख।—कुमारकः, (पु०) १ सुन्दर युवा पुरुष। २ चावल।—कुमारकं, (न०) तमालपत्र। तमाखू।—कृत्, (वि०) १ दानशील। परहितैषी। २ पुण्यात्मा। धर्मात्मा। ३ बुद्धिमान। विद्वान्। ४ भाग्यवान्। ख़ुशक़िस्मत। ५ यज्ञ करने वाला। (पु०) १ निपुण कारीगर। २ त्वष्टा।—कृत, (वि०) १ भली भाँति किया हुआ। २ भली भाँति बनाया हुआ। ३ मित्र बनाए हुआ। सद्व्यवहार किया हुआ। ५ धर्मात्मा। धर्मशील। पुण्यात्मा। ६ भाग्यवान। क़िस्मतवर।—सुकृतं, (न०) १ पुण्य। सत्कार्य। भला काम। २ दान। ३ पुरस्कार। ४ दया। मेहरबानी।—कृतिः, (स्त्री०) १ पुण्य कार्य। २ तपस्या।—कृतिन्, (वि०) १ भलीभाँति कार्य करने वाला। २ पुण्यात्मा। धर्मात्मा। ३ बुद्धिमान। ४ परहितैषी। ५ भाग्यवान। ख़ुशक़िस्मत।—केशरः,—केसरः, (पु०) नीबू का वृक्ष।—क्रतु, (पु०) १ अग्नि। २ शिव। ३ इन्द्र। ४ मित्र और वरुण। सूर्य।—ग, (वि०) १ भली चाल से चलने वाला। २ सुडौल। छबीला। ३ सुगम। ४ बोधगम्य। सहज में समझने लायक।—गं, (न०) १ मल। विष्ठा। २ प्रसन्नता। हर्ष।—गत, (वि०) १ भली प्रकार गुज़रा या बीता हुआ। २ भली भाँति दिया हुआ।—गतः, (पु०) बुद्ध देव का नाम।—गन्धः, (पु०) १ महक। गन्ध। बू। २ गन्धक। ३ व्यापारी।—गन्धं, (न०) १ चन्दन। २ ज़ीरा। ३ नील कमल। ४ गन्धतृण। गंधेज घास।—गन्धा, (स्त्री०) तुलसी।—गन्धकः, (पु०) १ गन्धक। २ लाल तुलसी। ३ नारंगी। ४ कडुआ।—गन्धि, (वि०) १ सुगन्धि। अच्छी ख़ुशबू। २ धर्मात्मा। पुण्यात्मा।—गन्धि, (पु०) १ अच्छी सुगन्धि। २ परब्रह्म। ३ मधुर सुगन्धियुक्त आम।—सुगन्धि, (न०) १ पिपरामूल। २ एक प्रकार की सुगन्ध युक्त घास। ३ धनिया।—गन्धिकः, (पु०) १ धूप। २ गन्धक। ३ चावल विशेष।—गन्धिकं, (न०) सफेद कमल।—गम, (वि०) १ सहज में जाने योग्य। २ स्पष्ट। बोधगम्य।—गहना, (स्त्री०) वह हाता जो यज्ञमण्डप के चारों ओर भ्रष्ट एवं पतित लोगों को रोकने के लिये बनाया जाता है।—ग्रासः, (पु०) सुस्वादु कवर या निवाला।—ग्रीव, (वि०) गरदन वाला।—ग्रीवः, (पु०) १ बहादुर। २ हंस। ३ हथियार विशेष। ४ वानरराज वालि के छोटे भाई का नाम।—ग्लं, (वि०) बहुत थका हुआ।—चक्षुस्, (वि०) अच्छे नेत्रों वाला। अच्छा देखने वाला। (पु०) १ पण्डित जन। २ सघन वट वृक्ष।—चरित,—चरित्र, (वि०) भलीभाँति व्यवहार करने वाला। अच्छे चालचलन का।—चरितं—चरित्रं, (न०) अच्छा चाल चलन। पुण्य कार्य।—चरिता,—चरित्रा, (स्त्री०) अच्छे चाल चलन की स्त्री या पत्नी।—चित्रकः, (पु०) १ मुर्गाबी। मत्स्यरंग पक्षी। २ चितला साँप। चित्र सर्प।—चिरम्, (अव्यया०) दीर्घ काल।—चिरायुस् (पु०) देवता। देवयोनि।—जनः, (पु०) १ परहितैषी जन। २ भद्र पुरुष।—जनता, (स्त्री०) १ नेकी। कृपा। परहितैषिता। २ सज्जन जन।—जन्मन्, (वि०) कुलीन जन।—जल्पः, (पु०) सुभाषित।—जात, (वि०) १ कुलीन। अच्छे कुल का। २ सुन्दर। मनोहर।—तनु, (वि०) १ अच्छे शरीर वाला। २ अत्यन्त सुकुमार या लटा दुबला। ३ लटा हुआ।—तनुः,—तनूः, (स्त्री०) सुन्दर शरीर।—तपस्, (वि०) १ तपस्या करने वाला। २ वह जिसमें अत्यधिक गर्मी हो। (पु०) १ साधु। भक्त। २ सूर्य। (न०) तपस्या। तप।—तराम्, (अव्यया०) १ बेहतर। अधिकतर उत्तमता से। बहुत। अत्यधिक।—तर्दनः, (पु०) कोकिल।—तलं, (न०) १ सप्त अधो लोकों में से एक। २ विशाल भवन की नींव।—

तिक्तकः, (पु०) मूँगे का पेड़ ।—तीक्ष्ण, (वि०) १ बड़ा तीव्र । २ बड़ा चरपरा । ३ अत्यन्त पीडाकारक ।—तीक्ष्णः, (पु०) १ सिग्रू का पेड़ । २ एक ऋषि का नाम जो श्री राम चन्द्र जी के समय में थे ।—तीर्थः, (पु०) १ अच्छा गुरु । २ शिव जी ।—तुङ्ग, (वि०) बहुत ऊँचा । बहुत लंबा ।—तुङ्गः (पु०) नारियल का पेड़ ।—दक्षिण (वि०) १ बहुत सच्चा । बड़ा ईमानदार । २ यज्ञ की दक्षिणा देने में बड़ा उदार ।—दक्षिणा, (स्त्री०) दिलीप की पत्नी । —दण्डः, (पु०) बेत ।—दन्त, (वि०) अच्छे दाँतो वाला ।—दन्तः, (पु०) १ अच्छा दाँत । २ नट । नचैया ।—दन्ती, (स्त्री०) उत्तर पश्चिम दिशा के दिग्गज की हथिनी ।—दर्शन, (वि०) १ खूबसूरत । २ जो सहज में देखा जा सके ।—दर्शनः, (पु०) १ विष्णु भगवान् का चक्र । २ शिव जी का नाम । ३ गीध । गिद्ध । —दर्शनं, (न०) जम्बुद्वीप ।—दर्शना, (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ स्त्री । ३ आज्ञा । आदेश । ४ एक प्रकार की दवाई ।—दामन्, (वि०) उदारता पूर्वक देने वाला । (पु०) १ बादल । २ पहाड़ । ३ समुद्र । ४ इन्द्र का हाथी । ५ श्री कृष्ण के सखा एक धनहीन ब्राह्मण का नाम ।—दायः, (पु०) शुभ-भेंट । शुभ दान । वह दान विशेष जो किसी पर्व विशेष पर दिया जाय ।—दिनं, (न०) शुभ अवसर । सुदिन । —दीर्घ, (वि०) बहुत लंबा ।—दीर्घा, (स्त्री०) ककड़ी विशेष ।—दुर्लभ, (वि०) विरला ।—दूर, (वि०) बहुत दूर या फासले पर ।—दृश्, (वि०) अच्छे नेत्रों वाला ।—धन्वन्, (वि०) अच्छे धनुष वाला (पु०) १ अच्छा तीरंदाज़ । २ विश्वकर्मा का नामान्तर ।—धर्मन्, (स्त्री०) देवताओं की सभा ।—धर्मा, —धर्मी, (स्त्री०) देवसभा ।—धी, (स्त्री०) अच्छी बुद्धि वाला । चतुर । बुद्धिमान ।—धीः, (पु०) पण्डित जन । (स्त्री०) सुबुद्धि ।—नन्दा, (स्त्री०) नारी । स्त्री ।—नयः, (पु०) १ अच्छा चाल चलन । २ सुनीति । अच्छी नीति ।—नयनः, (पु०) १ हिरन । मृग ।—नयना, (स्त्री०) १ अच्छे नेत्रों वाली स्त्री । २ नारी । स्त्री ।—नाभ, (वि०) अच्छी नाभि वाला ।—नाभः, (पु०) १ पर्वत । पहाड़ । २ मैनाक पर्वत । —निभृत, (वि०) नितान्त निर्जन ।—निश्चलः, (पु०) शिव ।—नीत, (वि०) १ सुचालित । सद्व्यवहारयुक्त । २ सज्जन । शिष्ट । —नीतं, (न०) १ सद्व्यवहार । अच्छा चाल-चलन । २ सुनीति ।—नीतिः, (पु०) १ अच्छा चाल चलन । २ अच्छी नीति । ३ ध्रुव की माता का नाम ।—नीथ, (वि०) धर्मात्मा । पुण्यात्मा । —नीथः, (पु०) १ ब्राह्मण । २ शिशुपाल का नाम ।—नीलः, (पु०) अनार का पेड़ ।—नीला, (स्त्री०) १ चणिका तृण । चनिका घास । २ नीला पराजिता । नीले रंग की अपराजिता । नीली कोयल । ३ तीसी । अलसी ।—पक्व, (वि०) भलीभाँति राँधा हुआ । भलीभाँति पका हुआ । —पक्वः, (पु०) एक प्रकार का खुशबूदार आम । —पत्नी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति नेक हो ।—पथः (पु०) १ अच्छी सड़क । २ अच्छा मार्ग । ३ अच्छा चाल चलन ।—पथिन्, (पु०) [कर्ता एक०—सुपन्थाः] अच्छी सड़क ।—पर्ण, (वि०) १ अच्छे पंखों वाला । २ अच्छे पत्तों वाला ।—पर्णः, (पु०) १ सूर्य की किरण । २ देवयोनि विशेष । ३ कोई भी अलौकिक पक्षी । ४ गरुड़ जी का नाम । ५ मुर्गा ।—पर्णा,—पर्णी, (स्त्री०) १ कमलसमूह । वह तालाब जिसमें कमलों की बहुतायत हो । ३ गरुड़ की माता का नाम ।—पर्याप्त, (वि०) १ बहुत लंबा चौड़ा । २ भली भाँति सजा हुआ ।—पर्वन्, (वि०) १ भली भाँति ग्रन्थित । २ बहुत गाँठ गठीला । (पु०) १ बांस । २ तीर । ३ देवता । ४ पूर्णिमा । अमावास्या, अष्टमी और चतुर्दशी तिथियां । ५ धूम । धुआँ ।—पात्रं, (न०) अच्छा बरतन । सुपात्र । २ उपयुक्त मनुष्य । योग्य व्यक्ति ।—पाद्, (स्त्री०) सुन्दर पैरों वाला । —पार्श्वः, (पु०) प्लक्ष नामक पेड़ । पाकर का पेड़ ।—पीतं, (न०) गाजर ।—पीतः, (पु०)

पाँचवाँ मुहूर्त्त।—पुष्पः, (पु०) मूँगे का पेड़। —पुष्पं, (न०) लौंग। लवंग। २ स्त्रियों का रज।—प्रवर्त्तकः, (पु०) सुविचारित निर्णय या फ़ैसला।—प्रतिभा, (स्त्री०) शराब।—प्रतिष्ठ, (वि०) १ भलीभाँति खड़ा हुआ। २ बहुत प्रसिद्ध।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०) अच्छा पद। २ सुकीर्ति। नेकनामी। सुयश। ३ स्थापना। प्रतिष्ठा। ४ प्राणप्रतिष्ठा।—प्रतिष्ठित, (वि०) १ भलीभाँति स्थापित। २ अर्पित। ३ प्रसिद्ध। —प्रतिष्ठितः, (पु०) उदुम्बर का पेड़। गूलर का पेड़।—प्रतिध्मात, (वि०) १ भली प्रकार पवित्र किया हुआ। २ भलीभाँति परिचित।—प्रतीक, (वि०) सुन्दर। मनोहर।—प्रतीकः, (पु०) १ कामदेव का नाम। २ शिव। ३ ईशान कोण का दिग्गज।—प्रपाणं (न०) अच्छा तालाब। —प्रभ, (वि०) बहुत तड़कीला भड़कीला।—प्रभा, (स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।—प्रभातं, (न०) १ शुभ प्रभात। मङ्गलमय प्रातःकाल। २ बड़ा तड़का।—प्रयोगः, (पु०) १ सुव्यवस्था। अच्छा प्रबन्ध। २ निपुणता। पटुता।—प्रसाद, (वि०) अत्यन्त शुभ।—प्रसादः, (पु०) शिवजी।—प्रिय, (वि०) अत्यन्त रुचिकर। बहुत पसंद।—प्रिया, (स्त्री०) १ मनोहारिणी स्त्री। २ प्रेयसी।—फल, (वि०) १ बहुत फलने वाला। २ बहुत उपजाऊ।—फलः (पु०) १ अनार का पेड़। २ बेरी का पेड़। ३ मूँग।—फला, (स्त्री०) १ पेठा। कुम्हड़ा। २ केले का पेड़। ३ कपिल द्राक्षा। मुनक्का।—बन्धः, (पु०) तिल्ली। तिल।—बलः, (पु०) शिवजी। —बोधः, (पु०) अच्छी सलाह या परामर्श। —ब्रह्मण्यः, (पु०) १ कार्त्तिकेय। २ उद्गाता पुरोहित या उसके तीन साथियों में से एक। —भग, (वि०) १ बड़ा भाग्यवान या सौभाग्यशाली। २ सुन्दर। मनोहर। ३ मधुर। प्रिय। ४ प्रेमपात्र। प्यारा। ५ प्रसिद्ध।—भगः, (पु०) १ सुहागा। २ अशोक वृक्ष। ३ चम्पक वृक्ष। ४ लाल कटसरैया।—भगं, (न०) सौभाग्य। खुशकिस्मती।—भगा, (स्त्री०) १ वह स्त्री जिसको उसका पति प्यार करता हो। २ पूज्या माता। ३ बेला। मोतिया। ४ हल्दी। ५ तुलसी। —भङ्गः, (पु०) नारियल का पेड़।—भद्र, (वि०) अत्यन्त प्रसन्न या भाग्यवान्।—भद्रः,(पु०) विष्णु का नाम।—भद्रा, (स्त्री०) बलराम तथा श्रीकृष्ण की बहिन।—भाषितं, (न०) उत्तम वाणी। अच्छी तरह की बोली।—भ्रूः, (स्त्री०) सुन्दर स्त्री।—मति, (वि०) बहुत बुद्धिमान।—मतिः, (स्त्री०) अच्छा मन। कृपालुता। परहितैषिता। सुहृदता। मैत्री। २ देवता का अनुग्रह। ३ आशीर्वाद। दया। ४ प्रार्थना। गीत। ५ अभिलाष। ६ सगर की भार्या का नाम।—मदनः, (पु०) आम का पेड़।—मध्य,—मध्यम, (वि०) पतली कमर वाला।—मध्या,—मध्यमा, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री। —मन, (वि०) सुन्दर। खूबसूरत।—मनः, (पु०) १ गेहूँ। २ धतूरा—मना, (स्त्री०) चमेली। जाती पुष्प। २ सेवती। शतपत्री।—सुमनस्, (वि०) १ अच्छे मन का। २ सन्तुष्ट। प्रसन्न। (पु०) देवता। देवत्व। २ पण्डित जन। ३ वेदपाठी ब्रह्मचारी। ४ गेहूँ। ५ नीम का पेड़।—मित्रा, (स्त्री०) लक्ष्मण जननी और महाराज दशरथ की एक रानी का नाम।—मुख, (वि०) मनोहर। सुन्दर। २ आह्लादकर। ३ उत्सुक। —मुखः, (पु०) १ पण्डित जन। २ गरुड़। ३ (पु०) १ पण्डित जन। २ गरुड़। ३ गणेश। ४ शिव।—मुखं, (न०) नख का खरोंटा या खरोंच।—मुखा,—मुखी, (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री। २ आईना।—मूलकं (न०) गाजर।—मेधस्, (वि०) उत्तम बुद्धि वाला। बुद्धिमान। (पु०) बुद्धिमान आदमी।—मेरुः, (पु०) १ मेरु नामक पर्वत। २ शिवजी का नाम।—यवसं, (न०) सुन्दर घास। अच्छा चरागाह।—योधनः, (पु०) दुर्योधन का नामान्तर।—रक्तकः, (पु०) १ गेरू। २ आम्रवृक्ष की तरह का एक पेड़।—रङ्गः, (पु०) अच्छा रंग।—रञ्जनः, (पु०) सुपारी का पेड़।—रत, (वि०) १ बड़ा खिलाड़ी। २ खिलाड़ी। ३ अत्यधिक उपयुक्त। ४ दयालु। कोमल।—रतं, (न०) १

अत्यन्त हर्ष या आनन्द । २ स्त्री-मैथुन । रतिबंध । पुष्पगुच्छ जो सिर पर धारण किया जाय ।—रतिः, (स्त्री०) बड़ा उपभोग या सन्तोष ।—रसं, (न०) १ रसीला । रसादार । २ मधुर । ३ सुन्दर ।—रसः,(पु०)—रसा, (स्त्री०) सिन्धुवार नामक पौधा ।—रसा, (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।—रूप, (वि०)१सुन्दर । मनोहर रूपवान । सम्भव । २ बुद्धिमान । पण्डित ।—रूपः, (पु०) शिवजी का नामान्तर ।—रेभ, (वि०) सुस्वर । सुरीला । अच्छे कण्ठ वाला ।—रेभं, (न०) टीन । जस्ता । —लक्षण, (वि०) १ शुभ लक्षणों से युक्त । अच्छे लक्षणों वाला । २ भाग्यवान । किस्मतवर । —लक्षणं, (न०) १ शुभ लक्षण । शुभ चिह्न । —लभ, (वि०) १ सहज में मिलने योग्य । २ योग्य । उपयुक्त ।—लोचन, (वि०) अच्छे नेत्रों वाला ।—लोचनः, (पु०) मृग । हिरन ।—लोचना, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—लोहकं, (न०) पीतल ।—लोहित, (वि०) बहुत लाल ।—लोहिता, (स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।—वक्त्रं, (न०) १ अच्छा चेहरा । २ शुद्ध उच्चारण ।—वचनं,—वचस्, (न०) वाक्पटुता ।—वर्चिकः, (पु०)—वर्चिका, (स्त्री०) सज्जी । स्वर्जिकाक्षार ।—वह, (वि०) १ सहज में वहन करने या उठाने योग्य । २धैर्यवान । धीर ।—वासिनी, (स्त्री०) १ विवाहिता अथवा अनविवाहिता वह स्त्री जो अपने पिता के घर में रहे । २ विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो ।—विक्रान्त, (वि०) बड़ा पराक्रमी । बड़ा बहादुर ।—विक्रान्तं, (न०) वीरता । बहादुरी ।—विदू, (पु०) विद्वज्जन । (स्त्री०) चतुर या चालाक स्त्री ।—विदः, (पु०) ज़नानखाने का अनुचर ।—विदत्, (पु०) राजा ।—विदल्ल०, (पु०) ज़नानख़ाने । का चाकर ।—विदल्लं, (न०) ज़नानख़ाना । अन्तःपुर ।—विदल्ला, (स्त्री०) विवाहिता स्त्री । —विध, (वि०) अच्छी जाति का ।—विधं, (अव्यया०) सहज में ।—विनीत, (वि०) विनम्र । सुशिक्षित ।—विनीता, (स्त्री०) सीधी गौ ।—विहित, (वि०) १ भलीभाँति जमा कराया हुआ । २ भलीभाँति सजाया हुआ । भलीभाँति व्यवस्थित ।—वीज,—वीज, (वि०) अच्छे बीज वाला ।—वीजः,—वीजः, (पु०) १ शिवजी । २ पोस्ता का दाना ।—वीजं,—वीजं, (न०) अच्छा बीज ।—वीराम्लं, (न०) खट्टी कांजी ।—वीर्य (वि०) बड़े पराक्रम वाला । वीर । बहादुर ।—वीर्यं, (न०) बहादुरी । बहादुरों का बाहुल्य । —वीर्या, (स्त्री०) वनकपास । वनकार्पासी ।—वृत्त, (वि०) १ धर्मात्मा । पुण्यात्मा । नेक । २ सुन्दर । खूबसूरत ।—वेल, (वि०) १ शान्त । निस्तब्ध । २ विनीत । चुपचाप ।—वेलः, (पु०) त्रिकूट पर्वत का नाम ।—व्रत, (वि०) साधु । व्रतों का पालन करने वाला ।—व्रता, (स्त्री०) १ पतिव्रता स्त्री । २ सीधी गौ । वह गौ जो सहज में दुह ली जाय ।—शंस, (वि०) प्रसिद्ध । मशहूर । प्रशंसित ।—शक, (वि०) सुलभ । सहज में होने योग्य । आसान ।—शल्यः, (पु०) खदिर का पेड़ ।—शाकं, (न०) अदरक । आर्द्रा ।—शासित, (वि०) भलीभाँति क़ाबू में किया हुआ । —शिक्षित, (वि०) उत्तम तरह शिक्षा पाया हुआ ।—शिखः, (पु०)—शिखा, (स्त्री०) १ मोर की कलँगी । २ मुर्गे की कलँगी ।—शील, (वि०) १ उत्तम शील वाला । २ उत्तम स्वभाव वाला । शीलवान । ३ सच्चरित्र । साधु । ४ विनीत । नम्र । ५ सरल । सीधा । —शीला, (स्त्री०) १ यमराज की पत्नी का नामान्तर । २ श्रीकृष्ण की आठ मुख्य रानियों में से एक का नाम ।—श्रुत, (वि०) १ अच्छी तरह सुना हुआ । २ वेदविद्या में निपुण ।—श्रुतः, (पु०) आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के एक प्रसिद्ध आद्याचार्य । २ इनका बनाया ग्रन्थ विशेष । ३ श्राद्ध के अन्त में ब्राह्मण से यह प्रश्न कि आप तृप्त हो गये न ।—श्लिष्ट, (वि०) भलीभाँति मिला या जुड़ा हुआ ।—श्लेषः, (पु०) भलीभाँति आलिङ्गन करने की क्रिया ।—सदृश, (वि०) देखने में अच्छा ।—सन्नत (वि०)

भली प्रकार चलाया हुआ। जैसे बाण।—सह, (वि०) १ सहज में सहने योग्य। २ सहज में वहन करने योग्य।—सहः, (पु०) शिवजी। —सार, (वि०) अच्छा रस वाला। सारवान। —सारः, (पु०) १ अच्छा रस। २ लाल फल का खदिर वृक्ष। ३ वैधक्षमता।—स्थ, (वि०) १ नीरोग। भला चंगा। तंदुरुस्त। २ समृद्धवान। समृद्धशाली। ३ प्रसन्न। हर्षित। सुखी।—स्थं, (न०) सुखी दशा। अच्छी हालत।—स्थता,—स्थितिः, (स्त्री०) १ अच्छी दशा। सुख। हर्ष। २ तंदुरुस्ती।—स्मित, (वि०) आनन्द से मुसक्याता हुआ। —स्मिता, (स्त्री०) प्रसन्न वदना स्त्री।—स्वर, (वि०) १ सुरीला। अच्छा कंठ वाला। ३ ऊँचस्वर का।—हित, (वि०) १ अत्यन्त योग्य या उपयुक्त। २ लाभकारी। गुणकारी। ३ स्नेही। प्यारा। ४ सन्तुष्ट।—हिता, (स्त्री०) अग्नि की सप्त जिह्वाओं में से एक।—हृद्, (वि०) १ अच्छे हृदय वाला। (पु०) १ मित्र। सखा। बन्धु। दोस्त। २ ज्योतिष के अनुसार लग्न से चौथा स्थान, जिससे यह जाना जाता है कि मित्र आदि कैसे होंगे।—हृदः (पु०) मित्र।—हृदय, (वि०) १ अच्छे हृदय वाला। २ प्यारा। स्नेही। प्रिय।

सुख (वि०) १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति जिसके द्वारा अनुभव कर्त्ता का विशेष समाधान और सन्तोष होता है और जिसके बराबर बने रहने की उसे सदा अभिलाषा बनी रहती है। २ प्रिय। मधुर। मनोहर। ३ धर्मात्मा। पुण्यात्मा। ४ आनन्द। हर्ष। ५ सरल। होने या करने योग्य। ६ योग्य। उपयुक्त।

सुखं (न०) १ आनन्द। हर्ष। प्रसन्नता। सुख। चैन। २ समृद्धि। ३ नीरोगता। तंदुरुस्ती। आरोग्यता। सौख्य। ४ सरलता। आसानी। ५ स्वर्ग। ६ जल। पानी।

सुखं (अव्यया०) १ सहर्ष। आनन्द से। २ भला। ३ आराम के साथ। ४ आसानी से। सहज में। ५ राज़ी से। रज़ामंदी से। ६ चुपचाप। खामोशी से।—आधारः, (पु०) स्वर्ग।—आप्लवः, (वि०) नहाने के लिये उपयुक्त।—आयतः,—आयनः, (पु०) सुशिक्षित घोड़ा। आरोहः, (पु०) सहज में सवारी लायक।—आलोक, (वि०) देखने में सुन्दर। खूबसूरत। —आवह, (वि०) सुख देने वाला। आराम देने वाला।—आश, (पु०) वरुण का नाम। —आशकः, (पु०) ककड़ी।—आस्वाद, (वि०) १ अच्छे ज़ायके का। २ आनन्ददायी। —आस्वादः, (पु०) १ अच्छा ज़ायका। अच्छा स्वाद। २ (आनन्द का) उपभोग।—उत्सवः, (पु०) १ आनन्दावसर। २ पति। स्वामी।—उदकं, (न०) गर्म पानी।—उदयः, (पु०) आनन्द की प्राप्ति या अनुभव।—उदर्क, (वि०) परिणाम में सुखदायी।—उद्य, (वि०) सुख से उच्चारण योग्य।—उपविष्ट, (वि०) सुख से बैठा हुआ।—एषिन्, (वि०) सुख की चाहना करने वाला।—कर,—कार, —दायक, (वि०) आनन्ददायी। हर्षप्रद।—द, (वि०) आनन्ददायी।—दं, (न०) विष्णु का आसन।—दा, (स्त्री०) इन्द्र के स्वर्ग की अप्सरा।—बोध, (पु०) १ आनन्द का अनुभव। २ सरल ज्ञान।—भागिन्,—भाज्, (पु०) आनन्द।—श्रव,—श्रुति, (वि०) कर्णमधुर। सुरीला।—संगिन्, (वि०) सुख का साथी।—स्पर्श, (वि०) छूने से सुख देने वाला।

सुत (व० कृ०) १ उड़ेला हुआ। २ खींचा हुआ। निकाला हुआ। ३ पैदा किया हुआ। पाया हुआ। —आत्मज, (पु०) पौत्र। पुत्र का पुत्र। नाती। —आत्मजा, (स्त्री०) पौत्री। पुत्र की पुत्री। नातिन।—उत्पत्तिः, (स्त्री०) पुत्र की पैदायश।—निर्विशेषं, (न०) ठीक पुत्र जैसा।—वत्करा, (स्त्री०) वह, स्त्री जिसके ७ पुत्र हों।—स्नेहः, (पु०) माता पिता का स्नेह।

सुतः (पु०) १ पुत्र। २ राजा।

सुतवत् (वि०) वह जिसके सुत हो। पुत्रवान। (पु०) एक पुत्र का पिता।

सुता (स्त्री०) लड़की । पुत्री ।

सुतिः (स्त्री०) सोमरस का निकालना ।

सुतिन् (वि०) [स्त्री०—सुतिनी] पुत्र या पुत्रों वाली । लड़कौरी । (पु०) पिता ।

सुतिनी (स्त्री०) माता ।

सुतुस् (वि०) भली आवाज़ वाला ।

सुत्या (स्त्री०) १ सोमरस को निकालने या तैयार करने की क्रिया । २ यज्ञीय नैवेद्य । ३ सन्तान प्रसव । गर्भमोचन ।

सुत्रामन् (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

सुत्वन् (पु०) १ सोमरस पीने या चढ़ाने वाला । वह ब्रह्मचारी जिसने यज्ञीय कर्म करने के पूर्व अपना मार्जन या अभिषेक किया हो ।

सुदि (अव्यया०) शुक्ल पक्ष में ।

सुधन्वाचार्यः (पु०) पतित वैश्य का पुत्र जो वैश्या माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो ।

सुधा (स्त्री०) १ अमृत । २ पुष्पों का शहद । ३ रस । ४ जल । ५ गंगा जी का नाम । ६ सफेदी । अस्तरकारी । गारा । ७ ईंट । ८ बिजली । ९ सेंहुड़ । थूहर ।—अंशुः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—अंशुरत्नं, (पु०) मोती ।—अंगः, —आकारः,—आधारः, (पु०) चन्द्रमा ।—जीविन्, (पु०) मैमार । राज । थवई ।—द्रवः, (पु०) अमृत जैसा तरल पदार्थ ।—धवलित, (वि०) अस्तरकारी किया हुआ । कलई या सफेदी किया हुआ । चूना से पुता हुआ ।—निधिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—भवनं, (न०) अस्तरकारी किया हुआ मकान ।—भित्तिः, (स्त्री०) १ अस्तरकारी की हुई दीवाल । २ ईंट की दीवाल । ३ दोपहर के बाद का पाँचवाँ मुहूर्त या घंटा ।—भुज्, (पु०) देवता ।—भृतिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ यज्ञ ।—मधं, (न०) १ चूना या पत्थर का भवन या घर । २ राजमहल ।—वर्षः, (पु०) अमृत-वृष्टि ।—वर्षिन्, (पु०) ब्रह्मा की उपाधि ।—वासः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—वासा, (स्त्री०) खीरा । त्रपुषी ।—सित, (वि०) १ गारा की तरह सफेद । २ अमृत की तरह चमकीला । ३ अमृत से बंधा हुआ । ४ चूना किया हुआ । सफेदी से पुता हुआ ।—सूतिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ यज्ञ । ३ कमल ।—स्यन्दिन्, (वि०) अमृत बहाने वाला ।—हरः, (पु०) गरुड़ जी की उपाधि ।

सुधितिः (पु० स्त्री०) कुल्हाड़ी ।

सुनारः (पु०) १ कुतिया का दूध । २ साँप का अंडा । ३ चटक पक्षी । गौरैया ।

सुनासीरः } (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।
सुनाशीरः }

सुंदः } (पु०) निकुंभ का पुत्र और उपसुंद का भाई एक दैत्य ।
सुन्दः }

सुंदर } (वि०) [स्त्री०—सुन्दरी] १ प्रिय । खूबसूरत । मनोहर । २ ठीक । सही ।
सुन्दर }

सुंदरः } (पु०) कामदेव का नाम ।
सुन्दरः }

सुंदरी } (स्त्री०) खूबसूरत औरत । सुस्वरूपा नारी ।
सुन्दरी }

सुप्त (व० कृ०) १ सोया हुआ । २ लकवा मारा हुआ । ३ बेहोश । बदहवास ।—जनः, (पु०) अर्ध रात्रि ।—ज्ञानं, (न०) स्वप्न । —त्वच्, (वि०) सुन्न ।

सुप्तं (न०) प्रगाढ़ निद्रा । निद्रा ।

सुप्तिः (स्त्री०) १ निद्रा । सुस्ती । औंघाई । निद्रा-सापन । २ लकवा । चैतन्य राहित्य । अचैतन्यता । ३ विश्वास । भरोसा ।

सुमं (न०) सुमन । फूल ।

सुमः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ आकाश ।

सुरः (पु०) १ देवता । २ तेंतीस की संख्या । ३ सूर्य । ४ महात्मा । ऋषि । विद्वज्जन ।—अंगना, (स्त्री०) स्वर्ग की अप्सरा ।—अधिपः, (पु०) इन्द्र ।—अरिः, (पु०) देवशत्रु । दैत्य ।—अर्हं, (न०) १ सुवर्ण । २ केसर । जाफ़रान ।—आचार्यः, (पु०) बृहस्पति ।—आपगा, (स्त्री०) आकाश गंगा ।—आलयः, (पु०) १ मेरुपर्वत ।

२ स्वर्ग।—इज्यः, (पु०) बृहस्पति का नाम। —इज्या, (स्त्री०) तुलसी।—इन्द्रः,—ईशः, —ईश्वरः, (पु०) इन्द्र का नाम।—उत्तमः, (पु०) १ सूर्य। २ इन्द्र।—उत्तरः, (पु०) चन्दन का वृक्ष।—ऋषिः, (=सुरर्षि) (पु०) देवर्षि।—कारुः, (पु०) विश्वकर्मा की उपाधि। —कार्मुकं, (न०) इन्द्र धनुष।—गुरुः, (पु०) बृहस्पति का नामान्तर।—ग्रामणी, (पु०) इन्द्र का नामान्तर।—ज्येष्ठः, (पु०) ब्रह्मा।—तरुः, (पु०) स्वर्ग का एक वृक्ष।—तोपकः, (पु०) कौस्तुभमणि।—दारु, (न०) देवदारु वृक्ष।—दीर्घिका, (स्त्री०) श्रीगंगा जी।—दुन्दुभी, (स्त्री०) तुलसी।—द्विप, (पु०) १ देवताओं का हाथी। २ ऐरावत हाथी का नामान्तर।—द्विष्, (पु०) दैत्य।—धनुस्, (न०) इन्द्र धनुष।—धूपः, (पु०) तारपीन। राल। —निम्नगा, (स्त्री०) श्रीगङ्गा जी।—पतिः, (पु०) इन्द्र।—पथं, (न०) आकाश। स्वर्ग। —पर्वतः, (पु०) मेरुपर्वत।—पादपः, (पु०) स्वर्ग का एक वृक्ष। कल्पतरु।—प्रियः (पु०) १ इन्द्र का नाम।—भूयं, (न०) पुरस्कार में देवत्वग्रहण। गौरव या मर्यादान्वितकरण।—भुरुहः, (पु०) देवदारु वृक्ष।—युवतिः, (स्त्री०) अप्सरा।—नासिका, (स्त्री०) बाँसुरी। नफीरी। —लोकः, (पु०) स्वर्ग।—वर्त्मन्, (न०) आकाश।—वल्ली, (स्त्री०) तुलसी।—विद्विष्, —वैरिन्,—शत्रुः, (पु०) दुष्ट आत्मा। दानव। दैत्य।—सद्मन्, (न०) स्वर्ग।—सरित् —सिन्धु (स्त्री०) श्रीगङ्गा।—सुंदरी, (स्त्री०) —स्त्री, (स्त्री०) अप्सरा।

सुरभि (वि०) १ अच्छी सुगन्धि से युक्त। खुशबूदार। २ प्रसन्न कारक। प्रिय। ३ चमकीला। मनोहर। ५ प्रेम पात्र। ६ प्रसिद्ध। ७ बुद्धिमान्। पण्डित। ८ नेक। पुण्यात्मा।

सुरभिः (पु०) १ महक। सुगन्धि। २ जातीफल। जायफल। ३ चंपक वृक्ष। ४ साल वृक्ष की राल। ५ समी वृक्ष। ६ कदंब वृक्ष। ७ एक प्रकार की सुगन्ध युक्त घास। ८ वसन्त ऋतु। (स्त्री०) १ एलुवा। एलुवालुक। २ जटामाँसी। ३ मोतिया। बेला। ४ मुरामाँसी। एकांगी। ५ शराब। मदिरा। ६ पृथिवी। ७ गो। सुरभी नामक गौ विशेष। ८ मातृओं में से एक। (न०) १ सुगन्धि। २ गन्धक। ३ सुवर्ण।—घृतं, (न०) खुशबूदार घी।—त्रिफला, (स्त्री०) १ जायफल। २ लवंग। ३ सुपारी।—बाणः, (पु०) कामदेव।—मासः, (पु०) वसन्तऋतु। —मुखं, (न०) वसन्त ऋतु का आरम्भ।

सुरभिका (स्त्री०) एक प्रकार का केला।

सुरभिमत् (पु०) अग्नि का नाम।

सुरा (स्त्री०) १ शराब। अँगूरी शराब। २ जल। ३ पानपात्र। ४ सर्प।—आकारः, (पु०) शराब की भट्टी।—आजीवः,—आजीविन्, (पु०) कलवार। शराब खींचने वाला।—आलयः, (पु०) शराब की दूकान। गद्दी।—उदः, (पु०) शराब का समुद्र।—ग्रहः, (पु०) शराब रखने का पात्र।—ध्वजः, (पु०) वह पताका या अन्य कोई चिन्हानी जो शराब की दूकान पर पहचान के लिये लगाया जाता है।—प, (वि०) १ शराबी। शराब पीने वाला। २ आनन्दजनक। रम्य। ३ बुद्धिमान महात्मा। ऋषि।—पाणं,—पानं, (न०) शराब पीना। —पात्रं,—भाण्डं, (न०) मदिरापान-पात्र।—भागः, (पु०) शराब का फेन। ख़मीर। फेना। —मण्डः, (पु०) शराब का माँड़—संधानं, (न०) शराब चुआने की क्रिया।

सुवर्ण (वि०) १ सुन्दर रंग का। चमकदार रंग का। सुनहला। पीला। २ अच्छी जाति का। ३ अच्छी कीर्ति वाला। गौरवान्वित। प्रसिद्ध।—अभिषेकः, (पु०) वरवधू का उस जल से मार्जन जिसमें सोने का एक टुकड़ा पड़ा हो।—कदली, (स्त्री०) केले की एक जाति विशेष।—कर्तृ,-कार, कृत्, (पु०) सुनार।—गणितं, (न०) गणित में विशेष प्रकार की गणनक्रिया। बीजगणित का वह अंग जिसके अनुसार सोने की तौल आदि मानी जाती है और उसका हिसाब

लगाया जाता है।—पुष्पित, (वि०) सोने का आधिक्य।—पृष्ठ, (वि०) सोने का पत्र चढ़ा हुआ। सुनहला मुलम्मा किया हुआ।—माक्षिकं, (न०) सोनामक्खी। खनिज पदार्थविशेष।—यूथी, (स्त्री०) पीली जुही। पीतयूथिका।—रूप्यक, (वि०) सोने और चाँदी कि विपुलता वाला। (न०) सुवर्ण द्वीप या सुमात्रा का एक प्राचीन नाम।—रेतस्, (पु०) शिवजी।—वर्णा, (स्त्री०) हल्दी।—सिद्धः, (पु०) वह जो इन्द्रजाल या जादू के बल सोना बना या प्राप्त कर सकता हो।—स्तेयं, (न०) सोने की चोरी।

सुवर्णं (न०) १ सोना। २ सोने का सिक्का। अशरफ़ी। मोहर। ३ सोने की तौल विशेष जो १६ माशे या लगभग १७५ रत्ती की होती है। [यह पु० भी है।] ४ धनदौलत। ५ पीला चन्दन। ६ गेरू।

सुवर्णः (पु०) १ अच्छा रंग। २ अच्छी जाति। ३ यज्ञविशेष। ४ शिव का नामान्तर। ५ धतूरा।

सुवर्णकं (न०) १ पीतल। काँसा। २ सीसा नामक धातु।

सुवर्णवत् (वि०) १ सुनहला। २ सुन्दर। ख़ूबसूरत।

सुषम (वि०) अत्यन्त मनोहर या ख़ूबसूरत।

सुषमा (स्त्री०) परमशोभा। अत्यन्त सुन्दरता।

सुषवी (स्त्री०) १ करेला। कारवेल्ल। २ करेली। ३ जीरा।

सुषाढः (पु०) शिवजी का एक नाम।

सुषिः (स्त्री०) सूराख़।

सुषिम } सुषीम } (वि०) १ ठंडा। शीतल। २ मनोरम। मनोज्ञ। सुन्दर।

सुषिमः } सुषीमः } (पु०) १ शीतलता। २ सर्पविशेष। ३ चन्द्रकान्तमणि।

सुषिर (वि०) १ छेदों से परिपूर्ण। पोला। छेदोंदार। २ मन्दस्वर।

सुषिरं (न०) १ छेद। सुराख़। २ कोई भी बाजा जो हवा के संयोग से बजाया जाय।

सुषुप्तिः (स्त्री०) १ गहरी नींद। प्रगाढ़ निद्रा। २ अज्ञान। ३ पातंजल दर्शन में सुषुप्ति, चित्त की उस वृत्ति या अनुभूति को माना है, जिसमें जीव, नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है। किन्तु जीव को इस बात का ज्ञान नहीं रहता कि उसने ब्रह्म की प्राप्ति की है।

सुषुम्णः (पु०) १ सूर्य की मुख्य किरणों में से एक का नाम।

सुषुम्णा (स्त्री०) शरीरस्थ तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो इड़ा और पिंगला के बीच में है।

सुष्ठु (अव्यया०) १ अच्छा। उत्तमता से। ख़ूबसूरती से। २ बहुत अधिक। अत्यधिक। ३ सचाई से। ठीक तौर से।

सुष्मं (न०) रस्सा। रस्सी। डोर। डोरी।

सुह्मा (पु० बहु०) एक जाति के लोग।

सू (धा० आ०) [सूते, सूयते, सूत] पैदा करना। उत्पन्न करना। देना।

सू (वि०) उत्पन्न करने वाला। पैदा करने वाला। (स्त्री०) १ पैदायश। २ माता।

सूकः (पु०) १ तीर। २ हवा। पवन। ३ कमल।

सूकरः (पु०) १ शूकर। सुअर। २ मृग विशेष। ३ कुम्हार।

सूकरी (स्त्री०) १ सुअरिया। २ एक प्रकार की सिवार या काई।

सूक्ष्म (वि०) १ बहुत छोटा। बहुत बारीक या महीन। २ छोटा। कम। अल्प। ३ पतला। सुकुमार। विलक्षण। ४ उत्तम। ५ तीक्ष्ण। ६ सुस्फली। चालाक। धूर्त। ७ ठीक। सही सही। शुद्ध।—एला, (स्त्री०) छोटी इलायची। —तंडुल, (पु०) पोस्ता।—तण्डुला, (स्त्री०) १ पीपल। पिप्पली। २ एक प्रकार की घास।—दर्शिता, (स्त्री०) सूक्ष्मदर्शी होने का भाव। सूक्ष्म बात सोचने समझने का गुण। दूरदर्शिता। बुद्धिमानी।—दर्शिन्,—दृष्टि, (वि०) वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी दिखाई दें या समझ में आ जाँय।—दारु, (न०)

काठ की पतली पटरी या तख्ता।—देहः, (पु०) —शरीरं, (न०) लिंगशरीर। पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समूह।—पत्रः, (पु०) १ धनिया। धन्याक। २ कालीजीरक। वनजीरक। ३ लाल ऊख। ४ कीकर। बबूल। ५ देवसर्षप। —पर्णी, (स्त्री०) रामतुलसी। रामदूती।—पिप्पली (स्त्री०) जंगली पीपल। वन पिप्पली। —बुद्धि, (वि०) तेज़ बुद्धि वाला।—मक्षिकं, (न०)—मक्षिका, (स्त्री०) मच्छड़। मशक। डाँस।—मानं, (न०) ठीक ठीक नाप।—शर्करा, (स्त्री०) बालू। बालुका।—शालिः (पु०) सेरों जाति का चाँवल।—षट्चरणः, (पु०) एक प्रकार का सूक्ष्म कीडा जो पलकों की जड़ में रहता है।

सूक्ष्मं (न०) १ सर्वव्यापी आत्मा। परमात्मा। परब्रह्म। २ सूक्ष्मता। ३ योग द्वारा प्राप्त योगियों की तीन शक्तियों में से एक। ४ शिल्पकौशल। ५ धूर्तता। कपट। फरेब। ६ महीन डोरा। ७ एक काव्यालंकार जिसमें चित्र वृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है।

सूक्ष्म. (पु०) १ अणु। परमाणु। २ केतक वृक्ष। ३ शिव का नाम।

सूच् (धा० उ०) [सूचयति—सूचयते, सूचित] १ छेदना। २ बतलाना। दिखलाना। ३ (किसी छिपी बात या वस्तु को) प्रकट कर डालना। ४ हावभाव प्रदर्शित करना। ५ जासूसी करना। खोज निकालना।

सूचः (पु०) कुशा की पैनी या नुकीली नोंक।

सूचक (वि०) [स्त्री०—सूचिका] १ बतलाने वाला। सिद्ध करने वाला। दिखलाने वाला। २ मुखबिर।

सूचकः (पु०) १ छेदने वाला। २ सुई। ३ मुखबिर। खबर देने वाला। जासूस। भेदिया। ४ वर्णन करने वाला। शिक्षक। ५ किसी नाटक मण्डली का व्यवस्थापक या मुख्य या प्रधान नट। ६ बुधदेव। ७ सिद्ध। ८ दुष्ट। गुंडा। ९ दैत्य। राक्षस। शैतान। १० कुत्ता। ११ काक। कौआ। १२ बिल्ली। १३ एक प्रकार का महीन चावल। —वाक्यं, (न०) मुखबिर की की हुई मुखबिरी।

सूचनं (न०) } १ छेदने या सूराख करने की
सूचना (स्त्री०) } क्रिया। २ सूचना देना। बतलाना। ३ भेद खोल देना। किसी गोप्य बात को प्रकट कर देना। ४ हावभाव। ५ सङ्केत। इशाराबाज़ी। ६ इत्तिला। ७ शिक्षण। वर्णन। ८ भेदिया का काम करना। पता लगाना। ९ दुष्टता।

सूचा (स्त्री०) १ भेदन। २ हावभाव। ३ अवलोकन।

सूचिः } (स्त्री०) १ छेदन। भेदन। २ सुई।
सूची } ३ नुकीली नोंक। ४ किसी वस्तु की नोंक। ५ कील की नोंक। ६ सैन्यव्यूह। सूक्ष्माग्र चतुरस्र। सूच्यग्र वनक्षेत्र। ७ हावभाव द्वारा कोई बात प्रदर्शित करना। इशारेबाज़ी। सैनामानी। ८ नृत्य विशेष। ९ नाटकीय हावभाव। १० तालिका। फेहरिस्त। ११ विषयानुक्रमणिका। किसी ग्रन्थ के विषयों की तालिका।—अग्र, (वि०) सुई की तरह पैनी नोंक का।—अग्रं, (न०) सुई की नोंक। —आस्यः, (पु०) चूहा।—पत्रकं, (न०) सूचीपत्र। तालिका। फहरिस्त।—पत्रक, (पु०) एक प्रकार की रुखरी।—पुष्पः, (पु०) केतक वृक्ष।—मुख, (वि०) वह जिसका मुख सुई जैसा हो। नुकीली चोंच वाला। २ नुकीला।—मुखः, (पु०) १ चिड़िया। २ सफेद कुश। ३ हस्तमुद्राविशेष।—मुखं, (न०) हीरा।—रोमन्. (पु०) शूकर।—वदन, (वि०) सुई जैसा चेहरे वाला। नुकीली चोंच वाला।—वदनः, (पु०) १ मच्छड़। डाँस। २ न्योला।—शालिः, (पु०) महीन जाति का चावल विशेष।

सूचिकः (पु०) दर्जी।

सूचिका (स्त्री०) १ सुई। २ हाथी की सूँड़।—धरः, (पु०) हाथी। गज।—मुखं, (न०) शंख।

सूचित (व० कृ०) १ छिदा हुआ। छेदा हुआ। छेद किया हुआ। २ दिखलाया हुआ। बतलाया

हुआ। ३ इशारे या सङ्केत से बतलाया हुआ। ४ कथित। इत्तिला दिया हुआ। प्रकट किया हुआ। ५ जाना हुआ। दरियाफ़्त किया हुआ।

सूचिन् (वि०) [स्त्री०—सूचिनी] १ छेदने वाला। छेद करने वाला। २ बतलाने वाला। ३ मुखबिरी करने वाला। ४ भेद लेने वाला। जासूसी करने वाला। (पु०) जासूस। भेदिया।

सूचिनी (स्त्री०) १ सुई। २ रात। रजनी।

सूची देखो सूचि।

सूच्य (वि०) सूचना देने योग्य। बतलाने लायक।

सूत् (अव्यया०) खर्राटे का शब्द जो सोने के समय प्रायः लोग किया करते हैं।

सूत (व० कृ०) १ पैदा हुआ। उत्पन्न हुआ। पैदा किया हुआ। २ निकाला हुआ।

सूतः (पु०) १ सारथी। रथ हाँकने वाला। २ क्षत्रिय का पुत्र जो ब्राह्मणी माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। ३ वंदीजन। भाट। ४ बढ़ई। ५ सूर्य। ६ व्यास के एक शिष्य का नाम। (पु० न०) पारा। पारद।—तनयः, (पु०) कर्ण का नाम।—राज्, (पु०) चाँदी।

सूतकं (न०) १ उत्पत्ति। पैदायश। २ जन्मसूतक। जनन अशौच।

सूतकं (न०) }
सूतकः (पु०) } पारा। पारद।

सूतका (स्त्री०) जच्चा स्त्री। वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना हो।

सूता (स्त्री०) जच्चा औरत। सूतका।

सूतिः (स्त्री०) १ उत्पत्ति। पैदाइश। प्रसव। २ सन्तान। औलाद। ३ निर्गमस्थान। ४ वह स्थान जहाँ सोमरस निकाला जाय।—अशौचं, (न०) जननअशौच।—गृहं, (न०) वह कमरा जिसमें लड़का जना गया हो। प्रसूतिगृह।—मासः, (पु०) (= सूतीमासः भी) वह मास जिसमें बच्चा जना गया हो।

सूतिका (स्त्री०) स्त्री जिसने हाल ही में सन्तान जनी हो।—अगारं,—गृहं,—गेहं,—भवनं (न०) वह कोठा या कमरा जिसमें जंता हुआ हो।—रोगः, (पु०) वह बीमारी जो बच्चा जनने के बाद हुई हो।—षष्ठी (स्त्री०) देवी विशेष, जिसका पूजन बच्चा जन्मने के दिन से छठवें दिन किया जाता है।

सूत्करं (न०) शराब चुआने की क्रिया।

सूत्या (स्त्री०) देखो सुत्या।

सूत्र् (धा० उ०) [सूत्रयति, सूत्रित] १ बाँधना। २ सूत्र के रूप में लिखना या बनाना। ३ क्रमबद्ध करना। ४ खोलना। बंधन ढीला करना।

सूत्रं (न०) १ डोरा। डोरी। २ सूत। धागा। ३ तार। ४ सूत का ढेर। ५ द्विजों के पहिनने का जनेऊ। ६ कठपुतली का तार या डोरी या वह तार या डोरी जिसे थाम कर कठपुतली नचाई जाती है। ७ संक्षिप्त रूप में बनाया हुआ नियम या सिद्धान्त। ८ थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो। संक्षिप्त सारगर्भित पद या वचन।—आत्मन्, (पु०) जीवात्मा।—आली, (स्त्री०) माला। हार।—कण्ठः, (पु०) १ ब्राह्मण। २ कबूतर। फाख़्ता। ३ खंजन।—कर्मन्, (न०) बढ़ईगीरी।—कारः,—कृत्, (पु०) सूत्र बनाने वाला।—कोणः,—कोणकः, (पु०) डमरू।—गण्डिका, (स्त्री०) जुलाहे का। एक औज़ार जो लकड़ी का होता है और कपड़ा बुनने में काम देता है।—धरः,—धार, (पु०) १ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट जो भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नांदी पाठ के अनन्तर खेले जाने वाले नाटक की प्रस्तावना सुनाता है। २ बढ़ई। ३ सूत्रों का बनाने वाला। ४ इन्द्र।—पिटकः, (पु०) बौद्धों के मत के प्रसिद्ध तीन संग्रह-ग्रन्थों में से एक।—पुष्पः, (पु०) कपास का वृक्ष।—भिद्, (पु०) दर्ज़ी।—भृत्, (पु०) सूत्रधार।—यंत्रं, (न०) करघा। ढरकी।—वीणा, (स्त्री०) प्राचीन काल की एक बीणा जिसमें तार की जगह सूत लगाये जाते थे।—वेष्टनं, (न०) करघा। ढरकी।

सूत्रणं (न०) गूंथने की क्रिया।

सूत्रला (स्त्री०) तकला। टेकुवा।

सूत्रिका (स्त्री०) पकवान विशेष।

सूत्रित (व० कृ०) सूत्र में दिया हुआ।

सूत्रिन् (व०) [स्त्री०—सूत्रिणी] १सूतों वाला। २ नियमों वाला। (पु०) काक।

सूद् (धा० आ०) [सूदते,] १ ताड़न करना। चोटिल करना। घायल करना। वध करना। २ उड़ेलना। ३ जमा करना। ४ निकाल डालना। [उभय०—सूदयति—सूदयते] १ उत्तेजना देना। उत्तेजित करना। जान डालना। २ ताडन करना। चोटिल करना। वध करना। ३ उडेलना ४ स्वीकार करना। प्रतिज्ञा करना। ५ तैयार करना। राँधना। ६ फैंक देना।

सूदः (पु०) १ नाश। वध २ उड़ेलना। चुआना। ३ कूप। सोता। चश्मा। ४ रसोइया। ५ चटनी। कढ़ी। ६ पकवान। ७ दली हुई मटर। ८ कीचड। काँदा। ९ पाप। गुनाह। कसूर। दोष। १० लोध्र वृक्ष।—कर्मन्, (न०) रसोइया का काम। —शाला, (स्त्री०) रसोई घर।

सूदन (वि०) [स्त्री०—सूदनी] १ नाशक। विनाशक। वधकारक। २ प्यारा। प्रेमपात्र। माशूक।

सूदनं (न०) नाशन। विनाशन। वध। कत्ल। २ प्रतिज्ञा। ३ निकालना। निष्कासन।

सून (व० कृ०) १ उत्पन्न। जन्मा हुआ। पैदा किया हुआ। २ खिला हुआ। फूला हुआ। कली लगा हुआ। ३ खाली। रीता।

सूनं (न०) १ प्रसव करना। २ कली। कुसुम। ३ फूल।

सूनरी (स्त्री०) सुखी स्त्री।

सूना (स्त्री०) १ कसाईखाना। २ माँस की विक्री। ३ चोटिल करना। वध करना। ४ छोटी जिह्वा। कौआ। ५ पटुका। कमरपेटी। ६ गर्दन की गाठों की सूजन। ७ किरन। ८ नदी। ९ पुत्री।

सूना. (स्त्री० बहु०) गृहस्थ के घर में ऐसा स्थान, चुल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा, झाड़ू में की कोई भी वस्तु, जिससे जीवहिंसा होने की सम्भावना रहती है।

सूनिन् (पु०) १ कसाई। २ माँस वेचने वाला। बहेलिया। शिकारी।

सूनुः (पु०) १ लड़का। २ बच्चा। बालक। औलाद। ३ दौहित्र। बेटी का बेटा। ४ छोटा भाई। ५ सूर्य। मदार का पौधा।

सूनू (स्त्री०) लड़की।

सूनृत (वि०) १ सच्चा और आनन्ददाई। कृपालु और सहृदय। २ कृपालु। शिष्ट। भद्र। ३ शुभ। भाग्यवान्। ४ प्यारा। प्रेमपात्र।

सूनृतं (न०) १ सत्य और प्रिय वाणी। २ अच्छा और अनुकूल संवाद। शिष्ट भाषण। ३ शुभता। कल्याण।

सूपः (पु०) १ शोरुआ। कढ़ी। २ चटनी। मसाला। ३ रसोइया। ४ कढ़ाई। तसला। ५ तीर। वाण।—कारः, (पु०) रसोइया। वावर्ची।— धूपनं.—धूपकं, (न०) हींग।

सूर् (धा० आ०) [सूर्यते] १ चोटिल करना। वध करना। २ दृढ़ करना। दृढ़ होना।

सूर्ण (वि०) घायल।

सूरः (वि०) १ सूर्य। २ मदार का पौधा। ३ सोमवल्ली। ४ पण्डितजन। ५ शूरवीर। राजा।— सुतः, (पु०) शनिग्रह।—सूतः, (पु०) सूर्य के सारथी अरुण देव।

सूरणः (पु०) ज़मीकंद। सूरन।

सूरत (वि०) १ सहृदय। कृपालु। दयालु। कोमल। २ शान्त।

सूरिः (पु०) १ सूर्य। २ विद्वज्जन। पण्डितजन। ३ पाधा। ४ पुजारी। अर्चक। ५ सम्मानसूचक जैनियों की एक. उपाधि। ६ श्रीकृष्ण का नामान्तर।

सूरिन् (वि०) [स्त्री०—सूरिणी] विद्वान्। पण्डित। (पु०) विद्वज्जन। विद्वान्। पण्डित।

सूरी (स्त्री०) १ सूर्य की पत्नी का नाम। २ कुन्ती का नाम।

सूर्त्त (धा० प०) [सूर्त्तति, सूर्त्तयति] १ सम्मान करना । इज़्ज़त करना । २ अपमान करना । तिरस्कार करना ।

सूर्त्तणं } सूर्त्त्यणं } (न०) असम्मान । बेइज़्ज़ती ।

सूर्द्यः (पु०) मूंग ।

सूर्प देखो शूर्प ।

सूर्मिः } सूर्मी } (स्त्री०) १ लोहे या अन्य किसी धातु की बनी मूर्ति । धातु विग्रह । २ घर का खंभा । ३ चमक । आभा । दीप्ति । ४ शोला । अँगारा ।

सूर्यः (पु) १ सूर्य । २ अर्क का पौधा । ३ बारह की संख्या ।—अपायः, (पु०) सूर्यास्त ।—अर्घ्यं, (न०) सूर्य को अर्घ्यदान ।—अश्मन्, (पु०) सूर्यकान्तमणि । —अश्वः, (पु०) सूर्य का घोड़ा ।—अस्तं, (न०) सूर्यास्त ।—आतपः, (पु०) धूप की चकाचौंध । धूप । सूर्यातप ।—आलोकः, (पु०) धूप । घाम ।—आवर्तः, (पु०) सूरज मुखी का फूल ।—आह्व, (वि०) सूर्य के नाम वाला ।—आह्वं, (न०) तांबा ।—आह्वः, (पु०) गुल्म विशेष ।—उदः, —उत्थानं, (न०)—उदयः, (पु०) सूर्योदय ।—ऊढः, (पु०) १ वह अतिथि या मेहमान जो शाम को आया हो । २ सूर्यास्तकाल ।—कान्तः, (पु०) सूर्यकान्तमणि ।—कालः (पु०) दिवस काल ।—ग्रहः, (पु०) १ सूर्य । २ सूर्य का ग्रहण । ३ राहु और केतु के नामान्तर । ४जल-घट की तली ।—ग्रहणं, (न०) सूर्यग्रहण ।—चन्द्रौ, [= सूर्याचन्द्रमसौ] (पु०) (द्विवचन) सूर्य और चन्द्रमा ।—जः,—तनयः,—पुत्रः, (पु०) १ सुग्रीव का नामान्तर । २ कर्ण । ३ शनिग्रह । ४ यम । —जा,—तनया, (वि०) यमुना नदी ।—तेजस्, (न०) सूर्य का आतप या चकाचौंध या चमक ।—नक्षत्रं, (न०) २७ नक्षत्रों में से जिस पर सूर्य हो ।—पर्वन्, (न०) संक्रमण और सूर्यग्रहण आदि ।—प्रभव, (वि०) सूर्य से उत्पन्न या निकला हुआ ।—भक्त, (वि०) सूर्योपासक ।—भक्तः, (पु०) बन्धूक नामक वृक्ष या उसके फूल ।—मणिः, (पु०) सूर्यकान्त मणि ।—मण्डलं, (न०) सूर्य की परिधि ।—यंत्रं, (न०) १ सूर्य के मंत्र और बीज से अङ्कित ताम्रपत्र जिसका सूर्य के उद्देश्य से पूजन किया जाता है । २ यंत्र विशेष या दूरबीन जिसमें सूर्य की गति आदि का हाल जाना जाय ।—रश्मिः, (पु०) सूर्य की किरणें ।—लोकः, (पु०) सूर्य के रहने का लोक विशेष ।—वंशः, (पु०) सूर्यवंशी राजाओं का कुल या वंश ।—वर्चस् , (वि०) सूर्य की तरह चमकीला ।—विलोकनं, (न०) चार मास का होने पर शिशु को बाहिर निकाल कर उसको सूर्य का दर्शन कराने की विधि ।—संक्रान्ति, (स्त्री०) —संक्रम , (पु०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना ।—संज्ञं, (न०) केसर ।—सारथिः, (पु०) अरुण का नामान्तर ।—स्तुतिः, (स्त्री०) —स्तोत्रं, (न०) सूर्य की स्तुति या स्तव ।—हृदयं (न०) सूर्य का एक स्तव विशेष ।

सूर्या (स्त्री०) सूर्यपत्नी ।

सूष् (धा० प०) [सूषति] उत्पन्न करना । पैदा करना ।

सूषणा (स्त्री०) माता ।

सूष्यन्ती (स्त्री०) वह स्त्री जो बालक जनने ही वाली हो ।

सृ (धा० प०) [सरति, सिसर्ति, सृत] १ गमन करना । २ समीप जाना । ३ आक्रमण करना । ४ दौड़ना । भागना । ५ बहना । चलना । (जैसे हवा का) । ६ बहना (पानी का) ।

सृकः (पु०) १ हवा । पवन । २ तीर । ३ वज्र । ४ कैरव । कमल ।

सृकंडु } सृकण्डु } (स्त्री०) खाज । खुजली ।

सृकालः (पु०) शृगाल । गीदड़ ।

सृक्कं (न०) } सृक्कणी (स्त्री०) } सृक्कन् (न०) } सृक्किणी (स्त्री०) } सृक्किन् (न०) } मुख के दोनों ओर के कोने ।

सृगः (पु०) भिन्दिपाल । एक प्रकार की गदा ।

सृगालः (पु०) सियार । गीदड़ ।

सृका (स्त्री०) रत्न हार । रत्नों का हार ।

सृज् (धा० प०) [सृजति, सृष्ट] १ सृष्टि करना । पैदा करना । बनाना । २ रखना । प्रयुक्त करना । ३ छोड़ देना । मुक्त करना । छुटकारा देना । ४ उँड़ेलना । गिराना । बहाना । ५ उच्चारण करना । ६ फेंकना । पटकना ७ त्यागना । छोड़ना ।

सृजिकाक्षरः (पु०) रेह । सज्जी । खार ।

सृंजयाः } (पु०) (बहु०) एक जाति के लोगों
सृञ्जयाः } का नाम ।

सृणिः (स्त्री०) अंकुश । आँकुस (पु०) १ शत्रु । २ चन्द्रमा ।

सृणिका } (स्त्री०) थूक । खखार ।
सृणीका }

सृतिः (स्त्री०) १ जाना । फिसलना । खिसकना । २ मार्ग । सड़क । रास्ता । ३ चोटिलकरण । अनिष्ट-करण ।

सृत्वर (वि०) [स्त्री०—सृत्वरी] गमन करने वाला । जाने वाला ।

सृत्वरी (स्त्री०) १ दरिया । चश्मा । नदी । सोता । २ माता । जननी ।

सृदरः (पु०) सर्प । साँप ।

सृदाकुः (पु०) १ पवन । हवा । २ अग्नि । ३ मृग । ४ इन्द्र का वज्र । सूर्य का मण्डल । (स्त्री०) नदी । चश्मा ।

सृप् (धा० प०) [सर्पति, सृप्त] १ रेंगना । सरकना । फिसलना । धीरे धीरे रेंगना । २ जाना । चलना ।

सृपाटः (पु०) माप विशेष ।

सृपाटिका (स्त्री०) पक्षी की चोंच ।

सृपाटी (स्त्री०) माप विशेष ।

सृप्रः (पु०) चन्द्रमा ।

सृभ् } (धा० प०) [सर्भति, सृंभति] घायल
सृंभ् } करना । चोटिल करना । बध करना ।
सृम्भ् }

सृमर (वि०) [स्त्री०—सृमरी] गमन करने वाला । जाने वाला ।

सृमरः (पु०) मृग विशेष ।

सृष्ट (व० कृ०) १ पैदा किया हुआ । सिरजा हुआ । २ उड़ेला हुआ । ३ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । ४ विदा किया हुआ । विसर्जन किया हुआ । बरखास्त किया हुआ । निकाला हुआ । ६ दर्याफ्त किया हुआ । निश्चित किया हुआ । ७ जुड़ा हुआ । मिलाया हुआ । ८ अधिक । विपुल । असंख्य । ९ भूषित ।

सृष्टिः (स्त्री०) १ रचना । २ संसार की रचना । ३ प्रकृति । ४ छुटकारा । ५ दान । ६ गुण का अस्तित्व । सगुणता । ७ निर्गुणता ।—कर्तृ, (पु०) सृष्टिकर्त्ता ।

सॄ (धा० प०) [सृणाति] घायल करना । वध करना ।

सेक् (धा० आ०) [सेकते] जाना । चलना ।

सेकः (पु०) १ पानी छिड़कना । सिंचन । पेड़ों को सींचना । २ प्रेरण । त्याग । ३ वीर्यपात । ४ नैवेद्य । चढ़ौती ।—पात्रं, (न०) वह बरतन जिससे छिड़काव किया जाय । २ बाल्टी । डोल ।

सेकिमं (न०) मूली । सलगम ।

सेक्तृ (वि०) [स्त्री०—सेक्त्री] १ छिड़कने वाला । (पु०) छिड़काव करने वाला । २ पति । खाविंद ।

सेक्त्रं (न०) डोलची । पानी छिड़कने का पात्र ।

सेचकं (वि०) [स्त्री०—सेचिका] सेंचन करने वाला । जल छिड़कने वाला ।

सेचकः (पु०) बादल ।

सेचनं (न०) १ सिंचन । पानी का छिड़काव । सींचना । २ डोलची । बाल्टी ।—घटः, (पु०) जलघट । जल का घड़ा ।

सेचनी (स्त्री०) बाल्टी । डोलची ।

सेटुः (पु०) १ तरबूज़ । २ ककड़ी ।

सेतिका (स्त्री०) अयोध्या का नाम ।

सेतुः (पु०) १ टीला । बांध । २ पुल । सेतु । ३ भूसीमा । ४ घाटी । सङ्कीर्ण मार्ग । ५ सीमा । हद ।

६ प्रतिबन्धक। किसी भी प्रकार की रोक या रुकावट। ७ निर्दिष्ट या निर्द्धारित नियम या विधि। ८ प्रणव। ओङ्कार। [यथा कालिकापुराणे:—

मन्त्राणां प्रणवः सेतुस्तत्सेतुः प्रणवः स्मृतः।
स्रवत्यनोङ्कृतं पूर्वं परस्ताच्च विदीर्यते ॥

—बंधः, (पु०) १ पुल की बनावट। २ श्रीरामचन्द्र जी का बनवाया इतिहासप्रसिद्ध पुल। —भेदिन्, (वि०) रुकावट का तोड़ने वाला। रुकावट दूर करने वाला। (पु०) दन्ती नामक वृक्ष।

सेतुकः (पु०) १ बाँध। पुल। २ दर्रा।

सेत्रं (न०) बन्धन। बेड़ी।

सेदिवस् (वि०) [स्त्री०—सेदुषी] उपवेशित। बैठा हुआ।

सेन (वि०) वह जिसका कोई प्रभु हो।

सेना (स्त्री०) १ फौज। वाहिनी। २ सेना की अधिष्ठात्री देवी कार्तिकेय की पत्नी बतलाई जाती है।—अग्रं, (न०) सेना का वह दल जो आगे चलता है।—चरः, (पु०) १ सिपाही। २ अनुयायी। अनुचरवर्ग।—निवेशः, (पु०) सेना की छावनी। सैन्यशिविर।—निवेशनी, (स्त्री०) १ सेनानायक। २ कार्तिकेय का नाम।—परिच्छद, (वि०) सेना से घिरा हुआ। —पृष्ठं, (न०) सेना का पिछला भाग। —भङ्गः, (पु०) सेना को तितर बितर कर भगा देना।—मुखं, (न०) १ सेना का एक दल। २ विशेष कर वह दल, जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ६ घोड़े, और पन्द्रह पैदल सिपाही होते हैं। ३ नगर द्वार के सामने का मिट्टी का टीला या धुस्स।—योगः, (पु०) सेना की सजावट। —रक्षः, (पु०) पहरेदार। पहरुआ।

सेफः (पु०) लिङ्ग। पुरुष की जननेन्द्रिय।

सेमंती }
सेमन्ती } (स्त्री०) सफेद गुलाब विशेष।

सेरः (पु०) १६ छटाँक का एक सेर।

सेराहः (पु०) दूधिया सफेद रङ्ग का घोड़ा।

सेरु (वि०) बांधने वाला।

सेल् (धा० प०) [सेलति] जाना। चलना।

सेव् (धा० आ०) [सेवते, सेवित] १ परिचय करना। सेवा करना। २ पीछा करना। पछियाना। अनुगमन करना। ३ इस्तेमाल करना। उपयोग करना। ४ मैथुन करना। ५ सम्पादन करना। ६ बसना। रहना। ७ रखवाली करना। क्षमा करना।

सेव देखो सेवन।

सेवक (वि०) १ सेवा करने वाला। अर्चा करने वाला। २ अनुगमन करने वाला। ३ परतन्त्र। पराधीन।

सेवक (पु०) १ नौकर। चाकर। २ भक्त। आराधना करने वाला। ३ दर्ज़ी। सीने वाला। ४ बोरा।

सेवनं (न०) १ सेवा करने की क्रिया। सेवकाई। २ इस्तेमाल करने की क्रिया। काम में लाने की क्रिया। ३ स्त्रीमैथुन करने की क्रिया। ४ सीना। सीने का काम। ६ बोरा।

सेवा (स्त्री०) १ सेवकाई। पराधीनता। २ पूजन। अर्चा। ३ अनुराग। अनुरक्ति। ४ उपयोग। ५ आसरा। ६ चापलूसी। ठकुरसुहाती। —धर्मः, (पु०) सेवकाई करने का कर्त्तव्य।

सेवि (न०) १ बेर या बेरी का फल। २ सेवक।

सेवित (व० कृ०) १ सेवन किया हुआ। सेवकाई किया हुआ। २ अनुमान किया हुआ। अभ्यास किया हुआ। ३ आसरा लिया हुआ। ४ उपभोग किया हुआ। काम में लाया हुआ।

सेवितं (न०) १ बदरी फल। बैर। २ सेव।

सेवितृ (पु०) अनुचर। पराधीन।

सेविन् (वि०) १ सेवा करने वाला। पूजा करने वाला। २ अभ्यास करने वाला। काम में लाने वाला। ३ बसने वाला। रहने वाला। (पु०) नौकर। अनुचर।

सेव्य (वि०) १ सेवा के लायक। २ नौकर रखने लायक। ३ उपभोग करने लायक। ४ रखवाली करने लायक।

सेव्यं (न०) एक प्रकार की जड़। —सेवकौ, (पु०) मालिक और नौकर।

सेव्यः (पु०) १ स्वामी। अश्वत्थ वृक्ष।

सै (धा० प०) [सायति] खराब कर डालना। नाश कर डालना।

सैंह (वि०) [स्त्री०—सैंही] सिंह सम्बन्धी।

सैंहल (वि०) सिंहल द्वीप सम्बन्धी। लंका में उत्पन्न।

सैंहिकः } सैंहिकेयः } (पु०) राहु का नामान्तर।

सैकत (वि०) [स्त्री०—सैकती] १ रेतीला। २ रेतीली ज़मीन वाला।

सैकतं (न०) १रेतीला तट। २ वह द्वीप जिसके तट पर रेत या बालू हो। ३ तट। किनारा।—इष्टं, (न०) अदरक। आदी।

सैकितिक (वि०) [स्त्री०—सैकितिकी] १ बलुहा तट का। २ सन्देह जीविन।

सैकितिकं (न०) गंडा जो गले या कलाई में बाँधा जाता है।

सैकितिकः (पु०) १ संन्यासी। साधु। २ तपस्वी।

सैद्धांतिकः } सैद्धान्तिकः } (पु०) १ सिद्धान्त सम्बन्धी। २ यथार्थ सत्य जानने वाला।

सैनापत्यं (न०) सेनानायकत्व। सेनापतित्व।

सैनिक (वि०) [स्त्री०—सैनिकी] १ सेना सम्बन्धी। २ फ़ौजी। जंगी।

सैनिक (पु०) १ सिपाही। योद्धा। सन्तरी। सेना जो युद्ध के लिए सजा कर खड़ी की गई हो।

सैंधव } सैन्धव } (वि०) [स्त्री०—सैन्धवी] १ सिन्धु देश में उत्पन्न हुआ। २ सिन्धु नदी सम्बन्धी। ३ नदी में उत्पन्न। ४ सामुद्रिक। समुद्र सम्बन्धी।

सैंधवः } सैन्धवः } (पु०) १ घोड़ा, विशेष कर सिन्धु देश का। २ एक ऋषि का नाम। ३ एक देश का नाम।

सैंधवः (पु०) } सैन्धवः (पु०) } सैंधवं (न०) } सैन्धवं (न०) } सेंधा निमक।

सैंधवाः } सैन्धवाः } (पु० बहु०) सिन्धु देशवासी लोग। —घनः (पु०) निमक का ढेला। —शिला (स्त्री०) सेंधानिमक।

सैंधवक (वि०) [स्त्री०—सैंधवकी] सैन्धव सम्बन्धी।

सैंधवकः } सैन्धवकः } (पु०) सिन्धु देश का एक विपत्तिग्रस्त आदमी।

सैंधी } सैन्धी } (स्त्री०) मदिरा विशेष।

सैन्य (पु०) १ सैनिक। योद्धा। २ रक्षक। संतरी। पहरेदार।

सैन्यं (न०) सेना। फौज।

सैमंतिकं } सैमन्तिकं } (न०) ईंगुर। सेंदुर।

सैरंध्री (स्त्री०) } सैरन्ध्री (स्त्री०) } सैरिंध्रः (पु०) } सैरिन्ध्रः (पु०) } १ नीच जाति की चाकरानी। २ वर्णसङ्कर जाति।

सैरंध्री (स्त्री०) } सैरन्ध्री (स्त्री०) } सैरिंध्री (स्त्री०) } सैरिन्ध्री (स्त्री०) } १ अन्तःपुर में काम करने वाली दासी जिसकी उत्पत्ति वर्णसङ्कर जाति विशेष में हुई हो। २ दूसरे के घर में रहने वाली स्वाधीन शिल्पकारिणी स्त्री। ३द्रौपदी का वह नाम जो उसने अज्ञातवास के समय रखा था।

सैरिक (वि०) [स्त्री०—सैरिकी] १ हल सम्बन्धी। २ सीर वाला।

सैरिकः (पु०) १ हल का बैल। २ हलवाहा।

सैरिभः (पु०) १ भैंसा। २ स्वर्ग।

सैवाल देखो शैवाल।

सैसक (वि०) [स्त्री०—सैसकी] सीसा नामक धातु का।

सो (धा० प०) [स्यति – सित] १ वध करना। नष्ट करना। २ समाप्त करना। पूर्ण करना।

सोढ (व० कृ०) वहन किया हुआ। सहन किया हुआ।

सोढृ (वि०) [स्त्री०—सोढ्री] १ धीरजवान। सहिष्णु। २ शक्तिमान। योग्य।

सोत्क, सोत्कंठ, सोत्कण्ठ (वि०) १ उत्सुक। अत्यन्त उत्सुक। २ खेदजनक। ३ शोकान्वित।

सोत्प्रास (वि०) १ अत्यधिक। २ बहुत बढ़ाया हुआ। अतिशयोक्त। ३ व्यङ्गयपूर्ण। कटाक्षयुक्त। व्याजस्तुतियुक्त।

सोत्प्रासः (पु०) अट्टहास।

सोत्प्रासः (पु०), सोत्प्रासं (न०) व्यङ्गयपूर्ण अतिशयोक्ति। व्याजस्तुति।

सोत्सव (वि०) हर्षवर्द्धक। आनन्दवर्द्धक।

सोत्साह (वि०) उत्साहपूर्वक।

सोत्सुक (वि०) खेदपूर्ण। शोकान्वित।

सोत्सेध (वि०) उन्नत। उठा हुआ। ऊँचा। लम्बा।

सोदर (वि०) एक उदर या पेट से उत्पन्न।

सोदरः (पु०) सहोदर भाई।

सोदरा (स्त्री०) सगी बहिन।

सोदर्यः (पु०) सहोदर भ्राता।

सोद्योग (वि०) मिहनती। परिश्रमी। अध्यवसायी।

सोद्वेग (वि०) १ उत्सुक। उत्कण्ठित। सशङ्कित। २ शोकान्वित।

सोद्वेगं (न०) उत्सुकता पूर्वक।

सोनहः (पु०) लहसुन।

सोन्माद (वि०) पागल। सिड़ी। सनकी।

सोपकरण (वि०) वह जिसके पास अपेक्षित समस्त औज़ार या सामान हो।

सोपद्रव (वि०) उपद्रवों सहित। उपद्रव युक्त।

सोपध (वि०) धूर्त्त। कपटी। धोखेबाज़।

सोपधि (वि०) कपटी। धूर्त्त।

सोपप्लव (वि०) १ किसी बड़े सङ्कट में पड़ा हुआ। २ शत्रुओं से आक्रान्त। ३ ग्रस्त। जैसे चन्द्र और सूर्य ग्रस्त होते हैं।

सोपरोध (वि०) १ अवरुद्ध। २ अनुगृहीत।

सोपरोधं (अव्यया०) प्रतिष्ठासहित।

सोपसर्ग (वि०) १ किसी बड़ी मुसीबत या सङ्कट में पड़ा हुआ। २ भावी अमङ्गल सूचक। ३ किसी भूत प्रेत द्वारा आवेशित। ४ व्याकरण में उपसर्ग सहित।

सोपहास (वि०) १ व्यङ्गयपूर्ण। घृणाव्यञ्जक हास्य युक्त।

सोपाकः (पु०) पतित जाति का आदमी।

सोपाधि, सोपाधिक (वि०) [स्त्री०—सोपाधिकी] १ उपाधि सहित। २ विशेष उपाधि सहित।

सोपानं (न०) सिड्ढी। सीढ़ी। ज़ीना।—पंक्तिः, (स्त्री०)—पथः, (पु०)—पद्धतिः, (स्त्री०)—परम्परा, (स्त्री०)—मार्गः, (पु०) ज़ीना। नसैनी। सीढ़ी।

सोमः (पु०) १ एक लता जिसका रस यज्ञ के काम में आता है। २ सोमवल्ली का रस। ३ अमृत। ४ चन्द्रमा। ५ किरण। ६ कपूर। ७ जल। ८ पवन। वायु। ९ कुवेर का नाम। १० शिव का नाम। ११ मन का नाम। १२ [किसी समासान्त शब्द के अन्त में आने पर इसका अर्थ होता है— मुख्य, प्रधान, सर्वोत्तम। यथा नृसोम]—अभिषवः, (पु०) सोमरस का निकालना।

सोमं (न०) १ काँजी। २ आकाश।—अहः, (पु०) सोमवार।—आख्यं, (न०) लाल कमल।—ईश्वरः, (पु०) शिवजी का एक प्रसिद्ध प्रतिनिधि।—उद्भवा, (स्त्री०) प्रसिद्ध नदी नर्मदा का नाम।—कान्तः, (पु०) चन्द्रकान्तमणि।—क्षयः, (पु०) चन्द्र की कला का ह्रास।—ग्रहः, (पु०) वह पात्र जिसमें सोमरस एकत्रित किया जाय।—ज, (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न।—जः, (पु०) बुधग्रह।—जं, (न०) दूध।—धारा, (स्त्री०) आकाश। आसमान।—नाथः, (पु०) शिवजी के द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से एक। सोमनाथ नामक प्रभासक्षेत्र में स्थान विशेष।—प,

—पा, (वि०) १ सोमरस पीने वाला। २ सोम याग करने वाला। ३ पितृगण विशेष।—पतिः, (पु०) इन्द्र का नामान्तर।—पायिन्,—पीथिन्, (पु०) सोम रस पीने वाला।—पुत्रः,—भूः,—सुतः, (पु०) बुध का नाम।—प्रवाकः, (पु०) श्रोत्रिय को सोमयाग के लिए नियुक्त करने का अधिकार प्राप्त मनुष्य।—पुत्रः,—भूः—सुतः, (पु०) बुध का नामान्तर—बंधुः, (पु०) सफ़ेद कमल। कमोदिनी।—योनिः, (पु०) पीत सुगन्ध वाला चन्दन।—रोगः, (पु०) स्त्रियों का रोग विशेष।—लता,—वल्लरी, (स्त्री०) १ सोमवल्ली। २ गोदावरी नदी का नाम।—वंशः, (पु०) सोमवंशी क्षत्रिय राजाओं की वह शाखा जो बुध से चली।—वारः,—वासरः (पु०) सोमवार।—विक्रयिन्, (पु०)। सोमवल्ली का विक्रेता।—वृक्षः,—सारः, (पु०) सफ़ेद खदिर का पेड़।—शकला, (स्त्री०) ककड़ी विशेष।—संज्ञं, (न०) कपूर।—सद्, (पु०) पितृगण विशेष।—सिन्धुः, (पु०) विष्णु।—सुत्, (पु०) सोमरस चुआने वाला—सुता (स्त्री०) नर्मदा नदी।—सूत्रं, (न०) शिवलिङ्ग के अभिषेक का जल निकालने की नाली।

सोमन् (पु०) चन्द्रमा।

सोमिन् (वि०) [स्त्री०—सोमिनी] सोम याग।—(पु०) सोम याग करने वाला।

सोम्य (वि०) १ सोम के योग्य। २ सोम चढ़ाने वाला। ३ सोम की शक्ल का। ४ मुलायम। कोमल।

सोल्लुंठः (पु०), सोल्लुण्ठः (पु०), सोल्लुंठनं (न०), सोल्लुण्ठनं (न०) श्लेषवाक्य। व्यङ्ग्योक्ति। परिहास। उपहास।

सोष्मन् (वि०) १ उष्ण। २ ध्वनिपूर्वक स्पष्ट उच्चारित। (पु०) स्पष्ट उच्चारण।

सौकर (वि०) [स्त्री०—सौकरी] शूकर का।

सौकर्य (न०) १ शूकरपन। २ सहजता। सरलत्व। ३ सम्भावना। ४ निपुणता। पटुता। किसी भोज्य पदार्थ या दवाई को सहज बनाने की तरक़ीब।

सौकुमार्यं (न०) १ कोमलता। सुकुमारता। २ जवानी।

सौक्ष्म्यं (न०) सूक्ष्मता। मिहीनपन।

सौखशायनिकः (पु०) वह पुरुष जो किसी अन्य पुरुष से सुख पूर्वक सोने का प्रश्न करे।

सौखसुप्तिकः (पु०) १ वह पुरुष जो किसी अन्य पुरुष से सुखपूर्वक सोने का प्रश्न करे। २ वंदीजन जो राजा या अन्य किसी महान् पुरुष को गान गाकर और बाजे बजाकर जगावें।

सौखिक, सौखीय (वि०) [स्त्री०—सौखिकी, सौखीयी] सुख संबन्धी। सुखी।

सौख्यं (न०) आनन्द। हर्ष। सन्तोष।

सौगतः (पु०) सुगत या बुध देव का अनुयायी।

सौगतिकः (पु०) १ बौद्ध। २ बौद्धभिक्षुक। ३ नास्तिक। पाखण्डी।

सौगतिकं (न०) अविश्वास। नास्तिकता।

सौगंध, सौगन्ध (वि०) [स्त्री०—सौगंधी] मधुर सुगन्ध युक्त।

सौगंधं, सौगन्ध्यं (न०) १ मधुर खुशबूपन। सुगन्धि। २ सुगन्ध युक्त घास विशेष।

सौगंधिक, सौगन्धिक [स्त्री०—सौगन्धिका, सौगन्धिकी] (वि०) मधुर सुगन्धि वाला। खुशबूदार।

सौगंधिकं, सौगन्धिकम् (न०) १ सफेद कमल। २ नील कमल। कत्तृण नामक खुशबूदार तृण विशेष। ३ चुन्नी। लाल।

सौगंधिकः, सौगन्धिकः (पु०) १ गन्धी। इत्रफ़रोश। २ गन्धक।

सौगंध्यं, सौगन्ध्यं (न०) महक या सुगन्धि की मधुरता। खुशबू।

सौचिः, सौचिकः (पु०) दर्ज़ी।

सौजन्यं (न०) १ नेकी। भलाई। भद्रता।

२ उदारता। ३ कृपालुता। दयालुता। ४ मैत्री। प्रेम।

सौडी (स्त्री०) पीपरामूल।

सौतिः (पु०) कर्ण का नामान्तर।

सौत्यं (न०) सारथीपन।

सौत्र (वि०) [स्त्री०—सौत्री] १ सूतसम्बन्धी। २ सूत्र में वर्णित धातु।

सौत्रः (पु०) १ ब्राह्मण। २ भ्वादि आदि दशगण में होने वालों से भिन्न केवल सूत्र में वर्णित धातु।

सौत्रांत्रिकाः } सौत्रान्त्रिकाः } (पु० बहु०) सौगत नाम की बौध धर्म की शाखा विशेष।

सौत्रामणी (स्त्री०) पूर्वदिशा।

सौदर्य (न०) भाईपना।

सौदामनी (स्त्री०) } सौदामिनी (स्त्री०) } सौदाम्नी (स्त्री०) } बिजली। विद्युत।

सौदायिक (वि०) [स्त्री०—सौदायिकी] वह सम्पत्ति जो किसी स्त्री को विवाह के समय दी जाय और जो उसीकी हो जाय।

सौदायिकं (न०) स्त्रीधन जो उसे विवाह के समय मिला हो।

सौध (वि०) [स्त्री०—सौधी] १ अमृत सम्बन्धी। अमृत रखने वाला। २ प्लास्टर वाला। अस्तरकारी किया हुआ।—कारः, (पु०) मैमार। राज। थवई। अस्तरकारी करने वाला।—वासः, (पु०) राजसी भवन। महल जैसा मकान।

सौधं (न०) १ सफेदी से पुता हुआ भवन। विशाल भवन। राजप्रासाद। ३ चाँदी। ४ दूधिया पत्थर।

सौन (वि०) [स्त्री०—सौनी] कसाईपन या कसाई खाने से सम्बन्ध रखने वाला।—धर्म्य, (न०) वैर शत्रुता।

सौन (न०) कसाई के घर का माँस।

सौनिकः (पु०) कसाई।

सौनंदं (न०) बलराम का मूसल।

सौनंदिन् } सौनन्दिन् } (पु०) बलराम का नामान्तर।

सौंदर्य } सौन्दर्य } (न०) सुन्दरता। मनोहरता।

सौपर्ण (न०) १ सोंठ। २ पन्ना।

सौपर्णेयः (पु०) गरुड़ जी।

सौप्तिक (वि०) [स्त्री०—सौप्तिकी] १ निद्रा सम्बन्धी। निद्राजनक। प्रस्वापन।—पर्वन्, (न०) महाभारत का दसवां पर्व।—वधः, (पु०) पाण्डवों के शिविर में सोते हुए लोगों का अश्वत्थामा द्वारा हत्या कृत्य।

सौप्तिकं (न०) १ रात्रि के समय का आक्रमण। २ वह आक्रमण जो रात के समय सोते लोगों पर किया जाय।

सौबलः (पु०) शकुनि का नामान्तर।

सौबली } सौबलेयी } (स्त्री०) गान्धारी या दुर्योधन की माता का नाम।

सौभं (न०) हरिश्चन्द्र की नगरी का नाम, जिसके विषय में कहा जाता है कि, वह अन्तरिक्ष में लटक रही है।

सौभग (न०) १ सौभाग्य। २ समृद्धि। धन-दौलत।

सौभद्रः } सौभद्रेयः } (पु०) सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का नामान्तर।

सौभागिनेयः (पु०) किसी भाग्यवन्ती का पुत्र।

सौभाग्यं (न०) १ अच्छा भाग्य। अच्छी किस्मत। सुगमता। २ शुभत्व। कल्याणत्व। ३ सौन्दर्य। मनोहरता। ४ गरिमा। महत्व। ५ सौभाग्यपन। ६ बधाई। मुबारकबादी ७ इंगुर। सेंदूर। ८ सुहागा।—चिह्नं, (न०) १ सौभाग्य का या हर्ष का लक्षण जैसे रोरी का माथे पर तिलक। २ सौभाग्यवती होने के चिह्न। यथा हाथों की चूड़ियाँ, मांग का सेंदुर, पैरों के बिछुआ।—तन्तुः, (पु०) वह डोरा जो वर के गले में विवाह के दिनों में डाला जाता है। मंगलसूत्र।—तृतीया (स्त्री०) भाद्र.शुक्ल तृतीया।

सौभाग्यवत् (वि०) सौभाग्यवान । शुभ ।

सौभाग्यवती (स्त्री०) विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित है ।

सौभिकः (पु०) मदारी ।

सौभ्रात्रं (न०) भ्रातृभाव ।

सौमनस (वि०) [स्त्री०—सौमनसा या सौमनसी] १ मनोनुकूल । मनप्रसन्नकारक । २ फूल सम्बन्धी । फूलों का ।

सौमनसं (न०) १ कृपालुता । दयालुता । परहितैषिता । २ आनन्द । सन्तोष ।

सौमनसा (स्त्री०) कायफल का बाहिरी छिलका ।

सौमनस्यं (न०) १ मन का सन्तोष । आनन्द । हर्ष । २ श्राद्ध के समय ब्राह्मण को दीगई पुष्पों की भेंट ।

सौमनस्यायनी (स्त्री०) मालती लता के पुष्प ।

सौमायनः (न०) बुद्धदेव का नामान्तर ।

सौमिक (वि०) [स्त्री०—सौमिकी] १ सोमरस से (यज्ञ) किया हुआ । सोमरस सम्बन्धी । २ चन्द्रमा सम्बन्धी । चान्द्रमस ।

सौमित्रः } सौमित्रिः } (पु०) लक्ष्मण का नामान्तर ।

सौमिल्लः (पु०) एक नाटककार जो कालिदास के पूर्व हुए थे ।

सौमेधिकः (पु०) ऋषि । मुनि । अलौकिक बुद्धि-सम्पन्न ।

सौमेरुक (वि०) [स्त्री०—सौमेरुकी] सुमेरु-सम्बन्धी । सुमेरु से निकला हुआ ।

सौमेरुकं (न०) सुवर्ण । सोना ।

सौम्य (वि०) [स्त्री० —सौम्या या सौम्यी] १ चन्द्रमा सम्बन्धी । चन्द्रमा का । २ सोम सम्बन्धी । ३ सुन्दर । मनोहर । प्रिय । ४ मुलायम । कोमल । ५ शुभ ।

सौम्यः (पु०) १ बुध ग्रह का नाम । २ ब्राह्मण को सम्बोधित करने के लिये उपयुक्त सम्बोधनात्मक शब्द । ३ ब्राह्मण । ४ गूलर का वृक्ष । ५ खून की वह दशा जो लाल होने के पूर्व होती है । ६ अन्न का वह रस जो उसके जीर्ण होने पर उदर में बनता है । ७ भूगोल के नवखंडों में से एक का नाम । (पु० बहु०) १ पितृगण विशेष । २ तारागण विशेष ।—उपचारः, (पु०) शान्त उपचार ।– ग्रहः, (पु०) ज्योतिष में चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्ररूप शुभग्रह ।—धातुः, (पु०) श्लेष्मा । कफ । -वारः,– वासरः, (पु०) बुधवार ।

सौर (वि०) [स्त्री०—सौरी] १ सूर्य सम्बन्धी । सौर्य । २ सूर्य को अर्पित । ३ दैवी । स्वर्गीय । ४ शराब या मदिरा सम्बन्धी ।—नक्तं, (न०) व्रत विशेष ।—लोकः, (पु०) सूर्यलोक ।

सौरं (न०) सूर्य सूक्त अर्थात् ऋग्वेद के उन मन्त्रों का सग्रह जो सूर्य सम्बन्धी है ।

सौरः (पु०) १ सूर्योपासक । २ शनिग्रह । ३ सौर्य-मास । वह मास जिसकी गणना संक्रान्ति से हो । ४ सौर्य दिवस । ५ तुम्बुरु नामक पौधा ।

सौरथः (पु०) योद्धा । वीर । भट ।

सौरभ (वि०) [स्त्री०—सौरभी] खुशबूदार । सुगन्धि युक्त ।

सौरभं (न०) १ खुशबू । सुगन्धि । केसर । कुङ्कुम ।

सौरभेय (वि०) [स्त्री०—सौरभेयी] सुरभी सम्बन्धी ।

सौरभेयः (पु०) बैल । वृषभ ।

सौरभी } सौरभेयी } (स्त्री०) १ गौ । २ सुरभी गौ ।

सौरभ्यं (न०) १ महक । खुशबू । २ लावण्य । सौन्दर्य । ३ अच्छा चालचलन । सुकीर्ति । गौरव । नामवरी ।

सौरसैयः (पु०) स्कन्ध । कार्तिकेय ।

सौरसैधव } सौरसैन्धव } (वि०) [स्त्री०—सौरसैन्धवी] आकाश गंगा सम्बन्धी ।

सौरसैधवः } सौरसैन्धवः } (पु०) सूर्य का घोड़ा ।

सौराज्यं (न०) अच्छा राज्य । सुशासन ।

सौराष्ट्र (वि०) [स्त्री०—सौराष्ट्री या सौराष्ट्र]

सुराष्ट्र (अर्थात् सूरत नगर) सम्बन्धी या वहाँ से आया हुआ।

सौराष्ट्रः (पु०) सुराष्ट्र देश । सूरत प्रान्त । (पु०बहु०) सौराष्ट्र देश के अधिवासी।

सौराष्ट्रं (न०) पीतल । फूल । काँसा ।

सौराष्ट्रिक (न०) विष विशेष।

सौराष्ट्रिकः (पु०) फूल या काँसा जैसी धातु विशेष।

सौरिः (पु०) १ शनिग्रह । २ असन नामक वृक्ष । —रत्न, (न०) पुखराज । याकूत ।

सौरिक (वि०) [स्त्री०—सौरिकी] १ स्वर्गीय । २ मादक । नशीला । ३ मदिरा पर लगने वाला (कर या महसूल)

सौरिकः (पु०) १ शनिग्रह । २ स्वर्ग । ३ शराब बेंचने वाला । कलवार ।

सौरी (स्त्री०) सूर्य की पत्नी ।

सौरीय (वि०) [स्त्री०—सौरीयी] १ सौर्य। २ सूर्य के लिये उपयुक्त या सूर्य के योग्य ।

सौर्य (वि०) [स्त्री०—सौर्यी] सूर्य सम्बन्धी । सूर्य का।

सौलभ्यं (न०) सुलभता । सहज में प्राप्तव्य । २ सहजत्व ।

सौल्विकः (पु०) ताबे का काम करने वाला।

सौव (वि०) [स्त्री०—सौवी] १ अपनी निज की सम्पत्ति सम्बन्धी । २ स्वर्गीय या स्वर्ग का।

सौव (न०) आदेश । अनुशासनपत्र ।

सौवग्रामिक (वि०) [स्त्री०—सौवग्रामिकी] अपने निज के ग्राम का ।

सौवर (वि०) [स्त्री०—सौवरी] ध्वनि या किसी राग सम्बन्धी ।

सौवर्चल (वि०) [स्त्री०—सौवर्चली] सुवर्चल नामक देश का या उस देश से निकला हुआ।

सौवर्चलं (न०) १ सज्जीखार । २ लवण विशेष ।

सौवर्ण (वि०) [स्त्री०—सौवर्णी] १ सुनहला । २ तौल विशेष।

सौवस्तिक (वि०) [स्त्री०—सौवस्तिकी] आशीर्वादात्मक।

सौवस्तिकः (पु०) कुलपुरोहित ।

सौवाध्यायिक (वि०) [स्त्री०—सौवाध्यायिकी] स्वाध्याय का । स्वाध्याय से सम्बन्ध रखने वाला ।

सौवास्तव (वि०) [स्त्री०—सौवास्तवी] अच्छी जगह वाला । ख़ूबसूरती से स्थापित ।

सौविदः } सौविदल्लः } (पु०) जनानखाने का अनुचर या चाकर ।

सौवीर (न०) १ बदरीफल । २ सुर्मा । ३ खट्टी काँजी ।

सौवीर (पु०) एक प्रदेश का नाम और वहाँ के अधिवासी ।—अंजनं, (न०) सुर्मा या काजल ।

सौवीरकं (न०) जवा के आटे की खट्टी काँजी ।

सौवीरकः (पु०) १ बदरी का फल । २ सुवीर का वासी । ३ जयद्रथ का नाम ।

सौवीर्यं (न०) बड़ी शूरवीरता या पराक्रम ।

सौशील्यं (न०) अच्छा स्वभाव । अच्छा चलन ।

सौश्रवसं (न०) प्रसिद्धि । प्रख्याति।

सौष्ठवं (न०) १ उत्तमता । नेकी । भलमनसाहत । २ सौन्दर्य । उत्कृष्टतर सौन्दर्य । ३ पटुता। चातुर्य। ४ आधिक्य । ५ हलकापन ।

सौस्नातिकः (पु०) वह जो किसी अन्य से पूंछे कि उसका स्नान भली भाँति हुआ है या नहीं।

सौहार्द (न०) अच्छा हृदय होने का भाव । मैत्री ।

सौहार्दः (पु०) मित्र का पुत्र ।

सौहार्द्यं } सौहृदं } सौहृद्यं } (न०) दोस्ती । प्यार ।

सौहित्यं (न०) १ सन्तोष । अघाना । २ परिपूर्णता । सम्पूर्णता । ३ मिहरबानी । दोस्तीपन ।

स्कंद् } स्कन्द् } (धा० आ०) [स्कन्दते,] १ कूदना । २ उठाना । ३ उड़ेलना । बाहिर निकालना ।

स्कंद् } स्कन्द् } (धा० प०) [स्कन्दति, स्कन्न] १ कूदना । फलाँगना । २ उछलना । ऊपर को

उठना। ३ गिरना। ऊपर से नीचे गिरना। ४ फूट जाना। ५ नाश होना। समाप्त होना। ६ चूना। ७ बहना। निकल पड़ना।

स्कंदः } स्कन्दः } (पु०) १ उछाल। कुलांच। २ पारा। ३ कार्तिकेय। ४ शिव। ५ शरीर। ६ राजा। ७ नदी तट। ८ चालाक आदमी।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक।—षष्ठी, (स्त्री०) चैत्र मास की शुक्ला ६।

स्कंदकः } स्कन्दकः } (पु०) १ कूदने वाला। २ सिपाही।

स्कंदनं } स्कन्दनं } (न०) १ निर्गमन। स्राव। बहाव। २ ढीलापन। रेचन। ३ गमन। चलन। ४ शोषन। सूख जाना। ५ शीतलोपचार से खून का बहना बंद करने की क्रिया।

स्कंध् } स्कन्ध् } (धा० उ०) [स्कन्धयति—स्कन्धयते] जमा करना। एकत्र करना।

स्कंधः } स्कन्धः } (पु०) १ कंधा। २ शरीर। ३ पेड़ का तना या धड़। ४ पेड़ की डाली या गुद्दा। ५ मानवी ज्ञान का एक विभाग या शाखा। (पुस्तक का) अध्याय। परिच्छेद। पर्व। ७ फौज का एक दस्ता या टोली। ८ टोली। दल। समूह। ९ पाँच इन्द्रियाँ। १० सौगत सिद्धों में विज्ञानादि पाँच। बौद्धदर्शन में सांसारिक ज्ञान विशेष। ११ संग्राम। युद्ध। १२ राजा। १३ इकरार। कौल करार। १४ मार्ग। सड़क। १५ बुद्धिमान या पढ़ा लिखा आदमी। १६ कङ्क। बृहत् वक विशेष।—आवारः, (पु०) सेना या सेना का एक विभाग। २ राजधानी। ३ शिविर। पड़ाव।—उपानेय, (वि०) वह जो कंधों पर रख कर लेजाया जाय।—उपानेयः, (पु०) एक प्रकार की सन्धि जिसमें शत्रु का वशित्व स्वीकार करने का चिह्न स्वरूप शत्रु के सामने फल अन्न आदि की भेंट रखनी पड़ती है।—चापः, (पु०) बहँगी का बाँस।—तरुः, (पु०) नारियल का पेड़।—देश, (पु०) कन्धा।—फलः, (पु०) १ नारियल का पेड़। २ विल्व का वृक्ष। ३ गूलर का पेड़।—बन्धनः, (पु०) सुलफा नामक शाक।—मल्लकः, (पु०) बगुला। बूँटीमार।—रुहः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष।—वाहः,—वाहकः, (पु०) बोझ ढोने वाला या लद्दू बैल।—शाखा, (स्त्री०) मुख्य गुद्दा या डाली।—शृङ्गः, (पु०) भैंसा।—स्कन्धः, (पु०) प्रत्येक कंधा।

स्कंधस् } स्कन्धस् } (न०) १ कंधा। २ वृक्ष का तना।

स्कंधिकः } स्कन्धिकः } (पु०) लद्दू बैल।

स्कंधिन् } स्कन्धिन् } (वि०) [स्त्री०—स्कन्धिनी] १ कंधों वाला। २ डालियों वाला। (पु०) वृक्ष। पेड़। दरख्त।

स्कन्न (व० कृ०) १ नीचे गिरा हुआ। नीचे उतरा हुआ। २ बाहिर निकला हुआ। चुआ हुआ। टपका हुआ। ३ छिड़का हुआ। ४ गया हुआ। ५ सूखा हुआ।

स्कंभ् } स्कम्भ् } (धा० आ०।) [स्कंभते, स्कभ्नाति] १ रचना। सिरजना। २ रोकना। बाधा डालना।

स्कंभः } स्कम्भः } (पु०) १ सहारा। रोक। थाम। २ कील जिसके ऊपर कोई वस्तु घूमे। ३ परब्रह्म।

स्कंभनं } स्कम्भनं } (न०) सहारा लगाने की क्रिया।

स्कांद } स्कान्द } (वि०) [स्त्री०—स्कान्दी] १ स्कन्द सम्बन्धी। २ शिव सम्बन्धी।

स्कांदं } स्कान्दं } (न०) स्कन्द पुराण।

स्कु (धा० उ०) [स्कुनोति, स्कुनुते, स्कुनाति, स्कुनीते] १ कूद कूद कर चलना। उछलना। २ उठाना। ऊपर करना। ३ ढाँकना। छा लेना। ४ समीप जाना।

स्कुद् } स्कुन्द् } (धा० आ०) [स्कुन्दते] १ कूदना। २ उठाना। ऊपर उठाना।

स्कोटिका (स्त्री०) पक्षी विशेष।

स्खद् (धा० आ०) [स्खदते] १ काटना। टुकड़े टुकड़े कर डालना। २ नाश करना। ३ चोटिल करना। अनिष्ट करना। मार डालना। ४ भगा

देना। पूर्ण रूप से परास्त करना। ५ थका डालना। कष्ट देना। ६ दृढ़ करना।

स्खदनं (न०) १ काट छाँट। टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया। २ घायल करना। वध। कष्टप्रद। तंग करने की क्रिया।

स्खल् (धा० प०) [स्खलति,] १ ठोकर खाना। ठोकर खाकर गिरना। फिसल पड़ना। २ लड़खड़ाना। हिलना डुलना। ३ आज्ञा का भंग किया जाना। ४ सत्पथ से भ्रष्ट होना। ५ उत्तेजित होना। ६ भूल करना। गलती करना। ७ हकलाना। ८ चूकना। असफल होना। ९ बूंद बूंद कर गिरना। चूना। टपकना। १० जाना। ११ अदृश्य होना। १२ एकत्र करना। जमा करना।

स्खलनं (न०) फिसलन। गिरन। पतन। २ लड़खड़ाने की क्रिया। ३ सत्पथ से भ्रष्ट होना। भूल। चूक। ४ हताशा। असफलता। अनुत्तीर्णता। ५ हकलापन। ६ चुवन। रिसन। टपकन। ७ पटकन। ८ रगड़न। परस्पर ताड़न।

स्खलित (व० कृ०) १ ठोकर खाया हुआ। फिसला हुआ। २ गिरा हुआ। ३ हिलता हुआ। काँपता हुआ। थरथराता हुआ। ४ नशे में चूर। ५ हकलाता हुआ। ६ उत्तेजित। ६ घबड़ाया हुआ। ७ भूल किये हुए। भूला हुआ। ८ चुआ हुआ। टपका हुआ। ९ बाधा डाला हुआ। रोका हुआ। १० परेशान। ११ प्रस्थानित। गया हुआ।

स्खलितं (न०) १ पतन। गिरन। फिसलन। २ सत्पथ से भ्रष्ट होना। ३ भूल। चूक। गलती। ४ अपराध। दोष। पाप। गुनाह। ५ धोखा। विश्वासघात। ८ चालाकी। चालबाज़ी।

स्खुड् (धा० प०) [स्खुडति] ढकना। छा लेना।

स्तक् (धा० प०) [स्तकति] १ वार बचाना। अपनी रक्षा करना। २ ढकेलना।

स्तन् (धा० प०) [स्तनति, स्तनयति, स्तनयते, स्तनित] १ शब्द करना। बजना। २ कराहना। ज़ोर ज़ोर से साँस लेना। ३ गर्जना। दहाड़ना।

स्तनः (पु०) स्त्री की छाती। २ छाती या किसी जानवर का थन। —अंशुकं, (न०) छाती या सीना ढाकने का वस्त्र। —अग्रः, (पु०) चूंची की घुंडी। —अन्तरं, (न०) हृदय। दोनों स्तनों के बीच का स्थान। २ स्तन पर का एक चिह्न जो भावी वैधव्य का द्योतक समझा जाता है। —आभोगं, (न०) स्तनों की वृद्धि या बढ़ाव। २ छातियों या चूंचियों की गोलाई। ३ वह पुरुष जिसकी स्त्रियों जैसी बड़ी छातियाँ हों। —प,—पा,—पायक,—पायिन्, (वि०) दूध पीने वाला। (बच्चा)—भरः, (पु०) १ छातियों का बोझ। स्त्रियों जैसी छातियों वाला पुरुष। —भव, (पु०) रतिबन्ध विशेष। —मुखं,—वृन्तं, (न०) —शिखा, (स्त्री०) चूंची की घुंडी।

स्तननं (न०) १ आवाज़। शोर गुल। २ दहाड़न। गर्जन। ३ कराहट। कराहने का शब्द। ४ ज़ोर ज़ोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना।

स्तनंधय (वि०) छाती का दूध पीने वाला।

स्तनंधयः (पु०) बच्चा जो छाती का दूध पीता हो।

स्तनयित्नुः (पु०) १ गर्जन। दहाड़न। बादलों की कड़क। २ बादल। ३ बिजली। ४ बीमारी। ५ मृत्यु। मौत। ६ तृण विशेष।

स्तनित (व० कृ०) १ शब्दायमान। कोलाहल करने वाला। २ गरजने वाला। दहाड़ने वाला।

स्तनितं (न०) १ बादलों की गरजन। २ दहाड़। गर्ज। कोलाहल। ३ ताली बजाने का शोरगुल।

स्तन्यं (न०) माता का दूध।

स्तवकः (पु०) गुच्छा। गुलदस्ता।

स्तब्ध (व० कृ०) १ रोका हुआ। २ सुन्न। लकवा का मारा हुआ। ३ गतिहीन। अचल। ४ दृढ़। कड़ा। कठोर। सख़्त। ५ हठी। ज़िद्दी। ६ मोटा खरदरा। —कर्ण, (वि०) कानों को छेदना। —रोमन्, (पु०) शूकर। —लोचन, (वि०) वे जिनके पलक न झपकें।

स्तब्धत्वं (न०) } १ कड़ाई। कठोरता। कड़ापन।
स्तब्धता (स्त्री०) } सख़्ती। २ दृढ़ता। अचलता। ३ सुन्न होना। अचैतन्यता। ४ हठीलापन। ज़िद्द। हठ।

स्तभ देखो स्तम्भ।

स्तभः (पु०) बकरा। मेढ़ा।

स्तभु (न०) देखो स्तम्भन।

स्तम् (धा० प०) [स्तमति] घबड़ा जाना। परेशान हो जाना।

स्तंबः } (पु०) १ घास का गट्ठा। २ अनाज की
स्तम्बः } बाल या भुट्टा। ३ गुच्छा। ४ झाड़ी। जंगल। ५ झाड़ी या पौधा जिसका तना या धड़ न देख पड़े। ६ हाथी बाँधने का खूंटा। ७ खंभा। ८ स्तब्धता। सुन्नपना। ९ पहाड़। —करिः, (पु०) अनाज। चावल।—करिता, (स्त्री०) बाल या भुट्टा पैदा करने वाला। अच्छी उगत या उपज।—वनः, (पु०) १ घास खोदने की खुर्पी। २ अनाज काटने का हंसिया। ३ चावल रखने की टोकरी।—घ्नः, (पु०) अनाज काटने का हँसिया। खुर्पी।

स्तंबेरमः } (पु०) हाथी। गज।
स्तम्बेरमः }

स्तंभ् } (धा० आ०) [स्तंभते, स्तभ्नोति,
स्तम्भ् } स्तभ्नाति, स्तम्भित या स्तब्ध] १ रोकना। पकड़ना। गिरफ़्तार करना। दबाना। २ दृढ़ करना। अचल करना। अटल बनाना। ३ सुन्न करना। स्तब्ध करना। ४ सहारा देना। ५ कड़ा होना। ६ अकड़ जाना। अभिमान दिखलाना।

स्तंभते पुरुषः प्रायो यौवनेन धनेन च।
न स्तभ्नाति लितिशोऽपि न स्तभ्नोति युवाप्यसौ॥

स्तंभः } (पु०) १ दृढ़ता। कठोरता। चिमड़ापन।
स्तम्भः } गतिहीनता। २ अकड़न। सुन्नपना। संज्ञाहीनता। ३ रोकथाम। बाधा। अड़चन। ४ रुकावट। दबाना। ५ सहारा। अवलंब। ६ खंभा। ७ पेड़ का तना। धड़। ८ मूढ़ता। मूर्खता। ९ उत्तेजना के भावों का अभाव। १० अलौकिक या मंत्र शक्ति से किसी वेग या भाव को दबाने की क्रिया।—उत्कीर्ण, (वि०) काठ के खंभे में खोदी हुई (मूर्ति)—कर, (वि०) १ स्तब्ध करने वाला। २ रोकथाम करने वाला। बाधा डालने वाला।—पूजा, (स्त्री०) मड़वा की पूजा। यज्ञस्तंभ का पूजन।

स्तंभकिन् } (पु०) चमड़े से मढ़ा हुआ बाजा
स्तम्भकिन् } विशेष।

स्तंभनं } (न०) १ रोक थाम। पकड़ धकड़। २
स्तम्भनं } सुन्न करना। स्तब्ध करना। ३ ख़ामोश करना। ४ सख़्त या कड़ा करना। ५ सहारा देना। ६ तांत्रिक क्रिया विशेष।

स्तंभनः } (पु०) कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
स्तम्भनः }

स्तर् (वि०) छा लेने वाला। ढकने वाला।

स्तर (पु०) १ परत। तह। २ शय्या। बिस्तर। बिछौना।

स्तरणं (न०) बिछाने, बुनने या बखेरने की क्रिया।

स्तरिमन् } (पु०) शय्या। खाट। चारपाई। कोच।
स्तरीमन् }

स्तरी (स्त्री०) १ धूम। भाप। २ बछिया। बछेड़ी। ३ बाँझ गौ।

स्तवः (पु०) १ प्रशंसन। स्तुति। कीर्तिकथन। २ तारीफ़। प्रशंसा।

स्तवक (वि०) [स्त्री०—स्तविका] १ स्तव। स्तुति। प्रशंसा।

स्तवकः (पु०) १ प्रशंसा करने वाला। वंदीजन। भाट। २ प्रशंसा। स्तुति। ३ पुष्पगुच्छ। गुलदस्ता। ४ ग्रन्थ का परिच्छेद। ५ समूह। समुदाय।

स्तवनं (न०) १ प्रशंसा। स्तुति। २ स्तोत्र। स्तव।

स्तावः (पु०) प्रशंसा। स्तुति।

स्तावकः (पु०) प्रशंसा करने वाला। भाट। वंदी जन। चापलूस।

स्तिघ् (धा० आ०) [स्तिघ्नुते] १ चढ़ना। २ आक्रमण करना। ३ चूना। रिसना। बहना।

स्तिप् (धा० आ०) [स्तेपते] चूना । टपकना । रिसना ।

स्तिभिः (पु०) १ रोक । अड़चन । २ समुद्र । ३ गुच्छा । स्तवक ।

स्तिम् } (धा० प०) [स्तिम्यति, स्तीम्यति] १ स्तीम् } गीला होना । भींग जाना । २ अटल होना । सख्त होना ।

स्तिमित (वि०) १ गीला । नम । तर । २ स्तब्ध । निश्चल । शान्त । ३ अटल । गतिहीन । ४ बंद । लकवा मारा हुआ । सुन्न । ५ कोमल । मुलायम । ६ सन्तुष्ट । प्रसन्न ।—वायुः, (पु०) मन्दवायु । —समाधि , (न०) दृढ़ ध्यान । ध्यानमग्नता ।

स्तिमितत्व (न०) दृढ़ता । शान्ति ।

स्तीर्विः (पु०) १ वह ऋत्विक जो किसी नियत ऋत्विक की जगह काम करे । २ घास । ३ आकाश । अन्तरिक्ष । ४ जल । ५ रक्त । ६ इन्द्र का नाम ।

स्तु (धा० उ०) [स्तौति,—स्तवीति, स्तुते,—स्तुवीते, स्तुत] १ प्रशंसा करना । स्तुति करना । २ किसी की प्रशंसा में गीत गाना । ३ स्तवन द्वारा पूजन या सम्मान करना ।

स्तुक (पु०) केशों की चोटी ।

स्तुका (स्त्री०) १ केशों की चोटी । २ भैंसा के सींगों के बीच के छल्लेदार बाल । ३ जांघ । जंघा । कूल्हा ।

स्तुच् (धा० आ०) [स्तोचते] १ चमकना । २ अनुकूल होना । प्रसन्न होना ।

स्तुत (व० कृ०) १ प्रशंसित । कीर्तित २ चापलूसी किया हुआ ।

स्तुति (स्त्री०) १ प्रशंसा । स्तव । स्तुति । २ विरुदावली । ३ चापलूसी । ठकुरसुहाती । झूठी प्रशंसा । ४ दुर्गा देवी का नाम ।—गीत, (न०) विरुदावली के गीत । -पदं, (न०) प्रशंसा की वस्तु ।—पाठकः, (पु०) वंदीजन । भाट ।—वादः, (पु०) प्रशंसावाद । गुणकीर्तन । स्तुति । —व्रत , (पु०) भाट ।

स्तुत्य (वि०) श्लाघ्य । सराहनीय । प्रशंसनीय ।

स्तुनकः (पु०) बकरा ।

स्तुभ् (धा० प०) [स्तोभति] १ प्रशंसा करना । २ प्रसिद्ध करना । प्रतिष्ठा करना । पूजन करना । [आ०—स्तोभते] १ दबाना । बंद करना । रोकना । २ स्तब्ध करना । सुन्न करना । लकवा का मार जाना ।

स्तुभः (पु०) बकरा ।

स्तूप् (धा० प०) (उ०) [स्तुप्नोति, स्तुप्नाति] जमा करना । ढेर करना । २ उठाना । खड़ा करना ।

स्तूपः (पु०) १ ढेर । राशि । टीला । २ बौद्धों के स्तूप या स्तम्भ जो विशेष आकार के होते थे और स्मरणचिह्न स्वरूप समझे जाते थे । ३ चिता ।

स्तृ (धा० उ०) [स्तृणोति, स्तृणुते, स्तृत] छाना । ढकना । तोप लेना । २ फैलाना । बढ़ाना । ३ बखेरना । छितराना । ४ लपेटना ।

स्तृ (पु०) सितारा । तारा ।

स्तृक्ष् (धा० प०) [स्तृक्षति] जाना ।

स्तृतिः (स्त्री०) १ विस्तार । फैलाव । बढ़ाव । २ चादर । चद्दर ।

स्तृह् } (धा० प०) [स्तृहति, स्तृंहति] ताड़न स्तृंह् } करना । चोटिल करना । वध करना ।

स्तॄ (धा० प०) [स्तृणाति, स्तृणीते, स्तीर्ण] ढकना । छुपाना ।

स्तेन् (धा० उ०) चुराना । लूटना ।

स्तेनं (न०) चोरी । चुराने का कार्य ।—निग्रहः, (पु०) १ चोरों को दण्ड । २ चोरी की वारदातों को रोकना ।

स्तेनः (पु०) चोर । लुटेरा । डाँकू ।

स्तेप् (धा० आ०) [स्तेपते] रसना । टपकना । (उ०) [स्तेपयति—स्तेपयते] भेजना । फैंकना ।

स्तेमः (पु०) सील । नमी । तरी ।

स्तेयं (न०) १ चोरी । डाँकेजनी । २ कोई वस्तु जो चुराई गई हो या जिसके चोरी जाने की सम्भावना हो । ३ कोई निजू या गोप्य वस्तु ।

स्तेयिन् (पु०) १ चोर। डाँकू। २ सुनार।

स्तै (धा० प०) [स्तायति] सजाना। पहिनना।

स्तैनं (न०) चोरी। डकैती।

स्तैन्यं (न०) चोरी। डकैती।

स्तैन्यः (पु०) चोर।

स्तैमित्यं (न०) १ दृढता। अटलता। ग़म्लता। २ सुन्नपना।

स्तोक (वि०) १ छोटा। थोड़ा। कम। २ ह्रस्व। ३ कुछ। ४ नीचा।—काय, (वि०) खर्वाकार। वौना। छोटा।—नम्र, (वि०) कुछ कुछ झुका हुआ। कुछ कुछ दबा हुआ।

स्तोकं (अव्यया०) थोड़ा सा। स्वल्प।

स्तोकः (पु०) १ कम परिमाण। थोड़ी मिकदार। क़तरा। बूंद। २ चातक पक्षी।

स्तोककः (पु०) चातक पक्षी।

स्तोकशस् (अव्यया०) थोड़ा थोड़ा करके।

स्तोतृ (पु०) प्रशंसक। भाट।

स्तोत्रं (न०) १ प्रशंसा। तारीफ। स्तुति। २ विरुदावली। प्रशंसात्मक गीत या कविता।

स्तोत्रियः (पु०)
स्तोत्रिया (स्त्री०) } काव्य या कविता विशेष।

स्तोमं (न०) १ शिर। २ धन। दौलत। ३ अन्न। अनाज। ४ लोहे की शान लगी लकड़ी।

स्तोमः (पु०) १ रुकावट। अड़चन। २ रोक। ठहराव। ३ अप्रतिष्ठा। असम्मान। ४ गीत। प्रशंसात्मक कवित्त। ४ सामवेद का भाग विशेष। ५ कोई वस्तु जो ऊपर से किसी वस्तु में घुसेड़ दी गई हो।

स्तोमः (पु०) १ प्रशंसा। विरुदावली। गीत। २ यज्ञभाग। ३ देवता वा पितरों के लिये सोम प्रदान। ४ संग्रह। समूह। ५ बहु संख्यक।

स्तोम्य (वि०) श्लाघ्य। प्रशंसनीय।

स्त्योन (वि०) १ ढेर किया हुआ। २ गाढ़ा। बड़ा। बड़े आकार का। ३ कोमल। मुलायम। चिकना। ४ ध्वनिकारक।

स्त्योनं (न०) १ मुटाई। बड़ा आकार। आकार की वृद्धि। २ स्निग्धता। चिकनाई ३ अमृत। ४ काहिली। सुस्ती। ५ प्रतिध्वनि। झाईं।

स्त्योयनं (न०) ढेर करना। भीड़भाड़। समूहन।

स्त्योनः (पु०) १ अमृत। २ चोर।

स्त्यै (धा० उ०) [स्त्यायति,—स्त्यायते] १ राशि या ढेर के रूप में जमा किया जाना। २ फैलाना। व्याप्त करना। ३ प्रतिध्वनि करना।

स्त्री (स्त्री०) १ नारी। औरत। २ जानवर की मादा [यथा—हरिणस्त्री, गजस्त्री]। ३ भार्या। पत्नी। ४ स्त्रीलिङ्ग।—अगार, (पु०)—आगारं, (न०) ज़नानखाना। अन्तःपुर। हरम।—अध्यक्षः, (पु०) ज़नानखाने या रनवास का अध्यक्ष।—अभिगमनं, (न०) स्त्री के साथ मैथुन।—आजीवः, (पु०) १ वह जो अपनी स्त्री के सहारे रहता हो। २ वह जो वेश्याकर्म के लिये स्त्रियां रखता हो।—कामः, (पु०) १ स्त्री-मैथुन का अभिलाषी। २ भार्या प्राप्ति की कामना।—कार्य, (न०) १ स्त्री का काम। २ स्त्रियों का अनुचर। अन्तःपुर का चाकर।—कुमारं, (न०) स्त्री और बच्चा।—कुसुमं, (न०) स्त्री का रजोधर्म।—क्षीरं, (न०) माता का दूध।—ग, (वि०) स्त्री के साथ मैथुन करने वाला।—गवी, (स्त्री०) दुधार गौ।—गुरुः, (पु०) पुरोहितानी।—घोषः, (पु०) प्रभात। सवेरा।—घ्नः, (पु०) स्त्री की हत्या करने वाला।—चरितं,—चरित्रं (न०) स्त्री के कर्म।—चिह्नं, (न०) १ स्त्री जाति का कोई भी चिह्न या लक्षण। २ भग। योनि।—चौरः, (पु०) स्त्री को चुराने वाला। स्त्री को बहकाने वाला।—जननी, (स्त्री०) वह स्त्री जो लड़की ही जने।—जाति, (स्त्री०) स्त्री जाति। स्त्रीलिङ्ग।—जितः (पु०) भार्या निर्जित स्वामी। स्त्रैणपुरुष।—धनं, (न०) स्त्री की निज सम्पत्ति।—धर्मः, (पु०) १ स्त्री या भार्या का कर्त्तव्य। २ स्त्री सम्बन्धी आईन। ३ रजस्वला धर्म।—धर्मिणी, (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।—ध्वजः, (पु०) किसी भी जानवर की

मादा।—नाथ, (वि०) वह जिसकी रक्षा कोई स्त्री करती हो।—निबंधनं, (न०) गार्हस्थ्य धर्म। पर, (पु०) स्त्री-प्रेमी। लंपट। कामुक। —पिशाची, (स्त्री०) राक्षसी जैसी पत्नी।—पुंसौ, (पु० द्विवचन०) १ पत्नी और पति। २ मर्दाना और ज़नाना।—पुंस लक्षणा, (स्त्री०) स्त्री पुं०—उभय चिह्न विशिष्ट जन्तु या उद्भिद। —प्रत्ययः, (पु०) व्याकरण में स्त्रीवाचक प्रत्यय। —प्रसङ्गः, (पु०) स्त्रीमैथुन।—प्रसूः, (स्त्री०) वह स्त्री जो केवल लड़कियाँ ही जने।—प्रियः, (पु०) आम का वृक्ष।—बाध्य, (पु०) वह पुरुष जो अपने आपको स्त्री द्वारा उत्पीड़ित करावे। —बुद्धिः, (स्त्री०) १ औरत की अक्ल या समझ। २ स्त्री की सलाह या परामर्श।—भोगः, (पु०) स्त्रीमैथुन।—मंत्रः, (पु०) स्त्री की चालाकी। स्त्री की सलाह।—मुखपः; (पु०) अशोक वृक्ष। —यंत्र, (न०) स्त्री के आकार की कल।—रंजन, (न०) ताम्बूल। पान।—रत्नं (न०) अत्युत्तम स्त्री।—राज्यं, (न०) स्त्री का राज्य।—लिंगं, (न०) १ स्त्रीवाची। २ योनि। भग। —वशः, (पु०) स्त्रैण।—विधेय, (वि०) वह जिस पर उसकी स्त्री हुकूमत करे।—संग्रहणं, (न०) १ स्त्री को (अनुचित रूप से) चिपटाने की क्रिया। २ व्यभिचार —सभं, (न०) स्त्रियों का समाज।—संबंधः, (पु०) स्त्री के साथ वैवाहिक सम्बन्ध। २ विवाह द्वारा सम्बन्ध स्थापन। —स्वभाव, (पु०) १ स्त्री की प्रकृति। २ हिंजड़ा। मेहरा। ज़नाना।—हरणं, (न०) स्त्री पर बलात्कार।

स्त्रीतमा } स्त्रीतरा } (स्त्री०) नितान्त स्त्री।

स्त्रीता } स्त्रीत्वं } १ स्त्रीपना। २ भार्यापन। ३ ज़नानपन। महरापन।

स्त्रैण (वि०) [स्त्री०—स्त्रैणी] १ ज़नाना। २ स्त्रियोपयुक्त। स्त्री का। ३ स्त्रियों में रहने वाला।

स्त्रैणं (न०) १ स्त्रियत्व। स्त्रीस्वभाव। २ स्त्रीजाति। ३ स्त्रियों का समूह।

स्त्रैणता (स्त्री०) } स्त्रैणत्व (न०) } १ ज़नानपना। महरापन। २ स्त्रियों के प्रति अत्यन्त अनुरक्ति।

स्थ (वि०) स्थापित। ठहरा हुआ। वर्तमान।

स्थकरं (न०) सुपाड़ी।

स्थग् (धा० प०) [स्थगति, स्थगयति,] १ ढकना। छिपाना। पर्दा डालना। २ भरना। पूर्ण करना। व्याप्त करना।

स्थग (वि०) १ धूर्त। कपटी। बेईमान। २ त्यक्त। लापरवाह। ढीठ।

स्थगः (पु०) १ गुंडा। बदमाश। ठग।

स्थगनं (न०) छिपाव। दुराव।

स्थगरं (न०) सुपाड़ी।

स्थगिका (स्त्री०) १ वेश्या। रंडी। २ वह नौकर जो पान के बीड़े साथ लिये हुए अपने मालिक के संग रहे। ३ एक प्रकार की पट्टी या बंधन।

स्थगित (वि०) ढका हुआ। छिपा हुआ।

स्थगी (स्त्री०) पनड़िब्बा।

स्थगुः (पु०) कूबड़। कुब्ब।

स्थंडिल } स्थण्डिलं } (न०) १ वेदी। वेदिका। २ ऊसरखेत। ३ ढेलों का ढेर। ४ सीमा। हद्द। ५ सीमाचिह्न।—शायिन्, (पु०) व्रत के लिये चबूतरे पर सोने वाला।—सितकं, (न०) वेदी। अग्निवेदी।

स्थपतिः (पु०) १ राजा। महाराज। २ कारीगर। ३ होशियार बढ़ई। ४ सारथी। ५ बृहस्पति देव को बलि चढ़ाने वाला। ६ ज़नानखाने का नौकर। ७ कुबेर का नाम।

स्थपुट (वि०) सङ्कटापन्न। ऊबड़खाबड़। ऊँचानीचा।

स्थल् (धा० प०) [स्थलति] दृढ़ता से खड़ा होना। दृढ़ होना।

स्थलं (न०) १ दृढ़ या सूखी भूमि। सूखी ज़मीन। २ समुद्र या नदी का तट। वेलाभूमि। ३ ज़मीन। धरती। ४ स्थान। जगह। ५ खेत। भूभाग। ६ टीला। ७ विषय। विवादग्रस्त विषय। ८ भाग। [जैसे ग्रन्थ का] ९ ख़ीमा। तंबू।—अंतर, (न०) दूसरी जगह।—आरुढ, (वि०) पृथिवी पर उतरा हुआ।—अरविंद,—कमलं,

कमलिनी, (स्त्री०) वह भूभाग जहाँ कमल उत्पन्न हो।—चर, (वि०) ज़मीन पर रहने वाला। (जलचर का उलटा)—च्युत (वि०) स्थान भ्रष्ट।—विग्रहः, (पु०) वह संग्राम जो सम-भूमि पर हो।

स्थला (स्त्री०) बनावटी सूखी ज़मीन जो ऊँची करके बनायी गई हो।

स्थली (स्त्री०) कड़ी ज़मीन।

स्थलेशय (वि०) ज़मीन पर सोने वाला।

स्थलेशयः (पु०) स्थलचर जीव।

स्थवि: (पु०) १ जुलाहा। २ स्वर्ग।

स्थविर (वि०) १ दृढ़। मजबूत। अचल। २ पुराना। बूढ़ा। प्राचीन।

स्थविरः (पु०) १ बूढ़ा आदमी। २ भिक्षुक। ३ ब्रह्मा का नामान्तर।

स्थविरा (स्त्री०) बुढ़िया।

स्थविष्ठ (वि०) सब से बड़ा। अत्यन्त दृढ़ या मज़बूत।

स्थवीयस् (वि०) सब से बड़ा।

स्था (धा० प०) १ खड़ा होना। २ बसना। रहना। २ बचजाना। ३ विलंब करना। ४ रोकना। बंद करना। चुपचाप खड़ा रहना।

स्थाणु (वि०) दृढ़। मज़बूत। टिकाऊ। अचल। गतिहीन।

स्थाणुः (पु०) १ शिव का नाम। २ खंभा। खूंटा। ३ खूंटी। कील। ४ धूपघड़ी का काँटा। ५ भाला। बर्छा। ६ दीमक का छत्ता। ६ जीवक नामक सुगन्ध द्रव्य।—(पु० न०) पेड़ का ठूँठ।—छेदः, (पु०) वृक्षों को काटने वाला।

स्थंडिलः } १ यज्ञमण्डप में सोने वाला तपस्वी।
स्थण्डिलः } वह तपस्वी जो ज़मीन पर सोवे। २ भिक्षुक।

स्थानं (न०) १ खड़े होने की क्रिया। २ अचलता। अटलता। ३ दशा। हालत। ४ स्थान। जगह। ५ सम्बन्ध। रिश्ता। [यथा पितृस्थाने]। ६ आवासस्थान। रहने की जगह। ७ गाँव। क़स्बा। ज़िला। ८ पद। ओहदा। ६ पदार्थ। वस्तु। १० कारण। हेतु। ११ उपयुक्त स्थान। १२ उपयुक्त या उचित पदार्थ। १३ किसी अक्षर के उच्चारण का स्थान। १४ तीर्थस्थान। १५ वेदी। १६ किसी नगर का कोई स्थल विशेष। ११ वह लोक या पद जो किसी मरे हुए आदमी के जीव को उसके शुभाशुभ कर्मानुसार प्राप्त हो। १८ युद्ध के लिये डट कर खड़ी हुई सेना। १६ टिकाव। पड़ाव। तटस्थता। उदासीनता। २० राज्य के मुख्य अंग, यथा सेना, धन, कोष, राजधानी राज्य। २१ सादृश्य। समानता। २२ अध्याय। परिच्छेद। २३ किसी अभिनयकर्त्ता का अभिनय या पार्ट। २४ अवकाश काल।—अध्यक्षः, (पु०) स्थानीय शासक।—आसेध, (पु०) क़ैद। जेल। गिरफतारी।—चिंतकः, (पु०) अधिकारी विशेष जो प्रायः कार्टरमास्टर के अधिकारों से युक्त होता है।—पाल, (पु०) चौकीदार।—भ्रष्ट, (वि०) स्थानच्युत।—माहात्म्यं, (न०) किसी स्थान या जगह का गौरव या महिमा।—स्थ (वि०) अपने घर में स्थित। अपनी जगह पर ठहरा हुआ।

स्थानकं (न०) १ पद। ओहदा। २ अभिनय के समय का एक हावभाव विशेष। ३ नगर। शहर। ४ बरतन। ५ मदिरा का झाग या फेन। ६ पाठ करने का एक ढंग। ७ यजुर्वेद के तैतरेय का एक भाग या शाखा।

स्थानतस् (अव्यया०) १ निज स्थान या पद के अनुसार। २ अपने उपयुक्त स्थान से। जिह्वा या उच्चारण करने की इन्द्रिय के अनुरूप।

स्थानिक (वि०) [स्त्री०—स्थानिकी] १ स्थानीय। किसी स्थान विशेष का। २ वह जो किसी के बदले प्रयुक्त हो।

स्थानिकः (पु०) १ सदस्य। ओहदेदार। २ किसी स्थान का शासक।

स्थानिन् (वि०) १ स्थान वाला। २ स्थायी। ३ वह जिसका कोई बदलीदार या एवज़दार हो।

स्थानीय (वि०) १ किसी स्थान का। २ किसी स्थान के लिये उपयुक्त।

स्थानीयं (न०) नगर। शहर। कस्बा।

स्थाने (अव्यया०) १ उचित रीत्या। २ बजा। जगह में। ३ क्योंकि। बवज़ह। ४ वैसे ही। उसी प्रकार। वैसे। जैसे। उसी तरह।

स्थापक (वि०) स्थापित करने वाला।

स्थापकः (पु०) १ रंगमञ्च का व्यवस्थापक या प्रबन्धकर्त्ता। २ किसी देवालय का बनाने वाला। किसी मूर्ति की स्थापना करने वाला।

स्थापत्यं (न०) भवन-निर्माण-कला। इमारती काम।

स्थापत्यः (पु०) ज़नानखाने का पहरेदार या रक्षक।

स्थापनं (न०) १ स्थापित करने की क्रिया। २ मन की एकाग्रता। ३ आबादी। बस्ती। ४ पुंसवन संस्कार।

स्थापना (स्त्री०) १ प्रतिष्ठा। २ रंगमञ्च का प्रबन्ध।

स्थापित (व० कृ०) १ रखा हुआ। प्रतिष्ठित किया हुआ। जमा किया हुआ। २ जारी किया हुआ। खोला हुआ। ३ खड़ा किया हुआ। ४ निर्दिष्ट किया हुआ। आदेश किया हुआ। ५ निश्चित किया हुआ। निर्णीत किया हुआ। ६ नियत किया हुआ। नियुक्त किया हुआ। ७ विवाहित। ८ दृढ़। अटल।

स्थाप्य (वि०) रखने योग्य। जमा करने योग्य।

स्थाप्यं (न०) धरोहर। अमानत।—अपहरणं (न०) धरोहर का गबन। अमानत की ख़यानत।

स्थामन् (न०) १ ताकत। शक्ति। २ स्तम्भन-शक्ति। बल। ३ अटलता। अचलता।

स्थायिन् (वि०) १ खड़ा रहने वाला। २ टिकाऊ। ३ रहाइस। ४ स्थायी। दृढ़। मज़बूत। (पु०) स्थायी भाव। (न०) स्थायी दशा या परिस्थिति।—भावः, (पु०) मन की स्थायी दशा।

स्थायुक (वि०) [स्त्री०—स्थायुका,—स्थायुकी] १ सहन करने वाला। ठहराऊ। २ दृढ़। मज़बूत। अचल।

स्थायुकः (पु०) गाँव का मुखिया या अफ़सर।

स्थालं (न०) १ थाली। रक़ाबी। तश्तरी। २ बट-लोई।—रूपं, (न०) बरतन की शक्ल का।

स्थाली (स्त्री०) १ मिट्टी की हँडिया। बटलोई। २ सोम रस तैयार करने का पात्र विशेष। ३ पुष्प विशेष। पाटल फूल।—पाकः, (पु०) गृहस्थ का धार्मिक कृत्य विशेष।—पुरीषं, (न०) बट-लोई का मैल।—पुलाकः, (पु०) बटलोई में रखा हुआ भात।

स्थाउर (वि०) १ अटल। अचल। २ सुस्त। अक्रियाशील। ३ स्थापित।

स्थावरं (न०) १ कोई निर्जीव वस्तु। २ रोदा। कमान की डोरी। ३ स्थावर सम्पत्ति। ४ माल असबाब जो बपौती में मिले।—अस्थावरं,—जंगमं, (न०) १ चल अचल सम्पत्ति। २ जानदार बेजान चीज़ें।

स्थावरः (पु०) पहाड़। पर्वत।

स्थाविर (वि०) [स्त्री०—स्थाविरा, स्थाविरी] मोटा। दृढ़।

स्थाविरं [न०) बुढ़ापा।

स्थासकः (पु०) १ ख़ुशबूदार उबटन लगा कर शरीर को सुवासित करने वाला। २ जल या किसी तरह के पदार्थ का बबूला।

स्थासु (न०) शारीरिक बल।

स्थास्नु (वि०) १ दृढ़। अचल। २ स्थायी। अनन्त। टिकाऊ।

स्थित (व० कृ०) १ खड़ा हुआ। ठहरा हुआ। २ जारी। प्रचलित। ३ खड़ा हुआ। निकला हुआ। ४ वर्तमान। ५ हुआ। वाक़ै हुआ। ६ घेरे हुए। रोके हुए। ७ दृढ़। मज़बूत। ८ दृढ़ सङ्कल्प किये हुए। ९ सिद्ध किया हुआ। आज्ञप्त। १० दृढ़ चित्त। ११ धर्मात्मा। पुण्यात्मा। १२ अपने वचन का धनी। १३ इकरार किया हुआ। कौल करार किया हुआ। १४ तैयार। मौजूद।—धी, (वि०) शान्तचित्त। दृढ़चित्त।—प्रज्ञ, (वि०) स्थिर बुद्धि वाला।—प्रेमन्, (पु०) पक्का या सच्चा मित्र।

स्थितिः (स्त्री०) १ रहन । ठहरन । २ स्थिरता। ठहराऊपन । ३ कर्त्तव्य में स्थिरता । ४ ग्रहणकाल ।

स्थिर (वि०) १ दृढ । मज़बूत । अटल । २ अचल । गतिहीन । ३ ऐसा स्थिर कि हिलडुल भी न सके । ४ स्थायी । अनादि । अनन्त । सदैव रहने वाला । ५ शान्त । स्वस्थ । ६ काम क्रोधादि से रहित या मुक्त । ७ एकरस । दृढप्रतिज्ञ । ८ निश्चित । ९ सख्त । ठोस । १० मज़बूत । ११ निष्ठुरहृदय । सगदिल । दयाहीन ।—अनुराग, (वि०) वह जिसका प्रेम एक सा बना रहे ।—आत्मन्,—चित्त,—चेतस्,—धी,—बुद्धि,—मति, (वि०) १ दृढ मन वाला । दृढप्रतिज्ञ । २ शान्त । स्वस्थ । —आयुस्,—जीविन्, (वि०) दीर्घायु वाला । चिरजीवी ।—आरम्भ, (वि०) किसी कार्य को आरम्भ कर अन्त तक एक सा उद्योग करने वाला । दृढ अध्यवसायी ।—गन्धः, (पु०) चम्पा का फूल ।—छदः, (पु०) भूर्जपत्र का वृक्ष ।—छायः, (पु०) १ वह वृक्ष जिसकी छाया में बटोही ठहरें । २ वृक्ष । पेड ।—जिह्वः. (पु०) मछली ।—जीविता. (स्त्री०) सेंमर का पेड । —दंष्ट्रः, (पु०) साँप ।—पुष्पः, (पु०) १ चम्पा का पेड़ । २ बकुल वृक्ष ।—प्रतिज्ञ, (वि०) १ हठी । ज़िद्दी । आग्रही । २ बात का पक्का । वचन का चौकस ।—प्रतिबन्ध, (वि० , सामना करने में दृढ़ । ज़िद्दी ।—फला, (स्त्री०) कुम्हड़ा । —योनि, (पु०) बडा वृक्ष जिसकी छाया में लोग ठहरें ।—यौवन, (वि०) सदा युवा रहने वाला ।—यौवनः, (पु०) अप्सरा जाति के जीव । परी ।—श्री, (वि०) अनन्त काल रहने वाली समृद्धि ।—संगर, (वि०) सत्यप्रतिज्ञ । अपने वचन को निवाहने वाला । —सौहृद, (वि०) मैत्री में दृढ ।—स्थायिन्, दृढ या अटल रहने वाला ।

स्थिरः (पु०) १ देवता । २ वृक्ष । ३ पर्वत । ४ बैल । साँड़ । ५ शिव । ६ कार्तिकेय । ७ मोक्ष । ८ शनिग्रह ।

स्थिरता (स्त्री०) } १ दृढ़ता । अटलता । अचलता ।
स्थिरत्वं (न०) } २ विक्रम । पराक्रमयुक्त उद्योग । ३ मन की दृढता । मन का एक रस बना रहना । ४ एकाग्रता ।

स्थिरा (स्त्री०) पृथिवी ।

स्थुड् (धा० प०) [स्थुडति] ढकना ।

स्थुलं (न०) एक प्रकार का ज़ंबा ख़ीमा ।

स्थूणा (स्त्री०) १ खंभा । थुनकिया । २ लोहे की प्रतिमा या पुतला । ३ लुहार की निहाई ।

स्थूमः (पु०) १ प्रकाश । २ चन्द्रमा ।

स्थूरः (पु०) १ सांड । २ नर । मनुष्य ।

स्थूल (वि०) १ बडा । बड़े आकार का । २ मोटा । ३ मज़बूत । दृढ । ४ गाढा । ५ मूर्ख । मूढ । ६ सुस्त । मन्दबुद्धि । ७ जो ठीक न हो । —अंत्रं, (न०) बड़ी आँत जो गुदा के पास रहती है ।—आस्य, (पु०) सर्प ।—उच्चयः, (पु०) १ पर्वत से टूटी हुई शिला या चट्टान जो एक टीला सा बन जाय । २ अधूरापन । अपूर्णता । कमी । त्रुटि । ३ हाथी की मध्यम चाल । ४ मुँह पर मुहाँसों का निकलना । ५ हाथी की सूँड़ के नीचे का गढ़ा या पोला सा स्थान ।—काय, (वि०) मोटे शरीर का ।—क्षेडः, —क्ष्वेडः, (पु०) तीर ।—चापः, (पु०) धुनिया की धनुही जिससे रुई धुनी जाती है ।—तालः, (पु०) दलदल में उत्पन्न खजूर का वृक्ष ।—धी,—मति, (वि०) मूर्ख । मूढ़ । बेवक़ूफ ।—नालः, (पु०) लंबी जाति का सरकंडा ।—नासे,—नासिक, (वि०) मोटी नाक वाला ।—नासः, —नासिक, (पु०) शूकर । सुअर ।—पटः, (पु०)—पटं, (न०) मोटा कपडा ।—पट्टः, (पु०) रुई ।—पाद (वि०) वह जिसका पैर फूल उठा या सूज गया हो ।—पादः, (पु०) १ हाथी । २ पील पांव के रोग से पीडित आदमी । —फलः, (पु०) सेम्हर का पेड ।—मानं (न०) मोटा अन्दाज ।—मूलं, (न०) मूली । शलगम ।—लक्ष, —लक्ष्य, (वि०) १ उदार । दिलदार । २ मनस्वी । विद्वान । ३ वह जिसे हानि लाभ का स्मरण रहे ।—शंखा, (स्त्री०) बड़ी भगवाली स्त्री ।—शरीरं, (न०) पांच

भौतिक नाशवान शरीर (सूक्ष्म या लिङ्ग शरीर का उल्टा) —शाटकः,—शाटिः, (पु०) मैाटा कपड़ा ।—शीर्षिका, (स्त्री०) एक जाति की चींटी जिसका सिर शरीर की अपेक्षा बड़ा होता है । —षट् पदः, (पु०) १ भौंरा । २ बरैया ।—स्कन्धः (पु०) लकूचा का पेड़ ।—हस्तं, (न०) हाथी की सूँड ।

स्थूलं (न०) १ ढेर । राशि । २ ख़ीमा । तम्बू । ३ कूट । पर्वत की चोटी ।

स्थूलः (पु०) कटहल का पेड़ ।

स्थूलक (वि०) बड़ा । लंबा । विशाल । मैाटा ।

स्थूलकः (पु०) एक प्रकार की घास या नरकुल ।

स्थूलता (स्त्री०) } १ बड़ापन । मोटापन । बड़ाई ।
स्थूलत्वं (न०) } २ मूढ़ता । मूर्खता ।

स्थूलयति (क्रि०) मैाटा होना । तगड़ा होना । आकार में वृद्धि हो जाना ।

स्थूलिन् (पु०) ऊट ।

स्थेमन् (पु०) दृढ़ता । स्थिरता । टिकाऊपन ।

स्थेय (वि०) स्थापित करने योग्य । तै करने योग्य । निश्चित करने योग्य ।

स्थेय (पु०) १ पंच । निर्णायक । २ पाधा । पुरोहित ।

स्थेयस् (वि०) [स्त्री०—स्थेयसी] दृढ़तर ।

स्थेष्ठ (वि०) बहुत दृढ़ । अत्यन्त मज़बूत ।

स्थैर्यं (न०) १ स्थिरता । दृढ़ता । २ सातत्य । ३ मन की दृढ़ता । ४ धैर्य । ५ कठोरता । ठोसपन ।

स्थौणेयः } (पु०) एक प्रकार की सुगन्धित
स्थौणेयकः } द्रव्य ।

स्थौरं (न०) १ दृढ़ता । शक्ति । बल । २ गधा या घोड़े के ढोने योग्य बोझ ।

स्थौरिन् (वि०) १ लद्दू घोड़ा । २ मज़बूत या ताकतवर घोड़ा ।

स्थौल्यं (न०) स्थूलता । मुटाई । मैाटापन ।

स्नपनं (न०) १ मार्जन । प्रक्षालन । २ स्नान ।

स्नवः (पु०) चुआव । रिसाव । टपकाव ।

स्नस (धा० प०) [स्नसति, स्नस्यति] १ आबाद होना । बसना । २ उगलना (मुंह से) अस्वीकार करना ।

स्ना (धा० प०) [स्नाति, स्नात] १ स्नान करना । नहाना । २ वेद पढ़ने के अनन्तर गृहस्थाश्रम में लैाटते समय स्नान करने की विधि के पूरा करना ।

स्नातकः (पु०) १ वह ब्राह्मण जिसने ब्रह्मचर्याश्रम के कर्म को पूरा करके स्नान विशेष किया हो । २ वेदाध्ययन के अनन्तर गृहस्थाश्रम में लौटने के लिये अङ्गभूत स्नान करने वाला ब्राह्मण । ३ वह ब्राह्मण जिसने किसी धार्मिक अनुष्ठान करने के लिये भिक्षावृत्ति ग्रहण की हो । ४ वह द्विज जिसने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो ।

स्नानं (न०) १ स्नान । शोधन । प्रक्षालन । अवगाहन । २ देवप्रतिमा को विधिपूर्वक स्नान कराने की क्रिया । ३ कोई वस्तु जो स्नान में काम आती हो ।—अगारं, (न०) स्नानागार । गुसलख़ाना । —द्रोणी, (स्त्री०) नहाने के लिये टब । —यात्रा, (स्त्री०) ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन का स्नान पर्व । —विधिः, (पु०) स्नान करने का विधान या नियम ।

स्नानीय (वि०) वह वस्त्र जो नहाते समय धारण करने के योग्य हो । उपयुक्त ।

स्नानीयं (न०) स्नान के काम में आने वाली कोई भी वस्तु यथा जल, उबटन, तैल आदि ।

स्नापकः (पु०) स्नान कराने वाला नैाकर या वह नैाकर जो अपने मालिक के नहाने के लिये जल लावे ।

स्नापनं (न०) स्नान करवाने की क्रिया या किसी के स्नान करते समय उपस्थित रहने की क्रिया ।

स्नायुः (पु०) १ शिरा । नस । २ धनुष का रोदा या डोरी ।—अर्मन्, (न०) नेत्र रोग विशेष ।

स्नायुकः (पु० देखो स्नायु,

स्नावः } (पु०) रग । पुट्ठा ।
स्नावन् }

स्निग्ध (वि०) १ प्रिय । प्यारा । स्नेही । मित्र ।

अनुरक्त। २ चिकना। तेल से तर। ३ चिपचिपा। ४ चमकीला। ५ कोमल। मुलायम। ६ तर। नम। भीगा। ७ शीतल। ८ दयालु कृपालु। ९ मनोहर। मनोज्ञ। १० गाढ़ा। ठस। सघन। ११ एकाग्रता।—तण्डुलः, (पु०) एक प्रकार का चावल जो जल्द उगता है।

स्निग्धं (न०) १ तेल। २ मोम। ३ चमक। दीप्ति। ४ मोटाई। मोटापन।

स्निग्धः (पु०) १ मित्र। दोस्त। प्रियजन। २ लाल रेंड का रूख। ३ एक प्रकार का सनोवर का वृक्ष।

स्निग्धता (स्त्री०) } १ चिकनापन। चिकनाहट।
स्निग्धत्वं (न०) } २ कोमलता। प्रियता। प्रेम।

स्निग्धा (स्त्री०) गूदा। मिंगी।

स्निह् (धा० प०) [स्निह्यति, स्निग्ध] १ प्यार करना। प्रेम करना। स्नेह करना। २ सहज में अनुरक्त होना। ३ प्रसन्न होना। ४ चिपचिपा होना। ५ चिकना होना।

स्नु (धा० प०) [स्नौति, स्नुत] १ टपकना। चूना। २ बहना। प्रवाहित होना।

स्नु (पु० न०) १ अधित्यका। ऊंची समतल भूमि। २ चोटी।

स्नु (स्त्री०) स्नायु। नस। रग। पुट्ठा।

स्नुत (वि०) रिसा हुआ। टपका हुआ। बहा हुआ।

स्नुषा (स्त्री०) बहू। पुत्रवधू।

स्नुह् (धा० प०) [स्नुह्यति, स्नुग्ध, स्नूढ] कै करना। उछांट करना। ओकना।

स्नेहः (वि०) १ वह प्रेम जो बड़ों का छोटों के प्रति होता है। २ चिकनाहट। चिकनापन। ३ नमी। तरी। ४ चरबी। वसा। ५ तेल। ६ शरीर से निकलने वाला कोई भी तरल धातु जैसे वीर्य।—अक्त, (वि०) तेल दिया हुआ। तेल से चिकनाया हुआ।—अनुवृत्तिः, (स्त्री०) मैत्री भाव।—आशः, (पु०) दीपक।—छेद, —भङ्गः, (पु०) मित्रता का टूटना।—पूर्वं, (अव्यया०) प्रेमपूर्वक।—प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेमप्रवाह।—प्रिय, (वि०) जिसको तेल प्रिय हो।—प्रिय, (पु०) दीपक —भूः, (पु०) कफ। श्लेष्म।—रंगः, (पु०) तिल्ली। तिल।—वस्ति, (पु०) गुदामार्ग से पिचकारी की नली से तेल डालना।—विमर्दित, (वि०) तेल की मालिश किये हुए।—व्यक्तिः, (स्त्री०) मित्रता प्रदर्शन। प्रेमजल लाना।

स्नेहन् (पु०) १ मित्र। २ चन्द्रमा। ३ रोगविशेष।

स्नेहन् (वि०) १ चिकनाया। हुआ। २ नाश करने वाला।

स्नेहनं (न०) १ तेल की मालिश। उबटन।

स्नेहित (व० कृ०) १ प्यार किया हुआ। २ कृपालु। प्यारा। ३ चिकनाया हुआ।

स्नेहितः (पु०) मित्र। प्रेमपात्र। माशूक।

स्नेहिन् (वि०) [स्त्री०—स्नेहिनी] १ प्यारा। प्रिय। २ चिकना। मोटा। (पु०) १ मित्र। दोस्त। २ तेल मलने वाला। उबटन लगाने वाला। ३ चितेरा।

स्नेहुः (पु०) १ चन्द्रमा। २ रोगविशेष।

स्नै (धा० प०) [स्नायति] वस्त्र धारण करना। कपड़ा लपेटना।

स्नैग्ध्यं (न०) १ स्निग्धता। चिकनई। २ कोमलता। ३ चिकनाहट।

स्पंद् } (धा० आ०) [स्पन्दते, स्पन्दित] १
स्पन्द् } धड़कना। सिसकना। २ थरथराना। काँपना। ३ जाना।

स्पंदः } (पु०) १ सिसकन। धड़कन। २ कँप-
स्पन्दः } कँपी।

स्पंदनं } (न०) १ धड़कन। सिसकन। २ आन्दो-
स्पन्दन } लन। कंपन। ३ गर्भ में बच्चे की फड़कन।

स्पंदित } (व० कृ०) १ कँपा हुआ। फड़का
स्पन्दित } हुआ। २ गया हुआ।

स्पंदितं } (न०) धड़कन। फड़कन। सिसकन।
स्पन्दितं }

स्पर्ध् (धा० आ०) [स्पर्धते] १ स्पर्धा करना। बराबरी करना। प्रतिद्वन्द्वता करना। २ चिनौती देना। ललकारना।

स्पर्धा (स्त्री०) १ दूसरे को दवाने की इच्छा। प्रतियोगिता। २ ईर्ष्या। डाह। ३ युद्धार्थ आह्वान। ४ समानता। बराबरी।

स्पर्धिन् (वि०) [स्त्री०—स्पर्धिनी] १ स्पर्धा करने वाला। प्रतियोगिता करने वाला। प्रतिद्वन्द्वी। २ ईर्ष्यालु। डाही। ३ अभिमानी। (पु०) प्रतियोगी।

स्पर्श् (धा० आ०) [स्पर्शयते] १ लेना। ग्रहण करना। स्पर्श करना। २ जोड़ना। मिलाना। ३ छाती से लगाना। आलिंगन करना। केरियाना।

स्पर्शः (पु०) १ लगाव। छुआव। २ (ज्योतिष में ग्रहों का) समागम। ३ भिड़ंत। मुठभेड़। ४ अनुभव। संज्ञा। ५ त्वचा का विषय। ६ रोग। बीमारी। पांच वर्गों में से ('क' से 'म' तक) कोई भी व्यञ्जन। ७ भेंट। दान। नजर। ८ पवन। हवा। ९ आकाश। १० स्त्री-मैथुन।—अज्ञ, (वि०) निःसंज्ञ। बेहोश। मूर्च्छित। —उदय, (वि०) जिसके पीछे व्यञ्जन वर्ण हो। —उपलः,—मणिः, (पु०) दिव्यमणि। —लज्जा, (स्त्री०) छुईमुई।—वेद्य, (वि०) जो छूने से जाना जाय।—सञ्चारिन् (वि०) उड़ना। छुआछूत का। संक्रामक।—स्नानं, (न०) उस समय का स्नान जिस समय चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगना आरम्भ होता है। —स्पन्दः,—स्यन्दः, (पु०) मेंढक।

स्पर्शन् (वि०) [स्त्री०—स्पर्शनी] १ छूने वाला। २ प्रभाव डालने वाला।

स्पर्शन (पु०) पवन। हवा।

स्पर्शनं (न०) १ छुआव। लगाव। संसर्ग। २ दान। भेंट।

स्पर्शनकं (न०) साख्य दर्शन में चर्म के लिये पर्यायवाची शब्द।

स्पर्शवत् (वि०) १ स्पर्श द्वारा अनुभव करने योग्य। स्पर्श योग्य। २ कोमल। मुलायम। छूने से आनन्द देने वाला।

स्पर्प् (धा० आ०) [स्पर्पते] नम होना। भींगना।

स्पश् (पु०) शरीर की गड़बड़ी। रोग। बीमारी।

स्पश् (धा० उ०) [स्पशति—स्पशते] १ रुकावट डालना। २ कोई काम करना। ३ सीना। ४ छूना। ५ देखना।

स्पशः (पु०) १ जासूस। २ युद्ध। लड़ाई। ३ जंगली जानवरों से लड़ने वाला। (पुरस्कार पाने की कामना से)

स्पष्ट (वि०) १ साफ। प्रकट। २ असली। सच्चा। ३ पूरा खिला हुआ। ४ साफ साफ देखने वाला।

स्पष्टं (न०) १ स्पष्टता से। साफ तौर से। २ खुलंखुल्ला। साहस पूर्वक।—गर्भा, (स्त्री०) स्त्री जिसके शरीर में गर्भ धारण के लक्षण साफ साफ दिखलाई पड़ते हों।—प्रतिपत्तिः, (पु०) स्पष्ट प्रतीति।—भाषिन्,—वक्तृ, (वि०) साफ साफ कहने वाला।

स्पृ (धा० प०) [स्पृणोति] १ देना। खींचकर निकालना। २ दान करना। बकशना। ३ बचाना। रक्षा करना। ४ रहना।

स्पृक्का (स्त्री०) एक जंगली रूख।

स्पृश् (धा० प०) [स्पृशति, स्पृष्ट] १ छूना। २ धीरे धीरे थपथपाना। ३ लगाव होना। सम्पर्क होना। ४ पानी से छिड़कना या धोना। ५ प्राप्त करना। ६ प्रभाव डालना। ७ हवाला देना।

स्पृश् (वि०) छूने वाला। असर डालने वाला। बेधने वाला। (यथा मर्मस्पृश्)

स्पृष्ट (व० कृ०) १ छुआ हुआ। हाथ से मालूम किया हुआ। २ जो लागू न हो। जो पहुँचे नहीं। ३ कलङ्कित। दागी। भ्रष्ट किया हुआ। ४ जिह्वा के स्पर्श से बना हुआ या उच्चारित वर्ण विशेष।

स्पृष्टिः, स्पृष्टिका } (स्त्री०) १ छुआव। लगाव।

स्पृह् (धा० उ०) [स्पृहयति—स्पृहयते] इच्छा करना। अभिलाष करना। कामना करना। ईर्ष्या करना।

स्पृहणं (न०) इच्छा करने की क्रिया।

स्पृहणीय (वि०) इच्छा करने योग्य । वाञ्छनीय ।

स्पृहयालु (वि०) स्पृहा करने वाला । इच्छा करने वाला ।

स्पृहा (स्त्री०) कामना । अभिलाष । उत्सुकता ।

स्पृह्य (वि०) वाञ्छनीय । ईर्ष्या करने योग्य ।

स्पृह्यः (पु०) जंगली बिजौरे का पेड़ ।

स्पॄ (धा० प०) [स्पृणाति] चोटिल करना । वध करना ।

स्रष्टृ (पु०) देखो स्रष्टृ ।

स्फट् (धा० प०) [स्फटति] फट जाना । बढ़ जाना ।

स्फटः (पु०) साँप का फैला हुआ फन ।

स्फटा (स्त्री०) १ साँप का फैला हुआ फन । २ फिटकरी ।

स्फटिकः (पु०) बिल्लौर । फटिक ।—अचलः, (पु०) मेरु पर्वत ।—अद्रिः, (पु०) कैलास पर्वत ।—अश्मन्—आत्मन्—मणिः (पु०) —शिला, (स्त्री०) स्फटिक या बिल्लौर पत्थर ।

स्फटिकारिः } (स्त्री०) एलुमिनियम धातुमिश्रित
स्फटिकारिका } रसायनिक पदार्थ विशेष ।

स्फटिकी (स्त्री०) फिटकरी ।

स्फंट् (धा० प०) [स्फंटति] तड़क जाना । फूट जाना । खिल जाना । फैल जाना । [उ० स्फंटयति—स्फंटयते] हँसी करना । मज़ाक करना । हँसना । उपहास करना ।

स्फरणं (न०) काँपना । थरथराना । धड़कना ।

स्फाटिक (वि०) [स्त्री०—स्फाटिकी] फटिक पत्थर की ।

स्फाटिकं (न०) बिल्लौर पत्थर ।

स्फाटित (व० कृ०) चिरा हुआ । फटा हुआ । फैला हुआ । सन्धि वाला ।

स्फातिः (स्त्री०) १ सूजन । फूलन । २ वृद्धि । बढ़ती ।

स्फाय् (धा० आ०) [स्फायते—स्फीत] १ मोटा हो जाना । बड़ा हो जाना । बढ़ जाना । २ सूज जाना । फैल जाना । वृद्धि को प्राप्त होना ।

स्फार (वि०) १ बड़ा । दीर्घ । बढ़ा हुआ । फैला हुआ । २ बहुत । विपुल । ३ उच्चस्वरित ।

स्फारं (न०) विपुलता । आधिक्य । बहुतायत ।

स्फारः (पु०) १ सूजन । बाढ़ । वृद्धि । २ (सुवर्ण में का) बुद्बुद । बुलबुला । ३ गुमड़ा । गुमड़ी । थरथराहट । स्पन्दन । धड़कन । ५ मरोड़ । ऐंठन ।

स्फारण (न०) विपुलता । कंपन । थरथराहट ।

स्फालः (पु०) धड़कन । कंपन । थरथराहट ।

स्फालनं (न०) १ कंपन । धड़कन । २ हिलाना । ३ रगड़न । घिट्टन । ४ थपथपी । सहलाना ।

स्फिच् (स्त्री०) चूतड़ । नितम्ब ।

स्फिट् (धा० उ०) [स्फेटयति—स्फेटयते] १ घायल करना । २ वध करना ।

स्फिर (वि०) १ अधिक । बहुत । विपुल । २ अनेक । असंख्य । २ बड़ा । विस्तारित ।

स्फीत (व० कृ०) १ सूजा हुआ । बढ़ा हुआ । २ मोटा ताज़ा । बड़े आकार का । ३ बहुत । असंख्य । अधिक । ४ सफलकाम । समृद्धवान । ५ पैतृक या पुश्तैनी रोग से सताया हुआ ।

स्फीतिः (पु०) १ वृद्धि । बाढ़ । २ विपुलता । आधिक्य । ३ समृद्धि ।

स्फुट् (धा० प० उ०) [स्फुटति, स्फोटति—स्फोटते, स्फुटित] १ फटजाना । अचानक दरक जाना । २ खिलना । फैलना । कुसुमित होना । ३ तितर बितर होना भाग जाना । ४ दृष्टिगोचर होना । प्रत्यक्ष होना । प्रकट होना ।

स्फुट (वि०) १ फटा हुआ । टूटा हुआ । २ पूरा खिला हुआ । फैला हुआ । ३ सफेद । चमकीला । विशुद्ध । ४ प्रसिद्ध । प्रख्यात । ५ छाया हुआ । व्याप्त । ६ उच्चस्वरित । ७ स्पष्ट । सत्य । —अर्थ, (वि०) १ बोधगम्य । साफ । २ अभिप्रायसूचक । गूढार्थप्रकाशक । —तार, (वि०) नक्षत्रविजड़ित । चमकीला ।

स्फुटं (अव्यया०) साफ तौर से। स्पष्टतः।

स्फुटनं (न०) फूट जाना। खुल जाना। दरक जाना। चिर जाना।

स्फुटि } स्फुटी } (स्त्री०) पैर की बिवाई या सूजन।

स्फुटिका (स्त्री०) टुकड़ा। चीप।

स्फुटित (व० कृ०) १ तड़का हुआ। टूटा हुआ। चिरा हुआ। फूटा हुआ। २ कलियाया हुआ। कलियाँ लगा हुआ। फूला हुआ। खिला हुआ। (फूल) ३ साफ किया हुआ। प्रकट किया हुआ। खिलाया हुआ। ४ चीरा हुआ। नष्ट किया हुआ। ५ उपहास किया हुआ। जीट उड़ाया हुआ। —चरण, (वि०) फैले हुए पैरों वाला। चौड़े पैरों वाला।

स्फुट्ट् (धा० उ०) [स्फुट्टयति,—स्फुट्टयते] तिरस्कार करना। अपमान करना।

स्फुड् (धा० प०) [स्फुडति] ढकना।

स्फुंट् } स्फुण्ट् } (धा० प०) [स्फुण्टति] हँसना। मज़ाक करना।

स्फुंड् } स्फुण्ड् } (धा० उ०) [स्फुण्डते, स्फुण्डयति-स्फुण्डयते] देखो स्फुण्ट्।

स्फुत (अव्यया०) बनावटी आवाज़ विशेष।—करः, (पु०) स्फुत् शब्द।

स्फुर् (धा० प०) [स्फुरति, स्फुरित] १ धड़कना। धकधक करना। २ थरथराना। काँपना।

स्फुरः (पु०) १ फड़कन। थरथरी। धड़कन। कँपकँपी। २ सूजन। फूलन। ३ ढाल।

स्फुरणं (न०) १ फड़कन। कँपकँपी। थरथराहट। २ (अङ्ग विशेषों की) फड़कन। जो होने वाले शुभाशुभ के द्योतक होते हैं। ३ दृष्टि पड़ना। नज़र आना। ४ चमक। दमक। कौंधा। ५ स्मरण हो आना।

स्फुरत् (वि०) थरथराता हुआ। चमकीला।

स्फुरित (व० कृ०) १ काँपता हुआ। धड़कता हुआ। २ हिला हुआ। ३ चमका हुआ। ४ अदद। चञ्चल। ५ सूजा हुआ।

स्फुरितं (न०) १ थरथरी। कँपकँपी। २ मन का उद्रेक या उद्वेग।

स्फुर्च्छ् (धा० प०) [स्फूर्च्छति] १ फैलना। बढ़ना। २ भूलना। विस्मरण होना।

स्फुर्ज् (धा० प०) [स्फूर्जति] १ बादल की तरह गरजना। २ चमकना। ३ फट पड़ना। फूट जाना।

स्फुल् (धा० ०) [स्फुलति] १ काँपना। धड़कना। २ प्रकट होना। सामने आना। ३ जमा करना। संग्रह करना। ४ नाश करना। वध करना।

स्फुलं (न०) छोलदारी। तम्बू।

स्फुलनं (न०) कँपकपी। धड़कन।

स्फुलिंगः (पु०) }
स्फुलिङ्ग (पु०) }
स्फुलिंगं (न०) }
स्फुलिङ्गम् (न०) } अँगारा। शोला।
स्फुलिंगा (स्त्री०) }
स्फुलिङ्गा (स्त्री०) }

स्फूर्जः (पु०) १ बिजली गिरने की कड़कड़ाहट। २ इन्द्र का वज्र। ३ सहसा होने वाली बाढ़ या फूटन। ४ दो प्रेमियों का प्रथम समागम जिसमें आरम्भ में हर्ष और अन्त में भय की आशंका हो।

स्फूर्जथुः (पु०) गड़गड़ाहट।

स्फूर्तिः (पु०) १ धड़कन। थरथराहट। २ खिलन। फूलन। ३ प्रकटन। प्राकट्य। ४ स्मरण होना। ५ काव्य सम्बन्धी स्फूर्ति।

स्फूर्तिमत् (वि०) १ कँपकँपा। थरथराने वाला। आन्दोलित। २ कोमल हृदय वाला।

स्फेयस् (पु०) अपेक्षाकृत अधिक। अपेक्षाकृत बड़ा।

स्फेष्ठ (वि०) अत्यधिक अधिक। सब से अधिक बड़ा।

स्फोटः (पु०) १ फूटन। तड़कन। २ प्रकाश। प्रकटीकरण। खुलाव। ३ गुमड़ा। सूजन। गुमड़ी। बलतोड़। ४ मन का वह भाव जो किसी शब्द के

सुनने से मन में उदय होता है। (मीमांसकों का) अनादि शब्द।—बीजकः (पु०) मिलावा।

स्फोटन (वि०) [स्त्री०—स्फोटनी] प्रकटन। प्रकाशन। साफ़ करना।

स्फोटनं (न०) १ सहसा तड़कना। फटना। चिरना। अनाज फटकना। ३ उँगली फोड़ना या चटकाना।

स्फोटनः (पु०) संयुक्त व्यञ्जन वर्णों का पृथक् पृथक् उच्चारण।

स्फोटनी (स्त्री०) छेद करने का औज़ार। बर्मा।

स्फोटा (स्त्री०) साँप का फैला हुआ फन।

स्फोटिका (स्त्री०) पक्षी विशेष।

स्फोरणं (न०) देखो स्फुरणं।

स्फ्य (न०) यज्ञीय पात्र विशेष जो तलवार के आकार का होता है।—वर्तिनिः, (पु०) इस औज़ार से बनाई हुई रेखा या कूंड।

स्म (अव्यया०) १ यह जब किसी वर्तमानकालिक क्रिया वाची शब्द में लगाया जाता है तब वह शब्दभूत कालिक क्रिया का अर्थ देता है। २ निषेध और वर्जन में भी इसका प्रयोग होता है।

स्मयः (पु०) १ आश्चर्य। ताज्जुब। २ अहंकार। अकड़।

स्मरः (पु०) १ यादगारी। स्मरणशक्ति। २ प्रेम। ३ कामदेव।—अङ्कुशः, (पु०) १ उँगली के नख। २ प्रेमी। आशिक। रसिया।—अगारं,(न०)—कूपकः (पु०)—गृहं, (न०)—मंदिरं, (न०) योनि। भग। स्त्री की जननेन्द्रिय।—अन्ध, (वि०) प्रेम से अंधा।—आतुर,—आर्त,—उत्सुक, (वि०) प्रेमविह्वल।—आसव., (पु०) थूक। खखार।—कर्मन्, (न०) कोई भी रसिक कर्म।—गुरुः (पु०) विष्णु।—दशा, (स्त्री०) प्रेम के कारण उत्पन्न हुई शरीर की दशा।—ध्वजः, (पु०) १ इन्द्रिय। २ मत्स्य विशेष। ३ वाद्ययंत्र विशेष।—ध्वजं, (न०) स्त्री की जननेन्द्रिय। भग। योनि।—ध्वजा, (स्त्री०) चाँदनी रात।—प्रिया, (स्त्री०) कामदेव की स्त्री रति।—भासित, (वि०) प्रेम से विह्वल।—मोहः, (पु०) प्रेम से मति का मारा जाना।—लेखनी, (स्त्री०) मैनापक्षी। सारिका पक्षी।—वल्लभः, (पु०) १ वसन्त ऋतु। २ अनिरुद्ध का नाम।—वीथिका (स्त्री०) रंडी। वेश्या।—शासनः, (पु०) शिव जी।—सखः, (पु०) चन्द्रमा।—स्तम्भः, (पु०) लिङ्ग। पुरुष की जननेन्द्रिय।—स्मर्यः, (पु०) गधा। रासभ।—हरः, (पु०) शिव जी।

स्मरणं (न०) १ याद। स्मरण। २ किसी के विषय में चिन्तन। ३ परंपरागत अनुशासन। ४ किसी देवता का मानसिक बारबार नाम कीर्तन करना। ५ सखेद स्मरण। ६ साहित्य में अलंकार विशेष। यथा।

"यथानुभवमर्थस्य दृष्टेतत्सदृशे स्मृतिः स्मरणम्।"

—अनुग्रहः, (पु०) १ कृपा पूर्वक स्मरण। २ स्मरण करने का अनुग्रह।—अपत्यतर्पकः, (पु०) कछुवा।—अयौगपद्यं, (न०) स्मरणों की अनसमसामयिकता।—पद्वी, (स्त्री०) मृत्यु।

स्मार (वि०) कामदेव सम्बन्धी।

स्मारं (न०) स्मरण। याददाश्त।

स्मारक (वि०) [स्त्री०—स्मारिका] स्मरण कराने वाला। याद दिलाने वाला।

स्मारकं (न०) कोई वस्तु जो किसी को स्मरण कराने के लिये हो।

स्मारणं (न०) स्मरण कराना। याद दिलवाना।

स्मार्त (वि०) १ स्मरण शक्ति सम्बन्धी। स्मरण किया हुआ। स्मारक। २ स्मृति में लिखा हुआ। स्मृति पर निर्भर। ३ आईनी-पुस्तकों का अनुसरण करने वाला। ४ गार्हपत्य (यथा अग्नि)

स्मार्तः (पु०) १ स्मृति शास्त्रों में दक्ष ब्राह्मण। २ परंपरागत आईन को मानने वाला। ३ एक सम्प्रदाय विशेष।

स्मि (धा० आ०) [स्मयते, स्मित] १ हँसना। मुसकुराना। २ खिलना। फूलना।

स्मिट् (धा० उ०) [स्मेटयति—स्मेटयते] १ तिरस्कार करना। २ प्रेम करना। ३ जाना।

स्मित (व० कृ०) १ मुसकाया हुआ। २ खिला हुआ। फूला हुआ।

स्मितं (न०) मुसक्यान।—दृश्, (वि०) दृष्टि जिसमें मुसक्यान हो। (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।—पूर्वम्, (अव्यया०) मुसक्यान के साथ।

स्मील् (धा० प०) [स्मीलति] आँख मारना। आँख ऋपकाना।

स्मृ (धा० प०) [स्मृणोति] १ प्रसन्न करना। २ रक्षा करना। बचाना। ३ रहना।

स्मृतिः (स्त्री०) १ याददाश्त। स्मरण शक्ति। २ ऋषि प्रणीत स्मृति शास्त्र। ३ आईन की पुस्तक। ४ अभिलाषा। कामना। ५ समझ। बुद्धि।—अंतरं, (न०) दूसरी स्मृति।—अपेत, (वि०) १ भूला हुआ। २ स्मृति शास्त्र विरुद्ध। ३ न्याय वर्जित। बेआईनी।—उक्त, (वि०) स्मृतियों में वर्णित।—प्रत्यवमर्षः, (पु०) स्मरण शक्ति। धारण। शक्ति।—प्रबन्धः, (पु०) स्मृति सम्बन्धी ग्रन्थ। आईनी किताब।—भ्रंशः, (पु०) स्मरण शक्ति का नाश।—रोधः, (पु०) स्मरण शक्ति का नाश।—विभ्रमः, (पु०) स्मरण शक्ति की गड़बड़ी।—विरुद्ध, (वि०) स्मृति शास्त्र के विरुद्ध। बे आईनी।—विरोधः, (पु०) दो स्मृति वाक्यों में पारस्परक विरोध।—शास्त्रं, (न०) स्मृति ग्रन्थ। आईन की पुस्तक।—शेष, (वि०) मृत। मरा हुआ।—शैथिल्यं, (न०) स्मरण शक्ति की शिथिलता।—साध्य, (वि०) जो स्मृति से सिद्ध किया जासके।—हेतुः (पु०) स्मरण होने का कारण।

स्मेर (वि०) १ मुसकाने वाला। मुसकाता हुआ। २ खिला हुआ। प्रफुल्लित। ३ अभिमानी। ४ प्रत्यक्ष। स्पष्ट। साफ।—विष्किरः, (पु०) मयूर। मोर।

स्यदः (पु०) वेग। रफ़्तार। तेज़ी।

स्यंद्, स्यन्द् (धा० आ०) [स्यन्दते, स्यन्न] १ चूना। रिसना। २ पकना। ३ बहना। निकालना। ४ दौड़ना। पलायन करना।

स्यंदः, स्यन्दः (पु०) १ बहाव। चुआव। २ तेज़ी से गमन। ३ रथ। गाड़ी।

स्यंदन, स्यन्दन (वि०) [स्त्री०—स्यन्दना, स्यन्दनी] तेज़ी से गमन करना। २ तेज़ चाल चलने वाला।

स्यदनं, स्यन्दनं (न०) १ बहाव। टपकाव। रिसाव। चुआव २ वेगवान प्रवाह। ३ जल। पानी।

स्यंदनः, स्यन्दनः (पु०) १ लड़ाई का रथ। रथ। गाड़ी। २ पवन। हवा। ३ तिनिश का पेड़।—आरोहः (पु०) वह योद्धा जो रथ में बैठ कर युद्ध करे।

स्यंदनिका, स्यन्दनिका (स्त्री०) थूक का छींटा।

स्यंदिन्, स्यन्दिन् (वि०) [स्त्री०—स्यंदिनी] १ थूक। २ एक साथ दो बच्चे जनने वाली गौ।

स्यन्न (व० कृ०) १ टपका हुआ। रिसा हुआ। चुआ हुआ। २ गमनशील।

स्यम्, स्यं (धा० प०) [स्यमति, स्यमयति—स्यमयते] १ शब्द करना। २ चिल्लाना। २ जाना। ३ सोचना विचारना।

स्यमंतकः, स्यमन्तकः (पु०) एक प्रकार का बहुमूल्य रत्न। यह श्रीकृष्ण के समय में सत्राजित के पास थी।

स्यमिकः, स्यमीकः (पु०) १ बादल। मेघ। २ दीमक का मिट्टी का टीला। ३ वृक्ष विशेष। ४ समय। काल।

स्यमिका (स्त्री०) नील।

स्यात् (अव्यया०) कदाचित्। शायद। संयोगवश।—वादिन्, (पु०) नास्तिक। शङ्का करने वाला।

स्यालः (पु०) देखो श्याल।

स्यूत (व० कृ०) १ सिला हुआ। २ छिदा हुआ।

स्यूतः (पु०) बोरा।

स्यूतिः (पु०) १ सिलाई। सीवन। २ सुईकारी। ३ बोरा। ४ वंशावली। ५ सन्तति। औलाद।

स्यूतः (पु०) १ किरन। २ सूर्य। बोरा। बोरी।

स्यूमः (पु०) किरन।

स्योन (वि०) १ सुन्दर। मनोहर। २ शुभ। मङ्गलकारक।

स्योमं (न०) प्रसन्नता। आनन्द।

स्योनः (पु०) १ किरन। २ सूर्य। ३ थैली।

स्रंस् (धा० आ०) [स्रंसते, स्रस्त] १ गिरना। टपक पड़ना। रपट जाना। २ डूब जाना। ३ लटकना। ४ जाना।

स्रंसः (पु०) गिरन। फिसलन।

स्रंसनं (न०) १ गिरन। २ गिरवाने की क्रिया। नीचे उतरवाने की क्रिया।

स्रंसिन् (वि०) [स्रंसिनी] १ गिरने वाला। लटकने वाला। २ झूलने वाला।

स्रंह् (धा० आ०) [स्रंहते] विश्वास करना। भरोसा करना।

स्रग्विन् (वि०) [स्त्री०—स्रग्विणी] मालाधारी।

स्रज् (स्त्री०) पुष्पमाला। फूलका गजरा।—दामन् [स्रग्दामन्] (न०) फूलके गजरे की गाँठ।—धर (वि०) मालाधारी।—धरा, (स्त्री०) वृत्त विशेष।

स्रज्वा (स्त्री०) रस्सी। डोरी। डोरा।

स्रद्धू (स्त्री०) अपान वायु। गोज़। पाद।

स्रंभ् } **स्रम्भ्** } (धा० आ०) [स्रम्भते, स्रब्ध] १ विश्वास करना। भरोसा करना।

स्रवः (वि०) १ टपकाव। चुआव। २ वहाव। धार। ३ चश्मा। सोता।

स्रवणं (न०) १ चुआव। टपकाव। रिसाव। २ पसीना। ३ पेशाव।

स्रवत् (वि०) [स्त्री—स्रवंती] बहने वाला।—गर्भा, (स्त्री०) १ पेट गिराने वाली औरत। २ किसी दुर्घटना वश गिरे हुए गर्भ वाली गौ।

स्रष्टृ (पु०) १ बनाने वाला। २ सिरजन हार। रचने वाला। ३ ब्रह्मा।

स्रस्त (व० कृ०) १ गिरा हुआ। टपका हुआ। २ लटकता हुआ। ३ ढीला किया हुआ। ४ खोला हुआ। ५ लटकता हुआ। ६ अलग किया हुआ।—अंग, (वि०) १ ढीले अंगों वाला। २ मूर्छित।

स्रस्तरः (पु०) शय्या। सेज। कोच।

स्राक् (अव्यया०) फुर्ती से। तेज़ी से।

स्रावः (पु०) बहाव। रिसाव। टपकाव।

स्रावक (वि०) [स्त्री०—स्राविका] बहने वाला। टपकने वाला।

स्रावकं (न०) काली मिर्च।

स्रिभ् (धा० प०) [स्रेभति] चोटिल करना। वध करना।

स्रिंभ् (धा० प०) [स्रिंभति] चोटिल करना। वध करना।

स्रिव् (धा० प०) [स्रीव्यति; स्रुत] १ जाना। २ सूख जाना।

स्रु (धा० प०) [स्रवति, स्रुत] १ बहना। २ उड़ेलना। वहाना। ३ जाना। ४ शून्य होना। बह जाना। टपक जाना। ५ (किसी गुप्त बात का) फैल जाना।

स्रुघ्नः (पु०) एक जनपद का नाम जो किसी समय पाटलिपुत्र से एक मंजिल पर था।

स्रुघ्नी (स्त्री०) सज्जी।

स्रुच (स्त्री०) काठ का स्रुवा।—प्रणालिका, (स्त्री०) स्रुवा की नाली जिसमें होकर घी अग्नि में डालते समय बहाया जाता है।

स्रुत (वि०) बहने वाला। टपकने वाला।

स्रुतिः (स्त्री०) १ बहाव। रिसाव। टपकाव। २ राल। थूक। ३ चश्मा।

स्रुवः (पु०) } **स्रुवा** (स्त्री०) } १ यज्ञीय पात्र विशेष। स्रुवा। २ सोता। चश्मा।

स्रेक् (धा० आ०) [स्रेकते] जाना।

स्रै (धा० प०) [स्रायति] १ उबालना। २ पसीजना। पसीना निकालना।

स्रोतं (न०) चश्मा। सोता।

स्रोतस् (न०) १ धार। चश्मा। सोता। जलप्रवाह। तेज प्रवाह वाली नदी। २ नदी। ३ लहर। ४ जल। ५ इन्द्रिय। ६ हाथी की सूँड़।—अंजनं, (= स्रोतोऽञ्जनं) सुर्मा।——ईशः, (पु०)

समुद्र।—रन्ध्रः, (पु०) हाथी की सूँड़ का छेद। नकुना। नथुना।—वहा, (स्त्री०) नदी।

स्रोतस्यः (पु०) १ शिव। २ चोर।

स्रोतस्वती } (स्त्री०) नदी।
स्रोतस्विनी }

स्व (सर्वनाम० वि०) १ निजू। अपना। २ स्वाभाविक प्रकृतिगत। ३ अपनी जाति का। अपनी जाति सम्बन्धी। अक्षपादः, (पु०) न्याय दर्शन का मानने वाला या अनुयायी।—अक्षर, (न०) अपने हाथ की लिखावट।—अधिकार., (पु०) अपना कर्त्तव्य या शासन।—अधिष्ठानं, (न०) शरीरस्थित षट्चक्रों में से एक।—अधीन, (वि०) १ स्वतंत्र। खुदमुख्तार। २ आत्मनिर्भर। ३ अपनी निजू प्रजा। ४ निजू शक्ति या सामर्थ्य के भीतर।-अध्यायः, (पु०) १ वेदाध्ययन।—अनुभूतिः, (स्त्री०) निजू अनुभव। २ आत्मज्ञान।—अंतं, (न०) १ मन। २ गुफा। खोह।—अर्थः, (पु०) १ अपना मतलब। निजू प्रयोजन। २ निजू अर्थ।—आयत्त, (वि०) आत्मनिर्भर।—इच्छा, (स्त्री०) निजू अभिलाष।—उदयः, (वि०) किसी ग्रह का उदय जो किसी स्थल विशेष पर हो।—उपधिः, (पु०) वह तारा जो अपने स्थान पर अचल रहे।—कंपनः, (पु०) पवन। वायु।—कर्मिन्, (वि०) स्वार्थी। खुदगरज।—छंद, (वि०) १ स्वेच्छाचारी। मनमौजी। २ वहशी।—छंदः, (पु०) अपनी इच्छा या मर्ज़ी।—छंदं, (न०) अपनी इच्छानुसार। अपने मन से।—ज, (वि०) स्वयं उत्पन्न।—जः, (पु०) १ पुत्र या बच्चा। २ पसीना।—जं, (न०) खून।—जन, (पु०) बिरादरी। जाति वाला।—तंत्र, (वि०) स्वाधीन। अनियंत्रित। मनमौजी। स्वेच्छाचारी। मनमुखी।—तंत्रः, (पु०) अंधा आदमी।—देशः, (पु०) अपना देश।—धर्मः, (पु०) १ अपना धर्म। २ अपना कर्त्तव्या। ३ विशेषता। निजू सम्पत्ति।—पक्षः, (पु०) निजू दल।—परमण्डलं, (न०) निजू और शत्रु का देश।—प्रकाश, (वि०) स्वयंसिद्ध। स्वयं प्रकाशमान।—प्रयोगात्, (अव्यया०) अपने निजू प्रयत्नों द्वारा।—भटः, (पु०) अपना योद्धा। २ शरीररक्षक।—भावः, (पु०) १ निजू दशा। २ स्वभाव। प्रकृति।—भूः, (पु०) १ ब्रह्मा की उपाधि। २ शिव का नामान्तर। ३ विष्णु का नामान्तर।—योनि, (वि०) मातृ सम्बन्धी। (पु० स्त्री०) अपनी उत्पत्ति का स्थान। (स्त्री०) भगिनी या अन्य कोई समीपी नातेदार। रसः, (पु०) स्वाभाविक स्वाद।—राजः, (पु०) परब्रह्म।—रूप, (वि०) १ समान। सदृश। २ मनोहर। सुन्दर। मनोज्ञ। ३ विद्वान। पण्डित बुद्धिमान्।—रूपं, (न०) १ प्रकृति। २ विलक्षण उद्देश्य ३ प्रकार। तरह। किस्म।—वश, (वि०) १ आत्म-संयमी। २ स्वाधीन।—वासिनी, (स्त्री०) विवाहिता अथवा अविवाहिता वह स्त्री जो युवती होने पर भी अपने पिता के घर में रहे।—वृत्ति, (त्रि०) अपने उद्योग पर निर्भर।—संवृत्त, (वि०) स्वयं अपनी रक्षा आप करने वाला।—संस्था, (वि०) आत्माधिकार। धृति। मन का प्रशान्त भाव। धीरता।—स्थ, (वि०) १ स्वाधीन। २ स्वस्थ। तंदुरुस्त। ३ सन्तुष्ट। सुखी।—स्थानं, (न०) अपना निजू घर।—हस्तं, (न०) अपना हाथ या अपने हाथ का लेख।-हस्तिका, (स्त्री०) कुल्हाड़ी।—हित, (वि०) अपने लिये हितकर।—हितं, (न०) अपनी भलाई। अपना हित।

स्वः (पु०) १ नातेदार। रिश्तेदार। २ जीवात्मा।

स्वं (न०) } धन दौलत। सम्पत्ति।
स्वः (पु०) }

स्वक (वि०) १ अपना। निजू। अपना। २ अपने खानदान। या कुटुम्ब का।

स्वंग } (धा० प०) [स्वंगति] जाना। चलना।
स्वङ्ग }

स्वगः } (पु०) आलिङ्गन।
स्वङ्गः }

स्वच्छ (वि०) १ साफ। बहुत स्वच्छ। चमकीला। विशुद्ध। २ सफेद। ३ सुन्दर। ४ तंदुरुस्त। स्वस्थ।—पत्रं, (न०) अबरक।—वालुकं, (न०)

विशुद्ध खड़िया मिट्टी।—मणिः, (पु०) स्फटिक पत्थर। बिल्लौरी पत्थर।

स्वच्छं (न०) मोती। मुक्ता।

स्वच्छः (पु०) बिल्लौरी पत्थर।

स्वंज्, स्वञ्ज् (धा० आ०) [स्वंजते] आलिङ्गन करना। छाती लगाना। २ घेर लेना। घेरे में कर लेना। उमेठना। मरोड़ना।

स्वठ् (धा० उ०) [स्वठयति, स्वाठयति—स्वठयते, स्वाठयते] १ जाना। २ समाप्त करना। पूरा होना।

स्वतस (अव्यया०) अपना। अपने का।

स्वत्वं (न०) १ आत्म-अस्तित्व। २ मालिकाना। अधिकार। स्वामित्व।

स्वद् (धा० आ०) [स्वदते, स्वदित] स्वादिष्ट लगना। ज़ायकेदार मालूम होना। भाना। पसंद आना।

स्वदनं (न०) चखना। खाना।

स्वदित (व० कृ०) चाखा हुआ। खाया हुआ।

स्वदितं (न०) वाक्य विशेष जिसका प्रयोग श्राद्ध कर्म में किया जाता है और जिसका अभिप्राय है कि यह पदार्थ आपको स्वादिष्ट लगे।

स्वधा (स्त्री०) १ स्वतः प्रवृत्ति। स्वयंसिद्धता। स्वाभाविक चाञ्चल्य। २ निज सङ्कल्प या दृढ़ विचार। मृत पुरुषों के उद्देश्य से हवि आदि का देना। ३ पितरों को भोजनादि निवेदन करना। ४ भोज्य पदार्थ या नैवेद्य। ५ माया या सांसारिक प्रपञ्च। (अव्यया०) पितरों का सम्बोधन विशेष जो नैवेद्य निवेदन करते समय उच्चारित किया जाता है। यथा—"पितृभ्यः स्वधा॥"—कारः, (पु०) स्वधा शब्द का उच्चारण।—प्रियः, (पु०) अग्नि। आग।—भुज् (पु०) १ मरे हुए पूर्वपुरुष। २ देवता।

स्वधिति (पु० स्त्री०), स्वधिती (स्त्री०) कुल्हाड़ी।

स्वन् (धा० प०) [स्वनति] १ शब्द करना। शोरगुल करना। २ गाना।

स्वनः (पु०) ध्वनि। आवाज़। कोलाहल।—उत्साहः, (पु०) गैंड़ा।

स्वनिः (पु०) शोरगुल।

स्वनिक (वि०) शब्द करने वाला।

स्वनित (वि०) शब्दायमान। शोर करने वाला। कोलाहलकारी।

स्वनितं (न०) गड़गड़ाहट का शोर।

स्वप् (धा० प०) [स्वपिति, सुप्त] १ सोना। २ लेटना। आराम करना। ३ ध्यानमग्न होना।

स्वप्नः (पु०) १ निद्रा। नींद। २ स्वप्न। सपना। ख्वाब। ३ काहिली। सुस्ती। औंघाई।—अवस्था, (स्त्री०) सपना देखने की हालत।—उपम, (वि०) १ सपने के सदृश। २ सपने की तरह मिथ्या।—कर,—कृत् (वि०) नींद लाने वाला। निद्राजनक।—गृहं,—निकेतन, (न०) सोने का कमरा। शयनगृह।—दोषः, (पु०) सोते में इच्छा न रहते भी वीर्यपात होना।—धीगम्य, (वि०) सोने जैसी दशा मन की होने पर जानने योग्य।—प्रपञ्चः, (पु०) स्वप्न सदृश मिथ्या संसार।—विचारः, (पु०) स्वप्न के शुभाशुभ फल पर विचार।—शील (वि०) निद्रालु। औंघासा।

स्वप्नज् (वि०) निंदासा। निद्रालु।

स्वयम् (अव्यया०) अपने आप। अपनी इच्छा से।—अर्जित, (वि०) अपनी पैदा की हुई।—उक्तिः, (स्त्री०) १ अपने आप दिया हुआ बयान। २ सूचना। इत्तिला। बयान।—ग्रहः, (पु०) बिना परवानगी लेना।—ग्राह, (वि०) अपने आप पसंद किया हुआ। स्वेच्छा प्रसूत। स्वेच्छाधीन।—जात, (वि०) अपने आप उत्पन्न।—दत्त, (वि०) अपने आप दिया हुआ।—दत्तः, (पु०) वह बालक जो दत्तक होने के लिये अपने आप दूसरे को दे दे।—भुः, (पु०) ब्रह्मा का नामान्तर।—भुवः, (पु०) प्रथम मनु। २ ब्रह्मा का नामान्तर। ३ शिव का नाम।—भू, (वि०) अपने आप उत्पन्न।—भूः, (पु०) १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ काल जो मूर्तिमान

हो। ५ कामदेव।—वरः, (पु०) स्वेच्छानुसार चुनाव। अपने आप (अपने लिये पति को) चुनना।—वरा, (स्त्री०) वह युवती जो अपने पति को अपने आप चुने।

स्वर् (धा उ०) [वरयति—वरयते] दोष निकालना। ऐब जोई करना। कलङ्क लगाना। भर्त्सना करना। फटकारना। धिक्कारना।

स्वर् (अव्यया०) १ स्वर्ग। २ इन्द्रलोक जहाँ पुण्यात्मा जन अपना पुण्यफल भोगने को अस्थायी रूप से रहते हैं। ३ आकाश। अन्तरिक्ष। ४ सूर्य और ध्रुव के बीच का स्थान। ५ तीन व्याहृतियों में से तीसरी व्याहृति।—आपगा,—गङ्गा, (स्त्री०) आकाशगंगा।—गति, (स्त्री०) गमनं, (न०) १ स्वर्गगमन। २ मृत्यु। मौत। —तरुः, (=स्वस्तरु) (पु०) स्वर्ग का वृक्ष।—दृश्, (पु०) १ इन्द्र। २ अग्नि। ३ सोम।—नदी, (=स्वर्णदी) (स्त्री०) स्वर्गीय गङ्गा।—मानवः, (पु०) बहुमूल्य रत्न विशेष।—भानुः, (पु०) राहु का नामान्तर। —मध्य, (न०) आकाश का मध्य बिन्दु।—लोकः, (पु०) स्वर्गलोक। स्वर्ग। बहिश्त।—वधूः, (स्त्री०) अप्सरा।—वापी, (स्त्री०) गंगा।—वेश्या, (स्त्री०) अप्सरा—वैद्य, (पु० द्वि०) अश्विनी कुमार।—षा, (स्त्री०) १ सोम का नामान्तर। २ इन्द्र के वज्र का नामान्तर।

स्वरः (पु०) १ ध्वनि। शोर। २ आवाज़। ३ सरगम। ४ सात की संख्या। ५ स्वरवर्ण। ६ उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। ७ स्वांसा। पवन जो नथुनों में होकर निकले। ८ खर्राटा। सोते समय नाक से निकलने वाला खर्राटे का शब्द। -ग्रामः, (पु०) सरगम।—मण्डलिका, (स्त्री०) वीणा।—लासिका, (स्त्री०) बाँसुरी।—शून्य, (वि०) सङ्गीत रहित।—संयोगः, (पु०) स्वरवर्णों का मेल।—संक्रमः, (पु०) सरगम।—सामन्, (पु०) (बहुवचन) यज्ञकाल का दिन विशेष।

स्वरवत् (वि०) १ स्वर या आवाज वाला। २ जवानी। ३ स्वरयुक्त।

स्वरित (वि०) १ स्वरयुक्त। २ प्रोथित किया हुआ। बाँधा हुआ। ३ स्पष्ट उच्चारित। ४ वक्रीभूत।

स्वरुः (पु०) १ धूप। २ यज्ञ-स्तम्भ का भाग विशेष। ३ यज्ञ। ४ वज्र। ५ तीर।

स्वरुस् (पु०) वज्र।

स्वर्गः (पु०) स्वर्ग। इन्द्रलोक।—आपगा, (स्त्री०) स्वर्गगङ्गा।—ओकस् (पु०) देवता।—गिरिः, (पु०) सुमेरुपर्वत।—द,—प्रद, (त्रि०) स्वर्ग प्राप्ति करने वाला।—द्वारं, (न०) स्वर्ग का फाटक।—पतिः,—भर्तृ, (पु०) इन्द्र।—लोकः, (पु०) १ स्वर्गलोक। २ स्वर्ग।—वधूः, —स्त्री, (स्त्री०) अप्सरा।—साधनं, (न०) स्वर्ग प्राप्ति का उपाय।

स्वर्गिन् (पु०) १ देवता। २ मुर्दा। मृतपुरुष।

स्वर्गीय } (वि०) स्वर्ग का। स्वर्ग सम्बन्धी।
स्वर्ग्य } स्वर्ग लेजाने वाला। स्वर्ग में प्रवेश कराने वाला।

स्वर्ण (न०) १ सुवर्ण। २ मोहर। अशर्फी।—अरिः, (पु०) गंधक।—कणः,—कणिकः, (पु०) रत्ती भर सोना।—काय, (वि०) सुनहले शरीर वाला।—कायः, (पु०) गरुड़।—कारः, (पु०) सुनार।—गैरिकं, (न०) गेरु।—चूडः, (पु०) १ नीलकंठ। २ मुर्गा।—जं, (न०) जस्ता। टीन।—दीधितिः, (पु०) अग्नि।—पक्षः, (पु०) गरुड़ का नाम।—पाठकः, (पु०) सोहागा।—पुष्पः, (पु०) चंपक वृक्ष।—बंधः, (पु०) सोने की धरोहर। भृंगारः, (पु०) सोने का यज्ञीय पात्र विशेष। —माक्षिकं, (न०) सोनामक्खी।—रेखा, —लेखा, (स्त्री०) सोने की लकीर। वणिज्, (पु०) १ सोने का व्यापारी। २ शराफ़।—वर्णा, (स्त्री०) हल्दी।

स्वर्द् (धा० आ०) [स्वर्दते] स्वाद लेना। ज़ायका लेना।

स्वल् (धा० प०) [स्वलति] चलना। जाना।

स्वल्प (वि०) [तुलना में—स्वल्पीयस्, स्वल्पिष्ठ] १ बहुत कम या थोड़ा। तुच्छ। अत्यन्त ह्रस्व।

स्वादु (स्त्री०) अंगूर ।

स्वाद्वी (स्त्री०) अंगूर । दाख ।

स्वानः (पु०) आवाज़ । कोलाहल ।

स्वापः (पु०) १ निद्रा । नींद । २ स्वप्न । सपना । ३ औंघाई । निदास । ४ लकवा । सुन्न । ५ किसी अंग के दब जाने से कुछ देर के लिये उसका सुन्न पड़ जाना या सो जाना ।

स्वापतेयं (न०) धन । सम्पत्ति ।

स्वापदः (पु०) देखो श्वापदः ।

स्वाभाविक (वि०) [स्त्री—स्वाभाविकी] स्वभाव सम्बन्धी ।

स्वाभाविकाः (पु०) (बहुवचन) बौद्धों का सम्प्रादाय विशेष ।

स्वामिता (स्त्री०) } १ मालकाना । स्वत्वाधिकार ।
स्वामित्वं (न०) } २ प्रभुत्व । अधिराजत्व ।

स्वामिन् (वि०) [स्त्री—स्वामिनी] स्वत्वाधिकारी । मालकाने के हक रखने वाला । (पु०) १ मालिक । स्वामी । २ प्रभु । ३ राजा । महाराजा । ४ पति । भर्ता । ५ गुरु । ६ पण्डित ब्राह्मण । सर्वोच्च श्रेणी का तपस्वी या साधु । ७ कार्तिकेय । ८ विष्णु । ९ शिव । १० वात्सायन ऋषि । ११ गरुड़ ।—उपसारकः, (पु०) घोड़ा ।—कार्यं, (न०) राजा या स्वामी का कार्य ।—पाल, (पु० द्वि०) (पशु का) मालिक और पालने वाला ।—सद्भाव, (पु०) १ किसी मालिक या स्वामी की विद्यमानता । २ स्वामी या प्रभु की नेकी ।—सेवा, (स्त्री०) १ स्वामी या मालिक की सेवा । २ पति के प्रति सम्मान ।

स्वाम्य (न०) १ मालिकपन । प्रभुत्व । २ सम्पत्ति का स्वत्वाधिकार । ३ शासन । प्रभुत्व । स्वामित्व ।

स्वायंभुव (वि०) [स्त्री०—स्वायंभुवी] १ ब्रह्मा-सम्बन्धी । २ ब्रह्मा से उत्पन्न ।

स्वायंभुवः (पु०) ब्रह्मा के पुत्र प्रथम मनु का नाम ।

स्वारसिक (वि०) [स्त्री०—स्वारसिकी] स्वाभाविक मिठास वाला ।

स्वारस्यं (न०) १ स्वाभाविक उत्तमता या श्रेष्ठता । २ सुखमा । सौन्दर्य मनोहरता ।

स्वाराज् (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

स्वाराज्यं (न०) १ स्वर्ग का राज्य । इन्द्रपन । इन्द्रत्व । २ ब्रह्मत्व । ब्रह्मपन ।

स्वारोचिषः (पु०) } दूसरे मनु का नाम ।
स्वारोचिषं (न०) }

स्वालक्षण्यं (न०) स्वाभाविक पहचान के चिह्न या लक्षण । लक्षण विशेष ।

स्वाल्प (वि०) [स्त्री—स्वाल्पी] १ थोड़ा । छोटा । २ कम ।

स्वाल्पं (न०) १ कमपन । थोड़ापन । छोटापन । २ संख्या का थोड़ापन ।

स्वास्थ्यं (न०) १ आत्मनिर्भरता । स्वाधीनता । २ विक्रम । दृढ़ता । ३ तंदुरुस्ती । ४ सुखचैन । ५ सन्तोष ।

स्वाहा (अव्यया०) १ देवता के उद्देश्य से हवि छोड़ते समय स्वाहा शब्द का उच्चारण किया जाता है । (स्त्री०) १ अग्नि पत्नी का नाम । २ समस्त देवताओं के उद्देश्य से दिया हुआ नैवेद्य ।—कारः, (पु०) स्वाहा शब्द का उच्चारण ।—पतिः,—प्रियः, (पु०) अग्नि ।—भुज्, (पु०) देवता ।

स्विद् (अव्यया०) प्रश्नवाची शब्द । यह सन्देह और आश्चर्य द्योतक भी है । यह कभी कभी या, एवं, अथवा के अर्थ में भी व्यवहृत होता है ।

स्विद् (धा० प०) [स्विद्यति, स्विद्यित या स्विन्न] पसीना निकालना ।

स्वीकरणं (न०) } १ ग्रहण करना । अंगीकार
स्वीकारः (पु०) } करना । २ रज़ामंदी । प्रतिज्ञा ।
स्वीकृतिः (स्त्री०) } ३ विवाह । परिणय ।

स्वीय (वि०) निजू । अपना ।

स्वृ (धा० प०) [स्वरति] १ पढ़ना । ध्वनि करना । २ प्रशंसा करना । ३ पीड़ित करना ।

स्वॄ (धा० प०) चोटिल करना । वध करना ।

स्वेक् (धा० आ०) [स्वेकते] जाना ।

स्वेदः (पु०) पसेव ।—उदं,—उदकं,—जलं (न०) पसीना ।—ज, (वि०) पसीने से उत्पन्न ।

स्वैर (वि०) १ स्वेच्छाचारी । मनमौजी । २ खुलं-खुल्ला । ३ मंद । धीमा । ४ सुस्त । काहिल । ५ ऐच्छिक ।

स्वैरं (न०) स्वेच्छाचारिता । मनमौजीपना ।

स्वैरं (अव्यया०) १ अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ । २ अपनी मौज के अनुसार । ३ धीमे धीमे । आहिस्ता आहिस्ता । ४ अस्पष्ट रूप से । ऐसी धीमी आवाज़ से कि सुनने ही में न आवे । (स्पष्ट का उल्टा ।

स्वैरिणी (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री ।

स्वैरिन् (वि०) स्वेच्छाचारी । मनमुखी ।

स्वैरिन्ध्री देखो सैरंध्री ।

स्वोरसः (पु०) चिकने पदार्थों का वह तलछट जो पत्थर से पिसा हुआ हो ।

स्वोवशीयं (न०) आनन्द । सुख । समृद्धि । (विशेष कर भविष्य जीवन सम्बन्धी) ।

ह

ह—संस्कृत वर्णमाला का अन्तिम वर्ण ।

ह (अव्यया०) १ अपने से पूर्वगत शब्द पर ज़ोर देने वाला अव्यय विशेष । २ सचमुच, निश्चय, दर-हक़ीकत शब्दों के अर्थ को भी यह सूचित करता है । ३ वैदिक साहित्य में यह पूरक का भी काम देता है और उस दशा में इसका अर्थ कुछ भी नहीं होता । यथा —

"तस्य ह शतं जाया बभूवुः ।"
तस्य ह पर्वत नारदौ गृह ऊपतुः ।

४ यह कभी कभी सम्बोधन के लिये और कदाचित् घृणा और उपहास के लिये भी प्रयुक्त किया जाता है ।

ह (पु०) १ जल । २ आकाश । ३ रक्त । खून । ४ शिवजी का एक रूप ।

हंसः (पु०) [इसकी व्युत्पत्ति हस् से बतलाई जाती है । "भवे द्वर्णागमाद् हंस "—सिद्धान्तकौमुदी] १ हंस नाम का एक पक्षी । [इस पक्षी का जो वर्णन संस्कृत साहित्य में दिया हुआ है वह वास्त-विक कम किन्तु काव्यमय है । कवियों ने इसे ब्रह्मा जी का वाहन लिखा है । और वर्षा ऋतु के आरम्भ में इसका मानसरोवर को चला जाना लिखा है । अधिकांश कवियों के मतानुसार हंस में यह शक्ति है कि, वह दूध में मिले हुए जल को दूध से अलग कर दे । यथा —

सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु,
हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ।

अन्यच्च,

नीर क्षीर विवेके हंसालस्य त्वमेव तनुषे चेत् ।
विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यतिकः ॥

२ परब्रह्म । परमात्मा । ३ जीवात्मा । ४ शारीरगत पवन विशेष । ५ सूर्य । ६ शिव । ७ विष्णु । ८ कामदेव । ९ सन्तुष्ट राजा । १० साधु विशेष । ११ गुरु । १२ कल्मष रहित पुरुष । १३ पर्वत ।—अङ्घ्रिः, (पु०) सेंदुर । ईंगुर ।—अधिरूढ़ा, (स्त्री०) सरस्वती ।—अभिख्यं (न०) चांदी ।—कान्ता, (स्त्री०) हंसी ।—कीलकः, (पु०) रतिबन्ध ।—गति, (वि०) हंस जैसी चाल ।—गद्गदा, (वि०) मधुरभाषिणी स्त्री ।—गामिनी, (स्त्री०) १ हंस जैसी चाल चलने वाली स्त्री । २ ब्रह्माणी ।—तूलः, (पु०) तूलं, (न०) हंस के कोमल पर ।—दाहनं, (न०) अगर । नादः, (पु०) हंस की बोली ।—नादिनी, (स्त्री०) विशेष प्रकार की स्त्री जिसकी परिभाषा यह है :—

गजेन्द्र गमना तन्वी कोकिलालापसंयुता ।
नितंबे गुर्विणी या स्यात् सा स्मृता हंसनादिनी ॥

—माला, (स्त्री०) हंसों का उड़ान विशेष । युवन्, (पु०) हंस का बच्चा ।—रथः,—वाहनः, (पु०) ब्रह्मा के नामान्तर ।—राजः, (पु०)

हंसों का राजा।—लोमशं, (न०) तूतीया।—लोहकं, (न०) पीतल।

हंसकः (पु०) हंस। २ नूपुर।

हंसिका } (स्त्री०) मादाहंस।
हंसी }

हहो (अव्यया०) १ सम्बोधनात्मक अव्यय जो हो हल्लो के समान है। २ तिरस्कार, अहंकार सूचक अव्यय। ३ प्रश्नवाची अव्यय। यथा

हहो ब्राह्मण मा कुप्य।

हक्कः (पु०) हाथियों का आह्वान।

हंजा } (अव्यया०) चाकरानी या दासी को बुलाने के लिये काम में लाया जाने वाला अव्यय।
हंजे }

हट् (धा० प०) [हटति,हटित] चमकना। चमकीला होना।

हट्टः (पु०) बाज़ार। पेंठ।—चौरकः, (पु०) वह चोर जो पेंठ या बाज़ार से चोरी करे।—विलासिनी, (स्त्री०) १ वेश्या। रंडी। २ एक प्रकार की गन्ध द्रव्य।

हठः (पु०) १ ज़बरदस्ती। जबरन। २ ज़ुल्म। अत्याचार।—योगः, (पु०) योग का भेद विशेष। [राजयोग और हठयोग—योग के दो भेद हैं।]

हडिः (पु०)काठ जो देशी रियासतों में क़ैदी के पैर में डाल दिया जाता है।

हडिकः }
हड्डिकः } (पु०) सब से नीच जाति का आदमी।
हड्डिः }

हड्डं (न०) हड्डी।—जं, (न०) गूदा।

हंडा } (स्त्री०) अपने से निम्न श्रेणी की स्त्री को तथा निम्न श्रेणी की स्त्रियों का परस्पर सम्बोधन करने का अव्यय।
हण्डा }

हडे हजे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति।"

हडिका } (स्त्री०) मट्टी का बड़ा बरतन।
हण्डिका }

हंडी } (स्त्री०) हाँडी।
हण्डी }

हंडे (अव्यया०) देखो हंडा

हत (व० कृ०) १ वधकिया हुआ २ ताडित। चोटिल किया हुआ। ३ खोया हुआ। नष्ट हुआ। ४ वञ्चित किया हुआ। ५ हताश ६ गुणित।—आश (वि०) १ आशा रहित। २ निर्बल। शक्तिहीन। ३ निष्ठुर। ४ वाँझ। ५ नष्ट। दुष्ट। धूर्त।—कण्टक, (वि०) शत्रु या काँटों से रहित या मुक्त।—चित्त, (वि०) घबड़ाया हुआ। परेशान।—त्विष्, (वि०) धुंधला।—दैव, (वि०) अभागा। वह जिसके ग्रह अनुकूल न हों।—प्रभाव,—वीर्य, (वि०) शक्ति या विक्रम हीन।—बुद्धि, (वि०) बुद्धिहीन।—भाग,—भाग्य, (वि०) बदकिस्मत। अभागा।—मूर्खः, (पु०) मूढ़। मूर्ख।—लक्षण, (वि०) अभागा।—शेष, (वि०) अवशिष्ट। बचा हुआ।—श्री,—संपद्, (वि०) श्री भ्रष्ट। धनहीन। निर्धन।—साध्वस्, (वि०) भय से युक्त।

हतक (वि०) नीच। कमीना।

हतकः (पु०) भीरु। डरपोंक। कमीना आदमी।

हतिः (स्त्री०) १ नाश। वध। २ ताड़न। चोटिल करना। ३ आघात। ४ हानि। असफलता।

हत्नुः (पु०) १ हथियार। २ रोग। बीमारी।

हत्या (स्त्री०) वध। कत्ल।

हद् (धा० आ०) [हदते, हन्न] हगना। पाखाना फिरना।

हदनं (न०) मल त्यागना। टट्टी जाना।

हन् (धा० प०) (हंति, हत] १ वध करना। मार डालना। २ ताड़न करना। मारना। पीटना। ३ घायल करना। चोटिल करना। तंग करना। सताना। कष्ट देना। ४ त्यागना। दबाना। ५ स्थानान्तरित करना। हटाना। ले जाना। नाश करना। ६ जीतना। हराना। परास्त। करना। ७ बाधा देना। रोकना। ८ भ्रष्ट करना। खराब करना। ९ उठाना। ऊँचा करना। यथा :—

तुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः।"

—शकुन्तला।

१० गुणा करना। ज़रब देना। ११ जाना (इस अर्थ में बहुत ही विरल प्रयोग होता है)।

हन् (वि०) हनन करने वाला। वध करने वाला। नाश करने वाला।

हनः (पु०) वध। नाश। हत्या।

हननं (न०) १ नाशन। हत्या। २ चोटिल करना। ३ गुणा।

हनु } हनू } (पु० स्त्री०) ठोड़ी। ठुड्डी।

हनु (स्त्री०) १ जीवन के लिये अनिष्ट करने वाला। २ हथियार। ३ रोग। बीमारी। ४ मृत्यु। ५ ओषधि विशेष। ६ वेश्या। रंडी।—ग्रहः, (पु०) बंद जावड़ा।—मूलं, (न०) जावड़े की जड़।

हनुमत् } हनूमत् } (पु०) सुग्रीवसचिव एवं श्रीरामदूत हनुमान जी।

हंत } हन्त } (अव्यया०) १ हर्ष, आश्चर्य, व्यस्तता। सूचक अव्यय। २ दयालुता। रहम। ३ दुःख। शोक। ४ सौभाग्य। आशीर्वाद। ५ उद्दीपक या उत्तेजक अव्यय विशेष।—कारः, (पु०) १ हन्त का चीत्कार। २ अतिथि को भेंट में दिया जाने वाला नैवेद्य।

हंतृ (वि०) } हन्तृ (वि०) } [स्त्री०—हंत्री] १ मारने वाला। वध करने वाला। २ हटाने वाला। नाश करने वाला। बदला लेने वाला। (पु०) १ वध करने वाला। हत्या करने वाला। २ चोर डाँकू।

हम् (अव्यया०) १ क्रोध। २ शिष्टता या सम्मान सूचक अव्यय।

हंवा } हम्वा } हंभा } हम्भा } (स्त्री०) पौंहे का रँभाना।—रव, (पु०) पौंहे का राँभना।

हय् (धा० प०) [हयति, हयित] १ जाना। २ पूजा करना। ३ ध्वनि करना। ४ थक जाना।

हयः (पु०) १ घोड़ा। २ मानव जाति विशेष का मनुष्य। ३ सात की संख्या। ४ इन्द्र का नामान्तर।—अध्यक्षः, (पु०) घुड़साल का दारोगा।—आयुर्वेदः, (पु०) सालिहोत्र विद्या।—आरूढः, (पु०) घुड़सावार।—आरोहः, (पु०) १ घुड़सवार। घोड़े पर सवार होने की क्रिया।—इष्टः, (पु०) जवा। यव।—उत्तमः, (पु०) उत्तम घोड़ा।—कोविद, (वि०) घोड़ों को पालने, उनको सिखलाने आदि की विद्या में निपुण।—ज्ञः, (पु०) घोड़ों का सौदागर। साईस।—द्विषत्, (पु०) भैंसा।—प्रियः, (पु०) यवा। जौ।—प्रिया, (स्त्री०) खजूर का पेड़।—मारणः, (पु०) वट वृक्ष।—मेधः, (पु०) अश्वमेध यज्ञ।—वाहन, (पु०) कुबेर का नामान्तर।—शाला, (स्त्री०) घोड़े का अस्तबल।—शास्त्रं, (न०) सालहोत्र विज्ञान।—संग्रहणं, (न०) घोड़े को शिक्षित करने की क्रिया।

हयंकपः (पु०) सारथी। रथवान।

हयी (स्त्री०) घोड़ी।

हर (वि०) [स्त्री०—हरा, हरी] १ हरने वाला। ले जाने वाला। दूर करने वाला। हराने वाला। [यथा खेदहर] २ लाने वाला। ढोने वाला। ले जाने वाला। ३ ग्रहण करना। पकड़ना। आकर्षक। मोहक। ५ (पाने का) अधिकारी। ६ घेरने या रोकने वाला। (किसी मकान या स्थान को) ६ विभाजक।—गौरी, (स्त्री०) अर्धनारी नटेश्वर शिव। चूडामणिः, (पु०) शिव जी की कलगी का रत्न। चन्द्रमा।—तेजस्, (न०) पारा। पारद।—नेत्रं, (न०) १ शिव का नेत्र। २ तीन की संख्या।—बीजं, (न०) शिव का बीज। पारा।—शेखरा, (स्त्री०) शिव की कँलगी। गंगा।—सुनुः, (पु०) स्कन्द।

हरः (पु०) १ शिव। २ अग्नि का नाम। ३ गधा। ४ विभाजक। ५ भिन्न का भाजक।

हरकः (पु०) १ चोर। चुराने वाला। २ दुष्ट। गुंडा। ३ भाग देने वाला।

हरणं (न०) १ पकड़ना। २ लेजाना। चुराना। हटाना। ३ वंचित करना। नाश करना।

४ विभाजन । ५ विद्यार्थी के लिये दान । ६ बाहु । ७ वीर्य । धातु । ८ सुवर्ण । सोना ।

हरि (वि०) १ हरा । धानी । २ भूरा । कपिल । ३ पीला ।

हरि (पु०) १ विष्णु । २ इन्दु । ३ ब्रह्मा । ४ यम । ५ सूर्य । ६ चन्द्रमा । ७ मानव । ८ किरण । शिव । १० अग्नि । ११ हवा । १२ शेर । सिंह । १३ घोड़ा । १४ इन्द्र का घोड़ा १५ वानर । लँगूर । १६ कोयल । १७ मेंढक । १८ तोता । १९ सर्प । सॉप । २० भूरा या पीला रंग । २१ मयूर । मोर । २२ भर्तृहरि का नामान्तर ।—अक्षः, (पु०) १ सिंह । २ कुबेर । ३ शिव ।—अश्वः, (पु०) १ इन्द्र । २ शिव ।—कान्त, (वि०) १ इन्द्र का प्यारा । २ सिंह की तरह मनोहर ।—केलीयः, (पु०) बंग देश ।—चंदनः, (पु०) —चंदनं, (नं०) १ चन्दन विशेष । २ स्वर्ग के पॉच वृक्षों में से एक ।—

" पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचंदनं ॥

—चंदनं, (न०) १ चॉदनी । २ केसर । जाफ़रॉन । ३ कमल का रेशा ।—ताल, (पु०) पीले रंग का कबूतर ।—तालं, (न०) हरताल ।—ताली, (स्त्री०) दूर्वा घास ।—तालिका, (न०) भाद्र शुक्ला चतुर्थी । २ दूर्वा घास ।—तुरङ्गमः, (पु०) इन्द्र का नाम ।—दासः, (पु०) विष्णुभक्त ।—दिनं, (न०) विष्णु उपासना का दिवस विशेष ।—देवः, (पु०) श्रवण नक्षत्र ।—द्रवः, (पु०) हरे रंग का द्रव पदार्थ ।—द्वारं, (न०) हरिद्वार नामक तीर्थ विशेष ।—नेत्रं, (न०) १ विष्णु की आँख । २ २ सफेद कमल ।—नेत्रः, (पु०) उल्लू ।—पदं, (न०) वसन्त कालीन वह दिन जब दिन और रात बराबर होती है । २१ मार्च ।—प्रियः, (पु०) १ कदंब का वृक्ष । २ शख । ३ मूर्ख । ४ उन्मत्त पुरुष । ५ शिव ।—प्रियं, (न०) एक प्रकार का चदन ।—प्रिया, (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ तुलसी । ३ पृथिवी । ४ द्वादशीतिथि ।—भुज्, (पु०) सॉप । सर्प ।—मथः,—मन्थकः, (पु०) छोटी मटर ।—लोचनः, (पु०) १ मकरा । २ उल्लू ।—वल्लभा, (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ तुलसी ।—वासरः, (पु०) एकादशी ।—वाहनः, (पु) १ गरुड । २ इन्द्र ।—शरः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—सख, (पु०) गन्धर्व ।—सङ्कीर्तनं, (न०) विष्णु का नाम-कीर्तन ।—सुन.,—सूनुः, (पु०) अर्जुन का नाम ।—हयः, (पु०) १ इन्द्र । २ सूर्य ।—हरः, (पु०) विष्णु और शिवात्मक देव विशेष । -हेतिः, (स्त्री०) १ इन्द्रधनुष । २ विष्णु का चक्र ।

हरिकः (पु०) १ पीले या भूरे रंग का घोड़ा । २ चोर । ३ ज्वारी ।

हरिण (वि०) [स्त्री०— हरिणी] १ पीला । उज्जर । २ ललौंहॉ या पिलौंहॉं । सफेद ।

हरिणः (पु०) १ हिरन । बारहसिंहा । [ये पॉच तरह के कहे गये हैं यथा — -

हरिणश्चापि विज्ञेयः पञ्चभेदोऽत्र भैरव ।
ऋष्यः खड्गो रुरुश्चैव पृषतश्च मृगस्तथा ।]

२ सफेद रग । ३ हंस । ४ सूर्य । ५ विष्णु । शिव ।—अक्ष, (वि०) हिरन जैसी आँखों वाला ।—अक्षी, (स्त्री०) सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री । —अङ्कः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—कलङ्कः,—धामन्, (पु०) चन्द्रमा ।—नयन, —नेत्र,—लोचन (वि०) मृगनयन । हिरन जैसे नेत्रों वाला । - हृदय, (वि०) डरपोंक । भीरु ।

हरिणकः (पु०) हिरन ।

हरिणी (स्त्री०) १ हिरनी । मृगी । २ चित्रिणी लक्षणाक्रान्त स्त्री ३ पुष्प वृक्ष विशेष । ४ सुन्दर सुवर्ण प्रतिमा । ५ वृत्त विशेष । दश ।

हरित (वि०) १ हरा । हरौंहॉं । २ पीला । पिलौंहॉं । ३ धानी । (पु०) १ हरा या पीला रङ्ग । २ २ सूर्य का एक घोड़ा । कुम्मैद घोड़ा । ३ तेज़ घोड़ा । ४ सिंह । ५ सूर्य । ६ विष्णु । (पु० न०) १ घास । २ दिशा ।—अंतः, (पु०) दिगन्त । —अन्तरं, (न०) भिन्न भिन्न दिशाएँ ।—अश्वः, (पु०) १ सूर्य । २ अर्क या मदार का

पौधा।—गर्भः, (पु०) हरे या पिलोहें रङ्ग के वे कुश जिनकी पत्ती चौड़ी होती है।—मणिः, (पु०) [=हरिन्मणि] पन्ना । हरे रंग की मणि ।—वर्ण, (वि०) हरीहाँ । हरा रङ्गा हुआ ।

हरित (वि०) [स्त्री०—हरिता या हरिणी] १ हरा । हरे रङ्ग का । सब्ज । २ भूरे रंग का ।

हरितः (पु०) १ हरा रङ्ग । २ सिंह । ३ तृण विशेष । —अश्मन्, (पु०) १ पन्ना । २ नीलाथोथा ।

हरितकं (न०) हरी घास ।

हरिता (स्त्री०) १ दूर्वा घास । २ हल्दी । ३ अगुर ।

हरिताल (देखो) हरि के अन्तर्गत ।

हरिद्रा (स्त्री०) १ हल्दी । २ पिसी हुई हल्दी की जड़ ।—आभ, (वि०) पीले रङ्ग का ।—गणपतिः,—गणेशः, (पु०) गणेश की मूर्ति विशेष ।—राग,—रागक, (वि०) १ हल्दी के रङ्ग का । २ प्रेम में अदृढ । चंचलमना । हलायुध के मतानुसार ।

क्षणमात्रानुरागश्च हरिद्राराग उच्यते ।

हरियः (पु०) हरे रंग का घोड़ा ।

हरिश्चन्द्रः (पु०) सूर्यवंशी स्वनामख्यात एक राजा ।

हरीतकी (स्त्री०) हर्र का पेड़ ।

कदाचित् कुपिता माता नोदरस्था हरीतकी ।

हर्तृ (वि०) [स्त्री०—हर्त्री] १ हरने वाला । ज़बरदस्ती छीनने वाला । (पु०) १ चोर । डाँकू । २ सूर्य ।

हर्मन् (न०) जमुहाई । अँगड़ाई ।

हर्मित (व० कृ०) १ फैंका हुआ । २ जला हुआ । ३ जमुहाई लिए हुए ।

हर्म्य (न०) राजभवन । राजप्रासाद । कोई भी विशाल भवन । २ तंदूर । चूल्हा । अग्निकुण्ड । अंगीठी । ३ आग का गढ़ा । भूतावास । अधोलोक । —अंगनं,—अङ्गणं (न०) राजप्रासाद का आँगन या सहन ।

हर्षः (पु०) १ प्रसन्नता । आल्हाद । खुशी । २ उत्फुल्लता । रोमाञ्च होना ।—आन्वित, (वि०) हर्षपूरित । हर्षाविष्ट ।—उत्कर्ष, (पु०) हर्ष का आधिक्य ।—कर, (वि०) प्रसन्नकारक ।—जड, (वि०) हर्ष से विह्वल ।—विवर्धन, (वि०) हर्ष बढ़ाने वाला ।—स्वनः, (पु०) हर्ष का चीत्कार ।

हर्षक (वि०) [स्त्री०—हर्षका, हर्षिका] प्रसन्नकारक

हर्षण (वि०) [हर्षणा या हर्षणी] हर्ष उत्पादक ।

हर्षणं (न०) प्रसन्नता । हर्ष ।

हर्षणः (पु०) १ कामदेव के पांच बाणों में से एक । २ नेत्र रोग विशेष । श्राद्ध कर्म का अधिष्ठाता देवता ।

हर्षयित्नु (वि०) प्रसन्नकारक । (न०) सुवर्ण । (पु०) पुत्र ।

हर्षुल (पु०) १ हिरन । २ प्रेमी ।

हल् (धा० प०) [हलति, हलित] हल चलाना । —आयुध, (पु०) बलराम की उपाधि ।—धर, —भृत्, (पु०) १ हलवाहा । २ बलराम का नामान्तर ।—भूति,—भूतिः, (स्त्री०) हल चलाने की क्रिया । किसानी । कृषि ।—हृतिः, (स्त्री०) हल चलाना ।

हलं (न०) हल ।

हलहला (स्त्री०) हे । अरे । हो ।

हला (स्त्री०) १ सखी । २ पृथिवी । ३ जल । ४ शराव । (अव्यया०) स्त्रियों को सम्बोधन करने का अव्यय ।

हला शकुन्तले अत्रैव तावन्मुहूर्तंतिष्ठ ।

हलाहल देखो हालहल ।

हलिः (पु०) १ बड़ा हल । २ कूण्ड । हलाई । ३ कृषि ।

हलिन् (पु०) १ हलवाहा । किसान । २ बलराम का नाम ।—प्रियः, (पु०) कदंब वृक्ष ।—प्रिया, (स्त्री०) शराव ।

हलिनी (स्त्री०) अनेक हल ।

हलीनः (पु०) साल का वृक्ष ।

हलीषा (स्त्री०) हल की मुठिया ।

हल्य (वि०) १ हल चलाने लायक । २ बदशक्ल । बदसूरत ।

हल्या (स्त्री०) हलों का समुदाय ।

हल्लकं (न०) लाल कमल ।

हल्लनं (न०) करवटें बदलना ।

हल्लीशं } हल्लीषं } (न०) १ अठारह उपरूपकों में से एक । २ एक प्रकार का गोलाकार नृत्य ।

हल्लीषकः (पु०) गोलाकार नृत्य ।

हवः (पु०) चढ़ावा । बलि । भेंट ।

हवनं (न०) १ होम । २ बलि । चढ़ावा । आह्वान । आमन्त्रण । प्रार्थना । ४ आदेश । आज्ञा । ५ ललकार । ६ युद्ध के लिए ललकार । —आयुस्, (पु०) अग्नि ।

हवनीय (वि०) १ हवन करने योग्य । २ घी ।

हवित्री (स्त्री०) हवन कुण्ड ।

हविष्मत् (व०) हवि वाला ।

हविष्य (न०) १ हवन करने योग्य पदार्थ । २ घी ।—अन्नं, (न०) वे भोज्य पदार्थ जो व्रत में खाये जा सकें ।—आशिन्,—भुज्, (पु०) अग्नि ।

हविस् (न०) १ चढ़ावा या भेंट जो अग्नि में भस्म हो चुका हो । २ घी । जल ।—अशनं, (न०) (=हविरशनं) घी खाने वाला ।—अशनः, (पु०) अग्नि ।—गन्धा, [स्त्री० =हविर्गन्धा] समी का पेड़ ।—गेहं, (न०) [=हविर्गेह] वह स्थान या घर जिसमें होम किया जाय । —भुज, (पु०) [हविर्भुज्] अग्नि ।—यज्ञः, (पु०) [=हविर्यज्ञः] यज्ञ विशेष ।—याजिन्, [हविर्याजिन्] (पु०) ऋत्विक ।

हव्य (वि०) होम करने योग्य ।

हव्यं (न०) १ घी । २ देवताओं के लिए चढ़ावा । ३ चढ़ावा । नैवेद्य ।—आशः, (पु०) आग । —कव्यं, (न०) देवताओं और पितरों का चढ़ावा ।—वाहः,—वाहनः, (पु०) अग्नि ।

हस् (धा० प०) [हसति] १ हँसना । मुसकाना । २ मज़ाक उड़ाना । हँसी उड़ाना । ३ समान होना । हँसी । मज़ाक । ५ खिलना । फूलना । ६ चमकना । स्पष्ट होना ।

हसः (पु०) १ हँसी । हास्य । २ ठठोली । ३ प्रसन्नता । हर्ष ।

हसनं (न०) हँसी ।

हसनी (स्त्री०) १ सफरी अँगीठी । २ मल्लिका विशेष।

हसिका (स्त्री०) हँसी । ठठ्ठा ।

हसित (व० कृ०) १ हँसता हुआ । हँसा हुआ । २ खिला हुआ ।

हसितं (न०) १ हँसी । २ ठठ्ठा । ठठोली । ३ कामदेव का धनुष ।

हस्तं (न०) चाम की धौंकनी ।—अक्षरं, (न०) हस्ताक्षर । दस्तख़त । अंगुलि, (स्त्री०) हाथ की उँगली ।—अभ्यास, (पु०) हस्तस्पर्श । हाथ का लगाव ।—अवलंबः (पु०),—आलंबनं, (न०) हाथ का सहारा ।—आमलक, (न०) हाथ का आँवला । [एक यह मुहावरा है जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है, जिस समय किसी ऐसी वस्तु का निर्देश करना आवश्यक होता है जो प्रत्यक्ष अथवा सामने हो ।]—आवाप., उँगली रक्षक । ज्याघातवारण ।—कमल, (न०) १ कमल जो हाथ में हो । २ कमल जैसा हाथ । —कौशल, (न०) हाथ की सफाई ।—क्रिया, (स्त्री०) दस्तकारी ।—गत,—गामिन्, (वि०) हाथ में आया हुआ । प्राप्त । कब्जे में आया हुआ । —ग्राहः, (पु०) हाथ से पकड़ना ।—चापल्यं, (न०) हस्तकौशल ।—तलं, (न०) १ हथेली । २ हाथी की सूंड़ की नोंक ।—तालः (पु०) ताली बजाना ।—दोषः, (पु०) हाथ की फिसलन ।—धारणं,—वारणं (न०) हाथ से प्रहार रोकना ।—पादं (न०) हाथ और पैर । —पुच्छं (न०) कलाई के नीचे का हाथ । —पृष्ठं, (न०) हाथ की पीठ ।—प्राप्त, (वि०) १ हाथ में पकड़ा हुआ । २ प्राप्त । पाया हुआ । —प्राप्य, (वि०) सरलता से हाथ में आने

वाला ।—विंबं, (न०) शरीर में सुगन्ध द्रव्य लगाकर शरीर को सुवासित करना ।—मणिः, (पु०) कलाई में पहनी जाने वाली मणि । —लाघवं, (न०) हाथ की सफाई ।—संवाहनं, (न०) हाथ से मलना या सहराना । —क्रियाः, (स्त्री०) १ शारीरिक श्रम । हस्त-क्रिया । २ भाड़ा । मजदूरी । उजरत ।—सूत्र, (न०) कलाई पर बांधा जाने वाला डोरा ।

हस्तः (पु०) १ हाथ । २ सूँड । ३ तेरहवाँ नक्षत्र । ४ एक हाथ का नाम । ५ हस्तलिपि । दस्तख़त । हस्ताक्षर । ६ सबूत । प्रमाण । ७ मदद । सहायता । समर्थन । ८ परिमाण ।

हस्तकः (पु०) १ हाथ ।

हस्तवत् (वि०) निपुण । चतुर ।

हस्ताहस्ति (अव्यया०) हाथापाँई ।

हस्तिकं (न०) हाथियों का समुदाय ।

हस्तिन् (वि०) [स्त्री०—हस्तिनी] १ हाथों वाला । वह जिसके हाथ हो । २ सूँड़वाला । (पु०) हाथी । [भद्र, मन्द्र मृग और मिश्र नामक चार जातियों के हाथी होते हैं ।]—अध्यक्षः, (पु०) हाथियों का दारोगा ।—आयुर्वेदः, (पु०) एक शास्त्र जिसमें हाथियों के रोगों की चिकित्सा का वर्णन किया गया है ।—आरोहः, (पु०) हाथी का सवार या महावत ।—कक्ष्यः, (पु०) १ सिंह । २ चीता ।—कर्णः, (पु०) रेंडी का रूख ।—घ्नः, (पु०) १ हाथी का हत्यारा । २ मनुष्य ।—चारिन्, (पु०) हाथी हाँकने वाला । महावत ।—दन्त, (पु०) १ हाथी का दाँत । २ खूँटी ।—दन्तं, (न०) १ हाथी दाँत । २ मूली ।—दन्तकं, (न०) मूली ।—नखं, (न०) नगरद्वार के पास की अथवा दुर्ग की छोटी बुर्जी ।—पः,—पक, (पु०) महावत ।—मदः, (पु०) हाथी का मद ।—मल्लः, (पु०) १ ऐरावत हाथी का नाम । २ गणेश जी । ३ राख या भस्म का ढेर । ४ धूल की वर्षा । ५ कुहरा ।—यूथः,—यूथं, (न०) हाथियों का गिरोह या गल्ला ।—वर्चसं, (न०) हाथी का महत्त्व या चमक ।—वाहः, (पु०) १ महावत । २ आँकुस । अङ्कुश ।—षड्गवं, (न०) ६ हाथियों का समुदाय ।—स्नानं, (न०) हाथी का स्नान । [यह एक मुहावरा है । कोई कार्य करने पर जब उसकी निष्फलता निश्चित होती है, तब इसका प्रयोग किया जाता है ।]

हस्तिनपुरं, हस्तिनापुरं (न०) दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तर पूर्व के कोने में अवस्थित प्राचीन कालीन एक नगर, जिसे राजा हस्तिन् ने आबाद किया था । हस्तिनापुर के ही नाम गजाह्वय, नागसाह्वय, नागाह्व और हास्तिन भी हैं ।

हस्तिनी (स्त्री०) १ हथिनी । २ सुगन्ध द्रव्य या रूखरी विशेष । ३ चार प्रकार की स्त्रियों में से एक । [इसका लक्षण इस प्रकार है :—

स्थूलाधरा स्थूलनितम्बबिम्बा
स्थूलाङ्गुलिः स्थूलकुचा सुशीला ।
कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च,
नितान्त भोक्त्री खलु हस्तिनी स्यात् ।।]

हस्त्य (वि०) १ हाथ सम्बन्धी । २ हाथ से किया हुआ । ३ हाथ से दिया हुआ ।

हहलं (न०) मारक विष विशेष ।

हहा (पु०) गन्धर्व विशेष ।

हा (अव्यया०) १ दुःख, उदासी, पीड़ा द्योतक अव्यय विशेष । २ आश्चर्य । ३ क्रोध । भर्त्सना ।

हा (धा० आ०) [जिहीते, हान] १ जाना । २ पाना । प्राप्त करना ।

हांगर, हाङ्गरः (पु०) मत्स्य विशेष ।

हाटक (वि०) [स्त्री०—हाटकी] सुनहली ।

हाटकं (न०) सोना ।—गिरिः, (पु०) सुमेरुपर्वत ।

हात्रं (न०) भाड़ा । उजरत । मज़दूरी ।

हानं (न०) १ त्याग । हानि । असफलता । २ बचाव । निकास । ३ शक्ति । ताकत ।

हानिः (स्त्री०) १ त्याग । २ हानि । असफलता । अविद्यमानता । अनस्तित्व । ३ हानि । नुकसानी । ४ ह्रास । कमी । ५ छूट । भङ्गकरण ।

हाफिका (स्त्री०) जमुहाई ।

हायनः (पु०), हायनं (न०) १ एक वर्ष । (पु०) १ चाँवल विशेष । २ शोला । अंगारा ।

हार. (पु०) १ हर ले जाना। हटाना। अलग करना। २ ढोना। ३ अलहदा करना। ४ कुली। ढोने वाला। ५ मोती का हार। ६ संग्राम। युद्ध। ७ भिन्न का भाजक। ८ विभाजक।—आवलिः,—आवली, (स्त्री०) मोती की लर।—गुटिका, गुलिका, (स्त्री०) हार का गुरिया।—यष्टिः, (स्त्री०) हार। मोती का हार।—हारा, (स्त्री०) अंगूर विशेष।

हारकः (पु०) १ चोर। लुटेरा। २ धूर्त। कपटी। ३ मोती का हार। ४ विभाजक। ५ गद्यनिबन्ध विशेष।

हारि (वि०) आकर्षक। मोहक। प्रसन्नकारक मनोहर।—कण्ठः (पु०) कोयल।

हारि (स्त्री०) १ हार। पराजय। २ जुए की हार। यात्री व्योपारियों की टोली।

हारिणिकः (पु०) शिकारी। बहेलिया।

हारित (व० कृ०) १ पकड़ाया हुआ। २ भेंट किया हुआ। नज़र किया हुआ। ३ आकर्षण किया हुआ।

हारितः (पु०) १ हरारंग। २ एक प्रकार का कबूतर।

हारिन् (वि०) [स्त्री०—हारिणी] १ ले जाने वाला। ढोने वाला। २ लूटने वाला। ३ पकड़ने वाला। गड़बड़ करने वाला। लेने वाला। प्राप्त करने वाला। ५ आकर्षक। मोहक। आल्हाद-कारक। ६ आगे निकल जाने वाला। ७ हार पहिने हुए।

हारिद्रः (पु०) १ पीला रंग। २ कदब वृक्ष।

हारीतः (पु०) १ कबूतर विशेष। २ धूर्त। कपटी। एक स्मृतिकार का नाम।

हार्द (न०) १ प्रेम। स्नेह। २ कृपालुता। कोमलता। ३ दृढ़ सङ्कल्प। ४ इरादा। अभिप्राय।

हार्य (वि०) १ लेजाने या ढोने लायक। २ छीन लेने योग्य। ३ हटा देने योग्य। ४ हिलजाने योग्य। ६ वश कर लेने योग्य। आकर्षण करने योग्य। जीत लेने योग्य। ७ लूट लेने योग्य। ज़ब्त कर लेने योग्य।

हार्यः (पु०) १ साँप। २ बहेडे का पेड़। ३ विभाज्य-राशि। अंश। लभ्यांश।

हाल. (पु०) १ हल। २ बलराम का नाम। ३ शालिवाहन का नाम—भृत्, (पु०) बलराम का नामान्तर।

हालकः (पु०) बादामी या भूरे रंग का घोड़ा।

हालहलं, हालाहलं } (न०) भयङ्कर विष। यह विष समुद्र मंथन के समय निकला था। इसकी झरप से जब समस्त लोक भस्म होने लगे: तब देवताओं द्वारा प्रार्थना किये जाने पर भगवान रुद्र ने इसे अपने कण्ठ में रख लिया।

हालहली, हाला } (स्त्री०) शराब। मदिरा। मद्य।

हालिकः (पु०) १ हलवाहा। खेतिहर। २ हल खींचने वाला (बैल)। ३ वह जो हल से लड़े। हल से लड़ने वाला।

हालिनी (स्त्री०) छिपकली विशेष।

हाली (स्त्री०) साली।

हालुः (स्त्री०) दाँत।

हावः (पु०) १ बुलावा। पुकार। २ सुस्निग्ध प्रेमालाप।

हासः (पु०) १ ठठा। मुसक्यान। २ हर्ष। आनन्द। ३ हास्य रस। ठठोली। मज़ाक। ५ खिलन। प्रस्फुटन।

हासिका (स्त्री०) १ हास। हंसी। २ उल्लास। हर्ष।

हास्य (वि०) हँसने योग्य। हँसाने योग्य।

हास्यं (न०) हँसी। २ हर्ष। उल्लास। आमोद। प्रमोद। क्रीड़ा। ३ मज़ाक दिल्लगी। ४ जीट। हास। ठट्ठा। ठठोली।

हास्यः (पु०) हास्य रस। आस्पदं, (न०) हँसने का कारण। —पदवी, —मार्गः, (पु०) ठठोली। मज़ाक।—रसः, (पु०) हास्य रस।

हास्तिकः (पु०) महावत। हाथीसवार।

हास्तिकं (न०) हाथियों का गल्ला।

हास्तिनं (न०) हस्तिनापुर।

हाहा (पु०) एक गन्धर्व का नाम। (अव्यया०) पीड़ा दुःख अथवा आश्चर्यसूचक अव्यय।—कारः, (पु०) १ विलाप। दुःख। २ युद्ध का चीत्कार।—रवः, (पु०) हाहाकार।

हि (अव्यया०) [यह वाच्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाता है। ये निम्न अर्थों में व्यवहृत किया जाता है :— १ क्योंकि। २ दर-हकीकत। सचमुच। ३ उदाहरणार्थ। जैसा कि प्रसिद्ध है। ४ केवल। सिर्फ़। एकाकी। ५ कभी कभी यह केवल पूरक की तरह प्रयुक्त किया जाता है।

हि (धा० प०) [हिनोति, हित] १ रेलना। ठेलना। ढकेलना। २ छोड़ना। फेंकना। चलाना। ३ उत्तेजित करना। भड़काना। ४ आगे बढ़ाना। चढ़ाना। ५ प्रसन्न करना। ६ आगे बढ़ना।

हिंस् (धा० प०) [हिंसति, हिनस्ति, हिंसयति — हिंसयते, हिंसित] १ ताड़न करना। आघात करना। २ चोटिल करना। घायल करना। हानि करना। ३ पीड़ित करना। सन्तप्त करना। ५ वध करना।

हिंसक (वि०) हानिकारी। अनिष्टकर।

हिंसकः (पु०) जंगली या वहशी जानवर। २ शत्रु। ३ अथर्ववेदज्ञ ब्राह्मण।

हिंसनं (न०) } ताड़न। चोटिल करना। वध
हिंसना (पु०) } करना।

हिंसा (स्त्री०) १ अनिष्ट। उत्पात। बुराई। हानि। चोट। २ वध। हत्या नाश। ३ लूटपाट।—आत्मक, (वि०) अनिष्टकारी। विनाशक।—कर्मन्, (न०) १ कोई भी अनिष्टकारी कार्य। २ अभिचार। तांत्रिक मारण प्रयोग।—प्राणिन्, (पु०) अनिष्टकर पशु।—रत, (वि०) उपद्रव-प्रिय।—रुचि, (वि०) उपद्रव करने में प्रसन्न रहने वाला या उपद्रव करने को तुला हुआ।—समुद्भव, (वि०) अनिष्ट से उत्पन्न।

हिंसारुः (पु०) १ चीता। २ कोई भी अनिष्टकारी जानवर।

हिंसालु (वि०) १ अनिष्टकारी। उपद्रवी। चोट करने वाला। २ हिंसा या वध करने वाला। (पु०) उपद्रवी या वहशी कुत्ता।

हिंसारः (पु०) १ चीता। २ पक्षी। ३ उपद्रवीजन।

हिंस्य (वि०) घायल किये जाने या वध किये जाने की सम्भावना से युक्त।

हिंस्र (वि०) १ हिंसालु। अनिष्टकर। उपद्रवी। २ भयानक। ३ निष्ठुर। वहशी।

हिंस्रः (पु०) १ हिंसालु पशु। हिंसक जानवर। २ नाशक। ३ शिव। ४ भीम का नाम।—पशु, (पु०) हिंसालु पशु।—यंत्रं, (न०) जाल। जानवर फँसाने का फंदा। विद्वेषकारी कार्यों की सिद्धि के लिये बनाया हुआ तांत्रिक यंत्र विशेष।

हिक्क् (धा० उ०) [हिक्कति—हिक्कते, हिक्कित] १ ऐसा शब्द करना जो बोधगम्य न हो। २ हिचकी लेना। [आ०—हिक्कयते] चोटिल करना। अनिष्ट करना। वध करना।

हिक्का (स्त्री०) १ अव्यक्त शब्द। २ हिचकी।

हिंकारः } (पु०) १ "हिम" की तरह का मंद या
हिङ्कारः } धीमा शब्द। २ चीता।

हिंगु } (पु०) १ हींग का पौधा। २ अचार का
हिङ्गु } (न०) मसाला जो हींग डाल कर तैयार किया गया हो।—निर्यासः, (पु०) १ हींग के पौधे का गोंद। २ नीम का पेड़।—पत्रः, (पु०) इंगुदी का पेड़।

हिंगुलः (पु०)
हिङ्गुलः (पु०)
हिंगुलं (न०)
हिङ्गुलं (न०)
हिंगुलिः (पु०)
हिङ्गुलि (पु०)
हिंगुलु (पु० न०)
हिङ्गुलु (पु० न०) } इंगुर।

हिञ्जीरः } (पु०) हाथी के पैर की बेड़ी या रस्सी।
हिञ्जीरः }

हिडिंब } (पु०) एक राक्षस जिसे भीम ने
हिडिम्बः } मारा था।

हिडिंबा } (स्त्री०) हिडिम्ब की भगिनी। इसने
हिडिम्बा } भीम के साथ अपना विवाह किया था।
—जित्,—निषूदन,—भिद्,—रिपु, (पु०) भीमसेन के नामान्तर।

हिंड् (धा० आ०) [हिंडते, हिंडित] १ जाना। घूमना फिरना। भ्रमण करना।

हिंडनं } (न०) १ भ्रमण। घूमना फिरना।
हिराडनं } २ स्त्रीमैथुन। ३ लेखन।

हिंडिक
हिण्डिक } (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।

हिंडिर
हिण्डिर
हिंडीरः
हिण्डीरः } (पु०) १ समुद्रफेन । २ मानव पुरुष । २ बैंगन । भटा ।

हिंडी
हिण्डी } (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

हित (वि०) १ रखा हुआ । स्थापित । जड़ा हुआ । २ लिया हुआ । ग्रहण किया हुआ । ३ उपयुक्त । उचित । ठीक । अच्छा । ४ उपयोगी । लाभकारी । ५ गुणकारी । ६ कृपालु । स्नेही ।—अनुवन्धिन्, (वि०) कल्याणकारी ।—अन्वेषिन्,—अर्थिन् (वि०) कल्याण चाहने वाला ।—इच्छा (स्त्री०) सदिच्छा ।—उक्तिः, (स्त्री०) हितकर सलाह । उपदेशः, (पु०) कल्याणप्रद परामर्श ।—एषिन्, (वि०) दूसरों का हित चाहने वाला । उपकारी । —कर, (वि०) अनुकूल । हित करने वाला । —काम, (वि०) उपकार करने की इच्छा रखने वाला ।—काम्या, (स्त्री०) परहित साधन के लिये इच्छुक ।—कारिन्,—कृत्, (पु०) उपकारी । हितैषी ।—प्रणी, (पु०) जासूस । भेदिया ।—बुद्धि, (पु०) मित्र । हितैषी । शुभेच्छु ।—वाक्यं, (न०) हितपूर्ण सलाह । - वादिन्, (पु०) हित की सलाह देने वाला ।

हित (न०) १ लाभ । फायदा । मुनाफा । २ कोई भी उचित या उपयुक्त वस्तु । ३ तदुरुस्ती । क्षेम । कुशल ।

हित (पु०) मित्र । उपकारी । नेक सलाह देने वाला ।

हितकः (पु०) १ बच्चा । २ जानवर का बच्चा ।

हितालः
हिन्तालः } (पु०) एक प्रकार का ताड़ वृक्ष ।

हिंदोलः
हिन्दोल } (पु०) हिंडोला । झूला ।

हिंदोलक (पु०)
हिन्दोलक (पु०)
हिंदोला (स्त्री०)
हिन्दोला (स्त्री०) } हिंडोला । झूला ।

हिम (वि०) ठंडा । शीतल । ओस का ।—अंशुः, (पु०) १ चन्द्रमा २ कपूर ।—अचलः,—अद्रि, (पु०) हिमालय पर्वत ।—अद्रिजा, अद्रितनया, (स्त्री०) १ पार्वती । २ गंगा ।—अम्बु,—अम्भस्, (न०) १ शीतलजल । २ ओस ।—अनिलः, (पु०) शीतल पवन ।—अब्जं (न०) कमल ।—अरातिः, (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य । —आगमः, (पु०) शीतकाल । जड़काला ।—आर्त, (वि०) जड़ाया हुआ ।—आलयः, (पु०) हिमालय पर्वत ।—आलयसुता, (स्त्री०) १ पार्वती का नामान्तर । २ श्रीगङ्गा जी का नामान्तर ।—आह्वः,—आह्वयः, (पु०) कपूर ।—उस्रः, (पु०) चन्द्रमा ।—कर, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—कूटः (पु०) १ शीतकाल । २ हिमालय पर्वत —गिरिः, (पु०) हिमालय । —गुः, (पु०) चन्द्रमा ।—जः, (पु०) मैनाक पर्वत ।—जा, (स्त्री०) १ पार्वती । २ आँबा हल्दी का पौधा ।—तैल, (न०) कपूर या मलहम विशेष ।—दीधितिः, चन्द्रमा ।—दुर्दिनं, (न०) ऐसा दिन जिस दिन ठंड हो, बादल आदि के कारण बुरी ऋतु हो ।—द्युतिः, (पु०) चन्द्रमा ।—द्रुह् (पु०) सूर्य ।—ध्वस्त, (वि०) पाले का मारा हुआ । कुतरा हुआ ।—प्रस्थः, (पु०) हिमालय पर्वत ।—भास्, (पु०) हिमालय पहाड़ । भास्,—रश्मि,(पु०) चन्द्रमा । —वालुका, (स्त्री०) कपूर ।—शीतल (वि०) बर्फ की तरह शीतल ।—शैलः, (पु०) हिमालय पर्वत ।—संहतिः, (स्त्री०) बर्फ का ढेर । —सरस्, (न०) बर्फीली झील शीतल जल । —हासकः, (पु०) दलदल में लगा हुआ छुहारे का पेड़ ।

हिमं (न०) १ कोहरा । पाला । २ बर्फ । ३ ठंड । ठंडक । ४ कमल । ५ ताज़ा या टटका मक्खन । ६ मोती । ७ रात । चन्दन काष्ठ ।

हिमः (पु०) १ शीतकाल । जाड़ा । चन्द्रमा । ३ हिमालय पर्वत । ४ चन्दन का वृक्ष । ५ कपूर ।

हिमवत् (वि०) बर्फीला । (पु०) हिमालय पर्वत । —कुक्षि, (पु०) हिमालय पर्वत की घाटी । —पुरं, (न०) हिमालय की राजधानी ओषधि-

प्रस्थ।—सुतः, (पु०) मैनाक पर्वत।—सुता, (स्त्री०) १ पार्वती। २ गंगा।

हिमानी (स्त्री०) बर्फ का ढेर। वायुचालित बर्फ का स्तूप।

हिरण (न०) १ सुवर्ण। २ वीर्य। ३ कौड़ी।

हिरणमय (वि०) [स्त्री०—हिरण्मयी] सुवर्ण का बना हुआ। सुनहला।

हिरणमयः (पु०) ब्रह्मा जी का नामान्तर।

हिरण्यं (न०) १ सोना २ सुवर्णपात्र। ३ चाँदी। ४ कोई भी मूल्यवान धातु। ५ सम्पत्ति। जायदाद। ६ वीर्य। धातु। ७ कौड़ी। ८ साँप विशेष। ९ वस्तु। द्रव्य। १० धतूरा।—कच (वि०) सोने की करधनी पहिनने वाला।—कशिपुः, (पु०) एक दैत्य का नाम।—कोशः, (पु०)—गर्भः, (पु०) १ ब्रह्म जिनका जन्म सुवर्ण-अण्ड में हुआ था। २ विष्णु। सूक्ष्म शरीर।—द, (वि०) सुवर्ण देने वाला।—दः, (पु०) समुद्र।—दा, (स्त्री०) पृथिवी।—नाभः, (पु०) मैनाक पर्वत।—बाहुः, (पु०) शिव का नाम। २ सोन नदी।—रेतस्, (पु०) १ अग्नि। २ सूर्य। ३ शिव का नाम। ४ चित्रक या अर्क का पौधा।—वर्णा, (स्त्री०) नदी।—वाहः, (पु०) सोन नदी।

हिरण्यय (वि०) [स्त्री०—हिरण्ययी] सुनहला।

हिरुक् (अव्यया०) १ बिना। छोड़कर। २ बीच में। ३ समीप। ४ नीचा।

हिल् (धा० प०) [हिलति] स्वेच्छानुसार क्रीडा करना।

हिल्लः (पु०) एक प्रकार की चिड़िया।

हिल्लोलः (पु०) १ तरंग। लहर। २ हिंडोल राग। ३ वहम। ४ रतिबन्ध विशेष।

हिल्वला (स्त्री० पु०) मृगशिरस् नक्षत्र।

ही (अव्यया०) १ आश्चर्य। थकावट, शोक। २ तर्क सूचक अव्यय विशेष।

हीन (व० कृ०) १ त्यक्त। त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। २ वर्जित। रहित। बिना। ३ नष्ट। ४ त्रुटिपूर्ण। ५ घटाया हुआ। ६ अल्पतर। निम्नतर। ७ नीच। कमीना।

हीनः (पु०) १ दोषयुक्त गवाह। २ दोषयुक्त प्रतिवादी। [नारद ने ऐसे पांच प्रकार के प्रतिवादियों का उल्लेख किया है। यथाः—

अन्यवादी क्रियाद्वेषी नोपस्थायी निरुत्तरः।
आहूतप्रपलायी च हीनः पंचविधः स्मृतः॥]

—अंग, (वि०) अंगहीन।—कुल—ज, (वि०) कमीना। अकुलीन।—क्रतु, (वि०) यज्ञहीन।—जाति, (वि०) १ नीच जाति का। २ जातिबहिष्कृत। पतित।—योनिः, (पु०) नीच जाति का। २ नीच पद का।—वादिन्, (वि०) दोषयुक्त बयान देने वाला। २ बयान बदलने वाला। ३ गूँगा।—सख्यं, (न०) नीच लोगों के साथ रहने वाला। सेवा, (स्त्री०) नीच की सेवा या चाकरी।

हींतालः } (पु०) दलदल में उत्पन्न छुहारे या खजूर
हीन्तालः } का पेड़।

हीर. (पु०) १ सर्प। २ हार। ३ शेर। ४ नैषध चरितकार श्रीहर्ष के पिता का नाम।

हीरः (पु०) } १ इन्द्र का वज्र। २ हीरा।—अंगः,
हीरं (न०) } (पु०) इन्द्र का वज्र।

हीरकः (पु०) हीरा।

हीरा (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी की उपाधि। २ चीटीं।

हीलं (न०) वीर्य। धातु।

हीही (अव्यया०) आश्चर्य या हर्षसूचक अव्यय विशेष।

हु (धा० प०) [जुहोति, हुत] १ निवेदन करना। भेंट करना। २ यज्ञ करना। ३ खाना।

हुड् (धा० प०) [होडति] जाना। [पु०—हुडति] जमा करना।

हुड. (पु०) १ मेढा। मेष। २ लोहे का खंभा या मेख जो चोरों से बचने के काम में आता है। ३ एक प्रकार का हाता। ४ लोहे का डंडा या गदा। ५ मूढ़। मूर्ख। ६ ग्रामशूकर। ७ दैत्य। राक्षस।

हुडु. (पु०) मेढा।

हुडुकः (पु०) १ ढोल जो विशेष। आकार का होता है। २ दात्यूह पक्षी। ३ किवाड़ों में लगी चटखनी। ४ नशे में चूर आदमी।

हुडुत् (न०) बैल का राँभना। २ धमकी का शब्द।

हुत (व० कृ०) १ हवन किया हुआ । होम किया हुआ । २ वह जिसको नैवेद्य अर्पण किया जाय ।—अग्नि, (वि०) हवन करने वाला । होम करने वाला ।—अशन., (पु०) १ अग्नि । २ शिव ।—अशनसहाय, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—अशनी, (स्त्री०) होली । फाल्गुनी पूर्णिमा ।—आशः, (पु०) अग्नि ।—जातवेदस्, (वि०) हवनकर्त्ता । होम कर्त्ता ।—भुज्, (पु०) अग्नि ।—भुज्प्रिया, (स्त्री०) स्वाहा, जो अग्निपत्नी है ।—वहः, (पु०) अग्नि ।—होमः, (पु०) हवन करने वाला ब्राह्मण ।—होमं, (न०) जला हुआ शाकल्य ।

हुत (न०) नैवेद्य । चढ़ावा ।

हुतः (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

हुं } हुम् } (अव्यया०) १ स्मृति । २ सन्देह । ३ स्वीकृति । ४ क्रोध । ५ अरुचि, घृणा । ६ भर्त्सना । ७ प्रश्नद्योतक अव्यय विशेष । तान्त्रिक साहित्य में "हु" का प्रयोग प्राय. किया जाता है । [यथा ओं कवचाय हुं] —कारः,—कृतिः (स्त्री०) १ हु का उच्चारण करने वाला । २ तिरस्कार सूचक आवाज़ । ३ गर्जन । ४ सुअर की घुर घुर आवाज़ । ५ टंकोर ।

हुर्छ् (धा प०) [हुर्छति] टेढ़ा होना ।

हुल् (धा० प०) [होलति] १ जाना । २ ढकना । छिपाना ।

हुलहुली (स्त्री०) यह एक अव्यक्त शब्द है जो आनन्दावसर पर स्त्रियों द्वारा बोला जाता था ।

हुहु } हूहू } (पु०) गन्धर्व विशेष ।

हूड् (धा० आ०) [हूडते] जाना ।

हूण } हूनः } (पु०) १ वर्वर । विदेशी । २ सोने का सिक्का विशेष (सम्भवतः यह हूणों के देश में प्रचलित था) ।

हूणाः (पु० बहु०) एक देश या उस देश के अधिवासी ।

हूत (व० कृ०) आमन्त्रित । निमंत्रित । बुलाया हुआ । आहूत ।

हूतिः (स्त्री०) १ आमंत्रण । बुलावा । २ ललकार । ३ नाम ।

हूम् देखो हुम्

हूरवः (पु०) गीदड़ । शृगाल ।

हूहू (पु०) गन्धर्व विशेष ।

हृ (धा० उ०) [हरति,—हरते, हृत]१ ले जाना । ढोना । २ हर लेजाना । दूर लेजाना । ३ लूट लेना । ४ उतार लेना । वञ्चित कर देना । छीन लेना । ५ नष्ट कर डालना । ६ आकर्षण करना । मोह लेना । ७ प्राप्त करना । ८ रखना । अधिकार में करना । ९ ग्रसना । १० विवाह करना । ११ विभाजन करना ।

हृणीयते } ह्रिणीयते } (क्रि०) १ क्रुद्ध होना । २ लज्जित होना । शर्माना ।

हृणीया } हृणिया } १ भर्त्सना । लानत मलामत । २ लज्जा । शर्म । ३ दया । रहम ।

हृत् (वि०) १ छीना हुआ । २ आकर्षक ।

हृत (व० कृ०) १ छीना हुआ । २ पकड़ा हुआ । ३ मोहित । ४ स्वीकृत । ५ विभाजित ।—अधिकार, (वि०) १ बरखास्त । निकाला हुआ । २ न्यायानुमोदित अधिकारों से वञ्चित किया हुआ ।—उत्तरीय (वि०) वह जिसका उत्तरीय वस्त्र (डुपट्टा) छीन लिया गया हो ।—द्रव्य—धन (वि०) वह जिसका धन नष्ट होगया हो ।—सर्वस्व. (वि०) सम्पूर्णत. बरबाद किया हुआ ।

हृतिः (स्त्री०) १ पकड़ । २ लूटपाट । नाशन । विनाशन ।

हृद् (न०) १ मन । हृदय । दिल । २ छाती । वक्षःस्थल । छाती ।—आवर्तः, (पु०) घोड़े की छाती की भौंरी ।—कम्पः, (पु०) हृदय की धड़कन ।—गत, (वि०) १ मनोगत । २ प्यार की आँखों से देखा हुआ ।—गतं, (न०) उद्देश्य । अभिप्राय ।—देशः, (पु०) हृदय का स्थान । —पिण्डः, (पु०) पिण्डं, (न०) हृदय । —रोगः, (पु०) १ हृदय का रोग । हृदय की जलन । २ दुःख । शोक । ३ प्रेम । ४ कुम्भराशि । —लासः, (=हृल्लास) (पु०) १ हिचकी । २ शोक । दुःख ।—लेखः, (पु०) (=हृल्लेखः) १ ज्ञान । तर्कना । २ हृदय की पीड़ा ।—घंटकः, (पु०) पेट । मेदा ।—शोक, (पु०) हृदय जलन ।

हृद्यं (न०) १ हृदय । दिल । जीव । रूह । मन । २ छाती । वक्षस्थल । प्रेम । प्यार । ४ किसी वस्तु का सार या मर्म । गुप्त विज्ञान । —आत्मन्, (पु०) बगुला । बूटीमार ।—आविध्, (वि०) हृदय को बेधने वाला ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु० (पु०) पति । स्वामी ।—ईशा,—ईश्वरी, (स्त्री०) १ पत्नी । २ स्वामिनी । मलकिन । —कम्पः, (पु०) हृदय की धड़कन ।—ग्राहिन्, (वि०) हृदय को वश में करने वाला ।—चौरः, (पु०) हृदय को चुराने वाला ।—वेधिन्, (वि०) हृदय को छेदने वाला ।—स्थानं, (न०) छाती । वक्षस्थल ।

हृदयंगम (वि०) १ हृदय को दहलाने वाला । २ प्रिय । सुन्दर । मनोहर । ३ मधुर । आकर्षक । मनोज्ञ । ४ उचित । उपयुक्त । ५ प्रेमपात्र । प्यारा । माशूक ।

ऋतु ते हृदयंगमः सखा ।

कुमारसम्भव ।

हृदयालु } **हृदयिक** } **हृदयिन्** } (वि०) कोमल हृदय । नेकदिल । स्नेहयुक्त ।

हृदिकः } **हृदीकः** } (पु०) एक यादव राजकुमार का नाम ।

हृदिस्पृश् (वि०) १ हृदय के छूने वाला । २ प्रिय । प्रेमपात्र । ३ मनोनुकूल । मनोहर । सुन्दर ।

हृद्य (वि०) १ हृदय का । हृदय से । सच्चा । प्यारा । २ मनोहर । मनोनुकूल ।—गन्धः, (पु०) बेल का पेड़ ।—गन्धा, (स्त्री०) बेला या मोतिया का पौधा ।

हृष् (धा० प०) [हर्षति, हृष्यति, हृष्ट या हृषित] १ हर्षित होना । प्रसन्न होना । खुश होना । २ (बालों या रोंगटों का) खड़ा होना । ३ (लिङ्ग का) तंनाना या खड़ा होना ।

हृषित (व० कृ०) १ प्रसन्न । आनन्दित । २ रोमाञ्चित । ३ आश्चर्यान्वित । ४ झुका हुआ । नवा हुआ । ५ हताश । ६ ताज़ा । टटका ।

हृषीकं (न०) ज्ञानेन्द्रिय ।—ईशः, (पु०) विष्णु या कृष्ण का नाम ।

हृष्ट (व० कृ०) हर्षित । आनन्दित ।—चित,—मानस, (वि०) मन में प्रसन्न ।—रोमन्, (वि०) रोमाञ्चित ।—वदन, (वि०) प्रसन्नमुख ।—सङ्कल्प, (वि०) सन्तुष्ट । सुखी ।—हृदय, (वि०) प्रसन्न । आनन्दित ।

हृष्टिः (स्त्री०) १ प्रसन्नता । हर्ष । खुशी । आनन्द । २ अभिमान । घमण्ड । अहङ्कार ।

हे (अव्यया०) १ सम्बोधनात्मक अव्यय । हो, अरे । २ दर्प, ईर्ष्या, द्वेष या शत्रुताद्योतक अव्यय ।

हेक्का (स्त्री०) हिचकी ।

हेटः (पु०) १ विरक्ति । २ रुकावट । अड़चन । विरोध । अनिष्ट । चोट ।

हेड् (धा० आ०) [हेडते] तिरस्कार करना । तुच्छ समझना । [प०—हेडति] १ घेरना । पोशाक धारण करना ।

हेड (पु०) असमान्यकरण । उपेक्षा ।—जः, (पु०) क्रोध । अप्रसन्नता । नाखुशी ।

हेडावुक्कः (पु०) घोड़े का व्यापारी ।

हेतिः (पु० स्त्री०) १ हथियार । अस्त्र ।

"समरविजयी हेतिदलितः" ।

२ आघात । चोट । ३ किरण । ४ प्रकाश । चमक । ५ शोला । अंगारा ।

हेतुः (पु०) १ कारण । सबब । उद्देश्य । २ उद्भव-स्थल । निकास । उत्पत्ति । ३ जरिया । साधन । ४ तर्क । तर्क विज्ञान । न्यायदर्शन में वर्णित प्रमाणों में से कोई भी प्रमाण । ६ अलङ्कार विशेष जिसकी परिभाषा यह है,—

"हेतोर्हेतुमता सार्धमभेदो हेतुरुच्यते ।"

हेतुक (वि०) उत्पादक ।

हेतुकः (पु०) १ कारण । हेतु । साधन । ज़रिया । २ तार्किक ।

हेतुता (स्त्री०) } **हेतुत्वं** (न०) } हेतु की विद्यमानता । कारण का होना ।

हेतुमत् (वि०) सकारण । सहेतुक । (पु०) कार्य । क्रिया । उद्देश्य ।

हेमं (न०) सोना । सुवर्ण ।

हेमः (पु०) १ काले या भूरे रंग का घोड़ा । २ सोने की तौल विशेष । ३ बुध ग्रह ।

हेमन् (न०) १ सुवर्ण । सोना । २ । जल । पानी । ३ बर्फ । हिम । ४ धतूरा ५ केसर का फूल । —अङ्ग, (वि०) सुनहला ।—अङ्गः, (पु०) १ गरुड । २ शेर । सिंह । ३ सुमेरु पर्वत । ४ ब्रह्मा । ५ विष्णु । ६ चंपक वृक्ष ।—अंगदं, (न०) सोने का बाजूबन्द ।—अद्रिः, (पु०) सुमेरु पर्वत ।—अंभोजं, (न०) सोने का कमल । [यथा—

हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानसस्याददानः ।

—मेघदूत ।]

—अंभोरुहं, (न०) सुनहला कमल ।—आह्वः, (पु०) जंगली चंपा का पेड़ ।—कंदलः, (पु०) मूँगा ।—करः, —कर्तृ,—कारः,—कारकः, (पु०) सुनार ।—किंजल्कं, (न०) नागकेसर का फूल ।—कुम्भः (पु०) सोने का घड़ा ।—कूटः, (पु०) एक पर्वत का नाम । —केतकी, (स्त्री०) स्वर्णकेतकी नामक पौधा । —गंधिनी, (स्त्री०) रेणुका ।—गिरिः, (पु०) सुमेरु पर्वत ।—गौरः, (पु०) अशोक वृक्ष । —छन्न, (वि०) सुवर्ण से आच्छादित । सोने से मढ़ा हुआ ।—छन्नं, (न०) सोने का ढकना । —ज्वालः, (पु०) अग्नि ।—तारं, (न०) तूतिया ।—दुग्धः,—दुग्धकः, (पु०) सघन गूलर का पेड़ ।—पर्वतः (पु०) सुमेरु पर्वत । —पुष्प,—पुष्पकः, (पु०) १ अशोक वृक्ष । २ लोध्रवृक्ष । ३ चंपकवृक्ष । (न०) १ अशोक का फूल । २ गुलाब विशेष का फूल ।—वल, —वलं, (न०) मोती ।—मालिन्, (पु०) सूर्य ।—यूथिका, (स्त्री०) सुनहली मल्लिका । —रागिणी, (स्त्री०) हल्दी ।—शङ्ख, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—शृङ्गं, (न०) सुनहला सींग । २ सुनहली चोटी या शिखर ।—सारं, (न०) नीलाथोथा ।—सूत्र,—सूत्रकं, (न०) गोप नामक कण्ठाभरण विशेष ।

हेमतः (पु०), हेमन्तः (पु०), हेमंत (न०), हैमन्तं (न०) } षटऋतुओं में से एक । मार्गशीर्ष और पौष अर्थात् अगहन और पूस मास ।

"नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः
प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः ।
विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो
हेमन्तकालः समुपागतः प्रिये ॥"
ऋतुसंहार ।

हेमलः (पु०) १ सुनार । २ कसौटी । ३ गिरगट ।

हेय (वि०) त्यागने योग्य । छोड़ देने योग्य ।

हेरं (न०) १ मुकुट विशेष । शिरोभूषण विशेष । २ हल्दी ।

हेरबः, हेरम्बः } (पु०) १ गणेश । २ भैंसा । शेखीबाज़ वीर । —जननी, (स्त्री०) गणेश जननी श्री पार्वतीजी ।

हेरिकः (पु०) जासूस । भेदिया ।

हेलनं (न०), हेलना (स्त्री०) } उपेक्षा । तिरस्कार । अपमान । हतक ।

हेला (स्त्री०) १ तिरस्कार । अपमान, हतक । २ आमोद प्रमोदमय क्रीड़ा । ३ उत्कट मैथुनेच्छा । ४ आराम । सुसाध्यता । सौलभ्य । ५ चाँदनी । जुन्हाई ।

हेलाबुकः (पु०) घोड़े का व्यापारी ।

हेलिः (पु०) १ सूर्य । (स्त्री०) स्वेच्छाचारिता ।

हेवाकः (पु०) उत्सुकता ।

हेवाकस (वि०) उच्च । अतिशय । अत्यन्त । प्रचण्ड ।

हेवाकिन् (वि०) अतिशय उत्सुक या इच्छुक ।

जायन्ते महतामहोनिरुपम—
प्रस्थानहेवाकिनां ।
निःसामान्यमहत्त्वयोगपिशुना
वार्ता विपत्तावपि ।
—कल्हण ।

हेष् (धा० आ०) [हेषते, हेषित] घोड़े की तरह हिनहिनाना । रेंकना । गर्जना ।

हेषः, (पु०), हेषा (स्त्री०), हेषित (न०) } हिनहिनाहट । रेंक ।

हेषिन् (पु०) घोड़ा ।

हेहे (अव्यया०) किसी को पुकारने के काम में आने वाला अव्यय विशेष ।

है (अव्यया०) सम्बोधनात्मक अव्यय ।

हैतुक (वि०) [स्त्री०—हैतुकी] १ कारणात्मक । कारणसम्बन्धी या निर्देशक । २ तर्कात्मक । प्रज्ञावत्ता । यौक्तिकता ।

हैतुकः (पु०) १ तर्क करने वाला । वहस करने वाला । २ मीमांसा दर्शन का अनुयायी । ३ सन्दिग्ध चित्त । ४ नास्तिक ।

हैम [स्त्री०—हैमी] १ शीतल । ठंडा । २ कोहरे के कारण हुआ । ३ सुनहला । सोने का बना हुआ । —मुद्रा—मुद्रिका, (स्त्री०) १ सोने का सिक्का ।

हैमं (न०) ओस । कोहरा । पाला ।

हैमः (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

हैमन् (वि०) [स्त्री०—हैमनी] १ शीतल । ठंडा । २ जड़काला सम्बन्धी । ३ शीतकाल में या ठंड में उत्पन्न होने वाला । ४ सुनहला । सोने का ।

हैमनः (पु०) १ मार्गशीर्षमास । अगहन का महीना । २ हेमन्त ऋतु । जड़काला ।

हैमंतिक / हैमन्तिक (वि०) १ शीतल । ठंडा । २ जड़काले में उत्पन्न होने वाला ।

हैमंतिकं / हैमन्तिकं (न०) एक प्रकार का चावल ।

हैमल देखो हैमन्त ।

हैमवत (वि०) [स्त्री०—हैमवती] १ बर्फीला । बर्फीले यानी हिमालय पर्वत से बहने वाला । २ हिमालय पर्वत में उत्पन्न या पालापोसा हुआ । हिमालय पर्वत सम्बन्धी । हिमालय पर्वत का । हिमालय पर्वत में स्थित ।

हैमवतं (न०) भारतवर्ष या हिन्दुस्तान ।

हैमवती (स्त्री०) १ श्री पार्वती देवी । २ श्री गङ्गा । ३ हर्रा बहेड़ा । आँवला की जाति का फल विशेष । ४ एक ओषधि विशेष । ५ साधारण सन या पटसन । ६ दाख या अंगूर ।

हैयंगवीनं / हैयङ्गवीनं (न०) १ ताज़ा घी । टटका मक्खन ।

हैरिकः (पु०) चोर ।

हैहय (पु०) (बहु०) एक जाति और उस जाति वालों का देश विशेष ।

हैहयः (पु०) १ यदु के पंती का नाम । २ सहस्रार्जुन का नाम ।

धेनुवत्सहरणाच्च हैहयः
त्वंच कीर्तिमपहर्तु मुद्यतः ॥

हो (अव्यया०) हो । अरे । हे । रघुवंश ।

होड् (धा० आ०) [होडते] तिरस्कार करना । उपेक्षा करना । अपमान करना । (प० होडति] जाना ।

होडः (पु०) बेड़ा ।

होतृ (वि०) [स्त्री—होत्री] १ हवन करने वाला । होम करने वाला । २ ऋत्विक । ३ यज्ञकर्त्ता ।

होत्रं (न०) १ हवन करने योग्य यथा घी । २ यज्ञ । ३ भस्म । शाकल्य ।

होत्रा (स्त्री०) १ यज्ञ । २ स्तुति ।

होत्रीयं (न०) यज्ञमण्डप । यज्ञशाला ।

होत्रीयः (पु०) हवन करने वाला ।

होमः (पु०) १ हवन । २ यज्ञ ।—अग्निः, (पु०) होम की आग ।—कुण्डं, (न०) हवनकुण्ड । —तुरङ्गः (पु०) यज्ञ में बलि दिया जाने वाला घोड़ा ।—धान्यं, (न०) तिल ।—धूमः, (पु०) यज्ञीय अग्नि या होम की आग से निकला हुआ धूम ।—भस्मन्, (न०) होम की भस्म —वेला, (स्त्री०) हवन करने का समय ।—शाला, (स्त्री०) वह घर जिसमें हवन करने के लिए हवन कुण्डादि हवन की सामग्री हो ।

होमक देखो होतृ ।

होमिः (पु०) १ घी । २ जल । ३ अग्नि ।

होमिन् (पु०) होम करने वाला । यज्ञ करने वाला ।

होमीय / होम्य (वि०) हवन सम्बन्धी ।

होम्यं (न०) घी ।

होरा (स्त्री०) १ राशि का उदय । २ राशि का आधा भाग । ३ एक घंटा । ४ चिह्न । रेखा ।

होलाका (स्त्री०) १ होली का त्योहार । २ फाल्गुनी पूर्णिमा ।

होलिका / होली (स्त्री०) होली का त्योहार ।

हो / होहो (अव्यया०) अरे । ए । हो ।

हौत्रं (न०) होता ।

हौम्यं (न०) घी ।

ह्नु (धा० आ०) [ह्नुते, ह्नुत] १ छीन लेना । लूट लेना । २ छिपाना । ३ किसी से कोई चीज़ छिपाना ।

ह्यस् (अव्यया०) बीता हुआ कल ।—भव, (वि०) वह जो कल (बीता हुआ) हुआ हो ।

ह्यस्तन (वि०) [स्त्री—ह्यस्तनी] कल सम्बन्धी । —दिनं, (न०) बीता हुआ कल ।

ह्यस्त्य (वि०) गुज़रे हुए कल सम्बन्धी ।

ह्रदः (पु०) १ गहरी झील । बड़ा और गहरा सरोवर। २ गहरी गुफा । किरण ।—ग्रहः, (पु०) बिजली । विद्युत् ।

ह्रदिनी (स्त्री०) १ नदी । सरिता । २ विद्युत । बिजली ।

ह्रद्रोग. (पु०) कुम्भ राशि ।

ह्रस् (धा० प०) [ह्रसति,ह्रसित] १ शब्द करना । २ छोटा हो जाना ।

ह्रसिमन् (पु०) छोटापन । ह्रस्वता ।

ह्रस्व (वि०) १ छोटा । थोड़ा । कम । २ खर्वाकार । बौना । ३ छोटा ।—अंग, (वि०) ठिंगनेकद का । —अङ्गः, (पु०) बौना । वामन ।—गर्भः, (पु०) कुश ।—दर्भः, (पु०) छोटा सफेद कुश । —बाहुक, (वि०) छोटी बाँह वाला ।—मूर्ति, (वि०) ठिंगने कद का ।

ह्रस्वः (पु०) बौना ।

ह्राद् (धा० आ०) [ह्रादते] १ शब्द करना । २ गर्जना ।

ह्रादः (पु०) शोर गुल ।

ह्रादिन् (वि०) शब्दायमान । गर्जने वाला ।

ह्रादिनी (स्त्री०) १ वज्र । २ बिजली । ३ नदी । ४ शल्लकी नामक वृत्त ।

ह्रासः (पु०) १ शब्द । शोरगुल । २ कमी । छोटापन । नाशन । ३ छोटी संख्या ।

ह्रिणीया (स्त्री०) १ भर्त्सना । २ लज्जा । शर्म। ३ रहम । तरस ।

ह्री (धा० प०) [जिह्रेति, ह्रीण, ह्रीत] शर्माना । लजाना ।

ह्री (स्त्री०) १ शर्म । लाज । २ हया । नम्रता ।—जित,—मूढ, (वि०) शर्म से घबड़ाया हुआ । —यंत्रणा, (स्त्री०) शर्म के कारण उत्पन्न पीड़ा।

ह्रीका (स्त्री०) १ लजीलापन । हयादारी। भीरुता। भय । डर ।

ह्रीकु (वि०) १ लजीला । हयादार । शर्मीला । २ भीरु। डरपोंक ।

ह्रीकुः (पु०) १ टीन । जस्ता । २ लाख ।

ह्रीण } (व० कृ०) १ शर्माया हुआ । लजाया हुआ ।
ह्रीत } २ हयादार। शर्मीला ।

ह्रीवेरं } (न०) एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।
ह्रीवेलं }

ह्रेष् (धा० आ०) [ह्रेषते] १ हिनहिनाना । २ चलना । रेंगना ।

ह्रेषा (स्त्री०) हिनहिनाहट ।

ह्लग् (धा० प०) [ह्लगति] शब्द करना ।

ह्लत्तिः (स्त्री०) हर्ष । प्रसन्नता ।

ह्लद् (धा० आ०) [ह्लादते,ल्हन्न,ल्हादित] १ प्रसन्न होना । प्रसन्न करना । २ शब्द करना ।

ह्लादः } (पु०) हर्ष । आनन्द ।
ह्लादकः }

ह्लादनं (न०) प्रसन्न होने की क्रिया । आनन्द । प्रसन्नता ।

ह्लादिन् (वि०) प्रसन्नकारक । हर्षप्रद ।

ह्लादिनी (स्त्री०) देखो ह्रादिनी ।

ह्लल् (धा० प०) [ह्ललति] १ चलना । जाना । २ हिलना । काँपना ।

ह्वानं (न०) १ आमंत्रण । २ चीत्कार । आवाज़ ।

ह्वृ (धा० प०) [ह्वरति] १ टेढ़ा होना । २ आचरण में टेढ़ापन करना । कपट करना । छलना । धूर्तता करना । ३ सन्तप्त होना । चोटिल होना ।

ह्वे (धा० उ०) [ह्वयति ह्वयते,—हूतः] १ बुलाना। आह्वान करना । २ नाम लेना । नाम लेकर पुकारना । ३ चिनौती देना । ललकारना । ४ स्पर्द्धा करना । ५ प्रार्थना करना । याचना करना ।

❀ समाप्त ❀

Printed by Ramzan Ali Shah at the National Press, Allahabad

परिशिष्ट १

अंधकूपपतनन्यायः—जब किसी अपात्र को कोई उपदेश दिया जाय और वह तदनुसार चल अपनी भूलचूक के कारण, अपनी हानि कर बैठता है ; तब इसका व्यवहार किया जाता है।

अंधगजन्यायः—कहा जाता है, कई जन्मान्धों ने यह जानने के लिये कि हाथी कैसा होता है हाथी के शरीर को हाथों से टटोला। जिसने हाथी का जो अंग टटोला, उसने हाथी का वही रूप समझ लिया। हाथी की पूँछ टटोलने वाले ने उसे रस्से के आकार का, पैर टटोलने वाले ने उसे खंभे के आकार का समझा।

किसी विषय का साङ्गोपाङ्ग ज्ञान न होने पर, जब कोई उस विषय को अपनी समझ के अनुसार ऊटपटाङ्ग वर्णन करता है, तब यह उक्ति प्रयुक्त की जाती है।

अंधगोलाङ्गूलन्यायः—कोई अंधा अपने घर का मार्ग भूल गया था। किसी मसखरे ने उसे एक गाय की पूछ थमा कर कहा कि यह तुम्हारे घर पहुँचा देगी। इसका परिणाम यह हुआ कि, अंधा घर न पहुँच कर इधर उधर मारा मारा फिरा। तब से जब कभी कोई मनुष्य किसी दुष्ट के उपदेशानुसार चल कर कष्ट उठाता है: तब इसका प्रयोग किया जाता है।

अंधचटकन्यायः—अंधे के हाथ बटेर लगना। अर्थात् बिना प्रयास किये कोई वस्तु हाथ लग जाना।

अंधपरम्परान्यायः—हिन्दी में "भेड़ चाल" इसी का परियाय है। जब कोई आदमी किसी को कोई काम करते देख, वही काम स्वयं भी करने लगता है, तब वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

अंधपंगुन्यायः—एक ही ठिकाने पर जाने वाले जब एक अंधा और एक लँगड़ा मिल जाते हैं, तब पारस्परिक साहाय्य से दोनों अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाते हैं। सांख्यदर्शन में जड, प्रकृति और चेतन पुरुष के संयोग से सृष्टिरचना के उदाहरण स्वरूप इस उक्ति का उल्लेख किया गया है।

अजाकृपाणीयन्यायः—किसी स्थान पर एक तलवार लटक रही थी। दैवसंयोग से उसके नीचे एक बकरा जा पहुँचा और तलवार उसकी गर्दन पर गिर पड़ी और उसकी गर्दन कट गयी। जहाँ दैवसंयोग से कोई आपत्ति आ जाती है वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

अजातपुत्रनामोत्कीर्त्तनन्यायः—अर्थात् पुत्र तो है नहीं, पर उसका नाम रख देना। जहाँ कोई बात न हो और कोरी आशा के भरोसे कोई आयोजन करने लगे, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

अध्यारोपन्यायः—जो वस्तु जैसी हो उसके विपरीत उसका निरूपण होने पर लोग इसका प्रयोग करते हैं। जैसे 'रस्सी को साँप" बतलाना। वेदान्त दर्शन में इस न्याय का उल्लेख प्रायः पाया जाता है।

अपवादन्यायः—जब किसी वस्तु का यथार्थ ज्ञान होने पर उसके सम्बन्ध में फिर किसी प्रकार का भ्रम नहीं रह जाता तब ऐसे स्थान पर इसका प्रयोग किया जाता है।

अपराह्णच्छायान्यायः—जिस प्रकार दोपहर की छाया बढ़ती है, उसी प्रकार जब किसी सज्जन की प्रीति की वृद्धि को व्यक्त करना होता है तब इस का प्रयोग किया जाता है।

अपसारिताग्निभूतलन्यायः—जिस प्रकार भूमि पर से आग हटा लेने पर भी कुछ देर तक वहाँ की ज़मीन में गरमाहट बनी रहती है, उसी प्रकार किसी धनी के पास धन न रहने पर भी कुछ दिनों तक उसमें धनाभिमान बना रहता है।

अरण्यरोदनन्यायः—अर्थात् जंगल में रोना, जहाँ कोई सुनने वाला या समवेदना प्रदर्शित करने वाला न हो। जहाँ कहने पर भी कोई ध्यान देने वाला न हो, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

अरुन्धतीदर्शनन्यायः—जिस प्रकार अरुन्धती के अतिसूक्ष्म तारे को दिखलाने के लिये उसके समीपस्थ बड़े तारे को दिखला कर अरुन्धती का तारा बतलाया जाता है, उसी प्रकार किसी सूक्ष्म वस्तु को बतलाने के लिये जब किसी महान् वस्तु का निर्देश कर उस सूक्ष्म वस्तु का निर्देश करते हैं, तब इस उक्ति को व्यवहार में लाते हैं।

अर्कमधुन्यायः—अगर मदार के दूध से काम चलता हो तो शहद-प्राप्ति के लिये विशेष प्रयास करना अनावश्यक है। जो कार्य सहज में हो उसके लिये इधर उधर बड़ा परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रदर्शित करने के लिये, इसका प्रयोग किया जाता है।

अर्द्धजरतीयन्यायः—एक पुस्तक के घुन पण्डित थे। धनाभाव से दुःखी हुए, तब वह अपना एक मात्र धन गौ को बेचने के लिये निकले। उन्होंने समझा कि जिस प्रकार मनुष्य बूढ़ा होने से उसका गौरव बढ़ जाता है, उसी प्रकार गौ की उम्र अधिक होने से उसका भी मूल्य अधिक होगा; अतः वे पूँछने पर अपनी गौ की उम्र खूब बढ़ाकर कहते थे। बूढ़ी गौ को भला कौन लेता। बेचारे को इसके लिये हताश होते देख एक ने कहा, तुम अपनी गौ को बूढ़ी मत कहा करो। वे विद्वान् तो थे अतः उन्होंने मन ही मन कहा आत्मा तो कभी बूढ़ा होता नहीं, अतएव मैं अब अपनी गौ को आधी बूढ़ी और आधी जवान बतलाऊँगा। तब से जब कोई बात उभय पक्ष के लिये लागू होती है, तब यह उक्ति प्रयुक्त की जाती है।

अशोकवनिकान्यायः—छाया, सौरभ आदि से युक्त अशोकवन में जाने के समान जब किसी एक ही स्थान पर सब कुछ (अर्थात् छाया, सौरभ आदि) प्राप्त हो जाय और अन्यत्र जाने की आवश्यकता न रहे, तब इसका प्रयोग होता है।

अश्मलोष्ट्रन्यायः—इसका प्रयोग विषमता बतलाने के लिये किया जाता है। जहाँ दो वस्तुओं में सापेक्षिकत्व प्रदर्शित करना होता है वहाँ पाषाणेष्टिक न्याय कहा जाता है।

अस्नेहदीपन्यायः—बिना तेल के दीपक जैसी बात। थोड़ी देर प्रचलित रहने वाली किसी चर्चा के सम्बन्ध में इसका प्रयोग किया जाता है।

अहिकुण्डलन्यायः—सर्प के कुण्डली मार कर बैठने के समान, जब कोई स्वाभाविक बात, कहनी होती है, तब इसका प्रयोग होता है।

अहिनकुलन्यायः—साँप नेवले के समान। यह स्वाभाविक विरोध सूचन करने के लिये व्यवहृत किया जाता है।

आकाशापरिच्छिन्नत्वन्यायः—आकाश के समान अपरिच्छिन्नत्व प्रदर्शित करने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है।

आभाणकन्यायः—लोकप्रवाद के समान जब किसी से किसी की उपमा देनी होती है, तब इससे काम लिया जाता है।

आम्रवणन्यायः—किसी वन में आम के वृक्षों की अधिक संख्या होने पर जैसे उस वन को आम्रवन ही कहते हैं—हालाँ कि उस वन में अन्य वृक्ष भी होते हैं; वैसे ही जहाँ औरों को छोड़, प्रधान वस्तु ही का उल्लेख किया जाता है, वहाँ लोग इसका प्रयोग करते हैं।

उत्पाटितदन्तनागन्यायः—अर्थात् विष का दाँत तोड़े हुए साँप के समान। जब कोई दुष्टप्रकृति मनुष्य कुछ करने धरने या हानि पहुँचाने में असमर्थ कर दिया जाता है, तब उसके लिये इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

उदकनिमज्जनन्यायः—किसी व्यक्ति के दोषी अथवा निर्दोषी होने की एक दिव्य परीक्षा जो प्राचीन काल में हुआ करती थी। वह इस प्रकार कि परीक्षार्थी व्यक्ति को पानी मे खड़ा करके किसी भी ओर बाण छोड़ा जाता था। साथ ही परीक्षार्थी अभियुक्त को तब तक जल में डूबे रहने के लिये कहते थे, जब तक वह छोड़ा हुआ बाण, वहाँ से छोड़ा जा कर प्रथम छोड़े हुए स्थान पर लौट न आवे। यदि इतने काल के भीतर अभियुक्त का कोई अंग बाहर न दिखाई पड़ा, तो वह निर्दोष समझा जाता था। अतः जब कभी सत्यासत्य के निर्णय का प्रसङ्ग आता है, तब इस न्याय का उल्लेख किया जाता है।

उभयतः पाशरज्जुन्यायः—जब दोनों ओर विपत्ति हो अर्थात् दो कर्त्तव्य पक्षों में से प्रत्येक में दुःख देख पड़े, तब इसका उल्लेख करना उचित समझा जाता है।

उष्ट्रकण्टकभक्षणन्यायः—थोड़ी सी देर के जिह्वासुख के लिये जैसे ऊँट, काँटे खाने का कष्ट उठाता है, वैसे ही जब थोड़े से सुख के लिये विशेष कष्ट उठाना पड़ता है तब वहाँ यह कहावत कही जाती है।

ऊषरवृष्टि-न्यायः—कही हुई किसी बात का जहाँ प्रभाव नहीं पड़ता, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

कण्ठचामीकरन्यायः—गले में पड़े सुवर्ण हार को ढूढ़ना। सच्चिदानंद ब्रह्म अपने में विद्यमान रहते भी जब कोई अज्ञानी जन, सुख प्राप्ति के लिये अनेक प्रकार के दुःख भोगता है; तब वेदान्ती इसका प्रयोग करते है।

कदम्बगोलकन्यायः—जैसे कदंब के गोले में सब फूल एक साथ रहते हैं; वैसे ही जिस जगह कई बातें एक साथ हो जाती हैं, उस जगह इसका प्रयोग किया जाता है। कभी कभी नैयायिक लोग शब्दोत्पत्ति के प्रसङ्ग में कई वर्णों के उच्चारण को एक साथ मान कर; उसके दृष्टान्त में भी इसका प्रयोग करते है।

कदलीफलन्यायः—जैसे केला काटने ही पर फलता है, वैसे ही नीच भी सीधे प्रकार फलदायी अर्थात् काम का नहीं होता।

कफोनिगुड-न्यायः—इसका समानार्थवाची है—सूत न कपास कोरी से लठालठी, अथवा सूत न कपास जुलाहे से मटकौवल।

करकङ्कणन्यायः—कङ्कण कहने ही से हाथ के गहने का बोध हो जाता है। 'कर' कहने की आवश्यकता नहीं रहती। जहाँ इस प्रकार का अभिप्राय व्यक्त करना होता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

काकतालीय-न्यायः—एक वृक्ष के नीचे एक बटोही पड़ा था। उसी वृक्ष के ऊपर एक काक भी बैठा था। काक वृक्ष छोड़ ज्यों ही उड़ा त्यो ही ताड़ का एक पका हुआ फल नीचे गिरा। यद्यपि फल पक कर आपसे आप गिरा था, पर पथिक दोनों बातों को साथ होते देख, यही समझ गया कि कौवे के उड़ने ही से तालफल गिरा। अतः जहाँ दो बातें संयोग से इस प्रकार एक साथ हो जाती हैं; वहाँ उनमे परस्पर कोई संबंध न होते हुए भी लोग जब सम्बन्ध लगा बैठते हैं, तब यह कहावत कही जाती है।

काकदध्युपघातकन्यायः—अर्थात् "कौवे से दही बचाना"। इसके कहने से, जिस प्रकार—कुत्ते बिल्ली आदि सब जन्तुओं से बचाना समझ लिया जाता है; उसी प्रकार जहाँ किसी वाक्य का अभिप्राय होता है वहाँ यह कहावत कही जाती है।

काकदन्तगवेषणन्यायः—जिस प्रकार काक का दाँत ढूढ़ना निष्फल है, उसी प्रकार किसी निष्फल प्रयत्न के सम्बन्ध में यह उक्ति व्यवहृत की जाती है।

काकाक्षिगोलकन्यायः—कहावत है कि कौवे के एक ही पुतली होती है। जो प्रयोजन के अनुसार कभी इस आँख में कभी उस आँख में जाती है। अतएव जहाँ एक ही वस्तु दो स्थानों में कार्य करे वहाँ के लिये यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है।

कारणगुणप्रक्रमन्यायः—कारण का गुण कार्य में भी पाया जाता है। जिस प्रकार सूत का रूप आदि उसके बने कपडे में।

कुशकाशावलम्बनन्यायः—जिस प्रकार दूबता हुआ आदमी कुश या काँस जो कुछ हाथ में पड़ता है, उसी को सहारे के लिये पकड़ता है ; उसी प्रकार जहाँ कोई दृढ़ आधार न मिलने पर लोग इधर उधर की बातों का सहारा लेते है, वहाँ के लिये यह कहावत है। हिन्दी में भी " डूबते को तिनके का सहारा " प्रसिद्ध है।

कूपखानकन्यायः—जिस प्रकार कुआँ खोदने वाले के शरीर में लगा हुआ कीचड़ उस कुए के जल ही से साफ़ हो जाता है, उसी प्रकार श्रीराम श्रीकृष्ण आदि को भिन्न भिन्न रूपों में समझने सेजो दोष लगता है: वह उन्हीकी उपासना करने से मिट भी जाता है।

कूपमण्डूकन्यायः—एक आख्यायिका है कि एक बार, समुद्र में रहने वाला एक मण्डूक (मेंढक) किसी कूप में जा पड़ा। उस कुए के मेंढक ने समुद्र के मेंढक से पूँछा तुम्हारा समुद्र कितना बड़ा है। उत्तर मिला बहुत बड़ा। इस पर कुएँ के मेंढक ने पूँछा—" इस कुएँ जितना बड़ा " ? समुद्र के मेंढक ने उत्तर दिया—" कहाँ कुआँ, कहाँ समुद्र !" समुद्र से बड़ी कोई वस्तु इस धराधाम पर है ही नहीं।

समुद्री मण्डूक की उक्ति पर कूपमण्डूक, जिसने कूप को छोड़ अपने जीवन में कोई वस्तु कभी देखी ही न थी, बहुत ही नाराज हुआ और बोला—" तुम झूठे हो, कुएँ से बड़ी कोई वस्तु हो नहीं सकती !" अतएव जहाँ परिमित ज्ञान के कारण, कोई अपनी जानकारी के ऊपर कोई दूसरी बात मानता ही नही, वहाँ यह न्याय काम में लाया जाता है।

कूर्माङ्ग-न्यायः—कछुवा अपनी इच्छा के अनुसार अपना समस्त अंग समेट और फैला सकता है। ईश्वर की जब इच्छा होती है; तब वह अपनी रची सृष्टि को अपने में लय कर लेता है और जब उसकी इच्छा होती है तब फिर रच डालता है। अतः जब ईश्वर की इस शक्ति का उदाहरण देना आवश्यक होता है, तब इस न्याय से काम लिया जाता है।

कैमुतिकन्यायः—जब यह बात दृष्टान्त द्वारा समझाने की ज़रूरत होती है कि, जिसने बड़े बड़े काम कर डाले उसके लिये छोटा काम कोई चीज़ ही क्या है; तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

कौण्डिन्यन्याय —यह ठीक है, किन्तु यदि ऐसा होता तो और भी अच्छा था ; बतलाने को इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

गजभुक्तकपित्थन्यायः—हाथी के खाये हुए कैथ के समान ऊपर से देखने में ज्यों का त्यों किन्तु भीतर खोखला। किसी अन्तःसार शून्य वस्तु के लिये इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

गड्डलिका-प्रवाहन्यायः—" भेड़िया धसान " से इसका अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है।

गणपतिन्यायः—एक बार देवताओं में सर्वश्रेष्ठत्व होने का परस्पर झगड़ा हुआ। ब्रह्मा जी के सुझाने पर निश्चित हुआ कि, जो देवता पृथिवी की प्रदक्षिणा कर सब के आगे लौट आवे वही देवता सर्वश्रेष्ठ और पूज्य माना जाय। समस्त देवताओं ने पृथिवी की प्रदक्षिणा करने के लिये अपने अपने वाहनों पर सवार हो प्रस्थान किया। गणेश जी अपने वाहन चूहे पर सवार होने के कारण सब के पीछे रहे। इतने में नारद जी से उनकी भेंट हो गयी। उन्होंने गणेश जी को यह युक्ति बतलाई कि सर्वमय श्रीराम जी का नाम लिख और उसकी प्रदक्षिणा कर के ब्रह्मा जी के निकट लौट जाओ। गणेश जी ने तदनुसार ही किया। फल यह हुआ कि गणेश जी देवताओं में सर्वप्रथम पूज्य हो गये। अतएव जहाँ ज़रा सी युक्ति से बड़ा काम हो जाय, वहीं इसका प्रयोग किया जाता है।

गतानुगतकन्यायः—एक घाट पर कुछ ब्राह्मण तर्पण किया करते थे। वे अपने अपने कुश एक ही जगह पर रख दिया करते थे। इसका फल यह होता कि, एक का कुश दूसरे के हाथ प्रायः लग जाया करता था। एक दिन पहचान के लिये उनमें से एक ब्राह्मण ने अपना कुश एक ईंट के नीचे दबा दिया। उसकी देखा देखी दूसरे दिन सब ने अपने अपने कुश ईंटों के नीचे दबा दिये। अतः जहाँ देखादेखी लोग कोई काम करने लगते हैं; वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

गुडजिह्विकान्यायः—जैसे कड़वी दवा पिलाने के पूर्व बालक को गुड देकर फुसला लिया जाता है वैसे ही किसी अरुचिकर या कठिन काम को कराने के लिये प्रथम कुछ प्रलोभन देना आवश्यक होता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

गोबलीवर्दन्यायः—बलीवर्द का अर्थ है–बैल। जहाँ यह शब्द गो के साथ आता है वहाँ अर्थ स्पष्ट हो जाता है। ऐसे शब्द जहाँ एक साथ होते हैं, वहाँ इस उक्ति से काम लिया जाता है।

घटप्रदीप न्यायः—घड़े के भीतर रखे हुए दीपक के प्रकाश को घड़ा अपने बाहर नहीं निकलने देता। जहाँ कोई केवल अपनी भलाई चाहता है और दूसरे की भलाई करना नहीं चाहता; वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

घट्टकुटीप्राभातन्यायः—एक लोभी बनिया घाट की उतराई का महसूल न देने के अभिप्राय से ऊबड खाबड जगहों में सारी रात भटक कर, प्रातःकाल होते ही फिर उसी घाट पर पहुँचा, जहाँ उतराई का महसूल देना पडता था। अतएव जहाँ एक कठिनता को बचाने के लिये अनेक उपाय निष्फल हों और अन्त में उसी कठिनता का सामना करना पड़े, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

घुणाक्षर-न्यायः—घुनों के काटने से लकडी में अक्षरों के आकार जैसे रूप बन जाते हैं, हालाँ कि घुन इस उद्देश्य से लकड़ी को नहीं घुनते। अत जहाँ किसी एक काम के होने पर दूसरा काम अनायास हो जाता है, वहाँ घुणाक्षरन्याय का प्रयोग किया जाता है।

चम्पकपटवासन्यायः—जिस वस्त्र में चंपे के फूल लपेट कर रख दिये गये हों उसमें से फूल निकाल लेने पर भी, बहुत देर तक चंपे के फूलों की ख़ुशबू बनी रहती है। इसी प्रकार विषय-भोग जन्य संस्कार भी बहुत काल पर्यन्त बना रहता है। इसको चम्पकपटवासन्याय कहते हैं।

जलतरङ्ग-न्यायः—नाम पृथक होने पर भी जल की तरंग अथवा लहर जल से भिन्न गुण की नहीं होती। अत. जब इस प्रकार का अभेद सूचित करने की आवश्यकता होती है, तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

जलतुम्बिका-न्यायः - (क) पानी में तूँबी कभी नहीं डूबती; बल्कि डुबाने पर भी ऊपर आ जाती है। अतः जब कोई बात छिपाने पर भी नहीं छिपती या छिपाने से छिपने वाली नहीं होती, वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

(ख) तूंबी में यदि कीचड मट्टी थोप कर उसे डुबो दे तो वह डूब जाती है, किन्तु यदि बिना मट्टी कीचड़ के उसे डुबोना चाहे तो वह नहीं डूबती। इसी तरह यह जीव शरीरादि रूपी मलों के रहने संसार सागर में डूब जाता है, और मल छूटने पर संसार सागर के पार हो जाता है।

जलानयन-न्यायः—"पानी ले आओ" कहने से पानी जिस बरतन में लाया जाता है, उस बरतन का भी बोध हो जाता है, क्योंकि बरतन के बिना पानी आवेगा किसमें। अतः जब एक वस्तु कह कर उसके साथ की अनिवार्य किसी अन्य वस्तु का ज्ञान कराना होता है, तब वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है।

तिलतण्डुलन्यायः—इसका प्रयोग उन वस्तुओं के सम्बन्ध में किया जाता है, जो चावलों और तिलों की तरह मिली रहने पर भी अलग अलग दिखाई पड़ती हैं।

तृणजलौका-न्यायः इस न्याय का प्रयोग नैयायिक लोग तब करते हैं, जब उन्हें आत्मा के एक शरीर छोड़ कर दूसरे शरीर में जाने का दृष्टान्त देने की आवश्यकता होती है।

दण्डचक्र-न्यायः—जिस तरह घड़ा बनने में दण्ड, चक्र आदि कई कारण हैं, उसी तरह जहाँ कोई बात अनेक कारणों से होती है, वहाँ यह उक्ति व्यवहृत की जाती है।

दण्डापूप-न्यायः—एक बार एक जन डंडे में बँधे हुए मालपुए छोड़ कर कहीं गया। आने पर उसने देखा कि मालपुओं के साथ चूहों ने डंडे को भी खा डाला है। यह देख उसने विचारा कि, जब चूहों ने डंडा तक खा डाला; तब उन्होंने मालपुए क्योंकर छोड़े होंगे। अत जब कोई दुष्कर और कष्टसाध्य कार्य हो जाता है, तब उसके साथ ही लगा हुआ सुखद और सुकर कार्य अवश्य ही हुआ होगा—यह बतलाने के लिये यह कहावत कही जाती है।

दशमन्याय—एक बार दस आदमी एक साथ तैरकर नदी पार गए। पार पहुँच कर वे यह देखने के लिये सबको गिनने लगे कि, कोई बीच में डूब तो नहीं गया। किन्तु जो गिनता वह अपने को छोड़ जाता था। इस लिये दस की जगह नौ ही निकलते। अन्त में वे अपने साथियों में से एक के डूब जाने के लिये रोने लगे। उनको रोते देख एक पथिक ने उनसे अपने सामने गिनने को कहा। जब उनमें से एक ने उठकर फिर गिनना शुरू किया और नौ पर आकर रुक गया; तब पथिक ने कहा—दसवें तुम"। इस पर वे सब प्रसन्न हो गये। वेदान्ती इस न्याय का व्यवहार उस समय करते हैं, जिस समय उनको यह दिखलाना होता है कि, गुरु के तत्त्वमसि आदि उपदेश सुनने पर ही अज्ञान और तज्जनित दुःख दूर होता है।

देहरीदीपकन्यायः—जिस जगह एक ही आयोजन से दो काम सधें या एक शब्द या बात दोनों ओर लगे, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। इसका अर्थ है देहरी का दीपक, जो भीतर और बाहिर—दोनों जगहों पर उजेला करता है।

नष्टाश्वदग्धरथन्यायः—एक बार एक आदमी रथ पर सवार हो वन में होकर जा रहा था कि वन में आग लगी और उसका घोड़ा जल कर मर गया। इतने में वह आदमी विकल हो वन में घूम रहा था कि, उसे एक दूसरा आदमी मिला। जिसका रथ नष्ट हो गया था, किन्तु घोड़ा जीवित था। अतः दोनों ने समझौता कर उस अश्वहीन रथ और रथहीन घोड़े से काम चलाया। अतः जब दो आदमी मिल कर एक दूसरे की त्रुटियों की पूर्ति कर अपना काम चला लेते हैं; तब इस न्याय का व्यवहार किया जाता है।

नारिकेलफलाम्बुन्यायः—जिस प्रकार नारियल के फल में जल का आना नहीं जान पड़ता, उसी प्रकार लक्ष्मी का आना जान नहीं पड़ता। जब कभी ऐसा प्रयोजन व्यक्त करना पड़ता है, तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

निम्नगाप्रवाह-न्यायः—नदी के प्रवाह का यह स्वभाव होता है कि जिधर, वह जाता है उधर रुकता नहीं। इसी प्रकार के अनिवार्य क्रम का दृष्टान्त देने में इस न्याय से काम लिया जाता है।

नृपनापितपुत्रन्यायः—किसी राजा के एक नाई नौकर था। राजा ने एक दिन उससे कहा कि, कहीं से सबसे सुन्दर एक बालक लाकर मुझको दिखलाओ। नाई को अपने पुत्र से बढ़ कर और कोई सुन्दर बालक ही न देख पड़ा। अतः वह अपने ही पुत्र को लेकर राजा के पास पहुँचा। राजा उस काले कलूटे

बालक को देख प्रथम तो बहुत क्रुद्ध हुआ, किन्तु पीछे उसने सोचा कि स्नेह के वश इसे अपने लड़के सा सुन्दर बालक कोई दिखाई ही न पड़ा। अतः रागवश जहाँ मनुष्य अन्धा हो जाता है और उसको अच्छे बुरे का विवेक नहीं रहता, वहाँ इस न्याय का व्यवहार किया जाता है

पङ्कप्रक्षालनन्यायः—कीचड़ लगने पर उसे धो डालने की अपेक्षा कीचड़ न लगने देना ही उत्तम है।

पञ्जरचालन-न्यायः—यदि दस पक्षी किसी पिंजड़े में बन्द कर दिये जायँ और वे सब एक साथ बल करें, तो उस पिंजड़े को चलायमान कर सकते हैं। ५ ज्ञानेन्द्रियाँ और ५ कर्मेन्द्रियाँ प्राणरूपी क्रिया को उत्पन्न कर देह को चलाती हैं। सांख्यवाले इस बात को दर्शाने के लिए उक्त न्याय का दृष्टान्त दिया करते हैं।

पाषाणेष्टकन्यायः—ईंट भारी अवश्य होती है; पर ईंट से भी कहीं अधिक पत्थर भारी होता है।

पिष्टपेषणन्यायः—पिसे को पीसना जिस प्रकार व्यर्थ है; उसी प्रकार किये हुए काम को जब कोई फिर करता है तब यह उक्ति कही जाती है।

प्रदीपन्यायः—जिस तरह तेल बत्ती और अग्नि इन भिन्न वस्तुओं के मेल से दीपक जलता है उसी तरह सत्व रज और तम इन परस्पर भिन्न गुणों के सहयोग से देहधारण का व्यापार होता है।

प्रापणकन्यायः—जिस तरह घी चीनी आदि कई वस्तुओं को एकत्र करने से बढ़िया मिठाई प्रस्तुत होती है, उसी तरह अनेक उपादानों के योग से सुन्दर वस्तु तैयार होने के दृष्टान्त में यह युक्ति प्रयुक्त की जाती है। साहित्यवाले विभाव, अनुभाव आदि द्वारा रस का परिपाक सूचित करने के लिए भी इसका प्रयोग किया करते हैं।

प्रासादवासिन्यायः—जिस तरह महल में रहनेवाला यद्यपि कामकाज के लिये नीचे उतर कर बाहर भी जाता है; तथापि वह प्रासादवासी ही कहलाता है। उसी तरह जहाँ जहाँ जिस विषय का प्राधान्य होता है; वहाँ वहाँ उसीका उल्लेख किया जाता है।

फलवत्सहकारन्यायः—जिस प्रकार आम के वृक्ष के तले बटोही छाया के लिये जाता है। पर उसे आम के फल भी मिलते हैं, उसी प्रकार जहाँ एक लाभ होने से दूसरा लाभ भी हो वहाँ इस युक्ति का प्रयोग किया जाता है।

बहुवृकाकृष्टन्यायः—जिस प्रकार एक हिरन के पीछे अनेक भेड़ियों के लगने से, उसके अङ्ग एक स्थान पर नहीं रह सकते, उसी प्रकार जिस वस्तु के लिये अनेक जन ऐंचातानी करते हैं, वह वस्तु यथास्थान पर समूची नहीं रह सकती।

बिलवर्तिगोधान्याय—जिस प्रकार बिलस्थित गोह का विभाग आदि नहीं हो सकता उसी प्रकार जो वस्तु अज्ञात है उसके विषय में भी अच्छा बुरा कहना सम्भव नहीं।

ब्राह्मणग्रामन्यायः—जिस गाँव में ब्राह्मणों की बस्ती अधिक होती है, वह ब्राह्मणों का गाँव कहलाता है; हालाँ कि, उसमें अन्य जाति के लोग भी बसते हैं। इसी प्रकार औरों को छोड़ प्रधान वस्तु ही का नाम लिया जाता है। यही सूचित करने के लिये यह उक्ति व्यवहृत की जाती है।

मज्जनोन्मज्जनन्यायः—तैरना न जानने वाला जिस प्रकार जल में गिरने से डूबता उतराता है, उसी प्रकार मूर्ख या दुष्ट वादी प्रमाण आदि ठीक न दे सकने के कारण क्षुब्ध और व्याकुल होता है।

रज्जुसर्पन्यायः—जिस प्रकार जब तक दृष्टि ठीक नहीं पड़ती; तब तक मनुष्य रस्सी को साँप समझता है; उसी प्रकार जब तक ब्रह्मज्ञान नहीं होता, तब तक मनुष्य दृश्य जगत् को सत्य समझता है, पीछे ब्रह्मज्ञान

होने पर उसका भ्रम दूर होता है और वह समझता है, कि ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह वेदान्त की एक शाखा विशेष का सिद्धान्त है।

राजपुत्रव्याधन्यायः—एक राजपुत्र बचपन में एक व्याध के हाथ पड़ा और उसीके घर पाला पोसा गया। अत. वह अपने को व्याधपुत्र ही समझने लगा। पीछे जब लोगों से उसे अपना कुल अवगत हुआ तब उसे अपना वास्तविक स्वरूप ज्ञात हुआ। इसी प्रकार अद्वैत वेदान्तियों का मत है कि, जीव को जब तक ब्रह्मज्ञान नहीं होता, तब तक वह अपने को न जाने क्या समझा करता है। जब जीव को ब्रह्म ज्ञान होता है, तब वह समझता है कि, 'मैं ब्रह्म हूँ।"

राजपुरप्रवेशन्यायः—राजद्वार पर जिस प्रकार बहुत से लोगों की भीड़भाड़ होने पर भी वहाँ किसी प्रकार का होहल्ला नहीं होता—प्रत्युत सब लोग चुपचाप यथानियम खड़े रहते हैं; इसी प्रकार जहाँ सुव्यवस्था होती है; वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

रात्रिदिवसन्यायः—अर्थात् रात दिन का अन्तर। कौड़ी मोहर का अन्तर। ज़मीन आसमान का अन्तर।

लूतातन्तुन्यायः—जैसे मकड़ी अपने शरीर ही से सूत निकाल कर जाला बनाती है और फिर स्वयं उसका संहार करती है; वैसे ही ब्रह्म अपने ही से सृष्टि करता और अपने में उसे लय करता है।

लोष्टलगुडन्यायः—जैसे ढेला तोड़ने के लिए डंडा होता है; वैसे ही जहाँ एक का दमन करने वाला दूसरा होता है; वहाँ इस कहावत से काम लिया जाता है।

लोहचुम्बकन्यायः—लोहा गतिहीन और निष्क्रिय होने पर भी चुम्बक के आकर्षण से उसके पास जाता है, उसी प्रकार पुरुष निष्क्रिय होने पर भी प्रकृत के साहचर्य से क्रिया में तत्पर होता है। [यह सांख्य के मतानुसार है।]

वरगोष्ठीन्यायः—जिस प्रकार वरपक्ष और कन्यापक्ष के लोग मिलकर विवाह रूप एक ऐसे कार्य का साधन करते है जिससे दोनों का अभीष्ट सिद्ध होता है; उसी प्रकार जहाँ कहीं लोग मिल कर कोई ऐसा काम करते हैं, जो सर्वहितकर होता है; वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

वन्हिधूमन्यायः—धूम रूपी कार्य देखकर, जिस प्रकार कारण रूप अग्नि का ज्ञान होता है, उसी प्रकार कारण रूपी अग्नि का ज्ञान होता है, उसी प्रकार कार्य द्वारा कारण अनुमान के सम्बन्ध में यह उक्ति है। (यह नैयायिकों का मत है)

विल्वखल्वाटन्यायः—सूर्यातप से विकल एक गंजा छाया के लिए एक बेल के नीचे गया। वहाँ उसके सिर पर एक बेल टूट कर गिरा। जहाँ इष्टसाधन के प्रयत्न में अनिष्ट होता है; वहाँ इस उक्ति से काम लिया जाता है।

विषवृक्षन्यायः—यदि कोई विष का पेड़ भी लगाता है, तो उसे अपने ही हाथ से नहीं काटता है। अपनी पाली पोसी वस्तु का कोई अपने हाथ से नाश नहीं करता।

वीचितरङ्गन्यायः—एक के उपरान्त दूसरी, इस क्रम से बराबर आनेवाली तरङ्गों के समान ही ककारादिवर्णों की उत्पत्ति नैयायिक लोग वीचितरङ्ग न्याय से मानते हैं।

वीजाङ्कुरन्यायः—अँकुर से बीज है या बीज से अँकुर—यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता। न बीज के विना अंकुर हो सकता है न अंकुर के विना बीज। बीज और अंकुर का प्रवाह अनादि काल से चला आता है। दो सम्बन्ध युक्त वस्तुओं के नित्य प्रवाह के दृष्टान्त में वेदान्ती लोग इस न्याय का प्रयोग किया करते हैं।

वृक्षप्रकम्पनन्यायः—एक मनुष्य वृक्ष पर चढ़ा, वृक्ष के नीचे खड़े लोगों में से एक ने उससे कहा—यह डाल हिलाओ, दूसरे ने कहा वह डाल हिलाओ। इसका परिणाम यह हुआ कि, वृक्ष पर चढ़ा हुआ आदमी यह स्थिर न कर सका कि, किस डाल को हिलाऊँ। इतने में एक आदमी ने पेड़ का धड़ ही पकड़ कर हिला डाला। जिससे सब डालें हिल गयीं। जहाँ कोई एक बात सब के अनुकूल हो जाती है, वहाँ इसका प्रयोग होता है।

वृद्धकुमारिकान्यायः—या वृद्धकुमारीवाक्यन्याय—एक कुमारी तप करते करते बूढ़ी हो गयी। इन्द्र ने उससे कोई एक वर माँगने को कहा। उसने वर माँगा कि मेरे बहुत से पुत्र सोने के बरतनों में खूब घी दूध और अन्न खायें। इस प्रकार उसने एक ही वाक्य में पति पुत्र गोधन धान्य सब कुछ माँग लिया। जहाँ एक की प्राप्ति में सब कुछ प्राप्त हो, वहाँ यह कहावत कही जाती है।

शतपत्रभेदन्यायः—सौ पत्ते एक साथ रख कर छेदने से जान पड़ता है कि, सब एक साथ एक काल ही में छिद गये, पर वास्तव में एक पत्ता भिन्न भिन्न समय में छिदा। कालान्तर की सूक्ष्मता के कारण इसका ज्ञान नहीं हुआ। इस प्रकार जहाँ बहुत से कार्य भिन्न भिन्न समयों में होते हुए भी एक ही समय में हुए जान पड़ते हैं, वहाँ इस दृष्टान्त वाक्य कहा जाता है। [सांख्य के मतानुसार]

श्यामरक्तन्यायः—जैसे कच्चा काला घड़ा पकने पर अपना श्यामगुण छोड़ कर रक्तगुण धारण करता है उसी प्रकार पूर्व गुण का नाश और अपरगुण का धारण सूचित करने के लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

श्यालकशुनकन्यायः—एक ने एक कुत्ता पाला था और उसका वही नाम रखा जो उसके साले का नाम था। जब वह कुत्ते का नाम लेकर गालियाँ देता, तब उसकी पत्नी अपने भाई का अपमान समझ कर नाक भौं सकोड़ती थी। तब से जिस उद्देश्य से कोई बात नहीं कही जाती और वह यदि उससे हो जाती है, तो इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

संदंशपतितन्यायः—संड़सी अपने बीच में आई हुई वस्तु को जैसे पकड़ती है; वैसे ही जहाँ पूर्व और उत्तर पदार्थ द्वारा मध्यस्थिति पदार्थ का ग्रहण होता है। वहाँ इस न्याय का व्यवहार किया जाता है।

समुद्रवृष्टिन्यायः—जैसे समुद्र में पानी बरसने से कोई लाभ नहीं, वैसे ही जहाँ जिस वस्तु की कोई आवश्यकता नहीं होती वहाँ यदि वह की जाती है, तो इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

सर्वापेक्षान्यायः—जिस स्थान पर बहुत से लोगों का न्योता होता है, वहाँ यदि कोई सब के पूर्व पहुँच जाय तो उसे सब की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इसी तरह जहाँ किसी काम के लिए सब का आसरा देखना पड़े वहाँ यह न्याय चरितार्थ समझा जाता है।

सिंहावलोकनन्यायः—सिंह शिकार मार कर जब आगे बढ़ता है तब पीछे फिर फिर कर देखा करता है। इसी प्रकार जहाँ अगली और पिछली सब बातों की एक साथ आलोचना की जाती है, वहाँ इस उक्ति का व्यवहार किया जाता है।

सूचीकटाहन्यायः—किसी लुहार से एक आदमी ने जाकर कड़ाह (बड़ी कड़ाही) बनाने को कहा। थोड़ी देर बाद एक दूसरा मनुष्य आया और उसने उसी लुहार से सुई बनाने को कहा। लुहार ने पहले सुई बनाई; पीछे कड़ाह जब सहज काम पहले और कठिन काम पीछे किया जाता है तब यह उक्ति चरितार्थ की जाती है।

सुन्दोपसुन्दन्यायः—सुन्द और उपसुन्द नाम के दो दैत्य भाई बड़े बली थे। वे दोनों एक ही स्त्री पर मोहित हुए। उस स्त्री ने दोनों से कहा 'तुममें से जो अधिक बलवान होगा—मैं उसीके साथ विवाह

करूँगी।" इसका फल यह हुआ कि, दोनों आपस में लड मरे। आपस की अनबन से बलवान से बलवान मनुष्य नष्ट हो जाते हैं। यह प्रकट करने के लिए ही यह कहावत कही जाती है।

सोपानारोहणन्यायः—जिस प्रकार महल पर जाने के लिये एक एक सीढ़ी क्रम से चढ़ना होता है, उसी प्रकार किसी बड़े काम के करने में क्रम क्रम से आगे बढ़ना पड़ता है।

सोपानावरोहणन्यायः—जिस क्रम से सीढ़ियों पर चढ़ा जाता है, उसी के उलटे क्रम से उतरते हैं। इसी प्रकार जहाँ किसी क्रम से चल कर फिर उसी के विपरीत क्रम से चलना होता है वहाँ यह न्याय व्यवहृत किया जाता है।

स्थविरलगुड़न्यायः—बुड्ढे के हाथ से फेंकी हुई लाठी जिस प्रकार ठीक निशाने पर नहीं पहुँचती उसी प्रकार किसी बात के लक्ष्य तक न पहुँचने पर यह उक्ति व्यवहार में लायी जाती है।

स्थालीपुलाकन्यायः—बटलोई भर चावल का पकना न पकना एक कना देखकर जान लिया जाता है इसी प्रकार थोडे से बहुत को जानने के लिए इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

स्थूणानिखनन न्याय—जिस प्रकार इधर की थूनी को दृढ़ करने के लिए उसे मिट्टी आदि डाल कर दृढ़ करना होता है, उसी प्रकार उदाहरण एवं युक्ति द्वारा अपना पक्ष दृढ़ करना पड़ता है।

स्थूलारुन्धतीन्यायः— विवाह में वर वधू को अरुन्धती का तारा दिखलाने की चाल है, यह अरुन्धती तारा पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण बहुत सूक्ष्म रूप का देख पड़ता है, और इसीसे वह जल्दी देख भी नहीं पडता। अतएव अरुन्धती तारे को दिखलाने के लिये जैसे प्रथम सप्तर्षि दिखाते हैं और उनके पास ही अरुंधती को बतलाते हैं, इसी प्रकार किसी सूक्ष्मतत्व का परिज्ञान कराने के लिये पहले स्थूल दृष्टान्त देकर क्रमशः उस सूक्ष्मतत्व तक ले जाते हैं। जब ऐसा कोई अभिप्राय समझाना होता है, तब यह न्याय व्यवहार में लाया जाता है।

स्वामिभृत्यन्यायः—दूसरे का काम हो जाने से अपना भी काम या प्रसन्नता हो जाय, वहाँ इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है। स्वामिभृत्यन्याय—इसलिये कहलाता है कि, मालिक का काम करने से नौकर स्वामी की प्रसन्नता प्राप्त करता है और उस प्रसन्नता से अपने को कृतकार्य समझता है।

परिशिष्ट २

की

सङ्केत-सूची

भ्वा० ग०	भ्वादि गणी।
अ० ग०	अदादि गणी।
जु० ग०	जुहोत्यादि गणी।
दि० ग०	दिवादि गणी।
स्वा० ग०	स्वादि गणी।
तु० ग० ..	तुदादि गणी।
रु० ग०	रुधादि गणी।
त० ग०	तनादि गणी।
क्रया० ग०	क्र्यादि गणी।
चु० ग०	चुरादि गणी।
क० ग०	कण्ड्वादि गणी।
पर०	परस्मैपदी।
आ०	आत्मनेपदी।
उ०	उभयपदी।
ल० व०	लट् वर्तमान काल।
स०	सकर्मक।
अ०	अकर्मक।
गति—	गमन, प्राप्ति, ज्ञान, मोक्षः।

———

धातुसूची (अकारादि धातु)

अक (भ्वा० ग० पर०) कुटिल गमन, तिर्च्छीचलना, टेढ़ा चलना। अकति, अकतः, अकन्ति (ल०व०) अ०।

अकि (भ्वा० ग० आ०) अङ्कित करना, लक्षित करना, अङ्कते, अङ्केते, अङ्कन्ते (ल० व०) स०।

अक्षू (भ्वा० ग० पर०) व्याप्त होना। अक्ष्णोति, अक्ष्णुतः, अक्ष्णुवन्ति, वा अक्षति, अक्षतः, अक्षन्ति—(ल० व०) अ०।

अग (भ्वा० ग० पर०) देखो—अक।

अगद (क० ग० उ०) रोगरहित करना, अगदयति, अगदयतः, अगदयन्ति, अगदयते – (ल० व०) स०

अगि (भ्वा० ग० पर०) चलना। अङ्गति, अङ्गत, अगन्ति (ल० व०) स० अ०

अघि (भ्वा० ग० आ०) एक तरह का गमन, जो कि लोक में उपहासास्पद हो केवल गमन, गमन का प्रारम्भ करना। अङ्घते (ल० व०) अ०।

अङ्क (चु० ग० उ०) लक्षित करना। अङ्कयति.... (ल० व०) स०।

अङ्ग („ „ „) „ „ „ .. („ „ „)।

अचि (भ्वा० ग० उ०) गमन करना, माँगना, याचना करना। अञ्चति . .(ल० व०) स० अ०।

अचु („ „ „) देखो— अचि, अचति अचतः ..(ल० व०) स० अ०।

अज (भ्वा० ग० पर०) गमन करना, फेंकना। अजति, अजतः... ..(ल० व०) स०।

नोट—इसका विशेष प्रयोग फेंकने में होता है, कहीं कहीं श्लेषादि अर्थ कहने के लिए गति—अर्थ भी ग्रहण किया जाता है।

अजि (चु० ग० उ०) बढ़ना। अञ्जयति अञ्जयते .(ल० व०) अ०।

अञ्चु (भ्वा० ग० पर०) गमन करना, पूजन करना। अञ्चति (ल० व०) स०

अञ्चु (उ० „ „) देखो — अचि—

अञ्चु (चु० ग० उ०) निवारण करना, हटाना, अञ्चयति .. ..(ल० व०) स०।

अञ्जू (रु० ग० पर०) विवेचन करना, चिकनाना, चमकना, शोभित होना, गमन करना। अनक्ति, अङ्क्तः, अञ्जति (ल० व०) स० अ०।

अट (भ्वा० ग० पर०) गमन करना, चलना। अटति (ल० व०) स० अ०।

अट्ट (भ्वा० ग० आ०) अतिक्रमण करना दबाना, हिंसा करना, मारना। अट्टते (ल० व०) स०।

अट्ट (चु० ग० उ०) अनादर करना, अट्टयति—अट्टयते (ल० व०) स०।

अठि (भ्वा० ग० आ०) गमन करना ..अण्ठते . (ल० व०) स० अ०।

अड (भ्वा ग० पर०) उद्यम करना, मेहनत करना। अडति (ल० व०) अ०।

अड्ड (भ्वा० ग० पर०) अभियोग करना, निर्बल शत्रु पर चढ़ाई आदि करके उसको पकड़ना। अड्डति—(ल० व०) स०।

अण (दि० ग० आ०) जीना, जीवित रहना—अण्यते (ल० व०) अ०।

अण (भ्वा० ग० पर०) बजना शब्द करना, अणति—(ल० व०) अ०।

अत (भ्वा० ग० पर०) निरन्तर चलना, अतति—(ल० व०) स०।

अति (भ्वा० ग० पर०) बाँधना, अन्तति ..(ल० व०) स०।

अद (अ० ग० पर०) भोजन करना, खाना। अत्ति, अत्त, अदन्ति (ल० व०) स० अ०।

अदि— देखो— अति—

अन (अ० ग० पर०) जीना, जीवित रहना। अनिति, अनित, अनन्ति (ल० व०) अ०।

अन (दि० ग० आ०) जीना, जीवित रहना। अन्यते, अन्येते, अन्यन्ते (ल० व०) अ०।

अन्ध (चु० ग० उ०) अन्धा हो जाना, दृष्टि का नाश होना। अन्धयति, अन्धयते (ल० व०) अ०।

अबि (भ्वा० ग० आ०) शब्द करना, (स्फुट शब्द को छोड किसी तरह का भी हो)
अम्बते, अम्बेते, अम्बन्ते (ल० व०) अ०।

अभि— देखो अबि।

अभ्र (भ्वा० ग० पर०) चलना, गमन करना, अभ्रति (ल० व०) अ०।

अम (भ्वा० ग० पर०) चलना, शब्द करना, रचना करना। अमति (ल० व०) अ०।

अम (चु० ग० उ०) रोगी होना। आमयति, आमयते (ल० व०) अ०।

अम्बर (क० ग० उ०) ढांक लेना, घेर लेना, अम्बर्यति, अम्बर्यते (ल० व०) स०।

अय (भ्वा० ग० आ०) जाना, चलना। अयते, अयेते, (ल० व०) स० अ०।

अरर (क० ग० उ०) आरा कर्मः—(आरा से छेदने आदि मे, (चमारों की चमड़ा आदि छेदने की सुई को आरा कहते हैं) अरर्यति, अरर्यते (ल० व०) स०।

अर्क (चु० ग० उ०) स्तुति करना, या तपना, जलना, अर्कयति ते (ल० व०) स० अ०।

अर्च (भ्वा० ग० पर०) पूजा करना। अर्चति (ल० व०) स०।

अर्च (चु० ग० उ०) देखो—पहली अर्च, अर्चयति, अर्चयते (ल० व०) स०।

अर्ज (भ्वा० ग० पर०) पैदा करना, अर्जन करना, प्राप्त करना, अर्जति (ल० व०) स०।

अर्ज (चु० ग० उ०) दूसरे के गुण का ग्रहण करना ; जैसे, लकडी पानी मे पडी रहकर उसके गुणको ग्रहण करलेती है। केवल लेना भी अर्थ होता है; जैसे, (द्रव्य मर्ज यति) द्रव्य ग्रहण करता है—अर्ज यति, अर्जयते। (ल० व०) स०।

अर्थ (चु० ग० आ०) याचना करना, माँगना। अर्थयते (ल० व०) स०।

अर्द (चु० ग० उ०) हिंसा करना, मारना, अर्दयति, अर्दयाते (ल० व०) स०।

अर्द (भ्वा० ग० पर०) गमन करना, याचना करना मांगना। अर्दति (ल० व०) स०।

अर्व (भ्वा० ग० पर०) गमन करना, जाना, अर्वति (ल० व०) स०।

अर्व (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, मारना, अर्वति (ल० व०) स०।

अर्ह (भ्वा० ग० पर०) पूजा करना, अर्हति (ल० व०) स०।

अल (भ्वा० ग० पर०) सजाना, पर्याप्त होना, समर्थ होना, वारण करना, निषेध करना।
अलति (ल० व०) स० अ०।

अव (भ्वा० ग० पर०) रक्षा करना, गति, (गमन करना) शोभित होना, दीपित होना, तृप्त हो जाना, जानना, प्रवेश करना, सुनना, स्वामी बनना, माँगना, इच्छा करना, प्राप्ति करना, आलिंगन करना, (चिपटाना), मारना, ग्रहण करना, (लेना), भाग करना, बढ़ना। अवति (ल० व०) स० अ०

अश (क्र्या० ग० पर०) भोजन करना, खाना अश्नाति, (ल० व०) स०

अशू (स्वा० ग० आ०) व्याप्त होना, इकट्ठा होना ,अश्नुते—(ल० व०) अ०

अस (भ्वा० ग० उ०) चलना, शोभित होना, ग्रहण करना। असति, असते (ल० व०) अ०

अस (अ० ग० पर०) सत्ता, वर्तमान रहना, बना रहना, अस्ति, स्तः (ल० व०) अ०

असु (दि० ग० पर०) फेंकना जैसे पत्थर, ढेला। अस्यति (ल० व०) स०

असु (क० ग० उ०) दुख देना, असूयति—यते। (ल० व०) स०

अह (स्वा० ग० पर०) व्याप्त होना। अह्नोति (ल० व०) अ०
अहि (भ्वा० ग० आ०) गति—चलना, जाना। अहते (ल० व०) स० अ०
अंहि (चु० ग० उ०) बढ़ाना, बढ़ना। अहयति-यते इत्यादि (ल० व०) स० अ०
अंस (चु० ग० पर०) ज़ोर से मारना अंसयति (ल० व०) स०

आ

आच्छि (भ्वा० ग० पर०) फैलना, बढ़ना आञ्छति (ल० व०) अ०
आप्लृ (चु० ग० पर०) प्राप्त कराना, पहुँचाना। आपयति, (ल० व०) स०
आप्लृ (स्वा० ग० पर०) व्याप्त होना, पाना आप्नोति (ल० व०) अ० स०
आस (अ० ग०) बैठना। आस्ते (ल० व०) अ०

इ

इक् (अ० ग० पर०) स्मरण करना। अध्येति (यह धातु अधि उपसर्ग पूर्वक रहती है) (ल० व०) स० अ०
इख् (भ्वा० ग० पर०) गमन करना, चलना। एखति (ल० व०) स० अ०
इखि देखो इख् इङ्खति (ल० व०)
इगि (" ") इङ्गति (ल० व०)
इङ् (अ० ग० आ०) पढ़ना, अध्ययन करना (यह धातु "अधि" पूर्वक होती है) अधीते (ल० व०) अ०
इट (भ्वा० ग० पर०) देखो—इख। एटति (ल० व०)
इण् (अ० ग० पर०) गति, चलना। एति (ल० व०) अ० स०
इदि (भ्वा० ग० पर०) अत्यन्त आनन्द पाना, परम ऐश्वर्य इन्दति (ल० व०) अ०
(ञि) इन्धी (रु० ग० उ०) खूब प्रज्वलित होना। इनद्धि (ल० व०) अ०
इरज्, ईरज् (क० ग० पर०) ईर्ष्या करना, ईरज्यति (ईर्यति, ईर्यते) (ल० व०) (दोनों) स० अ०
इरस् देखो—इरज्।

इल (तु० ग० पर०) सोना, या फेंकना। इलति (ल० व०) अ० स०
इल (चु० ग० उ०) प्रेरणा करना। एलयति ल० व० स०
इवि (भ्वा० ग० पर०) व्याप्त होना, फैलना। इन्वति (ल० व०) अ०
इष् (दि० ग० पर०) देखो—इण् इष्यति (ल० व०)
इष् (क्र्या० ग० पर०) बार बार या बहुत अधिक किसी काम को करना। इष्णाति (ल० व०) अ०
इष् (तु० ग० पर०) इच्छा करना, चाहना। इच्छति (ल० व०)
इपुध् (क० ग० पर०) बाण को तरकस में रखना इपुध्यति (ल० व०) अ०

ई

ईक्ष् (भ्वा० ग० आ०) देखना। ईक्षते (ल० व०) अ० स०
ईख् (भ्वा० ग०) देखो-इख्। ईङ्खति
ईङ् (दि० ग० आ०) देखो इण्। ईयते
ईज् (भ्वा० ग० आ०) गति, निन्दा करना, बुराई करना। ईजते (ल० व०) स० अ०
ईड् (अ० ग० आ०) स्तुति करना। ईट्टे (ल० व०) स०

ईड् (चु० ग० उ०) देखो ईड् । इडयति, यते (ल० व०)
ईर् (अ० ग० आ०) देखो इण् । ईर्ते (ल० व०)
ईर् (चु० ग० पर०) फेंकना ईरयति, ईरति (ल० व०) स०
ईर्क्ष्य् (भ्वा० ग० पर०) देखो इरज् ईर्क्ष्यति (ल० व०) स०
ईश् (अ० ग० आ०) मालिक बनना, ईश्वर भाव को प्राप्त होना । ईष्टे (ल० व०) अ०
ईष् (भ्वा० ग० पर०) उञ्छ वृत्ति ग्रहण करना (उञ्छ्—प्राचीन काल में ऋषि लोग खेतों में से दाना बीन कर अपना जीवन निर्वाह करते थे, वही वृत्ति उञ्छ कहलाती है) -
श्लो० उञ्छः कणश आदानं कणिशाद्यर्जनं शिलं—ईषति (ल० व०) अ०
ईष्य् देखो—ईर्क्ष्य्
ईह् (भ्वा० ग० आ०) चाहना, इच्छा करना, चेष्टा करना । ईहते (ल० व०) स० अ०

उ

उक्ष् (भ्वा० ग० पर०) सींचना । उक्षति (ल० व०) स०
उख् उखि—(देखो - इख्) ओखति, उङ्खति (ल० व०)
उङ् (भ्वा० ग० आ०) शब्द करना, बोलना । अवते (ल० व०) अ०
उच् (दि० ग० पर०) इकट्ठा होना उच्यति, (ल० व०) अ०
उच्छि (भ्वा० ग० पर०) देखो —ईष्—उच्छति—(ल० व०)
उच्छि (तु० ग० पर०) देखो—उच्छि
उच्छी (भ्वा० ग० पर०) समाप्त करना या होना (यह धातु वि पूर्वक चलती है) व्युच्छति (ल० व०) स० अ०
उच्छी (तु० ग० पर०) देखो—उच्छी । उच्छति (ल० व०)
उज्झ (तु० ग० पर०) छोड़ना, त्यागना उज्झति (ल० व०) स०
उठ् (भ्वा० ग० पर०) लोटना । ओठति (ल० व०) स० अ०
उध्रस् (चु० ग० पर०) देखो—ईष्, उध्रासयति, उध्रसति, कुछ लोग उकार इत्संज्ञक मानते है तब—
ध्रासयति, ध्रसति (ल० व०)
उध्रस् (क्र्या० ग० पर०) देखो—इष् (उकार इत्संज्ञक) ध्रस्नाति (ल० व०)
उन्दी (रु० ग० पर०) गीला करना, ओदा करना । उनत्ति (ल० व०) स०
उब्ज (तु० ग० पर०) मृदुता करना । उब्जति (ल० व०) अ०
उभ् उम्भ् (तु० ग० पर०) पूर्ण करना । उभति, उम्भति (ल० व०) स०
उरस् (क० ग० पर०) बलवान् होना, उरस्यति (ल० व०) अ०
उर्द (भ्वा० ग० आ०) तौलना, नापना, मान करना,ऊर्दते (ल० व०) स०
उर्वी (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, मारना, ऊर्वते (ल० व०) स०
उष् (भ्वा० ग० पर०) जलाना, दाह करना, ओषति (ल० व०) स०
उषस् (क० ग० पर०) सवेरा होना, उषस्यति(ल० व०) अ०
उहिर् (भ्वा० ग० पर०)—देखो—अर्द ओहति (ल० व०)

ऊ

ऊठ् देखो—उठ्
ऊन (चु० ग० उ०) क्षीण होना, नष्ट करना, ऊनयति यते (ल० व०) स० अ०

ऊयी (भ्वा० ग० आ०) सूत फैलाना अर्थात् बिनना (कपडा) ऊयते (ल० व०) स०
ऊर्ज् (चु० ग० उ०) बली होना, जिलाना, ऊर्जयति यते (ल० व०) स० अ०
ऊर्णुञ् (अ० ग० उ०) आच्छादन करना, ढाँकना ऊर्णौति, ऊर्णोति, उर्णुते (ल० व०) स०
ऊषू (भ्वा० ग० पर०) किसी दुख या रोग का होना (या किसी को करना) ऊषति (ल० व०) अ० स०
ऊह (भ्वा० ग०) आशङ्का करना, तर्क करना, ऊहते (ल० व०) स०

ऋ

ऋ (भ्वा० ग० पर०) गति, (देखो—इण) पहुँचाना, ऋच्छति, (ल० व०)
ऋ (अ० ग० पर०) गति – इयर्ति (अ० स०) यह धातु छान्दस है
ऋ (क्र्या० ग० पर०) गति ऋणाति ल० व०) अ० स०
ऋच् (तु० ग० पर०) स्तुति करना, ऋचति (ल० व०) स०
ऋच्छ (तु० ग० पर०) गति—इन्द्रियों का नष्ट होना, मूर्त्तिभाव अर्थात् मूर्त्ति की तरह स्तब्ध हो जाना ऋच्छति (स० अ०)
ऋज् (भ्वा० ग० आ०) गति, स्थान को प्राप्त करना, रुपया आदि पैदा करना, अर्जते (ल० व०) अ० स०
ऋजि (भ्वा० ग० आ०) गूँजना, ऋञ्जति (ल० व०) स०
ऋणु (तु० ग० उ०) गति—ऋणोति, अर्णोति इ० (ल० व०) अ० स०
ऋधु (स्वा० ग० पर०) बढ़ना—ऋध्नोति (ल० व०) अ०
ऋधु (दि० ग० पर०) बढ़ना—ऋध्यति (ल० व०) अ०
ऋफ, ऋम्फ (तु० ग० पर०) हिंसा करना ऋफति—ऋम्फति (ल० व०) स०
ऋषी (तु० ग० पर०) गति—ऋषति (ल० व०) अ० स०

ए

एज् (भ्वा० ग० पर०) काँपना, एजति (ल० व०) अ०
एज् (भ्वा० ग० आ०) दीप्त होना, शोभित होना, एजते (ल० व०) अ०
एठ (भ्वा० ग० आ०) बाधा करना, एठते, स०
एध (भ्वा० ग० आ०) बढ़ना, एधते, अ०
एला (क० ग० पर०) विलास करना—एलायति अ०
एषृ (भ्वा० ग० आ०) गति एषते अ० स०

ओ

ओखृ (भ्वा० ग० पर०) सुखाना, या समर्थ होना, ओखति, अ० स०
ओणृ (भ्वा० ग० पर०) दूर करना, ओणति, स०
ओलण्ड (चु० ग० पर०) फेंकना, ओलण्डयति ओलण्डति (बहुत आचार्य—ओकार इत्संज्ञक मानते हैं—लण्डयति, लण्डति) स०

क

कक (भ्वा० ग० आ०) गर्व और चपलता करना ककते, (ल० व०) अ०
ककि (भ्वा० ग० आ०) गति—कङ्कते, (ल० व०) अ० स०

कख (भ्वा० ग० पर०) हँसना कखति (ल० व०) अ० स०

कखे (भ्वा० ग० पर०) हँसना कखति, अ० स०

कगे (भ्वा० ग० पर०) इसका कोई विशेष अर्थ नहीं है। सामान्य क्रियामात्र ही अर्थ है—कगति,

कच (भ्वा० ग० आ०) बांधना कचते स०

कचि, काचि (भ्वा० ग० आ०) दीप्त होना (शोभा पाना), बांधना, कञ्चते, काञ्चते. अ० स०

कटी (भ्वा० ग० पर०) गति कटति, अ० स०

कटे (भ्वा० ग० पर०) बरसना या घेरना, कटति अ० स०

कठ (भ्वा० ग० पर०) कष्ट से जीना, कठति, अ०

कठि (भ्वा० ग० आ०) चिन्ता करना—कण्ठते, स०

कठि (चु० ग० उ०) शोक करना—कण्ठयति यते कण्ठति, कण्ठते. उत् उपसर्ग पूर्वक " उत्कण्ठा " अर्थ में आता है—उत्कण्ठते

कड (तु० ग० पर०) मद—करना कडति (ला० व०) अ०

कड (भ्वा० ग० पर०) देखो कड-कडति

कडि (भ्वा० ग० आ०) देखो कड कण्डते

कडि (चु० ग० उ०) भेदन करना, कण्डयति, यते कण्डति, कण्डते स०

कडि (भ्वा० ग० पर०) देखो—कड (भ्वा० ग०) कण्डति, अ०

कड्ड (भ्वा० ग० पर०) कर्कशता करना, कड्डति, अ०

कण् देखो—अण्, कणति

कण् (चु० ग० उ०) नेत्र मूंदना, मूंदना काणयते यते स०

कण्डूञ् (क० ग० उ०) खुजलाना, कण्डूयति, यते स०

कत्थ (भ्वा० ग० आ०) प्रशंसा करना कत्थते स०

कत्र (चु० ग० पर०) शिथिलता करना, कत्रयति, कत्रति (अन्य आचार्यों के मत में कर्त्त भी धातु है—कर्त्तयति, कर्त्तति)

कथ (चु० ग० उ०) कहना, कथयति, यते स०

कदि, क्रदि, क्लदि (भ्वा० ग० पर०) बुलाना, पुकारना, रोना, कन्दति, क्रन्दति, क्लन्दति, अ०

कदि, क्रदि, क्लदि (भ्वा० ग० आ०) डरना या विकल होना, कन्दते, क्रन्दते, क्लन्दते (यह पूर्व ही धातु है, किन्तु आत्मनेपद में पाठ मित्व के लिए और अर्थ वैपरीत्य के लिए है)

कनी (भ्वा० ग० पर०) दीप्ति (शोभा), कान्ति, गति, कनति, अ० स०

कपि (भ्वा० ग० आ०) काँपना, कम्पते, अ०

कबृ (भ्वा० ग०) आ० विचित्र रङ्गों से रङ्गना कबते स०

कमु (भ्वा० ग० आ०) इच्छा करना, चाहना, कामयते स० अ०

कर्ज (भ्वा० ग० पर०) दुःख देना या पाना, कर्जति, स० अ०

कर्त देखो,—कत्र

कर्द (भ्वा० ग० पर०) निन्दनीय शब्द करना (" खर्र से कोई चीज़ चीरना या फाड़ना) कर्दति, स०

कर्व (भ्वा० ग० पर०) गति—कर्वति. अ० स०

कर्व, खर्व, गर्व (भ्वा० ग० पर०) घमण्ड करना, कर्वति, खर्वति, गर्वति अ०

कल (भ्वा० ग० पर०) बोलना, गिनना, कलति, स०

कल, खिल (चु० ग० उ०) फेंकना, कालयति, खेलयति, स०
कल (चु० ग०) गति, गिनना, कलयति, अ० स०
कल्ल (भ्वा० ग० पर०) अस्फुट शब्द करना कल्लति, अ०
कष (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, कषति स०
कस (भ्वा० ग० पर०) गति – कसति, अ० स०
कसि (अ० ग० आ०) गति, शासन करना, कंस्ते, अ० स०
काक्षि, वाक्षि, माक्षि (भ्वा० ग० पर०) चाहना (देखो – इष्) काङ्क्षति, वाङ्क्षति माङ्क्षति, स०
काचि (भ्वा० ग० आ०) दीप्ति, बाधना, काञ्चते, अ० स०
काल (चु० ग० उ०) समय बतलाना, कालयति, यते, अ०
काशृ (दि० ग० आ०) दीप्त होना, काश्यते, अ०
काशृ (भ्वा० ग० आ०) दीप्त होना काशते, अ०
कासृ (भ्वा० ग० आ०) निन्दा करना, कासते, स०
कि (जु० ग० पर०) जानना, चिकेति, स० (यह धातु छान्दस है)
किट, खिट (भ्वा० ग० पर०) डरना, केटति, खेटति, स०
किट देखो—" कटी "—केटति,
कित (भ्वा० ग० पर०) रहना, रोग दूर करना, चिकित्सति (" वि " उपसर्ग पूर्वक संशय अर्थ में है) विचिकित्सति। बहुत आचार्य आत्मनेपद ही धातु मानते हैं—चिकित्सते। किन्तु—" निवास " अर्थ में " केतयति " रूप चलेगा।
किल (तु० ग० पर०) सफेद हो जाना, खेलना, किलति, अ०
कीट (चु० ग० उ०) रेंगना कीटयति, यते, स०
कील (भ्वा० ग० पर०) बांधना, कीलित करना, कीलति, स०
कु (अ० ग० पर०) शब्द करना, बोलना, कौति, अ०
कुक (भ्वा० ग० आ०) ग्रहण करना, लेना, कोकते, स०
कुङ् देखो—उङ्—कवते,
कुङ् (तु० ग० आ०) देखो उङ् कुवते
कुच (भ्वा० ग० पर०) ज़ोर से बोलना, तीव्र शब्द करना, कोचति, अ०
कुच (भ्वा० ग० पर०) सम्बन्ध करना, टेढ़ाई करना, रुक जाना, खींच देना (जैसे हल के लोहे से पृथ्वी पर कर्षण किया जाता है) कोचति—अ० स०
कुच (तु० ग० पर०) सङ्कोच करना, छोटा करना, कुचति—स०
कुज (भ्वा० ग० पर०) चोरी करना, कोजति, स०
कुञ्च, क्रुञ्च (भ्वा० ग० पर०) टेढ़ाई करना, कम हो जाना, कुञ्चति, क्रुञ्चति. स० अ०
कुट (तु० ग० पर०) कुटिलता करना, कुटति, अ०
कुट (चु० ग० उ०) तोड़ना, कोटयति, यते, स०
कुट्ट (चु० ग० उ०) कूटना, छेदना, ठगना, भर्त्सन करना या पूर्ण करना, मरना, कुट्टयति, स०
कुट्ट (चु० ग० आ०) प्रताप दिखलाना, कुट्टयति, अ०
कुठि (भ्वा० ग० पर०) मारना, प्रतिघात करना. कुण्ठति, स०
कुठि (भ्वा० ग० उ०) लपेटना, चारों ओर से फेरना, कुण्ठयति, यते, कुण्ठति, स०
कुड (तु० ग० पर०) लड़के की तरह आचरण करना, कुडति, अ०

कुडि (भ्वा० ग० आ०) जलाना, जलना, दाह का होना, कुण्डते, स० अ०

कुडि (भ्वा० ग० पर०) विकल होना, घबड़ाना, कुण्डति, अ०

कुडि (चु० ग० उ०) रक्षा करना, कुण्डयति, यते, कुण्डति स०

कुण (तु० ग० पर०) शब्द करना, उपकार करना, कुणति, स०

कुण (चु० ग० उ०) आमन्त्रण करना, बुलाना, कुणयति, यते, स०

कुत्स (चु० ग० आ०) निन्दा करना, कुत्सयते, स०

कुथ (दि० ग० पर०) दुर्गन्धित हो जाना, कुथ्यति, अ०

कुथ (क्र्या० ग० पर०) (दुर्ग आचार्य के मत में कई चीज़ों का एक में मिलजाना या कष्ट देना) कुथ्नाति, अ० स०

कुथि (भ्वा० ग० पर०) मारना और कष्ट देना कुन्थति, स०

कुद्रि (चु० ग० उ०) झूठ बोलना, कुन्द्रयति, यते, अ०

कुन्थ (क्र्या० ग० पर०) देखो—कुथ कुथ्नाति

कुप (दि० ग० पर०) क्रोध करना, कुप्यति, स०

कुप (चु० ग० उ०) बोलना, कोपयति, यते, स०

कुबि (भ्वा० ग० पर०) ढाँकना, कुम्बति, स०

कुबि (चु० ग० उ०) देखो—कुबि (भ्वा० ग०) कुम्बयति, यते, कुम्बति

कुभि देखो—कुबि (चु० ग०)

कुमार (चु० ग० उ०) खेलना, क्रीडा करना, कुमारयति, यते, स० अ०

कुर (तु० ग० पर०) कुर कुर शब्द करना, कुरति, अ०

कुर्द (भ्वा० ग० आ०) खेलना, कूर्दते अ०

कुल (भ्वा० ग० पर०) इकट्ठा होना या करना भाई की तरह बर्ताव करना कोलति स० अ०

कुशि देखो—कुद (चु० ग०) कुंशयति, कुंशति,

कुष (क्र्या० ग० पर०) निष्कर्ष करना, निचोड़ बात कहना, कुष्णाति, अ०

कुपुभ (क० ग० पर०) फेंकना, कुपुभ्यति, स०

कुस (दि० ग० पर०) कई वस्तुओं का एक साथ मिलना, कुस्यति, अ०

कुसि देखो कुप (चु० ग०) कुंसयति—कुंसति,

कुस्म (चु० ग० आ०) बुरी तरह मुस्कुराना, कुस्मयते, अ०

कुह (चु० ग० आ०) चकित कर देना, आश्चर्य पैदा करना, कुहयते, स०

कूज (भ्वा० ग० पर०) कूजन करना, कोकिला की बोली कूजति, अ०

कूट (चु० ग० आ०) देना, एक जगह पर स्थित होना, कूटयते—अ० स०

कूट (चु० ग० उ०) दुःख देना, कूटयति , यते स०

कूण (चु० ग० आ०) सिकोड़ना या सिकुड़ना, कूणयते, स० अ०

कूण (चु० ग० उ०) देखो कूण—कूणयति ,यते

कूल (भ्वा० ग० पर०) ढाँकना, आवरण करना, कूलति, स०

कृञ् (स्वा० ग० उ०) मारना, हिंसा करना, कृणोति (णुते) स०

कृञ् (तु० ग० उ०) करना, करोति, कुरुते स०

कृड (तु० ग० पर०) घना करना, या होना कृडति, स० अ०

कृती (तु० ग० पर०) काटना, कृन्तति, स०

कृती (रु० ग० पर०) वेष्टन करना, चारों ओर से घेरना या बाँधना, कृणत्ति, स०
कृप (चु० ग० उ०) दुर्बल होना कृपयति , यते , अ०
कृप (चु० ग० उ०) कल्पना करना, कल्पयति , यते , स०
कृपू (भ्वा० ग० आ०) समर्थ होना, कल्पते, अ०
कृवि (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, करना कृण्वति स०
कृश (दि० ग० पर०) पतला करना, कृश्यति, स०
कृषू (भ्वा० ग० पर०) खींचना, कर्षति, स०
कॄ (क्र्या० ग० पर०) हिंसा करना, कृणाति स०
कॄ (तु० ग० पर०) फेंकना, किरति, स०
कॄञ् (क्र्या० ग० पर०) हिंसा करना, मारना, कृणाति, यते स०
कॄत (चु० ग० उ०) कीर्ति आदि का गान करना, कीर्तयति, (यते) स०
केत (चु० ग० उ०) सुनाना, निमन्त्रण देना, केतयति, यते स०
केपृ (भ्वा ग० आ०) गति, काँपना, केपते, अ० स०
केला (क० ग० पर०) खेल करना (देखो-एला) केलायति—
केलृ (भ्वा० ग० पर०) चलित होना कँप जाना, केलति, अ०
केवृ (भ्वा० ग० आ०) सेवा करना, केवते, स०
कै (भ्वा० ग० पर०) शब्द करना, गाना, कायति, अ० स०
क्नसु (दि० ग० पर०) कुटिलता करना, दीप्त होना क्नस्यति, अ० स०
क्नूञ् (क्र्या० ग० पर०) देखो - कै, क्नूनाति
क्नूयी (भ्वा० ग० आ०) शब्द करना, गीला करना क्नूयते अ० स०
क्मर (भ्वा० ग० पर०) कुटिलता करना, क्मरति, अ०
क्रथ (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, क्रथति, स०
क्रदि देखो—कदि
क्रन्द (चु० ग० उ०) निरन्तर रोते रहना (आ) क्रन्दयति, यते, अ०
क्रप (भ्वा० ग० आ०) कृपापूर्वक चलना, क्रपते अ०
क्रमु (भ्वा० ग० पर०) पैर इधर उधर फेंकना क्राम्यति, क्रामति
क्रीञ् (क्र्या० ग० उ०) मोल लेना, क्रीणाति, क्रीणीते, स०
क्रीड् (भ्वा० ग० पर) खेलना, क्रीडति, अ०
क्रुञ्च देखो—कुञ्च
क्रुध (दि० ग० पर०) क्रोध करना, क्रुध्यति, अ०
क्रुश (भ्वा० ग० पर०) गाली देना, शाप देना, रोना, क्रोशति, स०, अ०
क्लथ (भ्वा० ग० पर०) देखो—क्रथ
क्लदि देखो—कदि
क्लदि देखो—क्रदि
क्लप (चु० ग० उ०) व्यक्त बोलना, स्पष्ट बातचीत करना, क्लपयति (यते) अ०
क्लमु (दि० ग० पर०) ग्लानि करना, क्लाम्यति, क्लमति, अ०
क्लिदि (भ्वा० ग० आ०) विलाप करना, क्लिन्दते, अ०
क्लिदू (दि० ग० पर०) गीला हो जाना, क्लिद्यति, अ०

क्लिश (दि० ग० पर०) दुःख पाना, क्लिश्यति, अ०
क्लिशू (क्र्या० ग० पर०) दुःख देना, क्लिश्नाति, स०
क्लीबृ (भ्वा० ग० पर०) पुरुषोचित वीर्य का न होना, नपुंसक हो जाना क्लीबते अ०
क्लेश (भ्वा० ग० आ०) अव्यक्त बोल बोलना, दुःख देना, क्लेशते, स०
क्वण देखो—अण, क्वणति
क्वथे (भ्वा० ग० पर०) पकाना, काढ़ा करना, क्वथति, स०
क्षजि (भ्वा० ग० आ०) गति, दान देना, क्षञ्जते, स० अ०
क्षणु (त० ग० उ०) हिंसा करना, क्षणोति, क्षणुते, स०
क्षपि (चु० ग० उ०) क्षमा करना क्षपयति, क्षपयते, स०
क्षमू (दि० ग० पर०) क्षमा करना, क्षाम्यति, स०
क्षमूष् (भ्वा० ग० आ०) सहन करना, क्षमा करना, क्षमते, स०
क्षर (भ्वा० ग० पर०) इधर उधर चलना, क्षरति
क्षल् (चु० ग० उ०) शुद्ध करना, किसी चीज़ को जैसे धोना इत्यादि, क्षालयति यते, स०
क्षि (तु० ग० पर०) निवास, गति क्षियति।
क्षि (स्वा० ग० पर०) हिंसा करना, क्षिणोति, स०
क्षि (भ्वा० ग० पर०) नाश करना, क्षयति, स०
क्षिणु देखो—क्षणु, क्षिणोति, क्षेणोति, स०
क्षिप (दि० ग० पर०) फेंकना, क्षिप्यति, स०
क्षिप (तु० ग० पर०) फेंकना, क्षिपति, स०
क्षिप् (चु० ग० उ०) फेंकना, क्षेपयति, (यते) स०
क्षिवु (भ्वा० ग० पर०) निकालना, क्षेवति, स०
क्षीज (भ्वा० ग० पर०) देखो—कूज, क्षीजति,
क्षीबृ (भ्वा० ग० आ०) मस्त होना, मदमत्त होना, मतवाला होना, क्षीबते, अ०
क्षीष् (क्र्या० ग० पर०) हिंसा करना, क्षिणाति, क्षीणाति स०
(टु) क्षु (अ० ग० पर०) शब्द करना, बोलना क्षौति, अ०
क्षुदिर् (रु० ग० उ०) पीसना, नष्ट करना, क्षुणत्ति, क्षुन्ते, स०
क्षुध् (दि० ग० पर०) भूख लगना, क्षुध्यति, अ०
क्षुभ (भ्वा० ग० पर०) कम्पन, मन में खेद होना, क्षोभति, अ०
क्षुभ (दि० ग० पर०) देखो क्षुभ (भ्वा० ग०) क्षुभ्यति अ०
क्षुभ (क्र्या० ग० पर०) देखो क्षुभ (भ्वा० ग०) क्षुभ्णाति अ०
क्षेवु देखो क्षिवु (भ्वा० ग०)
क्षै (भ्वा० ग० पर०) देखो क्षि० (भ्वा० ग०) क्षायति
क्षोट (चु० ग० उ०) नष्ट होना, क्षोटयति (यते) अ०
क्ष्णु (अ० ग० पर०) तेज करना, सान पर धरना क्ष्णौति, स०
क्ष्मायी (भ्वा० ग० आ०) हिलाना या हिलना, क्ष्मायते, स० अ०
क्ष्मील (भ्वा० ग० पर०) पलक भाँजना, क्ष्मीलति, अ०
(ञि) क्ष्विदा (दि० ग० पर०) चिकनाना, छोड़ना क्ष्विद्यति, स०
क्ष्वेल देखो "केलृ (भ्वा० ग०)" क्ष्वेलति

ख

खज (भ्वा० ग० पर०) मथना, खजति, स०
खजि (भ्वा० ग० पर०) लँगड़ाना, खञ्जति अ०
खट (भ्वा० ग० पर०) इच्छा करना, चाहना, खटति, स०
खट्ट (चु० ग०) उ० संवरण करना, ढाँकना खट्टयति (यते) स०
खड देखो कडि (चु० ग०) खडयति (यते)
खडि देखो कडि (चु० ग०) खण्डयति (यते)
खडि (भ्वा० ग० आ०) देखो—खज (भ्वा० ग०) खण्डते ।
खद (भ्वा० ग० पर०) स्थिरता, मारना, खदति' अ० स० ।
खनु (भ्वा० ग० उ०) खोदना, खनति, (नते) स० ।
खर्ज (भ्वा० ग० पर०) पूजा करना, दुःख देना, खर्जति, स० ।
खर्द (भ्वा० ग० पर०) बिल में रहने वाले जन्तुओं का काटना, खर्दति, स० ।
खर्द देखो—कर्द (भ्वा० ग०)
खर्ब देखो—कर्व (घमण्ड करना) अ० ।
खल (भ्वा० ग० पर०) इकट्ठा करना, खलति, स० ।
खष देखो—कष (भ्वा० ग०) ।
खादृ (भ्वा० ग० पर०) खाना खादति स० ।
खिट देखो—किट (भ्वा० ग०)
खिद (दि० ग० आ०) खेद करना, खिद्यते अ० ।
खिद (तु० ग० पर०) परिघात करना, मारना, खेद करना, खिन्दति स० ।
खिद (रु० ग०) देखो—खिद् (दि० ग०) खिन्ते ।
खुङ् देखो—उङ्, खवते ।
खुजु देखो—कुजु (भ्वा० ग०) खोजति ।
खुड (तु० ग०) पर० ढाकना, खुडति, स०
खुडि (चु० ग० उ०) खण्डन करना, खुण्डयति (यते) स० ।
खुर (तु० ग० पर०) छेदना, खुरति, स० ।
खुर्द देखो—कुर्द (भ्वा० ग०) ।
खेट (चु० ग० उ०) भक्षण करना, खाना, खेटयति (यते) स० ।
खेला देखो—केला ।
खेलृ देखो—केलृ (भ्वा० ग०)
खेवृ देखो—केवृ (भ्वा० ग०)
खै (भ्वा० ग० पर०) खाना, खायति, स० ।
खोट देखो—खेट, खोटयति, (यते) स० ।
खोऋृ (भ्वा० ग० पर०) गति, रोकना, खोटति ।
खोलृ देखो खोऋृ ।
ख्या (अ० ग० पर०) कहना, ख्याति स० ।

गज (भ्वा० ग० पर०) गरजना, गजति, अ० ।
गज (" " ") " मतवाला होना । गजति अ०
गज (चु० ग० उ०) गरजना, गाजयति (यते) अ० ।
गजि देखो—गज (भ्वा० ग०) गञ्जति ।
गड (भ्वा० ग० पर०) सींचना, गडति, स० ।
गडि (भ्वा० ग० पर०) यह धातु गाल की वाचक है, काश्यप के मत में इसमें तिङ प्रत्यय नहीं होता, अन्य आचार्य करते हैं, गण्डति ।
गडि देखो—गडि (भ्वा० ग०) ।
गण (चु० ग० उ०) गिनना, गणयति (यते) स० ।
गद् (भ्वा० ग० पर०) बोलना, कहना, गदति, स० ।
गदी (चु० ग० उ०) बादल का गरजना, गदयति (यते) अ० ।
गद्गद् (क० ग० पर०) गला रुँध जाना, गद्गद्यति, अ० ।
गन्ध (चु० ग० आ०) दुःख देना, हिंसा करना गन्धयते, स० ।
गम्लृ (भ्वा० ग० पर०) जाना, चलना, गति, गच्छति, स० अ० ।
गर्ज (भ्वा० ग० पर०) गरजना, गर्जति अ ।
गर्द् (भ्वा० ग० पर०) चिल्लाना, बड़े जोर से बोलना गर्दति, अ० ।
गर्द् (चु० ग० उ०) देखो "गर्द" (भ्वा० ग०) गर्दयति (यते) अ० ।
गर्ध (चु० ग० उ०) इच्छा करना, चाहना, गर्धयति (यते) स० ।
गर्व देखो, कर्व. (भ्वा० ग०) ।
गर्व देखो—कर्व (भ्वा० ग०) ।
गर्व (चु० ग० आ०) देखो—कर्व (भ्वा० ग०) गर्वयते ।
गर्ह (भ्वा० ग० आ०) निन्दा करना, गर्हते, स० ।
गर्ह (चु० ग० पर०) निन्दा करना, गर्हयति, गर्हति स० ।
गल (भ्वा० ग० पर०)देखो अद् (या गलना) गलति, अ० ।
गल (चु० ग० आ०) चूना, गलयते, अ० ।
गल्भ (भ्वा० ग० आ०) धृष्टता करना, गल्भते अ० ।
गल्ह देखो गर्ह (भ्वा० ग०) ।
गवेष (चु० ग० उ०) ढूँढ़ना, खोजना, गवेषयति. (यते) स० ।
गा (जु० ग० पर०) कीर्ति, आदि गाना, जिगाति, स० (यह धातु छान्दस है ।
गाङ् (भ्वा० ग० आ०) गति—गाते, स० अ० ।
गाधृ (भ्वा० ग० आ०) प्रतिष्ठा पाना, इच्छा रखना, लालच करना, गाधते, स० अ० ।
गाहू (भ्वा० ग० आ०) लोटना, रखना, पकड़ना, गाहते, स० अ० ।
गु (तु० ग० पर०) मलत्याग करना, शौच जाना, गुवति, अ० ।
गुङ् देखो "कुङ्" (भ्वा० ग०) ।
गुज (तु० ग० पर०) शब्द करना, गुजगुजाना (गूँजना) गुजति, अ० ।

गुजि (भ्वा० ग० पर०) गूँजना, गुञ्जति, अ० ।
गुडि (चु० ग० उ०) वेष्टन करना, गुण्डयति (यते) स० ।
गुड (तु० ग० पर०) रक्षा करना गुडति स०
गुण देखो—कुण (चु० ग०)
गुद देखो—कुर्द (भ्वा० ग०) गोदति
गुध (दि० ग० पर०) चारों ओर से घेरना या बाँधना गुध्यति स०
गुध (क्र्या० ग० पर०) क्रोध करना गुध्नाति अ०
गुप (भ्वा० ग० पर०) गोपन करना, छिपाना (यह भ्वादि में निन्दा अर्थ के लिए सन् प्रत्यय के लिए पढी गई है) । जुगुप्सति
गुप (दि० ग० पर०) व्याकुल होना, घबडाना गुप्यति अ०
गुप देखो कुसि (चु० ग०) गोपयति
गुपू (भ्वा ग० पर०) रक्षा करना, छिपाना गोपायति स०
गुफ, गुम्फ (तु० ग० पर०) गूंथना गुफति, गुम्फति स०
गुर्द देखो कुर्द (भ्वा० ग०)
गुर्द (चु० ग० उ०) प्रथम निवास करना गुर्दयति (यते) अ०
गुर्वी (भ्वा० ग० पर०) उद्यम करना, उठाना (ऊपर की ओर) गूर्वति स०
गुहू (भ्वा० ग० उ०) ढाँकना गूहति, गूहते स०
गूर (चु० ग० आ०) देखो—गुर्वी (भ्वा० ग०) गूरयते
गूरी (दि० ग० आ०) हिंसा करना, गति—गूर्यते स० अ०
घृ (भ्वा० ग० पर०) सींचना गरति स०
गृ (चु० ग० आ०) जानना गारयते स०
गृज देखो—गज (भ्वा० ग०) गर्जति
गृजि देखो—गज (भ्वा० ग०) गृञ्जति
गृधु (दि० ग० पर०) चाहना, काङ्क्षा करना गृध्यति स०
गृह (चु० ग० आ०) लेना, ग्रहण करना गृह्यते स०
गृहू (भ्वा० ग० आ०) निन्दा करना गर्हते स०
गॄ (तु० ग० पर०) निगलना गिलति, गिरति स०
गॄ (क्र्या० ग० पर०) शब्द करना, गलगलाना गृणाति अ०
गेवृ (भ्वा० ग० आ०) सेवा करना गेवते स०
गेपृ (भ्वा० ग० आ०) ढूँढ़ना, खोजना गेपते स०
गै देखो—कै (भ्वा० ग०)
गोम (चु० ग० उ०) लीपना गोमयति (यते) स०
गोष्ट (भ्वा० ग० आ०) एकट्ठा करना, ढेर लगाना गोष्टते स०
ग्लसु (भ्वा० ग० आ०) देखो अद, ग्लसते । स०
ग्लह देखो—गृहू (भ्वा० ग०) ग्लहते
ग्लुचु देखो—कुचु (भ्वा० ग०) ग्लोचति स०
ग्लुञ्चु (भ्वा० ग० पर०) गति—ग्लुञ्चति स० अ०
ग्लेपृ देखो—केपृ (भ्वा० ग०)

ग्लेवृ देखो—गेवृ (भ्वा० ग०) स०
ग्लेष्ट देखो—गेष्ट (भ्वा० ग०) स०
ग्लै (भ्वा० ग० पर०) हर्षोत्पत्ति के साथ ही साथ उसका नाश हो जाना, ग्लायति अ०
ग्रथि (भ्वा० ग० आ०) कुटिलता करना ग्रन्थते स०
ग्रन्थ (क्र्या० ग० पर०) ग्रन्थ रचना पुस्तक बनाना ग्रथ्नाति स०
ग्रन्थ (चु० ग० पर०) बाँधना, ग्रन्थयति, ग्रन्थति स०
ग्रस (चु० ग० उ०) ग्रहण करना, ग्रसना ग्रासयति स०
ग्रसु देखो—ग्लसु (भ्वा० ग०)
ग्रह (क्र्या० ग० उ०) लेना, ग्रहण करना गृह्णाति स०
ग्राम देखो—कुण (चु० ग०)
ग्रुचु देखो—ग्लुचु (भ्वा० ग०)

घ

घघ (भ्वा० ग० पर०) हंसना घघति अ०
घट (भ्वा० ग० आ०) चेष्टा करना, कोशिश करना, प्रयत्न करना, हो जाना, संघटित होना—घटते स० अ०
घट (चु० ग० उ०) एकट्ठा होना घाटयति (यते) अ०
घट (चु० ग० उ०) देखो—कुसि (चु० ग०) घाटयति (यते) स०
घट्ट (चु० ग० उ०) चलना, रगड़ खाना घट्टयति (यते) अ०
घट्ट (भ्वा० ग० आ०) चलना, रगड खाना घट्टते अ०
घटि देखो—कुसि (चु ग०) घाटयति (यते) स०
घस्लृ (भ्वा० ग० पर०) खाना, भोजन करना घसति स०
घिणि (भ्वा० ग० आ०) ग्रहण करना, लेना घिण्णते स०
घुङ् देखो—कुङ् (भ्वा० ग०)
घुट (भ्वा० ग० आ०) घोटना जैसे भाँग आदि घोटते स०
घुट (तु० ग० पर०) किसी के प्रति मारना, चोट पहुँचाना, घोटना घुटति स०
घुण (भ्वा० ग० आ०) घूमना, इधर उधर फिरना घोणते अ०
घुण (तु० ग० पर०) देखो—घुण (भ्वा० ग०) घुणति—
घुणि देखो—घिणि (भ्वा० ग०) घिण्णते
घुर (तु० ग० पर०) भयङ्कर शब्द करना, भयङ्कर रूप आदि बनाना घुरति स०
घुषि (भ्वा० ग० आ०) शोभित होना घुपते अ०
घुषिर् (चु० ग० उ०) शब्द करना, घोष करना घोषयति (यते) अ०
घूर्ण (भ्वा० ग० आ०) देखो—घुणि (भ्वा० ग०) घूर्णते
घूर्ण (तु० ग० पर०) देखो—घुणि (भ्वा० ग०) घूर्णति
घूरी (दि० ग० आ०) हिंसा करना, अवस्था का नाश होना घूर्यते स० अ०
घृ देखो—गृ (भ्वा० ग०)
घृ (चु० ग० पर०) झरना, चूना, शोभित होना जिघर्त्ति अ० (धातु छान्दस है)
घृ (चु० ग० उ०) झरना, चूना या चुआना घारयति (यते) अ० स०
घृणि देखो—घिणि (भ्वा० ग०) घृण्णते

घृणु (त० ग० उ०) दीप्त होना, शोभित होना घृणाति अ०
घृषु (भ्वा० ग० पर०) रगड खाना, रगड़ देना घर्षति अ० स०
घ्रा (भ्वा० ग० पर०) सूँघना जिघ्रति स०

ङ

ङुङ् देखो—कुङ्

च

चक (भ्वा० ग० आ०) तृप्त होना, मारना, चकते, अ० स०
चक (भ्वा० ग० पर०) तृप्त होना चकति अ० (इसी धातु का " चकयति " रूप होता है)
चक्क (चु० ग० उ०) पीड़ित होना या करना चक्कयति (यते) अ० स०
चकासृ (अ० ग० उ०) शोभित होना दीप्त होना, चकास्ति, चकास्ते अ०
चक्षिङ् (अ० ग० आ०) बात चीत करना, कहना, चष्टे स०
चञ्चु (भ्वा० ग० पर०) गति चञ्चति अ० स०
चट (चु० ग० उ०) भेदन करना, तोडना, चाटयति (यते) स०
चटे देखो—कटे (भ्वा० ग०)
चडि (भ्वा० ग० आ०) क्रोध करना चण्डते अ०
चण (भ्वा० ग० पर०) देना, दान करना चणति स०
चते (भ्वा० ग० उ०) याचना करना, माँगना चतति (तते) स०
चदि (भ्वा० ग० पर०) हर्षित होना चन्दति अ०
चदे देखो—चते (भ्वा० ग०)
चन (चु० ग० उ०) श्रद्धा करना, मारना चानयति (यते) अ० स०
चप (भ्वा० ग० पर०) शान्त करना, शान्ति देना चपति स०
चप (चु० ग० उ०) पाखण्ड करना, शठता करना चपयति (यते) आ०
चपि (चु० ग० उ०) गति—चम्पयति (यते) चम्पति अ० स०
चमु (भ्वा० ग० पर०) खाना, भोजन करना चमति स०
चमु (स्वा० ग० पर०) देखो—चमु (भ्वा० ग०) चम्नोति—(धातु छान्दस है)
चय देखो—" अय " (भ्वा० ग०)
चर (भ्वा० ग० पर०) चलना, गति, भक्षण करना चरति अ० स०
चर (चु० ग० उ०) सन्देह करना चारयति (यते) अ०
चरण (क० ग० पर०) गति —चरण्यति अ० स०
चर्च (भ्वा० ग० पर०) बोलना, हिंसा करना, डराना, डाटना चर्चति स०
चर्च (तु० ग० पर०) देखो—चर्च—(भ्वा० ग०)
चर्च (चु० ग० उ०) अध्ययन करना, पढ़ना, चर्चयति (यते) स०
चर्व —देखो—गर्व (भ्वा० ग०)
चर्व (भ्वा० ग० पर०) चबाना, चर्वति स०
चल (भ्वा० ग० पर०) चलना, फिरना, चलति अ०
चल (तु० ग० पर०) विलास करना, घूमना, घामना, चलति अ०

चल (चु० ग० उ०) भरण करना, धारण करना, चालयति (यते) स०
चष (भ्वा० ग० उ०) खाना, भक्षण करना चषति (यते) स०
चह (भ्वा० ग० पर०) पाखण्ड करना, शठता करना चहति अ०
चह (चु० ग० उ०) देखो चह (भ्वा० ग०) चहयति (यते)
चह देखो—चह (चु० ग०) चहयति (यते)
चायृ (भ्वा० ग० उ०) पूजा करना, सुनाना चायति (यते) स०
चि देखो—अहि (चु० ग०) चाययति (यते) स०
चिञ् (स्वा० ग० उ०) इकट्ठा करना चिनोति (नुते) स०
चिञ् (चु० ग० उ०) देखो चिञ् (स्वा० ग०) चययति (यते) स०
चिट (भ्वा० ग० पर०) दूसरे के द्वारा भेजा जाना, अर्थात् दूतकर्म करना चेटति अ०
चित (चु० ग० आ०) सचेत करना, सावधान करना चेतयते स०
चिति (चु० ग० उ०) चिन्ता करना, स्मरण करना चिन्तयति (यते) चिन्तति स०
चित्र (चु० ग० उ०) तस्वीर बनाना, देखना, विचित्र वस्तु का देखना चित्रयति (यते) स०
चिल (तु० ग० पर०) आच्छादित कर लेना, ढाँकना चिलति स०
चिल्ल (भ्वा० ग० पर०) शिथिलता करना, अभिप्राय प्रकट करना चिल्लति अ०
चीक (चु० ग० आ०) सहन करना, सहना, चीकयते स०
चीभृ (भ्वा० ग० आ०) प्रशंसा करना चीभते स०
चीव देखो—कुसि (चु० ग०) चीवयति (यते)
चुक्क देखो—चक्क (चु० ग०) चुक्कयति (यते)
चुच्य (भ्वा० ग० पर०) अङ्ग, अङ्ग शिथिल कर देना, शराब बनाना, स्नान करना या कराना (अभिषव कहलाता है) चुच्चति स० अ०
चुट (तु० ग० पर०) छेदना चुटति स०
चुट (चु० ग० उ०) छेदना चोटयति (यते) स०
चुट्ट (चु० ग० उ०) कम हो जाना, न्यून हो जाना चुट्टयति (यते) स०
चुटि (चु० ग० उ०) छेदना, चुण्टयति (यते) स०
चुड (तु० ग० पर०) संवरण करना, ढाँकना चोडयति (यते) अ०
चुडि (भ्वा० ग० पर०) कम हो जाना, चुण्डति अ०
चुड्ड (भ्वा० ग० पर०) अभिप्राय प्रकट करना, चुड्डति स०
चुद (चु० ग० उ०) प्रेरणा करना, चोदयति (यते) स०
चुप (भ्वा० ग० पर०) धीरे धीरे चलना, चुप होना चोपति अ०
चुबि (भ्वा० ग० पर०) चूमना चुम्बति स०
चुबि (चु० ग० उ०) हिंसा करना चुम्बयति (यते) (चुम्बति) स०
चुर (चु० ग० उ०) चुराना, चोरी करना, चोरयति (यते) स०
चुरण (क० ग० पर०) चोरी करना, चुरण्यति स०
चुल (चु० ग० उ०) फैलना, विस्तृत होना चोलयति (यते) अ०
चुल्ल (भ्वा० ग० पर०) अभिप्राय सूचित करना चुल्लति स०
चूरी (दि० ग० आ०) दाह का होना, जलन होना चूर्यते अ०
चूर्ण (चु० ग० उ०) सिकोड़ना, चूर्णयति (यते) स०

चूर्ण (चु० ग० उ०) प्रेरणा करना, भेजना चूर्णयति (यते) स०
चूष (भ्वा० ग० पर०) चूसना, चूषति स०
चृती (तु० ग० पर०) हिंसा करना, गूँथना चृतति स०
चृप (चु० ग० उ०) सन्दीपन करना, उत्तेजित करना । चर्पयति (यते) चर्पति स०
चेल देखो—केलृ (भ्वा० ग०)
चेष्ट (भ्वा० ग० आ०) चेष्टा करना, प्रयत्न करना चेष्टते अ०
च्यु (चु० ग० उ०) सहना च्यावयति (यते) स०
च्युङ् (भ्वा० ग० आ०) गति—च्यवते स० अ०
च्युति (भ्वा० ग० पर०) सींचना, भिगोना च्योतति स०

छ

छजि (चु० ग० उ०) कष्ट से जीवन बिताना छञ्जयति (यते) छञ्जति अ०
छद (चु० ग० उ०) निवारण करना, दूर हटाना छादयति (यते) स०
छद देखो—छद (चु० ग०) छादयति (यते) छदति स०
छद (भ्वा० ग० पर०) बलवान् बनना, जीना छदति अ० (इसी का छदयति रूप होता है)
छदि (चु० ग० उ०) ढाँकना, संवरण करना, छाना, छादयति (यते) स०
छमु (भ्वा० ग० पर०)—देखो—अद् (अ० ग०) छमति स०
छर्द (चु० ग० उ०) वमन करना, कय करना छर्दयति (यते) अ०
छष (भ्वा० ग० उ०) हिंसा करना छषति (ते) स०
छिदिर् (रु० ग० उ०) काट देना, दो टूक कर देना, तोड़ देना छिनत्ति, (छिन्ते) स०
छिद्र (चु० ग० उ०) कान छेदना या कोई भी इन्द्रिय छेदना छिद्रयति (यते) स०
छुट देखो—चुट (तु० ग०)
छुड (तु० ग० पर०) संवरण करना, ढाँकना, छाना छुडति स०
छुप (तु० ग० पर०) छूना, स्पर्श करनाछुपति स०
छुर् (तु० ग० पर०) देखो—छिद् (रु० ग०) छुरति स०
(उ) छृदिर् (रु० ग० उ०) दीप्त होना, खेलना छृणत्ति, छृन्ते स०
छृदी (चु० ग० उ०) सन्दीपन करना, उत्तेजित करना छर्दयति (यते) स०
छृप देखो चृप (चु० ग०)
छेद (चु० ग० उ०) देखो—छिप (रु० ग०) छेदयति स०
छो (दि० ग० पर०) देखो—छिद् (रु० ग०) छ्यति स०

ज

जक्ष् (अ० ग० पर०) भोजन करना, हँसना जक्षिति स० अ०
जज (भ्वा० ग० पर०) युद्ध करना, जजति अ०
जजि देखो—जज (भ्वा० ग०) जञ्जति अ०
जट (भ्वा० ग० पर०) इकट्ठा करना, जोड़ना जटति स०
जन (जु० ग० पर०) उत्पन्न होना, जजन्ति अ० (धातु छान्दस है)
जनि (दि० ग० आ०) उत्पन्न होना, पैदा होना, होना, जायते अ०

जप (भ्वा० ग० पर०) जपना, व्यक्त बोलना जपति स०
जभि (चु० ग० उ०) नष्ट करना जम्भयति (यते) स०
जभी (भ्वा० ग० आ०) अङ्गों को नवाना, जंभाई लेना जम्भते अ०
जमु देखो—चमु (भ्वा० ग०)
जर्ज देखो—चर्च (भ्वा० ग०)
जर्ज देखो—चर्च (तु० ग०)
जल (भ्वा० ग० पर०) तीक्ष्ण करना, चोख करना जलति स०
जल (चु० ग० उ०) निवारण करना, दूर करना, जालयति (यते) स०
जल्प (भ्वा० ग० पर०) व्यक्त बोलना, बात चीत करना जल्पति स०
जष देखो—कष (भ्वा० ग०)
जसि (चु० ग० उ०) रक्षा करना, जंसयति (यते) जंसति स०
जसु (चु० ग० उ०) हिंसा करना, जासयति (यते) स०
जसु (दि० ग० पर०) छोड़ देना, जस्यति स०
जसु (चु० ग० उ०) ताड़न करना, पीटना जासयति (यते) जसति स०
जागृ (अ० ग० पर०) जागना, जागर्ति अ०
जि (भ्वा० ग० पर०) जीतना, पराजित करना, पराजित होना, स० अ०
जि (भ्वा० ग० पर०) श्रेष्ठ बनना (जैसे रामो जयति) अ०
जि देखो—अर्हि (चु० ग०) जाययति (यते)
जिरि देखो—चिरि (स्वा० ग०)
जिवि (भ्वा० ग० पर०) प्रसन्न करना जिन्वति स०
जिषु (भ्वा० ग० पर०) सींचना जेषति स०
जीव (भ्वा० ग० पर०) जीना जीवति अ०
जुगि (भ्वा० ग० पर०) रोकना, वर्जन करना जुङ्गति स०
जुड (तु० ग० पर०) गति जुडति अ० स०
जुड (तु० ग० पर०) बँधना, जुडना जुडति अ०
जुड (चु० ग० उ०) प्रेरणा करना, जोडयति (यते) स०
जुत (भ्वा० ग० पर०) शोभित होना, दीप्त होना, चमकना, जोतते, अ०
जुष (चु० ग० आ०) तर्क करना, हिंसा करना, तृप्त करना, जोषयते, स० अ०
जुषी (तु० ग० पर०) प्रेम करना, प्रसन्न होना, सेवन करना, जुषति, अ० स०
जूडी—देखो धूरी (दि० ग०)
जूष (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, जूषति, स०
जृभि देखो—जभि—(भ्वा० ग०) जृम्भते
जॄ (क्र्या० ग० पर०) अवस्था का नष्ट होना, पुराना होना, जृणाति, अ०
जॄ (चु० ग० उ०) देखो—जॄ (क्र्या० ग०) जारयति (यते) जरति, अ०
जॄ (दि० ग० पर०) पुराना होना, जीर्यति, अ०
जेषु—देखो एषृ (भ्वा० ग०)
जेहृ (भ्वा० ग० आ०) प्रयत्न करना, जेहते, अ०
जै देखो—क्षै (भ्वा० ग०)

ज्ञप (चु० ग० उ०) जानना, जनाना, ज्ञपयति (०ते) स० अ०
ज्ञा (भ्वा० ग० पर०) मारना, सन्तुष्ट करना, सुनाना ज्ञापयति (इस का ज्ञपयति भी होता है)
ज्ञा (क्र्या० ग० पर०) जानना, जानाति, स०
ज्ञा (चु० ग० उ०) आज्ञा देना, आज्ञापयति (०यते) स० (यह धातुआपूर्वक चलती है)
ज्या (क्र्या० ग० पर०) अवस्थानष्ट होना, पुराना होना, जिनाति, अ०
ज्युङ् देखो—च्युङ् (भ्वा० ग०)
ज्रि देखो—जि (भ्वा० ग०) पराजित करना
ज्रि देखो—जॄ (चु० ग०) ज्रायति (०यते), ज्रयति, अ०
ज्वर (भ्वा० ग० पर०) बुखार आना, ज्वरति, अ०
ज्वल (भ्वा० ग० पर०) दीप्त होना, शोभित होना, जलना, ज्वलति, अ०

झ

झट देखो—जट (भ्वा० ग०)
झमु देखो—चमु (भ्वा ग०)
झर्झ देखो—चर्च (भ्वा० ग०)
झर्झ (तु० ग० पर०) देखो—चर्च (भ्वा० ग०)
झष देखो—कष (भ्वा० ग०)
झष (भ्वा० ग० पर०) ग्रहण करना, संवरण करना, ढाँकना, झषति, स०
झॄ देखो—जॄ (क्र्या० ग०)
झॄष् देखो—जॄष् (दि० ग०)

ट

टल (भ्वा ग० पर०) डरना, भय खाना, टलति, अ०
टिकृ, टीकृ देखो—ककि (भ्वा० ग० आ०) टेकते, टीकते
ट्वल देखो—टल (भ्वा० ग०)

ड

डप (चु० ग० आ०) इकट्ठा करना, एकत्रित करना, डापयते, स०
डिप—देखो—डप (चु० ग०) डेपयते, स०
डिप (दि० ग० पर०) फेंकना, डिप्यति, स०
डिप (तु० ग० पर०) फेंकना, डिपति, स०
डिप (चु० ग० उ०) फेंकना, डेपयति, (०यते), स०
डीङ् (दि० ग० आ०) उड़ना, आकाश में चलना, उड्डीयते, स० (यह प्रायः उत्पूर्वक चलती है)
डीङ् (भ्वा० ग० आ०) देखो—डीङ् (दि० ग०) डयते, अ०

ढ

ढौकृ देखो—ककि (भ्वा० ग० आ०)

णक्ष (भ्वा० ग० पर०) गति—नक्षति, स० अ०
णख देखो—डखि (भ्वा ग०) नखति
णखि „ —„ „ „ नङ्खति
णट (भ्वा० ग० पर०) नाचना, नट की तरह नाचना, नटति अ०
णद (भ्वा ग० पर०) नाद करना, अव्यक्त शब्द करना, नदति, अ०
णद देखो—कुसि (चु० ग०)
णभ (क्र्या० ग० पर०) हिंसा करना, नभ्नाति, स०
णभ (भ्वा ग० आ०) „ „ नभते स०
णभ (दि० ग० पर०) „ „ नभ्यति, स०
णम (भ्वा० ग० पर०) प्रणाम करना, नमति, स० .
णय—देखो—अय (भ्वा० ग०)
णल (भ्वा० ग० पर०) गन्ध आना, बाँधना, नलति, अ० स०
णश (दि० ग० पर०) नष्ट होना, न दिखलाई पड़ना, नश्यति, अ०
णस (भ्वा० ग० आ०) कुटिलता करना, नसते, अ०
णह (दि० ग० उ०) बाँधना, नह्यति, (ते) स० अ०
णासृ (भ्वा० ग० आ०) शब्द करना, एक तरह का शब्द करना, नासते, अ०
(ऐसा शब्द जो नास लेने के समय किया जाता है)
णिक्ष (भ्वा० ग० पर०) चूमना, निक्षति, स०
णिजि (अ० ग० आ०) पवित्र होना, नेङ्क्ते, अ०
णिजिर् (जु० ग० उ०) पवित्र होना, नेनेक्ति, (निक्ते) अ०
णिदि (भ्वा० ग० पर०) निन्दा करना, निन्दति, स०
णिदृ (भ्वा० ग० उ०) निन्दा करना, सम्बन्ध करना नेदति (ते) स०
णिल (तु० ग० पर०) गहन करना, निलति, स०
णिवि (भ्वा० ग० पर०) सींचना निन्वति स०
णिश (भ्वा० ग० पर०) समाधि लेना, ध्यान पूर्वक विचारना, नेशति, अ०
णिसि (अ० ग० आ०) चूमना, निंस्ते, स०
णीञ् (भ्वा० ग० उ०) पहुँचाना, ले जाना, नयति (ते) स०
णीव (भ्वा० ग० पर०) स्थूल होना, मोटाहोना, नीवति, अ०
णु (अ० ग० पर०) स्तुति करना, प्रार्थना, नौति, स०
णुद (तु० ग० उ०) प्रेरणा करना, भेजना, नुदति (ते) स०
णुद (तु० ग० पर०) „ „ „ नुदति
णू (तु० ग० पर०) स्तुति करना, प्रार्थना करना, नुवति, स०
णेद देखो—खिद (भ्वा० ग०)
णेपृ देखो—जेपृ (भ्वा० ग०)

त

तक (भ्वा० ग० पर०) हँसना, तकति, अ०
तकि (भ्वा० ग० पर०) कष्ट से दिन बिताना, तङ्कति, अ०
तक्ष (भ्वा० ग० पर०) ढाँकना, या चुटकी काटना, तक्षति, अ० स०
तक्षू (भ्वा० ग० पर०) पतला करना, चोख करना, तक्षति, स०
तगि देखो—इख (भ्वा० ग०)
तञ्चू (रु० ग० पर०) सिकोड़ना, तनक्ति, स०
तञ्चु देखो—चञ्चु (भ्वा० ग०)
तट (भ्वा० ग० पर०) विस्तृत होना, फैलना, बढ़ना, तटति, अ०
तड़ (चु० ग० उ०) मारना, ताड़न करना, ताड़यति (ते) स०
तड देखो—जि (चु० ग०)
तडि (भ्वा० ग० आ०) ताडन करना, तण्डते, स०
तत्रि— देखो—कुटुम्ब (चु० ग०)
तनु (त० ग० उ०) फैलाना, तनोति (नुते) स०
तनु (चु० ग० उ०) श्रद्धा करना, उपकार करना, तानयति (ते) स० अ०
तन्तस् (क० ग० पर०) दुःख भोगना, तन्तस्यति, अ०
तप (भ्वा० ग० पर०) तपना तपति अ०
तप (दि० ग० पर०) ऐश्वर्य भोगना, सुख भोगना, तप्यते, अ०
तप (चु० ग० उ०) जलाना, दाह पैदा करना, या स्वयं जलना, तापयति (ते), तपति, स० अ०
तमु (दि० ग० पर०) काङ्क्षा करना, चाहना ताम्यति, स०
तय—देखो—श्रय् (भ्वा० ग०)
तरण (क० ग० पर०) गति—तरण्यति, अ० स०
तर्क देखो—कुसि (चु० ग०)
तर्ज (चु० ग० आ०) डराना, तर्जन करना, तर्जयते, स०
तर्ज (भ्वा० ग० पर०) देखो –तर्ज (चु० ग०) तर्जति, स०
तर्द (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, तर्दति, स०
तल (चु० ग० उ०) प्रतिष्ठित करना, आदर करना तालयति (ते) स०
तसि (चु० ग० उ०) गहना पहनाना, शोभित करना, अवतंसयति (ते) स० (यह अवपूर्वक चलती है)
तसु (दि० ग० पर०) क्षय होना, नष्ट होना, तस्यति, अ०
तायृ (भ्वा० ग० आ०) पूजा करना, सुनाना, तायते, स०
तिक (स्वा० ग० पर०) गति—तिक्नोति, स० अ०
तिकृ देखो—ककि (भ्वा० ग०)
तिग देखो—तिक (स्वा० ग०) तिग्नोति, स०, अ०
तिज (भ्वा० ग० पर०) यह भ्वादि में केवल " क्षमा " अर्थ में सन् प्रत्यय करने के लिए पढ़ी गई है । और सन् होने पर आत्मनेपद भी हो जाती है, तितिक्षते
तिज (चु० ग० उ०) तेज करना, चोख करना, तेजयति (ते) स०
तिपृ (भ्वा० ग० आ०) क्षरण होना, चूना, तेपते, अ०

तिम (दि० ग० पर०) आर्द्र होना, गीला होना, तिम्यति अ०

तिरस (क० ग० पर०) अन्तर्हित होना, छिप जाना, आँख से ओझल होना, तिरस्यति. अ०

तिल (भ्वा० ग० पर०) गति—तेलति, स० अ०

तिल (तु० ग० पर०) चिकनाना, तिलति स०

तिल (चु० ग० उ०) चिकनाना, तेलयति (ते) स०

तिल्ल देखो—तिल्ल (भ्वा० ग०)

तिक्त देखो—तिक (भ्वा० ग०)

तीर (चु० ग० उ०) कर्म समाप्त करना, काम ख़तम करना, तीरयति (ते) अ०

तीव देखो – पीव (भ्वा० ग०)

तुज (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, तोजति स०

तुज (चु० ग० उ०) हिंसा करना, बली बनना, घर बनाना, तोजयति (ते) स० अ०

तुजि देखो—तुज (भ्वा० ग०) तुञ्जति

तुजि देखो—तुज (चु० ग०) तुञ्जयति (ते)

तुजि देखो कुसि (चु० ग०)

तुट (तु० ग० पर०) लड़ाई करना, अलग होना, तुटति अ०

तुड (तु० ग० पर०) तोड़ना, तुडति स०

तुडि (भ्वा० ग० आ०) तोड़ना, हिंसा करना, तुण्डति, स०

तुड् देखो—तुडि (भ्वा० ग०) तोडति स०

तुण (तु० ग० पर०) कुटिलता करना, तुण्यति

तुत्थ (चु० ग० उ०) ढाँकना, तुत्थयति (ते) स०

तुद (तु० ग० उ०) दर्द होना, पिराना, तुदति अ०

तुप (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, तोपति, स०

तुप (तु० ग० पर०) देखो—तुप (भ्वा० ग०) तुपति स०

तुफ देखो—तुप (भ्वा० ग०)

तुफ देखो—तुप (तु० ग०)

तुवि (भ्वा० ग० पर०) पीडा पहुँचाना, दुःख देना, तुम्वति, स०

तुवि (चु० ग० उ०) न दिखलाई पडना, दुःख देना, तुम्बयति (ते) स०

तुभ (भ्वा० ग० आ०) हिंसा करना, तोभते, स०

तुभ देखो—क्षुभ (दि० ग०)

तुभ देखो—क्षुभ (क्र्या० ग०)

तुम्प देखो—तुप (भ्वा० ग०)

तुम्प देखो—तुप (तु० ग०)

तुम्फ देखो—तुप (भ्वा० ग०)

तुम्फ देखो—तुप (तु० ग०)

तुर (जु० ग० पर०) शीघ्रता करना, तुतोर्त्ति, अ० (धातु छान्दस है)

तुर्वी देखो—उर्वी (भ्वा० ग०)

तुल (चु० ग० उ०) तौलना, तोलयति (ते) स०

तुप (दि० ग० पर०) तुष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, तुष्यति, अ०
तुस (भ्वा० ग० पर०) शब्द करना, तोसति अ०
तुहिर देखो – उहिर (भ्वा० ग०)
तूणे (चु० ग० आ०) भरना, तरकस भरना, तूणयते, स०
तूरी (दि० ग० आ०) शीघ्र चलना तेज़ चलना. हिंसा करना, तूर्यते अ० स०
तूल (भ्वा० ग० पर०) भीतर की चीज़ को बाहर खींचना, निष्कोषण करना, तूलति. स०
तूष (भ्वा० ग० पर०) देखो—तुष (दि० ग०) तूषति
तृक्ष देखो—ऋक्ष (भ्वा० ग०)
तृणु (त० ग० उ०) देखो—अद (अ० ग०) तृणोसि, तर्णुते, स०
(उ) तृदिर (रु० ग० पर०) हिंसा करना, अनादर करना तृणत्ति स०
तृप (दि० ग० पर०) तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, तृप्यति, अ०
तृप (स्वा० ग० पर०) देखो—तृप (दि० ग०) तृप्नोति अ०
तृप (तु० ग० पर०) देखो—तृप (दि० ग०) तृपति अ०
तृप (चु० ग० उ०) देखो तृप (दि० ग०) तर्पयति (ते) तर्पति स०
तृम्फ देखो—तृप (तु० ग०)
(ञि) तृषा (दि० ग० पर०) प्यास लगना, तृष्यति, अ०
तृह (रु० ग० पर०) हिंसा करना, तृणेढि स०
तृंहू (तु० ग० पर०) हिंसा करना तृहति, स०
तृहू देखो—तृंहू (तु० ग०).तृहति, स०
तॄ (भ्वा ग० पर०) बहना, तैरना, तरति, अ०
तेज (भ्वा० ग० पर०) रक्षा करना, तेजति, स०
तेपृ देखो—तिपृ (भ्वा० ग०)
तेवृ (भ्वा० ग० आ०) विलाप करना, तेवते, अ०
त्यज (भ्वा० ग० पर०) छोड़ना, त्यजति, स०
त्रकि देखो—कोक (भ्वा० ग०)
त्रख देखो—उखि (भ्वा० ग०)त्रखति स० अ०
त्रदि (भ्वा० ग० पर०) चेष्टा करना, प्रयत्न करना त्रन्दति अ०
त्रपूष (भ्वा० ग० आ०) लज्जित होना, त्रपते अ०
त्रस (चु० ग० उ०) धारण करना, ग्रहण करना, निवारण करना, त्रासयति (ते) स०
त्रसि देखो—कुसि (चु० ग०)
त्रसी (दि० ग० पर०) डरना, त्रस्यति, त्रसति, अ०
त्रिखि देखो—उखि (भ्वा० ग०)
त्रुट (तु० ग० पर०) तोड़ना त्रुटति स०
त्रुप देखो—तुप (भ्वा० ग०)
त्रुम्फ देखो—तृप (भ्वा० ग०)
त्रैङ् (भ्वा० ग० आ०) पालन करना, रक्षा करना, त्रायते, स०
त्रौकृ देखो—ककि (भ्वा ग०)

त्वक्षू देखो—तक्षू (भ्वा० ग०)
त्वच (तु० ग० पर०) संवरण करना, ढाँकना, त्वचति, स०
त्वगि देखो—उखि (भ्वा० ग०)
त्वञ्चु देखो चञ्चु (भ्वा० ग०)
त्वरा (भ्वा० ग० आ०) शीघ्रता करना, त्वरते, अ०
त्विष (भ्वा० ग० आ०) दीप्त होना, शोभित होना त्वेषते अ०
त्सर (भ्वा० ग० पर०) कपट पूर्वक चलना, कपट की चाल चलना, त्सरति, अ०

थ्

थुड (तु० ग० पर०) संवरण करना, ढाँकना, थुडति स०
थुर्वी देखो—उर्वी (भ्वा० ग०)

द्

दक्ष (भ्वा० ग० आ०) गति, हिंसा करना, दक्षते, अ० स०
दक्ष (भ्वा० ग० आ०) वृद्ध होना, बढना, जल्दी करना, दक्षते, अ०
दघ (स्वा० ग० पर०) मारना, पालन करना, दघ्नोति, स०
दण्ड (चु० ग० उ०) दण्ड देना, दण्डयति (ते) स०
दद (भ्वा० ग० आ०) देना, प्रदान करना, ददते, स०
दध (भ्वा० ग० आ०) धारण करना, पहिनना दधते स०
दम (दि० ग० पर०) दमन करना, शान्त करना, दवाना, दाम्यति, स०
दम्भु (स्वा० ग० पर०) पाखण्ड करना, दभ्नोति, अ०
दय (भ्वा० ग० आ०) गति दान देना, रक्षा करना, हिंसा करना, लेना, ग्रहण करना, दयते स०
दरिद्रा (अ० ग० पर०) दुर्गति होना, दरिद्र हो जाना, दरिद्राति, अ०
दल (भ्वा० ग० पर०) विशरण करना, टुकड़े टुकडे करना, दलति स०
दंश (भ्वा० ग० पर०) दाँत काटना, दशति, स०
दशि (चु० ग० आ०) देखो— दंश (भ्वा० ग०) दंशयते, दंशति
दशि देखो— कुस (चु० ग०)
दस देखो—दसि (चु० ग०) दासयते
दसि (चु० ग० आ०) देखो —दर्शन करना, दाँत काटना, दंसयते, स०
दसि देखो—जि (चु० ग०)
दसु देखो—तसु (दि० ग०)
दह (भ्वा० ग० पर०) जलाना, दहति स०
(डु) दाञ् (जु० ग० उ०) देना, प्रदान करना, ददाति, दत्ते, स०
दाण् (भ्वा० ग० पर०) देखो —दान, यच्छति, स०
दान (भ्वा० ग० पर०) खण्डन करना, दानयति, स०
दाप् (अ० ग० पर०) काटना, छेदना, दाति, स०
दाश् देखो—चिरि (स्वा० ग०) स०

दाश् (भ्वा० ग० उ०) देखो—दाशृ (भ्वा० ग०) दाशति (ते) स०
दास् देखो—दाश् दासति (ते)
दिवि देखो—जिवि (भ्वा० ग०)
दिवु (दि० ग० पर०) खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यवहार करना, शोभित होना, स्तुति करना, हर्षित होना, मतवाला होना, सोना, गति, दीव्यति, स० अ०

दिवु (चु० ग० उ०) मर्दन करना, मालिश करना, देवयति, (ते) देवति स०
दिश (तु० ग० उ०) अतिसर्जन करना, दान करना, देना, दिशति (ते) स०
दिह (अ० ग० उ०) वृद्धि होना, उपचय, बढ़ना, देग्धि दिग्धे अ०
दीक्ष (भ्वा० ग० आ०) मूँडना, यज्ञ करना, यज्ञोपवीत करना, नियम ग्रहण करना, व्रत करना, आज्ञा देना दीक्षते, स० अ०

दीङ् (दि० ग० आ०) नष्ट होना, क्षय, घटना, दीयते, अ०
दीधीङ् (अ० ग० आ०) शोभित होना, विलाप करना, दीधीते, अ०
दीपी (दि० ग० आ०) दीप्त होना, चमकना, दमकना, दीप्यते, अ०
दु (भ्वा० ग० पर०) गति —दवति स० अ०
(टु) दु (स्वा० ग० पर०) उपताप देना, दुःख देना, दुनोति, स०
दुःख (चु० ग० उ०) दुखी करना, दुःख देना, दुःखयति, (ते) स०
दुःख (क० ग० पर०) दुखी होना, दु खयति, अ०
दुर्वी देखो—उर्वी (भ्वा० ग०)

दुल (चु० ग० उ०) उछालना, ऊपर की ओर फेंकना, दोलयति, (ते) स०
दुष (दि० ग० पर०) विकृत होना, बिगड़ जाना, दुष्यति, अ०
दुह (अ० ग० उ०) दुहना, दोग्धि, दुग्धे, स०
दुहिर देखो—उहिर (भ्वा० ग०)

दूङ् (दि० ग० आ०) दुखी होना, परितप्त होना, दूयते, अ०
दृ देखो—चिरि (स्वा० ग०)
दृङ् (तु० ग० आ०) आदर करना, सत्कार करना, आद्रियते, स०
दृप (दि० ग० पर०) हर्षित होना, गर्वित होना, दृप्यति, अ०
दृप देखो—तृप (चु० ग०)

दृप (तु० ग० पर०) कष्ट करना, दुःख उठाना, दृपति, अ०
दृभ (चु० ग० उ०) सन्दर्भ कहना या मिलाना, दर्भयति, (ते) स०
दृभी (तु० ग० पर०) ग्रन्थसन्दर्भ लगाना, दृभ्यति, स०
दृभी (चु० ग० उ०) डरना, दर्भयति, (ते) दर्भति, अ०
दृम्फ देखो—दृप (तु० ग०)
दृशिर (भ्वा० ग० पर०) देखना, पश्यति, स०
दृह (भ्वा० ग० पर०) बढ़ना, दर्हति, अ०
दृहि देखो—दृह (भ्वा० ग०) दृंहति, अ०
दॄ (भ्वा० ग० पर०) डरना, दरति (इसी का दरयति होता है)
दॄ (क्र्या० ग० पर०) विदारण करना, चीर डालना, फाड़ देना, नष्ट करना, दृणाति, स०

देङ् (भ्वा० ग० आ०) रक्षा करना, दयते, स०
देवृ देखो—तेवृ (भ्वा० ग०)
दैप (भ्वा० ग० पर०) शोधना, शुद्ध करना, दापति, स०
दो (दि० ग० पर०) खण्डन करना, काट देना, द्यति, स०
द्यु (अ० ग० पर०) अभिगमन करना, द्यौति, अ०
द्युत (भ्वा० ग० आ०) शोभित होना, द्योतते अ०
द्यै (भ्वा० ग० पर०) तिरस्कार करना, द्यायति, स०
द्रम (भ्वा० ग० पर०) गति, द्रमति, अ० स०
द्रवस् (क० ग० पर०) दुख देना, जलन पहुँचाना सेवा करना, द्रवस्यति, स०
द्रा (अ० ग० पर०) निन्दित गमन करना, बुरी चाल चलना, द्राति, अ०
द्राक्षि (भ्वा० ग० पर०) इच्छा करना, घोर शब्द करना, द्राङ्क्षति, स० अ०
द्राखृ देखो—ध्रोखृ (भ्वा० ग०)
द्राघृ (भ्वा० ग० आ०) समर्थ होना, द्राघते, अ०
द्राडृ (भ्वा० ग० आ०) विशरण करना, अगग्रंगशिथिल कर देना, द्राडते, स०
द्राह (भ्वा० ग० आ०) नींद न आना, फेंकना, द्राहते, अ० स०
द्रु देखो—दु (भ्वा० ग०)
द्रुण (तु० ग० पर०) हिंसा करना, गति, कुटिलता करना, द्रुणति, स० अ०
द्रुह (दि० ग० पर०) द्रोह करना, वैर करना द्रुह्यति, अ०
द्रूञ् (क्र्या० ग० उ०) हिंसा करना, द्रूणाति, (णीते) स०
द्रेकृ (भ्वा० ग० आ०) शब्द करना, उत्साह करना, द्रेकते, अ०
द्रै (भ्वा० ग० पर०) सोना, द्रायति, अ०
द्विष (अ० ग० उ०) द्वेष करना, वैर बांधना, द्वेष्टि, द्विष्टे अ०

ध

धक्क (चु० ग० उ०) नष्ट करना, धक्कयति, (ते) स०
धणि देखो—श्रण (भ्वा० ग०) धण्णति
धन (जु० ग० पर०) धन, धान्य से परिपूर्ण होना, दधन्ति, अ० (धातु छान्दस है)
धवि (भ्वा० ग० पर०) गति, धन्वति, स० अ०
(डु) धाञ् (जु० ग० उ०) धारण करना पोषण करना, दधाति, धत्ते स०
धावु (भ्वा० ग० उ०) दौड़ना, शुद्ध होना, धावति (ते) अ०
धि (तु० ग० पर०) धारण करना, धियति, स०
धिक्ष (भ्वा० ग० आ०) दीप्त करना, उत्तेजित करना, दुःख देना, जीता रहना, धिक्षते, स० अ०
धिवि देखो—जिवि (भ्वा० ग०)
धिष (जु० ग० पर०) शब्द करना, दिधेष्टि, अ०
धीङ् (दि० ग० आ०) आधार पर होना, भरोसे पर रहना, धीयते, अ०
धुक्ष देखो—धिक्ष (भ्वा० ग०)
धुञ् (स्वा० ग० उ०) कँपना, या कँपाना, धुनोति, धुनुते, अ० स०

धुर्वी देखो—उर्वी (भ्वा० ग०)
धू (तु० ग० पर०) कँपाना, धुवति स०
धूञ् (क्र्या० ग० उ०) देखो - धुञ् (स्वा० ग०) धुनाति, (नीते)
धूञ् (चु० ग० उ०) देखो—धुञ् (स्वा० ग०) धूनयति (ते), धवति (ते) स० अ०
धूप (भ्वा० ग० पर०) धूप करना (देवताओं को जैसे की जाती है) धूपायति, स०
धूप देखो - कुसि (चु० ग०)
धूरी देखो—गूरी (दि० ग०)
धूस (चु० ग० उ०) शोभा बढ़ाना, धूसित करना धूसयति (ते) स०
धूष ,, ,, ,, ,, ,,
धूस ,, ,, ,, ,, ,,
धृङ् (भ्वा० ग० आ०) बाधना, धारण करना, धरति, स०
धृङ् (तु० ग० आ०) रहना, रक्खा जाना, ध्रियते, अ०
धृज (भ्वा० ग० पर०) गति, धर्जति, स० अ०
धृजि देखो धृज (भ्वा० ग०) धृञ्जति, स० अ०
धृञ् (भ्वा० ग० उ०) धारण करना, धरति, (ते) स०
धृष (चु० ग० उ०) धर्षित करना, डाटना, हँसी उड़ाना, धर्षयति (ते) स०
धॄ देखो—जॄ (क्र्या० ग०)
धेक (चु० ग० उ०) देखो—दृश् (भ्वा० ग०) धेकयति (ते) स०
धेट् (भ्वा० ग० पर०) पीना, पान करना, धयति, स०
धोर्ऋ (भ्वा० ग० पर०) चतुरता पूर्वक चलना, धोरति, अ०
ध्मा (भ्वा० ग० पर०) फूकना (जैसे आग, शङ्ख) धमति, स०
ध्यै (भ्वा० ग० पर०) ध्यान करना, चिन्ता करना, ध्यायति, स०
ध्रज देखो—ध्वज (भ्वा० ग०) ध्रजति
ध्रजि ,, ,, ,, ध्रञ्जति
ध्रण (भ्वा० ग०) शब्द करना, ध्रणति, अ०
ध्राक्षि देखो—द्राक्षि (भ्वा० ग०)
ध्राखृ देखो—द्राखृ (भ्वा० ग०)
ध्राडृ देखो—द्राडृ (भ्वा० ग०)
ध्रु (भ्वा० ग० पर०) स्थिर होना या रहना, ध्रवति, अ०
ध्रु (तु० ग० पर०) गति, स्थिरता, ध्रुवति, अ०
ध्रेकृ देखो—देकृ (भ्वा० ग०)
ध्रै (भ्वा० ग० पर०) तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, ध्रायति, अ०
ध्वज देखो—ध्रज (भ्वा० ग०) ध्वजति
ध्वजि ,, ,, ,, ,, ध्वञ्जति
ध्वण देखो—ध्रण (भ्वा० ग०) ध्वणति
ध्वन (भ्वा० ग० पर०) शब्द करना, ध्वनति, स० (इसी का ध्वनयति होता है)
ध्वन (चु० ग० उ०) ,, ,, ध्वनयति (ते) स०

ध्वंसु (भ्वा० ग० आ०) नष्ट होना, ध्वस्त होना, ध्वंसते, अ०
ध्वाक्ष देखो—ध्राक्षि (भ्वा० ग०)
ध्वृ (भ्वा० ग० पर०) कुटिलता करना, ध्वरति, अ०

न

नक्क देखो—धक्क (चु० ग०)
नट (चु० ग० उ०) नाट्य करना नाचना (उछल, कूद कर नाचना) नाटयति (ते) अ०
नट देखो—अहि (चु० ग०) नाटयति (ते)
(टु) नदि (भ्वा० ग० पर०) समृद्ध होना, हर्षित होना, खुशी होना, नन्दति, अ०
नल देखो—अहि (चु० ग०) नालयति (ते)
नर्द (भ्वा० ग० पर०) गला फाड़कर ज़ोर से चिल्लाना नर्दति अ०
नाथृ (भ्वा० ग० आ०) मांगना, दुःख उठाना, ऐश्वर्य करना, आशीर्वाद देना (अपने कल्याण की कामना करना यहां आशीर्वाद अर्थ है और इसी अर्थ में यह धातु आत्मनेपदी है, " नाथते ", और अर्थों में परस्मै पदी है, " नाथति ") स० अ०
नाधृ देखो—नाथृ (भ्वा० ग०) यह सदा आत्मनेपदी ही रहती है नाधते
निवास (चु० ग० उ०) ढाँकना, आच्छादन करना, निवासयति, (ते) स०
निष्क (चु० ग० आ०) " निष्क " एक तरह का परिमाण होता है उसके बराबर कोई चीज़ तौलना निष्कयते, स०
नील (भ्वा० ग० पर०) नीला रंग रंगना, नीलति, स०
नृती (दि० ग० पर०) नाचना, नृत्यति, अ०
नॄ (क्र्या० ग० पर०) न्याय करना, नृणाति, अ०

प

पक्ष (चु० ग० उ०) धारण करना, पक्षपात करना, पक्षयति (ते) अ०
(डु) पचष् (भ्वा ग० उ०) पकाना, पचति (ते) स०
पचि (चु० ग० उ०) विस्तार पूर्वक बातचीत करना, बहुत लम्बी चौड़ी बात करना, पञ्चयति, (ते) अ०
पट देखो—अट (भ्वा० ग०)
पट देखो—कुसि (चु० ग०)
पठ (भ्वा० ग० पर०) पढ़ना, पठति, स०
पठ (चु० ग० उ०) गाँठ देना, बाँधना, पठयति, (ते) स०
पडि देखो—अज (भ्वा ग०) पण्डति
पाडि (चु० ग० उ० नाश करना पण्डयति (ते) (पण्डति) स०
पण (भ्वा० ग० आ०) व्यवहार करना, या प्रशंसा करना, पणते, अ० स०
पत (चु० ग० उ०) गति पतयति (ते) पातयति (ते)
पत्लृ (भ्वा० ग० पर०) गिरना, पतति
पथ (चु० ग० उ०) फेंकना, पाथयति (ते) स०
पथि (चु० ग० उ०) गति—पन्थयति (ते) पन्थति स० अ०

पथे देखो—व्रज (भ्वा० ग०) पथति
पद (दि० ग० आ०) गति,—पद्यते, स० अ०
पद (चु० ग० आ०) गति पदयते स० अ०
पन देखो—पण (भ्वा० ग०) (किन्तु इसका व्यवहार अर्थ नहीं होता)
पम्पस् देखो—तन्तस् (क० ग०)
पय देखो—अय (भ्वा० ग०)
पयस (क० ग० पर०) बहना, सरण करना, पयस्यति, अ०
पर्ण (क० ग० उ०) हरा होना, पर्णयति (ते) अ०
पर्द (भ्वा० ग० आ०) अधो वायु के होने का शब्द, गुदरव करना, पर्दते अ०
पर्व देखो—कर्व (भ्वा० ग०)
पर्प " " " "
पर्व (भ्वा० ग० पर०) भरना, पूर्ण करना, पर्वति, स०
पल देखो—व्रज (भ्वा० ग०)
पल्यूल (चु० ग० उ०) काटना, पवित्र करना, पल्यूलयति, (ते) स०
पश (चु० ग० उ०) बाँधना, पाशयति (ते) स०
पष (चु० ग० उ०) गति—पषयति (ते) स० अ०
पसि देखो—पडि (चु० ग०)
पा (भ्वा० ग० पर०) पीना, पिबति, स०
पा (अ० ग० प०) रक्षा करना, पालना, पाति, स०
पार देखो—तीर (चु० ग०)
पाल (चु० ग० उ०) रक्षा करना, पालयति (ते) स०
पि (तु० ग० पर०) गति—पियति स० अ०
पिच्छ (चु० ग० उ०) कूटना, पिच्छयति, (ते०) स०
पिज देखो—तुज (चु० ग०)
पिजि " " " "
पिजि (अ० ग० आ०) रंगना, सम्पर्क करना, खण्ड करना, अव्यक्त शब्द करना, पिङ्क्ते, स०
पिजि देखो—कुसि (चु० ग०)
पिट (भ्वा ग० पर०) शब्द करना, एकट्ठा करना, पेटति अ० स०
पिठ (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, दुःख देना, पेठति, स०
पिडि (भ्वा० ग० आ०) पिण्डा बनाना, पिण्डते, स०
पिडि (भ्वा० ग० उ०) " " पिण्डयति (ते), पिण्डति स०
पिवि देखो—खिवि (भ्वा० ग०)
पिश (तु० ग० पर०) खण्ड करना, पीसना पिंशति स०
पिष्लृ (रु० ग० पर०) पीसना पिनष्टि स०
पिस (चु० ग० उ०) गति—पेसयति (ते) स० अ०
पिसि देखो कुसि (चु० ग०)
पिसृ (भ्वा० ग० पर०) गति—पेसति स० अ०

पीङ् (दि० ग० आ०) पीना पीयते स०
पीड (चु० ग० उ०) पीड़ा देना, दवाना पीडयति, (ते) स०
पील (भ्वा० ग० पर०) रोकना, पीलति स०
पीव देखो—गीव (भ्वा० ग०)
पुट (तु० ग० पर०) मिलना; जुटना, पुटति, अ०
पुट देखो—कुसि (कु० ग०)
पुट (चु० ग० उ०) संसर्ग करना, जुटना, पुटयति, अ०
पुटि देखो—जि (चु० ग०)
पुट्ट देखो—चुट्ट (" ")
पुड (तु० ग० पर०) छोड़ना, उत्सर्ग करना, दान करना, पुडति, स०
पुडि (भ्वा० ग० पर०) खण्डन करना, पुण्डति स०
पुण (तु० ग० पर०) शुभ काम करना पुणति अ०
पुथ देखो—कुसि (चु० ग०)
पुथ (दि० ग० पर०) हिंसा करना, पुथ्यति स०
पुथि देखो—कुथि (भ्वा० ग०)
पुर (तु० ग० पर०) आगे चलना, पुरति, अ०, स०
पुर्व देखो—पर्व (भ्वा० ग०)
पुल (भ्वा० ग० पर०) महत्व को पाना, बड़ा बनना, या होना, पुलति अ०
पुल (चु० ग० उ०) " " " " " " पोलयति (ते) अ०
पुष (भ्वा ग० पर०) पुष्ट होना, बलवान् होना, पोषति, अ०
पुष (दि० ग० पर०) " " " " पुष्यति
पुष (क्र्या० ग० पर०) " " " " पुष्णाति
पुष (चु० ग० उ०) धारण करना, पहिनना, पोषयति (ते) अ०
पुष्प (दि० ग० पर०) फूलना, विकसित होना, पुष्प्यति अ०
पुस्त (चु० ग० उ०) आदर या अनादर करना, पुस्तयति (ते) स०
पुंस (चु० ग० उ०) बढ़ना, पुंस्त्व दिखलाना पुंसयति (ते) अ०
पूङ् (भ्वा० ग० आ०) पवित्र करना, पवते स०
पूज (चु० ग० उ०) पूजा करना, पूजयति (ते) स०
पूञ् (क्र्या० ग० उ०) पवित्र करना या होना, पुनाति, (नीते) स०, अ०
पूयी (भ्वा० ग० आ०) अङ्ग अङ्ग शिथिल हो जाना, दुर्गन्धि आना। पूयते अ०
पूरी (दि० ग० आ०) पूर्ण होना, बढ़ना, पूर्यते, अ०
पूरी (चु० ग० उ०) " " " पूरयति (ते) अ०
पूर्ण (चु० ग० उ०) इकट्ठा करना पूर्णयति (ते) स०
पूल (" " ") " " पूलयति (ते) स०
पूल (भ्वा० ग० पर०) " " पूलति स०
पूष (भ्वा०,ग० पर०) बढ़ना, पूषति, अ०
पृ (स्वा० ग० पर०) प्रेम करना, प्रीति करना, पृणोति, अ०
पृङ् (तु० ग० आ०) परिश्रम करना, काम में लगना व्याप्रियते (यह प्रायः "व्या" पूर्वक चलती है) अ०

पृच (चु० ग० उ०) संयमन करना, संयम करना, नियम से रहना, किसी की कहीं योजना करना, पर्चयति (ते) स० (पर्चति०)
पृची (अ० ग० आ०) सम्पर्क करना, संयोग करना, मेल करना पृङ्क्ते अ०
पृची (रु० ग० पर०) ,, ,, ,, ,, ,, ,, पृणक्ति अ०
पृजि देखो—पिजि (अ० ग०)
पृड (तु० ग० पर०) सुखी होना, सुख भोगना, सुखी करना, पृडति अ०, स०
पृण (तु० ग० पर०) प्रसन्न करना पृणति स०
पृथ देखो—पथ (चु० ग०) पर्थयति (ते) स०
पृषु (भ्वा० ग० पर०) सींचना, पर्षति स०
पॄ (जु० ग० पर०) पालन करना, पूर्ण करना पिपर्त्ति स०
पेल देखो—व्रज (भ्वा० ग०) पेलति
पेवृ देखो—केवृ (भ्वा० ग०)
पेषृ (भ्वा० ग० पर०) प्रयत्न करना, पेषते
पेसृ देखो पिसृ (भ्वा० ग०)
पै (भ्वा० ग० पर०) सुखाना, सूखना, पायति। स० अ०
पैणृ (भ्वा० ग० पर०) गति—प्रेरणा करना, श्लेषण करना, मिलाना पैणति स० अ०
(ओ) प्यायी (भ्वा० ग० आ०) वृद्धि होना, बढ़ना, प्यायते, अ०
प्यैङ् (भ्वा० ग० आ०) ,, ,, ,, प्यायते, अ०
प्रच्छ (तु० ग० पर०) पूंछना, प्रश्न करना पृच्छति स०
प्रथ (भ्वा० ग० आ०) कहना, प्रख्यात करना, प्रथते, स०
प्रथ (चु० ग० उ०) ,, ,, प्राथयति (ते) स०
प्रस (भ्वा० ग० आ०) विस्तार करना, फैलाना, प्रसते, स०
प्रा (अ० ग० पर०) पूर्ण करना, भरना, प्राति, स०
प्रीङ् (दि० ग० आ०) प्रीति करना, प्रेम करना, प्रसन्न होना, प्रीयते, अ०
प्रीञ् (क्र्या० ग० उ०) तृप्त करना, संतुष्ट करना, चाहना, इच्छा करना, प्रीणाति (णीते) स०
प्रीञ् (चु० ग० उ०) तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, प्रीणयति (ते), प्राययति (ते) स०
प्रुङ् देखो—च्युङ् (भ्वा० ग०)
प्रुष (क्र्या० ग० प०) चिकनाना, सेवा करना, भरना, पूर्ण करना, प्रुष्णाति स०
प्रुषु (भ्वा० ग० पर०) जलाना, जलना प्रोषति स० अ०
प्रेषृ देखो—एषृ (भ्वा० ग०)
प्रोथृ (भ्वा० ग० उ०) पर्याप्त होना, समर्थ होना, काफ़ी होना, प्रोथति (ते) अ०
प्लिह देखो—अय (भ्वा० ग०) प्लेहते, स० अ०
प्ली (क्र्या० ग० पर०) गति, प्लिनाति, स० अ०
प्लुङ् देखो—च्युङ् (भ्वा० ग०)
प्लुष (दि० ग० पर०) जलना, प्लुष्यति, अ०
प्लुष देखो—प्रुष (क्र्या० ग०)
प्लुष देखो—प्लुष (दि० ग०)
प्लुषु देखो—प्रुषु (भ्वा० ग०)
प्सा देखो—अद् (अ० ग०) प्साति स०

फ

फक्क (भ्वा० ग० पर०) धीरे धीरे चलना, असत् व्यवहार करना, फक्कति, अ०
फण (भ्वा० ग० उ०) गति—फणति, (ते) स० अ०
(त्रि) फला (भ्वा० ग० पर०) काम सिद्ध होना, परिणाम निकलना, सफल होना फलति अ०
फला (भ्वा० ग० पर०) अंगों का अलग अलग होजाना, टूट फूट जाना, जर्जर होना, फलति अ०
फुल्ला (भ्वा० ग० पर०) फूलना, विकसित होना फुल्लति अ०
फेल देखो—पेलृ (भ्वा० ग०)

ब

बण देखो—भ्रण (भ्वा० ग०)
बद (भ्वा० ग० पर०) स्थिर होना, रुकना बदति अ०
बध (चु० ग० उ०) संयमन करना, रोकना, बाधयति, (ते) स०
बन्ध (क्र्या० ग० पर०) बाँधना, बध्नाति, स०
बर्ब देखो—अर्ब (भ्वा० ग०)
बर्ह (भ्वा० ग० आ०) प्रधान होना, बड़ा बनना, बर्हते, अ०
बर्ह देखो—कुसि (चु० ग०)
बर्ह (चु० ग० उ०) हिंसा करना, बर्हयति (ते) स०
बल (भ्वा० ग० पर०) जीना, धान्य आदि इकट्ठा करना, बलति, अ० स०
बल (चु० ग० उ०) जीता रहना, बली बनना, बलयति (ते) अ०
बल्ह देखो—बर्ह (भ्वा० ग०)
बल्ह देखो—बर्ह (चु० ग०)
बस्त देखो—गन्ध (चु० ग०)
बहि (भ्वा० ग० आ०) वृद्धि होना, बढ़ना, बंहते, अ०
बाडृ (भ्वा० ग० आ०) तैरना, बाडते, अ०
बाधृ (भ्वा० ग० आ०) प्रतिघात करना, रोकना, बाधते, स०
बाहृ देखो—जेहृ (भ्वा० ग०)
बिट (भ्वा० ग० पर०) गाली देना, निन्दा करना, बिटति, स०
बिदि (भ्वा० ग० पर०) टुकड़े २ करना, बिन्दति, स०
बिल (तु० ग० पर०) तोड़ना, भेदन करना, बिलति, स०
बिल (चु० ग० उ०) „ „ „ बेलयति (ते)
बिल देखो—कल (चु० ग०) „ („)
बिस (दि० ग० पर०) प्रेरण करना, भेजना, बिस्यति, स०
बुक्क (भ्वा० ग० पर०) भूंकना, बुक्कति, अ०
बुक्क (चु० ग० उ०) „ बुक्कयति (ते) अ०
बुगि देखो—जुगि (भ्वा० ग०)
बुध (दि० ग० आ०) जानना, समझना, बुध्यते, स०
बुध (भ्वा० ग० पर०) „ „ बोधति, स०
बुधिर् („ „ उ०) „ „ „ (ते) स०

(उ) वुन्दिर् (भ्वा० ग० उ०) जानना ज्ञान करना, बुन्दति (ते) स०
बुस (दि० ग० पर०) देना, दान करना, उत्सर्ग करना, छोडना, बुस्यति स०
बुस्त देखो—पुस्त (चु० ग०)
बृह, बृहि देखो—इह (भ्वा० ग०) वर्हति, बृंहति
बृहि (भ्वा० ग० पर०) शब्द करना, हाथी का चिघाडना, बृहति, अ०
बृहिर् देखो—दह (भ्वा० ग०)
बृह (तु० ग० पर०) उद्यम करना, उठाना, बृहति, अ० स०
ब्रूञ् (अ० ग० उ०) बोलना, कहना, ब्रवीति, ब्रूते, स०
ब्रूस देखो—वर्ह (चु० ग०)

भ

भक्ष (चु० ग० उ०) देखो—अद् (अ० ग०) भक्षयति (ते) स०
भज (भ्वा० ग० उ०) सेवा करना, भजन करना भजति (ते) स०
भज (चु० ग० उ०) दान करना, देना भाजयति (ते) स०
भजि देखो—कुसि (चु० ग०)
भञ्जो (रु० ग० पर०) मल डालना, तोड डालना, चूर चूर करना भनक्ति स०
भट (भ्वा० ग० पर०) भृत्ति करना, नौकरी करना, भाटपना करना भटति अ०
भट (भ्वा० ग० पर०) दिल्लगी उड़ाना, भटति, अ०
भडि (भ्वा० ग० आ०) ,, ,, , (निन्दा पूर्वक ताना मारना भण्डते) अ०
भडि (चु० ग० उ०) कल्याण होना, मगल होना भण्डयति (ते) अ०
भण देखो —अण् (भ्वा० ग०)
भदि (भ्वा ग० आ०) कल्याण होना, सुखी रहना, भन्दते, अ०
भर्व (भ्वा० ग० पर०) हिंसा करना, भर्वति, स०
भर्त्स (चु० ग० आ०) तर्जना करना, डराना, घुडकना, भर्त्सयते स०
भल (भ्वा० ग० आ०) हंसी उडाना, ताना मारना, हिंसा करना, देना, भलते, अ० स०
भल (चु० ग० आ०) देखो—भडि (चु० ग०) भालयते अ०
भल्ल देखो—भल (भ्वा० ग०)
भष (भ्वा० ग० पर०) भूंकना, कुत्ते का शब्द, भषति, अ०
भस (जु० ग० पर०) भर्त्सन करना, शोभित होना, बभस्ति, स० अ०
भा (अ० ग० पर०) दीप्त होना, शोभित होना भाति अ०
भाज (चु० ग० उ०) अलग करना, पृथक् करना, भाजयति (ते) स०
भाम (भ्वा० ग० आ०) क्रोध करना, भामते, अ०
भाम (चु० ग० पर०) ,, ,, भामयति (ते) अ०
भाष (भ्वा० ग० आ०) बोलना, भाषण करना भाषते, स०
भासृ (भ्वा० ग० आ०) शोभित होना, भासते, अ०
भिक्ष (भ्वा० ग० आ०) भिक्षा माँगना, भिक्षते स०
भिदिर् (रु० ग० उ०) भेदन करना, विदारण करना भिनत्ति, भिन्ते स०
भिषज् (क० ग० पर०) चिकित्सा करना, भिषज्यति, स०

भिष्णज् (क० ग० पर०) सेवा करना, भिषण्णयति, स०

(ञि) भी (जु० ग० पर०) डरना, बिभेति, अ०

भुज (रु० ग० उ०) पालन करना, खाना भुनक्ति (भुङ्क्ते) (केवल भोजन अर्थ मे—आत्मनेपद होता है)

भुजो (तु० ग० पर०) कुटिलता करना, भुजति, अ०

भुरण (क० ग० पर०) धारण करना, पोषण करना, भुरण्यति, स०

भू (चु० ग० उ०) मिलाना, चिन्ता करना, भावयति (ते) स०

भू (भ्वा० ग० पर०) रहना, होना, सत्ता, वर्त्तमान रहना भवति अ०

भू (चु० ग० आ०) पाना, भावयते, भवते, स०

भूष (भ्वा० ग० पर०) शोभित करना, सजाना, भूषति, स०

भूष देखो—तसि (चु० ग०) भूषयति (ते) स०

भृजी देखो—भ्रजि (भ्वा० ग०) भर्जते, स०

भृञ् (भ्वा० ग० उ०) भरण करना, भरना, भरति, स०

(डु) भृञ् (जु० ग० उ०) धारण करना, पोषण करना, बिभर्त्ति, बिभृते, स०

भृड देखो—कुड (तु० ग०)

भृशि देखो—त्रि (चु० ग०) भृंशयति (ते) स०

भृशु (दि० ग० पर०) नीचे गिरना, अधः पात होना, नीचा देखना, भृश्यति अ०

भॄ (क्र्य० ग० पर०) भर्त्सन करना या भारण करना, भृणाति, स०

भेप् (भ्वा० ग० उ०) डरना, भय खाना, भेपति (ते) अ०

भ्यस (भ्वा० ग० आ०) डरना ,, ,, भ्यसते अ०

भ्रक्ष (भ्वा० ग० उ०) खाना, भोजन करना भ्रक्षति (ते) स०

भ्रण देखो—अण (भ्वा० ग०)

भ्रमु (भ्वा० ग० पर०) घूमना, चलना, भ्रमण करना, भ्रम्यति, भ्रमति अ०

भ्रमु (दि० ग० पर०) ,, ,, ,, ,, भ्राम्यति, भ्रमति अ०

भ्रंशु देखो—भृशु (दि० ग०) भ्रश्यति

भ्रस्ज (तु० ग० उ०) पकाना, भूंजना. भृज्जति (ते) स०

भ्रंसु (भ्वा० ग० आ०) गिरना, ध्वस्त होना, भ्रंसते अ०

भ्राजृ (भ्वा० ग० आ०) शोभित होना, भ्राजते, स०

भ्राजृ भ्राशृ (भ्वा० ग० आ०) शोभित होना भ्राजते, भ्राश्यते, भ्राशते अ०

भ्री (क्र्या० ग० पर०) डरना, भ्रिणाति, अ०

भ्रूण (चु० ग० आ०) आशा करना, शंका करना, भ्रूणयते, स०

भ्रेजृ देखो—एजृ (भ्वा० ग०)

भ्रेषृ (भ्वा० ग० उ०) गति—भ्रेषति (ते) स० अ०

भ्यस देखो—भ्रश (भ्वा० ग०)

भ्लाशृ देखो—भ्राशृ (भ्वा० ग०)

भ्लेषृ देखो—भ्रेषृ (भ्वा० ग०)

म

मक्कि (भ्वा० ग०) मण्डन करना, शोभित करना, मण्डते, स०
मख देखो—उख (भ्वा० ग०) मखति
मखि „ — „ („ „) मङ्खति
मगध (क० ग० पर०) चारों ओर से लपेटना, परिवेष्टन करना, या नीच की सेवा करना, मगध्यति, स०
मगि देखो—उख (भ्वा० ग०) मङ्गति
मघि (भ्वा० ग० पर०) मण्डन करना, भूषित करना, मङ्घति, स०
मघि देखो—अघि (भ्वा० ग०)
मच (भ्वा० ग० आ०) शठता करना, पाखण्ड करना, मचति, अ०
मचि (भ्वा० ग० आ०) धारण करना, फैलना, विस्तार करना पूजा करना, मञ्चते, स० अ०
मठ (भ्वा० ग० पर०) घमण्ड करना, मतवाला होना, रहना, निवास करना, मठति, अ०
मठि देखो—कठि (भ्वा० ग०)
मडि (भ्वा० ग० आ०) विभाग करना. बटवारा करना, मण्डते, स०
मडि (भ्वा० ग० पर०) भूषित करना, मण्डन करना, मण्डति स०
मडि (चु० ग० उ०) भूषित करना, हर्षित होना, मण्डयति (ते) स०
मण देखो—अण् (भ्वा० ग०)
मत्रि (चु० ग० आ०) सलाह देना, गुप्त सलाह करना, गुप्त बातचीत करना, मन्त्रयते, स०
मथि देखो—कुथि (भ्वा० ग०)
मथे (भ्वा० ग० पर०) विलोडन करना, मथना, मथति, स०
मद् (चु० ग० आ०) तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, मदमस्त होना, मादयते, अ०
मदी (दि० ग० पर०) हर्षित होना, मस्त होना, माद्यति, अ०
मन (दि० ग० आ०) मानना, समझना, मन्यते, स०
मनु (त० ग० आ०) „ „ मनुते स०
मन्तु (क० ग० पर०) अपराध करना, मन्तूयति, अ०
मन्थ (भ्वा० ग० पर०) विलोडन करना, प्रतिघात करना, मथना, मन्थति स०
मन्थ (क्र्या० ग० पर०) „ „ „ „ मथ्नाति, स०
मभ्र देखो—अभ्र (भ्वा० ग०)
मय देखो—अय (भ्वा० ग०)
मर्च देखो—गज (चु० ग०) मर्चयति (ते)
मर्व देखो—अर्व (भ्वा० ग०)
मर्व देखो—पुर्व (भ्वा० ग०)
मल (भ्वा० ग० पर०) धारण करना, पहिनना, मलति
मल्ल „ „ „ „ „ मल्लति
मव (भ्वा० ग० पर०) बाँधना मवति, स०
मव्य („ „ „) „ मव्यति, स०
मश (भ्वा० ग० पर०) शब्द करना, क्रोध करना, मशति, अ०
मष देखो—कष (भ्वा० ग०)

मष्क देखो—ककि (भ्वा० ग०)
मसी (दि० ग० पर०) परिणाम निकलना, मस्यति, अ०
(टु) मस्जो (तु० ग० पर०) शुद्ध करना, (स्नान करना, डूबना, यदि धातु निपूर्वक हो तो) मज्जति, अ०
मह (भ्वा० ग० पर०) पूजा करना, महति, स०
मह (चु० ग० उ०) ,, ,, महयति, स०
महि देखो—वहि (भ्वा० ग०)
महि देखो—जि (चु० ग०)
मही (कं० ग० पर०) पूजा पाना, महीयते, अ०
मा (अ० ग० पर०) नापना, तौलना, समाना, माति, अ०
माक्षि देखो—काक्षि (भ्वा० ग०)
माङ् (जु० ग० आ०) नापना, तौलना, शब्द करना, मिमीते, मिमाते, स० अ०
माङ् (दि० ग० आ०) नपना, तुलना, मायते, अ०
मान (चु० ग० आ०) स्थिर रहना, मानना, मानयते, अ०
मान (चु० ग० उ०) सम्मान करना, पूजा करना, मानना, मानयति, (ते), मानति स०
मार्ग (चु० ग० उ०) खोजना, ढूँढ़ना, मार्गयति, (ते) स०
मार्ज देखो—गज (चु० ग०)
माह (भ्वा० ग० उ०) मानना, तौलना, माहति, (ते) स०
मिच्छ (तु० ग० पर०) दु.ख देना, मिच्छति, स०
मिजि देखो—कुसि (चु० ग०)
(डु) मिञ् (स्वा० ग० उ०) फेंकना, मिनोति, (नुते) स०
(ञि) मिदा (भ्वा० ग० आ०) चिकनाना, मेदते, स०
(ञि) मिदा (दि० ग० पर०) ,, मेद्यति, स०
मिदि (चु० ग० उ०) ,, मिन्दयति, (ते) मिन्दति, स०
मेद (भ्वा० ग० उ०) हिंसा करना, बुद्धि बढ़ाना, मेदति, (ते) स०
मिल (तु० ग० पर०) मिलना, मिलति, अ०
मिल (,, ,, ,,) आलिंगन करना, मिलति, स०
मिवि देखो—निवि (भ्वा० ग०)
मिश देखो—मश (,, ,,)
मिश्र (चु० ग० उ०) मिलना, सम्पर्क करना, मिलाना, मिश्रयति, अ० स०
मिष (तु० ग० पर०) स्पर्धा करना, मिषति, अ०
मिषु देखो—जिषु (भ्वा० ग०)
मिह (भ्वा० ग० पर०) लिंग इन्द्रिय से वीर्य का स्खलन होना मेहति, अ०
मी (चु० ग० उ०) गति—माययति, (ते) मयति, स० अ०
मीङ् (दि० ग० आ०) हिंसा करना, मीयते, स०
मीञ् (क्र्या० ग० उ०) ,, ,, मीनाति, (नीते) स०
मीमृ देखो—द्रम (भ्वा० ग०)
मील देखो—चील (भ्वा० ग०)
मीव देखो—पीव (,, ,,)

युञ् (क्र्या० ग० उ०) बाँधना, युनाति (नीते) स०
युतृ देखो—जुतृ (भ्वा० ग०)
युध (दि० ग० आ०) लड़ाई लड़ना युद्ध करना, युध्यते अ०
युप (दि० ग० पर०) विमोहन करना, मोहना, युप्यति, स०
यूप देखो—जूप (भ्वा० ग०)
यौटृ (भ्वा० ग० पर०) बाँधना, यौटति, स०

र

रक (चु० ग० उ०) स्वाद लेना, राकयति (ते) स०
रक्ष (भ्वा० ग० पर०) रक्षा करना, पालन करना, रक्षति, स०
रख देखो—उख (भ्वा० ग०)
रखि ,, — ,, (,, ,,)
रग देखो—रक (चु० ग०)
रगि देखो—उख (भ्वा० ग०)
रगे (भ्वा० ग० पर०) शङ्का करना, रगति, स०
रघ देखो—रक (चु० ग०)
रघि देखो—कखि (भ्वा० ग०)
रंघ देखो—जि (चु० ग०)
रच (चु० ग० उ०) बनाना, रचना करना, रचयति (ते) स०
रञ्ज (भ्वा० ग० उ०) रंगना, रजति (ते) स०
रञ्ज (दि० ग० उ०) रंगना, रज्यति (ते) स०
रट (भ्वा० ग० पर०) रटना, बकबक करना, रटति, स०
रठ देखो—रट (भ्वा० ग०)
रण देखो—अण् (भ्वा० ग०)
रद (भ्वा० ग० पर०) भेदन करना, खरोंचना, रदति, स०
रध (दि० ग० पर०) हिंसा करना, सिद्धि करना, काम साधना, रध्यति, स०
रप (भ्वा० ग० पर०) बातचीत करना, रपति, स०
रफ देखो—कर्व (भ्वा० ग०)
रफि ,, — ,, (,, ,,)
रबि देखो—अबि (भ्वा० ग०)
रभ (भ्वा० ग० आ०) आरम्भ करना, शुरू करना, आरभते, स० (यह धातु "आ" पूर्वक चलती है ।)
रमि देखो—अमि (भ्वा० ग०)
रम (भ्वा० ग० आ०) क्रीड़ा करना, खेलना, आनन्द करना, रमते, स०
रय (भ्वा० ग० आ०) गति—रयते, स० अ०
रवि देखो—धवि (भ्वा० ग०)
रस देखो—तुस (भ्वा० ग०) रसति, अ०
रस (चु० ग० उ०) स्वाद लेना, चिकनाना रासयति, स०
रह (भ्वा० ग० पर०) छोड़ना, त्याग देना, रहति स०

रह (चु० ग० उ०) छोड़ना, त्याग देना, रहयति (ते) स०
रहि (भ्वा० ग० पर०) गति—रंहति स० अ०
रहि देखो—ग्रहि (चु० ग०)
रा (अ० ग० पर०) देना, प्रदान करना, राति, स०
राखृ देखो—श्रोखृ (भ्वा० ग०)
राघृ देखो - द्राघृ (भ्वा० ग०)
राज् (भ्वा० ग० उ०) शोभित होना, राजति (ते) अ०
राध (स्वा० ग० पर०) सिद्धि करना, काम सिद्ध करना, राध्नोति, स०
रासृ देखो गासृ (भ्वा० ग०)
रि देखो पि (तु० ग०)
रि देखो—चि (स्वा० ग०)
रिख देखो—उख (भ्वा० ग०)
रिगि देखो—„ („ ,)
रिचि (चु० ग० उ०) अलगाना, पृथक् करना सम्पर्क रखना, सम्बन्ध करना, रेचयति (ते) स०
रिचिर् (रु० ग० उ०) पाखाना फिरना, दिशा फिरना, रिणक्ति, रिङ्क्ते अ०
रिफि (तु० ग० पर०) प्रशंसा करना, लड़ना, निन्दा करना, हिंसा करना, लेना, रिफति स०
रिवि देखो—धवि (भ्वा० ग०)
रिश (तु० ग० पर०) हिंसा करना, रिशति, स०
रिप देखो—कप (भ्वा० ग०) रेपति, स०
रिप (तु० ग० पर०) हिंसा करना, रिपति, स०
री (क्र्या० ग० पर०) गति—भेड़िये का बोलना, रियाति, अ० स०
रु (अ० ग० पर०) रोना, रौति, रवीति, अ०
रुङ् (भ्वा० ग० आ०) गति—हिंसा करना, रवते, स० अ०
रुच (भ्वा० ग० आ०) शोभित होना, अच्छा लगना, रुचना, रोचते अ० स०
रुज (चु० ग० उ०) हिंसा करना, रोजयति (ते) स०
रुजो (तु० ग० पर०) तोड़ देना, दर्द होना, रुजति, स० अ०
रुट (भ्वा० ग० आ०) प्रतिघात करना, रोटते स०
रुट देखो—जि (चु० ग०)
रुटि (भ्वा० ग० पर०) चोरी करना, चुराना, रुण्टति स०
रुठ देखो—उठ (भ्वा० ग०)
रुठि (भ्वा० ग० पर०) गति—लुण्ठित होना, लोटना, रुण्ठति स० अ०
रुठि देखो—रुटि (भ्वा० ग०)
रुडि " " (" ")
रुदिर (अ० ग० पर०) रोना, रोदिति अ०
रुध (दि० ग० आ०) अनुरोध करना, अनुरुध्यते (यह अनुपूर्वक होती है) अ०
रुधिर् (रु० ग० उ०) रोकना, ढाँकना, रुणद्धि (रुन्धे) स०
रुप देखो—युप (दि० ग०)
रुश देखो—रिश (तु० ग०)

रुष देखो —रूप (भ्वा० ग०)
रुष देखो—रिष् (दि० ग०)
रुष (चु० ग० उ०) क्रोध करना, रोषयति (ते) अ०
रुह (भ्वा० ग० पर०) बीज निकलना, रोहति, अ०
रूक्ष (चु० ग० उ०) रूखापन होना, रूप होना, रूक्षयति (ते) अ०
रूप (चु० ग० उ०) रूप बनाना, या रूप देखना, रूपयति (ते) स०
रूष (भ्वा० ग० पर०) भूषित करना, शोभित करना, रूषति, स०
रेकृ (भ्वा० ग० आ०) शंका करना, सन्देह करना, रेकते, स०
रेखा (क० ग० पर०) प्रशंसा करना, रेख्यति, स०
रेटृ (भ्वा० ग० उ०) देखो—रट (भ्वा० ग०) रेटति (ते) स०
रेपृ (देखो—मेपृ (भ्वा० ग०)
रेभृ देखो—अभि (भ्वा० ग०) रेभते
रेवृ (भ्वा० ग० आ०) जल्दी से चलना, दौड़ना, रेवते, अ०
रेषृ (भ्वा० ग० आ०) भेड़िये का बोलना, रेषते, अ०
रै देखो—कै (भ्वा० ग०)
रोड़ृ (भ्वा० ग० पर०) पागलपन करना, बेसमझी करना, रोडति, अ०
रौड़ृ (भ्वा० ग० पर०) अनादर करना, रौडति, स०

ल

लक्ष (चु० ग० आ०) आलोचना करना, देखना, लक्षित करना, लक्षयते, स०
लक्ष (चु० ग० उ०) देखना, अङ्कित करना, लक्षयति, (ते) स०
लख देखो—उख (भ्वा० ग०)
लखि „ „ („ „)
लग देखो - रक (चु० ग०)
लगि देखो—लखि
लगे (भ्वा० ग० पर०) संग करना, लगना, लगति, अ०
लघि देखो—ककि (भ्वा० ग०) भोजन न करना, लंघन करना, लङ्घते
लच्छ (भ्वा० ग० पर०) लक्षण करना, किसी विशेष चिह्न द्वारा जानना, लच्छति, स०
लज (चु० ग० उ०) प्रकाश करना, बतलाना, खोलना, लजयति (ते) स०
लज (भ्वा० ग० पर०) भूँजना, लजति, स०
लजि („ „ „) „ लञ्जति, स०
लजि देखो—लज (चु० ग०) लञ्जयति (ते)
(ओ) लजी (तु० ग० आ०) लज्जा करना, लजाना, लजते, अ०
लट ((भ्वा० ग० पर०) लड़कई करना, बाल्यावस्था, लटति, अ०
लड (चु० ग० उ०) लाड़ प्यार करना, दुलारना, लाडयति (ते), स०
(ओ) लडि (चु० ग० उ०) फेंकना, ओलण्डयति (ते), (ओकार इत्संज्ञमाना जाता है)—लण्डयति (ते), लण्डति, लण्डते,
लप देखो—रप ((भ्वा० ग०)

लबि (भ्वा० ग० आ०) लम्बा बढ़ना, लम्बा होना लम्बते, अ०
लबि देखो—अबि (भ्वा० ग०)
(डु) लभष् (भ्वा० ग० उ०) पाना, प्राप्ति करना, लभति, लभते, स०
लर्ब देखो अर्ब ((भ्वा० ग०)
लल (चु० ग० आ०) चाहना, लालसा करना, लालयते, स०
लष (भ्वा० ग० उ०) शोभित होना, चमकना, लषति, (ते) अ०
लस (भ्वा० ग० पर०) आलिङ्गन करना चिपटना खेलना, लसति, स० अ०
लस (चु० ग० उ०) शिल्प का काम करना, लासयति (ते) अ०
(ओ) लस्जी देखो—(ओ) लजी, (तु० ग०) लज्जते, अ०
ला (अ० ग० पर०) लेना, ग्रहण करना, लाति, स०
लाखृ देखो—ओखृ (भ्वा० ग०)
लाघृ देखो—द्राघृ („ „)
लाच्छि देखो—लच्छ („ „) लाञ्छति
लाज (भ्वा० ग० पर०) भर्त्सन करना, डाटना, लाजति, स०
लाजि („ „ „) लाञ्जति स०
लाट (क० ग० पर०) जीना, लाट्यति, अ०
लाभ (चु० ग० उ०) प्रेरणा करना, भेजना, लाभयति (ते) स०
लिख (तु० ग० पर०) लिखना, लिखति, स०
लिगि देखो—उख (भ्वा० ग०)
लिगि (चु० ग० उ०) चित्रित करना, लक्षित करना, बताना, लिङ्गयति (ते) स०
लिट (क० ग० पर०) न्यून होना, कम होना, निन्दा करना, लिट्यति अ० स०
लिप (तु० ग० पर०) बढ़ना, वृद्धि होना लिम्पति, अ०
लिश (दि० ग० आ०) न्यून होना, कमी होना, लिश्यते, अ०
लिह् (अ० ग० उ०) स्वाद लेना, चखना, लेढि, (लीढे) स०
ली (क्र्या० ग० पर०) श्लेषण करना, चिपटना, लगाना, लिनाति स०
ली (चु० ग० उ०) पिघलना, लापयति (ते), लयति, अ०
लीङ् (दि० ग० आ०) देखो—ली (क्र्या० ग०) लीयते, स०
लुञ्च (भ्वा० ग० पर०) दूर करना, हटाना, लुञ्चति, स०
लुट (भ्वा० ग० पर०) लोटना, लोटति, अ०
लुट देखो—रुट (भ्वा० ग०)
लुट (तु० ग० पर०) मिलाना, चिपटाना, लुटति, स०
लुठि देखो—लुटि (भ्वा० ग०)
लुठ देखो—उट („ „)
लुठ देखो—रुट („ „)
लुठ (दि० ग० पर०) लोटना, विलोडन करना, लुठ्यति, अ०
लुठि (भ्वा० ग० पर०) आलस्य करना, प्रतिघात करना, लुण्ठति, अ०
लुठि देखो—रुठि (भ्वा० ग०)
लुठि „—रुटि („ „)

लुण्ठ (चु० ग० उ०) चुराना, लुण्ठयति (ते)
लुथि देखो - कुथि (भ्वा० ग०)
लुप देखो—रुप (दि० ग०)
लुप्लृ (तु० ग० पर०) काटना लुम्पति, स०
लुबि देखो—तुबि (चु० ग०)
लुबि देखो—तुबि (भ्वा० ग०)
लुभ (दि० ग० पर०) लोभ करना लालच करना, लुभ्यति अ०
लुभ (तु० ग० पर०) किसी चीज़ को देखकर उस पर मोहित हो जाना, लुभा जाना, लुभति अ०
लूञ् (क्र्या० ग० उ०) काटना, छेदना, लुनाति (नीते) स०
लूष देखो—रूष (भ्वा० ग०)
लूष (चु० ग० उ०) हिंसा करना, लूषयति (ते) स०
लेखा (क० ग० पर०) स्खलित होना, गिरना, विलास करना, लेख्यति, अ०
लेट् (क० ग० पर०) धूर्तता करना, लेट्यति, अ०
लेपृ देखो—मेपृ (भ्वा० ग०)
लेला (क० ग० पर०) शोभित होना, लेल्यति, अ०
लोकृ (भ्वा० ग० आ०) देखना, लोकते, स०
लोचृ (,, ,, ,,) ,, लोचते, स०
लोट् देखो—लेट् (क० ग०)
लोड़ृ देखो—रोड़ृ (भ्वा० ग०)
लोष्ट देखो—लोष्ट (,, ,,)

व

वकि देखो—ककि (भ्वा० ग०)
वकि (भ्वा० ग० आ०) कुटिलता करना, वङ्कते अ०
वक्ष (भ्वा० ग० पर०) क्रोध करना, या इकट्ठा करना वक्षति, अ० स०
वख देखो—उख (भ्वा० ग०)
वखि ,,— ,, (,, ,,)
वगि ,,— ,, (,, ,,)
वघि देखो—अघि (,, ,,)
वच (अ० ग० पर०) कहना, बोलना, वक्ति, स०
वज (भ्वा० ग० पर०) गति - वजति, स० अ०
वञ्चु (चु० ग० आ०) धोखा देना, ठगना, वञ्चयते, स०
वट (भ्वा० ग० पर०) वेष्टन करना, लपेटना, वटति, स०
वट (चु० ग० उ०) विभाग करना, अलगाना, वटयति, स०
वठ (चु० ग० उ०) ग्रन्थन करना गठियाना, वठयति (ते), स०
वठ (भ्वा० ग० पर०) स्थूल होना, मोटा होना, वठति, अ०
वठि देखो—वट (चु० ग०) वण्ठयति (ते), वण्ठति
वडि (भ्वा० ग० आ०) अलगाना, विभाग करना, वण्डते, स०

वडि देखो—वठि (चु० ग०)
वण देखो—अण् (भ्वा० ग०)
वद (भ्वा० ग० पर०) बोलना, वदति, स०
वद (चु० ग० उ०) सन्देश कहना, वादयति (ते), वदति (ते) स०
वदि (भ्वा० ग० आ०) प्रणाम करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, वन्दते, स०
वन (भ्वा० ग० पर०) रचना करना, वनति, स०
वन देखो—पूव (भ्वा० ग०)
वनु (त० ग० आ०) याचना करना, माँगना, वनुते, स०
(डु) वप (भ्वा० ग० उ०) बीज को खेत में बोना, गर्भाधान करना, काटना, मूँडना, वपति, स०
वभ्र देखो—अभ्र (भ्वा० ग०)
(टु) वम (भ्वा० ग० पर०) कम करना, उल्टी करना, वमति स०
वय देखो—अय (भ्वा० ग०)
वर (चु० ग० उ०) वर माँगना, वरयति (ते) स०
वर्च (भ्वा० ग० आ०) शोभित होना, वर्चते, अ०
वर्ण देखो—चूर्ण (चु० ग०), वर्णन करना वर्णयति (ते) स०
वर्ण (चु० ग० उ०) रंग चढ़ाना, विस्तार करना, फैलाना, स्तुति करना, वर्णयति (ते) स०
वर्ध (चु० ग० उ०) काटना, बढ़ना, वर्धयति (ते) स० अ०
वर्ष (भ्वा० ग० आ०) पानी बरसना, वर्षते अ०
वर्ह (भ्वा० ग० आ०) निन्दा करना, हँसी उड़ाना, हिंसा करना ढँकना, वर्हते स०
वल (भ्वा० ग० आ०) ढाँकना, संवरण करना, चलना, घूमना, युक्त करना, वलति, स० अ०
वल्क (चु० ग० उ०) निन्दा करना, हँसी उड़ाना, वल्कयति (ते) अ०
वल्क (चु० ग० उ०) देखना, वल्कयति (ते) स०
वल्ग देखो—उख (भ्वा० ग०)
वल्गु (क० ग० पर०) पूजा करना, मीठा लगना, वल्गूयति, स० अ०
वल्ल (भ्वा० ग० आ०) भोजन करना, खाना, वल्लते, स०
वल्ल देखो—वल (भ्वा० ग०)
वल्ह देखो—वर्ह (,, ,,)
वश् (अ० ग० पर०) चाहना, इच्छा करना, वष्टि, स०
वष देखो कष (भ्वा० ग०)
वष्क देखो—ककि (,, ,,)
वस (भ्वा० ग० पर०) निवास करना, रहना, वसति अ०
वस (चु० ग० उ०) चिकनाना, काटना, छीनना, चुराना, वासयति (ते) स०
वस (चु० ग० उ०) देखो—वस (भ्वा० ग०) वासयति, अ०
वसु (दि० ग० पर०) सकना दृढ़ होना, वस्यति, अ०
वह (भ्वा० ग० पर०) पहुँचाना, ढोना, वहति (ते) स०
वा (अ० ग० पर०) वायु का बहना, महकना, वाति, अ०
वाक्षि देखो—काक्षि (भ्वा० ग०)
वाञ्छि ,,— ,, (,, ,,)

वात (चु० ग०) हवा का बहना, सुखी रहना, सेवा करना, उपभोग करना, वातयति (ते) अ०
वाश्रृ (दि० ग० आ०) एक तरह का शब्द करना, वाश्यते, अ०
वास (चु० ग० उ०) उपसेवा करना, उपभोग करना, वासयति (ते स०
विचिर् (रु० ग० उ०) अलग करना, विभाग करना, विनक्ति, विङ्क्ते स०
विच्छ (तु० ग० पर०) गति—विच्छति, स० अ०
विजिर् (अ० ग० पर०) देखो—विचिर् (रु० ग०) वेवेक्ति स०
(ओ) विजी (तु० ग० पर०) डरना, चलना उद्विजते, अ० (' उत् ' पूर्वक रहती है)
(ओ) विजी (रु० ग० पर०) देखो—विजी (तु० ग०) विनक्ति, अ०
विथृ (भ्वा० ग० आ०) याचना करना, वेथते स०
विद् (अ० ग० पर०) जानना, वेद, वेत्ति स०
विद् (दि० ग० आ०) वर्त्तमान रहना, मौजूद रहना, है, विद्यते, अ०
विद् (रु० ग० आ०) विचार करना, सोचना, विन्ते, स०
विद् (चु० ग० आ०) जानना, कहना, रहना, वेदयते, स० अ०
विद्लृ (तु० ग० उ०) पाना, लाभ करना, विन्दति (ते) स०
विध (तु० ग० पर०) करना विधान करना, विधति, स०
विल (,, ,, ,,) सवरण करना, ढाँकना विलति, स०
विश (,, ,, ,,) घुसना, प्रवेश करना, विशति, स०
विष् (क्र्या० ग० पर०) विप्रयोग होना, बिगड़ जाना, विष्णाति, अ०
विसु देखो—जिषु (भ्वा० ग०)
विष्लृ (जु० ग० पर०) व्याप्त होना, वेवेष्टि अ०
वी (अ० ग० पर०) गति, व्याप्त होना, उत्पन्न होना, इच्छा करना, बैठना, खाना, वेति, स० अ०
वीर (चु० ग० आ०) वीरता दिखाना वीरयते, अ०
वुगि देखो—जुगि (भ्वा० ग०)
वृ (भ्वा० ग० पर०) संवरण करना, ढाँकना, वरति, स०
वृक देखो—वुक (भ्वा० ग०)
वृक्ष (भ्वा० ग० पर०) देखो—वृ (भ्वा० ग०) वृक्षते स०
वृङ् (क्र्या० ग० आ०) वरण करना, वृणीते, स०
वृजी (अ० ग० आ०) रोकना, वर्जन करना, मना करना, वृक्ते, स०
वृजी (रु० ग० पर०) ,, ,, ,, ,, वृणक्ति, स०
वृजी (चु० ग० उ०) ,, ,, ,, ,, वर्जयति (ते), वर्जति स०
वृञ् (चु० ग० उ०) आवरण करना, वारयति (ते), वरति (ते), स०
वृञ् (स्वा० ग० पर०) वरण करना, वरना चुनना, वृणोति स०
वृड देखो—चुड (तु० ग०)
वृण देखो—पृण (,, ,,)
वृतु (भ्वा० ग० आ०) है वर्तमान, उपस्थित, वर्त्तते, अ०
वृतु (दि० ग० आ०) देखो—वृतृ (स्वा० ग०) वृत्यते
वृधु (भ्वा० ग० पर०) बढ़ना, वर्धते, अ०
वृश (दि० ग० पर०) वरण करना, चुनना, वृश्यति, स०

वृष (चु० ग० आ०) सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति होना, शक्ति को पुष्ट करना, वर्षयते, अ०
वृषु देखो—घृषु (भ्वा० ग०)
वृहू (तु० ग० पर०) ऊपर उठाना, प्रयत्न करना, वृहति, स०
वॄ (क्र्या० ग० पर०) वरण करना, भरण करना, वृणाति स०
वृञ् (क्र्या० ग० उ०) वरण करना, वृणाति (णीते) स०
वेञ् (भ्वा० ग० उ०) कपड़ा विनना, वयति (ते) स०
वेणृ (भ्वा० ग० उ०) गति, जानना, चिन्ता करना, सुनाना, बाजा बजाना, वेणति (ते) स०
वेथृ देखो—विथृ (भ्वा० ग०)
वेपृ (भ्वा० ग० आ०) काँपना, वेपते, अ०
वेक देखो—काल (चु० ग०)
वेलृ देखो—केलृ (भ्वा० ग०)
वेल्ल ,, — , (,, ,,)
वेवीङ् (अ० ग० आ०) देखो—वी (अ० ग०) वेवीते
वेष्ट (भ्वा० ग० आ०) लपेटना, घेरना, वेष्टते, स०
वेहृ देखो—जेहृ (भ्वा० ग०)
(ओ) वै देखो—पै (,, ,,)
व्यच (तु० ग०) बहाना करना, विचति, अ०
व्यथ (भ्वा० ग० आ०) डरना, दुखी होना, व्यथते, अ०
व्यध (दि० ग० पर०) मारना, ताडन करना, विध्यति, स०
व्यय (भ्वा० ग० उ०) गति—व्ययति (ते) स० अ०
व्यय (चु० ग० उ०) खर्च करना, व्याययति (ते) अ० स०
व्युष देखो—प्लुष (दि० ग०)
व्युष (दि० ग० पर०) विभाग करना, पृथक् करना, व्युष्यति, स०
व्येञ् (भ्वा० ग० उ०) संवरण करना, ढाँकना, व्ययति (ते) स०
व्रज देखो—वज (भ्वा० ग०)
व्रज (चु० ग० उ०) रास्ता ठीक कराना, रस्ता बनाना, गति व्राजयति (ते) स०
व्रण देखो—अण (भ्वा० ग०)
व्रण (चु० ग० उ०) शरीर में घाव करना, व्रणयति, स०
(ओ) व्रश्चू (तु० ग० पर०) छेदना, काटना, वृश्चति, स०
व्री (क्र्या० ग० पर०) वरण करना, मन के अनुसार चुनना, व्रिणाति स०
व्रीङ् (दि० ग० आ०) देखो—वृञ् (स्वा० ग०) व्रीयते
व्रीड (दि० ग० पर०) प्रेरणा करना, लज्जित होना, व्रीडयति, स० अ०
व्ली (क्र्या० ग०) वरण करना, व्लिनाति, स०

श

शक (दि० ग० उ०) समर्थ होना, किसी वस्तु के करने की शक्ति होना, शक्यति (ते), अ०
शकि (भ्वा० ग० आ०) शङ्का करना, सन्देह करना, शङ्कते, स०
शकॢ (स्वा० ग० पर०) देखो शक (दि० ग०) शक्नोति, स०

शच (भ्वा० ग० आ०) स्पष्ट बात बोलना, बातचीत करना, शचते, अ०
शट (भ्वा० ग० पर०) खण्ड खण्ड करदेना, अलगाना, शटति स०
शट्ट (भ्वा० ग० पर०) पीड़ा होना, अंगों का शिथिल होजाना, गति, दुःख देना, शटति, अ० स०
शठ (भ्वा० ग० पर०) धूर्त्तता करना, हिंसा करना, दुःख देना, शठति, अ० स०
शठ (चु० ग० उ०) स्पष्टतया बात चीत करना, शठयति (ते) अ०
शठ (चु० ग० आ०) प्रशंसा करना, शाठयते, स०
शठ (चु० ग० उ०) संस्कार न होना, असंस्कृत रहना, गति शाठयति (ते) अ०
शडि (भ्वा० ग० आ०) दर्द होना, इकट्ठा होना, शण्डते, अ०
शण (भ्वा० ग० पर०) दान करना, गति, शणति स० अ०
शद्लृ (भ्वा० ग० आ०) तीक्ष्ण करना चोख करना, शीदति स० (यह धातु सार्वधातुक में आत्मनेपदी और आर्धधातुक में परस्मैपदी है ।)
शप (भ्वा० ग० उ०) गाली देना, शापदेना, शपति (ते) स०
शप (दि० ग० उ०) ,, ,, ,, शप्यति (ते) स०
शब्द (चु० ग० उ०) ("प्रति" उपसर्ग पूर्वक-)-प्रतिध्वनि करना, (कोई उपसर्ग पूर्व में न रहे) शब्द करना, बोलना, प्रतिशब्दयति (ते) शब्दयति (ते) स०
शम (चु० ग० आ०) आलोचना करना, शमन करना, विचार करना, शामयते, स०
शमु (दि० ग० पर०) शान्त होना, दबना, शाम्यति, अ०
शम्ब (चु० ग० उ०) बाँधना, सम्बन्ध लगाना, या करना शम्बयति (ते) स०
शर्ब देखो—अर्ब (भ्वा० ग०)
शर्व देखो—अर्व (भ्वा० ग०)
शल (भ्वा० ग० आ०) चलना, ढाँकना, शलते, अ० स०
शल देखो—पल्ल (भ्वा० ग०)
शल्भ (भ्वा० ग० आ०) प्रशंसा करना शल्भते, स०
शव (,, ,, पर०) गति, शवति, स० अ०
शश (,, ,, ,,) शीघ्र चलना, दौड़ना शशति अ०
शष देखो—कष (भ्वा० ग०)
शसि (भ्वा० ग० आ०) (आङ्पूर्वक) इच्छा करना, चाहना, आशसते, स०
शसु (,, ,, पर०) हिंसा करना, शसति स०
शंसु (,, ,, ,,) प्रशंसा करना, घात न करना भी अर्थ होता है शसति स०
शाश्वृ (,, ,, ,,) व्याप्त होना, शाश्वति, अ०
शाडृ (,, ,, आ०) प्रशंसा करना, शाडते स०
शासु (अ० ग० आ०) (आङ्पूर्वक) इच्छा करना, आशास्ते स०
शासु (अ० ग० पर०) आज्ञा देना, शास्ति स०
शिक्ष (भ्वा० ग० आ०) पढ़ना, विद्या ग्रहण करना, शिक्षते
शिखि देखो—उखि (भ्वा० ग०)
शिघि (भ्वा० ग० पर०) सूंघना, शिङ्घति स०
शिजि (अ० ग० आ०) अव्यक्त शब्द होना, जैसे झांझ आदि का बजना शिङ्क्ते अ०
शिञ् (स्वा० ग० उ०) चोख करना, तीक्ष्ण करना, शिनोति (नुते) स०

शिट (भ्वा० ग० पर०) अनादर करना, शेटति स०
शिल (तु० ग० पर०) देखो—उछि (भ्वा० ग०) शिलति, अ०
शिष देखो—कष (भ्वा० ग०)
शिष (चु० ग० उ०) बच जाना, शेष रहना, शेषयति (ते) शेषति अ०
शिष्लृ (रु० ग० पर०) किसी विशेष को लक्षित करना, शेष रहना, शिनष्टि स० अ०
शीक देखो—चीक (चु० ग०)
शीकृ (भ्वा० ग० आ०) सींचना, चूना, शीकते, अ०
शीङ् (अ० ग० आ०) सोना शेते, अ०
शीभृ (भ्वा० ग० आ०) प्रशंसा करना, शीभते स०
शील (,, ,, पर०) समाधि लेना, योगस्थ होकर बैठना, शीलति, अ०
शील (चु० ग० उ०) अभ्यास करना, शीलयति (ते) अ०
शुच (भ्वा० ग० पर०) शोक करना, सोचना शोचति अ० स०
शुचिर् (दि० ग० पर० पसीजना, गीला हो जाना, शुच्यति, अ०
शुच्य (भ्वा० ग० पर०) अंगों को शिथिल कर देना, मदिरा बनाना, स्नान करना, शुच्यति, अ०
शुठ देखो कुठि (भ्वा० ग०)
शुठ (चु० ग० उ०) आलस्य करना, शोठयति, (ते) अ०
शुठि (भ्वा० ग० पर०) सुखाना, सूखना शुण्ठति स० अ०
शुठि (चु० ग० उ०) ,, ,, शुण्ठयति (ते) शुण्ठति
शुध (दि० ग० पर०) शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध्यति, अ०
शुन (तु० ग० पर०) गति, कुत्ते की चाल चलना, शुनति, अ०
शुन्ध (भ्वा० ग० पर०) देखो—शुध (दि० ग०) शुन्धति
शुन्ध (चु० ग० उ० ,— ,, (,, ,,) शुन्धयति (ते) शुन्धति
शुभ (भ्वा० ग० पर०) बोलना, भाषण देना शोभित होना, या मारना, शोभति, अ०
शुभ (,, ,, आ०) शोभित होना शोभते अ०
शुभ (तु० ग० पर०) ,, शुभति अ०
शुम्भ देखो शुभ (भ्वा० ग०)
शुम्भ देखो—शुभ (तु० ग०)
शुल्क (चु० ग० उ०) फ़ीस लेना, किसी वस्तु के लिए पहिले कुछ ले लेना, शुल्कयति (ते), अ०
शुल्व (चु० ग० उ०) एक तरह की तोल को "शुल्व" कहते हैं उससे तौलना, शुल्वयति (ते) अ०
शुष (दि० ग० पर०) सूखना, शुष्यति, अ०
शूर देखो—वीर (चु० ग०)
शूरी (दि० ग० आ०) हिंसा करना, स्तम्भन करना, रोकना, शूर्यते, स०
शूर्प देखो—शुल्व (चु० ग०)
शूल (भ्वा० ग० पर०) पीड़ा उठना, शब्द करना, शूलयति (ते) अ०
शृधु (भ्वा० ग० आ०) देखो—पर्द (भ्वा० ग०) शर्धते अ०
शृधु देखो—मृधु (भ्वा० ग०)
शृधु (चु० ग० उ० हँसी करना, हँसना, शर्धयति (ते) अ०
शृ (क्र्या० ग० पर०) हिंसा करना, शृणाति, स०

शेलृ देखो—पेलृ (भ्वा० ग०)
शेवृ देखो—केवृ (,, ,,)
शै (भ्वा० ग० पर०) पकाना, शायति, स०
शो (दि० ग० पर०) पतला करना, चोख करना, दुर्बल करना, श्यति, स०
शोण (भ्वा० ग० पर०) रंगना ("शोण" एक तरह का रंग होता है), गति, शोणति, स० अ०
शौटृ (,, ,, ,,) घमण्ड करना, गर्व करना शौटति अ०
श्च्युतिर (भ्वा० ग० पर०) चूना, झरना, श्च्योतति अ० इसे यकार रहित भी लोग मानते हैं, श्चोतति
श्मील देखो—क्ष्मील (भ्वा० ग०)
श्यैङ् देखो—अय (भ्वा० ग०) श्यायते
श्रकि देखो— ,, (,, ,,) श्रङ्कते
श्रगि देखो —उखि (,, ,,)
श्रण (चु० ग० उ०) देना, दान करना, विश्राणयति (ते) (यह प्रायः "वि" पूर्वक रहती है) स०
श्रथ देखो—कृप (चु० ग०)
श्रथ (चु० ग० उ०) प्रयत्न करना, प्रस्थान करना, श्राथयति (ते) अ०
श्रथ (,, ,, ,,) छोड़ना, हिंसा करना, श्राथयति (ते) श्रथति स०
श्रथि (भ्वा० ग० आ०) शिथिल हो जाना, ढीला पड़ना, श्रन्थते अ०
श्रन्थ देखो—ग्रन्थ (क्र्या० ग०)
श्रन्थ (क्र्या० ग० पर०) छोड़ना, हर्ष होना, श्रथ्नाति, स० अ०
श्रन्थ देखो—ग्रन्थ (चु० ग०)
श्रमु (दि० ग० पर०) तपस्या करना, परिश्रम करना, थकना, श्राम्यति, अ०
श्रम्भु (भ्वा० ग० आ०) प्रमाद करना, पागलपन करना, कर्त्तव्य से च्युत होना, श्रम्भते, अ०
श्रा (अ० ग० पर०) देखो—पच (भ्वा० ग०) श्राति, स०
श्रिञ् (भ्वा० ग० उ०) सेवा करना आश्रय लेना श्रयति (ते) स०
श्रिषु देखो—प्रुषु (भ्वा० ग०)
श्रीञ् (क्र्या० ग० उ०) देखो—पच (भ्वा० ग०) श्रीणाति (णीते) स०
श्रु (भ्वा० ग० पर०) सुनना, शृणोति, स०
श्रै देखो—शै (भ्वा० ग०)
श्रोणृ (भ्वा० ग० पर०) एकट्ठा होना, श्रोणति, अ०
श्लकि देखो—श्रकि (भ्वा० ग०)
श्लगि देखो—उखि (,, ,)
श्लथ देखो—क्रथ (भ्वा० ग०)
श्लाखृ देखो—शाखृ (, ,,)
श्लाघृ देखो—कत्थ (,, ,,) श्लाघते, स०
श्लिष (दि० ग० पर०) आलिङ्गन करना, श्लिष्यति, स०
श्लिष (चु० ग० उ०) ,, श्लेषयति (ते), स०
श्लिषु देखो—प्रुषु (भ्वा० ग०)
श्लोकृ (भ्वा० ग० आ०) ग्रन्थ बनाना या ग्रन्थ का रचा जाना, श्लोकते, स० अ०
श्लोणृ देखो—श्रोणृ (भ्वा० ग०)

श्वकि देखो—ककि (,, ,,)
श्वच्च देखो—श्रय (,, ,,)
श्वचि ,—,, (,, ,,) श्वञ्चते, स० अ०
शठ (चु० ग० उ०) असंस्कृत रहना, गति, शाठयति (ते) अ०
श्वठ (,, ,, ,,) ,, ,, ,, श्वाठयति (ते) अ०
श्वठि (,, ,, ,,) ,, ,, ,, श्वण्ठयति (ते) श्वण्ठति अ०
श्वभ्र (,, ,, ,,) गति -श्वभ्रयति (ते) स० अ०
श्वर्त (,, ,, ,,) ,, श्वर्तयति (ते)
श्वल (भ्वा० ग० पर०) शीघ्र चलना, दौड़ना, श्वलति, अ०
श्वल्क देखो—कल्क (चु० ग०)
श्वल्ल देखो—श्वल (भ्वा ग०)
श्वस (अ० ग० पर०) सांस लेना जीवित रहना, श्वसिति, अ०
श्वि (भ्वा० ग० पर०) गति, बढ़ना श्वयति, स० अ०
श्विता (,, ,, आ०) सफेद रंग से रँगना, श्वेतते, स०
श्विदि (,, ,, ,,) सफ़ेद होना, श्विन्दते अ०

ष

षगे (भ्वा० ग० पर०) संवरण करना, ढाँकना, सगति, स०
षघ (स्वा० ग० पर०) हिंसा करना, सघ्नोति, स०
षच (भ्वा० ग० आ०) सींचना, सेवन करना, चूना सचते स० अ०
षच (,, ,, उ०) एकत्र होना, झुण्ड में रहना, सचति, (ते) अ०
षञ्ज (,, ,, पर०) सङ्ग करना, लगना, चिपकना, सज्जति, अ०
षट्ट देखो—चुवि (चु० ग०)
षण देखो—वन (भ्वा० ग०)
षणु (त० ग० उ०) देना, दान करना, सनोति (नुते) स०
षद् (चु० ग० उ०) देखो—पद (दि० ग०) आसादयति (ते) आसीदति
षद्लृ (भ्वा० ग० पर०) अंगों का पृथक् पृथक् हो जाना, अवयवों का शिथिल पड़ जाना, गति, दुःख दे या उठाना, सीदति स० अ०
षद्लृ (चु० ग० पर०) देखो—षद्लृ (भ्वा० ग०)
षम (भ्वा० ग० पर०) विकलता का न होना, स्वस्थ रहना समति अ०
षम्ब देखो—शम्ब (चु० ग०)
षर्ज देखो—अर्ज (भ्वा० ग०)
षर्ब देखो—अर्ब (,, ,,)
षर्व देखो—अर्व (भ्वा० ग०)
षल देखो—अज (,, ,,) सलति
षस (अ० ग० पर०) सोना, सस्ति, अ०
षस्ज देखो—ग्लुञ्च (भ्वा० ग०) सज्जति, स० अ०

षह (चु० ग० उ०) सहना, बरदाश्त करना, साहयति (ते) सहति स०
षह (भ्वा० ग० आ०) सहना, ,, ,, सहते, स०
षह देखो—षुह (दि० ग०)
षान्त्व (चु० ग० उ०) शान्त करना, सान्त्वयति (ते) स०
षिच (तु० ग० पर०) सींचना, सिञ्चति, अ०
षिञ् (स्वा० ग० उ०) बाँधना, सिनोति (नुते) स०
षिट देखो—शिट (भ्वा० ग०)
षिध (भ्वा० ग० पर०) गति, (निपूर्वक) निषेध करना, रोकना, सेधति. निषेधति, स०
षिधु (दि० ग० पर०) सिद्ध होना. पूर्ण हो जाना, सिद्ध्यति अ०
षिधू (भ्वा० ग० पर०) आज्ञा देना, शासन करना, मङ्गल कार्य करना, मंगल का होना, सेधति, स० अ०
षिभु (,, ,, ,,) हिंसा करना, मार डालना, सेभति, स०
षिम्भु (,, ,, ,,) ,, ,, सिम्भति स०
षिल देखो—षिच (तु० ग०) ,, ,,
षिवु (दि० ग० पर०) बिनना, या सीना, सीव्यति, स०
षु (भ्वा० ग० पर०) सन्तान उत्पन्न करना, प्रसव होना, ऐश्वर्य भोग करना, सवति, स० अ०
षु (अ० ग० पर०) ,, ,, ,, ,, ,, सौति स०, अ०
षुञ् (स्वा० ग० उ०) अभिषव करना,—अर्थात् स्नान करना, या कराना, मदिरा बनाना, दबाना, सुनोति (नुते) स० अ०

षुट्ट देखो—अट्ट (चु० ग०)
षुर (तु० ग० पर०) ऐश्वर्य भोग करना, सुख-भोग करना, शोभित होना, सुरति, अ०
षुह (षह) (दि० ग० पर०) तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, सुह्यति, सह्यति अ०
षू (तु० ग० पर०) प्रेरणा करना, भेजना, लगाना, सुवति, स०
षूङ् (अ० ग० आ०) सन्तान उत्पन्न करना, प्रसव करना, सूते, स०
षूङ् (दि० ग० आ०) सन्तान उत्पन्न होना, सूयते, अ०
षूद (चु० ग० उ०) झरना, चूना, सूदयति, (ते) अ०
षूद (भ्वा० ग० आ०) ,, ,, सूदते अ०
षृभु देखो—षिभु (भ्वा० ग०) सर्भति, स०
षृम्भु देखो—षिभु (भ्वा० ग०) सृम्भति, स०
षेलृ देखो—पेलृ (,, ,,) सेलति
षेवृ देखो—केवृ (,, ,,)
षै देखो—जै (,, ,,)
षो (चु० ग० पर०) नष्ट करना, अन्त करना, स्यति, स०
ष्टक (भ्वा० ग० पर०) मारना, प्रतीघात करना, स्तकति, स०
ष्टगे देखो—षगे (भ्वा० ग०) स्तगति
ष्टन देखो—वन (भ्वा० ग०) स्तनति
ष्टभि देखो—स्कभि (,, ,,)
ष्टम देखो—षम (,, ,,) स्तमति
ष्टिपृ देखो—तिपृ (,, ,,)

ष्टिम देखो—तिम (दि० ग०)
ष्टीम ,,— ,, (,, ,,)
ष्टुच (भ्वा० ग० आ०) प्रसन्न होना, स्तोचते, अ०
ष्टुञ् (अ० ग० उ०) स्तुति करना, स्तौति, स्तुते, स्तवीति, स्तुवीते, स०
ष्टुप (चु० ग० उ०) फैलना, स्तोपयति (ते), अ०
ष्टुभु (भ्वा० ग० आ०) रोकना, स्तम्भन करना ठहर जाना, स्तोभते, अ०
ष्टेपृ देखो—तिपृ (भ्वा० ग०) स्तेपते
ष्टै (भ्वा० ग० पर०) वेष्टन करना, घेरना, लपेटना, स्तायति, स०
ष्ट्यै देखो—स्त्यै (भ्वा० ग०)
ष्ठल (भ्वा० ग० पर०) स्थित होना, ठहरना, स्थलति, अ०
ष्ठा (,, ,, ,,) बैठना, ठहरना, रुकना, तिष्ठति अ०
ष्ठिवु (,, ,, ,,) थूकना, ष्ठीवति, अ०
ष्णसु (दि० ग० पर०) थूकना, निकालना, स्नस्यति, अ० स०
ष्णा (अ० ग० पर०) स्नान करना, स्नाति अ०
ष्णिह (दि० ग० पर०) प्रसन्न होना, प्रीति करना, स्नेह करना, स्निह्यति, अ०
ष्णिह (चु० ग० उ०) चिकनाना, स्नेहयति (ते), स०
ष्णु (अ० ग० पर०) स्राव होना, चूना, झरना, स्नौति, अ०
ष्णुसु (दि० ग० पर०) खाना, लेना, न दिखलाई पड़ना, स्नुस्यति, स०
ष्णुह (,, ,,) ,, उगिल देना, स्नुह्यति, स०
ष्णै (भ्वा० ग० पर०) वेष्टन करना, शोभित होना, स्नान करना, स्नायति, स० अ०
ष्मिङ् (,, ,, आ०) मुस्कुराना, मन्द मन्द हँसना, स्मयते, अ०
ष्मिङ् (चु० ग० आ०) अनादर करना, स्माययते, स०
ष्वद (,, ,, उ०) स्वाद लेना, चखना, स्वादयति (ते) स०
ष्वद (भ्वा० ग० आ०) स्वाद लेना, अनुभव करना, अच्छा लगना, स्वदते, स० अ०
(ञि) ष्वप् (अ० ग० पर०) सोना, स्वपिति, अ०
ष्वष्क देखो—ककि (भ्वा० ग०) ष्वष्कते
(ञि) ष्विदा (भ्वा० ग० आ०) चिकनाना, गीला करना, छोड़ देना, मोह लेना, पागल सा हो जाना, स्वेदते, स० अ०
ष्विदा (दि० ग० पर०) पसीना बहना, स्वेद निकलना, स्विद्यति, अ०

स

सत्र (चु० ग० आ०) सन्तान उत्पन्न करना, किसी वस्तु को फैलाना, सत्रयते स०
सपर (क० ग० पर०) पूजा करना, सपर्यति, स०
सभाज (चु० ग० उ०) प्रेम करना, स्नेह करना, देखना, सेवा करना, सभाजयति (ते), अ० स०
सस्ति देखो—षस (अ० ग०) सन्ति, संस्ति, इत्यादि
सङ्केत देखो—कुण (चु० ग०)
सङ्ग्राम (चु० ग० आ०) युद्ध करना, लड़ना, सङ्ग्रामयते, अ०
सम्भूयस् (क० ग० पर०) बहुत अधिक होना, किसी वस्तु का अधिक परिमाण में होना, सम्भूयस्यति, अ०

संवर देखो—अम्बर (क० ग०)
साध देखो—राध (स्वा० ग०)
साम (चु० ग० उ०) शान्त करना, समझा बुझा कर शान्त करना, सामयति (ते) स०
साम्ब देखो—शम्ब (चु० ग०)
सार देखो—कृप (,, ,,)
सुख (चु० ग० उ०) सुख देना, सुखयति, स०
सुख (क० ग० पर०) सुख पाना या—सुख देना सुख्यति, अ० स०
सूर्त्त (भ्वा० ग० पर०) आदर करना, सत्कार करना, सूर्त्तति, स०
सूदय देखो—ईर्ष्य (भ्वा० ग०)
सूच (चु० ग० उ०) चुगुली करना, सूचना देना, सूचयति (ते०), स०
सूत्र (चु० ग० उ०) लपेटना, घेरना, सूत्रयति (ते), स०
सृ (भ्वा० ग० पर०) गति—सरति, स० अ०
सृ देखो—ऋ (जु० ग०) ससर्ति
सृज (दि० ग० आ०) खुलना, छूटना, बनना, सृज्यते, अ०
सृज (तु० ग० पर०) रचना करना, संसार की रचना करना, सृजति, स०
सृप्लृ (भ्वा० ग० पर०) गति—सर्पति, स० अ०
सेकृ देखो—अकि (भ्वा० ग०) सेकते
स्कन्दिर (भ्वा० ग० पर०) गति, सूखना, स्कन्दति अ० स०
स्कभि देखो—ष्टभि (भ्वा० ग०)
स्कम्भु (स्वा० ग०) (क्र्या० ग० पर०) रोकना, रुकना, स्कम्नोति, स्कभ्नाति, स० अ०
स्कुञ् (क्रया० ग० उ०) उतराना, कूदना, उछलना, स्कुनाति (नीते) अ०
स्कुदि (भ्वा० ग० आ०) देखो —स्कुञ् (क्र्या० ग०) स्कुन्दते, अ०
स्कुम्भु देखो—स्कम्भु (क्या० ग०) (स्वा० ग०) स्कुम्भोति (भ्नाति)
स्खद (भ्वा० ग० आ०) फाड डालना, नष्ट कर देना, स्खदते, स०
स्खल (,, ,, पर०) स्खलित होना, गिरना, स्खलति, अ०
स्तन देखो—गदी (चु० ग०)
स्तम्भु देखो—स्कम्भु
स्तृक्ष देखो—याच (भ्वा० ग०)
स्तृञ् (स्वा० ग० उ०) ढाँकना, घेरना, आच्छादन करना, स्तृणोति (णुते) स०
स्तृहू देखो—तृहू (तु० ग०)
स्तॄञ् (क्या० ग० उ०) देखो—स्तृञ् (स्वा० ग०) स्तृणाति (णीते) स०
स्तेन देखो—चुट (चु० ग०) स्तेनयति (ते) स०
स्तोम (चु० ग० उ०) प्रशंसा करना, स्तोमयति (ते) स०
स्त्यै देखो—ष्टै (भ्वा० ग०)
स्थुड देखो—थुड (तु० ग०)
स्थूल (चु० ग० आ०) स्थूल होना, मोटा होना, मोटाना, स्थूलयते, अ०
स्पदि (भ्वा० ग० आ०) कुछ कुछ चलना, हिलना, डुलना, स्पन्दते अ०
स्पर्ध (भ्वा० ग० आ०) स्पर्धा करना, डाह करना, ईर्ष्या करना, स्पर्धते, अ० स०

स्पश (,, ,, उ०) बाधा करना, गूँथना, स्पशति (ते) स०

स्पश (चु० ग० आ०) पकड़ना, ग्रहण करना, आलिङ्गन करना, स्पशते स०

स्पृ (स्वा० ग० पर०) प्रेम करना, पालन करना, रक्षा करना, स्पृणोति, अ० स०

स्पृश (तु० ग० पर०) छूना, स्पर्श करना, स्पृशति स०

स्पृह (चु० ग० उ०) चाहना, इच्छा करना, स्पृहयति (ते) स०

स्फर (तु० ग० पर०) हिलना, फरकना, स्फरति, अ०

स्फायी देखो—प्यायी (भ्वा० ग०)

स्फिट देखो—स्निट (चु० ग०)

स्फिट्ट देखो—चुद्रि (चु० ग०)

स्फुट (भ्वा० ग० आ०) विकसित होना, खिलना, खुलना, स्फोटते, अ०

स्फुट (तु० ग० पर०) ,, ,, ,, स्फुटति

स्फुट (चु० ग० उ०) देखो—भिद (रु० ग०) स्फोटयति (ते)

स्फुटि (भ्वा० ग० पर०) टूट जाना, अंगों का शिथिल हो जाना, फट जाना, स्फुण्टति अ०

स्फुटिर् (,, , ,,) ,, ,, , ,, ,, ,, स्फोटति, अ०

स्फुड देखो—चुड (तु० ग०)

स्फुडि (चु० ग० उ०) हँसी करना, दिल्लगी उड़ाना, ताना मारना, स्फुण्डयति (ते) स०

स्फुर देखो—स्फर (तु० ग०)

स्फुर्च्छा (भ्वा०ग ० पर०) फैलना, स्फुर्च्छति, अ०

स्फुल देखो—स्फट (तु० ग०)

(टुओ) स्फूर्जा (भ्वा० ग० पर०) वज्र का शब्द, वज्र सदृश शब्द करना, स्फूर्जति, अ०

स्मिट ((चु० ग० उ०) देखो—स्मिड् (चु० ग०) स्मेटयति (ते)

स्मील देखो—स्मील (भ्वा० ग०)

स्मृ (भ्वा० ग० पर०) चिन्ता करना, ध्यान करना, स्मरति, स०

स्मृ देखो—स्पृ (स्वा० ग०)

स्यन्द् (भ्वा० ग० आ०) बहना, चूना, झरना, स्यन्दते, अ०

स्यम (चु० ग० आ०) तर्क करना, संशय करना, स्यमयते, अ०

स्यमु देखो—ध्वन (भ्वा० ग०)

स्रकि देखो—श्रकि (,, ,,)

स्रम्भु (भ्वा० ग० आ०) विश्वास करना, भरोसा करना, स्रम्भते, अ०

स्रंसु देखो—भ्रंसु (भ्वा० ग०)

स्रिवु (दि० ग०) गति, सूखना, स्रीव्यति, अ०

स्रु (भ्वा० ग० पर०) झरना, चूना, बहना, स्रवति अ०

स्वेक्क देखो—श्रकि (भ्वा० ग०)

स्वन देखो—ध्वन (भ्वा० ग०)

स्वर (चु० ग० उ०) आक्षेप करना, निन्दा करना, ताना मारना, स्वरयति (ते) अ०

स्वर्द देखो—स्वद (भ्वा० ग०)

स्वाद् (भ्वा० ग० आ०) स्वाद लेना, चखना, स्वादते, स०

स्वाद देखो—ष्वद (चु० ग०)
स्वृ (भ्वा० ग० पर०) शब्द करना; बोलना, उपताप करना, दुःख देना, स्वरति, अ०

ह

हट (भ्वा० ग० पर०) शोभित होना, दीप्त होना, हटति, अ०
हठ (" " ") दौड़ना, कूदना, हठ करना, जबर्दस्ती कोई काम करना, हठति अ०
हद (" " आ०) शौच जाना, दिसा फिरना, मल त्याग करना, हदते, अ०
हन (अ० ग० पर०) मारना, गति, हन्ति, स०
हम्म देखो—ह्मम (भ्वा० ग०)
हय (भ्वा० ग० पर०) गति, घोड़े की चाल चलना, हयति, अ०
हर्य (" " ") गति, इच्छा करना, चाहना, हर्यति, स०
हल (" " ") हल जोतना, हलति अ०
हसे (" " ") हँसना, हसति अ०
(ओ) हाक् (जु० ग० पर०) छोड़ देना, त्याग देना, हसति स०
(ओ) हाङ् (" " आ०) गति, जिहाते, जिहीते, अ० स०
हि (स्वा० ग० पर०) गति, बढ़ना, ("प्र" उपसर्ग) भेजना, हिनोति, प्रहिणोति, स० अ०
हिक्क (भ्वा० ग० उ०) हुचकी आना, हिक्कति (ते) अ०
हिट देखो—बिट (भ्वा० ग०)
हिठ देखो—क्षुप (क्र्या० ग०)
हिडि (भ्वा० ग०) गति, अनादर करना, हिण्डते, स० अ०
हिल (तु० ग० पर०) अभिप्राय बतलाना, हिलति, अ०
हिवि देखो—जिवि (भ्वा ग०)
हिष्क देखो—विष्क (चु० ग०)
हिसि देखो—तृह् (स० ग०) हिनस्ति, स०
हु (जु० ग० पर०) हवन करना, जुहोति, स०
हुडि (भ्वा० ग० आ०) इकट्ठा होना, एकत्रित करना, हुण्डते, अ०
हुडृ (,, ,, पर०) गति, होडति स० अ०
हुर्च्छा (,, ,, ,,) कुटिलता करना, टेढापन करना, हूर्च्छति, अ०
हुल देखो—पल्लृ (भ्वा० ग०) होलति
हूडृ देखो—हुडृ (भ्वा० ग०) हूडति
हृ (जु० ग० पर०) बलपूर्वक कोई काम करना, जिहर्त्ति (धातु छान्दस है)
हृञ् (भ्वा० ग० उ०) चुराना, हरलेना, पहुँचाना, नष्ट करना, हरति (ते) स०
हृणीङ् (क० ग० आ०) क्रोध करना, लज्जा करना, हृणीयते, अ०
हृष (दि० ग० पर०) प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, हृष्यति अ०
हृषु (भ्वा० ग० पर०) असत्य बोलना, झूठ बोलन, अ०
हेठ (,, ,, आ०) रोकना, किसी काम में विघ्न डालना, हेठते, स०
हेडृ (,, ,, ,,।) अनादर करना, हेडते, स०
हेषृ (,, ,,) हिनहिनाना, घोड़े की बोली, हेषते, अ०

होड़ृ देखो —हेड़ृ (भ्वा० ग०)
होड़ृ देखो—हुड़ृ (,, ,,)
ह्नुङ् (अ० ग० आ०) दूर करना, हटाना, अलग करना, ह्नुते स०
ह्मल (भ्वा० ग० पर०) चलना, खसकना, हिलना, डुलना, ह्मलति, अ०
ह्रगे देखो—पगे (भ्वा० ग०)
ह्रस देखो—तुस (,, ,,)
ह्राद (भ्वा० ग० आ०) हर हर शब्द करना, जैसे—नदियों का शब्द, ह्रादते, अ०
ह्री (जु० ग० पर०) लज्जा करना, लजाना, शरमाना, जिह्रेति अ०
ह्रीच्छ (भ्वा० ग० पर०) ,, ,, ,, ह्रीच्छति, अ०
ह्रेषृ देखो—हेषृ (भ्वा० ग०)
ह्लगे देखो—पगे (भ्वा० ग०)
ह्लप देखो—क्लप (चु० ग०)
ह्लस देखो—तुस (भ्वा० ग०)
ह्लादी (भ्वा० ग० आ०) हर हराना, आनन्दित होना, ह्लादते, अ०
ह्वल देखो—ह्मल (भ्वा० ग०)
ह्वृ (भ्वा० ग० पर०) कुटिलता करना, टेढ़ी चाल चलना, ह्वरति अ०
ह्वेञ् (,, ,, उ०) स्पर्धा करना, ईर्ष्या करना, ह्वयति (ते) ("आङ्" उपसर्गपूर्वक)—बुलाना, पुकारना, आह्वयति (ते) स०

॥ इति ॥

परिशिष्ट ३

संस्कृत साहित्य में प्रचलित भौगोलिक नामों का संक्षिप्त परिचय

अग
अङ्ग } श्री गंगा के दहिने तट पर अवस्थित प्राचीन एक प्रसिद्ध राज्य। इस राज्य की राजधानी का नाम चंपा नगरी था चंपा का दूसरा नाम अनंगपुरी भी था। यह चंपा नगरी आधुनिक भागलपुर नगर के समीप विहार प्रान्त में थी।

अगस्त्याश्रमः—(पु०) नासिक के आगे बवई के समीप जी० आई० पी० रेलवे का एक स्टेशन। नासिक से यह २४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर था।

अंगाः
अङ्गाः } सरयू और गंगा के बीच का देश। आधुनिक भागलपुर का समीपवर्ती प्रान्त।

अन्ध्र—आधुनिक तिलंगाना देश का प्राचीन नाम अन्ध्र देश है।

अधिराज—आधुनिक ग्वालियर के समीप-वर्ती दतिया नामक नगर।

अपरान्ता—कोंकन और मालावार देश।

अवंती
अवन्ती } नर्मदा नदी के उत्तर का प्रदेश। इसकी राजधानी का प्राचीन और आधुनिक नाम उज्जैन है या अवन्तीपुरी है। महाभारत के काल में यह प्रदेश दक्षिण में नर्मदा के तट तक और पश्चिम में माही नदी तक फैला हुआ था। उत्तर में एक और राज्य था जिसकी राजधानी दखपुर थी जो चंवल नदी के तट पर थी। इस राजधानी का अधुनिक नाम धौलपुर है और यह महराज रन्तिदेव की राजधानी थी।

अश्मक—ट्रावनकोर का नाम।

अश्वतीर्थ—कान्यकुब्ज देश के समीप का एक तीर्थ विशेष। यहाँ पर ऋचीक नामक ऋषि ने वरुण देव से एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े पाये थे। यह तीर्थ गंगा और काली नदी के संगम पर आधुनिक कन्नौज में है।

असिक्नी नदी—इस नदी का वर्तमान नाम चन्द्रभागा है और यह पंजाब में चनाव के भी नाम से प्रसिद्ध है।

अहिच्छत्र—उत्तर पाञ्चाल देश को अहिच्छत्र भी कहते थे। इसे द्रोणाचार्य ने पाण्डवों की सहायता से राजा द्रुपद से छीना था। इस राज्य की राजधानी रुहेलखण्ड के रामनगर में थी। यह राज्य रुहेलखण्ड में था।

आनर्त देखो सौराष्ट्र।

इ

इक्षुमती संयुक्तप्रान्त के उत्तरीय भाग में वहनेवाली काली नदी का नाम।

इन्द्रप्रथ—इसके नाम हरिप्रस्थ और शक्रप्रस्थ भी पाये जाते हैं। इसका आधुनिक नाम दिल्ली है। किन्तु इन्द्रप्रस्थ नगर जमुना के वामतट पर था और दिल्ली दक्षिणतट पर बसी हुई है।

उ

उज्जयन्त—सौराष्ट्र काठियावाड़ के जूनागढ़ के समीप वाले गिरनार पर्वत का अन्यतम नाम।

उज्ज़ानक—काश्मीर के पश्चिम सिन्धु नदी का तटवर्ती एक पवित्र क्षेत्र विशेष।

उत्कल—इसका नामान्तर ओड्र भी है और ओड्र ही का अपभ्रंश उडीसा जान पड़ता है। यह प्रदेश ताम्रलिप्त के दक्षिण कपिश नदी के तट तक फैला हुआ था। इस प्रदेश के मुख्य नगर कटक और पुरी हैं। पुरी चारों धामों में से एक है। यहीं पर जगन्नाथ भगवान् विराजमान हैं।

उरगापुरी—दक्षिण भारत के समुद्र-तटवर्ती एक बंदरगाह का नाम। आज कल यह तंजौर ज़िले में नीगापट्टम के नाम से प्रख्यात है। प्राचीन काल में किसी समय यह पाण्डय देश की राजधानी था।

ऋ

ऋक्षवान्—विन्ध्य पर्वतमाला का पूर्वीय भाग।

ऋष्यमूक—मदरास हाते के अनागुंडी स्थान से आठ मील के अन्तर पर और तुंगभद्रा नदी के तट पर जो पर्वत है, उसीका नाम ऋष्यमूक पर्वत है।

ऋष्यशृङ्गाश्रम—आधुनिक भागलपुर ज़िले में सिंहेश्वर में कुशी नदी के तट पर शृङ्गीऋषि का आश्रम था।

ऋषभ—(अथवा वृषभ) पाण्डय देशस्थ एक पर्वत का नाम। यहाँ पर महाराज युधिष्ठिर तीर्थयात्रा के लिये गये थे। दक्षिण भारत में यह पर्वत मदूरा नगर में अलगिरी नाम से प्रसिद्ध है।

ऋषिका—भारत के उत्तर में काम्भोज देश का समीपवर्ती देश। आधुनिक रूस देश।

ऋषिकुल्या—कलिङ्गदेश की एक नदी का नाम। यह नदी गंजाम ज़िले में होकर बहती है और इसका उद्गम स्थान महेन्द्राचल पर्वत है।

औ

औदुम्बरा }
औंदुवरा } कच्छ देश का नाम। इसकी राजधानी का प्राचीन नाम कच्छेश्वर या कोटेश्वर था।

क

कच्छा—गुजरात प्रान्त का खेडा, जो अहमदाबाद और खंभे के बीच में है।

कटदेश—बंगालके अन्तर्गत बरदवान के समीपवर्ती कटवा का नामान्तर। यहाँ के महाभारत कालीन राजा का नाम सुनाभ था और अर्जुन ने दिग्विजय यात्रा के समय, सुनाभ को परास्त किया था।

कण्वाश्रम—रुहेलखण्ड के अन्तर्गत वह स्थान विशेष, जहाँ आज कल विजनौर नामक नगर है। प्राचीन काल में यहाँ वन था।

कनखल—हरिद्वार से दो मील पूर्वस्थित एक ग्राम का नाम।

कन्यातीर्थ—आधुनिक नाम कन्याकुमारी है। यह ट्रावनकोर राज्य के अन्तर्गत दक्षिणभारत का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है।

कपिश—देखो सुह्म।

करतोया—यह एक नदी का नाम है जो बंगाल हाते के रंगपुर दीनाजपुर आदि नगरों में होकर बहती है। यह नदी किसी समय बंगाल और कामरूप देश की सीमा समझी जाती थी।

करीपका—(या कारुप) आधुनिक विहार प्रान्त के अन्तर्गत शाहाबाद ज़िले का पूर्वीय भाग। यहीं का राजा दन्तवक्त्र था।

कर्णाटक—दक्षिणभारत का एक प्रदेश जो बंबई और मदरास दोनों हातों में है। समूचा मैसूर राज्य, और मदरास हाते का दक्षिण कनारा तथा बंबई हाते का उत्तरी कनारा. बेलगाँव और धारवाड नामक ज़िले कर्णाटक प्रदेश कहलाते हैं।

कलिंग / कलिङ्ग — उड़ीसा के दक्षिण की ओर का प्रदेश। यह प्रदेश गोदावरी नदी के उद्गम स्थान तक फैला हुआ था। इसका आधुनिक नाम नार्दर्न सरकार है। इस राज्य की प्राचीन राजधानी कलिङ्गनगर समुद्र तट से कुछ फासले पर थी और सम्भवतः उस स्थान पर थी जहाँ आधुनिक राजमहेन्द्री नामक नगर है।

काँची—द्रविड़ देश की प्राचीन राजधानी। आधुनिक नाम काँजवर हैं।

कान्यकुब्ज—इक्षुमती या काली नदी तथा गंगा के संगम पर अवस्थित प्राचीन कालीन एक राज्य विशेष। इसकी राजधानी आधुनिक कन्नौज कसबा है, जो फर्रुखाबाद ज़िले के अन्तर्गत है। यह राजा गाधि की राजधानी थी।

कांपिल्य / काम्पिल्य — यह दक्षिण पाञ्चाल की राजधानी का नगर है। अब भी कम्पिला के नाम से प्रसिद्ध है और फर्रुखाबाद ज़िले का एक कसबा है। द्रौपदी का जन्म यहीं हुआ था।

कांभोज / काम्भोज — यह निषध पर्वत के दक्षिण में बतलाया जाता है। यहाँ अर्जुन राजसूयज्ञ के अवसर पर दिग्विजय करने गये थे। वर्तमान में इस देश की स्थिति, अफगानिस्तान जो अश्वस्थान का अपभ्रंश है; बतलायी जाती है। वहाँ घोडे अधिक होते है।

कामरूप—आसाम के अन्तर्गत प्राचीन कालीन राज्य विशेष। इसकी राजधानी प्राग्ज्योतिष था। यह राज्य उत्तर में हिमालय तक और पूर्व में चीन की सीमा तक था। यहाँ का राजा एक बड़ी सेना लेकर दुर्योधन की सहायता करने आया था। इसी की सेना में किरात और चीनी सैनिक थे।

कारुप—देखो करीषका।

किम्पुरुष—हिमालय पर्वत के उत्तर भाग का नाम।

किराता—टिपराहिल और कोमिल्ला जो बंगाल में हैं।

किष्किन्धा—बालि और सुग्रीव की राजधानी। यह स्थान मदरास हाते के बिलारी ज़िले के हिम्पी ग्राम के समीप तुङ्गभद्रा नदी के उत्तरी तट पर बतलाया जाता है।

कुंडिन / कुण्डिन — विदर्भ देश की राजधानी। यहाँ का प्रसिद्ध राजा भीष्मक था। यह स्थान बरार प्रान्त में आधुनिक अमरावती नगर से चालीस मील पूर्व की ओर है।

कुंतयः / कुन्तयः — कुन्ती के जन्मस्थान का नाम। यह मालवा में अश्व नदी के तट पर बसा हुआ था।

कुंतला / कुन्तला — मदरास हाते के बिलारी ज़िले के कुछ भाग जिसमें कुलगोड है।

कुरुक्षेत्र—पंजाब के कर्नाल जिले का एक कसबा यह दिल्ली से १०१ मील के फासले पर उत्तर की ओर है।

कुरुजांगल—कुरुदेश के पश्चिम में जो बड़ा भारी जङ्गल था उसीका नाम कुरुजाङ्गल था। यह कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर से उत्तर तथा आधुनिक दिल्ली नगरी से उत्तरपूर्व की ओर था। अब इसका नाम निशान तक नहीं है। गङ्गा इसे बहा ले गई।

कुलिंदा / कुलिन्दा —कुरुक्षेत्र का उत्तरवाला प्रदेश जिसका आधुनिक नाम सहारनपुर हैं।

कुलूत—इसका आधुनिक नाम कुलू है। यह जालन्धर-दुआब के उत्तर-पूर्व और सतलज के दाहिने तट पर स्थित है।

कुशस्थली—इसका आधुनिक नाम द्वारका है।

कुशावती दक्षिण कोशल की राजधानी का नाम। यह कहीं विन्ध्यागिरिमाला में थी। यह स्थान नर्वदा के उत्तर किन्तु विन्ध्य के दक्षिण मे स्थिति थी। सम्भवतः यह बुन्देलखण्ड में कहीं पर थी।

कृष्णवेणा
कृष्णावेणी
कृष्णा —दक्षिण भारत की कृष्णा नदी के नामान्तर है।

कैकया—पञ्जाब के उस भूखण्ड का नाम जो व्यास और सतलज नदियों के बीच मे है। भरतमाता कैकेयी इसी देश के तत्कालीन राजा की पुत्री थी।

केरल—कावेरी नदी के उत्तर भाग में पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच का भूखण्ड। इसका आधुनिक नाम कनारा और इसमें मालाबार प्रान्त भी शामिल है। इस भूभाग की प्रसिद्ध नदियां वेत्रवती, सरस्वती और काली नदी हैं।

कोटतीर्थ—इस नाम के तीर्थ कालिंजर, गोकर्ण और मथुरा मे है

कोलहल—मालवा को बुन्देलखण्ड मे पृथक् करनेवाली एक पर्वतमाला, जो चँदेरी के पास है।

कोशल—सरयू नदी के किनारे किनारे बसा हुआ एक प्राचीन राज्य। यह उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल नामक दो भागों में विभक्त था। उत्तर कोशल ही में आधुनिक गोंडा और बहराइच जिले हैं।

कौशांबी
कौशाम्बी —वात्स्य देश की राजधानी का प्राचीन नाम। प्रयाग नगर से तीस मील पश्चिम की ओर यह यह कोसम नामक स्थान पर थी।

कौशिकी—गङ्गा की बड़ी सहायक नदियों में से एक। यह बङ्गालहाते में गङ्गा से मिली है और जहाँ मिली है वहाँ का स्थान कौशकी तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हैं। रामायण के अनुसार यह विश्वामित्र की भगिनी है है, जो नदी के रूप में बहती है।

क्रथकैशिका—यह नगरी बरार प्रान्त में है और एक समय यह विदर्भ देश की राजधानी थी।

ग

गंधमादन
गन्धमादन —रुद्रहिमालय का अँग विशेष, जो बदरिका आश्रम से उत्तरपूर्व की ओर थोड़ा हट कर आरम्भ होता है।

गंधार
गन्धार —यह देश काबुल नदी के किनारे किनारे कुनार और सिन्ध नदी के बीच में है। इसकी राजधानी का नाम पुरुषपुर (जो अब पेशावर कहलाता है) था।

गिरिव्रज—मगध राज्य की राजधानी। विहार प्रान्त में इसका अधुनिक नाम राजगिरि है।

गोकर्ण—एक क्षेत्र का नाम जो गोआ से ३० मील उत्तरी कनारा मे है।

गोप्रतार—अयोध्या मे गुप्तारघाट के नाम से प्रसिद्ध है। यह वहाँ सरयूनदी के ऊपर बना हुआ एक घाट है और एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है।

गोमंत
गोमन्त —काठियावाड़ प्रान्त में द्वारका के समीप एक पर्वत विशेष।

गौड या पुण्ड्र—उत्तरी बङ्गाल का नामान्तर।

च

चेदयः
चेदि —यह शिशुपाल के राज्य का नाम था इस राज्य में आधुनिक बुँदेलखण्ड का दक्षिणी भाग और जबलपुर का उत्तरीभाग सम्मिलत था। चँदेरी इसकी राजधानी थी।

चोल—यह महाराज्य कावेरी नदी के तट पर बसा हुआ था और वर्तमान मैसूर राज्य का दक्षिणी भाग इसमें शामिल था। पीछे से इसीको लोग कर्नाटक के नाम से पुकारने लगे।

ज

जनस्थान—दक्षिण में जहाँ अब औरङ्गाबाद है वहाँ किसी समय विकट वन था और वहीं राक्षसों की चौकी थी। नासिक की पञ्चवटी भी उस समय जनस्थान की सीमा के भीतर थी।

जालंधर / जालन्धर — शतद्रु और विपाशा (व्यास) नदियों के बीच का भूखण्ड।

तक्षशिला—झेलम नदी के तट का एक नगर जो अटक और रावलपिंडी के बीच में बसा हुआ था।

तमसा—संयुक्त प्रान्त में बहनेवाली गङ्गा की एक सहायक नदी। इसका आधुनिक नाम टौंस है।

ताम्रपर्णी—मलय पर्वत से निकलनेवाली एक नदी। मदरासहाते का टिनेवेली नामक नगर इसी नदी के तट पर बसा हुआ एक प्रख्यात नगर है। यह नदी मनार की खाड़ी में गिरती है।

ताम्रलिप्त—देखो सुह्म

त्रिगर्त—प्राचीन कालीन एक निर्जल देश। शतद्रु नदी के पूर्व यह एक रेगिस्तान है और सतलज तथा सरस्वती के बीच का भूखण्ड, जिसमें उत्तर की ओर लुधयाना और पटियाला भी शामिल है और दक्षिण का कुछ भाग रेगिस्तान का भी शामिल है।

त्रिपुर / त्रिपुरी —इसका आधुनिक नाम तिवुर है और जबलपुर से ६ मील के फासले पर है। यह चेदि राज्य की राजधानी थी।

दरदाः—दर्दस्थान जो काश्मीर के उत्तर सिन्धुदेश के चढ़ाव की ओर है।

दर्दुः—पूर्वघाट की पर्वतमाला के दक्षिणी भाग का नाम।

दशपुरा देखो अवन्ती

दृशद्वती—कग्गर नदी का नाम जो अम्बाला सरहिन्द होकर बहती है और राजपूताने के रेगिस्तान में आकर लुप्त हो जाती है।

दशार्ण—एक देश विशेष का नाम जिसमें होकर दशार्ण नदी बहती है। मालवा प्रान्त के पूर्वी भाग का नाम दशार्ण है। वेतवानदीतटवर्ती भिलसा इसकी राजधानी थी। इस भिलसा का प्राचीन नाम विदिसा था।

द्रमिडाः / द्रविडाः —दक्षिण भारत का वह भूभाग जो मदरास से श्रीरङ्गपट्टम और कन्याकुमारी तक है। प्राचीनकाल में इस देश की राजधानी काँची थी। काँची का आधुनिक नाम काँजीवरम् है।

द्वारका—इसका दूसरा नाम आनर्त नगरी या अब्धि नगरी है। प्राचीन द्वारका मधुपुर के समीप वर्तमान द्वारका से ८४ मील दक्षिण पूर्व के कोने में थी। यह रेवतक पर्वत के समीप थी। रेवतक पर्वत जूनागढ़ के गिरिनाथ पर्वत का नामान्तर है। काठियावाड़ प्राय द्वीप की राजधानी द्वारका के बाद, वल्लभी नगरी में थी। यह वल्लभी नगरी भावनगर से १० मील उत्तरपश्चिम के कोने में थी।

निषध—यह उस देश का नाम है जिसके अधिपति किसी समय राजा नल थे। इसकी राजधानी का नाम अलका नगरी, था जो अलका नदी के तट पर बसी हुई थी। उत्तरी भारत का कमाऊ प्रान्त इसीमें शरीक समझा जाता है। निषध नामक एक पर्वत भी है।

नैमिषारण्य—गोमती नदी के वामतट पर सीतापुर से लगभग बीस मील के अन्तर पर है। आधुनिक नाम इसका नीमसार मिसरिक है।

प

पंचवटी / पञ्चवटी —नासिक के समीप एक स्थान। यह जनस्थान के अन्तर्गत है।

पंचाल
पञ्चाल } —एक प्रसिद्ध भूखण्ड का नाम जो राजशेखर के मतानुसार यमुना और गंगा के मध्य में है। राजा द्रुपद के समय में यह दक्षिण में चर्मण्वती (चम्बल) के तट से उत्तर में हरिद्वार तक फैला हुआ था। इसका उत्तरी भाग जो भागीरथी से आरम्भ होता था—उत्तर पाँचाल कहलता था और इसकी राजधानी का नाम था अभिछत्र। इस प्रकार इसका दक्षिणी भाग दक्षिण पांचाल के नाम से प्रसिद्ध था। द्रुपद की मृत्यु के बाद यह भाग हस्तिनापुर के राज्य में शामिल कर लिया गया था (मतान्तर) जो अब रुहेलखण्ड है, वही पाञ्चाल देश था। इसके दो विभाग थे। एक उत्तर पाञ्चाल और दूसरा दक्षिण पाञ्चाल। उत्तर पाञ्चाल की राजधानी रामनगर थी। दूसरे अर्थात् दक्षिण पांचाल की राजधानी कंपिला थी।

पद्मपुर—भवभूति कवि का आवासस्थान। यह स्थान चन्दपुर या चंदा (जो नागपुर के समीप है), के आस पास कहीं था।

पद्मावती—मालवा प्रान्त के नरवर नगर का प्राचीन नाम। यह सिन्द नामक नदी के तट पर बसा हुआ है। भवभूति के मालती-माधव की रंगस्थली यही नगरी है।

पंपा
पम्पा } —एक प्रसिद्ध झील का नाम। यह तुङ्गभद्रा की एक शाखा का नाम है। इसीके तट पर ऋष्यमूक पर्वत है।

पायोष्णी—तापती नदी की एक शाखा, जो बरार प्रान्त में है। इसको वहाँ वाले पूर्णा कहते हैं।

पर्णाशा—यह राजपूताने में है और इसका आधुनिक नाम बनास है। यह नदी चम्बल मे गिरती है।

पाटलावती—काली सिन्द नदी का नाम। यह चम्बल की एक शाखा है।

पाटलिपुत्र—मगध या दक्षिण विहार के एक प्रसिद्ध नगर का नाम। यह गंगा और सोन नदी के संगम पर बसाया गया था। इसी प्रकार इसका दूसरा नाम कुसुमपुर है। प्राचीन ग्रन्थों में जो विदेशियों के लिखे हुए हैं इसका नाम पालीबोथरा लिखा हुआ है। कहा जाता है आठवीं शताब्दी में एक नदी की बाढ से यह नष्ट हो गया।

पांड्य—भारत के अत्यन्त दक्षिण भूभाग का नाम। यह भूभाग चोल देश के दक्षिण-पश्चिम भाग में है। मलय पर्वत और ताम्रपर्णी नदी से इसका स्थान निर्विवाद प्रकट हो जाता है। दक्षिण के तिनवली और मदूरा के ज़िले जहाँ हैं वही स्थान पाड्य राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध था। रामेश्वर का द्वीप इसी राज्य में किसी समय था। इसकी राजधानी उरगपुर में थी। उरगपुर का आधुनिक नाम नीगापटम है; जो मदरास से १६० मील दक्षिण की ओर है।

पारसिक—फारस या परशिया देशवासी। कदाचित् भारत की उत्तर पश्चिम सीमा पर रहने वाली जातियों को भी पारसी कहा करते थे। यहाँ के घोडो को वनायुदेश्य कहते थे।

पारियात्र—विन्ध्यगिरि की पश्चिमी पर्वतमाला. जिसमें अरावली शामिल है और जो नर्मदा के मुहाने से खंवात की खाड़ी तक चल गयी है। सम्भवतः इसीका दूसरा नाम सिवालिक पर्वत है।

पावनी—वर्मा की इरावती नदी का नाम।

पुलिंद
पुलिन्द } —प्राचीन काल में इस राज्य के अन्तर्गत आधुनिक बुन्देलखण्ड का पश्चिमी भाग और समूचा सागर ज़िला शामिल था।

पृथूदक—पीहो अर्थात् जहाँ पर ब्रह्मयोनि नामक प्रसिद्ध तीर्थ है। यह स्थान, थानेश्वर से चौदह मील पश्चिम की ओर है।

प्रतिष्ठान—महाराज पुरुरवा की राजधानी का नाम। इसका आधुनिक नाम झूसी है, जो प्रयाग के दारागंज के सामने गंगा के उस तट पर वसी हुई है। हरिवंश में यह गंगा के उत्तर तट पर और कालिदास के मतानुसार यह गंगा यमुना के संगम पर वसी हुई थी।

प्रभास—काठियावाड़ का सोमनाथ पट्टनस्थान ।

प्राग्ज्योतिष—आसाम का कामरूप देश ।

ब

बाहुदा—धवला नदी जिसे अब बूढ़ा राप्ती नदी कहते हैं । यह अवध की राप्ती नदी की एक सहायक नदी है । शङ्ख के भाई लिखित ऋषि के इसी नदी में स्नान करने से नयी बाँहे निकली थीं । उसी समय से इसका नाम बाहुदा पड़ा है ।

बाल्हीकरः—केकय देश के उत्तर पूर्व का वह देश जो व्यास और सतलज नदी के बीच में है ।

बिंदुसर / बिन्दुसर —गंगोत्री से दो मील हटकर रुद्रहिमालय में एक पवित्र कुण्ड है । यहीं भागीरथ ने गङ्गा को पृथिवी पर बुलाने के लिए तप किया था ।

भ

भृगुकच्छ—इसका आधुनिक नाम (गुजरात का) भड़ौच नगर है । यही पर नर्मदा का समुद्र के साथ संगम होता है । यही पर महर्षि भृगु का आश्रम था ।

भोजकट—पूर्णा नदी पर बसा हुआ इलिचपुर नामक नगर जो बरार में है । इसी नगर में रुक्मिणी का भाई रुक्मिण रहता था ।

म

मगध—बिहार प्रान्त । प्राचीन काल में मगध राज्य की पश्चिमी सीमा सोन नद था । इसकी प्राचीन राजधानी का नाम गिरिव्रज या राजगृह था । इस नगरी में पाँच पहाड़ियाँ थी । जिनके नाम ये हैं:—१ विपुला गिरि, २ रत्नगिरि ३ उदयगिरि ४ शोणगिरि और ५ वैभार या व्यवहार गिरि । इसकी दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र में थी । पिछले प्राचीन साहित्य में इसीका दूसरा नाम कीकट देश लिखा मिलता है ।

मत्स्य—अथवा विराट देश । जैपुर के आस पास का भू भाग । इसमें अलवर भी शामिल था । इसकी राजधानी का नाम वेरात था जो अब बारट के नाम से प्रसिद्ध है । यह जैपुर से ४० मील उत्तर की ओर है ।

मद्रा—रावी और चनाव के बीच का देश जो पंजाब में है ।

मलजाः या मलराः—करूप देश के समीप का देश, जिसे मालदा कहते हैं और जो शाहाबाद—आरा का पश्चिमी भाग है ।

मलय—भारत की मुख्य सप्त मालाओं में से एक । यह मैसूर के पश्चिम भाग से शुरू होती है और ट्रावनकोर राज्य की पूर्वी सीमा बनाती हुई चली जाती है । भवभूति ने इस पर्वतमाला को कावेरी नदी से घिरा हुआ लिखा है । इस पर्वत पर इलायची, कालीमिर्च, चन्दन और सुपाड़ियाँ बहुतायत से उत्पन्न होती हैं ।

मल्ला —इस नाम के दो देश हैं । पश्चिम में मुलतान और पूर्व में हज़ारीबाग का वह भाग जिसमें पारसनाथ पर्वत है और मानभूमि ज़िले का भी कुछ भाग शामिल है ।

महेन्द्र—भारतवर्ष की प्रसिद्ध सप्त-पर्वत-मालाओं में से एक । यह महेन्द्रमाली के नाम से गंजाम ज़िले में प्रसिद्ध है । यह महानदी और गोदावरी के बीच में फैली हुई है ।

महोदय—अथवा कन्यकुब्ज या गाधिनगर । इसका आधुनिक नाम कन्नौज है । सातवी शताब्दी में यह भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध स्थान था ।

मार्कंडेयाश्रम
मार्कण्डेयाश्रम } —गोमती और सरयू नदियों के संगम पर यह आश्रम बसा हुआ है।

मानस—हाटक या लद्दाक की प्रसिद्ध झील का नाम। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुरुओं का हरिवर्ष है। प्राचीन काल में यह स्थान किन्नरो का आवास-स्थान माना जाकर प्रसिद्ध था। और कवियों ने वर्षा काल के आरम्भ में इसे हसो का आश्रयस्थल वतला कर अपने काव्यग्रन्थों में इसका वर्णन किया है।

मालिनी—वह नदी जो अयोध्या से ४० मील की दूरी पर चढाव की ओर सरयू नदी मे मिलती हैं। यहीं पर कण्व ऋषि का आश्रम था।

माहिष्मती—प्रसिद्ध नाम माहेश्वर जो नर्मदा नदी के तट पर इन्दौर से चालीस मील दक्षिण की ओर है।
मिथिला —देखो विदेह के अन्तर्गत।
मुरल —देखो केरल
मेकला: - मेकल अथवा अमरकंटक पर्वत की तलैटी का देश।
मैनाक—सिवालक पर्वत का नामान्तर।
मोदागिरिः—मुंगेर के पास का पर्वत जिसे मुद्गल गिरि कहते हैं और जो भागलपुर ज़िले में है।

र

रैवतक—गिरिनार पर्वत का नाम जो जूनागढ़ में है।
रोही—अफ़ग़ानिस्तान की रोहा नदी।
रोहीतकः—पंजाव का रोहतक ज़िला।

ल

लम्वकाः या लम्पकाः—लामवम नामक देश जो कावुल नदी के उत्तरी तट पर है।

व

वंग—इसे समतट भी कहते है। पूर्वी वंगाल का नाम। किसी समय इसमें टिपरा और गारों भी शामिल थे।
वसोधारा —यह तीर्थ अलकनन्दा नदी के मुहाने पर वदरीनारायण से चार मील उत्तर को ओर है।
वंशगुल्मतीर्थ—यह एक पवित्र कुण्ड का नाम है जो अमरकण्टक की उपत्यका में नर्मदा नदी के मुहाने से साढ़े चार मील पर है।
वलभी—देखो सौराष्ट्र—

वाल्हीक —
वाहीक — } पंजाव में रहने वाली जातियों का समूलीनाम। इनका देश वास्तव में वटाविया या वलख़ था। महाभारत में लिखा है कि इनका देश वह था जो सिन्धनद तथा पंजाव की प्रसिद्ध पाँच नदियाँ से सींचा जाता है; किन्तु यह प्रदेश पवित्र भारतवर्ष के भीतर नहीं, वाहिर था। यह देश उत्तम घोड़ों की उत्पत्ति और हींग की पैदावार के लिये प्रसिद्ध था।

वात्स्याः—गगा यमुना के वीच का दुआव प्रदेश जो प्रयाग से पश्चिम की ओर है और जहाँ एक समय राजा उदयन राज्य करते थे। इसकी राजधानी का नाम कौसाँवी वा (प्रयाग का कोसों) था।

वारणावत—मेरठ ज़िले का वारणाव के नाम से प्रसिद्ध है। यह मेरठ से उत्तर पश्चिम की ओर उन्नीस मील के फासिले पर है।

वितस्ता—पंजाब की झेलम नदी का नाम।

विदर्भाः—विन्ध्य गिरि से दक्षिण, दशार्ण से पश्चिम, गोदावरी से उत्तर और सुराष्ट्र से पूर्व का देश, जो बरार के नाम से आजकल प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में यह एक विशाल राज्य माना जाता था। इसकी विशालता के कारण ही इसको महाराष्ट्र कहते थे। कुण्डिनपुर इसकी राजधानी का नाम था। वर्द्धा नाम की नदी इसको दो भागों में विभक्त करती थी। उत्तर और दक्षिण दो भागों में। उत्तर भाग की राजधानी का नाम अमरावती और दक्षिण भाग की राजधानी का नाम प्रतिष्ठान था।

विदिशा देखो दशार्ण—के अन्तर्गत।

विदेह—मगध के उत्तर, पूर्व स्थित देश का नाम। इसकी राजधानी मिथिलापुरी थी, जिसे जनकपुर भी कहते थे। यह जनकपुर नैपालराज्य में मधुवनी से उत्तर की ओर है। प्राचीन कालीन विदेह राज्य के अन्तर्गत नैपालराज्य का कुछ हिस्सा तथा सीतामढ़ीं, सीताकुण्ड या तिरहुत का उत्तरी और चंपारन का उत्तर-पश्चिमी भाग आदि स्थान अवश्य सम्मिलित होंगे।

विनशनतीर्थ सरहिन्द के रेतीले मैदान का वह स्थान जहाँ सरस्वती नदी विलीन होती है।

विपाशा—पंजाब की व्यास नदी।

विराट—देखो मत्स्य।

वृंदावन—मथुरा से उत्तर-पश्चिम ओर एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो यमुना के वामतट पर बसा हुआ है।

वेत्रवती—वेतवा नदी जो बुंदेलखण्ड में है।

वैतरणी—उड़ीसा में कटक नगर के समीप बहने वाली एक नदी का नाम।

श

शक—भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर रहने वाली जाति विशेष का नाक। सीदियन नाम से इस जाति का परिचय परिवर्ती इतिहासकारों ने दिया है।

शतद्रुः—पंजाब की सतलज नदी का नाम।

शरावती—गुजरात की सांभरमती नदी का नाम।

शालग्राम क्षेत्र—नैपाल में गण्डकी नदी के मुहाने के समीप। मैसूरराज्य में भी इस नाम का एक स्थान है।

शुक्तिमत्—भारत की मुख्य सप्त पर्वतमालाओं में से एक का नाम। यह कहाँ पर है इस नाम को ठीक ठीक पता नहीं बतलाया जा सकता; किन्तु कुछ लोगों का मत है कि नैपाल से दक्षिण हिमालय की जो एक सहायक पर्वत श्रेणी है वही शुक्तिमत् नाम्नी पर्वतमाला है।

शुक्तिमती—उड़ीसा की सुवर्णरेखा या बुंदेलखड की वेतवा नदी का नाम।

शुक्तिमान्—उज्जैन निकटस्थ पश्चिमीय विन्ध्य-पर्वत-माला।

शूरसेना—मथुरा नगरी जिस राज्य की राजधानी थी, उस राज्य का नाम।

शूर्पारक—बम्बई हाते के बीजापुर ज़िले में जमखडी के समीप का स्थान। यहाँ पर जामदग्न्य परशुराम जी रहते थे। इस स्थान का नामान्तर शूरपल्य है।

शृङ्गवेरपुर—सिगरौर जो गुह की राजधानी थी। यह स्थान प्रयाग से उत्तर-पश्चिम की ओर १८ मील के फासले पर गंगा के तट पर है।

श्रवास्ती—उत्तर कोसल राज्य की राजधानी जहाँ लव राज्य करते थे। रघुवंशकार ने इसीका नाम शरावती लिखा है अयोध्या से उत्तर साहत माहत नाम का स्थान ही प्राचीन कालीन श्रावस्ती है। इसके नामन्तर धर्मपत्तन और धर्मपुरी भी हैं।

शोण—सोन नद का नाम।

स

सदानीरा—करतोया नाम की नदी जो अवध में है और जो रंगपुर एवं दीनाजपुर के समीप होकर बहती है।

सह्य—भारत की प्रधान सप्त पर्वतमालाओं में से एक। इसका नाम सह्याद्री है।

सिन्धुदेश—वह देश जो सिन्धुनद और झेलम नदी के बीच में बसा हुआ है।

सुह्य—वंग देश के पश्चिम का देश। इसकी राजधानी ताम्रलिप्त थी जिसके नामान्तर तामलिप्त, दामलिप्त, ताम्रलिप्ती और तमालिनी भी हैं। इसका आधुनिक नाम तमलूक है जो कोसो नदी के दक्षिण तट पर बसा हुआ है। प्राचीनकाल में यह समुद्र तट पर थी और व्यापार का केन्द्र थी सुह्यो को राढ भी कहते हैं। यह पश्चिमी बंगाल के रहने वाले हैं।

सेकाः—उस देश का नाम जो चंबल से दक्षिण और उज्जैन से उत्तर की ओर है।

सौराष्ट्र—इसका नामान्तर आनर्त है। आधुनिक काठियावाड़ प्रायद्वीप ही प्राचीन कालीन सौराष्ट्र या आनर्त देश है। प्राचीन द्वारकापुरी आधुनिक द्वारकापुरी से ६५ मील के फाँसले पर मधुपुर से दक्षिण-पूर्व की ओर थी। उसके ही समीप रेवतक पर्वत, जो अब जूनागढ में गिरिनार के नाम से प्रख्यात है। द्वारका के बाद इसकी दूसरी राजधानी वल्लभी थी। इसके खडहर भावनगर से दस मील के फांसले पर उत्तर-पश्चिम की ओर विलवी में मिले हैं। प्रभास नामक प्रसिद्ध झील इसी देश में थी और समुद्र तट के निकट थी

सौवीर—सिन्धु देश के समीप का प्रदेश।

स्रुघ्न—एक नगर का नाम जो पाटलिपुत्र से कुछ हटकर था।

ह

हस्तिनापुर—राजा हस्तिन द्वारा स्थापित एक प्रसिद्ध नगर। यह कौरवो की राजधानी थी। दिल्ली से उत्तर-पूर्व और मेरठ से २२ मील के अन्तर पर गंगा किनारे पर यह नगरी बसी हुई थी।

हेमकूट—अनुमानतः यह हिमालय के उत्तर ओर अथवा हिमालय और मेरु पर्वत के बीच में है। यह किम्पुरूप वर्ष की एक सीमा भी है।

परिशिष्ट ४

भूतपूर्व विद्वान् और संस्कृत के ग्रन्थकार

अभिनव गुप्त—यह एक प्रसिद्ध आलङ्कारिक संस्कृत के विद्वान् थे। यह शैव थे—क्योंकि इनके बनाये ग्रन्थों में से शैवदर्शन भी एक ग्रन्थ है। यह काश्मीर के रहने वाले थे। यह मम्मट भट्ट के गुरु थे। इनके बनाये ग्रन्थों की नामावली यह है—

१ भैरव स्तोत्र
२ प्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी
३ बृहती वृत्ति
४ तंत्रालोक
५ बोध पंचाशिका
६ लोचन [यह आनन्दवर्धन कृत ध्वन्यालोक की टीका है]

इसी ग्रन्थ में अभिनव गुप्त ने अपने गुरु काव्यकौतुक के रचयिता तौल का नामोल्लेख किया है। इनका अस्तित्व काल सन् ९९३ से १०१५ ई० के बीच माना गया है।

अमरसिंह—संस्कृत भाषा में नाम लिङ्गानुशासन नामक कोश के रचयिता। इसी कोश का दूसरा नाम अमर कोश है। कोई इन्हें जैन और कोई इन्हें बौद्ध बतलाता है। पाश्चात्य विद्वानों का अनुमान है कि गया के बौद्ध मन्दिर के निर्माणकर्त्ता ये ही हैं। यदि यह अनुमान ठीक मान लिया जाय तो अमरसिंह खीष्टीय पाचवी शताब्दी के माने जा सकते हैं। कनिंहम आदि पुरातत्ववेत्ता विद्वानों ने गया का बौद्ध मन्दिर पांचवी शताब्दी का बना माना है। एक श्लोक में इनका नाम अमरु कवि भी पाया जाता है। कदाचित् नवरत्न वाले अमरसिंह भी यही रहे हों।

अमरुकवि—इनका बनाया अमरुशतक नामक शृङ्गाररस का एक ग्रन्थ देखने में आता है। इसके श्लोक सरस और मनोहर हैं इनके बारे में यह जनश्रुति प्रचलित है कि, जिस समय भगवान्शङ्कराचार्य कश्मीर गये, उस समय वहाँ वालों ने इन्हे संन्यासी समझ इनसे शृङ्गार रस की कविता बनाने को कहा। तब वे योगशक्ति द्वारा अमरु नामक राजा के शरीर में पैठे और उन्होंने अमरुशतक बनाया। यदि इस जनश्रुति पर विश्वास न किया जाय और शङ्कराचार्य और अमरुकवि एक ही व्यक्ति न माने जायँ तो भी अमरु कवि उनके समकालीन अवश्य थे। आर्यविद्यासुधाकर के मतानुसार शङ्कराचार्य का समय सन् ७८८ ई० से ८२० ई० तक प्रमाणित होता है। के० टी० तैलङ्ग के मतानुसार शङ्कराचार्य ५९० ई० में विद्यमान थे। अतएव यह कवि भी सातवीं और आठवीं सदी के बीच कश्मीर में रहे होंगे। पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने लिखा है कि संस्कृत, के उपलब्ध खण्ड काव्यों में अमरुशतक ही सर्वोत्तम काव्य है। इसकी रचना ही इसके प्राचीनत्व का प्रमाण है। काव्यप्रकाश और कुवलयानन्द में अमरुशतक के श्लोक स्थान स्थान पर उद्धृत किये गये हैं।

उनमें से एक श्लोक उदाहरणस्वरूप नीचे उद्धृत किया जाता है :—

हारोऽयं हरिणाक्षीणां
लुंठति स्तनमण्डले।

मुक्तानामप्यवस्थेयं
के वयं स्मर किङ्कराः॥

आनन्द वर्द्धन—यह कवि कश्मीर देश के रहने वाले थे और अलङ्कारशास्त्र के एक मर्मज्ञ विद्वान् थे। इनके बनाये हुए मुख्य ग्रन्थों में ये हैं:—

१ काव्यालोक
२ ध्वन्यालोक
३ सुहृदयालोक

कल्हण ने अपनी राजतरङ्गिणी में जहाँ मुक्ताकण और शिवस्वामी को अवन्तिवर्मा के राज्य में विद्यमान बतलाया हैं, वहीं पर आनन्दवर्द्धन का भी नामोल्लेख किया है। अवन्तिवर्मा सन् ८५५ से ८८० ई० तक रहे। अतएव यही समय आनन्दवर्द्धन का भी मानना पडता है। इन्हीं के समकालीन कल्लट और रुद्रट भी थे।

आर्यक्षेमीश्वर—चण्डकौशिक नाम का नाटक इन्हीं प्रसिद्ध कवि का बतलाया जाता है। इस नाटक का उल्लेख साहित्यदर्पण को छोड अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं मिलता। अतएव इनका होना सन् १४६७ ई० के पूर्व मानना पडता है। इन्होंने अपने नाटक में लिखा हैं कि राजा महीपाल देव के आज्ञानुसार इस नाटक का अभिनय किया जाता हैं। साथ ही इसी नाटक के अन्त में अपने को कार्तिकेय राजा का सभासद् होना लिखा है। बंगाल के पालवंशीय राजाओं में से एक राजा का नाम महीपाल भी था। इसके पिता का नाम (द्वितीय) विग्रहपाल और इसके पुत्र का नाम नैपाल था। महीपाल देव का समय सन् १०२६ से १०४० ई० तक माना गया है। अतएव आर्यक्षेमीश्वर का समय इसीके कुछ आगे पीछे होना चाहिये।

आर्यभट्ट—यह एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्र थे। आर्यसिद्धान्त नाम का ज्योतिष ग्रन्थ इन्हींका बनाया हुआ है। यह सन् ४७६ ई० में कुसुमपुर नामक स्थान में उत्पन्न हुए थे। इनका बनाया बीजगणित का भी एक ग्रन्थ है। इन्होंने सौर केन्द्रिक मत को भी पुष्ट किया है।

उदयनाचार्य—यह एक प्रसिद्ध नैयायिक पण्डित थे। इनका निवासस्थान मिथिला था और एक बार इनका शास्त्रार्थ नैषध-चरित के रचयिता श्रीहर्ष के पिता के साथ हुआ था। श्रीहर्ष का विद्यमान काल सन् ११६३ से ११७७ ई० के लगभग माना गया है। अतएव उदयन का समय इससे कुछ पहिले मानना अनुचित न होगा। उदयनाचार्य के रचित ग्रन्थों के नाम ये हैं —

१ किरणावली
२ न्यायकुसुमाञ्जलि
३ आत्मतत्व विवेक
४ न्यायपरिशिष्ट
५ न्यायवार्तिक तात्पर्य परिशुद्धि

नैयायिक श्रीधर ने उदयन की किरणावली देख कर, सन् ९९१ ई० में प्रशस्तपादभाष्य पर "न्यायकन्दली" टीका लिखी थी। अतएव लोगो का अनुमान हैं कि, उदयनाचार्य सन् ९९१ के पूर्व रहे होंगे।

कहा जाता है, कि उदयनाचार्य ही ने बौद्धों के धर्म को ऐसा कर दिया कि, फिर उसका विशेष प्रचार इस देश में न हो पाया। यदि श्रीहर्ष के पिता के साथ इन्हीं उदयनाचार्य के शास्त्रार्थ की बात ठीक हो? तो उनका समय न्याय-कन्दली-कार के पूर्व होना कठिन है।

उद्भट—अलङ्कार शास्त्र पर लिखने वाले प्राचीन लेखकों में यह एक प्राचीन लेखक बतलाये जाते हैं। काश्मीर के राजा जयपीड के दरबार के यह सभापण्डित थे। इनका काल ७७९—८१३ ई० माना जाता है।

उवट या उव्वट—यह कश्मीर-निवासी थे और इन्होंने चारों वेदों पर भाष्य लिखा है। पातञ्जली व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार कैयट और औयट या उव्वट काव्यप्रकाशकार मम्मट के कनिष्ठ भ्राता थे। उव्वट ने वाजसनेयी संहिता के भाष्य में लिखा है:—

ऋष्यादींश्च पुरस्कृत्य
अवन्त्यामुव्वटो वसन्।
मन्त्रभाष्यमिदं चक्रे
भोजे राष्ट्रे प्रशासति॥

इस श्लोक को देख कर अनुमान करना पड़ता है कि उव्वट अवन्ती में राजा भोज के राज्य काल में मौजूद थे। किन्तु यह अपने पिता का नाम वज्रट बतलाते हैं और मम्मट के पिता का नाम जैयट था। यह भी सन्देह होता है कि जब मम्मट ने भोजरचित सरस्वती कण्ठाभरण के श्लोकों को काव्यप्रकाश में उद्धृत किया है, तब मम्मट का भोज के पीछे होना सिद्ध होता है। अतएव उनके छोटे भाई उव्वट, भोज के समकालीन क्योंकर हो सकते हैं? हो सकता है। मम्मट और भोज दोनों समकालीन रहे हों और यह मम्मट, उव्वट के सगे भाई न रहे हों और वज्रट के योग्य पुत्र हों। राजा भोज का समय सन् ९९६ से ११५३ ई० तक माना जाता है। अतएव उव्वट सन् ईस्वी की बारहवीं शताब्दी में रहे होंगे।

उमापतिधर—श्रीहरिमोहन प्रामाणिक ने लिखा है कि श्रीमद्भागवत की भावार्थदीपिका नाम्नी टीका पर जो वैष्णवतोषिणी टीका लिखी गयी है, उसमें एक स्थान पर लिखा है:—

"श्री जयदेवसहचरेण महाराज लक्ष्मणसेन मंत्रवरेणोपामतिथरेण।"

इससे प्रकट होता है कि, उमापतिधर नाम के एक कवि बंगाल के सेनवंशीय राजा लक्ष्मणसेन के पुत्र थे। जिन लक्ष्मणसेन ने सन् १११९ ई० में लक्ष्मणसेन संवत् चलाया था, सम्भवतः वह लक्ष्मणसेन ये ही थे। इन्हीं लक्ष्मणसेन के समकालीन जयदेव कवि हुए, जिन्होंने गीतगोविन्द बनाया था। उमापतिधर का नाम गीतगोविन्द में भी आया है। यथा—

वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः
सन्दर्भशुद्धिं गिराम्।
जानीते जयदेव एव शरणः
श्लाघ्यो दुरूहद्रुते॥"

इस प्रमाण से उमापतिधर और जयदेव, राजा लक्ष्मणसेन के समकालीन सिद्ध हो जाते हैं और राजा लक्ष्मणसेन का समय सन् ११११ ई० है। अतएव खीष्टीय १२वीं शताब्दी के आरम्भ और मध्य में सम्भवतः कवि उमापतिधर मौजूद रहे होंगे।

यद्यपि उमापतिधर का विरचित कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ न तो देखने ही में आया और न सुनने ही में, तथापि इनके रचित और शिला पर खुदे ३६ श्लोक एशियाटिक सोसाइटी में रखे हुए हैं।

कल्हण—यह काश्मीरी थे और राजा जयसिंह के समय में मौजूद थे। इन्होंने कश्मीर का इतिहास राजतरङ्गिणी नामक ग्रन्थ में लिखा है। उसमें कल्हण ने एक स्थान पर लिखा है—

लौकिकेऽब्दे चतुर्विंशे
शककालस्य साम्प्रतम् ।
सप्तत्यभ्यधिकं यातं
सहस्रं परिवत्सराः ॥

इससे स्पष्ट विदित होता है कि, ये सन् ११४८ ई० में विद्यमान थे। अनेक लोगों का मत है कि भारतवर्ष में शृङ्खलाबद्ध प्राचीन इतिहास यदि कोई विश्वास योग्य है, तो कल्हण-रचित राज-तरङ्गिणी ही है।

कैयट / कय्यट (१) यह महाभाष्य-प्रदीप के रचयिता थे। सुना जाता है कि, ये काव्यप्रकाशकार मम्मट के छोटे भाई हैं और उव्वट भी इनके छोटे भाई थे। महाभाष्यप्रदीप में लिखा है—"कैयटो जैयटात्मजः" अर्थात् कैयट, जैयट के पुत्र थे। ये ही जैयट, मम्मट के पिता थे। जैयट, उव्वट, वज्रट, रुद्रट, धर्म्मट मम्मट कल्लट, भल्लट, बिल्हण, कल्हण आदि नाम उस समय काश्मीरियों ही के रखे जाते थे। इससे इनका काश्मीरी होना सिद्ध होता है। इनके विषय में काश्मीर में जो कथानक प्रचलित है उसका उल्लेख सुभाषितावली की भूमिका में पीटर्सन साहब ने किया है। कय्यट ने बड़े परिश्रम से महाभाष्य पढ़ा था, उनका अभ्यास महाभाष्य में इतना चढ़ा बढ़ा था कि, वे विद्यार्थियों को समग्र महाभाष्य कण्ठाग्र ही पढ़ा सकते थे। चन्द्राचार्य ने महाभाष्य के जिन कठिन स्थलों को न समझने के कारण छोड़ दिया था, वे स्थल भी कैयट को स्पष्ट होगये थे। कहा जाता है कि, जब दक्षिणदेश से कृष्णभट्ट इनका दर्शन करने गये, तब कय्यट कुल्हाडी से लकडियाँ चीर रहे थे और विद्यार्थियों को पढ़ाते भी जाते थे। यह देख कृष्णभट्ट को बड़ा विस्मय हुआ। तदनन्तर इन कृष्णभट्ट ने तत्कालीन काश्मीरनरेश से कैयट को दक्षिणा में धनधान्य दिलाना चाहा, किन्तु इन त्यागी पण्डित ने राजधन लेना अस्वीकार किया। पीछे कैयट काश्मीर छोड़ काशी चले आये और काशी के पण्डितों को शास्त्रार्थ में परास्त किया। कैयट ने महाभाष्यप्रदीप की रचना काशी ही में की थी। कैयट पामपुर के रहने वाले थे। यदि यह जनश्रुति सत्य है तो कैयट, अजितापीड़ से पीछे हुए। क्योंकि पामपुर को अजितापीड ही ने बसाया था। अजितापीड ने काश्मीर में सन् ८४४ से ८८६ ई० तक राज्य किया था। किसी किसी विद्वान् का यह भी मत है कि, कैयट १२वीं सदी से आगे के नहीं हैं। सायणमाधव के पूर्ववर्ती किसी लेखक ने इनके बारे में कुछ भी नहीं लिखा। किन्तु जब यह उव्वट और मम्मट के भाई बतलाये जाते हैं, तब इनका समय ११वीं सदी मानना ही युक्तिसङ्गत है।

कैयट / कय्यट (२) यह भी संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् हो गये हैं और नाम से काश्मीरी माने जाते हैं। इन्होंने सन् ९७७ ई० में आनन्दवर्द्धनरचित देवीशतक की टीका लिखी है। इनके पिता का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम वल्लभदेव था। यह कवि भीमगुप्त के राजत्व काल में जीवित थे। इनके रचे हुए अन्य किसी भी ग्रन्थ का पता नहीं चलता।

कल्याणवर्म्मा—यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनका रचित "सारावली" नामक एक ज्योतिष का ग्रन्थ है, जिससे विदित होता है कि, ये वराहमिहिर से पीछे उत्पन्न हुए होंगे। यह जाति के बघेल क्षत्रिय थे और देवग्राम में रहा करते थे। ब्रह्मगुप्त के ग्रन्थ में इनका नाम आया है। अतएव ये ब्रह्मगुप्त के समकालीन वा उनसे कुछ पूर्व विद्यमान रहे होंगे। पण्डित सुधाकर द्विवेदी के मतानुसार इनका समय सन् ९७८ ई० के लगभग है।

कविराज—"राघवपाण्डवीय" नामक श्लेषात्मक काव्य के रचयिता यही हैं। इनकी गणना सुबन्धु और बाणभट्ट के साथ बहुधा की जाती है। निजरचित ग्रन्थ में यह अपने को आसाम के अन्तर्गत

जयन्तीपुर के राजा कामदेव के सभासद बतलाते हैं। राजा कामदेव सन् ११८१ ई० में वर्तमान था। राघवपाण्डवीय में मुञ्ज नाम के राजा का उल्लेख मिलता है। इससे विदित होता है कि मालवा के राजा भोज के पितृव्य मुञ्ज की अपेक्षा यह कवि अर्वाचीन हैं। एक ऐसा भी श्लोक सुना जाता है जिसके अनुसार कविराज उमापतिधर, जयदेव आदि कविगण एक ही समय के जान पडते हैं। वह श्लोक इस प्रकार है:—

गोवर्द्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः।
कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्य च॥

यह लक्ष्मणसेन बंगाल का सेनवंशी राजा है और सन् १११६ ई० में विद्यमान था। सो कविराज का समय खीष्टीय १२वीं सदी अनुमान किया जाता है। कुछ लोगों का यह भी अनुमान है कि कविराज केवल उपाधि है, नाम कुछ और होगा। जो हो, इनका जहाँ कहीं उल्लेख किया गया है वहाँ इनका नाम कविराज ही पाया जाता है। पद्यावली में इनका बनाया एक श्लोक आया है। राघवपाण्डवीय के निम्न लिखित श्लोक से भी जान पड़ता है कि, इनका नाम कविराज ही था। यह श्लोक इस प्रकार है:—

सुबन्धुर्बाणभट्टश्च
कविराज इति त्रयः।
वक्रोक्तिभङ्गि निपुणाः
चतुर्थो विद्यते न वा॥

एक श्लेषात्मक श्लोक बनाना कठिन काम है। इन्होंने तो १३ सर्ग का समूचा राघवपाण्डवीय काव्य ही श्लेषात्मक रचना से परिपूर्ण कर दिया है। इनके पाण्डित्य का क्या कहना है। इनके पाण्डित्य का नमूना उस श्लोक में मिल जाता है, जिसमें इन्होंने एक ही श्लोक में रामायण और महाभारत दोनो की कथाएँ एक साथ निबाही हैं। उस कवि ने अपने ग्रन्थ में स्वय लिखा है:—

पदमेकमपि श्लिष्टं
वक्तुं भूयान् परिश्रमः।
कथाद्वयैक्य निर्वोढुः
किंधरापतितोऽधिकम्॥

कात्यायन—कुछ लोग इन्हें वररुचि भी कहते हैं। किन्तु यह वररुचि उन वररुचि से सर्वथा भिन्न हैं, जो महाराज विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से थे। कात्यायन वैदिक मुनि हैं और पाणिनि के लगभग समकालीन भी थे। इनके रचित ग्रन्थों के नाम ये हैं:—

१ वाजीसूत्र
२ क्रमप्रदीप
३ पाणिनि व्याकरण पर वार्तिक
४ प्राकृत व्याकरण

आदि कई ग्रन्थ हैं। कथासरित्सागर में लिखा है कि, कात्यायन बचपन ही से विचक्षण बुद्धिमान् थे। वे नाट्यशाला में जब कभी कोई अभिनय देखते, तो घर लौटकर सारे अभिनय को ज्यों का त्यों अपनी माता के सामने दुहरा दिया करते थे। यज्ञोपवीत होने के पूर्व वे व्याडि आदि मुनियों से सुने हुए प्रातिशाख्य को कण्ठाग्र दुहरा दिया करते थे। यह वर्षमुनि के शिष्य थे और वेदवेदाङ्ग में ऐसे निपुण थे कि, पाणिनि भी इनकी समानता न कर सके, पर महादेव जी की सहायता से पाणिनि ने इन्हें जीता था। यह राजा नन्द के मन्त्री थे। राजा नन्द पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त के पिता हैं। चन्द्रगुप्त का राज्यकाल सन् ई० के पूर्व चतुर्थ शताब्दी में स्थिर होता है। अतएव खीष्टीय और चौथी शताब्दी या उसके भी कुछ पूर्व कात्यायन का समय हो सकता है। रमेशचन्द्रदत्त के मतानुसार पाणिनि का समय खीष्ट से ८०० वर्ष पूर्व जान पड़ता है। उनके अनुमान से कात्यायन पाणिनि के समकालीन होने के कारण खीष्ट से पूर्व नवीं सदी में रहे होंगे। डाक्टर भाण्डारकर, कात्यायन का समय खीष्टीय सन् से पूर्व चौथी सदी के पूर्वार्द्ध में स्थिर करते हैं।

कात्यायन का जन्म कौशाम्बी में हुआ था। इनके पिता का नाम सोमदत्त था। वेद की सर्वानुक्रमणी भी इन्हीं कात्यायन मुनि की बनायी हुई है। महाराज नन्द के समकालीन और उनके मंत्री मानने से कात्यायन मुनि का समय खीष्ट के पूर्व ३१५ वर्ष से (जब कि चन्द्रगुप्त राज्य पर बैठा) भी पहले स्थिर होता है।

कामन्दक—इनका बनाया कामन्दकीय नीतिसार नामक एक ग्रन्थ है, जिसमें इन्होंने चाणक्य का नामोल्लेख किया है। इससे निश्चय होता है कि, ये चाणक्य की अपेक्षा अर्वाचीन है। चाणक्य वही हैं, जिसने मगध के राजा नन्द का विनाश कर, चन्द्रगुप्त को पाटलिपुत्र के राजसिंहासन पर बिठाया और इसीके द्वारा मौर्यवंश की जड़ जमी। निदान चाणक्य का समय खीष्ट से ३१५ वर्ष पूर्व स्थिर होता है। अतएव कामन्द को उनसे थोड़ा पीछे वा खीष्ट से पूर्व चौथी सदी के पिछले भाग में मान सकते हैं। क्योंकि लोग कामन्दक की गणना प्राचीन शास्त्रकारों में करते हैं।

कालिदास (१) कवि राजशेखर के समय तक तीन कालिदास प्रसिद्धि पाचुके थे। इनमें प्रथम कालिदास वे रहे होंगे जिनके बनाये रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत, ऋतुसंहार, विक्रमोर्वशी, अभिज्ञान शाकुन्तल आदि हैं। सन् ६३७ ई० में लिखे गये शिलालेख में भारवि के साथ कालिदास का नाम प्रसिद्ध कवियों में पाया जाता है। यही कालिदास राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक रहे होंगे। सन् ५८८ ई० के महानामन वाले बौद्धगया के लेख में रघुवंश के श्लोक से मिलता हुआ एक श्लोक पाया गया है। निदान बहुत सम्भव है कि कालिदास का रघुवंश सन् ५८८ ई० के पूर्व रचा गया हो। प्रो० कीलहार्न का मत है कि, ऋतुसंहार के रचयिता कालिदास सन् ४७२ ई० से नवीन नहीं हो सकते। क्योंकि ऋतुसंहार का एक श्लोक कुमारगुप्त वाले मदसौर के शिलालेख से बहुत मिलता जुलता है।

कालिदास (२) कहा जाता है कि, कवि भवभूति अपने उत्तरचरित को कालिदास को दिखलाने ले गये। उस ग्रन्थ को देख कालिदास अति प्रसन्न हुए, किन्तु उन्होंने भवभूति से—"अविदितगतयामा रात्रिरेवं व्यरंसीत" —में व्यवहृत "एवं" के स्थान में "एव" करवा दिया। यदि यह कथानक सत्य हो तो भवभूति के समकालीन यह कालिदास रहे होंगे। शिशुपालवध के रचयिता माघ कवि भी लगभग इसी समय में रहे होंगे। सम्भवतः जान पड़ता है कि, इन कालिदास और माघ ने मिलकर कोई काव्य बनाया है। मालविकाग्निमित्र नाटक और श्रुतबोध कदाचित् इन्हीं कालिदास का बनाया हो। ये श्रृङ्गाररस लिखने में विशेष पटु थे। इनका समय ७४८ ई० के लगभग रहा होगा।

कालिदास (३) राजा भोज के सभासद कालिदास यही हैं। कालिदास और भोज सम्बन्धी अनेक प्रचलित कथानकों का सम्बन्ध इन्हीं कालिदास से हो तो आश्चर्य नहीं। राजा भोज धारा नगरी के रहने वाले मालवाधिपति थे और उनका समय लोग सन् ९९६ ई० से लेकर सन् १०५१ ई० तक मानते हैं। निदान यह कालिदास भी ११वीं सदी के पूर्वार्द्ध में माने जा सकते हैं।

कालिदास के सम्बन्ध में बहुत कुछ वादविवाद हो चुका है। अतएव इनके सम्बन्ध में अधिक लिखना व्यर्थ है। जान पड़ता है उपरोक्त इन्हीं तीनों कालिदासों का स्मरण राजशेखर को रहा होगा। विद्धशालभञ्जिका, बालरामायण आदि के रचयिता राजशेखर ये नहीं हैं, जिन्होंने कि तीन कालिदासों का उल्लेख किया है। विद्धशालभञ्जिका वाले राजशेखर का समय सन् ७६१ ई० है और दूसरे का समय लोग १४वी सदी बतलाते हैं। अतएव भोज के समकालीन कालिदास का उल्लेख इन्हीं दूसरे राजशेखर से सम्बन्ध रखता है।

कुमारिलभट्ट—यह एक प्रसिद्ध मीमांसक थे और इनका जन्म दक्षिण प्रान्त में हुआ था। बर्नेल साहब के मतानुसार इनका समय सन् ६५० से ७०० ई० तक आता है। किन्तु के० टी० तैलंग ने युक्तिपूर्वक इसका खण्डन करने की चेष्टा की है और यह सिद्ध करना चाहा है कि भगवान् शङ्कराचार्य और कुमारिल भट्ट ख्रीष्टीय छठी सदी के उत्तरार्द्ध में विद्यमान रहे होंगे। यदि इनका अनुमान ठीक हो तो शङ्कराचार्य का जन्म सन् ७४८ ई० में हुआ—केरलोत्पत्ति की यह बात अयथार्थ अथवा सन्दिग्ध हो जाती है। कुमारिल का रचा तंत्रवार्तिक एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

कुल्लूकभट्ट—यह एक विख्यात स्मृतिशास्त्रवेत्ता हैं। मनुस्मृति की टीका के प्रारम्भ में इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

> गौडे नन्दन वासिनाम्नि सुजनैर्वन्द्ये वरेन्द्र्यां कुले
> श्रीमद्भट्टदिवाकरस्य तनयःकुल्लूक भट्टोऽभवत् ॥
> काश्यामुत्तर वाहिजन्हुतनया तीरे समं पण्डितैः
> तेनेयं क्रियते हिताय विदुषामन्वर्थमुक्तावली ॥१॥

अर्थात् गौड देश में सज्जनों द्वारा मान्य नन्दनवासी नामक जो वारेन्द्र श्रेणी के ब्राह्मणों का कुल है, उसमें श्रीमान् भट्ट दिवाकर उत्पन्न हुए। इन भट्ट दिवाकर के पुत्र का नाम कुल्लूक भट्ट है। जिसने पण्डितों के साथ काशी में, जहाँ कि गंगा नदी उत्तरवाहिनी हैं, निवास कर, विद्वज्जनों के उपयोग के लिये यह मन्वर्थ मुक्तावली बनायी।

विश्वकोष नामक अभिधान में उदयनाचार्य भादुड़ी को ख्रीष्टीय १४वीं शताब्दी में वर्तमान और कुल्लूकभट्ट का समसामयिक भी लिखा है। श्रीयुत त्रैलोक्यनाथ भट्टाचार्य ने प्रसिद्ध स्मृतिशास्त्रवेत्ता कुल्लूकभट्ट के भाई का नाम पुरुषोत्तम वेदान्तवागीश बतलाया है। भट्टाचार्य महाशय का कथन है कि, पुरुषोत्तम वेदान्तवागीश की १०वीं पीढ़ी में राजा कंसनारायण हुए। यह राजा कंसनारायण ख्रीष्टीय १६वीं सदी के बिचले भाग में राजशाही ज़िले में उत्पन्न हुए थे। यदि एक एक पीढ़ी के लिये पचीस वर्षों का भी समय रखा जावे तो बहुत सम्भव है कि, ख्रीष्टीय १४वीं शताब्दी में कुल्लूक भट्ट रहे हों। अतएव विश्वकोष के प्रमाणानुसार कुल्लूक भट्ट का समय ख्रीष्टीय १४वीं सदी ही निष्पन्न होता है।

कृष्णमिश्र—"प्रबोधचन्द्रोदय" नामक नाटक के रचयिता यही हैं। इस नाटक से विदित होता है कि, चन्देल राजा कीर्तिवर्मा ने चेदि के कर्णदेव को युद्ध में हराया। बनारस में इस राजा कर्ण के नाम के लेख

ताम्रपत्र पर खुदे मिलते हैं। राजा कर्ण का समय सन् १०४२ ई० में मिलता है। हेमचन्द्र और विल्हण के ग्रन्थों से यह विदित होता है कि, और और राजाओं ने भी इसे पराजित किया है। कर्णदेव को पराजित करने वाले राजा कीर्तिवर्मदेव सन् १०१० ई० से ११९६ ई० तक विद्यमान थे और उन्हींके सभासद होने के कारण कृष्णमिश्र का भी समय ११वी सदी का अन्तिम भाग माना जा सकता है।

क्षपणक—महाराज विक्रमादित्य की सभा में जो नवरत्न थे उनमें यह द्वितीय है। नाम से विदित होता है कि यह भी अमरसिंह की तरह बौद्ध या जैन रहे होंगे। इनके बनाये किसी ग्रंथ का नाम सुनने मे नहीं आया; किन्तु काव्यसंग्रह में जो नवरत्न सम्बन्धी श्लोक उठाये गये हैं उनमें से निम्न उद्धृत श्लोक क्षपणक विरचित है:—

> नीतिर्भूमिभुजां नतिर्गुणवतां ह्रीरङ्गनानां रतिः,
> दम्पत्योः शिशवो गृहस्य कविता बुद्धेः प्रसादो गिराम्।
> लावण्यं वपुषः श्रुतिः सुमनसां शान्तिर्द्विजस्य क्षमा,
> शक्तस्य द्रविणं गृहाश्रमवतां शीलं सतां मण्डनम्॥

अर्थात् राजाओं को नीति, गुणियों को नम्रता, स्त्रियों को लज्जा, दम्पति का विलास, घर के बाल बच्चे, बुद्धि की कविता, वचन की मिठाई, देह की सुन्दरता, सज्जन का वेदज्ञान, ब्राह्मण को शान्ति, सामर्थवान् को क्षमा, गृहस्थों का धन वैभव और सज्जनों का शील भूषण है, अर्थात् शोभा बढ़ाने वाला आभूषण है।

इस एक ही श्लोक से क्षपणक की कवित्व शक्ति का भली भाँति परिचय मिल जाता है। विक्रम के सभारत्न होने से इनका काल वही खीष्टीय छठवीं सदी का मध्यभाग निर्णीत होता है।

क्षीरस्वामी—यह काश्मीरनरेश महाराज जयापीड़ के शासनकाल में विद्यमान थे। जयापीड का शासनकाल ७०० शाके अर्थात् सन् ७७९ ई०—८१३ ई० तक दिया है और यह भी लिखा है कि क्षीरस्वामी राजा जयापीड़ के गुरु थे। क्षीरस्वामी ने अमरकोश पर टीका लिखी है और धातुपाठ तथा पाणिनि-व्याकरण से सम्बन्ध रखने वाले कई एक ग्रन्थ भी रचे हैं। "कुट्टिनीमतम्" के रचयिता दामोदर गुप्त और अलङ्कारशास्त्र के बनाने वाले भट्टोद्भट इनके समकालीन थे।

क्षेमेन्द्र } क्षेमेंद्र }—यह एक प्रसिद्ध काश्मीरी कवि हैं। पीटर्सन साहब ने लिखा है कि सन् १०५० ई० में राजा अनन्त के राज्यकाल में क्षेमेन्द्र ने समयमातृका बनायी। बूलर साहब के मतानुसार क्षेमेन्द्र का विद्या सम्बन्धी जीवन सन् १०२५ ई० से सन् १०७५ ई० तक रहा होगा। निदान इनका समय ११वीं सदी ही जान पड़ता है। इनके बनाये २८ ग्रंथ हैं; जिनमें कई एक ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। उनमें—

१ औचित्य-विचार-चर्चा
२ कला-विलास
३ दर्पदलन
४ कविकण्ठाभरण
५ चतुर्वर्गसंग्रह
६ चारुचर्या
७ बृहत्कथामंजरी

८ भारतमञ्जरी
९ समयमातृका
१० सुवृत्ततिलक

बहुत प्रसिद्ध हैं।

इनके ग्रन्थों के पाठ से मालूम होता है कि, ये विलक्षण कवि और व्यवहार में बड़े कुशल थे। इनके ग्रन्थों में कायस्थों और मुसलमानो की खूब निन्दा है। समयमातृका ग्रन्थ का विषय दामोदर गुप्त के कुट्टिनीमतम् सरीखा है। कदाचित् उसीके परतों पर लिखा गया है। इनका एक ग्रन्थ "अवदान कल्पलता" है। इसमें बौद्धों के महात्मा महापुरुषों का हाल दिया गया है। संस्कृत इसकी बड़ी स्वच्छ, प्रसादगुणविशिष्ट एवं उपदेशात्मक है। यह ग्रंथ पाली अक्षरों में तिब्बत में था। कलकत्ते की एशियाटिक सोसाइटी ने इसे पाली और संस्कृत दोनों अक्षरों में छपवा दिया है।

गंगादास / गङ्गादास — (२) "छन्दोमंजरी" इन्हींकी बनायी हुई है। ग्रन्थ के आरम्भ में और अन्त में कवि ने अपना परिचय दिया है। यथाः—

देवं प्रणम्य गोपालं
वैद्य गोपालदासजः।
सन्तोषातनयश्छन्दो
गंगादास स्तनोत्यदः॥

अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम कर, गोपालदास वैद्य का पुत्र मैं गंगादास, जिसकी माता का नाम सन्तोषा है, इस छन्दोमंजरी नामक ग्रन्थ को बनाता हूँ।

और ग्रन्थ के अन्त में·—

सर्गे षोडशभिः समुज्वलपदैः नव्यार्थभव्याशयैः
येनाकारि तदच्युतस्य चरितं काव्यं कविप्रीतिदम्।
कंसारेः शतकं दिनेशशतकं द्वन्द्वं च तस्यास्त्वसौ,
गंगादासकवेः श्रुतौ कुतुकिनां सच्छन्दसां मञ्जरी॥

अर्थात् गंगादास कवि ने कवियों के प्रसन्नार्थ अच्युत चरित नाम सोलह सर्गवाले काव्य को बनाया, जिसमें बहुत से ललित पद तथा नवीन अर्थ और मनोहर आशय भरे हुए हैं। उसी कवि ने कंसारि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की बाललीला का जिसमें वर्णन है और सूर्यशतक भी १०० । १०० श्लोकों के दो शतक अनूठी कविता में बनाये। उसी कवि की प्रतिभा की यह छन्दोमंजरी सुनने वालों के कर्णों को तृप्तिदायक होवे।

उपरोक्त श्लोकों में इस ग्रन्थकर्त्ता के पिता माता और उसके विरचित ग्रन्थों के नाम प्रकट हो जाते हैं। ये वैद्यवंश में उत्पन्न हुए थे। यद्यपि लोग इन्हें महाकवि न कहें तो भी ये ऐसे भाग्यशाली थे कि, इनका रचित छोटा सा ग्रन्थ छन्दोमंजरी भारतवर्ष भर में प्रचलित है। कहा जाता है, इनके पिता गोपालदास वैद्य ने "पारिजातहरण" नाम का एक नाटक बनाया था।

छन्दोमंजरी का एक श्लोक मुरारिमिश्र कृत अनर्घराघव नाटक में मिलता है। अतएव गंगादास मुरारि से पहिले के जान पडते हैं। किसी किसी के मतानुसार मुरारि कवि का समय खीष्टीय १२वीं शताब्दी है। अतः कवि गंगादास बारहवीं शताब्दि के पूर्व के जान पडते हैं।

गंगाधर
गङ्गाधर } इस कवि के रचित श्लोक गोविन्दपुर के एक शिला-लेख मे मिले है। उस शिला-लेख में मिति शाके १०५६ अर्थात् सन् ११३७ ई० दी है। अतएव अनुमान होता है कि, उसी समय में यह कवि विद्यमान था। लेख में यह कवि अपनी वंशावली भी कुछ लिखता है, जिससे विदित होता है कि, उसके प्रपितामह का नाम दामोदर, पितामह का नाम चक्रपाणि, पिता का नाम मनोरथ, चाचा का नाम दशरथ और भाइयो का नाम महीधर तथा पुरुषोत्तम हैं। "एपिग्राफिया—इण्डिका" में इस लेख के सम्बन्ध में अनुमान किया गया है कि श्रीधरदास विरचित सदुक्तिकर्णामृत सन् १२०५ ई० मे रचा गया।

विल्हण के विक्रमाङ्कदेव-चरित में भी एक गङ्गाधर कवि का नाम मिलता है। नहीं जान पडता कि, यह गोविन्दपुर के शिलालेख वाले गगाधर हैं या दूसरे कोई। काव्यसग्रह में गंगाधर कवि विरचित "मणिकर्णिकाष्टक" छुपा है। नहीं जान पडता कि, यह गंगाधर इनमें से कौन है।

गुणाढ्य—कथासरित्सागर में इस कवि का उल्लेख किया गया है। इसके विरचित ग्रन्थ का नाम 'बृहत्कथा' है जिसे लोग "बडाहकथा" भी कहते हैं। कथासरित्सागर में इन्हे कात्यायन और व्याडि का समकालीन कहा है और कात्यायन का समय सन् ईस्वी के आरम्भ होने से ३१५ वर्ष पूर्व माना जाता है। "पुरुषपरीक्षा" में विक्रमादित्य से बडाह नाम के एक राजा की भेट का वृत्तान्त लिखा है। यदि इसी बडाह की कथा गुणाढ्य ने लिखी हो तो सम्भव है, वे विक्रमादित्य के नवरत्न वाले वररुचि के समय में रहे हों।

जगद्धर के लिखने से जान पडता है कि, गुणाढ्य ने महादेव जी से बडाह राजा की कथा को सुन कर "बृहत्कथा" नाम का ग्रन्थ बडाह के वर्णन में लिखा। यदि यह बात सच है तो गुणाढ्य खीष्टीय छठवीं शताब्दी में विद्यमान जान पडते हैं। पर इससे और कथासरित्सागर से बडा भेद पडता है। सम्भव है कि, वररुचि के लिये कात्यायन नाम लिख गया हो; किन्तु व्याडि के नाम में भूल हो नहीं सकती। इससे यही निर्णय ठीक होता है कि, गुणाढ्य सन् ईस्वी से ३१५ वर्ष पूर्व वाले कात्यायन के समसामयिक हैं और "बृहत्कथा" के जिसे लोग भूल से 'बडाह कथा" कहते हों—रचयिता हैं।

गुणाढ्य कवि के प्राचीन होने में कोई सदेह नहीं है। गोवर्द्धनाचार्य ने अपने "आर्या सप्तशती" ग्रंथ में वाल्मीकि और व्यास के उपरान्त कवियों के नाम की गणना में तीसरा नाम इन्हींका दिया है; यथाः—

> अतिदीर्घजीविदोपात् व्यासेन,
> यशोपहारितं हन्त।
> केनाच्येत गुणाढ्यः
> स एव जन्मान्तरापन्नः ॥

पैशाची भाषा जो प्राकृत भाषा का एक भेद है, उसमें एक लाख श्लोकों में इन्होंने "बृहत्कथा सरित्सागर" नाम का एक ग्रन्थ रचा है। जिसे सोमदेव शर्मा नामक एक काश्मीरी पण्डित ने २० हज़ार श्लोकों में पैशाची भाषा से संस्कृत भाषा में अनुवाद स्वरूप लिखा है। इस ग्रन्थ की कल्पना और पाण्डित्य अद्भुत है।

गोवर्द्धनाचार्य—ये कवि गीतगोविन्दकार जयदेव तथा उमापतिधर आदि के समकालीन हैं। गीतगोविन्द में जयदेव ने इनका उल्लेख करके बड़ाई की है कि, शृङ्गाररस की कविता लिखने में ये बड़े चतुर थे। इनका बनाया "आर्यासप्तशती" नामक एक ग्रन्थ है। यद्यपि इस ग्रन्थ के नाम से तो यही जान पड़ता है कि, इसमें ७०० आर्या छन्द के श्लोक होंगे किन्तु काव्यसंग्रह में जो ग्रन्थ छपा है उसमें ७३१ श्लोक है। गोवर्द्धनाचार्य ने निजरचित ग्रन्थ में अपने पिता का नाम नीलाम्बर लिखा है। इनके ग्रन्थ में वाल्मीकि, व्यास, बृहत्कथा के रचयिता गुणाढ्य, कालिदास, भवभूति, बाण आदि के नामों का उल्लेख किया गया है और ये समस्त कवि उमापतिधर से प्राचीन भी हैं। अतएव उमापतिधर के समसामयिक होने से इनका समय १२वीं शताब्दी का आरम्भ और मध्यभाग सिद्ध होता है।

राढ़ देश में मल्लभूमि की राजधानी विष्णुपुर है। वहाँ के राजा के आश्रित मुरारि कवि शाके ११००, अर्थात सन् ११७८ ईस्वी के पूर्व विद्यमान थे। उसने अपने को गोवर्द्धन भट्ट का पुत्र बतलाया है। किन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता कि, यह गोवर्द्धनाचार्य वही हैं जिन्होंने आर्यसप्तशती रची थी। गोवर्द्धनाचार्य ने अपने शिष्यों में से एक का नाम उदयन लिखा है। ये प्रसिद्ध नैयायिक उदयनाचार्य ही हैं अथवा अन्य कोई, सो स्पष्ट नहीं कहा जा सकता है।

गोविन्द ठक्कुर—चन्द्रदत्त मैथिल कृत संस्कृतभाषान्तर वाली "भक्तमाला" में गोविन्द ठक्कुर को "काव्यप्रदीप" का रचयिता बतलाया गया है और यह भी लिखा है कि, गोविन्द ठक्कुर मम्मट भट्ट से भेंट करने गये, उनको जूता पहिने और डाढी मोछ रखाये देख, उन्हें आश्चर्य हुआ कि, ये मुसलमान के भेष में क्यों रहते हैं। यदि भक्तमाला की बात सत्य हो तो मम्मट भट्ट के समकालीन गोविन्द ठक्कुर भी १२वीं सदी के अन्तिम वा १३वीं सदी के प्रारम्भ काल में माने जा सकते हैं। काव्यप्रकाश के टीकाकार कमलाकर भट्ट (जिन्होंने सन् १६१२ ई० में शूद्रकमलाकर नामक ग्रन्थ रचा था) अपने ग्रन्थ में काव्यप्रदीप का नाम लिखते हैं। इसलिये गोविन्द ठक्कुर उसके पूर्व ही किसी समय में रहे होंगे ऐसा निश्चय होता है। गोविन्द ठक्कुर के एक चचेरे भाई की पाँचवीं पीढ़ी में नरसिंह ठक्कुर हुए, जिन्होंने काव्यप्रकाश की टीका लिखी है और जिसका निर्णीत समय १६६८ ई० है। प्रत्येक पीढ़ी के लिये ३० वर्ष का समय लेकर यदि लेखा लगावें तो गोविन्द ठक्कुर का समय किसी प्रकार १६वीं सदी के प्रारम्भ में या १५वीं सदी के अन्त में पड़ता है। काव्यमाला में इनका वंशवृत्त दिया हुआ है और इनको मिथिला निवासी बतलाया है। किन्तु इनका निश्चित समय नहीं लिखा। केवल इतना ही अनुमान करके छोड़ दिया है कि, गोविन्द ठक्कुर १६वीं सदी के अन्तिम भाग से पीछे के कभी नहीं हो सकते।

गोविन्दराज—इनका बनाया श्रीमद्वाल्मीकि रामायण का भूषण टीका प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के रहने वाले और श्रीरामानुज सम्प्रदायी थे।

गौड़पादाचार्य—आदि शङ्कराचार्य के गुरु। इन्होंने अद्वैतसिद्धान्त प्रतिपादक एक ग्रन्थ लिखा है। माण्डूक्योपनिषत्कारिका उस ग्रन्थ का नाम है। इनकी कारिका आर्य वृत्तों में है और वे बड़े मनोहर हैं।

घटकर्पर—महाराज विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक घटकर्पर भी थे। इनका बनाया २२ श्लोकात्मक एक काव्य है, जिसमें यमक रचे गये हैं। सुनते हैं, इन्होंने जब यह प्रतिज्ञा की कि, यदि कोई उन्हें यमक में हरा दे तो वह उस हराने वाले का पानी भरें; तब कविशिरोमणि कालिदास ने नलोदय काव्य बनाकर यमक रचना में इनको परास्त किया। काव्यसंग्रह में घटकर्पर काव्य और नलोदय काव्य दोनों, छपे हैं। इन ग्रन्थों के देखने से इतना तो अवश्य झलकता है कि, घटकर्पर अपने काव्य में कालिदास

की तरह कठिन और गूढ़ छंदों से भरे यमक लिखने नहीं बैठे थे। साथ ही कालिदास को यदि घटकर्पर को पराम्त करना न होता तो बहुत सम्भव था कि, वे भी स्वरचित नलोदय काव्य में क्लिष्ट कल्पनाओं से युक्त और गूढ़ छंदों से भरे यमकों की रचना न करते।

घटकर्पर का बनाया 'नीतिसार' नामक एक और भी ग्रन्थ है, जिसे देखने से इनकी कविता-शक्ति भली भाँति प्रकट होती है। विक्रमादित्य के सभासद् होने से इनका समय भी सन् ईस्वी की छठवीं सदी निर्णीत होता है।

२२ श्लोकों वाले वर्षा के वर्णन में राक्षस काव्य नाम का एक छोटासा काव्य है, जिसके आदि का श्लोक इस प्रकार है:—

पश्याब्जदृक् गिरितटेषु कृपातसाह्वान्
भूदेवराजरिपुशत्रुसमाववृतान्।
वैश्वानरारिजरिपुप्रशराभिघातैः
दृक्श्रोत्रशत्रुभिरुपामितपुष्पशोभाम्॥

राक्षस इसका नाम इसलिये पड़ा है कि इसमें कूट भरा है। यह भी सम्भवतः घटकर्पर ही का हो।

चटक—कल्हण ने राजतरङ्गिणी में लिखा है:—

मनोरथः शङ्खदत्तश्चटकः सन्धिमाँस्तथा।
बभूवुः कवयस्तस्य वामनाद्याश्च मंत्रिणः॥

अर्थात् मनोरथ, शङ्खदत्त, चटक और सन्धिमान—ये जयापीड राजा की राजसभा के कवि थे। वामन आदिक पण्डित उसके मंत्री थे। निदान चटक कवि का समय राजा जयापीड का राज्यकाल अर्थात् सन् ७७२ ई० से ८०३ ई० तक अनुमित होता है। यह काश्मीरी थे। इनका बनाया कोई ग्रन्थ देखने या सुनने में नहीं आता। हरिमोहन प्रामाणिक ने इनका नामान्तर चालक भी लिखा है।

चाणक्य—ये कवि जी पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त के मंत्री थे। विशाखदत्त ने "मुद्राराक्षस" नामक नाटक में इनके कलाकौशल दरसाये हैं। लोगों का कहना है कि, यह नीतिशास्त्र के आचार्य कामन्दक के गुरु हैं और इनके बनाये ग्रन्थ का नाम चाणक्यनीति है। गुणाढ्य ने बृहत्कथा में इनके नाम का उल्लेख किया है। किन्तु गुणाढ्य, चन्द्रगुप्त के पूर्व हुए थे और चाणक्य चन्द्रगुप्त के समकालीन हैं। यदि चाणक्य, गुणाढ्य से पीछे हों तो कथासरित्सागर की बात ठीक नहीं जचती। निदान चाणक्य को गुणाढ्य आदि के समकालीन मानने से यह बाधा दूर हो सकती है। अतएव चाणक्य का समय भी सन् ईस्वी से ३१५ वर्ष पूर्व के लगभग मानना चाहिये। कथासरित्सागर में जो कुछ चाणक्य के सम्बन्ध में है उसे यहाँ विस्तारभय से छोड़ दिया है।

चोर कवि—इन काश्मीरी कवि का नामान्तर विल्हण है। इनके बनाये ग्रन्थों के नाम ये—

१ विक्रमाङ्कदेवचरित
२ चौरपञ्चाशिका
३ कर्णसुन्दरी नाटिका

हैं। इन्होंने निश्चय ही अन्य ग्रन्थ भी प्रणयन किये होंगे, किन्तु इन तीन ग्रन्थों को छोड़ औरों का पता आज तक नहीं चला। कुछ श्लोक सुभाषितावली में बिल्हण रचित कहकर उद्धृत किये गये हैं। चौरपञ्चाशिका एक ग्रन्थ है जिसकी रचना के विषय में यह कथानक प्रसिद्ध है कि —जब विल्हण गुजरात के राजा बैरीसिंह की बेटी शशिकला को पढाने के लिये शिक्षक के पद पर नियुक्त किये गये, तब वे उसके यौवन और सौन्दर्य पर मुग्ध हुए और उसके साथ गुप्त गान्धर्व विवाह भी कर लिया। इस वृत्तान्त को राजा के कान तक पहुँचने में देर न लगी और इसका यह परिणाम हुआ कि, राजा ने विल्हण को प्राणदण्ड की आज्ञा सुनायी। वधस्थान तक पहुँचते पहुँचते कवि ने अपनी प्रियतमा के वर्णन में पचास श्लोक रच डाले। इसका समाचार भी राजा को मिला। इस पर उस राजा ने कवि को केवल प्राणदण्ड ही से मुक्त नहीं किया, प्रत्युत अपनी राजकुमारी भी उनको दे डाली। यह कथानक प्रसिद्ध अवश्य है, किन्तु इसकी सत्यता में पूर्ण सन्देह है। क्योंकि गुजरात का राजा वैरीसिंह सन् ६२० ई० में मर चुका था। उधर विक्रमाङ्कदेवचरित द्वारा जाना जाता है कि, विल्हण ख्रीष्टीय ११वीं सदी के अन्तिम भाग में काश्मीर के बाहर निकले और उस समय गुजरात में चालुक्य वंश का और भीमदेव का पुत्र कर्णराज राज्य करता था। इतना तो अवश्य पता चलता है कि, गुजरात में विल्हण को क्लेश अवश्य मिला, जिसे उन्होंने सोमनाथ जी के दर्शन कर भुला डाला। यह भी मानना पड़ेगा कि इस समय सोमनाथ का वह ऐश्वर्य नहीं रह गया था जो महमूद गज़नवी की चढ़ाई के पूर्व था। यदि गज़नी के इस लुटेरे के पूर्व विल्हण ने सोमनाथ के दर्शन किये हों तो सम्भव हो सकता है कि, वे सन् ६२० ई० में बैरीसिंह के समकालीन रहे हों, किन्तु यह बात न तो राजतरङ्गिणी और न विक्रमाङ्कदेवचरित (जिनको हम उक्त कथानक की अपेक्षा अधिकतर प्रामाणिक मानते हैं) इस बात के सिद्ध होने में हमारी कुछ सहायता करते हैं।

प्रत्युत राजतरंगिणी के द्वारा तो ज्ञात होता है कि, काश्मीर के राजा कलश ने सन् १०६४ ई० से लेकर सन् १०८८ ई० पर्यन्त राज्य किया। इसी राजा के समय विल्हण काश्मीर को छोड़ देशाटन के लिये बाहर निकले थे। विक्रमाङ्कदेवचरित से यह भी जान पड़ता है कि, विल्हण कवि मथुरा, कन्नौज, बनारस, प्रयाग, अयोध्या, धार, गुजरात प्रान्त आदि अनेक नगरों और प्रान्तों में घूमते फिरते सेतुबन्ध रामेश्वर तक पहुँच पाये थे।

बूलहर साहिब का अनुमान है कि, विल्हण लगभग सन् १०६५ ई० में भारतवर्ष के भिन्न भिन्न राजाओं के दरबार में गये होंगे और अन्त में जाकर पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य के यहाँ ठहरे, जिनके वर्णन में उन्होंने विक्रमाङ्कदेवचरित नामक काव्य बनाया। पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य छठवाँ सन् १०७६ ई० में राजगद्दी पर बैठा। विक्रमादित्य के पिता का नाम सोमेश्वर था। विक्रमादित्य के उत्तराधिकारी का नाम भी सोमेश्वर ही मिलता है और इसके राजगद्दी पर बैठने का समय सन् ११२७ ई० है।

विल्हण ने विक्रमाङ्कदेवचरित में अपने वंश का कुछ वर्णन भी किया है और अपने पूर्वजों का निवासस्थान खोनमुख नामक काश्मीर का एक गाँव बतलाया है। काश्मीर के खोनमुख गाँव में कौशिक गोत्र से उत्पन्न वेद शास्त्रादि में निपुण मुक्तिकलश नामक एक पण्डित थे। मुक्तिकलश के पुत्र का नाम राजकलश और राजकलश के बेटे का नाम ज्येष्ठकलश था। ज्येष्ठकलश की पत्नी का नाम नागा देवी था। यही नागादेवी विल्हण की माता थीं। विल्हण के ज्येष्ठ भ्राता का नाम इष्टराम और कनिष्ठ भाई का नाम आनन्द था।

बिल्हण शरीर से बहुत सुन्दर थे। यदि 'चौरपञ्चाशिका' का कथानक सत्य हो तो आश्चर्य नहीं; क्योंकि सम्भव है राजकन्या इनके गुणों में से इनके सौन्दर्य गुण को प्रधान समझ, इन पर मोहित होगयी हो।

निदान बिल्हण प्रसिद्ध काश्मीरी कवि थे और कर्णसुन्दरी नाटिका के आरम्भ में, इन्होंने मंगलाचरण में नागानन्द की तरह, जिन अर्हन देव से सभासदों के कल्याण की प्रार्थना की है। इनका समय खीष्टीय ग्यारहवीं सदी का अन्तिम भाग मान लेने में कोई आपत्ति नहीं है।

कुछ लोगों का मत है कि, चोर कवि एक और भी हैं, जो राजा गुणसिन्धु के पुत्र थे। पर इनके विषय में भी बिल्हण की तरह राजकन्या पर आसक्ति और अन्त में दण्ड से छुटकारे का वर्णन है। यदि यह बिल्हण से भिन्न कोई कवि है, तो इनके समय का कुछ भी पता नहीं है। "कविचोरमयूरकौ" इस श्लोकपंक्ति के द्वारा यदि चोर को मयूर का समकालीन मान लें तो चोर भी मयूर के समान ईस्वी सन् की सातवीं सदी के प्रारम्भ में विद्यमान माने जा सकते हैं।

जगदीश तर्कालङ्कार—नवद्वीपनिवासी एक प्रसिद्ध नैयायिक थे। इनका जन्म १७वीं सदी के प्रारम्भ में हुआ था। इनके पिता का नाम यादवचन्द्र तर्कवागीश था और वे भी एक प्रसिद्ध नैयायिक थे। जगदीश तर्कालकार ने न्यायदीधिति की टीका लिखी है। इसके अतिरिक्त इन्होने निम्न ग्रन्थ भी लिखे हैं :—

१ गंगेशोपाध्याय प्रणीत अनुमानमयूख का भाष्य
२ पक्षता
३ केवलान्वयी।
४ केवलव्यतिरेकी
५ अन्वयव्यतिरेकी
६ अवयव।
७ चतुष्टयतार्क
८ सिद्धान्तलक्षण
९ व्याप्तिपन्चक
१० उपाधिवाद
११ पूर्वपक्ष
१२ अनुमानदीधिति का तर्क।
१३ सिंहव्याघ्री
१४ अवच्छेदक निरुक्ति

जगद्धर—भवभूतिकृत मालतीमाधव नामक नाटक की टीका इन्हीं की रची हुई है। नाटक के प्रत्येक अङ्क की टीका के अन्त में टीकाकार ने अपने माता पिता का नाम दिया है और ग्रन्थ की समाप्ति में भी अपने वंश का संक्षिप्त परिचय दिया है। उससे विदित होता है कि द्विजातिकुलतिलक चण्डेश्वर नाम के एक प्रसिद्ध मीमांसक पण्डित थे। इनके पुत्र रामेश्वर पण्डित भी एक प्रसिद्ध मीमांसक थे। रामेश्वर के पुत्र गदाधर, गदाधर के पुत्र विद्याधर और उनके पुत्र रत्नधर हुए। ये ही रत्नधर जगद्धर के पिता हैं। जगद्धर ने निज माता का नाम दमयन्तिका लिखा है। यह जगद्धर न्याय, वैशेपिक, व्याकरण, काव्यादि में निपुण थे। इनके रचित मालतीमाधव नाटक की

टीका की संस्कृतज्ञों में बड़ी प्रतिष्ठा है। इन्होंने ग्रन्थ के अन्त में अपने पिता की उपाधि "श्रीमन्महोपाध्याय पण्डितराज महाकवि राजधर्माधिकारी" लिखी है। इससे सिद्ध होता है कि यह महापण्डित विद्वज्जनों के कुल में उत्पन्न है। इन्होने वेणीसंहार और वासवदत्ता पर भी टीकाएँ लिखी हैं। जिनका विद्वानो में बड़ा आदर है।

इनका समय पण्डितवर रामकृष्ण भाण्डारकर के निर्णयानुसार ख्रीष्टीय चौदहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हो सकता।

जगन्नाथ पण्डितराज—यह एक प्रसिद्ध आलङ्कारिक और कवि थे तथा दिल्ली के सम्राट् के दरबार में रहते थे। इन्होने भामिनीविलास के अन्त मे लिखा है—

"दिल्लीवल्लभपाणिपल्लवतले नीत नवीनं वयः।"

यह तैलग देशान्तर्गत राजमहेन्द्री प्रान्त के रहने वाले थे, पर चिरकाल तक काशी में रह कर, इन्होंने विद्याभ्यास किया था। इनके पिता का नाम मेरुभट्ट, माता का लक्ष्मी और गुरु का ज्ञानेन्द्र भिक्षु था। जैपुरनरेश की आज्ञा से जैपुर और काशी मे इन्होने नक्षत्रों की गति आदि जानने के लिये उपयुक्त कौतुकालय बनवाये। काशी में मानमन्दिरघाट पर अब तक यह कौतुकालय बना है। पर भूमि के हिल जाने से अब उस स्थान से नक्षत्रादि ठीक नहीं देख पड़ते। इनका समय लोगों ने सन् ईस्वी १६२०—१६६० तक दिल्ली की राजसेवा में व्यतीत हुआ माना है। वहीं इनको दिल्ली के सम्राट् से पण्डितराज की उपाधि भी प्राप्त हुई थी। इनके बनाये मुख्य ग्रन्थ ये हैं:—

१ रसगंगाधर
२ मनोरमा
३ कुचमर्दन
४ गंगालहरी
५ करुणालहरी
६ अश्वधाटी
७ भामिनीविलास।

कहा जाता है इन्होंने किसी मुसलमानी के प्रेम में फँस उसके साथ विवाह कर लिया था, जिससे ब्राह्मणों ने इन्हे जाति से बाहिर कर दिया था। अन्त में गंगालहरी रचते रचते काशी में गंगाघट पर इन्होंने प्राण त्याग किये। बुढ़ापे में कुछ दिनों तक यह मथुरा में भी रहे थे।

जनार्दन भट्ट—बंबई से प्रकाशित "काव्यमाला" के एकादश गुच्छक में इनका बनाया शृङ्गारशतक नामक ग्रन्थ छापा गया है। किन्तु उसमें इनके निवासस्थान या समय का पता नही है। काव्य की रचना देखने से यह बहुत ही अर्वाचीन कवि जान पड़ते है। इनके पिता का नाम उस ग्रन्थ में जगन्निवास गोस्वामी लिखा मिलता है। इन्होंने अपने ग्रन्थ में पूर्व के कवियों का स्मरण किया है। यथा—

विख्याता रघुवंशवद्गुणगणैः शृङ्गारसारापरं,
शृङ्गारे रसमञ्जरीवदमला माघार्थवत्सत्तनौ।
क्लिष्टा नैषधवच्च मानकरणे कादम्बरीवद्रते,
नानाश्लेषविचक्षणा विजयते सारङ्गरम्येक्षणा॥

इससे विदित होता है कि, कालिदास, भानुदत्त मिश्र, माघ, श्रीहर्ष बाण आदि इनके समय में प्रसिद्धि पा चुके थे। उपरोक्त कविसूची में भानुदत्त मिश्र सब से नवीन हैं। इनका समय १४ वीं सदी का अन्त या १५ वीं का आरम्भ माना जा सकता है। अतएव विद्वानों का कथन है कि इन गोस्वामी जी का समय १६ वीं सदी का अन्तिम भाग अनुमान किया जा सकता है।

जयदेव (१) यह गीतगोविन्द के रचयिता, अति मधुर एव ललित काव्यरचना के लिये प्रख्यात हैं। इन्होंने गीतगोविन्द में अपने माता पिता का नाम दिया है। इनकी माता का नाम वामादेवी और पिता का नाम भोजदेव था। बंगाल में वीरभूमि नाम के स्थान से कुछ हटकर भागीरथी में गिरनेवाला अजय नाम का एक नद है। इसी नद के तीरपर कंदुला नाम का एक गाँव है। इसीको लोग जयदेव की जन्मभूमि बतलाते हैं। यथा—

वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन,
केन्दुबिल्व-समुद्रसम्भव-रोहिणीरमणेन।

इससे स्पष्ट है कि, यह बंगाल में कंदुला नामक गाँव के निवासी थे।

जयदेव के समय के बारे में विचार करने से यही समझ पड़ता है कि, यह उमापतिधर के समकालीन थे। यह उमापतिधर बंगाल के उस राजा लक्ष्मणसेन के मंत्री थे, जो ईस्वी सन् १११६ में वर्तमान थे और जिनके पिता दानसागर के रचयिता बल्लालसेन के नाम से सेनवंश के राजाओं के बीच अत्यन्त प्रतिष्ठित माने जाते थे तथा अत्यन्त प्रसिद्ध थे। अतएव उमापति के समकालीन होने से जयदेव भी ख्रीष्टीय १२ वीं सदी के पूर्वभाग में विद्यमान थे। जयदेव ने गीतगोविन्द में अपने समकालीन कवियों की नामावली का जो श्लोक दिया है वह स्थानान्तर में उद्धृत किया जा चुका है और कविराज के प्रकरण में भी एक वैसा ही श्लोक उठाया जा चुका है; जिससे उमापतिधर, शरण, गोवर्द्धन और कविराज आदि जयदेव के समकालीन और राजा लक्ष्मणसेन के सभासद् सिद्ध होते हैं।

पृथ्वीराजरासो के रचयिता कविचंद १२ वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में विद्यमान थे। यह बात इतिहास से सिद्ध मानी गयी है। इस चंद कवि ने अपने बनाये हुए ग्रन्थ में जयदेव के गीतगोविन्द का नाम दिया है। अतएव उपरोक्त बात प्रमाण द्वारा परिपुष्ट होती है कि जयदेव १२ वीं सदी के पूर्वभाग में रहे हों।

जयदेवरचित गीतगोविन्द की कई एक टीकाएं देखने में आती हैं। इनमें सबसे प्राचीन टीका भगवती-भवेश के बेटे मैथिल कृष्णदत्त की बनायी जान पड़ती है। भक्तमाल में भी विस्तारपूर्वक जयदेव का चरित्र दिया हुआ है। संस्कृत भाषा के भक्त ग्रन्थकारों में जयदेव की अच्छी ख्याति है। लोगों का कथन तो यहाँ तक है कि स्वयं भगवान श्रीकृष्णचन्द्र भी गीतगोविन्द के गान से रीझ जाते हैं। संस्कृत जानने वालों में कदाचित् ही कोई ऐसा निकले जिसने गीतगोविन्द काव्य और इसके बनाने वाले जयदेव का नाम न सुना हो। जयदेवरचित गीतगोविन्द के एक श्लोक का पूरा पूरा भाव कुवलयानन्द के उद्धृत एक श्लोक में पाया जाता है। पर यह निर्णय अत्यन्त दुर्घट है कि उन श्लोकों में से कौन सा अधिक प्राचीन है। वे श्लोक ये हैं:—

हृदि बिसलता हारो नायं भुजंगमनायकः,
कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युतिः।

मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि,
प्रहर न हरभ्रान्त्यानङ्ग क्रुधा किमु धावसि ॥

यह श्लोक गीतगोविन्द में विरही पुरुष की ओर से उठाया गया है। इसी आशय का दूसरा श्लोक कुवलयानन्द में विरहिणी स्त्री की ओर से उठाया गया है। यथा—

जटा नेयं वेणी कृतकचकलापो न गरलं,
गले कस्तूरीयं शिरसि शशिलेखा न कुसुमं।
इयं भूतिर्नाङ्गे प्रियविरहजन्मा धवलिमा,
पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर किं मां प्रहरसि ॥

जगदेव (२) यह प्रसिद्ध ग्रन्थकार "प्रसन्नराघव" नाम नाटक के रचयिता हैं। यह नैयायिक भी थे। प्रसन्नराघव की प्रस्तावना में इस बात की शङ्का उठायी है कि, जो कवि है वह उत्तम नैयायिक कैसे हो सकता है? उसका समाधान विचित्र रीति से किया है, जैसा कि नीचे लिखे श्लोक से प्रकट होता है—

येषां कोमलकाव्यकौशलकला लीलावती भारती,
तेषां कर्कशतर्कवक्रवचनोद्गारेऽपि किं हीयते।
यैः कान्ताकुचमण्डले कररुहाः सानन्दमारोपिता-
स्तैः किं मत्तकरीन्द्रकुम्भशिखरे नारोपणीयाः शराः ॥

अर्थात जिन मनुष्यों की वाणी कोमल काव्यरचना की निपुणता वा चातुर्य की कला से भरी चमत्कार उपजाने वाली है क्या उनकी वाणी न्यायशास्त्र के रूखे और कुटिल वचनों के उच्चारण से नीच हो सकती है,। भला देखो तो जिन विलासियों ने आनन्दपूर्वक अपनी ललनाओं के गोल स्तनों पर नखों के चिन्ह किये हों, वे क्या मतवाले हाथी के ऊँचे गण्डस्थलों पर अपने बाणों का घाव नहीं करते?

इन्होंने अपनी माता का नाम सुमित्रा, पिता का नाम महादेव और अपने आपको कौण्डिन्य अर्थात कुण्डिनपुर निवासी बतलाया है। निजरचित ग्रन्थ में इन्होंने निम्न लिखित कवियों का नामोल्लेख किया है:—

चोर, मयूर, भास, कालिदास, हर्ष, और बाण।

अनुमान से विदित होता है कि उपरोक्त समस्त कवि ख्रीष्टीय शताब्दी की समाप्ति के पूर्व प्रसिद्ध हो चुके थे, अतएव यह जयदेव सातवीं शताब्दी से पिछले जान पड़ते हैं। किन्तु गीतगोविन्द-कार जयदेव इनसे अवश्य भिन्न है, क्योंकि न तो इनके माता पिता का मेल है और न निवास-स्थान का प्रत्युत इन्हीं प्रसन्नराघवकार जयदेव की उपाधि पक्षधर मिश्र और पीयूषवर्ष थी—ऐसा भी लोग अनुमान करते हैं। "चन्द्रालोक" नामक ग्रन्थ भी इन्ही जयदेव का बनाया हुआ है। जयदेवरचित रतिमंजरी नामक छोटा सा ग्रन्थ भी देखने में आता है, पता नहीं कि, यह कौन जयदेव हैं

श्रीहरिप्रसाद शास्त्री ने लिखा है कि पक्षधर मिश्र सन् ई० की १५ वीं शताब्दी में मिथिला में विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे, यह अनुमान बहुत करके सत्य ही होगा। क्योंकि रामचरितमानसकार गोस्वामी तुलसीदास का जीवनकाल सन् १५२६—१६२३ ई० तक था, अर्थात शताब्दी के अन्तिम में था। इन्हीं गोस्वामी जी ने प्रसन्नराघव नाटक के भावों को अपनी रामायण में भर दिया है। भाग उनमें से दो चार नीचे उदाहरणार्थ उद्धृत करते हैं।

प्रसन्नराघव—

झटिति जगतीमागच्छन्त्याः पितामह,
विष्टपान्महति पथियो देव्या वाचः श्रमः समजायत।
अपि कथमसौ मुञ्चेदेनं नचेदवगाहते,
रघुपतिगुणग्रामं श्लाघ्यां सुधामय दीर्घिकाम्॥

रामचरितमानस—

भक्ति हेतु विधि भवन बिहाई।
सुमिरत शारद आवत धाई॥
रामचरित-सर बिनु अन्हवाये।
सो श्रम जाय न कोटि उपाये॥

प्रसन्नराघव—

नेदं धनुश्चलति किञ्चिदपीन्दुमौलेः
कामातुरस्य वचसामिव संविधानै-
रभ्यर्थितं प्रकृतिचारु मनः सतीनाम्॥

रामचरितमानस—

डगै न शम्भु शरासन कैसे,
कामी वचन सती मन जैसे।

प्रसन्नराघव—

चन्द्रहास हर मम परितापं,
रामचन्द्रविरहानलजातं।
त्वं हि कान्तिजितमौक्तिकचूर्णं,
धारया वहसि शीतलमम्भः॥

रामचरितमानस—

चन्द्रहास हरु मम परितापं
रघुपति विरह अनल संजातं॥
शीतल निसि तव असि वर धारा।
कह सीता हर मम दुख भारा॥

प्रसन्नराघव

कुरु सकरुण चेतः श्रीमन्नशोक वनस्पते,
दहनकणिकामेकां तावन्मम प्रकटीकुरु।
ननु विरहिणीसन्तापाय स्फुटीकुरुते भवान्,
नव किसलयश्रेणीव्याजात्कृशानुशिखावलिम्॥

रामचरितमानस— सुनहु विनय मम विटप अशोका।
सत्य नाम कर हरु मम शोका॥
नूतन किसलय अनल समाना।
देहि अगिन जनि करहि निदाना॥

प्रसन्नराघव— हिमांशुश्चण्डांशुर्नवजलधरो दावदहनः,
सरिद्वीचीवातः कुपितफणिनिश्वासपवनः।
नवामल्ली मल्ली कुवलयवनं कुन्तगहनम्॥
ममत्वद्विश्लेषात्सुमुखि विपरीतं जगदिदम्।

रामचरितमानस— राम वियोग कहा तव सीता,
मोकहँ सकल भयेउ विपरीता।
नवतरु किसलय मनहु कृसानू,
कालनिसा सम निसि ससिभानू॥
कुवलय विपिन कुन्त वन सरिसा।
जेहि तरु रहैं करै सोइ पीरा,
उरगस्वाँससम त्रिविध समीरा॥

अतएव प्रसन्नराघवकार जयदेव तुलसीदासजी के पूर्व अर्थात् १५ वी ईस्वी सदी में विद्यमान थे। कुछ लोग पक्षधर मिश्र को प्रसन्नराघवकार से भिन्न मानते है। पर ऐसे संशय करने का कोई विशेष स्थल उपस्थित नहीं होता।

जोनराज—कवि कल्हण ने सन् ११४८ ई० में जो राजतरङ्गिणी लिखी थी, उसे वे समाप्त करने नहीं पाये, वह अधूरी ही रही। इस अधूरी पुस्तक को जोनराज ने पूरा किया। राजतरङ्गिणी के पिछले भाग में यह अपने समय का परिचय इस प्रकार देते हैं :—

श्रीजोनराजविबुधः कुर्वन् राजतरङ्गिणीम्।
सायकाग्निगते वर्षे शिवसायुज्यमाव्रसत्॥

अर्थात पण्डित जोनराज महाशय संवत् ३५ में राजतरंगिणी रचकर शिवसायुज्य को प्राप्त हुए। यह सवत् स्थानीय अथवा काश्मीरी समझना चाहिये। अतएव यह बात निर्द्धारित होती है कि, इन पण्डित ने सन् १४१२ ई० में प्राणत्याग किया, सो इनका समय अनुमान से १४ वीं शताब्दी का पिछला भाग और पन्द्रहवीं सदी के आरम्भ के १२ वर्ष हैं। जोनराज की बनाई राजतरङ्गिणी का नाम लोगों ने दूसरी राजतरंगिणी रखा है। इन्होंने भारवि-रचित किरातार्जुनीय की टीका भी बनायी है। इनके शिष्य का नाम श्रीवर पण्डित था, जिसने शाके १४७७, सन् १५५५ ई० में तीसरी तरंगिणी रची थी। राजतरंगिणीकार सब काश्मीरी ही हैं।

त्रिविक्रम भट्ट—यह कवि, प्रसिद्ध विद्वान् देवादित्य शर्मा के पुत्र थे। लडकपन में इनकी विशेष अभिरुचि पढ़ने लिखने में न थी, पर प्रयोजनवश सरस्वती देवी की आराधना कर कुछ काल लों उन देवी की

कृपा से विद्या का परिचय सुनने मे आता है कि, सरस्वती की अनुग्रहावस्था के अवसर में सात दिन मे इन्होने सात उच्छ्वास वाला नलचम्पू नामक एक अत्युत्कृष्ट ग्रन्थ रचा। चम्पू ग्रन्थ बहुधा खण्डित ही छोड दिये जाते हैं। निदान नलचम्पू भी खण्डित है। त्रिविक्रम भट्ट की उपाधि यमुना-त्रिविक्रम थी।

नलचम्पू में बाणभट्ट का नाम लिखा मिलने से विदित होता है कि, यह सातवी शताब्दी खीष्टीय से पिछले हैं। सरस्वतीकण्ठाभरण में भोजराज ने नलचम्पू से एक श्लोक उठाया है। त्रिविक्रम के समय तक बाण तथा भोज के समय तक त्रिविक्रम को ख्याति प्राप्त करते कुछ समय लगा होगा। अतएव त्रिविक्रम का समय आठवीं शताब्दी से दसवी शताब्दी तक के बीच किसी समय माना जा सकता है।

दण्डी कवि—किस देश में कब हुए इसका निर्णय नही हो सका। कतिपय बंगाली विद्वानों का अनुमान है कि, विदर्भ देश की विशेष प्रशंसा दशकुमारचरित में मिलने से सम्भव है कि, यह विदर्भवासी हों। पर ऐसा सिद्धान्त बना लेना भूल है। क्योकि इस युक्ति के अनुसार कालिदास को प्रयागवासी भी कहना पड़ेगा। देखो रघुवंश सर्ग १३, श्लो० ५४ से ५७ तक। अन्य लोगों का अनुमान है कि, "काव्यादर्श" में—

"लिम्पतीवतमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।"

के आने से शूद्रक कवि की अपेक्षा दण्डी अर्वाचीन हैं। शूद्रक का समय लोगों ने सन् ई० की प्रथम सदी माना है। जो हो, किन्तु दण्डी बहुत प्राचीन कवि समझ पड़ते हैं। क्योंकि—

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाभवत्।
कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

यह श्लोक उक्त बात को सिद्ध करता है। यह अनुपम कवि यदि कालिदास के समकालीन हों तो कुछ अचरज नहीं। कालिदास के साथ इनका शास्त्रार्थ होने की जनश्रुति भी इसकी सिद्धि में सहायक है। कवि राजशेखर सन् ७६१ ई० में हुए है और उन्होंने अपने ग्रन्थ में दण्डी का नाम दिया हैं। इसके द्वारा विलसन साहब का यह अनुमान कि, दण्डी सोमदेव भट्ट की अपेक्षा अर्वाचीन हैं और कथासरित्सागर देख कर उन्होंने दशकुमारचरित रचा, ठीक नहीं समझ पड़ता। हाँ, इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि, दण्डी कवि, शूद्रक एवं राजशेखर कवियों के बीच के समय में हुए। शूद्रक का समय सन् ई० की प्रथम सदी और राजशेखर की आठवी सदी है। इस समय में छठवीं सदी (जो कालिदास का समय है) भी अन्तर्गत है, सो कथानक के आधार पर दण्डी को छठवीं सदी का कवि कहना असंगत बोध नही होता।

जो लोग गृहस्थाश्रम को छोड़कर संन्यासी हो जाते है, वे दण्डी कहलाते हैं। सम्भव है "दण्डी" कवि का नाम न हो कर केवल उनके आश्रम मात्र का द्योतक हो। इस अनुमान के पोषण में पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर लिखते है कि, दण्डियों के रहने का कोई नियत स्थान नहीं है। वे सदा रमते विचरते रहते हैं, केवल वर्षाऋतु के चार मासों मे यात्रा में बहुत अधिक क्लेश मिलने के कारण प्रायः वर्ष के वर्षाभाग में किसी गृहस्थ के यहाँ टिक रहते हैं। यह दण्डी कवि भी बरसात में किसी गृहस्थ के घर में टिक जाते थे और प्रत्येक चौमासे में एक एक ग्रन्थ बनाते थे। जिस बार दण्डी जिस गृहस्थ के यहाँ टिकते थे, वर्षा के अन्त में चलते समय अपनी रचित पुस्तक उसीको सौंप जाते थे। "दशकुमारचरित" को दण्डी ने एक वर्ष के चौमासे में बनाया। वैसे ही अलङ्कार ग्रन्थ "काव्या-

दर्श" भी एक ही चौमासे का बनाया प्रतीत होता है। यदि यह अटकल ठीक मान ली जाय तो दण्डी-रचित ग्रन्थों के आरम्भ और अन्त में जो न्यूनता देख पड़ती है उसका भी समाधान हो जाता है। क्योंकि यह भी कहा जाता है कि, दण्डी ने जिस बरसात में दशकुमारचरित बनाया उसी बरसात में उनका देहान्त हुआ। इसी कारण न तो दशकुमारचरित सम्पूर्ण हो सका और न उसका ठीक पूर्वापर सम्बन्ध लग सका।

दण्डी के बनाये जो ग्रन्थ आज कल उपलब्ध हैं; उनकी नामावली इस भाँति है:—

१ काव्यादर्श
२ दशकुमारचरित
३ छन्दो विचित्र
४ कलापरिच्छेद

वासवदत्ता की भूमिका में हाल साहब ने अनुमान किया है कि, " लिम्पतीव तमोऽङ्गानि " इत्यादि श्लोक दण्डिविरचित है और मम्मट ने इसे काव्यप्रकाश में उद्धृत किया है। यह असम्भव नहीं। क्योंकि मान लिया जाय कि, मम्मट ने दण्डी का बनाया श्लोक उद्धृत किया तो वे दण्डी से पिछले रहे होंगे। इससे विलसन साहब के सिद्धान्त में अवश्य भूल समझ पड़ती है, अर्थात् यदि सोमदेव की अपेक्षा, दण्डी अर्वाचीन हों, तो मम्मट से प्राचीन नहीं हो सकते। यदि हाल साहब का अनुमान ठीक हो, तो या तो उक्त श्लोक मृच्छकटिक में प्रक्षिप्त मानना पड़ेगा वा शूद्रक को कालिदास, दण्डी आदि की अपेक्षा नवीन स्वीकार करना पड़ेगा।

दामोदर गुप्त—यह भी एक काश्मीरी कवि हैं। इनका बनाया ग्रन्थ "कुट्टनीमतम्" है। राजतरंगिणी में लिखा है कि—

स दामोदरगुप्ताख्यं कुट्टनीमतकारिणम्।
कविं कविं बलिरिव धुर्यधी सचिवं व्यधात्॥

इसके द्वारा विदित होता है कि, यह महाराज जयापीड़ के मन्त्री थे। जयापीड़ का समय सन् ७७२ ई० से लेकर ८०३ ई० तक निर्णीत है। अतएव दामोदर गुप्त का यही समय है। "कुट्टनीमत" ग्रन्थ क्षेमेन्द्र कवि के " समयमातृका " ही सा है। काव्यप्रकाशकार-मम्मट ने इनके रचित दो श्लोकों को निजग्रन्थ में उठाया है। इन्हीं दो श्लोकों को देखने से इनकी विलक्षण कविता-शक्ति जानी जाती है। वे श्लोक ये हैं :—

अपसारय घनसारं कुरुहारं दूर एव किं कमलैः,
अलमलमालिमृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला॥१॥
हृदयमधिष्ठितमादौ मालत्या कुसुमचापबाणेन,
चरमं रमणीवल्लभलोचनविषयं त्वया भजता॥२॥

इनके ग्रन्थ लिखने का मुख्य उद्देश्य युवा पुरुषों को वेश्याओं के फंदे से बचाना है और ग्रन्थ में यह दिखलाया है कि, पुरुषों को लुभाने के लिये वेश्याओं के लिये क्या क्या कर्त्तव्य हैं। इस ग्रन्थ के पढ़ने वाले यदि चतुर हों तो संसार में बहुत सँभल के अपना जीवन बिता सकते हैं। ग्रन्थ का

विषय अश्लील होने के कारण लोग दामोदर गुप्त के कवित्व की कुछ विशेष प्रशंसा नहीं करते, किन्तु कवि यह अपने ढंग का एक ही था।

दामोदर मिश्र—हनुमन् नाटक के अन्त में जो श्लोक लिखा मिलता है, उससे अनुमान होता है कि, हनुमन् नाटक का संग्रह दामोदर मिश्र ने किया है। भोजप्रबन्ध में लिखा मिलता है कि, राजा भोज के समय में मल्लाहों ने नदी में जाल डालने पर एक पत्थर पाया, जिसमें एक लेख खुदा हुआ था। राजा ने अपने सभासदों से उसे पढ़वाया, तब यह श्लोक निकला—

अयि खलु विषमः पुराकृतानां,
भवति हि जन्तुषु कर्मणां विपाकः।
क्व जनकतनया क्व रामजाया,
क्व च दशकन्धरमन्दिरे निवासः॥

तदनन्तर कालिदास ने निम्नभाग और भी पढ़ पाया:—

शिवशिरसि शिरांसि यानि रेजुः।
शिव शिव तानि लुठन्ति गृध्रपादैः॥

इस कथानक से विदित होता है कि, राजा भोज ही के समय में हनुमद्विरचित रामायण की चर्चा प्रसिद्ध हो चली थी। दामोदर मिश्र ने निज सङ्कलन में उसे पूरा किया और हनुमन् नाटक वा महानाटक उसका नाम रखा। यह नाटक संस्कृत में है तो, परन्तु कालिदास, भवभूति आदि कवियों की तरह यह कवि प्रौढ़ या चतुर नहीं जान पड़ते। नाटक के नियमों का इस ग्रन्थ में ठीक ठीक अनुसरण नहीं है। किन्तु इस नाटक में और और कवियों के रचित ग्रन्थों के श्लोक भी उद्धृत किये हुए देखने में आते हैं। जैसे—"ग्रीवाभङ्गाभिराम" आदि शकुन्तला में "सद्यःपुरी परिसरेऽपि" आदि बालरामायण में मिलते हैं। इससे अनुमान होता है कि, वास्तव में दामोदर मिश्र ने संग्रहमात्र किया है। हनुमन् नाटक को छोड़ अन्य कोई ग्रन्थ दामोदर मिश्र-विरचित नहीं मिलता। लोगों का कहना है कि यह वीररस प्रधान ग्रन्थ है। परन्तु इसमें रामसीता विषयक शृङ्गार भी बहुत भरा है। द्वितीय अङ्क का नाम जानकीविलास लिखा गया है। प्रसन्नराघवकार राजशेखर या भवभूति आदि की तरह हनुमन्नाटक के शृङ्गाररस में सुघरता नहीं है। इसीसे तो विलसन साहब ने हिन्दुओं की रामसीता विषयक विलक्षण शृङ्गाररस की रुचि पर आश्चर्य प्रकट किया है।

काव्यप्रकाश के सप्तम उल्लास में मम्मट ने हनुमन् नाटक से—

न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयस्तत्राप्यसौ तापसः,
सोऽप्यत्रैव निहन्ति राक्षसकुलं जीवत्यहो रावणः।
धिक् धिक् शक्रजितं प्रबोधितवता किं कुम्भकर्णेन वा,
स्वर्गग्रामटिका विलुण्ठनवृथोच्छूनैः किमेभिर्भुजैः॥

इस श्लोक को उद्धृत कर, इसका दोष निर्देश किया है। अतएव दामोदरमिश्र मम्मटभट्ट से प्राचीन वा उनके समकालीन हो सकते हैं। पर मेरी समझ में ये भोजराज और मम्मट दोनों के समकालीन हो सकते हैं। अतएव इनका समय ईस्वी सन् की ग्यारहवी सदी का पूर्व भाग निर्णीत होता है।

दिङ्नाग—यह महाशय बौद्धमत के आचार्य और काञ्चीपुरी के रहने वाले थे। मल्लिनाथ ने मेघदूत के पूर्वार्द्ध के १४ वें श्लोक की टीका में (दिङ्नागाना पथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान् ॥) दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन बतलाया है। मैक्समूलर ने भी इसी अटकल को स्थिर किया है। कालिदास तो बौद्ध न थे। अतएव दिङ्नाग का मत उनके मत के विरुद्ध था। मल्लिनाथ के कथनानुसार मेघदूत के एक श्लोक से कालिदास की दिङ्नाग पर अश्रद्धा प्रकट होती है। कालिदास के सहपाठी निचुल ने दिङ्नाग के आक्षेपों का खण्डन भी किया है। यदि दिङ्नाग कालिदास के समकालीन रहे हों तो दिङ्नाग का समय सन् ५२० —६०० ई० तक में मैक्समूलर के निर्देशानुसार हो सकता है।

कतिपय विद्वानों का यह भी मत है कि दिङ्नाग एक अत्यन्त प्राचीन बौद्धाचार्य हैं और प्रायः भाष्यकार पतंजलि के समकालीन हैं, यह कल्पना असम्भव भी नहीं है। क्योंकि सम्भव है मल्लिनाथ ने केवल अटकल लगायी हो। काव्यप्रकरण में दिङ्नाग और निचुल का कोई उल्लेख नहीं, केवल कालिदास की गुप्ताभिसन्धि का अनुमान श्लेष द्वारा किया गया है। फिर भी यदि कालिदास को गुप्ताभिसन्धि द्वारा दिङ्नाग पर अश्रद्धा दिखलाने की बात सत्य हो तो भी उन दोनों का समकालीन होना क्यों आवश्यक है यह बात समझ में नहीं आती। यदि दिङ्नाग, पतंजलि के समकालीन माने जाँय तो उनका समय खीष्ट के पूर्व २०० या ३०० वर्ष के बीच कभी हो सकता है।

दिवाकर—(१) राजशेखर ने जो अपने पूर्वकवियों की सूची दी है, उसमें इनका नाम दण्डी, बाण, मयूर आदि के साथ आया है। जिससे विदित होता है कि ये भी उन कवियों के समकक्ष रक्खे गये हैं। इस आशय का एक और श्लोक भी मिलता है। यथा—

अहो प्रभावो वाग्देव्या यं मातङ्गदिवाकरः।
श्रीहर्षस्याभवत्सभ्यः समं बाणमयूरयोः॥

यह श्रीहर्ष कन्नौज के महाराज हर्षवर्द्धन है। कादम्बरीकार बाण कवि ने इन्हींके वर्णन में हर्षचरित नाम गद्य-ग्रन्थ लिखा है। प्राचीन शिला-लेखों और चीन के यात्री ह्वेनसंग के वर्णन के द्वारा इस श्रीहर्ष का राज्य सन् ६०० से ६२५ ई० तक निर्णीत हुआ है। इसी समय में दिवाकर उसकी सभा के सभ्य थे। बाण वा मयूर सरीखे सद्वंशसम्भूत ये न थे। पर सरस्वती के प्रभाव से उन्हींके समान प्रतिष्ठित रहे।

दिवाकर—(२) यह प्रसिद्ध ज्योतिषी भरद्वाज गोत्री एक ब्राह्मण थे। इनके पिता नृसिंह और विद्यागुरु इनके चचा शिवदैवज्ञ हैं। पं० सुधाकर द्विवेदी के मतानुसार इनका जन्म शाके १५२८ वा सन् १६०६ ई० में होता है। इन्होने कई एक ग्रन्थ रचे हैं। उनमें से जातकपद्धति नाम ग्रन्थ सन् १६२५ ई० में प्रकाशित हुआ। इनका निवासस्थान गोदावरी नदी के तट पर गोल नामक ग्राम था।

दिनकर मिश्र—ये रघुवंश के टीकाकार एक प्रसिद्ध पण्डित थे। लोग कहते हैं कि इन्होंने सन् १३८५ ई० में यह टीका बनायी थी। ये बौद्ध मत के थे। अतः इनकी बनाई रघुवंश की टीका मल्लिनाथ को नहीं रुची इसीसे उन्होंने अपनी टीका के आरम्भ में इनकी टीका के सम्बन्ध में लिखा है—"दुर्व्याख्या विषमूर्छिता।" जब सन् १३८५ ई० में इन्होंने ग्रन्थ रचा, तब दिनकर मिश्र का समय चौदहवीं सदी का पिछला भाग मान लेना ठीक ही है। इतना और भी मालूम हुआ है कि, पहिले शङ्कराचार्य, तदनन्तर उदयनाचार्य द्वारा परास्त किये जाने पर यद्यपि बौद्धधर्म का प्राधान्य हिन्दुस्थान में न रहने पाया, तथापि बौद्धसिद्धान्तवादी दिनकर मिश्र सरीखे दो चार जन रही गये थे सम्भव है ऐसे ही लोगों के

पास बचे खुचे बौद्धग्रन्थ देखकर माधवाचार्य जी ने सर्वदर्शन-संग्रह में बौद्धदर्शन भी लिखा हो। माधव के भाई सायण का मृत्युकाल सन् १३८७ ई० है—तो दिनकर का सायण और माधव से पूर्व होना स्वतःसिद्ध है।

धनंजय } धनञ्जय } भोजराज के पितृव्य धारानरेश मुञ्ज की सभा के रत्नों में से यह भी एक थे। इनका रचित "दशरूपक" नाम ग्रन्थ प्रसिद्ध है। ग्रन्थ की समाप्ति में धनञ्जय लिखते हैं:—

विष्णोः सुतेनापि धनञ्जयेन,
विद्वन्मनोरागनिबद्धहेतुः।
आविष्कृतं मुञ्जमहीशगोष्ठी,
वैदग्ध्यभाजा दशरूपमेतत् ॥

इससे विदित होता है कि, इनके पिता का नाम विष्णु था और यह मुञ्ज के समकालीन तथा उनके सभासद थे। भोजराज का समय लोगों के निर्णयानुसार सन् ९९७ ई० से १०५१ ई० तक पूर्व में उल्लिखित हो चुका है। उनके पितृव्य होने के कारण मुञ्ज का समय उनसे पूर्व ठहरा, अर्थात् खीष्टीय १० वीं शताब्दी का अन्तिम भाग मुञ्ज तथा उनके समसामयिक धनंजय कवि का भी होगा। धनञ्जय के समकालीन अन्य कवियों के नाम पद्मगुप्त, धनिक, हलायुध आदि हैं। इनमें से पद्मगुप्त तो नवसाहसाङ्कचरित काव्य के रचयिता हैं। धनिक, धनञ्जय के भाई हैं, इन्होंने भी अपने पिता का नाम विष्णु लिखा है। हलायुध तो एक प्रसिद्ध कोषकार हैं। जिनका उल्लेख जहाँ तहाँ मल्लिनाथ करते हुए देखने में आते हैं, परन्तु यह हलायुध वे ही हैं या नहीं, इसमें सन्देह है।

धन्वन्तरि—महाराज विक्रम की सभा के नवरत्नों में इनका नाम प्रथम लिखा हुआ मिलता है। जिससे इनकी विशेष विद्वत्ता और योग्यता के विषय में सन्देह नहीं रह जाता। मन्थराचल के मथे जाने पर समुद्र से जो १४ रत्न निकले, उनमें अमृत का कलश हाथ में लिये धन्वन्तरि का भी उल्लेख मिलता है। पुराणों तथा हरिवंश में धन्वन्तरि काशिराज प्रसिद्ध हैं। धन्वन्तरि काशी में रहते थे और वृद्धकाल का कूप आज तक काशी में उनका स्मारक बना हुआ है। यह कूप मुहल्ला दारानगर मे मृत्युञ्जय महादेव के मन्दिर के निकट है। लोगों का यह भी कथन है कि धन्वन्तरि वैद्य परलोक सिधारते समय अपनी गुणकारी ओषधियों को वृद्धकाल के कुएं में छोड़ गये। जिसके प्रभाव से उस कूप का पानी आरोग्यवर्द्धक है। अतएव धन्वन्तरि वैद्य काशी के निवासी और एक अति प्राचीन व्यक्ति सिद्ध होते है। कुछ लोगों का मत है कि, ये ही धन्वन्तरि वैद्य विक्रमादित्य के सभारत्न और प्रसिद्ध कवि थे। पर इसका कुछ भी प्रमाण नहीं मिलता।

मैं तो धन्वन्तरि वैद्य और धन्वन्तरि कवि को भिन्न भिन्न समझता हूँ। इनमें से वैद्यराज तो पौराणिक काल के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। इनका समय तो खीष्ट के पीछे कभी हो ही नहीं सकता। किन्तु जो धन्वन्तरि कवि हैं वे विक्रम के सभारत्न उज्जयिनी के निवासी और खीष्टीय छठवीं सदी के व्यक्ति है। यह कालिदास, घटकर्पर आदि के समकालीन हैं। इनका बनाया कोई ग्रन्थ देखने व सुनने में नहीं आया। नवरत्न के श्लोकों में इनका रचा श्लोक मिलता है जिससे अनुमान होता है कि यह अद्भुत कवि थे।

धनिक—यह विष्णु कवि के पुत्र और धनञ्जय के भाई हैं। धनञ्जयरचित दशरूपक पर दशरूपकावलोक नामक तिलक इन्होंने ही लिखा है। इन्होंने निजरचित ग्रन्थ में विद्धशालभञ्जिका के श्लोक उदाहरण में उठाये हैं। जिससे सिद्ध होता है कि, राजशेखर इनसे पहिले हो चुके हैं। दशरूपकावलोक में

इन्होंने स्वरचित पद्य भी लिखे हैं तथा पद्मगुप्त और रुद्र इन कवियों का भी नाम लिया है, पर इनमें से पद्मगुप्त तो राजा मुञ्ज के सभारत्न हैं और धनञ्जय के साथ इनका उल्लेख किया जा चुका है और रुद्र कदाचित् काव्यालङ्कार-कर्त्ता रुद्र ही होंगे। उनका समय लोगों ने सन् ८५० ई० अनुमान किया है। श्रृङ्गारतिलक के रचयिता रुद्रभट्ट कदाचित ये ही काव्यालङ्कारकर्त्ता रहे हों, पर इनका प्रमाण मिलना दुर्घट है।

धर्मदास—काव्यसंग्रह में इनका रचित विदग्धमुखमण्डन नामक ग्रन्थ छपा है। इसके मङ्गलाचरण में ग्रन्थकार ने बुद्धदेव की स्तुति इस प्रकार की है:—

सिद्धौषधानि भवदुःखमहापदानां,
पुण्यात्मनां परमकर्णरसायनानि।
प्रक्षालनैकसलिलानि मनोमलानां,
शौद्धोदनेः प्रवचनानि चिरञ्जयन्ति॥

इससे अनुमान होता है कि, ये बौद्ध रहे होंगे, किन्तु इनका निवासस्थान वा समय इनके रचित ग्रन्थो से विदित नहीं होता। विदग्धमुखमण्डन तो एक प्राचीन ग्रन्थ जान पड़ता है। सम्भव है कि, यह कवि उस समय के होंगे, जिस समय भारत में बौद्धधर्म का प्राबल्य सातवीं या आठवीं सदी में रहा होगा—ऐसा इतिहास से सिद्ध होता है। जब तक भगवत्पाद् शङ्कराचार्य ने बौद्धों को शास्त्रार्थ में परास्त न किया, तब तक वे भारत में बढ़ते गये। यदि धर्मदास बौद्धों के प्राबल्य काल में सब से पिछले माने जाँय, तो उनका समय शङ्कराचार्य के कुछ ही पूर्व का हो सकता है। हरिमोहन प्रामाणिक के कथनानुसार, यदि उस समय मगध देश में बौद्धधर्म का विशेष प्रचार ठीक मान लिया जाय, तो सम्भव है कि यह कवि मगध के निवासी रहे होंगे। इनका समय अनुमान से खीष्टीय आठवी शताब्दी के पूर्व माना जा सकता है।

धावक—पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने लिखा है कि, ऐसी किंवदन्ती प्रचलित है कि धावक नामक किसी कवि ने रत्नावली और नागानन्द नामक नाटक बनाये। राजा श्रीहर्ष ने धन देकर धावक को सन्तुष्ट किया और इन दोनों नाटकों को अपने नाम से प्रचलित करवाया। प्रसिद्ध और मुख्य अलङ्कार शास्त्रवेत्ता पण्डित मम्मटभट्ट के लेख से भी यही-बात पक्की होती है। पर धावक और राजा श्रीहर्ष इन दोनों के समय में सहस्र से भी अधिक वर्षों का अन्तर पड़ता है। दोनों एक ही समय के जन नहीं हो सकते। कालिदास-विरचित "मालविकाग्निमित्र" नाटक की प्रस्तावना में प्राचीन नाटक लिखने वालों के बीच धावक का भी नाम लिखा मिलता है। इसके अनुसार धावक विक्रमादित्य के बहुत पूर्व प्रकट हुए जान पड़ते हैं। अतएव यह किंवदन्ती और उसका मूलस्वरूप मम्मट का भी सिद्धान्त ठीक नहीं जँचता। जब श्रीहर्ष का एक अच्छा कवि होना और सब देशों की भाषाओं का जानना प्रामाणिक इतिहासग्रन्थों से सिद्ध होता है, तब निर्मूल किम्वदन्ती तथा मम्मट का लेख सँभालने के लिये किसी दूसरे धावक कवि की कल्पना कर के श्रीहर्ष की कविविषयक कीर्ति को उड़ा देना, किसी भी रीति से न्याय नहीं जान पड़ता।

उपरोक्त मत से प्रकट होता है कि धावक का समय विक्रम से भी बहुत पूर्व रहा होगा। परन्तु ध्यान रखना चाहिये कि, मालविकाग्नि की केवल दो एक प्रतियों में धावक नाम मिलता है। भासक, धावक का नामान्तर नहीं हो सकता। यदि भासक के स्थान में लेखक भूल से धावक लिख गया हो तो कदाचित् सम्भव है। ऐसे लेखकों के प्रमाण से मम्मट की उक्ति की भूल निकालना

श्लाघ्य नहीं है। मेरी समझ मे मम्मट का कथन ठीक ज्ञान पड़ता है। क्योंकि काव्यप्रकाश के टीकाकारों ने यही किम्वदन्ती उठाई है जिसे विद्यासागर महाशय झूठी ठहराते हैं। प्रत्युत जिस श्रीहर्ष ने धावक से ग्रन्थ बनवाया वह काश्मीर का राजा नहीं है, किन्तु वह कान्यकुब्ज का हर्षवर्द्धन है, जिसके यश का वर्णन बाणभट्ट ने हर्षचरित में किया है। यदि यह बात ठीक हो, तो धावक कवि मम्मट के समकालीन सिद्ध होते हैं और विद्यासागर की बात कट जाती है। अतएव धावक का समय खीष्टीय सातवी सदी के प्रारम्भ का भाग अनुमित होता है।

धोयी—जयदेव ने गीतगोविन्द में "धोयी कविक्ष्मापतिः" लिख कर धोयी की प्रशंसा की है। इसमें सन्देह नहीं कि धोयी एक अच्छे कवि थे। इनका बनाया पवनदूत नामक एक ग्रन्थ है। इसकी रचनाशैली कालिदास के मेघदूत से बिल्कुल मिलती जुलती है। इसमें कुवलयवती नाम नायिका ने पवन द्वारा अपने प्राणप्रिय राजा लक्ष्मण के पास अपने विरह का संदेशा भेजा है। इसमें सन्देह नहीं कि, यह महराजा लक्ष्मण बंगाल का सेनवंशीय राजा लक्ष्मणसेन है; जिसके सभासद जयदेव, धोयी, गोवर्द्धन, शरण, उमापतिधर आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध कविवर थे। अतः उन समस्त कवियों की तरह धोयी बंगाल निवासी ही होंगे। लक्ष्मणसेन के पिता का नाम वल्लालसेन था; जिसने सन् ११०१ ई० में दानसागर नामक ग्रन्थ रचा। जयदेव आदि का समय खीष्टीय १२वीं सदी का पूर्वभाग पहिले निर्णीत हो चुका है। अतएव उसीके अनुसार धोयी कवि का समय निश्चय किया जा सकता है। अर्थात् धोयी कवि का समय भी सन् ११०० ई० से ११५० ई० तक माना जा सकता है। धोयी का यह श्लोक प्रसिद्ध है:—

इक्षुदण्डं कलानाथं, भारतं चापि वर्णय।
इति धोयी कविर्ब्रूते, प्रतिपर्व रसायनम्॥

नागेशभट्ट या नागोजी भट्ट – साहित्य-मर्मज्ञ महावैयाकरण नागेशभट्ट का नाम संस्कृत-साहित्य में तब तक जगमगाता रहेगा; जब तक पृथ्वी पर उनके ग्रन्थ-रत्नों में से एक भी अक्षर अवशिष्ट रहकर सहृदयों के मन को रञ्जित करता रहेगा। इनकी संस्कृत-साहित्य में इतनी प्रसिद्धि है कि, केवल नाम भर ले लेना ही पर्याप्त है। प्रायः प्रत्येक शास्त्र पर इन्होंने अपने उज्ज्वल विचार प्रकट किये हैं, जो इनके बुद्धि-कौशल और ज्ञान-गौरव के ज्वलन्त प्रमाण हैं।

नागेशभट्ट के पिता का नाम शिवभट्ट और माता का सती देवी था। ये महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। प्रसिद्ध वैयाकरण "सिद्धान्तकौमुदी" के प्रणेता श्रीभट्टोजीदीक्षित के पौत्र हरिदीक्षित इनके व्याकरण विषयक विद्यागुरु थे। न्याय-शास्त्र इन्हे "राम" नामक तात्कालिक विद्वान् ने पढ़ाया था। इसी प्रकार विभिन्न शास्त्रों के विशिष्ट विद्वान् आचार्यों से इन्होने विद्याभ्यास किया था। अधिकतर निवास स्थान इनका काशी था। शृंगवेरपुर के गुणज्ञ महाराज "राम" ने इन्हे सम्मान-पूर्वक जीविका दी थी।

शृंगवेरपुर के राजा "राम" जैसे दानवीर थे, वैसे ही युद्धवीर भी थे। इन्हीं महाराज का पूरा नाम "रामदत्त" था; परन्तु नागेशभट्ट प्रायः "राम" ही लिखते थे। अध्यात्म-रामायण की टीका के प्रारम्भ में इन्होंने राजा साहब का यह पूरा नाम लिखा है। ये गुण-ग्राही राजा साहब "विशेन" वंश के क्षत्रिय थे और इनके पिता का नाम "हिम्मति" वर्म्मा था। ये सब बातें भी पूर्वोक्त टीका के प्रारम्भ ही में नागेशभट्ट ने लिखी हैं। यह टीका इन्हीं राजा साहब ने करायी थी। महाराज रामदत्त को नागेशभट्ट ने अपना शिष्य लिखा है और उसके लिये "श्रीरामभक्त" और "सर्वविद्यामर्मज्ञ" आदि विशेषण दिये हैं।

वाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि, शृंगवेरपुर गंगा के किनारे है। शृंगि-ऋषि का यही आश्रम था। आजकल इसका "सिंघोर" नाम है, जो प्रयाग के पास ही गंगा के किनारे है। अस्तु।

नागेशभट्ट सब शास्त्रों में निष्णात थे, पर व्याकरण और साहित्य की साक्षात् मूर्त्ति ही थे। इनके बनाये ग्रन्थ ये हैं:—

१ बृहन्मञ्जूषा
२ लघुमञ्जूषा
३ लघुशब्देन्दुशेखर
४ परिभाषेन्दुशेखर
५ लघुशब्दरत्न
६ प्रायश्चित्तेन्दुशेखर
७ आचारेन्दुशेखर
८ तीर्थेन्दुशेखर
९ श्राद्धेन्दुशेखर आदि बारह शेखर हैं।

साहित्य में भी इन्होंने जो कुछ किया है, सो सब अकाट्य ही है। "काव्य-प्रकाश" की "काव्यप्रदीप" नामक टीका जो प्रसिद्ध नैयायिक श्रीगोविन्द ठक्कुर ने की है, उस "प्रदीप" का इन्होंने "प्रदोपोद्योत" विवरण बनाया है। इस 'प्रदीपोद्योत" में न केवल "प्रदीप" का ही, किन्तु काव्यप्रकाश" का भी वह मर्म प्रकाशित किया है; जो "ठक्कुर" महोदय से रह गया था। वास्तव में इस उद्योत से ही "प्रदीप" है। उसमें से यदि यह "उद्योत" अलग कर दिया जाता है, तो फिर "प्रदीप" कोरा रह जाता है और साथ ही "काव्य-प्रकाश" का प्रकाश भी धुंधला सा नज़र आता है। इसके अतिरिक्त मुसलमान बादशाह शाहजहाँ के सम्मानित पंडितराज जगन्नाथ के "रस गङ्गाधर" की भी इन्होने "मर्म-प्रकाश" नामक टीका लिखी है। रत्न सोने ही में शोभा पाता है। वास्तव में पण्डित-राज के अनुपम ग्रन्थ "रस-गंगाधर" को योग्य ही टीकाकार भी मिले। इस मर्म-प्रकाश में प्रत्येक बात का मर्म बड़ी ख़ूबी के साथ खोला गया है। नागेशभट्ट ने व्याकरण और साहित्य के अतिरिक्त, वेदान्त, न्याय, वैशेषिक, योग, सांख्य, धर्मशास्त्र और पुराण आदि सभी विषयों पर बीसों ग्रन्थ बनाये हैं, परन्तु टीकायें या विवृति ही। मूलग्रन्थ इन्होंने बहुत कम लिखे हैं। इनके टीका ग्रंथ ऐसे हैं कि, जिन्हें देखते हुए "गुरु तो गुड़ ही रहे चेला शक्कर हो गये" वाली कहावत याद आती है। स्वय मूल-ग्रथ न लिख कर भी, टीका ग्रथों हो में जो इन्होंने मौलिक सिद्धान्तों की वर्षा की है, वर्षा भी कैसी? जो मूलग्रन्थ के लेखकों को भी नसीब न हुई; उसे देखते हुए इनकी बुद्धि-वैभव का जितना पता चलता है; उससे बहुत अधिक इनके साहित्य की पवित्र झलक हमें चकित करती है।

कहते हैं, व्याकरण का "शब्दरत्न" जो प्रसिद्ध टीका-ग्रन्थ है, जिसके प्रणेता "हरिदीक्षित" प्रसिद्ध हैं, सो यह प्रोज्वल ग्रन्थ-रत्न भी नागेशभट्ट ही की कृति है। इन्होंने अपने गुरु के नाम से इसकी रचना की थी। इसी प्रकार अध्यात्म-रामायण और वाल्मीकीय रामायण की रामाभिरामी टीकाएं अपने आश्रय-दाता शृङ्गवेरपुर के महाराज रामदत्त के नाम से की हैं। पहले इस प्रकार दूसरे के नाम से निबन्ध बनाने बनवाने की प्रायः चाल सी थी; जो कई जगह दृष्टि में आती है।

नारायण—मुहूर्तमार्त्तण्ड नामक जो संस्कृत में ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ है उसके रचयिता नारायण हैं। इन्हीं महाशय ने अपने इस निज रचित ग्रन्थ पर मार्त्तण्डवल्लभा नामक एक टीका भी की है। पं० सुधाकर

द्विवेदी के मत से इन ग्रन्थों का निर्माण काल शाके १४६३ (सन् १५७१ ई०) और शाके १४६४ (सन् १५७२ ई०) हैं। यही समय स्वयं नारायण ने अपने ग्रन्थ में लिखा है। मुहूर्तमार्तण्ड ग्रन्थ के अन्त में अपना कुछ विशेष परिचय भी इन्होंने दिया है। यथा:—

> श्रीमत्कौशिकपावनो हरिपदप्रत्यर्पितात्मा हरिः,
> तज्जोऽनन्त इलासु रोचितगुणो नारायणस्तत्सुतः।
> ख्यात देवगिरेः शिवालयमुदक् तस्मादुदक् टापरे,
> ग्रामस्तद्वसतिर्मुहूर्त्तभवनं मार्त्तण्डमत्राकरोत् ॥

इससे विदित होता है कि इनके पिता का नाम अनन्त और निवास स्थान देवगिरि से कुछ हटकर टापर नाम एक गाँव था। सन् १५७१ और सन् १५७२ ई० में ग्रन्थ बनाने से इनका समय खीष्टीय १६वीं सदी का पिछला भाग मान लेने में कुछ भी बाधा नहीं हो सकती।

निम्बादित्य—चार वैष्णव सम्प्रदायों का नाम पद्मपुराण में लिखा हुआ है। उनमें प्रथम श्रीरामानुज या श्रीसम्प्रदाय है, जो विशिष्टाद्वैतवाद का अनुयायी है। दूसरा माध्वसम्प्रदाय है जिसके मत में ब्रह्म और जीव भिन्न भिन्न माने गये हैं। तीसरा विष्णुस्वामी का सम्प्रदाय है, जिसे निम्बादित्य ने प्रवर्तित किया है और जिसका सिद्धान्त भेदाभेदवाद है। इनके मतानुसार जैसे डाल, पत्ते आदि वृक्ष से भिन्न हैं और अभिन्न भी वैसे ही जीव और ब्रह्म भिन्न भी है और अभिन्न भी।

इनका नाम निम्बादित्य पडने का कारण यह सुनने में आता है कि, कोई जैन संन्यासी इनसे शास्त्रार्थ करने आया और वादविवाद करते करते साँझ हो गयी। जब जैन संन्यासी ने साँझ हो जाने पर भोजन न करने का विचार बाँधा तब इन्हीं आचार्य ने नीम के वृक्ष पर सूर्य को तब तक रोक रखा ; जब तक कि संन्यासी ने अपना भोजन प्रस्तुत करके खा न लिया। कुछ लोग कहते हैं कि जब संन्यासी ने साँझ होने पर उपवास करने का प्रस्ताव किया; तब निम्बादित्य ने नीम के पेड़ पर चढ़ के उन्हें सूर्य दिखला कर कहा कि, अभी साँझ नहीं हुई है। नीम के पेड पर से सूर्य को दिखला देने अथवा वहाँ पर सूर्य को रोक रखने से इन आचार्य का नाम निम्बादित्य अथवा निम्बार्क पडा।

निम्बादित्य के रचित ग्रन्थ का नाम धर्माब्धिबोध है। मथुरा के निकट ध्रुवतीर्थ नाम का एक स्थान है। वहीं पर निम्बादित्य की गद्दी है। लोगों का कहना है कि उनकी गद्दी पर उनके शिष्य हरिव्यास की सन्तान आज तक विराजमान है। ये लोग निम्बार्कस्वामी का समय १४२० वर्ष से भी पूर्व का बतलाते है, परन्तु ऐसा तो हो ही नहीं सकता। क्योकि तीसरे वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक विष्णुस्वामी सन् १५७८ ई० में वर्तमान थे। तब निम्बादित्य अवश्य उनके पीछे हुए। अतएव इनका समय १६वीं सदी का पिछला या १७वीं सदी का प्रारम्भ का भाग मान लिया जा सकता है। इनके प्रसिद्ध शिष्यों के नाम केशव और हरिव्यास हैं।

नीलकण्ठ (१) यह महाशय एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनकी बनायी "ताजिक नीलकण्ठी" नाम की फलित ज्योतिष की एक पुस्तक का भारतवर्ष के ज्योतिषियों में बड़ा आदर है। इनके पिता का नाम अनन्त और पितामह का चिन्तामणि था। प्रसिद्ध रामदैवज्ञ जिन्होंने "मुहूर्तचिन्तामणि" ग्रन्थ बनाया इन्हींके छोटे भाई थे। नीलकण्ठ के पुत्र एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्होंने मुहूर्तचिन्तामणि की पीयूषधारा नाम की टीका लिखी है। ग्रन्थारम्भ में ये अपने पिता का वर्णन इस प्रकार से करते हैं.—

सोमामीमांसकानां कृतसुकृतचयः कर्कशस्तर्कशास्त्रे,
ज्योतिःशास्त्रे च गर्गः फणिपति भणित व्याकृतौ शेषनागः ।
पृथ्वी शाक्बरस्य स्फुरदतुलसभामण्डनं पण्डितेन्द्रः,
साक्षात् श्रीनीलकण्ठः समजनि जगतीमण्डले नीलकण्ठः ॥

इससे स्पष्ट है कि ये मीमांसक, नैयायिक, ज्योतिषी और वैयाकरण थे तथा अकबर बादशाह के सभासद भी थे। इनका निवासस्थान विदर्भ देश और उनकी स्त्री का नाम पद्मा था। अकबर बादशाह के समकालीन होने के कारण इनका समय खीष्टीय १६वीं शताब्दी का पिछला भाग अनुमित होता है।

नीलकण्ठ चतुर्धर—महाभारत पर इनका नीलकण्ठी टीका सर्वप्रसिद्ध है। यह कट्टर शैव थे, तथा निज रचित टीका में अपना साम्प्रदायिक आग्रह प्रदर्शित करने मे इन्होंने सङ्कोच नहीं किया। इनके विद्वान् होने में सदेह नही, पर यह कब हुए और इनके माता पिता का क्या नाम था तथा कहाँ के रहने वाले थे इन बातों का पता लगाना अभी बाकी है।

पक्षधर मिश्र—यह एक उद्भट नैयायिक तथा असामान्य बुद्धिमान् थे। इनके विषय में अनेक किम्वदन्तियाँ प्रचलित है, बहुत लोगों का कहना है कि पक्षधर मिश्र और प्रसन्नराघव के बनाने वाले जयदेव एक ही हैं। जो हो, यह मिथिला के वासी थे।

पक्षिल स्वामी—एक अति प्राचीन नैयायिक विद्वान्। गौतमविरचित न्यायसूत्रों पर भाष्य करने वालों में यह सब से प्राचीन हैं। इनका बनाया भाष्य अन्य भाष्यों की अपेक्षा उत्तम समझा जाता है। खीष्टीय सदी के पूर्व चौथी सदी में इनके विद्यमान होने का पता पाया गया है। हेमचन्द्र ने अपने अभिधान मे पक्षिल स्वामी और चाणक्य को एक व्यक्ति माना है। इनका नामान्तर वात्स्यायन था। यह चन्द्रगुप्त की सभा में विद्यमान थे।

पंचशिख / पञ्चशिख—यह साख्यदर्शन के सम्प्रदाय में एक प्रसिद्ध दार्शनिक हो गये है। इनके गुरु विख्यात दार्शनिक महात्मा आसुरि थे। आसुरि के गुरु साख्यदर्शनप्रणेता महर्षि कपिल थे, पञ्चशिख ही ने सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों का प्रचार किया था। आसुरि की स्त्री का नाम कपिला था। पञ्चशिख पुत्ररूप से अपनी गुरुपत्नी कपिला का स्तन्यपान करते थे। इसीसे वे कपिलापुत्र के नाम से भी प्रसिद्ध हुए।

पतंजलि / पतञ्जलि—यह प्राचीन वैयाकरण महाभाष्य के रचयिता हैं। हिन्दुस्थान के पूर्वभाग में गोनर्द नाम प्रदेश पतजलि का निवासस्थान है। उनकी माता का नाम गोणिका था। महाभाष्य के वाक्यों को उठा उठा के भाण्डारकर और गोल्डस्टुकर ने इनका समय निर्णय करने का प्रयत्न किया है। और सिद्ध किया है कि, पतजलि यूनानी मिनेंडर और पाटलिपुत्र के राजा पुष्पमित्र के समकालीन हैं, इन महानुभावो के मतानुसार पतजलि का समय सन् ईस्वी के १४० वर्ष पूर्व से १२० वर्ष पूर्व तक निश्चित हुआ है। पतजलि ने जो—

"मौर्यैर्हिरण्यार्थिभिरर्चाः प्रकल्पिताः।"

अर्थात् मौर्यवंशीय राजाओ ने सुवर्ण की कामना से पूजा का व्यवहार चलाया—ऐसा वाक्य लिखा है। इससे गोल्डस्टुकर साहब समझते हैं कि वे मौर्यवंशीय प्रथम राजा चन्द्रगुप्त से पूर्व न रहे होंगे। अर्थात् सन् ईस्वी से ३१९ वर्ष पूर्व समय की अपेक्षा प्राचीनतर न होंगे। प्रत्युत सम्भव है कि उस वश के अन्तिम राजा के भी पीछे अर्थात् सन् ईस्वी से १८० वर्ष पूर्व रहे हो। क्या इस अनुमान को अलीक ठहराने का साहस कोई कर सकता है।

पतंजलि के और और वाक्य ; यथा—

"अरुणद्यवनसाकेतम् ।"

अर्थात् यवन राजा ने अयोध्यापुरी को घेरा, और—

"अरुणद्यवनो माध्यमिकान् ।"

अर्थात् यवन राजा ने माध्यमिकों को घेरा । इससे अनुमान होता है कि, यूनान वालों ने पतंजलि ही के समय में अयोध्या को घेरा था । माध्यमिक नागार्जुन के शिष्यों का एक सम्प्रदाय है जो कि शून्यवादी बौद्धों के नाम से विशेष परिचित है । अब विचारना चाहिये कि यूनान वालों ने अयोध्या पर कब चढ़ाई की है । प्राचीन यूनान के इतिहास से विदित होता है कि, स्ट्रैबो के वर्णनानुसार राजा मिनेंडर ने यमुना नदी तक के देशों को विजय किया । मथुरा में इसके नाम के सिक्के भी पाये गये हैं । मिनेंडर का राज्यकाल प्रोफेसर लासेन के मतानुसार सन् ईस्वी से १४४ वर्ष पूर्व है । निदान इन सब बातों से निस्सन्देह यह बात प्रतीत होती है कि पतंजलि सन् ईस्वी की पिछली या दूसरी शताब्दी में वर्त्तमान थे ।

पतंजलि वैयाकरण होने के अतिरिक्त एक अति प्रसिद्ध दार्शनिक भी थे और इनका रचित पातंजल योगसूत्र भी प्रसिद्ध हैं । इनके ग्रन्थ की टीका स्वयं व्यासजी ने की है । लोगों को सन्देह भी हुआ करता है कि व्यास का जीवन कितना अधिक रहा होगा कि वे पतंजलि के पीछे तक वर्तमान रहे हों; पर ऋषियों का चिरायु होना कोई असम्भव बात नहीं है ।

पद्मगुप्त—इनका उल्लेख ऊपर धनंजय और धनिक के वर्णन में आ चुका है । यह महाशय राजा मुञ्ज के सभासदों में से हैं । "दशरूपकावलोक" में इनका और रुद्र कवि का भी नाम देखने में आता है । इनके रचित ग्रन्थ का नाम 'नवसाहसाङ्कचरित" है । मुञ्ज के पीछे राजा सिन्धुराज ने सम्भवतः सन् ९९५ ई० से १०१० ई० तक राज्य किया और उन्हींकी प्रतिष्ठा तथा कीर्त्ति के लिये सन् १०१० ई० में नवसाहसाङ्कचरित बनाया गया है । इस कवि का नामान्तर परिमल भी था ।

पाणिनि—संस्कृत भाषा जानने वालों में ऐसा कोई भी न होगा जो पाणिनि की अष्टाध्यायी को न जानता हो । संस्कृत भाषा के आधुनिक यावत् व्याकरणों के मूल यही पाणिनि हैं । पर इनकी जीवनी प्रायः अभी तक अन्धकार में है । निःसन्देह यह महाशय अत्यन्त विद्वान् थे—केवल इतना ही कहना पर्याप्त नहीं है; प्रत्युत यह ऋषि हैं । केवल रामायण, महाभारत एवं पुराणों को छोड़ अन्य संस्कृत ग्रन्थों में आर्षप्रयोग अर्थात् पाणिनिरचित व्याकरण द्वारा प्रसिद्ध प्रयोग नहीं मिलता । पाणिनि ऋषि थे, केवल यह कहकर ही उन्हें अति प्राचीन जन समझ लेना और उनके समय के सम्बन्ध में विचार न करना, उचित नहीं जान पड़ता । अतएव आजकल के विद्वानों ने पाणिनि के विषय में जो कुछ विचार किया हैं, उसे भी देखना आवश्यक है ।

प्रो० मैक्समूलर के कथनानुसार पाणिनि, कात्यायन—वररुचि के समकालीन और सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पूर्व के व्यक्ति जान पड़ते हैं । कात्यायन—वररुचि का वर्णन पहले हो चुका है और वहाँ पर पाणिनि को भी प्रायः उनका समसामयिक कहा है । मैक्समूलर अपने इस अनुमान का प्रमाण सोमदेवभट्टरचित कथासरित्सागर को उत्थापित करते है । पर कथासरित्सागर कहाँ तक ऐतिहासिक विषयों में प्रामाणिक हो सकता है ; इसमें क्या सन्देह है । क्या काश्मीर ही में रचे जाने के कारण—कथासरित्सागर राजतरंगिणी के समान प्रामाणिक ग्रन्थ मान लिया जा सकता है ? क्या सोमदेव भी कल्हण की तरह इतिहास लिखने बैठे थे ?

जहाँ तक ज्ञात हो सकता है केवल इतना ही विदित होता है कि काश्मीर के महाराज अनन्तदेव की पटरानी सूर्यवती के मनस्तोष के लिये सोमदेव ने कथासरित्सागर नाम का ग्रन्थ रचा। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि, मनस्तोष के लिये कोई इतिहास रचा। फिर भी ग्रन्थ ऐसी कहानियों से भरा हुआ है कि जिनका मूल ऐतिहासिक समझना बडी भारी भूल की बात होगी। इन्ही कात्यायन, वररुचि ही के वर्णन-प्रकरण में प्रो० मैक्समूलर ने कुछ बातों को ऐतिहासिक सत्य अनुमान कर लिया है। किन्तु औरों को नहीं! नहीं जान पड़ता कि, ऐसे अनुमानों का नियामक क्या है? प्रो० मैक्समूलर का अनुमान तो यहाँ तक बतलाता है कि पाणिनि के समय तक हिन्दुस्थान के लोगों को लिखने की विद्या का ज्ञान न था, अर्थात् सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पूर्व तक हिन्दुओं को लिखना नहीं आता था। गोल्डस्टुकर ने इस अनुमान की भूल दिखलाने के लिये बड़ा परिश्रम किया है तथा पाणिनि के ग्रन्थ के शब्दों द्वारा इसके विरुद्ध मत सिद्ध होने के प्रमाण दिखलाये है। वे शब्द नीचे लिखे जाते हैं।

यवनानी—अर्थात् यवनो की लिखावट।

लिपिकर—अर्थात् लिखने वाला। पाटल, काण्ड सूत्र और पत्र। इन शब्दों से मुख्यकर वृक्ष के अवयवों का निर्देश होता है। पर असम्भव नहीं कि पुस्तक के सम्बन्ध में भी इनका प्रयोग होता रहा हो।

वर्ण—और कार ये शब्द अक्षरों के लिये हैं।

लोप—अक्षर का लुप्त वा दृष्टि से बहिर्गत होना इत्यादि।

इन शब्दों को देखने और उनके ग्रन्थों को विचारने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि, पाणिनि के समय में भी भलीभाँति लिखने का प्रचार रहा होगा। गोल्डस्टुकर साहब कहते हैं कि सम्भव है जिस समय यूनान देश में प्लेटो और एरिस्टाटिल सरीखे प्रसिद्ध ग्रन्थ—लेखक उन्नति को प्राप्त हुए हों, उस समय हिन्दुस्थानवाले लिखने की जैसी अत्यन्त उपयोगी विद्या को न जानते हों? मैं तो अपनी बुद्धि के अनुसार इसके उत्तर में कहूँगा कि नहीं, और फिर पाणिनिरचित ग्रन्थ में जो उपरोक्त शब्द आये हैं वे सिद्ध करते हैं कि, पाणिनि के समय में लिखना प्रचलित था।

पाणिनि के समय सम्बन्धी—निर्णय के विषय में प्रो० मैक्समूलर का सिद्धान्त गोल्डस्टुकर के कथनानुसार अशुद्ध प्रतीत होता है। पर आश्चर्य तो यह है कि, बोथलिंक भी पाणिनि को सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पूर्व का व्यक्ति समझते हैं। उनका कथन है कि, काश्मीर के इतिहास राजतरंगिणी में लिखा मिलता है कि, अभिमन्यु ने चन्द्र तथा और और वैयाकरणों को पतंजलिविरचित महाभाष्य को काश्मीर में प्रचलित करने का आदेश दिया। अभिमन्यु का समय सन् ईस्वी से १०० वर्ष पूर्व है, अतएव पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य रचा गया। उसे और ५० वर्ष पीछे का अर्थात् सन् ईस्वी से १५० वर्ष पूर्व रचा हुआ मान लेने में कोई बाधा नहीं पड़ती। पतंजलि और पाणिनि के बीच में अन्य तीन वैयाकरण अर्थात् १ परिभाषा के रचयिता कात्यायन, २ कारिका के रचयिता और ३ स्वयं पाणिनि हैं। यदि इन तीनों में से प्रत्येक वैयाकरण के लिये औसत दर्जे ५० वर्ष का भी अन्तर मान लिया जाय तो कथासरित्सागर के निर्णयानुसार पाणिनि का समय सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पहिले जा पहुँचता है। बोथलिंक के इस अनुमान को गोल्डस्टुकर अत्यन्त दुर्लभ समझते है और उसकी उपेक्षा करते हैं।

गोल्डस्टुकर का मत है कि पाणिनि, कात्यायन की अपेक्षा प्राचीन व्यक्ति हैं। इसकी पुष्टि में वे निम्न चार युक्तियाँ देते हैं :—

१—कुछ शब्द पाणिनि के समय में प्रचलित तथा व्याकरणानुसार सिद्ध थे। पर कात्यायन के समय में वे अप्रचलित वा अशुद्ध होगये।

२—कात्यायन के समय में कुछ शब्दों के ऐसे अर्थ लगाये जाने लगे जैसे कि पाणिनि के समय में नहीं लगते थे।

३—शब्द और उनके अर्थों का जैसा प्रयोग पाणिनि के समय में था वैसा पीछे कात्यायन के समय में न रह गया।

४—संस्कृत विद्या ने कात्यायन के समय में एक नवीन अर्थात् पाणिनि के समय से भिन्न रूप धारण किया।

इन युक्तियों के सिद्ध करने में गोल्डस्टुकर साहब ने पाणिनिर्विरचित अष्टाध्यायी के सूत्रों का उदाहरण प्रमाण की तरह उठाया है। उनके देखने से सम्भव जान पड़ता है कि पाणिनि और कात्यायन दोनों के समय में संस्कृत व्याकरण की एक ही दशा न रही होगी। अतएव उक्त महाशय का यही मत है कि पाणिनि कात्यायन की अपेक्षा प्राचीन है।

गोल्डस्टुकर साहब आगे कहते हैं कि पाणिनि के ग्रन्थों से यह विदित नहीं होता कि उनके समय में वेद का आरण्यक भाग प्रचलित था, " क्योंकि उनके ग्रन्थ में आरण्यक शब्द का अर्थ वन में रहने वाला मनुष्य था। पीछे से इस शब्द के अर्थ—१ वन का मार्ग। २ बनैला हाथी। ३ बनैला सियार आदि भी हो गये। पर अब इस आरण्यक शब्द का प्रचलित अर्थ लोग वेद का वह भाग बतलाते हैं, जो उपनिषदों के पूर्व रचा गया। ऐसे आरण्यक, ऐतरेयारण्यक, बृहदारण्यकादि बहुत से हैं। किन्तु पाणिनि ने आरण्यक का अर्थ नहीं किया, तो इससे क्या सम्भव है कि पाणिनि को यह अर्थ विदित न था और उनके ग्रन्थ में इसके अर्थ का उल्लेख न मिलने पर भी क्या सम्भव है कि उस समय वेद के वे भाग न रहे हों वा पाणिनि उन्हें न जानते हों।

इसी प्रकार गोल्डस्टुकर नानाप्रकार के प्रमाणों का उपन्यास करके सिद्ध करना चाहते हैं कि पाणिनि को अधोलिखित ग्रन्थों का पता नहीं था। अथवा केवल इतना ही सही कि, उनके विदित रहने का पता पाणिनि के ग्रन्थ से नहीं लगता। वे ग्रन्थ ये हैं :—

१ वाजसनेयी संहिता
२ शतपथ ब्राह्मण
३ उपनिषद्
४ अथर्ववेद
५ छओं दर्शन [अर्थात् पूर्व और उत्तर मीमांसा, सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक]

किन्तु इनका यह सिद्धान्त कहाँ तक ठीक हो सकता है, इस बात में वैसा ही सन्देह है जैसा कि पाणिनि के सन् ईस्वी से ३५० वर्षों पूर्व मान लेने में पड़ता है। वास्तव में हिन्दू पण्डितों के विश्वासानुसार व्यास, जैमिनि कपिल, गौतम, कणाद आदि की अपेक्षा पाणिनि नवीन ही ठहरते हैं। हाँ पतंजलि चाहे उनसे पीछे माने जांय ; क्योंकि वे महाभाष्य के रचयिता हैं।

गोल्डस्टुकर साहब के मत में "प्रातिशाख्य" और "फिट् सूत्र" पाणिनि से प्राचीन हैं। "उणादिगण" और "धातुपाठ" की मूलभित्ति उन्हींकी रचना है; पर "उणादि सूत्र" पाणिनि की अपेक्षा नवीन है। इन सब का पता लगाने से संस्कृत विद्या की उन्नति व प्रचार में पाणिनि कैसे सहायक थे यह तो विदित हो सक्ता है, पर पाणिनि के समय के विषय में सन्देह बना ही रहता है।

पाणिनि के ग्रन्थ में यास्क का नाम मिलता है। उपसर्ग की परिभाषा "निरुक्त" में मिलती है। पर पाणिनि ने पृथक् उसकी परिभाषा नहीं लिखी। अनुमान होता है कि, पाणिनि ने "निरुक्त"

वाली प्रचलित परिभाषा के पर्याप्त समझ और लोगों के बीच प्रसिद्ध देख उसे छोड़ दिया है। यास्क पाणिनि की अपेक्षा प्राचीन है।

पाणिनि बुद्ध की अपेक्षा भी प्राचीन होंगे, पर वे कितने प्राचीन थे यह निर्णय नहीं हो सकता। बुद्ध का जन्मकाल प्राय. सन् ईस्वी से ६२३ वर्ष पूर्व अनुमान किया जाता है। अतएव पाणिनि सन् ६२३ ई० से अधिक प्राचीन व्यक्ति होंगे। पर यह नहीं कह सकते कि, यह बात कहाँ तक प्रमाण-सिद्ध मानी जा सकती है।

पाणिनि का निवासस्थान गान्धार देश में शलातुर नामक स्थान था और उनकी माता का नाम दाक्षी था। पतञ्जलि लिखते हैः—

"सर्वे सर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः"।

श्रीयुत महाशय रमेशचन्द्रदत्त के अनुमान से पाणिनि का समय सन् ईस्वी से पूर्व ८वीं सदी में होता है। और यास्क उनसे भी सौ वर्ष पहिले हुए थे। यद्यपि इस बात का कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता है कि, पाणिनि का ठीक ठीक समय वही है जो उक्त महाशय ने निर्देश किया है; पर बहुत सम्भव है कि, पाणिनि लगभग उसी समय रहे होंगे। क्योंकि कात्यायन का समय सन् ई० से ३५० वर्ष पूर्व माना जाय तो असम्भव न होगा कि, "अष्टाध्यायी" सरीखे व्याकरण ग्रन्थ का भारत में प्रचार होने में विशेष समय अपेक्षित हुआ हो।

पाणिनि नाम के एक कवि भी सुनने में आते हैं; जिनके रचित श्लोक वल्लभदेव द्वारा संग्रहीत "सुभाषितावली" में उल्लिखित देखने में आते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि ये कवि दाक्षीपुत्र वैयाकरण पाणिनि से भिन्न हैं। पीटर्सन साहब ने अपनी प्रकाशित "सुभाषितावली" में इनका उल्लेख किया है।

पाणिनि रचित श्लोक, यथा—

"क्षपाः क्षामीकृत्य प्रसभमपहृत्याम्बुसरिताम्,
प्रताप्योर्वीं कृत्स्नां तरुगहनमुच्छोष्यसकलम्।
क्व संप्रत्युष्णांशुर्गत इति समालोकनपरा-
स्तडिद्दीपालोका दिशिदिशि चरन्तीह जलदाः॥"

ऊपर के श्लोक में ग्रीष्म का अन्त और वर्षा का प्रारम्भ बहुत अच्छा वर्णन किया गया है।

"विलोक्य सङ्गमे रागं पश्चिमायाः विवस्वतः।
कृतं कृष्णं मुखं प्राच्या नहि नार्यो विनेर्ष्यया॥
सरोरुहाक्षीणि निमीलयन्त्या रवौगते साधुकृतं नलिन्या।
अक्ष्णां हि दृष्टापि जगत्समग्रं फलं प्रियालोकनमात्रमेव॥
प्रकाश्य लोकान्भगवान्स्वतेजसा, प्रभादरिद्रः सवितापि जायते।
अहो चला श्रीर्वलमानदामहो स्पृशन्ति सर्वं हि दशाविपर्यये॥
ऐन्द्रं धनुः पाण्डुपयोधरेण शरद्दधर्द्रनखक्षताभम्।
प्रसादयन्ती सकलंकमिन्दुं तापं रवेरभ्यधिकं चकार॥"

ये श्लोक बडी उत्तम कविता के हैं। इससे प्रकट है कि इनकी कवित्व प्रभा भी बडी ही उत्कृष्ट थी।

बाण—हर्षचरित्र, कादम्बरी, चण्डिकाष्टक और पार्वतीपरिणय के रचयिता ये ही हैं। इनके गुणग्राही सहायक कान्यकुब्ज देशाधिपति राजा हर्षवर्द्धन थे यह राजा सन् ६२६ से ६४५ के बीच राज्य करते थे। क्योंकि ह्यूनशाङ्ग यात्री ने अपनी यात्रापुस्तक में हर्षवर्द्धन का उल्लेख किया है। इससे बाण का होना सन् ६२६ से ६४५ तक पाया जाता है।

भट्ट नारायण—वेणीसंहार नामक प्रसिद्ध नाटक के रचयिता। भट्ट नारायण उन पाँच ब्राह्मणों में से हैं, जिन्हे बङ्गाल के राजा आदिशूर ने मध्यदेश से बुला कर बङ्गाल में बसाया। डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र के कथनानुसार आदिशूर ही का नामान्तर वीरसेन है और उक्त महाशय तथा रमेशचन्द्रदत्त के भी निर्देशानुसार बङ्गाल में राजा वीरसेन का समय सन् ९८६—१००६ ई० तक अनुमित होता है। भट्टनारायण ने आदिशूर को अपना परिचय निम्न श्लोक द्वारा दिया था।

> वेणीसंहारनामा परमरसयुतो ग्रन्थ एकः प्रसिद्धो—
> भोराजन्मत्कृतोऽसौ रसिकगुणवता यत्नतो गृह्यते सः।
> नाम्नाहं भट्टनारायण इति विदितश्चारुशाण्डिल्यगोत्रो,
> वेदे शास्त्रे पुराणे धनुषि च निपुणः स्वस्ति ते स्यात्किमन्यत् ॥

इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि, बङ्गाल मे आने के पूर्व भट्टनारायण "वेणीसंहार" बना चुके थे और वह ग्रन्थ प्रसिद्ध भी हो चुका था। निदान बङ्गाल के राजा आदिशूर के सम्सामयिक होने के कारण भट्टनारायण का समय खीष्टीय दसवीं सदी में निश्चित होता है। इनके रचित वेणीसंहार के श्लोक बहुधा काव्यप्रकाश में उठाये गये हैं। भट्टनारायण-रचित एक ग्रन्थ का नाम प्रयोगरत्न है। काव्यप्रकाश में जो श्लोक उदाहरण में दिये गये हैं, उनमें 'वेणीसंहार' और 'रत्नावली' के श्लोक बहुत अधिक हैं।

बङ्गाल-निवासी श्रीप्रसन्नकुमार ठाकुर अपने को भट्टनारायण का वंशज बतलाते हैं और उन्होने जो वेणीसंहार नाटक का संस्करण छपवाया है उसके आरम्भ में अपनी वंशावली भी दे दी है। उसके देखने से ज्ञात होता है कि, यह महानुभाव भट्टनारायण के वंश में ३२वीं पीढ़ी में हैं। भट्टनारायण के पिता का नाम भट्टमहेश्वर था। क्योंकि ' भट्टमहेश्वरसुतः भट्टनारायणः सुधीः " ऐसा एक श्लोकार्द्ध सुनने में आता है। किन्तु यह भट्टमहेश्वर 'साहसाङ्कचरित' के निर्माता हैं या उनसे भिन्न, इसका पता लगाना आवश्यक है।

बल्हरसाहब ने काश्मीर के शैव दार्शनिक लक्ष्मण गुप्त और उत्पल को भट्टनारायण का शिष्य बतलाया है। यह लक्ष्मण गुप्त सन् ९५० ई० में विद्यमान थे। क्या आश्चर्य जो यह भट्टनारायण भी उसी समय रहे हों।

भट्ट लोल्लट—काव्य-प्रकाश के रसनिरूपण प्रकरण में इनकी मीमांसा की रीति के सूत्र का व्याख्यान लिखा गया है। राजानक रुय्यक ने अलङ्कारसर्वस्व में इनके मत का उल्लेख किया है। अतएव यह मम्मट से प्राचीन व्यक्ति सिद्ध होते हैं। इनका रचित कोई ग्रन्थ अथवा उसका कोई अंश किसी अन्य ग्रन्थ में उद्धृत किया हुआ देखने में नहीं आया। नाम से यह महाशय काश्मीरनिवासी जान पड़ते हैं। खीष्टीय ११वीं शताब्दी से पिछले व्यक्ति ये नहीं हो सकते, पर उसके पूर्व कब तक उनके होने की सम्भावना पायी जाती है, इसका निर्णय नहीं हो पाया।

भट्टोद्भट—राजतरंगिणी के चौथे तरंग में :—

"भट्टोऽभूदुद्भटस्तस्य भूमिभर्तुः सभापतिः"—

लिखा मिलता है। इससे जान पडता है कि यह महाशय काश्मीर के राजा जयापीड़ के सभासद थे। महाराज जयापीड का राज्यत्वकाल सन् ७७९—८१२ ई० तक था। अतः भट्ट उद्भट का समय इन्हीं काश्मीर के राजा जयापीड़ के समयानुसार खीष्टीय आठवीं शताब्दी का आरम्भ मान लिया जा सकता है। इनके रचित ग्रन्थ का नाम "अलङ्कारसारसंग्रह" है। इसकी टीका प्रतीहारेन्दुराज ने रची है। इनका रचित कुमारसम्भव नाम का कोई काव्य भी होगा, जिसमे का एक श्लोक इस प्रकार है:—

या शैशरी श्रीस्तपसा मासेनैकेन विश्रुता।
तपसा तां सुदीर्घेणादूर्णवद्दधतीमधः॥

इसमे एक स्थान पर तपस शब्द का अर्थ माघ मास और दूसरे में शरीर को क्लेश देनेहारी तपस्या है। उक्त श्लोक से इनकी कवित्व शक्ति झलक जाती है इनके समसामयिक कुट्टिनीमत के रचयिता दामोदर गुप्त और वामन आदि हैं। भट्ट महाशय काश्मीरी थे व्याकरण, अलङ्कार और काव्य में ये निपुण जान पड़ते है।

काव्य-प्रकाश के टीकाकारों ने कहीं कही इन्हें उद्भट कही उद्भटभट्ट और कही कही उद्भटाचार्य भी लिखा है। अलङ्कारसारसग्रह और कुमारसम्भव काव्य को छोड, इनके बनाये और कोई ग्रन्थ है वा नहीं इसका कुछ पक्का पता नही चलता, किन्तु पाण्डित्य और इनकी सभाचातुरी की निपुणता छिपी नहीं है।

भट्टोत्पल—यह महाशय एक प्रसिद्ध ज्योतिपी है। जिन्होंने वराहमिहिर के लगभग समस्त ग्रन्थों की टीकाएँ लिखी हैं। वराहकृत पञ्चसिद्धान्तिका की टीका इनकी रचित नहीं मिलती। सम्भव है उसकी टीका बनायी ही न हो। प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है, किन्तु यह अपने ग्रन्थों में अपने को केवल उत्पल लिखते है। बृहज्जातक की टीका में, इन्होंने अपना समय शाके ८८८ अर्थात् सन् ९६६ ई० लिखा है। अतएव इनको खीष्टीय १०वी शताब्दी का मान लेना पड़ेगा।

भट्ट कल्लट—यह महाशय भी काश्मीरी थे। इनके गुरु का नाम वसुगुप्त था। वसुगुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है और स्पन्दकारिका पर स्पदसर्वस्व नामक टीका भट्ट कल्लट की ही लिखी हुई है। यह काश्मीर के राजा अवन्तिवर्मा के समकालीन है। अवन्तिवर्मा का समय राजतरंगिणी के निर्देशानुसार सन् ८५५—८८४ ई० है। निदान भट्ट कल्लट खीष्टीय नवीं सदी के पिछले भाग में वर्तमान माने जा सकते हैं। इनके पुत्र का नाम मुकुल था, जो प्रसिद्ध आलङ्कारिक थे। इनका मत शैव था। कुछ लोगो ने इनका समय सन् ८५०—८७० ई० तक अनुमान किया है।

भर्तृहरि—यह उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के भ्राता थे। विक्रमादित्य के पिता गन्धर्वसेन के औरस और एक दासी के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई थी। कुछ दिनों तक इन्होने उज्जयिनी का राज्य भी किया था। तदनन्तर अपनी पत्नी की दुश्चरित्रता से खिन्न हो, इन्होने राज्य छोड़ कर सन्यास ग्रहण किया। इनका नाम 'हरि' था। इसी से कैय्यट ने कहा है:—

"तथापि हरिवद्धेन सारेण ग्रन्थसेतुना।"

इनके नाम के साथ जो भर्तृ पद का प्रयोग किया गया है, वह प्रजापालन करने के कारण है। व्याकरण महाभाष्य की सार नाम की एक व्याख्या इन्होने बनायी थी। वाक्यप्रदीप और शतक-

ग्रंथ भी इन्हींके बनाये हुए हैं। वाक्यग्रन्थ की सारवत्ता संसारप्रसिद्ध है। इसीके आधार पर काश्मीरी पण्डित कैयट ने महाभाष्य पर प्रदीप नाम की व्याख्या की है। वाक्यप्रदीप में वाक्य और पद का विचार किया गया है। यह व्याकरण विज्ञान का बेजोड़ ग्रन्थ है। वाक्यप्रदीप पर हेलाराज और पुण्यराज की रची हुई टीकाएँ हैं। हेलाराज कल्हण से प्राचीन हैं। अतः इसीसे भर्तृहरि का समय निकाला जा सकता है।

महाकवि भवभूति—साहित्य-महोदधि के कर्णधार मालतीमाधव, वीरचरित, उत्तरचरित संस्कृत के तीन प्रधान नाटकों के कर्त्ता महाकवि भवभूति से काव्यपाठी मात्र अच्छी तरह परिचित हैं। हमें तो कुछ ऐसा ही निश्चय है कि, भवभूति की सरस्वती का रसास्वाद बिना लिये पठन पाठन फीका ही रह जाता है। मालतीमाधव में शृङ्गाररस वीरचरित्र में वीर और उत्तरचरित में करुणा—इस प्रकार काव्यपाठियों को तीन रसों से आप्लावित करती हुई और भवभूति का सहारा पा सरस्वती त्रिस्रोता होकर बही है। काव्य-वासना विदग्ध विद्वानों ने, ध्वनि को काव्य का सब से श्रेष्ठ अंग माना है।

"काव्यस्यात्मा ध्वनिः"।

सो ध्वनि भवभूति के काव्यों में जितनी अधिक है उतनी और कवियों के काव्यों में नहीं पाई जाती। यही कारण है कि काव्यप्रकाश, सरस्वतीकण्ठाभरण, वाग्भटालङ्कार आदि प्राचीन और कुवलयानन्द, चित्रमीमांसा, साहित्यदर्पण आदि नव्य साहित्य-ग्रंथों में भवभूति के श्लोकों को उदाहरण में अवश्य रखा है। जैसे आदि से अन्त तक प्रत्यक्षर में व्याप्त प्रसादगुण कालिदास के काव्य को नहीं छिपा रहने देता वैसे ही ओज-गुण-विशिष्ट-ध्वन्यात्मक अनोखी उक्ति-युक्ति भवभूति के काव्य मालतीमाधव तथा वीरचरित में टपकती है। इनका पाण्डित्य किसी अंश में कम नहीं है। किन्तु उत्तरचरित्र में तो ओर छोर को पहुँच गया है। इसीसे कहा गया है—

"उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।"

मालतीमाधव की प्रस्तावना में इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है।

दक्षिणापथ विदर्भ देश में पद्मपुर नाम का नगर है। वहाँ कृष्णयजु की तैत्तिरीय शाखा के पढ़ने वाले काश्यप गोत्र में उत्पन्न चरणगुरु, पंक्तिपावन*, पञ्चाग्नि तापने वाले, धृतव्रत अर्थात् चान्द्रायण आदि व्रत के करने वाले सोमयाग में सोम पीने वाले ब्रह्मवादी ब्राह्मण रहते थे।

ते श्रोत्रियास्तत्त्वविनिश्चयाय
भूरिश्रुतं शाश्वतमाद्रियन्ते।
इष्टाय पूर्त्ताय च कर्मणेऽर्थान्
दारानपत्याय तपोऽर्थमायुः॥

वे श्रोत्रिय ब्राह्मण तत्त्वनिश्चय के लिये अधिक वेद पढ़ते थे। धन को इष्टापूर्त्त आदि बड़े बड़े यज्ञों के निमित्त बटोरते थे। स्त्री का साथ सन्तान के लिये, विषय-भोग के प्रयोजन से नहीं करते थे। आयुष्य अधिक हो, इसलिये कि दीर्घजीवी होंगे तो तपस्या विशेष बन पड़ेगी। तात्पर्य यह है कि अब के से कार्य ब्राह्मण वे न थे।

* मनु ने पंक्तिपावन का लक्षण लिखा है कि 'पंक्ति में यदि पंक्तिपावन ब्राह्मण एक भी हो, तो वह सम्पूर्ण पंक्ति को पवित्र कर देता है"।

उन्हीं ब्राह्मणों में सुगृहीत नामधेय भट्ट गोपाल के पौत्र पवित्रकीर्ति नीलकण्ठ के पुत्र श्रीकण्ठ-पद-लाञ्छन भवभूति जातुकर्णी नाम की माता से उत्पन्न हुए।

बल्लालकृत भोजप्रबन्ध में भवभूति का नाम कई जगह पाया जाता है और और कवियों के मुकाबले भवभूति का यह प्रौढवाद है:—

हठादाक्षिप्तानां कतिपयपदानां रचयिता,
कविः स्पर्द्धालुश्चेद्भुवनजयिनाक्यचमा।
वयं तज्जानीमः कतिपयदिनैः पापिनि कलौ,
घटानां निर्मातुस्त्रिभुवनविधातुश्च कलहः॥

दो चार पद के रचने वाले कविलोग अपनी कविता के घमण्ड से भुवनविजयी वाणी को वश में किये हुए मेरे साथ हठ के वश हो यदि स्पर्द्धा करें तो जान पडता है, कलियुग में थोड़े दिनों बाद कुम्हार ब्रह्मा के साथ लड़ाई ठानेगा कि मैं भी तो रोज मिट्टी के वर्तन गढा करता हूँ तब तुमको सूरत गढ़ने का ऐसा अभिमान क्यो है।

और भी मालतीमाधव में :—

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी॥

जो कोई मूढ़मति अल्पज्ञता के कारण काव्य के मर्म को न समझ मेरी कविता का निरादर करते हैं वे समझ लें कि, ऐसे निपट मूर्खों के लिये मेरा यह प्रयत्न नहीं है, किन्तु मुझसा समान-धर्मा कहीं पैदा हो जायगा। कदाचित् कहीं कोई हो भी तो क्या अचरज है; क्यो कि समय की लम्बाई का ओर छोर नही है और यह पृथिवी कितनी विस्तृत है कौन जानता है।

भवभूति कवि कब हुए इसका ठीक पता लगाना तो दुर्घट है, किन्तु बाण, मयूर, माघ प्रभृति भोजदेव धारेश्वर की सभाके प्रधान प्रधान कवि और पण्डितों में यह भी एक थे। धारेश्वर भोजदेव का पता इतिहासों से ईस्वी सन् की दसवीं शताब्दी में लगता है। प्रकृति के वर्णन में यद्यपि कालिदास का नंबर अव्वल है, किन्तु वर्णन के द्वारा किसी वस्तु का रूप खड़ा कर देना भवभूति ही जानते थे। उत्तर-चरित्र में अवस्थान्तर या वन, पर्वत इत्यादि का वर्णन ऐसी पूर्णता और खूबी के साथ किया गया है जिसे पढ़ बोध होता है, मानों वह आँखों के सामने मौजूद है। मालतीमाधव में श्मशान का वर्णन पढ़ वीभत्सरस का रूप खड़ा होजाता है। वीभत्स के वर्णन में साहित्यवाले जितने ग्रन्थकार हैं सब ने भवभूति ही के उन श्लोकों को उदाहरण में दिया है। यथा —

उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं प्रथममथपृथूच्छोथभूयांसि मांसा—
न्यंसस्फिक्पृष्ठपिण्डाद्यवयवसुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा॥
अन्तः पर्यस्तनेत्रप्रकटितदशनः प्रेतरंकः करङ्का—
दङ्कस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति॥

ऐसे ही वीररस के दर्शन में वीरचरित्र के कितने श्लोकों को कवियों ने अपने अपने ग्रन्थों में उठाया है। भवभूति को इस समय के कोमल बुद्धिवाले छात्र क्लिष्टता और बड़े लंबे समास के लिये बहुधा बदनाम किये हुए हैं। किन्तु नीचे के इस श्लोक को ध्यान से पढ़ो। कोमल अक्षरों में प्रसादगुण निबाहते तपोवन का कैसा अनूठा और प्राकृतिक वर्णन इसमें किया है।

एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषु,
वैखानसाश्रिततरूणि तपोवनानि।
येष्वातिथेयपरमा यमिनो भजन्ते,
नीवारमुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि॥

ये वे ही तपोवन हैं, जहाँ दण्डकारण्य की पहाड़ी नदियों के किनारे किनारे उगे हुए वृक्षों की छाया में उन शान्त दान्त वानप्रस्थ गृहस्थों की कुटियाँ हैं; जो लोग केवल मूठी भर पसाई का भात पका और खाकर निर्वाह कर लेते हैं।

अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना,
तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै-
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्॥

अयन्ते बाष्पौघस्त्रुटित इव मुक्ता परिसरो,
विसर्पन्धाराभिर्लुठति धरणीं जर्जरकणः।
निरुद्धोऽप्यावेगः स्फुरदधरनासापुटतया,
परेषामुन्नेयो भवति विरमाध्मातहृदयः॥

तत्कालं प्रियजनविप्रयोगजन्मा,
तीव्रोऽपि प्रतिकृतिवाञ्छया विसोढः।
दुःखाग्निर्मनसि पुनर्विपच्यमानो,
हृन्मर्मव्रण इव वेदनां करोति॥

ऊपर के ये सर्वाङ्गसुन्दर ३ पद्य अनोखे करुणारस के उदाहरण हैं।

नीचे के पद्यों में स्पर्शसुख और कर्णेन्द्रिय के सुख का जैसा वर्णन है उससे अधिक उत्तम वर्णन और क्या हो सकता है।

"विनिश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा,
प्रमोहो निद्रा वा किमु विषविसर्पः किमु मदः।
तव स्पर्शे स्पर्शे मम हि परिमूढेन्द्रियगणो,
विकारश्चैतन्यं भ्रमयति च सम्मीलयति च॥

म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकाशनानि,
सन्तर्पणानि सकलेन्द्रियमोहनानि ।
एतानि ते सुवचनानि सरोरुहाक्षि,
कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि ॥

इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्त्तिर्नयनयो—
रसावस्य स्पर्शो वपुषि वहुलश्चन्दनरसः ।
अयं कण्ठे वाहुः शिरसि मसृणो मौक्तिकसरः,
किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः ॥

"उत्तरचरित्र" के दूसरे अङ्क में दो तपस्वियों का प्रवेश है। उन दोनों में कैसा कोमल वार्तालाप तथा आतिथ्यसत्कार का वर्णन है, जिसे पढ़ बेशक इन दिनो के कपटी निरी चुनाचुनी के ढङ्ग पर मेहमानदारी करनेवालों को शर्म आ सकती है।

उसी अङ्क में हिंस्रजीवों से भरे हुए जङ्गल का ऐसा उत्कृष्ट वर्णन है कि पढ़ने वाले को यही भासित हो जाता है। मानों हम उसी जनशून्य निराले जङ्गल में खड़े हुए हैं। तद्यथाः

"पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरिताम्,
विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम्।
बहोर्दृष्टं कालादपरमिव मन्ये वनमिदम्,
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति ॥"

तृतीय अङ्क में रामचन्द्र ऐसे धीर गम्भीर नायक की करुणा की उपमा पुटपाक के साथ बिल्कुल नयी है। नवीन या प्राचीन किसी भी कवि को यह नहीं सूझी।

हा हा देवि स्फुटति हृदयं स्रंसते देहबन्धः,
शून्यं मन्ये जगदविरतज्वालमन्तर्ज्वलामि ।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा,
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि ॥

इसमें करुणा की चरम सीमा है। कवि की सूक्ष्म प्रतिभा इसके आगे अब और क्या वर्णन करेगी? छठवें अङ्क में "दृष्टिस्तृणीकृतजगत्त्रयसत्त्वसारा" इत्यादि पद्य में वीररस का भी अनोखा वर्णन-भवभूति की कवित्व शक्ति किस दर्जे तक चढी है—इस बात का उत्तम नमूना है। हमने यह सब उत्तर-चरित्र में कवि की अनूठी उक्ति दिखलायी। इसका भरपूर रसास्वाद उन्हींको मिल सकता है, जिन्होंने संस्कृत के काव्यों में अभ्यास किया है। भाषा में संस्कृत के अक्षरों और पदों की कारीगरी—कैसा ही यथार्थ अनुवाद क्यों न हो—आना असम्भव है।

तीसरे अङ्क को ऐसे ढङ्ग से बाँधा है कि, उसके अभिनय में यथावत भाव दरसाना किसी प्रकार सहज नहीं है। खास कर ऐसे ज़माने में भी जब कि, नाटक खेलने की कला बड़ी उन्नति पर पहुँच चुकी

है। यदि इस अङ्क का अभिनय भलीभाँति करते बन पड़े तो पारसियों के भ्रष्ट अभिनयों के शौकीन देख कर चकित हो जायें। एक ओर तो दृश्य में श्रीरामचन्द्रजी की हृदयविदारक करुणा, दूसरी ओर सीता का अपनी सखी वासन्ती के साथ उन पर अदृष्ट रूप में दयाभाव प्रकट करना। सीता के परित्याग पर भी जानकी को श्रीराम से ऐसे ढङ्ग से मिलाया है कि जानकी के गात्रस्पर्श के सुख का तो श्रीरामचन्द्रजी अनुभव कर रहे हैं, किन्तु प्रत्यक्ष उन्हें नहीं देखते। करुणारस के कई पद्य इस अङ्क में भी बड़े ही उत्तम हैं। तद्यथा—

त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं।
त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे॥

× × × ×

पूरोद्वाहे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते॥"

बहुत ही सच है, जैसे बरसात में झील या ताल के उमड़ आने पर उसका बाँध तोड़ देना ही सुगम उपाय है, वैसे ही शोक से सन्तापित हो विलाप ही दुःख के आवेग को घटाता है।

शृङ्गाररस प्रधान और भी अनेक काव्य और नाटक हैं इसलिये शृङ्गाररस में नयी उक्ति-युक्ति का निकालना बहुत सहज नहीं है, किन्तु भवभूति ने मालतीमाधव में जो उक्ति-युक्ति निकाली है, वह शृङ्गाररस के सम्बन्ध में दूसरे कवि को सूझना कठिन है।

लीनेव प्रतिबिम्बितेव लिखितेवोत्कीर्णरूपेव च,
प्रत्युप्तेव च वज्रलेपघटितेवान्तर्निखातेव च।
ज्ञानश्चेतसि कीलितेव विशिखैश्चेतोभुवः पञ्चभिः,
चिन्तासन्ततितन्तुजालनिविडस्यूतेव लग्नप्रिया॥

कैसे कोमल और ललित अक्षरों में उत्प्रेक्षा का निर्वाह किया गया है। अस्तु, कवियों की गणना में गोवर्द्धनाचार्य ने कालिदास के उपरान्त भवभूति का नाम लिखा है:—

भवभूतेः सम्बन्धात् भूधरभूरेव भारती भाति।
एतत्कृतकारुण्ये, किमन्यथा रोदिति ग्रावा॥

हमें भी ऐसा ही मालूम होता है कि ललित पदविन्यास के साथ कवित्व में एक अनोखी छटा निकालना या तो कालिदास जानते थे या भवभूति ही। माघ, भारवि, बाण, जयदेव, श्रीहर्ष दण्डी आदि सब अपने अपने ढङ्ग पर किसी न किसी बात में अनोखापन रख गये हैं, किन्तु भवभूति का यह ढङ्ग सब से निराला है। मिथिला देश के आधुनिक एक कवि ने अपने राजा की प्रशंसा में भवभूति का नाम बड़े अच्छे ढङ्ग से लिखा है। देखिये न—

कलयति करकमले करवालमपैति,
विभूषणमरिमहिलायाः।
कवयति भवति भवति भवभूतिरसौ,
वचसोऽपि कलायाः॥

वितरति वसु वसुधा सुरसद्मनि,
लसति कला सकला कमलायाः।

त्वयि शुभमस्तु शुभङ्कर ठक्कुर,
भवसि विभूषणमिहि मिथिलायाः।

भारवि—यह संस्कृत के महाकवि हैं। इनके बनाये किरातार्जुनीय नामक महाकाव्य का संस्कृतज्ञ समाज में बड़ा आदर है। महाकवि भारवि की प्रशंसा में यह श्लोक प्रचलित है।

माघेन विघ्नितोत्साहा न क्षमन्ते पदक्रमे।
स्मरन्तो भारवेरेव कवयः कपयो यथा॥

अर्थात् माघ की रचनाशैली देख कर कवियों का पदविन्यास करने का उत्साह जाता रहा और भारवि का स्मरण करके तो वे कवि कपि हो जाते हैं।

महाकवि भारवि कब और कहाँ हुए, इसका निरूपण उपलब्ध प्रमाणों द्वारा किया जाता है। प्राचीनलेखमाला नामक प्राचीन लेखों के संग्रह की पुस्तक में एक दानपत्र मुद्रित हुआ है। वह दानपत्र महाराज श्रीपृथ्विकोङ्गणि का है। उसमें लिखा है:—

किरातार्जुनीयपञ्चदशसर्गादिकोंकारोदुर्व्विनीतनामधेयः

यह शिलालेख शक ६९८ का लिखा हुआ है। उसी ग्रन्थ में एक दूसरा लेख मुद्रित हुआ है। जो चालुक्य वंशोद्भव श्रीपुलकेशिन का शिलालेख कहा जाता है। उस लेख के अन्त में यह पद्य है:—

येनायोजिनवेश्म स्थिरमर्थविधौ
विवेकिनाजिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित—
भारवि-कालिदास-कीर्तिः॥

यह लेख शक ५५६ का लिखा हुआ है। इन दोनों लेखों से तो यह बात निःसन्देह प्रमाणित होती है कि, खीष्टीय सप्तम शतक के प्रारम्भ में भारवि और उनके काव्य—"किरातार्जुनीय" की उतनी ही प्रसिद्धि थी जितनी कविकुलगुरु कालिदास की। अतएव भारवि का समय खीष्टीय ६वीं सदी के भी पहिले मानना पड़ेगा। पाश्चात्य पण्डित याकोवी ऑगरेज़ी की एक त्रैमासिक पुस्तक में लिखते हैं कि माघ कवि ६०० सन् के मध्यभाग से किसी प्रकार नवीन नहीं हैं और भारवि तो उनसे भी प्राचीन है। बस भारवि के समय के विषय में इससे अधिक और कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इनके वासस्थान के विषय में कुछ न लिखना ही उचित है। क्योंकि इसका पता लगाने के लिये कोई उपाय भी नहीं है। कतिपय विद्वानों ने भारवि के वासस्थान के विषय में अपना यह मत प्रकाशित किया है कि इन्होंने सह्य पर्वत का वर्णन किया है, इस कारण इनका वासस्थान दक्षिण ही में कहीं रहा होगा। परन्तु क्या यह अटकल ठीक कही जा सकती है। यदि इसी अटकल से काम लिया जाय तो बाणभट्ट ने विन्ध्याटवी का बढ़िया वर्णन किया है। अतएव उन्हें विन्ध्याटवी का वासी मान लेना पड़ेगा। रत्नाकर ने हरविजय महाकाव्य में स्वर्ग का वर्णन किया है; अतः क्या वे स्वर्गवासी थे। पाताल के मार्ग का वर्णन करने वाले परिमल को तब पातालवासी मानना पड़ेगा।

किन्तु ऐसा है नहीं। महाकवि भारवि का बनाया एक किरातार्जुनीय महाकाव्य ही मिलता है। इनके दूसरे ग्रन्थ का पता नहीं लगता। किरात का अर्थ गौरव प्रसिद्ध है।

"भारवेरर्थगौरवम्।"

प्राचीन कवियों की रुचि शृङ्गार की ओर विशेषतः पायी जाती है। परन्तु किरातार्जुनीय इस दोष से मुक्त है। इस ग्रन्थ मे नीति का उत्तम उपदेश है।

भास्कराचार्य—भारत के विख्यात ज्योतिर्वेत्ता पण्डित और गणितज्ञ इनके पिता का नाम महेश आचार्य था। इनका वासस्थान सह्य पर्वत के समीप विज्जडविड नामक गाँव मे था। १११४ खीष्टाब्द में इनका जन्म हुआ। इन्होंने ३६ वर्ष की अवस्था मे सन् ११५० ई० में अपने प्रसिद्ध सिद्धान्तशिरोमणि नामक ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ चार खण्डों में विभक्त है अर्थात् १ पाटीगणित, २ बीजगणित, ३ ग्रहगणित, ४ गोलाध्याय। इनके लक्ष्मीधर नामक पुत्र और लीलावती नाम की कन्या थी।

भोजराज—इतिहास प्रसिद्ध विद्वान् और वीर राजा। इनके पिता का नाम सिन्धुराज था। भोजराज कवि और ग्रन्थकार थे। भोजराज रचित ग्रन्थों मे पातंजलदर्शन की वृत्ति, जो भोजवृत्ति के नाम से प्रसिद्ध है, विशेष रचनापूर्ण है। इसके अतिरिक्त निम्नग्रन्थ भोजराज के बनाये हैं।

१ अमरटीका।
२ चम्पूरामायण।
३ चारुचर्या।
४ सरस्वती कण्ठाभरण।
५ राजवार्तिक।

भोजराज के पिता सिन्धुराज थे और मुञ्जराज उनके छोटे भाई थे जो भोज के बाद राजगद्दी पर बैठे। यह बात सिन्धुराज के जीवनचरितरूप नवसाहसाङ्क के विरुद्ध है। यह बात तो सिद्ध है कि मुञ्ज की सभा में धनिक, धनञ्जय, पद्मगुप्त आदि कवि थे। पद्मगुप्त ही ने नवसाहसाङ्क बनाया है। उन्होंने उसमें लिखा है।

दिवं यियासुर्मम वाचि मुद्रा—
मदत्त यां वाक्पतिराजदेवः।
तस्यानुजन्मा कविबान्धवस्य,
भिनत्ति तां सम्प्रति सिन्धुराजः॥

अर्थात् वाक्पति राजदेव (मुञ्ज) के स्वर्ग जाने पर मेरी वाणी रुक गई थी मानो उन्होंने मेरी वाणी में ताला लगा दिया था। आज उन्हीं कवि-बान्धव के छोटे भाई सिन्धुराज मेरी वाणी का ताला खोल रहे हैं।

इससे स्पष्ट प्रमाणित है कि, सिन्धुराज मुञ्जराज के छोटे भाई थे। भोजराज सन् १०६२ ई० में युद्ध में मारे गये थे।

मण्डन मिश्र—भारत के एक प्राचीन विद्वान्। यह जब्बलपुर के पास नर्मदा नदी के किनारे माहिष्मती पुरी के रहने वाले थे। प्रसिद्ध कुमारिलभट्ट के यह प्रिय शिष्य थे। इनका नाम तो विश्वरूप था, परन्तु शास्त्रार्थ में अजेय होने के कारण लोग इन्हे मण्डनमिश्र कहने लगे थे।

शङ्करदिग्विजय में लिखा है कि इनका और शङ्कराचार्य का शास्त्रार्थ हुआ था। शंङ्करा-चार्य से परास्त होने पर यह सन्यासी हो गये थे और शङ्कराचार्य ही से मण्डन ने सन्यास ग्रहण किया था। मण्डनमिश्र के सन्यासाश्रम का नाम सुरेश्वराचार्य हुआ। शङ्कराचार्य के साथ ये भी उनकी शिक्षा का प्रचार करने लगे। इन्होंने व्याससूत्र पर भाष्य भी बनाया था, परन्तु इनके जीवनकाल ही में दुष्टों ने उसे नष्ट कर डाला था। बृहदारण्यक उपनिषद् पर इनका लिखा वार्तिक है जो तात्पर्य वार्तिक के नाम से प्रसिद्ध है। पीछे से यह श्रृङ्गेरीमठ के अधिपति बनाये गये थे।

मम्मट—यह अलङ्कार शास्त्र के प्रधान ग्रन्थ काव्यप्रकाश के रचयिता हैं। माणिक्यचन्द्र ने ख्रीष्टीय सन् ११६० ई० में काव्यप्रकाश की टीका सङ्केता बनायी। माणिक्यचन्द्र ने अपना समय उक्त टीका में लिखा है:—

रसवक्त्रग्रहाधीशवत्सरे (१२१६) मासिमाधवे।
काव्ये काव्यप्रकाशस्य सङ्केतोऽयं समर्थितः॥

इस श्लोक के अनुसार माणिक्यचन्द्र ने अपना समय १२१६ वि० बतलाया है। इसके अनु-सार उनका समय सन् ११६० ई० होता है अतः मम्मट सन् ११६० के पूर्व रहे होंगे।

मम्मट का विशेष वृत्तान्त नहीं मालूम पडता। काव्यप्रकाश की निदर्शक नामक टीका से इतना पता चलता है कि यह शैवागमानुयायी शैव थे और "शब्दव्यापार-विचार" ग्रन्थ की रचना भी इन्होंने की थी।

मम्मट काश्मीरी थे। यह पता उनके नाम से चलता है। कहा जाता है मम्मट ने परिकरालङ्कार पर्यन्त ही काव्यप्रकाश बनाया था, आगे का अंश अल्लट सूरि ने पूरा किया है। काव्यप्रकाश की निदर्शन नामक टीका में लिखा है:—

कृतः श्रीमम्मटाचार्यवर्यैः परिकरावधि—
प्रबन्धः पूरितः शेषो विधायाल्लटसूरिणा॥

माघ—ये महाकवि संस्कृत-साहित्य में बडे प्रसिद्ध तथा आदरणीय हैं। इनके बनाये महाकाव्य शिशुपाल-वध का संस्कृत-साहित्य-वाटिका में बहुत ही ऊँचा स्थान है। इस महाकाव्य की सुमधुर तथा मनोमुग्धकारी कविता की छटा पर संस्कृत-साहित्य-निकुञ्जवासी अनेक पिक लुब्ध हैं और उन्होंने इसका गुणगान भी किया है। किसी कवि ने कहा है—

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः"॥

कालिदास उपमा के लिये, अर्थगुरुता के लिये भारवि, और पदलालित्य के लिये दण्डी प्रसिद्ध हैं, परन्तु माघ में ये तीनों गुण वर्तमान हैं।

एक कवि ने श्लेषालङ्कार से माघ की प्रशंसा की है। वह श्लोक ऐसा है—

मुरारिपदचिन्ता चेत्तदा माघे रतिं कुरु।
मुरारिपदचिन्ता चेत्तदा माघे रतिं कुरु॥

मुरारिपदचिन्ता—भगवत् चरण की यदि चिन्ता हो तो—मा अघे रतिं कुरु—पाप में अनुराग न करो; मुरारिपदचिन्ता—मुरारि नामक कवि के पदों, श्लोकों को समझने की यदि चिन्ता हो, तो माघ नामक ग्रन्थ में रति अनुराग करो।

अन्यान्य संस्कृत कवियों के समान माघ के विषय का भी ज्ञान लोगों को कम ही है। महाकाव्य शिशुपाल-वध के अंत में माघ कवि ने अपना कुछ वृत्तान्त लिखा है। वह भी अपूर्ण ही है। उससे केवल इतना ही पता चलता है— श्रीवर्मल नाम के एक राजा थे, उनके प्रधान मन्त्री का नाम सुप्रभदेव था। सुप्रभदेव के पुत्र दत्तक हुए, जिनके पुत्र माघ ने शिशुपाल-वध नामक महाकाव्य बनाया। परन्तु श्रीवर्मल नामक राजा कहाँ के थे, उनकी राजधानी कहाँ थी, आदि बातों की चर्चा वहाँ नाममात्र को भी नहीं की गई है। वल्लालपण्डित विरचित भोजप्रबन्ध में माघ कवि के विषय में एक कथा लिखी है। यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टि से उस कथा का कुछ भी महत्व नहीं है; तथापि माघ की असीम उदारता का परिचय इस कथा से मिलता है। माघ कवि गुजरात के रहने वाले थे। एक समय गुजरात में बड़ा अकाल पड़ा। उन्होंने गुजरात छोड़ दिया और मालवा के राजा भोजराज की राजधानी धारा नगरी में पहुँचे। माघ पण्डित ने एक पत्र दे कर अपनी स्त्री को राजा के समीप भेजा। पत्र में यह श्लोक लिखा था—

" कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजपण्डम् ,
त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः ।
उदयमहिमरश्मिर्याति शीतांशुरस्तम् ,
हतविधिलसितानां ह्रा विचित्रो विपाकः" ॥

अर्थात् कुमुदवन शोभाहीन हो गया, कमलों की शोभा बढ़ रही है। उलूक अपनी प्रसन्नता छोड़ रहे हैं, चक्रवाक प्रसन्न हो रहे हैं, सूर्य उदय हो रहा है, चन्द्रमा अस्त हो रहा है—दुर्दैव के विलासों का विपाक बड़ा ही विचित्र है। यह श्लोक प्रभात के वर्णन में है। इस श्लोक को पढ़ कर भोजराज बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने तीन लाख रुपये माघ पण्डित की स्त्री को दिये और स्वयं जा कर माघ पण्डित के दर्शन करने की प्रतिज्ञा भी की।

माघ पण्डित की स्त्री इन रुपयों को लेकर जा रही थी, मार्ग में दीन याचक मिले। माघ की स्त्री ने सब धन उन ग़रीबों को दे दिया। पुन: छूछे हाथ वह पति के पास पहुँची और उसने सब हाल कह सुनाया। माघ कवि यह सुन कर बड़े प्रसन्न हुए। एक दिन माघ की फटी टूटी हालत देख कर किसी याचक कवि ने कहा था।

" आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्मतप्त—
मुद्दामदावविधुराणि च काननानि ।
नाना नदीनदशतानि च पूरयित्वा,
रिक्तोऽसि यज्जलद सैव तवोत्तमा श्रीः" ॥

अर्थात् सूर्य की किरणों से तप्त पर्वतों को आश्वासन कर के दावानल से दग्ध हुए वनों को लहलहा बना कर और नदी तथा नदों को पूरा करके जो तुम खाली हो गये हो, सो हे जलद! वही तुम्हारी सर्वोत्तम शोभा है। माघ पण्डित का नाम सुन कर माघ के यहाँ दूर दूर से याचक जुटने लगे। जब तक धन इनके पास था, तब तक तो इन्होने अर्थियो को खूब धन दिया, अन्त में माघ पण्डित छूछे हो गये और अब याचक उनके घर से निराश होकर फिर जाने लगे। इससे दु:खी होकर माघ पण्डित ने कहा—

"दारिद्र्यानलसन्तापः शान्तः सन्तोषवारिणा ।
याचकाशाविघातान्तर्दाहः केनोपशाम्यति" ॥

अर्थात् दारिद्र्य रूपी अग्नि का सन्ताप तो संतोषरूपी जल से बुझ गया, परन्तु याचकों के आशा-विघात से उत्पन्न दाह किस प्रकार शान्त होगा ? इसका दुःख माघ पण्डित को इतना हुआ कि इसी दुःख से उनका प्राणान्त हो गया। माघ के प्राणान्त होने पर उनकी स्त्री ने यह श्लोक कहा था—

"सेवन्ते स्म गृहं यस्य दासवद्भूभुजः पुरा ।
हाद्य भार्यासहायोऽयं मृतो वै माघपण्डितः ॥"

राजा भोज माघ कवि की मृत्यु सुन कर बड़े दुःखी हुए और वे स्वयं वहाँ आये, और उनका सब संस्कार कराया। माघ की स्त्री भी पति की अनुगामिनी हुई।
प्रबन्धचिन्तामणि में भी इसीसे मिलती जुलती बात लिखी है।

इस कथा के आधार पर महाकवि माघ का समय राजा भोज के समकाल ही सिद्ध होता है। परन्तु भोजप्रबन्ध अथवा प्रबन्धचिन्तामणि के आधार पर किसी का समय निर्णय करना ऐतिहासिक दृष्टि से कभी उचित नहीं मालूम पड़ता। क्योंकि उसमें कालिदास, भारवि और भास सभी को एक ही समय का लिखा है।

ध्वन्यालोककर्ता काश्मीर के आनन्दवर्द्धनाचार्य ने माघ काव्य का एक श्लोक अपने ध्वन्यालोक नामक ग्रन्थ में उद्धृत किया है। आनन्दवर्द्धनाचार्य काश्मीर के महाराज अवन्तिवर्मा के समय में थे। अवन्तिवर्मा का समय नवम शताब्दी का अन्तिम भाग है, यह बात राजतरङ्गिणी से सिद्ध है। माघ का एक श्लोक है—

"अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्तिः सन्निबन्धना ।
शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा ॥"

इस श्लोक में जिस न्यासग्रंथ का उल्लेख किया गया है उसका कर्ता जिनेन्द्रबुद्धिपादाचार्य था। न्यास नामक ग्रंथ काशिकावृत्ति की टीका है। चीन देश के परिव्राजक ईत्सिंग ने लिखा है कि, जयादित्य की मृत्यु ६६१—६६० के बीच हुई थी, यह जयादित्य बौद्ध था और काशिकावृत्ति का कर्ता था, परन्तु न्यासग्रंथ के कर्ता का उसने कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि, उसके समय में जिनेन्द्रबुद्धि नामक पण्डित विद्यमान नहीं थे। विद्वानों का अनुमान है कि, अष्टम शताब्दी के आरम्भ में न्यास नाम का ग्रन्थ रचा गया होगा। अष्टम शताब्दी के रचित ग्रन्थ का उल्लेख माघ ने अपने ग्रन्थ में किया है और नवम शताब्दी के अन्त में उत्पन्न आनन्दवर्द्धन ने अपने ग्रंथ में माघ से एक श्लोक उद्धृत किया है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि, अष्टम शताब्दी का अन्त अथवा नवम शताब्दी का मध्यभाग माघ कवि का समय होगा।

माधव विद्यारण्य—ये वेद के विख्यात भाष्यकार सायणाचार्य के बड़े भाई थे। खीष्टीय १४वीं सदी में दक्षिण की तुङ्गभद्रा नदी के तीरस्थित पम्पा नगरी में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम मायण और माता का नाम श्रीमती था। विजयानगरम् के राजा बुक्काराय के ये कुलगुरु तथा प्रधान मन्त्री थे। भारती तीर्थ के पास इन्होंने संन्यास की दीक्षा ली थी। सन् १३३१ ई० में ये श्रृङ्गेरीमठ के

शङ्कराचार्य के पद पर अभिषिक्त हुए। ९० वर्ष की अवस्था में इनका परलोकवास हुआ। इन्होंने पराशरस्मृति का एक भाष्य भी बनाया है जो पराशरमाधव के नाम से प्रसिद्ध है। इस भाष्य में माधवाचार्य ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

श्रीमती जननी यस्य सुकीर्त्तिर्मायणः पिता।
सायणो भोगनाथश्च मनोबुद्धी सहोदरौ॥

माधवविद्यारण्य अथवा माधवाचार्य विजयानगरम् के राजा बुक्कराय के मन्त्री थे। सायण नाम का कोई था ही नहीं। कहा जाता है इन्हींका नामान्तर सायण था। इसका कारण यही बताया जाता है कि माधवाचार्य के बहुत पहिले सायण नाम के कोई वेदभाष्यकर्ता थे, उन्हींके बनाये वेदभाष्य के आधार पर माधवविद्यारण्य ने वेदभाष्य बना कर सायण के नाम से उसे प्रसिद्ध किया। कृष्णयजुर्वेद के ब्राह्मण के टीकाकार का नाम सायणमाधव लिखा है, और शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण के टीकाकार का नाम सायणाचार्य लिखा है। इससे बहुतों का ऐसा विश्वास है कि सायण और माधव दोनो भिन्न भिन्न दो व्यक्ति थे। सम्भव है माधवाचार्य के पाण्डित्य पर रीझ कर सायण ने उनके पाण्डित्य की तुलना की गयी हो और सायणमाधव नाम से उनकी प्रख्याति हुई हो, तदनन्तर वही नाम प्रसिद्ध हो गया हो।

माधवाचार्य के विषय में ऊपर लिखे ये ही दो मत प्रचलित हैं। इन्होंने शङ्करदिग्विजय नामक एक और भी ग्रन्थ लिखा है।

मुरारि—अनर्घराघव के रचयिता हैं। इस ग्रन्थ का नामोल्लेख कविरत्न रत्नाकर ने जो नवम शतक में हुए हैं हरिविजय में किया है। अतएव इनका समय नवें शतक के पूर्व समझना चाहिए।

मेधातिथि—मनुसंहिता के विख्यात टीकाकार थे। इनके पिता का नाम वीरस्वामि भट्ट था।

यवनाचार्य—यह एक ज्योतिष के प्रसिद्ध विद्वान्। इनके बनाये हुए ग्रन्थ का नाम "यवनसिद्धान्त" है। बलभद्र नामक एक ज्योतिर्वेत्ता ने "सिद्धायनरत्न" नामक एक ग्रन्थ बनाया है, उस ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने यवनाचार्य का परिचय इस प्रकार दिया है। यवनाचार्य ने जातकस्कन्ध विषयक "ताजिक" नामक एक ग्रन्थ बनाया है। यह ग्रन्थ फ़ारसी भाषा में था। मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंह ने इस ग्रन्थ का संस्कृत भाषा में अनुवाद करवाया है। इनकी प्रसिद्धि यवन नाम से भी है।

रघुनन्दन भट्टाचार्य—प्रसिद्ध बङ्गीय स्मार्त्त पण्डित। १५वीं शताब्दी में नवद्वीप में उत्पन्न हुए थे। इनकी उत्पत्ति का समय निरूपण करना महाकठिन है। इस समय का बङ्गीय हिन्दू समाज इन्हींके बनाये धर्मशास्त्र के अनुसार परिचालित होता है। जिस समय ये उत्पन्न हुए थे उस समय हिन्दू समाज की बड़ी शोच्य दशा थी। मुसलमानों के हाथ से हिन्दुओं का आचार व्यवहार नष्ट हो रहा था। इन्हीं बातों को देख कर, रघुनन्दन भट्टाचार्य ने हिन्दू समाज का संस्कार करने की इच्छा से अष्टविंशतितत्त्व नामक एक स्मृतिग्रन्थ प्रणयन किया। उस समय प्रचलित हिन्दू धर्म के साथ रघुनन्दन की स्मृति का विरोध होने के कारण अनेक स्थानों से पण्डितगण रघुनन्दन से शास्त्रार्थ करने आये थे। शास्त्रार्थ में रघुनन्दन ने जय पाया। तभी से दूर दूर के विद्यार्थी उनके यहाँ आने लगे और वहाँ शिक्षा पा कर स्मृतिशास्त्र का प्रचार करने लगे। थोड़े ही दिनों में समूचे बङ्गाल में रघुनन्दन की स्मृति का आदर होने लगा और उसीके अनुसार हिन्दूसमाज परिचालित होने लगा। उसी समय से रघुनन्दन स्मार्त्त भट्टाचार्य अथवा स्मार्त्त रघुनन्दन के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके पिता का नाम हरिहर भट्टाचार्य था। इनके पिता भी स्मृतिशास्त्र के पण्डित थे, और नवद्वीप में पढ़ाते थे। इन्होंने २५ वर्ष परिश्रम करके

अपना स्मृतिग्रंथ बनाया था। इस ग्रंथ के बनाने के थोड़े दिनों के बाद पिण्डदान करने के लिये रघुनन्दन गया गये थे। इन्होंने अपने जीवन भर शास्त्रों का अनुशीलन ही किया था।

रघुनाथ शिरोमणि—ये नवद्वीप के विख्यात नैयायिक थे। ख्रीष्टीय १५वीं शताब्दी के शेषभाग में नवद्वीप में इनका जन्म हुआ था। वैदिकसंवहिनी नामक एक ग्रन्थ में लिखा है कि इनका जन्म श्रीहट्ट में हुआ था और इनके ज्येष्ठ भाई रघुपति का ब्याह उसी ज़िले के एक राजा की कन्या रत्नवती से हुआ था। इनकी माता का नाम सीता देवी था। रघुनाथ के पिता अत्यन्त दरिद्र थे, इनकी माता भीख माँग कर इनका पालन बडे कष्ट से करती थी। पाँच वर्ष की अवस्था में ये पढ़ने के लिये गुरुगृह में गये। दरिद्रता से व्याकुल हो कर इनकी माता ने अपने ज्येष्ठ पुत्र का ब्याह राजा के यहाँ कर दिया। वह राजा, कुल में न्यून था, इस कारण अन्यान्य ब्राह्मण पण्डित उनकी निन्दा करने लगे। यह देख कर सीता देवी रघुनाथ को, लेकर नवद्वीप को चली गयी। उस समय नवद्वीप सरस्वती का क्रीड़ाक्षेत्र था। नवद्वीप की प्रसिद्धि चारों ओर हो गयी थी। नाना स्थानों से आ आकर लोग वहाँ से अध्ययन करके पण्डित होकर जाते थे। वहाँ जाकर प्रसिद्ध वासुदेव सार्वभौम के यहाँ ठहर कर रघुनाथ उन्हीं के आश्रम में पढने लगे। सार्वभौम महाशय रघुनाथ की प्रतिभा देख कर विस्मित हो गये। थोड़े ही दिनों में रघुनाथ ने न्यायशास्त्र में प्रगाढ़ व्युत्पत्ति प्राप्त कर ली। इस समय रघुनाथ अपने अध्यापक वासुदेवकृत ' सार्वभौमनिरुक्ति " और गङ्गेशोपाध्यायकृत "चिन्तामणि" पढ़ते थे। रघुनाथ इन ग्रन्थों के अध्ययन के समय उनमें अनेक भूल बतलाने लगे। वासुदेव अपने विद्यार्थी की बुद्धि की प्रखरता देखकर अवाक् रह गये। रघुनाथ उन ग्रंथों का भ्रम बताकर अपना सिद्धान्त छात्रावस्था ही में प्रचार करने लगे। इससे नवद्वीप के पण्डितसमाज में हड़बडी उपस्थित हुई। श्रीचैतन्य और रघुनाथ सहाध्यायी थे। वे दोनो बडे बुद्धिमान् और आपस में मित्र थे। सब मिला कर रघुनाथ शिरोमणि ने ३२ ग्रंथ लिखे हैं, जिनमें ये प्रसिद्ध हैं :—

१ व्युत्पत्तिवाद।
२ लीलावती की टीका।
३ क्षणभंगुरवाद।
४ तत्त्वचिन्तामणिदीधिति।
५ पदार्थमण्डल।
६ प्रामाण्यवाद।
७ ब्रह्मसूत्रवृत्ति।
८ अद्वैतेश्वरवाद।
९ अवयवग्रंथ।
१० आकाङ्क्षावाद।
११ केवलव्यतिरेकी।
१२ पक्षता।
१३ आख्यातवाद।
१४ न्यायकुसुमाञ्जलि की टीका, ये ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

ये षोडश शताब्दी के मध्यभाग में परलोकवासी हुए।

रत्नाकर—इनका रचा काव्य हरविजय है, जिसका आदर अवन्तिवर्मन ने किया था। इनका समय सन् ८५५–८८३ के बीच है।

राजशेखर—ये संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार थे। इनके बनाये विद्धशालभञ्जिका, वालभारत अथवा प्रचण्डपाण्डव और वालरामायण इन नाटकों का संस्कृत साहित्यज्ञों में वडा आदर है। प्राकृत मे भी कर्पूरमञ्जरी नामक एक नाटक इन्होंने लिखा है। ये कवि भवभूति के पश्चात् हुए थे। इनका समय दशम शतक तक माना गया है।

श्रीरामानुजाचार्य—विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त के प्रचारकों में यह सर्वाग्रगण्य है। इन्होंने भारतवर्ष में जैनियों और मायावादियो का प्रभाव हटाने मे प्राणपण से प्रयत्न किया था और अपने प्रयत्न में सफल भी हुए थे। इनका प्राकट्य शकाब्द ९३८ अर्थात् सन् १०१७ ई० मे हुआ था। इनके वनाये मुख्य ग्रंथ ये हैं:—

१ वेदान्तसूत्र पर श्रीभाष्य।
२ वेदान्तप्रदीप
३ वेदान्तसार
४ वेदान्तसंग्रह
५ गीताभाष्य
६ गद्यत्रय

लल्लाचार्य—भारतीय एक प्राचीन ज्योतिषी। इनका सिद्धान्त आर्यज्योतिष मे वड़े आदर से देखा जाता है।

वराहमिहिर—यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनकी वनायी 'वृहत्संहिता' एक उपादेय ग्रंथ है। इनका शरीरान्त सन् ५८७ ई० मे हुआ था।

वल्लभाचार्य—पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक आचार्य। इस मार्ग का नामान्तर रुद्रसम्प्रदाय या वल्लभसम्प्रदाय भी है। इनके पिता का नाम लक्ष्मणभट्ट था। यह तैलङ्ग ब्राह्मण थे। ख्रीष्टीय सोलहवीं सदी में इनका जन्म हुआ था। दक्षिण भारत को छोड इनके सम्प्रदाय के अनुयायी समस्त भारतवर्ष में पाये जाते है। श्रीवल्लभाचार्य ने श्रीमद्भागवत पर सुवोधिनी टीका व्याससूत्र पर भाष्य, सिद्धान्तरहस्य भागवतलीलारहस्य, एकान्तरहस्य आदि ग्रंथ रचे थे। यह जीव और ब्रह्म का अभेद मानने वाले हैं।

विद्यापति—विख्यात मैथिल कवि। इन्होने "पुरुषपरीक्षा" नामक एक संस्कृतग्रंथ वनाया है। इनके पिता का नाम गणपति और पितामह का नाम जयदत्त था। यह मिथिला नरेश शिवसिंह के आश्रित और उनके सभापण्डित थे। पुरुषपरीक्षा के अतिरिक्त इनके रचे संस्कृत-भाषा के ये ग्रन्थ और हैं:—

१ दुर्गाभक्तितरंगिणी।
२ दानवाक्यावली।
३ विवादसार।
४ गयापतन।

निश्चित प्रकार से इनके समय का निरूपण नहीं किया जा सक्ता; परन्तु इतना अवश्य कहा जा सक्ता है कि, यह चैतन्यदेव के पूर्ववर्ती चण्डीदास के समसामयिक थे। किसी किसी का कहना है कि, इनका सन् १३१८ ई० में जन्म हुआ था।

विशाखदत्त—इनका वनाया मुद्राराक्षस नाटक संस्कृत साहित्य में एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। तैलग के मतानुसार इस नाटक की रचना ईसा की ७वीं या ८वीं सदी में हुई थी।

वेदान्तदेशिक—कवितार्किककेसरी, सर्वतंत्रस्वतन्त्र इनकी उपाधियाँ थीं। इनका जन्म कांचीवरम् के निकट एक ग्राम में सन् १२६८ ई० के सितंबर मास अथवा तामिल संवत् विभव में हुआ था। संस्कृत-साहित्य के समस्त विषयो को इन्होने २० वर्ष की उम्र में पढ़ लिया था। इनको पैतृक संपत्ति कुछ भी प्राप्त नहीं हुई थी। यह बहुधा यह श्लोक पढ़ा करते थेः—

"नास्ति पित्रार्जितं किञ्चिन्न मया किञ्चिदर्जितम् ।
अस्ति मे हस्तिशैलाग्रे वस्तु पैतामहं धनम् "॥

वेदान्तदेशिक ने अपना जीवनवृत्तान्त सूत्ररूप से स्वयं निम्नश्लोक में लिख दिया हैः—

निर्विष्टं यतिसार्वभौमवचसामावृत्तिभिर्यौवनं ।
निर्धूतेतरपारतन्त्र्यनिरया नीताः सुखं वासराः ॥
अङ्गीकृत्य सतां प्रसत्तिममतां गर्वोऽपि निर्वापितः ।
शेषायुष्यपि शेषिदपतिदया दीक्षामुदीक्षामहे ॥

इनके जीवनचरित्र में लिखा है कि, इन्होंने एक रात में एक सहस्र श्लोकात्मक "पादुकासहस्र" नामक एक उच्चकोटि के काव्य की रचना की थी। इसी प्रकार इन्होंने कृष्णमिश्र विरचित प्रबोधचन्द्रोदय को देख कर 'सङ्कल्पसूर्योदय" तुरन्त रचडाला था। कालिदास के काव्यों का इनके मन में बड़ा आदर था। उनके मेघदूत काव्य के ढंग पर इन्होंने 'हंससन्देश" की रचना की थी। तदनन्तर "यादवाभ्युदय" नामक महाकाव्य की रचना की। इनके इस काव्य पर अप्पयदीक्षित ने टीका किया। दर्शन-सम्बन्धी ग्रन्थों में इनका बनाया "तत्वमुक्ताकलाप" एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। 'सर्वार्थसिद्धि" का भी बड़ा आदर है। "अधिकरणसारावली" में इस प्रकाण्ड विद्वान् ने श्रीभाष्य को पद्यों में संक्षिप्त कर डाला है। इसमें स्रग्धरावृत्त से काम लिया गया है। कवि सार्वभौम के शब्दों में स्रग्धरावृत्तः—

"स्रग्धरा दुग्धराशिः"।

१ न्यायपरिशुद्धि।
२ न्यायसिद्धाञ्जन।
३ शतदूषणी तत्वटीका।
४ तात्पर्यचन्द्रिका।
५ सेश्वरमीमांसा।
६ मीमांसा पादुका।
७ निक्षेपरक्षा।
८ ईसावास्योपनिषद् का भाष्या।
९ सुभाषितनी वी।
१० रहस्यत्रयसार (संस्कृत तथा तामिल)।
११ यतिराजसप्तशती आदि अनेक स्तोत्र भी इनके बनाये हुए हैं।

श्रीहर्ष के खण्डनखण्डखाद्य के उत्तर में इन्होंने शतदूषणी की रचना की थी। यह सचमुच एक बड़े साहित्यमर्मज्ञ और दार्शनिक विद्वान् हो गये हैं।

वेंकटाध्वरि—यह भी एक दाक्षिणात्य विद्वान् हैं। इन्होंने अपने बनाये विश्वगुणादर्श नामक चम्पू में अपना परिचय दिया है। इनके पिता का नाम रघुनाथ दीक्षित था। अप्पयगुरु, कुवलयानन्द, चित्रमीमांसा आदि के कर्त्ता अप्पय दीक्षित से भिन्न हैं। क्योंकि ये द्राविड़ ब्राह्मण थे। यह अप्पयगुरु ताताचार्य के भाँजे थे। यह ताताचार्य करनाटकदेशवासी राजा कृष्णराय के गुरु थे। इन्होंने सात्विक ब्रह्मविद्याविलास नामक वेदान्त का प्रसिद्ध ग्रन्थ बनाया है।

यह नीलकण्ठ दीक्षित के समकालीन तथा सहाध्यायी थे। ये नीलकण्ठ दीक्षित के पौत्र और नारायण दीक्षित अप्पय दीक्षित के पौत्र और नारायण दीक्षित के पुत्र थे। नीलकण्ठ ने नीलकण्ठविजय नामक एक ग्रन्थ बनाया है। उसमें इन्होंने उसका निर्माणकाल इस प्रकार लिखा है।

> अष्टत्रिंशदुपस्कृतसप्तशताधिकचतुः सहस्रेषु।
> कलिवर्षेषु गतेषु ग्रथितः किल नीलकण्ठविजयोऽयम्॥

इससे निश्चित होता है कि, सन् १६३७ ई० में नीलकण्ठविजय ग्रन्थ बना था। उन्हींके समकालीन वेंकटाध्वरि थे। अतः आज से अढाई सौ वर्ष से भी अधिक इस ग्रन्थ के कर्त्ता (कवि) को हुए हो गये। इस ग्रन्थ का ठीक ठीक निर्माणकाल बतलाना कठिन है।

यह काँची के पास अर्शनफल नाम अग्रहार में रहते थे। यह वडहल सम्प्रदाय के थे। इस महाकवि ने विश्वगुणादर्श, हस्तिगिरि चम्पू और लक्ष्मीसहस्र नामक काव्य बनाये थे। यह भी दाक्षिणात्य कवियों की तरह शब्दालंकार की ओर झुके हुए हैं। प्रलयकावेरी नामक किसी राजा की सभा के ये प्रधान पण्डित थे। कहते हैं विश्वगुणादर्श चम्पू बनाने के कारण यह अन्धे हो गये थे। अतः इन्होंने लक्ष्मीसहस्र से लक्ष्मी की स्तुति की, तो पुनः लक्ष्मी के प्रसाद से इनकी आँखें ठीक हो गयीं।

शङ्कराचार्य—यह एक प्रसिद्ध अद्वैतवादी पण्डित थे। इनके नाम से अनेक ग्रन्थ प्रचलित हैं। जिनमें से शारीरक भाष्य उच्च कोटि का ग्रन्थ है। लोग कहते हैं कि इनका जन्म सन् ७८८ ई० में और देहान्त सन् ८२० ई० में ३२ वर्ष की अवस्था में हुआ। तैलंग तथा भण्डारकर शङ्कर को छठवीं या सातवीं शताब्दी में मानते हैं। वेदान्तसूत्र—भाष्य। भगवद्गीता—भाष्य आदि अनेक ग्रन्थ इनके रचे हुए हैं।

शिवसहायराम—इनकी लिखी शिरोमणि टीका श्रीमद्वाल्मीकि रामायण पर प्रसिद्ध है। यह एक बड़े भावुक विद्वान् थे और प्रयाग दारागंज के रामभवन में रहा करते थे। सं० १९३१—३२ में इन्होंने अपनी टीका प्रकाशित करवायी थी।

श्रीहर्ष—यद्यपि काव्य की लघुत्रयी और अभिज्ञानशाकुन्तल तथा विक्रमोर्वशी के कर्त्ता महाकवि कालिदास प्रसादगुण और लोकोत्तर उपमा के लिये निस्सन्देह प्रशंसनीय हैं; तथापि ओज और लालित्य के लिये श्रीहर्ष ही अद्वितीय माने गये हैं। कविता के जिस पथ का अनुसरण इन्होंने किया है, वह भारवि और माघ कवि के ढंग से बिलकुल निराला है। इनकी काव्यमयी सरस्वती का क्या निराला ढंग है और इनकी लोकोत्तर प्रतिभा कितनी पैनी और कहाँ तक उसमें समावेश है, इसे वे ही पहचान सकते हैं, जो काव्यवासना पूर्ण सरस हृदय हैं। इनकी रचना नैषधचरित निस्सन्देह भारवि प्रभृति कई एक महाकवियों के काव्य के उपरान्त प्रकट की गयी है। इसलिये सम्भव है कि श्रीहर्ष ने उन कवियों की छाया का सहारा अपने काव्य में लिया हो। किन्तु

कालिदास को छोड,—जो कवि-सम्प्रदाय मात्र के काकागुरु हैं और जिनके कविता के भण्डार से कुछ न कुछ चुराये बिना कोई आगे बढ़ ही नहीं सकता, अन्य किसी कवि का अनुकरण श्रीहर्ष ने नहीं किया। बल्कि कविता के अंश में जो कुछ इन्हें सूझा वह इनके उपरान्त के कवियों से न बन पडा। अतएव सस्कृत के षट्काव्यों में नैपध जैसे सब का अन्तिम है—वैसे ही काव्यों की पूर्णाहुति भी इसीसे होती है। ऐसा जान पडता है कि माघ और भारवि ये दोनों कवि परस्पर स्पर्द्धालु थे, क्योंकि इन दोनों के काव्य की लिखावट ऐसी मिल जाती है कि, उनमें यह जान लेना कि, यह किसकी कविता है असम्भव सा है। यह वही परख सकता है जिसने आद्योपान्त किरात और माघ को कई बार पढ़ा पढ़ाया है। किन्तु नैपध के श्लोको का ढंग ही निराला है। पढ़ते ही मालूम हो जाता है कि यह कालिदास, भारवि और माघ तीनों से पृथक् है। माघ और किरात दोनो के अन्त में चित्रकाव्य, सर्वतोभद्र, अर्द्धभ्रमक, मुरजबध, कमलबंध, गोमूत्रिकाबंध, एकाक्षरी, द्वाक्षरी, अमात्रिक आदि छदों की कल्पनाएँ हैं। ये प्रकट करती हैं कि उन उन कवियों में परस्पर स्पर्द्धा थी, परन्तु श्रीहर्ष ने जान बूझ कर इस क्रम को नैपध में नहीं रक्खा है और शब्दचातुरी को निकृष्ट और अधम काव्य समझ इन विविध बन्धों का समावेश नहीं किया। केवल अर्थ की गम्भीरता और पदलालित्य को प्रधान रक्खा है। श्रीहर्ष ने श्लेपालङ्कार को आदि से अन्त तक आदर दिया है—और इनके श्लेष कुछ ऐसे नहीं हैं कि, सहज मे खुल जाँय, वरन् काव्यो के पठन पाठन और अनुशीलन से जो पटुबुद्धि हैं उन्हींके चित्त को श्रीहर्ष की कविता हर्ष पहुँचा सकती है। इसका सर्ग का सर्ग ऐसी कविताक्लिष्ट का सन्दोह है कि कालिदास का प्रसादगुण जी से उखड़ जाता है। बुद्धि चकरा जाती है। कालिदास के काव्य को जो मक्खन का लड्डू कहें, तो इसे कन्द का गोला कहेंगे। इनकी रचना छात्रदशा के पठन पाठन के लिये तब तक उपयोगी नहीं है, जब तक समग्र व्याकरण और तर्कवाद में पूरा प्रवीण न हो जाय।

यह किस समय में हुए, इसका निर्णय करने के पूर्व यह कहना उचित है कि यह श्रीहर्ष वह नहीं हैं, जिनका ज़िक्र "रत्नावली" नाटिका में किया गया है। यथाः—

"श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी।"

न यह वही श्रीहर्ष हैं, जिनके लिये बाणभट्ट ने श्रीहर्षचरित्र बनाया है। वह श्रीहर्ष काश्मीर के राजा थे और विक्रम संवत् की सातवीं या आठवीं शताब्दी में हुए थे, किन्तु यह श्रीहर्ष भारवि और माघ कवि के बहुत दिनों बाद कन्नौज के राजा जयचन्द्र के समय के लगभग विक्रमाब्द को नवीं शताब्दी में हुए हैं। काव्यप्रकाशकार मम्मट ने, जिसको लोग पतञ्जलिमहाभाष्य के तिलककार कैय्यट का भाई मानते हैं, अपने काव्यप्रकाश में सब कवियों के उदाहरण दिये हैं और उस समय भारवि आदि जो जो कवि हो चुके थे, उनके गुण दोषों के निरूपण द्वारा उन सब की सामान्य समालोचना की है। परन्तु श्रीहर्ष के नैपध का एक श्लोक भी कहीं उदाहरण में नहीं दिया: इससे निश्चय होता है कि मम्मटभट्ट के उपरान्त श्रीहर्ष ने नैषधचरित्र निर्माण किया। किम्वदन्ती है कि मम्मट जब काव्यप्रकाश बना चुके, तब श्रीहर्ष की भेंट उनसे हुई और उन्होंने नैषधचरित्र दिखलाया और कहा कि हमारे काव्य की भी समालोचना आप करें। तब मम्मटभट्ट ने नैषध के निम्न श्लोक की भूल दिखलायी।

तव वर्त्मनि वर्ततां शिवम्,
पुनरस्तु त्वरितं समागमः।

अपि साधय साधयेप्सितम्,
स्मरणीयाः समये वयं वयः ॥

इसका अर्थ यह है:—राजा नल हंस को विदा करने के समय कहते हैं—"जाइये, मार्ग में तुम्हारा शुभ हो। जल्दी फिर लौट कर आना। हमारे मनोरथ को साधो और समय पर स्मरण रखना।" यहाँ 'वर्त्मनि वर्ततां" में 'वर्त्मनि' सप्तमी है और 'वर्ततां' क्रिया है; किन्तु 'वर्त्मनि' का 'नि' अलग कर "वर्ततां" इस क्रिया मे लगा दो तो 'निवर्ततां' हो जाता है। तात्पर्य यह कि तुम्हारे मार्ग में शुभ की निवृत्ति हो, अर्थात् मार्ग में तुम्हारा अशुभ हो। इस पर कहा जाता है कि, श्रीहर्ष लज्जित हो चुप हो गये। समालोचना के लिये फिर न कहा। यह कन्नौज के राजा के सभापति थे। नैषध के अन्त में इन्होंने लिखा है:—

"ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्"।

अर्थात् कान्यकुब्जाधिप से जो दो बीडा पान और आसन पाने के हकदार थे। यह श्रीहीर पण्डित के पुत्र थे और मामल्ल देवी इनकी माता का नाम था। कहते हैं जब इनके पिता श्रीहीर ने वाद में परास्त हो लज्जावश शरीर त्याग दिया, तब इनकी माता मामल्लदेवी ने इनसे शव-साधन करवाया और सरस्वती के चिन्तामणिमन्त्र का मुरदे की छाती पर श्रीहर्ष को बिठा जप करवाया। उस समय इनकी उम्र केवल ५ वर्ष की थी। चिन्तामणिमन्त्र के प्रभाव से यह ऐसे उद्भट पण्डित हुए कि लडकपन ही में इन्होंने अपने पिता को परास्त करने वाले पण्डित को वाद में जीत लिया। खण्डन-खण्डखाद्य आदि कई ग्रन्थ इनके बनाये हुए हैं। नैषध के प्रतिसर्ग के अन्त में इन्होंने ऐसे श्लोक से सर्ग की समाप्ति की है; जिससे इनके माता पिता का नाम तथा इनका सूक्ष्म वृत्तान्त बराबर प्रकट होता है। यथा.—

श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं,
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यं।
तच्चिन्तामणिमंत्रचिन्तनफले शृङ्गारभङ्ग्यामहा,
काव्ये चारुणि नैषधीयचरिते सर्गो निसर्गोज्ज्वलः ॥

श्रीहर्ष की उक्ति की बानगी के ढंग पर नैषध की कुछ लोकोक्तियों का संग्रह हम नीचे देते हैं।

त्यजन्त्यमून् शर्म च मानिनो वरं।
त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम् ॥

अर्थात् मानीजन प्राण और सुख दोनों से हाथ धो बैठते हैं, पर एक अयाचितव्रत नहीं छोडते।

क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग् जनः ?

अर्थात् भाग्यवान् जहाँ जाते है वहीं सब भोगसामग्री उन्हे प्राप्त होती हैं।

अवश्यभव्येष्वनवग्रहग्रहा, यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते जनस्य चित्तेन भृशावशात्मना ॥

अर्थात् विधाता की इच्छा जिसे अवश्य होनहार के सुघटित करने का हठ है—वह जिस ओर अपना झुकाव प्रकट करती है, उसी ओर मनुष्य का चित्त भी हवा के झोंके से तृण के समान विवश हो दौड़ जाता है।

विगर्हितं धर्मधनैर्निबर्हणं विशिष्यविश्वासजुषां द्विषामपि।

अर्थात् जिनका धर्म ही धन है, ऐसे लोगों के जो अपने विश्वास पर हो, चाहे शत्रु क्यों न हो, मारना विशेष निन्द्य है।

ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम्।

अर्थात साधुजन जब किसी का कुछ उपकार करते हैं तो करके दिखा देते हैं—मुख से कहते नहीं।

सुबन्धु—इनको बाण ने वासवदत्ता का रचयिता बताया है। इसलिये इनका समय सप्तम शतक से पहले का नहीं है।

हलायुध—ब्राह्मणसर्वस्व, कविरहस्य आदि ग्रन्थों के प्रणेता एक प्राचीन पण्डित। यह गीतगोविन्द प्रणेता जयदेव कवि के समकालीन थे। यह गौड़ेश्वर लक्ष्मणसेन के सभापण्डित थे।

हेमचन्द्र—बारहवीं शताब्दी के एक जैनधर्मप्रचारक का नाम। इन्होंने अभिधानचिन्तामणि नामक ग्रन्थ रचा था। महावीरचरित के लेखक भी यही हैं।

इति

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad